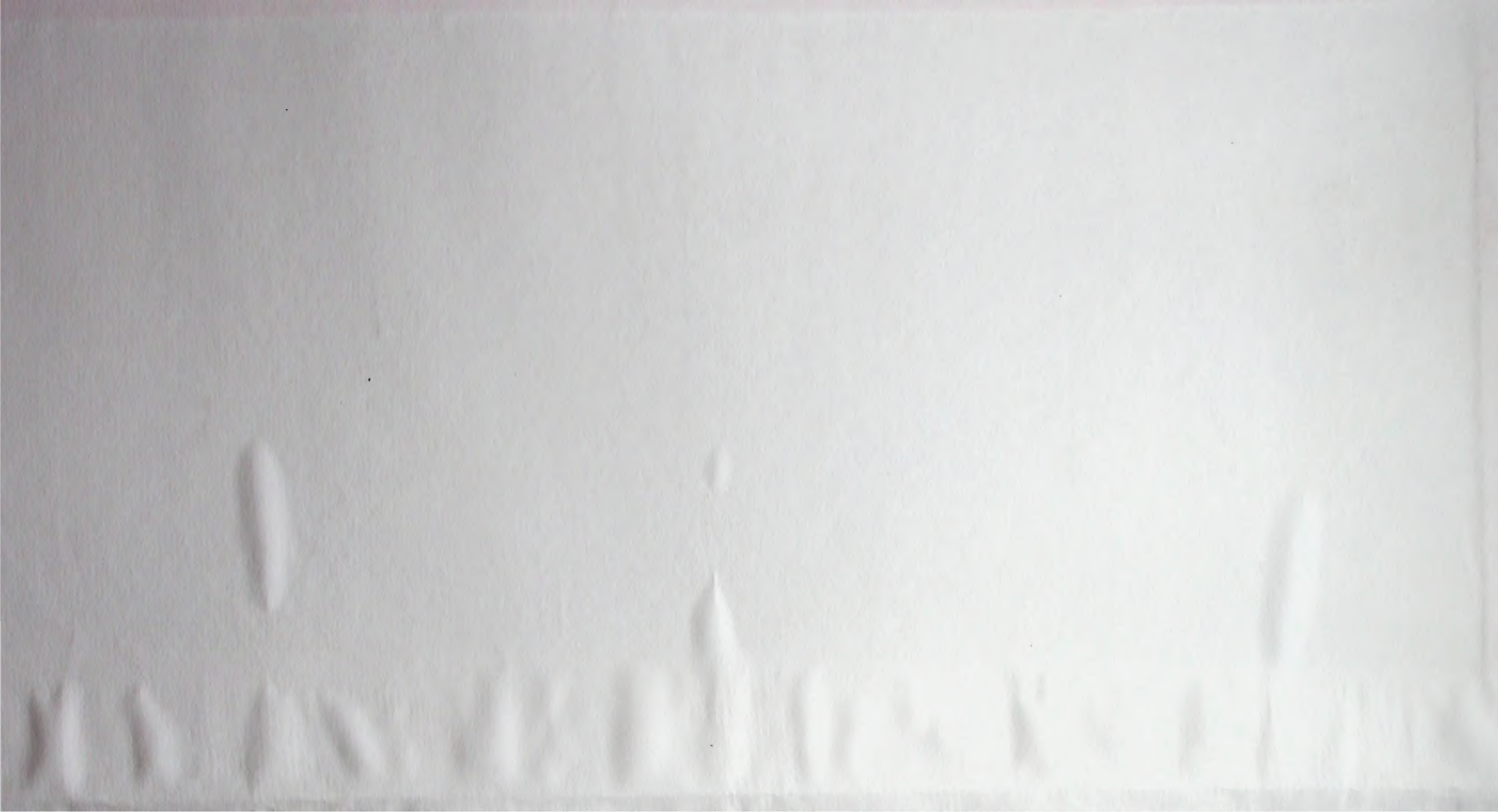


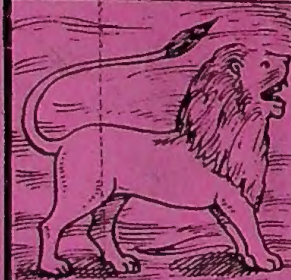
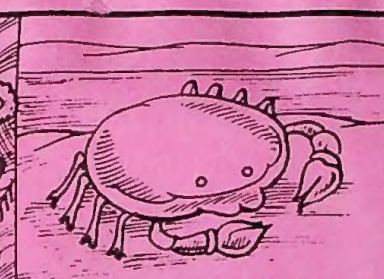
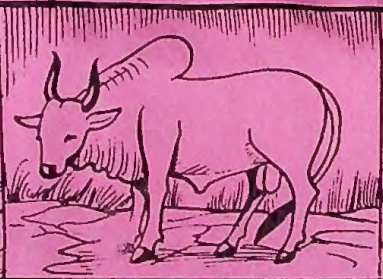
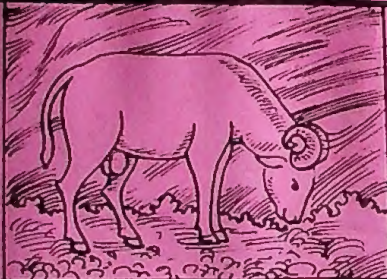


असली प्राचीन हस्त लिखित

श्री भृगु संहिता कुण्डली रहस्यम्

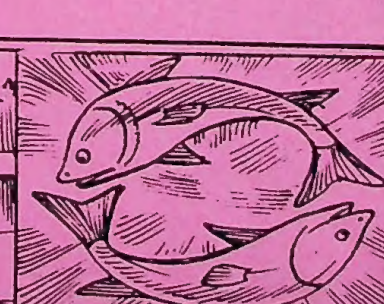
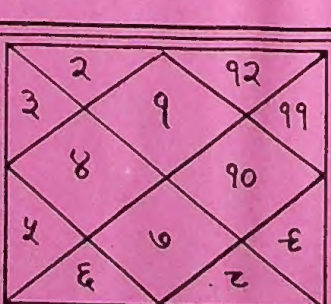
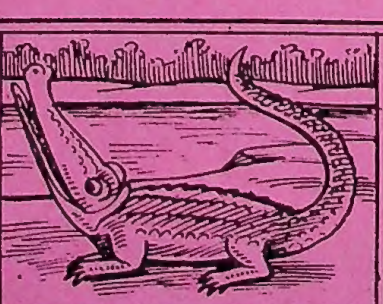
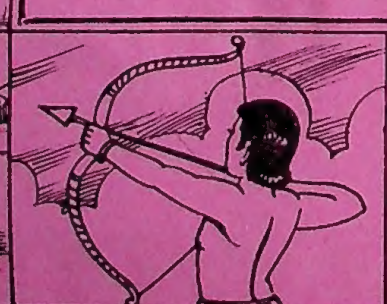
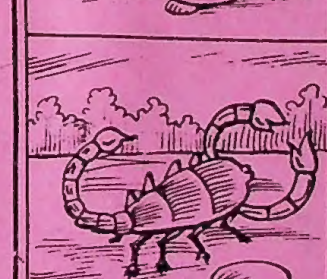


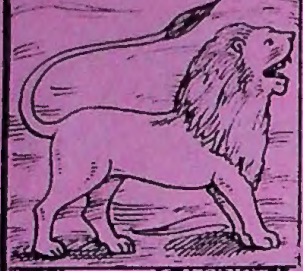
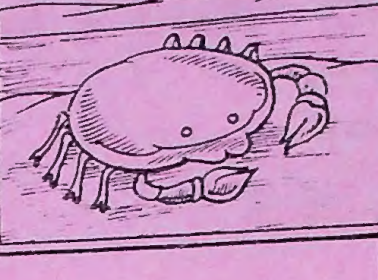
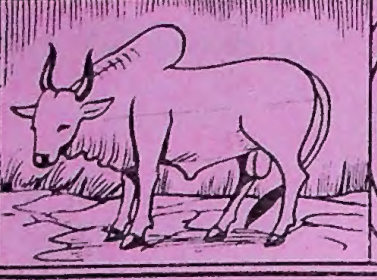
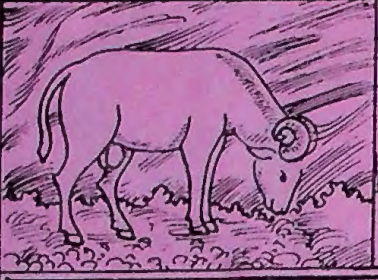




अथ श्रीभूगु संहिता कुण्डली रहस्यम्

आरम्भः

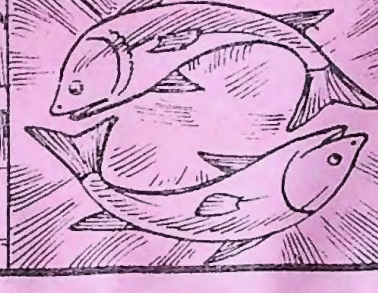
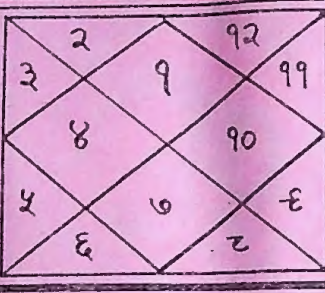
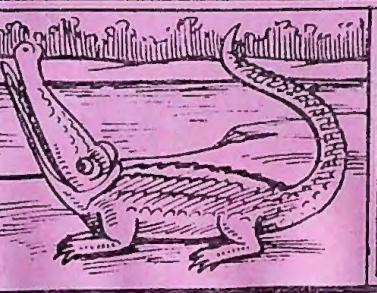
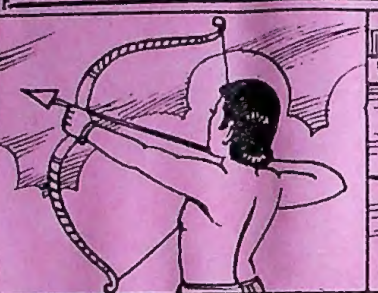
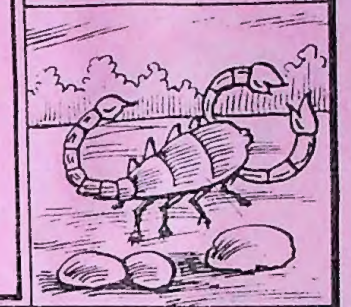




अथ श्रीभूगु संहिता कुण्डली रहस्यम्

जातव्य विषयाः

प्रथम खण्डः





असली प्राचीन हस्तलिखित श्री भृगुसंहिता कुण्डली रहस्यम्

विक्रम सम्वत् १८४२ से सम्वत् २१०० तक की
सूर्य-कुण्डलियाँ, सम्वत् १८६७ वि. से २०४४
तक की सूर्य-कुण्डलियों का फलादेश, किसी भी
जन्म कुण्डली का फलादेश जानने के सिद्धान्त,
ज्योतिष तथा ग्रह विषयक शास्त्र-विषयों
से परिपूर्ण, प्रत्येक घर में पूजा-स्थान पर
रखने योग्य अभिनव फलदायक महाग्रन्थ।

प्राप्तिस्थान



क्रियेटिव पब्लिकेशन

4422, नई सड़क, दिल्ली-110006

फोन. : 23261030, 23985175

मोबाईल-9899470459,



प्रकाशक:

© देहाती पुस्तक भण्डार

सम्पादक
विद्या-वारिधि
पं. राजेश दीक्षित

आस्तिक श्रद्धालुजन

इस ग्रन्थ को स्वच्छ
वेस्त्र में लपेटकर
पूजा-स्थल में रखें
तथा अनधिकारी के
हाथों में न जाने दें।

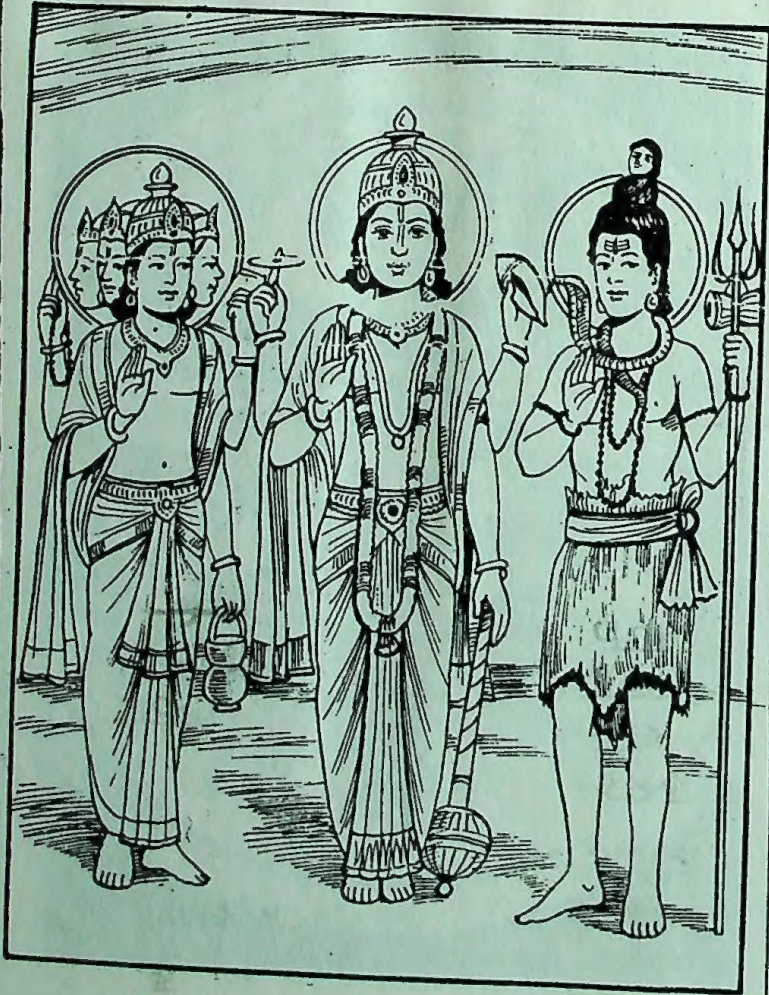
सर्वाधिकार: प्रकाशकाधीन

फोटोस्टेट वाले ग्रंथ नकली हैं। असली ग्रंथ ऑफसेट द्वारा छापे गये हैं।

मूल्य: 3100/- (तीन हजार एक सौ रुपये)

E-mail : hcb60@hotmail.com





विश्व-नियन्ता, ब्रह्माण्ड और ज्योतिषशास्त्र

यह संसार, जिसमें कि हम सब निवास कर रहे हैं, ब्रह्माण्ड का एक लघुतम भाग है। शास्त्रों में ऐसे कोटि-कोटि ब्रह्माण्डों की विज्जमानता पर प्रकाश डाला है। आधुनिक वैज्ञानिकों ने भी अपनी खोजों द्वारा यह जान लिया है कि जिस धृषवी पर कोराडु कोटि प्राणी निवास कर रहे हैं, वह सूर्य का एक छोटा सा उपग्रह है तथा जिस नीलाकाश को हम देखते रहते हैं उसमें सूर्य से सैकड़ों गुणा बड़े अलंकार तारे विज्जमान हैं, जिनके आकार, दूरी तथा अन्तःविषयों के सम्बन्ध-में कोई कल्पना तक नहीं की जा सकती।

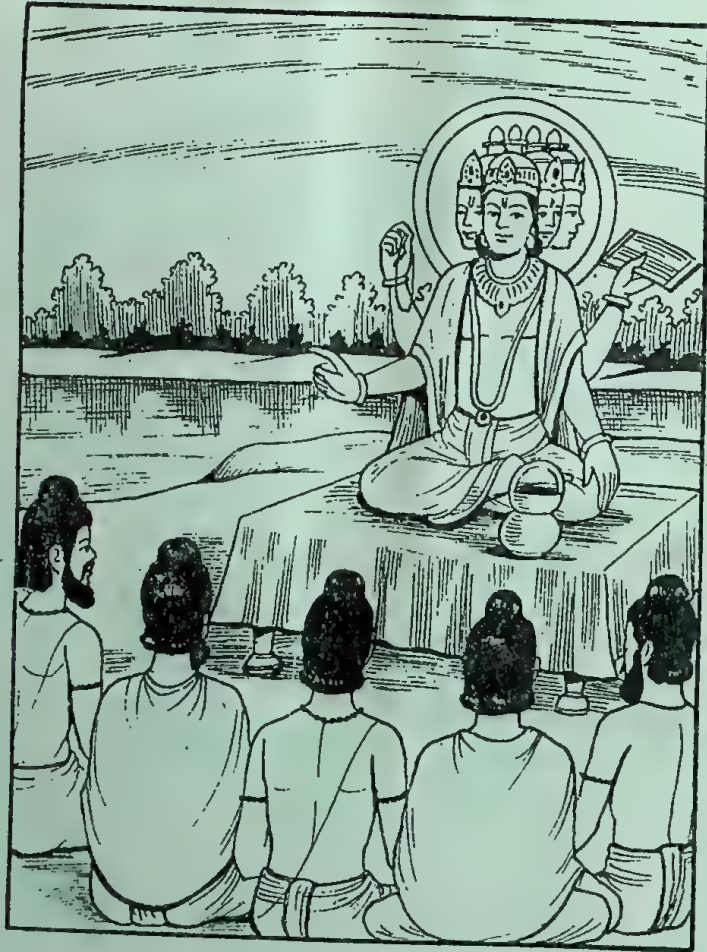
आकाश में रात्रि के समय दिखाई देने वाली मंदाकिनी में अरबों तारे हैं और उनमें से सबसे छोटा तारा भी हमारे सूर्य से सैकड़ों गुणा बड़ा है। फिर स्वमण्डल में ऐसी मंदाकिनियाँ भी अनेक हैं, जो लाखों किलोमीटर प्रति सैकेण्ड की गति से, हमारी धृषवी से दूर, अति दूर होती चली जा रही हैं। वे कहाँ जा रही हैं और यह आकाश कितना गहरा है, जिसमें कि वे अधिकाधिक भीत समाती चली जाती हैं, इसे कोई नहीं जानता।



हिन्दू धर्मगुरुओं के अनुसार इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का एक परमपिता परमेश्वर निराकार रहते हुए भी स्वयं को तीन रूपों में विभक्त किए हुए है, उसके उन स्वरूपों को ब्रह्मा, विष्णु और शिव के नाम से सम्बोधित किया जाता है। ब्रह्मा सृष्टि को उत्पन्न करते, विष्णु पालन करते तथा शिव संहार करने का कार्य करते हैं। महाप्रलय में इन सबका भी विरोभाव हो जाता है। फिर नित्यका परमेश्वर नवीन सृष्टि सृजन की इच्छासे इन्हें पुनः उत्पन्न करना है। इस प्रकार उत्पत्ति, विपत्ति और प्रलय का क्रम निरन्तर चलता रहता है।

शास्त्रों की मान्यता है कि जिस प्रकार ईश्वर का कभी विनाश नहीं होता, उसी प्रकार ज्ञान भी कभी विनष्ट अथवा नष्ट नहीं होता है। कल्पान्त के समय भी यह अलक्ष्य रूप में विद्यमान रहता है तथा सृष्टि के नव-सृजन के समय सृजनकर्ता ब्रह्मा द्वारा इसका पुनर्गठन एवं पुनः-प्रसार किया जाता है।

गुरुओं की उत्पत्ति भी सृष्टि-सृजन के समय ही होती है। अधिभूत यह कहना कहीं अधिक समीचीन रहेगा कि मनुष्य के जन्म लेते से पूर्व ही ग्रह-नक्षत्रों का जन्म हो चुका होता है, अतः जब बाद में मनुष्य तथा अन्य जीव-जन्तु, वनस्पति



आदि उत्पन्न होते हैं; तब पहले से ही विद्यमान गृह-नक्षत्र उनपर अपना आधिपत्य स्थापित करते हैं; फलतः संचराचर-जगत् का प्रत्येक प्राणी गृह-नक्षत्रों के अधीन बना रहता है। अपने जन्म-जन्मानु के निश्चित कर्मों के फलस्वरूप वह सुख दुःख, शान्ति, लाभ, जीवन-मृत्यु, उत्थान-पतन, रोग-आरोग्य आदि को प्राप्त करता है। स्थितरीति आत्मा से गृह-नक्षत्र जैसे उनके कर्मों के साक्षी एवं निष्पन्नक बन जाते हैं।

सृष्टि के शांति में अन्त विज्ञानों की माँति ज्योतिषशास्त्र के ज्ञान का प्राकट्य भी प्रजापति ब्रह्मा के द्वारा किया गया। उन्होंने तत्कालीन ऋषि-मुनियों को इस ज्ञान का उपदेश किया, तदुपान्त उन महर्षियों द्वारा ही यह ज्ञान भूमण्डल के सभी कोनों में विकीर्ण किया गया।

संसार की सबसे प्राचीन पुस्तक वेद, अपौरुषेय माने जाते हैं। सृष्टि-सृजनोद्धान्त इस वेदों का प्राकट्य ब्रह्माजी द्वारा ही किया जाना है। वेदों पर आधारित ६ शास्त्रों में ज्योतिषशास्त्र का अपना महत्वपूर्ण स्थान है। यही एक ऐसा शास्त्र है, जो न केवल गृह-नक्षत्रों से सम्बन्धित गतिविधियों की सूचना देता है, अपितु संचराचर जगत् और उसमें रहने वाले प्रत्येक



प्राणी के ध्वज, वर्तमान तथा भविष्य का ज्ञान भी प्राप्त करता है। यह दृष्टि से ओष्ठल अतीत तथा सकलपरीक्ष अनागत अर्थात् भविष्य का ज्ञान देकर आश्चर्यचकित कर देने की क्षमता रखता है। इस दिव्य ज्ञान के आलोक में मनुष्य न केवल अपना, अपितु संसार के किसी भी प्राणी का ध्वज, वर्तमान तथा भविष्य ज्ञान लभता है और उसे दूसरे लोगों को बता भी सकता है।

त्रिकालीन फलोद्देश को ज्ञान कोते का साधन जन्मकुण्डली मानी गई है। मनुष्य के अस्मिता पशु-पक्षी, वेड-जैके पशुओं के वाच्य एवं चरगाओं के जन्म-समय की भी जन्मकुण्डली तय्यार की जा सकती है। किसी प्राणी के जन्म लेने के समय अथवा किसी चरगा के घरेने के समय अथवा किसी शब्द प' लब्ध समुद्र के मुँह से निकलने समय आकाश में कौन सा ग्रह किस स्थान पर, किन्तनी दूरी पर तथा किस ग्रह के साथ अथवा उसके किन्ता आगे-पीछे था, इसका ज्ञान जन्म कुण्डली से लगता है।

आकाश में कौन सा ग्रह कब कहाँ होगा, इसका ज्ञान पञ्चाङ्ग द्वारा होता है। पञ्चाङ्ग स्वर्गोत्पीद तथा मेदिनीय गणित के आधार पर तय्यार किसे पाते हैं। पञ्चाङ्ग ही जन्म कुण्डली निर्माण के सहायक बनते हैं। जब जन्म कुण्डली तय्यार



हो जाती है, तब उनके आकाश पर फलादेश-कथन किया जाता है।
 फलादेश-कथन के कुछ निश्चित सिद्धान्त हैं। जिनका
 उत्प्रेषण विभिन्न ज्योतिषीय गुणों से किया जाता है। ज्योतिष-गुणों
 में उत्प्रेषण फलादेश के सिद्धान्त अधि-भुक्ति तथा विद्वानों के
 अनुभवों पर आधारित है। ये अनुभव हजारों वर्ष की दीर्घकालीन
 न रोज के परिणाम भी कहे जा सकते हैं। कही-कही इन
 फलादेशों में न्यूनतम अन्त भी पाया जाता है, उसका कारण
 विभिन्न मन्त्रीविज्ञों द्वारा निक-निक परिस्थितियों में प्राप्त अनुभवों
 का अन्त होता है। सुयोग्य ज्योतिषी का कर्तव्य है कि
 वह फलादेश पर विचार करते समय प्राचीन मन्त्रीविज्ञों के
 वचनों का तो लाभ उठा ले, यदि उसका स्वयं का भी कोई अनु-
 भव हो तो उसे भी अवश्य उपयोग में ले। जिन प्रकार चिकित्सा-
 कार्य में शास्त्र-कथन के अतिरिक्त चिकित्सक का स्वानुभव भी
 महत्वपूर्ण स्थान रखता है, ठीक वही बात ज्योतिष-विज्ञान पर भी
 लागू होती है। सफल फलादेशकर्ता वही ज्योतिषी हो सकता है,
 जो शास्त्र-वचनों के अतिरिक्त स्वानुभव पर भी ध्यान देता हो।
 शास्त्र, अनुभव तथा देश-कालीन परिस्थितियों को ध्यान में रख
 कर किया गए फलादेश ही सफल सिद्ध होते हैं।



'शृगु निर्दिष्ट' को फलित-ज्योतिष का महान् गुण माना जाता है। इसके जन्म के लम्बे-लम्बे में एक सुप्रचलित-कथा इस प्रकार है—

एक समय महर्षि शृगु भगवान् विष्णु से भेंट कोने हेतु क्षीर-सागर में गए। भगवान् उस समय ब्रह्म-शास्त्रों का शपथ का रहे थे तबका (मन्त्री) उनके चार-कमलों को, दबायी थी। बाहर दरवाजे पर जय-विजय नामक दो कारपाल पहना दे रहे थे। महर्षि शृगु जब विष्णु-सदन के द्वार पर पहुँचे तो जय-विजय ने उन्हें भीतर उवेश कोने से घट कहकर रोका कि इस समय भगवान् शपथ का रहे हैं, अतः उनके पास जाना उचित नहीं है।

महर्षि शृगु कोपी स्वभाव के थे। जय-विजय के मुँह से निकले इन शब्दों को सुन कर वे आग-बबूला हो गए और बोले—'अरे दुष्टे! ब्राह्मण को सभी समय सर्वत्र उवेश करने का अधिकार है। इस दृष्टि में ब्राह्मण से बड़ा कोई नहीं है। वह तदैव विष्णु के हित-चिन्तन में लगा रहता है। अपने विषय में वह कभी चिन्ता नहीं करता, इसी कारण उसे सर्वोपरि स्वीकार किया गया है। मैं इस समय यहाँ अपने किसी निजी



स्वार्थ के लिए नहीं आया हूँ, अविदु लोक-हित की कामना से
उत्पन्न तत्त्वा वात्सल्य हेतु आया हूँ। तुम लोगों ने मेरा
मार्ग अवलम्ब करके जो मेरा अपमान एवं विरुद्ध किया है,
इसके फल (चरण तुम्हें वैकुण्ठधाम ले प्रतिन होकर तीन जनों
तक राक्षस की चोरी में रहना पड़ेगा।

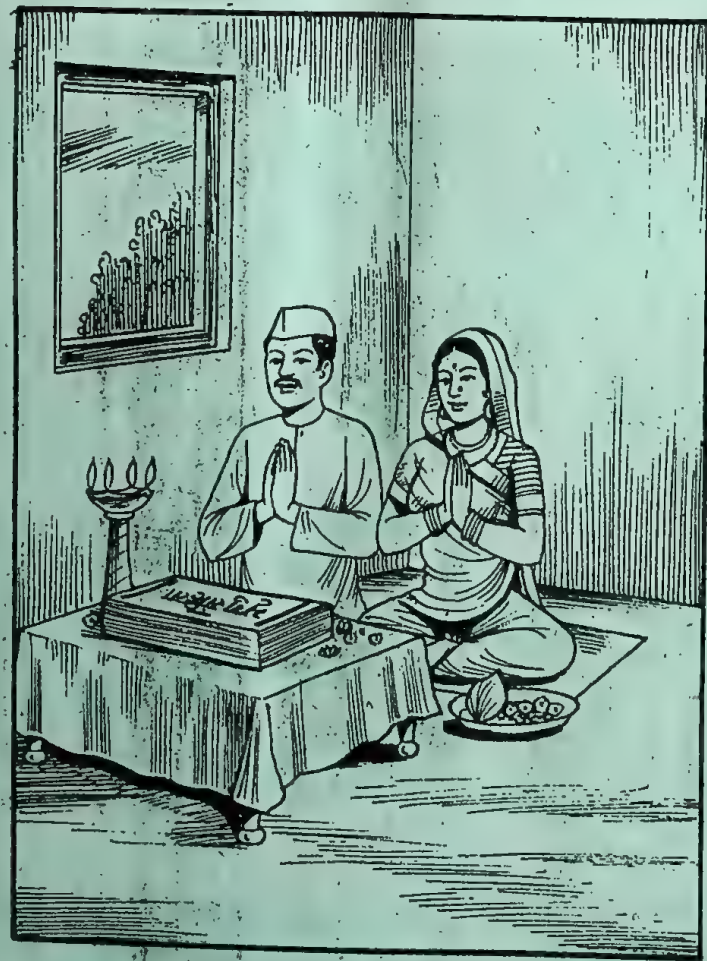
महर्षि शुक के इस श्राप को सुनकर जय-विजय
बिलाप करते हुए उनके चरणों में गिरपड़े तथा अपने-अपना
की क्षमा माँगने लगे, तब महर्षि ने उल्लासपूर्वक इस प्रकार
कहा - 'हे जय, विजय ! मेरा श्राप तो अमर नहीं हो सकता,
परन्तु मैं तुम्हें अब यह वरदान देता हूँ कि तीन जनों में राक्षस
चोरी से उद्धार दिलाने के लिए स्वयं विष्णु भगवान् ही भूलोक
पर अवतरित होकर तुम्हारा लक्ष्य करेंगे। फिर श्राप की अवधि
समाप्त होगे या तुम दोनों पुनः यही आकर भगवान् की सेवा
करोगे।'

यह सुनकर जय-विजय ने तनिक जन्नोष की साँस ली,
तत्पश्चात् महर्षि शुक जब विष्णु-सदन में पहुँचे तो उन्होंने
यह दावा कि श्री विष्णु अपनी आँखें बंद किये हुए शोक-शरणात्
लेटे हैं।



विष्णुजी को आँखें बंद कर लेते हुए देव का महर्षि का कोप पुनः भड़क उठा। उन्होंने समझा कि श्रीविष्णु (संभवतः) उनका अन्याय करने के उद्देश्य से ही इस प्रकार आँखें बंद कर लेते हुए हैं।

महर्षि ने अब देवाना न ताक कोप में भर का श्रीविष्णु के वक्षःस्थल पर अपने पाद-रत्न का उहाड़ का दिया। पाँव की-चोट लगते ही श्रीविष्णु हड़बड़ा कर उठ बैठे। आँखें खोलकर देखा तो पाया कि महर्षि भृगु कोप में भरे खड़े हैं। श्रीविष्णु ने बुझा ही उनके चाण को अपने दोनों हाथों में लेते हुए कहा - 'हे मुने! मैं शपथ कर रहा था, अतः आपके आगमन के विषय में नहीं जान पाया। अतः सर्व उपम तो आप मुझे इसलिए क्षमा उदान करें कि मैं आपको यथोचित सम्मान देने में असमर्थ रहा, कि मेरे वक्षःस्थल पर उहाड़ करने से आपके चाण को जो कीड़ा दुर्लभ उनके लिए भी मैं क्षमा प्रार्थी हूँ। मेरा वक्षःस्थल तो बल की भाँति कठोरा है, अतः उस पर किसी भी आघात का कोई प्रभाव नहीं पड़ता, परन्तु आपके चाण कमल की भाँति कोमल है, वे मेरे वक्षःस्थल से लगाकर अवश्य पीड़ित हुए होंगे, इस हेतु आप मुझे बालम्बाह क्षमा उदान करने की कृपा करें।'।



श्रीविष्णु के मुख से निकलत इन चित्त-वचनों को सुन कर महर्षि
शुक्र का तब केवल कोप क्षान्त हो गया, अधिक उन्हें अपने व्यवहार पर
बड़ी लज्जा और ग्लानि का अनुभव भी हुआ। तब वे स्वयं भी विष्णु
की स्तुति करते हुए अपने दुष्कृत्य की क्षमा माँगते लगे।

महर्षि को ग्लानिमुक्त दोष का श्रीविष्णु ने ऐसा शक्ति प्रकाश
दाया अपने लक्ष में लेते हुए कहा—“हे विप्रकेश ! मैं ब्राह्मणों
की कृपा से ही पृथ्वी को प्राप्त किए हुए हूँ और उन्हीं के
आशीर्वाद से ही अन्न सामर्थ्यों को भी प्राप्त कर पाया हूँ।
आप अपने व्यवहार पर शुद्ध न हों। आपका धर्म-चिन्तन
मेरे वक्षःस्थल पर आज से सदैव के लिए विद्यमान रहेगा
और उसे ‘शुक्रलता’ के रूप में स्मृति प्राप्त होगी। आपने
अप-विषय को जो ध्यान दिया है, उसके अनुसार वे तीन
जन्म तक राक्षस के रूप में पृथ्वी पर उकर होंगे, तब मैं
स्वयं अवतार लेकर उनका नाश करूँगा। पहले जन्म में, सप्तयुग
के समय वे दोनों हिण्पास एवं हिण्पाकशिपु के रूप में जन्म
लेगे तब मैं वाराह अवतार लेकर हिण्पास का तथा नृसिंह
अवतार लेकर हिण्पाकशिपु का नाश करूँगा। दूसरे जन्म में,
त्रेतायुग में वे दोनों रावण तथा कुम्भकर्ण वन का जन्म लेंगे,



तब मैं 'राम' का अवतार लेकर उनका संसार कहूँगा । तीसरे जन्म में,
काश्यप्युग में वे दोनों कंस तथा शिशुपाल के हृदय में जन्म लेंगे,
तब मैं 'कृष्ण' का अवतार लेकर उन्हें मुक्ति उदान कहूँगा । इसके
बाद वे दोनों पुनः वैकुण्ठ धाम में आकर मेरे हाथपाल जप-
विजय के हृदय में प्रतिष्ठित होंगे । हे मुने ! यह सब घटनाओं केरी
इच्छा है ही चरी है । भविष्य में लीलारे काले के लिए ही मैंने
जप विजय की कृष्टि कृष्टि का दी की, जिसके कारण उन्होंने अपने
को भीता आने के लेका तथा मैंने ही आपके हृदय में क्रोध
की भावना म दी की, जिसके कारण आपने उन्हें शाप दिया तथा
मैंने आकर दुःखे लात भी मारी । हे मुनिनाथ ! आप प्रकृतिज्ञ
हो । मैंने अपनी माया के लगेर लिखा है ब्रह्मण्य की गीता
के प्रतिष्ठित बगाने राखे हेतु ही मैंने अपने वक्षःस्थल पर
'रगुलता' को लदेव धारण किए रहने का निश्चय किया है ।
आप इन सब घटनाओं के लिए अपने मन में तनिक भी दुःख
न को ।

भगवान् विष्णु के इत प्रिय तथा मधुर वचनों के सुन
कर महर्षि रगु का क्रोध तो शान्त हुआ ही, वे भक्तिभाव में
भर का श्री विष्णु की स्तुति करने लगे, जलत भी एक घटना

और चरगर्ह, जिसने एक महान गुंथ को जग दे दिया। वह इस प्रकार थी—

भगवती लक्ष्मी ने जब यह देखा कि महर्षि शृगु ने उनके प्रति श्री विष्णु के वरदान का ज्ञान मारी है तो वे आग-बबूला हो उठी। श्री विष्णु ने महर्षि के प्रति जो विनम्र वचन कहे, उससे उनका गाली-मुल्लाहट अधिक और अधिक उद्विग्न हो उठा। वे अधिक समझ नक अपने को संयत नहीं रख पाई। अस्तु, ज्योंही श्री विष्णु मौन हुए, त्योंही उन्होंने महर्षि शृगु को हर्षोचित करने हुए यह कहा— 'हे मुनिराज! आपके मेरे समक्ष ही मेरे पूज्य प्रति का सम्मान किया है, अतः मैं यह घोषणा करती हूँ कि आज से मैं अपने प्रति का सम्मान करने वाले ब्राह्मणों के घर में नहीं रहूँगी। मेरे अभाव में वे दरीड ही बने रहेंगे।'

भगवती लक्ष्मी के मुख से निकलत इन शब्दों को सुनकर महर्षि शृगु का क्रोध पुनः जागृत हो उठा। उन्होंने लक्ष्मी को हर्षोचित करने हुए उच्चस्व में कहा— 'हे लक्ष्मी! तुम्हारे प्रति मेरे तो ब्रह्मण्यदेव वन का अपनी महानता का परिचय दिया, पालतु तुमने यह बात कह कर अपनी वृद्धता को ही प्रकट किया है। तुम्हें संभवतः यह प्रसन्न होगया है कि यदि इस ब्राह्मणों के घर रहना बन्द कर देती तो आपसीजन दरीडना का ही दुःख भोगने लगे। अस्तु, तुम्हारे इस अहंकार पूर्ण कथन की पुनर्गती स्वीकार करने हुए मैं यह घोषणा करती हूँ कि अब मैं एक ऐसे गुंथ का निर्माण करूँगा, जो भूत, भविष्य तथा वर्तमान - तीनों कालों का वृत्तान्त बताते में लक्ष्य होगा तथा उस गुंथ के बल पर ब्राह्मण न केवल सर्वत्र प्रश, सम्मान एवं प्रतिष्ठा ही प्राप्त करेंगे, अपितु इस स्वर्ग भी उनके चरणों में लोरी-लोरी फिरेगी।'

महर्षि शृगु के मुख से निकले इन शब्दों को सुनकर भगवती लक्ष्मी स्तब्ध तथा मौन रह गई। उन्होंने आगे कुछ और घोषणा उचित नहीं समझा। उन्हें प्रसन्न कि इस बार बोलने पर मुनिराज उन्हें कोई शाप न दे देंगे। तब श्री विष्णु बोले— 'हे मुनिराज! यह चरगर्ह भी मेरी इच्छा से ही बनी है। मैं

चाहता था कि आप अपने विवेक्षण हान के आधार पर ऐसे महान गुण की रचना करें, जो लक्षणों के सम्मान को बढ़ावे वाला सिद्ध हो। भावनी लक्ष्मी के अविनेक पूर्ण कार्य का शुभ फल यह निकला कि आपके ऐसे गुण की रचना की योजना कादी है। अब आप 'शृगुल्लिहा' नामक उस महान ज्योतिष गुणों की रचना कीजिए, जो लक्षण के लक्षणों के लिए उपयुक्त है, जो लक्षणों के सुपथ को बढ़ावे वाला तथा भूत, भविष्य एवं वर्तमान कालीन घटनाओं की जानकारी देने वाला है। मैं जिसे अपने पास रखेगा वाला ब्राह्मण कभी भी दीपना का कारण न भोके। लक्ष्मी ने जो अपवाद किया, उनके लिए मैं क्षमा माँगता हूँ। यह कह कर श्रीविष्णु ने पुनः शृगुल्लिहा के चरणों में अपना मस्तक रख दिया। लक्ष्मी ने भी उही का अनुज्ञा किया। अब शृगुल्लिहा दोनों को आशीर्वाद देकर वहाँ से अपने आसन को लौट आये तथा ज्योतिष के उस महान गुण की रचना में लिप्त हो गए, जो पूर्ण हो जायेगा 'शृगुल्लिहा' के नाम से उल्लिखित।

'शृगुल्लिहा' के जन्म की घड़ी कथा उच्चलिप्त है। महर्षि शृगु ने ऐसी लिहिना लिखी, यह प्राचीनकाल से प्रचलित होता चला आ रहा है, पान्थ वर्तमान युग में, विगत सैकड़ों वर्षों से उस गुण को ही 'उपलब्ध नहीं' होता। अलखता 'शृगुल्लिहा' नामक गुण के अंश को ले जाते-वाले कुछ पुरुष पक्ष-पक्ष उपलब्ध होते हैं, पान्थ उनकी जमायिकाता खंडित ही है। हाँ, ज्योतिष शास्त्र के आधार पर भूत वर्तमान तथा भविष्य काल की जो गुणाती वर्तमान तथा सुप्रचलित है, उसी के आधार पर उत्तम गुण का विकास एवं सम्पादन किया गया है।

विषयानुक्रमणिका प्रारम्भः

क्रमांकः

पृष्ठांकः

१ प्रथम खण्डः

१ क्षातज विषयाः, जन्माङ्क फलदेश विद्वान् प्रकरण	१६
२ सम्बत्सरादि का प्रभाव	२१
३ सम्बत्सर फलम्	२१
४ अघन फलम्	२५
५ ऋतु फलम्	२५
६ मास फलम्	२६
७ पक्ष फलम्	२७
८ तिथि फलम्	२७
९ वार फलम्	२८
१० तिथि-क्षय एवं तिथि-माल फलम्	२८
११ नन्दादि संलक्ष्ण तिथि फलम्	२९
१२ दिना-रात्रि फलम्	२९
१३ जन्मनक्षत्र फलम्	२९
१४ नक्षत्र-चरण फलम्	३१

क्रमांकः

पृष्ठांकः

१५ नक्षत्रांश फलम्	३३
१६ योग फलम्	३३
१७ करण फलम्	३५
१८ योनि फलम्	३६
१९ आवश्यक दिव्यणी	३७
२० लग्न फलम्	३८
२१ लग्न होरा फलम्	३९
२२ द्वेष्काण फलम्	४१
२३ दिव्यणी	४४
२४ चन्द्र राशि फलम्	४५
२५ गृह भाव फलम्	४८
(सूर्य, चन्द्र, मङ्गल, बुध, गुरु, शुक, शनि, राहु, केतु)	
२६ द्वादश भाव गत राशि फलम्	५७
(उपम भाव, द्वितीय भाव, तृतीय भाव, चतुर्थ भाव, पञ्चम भाव, षष्ठ भाव, सप्तम भाव, अष्टम भाव)	

कु०
र०

कमाऊ

पृष्ठाङ्क

नवम भाव, दशम भाव, एकादश भाव, द्वादश भाव)

२७ भावेश फलम्

६६

(लग्नेश फल, धनेश फल, सरजेश फल, सुखेश फल,
पुत्रेश फल, वपेश फल, जापेश फल, अप्पमेश फल,
भापेश फल, राप्पेश फल, लग्नेश फल, वपेश फल)

२८ चतु कुण्डली भाव फलम्

८२

(सूर्य फल, मंगल फल, बुध फल, गुरु फल, शुक फल
शनि फल, राहु फल, केतु फल)

२९ चतु निर्घण फलम्

८७

(मेघ राशिफल, वृष राशिफल, मिथुन राशिफल,
कर्क राशिफल, सिंह राशिफल, कन्या राशिफल,
तुला राशिफल, वृश्चिक राशिफल, धनु राशिफल
मकर राशिफल, कुम्भ राशिफल, मीन राशिफल)

३० गोल फलम्

८१

३१ राशि भुक्ता के अनुसार आयुर्दाय ज्ञान

८२

३२ द्वादश भावों से विचारणीय विषय

८२

३३ विभिन्न भावों पर ग्रहों की दृष्टि का नियम

८३

कमाऊ

पृष्ठाङ्क

३४ ग्रहों के स्वरूप

८४

३५ ग्रहों का राशि-भोग काल

८५

३६ ग्रहों के फल देने का समय

८५

३७ ग्रहों का दशा-फल

८६

२ द्वितीय खण्डः

१ सूर्य कुण्डलीपत्र, सं. १९४२ वि० से सं-२१८ वि०

२ तक की सूर्य कुण्डलियाँ

८७

३ आवश्यक रिपण्णी

८८

४ सूर्य-कुण्डली पाठ्य

१००

३ तृतीय खण्डः

१ सूर्य कुण्डली फलम्, फलादेश खण्ड,

४८१

२ माघ सं. १९६७ वि० से सं. २०४४ वि० तक की

सूर्य कुण्डलियों का संक्षिप्त फलादेश, रिपण्णी ४८२

३ सूर्य कुण्डली को लग्न कुण्डली में बदलने की
विधि

१८३४

क्रमांक

४ चतुर्थ खण्ड

१ नवग्रह फलम्, ग्रह फलदेश प्रकाश	१८३७
२ सूर्य फलम्	१८३७
३ चन्द्र फलम्	१८५२
४ मंगल फलम्	१८६६
५ बुध फलम्	१८६३
६ गुरु फलम्	१८१५
७ शुक्र फलम्	१८४१
८ शनि फलम्	१८६३
९ राहु फलम्	१८६१
१० केतु फलम्	२०१२

५ पञ्चम खण्ड

१ प्रकीर्ण विषयः	२०३५
२ राशि	२०३५
३ ग्रह	२०३५

(सूर्य, चन्द्रमा, मङ्गल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु.)

पृष्ठांक

क्रमांक

४ राशिजो से विचारणीय विषय	२०३८
५ राशिस्वाप्ती	२०३६
६ ग्रहों की नैसर्गिक मैत्री	२०३६
७ ग्रहों की अलम्यारे	२०४०
८ लग्नकुण्डली के दादश भावों से विचारणीय विषय	२०४०
९ भावों की संख्याएँ	२०४२
१० मूल त्रिकोण	२०४२
११ ग्रहों की उच्च स्थिति	२०४३
१२ ग्रहों की नीच स्थिति	२०४३
१३ ग्रहों के बलावल	२०४४

(स्वान्त बल, दिग्बल, काल बल, नैसर्गिक बल,

चेष्टा बल, हज्जल)

१४ ग्रहों की दृष्टि	२०४५
१५ ग्रहों के दृष्टि लम्बा स्वान्त सम्बन्ध	२०४६
१६ स्वान्तदिगति अवला भावेश	२०४६
१७ उच्चराशिगत ग्रहों का फल	२०४७
१८ मूल त्रिकोण स्व ग्रहों का फल	२०४७
१९ स्व मैत्री ग्रहों का फल	२०४८

कुमाङ्क

- 20 मित्र क्षेत्री ग्रहों का फल
21 शत्रु क्षेत्री ग्रहों का फल
22 नीच राशिस्थ ग्रहों का फल
23 विशिष्ट सातव्य
24 ग्रहों की युति का फल
25 तीन ग्रहों की युति का फल

पृष्ठाङ्क

- 2048
2048
2050
2051
2054
2056

कुमाङ्क

- 26 चार ग्रहों की युति का फल
27 पाँच ग्रहों की युति का फल
28 छः ग्रहों की युति का फल
29 सात ग्रहों की युति का फल
30 स्त्री-जातक
31 राजयोग

पृष्ठाङ्क

- 2060
2063
2064
2066
2066
2060

कु०
र०

सम्पूर्णम्

जब तक

भारतवर्ष में गीता, गायत्री, गङ्गा, गाय, गोपाल, गुरु, गोवर्द्धन, गणेश, मौरी, गिरिजावति, गिरा, गहड़ और गोविन्द की अर्चना होती रहेगी, तब तक इसके महत्व पर कोई आँच नहीं आ सकती।

यह ग्रंथ

केवल अध्ययन करने के लिए ही नहीं है। इसे अपने ब्रह्म-गृह में सर्वत्र चौकी पर स्थापित करें तथा धूप-दीप देते रहें। इसकी उपस्थिति सुख, शान्ति एवं धन, यश, सम्मान की वृद्धि करती रहेगी।

अथ श्री भृगु-संहिता कुण्डली-रहस्य (प्रथम खण्ड)

जन्माङ्क-फलादेश-कथन-सिद्धान्त प्रकरण

कु०
र०

इस ग्रंथ के द्वितीय खण्ड में जिन सूर्य-कुण्डलियों को प्रदर्शित किया गया है, उनका संक्षिप्त-फलादेश अगले-तृतीय खण्ड में वर्णित है। प्रस्तुत खण्ड में किसी भी जन्मकुण्डली के विस्तृत-फलादेश का प्रतिपादन करने वाले शास्त्रीय-सिद्धान्तों का उल्लेख किया जा रहा है। इनके आधार पर प्रत्येक जन्म कुण्डली के फलादेश का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। स्मरणीय है कि द्वितीय खण्ड में जो सूर्य-कुण्डलियाँ प्रदर्शित की गई हैं, उनमें से प्रत्येक के लगन-परिवर्तन के आधार पर १२ स्वरूप बनेंगे और जब उनमें चन्द्रमा की विभिन्न स्थितियों को भी सम्मिलित किया जाएगा, तब उनमें से प्रत्येक की संख्या १०० से भी अधिक हो जाएगी। इस नियमानुसार यदि केवल १०० वर्ष की जन्मकुण्डलियों का स्वरूप ही प्रदर्शित किया जाय तो उनकी संख्या करोड़ों में बँटनेगी। इससे अधिक वर्षों की कुण्डलियों के स्वरूप की संख्या का अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है। अस्तु, इतनी निपुण संख्या वाली कुण्डलियों का अलग-अलग विस्तृत फलादेश-कथन न तो किसी एक व्यक्ति द्वारा अपने सम्पूर्ण जीवन-काल में भी संभव है और न उसके अरबों घण्टे वाले ग्रंथ के रूप में प्रकाशन की कल्पना ही की जा सकती है। यही कारण है कि 'पारस' पत्थर की भूँति जिस 'भृगु-संहिता' नामक ग्रंथ की कल्पना की जाती है, वह कहीं भी उपलब्ध नहीं है। कुछ ज्योतिषी-परिवारों में पीढ़ी-दर-पीढ़ी द्वारा किए गए कतिपय जन्मकुण्डलियों के फलादेश ही 'भृगुसंहिता' के नाम से उपलब्ध होते हैं, उनमें जिनकी कुण्डली मिल जाती है, वे तो उनके फल-कथन को ज्ञात कर लेते हैं; शेष लोगो

को निराशा ही हाथ लगती है। ऐसी 'भृगु संहिता' नामक अनेक प्राचीन तथा हस्तलिखित पाण्डुलिपियों को हमने वनों की खोज तथा पुनुर धन व्यय करके विभिन्न स्थानों से उपलब्ध किया था, जिन्हें संकलित रूप में हिन्दी भाषा-टीका सहित सुसम्पादित 'भृगु संहिता महाशास्त्र' के नाम से पूर्व में प्रकाशित किया जा चुका है।

प्रथम में, प्रत्येक जन्मकुण्डली का सम्यक्-फलादेश ज्ञात करने हेतु विभिन्न भावों तथा विभिन्न राशियों में स्थित विभिन्न ग्रह, उनकी युति, दृष्टि, सम्बन्ध तथा अन्य विषयों पर प्राचीन ज्योतिष शास्त्र के सिद्धान्तों का अध्ययन तथा स्वानुभव का निष्कर्ष आवश्यक है। ग्रहों की महादशा, अन्तरदशा, सूक्ष्म दशा, तत्कालीन गोचरस्थिति एवं अन्य विषय भी विचारणीय होते हैं। 'भृगु संहिता कुण्डली-रहस्य' के प्रस्तुत खण्ड में उन शास्त्रीय सिद्धान्तों को प्रस्तुत किया जा रहा है, जिनके आधार पर प्रत्येक जन्म कुण्डली का फलादेश ज्ञात किया जा सकता है। यह सामग्री विभिन्न प्राचीन तथा प्रामाणिक माने जाने वाले ग्रंथों से संकलित की गई है। इसके समुचित अध्ययन के आधार पर सामान्य ज्योतिषी भी चमत्कृत कर देने वाले फलादेश - कथन में सक्षम सिद्ध हो सकता है। इस खण्ड के अध्ययनोपरान्त उसे फलादेश-कथन हेतु किसी अन्य ग्रंथ के अनलोकन की आवश्यकता भी अनुभव नहीं होगी। तृतीय खण्ड में वर्णित विभिन्न कुण्डलियों के फलादेश में जो कमी अनुभव हो, उसकी पूर्ति इस खण्ड में वर्णित फल-उत्पिपादन के सिद्धान्तों के आधार पर की जा सकती है। आवश्यक है कि सर्वप्रथम द्वितीय खण्ड में उद्दिष्ट सूर्य-कुण्डलियों में से अपनी सूर्य-कुण्डली को ढूँढा जाय, तदुपरान्त उसका फलादेश तृतीय खण्ड में देखा जाय, उसके बाद जिस विषय की जानकारी प्राप्त करनी हो, उसे १, ४, ५ खण्ड में वर्णित नियमों के आधार पर ज्ञात करके जिज्ञासा को शान्त कर लिया जाय। इस प्रकार भृगु-ज्योतिष के आधार पर संसार के किसी भी प्राणी की जन्मकुण्डली का भूत, भविष्य एवं वर्तमान कालीन विस्तृत फलादेश सरलता पूर्वक ज्ञात किया जा सकेगा। और वही प्रथम कुण्डली-रहस्य होगा।

सम्बत्सरादि का प्रभाव - यों तो जन्मकालीन ग्रह-स्थिति ही जातक के जीवन को मुख्यरूप से प्रभावित करती है, तथापि विभिन्न संवत्सर, अथवा, ऋतु, मास, पक्ष, तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण, घोति, गण, एवं दिन अथवा रात्रि के समय जन्म लेने का प्रभाव भी जातक के स्वभाव एवं चरित्र पर कुछ-न-कुछ अवश्य पड़ता है; अस्तु सर्वप्रथम क्रमशः इसी के प्रभाव का उल्लेख किया जाता है।

अथ सम्बत्सर फलम् - १ प्रभव, २ विभव, ३ शुक्ल, ४ प्रमोद, ५ प्रजापति, ६ अङ्कुर, ७ श्रीमुख, ८ भाव, ९ पुत्र, १० धाता, ११ ईश्वर, १२ बहुधान्य, १३ प्रमाथी, १४ विक्रम, १५ वृष, १६ चित्रभानु, १७ सुभानु, १८ तारण, १९ पार्थिव, २० व्यय, २१ सर्वजित्, २२ सर्वधारी, २३ विरोधी, २४ विकृति, २५ खर, २६ नन्दन, २७ विजय, २८ जय, २९ मन्मथ, ३० दुर्मुख, ३१ हेमलम्ब, ३२ निलम्ब, ३३ विकारी, ३४ शर्वरी, ३५ प्लव, ३६ शुभकृत्, ३७ शोभन, ३८ क्रोधी, ३९ विभावसु, ४० पराभव, ४१ प्लवङ्ग, ४२ कीलक, ४३ सौम्य, ४४ साधारण, ४५ विरोधकृत्, ४६ परिधावी, ४७ प्रमादी, ४८ आनन्द, ४९ राक्षस, ५० नल, ५१ पिङ्गल, ५२ कालयुक्त, ५३ सिद्धार्थी, ५४ रौद्र, ५५ दुर्मति, ५६ दुन्दुभी, ५७ रुधिरदुगारी, ५८ रक्ताक्ष, ५९ क्रोधन तथा ६० क्षय। इन साठ सम्बत्सरो की पुनरावृत्ति होती रहती है। इनमें पहले २० 'ब्रह्मविंशतिका', दूसरे २० 'विष्णु विंशतिका' तथा तथा तीसरे अर्थात् अन्तिम २० 'शुक्रविंशतिका' के अन्तर्गत आते हैं। इन सम्बत्सरो में जन्म लेने का फल क्रमशः इस प्रकार कहा गया है - 'प्रभव' नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला व्यक्ति अनेक पुत्रों वाला, सम्पत्तिशाली, दीर्घायु, समस्त पदार्थों को प्राप्त करने वाला तथा अनेक भोगों का उपभोग करने वाला होता है। 'विभव' नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला लालिमा युक्त कृष्ण नेत्रों वाला, विद्वान्, राज-वृजित् तथा विभिन्न प्रकार के भोगों का उपभोग करता है। 'शुक्ल' नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला सुन्दर, भोगी, शान्त-स्वभाव, पुत्रवान्, विद्वान् तथा सर्वगुण-सम्पन्न होता है। 'प्रमोद' नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला सत्यवादी, पण्डित, सुरवी, मानी, आनन्दित रहने वाला तथा स्वर्ण जैसे कान्तिमान् शरीर वाला होता है। 'प्रजापति' नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला पुत्र-पालक, कृपालु, धर्मात्मा, सत्यवादी, गुणी तथा देव-भक्त होता है।

'अङ्कुरा' नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला कामी, मोगी, मानी, सुखी, मित्र-प्रिय, दीर्घायु तथा अनेक पुत्रों वाला होता है। 'श्रीसुरव' नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला श्रीमान्, श्रेष्ठ बुद्धि, शान्त-स्वभाव, नीतिपुक्ता, शुभकर्मकर्ता, दीर्घायु तथा अनेक पुत्रों वाला होता है। 'भाय' नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला यशस्वी, दानी, शुभलक्षणपुक्ता तथा बहुत सुख भोगने वाला होता है। 'युवा' नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला गुणी, कीर्तिमान्, दीर्घायु, दानी, पवित्र, शान्त तथा श्रेष्ठ बुद्धि वाला होता है। 'धाता' नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला दीर्घायु, चतुर, वेदाध्ययन में तत्पर एवं सुन्दर स्वरूप वाला होता है। 'ईश्वर' नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला सर्वज्ञ, गुरुभक्त, अत्यन्त सुन्दर, परन्तु सदैव क्रोधपुक्ता रहने वाला होता है। 'बहुधान्य' नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला कूप-वापी आदि का निर्माण कराने वाला, पहादि शुभ-कर्म करने वाला, दानी तथा धन की वृद्धि करने वाला होता है। 'प्रमाथी' नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला सेनापति, मन्त्री, शिवजी से बर प्राप्त करने वाला अर्थात् शिव-भक्त, शास्त्रज्ञ तथा धन-संग्रही होता है। 'विष्णु' नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला उग्र प्रतापी, दूसरों को सलाह देने वाला, पाप-कर्म-निरत तथा शूर-वीर होता है। 'वृष' नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मन्द-बुद्धि, आलसी, महामूर्ख, भार-वाहक तथा पाप-कर्म-निरत होता है। 'चित्रभानु' संवत्सर में जन्म लेने वाला परम विद्वान्, नीतिमान्, बुद्धिमान्, श्रीमान्, स्वामि-भक्त तथा प्रियवादी होता है। 'सुभानु' नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला पिङ्गल-वर्ण नेत्रों का, पिङ्गल-वर्ण केशों वाला, गौर-वर्ण शरीर, कान्तिमान्, स्वामी, त्यागकर्ता, परन्तु अत्मका दुष्ट-स्वभाव का होता है। 'तारुण' नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला चंचल, चपल, धृष्ट, पापी, शूर, दरिद्र तथा निष्ठुर स्वभाव वाला होता है। 'पार्थिव' नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मृदुभाषी, राजमान्य, रत्नगुणी, कान्तिमान्, शुभ-लक्षण-सम्पन्न तथा धन की वृद्धि करने वाला होता है। 'व्यय' नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला जुआरी, मद्यपी, पर-स्त्रियों के लिये धन नष्ट करने वाला, चोर तथा पाप-बुद्धि वाला होता है। 'ब्रह्मविंशतिका' के अन्तर्गत आनेवाले संवत्सरो में जन्म लेने वाले व्यक्ति के चरित्र तथा स्वभाव में उक्त लक्षण पाये जाते हैं।

'सर्वेजित' नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला अपने कार्य में दत्तचित्त, शास्त्रपाठी, रोग-ज्ञाता (वैद्य), श्याम वर्ण, छोटे कद तथा स्थूल शरीर वाला होता है। 'सर्वधारी' नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला धनी, अनेक सेवकों से युक्त, कामी, सबका आश्रय, स्वामी तथा मिष्ठान्न-पिप होता है। 'विरोधी' नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला कुटुम्बियों से कलहकर्ता, पर-स्त्रीगामी तथा सबका विरोधी होता है। 'विकृति' नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला कृष्ण-वर्ण, गुणहीन, रुद्ध-शरीर वाला तथा कलान्यास में चंचल होता है। 'खर' नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला धूलि-धूसरित जैसे अङ्गों वाला, दीर्घायु, अत्यन्त कामी तथा निर्लज्ज होता है। 'नन्दन' नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला सदैव आनन्दित, सन्तुष्ट, वापी-कृपादि का निर्माता, शीलवान् तथा दीनों के प्रति दयालु होता है। 'विजय' नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला शूर-वीर, युद्धक्षेत्र में तेजस्वी, यशस्वी, कीर्तिमान्, पृथ्वीपति, विजयी तथा भोगी होता है। 'जय' नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला विद्वान्, मानी, यशस्वी, शास्त्रज्ञ, अनुपाङ्गियों से युक्त तथा विजय पाने वाला होता है। 'मन्मथ' नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला भोगी, कामी, पिपकादी तथा सब प्रकार के सुखों से युक्त होता है। 'दुर्मुख' नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला शठ, क्रूर-बुद्धि, दुष्ट, हिंसक, वृषली-पति, उग्र-स्वभाव तथा टेढ़े मुख एवं हाथ-पैरों वाला होता है। 'हेमलम्ब' संवत्सर में जन्म लेने वाला स्वर्ण, धन-धान्य, पशु तथा वस्त्र आदि से समृद्ध एवं स्त्री-पुत्रादि के सुख से युक्त होता है। 'विलम्ब' नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मन्दभागी, आलसी, लोभी, कफ-रोगी, ठग, पापी तथा स्वकार्य में जुटा रहने वाला होता है। 'विकारी' नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला अविवेकी, अहंकारी, खल, विवादी तथा ठग होता है। 'शर्वरी' नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला व्यापार-कुशल, लम्बे तथा पतले शरीर वाला, निद्रालु जैसे भुके नेत्रों वाला तथा मित्र-द्वेषी होता है। 'प्लव' नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला चंचल, कामी, पर-सेवक, कृषि-कर्मकर्ता एवं छोटे कद वाला होता है। 'शुभकृत' नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला सुन्दर, शुभ-कर्मकर्ता, विद्या-धर्म-परायण, दीर्घायु तथा धन-पुत्रादि से सम्यन्त होता है। 'शोभन' नामक

सम्बत्सर में जन्म लेने वाला सर्वत्र विजयी, कामी, सुन्दर, गुणी तथा दयालु होता है। 'क्रोधी' नामक सम्बत्सर में जन्म लेने वाला पिंगल-वर्ण नेत्र, मंदमति, कामी, स्त्री-लोलुप, पराये कामों को बिगाड़ने वाला तथा राज-कोप पागे वाला होता है। 'विभावसु' नामक सम्बत्सर में जन्म लेने वाला शान्त-स्वभाव, सद्गुणी, दानी, पवित्रात्मा, सन्ततिवान्, सुखी तथा मिष्टान्त-प्रिय होता है। 'पराभव' नामक सम्बत्सर में जन्म लेने वाला पर-स्त्रीगामी, शत्रु, स्वजनों से शत्रुता तथा पराये लोगों से मित्रता रखने वाला एवं धन-धान्य-हीन होता है। 'विष्णु विशातिका' के अन्तर्गत आने वाले सम्बत्सरो में जन्म लेने वाले व्यक्ति के स्वभाव तथा चरित्र में उक्त लक्षण पाये जाते हैं।

'प्लवङ्ग' नामक सम्बत्सर में जन्म लेने वाला दुष्ट, पापी, आचार-हीन तथा अपवित्र होता है। 'कीलक' नामक सम्बत्सर में जन्म लेने वाला कामी, क्षुधा-पिपासाकुल, स्थूल शरीर वाला तथा सामान्य सुन्दर होता है। 'सौम्य' नामक सम्बत्सर में जन्म लेने वाला विद्वान्, धनी, तपस्वी, सौम्य तथा ब्राह्मण, देवता एवं अतिथि पूजक होता है। 'साधारण' नामक सम्बत्सर में जन्म लेने वाला नीचवृत्ति, काम-रहित, पवित्र, परदेशवासी तथा देव-दर्शन के समय क्रोध करने वाला होता है। 'विरोधकृत्' नामक सम्बत्सर में जन्म लेने वाला पितृ-भक्ति-रहित, लोक-विरोधी, परन्तु सजातीयों की सेवा करने वाला होता है। 'परिधात्री' नामक सम्बत्सर में जन्म लेने वाला विद्वान्, कला-कुशल, व्यवसाय-कुशल, कुटुम्बान्, राज्य द्वारा सम्मानित एवं दानी होता है। 'प्रमादी' नामक सम्बत्सर में जन्म लेने वाला लोभी, कुटुम्बघाती, पर-कर्म करने वाला, बन्धु-विरोधी तथा दुष्ट स्वभाव का होता है। 'आनन्द' नामक सम्बत्सर में जन्म लेने वाला अनेक स्त्रियों से युक्त, परम-चतुर, समस्त आनन्दों का उपभोग करने वाला, क्षमाशील तथा पुत्र एवं मित्र युक्त होता है। 'राक्षस' नामक सम्बत्सर में जन्म लेने वाला सर्वभक्षी, कृतघ्न, धर्मधर्म-रहित, हिंसक तथा पर-पीडक होता है। 'नल' नामक सम्बत्सर में जन्म लेने वाला वैश्यवृत्ति, धनी, बहुकुटुम्बी, पवित्र तथा जलाशयों का निर्माण करने वाला होता है। 'पिङ्गल' नामक सम्बत्सर में जन्म लेने वाला टेढ़ी-दष्टि वाला, अल्प रोमों वाला, महाउद्यमी तथा कार्य-सिद्धि के कर्म-फलका

त्याग करने वाला होता है। 'कालयुक्त' नामक सम्बत्सर में जन्म लेने वाला परोपकारी, रोगी तथा भक्ष्याभक्ष्य का विचार न करने वाला होता है। 'सिद्धार्थी' नामक सम्बत्सर में जन्म लेने वाला ऋद्धि-सिद्धि युक्त, नित्य भोगी, वसङ्गीत-विशारद, मन्त्री, यशस्वी तथा उदासीन वृत्ति का होता है। 'रौद्र' नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला भयानक स्त्री वाला, पापी, चुगुलखोर घात करने वाला तथा अल्पायु होता है। 'दुर्मति' नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मूर्ख, क्रूर, कामी, बचन-जालक, दान न करने वाला तथा धनी होता है। 'दुन्दुभी' नामक सम्बत्सर में जन्म लेने वाला सदैव उत्साही, पृथ्वीपति, हाथी-घोड़ा, धन-धान्य तथा सुख से सम्पन्न होता है। 'रुधिरोदगरी' नामक सम्बत्सर में जन्म लेने वाला कामी, लोभी, महादोषी, शस्त्र-पीड़ा से पीड़ित, दुष्कर्मकर्त्ता तथा बुरे नस्लों वाला होता है। 'रक्ताक्षी' नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला नेत्र-रोगी, मन्द-दृष्टि, घमण्डी, दुर्जन तथा अत्यन्त कामी होता है। 'क्रोधन' नामक सम्बत्सर में जन्म लेने वाला तपस्वी, धातुवादी, निर्गुण, भयंकर रूप वाला, ठग तथा पापकुट्टि होता है। 'अथ' नामक सम्बत्सर में जन्म लेने वाला आजन्म-रोगी, पर-सेवक, दुष्ट तथा अधर्मी होता है। 'रुद्र विंशतिका' के अन्तर्गत आने वाले सम्बत्सरो में जन्म लेने वाले व्यक्ति के चरित्र तथा स्वभाव में उक्त लक्षण पाये जाते हैं।

अथ अयन फलम् - अयन २ होते हैं - उत्तरायण और दक्षिणायन। 'उत्तरायण' में जन्म लेने वाला सुखी, गुणी, आचारवान्, बुद्धि-कुशल, स्त्री युक्त, दीर्घायु, यशस्वी तथा देव-ब्राह्मण सब आचार्य-चरणों में भक्ति रखने वाला होता है। 'दक्षिणायन' में जन्म लेने वाला क्रूर, शठ, रोगी, पापी, चोर, कुश-प्रारी, पर-स्त्री-गामी तथा अधिक सोने वाला होता है।

अथ ऋतु फलम् - ऋतुओं ६ होती हैं - १ शिशिर, २ वसन्त, ३ ग्रीष्म, ४ वर्षा, ५ शरद और ६ हेमन्त। 'शिशिर ऋतु' में जन्म लेने वाला बलवान्, सुखी, दीर्घायु, शुभ आचरणों वाला, दन्त-रोगी तथा मिष्ठान्न भोगी होता है। 'वसन्त ऋतु' में जन्म लेने वाला सुखी, भोगी, गुणी, श्रेष्ठ स्वामी, सत्यवादी, दानी तथा यशस्वी होता है।

'गीष्म ऋतु' में जन्म लेने वाला जलाशयों का निर्माता, शास्त्र-वेत्ता एवं ज्ञानोपदेष्टाक होता है। 'वर्षा ऋतु' में जन्म लेने वाला देश-ग्राम-पुरादि का अधपक्ष, कृषि-कर्म-कर्ता एवं शास्त्र-संग्रह में प्रवीण होता है। 'शरद ऋतु' में जन्म लेने वाला व्यापार-कुशल, मन्त्री, ज्वरादि से मुक्त, पण्डित, गुणी तथा दीर्घवान् होता है। 'हेमन्त ऋतु' में जन्म लेने वाला महलों में निवास करने वाला, धर्माला, सत्पवादी, पवित्र तथा मिष्ठान्तभोजी होता है।

अथ मास फलम् - महीने १२ होते हैं - १ चैत्र, २ वैशाख, ३ ज्येष्ठ, ४ आषाढ, ५ श्रावण, ६ भाद्रपद, ७ आश्विन, ८ कार्तिक, ९ मार्गशीर्ष, १० पौष, ११ माघ तथा १२ फाल्गुन। 'चैत्रमास' में जन्म लेने वाला ब्रह्मचारी, वेदाभ्यासी, गुरु, ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त एवं सद्गुणी होता है। 'वैशाख मास' में जन्म लेने वाला सर्वलक्षण सम्पन्न, दीर्घ-दशी, कलाओं का ज्ञाता, सात्विक स्वभाव वाला तथा दीर्घजीवी होता है। 'ज्येष्ठ मास' में जन्म लेने वाला सब कार्यों में चतुर, बुद्धिमान, परीक्षक तथा दैनिक क्रय-विक्रय करने वाला होता है। 'आषाढ मास' में जन्म लेने वाला बहुभोजी, कुष्ठरोगी, निर्धन, कृषि-कर्म करने वाला, सुख तथा व्याधिपुक्त होता है। 'श्रावण मास' में जन्म लेने वाला पुत्र, स्त्री एवं धन सम्पन्न, वेद-कर्म में प्रवीण तथा लोक-प्रिय होता है। 'भाद्रपद मास' में जन्म लेने वाला भोगी, दाता, क्रुश एवं दीर्घ शरीर वाला, गौर-वर्ण, कामी, पुत्रवान्, बन्धु-बान्धव युक्त, शीमान् तथा अनेक स्त्रियों से सम्बन्ध रखने वाला होता है। 'आश्विन मास' में जन्म लेने वाला श्रेष्ठशाली, राजा को प्रिय, अनेक सेवक तथा स्त्रियों वाला, पुत्रवान् परन्तु अल्पजीवी होता है। 'कार्तिक मास' में जन्म लेने वाला वक्रबुद्धि, वांचाल, आलसी, ब्रह्मचारी तथा कुंचित केशों वाला होता है। 'मार्गशीर्ष मास' में जन्म लेने वाला तीर्थयात्री, मन्त्र-दीक्षा में तत्पर तथा शास्त्रार्थ-संचयी होता है। 'पौष मास' में जन्म लेने वाला दुःख-दायक, रोगी तथा पाप-मार्ग पर चलने वाला होता है। 'माघ मास' में जन्म लेने वाला योगी, तपोनिष्ठ, वेदज्ञ, चतुर, शान्त तथा दयालु स्वभाव का होता है। 'फाल्गुन मास' में जन्म लेने वाला सुकुमार, भोगी, कामी, स्त्रियों को प्रिय, सुखी तथा हाथी, घोड़ा एवं आभूषणादि से सम्पन्न होता है।

अथ पक्ष फलम् - पक्ष २ होते हैं - शुक्ल और कृष्ण। 'शुक्ल पक्ष' में जन्म लेने वाला दीर्घायु, पुत्रवान्, दानी, अनेक व्यक्तियों का चालन करने वाला, स्त्री-वशी तथा मित्रों का सम्मान करने वाला होता है। 'कृष्ण पक्ष' में जन्म लेने वाला आलसी, मलिन, द्वेषी, निन्दक, ग्राम्य-भाषा बोलने वाला तथा धर्म-बहिष्कृत होता है।

अथ तिथि फलम् - प्रत्येक पक्ष में पन्द्रह-पन्द्रह तिथियाँ होती हैं। शुक्ल पक्ष की अन्तिम तिथि को 'पूर्णिमा' तथा कृष्ण पक्ष की अन्तिम तिथि को 'अमावास्या' कहा जाता है। अन्य तिथियों के नाम दोनों पक्षों में क्रमशः इस प्रकार होते हैं - १ प्रतिपदा, २ द्वितीया, ३ तृतीया, ४ चतुर्थी, ५ पञ्चमी, ६ षष्ठी, ७ सप्तमी, ८ अष्टमी, ९ नवमी, १० दशमी, ११ एकादशी, १२ द्वादशी, १३ त्रयोदशी और १४ चतुर्दशी। 'प्रतिपदा' को जन्म लेने वाला प्रायः अत्यायु होता है, परन्तु यदि तीन मास तक जीवित बना रहे तो फिर अस्सी वर्ष की आयु प्राप्त करने वाला एवं परम तेजस्वी होता है। 'द्वितीया' को जन्म लेने वाला सत्यवादी, लोकानन्द-दायक, स्तुति-योग्य तथा स्व-कर्म-निरत होता है। 'तृतीया' को जन्म लेने वाला स्त्री-लम्पट, कृपण, चंचल-चित्त, व्रत-उपवास रखने वाला, मूर्ख, विवादी तथा बलवान् होता है। 'चतुर्थी' को जन्म लेने वाला लोभी, चुगलखोर, प्रचण्ड-साहसी, शूर-वीर सुखी तथा चंचल-चित्त वाला होता है। 'पञ्चमी' को जन्म लेने वाला दीर्घायु, महामति, स्थिर स्वभाव वाला, शूर-वीर, सत्यवादी दानी तथा जितेन्द्रिय होता है। 'षष्ठी' को जन्म लेने वाला व्रण-चिह्न युक्त, स्थिर-स्वभाव, स्त्री-लोलुप, सुन्दर तथा विद्या एवं कीर्ति अर्जित करने वाला होता है। 'सप्तमी' को जन्म लेने वाला धनी, गुणी, सदाचारी, गुरु-देव-भक्त तथा दृढव्रती होता है। 'अष्टमी' को जन्म लेने वाला स्व-स्त्री में आसक्त, चंचल, चपल-चित्त, बहुभाषी तथा निष्ठुर-स्वभाव का होता है। 'नवमी' को जन्म लेने वाला कामी, महाबलशाली, गीत-वृत्त-प्रिय, शत्रु-हन्ता तथा परम क्रोधी होता है। 'दशमी' को जन्म लेने वाला शरीर पर शस्त्र अथवा व्रण-चिह्न युक्त, स्त्री-जित्, अल्पज्ञ सुन्दर, पवित्र, चंचल-चित्त तथा परम बुद्धिमान् होता है। 'एकादशी' को जन्म लेने वाला

लोक-व्यवहार में कुशल, कला-शास्त्र विद, दृढ़व्रती तथा सत्यवादी होता है। 'द्वादशी' को जन्म लेने वाला महा क्रोधी, रति-लोलुप, श्रेष्ठ आचरणों वाला, सुन्दर तथा वस्त्र-भोजन आदि की प्राप्ति में तत्पर बना रहने वाला होता है। 'त्रयोदशी' को जन्म लेने वाला ब्रह्मपवास-निरत, हानी, बुद्धिमान गुणी तथा स्त्री-हित होता है। 'चतुर्दशी' को जन्म लेने वाला सभी कर्मों में शुद्ध, व्याधि-रहित, बुद्धिमान तथा बन्धु-बान्धवों से युक्त होता है। 'पूर्णिमा' को जन्म लेने वाला सुन्दर, श्रेष्ठ, सुस्थिर-चित्त वाला तथा सदैव प्रसन्न बना रहने वाला होता है। 'अमावास्या' को जन्म लेने वाला इन्द्रियों से दुःखी, सुख-हीन, बल-हीन तथा अत्यधिक व्याकुल चित्त वाला होता है।

अथ वार फलम् - वार अर्थात् दिन ७ होते हैं - रवि, चन्द्र, भौम, बुध, गुरु, शुक्र और शनि। 'रविवार' को जन्म लेने वाला स्थिर-स्वभाव, शूर-वीर, पवित्र, अत्यन्त चतुर, रक्त-श्याम वर्ण तथा पित्त-प्रकृति का होता है। 'चन्द्रवार' (सोमवार) को जन्म लेने वाला सात्विक-स्वभाव, क्षय-वृद्धि-सम्पन्न, गौर-वर्ण, छोटे कदका, चौड़ी छाती वाला एवं श्रेष्ठ बुद्धिमान होता है। 'भौमवार' (मङ्गलवार) को जन्म लेने वाला रक्त-वर्ण नेत्र, क्षत्रियोचित-कर्म करने वाला, अल्पभाषी, मधुर-स्वभाव तथा क्षमाशील होता है। 'बुधवार' को जन्म लेने वाला गोल सिर तथा गोल पाँवों वाला, चपल-बुद्धि, अत्यन्त चतुर, रूपवान् तथा कवि होता है। 'गुरुवार' (बृहस्पतिवार) को जन्म लेने वाला श्रेष्ठ बुद्धिमान, लोक-प्रसिद्ध, कला-शास्त्र विद, प्रगल्भ, कुशल, पवित्र तथा धीर-स्वभाव का होता है। 'शुक्रवार' को जन्म लेने वाला गुप्त-कर्म करने वाला, श्रेष्ठ बुद्धिमान, सुन्दर मुख वाला, विद्वान्, प्रसिद्ध, कला-मर्मज्ञ, शास्त्रज्ञ तथा पवित्र होता है। 'शनिवार' को जन्म लेने वाला मनुष्य रुद्ध एवं दुर्बल शरीर वाला, मलिन, अत्यन्त चंचल-चित्त वाला, दुष्ट, भयानक तथा सदैव क्रोधोन्मत्त रहने वाला होता है।

अथ लिपि-क्षय एवं लिपि-मल फलम् - जिस लिपि में सूर्योदय न हो, उसे 'लिपि-क्षय' तथा जिस लिपि में दो बार सूर्योदय हो, उसमें अग्नि उदय वाली लिपि को 'लिपि-मल' कहा जाता है। 'लिपि-क्षय' अथवा 'लिपि-मल'

में जन्म लेने वाला गुण-हीन, धन-हीन, कुटिल तथा पर-वञ्चक होता है।

अथ नन्दादि संज्ञक तिथि फलम् - प्रतिपदा, षष्ठी तथा एकादशी - चे तिथियाँ 'नन्दा' संज्ञक; द्वितीया, सप्तमी और द्वादशी - चे तिथियाँ 'भद्रा' संज्ञक; तृतीया, अष्टमी और त्रयोदशी - चे तिथियाँ 'जया' संज्ञक; चतुर्थी, नवमी और चतुर्दशी - चे तिथियाँ 'रिक्ता' संज्ञक एवं पंचमी, दशमी और पूर्णिमा (अथवा अमावास्या) - चे तिथियाँ 'पूर्णा' संज्ञक होती हैं। 'नन्दा' तिथि में जन्म लेने वाला विद्वान्, महामानी, देव-भक्त, धानी तथा पिप-वत्सल होता है। 'भद्रा' तिथि में जन्म लेने वाला बन्धु-बान्धवों में सम्मानित, राज-सेवक, धनी, सांसारिक-बन्धनों से डरने वाला तथा परोपकारी होता है। 'जया' तिथि में जन्म लेने वाला राज्पद द्वारा सम्मानित, पुत्र-पौत्रादि से युक्त, शूर-वीर, शान्त स्वभाव वाला, दीर्घायु तथा सन्तुष्ट होता है। 'रिक्ता' तिथि में जन्म लेने वाला शास्त्रज्ञ, परन्तु कुतर्की, प्रमादी, गुरु-निन्दक, कामी तथा दूसरों का धमंड चूर करने वाला होता है। 'पूर्णा' तिथि में जन्म लेने वाला सत्यवादी, वेद-शास्त्रों के तत्त्वार्थ का जानकार, अनेक विषयों का ज्ञाता, शुद्ध चिन्त वाला तथा सत्यवादी होता है।

अथ दिवा-रात्रि फलम् - 'दिन' में जन्म लेने वाला अनेक पुत्रों तथा अधिक मित्रों वाला, बुद्धिमान्, सुन्दर, सद्गुण युक्त, कामातुर, भोगी तथा वस्त्रादि से परिपूर्ण होता है। 'रात्रि' में जन्म लेने वाला मित्रभाषी, अति-कामी, क्षय-रोगी, मलिन, शूर तथा गुफा-पापी होता है।

अथ जन्म-नक्षत्र फलम् - नक्षत्र २७ होते हैं - १ अश्विनी, २ भरणी, ३ कुत्तिका, ४ रोहिणी, ५ मृगशिरा, ६ आर्द्रा, ७ पुनर्वसु, ८ पुष्य, ९ आश्लेषा, १० मघा, ११ पूर्वा फाल्गुनी, १२ उत्तरा फाल्गुनी, १३ हस्त, १४ चित्रा, १५ स्वाति, १६ विशाखा, १७ अनुराधा, १८ ज्येष्ठा, १९ मूल, २० पूर्वाषाढा, २१ उत्तराषाढा, २२ श्रवण, २३ धनिष्ठा, २४ शतभिषा, २५ पूर्वाभाद्रपदा, २६ उत्तरा भाद्रपदा और २७ रेवती। 'अश्विनी' नक्षत्र में जन्म लेने वाला सुन्दर, भाग्यशाली, चतुर, स्थूल-काय, महाधनी तथा लोकप्रिय होता है। 'भरणी' नक्षत्र में जन्म लेने वाला रोग-रहित, सत्य-प्रतिष्ठ, सत्यवादी,

दृढ़व्रती, सुखी तथा चनी होता है। 'कृतिका' नक्षत्र में जन्म लेने वाला कृपण, पाप-कर्म करने वाला, क्षुधा-पीड़ित, नित्यदुःखी, तथा अतिदिन अकर्म करने वाला होता है। 'रोहिणी' नक्षत्र में जन्म लेने वाला चनी, कृतघ्न, मेधावी, राजमान्य, धिपभाषी, सत्यवादी तथा सुन्दर स्वरूपवान् होता है। 'मृगशिरा' नक्षत्र में जन्म लेने वाला चपल, चतुर, चौर्यवान्, अहंकारी, स्वार्थी, पर-द्वेषी तथा नकली-वस्तुएँ बनाने वाला होता है। 'आर्द्रा' नक्षत्र में जन्म लेने वाला कृतघ्न, दमण्डी, पापी, शठ, धन-धान्य-हीन तथा नीच-स्वभाव का होता है। 'पुनर्वसु' नक्षत्र में जन्म लेने वाला शान्त, सुखी, संभोग-प्रिय, सुन्दर, लोक-प्रिय तथा पुत्र-मित्रादि से युक्त होता है। 'पुष्य' नक्षत्र में जन्म लेने वाला देव-धर्म-उपासक, शान्त, सुखी, चनी, पुत्रवान्, विद्वान् तथा सुन्दर होता है। 'आश्लेषा' नक्षत्र में जन्म लेने वाला सर्वभक्षी, क्रूर-स्वभाव का, कृतघ्न, धूर्त, दुष्ट तथा स्वार्थी होता है। 'मघा' नक्षत्र में जन्म लेने वाला चनी, मानी, भोगी, अनेक सेवकों वाला, सेनापति, राज-सेवक, महान् उद्यमी तथा पितृ-भक्त होता है। 'पूर्वाफाल्गुनी' नक्षत्र में जन्म लेने वाला विद्यावान्, धनवान्, पशुओं से युक्त, गंभीर स्वभाव का, स्त्रियों को प्रिय, सुखी तथा विद्वानों द्वारा सम्मानित होता है। 'उत्तराफाल्गुनी' नक्षत्र में जन्म लेने वाला विद्या एवं धन-सम्पन्न, सुख-भोगी तथा सौभाग्यशाली होता है। 'हस्त' नक्षत्र में जन्म लेने वाला निर्लज्ज, पापी, धूर्त तथा उत्साही होता है। 'चित्रा' नक्षत्र में जन्म लेने वाला सुन्दर नेत्र तथा अङ्गों वाला एवं विचित्र वस्त्र तथा पुष्पमालादि धारण करने वाला होता है। 'स्वाति' नक्षत्र में जन्म लेने वाला दयालु, मधुर-भाषी, चनी तथा धर्माला होता है। 'विशारवा' नक्षत्र में जन्म लेने वाला ईर्ष्यालु, कृपण, वाणी का चतुर तथा शोभायुक्त होता है। 'अनुराधा' नक्षत्र में जन्म लेने वाला विदेशवासी, चनी तथा क्षुधातुर होता है। 'ज्येष्ठा' नक्षत्र में जन्म लेने वाला धर्माला, संशोधी, अल्प मित्रवान्, परन्तु महाक्रोधी होता है। 'मूल' नक्षत्र में जन्म लेने वाला सुख-हीन, हिंसक, चनी, मानी, भोगी तथा स्थिर-स्वभाव वाला होता है। 'पूर्वाषाढा' नक्षत्र में जन्म लेने वाला सुखी, मानी, स्त्री-युक्त, दृढ़-मित्रों वाला तथा आनन्दित रहने वाला होता है। 'उत्तराषाढा' नक्षत्र में जन्म लेने वाला

बहुसंख्यक श्रेष्ठ मित्रों वाला, धर्मात्मा, कृतज्ञ तथा सौभाग्यशाली होता है। 'अवण' नक्षत्र में जन्म लेने वाला बड़ा उदार, श्रुतज्ञ, महाधनी तथा प्रसिद्धि पाने वाला होता है। 'चनिष्ठा' नक्षत्र में जन्म लेने वाला दानी, धनी, शूरवीर, स्वस्थ एवं पुष्ट शरीर वाला तथा रति-प्रेमी होता है। 'शानभिषा' नक्षत्र में जन्म लेने वाला स्पष्टवादी, रसिक, दुर्गोह्य, व्यसनी तथा शत्रुजघ्नी होता है। 'पूर्वाभाद्रपदा' नक्षत्र में जन्म लेने वाला सुखी, सन्तानिवान्, सुवक्ता, अर्घ्य समर्थ जैवाने वाला तथा अधिक सोने वाला होता है। 'उत्तराभाद्रपदा' नक्षत्र में जन्म लेने वाला गौर-वर्ण, सत्ववान्, धर्मात्मा, दैव-तुल्य साहसी तथा शत्रुजघ्नी होता है। 'रेवती' नक्षत्र में जन्म लेने वाला शूर, सज्जन, विवेक्षण, सर्वाङ्ग पूर्ण तथा धन-धान्य-सम्पन्न होता है।

अथ नक्षत्र-चरण फलम् - प्रत्येक नक्षत्र के चार-चार चरण होते हैं। किस नक्षत्र के प्रथम, द्वितीय, तृतीय अथवा चतुर्थ चरण में जन्म लेने का क्या प्रभाव होता है, इसे आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए। 'अश्विनी' नक्षत्र के 'प्रथम' चरण में जन्म लेने वाला चौर, 'द्वितीय' चरण वाला अल्प-कर्मी, 'तृतीय' चरण वाला श्रेष्ठ भाग्यशाली तथा 'चतुर्थ' चरण वाला दीर्घायु होता है। 'भरणी' के 'प्रथम' चरण वाला धात्री, 'द्वितीय' चरण वाला धनी-सुखी, 'तृतीय' चरण वाला क्रूरकर्मी तथा 'चतुर्थ' चरण वाला दरिद्र होता है। 'कृत्तिका' के 'प्रथम' चरण वाला तेजस्वी, 'द्वितीय' चरण वाला शास्त्रज्ञ, 'तृतीय' चरण वाला श्रेष्ठ भाग्यशाली तथा 'चतुर्थ' चरण वाला बहुपुत्रवान् एवं दीर्घायु होता है। 'रोहिणी' के 'प्रथम' चरण वाला सौभाग्यशाली, 'द्वितीय' चरण वाला पीडित, 'तृतीय' चरण वाला उरफोक तथा 'चतुर्थ' चरण वाला सत्यवादी होता है। 'मृगशिरा' के 'प्रथम' चरण वाला राजा, 'द्वितीय' चरण वाला चौर, 'तृतीय' चरण वाला भोगी तथा 'चतुर्थ' चरण वाला धन-धान्य-सम्पन्न होता है। 'आर्द्रा' के 'प्रथम' चरण वाला अधिक रत्न चरने वाला, 'द्वितीय' चरण वाला दरिद्र, 'तृतीय' चरण वाला अल्पायु तथा 'चतुर्थ' चरण वाला चौर होता है। 'पुनर्वसु' के 'प्रथम' चरण वाला सुखी, 'द्वितीय' चरण वाला विद्वान्, 'तृतीय' चरण वाला भोगी तथा 'चतुर्थ' चरण वाला मृदुभावी होता है। 'पुष्य' के 'प्रथम' चरण वाला दीर्घायु, 'द्वितीय'

चरण वाला चोर, 'तृतीय' चरण वाला भोगी तथा 'चतुर्थ' चरण वाला बुद्धिमान होता है। 'आश्लेषा' के 'प्रथम' चरण वाला सन्तान-रहित, 'द्वितीय' चरण वाला पराधा-काम करने वाला, 'तृतीय' चरण वाला रोगी तथा 'चतुर्थ' चरण वाला सौभाग्य-प्रशाली होता है। 'आश्लेषा' के गण्डान्तों में जन्म लेने वाला अल्पायु होता है। 'मघा' के 'प्रथम' चरण वाला सन्तान-हीन, 'द्वितीय' चरण वाला पुत्रवान्, 'तृतीय' चरण वाला कठिन रोग-युक्त तथा 'चतुर्थ' चरण वाला विद्वान् होता है। 'पूर्वाफाल्गुनी' के 'प्रथम' चरण वाला सामर्थ्यवान्, 'द्वितीय' चरण वाला धर्मात्मा, 'तृतीय' चरण वाला राजा तथा 'चतुर्थ' चरण वाला क्रूर एवं अल्पायु होता है। 'उत्तराफाल्गुनी' के 'प्रथम' चरण वाला पण्डित, 'द्वितीय' चरण वाला 'राजा', 'तृतीय' चरण वाला विजयी तथा 'चतुर्थ' चरण वाला धर्मात्मा होता है। 'हस्त' के 'प्रथम' चरण वाला शूर-वीर, 'द्वितीय' चरण वाला विवादी, 'तृतीय' चरण वाला धन-धान्य सम्पन्न तथा 'चतुर्थ' चरण वाला श्रीमान् होता है। 'चित्रा' के 'प्रथम' चरण वाला चोर, 'द्वितीय' चरण वाला चित्रकार, 'तृतीय' चरण वाला पर-स्त्री गामी तथा 'चतुर्थ' चरण वाला पण्डित होता है। 'स्वाति' के 'प्रथम' चरण वाला चोर, 'द्वितीय' चरण वाला अल्पायु, 'तृतीय' चरण वाला धर्मात्मा तथा 'चतुर्थ' चरण वाला राजा होता है। 'विशाखा' के 'प्रथम' चरण वाला नीतिज्ञ, 'द्वितीय' चरण वाला शास्त्रज्ञ, 'तृतीय' चरण वाला विवादी तथा 'चतुर्थ' चरण वाला दीर्घायु होता है। 'अनुराधा' के 'प्रथम' चरण वाला तेजस्वी, 'द्वितीय' चरण वाला धर्मात्मा, 'तृतीय' चरण वाला दीर्घायु तथा 'चतुर्थ' चरण वाला धर्मिचारी होता है। 'ज्येष्ठा' के 'प्रथम' चरण वाला क्रूर, 'द्वितीय' चरण वाला भोगी, 'तृतीय' चरण वाला विद्वान् तथा 'चतुर्थ' चरण वाला पुत्रवान् होता है। 'मूल' के 'प्रथम' चरण वाला भोगी, 'द्वितीय' चरण वाला त्यागी, 'तृतीय' चरण वाला श्रेष्ठ मित्रों वाला तथा 'चतुर्थ' चरण वाला राजा होता है। 'पूर्वाषाढा' के 'प्रथम' चरण वाला श्रेष्ठ-पुरुष, 'द्वितीय' चरण वाला राजा का प्रिय, 'तृतीय' चरण वाला विवादी तथा 'चतुर्थ' चरण वाला धनी होता है। 'उत्तराषाढा' के 'प्रथम' चरण वाला राजा, 'द्वितीय' चरण वाला मित्र-विरोधी, 'तृतीय' चरण वाला मानी तथा 'चतुर्थ' चरण वाला

धर्मात्मा होता है। 'श्रवण' के 'प्रथम' चरण वाला श्रेष्ठ मानी, 'द्वितीय' चरण वाला श्रेष्ठ गुणी, 'तृतीय' चरण वाला विद्वान् तथा 'चतुर्थ' चरण वाला धर्मात्मा होता है। 'धर्मात्मा' के 'प्रथम' चरण वाला दीर्घायु, 'द्वितीय' चरण वाला पीडा युक्त, 'तृतीय' चरण वाला उरपोक तथा 'चतुर्थ' चरण वाला श्रेष्ठ स्त्री वाला होता है। 'शान्ति' के 'प्रथम' चरण वाला मधुरभाषी, 'द्वितीय' चरण वाला लक्ष्मीवान्, 'तृतीय' चरण वाला सुरकी तथा 'चतुर्थ' चरण वाला पुत्रवान् होता है। 'पूर्वभाद्रपदा' के 'प्रथम' चरण वाला शूर-वीर, 'द्वितीय' चरण वाला चौर, 'तृतीय' चरण वाला बृद्धिमान् तथा 'चतुर्थ' चरण वाला भोगी एवं भू-स्वामी अथवा पुर (नगर आदि) का स्वामी होता है। 'उत्तराभाद्रपदा' के 'प्रथम' चरण वाला राजा, 'द्वितीय' चरण वाला चौर, 'तृतीय' चरण वाला पुत्रवान् तथा 'चतुर्थ' चरण वाला सुरकी होता है। 'रेवती' के 'प्रथम' चरण वाला ज्ञानी, 'द्वितीय' चरण वाला चौर, 'तृतीय' चरण वाला युद्ध में नष्ट होने वाला तथा 'चतुर्थ' चरण वाला क्लेश-युक्त होता है। (विशेष- नक्षत्र तथा नक्षत्र-चरणों में जन्म का फल सभी धरित होता है, जबकि नक्षत्र ग्रहण, युद्ध, भूकम्प आदि दोषों से रहित हों तथा जन्म बलवान् हो)।

अथ नक्षत्रांश फलम् - नक्षत्र 'पहले' अंश में जन्म लेने वाला चतुर, धर्मात्मा, सत्यवादी, इन्द्रियजित् तथा विद्वान् होता है। 'दूसरे' अंश में जन्म लेने वाला धनी, भोगी, युद्धप्री, नीतिज्ञ तथा स्त्री-आसक्त होता है। 'तीसरे' अंश में जन्म लेने वाला भोगों को भोगने वाला, शास्त्रज्ञ, स्वधर्म-पालक तथा स्व-पत्नी में आसक्त होता है। 'चौथे' अंश में जन्म लेने वाला स्त्री-हित, माया-लिंग, सन्तानि-विहीन, नपुंसक तथा वीर-विघ्ना का होता होता है।

अथ योग फलम् - योग २७ होते हैं - १ विष्णु, २ जीति, ३ आयुष्य, ४ सौभाग्य, ५ शोभन, ६ अतिगण, ७ सुकर्म, ८ धृति, ९ शूल, १० गण्ड, ११ वृद्धि, १२ ध्रुव, १३, व्याघ्र, १४, दर्शन, १५, वज्र, १६, सिद्ध, १७ व्यालीपात, १८, वरीयान्, १९ वारिध, २० शिव, २१ सिद्धि, २२ साध्य, २३ शुभ, २४ शुक्ल, २५ ब्रह्म, २६ रेन्दु तथा २७ वैधृति। इन योगों में जन्म लेने का फल क्रमशः आगे लिखे अनुसार होता है -

'विष्णुभ' योग में जन्म लेने वाला अपने साले से जेम बरबने वाला, स्व-पत्नी के अतिरिक्त पर-स्त्रियों से भी प्रीति करने वाला तथा सब कार्यों में चतुर होता है। 'प्रीति' योग वाला स्त्री-प्रिय, अल्पत उत्साही, कृतज्ञ तथा परमार्थ-बुद्धि वाला होता है। 'आयुष्य' योग वाला नीतिज्ञ, स्थिर-चित्त, परम दानी, सब कार्यों में तत्पर तथा सब भोगों से युक्त होता है। 'सौभाग्य' योग वाला अधिक बोलने वाला, शुभगुण सम्पन्न, धनी, प्रियवादी, बुद्धिमान्, सुगंध-प्रिय, सुन्दर तथा भाग्यशाली होता है। 'शोभन' योग वाला बुद्धिमान्, गुणी, अकस्मात् शोकालु हो जाने वाला, सुन्दर, स्वच्छ-हृदय एवं निर्मल-स्वभाव वाला होता है। 'अतिगण्ड' योग वाला दूसरों पर दोषारोपण करने वाला, शूर-वीर, सत्यवादी, धर्मज्ञ, परन्तु कामी एवं पर-स्त्री-गामी होता है। 'सुकर्म' योग वाला सब कार्यों में दक्ष, धन-धान्य एवं गुण-सम्पन्न तथा व्यवसाय-कुशल होता है। 'धृति' योग वाला सुगन्ध-प्रिय, विवाद-रत, धनी, आलसी तथा नित्य पर-स्त्री-प्रेमी होता है। 'शूल' योग वाला पराक्रमी, सत्कर्मकर्ता, गुणी, भाग्यवान् तथा शूल-रोगी होता है। 'गण्ड' योग वाला वाञ्छाल, गंभीर, महापराक्रमी, गंभीर, गर्वित, देख तथा शुभ-लक्षण-सम्पन्न होता है। 'वृद्धि' योग वाला महाबुद्धिमान्, स्थिर-स्वभाव, शूर-वीर, सत्यवादी, जितेन्द्रिय, स्व-वचन-पालक एवं परम पशुस्वी होता है। 'ध्रुव' योग वाला स्थिर-कर्मकर्ता, दृढव्रति-सम्पन्न, दीर्घायु, प्रियदर्शी एवं सदैव कर्म-रत होता है। 'व्याघ्रात' योग वाला मूर्ख, मलिन, चित्रकार, निष्ठुर तथा परम अभिमानी होता है। 'हर्षण' योग वाला कुटिल, सुख-सम्पन्न, कृषि-कर्मकर्ता, महाबली तथा मधुरभाषी होता है। 'वज्र' योग वाला दान न करने वाला, कृपण, धनी, ग्राम्य-भाषा बोलने वाला, क्रूर तथा सन्तान-हीन होता है। 'सिद्ध' योग वाला भोगी, धनी, मित्रभाषी, सुखी, सिद्धकर्म तथा सत्यवादी होता है। 'व्यतीयात' योग वाला अस्थिर-स्वभाव का, सत्य-रहित, कुमन्त्री, बहुभोजी, कला-हीन तथा मूर्ख होता है। 'वरीयान्' योग वाला लोकप्रिय, धनी, स्वकर्मकर्ता, आनन्दप्रद तथा उग्रसित होता है। 'परिच' योग वाला दानी, दुराचारी, लोभी, साहसी, हठी तथा अपने कुल में बुद्धिमान् होता है। 'शिव' योग वाला धनी,

पुत्रवान्, ब्रह्मचर्य-पालक (संघसी), तीर्थ-यात्रा करने वाला तथा धर्मात्मा होता है। 'सिद्धि' योग वाला गुप्त-मन्त्रणा में कुशल, पण्डित, सब व्यवसायों का हाना, अष्ट चिन्त वाला तथा नीतिमान् होता है। 'साध्य' योग वाला विभिन्न प्रकार के व्यवसाय करने वाला, बड़ा बुद्धिमान्, स्वामि-भक्त, सुसाध्य, सुगन्ध-धिप तथा परम उदार होता है। 'शुभ' योग वाला शुभ-कर्म करने वाला, अक्रोधी, सत्यवादी, निर्मल-हृदय तथा शरणागत-वत्सल होता है। 'शुक्ल' योग वाला सुन्दर, यशस्वी, वेदज्ञ, कला-शास्त्र-उकीण तथा सत्यवादी होता है। 'ब्रह्म' योग वाला परम पराक्रमी, धिप-वादी, विप्र-धिप, धीर, उगतम तथा निर्मल स्वभाव का होता है। 'शेन्दु' योग वाला विजयी, धावक, सब कार्यो में कुशल, धनी, पुष्टि तथा धिपवादी होता है। 'वैद्युति' योग वाला कृपण, युगुलखोर, बहुभाषी तथा प्रारंभिक-अवस्था में चंचल-चिन्त वाला होता है।

अथ करण फलम् - करण ११ होते हैं - १ बव, २ बालव, ३, कौलव, ४ तैतिल, ५ गर, ६ वणिज, ७ भद्रा, ८ शकुनि, ९ चतुष्पद, १० नाग और ११ किंस्तुघ्न। विभिन्न कणों से जन्म लेने का फल क्रमशः, अग्रे लिखे अनुसार होता है - 'बव' कण में जन्म लेने वाला अल्पतः अभिमानी, उदार, सुरवी, धन-हीन तथा सेना-नायक होता है। 'बालव' करण वाला धैर्यवान्, ह्वासी वृत्ति का, सुन्दर, बाल-क्रीड़ाओं से प्रसन्न होने वाला तथा स्वयं भी बालकों जैसे काम करने वाला एवं सुख-सम्पन्न होता है। 'कौलव' करण वाला कौतुकों से आनन्दित होने वाला, पाप-कर्म-रत, उच्छन्न रूप से कौलव-धर्म-पालक तथा सुरवी होता है। 'तैतिल' करण वाला सत्य-सम्पन्न, स्थिर-स्वभाव, साधक, महाप्रतापी, तामसी-वृत्ति का, भालिन तथा स्वयं में सन्तुष्ट बना रहने वाला होता है। 'गर' करण वाला मन्त्रज्ञ, नीतिमान्, चतुर, दुर्बल-शरीर वाला, अतिभाषी, चपल तथा भगवत्प्र-प्रेमिका होता है। 'वणिज' करण वाला वैश्य-वृत्ति करने वाला, अनेक प्रकार के कृष-विक्रय-व्यवहारों का हाना तथा वैश्य वृत्ति से ही जीविकोपार्जन करने वाला होता है। 'भद्रा' करण वाला क्रूर, साहसी, प्रचण्ड, पाप-कर्म करने वाला, चंचल

स्वभाव का तथा सब कार्य का होता होता है ('भडा करण' को 'विष्टि करण' भी कहते हैं)। 'शकुनि' करण वाला पक्षी-विष्णु का होता, निरन्तर उद्योगी, सदैव अमण करने वाला, शान्त-स्वभाव तथा परम बुद्धिमान होता है। 'चतुष्पद' करण वाला कृषि एवं व्यवसाय करने वाला, उद्योगी, पराक्रमी, आलस्य-रहित तथा रवेद-रहित होता है। 'भाग' करण वाला धनी, धातु-विशेषज्ञ, अपने परिश्रम से गुणवान् बनने वाला तथा हाथियों का पालक होता है। 'किंस्तुघ्न' करण वाला किंचित् धर्म तथा किंचित् पाप-कर्म करने वाला एवं किंचित् रोग के कारण शारीरिक-पीड़ा पाने वाला होता है।

अथ योनि फलम् - अश्विनी और शतभिषा नक्षत्रों की 'अश्व'; रेवती तथा भरणी नक्षत्रों की 'गज'; पुष्य तथा कृत्तिका नक्षत्रों की 'हाग'; रोहिणी तथा मृगशिरा नक्षत्रों की 'सर्प'; आर्द्रा तथा मूल नक्षत्रों की 'श्वान', मघा तथा पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्रों की 'मूषक', पुनर्वसु तथा आश्लेषा नक्षत्रों की 'मार्जार', उत्तराभाद्रपदा तथा उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रों की 'गौ', स्वाति तथा हस्त नक्षत्रों की 'महिष'; ज्येष्ठा तथा अनुराधा नक्षत्रों की 'मृग'; चित्रा तथा विशाखा नक्षत्रों की 'व्याध'; पूर्वाषाढा तथा श्रवण नक्षत्रों की 'वानर', धनिष्ठा तथा पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्रों की 'सिंह' तथा उत्तराषाढा एवं अश्लेषा नक्षत्रों की 'नकुल' योनि हैं। इस प्रकार २४ प्रकार की योनियाँ होती हैं। किस योनि में जन्म लेने का क्या फल होता है, इसे क्रमशः आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए - 'अश्व' योनि में जन्म लेने वाला चपल, चंचल दृष्टि वाला, शीघ्रगामी, पुट्ट-पिप, बलवान् तथा अपने स्वामी का पिप होता है। 'गज' योनि में जन्म लेने वाला मन्दगामी, बहुभोषी, राजा को पिप, सत्यवादी तथा हानी होता है। 'हाग' योनि वाला दुर्घट, दुर्लभ एवं कठिन स्थानों का भेद पाने वाला, निःशङ्क तथा बड़ा बुद्धिमान होता है। 'सर्प' योनि वाला अपने स्वरूप से दूसरों के हृदय में मय उत्पन्न करने वाला, प्रपंची, तथा पर-धन-हारी होता है। 'श्वान' योनि वाला सर्वमक्षी, बकवादी, दूत-कर्म करने वाला, अपने स्वामी का हित-

साधन करने में तत्पर, वन में कष्ट पाने वाला तथा शूर-वीर होता है। 'मार्जार' योनि वाला पिंगल-वर्ण मँत्रों का, सर्वमक्षी, चपल, द्वेषी, अकारण क्रोधी, परन्तु उरपोक-स्वभाव का होता है। 'मूषक' योनि वाला धूर्त, अपने काम में लगा रहने वाला, पराये कामों को बिगाड़ने वाला तथा शत्रुओं का समूल-नाश करने वाला होता है। 'गौ' योनि वाला अनेक पशु रखने वाला, दुग्ध-दही का भोजन करने वाला, परोपकारी तथा अत्यन्त सुन्दर होता है। 'गहिष्ठ' योनि वाला मन्दगात्री, स्थूल-शरीर, बलवान्, धनी एवं धृति-दुग्ध आदि का अधिक सेवन करने वाला होता है। 'व्याजु' योनि वाला हिंसक, सर्वमक्षी, कुशल, विद्वान् तथा दूसरों को अपमान करने वाला होता है। 'मृग' योनि वाला गीति-वाद्य-प्रिय, सुन्दर, धर्मात्मा तथा पुष्ट-भरि होता है। 'वानर' योनि वाला पिंगल-नेत्र, वन में भ्रमण करने वाला, फल-मक्षी तथा अविश्वासी-प्रकृति का होता है। 'नकुल' योनि वाला सुन्दर, स्व-कार्य में लगा रहने वाला तथा पराये काम भी करने वाला, गहरे स्थान में रहने वाला तथा दीर्घजीवी होता है। 'सिंह' योनि वाला महाबली, पिंगल-नेत्र, क्षीण कटि, सर्वमक्षी तथा अन्धों को भ्रष्टोत्पादक होता है।

आवश्यक टिप्पणी— संवत्सरादि के जो फल कहे गए हैं, वे आगे लिखे अनुसार उभावी होते हैं— 'संवत्सर' का फल सावन वर्षाति की दशा में तथा 'अघन' और 'ऋतु' का फल सूर्य की दशा में उपा होता है। 'महीने' का फल मास-पति दशा में तथा 'गण', 'पक्ष' और 'नक्षत्र' का फल चन्दमा की दशा में मिलता है। चन्दमा की दशा में जब सूर्य की अन्तर्दशा आती है, तब 'तिथि' और 'करण' का फल मिलता है। 'वार' का फल उस वार के स्वामी का दशा में उपा होता है। चन्दमा तथा सूर्य में जो बलवान् हो, उसकी दशा में 'योग' का फल उपा होता है। 'लग्न' का फल लग्नेश की दशा में मिलता है। इसी प्रकार दृष्टि-फल, भाव-फल तथा पुति-फल के सम्बन्ध में भी विचार किया जाता है। जो ग्रह जिस ग्रह को देखता है वह अपना दृष्टि-फल उस ग्रह की दशा के अन्तर्गत अपनी अन्तर्दशा में देता है। जो ग्रह जिस भाव में स्थित होता है तथा जो ग्रह जिस राशि में स्थित होता है, वह उस भाव या राशि के

स्वामी की अन्तर्दृष्टि में अपना कल प्रकट करता है। लग्न, राशि, ग्रहों की स्थिति, दृष्टि, युति तथा दशा-अन्तर्दृष्टि आदि के विषय में आगे लिखा जायेगा।

अथ लग्न कालम् - जातक के जन्म के समय पूर्वी-दिशि पर जिस राशि की स्थिति होती है, वही जातक की 'जन्म-लग्न' होती है। राशिओं की कुल संख्या १२ है, अतः जन्म-लग्न भी १२ ही होती है, जो इस प्रकार हैं - १ मेष, २ वृष, ३ मिथुन, ४ कर्क, ५ सिंह, ६ कन्या, ७ तुला, ८ वृश्चिक, ९ धनु, १० मकर, ११ कुम्भ और १२ मीन। किस लग्न का जातक के चरित्र और स्वभाव पर क्या प्रभाव पड़ता है, इसे आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए - 'मेष' लग्न में जन्म लेने वाला चण्डाभिमानी, गुणी, क्रोधी, स्वजन-विरोधी, परन्तु पराधर्म से मैत्री रखने वाला, पराक्रम द्वारा पशु पाने वाला तथा रोषपूर्ण स्वभाव का होता है। 'वृष' लग्न वाला शूर, वीर, युद्ध-प्रेम, धैर्यवान्, परन्तु प्रशान्त-हृदय, प्रियवादी, गुरुजनों का भक्त, गुरुणियों में अगुगण्य तथा धन-सम्पन्न होता है। 'मिथुन' लग्न वाला भोगी, दानी, अनेक पुत्र रखने वाला, धनी, सुशील तथा राजा से सम्पर्क रखने वाला होता है। 'कर्क' लग्न वाला सज्जनों की सङ्कति करने वाला, मिष्टान्नभोगी, जलक्रीड़ा-प्रेमी, तत्त्वज्ञ, विनम्र तथा चंचल-बुद्धि वाला होता है। 'सिंह' लग्न वाला कुशोदर, सुन्दर, पराक्रमी, भोगी, अल्प सन्तानिवान्, अल्पभोगी तथा अपनी बुद्धि पर घमण्ड करने वाला होता है। 'कन्या' लग्न वाला काम-क्रीड़ा में कुशल, सद्गुणी, दानी, कार्य-कुशल, सदैव प्रसन्न रहने वाला तथा धनी होता है। 'तुला' लग्न वाला अल्पन्तःशुणी, व्यवसाय-कुशल तथा बहुत धन कमाने वाला होता है। वह स्थिर-लक्ष्मी-सम्पन्न तथा स्व-कुल में प्रेष्ठ होता है। 'वृश्चिक' लग्न वाला शूर-वीर, तत्त्वज्ञ, परन्तु अपने विचारों को कुमार्ग में प्रवृत्त करने वाला तथा सदैव भगदौ-दण्टे में प्रवृत्त रहने वाला होता है। 'धनु' लग्न वाला विद्वान्, नीतिज्ञ, दृढ़-प्रतिज्ञ, कलाविद्, सुन्दर तथा शास्त्र-विद्या में निपुण होता है। 'मकर' लग्न वाला अल्पन्तःशुण, कुरूप, मनमानी करने वाला,

बहुसन्तानिकान्, अत्यन्त चतुर तथा कृपण होता है। 'कुम्भ' लग्न वाला चञ्चल, कामी, सुन्दर, मित्र-स्नेही, अभिमानी तथा धान्यादि का उपार्जन करने वाला होता है। 'मीन' लग्न वाला चञ्चल, सुन्दर, फला-कुशल, अत्यभोजी, कामासक्त, परम धूर्त, रत्न-स्वर्णादि से सम्यन्त तथा अनेक प्रकार की वस्तुओं के निर्माण में दक्ष होता है।

टिप्पणी - यदि लग्न बलवान् हो तो उक्त फल वृत्तिरूपेण घटित होता है, अन्यथा अल्प फल होता है।

अथ लग्न होरा फलम् - 'होरा चक्र' के आधार पर जातक के रूप तथा सौहार्द का विचार किया जाता है। यदि जातक का 'जन्म चन्द्रमा' की होरा में हुआ हो तथा अधिकांश ग्रह अन्य स्थानों में स्थित हों तो वह अत्यन्त सुन्दर, महा धनी तथा श्रेष्ठ होता है। यदि 'सूर्य' की होरा में जन्म हुआ हो तथा अधिकांश ग्रह अन्य स्थानों में स्थित हों तो जातक मध्यम रूप, धन एवं मित्रों वाला होता है। अब विभिन्न लग्नों की प्रथम तथा द्वितीय होरा में जन्म लेने का फल लिखा जाता है - 'मेघ' लग्न की प्रथम होरा में जन्म लेने वाला रक्तवर्ण नेत्र, तीक्ष्ण-दृष्टि, तोते जैसी नाक, शूर-वीर, पुष्ट तथा ऊँचे शरीर वाला, श्रेष्ठ स्त्रियों से प्रेम करने वाला, धनवान् तथा चोरों का सरदार होता है। 'द्वितीय' होरा वाला कठोर पाँव तथा अँगुलियों वाला, सिग्ध एवं विशाल नेत्रों वाला, पुष्ट-शरीर तथा श्रेष्ठ बुद्धि वाला, प्रमादी, चतुर तथा चोर होता है। 'वृष' लग्न की प्रथम होरा में जन्म लेने वाला विशाल वक्षःस्थल, ललाट एवं नेत्रों वाला, स्थूल-शरीर, अत्यन्त क्रोधी, वश्व तथा वाहन-प्रेमी होता है। 'द्वितीय' होरा वाला भारी एवं पुष्ट शरीर, सुन्दर केश, टेढ़ी कमर, बेल के समान मुख वाला तथा बड़ा पराक्रमी होता है। 'मिथुन' लग्न की प्रथम होरा में जन्म लेने वाला विशाल नेत्र, छोटे कद, दृढ़ शिर एवं पाँवों वाला, मध्यम रूप, काम-चेष्टा युक्त, शूर-वीर, सुवक्ता तथा बुद्धिमान् होता है। 'द्वितीय' होरा वाला सुन्दर नेत्र, होठ तथा दाँतों वाला, मधुरभाषी, मनस्वी, कामी तथा शूर-वीर होता है। 'कर्क' लग्न की प्रथम होरा में जन्म लेने वाला वर्तुलाकार शरीर, श्रेष्ठ शिर, सुन्दर शरीर, अंगुलि दाँत दृढ़, कृतघ्न, शठ, चञ्चल तथा मन्द स्वर वाला होता है। 'द्वितीय' होरा वाला मोटे मुख वाला,

निरन्तर यात्राएँ करने वाला, सम शरीर, कठोर देह, कोधी स्वभाव का तथा जुआरी होता है। 'सिंह' लग्न की प्रथम होरा में जन्म लेने वाला रक्त-वर्ण कोने वाले विशाल नेत्रों वाला, बड़े शरीर तथा कपटी स्वभाव का, स्थिर पराक्रमी, स्थिर कर्म करने वाला, पुण्य तथा अन्तिम अवस्था में सुखोपभोग प्राप्त करने वाला होता है। 'द्वितीय' होरा वाला कठोर अङ्गों वाला, श्रेष्ठ वस्त्रों का इच्छुक, अनेक प्रकार की चेष्टाओं वाला, स्त्री-रत, मिष्टान्न-प्रेमी, यात्राएँ करने वाला, स्थिर-मैत्री वाला, दानी तथा भोगी होता है। 'कन्या' लग्न की प्रथम होरा में जन्म लेने वाला अल्पवय कोमल तथा कान्तिमान् शरीर वाला, सुभाषी, मधुर चितवन पूर्ण नेत्रों वाला, सुन्दर स्वरूप, श्रेष्ठ संगीतज्ञ, श्रेष्ठ संगीतज्ञ-नारियों के सम्पर्क में रहने वाला तथा विनम्र स्वभाव का होता है। 'द्वितीय' होरा वाला छोटे शरीर तथा स्थूल शिर वाला, विवाद युक्त, पाप-कर्म द्वारा पन्नोपार्जन कर सुखोपभोग एवं श्रेष्ठ तीर्थों की यात्रा करने वाला, लिपिशिल्प एवं संगीत का ज्ञाता तथा सेवाभावी होता है। 'तुला' लग्न की प्रथम होरा में जन्म लेने वाला गोल मुख तथा ऊँची नाक वाला, पुष्ट एवं विशाल शरीर वाला, अस्थि-शर युक्त, चतुर, विलासी, दानी, मन्त्री, श्रेष्ठ-बुद्धि तथा सच्चे मित्रों वाला होता है। 'द्वितीय' होरा वाला सुन्दर शरीर कुंचित केश तथा गोल आँखों वाला, अत्यधिक यात्रा करने के कारण पाँवों में कटी बिवाईयों वाला, स्थिर धनी तथा शठ स्वभाव का होता है। 'वृश्चिक' लग्न की प्रथम होरा में जन्म लेने वाला लाल कोने के पिङ्गल-वर्ण नेत्रों वाला, दुष्ट-स्वभाव, शूर-वीर, युद्धोत्साही तथा मित्रों के धन का उपहरण करने वाला होता है। 'द्वितीय' होरा वाला विशाल तथा पुष्ट शरीर का, बड़े नेत्रों वाला, राजा का सेवक, अधिक शृङ्गी तथा मित्रों से युक्त होता है। 'धनु' लग्न की प्रथम होरा में जन्म लेने वाला दबी हुई पीठ, मुख तथा वक्षःस्थल वाला, हाथी जैसे निमीलित-नेत्रों वाला, पुष्ट कपोल वाला तथा बाल्यावस्था में ही गुरुजनों तथा पारिवारिकजनों का त्याग कर तपस्वी बन जाने वाला होता है। 'द्वितीय' होरा वाला कमल-दल से विस्तृत नेत्र, लम्बी भुजाओं वाला, सुन्दर, सुभाषी, शास्त्रज्ञ, नीतिज्ञ, धर्मात्मा तथा पूर्ण यशस्वी होता है। 'मकर' लग्न

की प्रथम होरा में जन्म लेने वाला सुन्दर, काले तथा हरिण जैसे नेत्रों वाला, सौम्य-स्वार्थ, ऊँची नाक वाला, अत्यधिक प्रमथशील, धन्य भाग्य, प्रथमावस्था में साठ और बूढ़ तथा अत्यन्त क्रोधी स्वभाव का होता है। 'द्वितीय' होरा वाला रक्तवर्ण कोने वाले नेत्रों का, पतले शरीर तथा लम्बे अङ्गों वाला, अपनी वास्तविक आयु से दोरा देखाई देने वाला, आधिक रोमों वाला, आलसी, भूख तथा जान-बूझ कर कुकर्म करने वाला होता है। 'कुम्भ' लग्न की प्रथम होरा में जन्म लेने वाला लंबे जैसे रक्तवर्ण शरीर एवं नेत्रों वाला, कौमल, स्थिर-मैत्री, युक्त, चौड़े पुत्रों वाला, शूरवीर, गुणवान्, परन्तु पाप-कर्म में रत रहने वाला होता है। 'द्वितीय' होरा वाला कृष्णवर्ण, कुश-शरीर, टेढ़े अङ्गों वाला, साठ, आलसी, किसी की बात न मानने वाला तथा अपने रहस्य को प्रकट न होने देने वाला होता है। 'मीन' लग्न की प्रथम होरा में जन्म लेने वाला बौढ़े कद तथा सुन्दर और बड़े नेत्रों वाला, विशाल वक्षःस्थल तथा चौड़े मस्तक वाला, शूर-वीर, क्रिया-कुशल, सुन्दर, मित्रों को प्रिय तथा पशुस्वी होता है। 'द्वितीय' होरा वाला ओष्ठ तथा स्थिर-स्वभाव का, बुद्धिमान्, ऊँची नाक वाला, सुन्दर, मधुरभाषी, राजा का प्रिय तथा उदार-स्त्री वाला होता है।

अथ द्रष्टव्यफलम् - प्रत्येक राशि के पूर्व, मध्य तथा अन्तिम - ये तीन द्रष्टव्य होते हैं। द्रष्टव्य-चक्र में उच्च-ग्रह की स्थिति होने पर जातक राजा होता है। स्वक्षेत्री-ग्रह हो तो सेनापति एवं मित्र-क्षेत्री-ग्रह हो तो सुवक्ता होता है। प्रत्येक राशि के विभिन्न द्रष्टव्यों में जन्म लेने का फल अगे लिखे अनुसार होता है - 'मेष' के पूर्व द्रष्टव्य में जन्म लेने वाला दीर्घ-शरीर, युद्ध-क्षेत्र में प्रचण्ड पराक्रम दिखाने वाला, हिंसक, दानी, मित्र-विरोधी तथा बन्धु-बान्धवों को उग्र-दण्ड देने वाला होता है। 'मध्य द्रष्टव्य' में जन्म लेने वाला स्त्री, मित्र तथा पत्न का उपभोग करने वाला, स्त्री-प्रिय, सुभाषी, सुन्दर, सङ्कीर्ण-प्रिय तथा मनस्वी होता है। 'अन्तिम द्रष्टव्य' वाला गुणी, दूसरों के दोष निकालने वाला, बल एवं पराक्रम से युक्त, स्वर्जनों का प्रिय, राज-सेवक, धर्म-बुद्धि तथा प्रियजनों का आदर करने वाला होता है। वृष के

'पूर्व देष्काण' वाला ऐंठ मित्रो वाला, ऐंठ भोजन करने वाला, स्त्री-विधोग से संतप्ता, वस्त्रालङ्कार युक्ता तथा स्त्री की इच्छानुसार चलने वाला होता है। 'मध्य देष्काण' वाला सौम्य-शरीर, महाधनी, स्वरूपवान्, बलवान्, भोगी, स्त्री-सौभाग्यवान्, स्नान तथा आभूषणों का प्रेमी, स्थिर एवं मनस्वी स्वभाव का होता है। 'अन्तिम देष्काण' वाला चतुर, पात्रा-प्रेमी, स्थिर, लोकमान्य, उपोक्त, धन-हीन, गौर-वर्ण तथा खोटे-चरित्र के कारण संताप पाने वाला होता है। 'मिथुन' के 'पूर्व देष्काण' वाला बड़े शिर तथा लम्बे शरीर का, राजा द्वारा सम्मानित, स्व-वचन-पालक, धूर्त, गुणी, विलासी तथा धनी होता है। 'मध्य देष्काण' वाला कोमल तथा सौम्य स्वरूप वाला, छोटे शरीर, मुँह तथा सूक्ष्म केशों वाला, पतली जाँघों वाला, कोमल स्वभाव, उतापी, पशस्वी, धन्य तथा बड़े शत्रुओं वाला होता है। 'अन्तिम देष्काण' वाला सिग्ध-नेत्र, सुन्दर शरीर, बड़े शिर, लम्बा कद, रुस नख, कठोर पाँव तथा चल सम्पत्ति को पाने वाला, अमणशील एवं शत्रुओं से युक्ता होता है। 'कर्क' के 'पूर्व देष्काण' वाला देव-ब्राह्मण-भक्ता, गौर-वर्ण, बन्धु-बान्धव युक्ता, बुद्धिमान्, पराप्त काम करने वाला, सुन्दर एवं ऐंठ स्त्री-पुत्र का सुख पाने वाला होता है। 'मध्य देष्काण' वाला धन-लोलुप, दाती, अधिक स्वप्न देखने वाला, स्त्री-हित, अहिमात्री, विलासी, बन्धु-युक्ता, चपल तथा अनेक रोगों से ग्रस्त होता है। 'अन्तिम देष्काण' वाला धर्म श्रद्धा करने वाला, वन तथा जल में प्रमण करने वाला, विदेशगामी, धनी, साधु एवं सुगन्धित-पदार्थों में रुचि रखने वाला होता है। 'सिंह' के 'पूर्व देष्काण' वाला हिंसक-स्वभाव का, दाती, अनेक स्त्रियों तथा अनेक शत्रुओं वाला, शत्रुघनी, राज-सेवक, पराक्रमी तथा स्थिर-भेत्री का निर्वाह करने वाला, महाधनी होता है। 'मध्य देष्काण' वाला कामी, दाती, स्थिर-स्वभाव, सुरक्षित-सम्पन्न, सुन्दर, सुरोपभोगी, वेद तथा धर्म में रुचि रखने वाला, पण्डितमान् तथा आभूषण-प्रेमी होता है। 'अन्तिम देष्काण' वाला बड़े शरीर का, स्थिर-स्वभाव, कृपण, स्तब्ध, परधनापहारी, बुद्धिमान्, धूर्त, प्रगल्भ, अनेक पुत्रों वाला तथा स्त्रियों का अहित करने वाला होता है। 'कन्या' के 'पूर्व देष्काण' वाला सुन्दर तथा कोमल शरीर वाला, मधु-

मय नेत्रों वाला, मधुरभाषी, श्रेष्ठ बुद्धिमान्, नीतिज्ञ, पुण्यवान् तथा स्त्रियों को अतिशय-फल-कारक होता है। 'मध्य-देष्काण' वाला युद्ध में विशेष पराक्रमी, धैर्यवान्, परदेशभाषी, विलासी, पुत्रवान्, मुनिबुद्धि गतिवाला, अधिक खर्चीला, अल्प-भाषी तथा अल्प-कला-विद्वत् होता है। 'अन्तिम-देष्काण' वाला छोटे क्रम का सुन्दर, बड़े नेत्रों वाला, तीव्र-स्वभाव, संगीत-प्रिय, राजाद्वारा-पालक, स्थिर तथा त्यागी वृत्ति का होता है। 'तुला' के 'पूर्व-देष्काण' वाला अपनी आयु से अधिक युवा दिखलाई देने वाला, कला-मर्मज्ञ, व्यवसाय-कुशल, मन्त्रज्ञ, बुद्धिमान् तथा कामदेव-तुल्य सुन्दर स्वरूप वाला होता है। 'मध्य-देष्काण' वाला कमल-दल जैसे बड़े नेत्रों वाला, सुन्दर, बहुभाषी, वंश-वृद्धिकर्ता, चतुर, विख्यात, राजा का मित्र तथा अनेक सेवकों वाला होता है। 'अन्तिम-देष्काण' वाला छोटे क्रम का, अल्प-बुद्धि, अमणशील, कुरूप, बकवादी, कुलध्वंश, चपल तथा मित्र, धन एवं पशु को नष्ट करने वाला होता है। 'वृश्चिक' के 'पूर्व-देष्काण' वाला गौर-वर्ण, स्थिर-स्वभाव, विशाल नेत्रों वाला, पुच्छ-रणोत्कट, स्थूल तथा लम्बे शरीर वाला एवं कलह-प्रिय होता है। 'मध्य-देष्काण' वाला स्वर्ण-तुल्य गौर वर्ण, सुन्दर, सरलकिष्क वाला, चंचल, मिलाप-मोक्षी, धैर्य-कुशल एवं पराधे-धन से युक्त होता है। 'अन्तिम-देष्काण' वाला श्रेष्ठ भुजा, बड़ा पेट, दाढ़ी-मूँह रहित चेहरा, मधु-पिण्गल-नेत्र, कृष्ण वर्ण, बन्धु-विहीन तथा अपहरणकर्त्ता होता है। 'धनु' के 'पूर्व-देष्काण' वाला गोल आँखों तथा गोल वक्षःस्थल वाला, कोमल हृदय, धनी, मन्त्रियों से श्रेष्ठ, साधु-आचार में प्रवृत्त तथा पुण्यवान् होता है। 'मध्य-देष्काण' वाला सैकड़ों धन करने वाला, शास्त्रार्थ-ज्ञान, तीर्थ-यात्री, मन्त्रियों से श्रेष्ठ तथा श्रेष्ठवर्णशाली होता है। 'अन्तिम-देष्काण' वाला स्व-बन्धुओं में प्रधान, चतुर, श्रेष्ठजनों की संगति करने वाला, धर्माला, मानी, पशुस्त्री, स्वरूपवान्, परमश्रेष्ठ तथा पर-स्त्रियों से दूर रहने वाला होता है। 'मकर' के 'पूर्व-देष्काण' वाला लम्बी भुजाओं, बड़े नेत्र और उरु, कोमल शरीर, सुन्दर कान्ति उत्तम-चेष्टाओं वाला तथा स्त्रियों द्वारा अविक्रित, शठ, मित्रभाषी, धनी तथा स्वरूपवान् होता है। 'मध्य-देष्काण' वाला चंचल-चित्त, कोमल शरीर, जाँघों में बंधन वाला, मित्रभाषी, शठ, चुगुलखोर, प्रवासी, दुष्ट तथा पर-स्त्री

स्वयं पराये चान का अपहरण करने वाला होता है। 'अन्तिम डेढकाण' वाला सुन्दर नासिका एवं मस्तक वाला, पतले और लम्बे शरीर वाला, यात्रा-विदेशों की यात्रा करने वाला, पितृ-विपोगी, पापी तथा कसनी होता है। 'कुम्भ' के 'पूर्व डेढकाण' वाला लम्बे शरीर का, रक्त-वर्ण, स्त्री के मान में रत, स्थिर-कर्म करने वाला, अधम, शत्रु-सम्पन्न तथा सुरवी होता है। 'मध्य डेढकाण' वाला मधु-श्वेत-पिङ्गल नेत्रों वाला, सामर्थ्यवान्, संगीत-प्रिय, श्रेष्ठ-चाहने वाला, उत्कृष्ट वाणी बोलने वाला, अल्पधिक हाथ-कीड़ा-प्रिय तथा कृपण स्वभाव का होता है। 'अन्तिम डेढकाण' वाला लम्बे शरीर तथा कृश एवं छोटी बाँहों वाला, बड़े नेत्रों वाला, शठ, उल्लासी, श्रेष्ठ चानी, विनम्रता-रहित, अल्पधिक मिष्टवादी, कपटी तथा दलित-पण्डित होता है। 'मीन' के 'पूर्व डेढकाण' वाला मधु-नेत्र, गौर-वर्ण, सुभाषी, सुरवी, विनम्र, कृतज्ञ, दानवान् तथा लोकप्रसिद्ध होता है। 'मध्य डेढकाण' वाला 'धनिकों' के उपचार का हारा, पराये-चान का अपभोग करने वाला, सम्बन्धियों की सभारि का आर करे वाला, शानी, सुरवर तथा मिष्ठान्न-प्रिय होता है। 'अन्तिम डेढकाण' वाला बड़े हाथ-पीरों तथा कोमल शरीर वाला, हास्य-कला-प्रिय, श्रेष्ठ अन्न-भोजी तथा मित्रों में श्रेष्ठ होता है।

दिप्यणी-(१) लग्न के 'सप्तश' से भाई के सम्बन्ध में विचार किया जाता है। सप्तश लग्न से तृतीयभाव का स्वामी क्रूर अथवा शुभगृह हो और वह शुभ अथवा पापगृहों से दृष्ट-युक्त हो तो पापगृहों से दृष्ट-युक्त होने पर जातक आनन्द-हीन होता है तथा शुभगृहों से दृष्ट-युक्त होने पर भाई से युक्त होता है। (२) यदि चन्दमा बली हो तो 'चन्दु राशिगत नवश' का फल द्वारा जातक के वर्ण, स्वभाव, स्वरूप आदि का हान उपपा किया जाता है। ऐसा फल चन्दमा के पूर्ण बली होने अथवा नवशपति के बली होने पर ही द्यति होता है। (३) द्वादशशः कुण्डली द्वारा स्त्री का विचार किया जाता है। यदि जातक के जन्म काल में द्वादशश लग्न में सप्तमभाव का स्वामी शुभ अथवा अशुभ हो, क्रूर-दृष्ट अथवा शुभ-दृष्ट हो तो जातक स्त्री-पुत्रों से युक्त होता है। शुभगृह से

युक्त अथवा दृष्ट हो तो जातक की रुका ही स्त्री होती है और कूर-गृह से युक्त अथवा दृष्ट हो तो स्त्री स्वामी दुःख बना रहता है। कादशांश में चन्दुमा की राशि जैसा फल होता है। स्वभाव तथा अङ्गों के लक्षण सप्तांश की भाँति समझने-चाहिए। (४) 'त्रिशांश' कुण्डली से शुभाशुभ मृत्यु के लक्षण के सम्बन्ध में विचार किया जाता है, त्रिशांश लग्न से अष्टम गृह का स्वामी शुभ गृह हो तथा शुभ गृह से युक्त अथवा दृष्ट हो तो नीच-स्थान अथवा शुभ-स्थान में दान-धर्मदि करेण दण्ड मृत्यु होती है। यदि त्रिशांश लग्न से अष्टमभाव का स्वामी कूर गृह हो और वह पाप गृहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो अग्नि, जल आदि के द्वारा अपमृत्यु होती है। उक्त लग्न-सप्तांश, चतुः राशिगत सप्तांश, कादशांश एवं त्रिशांश कुण्डलियों के विस्तृत फलान्देश हेतु हमारे द्वारा सम्पादित 'भृगुसंहिता महाशास्त्र' अथवा अथ ज्योतिष-ग्रंथों का अध्ययन करना चाहिए। विस्तार-भय से उन्हें यहाँ उद्धृत नहीं किया गया है।

अथ चन्दु राशि फलम् - जातक के जन्म के समय चन्दुमा जिस नक्षत्र-राशि में उमठा कर रहा होता है, वही जातक की जन्म-कालीन 'चन्दु-राशि' होती है। अर्थात् जन्म कुण्डली में चन्दुमा जिस राशि पर स्थित हो, वह जातक की 'जन्म-राशि' होगी। 'जन्म-लग्न' तथा 'जन्म-राशि' के अन्तर को ध्यान में रखना आवश्यक है। जातक के जन्म के समय पूर्वो-दिशिज पर, जिस राशि का उदय हो रहा होता है, वह जातक की 'जन्म-लग्न' होती है। जन्म-लग्न का अङ्क जन्म कुण्डली के प्रथम भाग में लिखा जाता है अर्थात् जन्म कुण्डली के प्रथम भाग में जो अङ्क लिखा हो, उस अङ्क वाली राशि ही जातक की 'जन्म लग्न' होती है। जैसे - जन्म कुण्डली के प्रथम भाग में ५ का अङ्क लिखा है तो जातक की जन्म लग्न 'सिंह' होगी और यदि ११ का अङ्क लिखा है तो 'कुम्भ' होगी इत्यादि। परन्तु जन्म कुण्डली के जिस भाग में चन्दुमा स्थित हो, उस भाग में स्थित अङ्क की राशि ही जातक की 'जन्म-राशि' होती है। यथा - जन्म कुण्डली में चन्दुमा

तृतीय भाग में हो और वहाँ ७ का अङ्क लिखा हो तो जातक की जन्म राशि 'तुला' होगी और यदि १२ का अंक लिखा हो तो 'मीन' राशि होगी इत्यादि। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि जातक के जन्म के समय प्रकाशित पर जिस राशि का उदय हो रहा हो, चन्द्रमा भी उसी राशि में उस समय अमण कर रहा होता है। ऐसी स्थिति में जातक की 'जन्म-लग्न' तथा 'जन्म-राशि' दोनों एक ही हो जाती है। यथा जन्म कुण्डली के प्रथम भाग में २ का अङ्क हो तो जातक की जन्म-लग्न 'वृष' होगी तथा उसी भाग में यदि चन्द्रमा भी लिखा हो तो उसकी जन्म राशि भी वृष ही रहेगी। कहने का तात्पर्य यह कि जब जन्म कुण्डली में चन्द्रमा प्रथम भाग में ही स्थित होता है तो जातक की 'जन्म-लग्न' तथा 'जन्म-राशि' एक ही होती है, परन्तु जब चन्द्रमा प्रथम भाग से मिल किसी अन्य भाग में स्थित होता है, तब 'जन्म-लग्न' और 'जन्म-राशि' अलग-अलग हो जाती है। जन्म-लग्न के फलादेश का उल्लेख पहले किया जा चुका है, अब यहाँ जन्म-राशि के फलादेश का उल्लेख किया जा रहा है, जो निम्नानुसार है। यदि जन्म-लग्न तथा जन्म-राशि एक ही हो तो इन दोनों का फलादेश उस जातक पर सम्मिलित रूप से धरित होगा - यह समझना चाहिए। सामान्यतः जन्म-लग्न एवं जन्म राशि के फलादेश में बहुत कुछ साम्य पाया जाता है।

'मेघ' राशि में जन्म लेने वाला जातक स्थूल जीवों तथा चंचल नेत्रों वाला, रिजपो की आनन्द-दायक, धर्म तथा धन का उपार्जन करने वाला, पाप-रहित, परन्तु कृतघ्न, राज्य द्वारा सम्मानित, दानी, पानी से उरने वाला तथा शुचण-कर्म करने के पश्चात् अन्न में नम्र होने वाला होता है। 'वृष' राशि वाला भोगी, दानी, पवित्र, दक्ष, महाबली, परम बुद्धिमान, धनी, जिलासी, तेजस्वी तथा श्रेष्ठ मित्रों वाला होता है। 'मिथुन' राशि वाला सुन्दर, चंचल दृष्टि वाला, लम्बे शरीर काला, गौर-वर्ण, पिपवादी, दयालु, मैथुन-प्रेमी, संगीतज्ञ, कास-रोगी, धनी, कीर्तिमान्, गुणी, कुशल-वक्ता, मेधावी, दृढव्रती, समर्थ तथा न्यायवादी होता है। 'कर्क' राशि वाला

कार्य-पटु, धनी, शूर, धर्मात्मा, गुरु-भक्त, मस्तक-रोगी, दुर्बल-शरीर, परम बुद्धिमान्, कार्य-कुशल, प्रवासी, दुःखी, अपने पार से अनासक्त, कुटिल-स्वभाव तथा अच्छे मित्रों वाला होता है। 'सिंह' राशिवाला मद्य-मांस-सेवी, शीघ्र कुट्ट हो जाने वाला, अमणशील, क्रियासक्त, क्षमाशील, मातृ-पितृ-भक्त, श्रेष्ठ मित्रों वाला, वृद्ध से डरने वाला, असनी, विनम्र तथा लोक-प्रसिद्ध होता है। 'कन्या' राशिवाला मित्रों को आनन्दप्रद, सर्व-प्रिय, जेद-शास्त्र-परायण, नाट्य-सङ्गीत में निरत, वृद्ध-तुल्य, सुन्दर, धर्मात्मा, दक्ष, दानी, विलासी, कवि, प्रवासी तथा दुःखी होता है। 'तुला' राशिवाला अकारण तथा असमय क्रोध करने वाला, दुःखी, अस्थिर-धनी, चंचल-नेत्रों वाला, कृपालु, मृदुभाषी, पार में पराक्रम दिखाने वाला, देव-पूजक, व्यवसाय-कुशल, मित्र-वत्सल, प्रवासी तथा बन्धु-प्रिय होता है। 'वृश्चिक' राशिवाला वात्सवस्था से ही परदेश में रहने वाला, पिङ्गल-वर्ण, नेत्रों वाला, क्रूरत्मा, शूर, मानी, निष्कुर, पर-स्त्रीगामी, साहसी, धनी, अपनी माता के प्रति भी दुर्बुद्धि रखने वाला, जोर, धूर्त तथा अपने लोगों के प्रति कठोर-व्यवहार करने वाला होता है। 'धनु' राशिवाला शूर, सात्विक, धनी, सद्बुद्धि, शिल्पज्ञ, मानी, सच्चरित्र, सुन्दर, प्रियभाषी, तेजस्वी, स्थूल शरीर वाला, लोगों को आनन्द-दायक तथा सुन्दर-पत्नी वाला होता है। 'मकर' राशिवाला स्वकुल में हीन, स्त्री-वशी, पण्डितों से विवाद करने वाला, स्त्रियों को प्रिय, माता को प्रिय, पुत्रवान्, श्रेष्ठ सेवकों वाला, अनेक मित्रों तथा बन्धु-बान्धवों से युक्त, दूसरों से सुख पाने वाला, धनी, त्यागी, दयालु, परन्तु पर-निन्दक होता है। 'कुम्भ' राशिवाला शुभ-दृष्टि वाला, मेढक जैसे बेटे वाला, सौम्य-स्वभाव का, आलसी, दानी, धनी, कृतज्ञ, हाथी-चोड़ा सम्पन्न, धन तथा विद्या-लाभ हेतु निरन्तर प्रयत्नशील, पुण्यात्मा, स्नेह युक्त, पुण्यात्मा तथा निमीक-स्वभाव का होता है। 'मीन' राशिवाला शूर-वीर, शीघ्र गामी, संगीत-प्रवीण, बन्धु-वत्सल, शुभ-चरित्र वाला, गंभीर-चेष्टा वाला, वाक्यपटु, मनुष्यों में श्रेष्ठ, क्रोधी, कृपण, हानि, गुणों के कारण प्रज्ज, स्व-कुल में प्रिय, देवाराधक, बन्धु-वत्सल तथा शुभ-आचरणों वाला होता है।

अथ ग्रह भाव फलम् - जन्म कुण्डली में द्वादश भाव होते हैं। किस भाव में स्थित कौन सा ग्रह का प्रभाव करता है, इसे क्रमशः निम्नानुसार समझना चाहिए -

सूर्य - यदि जन्म कुण्डली के 'प्रथम भाव' अर्थात् लग्न में 'सूर्य' स्थित हो तो जातक अल्पकेशी, कठोर शरीर एवं निर्लज्ज स्वभाव का, आलसी, उच्छृङ्खली, लम्बा, कण्ठ-रोग युक्त, नेत्र-रोगी, शूर-वीर तथा क्षमाशील होता है। यदि लग्न में 'कर्क' राशि हो और उसमें सूर्य स्थित हो तो जातक कमल जैसे नेत्रों वाला होता है, यदि 'मेघ' राशि हो तो स्थिति-हारी होता है; यदि 'सिंह' राशि हो तो 'रक्तैधी' रोग वाला होता है और यदि 'तुला' राशि हो तो दरिद्र एवं नष्ट पुत्रों वाला होता है। यदि सूर्य 'द्वितीय भाव' में स्थित हो तो जातक धन-पुत्र एवं श्रेष्ठ वाहनों से रहित, बुद्धि-हीन, मित्रभावसे रहित तथा पराये घर में रहने वाला होता है। यदि 'तृतीय भाव' में हो तो जातक सधुर-भाषी, धन तथा वाहन सम्पन्न, श्रेष्ठ कर्मों में मन लगाने वाला, सेवकों से युक्त, छोटे भाइयों वाला तथा बलवान् होता है। यदि 'चतुर्थ भाव' में हो तो जातक सुख, वाहन तथा धन से रहित, पितृ-निरोधी एवं अपने घर में न रहने वाला होता है। यदि 'पंचम भाव' में हो तो जातक अल्प-सन्ततिवान्, वनदुर्ग एवं शिव का भक्त, सुख-हीन, श्रेष्ठ कर्म तथा धन हीन तथा भ्रान्त-चिन्त वाला होता है। यदि 'षष्ठ भाव' में हो तो जातक निरन्तर सुखी, शत्रु-नाशक, पराक्रमी, परम तेजस्वी, राजमन्त्री तथा सुन्दर वाहनों वाला होता है। यदि 'सप्तम भाव' में हो तो जातक लक्ष्मी तथा योग्य से हीन, भय तथा रोगों से पीड़ित, दुष्ट-स्वभाव का एवं राज्यकोष द्वारा दुःख ज्ञाने वाला होता है। यदि 'अष्टम भाव' में हो तो जातक मन्द-दृष्टि, बुद्धि-हीन, महाक्रोधी, अल्प-धनी, अनेक शत्रुओं वाला तथा कृषा-अङ्गों वाला होता है। यदि 'नवम भाव' में हो तो धर्म-कर्म-रत, श्रेष्ठ बुद्धिमान्, पुत्र-मित्रादि से सुखी तथा मातृ-निरोधी होता है। यदि 'दशम भाव' में हो तो जातक श्रेष्ठ बुद्धि वाला, धन-वाहन-सम्पन्न, राजा का कृपापात्र, पुत्र-सुखी एवं साधुजनो का उद्वेग करने वाला होता है। यदि 'एकादश भाव' में हो तो जातक संगीत-प्रेमी, श्रेष्ठ कर्म करने वाला, महाधनी, परम यशस्वी तथा राज्यसे

नित्य लाभ पाने वाला होता है। यदि 'द्वादश भाव' में हो तो जातक निस्तेज-नैत्रों वाला अर्थात् मन्द-दृष्टि, लोक-विरोधी तथा पिता से विरोध-बुद्धि रखने वाला होता है।

चन्द - यदि जन्म कुण्डली के 'पुष्प भाव' अर्थात् लग्न में चन्दमा वृष अथवा कर्क राशि का हो तो ऐसा जातक सुन्दर, धनी, भोगी तथा श्रेष्ठ गुणी होता है, परन्तु यदि पुष्प भाव में इनके अतिरिक्त किसी अन्य राशि पर चन्दमा की स्थिति हो तो जातक मूक, बधिर, उन्मत्त अथवा नीच-स्वभाव का होता है। यदि चन्दमा 'द्वितीय भाव' में हो और वह शर्ण-चन्द हो तो जातक सुख, धन तथा पुत्रों से युक्ता श्रेष्ठ स्वभाव का होता है, परन्तु यदि द्वितीय भाव पर चन्दमा 'क्षीण-चन्द' हो तो जातक हकला, धन-हीन तथा बुद्धि-हीन होता है। ऐसा चन्दमा अपनी कला की न्यूनाधिकता के अतुल्य रूप ही न्यूनाधिक भला-बुरा फैल करता है। यदि चन्दमा 'तृतीय भाव' में हो तो जातक हिंसक, कृपण, चमड़ी, अल्प-बुद्धि, बन्धुजनों का आश्रित तथा दया एवं भय-रहित होता है। यदि 'चतुर्थ भाव' में हो तो जातक जलाशय अथवा समुद्री-जगत्प्राय से धनोपापनि करने वाला, कृषि-कर्म-कर्ता, स्त्री तथा वाहन-सुख से सम्मान लेता है। यदि 'पञ्चम भाव' में हो तो जातक जितेन्द्रिय, सत्यवादी, प्रसन्न चित्त, धनी, पुत्रवान् तथा श्रेष्ठ सुख पाने वाला संगृहीत होता है। यदि 'षष्ठ भाव' में हो तो जातक दयाहीन, क्रूर, महा आलसी, कठोर, दुष्ट स्वभाव का, कोपी, अनेक शत्रुओं वाला तथा मंदोग्नि-पीडित होता है। यदि 'सप्तम भाव' में हो तो जातक महा अभिमानी, कामातुर, निर्धन, नम्रता-रहित तथा कुश-शरीर वाला होता है। यदि 'अष्टम भाव' में हो तो जातक अनेक रोगों के कारण कुश-देह वाला, निर्धन, चित्त के उद्वेग से व्याकुल, शत्रु एवं राजा द्वारा संतापित होता है। यदि 'नवम भाव' में हो तो जातक पुराण-प्रेमी, श्रेष्ठ कर्म करने वाला, तीर्थयात्री एवं स्त्री-पुत्र-धनादि से युक्त होता है। यदि 'दशम भाव' में हो तो जातक राजा से धन पाने वाला, सुन्दर, पशस्वी, पराक्रमी, सन्तोषी तथा स्थिर-लक्ष्मी प्राप्त करने वाला होता है। यदि 'एकादश भाव' में हो तो जातक उच्च सम्मान पाने वाला, अनेक प्रकार के वाहनों वाला, प्रसन्नता पाने वाला, यशस्वी तथा श्रेष्ठ गुणी होता है।

यदि 'द्वादश भाव' में हो तो जातक दुष्ट स्वभाव का, मित्र-हीन, महाक्रोधी, अनेक शत्रुओं वाला तथा विकल नेत्रों वाला होता है।

मङ्गल - यदि जन्म कुण्डली के 'पुष्प भाव' (लग्न) में मंगल स्थित हो तो जातक अमित्र-बुद्धि, शरीर में कुछ अथवा चोट के चिह्न वाला, उग्र-हठी, निरन्तर अमरा करने वाला तथा अत्यन्त साहसी होता है। यदि मङ्गल 'द्वितीय भाव' में हो तो जातक तिथि, दुष्ट-बुद्धि, दया-हीन एवं बुरे लोगों से सम्पर्क रखने वाला होता है। यदि 'तृतीय भाव' में हो तो जातक राजा की कृपा एवं सुरों को प्राप्त करने वाला, श्रेष्ठ पराक्रमी, आगे उदार, धनी, परन्तु भ्रातृ-सुर से रहित होता है। यदि 'चतुर्थ भाव' में हो तो जातक मित्रों तथा वाहनों से कष्ट पाने वाला, प्रबल रोगी, परदेशवासि तथा दुर्बल होता है। यदि 'पंचम भाव' में हो तो जातक कष्ट-लाभ से व्याकुल शरीर वाला, अस्थिर-बुद्धि तथा स्त्री, पुत्र एवं मित्रादि के सुर की हानि पाने वाला होता है। यदि 'षष्ठ भाव' में हो तो जातक क्रोधी, शत्रु-नाशक, श्रेष्ठ जनों की सङ्कति करने वाला, कामी तथा प्रबल जठराग्नि वाला अर्थात् बहुभोजी होता है। यदि 'सप्तम भाव' में हो तो जातक अनेक अनर्थ तथा व्यर्थ की चिन्ताओं से क्षीण, शत्रुओं से पीड़ित तथा स्त्री के कारण प्राप्ता होने वाले दुःख से संतप्त बना रहता है। यदि 'अष्टम भाव' में हो तो जातक नेत्रों की विकलता, दुर्गन्ध, रक्त-पीड़ा से पीड़ित तथा नीच-कर्मों में प्रवृत्त एवं दुर्बुद्धि होने के कारण सज्जनों की निन्दा करने वाला होता है। यदि 'नवम भाव' में हो तो जातक हिंसक-प्रवृत्ति का, राज्य से अल्प सम्मान पाने वाला, क्षीण-पुण्य तथा चत-हानि पाने वाला होता है। यदि 'दशम भाव' में हो तो जातक राजतुल्य सुसन्नता पाने वाला, परोपकार करने में उत्साही, दो प्रकार के चार्मों द्वारा लाभ पाने वाला, एवं सुन्दर मणि-आभूषणादि से युक्त होता है। यदि 'एकादश भाव' में हो तो जातक राजा की कृपा, सुन्दर वाहन, परम कौतुक, मङ्गल तथा तँका, मूँगा, स्वर्ण एवं वस्त्रादि का लाभ पाने वाला होता है। यदि मङ्गल 'द्वादश भाव' में हो तो जातक नेत्रों में पीड़ा तथा मित्रों से विरोध पाने वाला, दुर्बल अङ्गों वाला, चत-हानि तथा व्ययन पाने वाला, अल्प तेजस्वी तथा क्रोधी-स्वभाव का होता है।

बुध- यदि जन्म कुण्डली के 'पुण्यभाव' अर्थात् लग्न में 'बुध' की स्थिति हो तो जातक अत्यन्त शान्त स्वभाव का, आचार-विचार धर्म, उदार-हृदय, विनम्र, पण्डित, विद्वान्, कला-मर्मज्ञ तथा बहुत पुत्रों वाला होता है। यदि बुध 'द्वितीय भाव' में हो तो जातक निर्मल स्वभाव का, गुरु-वत्सल, अत्यन्त सुखी, कुशल, शोभावान् तथा उच्चपद पाने वाला होता है। यदि 'तृतीय भाव' में हो तो जातक स्वजनों से युक्त, चित्त-शुद्धि रखे सुख रहित, साहसी तथा स्वच्छा से शुभ-कर्म करने वाला होता है। यदि 'चतुर्थ भाव' में हो तो जातक श्रेष्ठ वाहन तथा धन-धान्य सम्पन्न, खेती में रुचि रखने वाला तथा विद्या एवं आभूषणों को प्राप्त करने वाला होता है। यदि 'पञ्चम भाव' में हो तो जातक पुत्र एवं मित्रों के सुख से युक्त, मन्त्रवाद में कुशल, श्रेष्ठ स्वभाव वाला तथा अनेक लीलाएँ करने वाला होता है। यदि 'षष्ठ भाव' में हो तो जातक मुकद्दमे बाजी में रुचि रखने वाला, रोगी, कठोर हृदय, अनेक उपद्रवों से पीड़ित, महा आलसी तथा व्याकुल चित्त वाला होता है। यदि 'सप्तम भाव' में हो तो जातक श्रेष्ठ स्वभाव का, श्रेष्ठार्थवान्, सत्यवादी, स्त्री-पुत्रादि से युक्त तथा स्वर्ण लाभ प्राप्त करने वाला होता है। यदि 'अष्टम भाव' में हो तो जातक शूलों की कृपा से समस्त सम्पत्तियों को खोने वाला, विरोधी-स्वभाव का, महा अभिमानी तथा अनेक उपानों द्वारा पराये कृत्यों का अपहरण करने वाला होता है। यदि 'नवम भाव' में हो तो जातक परोपकारी, अन्धों का आदर करने वाला, श्रेष्ठ विद्वान्, संसार से मुक्त होने की इच्छा रखने वाला तथा धन-पुत्र-सेवकादि के सुख से युक्त होता है। यदि 'दशम भाव' में हो तो जातक दानवी, बुद्धिमान्, श्रेष्ठ कर्म करने वाला, राजमान्य, अनेक सम्पत्तियों से युक्त तथा सुन्दर लीलाओं सहित वाग्विलास करने वाला होता है। यदि 'एकादश भाव' में हो तो जातक महा धनी, रोगी, विनम्र, निष्ठ आनन्द पाने वाला, श्रेष्ठ स्वभाव का, महाबली तथा अनेक विद्याओं का अभ्यासी होता है। यदि 'द्वादश भाव' में हो तो जातक दयाहीन, मित्रहीन, धूर्त, मलीन, स्व-पक्ष-विजयी तथा अपने काम में चतुर होता है।

गुरु - यदि जन्मकुण्डली के 'पुण्यभाव' अर्थात् लग्न में 'गुरु' (बृहस्पति) की स्थिति हो तो जातक विद्वान्, राजाला-पालक, चतुर, कृतज्ञ, उदार-हृदय तथा सुन्दर शरीर वाला होता है। यदि गुरु 'द्वितीय भाव' में हो तो जातक सुन्दर स्वरूपवान्, विद्या-गुण तथा पशु सम्पन्न, वैर-भाव-रहित, धार्मी, श्रेष्ठ स्वभाव का एवं धर्म-प्राप्ति होता है। यदि 'तृतीय भाव' में हो तो जातक सुहृद-भाव-रहित, कृपण, कृतघ्न, स्त्री-पुत्रों से प्रेम न करने वाला तथा मंदार्थ के कारण अशक्त होता है। यदि 'चतुर्थ भाव' में हो तो जातक अनेक प्रकार के वाहन तथा धन से सम्पन्न, सम्मान पाने वाला एवं राजा की कृपा से सम्पत्ति का लाभ पाने वाला होता है। यदि 'पञ्चम भाव' में हो तो जातक श्रेष्ठ मित्र एवं पुत्रों वाला, श्रेष्ठ मन्त्रज्ञ, अनेक प्रकार के श्रेष्ठ वाहन तथा धन प्राप्त करने वाला एवं कोमल-वाग्द्विपासी होता है। यदि 'षष्ठ भाव' में हो तो जातक तो जातक उत्तम संगीत एवं विद्या में रुचि न रखने वाला, पशु-प्राप्ति का इच्छुक, शत्रु-नाशक तथा सौभाग्य-वर्द्धक कार्य में आलस्य करने वाला होता है। यदि 'सप्तम भाव' में हो तो जातक शास्त्रार्थ-प्राप्ति, विनम्र, स्त्री एवं धन का परम सुख पाने वाला, राजमन्त्री तथा कवि होता है। यदि 'अष्टम भाव' में हो तो जातक दूर-कर्म-कर्ता, मलिन, दीन, अविवाही, नष्टता-रहित, आलसी तथा कुश-शरीर वाला होता है। यदि 'नवम भाव' में हो तो जातक राजमन्त्री, धर्मार्थ, पलकर्ता, 'सम्पूर्ण शास्त्रों' का ज्ञान, शत्रु तथा आह्वान-सेवक होता है। यदि 'दशम भाव' में हो तो जातक राज-चिह्नों को धारण करने वाला, श्रेष्ठ वाहन सम्पन्न, अनेक प्रकार से पशु पाने वाला तथा स्त्री, पुत्र, मित्र एवं धन के सुख से सुरक्षित रहना है। यदि 'एकादश भाव' में हो तो जातक अल्पज्ञ समर्थ, धन-लाभ पाने वाला, राजा का कृपापात्र तथा श्रेष्ठ वस्त्र एवं वाहनों से सम्पन्न, पशुस्वी होता है। यदि 'द्वादश भाव' में हो तो जातक अनेक प्रकार के चित्तोद्वेगों के कारण कोप करने वाला, धार्मी, आलसी, निर्लज्ज, बुद्धि-हीन तथा मान-रहित होता है।

शुक्र - यदि जन्म कुण्डली के 'पुण्यभाव' अर्थात् लग्न में 'शुक्र' की स्थिति हो तो जातक श्रेष्ठ

स्वभाव का, मधुरभाषी, अनेक कलाओं का हारा, राजमान्य, पत्नी तथा श्रेष्ठ स्त्री के साथ काम-क्रीड़ाएँ करनेवाला होता है। यदि शुक्र 'द्वितीय भाव' में हो तो जातक श्रेष्ठ अन्न-पानादि का प्रेमी, श्रेष्ठ वस्त्र-आभूषण-धान-वाहनादि से सम्पन्न तथा विचित्र-विद्याओं का हारा होता है। यदि 'तृतीय भाव' में हो तो जातक कृषा-भद्रों वाला, कृपण, दुष्ट-चित्त, धनहीन, काम-पीड़ित, श्रेष्ठजनों को बलादायक तथा अपना बलोरा व्यवहार करने वाला होता है। यदि 'चतुर्थ भाव' में हो तो जातक देव-पूजक, निष्प आनन्द मनाने वाला तथा मित्र, ग्राम, भूमि, श्रेष्ठ वाहन तथा अन्य अनेक प्रकार के सुख प्राप्त करने वाला होता है। यदि 'पञ्चम भाव' में हो तो जातक समस्त काव्य-कलाओं से अलंकृत, उच्च राज्य-सम्मान पाने वाला तथा पुत्र, वाहन एवं धन-धान से युक्त होता है। यदि 'षष्ठ भाव' में हो तो जातक स्त्रियों को अधिप, काम-हीन, निर्बल तथा शत्रुओं से भयभीत रहने वाला है। यदि 'सप्तम भाव' में हो तो जातक अनेक कलाओं में कुशल, जल-क्रीड़ा-प्रेमी, रति-विलास में आप्त, पुत्री तथा परम चञ्चल स्वभाव वाली स्त्री के साथ प्रेम करने वाला होता है। यदि 'अष्टम भाव' में हो तो जातक पसन-सुख, राजा द्वारा सम्मानित, शत्रु, वामपुत्री, निःशङ्क, बहुभाषी तथा कदाचित् स्त्री-पुत्र की चिन्ता से युक्त होता है। यदि 'नवम भाव' में हो तो जातक आदिष्टि, गृह एवं देव-पूजक, तीर्थारत में धन व्यय करने वाला, निष्प धन तथा वाहन का सुख पाने वाला, क्रोध-रहित तथा मुनियों जैसा जेष्ठ पारण करने वाला होता है। यदि 'दशम भाव' में हो तो जातक सुख, सौभाग्य एवं सम्मान से युक्त, सुन्दर, स्नान-पूजन-ध्यानादि में चित्त लगाने वाला तथा स्त्री-पुत्र से निष्प विशेष स्नेह करने वाला होता है। यदि 'एकादश भाव' में हो तो जातक सुन्दर गीत-नृत्यादि में रुचिर रहने वाला, निष्प यात्रा की चिन्ता करने वाला, श्रेष्ठ कर्म, धर्म तथा वेदाध्ययन में चित्तवृत्तियों को लगाने वाला होता है। यदि 'द्वादश भाव' में हो तो जातक श्रेष्ठ कर्मों का प्राप्ति तथा उनका विरोधी कामी एवं दया तथा साथ से विमुख होता है।

शनि - यदि जन्म कुण्डली के 'प्रथम भाव' अर्थात् लग्न में 'शनि' की स्थिति हो तो जातक नीच, रोगी तथा दरिद्र होता है, परन्तु यदि लग्न में तुला, मकर अथवा कुंभ राशि हो तो जातक पुर अथवा देश का स्वामी होता है। यदि शनि 'द्वितीय भाव' में हो, परन्तु वह स्वक्षेत्री अथवा उच्च राशि का न हो तो जातक व्यसनी, स्वजनो से परित्यक्त तथा विदेश में राज-सम्मान एवं वाहन जाने वाला होता है, इसके विपरीत हानिकर सिद्ध होता है। यदि 'तृतीय भाव' में हो तो जातक ग्राम का स्वामी, अल्पतः पराक्रमी, श्रेष्ठ वाहन सम्पन्न, राज्य द्वारा सम्मानित तथा अनेक लोगों का पालन करने वाला होता है। यदि 'चतुर्थ भाव' में हो तो जातक वात-पित्त के कारण क्षीण-बली, खोटे स्वभाव का, आलसी, लड़ाई के कारण दुर्बल अङ्गों वाला तथा धनहीन होता है। यदि 'पंचम भाव' में हो तो जातक वात-पित्तादि के कारण निच रोगी तथा क्षीण शरीर वाला, धनहीन, काम-शक्ति-हीन तथा पुत्र को पीड़ा-कारक होता है। यदि 'षष्ठ भाव' में हो तो जातक शत्रु-समूह पर विजय पाने वाला, कुण्डल, श्रेष्ठ कर्मों का दाता, प्रबल जठ राशि वाला, महाबली, पुष्ट-शरीर तथा अनेक लोगों का पालक होता है। यदि 'सप्तम भाव' में हो तो जातक रोग के कारण दुर्बल; स्त्री, घर तथा अन्न की चिन्ता से दुःखी, उपजीविका-रहित तथा लोगों से मेल-मिलाप-रहित होता है। यदि 'अष्टम भाव' में हो तो जातक कुश-शरीर, खराब-रोगों से पीड़ित, असन्तोषी एवं आलसी होता है। यदि 'नवम भाव' में हो तो जातक धर्म-कर्म-युक्ता, व्याकुल-अङ्गों वाला, दुर्बुद्धि, अत्यधिक तर्क करने वाला तथा मनमानी करने वाला होता है। यदि 'दशम भाव' में हो तो जातक राजमन्त्री, नीतिज्ञ, विनम्र, चतुर, धनी तथा ग्राम एवं नगरों का शासन-अधिकारी होता है। यदि 'एकादश भाव' में हो तो जातक कृष्ण-वर्ण; अश्व, नीलमणि, ऊर्ण-वस्त्र तथा हाथियों का काम पाने वाला होता है, परन्तु यह सभी संभव है, जबकि शनि बलवान् हो, अथवा सामान्य-लाभ प्राप्त होते हैं। यदि 'द्वादश भाव' में हो तो जातक दयाहीन, धनहीन, अङ्गहीन, सुखहीन, नीचों की संगति करने वाला तथा आलसी और व्यय के कारण निरन्तर पीड़ित बना रहने वाला होता है।

राहु - यदि जन्मकुण्डली के 'पञ्चम भाव' अर्थात् लग्न में राहु की स्थिति हो तो जातक दुष्ट-स्वभाव का, दुष्ट-बुद्धि, सम्बन्धियों को ठगने वाला, शिर-पीड़ा युक्त, रोगी तथा विवाद में विजय पाने वाला होता है। यदि राहु 'द्वितीय भाव' में हो तो जातक कठोर-कर्मा, धन-नाशक, दरिद्र तथा निश्चित रूप से असमर्थ होता है। यदि 'तृतीय भाव' में हो तो जातक शत्रुओं के श्रेष्ठों को नष्ट करने वाला, लोक में पशस्वी, सुख एवं विलास का नाशक, कल्याण तथा श्रेष्ठों को प्राप्त करने वाला, भाइयों को हृत्पुकारक, पशु-नाशक, दरिद्र, नित्य सुख पाने वाला तथा श्रेष्ठ पशुधर्मी होता है। यदि 'चतुर्थ भाव' में हो तो जातक को स्वयं तथा उसके पुत्र एवं मित्रों को सुख नहीं मिलता, साथ ही वह निरन्तर असमर्थ भी करता रहता है। यदि 'पञ्चम भाव' में हो तो जातक सुख-हीन, मित्र-हीन, उदर-शूल-रोगी, विलास में पीड़ा पाने वाला तथा युक्ति-मति वाला होता है। यदि 'षष्ठ भाव' में हो तो जातक शत्रु-नाशक, अल्पता बलवान्, धन-लाभ पाने वाला, कमर में दर्द पाने वाला, पशुओं के लिए पीड़ा का कृत तथा म्लेच्छों की संगति करने वाला होता है। यदि 'सप्तम भाव' में हो तो जातक स्त्री-विरोधी अथवा स्त्री-नाशक, पुत्रों को धनवाली स्त्री का प्रति अथवा स्त्री से विवाद करने वाला अथवा कृष्ण-स्त्री को पाने वाला होता है। यदि 'अष्टम भाव' में हो तो जातक को बुढ़ा-पीड़ा, प्रमेह अथवा जठर-वृद्धि रोग होते हैं, वह शत्रुओं से व्याकुल बना रहता है अथवा नाश को प्राप्त होता है। यदि 'नवम भाव' में हो तो जातक धर्म तथा धन नाशक, असमर्थ, दरिद्र, सम्बन्धियों का अल्प सुख पाने वाला, पीड़ा युक्त एवं अल्प-सुखी होता है। यदि 'दशम भाव' में हो तो जातक पित्र-सुख-हीन, दुर्भाग्यशाली, रोगी, धन-पीड़ित, धन-हीन तथा शत्रु-नाशक होता है। यदि दशम भाव में मीन राशिस्थ राहु हो तो जातक कष्ट भोगने वाला होता है। यदि 'एकादश भाव' में हो तो जातक को धन तथा सुख का विशेष लाभ होता है, राजकुल से सुख, वस्त्र, स्वर्ण, धन एवं चतुष्टयों की प्राप्ति होती है। सर्वज्ञ मनोरथ-सिद्धि एवं विजय मिलती है। यदि 'द्वादश भाव' में हो तो जातक नेत्र-रोगी, धन में आघात पाने वाला, बड़ा उपेक्षित, दुष्ट प्रेम करने वाला, दुष्टों का सेवक तथा मध्यम लोगों का सेवक होता है।

केतु - यदि जन्म कुण्डली के 'पुण्य भाव' अर्थात् 'लग्न' में केतु की स्थिति हो तो जातक सूत्रकर्ता, रोगादि से भय-प्राप्त, व्यग, स्त्री-पुत्र की चिन्ता से युक्त, महान् उद्वेग पाने वाला तथा शरीर में वात-बीड़ा से दुःखी होता है। यदि केतु 'द्वितीय भाव' में हो तो जातक का धन-धान्य नष्ट होता है तथा कुटुम्बियों से विरोध मिलता है। राजा के द्वारा धन की चिन्ता होती है तथा सदैव रोगी बना रहता है। परन्तु द्वितीयस्थ-केतु यदि स्वक्षेत्री अथवा शुभगृह के क्षेत्र में हो तो सब प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं। यदि 'तृतीय भाव' में हो तो जातक शत्रु-नाशक, शत्रुओं से विवाद करने वाला, भ्रातृ-नाशक, बाहु-पीड़ा युक्त तथा धन, भोग, श्रेष्ठार्थ एवं तेज सम्पन्न होता है; परन्तु यदि तृतीयस्थ-केतु उच्चराशि का हो तो जातक सुरकी एवं संसार से उदासीन रहता है। यदि 'चतुर्थ भाव' में हो तो जातक को माता का सुख प्राप्य नहीं मिलता तथा उसके मित्र, पिता एवं भाइयों का भी नाश होता है; परन्तु यदि चतुर्थस्थ-केतु अपनी उच्चराशि वृश्चिक अथवा सिंह राशि का हो तो जातक को माता-पिता-मित्रादि का सुख तो मिलता है, परन्तु वह चिरस्थायी नहीं होता, साथ ही जातक का चित्त भी सदैव उदास बना रहता है। यदि 'पंचम भाव' में हो तो जातक पेट में आघात आदि लगेने के कारण कष्ट पाना है। वह स्व-सम्बन्धियों से प्रेम करने वाला, अल्प पुत्रवान्, सदैव कल्याण युक्त तथा बलवान् होता है। यदि 'षष्ठ भाव' में हो तो जातक शत्रु-नाशक, मामा के पक्ष से मान-भुज्ज पाने वाला अर्थात् अपमानित, चतुष्पदों का सुख एवं धन-पाने वाला, व्याधि-रहित, आरोग्यवान् तथा हृदयशरीर वाला होता है। यदि 'सप्तम भाव' में हो तो जातक निरन्तर यात्राएं करता रहता है तथा शत्रुओं के कारण उसके धन का नाश होता रहता है। परन्तु यदि सप्तमस्थ-केतु 'वृश्चिक' राशि का हो तो वह सदैव लाभ देता है, साथ ही स्त्री-चिन्ता से चित्त को चिन्तित भी बनाये रहता है। यदि केतु 'अष्टम भाव' में हो तो जातक गुदा-रोगी होता है, परन्तु यदि अष्टमस्थ-केतु वृश्चिक, कन्या, मिथुन, मेष अथवा वृष राशि का हो तो बहुत धन का लाभ होता है। यदि 'नवम भाव' में हो तो जातक के क्लेश दूर होते हैं, वह पुत्रेच्छुक तथा म्लेच्छ-सहयोग से भाग्य-वृद्धि का एक होता है। उसे किसी

प्रकार की बीड़ा तथा बाहु-रोग भी होता है। यदि 'दशम भाव' में हो तो जातक धिंत-सुर-हीन, रक्वोटे भाण वाला, रोगी वाहन-पीड़ित, वात-विकारी तथा अनेक शत्रुओं का नाशक होता है। परन्तु यदि दशमस्थ-केतु कन्या राशि का हो तो जातक को सुर-दुःख-दोनों की प्राप्ति होती है। यदि 'एकादश भाव' में हो तो जातक सुभाषी, श्रेष्ठ विद्वान्, सुदर्शन, श्रेष्ठ भोग प्राप्त करने वाला, श्रेष्ठ वस्त्र धारण करने वाला, गुदा-रोगी, तैजस्वी तथा खोटी सन्तान वाला होता है। यदि द्वादश भाव में हो तो जातक के पाँच तथा नेत्रों में बीड़ा रहती है। वह राजा के समान रख-चौकीला, शत्रु-नाशक अशान्त-चित्त तथा वास्तव अथवा गुदा सम्बन्धी रोग से पीड़ित रहता है।

टिप्पणी— (१) विद्वानों का कथन है कि 'बाहु' का फल 'शान्ति' जैसा ही होता है। (२) जो गृह अपनी उच्च राशि में होता है, वह पूर्ण फल देता है। जो गृह स्वराशि अथवा मित्र-राशि में हो, वह भाव का आधा फल देता है। जो गृह शत्रु-राशि में हो वह चतुर्थांश फल देता है और जो गृह अस्त होता है अर्थात् सूर्य के समान अंशों पर होता है अथवा नीच-राशिस्थ होता है, वह किञ्चिन्मात्र भी भाव-फल नहीं देता (परन्तु मंगल आदि गृह इसके अपवाद भी हैं)।

अथ द्वादश भावगत राशि फलम्— जन्म कुण्डली के द्वादश भावों में स्थित विभिन्न राशिओं का प्रभाव निम्नानुसार समझना चाहिए—

'पुण्य भाव'— अर्थात् लग्न में द्वादश-राशिओं की स्थिति का प्रभाव इस प्रकार होता है— यदि लग्न में 'मेघ' राशि हो तो जातक रक्त-गौर-वर्ण, कफ-प्लुति, कोधी-स्वभाव का, हृत्पथ, मृदु-बुद्धि, स्थिर-प्लुति वाला तथा स्त्री एवं सेवकों के समक्ष पराजय स्वीकार करने वाला होता है। यदि 'वृष' राशि हो तो जातक मानसिक-रोग ग्रस्त, स्वजनो से अपमानित, मित्रों का विपरीत पाने वाला तथा कलह, दुःख, शस्त्राघात एवं धन-हानि के कारण दुःख पाने वाला होता है। यदि 'मिथुन' राशि हो तो जातक गौर-वर्ण, स्त्री-आसक्त, राजा से पीड़ित, दूर-कर्म करने वाला,

प्रसन्न-चित्त, प्रियवादी, विनम्र, सुन्दर केशों वाला तथा संगीतज्ञ होता है। यदि 'कर्क' राशि हो तो जानक गौर-वर्ण, पित्त-प्रकृति, छोटे, जल-क्रीड़ा-प्रेमी, अल्पना बुद्धिमान्, दानी, प्रेमी, पवित्र, क्षमाशील, चर्माला तथा सेवकों द्वारा सुश्रुत होता है। यदि 'सिंह' राशि हो तो जानक पाण्डु-वर्ण, पित्त तथा वात प्रकृति, वीरित-अङ्ग, मांस-प्रेमी, रम्य-रसिक, तीक्ष्ण-स्वभाव, शूर, प्रगल्भ तथा भ्रमणशील होता है। यदि 'कन्या' राशि हो तो जानक कंक-पित्त प्रकृति, सुशील, चानी, उरपोक, मायावी, काम-वीरित, स्त्री-वशी तथा रिजों जैसे स्वभाव वाला होता है। यदि 'तुला' राशि हो तो जानक कंक-प्रकृति, राजमान्ध, देवाराधक, सत्यवादी तथा पर-स्त्री-प्रेमी होता है। यदि 'वृश्चिक' राशि हो तो जानक कृद्-तुल्य दीखने वाला, क्रोधी, राजमान्ध, गुणी, शास्त्र में रुचि रखने वाला तथा शत्रु-मर्दक होता है। यदि 'धनु' राशि हो तो जानक राजा का पिप, अन्नारोही, छोटे जैसी जाँघों वाला, कालरात्रि देवताओं का भक्त तथा कार्य-कुशल होता है। यदि 'मकर' राशि हो तो जानक कंक-वात-वीरित अङ्गों वाला, लम्बे शरीर का, चर्त, ठग, जल-प्रेमी, तीव्र-स्वभाव का, उरपोक तथा पापाचारी होता है। यदि 'कुम्भ' राशि हो तो जानक स्थिर-स्वभाव, वात-प्रकृति, छोटे कद का, जल-क्रीड़ा-प्रेमी, विद्वान्, लोकप्रिय तथा रिजों को प्रिय होता है। यदि 'मीन' राशि हो तो जानक जल-प्रेमी, सुरत-प्रेमी, पिताधिकार-प्रकृति का, कुश-शरीर, विनम्र, विद्वान् तथा कर्मिष्ठान् होता है।

'द्वितीय भाग' अर्थात् 'धन' भाग में द्वादश राशियों की स्थिति का उभाव इस प्रकार होता है - यदि द्वितीय भाग में 'मेघ' राशि हो तो जानक अनेक प्रकार के धर्म-कर्म करने वाला, नीतिपूर्वक धनोपार्जन करने वाला तथा श्रेष्ठ स्वभाव का होता है। उसके पुत्र भी नीति-निपुण, धन-वाहनादि से युक्त तथा विद्वान् होते हैं। यदि 'वृष' राशि हो तो जानक कृषि-कर्म से धनोपार्जन करने वाला, गाय-भैंस तथा अन्य चतुष्पदों सहित स्वर्ण, रत्नादि का निर्दिष्ट लाभ प्राप्त करने वाला होता है। यदि 'मिथुन' राशि हो तो जानक रिजों की सहायता से स्वर्ण,

चाँदी एवं चतुष्पदादि का लाभ पाने वाला साधुजनों की संगति पाने वाला होता है। यदि 'कर्क' राशि हो तो जातक को जल में डूबने का भय रहता है तथा लकड़ी के ज्वनसाध से लाभ कमाता है। उसके द्वारा नीतिद्वर्क उपाधि-इका का उपभोग उसके मित्रगण करते हैं तथा पुत्र भी उस धन से सुख प्राप्त करते हैं, परन्तु वह स्वयं स्वीकार्य धन का उपभोग नहीं कर पाता। यदि 'सिंह' राशि हो तो जातक वनोत्पन्न-वस्तुओं तथा वन्य-जन्तुओं द्वारा धनोपार्जन करता है तथा स्व-पराक्रम से लाभ उठाता है। उसका धन परोपकार में व्यय होता है। यदि 'कन्या' राशि हो तो जातक राजा द्वारा स्वर्ण, रौप्य, हीरा-मौली, अश्व-गज आदि का लाभ प्राप्त करता है। यदि 'तुला' राशि हो तो जातक पुष्पात्मा होता है तथा अपने पुष्प-पुष्पाध से ही उच्चर धनोपार्जन करता है। उसे पत्थर, मिट्टी तथा धातु आदि के व्यवसाय से भी पर्याप्त लाभ होता है। यदि 'वृश्चिक' राशि हो तो जातक स्व-धर्म निष्ठ, स्त्री-प्रेमी, विचित्र-विनोद युक्त वार्तालाप करने वाला तथा देव-प्राण-भक्त होता है। यदि 'धनु' राशि हो तो जातक शिपर कपौ, अनेक प्रकार के चतुष्पदों तथा वसोदभूत वस्तुओं द्वारा धन एवं यश का लाभ पाने वाला होता है। वह धर्म-कर्म हेतु धन का संचय भी करता है। यदि 'मकर' राशि हो तो जातक अनेक प्रकार के उपेक्षों, राजा की सेवा, कृषि-कर्म तथा विदेश-यात्रा द्वारा धनोपार्जन एवं संग्रह करने वाला होता है। यदि 'कुम्भ' राशि हो तो जातक फल-फूल एवं जलोत्पन्न वस्तुओं द्वारा धनोपार्जन कर, साधुओं को दिवदाने वाला तथा परोपकारी होता है। यदि 'मीन' राशि हो तो जातक वृत्त-उपवास तथा विद्या आदि के प्रभाव से, भूमिगत-द्रव्य की खोज से अथवा माता-पिता द्वारा उपाधि-धन का लाभ पाने वाला होता है।

'तृतीय भाव' अर्थात् 'सहज भाव' में द्वादश राशियों की स्थिति का प्रभाव इस प्रकार होता है—
यदि तृतीय भाव में 'मिथु' राशि हो तो जातक ब्राह्मणों का द्वितीय, पुराण-श्रवण में रुचि रखने वाला, पवित्र, परोपकारी, राजमान्य तथा अनेक विद्याओं का ज्ञान होता है। यदि 'वृष' राशि हो तो जातक अत्यन्त धनवी,

राजा का मित्र, ब्राह्मणों का भक्त, दानी, यशस्वी, पण्डित तथा कवि होता है। यदि 'मिथुन' राशि हो तो जातक उदार, उत्तम वाहन सन्धक, रिजियों को प्रिय, सत्पकारी, लोकप्रिय तथा स्व-कुल में प्रेष्ठ होता है। यदि 'कर्क' राशि हो तो जातक व्यापारियों का मित्र, कृषि-कर्म-कर्ता, चर्माला, सुशील तथा लोकप्रिय होता है। यदि 'सिंह' राशि हो तो जातक शूर-वीर, कुत्सित मित्रों वाला, हिंसक, धन-लोलुप, कठोर भाषी, पाप-कर्मों में रुचि रखने वाला, गौरवशाली तथा अहंकारी होता है। यदि 'कन्या' राशि हो तो जातक अनेक मित्रों वाला, मित्रों की सहायता से धन-संग्रह करने वाला, ब्राह्मणों का प्रिय, शास्त्राभ्यासी, सुशील तथा देव-गुरु भक्त होता है। यदि 'तुला' राशि हो तो जातक चंचल-चित्त, पापियों का मित्र तथा अपने छोटे बच्चों के साथ ही हास-परिहास की बातें करने वाला होता है। यदि 'वृश्चिक' राशि हो तो जातक पापी तथा दरिद्रों का मित्र, कुतर्क, कलह, अल्पवर्षित, स्व-लोक-विरोधियों से प्रेम-सम्बन्ध रखने वाला होता है। यदि 'धनु' राशि हो तो जातक राजमन्त्री, राजसेवक, शूर-वीर, चर्मचणकरी, हृदयकर्मक-वाक्य बोलने वाला, पुष्ट-कुशल, दयालु तथा सदैव प्रसन्न रहने वाला होता है। यदि 'मकर' राशि हो तो जातक सदैव प्रसन्न-मुख, अद्वितीय विद्वान्, देव-गुरु-भक्त, पुत्रवान् तथा महाधनी होता है। यदि 'कुम्भ' राशि हो तो जातक वृत्ती, यशस्वी, सुशील, धर्माशील, संगीत-प्रिय, सत्पकारी तथा दुष्टजनों से भी मित्रता रखने वाला होता है। यदि 'मीन' राशि हो तो जातक पुण्यवान्, पुत्रवान्, धनवान्, अतिथि-भक्त तथा सर्वप्रिय होता है।

'चतुर्थ भाग' अर्थात् 'सुरव' भाग में द्वादश राशियों की स्थिति का उभाव इस प्रकार होता है— यदि 'चतुर्थ भाग' में 'मेघ' राशि हो तो जातक चतुष्पदों, रिजियों तथा स्वोपाधि-धन द्वारा अनेक प्रकार के अन्न-पानादि भोगों का सुख प्राप्त करता है। यदि 'वृष' राशि हो तो जातक सम्मान्य तथा अन्य लोगों से भी सुख प्राप्त करता है, साथ ही वह स्व-पराक्रम तथा राज-सेवा आदि अन्य उपायों से भी सुख पाता है।

यदि 'मिथुन' राशि हो तो जातक जल-क्रीडा, वन-भ्रमण, पुष्प-वस्त्रादि एवं रिश्वों से अनेक प्रकार के सुख-लाभ प्राप्त करता है। यदि 'कर्क' राशि हो तो जातक सुन्दर, सौभाग्यशाली, रिश्वों को प्रिय, सुशील, सर्वगुण-सम्पन्न तथा विद्वान् होता है। यदि 'सिंह' राशि हो तो जातक कन्या-सन्तानिलास, दरिद्रों के साध रहने वाला, शील-रहित तथा अल्पजन्तु कोष करने के कारण कमी सुखी न रहने वाला होता है। यदि 'कन्या' राशि हो तो जातक धन पाकर दुष्टों का साध करने वाला, चुगुलबोरो का मित्र तथा चोरी एवं मारण-मोहन आदि क्रियाओं के कारण दुःख पाने वाला होता है। यदि 'तुला' राशि हो तो जातक सरल-स्वभाव, सत्कर्म-कुशल, विद्या-विनीत, सदा सुखी, प्रसन्न-चित्त तथा चनी होता है। यदि 'वृश्चिक' राशि हो तो जातक तीक्ष्ण-स्वभाव का, विपत्ति युक्त, दूसरों से डरने वाला, अनेक लोगों का सेवक, शत्रुओं द्वारा प्रताड़ित, कार्य-कुशल तथा बुद्धिमानों से दूर रहने वाला होता है। यदि 'धनु' राशि हो तो जातक युद्ध-कार्य, युद्ध-चिन्तन, छोड़ों की देखभाल तथा स्वप्रपत्नों द्वारा सुख पाने वाला होता है। यदि 'मकर' राशि हो तो जातक जल-विहार, वन-उपवनादि में भ्रमण, मित्रों के उपचार तथा सुरत-क्रिया आदि से सुख पाता है। यदि 'कुम्भ' राशि हो तो जातक फल-शाक आदि से, रिश्वों के आग्रह से तथा उत्साह-वर्द्धक वाक्य-चातुर्य से सुख पाने वाला होता है। यदि 'मीन' राशि हो तो जातक सुखी, मदगामी तथा स्व-पराक्रम एवं देवताओं की कृपा से अनेक प्रकार के सुख प्राप्त करने वाला होता है।

'पञ्चम भाव' अर्थात् 'सुत-भाव' में द्वादश राशियों की स्थिति का प्रभाव इस प्रकार होता है- यदि 'पञ्चम भाव' में 'मेघ' राशि हो तो जातक मित्रों, पुत्रों, प्रियजनों एवं देवताओं की सेवा से सुख पाता है तथा पाप-कर्म में पड़ कर व्याकुल-चित्त भी बना रहता है। यदि 'वृष' राशि हो तो जातक को सुन्दरी, सौभाग्यवती, लालच-वती, पति-पराधना, परन्तु सन्तानहीन कन्या की प्राप्ति होती है। यदि 'मिथुन' राशि हो तो जातक को प्रसन्न, सुखी, सुशील, गुणीजनों से प्रेम करने वाले तथा बलवान् पुत्र प्राप्त होते हैं। यदि 'कर्क' राशि हो तो

जातक के पुत्र अश्वि, पशस्वी, उदार, धनी, विनम्र तथा पिता को सुख देने वाले होते हैं। यदि 'सिंह' राशि हो तो जातक के पुत्र क्रूर-स्वभाव वाले, सुन्दर नेत्रों वाले, मत्स्य-मांस-प्रेम, कन्या-सन्तति वाले, तीव्र-स्वभाव वाले, विदेश-वासी तथा क्षुधातुर होते हैं। यदि 'कन्या' राशि हो तो जातक के कन्यायें अधिक होती हैं और वे पुत्रहीन, पतिव्रता, कार्य-कुशला, निष्पाप तथा आभूषण-प्रेमी होती हैं। यदि 'तुला' राशि हो तो जातक के पुत्रादि सुन्दर, सुशील, सुन्दर नेत्रों वाले तथा कार्य-दक्ष होते हैं। यदि 'वृश्चिक' राशि हो तो जातक के पुत्र अप्रवृत्त, सुशील, निर्दोष, विनीत तथा स्व-धर्म-पालक होते हैं। यदि 'धनु' राशि हो तो जातक के पुत्र अश्व-वाहनादि रखने वाले, शत्रुजघी, शास्त्र-विद्या में निपुण, राजा से सम्मान पाने वाले, सेवा-कर्म के अनुभवी तथा अनेक गुणयुक्त होते हैं। यदि 'मकर' राशि हो तो जातक के पत्नी, कुरुप, नपुंसक, दुष्ट, प्रभावहीन, निष्ठुर तथा प्रेम-रहित होते हैं। यदि 'कुम्भ' राशि हो तो जातक के पुत्र स्थिर-स्वभाव, सत्यवादी, सुप्रसिद्ध, पशस्वी, पुण्यवान् तथा कष्ट-सहिष्णु होते हैं। यदि 'मीन' राशि हो तो जातक के पुत्र सुन्दरखाँदित-भक्त होते हैं, परन्तु यदि पंचमभाक में कोई पाप-गृह बैठा हो तो वे रोगी, कुरुप तथा स्त्री सहित पापी होते हैं।

'बल्लभा' अर्थात् 'रिपु' भाव में द्वादश राशियों की स्थिति का प्रभाव इस प्रकार होता है— यदि बल्लभा में 'मेघ' राशि हो तो जातक लोगों से स्वयं शत्रुता करने वाला होता है। यदि 'वृष' राशि हो तो जातक की अपनी सन्तान, स्त्री अथवा बन्धु-वर्ग से शत्रुता होती है। यदि 'मिथुन' राशि हो तो जातक की अपनी पत्नी, पापी लोग, वैश्य तथा नीचों से शत्रुता होती है। यदि 'कर्क' राशि हो तो जातक की अपने पुत्र तथा अन्य लोगों के आग्रह के कारण ब्राह्मण, राजा तथा बड़े लोगों से शत्रुता होती है। यदि 'सिंह' राशि हो तो जातक की अपने पुत्रों तथा बन्धु-जन से शत्रुता होती है अथवा पर-रिजों के संग के कारण उसकी समस्त सम्पत्ति नष्ट हो जाती है। यदि 'कन्या' राशि हो तो जातक जातक की

किसी से शत्रुता तो नहीं होती, परन्तु दुराचारिणी, नीच अथवा वैश्या स्त्री के संसर्ग के कारण उसका धन
 नष्ट होता है। यदि तुला राशि हो तो जातक धन के पृथ्वी में गाढ़ कर रखने के बजाय अथवा धर्म-कर्म, साधु-सेवा
 या प्रोपकार में खर्च करने वाला होता है, जिसके कारण घरवाले ही उससे शत्रुता रखते हैं। यदि 'वृश्चिक' राशि
 हो तो जातक को सर्प-बिच्छ, सरीसृप, व्याध, सिंह आदि वन्य-जन्तुओं, युगुलरों तथा चोरों से भय होता है
 तथा प्रतिष्ठित एवं विलासी मनुष्यों से शत्रुता होती है। यदि 'धनु' राशि हो तो जातक की घोड़ा, हाथी, शास्त्र-
 चारी, रागी तथा दुष्कामालों से शत्रुता होती है। यदि 'मकर' राशि हो तो जातक की धन के कारण अपने
 हिन्दू लोगों से भी शत्रुता होती है और कभी किसी सज्जन-पुरुष की सहायता करने के कारण से भी अपने
 घर के लोगों से ही शत्रुता हो जाती है। यदि 'कुम्भ' राशि हो तो जातक की जल-जन्तुओं, राजा तथा बड़े
 लोगों से शत्रुता होती है और उसे बाघी-रूप जलाशय आदि से भय भी प्राप्त होता है। यदि 'मीन' राशि
 हो तो जातक की अपने स्वार्थ के कारण अपने ही पुत्रों, स्त्री तथा अन्य हिन्दू लोगों से शत्रुता होती है।

'सप्तम भाव' अर्थात् 'जाया' भाव में द्वादश राशियों की स्थिति का प्रभाव इस प्रकार
 होता है— यदि सप्तम भाव में 'मेघ' राशि हो तो जातक की स्त्री दुष्टा, क्रूर, पापिनी, कठोर स्वभाव की
 निर्दय तथा धन-लोलुप होती है। यदि 'वृष' राशि हो तो जातक की पत्नी सुन्दर, मधुरभाषिणी, गृह-कार्य-चतुर
 शान्त-स्वभाव, पतिव्रता, कलाओं की जानकार तथा देव-बालक-भक्त होती है। यदि 'मिथुन' राशि हो तो
 जातक की पत्नी धनवती, रूपवती, सदा-चारिणी, सर्वगुण सम्पन्ना, कोमल-स्वभाव तथा गण-वर्जिता होती है। यदि
 'कर्क' राशि हो तो जातक की पत्नी सुन्दरी, सौभाग्यवती, उसने-दृष्ट, भगद से उरने वाली तथा पति की कलाका-
 रिणी होती है। यदि 'सिंह' राशि हो तो जातक की स्त्री तीव्र-स्वभाव की, क्रूर, दुष्ट, अंगार-विहीता, धन-
 लोलुप, बड़ा काम करने वाली तथा दुर्बल-शरीर की होती है। यदि 'कन्या' राशि हो तो जातक की

पत्नी परम सुन्दरी, कन्या-सन्तानिवाली, भोगवती, सौभाग्यवती, चातवती, विपवर्द्धनी, सत्यवादिनी, पुण्यमा तथा कार्य-कुशला होती है। यदि 'तुला' राशि हो तो जातक की पत्नी गुण-गौरव मण्डिता, पुण्य-कर्म करने वाली, धर्म-प्राप्त्या, गुणवती, पुत्रवती, पृथ्वी-तुल्य सुमावान् तथा विनम्र होती है। यदि 'वृश्चिक' राशि हो तो जातक की पत्नी कलाओं की हारा, कृपण, सुकिङ्किता होने पर भी विनम्र-रहित तथा दुर्भाग्य-दोषों से युक्त होती है। यदि 'धनु' राशि हो तो जातक की पत्नी दुष्टा, कुशीला, निर्लज्ज, पराये-दोष देखने वाली भगवत् तथा दम्भ-हर्त्ता आदि दुर्गुणों से युक्त होती है। यदि 'मकर' राशि हो तो जातक की पत्नी अभिमानिनी, अनाम प्रकृति की, निर्लज्ज, कृपण, दुष्ट-स्वभाव की बुराई-सदैव दुरव भोगने वाली होती है। यदि 'कुम्भ' राशि हो तो जातक की पत्नी दुष्ट-स्वभाव की, पानु देव-क्राशण-भक्त, दया-धर्म का पालन करने वाली तथा सदैव प्रसन्न रहने वाली होती है। यदि 'मीन' राशि हो तो जातक की पत्नी पति से भिन्न-मत रखने वाली, विकार-युक्त, कुत्सित-पुत्रों वाली, स्व-धर्म में निष्ठा रखती हुई विनम्र-हीन तथा सदैव धन की इच्छा रखने वाली होती है।

'अष्टम भाग' अर्थात् 'रन्ध्र भाग' में द्वादश राशियों की स्थिति का प्रभाव इस प्रकार होता है — यदि 'अष्टम भाग' में 'मेष' राशि हो तो जातक रोगी, परदेशवासी, कीरी-बागों को पार कर बहेरा हो जाने वाला, चतुर्वर्त्त तथा दुःखी होता है। यदि 'वृष' राशि हो तो जातक कफ-विकार, अधिक भोजन, चतुष्पदों के शृङ्खल अथवा दुष्टों के सम्पर्क के कारण अपने ही घर में मृत्यु को प्राप्त होता है। यदि 'मिथुन' राशि हो तो जातक की मृत्यु शत्रु के साथ से, लोभवश, किसी रस-पदार्थ के सेवन के कारण, गुदा-रोग अथवा पित्त-रोग से होती है। यदि 'कर्क' राशि हो तो जातक की मृत्यु पानी में डूबने, कृमि-दंश अथवा परदेश में किसी अल्प मनुष्य के हाथों होती है। यदि 'सिंह' राशि हो तो जातक की मृत्यु किसी विषैले

जन्तु के देश के कारण, सर्प-देश, वन में, चतुष्पद द्वारा अथवा चोर के द्वारा होती है। यदि 'कन्या' राशि हो तो जात की मृत्यु अधिक भोग - विलास, अपनी मनमानी, स्त्री की हिंसा के कारण, विषम-भोजन अथवा अपनी स्त्री के कारण अपने ही घर में होती है। यदि 'तुला' राशि हो तो जातक की मृत्यु अधिक उपवास के कारण शक्ति के समझ अथवा शत्रु के क्रोध, सन्नाप अथवा किसी मनुष्य द्वारा होती है। यदि 'वृश्चिक' राशि हो तो जातक की मृत्यु रक्त-विकार, हृमि अथवा विष के कारण अपने ही स्थान में होती है। यदि 'धनु' राशि हो तो जातक की मृत्यु शास्त्राघात, गुप्तेन्द्रिय में रोग, किसी चतुष्पद अथवा पानी में डूबने आदि कारणों से होती है। यदि 'मकर' राशि हो तो जातक विद्वान्, गुणी, काशी, शूर-वीर, मानी, विद्वान्, वक्षःस्पल वाला, शास्त्रज्ञ तथा समस्त कलाओं में निपुण होता है। यदि 'कुम्भ' राशि हो तो जातक की सम्पूर्ण सम्पत्ति अग्नि से नष्ट हो जाती है तथा अनेक प्रकार के व्रण, वायु-विकार, अधिक परिश्रम अथवा पराधे घर में उसकी मृत्यु होती है। यदि 'मीन' राशि हो तो जातक की मृत्यु अतिसार, पित्त-ज्वर, जल, रक्त-विकार अथवा शास्त्राघात से होती है।

'नवम भाव' अर्थात् 'धर्म-भाव' में द्वादश राशियों की स्थिति का प्रभाव इस प्रकार होता है - यदि 'नवम भाव' में 'मेष' राशि हो तो जातक पशु-पालक एवं पशुओं के प्रति दयालु तथा पशु-दान हवी धर्म करने वाला होता है। यदि 'वृष' राशि हो तो स्त्रीपार्थिव-धर्म से अनेक प्रकार के दात-धर्म करने वाला होता है। यदि 'मिथुन' राशि हो तो जातक सद्भाव पूर्वक धर्मचरण करने वाला, अतिथि-सत्कारी, ब्राह्मणों को भोजन कराने वाला तथा दीनों को अनुकम्पा एवं आश्रय देने वाला होता है। यदि 'कर्क' राशि हो तो जातक अनेक व्रत, उपवास, तीर्थ यात्रा एवं वन में रहकर तप आदि करने वाला होता है। यदि 'सिंह' राशि हो तो जातक स्वधर्म त्याग कर पर-धर्म अपनाने वाला, अकारण ही तीर्थों में घूमने वाला, विषम

एवं धर्म-रहित होता है। यदि 'कन्या' राशि हो तो जातक रिक्तों जैसे काम करने वाला अथवा स्त्री की सेवा करने वाला, भक्ति-हीन, पारवण्डी अथवा अल्प मतावलम्बी होता है। यदि 'तुला' राशि हो तो जातक स्वधर्म-पालक, देव-ब्राह्मण भक्ता एवं लोकानुरागी अद्भुत-धर्म करने वाला होता है। यदि 'वृश्चिक' राशि हो तो जातक पारवण्डधर्म, अम्बों के लिए वेश्या-कारक, भक्ति-हीन, परन्तु कभी-कभी दूसरों का पालन करने वाला भी होता है। यदि 'धनु' राशि हो तो जातक ब्राह्मण एवं देव-पूजक, पूजादि करने वाला, शास्त्र-विहित धर्म का पालक, प्रतिद्वन्द्विता होता है। यदि 'मकर' राशि हो तो जातक अपने उत्तम की वृद्धि के लिए अधर्म करता है, फिर अल्पधिक विदुष्यता के कारण विरक्त होकर कुल-धर्म का आश्रय लेता है। यदि 'कुम्भ' राशि हो तो जातक देव-भक्त, जलाशय, उपवन आदि का निर्माता तथा धार्मिक-कृत्य-करने वाला होता है। यदि 'मीन' राशि हो तो जातक सज्जनों का सेवक, तीव्ररित आदि धार्मिक-कृत्य करने वाला तथा लोकोपकारार्थ जलाशयादि का निर्माण करने वाला होता है।

'दशमभाज' अर्थात् 'कर्म-भाज' में द्वादश राशियों की स्थिति का प्रभाव इस प्रकार होता है — यदि 'दशमभाज' में 'मेघ' राशि हो तो जातक धित्त-हीन, चुगुलखोर तथा निन्दित-कर्म करने वाला होता है। यदि 'वृष' राशि हो तो जातक साधु-जनों के उपकारार्थ धन व्यय करने वाला, देव-ब्राह्मण एवं अतिथियों का सम्मान करने वाला तथा धित्त-कर्म करने वाला होता है। यदि 'मिथुन' राशि हो तो जातक गुरुजनों के निर्देशानुसार कार्य करने वाला, धित्त तथा पशुपालन काम तथा धित्त-कर्म करने वाला होता है। यदि 'कर्क' राशि हो तो जातक उपवन-जलाशय आदि का निर्माता एवं पशुपालनार्थ निष्पाद-कर्म करने वाला होता है। यदि 'सिंह' राशि हो तो जातक रौद्र, पापी, विकृत, पराङ्मयी, हिंसक तथा निन्दित क्रूर-कर्म करने वाला होता है। यदि 'कन्या' राशि हो तो

जातक मूर्खी जैसे काम करने वाला, हठी तथा राजा के समक्ष अपमानित, अल्पकामी तथा निर्धन होता है। यदि 'बुला' राशि हो तो जातक यत्नपूर्वक व्यवसाय करने वाला, धर्म तथा नीतिपूर्वक दुष्प्रयोजन करने वाला, सज्जनों का प्रिय एवं पराये धन की वृद्धि करने वाला होता है। यदि 'वृश्चिक' राशि हो तो जातक शास्त्र एवं लोक-सम्मत कार्य करने वाला, गुरु तथा ब्राह्मणों के लिए धन खर्च करने वाला, परन्तु निर्धन एवं अनीतिपूर्ण कार्य करने वाला भी होता है। यदि 'धनु' राशि हो तो जातक सब कार्य में दक्ष, नित्य लाभ पाने वाला, परोपकारी, राजकर्मचारी तथा भूमि एवं पशु सम्पन्न होता है। यदि 'मकर' राशि हो तो जातक उग्र प्रतापी, दयाहीन, बन्धु-बान्धव भुक्ता, दुष्टों को प्रिय तथा धर्म-हीन होता है। यदि 'कुम्भ' राशि हो तो जातक कर्म-कुशल, दूसरों को ठगने वाला, पाखण्डी, लोभी, अविश्वस्त एवं जन-विरोधी होता है। यदि 'मीन' राशि हो तो जातक धर्म एवं कुलपरम्परा-विहित कर्मों को करने वाला, ब्राह्मणों का सेवक, यशस्वी तथा कीर्तिमान होता है।

'एकादशभाव' अर्थात् 'लाभ भाव' में द्वादश राशियों की स्थिति का प्रभाव इस प्रकार होता है — यदि एकादशभाव में 'मेष' राशि हो तो जातक को पशु, राज-सेवा एवं देशान्तर से विशेष लाभ होता है। यदि 'वृष' राशि हो तो जातक को रित्रियों, साधुजनों तथा व्याज एवं गो-सेवा से भी विशेष लाभ होता है। यदि 'मिथुन' राशि हो तो जातक को सभी कामों से लाभ होता है, साथ ही वह रित्रियों को प्रिय, पण्डितों से प्रसिद्ध तथा उत्तम भोजन एवं पेय पाने वाला होता है। यदि 'कर्क' राशि हो तो जातक को सेवा, कृषि, शास्त्र एवं साधुजनों से लाभ प्राप्त होता है। यदि 'सिंह' राशि हो तो जातक को जीव-हिंसा, निन्द्य-कर्म, व्यापार तथा देशान्तर की यात्राओं से लाभ होता है। यदि 'कन्या' राशि हो तो जातक को अनेक प्रकारों से लाभ होता है, साथ ही वह शास्त्र-पुराणादि के अभ्यास एवं विनय-विवेक के कारण सर्वत्र पूज्य

भी होता है। यदि 'तुला' राशि हो तो जातक अनेक व्यवसायों से लाभ पाता है तथा साधु-सेवा एवं विनम्रता के कारण सुखी तथा लोक-प्रशंसित होता है। यदि 'वृश्चिक' राशि हो तो जातक दल-कपट, मिथ्या-भाषण एवं चुगुलखोरी से लाभ उठाता है। यदि 'धनु' राशि हो तो जातक राजा के साथ विलास करने वाला, साधु-सेवी तथा स्व-पुरुषार्थ से विशेष लाभ पाने वाला होता है। यदि 'मकर' राशि हो तो जातक जल-यान, विदेश-यात्रा एवं राज-सेवा द्वारा धनोपार्जन करता है तथा उसे ब्रीच ही व्यय भी कर देता है। यदि 'कुम्भ' राशि हो तो जातक कुत्सित-कर्म, त्याग-धैर्य, पराक्रम एवं विद्या के प्रभाव से लाभ उठाता है। यदि 'मेष' राशि हो तो जातक विविध कथा-पुराणों, विचित्र-वाग्ज्योत्संमित्रों से लाभ उठाता है। राजा द्वारा उदत्त सम्मान तथा अन्ध अनेकों प्रकारों से लाभ प्राप्त करता है। वह विनम्रता पूर्वक लाभ कमाता है।

'द्वादश भाव' अर्थात् 'व्यय भाव' में द्वादश राशियों की स्थिति का प्रभाव इस प्रकार होता है— यदि द्वादश भाव में 'मेघ' राशि हो तो जातक उत्तम भोजन-वस्त्र के सेवन एवं गाय आदि पशुओं के पालन में उपाधिर्जन चत को व्यय करता है। यदि 'वृष' राशि हो तो जातक अनेक प्रकार के वस्त्रों तथा रिजियों के साथ प्रेम-लीला में चत व्यय करता है। यदि 'मिथुन' राशि हो तो जातक रिजियों के साथ प्रेम-झोंडा, नौकरी के वेतन, दुष्ट-संगति एवं कुकर्मों में चत खर्च करता है। यदि 'कर्क' राशि हो तो जातक ब्राह्मण-सेवा, देवाराधन, पक्ष, साधु-संगति एवं झेठ कर्मों में चत खर्च करता है। यदि 'सिंह' राशि हो तो जातक स्वहय, जन्म एवं छिया से निन्दनीय, तमोगुणी तथा चोर एवं राजा द्वारा चत-हानि पाने वाला होता है। यदि 'कन्या' राशि हो तो जातक रिजियों, विवाहादि मंगल कार्यों अथवा साधु-संगति में अपना चत खर्च करता है। यदि 'तुला' राशि हो तो जातक देव-ब्राह्मण, बन्धु-वर्ग, वृत्त-पालन एवं वेद-शास्त्र-विहित कर्मों में तथा साधुजनों की संगति में चत खर्च करता है।

यदि 'वृश्चिक' राशि हो तो जातक अनेक विडम्बनाओं सहित दान करने में, कपटी-मित्रों की सहायता में, दुर्बुद्धि पूर्वक 'चोरों' को अधिकार देने में 'धन' खर्च करना तथा लोक-निन्दित होता है। यदि 'धनु' राशि हो तो जातक पापियों की संगति में, राजातीय अधिकारों की खुशामद में, कृषि-कर्म में तथा पराधीनता में धन खर्च करता है। यदि 'मकर' राशि हो तो जातक निन्द्य-भोजन एवं स्व-वर्ग के मनुष्यों के सत्कार में धन खर्च करता है। वह कृषि-कर्म कर्ता, धन-हीन तथा लोक-निन्दित भी होता है। यदि 'कुम्भ' राशि हो तो जातक देव, ब्राह्मण एवं तपस्वियों की सेवा में अपना धन खर्च करता है। यदि 'मीन' राशि हो तो जातक नाव आदि बनवाने, विदेश-यात्रा तथा मुकदमा आदि में अपना धन खर्च करता है।

अथ भावेश फलम् - जन्म कुण्डली के विभिन्न भावों के स्वामी (भावेश) की विभिन्न भावों में स्थिति का फल निम्नानुसार समझना चाहिए।

लग्नेश फल - 'लग्नेश' अर्थात् प्रथम भाव का स्वामी यदि 'लग्न' अर्थात् प्रथम भाव में स्थित हो तो जातक स्वस्थ, दीर्घायु, बलवान्, भू-स्वामी अथवा राजा होता है। यदि लग्नेश 'द्वितीय भाव' में स्थित हो तो जातक स्थूल शरीर, दीर्घजीवी, बलवान्, धनी, भू-स्वामी, राजा अथवा धर्माला होता है। यदि लग्नेश 'तृतीय भाव' में स्थित हो तो जातक बन्धु-बान्धवों से प्रुक्ता, धर्माला, दानी, सूरवीर, बलवान्, परास्वी तथा चिरजीवी होता है। यदि लग्नेश 'चतुर्थ भाव' में स्थित हो तो जातक पिता से धन पाने वाला, माता-पिता का भक्त, अधिक भोजन करने वाला, राजा का मित्र तथा दीर्घजीवी होता है। यदि लग्नेश 'पंचम भाव' में हो तो जातक राजा, दानी, दीर्घायु, सुकर्म, सुप्रसिद्ध एवं सुपुत्रवान् होता है। यदि लग्नेश 'षष्ठ भाव' में हो तो जातक नीरोग, बलवान्, शत्रुजघ्नी, सत्कर्म करने वाला, धनी तथा भू-स्वामी होता है। यदि लग्नेश 'सप्तम भाव' में हो तो जातक सुशीला, सुन्दरी एवं तेजस्विनी पत्नी वाला, स्वयं भी तेजस्वी;

परन्तु शोकग्रस्त होता है। यदि लग्नेश 'अष्टम भाव' में हो तो जातक दीर्घायु, कृपण तथा धन-संगृही होता है। यदि लग्नेश 'नवम भाव' में हो तो जातक सबका मित्र, बुद्धिमान्, सुशील, विरव्यात, तेजस्वी, पुण्यात्मा तथा धर्म-परायण होता है। यदि लग्नेश 'दशम भाव' में हो तो जातक राजा द्वारा सम्मानित, माता-पिता का भक्ता, परिश्रम, सुशील तथा यशस्वी होता है। यदि लग्नेश 'एकादश भाव' में हो तो जातक पुत्रवान्, बलवान्, तेजस्वी, सुरवी, यशस्वी, दीर्घायु तथा धन-वाहन सम्पन्न होता है। यदि लग्नेश 'द्वादश भाव' में हो तो जातक बन्धुओं में मानी, परदेसी, नीच, कुकर्मी, परदेशवासी तथा पराया अन्न खाने वाला होता है।

धनेशफल - 'धनेश' अर्थात् द्वितीय भाव का स्वामी यदि 'लग्न' अर्थात् 'प्रथम भाव' में हो तो जातक सस्वर्कर्मकर्ता, व्यवसाय से लाभ पाने वाला, प्रसिद्ध धनी, विपुल सुखभोगी तथा कृपण स्वभाव का होता है। यदि 'धनेश' 'द्वितीय भाव' में हो तो जातक व्यवसाय से धन कमाने वाला, कौशल खनने वाला, सत्य को छिपाने वाला, उद्वेगी तथा नीच-प्रकृति का होता है। यदि 'धनेश' 'तृतीय भाव' में हो और वह शुभग्रह हो तो जातक राजा से विरोध रखता है और यदि पापग्रह हो तो भार्गव से शत्रुता रखता है। यदि मंगल 'धनेश' होकर तृतीय भाव में बैठा हो तो जातक चोर होता है। यदि 'धनेश' 'चतुर्थ भाव' में हो तो जातक अपने पिता से धन पाने वाला, सत्यवादी तथा दीर्घायु होता है, परन्तु यदि 'धनेश' पापग्रह होकर चतुर्थ भाव में बैठा हो तो वह मृत्युकारक भी हो सकता है। यदि 'धनेश' 'पंचम भाव' में हो तो जातक पुत्रों में सुरवी, कठिन-कर्म करने वाला, कृपण तथा दुरवी होता है। यदि 'धनेश' 'षष्ठ भाव' में हो तो जातक धन-संगृही तथा शत्रुघ्नी होता है। यदि शुभग्रह हो तो भूमि-लाभ होता है और यदि पापग्रह हो तो जातक धनहीन होता है। यदि 'धनेश' 'सप्तम भाव' में हो तो

जातक की पत्नी सुशीला, सौभाग्यवती, विलासिनी एवं धन-संग्रह करने वाली होती है। यदि पापग्रह होते पत्नी बर्षा होती है। यदि चनेश 'अष्टमभाव' में हो तो जातक को प्रत्येक कार्य में असफलता मिलती है और वह आत्मघाती, परधनापहारी, विलासी तथा भाग्यवादी होता है। यदि चनेश 'नवमभाव' में हो और वह शुभग्रह हो तो जातक स्व-वचन-पालक तथा दानी होता है, परन्तु यदि पापग्रह हो तो दरिद्र, भिक्षुक एवं विडम्बनायुक्त होता है। यदि चनेश 'दशमभाव' में हो तो जातक राजमान्य एवं राजा से धन पाने वाला होता है। यदि वह शुभग्रह की राशि में स्थित हो तो जातक माता-पिता का भक्त होता है। यदि चनेश 'एकादशभाव' में हो तो जातक अनेक लोगों का पालन करने वाला, सुप्रसिद्ध तथा ज्योतिष विद्या द्वारा जनोपार्जन करने वाला होता है। यदि चनेश 'द्वादशभाव' में हो तो जातक, पापग्रह होने पर कृपण और निर्धन तथा शुभग्रह होने पर हाथ-लाभ को समान रूप से प्राप्त करने वाला होता है।

सहजेश फल - 'सहजेश' अर्थात् 'तृतीय भाव का स्वामी' यदि 'लग्न' अर्थात् 'प्रथम भाव' में बैठा हो तो जातक अपने परिवार में भेद रखने वाला, कुमित्रवान्, सेवा-कर्म करने वाला, बकलासी, लम्पट तथा नकली वस्तुएँ बनाने वाला होता है। यदि सहजेश 'द्वितीय भाव' में हो तो जातक, पापग्रह के होने पर निर्धन, अल्पायु, लम्पट तथा बन्धु-विरोधी होता है एवं शुभग्रह हो तो धनवान् होता है। यदि सहजेश 'तृतीय भाव' में हो तो जातक दैव-बुद्ध भक्त, बलवान्, राजा से धन पाने वाला तथा अच्छे मित्रों वाला होता है। यदि सहजेश 'चतुर्थ भाव' में हो तो जातक पिता, बन्धु एवं सहोदरों से सुख पाने वाला, परन्तु माता से शत्रुता रखने वाला एवं पिता के धन का उपभोग करने वाला होता है। यदि सहजेश 'पंचम भाव' में हो तो जातक पुत्र एवं बन्धु-बाधकों से घालित, दीर्घायु तथा परीपकारी होता है। यदि सहजेश 'षष्ठ भाव' में हो तो जातक घटा-कटा रोग पीड़ित रहने वाला, मेन-सेगी, बन्धु-विरोधी

तथा भूमि का उपार्जन करने वाला होता है। यदि सहजेश 'सप्तम भाव' में हो तो जातक की पत्नी, यदि शुभगृह हो तो सौभाग्यवती एवं सुशीला होती है और यदि कूरगृह हो तो वह पति को छोड़कर देवर के साथ रहती है। यदि सहजेश 'अष्टम भाव' में हो तो जातक, यदि शुभगृह हो तो भार्य-वहिनो से रहित होता है और यदि पापगृह हो तो अंग-हीन अथवा केवल २ वर्ष की आयु पाने वाला होता है। यदि सहजेश 'नवम भाव' में हो तो जातक, पापगृह होने पर बन्धु-हीन होता है तथा शुभगृह होने पर सद्बन्धु युक्त, पुष्पात्मा एवं भार्य-वहिनो से प्रेम करने वाला होता है। यदि सहजेश 'दशम भाव' में हो तो जातक माता-पिता तथा बन्धुओं से स्नेह करने वाला और उनके प्रिय, राजा का स्नेहपात्र तथा भोगी होता है। यदि सहजेश 'एकादश भाव' में हो तो जातक भार्य-वन्धुओं से प्रेम करने वाला, राज-सम्मान पाने वाला तथा सुखी होता है। यदि सहजेश 'द्वादश भाव' में हो तो जातक मित्र-विरोधी, बन्धु-सन्तानी तथा परदेशवासी होता है।

सुरेश फल - 'सुरेश' अर्थात् 'चतुर्थ भाव का स्वामी' यदि 'लग्न' अर्थात् 'प्रथम भाव' में बैठा हो तो जातक अपने पिता से प्रेम रखने वाला, अपने पिता के नाम से प्रतिष्ठित, स्वयं भी यशस्वी तथा पितृकुल में श्रेष्ठ होता है। सुरेश 'द्वितीय भाव' में हो तो जातक, यदि पापगृह हो तो पिता का विरोधी होता है और यदि शुभगृह हो तो पिता का भक्त होता है एवं स्वोपासित-सम्पत्ति से पिता को सुखी रखता है। सुरेश 'तृतीय भाव' में हो तो जातक पिता-माता से मतभेद रखने वाला, पिता से कलह करने वाला तथा पिता के भार्यों के लिए घातक होता है। सुरेश 'चतुर्थ भाव' में हो तो जातक का पिता राज-सम्मानित होता है तथा जातक स्वयं पिता के लिए लाभप्रद, अल्पन्त चनी, चर्माला, सुखी तथा यशस्वी होता है। यदि सुरेश 'पंचम भाव' में हो तो जातक पितृ-धन का भोगी, सन्ततिवान्, पुत्र-पालक, दीर्घायु तथा क्रिया-प्रसिद्ध होता है। सुरेश 'षष्ठ भाव' में हो तो जातक माता के धन को नष्ट करता है। यदि शुभ-गृह हो तो जातक

घन-सेचयी तथा पाप-गृह हो तो पितृ-घन-नाशक होता है। यदि सुरेश 'सप्तम भाव' में हो तो जातक की पत्नी श्वसुर की सेवा करती है, परन्तु यदि पाप-गृह हो तो श्वसुर को कष्ट देती है। यदि सप्तम भावस्थ सुरेश मंगल अथवा शुक्र हो तो जातक की पत्नी कुलीना होती है। यदि सुरेश 'अष्टम भाव' में हो तो जातक क्रूर, रोगी, कुकर्म, दरिद्र तथा आत्महत्या-प्रिय होता है। यदि सुरेश 'नवम भाव' में हो तो जातक सब विद्याओं का ज्ञान पिता से अलग रहने वाला तथा उसकी अपेक्षा न करने वाला, परन्तु पितृ-धर्म का पालन करने वाला होता है। यदि सुरेश 'दशम भाव' में हो तो जातक का पिता (यदि सुरेश पाप-गृह हो तो) उसकी माता को त्याग कर दूसरा विवाह कर लेता है, परन्तु यदि सुरेश शुभ-गृह हो तो जातक परोपकारी होता है। यदि सुरेश 'एकादश भाव' में हो तो जातक परिजन-पालक, सुकर्म, धर्मात्मा, स्वस्थ, दीर्घायु तथा पितृ-भक्त होता है। यदि सुरेश 'द्वादश भाव' में हो तो जातक (यदि शुभ-गृह हो तो) का जन्म पिता के परोक्ष में अथवा पिता की मृत्यु के बाद हुआ सम्भनना चाहिए। यदि पाप-गृह हो तो जातक को पर-पुरुष से उत्पन्न (जारज-सन्तान) सम्भनना चाहिए।

पुत्रेश फल - पुत्रेश 'अर्थात्' 'पञ्चम भाव का स्वामी' यदि लगन 'अर्थात्' 'चतुर्थ भाव' में बैठा हो तो जातक जोड़े पुत्रों वाला, शास्त्रज्ञ, सुकर्म तथा लोक-प्रसिद्ध होता है। यदि पुत्रेश 'द्वितीय भाव' में हो तो जातक, यदि पाप-गृह हो तो निर्धन, रोगी तथा एवं कष्ट से अर्थोपार्जन कर पेट भरने वाला होता है। यदि शुभ-गृह हो तो जातक सुखी रहता है। यदि पुत्रेश 'तृतीय भाव' में हो तो जातक लोक-प्रसिद्ध तथा मधुर-भाषी होता है। उसके पुत्र भी सुयोग्य तथा पिता के परिवार की रक्षा करने वाले होते हैं। यदि पुत्रेश 'चतुर्थ भाव' में हो तो जातक अपने वैतृक-व्यवसाय को करने वाला, पिता द्वारा पालित एवं माता का भक्त होता है। यदि पाप-गृह हो तो माता-पिता का विरोधी होता है। यदि पुत्रेश 'पञ्चम भाव' में हो

तो जातक पुत्रवान्, बुद्धिमान्, मानी, लोक-विरम्भात् तथा समाज में अगुगण्य होता है। यदि पुत्रेश 'षष्ठ' भाव' में हो तो जातक शुभ-गृह होने पर, अनेक शत्रुओं वाला तथा मानहीन होता है और यदि पापगृह हो तो रोगी तथा निर्धन भी होता है। यदि पुत्रेश 'सप्तम भाव' में हो तो जातक के पुत्र सुन्दर तथा देव-गुरु-भक्त होते हैं और उसकी पत्नी विपवादिनी तथा सुशीला होती है। यदि पुत्रेश 'अष्टम भाव' में हो तो सूत्री-विहीन होता है। यदि पत्नी जीवित रहे तो वह कटु-भाषिणी एवं अङ्गहीन होती है। उसके भर्ता तथा पुत्र भी अङ्गहीन एवं कोपी स्वभाव के होते हैं। यदि पुत्रेश 'नवम भाव' में हो तो जातक सुन्दर, राजमान्य, विद्वान्, बुद्धिमान्, कवि तथा संगीत-नाटक-प्रिय होता है। यदि पुत्रेश 'दशम भाव' में हो तो जातक राज-मान्य, राजकर्मचारी, श्रेष्ठ, सत्कर्मकर्ता तथा माता को सुख देने वाला होता है। यदि पुत्रेश 'एकादश भाव' में हो तो जातक सत्पत्नी, पुत्रवान्, धैर्य-वीर, राज-सम्मानित तथा संगीत आदि कलाओं का जातकार होता है। यदि पुत्रेश 'द्वादश भाव' में हो तो जातक पुत्रवान् तो होता है परन्तु उसे पुत्र द्वारा संताप मिलता है। यदि पुत्रेश अशुभ-गृह हो तो पुत्र-हीन भी होता है।

षष्ठेश फल - 'षष्ठेश' अर्थात् 'द्विष्ठ भाव का स्वामी' यदि लग्न' अर्थात् 'पञ्चम भाव' में स्थित हो तो जातक वाक्पटु, धन कमाने में स्वच्छन्द प्रकृति का, कुटुम्बियों को कष्ट देने वाला, अनेक लोगों को अपने पक्ष में रखने वाला, शत्रुघ्नी, बलवान् तथा तीरोग होता है। यदि षष्ठेश 'द्वितीय भाव' में हो तो जातक दुष्ट, चतुर, रोगी, मित्र-हीन, धन-संगृही तथा उत्तम स्थान में रहने वाला होता है। यदि षष्ठेश 'तृतीय भाव' में हो तो तो जातक लोगों को कष्टदायक, नीच आचरण वाला एवं भगड़े-टण्डों से निरन्तर कष्ट पाने वाला होता है। यदि षष्ठेश 'चतुर्थ भाव' में हो तो जातक अपने पिता से शत्रुता रखता है, उसका पिता रोगी होता है और वह स्वयं चिरकाल तक अपने पुत्र सहित सम्पत्तिशाली भी बना रहता है। यदि षष्ठेश 'पञ्चम भाव' में हो

तो जातक की अपने पुत्र से शत्रुता होती है तथा उसी के कारण मृत्यु भी होती है। यदि ऋषेश शुभग्रह हो तो जातक निधनि, दुष्ट तथा कष्टी होता है। यदि ऋषेश 'षष्ठ भाव' में हो तो जातक नीरोग, लोगों से अकारण शत्रुता करने वाला, कभी विवश न होने वाला, बुरी जगह में रहने वाला, सुखी तथा कृपण होता है। यदि ऋषेश 'सप्तम भाव' में हो और वह पापग्रह हो तो जातक की पत्नी विरुद्ध आचरण करने वाली, सन्तान देने वाली, क्रूर तथा चण्डीरुपा होती है। यदि शुभग्रह हो तो वध्या अवका नष्टगर्भा होती है। यदि ऋषेश 'अष्टम भाव' में हो तो जातक को इस प्रकार फल मिलता है - यदि ऋषेश 'शनि' हो तो जातक की मृत्यु संग्रहणी रोग से होती है। यदि 'मंगल' हो तो सर्पादि विषहर जीव से होती है। यदि 'बुध' हो तो विष से, 'चन्द्रमा' हो तो आकस्मिक रूप से एवं 'शुक्र' हो तो सिंह-व्याध्यादि से मृत्यु होती है। यदि 'गुरु' हो तो जातक दुष्ट-बुद्धि होता है। यदि 'शुक्र' हो तो नेत्र-दोष युक्त होता है। यदि ऋषेश 'नवम भाव' में हो तो जातक भिक्षुक होता है। यदि वह पापग्रह हो तो लँगड़ा, बन्धु-विरोधी एवं शत्रुता को न मानने वाला होता है। यदि ऋषेश 'दशम भाव' में हो तो जातक चर्म एवं सन्तान का जालन करने वाला, परन्तु मातृ-दोष युक्त होता है। यदि ऋषेश पापग्रह हो तो जातक पशुओं से लाभ पाने वाला, दुष्ट-स्वभाव का एवं अपनी माता का शत्रु होता है। यदि ऋषेश 'एकादश भाव' में हो तो जातक शत्रु तथा चोरो को नष्ट करने वाला होता है। यदि ऋषेश पापग्रह हो तो उसकी मृत्यु शत्रु द्वारा होती है। यदि ऋषेश 'द्वादश भाव' में हो तो जातक के धन की हानि होती है, परन्तु याला से धन-लाभ भी होता है। ऐसा व्यक्ति भग्नवादी भी होता है।

जापेश फल - जापेश 'अर्थात् सप्तम भाव का स्वामी यदि लग्न 'अर्थात् प्रथम भाव' में बैठा हो तो जातक अपनी पत्नी से विशेष प्रेम करने वाला तथा पर-स्त्रियों से भी कुछ प्रेम करने वाला, भोगी तथा सुन्दर स्वरूपवादी होता है। यदि जापेश 'द्वितीय भाव' में हो तो जातक की पत्नी

दुष्ट-स्वभाव की एवं पुत्र की इच्छा रखने वाली होती है। उसे स्त्री द्वारा धन-लाभ भी होता है, साथ ही वह स्त्री-सङ्ग से रहित भी होता है। यदि जापेश 'तृतीय भाव' में हो और वह शुभग्रह हो तो जातक आत्मबली एवं बन्धुजनों से प्रेम रखने वाला होता है। यदि पापग्रह हो तो उसकी स्त्री सुन्दरी होती है और वह देवर अपना पति के मित्रों से सम्बन्ध रखती है। यदि जापेश 'चतुर्थ भाव' में हो तो जातक चञ्चल स्वभाव वाला तथा अपने पिता के शत्रुओं से प्रेम रखने वाला होता है। यदि जापेश 'पञ्चम भाव' में हो तो जातक सुख, सौभाग्य एवं पुत्रवान्, साहसी तथा दुष्ट-बुद्धि होता है। उसकी पत्नी का पालन (उसके पुत्र करते हैं)। यदि जापेश 'षष्ठ भाव' में हो तो जातक पत्नी-विरोधी, रुग्ण-पत्नी वाला अपना स्त्री-रहित होता है। यदि जापेश पापग्रह हो उसकी मृत्यु भी हो जाती है। यदि जापेश 'सप्तम भाव' में हो तो जातक दीर्घायु, सुशील, तेजस्वी तथा स्त्री-प्रेमी होता है। यदि जापेश 'अष्टम भाव' में हो तो जातक का विवाह नहीं होता। वह दुर्गति रहने वाला, चिन्तित तथा वेश्यागामी होता है। यदि जापेश 'नवम भाव' में हो तो जातक सुशील एवं तेजस्वी होता है तथा उसकी पत्नी भी सुशीला होती है, परन्तु नवमस्थ जापेश यदि पापग्रह हो तो जातक क्रूर तथा नष्ट हो जाता है। यदि जापेश 'दशम भाव' में हो तो जातक राजदोषी, लम्पट तथा कामी होता है। यदि जापेश पापग्रह हो तो जातक दुर्गति एवं शत्रु से पराजित होता है। यदि जापेश 'एकादश भाव' में हो तो जातक की पत्नी रूपवती, सुशीला, स्नेहप्रयी एवं पतिव्रता होती है। यदि जापेश 'द्वादश भाव' में हो तो जातक घर तथा बन्धु-बान्धवों के कामों में व्यस्त रहता है तथा उसकी पत्नी नवीना, चञ्चला तथा दुष्ट लोगों से प्रेम-सम्बन्ध रखने वाली होती है तथा अपने पति को छोड़कर दूसरे पुरुष के साथ चली जाती है।

अष्टमेश फल - यदि 'अष्टमेश' अर्थात् 'आठवें भाव' का स्वामी 'लग्न' अर्थात् 'प्रथम

भाव में हो तो अनेक विषय-बाधाओं से युक्त, विवादी, चोर, दीर्घरोगी, परन्तु राजकृपा से धन-लाभ पाने वाला होता है। यदि अष्टमेश 'द्वितीय भाव' में हो तो जातक शुभ फल प्राप्त करता है, परन्तु 'उसकी मृत्यु राजा के द्वारा होती है'। यदि द्वितीय भावस्थ अष्टमेश पापग्रह हो तो जातक शत्रुयुक्त, चोर तथा अल्पायु होता है। यदि अष्टमेश 'तृतीय भाव' में हो तो जातक बन्धु-विरोधी, कटुभाषी, सहोदर-हीन, चंचल, अंग-हीन तथा मित्र-विरोधी होता है। यदि अष्टमेश 'चतुर्थ भाव' में हो तो जातक पिता से कलह एवं शत्रुता रखने वाला व उसका धन हीन करने वाला होता है, साथ ही उसका पिता रोगी भी बना रहता है। यदि अष्टमेश 'पंचम भाव' में हो तो अशुभग्रह होने पर जातक पुत्रहीन होता है और शुभग्रह होने पर पुत्र जीवित नहीं रहता, यदि जीवित रहे तो वह धूर्त होता है। यदि अष्टमेश 'षष्ठ भाव' में हो और वह 'सूर्य' हो तो जातक राजा का विरोधी; 'गुरु' हो तो रोगी; 'शुक्र' हो तो लेज-रोगी; 'चन्द्रमा' हो तो रोगी; 'मंगल' हो तो क्रोधी; 'बुध' हो तो कायर एवं मुराव-रोगी एवं 'शनि' हो तो कष्ट पाने वाला होता है। यदि अष्टमेश पर चन्द्रमा तथा बुध की दृष्टि हो तो विशेष अनिष्ट-फल होता है। यदि अष्टमेश 'सप्तम भाव' में हो तो जातक उदर-रोगी, दुष्ट-स्वभाव का तथा दुःशील-पत्नी वाला होता है। यदि अष्टमेश पापग्रह हो तो जातक की मृत्यु उसकी स्त्री के द्वारा ही होती है। यदि अष्टमेश 'अष्टम भाव' में हो तो जातक नीरोग, उल्लेगी, धूर्त एवं धूर्तों के घर जाकर लेने वाला होता है। यदि अष्टमेश 'नवम भाव' में हो तो जातक पापी, जीवघाती, अङ्ग तथा सङ्गहीन, बन्धु-हीन, भेम तथा दयाहीन एवं शत्रुओं से मध्य होता है। यदि अष्टमेश 'दशम भाव' में हो और वह शुभग्रह हो तो जातक आलसी, क्रूर, राजकर्मचारी तथा नीच कर्म करने वाला होता है। यदि पापग्रह हो तो उसकी माता या पुत्र में से किसी एक की मृत्यु हो जाती है। यदि अष्टमेश 'एकादश भाव' में हो और वह सौम्य ग्रह हो तो जातक कालभावस्था में दुःखी तथा

बाद में सुखी होता है। यदि शुभ-गृह हो तो दीर्घायु एवं पाप-गृह हो तो अल्पायु होता है। यदि अष्टमेश 'द्वादश भाव' में हो तो जातक स्वेच्छा-चारी, शठ, निर्दय, कटुभाषी तथा तस्कर होता है, मृत्यु के बाद उसके शरीर की दुर्गति भी होती है।

भाग्येश फल - 'भाग्येश' अर्थात् नवम भाव का स्वामी, यदि लग्न, अर्थात् नवम भाव में हो तो जातक गुरु-देव-भक्त, राजकर्मचारी, बुद्धिमान, महाबली, अल्पाहारी तथा कृपण होता है। यदि भाग्येश 'द्वितीय भाव' में हो तो जातक मूल-रोगी, पशुओं से पीड़ा पाने वाला, धर्माला, सुशील, पुण्यवान्, प्रियवत्सल तथा प्रशस्ती होता है। यदि भाग्येश 'तृतीय भाव' में हो तो जातक श्रेष्ठ पत्नी एवं बन्धुओं वाला, उनकी रक्षा करने वाला और यदि जीवित रहे तो बन्धु-बान्धवों के साथ रहनेवाला होता है। यदि भाग्येश 'चतुर्थ भाव' में हो तो जातक सुन्दर, पुण्यात्मा पुत्रों वाला एवं देव-गुरु-भक्त होता है। यदि भाग्येश 'पंचम भाव' में हो तो जातक श्रेष्ठ पुत्रों वाला तथा प्रशस्ती होता है। यदि भाग्येश 'षष्ठ भाव' में हो तो जातक काम को अधूरा छोड़ देने वाला, दशति-ब्राह्मण का निन्दक एवं शत्रुओं के समक्ष मुँह जाने वाला होता है। यदि भाग्येश 'सप्तम भाव' में हो तो जातक की पत्नी सुन्दरी, सुशीला, पुण्यवती, सत्यवादिनी, पतिव्रता एवं सम्पत्तिकामिनी होती है। यदि भाग्येश 'अष्टम भाव' में हो तो जातक दुष्ट, हिंसक स्वभाव का, गृह तथा बन्धुओं से बहिर एवं दुष्प्रहीन होता है। यदि नवमेश पाप-गृह हो तो लुप्तसक होता है। यदि भाग्येश 'नवम भाव' में हो तो जातक बन्धु-प्रेमी, दानी, देव-गुरु, स्वजन एवं स्त्री से प्रेम करने वाला होता है। यदि भाग्येश 'दशम भाव' में हो तो जातक माता-पिता का भक्त, धर्माला, शूर-वीर एवं राजकर्मचारी होता है। यदि भाग्येश 'एकादश भाव' में हो तो जातक दीर्घायु, धर्माला, प्रसिद्ध, श्रेष्ठ पुत्रवाला, राजा से घात पाने वाला तथा लोक-स्नेही होता है।

यदि राज्येश 'द्वादश भाव' में हो तो जातक सुन्दर तथा देशान्तर में सम्मान पाने वाला होता है। यदि द्वादशेश शुभ गृह हो तो जातक विद्वान् और पाण्डित्य हो तो धूर्त होता है।

राज्येश फल - यदि 'राज्येश' अर्थात् 'दशम भाव का स्वामी' 'लग्न' अर्थात् 'प्रथम भाव' में हो तो जातक अपनी माता का शत्रु तथा पिता का भक्त होता है। उसकी माता पिता की मृत्यु के बाद पर-पुरुष के साथ रहने लगती है। यदि राज्येश 'द्वितीय भाव' में हो तो जातक माता द्वारा पालित होने वाला भी मातृ-द्वेषी, अल्पाहारी तथा वेदोक्त सुकर्मों का हाना होने पर भी कृपण होता है। यदि राज्येश 'तृतीय भाव' में हो तो जातक माता-पिता, स्वजन आदि का विरोधी, निरुद्योगी, सेवा-कार्य करने वाला तथा मामा द्वारा पालित होता है। यदि राज्येश 'चतुर्थ भाव' में हो तो जातक माता-पिता का भक्त, राजमान्य, सुरवी तथा सदाचारी होता है। यदि राज्येश 'पंचम भाव' में हो तो जातक राजा से धन पाने वाला, सुकर्मों से उदासीन, संगीत-प्रेमी तथा अपनी माता द्वारा पालित होता है। यदि राज्येश 'षष्ठ भाव' में हो तो जातक कलह-प्रेमी, शत्रुओं से भीत, दयाहीन, कृपण तथा कलह-प्रेमी होता है। यदि राज्येश 'सप्तम भाव' में हो तो जातक की पत्नी सुन्दरी, सुशीला, शुभ कर्म करने वाली, पुत्रवती तथा पति-सेवा-प्रायणा होती है। यदि राज्येश 'अष्टम भाव' में हो तो जातक मिथ्यावादी, दुष्ट, शूर-वीर, धूर्त, मिथ्यावादी, माता को कष्ट देने वाला तथा अल्पायु होता है। यदि राज्येश 'नवम भाव' में हो तो जातक सद्बन्धु एवं सन्मित्रवान् तथा सुशील होता है। उसकी माता भी सत्यवादिनी, पुण्यात्मा एवं सुशीला होती है। यदि राज्येश 'दशम भाव' में हो तो जातक माता को सुख देने वाला, माता से सुख पाने वाला तथा अत्यन्त चतुर होता है। यदि राज्येश 'एकादश भाव' में हो तो जातक माता तथा धनी होता है। उसकी माता भी सुखी एवं रक्षा करने वाली होती है। यदि राज्येश 'द्वादश भाव' में हो तो जातक राज्यकर्मचारी, सुकर्म तथा काल्पावस्था से ही माता द्वारा परित्यक्त होता है। यदि दशमेश पाण्डित्य हो तो परदेशवासी होता है।

लामेश फल - 'लामेश' अर्थात् 'एकादश भाव का स्वामी' यदि 'लग्न' अर्थात् 'प्रथम भाव' में बैठा हो तो जातक शूर-वीर, सुन्दर, लोक-प्रिय, दानी, परन्तु अल्पायु होता है। उसकी मृत्यु तृष्णा-दोष से होती है। यदि लामेश 'द्वितीय भाव' में हो तो जातक स्वल्पाहारी एवं अल्पायु होता है। यदि लामेश पापग्रह हो तो अष्ट-कपाली एवं रोगी होता है। यदि लामेश 'तृतीय भाव' में हो तो जातक बन्धु तथा स्त्री का चालक, श्रेष्ठ भाई या बाला एवं शत्रु-कुल-नाशक होता है। यदि लामेश 'चतुर्थ भाव' में हो तो जातक पितृ-भक्ता, दीर्घायु, स्व-धर्म-निरत, एक समय में एक ही काम करने वाला तथा लाभ पाने वाला होता है। यदि लामेश 'पंचम भाव' में हो तो जातक पिता तुल्य स्व-गुण-सम्पन्न, पुत्र एवं पिता से प्रेम रखने वाला तथा अल्पायु होता है। यदि लामेश 'षष्ठ भाव' में हो तो जातक दीर्घ-रोगी एवं शत्रु-सम्पन्न होता है। यदि लामेश पापग्रह हो तो परदेश में किसी तस्करी के द्वारा उसकी मृत्यु होती है। यदि लामेश 'सप्तम भाव' में हो तो जातक तेजस्वी, दीर्घायु, सम्पत्तिशाली, सुशील, उच्च पदाधिकारी एवं एक पत्नी वाला होता है। यदि लामेश 'अष्टम भाव' में हो तो जातक अल्पायु एवं रोगी होता है। यदि लामेश पापग्रह हो तो जीवित रहते हुए भी मृत-तुल्य दुःखी बना रहता है। यदि लामेश 'नवम भाव' में हो तो जातक देव-गुरु भक्ता, चर्माला, शास्त्रज्ञ एवं अनेक विषयों का जानकार होता है। यदि लामेश पापग्रह हो तो व्रत-नियम एवं बन्धु-विरोधी होता है। यदि लामेश 'दशम भाव' में हो तो जातक मातृ-भक्त, परन्तु पिता से द्वेष रखने वाला, धनी तथा दीर्घजीवी होता है। यदि लामेश 'एकादश भाव' में हो तो जातक दीर्घायु, अधिक पुत्र-पौत्रवान्, सुकर्मी, सुन्दर, सुशील, लोक-प्रसिद्ध तथा प्रधान पुरुष होता है। यदि लामेश 'द्वादश भाव' में हो तो जातक रोगी, उत्पात-निरत, मानी, दानी, विषय-चिन्त तथा सदा सुखी रहनेवाला होता है।

व्यपेश फल - यदि 'व्यपेश' अर्थात् 'द्वादश भाव का स्वामी' 'लग्न' अर्थात् 'प्रथम भाव' में बैठा हो तो जातक सुन्दर, अविवाहित अपना नपुंसक नीचों के संग के कारण दोष पाने वाला, परदेशवासी तथा

प्रियवादी होता है। यदि व्यपेश 'द्वितीय भाव' में हो तो जातक कृपण और कटुभाषी होता है। यदि व्यपेश शुभगृह हो तो राजा, चौर अथवा अग्नि द्वारा उसकी मृत्यु होती है। यदि व्यपेश 'तृतीय भाव' में हो तो जातक वाधु-विहीन होता है। यदि तृतीयभावस्थ व्यपेश शुभगृह हो तो जातक धनी, थोड़े भाइयों वाला तथा कुटुम्बियों से दूर रहने वाला होता है। यदि व्यपेश 'चतुर्थ भाव' में हो तो जातक सुकर्म, परन्तु सदा दुःखी रहने वाला, रोगी, कृपण एवं पुत्र के द्वारा मृत्यु पाने वाला होता है। यदि व्यपेश 'पञ्चम भाव' में हो तो जातक, पापगृह तो सन्तान-हीन एवं शुभगृह हो तो पुत्रवान्, पिता के धन का उपभोग करने वाला, परन्तु सामर्थ्यहीन होता है। यदि व्यपेश 'षष्ठ भाव' में हो तो जातक, पापगृह होने पर, कृपण, नेत्र-रोगी अथवा नेत्र-हीन अथवा बाल्यावस्था में ही मृत्यु पाने वाला होता है। यदि शुभगृह हो तो दुःखी एवं रोगी रहता है। यदि व्यपेश 'सप्तम भाव' में हो तो जातक दुष्ट, दुश्चरित्र एवं वाक्पटु होता है। यदि व्यपेश पापगृह हो तो जातक की मृत्यु अपनी पत्नी के द्वारा और यदि पापगृह हो तो वेश्या के द्वारा होती है। यदि व्यपेश 'अष्टम भाव' में हो तो जातक पापगृह के होने से लोक-द्रोही, अष्ट-कपाली तथा कार्य-साधन-हीन होता है एवं शुभगृह के होने से धन-संगृही होता है। यदि व्यपेश 'नवम भाव' में हो तो जातक तीर्थाटन करने वाला होता है। यदि व्यपेश पापगृह हो तो धन को व्यर्थ खर्च करता रहता है। यदि व्यपेश 'दशम भाव' में हो तो जातक पर-स्त्री से विमुख, पुत्रवान्, पवित्र-हृदय एवं धन-संगृही होता है, परन्तु उसकी माता कटु वादिनी होती है। यदि व्यपेश 'एकादश भाव' में हो तो जातक उत्तम स्थान में रहने वाला, चिरजीवी, सम्पत्तिशाली, उदार-दारी, सत्यवादी तथा लोक-प्रसिद्ध होता है। यदि व्यपेश 'द्वादश भाव' में हो तो जातक ग्रामवास से सुखी, पशुओं का संगृह करने वाला, कृपण तथा सम्पत्तिशाली होता है, परन्तु उसके जीवन रहने की आशा कम ही होती है। यदि वह जीवन रह जाय तो गात्र का स्वामी, लोक-प्रसिद्ध एवं सम्मानित होता है।

चन्द्र कुण्डली भाव फलम् - चन्द्र कुण्डली में चन्द्रमा से विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का फल निम्नानुसार समझना चाहिए -

सूर्य फल - चन्द्रमा के साथ सूर्य हो अर्थात् जन्म काल में चन्द्रमा और सूर्य 'एक ही भाव' में स्थित हों तो जातक सुखभोगी, परदेशवासी एवं फलह-प्रिय होता है। यदि सूर्य चन्द्रमा से 'द्वितीय भाव' में हो तो जातक घमास्वी, राजमान्य तथा अनेक स्त्रियों वाला होता है। यदि सूर्य चन्द्रमा से 'तृतीय भाव' में हो तो जातक राजतुल्य, स्वर्ण-संगृही तथा पवित्र-हृदय होता है। यदि सूर्य चन्द्रमा से 'चतुर्थ भाव' में हो तो जातक माता-पिता का अभक्त अथवा उनका विनाश होता है। यदि सूर्य चन्द्रमा से 'पञ्चम भाव' में हो तो जातक अनेक पुत्रों वाला तथा कन्याओं के कारण दुःखी रहता है। यदि सूर्य चन्द्रमा से 'षष्ठ भाव' में हो तो जातक शत्रुघ्नी, वीर तथा क्षत्रिघोषित-कर्म करने वाला होता है। यदि सूर्य चन्द्रमा से 'सप्तम भाव' में हो तो जातक की पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होती है और वह स्वयंभी श्रीलवान् तथा राजमान्य होता है। यदि सूर्य चन्द्रमा से 'अष्टम भाव' में हो तो जातक अनेक रोगों से पीड़ित तथा सदैव क्लेश युक्त रहता है। यदि सूर्य चन्द्रमा से 'नवम भाव' में हो तो जातक धर्मात्मा, सत्यवादी, परन्तु बन्धुओं को क्लेश देने वाला होता है। यदि सूर्य चन्द्रमा से 'दशम भाव' में हो तो जातक के ऊपर चनी व्यापारी सदैव उपस्थित बने रहते हैं। यदि सूर्य चन्द्रमा से 'एकादश भाव' में हो तो जातक अनेक विषयों का हारा, कुलनायक, सुप्रसिद्ध तथा राज-सम्मान पाने वाला होता है। यदि सूर्य चन्द्रमा से 'द्वादश भाव' में हो तो जातक क्षीण-दृष्टि वाला अथवा संकाशी होता है।

भौम फल - यदि चन्द्रमा के साथ मङ्गल एक ही भाव में हो तो जातक रक्तवर्ण, लाल नेत्रों वाला तथा रक्ताक्ष-रोगी होता है। यदि मङ्गल चन्द्रमा से 'द्वितीय भाव' में हो तो जातक भू-स्वामी, कृषि-कर्म करने वाला होता है। विशेषतः उसके पुत्र कृषि-कर्म करते हैं। यदि मङ्गल चन्द्रमा से 'तृतीय भाव' में हो तो जातक

में हो तो जातक के चार भाई होते हैं और वह सुखी जीवन बिताता है। यदि मङ्गल चन्दमा से 'चतुर्थभाव' में हो तो जातक सुख-हीन एवं दरिद्र होता है तथा उसकी पत्नी की मृत्यु उसके सामने ही हो जाती है। यदि मङ्गल चन्दमा से 'पञ्चम भाव' में हो तो जातक पुत्र-हीन होता है। यदि किसी स्त्री की जन्म कुण्डली में ऐसा योग हो तो उसे निश्चित न समझना चाहिए। यदि चन्दमा से 'षष्ठ भाव' में मङ्गल हो तो जातक रक्त-रोग से पीड़ित तथा अधर्म से विचुर होता है। यदि चन्दमा से 'सप्तम भाव' में मङ्गल हो तो जातक की पत्नी कटुभाषिणी तथा कुशीला होती है। यदि चन्दमा से 'अष्टम भाव' में मङ्गल हो तो जातक जीव-हिंसक, महापापी तथा मत्थ एवं शील से रहित होता है। यदि चन्दमा से 'नवम भाव' में मङ्गल हो तो जातक सम्पत्तिशाली होता है तथा वृद्धावस्था में उसे अपने पुत्रों द्वारा सुख प्राप्त होता है। यदि चन्दमा से 'दशम भाव' में मङ्गल हो तो जातक को वाहनदिक्क सुख प्राप्त होता है। यदि चन्दमा से 'एकादश भाव' में मङ्गल हो तो जातक राजसम्मान पाने वाला, प्रशस्ती तथा स्वरूपवान् होता है। यदि चन्दमा से 'द्वादश भाव' में मङ्गल हो तो जातक सबको प्रीतिदायक तथा माता को दुःखी रखने वाला होता है।

बुध कल- यदि चन्दमा के साथ बुध एक ही भाव में हो तो जातक सुन्दर, सुखी, मिष्टावधि परदेसी तथा अपने कुटुम्बियों को प्रिय होता है। यदि चन्दमा से 'द्वितीय भाव' में बुध हो तो जातक धन-धान्यादि से युक्त, गृह तथा बन्धुजनों का लाभ पाने वाला होता है। उसकी मृत्यु ग्रीव-रोग से होती है। यदि चन्दमा से 'तृतीय भाव' में बुध हो तो जातक महापुरुषों की संगति करने वाला एवं धन-सम्पत्ति तथा राज्य का लाभ पाने वाला होता है। यदि चन्दमा से 'चतुर्थ भाव' में बुध हो तो जातक सदा सुखी रहता है और उसे मातृपक्ष से विशेष लाभ होता है। यदि चन्दमा से 'पञ्चम भाव' में बुध हो तो जातक रूपवान्, महाकामी, विलक्षण कुटुम्ब परन्तु कुवाक्य बोलने वाला होता है। यदि चन्दमा से 'षष्ठ भाव' में बुध हो तो जातक बड़े नेत्र तथा अधिक रोमों वाला, कृपण, कातर तथा विवादों से डरने वाला होता है। यदि चन्दमा से 'सप्तम भाव' में बुध हो तो जातक

हस्त्री के वशा में रहने वाला, धनी, कृपण तथा दीर्घायु होता है। यदि चन्दमा से 'अष्टम भाव' में बुध हो तो जातक शत्रुओं के लिए भयंकर, विख्यात राजा तथा शीत से कष्ट पाने वाला होता है। यदि चन्दमा से 'नवम भाव' में बुध हो तो जातक स्व-धर्म-विरोधी, पराया-धर्म अपनाने वाला, दारुण स्वभाव का तथा लोक-विरोधी होता है। यदि चन्दमा से 'दशम भाव' में बुध हो तो जातक राजयोगी होता है। यदि चन्दमा कर्कस्थ हो तो स्वकुल में श्रेष्ठ होता है। यदि चन्दमा से 'एकादश भाव' में बुध हो तो जातक का भाग्योदय विवाहोपरान्त होता है तथा उसे प्रत्येक कार्य में लाभ होता है। यदि चन्दमा से 'द्वादश भाव' में बुध हो तो जातक कृपण होता है तथा उसके पुत्रों को सदैव पराजय प्राप्त होती है।

गुरु फल - यदि चन्दमा और गुरु (बृहस्पति) 'एक ही भाव' में बैठे हों तो जातक रोग-हीन, वीर, दीर्घजीवी तथा धन-सम्पन्न होता है। यदि चन्दमा से 'द्वितीय भाव' में गुरु हो तो जातक शासक, उत्तम धर्मात्मा, निष्ठाप, उग्र स्वभाव का तथा राजमान्य होता है। यदि चन्दमा से 'तृतीय भाव' में गुरु हो तो जातक जनप्रिय होता है तथा उसकी सत्रह वर्ष की आयु से पिता के घर में धन की वृद्धि होती है। यदि चन्दमा से 'चतुर्थ भाव' में गुरु हो तो जातक मातृ-पक्ष के लिए कष्टकारक, परोपकार का काम करने वाला, सुरक्षित होता है। यदि चन्दमा से 'पञ्चम भाव' में गुरु हो तो जातक पुत्रवान्, तेजस्वी, उग्र स्वभाव का, महाधनी तथा दूरदृष्टि सम्पन्न होता है। यदि चन्दमा से 'षष्ठ भाव' में गुरु हो तो जातक दीर्घायु, उदासीन, गृहहीन तथा भिक्षावृत्ति आदि से जीवन-यापन करने वाला होता है। यदि चन्दमा से 'सप्तम भाव' में गुरु हो तो जातक स्थूल-शरीर, मितव्ययी, दीर्घजीवी, नपुंसक, पाण्डुरोगी तथा अपने घर का मुखिया होता है। यदि चन्दमा से 'अष्टम भाव' में गुरु हो तो जातक श्रेष्ठ पिता की सन्तति होने हुए भी महाफरेजी होता है, सदैव रोगी बना रहता है तथा स्वप्न में भी सुखी नहीं रह पाता। यदि चन्दमा से 'नवम भाव' में

में गुरु हो तो जातक चानी, चर्माला, देव-गुरु-सेवक तथा सुमार्गशामी होता है। यदि चन्दमा से 'दशम भाव' में गुरु हो तो जातक स्त्री-पुत्रादि को त्याग कर तपस्वी हो जाता है। यदि चन्दमा से 'एकादश भाव' में गुरु हो तो जातक वाहनादि-सुरव-सम्पन्न एवं राजतुल्य ऐश्वर्यशाली होता है। यदि चन्दमा से 'द्वादश भाव' में गुरु हो तो जातक स्व-कुटुम्ब विरोधी एवं शत्रुओं को सुख देने वाला होता है।

शुक्र फल - यदि चन्दमा और शुक्र 'एक ही भाव' में बैठे हों तो जातक की मृत्यु जल, हिंसा अथवा सन्निपात से होती है। यदि चन्दमा से 'द्वितीय भाव' में शुक्र हो तो जातक चर्माला, बुद्धिमान्, महाधनी एवं राजतुल्य ऐश्वर्यशाली होता है। यदि चन्दमा से 'तृतीय भाव' में शुक्र हो तो जातक चर्माला, बुद्धिमान् एवं म्लेच्छ जातियों से धन प्राप्त करने वाला होता है। यदि चन्दमा से 'चतुर्थ भाव' में शुक्र हो तो जातक दुर्बल-शरीर, कष्ट-प्रकृति एवं कृदालस्था में धन-सम्पन्न होता है। यदि चन्दमा से 'पञ्चम भाव' में शुक्र हो तो जातक अनेक कन्याओं वाला तथा चानी होने हुए भी अग्रयणी होता है। यदि चन्दमा से 'षष्ठ भाव' में शुक्र हो तो जातक भयकारी, युद्ध में पराजित तथा निन्धा-कर्मी में धन रक्क करने वाला होता है। यदि चन्दमा से 'सप्तम भाव' में शुक्र हो तो जातक महान् योद्धा, महाधनी, दानी, भोगी तथा लोक-प्रसिद्ध होता है। यदि चन्दमा से 'अष्टम भाव' में शुक्र हो तो जातक पुरुषार्थ-हीन एवं शोकालु-स्वभाव का होता है। यदि चन्दमा से 'नवम भाव' में शुक्र हो तो जातक अनेक भार्गव-वहिन तथा मित्रों वाला होता है। यदि चन्दमा से 'दशम भाव' में शुक्र हो तो जातक दीर्घायु एवं माता-पिता से सुख पाने वाला होता है। यदि चन्दमा से 'एकादश भाव' में शुक्र हो तो जातक दीर्घायु एवं शत्रु तथा रोग से रहित होता है। यदि चन्दमा से 'द्वादश भाव' में शुक्र हो तो जातक ज्ञानहीन तथा पर-स्त्री-शामी होता है।

शनि फल - यदि चन्दुमा और शनि 'एक ही भाव' में बैठे हों तो जातक रोगी, धनहीन तथा बन्धु-हीन होता है। यदि चन्दुमा से 'द्वितीय भाव' में शनि हो तो जातक की माता को कष्ट होता है और वह शैशवावस्था में माता का दूध पीने की बजाय बकरी का दूध पीकर जीवित रहता है। यदि चन्दुमा से 'तृतीय भाव' में शनि हो तो जातक की अनेक कन्याएँ होती हैं और वे मर भी जाती हैं। यदि चन्दुमा से 'चतुर्थ भाव' में शनि हो तो जातक शत्रु-हन्ता एवं बड़ा पराक्रमी होता है। यदि चन्दुमा से 'पञ्चम भाव' में शनि हो तो जातक की स्त्री पिचकादिनी तथा श्यामवर्ण होती है। यदि चन्दुमा से 'षष्ठ भाव' में शनि हो तो जातक अल्पायु, कलरी तथा महाक्लेशी होता है। यदि चन्दुमा से 'सप्तम भाव' में शनि हो तो जातक महादानी, धर्मार्थी तथा अनेक विजयों के साथ समण अपना विवाह करने वाला होता है। यदि चन्दुमा से 'अष्टम भाव' में शनि हो तो जातक पिता को कष्ट देता है तथा बहुत दान करने पर ही उसका कल्याण होता है। यदि चन्दुमा से 'नवम भाव' में शनि हो तो जातक के जीवन में जब भी शनि की अनुदशा आयेगी, तब-तब उसकी धर्म-हानि होती रहेगी। यदि चन्दुमा से 'दशम भाव' में शनि हो तो जातक राजतुल्य धनी होने हुए भी वृषण स्वभाव का होता है। यदि चन्दुमा से 'एकादश भाव' में शनि हो तो जातक दीर्घायु, सुखी तथा पशु-धन से युक्त होता है। यदि चन्दुमा से 'द्वादश भाव' में शनि हो तो जातक धनहीन, पापी तथा निष्ठुर होता है।

राहु फल - यदि चन्दुमा और राहु 'एक ही भाव' में बैठे हों अथवा चन्दुमा से 'दशम' अथवा 'नवम भाव' में राहु हो तो जातक काल्पावस्था में सुरवी तथा वृद्धावस्था में महाधनी होता है। यदि चन्दुमा से 'तृतीय', 'षष्ठ' अथवा 'एकादश भाव' में राहु हो तो जातक राजा अथवा राजमन्त्री एवं धन-धान्य से वर्य होता है। यदि चन्दुमा से 'चतुर्थ', अथवा 'सप्तम भाव' में राहु हो तो जातक के माता-पिता एवं पत्नी को कष्ट होता है। यदि चन्दुमा से 'द्वितीय', 'अष्टम' अथवा 'द्वादश भाव' में राहु हो तो जातक

धन-धान्य से सम्पन्न होने पर भी कभी सुरकी नहीं रह पाता। यदि चतुमा से 'पञ्चम भाव' में राहु हो तो जातक की मृत्यु पानी में डूब कर होने की संभावना रहती है तथा उसके जीवन में पग-पग पर विपत्तियाँ आती रहती हैं।

केतु फल - जैमिनि आदि के मतानुसार केतु का फल भी राहु के समान ही होता है।

चन्दु निर्घाण फलम् - अब यवनाचार्य के मतानुसार चन्दु निर्घाण का फल कहा जाता है।

मेष राशिस्थ चन्दु निर्घाण फल - यदि चतुमा 'मेष' राशि में हो तो जातक पुत्रवान्, धनी, उग्रस्वभावी, कार्य-कुशल, राज-पिप, देव-ब्राह्मण-भक्त, गुणी, परोपकारी, शाकादि का स्वल्प आहार करनेवाला एवं सामुवर्ण बड़े-बड़े नेत्रों वाला होता है। ऐसा जातक दुर्बल पुरतों, खराब तरब तथा सिर पर बुछा वाला, चपल स्वभाव, दौ दिनों वाला, उमादी, कात्री, शूर तथा सेवक पर स्नेह रखने वाला होता है। वह पुष्ट से उरता है। उसे १६ तथा १७ वें वर्ष में विश्वम्बिका, तीसरे एवं १२ वें वर्ष में जल से भय होता है। २५ वें वर्ष में सन्तान-लाम होता है तथा इसी वर्ष उसे रतौंधी की बीमारी भी हो सकती है। ३२ वें वर्ष में कान्ताघात का भय भी उदात्त होता है। ऐसा जातक शीघ्र गाम्भी, वृशाङ्ग, मात्री, शुभ लक्षण सम्पन्न, अपने कार्य की स्वयं प्रशंसा करने वाला एवं विदेश-यात्राएं करने वाला होता है। उसमें वायु की अधिकता होती है। यदि चतुमा शुभगृह से दृष्ट हो तो ६० वर्ष की आयु प्राप्त करता है। कार्तिक कृष्ण नवमी, बुधवार को मध्वरात्रि में मस्तक रोग से उसकी मृत्यु होना संभव है।

वृष राशिस्थ चन्दु निर्घाण फल - यदि चतुमा वृष राशि में हो तो जातक अल्प तैजस्वी, स्तब्ध, कर्म-मुग्ध-रहित, स्त्री-वशी, दीर्घायु, अल्पकेशी, माता-पिता-गुरु-भक्त, समा-चतुर, थोड़े में सन्तोष करने वाला, सत्यवादी, धनी, कभी, परोपकारी, शाका पिप, कफ-प्रकृति, शान्त, शूर, सहिष्णु

तथा बुद्धिमान् होता है। उसे जन्म के पहले वर्ष में कष्ट, तीसरे में अग्नि-भय, सातवें में विध्वंसिका, नवें में व्यथा, दसवें में रक्त-वमन, बारहवें में ऊँचाई से गिरने का भय, सोलहवें में सर्प-भय, उन्नीसवें में पीड़ा, पच्चीसवें में जल-भय एवं तीसवें तथा बत्तीसवें वर्ष में पीड़ा होती है। यदि चन्द्रमा पर शुभग्रह की दृष्टि हो तो वह ८६ वर्ष की आयु पाता है तथा माघ शुक्ला नवमी, शुक्रवार, रोहिणी नक्षत्र में उसकी मृत्यु होना संभव है।

मिथुन राशिस्थ चन्द्र निर्घाण फल - यदि चन्द्रमा 'मिथुन' राशि में हो तो जातक चतुर, विद्वान्, दृढ़ मैत्रीवाला, सुशील, अल्पभाषी, कुटुम्ब-पालक, कामी, कौतूहल-पिप, मिथिल पिप, बाल्यावस्था में सुखी, मध्य-मावस्था में अल्प अपवा मध्यम सुखी तथा वृद्धावस्था में दुःखी रहता है। ऐसा व्यक्ति कर्ष-रोग से पीड़ित, धर्म-परायण, सुन्दर, सत्यवादी, संगीत-पिप, बुद्धिमान्, शास्त्रज्ञ तथा पिपकारी होता है। वह दो त्रिज्ये वाला, गुरुज्ये का भक्त अल्प सन्ततिवान् तथा गुणवान् होता है। उसे अपनी आयु के ५ वें वर्ष में वृद्ध से भय, १६ वें में शत्रु से भय, १८ वें में कात की पीड़ा, २० वें में कष्ट तथा ३८ वें में मृत्यु तुल्य कष्ट होता है। वह अस्सी वर्ष की आयु पाता है तथा वैशाख शुक्ला द्वादशी, बुधवार, मघाशुक्ल काल, हस्तनक्षत्र में उसकी मृत्यु होना संभव रहता है।

कर्क राशिस्थ चन्द्र निर्घाण फल - यदि चन्द्रमा 'कर्क' राशि में हो तो जातक पुत्रवान्, गुणवान्, सज्जन, मातृ-पितृ-भक्त, स्त्री-वशी, सब वस्तुओं का संग्रह करने वाला, परोपकारी, अनेक जन्तु-खाद्यको तथा अनेक विजयों से युक्त, ज्योतिषी, मित्रवान् तथा पिपकारी होता है। वह बाल्यावस्था में तिथि, मध्यमायु में सुखी तथा वृद्धावस्था में धर्म-तत्पर होकर तीर्थयात्री होता है। उसके ललाट के मध्यभाग में एक छोटी सी रेखा होती है। उसे जन्म के पहले वर्ष में रोग, तीसरे में लिङ्ग-पीड़ा, ३१ वें में सर्प-भय तथा ३२ वें वर्ष में अनेक कष्ट होते हैं। उसकी आयु ८५ अथवा ८६ वर्ष की होती है। माघ शुक्ला नवमी, शुक्रवार, रोहिणी नक्षत्र में उसकी मृत्यु होना संभव होता है।

सिंह राशिस्थ-चन्द निर्घाण फल - यदि चन्दमा 'सिंह' राशि में हो तो जातक चानी, विद्वान्, कला-समर्थ, निदेश प्राप्त प्रेमी, युद्ध-प्रिय, बड़े डील-डौल का, फिजूल-वर्ण नेत्रों वाला, क्रोधी, अल्प पुत्रवान्, सर्वत्र वामन करने वाला, शत्रु-नाशक, परम निष्ठुर, शिरोरोगी, सत्यकारी, विचक्षण-बुद्धि वाला, सुशील तथा कृपण होता है। उसे अपनी आयु के पहले वर्ष में भूत-बाधा, ५ वें में अग्नि-भय, ७ वें में प्लव तथा विश्वसिका, बीसवें में सर्प-दंश एवं २१ वें में पीड़ा का भय होता है। २२ वें वर्ष में लोकापवाद तथा ३२ वें में उदर के वामभाग में वातगुल्ल रोग होने की संभावना रहती है। यदि चन्दमा पर शुभगुह की दृष्टि हो तो जातक १०० वर्ष की आयु प्राप्त करता है। फाल्गुन कृष्ण पंचमी, मंगलवार को मद्यपान में जल अथवा जल के समीप उसकी मृत्यु होना संभव है।

कन्या राशिस्थ-चन्द निर्घाण फल - यदि चन्दमा 'कन्या' राशि में हो तो जातक स्वजनों को आनन्द देने वाला, अनेक सेवकों वाला, देव-आराधन-भक्त, कलाविलस, चानी, प्रियकारी, प्रवासी, धर्मात्मा, मनुष्यों में प्रेष्ठ, अल्प कन्या-सन्तान एवं बहुत पुत्रों वाला होता है। उसके कण्ठ-प्रदेश तथा शिश्न में कोई चिह्न होता है। वह अपनी आयु के तीसरे वर्ष में अग्नि-पीडा, ५ वें में नेत्र-पीडा, ८ वें में अथवा १३ वें में गुदा-कष्ट, १५ वें में सर्प-भय, इस्कीसके में किसी ऊँची जगह से गिरने का कष्ट तथा ३० वें वर्ष में शास्त्राचार का भय प्राप्त करता है। यदि चन्दमा पर शुभगुह की दृष्टि हो तो वह २० वर्ष की आयु प्राप्त है तथा ज्येष्ठ कृष्ण त्रयोदशी, रविवार को उसकी मृत्यु होना संभव है।

तुला राशिस्थ-चन्द निर्घाण फल - यदि चन्दमा 'तुला' राशि में हो तो जातक सर्व-मान्य, वस्तु-संगृही, धर्म-परायण, योगी, अनेक सेवकों वाला, परिणत, चानी, जलाशयादि का निर्माण करने वाला, शाल, कला-समर्थ, राजाओं को प्रिय, मिष्टान्न प्रेमी, पितृ-भक्त, दो हित्रों वाला, अल्प सन्तानिस्व, अल्प वधुवान्, कृषि-कर्म-निपुण, कुप-त्रिकुप-कुशल, देव-आराधन-प्रणक, स्त्री के कहे अनुसार चलने

वाला तथा विपुल सम्पत्ति अर्जित करने वाला होता है। उसे अपनी आयु के ७वें वर्ष में अग्नि-भय, २वें में ज्वर-पीड़ा, १२वें में जल-भय, २०वें में ऊँचाई से गिरने अथवा सर्प-दंश का भय तथा २१वें वर्ष में अनेक प्रकार के कष्ट होने संभव है। यदि चन्दुमा शुभग्रह से दृष्ट हो तो पूर्णाष्टि २५ वर्ष होती है तथा वैशाख शुक्ला, अष्टमी, बुधवार के प्रथम उदर आश्लेषा नक्षत्र में मृत्यु होना संभव है।

वृश्चिक राशिस्थ चन्दु निर्घाण फल - यदि चन्दुमा 'वृश्चिक' राशि में हो तो जातक पर-सन्तापी, विद्वेष्टी, क्रोधी, कलही, विश्वासघाती, मित्रदोही, असन्तोषी, दूसरों के कान में विद्वान् उपरिष्ण-त करने वाला, पराक्रमी, अनेक नौकरों वाला, गुप्त-पापी, शुभ-लक्षणों वाला, विलक्षण कुटुंब वाला तथा राजा द्वारा सम्मानित होता है। उसे जन्म के पहले वर्ष में ज्वर, तीसरे में अग्नि-भय, पाँचवें तथा पन्द्रहवें में ज्वर तथा २५वें में विशेष पीड़ा होती है। वह चार भाई तथा दो स्त्रियों वाला होता है। यदि चन्दुमा पर शुभग्रह की दृष्टि हो तो पूर्णाष्टि ८० वर्ष की होती है। ज्येष्ठ शुक्ला दशमी, बुधवार, हस्तनक्षत्र, मध्यरात्रि में उसकी मृत्यु होना संभव है।

चन्दु राशिस्थ चन्दु निर्घाण फल - यदि चन्दुमा 'चन्दु' राशि में हो तो जातक विद्वान्, सुपुत्रवान्, धर्माला, राजमान्य, लोकप्रिय, देव-आराधन-भक्ता, वस्तु-संग्रही, सभा-वक्ता, सुतरवी, दृढ़ मैत्री वाला, सौभाग्यशाली, गहरे पदतल वाला, साहसी, विनम्र, शान्त, क्लेशशुक्ल, धीमत् कुटुंब हो जाने वाला, अल्प सन्तानिवान्, अर्द्धे भाईपों वाला, स्वल्पाहारी तथा तपस्वी होता है। वह पूर्वदिशा में धरती रहता है। उसे जन्म से पहले वर्ष में बाधा तथा तेरहवें वर्ष में विशेष कष्ट होता है। किसी आचार्य ने पूर्णाष्टि ६२ तथा किसीने ७५ वर्ष कही है। यदि चन्दुमा पर शुभग्रह की दृष्टि हो तो पूर्णाष्टि १०० वर्ष हो सकती है। आषाढ कृष्ण पंचमी, बुधवार, हस्तनक्षत्र में रात्रि के समय उसकी मृत्यु होना संभव है।

मकर राशिस्थ चन्दु निर्घाण फल - यदि चन्दुमा 'मकर' राशि में हो तो जानक धीरे, गंभीर, विचक्षण बुद्धि, सत्यवादी, कृपालु, दानी, सुन्दर, आलसी, कैलेशायुक्त, कृष्णवर्ण तालु एवं विस्तीर्ण कटि वाला होता है। उसे आयु के ५ वें वर्ष में पीड़ा, ७ वें में जल-भय, १० वें में वृद्ध से गिरने का भय, १२ वें में शत्रु-पीड़ा, बीसवें में ज्वर-बाधा, २५ वें में अशु-पीड़ा तथा चौबीसवें में बाँधे अंग में अग्नि-पीड़ा का भय होता है। पूर्णाष्टु ८० वर्ष होती है। आषाढ शुक्ला दशमी, मंगलवार को ज्येष्ठ नक्षत्र में उसकी मृत्यु होना संभव रहता है।

कुम्भ राशिस्थ चन्दु निर्घाण फल - यदि चन्दुमा 'कुम्भ' राशि में हो तो जानक दानी, पिपलक्ता, धर्मकर्म में शीघ्रता करने वाला, कामी, दोषलिप्त वाला, अल्प सन्ततिवान्, क्षीण शरीर तथा धनहीन होता है। उसे आयु के पहले वर्ष में पीड़ा, ५ वें में अग्नि-भय, १२ वें में सर्प अथवा जल से भय तथा २८ वें में चौरों से हानि का भय होता है। पूर्णाष्टु ८० वर्ष मानी गई है। उसके बाँधे हाथ में कोई चिह्न भी होता है। भाद्रपद कृष्ण चतुर्थी, शनिवार को भरणी नक्षत्र में उसकी मृत्यु होना संभव है।

मीन राशिस्थ चन्दु निर्घाण फल - यदि चन्दुमा 'मीन' राशि में हो तो जानक धनी, माती, विनयी, भोगी, प्रसन्न चित्त, माता-पिता-देव-अन्धार्थ-गुरु-भक्त, सुन्दर, मेष्ठ, उदार एवं गंध-माला आदि से विभूषित होता है। उसे जन्म से ५ वें वर्ष में जल-भय, ८ वें में ज्वर तथा बाईसवें वर्ष में महात् पीड़ा होना संभव है। चौबीस वर्ष की आयु में पूर्व दिशा की यात्रा करने का योग भी बनता है। पूर्णाष्टु ८० वर्ष की होती है। आश्विन मास के कृष्ण पक्ष की द्वितीया तिथि को, गुरुवार के दिन, कृतिका नक्षत्र में उसकी मृत्यु होना संभव कहा गया है।

गोल फलम् - मेषादि ६ राशियों (मेघ, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह और कन्या) में

जब सूर्य रहता है, तब उस अवधि को 'सौम्य' अथवा 'उत्तर' गोल कहा जाता है एवं तुला आदि ६ राशियों (तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ तथा मीन) में जब सूर्य रहता है, तब उस अवधि को 'याम्य' अथवा 'दक्षिण' गोल कहा जाता है। सौम्य अर्थात् उत्तर गोल में जन्म लेने वाला धनी, विद्वान्, पुत्र, पौत्रादि से युक्त तथा राजमान्य होता है एवं याम्य अर्थात् दक्षिण गोल में जन्म लेने वाला सुख-हीन, दुराचारी, मिथ्यावादी, निधनि तथा हीनाङ्ग होता है।

राशि ध्रुवाङ्क के अनुसार आयुर्द्वय ज्ञान - मेष के १०, वृष के ६, मिथुन के २०, कर्क के ५, सिंह के ८, कन्या के २, तुला के २०, वृश्चिक के ६, धनु के १०, मकर के १४, कुम्भ के ३ तथा मीन के ४ ध्रुवाङ्क माने गये हैं। जन्म कुण्डली में सूर्यादि ग्रह जिन राशियों में हों, उन सबके ध्रुवाङ्कों को जोड़ कर जातक की आयु के वर्षों का ज्ञान प्राप्त किया जाता है।

द्वादश भावों से विचारणीय विषय - जन्म कुण्डली के विभिन्न भावों से विभिन्न विषयों का विचार किया जाता है। किस भाव से किन-किन विषयों का मुख्य रूप से विचार करना चाहिए, इसे निम्नानुसार समझ लें - भावों की गणना 'लग्न' से आरंभ की जाती है।

'लग्न' अर्थात् 'प्रथम भाव' जातक अथवा किसी पदार्थों के रूप, रंग, चिह्न, जाति, आयु का प्रमाण, सुख-दुःख तथा साहस आदि के सम्बन्ध में विचार करना चाहिए। 'द्वितीय भाव' से स्वर्ण-रौप्य आदि धातु, रत्न, भाण्डार, क्रय-विक्रय, धन-सम्पत्ति, केवल आदि के संग्रह के सम्बन्ध में विचार करना चाहिए। 'तृतीय भाव' से सहोदर-सहोदरा (भाई-बहिन), पराक्रम, सेवक तथा अनुजीवी आदि का विचार करना चाहिए। 'चतुर्थ भाव' से मित्र, गृह, ग्राम, भूमि, कृषि, चतुष्टय, वाहन, मातृ-सुख आदि का विचार करना चाहिए। इस भाव पर शुभ ग्रहों की दृष्टि अथवा युति से इन सब वस्तुओं की वृद्धि होती है। 'पंचम भाव'

से बुद्धि, विद्या, उद्योग-क्षमता, सन्तान, मन्त्र, न्याय, नीति तथा गर्भ-स्थिति आदि के सम्बन्ध में विचार करना चाहिए। 'षष्ठ भाव' से शत्रु-समूह, शूर-कर्म, कोड़ा-कुंसी, वृण, रोग, चिन्ता, शङ्का, मामला-मुकदमा, भगडा-भंभर तथा मामा के सम्बन्ध में विचार करना चाहिए। 'सप्तम भाव' से दैनिक आय, वाणिज्य, पुद्द, पत्नी, स्त्री, प्रणय, यात्रा तथा शरीर के गुहा-स्थान आदि के सम्बन्ध में विचार करना चाहिए। 'अष्टम भाव' से नदी, मार्ग-वैषम्य, शस्त्रास्त्र, गुप्त-धन, आकस्मिक-लाभ, आयु, मृत्यु तथा सङ्कट आदि के सम्बन्ध में विचार करना चाहिए। 'नवम भाव' से धर्म, माघोदय, तीर्थयात्रा, दान, पुण्य, पवित्रता एवं मनोवृत्ति आदि के सम्बन्ध में विचार करना चाहिए। 'दशम भाव' से पिता, राज्य-सम्बन्ध, उच्च पद, व्यवसाय, मुद्रा आदि के सम्बन्ध में विचार करना चाहिए। 'एकादश भाव' से सब प्रकार के लाभ, आमदनी, स्वर्ण, वस्त्र, वाहन आदि के सम्बन्ध में विचार करना चाहिए। 'द्वादश भाव' से हानि, व्यय, दण्ड, बन्धन आदि के सम्बन्ध में विचार करना चाहिए।

जन्म कुण्डली अथवा प्रश्न कुण्डली का अवलोकन करते समय यह नियम ध्यान में रखना चाहिए कि जिस भाव पर अपने स्वामी की अथवा शुभगृह की दृष्टि हो अथवा पुत्रि हो, उस भाव की वृद्धि होती है अर्थात् उसका उत्तम फल प्राप्त होता है, और जिस भाव पर पापगृह की अथवा शत्रुगृह की दृष्टि हो, उसके शुभ-फल की हानि तथा अशुभ-फल की वृद्धि होती है।

विभिन्न भावों पर गृहों की दृष्टि का नियम - प्रत्येक गृह जिस भाव से बैठा हो, वहाँ से तीसरे तथा दशम भाव को 'एकपाद' दृष्टि से, पाँचवें तथा नवमे भाव को 'द्विपाद दृष्टि' से, चौथे तथा आठवें भाव को 'त्रिपाद' दृष्टि से एवं सप्तम भाव को 'चतुष्पाद' अर्थात् 'पूर्ण' दृष्टि से देखता है। इसके अतिरिक्त शनि सप्तम भाव के अतिरिक्त तृतीय तथा दशम भाव को भी पूर्ण दृष्टि से देखता है अर्थात् शनि

तृतीय, सप्तम तथा दशम - इन तीनों भावों को पूर्ण दृष्टि से देखना है। गुरु सप्तम भाव के अतिरिक्त 'पंचम' तथा 'नवम भाव' को भी पूर्ण दृष्टि से देखना है अर्थात् गुरु पंचम, सप्तम एवं नवम - इन तीनों भावों को पूर्ण दृष्टि से देखना है। इसी प्रकार मङ्गल सप्तम भाव के अतिरिक्त 'चतुर्थ' तथा 'अष्टम भाव' को भी पूर्ण दृष्टि से देखना है अर्थात् मंगल जिस भाव में बैठा हो, वहाँ से चतुर्थ, सप्तम तथा अष्टम भाव पर पूर्ण दृष्टि डालना है। शनि, गुरु तथा मंगल के अतिरिक्त अन्य सभी ग्रह केवल सप्तम भाव को ही पूर्ण दृष्टि से देखते हैं। राहु तथा केतु की विपरीत दृष्टि मानी गई है। फलादेश के समय ग्रह - दृष्टि का विचार आवश्यक है।

ग्रहों के स्वरूप - सूर्यादि ग्रहों के गुण, वर्ण, आकार आदि निम्नानुसार कहे गए हैं। ग्रहों के फलादेश पर विचार करते समय उनके स्वरूपादि पर विचार करना उचित है।

'सूर्य' - शूर, गंभीर, सुन्दर, प्रधामाभा युक्त रक्त वर्ण, अल्पकेशी, चतुरस्र अर्थात् लंबाई-चौड़ाई में समान, मधु-नेत्र, पित्त-प्रकृति, बलवान, मोटे कद वाला तथा कुशल एवं गंभीर स्वभाव का है।

'चन्द्र' - सुन्दर शरीर, रक्त की अधिकता वाला, कृष्णवर्ण पुँछराले केशों वाला, कमल-पत्र तुल्य नेत्रों वाला, अल्पत गौर वर्ण, कफ-वात-प्रकृति, निर्मल बुद्धि वाला तथा श्रेष्ठ वक्ता है।

'मङ्गल' - रक्त-गौर वर्ण, पीतवर्ण नेत्रों वाला, पुत्रावस्था वाला, अग्नि तुल्य कान्ति वाला, पित्त-प्रकृतिका, मज्जासार युक्त, हिंसक-स्वभाव, परन्तु अल्पत उदार प्रकृति का, महा अभिमान्नी तथा शूर है।

'बुध' - प्रधाम वर्ण, लंबे जैसे नेत्रों वाला, त्रिदोष-प्रकृति, रजोगुणी, कोमल वाणी वाला, नसों में रो'ठन वाला, उत्कण्ठित, कला-निपुण तथा बुद्धिमान् है।

'गुरु' - स्वर्ण वर्ण, लम्बे कद का, पीतवर्ण नेत्रों वाला, कफ-प्रकृति, मज्जासार युक्त, उदार बुद्धि, कोमल वाणी वाला, चतुर, हानी तथा पण्डित है।

'शुक्र' - जलयुक्त मेघवर्ण, कृक-वात-प्रकृति, कमलपत्र जैसे नैत्रों वाला, धुंधराले केशों वाला, बलिष्ठ भुजाओं वाला, मधुमत्त हाथी जैसी चालवाला, सुन्दर, रजोगुणी तथा कामातुर है।

'शनि' - अधिक कृष्णवर्ण, नशों में बलवाला, जलयुक्त केशों वाला, मोटे दाँत तथा नखों वाला, पीतवर्ण-नेत्र, वात-प्रकृति, हृश-शरीर, दुष्ट-स्वभाव तथा मलिन-बुद्धि है।

टिप्पणी - जन्मलग्न भाग में जो नवांश हो उसके स्वामी-गृह के आकार के अनुसार जातक का आकार तथा चन्दुमा जिस राशि के नवांश में हो उसके स्वामी-गृह के वर्ण के अनुरूप जातक का वर्ण कहना चाहिए। यदि कहीं संशय उत्पन्न हो तो कुल, जाति अथवा देशानुसार जातक के वर्ण का निर्णय करना चाहिए। सूर्य, चन्द्र तथा गुरु - ये तीनों गृह सत्त्वगुण प्रधान हैं; मङ्गल तथा शनि तमोगुण प्रधान हैं तथा बुध और शुक्र - रजोगुण प्रधान हैं। जिस के त्रिशंश में 'सूर्य' हो, उसी के अनुसार जातक का गुण अर्थात् स्वभाव समझना चाहिए।

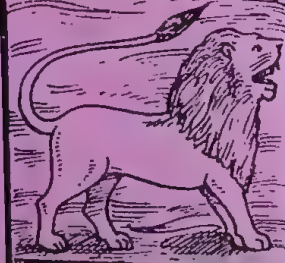
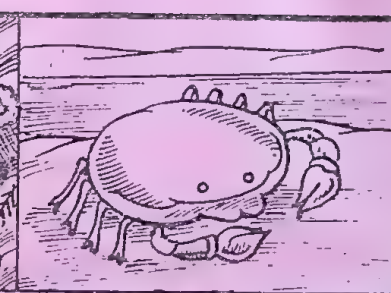
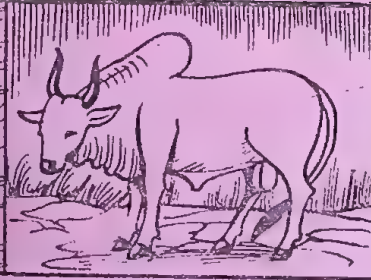
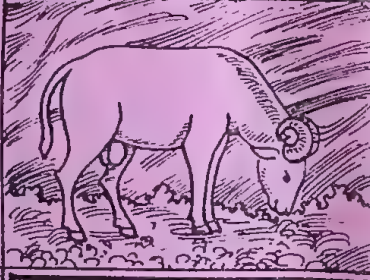
गृहों का राशि-भोग काल - सूर्य, बुध तथा शुक्र एक राशि पर लगभग एक-एक मास तक रहते हैं। गुरु एक वर्ष, मङ्गल ३६ मास, शनि ६० वर्ष तथा चन्दुमा लगभग सवा दो दिन तक एक-एक राशि में संचरण करते हैं।

गृहों के फल देने का समय - सूर्य तथा मङ्गल राशि के अग्रिम भाग में, गुरु तथा शुक्र मध्य भाग में, बुध सम्पूर्ण राशि-भोग-काल में तथा शनि और चन्दुमा राशि के अन्तिम भाग में विशेष रूप से अपना शुभ अथवा अशुभ-फल प्रदर्शित करते हैं। मङ्गल आदि पाँच गृह यदि अतिचार से अग्रिम राशि में अथवा वक्रगति से पृष्ठ राशि में भी चले जाँच तो भी वे स्वर्क राशि का ही फल देते हैं। गुरु में यह विशेषता है कि वह यदि अतिचारी होकर अग्रिम राशि में चला जाय तो गोचर-फल उसी राशि का

देता है, परन्तु लुप्तवर्षजन्य दोष पूर्व राशि सम्बन्धी संवत्सर में ही देता है, क्योंकि पूर्व राशि सम्बन्धी संवत्सर ही लुप्त होता है। जो ग्रह नीच राशि अथवा शत्रु राशि में हो अथवा सूर्य के सान्निध्य से अस्त हो, वह अपना शुभ अथवा अशुभ फल नहीं देता। यदि शुभ ग्रह पाप ग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो तो वह शुभ फल नहीं देता, इसी प्रकार यदि पाप ग्रह शुभ ग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो तो वह पाप फल नहीं देता। जन्म कुण्डली स्थित ग्रहों के विशिष्ट फलानुदेश की जानकारी के लिए अन्तिम खण्ड को ध्यान से पढ़ें।

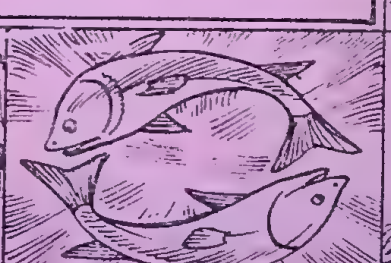
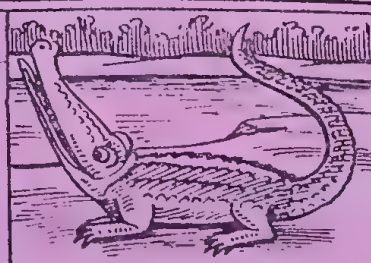
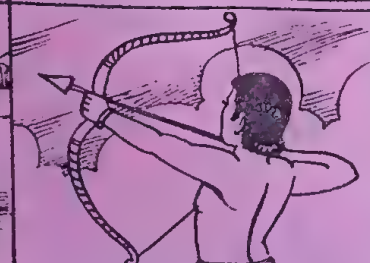
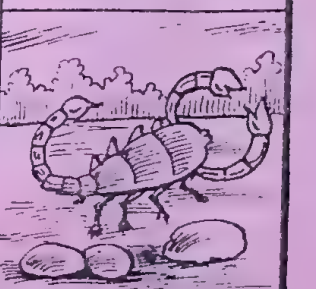
'सूर्य' एक राशि पर एक महीने तक रहता है, वह प्रांभ के पाँच दिन तक ही फल देता है। 'चन्द्र' एक राशि पर सवा दो दिन तक रहता है और अन्त की तीन घड़ी में फल देता है। 'मंगल' एक राशि पर डेढ़ मास तक रहता है तथा प्रांभ के आठ दिनों तक विशेष फल देता है। 'बुध' एक राशि पर एक मास तक रहता है और अन्त के तीन दिनों में फल देता है। 'गुरु' एक राशि पर तेरह मास तक रहता है तथा मध्यभाग के दो-महीनों में विशेष फल देता है। 'शनि' एक राशि पर तीस मास तक रहता है और अन्त के दो महीनों में विशेष फल देता है। 'शुक्र' एक राशि पर एक महीने तक रहता है और वह मध्यभाग में सात दिनों तक विशेष फल देता है। 'राहु' तथा 'केतु' एक राशि पर अठारह-अठारह मास तक रहते हैं तथा अन्त के दो-दो महीनों में विशेष फल देते हैं।

ग्रहों का दशा-फल - प्रत्येक ग्रह अपनी दशा तथा अन्तर्दशा में अपना विशेष फल देता है। ग्रहों की दृष्टि तथा ग्रहों की दशा एवं अन्तर्दशा फल का विस्तृत विवेचन 'चतुर्थ खण्ड' में किया जाएगा। अगले 'द्वितीय खण्ड' में सं. १८४२ वि. से सं. २१०० वि. तक की सूर्य कुण्डलियों का वर्णन है तथा तृतीय खण्ड में सं. १८७१ वि. से सं. २०५० वि. तक की सूर्य कुण्डलियों का संक्षिप्त फलानुदेश वर्णित है। अपनी जन्म कुण्डली का फलानुदेश इनके आधार पर फल प्रकाशन के सिद्धान्तानुसार समझ लेना चाहिए।



इति श्री भृगु संहिता कुण्डली रहस्यम्

प्रथम खण्डः समाप्तम्





ॐ

श्रीभृगुसंहिता कुण्डली-रहस्य

द्वितीय खण्ड

(सं. १८४२ वि० से सं. २१०० वि० तक की सूर्य-कुण्डली)

आवश्यक-टिप्पणी

कुण्डली-रहस्य के इस द्वितीय खण्ड में सं. १६४२ वि. से लेकर सं. २१०० वि. तक की सूर्य कुण्डलियों दी गई हैं। ये कुण्डलियाँ पृष्ठ संख्या १०० से पृष्ठ संख्या ४८० तक में हैं। जिस सम्बन्ध की सूर्य-कुण्डली किस पृष्ठ पर मिलेगी, इसकी जानकारी के लिए पृष्ठ संख्या २३७ से २४६ तक दी गई 'जन्म कुण्डली सारिणी' का अवलोकन करना चाहिए। सूर्य-कुण्डली के आधार पर अपनी लग्न कुण्डली तय्यार करने की विधि पृष्ठ संख्या २४७ से २५० तक में दी गई है। उसके अनुसार अपनी लग्न कुण्डली अपनी जन्म कुण्डली तय्यार कर लेनी चाहिए। आपका जन्म किस लग्न में हुआ था, यह जानकारी आवश्यक है।

पृष्ठ संख्या १६८ से पृष्ठ संख्या ३६५ तक उद्देशि की गई अपूर्ण सं. १६६७ वि. से सं. २०४६ वि. संवत् तक की सूर्य कुण्डलियों का भाषा फलादेश 'तृतीय खण्ड' में वर्णित है। इससे पूर्व तथा बाद की सूर्य कुण्डलियों का फलादेश ग्रंथ-विस्तार भय से छोड़ दिया गया है। अपनी सूर्य कुण्डली का फलादेश जानने के उपरान्त लग्न कुण्डली के विस्तृत फलादेश सम्बन्धी नियमों की जानकारी के लिए खण्ड एक, चार तथा पाँच का अध्ययन करना चाहिए। फलादेश सम्बन्धी नियमों के आधार पर किसी भी जन्म कुण्डली का फलादेश सहज में द्वात किया जा सकता है। कुण्डली खण्ड में जिन सूर्य-कुण्डलियों के नीचे क्रम संख्या अंकित है, उनका 'फलादेश प्रकाश' में उसी क्रम संख्या पर फलादेश वर्णित है। जिन सूर्य-कुण्डलियों के नीचे कोई क्रमांक नहीं दिया गया है, उनका फलादेश तृतीय खण्ड में नहीं मिलेगा। उनके फलादेश की जानकारी के लिए खण्ड १, ४ तथा ५ के फलादेश कथन सिद्धान्तों का आश्रय लेना चाहिए।

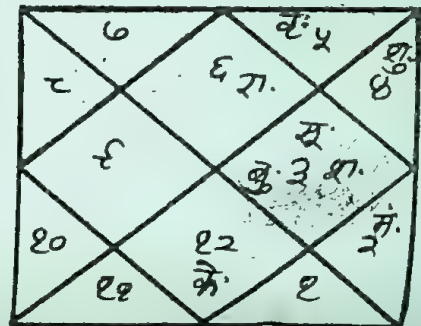
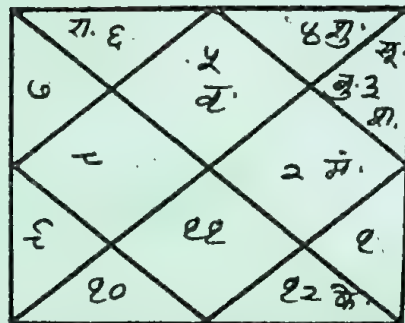
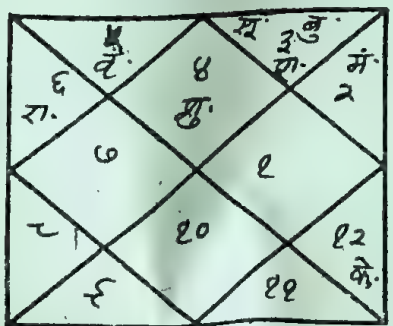
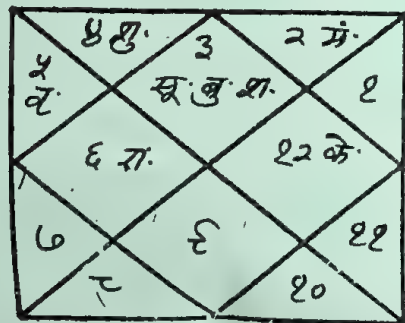
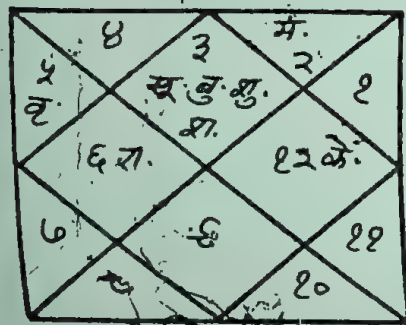
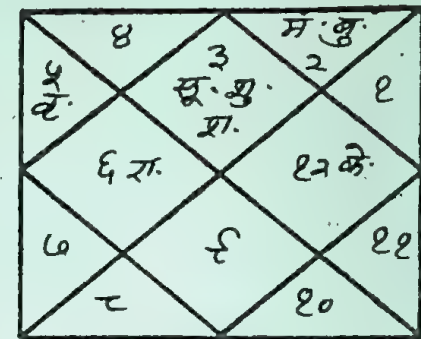
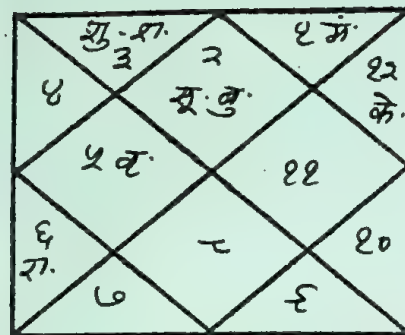
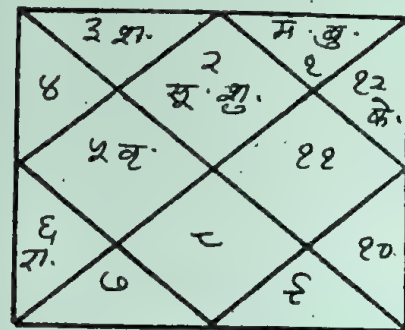
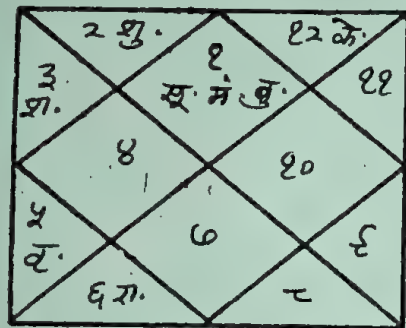
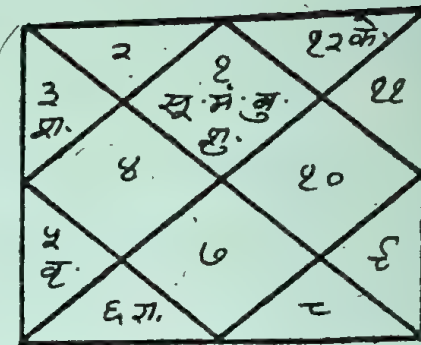
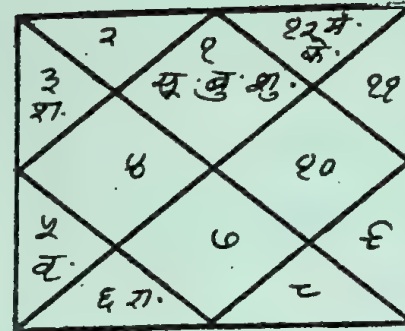
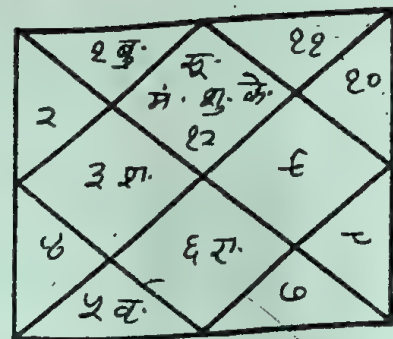
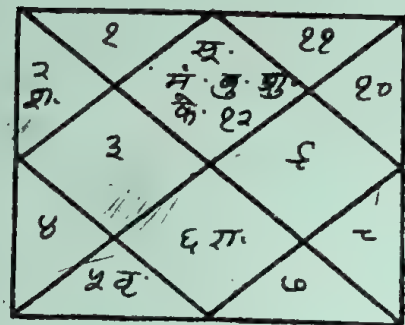
श्री भृगु संहिता महाशास्त्र कुण्डली-रहस्य

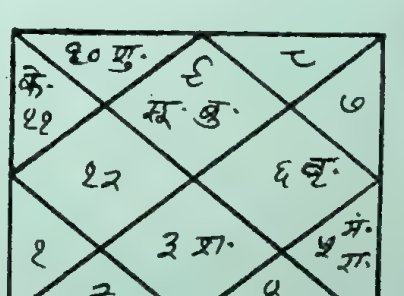
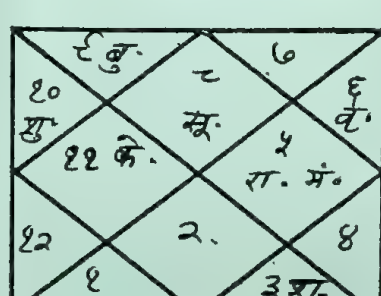
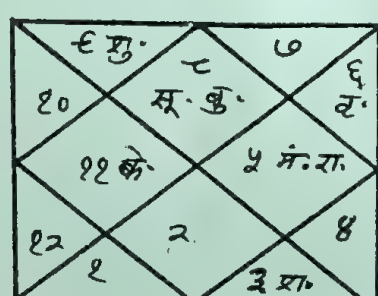
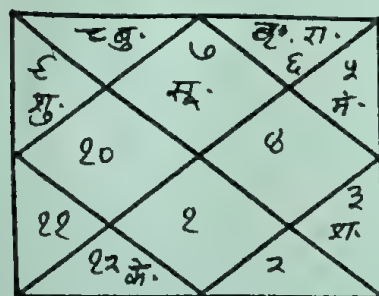
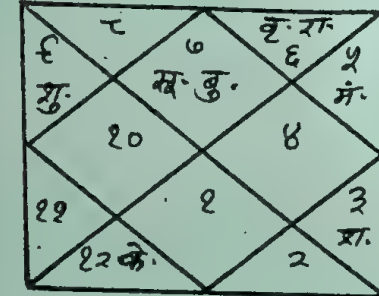
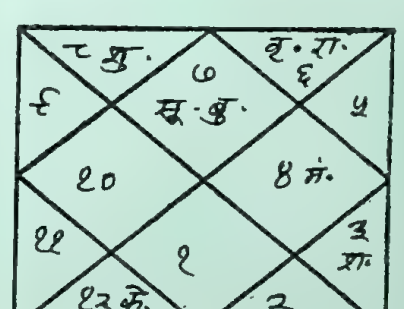
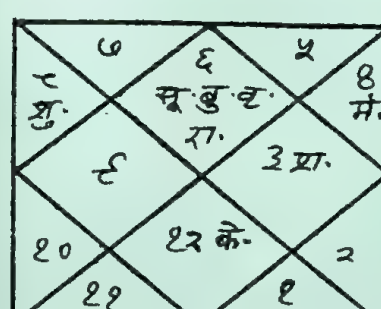
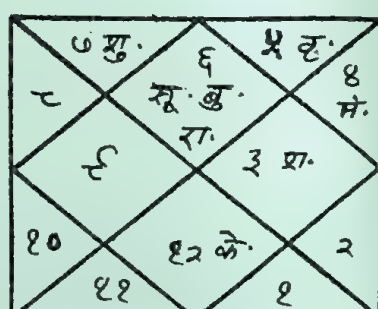
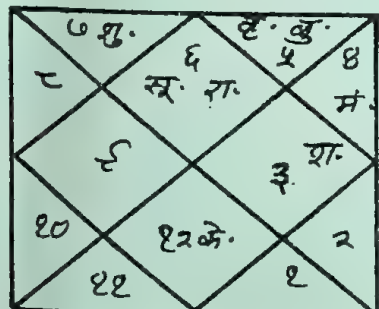
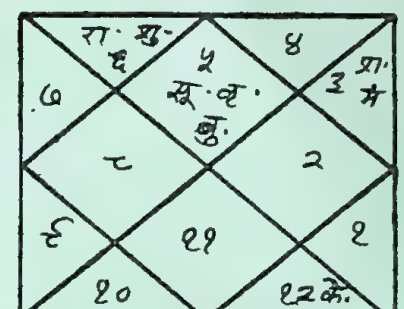
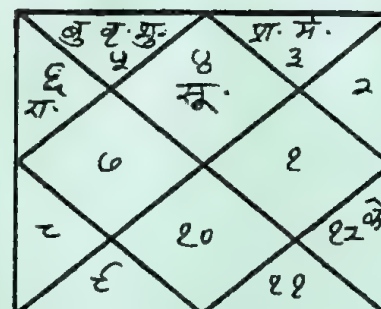
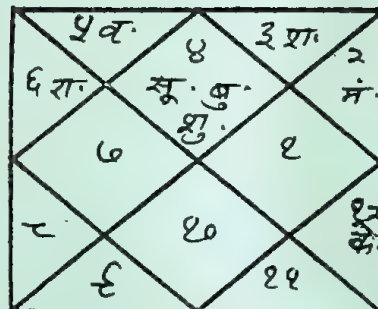
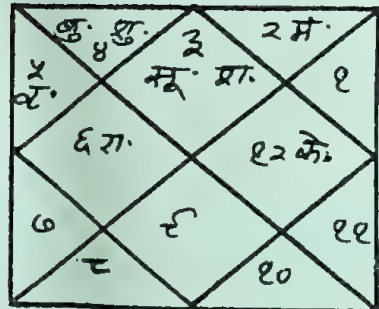
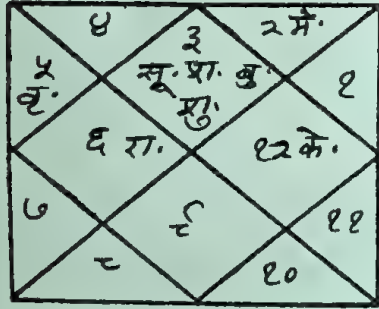
कुण्डली-खण्ड

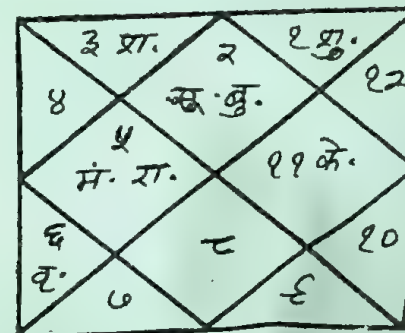
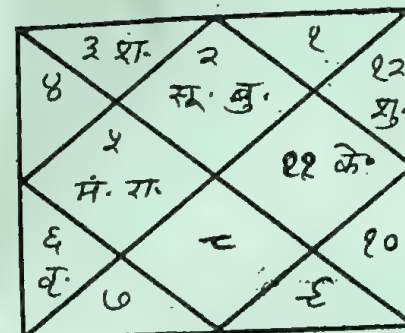
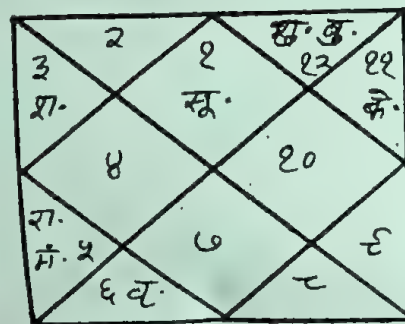
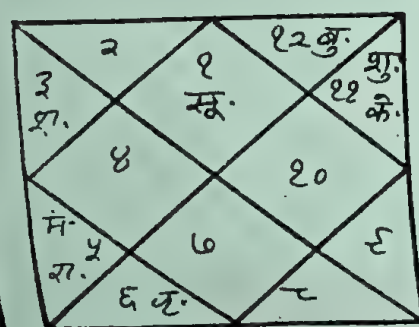
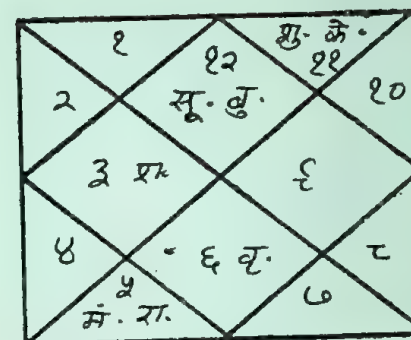
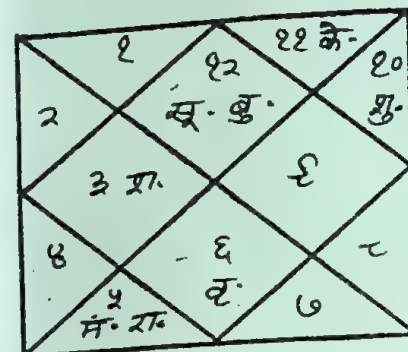
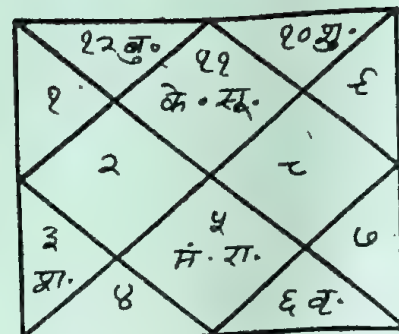
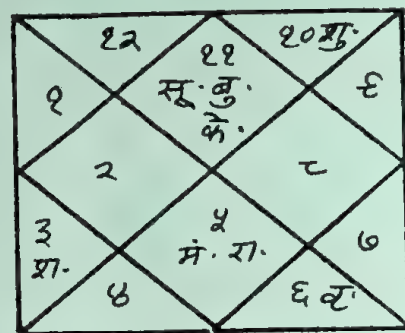
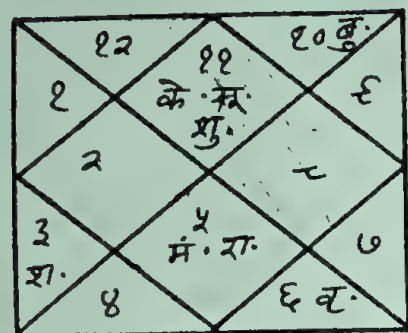
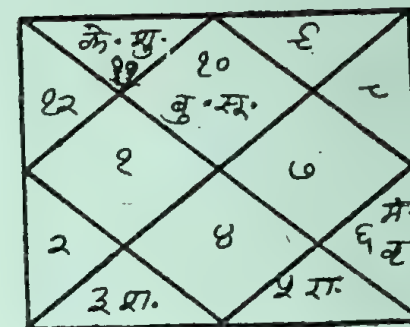
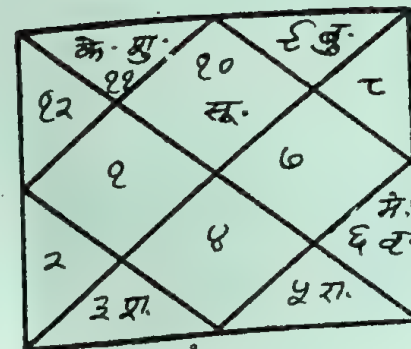
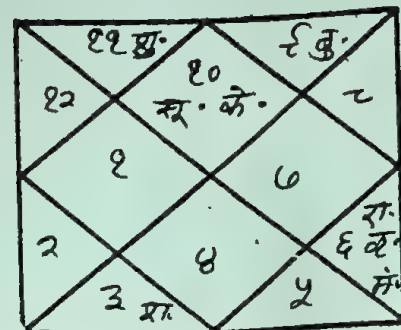
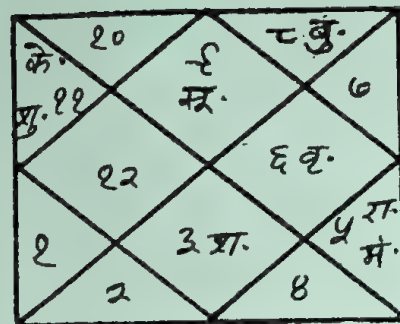
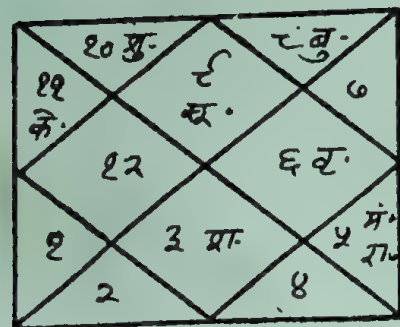
विक्रम सम्वत् १९४२ से २१०० वि. तक की कुण्डलियाँ

आगे पृष्ठ संख्या १०० से पृष्ठ संख्या २३६ तक विक्रम सम्वत् १९४२ से २००० वि. तक की सूर्य-कुण्डलियाँ उद्धृति हैं। तत्पश्चात् पृष्ठ संख्या २३७ से २५० तक विभिन्न सम्वत्सरेण के जन्म कुण्डलियों की सारिणी तय्यार तथा आवश्यक टिप्पणियाँ दी गई हैं; जिनके आधार पर सूर्य-कुण्डली द्वारा लग्न कुण्डली तय्यार करने की विधि तथा किसे पृष्ठ पर किस कामकाज की कुण्डलियाँ देखनी चाहिए, यह ज्ञान प्राप्त होगा। तत्पश्चात् पृष्ठ संख्या २५१ से पृष्ठ संख्या ४८० तक विक्रम-सम्वत् २००१ से संवत् २१०० तक की सूर्य-कुण्डलियाँ उद्धृति हैं।

पाठकों को चाहिए कि वे सर्वप्रथम कुण्डलियों की सारिणी के आधार पर अपनी जन्म कालीन सूर्य-कुण्डली को ढूँढ़ें, तदुपरांत टिप्पणी में दिए गए निर्देशानुसार सूर्य-कुण्डली को लग्न-कुण्डली में परिवर्तित करें। उक्त १५६ वर्ष की अवधि में जन्म लेने वाले सभी जातकों की सूर्य-कुण्डलियाँ इस खण्ड में अवश्य मिल जाँचेंगी। तत्पश्चात् जन्म कुण्डली के फलादेश, मृत तथा अविष्कृत-जीवन तथा महादशा अर्द्ध विषयों की जानकारी के लिए अगले प्रकरणों (खण्डों) का अध्ययन करना चाहिए। फलादेश सं. १९६७ वि. से २०४४ वि. तक की कुण्डलियों का मिलेगा।







४	३	२	१
मं. ५	सू. बु. श.		शु.
६ व.		१२	
७	८		११ के.
		१०	

४	३	२ शु.	१
५ रा.	सू. बु. श.		
६ मं. व.		१२	
७	८		११ के.
		१०	

४ बु.	३	२ शु.	१
५ रा.	सू. श.		
६ मं. व.		१२	
७	८		११ के.
		१०	

५ रा.	४	३ श.	२ शु.
मं. व. ६	सू. बु.		
७		१	
८	१०		१२
९		११ के.	

रा. बु.	श. शु.		
मं. व. ५	४	३	२
७		१	
८	१०		१२
९		११ के.	

५ रा.	४	३ शु.	२
मं. व. ६	सू. बु.		
७		१	
८	१०		१२
९		११ के.	

५ रा.	४	३ श.	२
६ व.	सू. बु. शु.		
७ मं.		१	
८	१०		१२
९		११ के.	

६ व.	५	४ शु.	३ श.
७ मं.	सू. रा.		
८		२	
९	११ के.		१
१०		१२	

६ व.	५	४ शु.	३ श.
७ मं.	सू. रा. बु.		
८		२	
९	११ के.		१
१०		१२	

६ व.	५	४	३ श.
७ मं.	सू. बु. शु.		
८	रा.		२
९	११ के.		१
१०		१२	

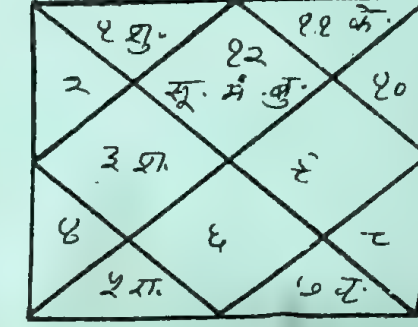
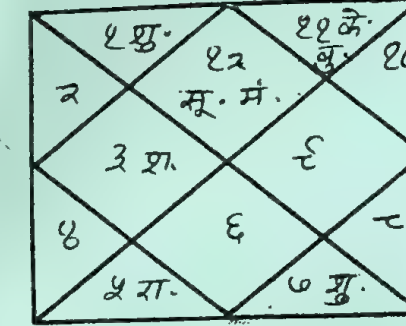
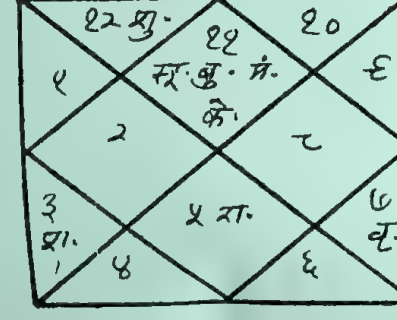
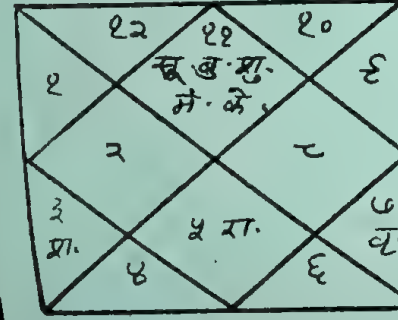
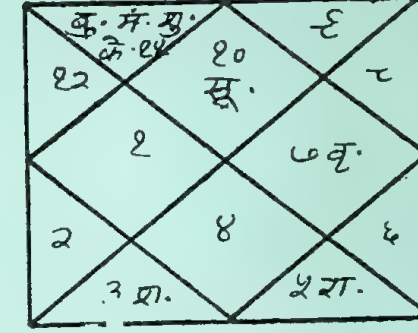
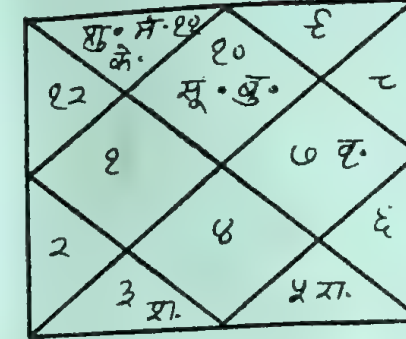
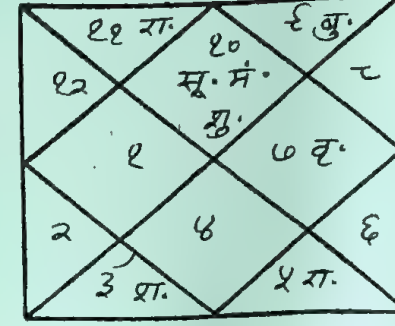
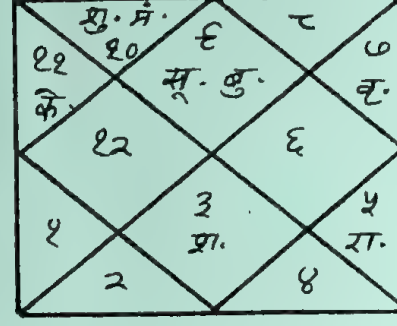
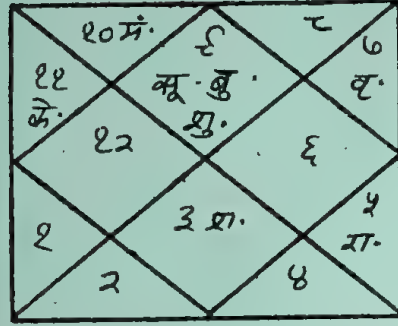
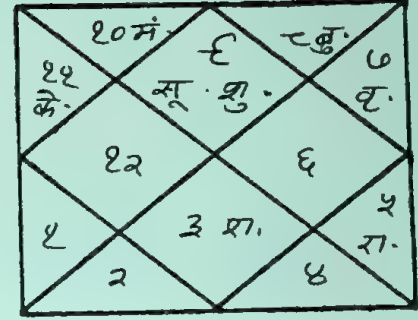
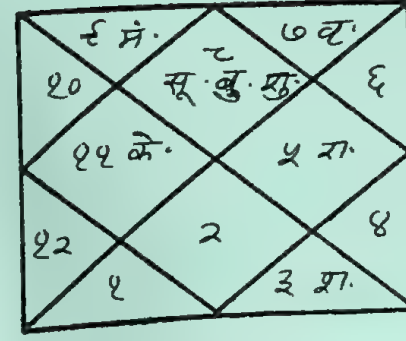
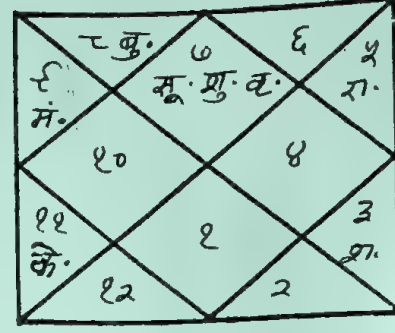
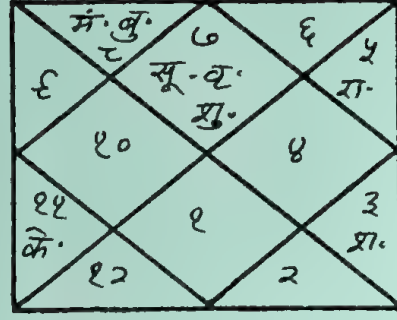
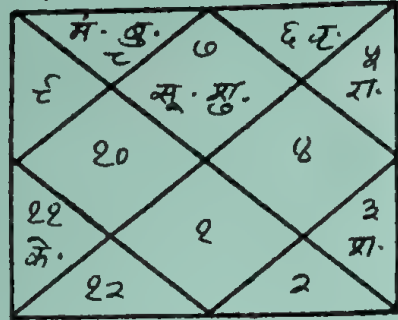
७ मं.	६	५ रा.	४
८	सू. बु. व.		
९		३ श.	
१०	१२		२
११ के.		१	

७	६	५ शु.	४ रा.
८ मं.	सू. बु. व.		
९		३ श.	
१०	१२		२
११ के.		१	

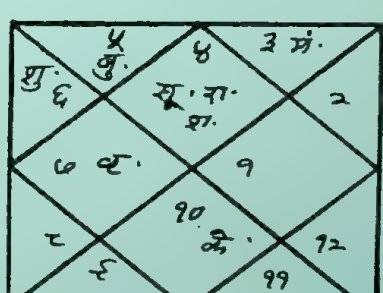
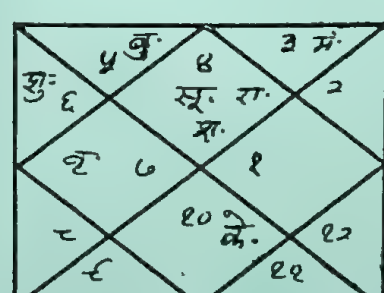
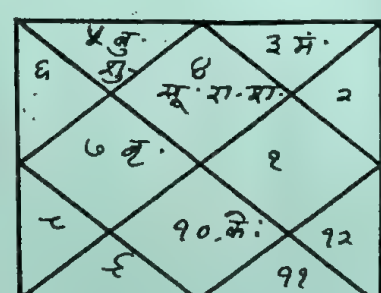
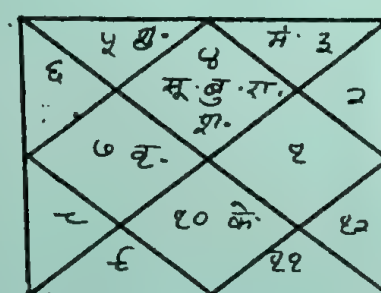
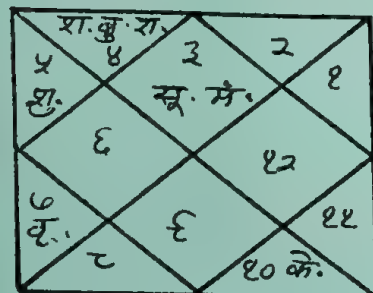
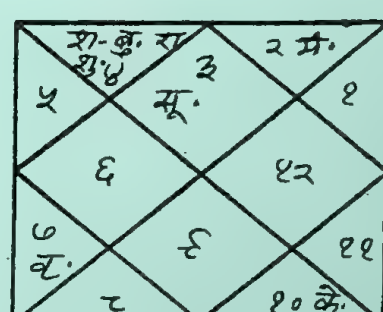
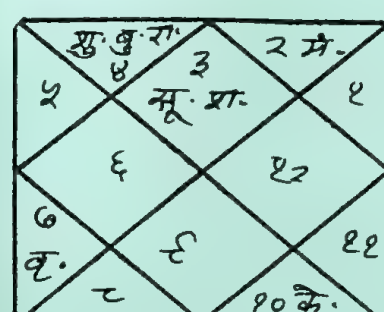
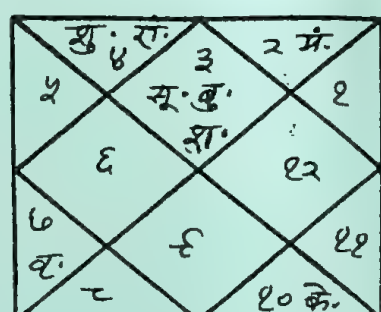
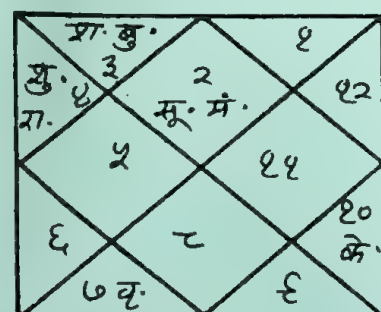
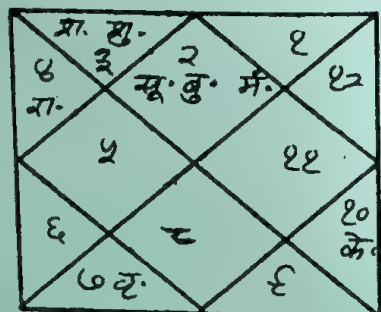
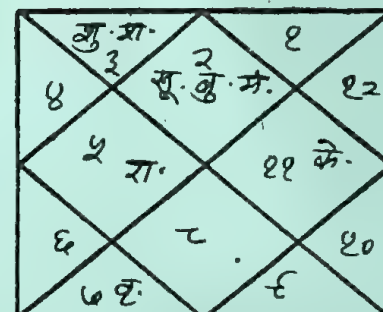
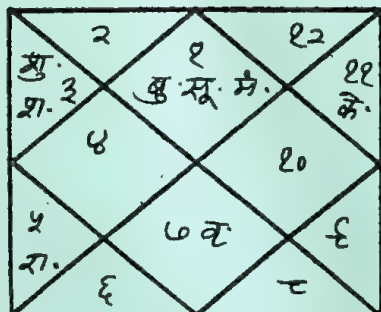
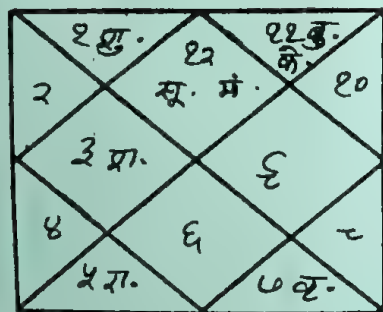
७	६	५ रा.	४
८ मं.	सू. बु. व.		
९		३ श.	
१०	१२		२
११ के.		१	

७ बु.	६	५ रा.	४
८ मं.	सू. शु. व.		
९		३ श.	
१०	१२		२
११ के.		१	

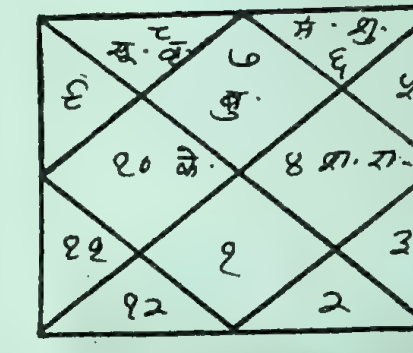
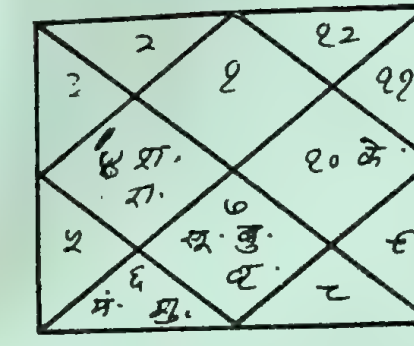
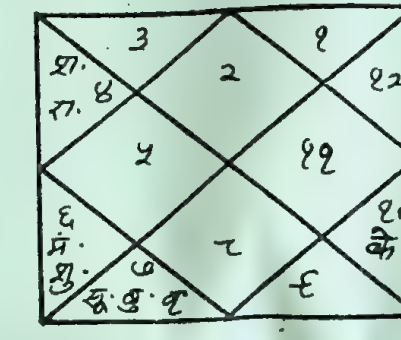
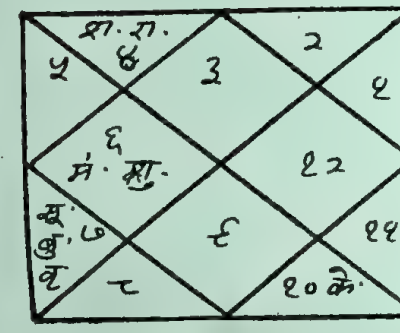
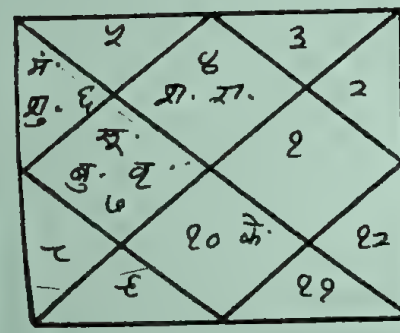
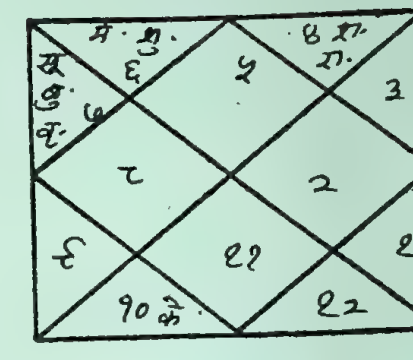
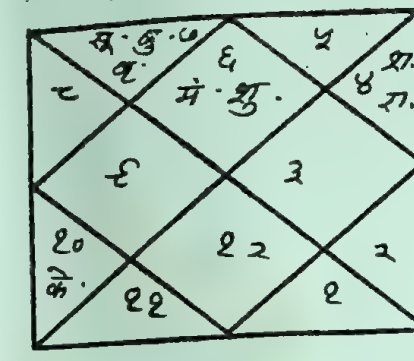
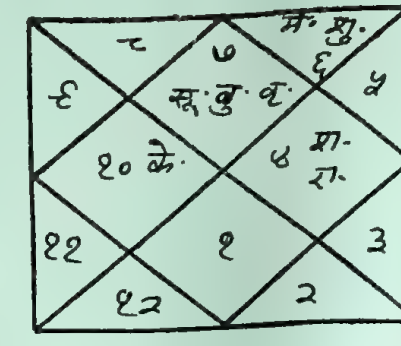
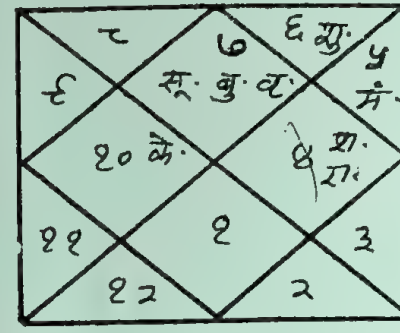
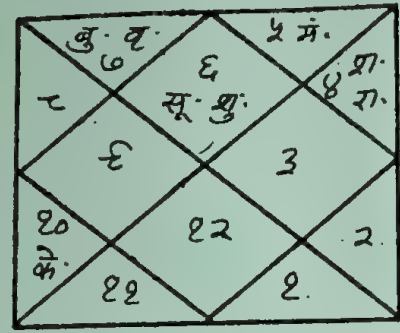
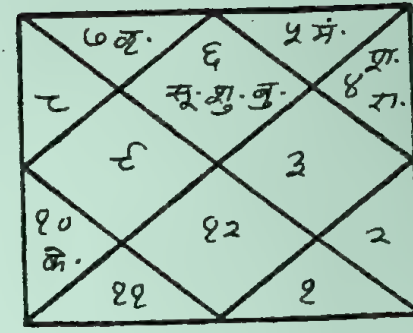
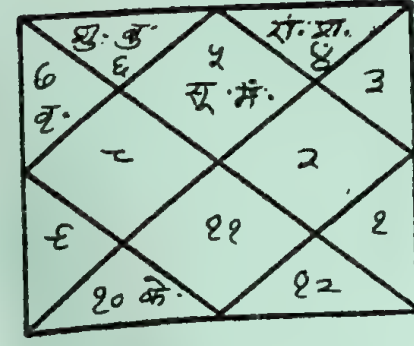
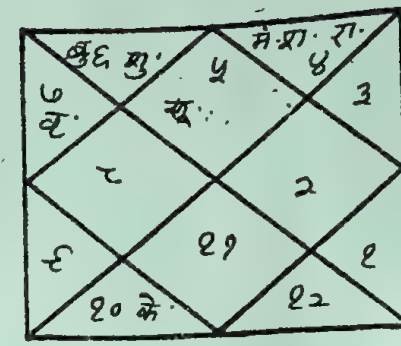
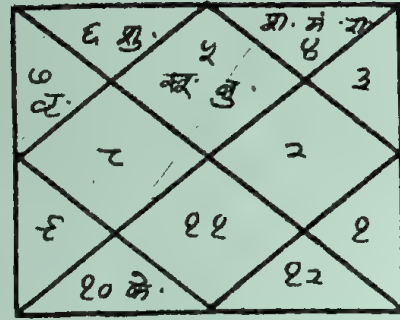
८ मं.	७	६ व.	५ रा.
९	बु. सू.		
१०		४	
११ के.	१		३ श.
१२		२	

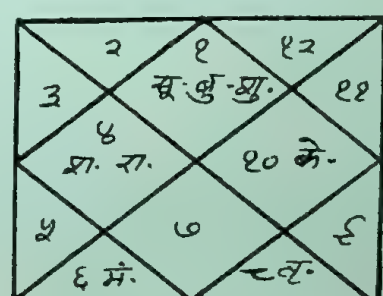
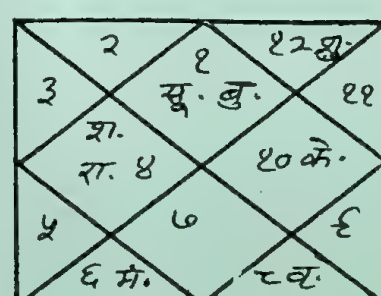
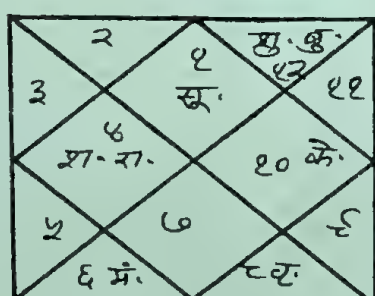
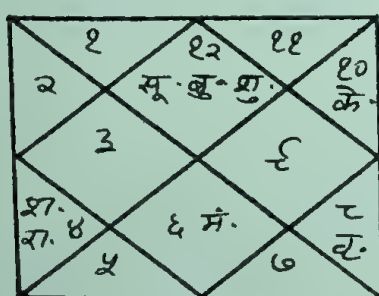
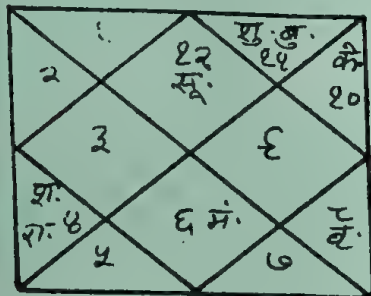
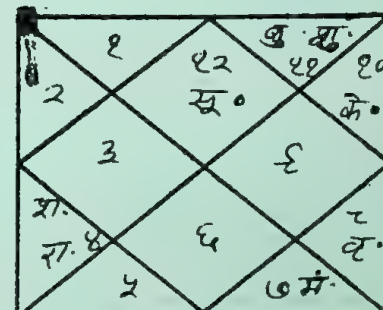
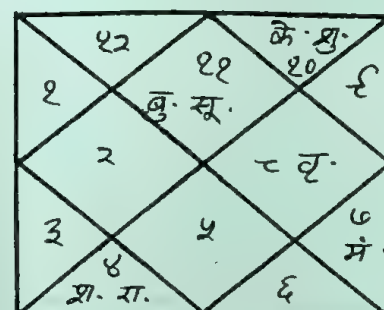
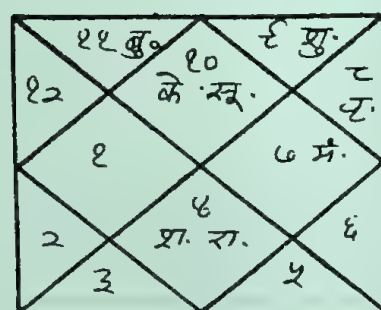
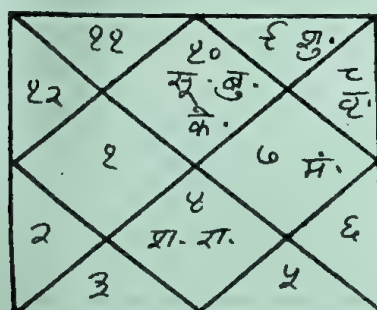
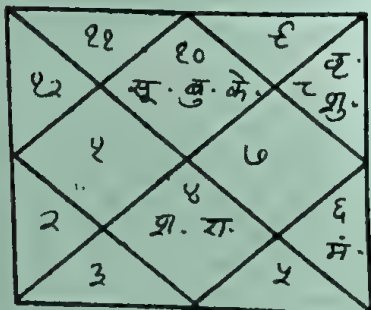
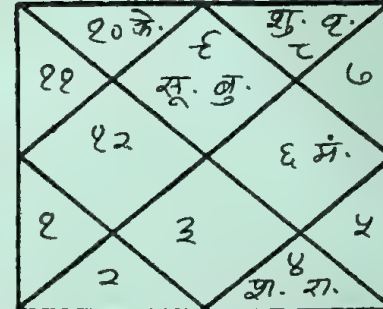
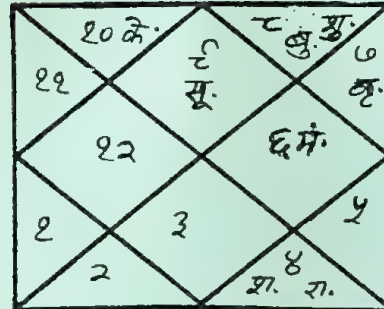
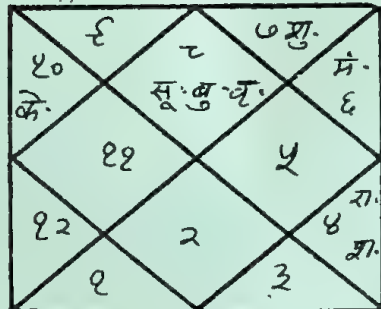
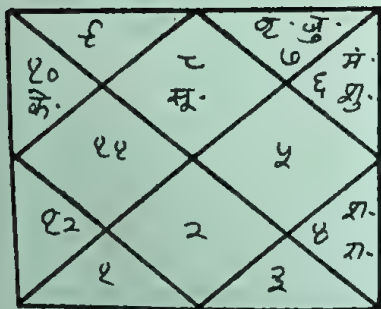


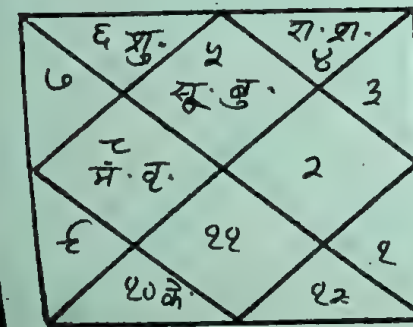
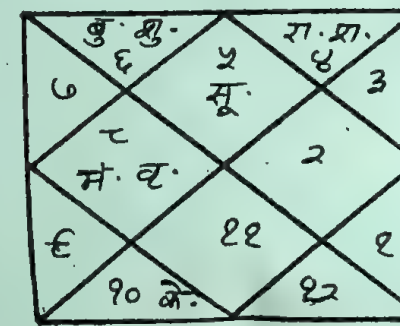
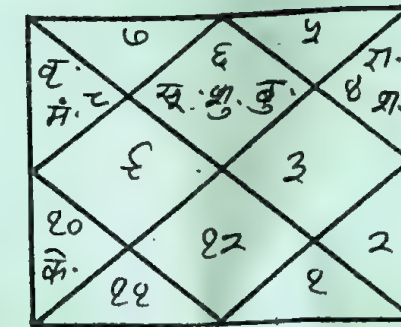
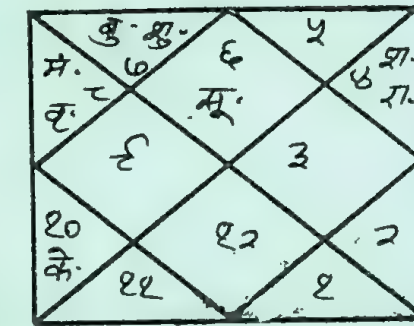
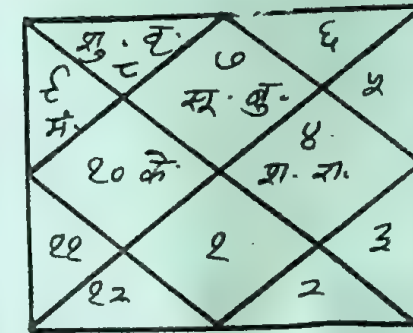
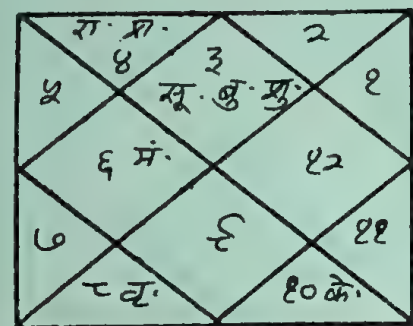
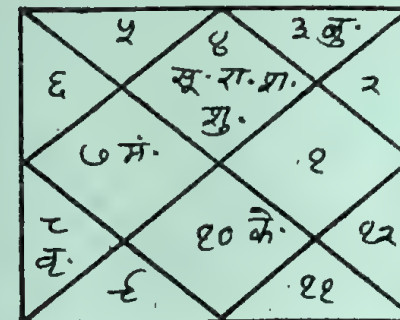
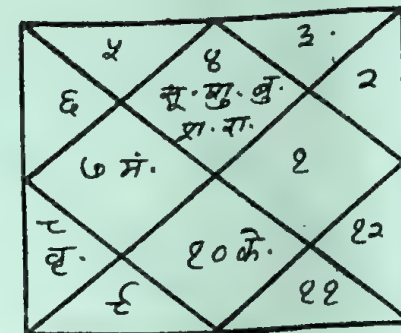
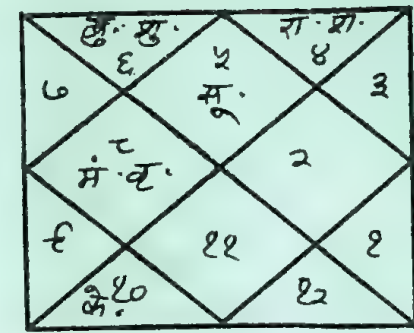
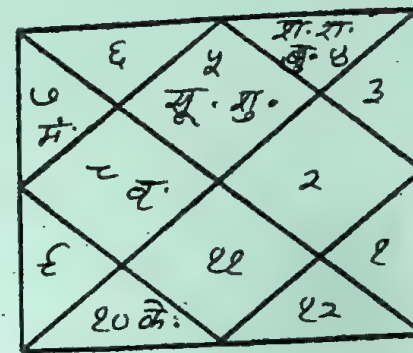
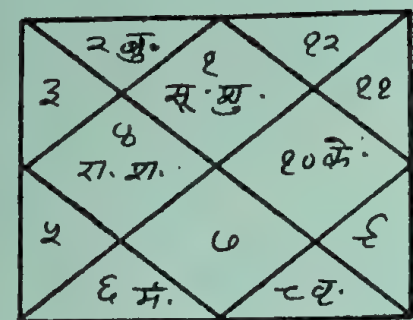
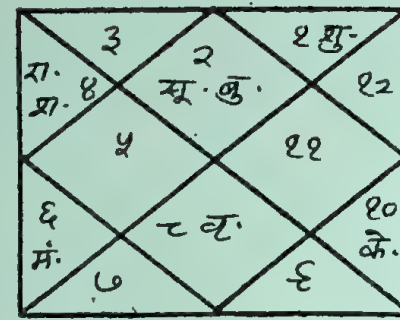
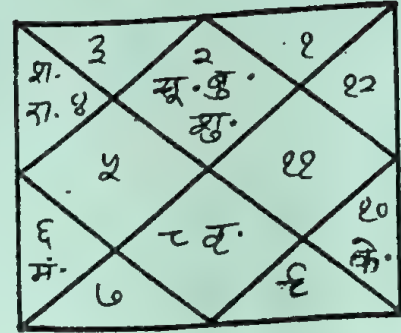
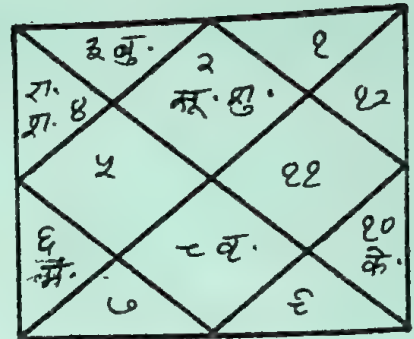
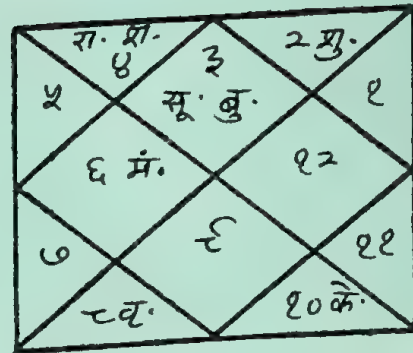
भू०
सं०

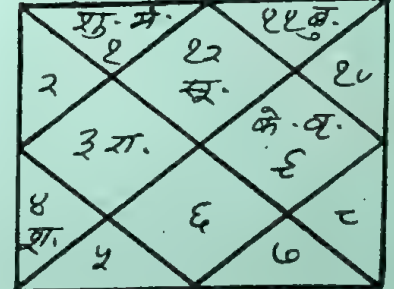
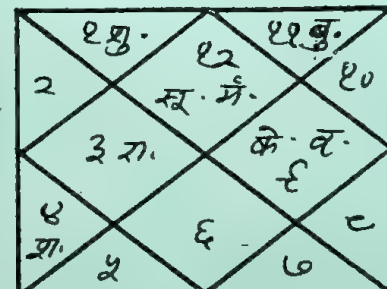
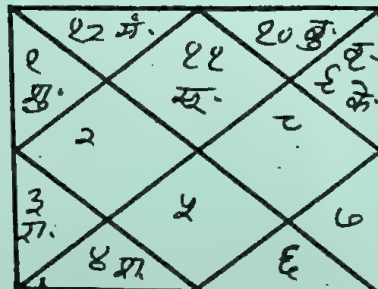
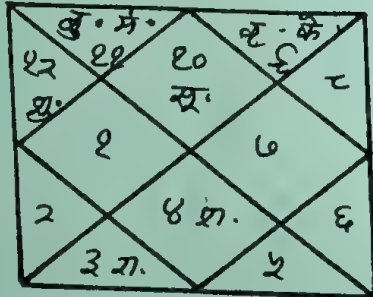
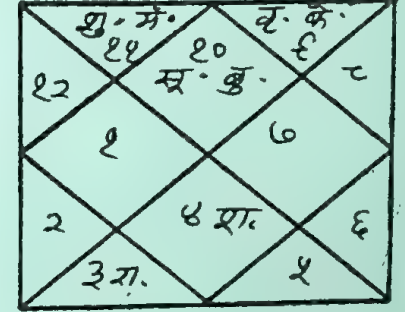
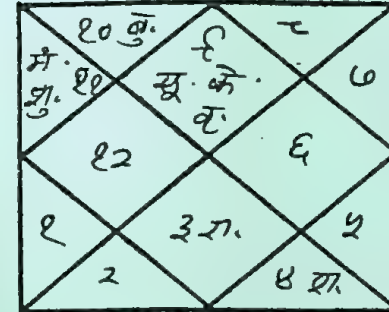
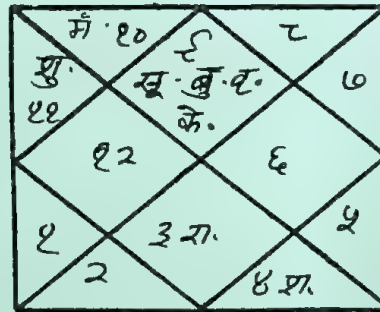
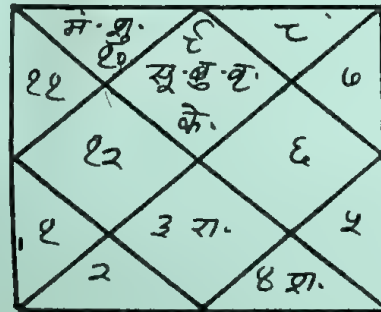
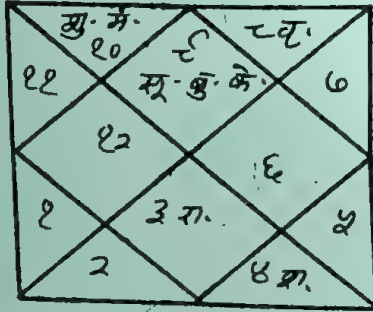
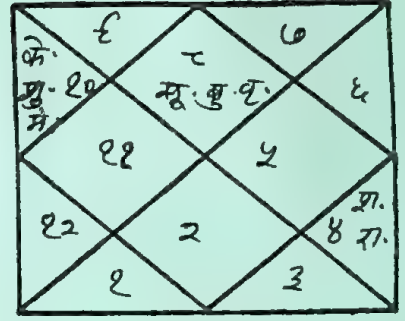
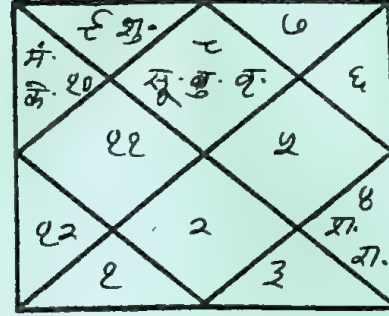
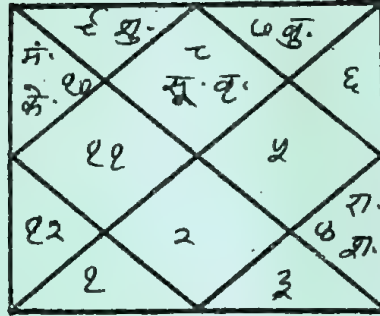
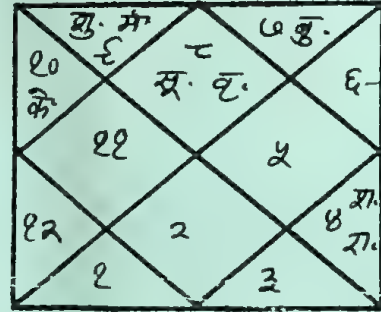
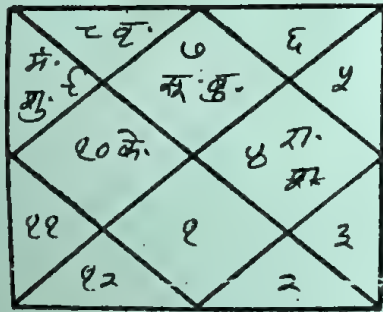


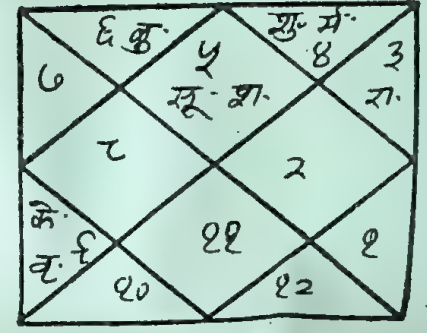
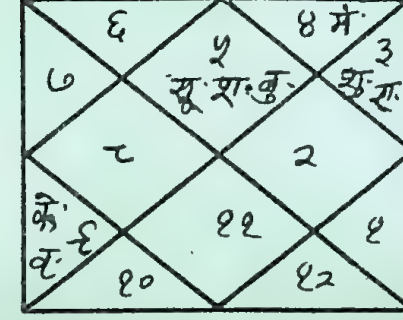
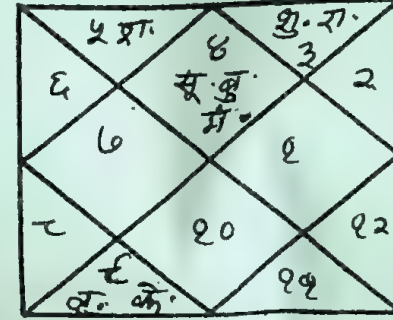
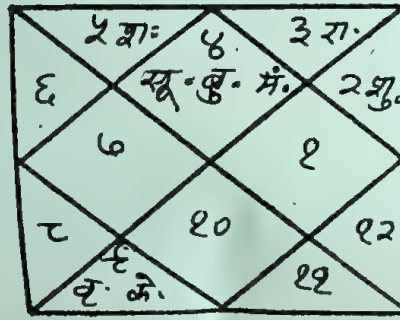
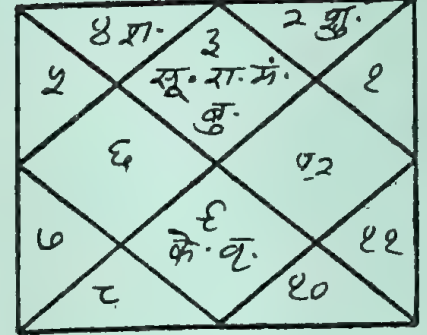
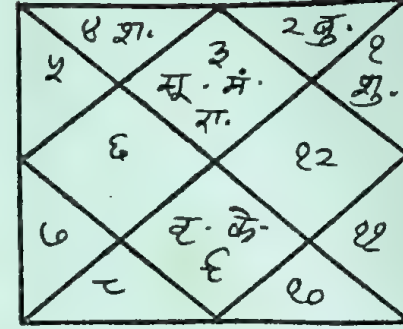
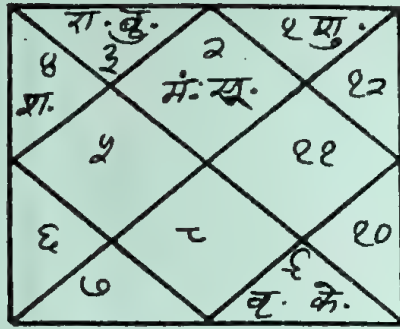
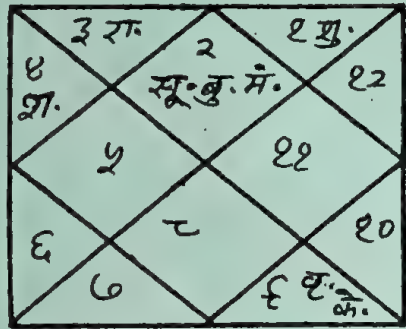
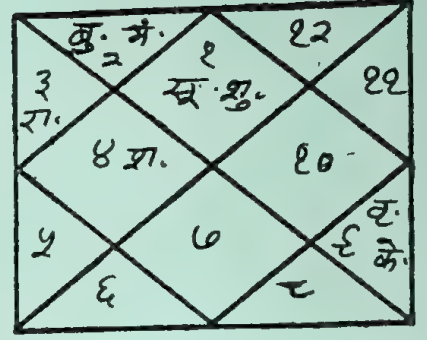
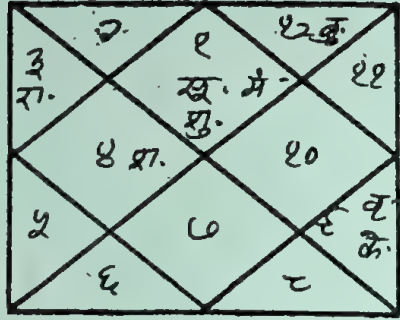
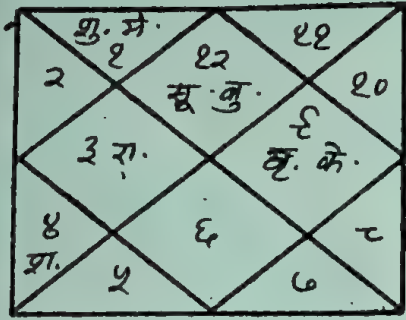
कु०
प०

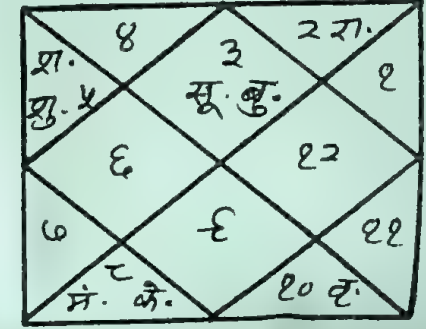
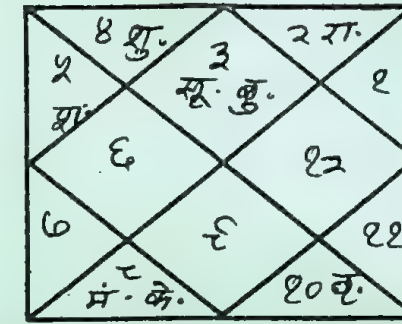
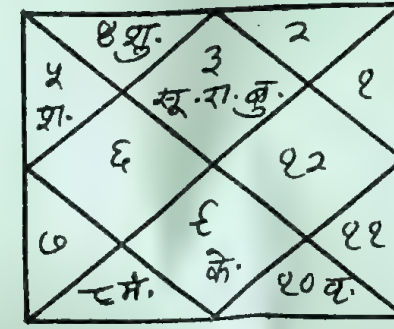
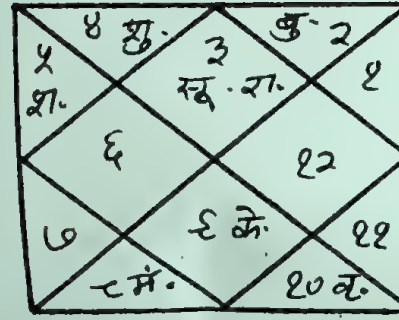
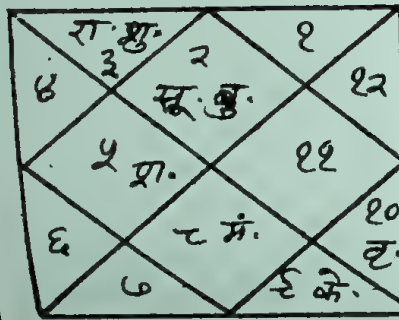
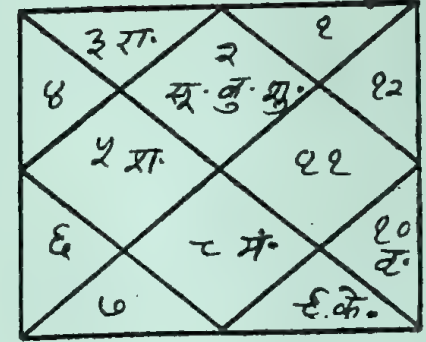
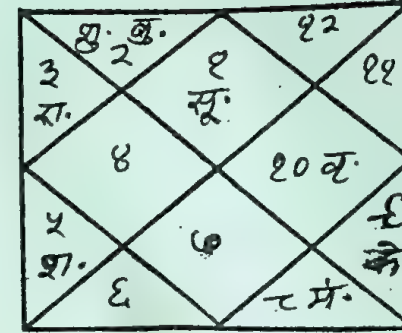
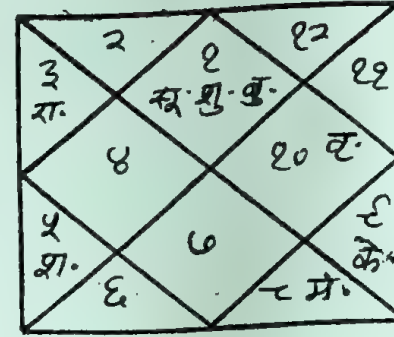
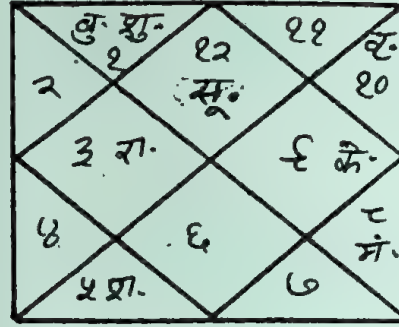
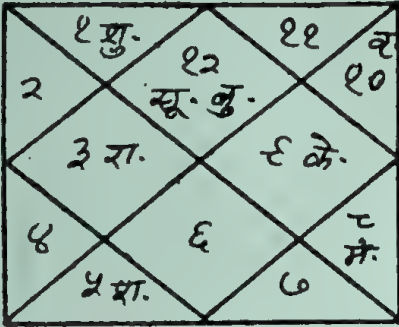
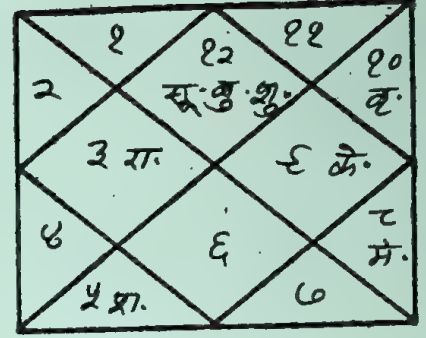
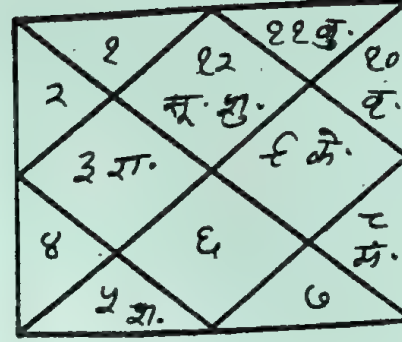
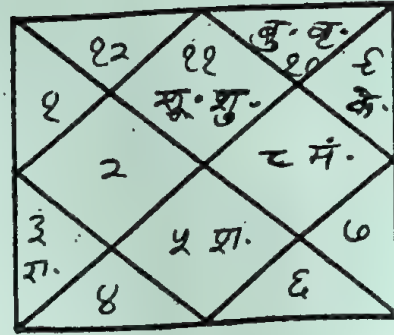
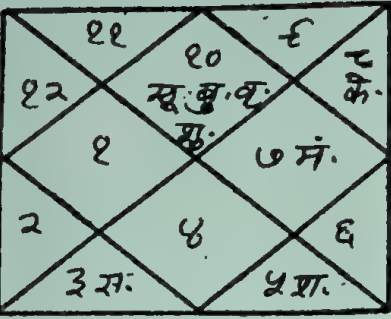


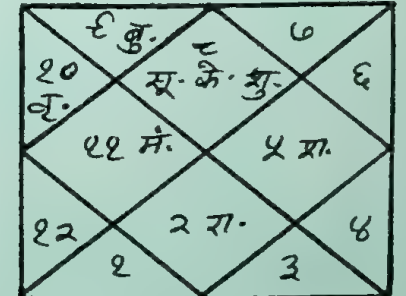
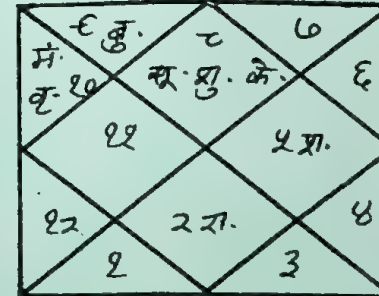
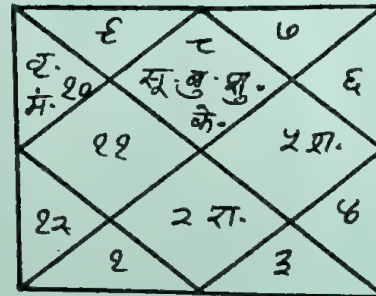
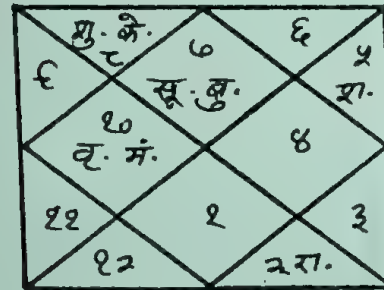
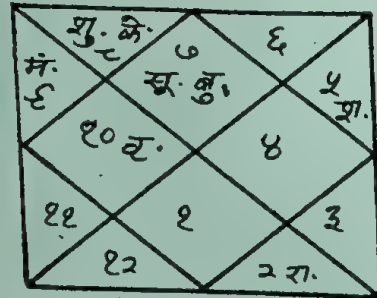
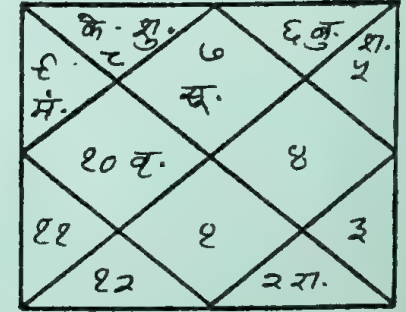
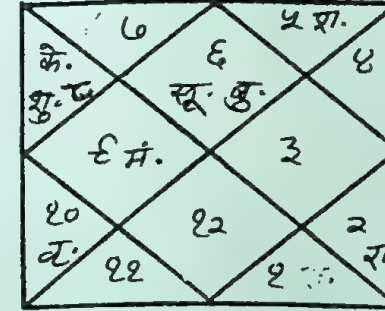
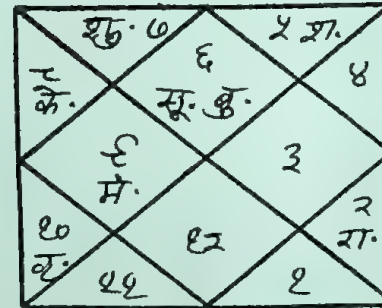
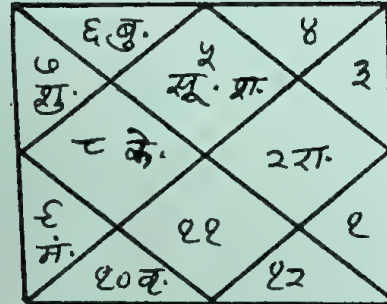
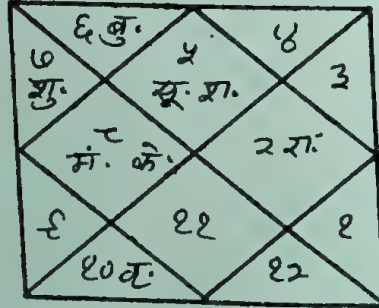
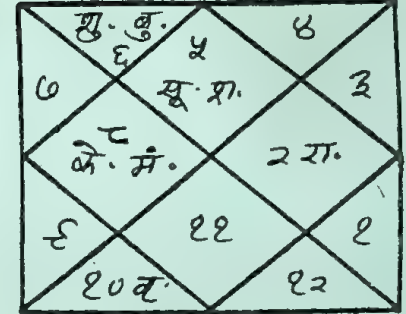
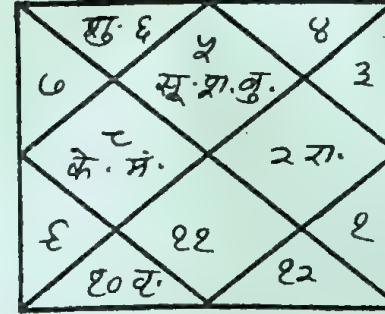
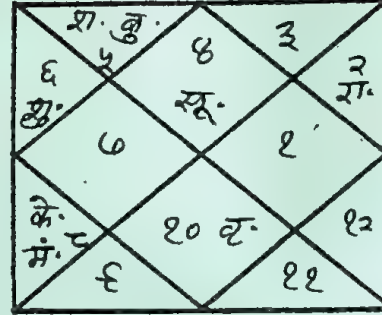
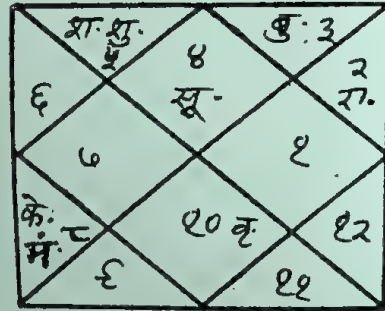


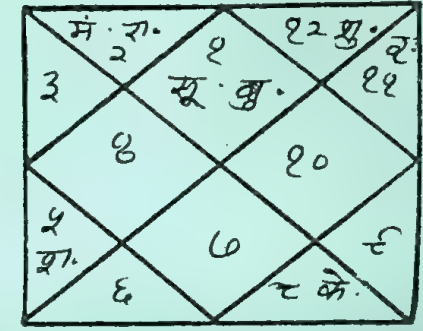
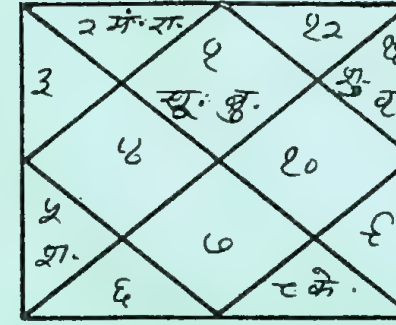
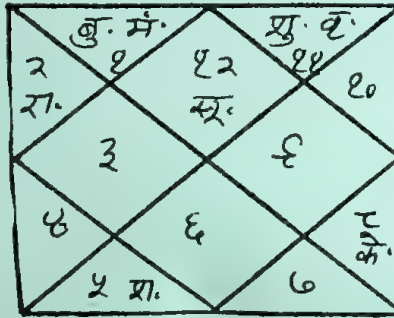
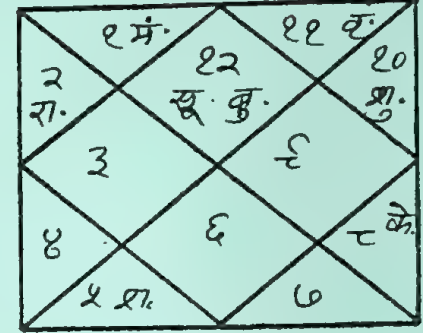
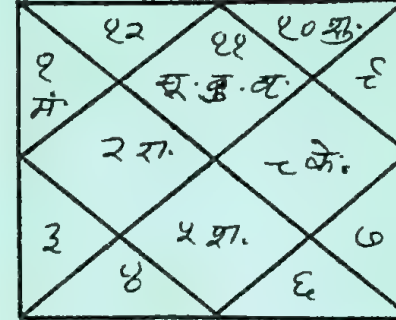
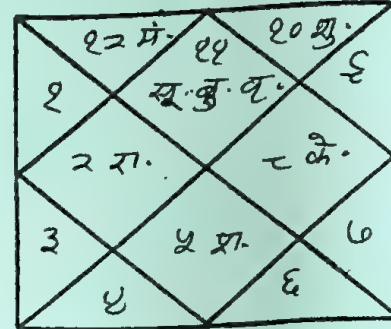
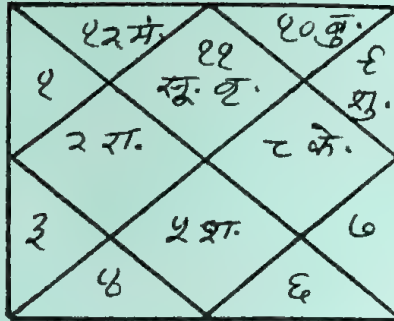
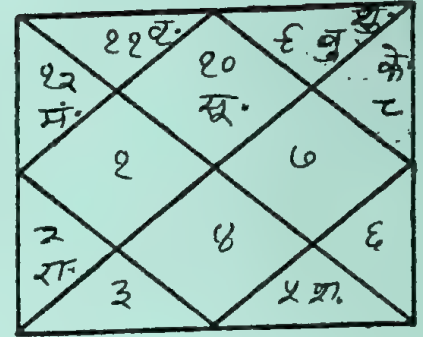
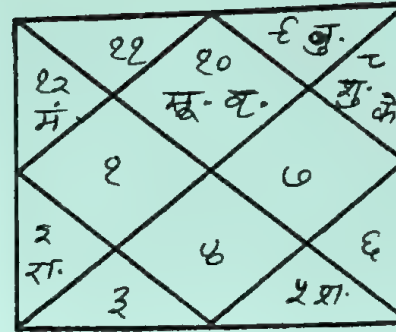
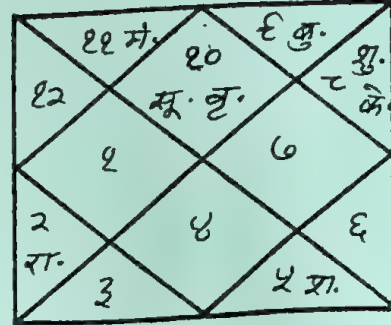
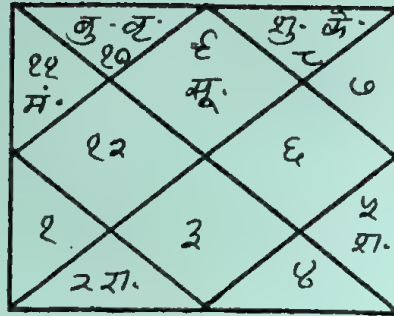
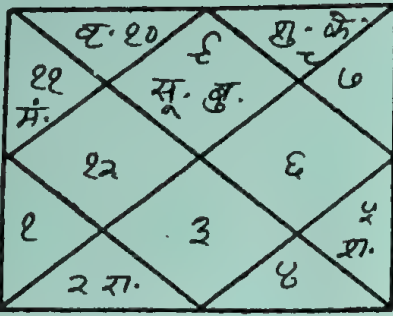




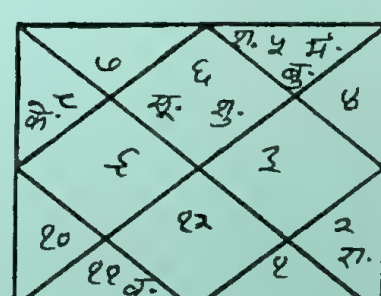
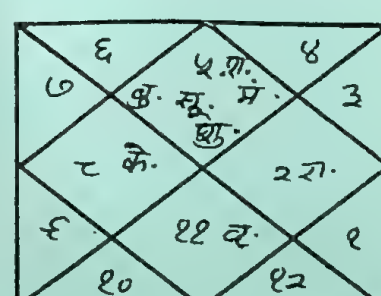
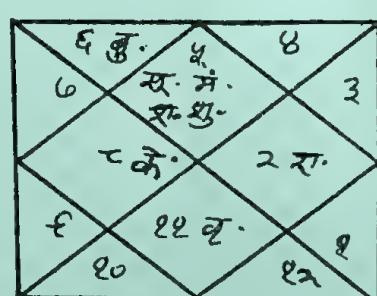
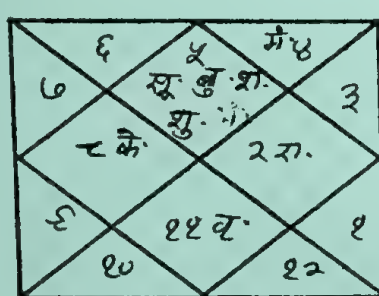
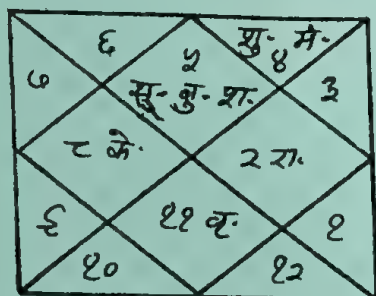
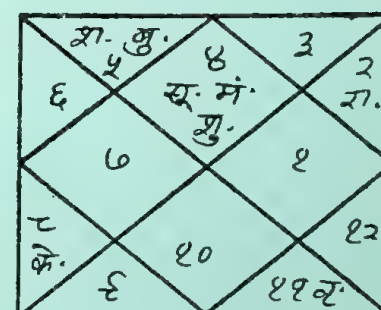
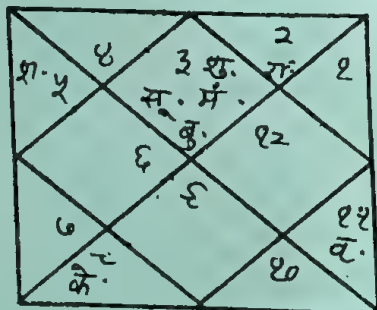
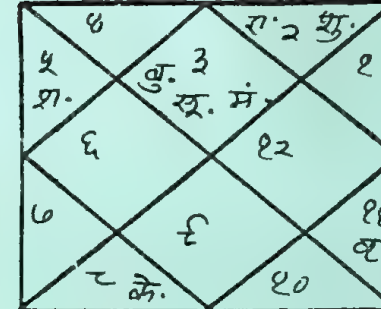
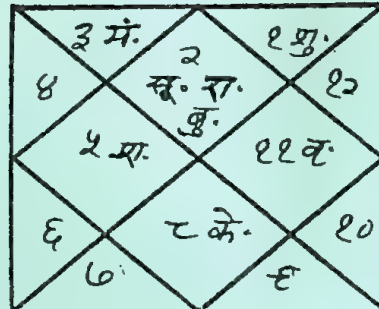
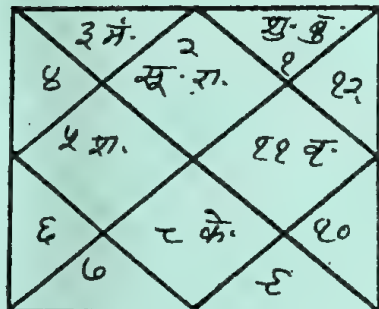




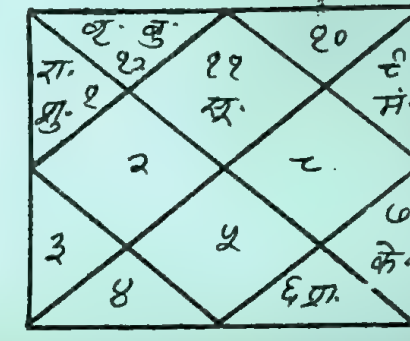
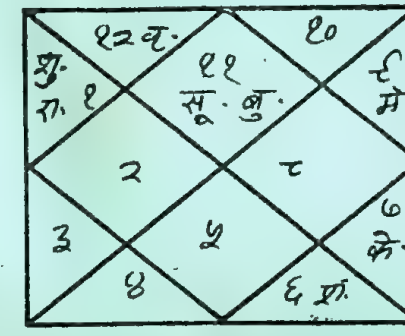
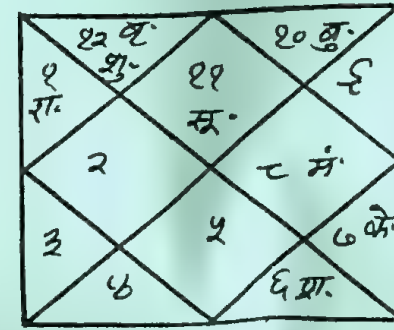
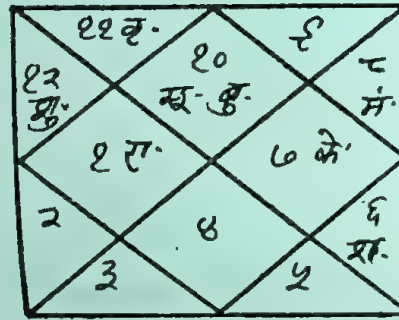
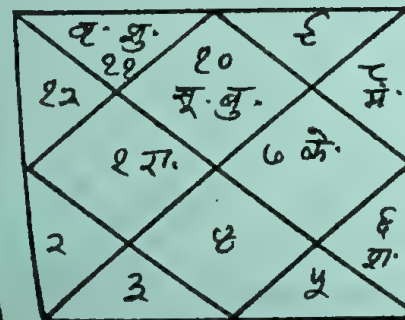
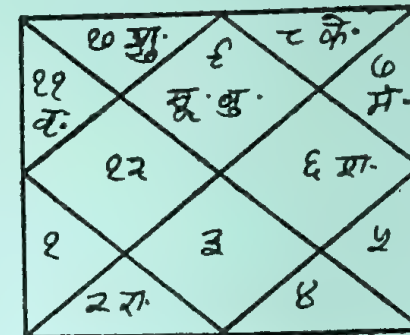
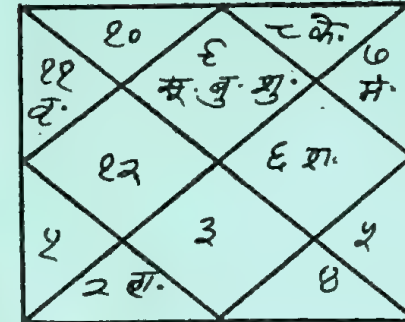
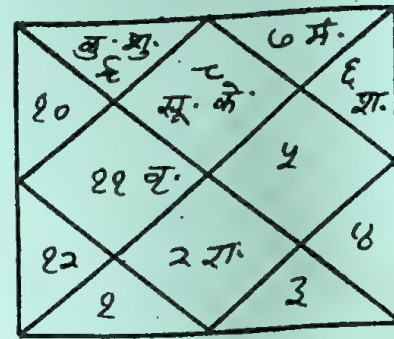
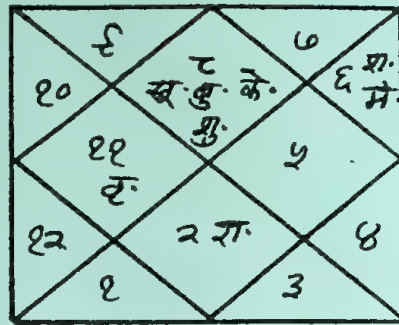
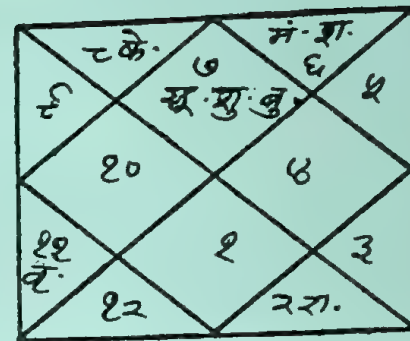
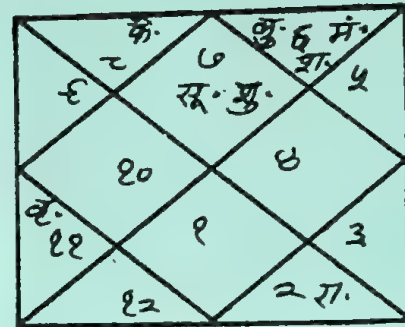
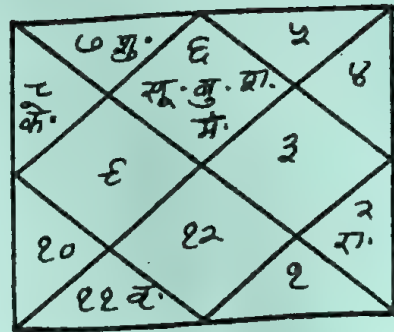
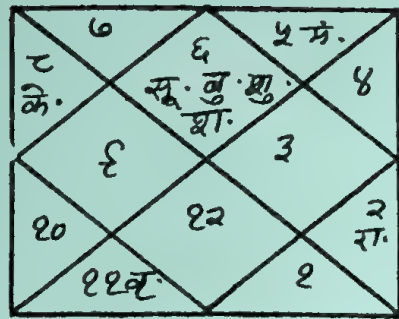
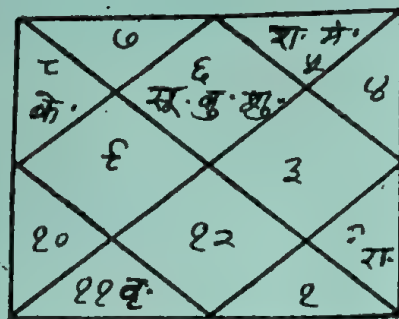




मृ० सं०
५०००

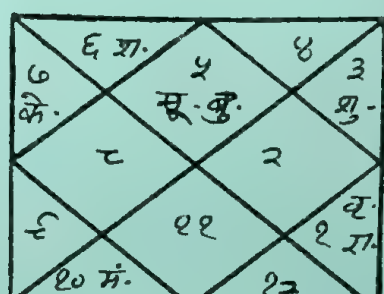
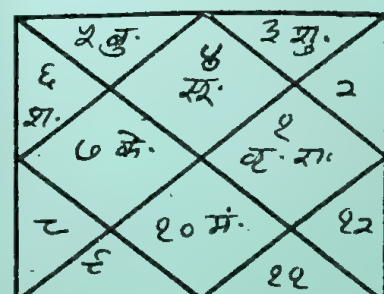
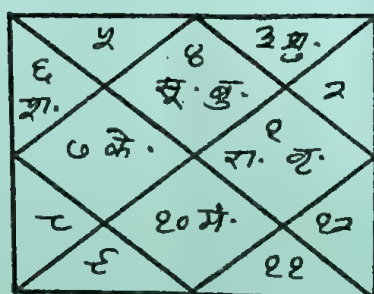
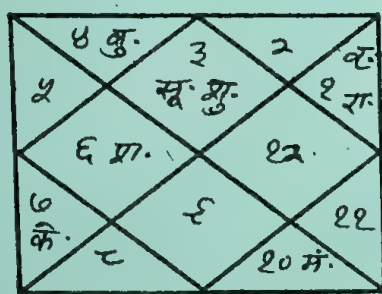
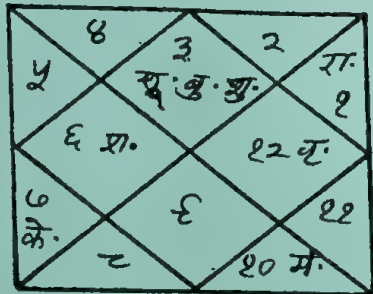
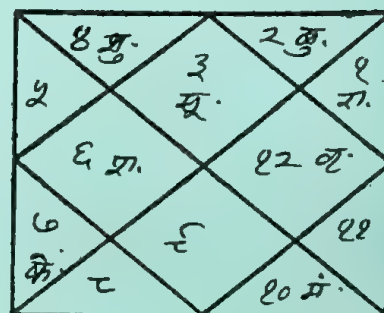
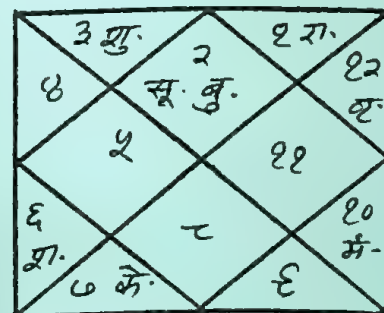
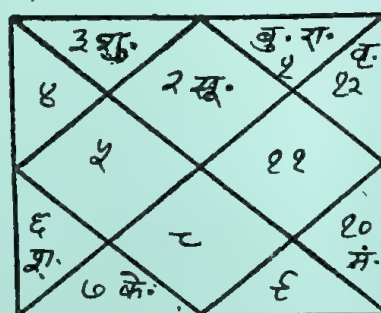
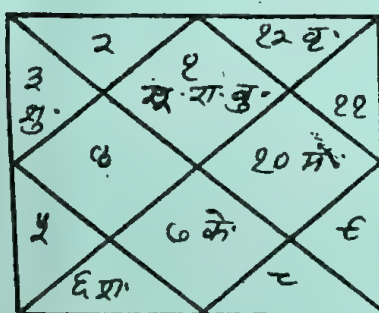
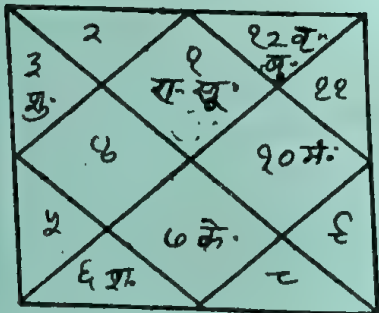
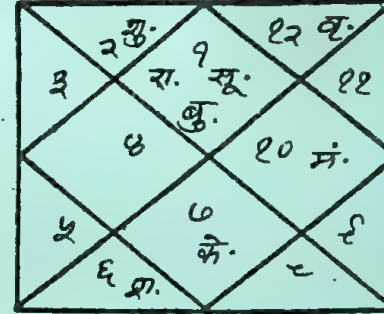
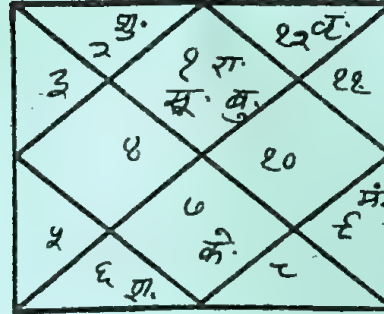
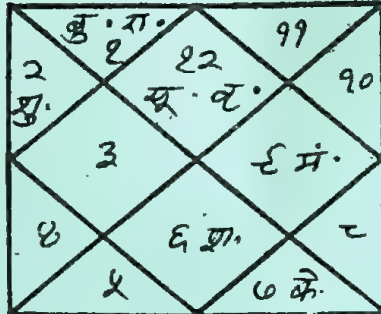
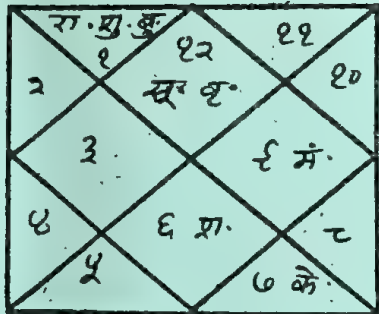
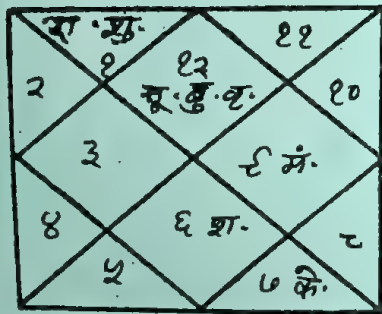


कु० प०

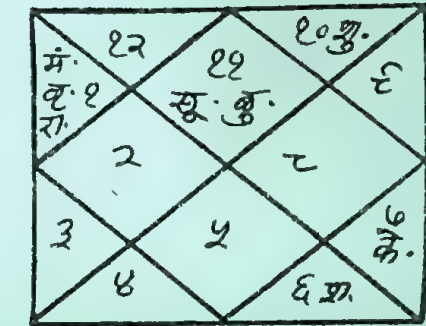
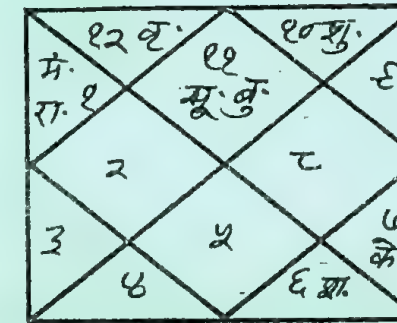
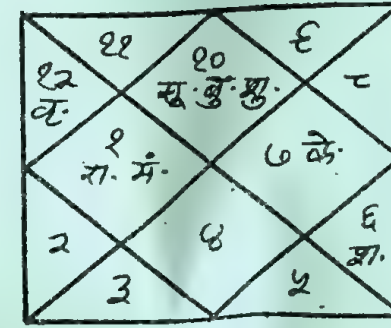
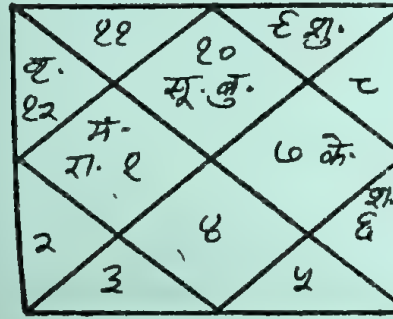
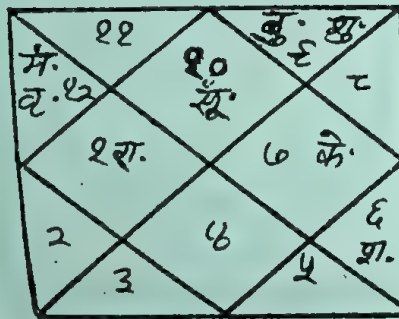
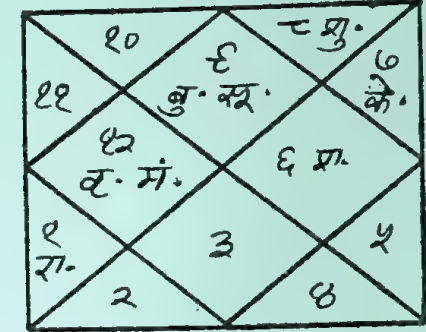
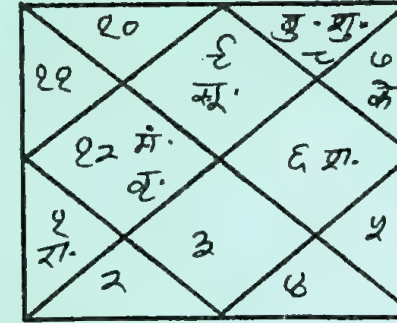
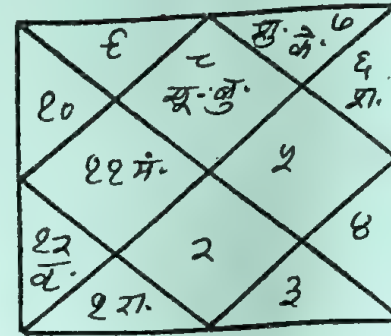
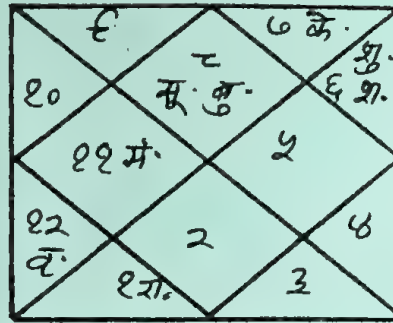
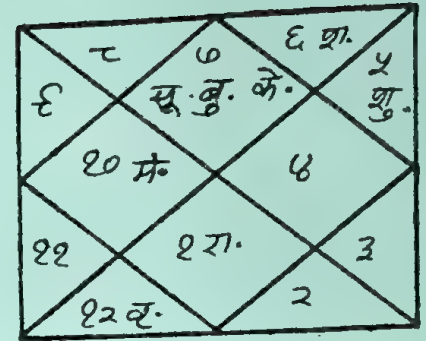
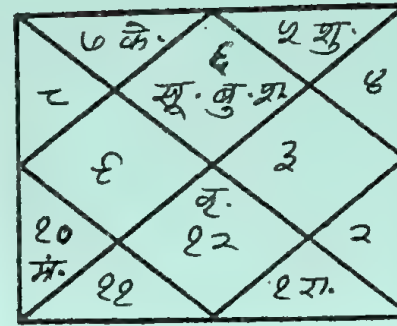
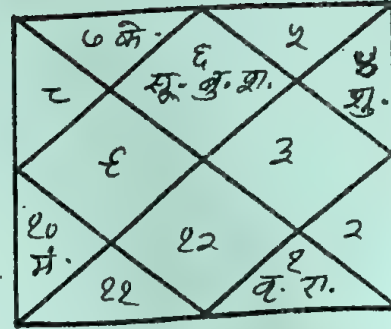
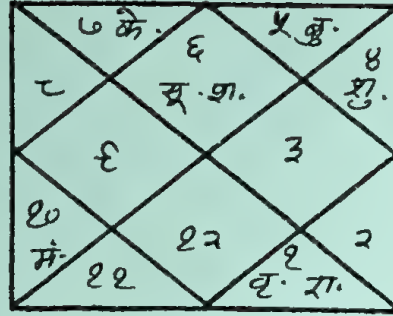
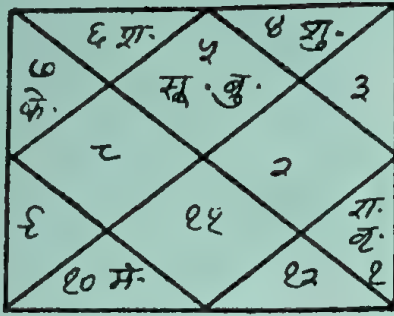


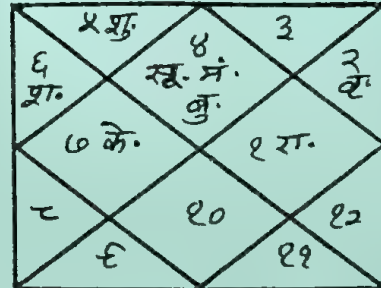
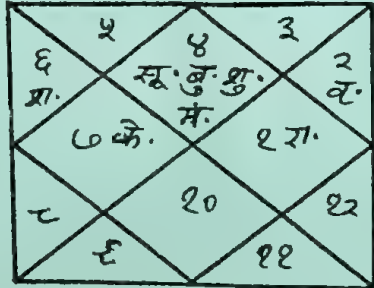
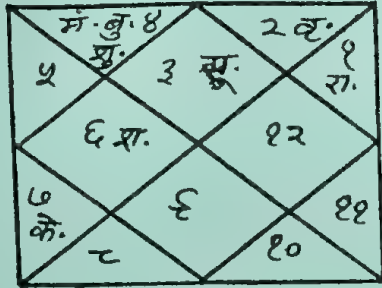
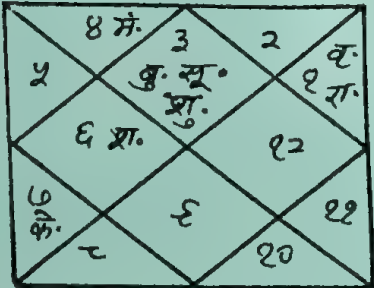
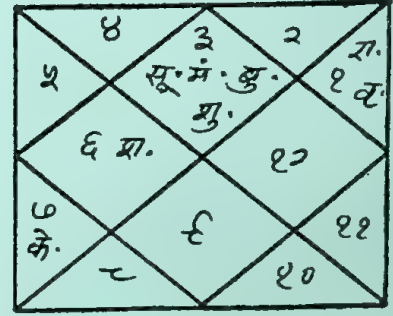
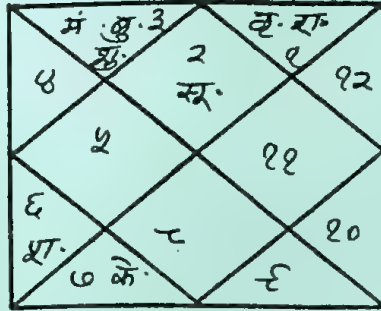
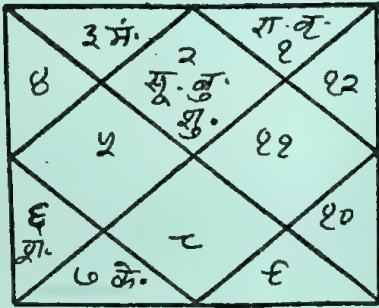
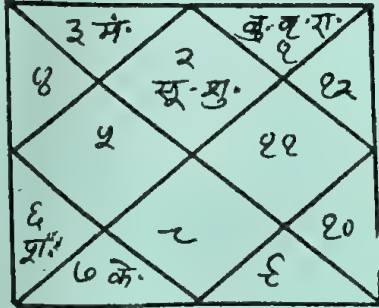
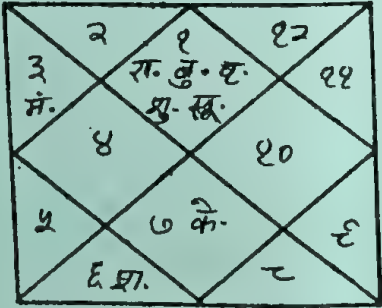
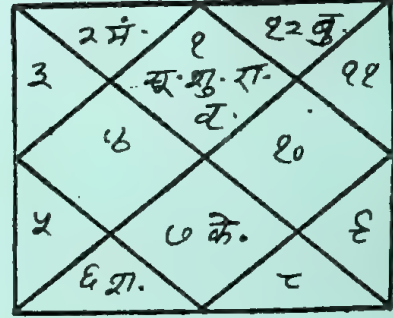
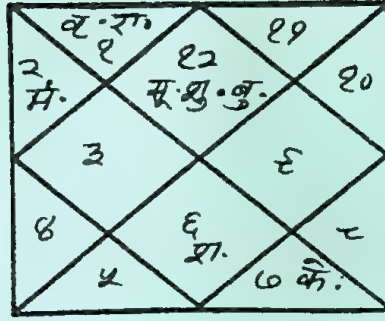
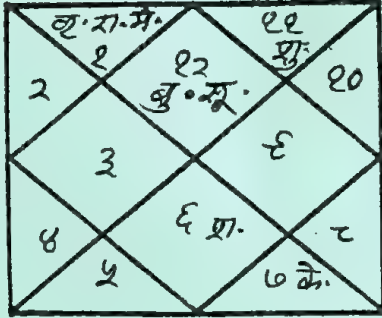
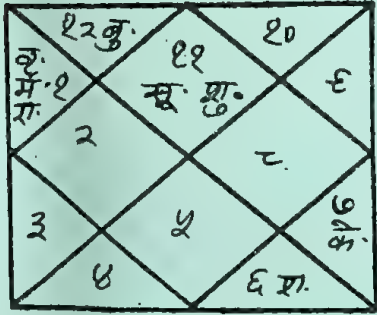
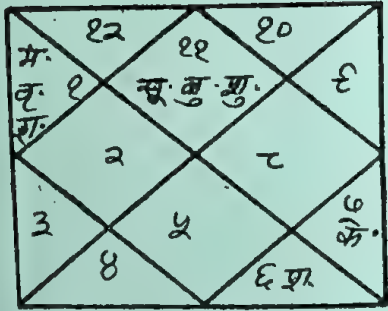
પ.સં.

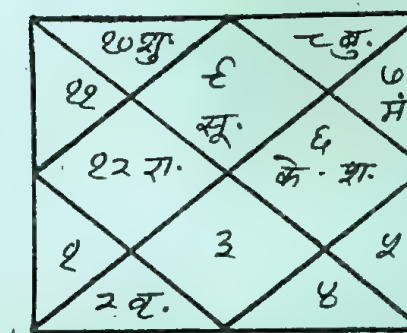
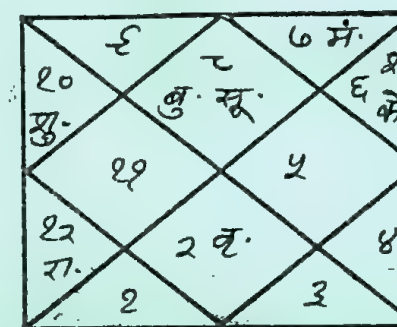
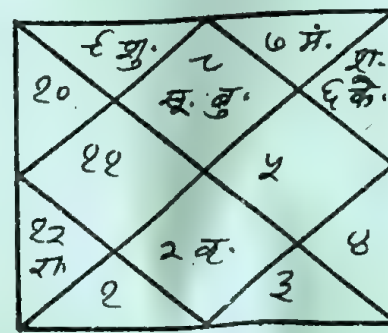
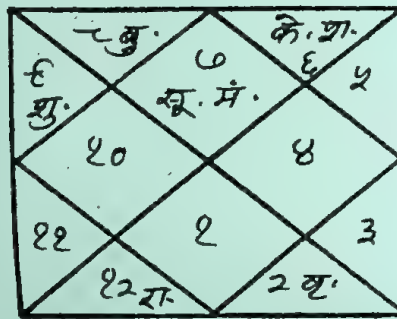
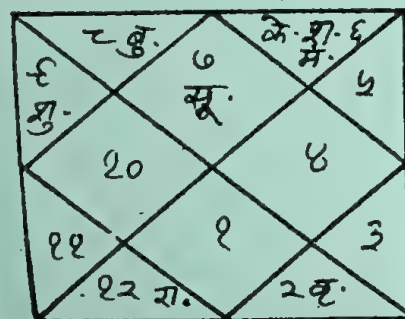
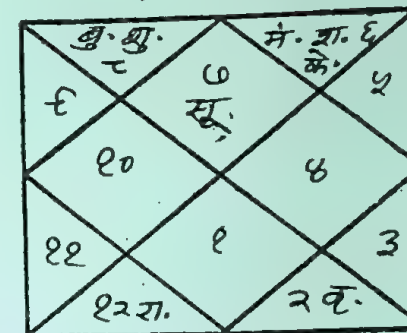
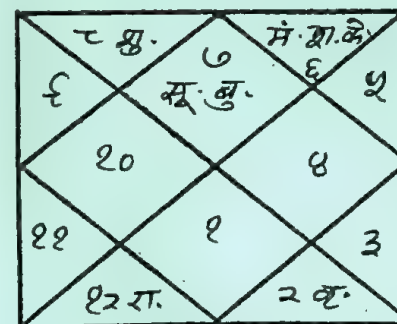
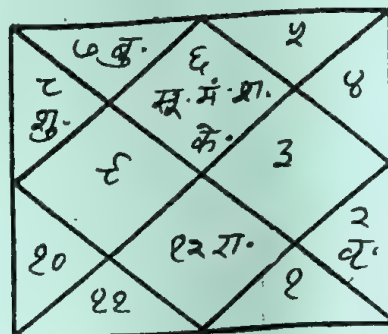
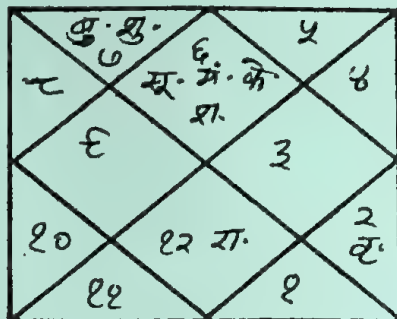
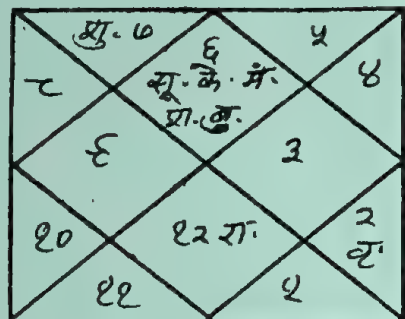
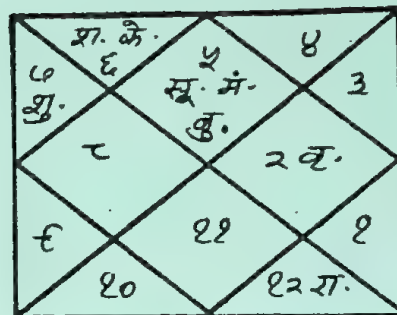
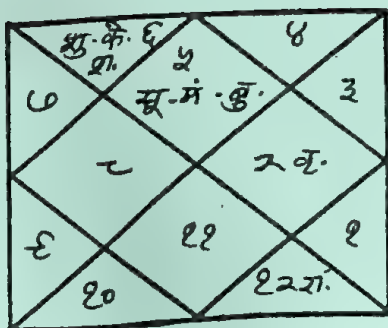
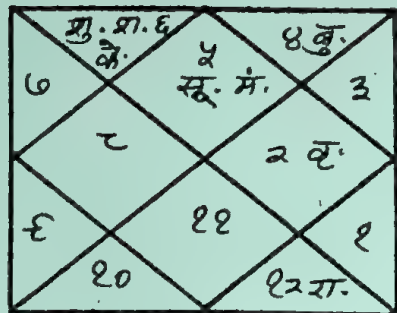
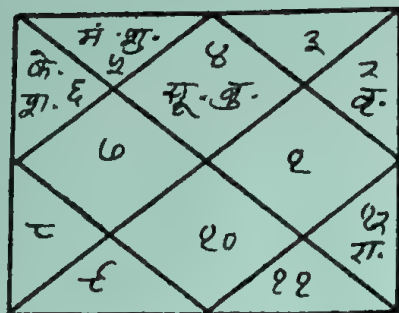
૭૩૩

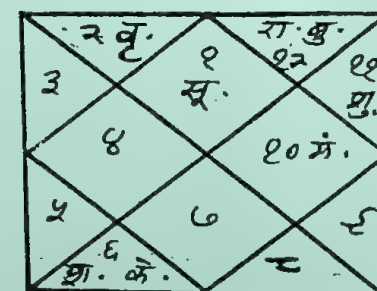
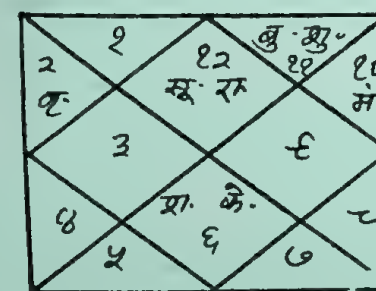
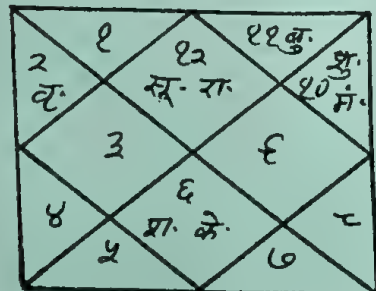
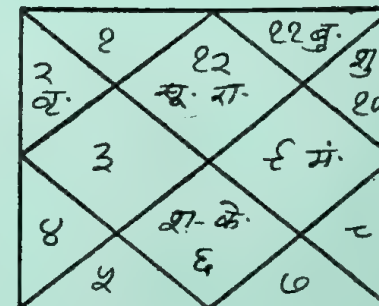
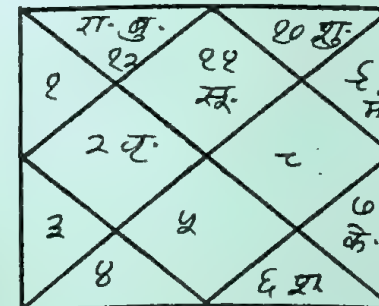
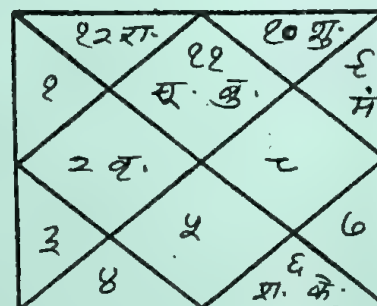
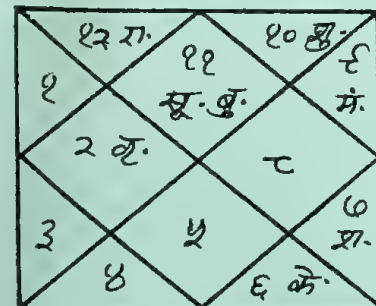
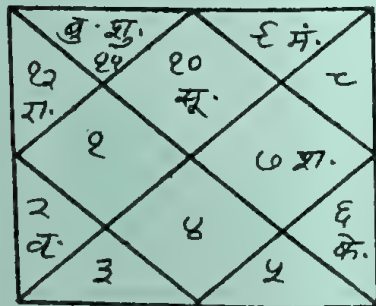
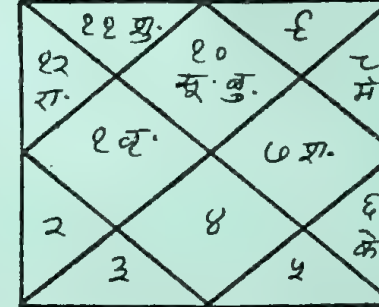
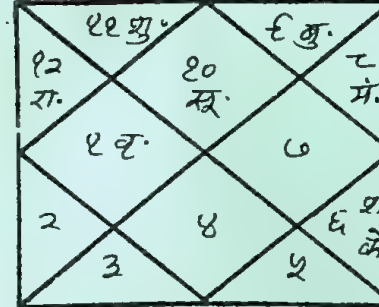
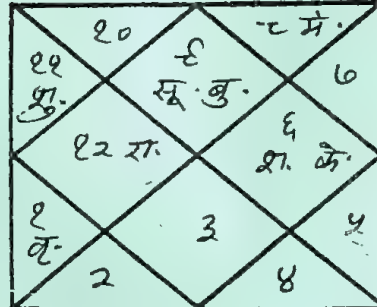
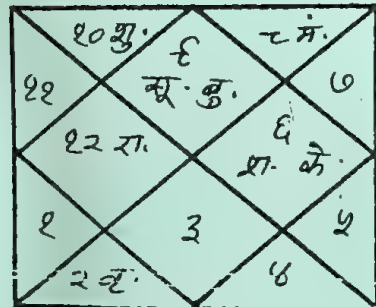
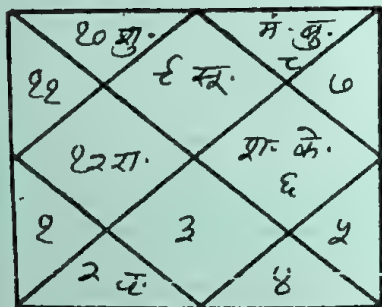


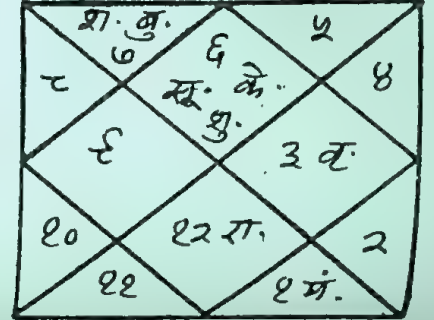
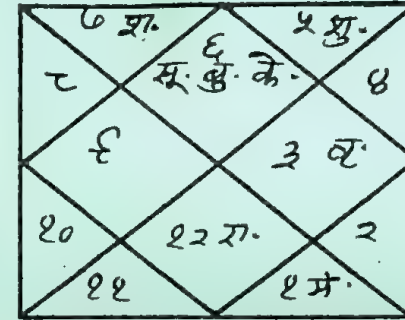
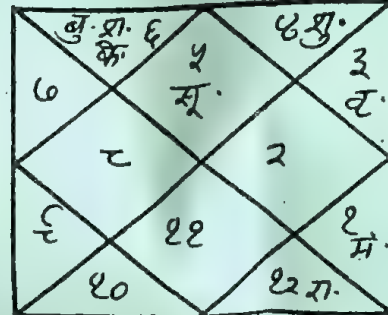
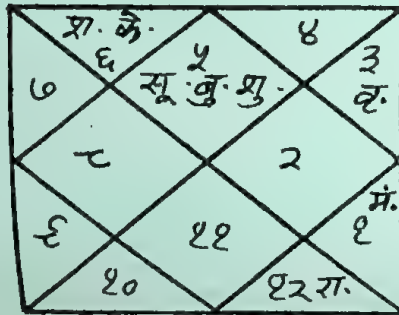
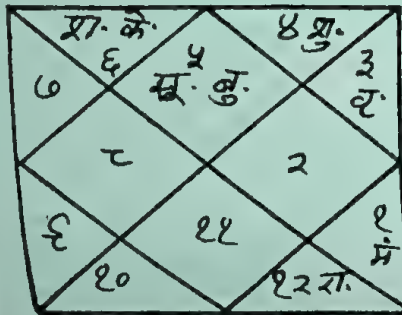
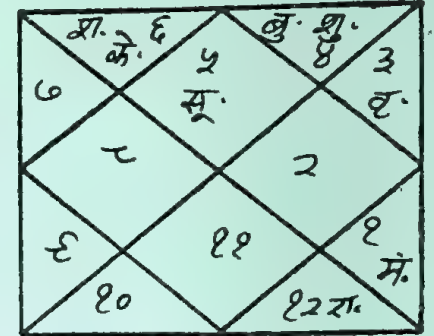
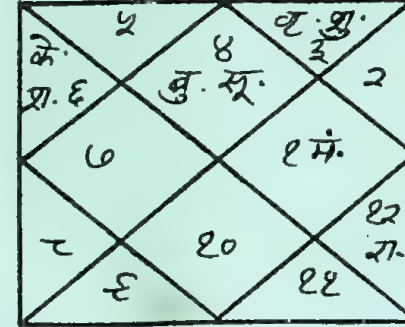
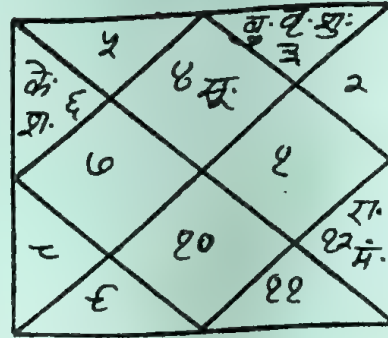
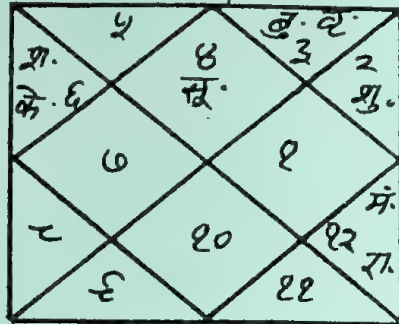
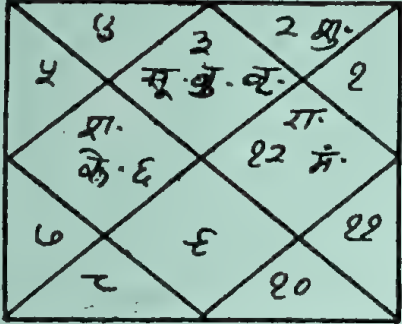
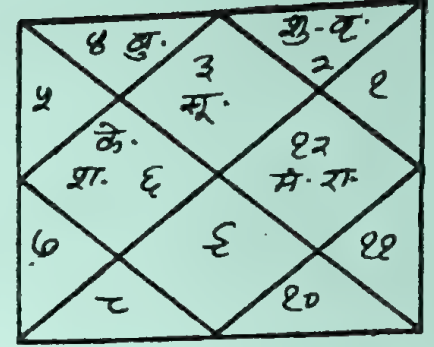
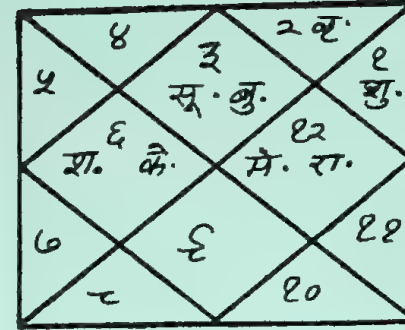
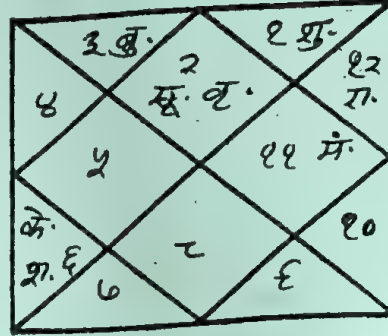
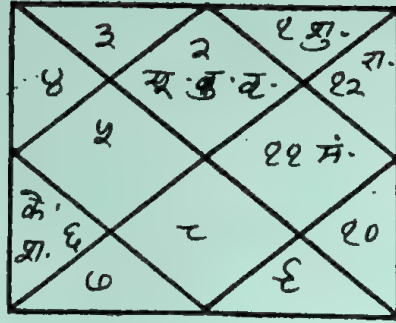
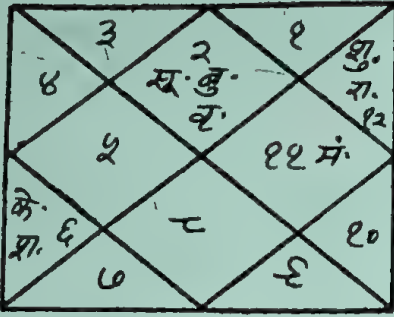
કુ.પ.

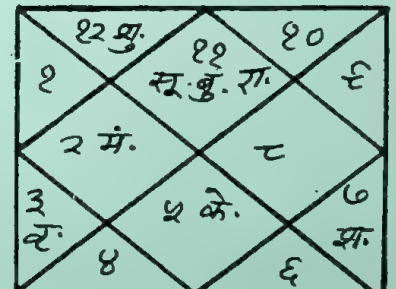
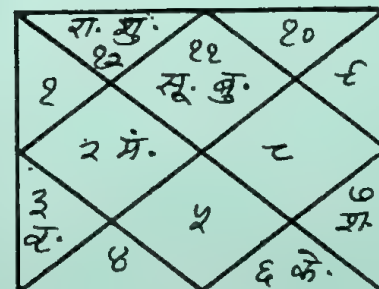
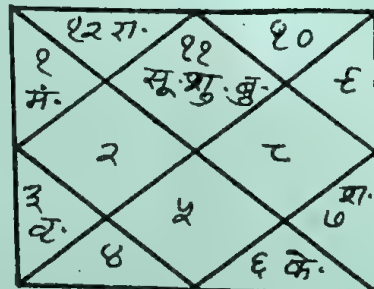
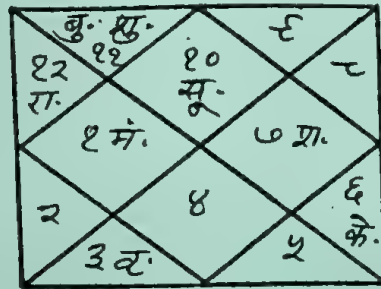
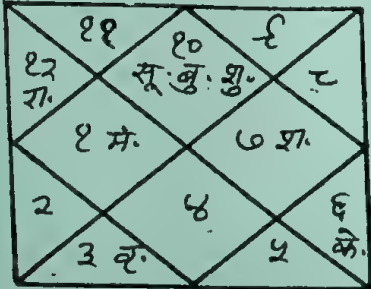
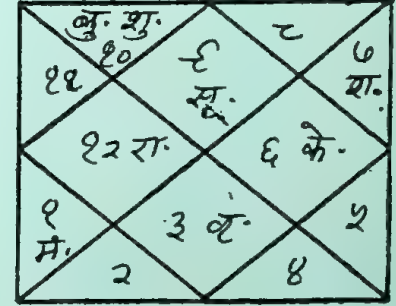
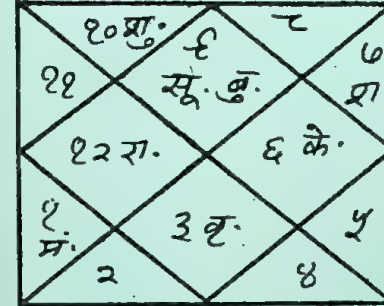
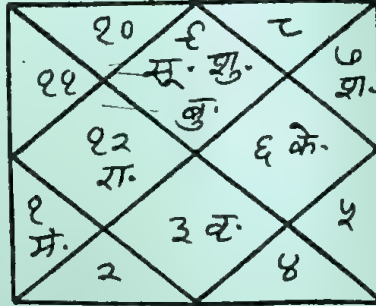
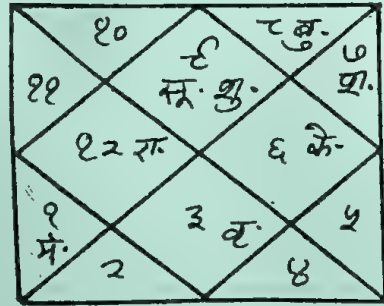
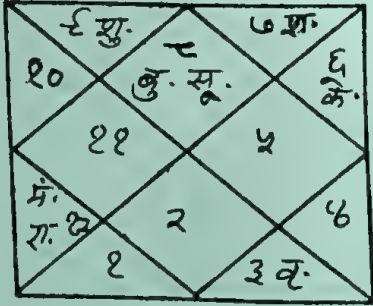
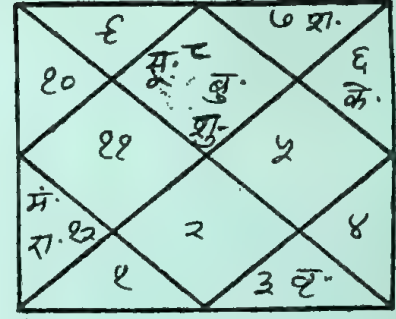
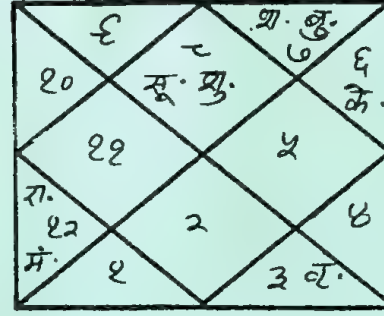
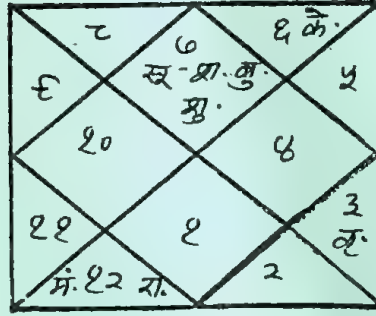
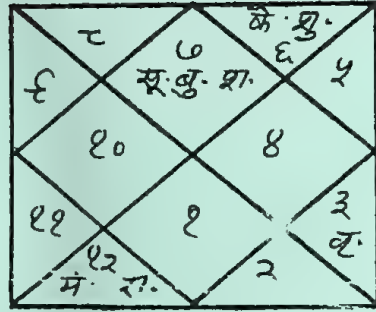
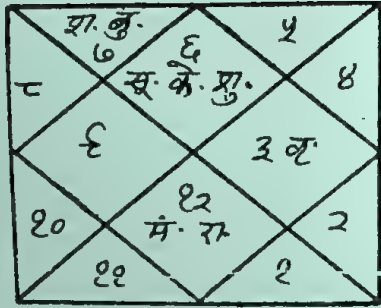


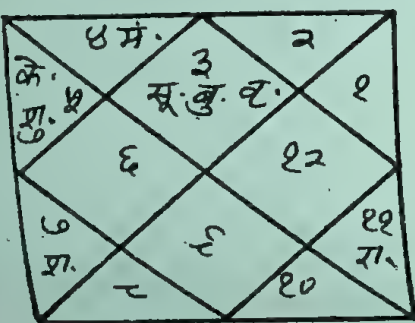
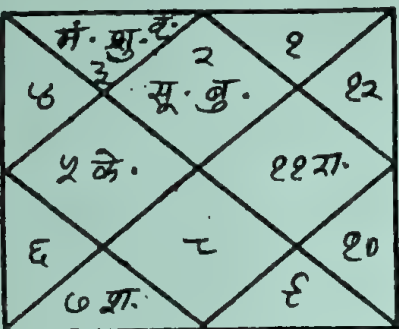
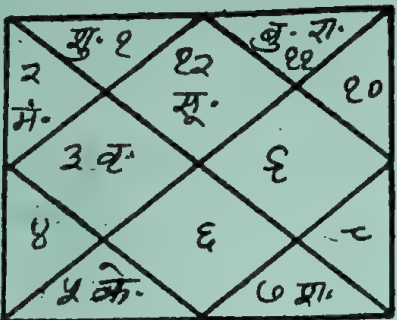
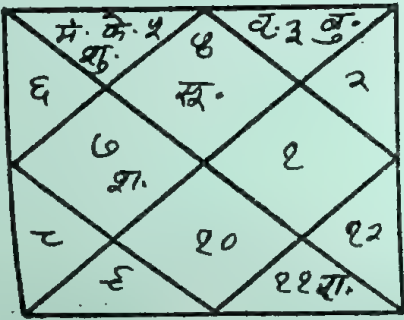
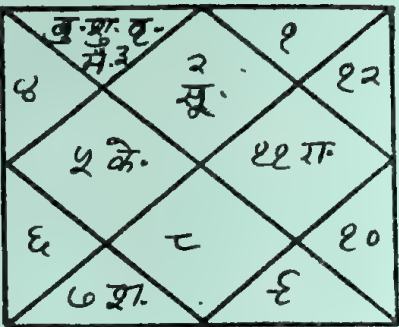
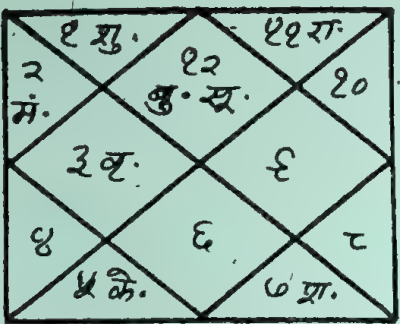
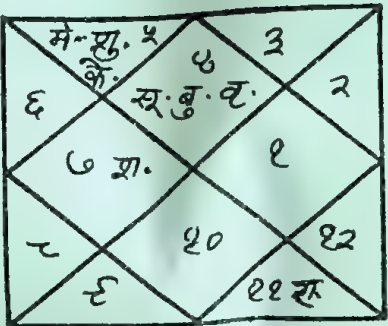
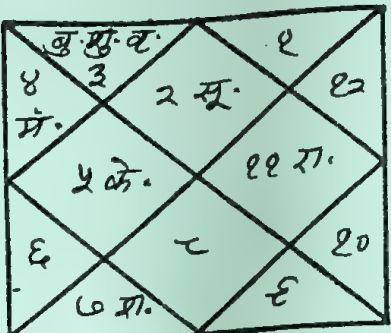
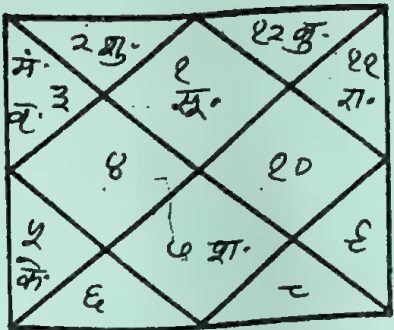
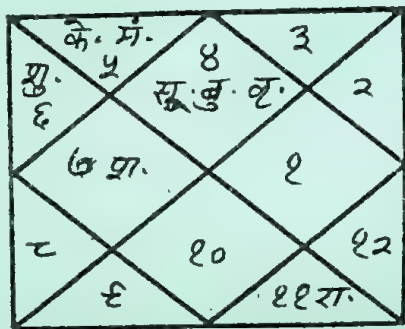
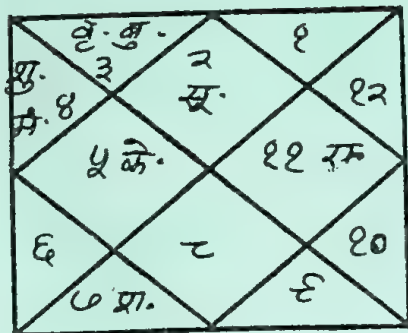
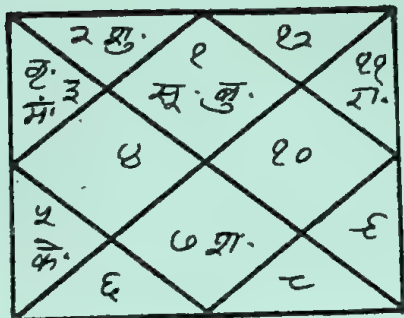
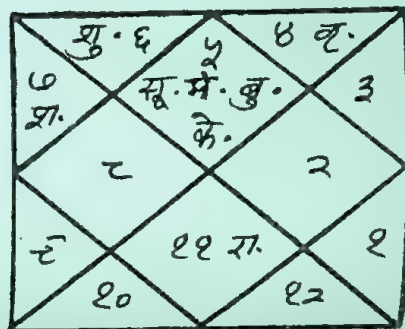
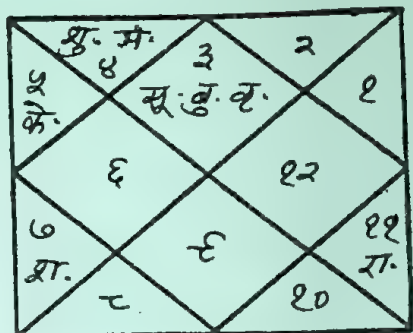
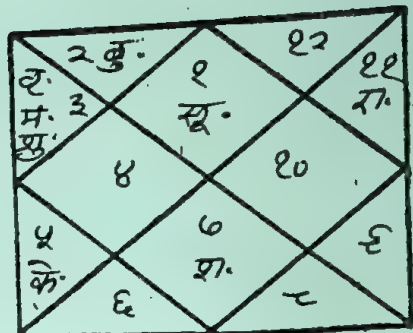


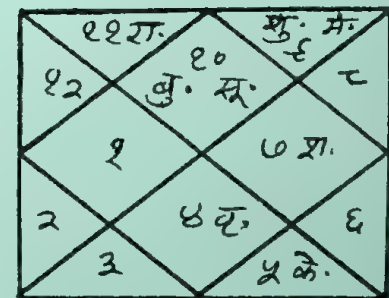
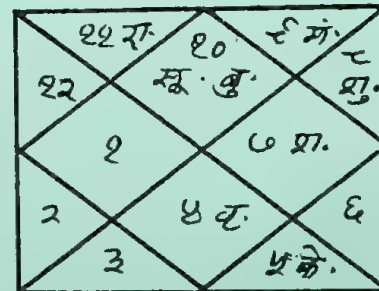
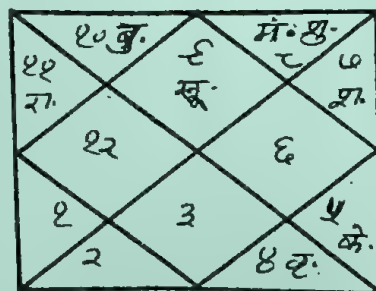
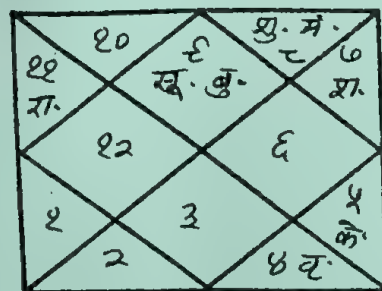
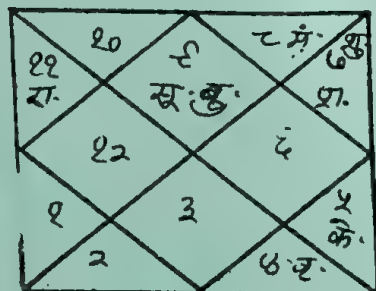
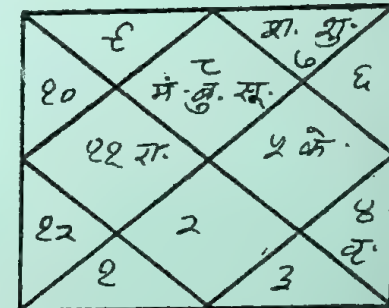
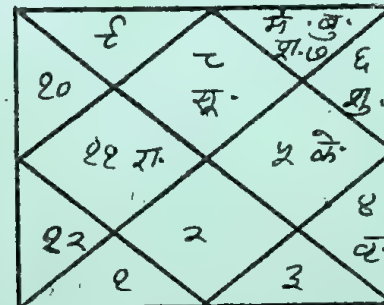
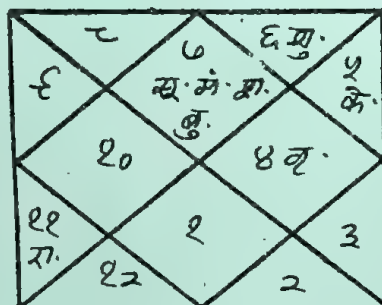
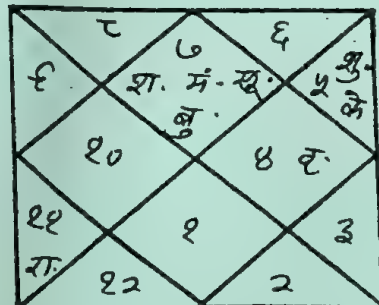
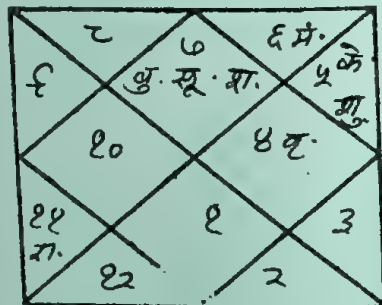
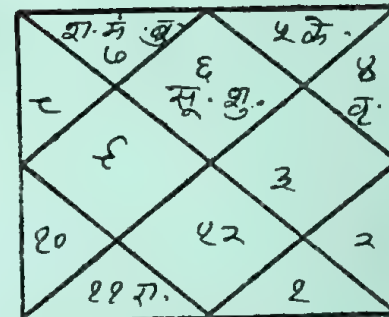
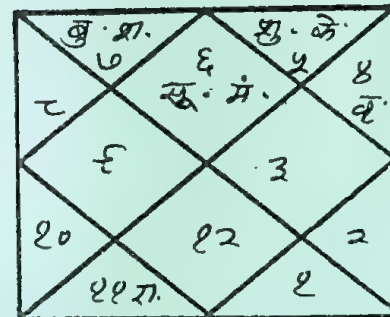
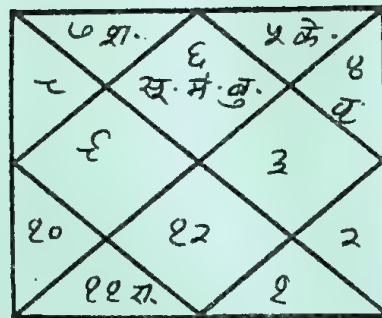


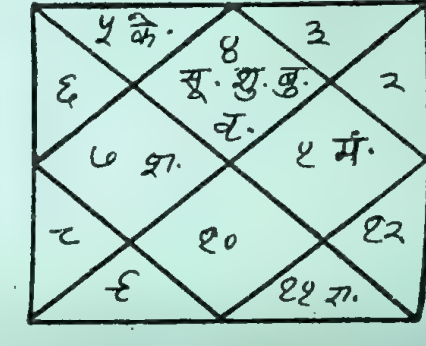
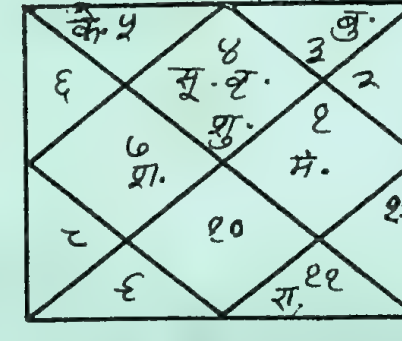
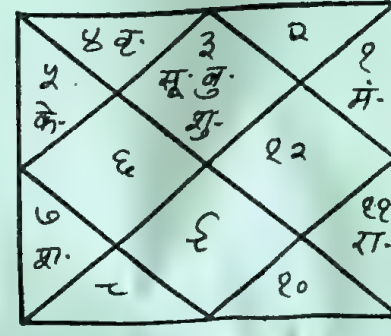
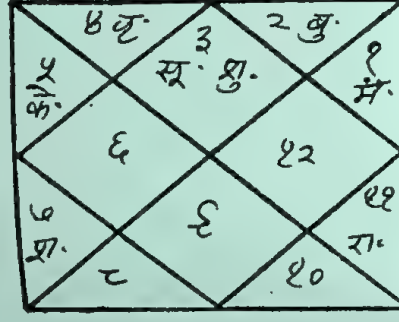
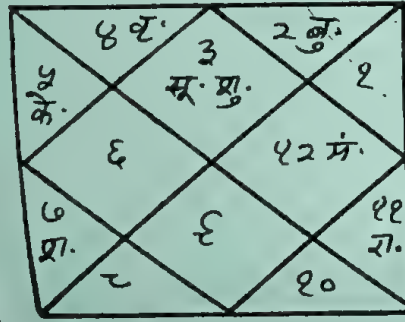
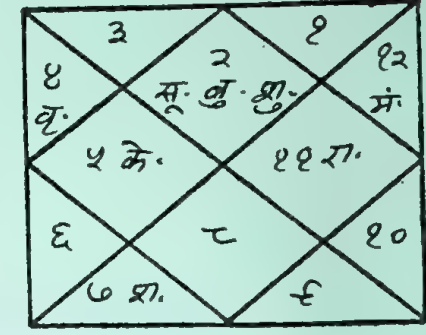
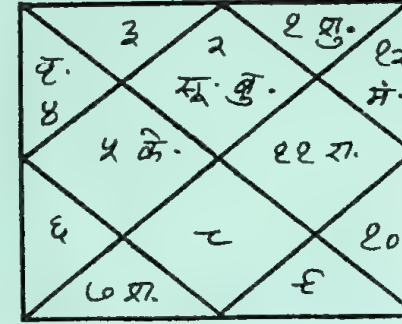
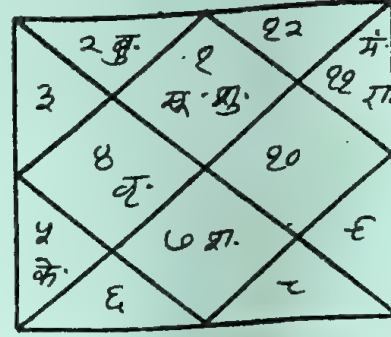
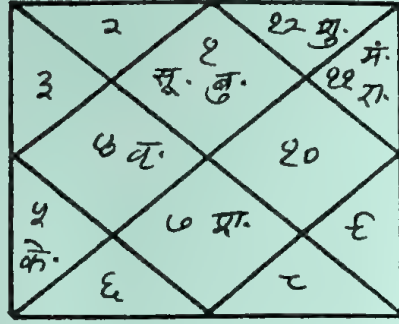
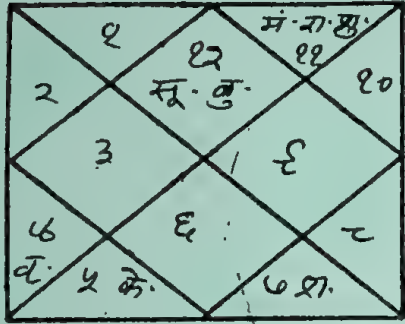
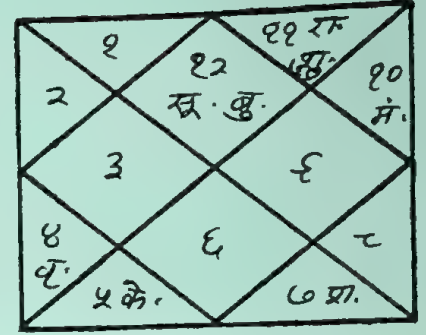
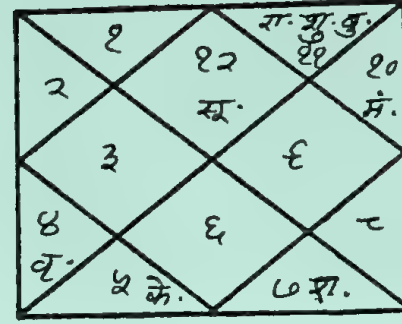
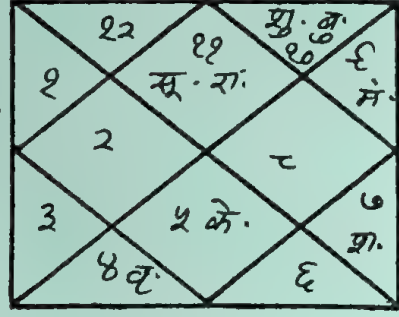
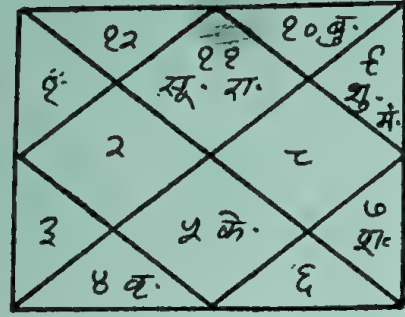


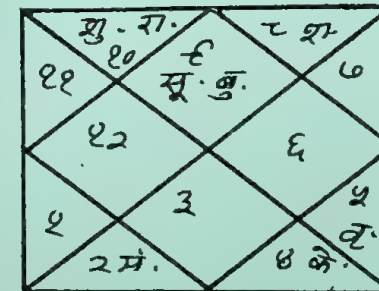
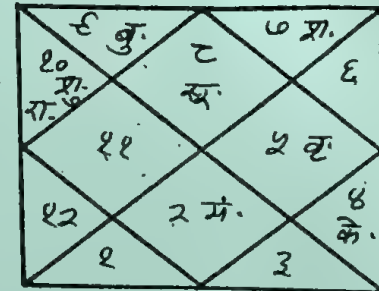
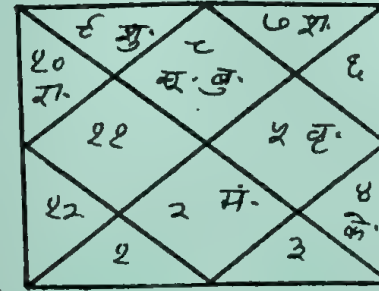
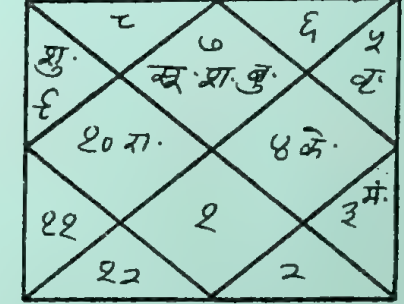
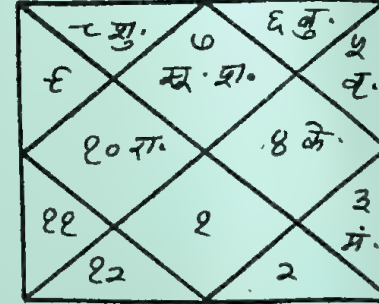
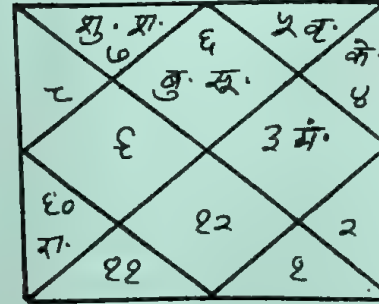
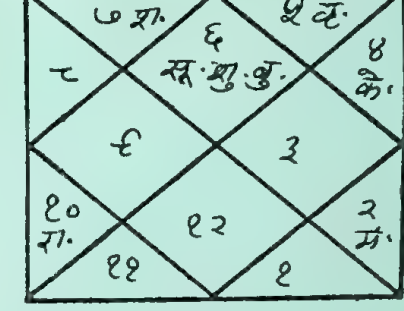
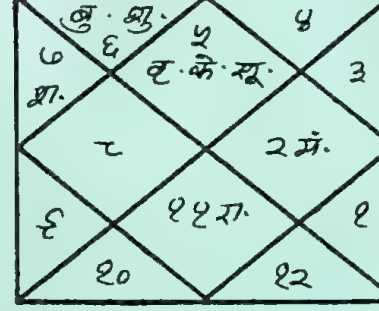
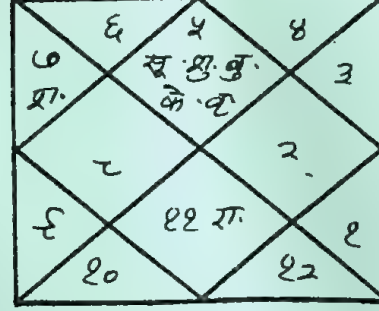
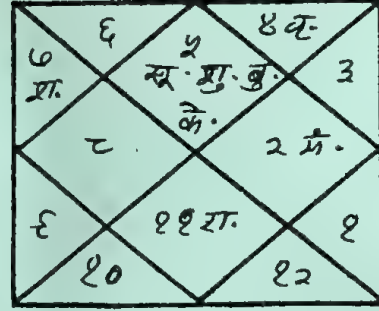
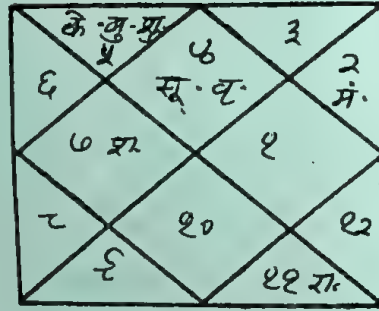


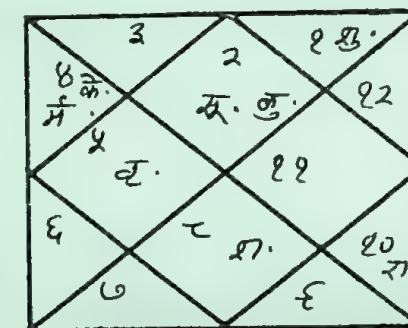
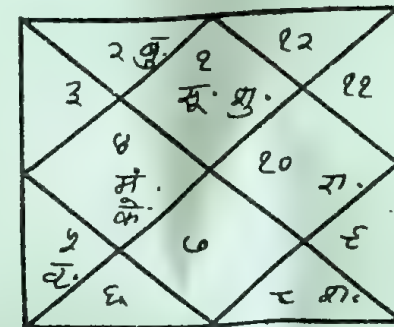
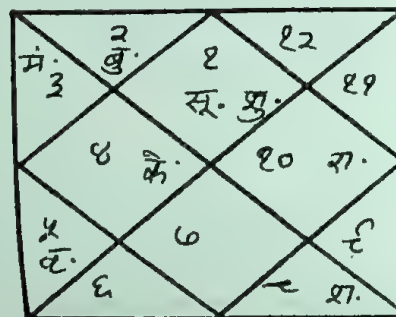
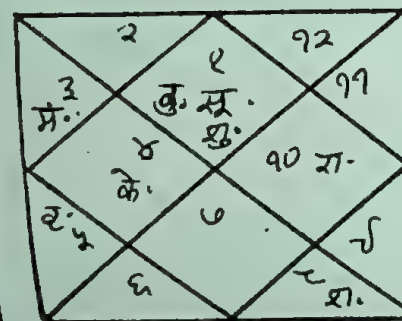
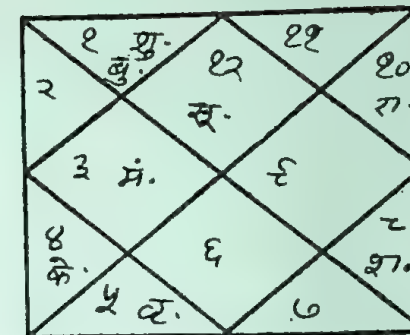
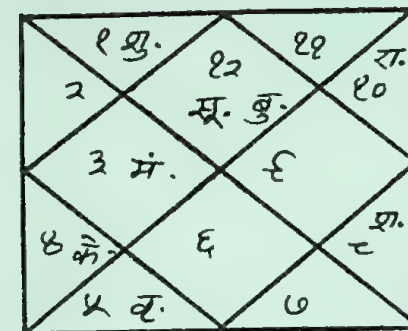
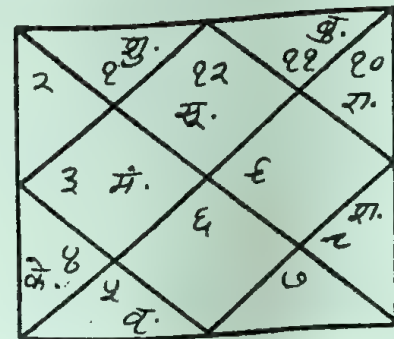
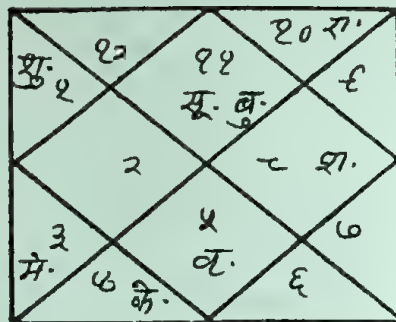
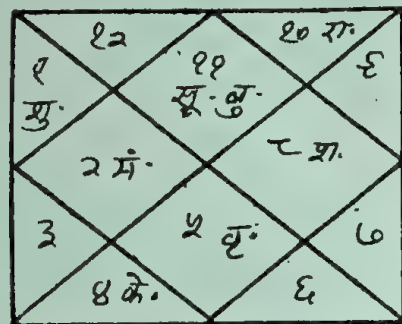
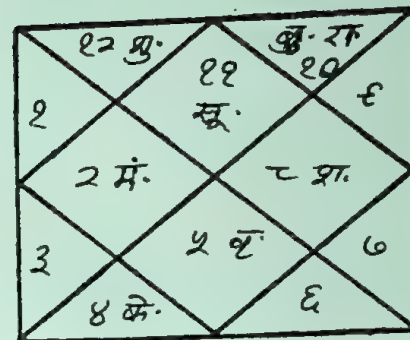
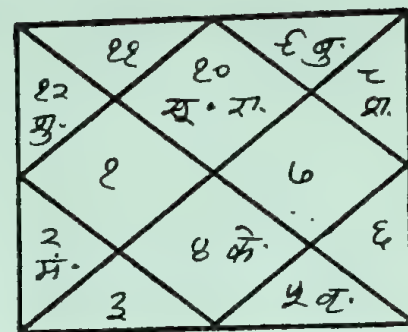
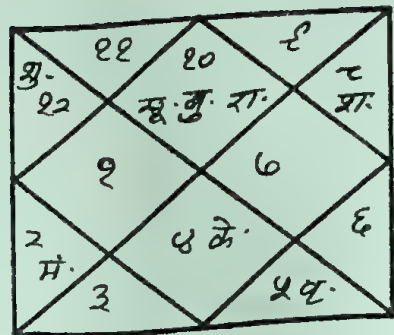
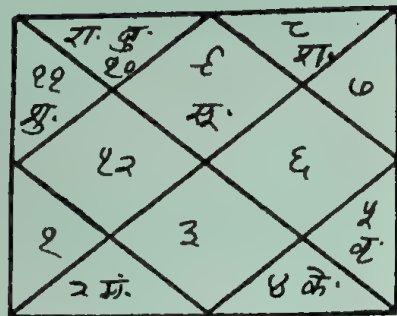


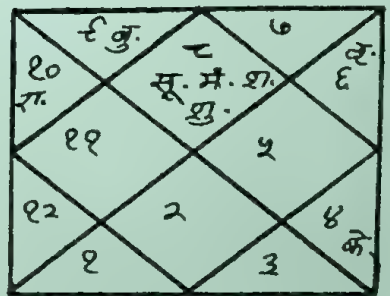
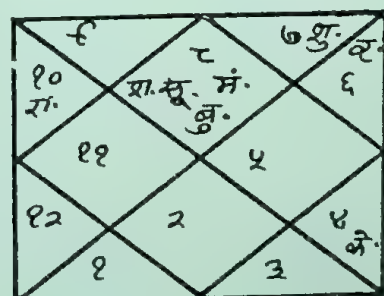
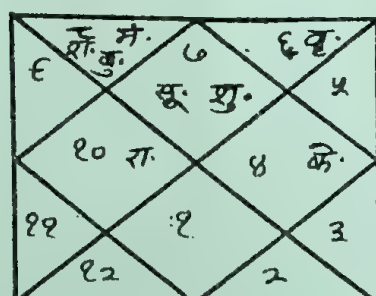
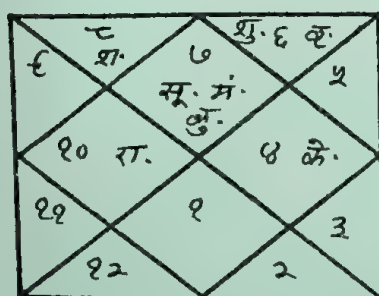
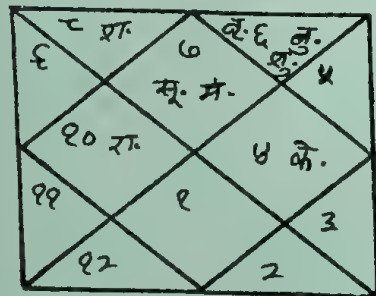
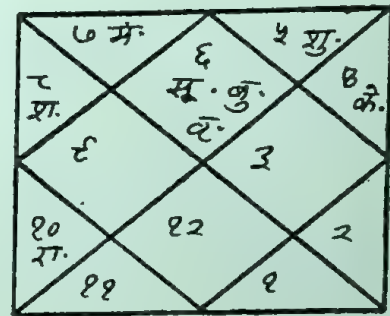
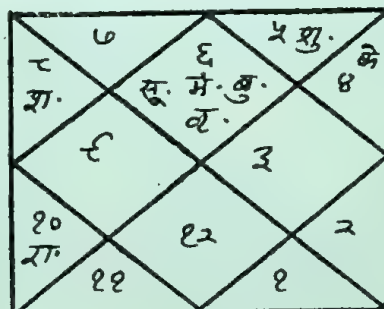
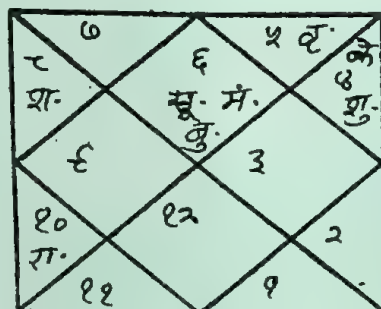
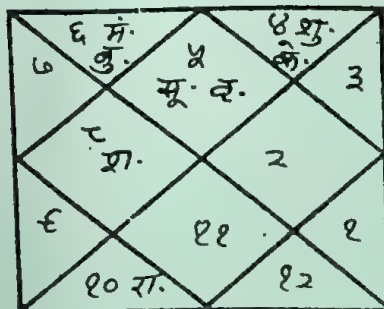
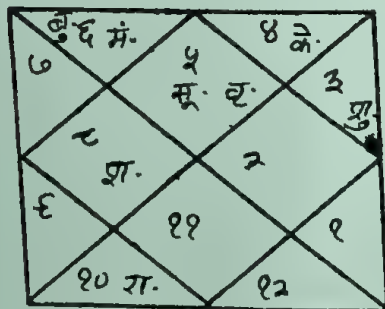
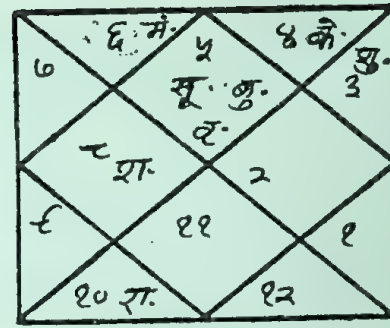
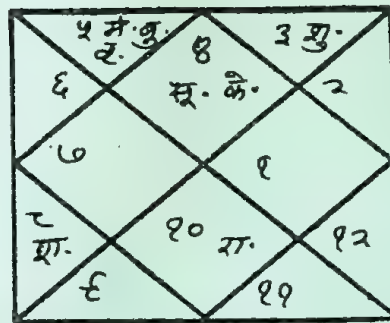
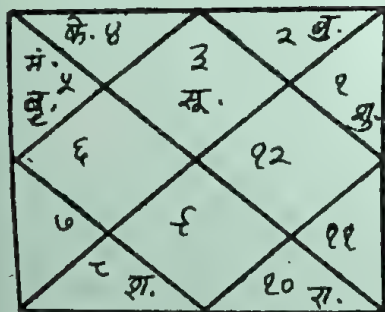


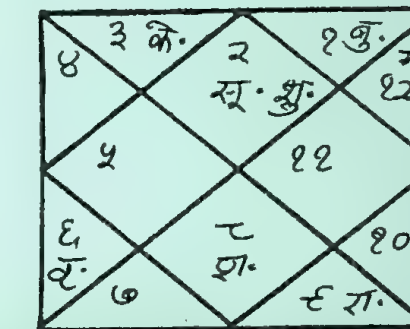
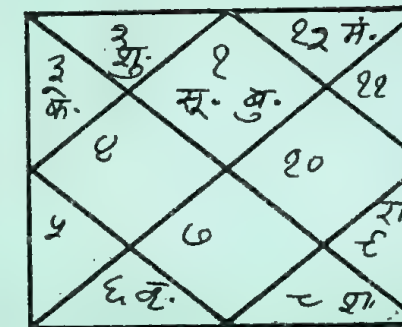
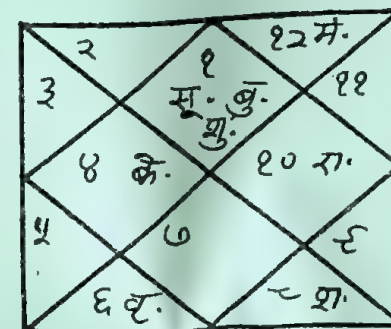
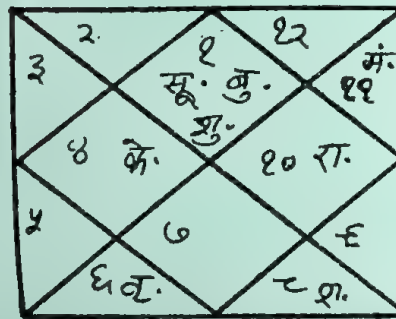
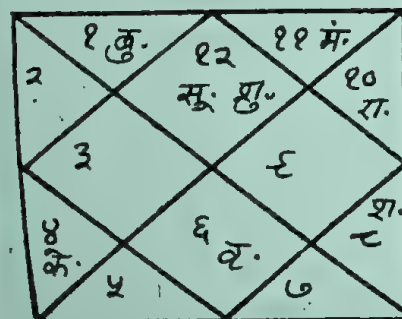
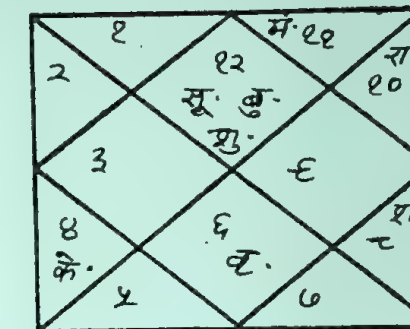
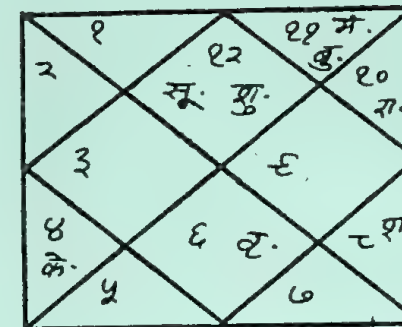
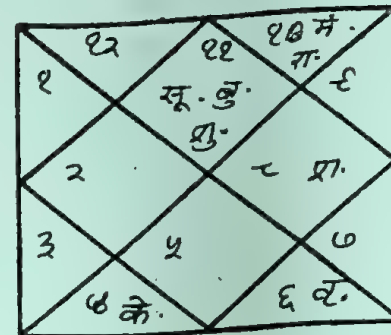
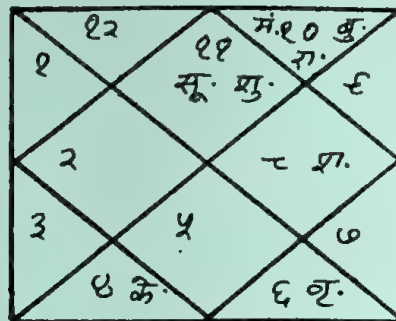
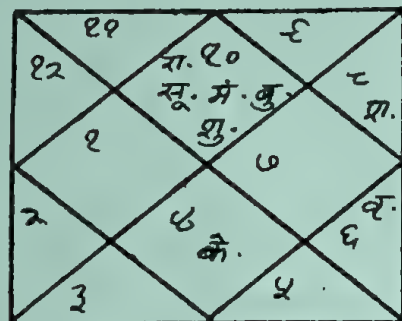
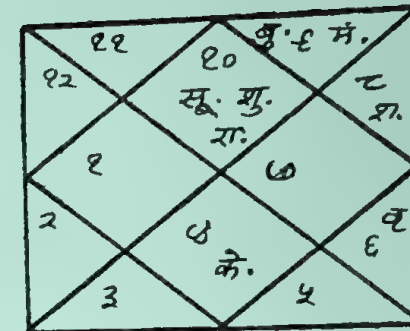
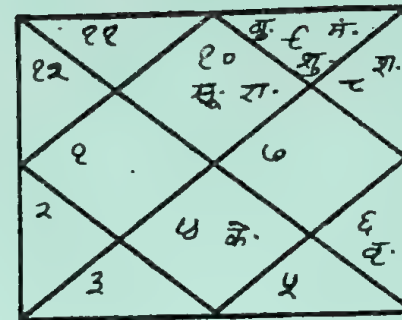
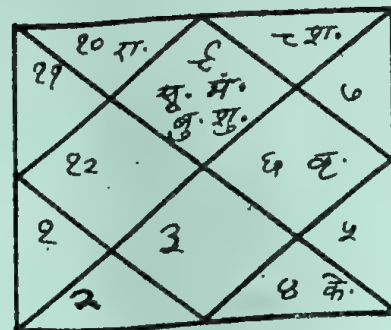
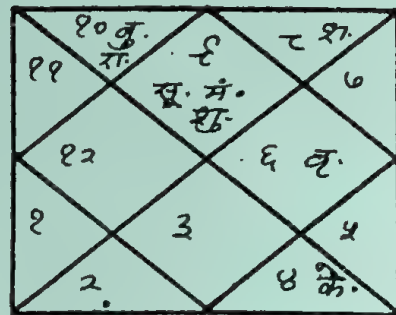
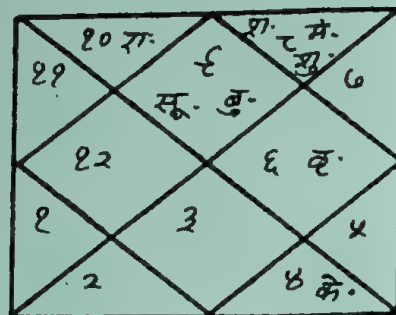


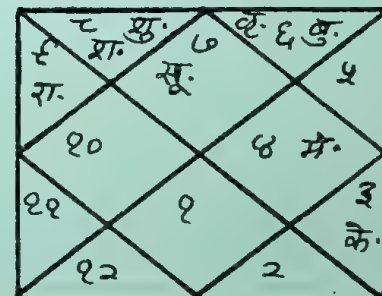
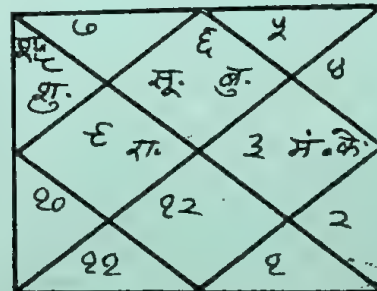
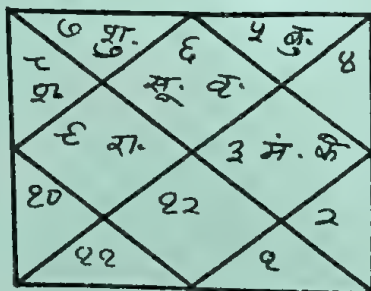
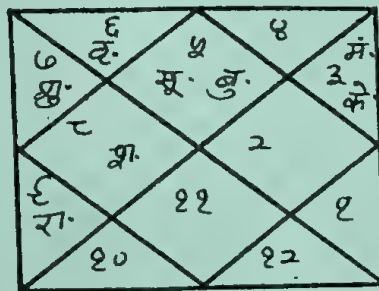
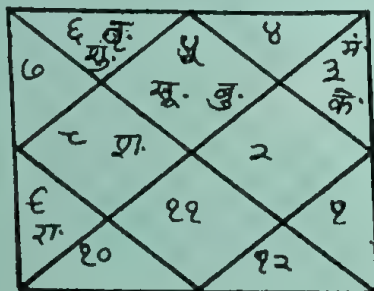
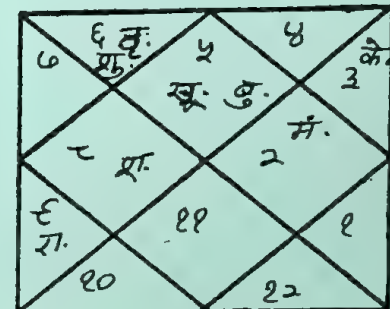
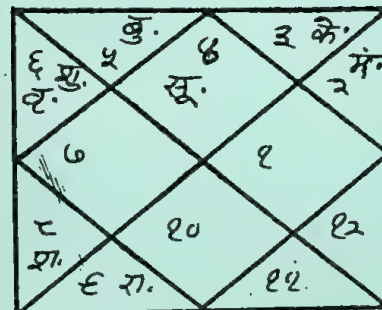
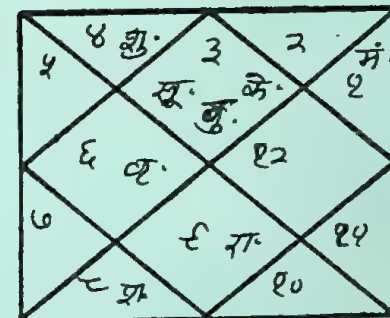
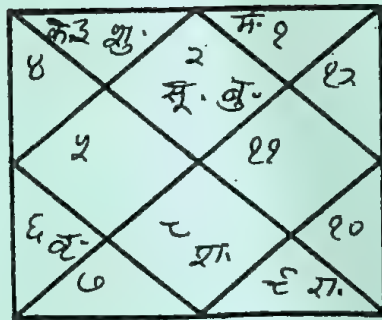
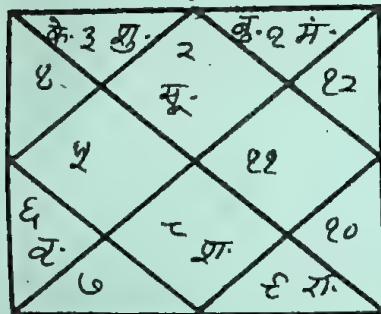
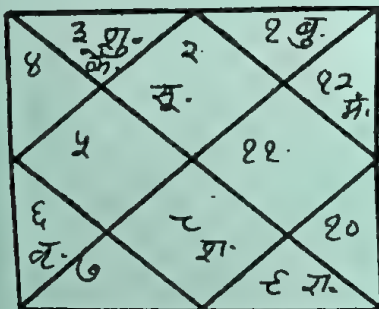


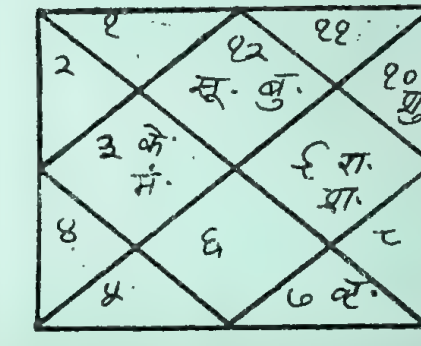
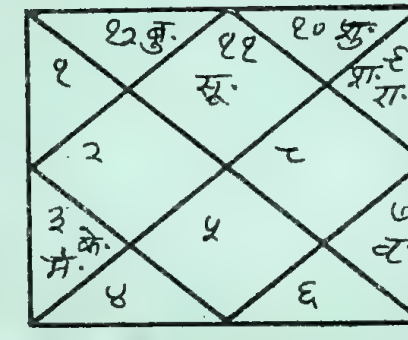
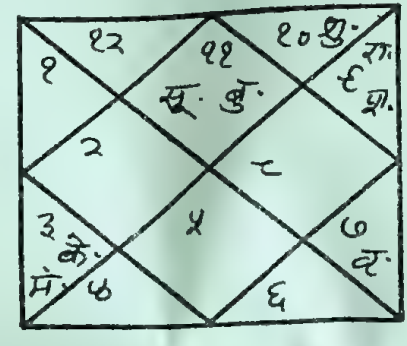
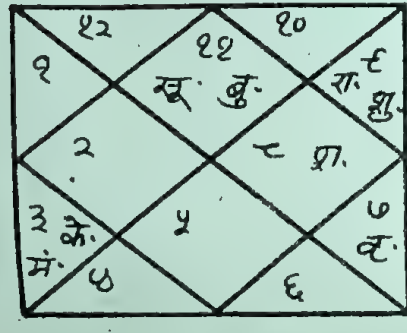
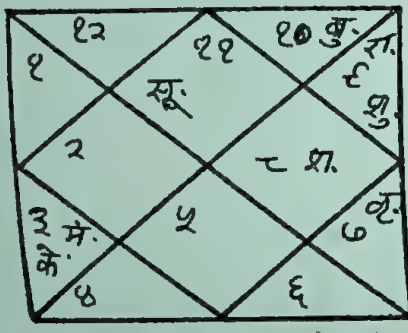
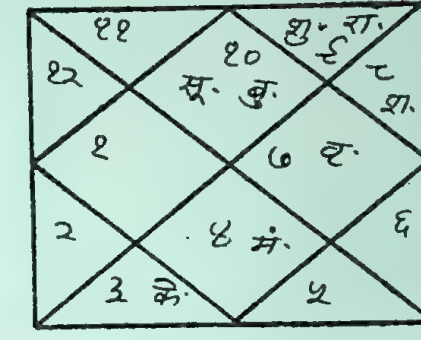
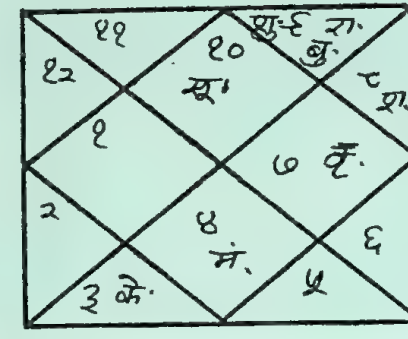
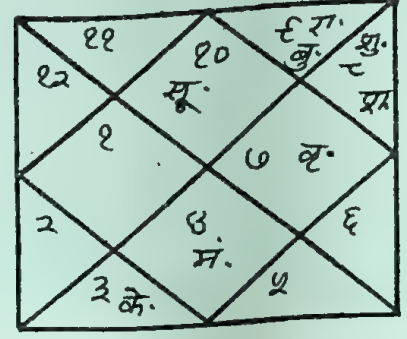
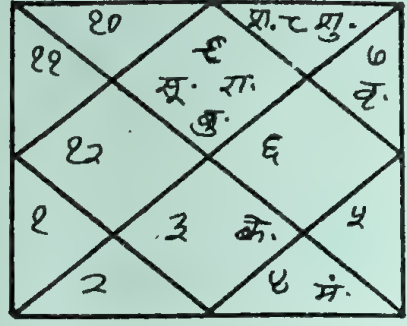
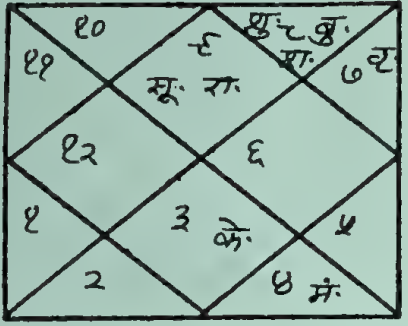
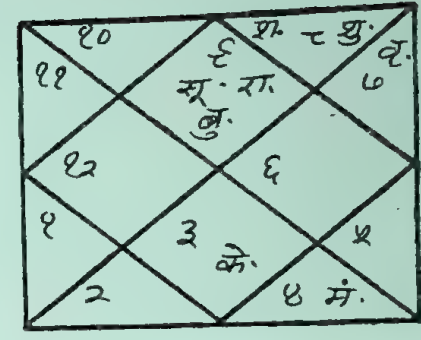
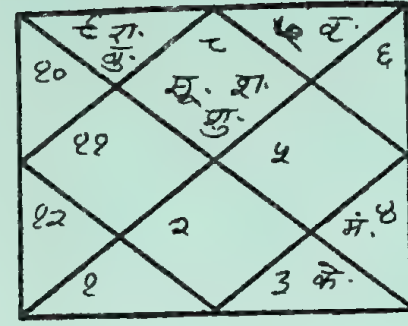
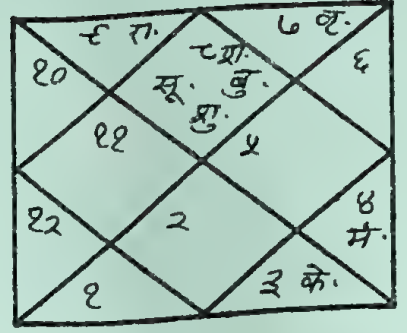
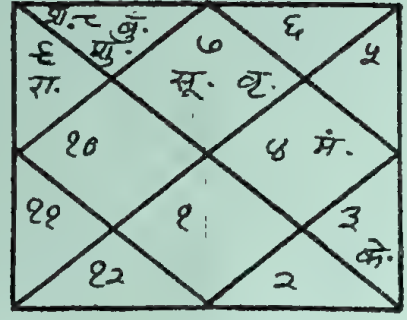
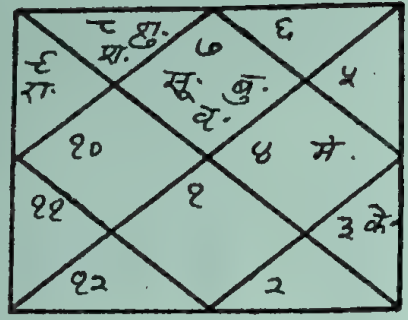


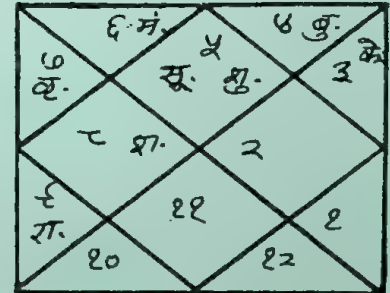
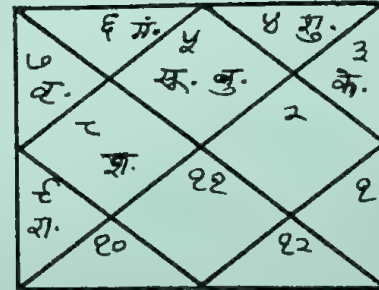
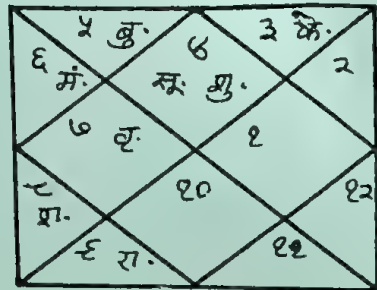
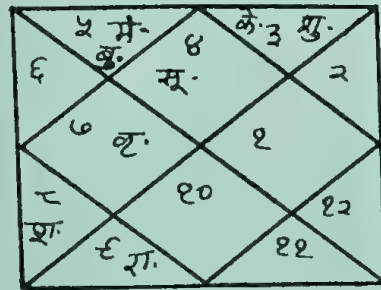
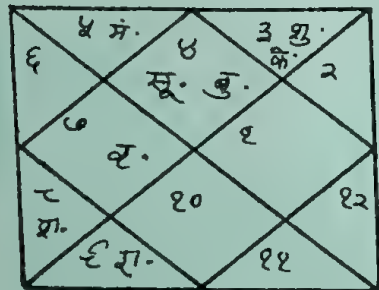
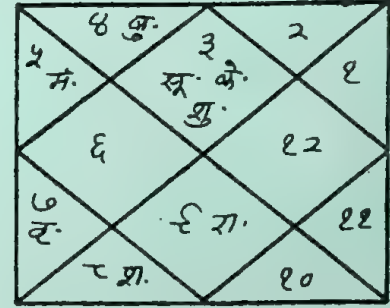
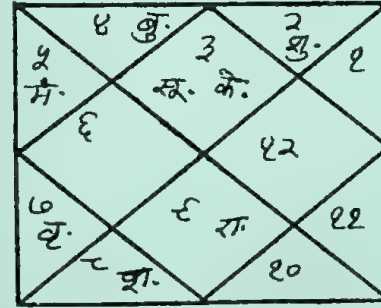
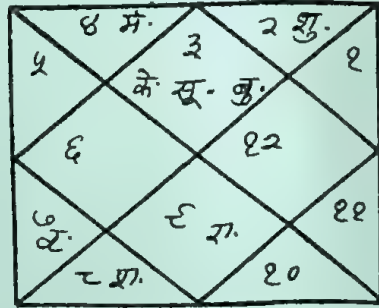
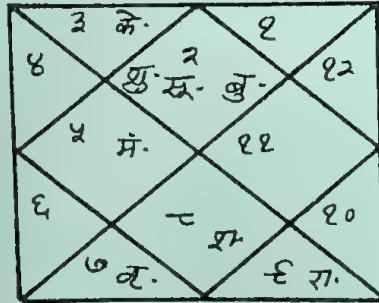
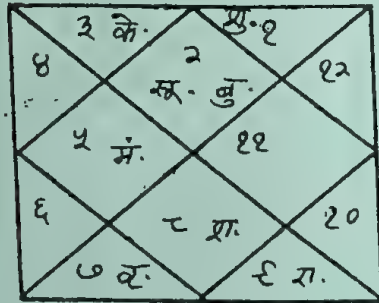
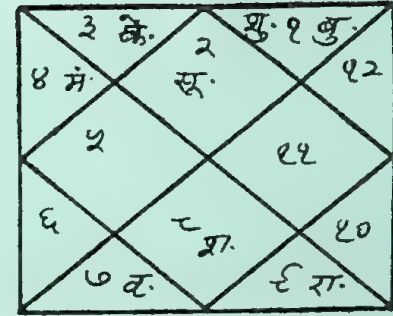
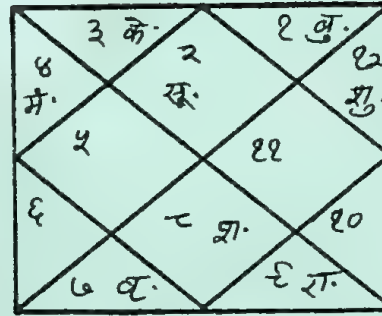
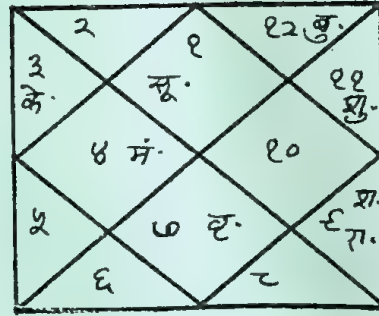
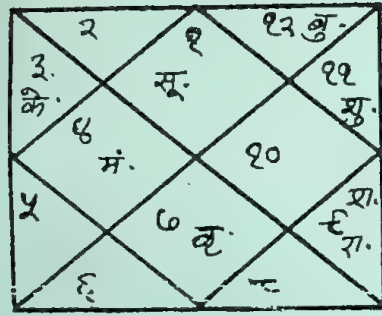
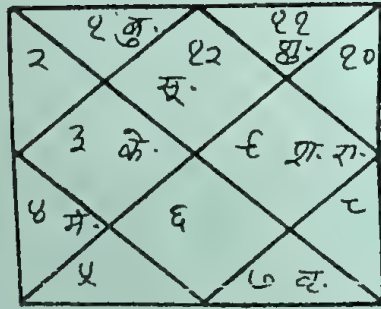


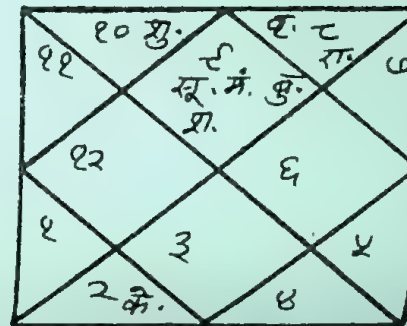
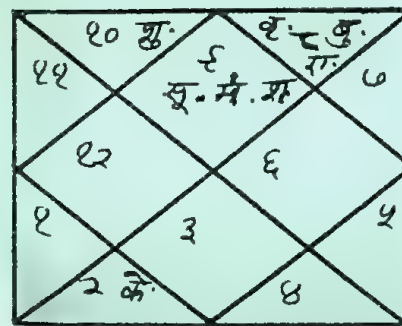
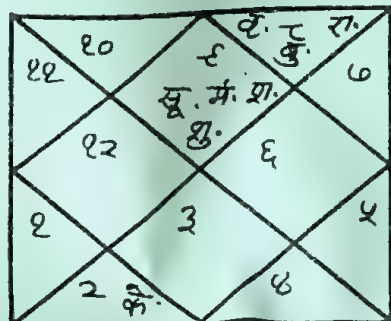
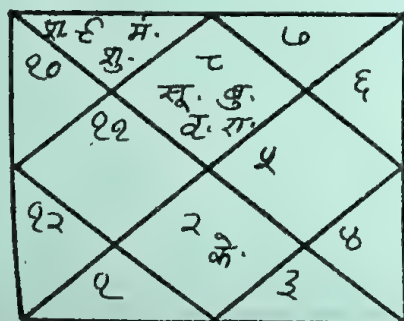
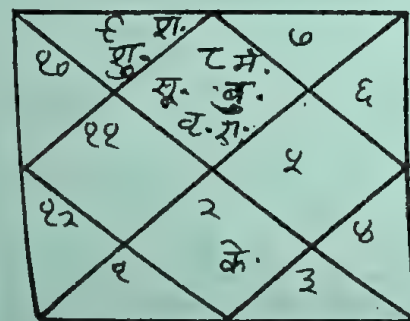
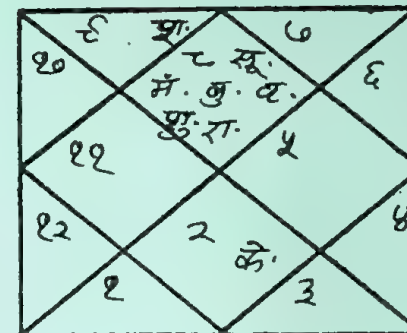
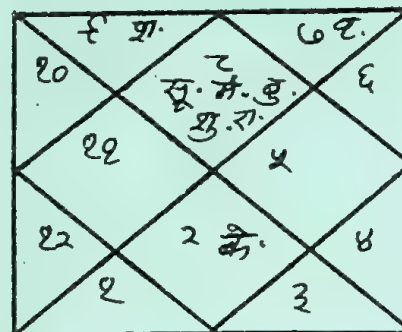
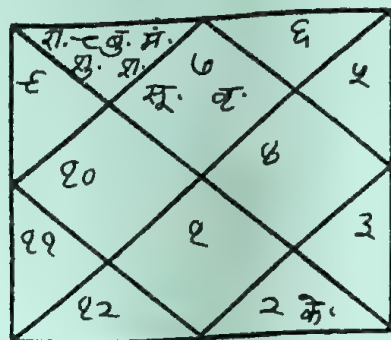
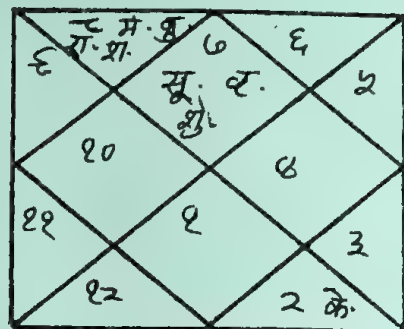
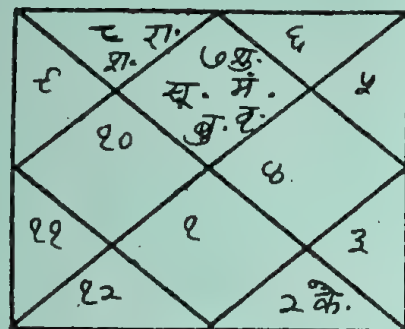
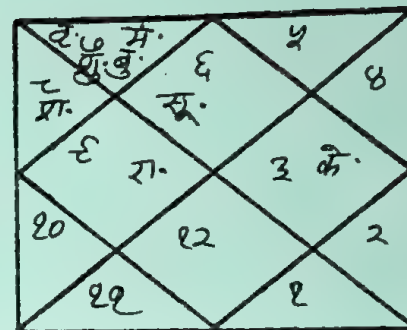
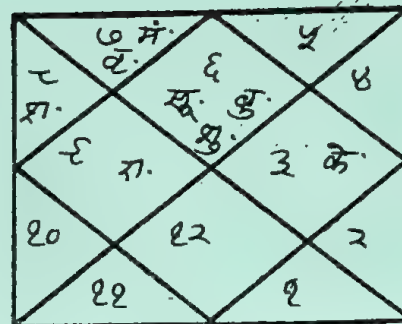
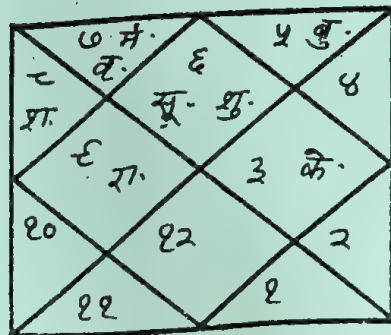
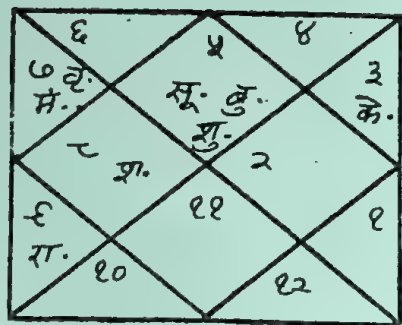
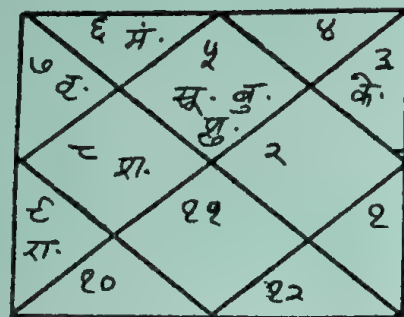


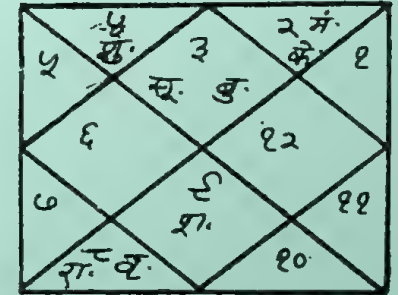
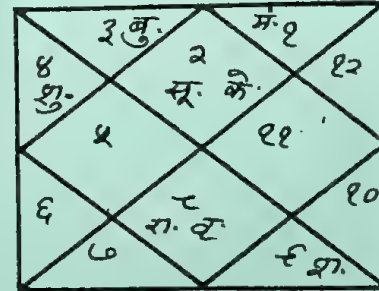
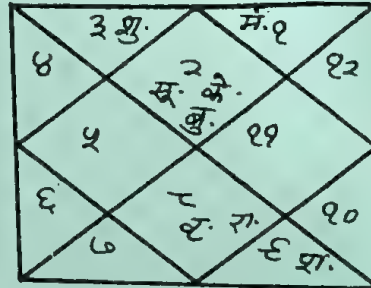
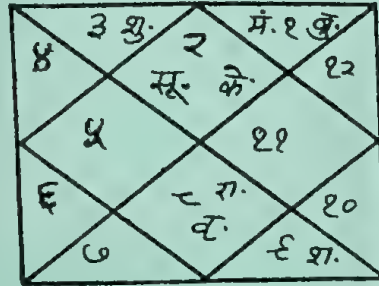
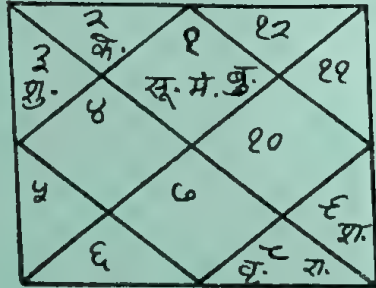
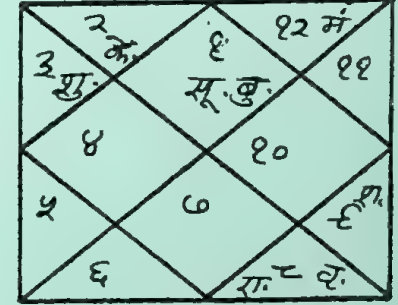
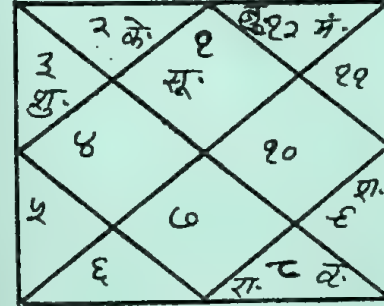
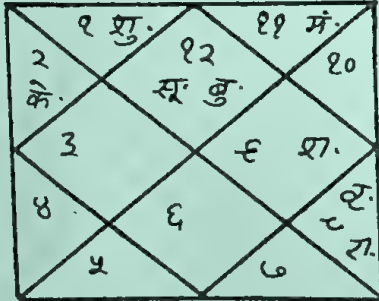
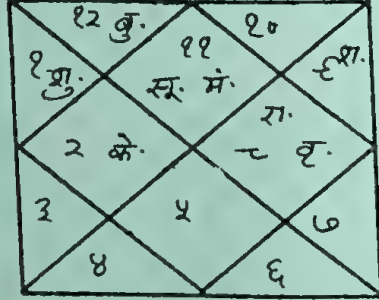
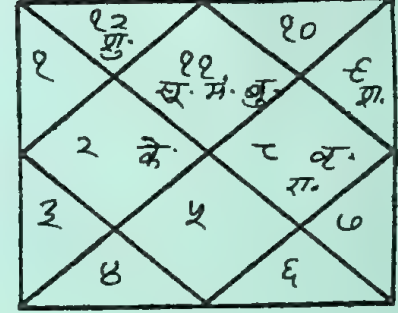
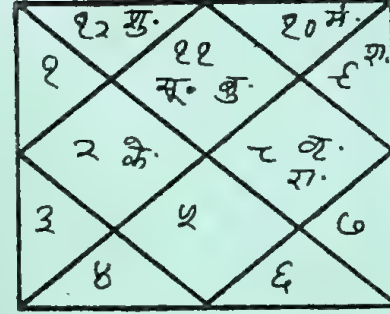
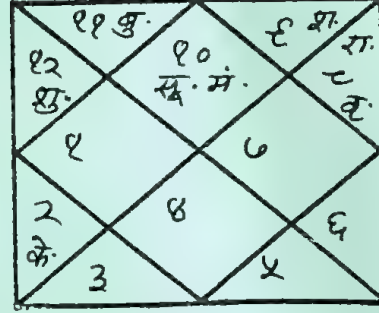
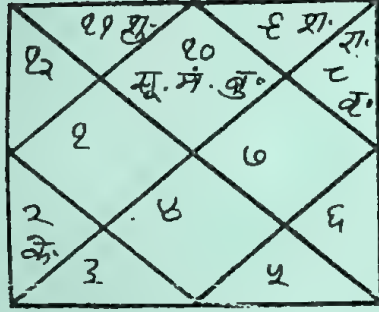


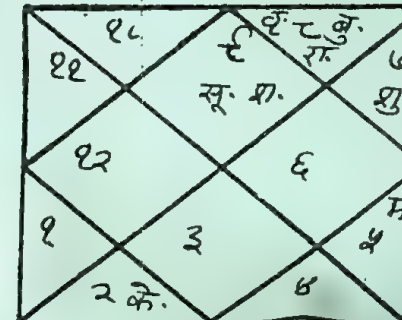
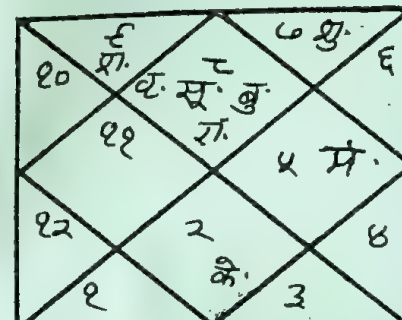
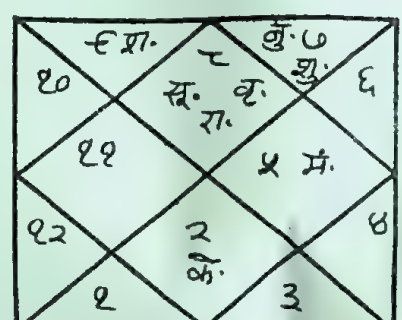
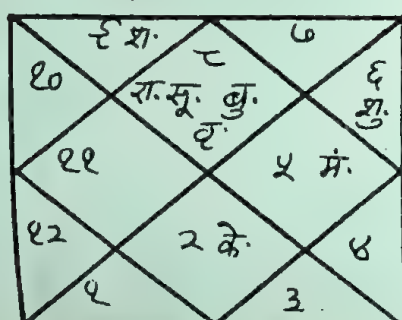
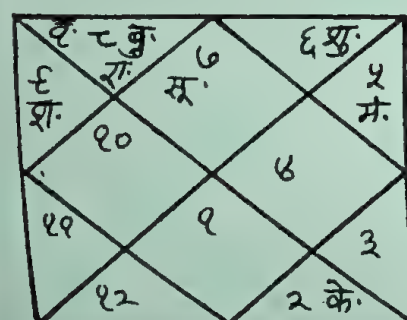
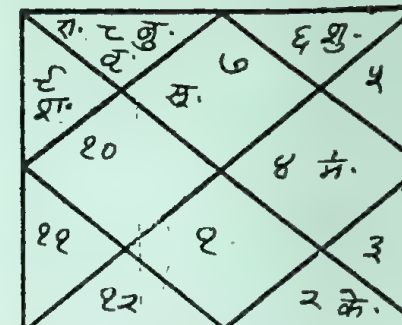
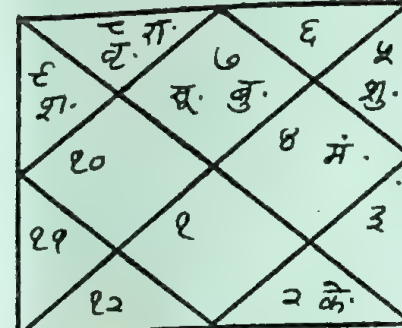
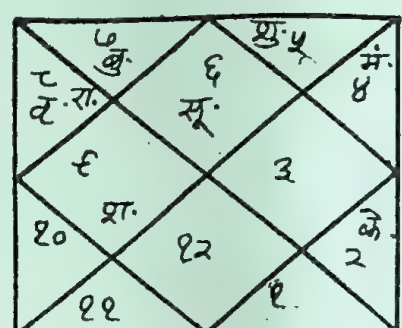
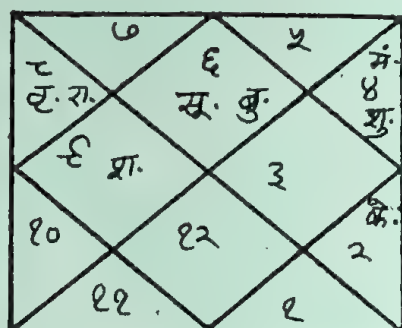
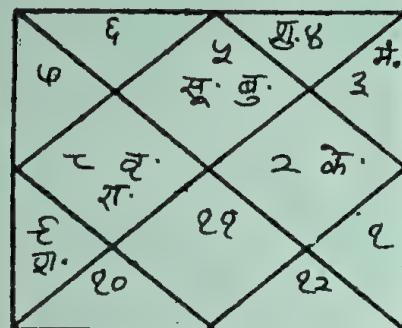
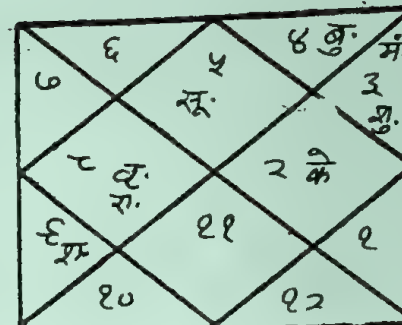
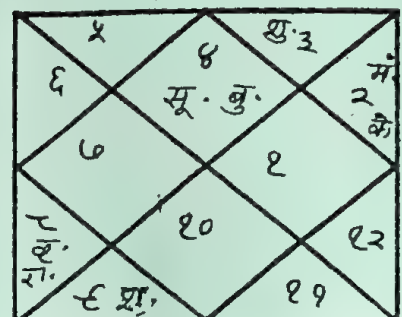
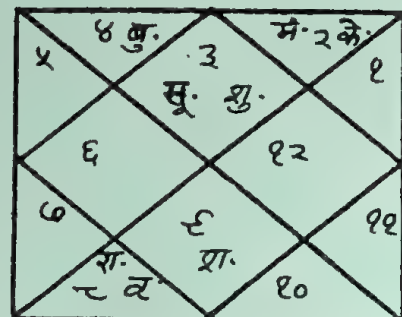
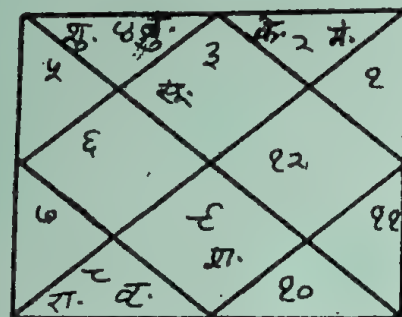


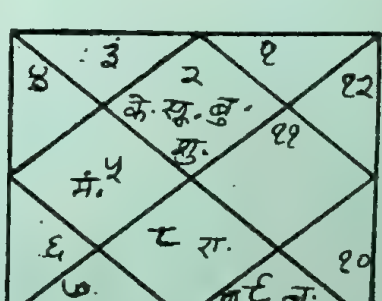
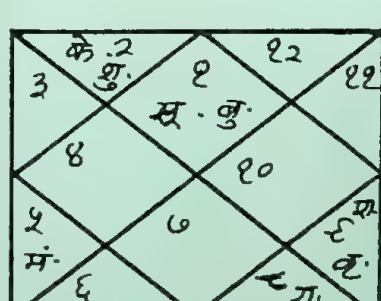
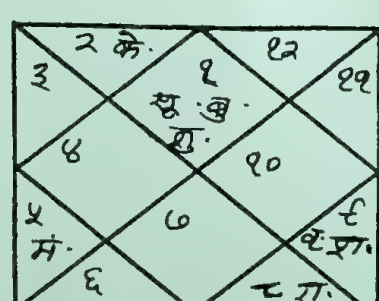
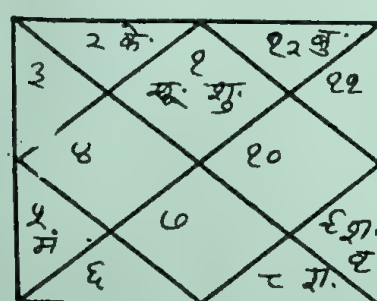
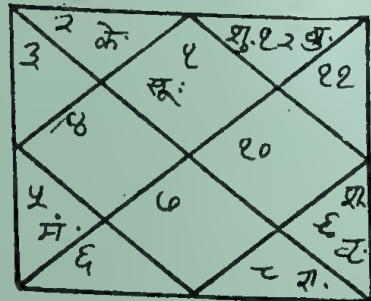
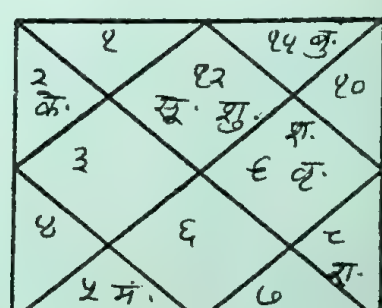
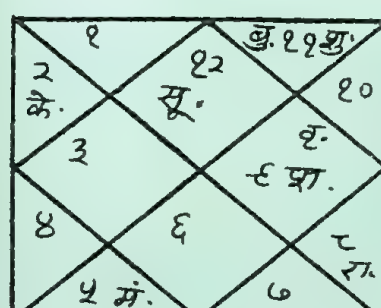
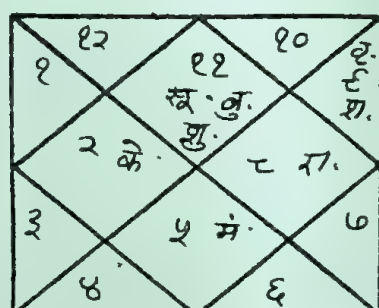
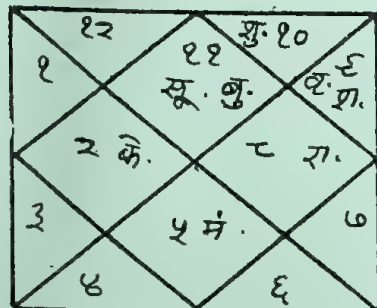
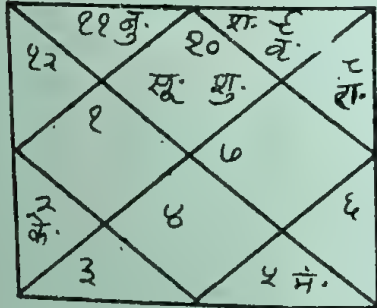
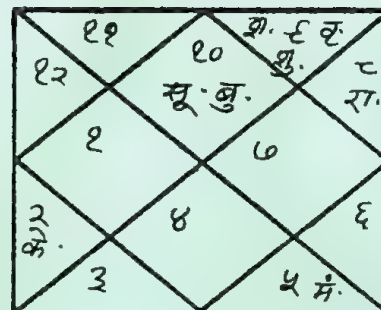
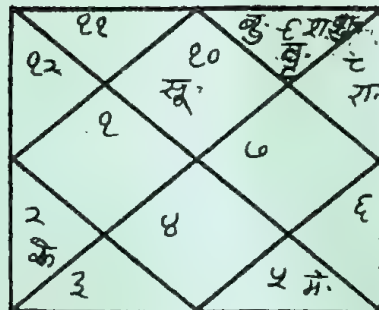
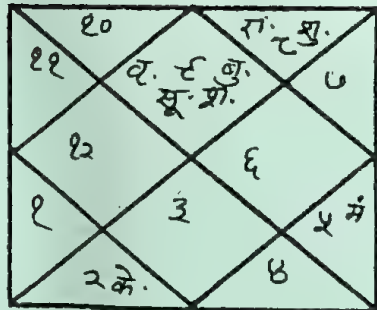
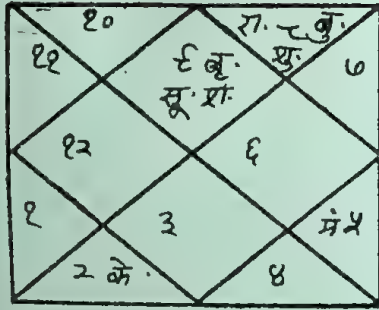


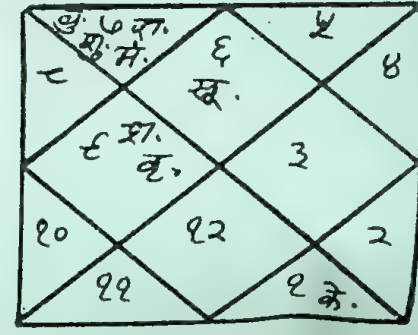
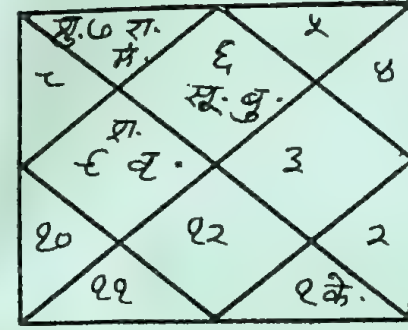
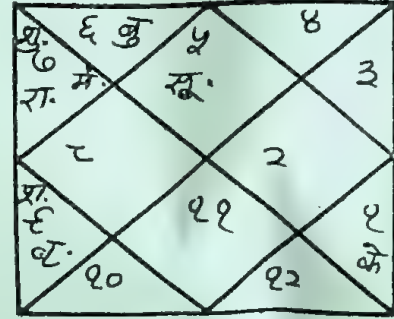
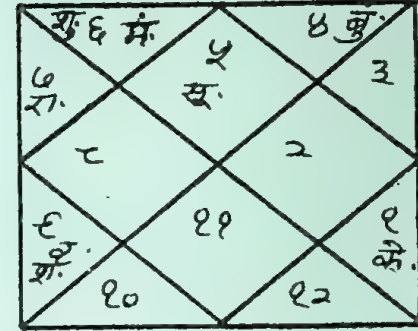
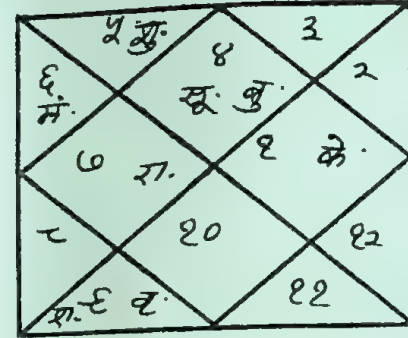
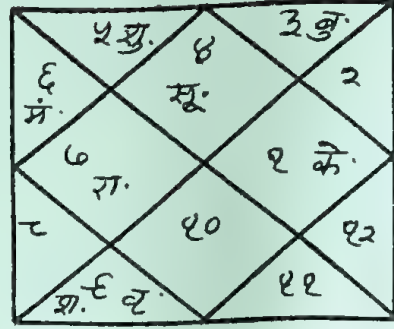
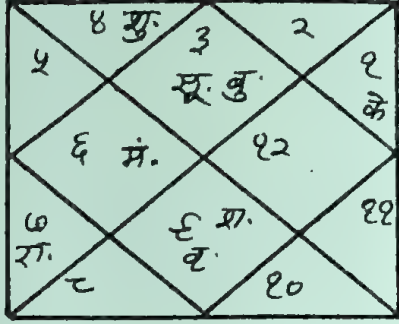
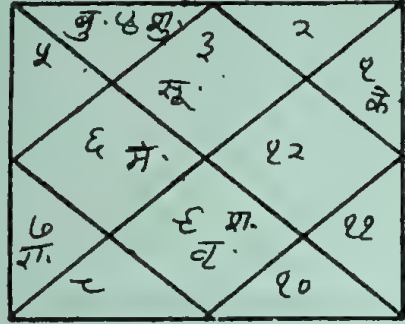
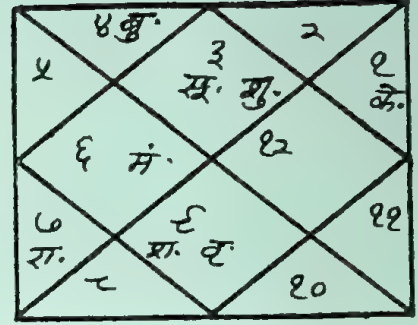
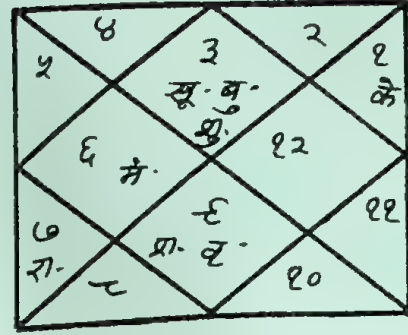
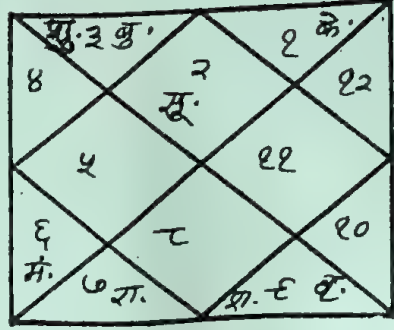
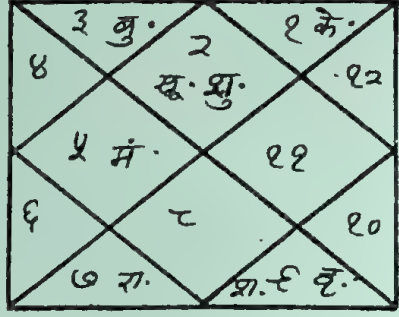
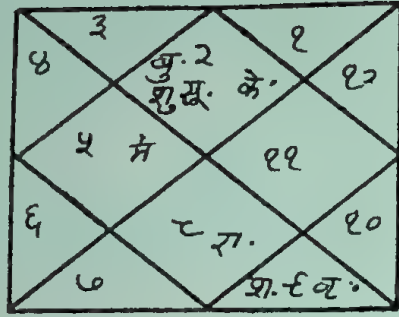












६ रा. शु.	९ द	४
८ शु. सं.		८ स
६ वृ.	३	
१० श.	१२	२
११		१ के.

८ मं. १०	७ सु. कु.	६ ५
११	४ १ मं.	३
१२	२	

६	७	८ मं.
५	स्त्र. रा. शु.	६
	४	१०
३	१ के.	११
२		१२

श. ई. सं. ७८	श. ७८
१०	६
११	५
१२	४
१३	३

श. ६ मं.	८	रा. ७ बु.
१०	स.	६
११	५	६
१२	२	४
१ के.	३	

१०	८	६
९	५	३
१२	२	४

10 ਏ	11 ਐ	12 ਓ	13 ਔ
14 ਏ	15 ਐ	16 ਓ	17 ਔ
18 ਏ	19 ਐ	20 ਓ	21 ਔ
22 ਏ	23 ਐ	24 ਓ	25 ਔ

१० श. १० नं.	८	९
२१	८ श.सू.व. भु.	७
१२	६	५
१ के.	३	४
२	४	

10 ਭੰ	ੜ	ਸ਼
੧੧ ਸ਼	ੜ ਸ਼	੬
੧੨	੬	੫
੧ ਭੰ	੩	੫
੨	੪	

A 3x3 magic square with numbers 1-9 and Gujarati text. The numbers are arranged in a standard 3x3 grid. The Gujarati text is written in the cells containing the numbers 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, and 9. The text is as follows:

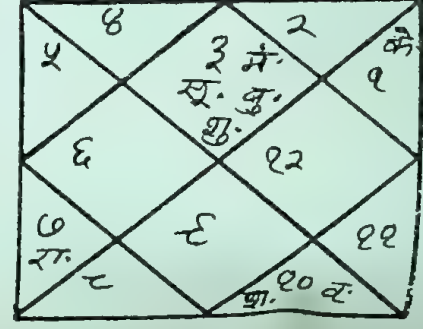
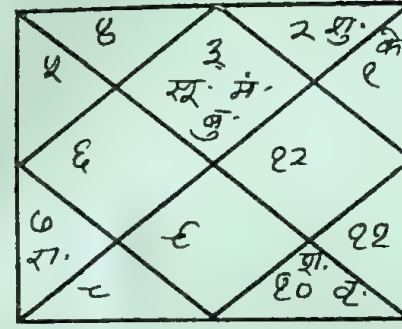
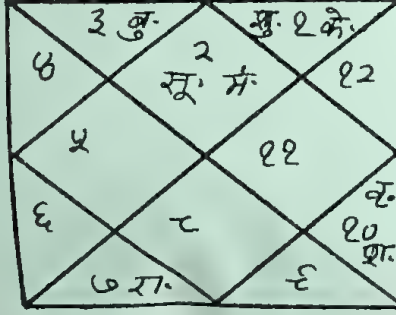
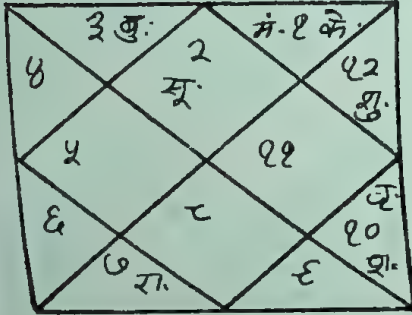
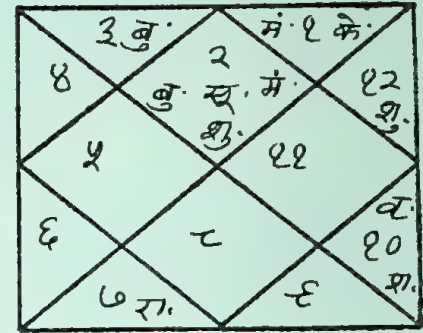
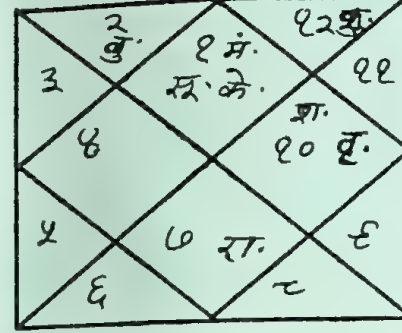
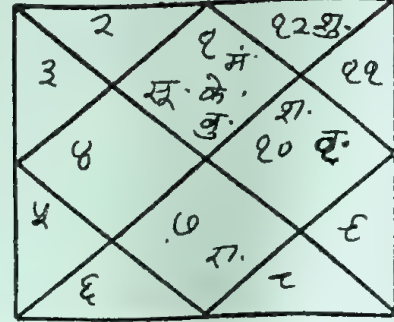
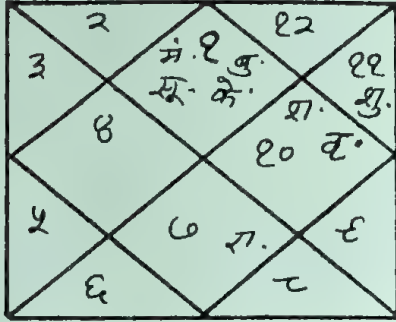
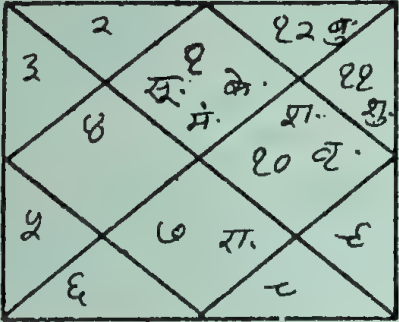
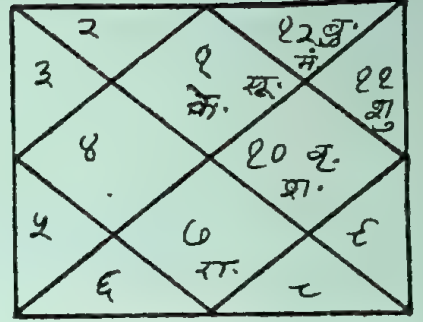
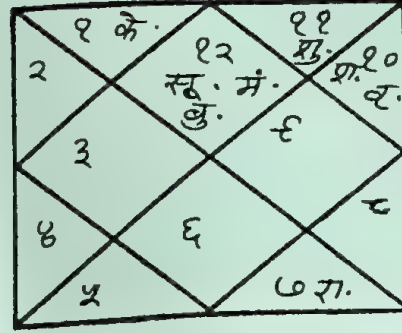
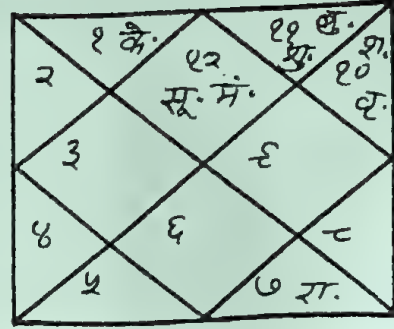
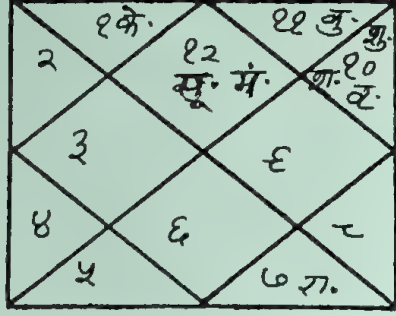
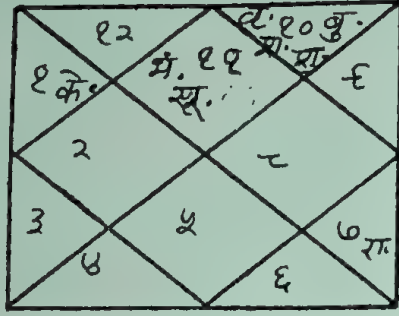
૧૧	૧૨	૧૩
૧૪	૧૫	૧૬
૧૭	૧૮	૧૯

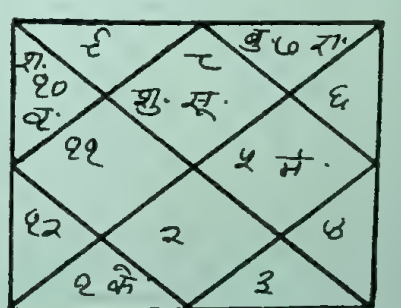
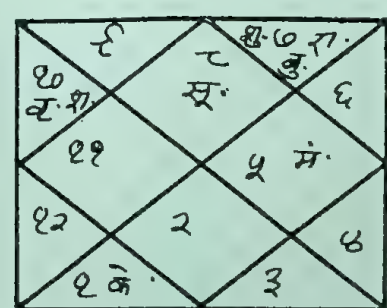
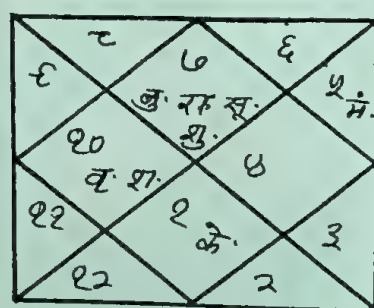
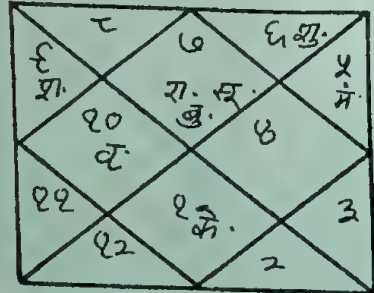
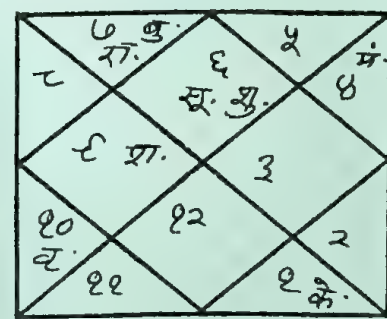
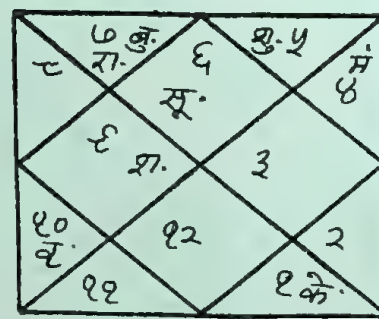
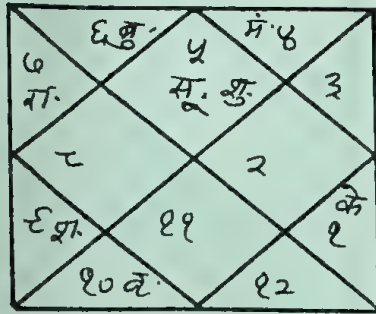
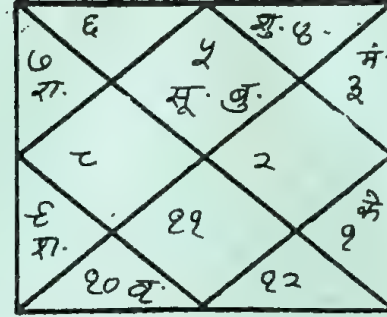
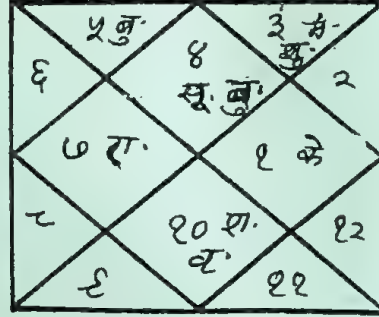
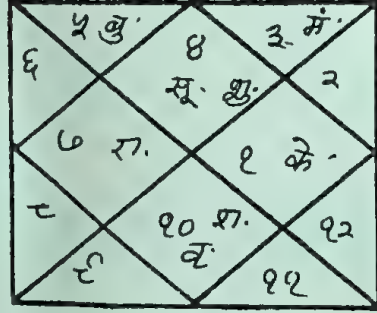
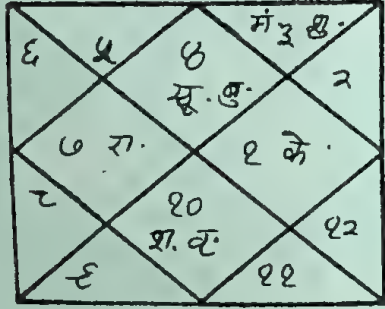
੧੧	੧੦	੯
੧੨	੮	੭
੧	੬	੫

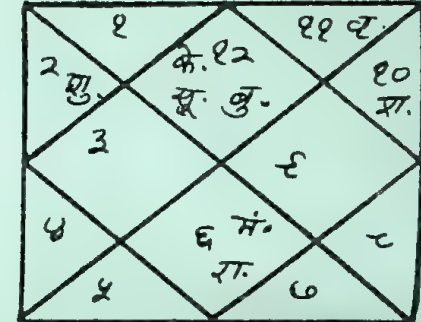
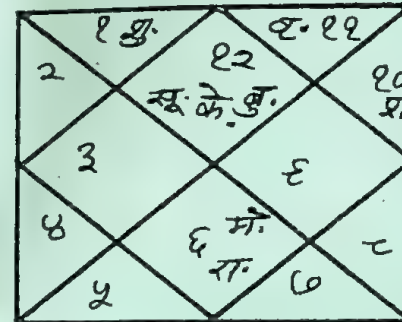
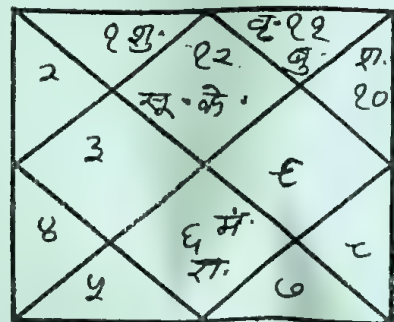
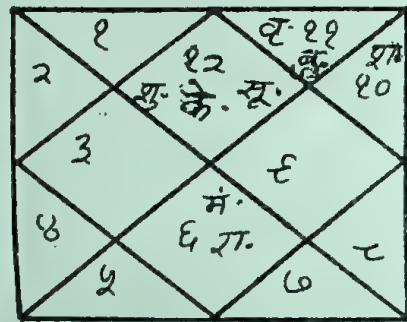
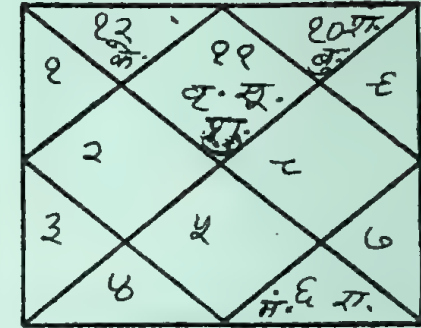
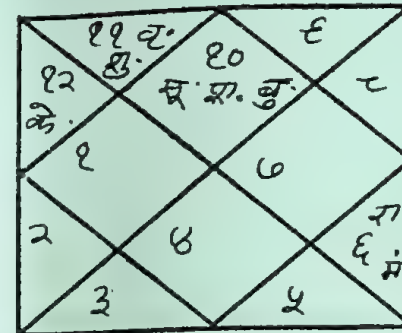
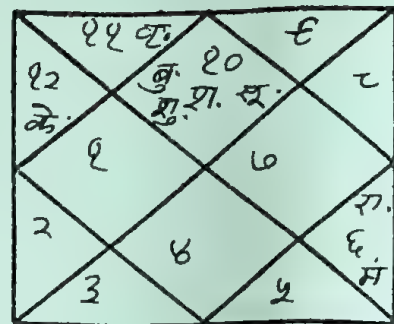
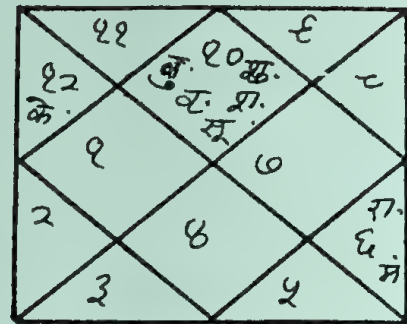
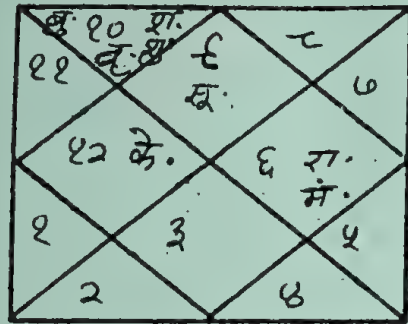
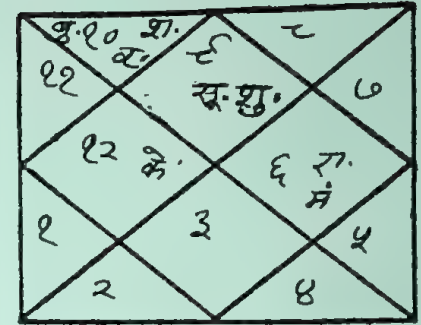
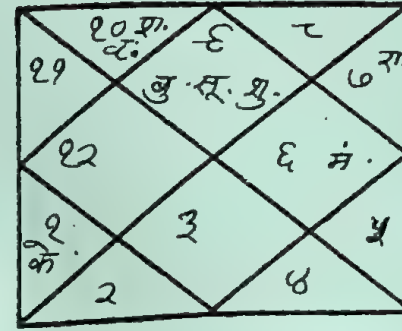
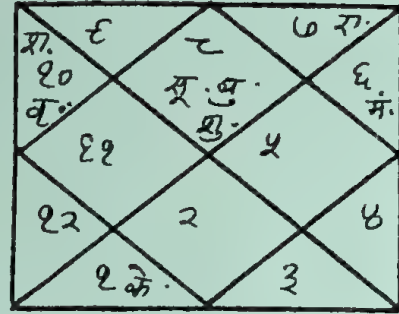
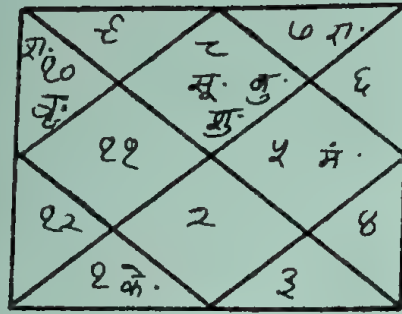
१	कै.	१०	सं.
२	कै.	३	सं.
४	सं.	५	सं.
६	सं.	७	सं.
८	सं.	९	सं.

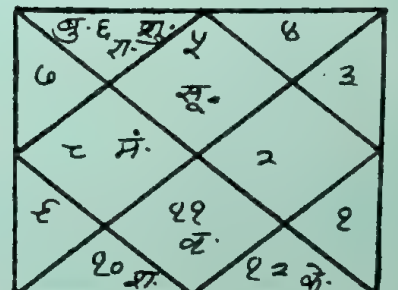
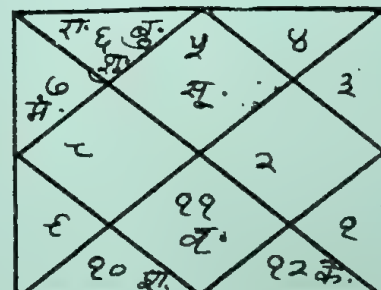
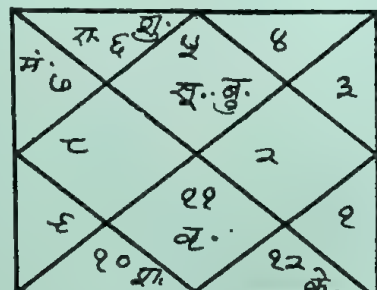
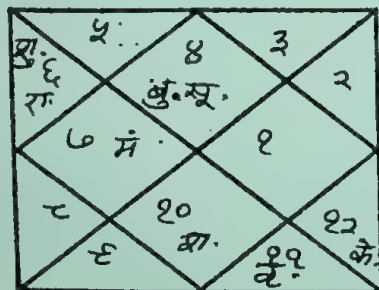
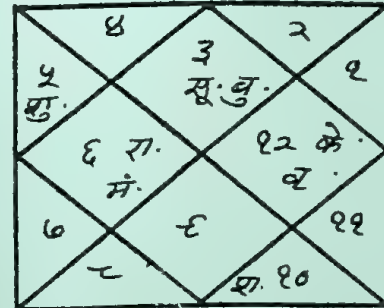
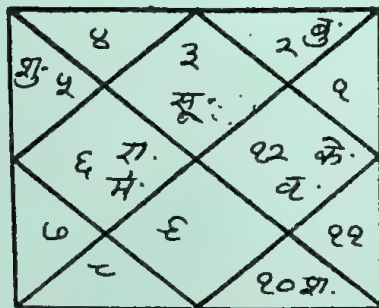
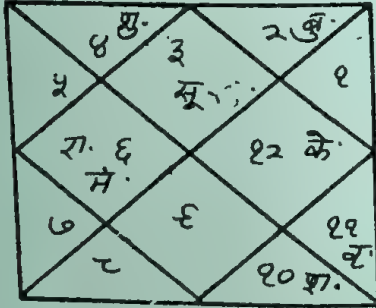
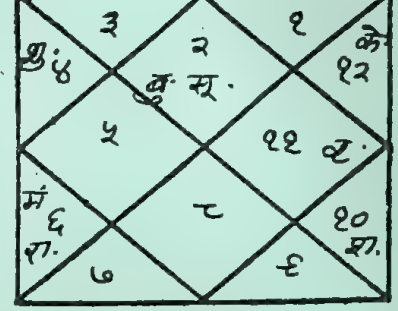
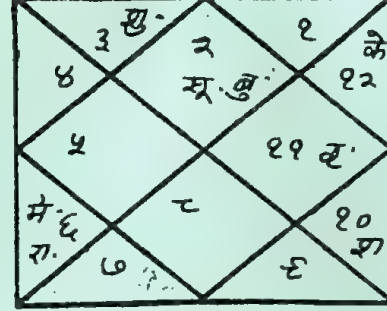
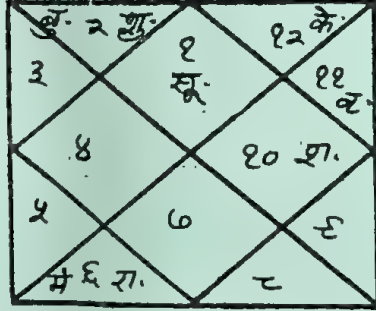
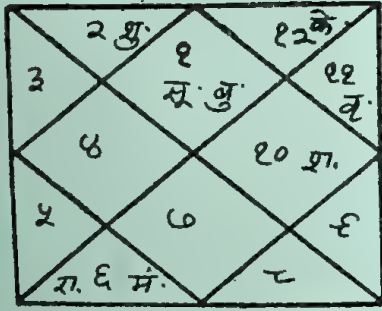
१२	११ शु. १० म.	६
१ के.	मं. सू. बु.	८
२	८	७ रा.
३	५	६
४		

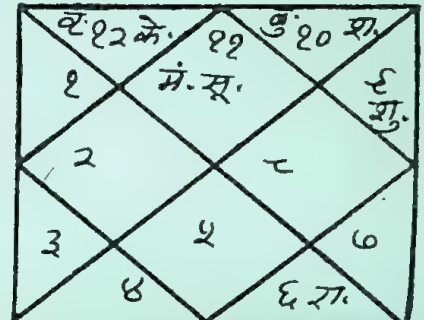
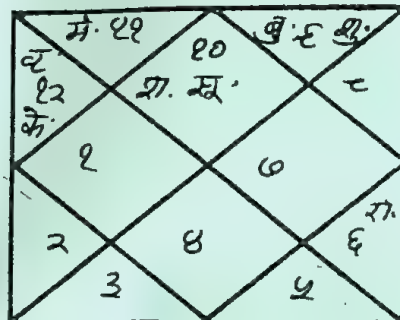
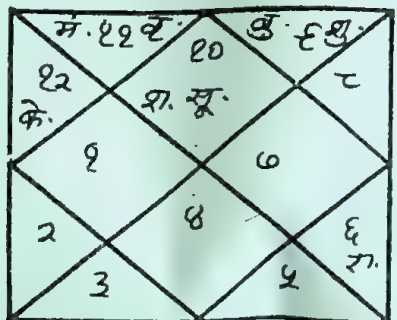
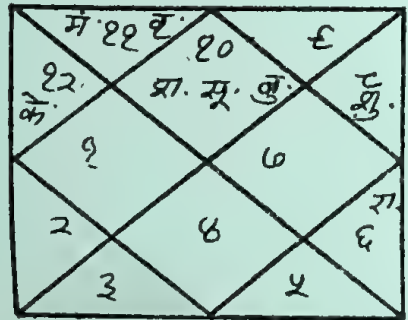
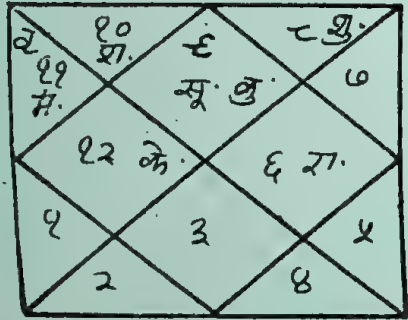
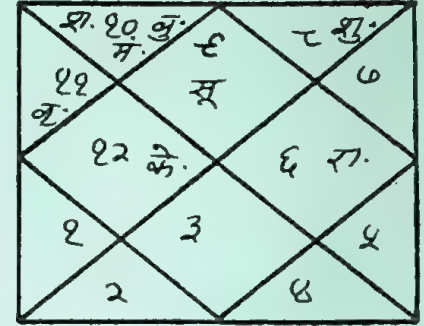
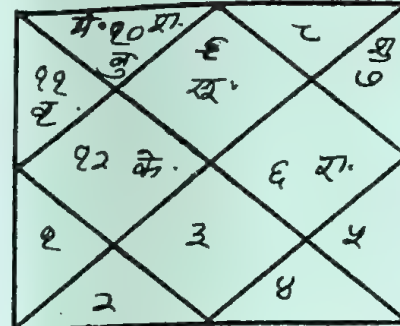
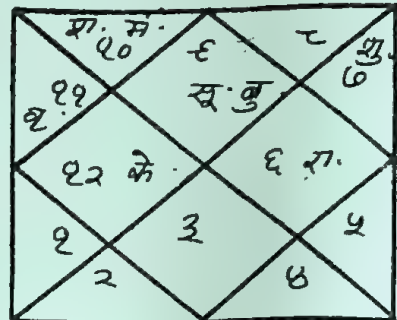
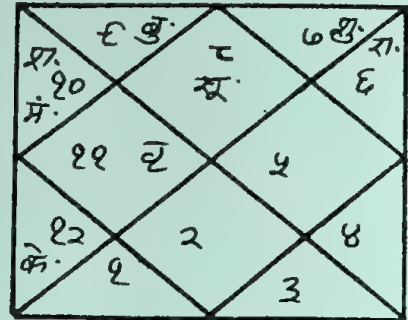
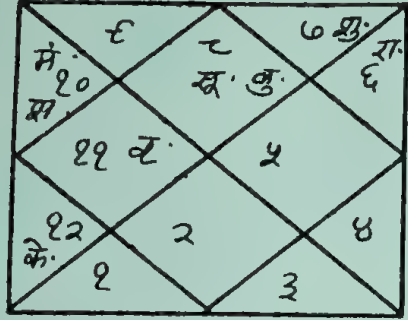
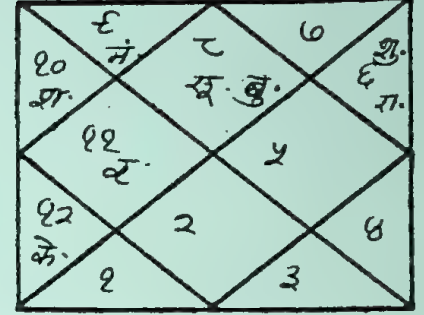
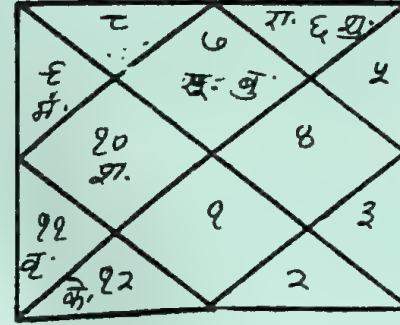
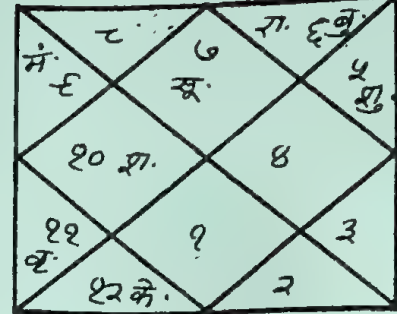
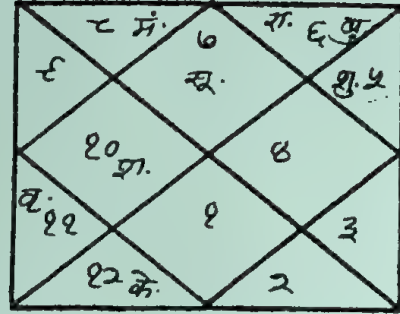
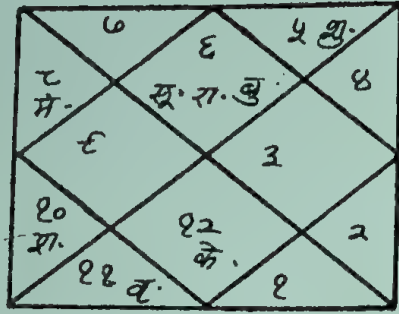
कु०
प०

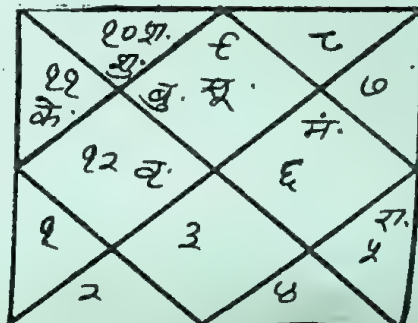
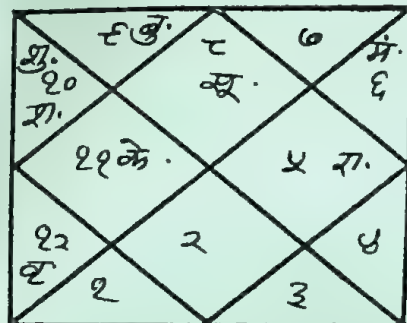
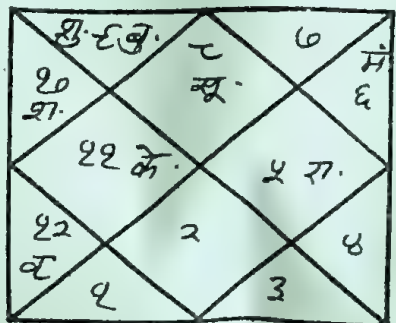
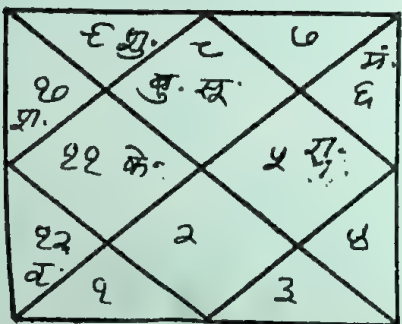
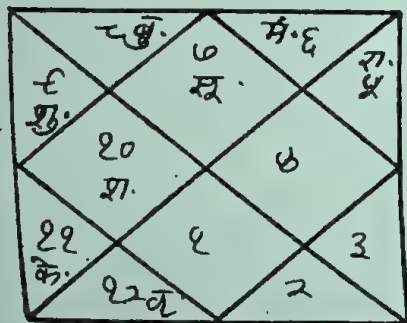
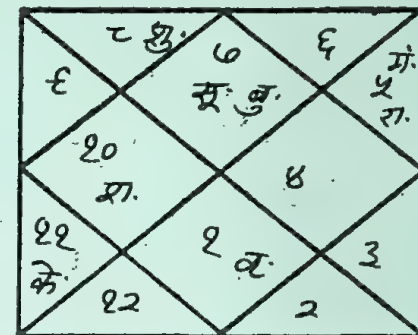
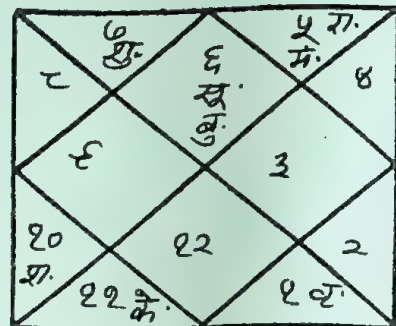
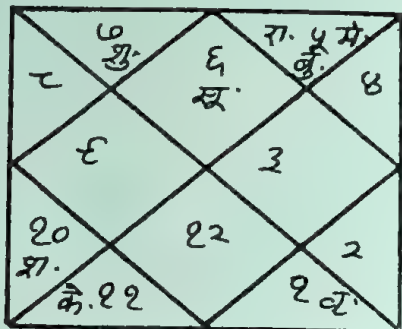
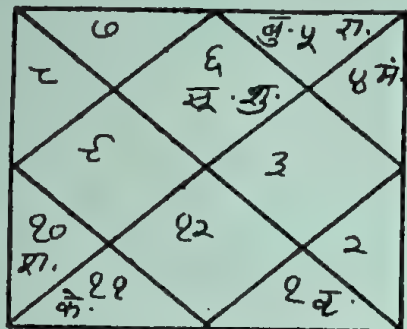
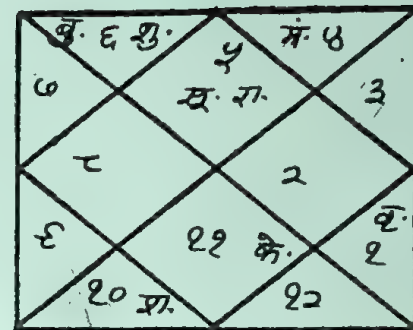
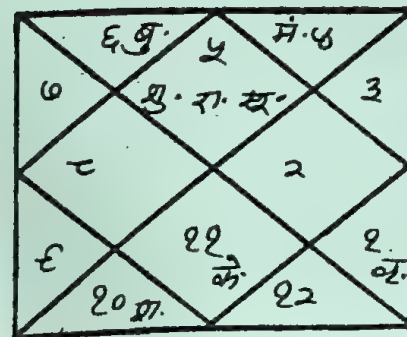
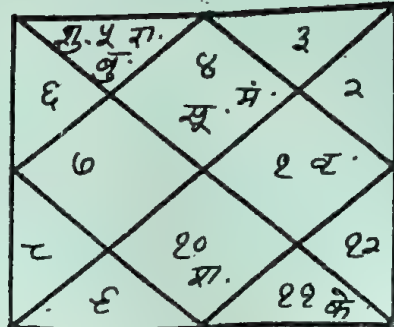
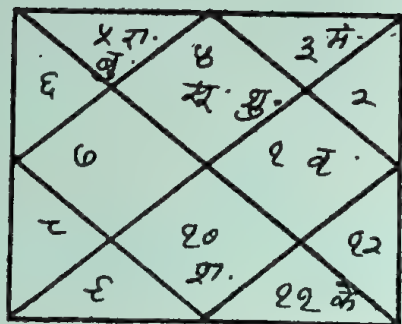
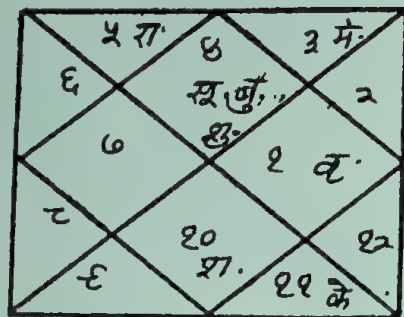


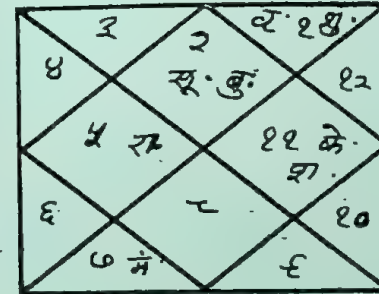
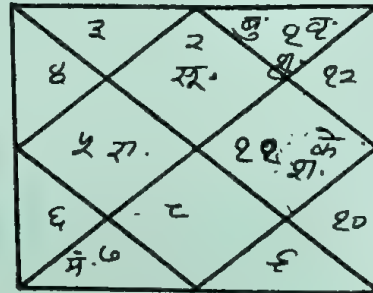
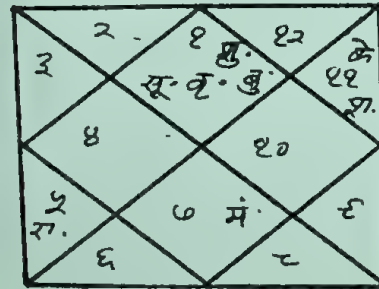
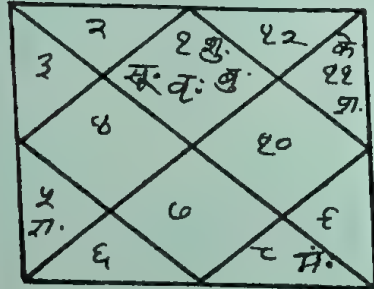
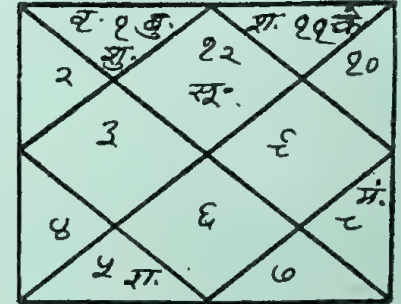
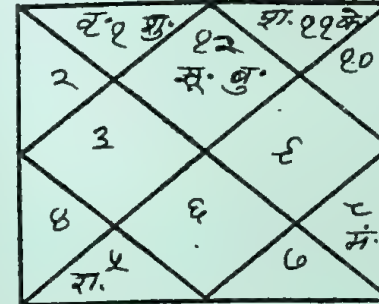
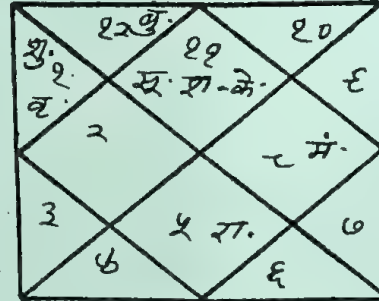
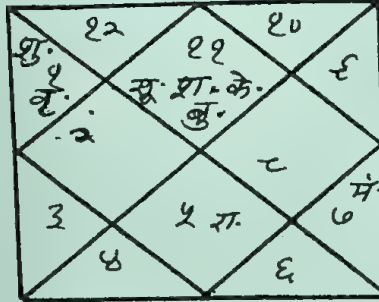
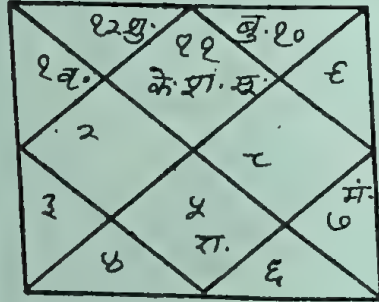
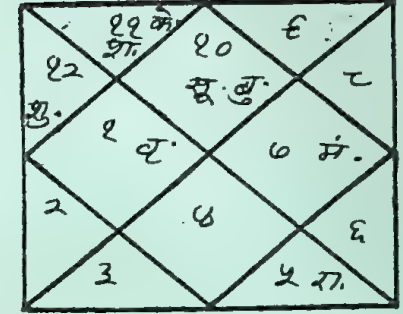
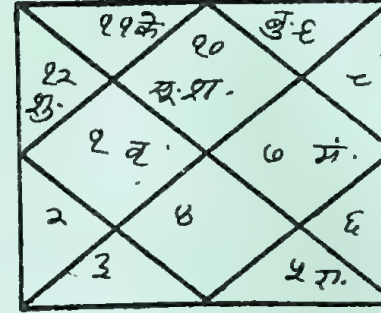
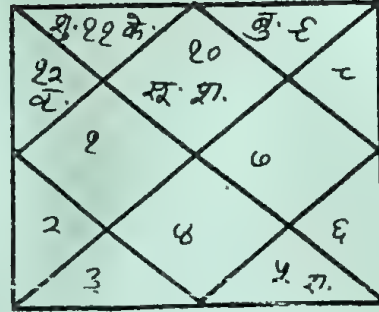
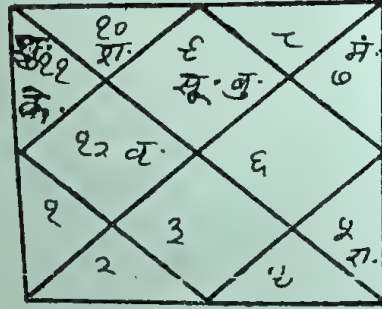


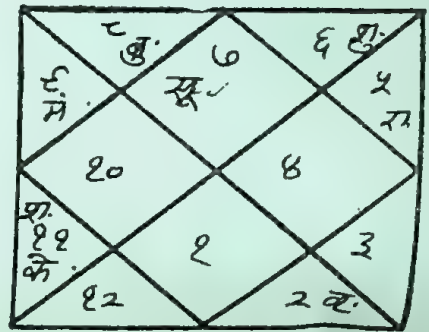
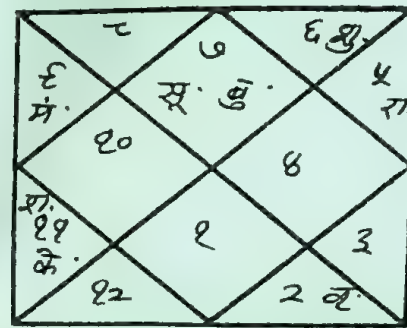
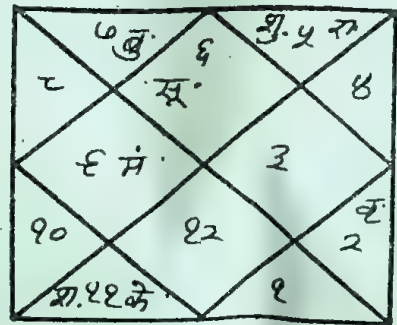
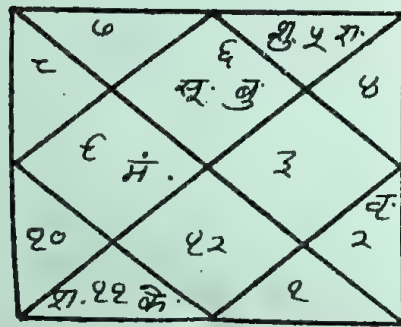
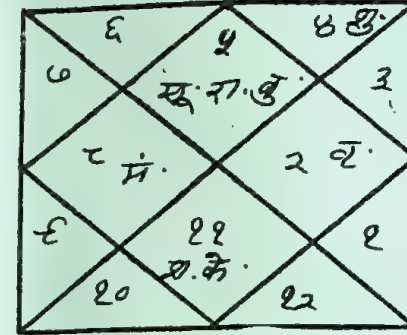
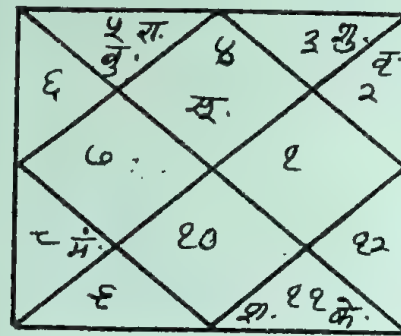
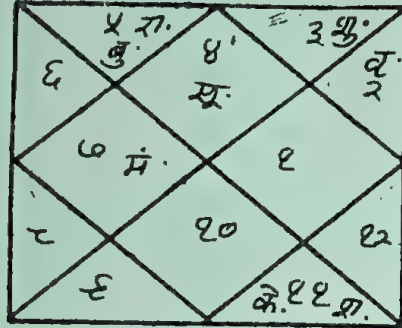
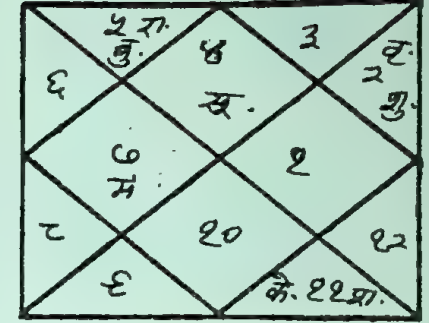
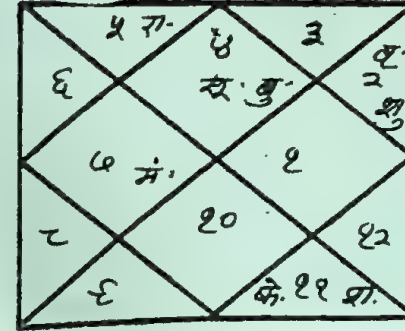
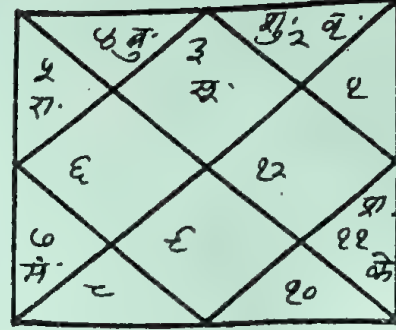
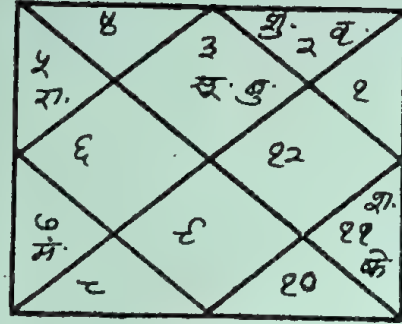


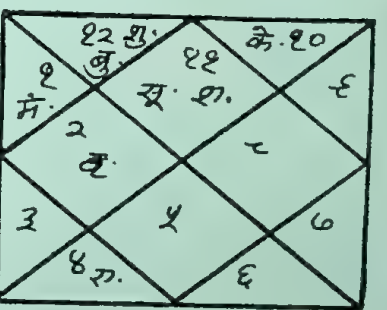
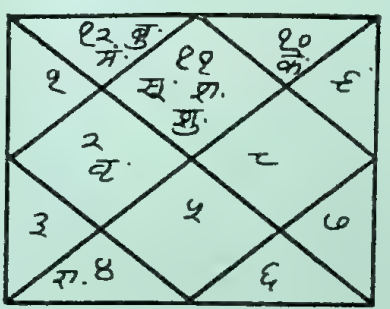
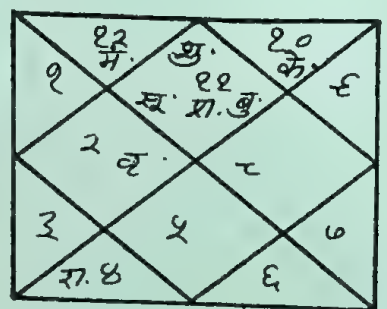
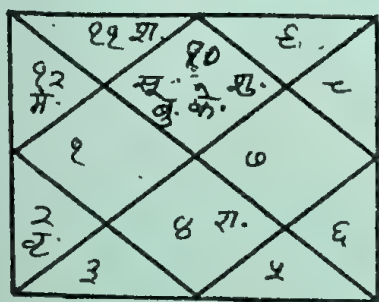
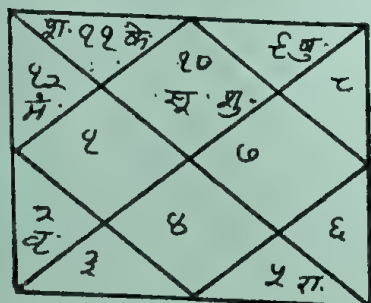
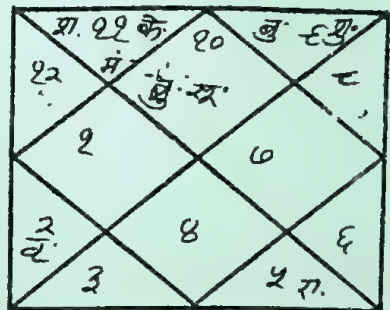
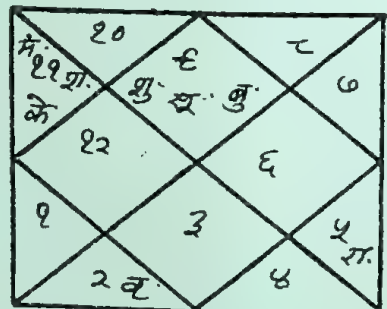
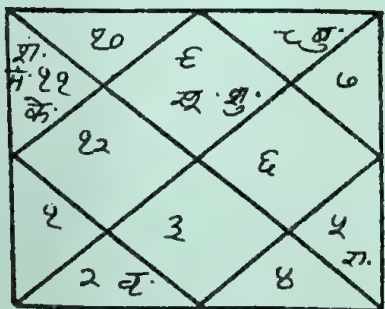
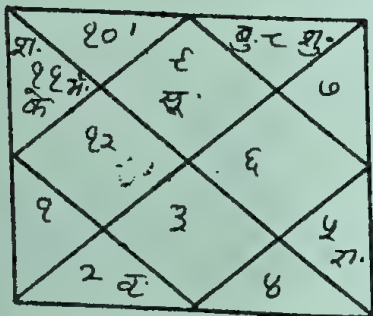
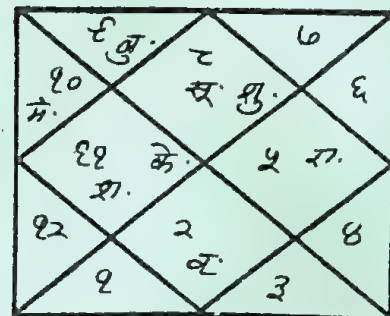
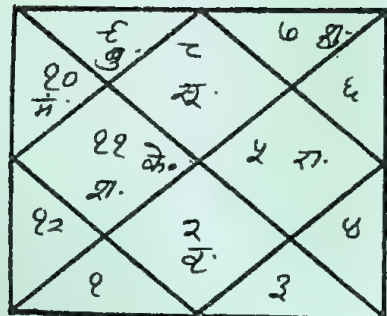
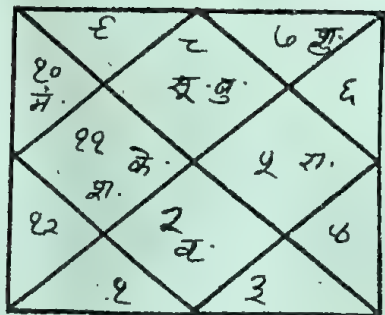
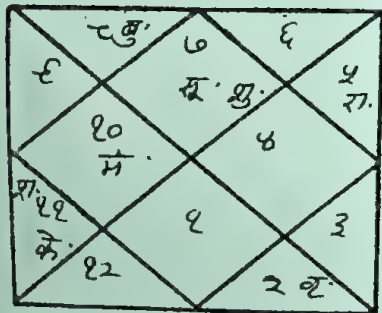


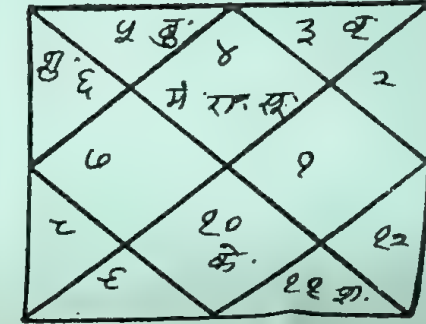
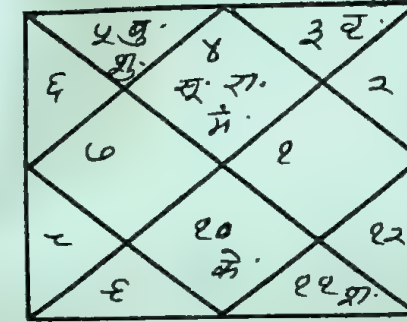
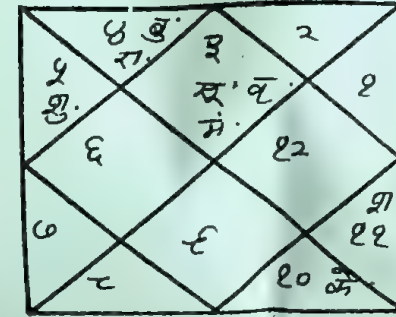
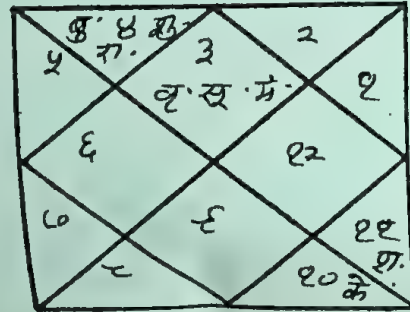
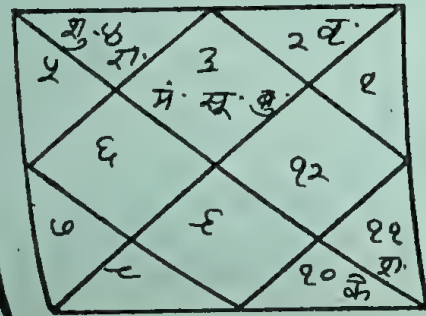
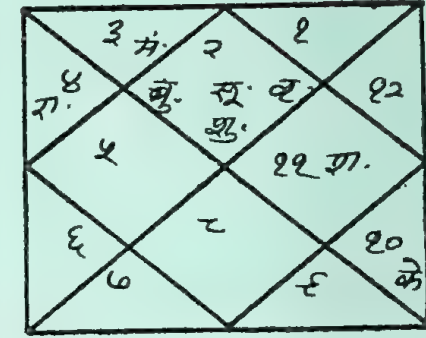
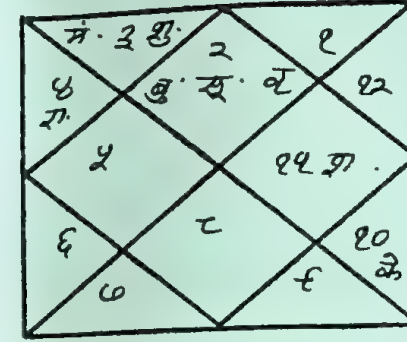
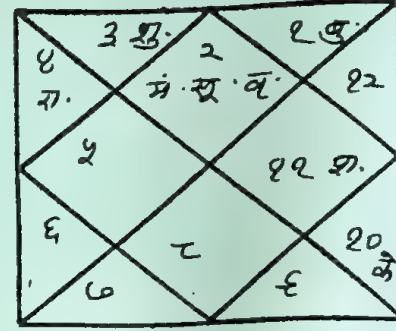
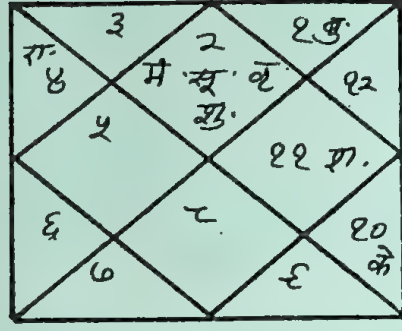
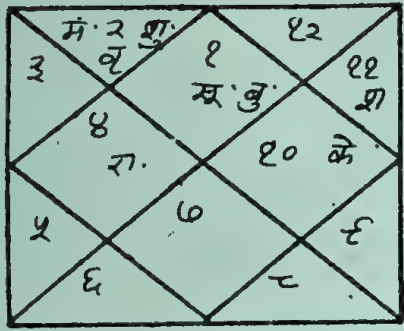
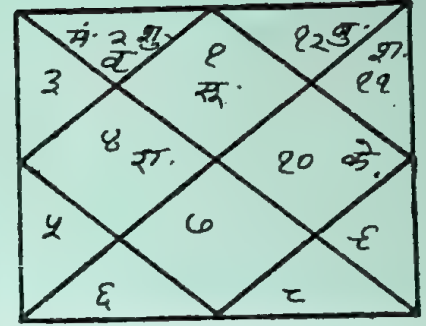
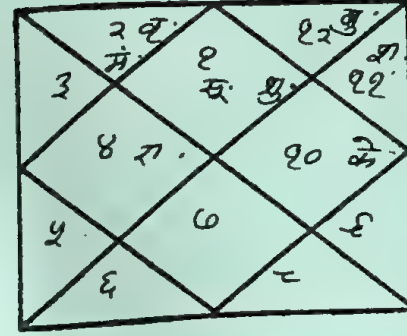
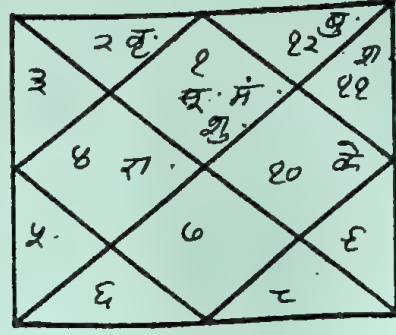
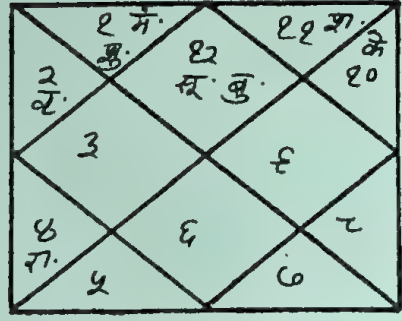
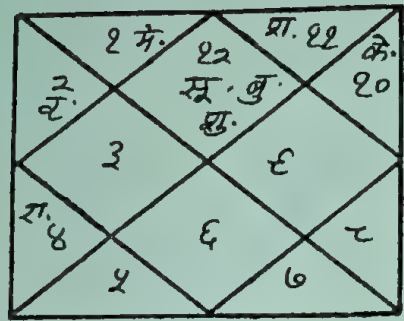


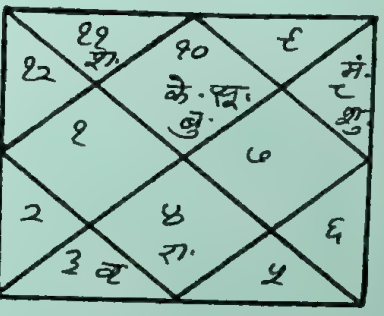
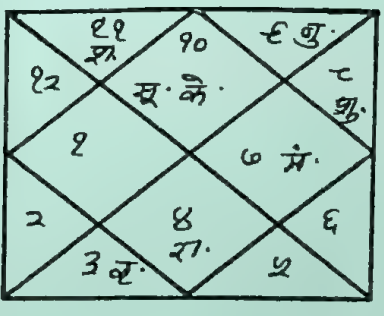
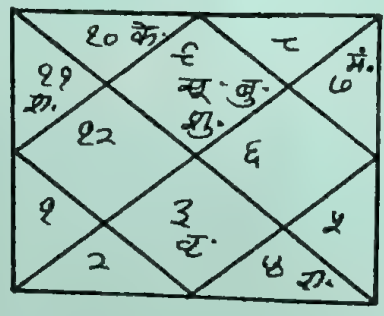
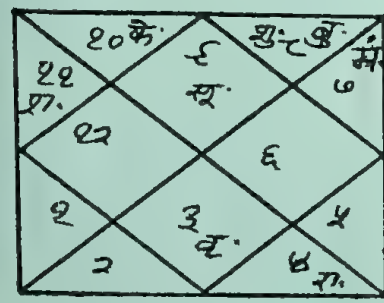
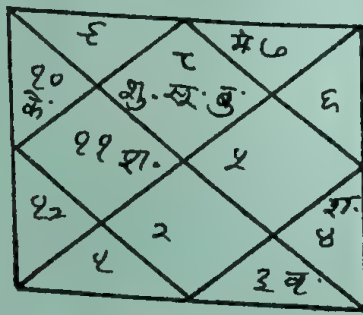
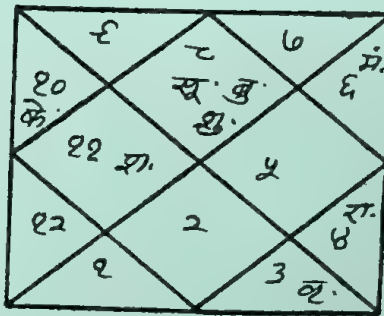
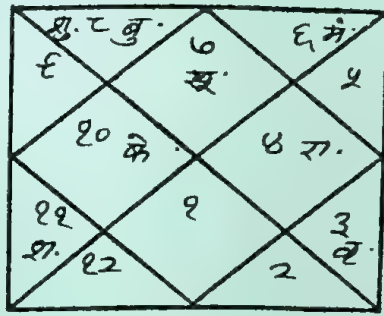
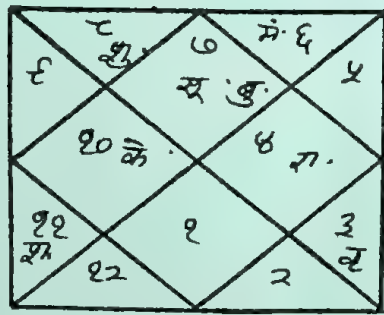
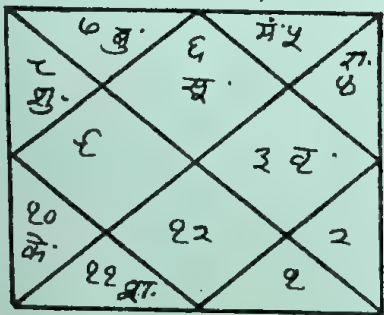
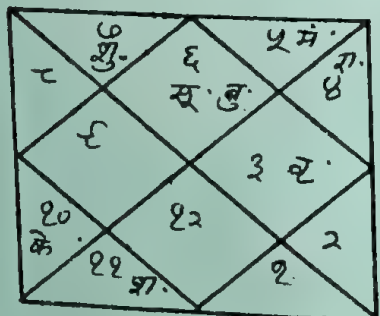
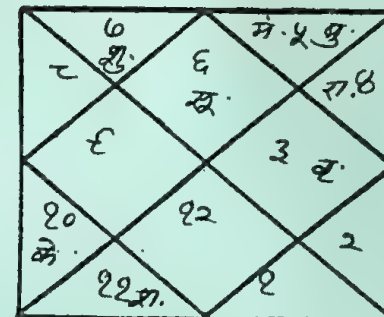
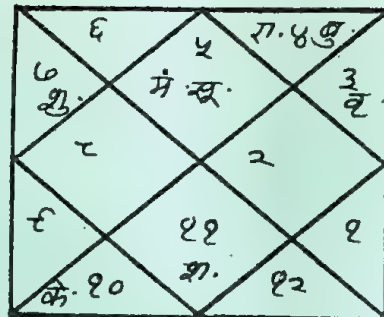
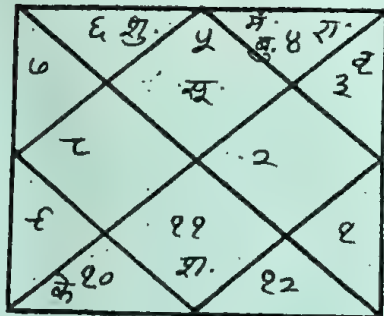


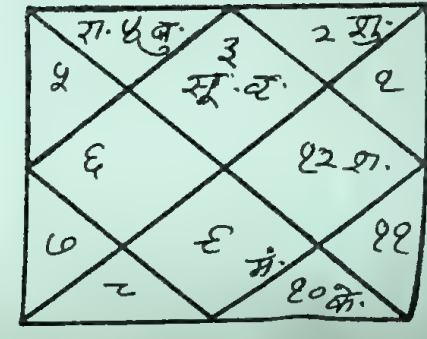
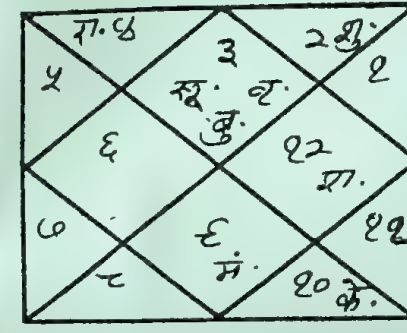
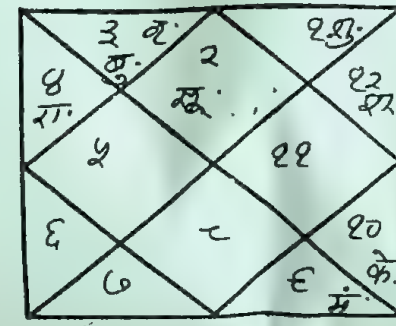
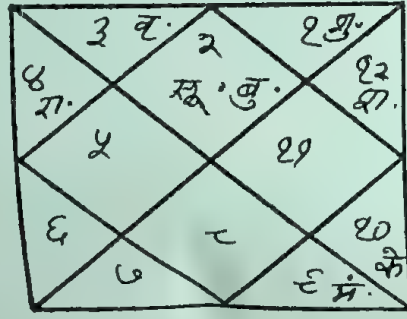
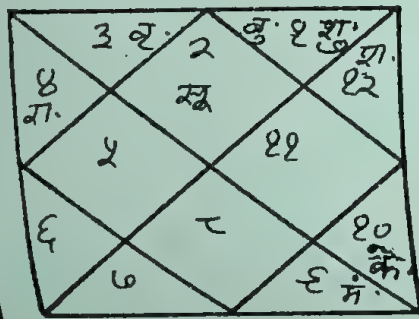
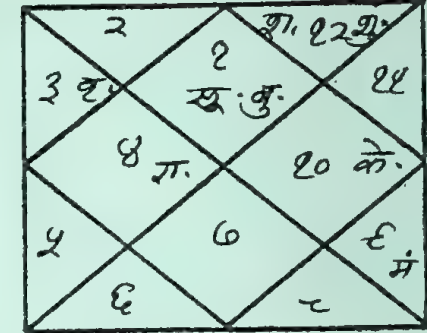
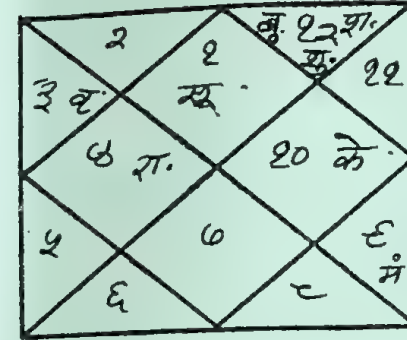
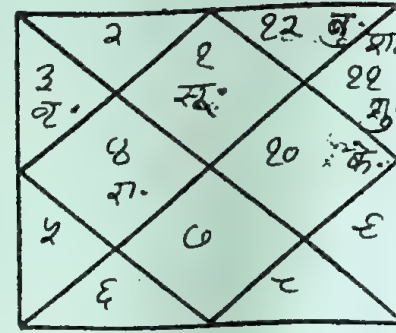
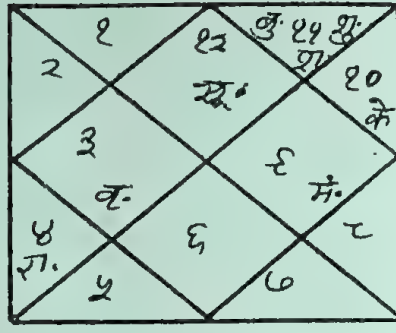
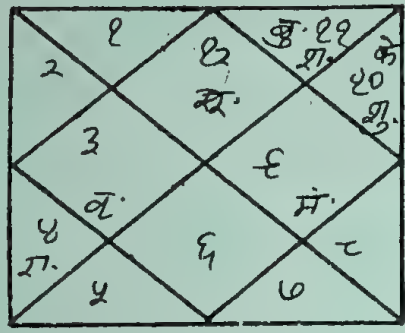
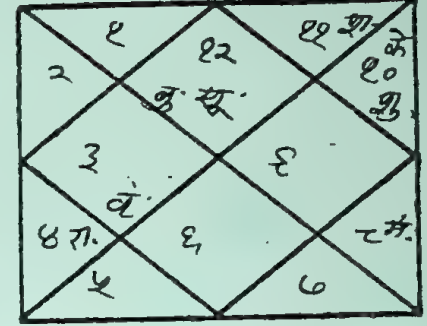
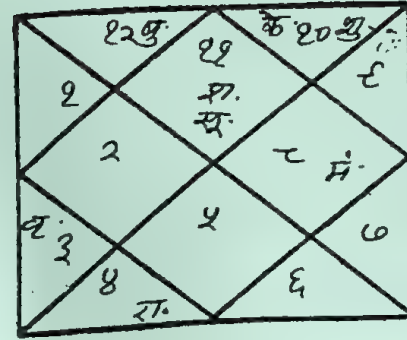
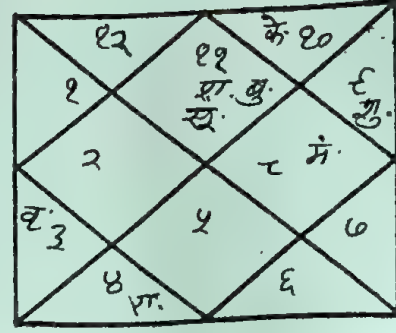
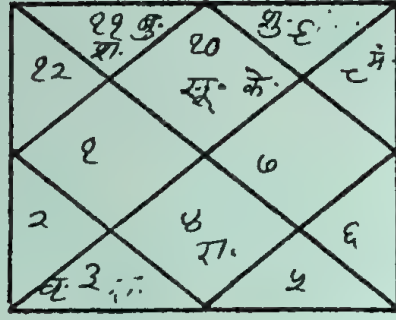
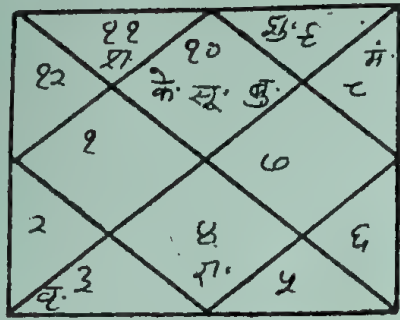


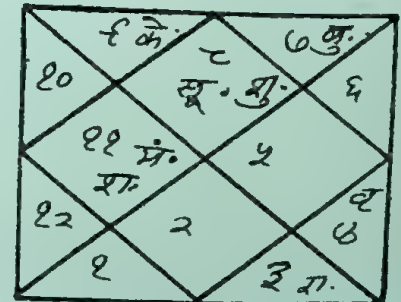
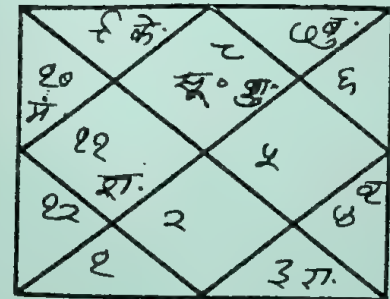
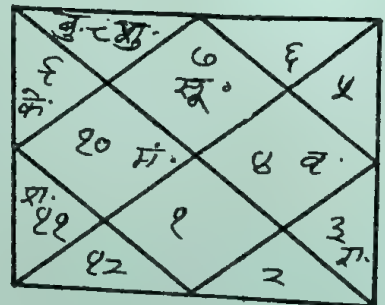
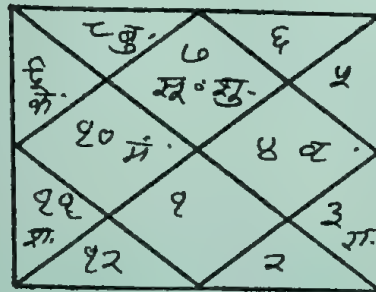
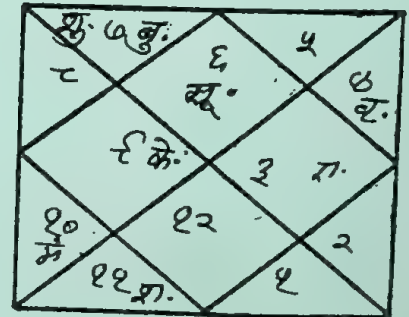
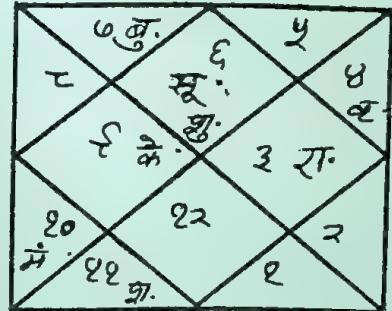
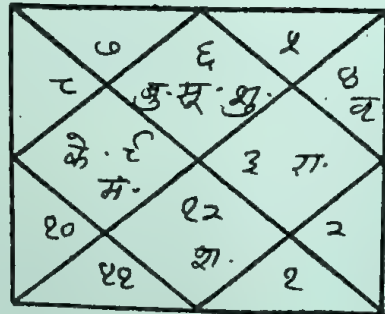
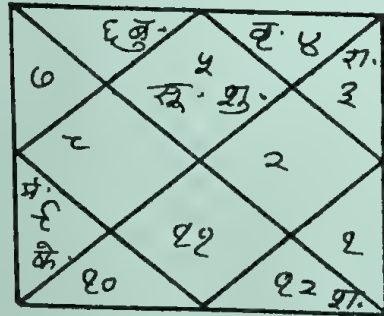
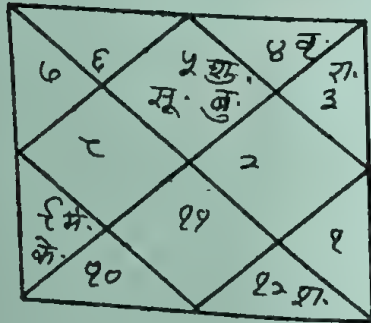
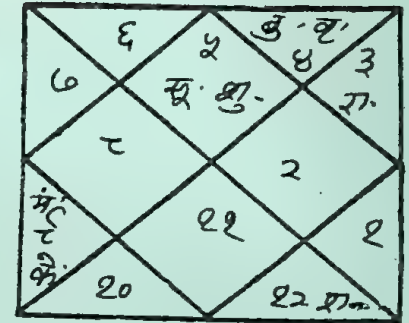
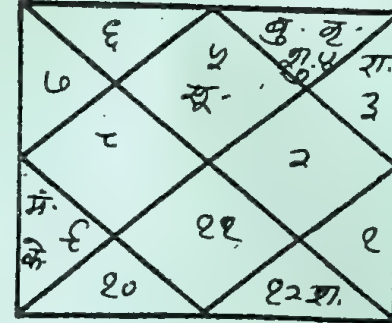
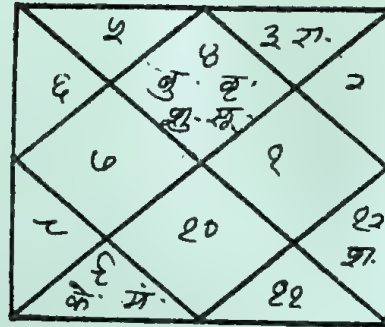
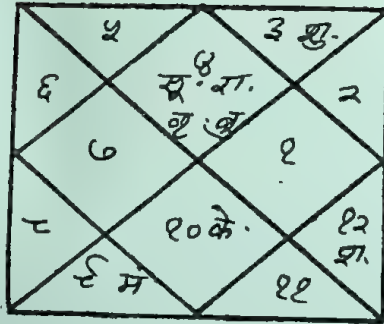
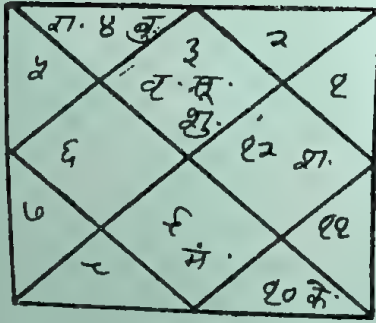


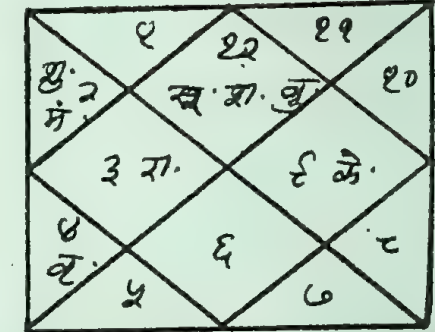
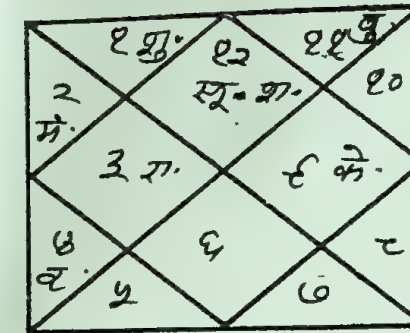
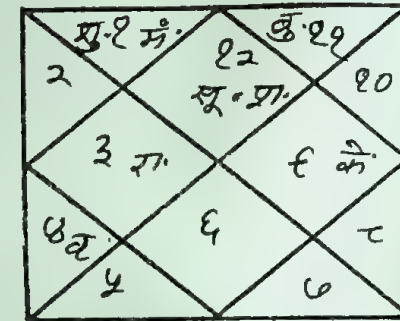
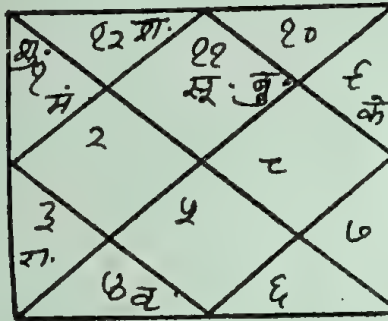
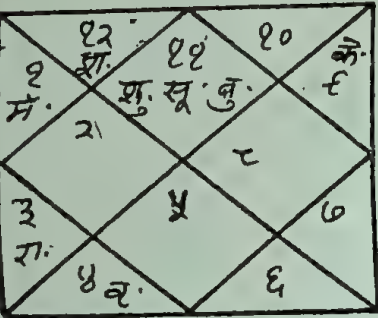
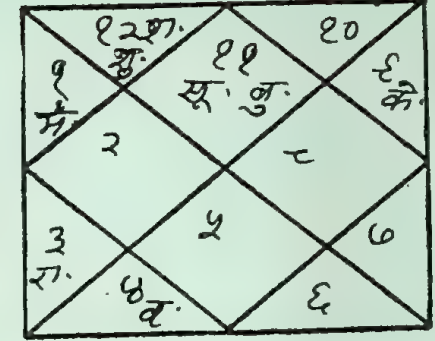
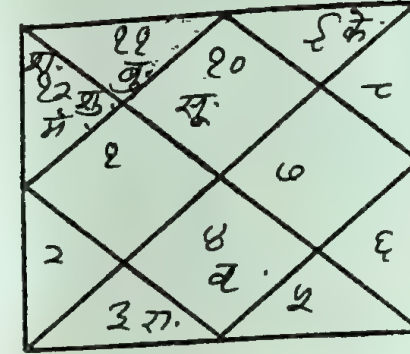
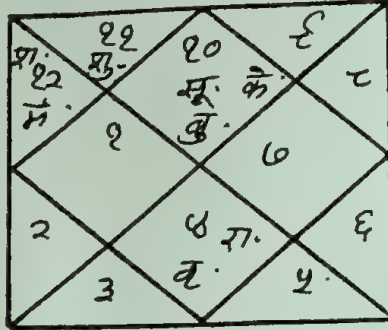
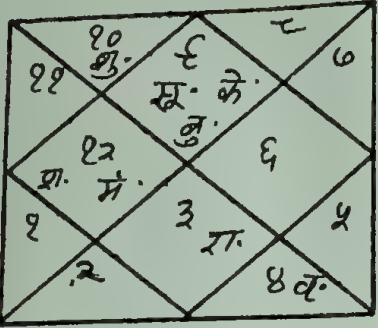
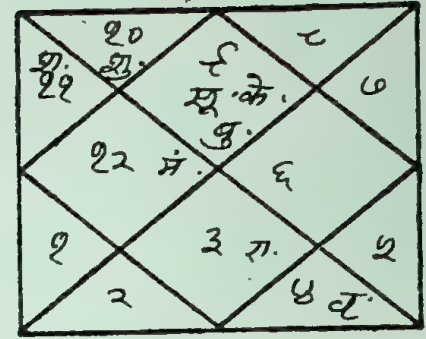
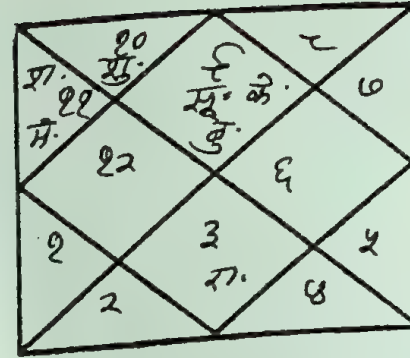
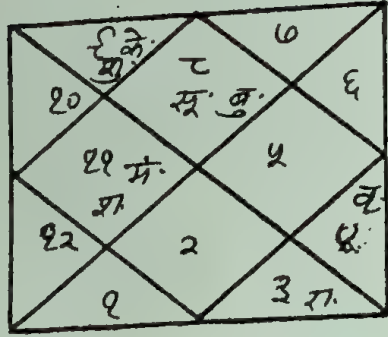
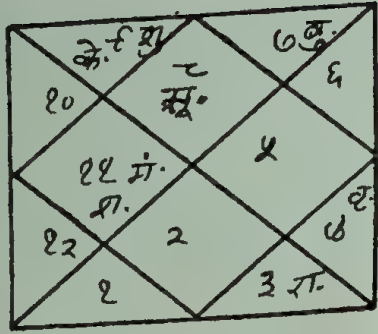


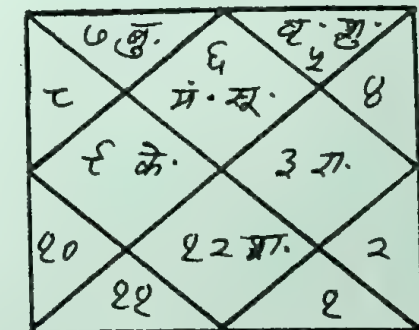
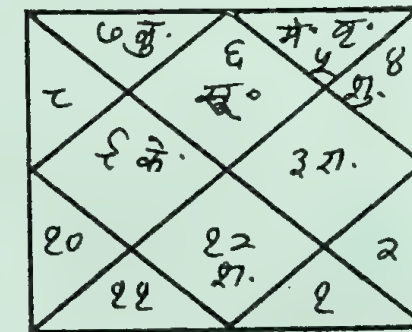
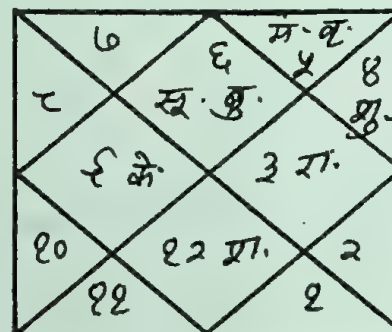
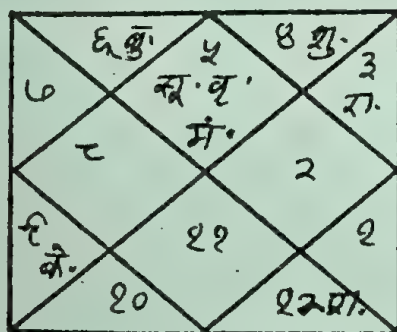
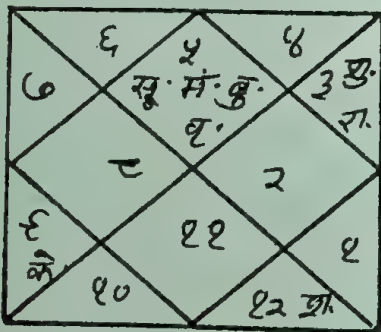
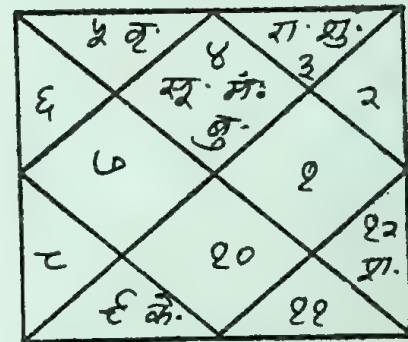
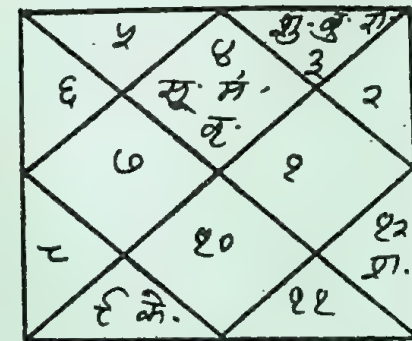
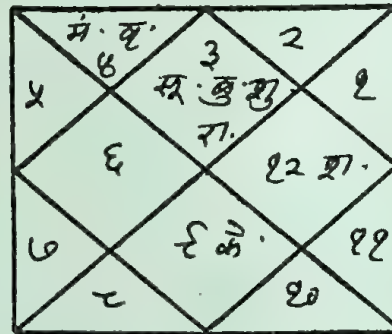
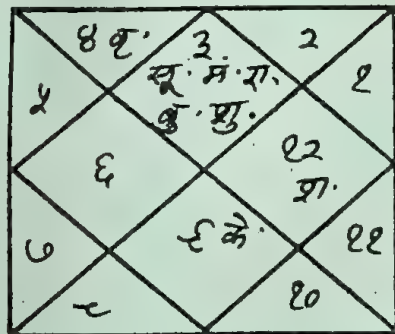
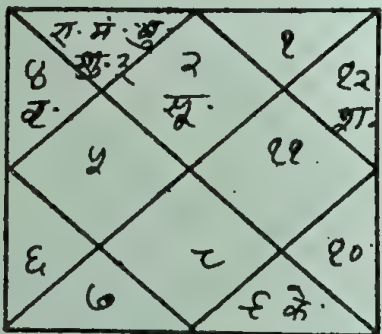
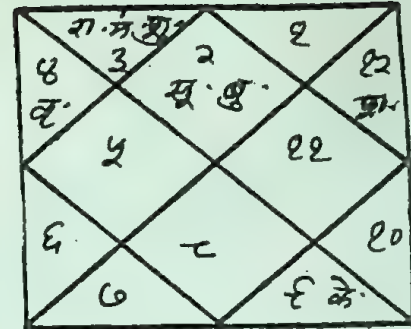
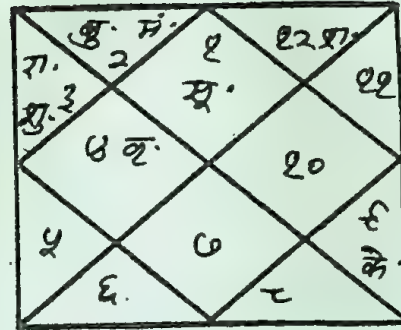
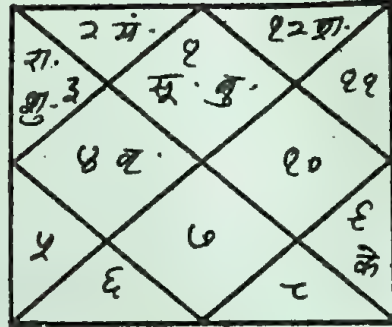
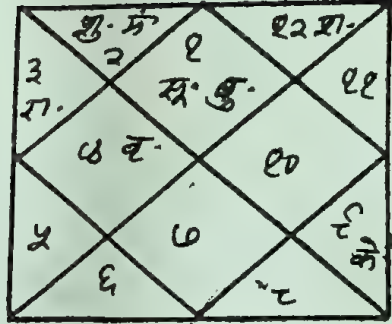
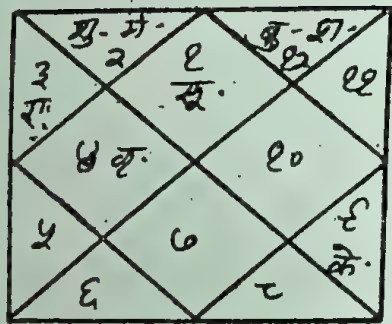


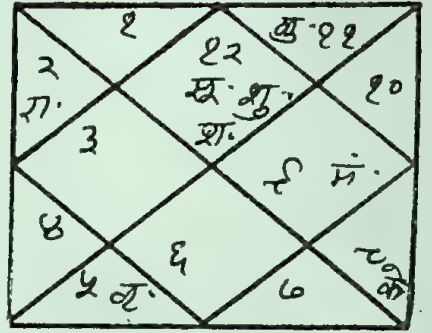
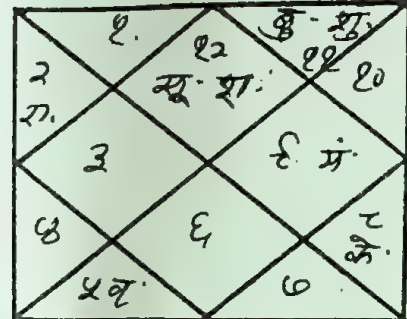
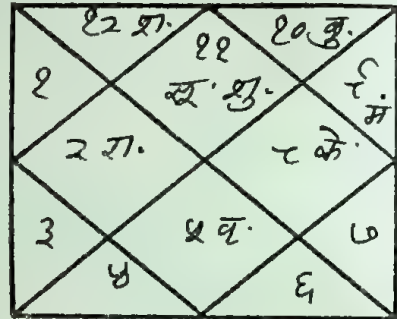
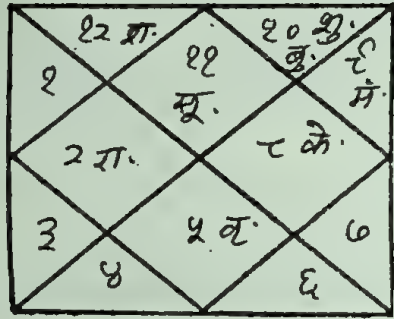
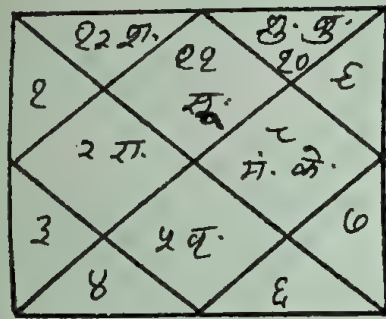
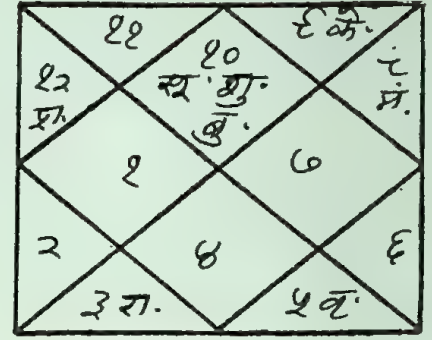
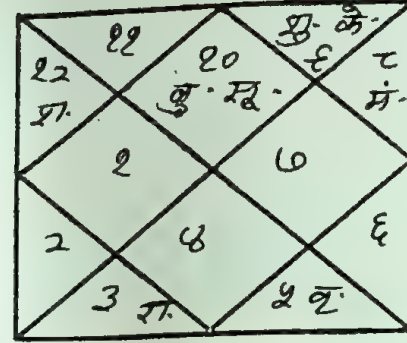
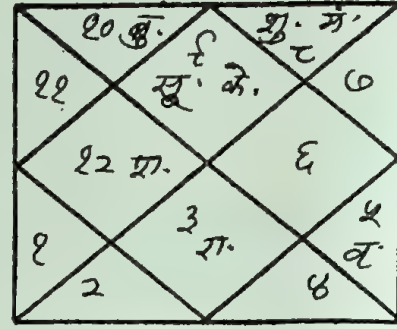
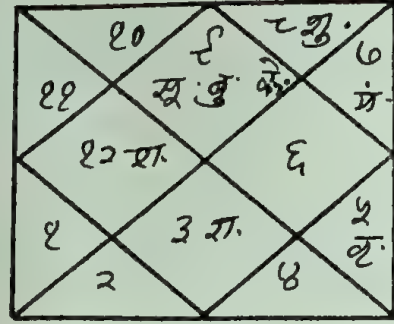
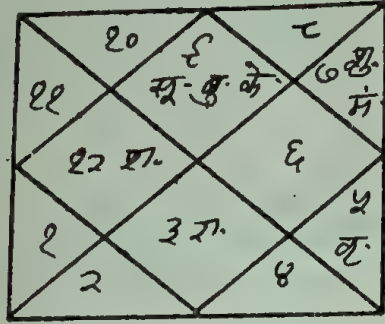
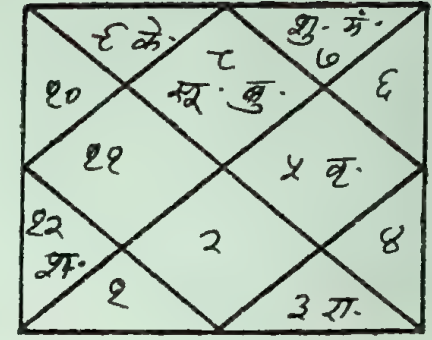
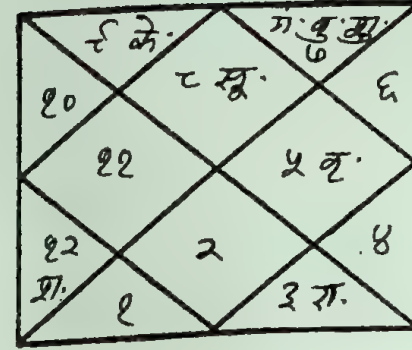
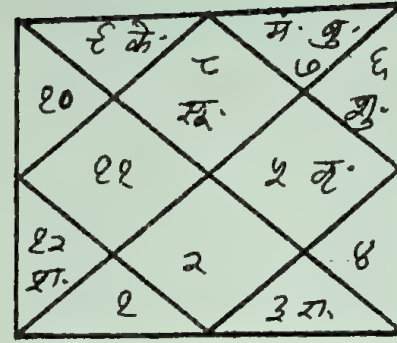
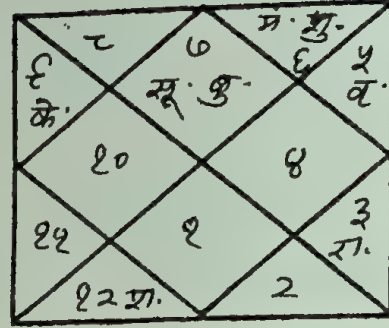
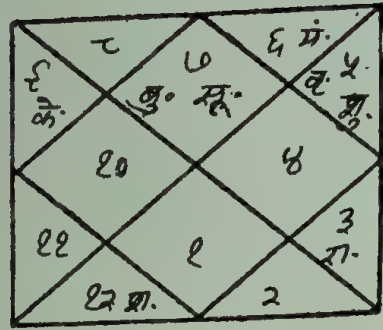


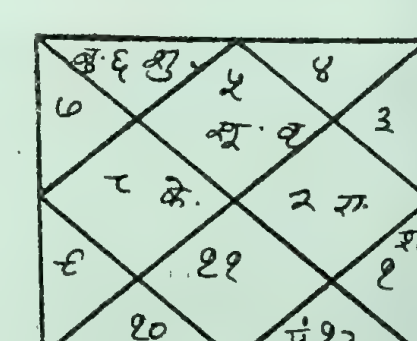
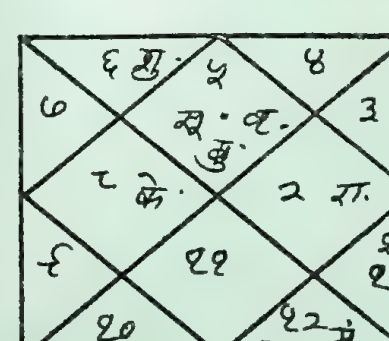
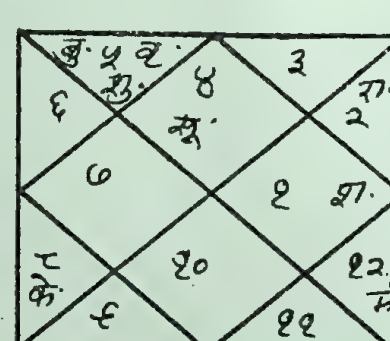
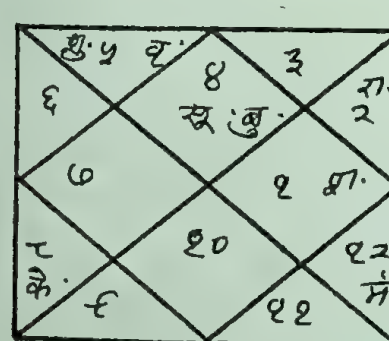
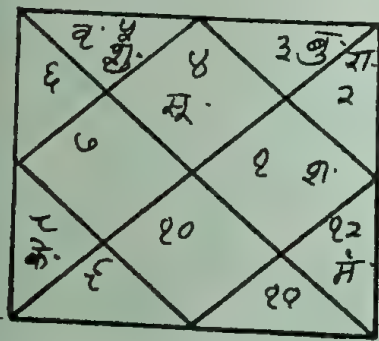
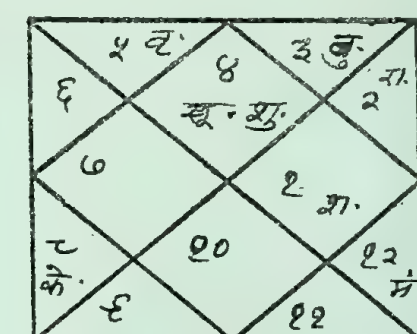
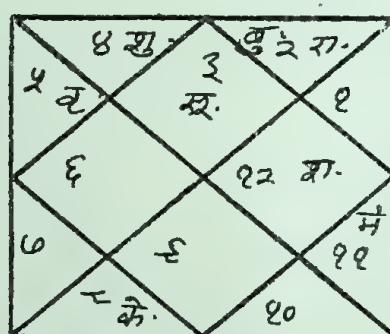
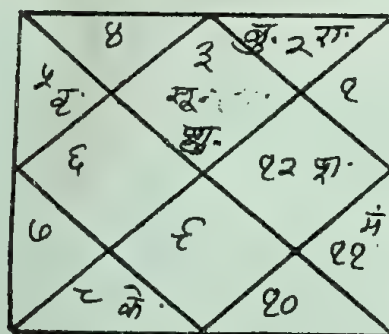
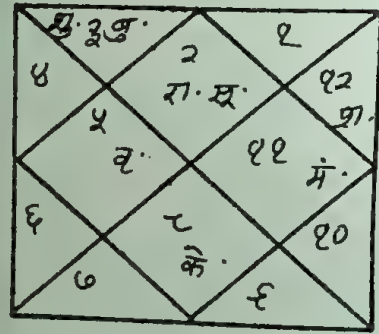
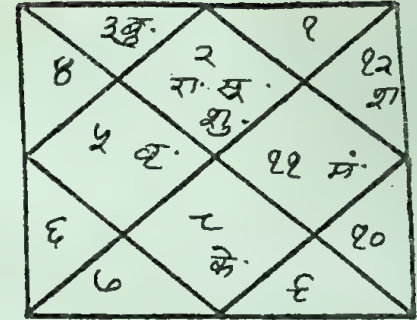
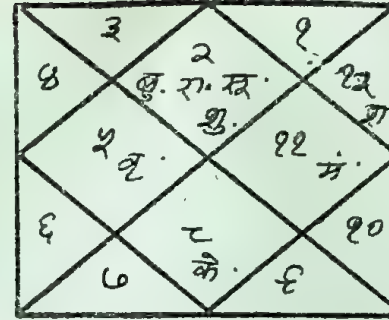
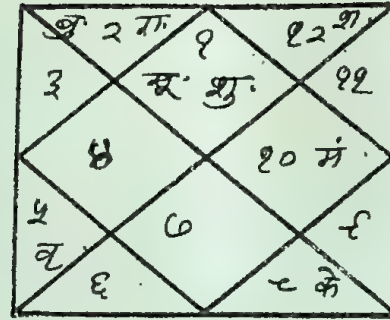
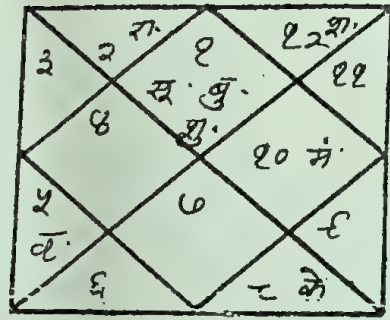
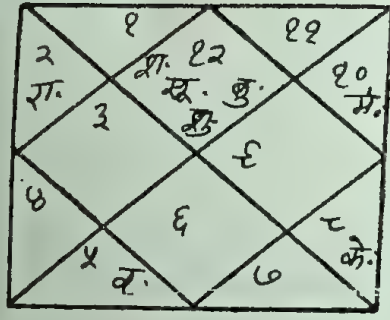


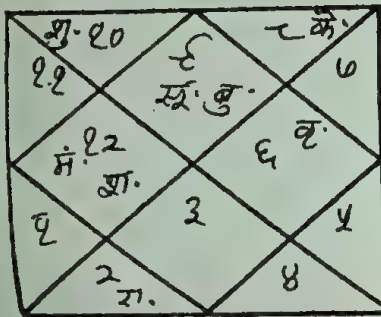
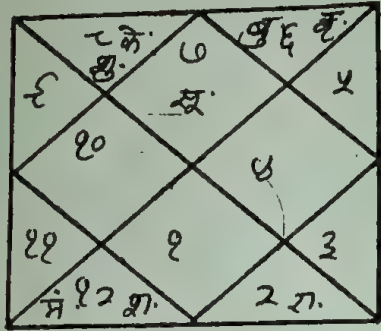
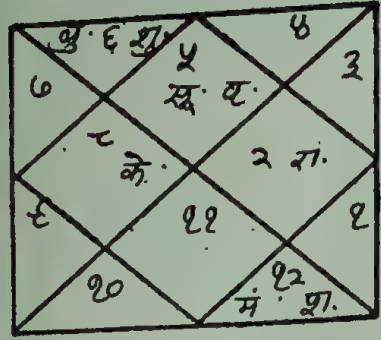
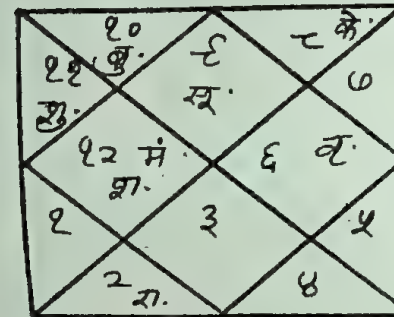
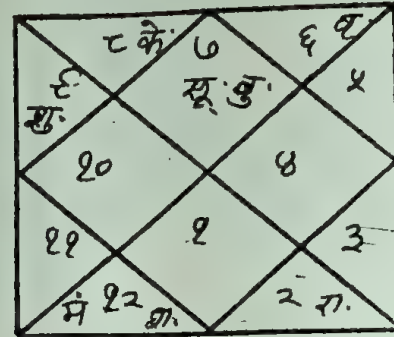
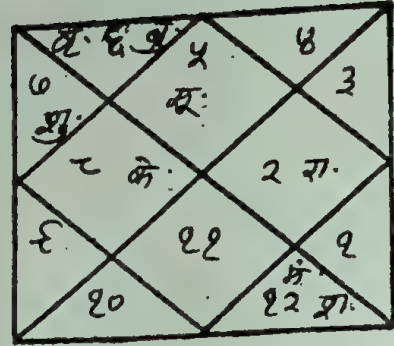
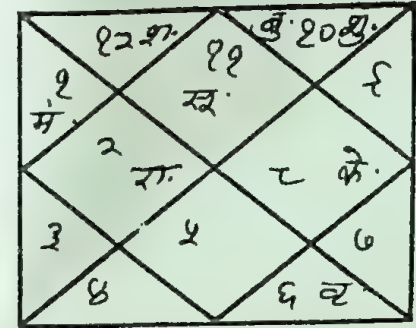
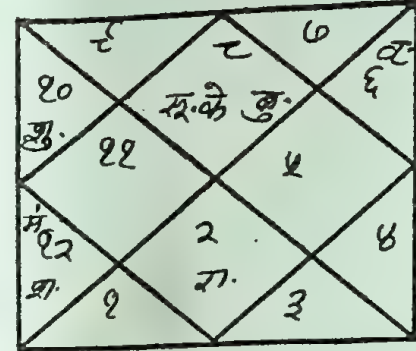
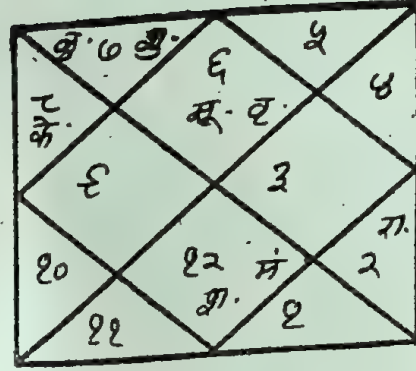
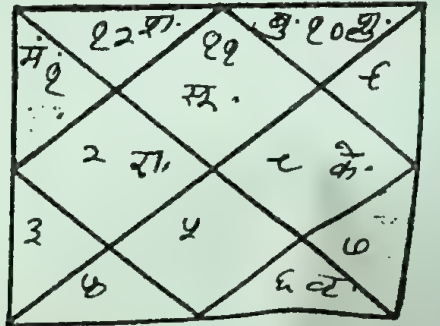
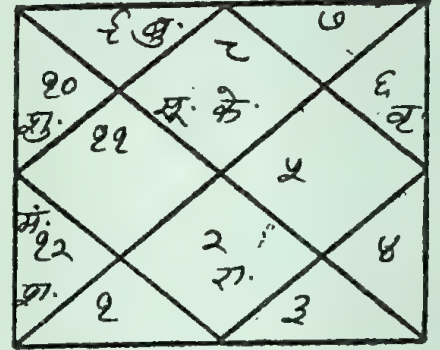
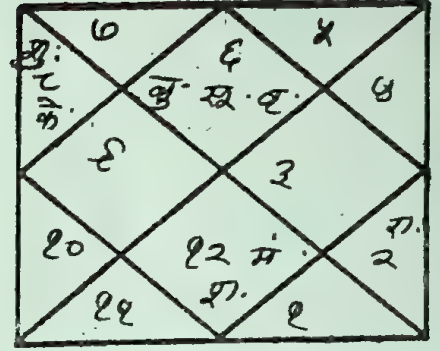


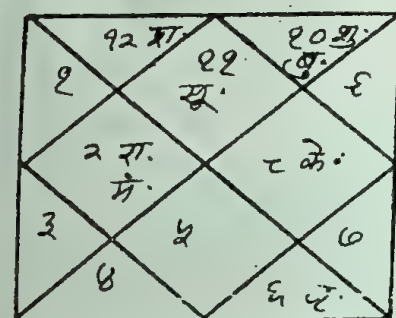




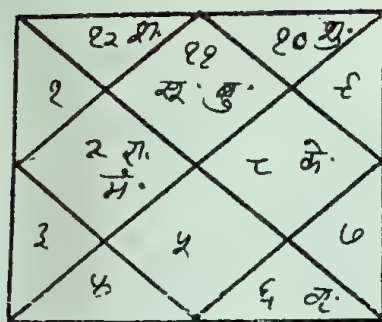




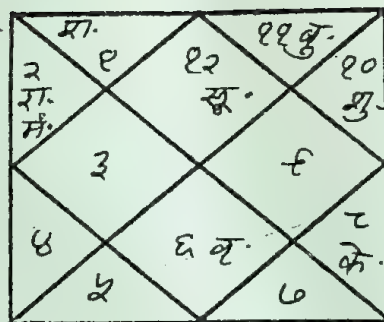




१



२



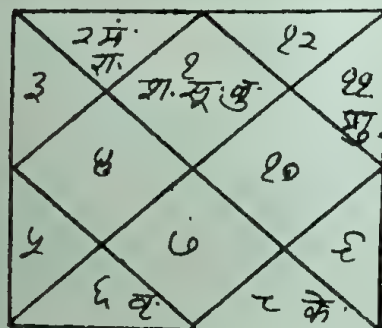
३



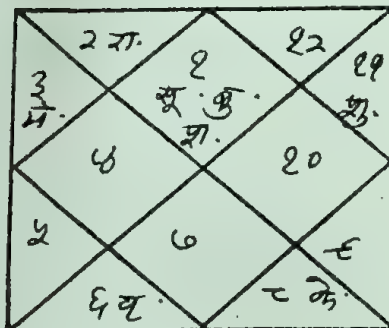
४



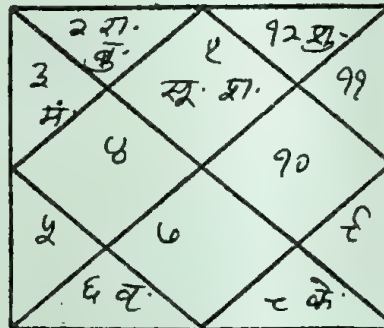
५



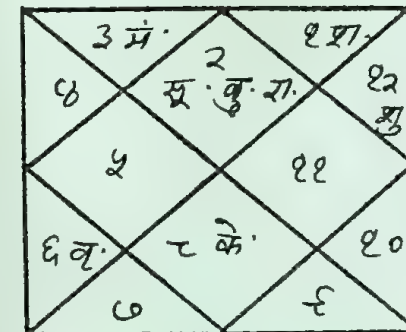
६



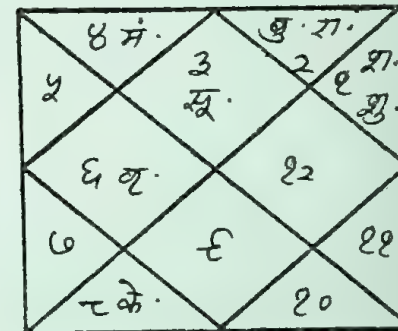
७



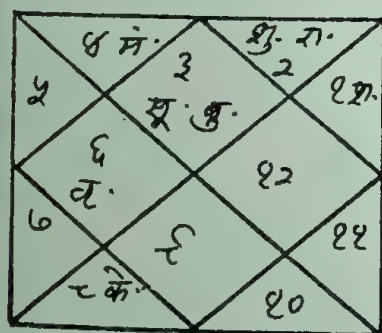
८



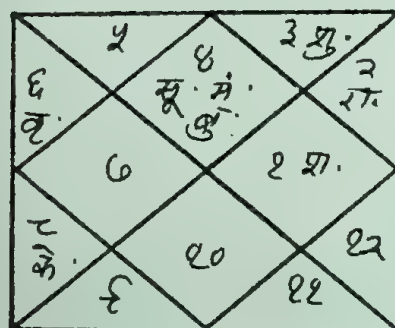
९



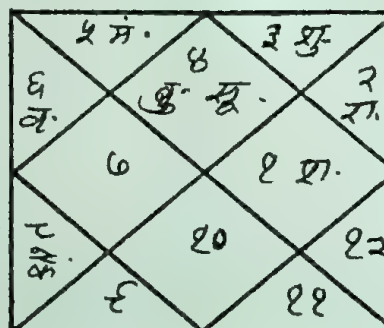
१०



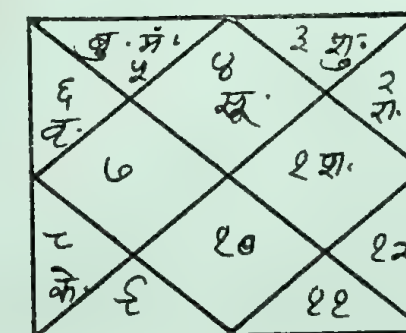
११



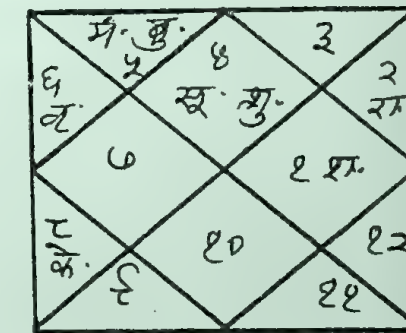
१२



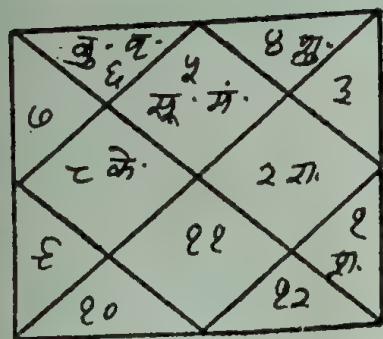
१३



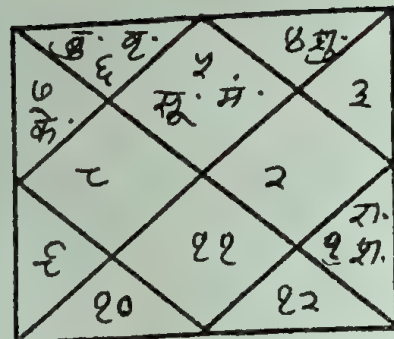
१४



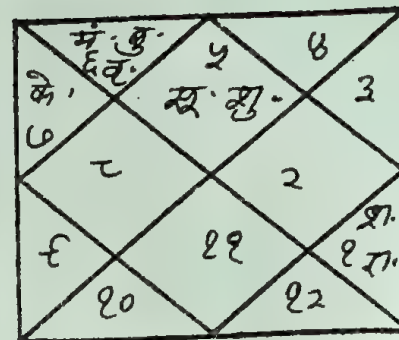
१५



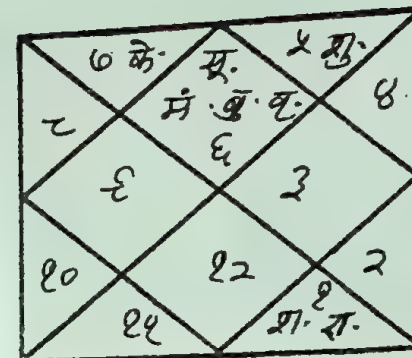
१६



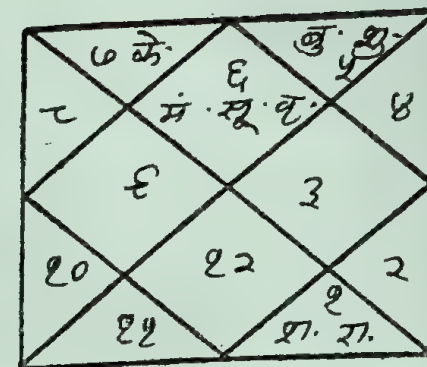
१७



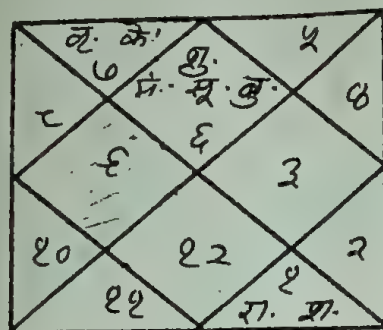
१८



१९



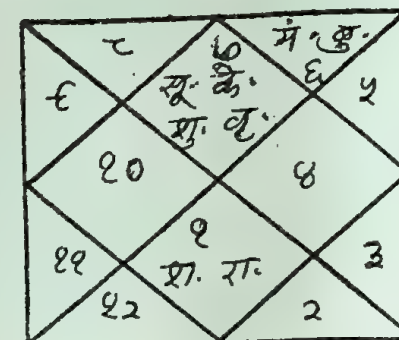
२०



२१



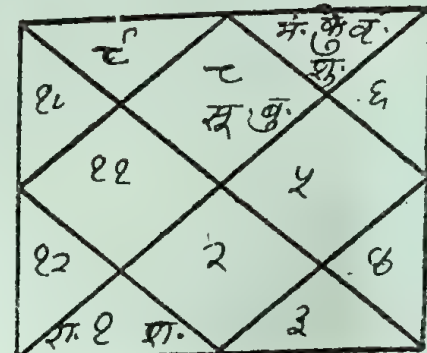
२२



२३



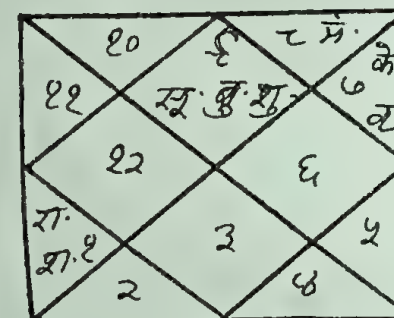
२४



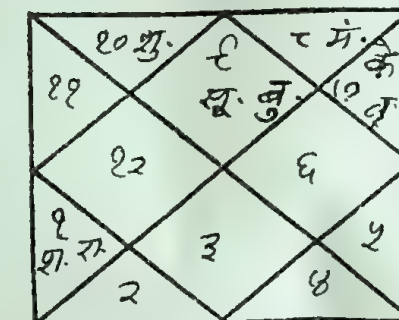
२५



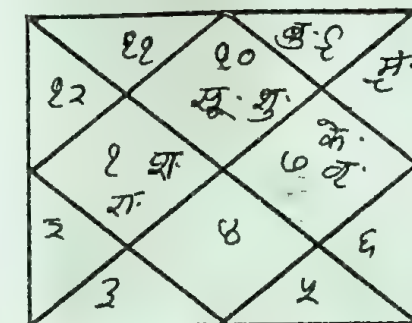
२६



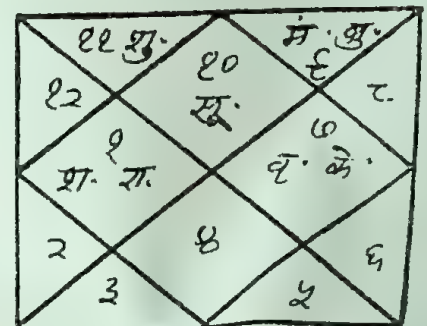
२७



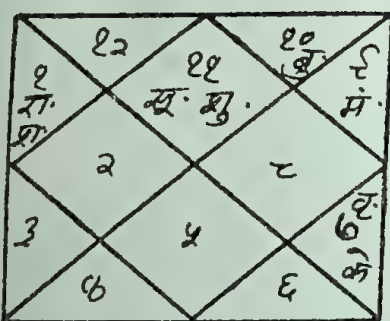
२८



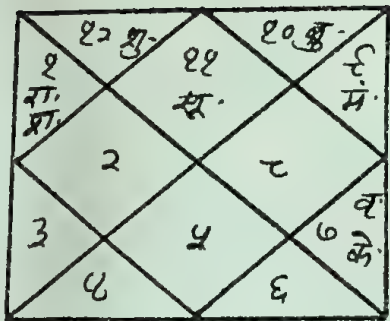
२९



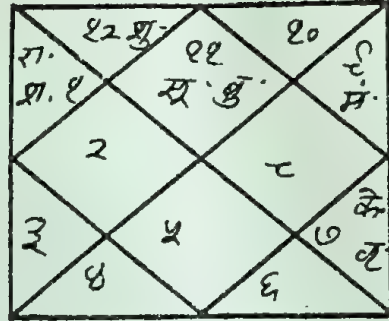
३०



३१



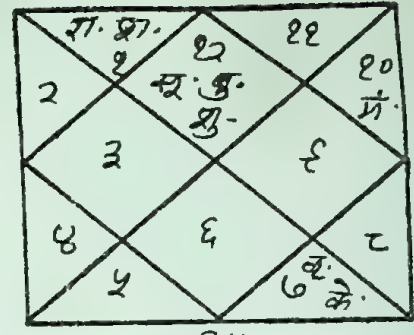
३२



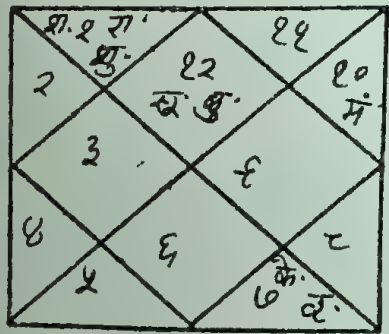
३३



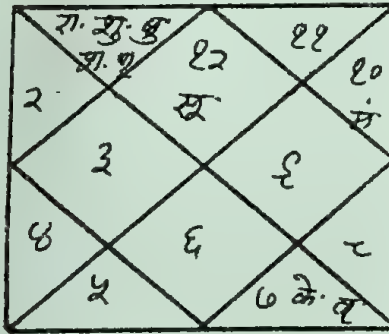
३४



३५



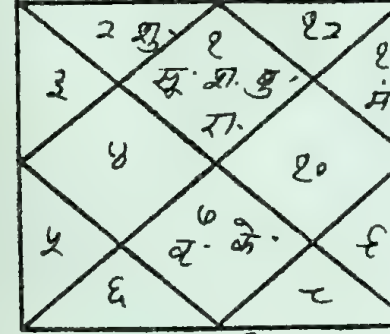
३६



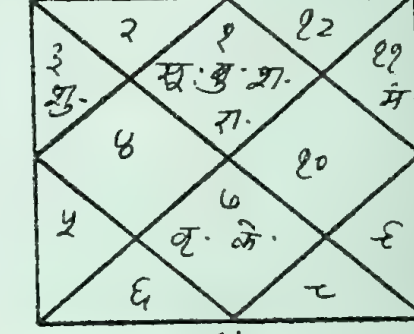
३७



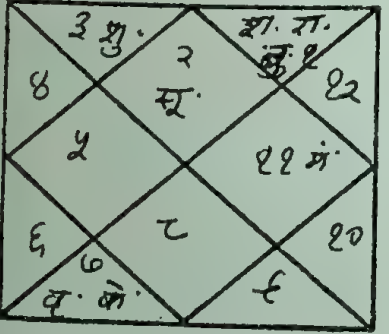
३८



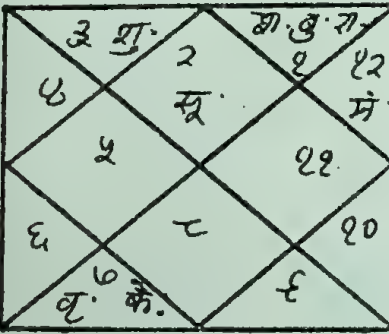
३९



४०



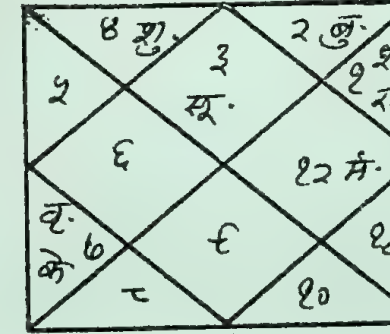
४१



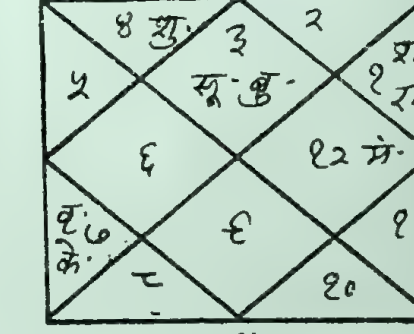
४२



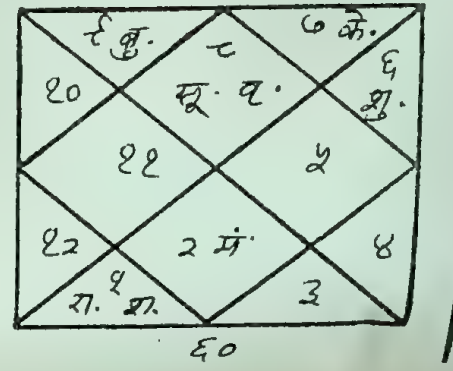
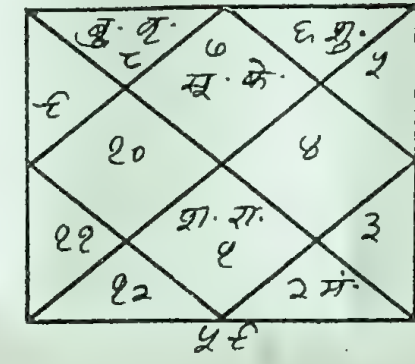
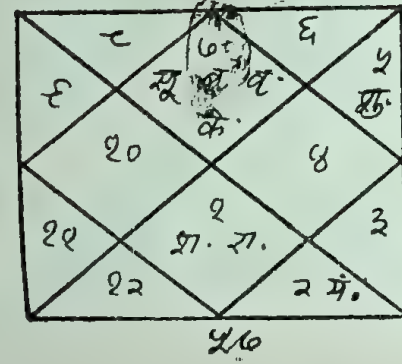
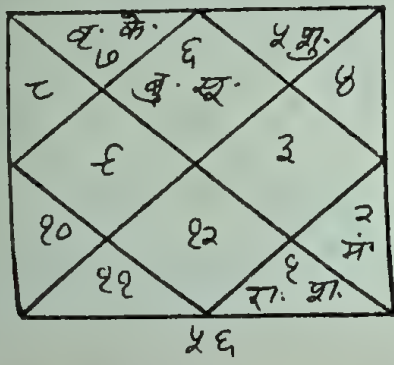
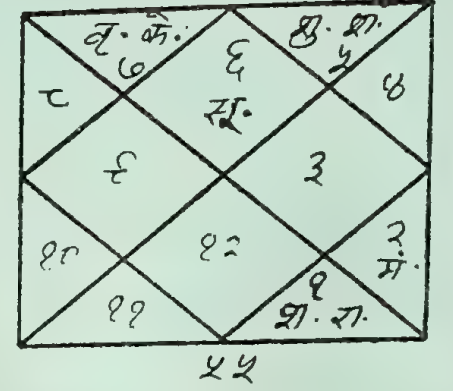
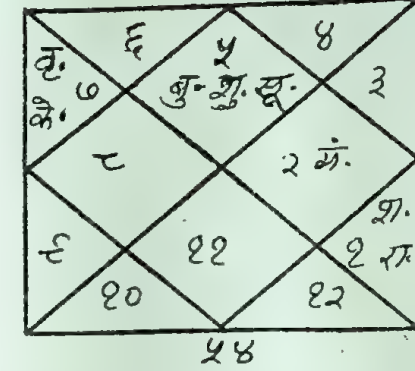
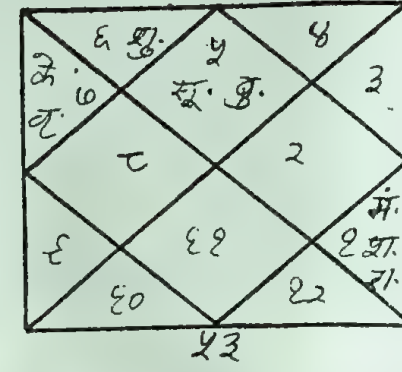
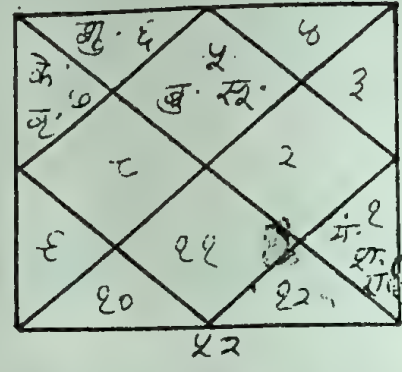
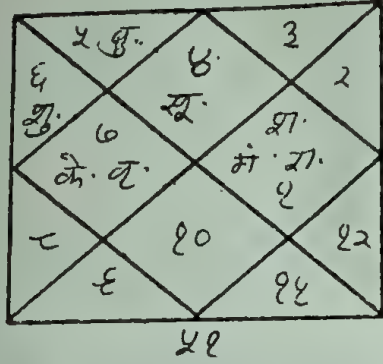
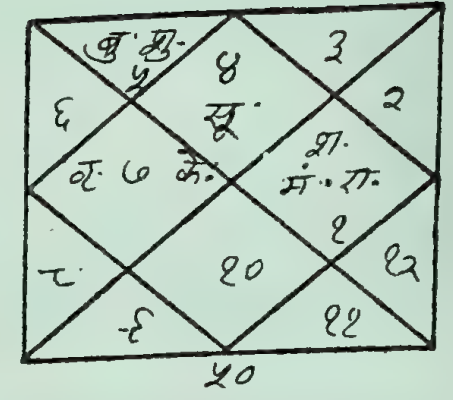
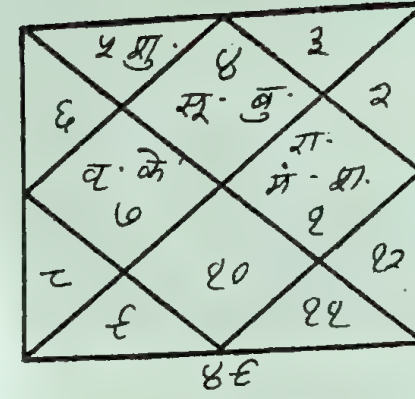
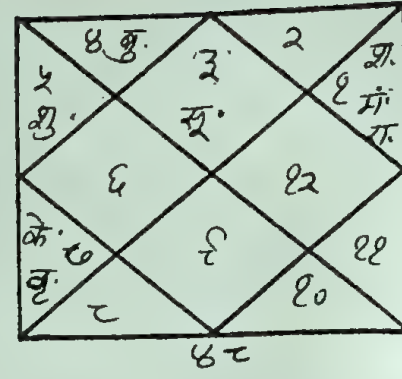
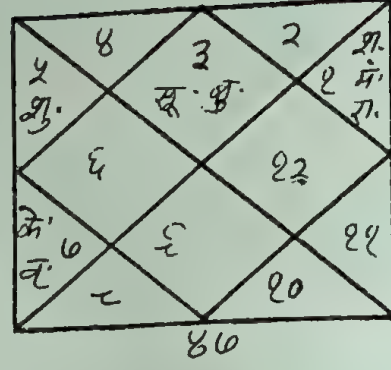
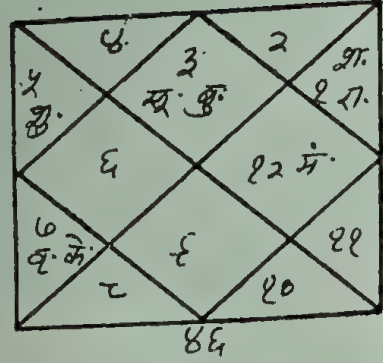
४३

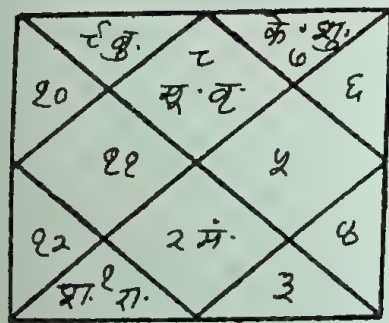


४४

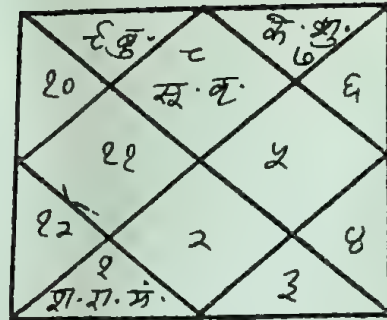


४५

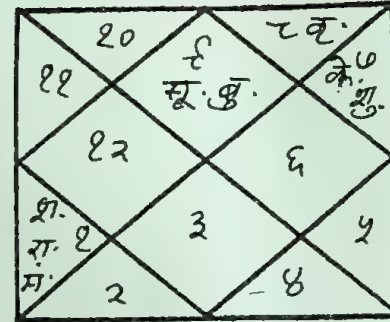




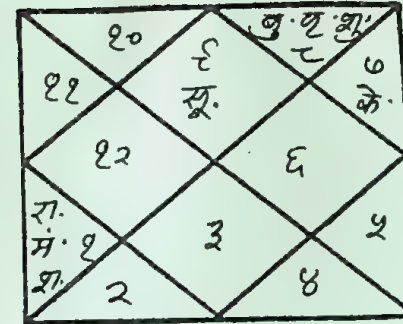
६१



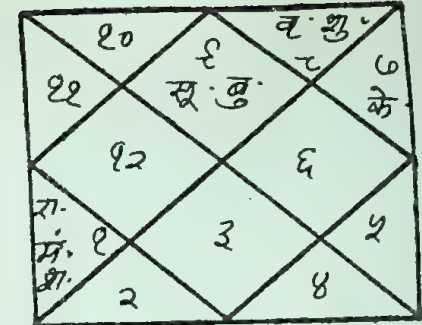
६२



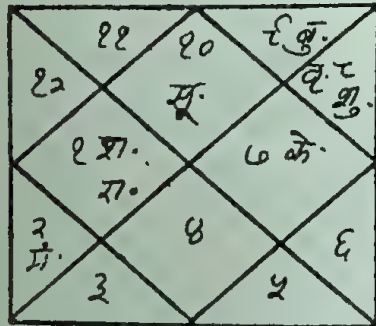
६३



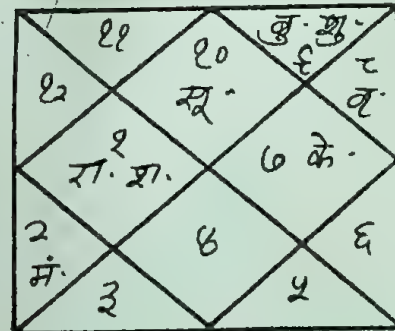
६४



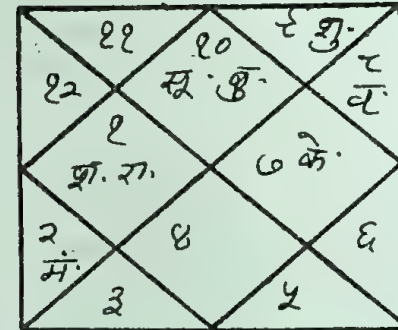
६५



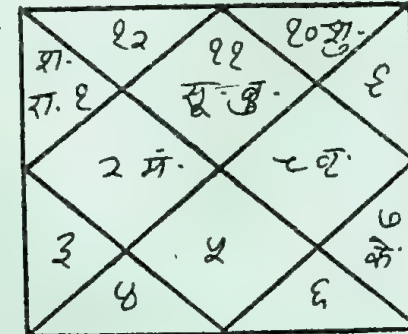
६६



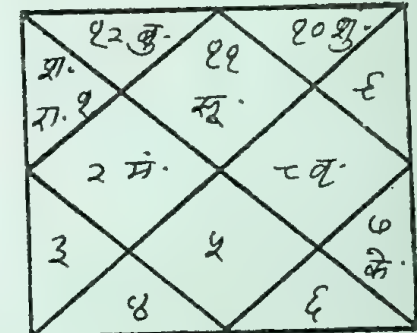
६७



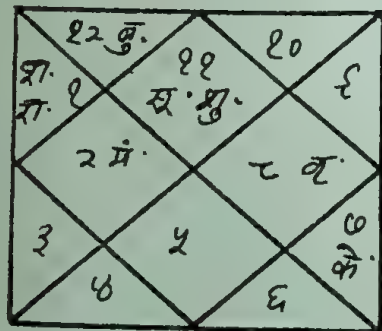
६८



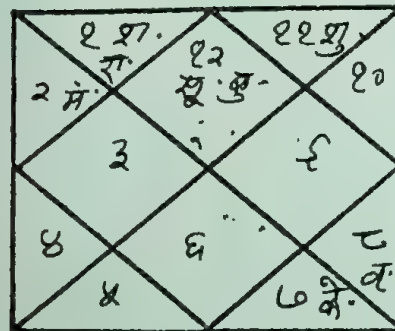
६९



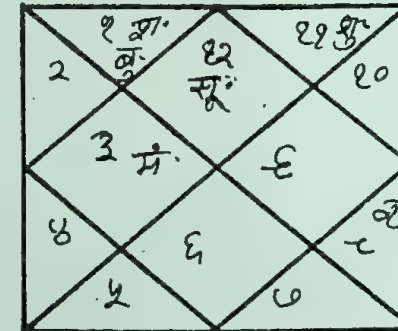
७०



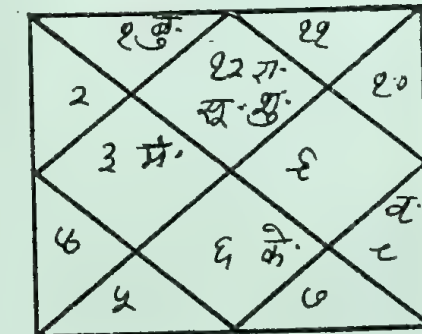
७१



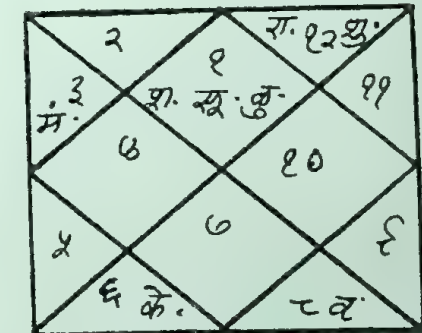
७२



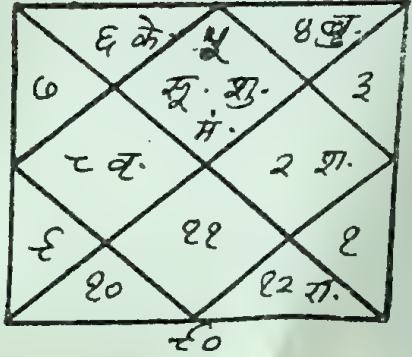
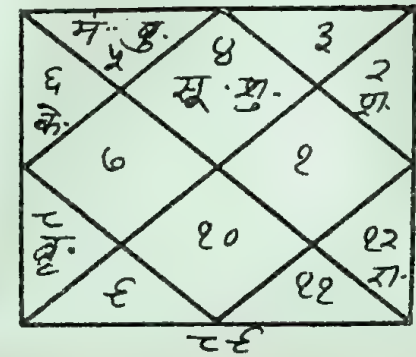
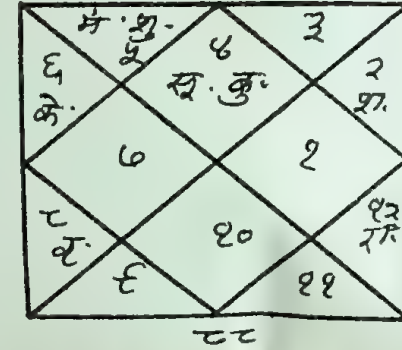
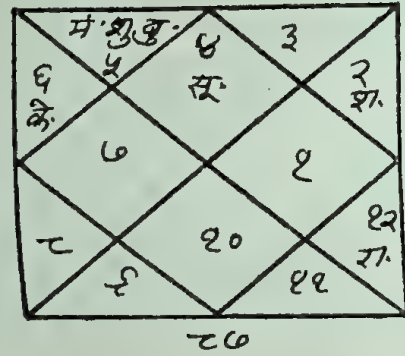
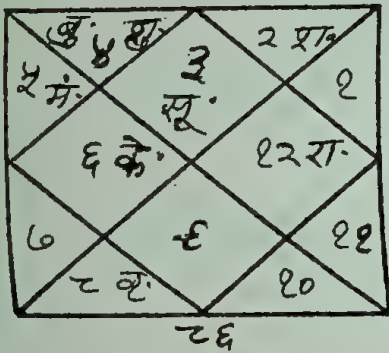
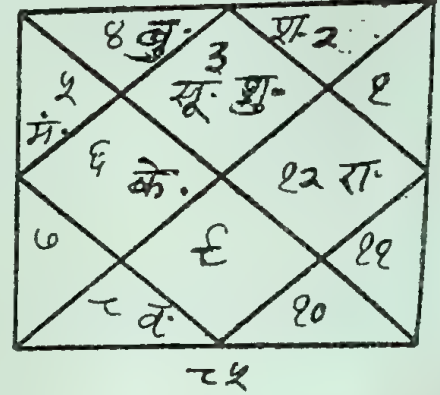
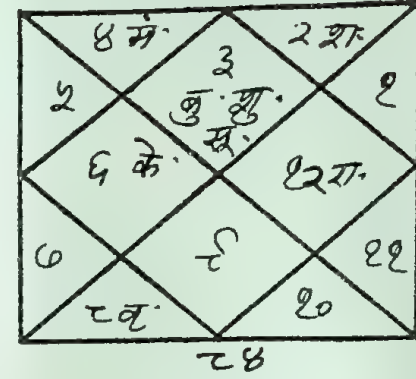
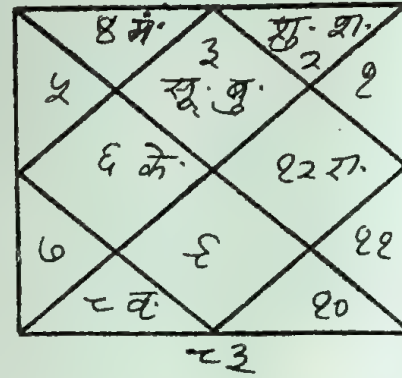
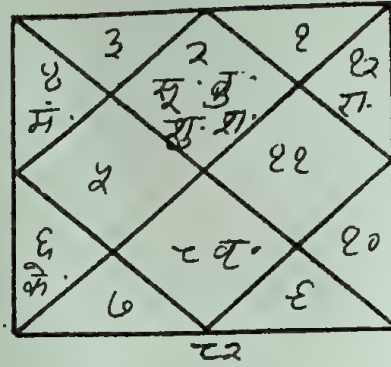
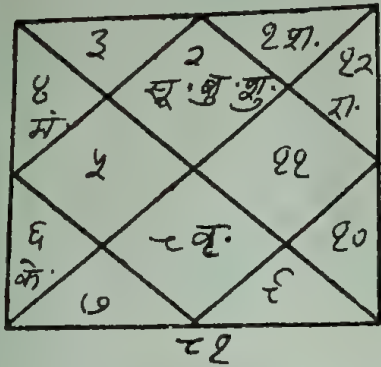
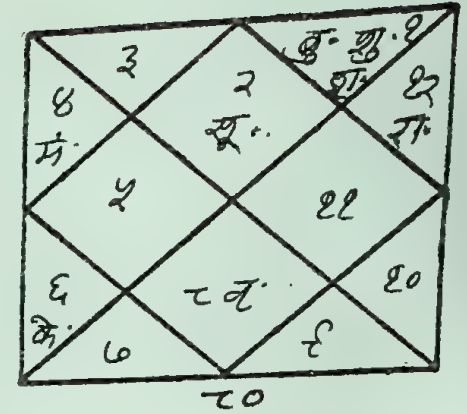
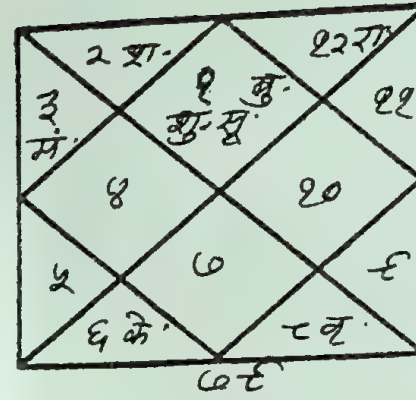
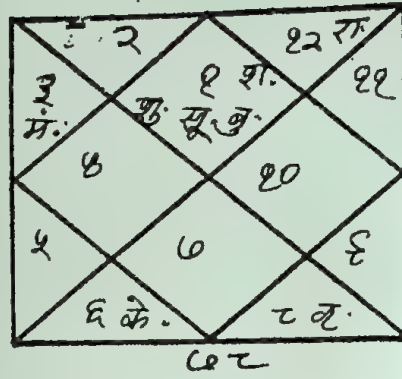
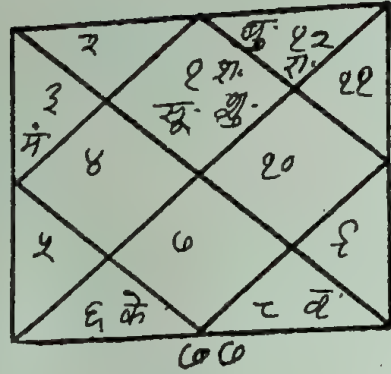
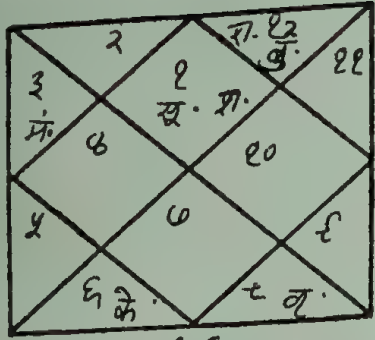
७३

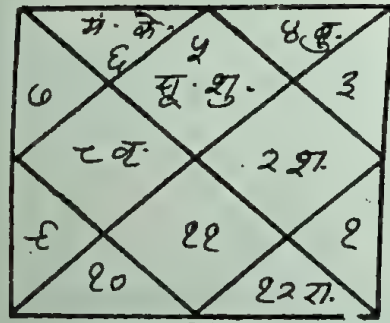


७४

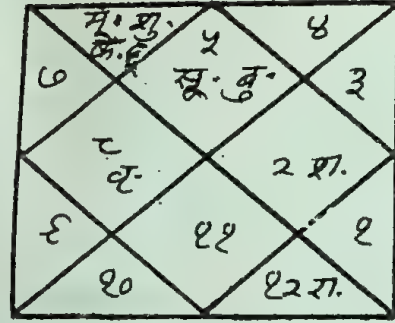


७५

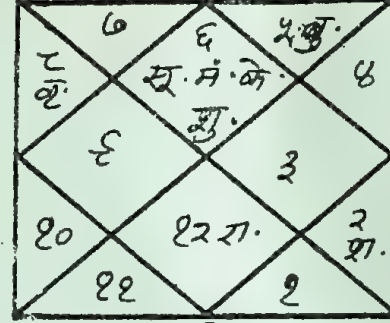




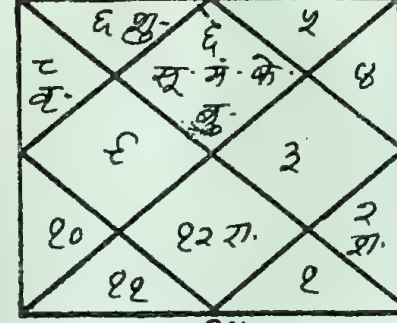
८१



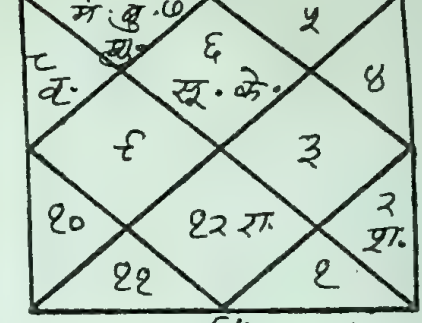
८२



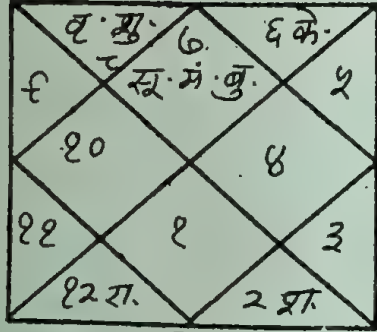
८३



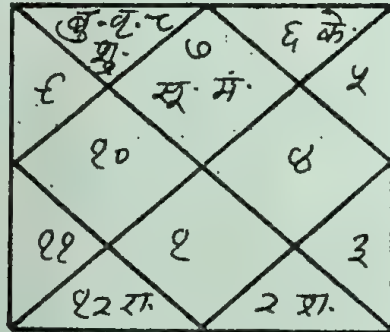
८४



८५



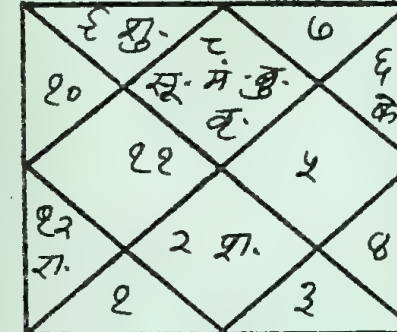
८६



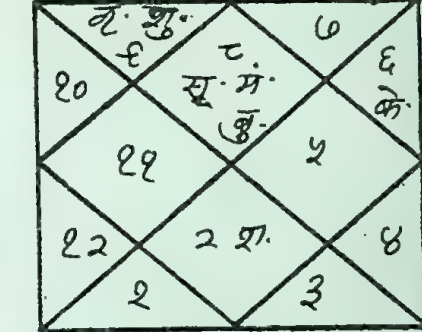
८७



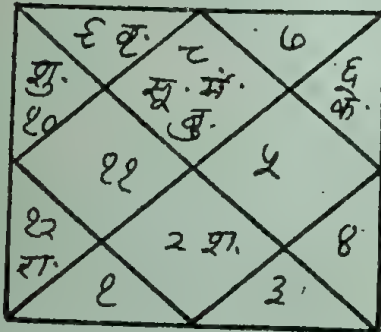
८८



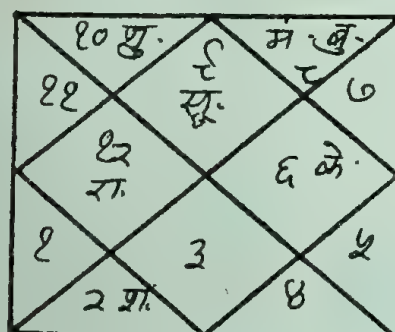
८९



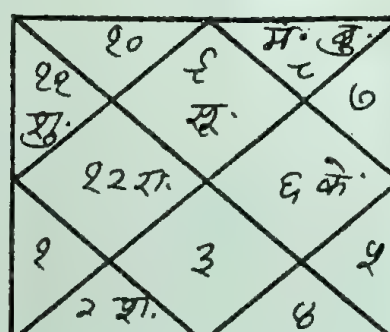
९०



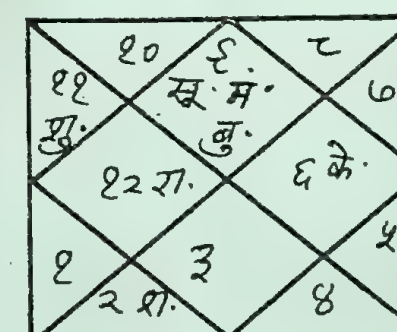
९०१



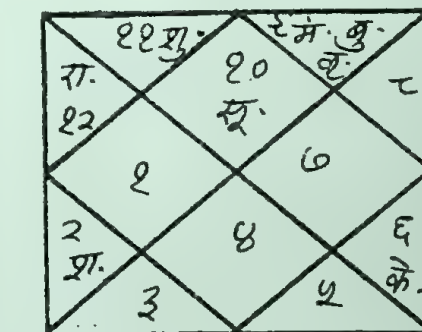
९०२



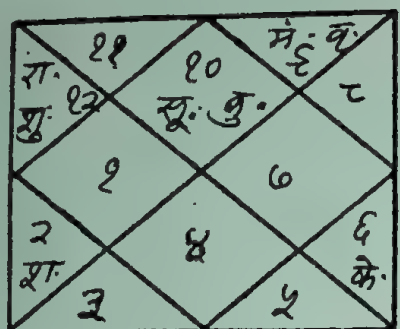
९०३



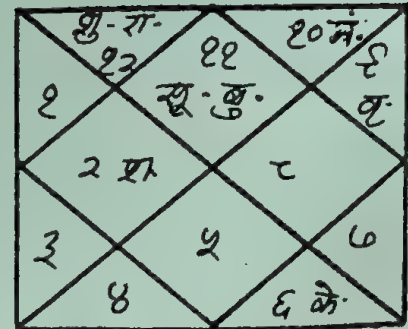
९०४



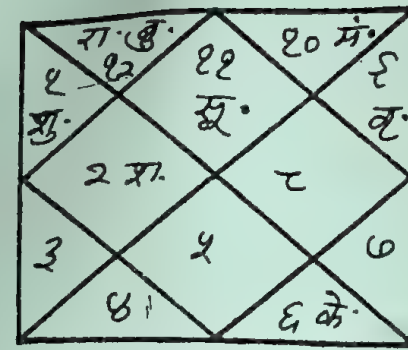
९०५



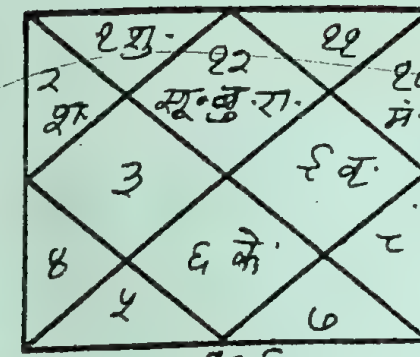
१०६



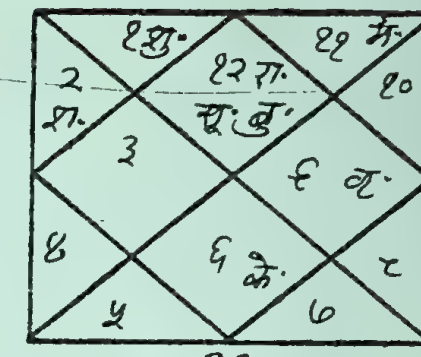
१०७



१०८



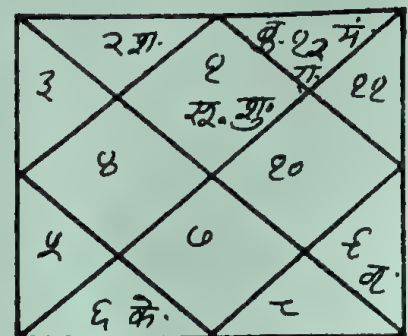
१०९



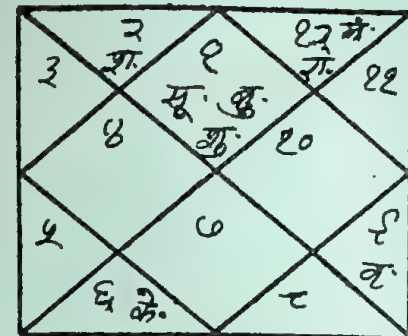
११०



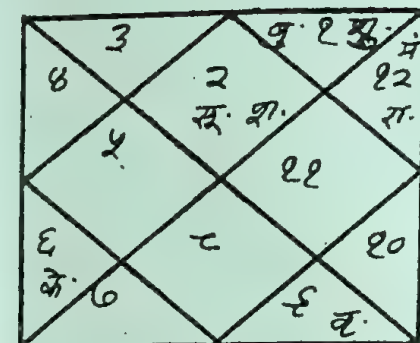
१११



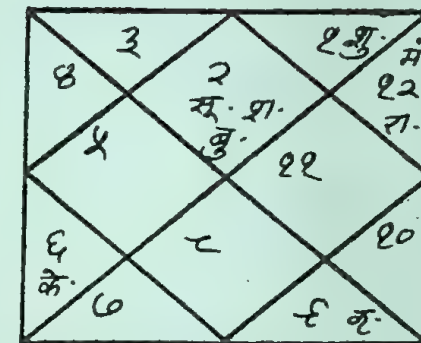
११२



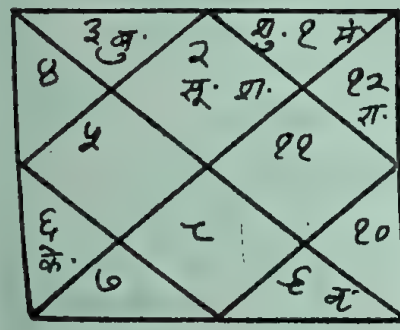
११३



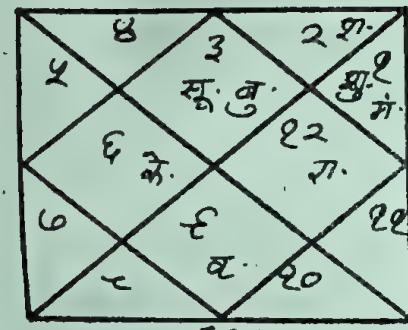
११४



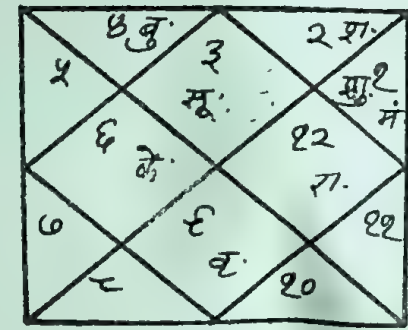
११५



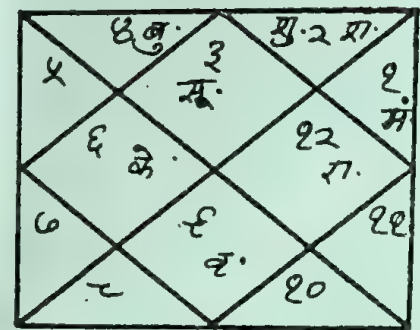
११६



११७



११८



११९



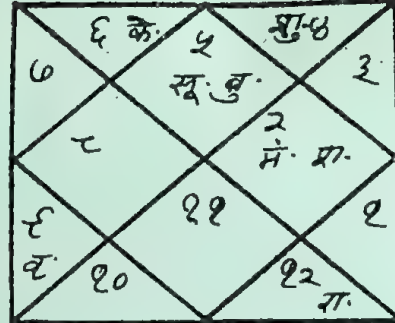
१२०



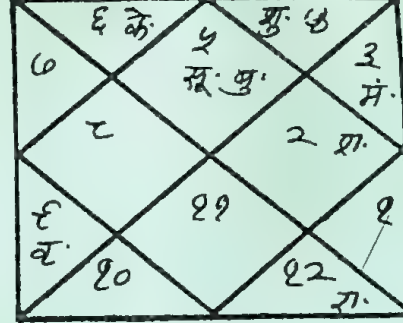
१२१



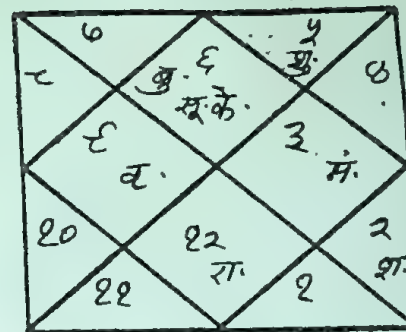
१२२



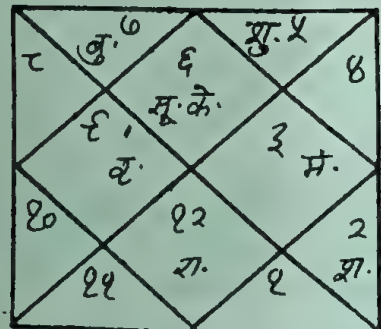
१२३



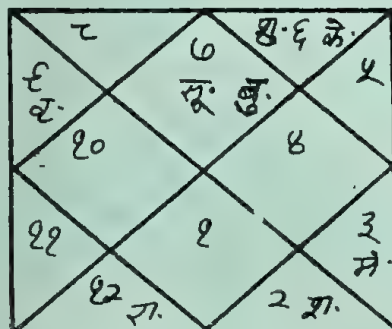
१२४



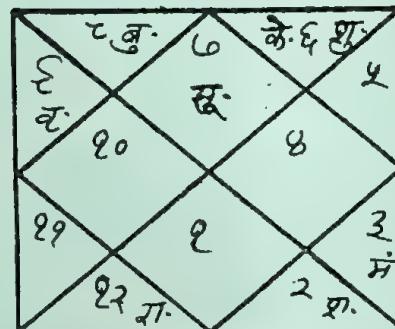
१२५



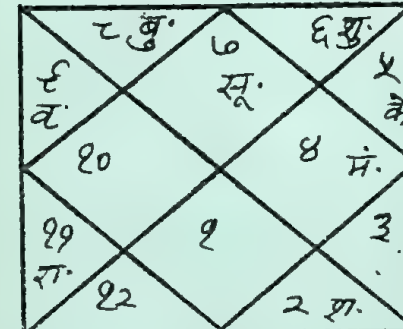
१२६



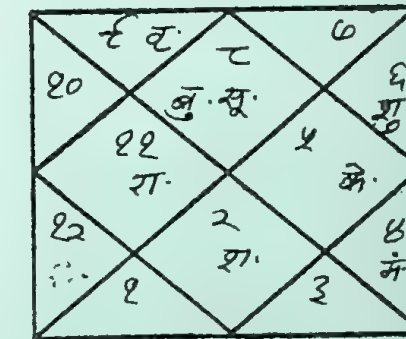
१२७



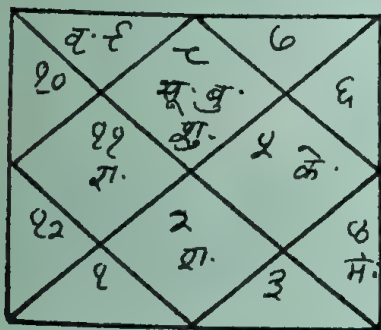
१२८



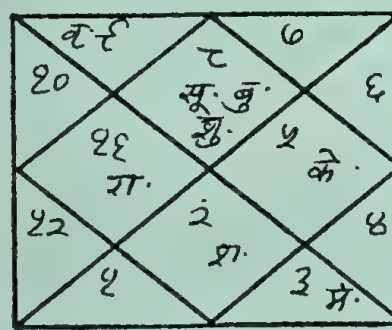
१२९



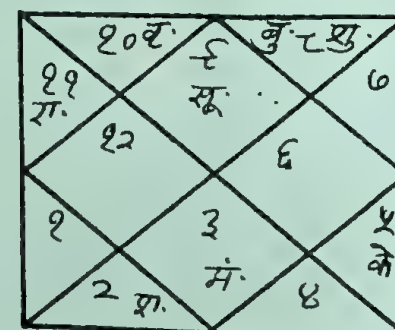
१३०



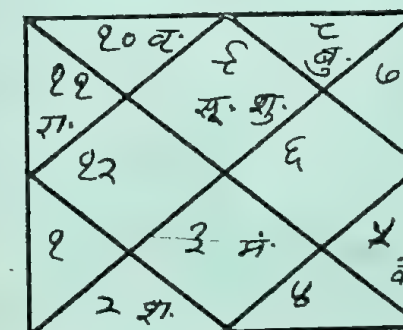
१३१



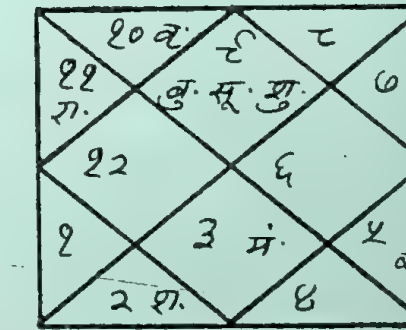
१३२



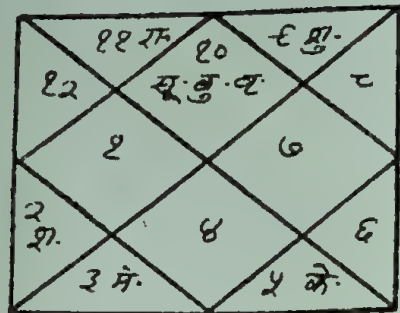
१३३



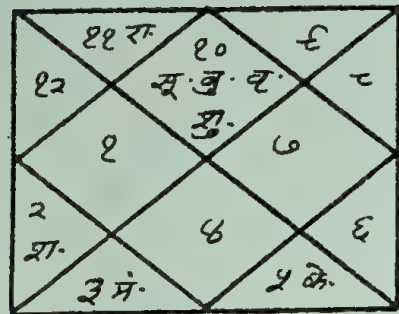
१३४



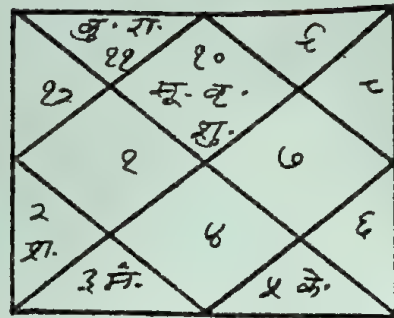
१३५



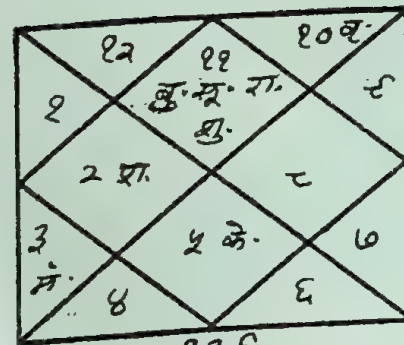
१३६



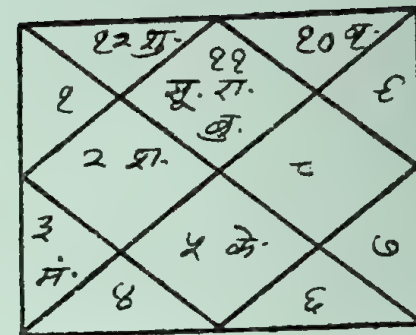
१३७



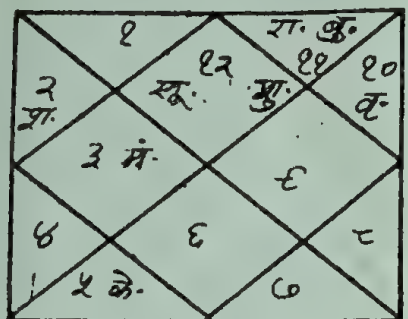
१३८



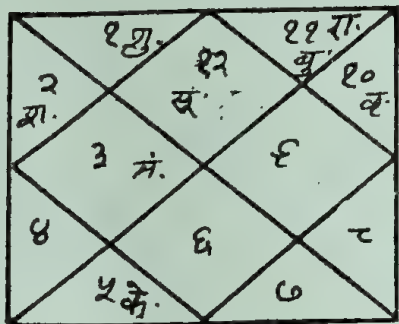
१३९



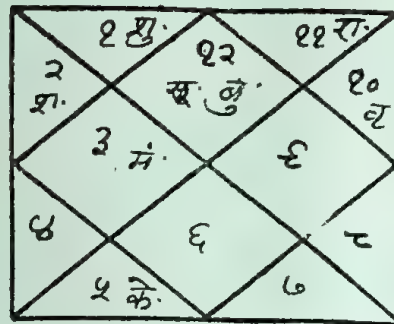
१४०



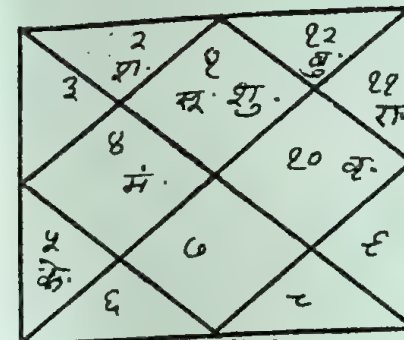
१४१



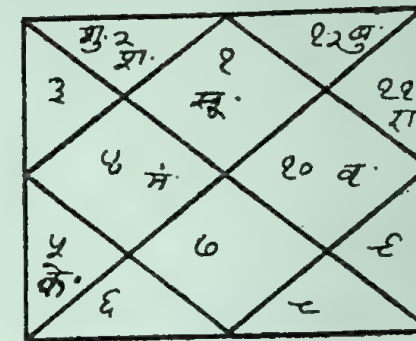
१४२



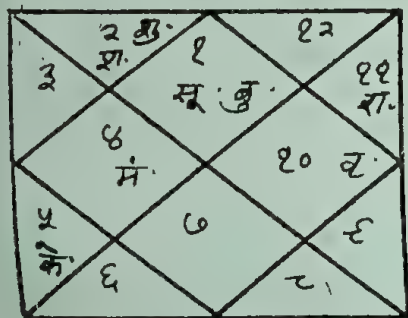
१४३



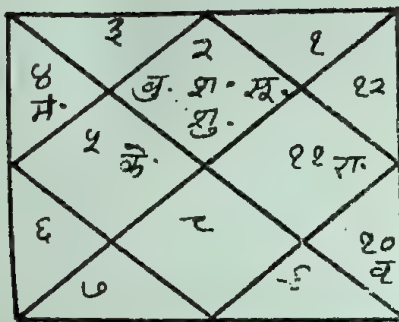
१४४



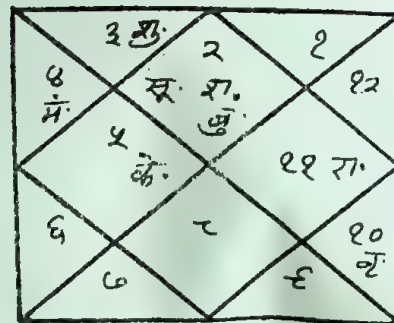
१४५



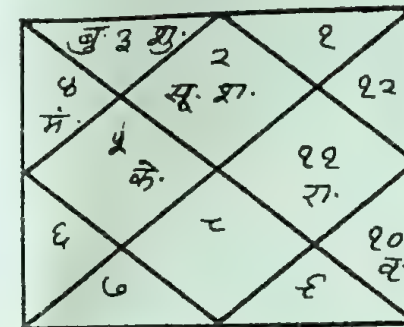
१४६



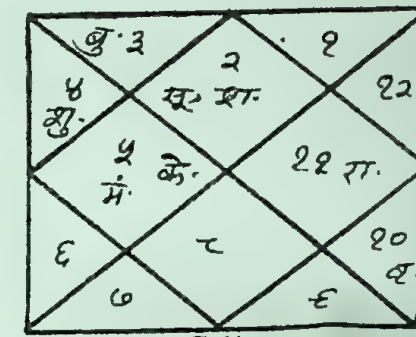
१४७



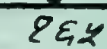
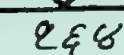
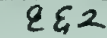
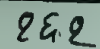
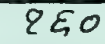
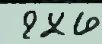
१४८

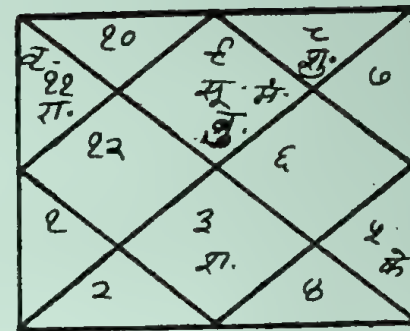


१४९

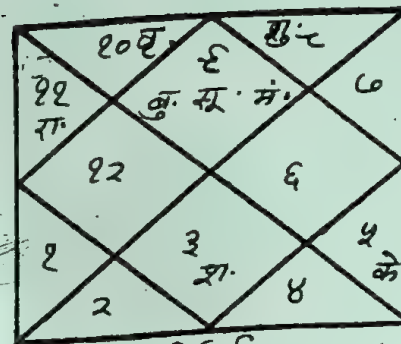


१५०

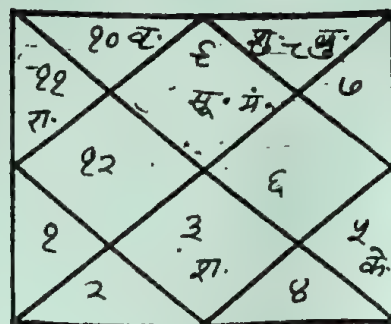




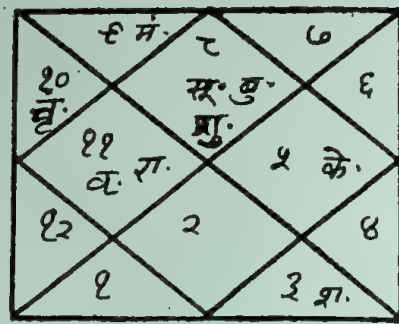
१००



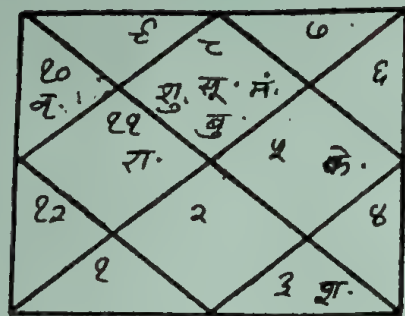
१००



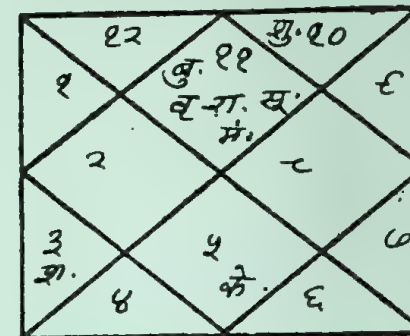
१००



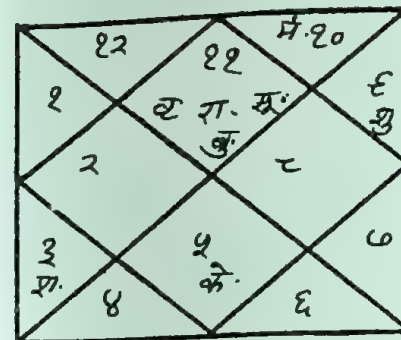
१००



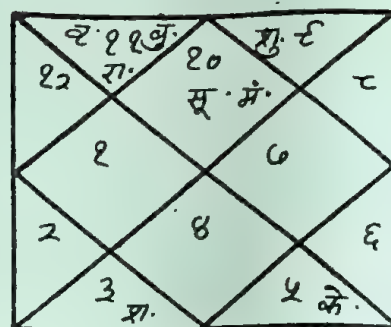
१००



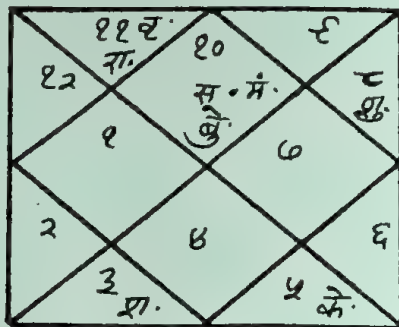
१००



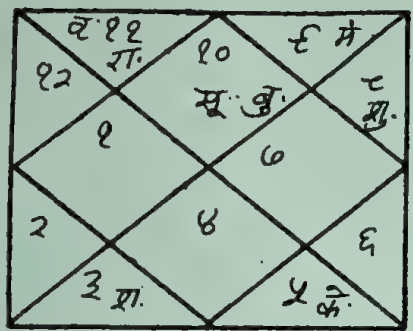
१००



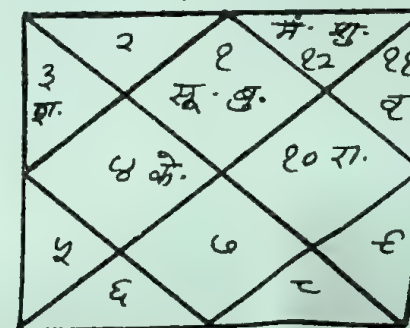
१००



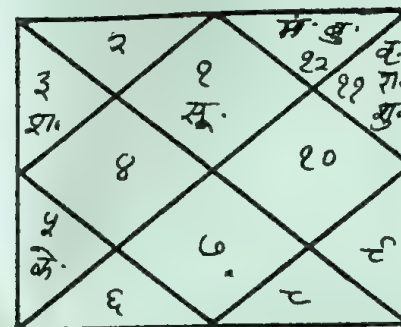
१००



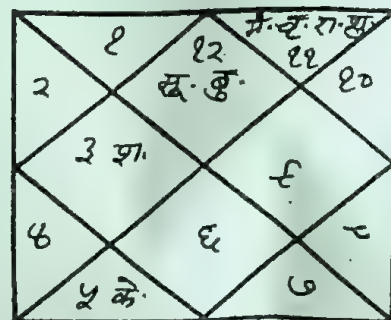
१००



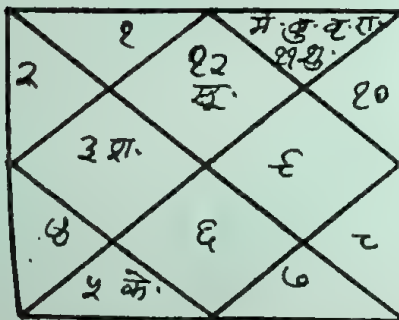
१००



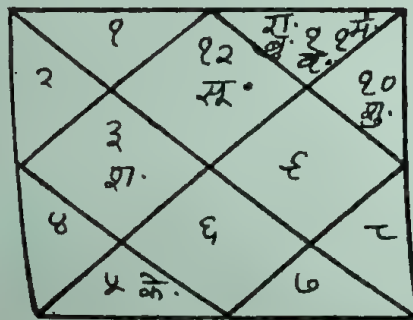
१००



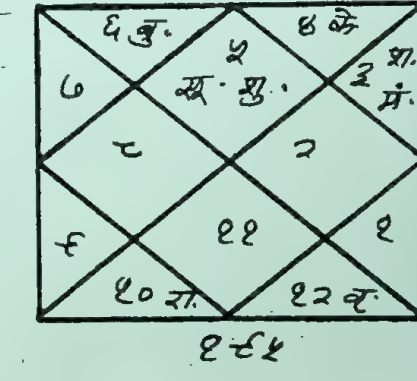
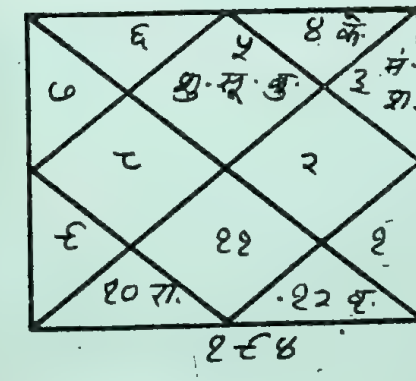
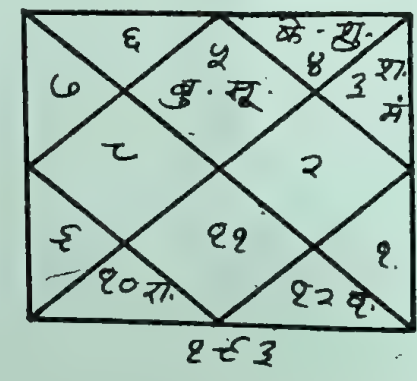
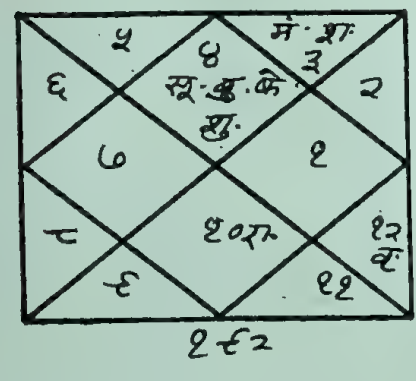
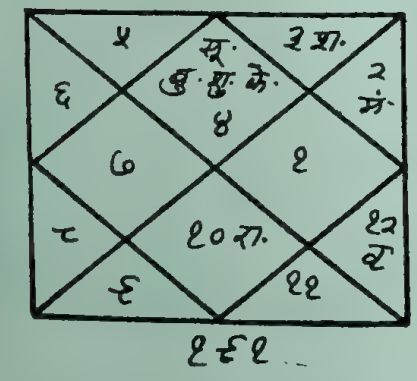
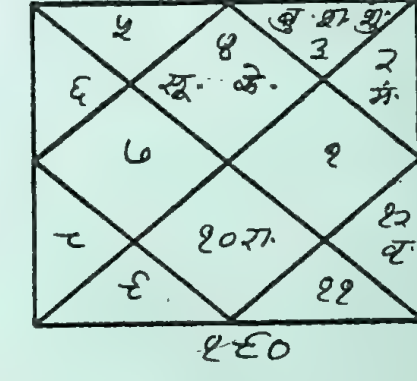
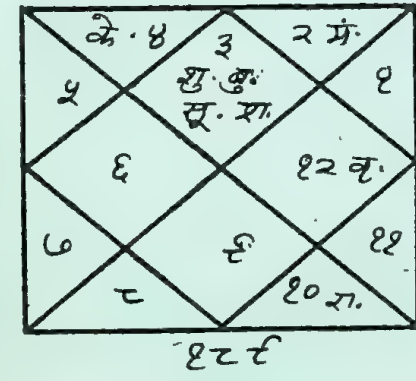
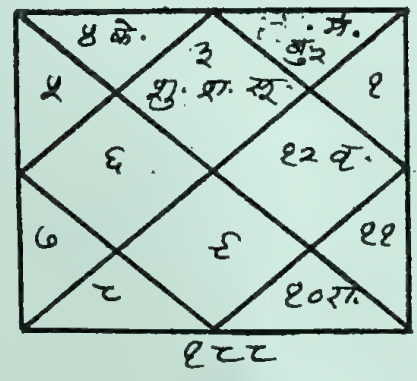
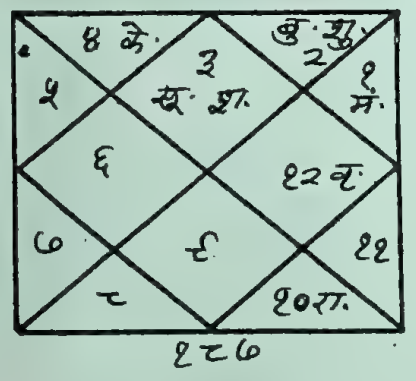
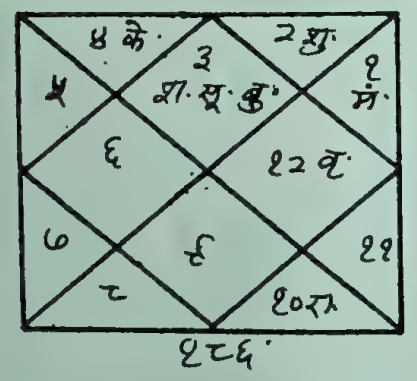
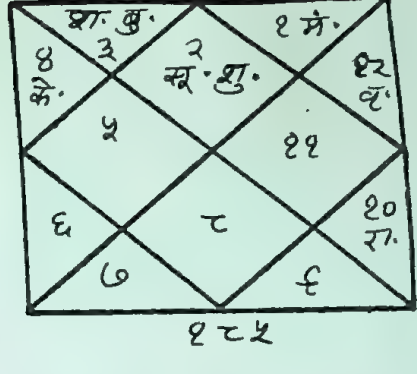
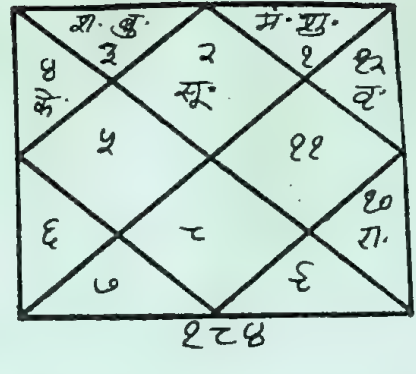
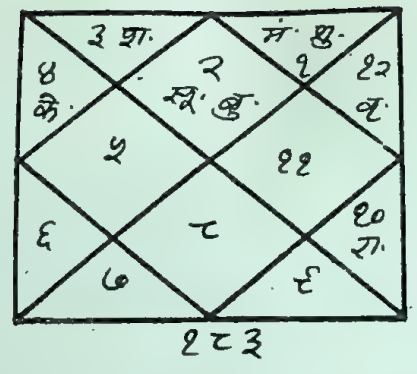
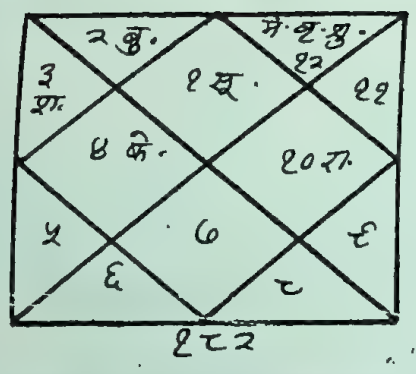
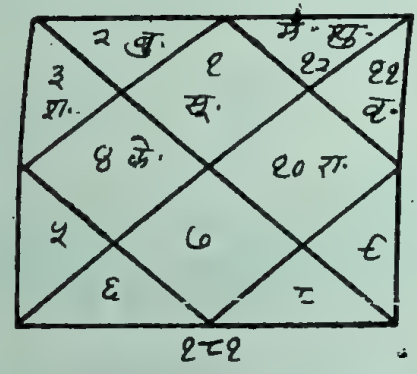
१००

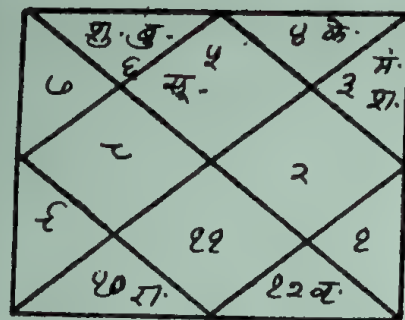


१००

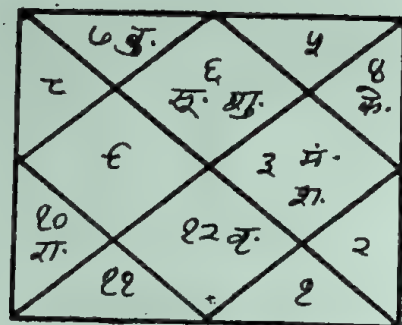


१००

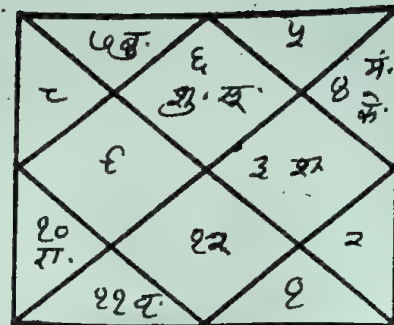




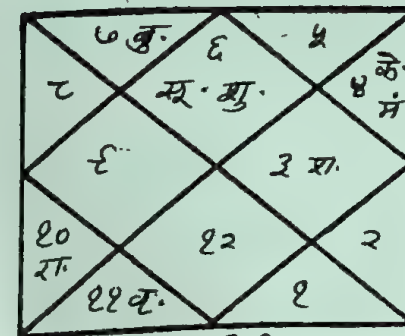
१८६



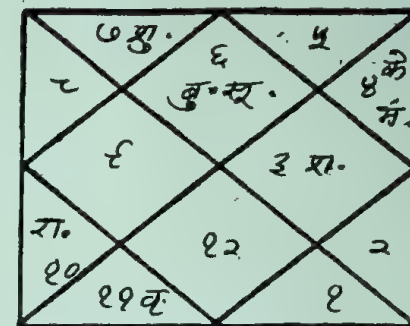
१८७



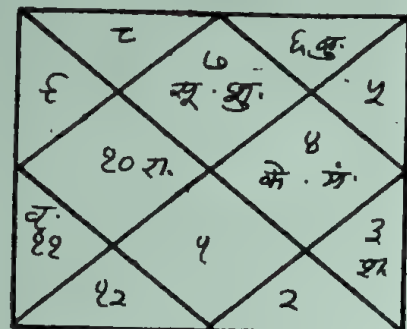
१८८



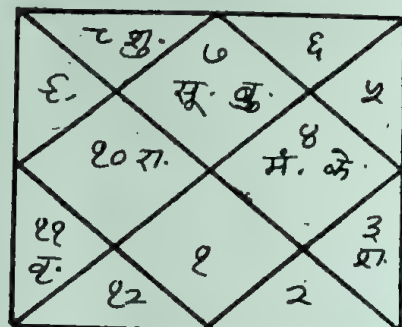
१८९



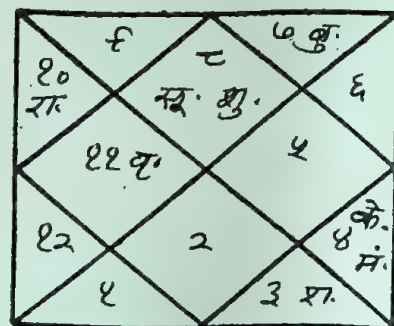
२००



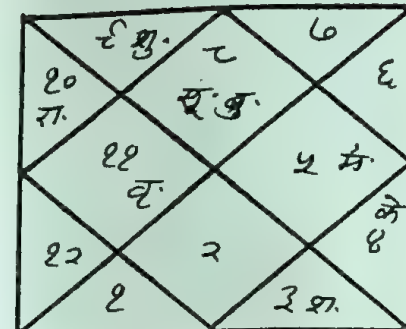
२०१



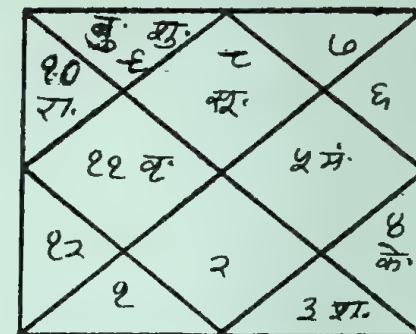
२०२



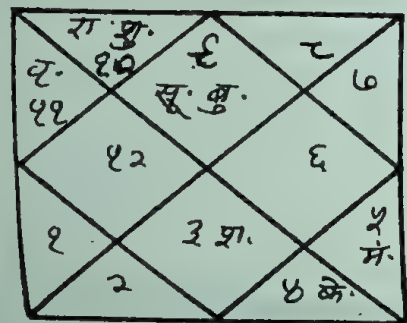
२०३



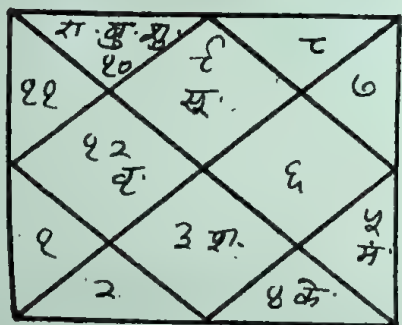
२०४



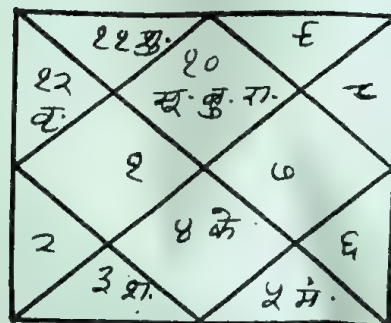
२०५



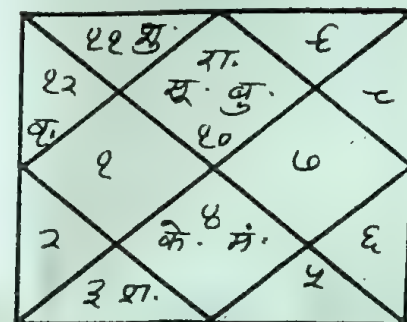
२०६



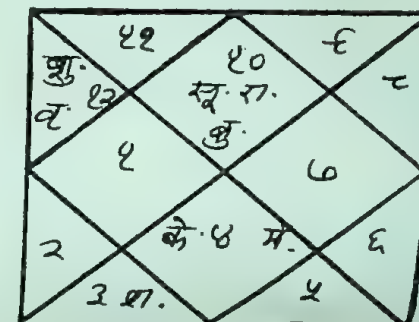
२०७



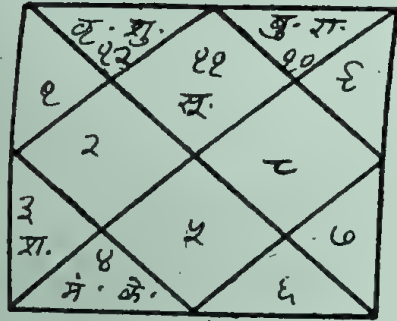
२०८



२०९



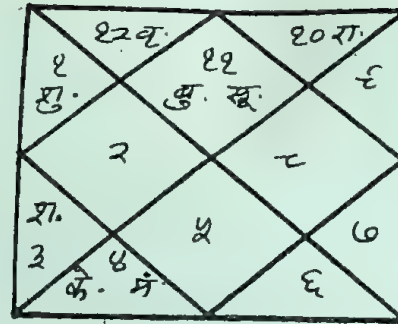
२१०



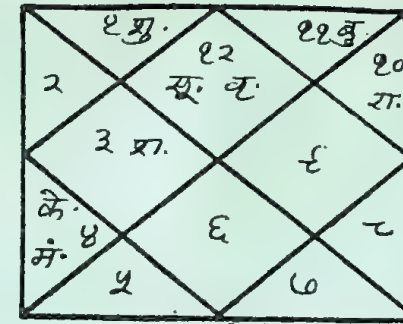
२२१



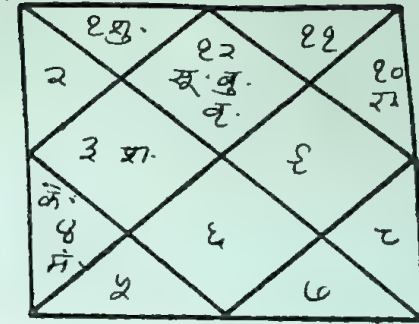
२२२



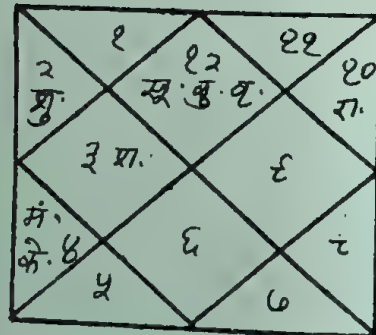
२२३



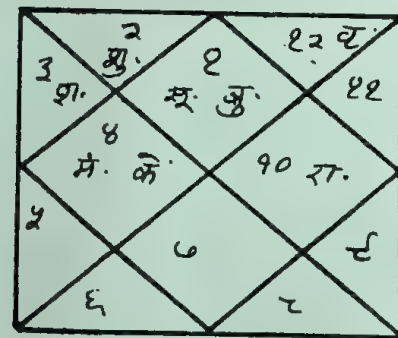
२२४



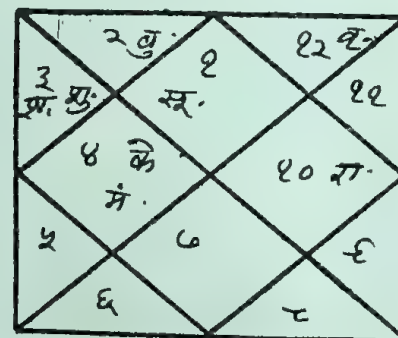
२२५



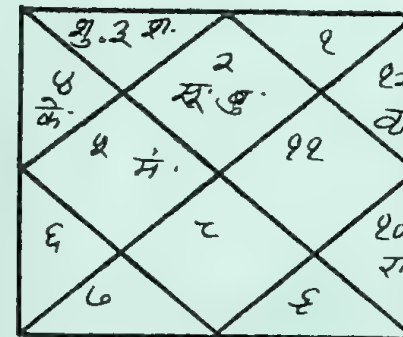
२२६



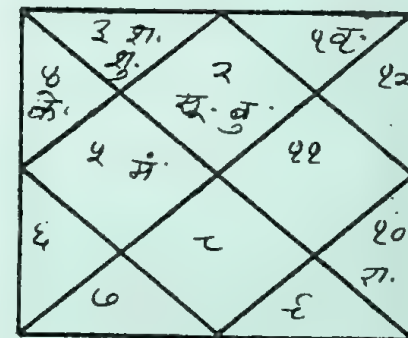
२२७



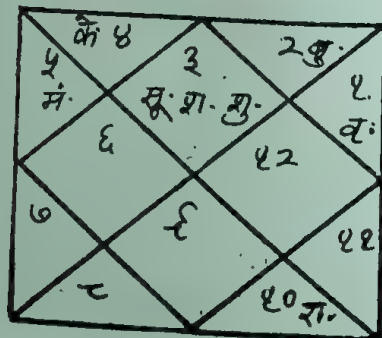
२२८



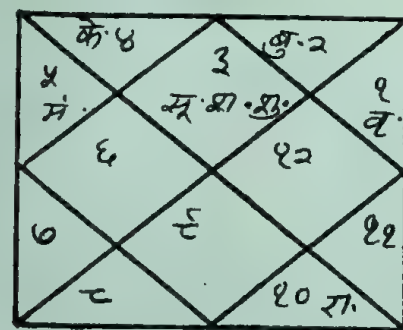
२२९



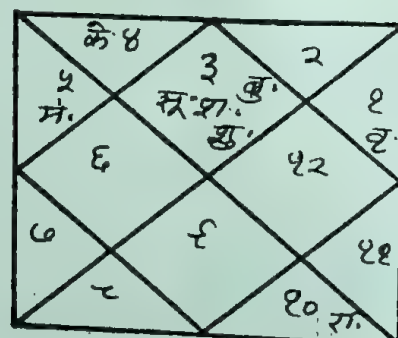
२३०



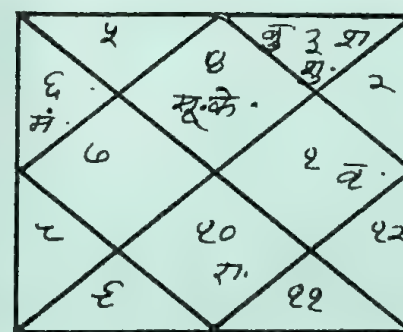
२३१



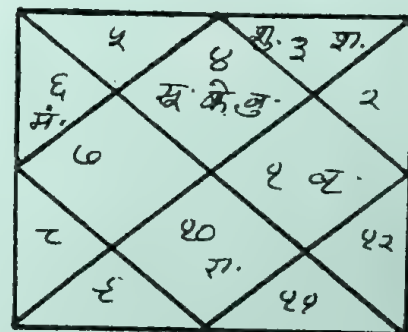
२३२



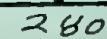
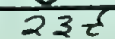
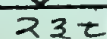
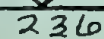
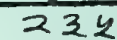
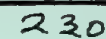
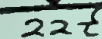
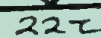
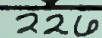
२३३

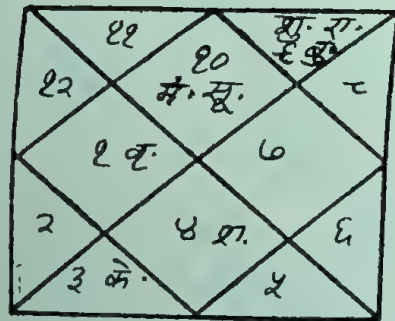


२३४



२३५

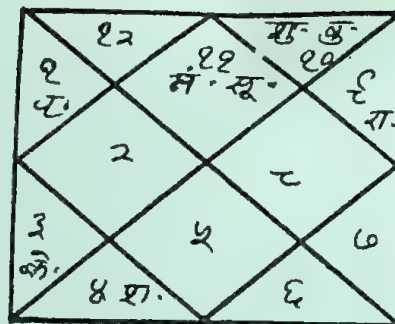




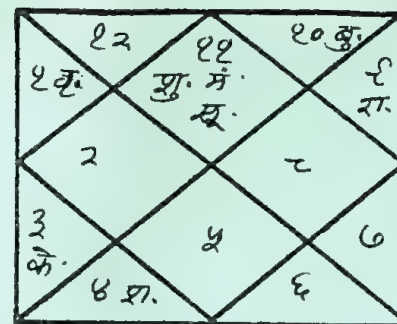
२४१



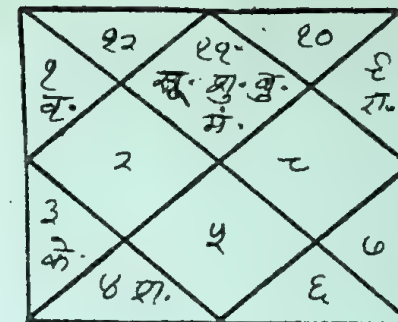
२४२



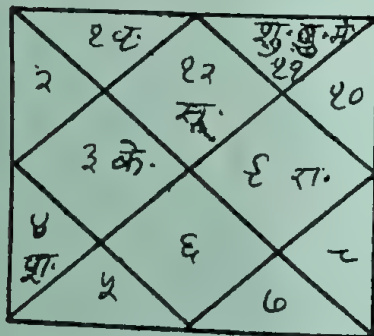
२४३



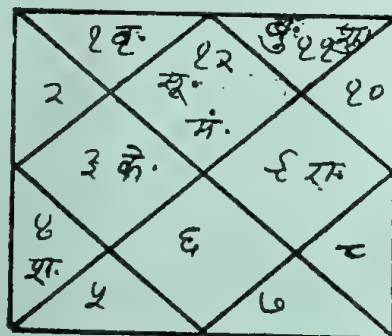
२४४



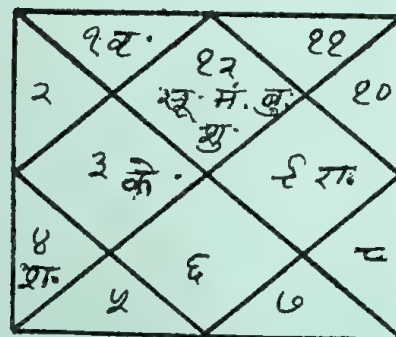
२४५



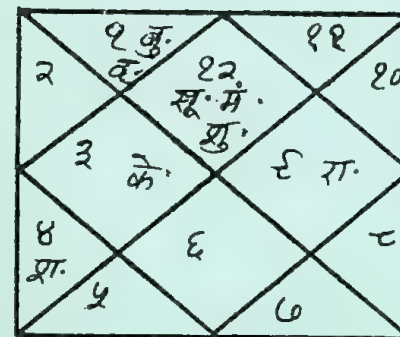
२४६



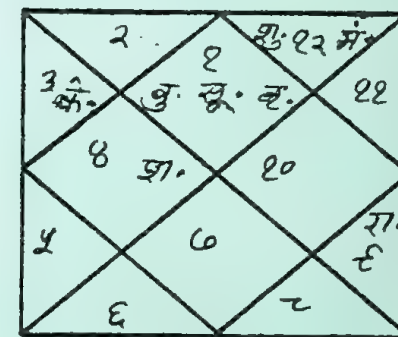
२४७



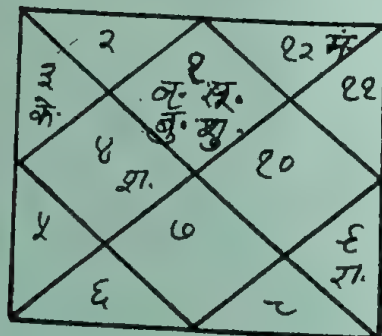
२४८



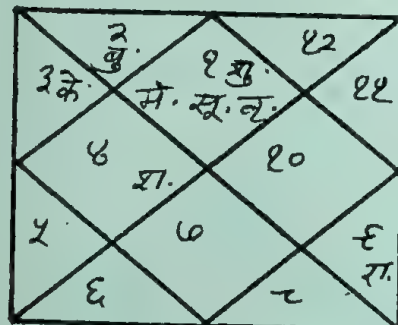
२४९



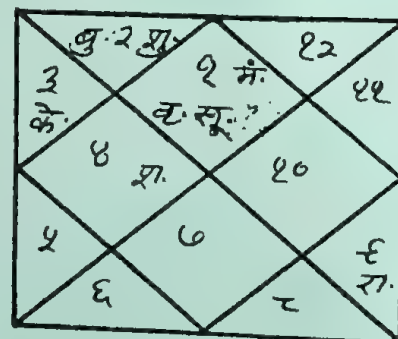
२५०



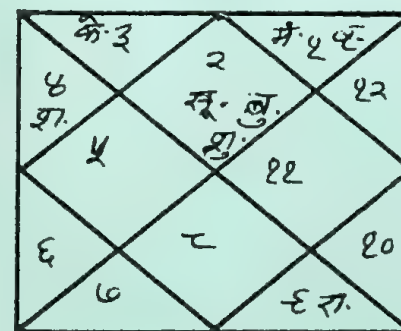
२५१



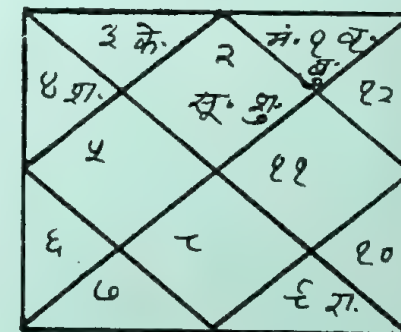
२५२



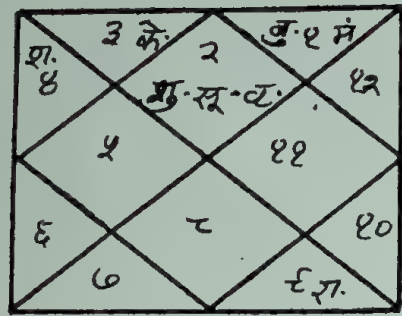
२५३



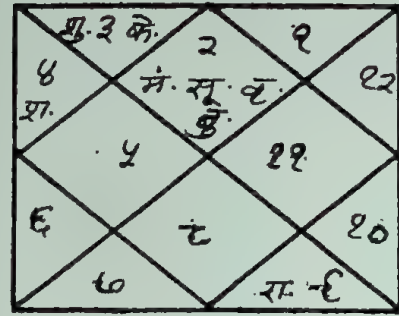
२५४



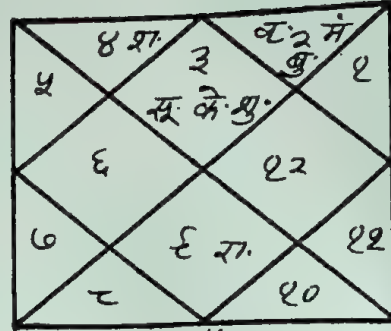
२५५



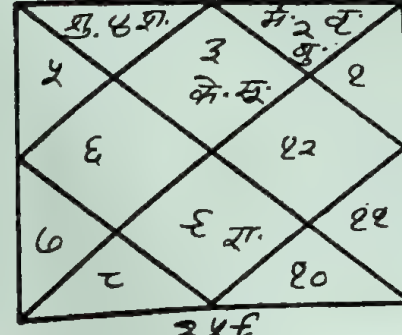
२५६



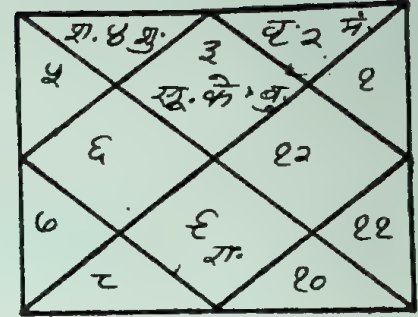
२५७



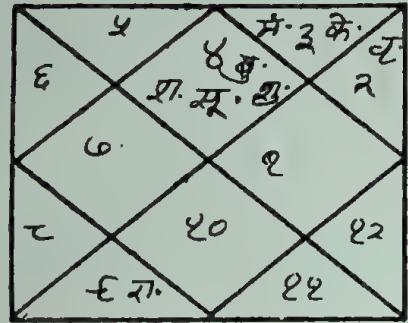
२५८



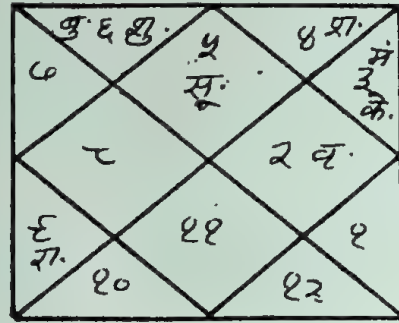
२५९



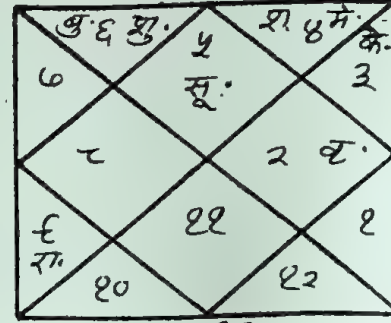
२६०



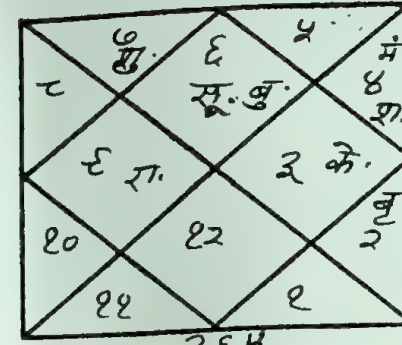
२६१



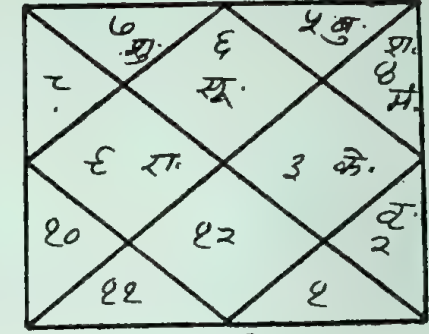
२६२



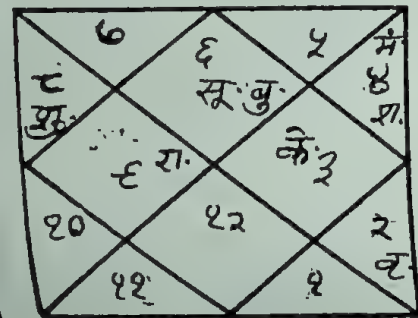
२६३



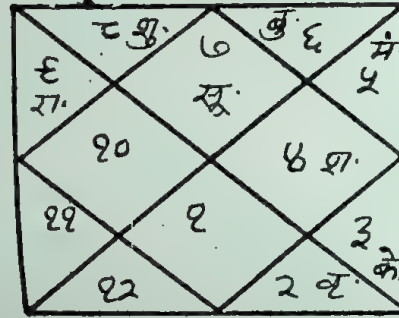
२६४



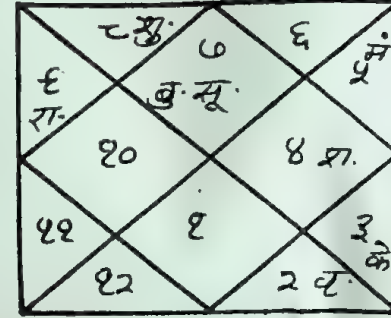
२६५



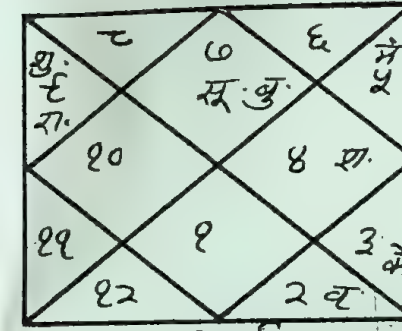
२६६



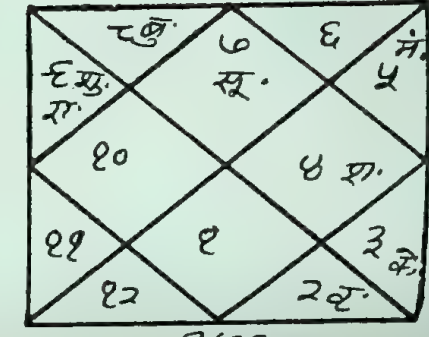
२६७



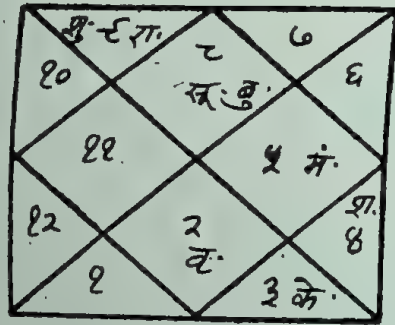
२६८



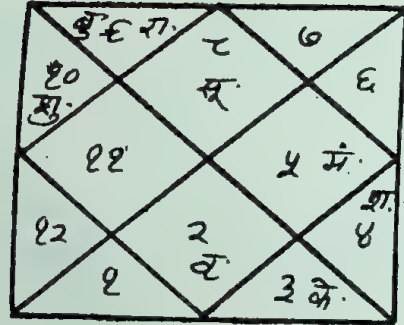
२६९



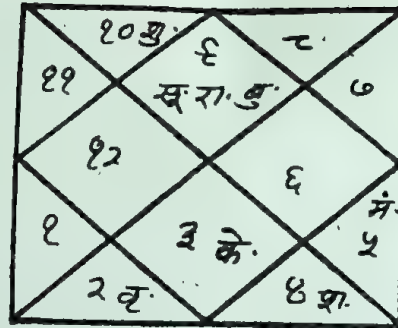
२७०



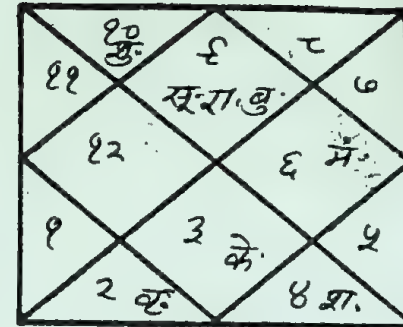
२०१



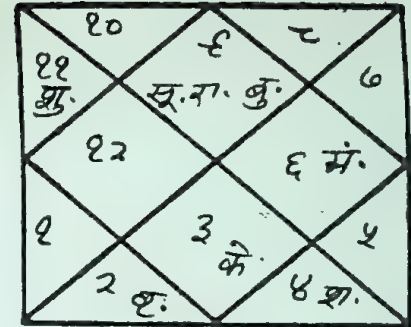
२०२



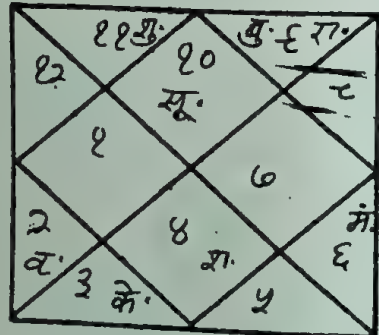
२०३



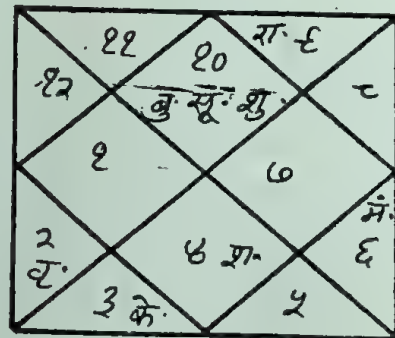
२०४



२०५



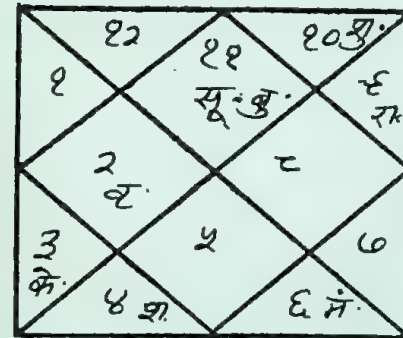
२०६



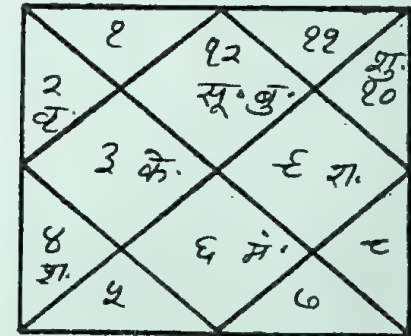
२०७



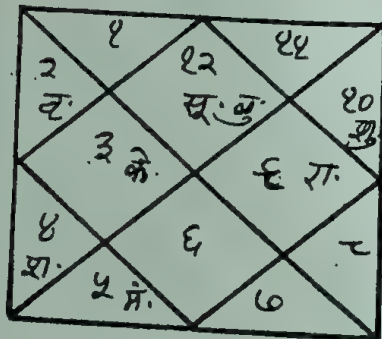
२०८



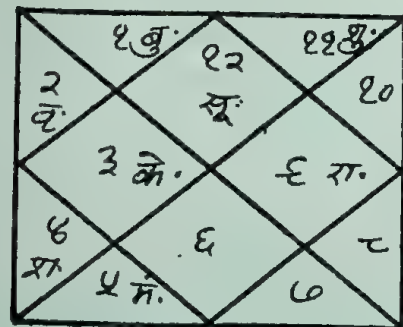
२०९



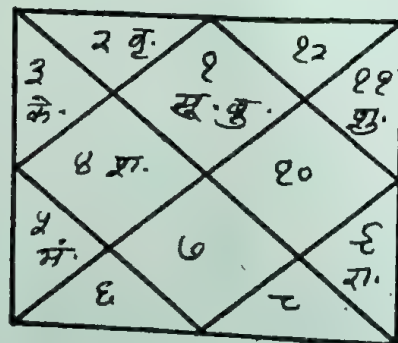
२१०



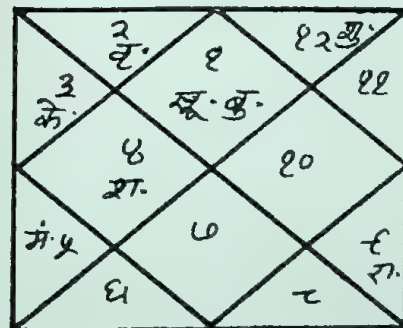
२११



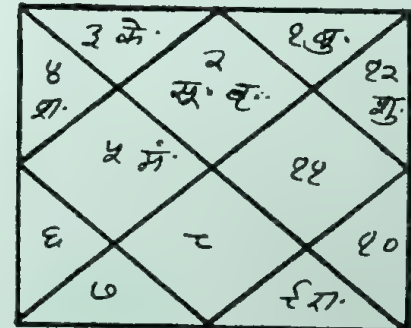
२१२



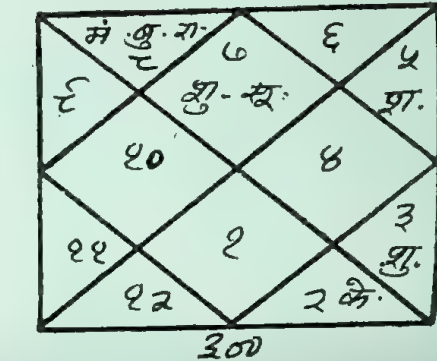
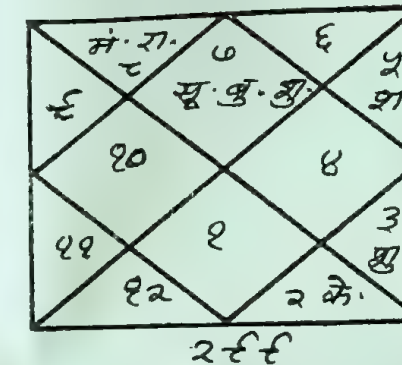
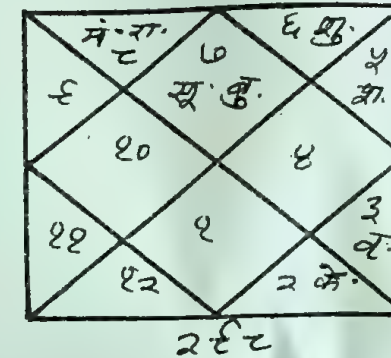
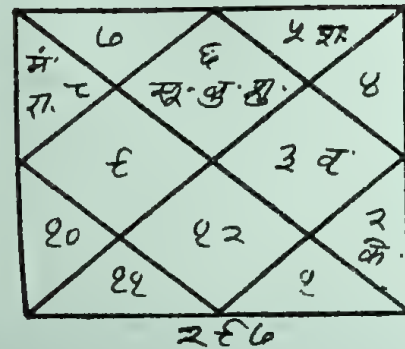
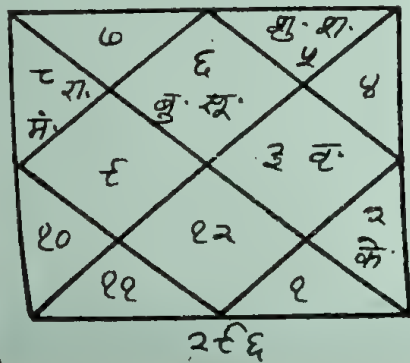
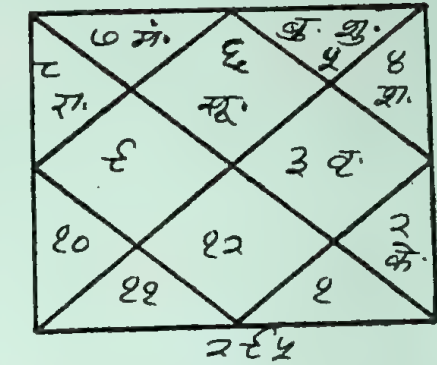
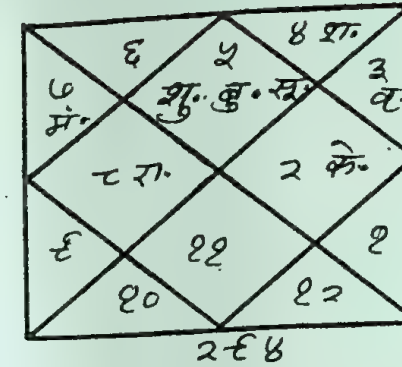
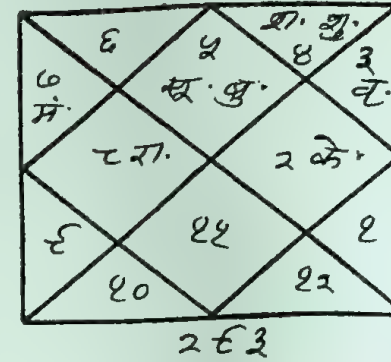
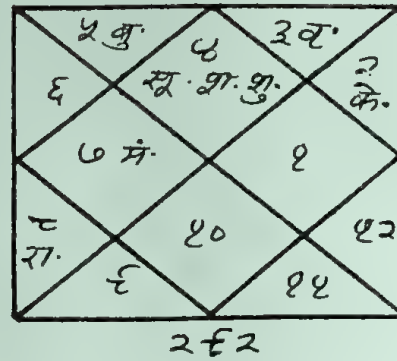
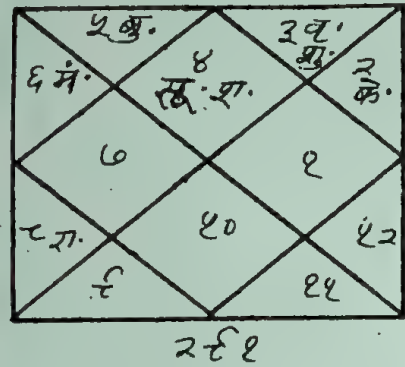
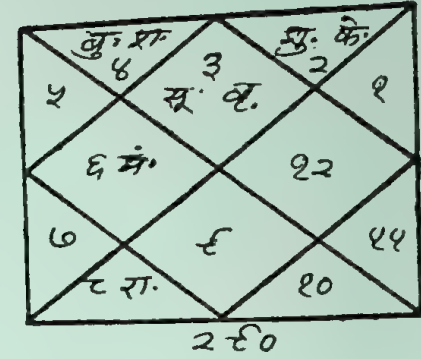
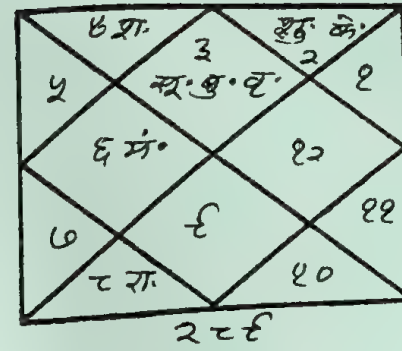
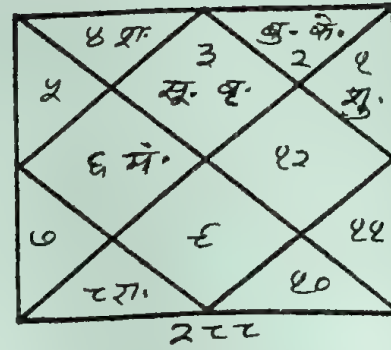
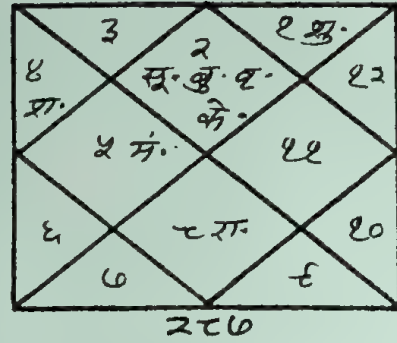
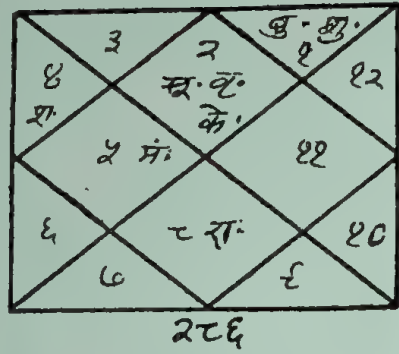
२१३

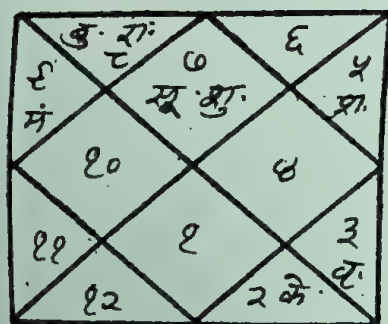


२१४

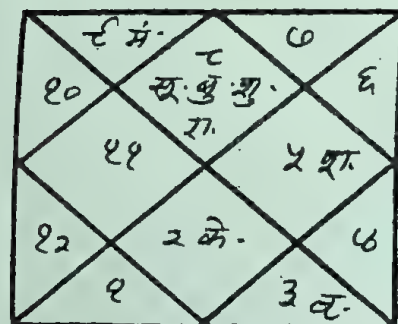


२१५

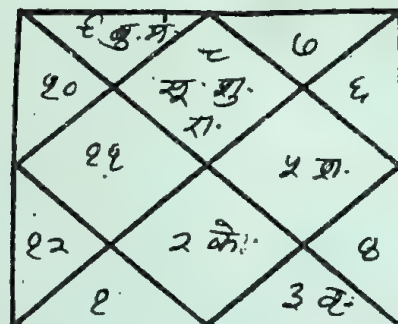




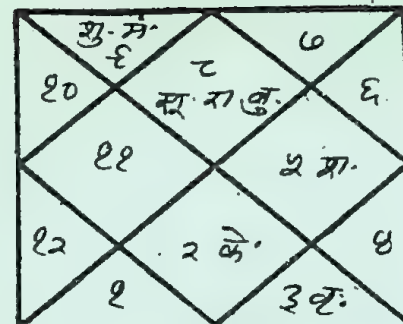
302



302



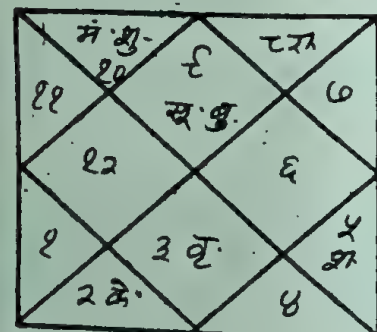
303



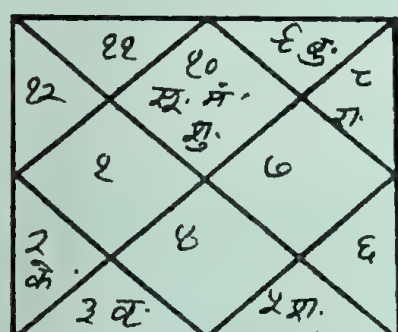
308



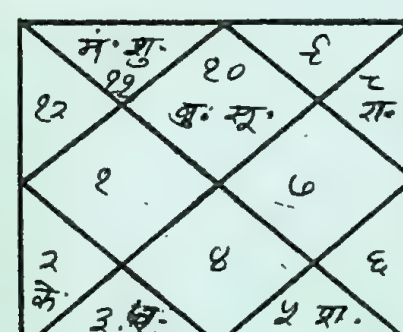
304



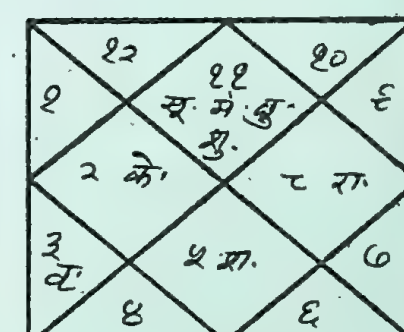
308



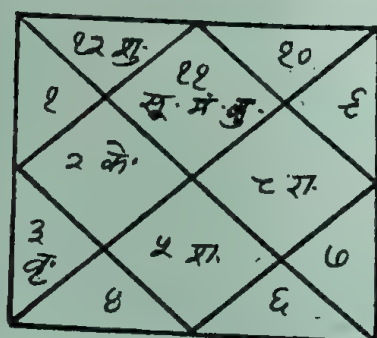
306


$$30\tau$$


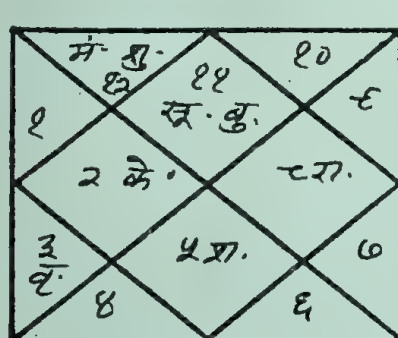
305



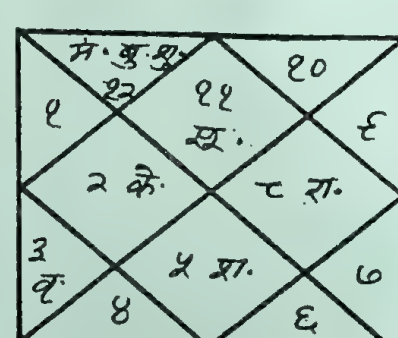
300



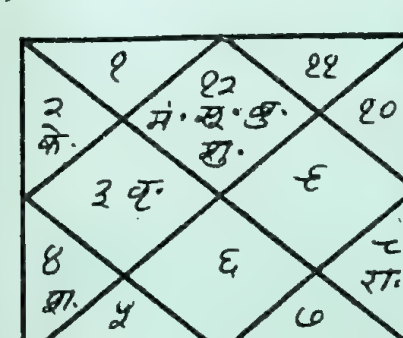
322



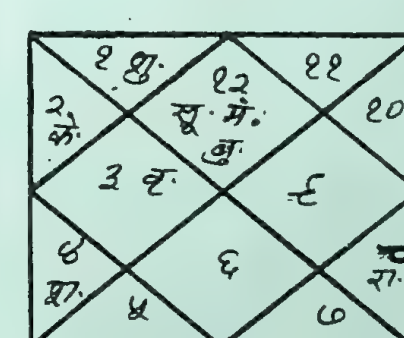
322



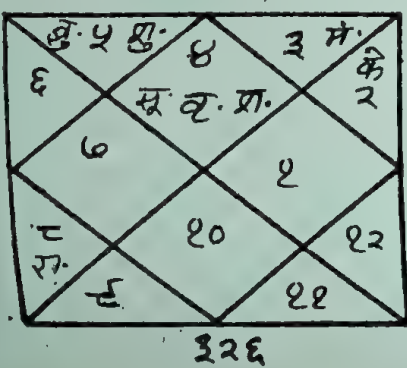
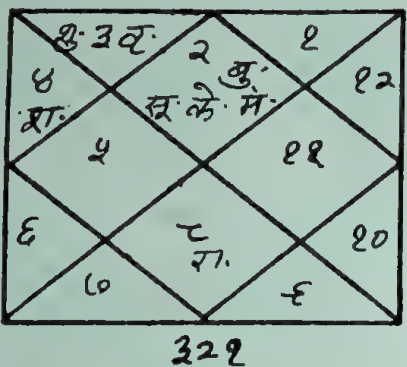
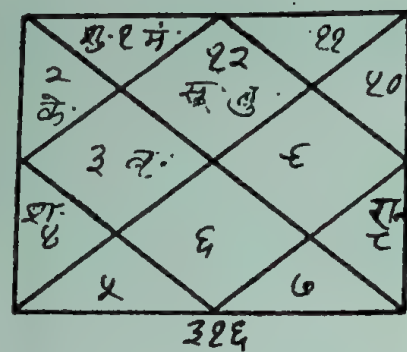
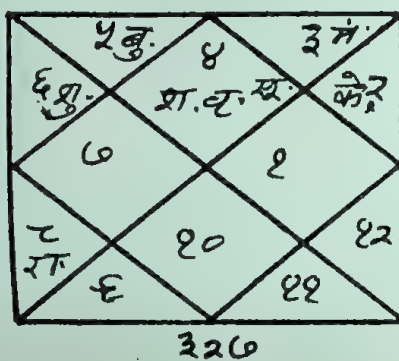
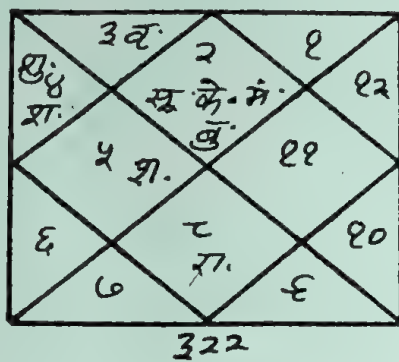
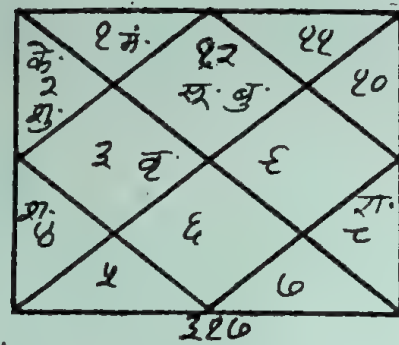
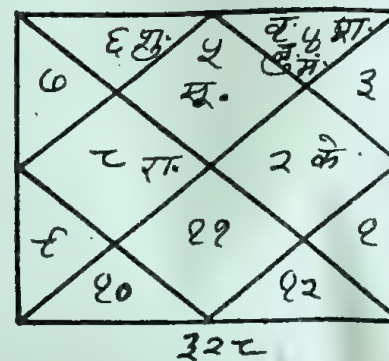
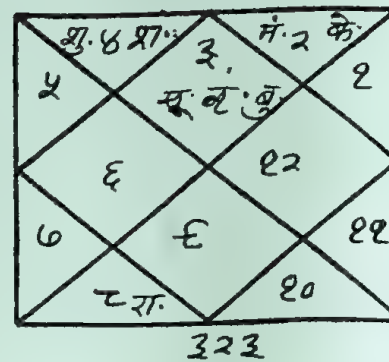
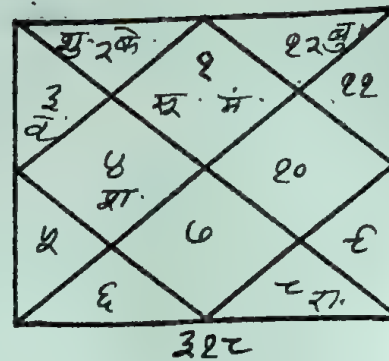
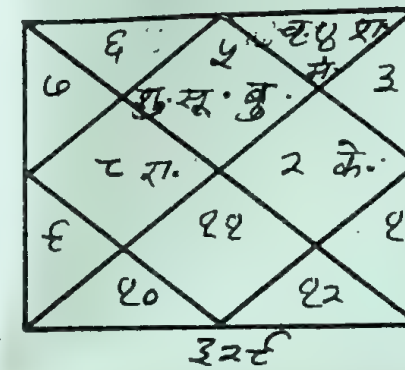
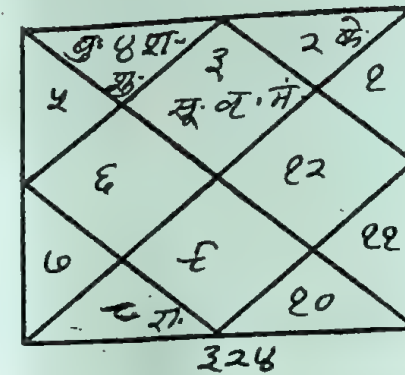
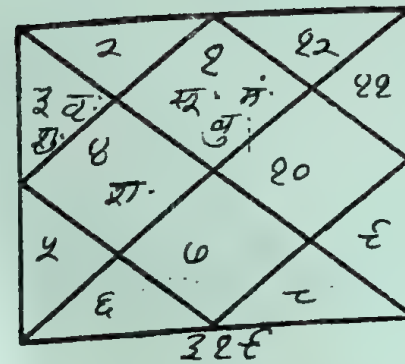
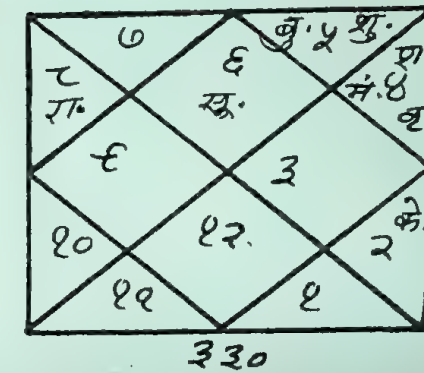
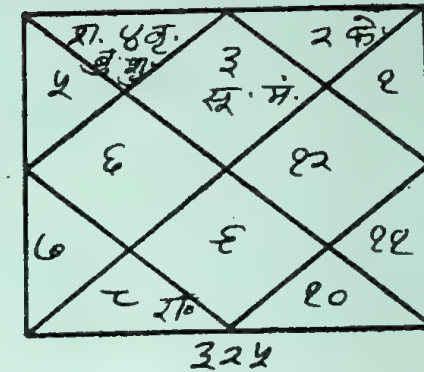
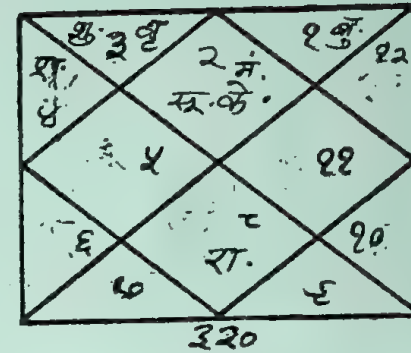
383

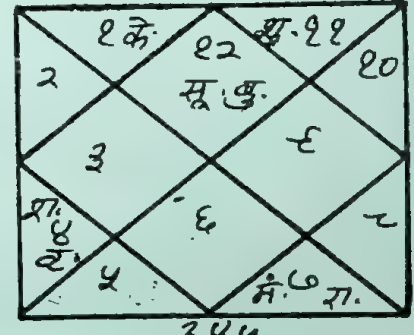
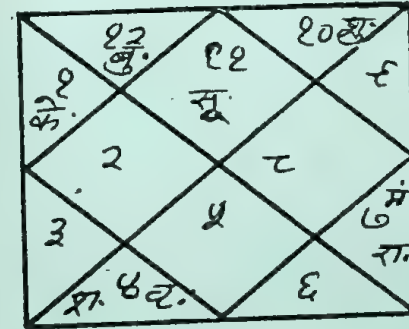
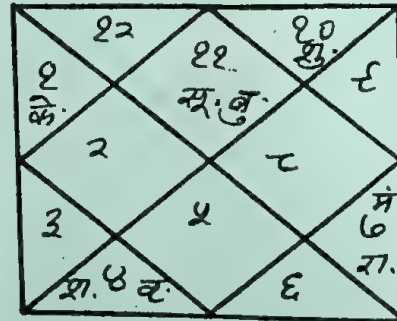
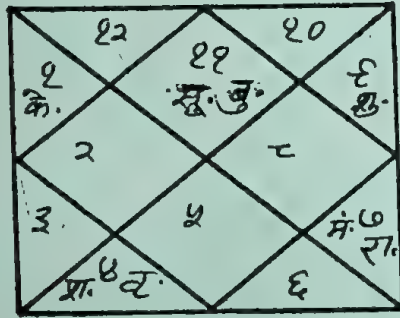
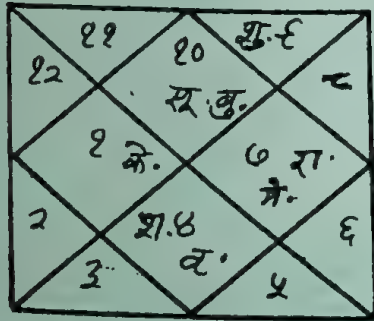
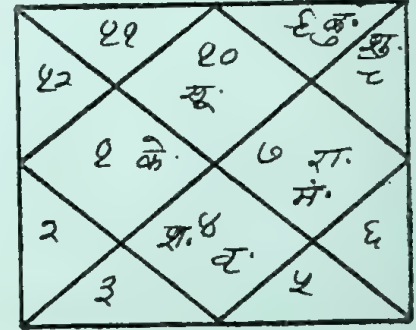
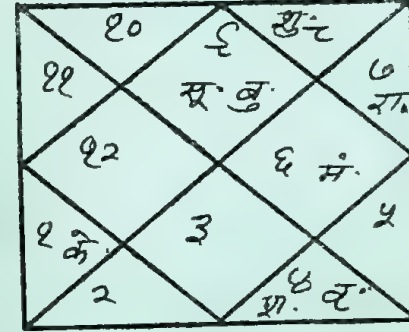
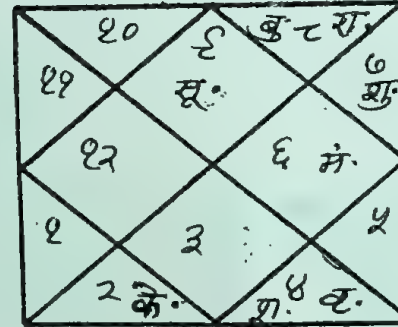
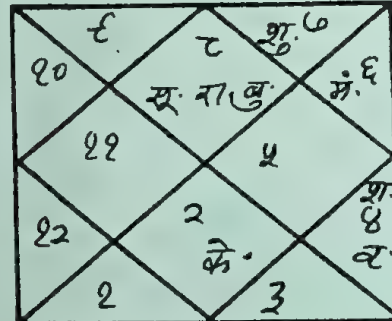
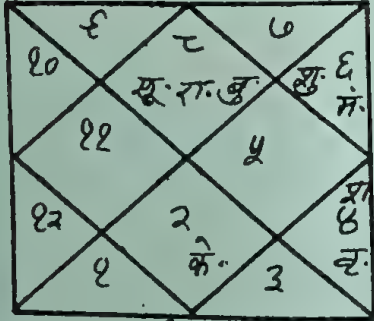
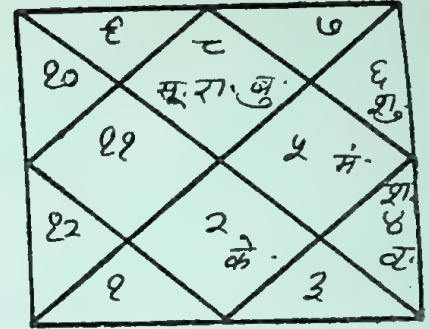
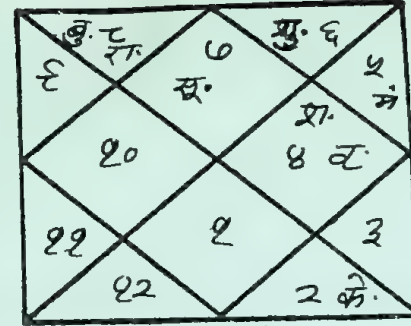
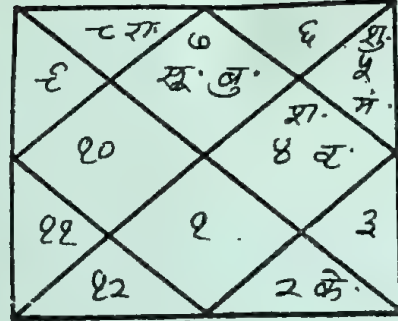
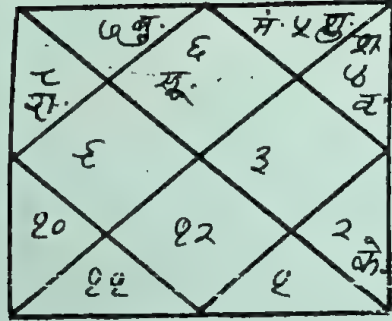


388



384



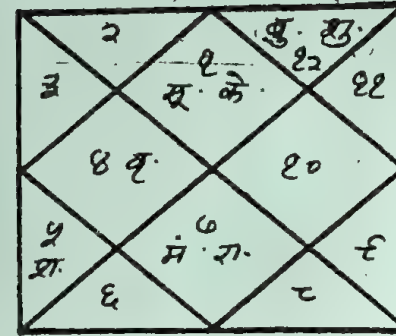




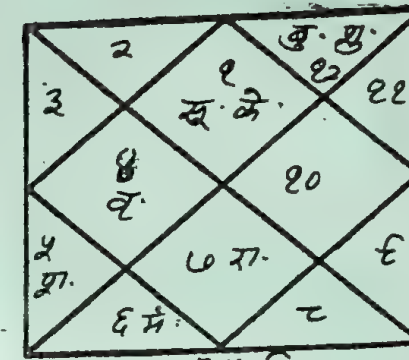
३४६



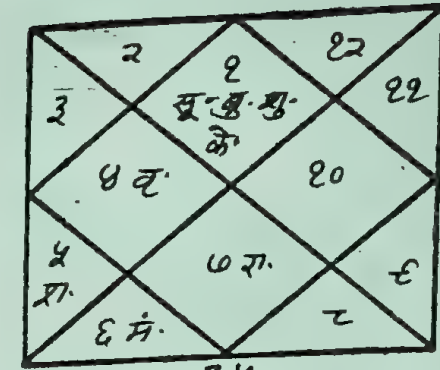
३४७



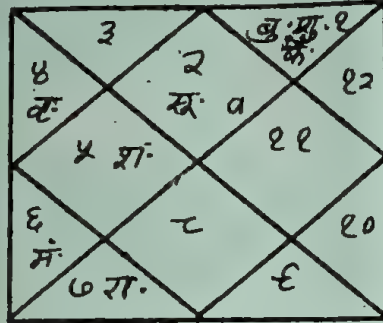
३४८



३४९



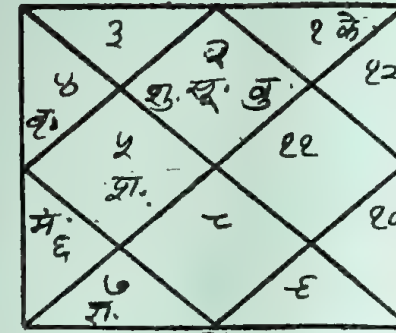
३५०



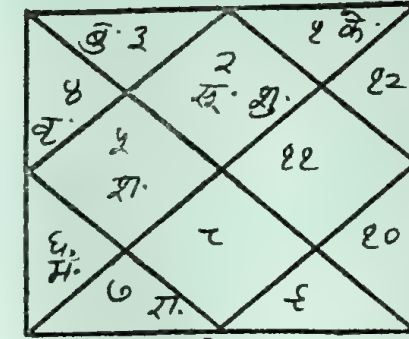
३५१



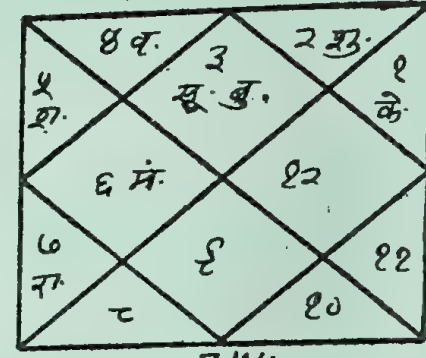
३५२



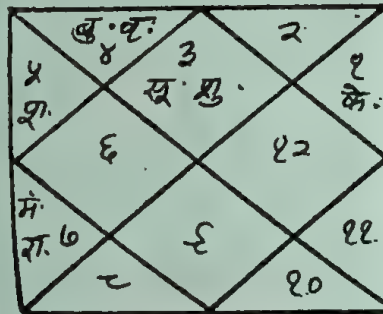
३५३



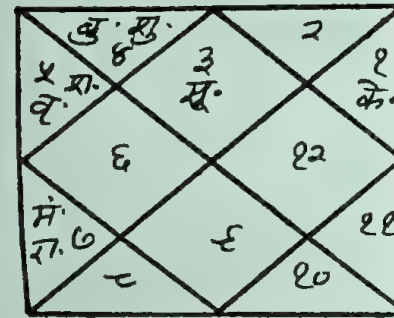
३५४



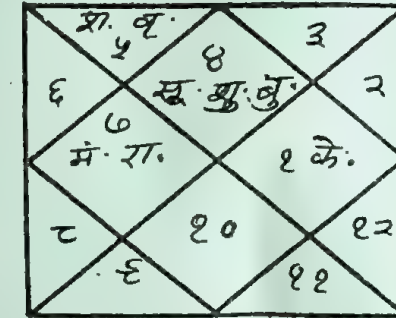
३५५



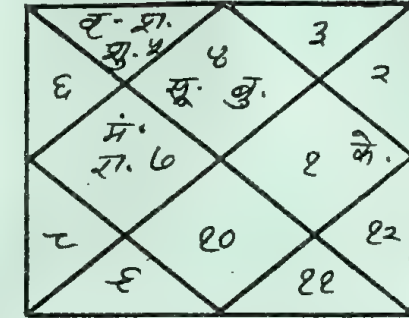
३५६



३५७



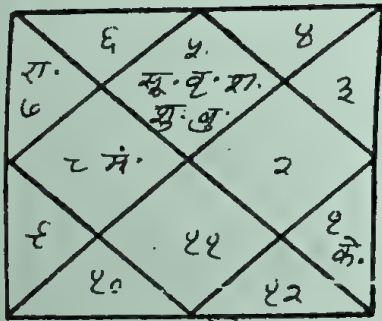
३५८



३५९



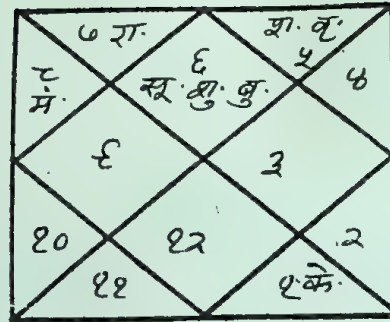
३६०



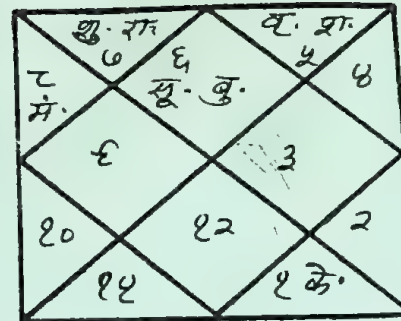
३६१



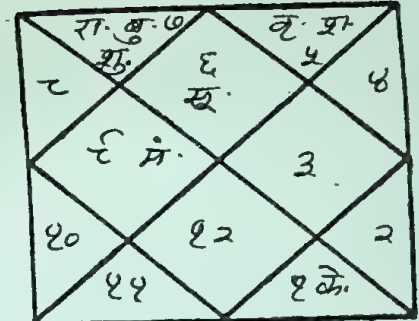
३६२



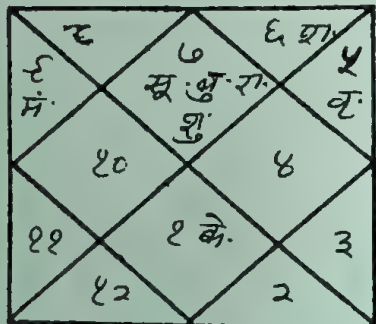
३६३



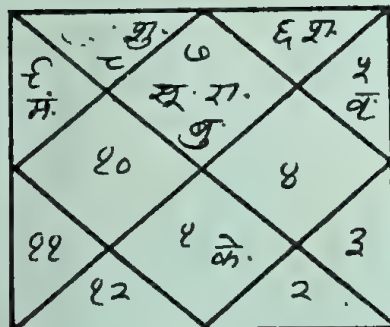
३६४



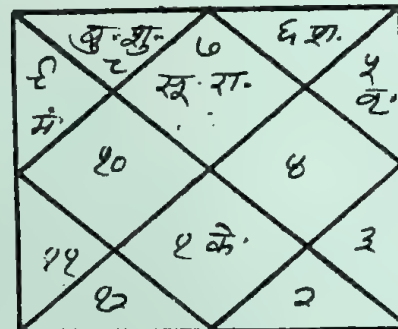
३६५



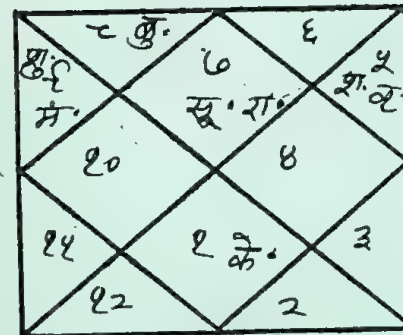
३६६



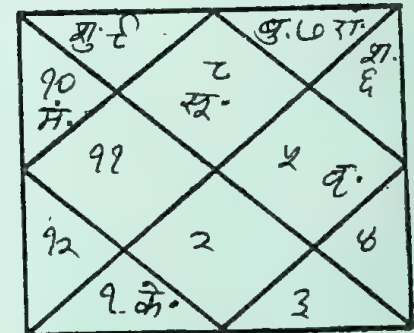
३६७



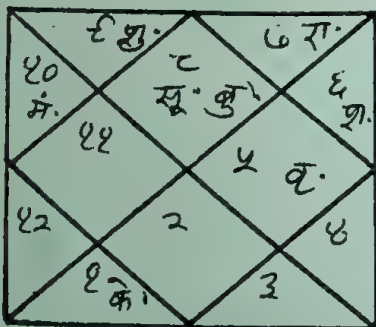
३६८



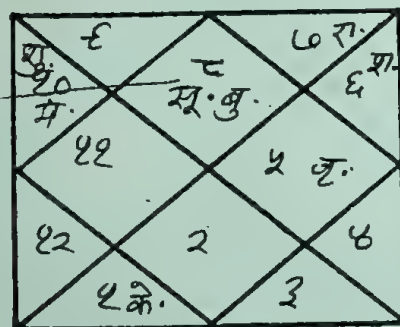
३६९



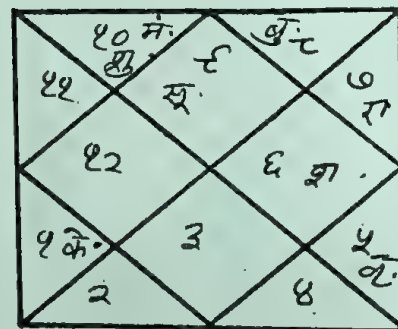
३७०



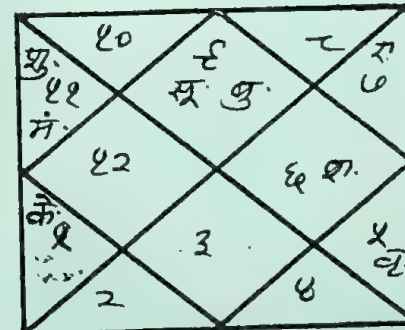
३७१



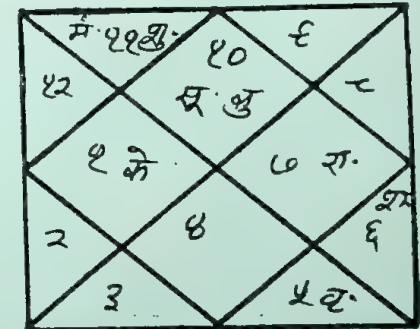
३७२



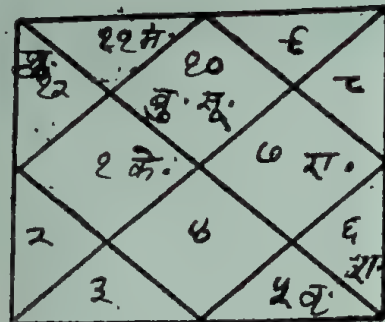
३७३



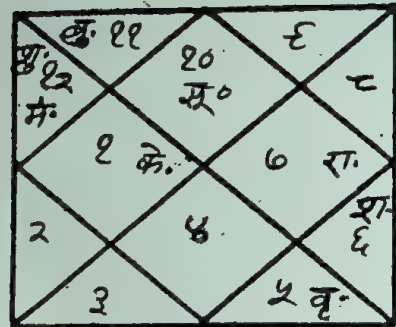
३७४



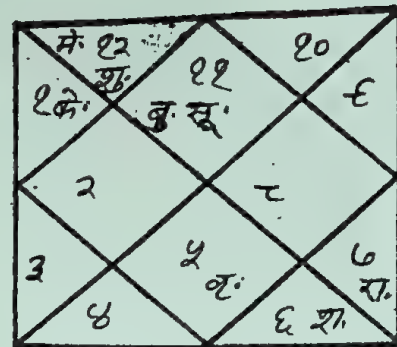
३७५



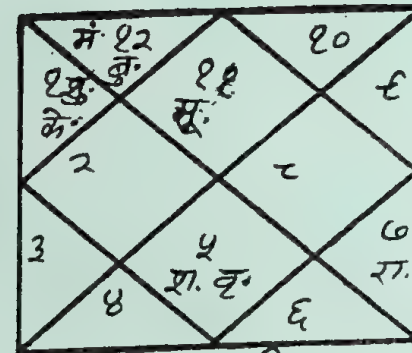
३७६



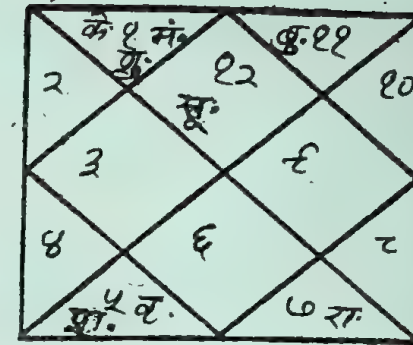
३७७



३७८



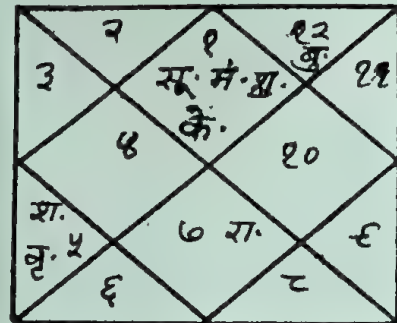
३७९



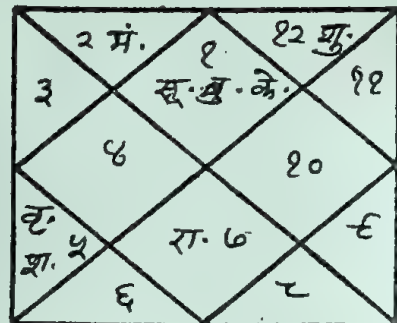
३८०



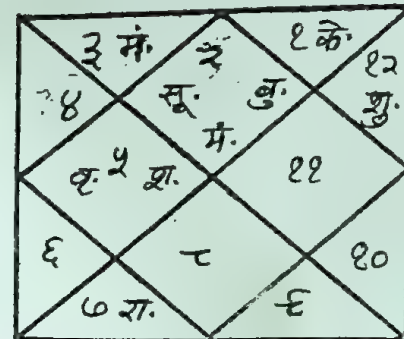
३८१



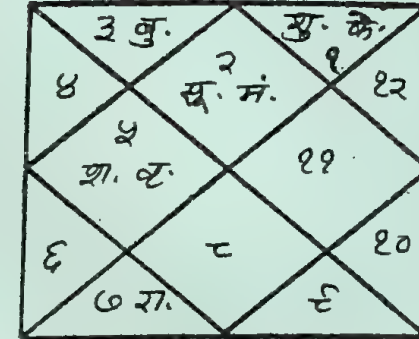
३८२



३८३



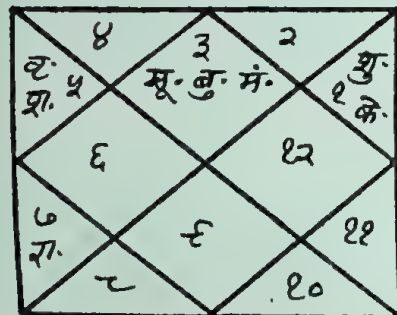
३८४



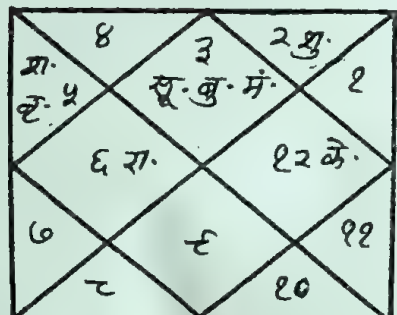
३८५



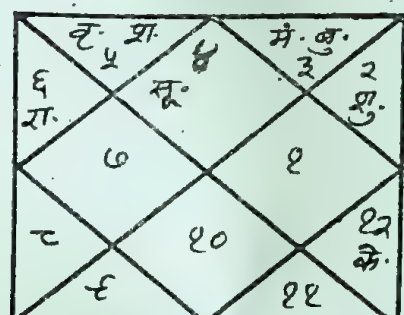
३८६



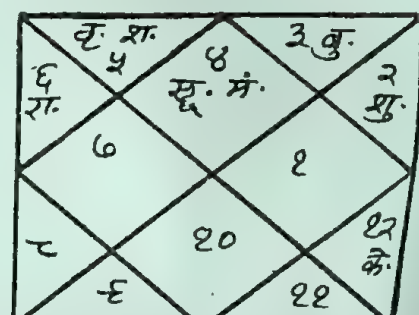
३८७



३८८



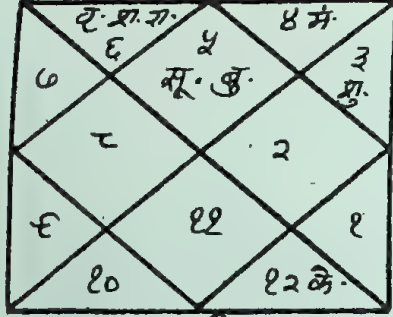
३८९



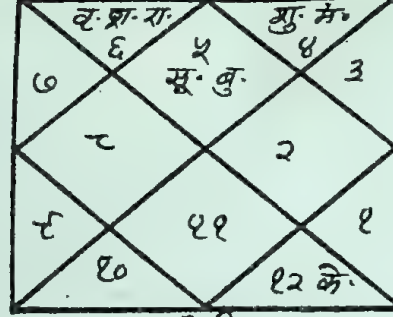
३९०



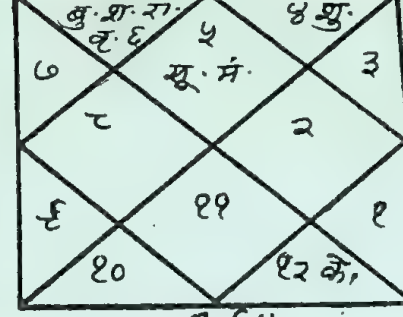
३८१



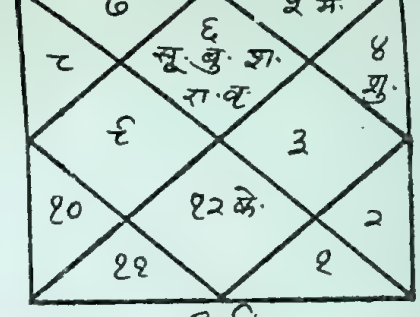
३८२



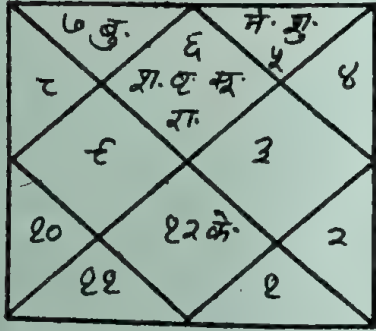
३८३



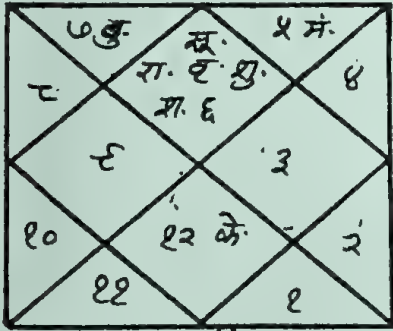
३८४



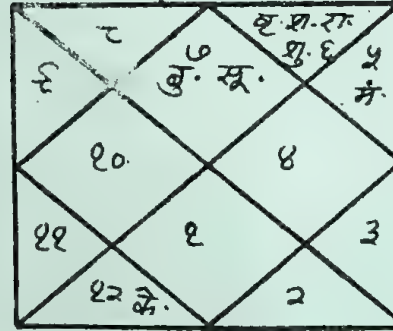
३८५



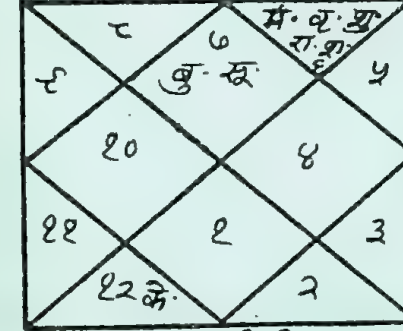
३८६



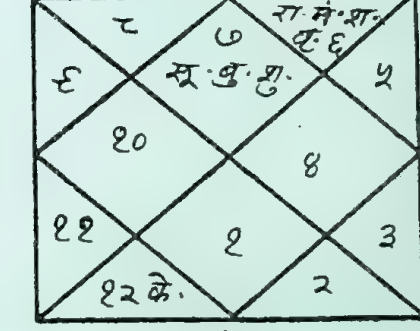
३८७



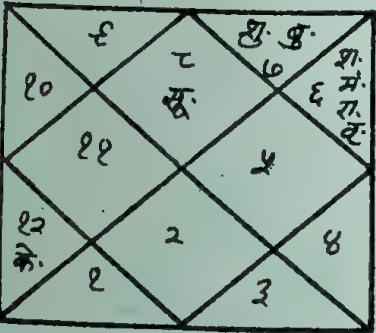
३८८



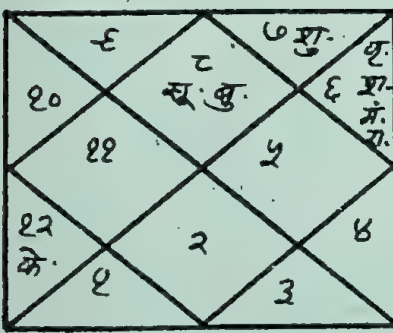
३८९



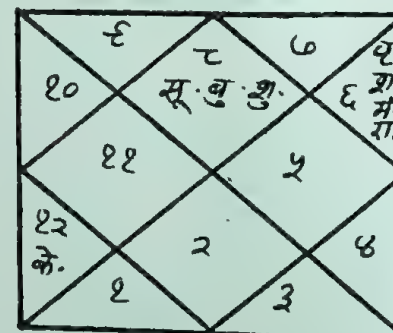
४००



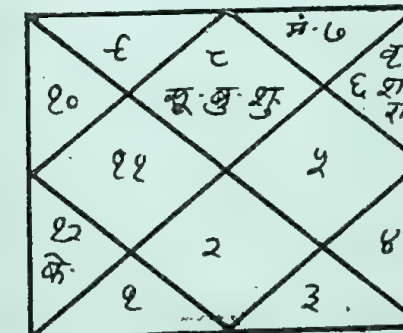
४०१



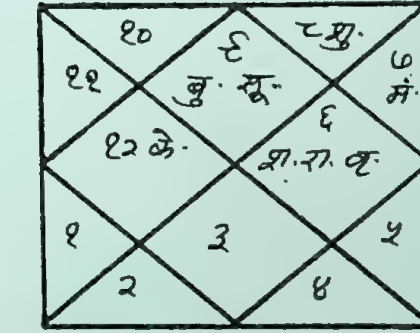
४०२



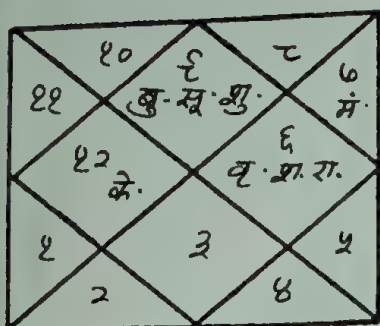
४०३



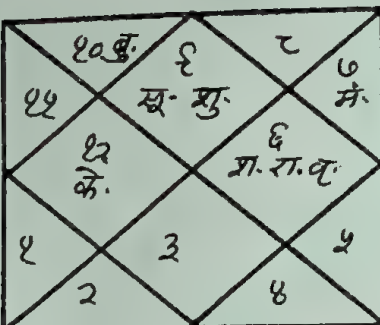
४०४



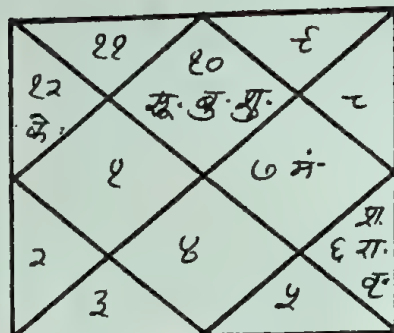
४०५



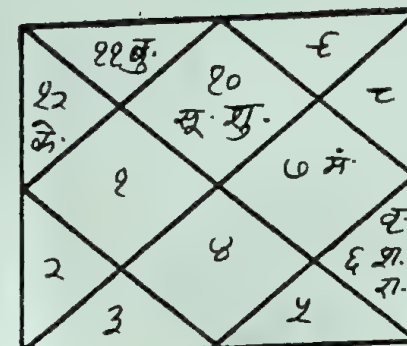
४०६



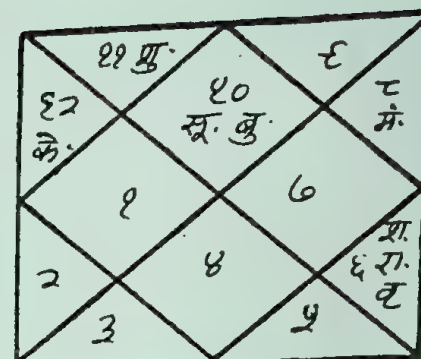
४०७



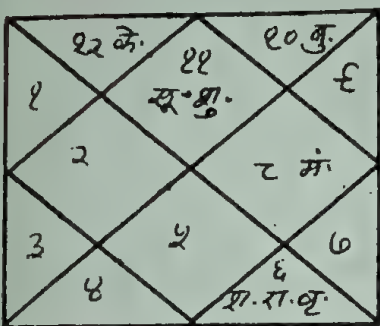
४०८



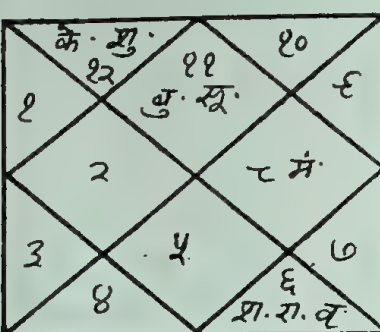
४०९



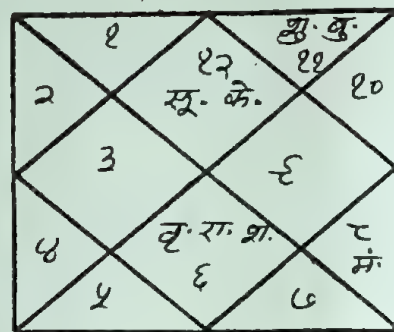
४१०



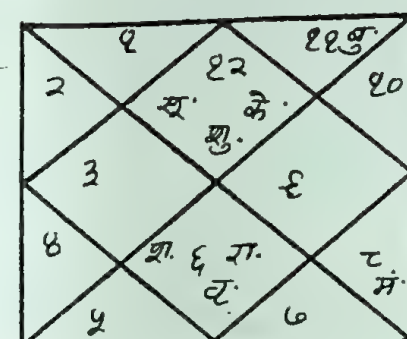
४११



४१२



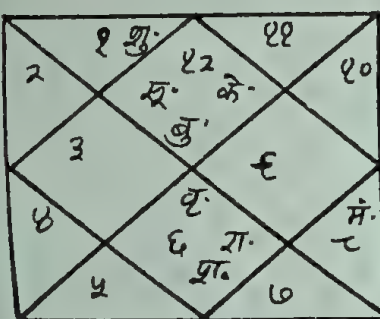
४१३



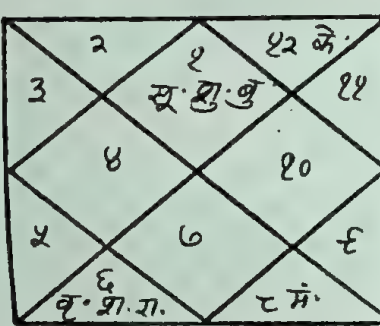
४१४



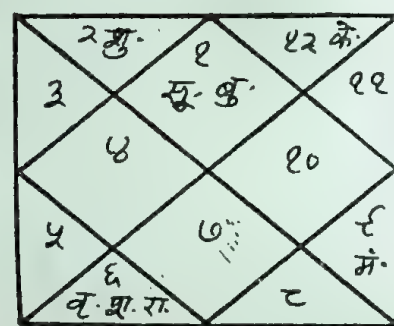
४१५



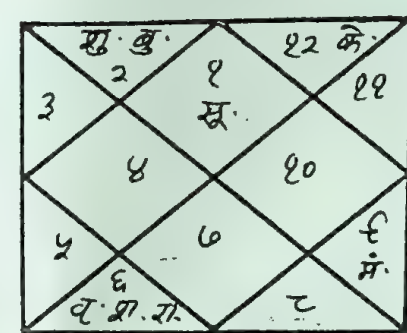
४१६



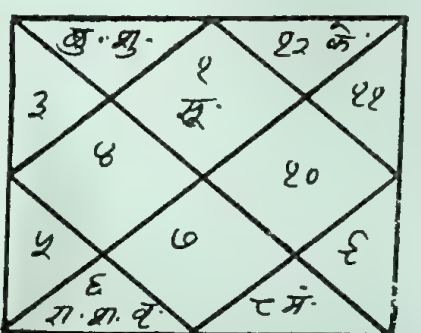
४१७



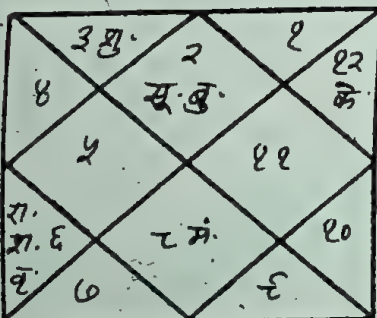
४१८



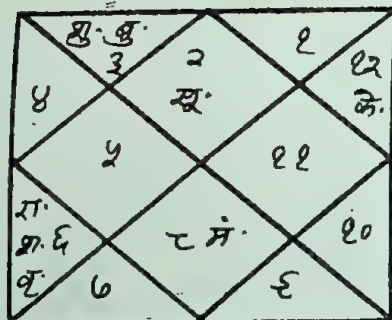
४१९



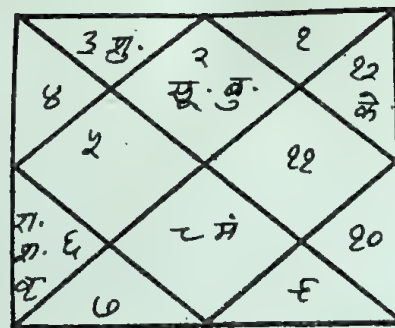
४२०



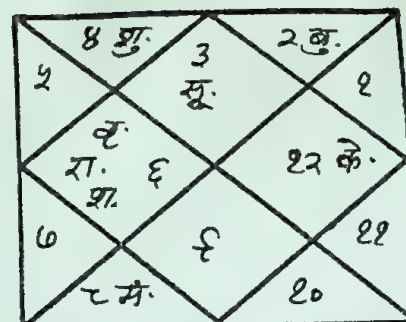
४२१



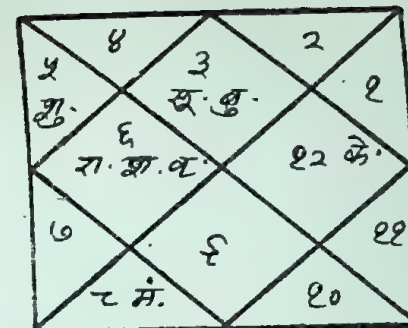
४२२



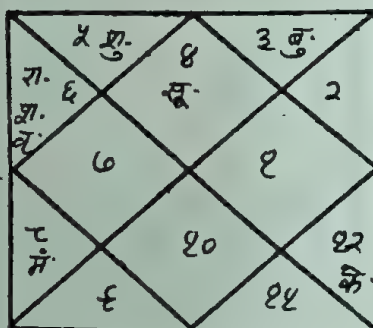
४२३



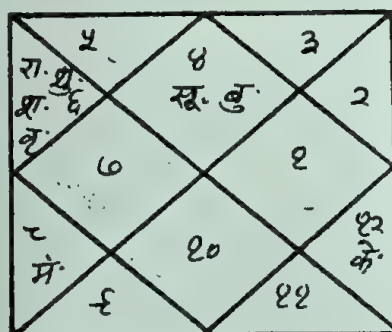
४२४



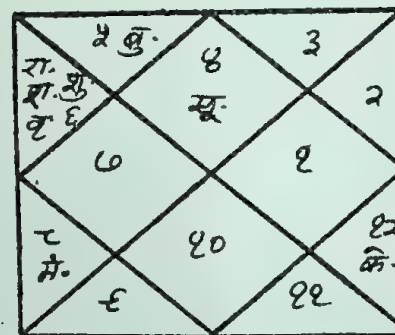
४२५



४२६



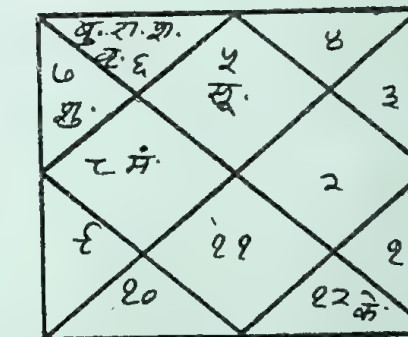
४२७



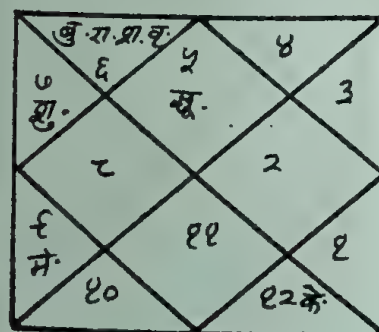
४२८



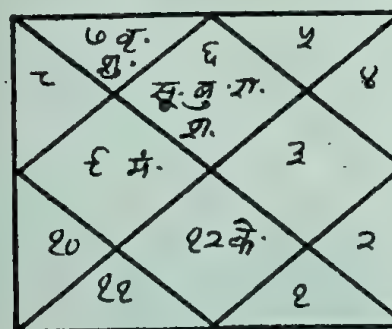
४२९



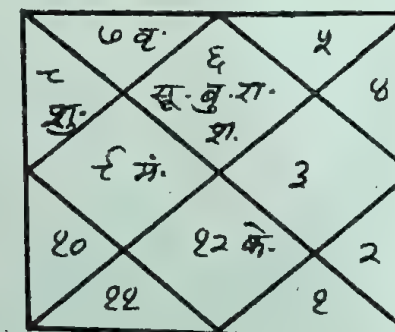
४३०



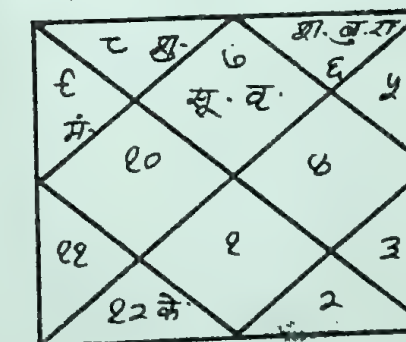
४३१



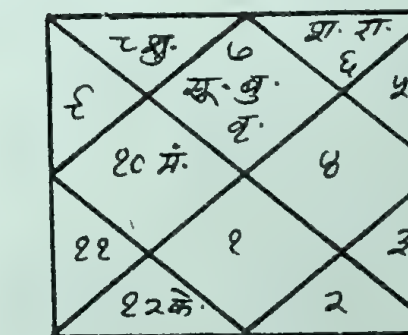
४३२



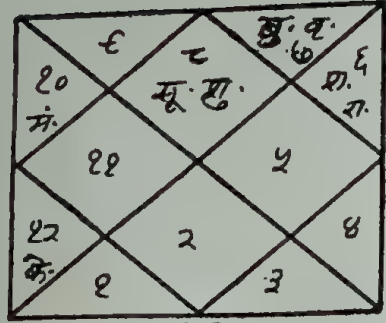
४३३



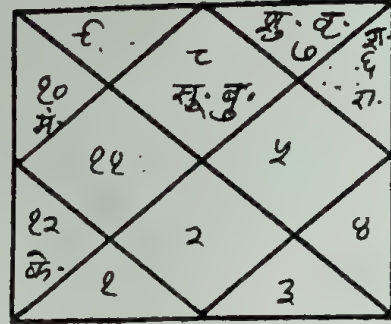
४३४



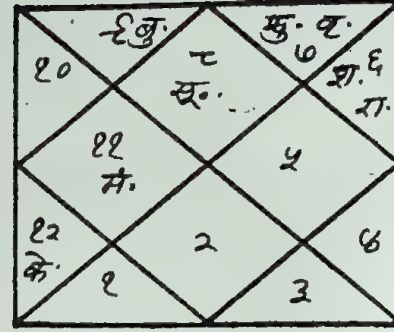
४३५



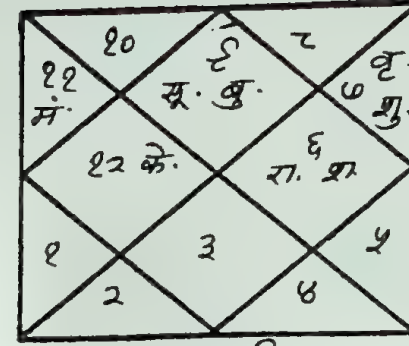
४३६



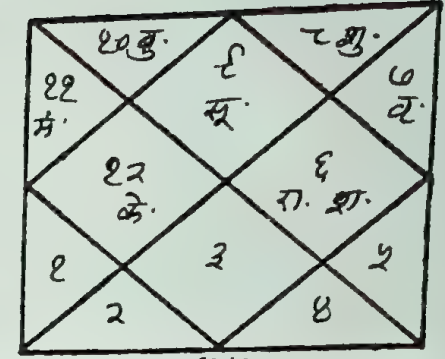
४३७



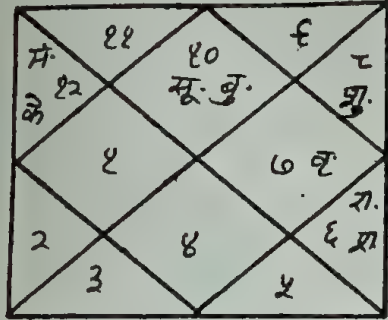
४३८



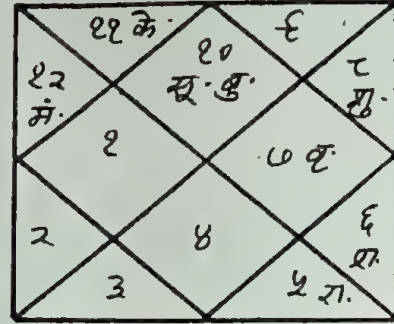
४३९



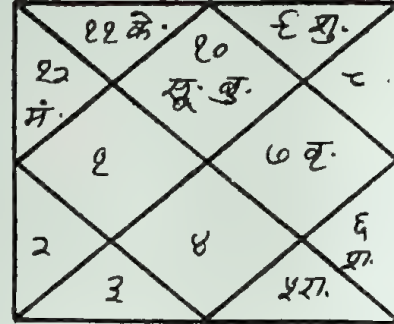
४४०



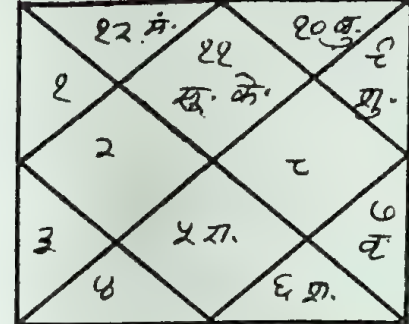
४४१



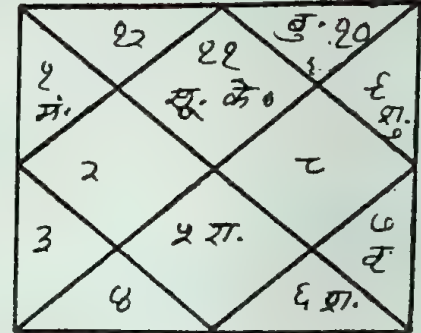
४४२



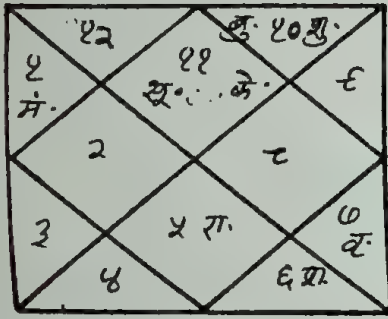
४४३



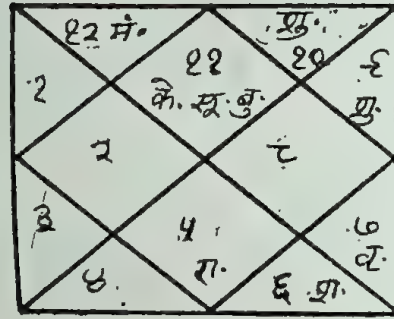
४४४



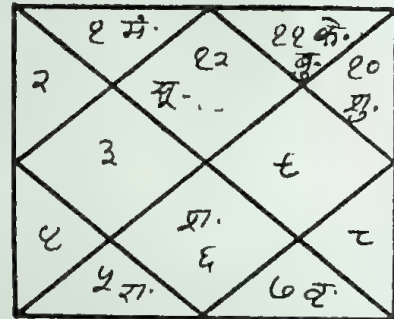
४४५



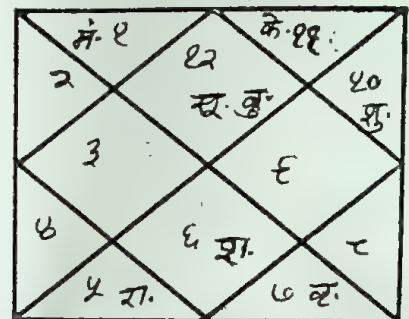
४४६



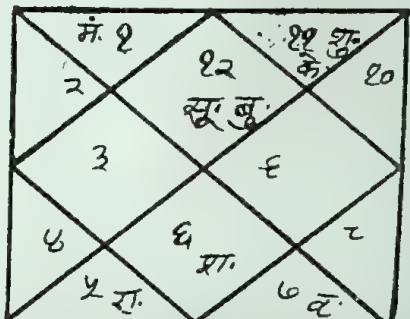
४४७



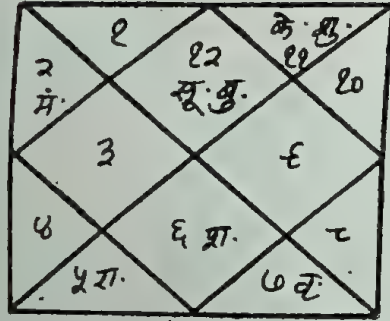
४४८



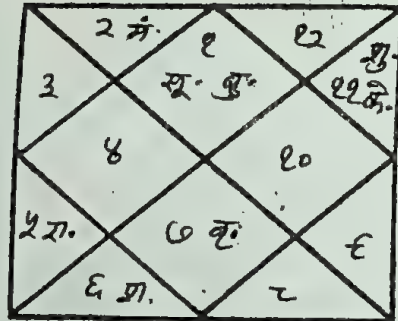
४४९



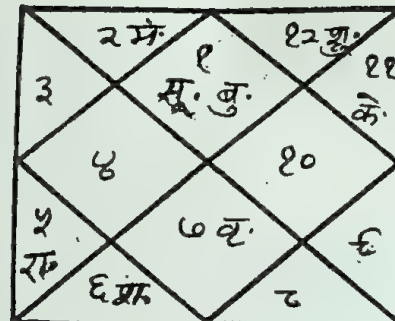
४५०



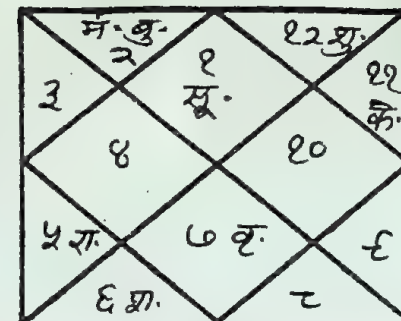
४५१



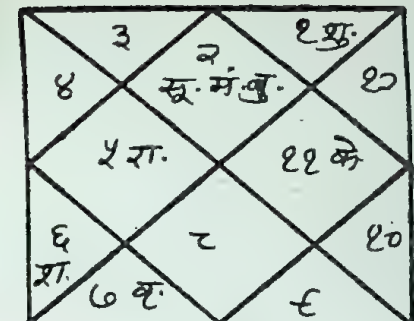
४५२



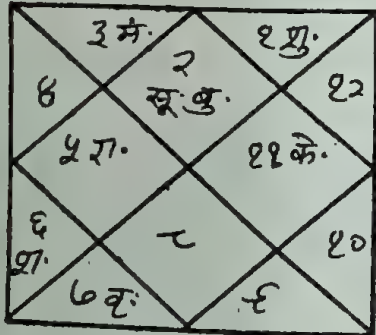
४५३



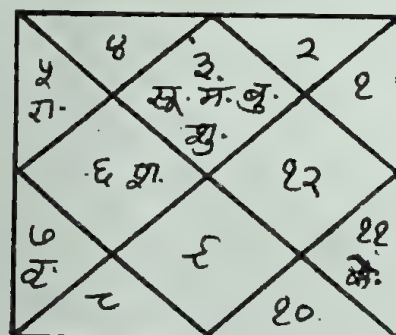
४५४



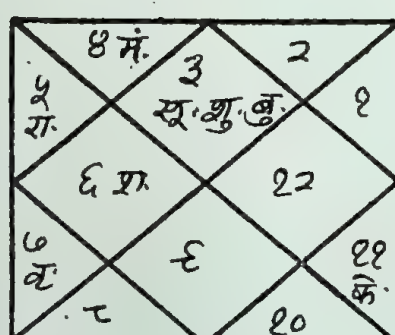
४५५



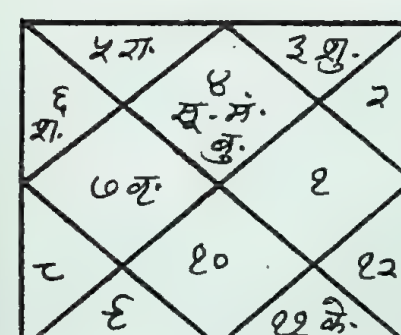
४५६



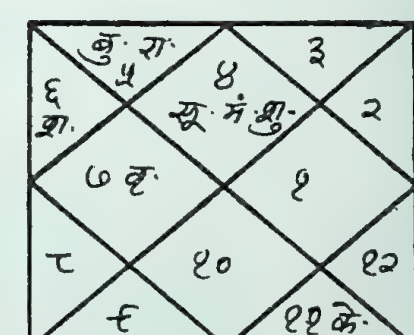
४५७



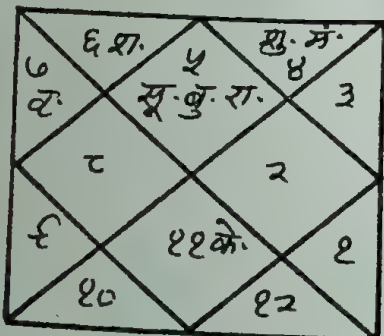
४५८



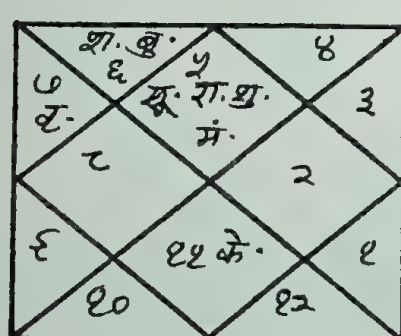
४५९



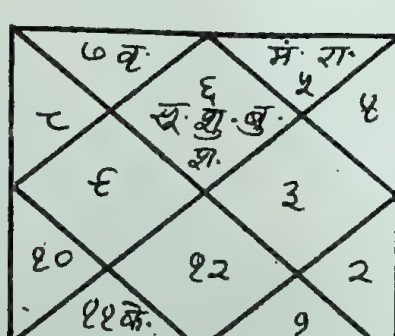
४६०



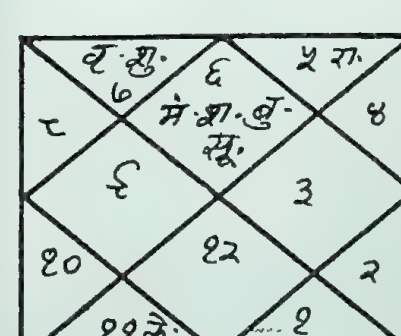
४६१



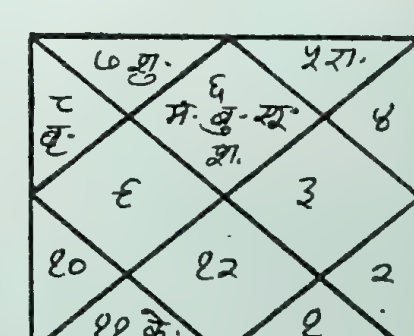
४६२



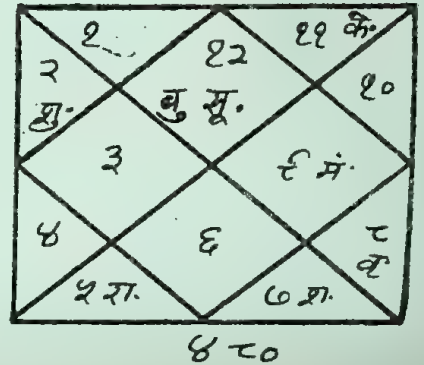
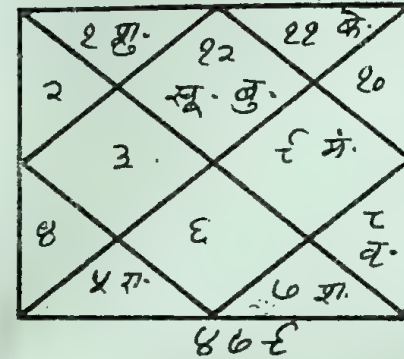
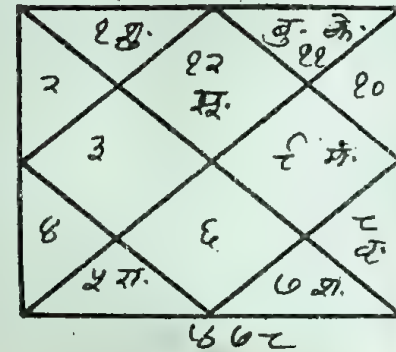
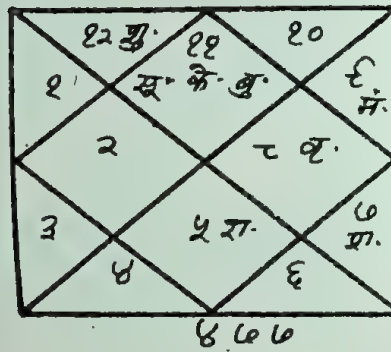
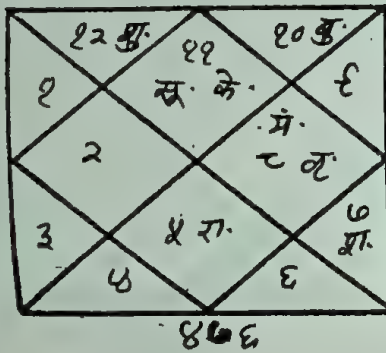
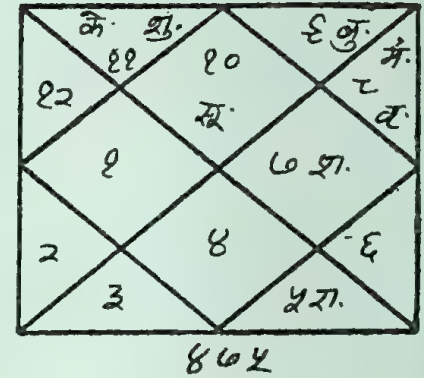
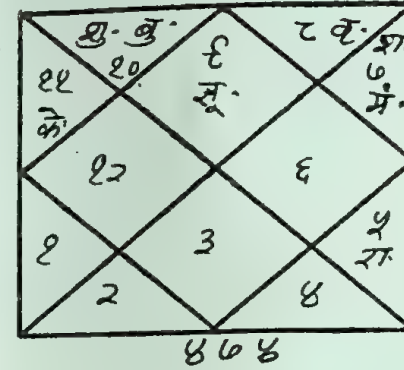
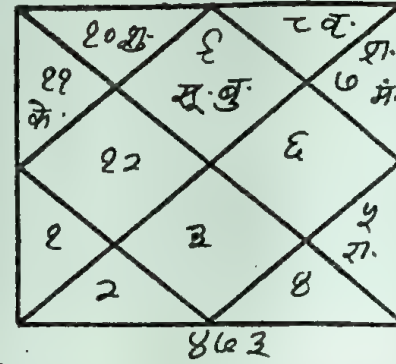
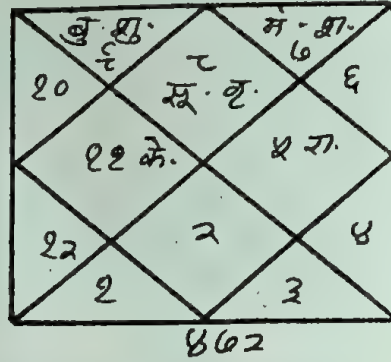
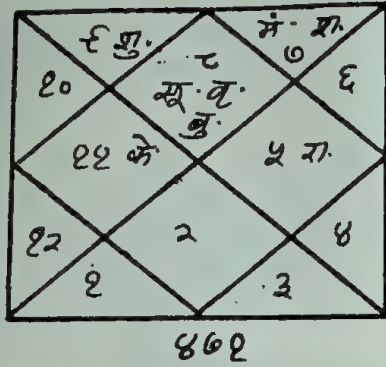
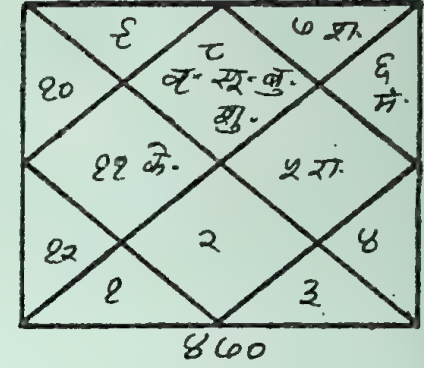
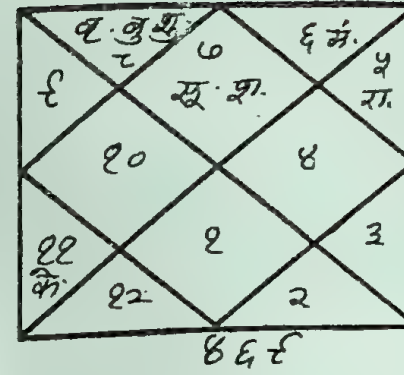
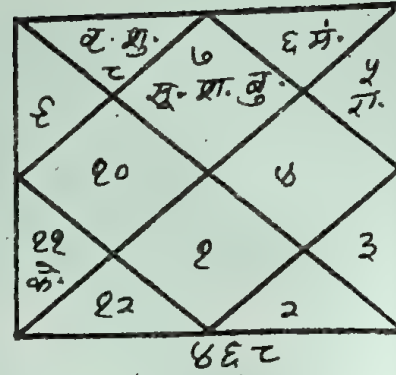
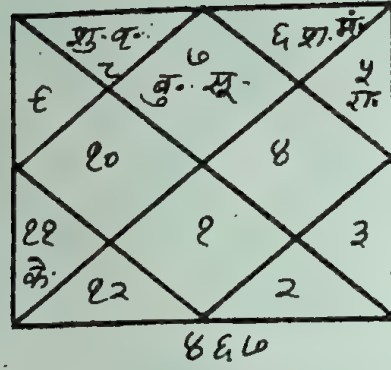
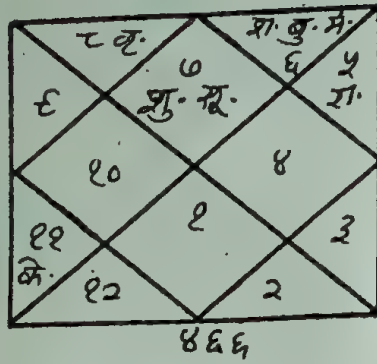
४६३

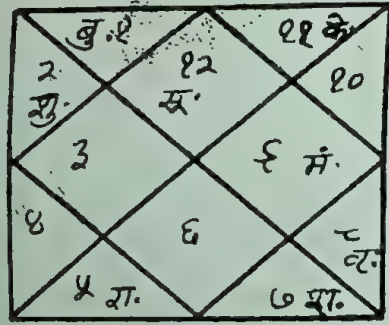


४६४

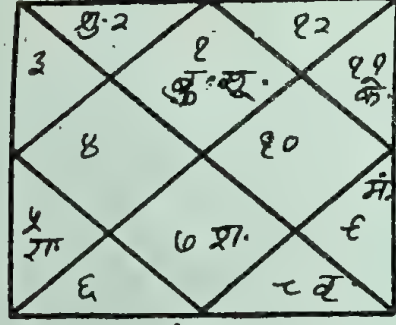


४६५

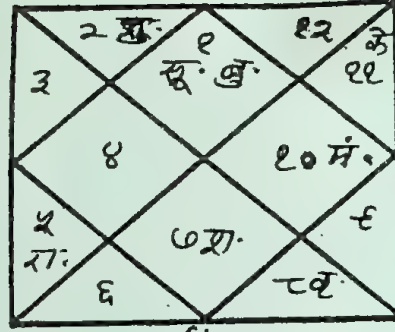




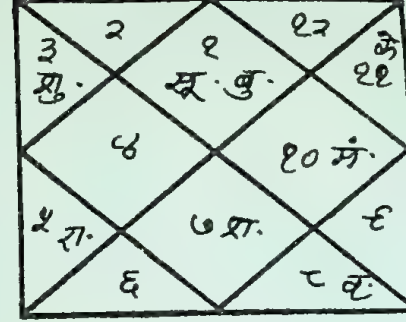
४२१



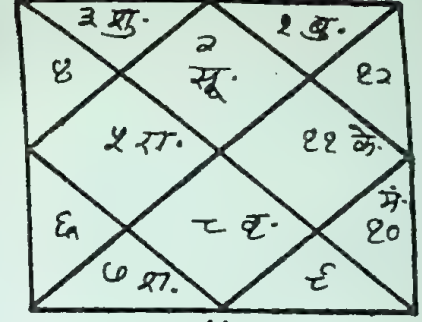
४२२



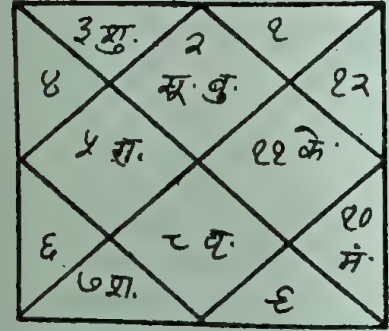
४२३



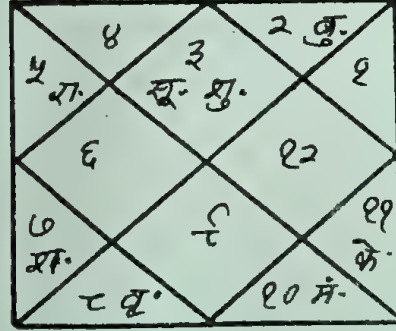
४२४



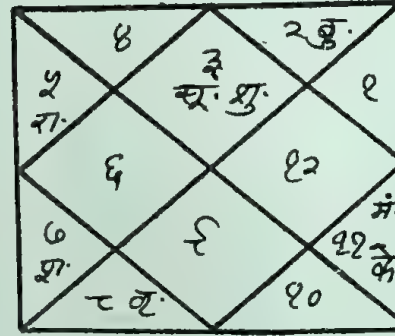
४२५



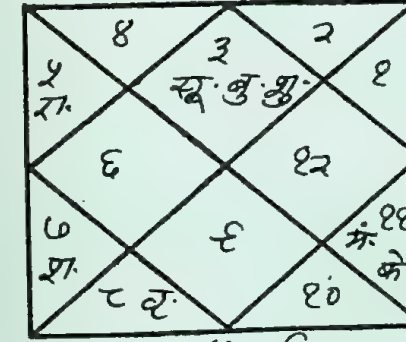
४२६



४२७



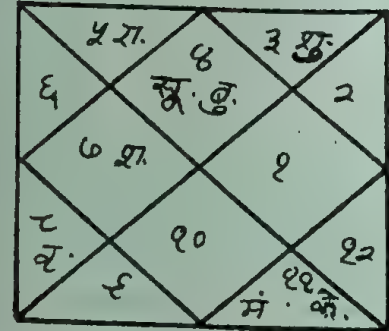
४२८



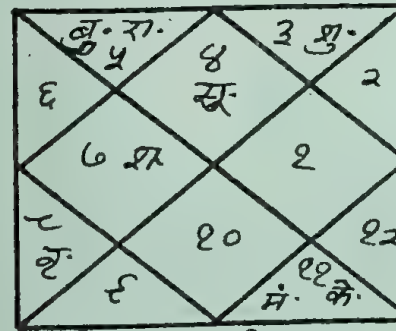
४२९



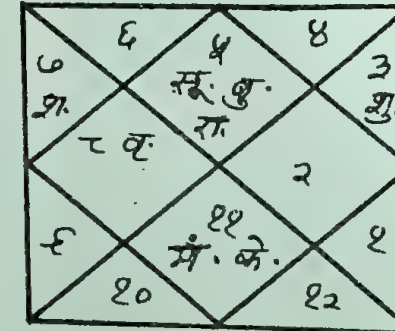
४३०



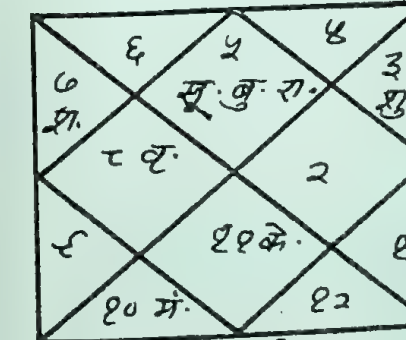
४३१



४३२



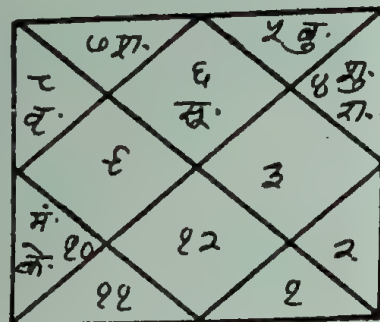
४३३



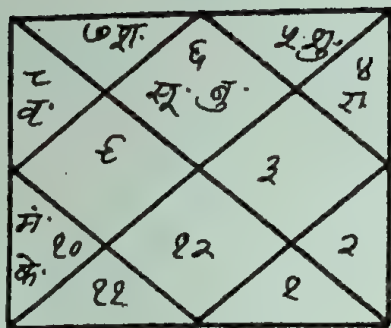
४३४



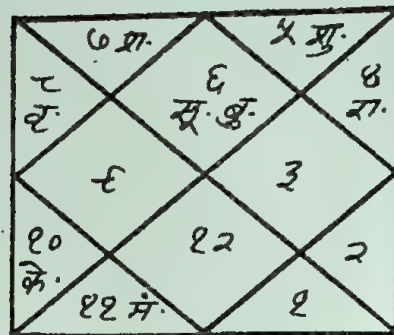
४३५



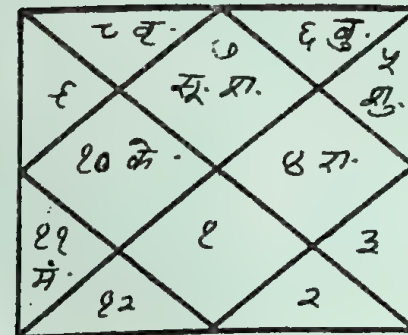
328



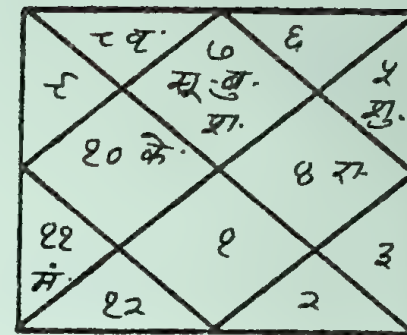
856



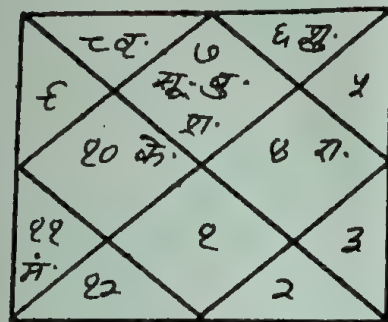
2328



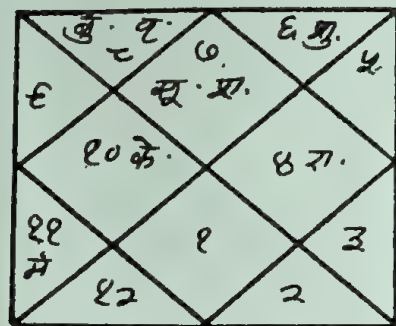
858



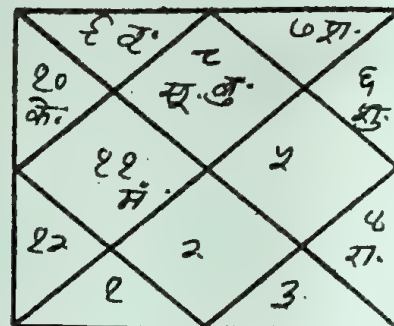
200



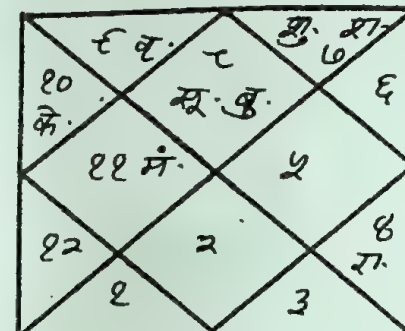
202



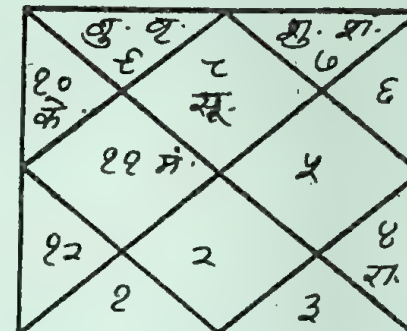
202



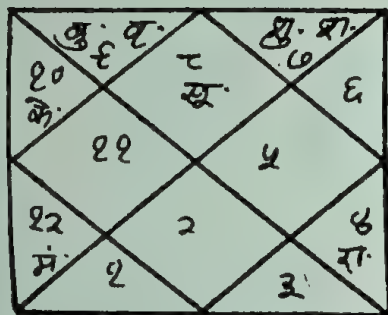
403



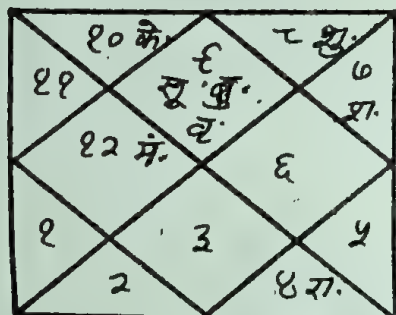
208



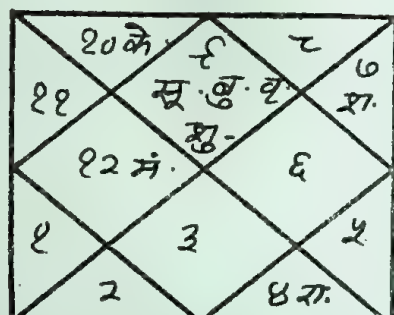
204



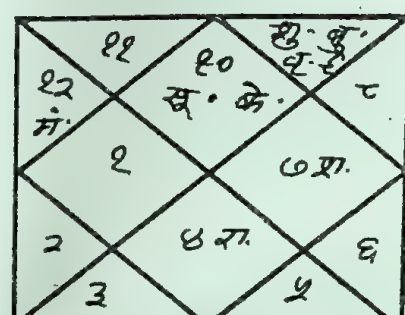
305



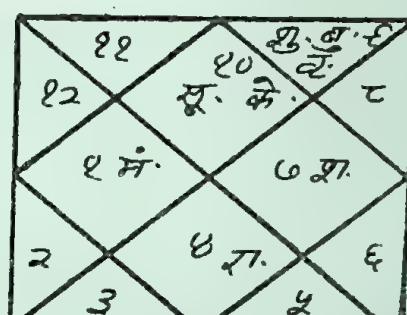
206



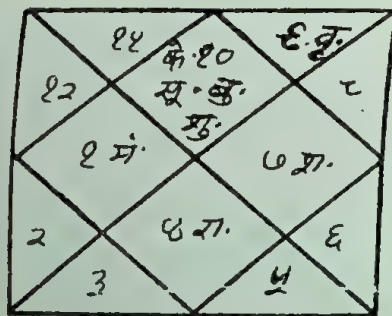
202



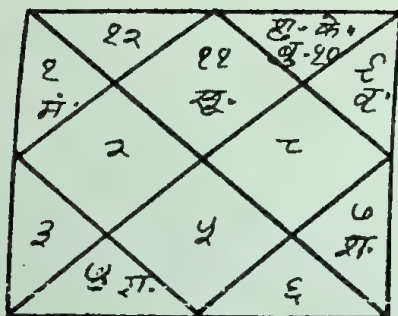
505



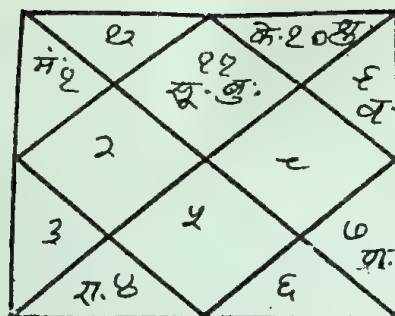
480



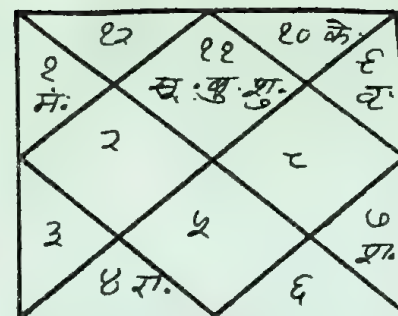
५११



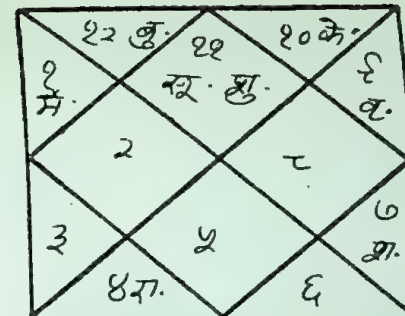
५१२



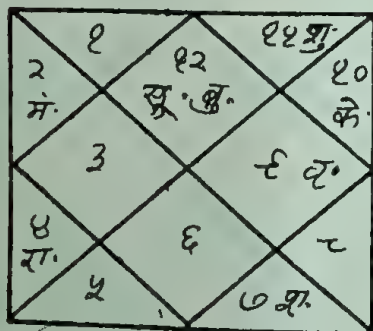
५१३



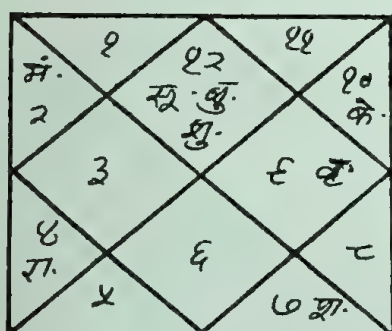
५१४



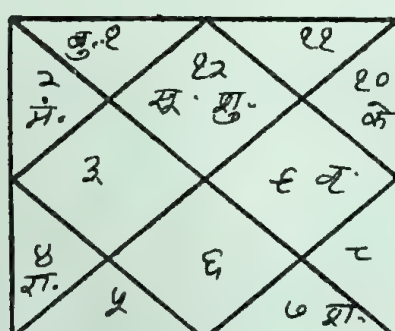
५१५



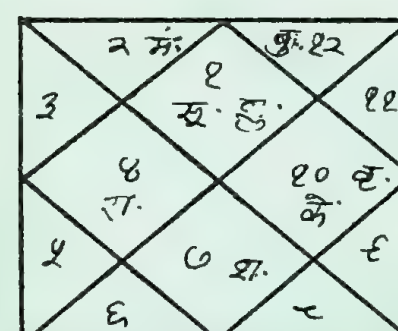
५१६



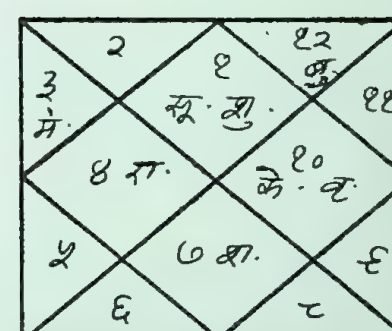
५१७



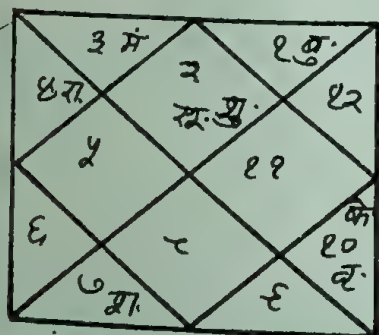
५१८



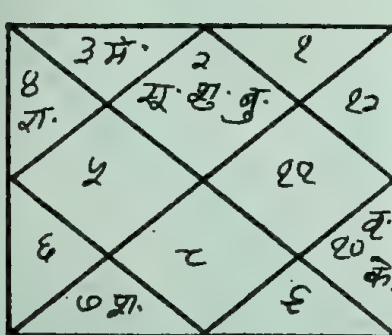
५१९



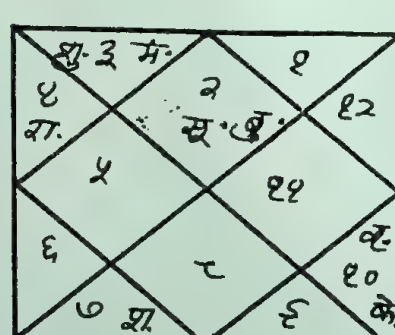
५२०



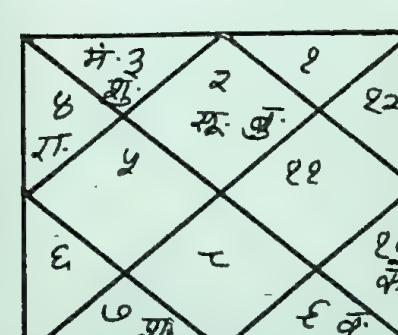
५२१



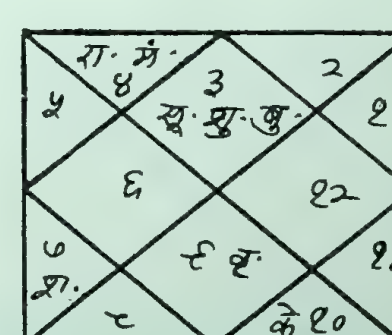
५२२



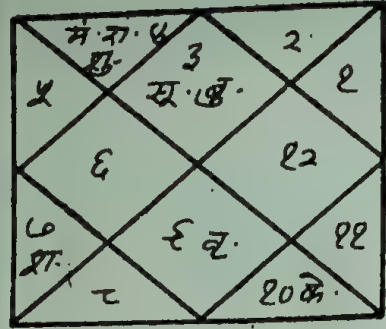
५२३



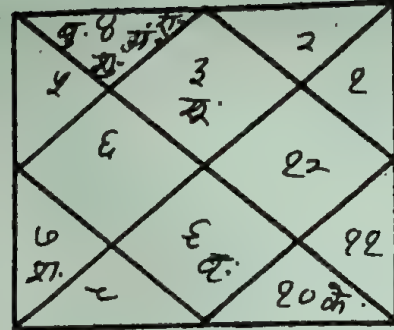
५२४



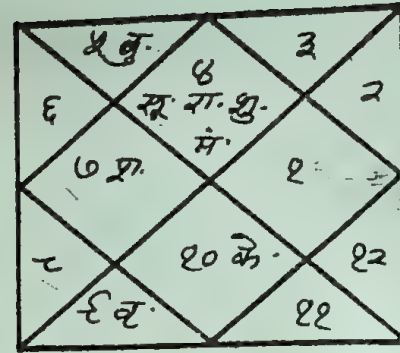
५२५



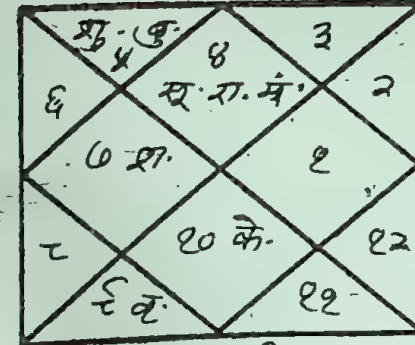
५२६



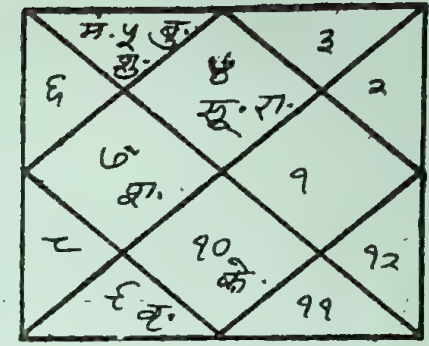
५२७



५२८



५२९



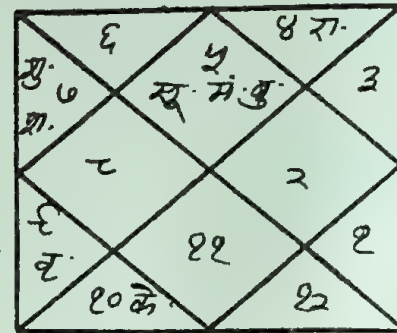
५३०



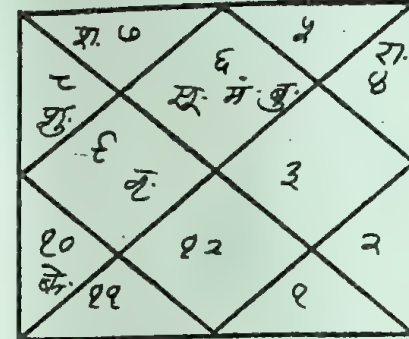
५३१



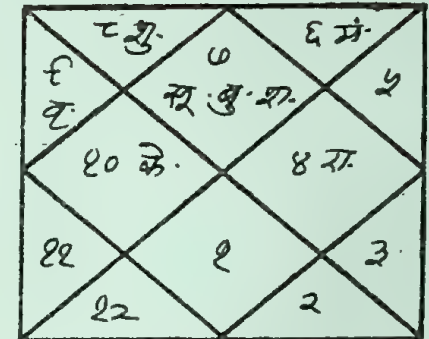
५३२



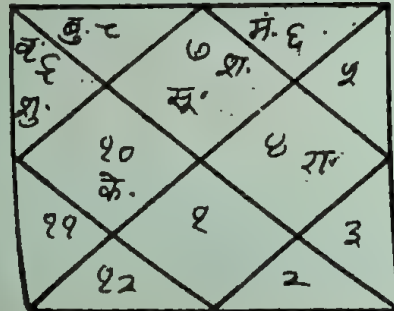
५३३



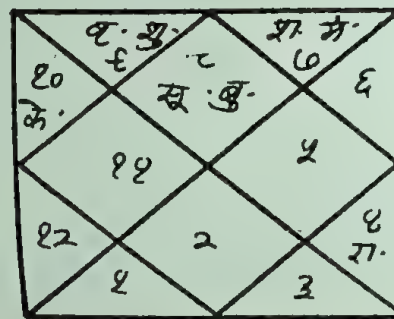
५३४



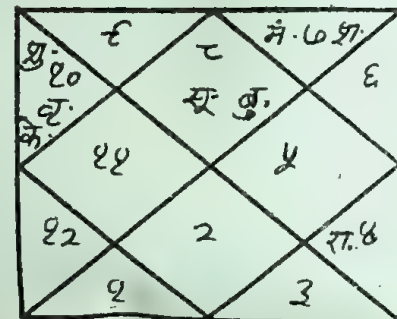
५३५



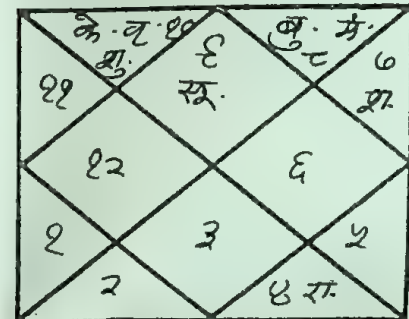
५३६



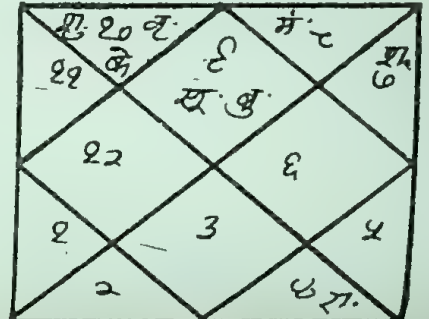
५३७



५३८



५३९



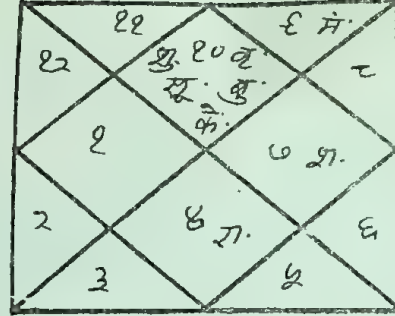
५४०



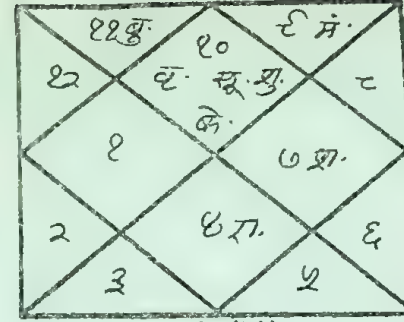
૫૪૨



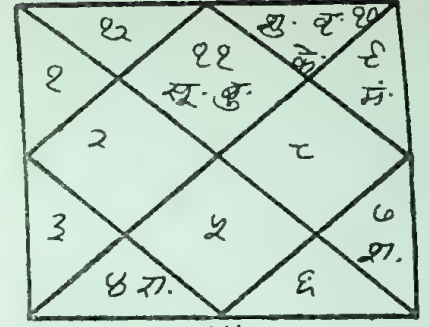
૫૪૨



૫૪૩



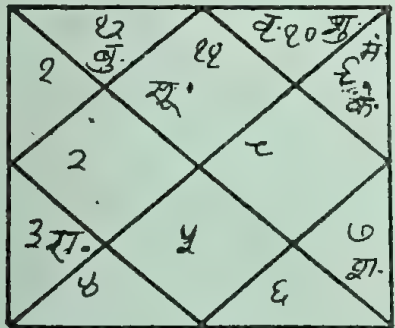
૫૪૪



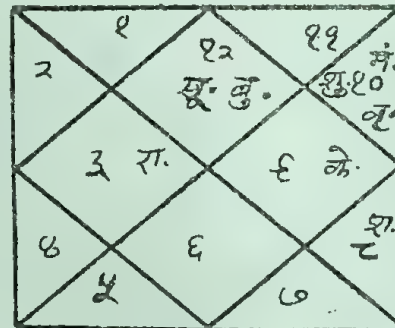
૫૪૫



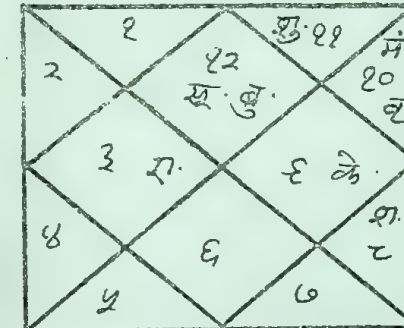
૫૪૬



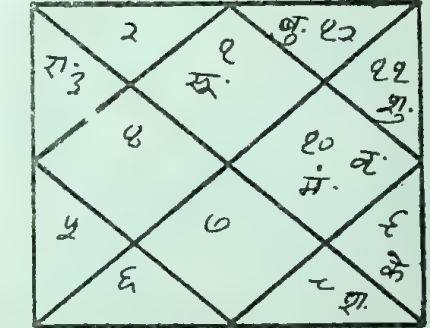
૫૪૭



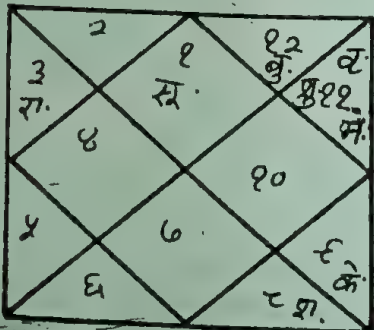
૫૪૮



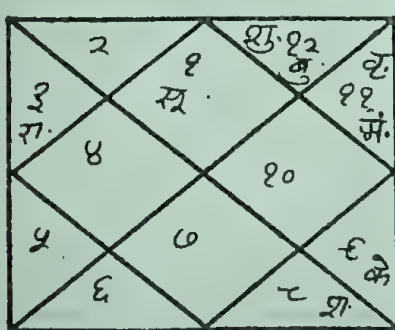
૫૪૯



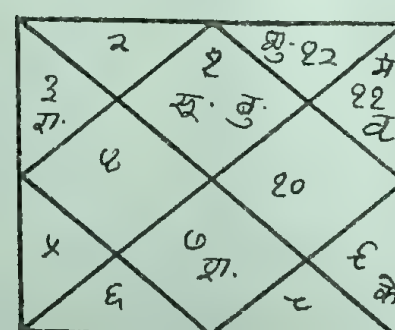
૫૫૦



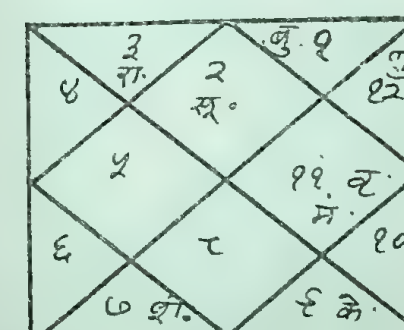
૫૫૧



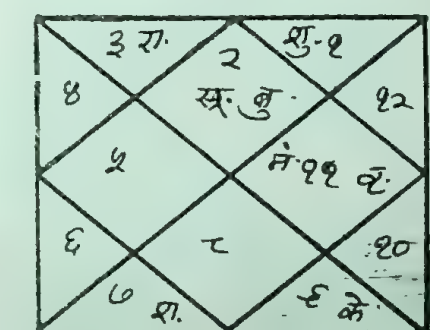
૫૫૨



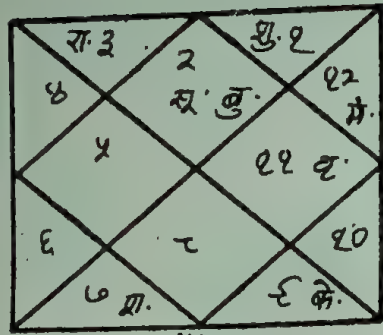
૫૫૩



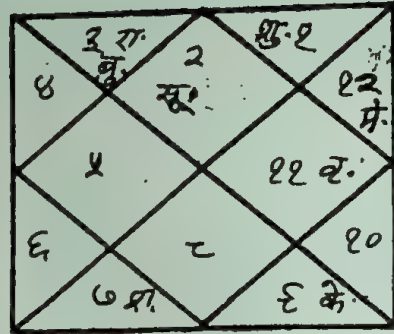
૫૫૪



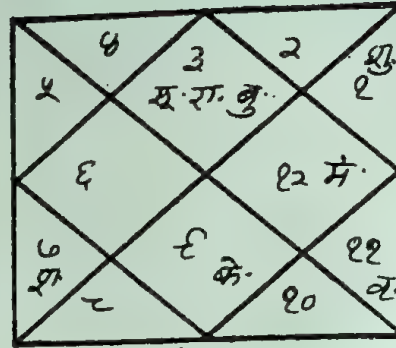
૫૫૫



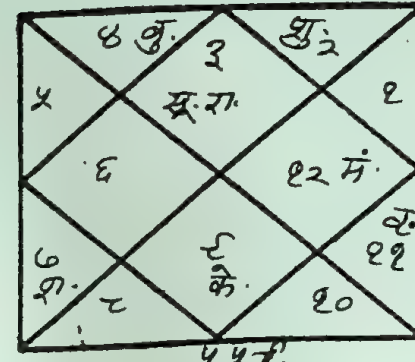
५५६



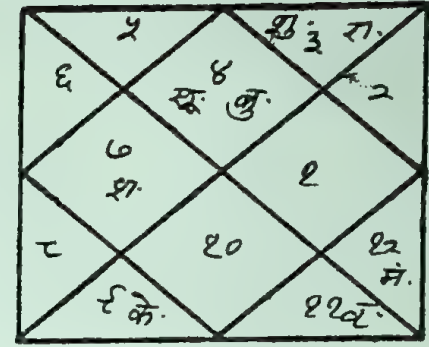
५५७



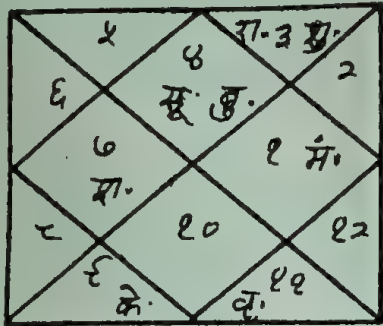
५५८



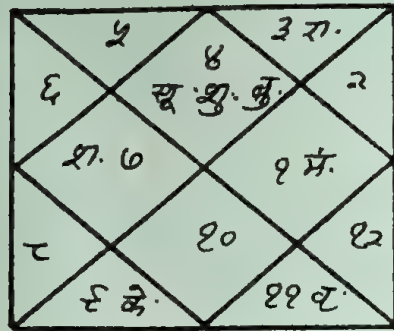
५५९



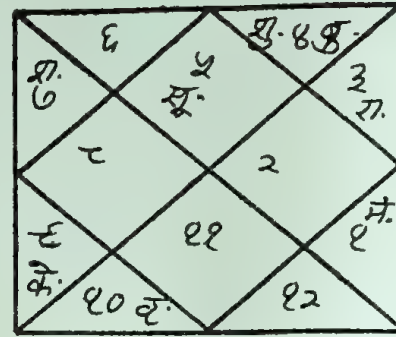
५६०



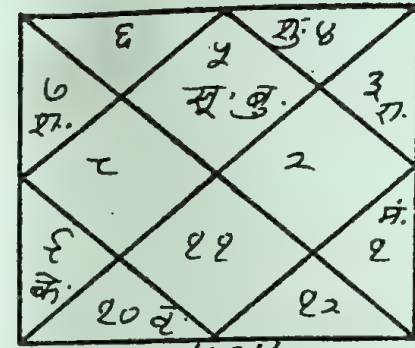
५६१



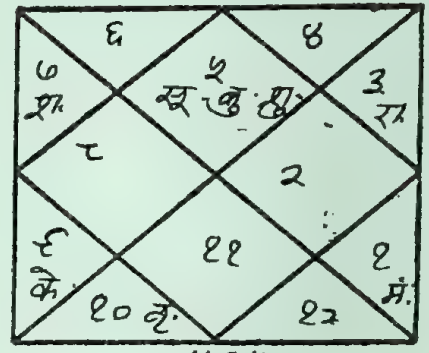
५६२



५६३



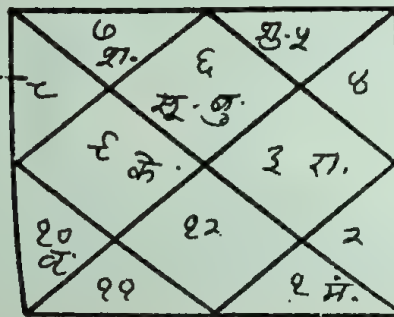
५६४



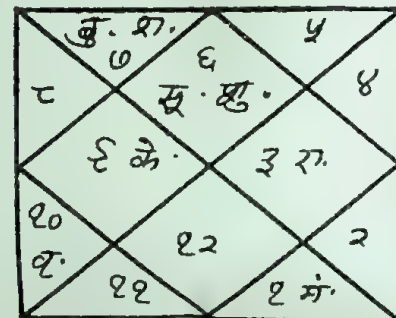
५६५



५६६



५६७



५६८



५६९



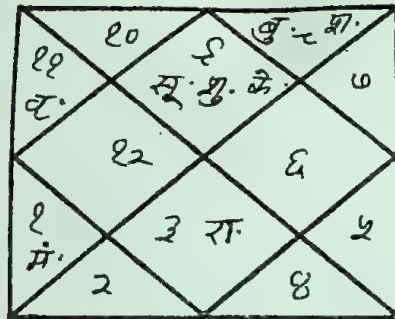
५७०



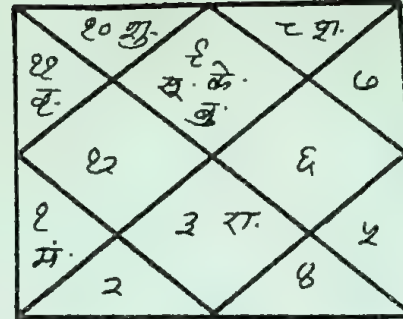
૫૦૧



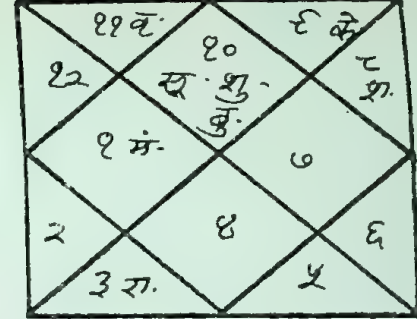
૫૦૨



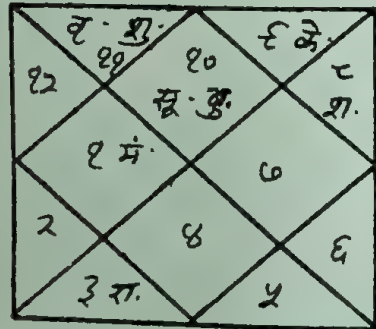
૫૦૩



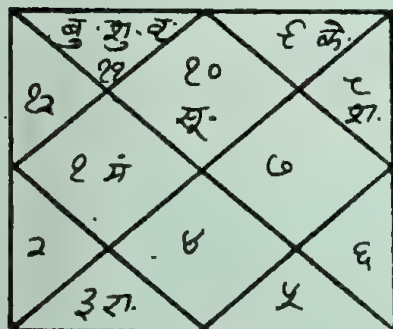
૫૦૪



૫૦૫



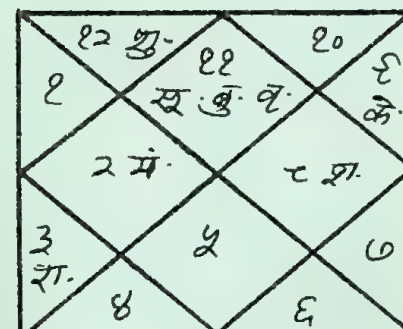
૫૦૬



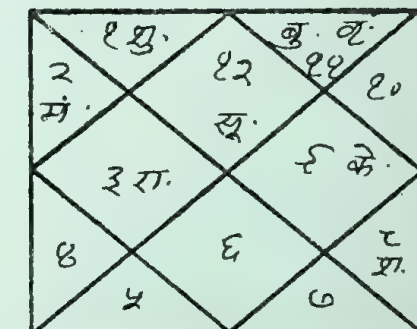
૫૦૭



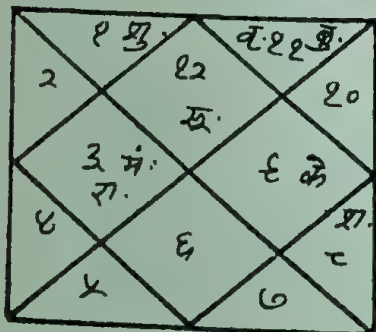
૫૦૮



૫૦૯



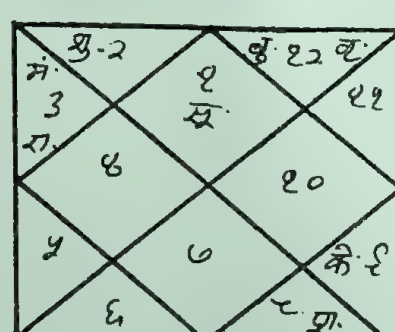
૫૧૦



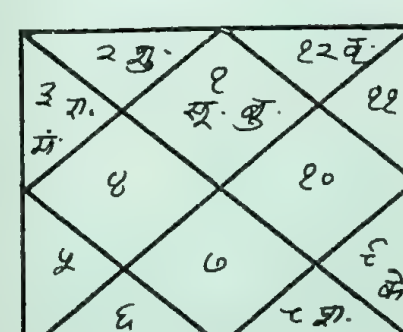
૫૧૧



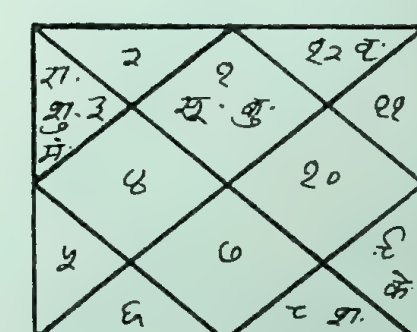
૫૧૨



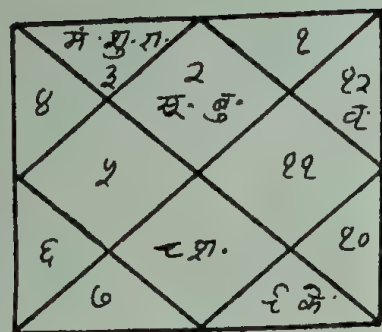
૫૧૩



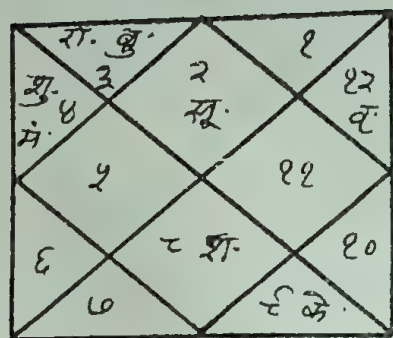
૫૧૪



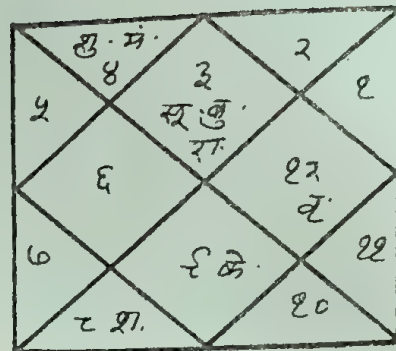
૫૧૫



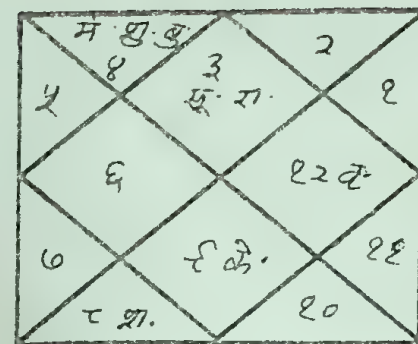
५८६



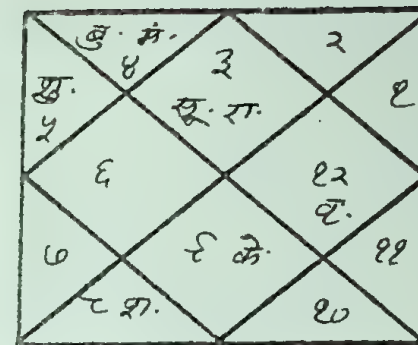
५८७



५८८



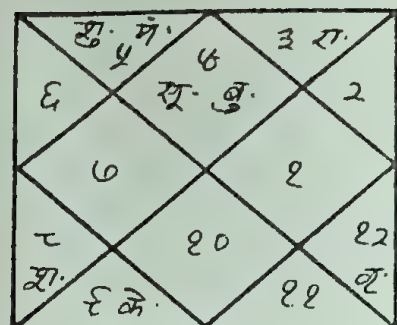
५८९



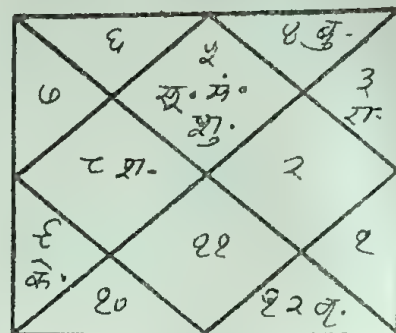
५९०



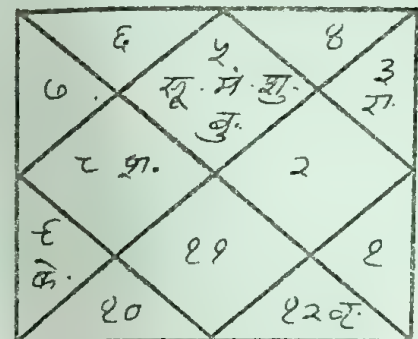
५९१



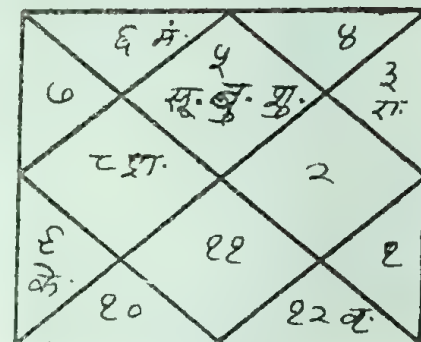
५९२



५९३



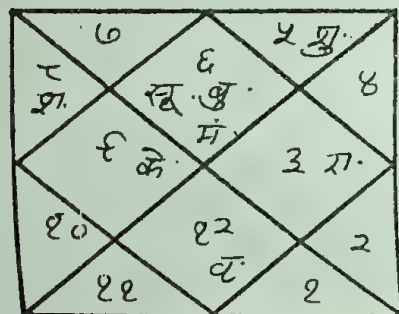
५९४



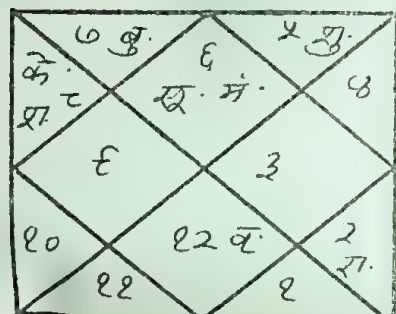
५९५



५९६



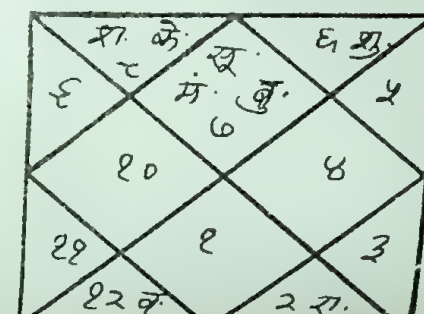
५९७



५९८



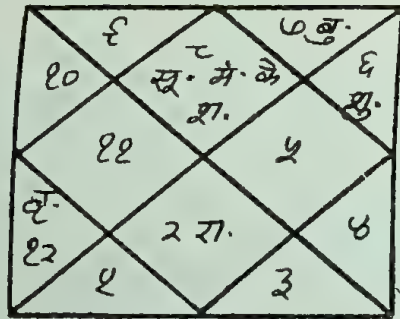
५९९



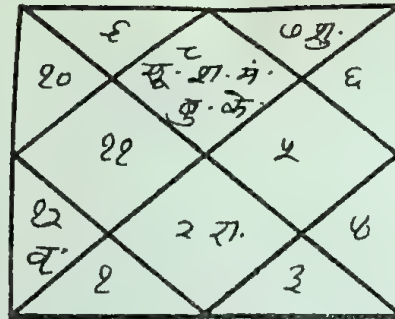
६००



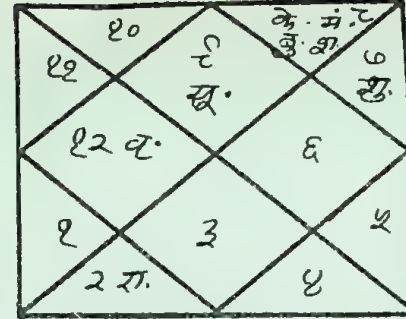
६०१



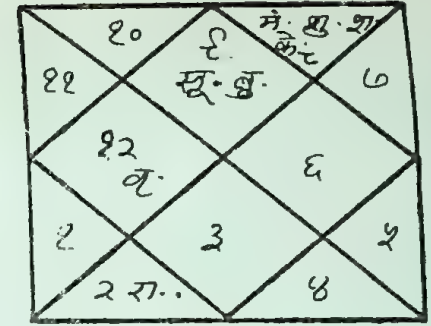
६०२



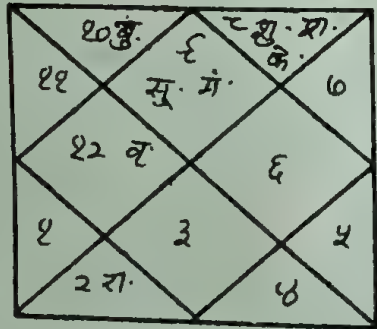
६०३



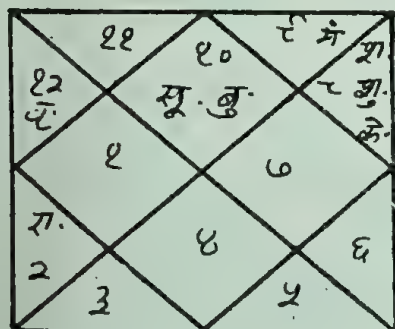
६०४



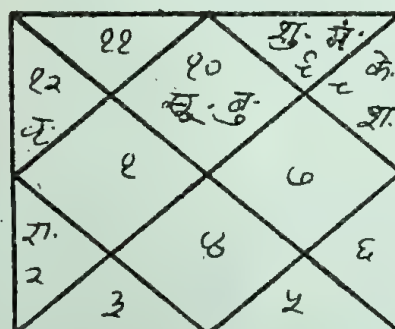
६०५



६०६



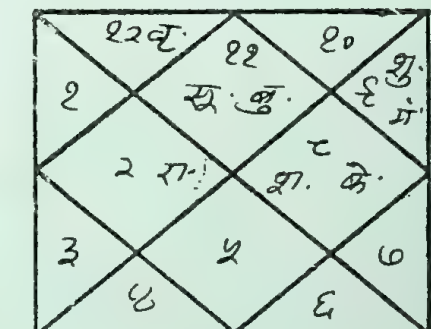
६०७



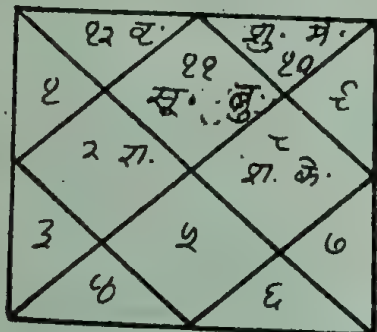
६०८



६०९



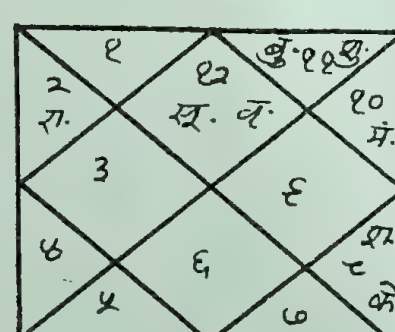
६१०



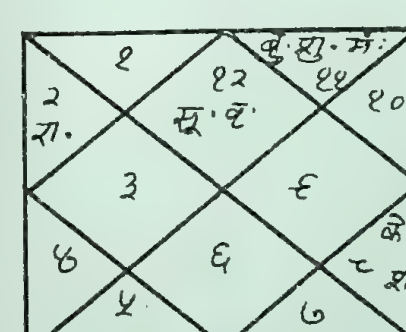
६११



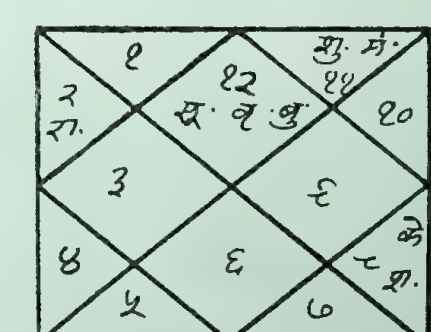
६१२



६१३



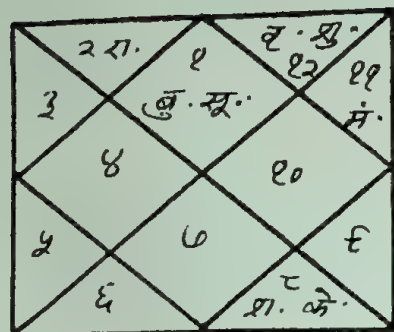
६१४



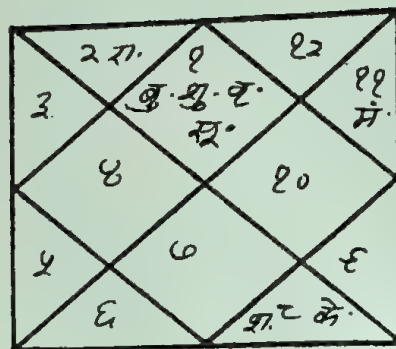
६१५



६१६



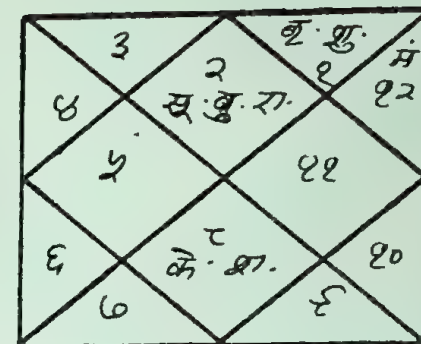
६१७



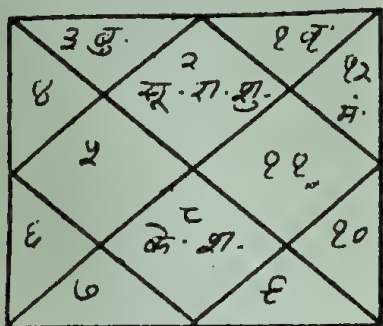
६१८



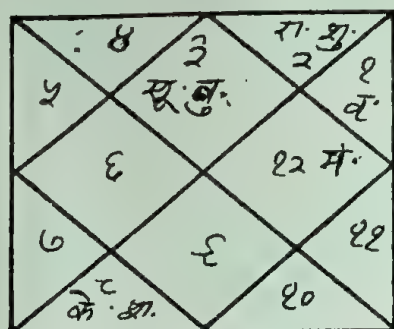
६१९



६२०



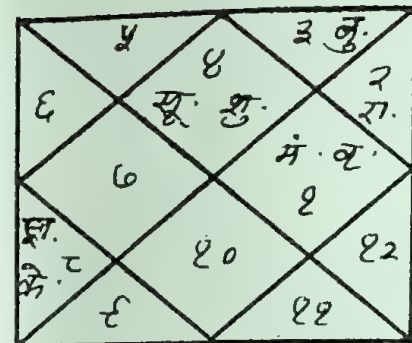
६२१



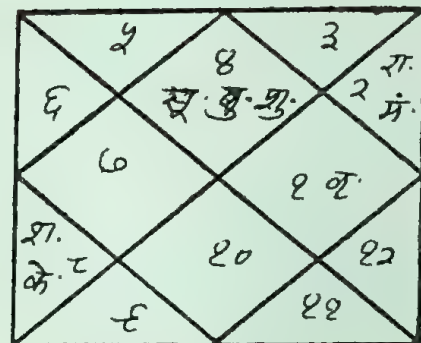
६२२



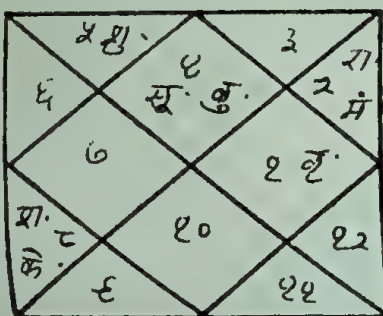
६२३



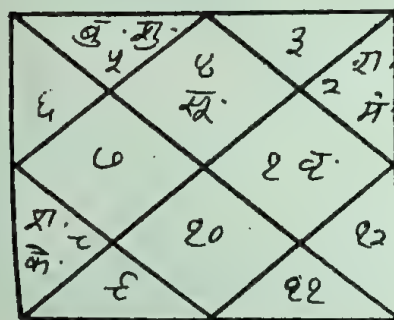
६२४



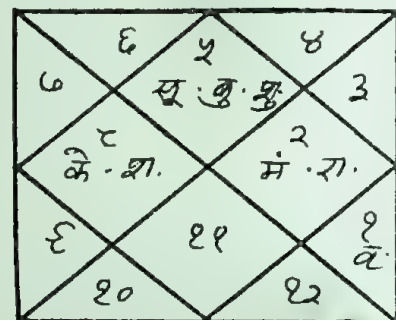
६२५



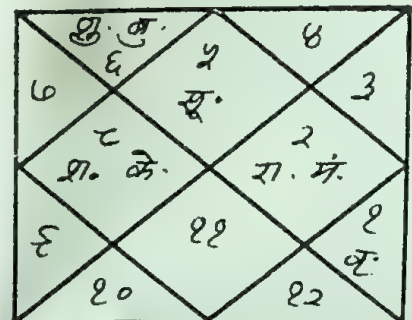
६२६



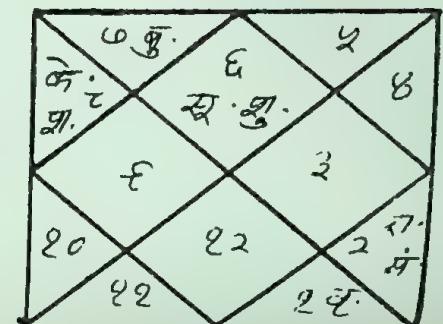
६२७



६२८



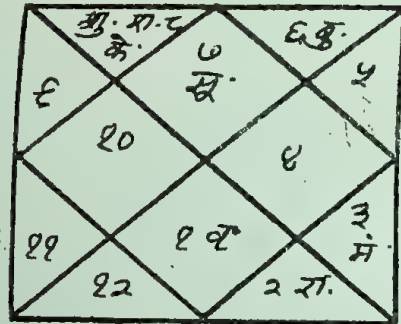
६२९



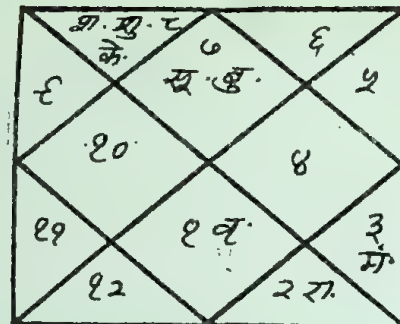
६३०



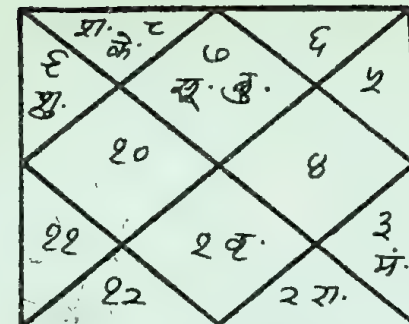
६३१



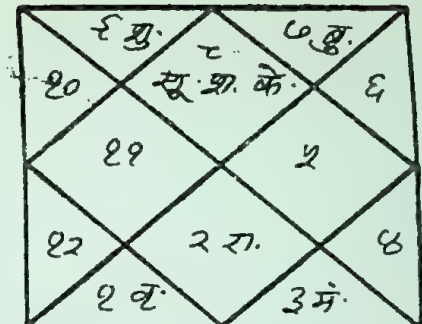
६३२



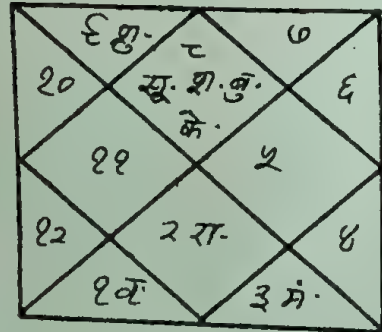
६३३



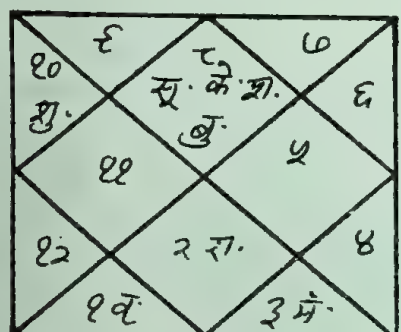
६३४



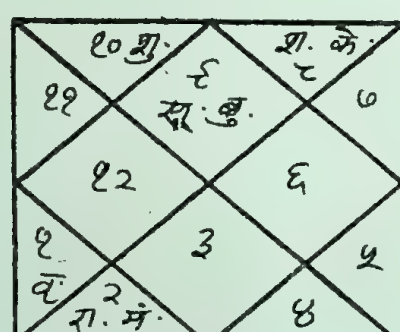
६३५



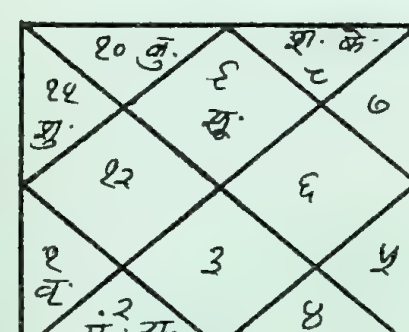
६३६



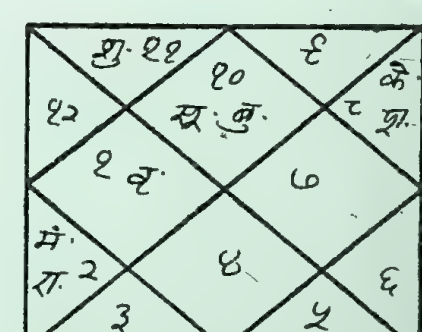
६३७



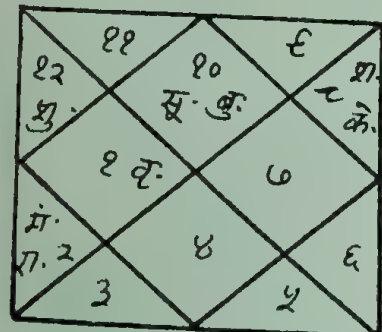
६३८



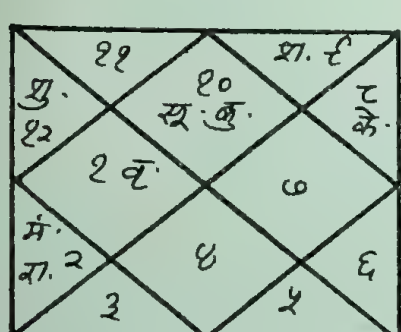
६३९



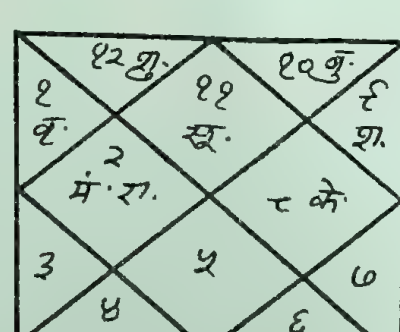
६४०



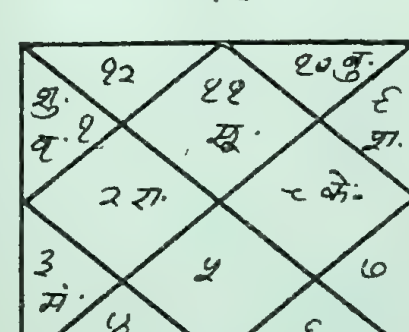
६४१



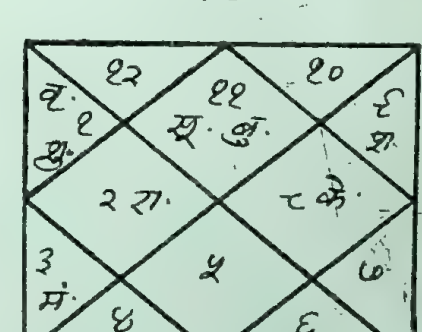
६४२



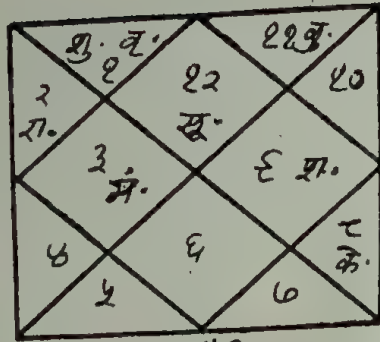
६४३



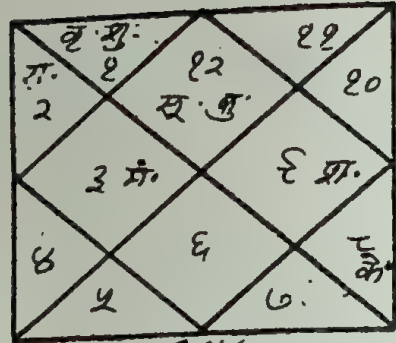
६४४



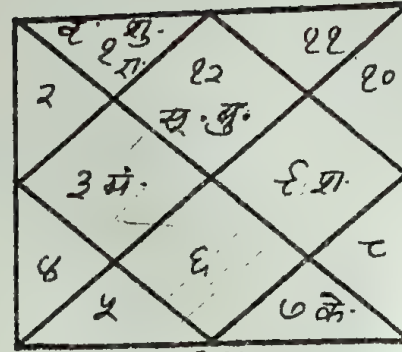
६४५



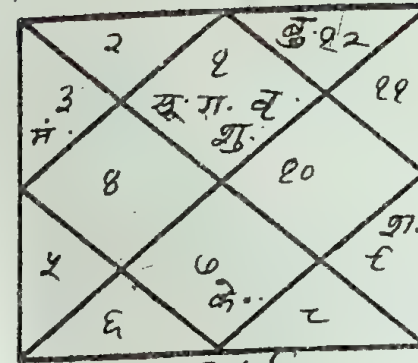
६४६



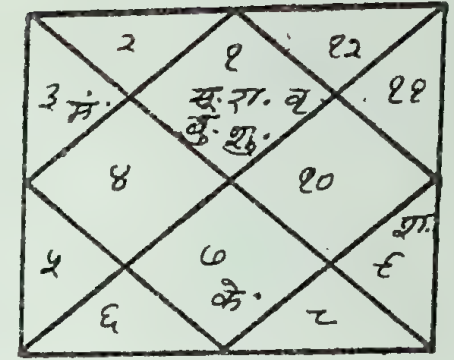
६४७



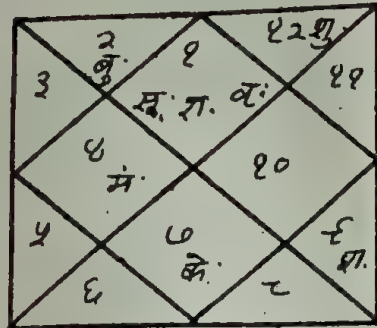
६४८



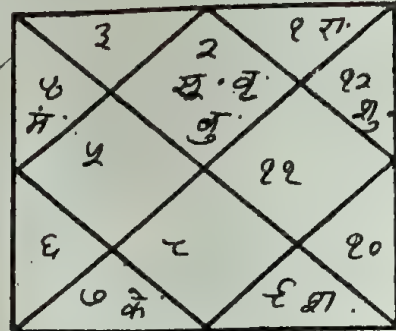
६४९



६५०



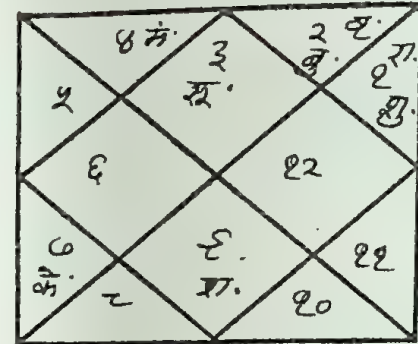
६५१



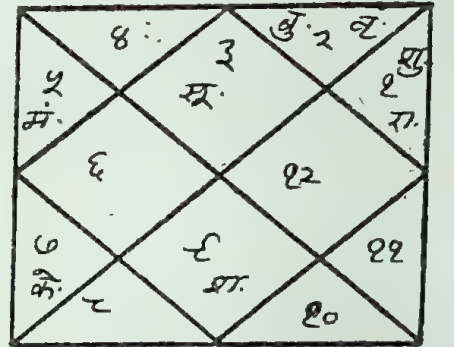
६५२



६५३



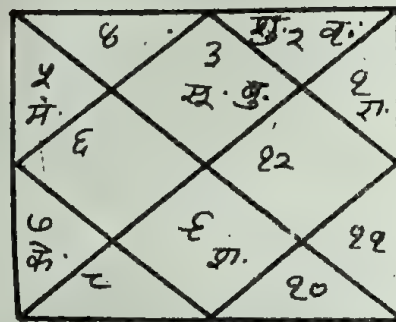
६५४



६५५



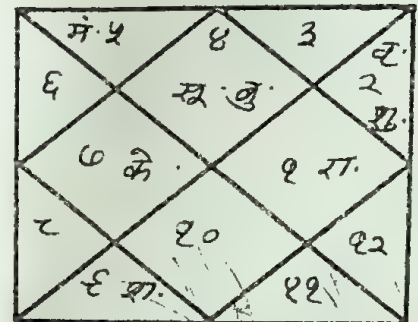
६५६



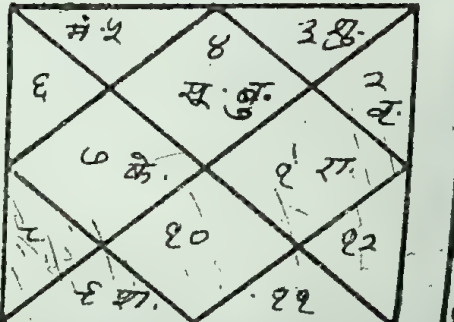
६५७



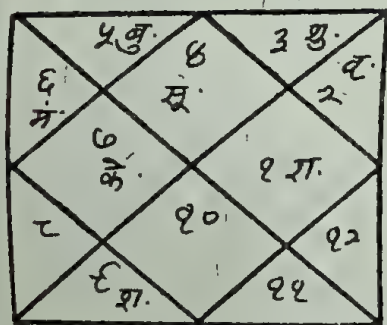
६५८



६५९



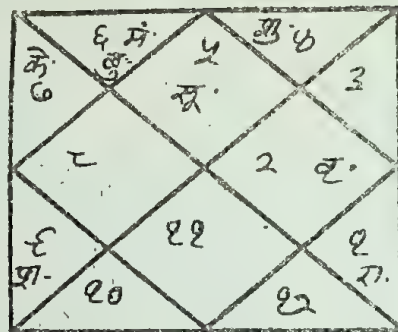
६६०



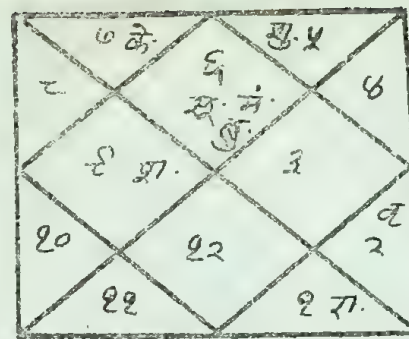
६६१



६६२



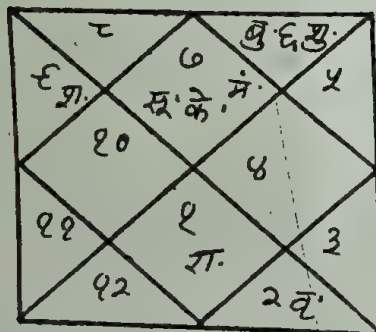
६६३



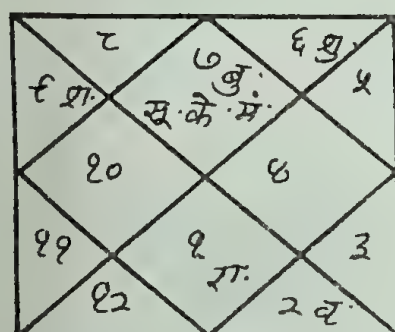
६६४



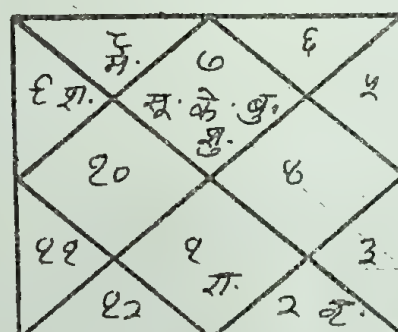
६६५



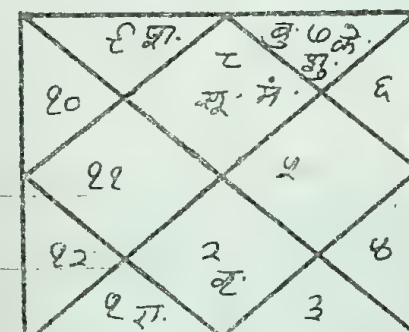
६६६



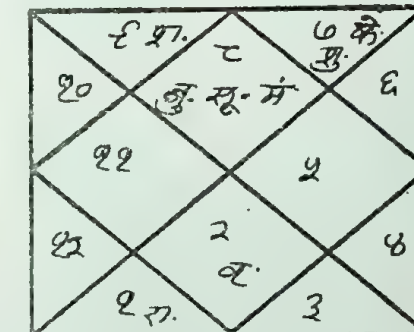
६६७



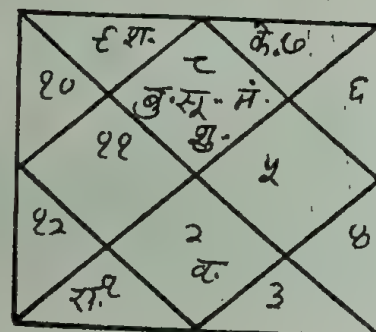
६६८



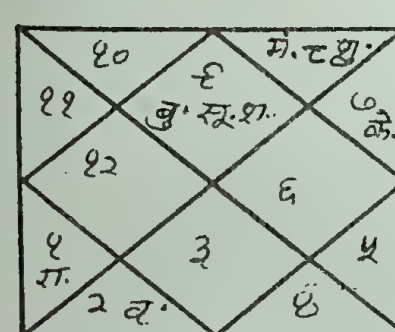
६६९



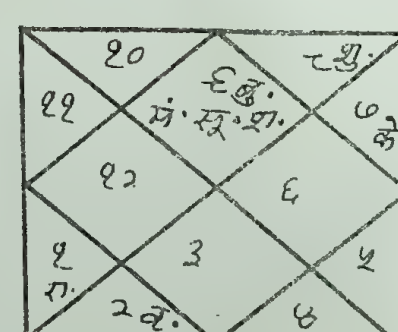
६७०



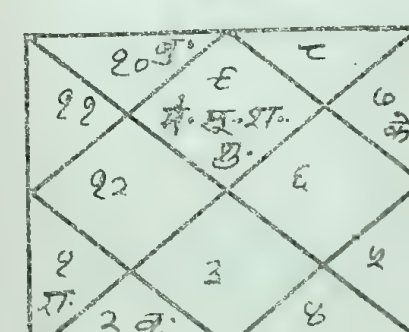
६७१



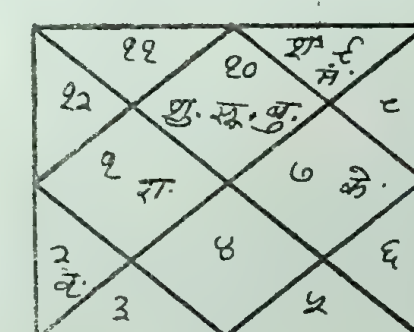
६७२



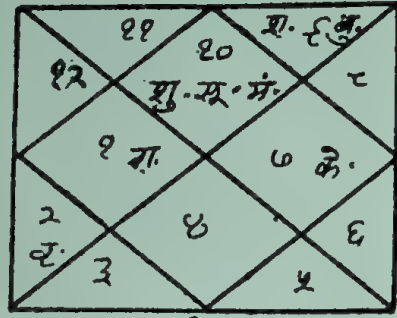
६७३



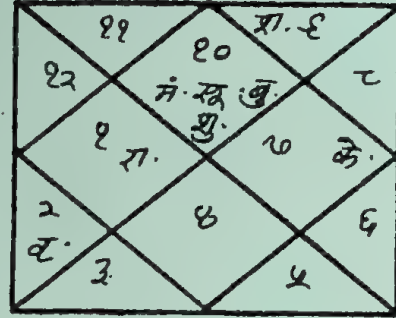
६७४



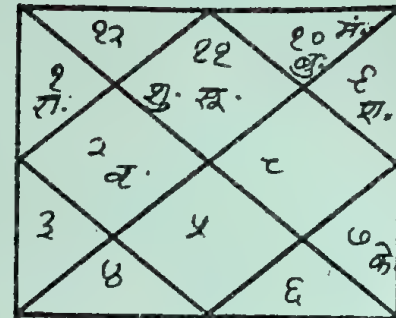
६७५



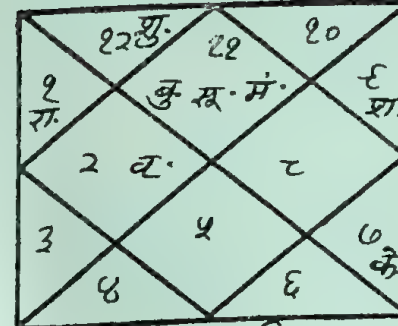
६७६



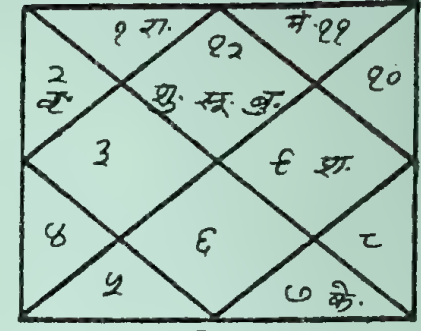
६७७



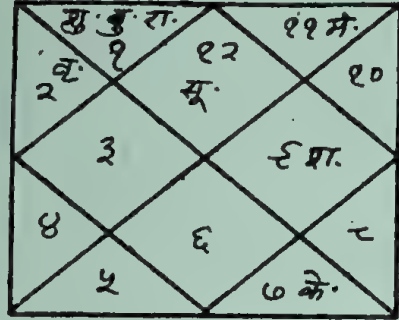
६७८



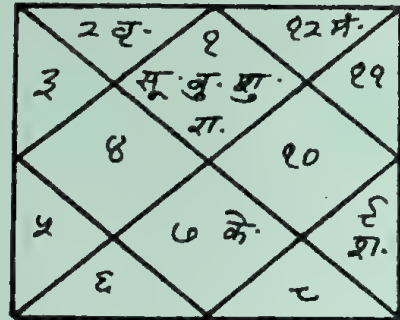
६७९



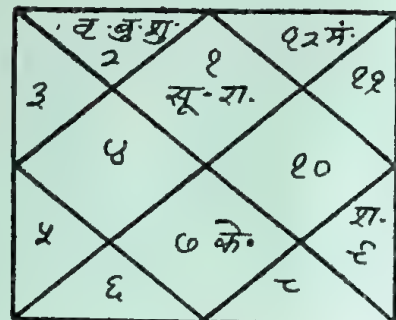
६८०



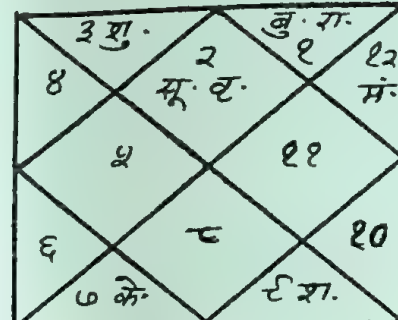
६८१



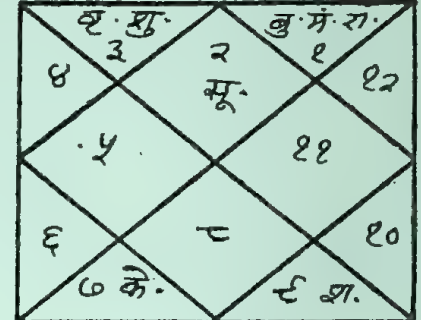
६८२



६८३



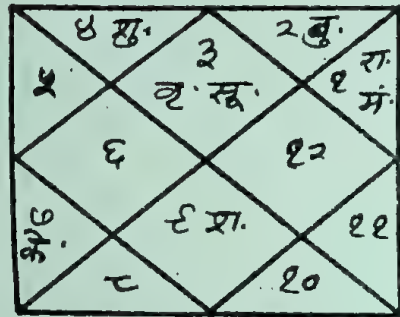
६८४



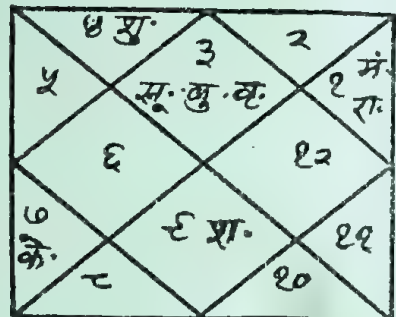
६८५



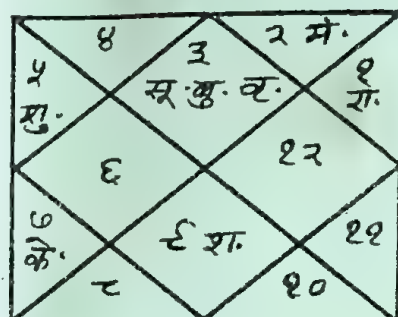
६८६



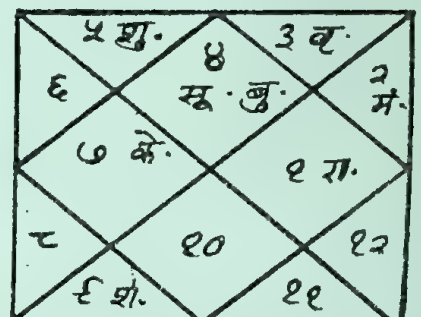
६८७



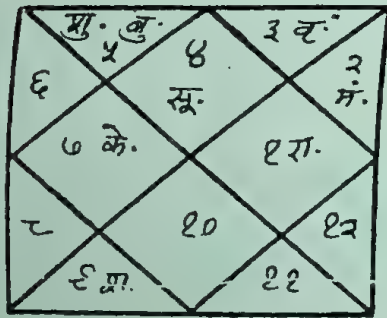
६८८



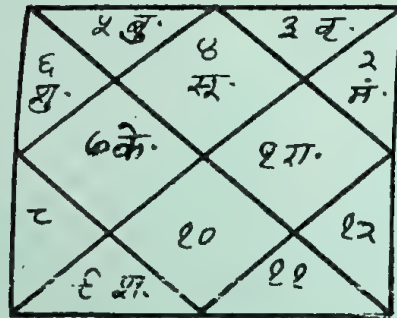
६८९



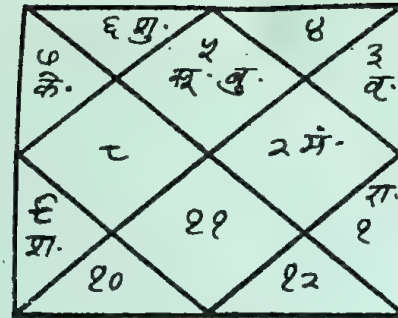
६९०



६८१



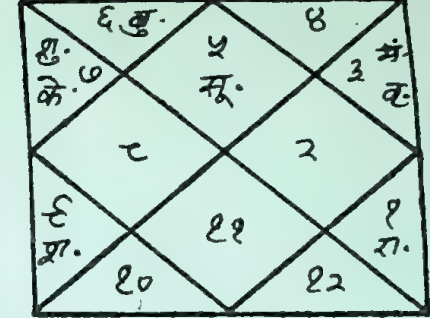
६८२



६८३



६८४



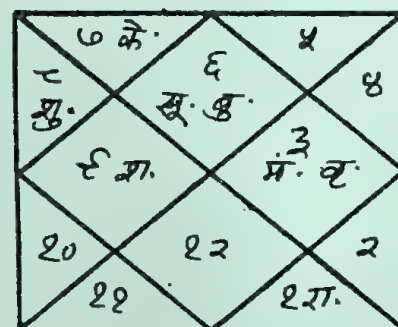
६८५



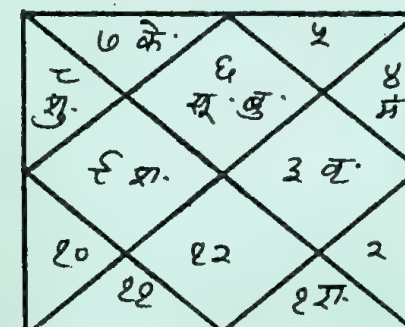
६८६



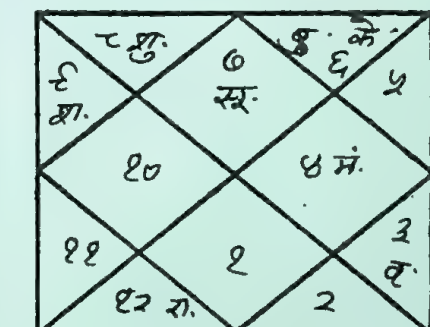
६८७



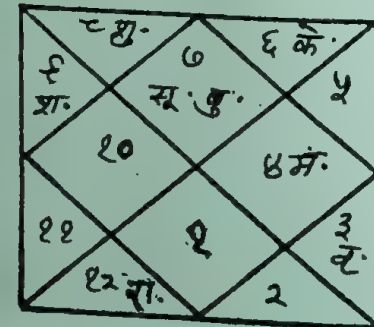
६८८



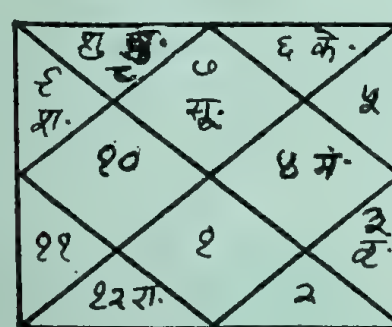
६८९



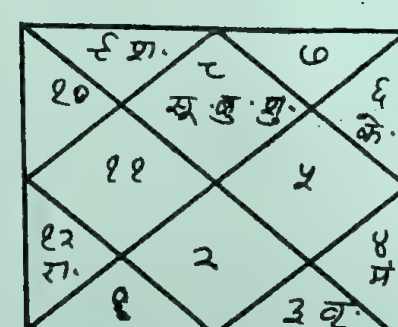
७००



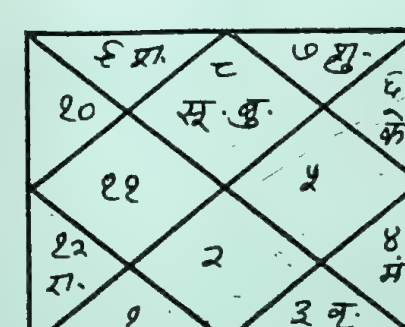
७०१



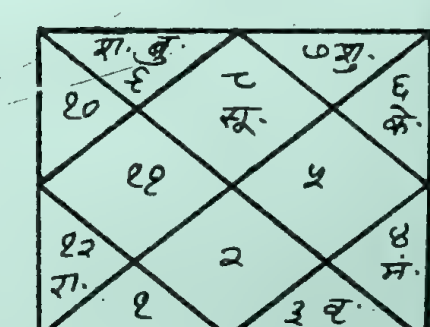
७०२



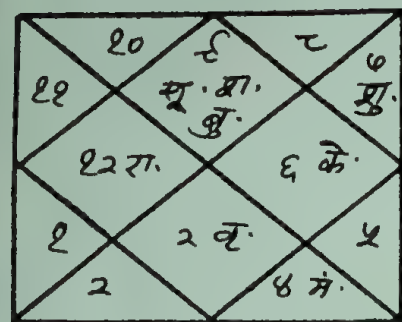
७०३



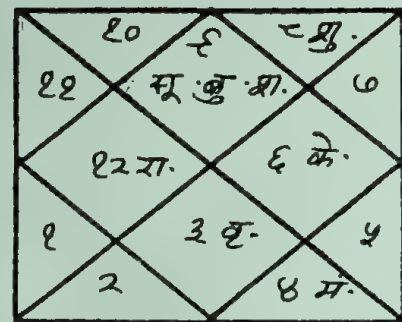
७०४



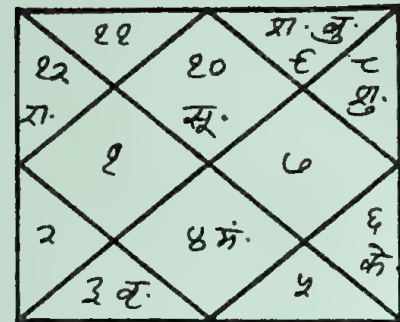
७०५



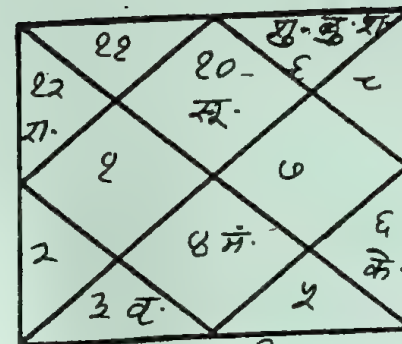
૦૦૬



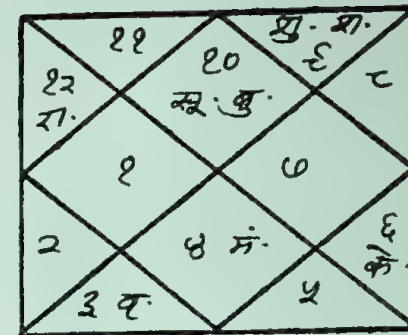
૦૦૭



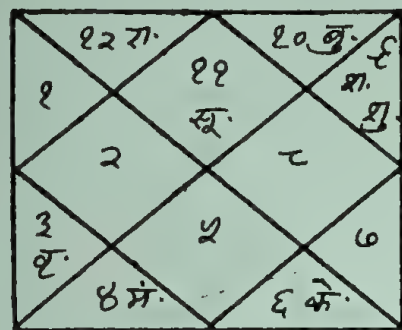
૦૦૮



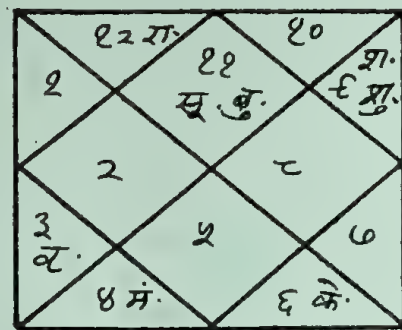
૦૦૯



૦૧૦



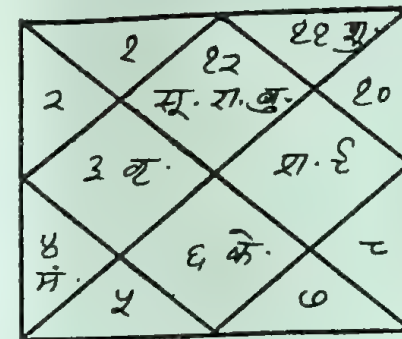
૦૧૧



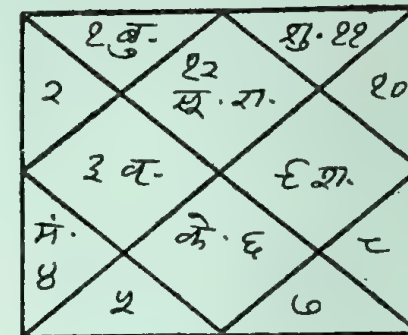
૦૧૨



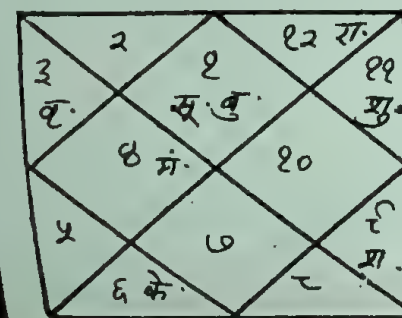
૦૧૩



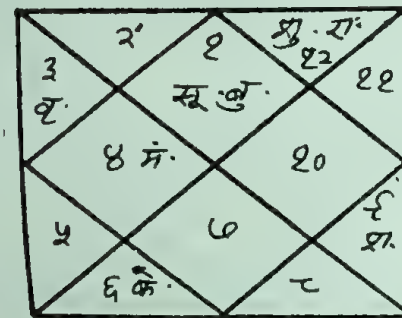
૦૧૪



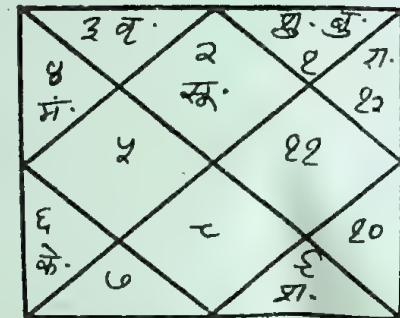
૦૧૫



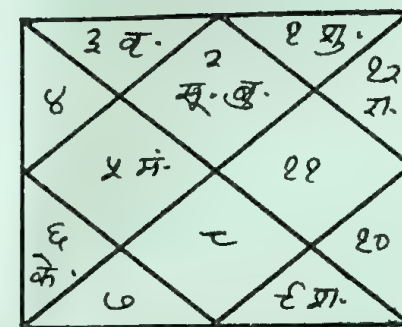
૦૧૬



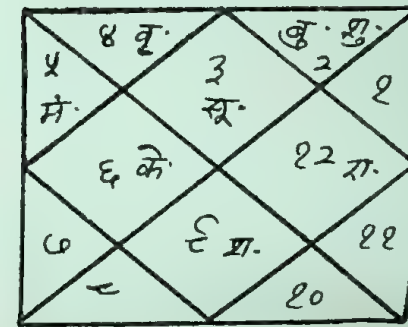
૦૧૭



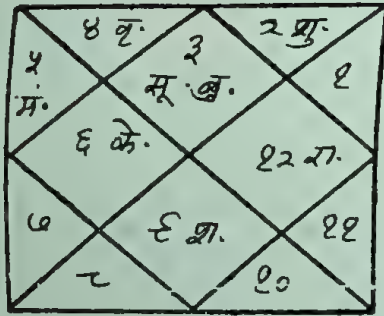
૦૧૮



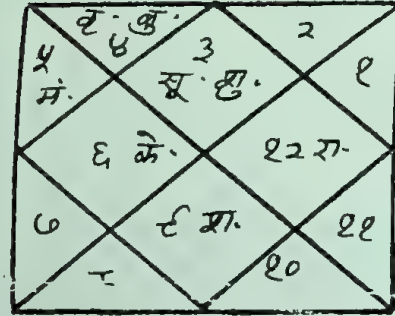
૦૧૯



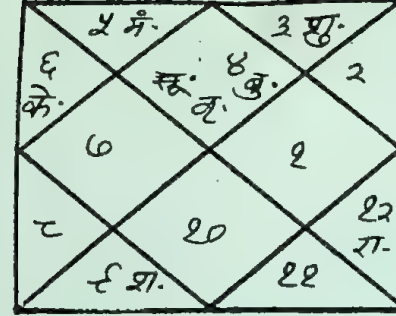
૦૨૦



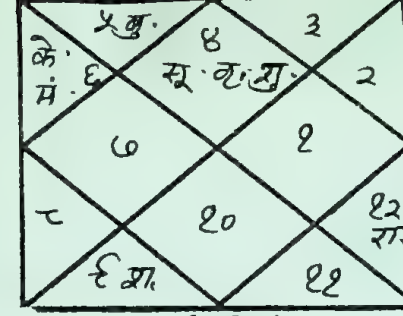
૦૨૧



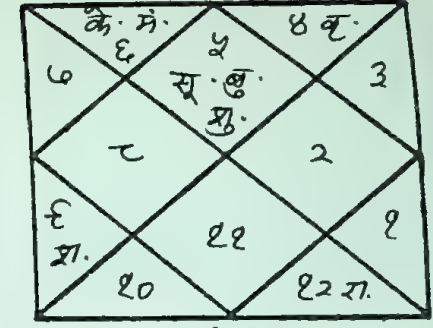
૦૨૨



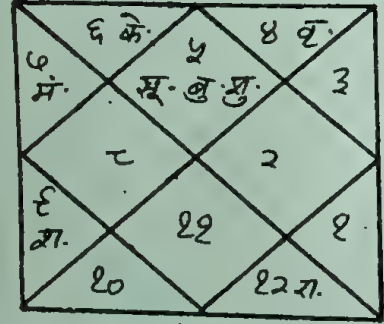
૦૨૩



૦૨૪



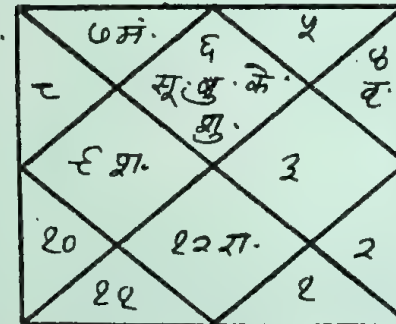
૦૨૫



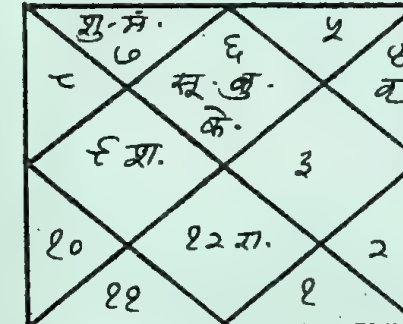
૦૨૬



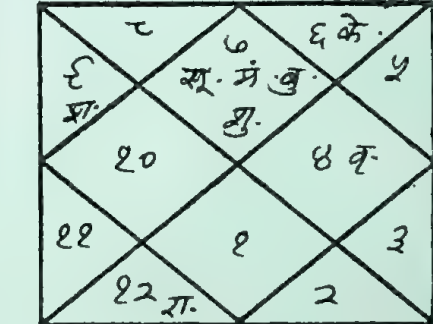
૦૨૭



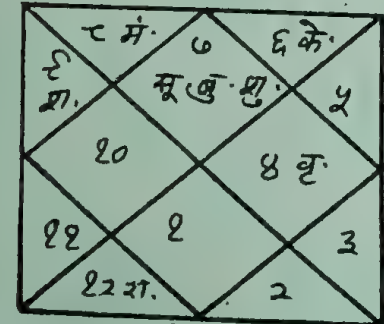
૦૨૮



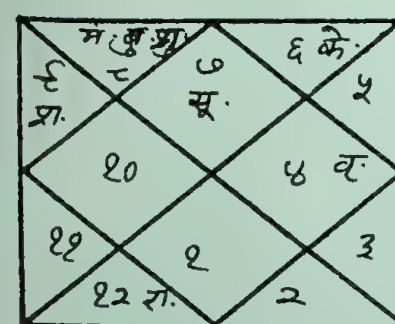
૦૨૯



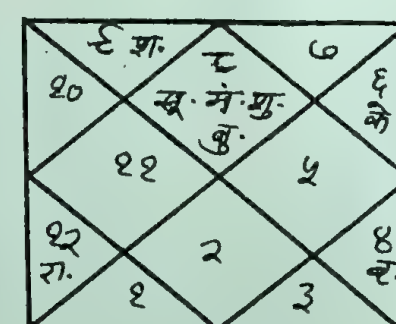
૦૩૦



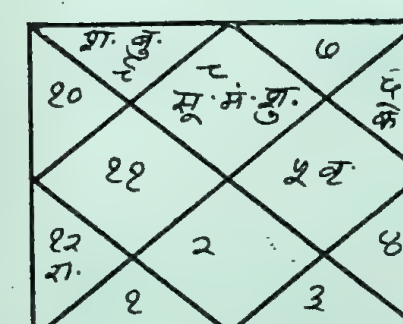
૦૩૧



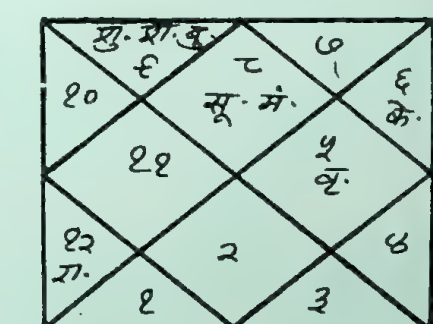
૦૩૨



૦૩૩



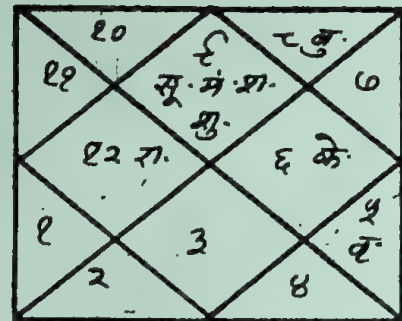
૦૩૪



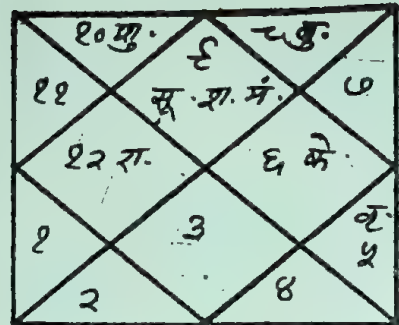
૦૩૫



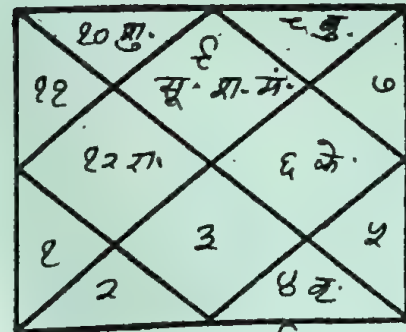
૭૩૬



૭૩૭



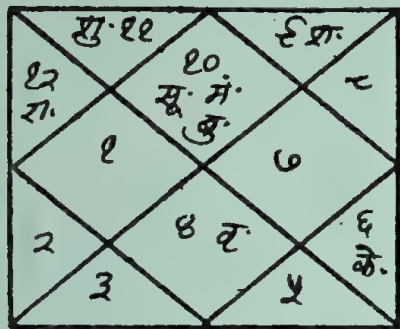
૭૩૮



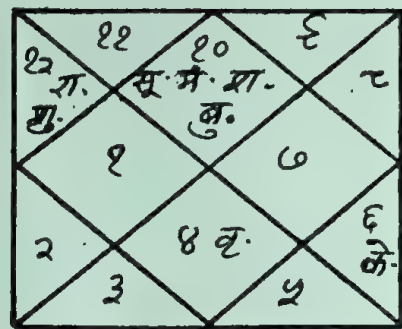
૭૩૯



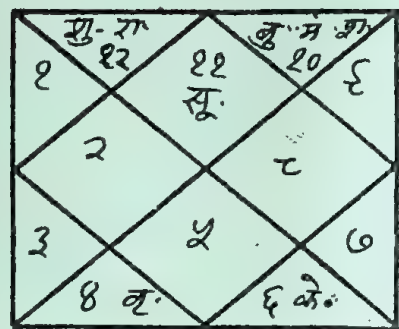
૭૪૦



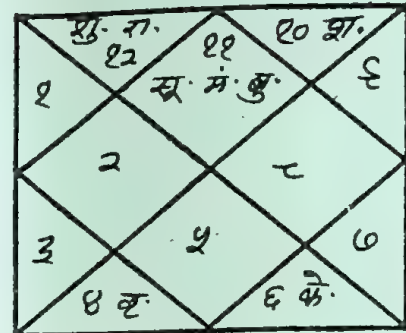
૭૪૧



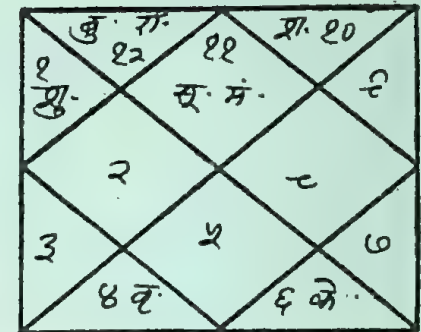
૭૪૨



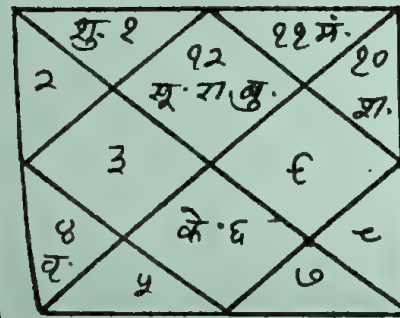
૭૪૩



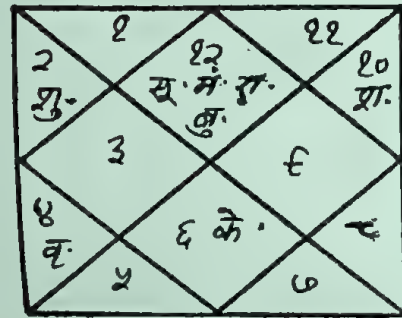
૭૪૪



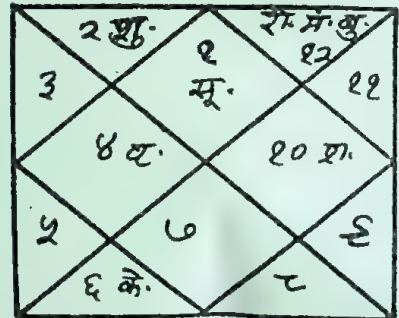
૭૪૫



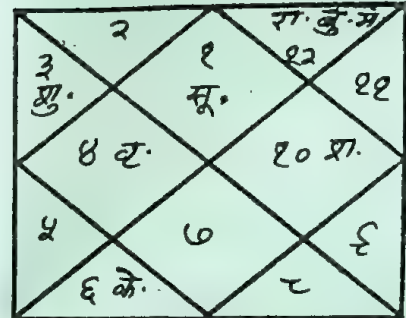
૭૪૬



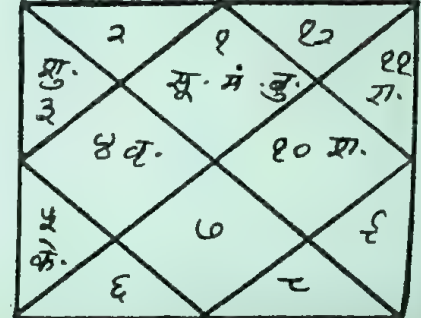
૭૪૭



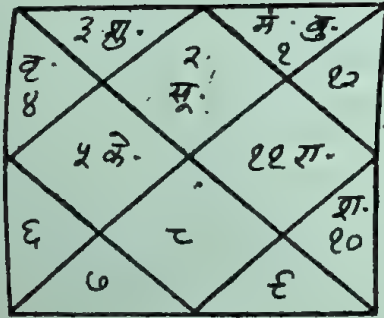
૭૪૮



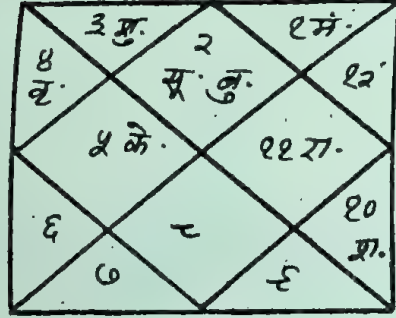
૭૪૯



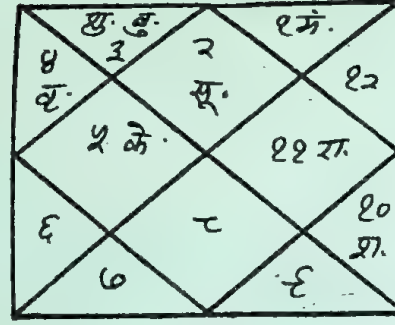
૭૫૦



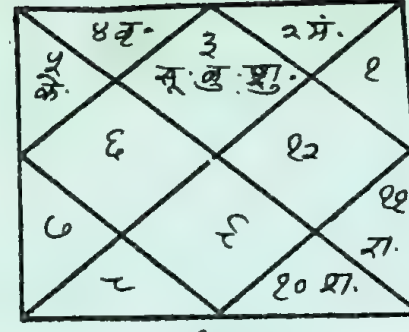
१०४१



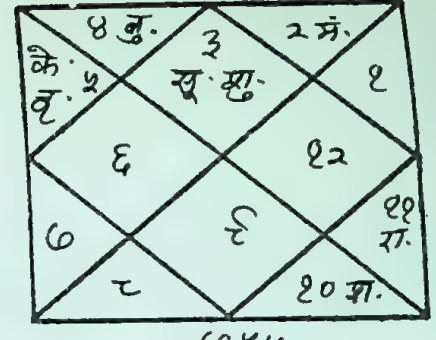
१०४२



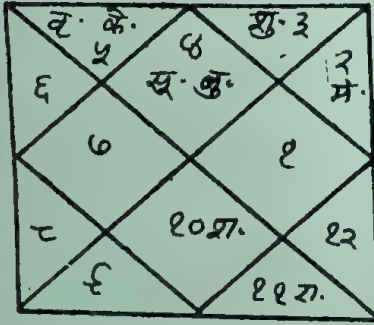
१०४३



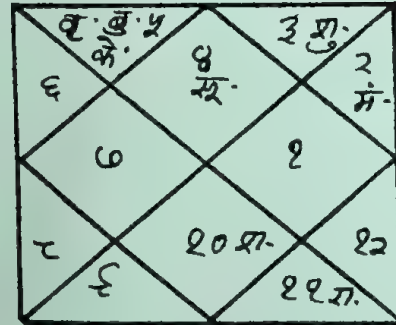
१०४४



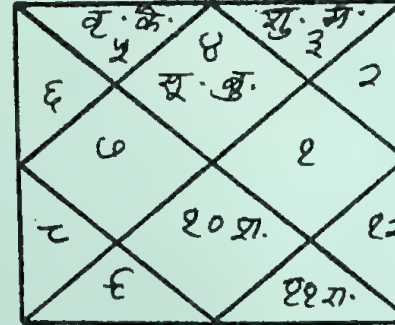
१०४५



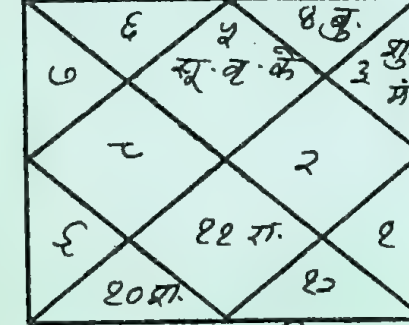
१०४६



१०४७



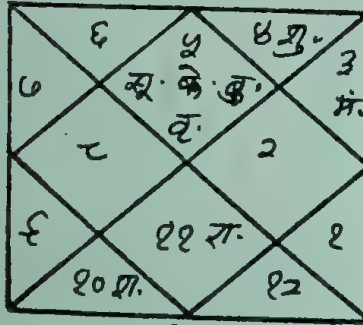
१०४८



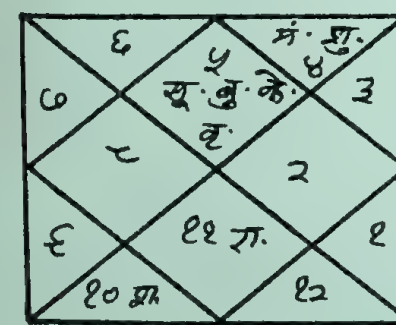
१०४९



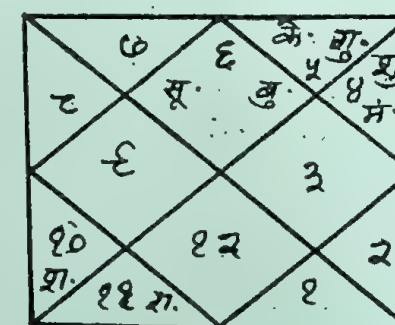
१०५०



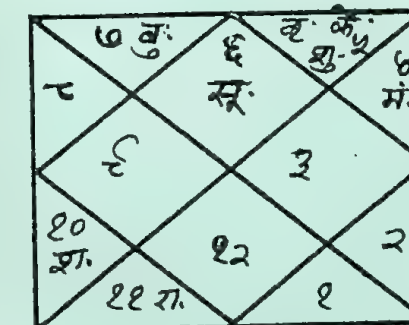
१०५१



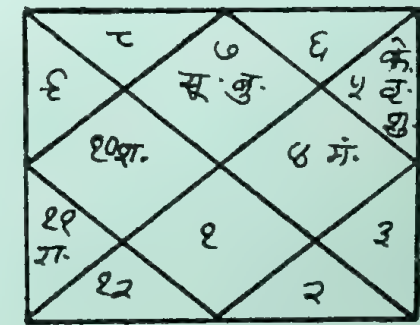
१०५२



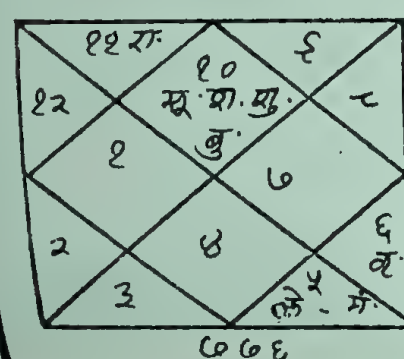
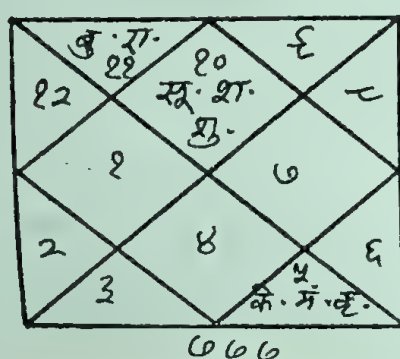
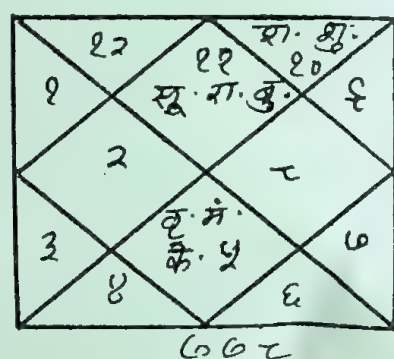
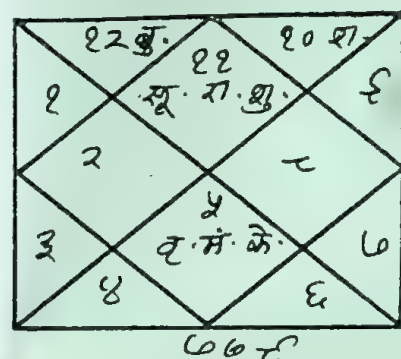
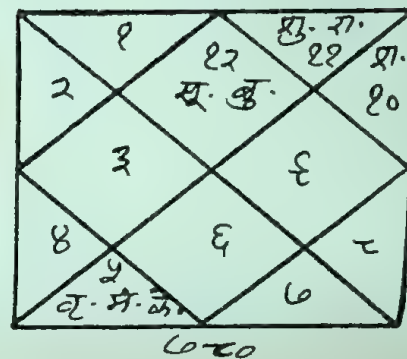
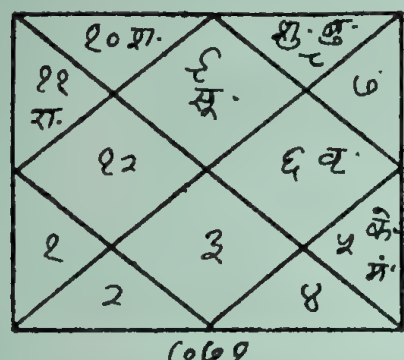
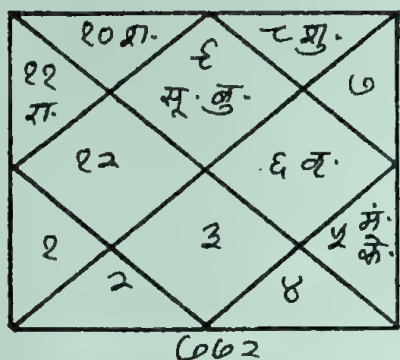
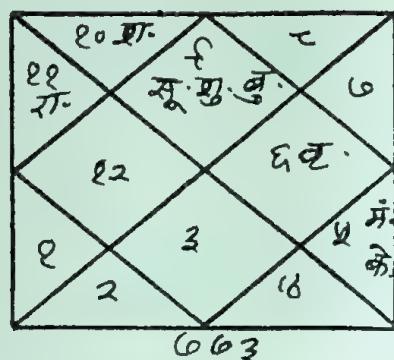
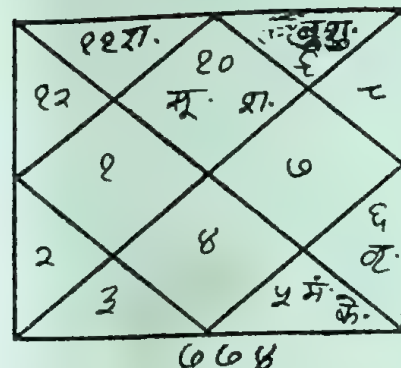
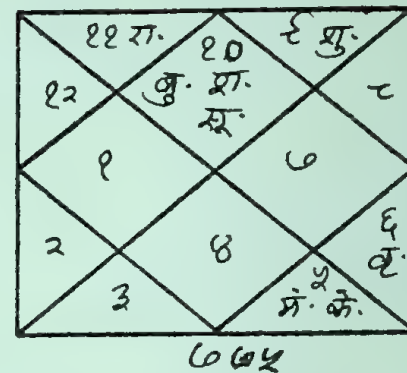
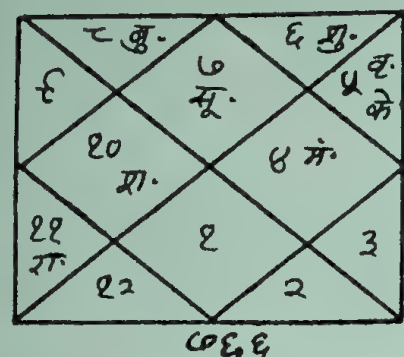
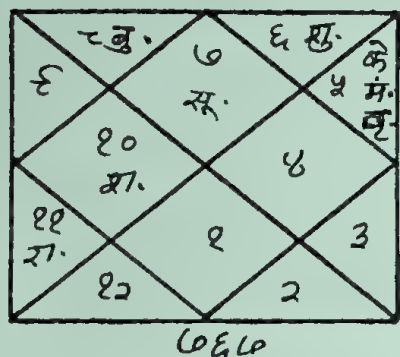
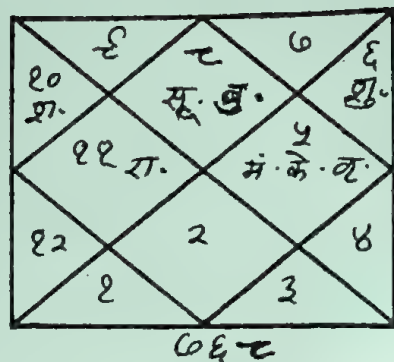
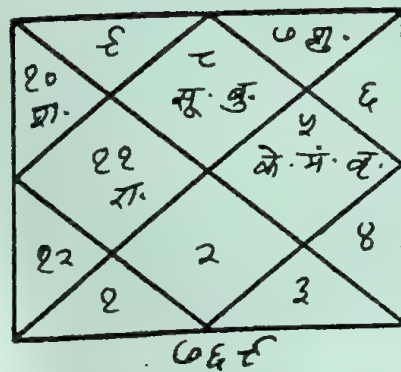
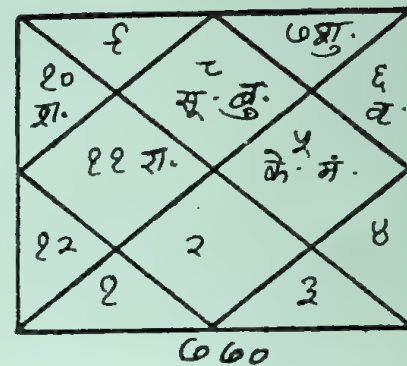
१०५३

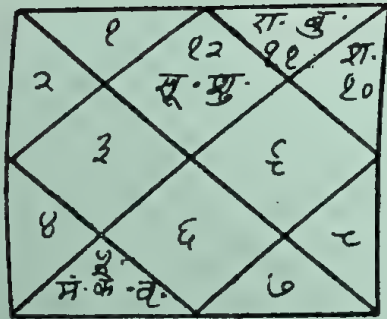


१०५४

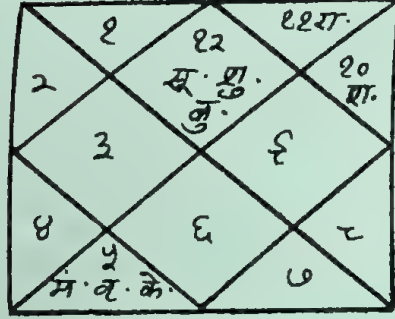


१०५५

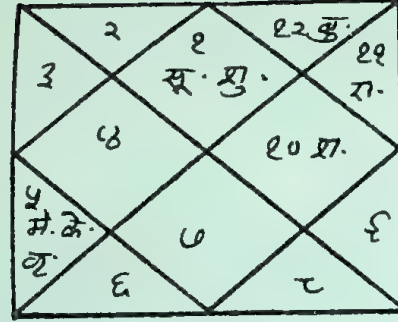




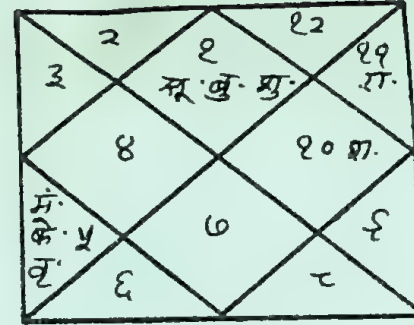
७८१



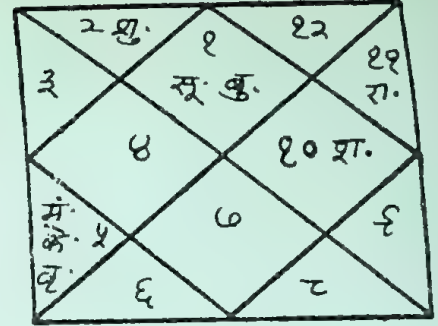
७८२



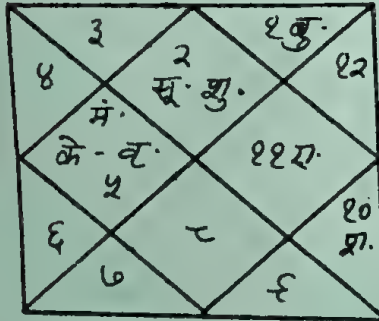
७८३



७८४



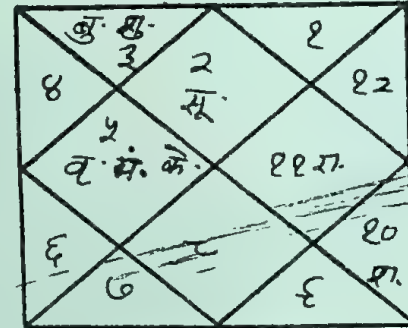
७८५



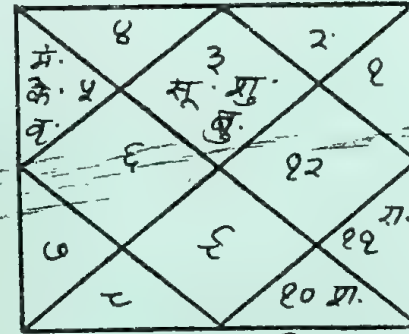
७८६



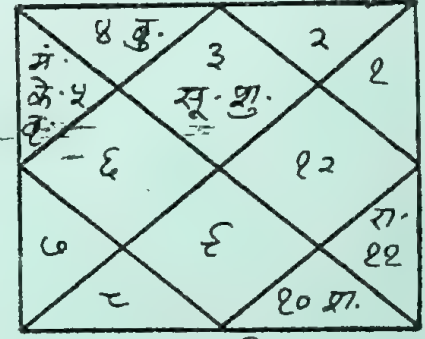
७८७



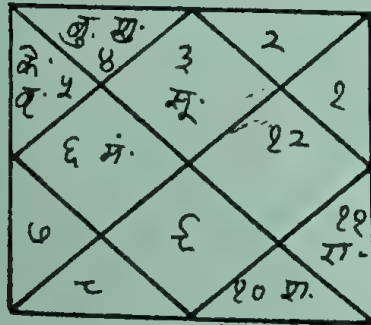
७८८



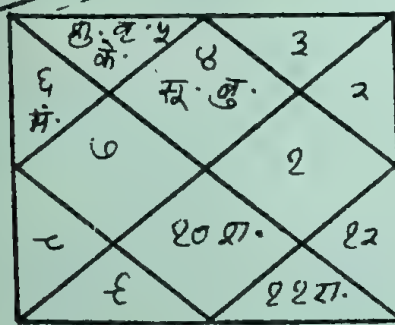
७८९



७९०



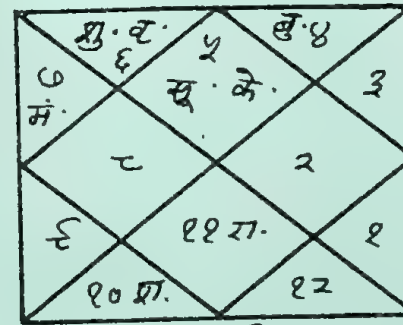
७९१



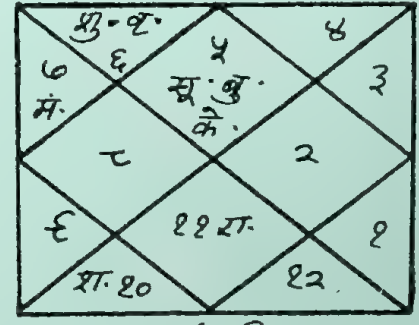
७९२



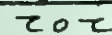
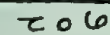
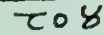
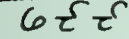
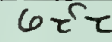
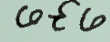
७९३

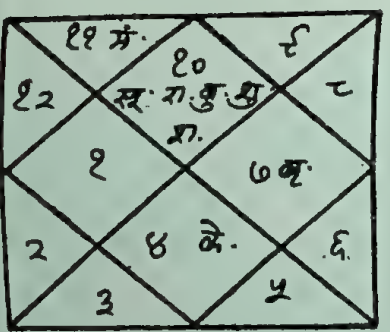


७९४

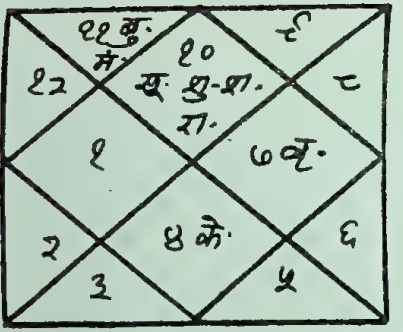


७९५

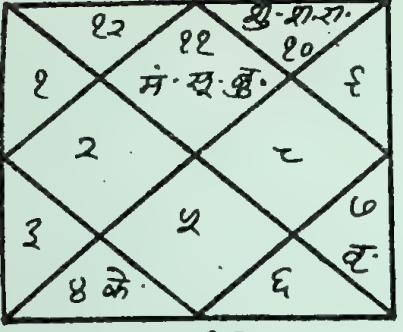




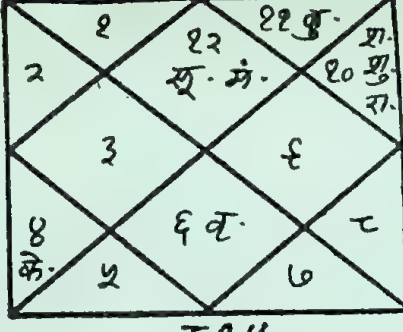
૮૧૧



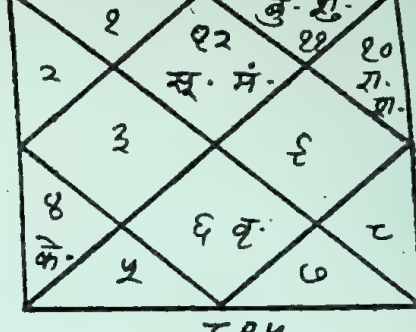
૮૧૨



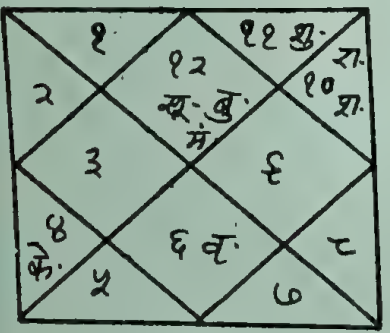
૮૧૩



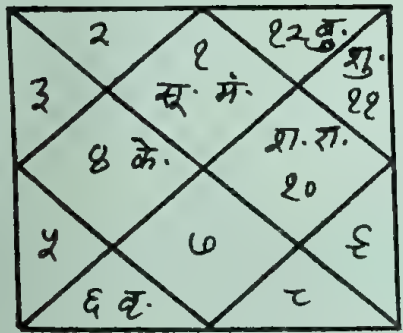
૮૧૪



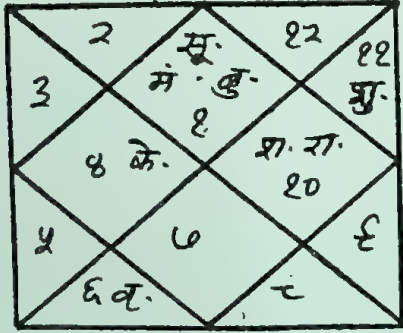
૮૧૫



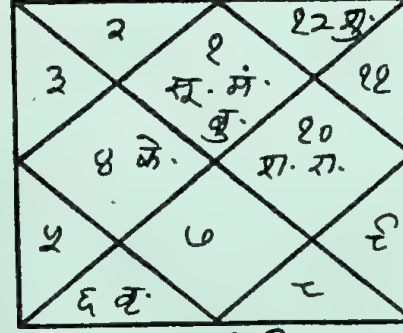
૮૧૬



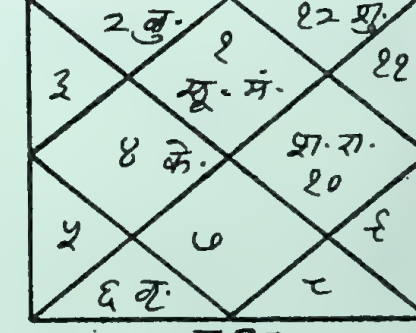
૮૧૭



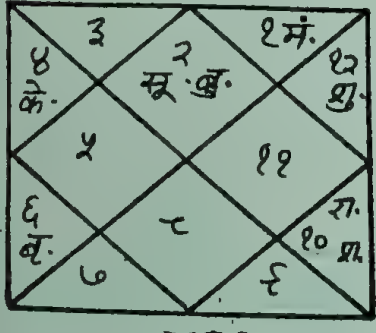
૮૧૮



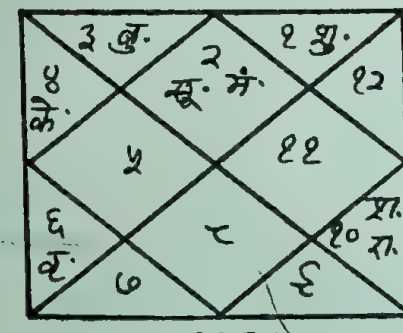
૮૧૯



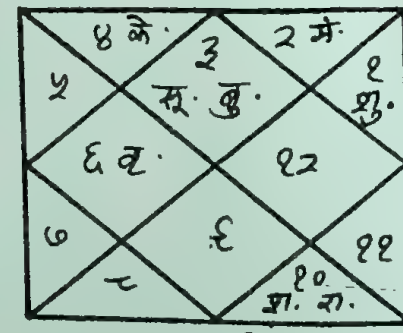
૮૨૦



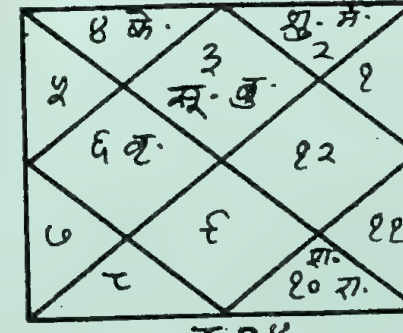
૮૨૧



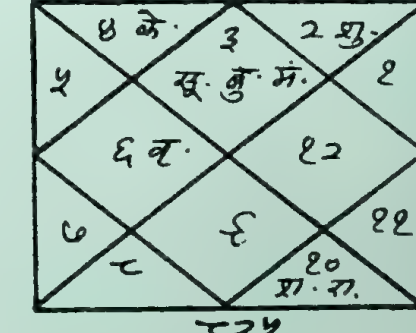
૮૨૨



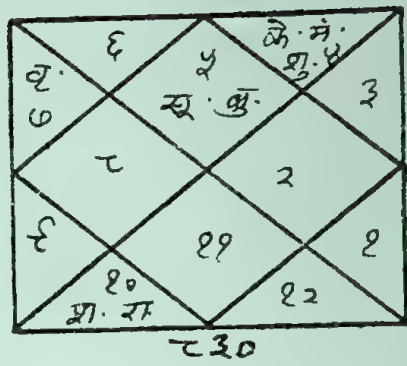
૮૨૩



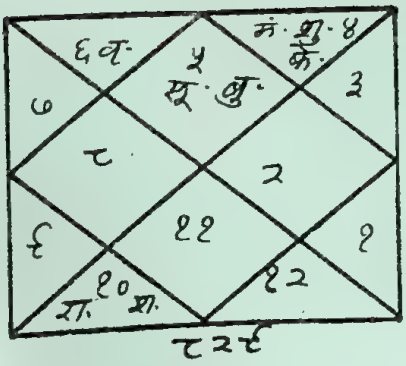
૮૨૪



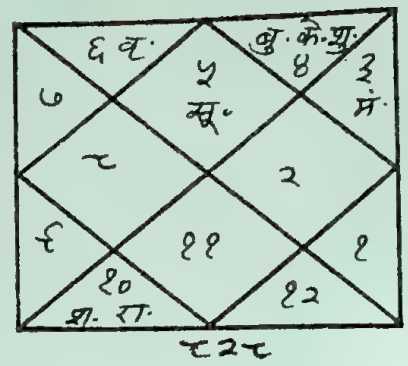
૮૨૫



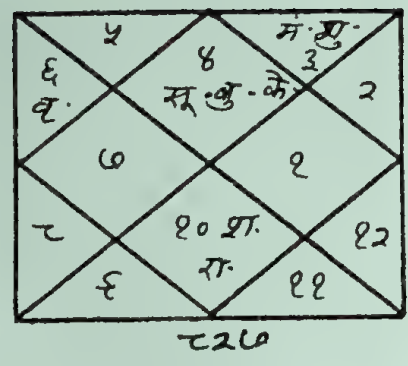
८३०



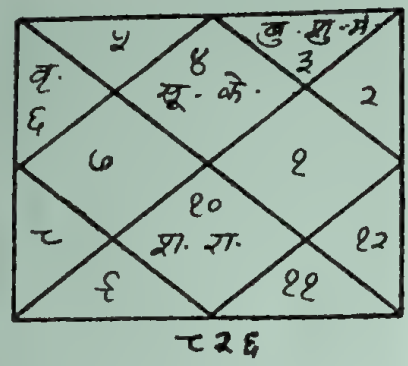
८२८



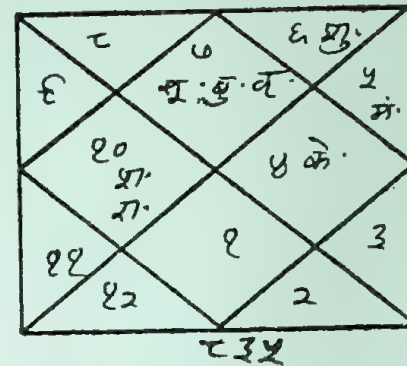
८२८



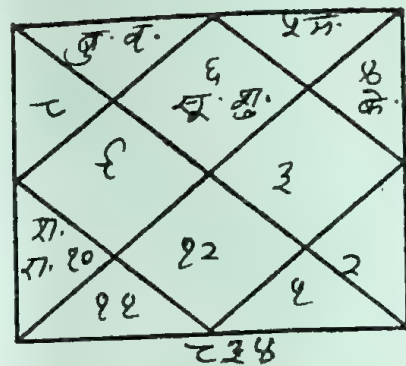
८२७



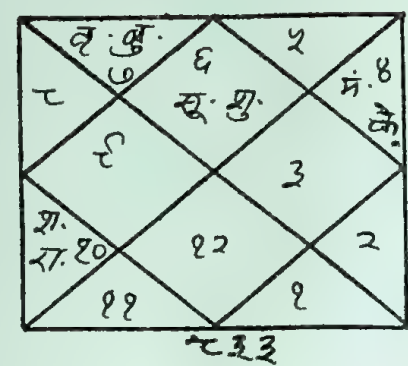
८२६



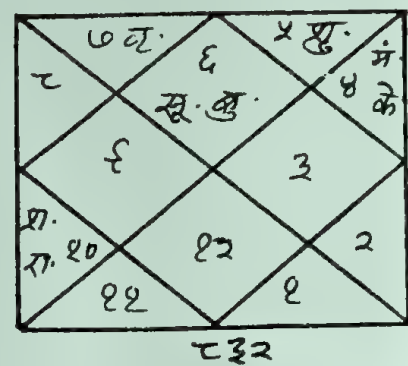
८३५



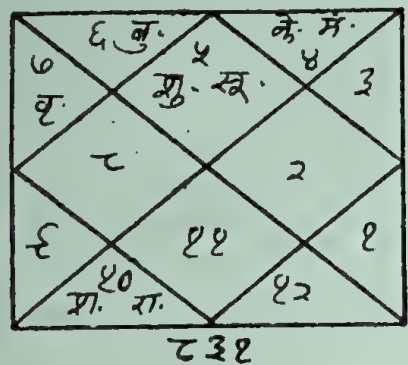
८३४



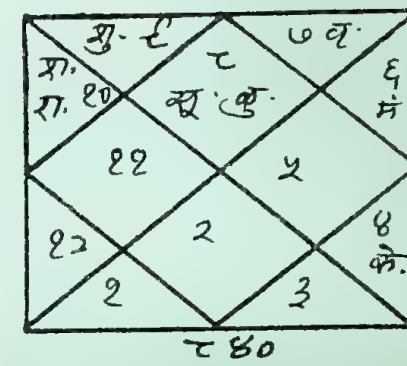
८३३



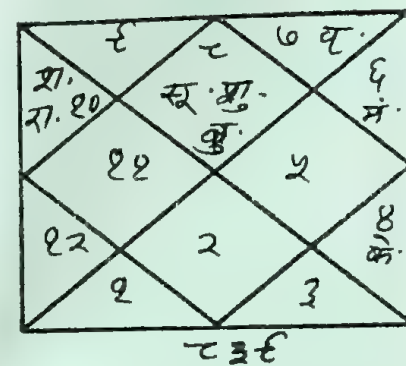
८३२



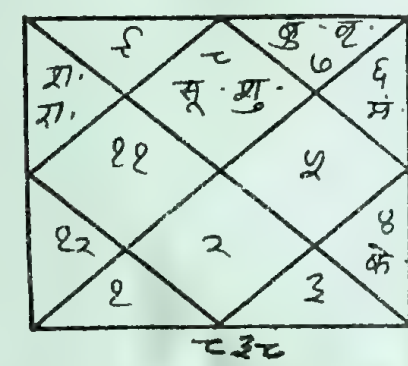
८३१



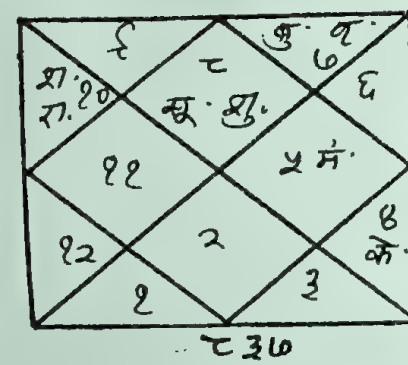
८४०



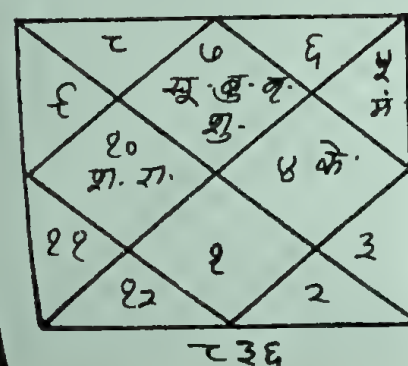
८३८



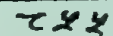
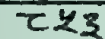
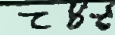
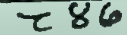
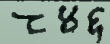
८३८

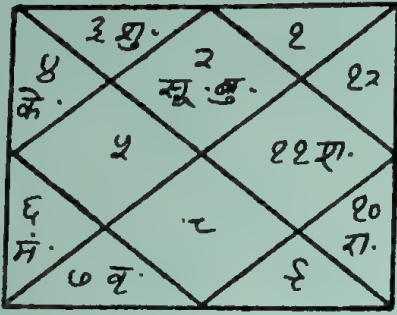


८३७

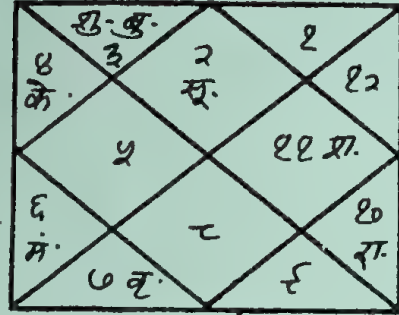


८३६

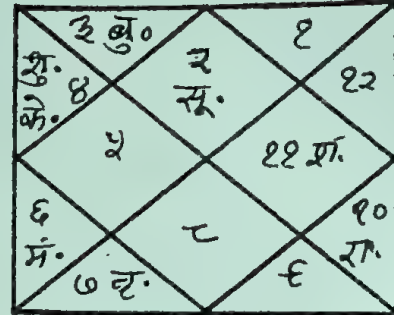




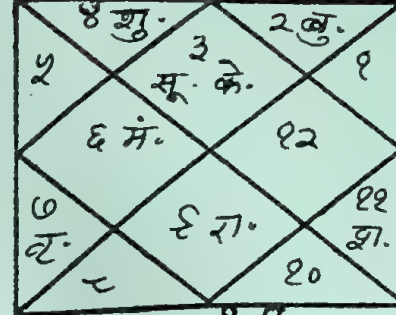
746



746



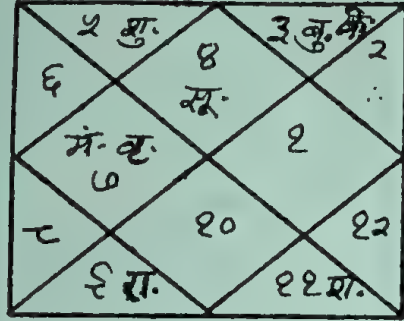
746



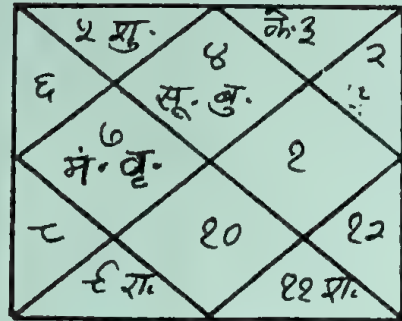
746



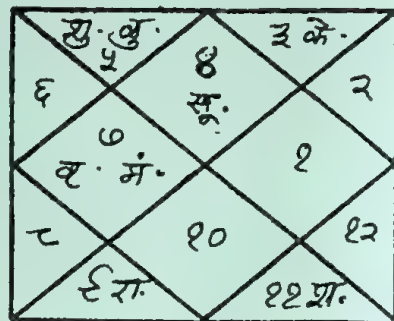
746



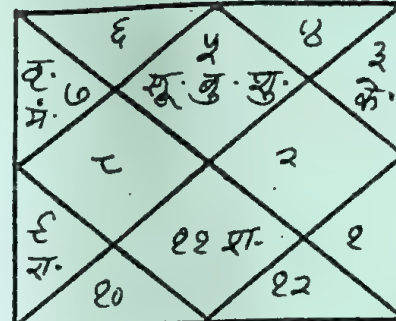
742



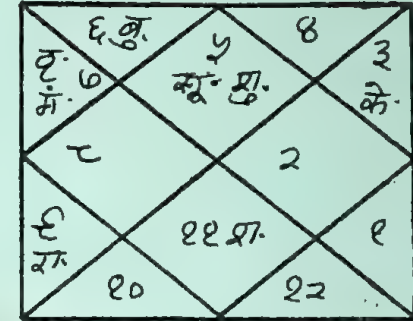
742



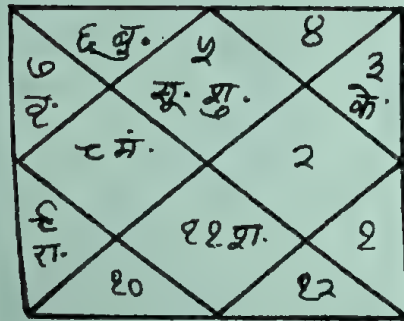
742



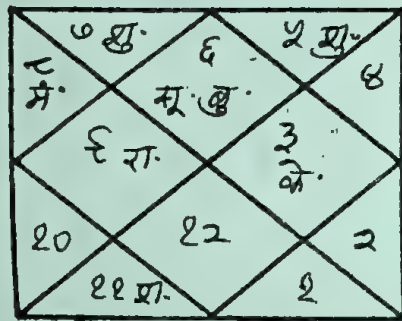
746



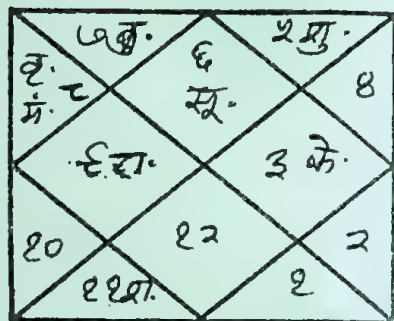
742



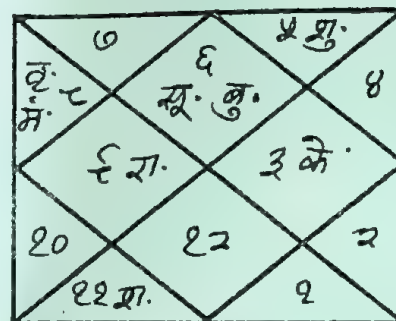
746



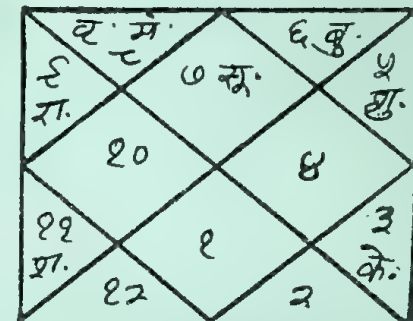
746



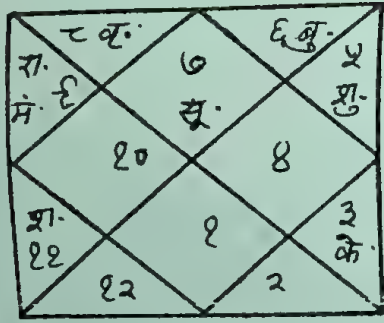
746



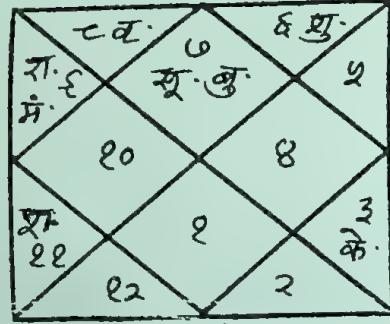
746



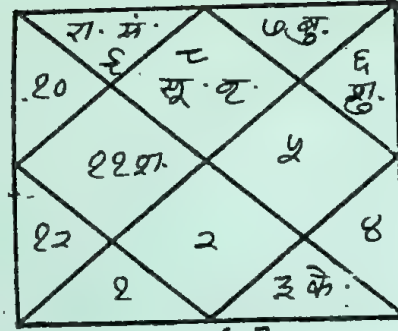
746



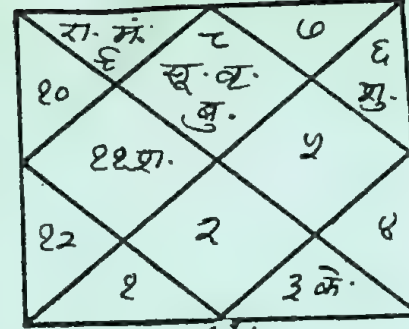
८७१



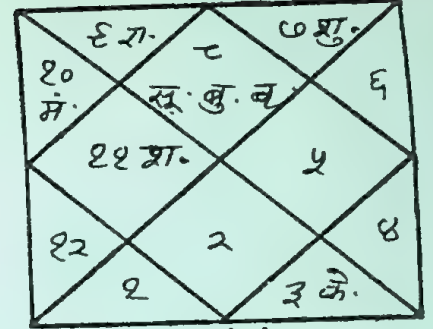
८७२



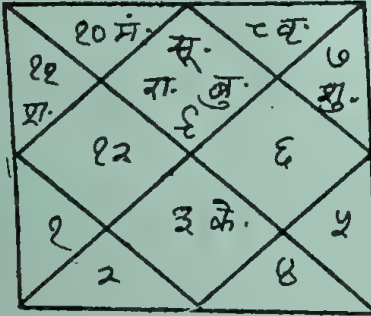
८७३



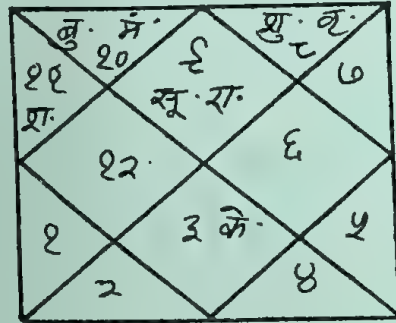
८७४



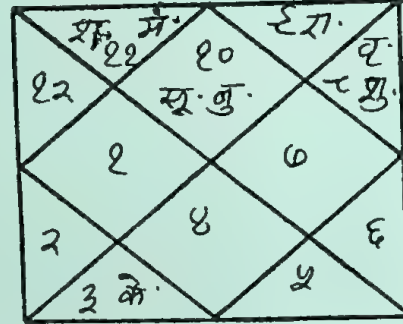
८७५



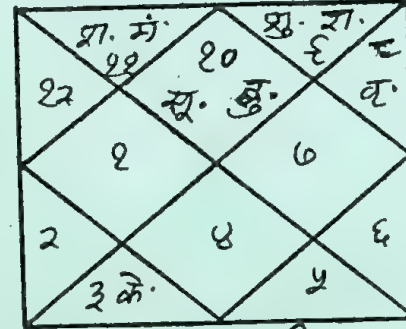
८७६



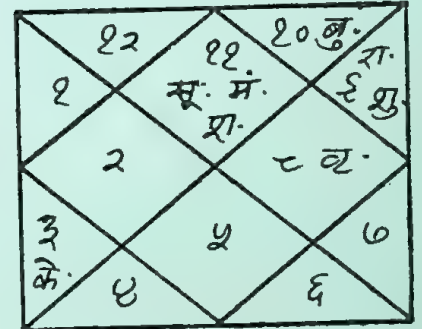
८७७



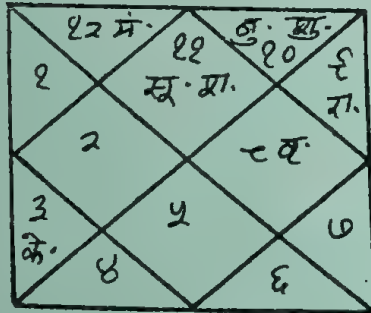
८७८



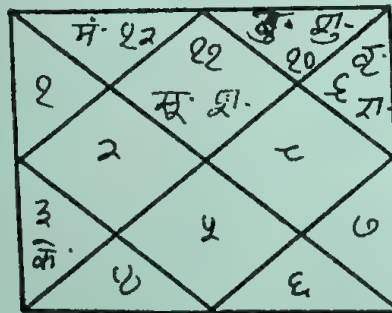
८७९



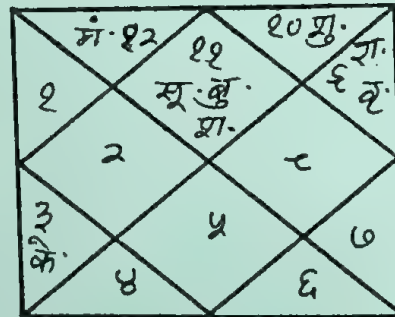
८८०



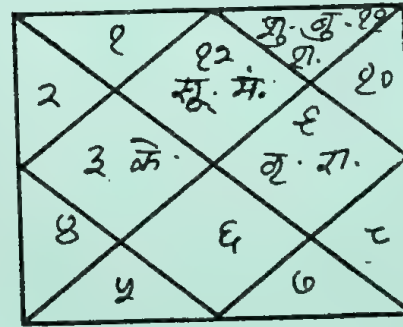
८८१



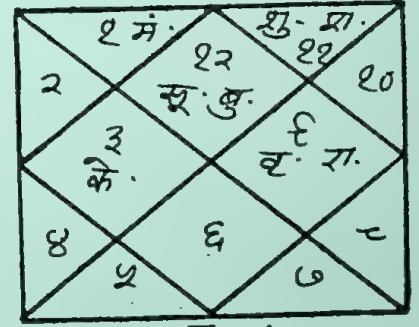
८८२



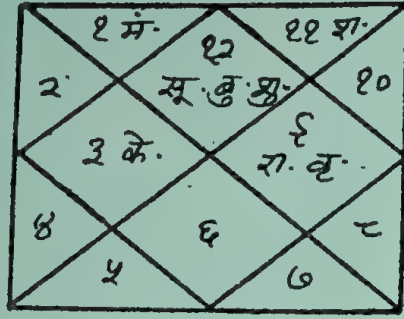
८८३



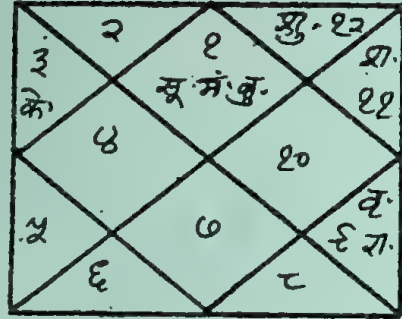
८८४



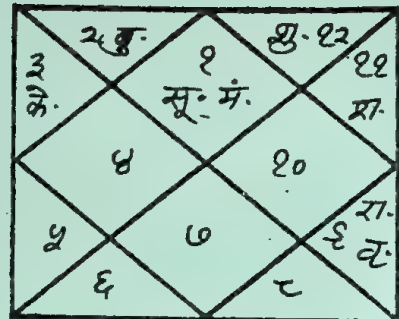
८८५



२२६



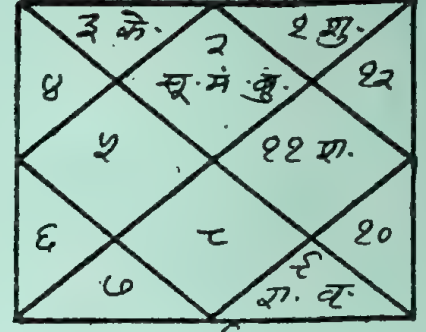
२२७



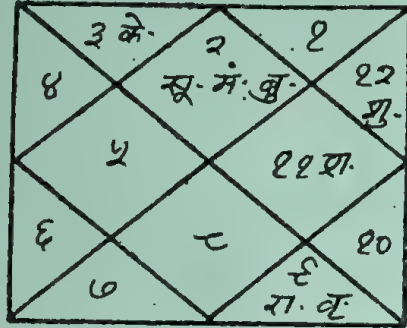
२२८



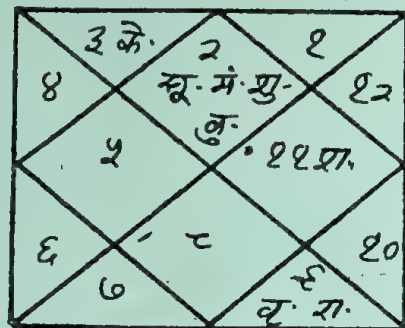
२२९



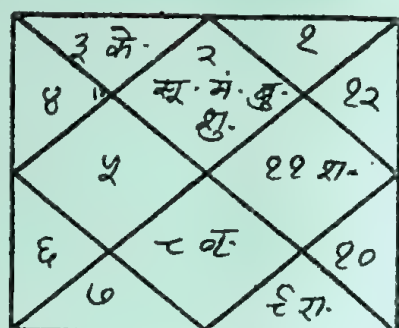
२३०



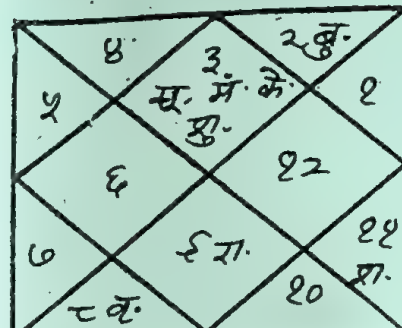
२३१



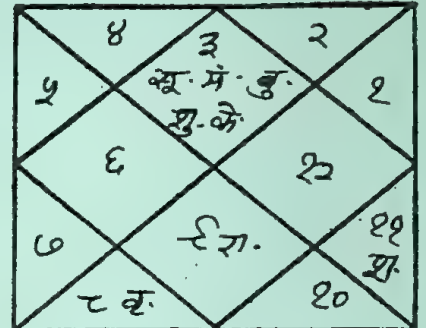
२३२



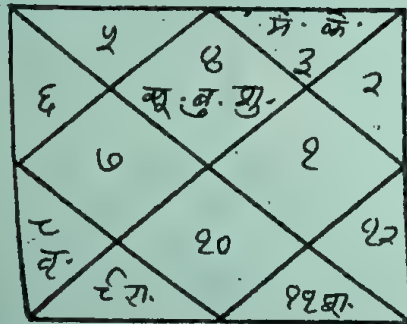
२३३



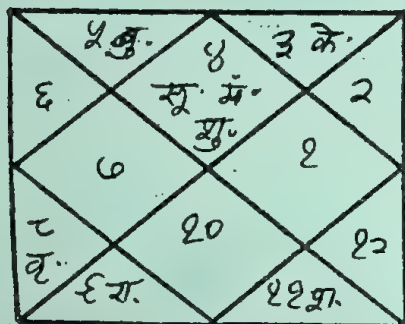
२३४



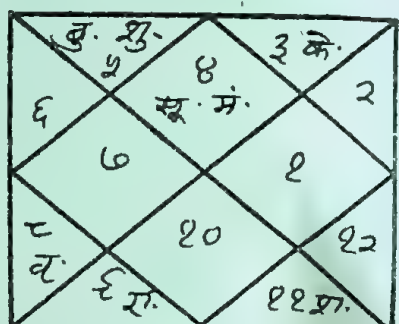
२३५



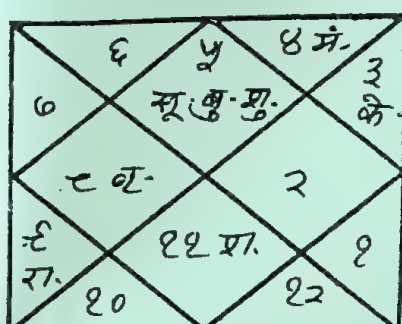
२३६



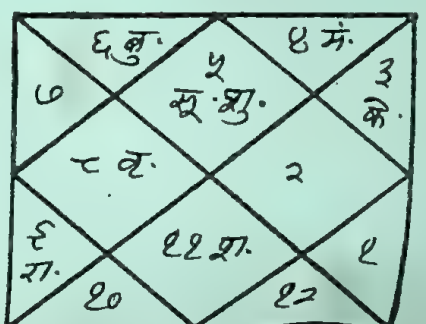
२३७



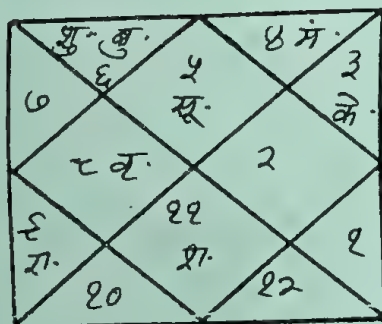
२३८



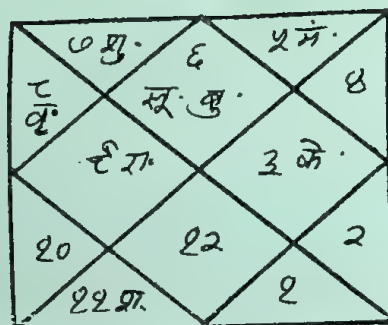
२३९



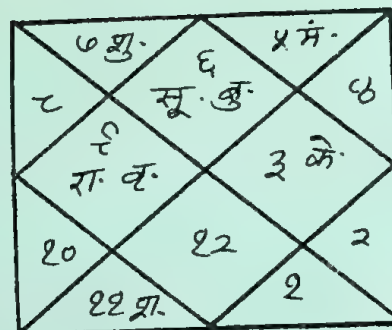
२४०



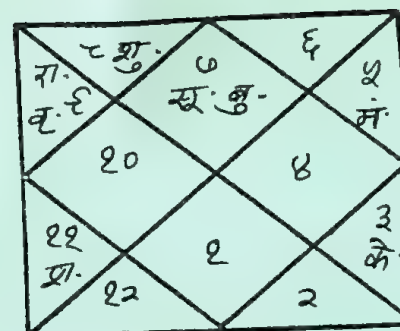
203



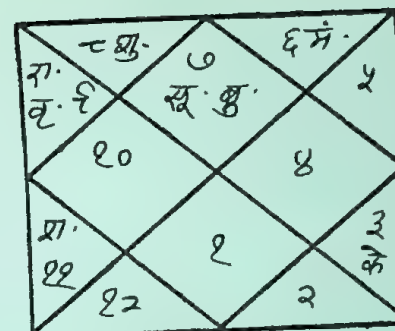
202



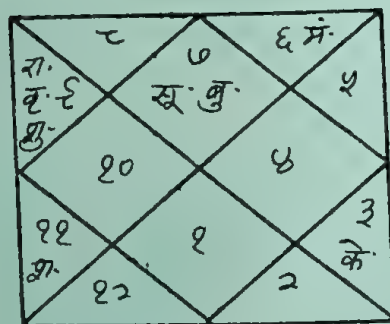
503



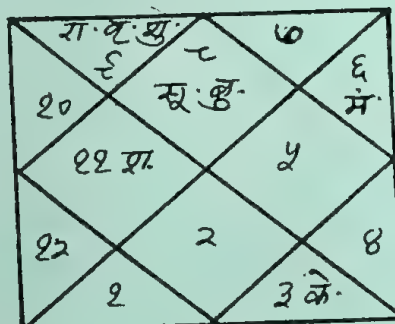
508



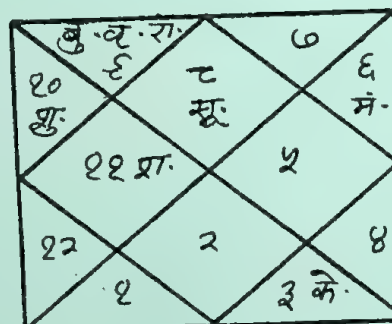
502



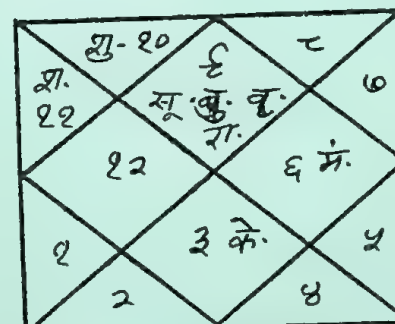
302



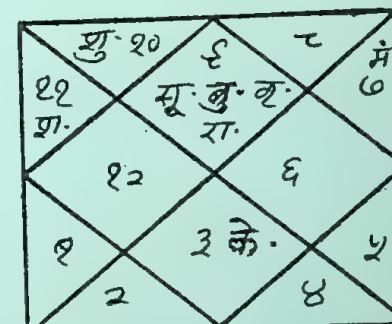
206



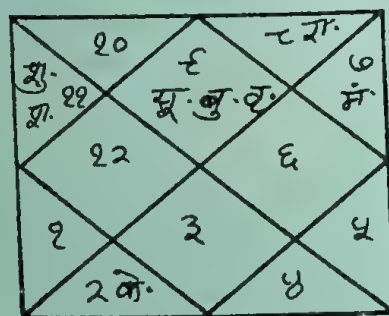
203



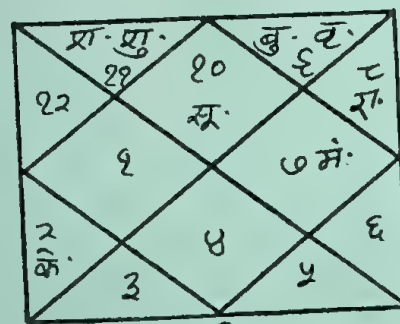
202



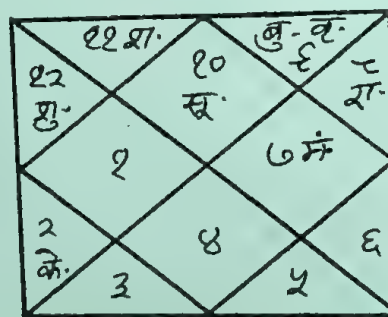
£20



£22



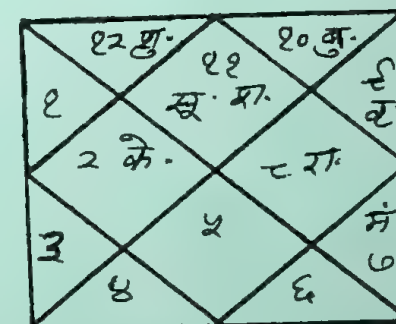
£82



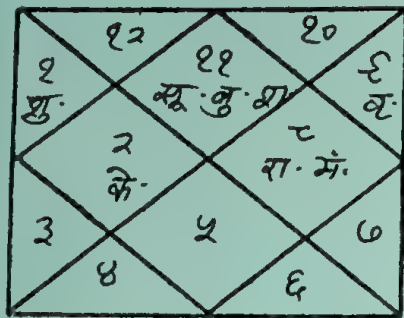
-E-23



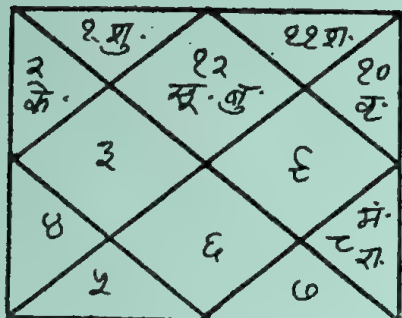
٥٥٥



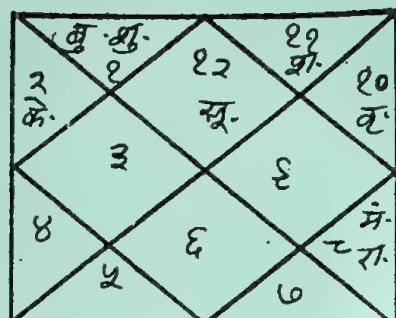
for



८१६



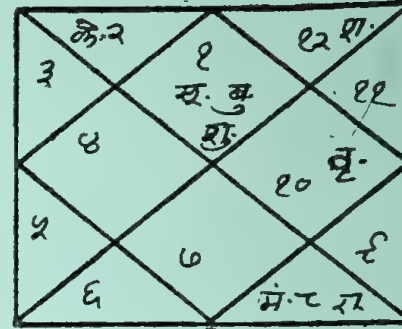
८१७



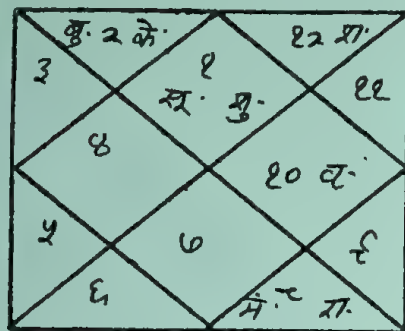
८१८



८१९



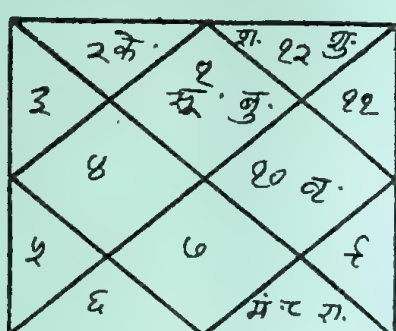
८२०



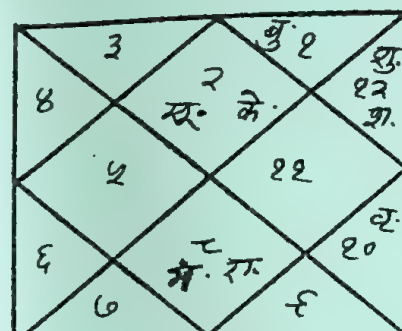
८२१



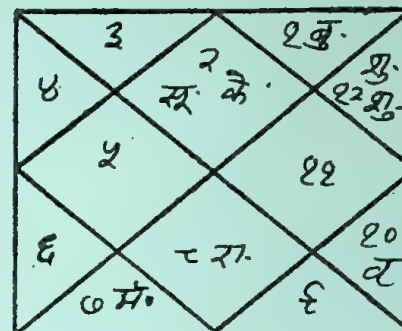
८२२



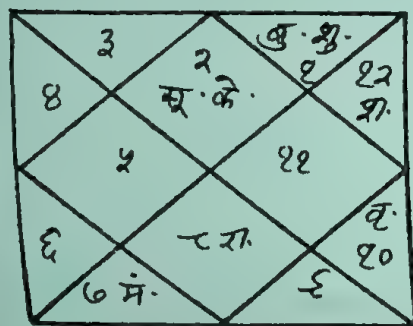
८२३



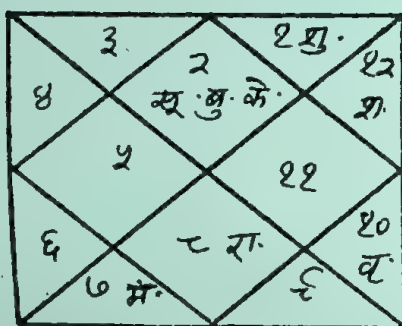
८२४



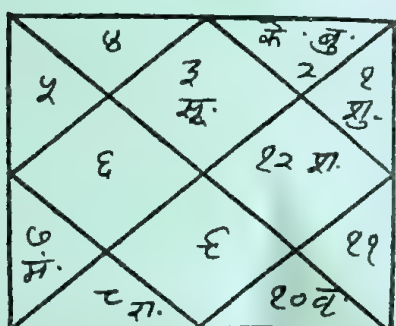
८२५



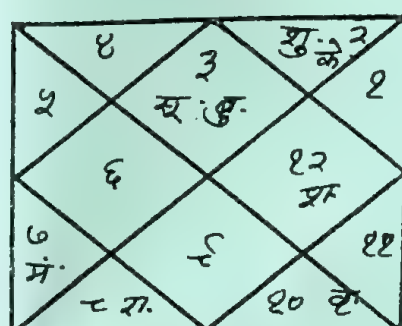
८२६



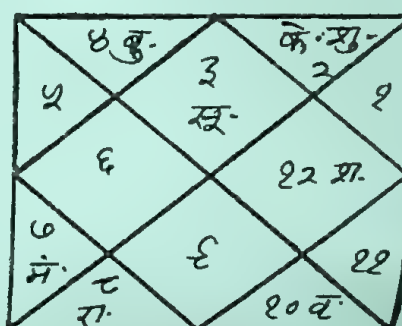
८२७



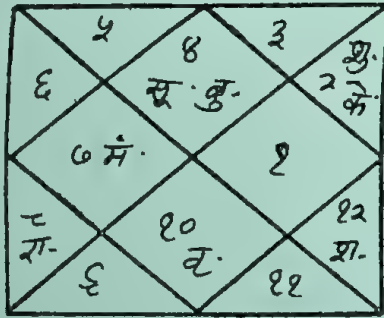
८२८



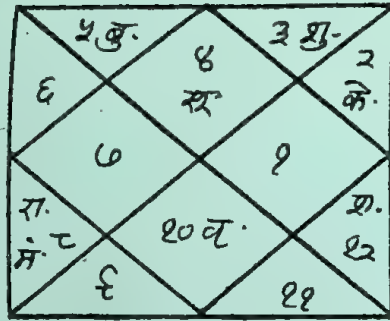
८२९



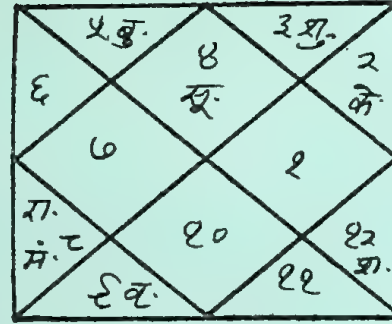
८३०



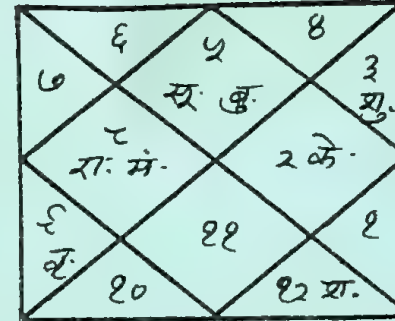
८३१



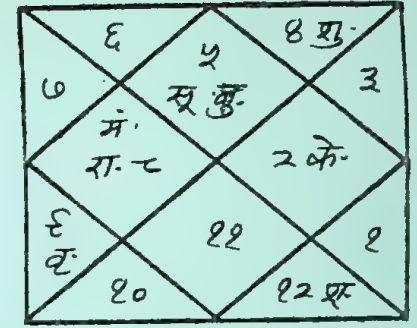
८३२



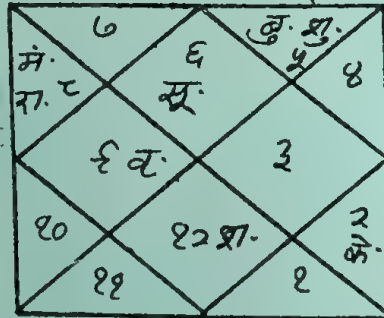
८३३



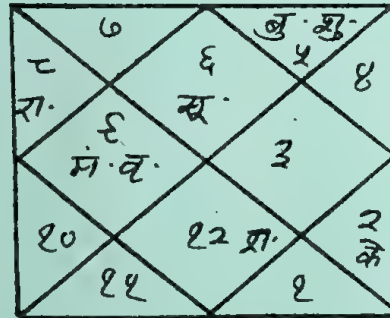
८३४



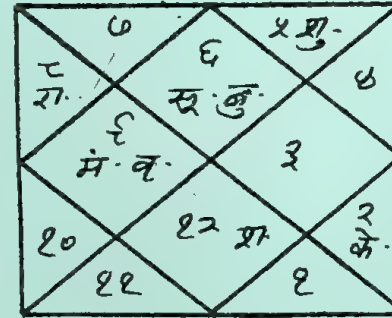
८३५



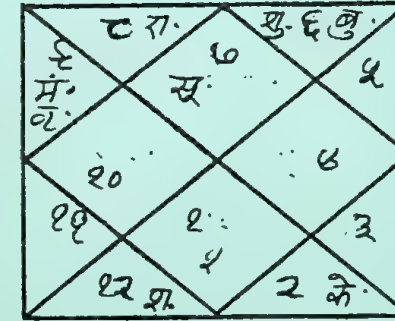
८३६



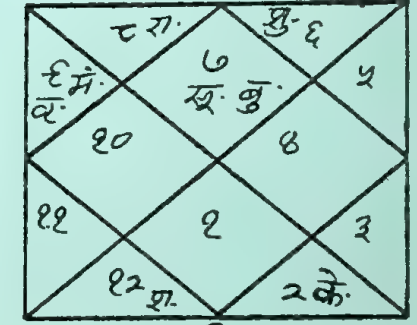
८३७



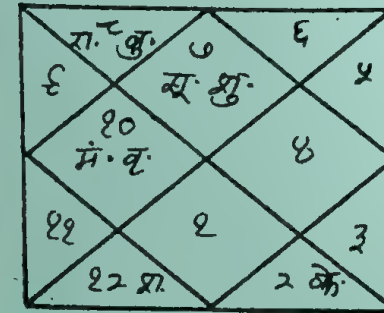
८३८



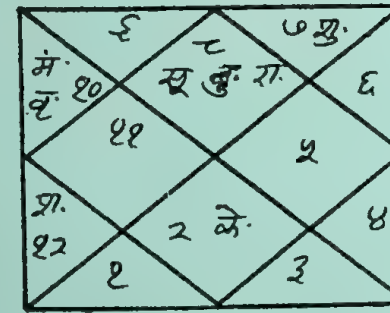
८३९



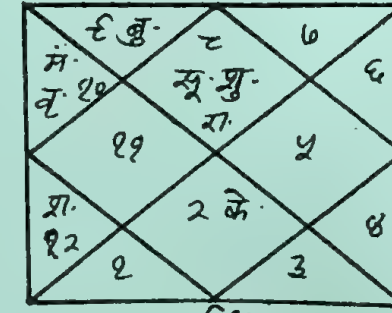
८४०



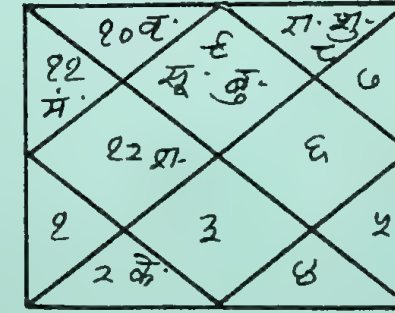
८४१



८४२



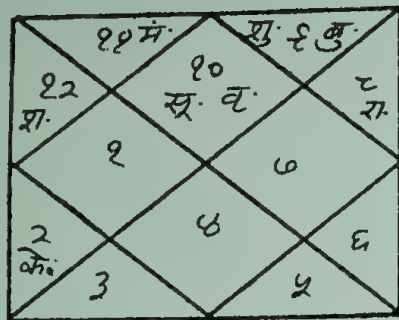
८४३



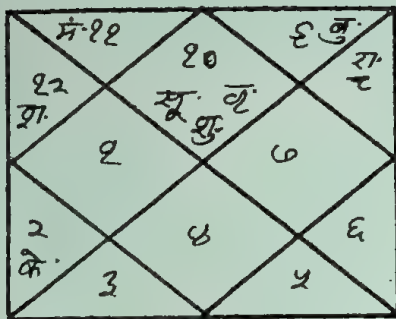
८४४



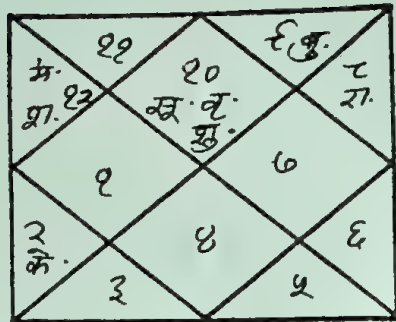
८४५



८४६



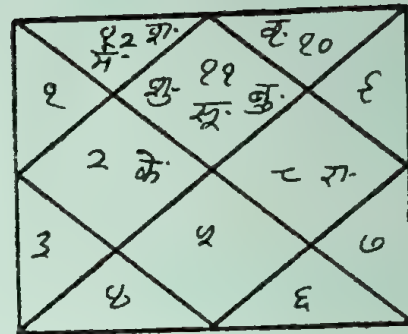
८४७



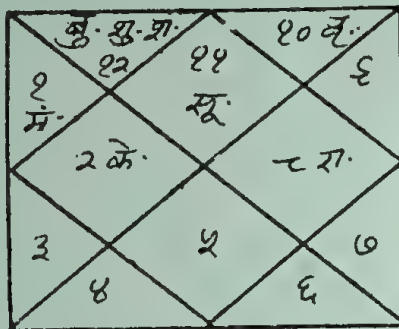
८४८



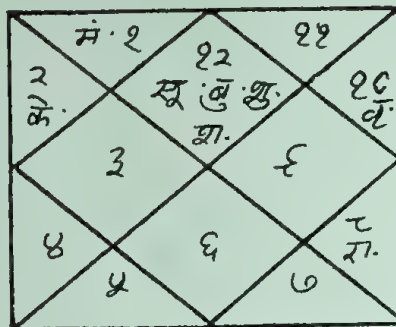
८४९



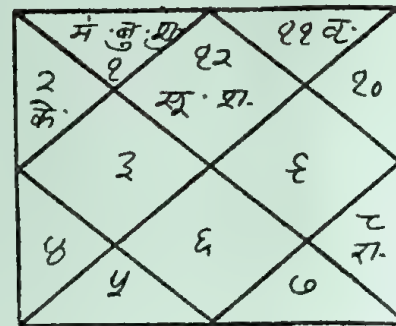
८५०



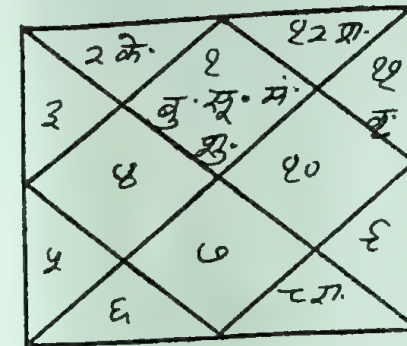
८५१



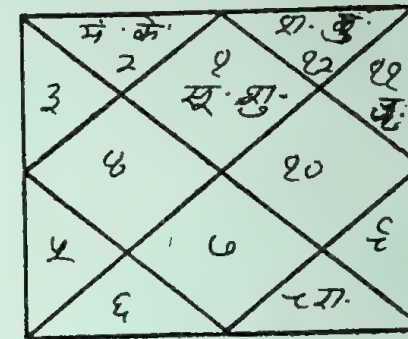
८५२



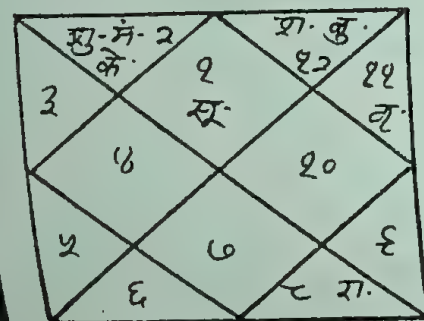
८५३



८५४



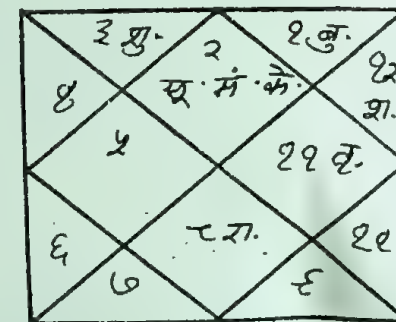
८५५



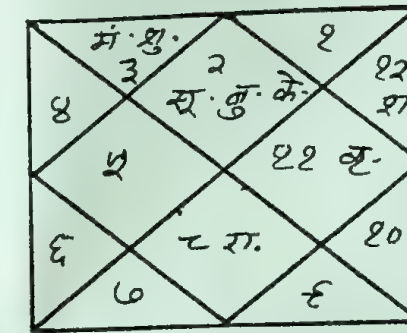
८५६



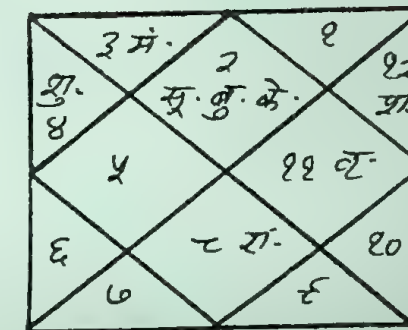
८५७



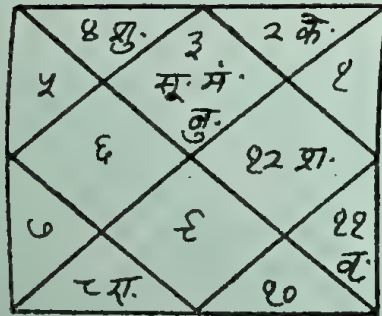
८५८



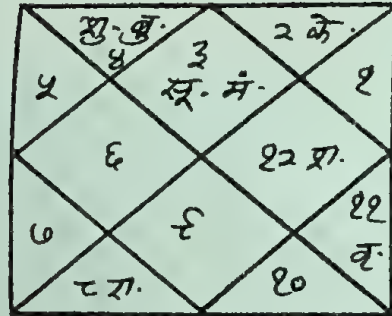
८५९



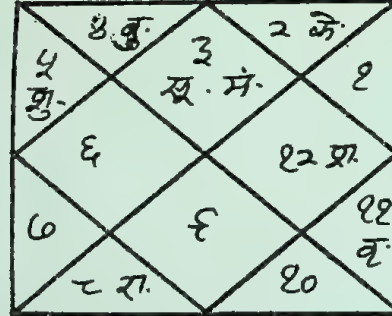
८६०



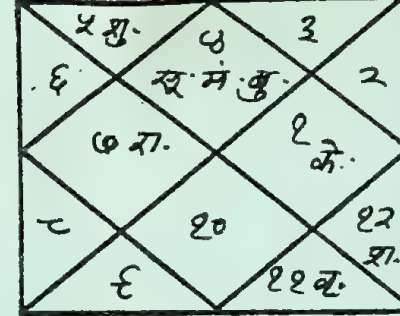
सं० १



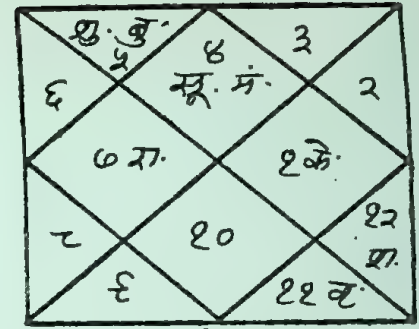
सं० २



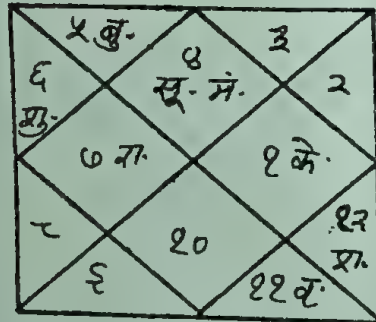
सं० ३



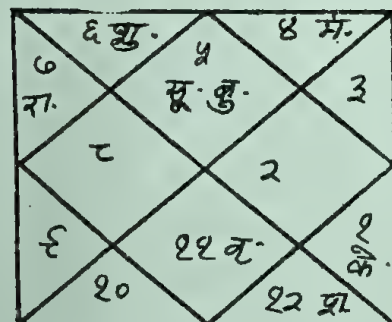
सं० ४



सं० ५



सं० ६



सं० ७



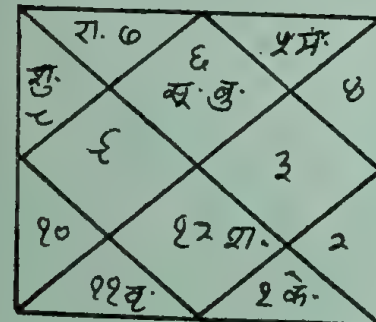
सं० ८



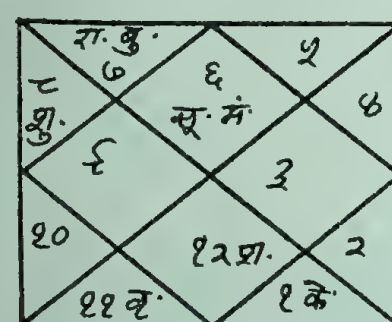
सं० ९



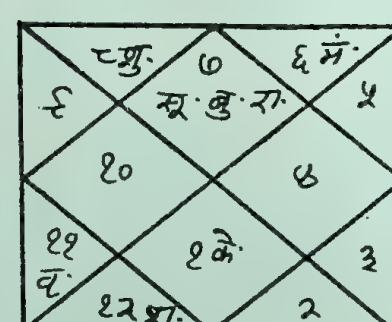
सं० १०



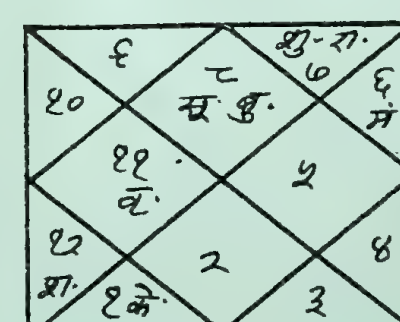
सं० ११



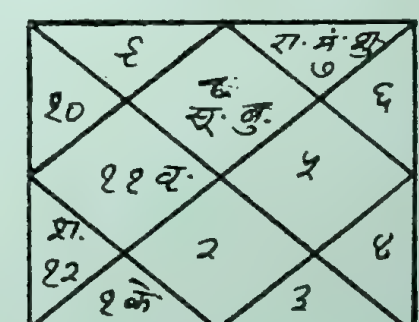
सं० १२



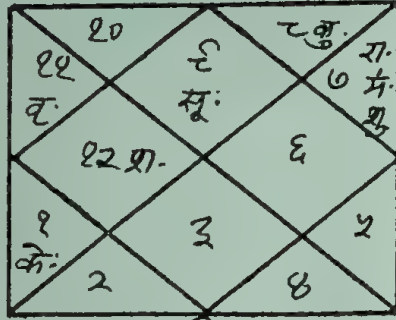
सं० १३



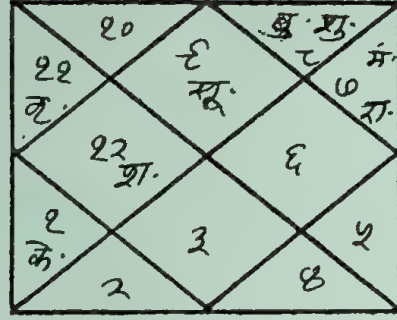
सं० १४



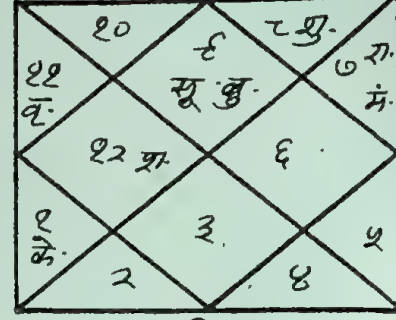
सं० १५



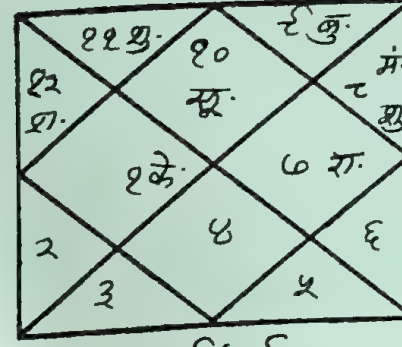
८७६



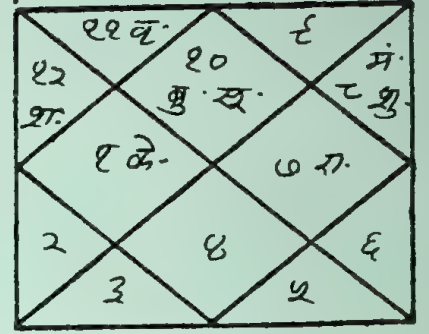
८७७



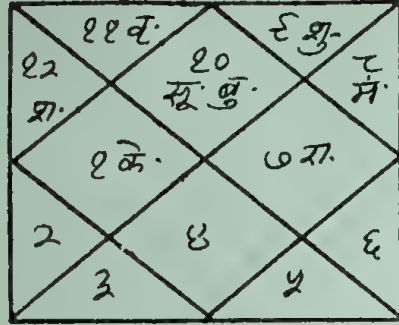
८७८



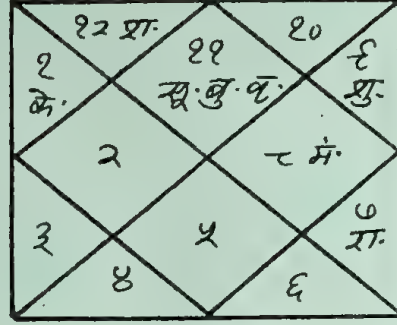
८७९



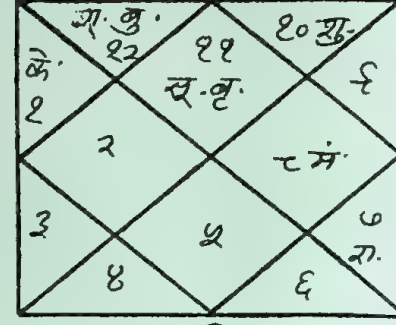
८८०



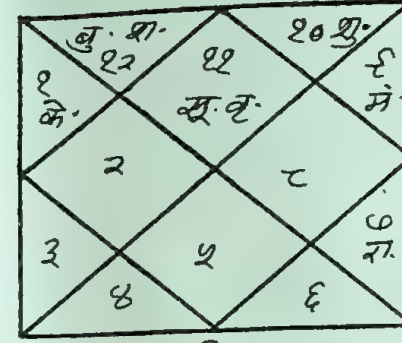
८८१



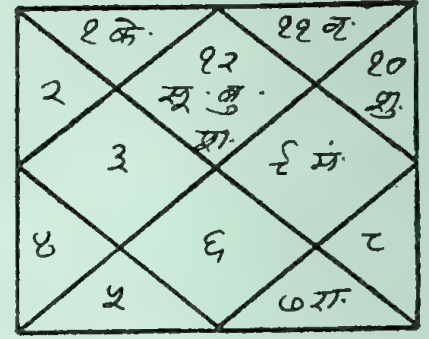
८८२



८८३



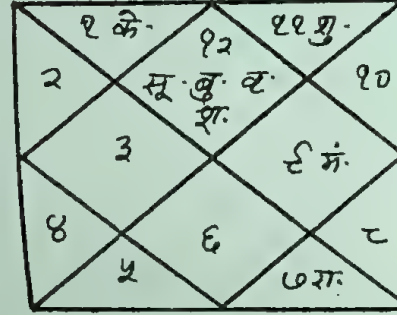
८८४



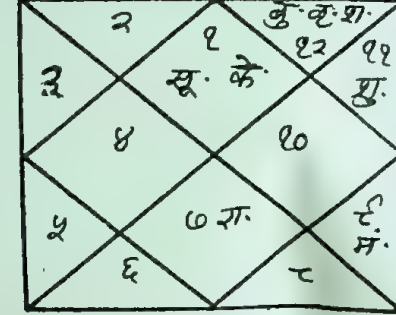
८८५



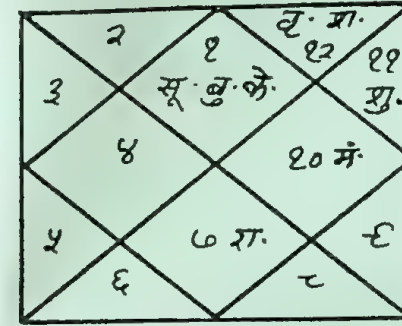
८८६



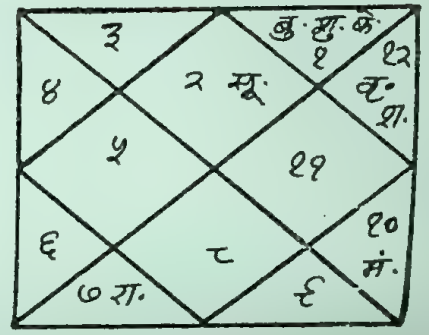
८८७



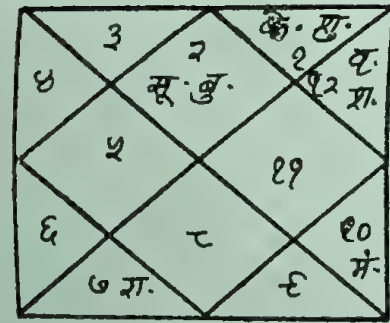
८८८



८८९



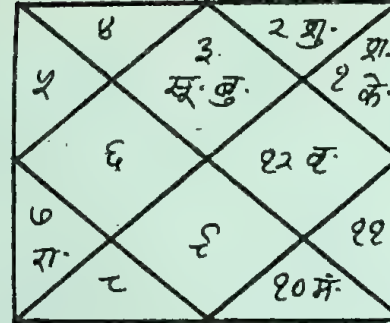
८९०



૧૧૧



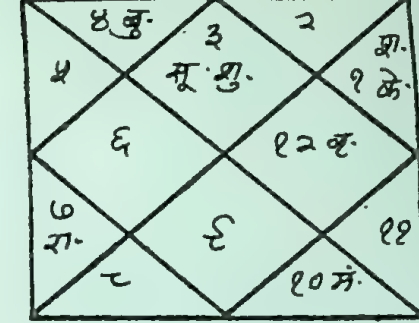
૧૧૨



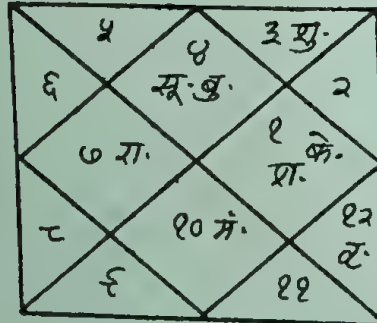
૧૧૩



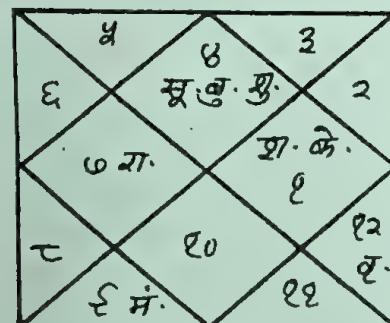
૧૧૪



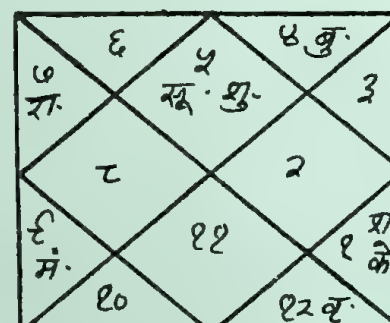
૧૧૫



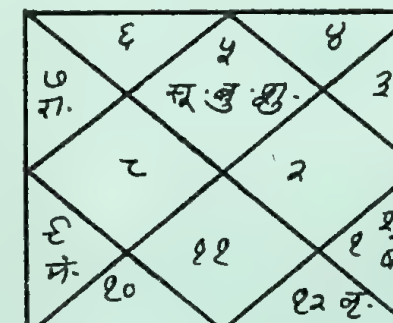
૧૧૬



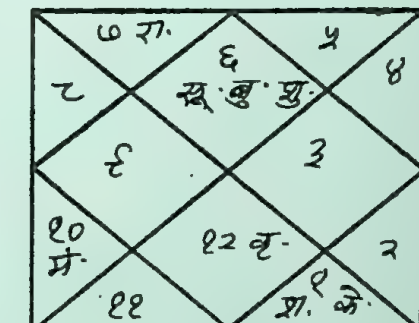
૧૧૭



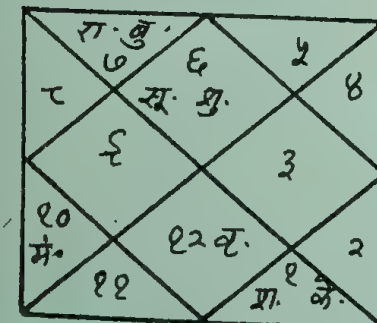
૧૧૮



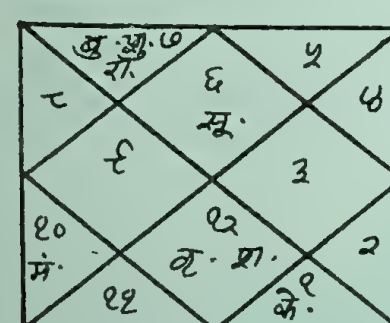
૧૧૯



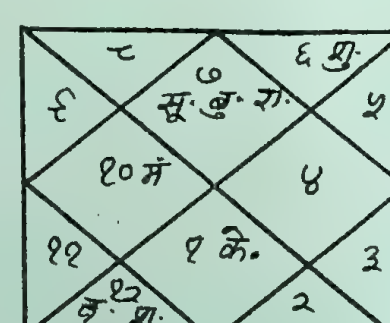
૧૨૦૦



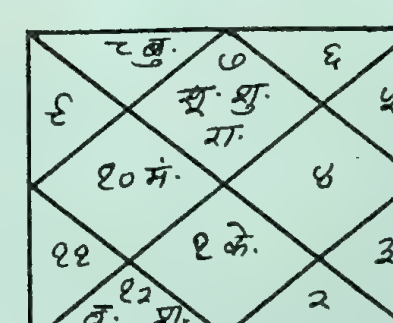
૧૨૦૧



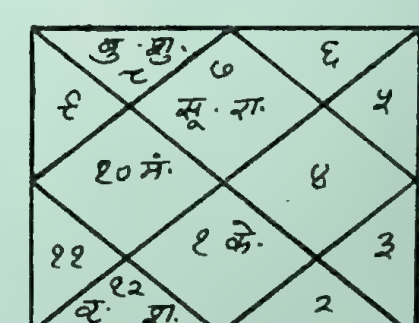
૧૨૦૨



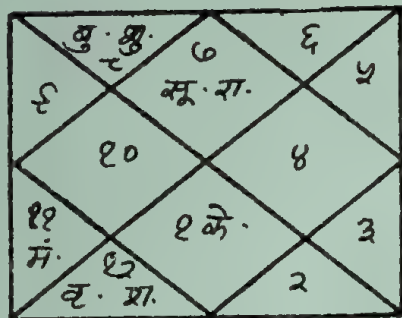
૧૨૦૩



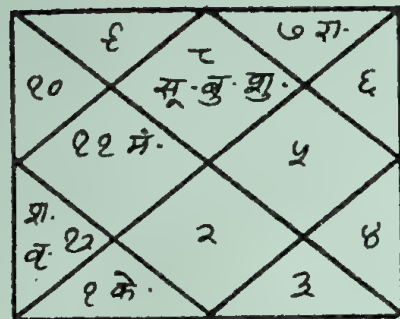
૧૨૦૪



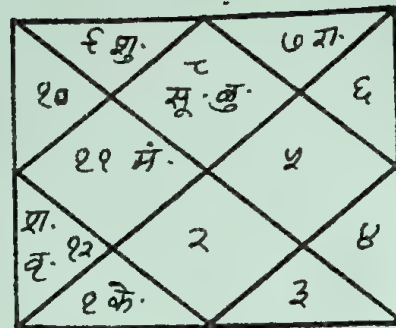
૧૨૦૫



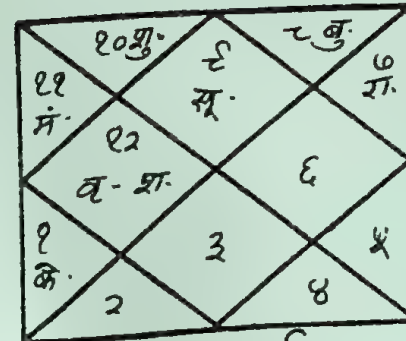
१००६



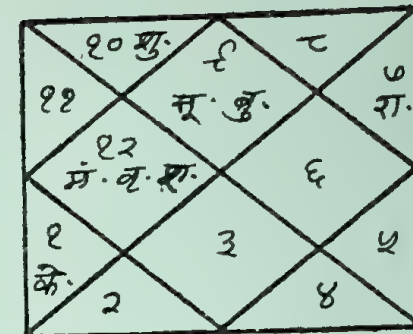
१००७



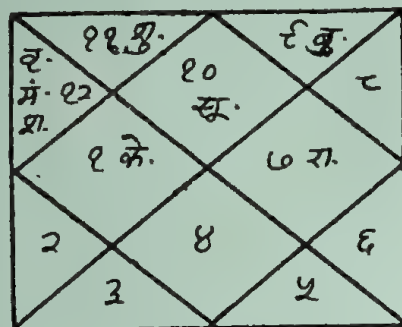
१००८



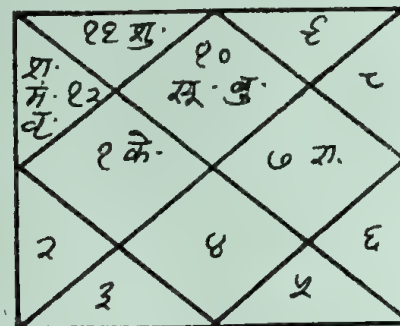
१००९



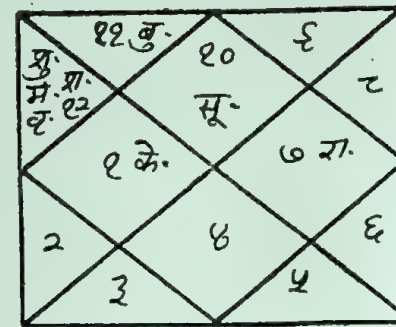
१०१०



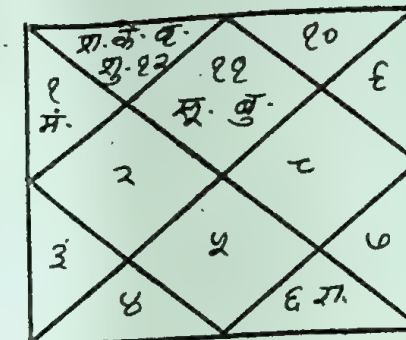
१०११



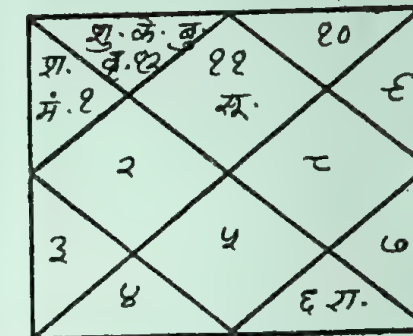
१०१२



१०१३



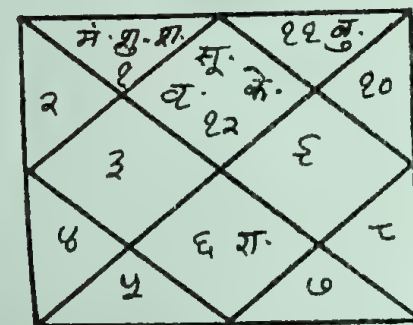
१०१४



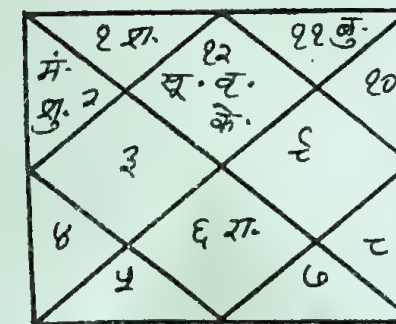
१०१५



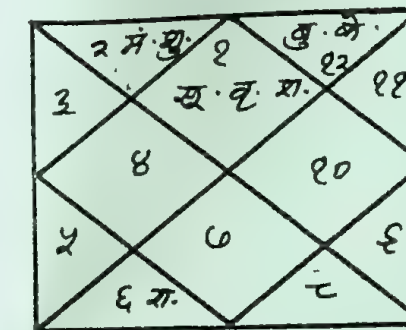
१०१६



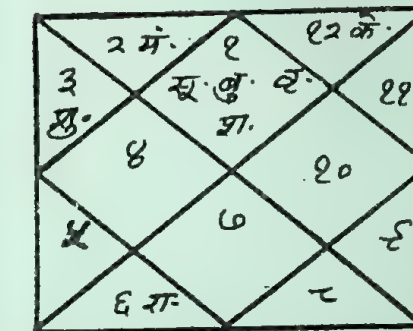
१०१७



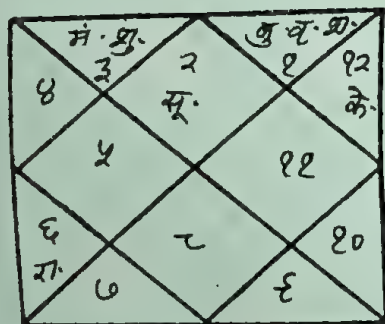
१०१८



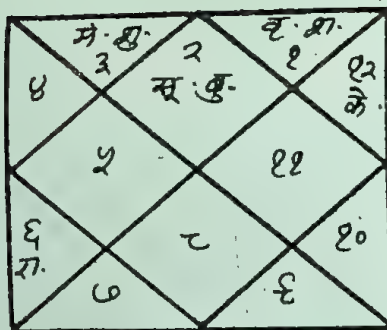
१०१९



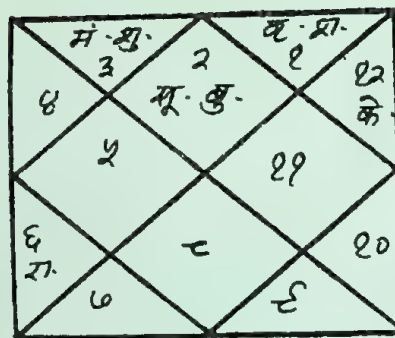
१०२०



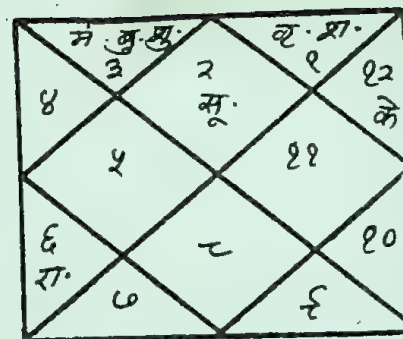
૧૦૨૧



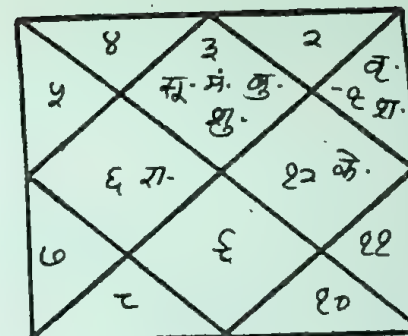
૧૦૨૨



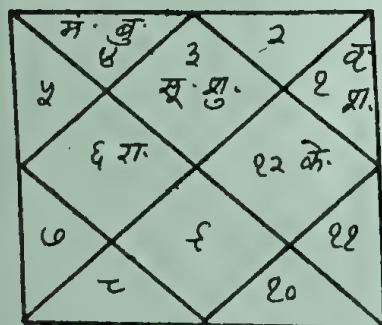
૧૦૨૩



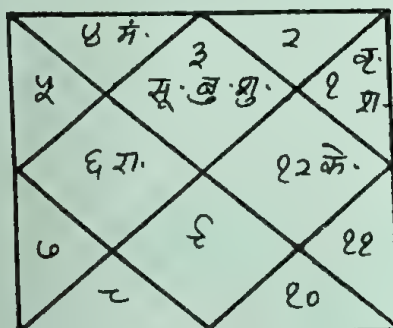
૧૦૨૪



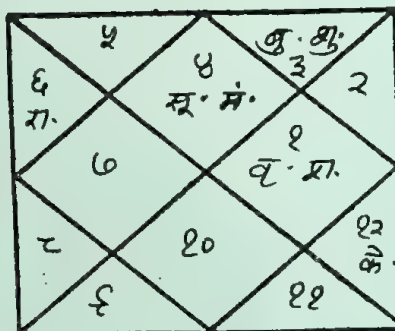
૧૦૨૫



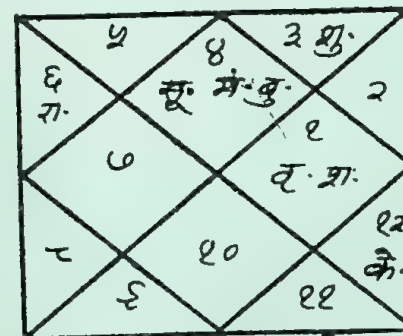
૧૦૨૬



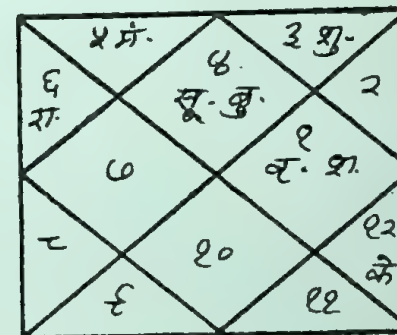
૧૦૨૭



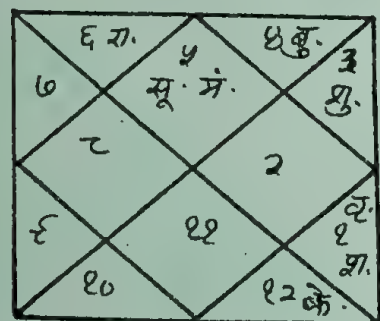
૧૦૨૮



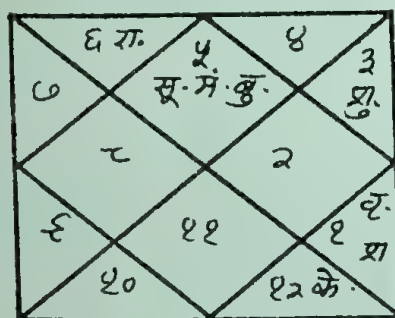
૧૦૨૯



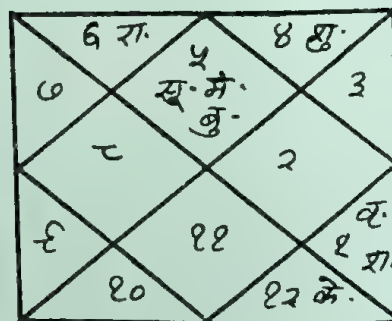
૧૦૩૦



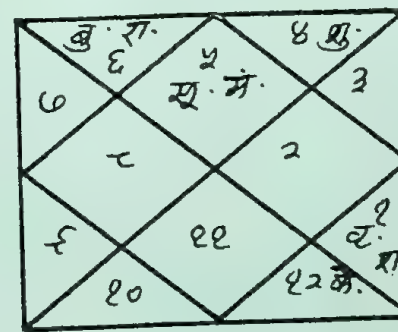
૧૦૩૧



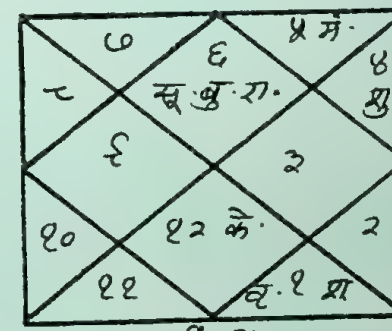
૧૦૩૨



૧૦૩૩



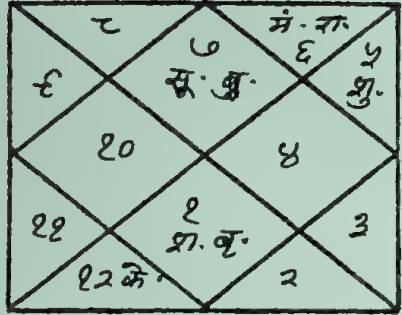
૧૦૩૪



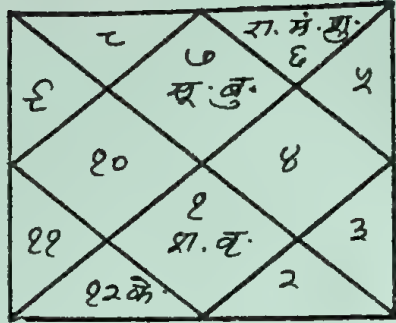
૧૦૩૫



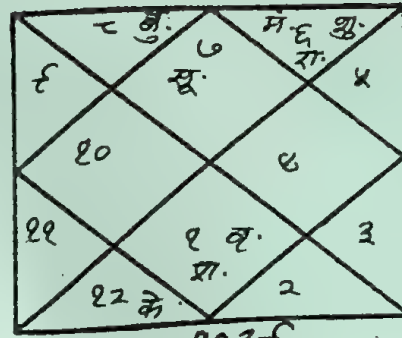
१०३६



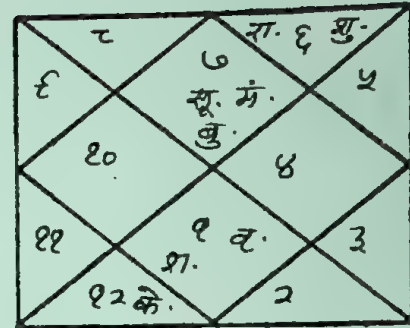
१०३७



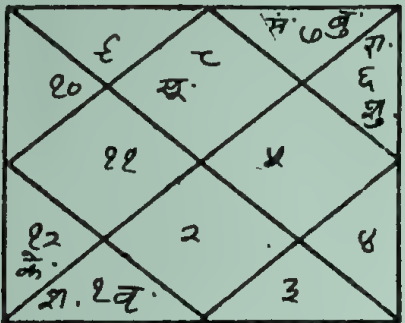
१०३८



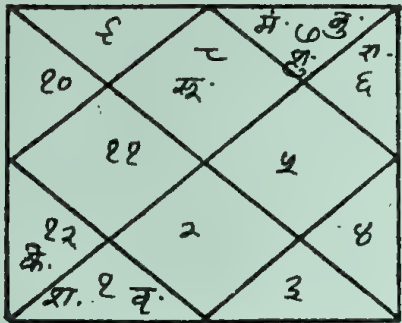
१०३९



१०४०



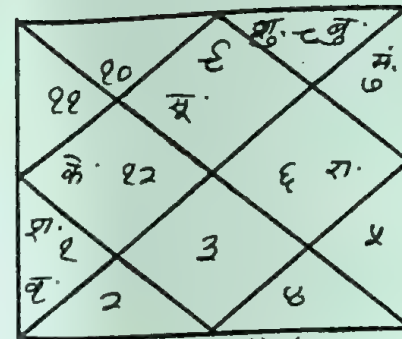
१०४१



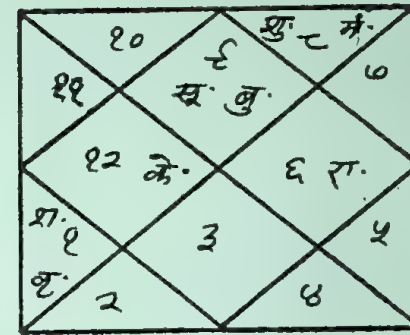
१०४२



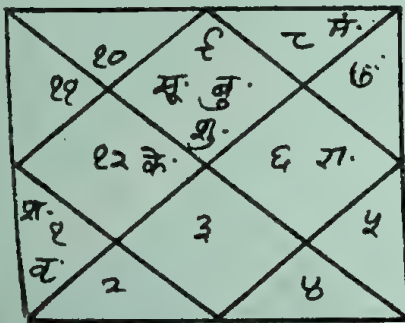
१०४३



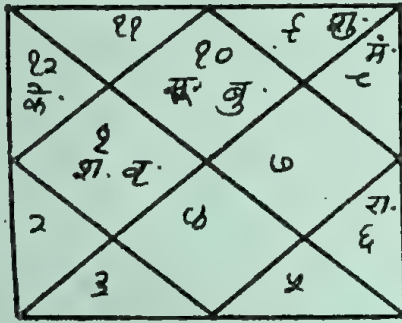
१०४४



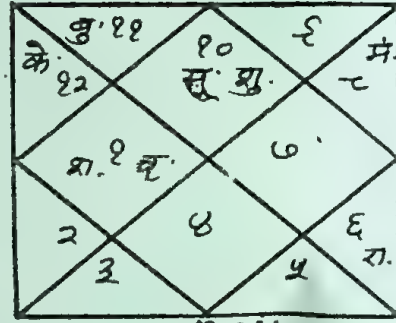
१०४५



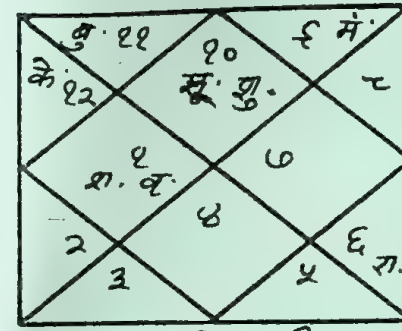
१०४६



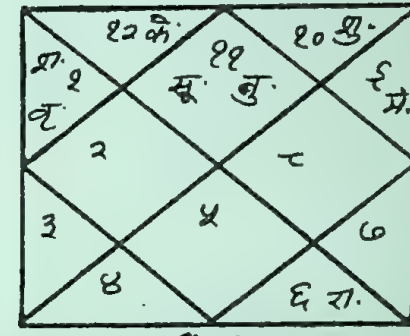
१०४७



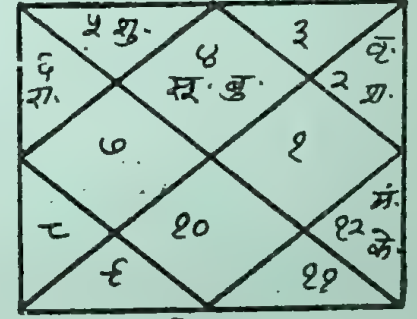
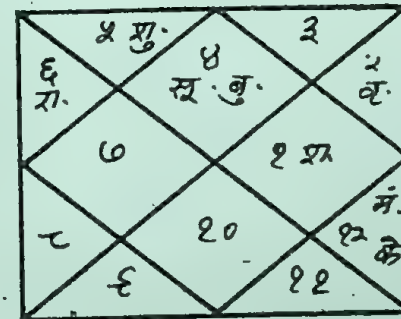
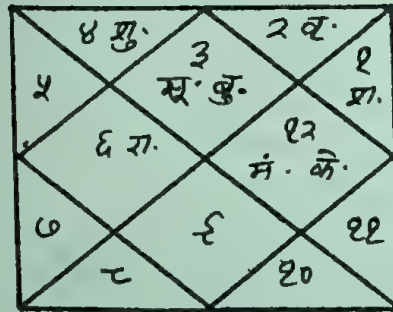
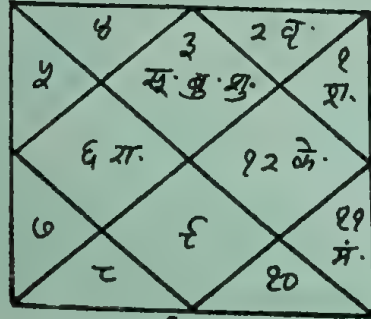
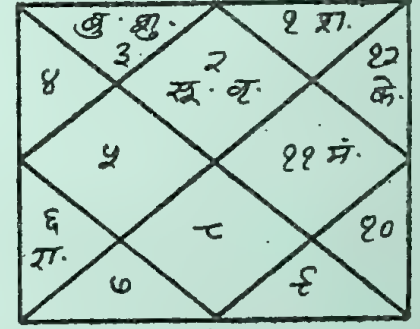
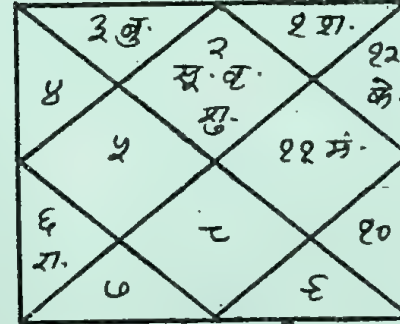
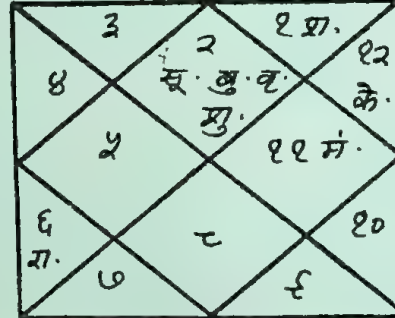
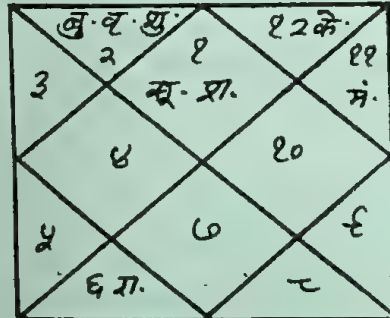
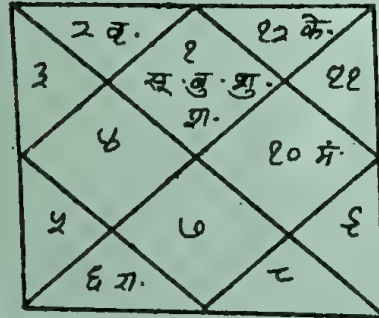
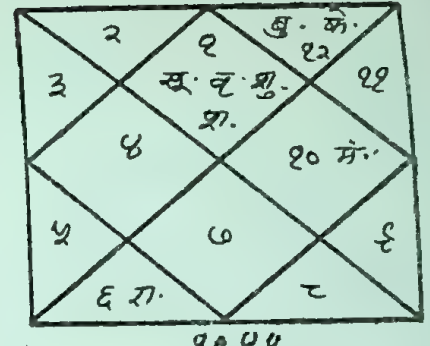
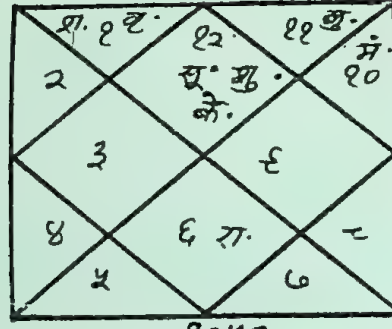
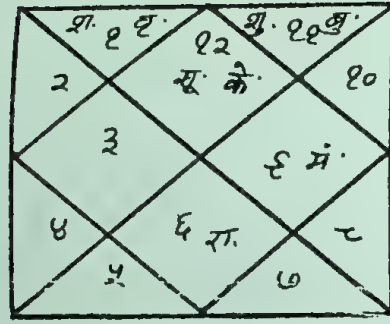
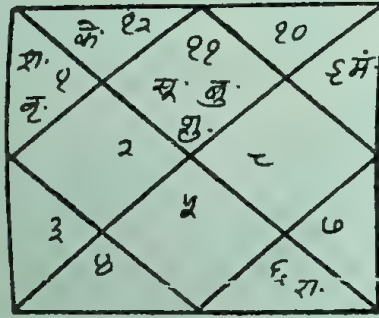
१०४८

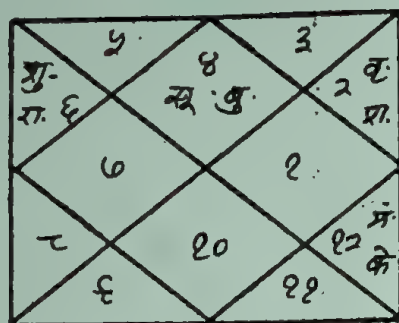


१०४९

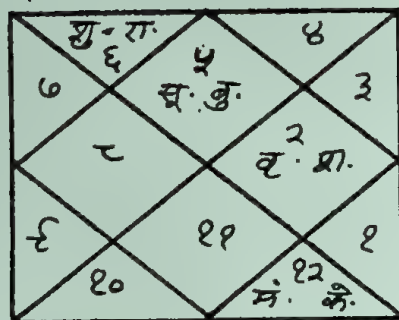


१०५०

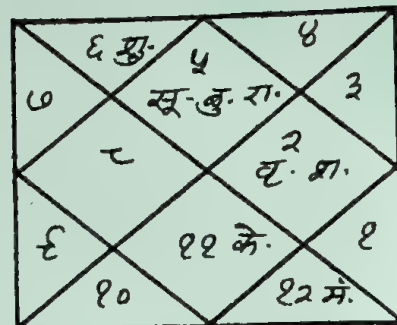




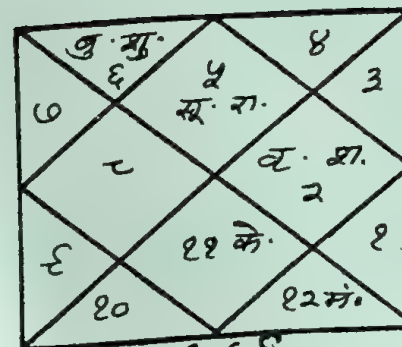
१०६६



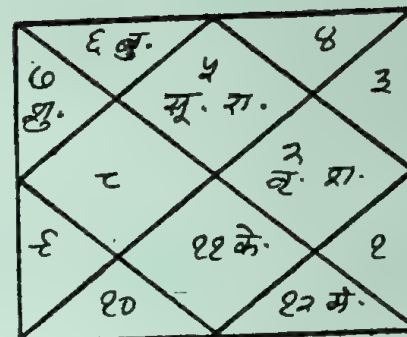
१०६७



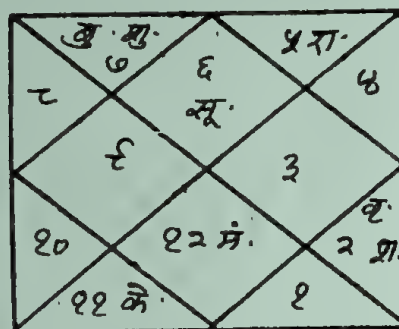
१०६८



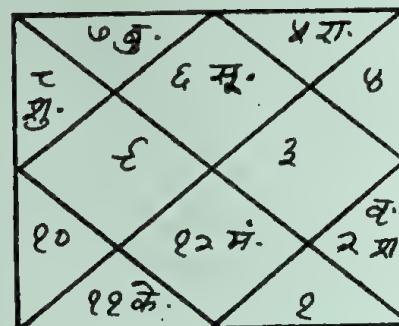
१०६९



१०७०



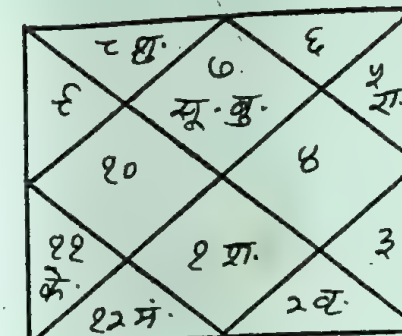
१०७१



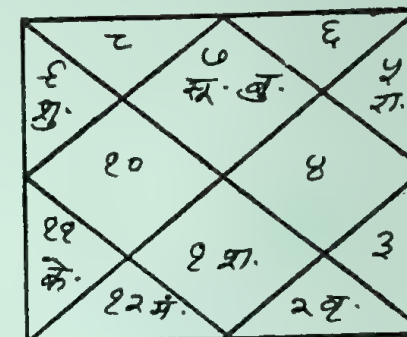
१०७२



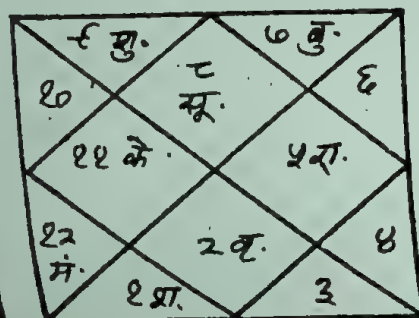
१०७३



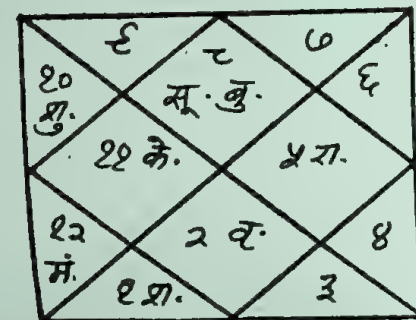
१०७४



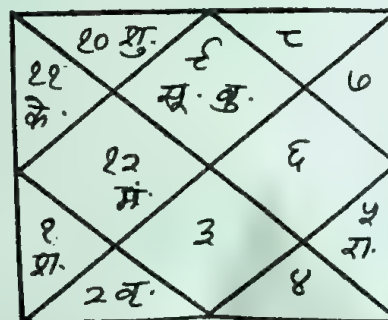
१०७५



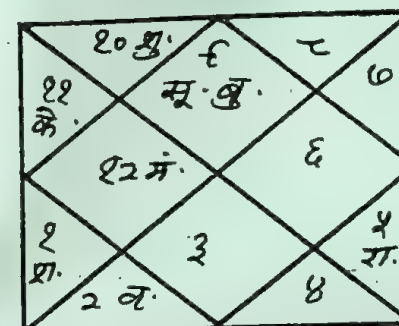
१०७६



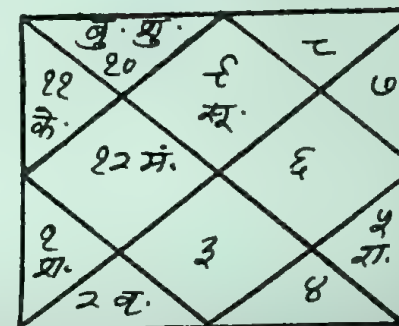
१०७७



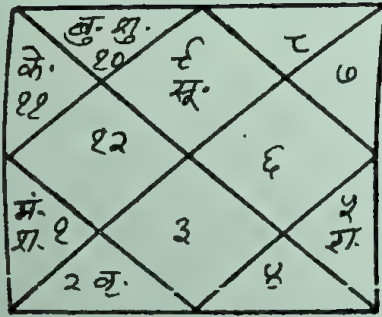
१०७८



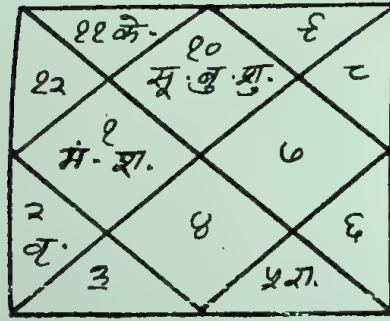
१०७९



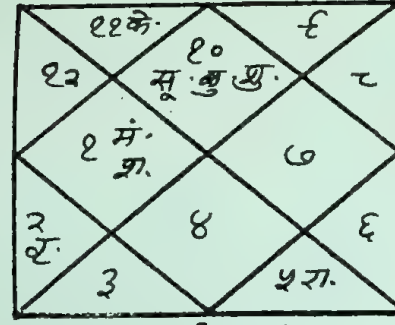
१०८०



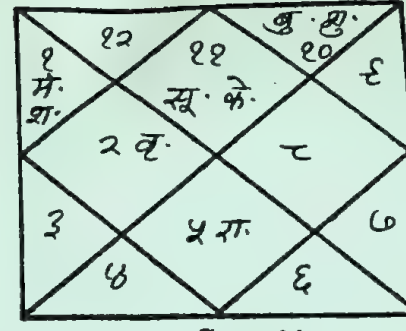
१०८१



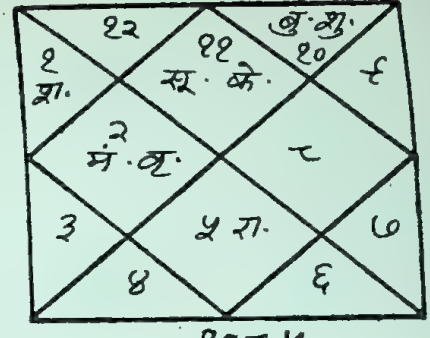
१०८२



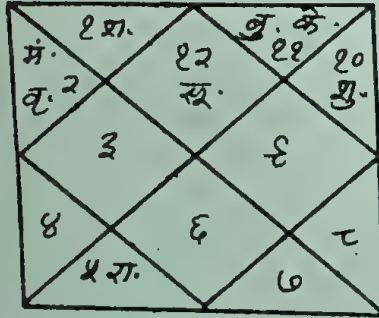
१०८३



१०८४



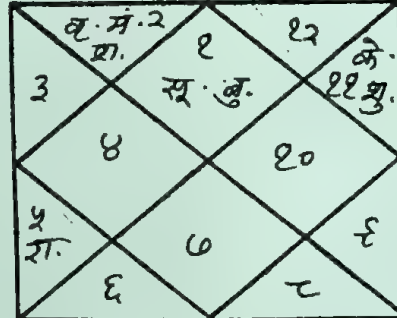
१०८५



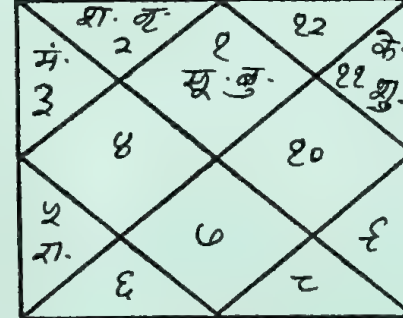
१०८६



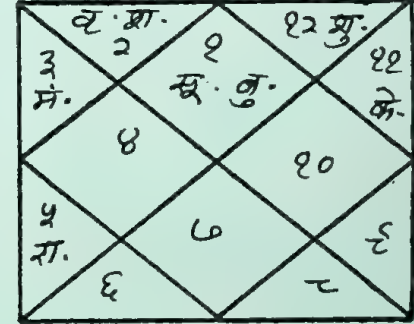
१०८७



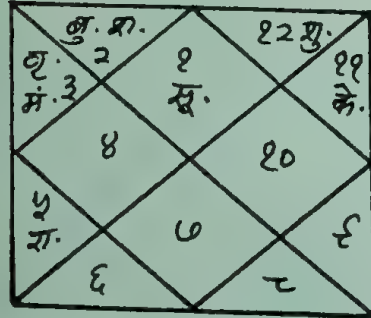
१०८८



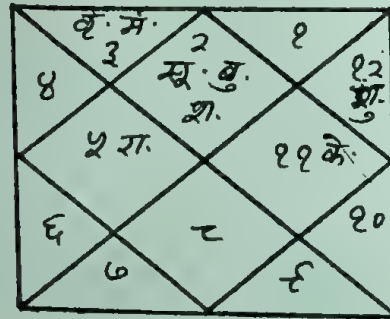
१०८९



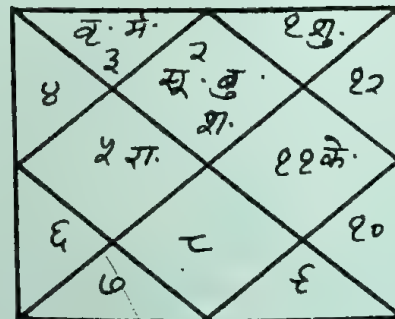
१०९०



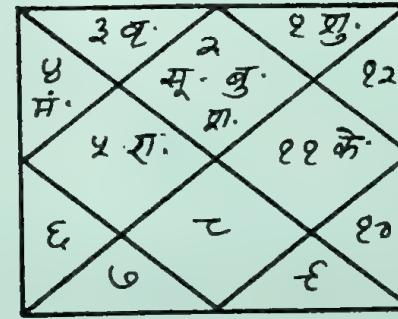
१०९१



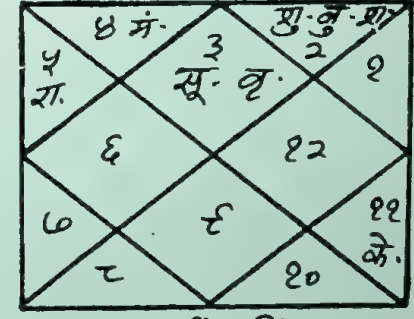
१०९२



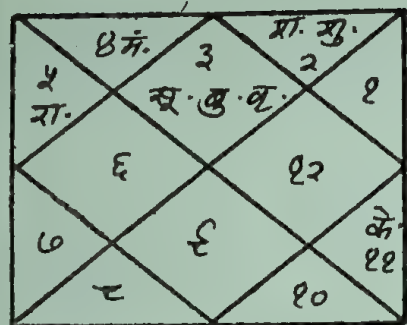
१०९३



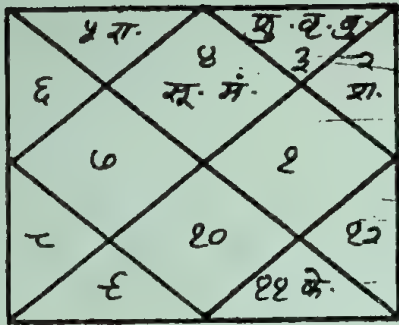
१०९४



१०९५



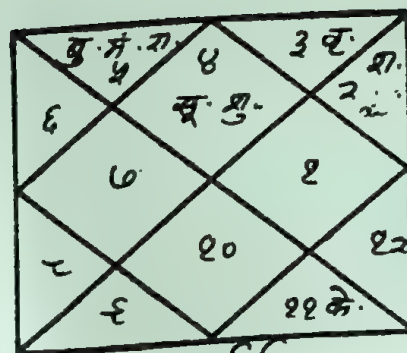
१०८६



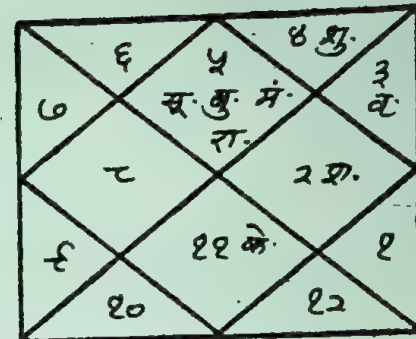
१०८७



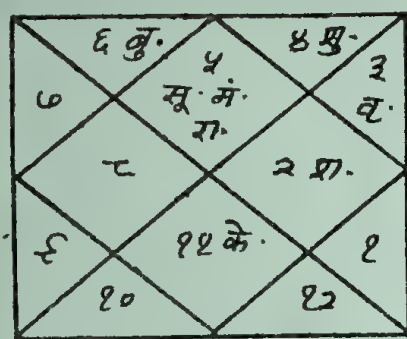
१०८८



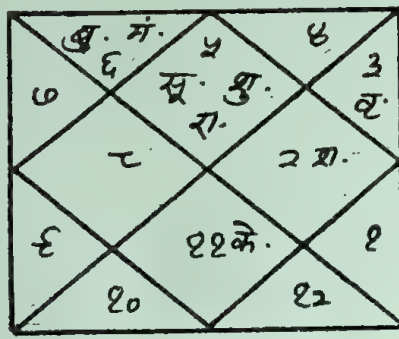
१०८९



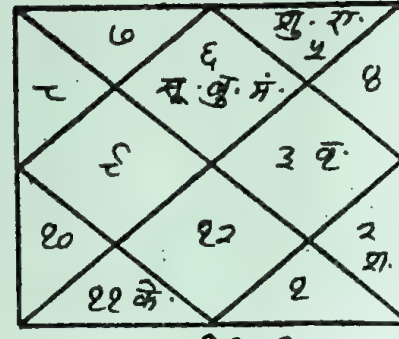
११००



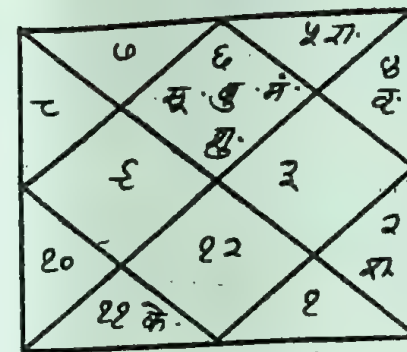
११०१



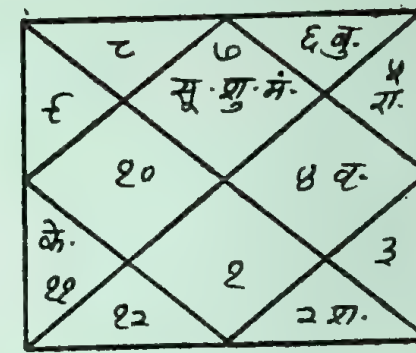
११०२



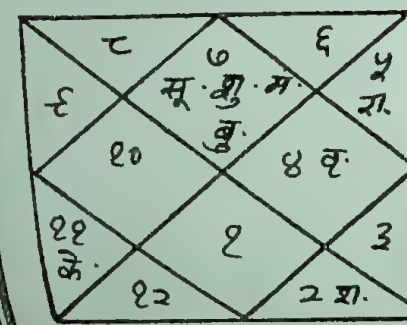
११०३



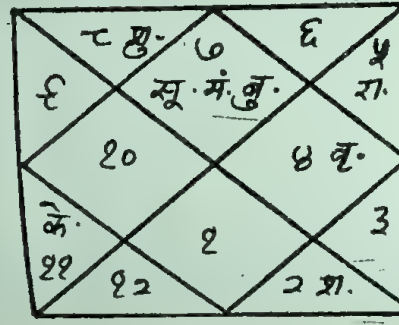
११०४



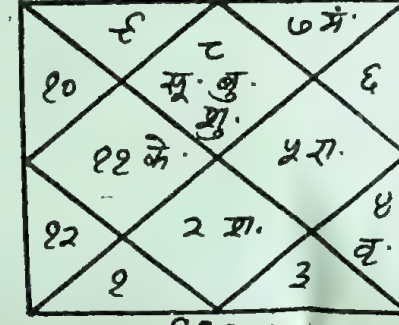
११०५



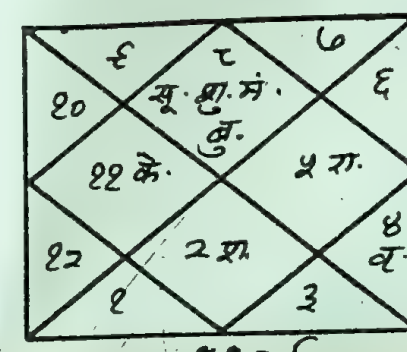
११०६



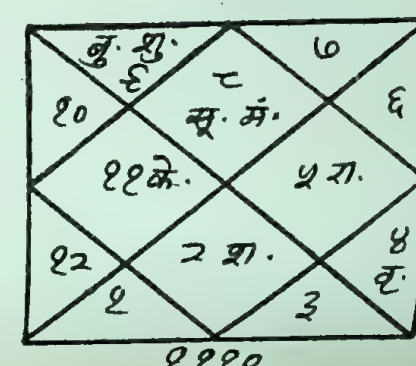
११०७



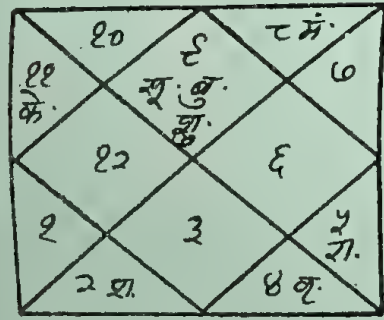
११०८



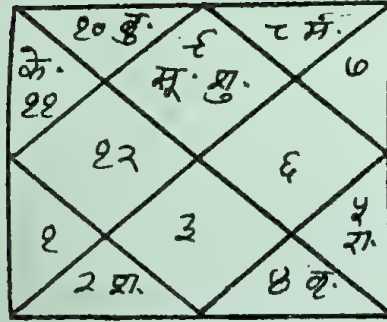
११०९



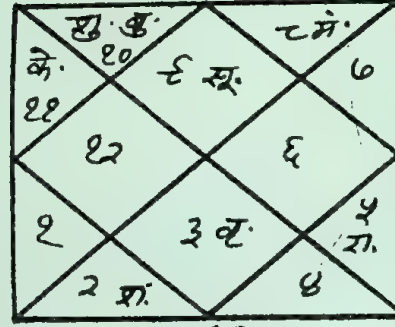
१११०



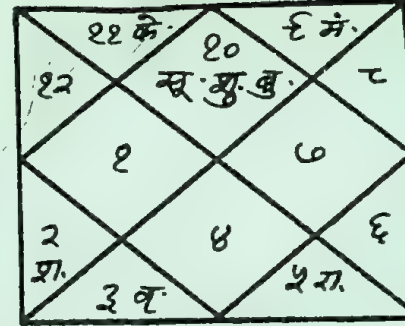
११११



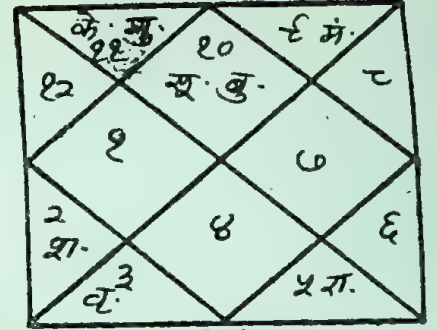
१११२



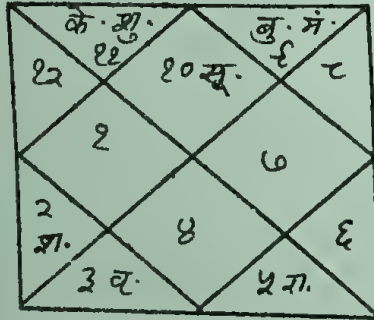
१११३



१११४



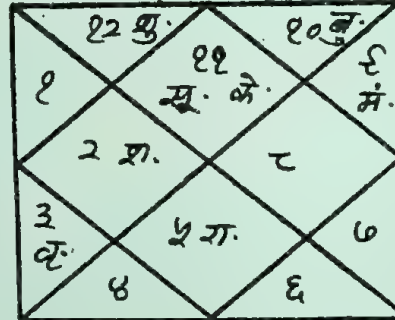
१११५



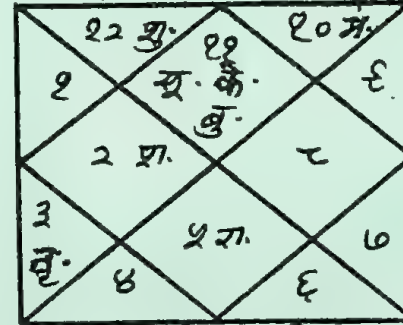
१११६



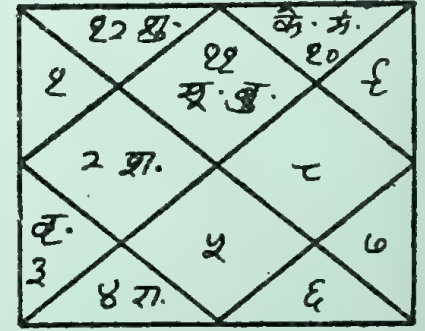
१११७



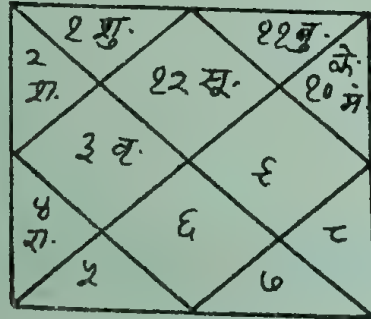
१११८



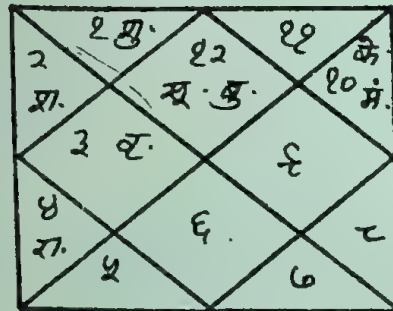
१११९



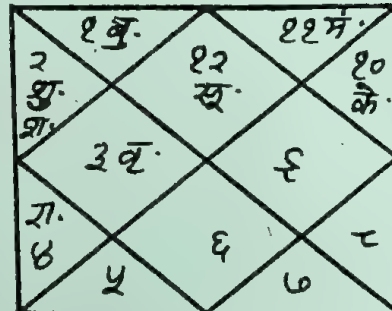
११२०



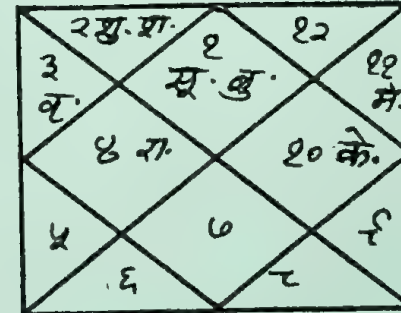
११२१



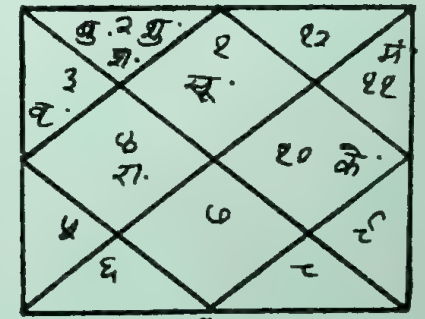
११२२



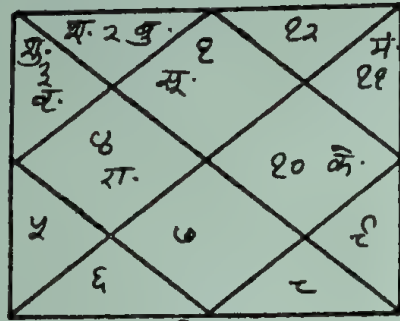
११२३



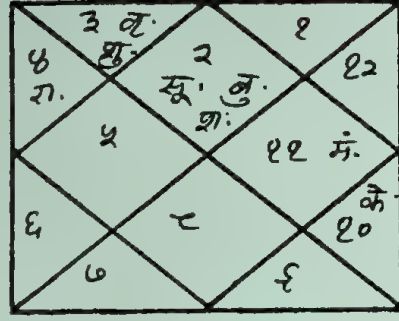
११२४



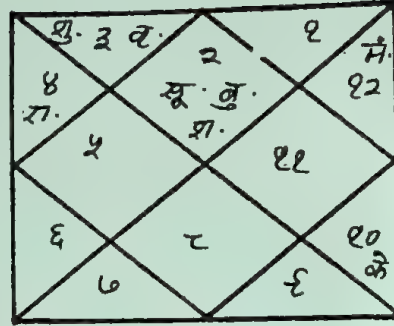
११२५



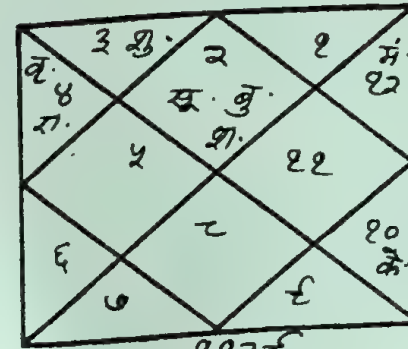
२२२६



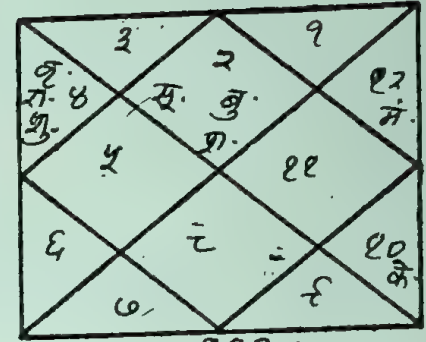
२२२६



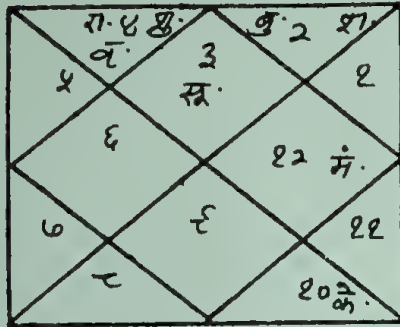
२२२८



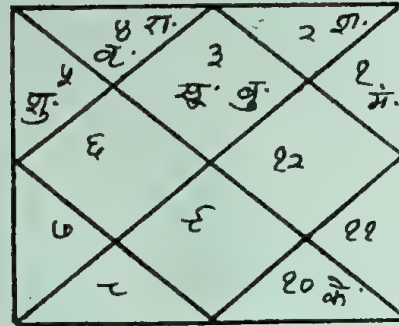
२२२८



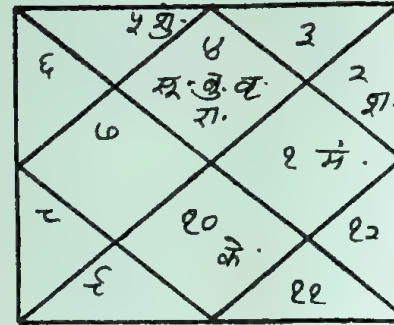
२२३०



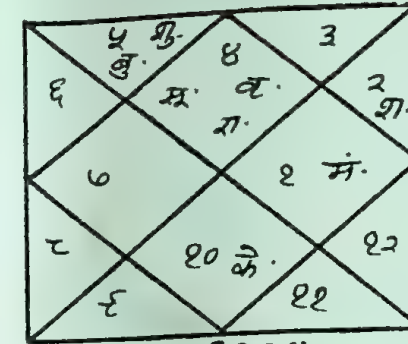
२२३२



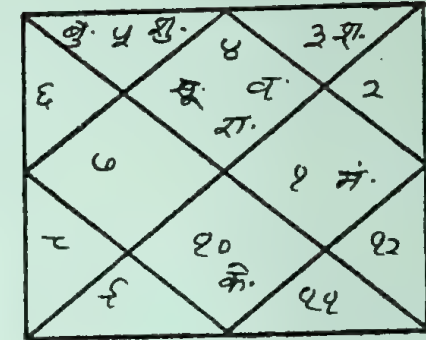
२२३२



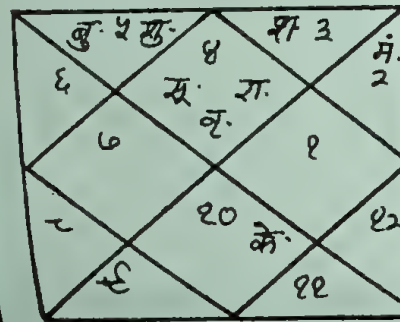
२२३३



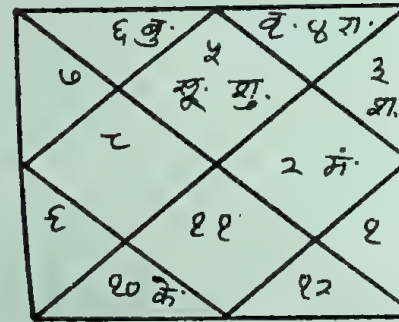
२२३४



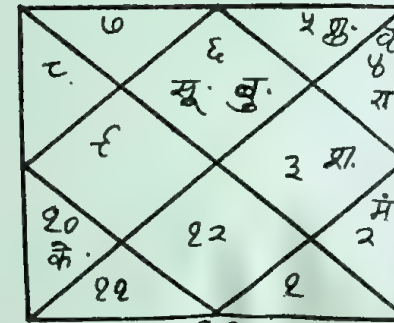
२२३५



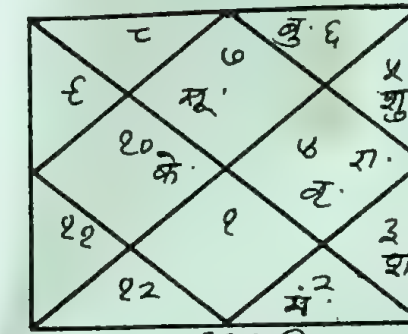
२२३६



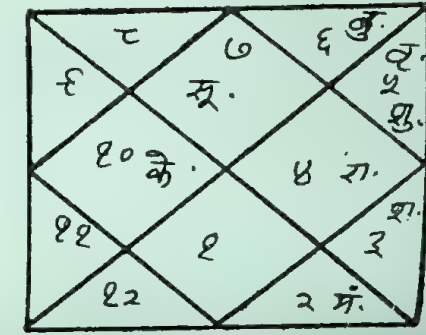
२२३७



२२३८

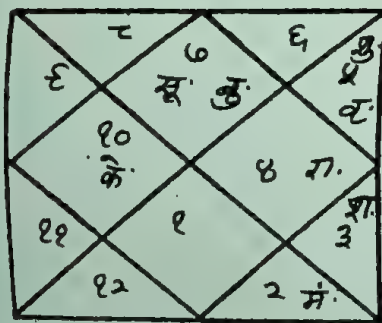


२२३९

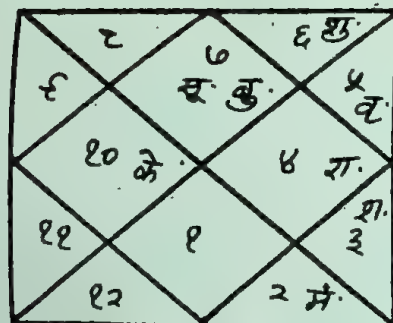


२२४०

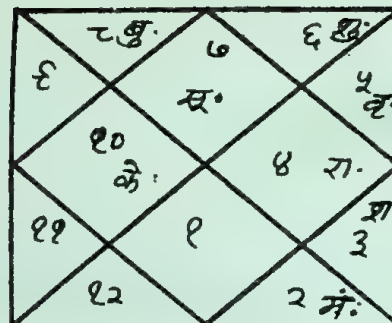
भू०
सं०
५५
५६
५७



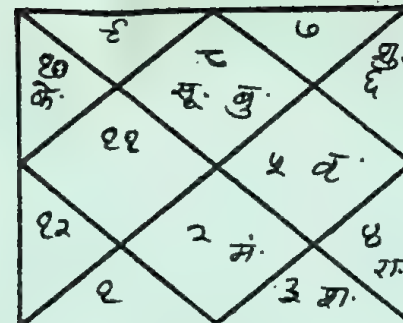
2242



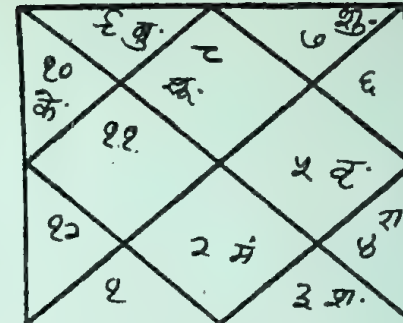
9262



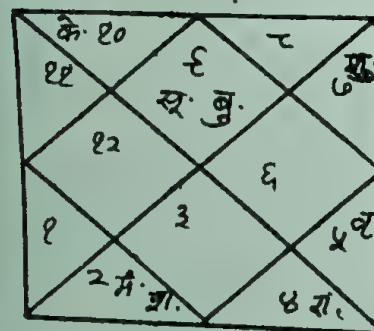
2283



2248



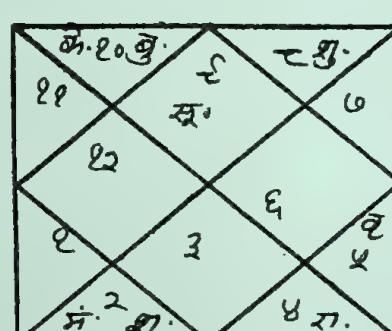
2282



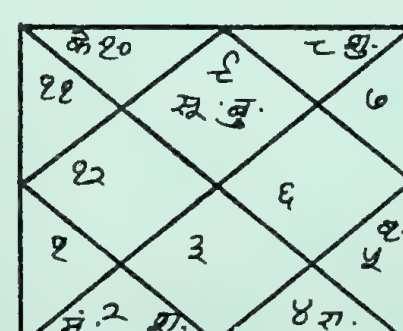
2286



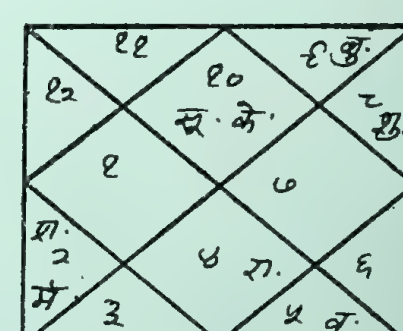
2286



2882



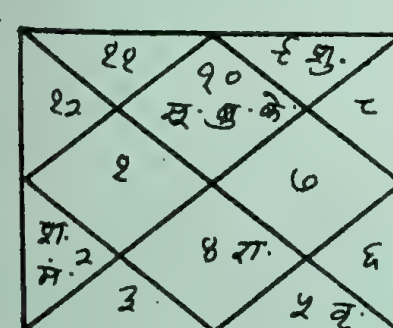
3882



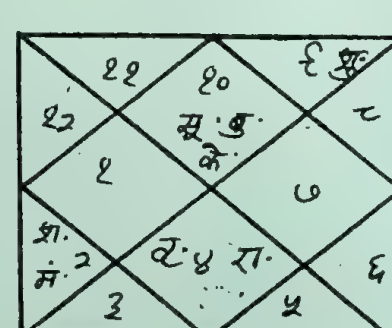
2220



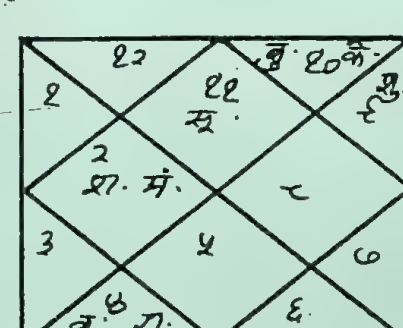
२२५२



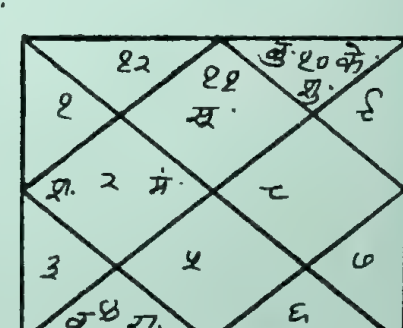
8842



2243

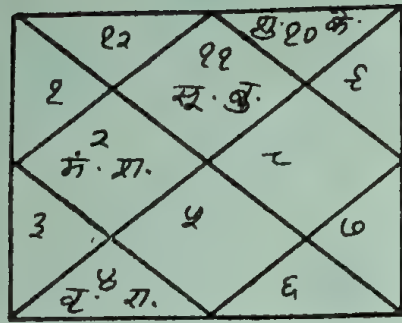


8846

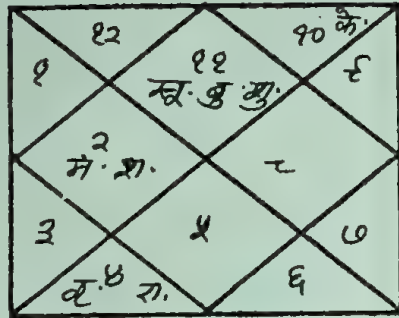


2222

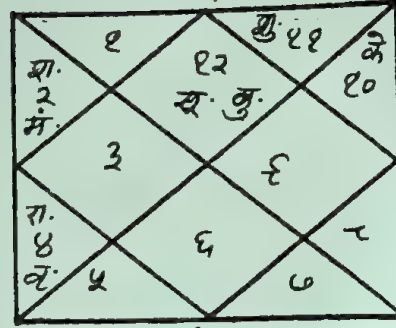
कु०
प०



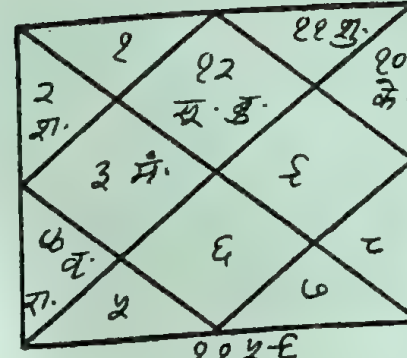
११५६



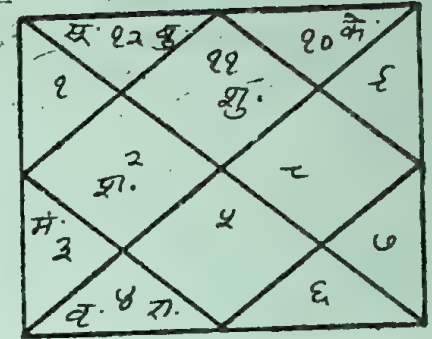
११५७



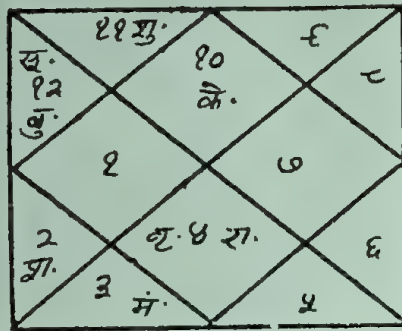
११५८



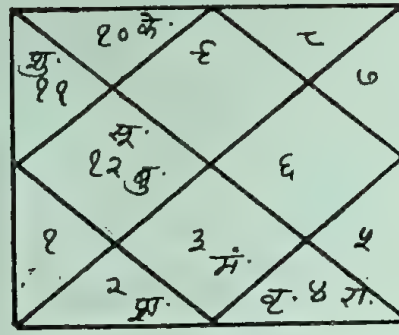
११५९



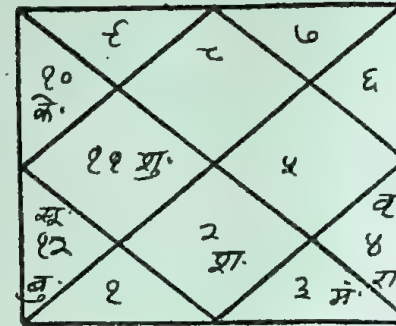
११६०



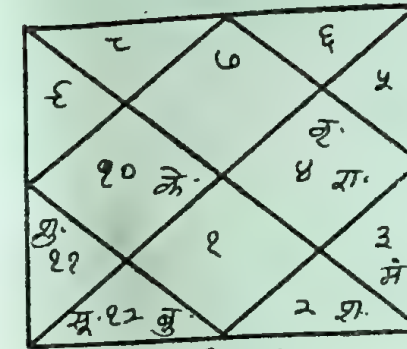
११६१



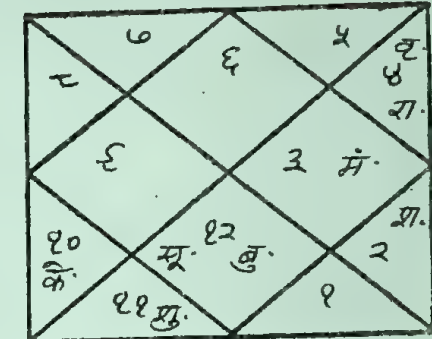
११६२



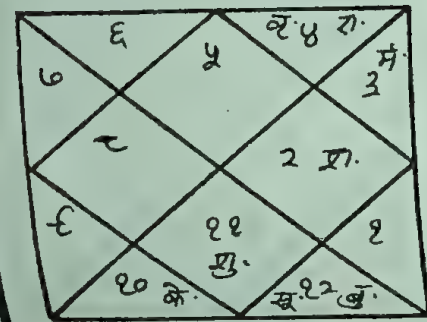
११६३



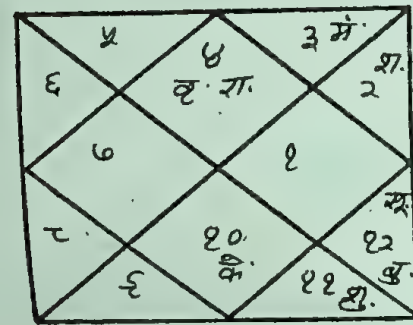
११६४



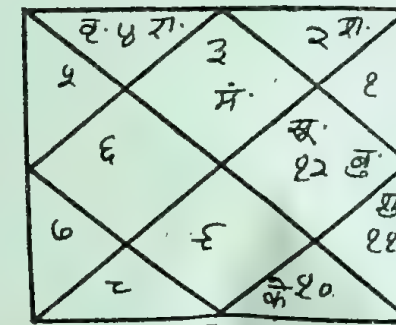
११६५



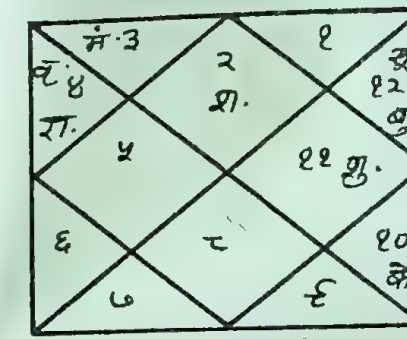
११६६



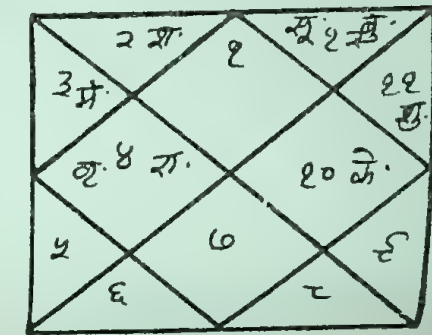
११६७



११६८



११६९



११७०

सम्वत्सरानुसार सूर्य-कुण्डली सारिणी

इस ग्रंथ के पृष्ठ संख्या १०० से पृष्ठ संख्या ४८० तक सम्वत् १९४२ वि० से सम्वत् २१०० वि० तक की सूर्यकुण्डलियाँ प्रदर्शित हैं। आपका जन्म किस विभुत सम्वत् में हुआ हो, उसके अनुसार अपनी जन्मकालीन सूर्य-कुण्डली को किस पृष्ठ पर देखें, इसे आगे दी गई सारिणी में बताया गया है।

सूर्य-कुण्डली के आधार पर लगनकुण्डली जानने की विधि इस सारिणी के अन्त में दी गई टिप्पणी में वर्णित है। उसके अड्डाग अपनी जन्मकुण्डली का ज्ञान छापा करने के उपरान्त, उस सूर्य-कुण्डली के नीचे दी गई कुम्भ-फलक के आधार पर अगले फलदेश प्रकरण में उसी कुम्भ-फलक पर अपनी सूर्य-कुण्डली का फलदेश देवले। विस्तृत फलदेश की जानकारी के लिए प्रथम तथा अन्तिम पृष्ठ के वर्णित फलदेश ज्ञान करने के सिद्धान्तों का उपयोग करें।

विभुत सम्वत्	किस पृष्ठ से किस पृष्ठ तक देखें
१९४२ वि०	पृष्ठ १०० की पहली कुण्डली से पृष्ठ १०२ की दसवीं कुण्डली तक
१९४३ वि०	पृष्ठ १०२ की ग्यारहवीं कुण्डली से पृष्ठ १०४ की पन्द्रहवीं कुण्डली तक
१९४४ वि०	पृष्ठ १०४ की पहली कुण्डली से पृष्ठ १०६ की नवीं कुण्डली तक

१८४५ वि०
१८४६ वि०
१८४७ वि०
१८४८ वि०
१८४९ वि०
१८५० वि०
१८५१ वि०
१८५२ वि०
१८५३ वि०
१८५४ वि०
१८५५ वि०
१८५६ वि०
१८५७ वि०
१८५८ वि०
१८५९ वि०
१८६० वि०
१८६१ वि०
१८६२ वि०

पृष्ठ २०७ की दसवीं कुण्डली से पृष्ठ २१० की पहली कुण्डली तक
पृष्ठ २१० की दूसरी कुण्डली से पृष्ठ २१२ की चौथी कुण्डली तक
पृष्ठ २१२ की पाँचवीं कुण्डली से पृष्ठ २१४ की बारहवीं कुण्डली तक
पृष्ठ २१४ की तेरहवीं कुण्डली से पृष्ठ २१७ की दूसरी कुण्डली तक
पृष्ठ २१७ की तीसरी कुण्डली से पृष्ठ २१९ की तीसरी कुण्डली तक
पृष्ठ २१९ की चौथी कुण्डली से पृष्ठ २२१ की बारहवीं कुण्डली तक
पृष्ठ २२१ की तेरहवीं कुण्डली से पृष्ठ २२४ की पहली कुण्डली तक
पृष्ठ २२४ की दूसरी कुण्डली से पृष्ठ २२६ की चौथी कुण्डली तक
पृष्ठ २२६ की पाँचवीं कुण्डली से पृष्ठ २२८ की नवीं कुण्डली तक
पृष्ठ २२८ की दसवीं कुण्डली से पृष्ठ २३० की दसवीं कुण्डली तक
पृष्ठ २३० की ग्यारहवीं कुण्डली से पृष्ठ २३३ की पहली कुण्डली तक
पृष्ठ २३३ की दूसरी कुण्डली से पृष्ठ २३५ की सातवीं कुण्डली तक
पृष्ठ २३५ की आठवीं कुण्डली से पृष्ठ २३७ की नवीं कुण्डली तक
पृष्ठ २३७ की दसवीं कुण्डली से पृष्ठ २४० की चौथी कुण्डली तक
पृष्ठ २४० की पाँचवीं कुण्डली से पृष्ठ २४२ की चौदहवीं कुण्डली तक
पृष्ठ २४२ की पंद्रहवीं कुण्डली से पृष्ठ २४५ की दूसरी कुण्डली तक
पृष्ठ २४५ की तीसरी कुण्डली से पृष्ठ २४७ की दसवीं कुण्डली तक
पृष्ठ २४७ की ग्यारहवीं कुण्डली से पृष्ठ २५० की पहली कुण्डली तक

१६६३ वि०
१६६४ वि०
१६६५ वि०
१६६६ वि०
१६६७ वि०
१६६८ वि०
१६६९ वि०
१६७० वि०
१६७१ वि०
१६७२ वि०
१६७३ वि०
१६७४ वि०
१६७५ वि०
१६७६ वि०
१६७७ वि०
१६७८ वि०
१६७९ वि०
१६८० वि०

पृष्ठ १५० की दूसरी कुण्डली से पृष्ठ १५२ की चौथी कुण्डली तक
पृष्ठ १५२ की पाँचवीं कुण्डली से पृष्ठ १५४ की चौदहवीं कुण्डली तक
पृष्ठ १५४ की पन्द्रहवीं कुण्डली से पृष्ठ १५६ की चौदहवीं कुण्डली तक
पृष्ठ १५६ की पन्द्रहवीं कुण्डली से पृष्ठ १५८ की चौथी कुण्डली तक
पृष्ठ १५८ की पाँचवीं कुण्डली से पृष्ठ १६१ की छठी कुण्डली तक
पृष्ठ १६१ की सातवीं कुण्डली से पृष्ठ १६३ की बारहवीं कुण्डली तक
पृष्ठ १६३ की तेरहवीं कुण्डली से पृष्ठ १६६ की पाँचवीं कुण्डली तक
पृष्ठ १६६ की छठी कुण्डली से पृष्ठ १६८ की छठी कुण्डली तक
पृष्ठ १६८ की सातवीं कुण्डली से पृष्ठ १७० की ग्यारहवीं कुण्डली तक
पृष्ठ १७० की बारहवीं कुण्डली से पृष्ठ १७३ की छठी कुण्डली तक
पृष्ठ १७३ की सातवीं कुण्डली से पृष्ठ १७५ की आठवीं कुण्डली तक
पृष्ठ १७५ की नवीं कुण्डली से पृष्ठ १७७ की बारहवीं कुण्डली तक
पृष्ठ १७७ की तेरहवीं कुण्डली से पृष्ठ १७९ की पन्द्रहवीं कुण्डली तक
पृष्ठ १८० की पहली कुण्डली से पृष्ठ १८१ की पन्द्रहवीं कुण्डली तक
पृष्ठ १८२ की पहली कुण्डली से पृष्ठ १८४ की पाँचवीं कुण्डली तक
पृष्ठ १८४ की छठी कुण्डली से पृष्ठ १८६ की दसवीं कुण्डली तक
पृष्ठ १८६ की ग्यारहवीं कुण्डली से पृष्ठ १८८ की तेरहवीं कुण्डली तक
पृष्ठ १८८ की चौदहवीं कुण्डली से पृष्ठ १९० की पन्द्रहवीं कुण्डली तक

१८८१ वि०
 १८८२ वि०
 १८८३ वि०
 १८८४ वि०
 १८८५ वि०
 १८८६ वि०
 १८८७ वि०
 १८८८ वि०
 १८८९ वि०
 १८९० वि०
 १८९१ वि०
 १८९२ वि०
 १८९३ वि०
 १८९४ वि०
 १८९५ वि०
 १८९६ वि०
 १८९७ वि०
 १८९८ वि०

पृष्ठ १८१ की पहली कुण्डली से पृष्ठ १८३ की सातवीं कुण्डली तक
 पृष्ठ १८३ की आठवीं कुण्डली से पृष्ठ १८५ की आठवीं कुण्डली तक
 पृष्ठ १८५ की नवीं कुण्डली से पृष्ठ १८७ की दसवीं कुण्डली तक
 पृष्ठ १८७ की ग्यारहवीं कुण्डली से पृष्ठ १८९ की ग्यारहवीं कुण्डली तक
 पृष्ठ १८९ की बारहवीं कुण्डली से पृष्ठ २०२ की तीसरी कुण्डली तक
 पृष्ठ २०२ की चौथी कुण्डली से पृष्ठ २०४ की पाँचवीं कुण्डली तक
 पृष्ठ २०४ की छठी कुण्डली से पृष्ठ २०६ की आठवीं कुण्डली तक
 पृष्ठ २०६ की नवीं कुण्डली से पृष्ठ २०८ की बारहवीं कुण्डली तक
 पृष्ठ २०८ की तेरहवीं कुण्डली से पृष्ठ २११ की पहली कुण्डली तक
 पृष्ठ २११ की दूसरी कुण्डली से पृष्ठ २१३ की चौथी कुण्डली तक
 पृष्ठ २१३ की पाँचवीं कुण्डली से पृष्ठ २१५ की ग्यारहवीं कुण्डली तक
 पृष्ठ २१५ की बारहवीं कुण्डली से पृष्ठ २१७ की चौदहवीं कुण्डली तक
 पृष्ठ २१७ की पन्द्रहवीं कुण्डली से पृष्ठ २१९ की चौथी कुण्डली तक
 पृष्ठ २२० की पाँचवीं कुण्डली से पृष्ठ २२२ की आठवीं कुण्डली तक
 पृष्ठ २२२ की नवीं कुण्डली से पृष्ठ २२४ की दसवीं कुण्डली तक
 पृष्ठ २२४ की ग्यारहवीं कुण्डली से पृष्ठ २२६ की तेरहवीं कुण्डली तक
 पृष्ठ २२६ की चौदहवीं कुण्डली से पृष्ठ २२८ की तीसरी कुण्डली तक
 पृष्ठ २२८ की चौथी कुण्डली से पृष्ठ २३१ की छठी कुण्डली तक

१८८८ वि०
२००० वि०
२००१ वि०
२००२ वि०
२००३ वि०
२००४ वि०
२००५ वि०
२००६ वि०
२००७ वि०
२००८ वि०
२००९ वि०
२०१० वि०
२०११ वि०
२०१२ वि०
२०१३ वि०
२०१४ वि०
२०१५ वि०
२०१६ वि०

पृष्ठ २३१ की सातवीं कुण्डली से पृष्ठ २३३ की बारहवीं कुण्डली तक
पृष्ठ २३३ की तेरहवीं कुण्डली से पृष्ठ २३६ की पन्द्रहवीं कुण्डली तक
पृष्ठ २५१ की पहली कुण्डली से पृष्ठ २५३ की नवीं कुण्डली तक
पृष्ठ २५३ की दसवीं कुण्डली से पृष्ठ २५५ की तेरहवीं कुण्डली तक
पृष्ठ २५५ की चौदहवीं कुण्डली से पृष्ठ २५८ की दूसरी कुण्डली तक
पृष्ठ २५८ की तीसरी कुण्डली से पृष्ठ २६० की तेरहवीं कुण्डली तक
पृष्ठ २६० की चौदहवीं कुण्डली से पृष्ठ २६३ की तीसरी कुण्डली तक
पृष्ठ २६३ की चौथी कुण्डली से पृष्ठ २६५ की दसवीं कुण्डली तक
पृष्ठ २६५ की ग्यारहवीं कुण्डली से पृष्ठ २६८ की दूसरी कुण्डली तक
पृष्ठ २६८ की तीसरी कुण्डली से पृष्ठ २७० की तीसरी कुण्डली तक
पृष्ठ २७० की चौथी कुण्डली से पृष्ठ २७२ की पाँचवीं कुण्डली तक
पृष्ठ २७२ की छठी कुण्डली से पृष्ठ २७४ की दसवीं कुण्डली तक
पृष्ठ २७४ की ग्यारहवीं कुण्डली से पृष्ठ २७६ की ग्यारहवीं कुण्डली तक
पृष्ठ २७६ की बारहवीं कुण्डली से पृष्ठ २७८ की दूसरी कुण्डली तक
पृष्ठ २७८ की तीसरी कुण्डली से पृष्ठ २८१ की तीसरी कुण्डली तक
पृष्ठ २८१ की चौथी कुण्डली से पृष्ठ २८३ की आठवीं कुण्डली तक
पृष्ठ २८३ की नवीं कुण्डली से पृष्ठ २८६ की दूसरी कुण्डली तक
पृष्ठ २८६ की तीसरी कुण्डली से पृष्ठ २८८ की पाँचवीं कुण्डली तक

२०१७ वि०
२०१८ वि०
२०१९ वि०
२०२० वि०
२०२१ वि०
२०२२ वि०
२०२३ वि०
२०२४ वि०
२०२५ वि०
२०२६ वि०
२०२७ वि०
२०२८ वि०
२०२९ वि०
२०३० वि०
२०३१ वि०
२०३२ वि०
२०३३ वि०
२०३४ वि०

पृष्ठ २८८ की दही कुण्डली से पृष्ठ २९० की नवी कुण्डली तक
पृष्ठ २९० की दसवीं कुण्डली से पृष्ठ २९२ की तेरहवीं कुण्डली तक
पृष्ठ २९२ की चौदहवीं कुण्डली से पृष्ठ २९५ की चौथी कुण्डली तक
पृष्ठ २९५ की पाँचवीं कुण्डली से पृष्ठ २९७ की नवीं कुण्डली तक
पृष्ठ २९७ की दसवीं कुण्डली से पृष्ठ ३०० की दूसरी कुण्डली तक
पृष्ठ ३०० की तीसरी कुण्डली से पृष्ठ ३०२ की पहली कुण्डली तक
पृष्ठ ३०२ की दूसरी कुण्डली से पृष्ठ ३०४ की आठवीं कुण्डली तक
पृष्ठ ३०४ की नवीं कुण्डली से पृष्ठ ३०६ की दसवीं कुण्डली तक
पृष्ठ ३०६ की ग्यारहवीं कुण्डली से पृष्ठ ३०८ की पन्द्रहवीं कुण्डली तक
पृष्ठ ३०८ की पहली कुण्डली से पृष्ठ ३११ की दूसरी कुण्डली तक
पृष्ठ ३११ की तीसरी कुण्डली से पृष्ठ ३१३ की दही कुण्डली तक
पृष्ठ ३१३ की सातवीं कुण्डली से पृष्ठ ३१५ की आठवीं कुण्डली तक
पृष्ठ ३१५ की नवीं कुण्डली से पृष्ठ ३१७ की चौदहवीं कुण्डली तक
पृष्ठ ३१७ की पन्द्रहवीं कुण्डली से पृष्ठ ३१९ की तेरहवीं कुण्डली तक
पृष्ठ ३१९ की चौदहवीं कुण्डली से पृष्ठ ३२२ की पहली कुण्डली तक
पृष्ठ ३२२ की दूसरी कुण्डली से पृष्ठ ३२४ की दसवीं कुण्डली तक
पृष्ठ ३२४ की ग्यारहवीं कुण्डली से पृष्ठ ३२६ की पन्द्रहवीं कुण्डली तक
पृष्ठ ३२६ की बारहवीं कुण्डली से पृष्ठ ३२८ की पहली कुण्डली तक

२०३५ वि०
२०३६ वि०
२०३७ वि०
२०३८ वि०
२०३९ वि०
२०४० वि०
२०४१ वि०
२०४२ वि०
२०४३ वि०
२०४४ वि०
२०४५ वि०
२०४६ वि०
२०४७ वि०
२०४८ वि०
२०४९ वि०
२०५० वि०
२०५१ वि०
२०५२ वि०

पृष्ठ ३२९ की दूसरी कुण्डली से पृष्ठ ३३१ की पाँचवीं कुण्डली तक
पृष्ठ ३३१ की छठी कुण्डली से पृष्ठ ३३३ की दसवीं कुण्डली तक
पृष्ठ ३३३ की ग्यारहवीं कुण्डली से पृष्ठ ३३६ की दूसरी कुण्डली तक
पृष्ठ ३३६ की तीसरी कुण्डली से पृष्ठ ३३८ की छठी कुण्डली तक
पृष्ठ ३३८ की सातवीं कुण्डली से पृष्ठ ३४० की पन्द्रहवीं कुण्डली तक
पृष्ठ ३४१ की पहली कुण्डली से पृष्ठ ३४३ की पन्द्रहवीं कुण्डली तक
पृष्ठ ३४४ की पहली कुण्डली से पृष्ठ ३४६ की सातवीं कुण्डली तक
पृष्ठ ३४६ की आठवीं कुण्डली से पृष्ठ ३४८ की ग्यारहवीं कुण्डली तक
पृष्ठ ३४८ की बारहवीं कुण्डली से पृष्ठ ३५० की बारहवीं कुण्डली तक
पृष्ठ ३५० की तेरहवीं कुण्डली से पृष्ठ ३५३ की दूसरी कुण्डली तक
पृष्ठ ३५३ की तीसरी कुण्डली से पृष्ठ ३५५ की नवीं कुण्डली तक
पृष्ठ ३५५ की दसवीं कुण्डली से पृष्ठ ३५८ की पहली कुण्डली तक
पृष्ठ ३५८ की दूसरी कुण्डली से पृष्ठ ३६० की सातवीं कुण्डली तक
पृष्ठ ३६० की आठवीं कुण्डली से पृष्ठ ३६२ की दसवीं कुण्डली तक
पृष्ठ ३६२ की ग्यारहवीं कुण्डली से पृष्ठ ३६४ की पन्द्रहवीं कुण्डली तक
पृष्ठ ३६५ की पहली कुण्डली से पृष्ठ ३६७ की सातवीं कुण्डली तक
पृष्ठ ३६७ की आठवीं कुण्डली से पृष्ठ ३६९ की तीसरी कुण्डली तक
पृष्ठ ३६९ की चौथी कुण्डली से पृष्ठ ३७१ की आठवीं कुण्डली तक

२०५३ वि०
२०५४ वि०
२०५५ वि०
२०५६ वि०
२०५७ वि०
२०५८ वि०
२०५९ वि०
२०६० वि०
२०६१ वि०
२०६२ वि०
२०६३ वि०
२०६४ वि०
२०६५ वि०
२०६६ वि०
२०६७ वि०
२०६८ वि०
२०६९ वि०
२०७० वि०

पृष्ठ ३७१ की नवी कुण्डली से पृष्ठ ३७३ की चौदहवीं कुण्डली तक
पृष्ठ ३७३ की पन्द्रहवीं कुण्डली से पृष्ठ ३७६ की तीसरी कुण्डली तक
पृष्ठ ३७६ की चौथी कुण्डली से पृष्ठ ३७८ की पाँचवीं कुण्डली तक
पृष्ठ ३७८ की छठी कुण्डली से पृष्ठ ३८० की दसवीं कुण्डली तक
पृष्ठ ३८० की ग्यारहवीं कुण्डली से पृष्ठ ३८२ की पन्द्रहवीं कुण्डली तक
पृष्ठ ३८३ की पहली कुण्डली से पृष्ठ ३८५ की दूसरी कुण्डली तक
पृष्ठ ३८५ की तीसरी कुण्डली से पृष्ठ ३८७ की पहली कुण्डली तक
पृष्ठ ३८७ की दूसरी कुण्डली से पृष्ठ ३८९ की चौथी कुण्डली तक
पृष्ठ ३८९ की पाँचवीं कुण्डली से पृष्ठ ३९१ की ग्यारहवीं कुण्डली तक
पृष्ठ ३९१ की बारहवीं कुण्डली से पृष्ठ ३९३ की आठवीं कुण्डली तक
पृष्ठ ३९३ की नवीं कुण्डली से पृष्ठ ३९५ की सातवीं कुण्डली तक
पृष्ठ ३९५ की आठवीं कुण्डली से पृष्ठ ३९७ की ग्यारहवीं कुण्डली तक
पृष्ठ ३९७ की बारहवीं कुण्डली से पृष्ठ ३९९ की चौदहवीं कुण्डली तक
पृष्ठ ३९९ की पन्द्रहवीं कुण्डली से पृष्ठ ४०२ की चौथी कुण्डली तक
पृष्ठ ४०२ की पाँचवीं कुण्डली से पृष्ठ ४०४ की ग्यारहवीं कुण्डली तक
पृष्ठ ४०४ की बारहवीं कुण्डली से पृष्ठ ४०६ की चौदहवीं कुण्डली तक
पृष्ठ ४०६ की पन्द्रहवीं कुण्डली से पृष्ठ ४०९ की तीसरी कुण्डली तक
पृष्ठ ४०९ की चौथी कुण्डली से पृष्ठ ४११ की दूसरी कुण्डली तक

२०७१ वि०
२०७२ वि०
२०७३ वि०
२०७४ वि०
२०७५ वि०
२०७६ वि०
२०७७ वि०
२०७८ वि०
२०७९ वि०
२०८० वि०
२०८१ वि०
२०८२ वि०
२०८३ वि०
२०८४ वि०
२०८५ वि०
२०८६ वि०
२०८७ वि०
२०८८ वि०

एष ४११ की तीसरी कुण्डली से एष ४१३ की दूसरी कुण्डली तक
एष ४१३ की तीसरी कुण्डली से एष ४१५ की चौथी कुण्डली तक
एष ४१५ की पाँचवीं कुण्डली से एष ४१७ की नवीं कुण्डली तक
एष ४१७ की दसवीं कुण्डली से एष ४१९ की ग्यारहवीं कुण्डली तक
एष ४१९ की बारहवीं कुण्डली से एष ४२१ की पन्द्रहवीं कुण्डली तक
एष ४२२ की पहली कुण्डली से एष ४२४ की पाँचवीं कुण्डली तक
एष ४२४ की छठी कुण्डली से एष ४२६ की बारहवीं कुण्डली तक
एष ४२६ की तेरहवीं कुण्डली से एष ४२८ की पन्द्रहवीं कुण्डली तक
एष ४२९ की पहली कुण्डली से एष ४३१ की तीसरी कुण्डली तक
एष ४३१ की चौथी कुण्डली से एष ४३३ की सातवीं कुण्डली तक
एष ४३३ की आठवीं कुण्डली से एष ४३५ की नवीं कुण्डली तक
एष ४३५ की दसवीं कुण्डली से एष ४३७ की तेरहवीं कुण्डली तक
एष ४३७ की चौदहवीं कुण्डली से एष ४४० की पहली कुण्डली तक
एष ४४० की दूसरी कुण्डली से एष ४४२ की सातवीं कुण्डली तक
एष ४४२ की आठवीं कुण्डली से एष ४४४ की ग्यारहवीं कुण्डली तक
एष ४४४ की बारहवीं कुण्डली से एष ४४६ की पाँचवीं कुण्डली तक
एष ४४६ की छठी कुण्डली से एष ४४९ की तेरहवीं कुण्डली तक
एष ४४९ की चौथी कुण्डली से एष ४५२ की पहली कुण्डली तक

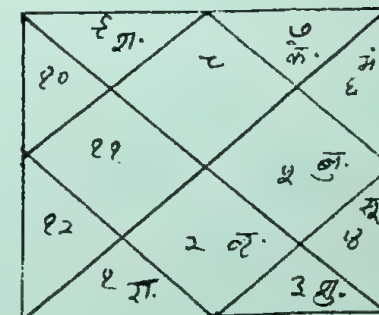
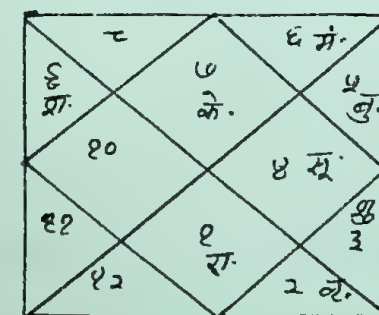
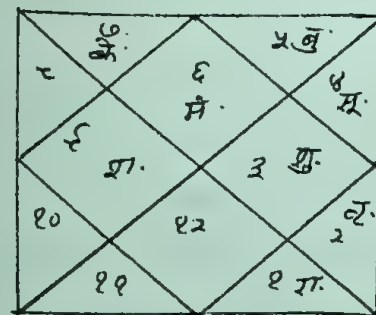
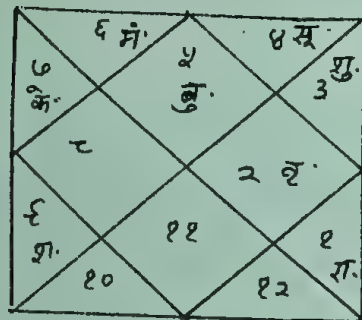
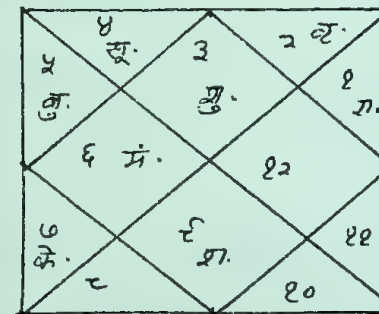
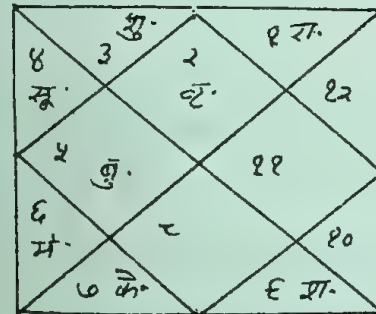
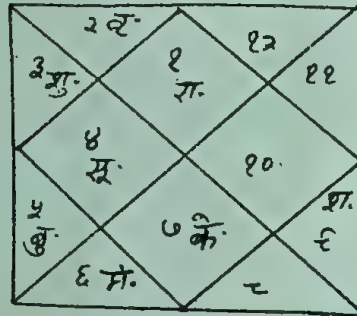
२०८८ वि०
२०८९ वि०
२०९० वि०
२०९१ वि०
२०९२ वि०
२०९३ वि०
२०९४ वि०
२०९५ वि०
२०९६ वि०
२०९७ वि०
२०९८ वि०
२०९९ वि०
२१०० वि०

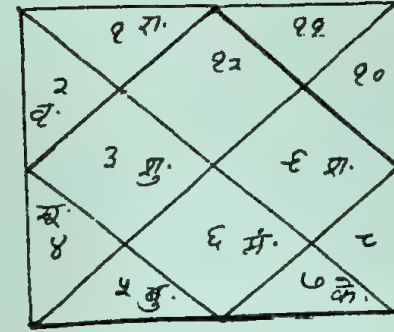
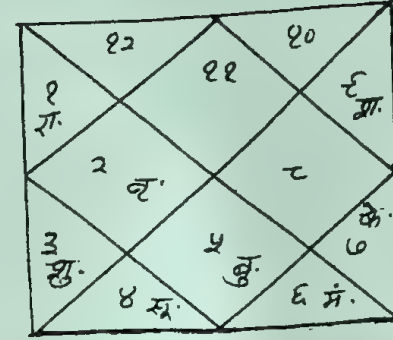
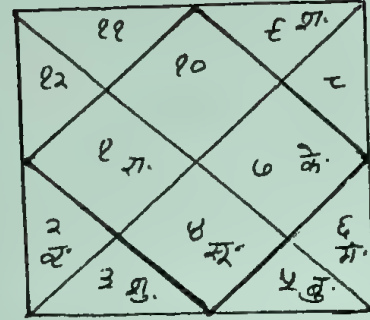
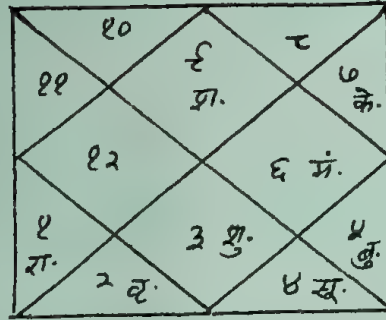
पृष्ठ ४५२ की दूसरी कुण्डली से पृष्ठ ४५४ की चौथी कुण्डली तक
पृष्ठ ४५४ की छठी कुण्डली से पृष्ठ ४५६ की आठवीं कुण्डली तक
पृष्ठ ४५६ की नवीं कुण्डली से पृष्ठ ४५८ की दूसरी कुण्डली तक
पृष्ठ ४५८ की तीसरी कुण्डली से पृष्ठ ४६० की दसवीं कुण्डली तक
पृष्ठ ४६० की नवीं कुण्डली से पृष्ठ ४६३ की चौदहवीं कुण्डली तक
पृष्ठ ४६३ की पन्द्रहवीं कुण्डली से पृष्ठ ४६६ की छठी कुण्डली तक
पृष्ठ ४६६ की सातवीं कुण्डली से पृष्ठ ४६८ की बारहवीं कुण्डली तक
पृष्ठ ४६८ की तेरहवीं कुण्डली से पृष्ठ ४७० की तेरहवीं कुण्डली तक
पृष्ठ ४७० की चौदहवीं कुण्डली से पृष्ठ ४७३ की पन्द्रहवीं कुण्डली तक
पृष्ठ ४७३ की पंद्रहवीं कुण्डली से पृष्ठ ४७५ की पंद्रहवीं कुण्डली तक
पृष्ठ ४७५ की नवीं कुण्डली से पृष्ठ ४७७ की ग्यारहवीं कुण्डली तक
पृष्ठ ४७७ की बारहवीं कुण्डली से पृष्ठ ४८० की अन्तिम कुण्डली तक

टिप्पणी : (१) विक्रम सम्वत् १९४२ से २००० वि० तक की सूर्य-कुण्डलिपों पृष्ठ संख्या १०० से पृष्ठ संख्या २३६ तक दी गई है तथा विक्रम सम्वत् २००१ से २१०० तक की सूर्य-कुण्डलिपों पृष्ठ संख्या २३७ से पृष्ठ संख्या ४८० तक उद्दिष्ट है। उपर्युक्त सारिणी के आधार पर आप अपने जन्म-सम्वत् की सूर्य-कुण्डली को सम्बन्धित पृष्ठ पर ढूँढ सकते हैं।

टिप्पणी (२) - एक दिन में बारहों लग्न बदलती हैं। एक लग्न लगभग २ घंटे की होती है, अतः प्रतिदिन की लग्न-कुण्डली एवं सूर्य-कुण्डली में लग्न राशि का अन्तर पड़ना स्वाभाविक है। सूर्य-राशि कुण्डली से लग्न-राशि कुण्डली जानने के लिए निम्नलिखित प्रक्रिया पर ध्यान देना चाहिए -

यदि किसी दिन की सूर्य-राशि-कुण्डली 'कर्क-लग्न' की है (उदाहरणार्थ - वृष संवत् २०३ की पहली कुण्डली) तो उस दिन की अन्य कुण्डलियां निम्नानुसार तय्यार होंगी -





उक्त नियमानुसार आप सूर्य-कुण्डली के आधार पर आप वास्तविक जन्म कुण्डली का ज्ञान पुरना प्राप्त कर सकते हैं।

टिप्पणी (३) - 'चन्दुमा' एक राशि पर लगभग २½ दिन विचरण करता है, तदुपरान्त अगली राशि पर चला जाता है। अतः एक चन्दुमा के कारण जन्म कुण्डली की गृह-स्थिति अतिशीघ्र बदल जाती है। यदि प्रत्येक सूर्य-कुण्डली के साथ चन्दुमा के राशि-परिवर्तन को भी प्रदर्शित किया जाय, तो इस ग्रंथ में जितनी सूर्य-कुण्डलियां प्रदर्शित हैं, उनकी संख्या बढ़कर लगभग ६ गुनी हो जाती और यदि चन्दुमा सहित प्रत्येक दिन की जन्म कुण्डलियों को प्रदर्शित किया जाय तो उस संख्या में १२ गुणा वृद्धि और हो जाती। उस्तुत ग्रंथ में विक्रम सम्वत् १६४२ से २००० वि. तक अर्थात् १५८ वर्ष की सूर्य-कुण्डलियां प्रदर्शित हैं, जो संख्या में ६००० के लगभग हैं। इन्हीं वर्षों की चन्दुमा सहित सभी जन्म कुण्डलियां यदि प्रदर्शित की जातीं तो वे साठ हजार से भी अधिक बैठतीं। इसी अधिक संख्या में कुण्डलियां प्रदर्शित करने पर ग्रंथ का आकार तथा मूल्य इतना अधिक बढ़ जाता कि उसे स्वीकार करना सर्वसाधारण के लिए असंभव सिद्ध होता। इसी कारण इस ग्रंथ में उक्त १५८ वर्ष की केवल सूर्य-कुण्डलियों को ही प्रदर्शित किया गया है। इनके आधार पर जन्म कुण्डलियां तैयार करने की विधि

उल्लेख ऊपर किया जा चुका है। रही चन्द-स्थिति की बात, तो उसे अपनी जन्म कुण्डली के अनुसार अपना सम्बन्धित वर्ष, मास, तिथि के पञ्चाङ्गानुसार जान लेना चाहिए। इस ग्रंथ में एक-दो स्थानों पर सूर्य-कुण्डली के साथ ही उस ग्रहस्थिति की जन्म कुण्डलियां भी दे दी गई हैं, परन्तु ऐसा उदाहरण प्रदर्शित करने की दृष्टि से ही किया गया है, सर्वत्र नहीं है।

टिप्पणी (४) - चन्द युक्त दैनिक जन्म कुण्डली के आधार पर फलादेश-कथन का नियम रखने पर, ग्रंथ की पृष्ठ संख्या करोड़ों में पहुँच जाना स्वाभाविक होता। 'उतने बड़े ग्रंथ का न तो लेखन ही संभव हो पाता और न प्रकाशन ही। वैसा ग्रंथ आज तक किसी ने देखा-सुना भी नहीं है।' 'भृगु संहिता' नामक प्राचीन ग्रंथों के जो सीमित संख्या वाले पृष्ठ यज्ञ-तन्त्र उपलब्ध होते हैं, उनमें भी कुछेक जन्म कुण्डलियों का फलादेश ही देने के मिलता है। उपलब्ध प्राचीन पृष्ठों में से किसी में २० वर्ष की अवधि वाली समस्त जन्म कुण्डलियों का फलादेश भी उपलब्ध नहीं होता। ऐसे 'भृगु संहिता' नामक प्राचीन ग्रंथ के जो पृष्ठ हमें वर्तमान की खोज तथा परिश्रम के बाद उपलब्ध हो सके थे, उन्हें हमने अन्य ज्योतिषीय ग्रंथों से उपयोगी सामग्री के चयन के साथ अपने द्वारा सम्पादित 'भृगु संहिता महाशास्त्र' नामक ग्रंथ में संकलित किया है, जो "देहली पुस्तक भण्डार, चाण्डी बाजार, दिल्ली ६" में प्रकाशित किया है, परन्तु उक्त ग्रंथ में कुण्डलियों की संख्या लगभग २०० ही थी, जिसके कारण अनेक पाठकों की यह मांग बनी रही कि उन्हें ऐसे ग्रंथ की आवश्यकता है, जिसमें उनकी जन्म कुण्डली भी अवश्य मिल जाय। ऐसे पाठकों की आकांक्षा पूर्ति के हेतु ही इस "भृगु संहिता महाशास्त्र कुण्डली-रहस्य" नामक ग्रंथ का सम्पादन किया गया है। इसमें सम्मूल १६४२ वि. से सं. २१०० वि. की अवधि में जन्म लेने वाले सभी जातकों की जन्म कालीन सूर्य-कुण्डलियां संकलित हैं। इन कुण्डलियों के आधार पर जन्म-कुण्डलियों को तय्यार किया जा सकता है, जिसकी विधि का उल्लेख ऊपर किया जा

युक्त है। इस प्रकार आठ ग्रहों की स्थिति वाली सूर्य-कुण्डलियाँ इस ग्रंथ में संकलित हैं। चतुर्मा की विज्ञान सम्बन्धी जानकारी अपनी जन्मकुण्डली अथवा जन्मकालीन पञ्चाङ्ग के आधार पर प्राप्त कानी चाहिए।

इस ग्रंथ में प्रस्तुत सभी सूर्य-कुण्डलियों के फलान्देश का वर्णन नहीं किया गया है। विक्रम सम्मान १९६७ से २०४२ वि० तक की सूर्य-कुण्डलियों का संक्षिप्त फलान्देश ही उद्घृत किया गया है। इस अवधि वाली सूर्य-कुण्डलियों के नीचे जो क्रम-संख्या अंकित हैं, अगले प्रकाश में उसी क्रम संख्या पर उस कुण्डली का संक्षिप्त फलान्देश वर्णित है।

किसी भी कुण्डली के फलान्देश की विस्तृत जानकारी के लिए इस ग्रंथ के खण्ड १, ४ तथा ५ में वर्णित सिद्धान्तों का अध्ययन लेना चाहिए। प्रकाश १, ४, ५ में जन्मकुण्डली विशेषक फलान्देश के शास्त्रीय-सिद्धान्तों का उल्लेख किया गया है। इन सिद्धान्तों के आधार पर किसी भी जन्मकुण्डली का प्रयोगजन्य फलान्देश प्राप्त किया जा सकता है।

पिछले दृष्ट संख्या १०० से २३६ तक विक्रम सम्मान १९६२ से २००० वि० तक की सूर्य-कुण्डलियाँ प्रदर्शित की जा चुकी हैं। अगले दृष्ट संख्या २३७ से ४२० तक में विक्रम सम्मान २००१ से २१०० वि० तक की सूर्य-कुण्डलियाँ प्रदर्शित हैं।

श. २	१	१२	११ शु.
	सू. बु.		१० के.
३ मं.		८	
रा. ४		६	८
बु.	५	७	

११७१

१ बु.	१२	११ शु.	१० के.
२ श.	सू.		
३ मं.		८	
रा. ४		६	८
बु. ५		७	

११७२

३ श.	१	१२ शु.	११
३ मं.	सू. बु.		१० के.
४ बु. रा.		८	
५		७	८
६			

११७३

२	१	१२ शु.	११
श. ३	सू. बु.		१० के.
४ रा. बु.		८	
५		७	८
६			

११७४

२	१	१२	११
श. ३	सू. बु. शु.		१० के.
४ बु. रा.		८	
५		७	८
६			

११७५

३ श.	२	१	१२
	सू. बु. शु.		११
४ रा. मं. बु.		८	१० के.
५		७	८
६			

११७६

४ बु. ३ श.	२	सू.	१
रा. मं.	सू.		१२
५		८	१० के.
६		७	८

११७७

४ बु. ३ श.	२	सू. शु.	१
रा. मं.	सू. शु.		१२
५		८	१० के.
६		७	८

११७८

४ बु. ३ श.	२	सू. शु. बु.	१
रा. मं.	सू. शु. बु.		१२
५		८	१० के.
६		७	८

११७९

४ बु. ३ श.	२	सू. शु. बु.	१
रा. मं.	सू. शु. बु.		१२
५		८	१० के.
६		७	८

११८०

५ बु. ४ रा.	३	२ बु.	१
सू. शु. श.			१२
६		८	१० के.
७		७	८

११८१

५ बु. ४ रा.	३	२ बु.	१
सू. शु. श.			१२
६		८	१० के.
७		७	८

११८२

५ बु. ४ रा.	३	२ बु.	१
सू. शु. श.			१२
६		८	१० के.
७		७	८

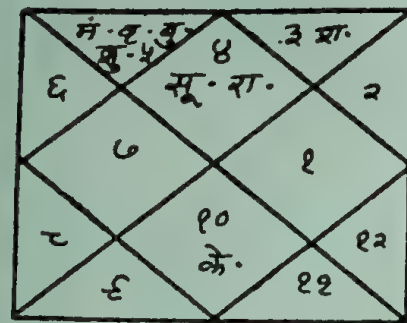
११८३

५ बु. ४ रा.	३	२ बु.	१
सू. शु. श.			१२
६		८	१० के.
७		७	८

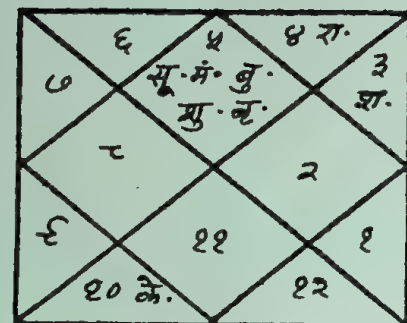
११८४

५ बु. ४ रा.	३	२ बु.	१
सू. शु. श.			१२
६		८	१० के.
७		७	८

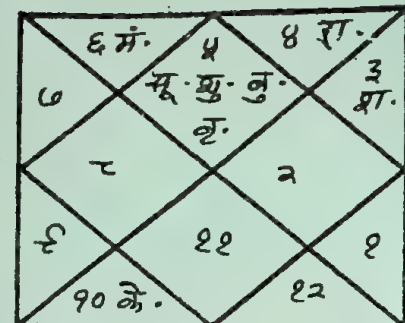
११८५



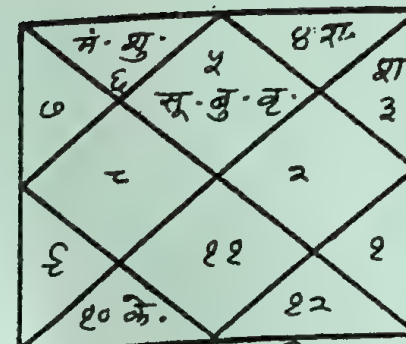
११८६



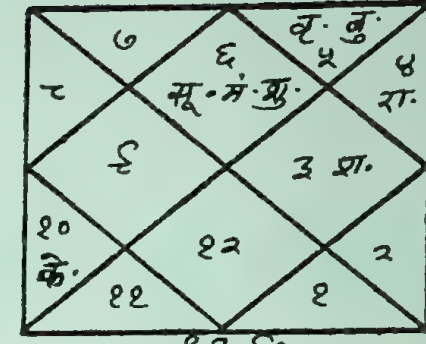
११८७



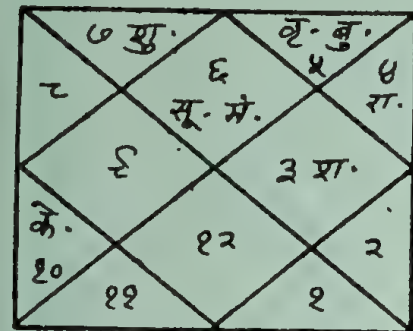
११८८



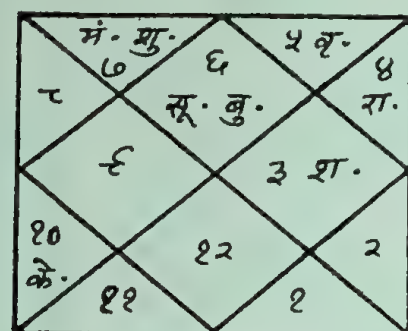
११८९



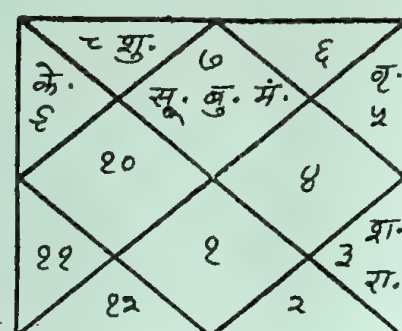
११९०



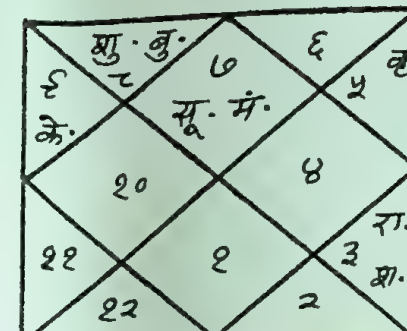
११९१



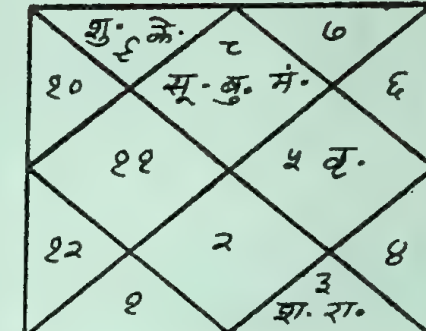
११९२



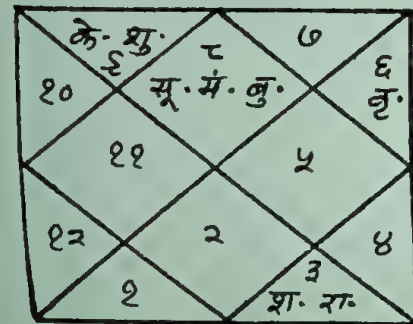
११९३



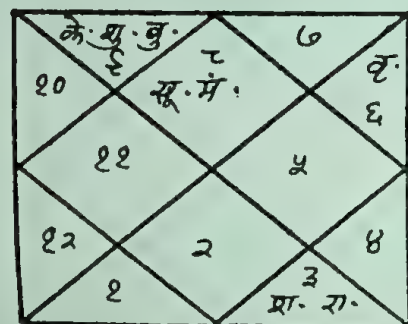
११९४



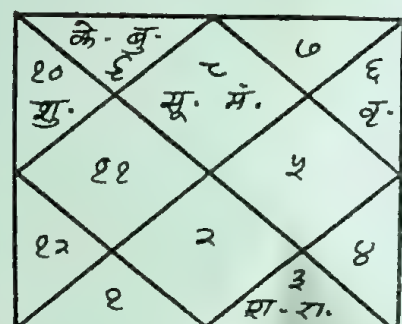
११९५



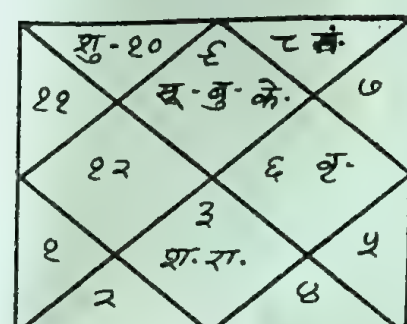
११९६



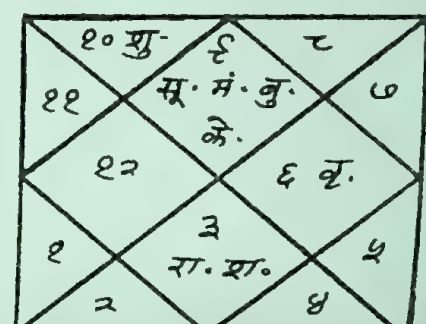
११९७



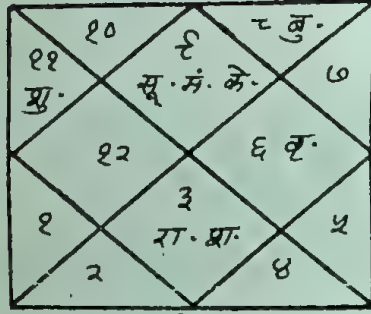
११९८



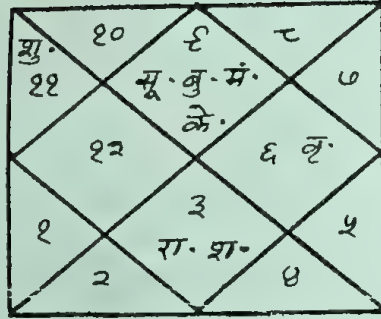
११९९



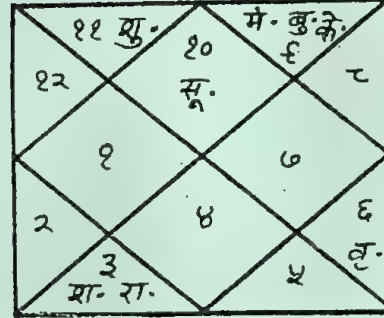
१२००



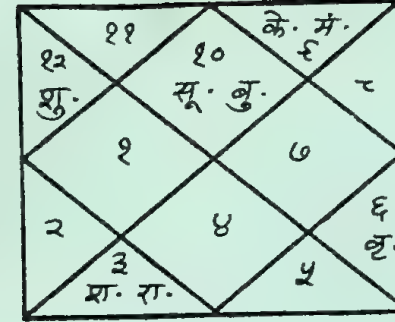
१२०१



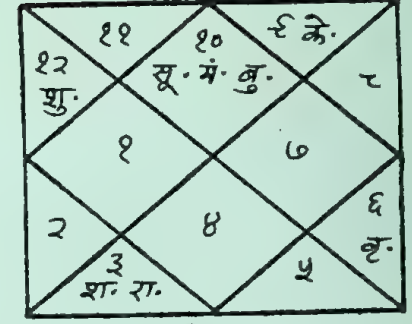
१२०२



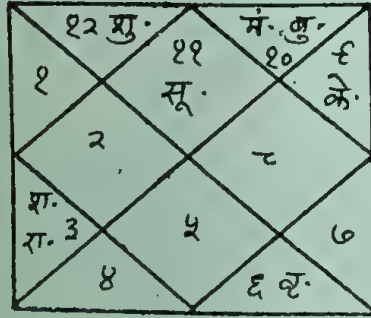
१२०३



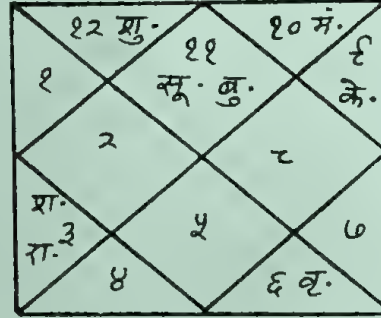
१२०४



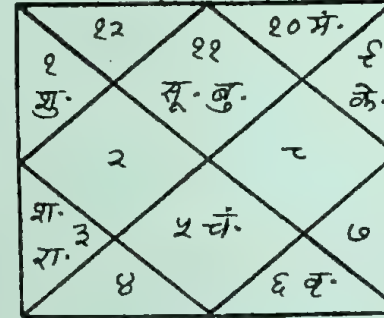
१२०५



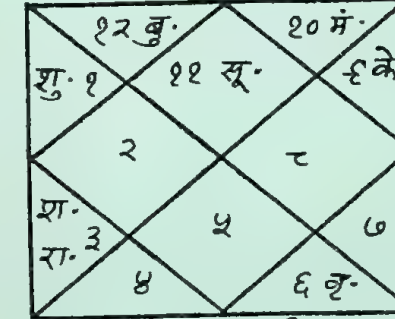
१२०६



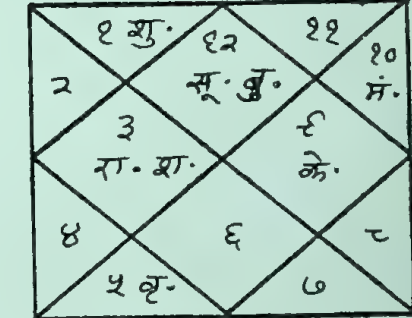
१२०७



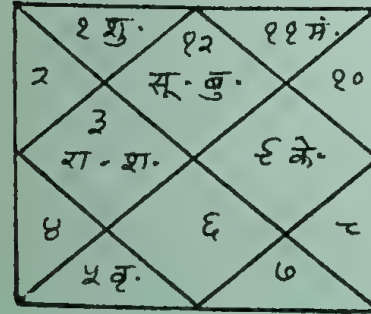
१२०८



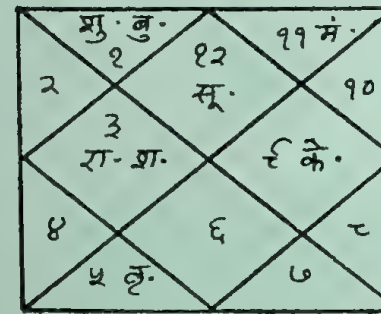
१२०९



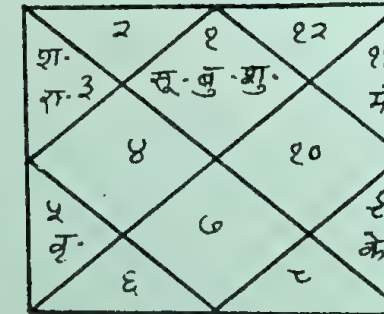
१२१०



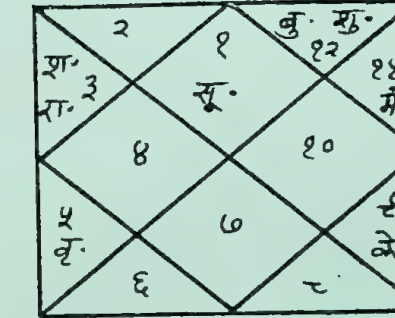
१२११



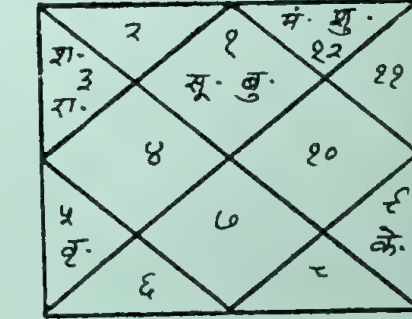
१२१२



१२१३



१२१४



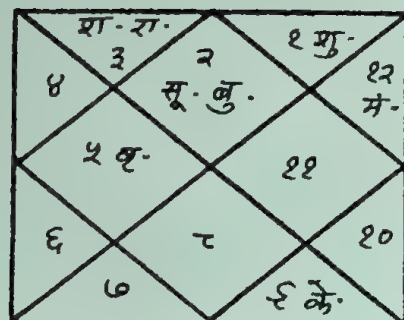
१२१५

भू०
सं०

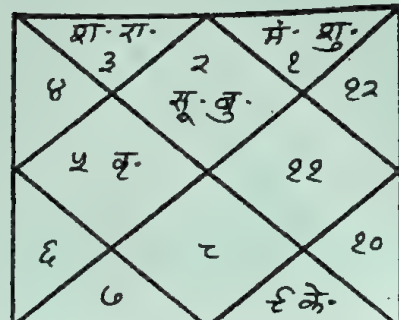
220



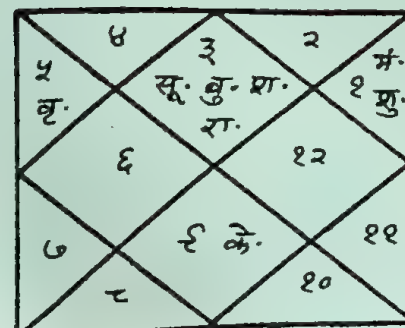
2225



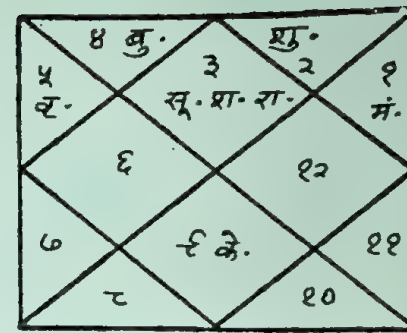
2226



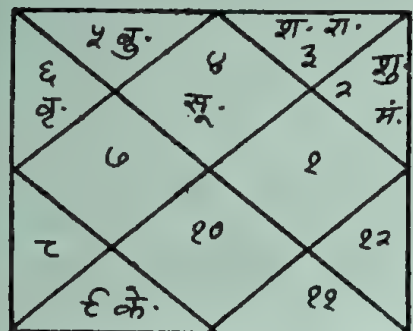
2222



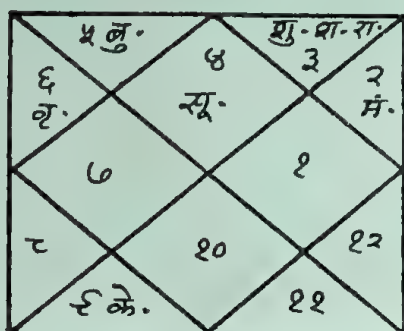
१२१८



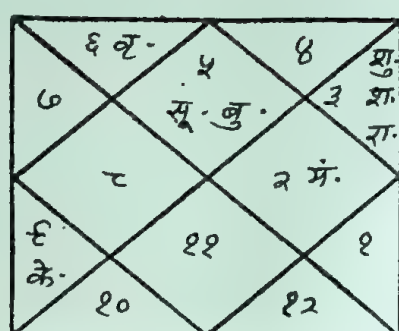
8220



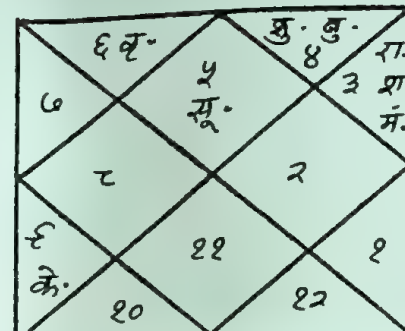
१२२१



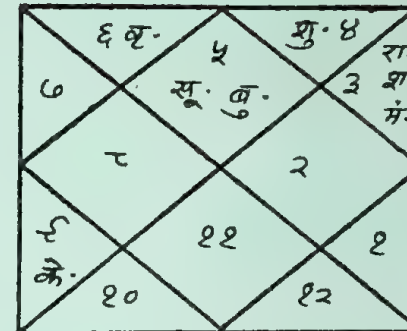
8222



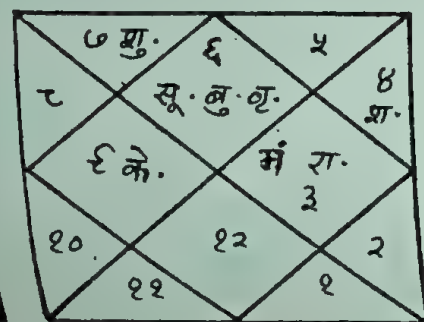
8223



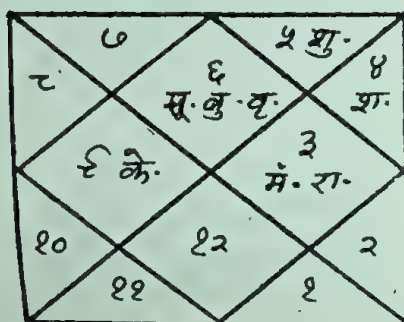
8228



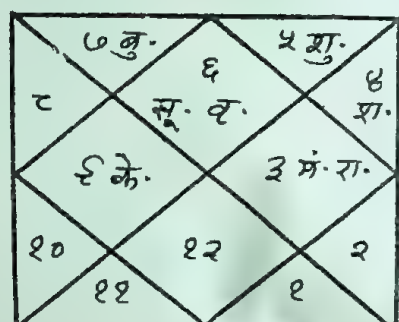
8274



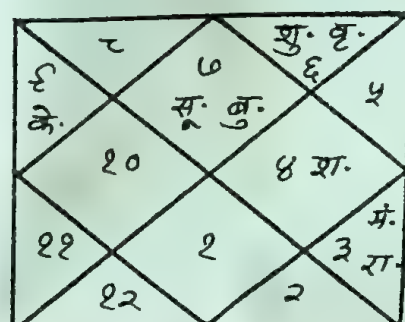
2225



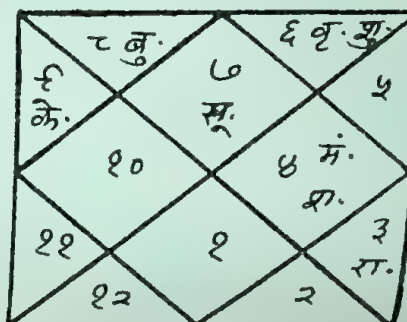
8226



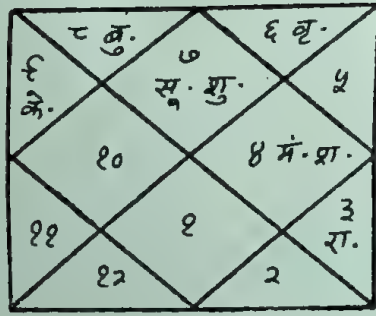
8224



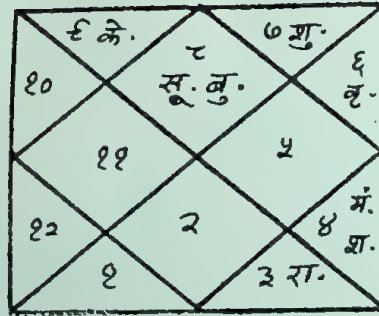
8225



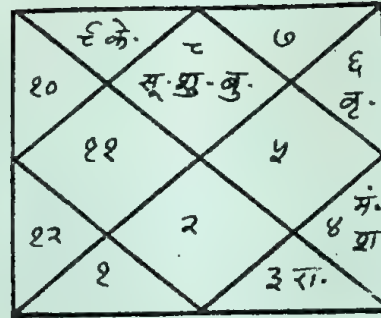
8230



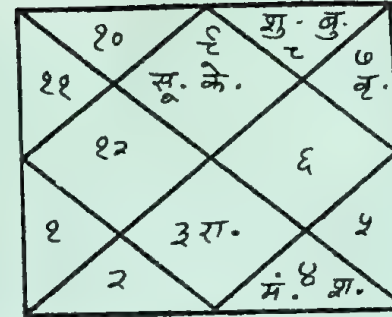
१२३१



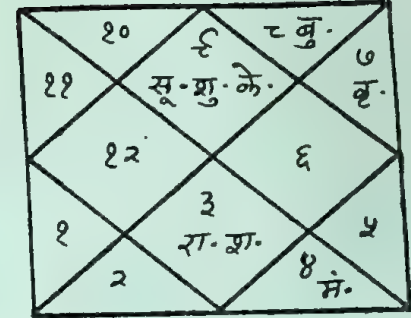
१२३२



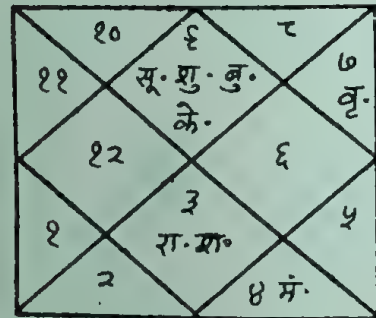
१२३३



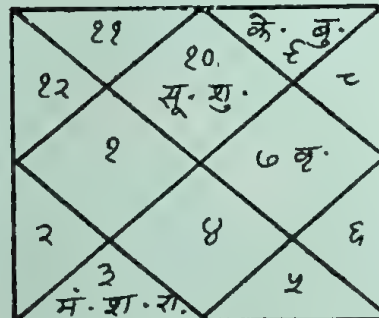
१२३४



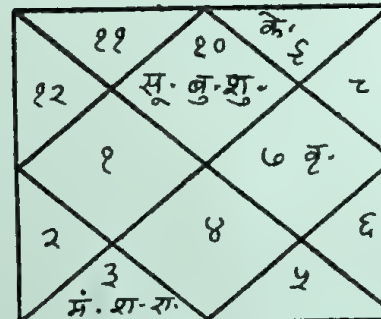
१२३५



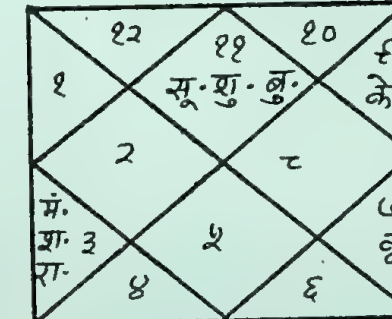
१२३६



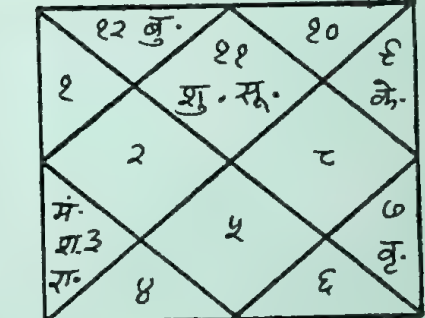
१२३७



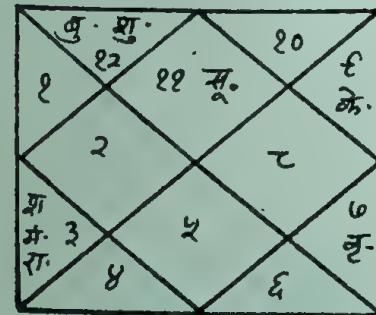
१२३८



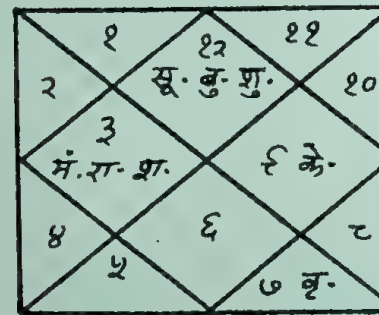
१२३९



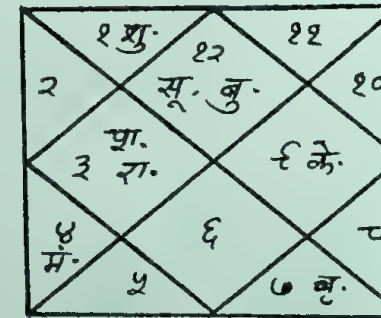
१२४०



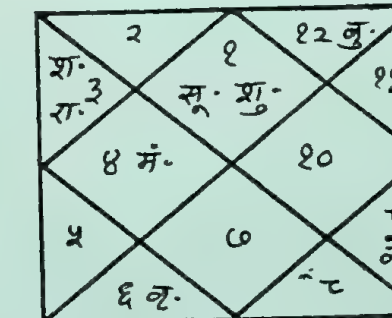
१२४१



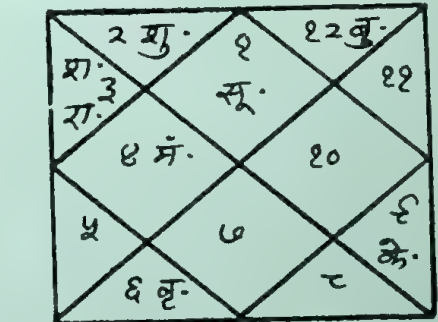
१२४२



१२४३



१२४४



१२४५

रा. शु.	१२ बु.	११	३
२	१ सू.	१०	४ मं.
५	७	६	६ वृ.
८	८ के.	२०	२

१२४६

रा. शु.	१२	११	३
२	१ सू. बु.	१०	४ मं.
५	७	६	६ वृ.
८	८ के.	२०	२

१२४७

शु. रा.	१ बु.	११	४ मं.
३	२ सू. रा.	१०	५
६	८ के.	२०	६ वृ.
७	८	२१	३

१२४८

शु. रा.	१	११	४ मं.
३	२ सू. रा.	१०	५
६	८ के.	२०	६ वृ.
७	८	२१	३

१२४९

शु. बु.	१	११	४ मं.
३	२ सू. रा.	१०	५
६	८ के.	२०	६ वृ.
७	८	२१	३

१२५०

शु. रा.	२ रा.	१	५ मं.
४	३ सू. बु.	१२	६ वृ.
७	८	२१	३
८ के.	२०	२	४ मं.

१२५१

शु. रा.	२ रा.	१	५ मं.
४	३ सू. बु.	१२	६ वृ.
७	८	२१	३
८ के.	२०	२	४ मं.

१२५२

शु. रा.	२ रा.	१	५ मं.
४	३ सू. बु.	१२	६ वृ.
७	८	२१	३
८ के.	२०	२	४ मं.

१२५३

मं. शु.	३	२ रा.	५ मं.
४	३ सू. बु.	१२	६ वृ.
७	८	२१	३
८ के.	२०	२	४ मं.

१२५४

मं. शु.	३	२ रा.	५ मं.
४	३ सू. बु.	१२	६ वृ.
७	८	२१	३
८ के.	२०	२	४ मं.

१२५५

मं. वृ. शु.	३	२ रा.	५ मं.
४	३ सू. बु.	१२	६ वृ.
७	८	२१	३
८ के.	२०	२	४ मं.

१२५६

मं. वृ. शु.	३	२ रा.	५ मं.
४	३ सू. बु.	१२	६ वृ.
७	८	२१	३
८ के.	२०	२	४ मं.

१२५७

मं. वृ. शु.	३	२ रा.	५ मं.
४	३ सू. बु.	१२	६ वृ.
७	८	२१	३
८ के.	२०	२	४ मं.

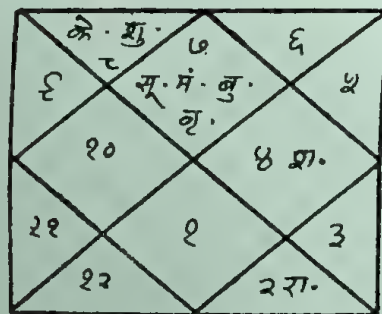
१२५८

मं. वृ. शु.	३	२ रा.	५ मं.
४	३ सू. बु.	१२	६ वृ.
७	८	२१	३
८ के.	२०	२	४ मं.

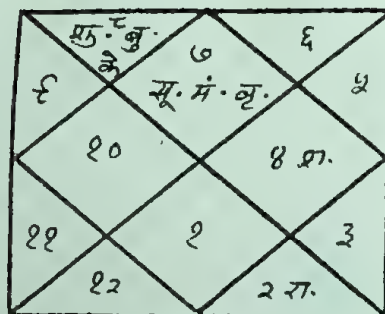
१२५९

मं. वृ. शु.	३	२ रा.	५ मं.
४	३ सू. बु.	१२	६ वृ.
७	८	२१	३
८ के.	२०	२	४ मं.

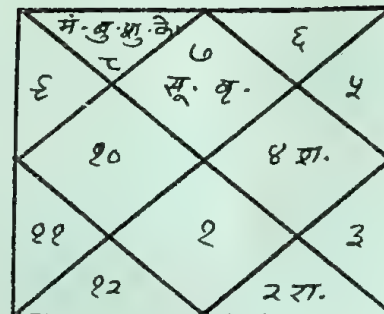
१२६०



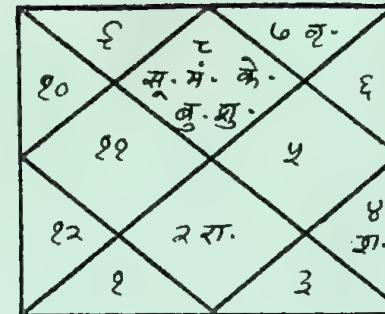
१२६१



१२६२



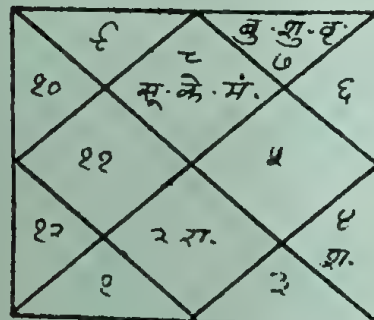
१२६३



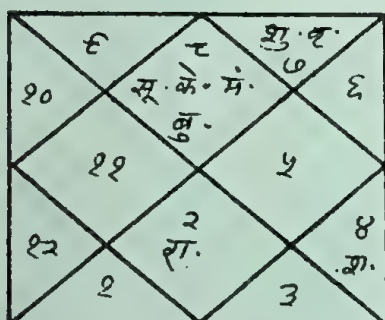
१२६४



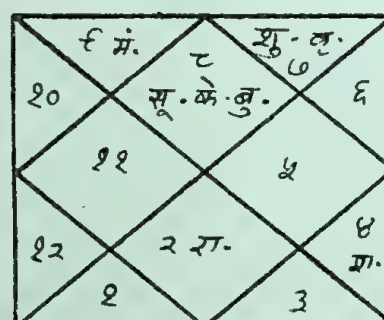
१२६५



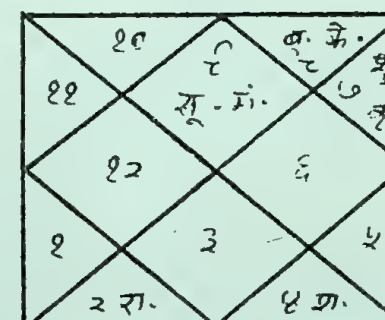
१२६६



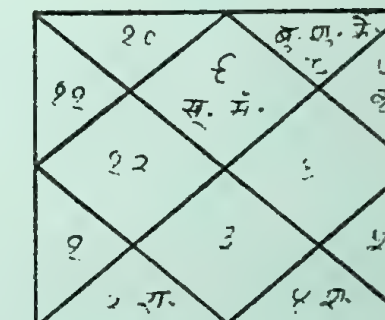
१२६७



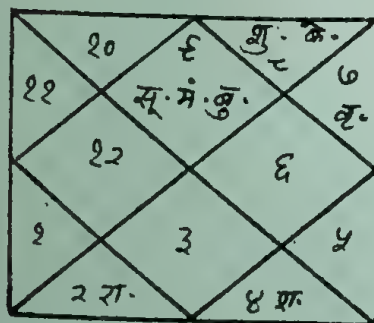
१२६८



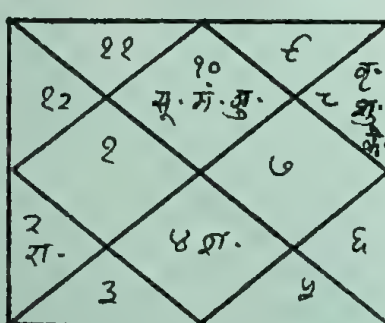
१२६९



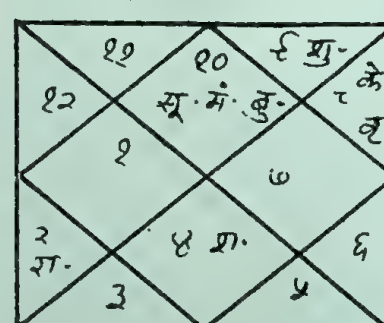
१२७०



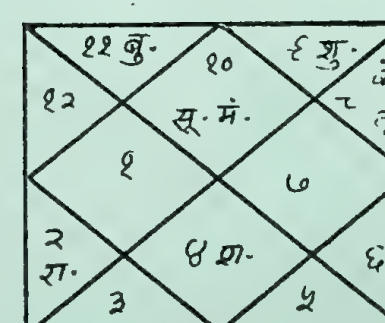
१२७१



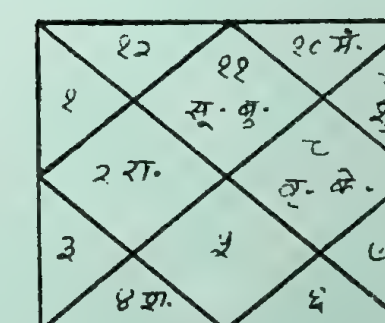
१२७२



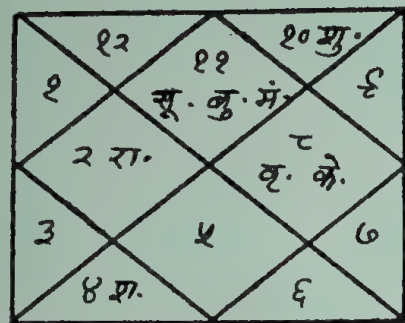
१२७३



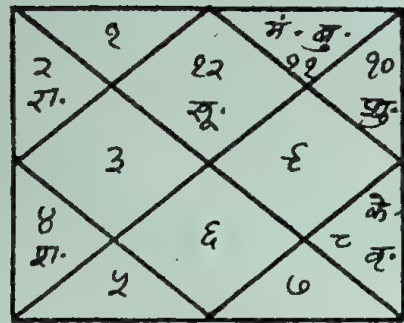
१२७४



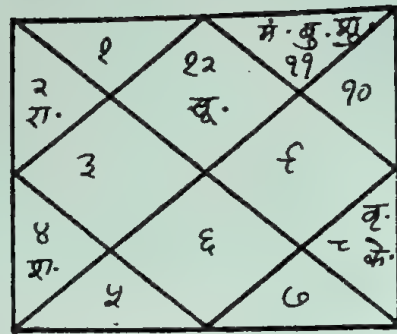
१२७५



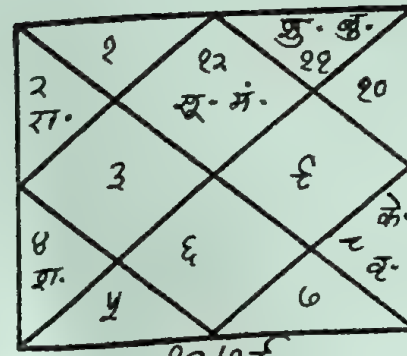
१२७६



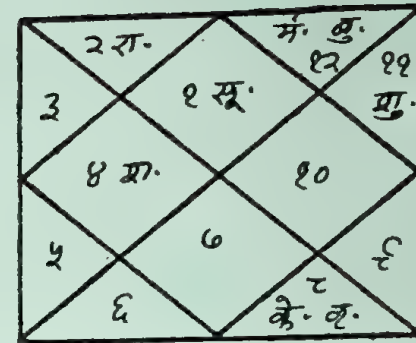
१२७७



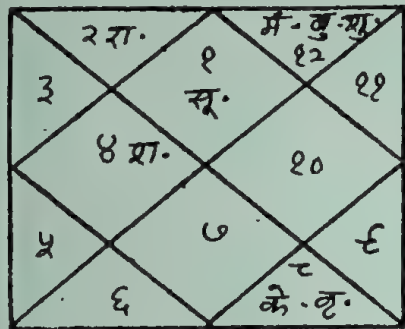
१२७८



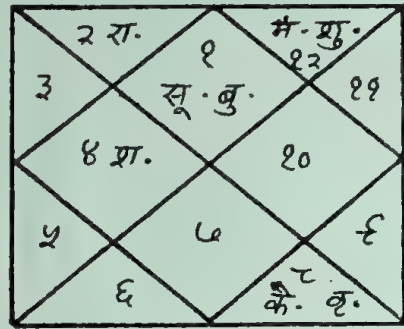
१२७९



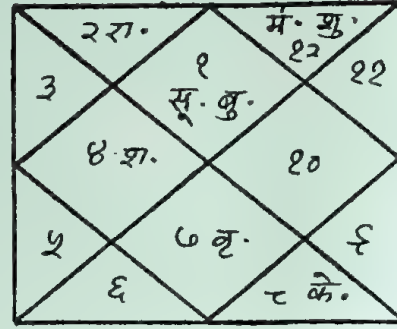
१२८०



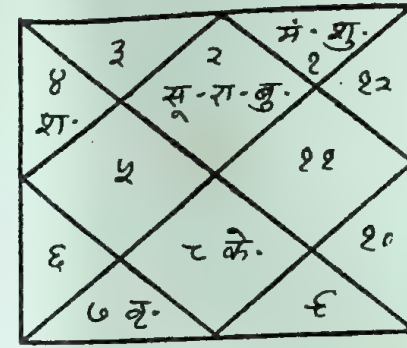
१२८१



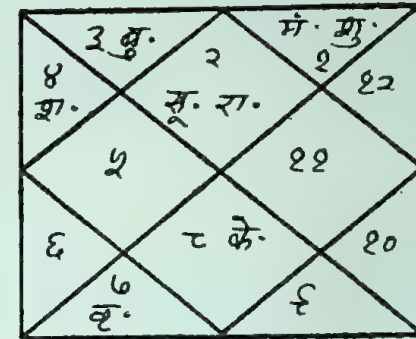
१२८२



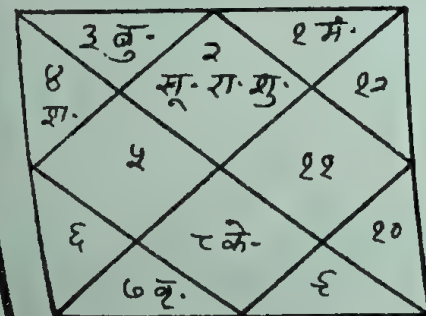
१२८३



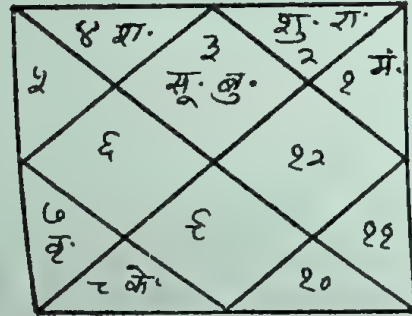
१२८४



१२८५



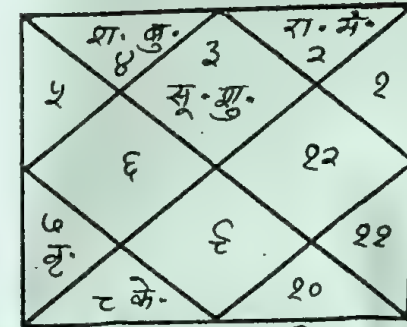
१२८६



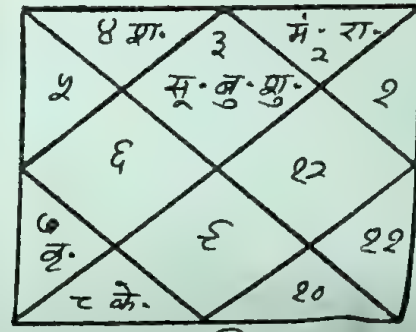
१२८७



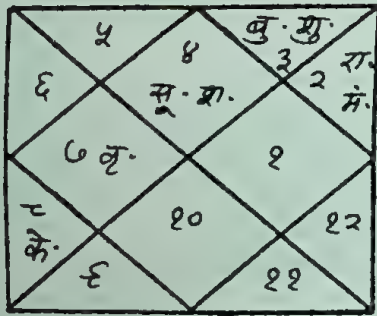
१२८८



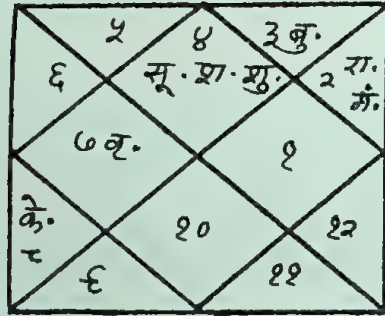
१२८९



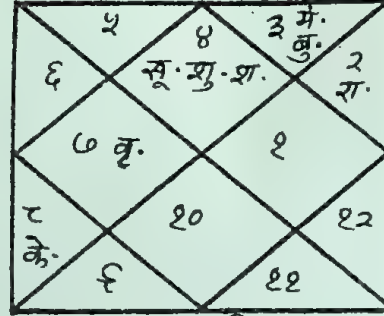
१२९०



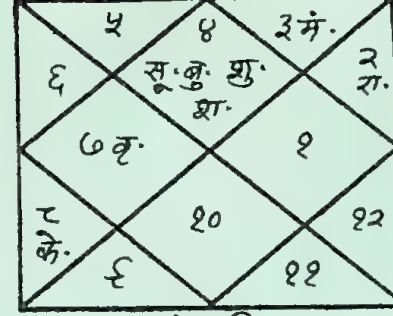
१२८१



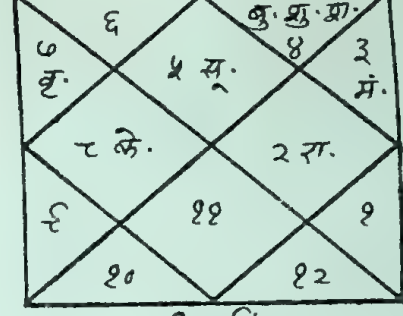
१२८२



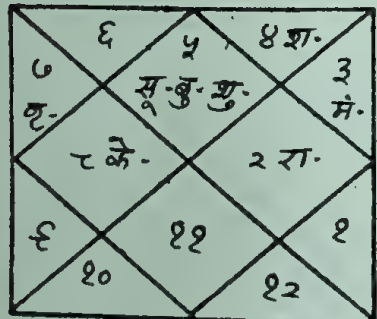
१२८३



१२८४



१२८५



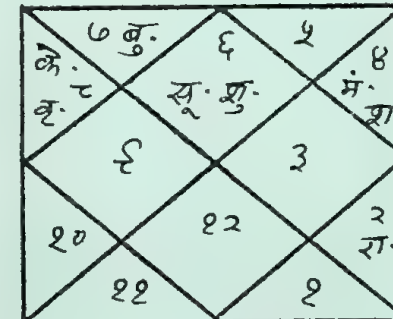
१२८६



१२८७



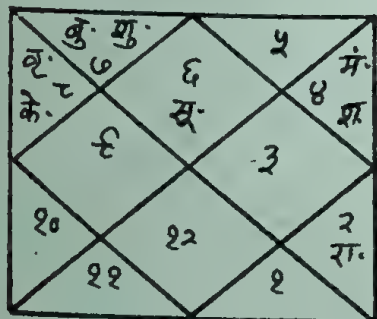
१२८८



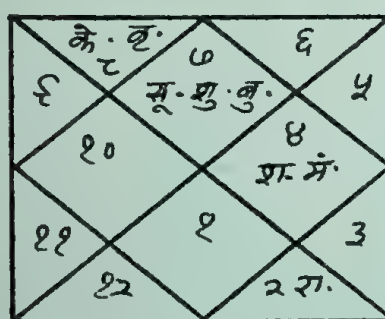
१२८९



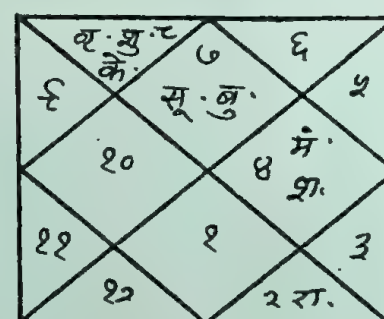
१३००



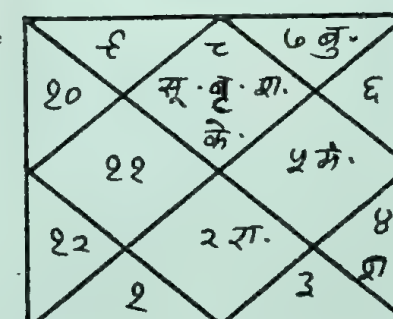
१३०१



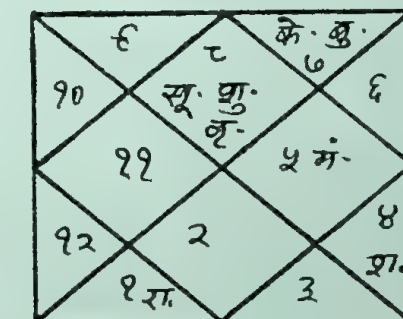
१३०२



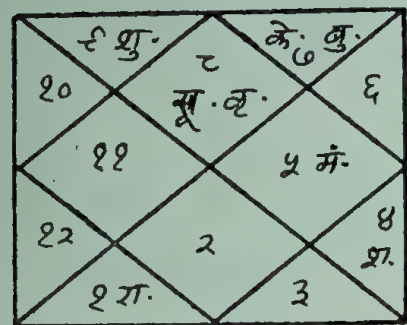
१३०३



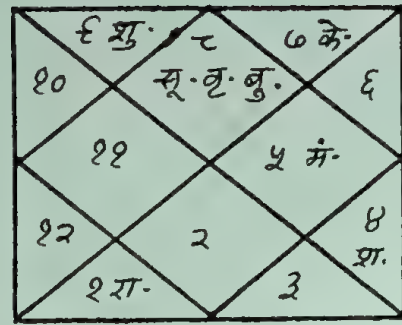
१३०४



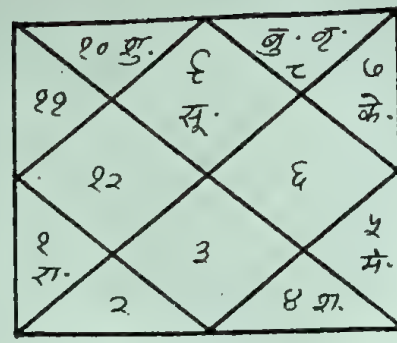
१३०५



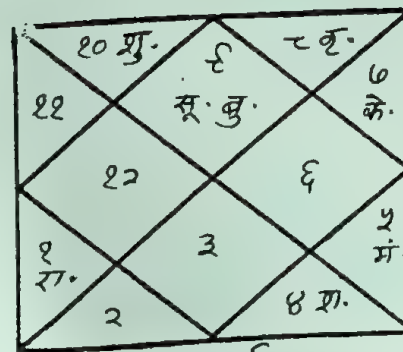
१३०६



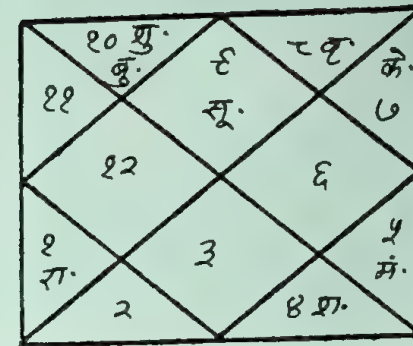
१३०७



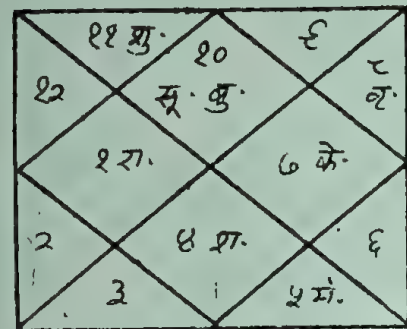
१३०८



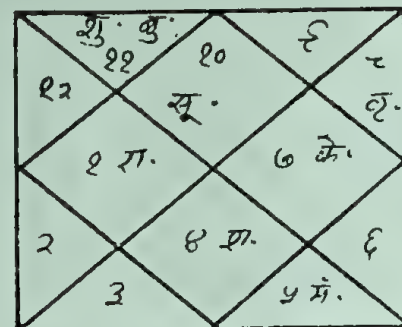
१३०९



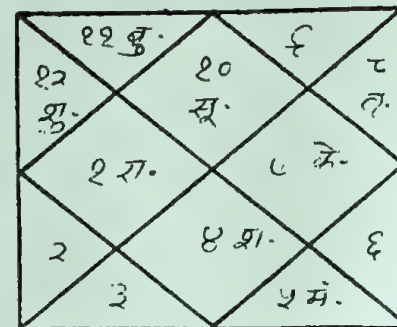
१३१०



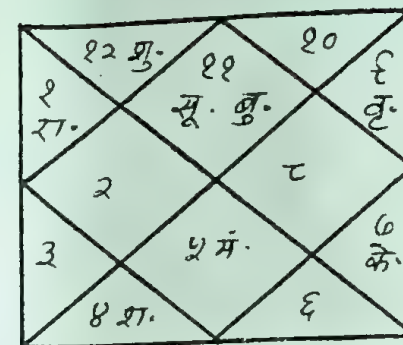
१३११



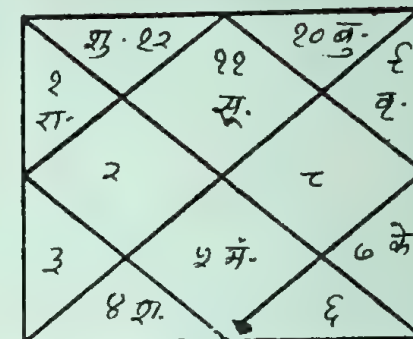
१३१२



१३१३



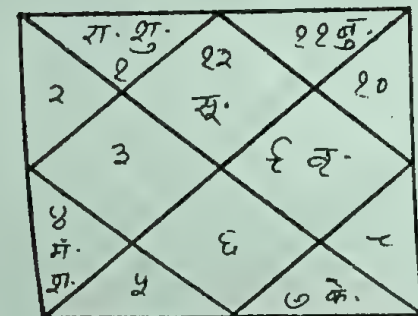
१३१४



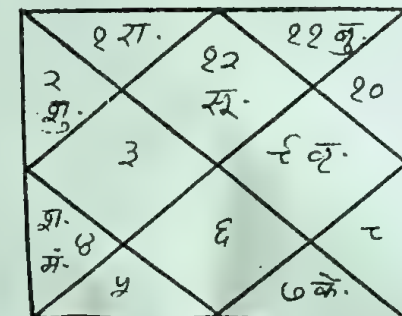
१३१५



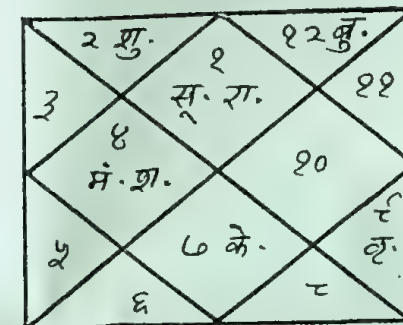
१३१६



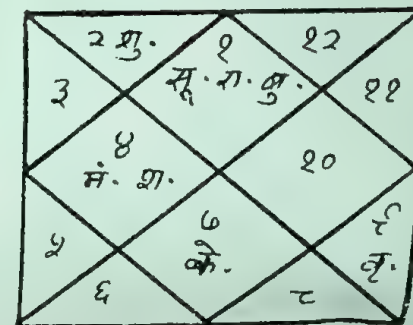
१३१७



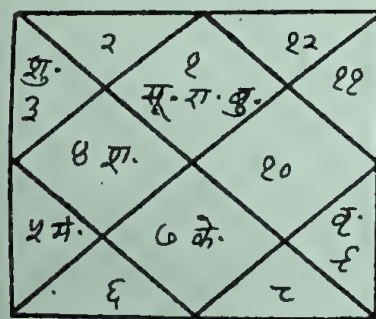
१३१८



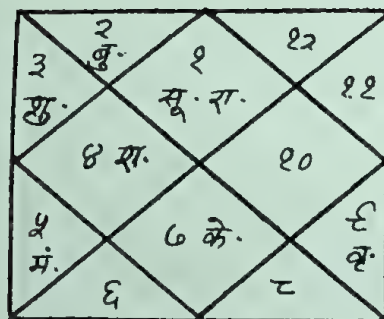
१३१९



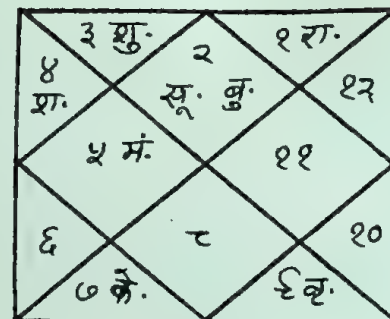
१३२०



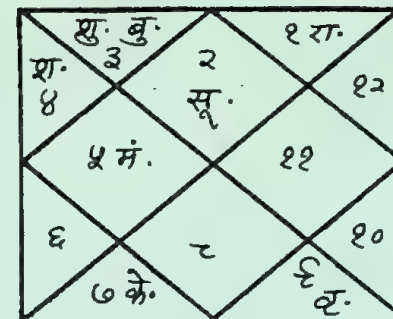
8322



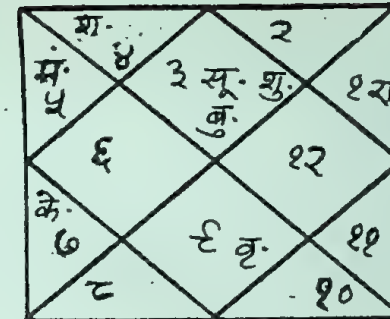
8322



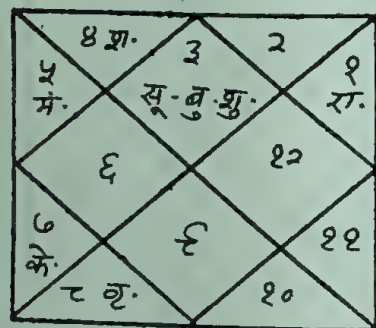
2323



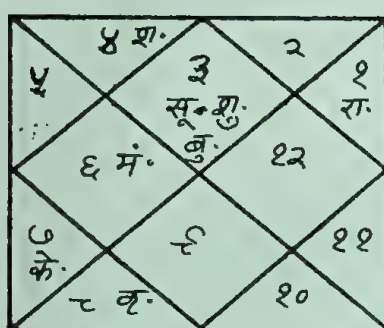
2328



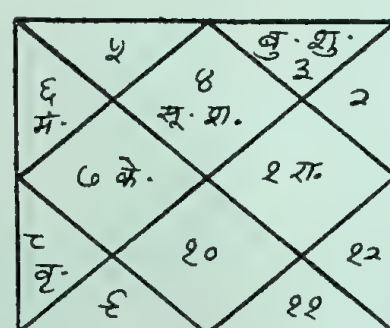
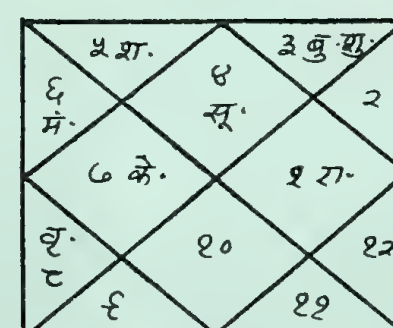
8324



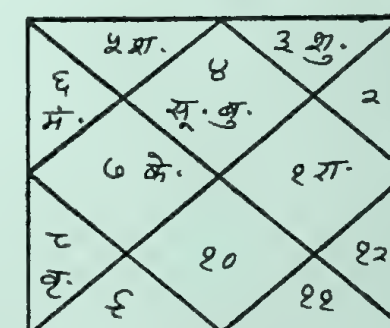
2325



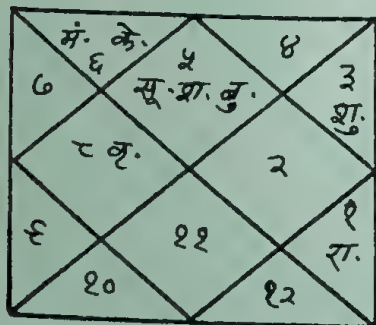
2326


$$\underline{8322}$$


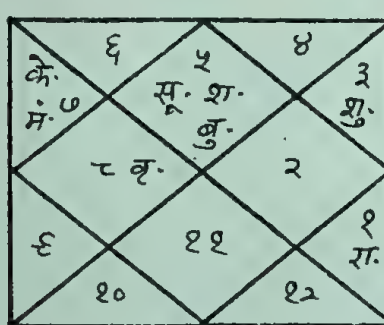
2325



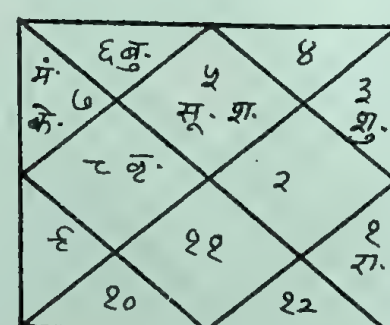
2330



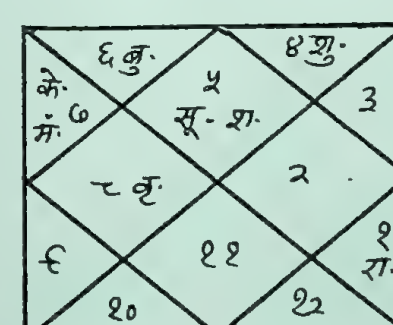
2332



0332



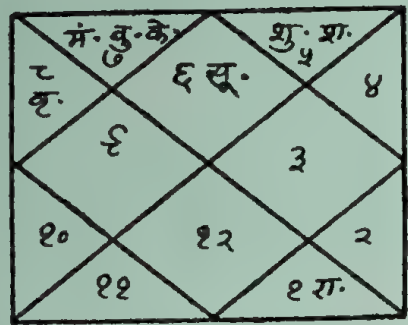
2333



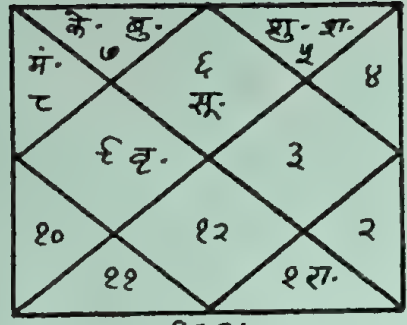
2338



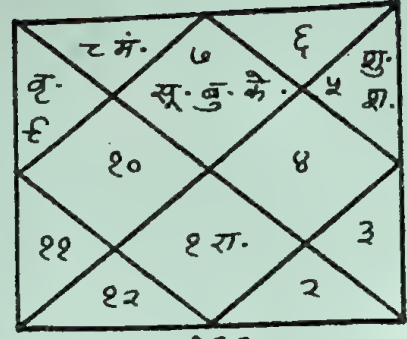
8332



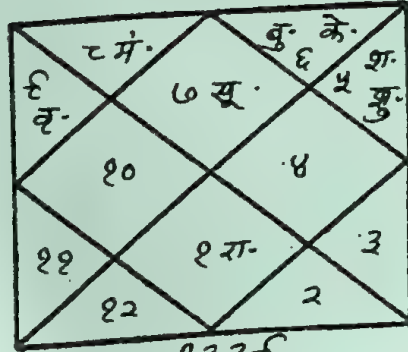
२३३६



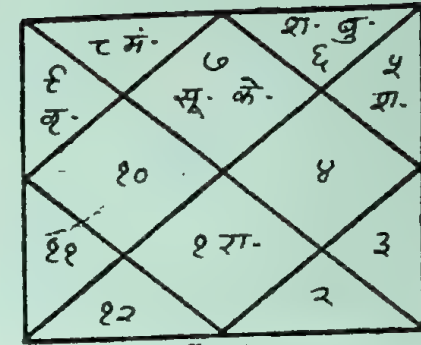
२३३७



२३३८



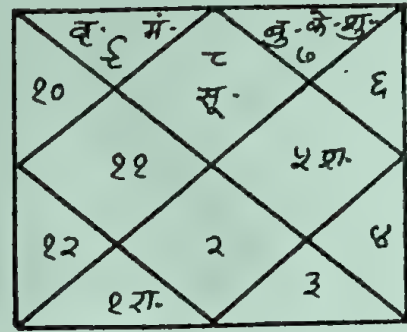
२३३९



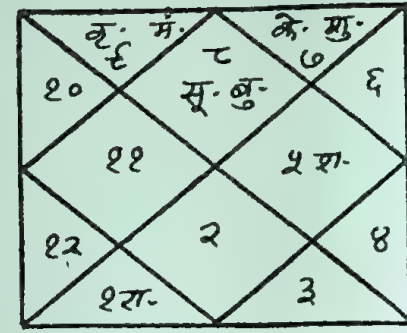
२३४०



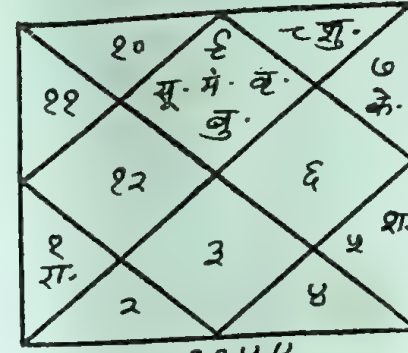
२३४१



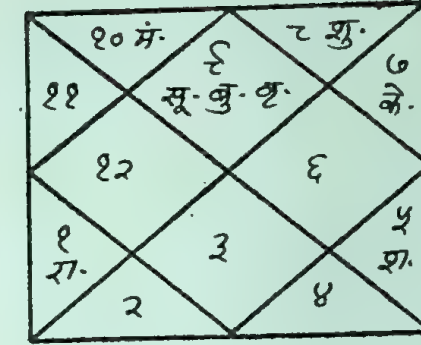
२३४२



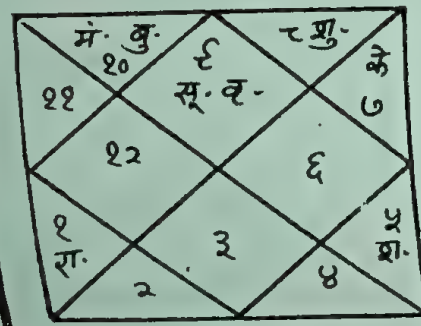
२३४३



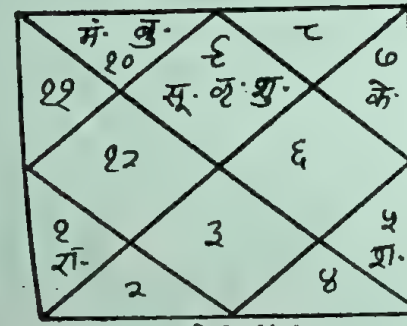
२३४४



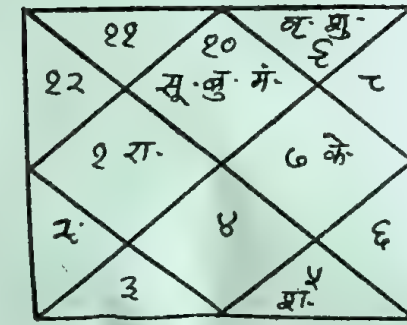
२३४५



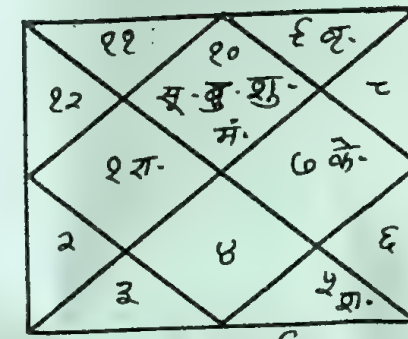
२३४६



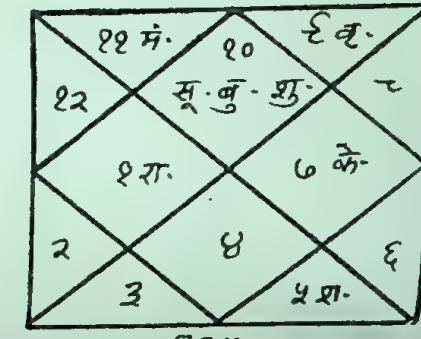
२३४७



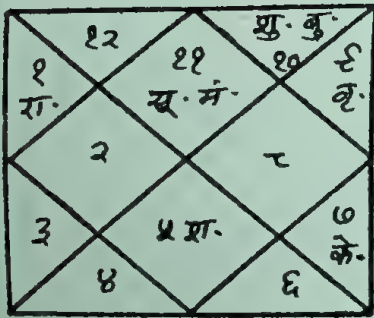
२३४८



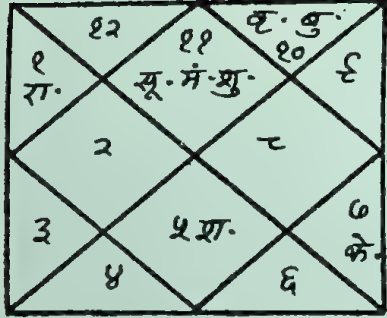
२३४९



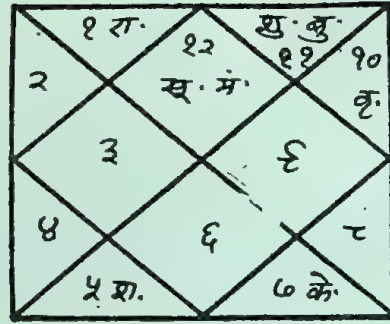
२३५०



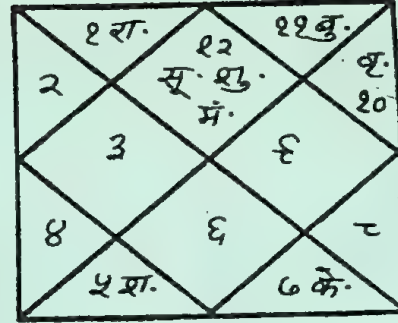
૧૩૫૧



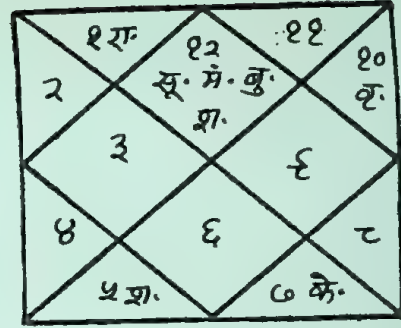
૧૩૫૨



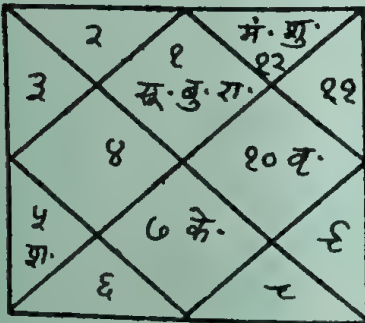
૧૩૫૩



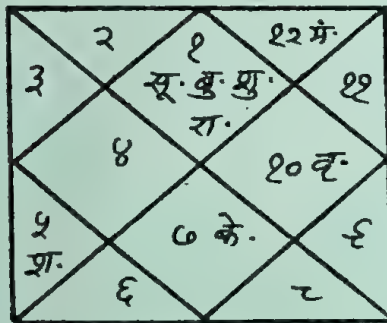
૧૩૫૪



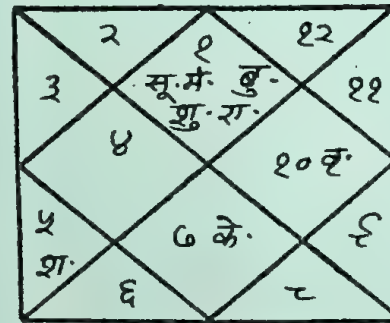
૧૩૫૫



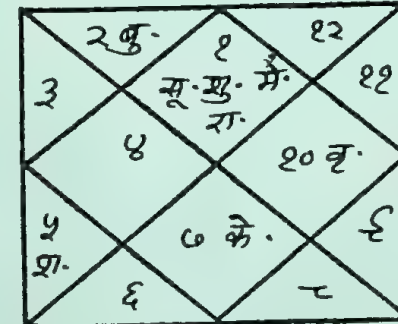
૧૩૫૬



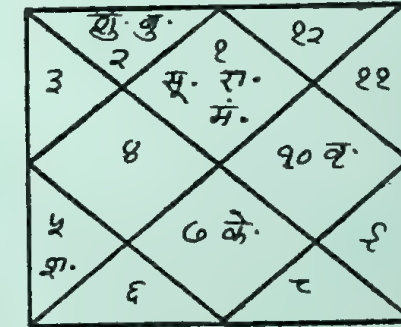
૧૩૫૭



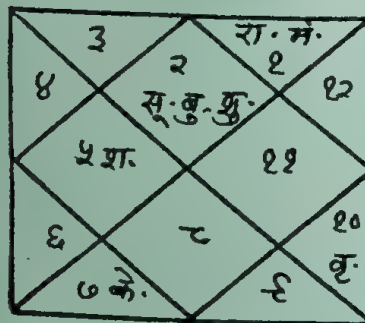
૧૩૫૮



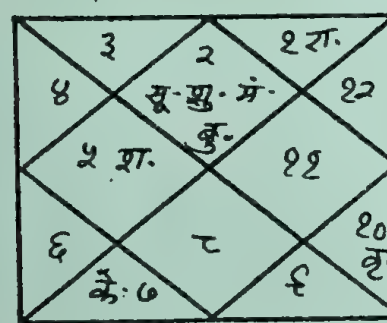
૧૩૫૯



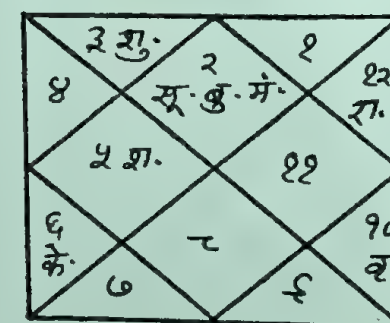
૧૩૬૦



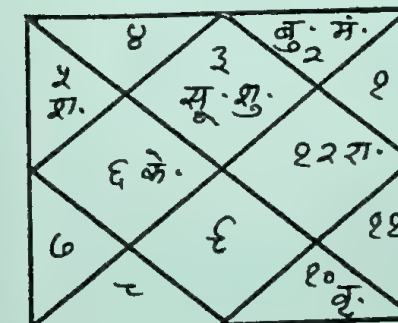
૧૩૬૧



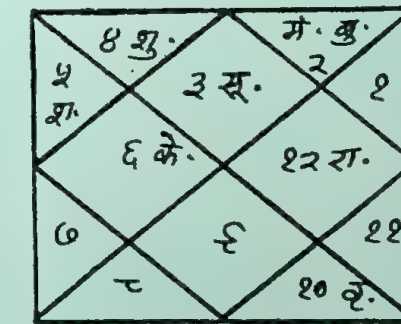
૧૩૬૨



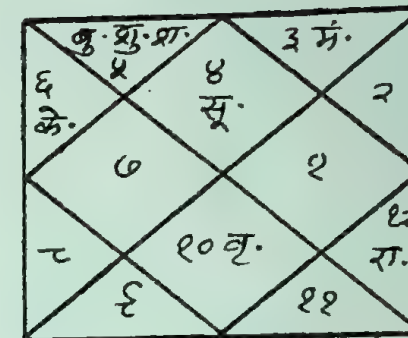
૧૩૬૩



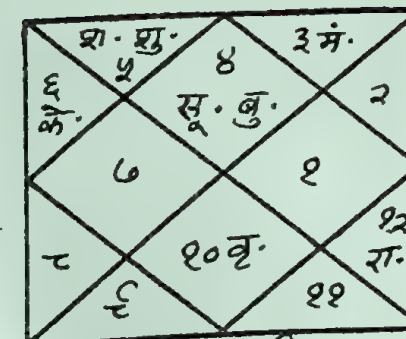
૧૩૬૪



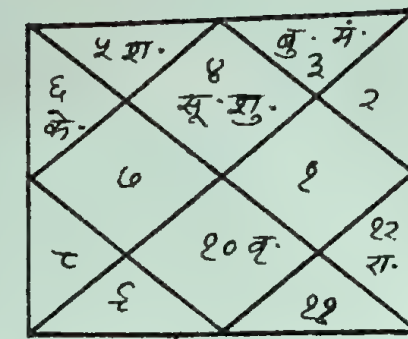
૧૩૬૫



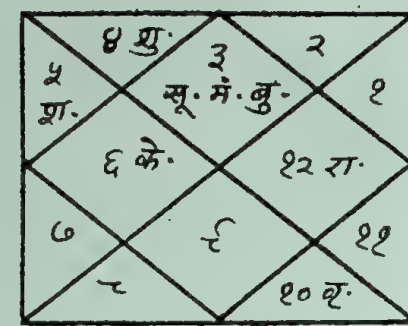
१३६०



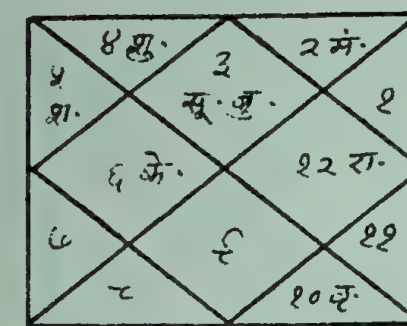
१३६१



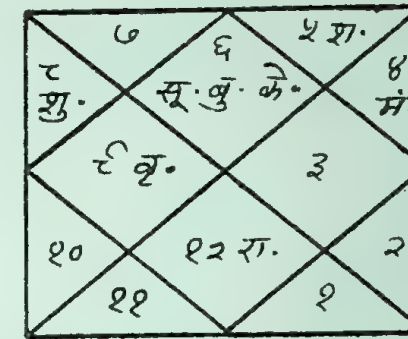
१३६२



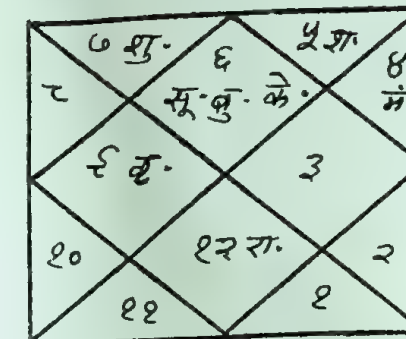
१३६३



१३६४



१३६५



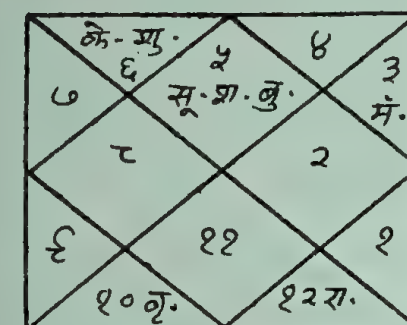
१३६६



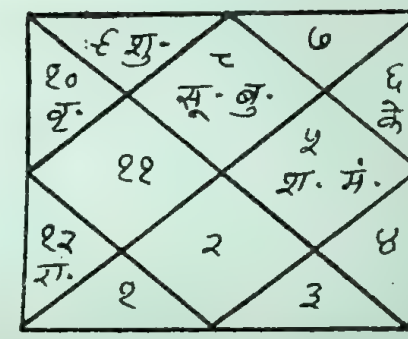
१३६७



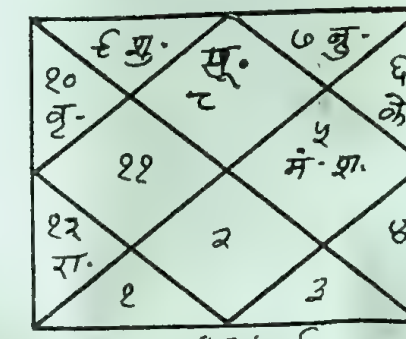
१३६८



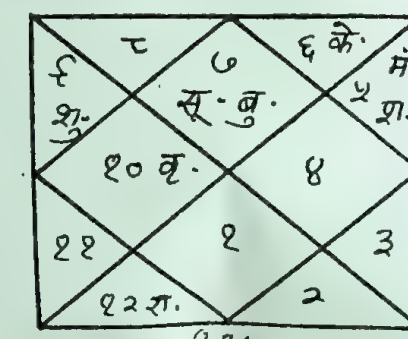
१३६९



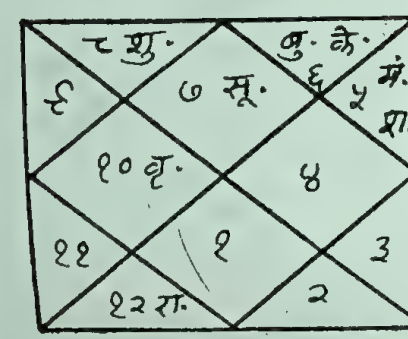
१३७०



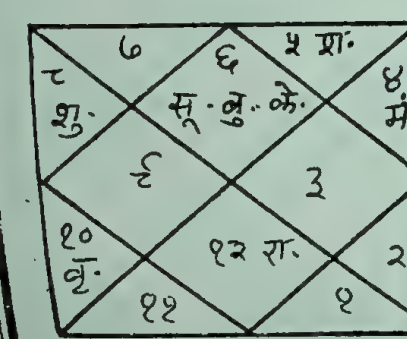
१३७१



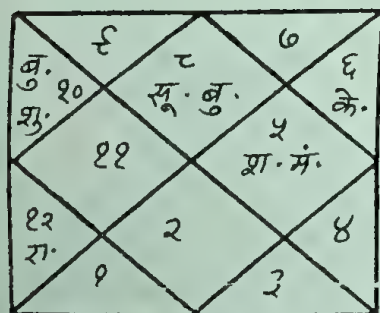
१३७२



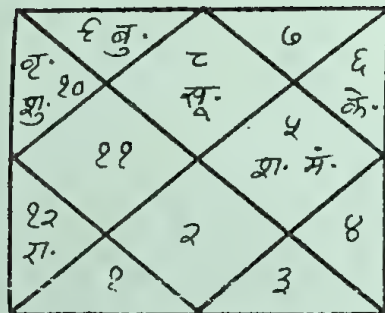
१३७३



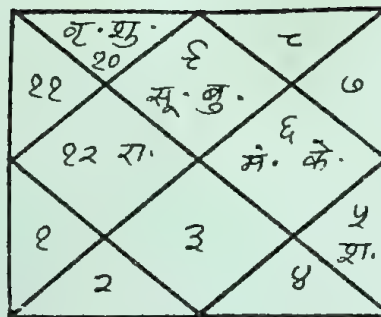
१३७४



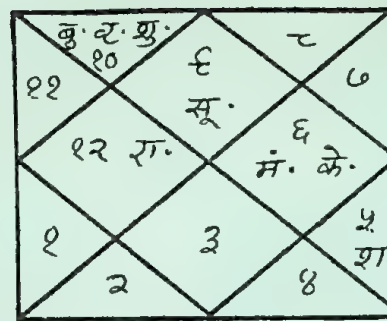
8328



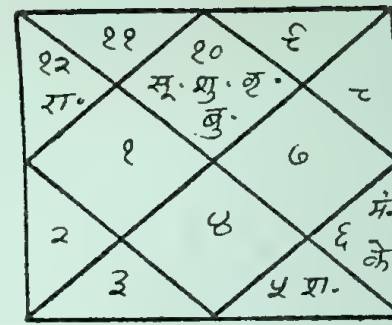
2372



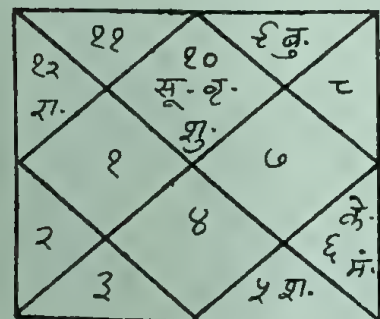
2372



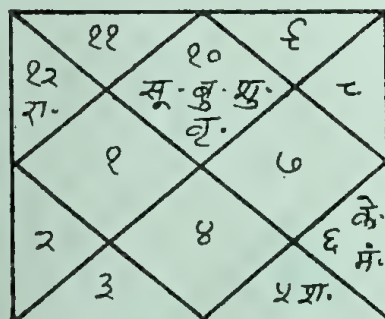
8324



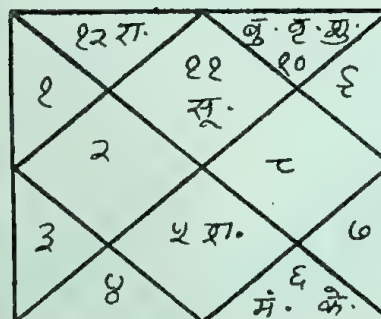
8374



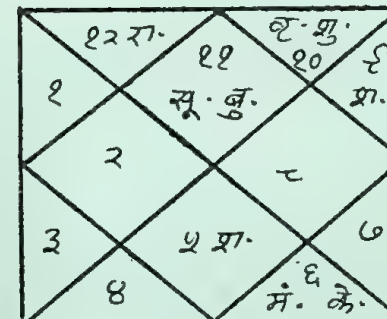
१३२५



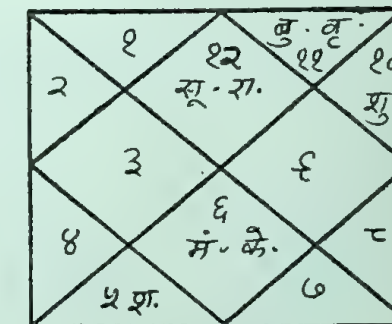
23760



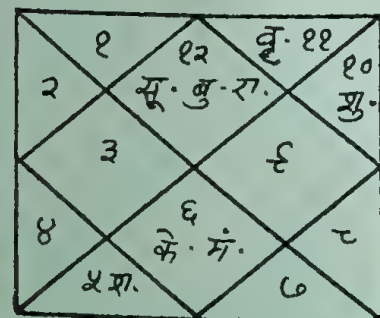
2325



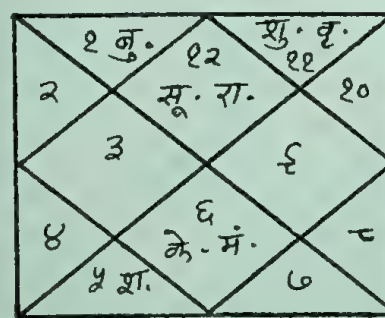
7276



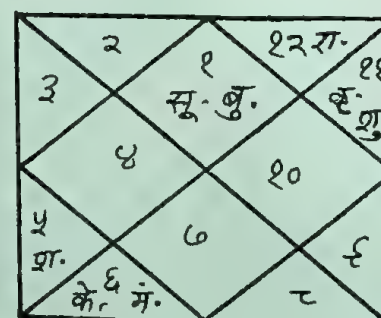
१३-८०



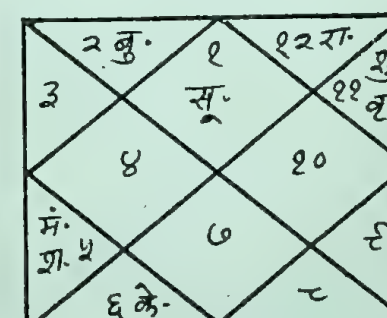
83-78



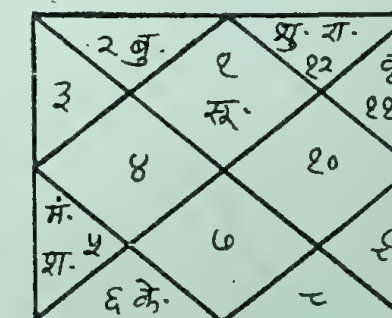
83 f 2



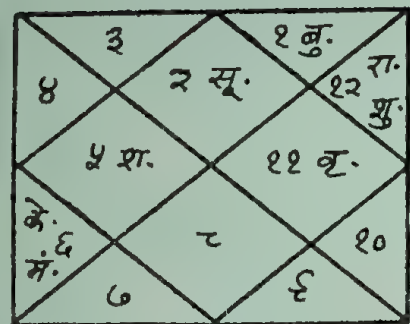
१३८३



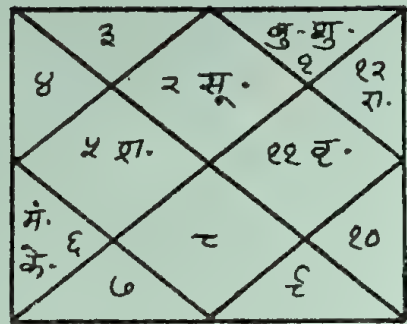
83-56



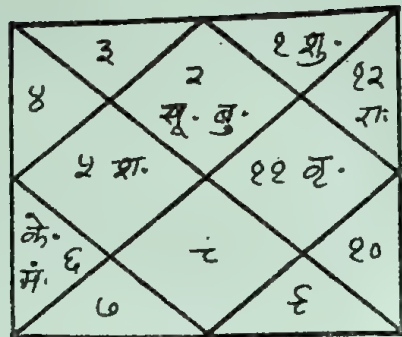
2372



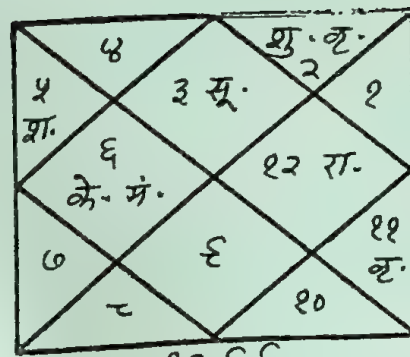
१३८६



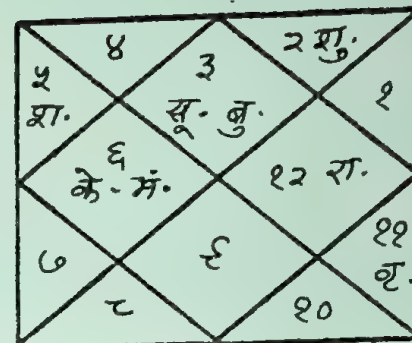
१३८७



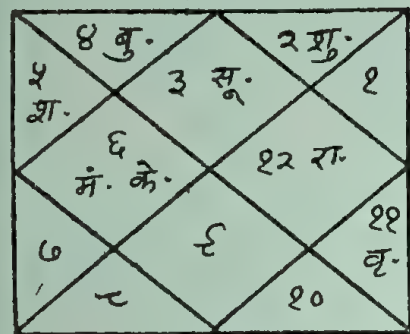
१३८८



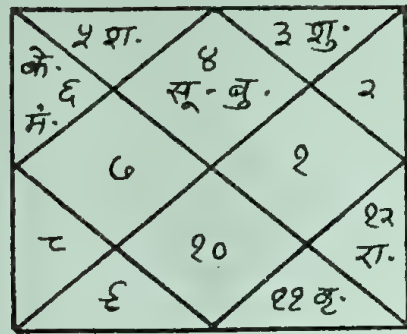
१३८९



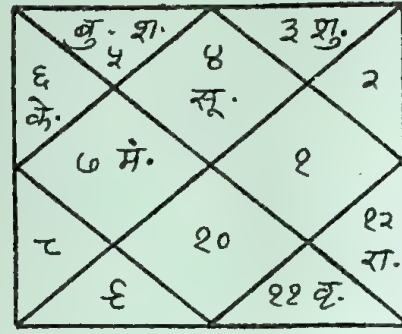
१४००



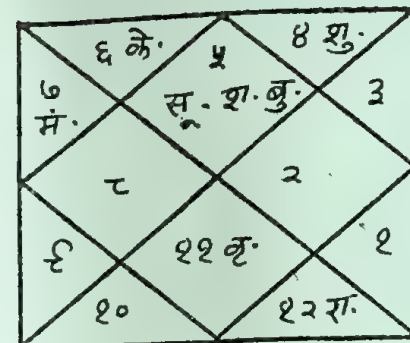
१४०१



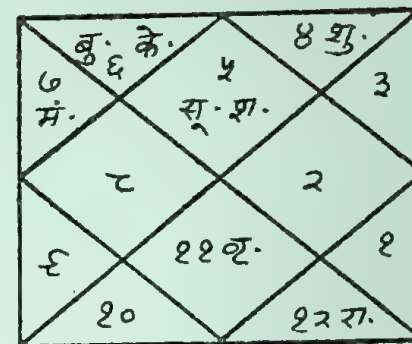
१४०२



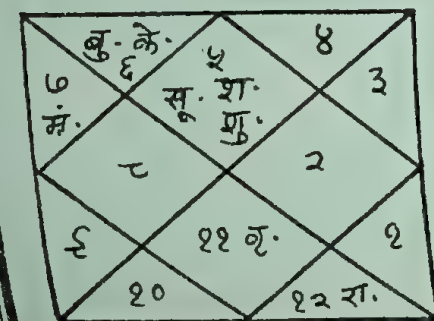
१४०३



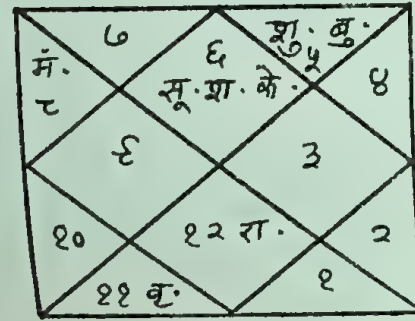
१४०४



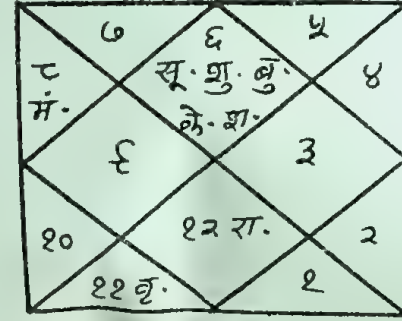
१४०५



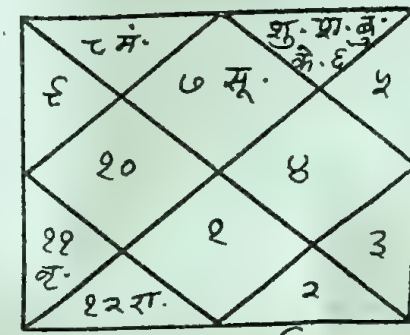
१४०६



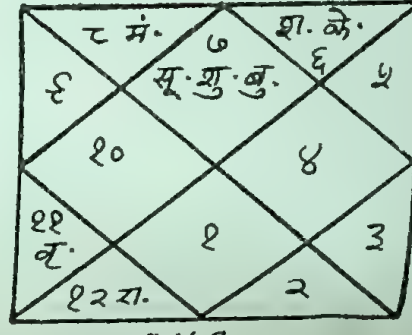
१४०७



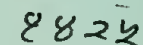
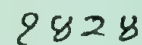
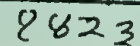
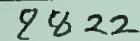
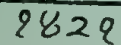
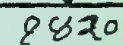
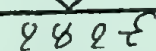
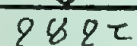
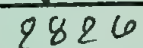
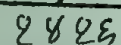
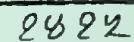
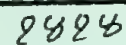
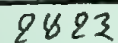
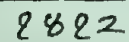
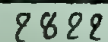
१४०८

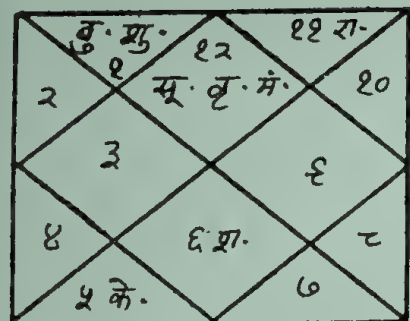


१४०९

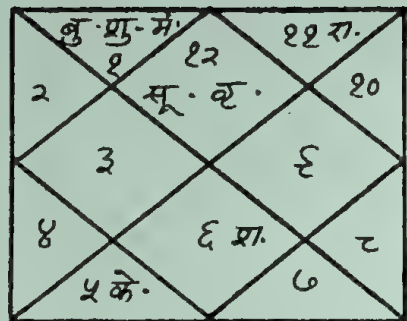


१४१०

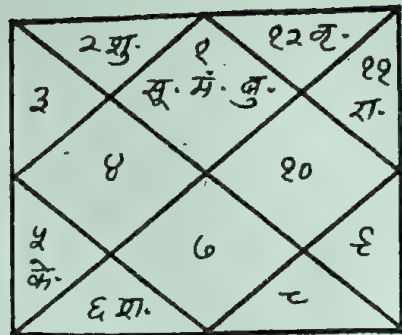




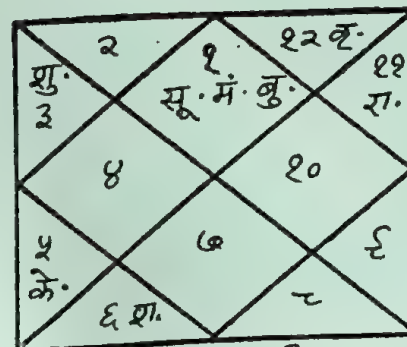
૧૪૨૬



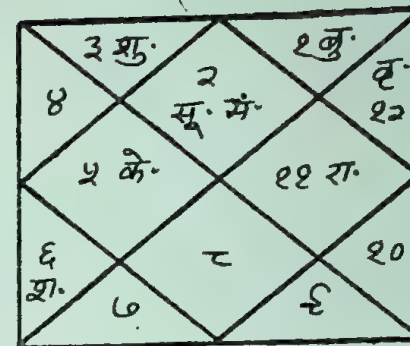
૧૪૨૭



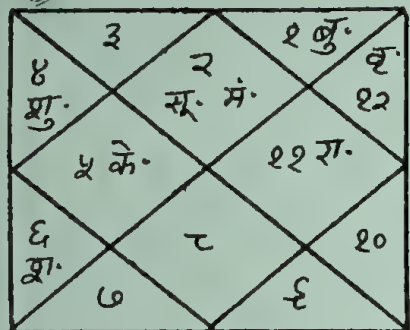
૧૪૨૮



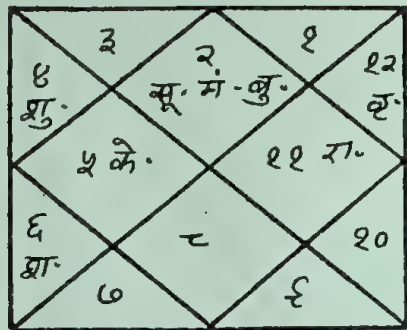
૧૪૨૯



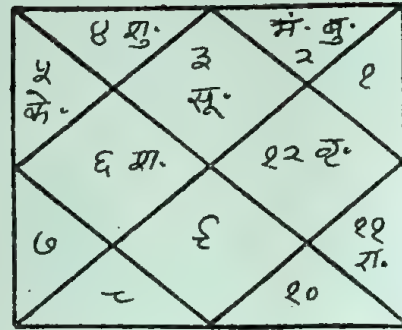
૧૪૩૦



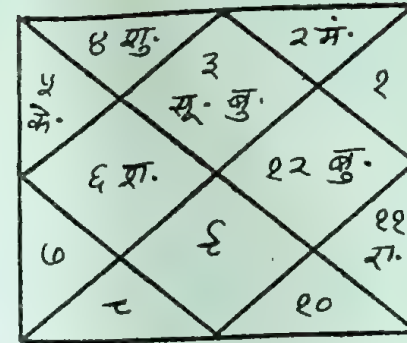
૧૪૩૧



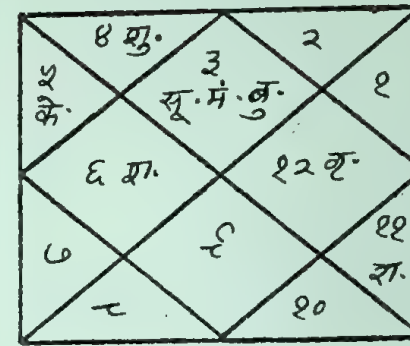
૧૪૩૨



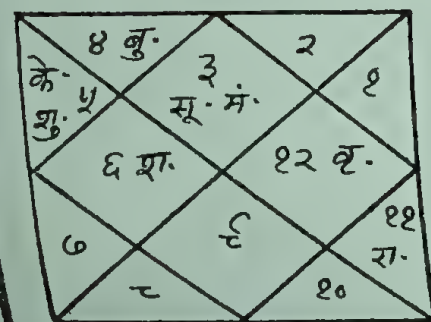
૧૪૩૩



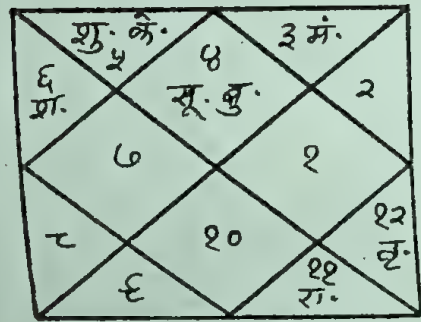
૧૪૩૪



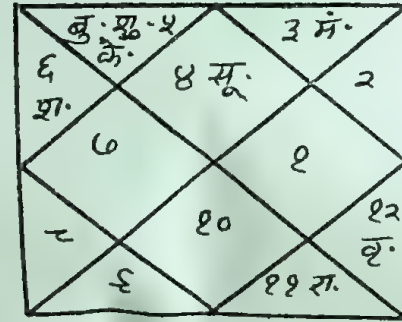
૧૪૩૫



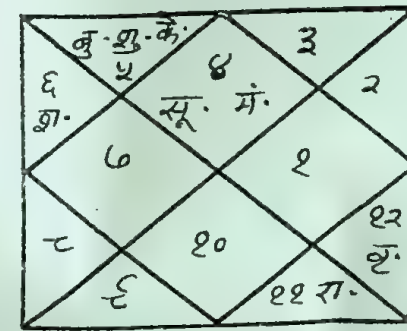
૧૪૩૬



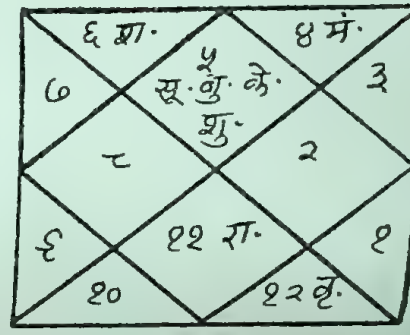
૧૪૩૭



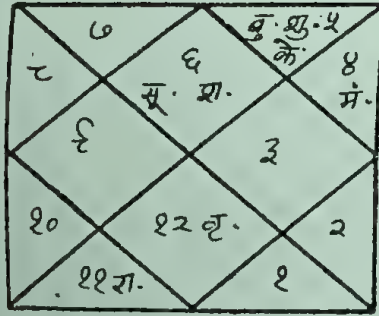
૧૪૩૮



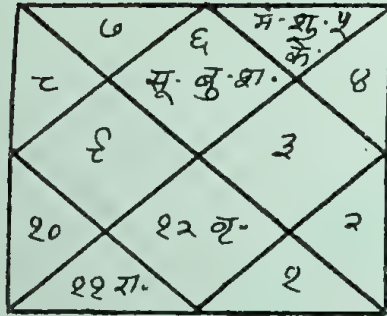
૧૪૩૯



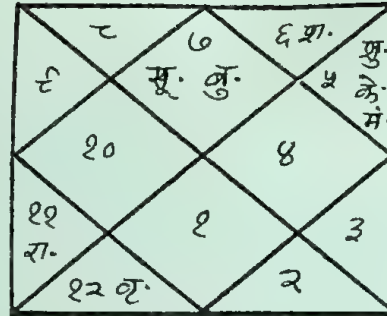
૧૪૪૦



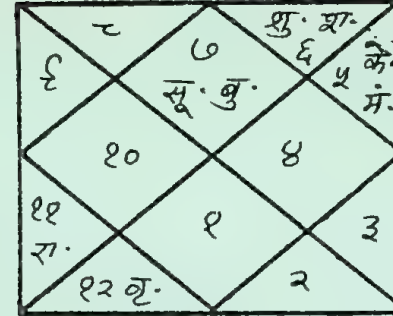
१४४१



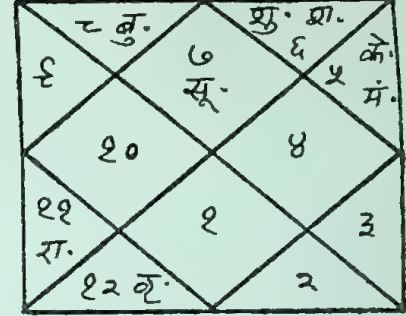
१४४२



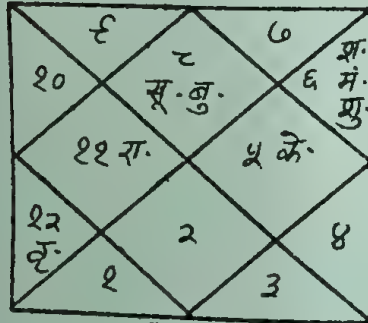
१४४३



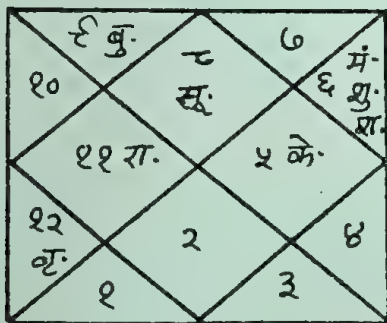
१४४४



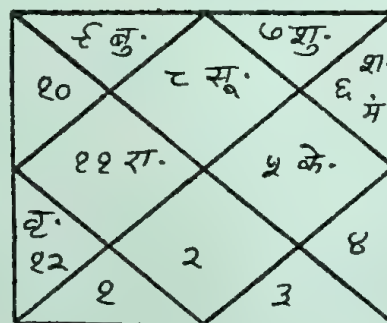
१४४५



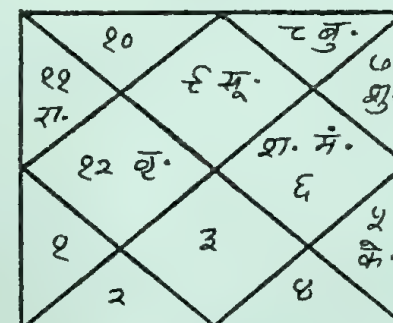
१४४६



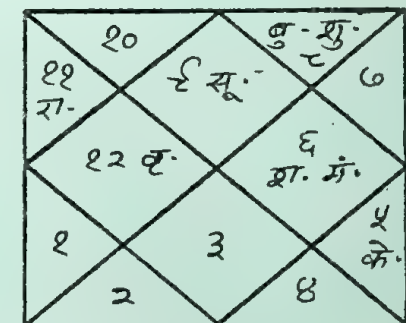
१४४७



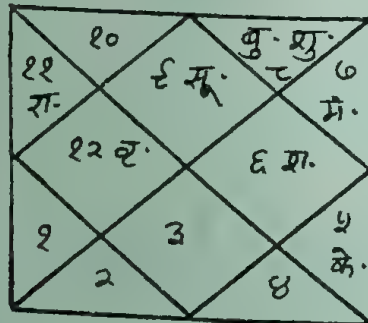
१४४८



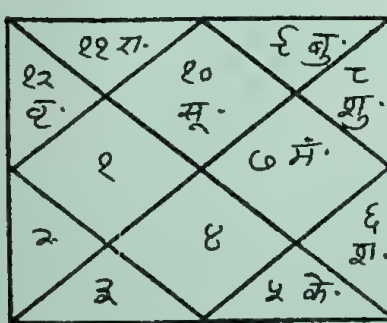
१४४९



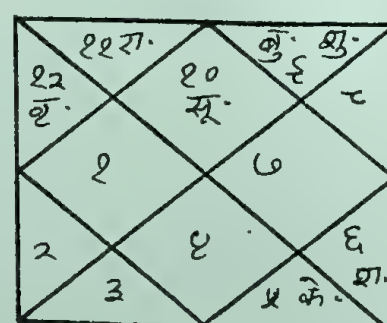
१४५०



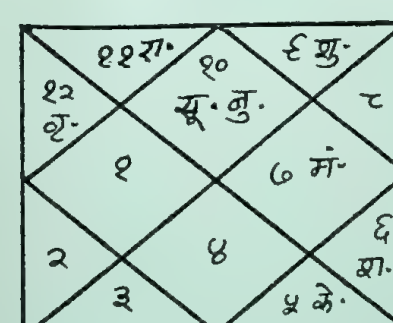
१४५१



१४५२



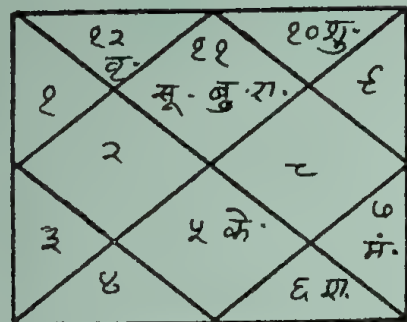
१४५३



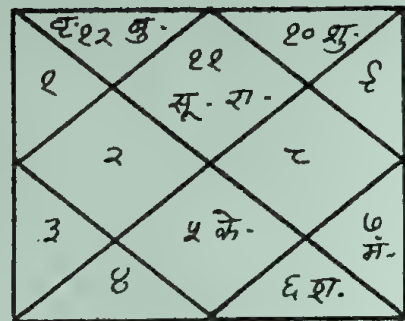
१४५४



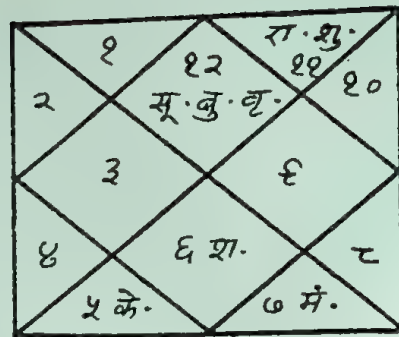
१४५५



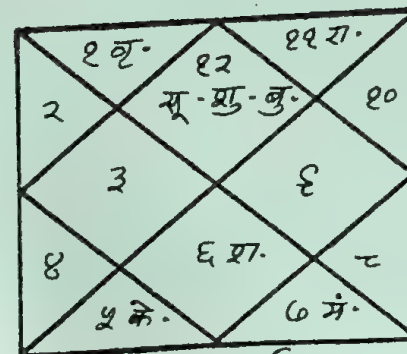
१४५६



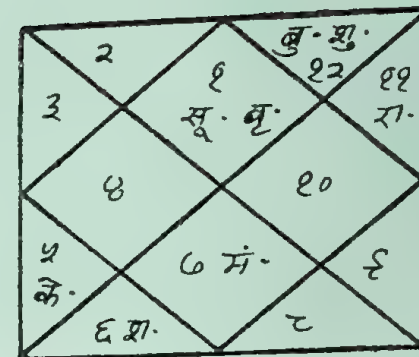
१४५७



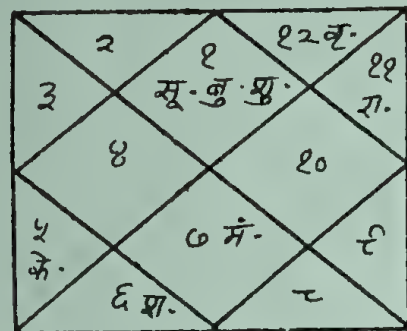
१४५८



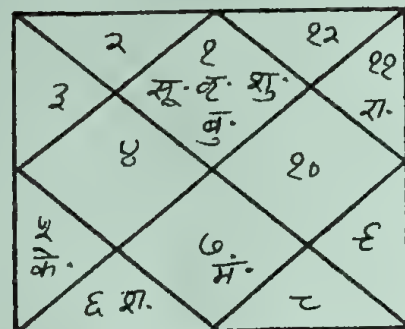
१४५९



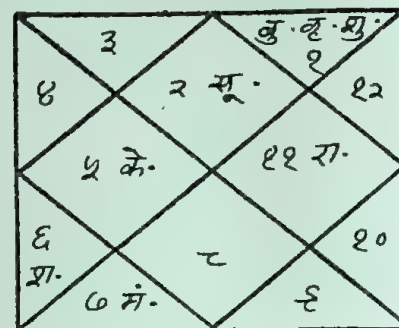
१४६०



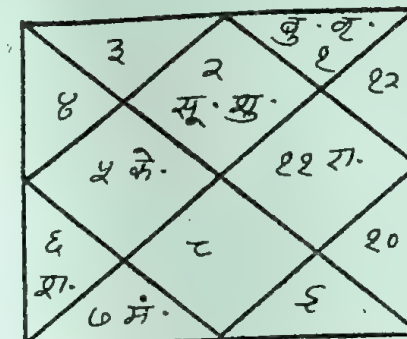
१४६१



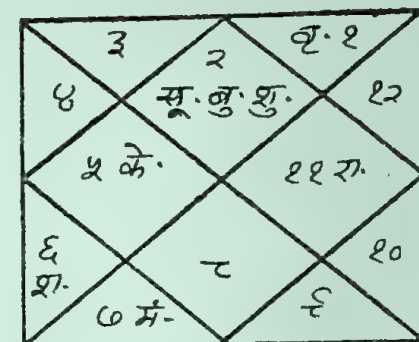
१४६२



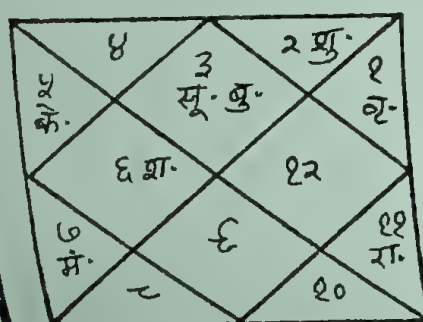
१४६३



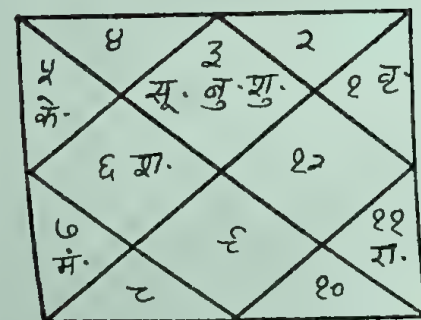
१४६४



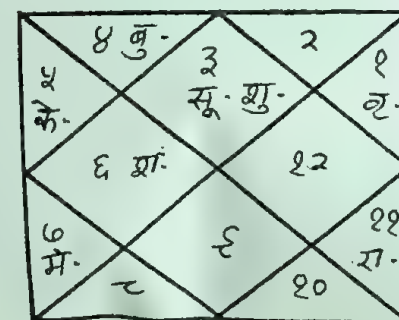
१४६५



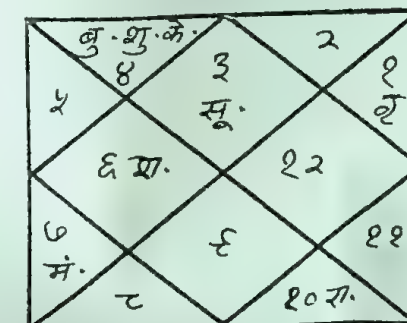
१४६६



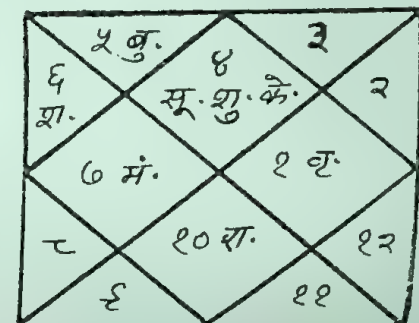
१४६७



१४६८



१४६९



१४७०

५ शु.	४	३
६ श.	सू. बु. के.	२
७ मं.	१ वृ.	
८	१० रा.	१२
९		११

१४७१

६ श.	५	के. बु.	३
७	सू. शु.		
८ मं.	२		
९	११		१ वृ.
१० रा.	१२		

१४७२

शु. श.	५	बु. के.	३
७	सू.		
८ मं.	२		
९	११		१ वृ.
१० रा.	१२		

१४७३

श. शु.	५	४ के.	३
७	सू. बु.		
८ मं.	२		
९	११		१ वृ.
१० रा.	१२		

१४७४

७	६	५	४ के.
८ मं.	सू. शु. श.	बु.	
९		३	
१० रा.	१२	२	
११		१ वृ.	

१४७५

७ शु.	६	५	४ के.
८ मं.	सू. बु. श.		
९		३	
१० रा.	१२	२	
११		१ वृ.	

१४७६

७ शु.	६	५	४ के.
८	सू. श. बु.		
९ मं.		३	
१० रा.	१२	२	
११		१ वृ.	

१४७७

शु. बु.	६	५	के. ४
८	सू. श.		
९ मं.		३	
१० रा.	१२	२	
११		१ वृ.	

१४७८

८ शु.	७	६ श.	५
९ मं.	सू. बु.		
१० रा.		४ के.	
११	१ वृ.	३	
१२		२	

१४७९

बु. शु.	७	६ श.	५
९ मं.	सू.		
१० रा.		४ के.	
११	१ वृ.	३	
१२		२	

१४८०

९ शु.	८	७	६ श.
१० मं.	सू. बु.		
११		५	
१२	२		४ के.
१ वृ.		३	

१४८१

९ शु.	८	७ श.	६
१० मं.	सू. बु.		
११		५	
१२	२		४ के.
१ वृ.		३	

१४८२

मं. ९	८	७ श.	६
शु. १०	सू. बु.		
११		५	
१२	२		४ के.
१ वृ.		३	

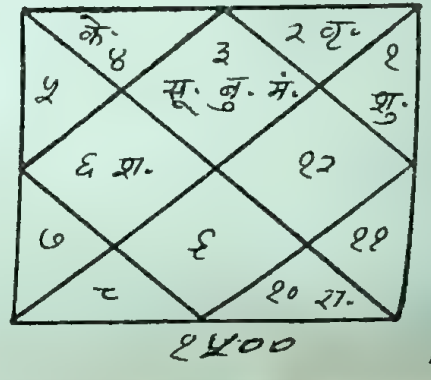
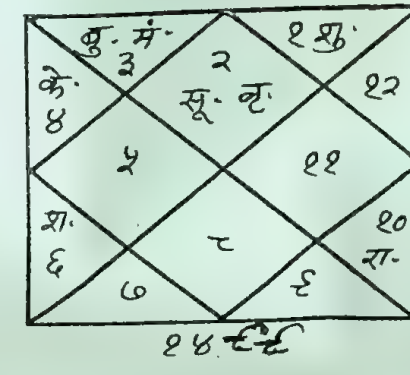
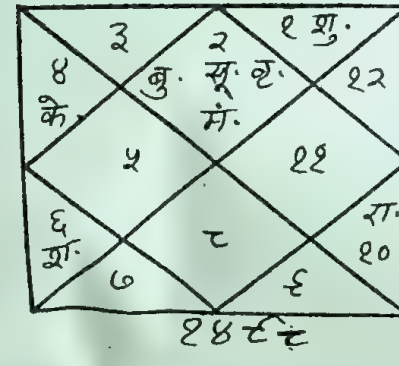
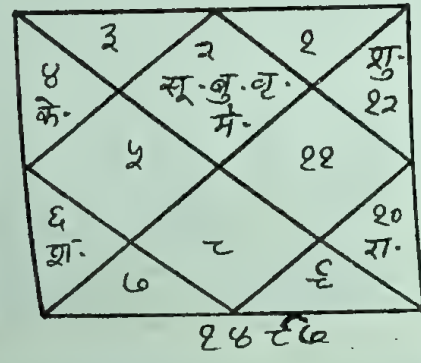
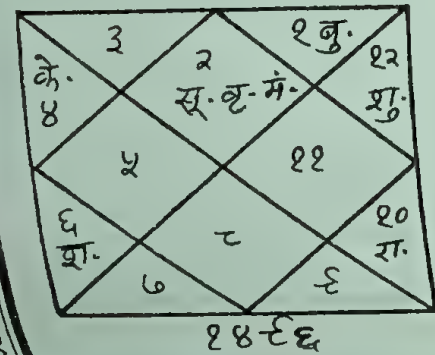
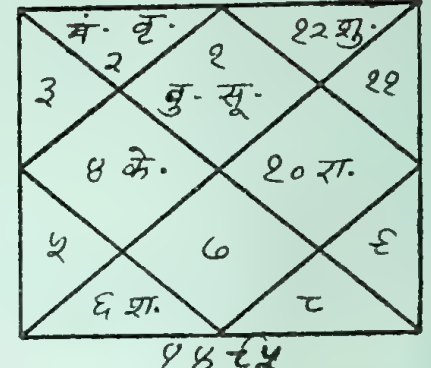
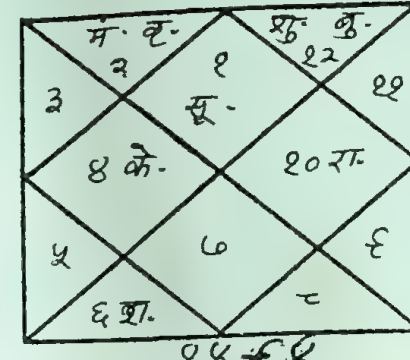
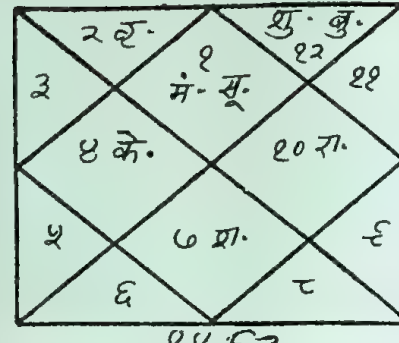
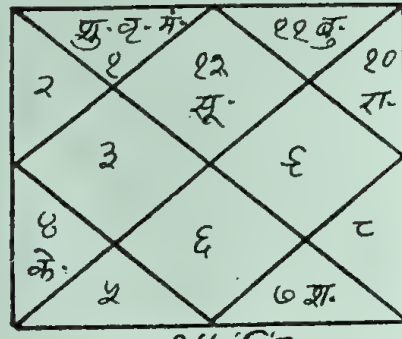
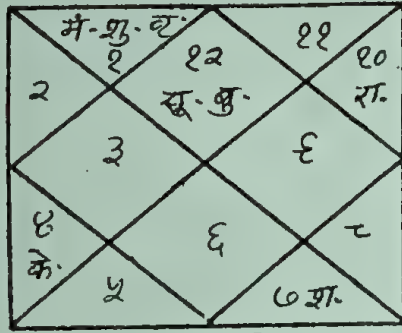
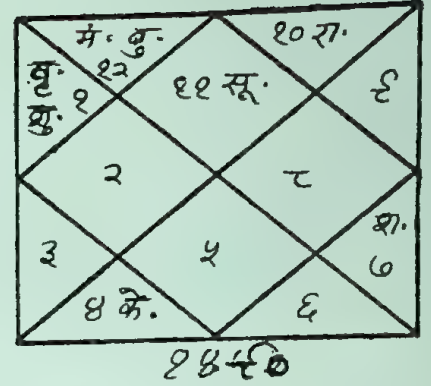
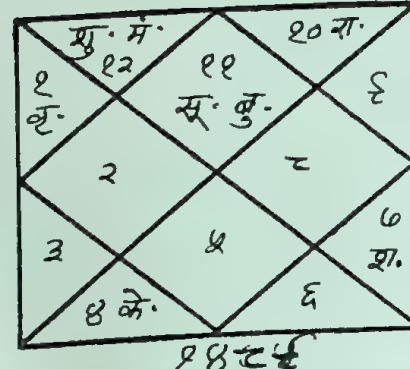
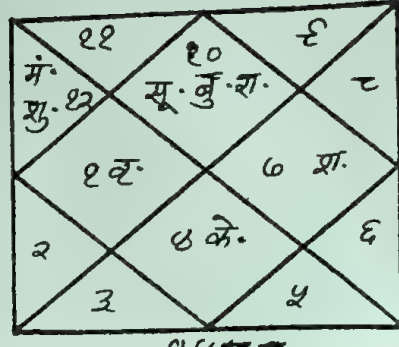
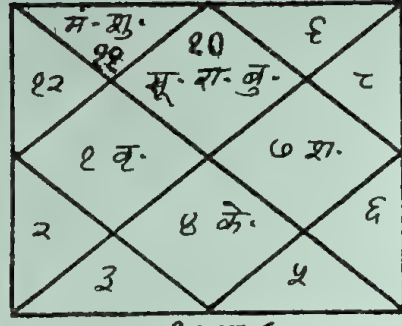
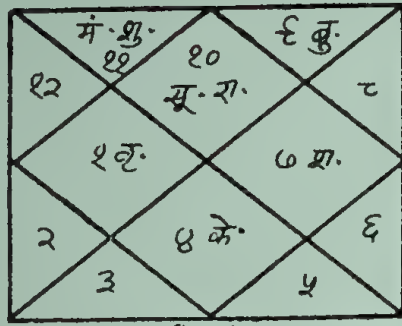
१४८३

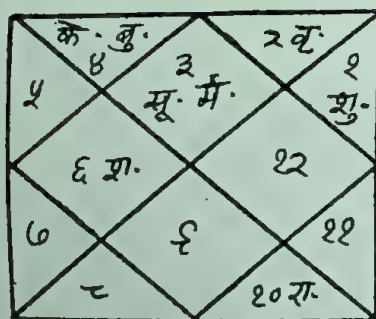
मं. शु. रा.	८ बु.	७	६ श.
१०	९ सू.		
११		६	
१२	३		५
१ वृ.	२		४ के.

१४८४

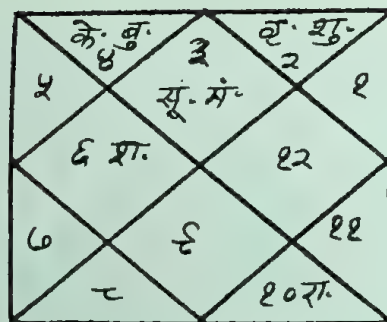
मं. १० रा.	९	८	७ श.
शु. ११	सू. बु.		
१२		६	
१ वृ.	३		५
२			४ के.

१४८५

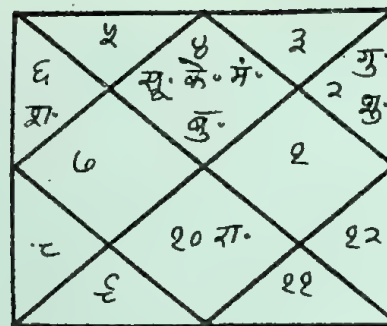




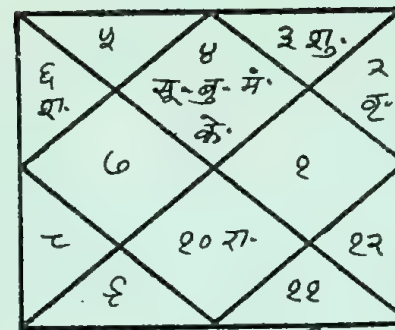
१५०१



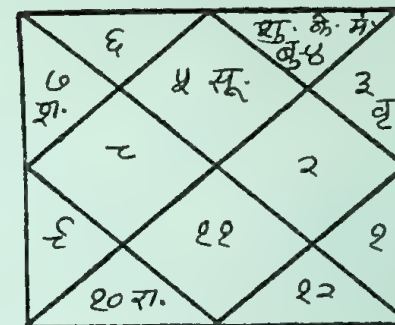
१५०२



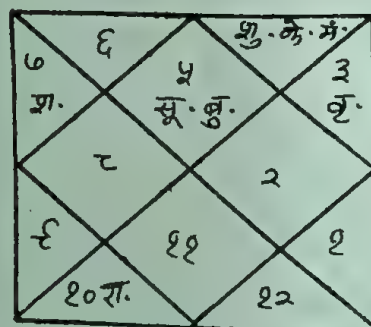
१५०३



१५०४



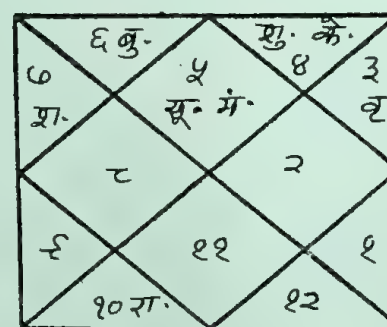
१५०५



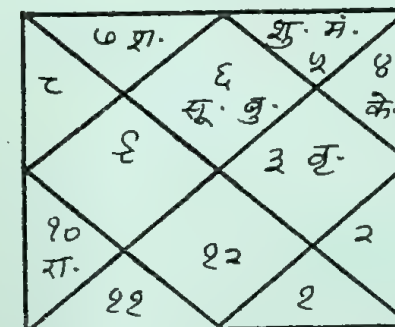
१५०६



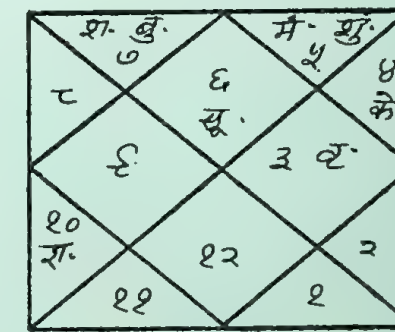
१५०७



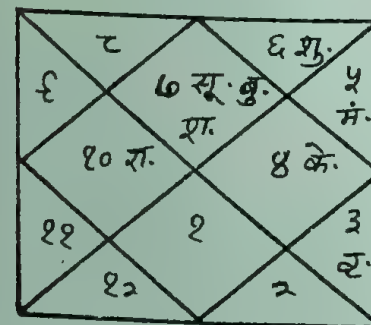
१५०८



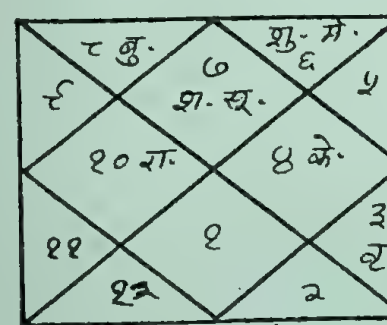
१५०९



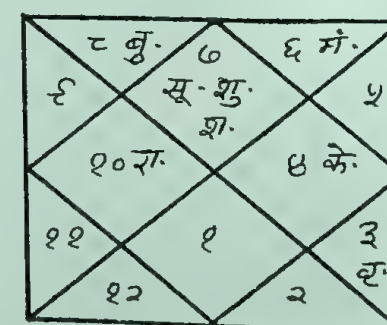
१५१०



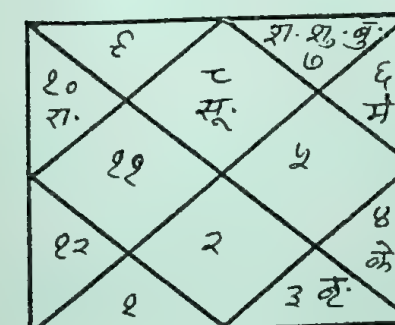
१५११



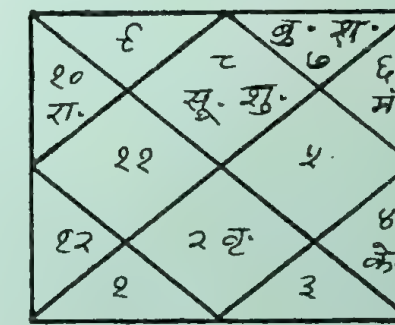
१५१२



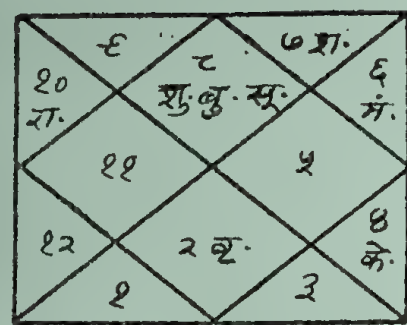
१५१३



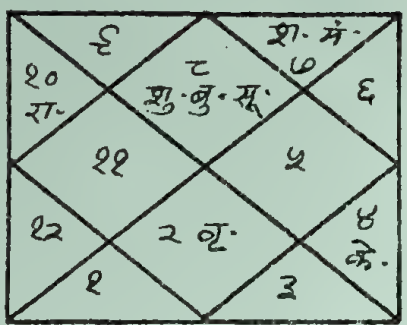
१५१४



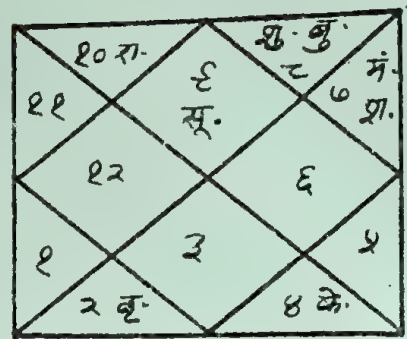
१५१५



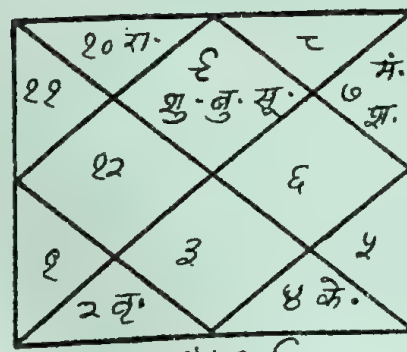
१५१६



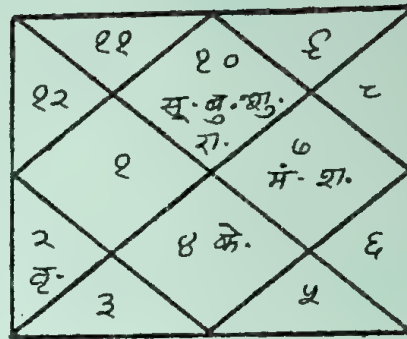
१५१७



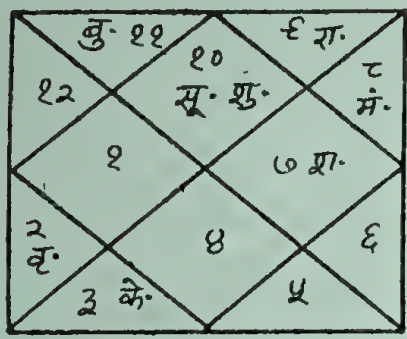
१५१८



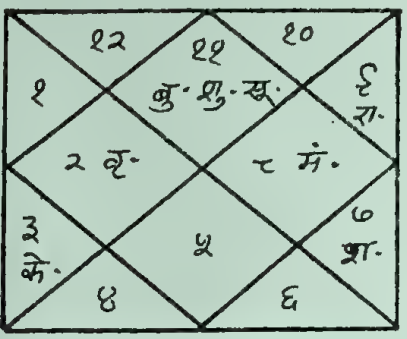
१५१९



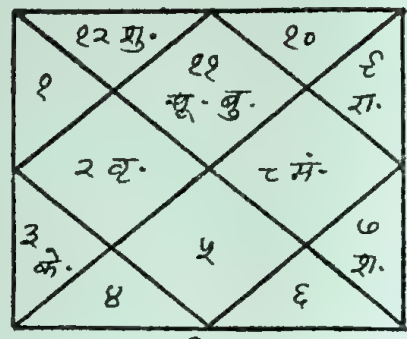
१५२०



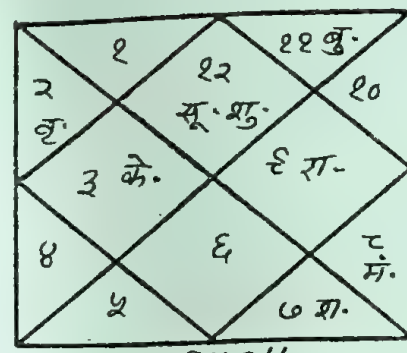
१५२१



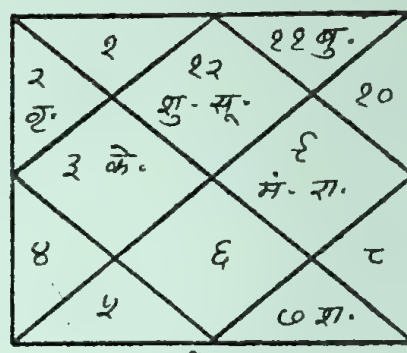
१५२२



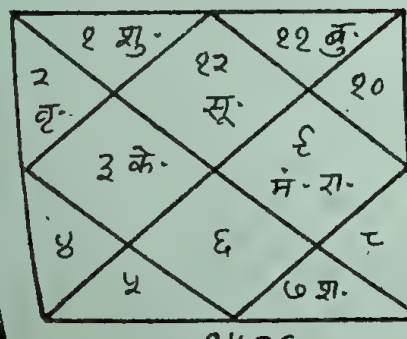
१५२३



१५२४



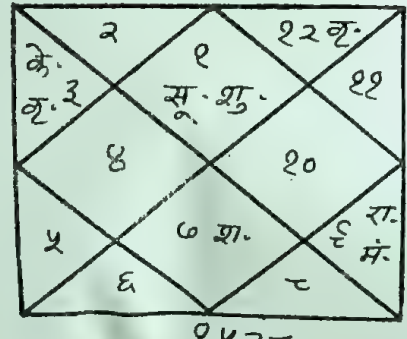
१५२५



१५२६



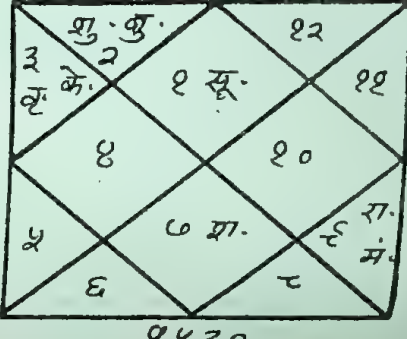
१५२७



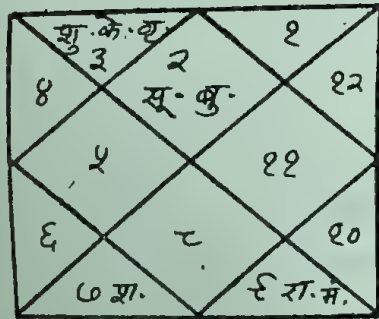
१५२८



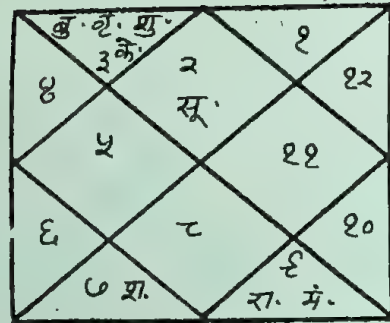
१५२९



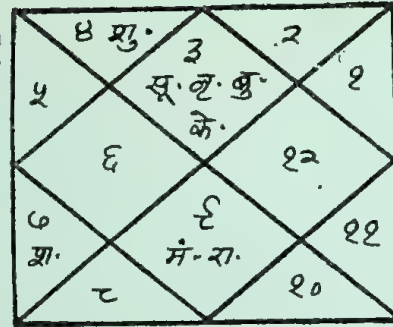
१५३०



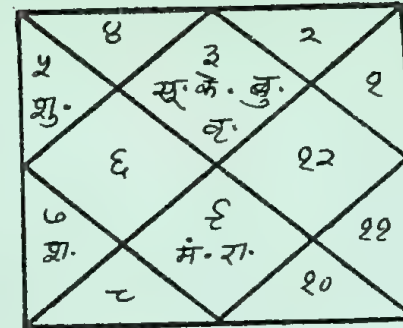
१५३१



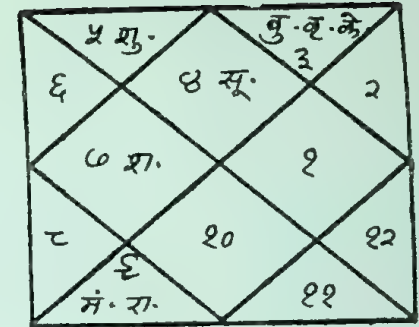
१५३२



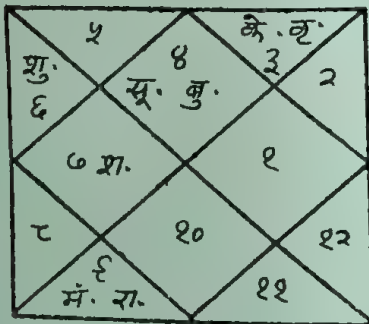
१५३३



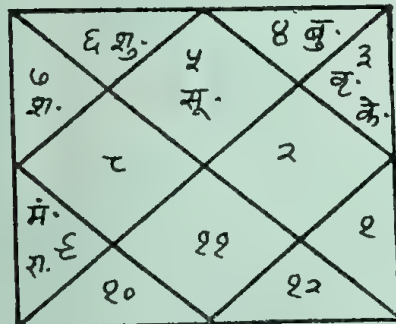
१५३४



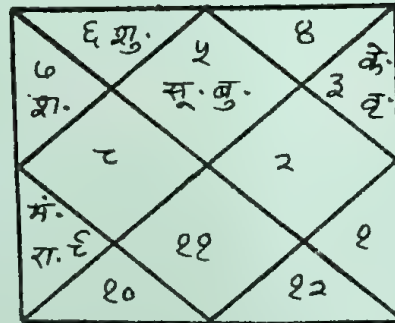
१५३५



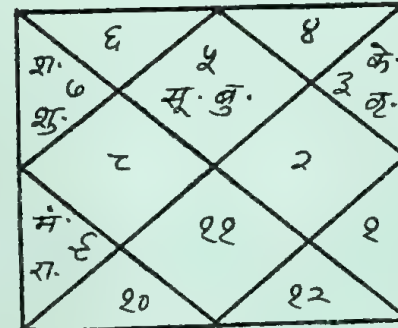
१५३६



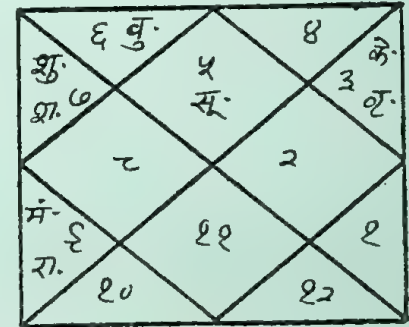
१५३७



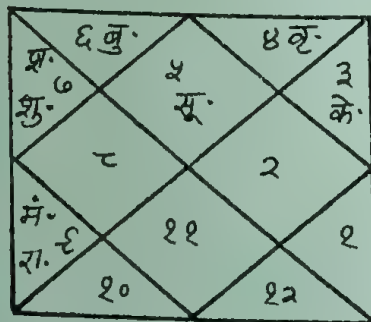
१५३८



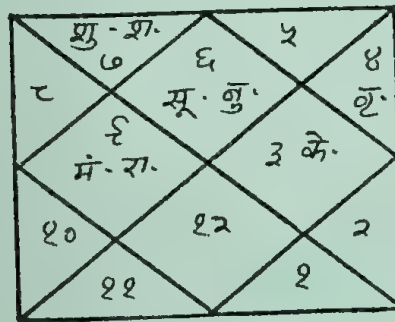
१५३९



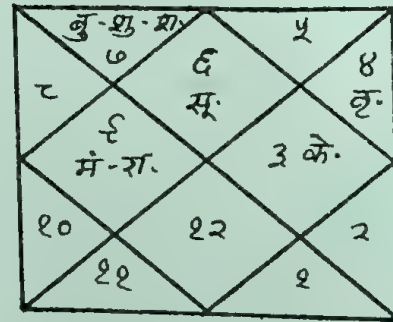
१५४०



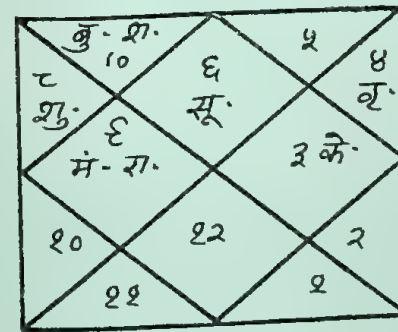
१५४१



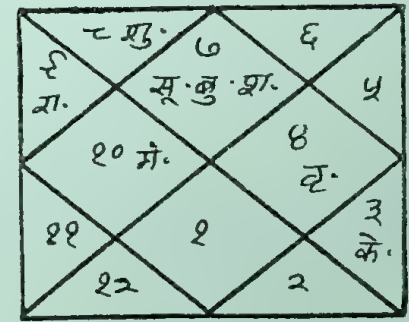
१५४२



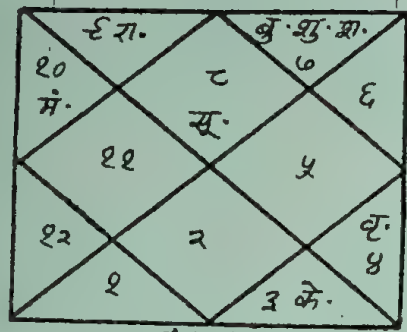
१५४३



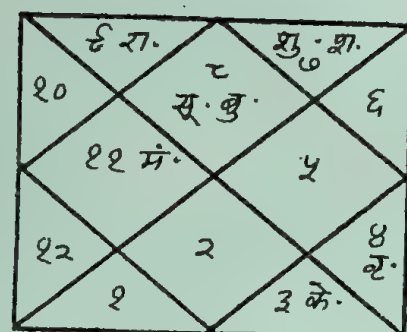
१५४४



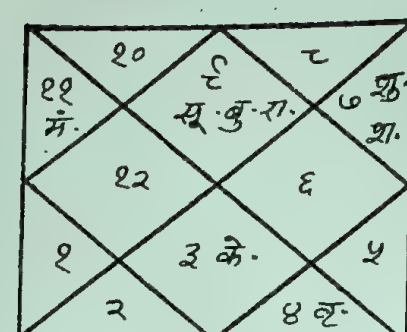
१५४५



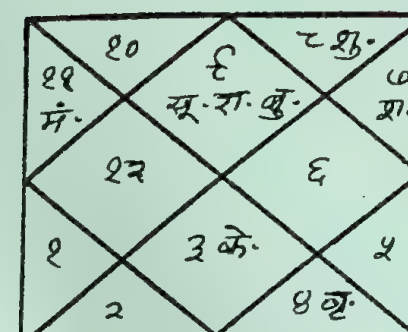
१५४६



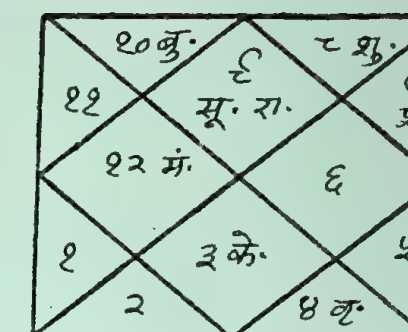
१५४६



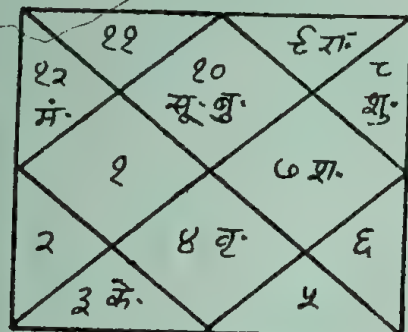
१५४८



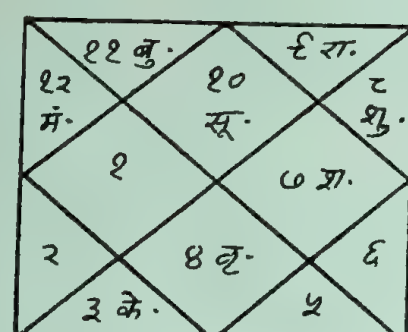
१५४८



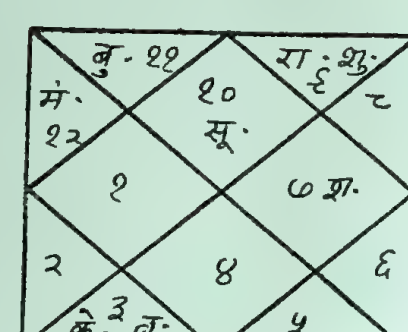
१५४०



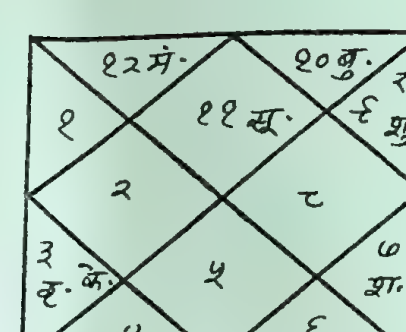
१५५१



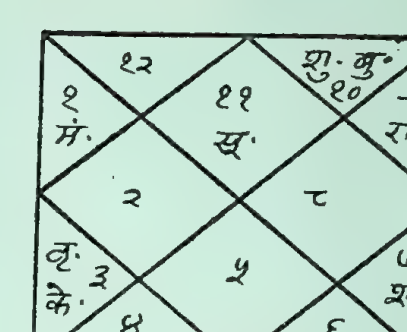
१५५२



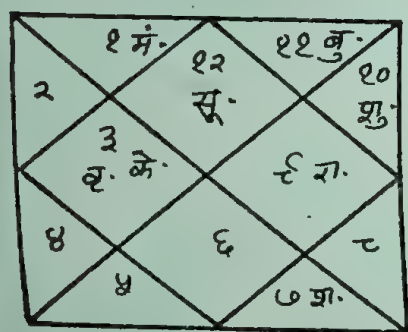
१५५३



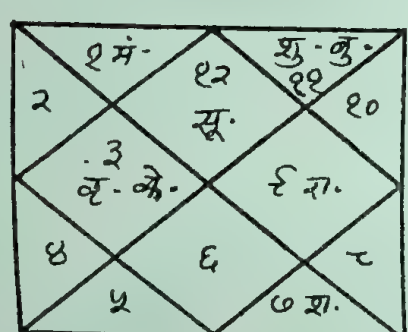
१५५४



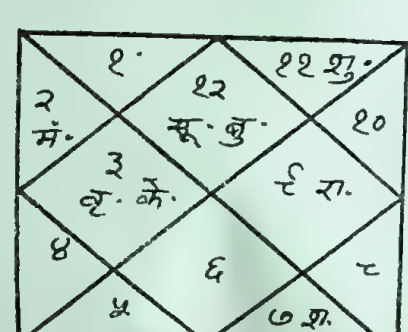
१५५५



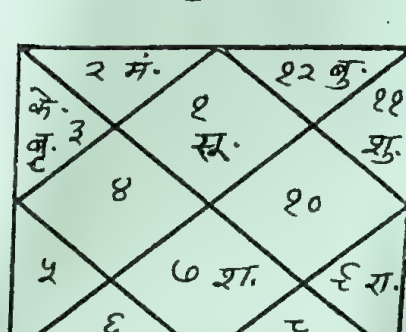
१५५६



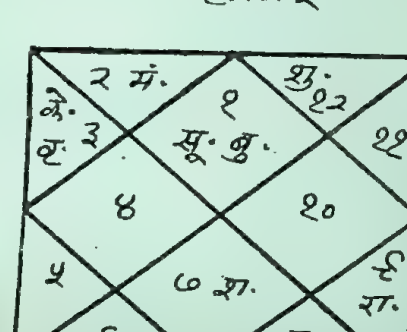
१५५७



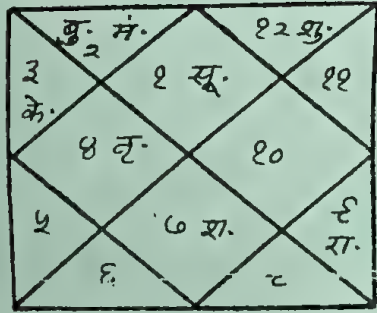
१५५८



१५५९



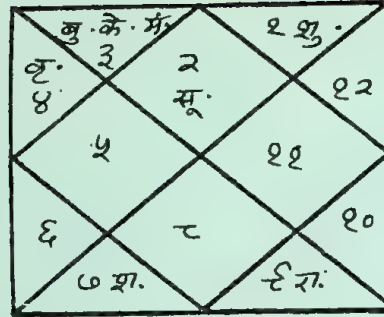
१५६०



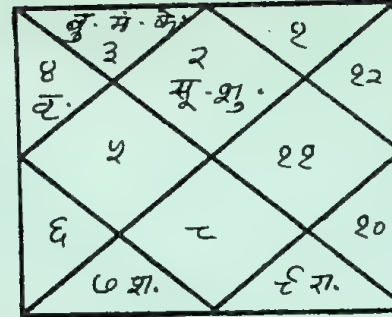
१५६१



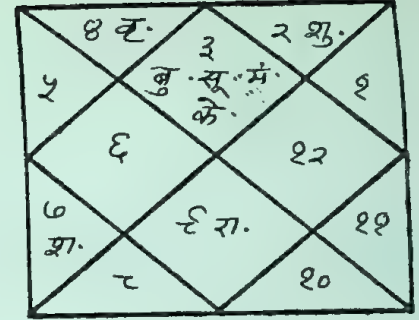
१५६२



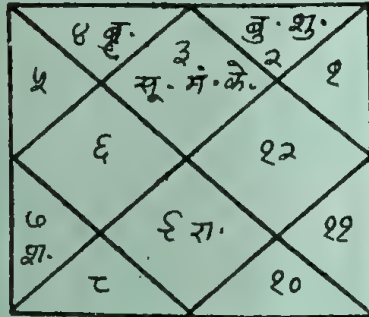
१५६३



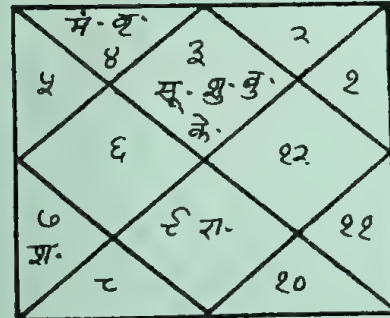
१५६४



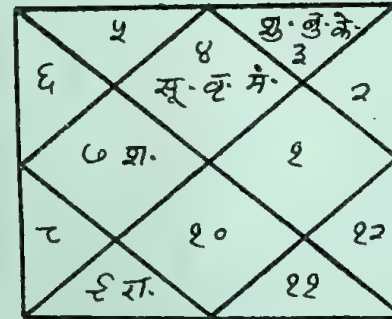
१५६५



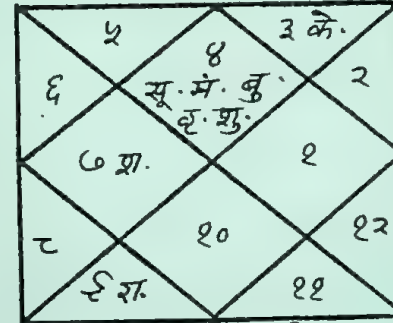
१५६६



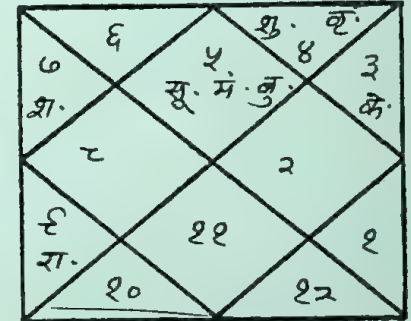
१५६७



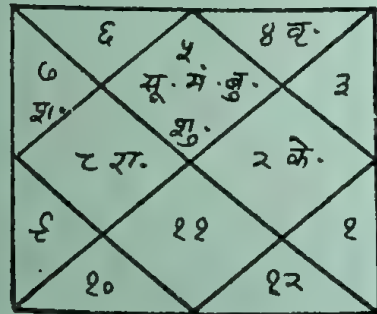
१५६८



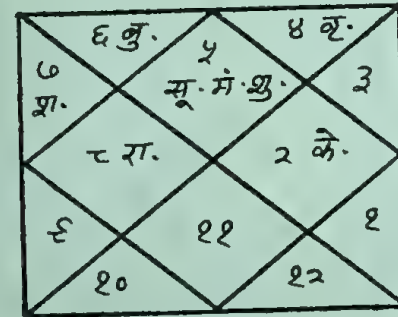
१५६९



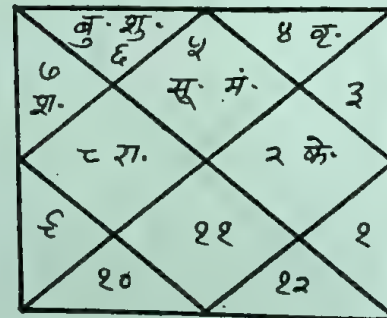
१५७०



१५७१



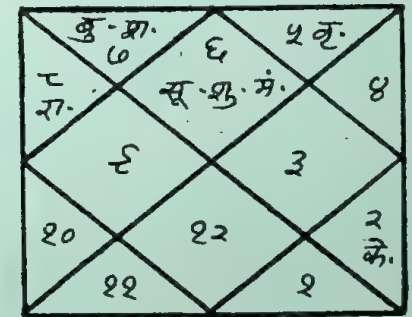
१५७२



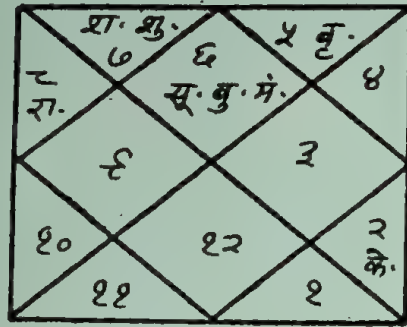
१५७३



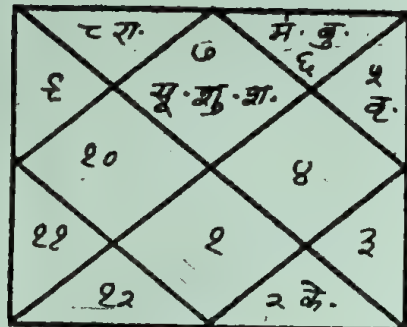
१५७४



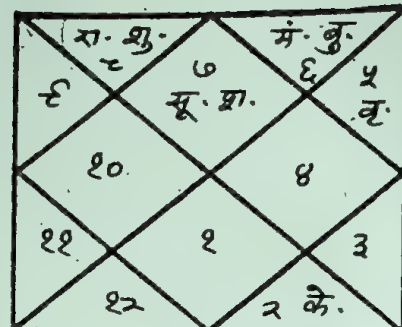
१५७५



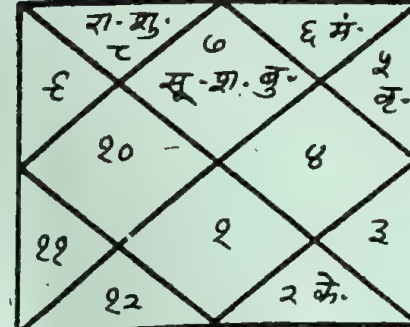
१५७६



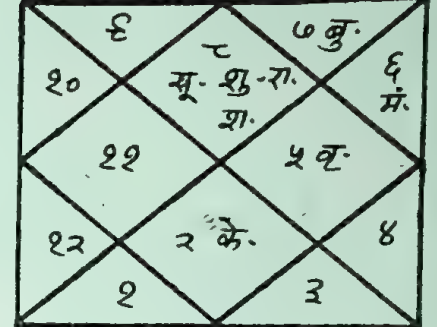
१५७७



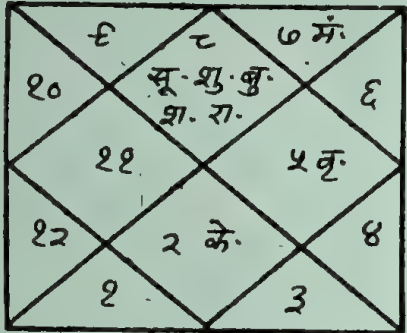
१५७८



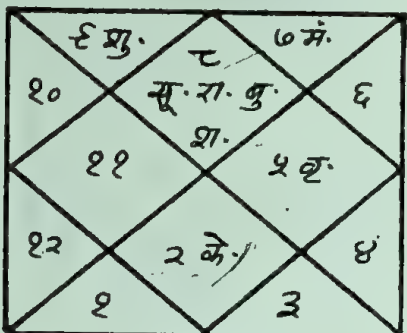
१५७९



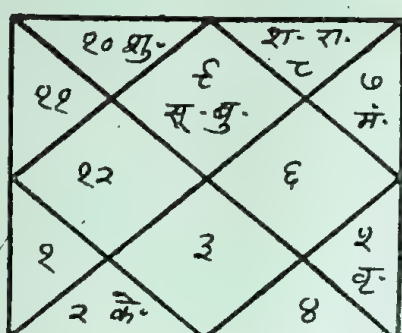
१५८०



१५८१



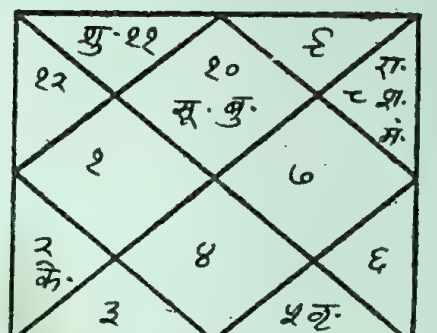
१५८२



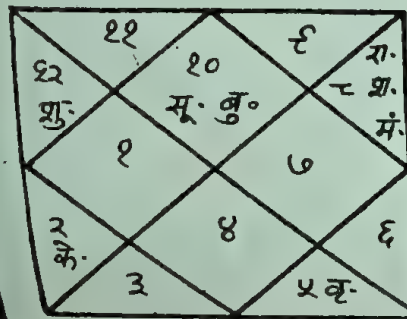
१५८३



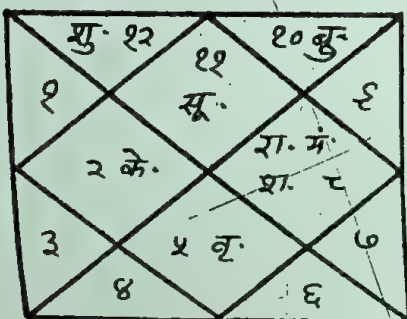
१५८४



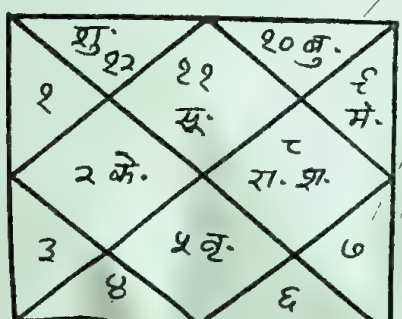
१५८५



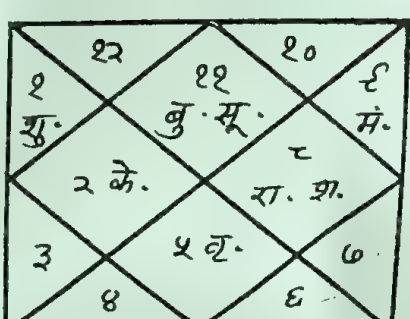
१५८६



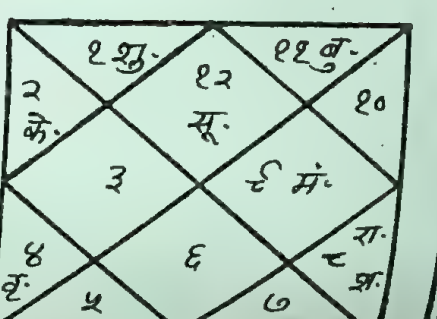
१५८७



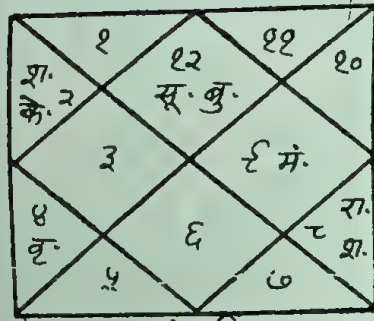
१५८८



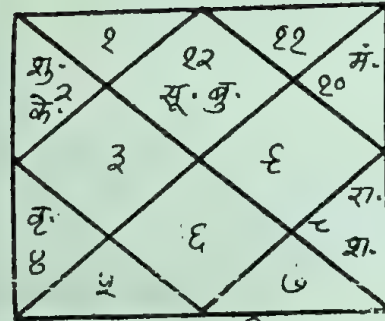
१५८९



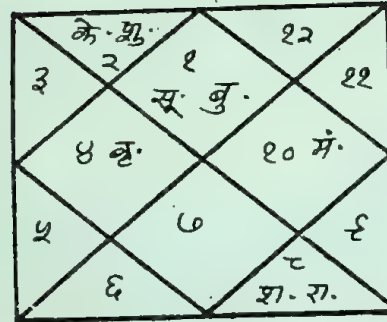
१५९०



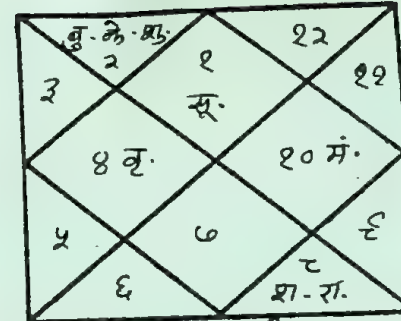
१५८१



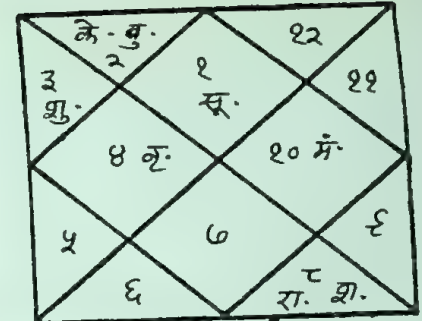
१५८२



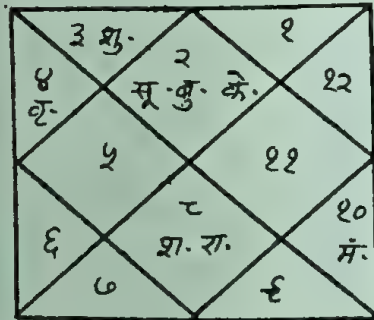
१५८३



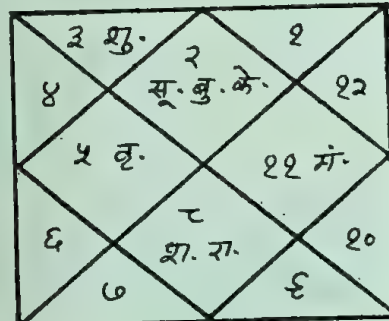
१५८४



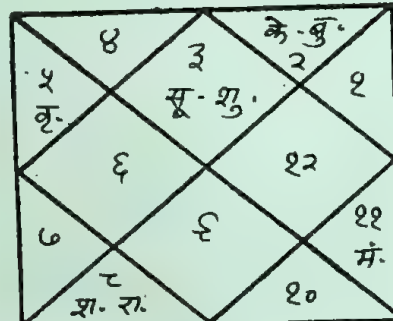
१५८५



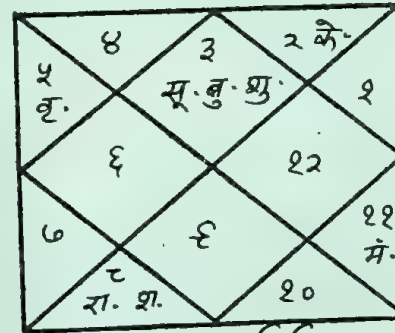
१५८६



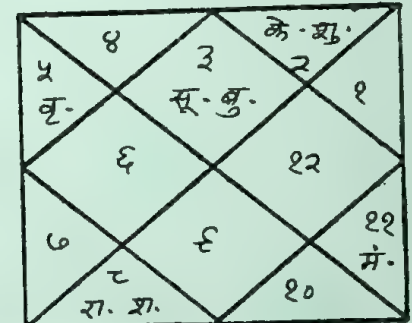
१५८७



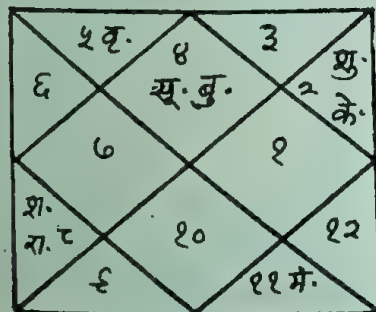
१५८८



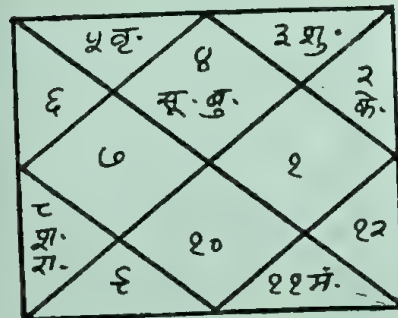
१५८९



१६००



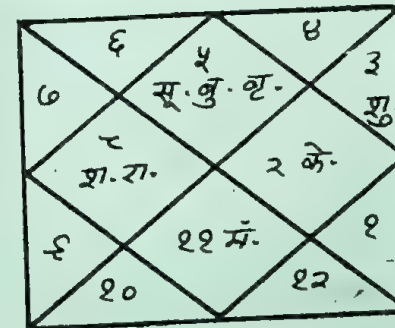
१६०१



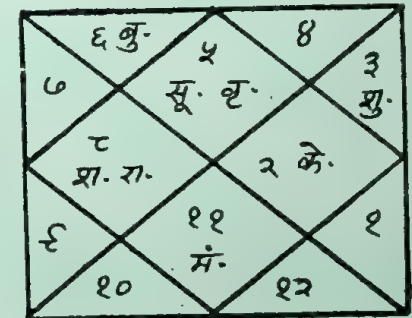
१६०२



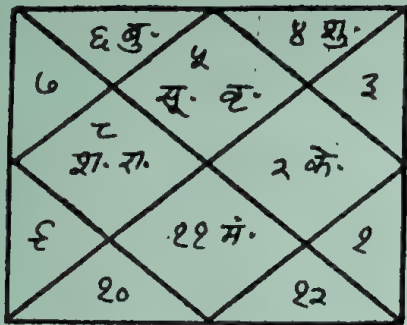
१६०३



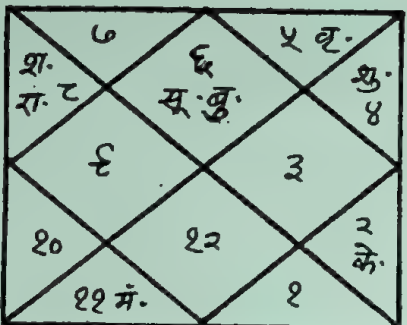
१६०४



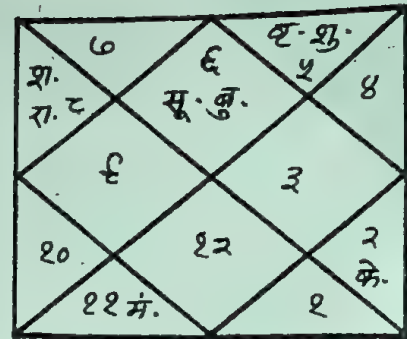
१६०५



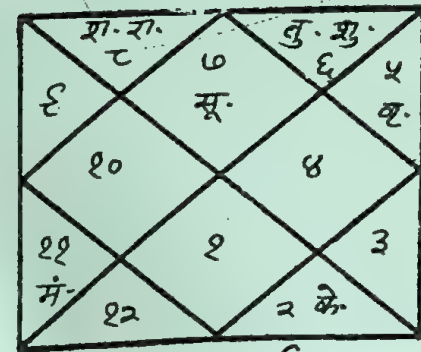
१६०४



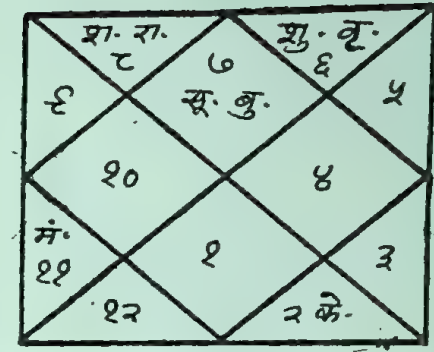
१६०६



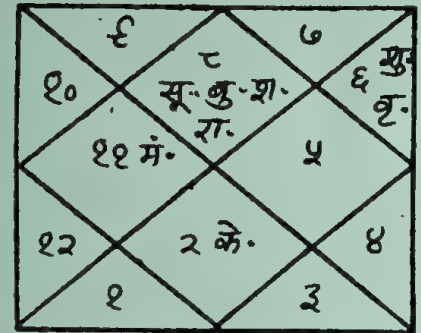
१६०७



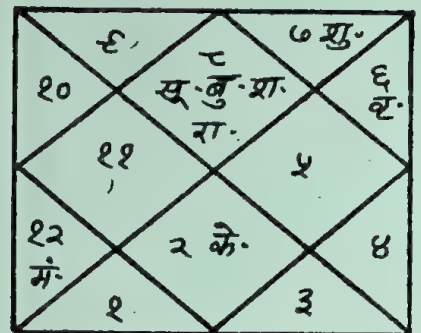
१६०८



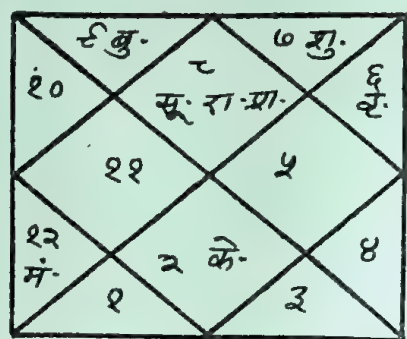
१६१०



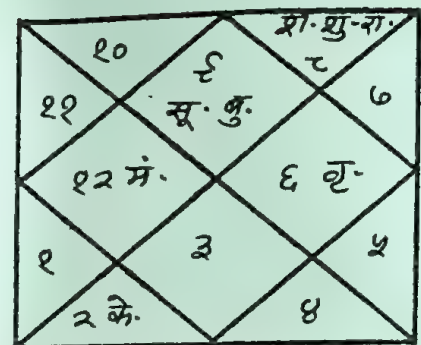
१६११



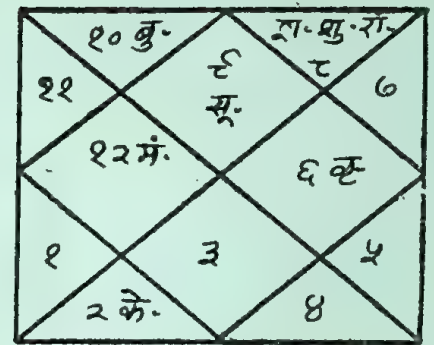
१६१२



१६१३



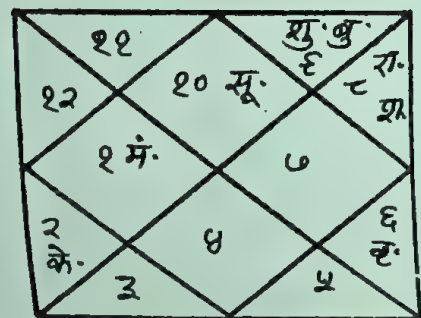
१६१४



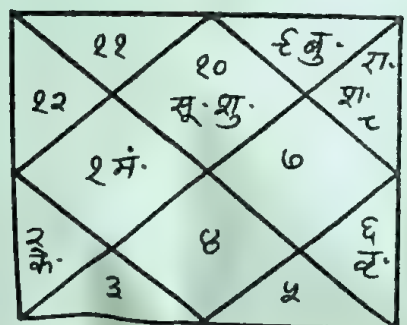
१६१५



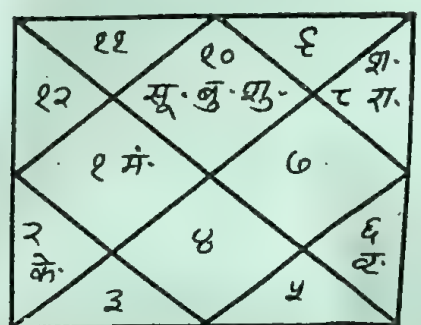
१६१६



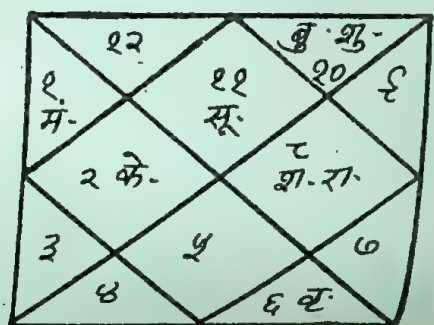
१६१७



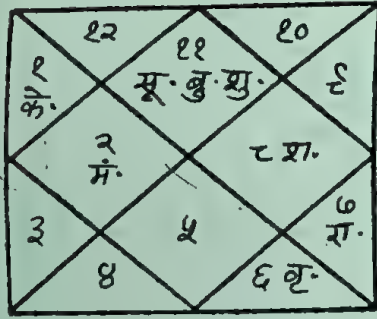
१६१८



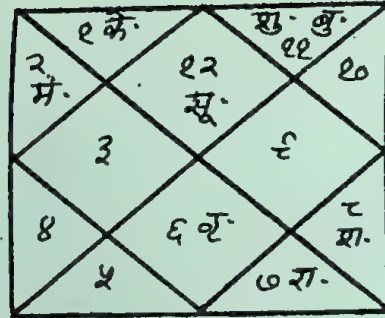
१६१९



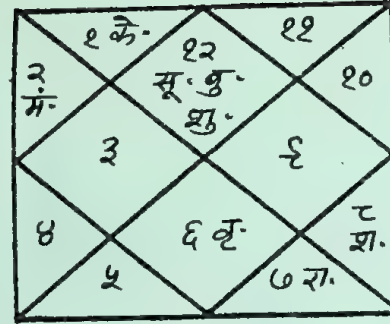
१६२०



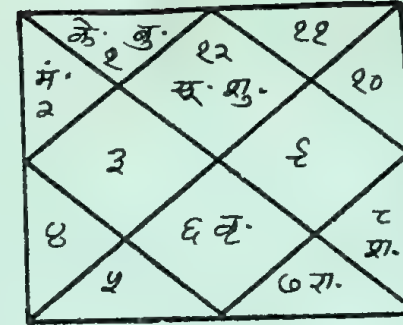
૧૬૨૧



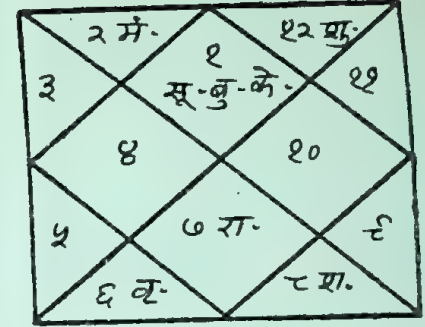
૧૬૨૨



૧૬૨૩



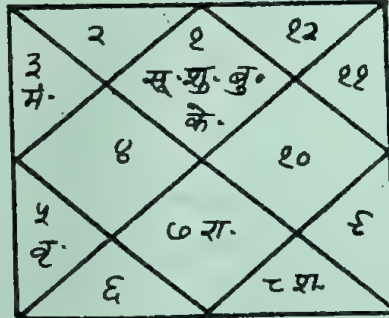
૧૬૨૪



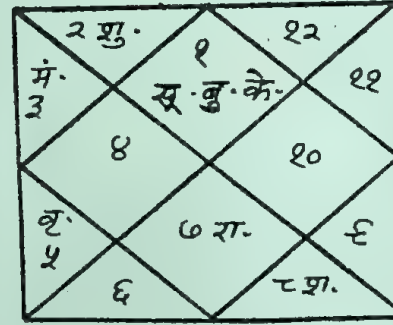
૧૬૨૫



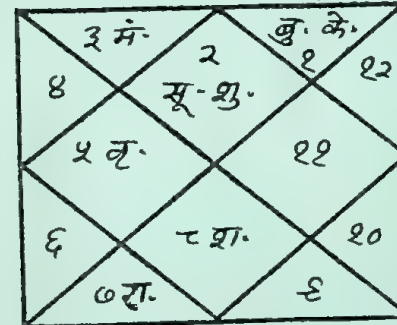
૧૬૨૬



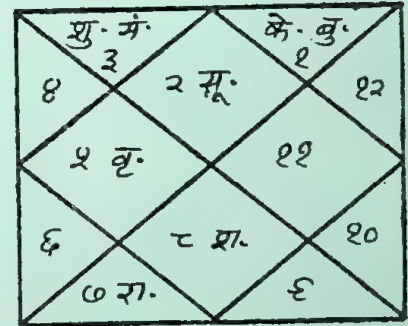
૧૬૨૭



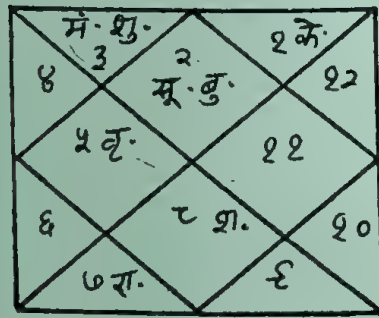
૧૬૨૮



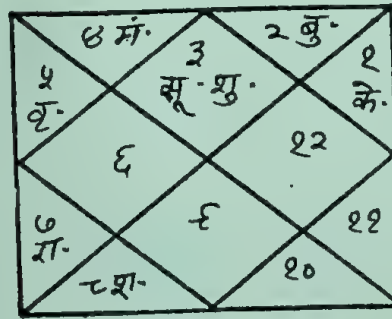
૧૬૨૯



૧૬૩૦



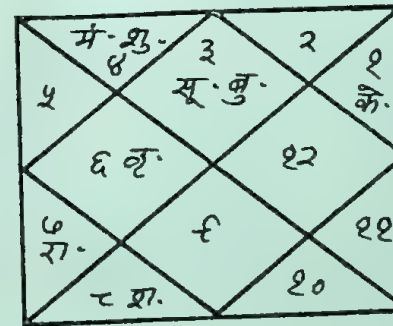
૧૬૩૧



૧૬૩૨



૧૬૩૩

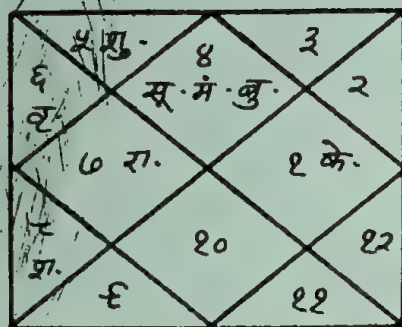


૧૬૩૪

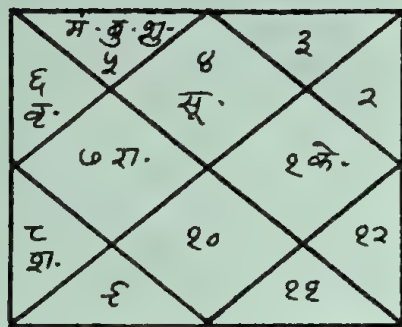


૧૬૩૫

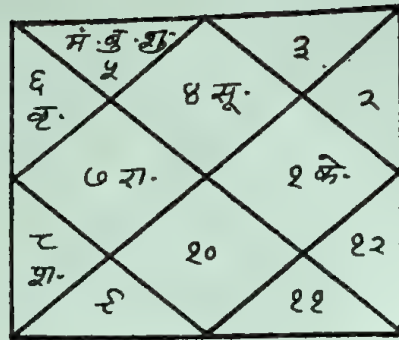
कु०
प०



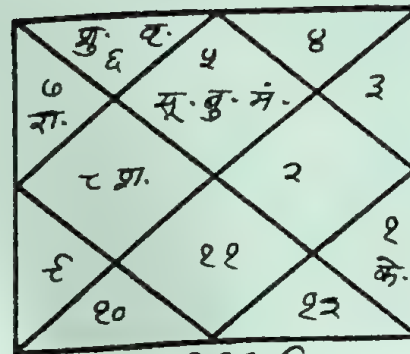
8E3E



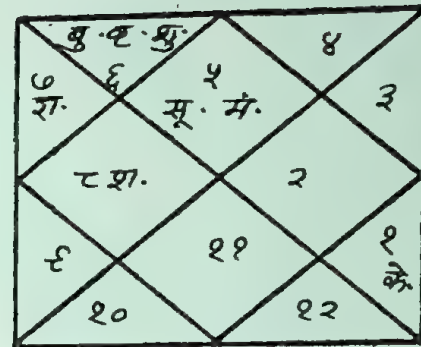
2436



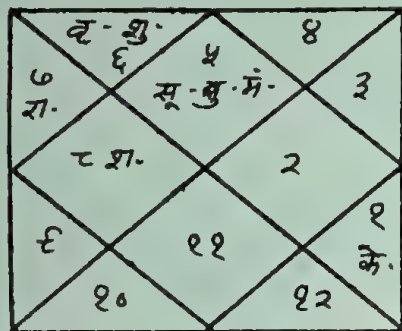
2432



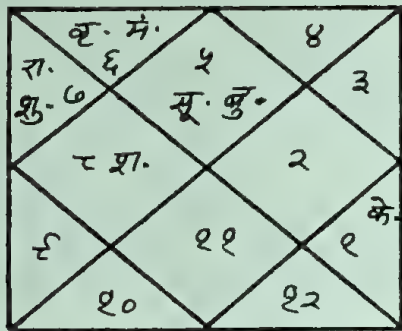
2436



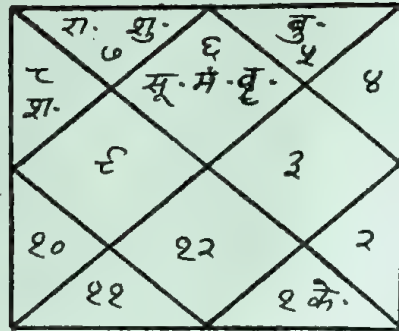
0840



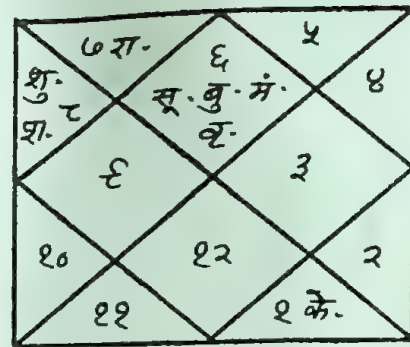
2542



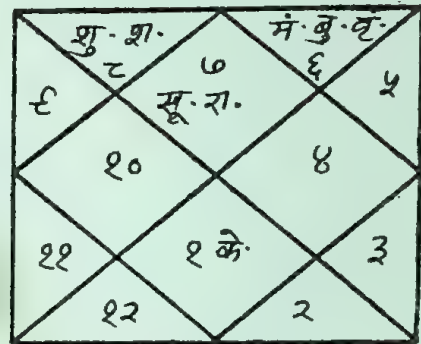
9 E 42



8E 43



8888



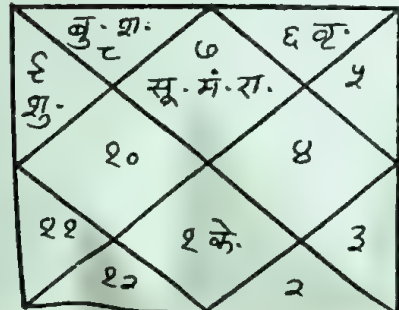
2882



3 8 3 8



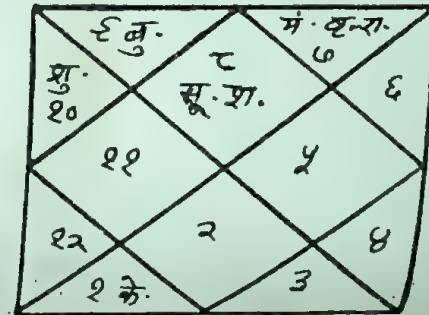
2 E 166



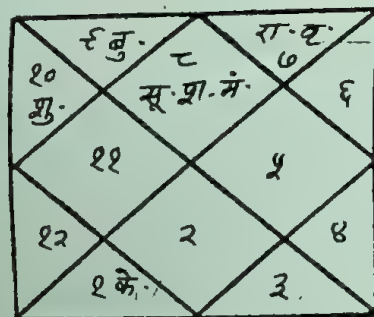
2887



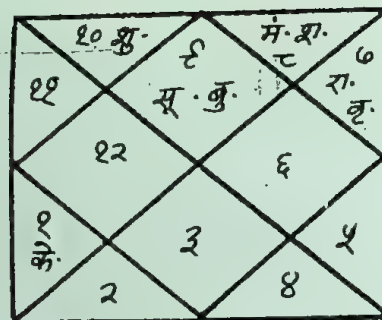
2838



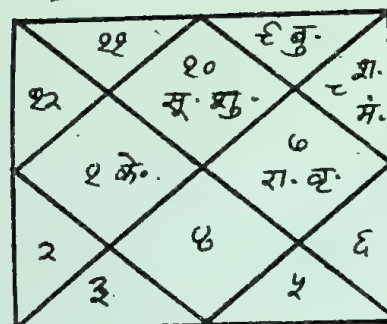
0528



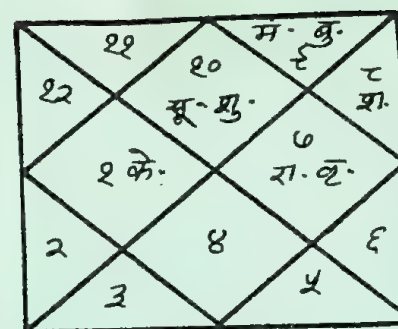
১৫২২



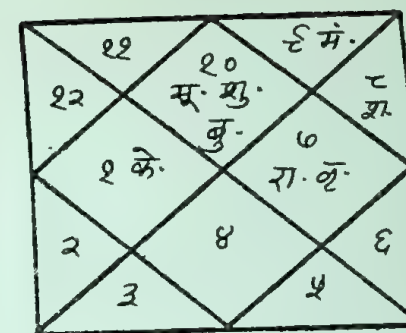
8842



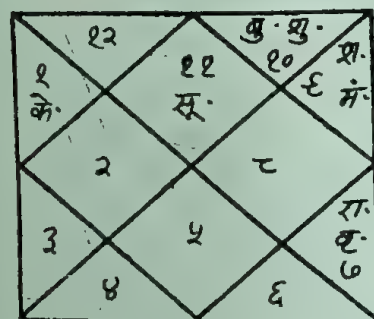
2423



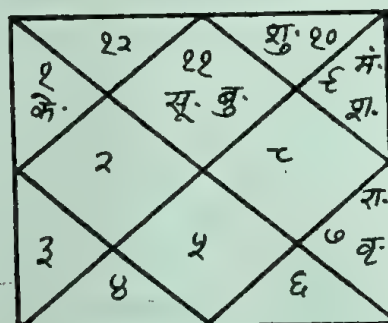
2524



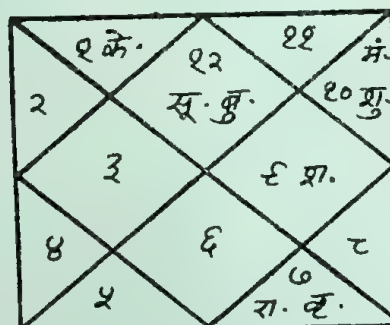
४४४४



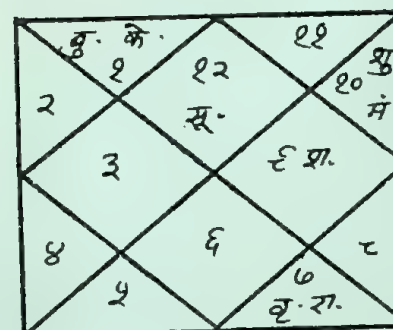
3243



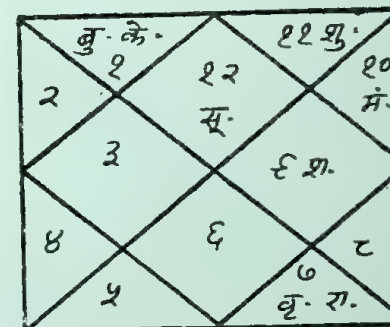
85410



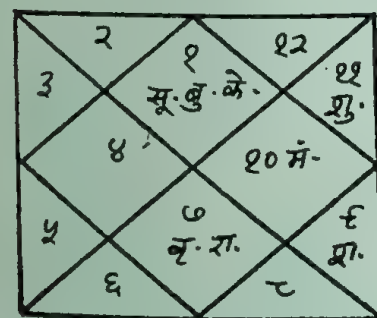
2242



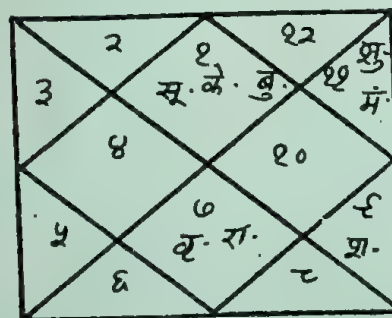
2538



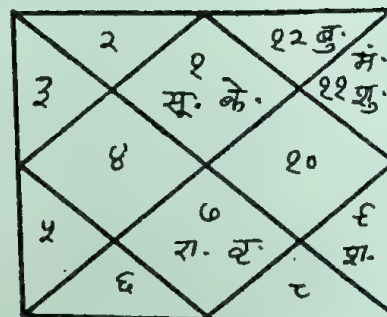
0350



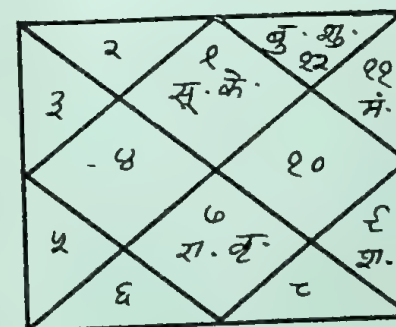
PEEQ



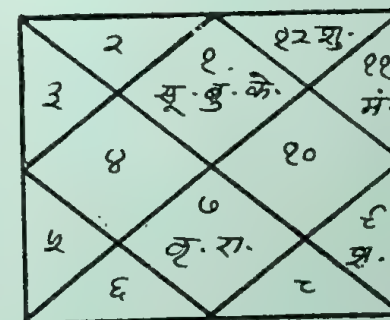
25, 26



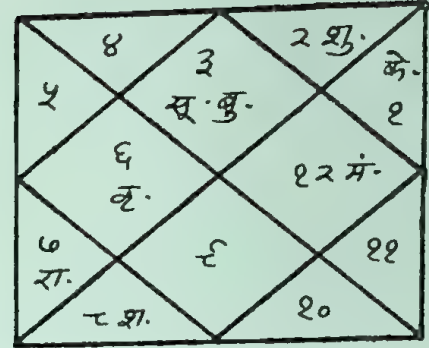
४६६३



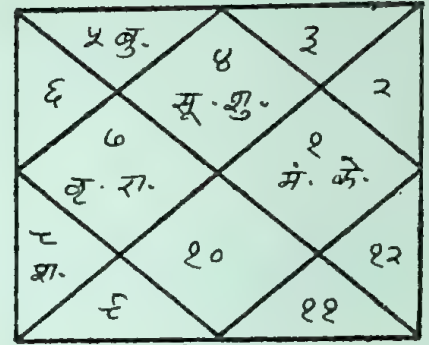
8332



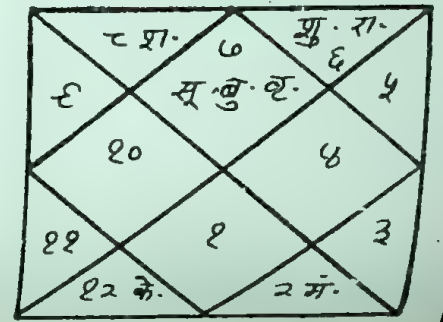
2352



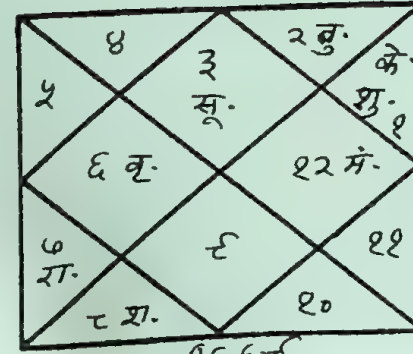
१६६०



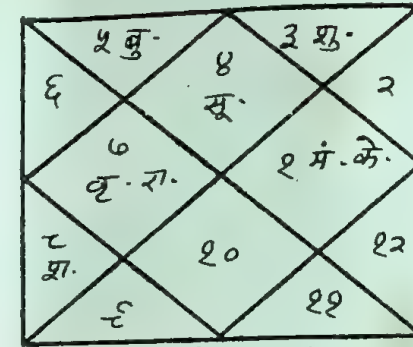
१६६५



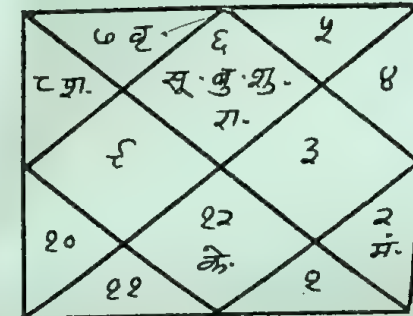
१६७०



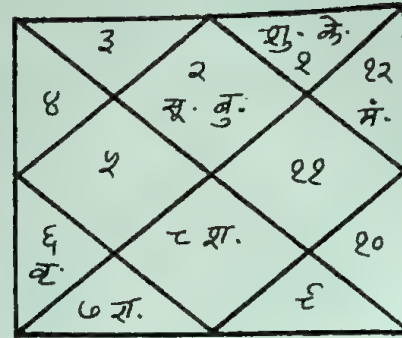
१६६८



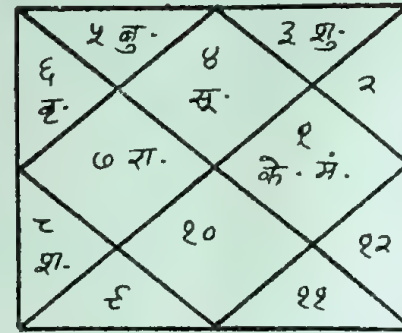
१६७४



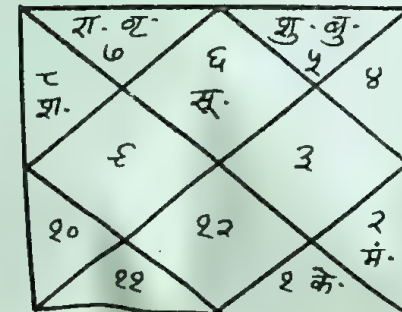
१६७८



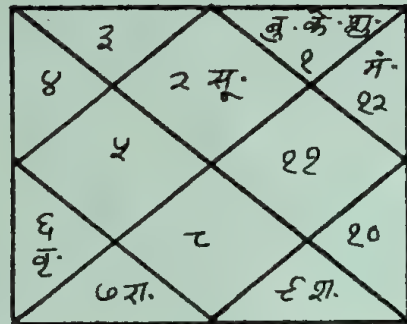
१६६८



१६७३



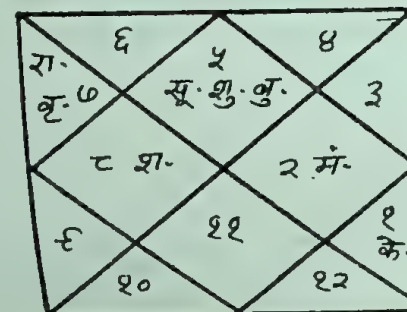
१६७८



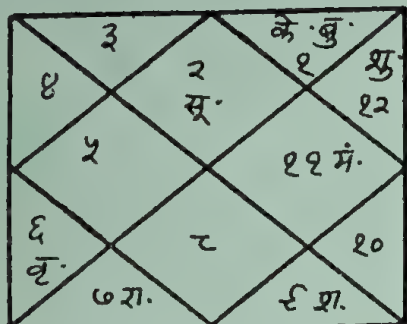
१६६७



१६७२



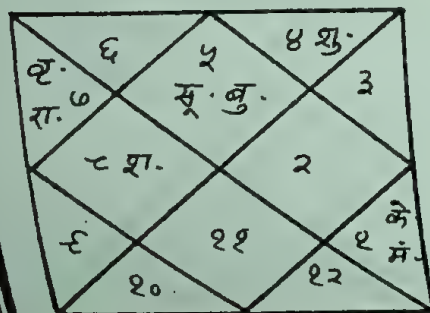
१६७७



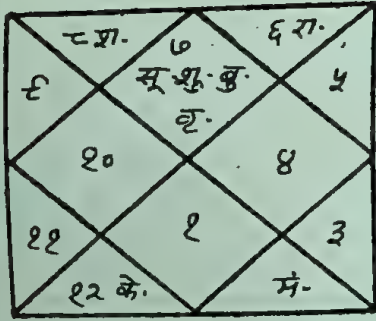
१६६६



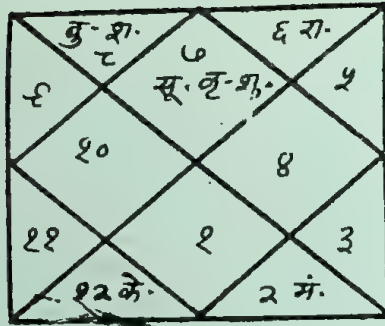
१६७१



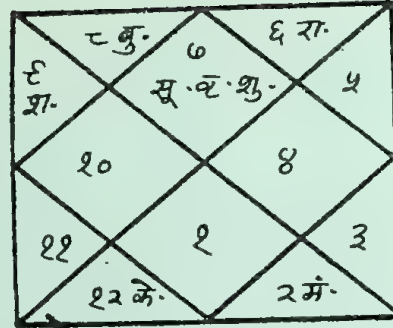
१६७६



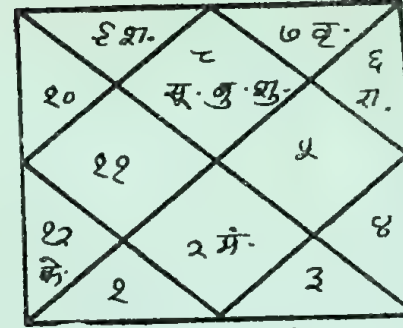
१६८१



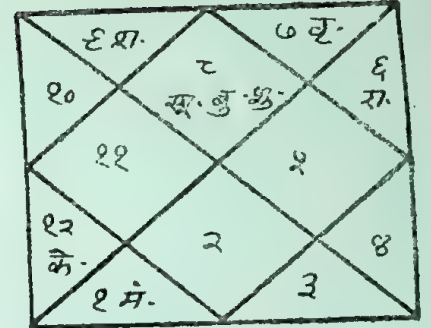
१६८२



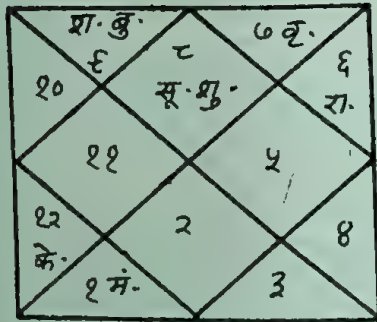
१६८३



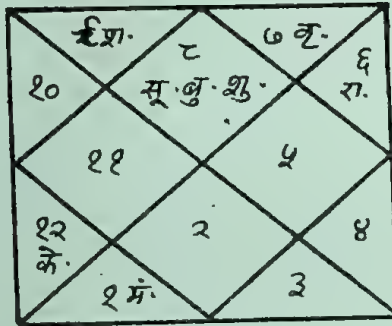
१६८४



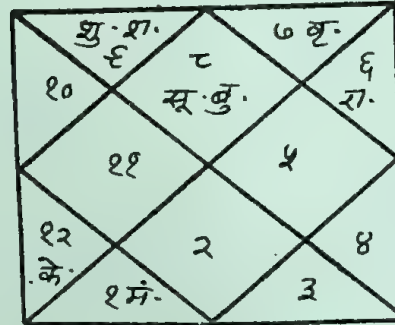
१६८५



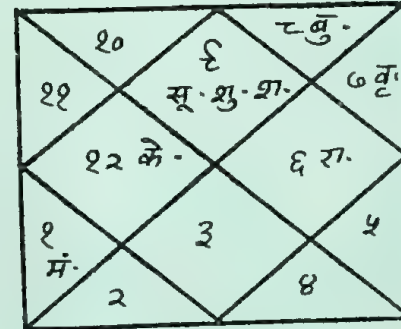
१६८६



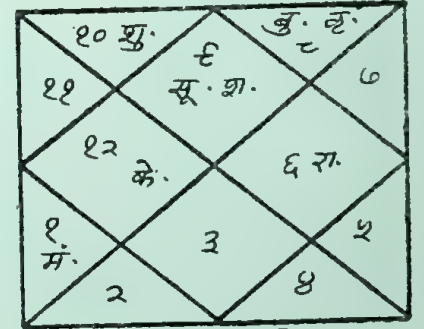
१६८७



१६८८



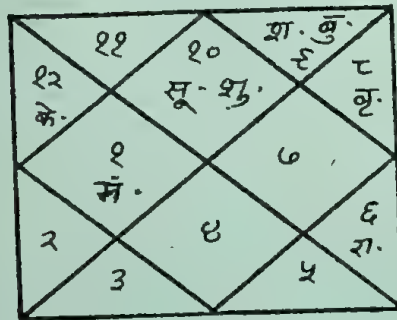
१६८९



१६९०



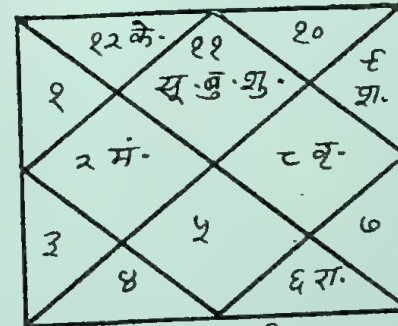
१६९१



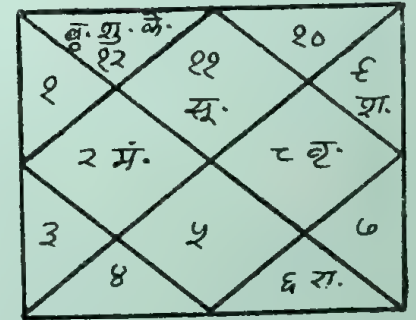
१६९२



१६९३



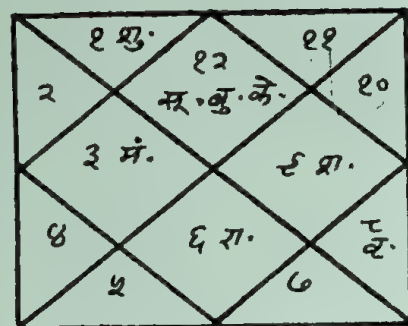
१६९४



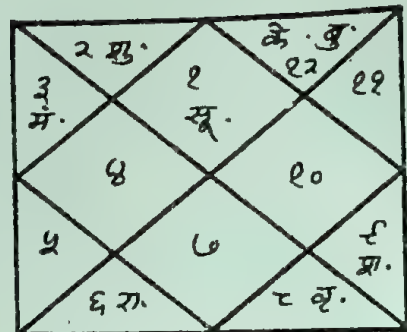
१६९५



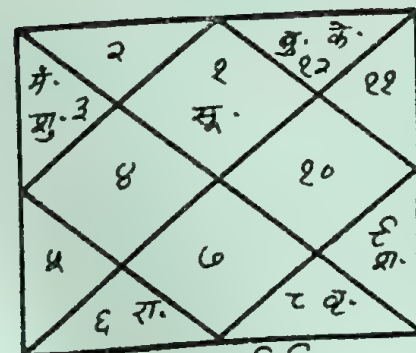
૧૬૮૬



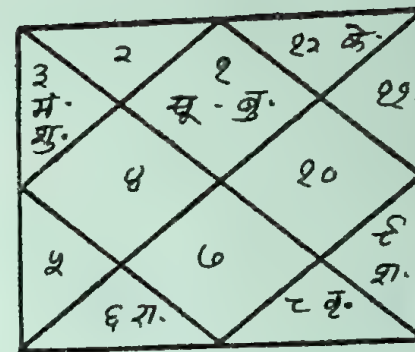
૧૬૮૭



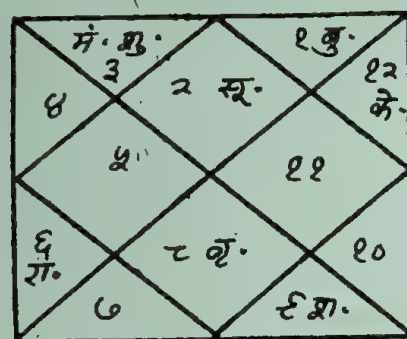
૧૬૮૮



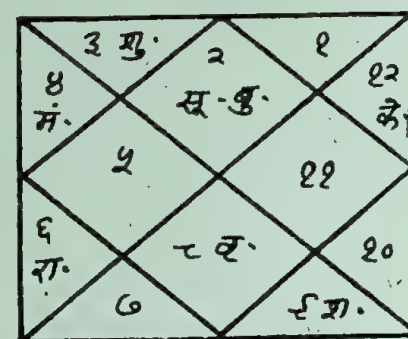
૧૬૮૯



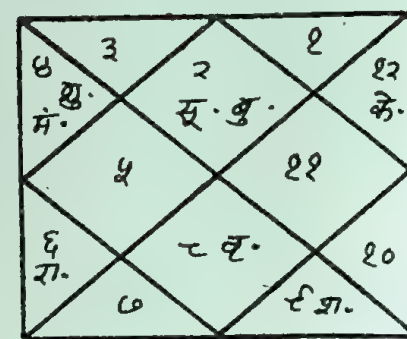
૧૭૦૦



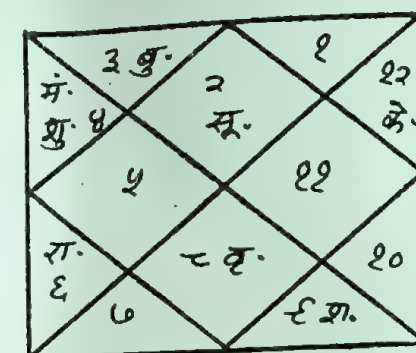
૧૭૦૧



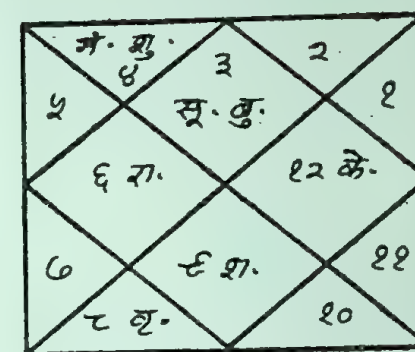
૧૭૦૨



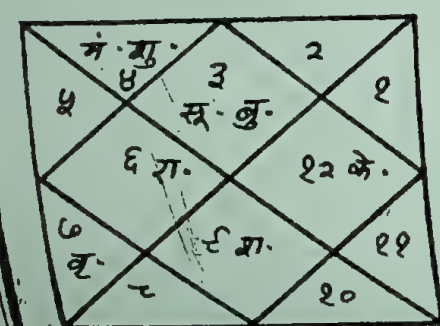
૧૭૦૩



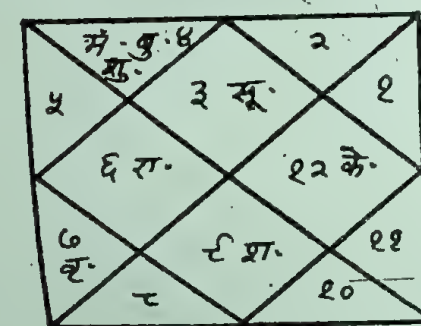
૧૭૦૪



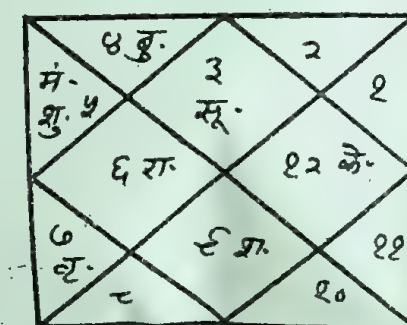
૧૭૦૫



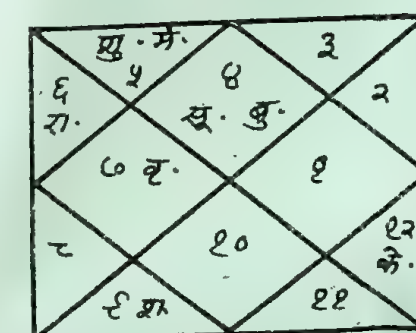
૧૭૦૬



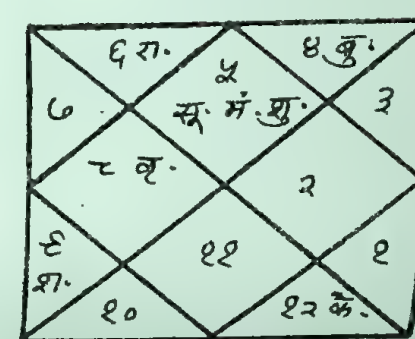
૧૭૦૭



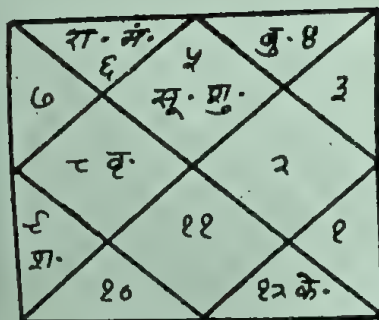
૧૭૦૮



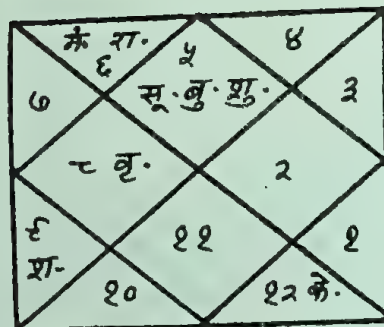
૧૭૦૯



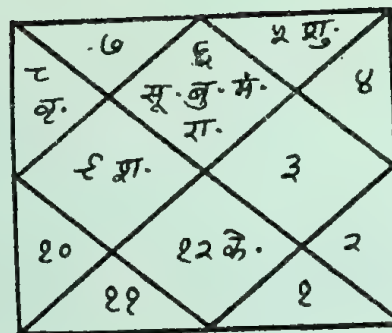
૧૭૧૦



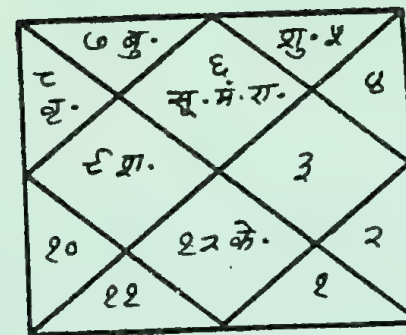
૧૦૧૧



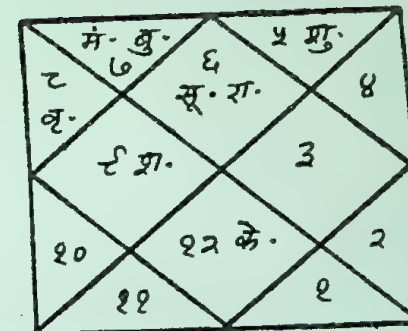
૧૦૧૨



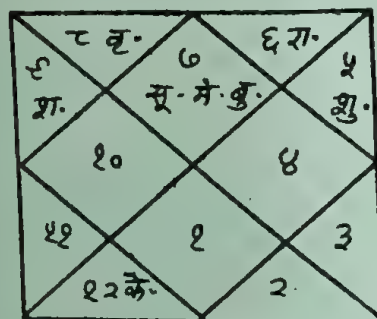
૧૦૧૩



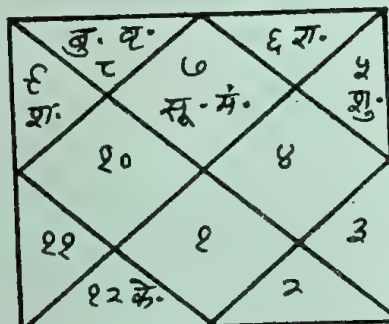
૧૦૧૪



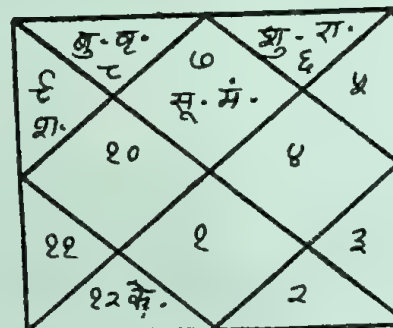
૧૦૧૫



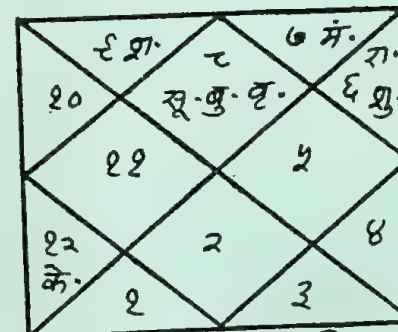
૧૦૧૬



૧૦૧૭



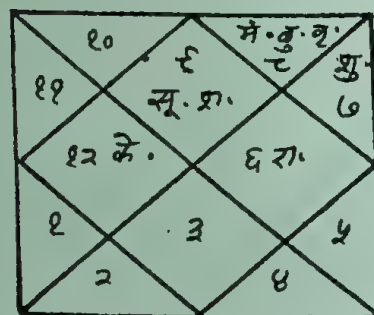
૧૦૧૮



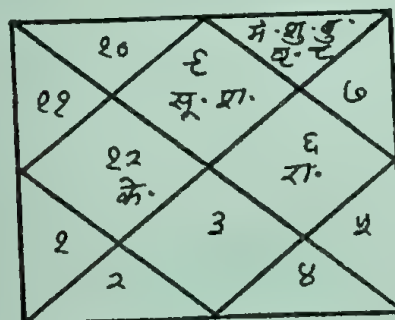
૧૦૧૯



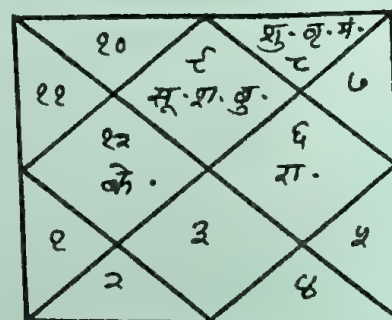
૧૦૨૦



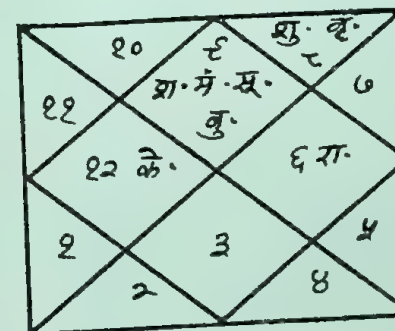
૧૦૨૧



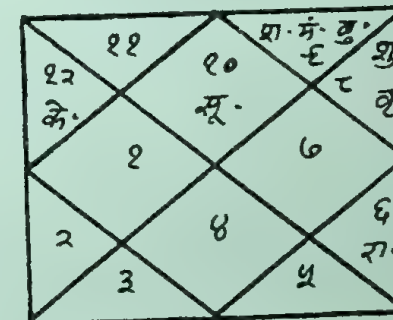
૧૦૨૨



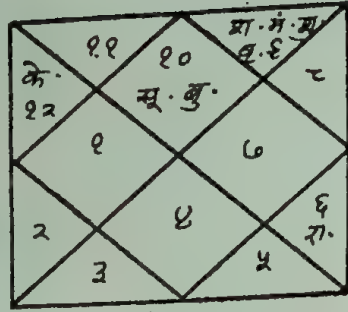
૧૦૨૩



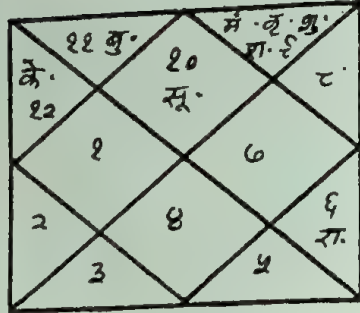
૧૦૨૪



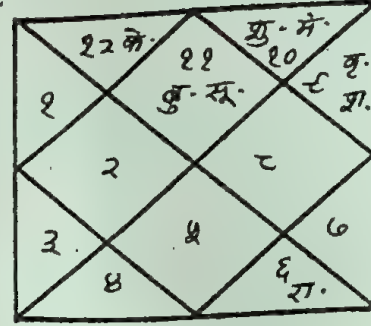
૧૦૨૫



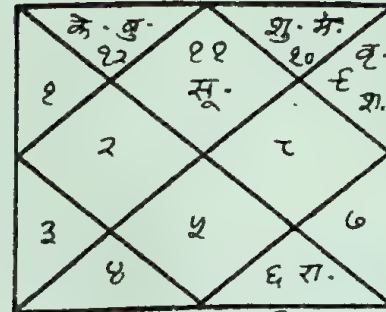
१०२६



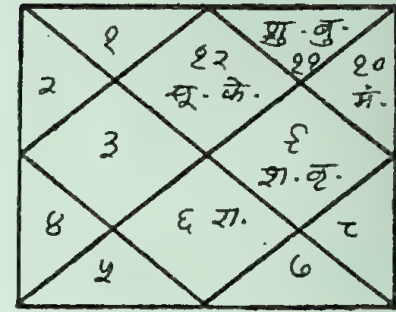
१०२७



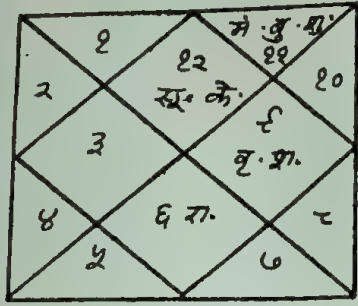
१०२८



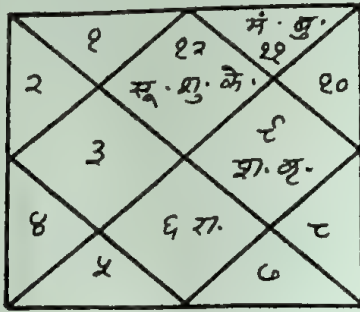
१०२९



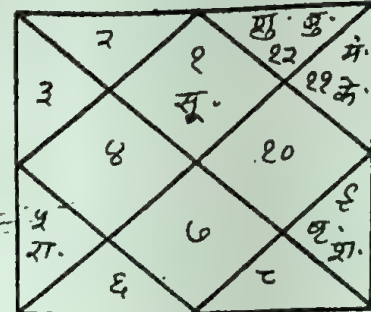
१०३०



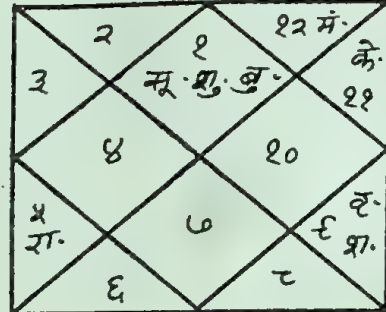
१०३१



१०३२



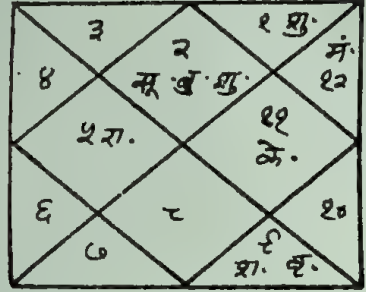
१०३३



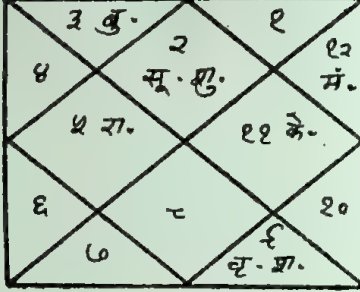
१०३४



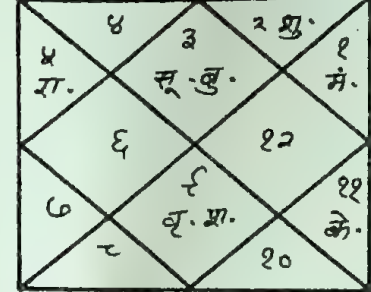
१०३५



१०३६



१०३७



१०३८

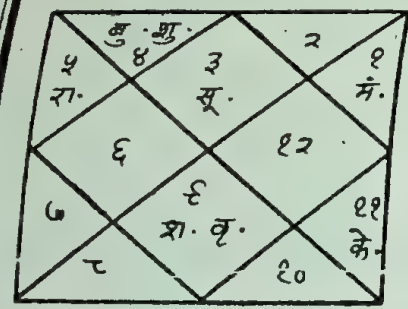


१०३९

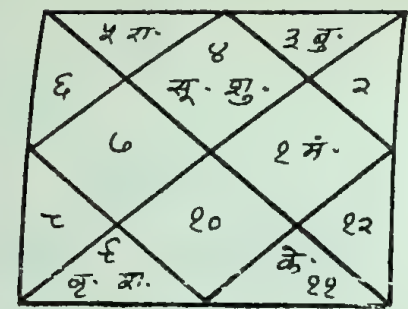


१०४०

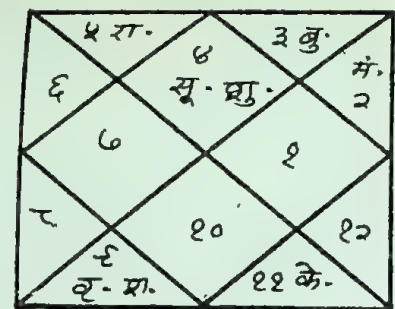
भ०
सं०
३२२



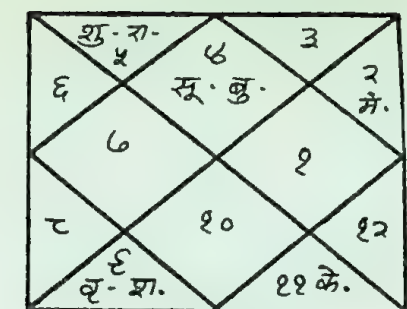
१०४१



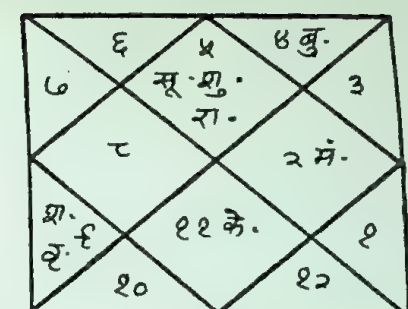
१०४२



१०४३



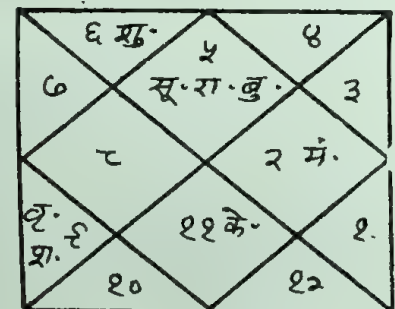
१०४४



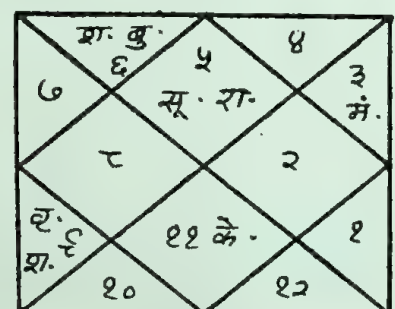
१०४५



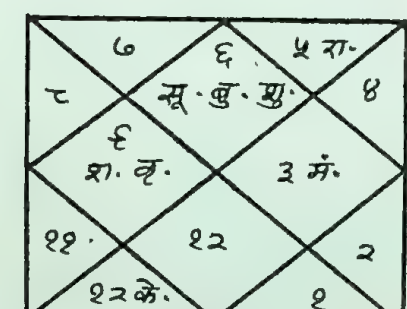
१०४६



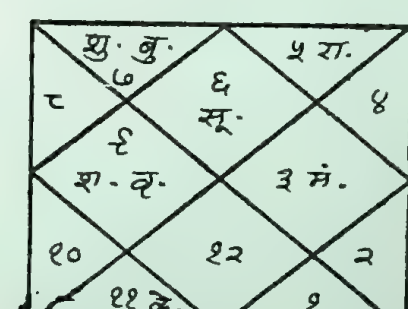
१०४७



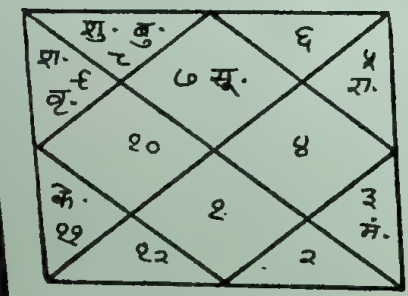
१०४८



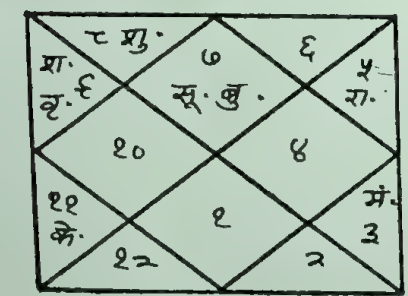
१०४९



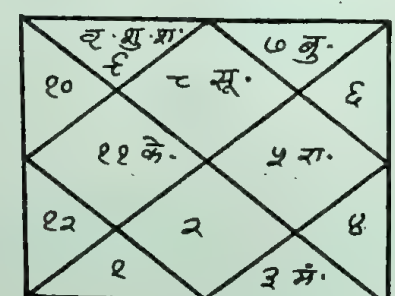
१०५०



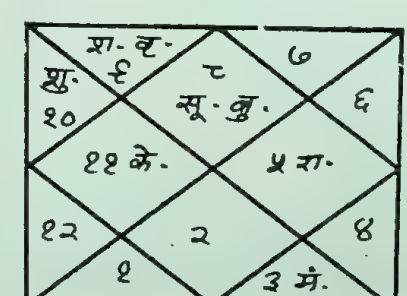
१०५१



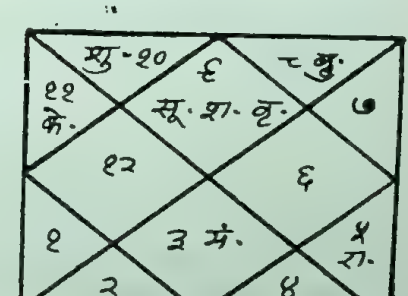
१०५२



१०५३

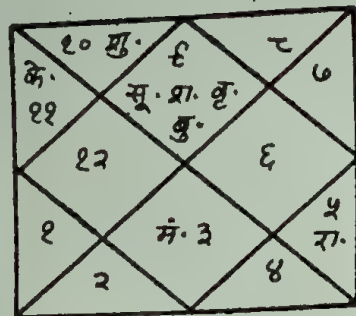


१०५४

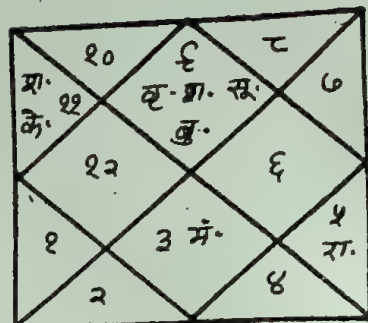


१०५५

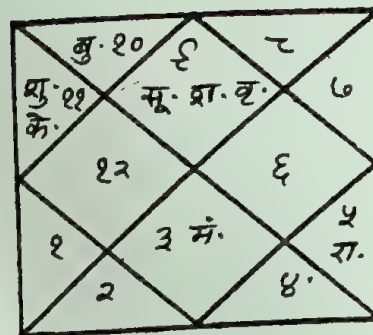
कु०
प०



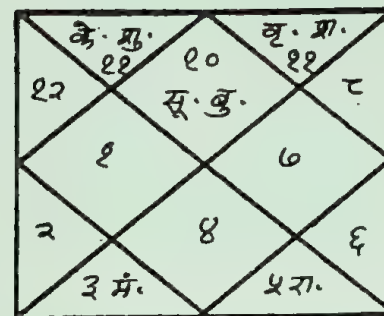
१०५६



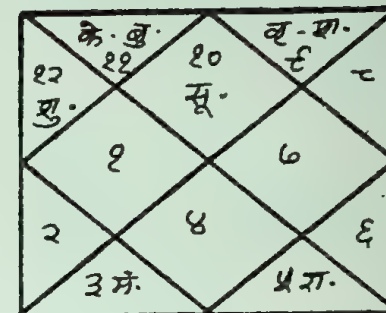
१०५७



१०५८



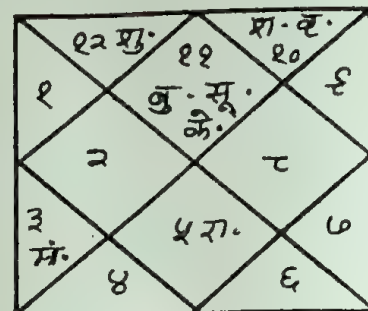
१०५९



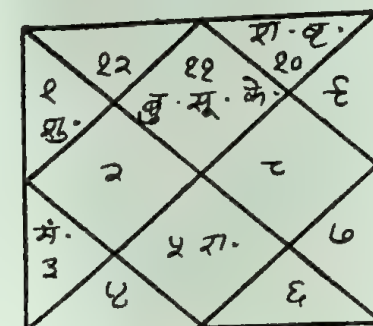
१०६०



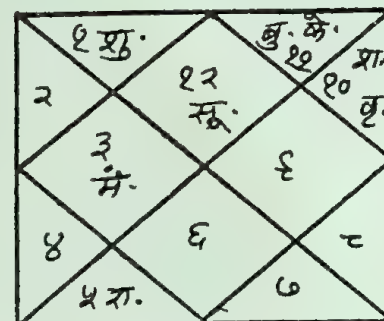
१०६१



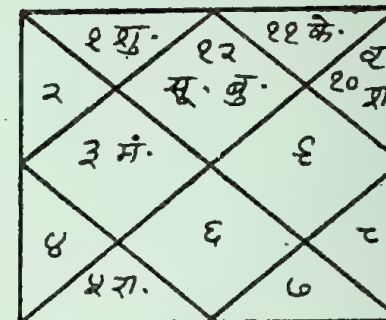
१०६२



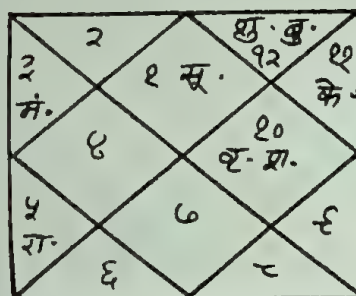
१०६३



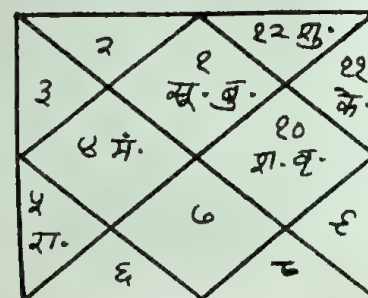
१०६४



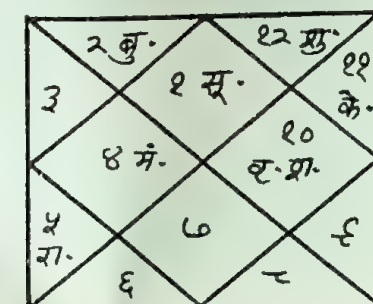
१०६५



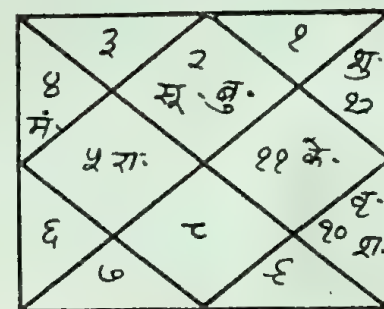
१०६६



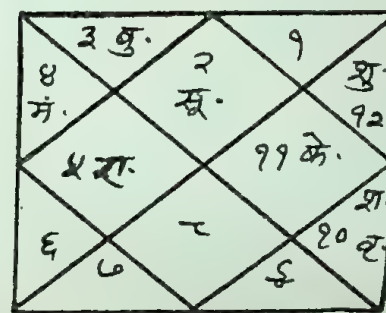
१०६७



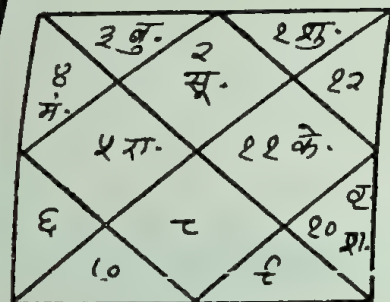
१०६८



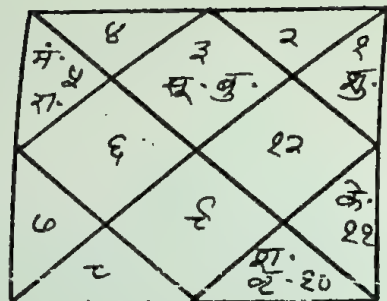
१०६९



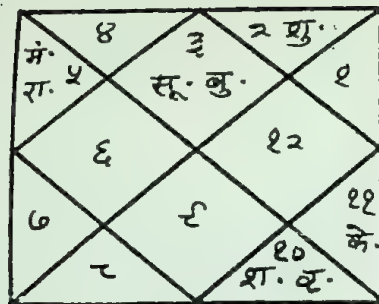
१०७०



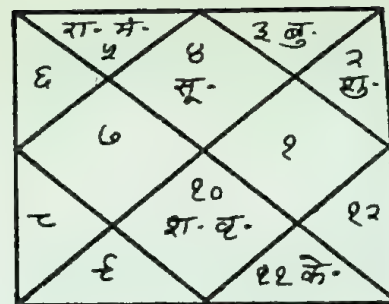
१७७१



१७७२



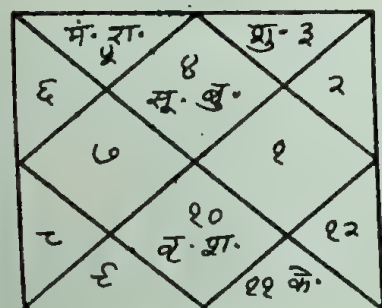
१७७३



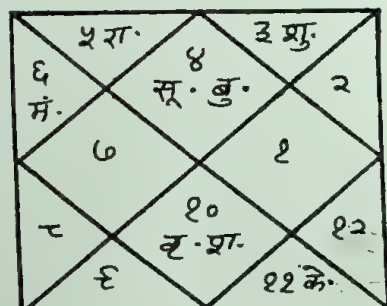
१७७४



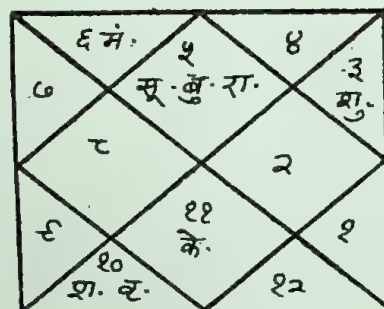
१७७५



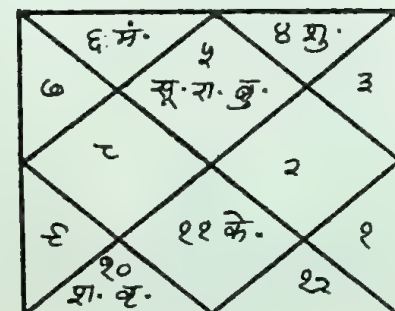
१७७६



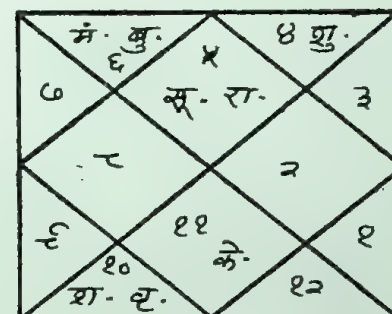
१७७७



१७७८



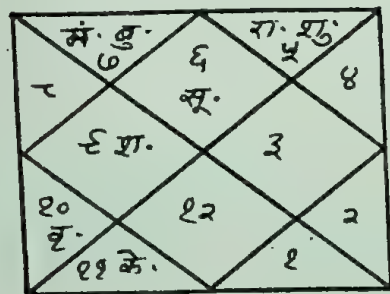
१७७९



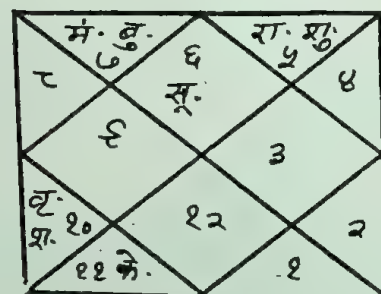
१७८०



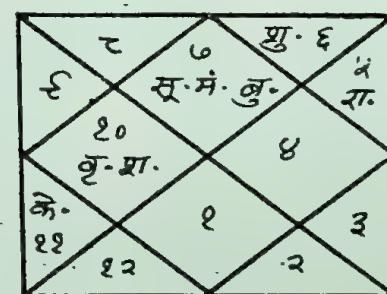
१७८१



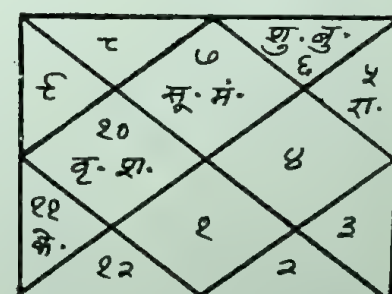
१७८२



१७८३



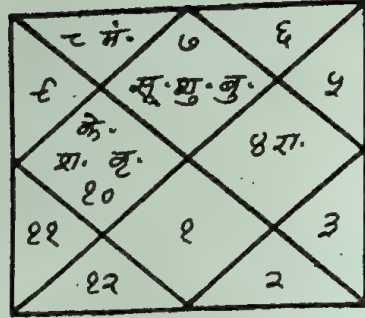
१७८४



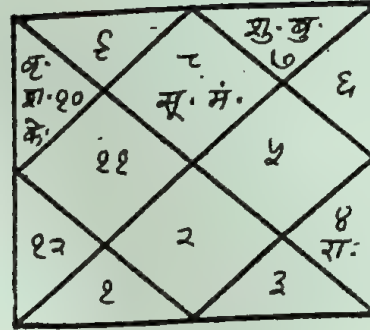
१७८५



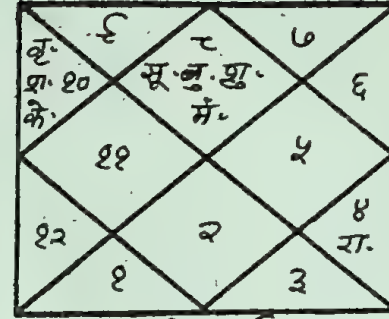
१७८६



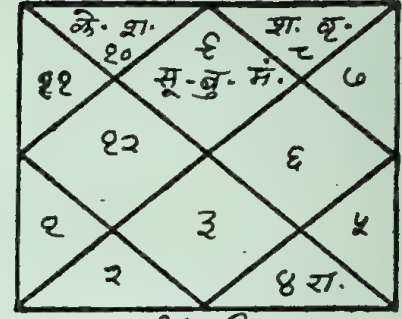
१७८७



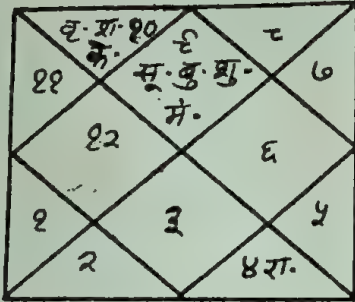
१७८८



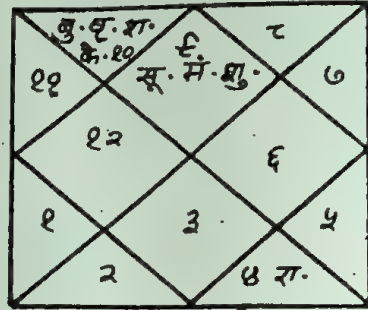
१७८९



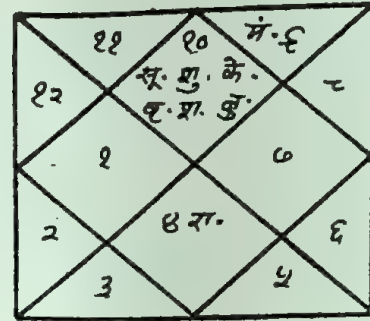
१७९०



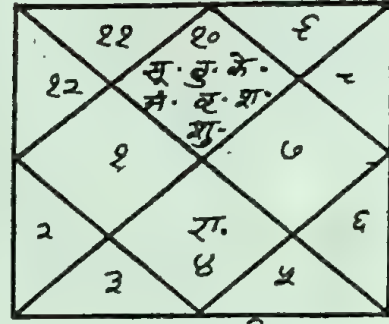
१७९१



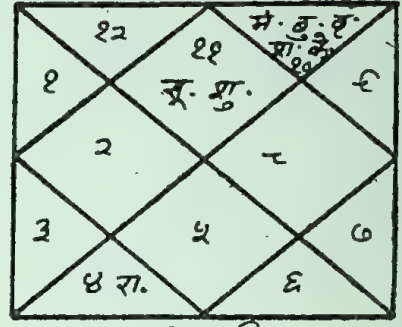
१७९२



१७९३



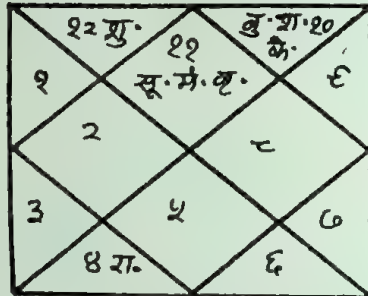
१७९४



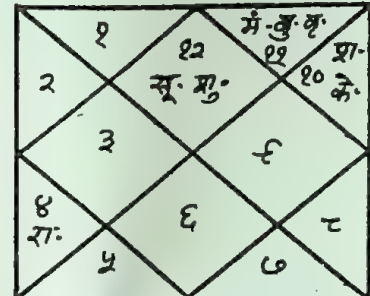
१७९५



१७९६



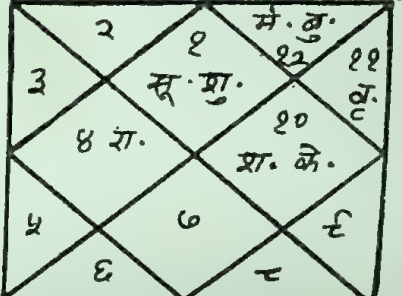
१७९७



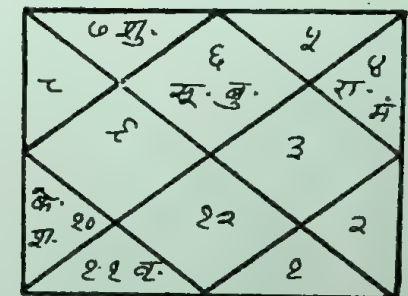
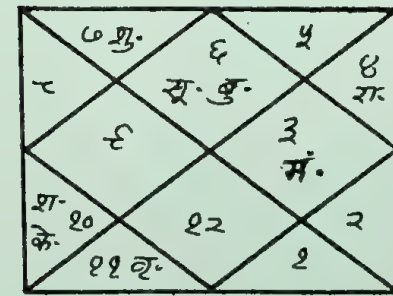
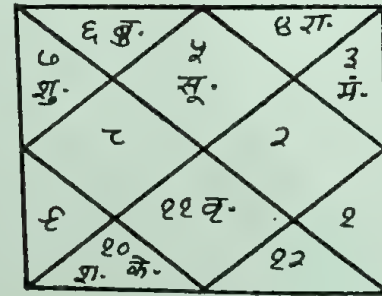
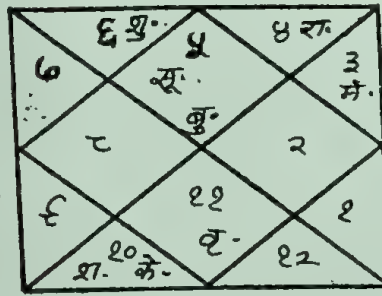
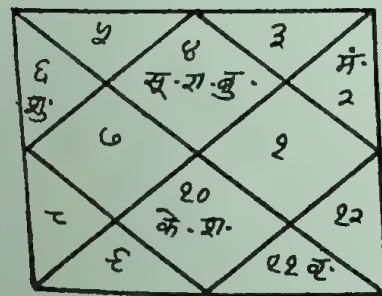
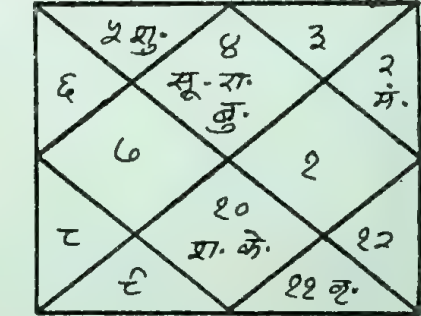
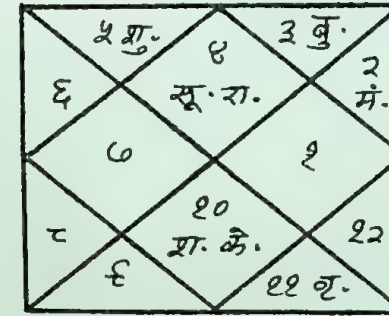
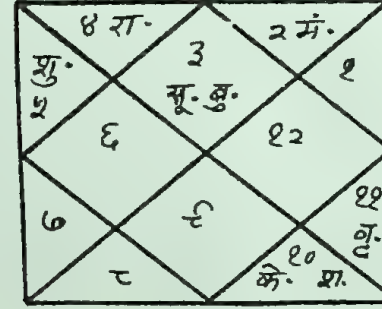
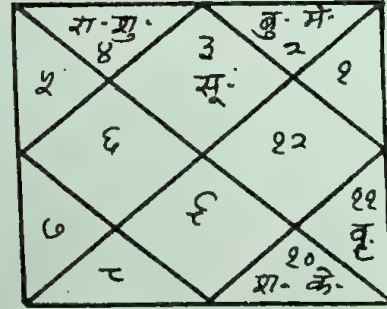
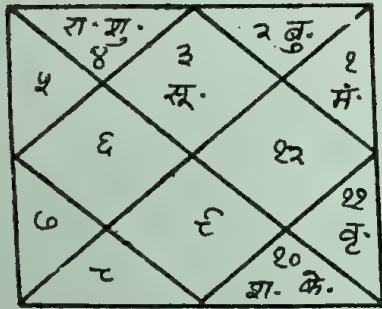
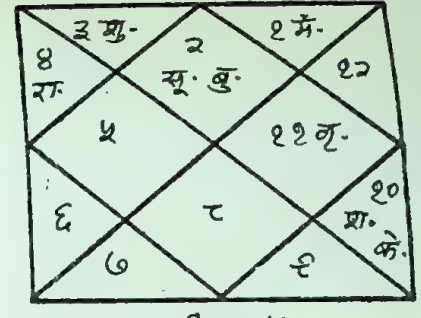
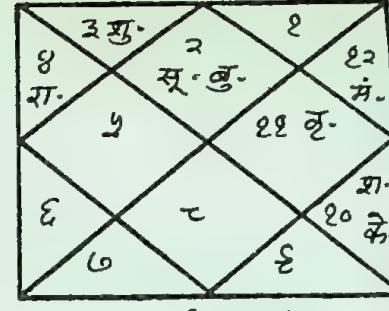
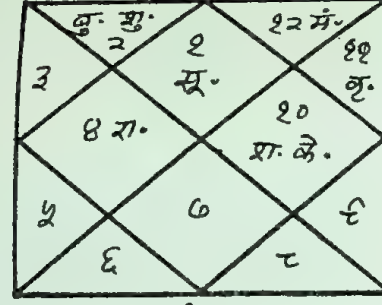
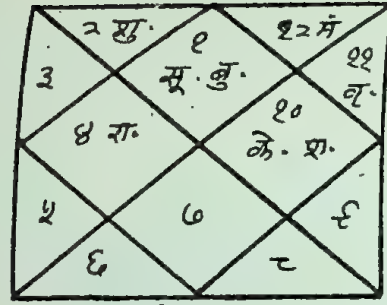
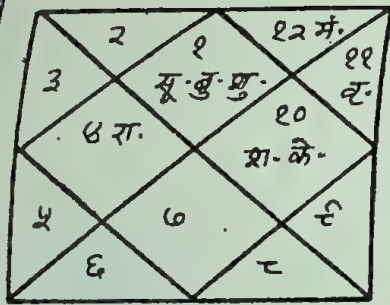
१७९८

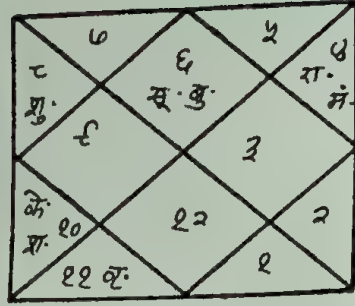


१७९९

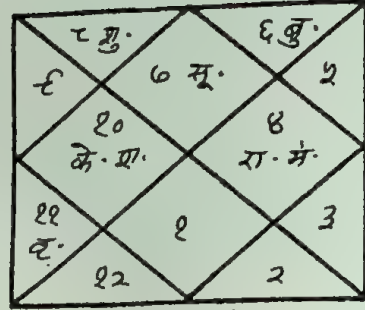


१८००

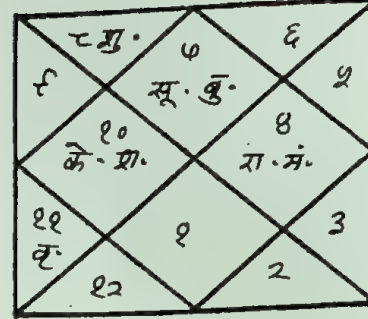




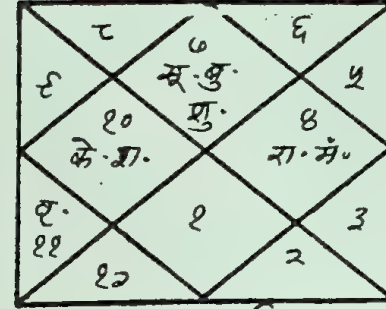
१८१६



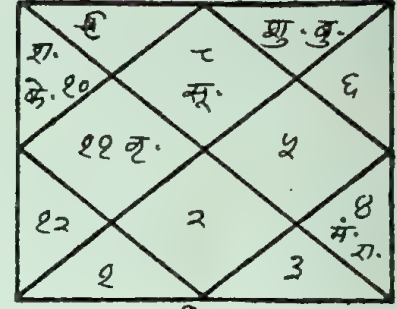
१८१७



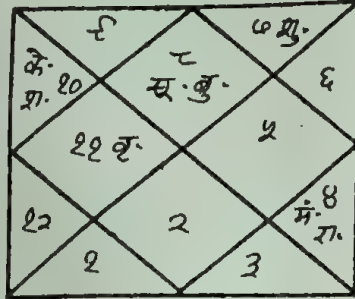
१८१८



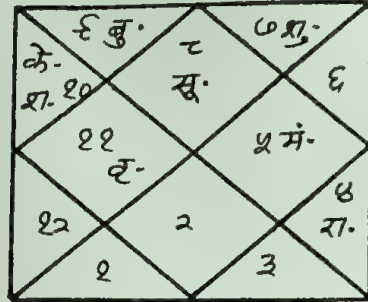
१८१९



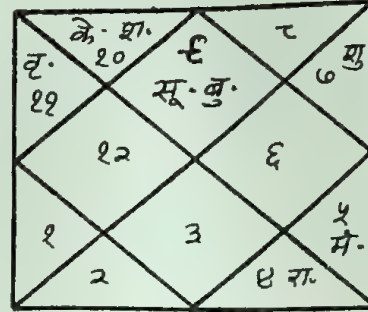
१८२०



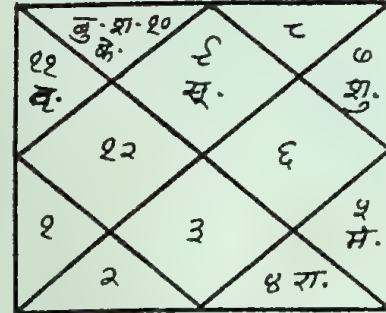
१८२१



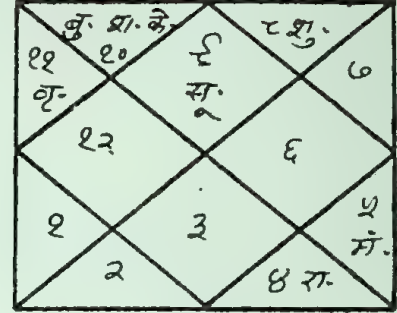
१८२२



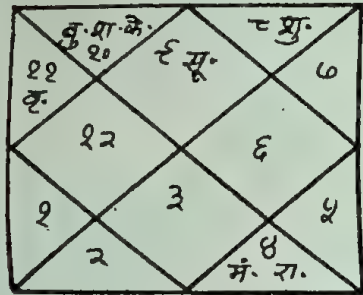
१८२३



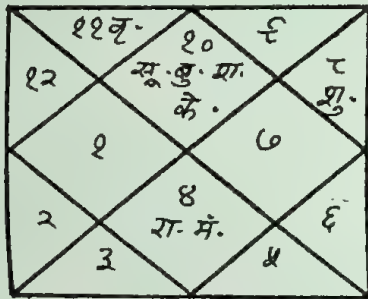
१८२४



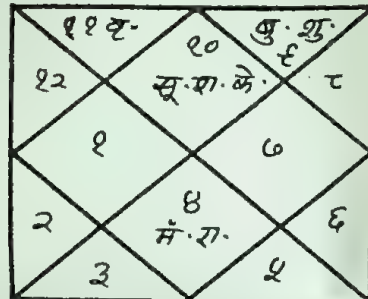
१८२५



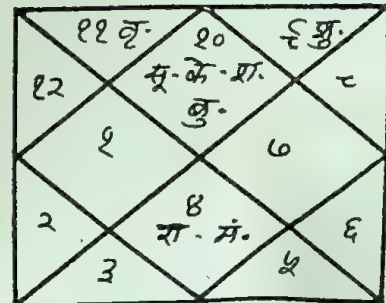
१८२६



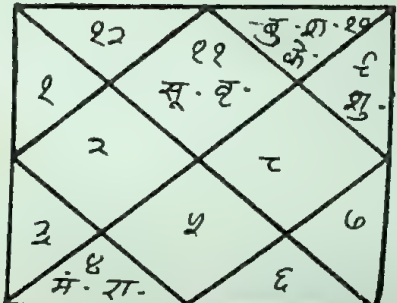
१८२७



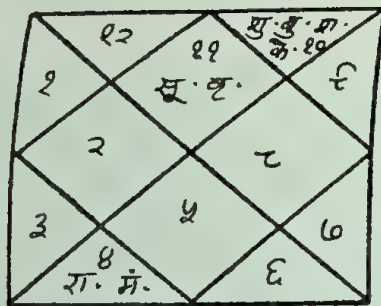
१८२८



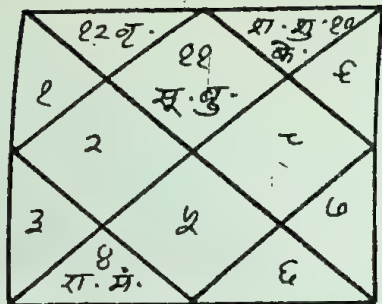
१८२९



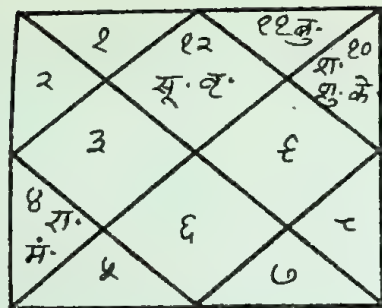
१८३०



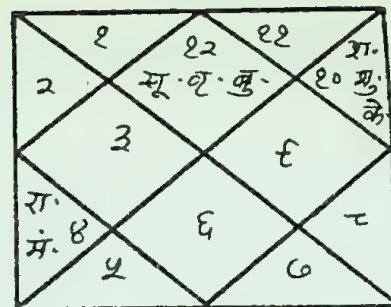
૧૮૩૧



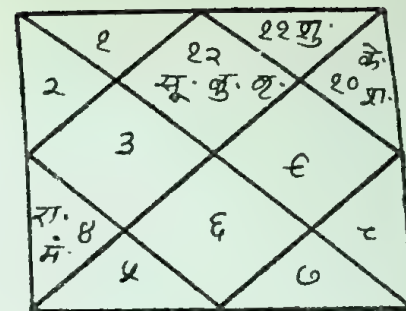
૧૮૩૨



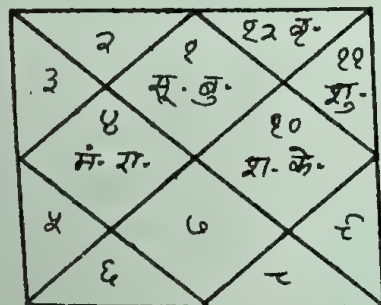
૧૮૩૩



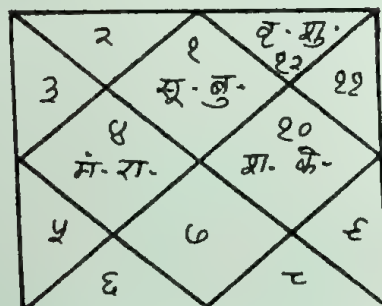
૧૮૩૪



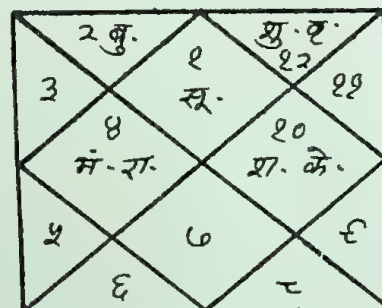
૧૮૩૫



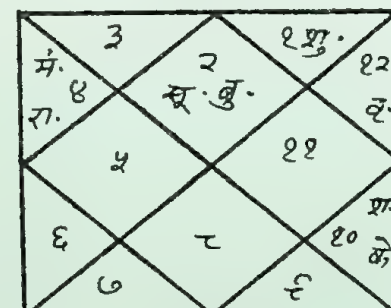
૧૮૩૬



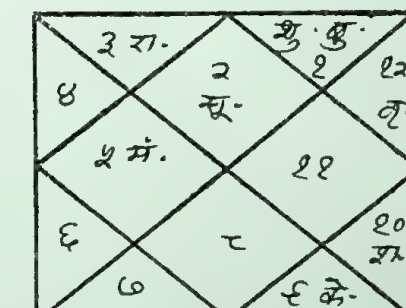
૧૮૩૭



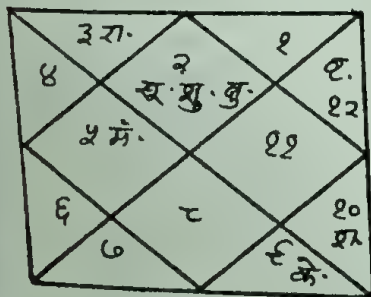
૧૮૩૮



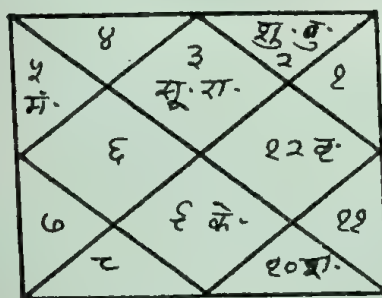
૧૮૩૯



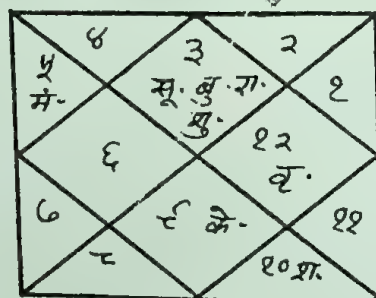
૧૮૪૦



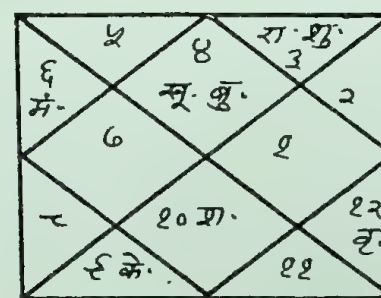
૧૮૪૧



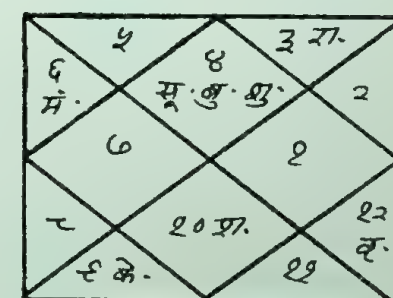
૧૮૪૨



૧૮૪૩



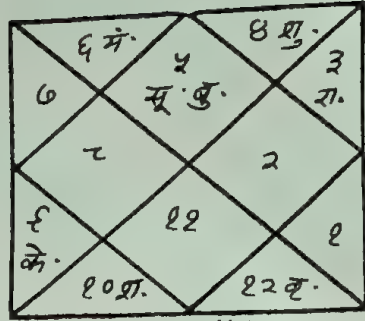
૧૮૪૪



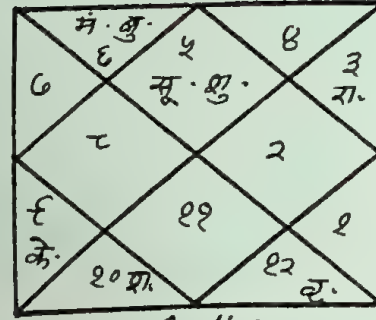
૧૮૪૫



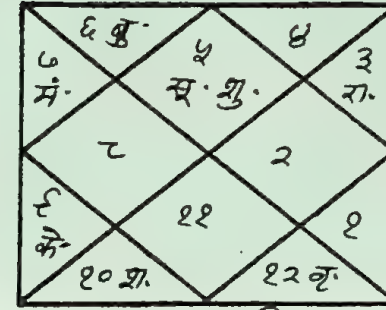
१८४६



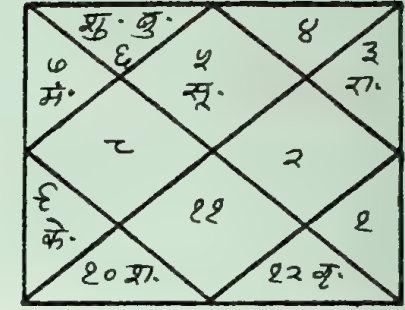
१८४७



१८४८



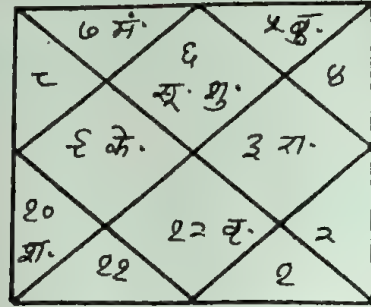
१८४९



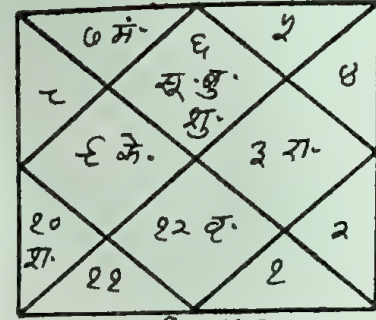
१८५०



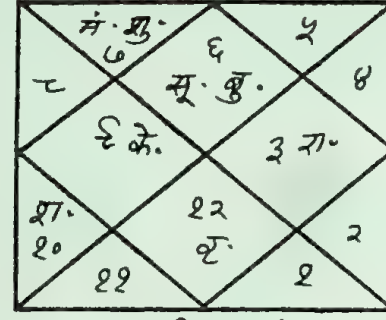
१८५१



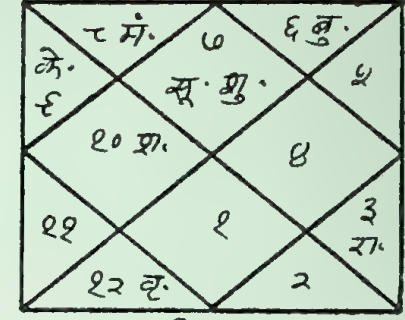
१८५२



१८५३



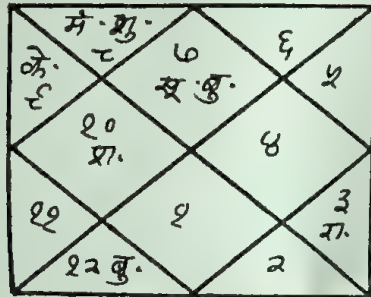
१८५४



१८५५



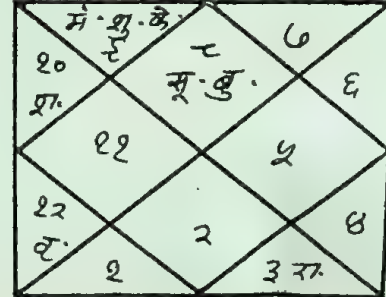
१८५६



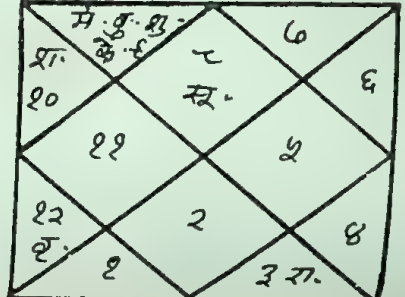
१८५७



१८५८



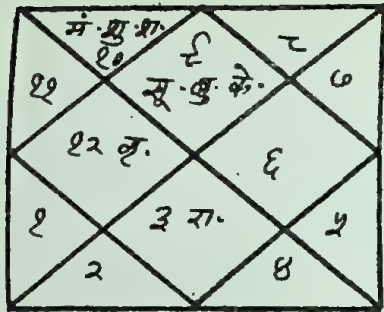
१८५९



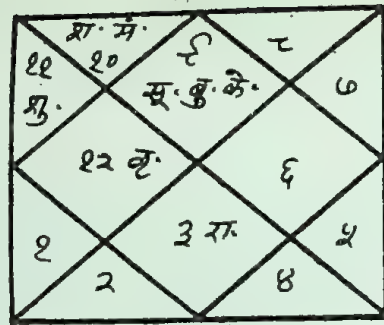
१८६०



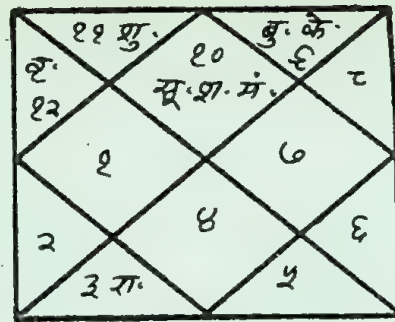
१८६१



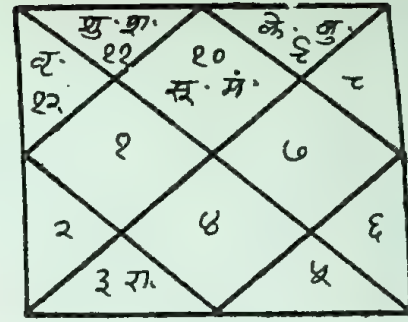
१८६२



१८६३



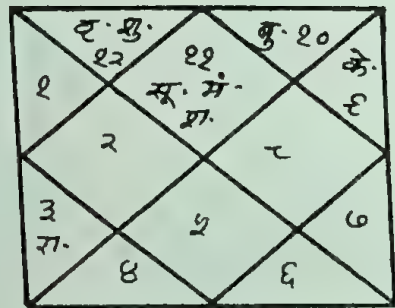
१८६४



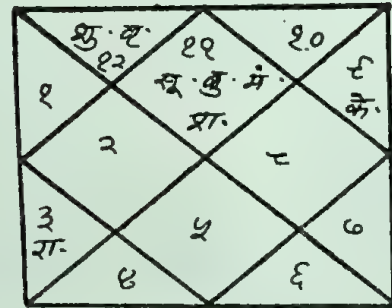
१८६५



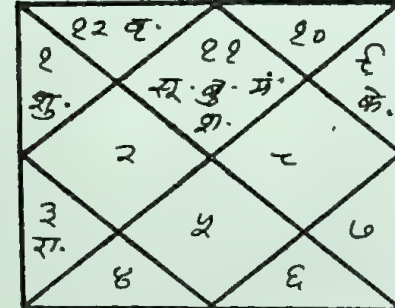
१८६६



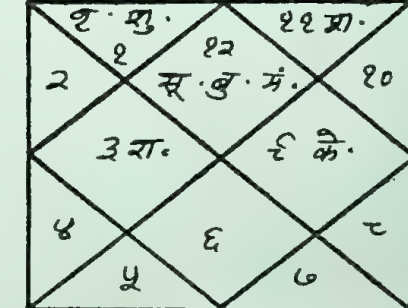
१८६७



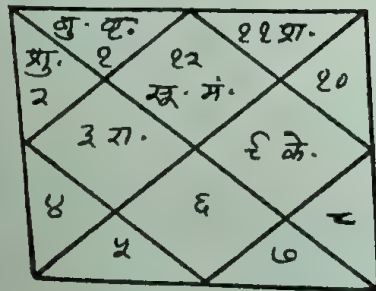
१८६८



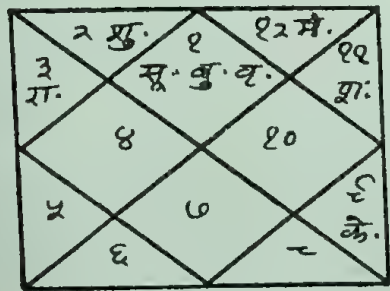
१८६९



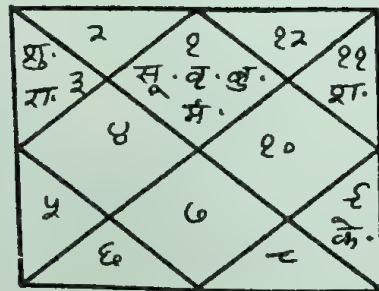
१८७०



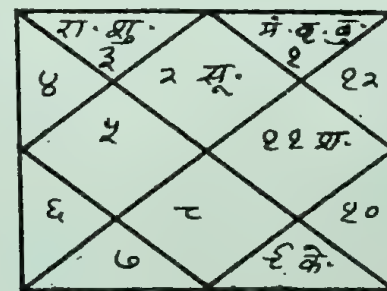
१८७१



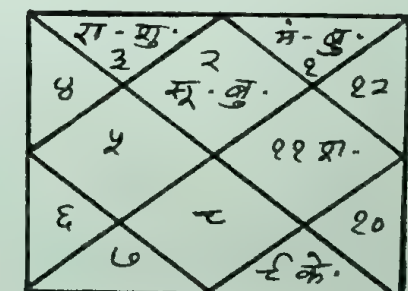
१८७२



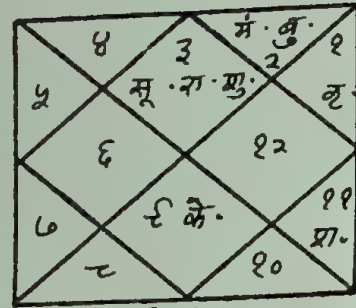
१८७३



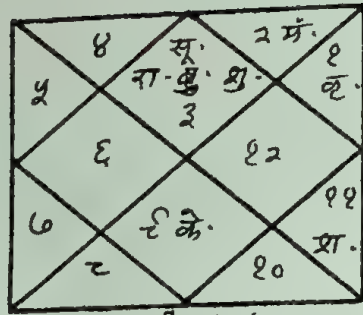
१८७४



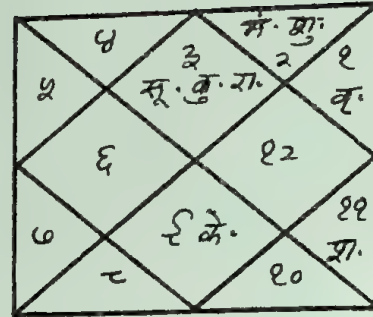
१८७५



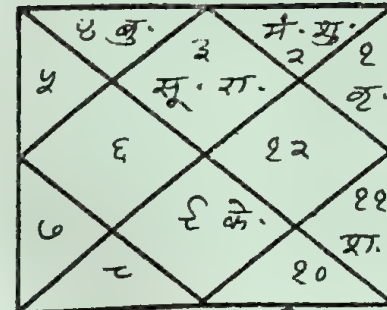
१८७६



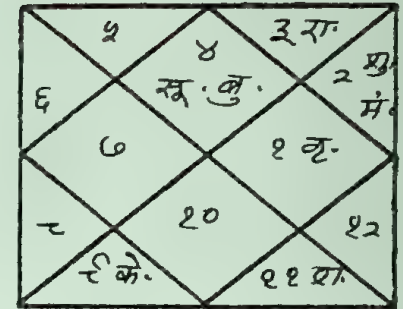
१८७७



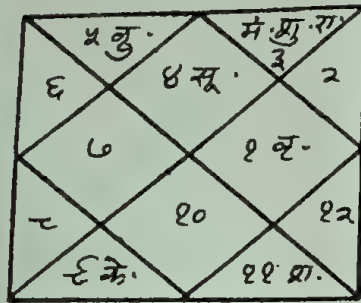
१८७८



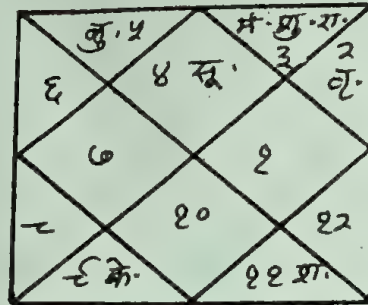
१८७९



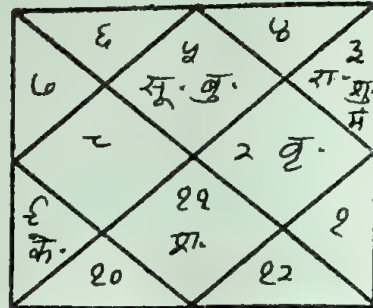
१८८०



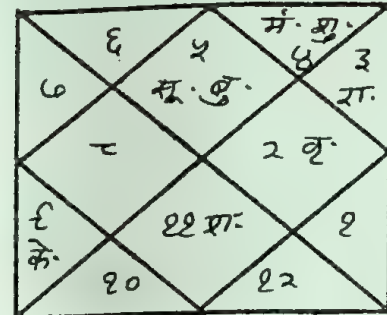
१८८१



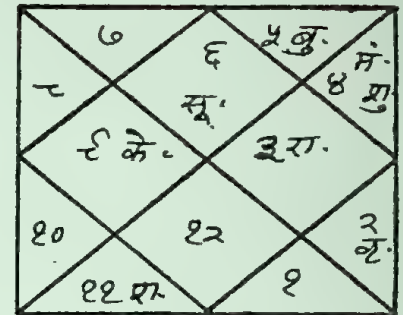
१८८२



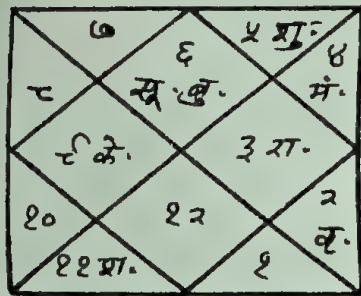
१८८३



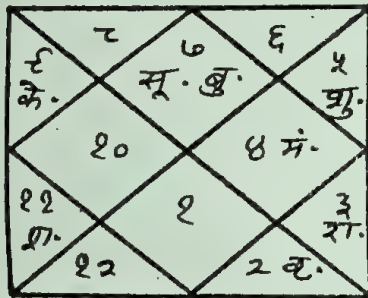
१८८४



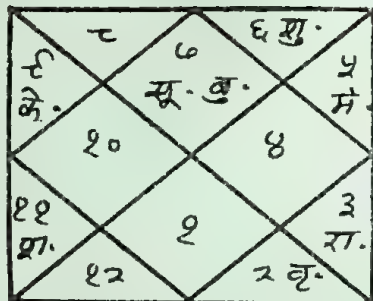
१८८५



१८८६



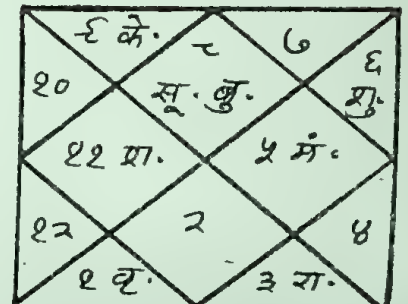
१८८७



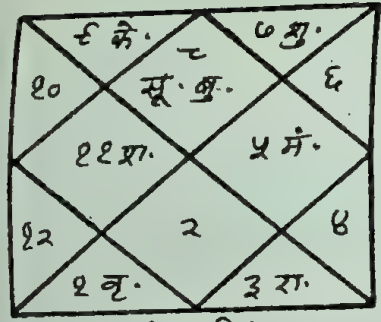
१८८८



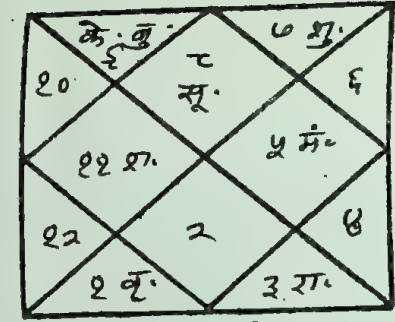
१८८९



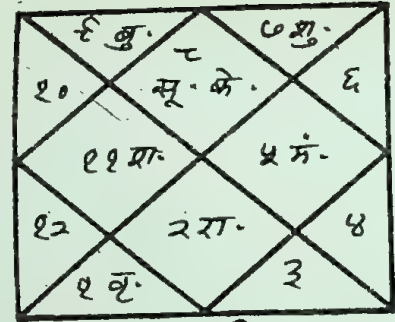
१८९०



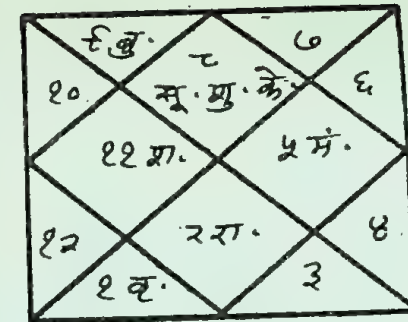
१८८१



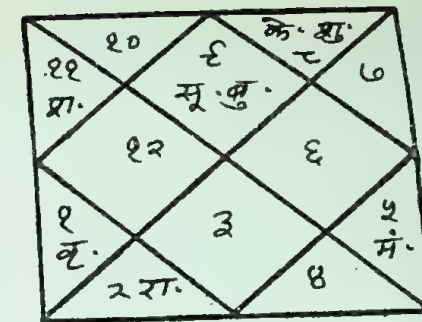
१८८२



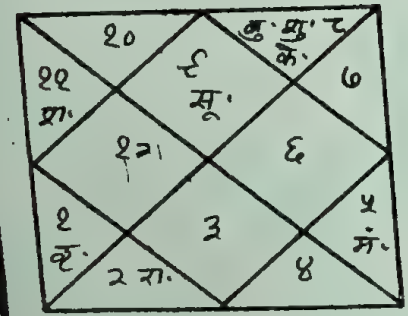
१८८३



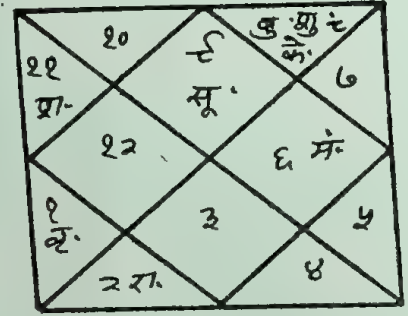
१८८४



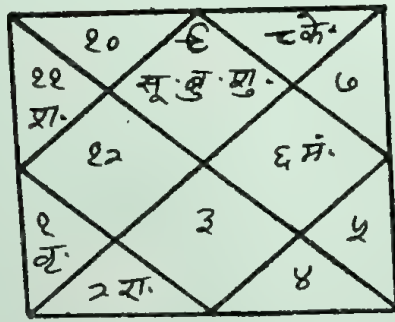
१८८५



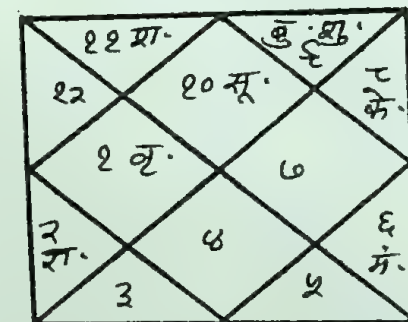
१८८६



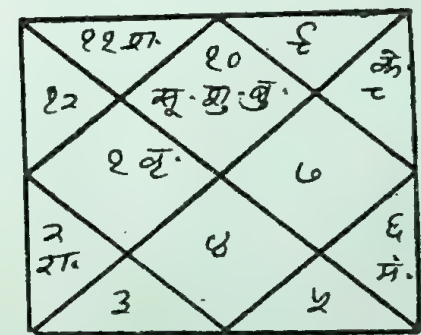
१८८७



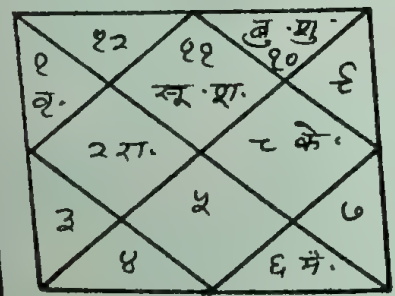
१८८८



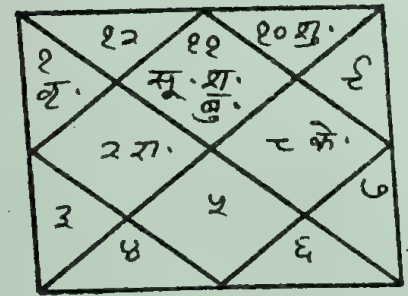
१८८९



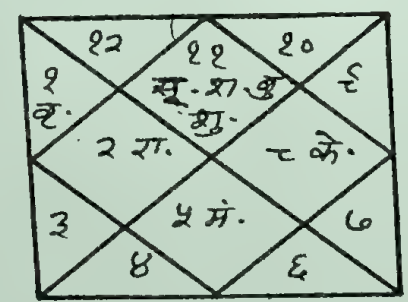
१८९०



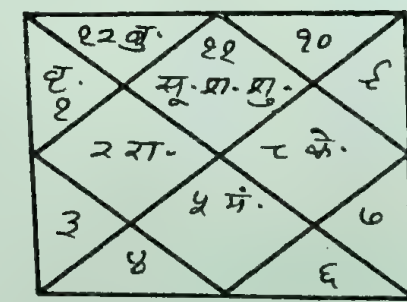
१८९१



१८९२



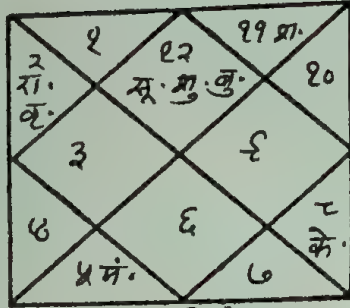
१८९३



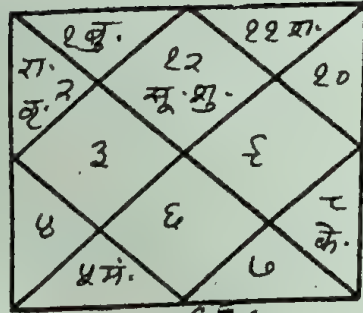
१८९४



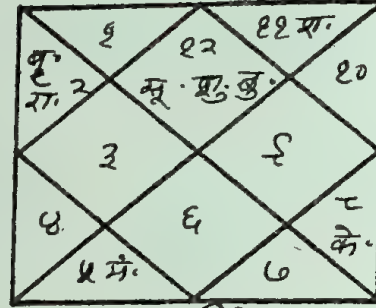
१८९५



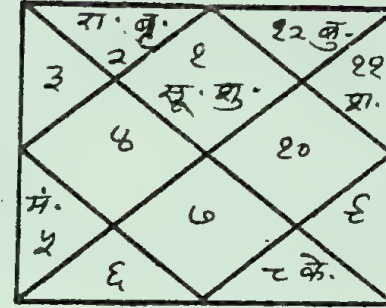
१८०६



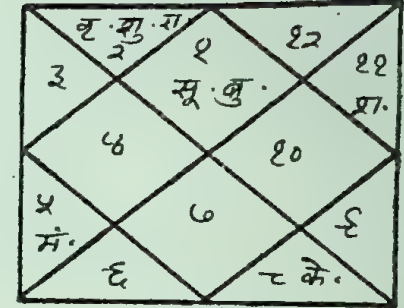
१८०७



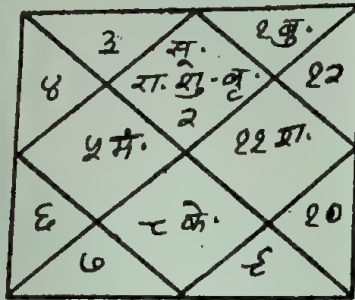
१८०८



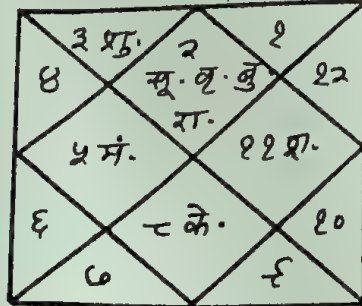
१८०९



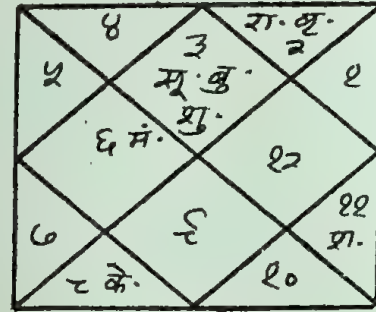
१८१०



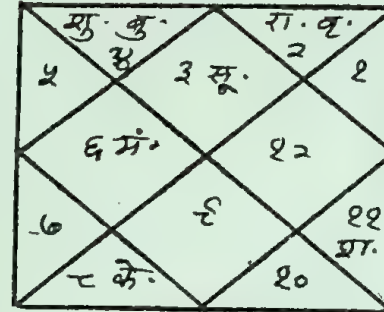
१८११



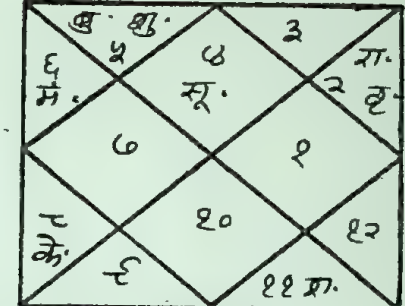
१८१२



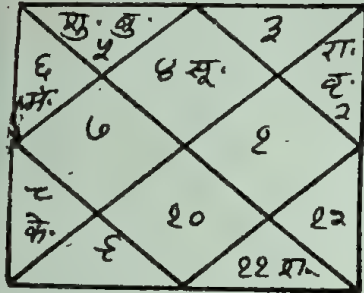
१८१३



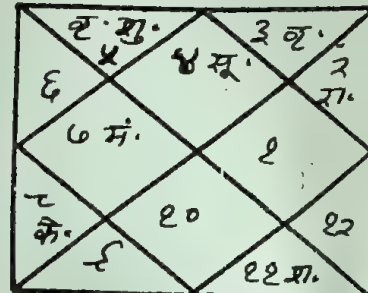
१८१४



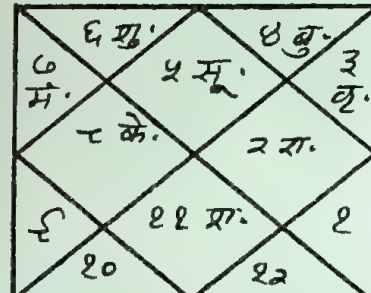
१८१५



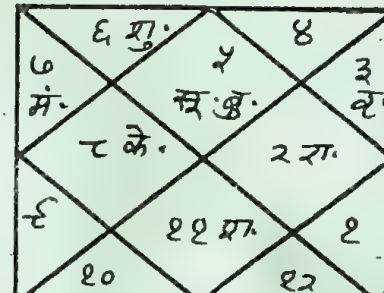
१८१६



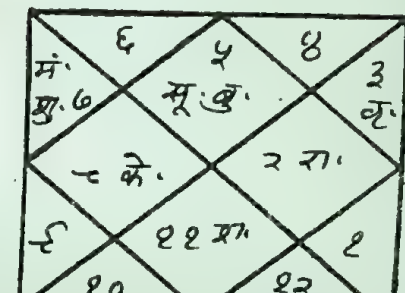
१८१७



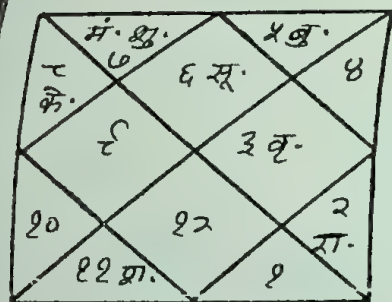
१८१८



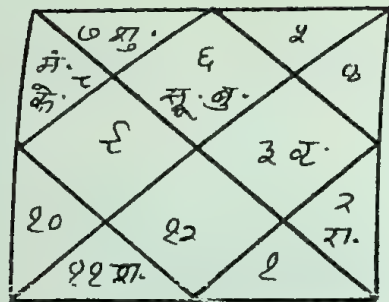
१८१९



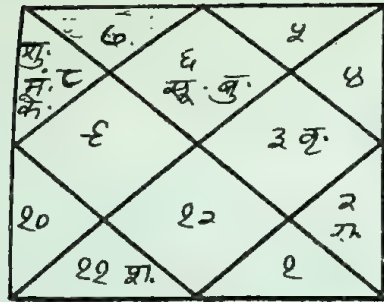
१८२०



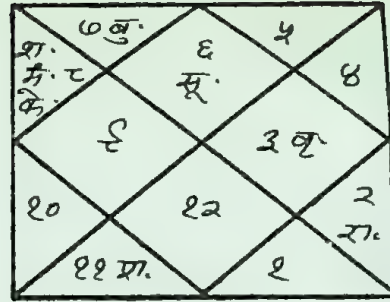
१८२१



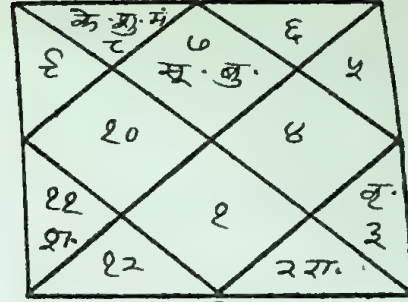
१८२२



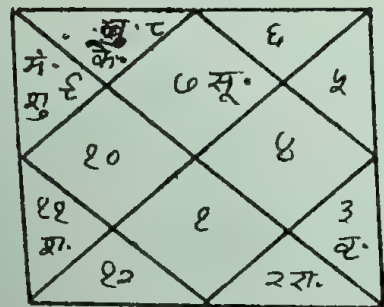
१८२३



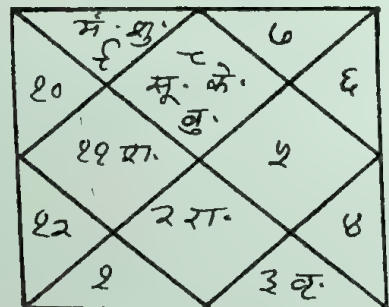
१८२४



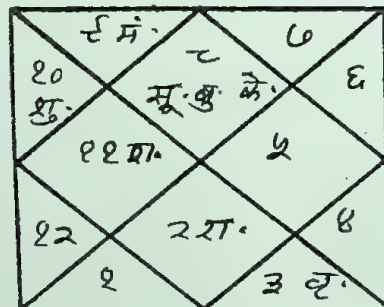
१८२५



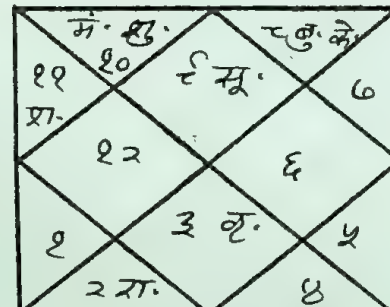
१८२६



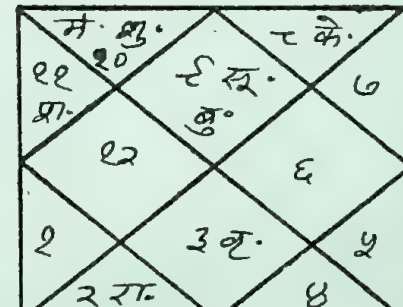
१८२७



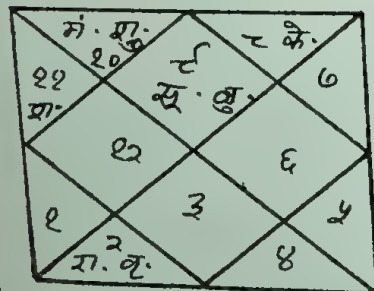
१८२८



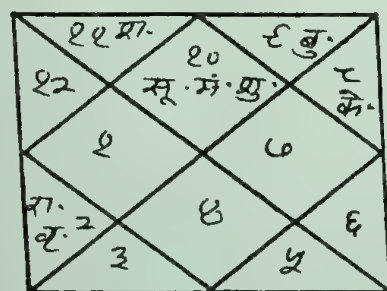
१८२९



१८३०



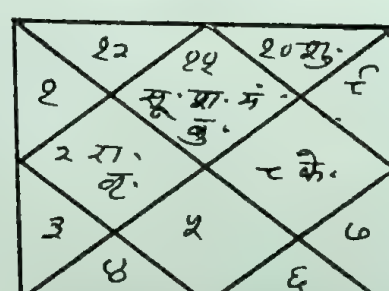
१८३१



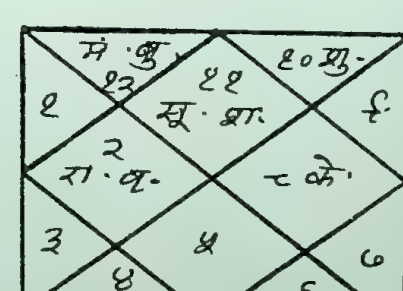
१८३२



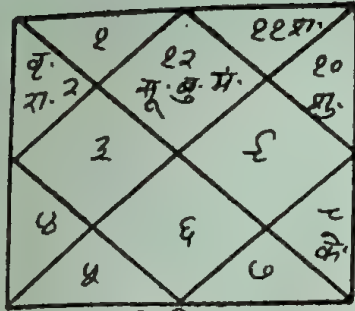
१८३३



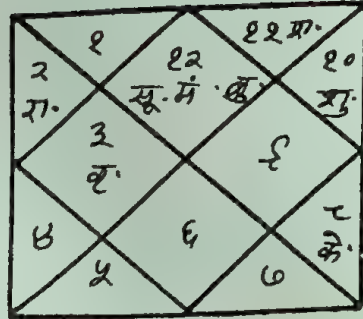
१८३४



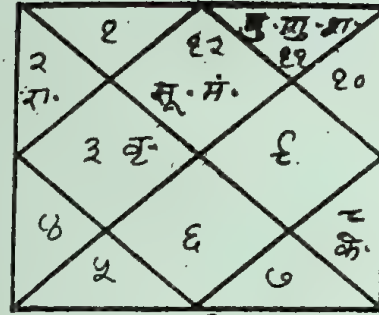
१८३५



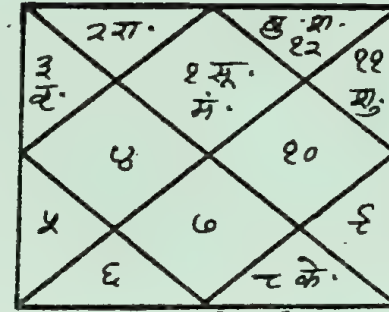
१८३६



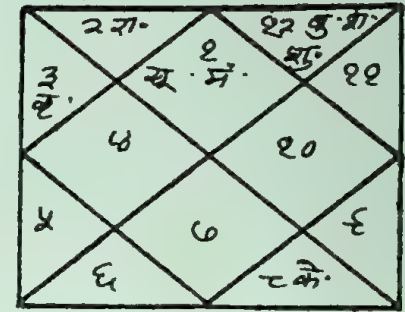
१८३७



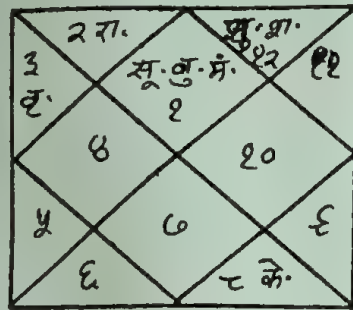
१८३८



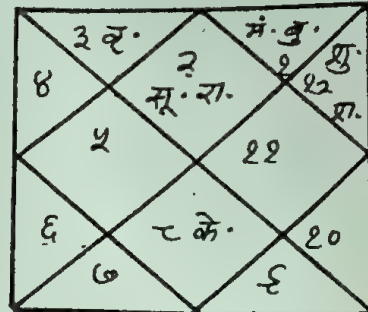
१८३९



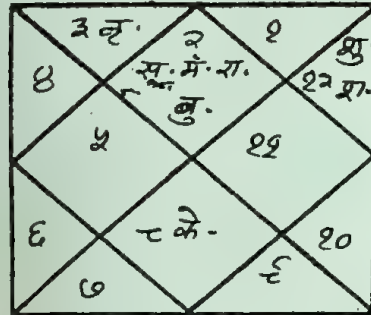
१८४०



१८४१



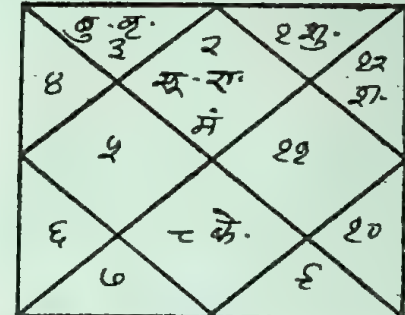
१८४२



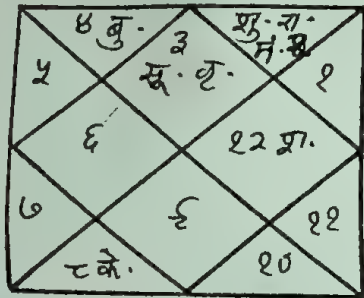
१८४३



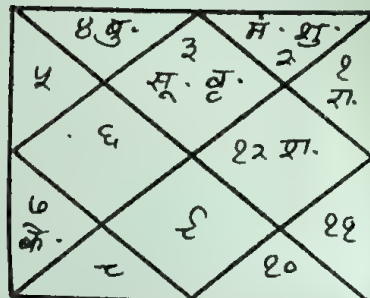
१८४४



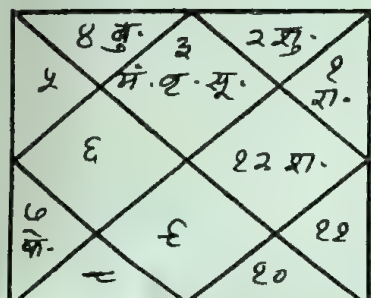
१८४५



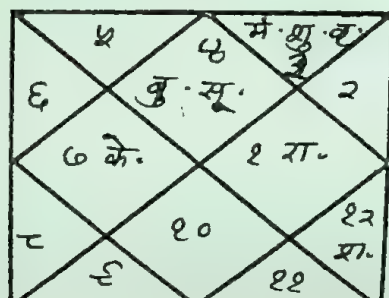
१८४६



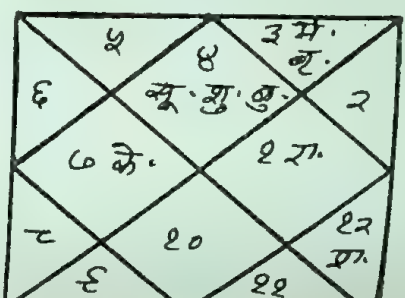
१८४७



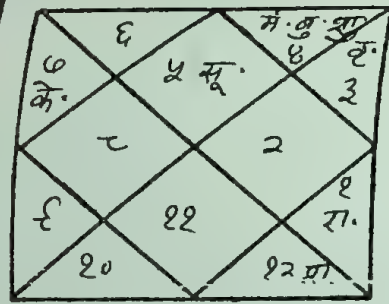
१८४८



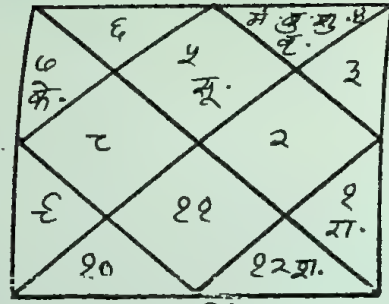
१८४९



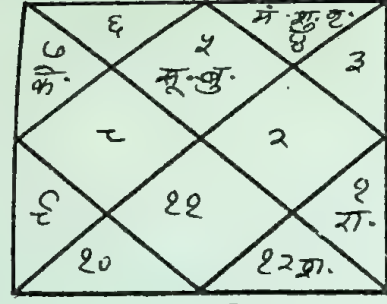
१८५०



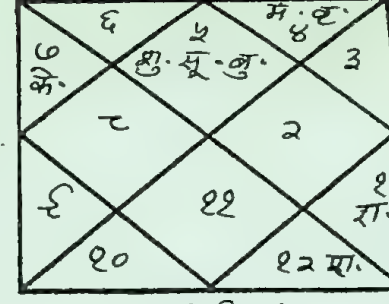
૧૮૫૧



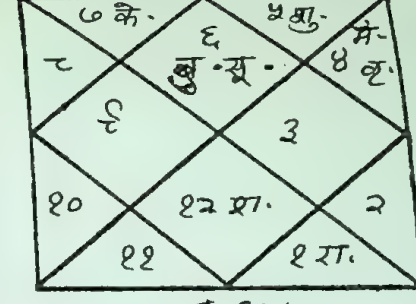
૧૮૫૨



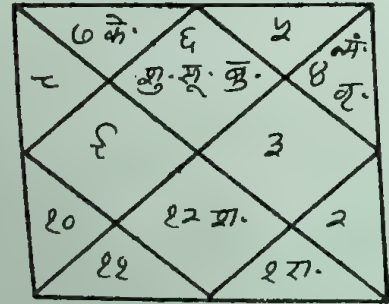
૧૮૫૩



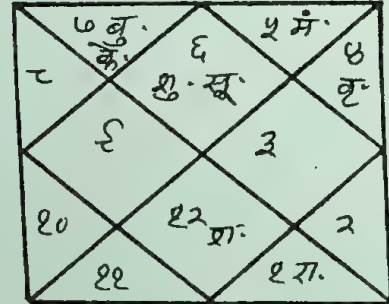
૧૮૫૪



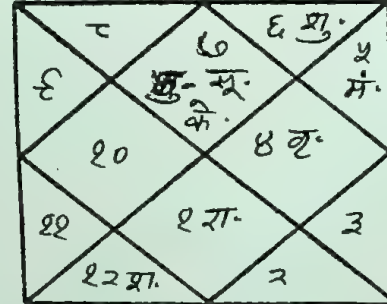
૧૮૫૫



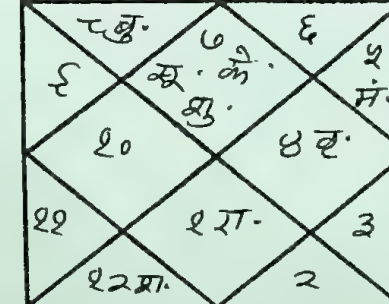
૧૮૫૬



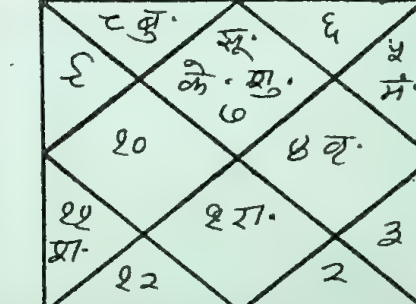
૧૮૫૭



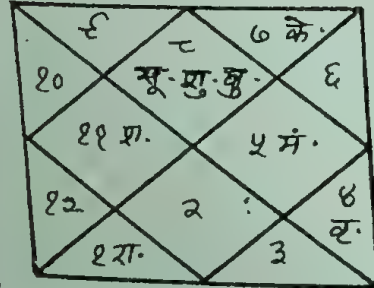
૧૮૫૮



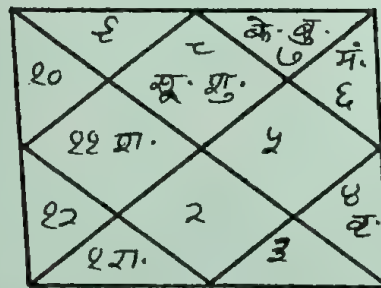
૧૮૫૯



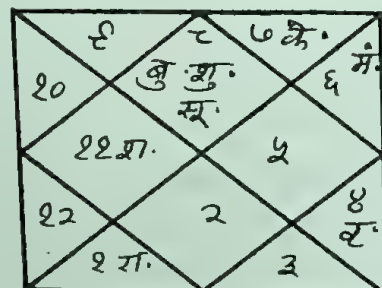
૧૮૬૦



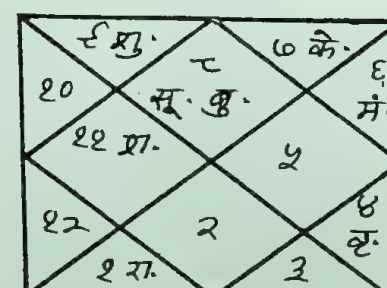
૧૮૬૧



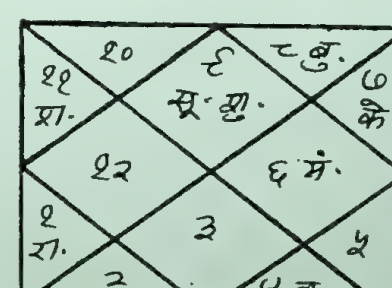
૧૮૬૨



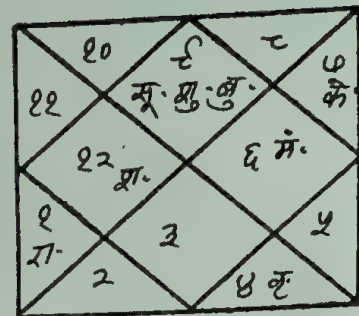
૧૮૬૩



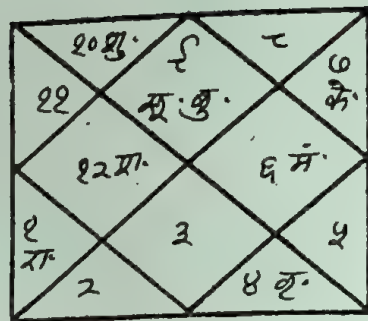
૧૮૬૪



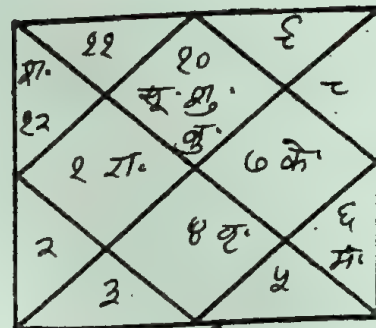
૧૮૬૫



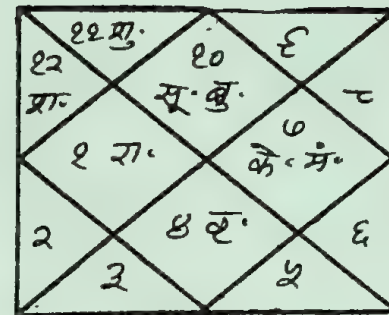
૧૬૬૬



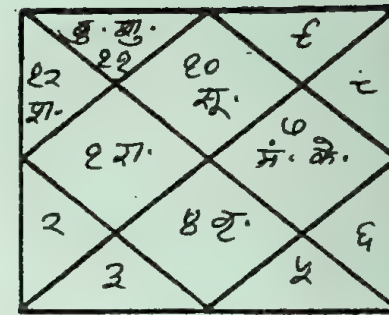
૧૬૬૭



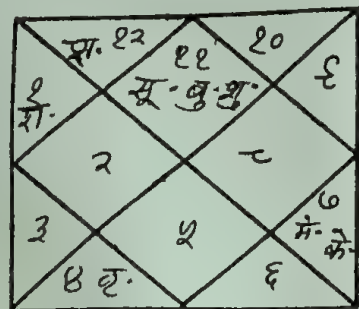
૧૬૬૮



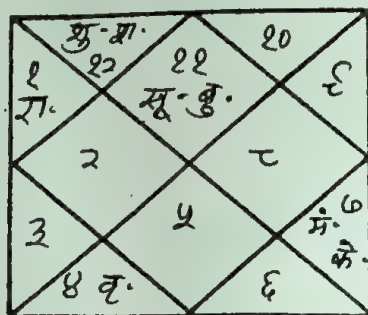
૧૬૬૯



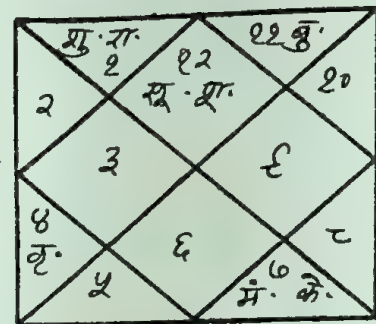
૧૬૭૦



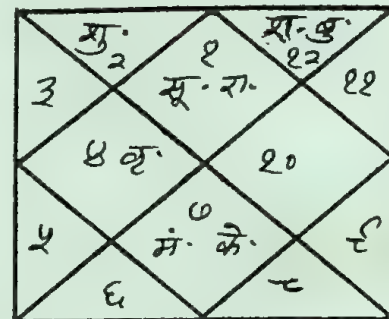
૧૬૭૧



૧૬૭૨



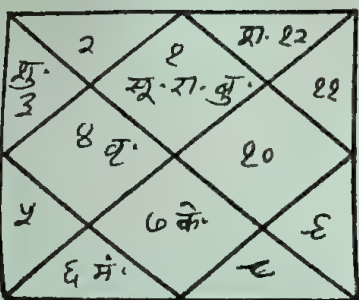
૧૬૭૩



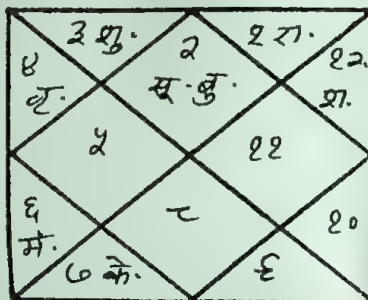
૧૬૭૪



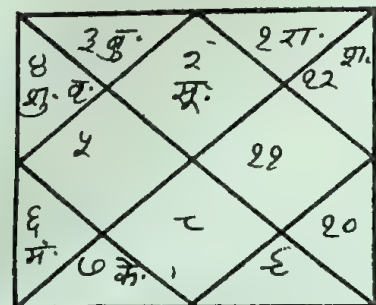
૧૬૭૫



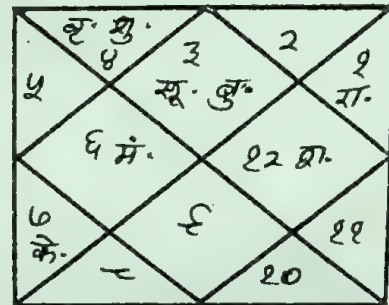
૧૬૭૬



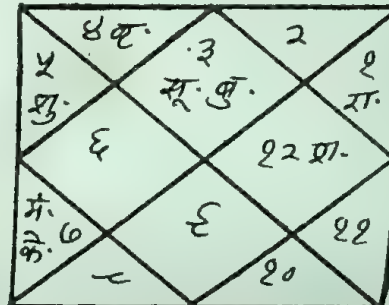
૧૬૭૭



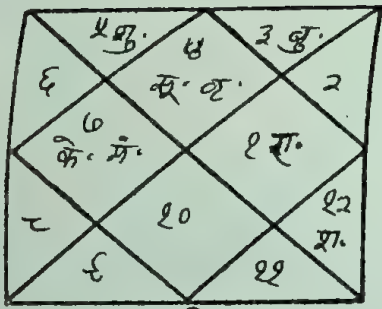
૧૬૭૮



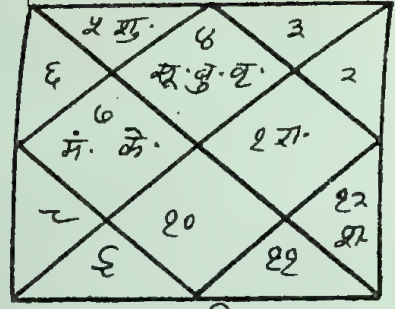
૧૬૭૯



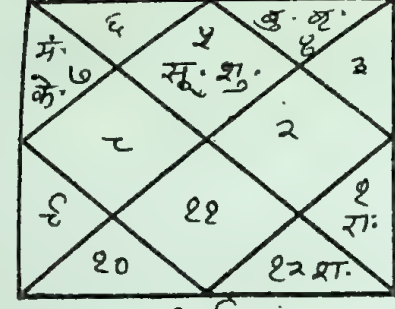
૧૬૮૦



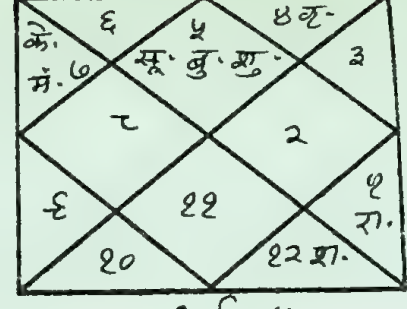
१८८१



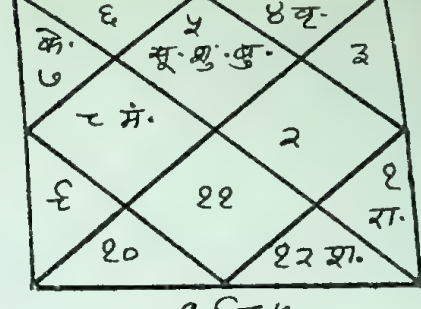
१८८२



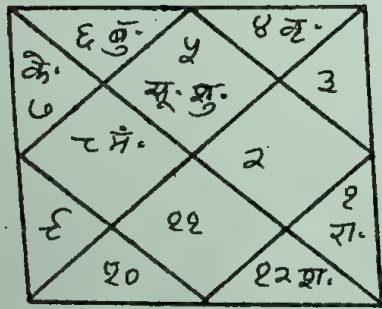
१८८३



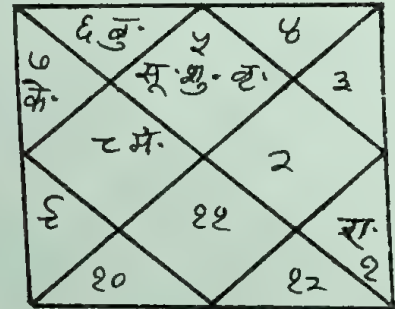
१८८४



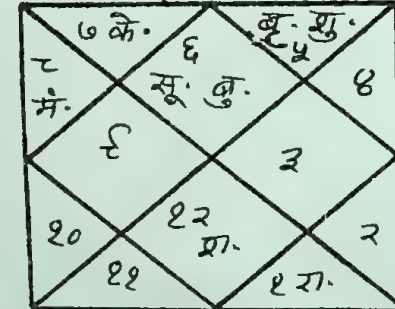
१८८५



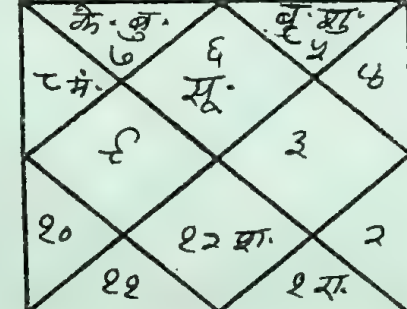
१८८६



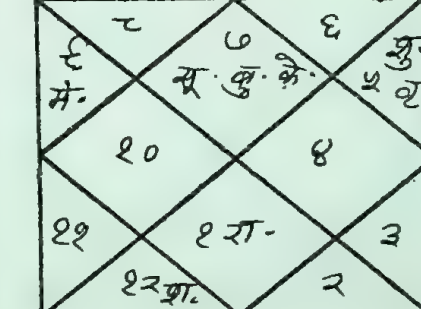
१८८७



१८८८



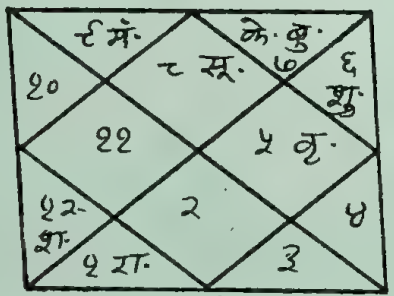
१८८९



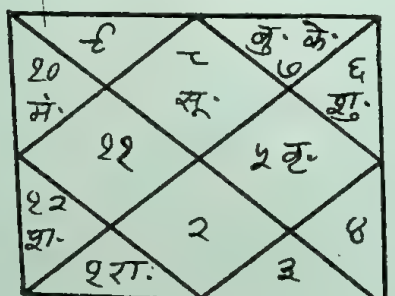
१८९०



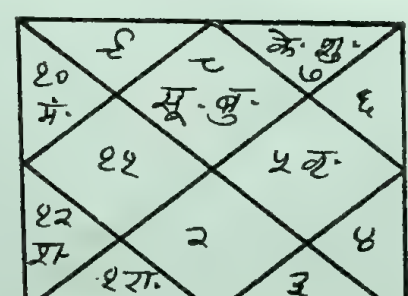
१८९१



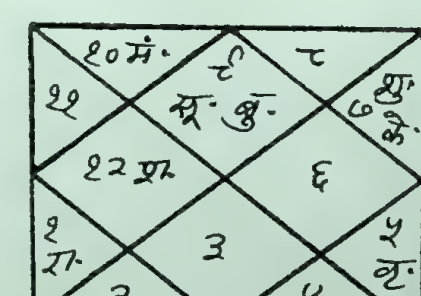
१८९२



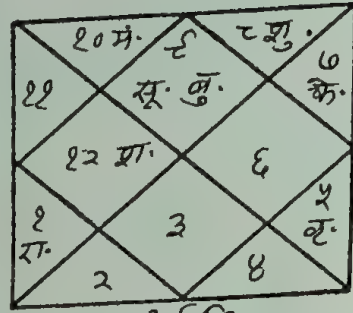
१८९३



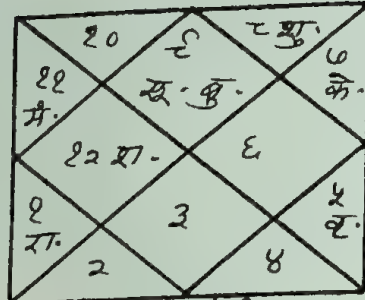
१८९४



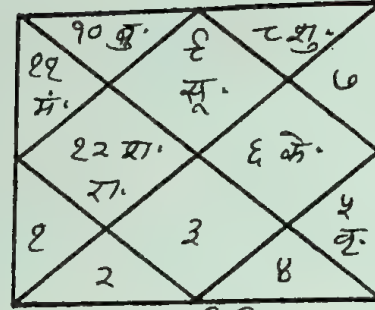
१८९५



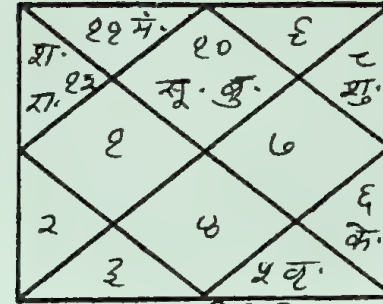
१८६६



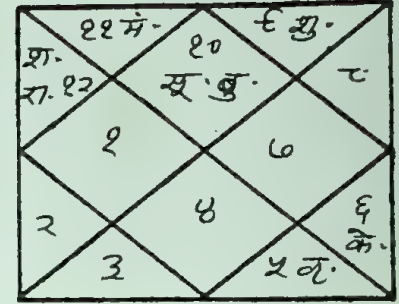
१८६६



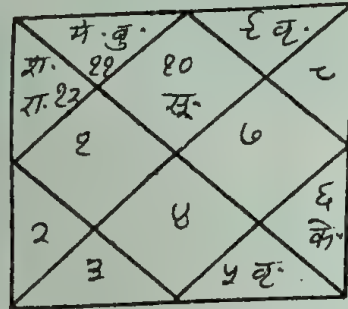
१८६६



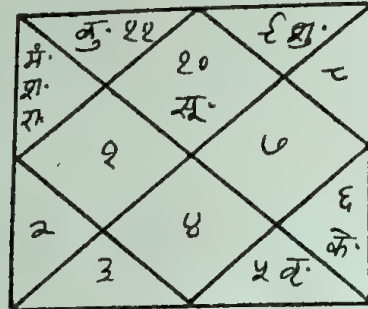
१८६६



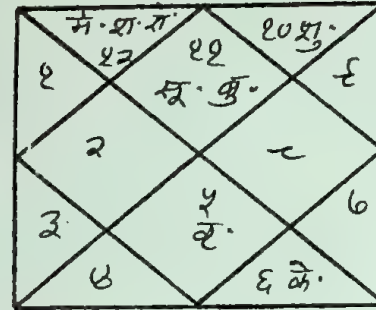
१८६६



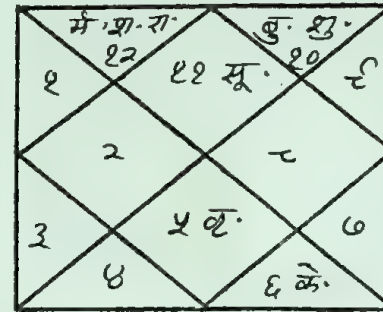
१८६६



१८६६



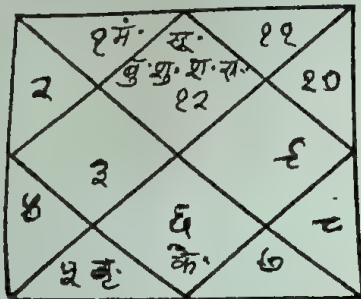
१८६६



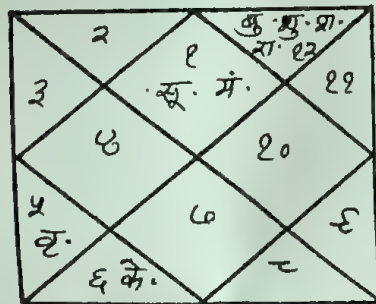
१८६६



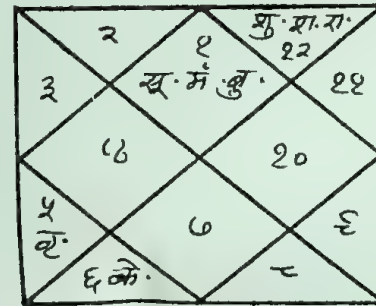
१८६६



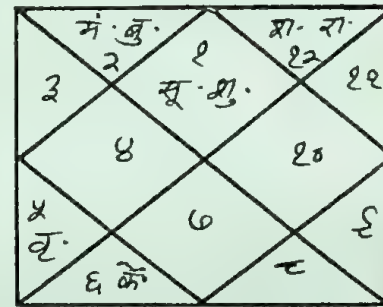
१८६६



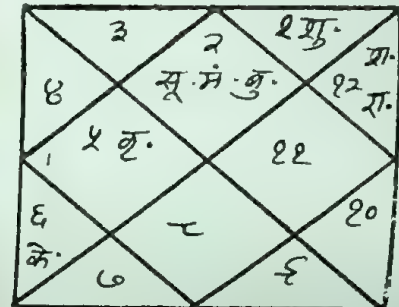
१८६६



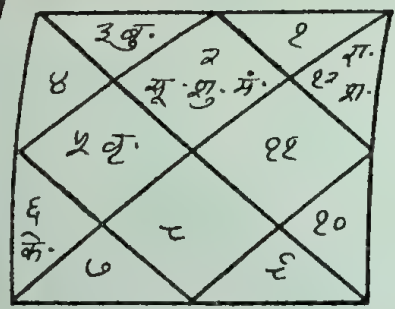
१८६६



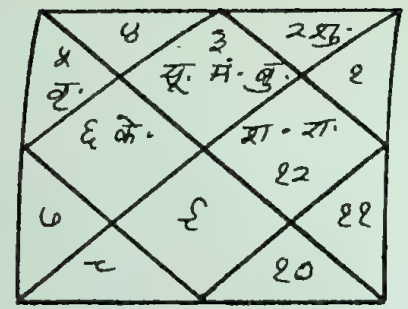
१८६६



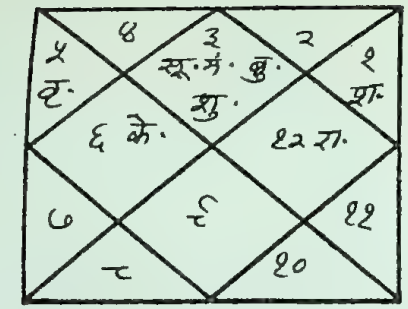
१८६६



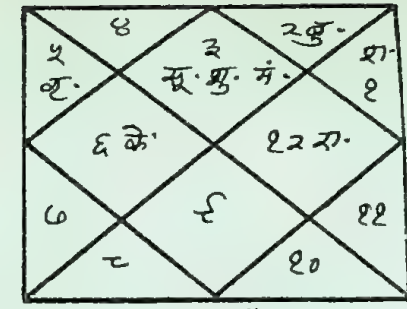
2021



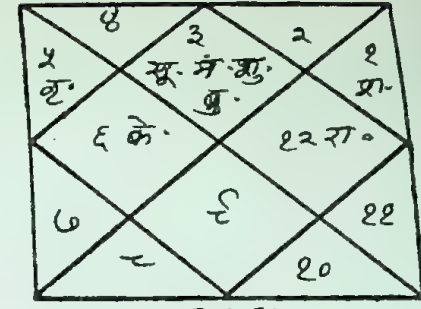
2022



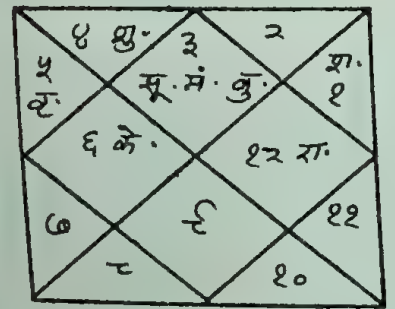
2023



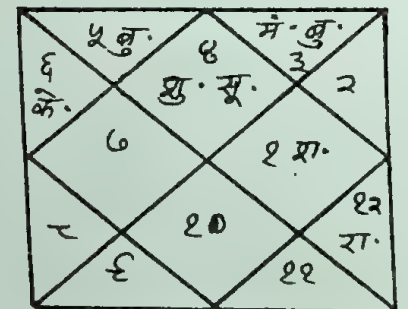
2024



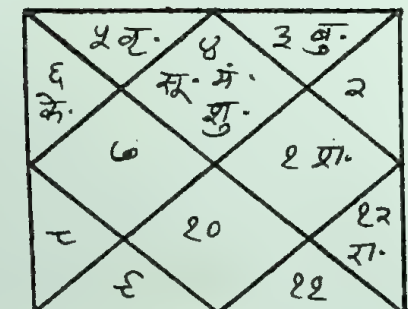
2025



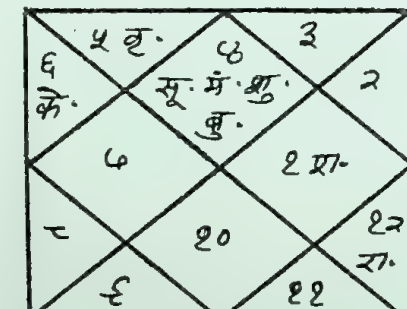
2026



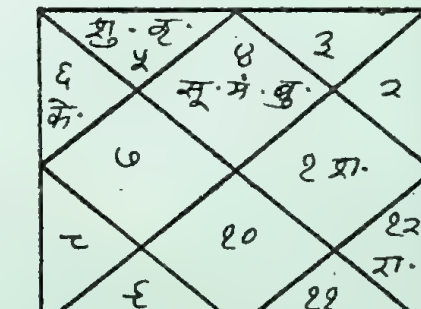
2027



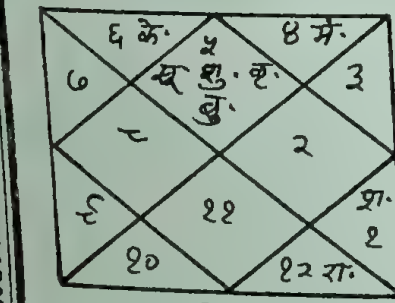
2028



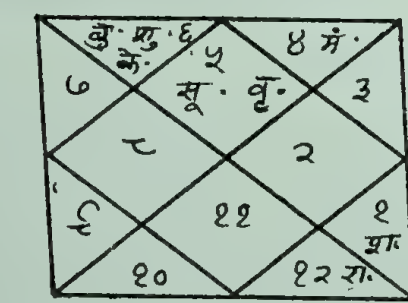
2029



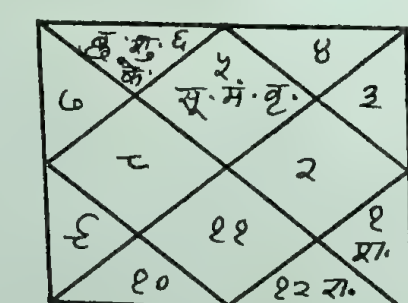
2030



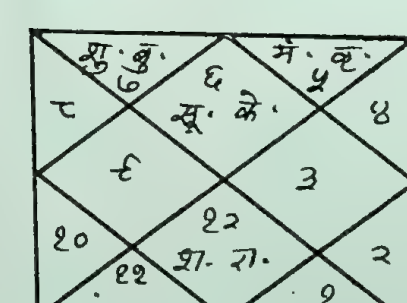
2031



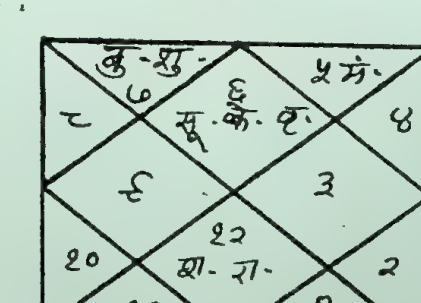
2032



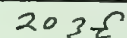
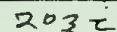
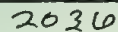
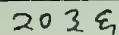
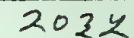
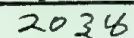
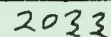
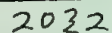
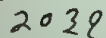
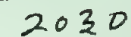
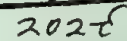
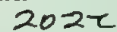
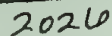
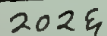
2033



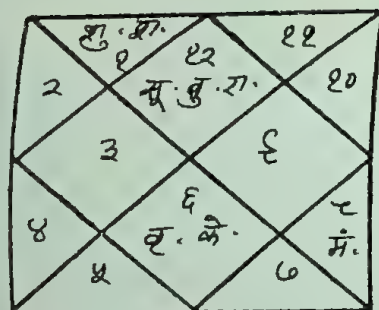
2034



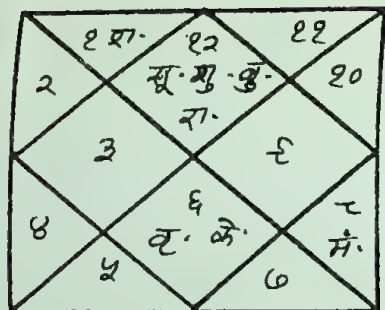
2035



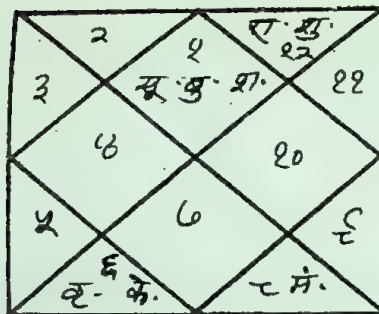
भू०
सं०
५
०
३



2082



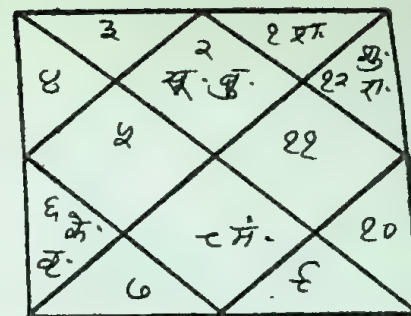
2082



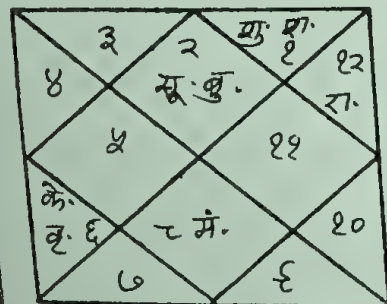
2043



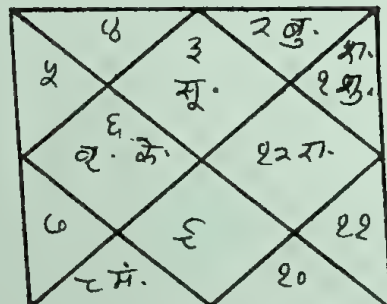
2046



2082



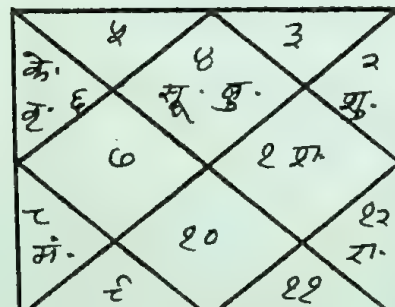
2049



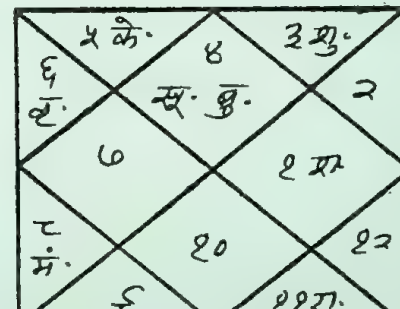
2046



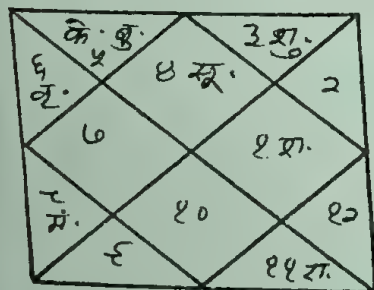
2016-7



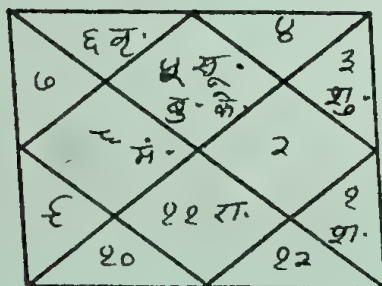
204E



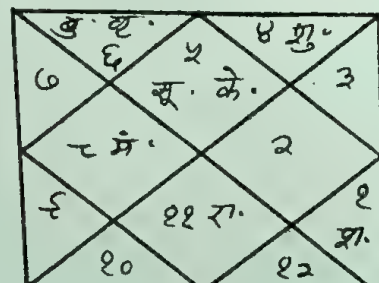
2020



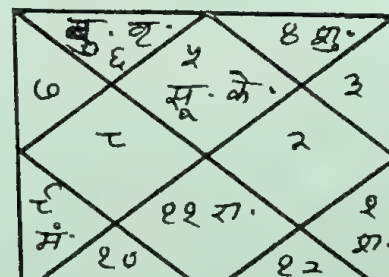
204e



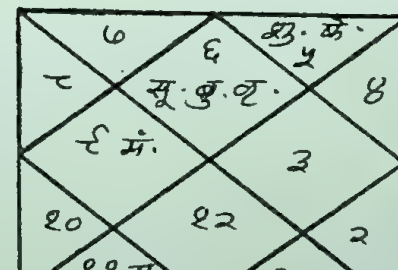
2042



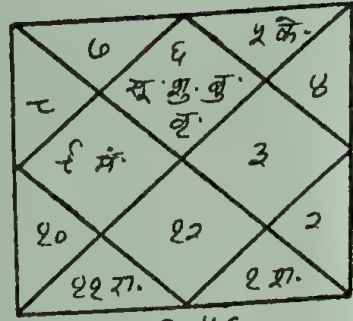
2043



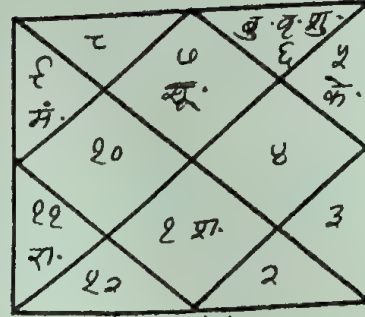
2046



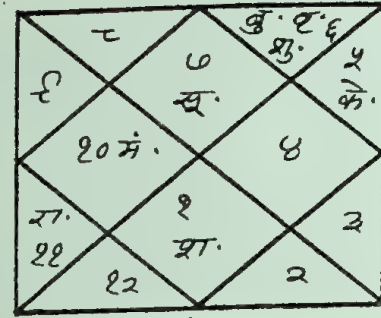
2044



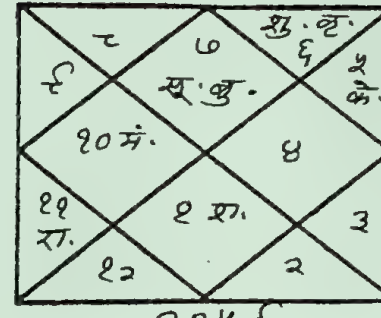
२०५६



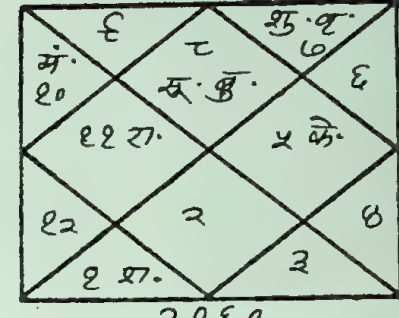
२०५७



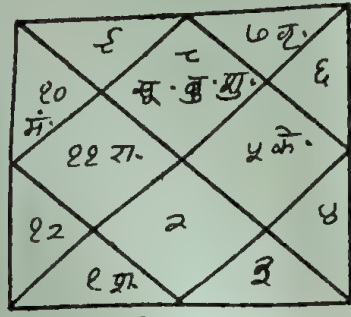
२०५८



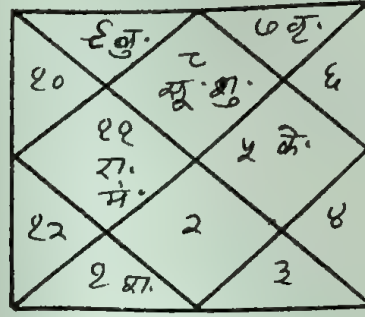
२०५९



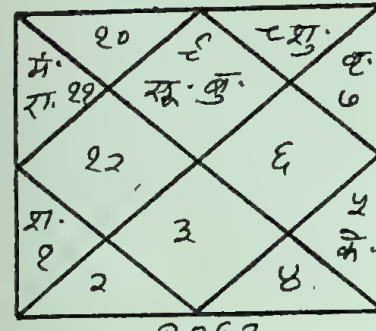
२०६०



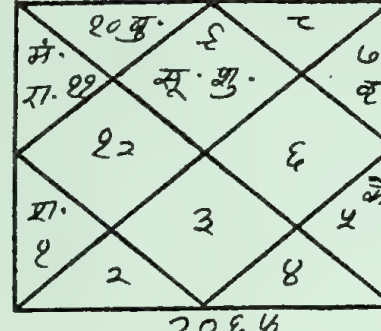
२०६१



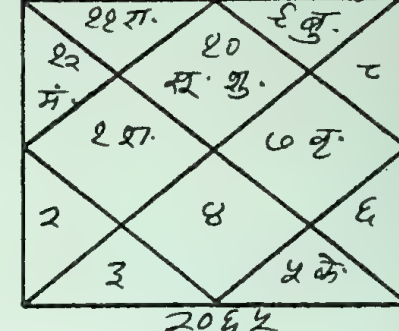
२०६२



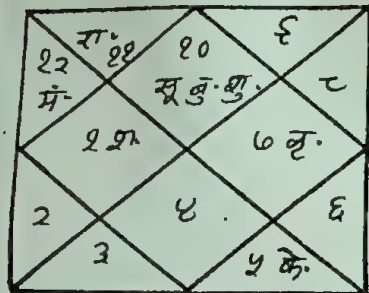
२०६३



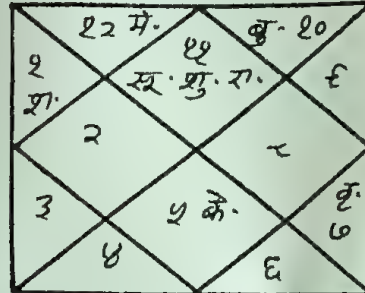
२०६४



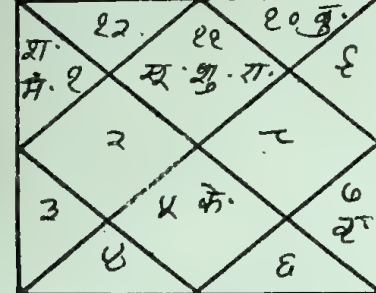
२०६५



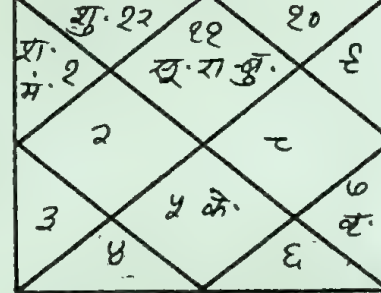
२०६६



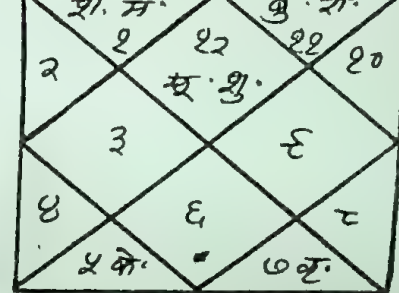
२०६७



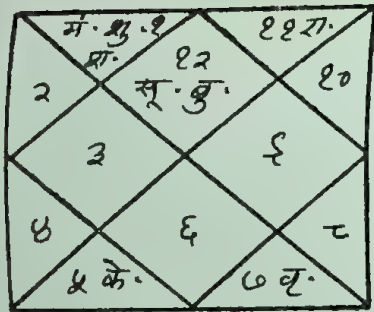
२०६८



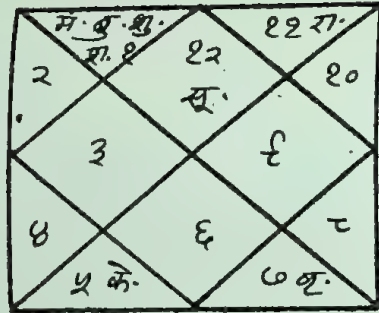
२०६९



२०७०



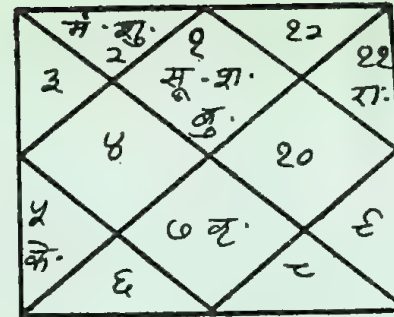
2062



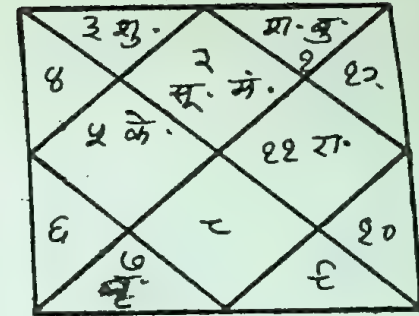
2062



2063



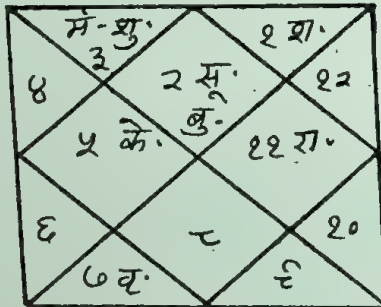
2068



2064



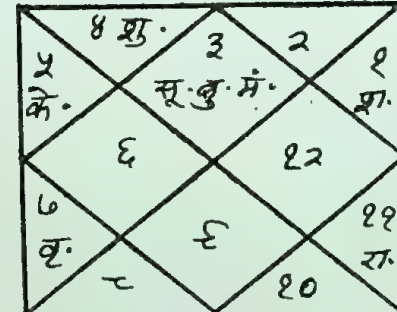
206E,



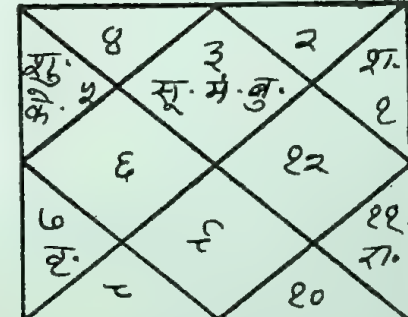
20660



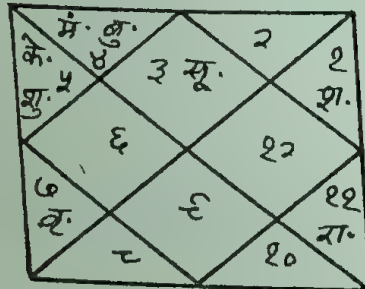
2062



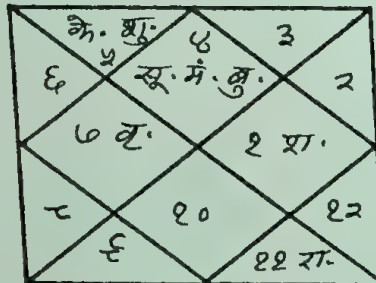
206f



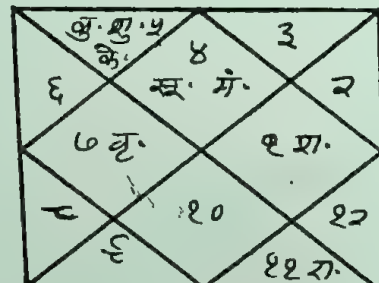
2070



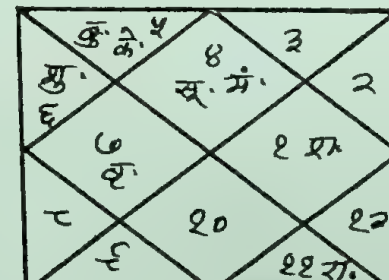
2079



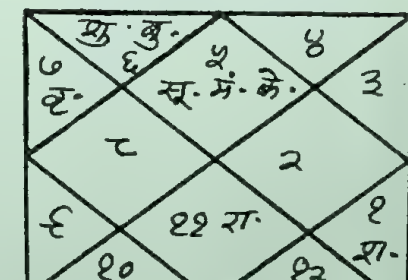
2022



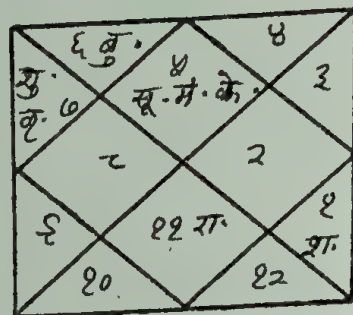
2023



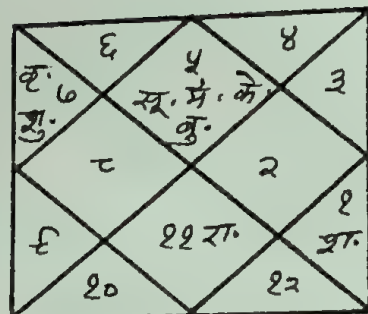
2028



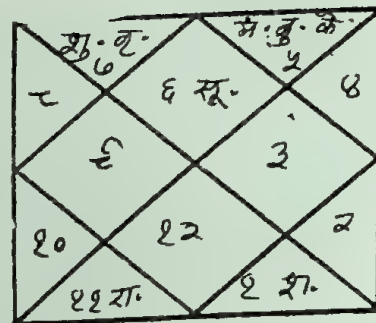
2022



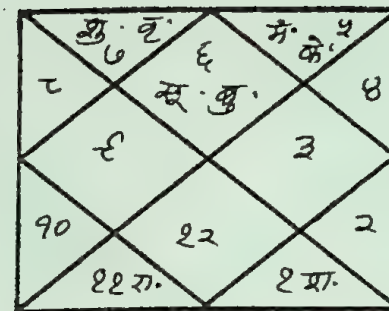
२०८६



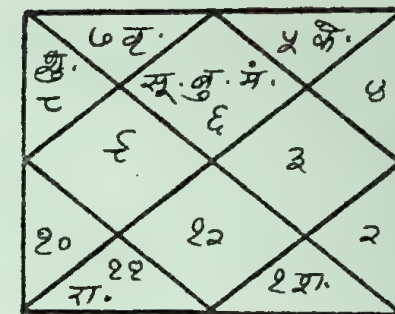
२०८७



२०८८



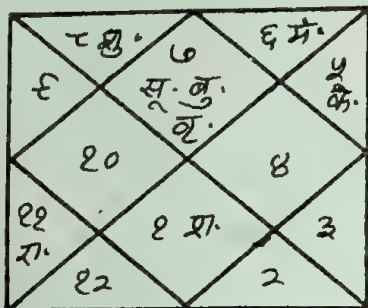
२०८९



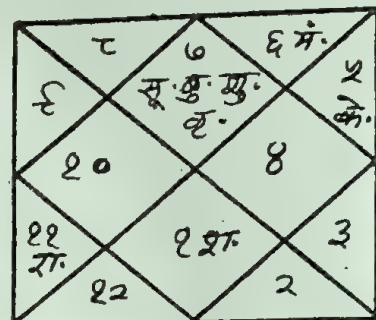
२०९०



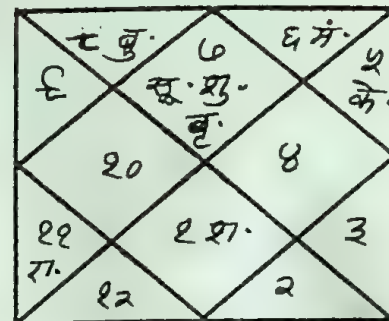
२०९१



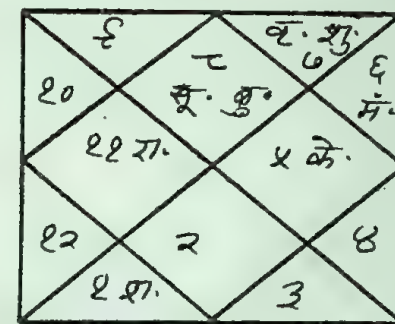
२०९२



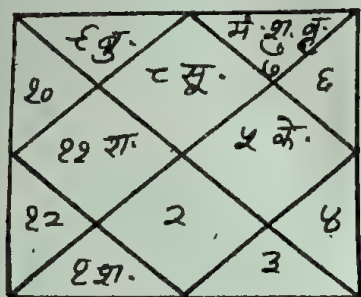
२०९३



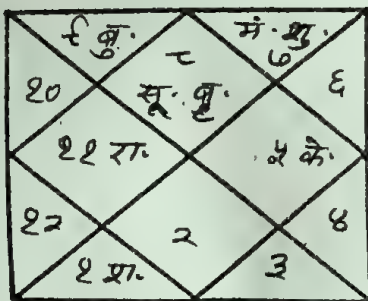
२०९४



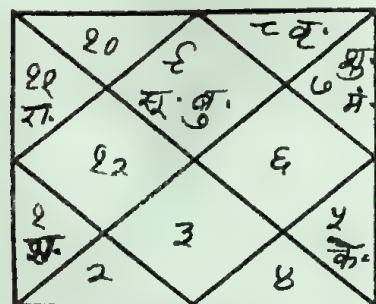
२०९५



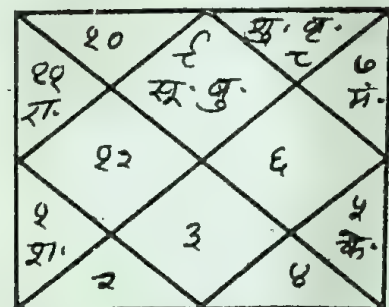
२०९६



२०९७



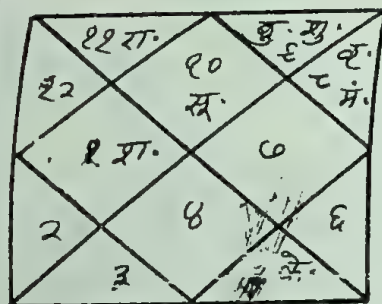
२०९८



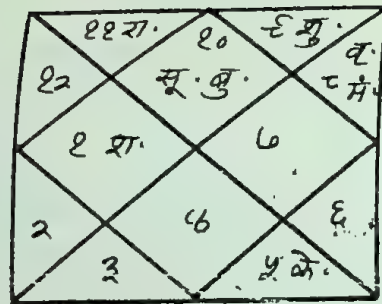
२०९९



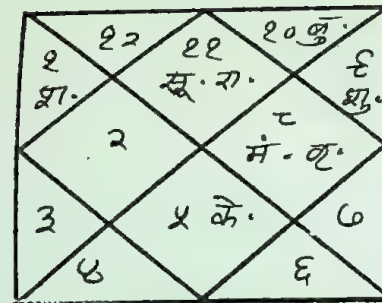
२१००



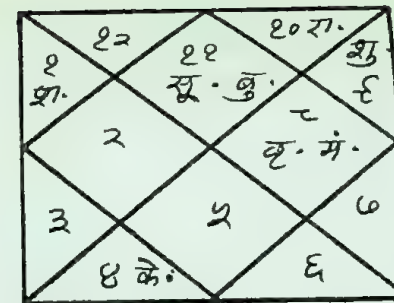
२८०१



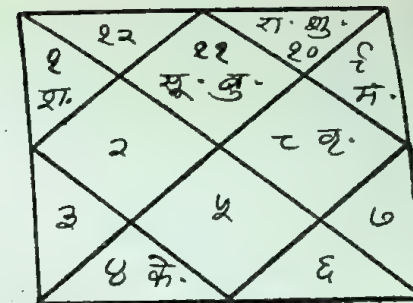
२८०२



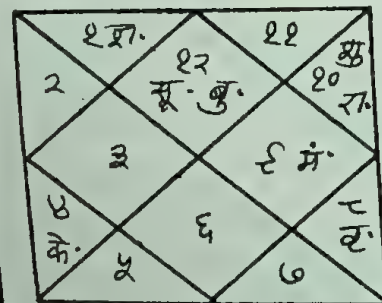
२८०३



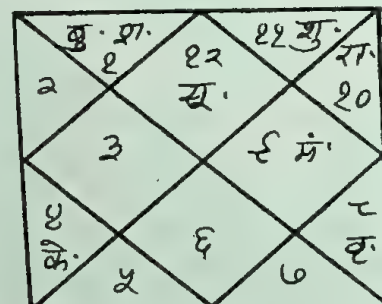
२९०४



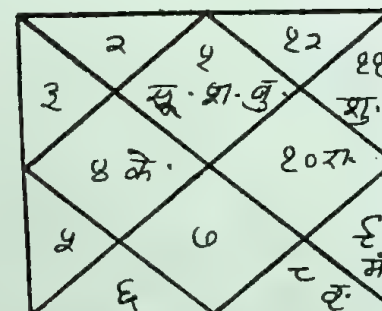
२९०५



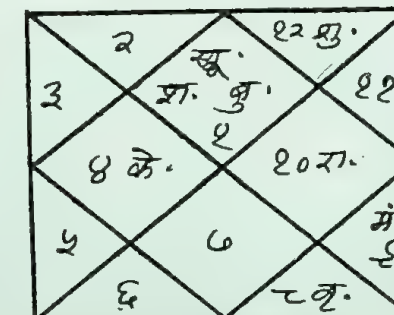
२९०६



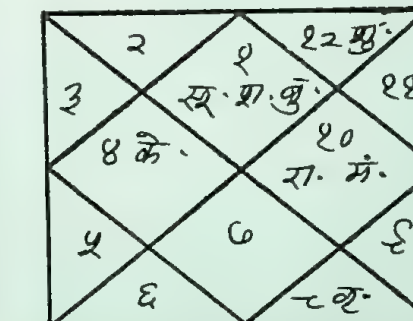
२९०७



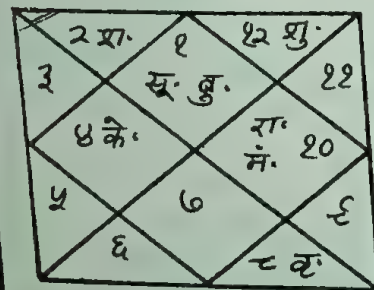
२९०८



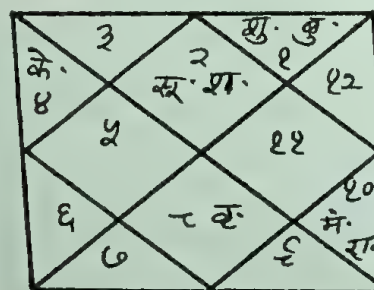
२९०९



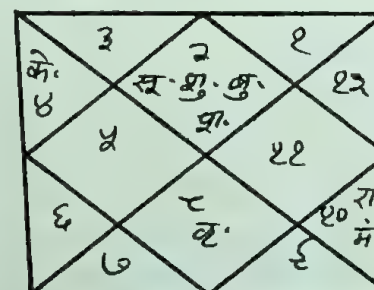
२९१०



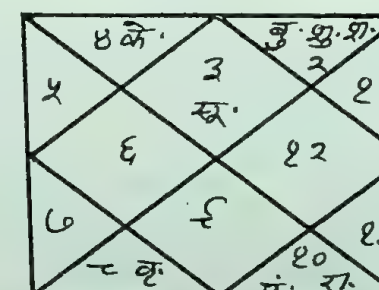
२९११



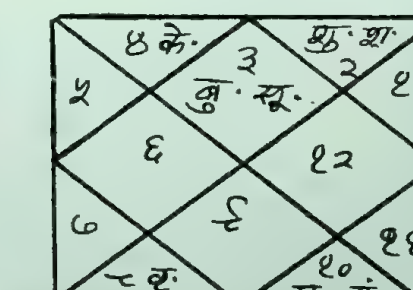
२९१२



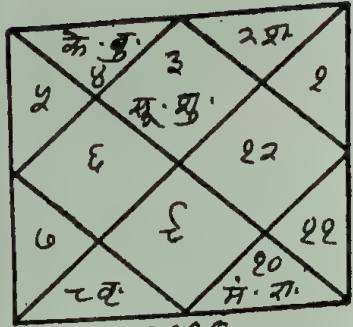
२९१३



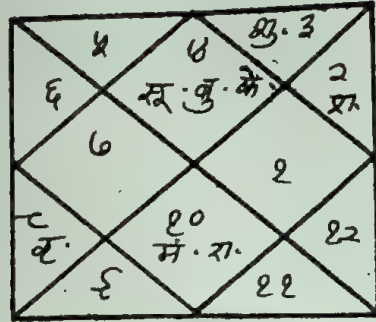
२९१४



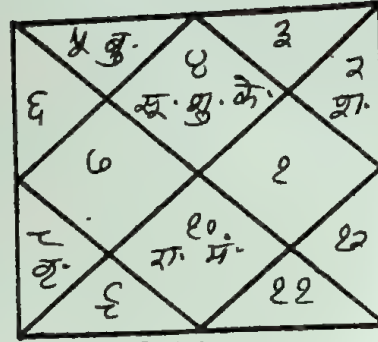
२९१५



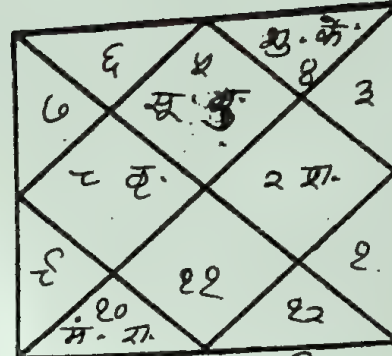
२११६



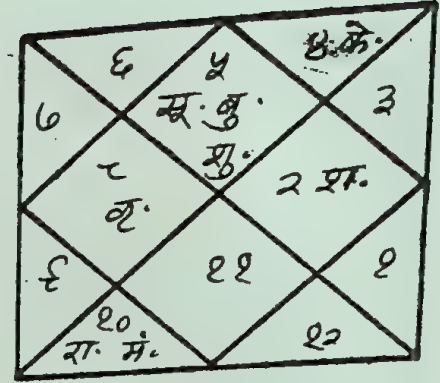
२११७



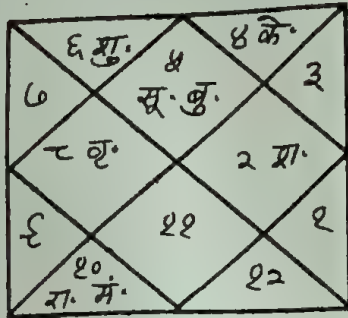
२११८



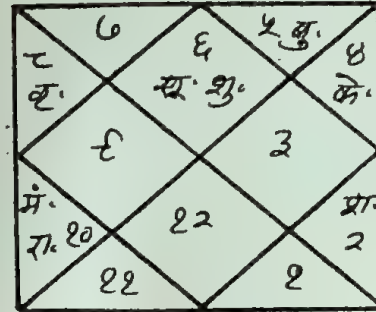
२११९



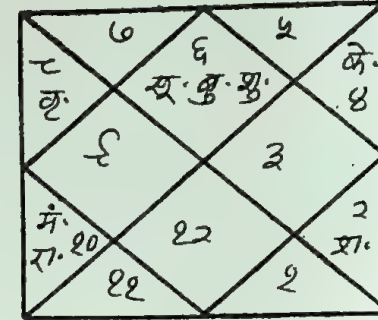
२१२०



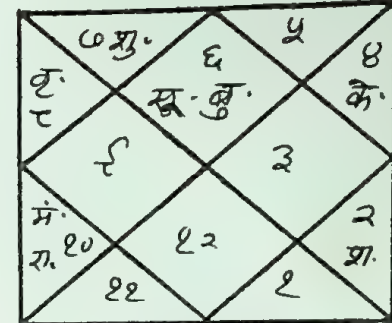
२१२१



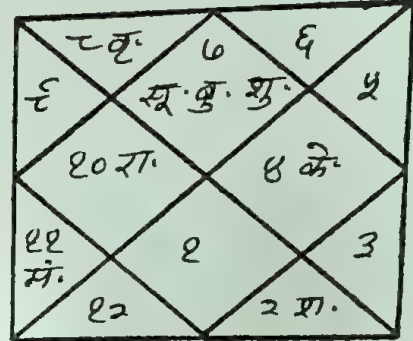
२१२२



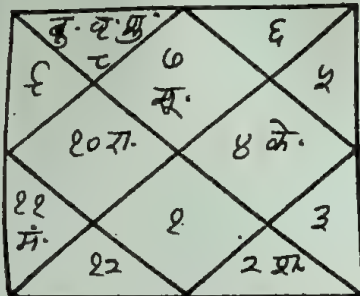
२१२३



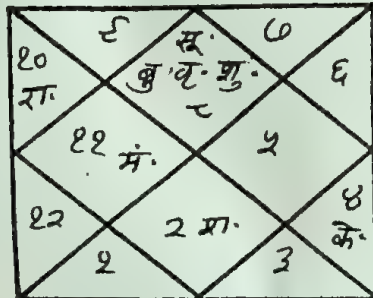
२१२४



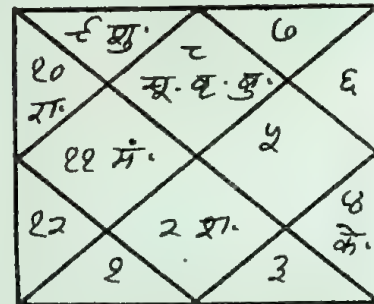
२१२५



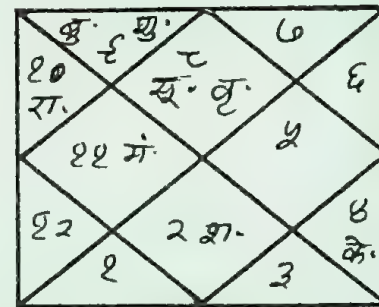
२१२६



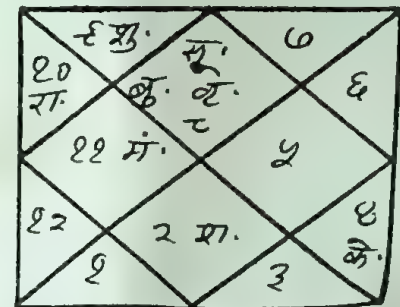
२१२७



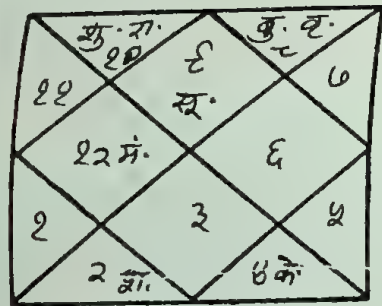
२१२८



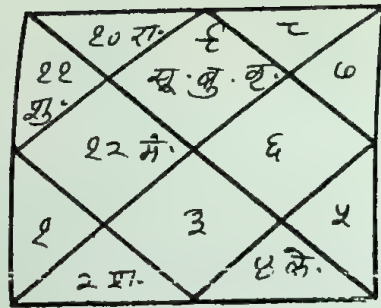
२१२९



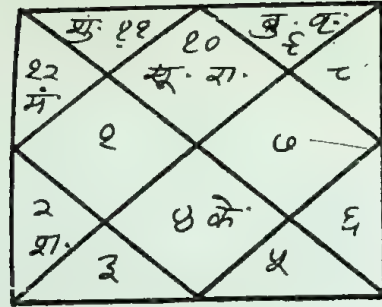
२१३०



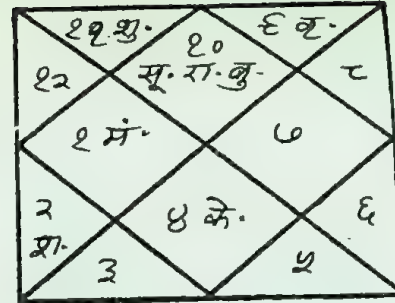
੨੨੩੨



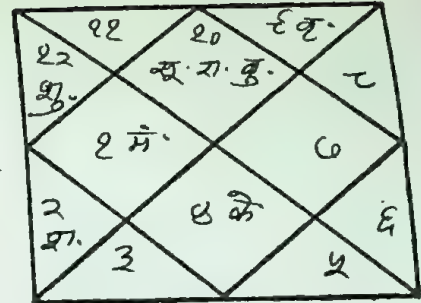
੨੨੩੨



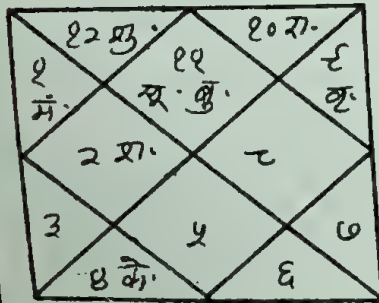
੨੨੩੩



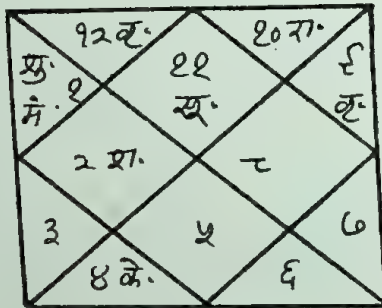
੨੨੩੪



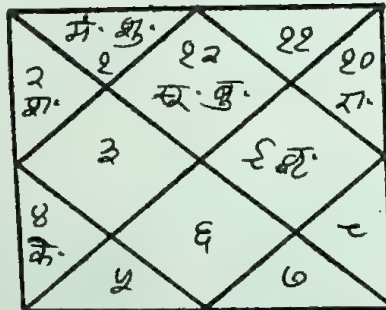
੨੨੩੫



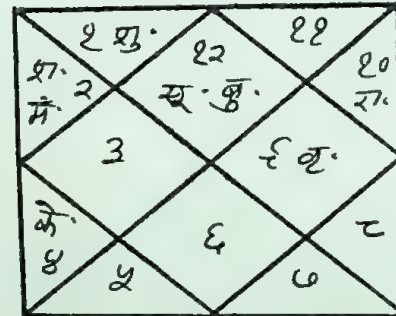
੨੨੩੬



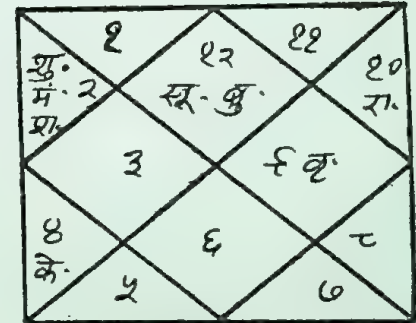
੨੨੩੭



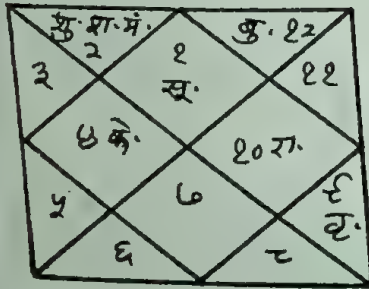
੨੨੩੮



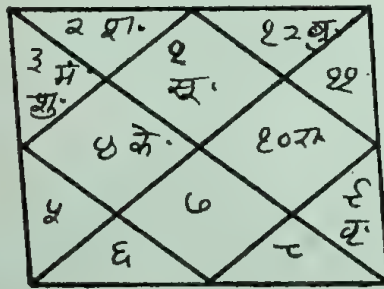
੨੨੩੯



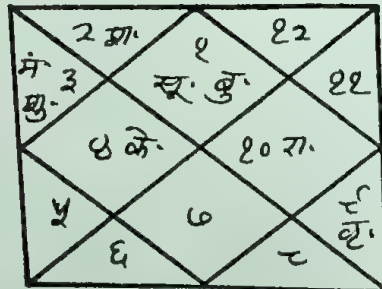
੨੨੪੦



੨੨੪੧



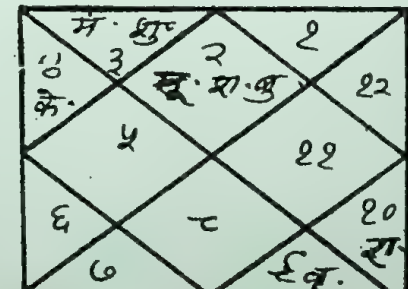
੨੨੪੨



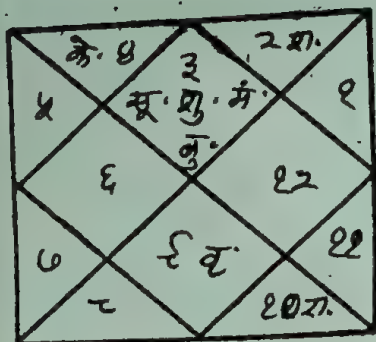
੨੨੪੩



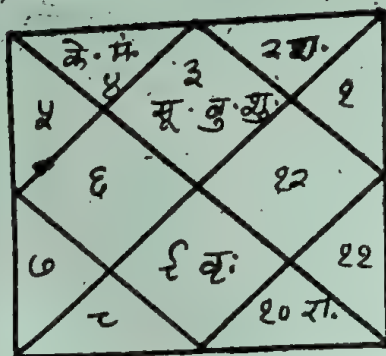
੨੨੪੪



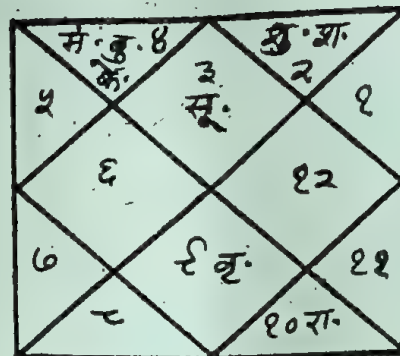
੨੨੪੫



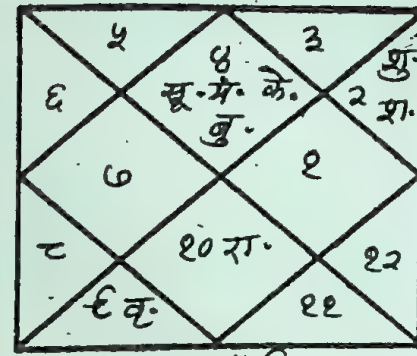
२१४६



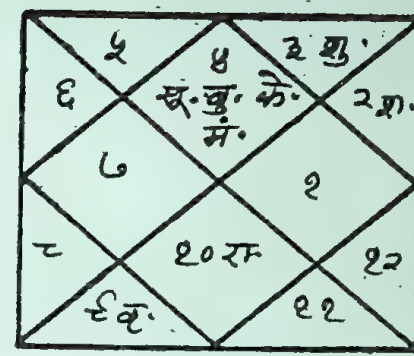
२१४६



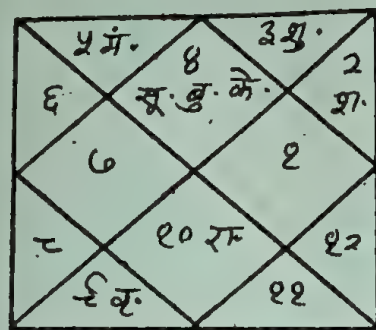
२१४८



२१४९



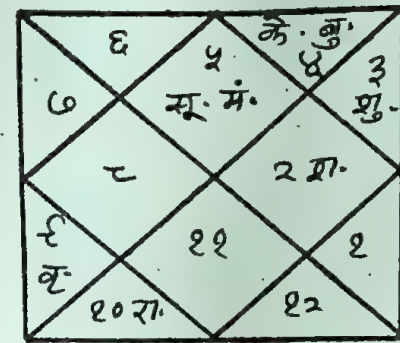
२१५०



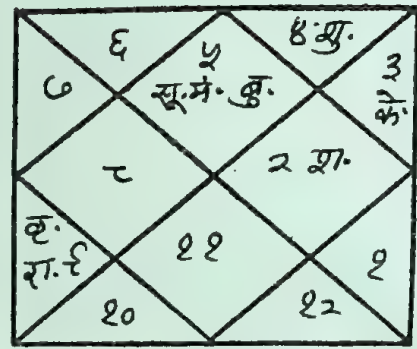
२१५१



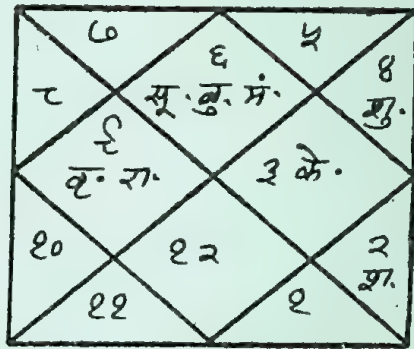
२१५२



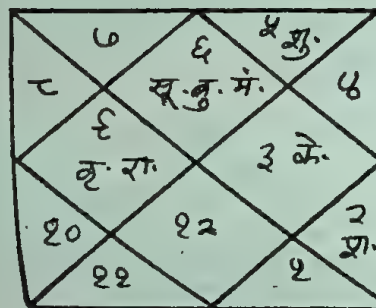
२१५३



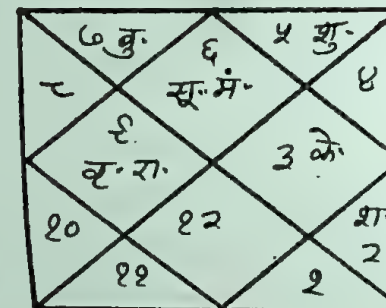
२१५४



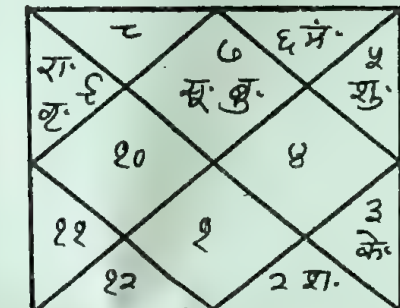
२१५५



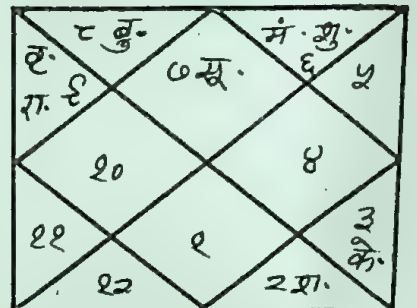
२१५६



२१५७



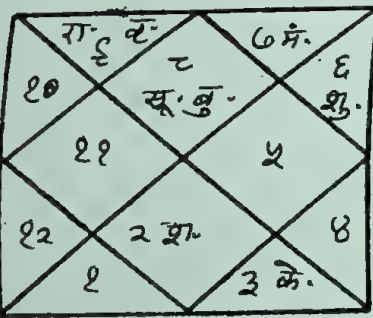
२१५८



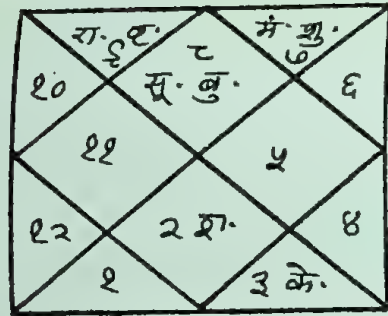
२१५९



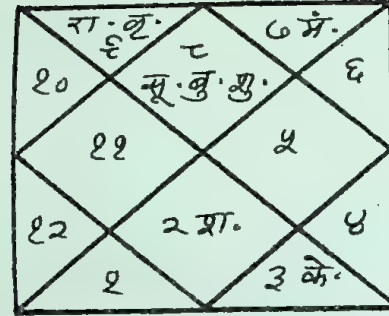
२१६०



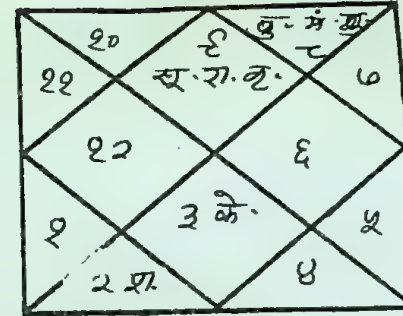
२२६१



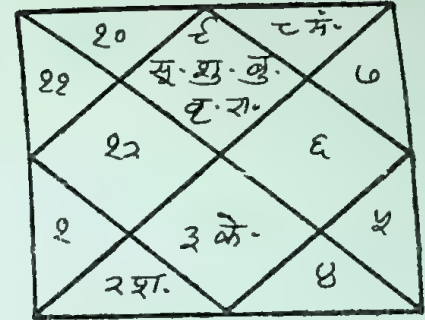
२२६२



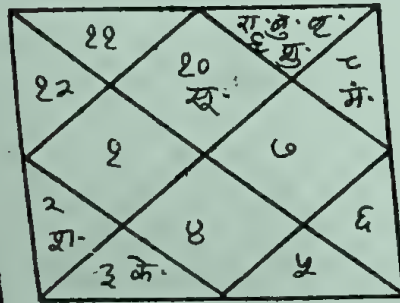
२२६३



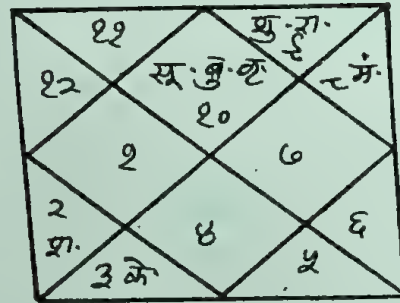
२२६४



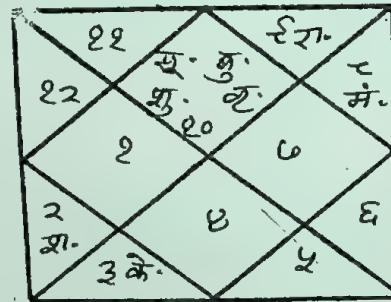
२२६५



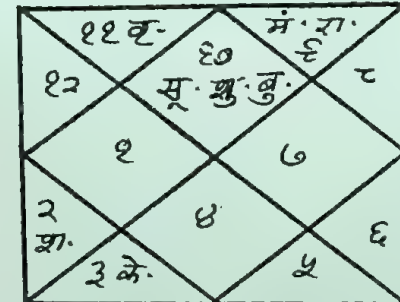
२२६६



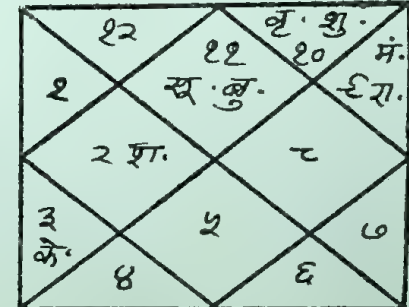
२२६७



२२६८



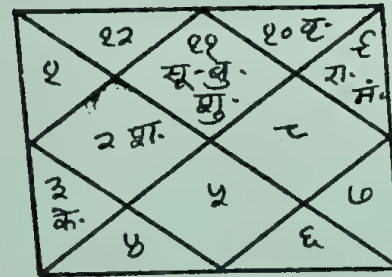
२२६९



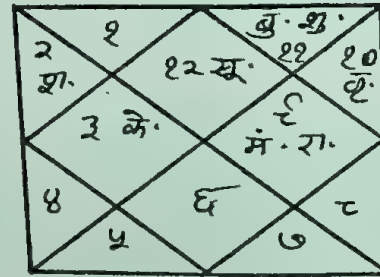
२२७०



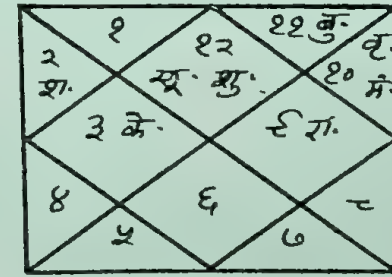
२२७१



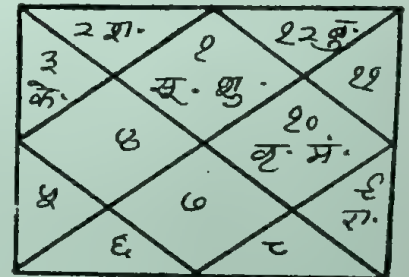
२२७२



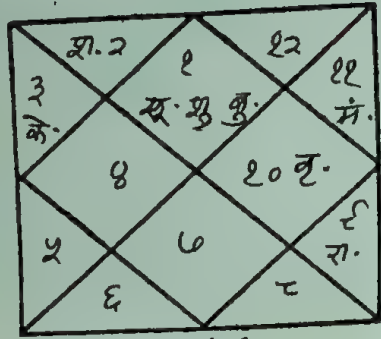
२२७३



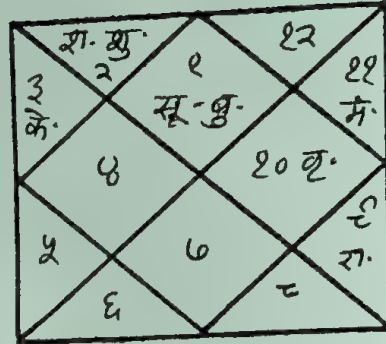
२२७४



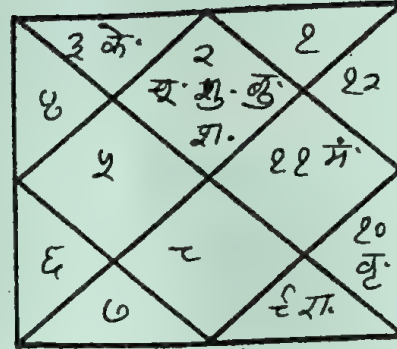
२२७५



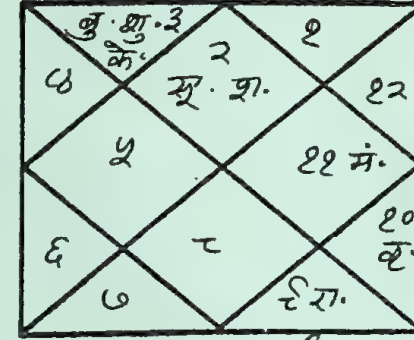
२१०६



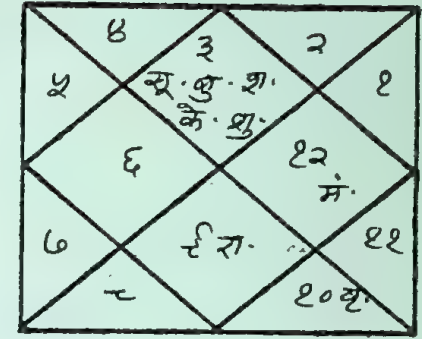
२१०७



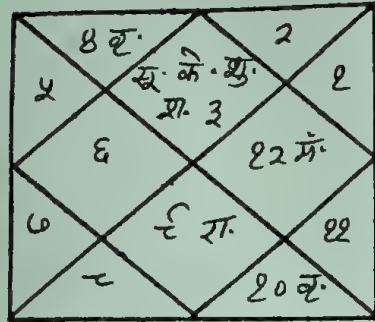
२१०८



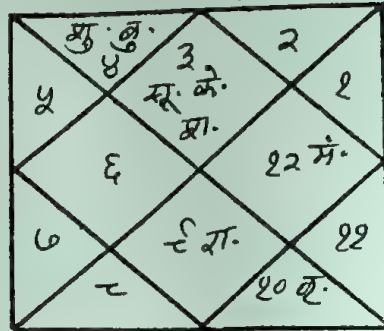
२१०९



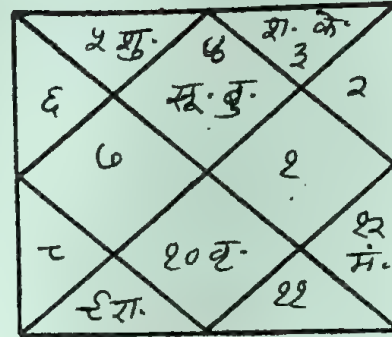
२११०



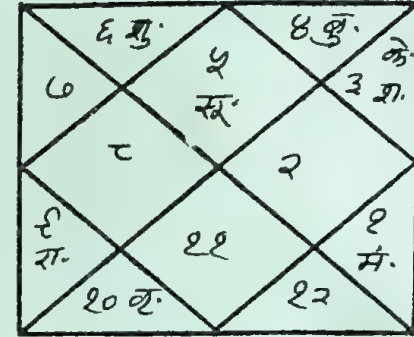
२१११



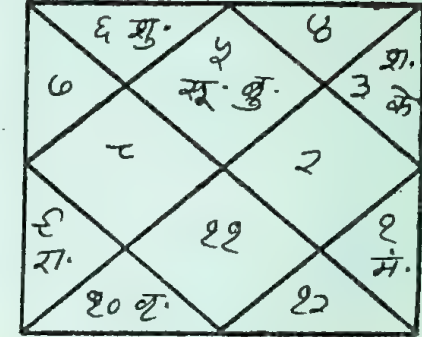
२११२



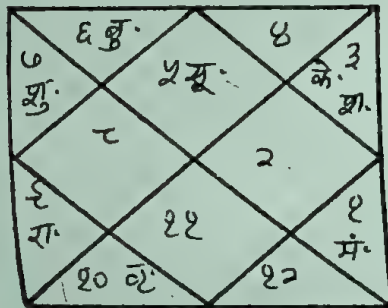
२११३



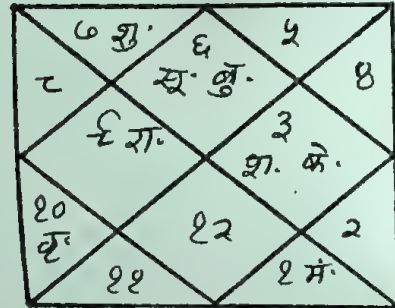
२११४



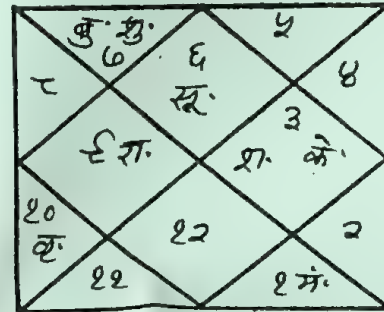
२११५



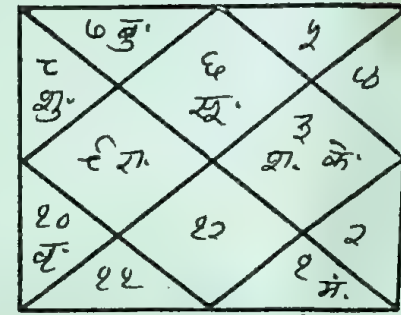
२११६



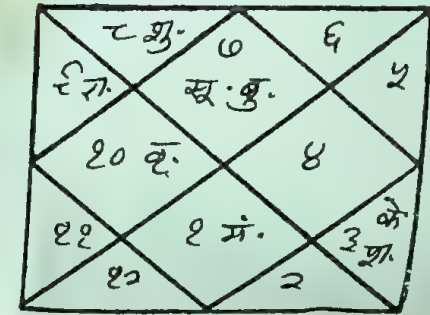
२११७



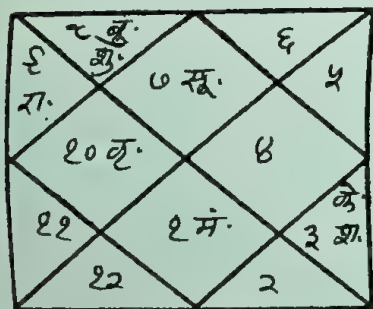
२११८



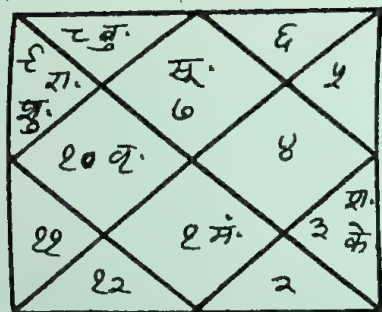
२११९



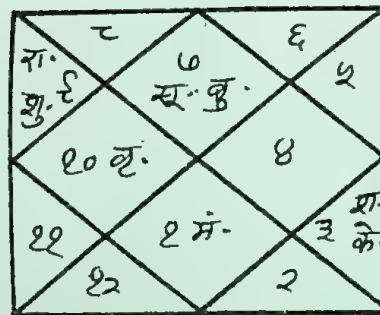
२१२०



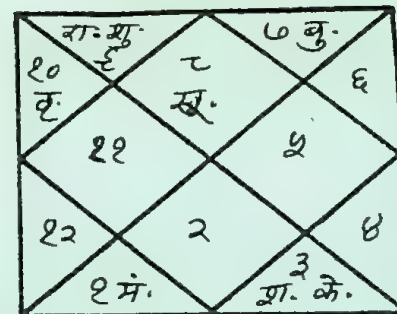
२१८१



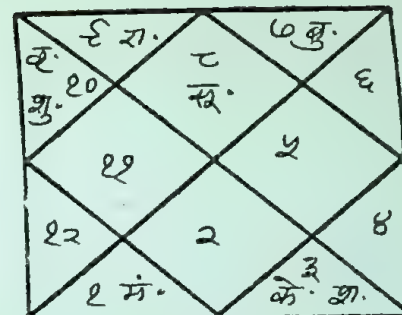
२१८२



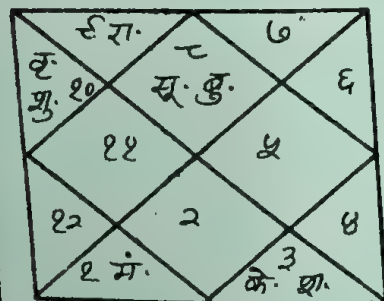
२१८३



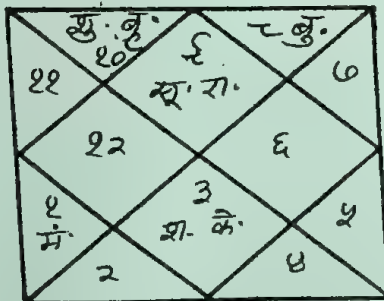
२१८४



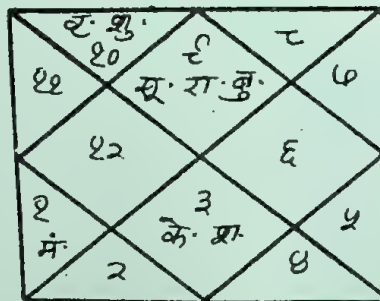
२१८५



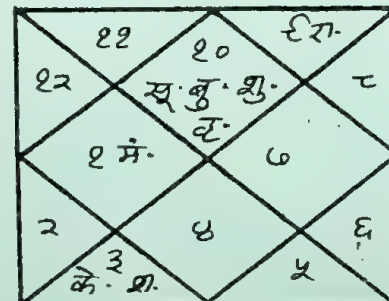
२१८६



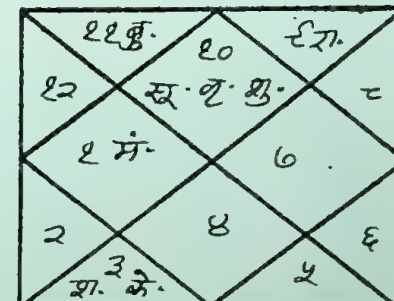
२१८७



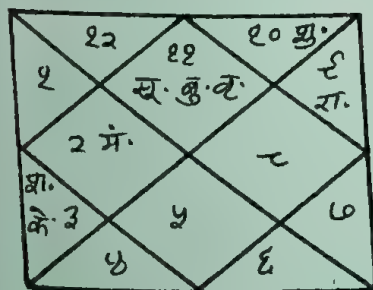
२१८८



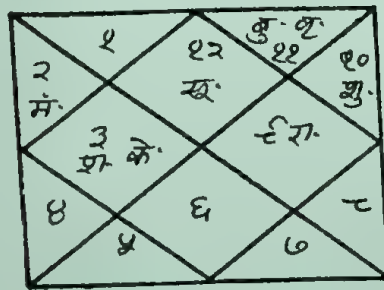
२१८९



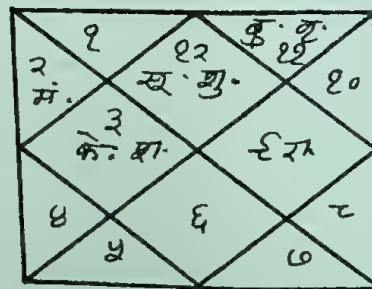
२२००



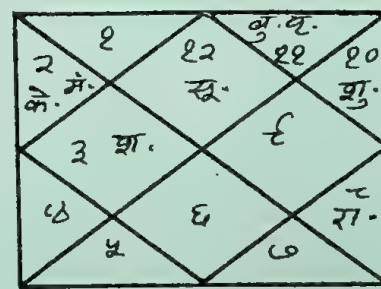
२२०१



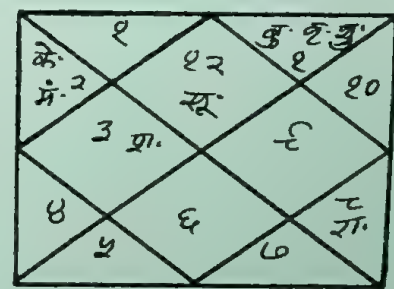
२२०२



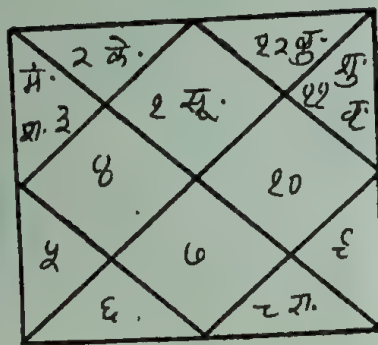
२२०३



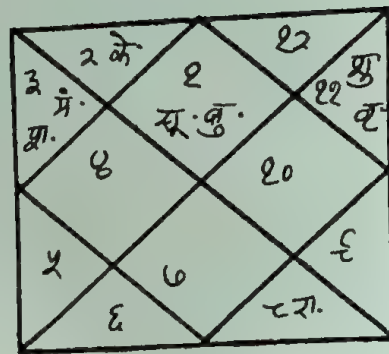
२२०४



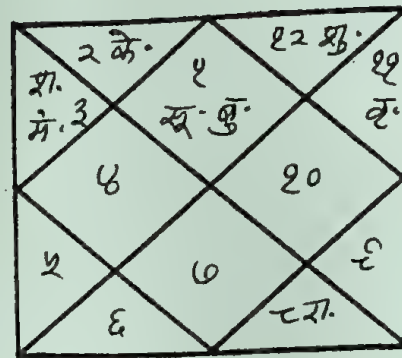
२२०५



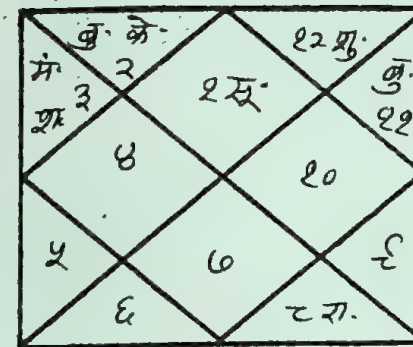
२२०६



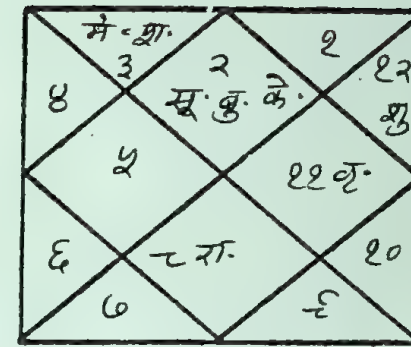
२२०७



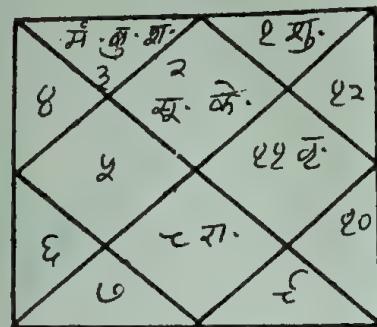
२२०८



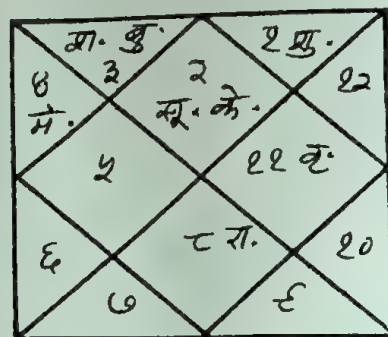
२२०९



२२१०



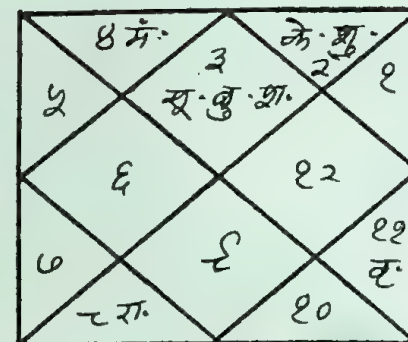
२२११



२२१२



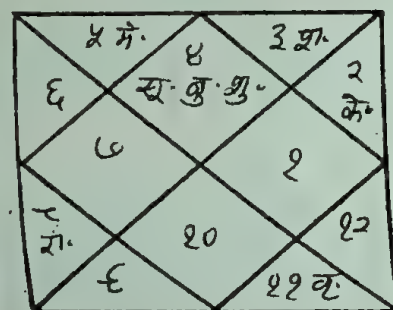
२२१३



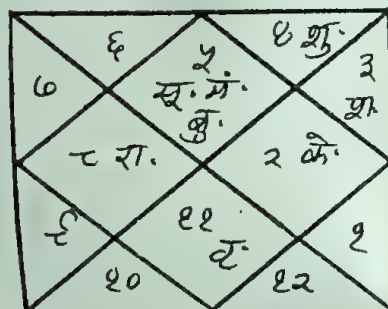
२२१४



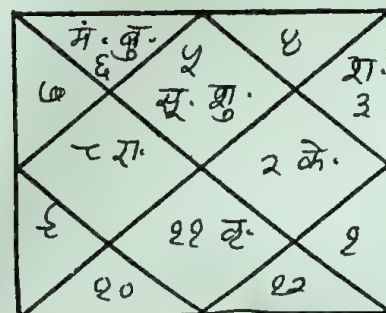
२२१५



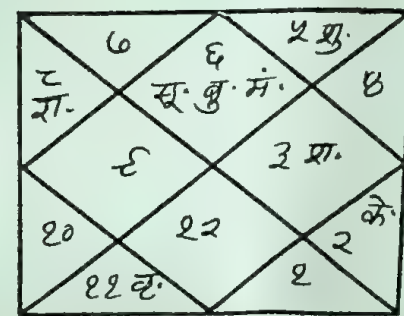
२२१६



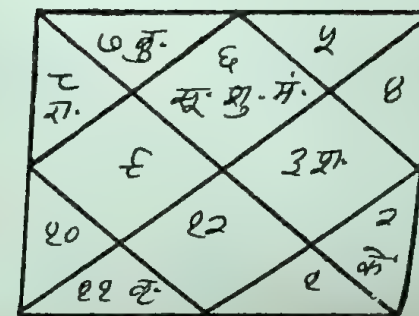
२२१७



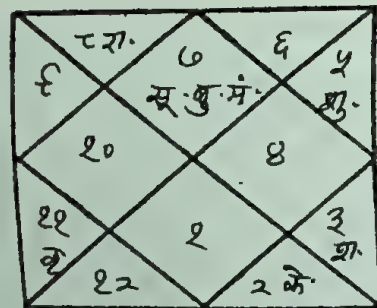
२२१८



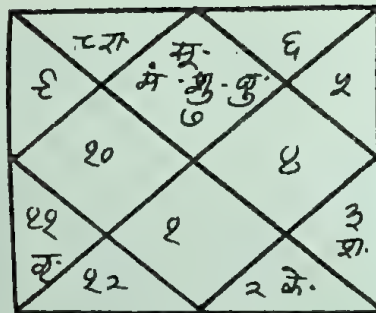
२२१९



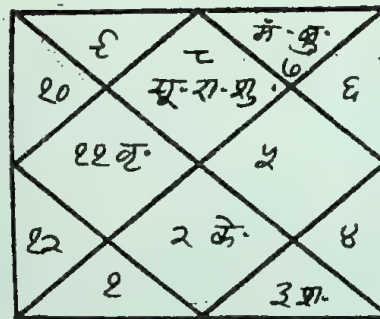
२२२०



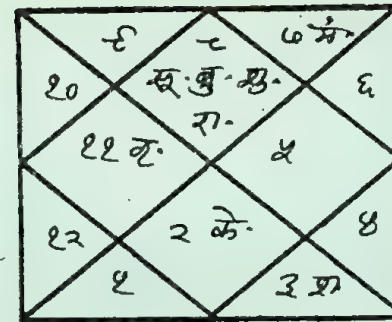
२२२१



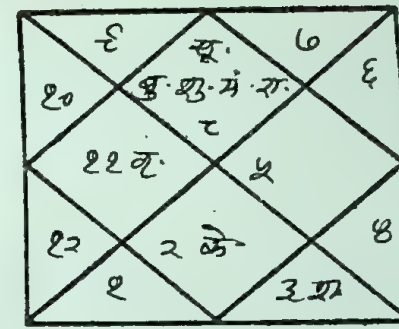
२२२२



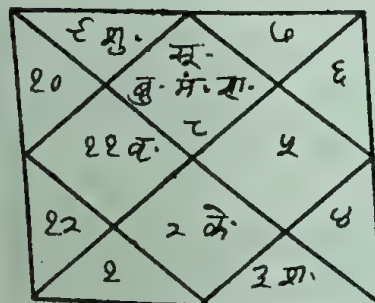
२२२३



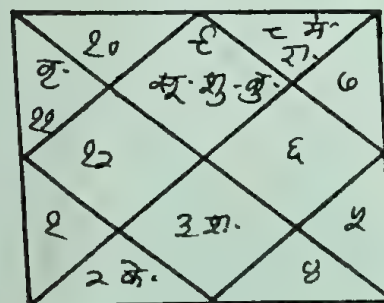
२२२४



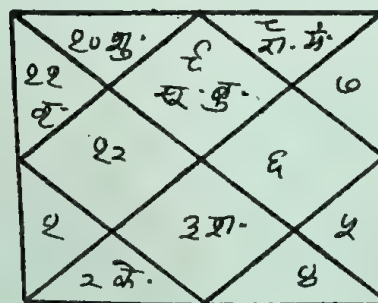
२२२५



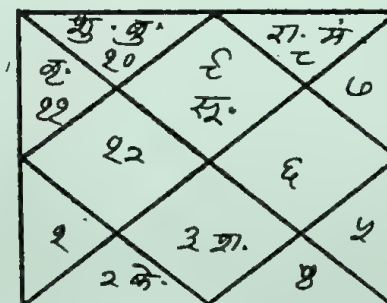
२२२६



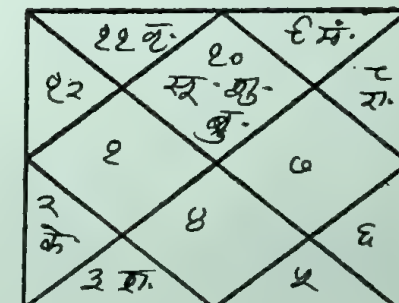
२२२७



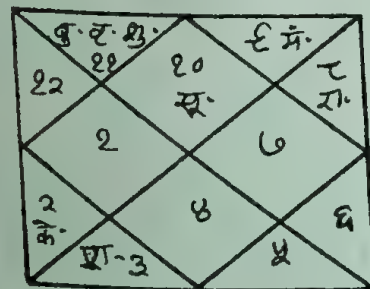
२२२८



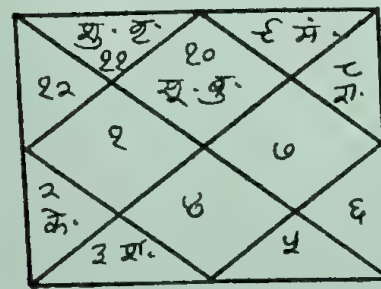
२२२९



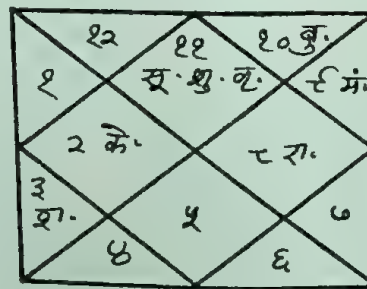
२२३०



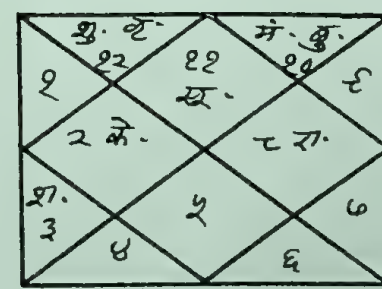
२२३१



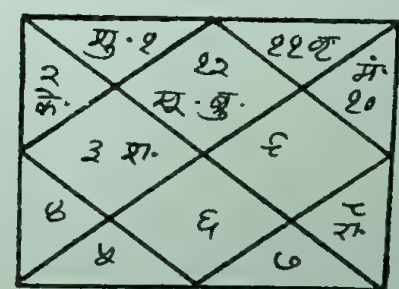
२२३२



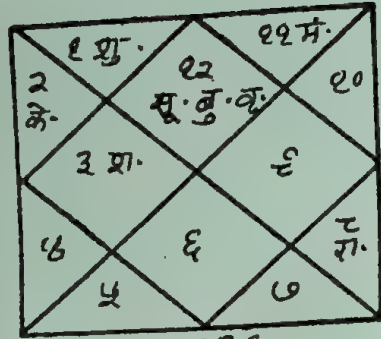
२२३३



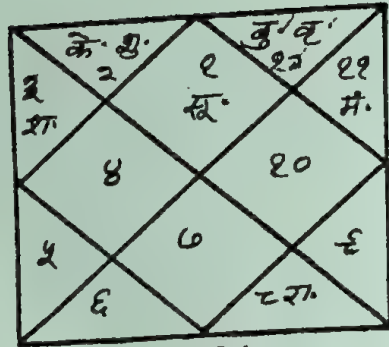
२२३४



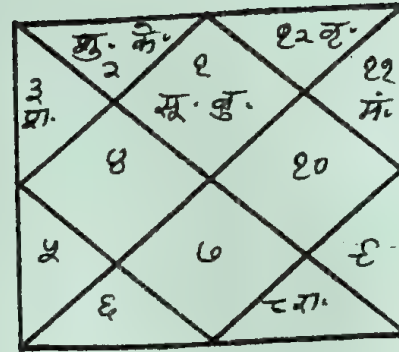
२२३५



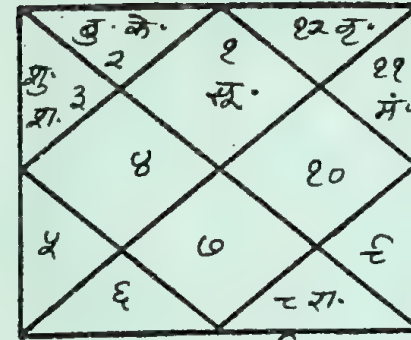
२२३६



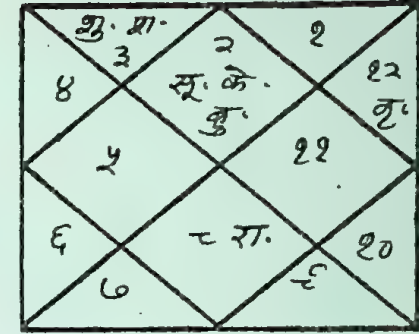
२२३७



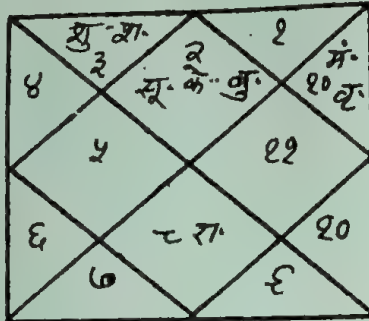
२२३८



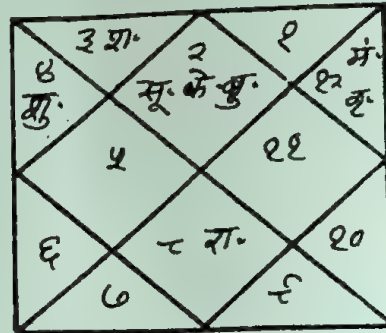
२२३९



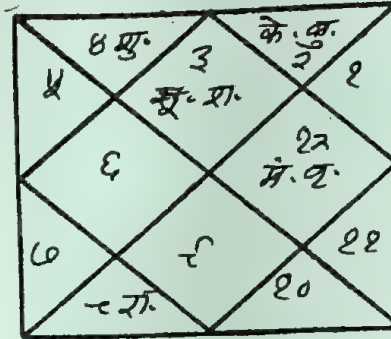
२२४०



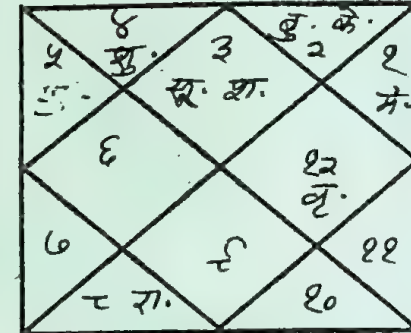
२२४१



२२४२



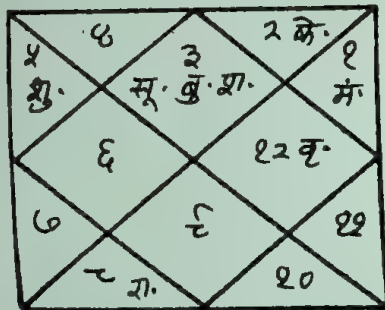
२२४३



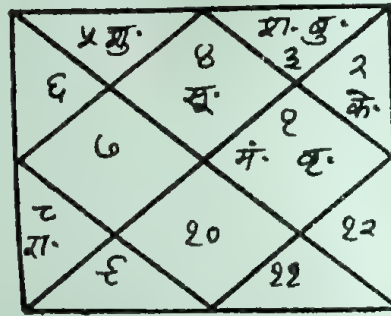
२२४४



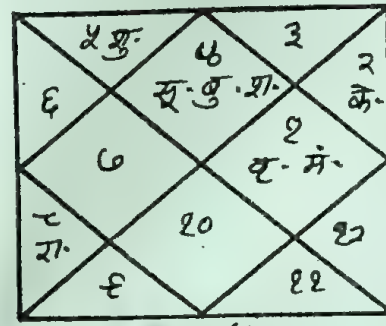
२२४५



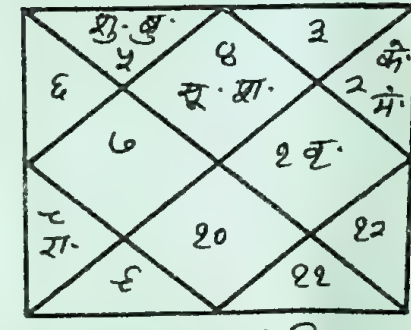
२२४६



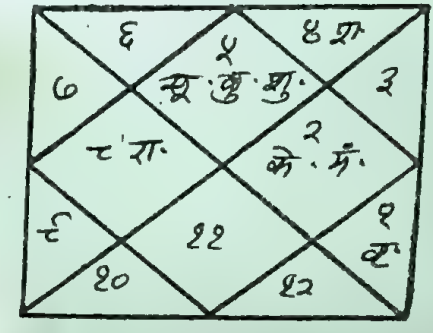
२२४७



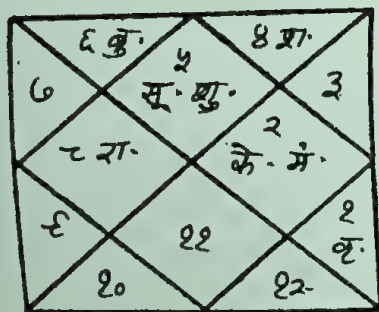
२२४८



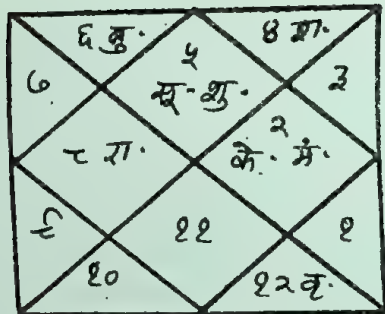
२२४९



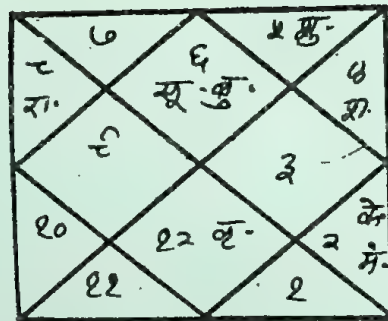
२२५०



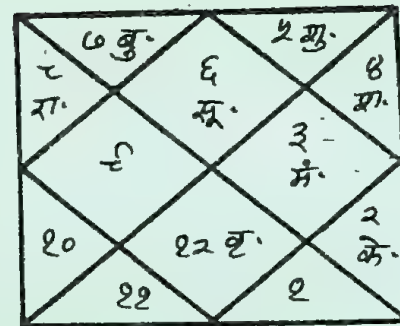
२२५१



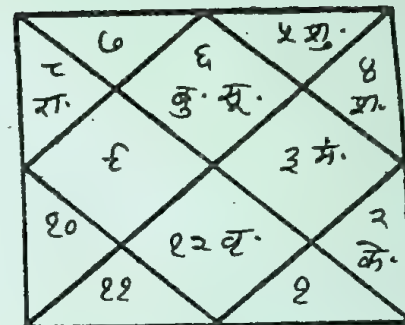
२२५२



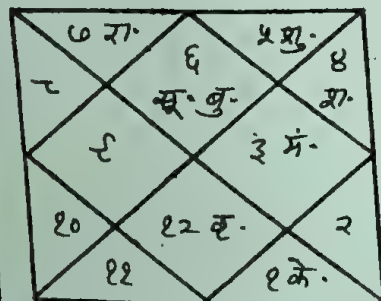
२२५३



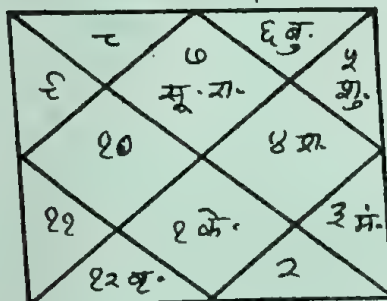
२२५४



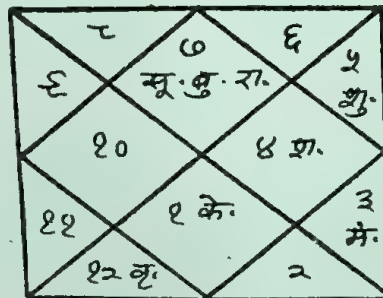
२२५५



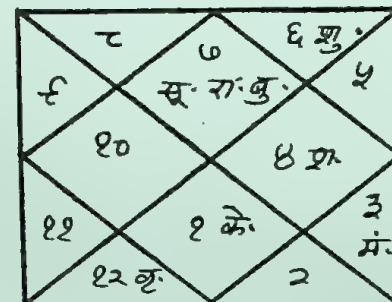
२२५६



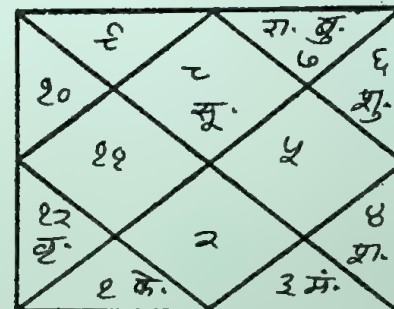
२२५७



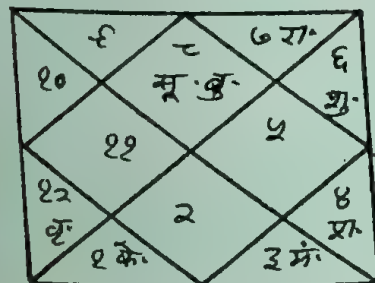
२२५८



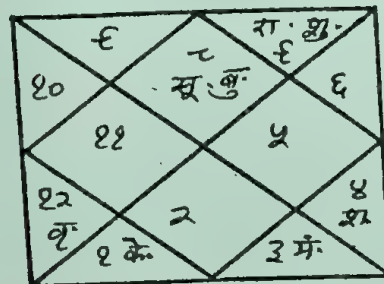
२२५९



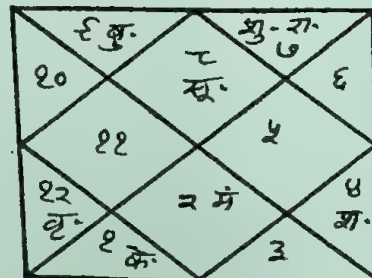
२२६०



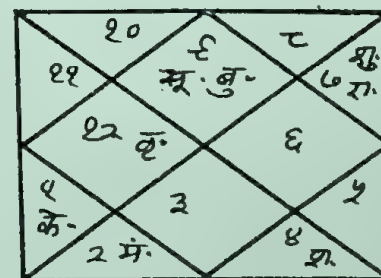
२२६१



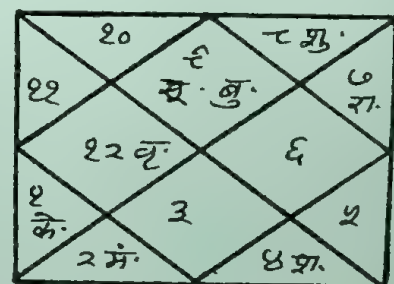
२२६२



२२६३



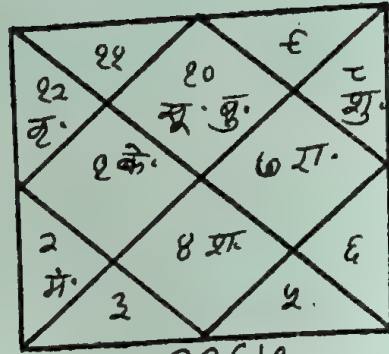
२२६४



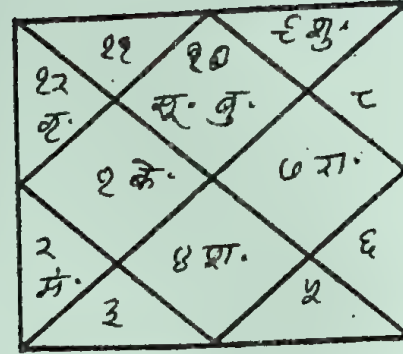
२२६५



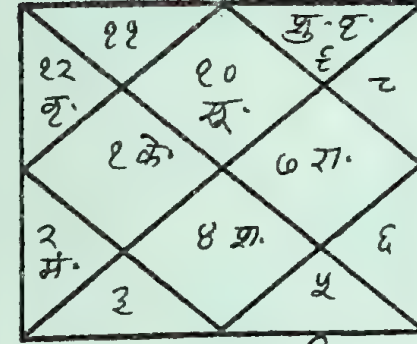
૨૨૬૬



૨૨૬૭



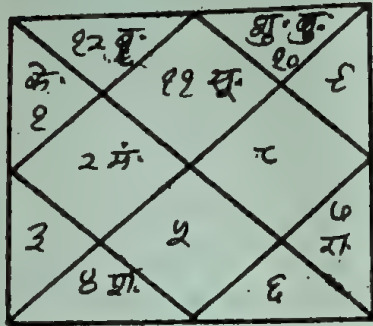
૨૨૬૮



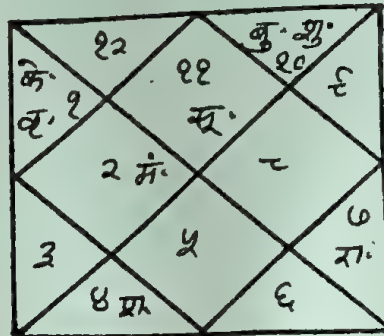
૨૨૬૯



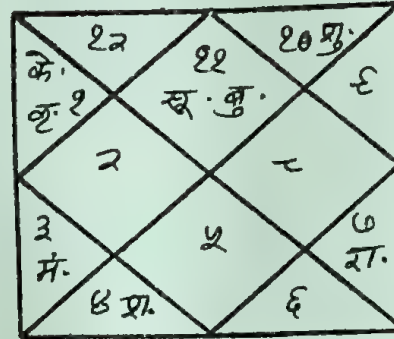
૨૨૭૦



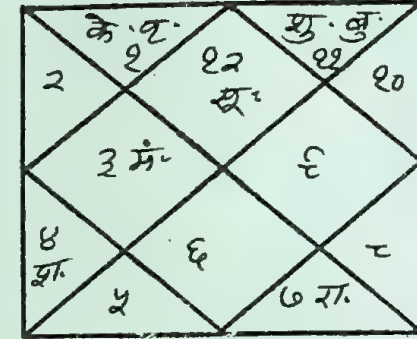
૨૨૭૧



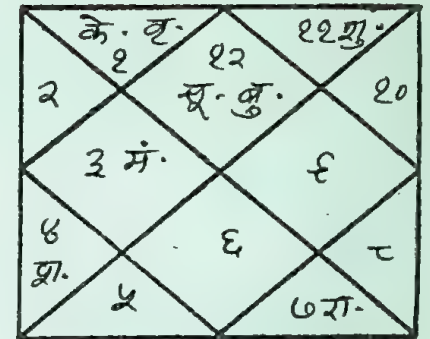
૨૨૭૨



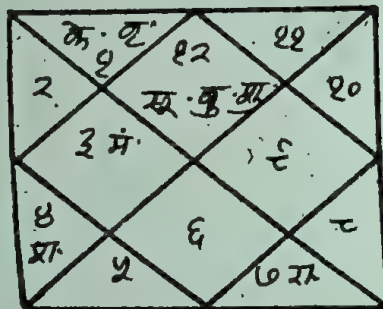
૨૨૭૩



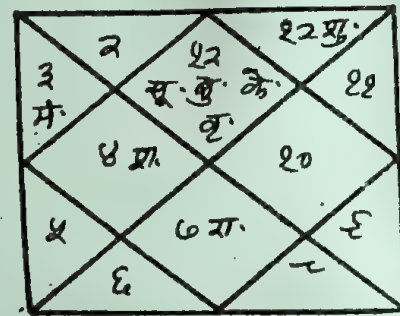
૨૨૭૪



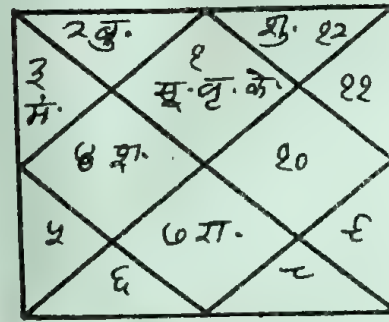
૨૨૭૫



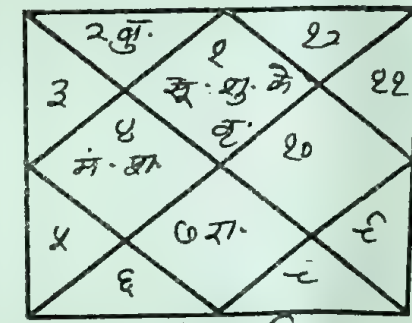
૨૨૭૬



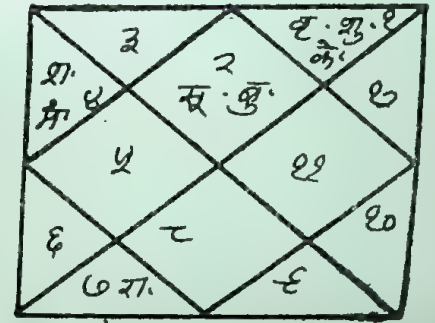
૨૨૭૭



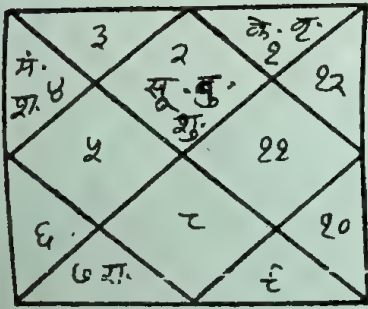
૨૨૭૮



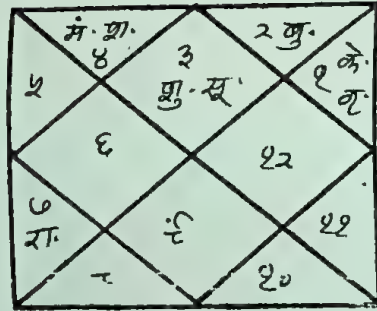
૨૨૭૯



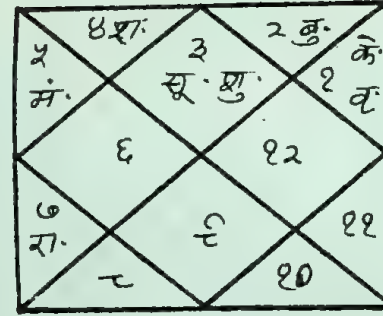
૨૨૮૦



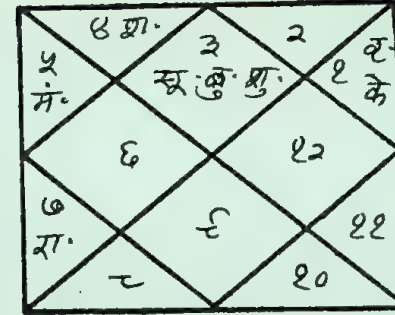
२२८१



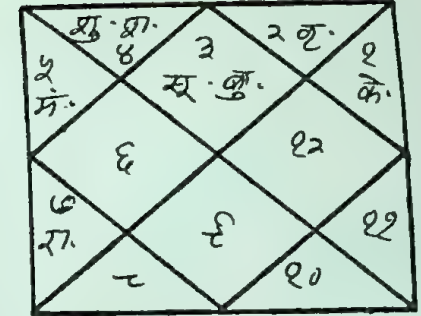
२२८२



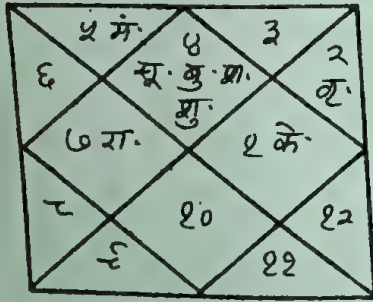
२२८३



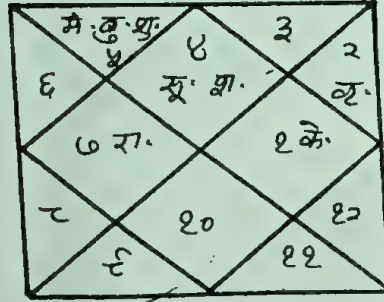
२२८४



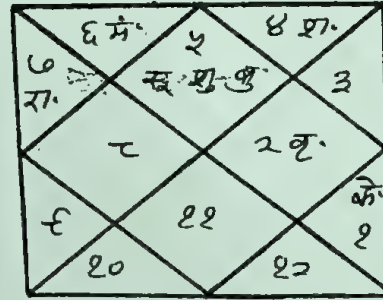
२२८५



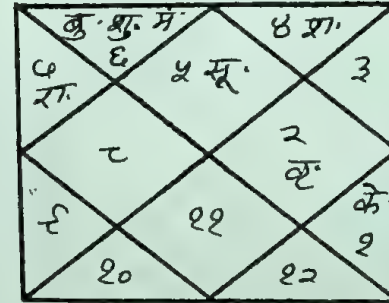
२२८६



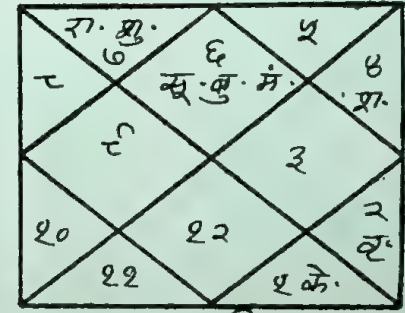
२२८७



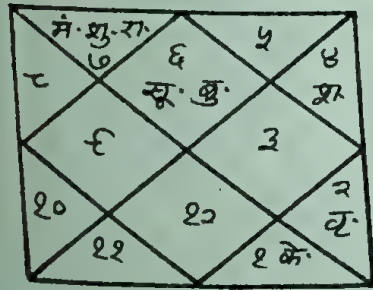
२२८८



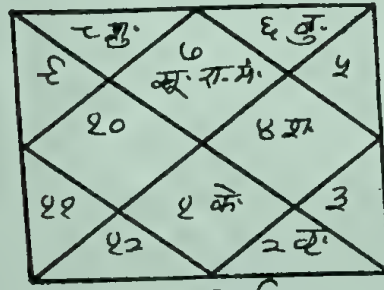
२२८९



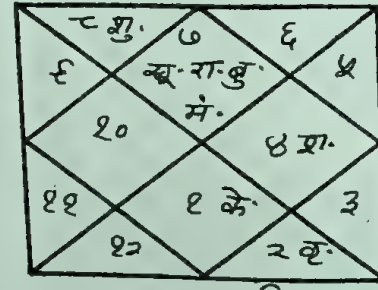
२२९०



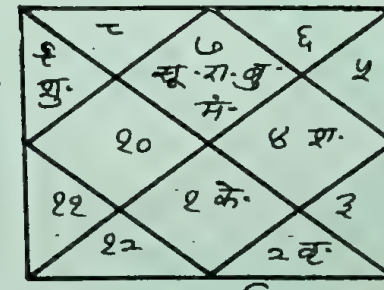
२२९१



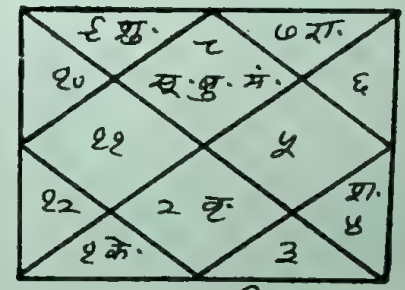
२२९२



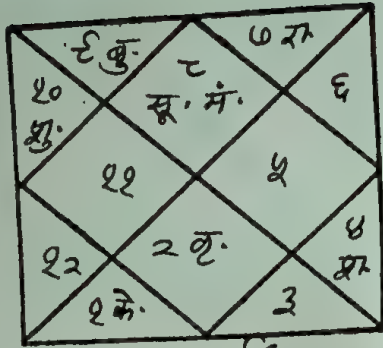
२२९३



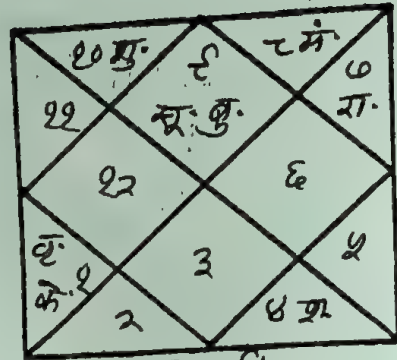
२२९४



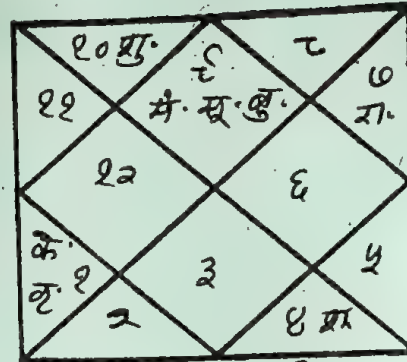
२२९५



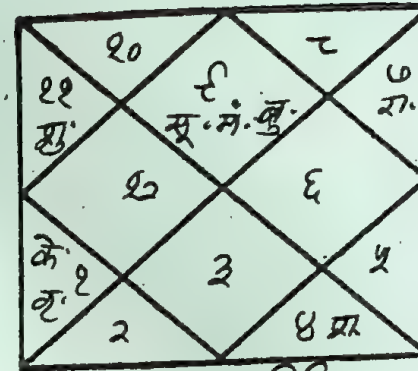
२२८६



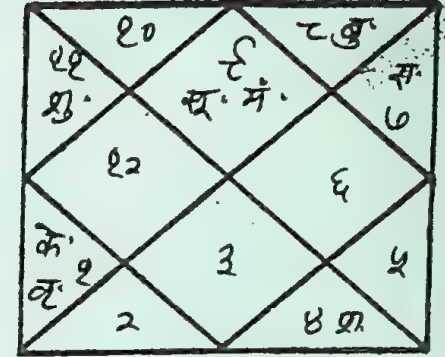
२२८७



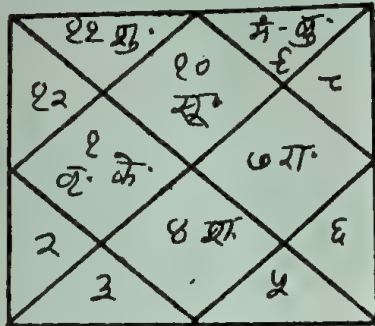
२२८८



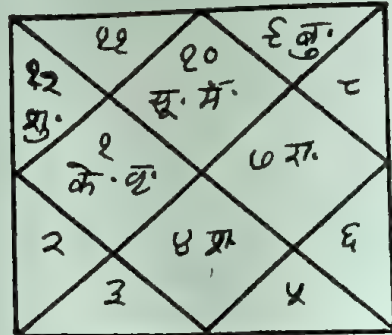
२२८९



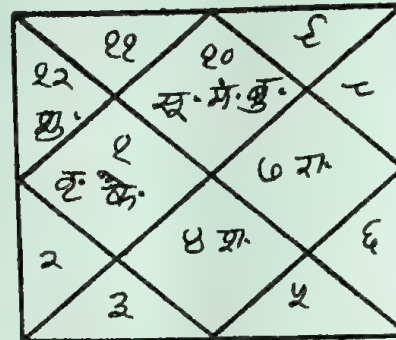
२३००



२३०१



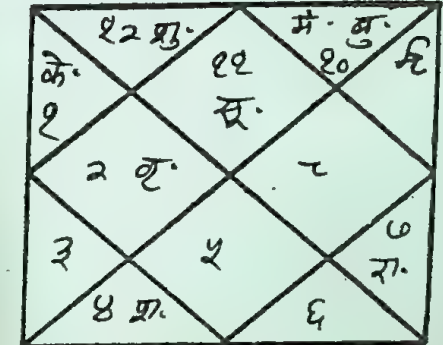
२३०२



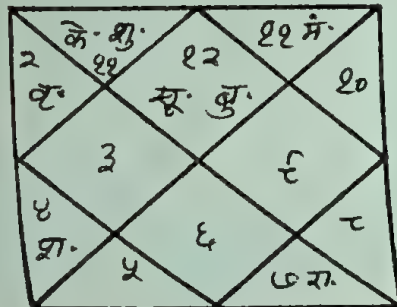
२३०३



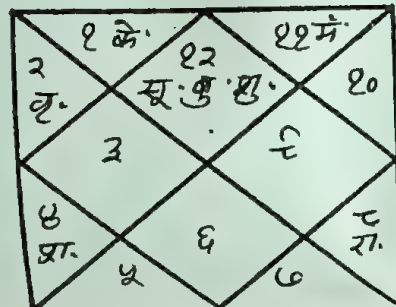
२३०४



२३०५



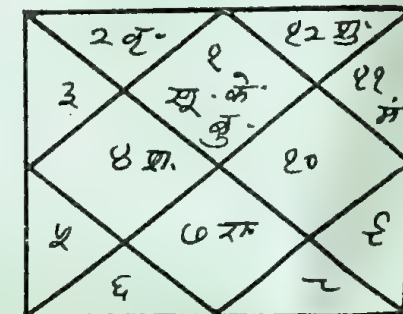
२३०६



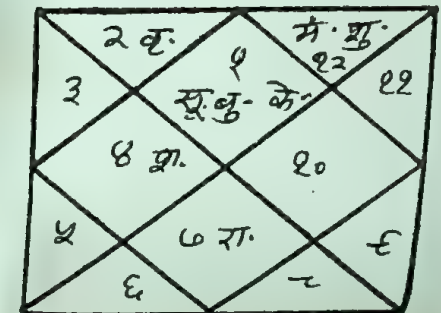
२३०७



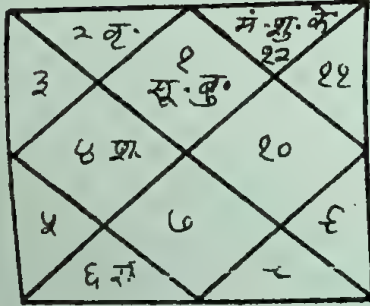
२३०८



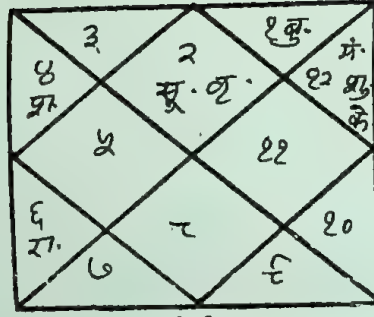
२३०९



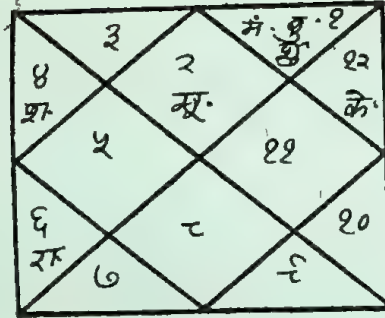
२३१०



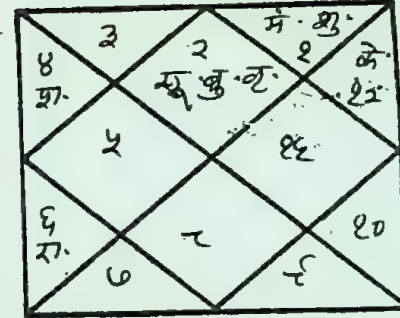
૨૩૧૧



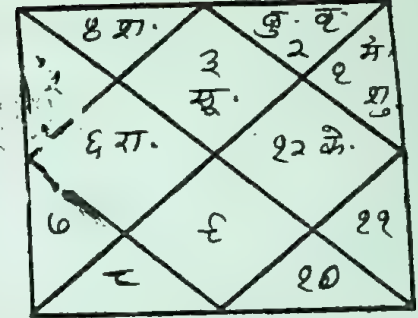
૨૩૧૨



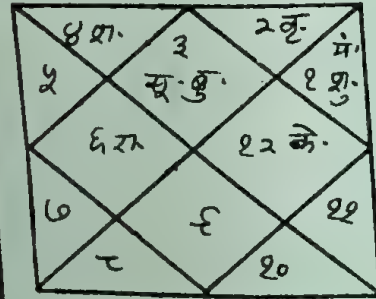
૨૩૧૩



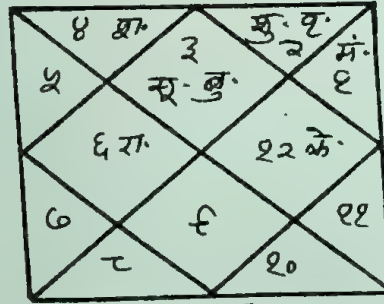
૨૩૧૪



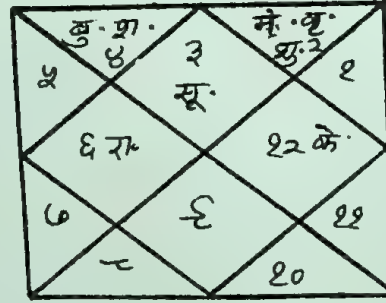
૨૩૧૫



૨૩૧૬



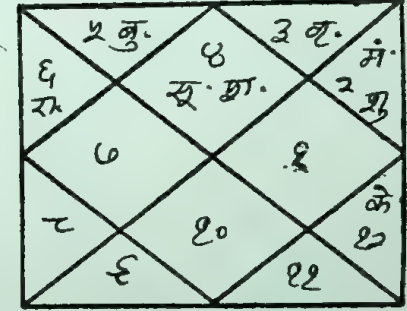
૨૩૧૭



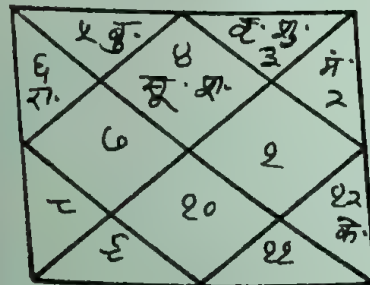
૨૩૧૮



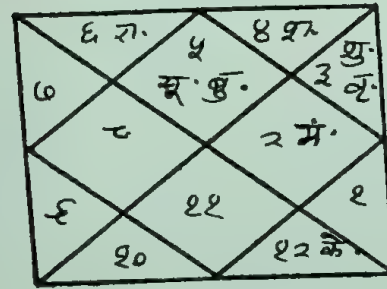
૨૩૧૯



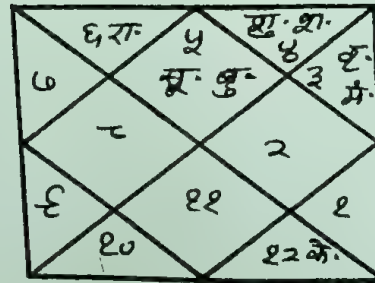
૨૩૨૦



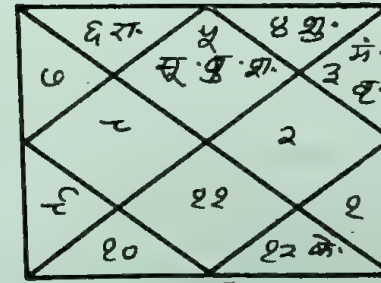
૨૩૨૧



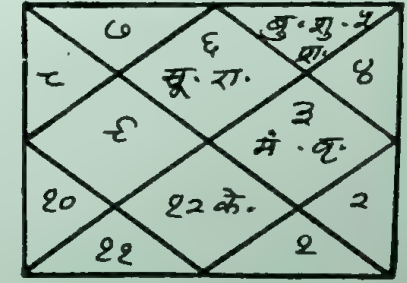
૨૩૨૨



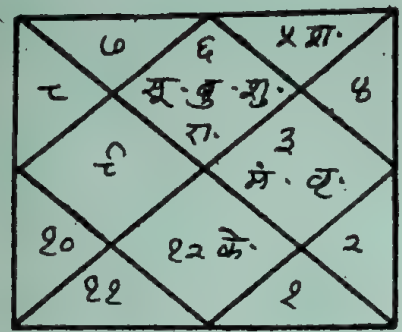
૨૩૨૩



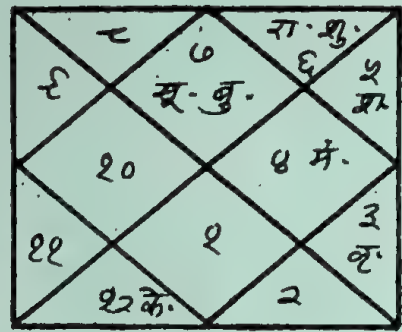
૨૩૨૪



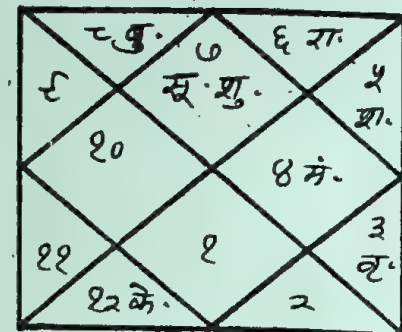
૨૩૨૫



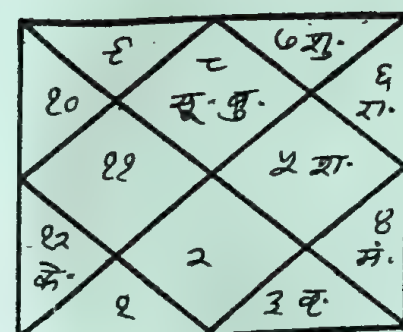
२३२६



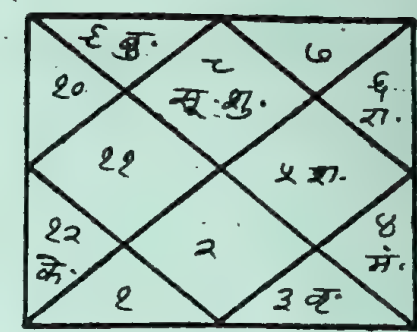
२३२७



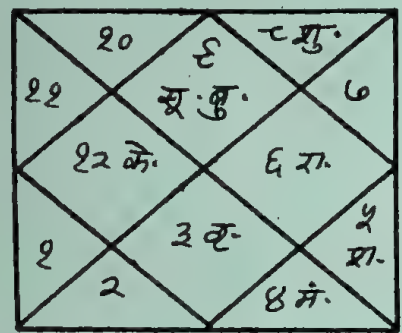
२३२८



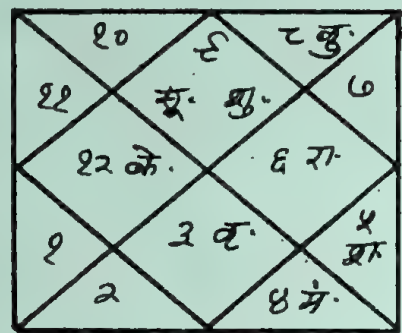
२३२९



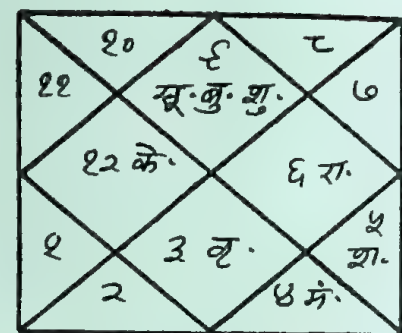
२३३०



२३३१



२३३२



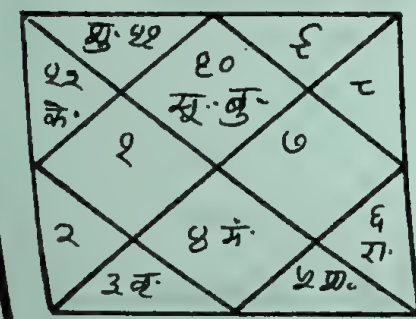
२३३३



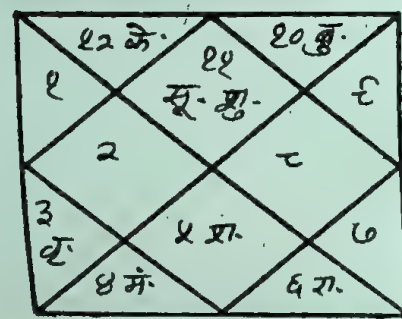
२३३४



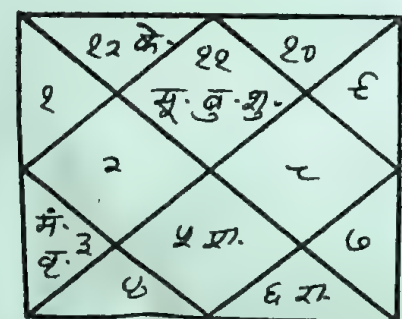
२३३५



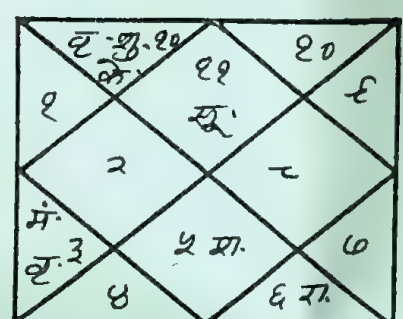
२३३६



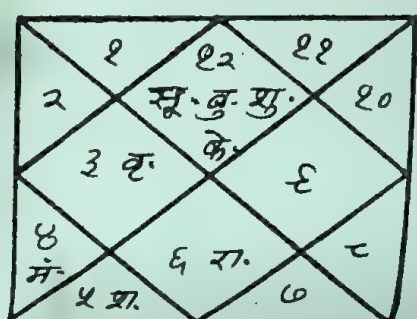
२३३७



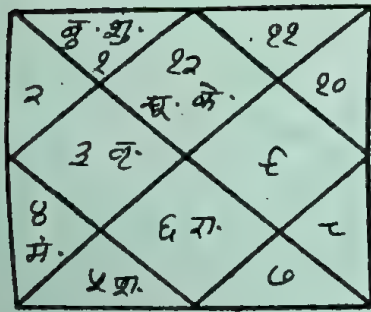
२३३८



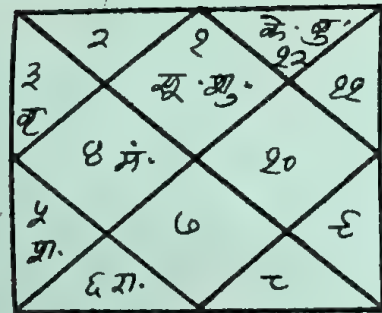
२३३९



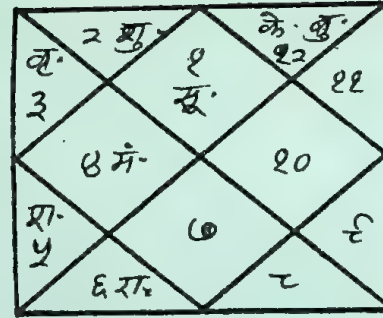
२३४०



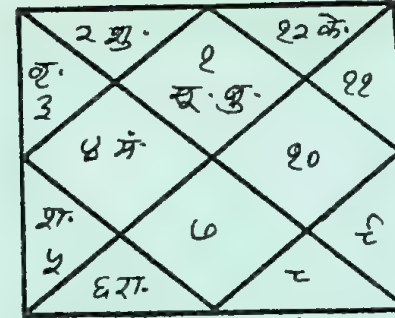
२३४१



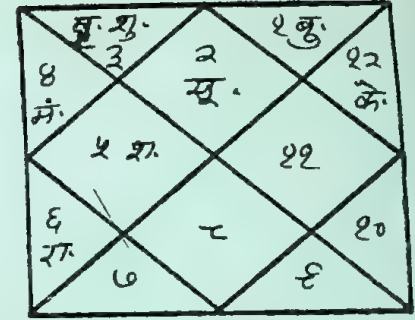
२३४२



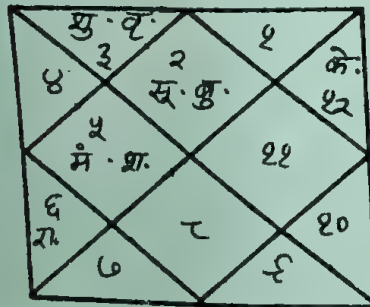
२३४३



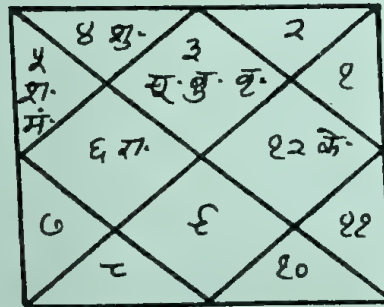
२३४४



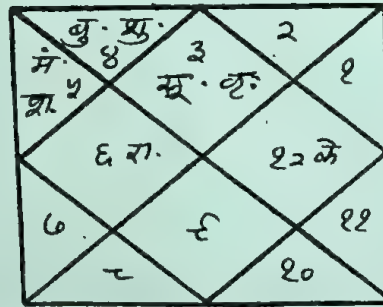
२३४५



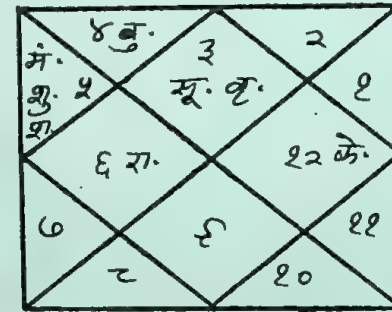
२३४६



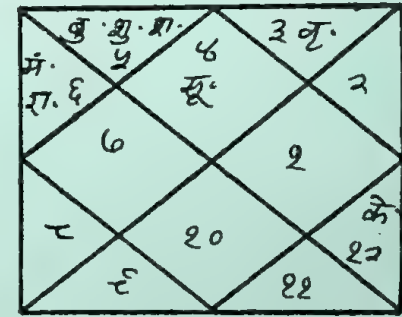
२३४७



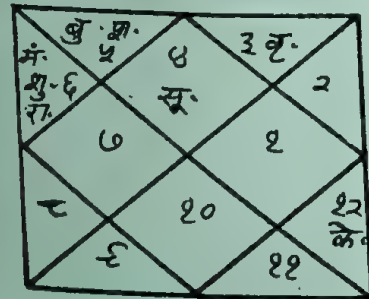
२३४८



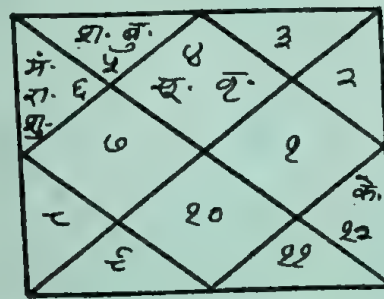
२३४९



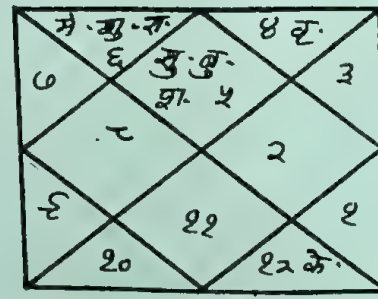
२३५०



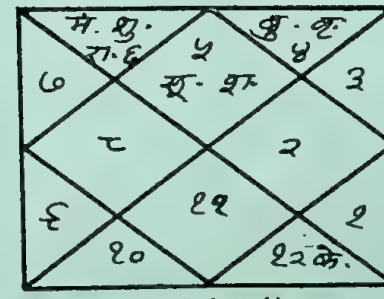
२३५१



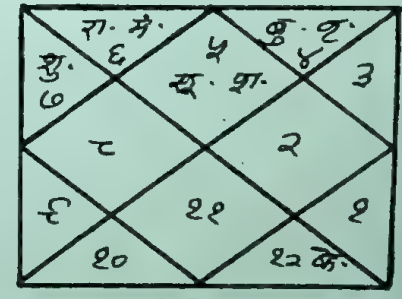
२३५२



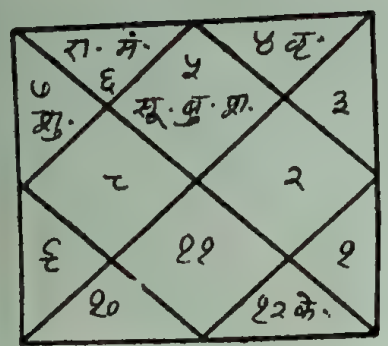
२३५३



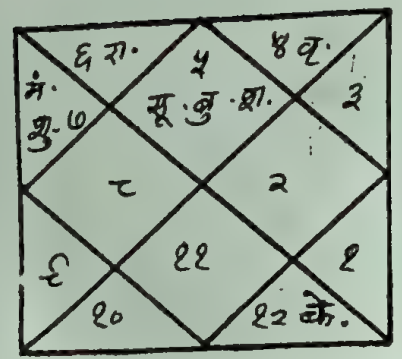
२३५४



२३५५



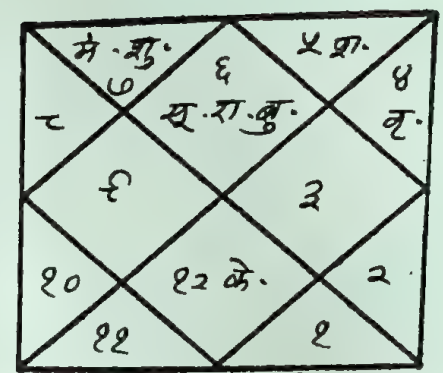
२३५६



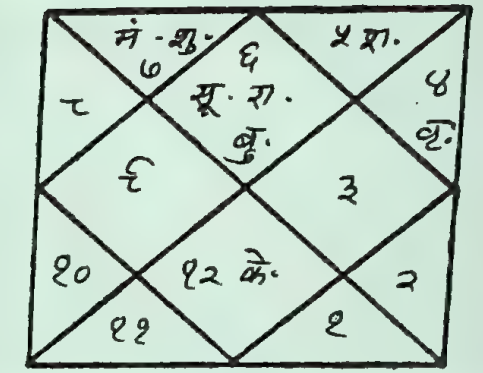
२३५७



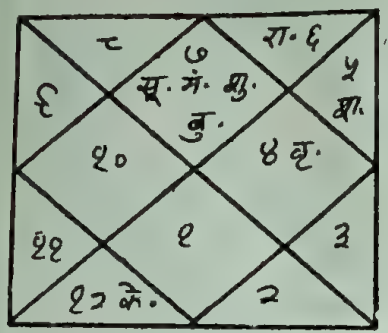
२३५८



२३५९



२३६०



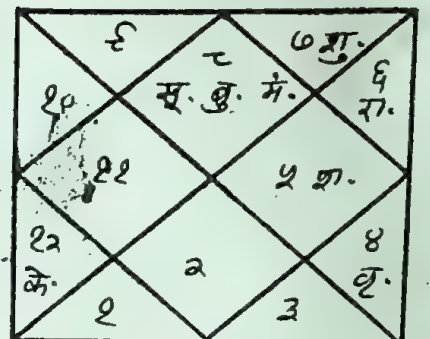
२३६१



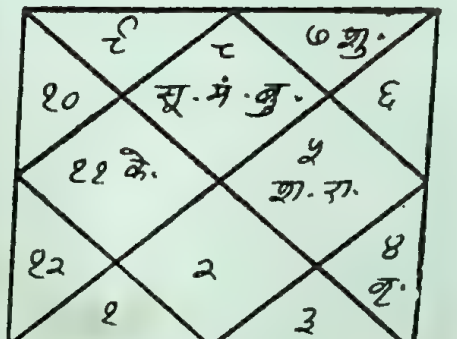
२३६२



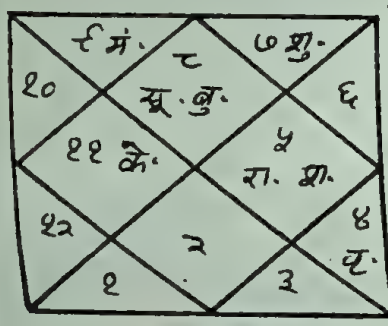
२३६३



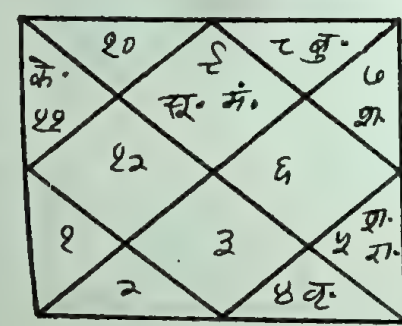
२३६४



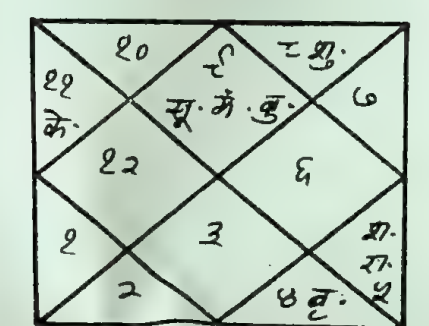
२३६५



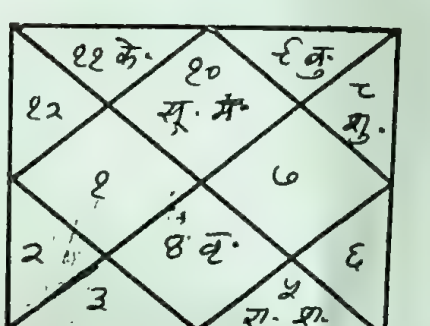
२३६६



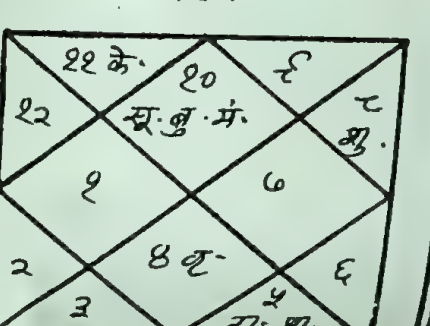
२३६७



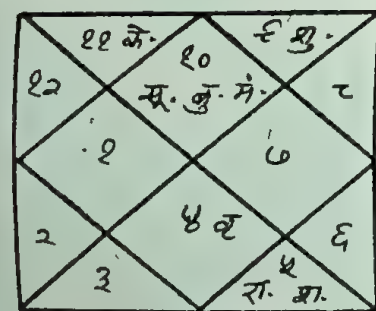
२३६८



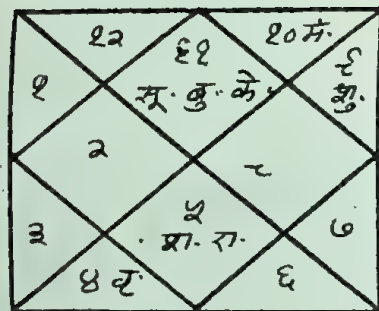
२३६९



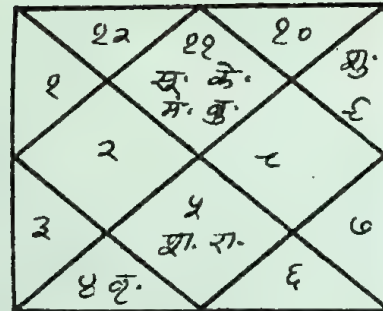
२३७०



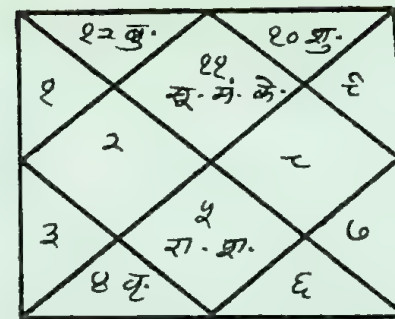
२३७१



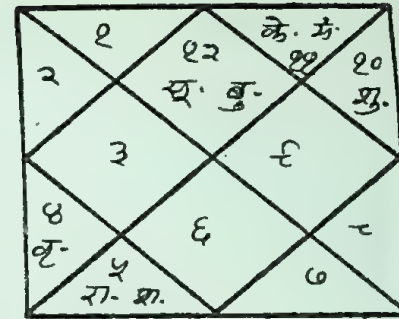
२३७२



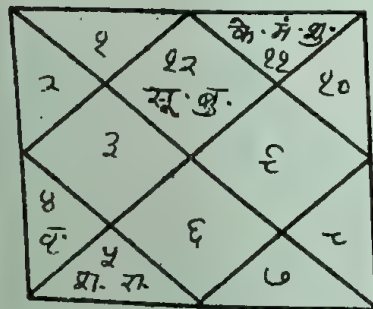
२३७३



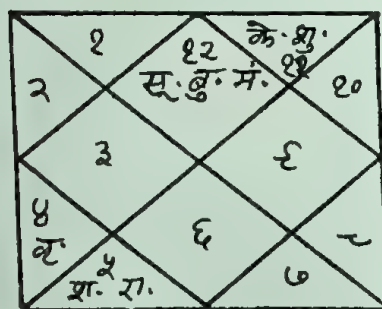
२३७४



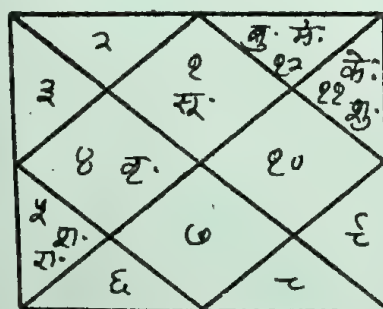
२३७५



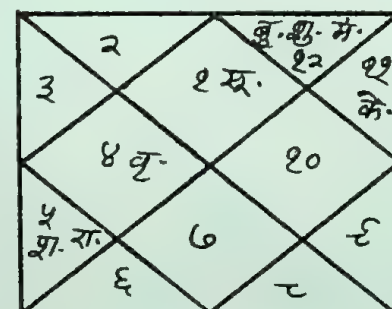
२३७६



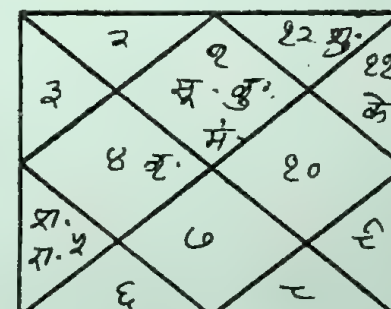
२३७७



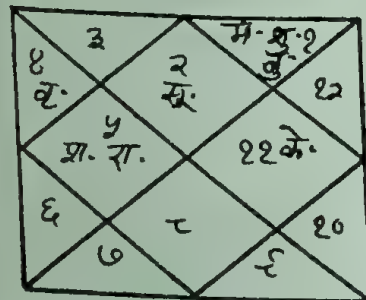
२३७८



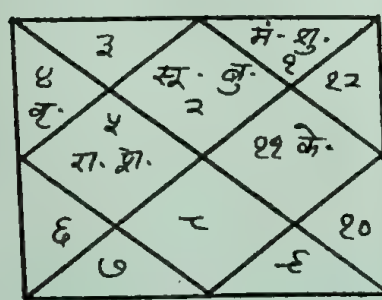
२३७९



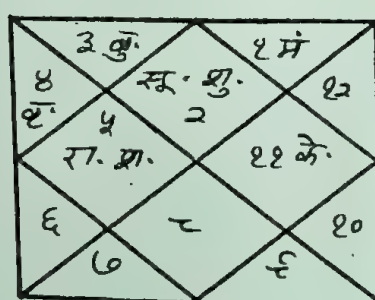
२३८०



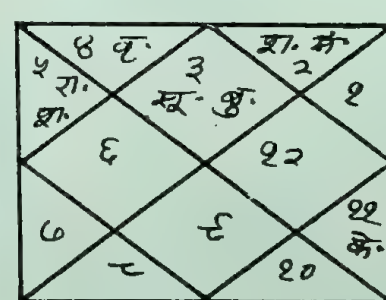
२३८१



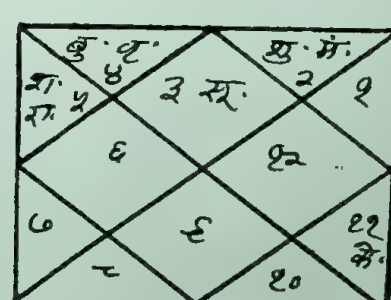
२३८२



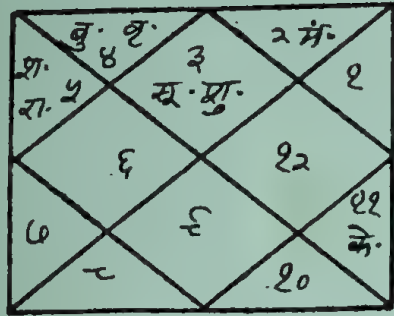
२३८३



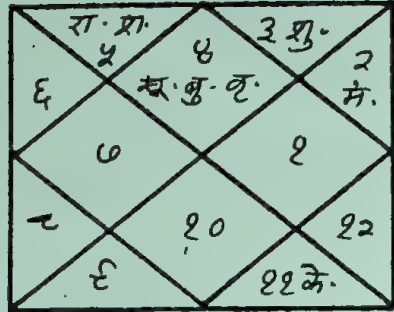
२३८४



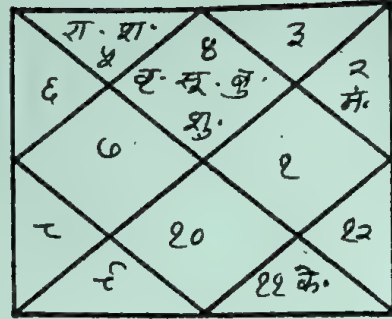
२३८५



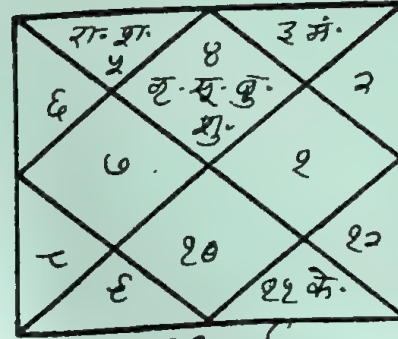
२३८६



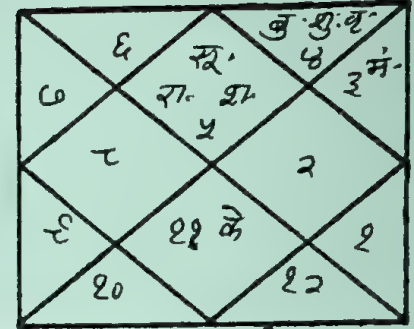
२३८७



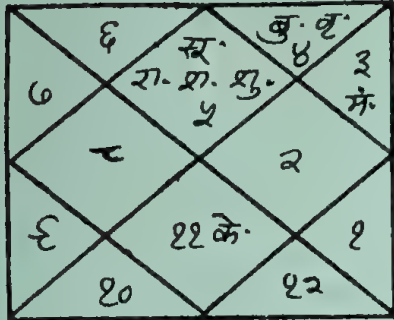
२३८८



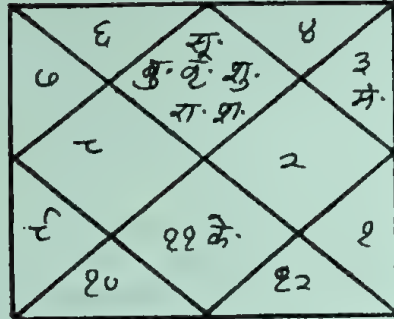
२३८९



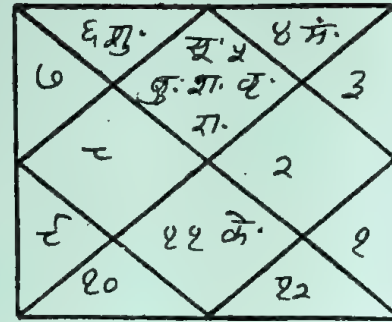
२३९०



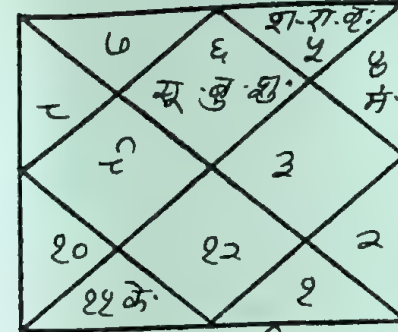
२३९१



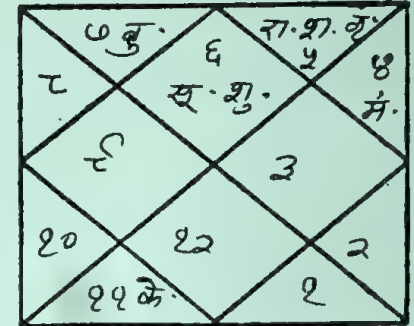
२३९२



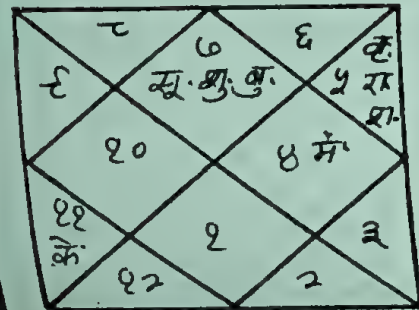
२३९३



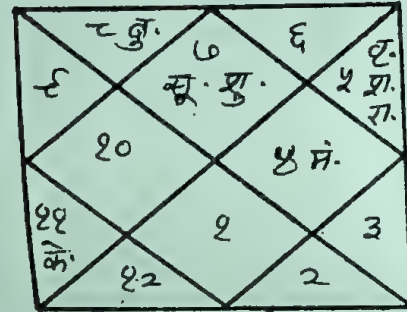
२३९४



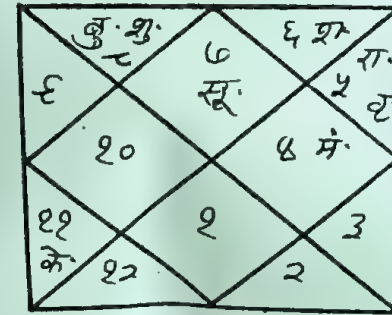
२३९५



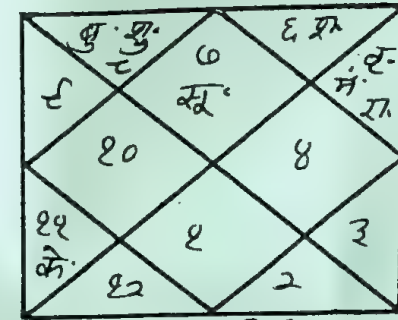
२३९६



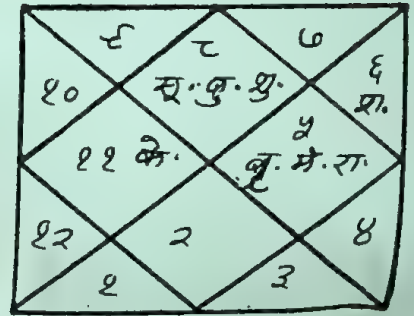
२३९७



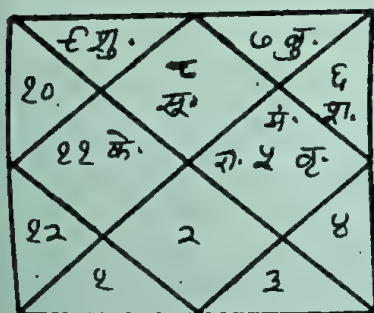
२३९८



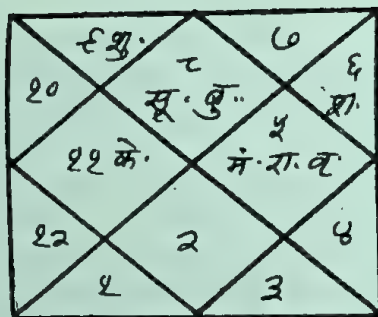
२३९९



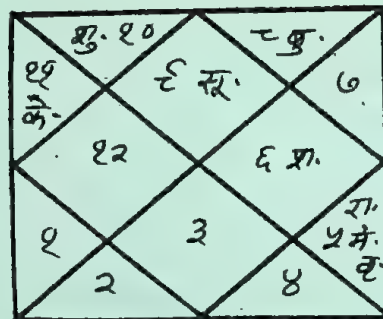
२४००



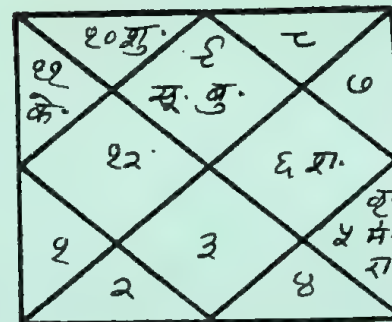
२४०१



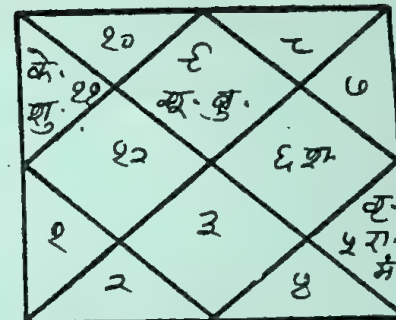
२४०२



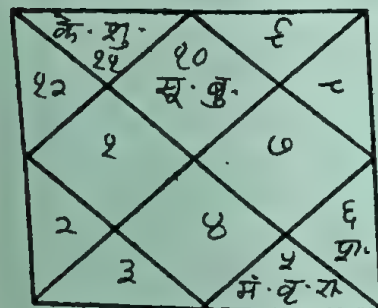
२४०३



२४०४



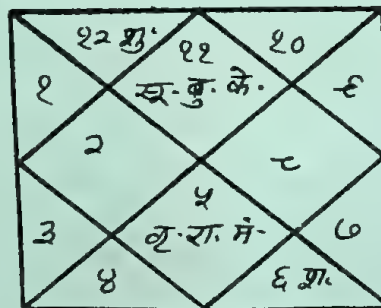
२४०५



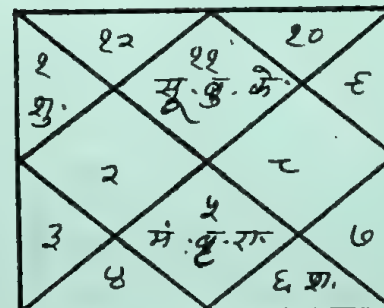
२४०६



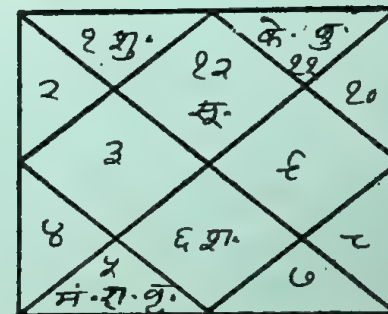
२४०७



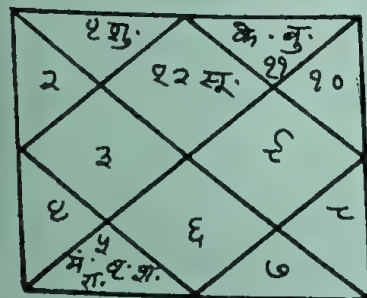
२४०८



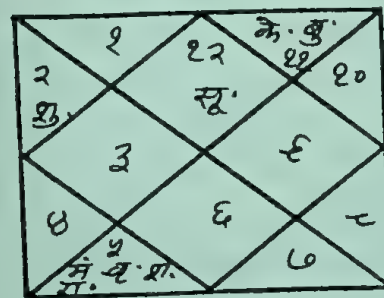
२४०९



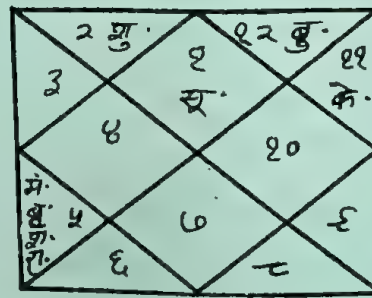
२४१०



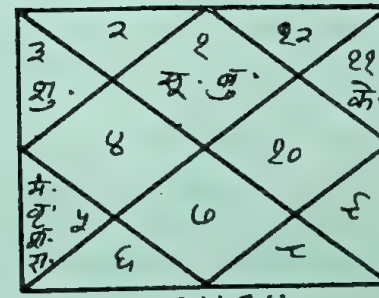
२४११



२४१२



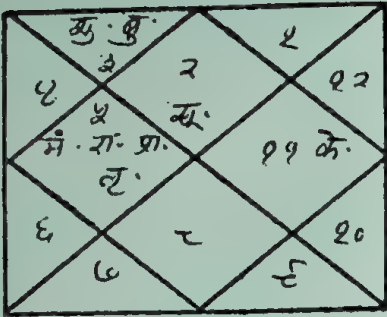
२४१३



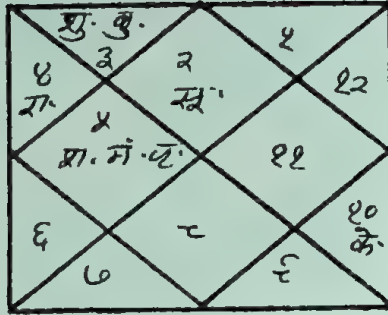
२४१४



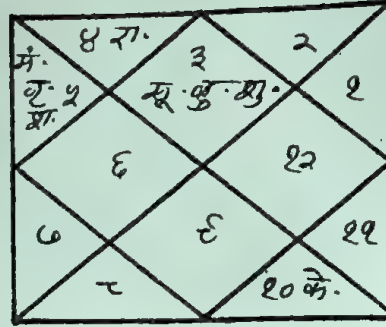
२४१५



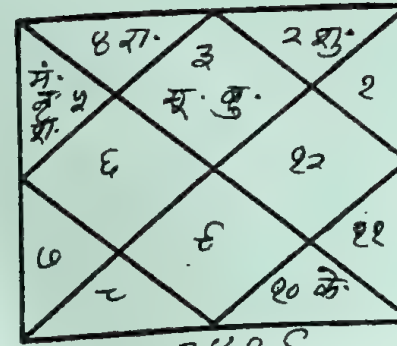
२४१६



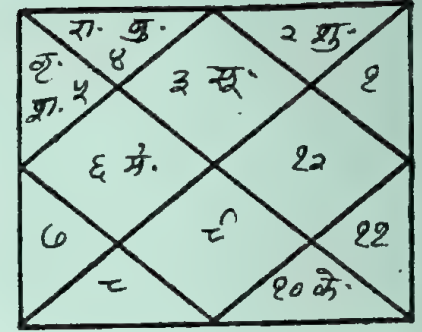
२४१७



२४१८



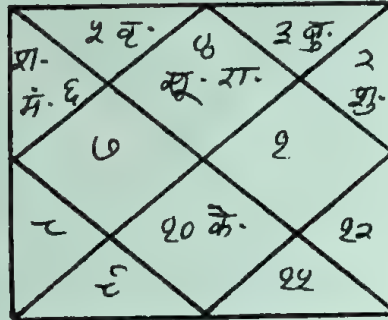
२४१९



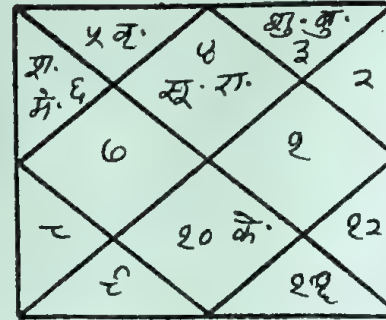
२४२०



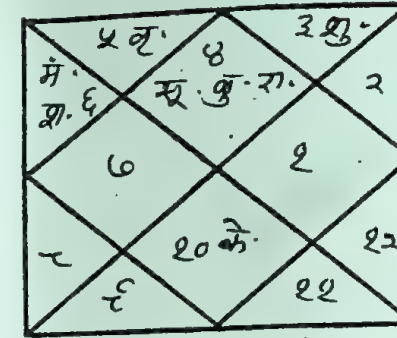
२४२१



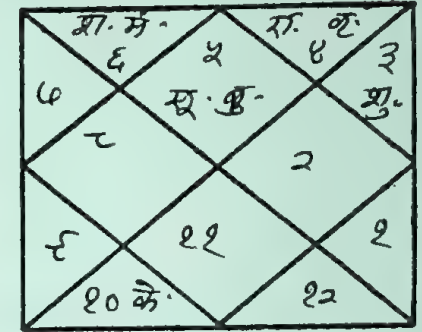
२४२२



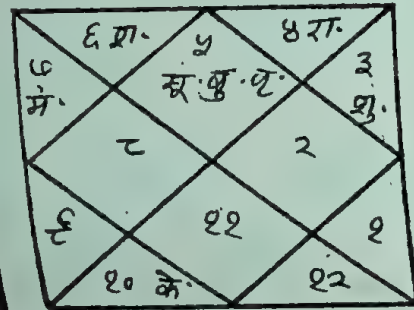
२४२३



२४२४



२४२५



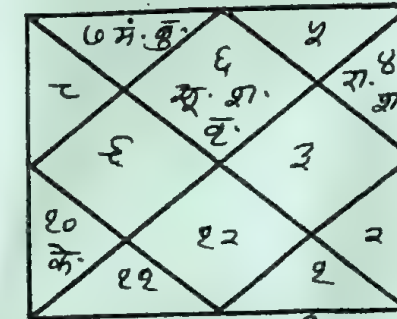
२४२६



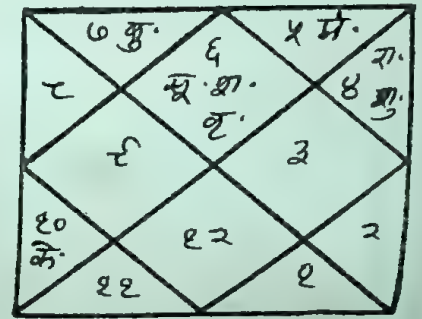
२४२७



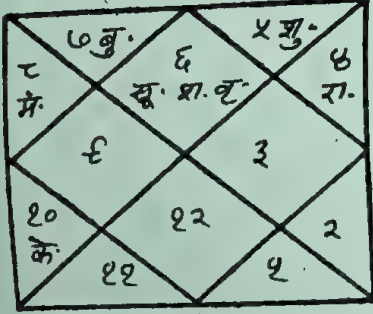
२४२८



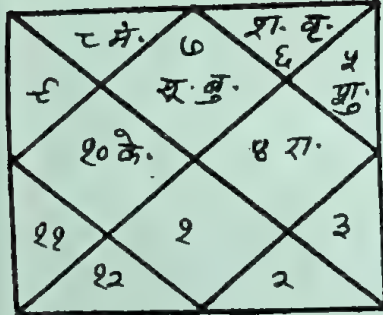
२४२९



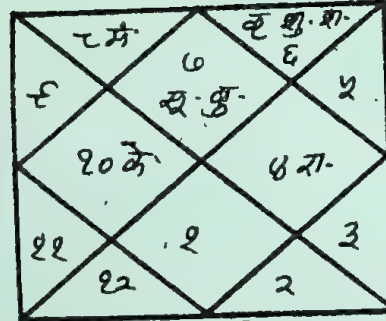
२४३०



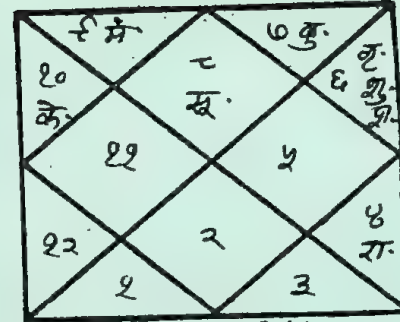
२४३१



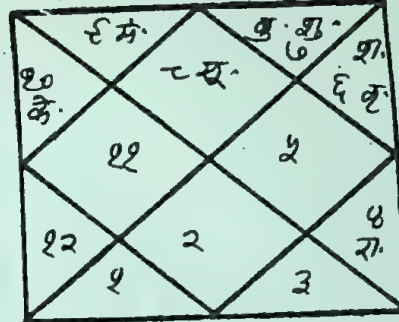
२४३२



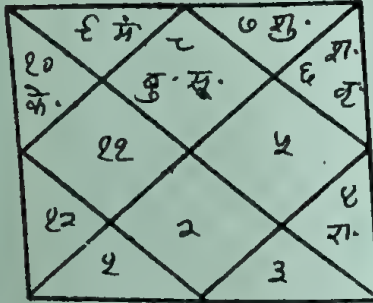
२४३३



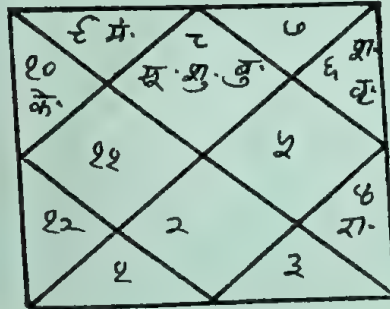
२४३४



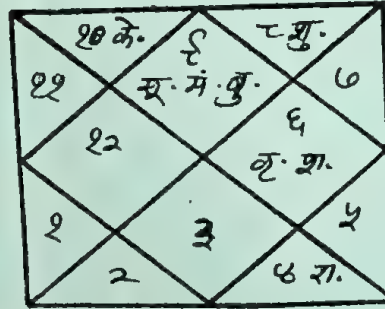
२४३५



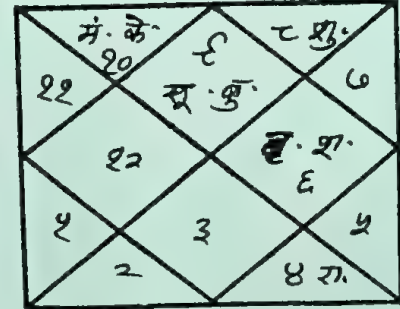
२४३६



२४३७



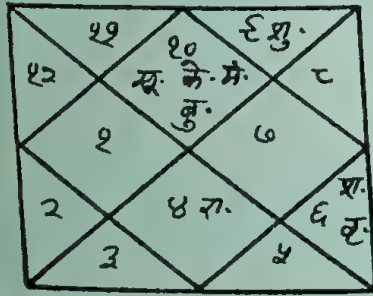
२४३८



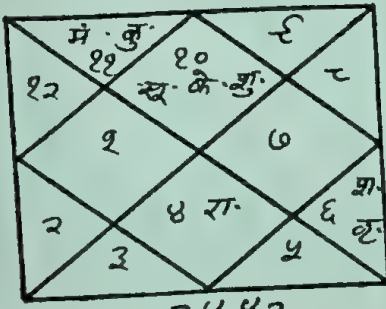
२४३९



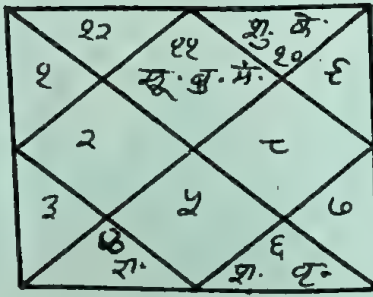
२४४०



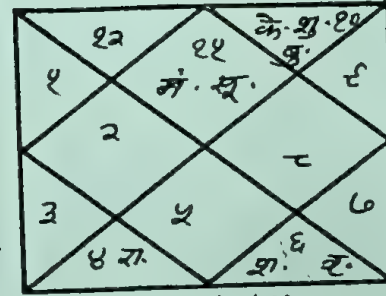
२४४१



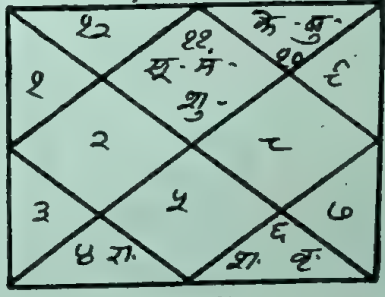
२४४२



२४४३



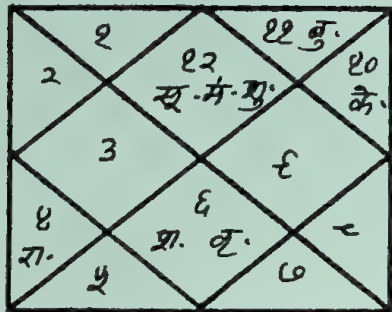
२४४४



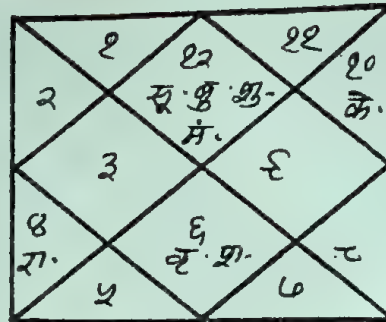
२४४५



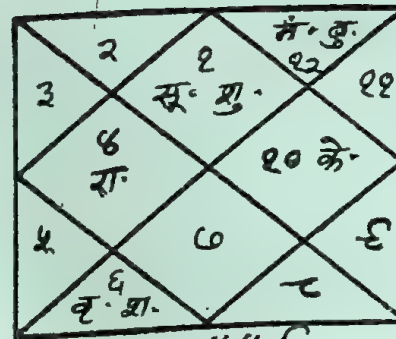
२४४६



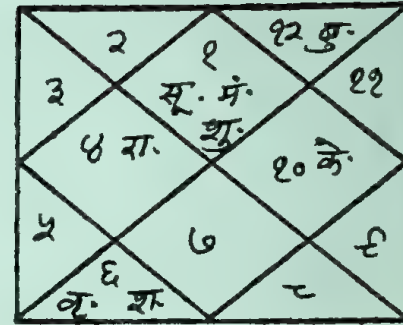
२४४७



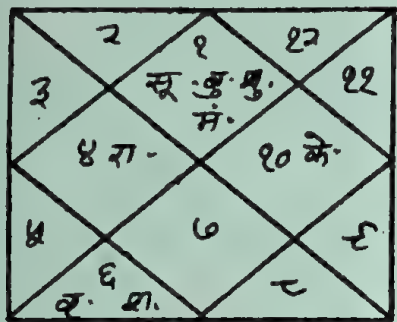
२४४८



२४४९



२४५०



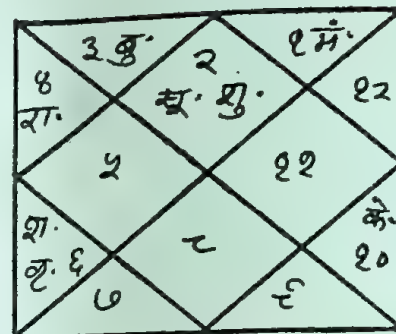
२४५१



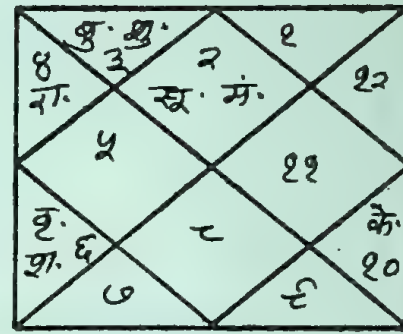
२४५२



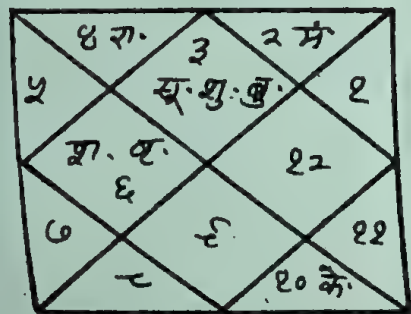
२४५३



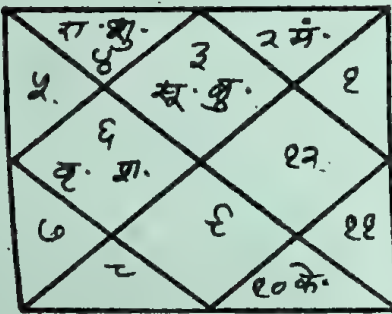
२४५४



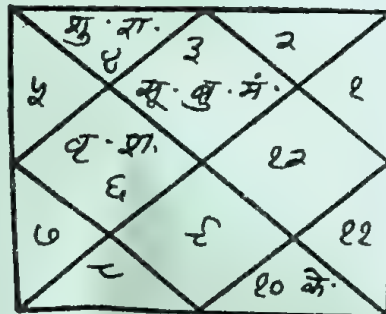
२४५५



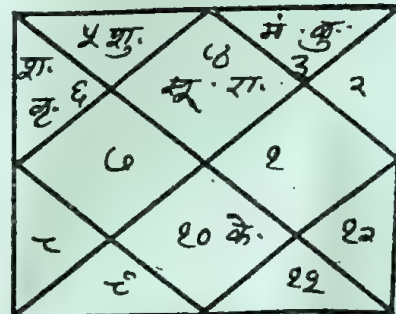
२४५६



२४५७



२४५८



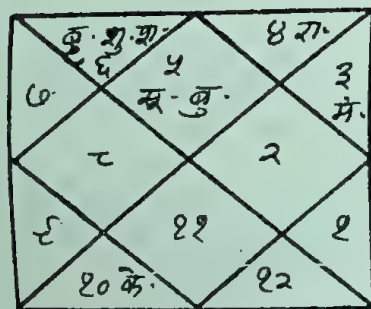
२४५९



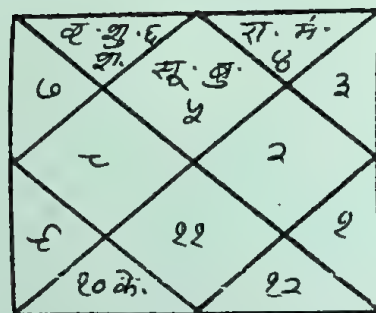
२४६०

336

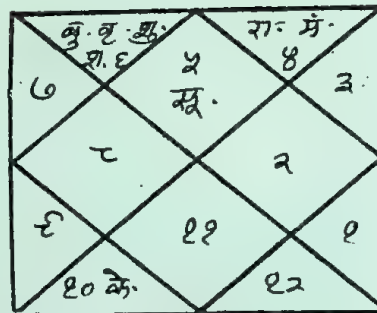
प०



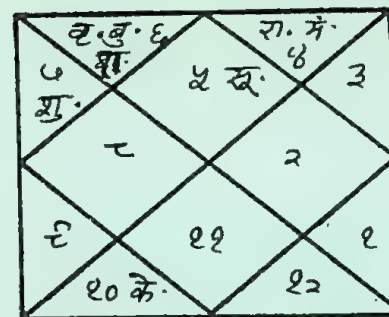
2484



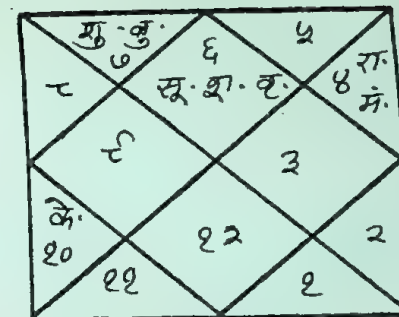
28E2



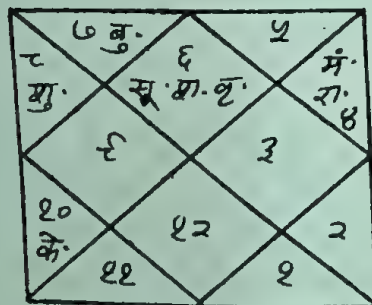
2893



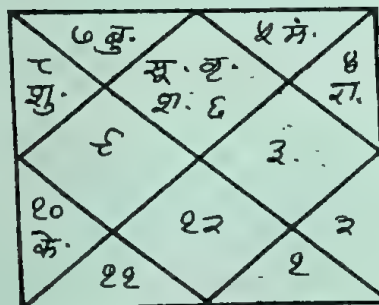
2858



2854



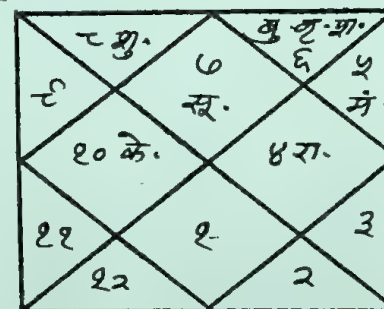
28 4 4



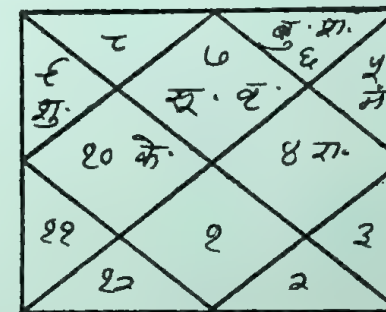
2406-



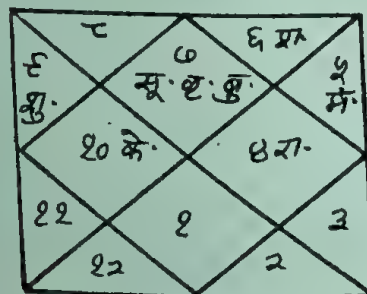
2892



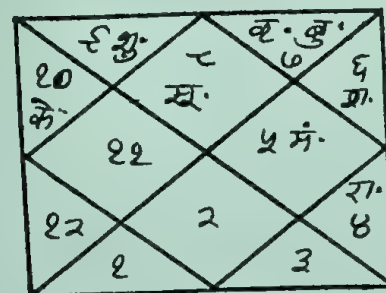
289c



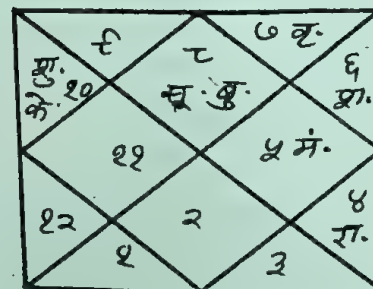
2860



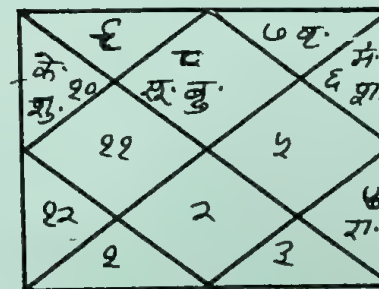
2862



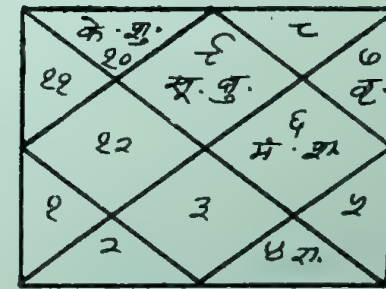
2862



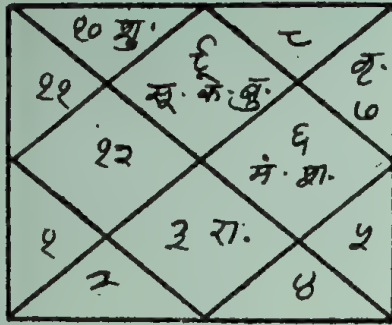
2863



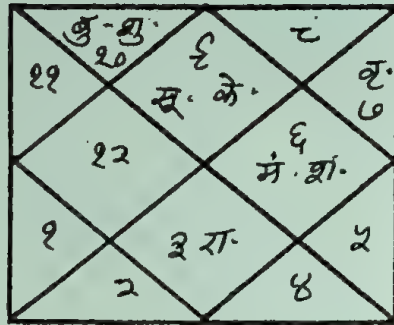
2868



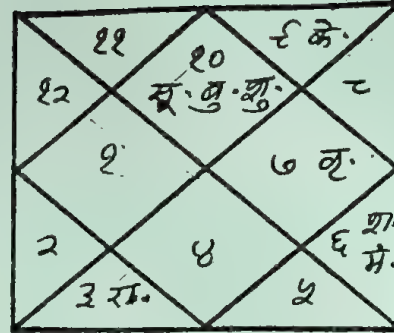
2864



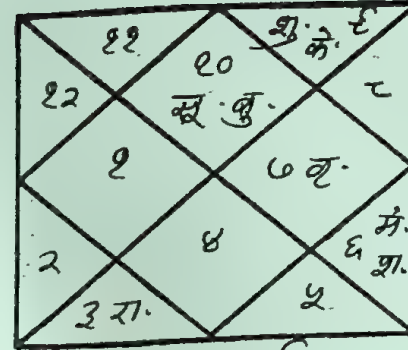
२४७६



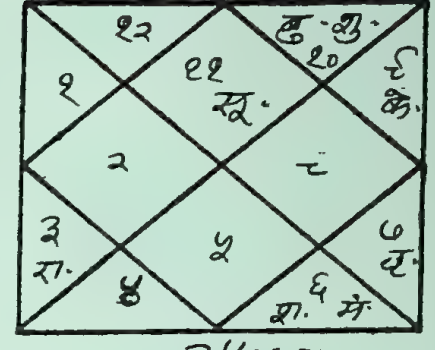
२४७७



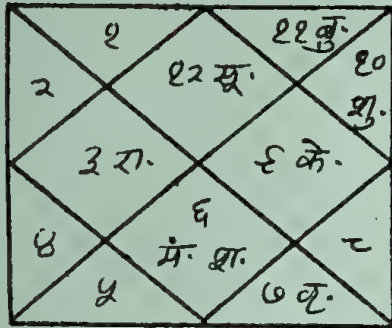
२४७८



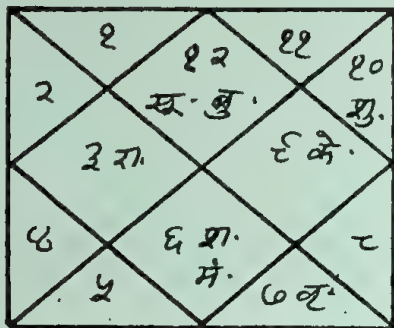
२४७९



२४८०



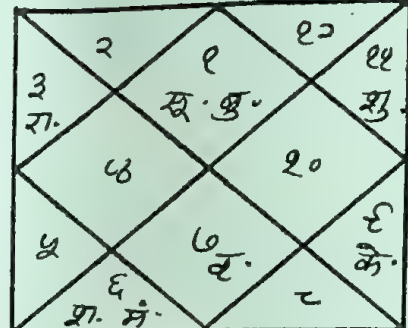
२४८१



२४८२



२४८३



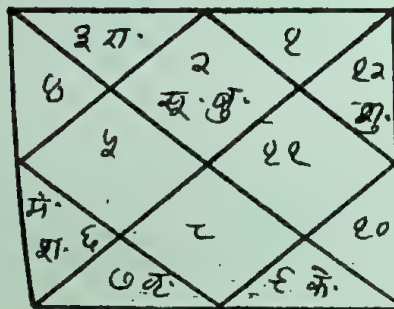
२४८४



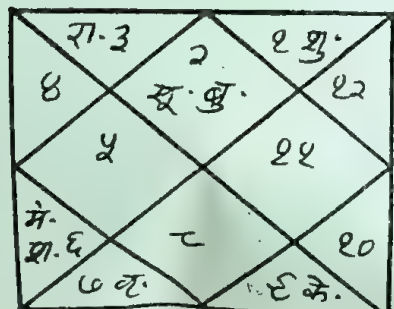
२४८५



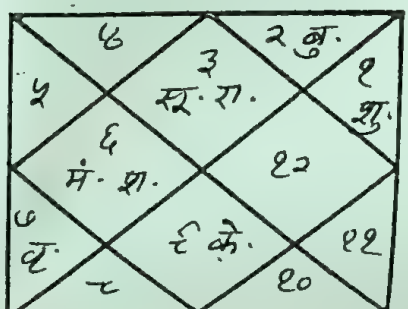
२४८६



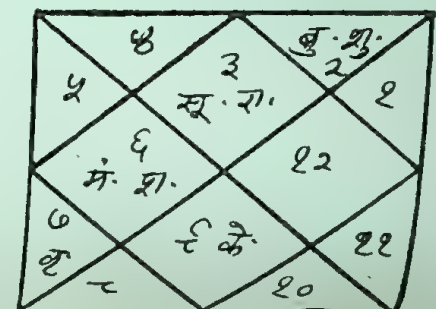
२४८७



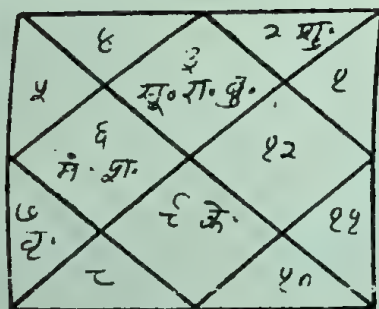
२४८८



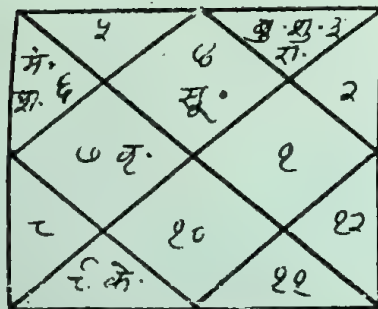
२४८९



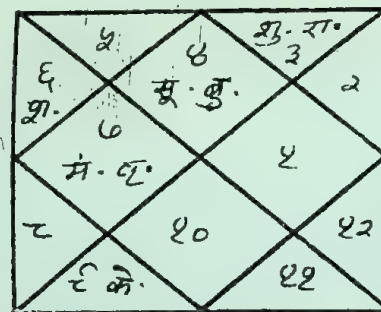
२४९०



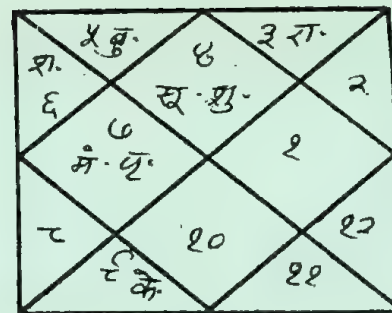
२४६१



२४६२



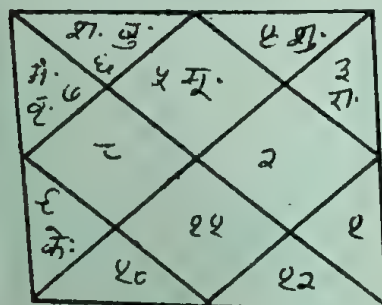
२४६३



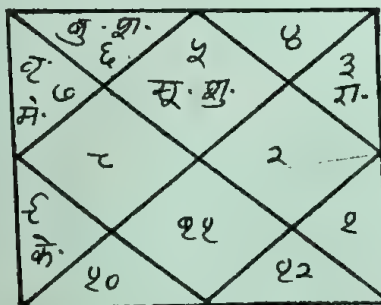
२४६४



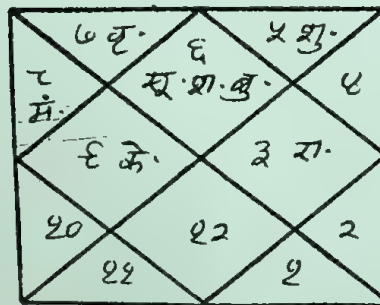
२४६५



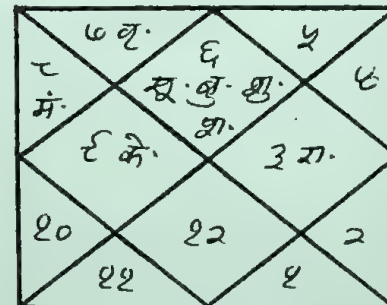
२४६६



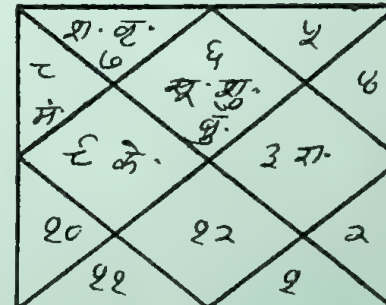
२४६७



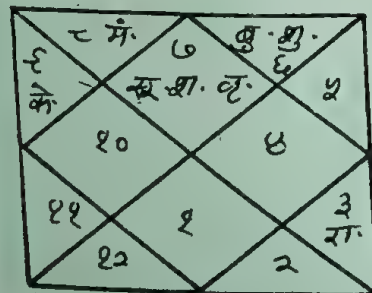
२४६८



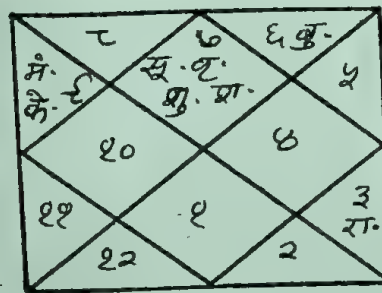
२४६९



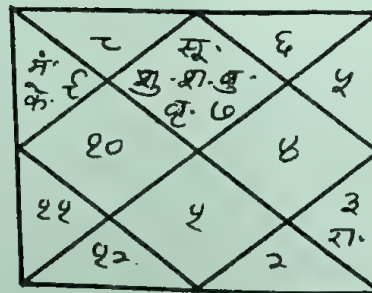
२४७०



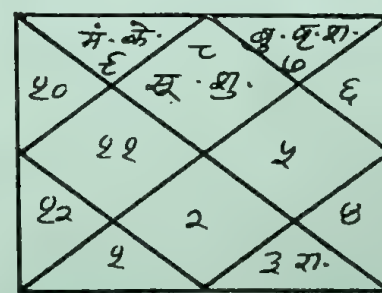
२४०१



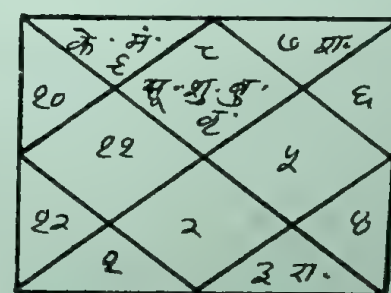
२४०२



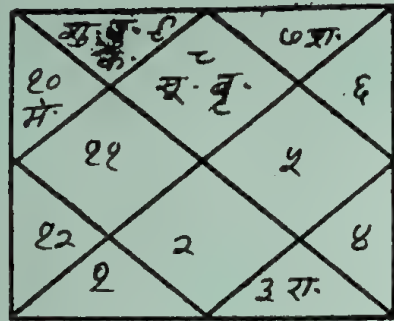
२४०३



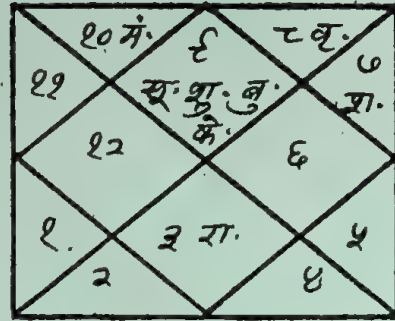
२४०४



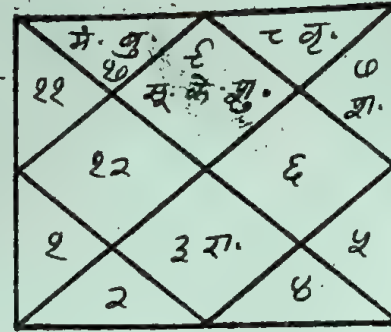
२४०५



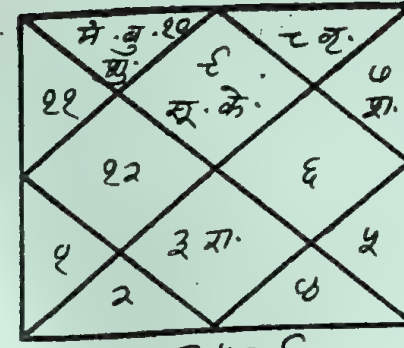
२५०६



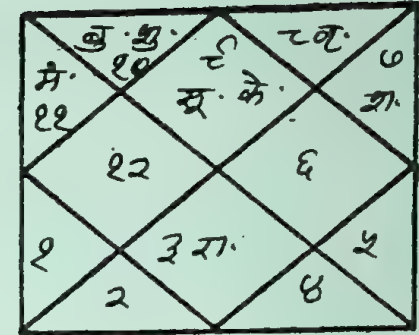
२५०७



२५०८



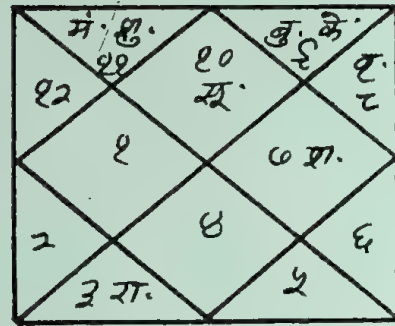
२५०९



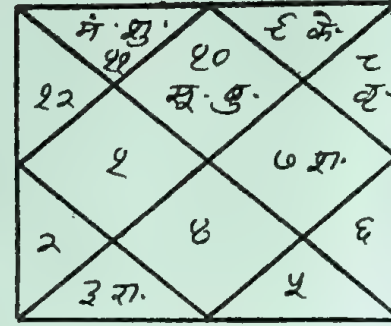
२५१०



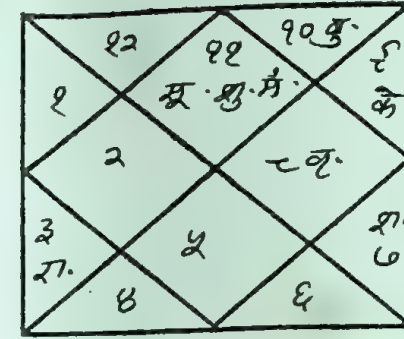
२५११



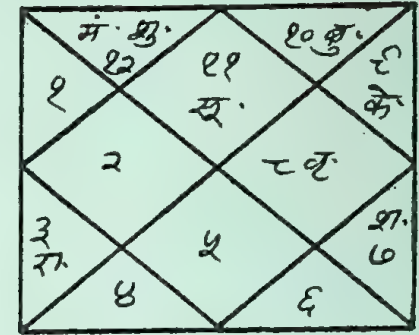
२५१२



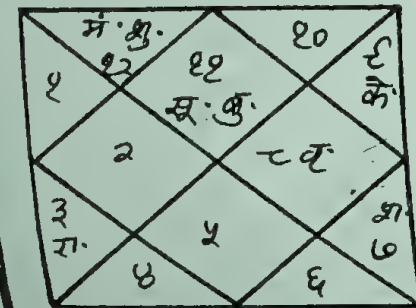
२५१३



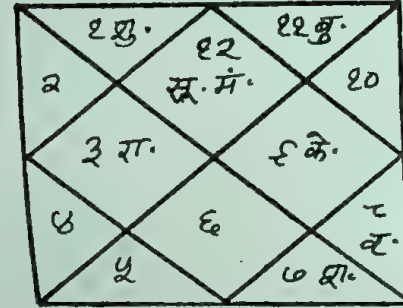
२५१४



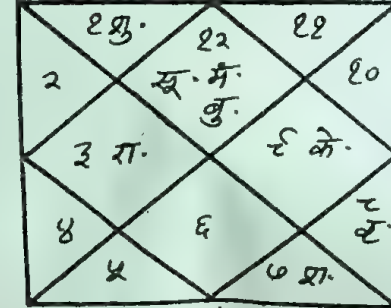
२५१५



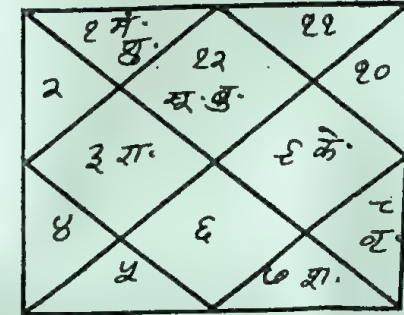
२५१६



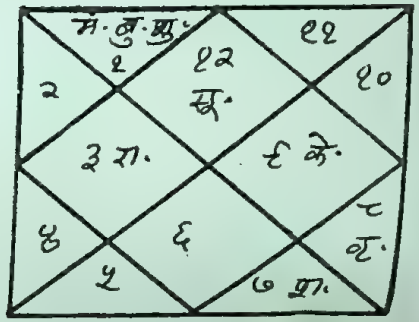
२५१७



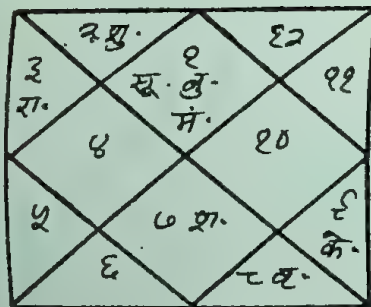
२५१८



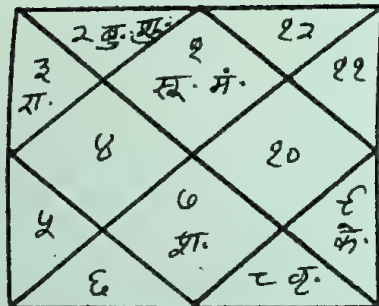
२५१९



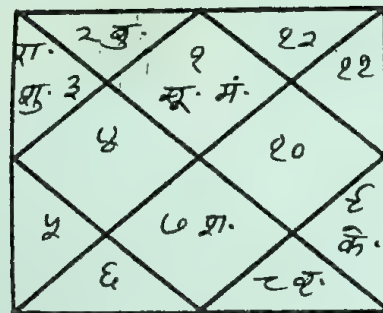
२५२०



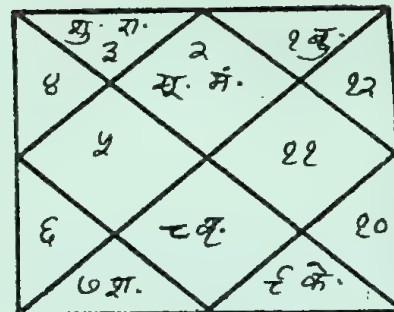
२५२१



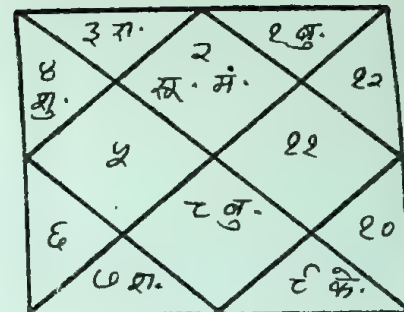
२५२२



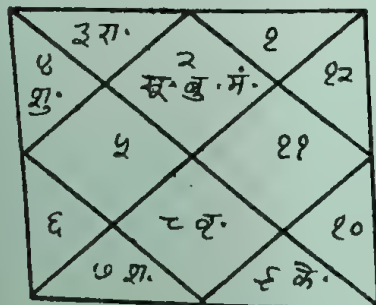
२५२३



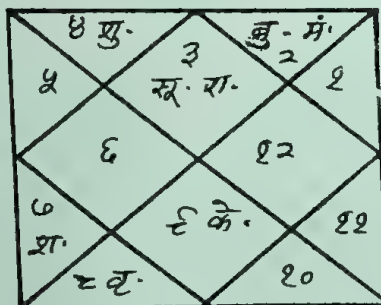
२५२४



२५२५



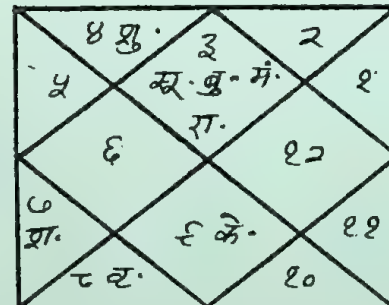
२५२६



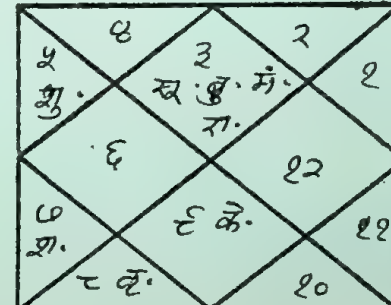
२५२७



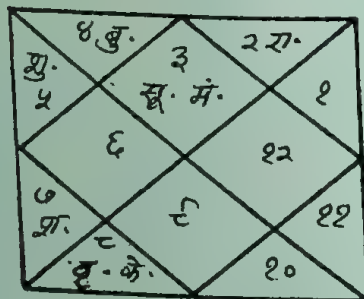
२५२८



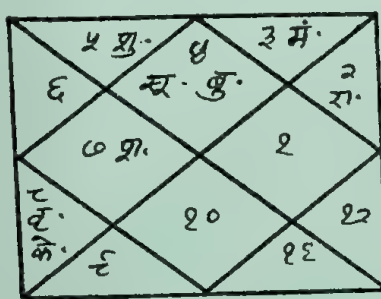
२५२९



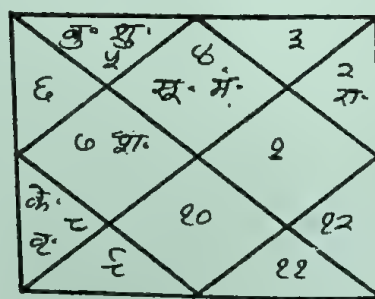
२५३०



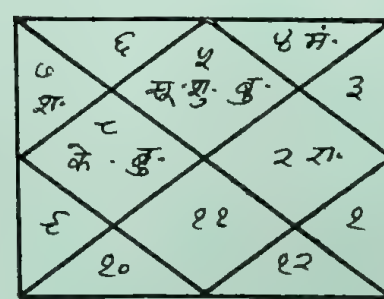
२५३१



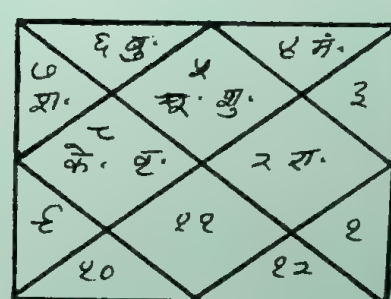
२५३२



२५३३



२५३४



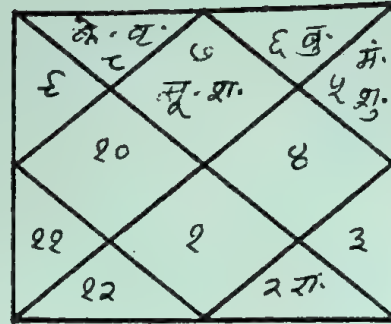
२५३५



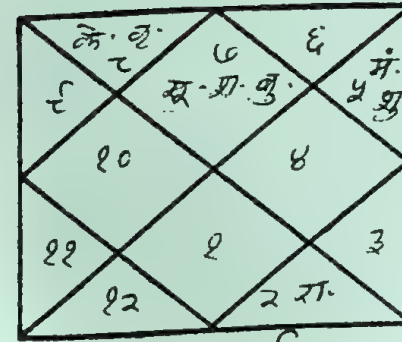
२५३६



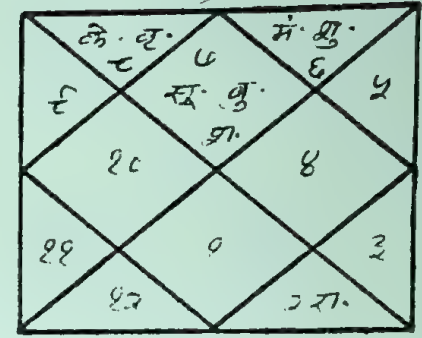
२५३७



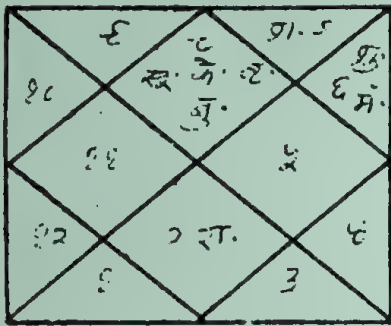
२५३८



२५३९



२५४०



२५४१



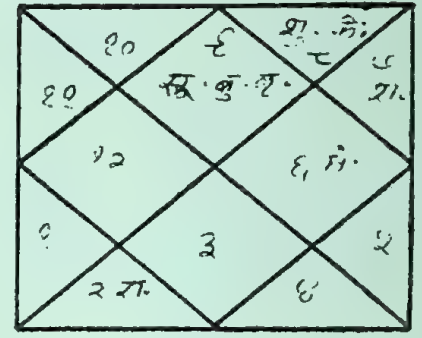
२५४२



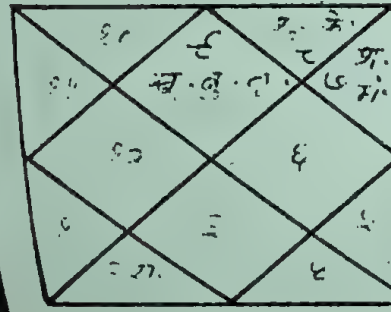
२५४३



२५४४



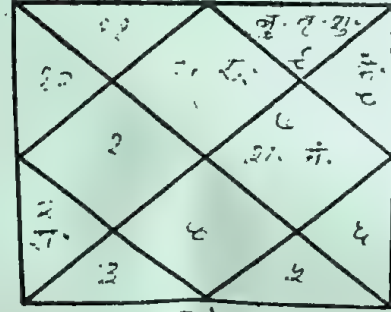
२५४५



२५४६



२५४७



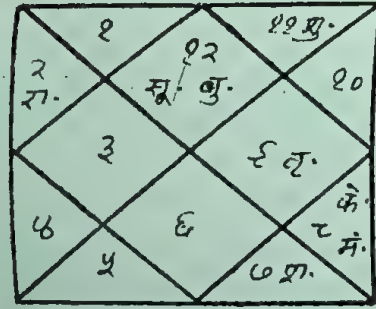
२५४८



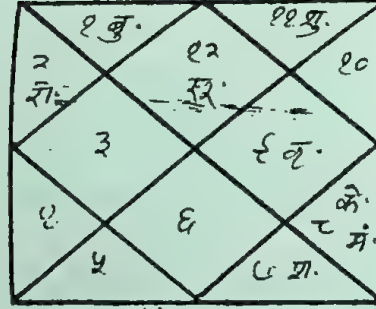
२५४९



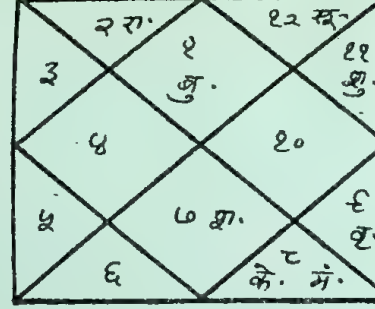
२५५०



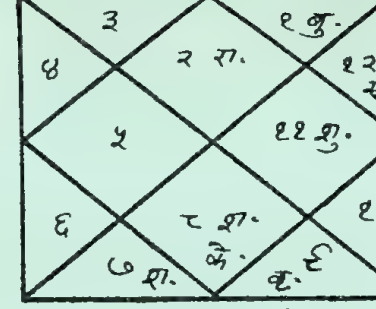
૨૫૫૧



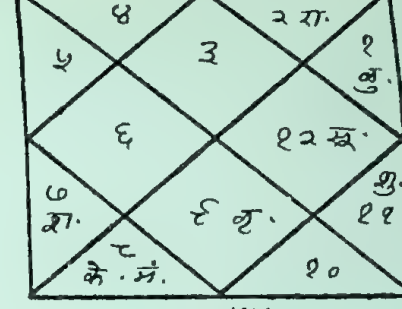
૨૫૫૨



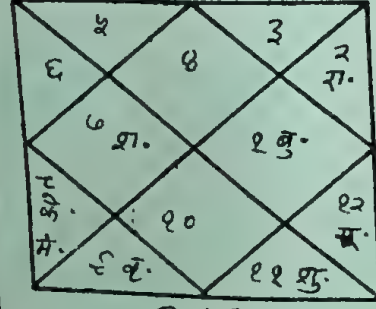
૨૫૫૩



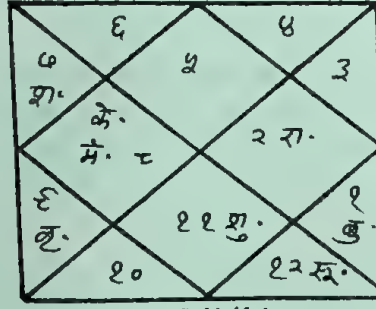
૨૫૫૪



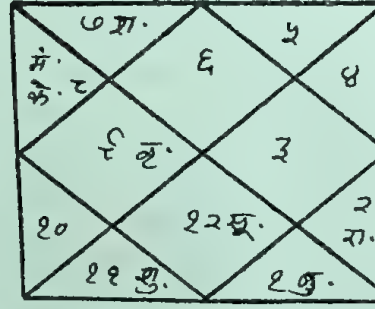
૨૫૫૫



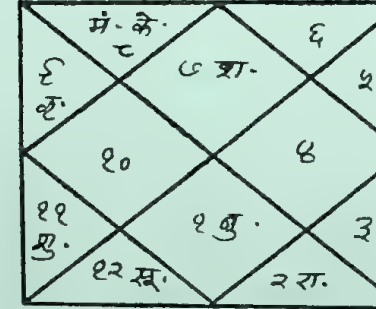
૨૫૫૬



૨૫૫૭



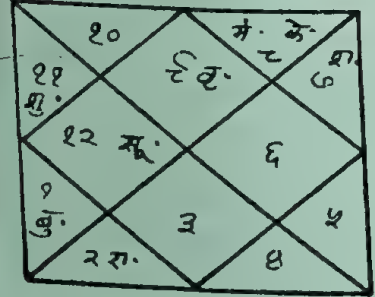
૨૫૫૮



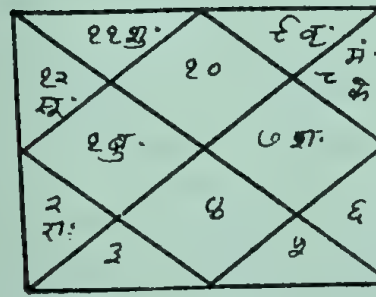
૨૫૫૯



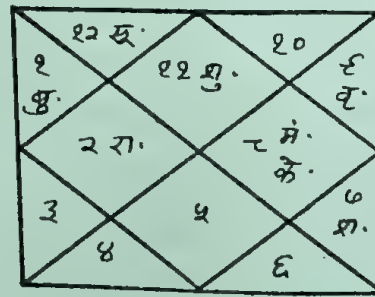
૨૫૬૦



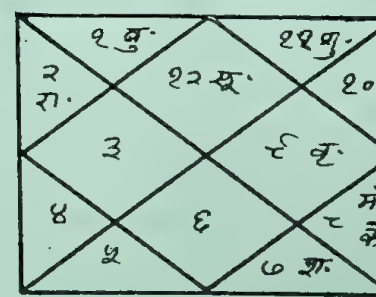
૨૫૬૧



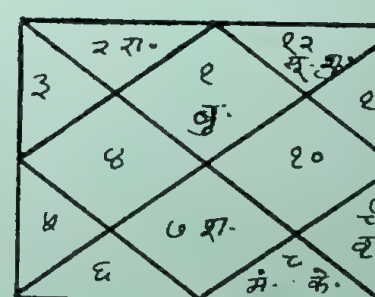
૨૫૬૨



૨૫૬૩



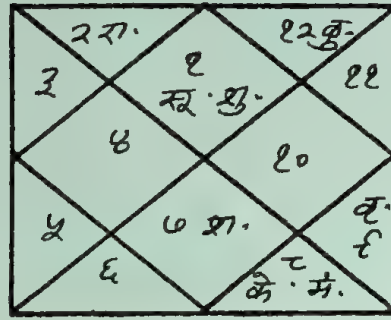
૨૫૬૪



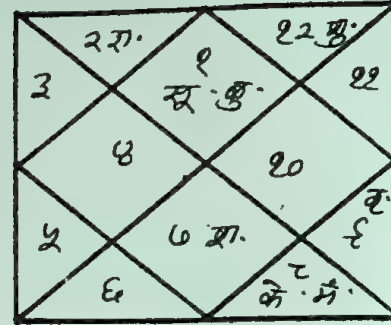
૨૫૬૫



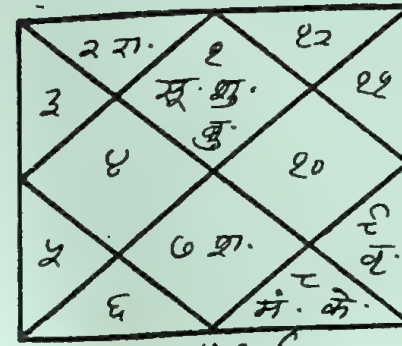
२५६६



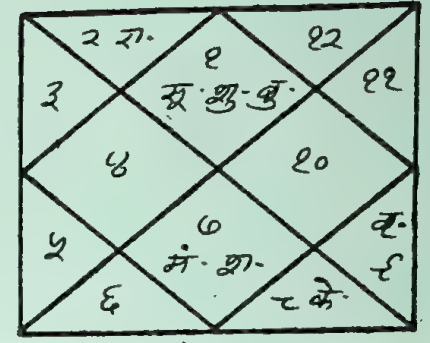
२५६७



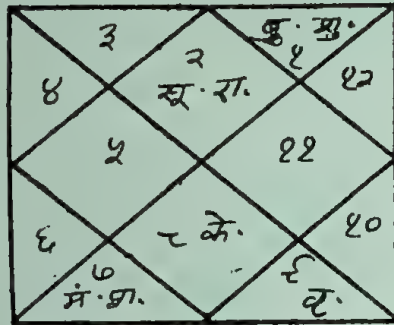
२५६८



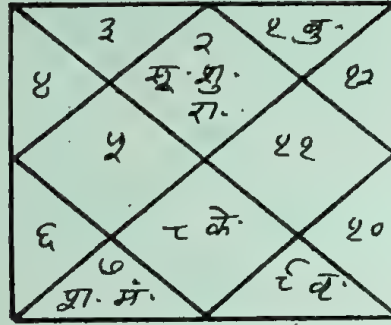
२५६९



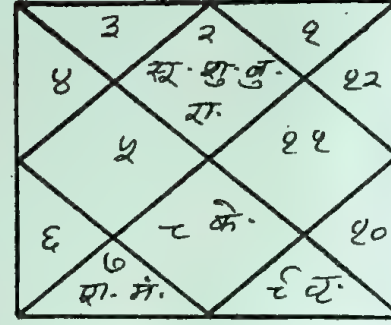
२५७०



२५७१



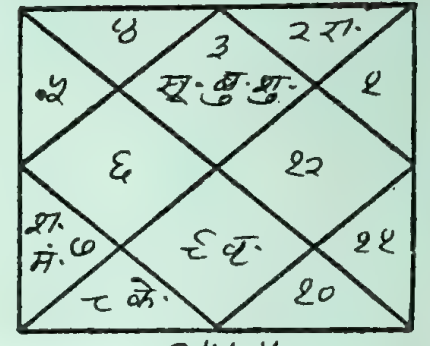
२५७२



२५७३



२५७४



२५७५



२५७६



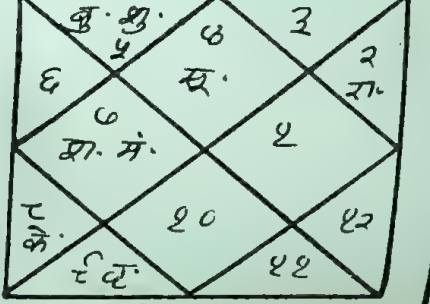
२५७७



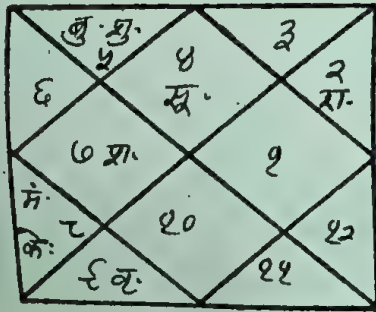
२५७८



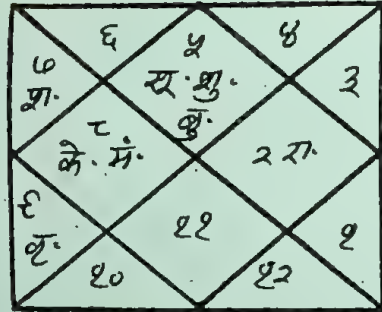
२५७९



२५८०



२५८१



२५८२



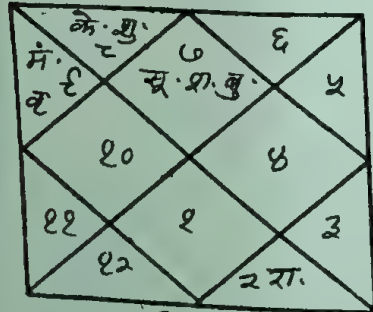
२५८३



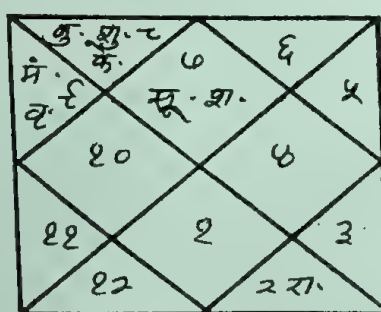
२५८४



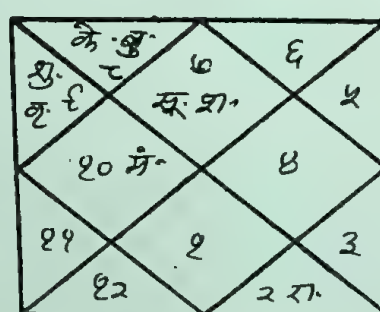
२५८५



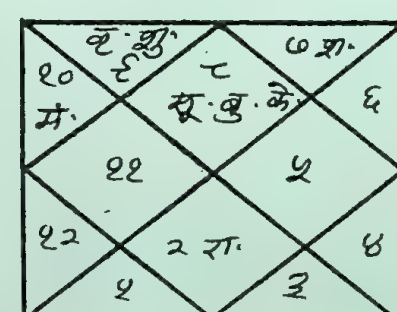
२५८६



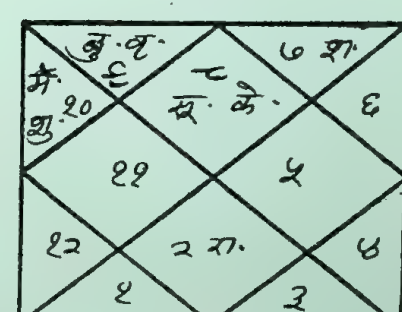
२५८७



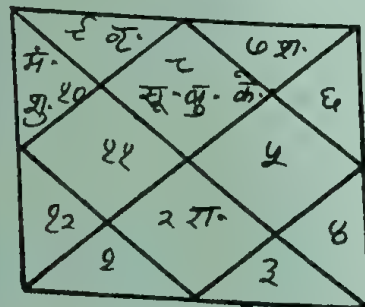
२५८८



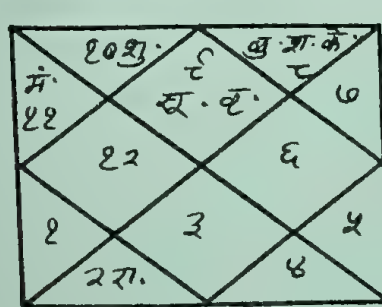
२५८९



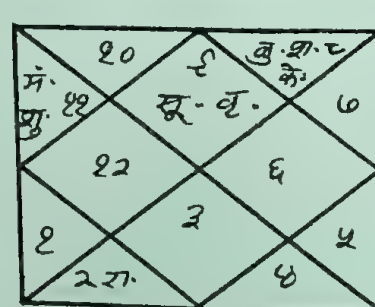
२५९०



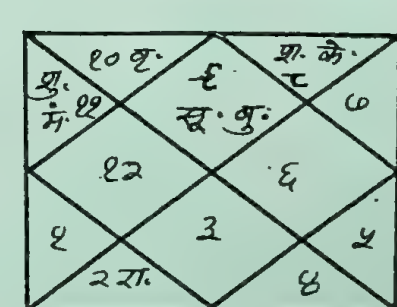
२५९१



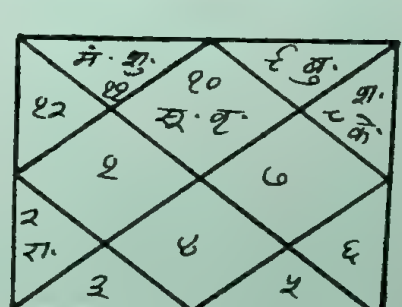
२५९२



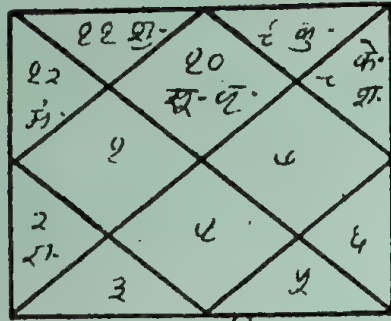
२५९३



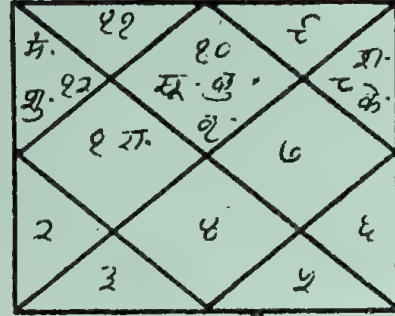
२५९४



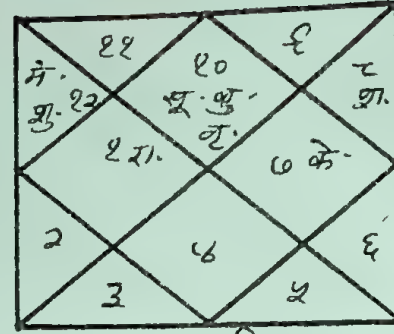
२५९५



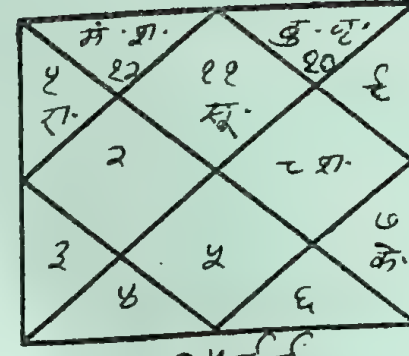
२५८६



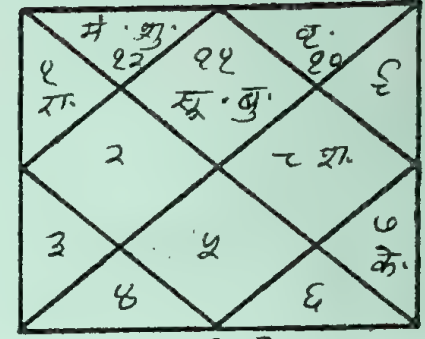
२५८७



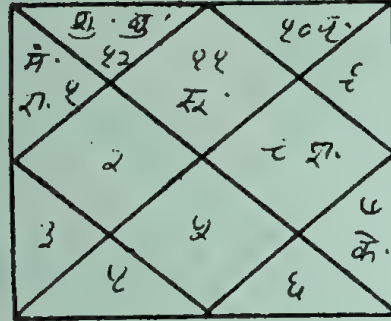
२५८८



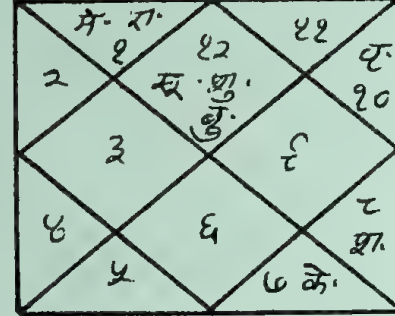
२५८९



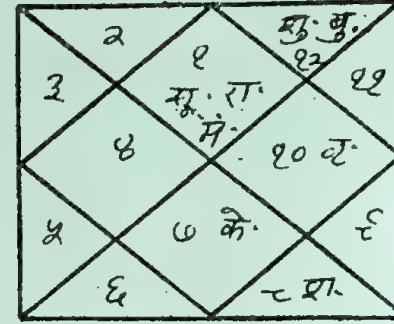
२६००



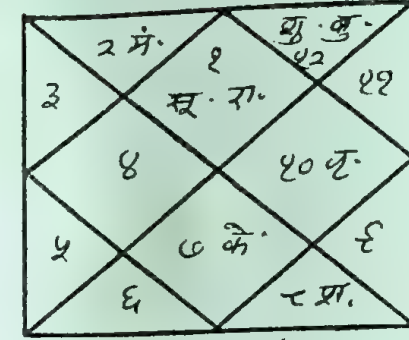
२६०१



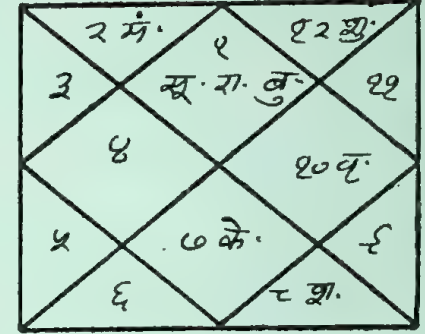
२६०२



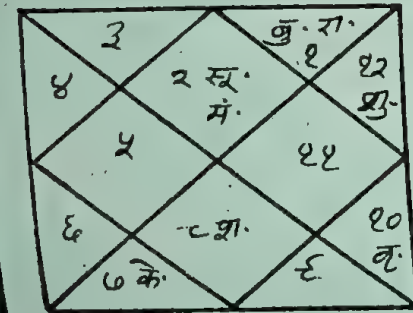
२६०३



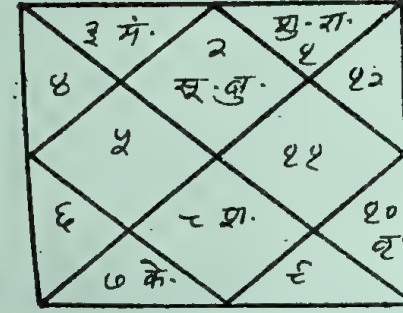
२६०४



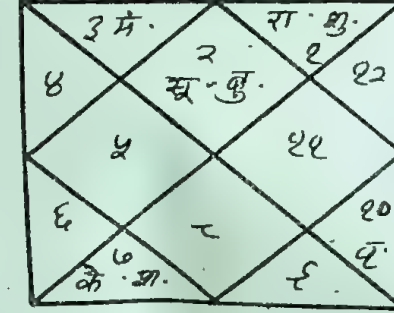
२६०५



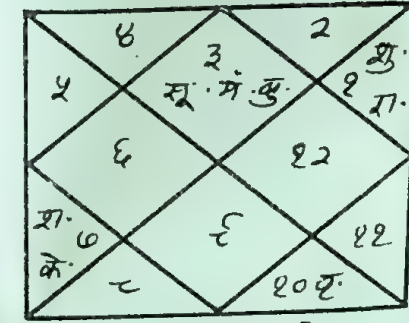
२६०६



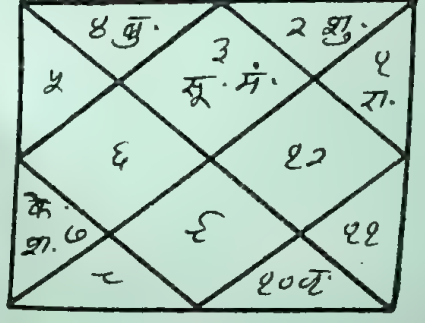
२६०७



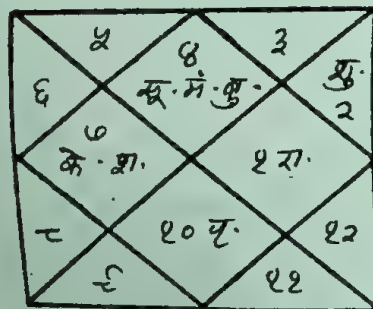
२६०८



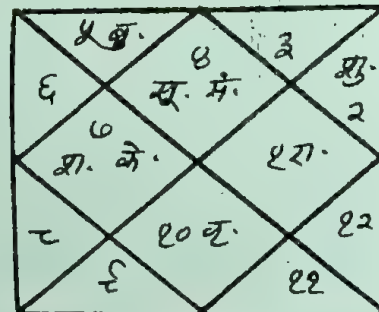
२६०९



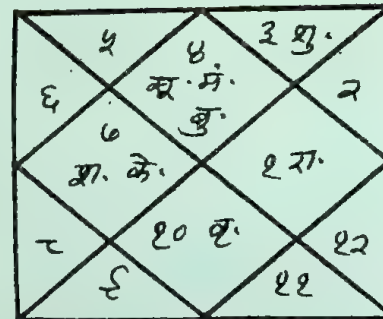
२६१०



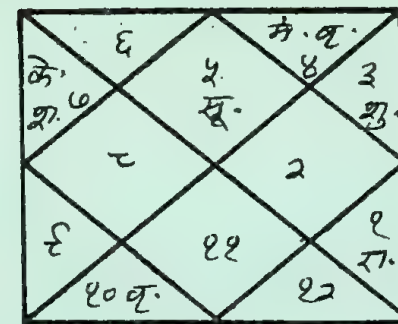
२६११



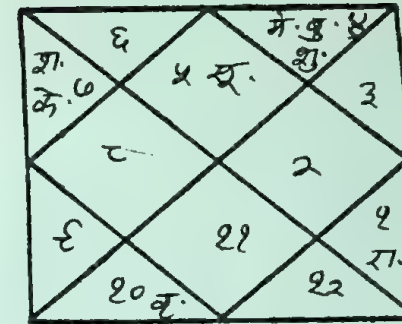
२६१२



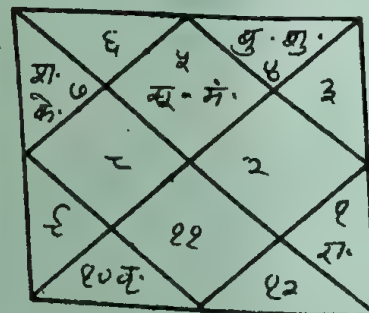
२६१३



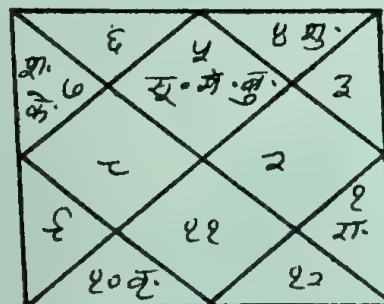
२६१४



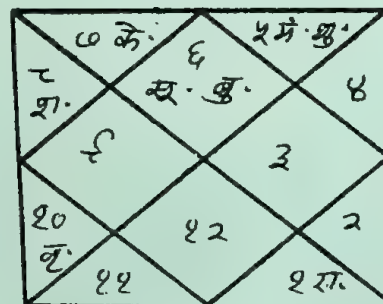
२६१५



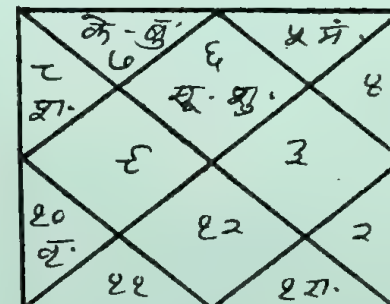
२६१६



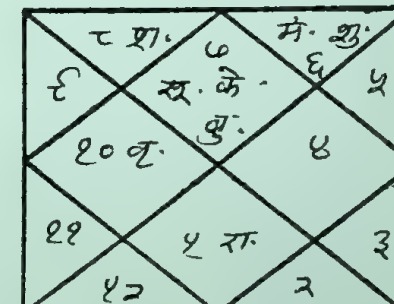
२६१७



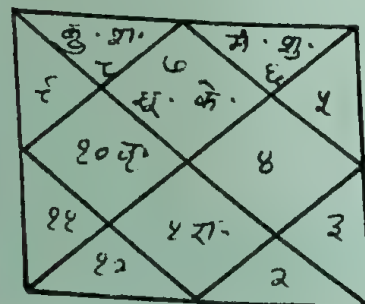
२६१८



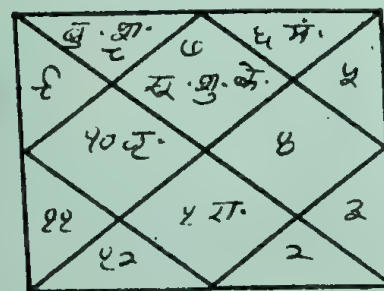
२६१९



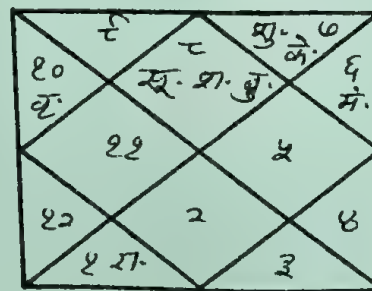
२६२०



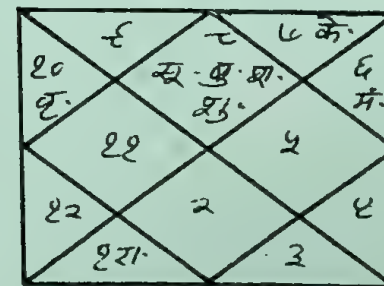
२६२१



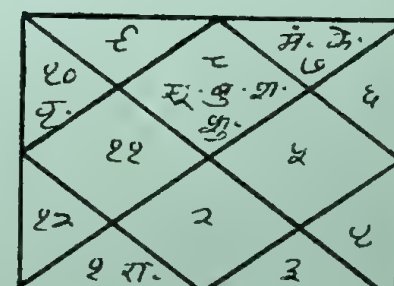
२६२२



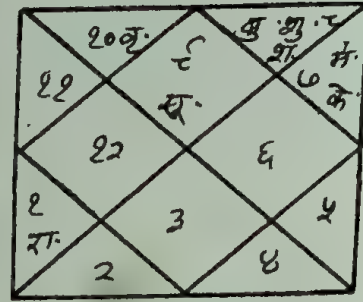
२६२३



२६२४



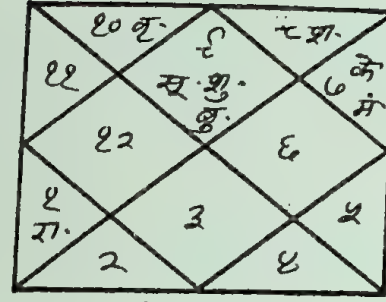
२६२५



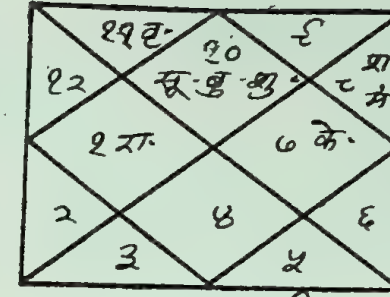
२६२६



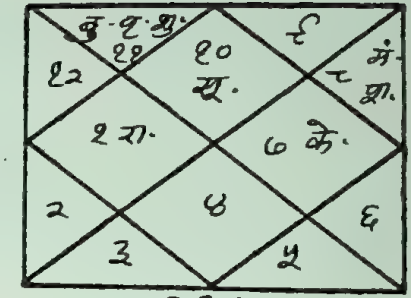
२६२७



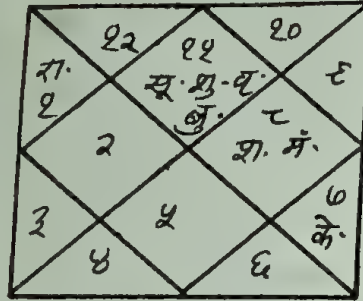
२६२८



२६२९



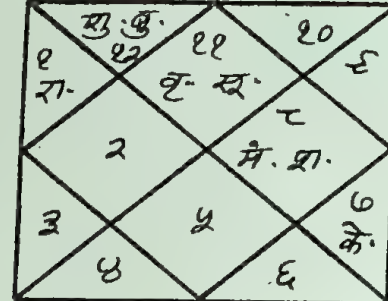
२६३०



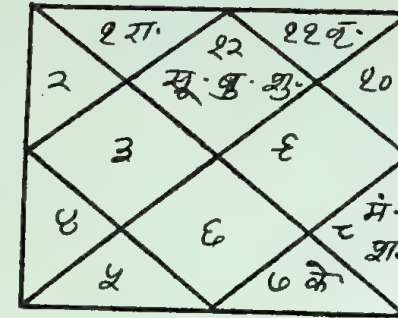
२६३१



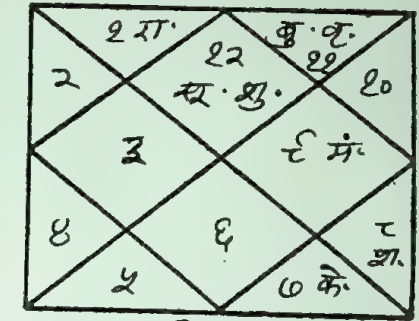
२६३२



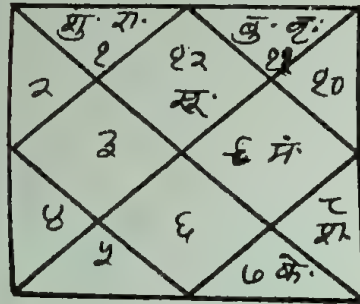
२६३३



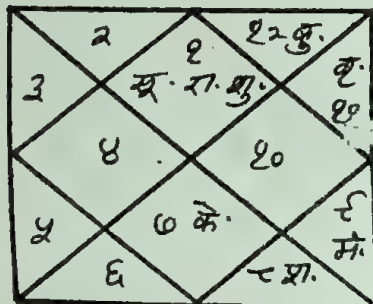
२६३४



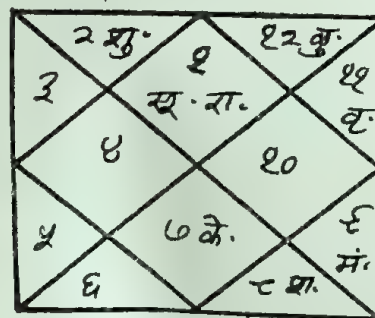
२६३५



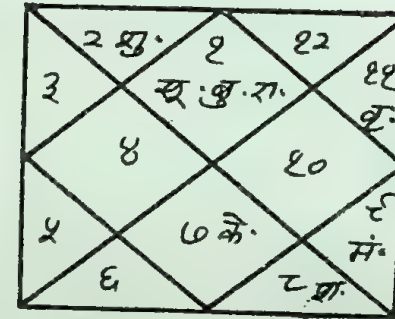
२६३६



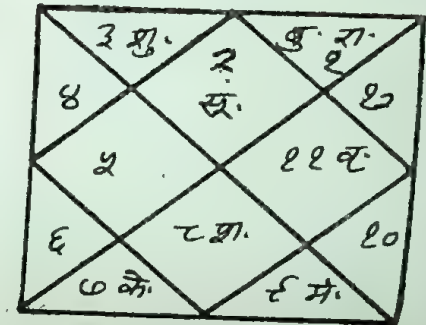
२६३७



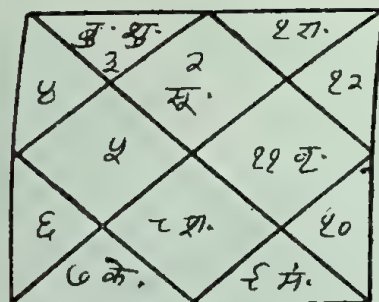
२६३८



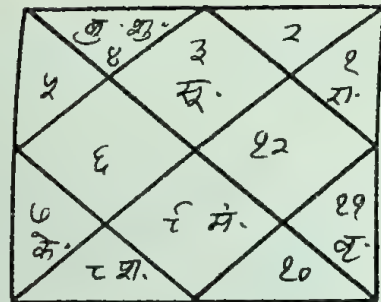
२६३९



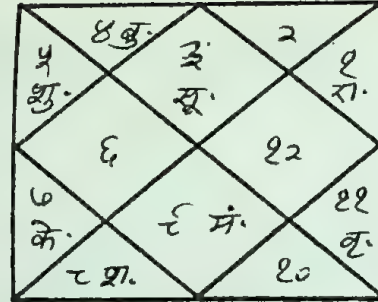
२६४०



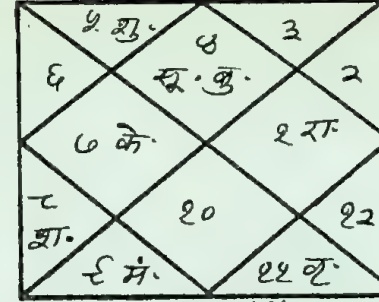
२६४१



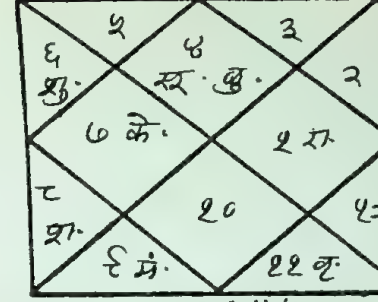
२६४२



२६४३



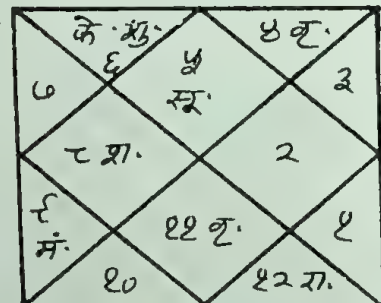
२६४४



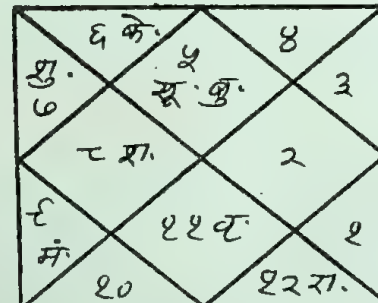
२६४५



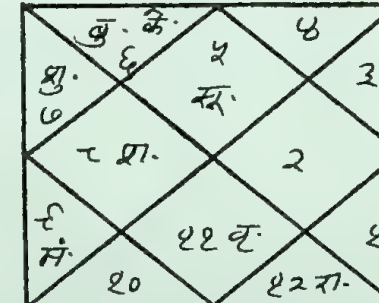
२६४६



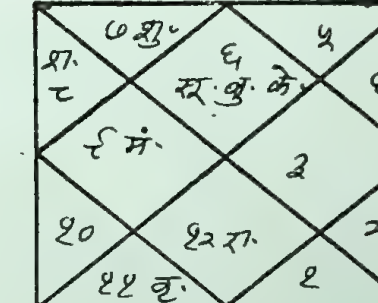
२६४७



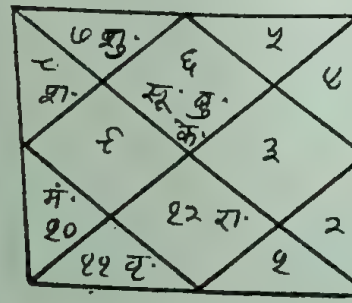
२६४८



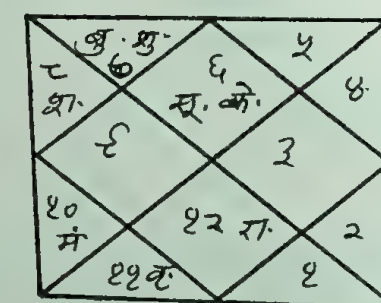
२६४९



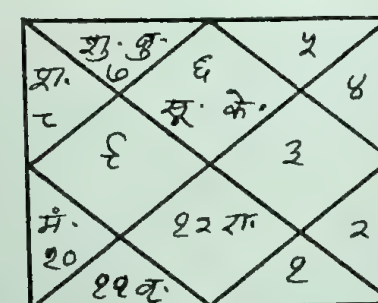
२६५०



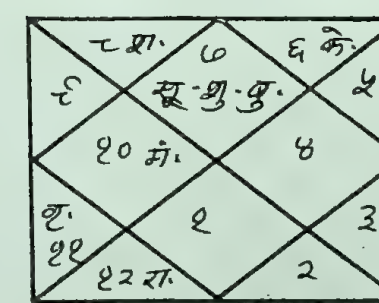
२६५१



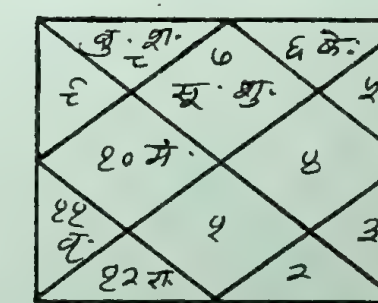
२६५२



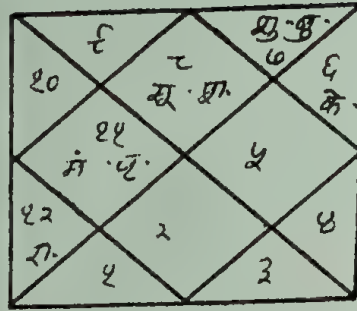
२६५३



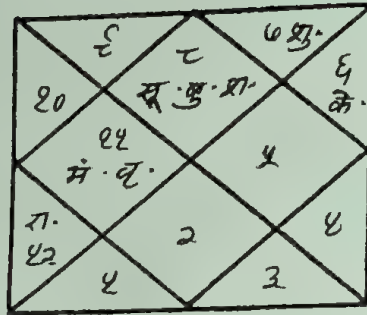
२६५४



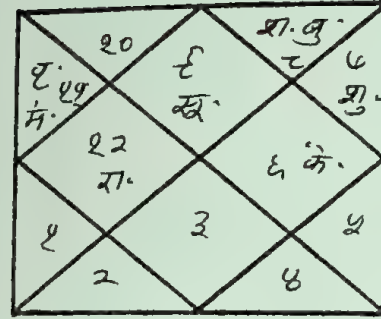
२६५५



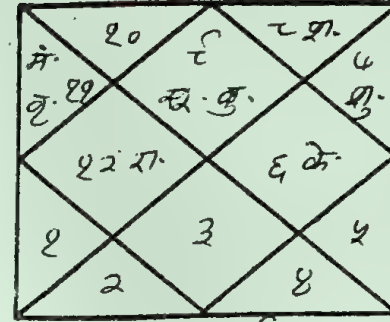
૨૬૪૬



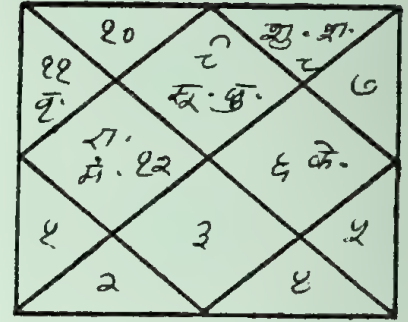
૨૬૪૮



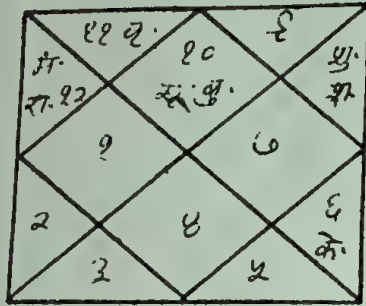
૨૬૪૮



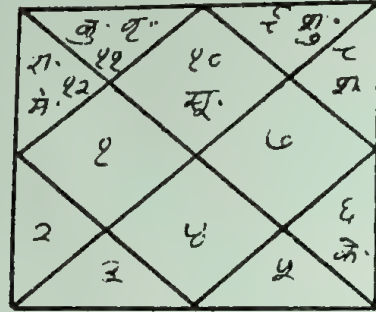
૨૬૪૮



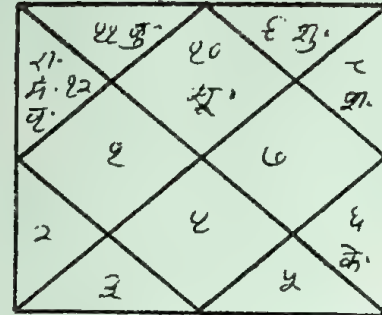
૨૬૬૦



૨૬૬૧



૨૬૬૨



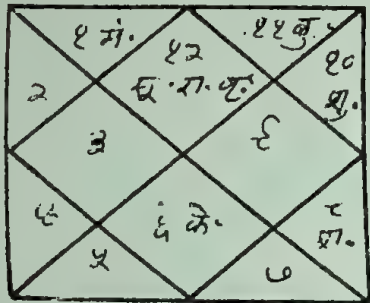
૨૬૬૩



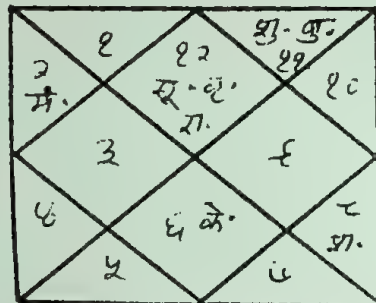
૨૬૬૪



૨૬૬૫



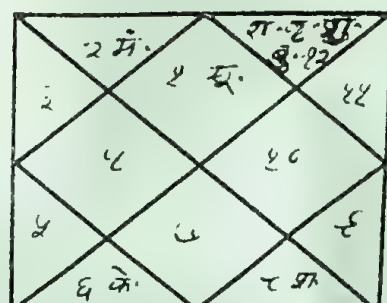
૨૬૬૬



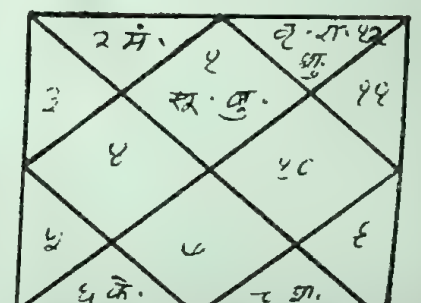
૨૬૬૭



૨૬૬૮



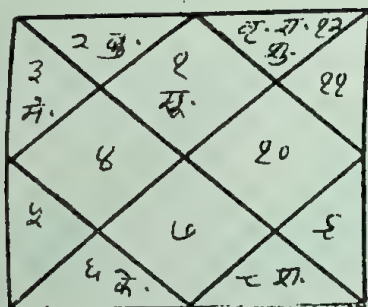
૨૬૬૯



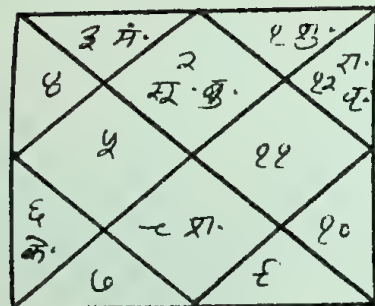
૨૬૭૦

4252

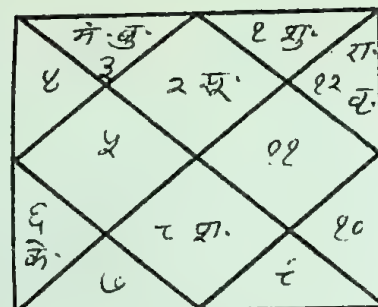
कु०
प०



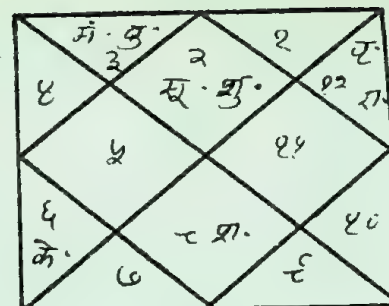
2962



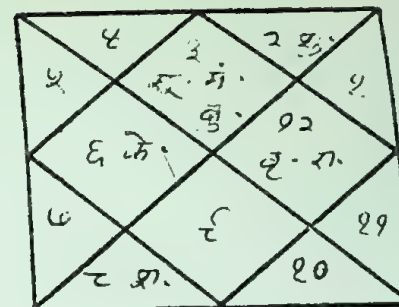
2542



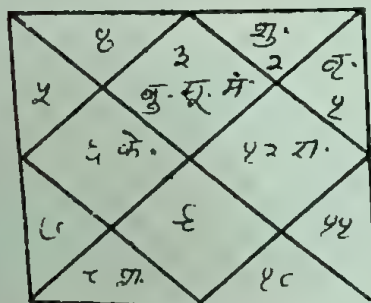
2463



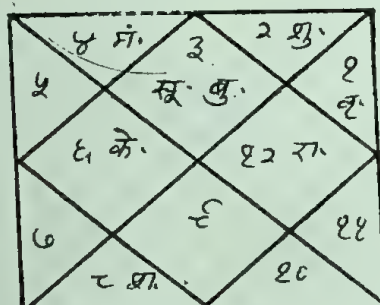
29. 10. 48



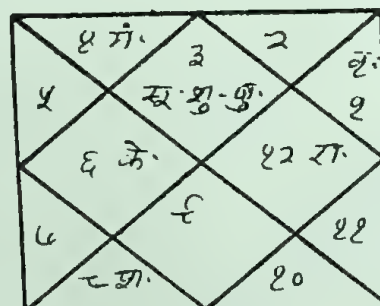
2E 62



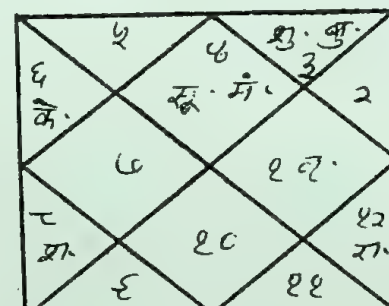
2E, 10E



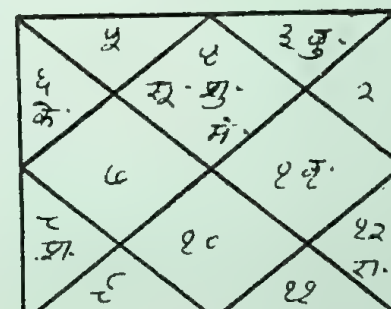
2966



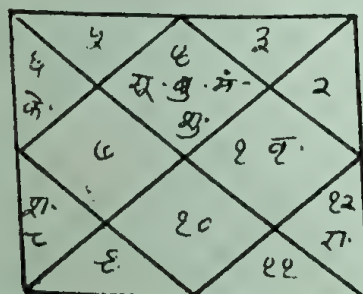
2502



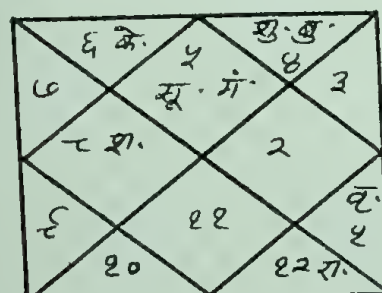
2948



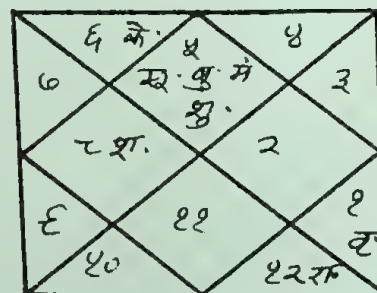
2470



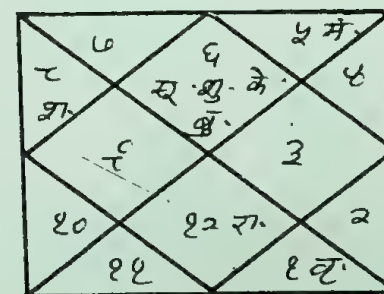
2572



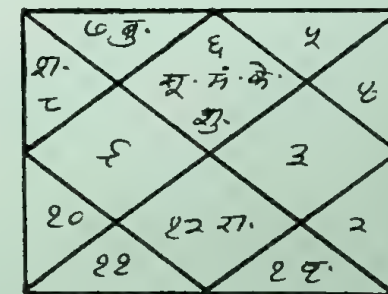
2572



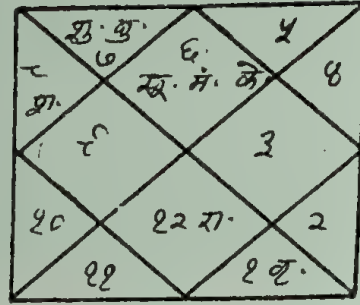
2473



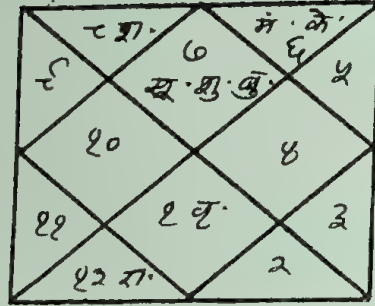
2924



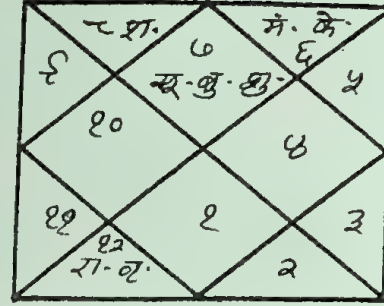
2822



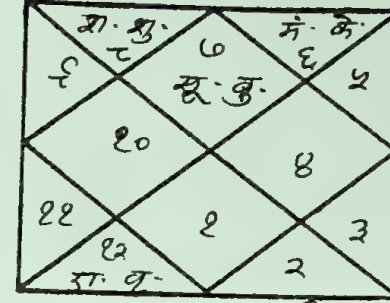
२६८६



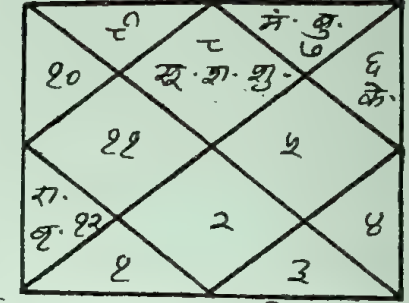
२६८७



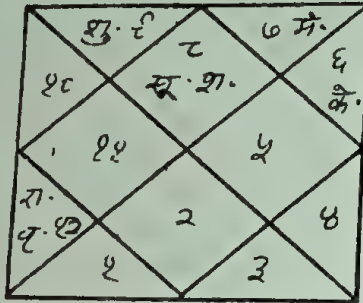
२६८८



२६८९



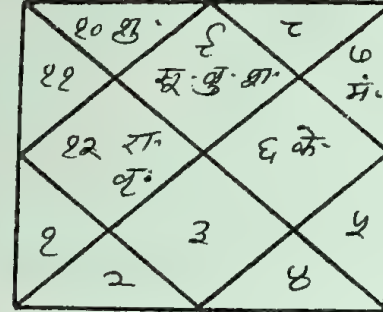
२६९०



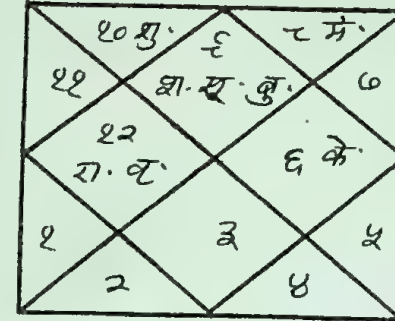
२६९१



२६९२



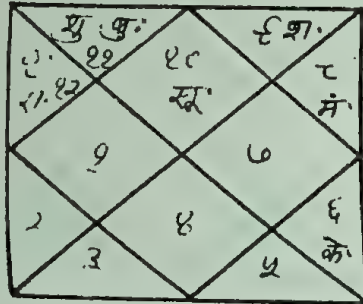
२६९३



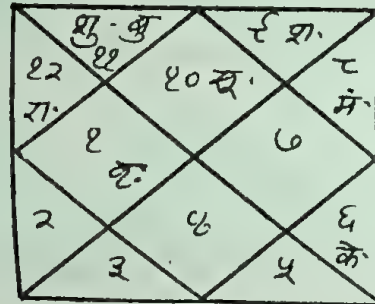
२६९४



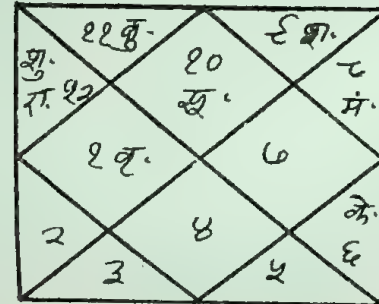
२६९५



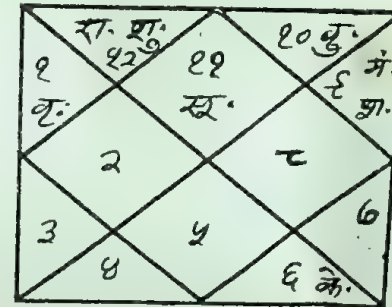
२६९६



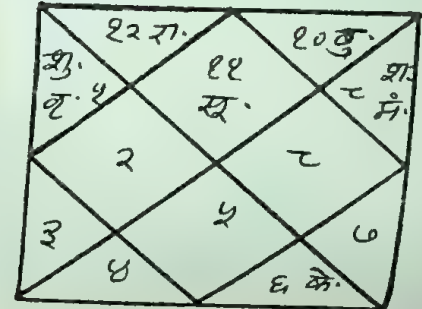
२६९७



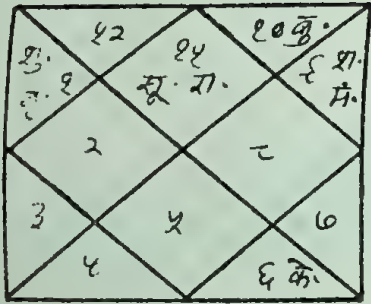
२६९८



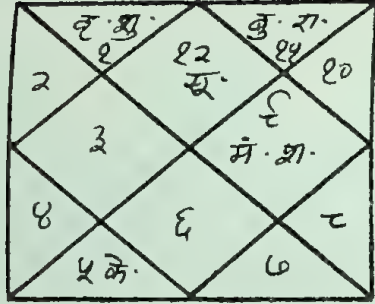
२६९९



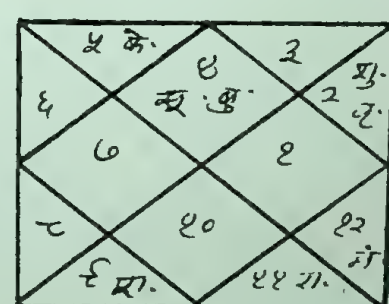
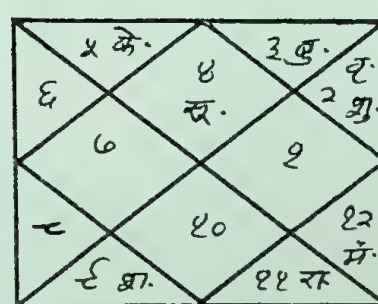
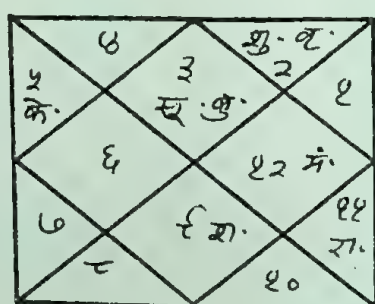
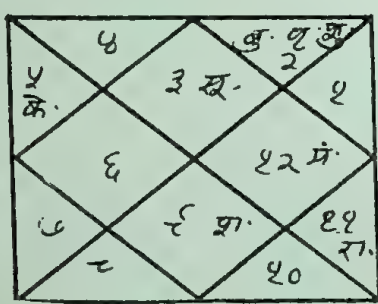
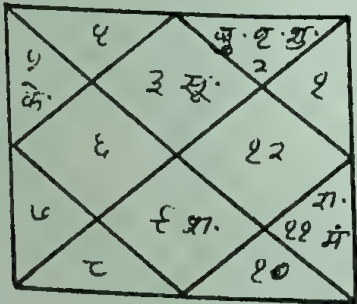
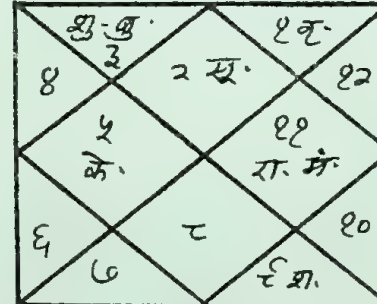
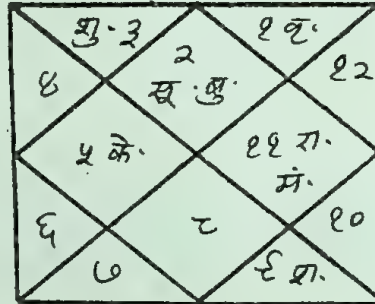
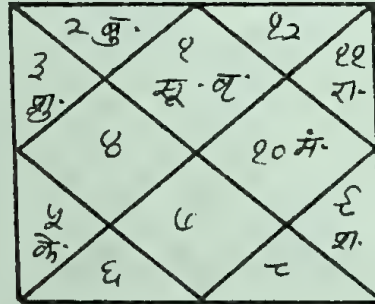
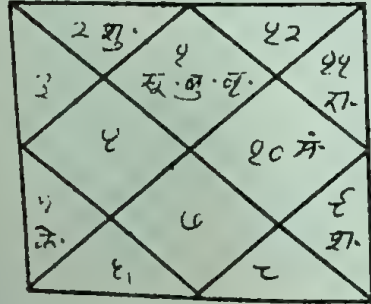
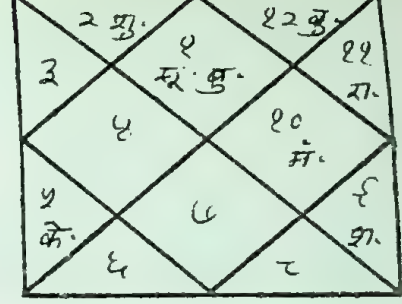
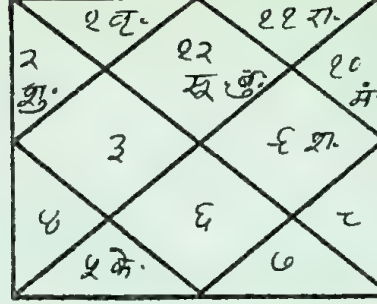
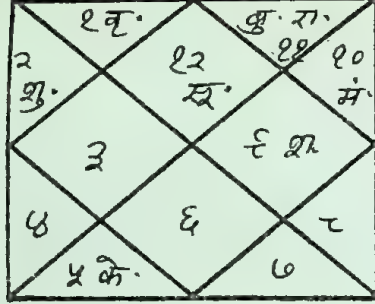
२७००



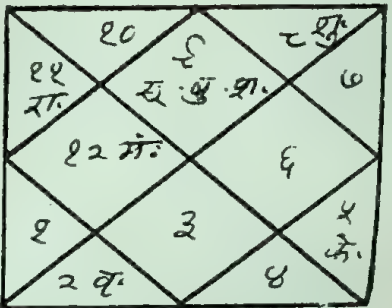
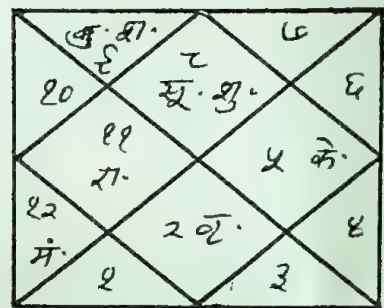
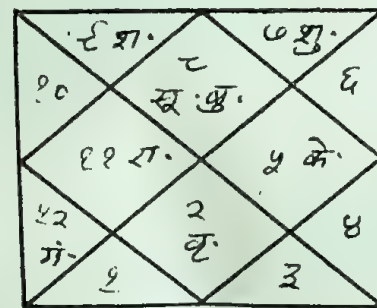
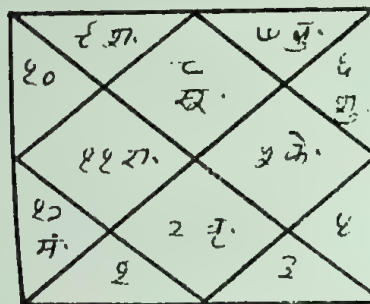
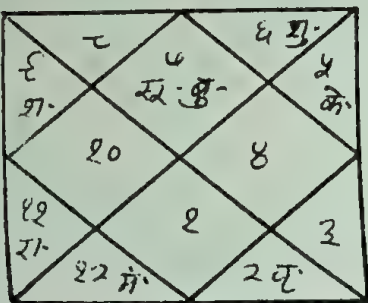
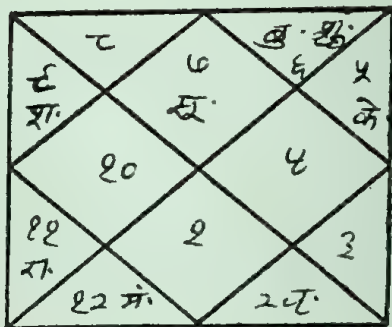
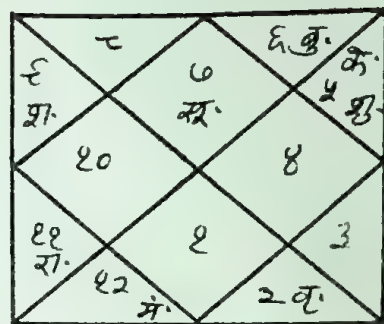
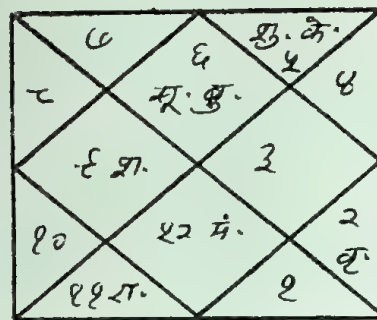
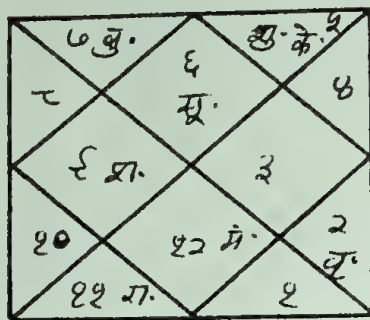
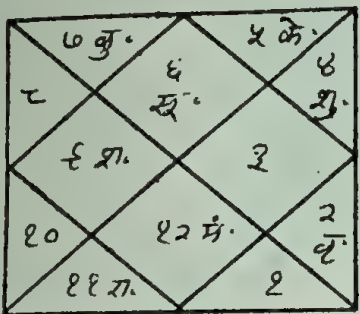
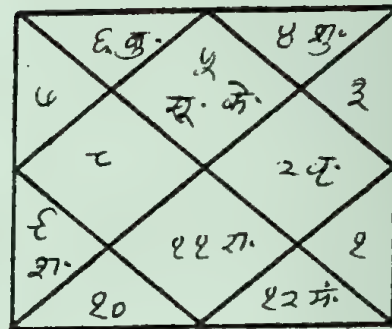
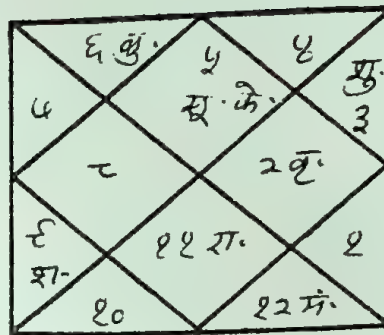
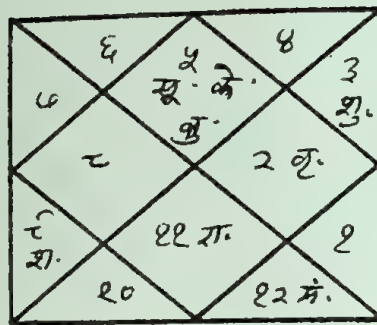
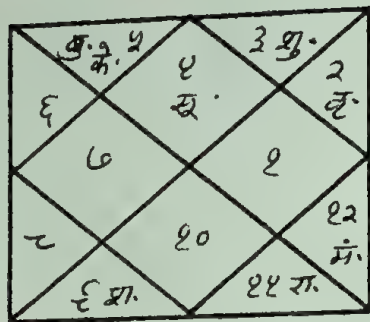
२००१



२००२



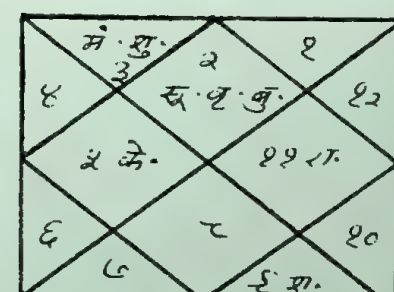
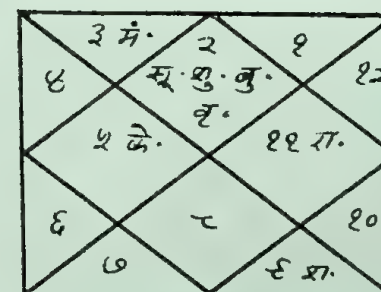
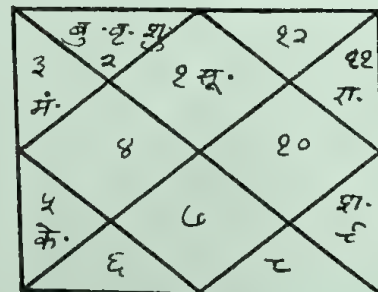
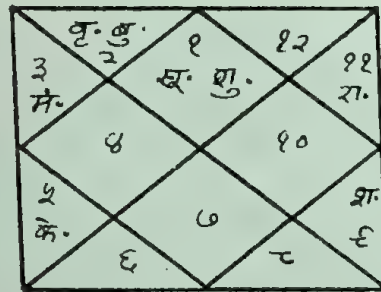
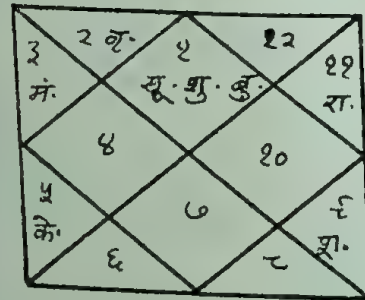
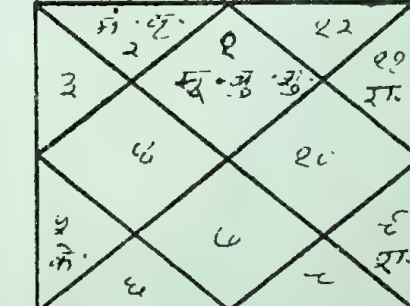
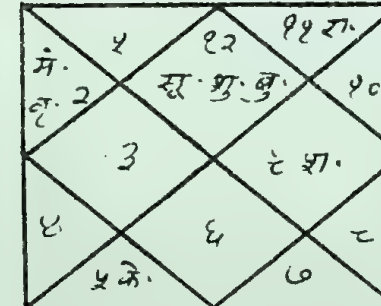
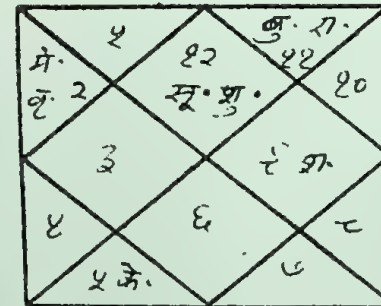
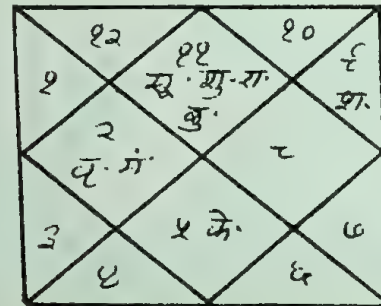
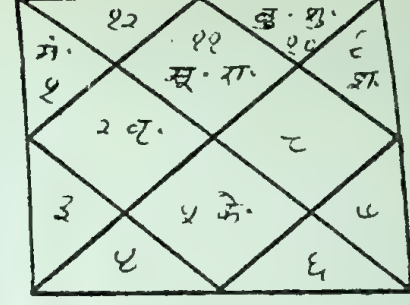
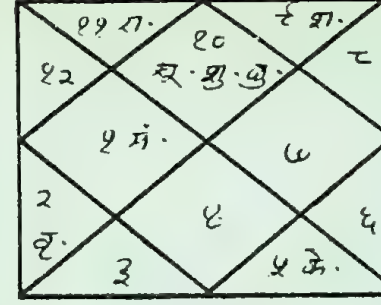
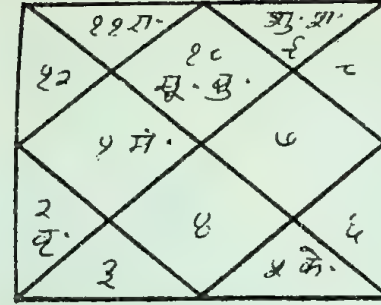
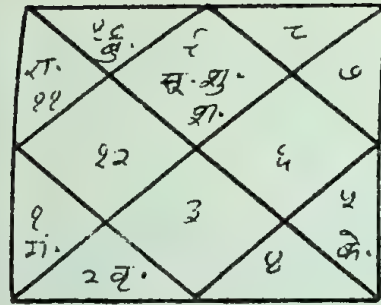
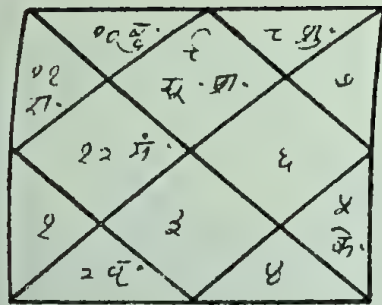
भ०
सं०
६५
००

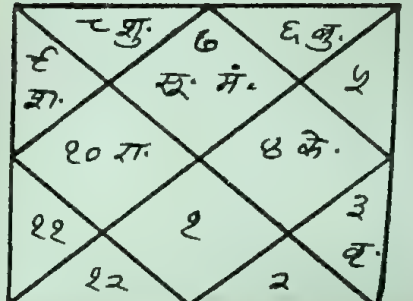
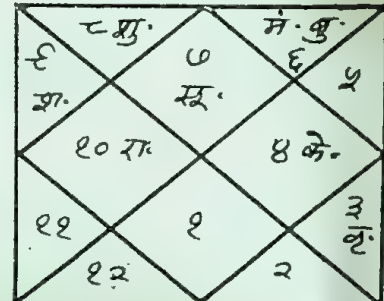
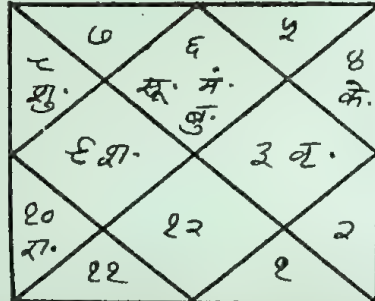
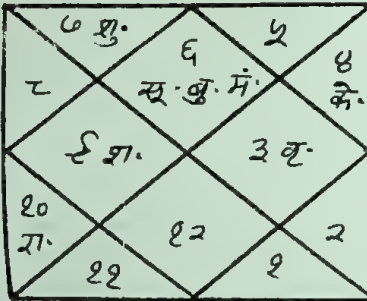
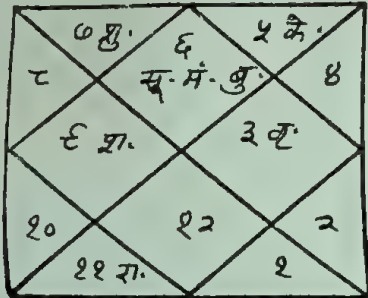
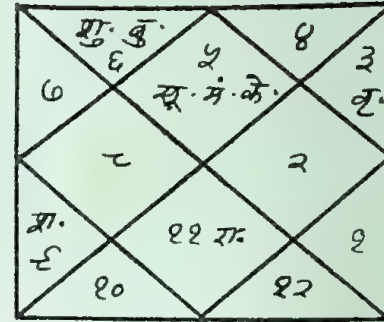
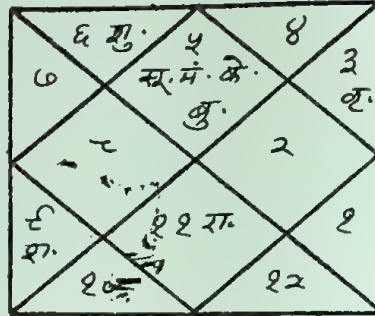
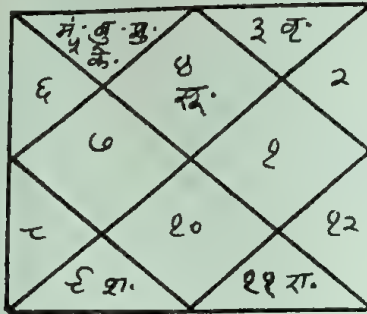
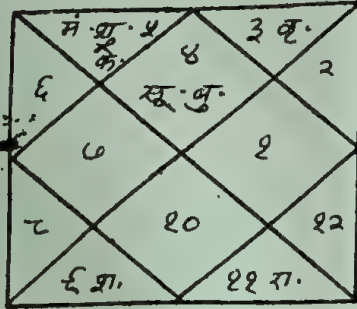
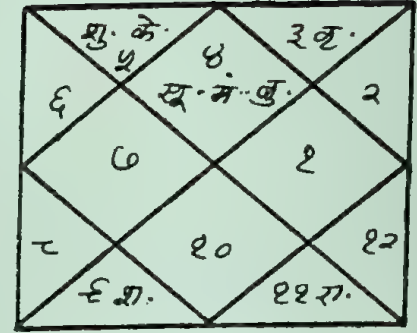
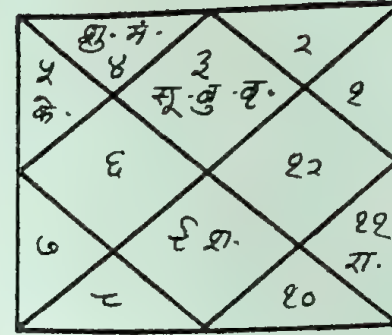
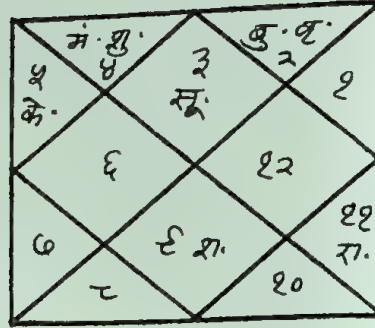
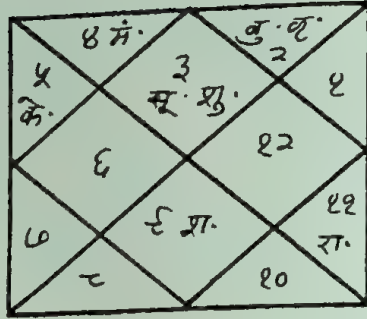
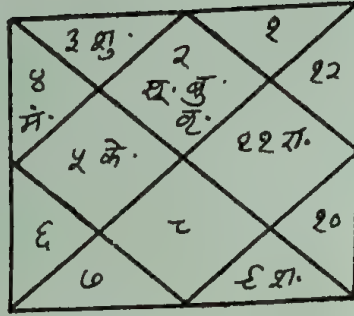


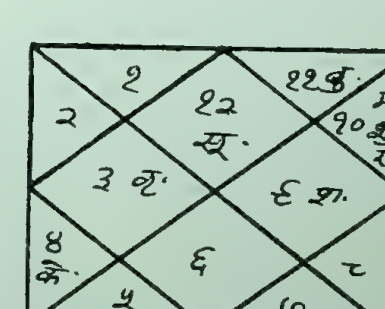
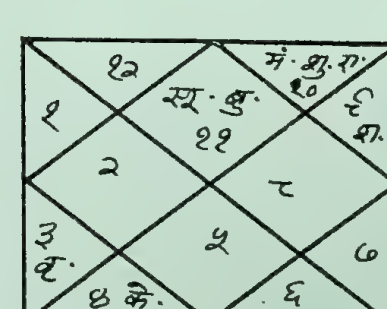
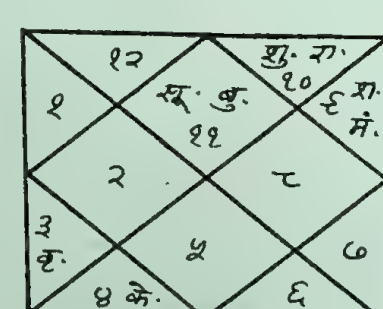
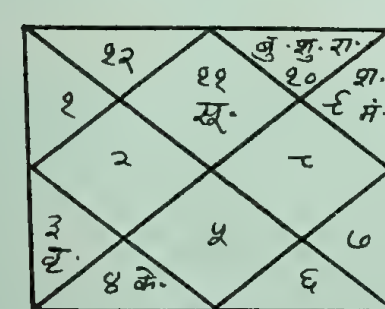
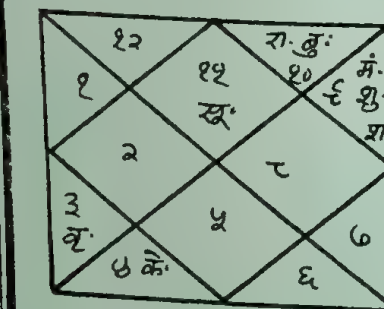
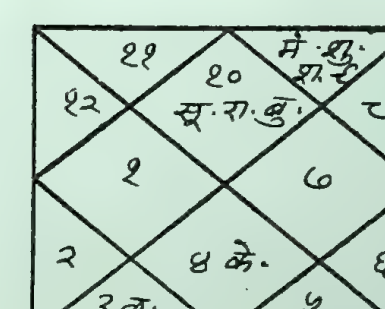
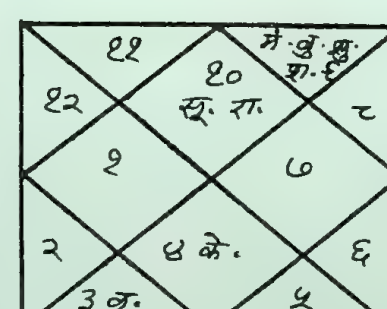
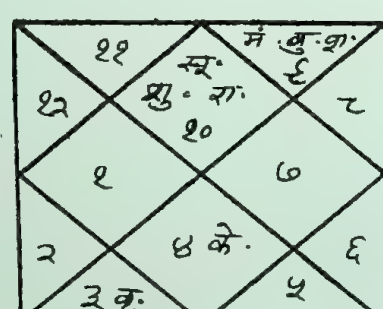
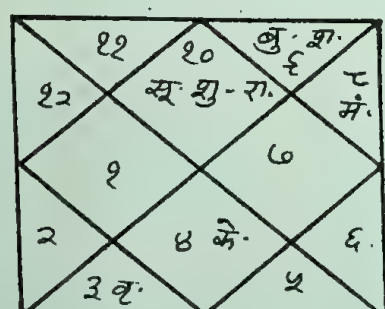
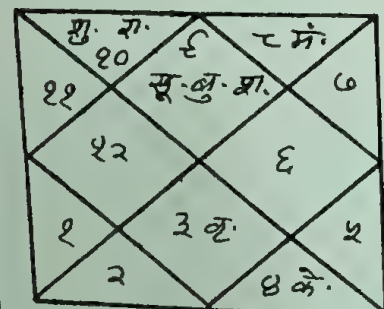
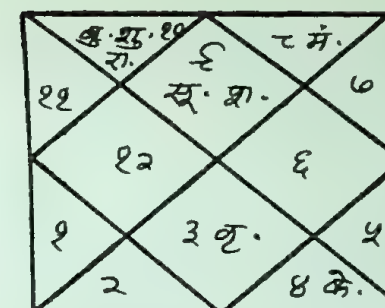
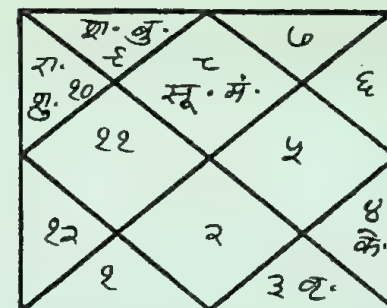
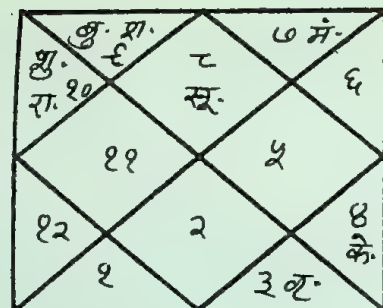
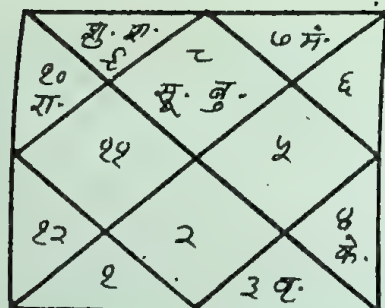
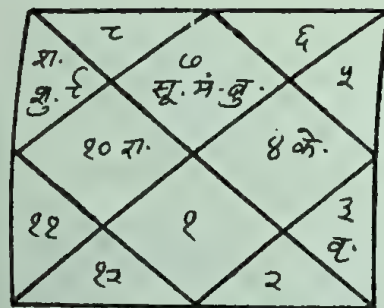
कु०
प०

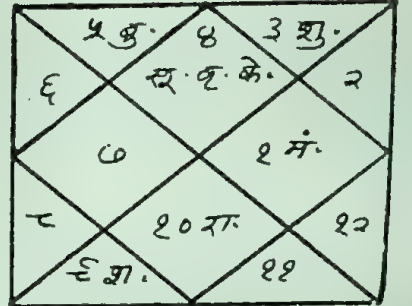
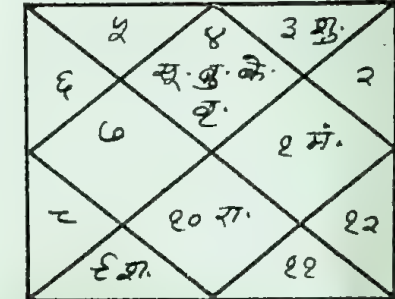
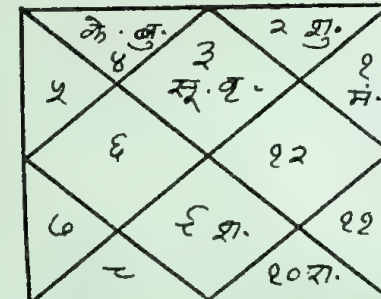
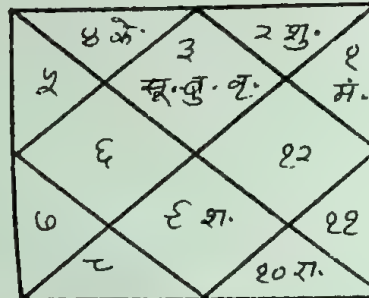
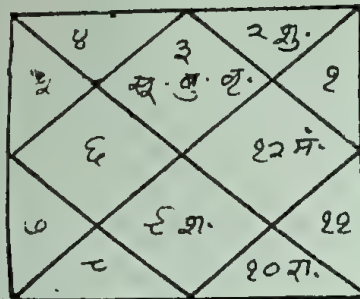
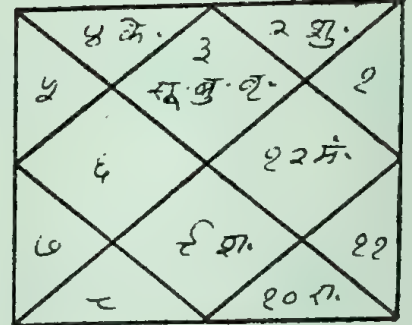
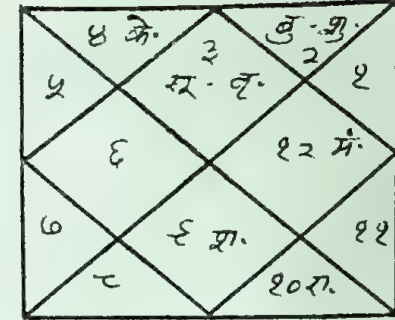
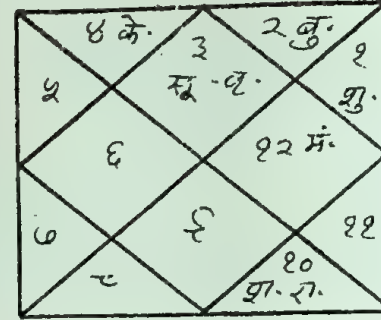
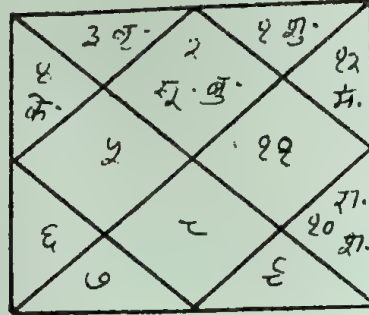
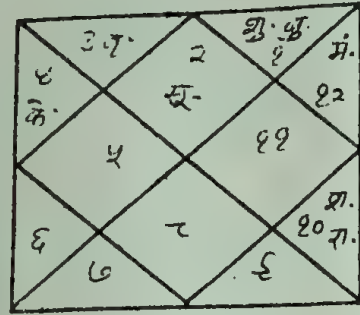
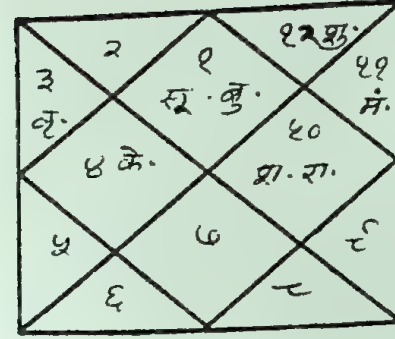
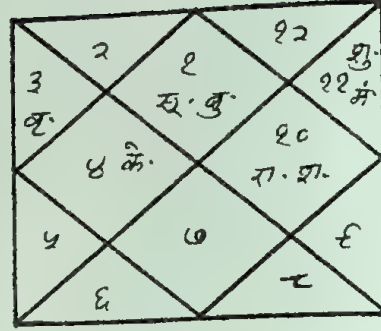
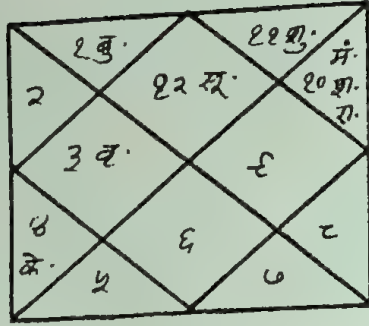
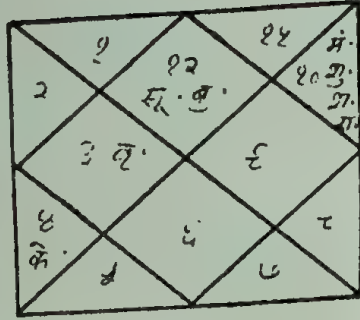
人々々

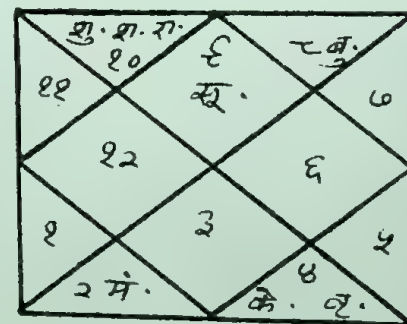
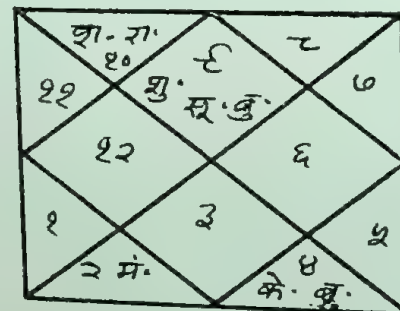
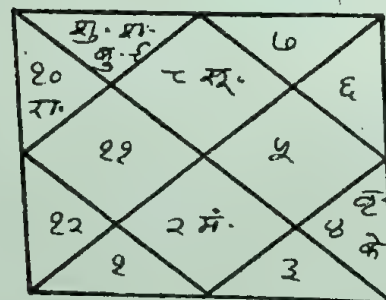
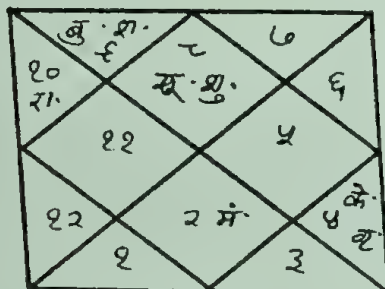
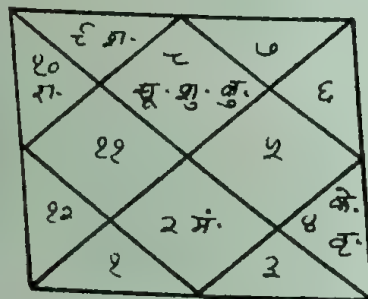
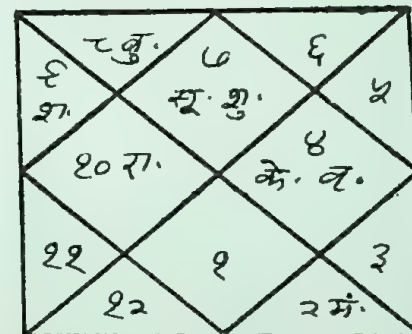
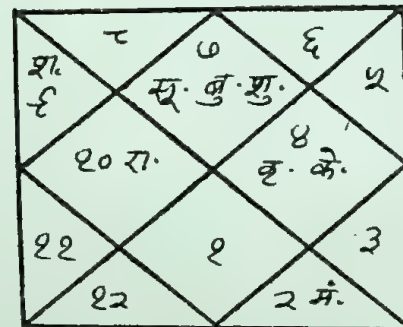
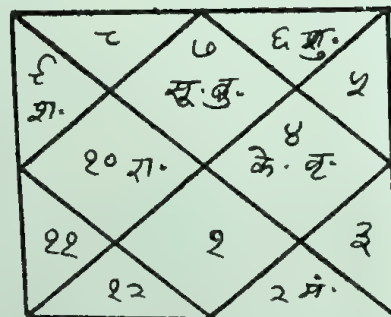
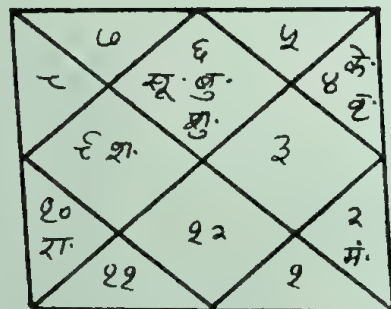
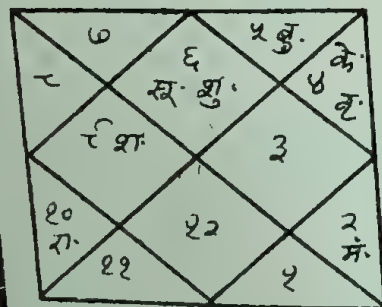
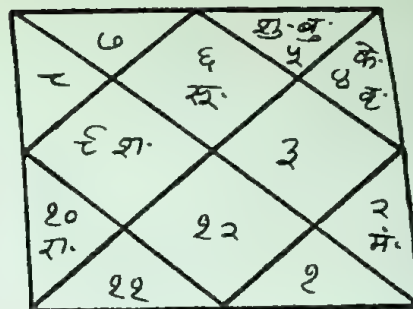
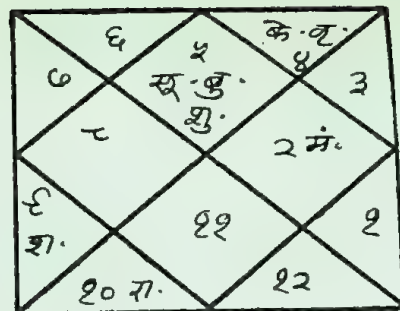
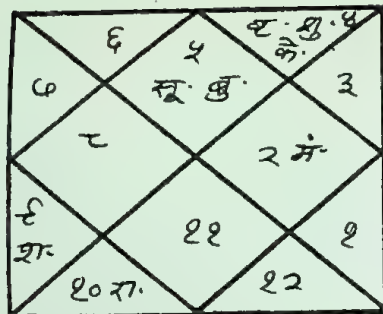
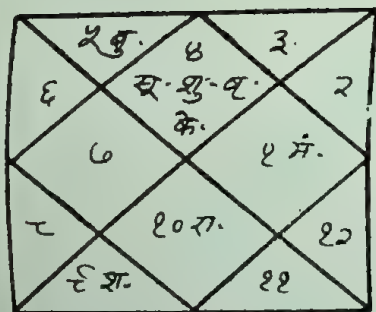
कु०
प०

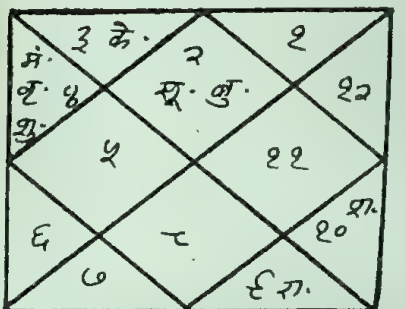
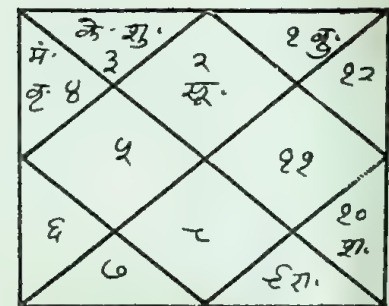
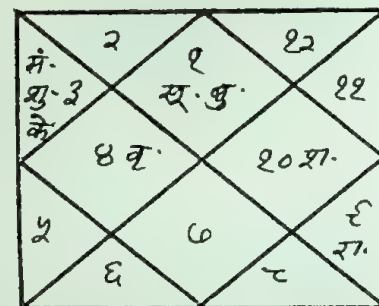
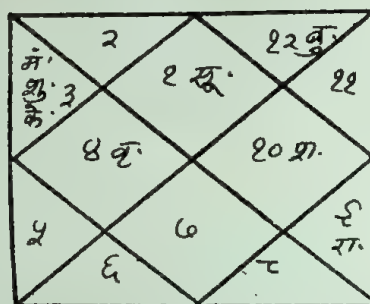
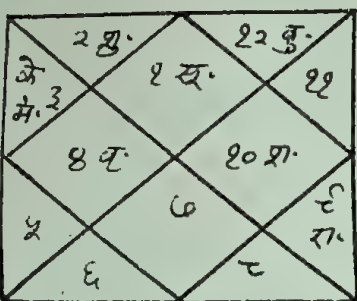
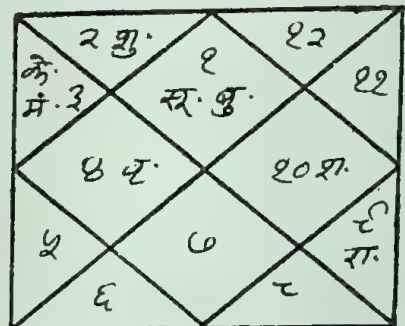
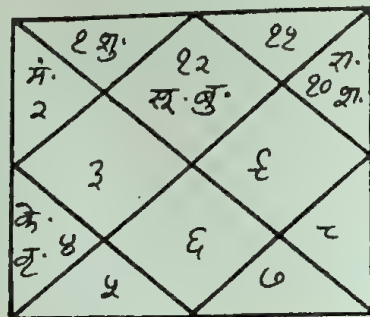
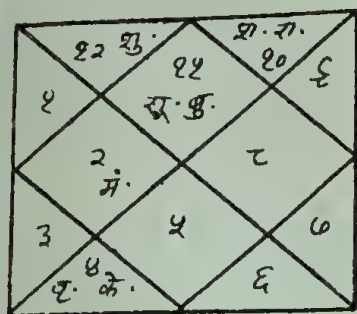
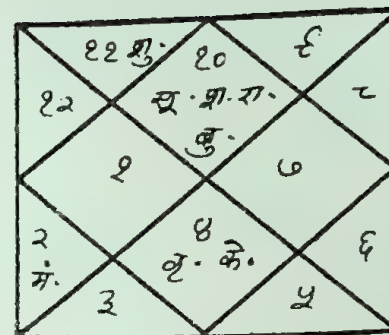
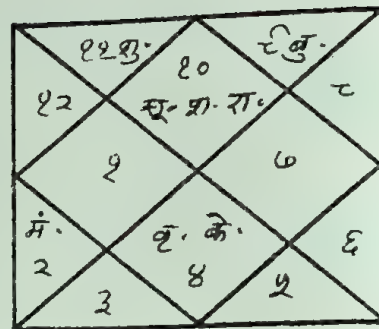
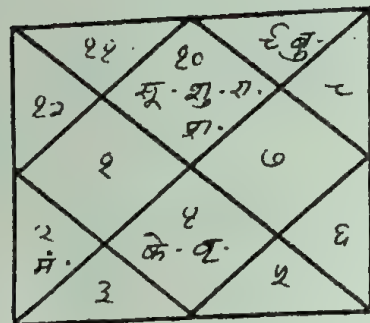
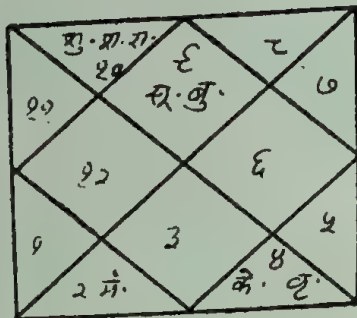




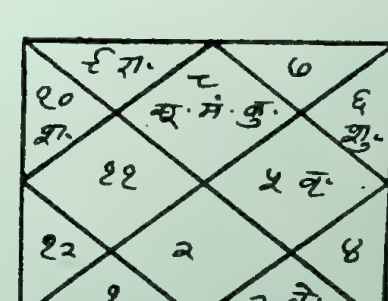
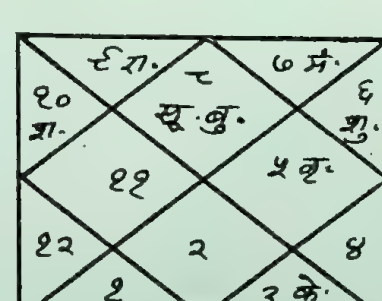
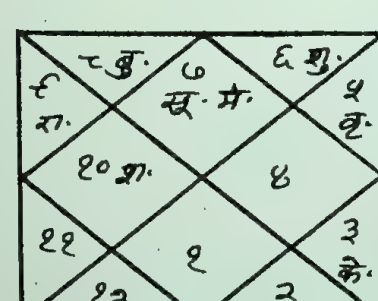
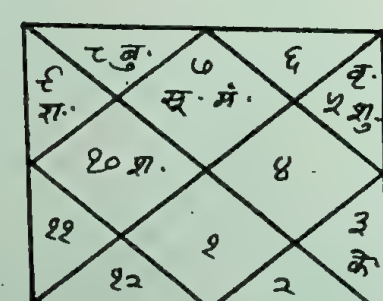
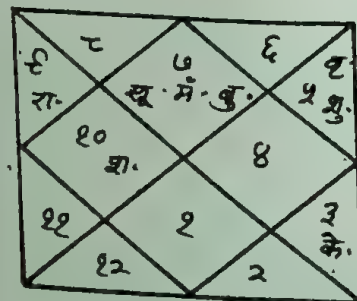
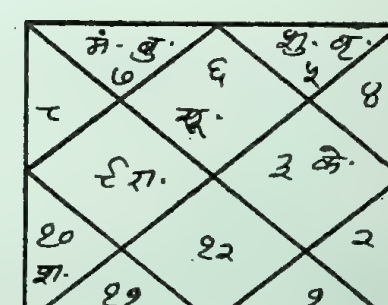
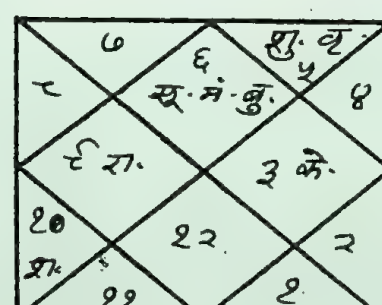
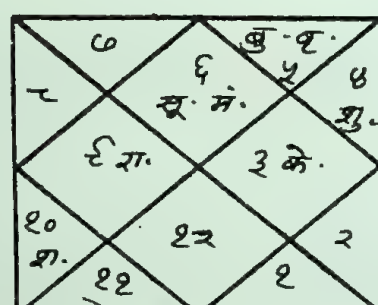
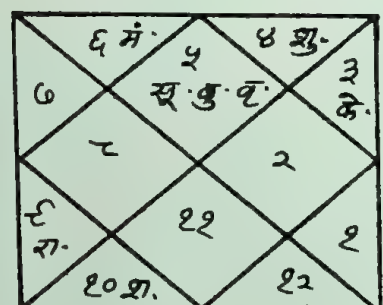
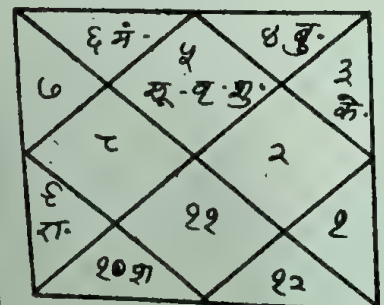
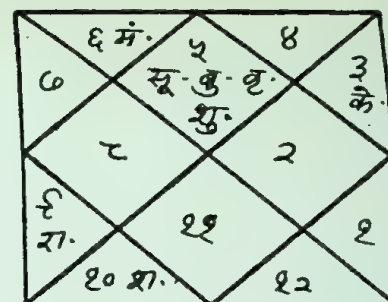
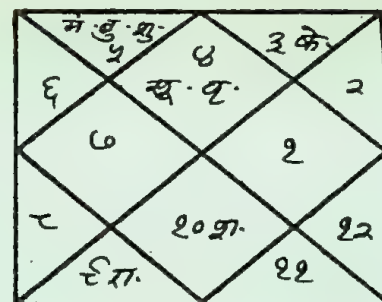
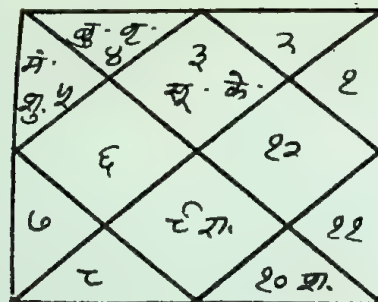
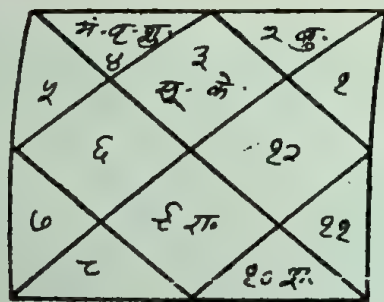




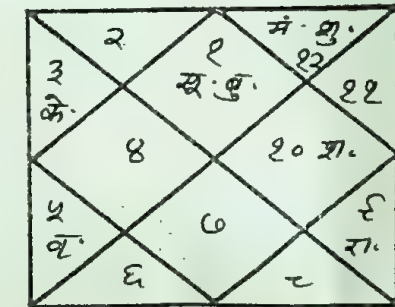
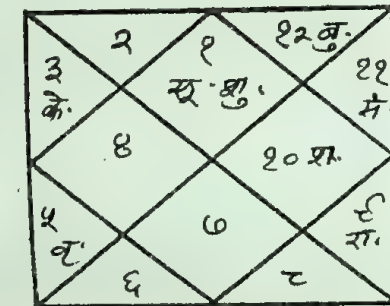
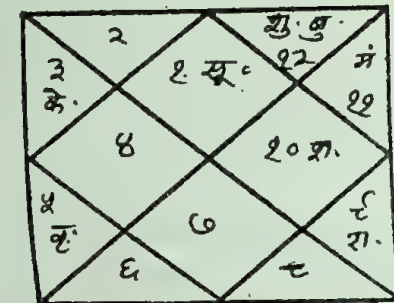
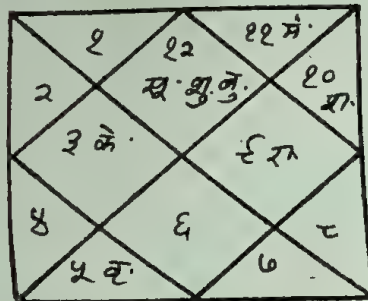
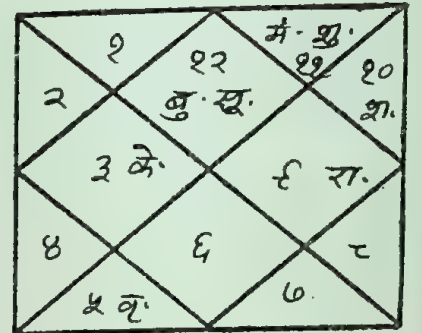
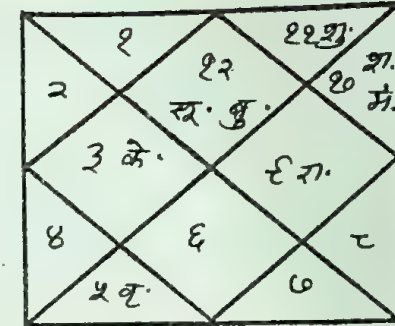
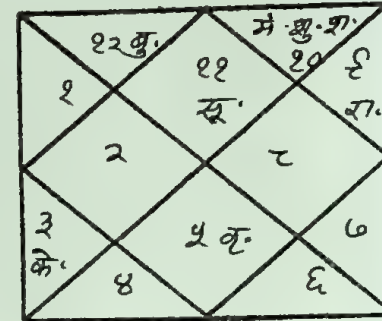
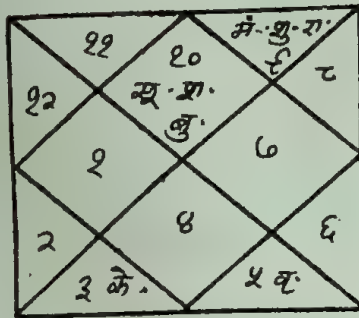
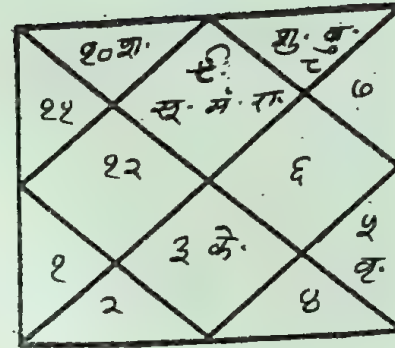
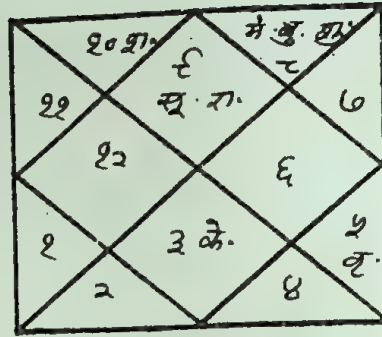
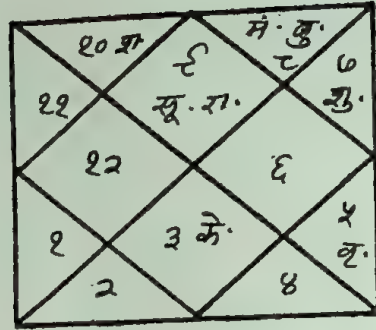
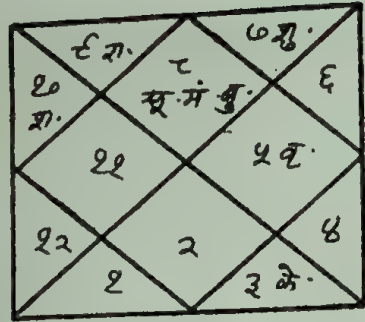


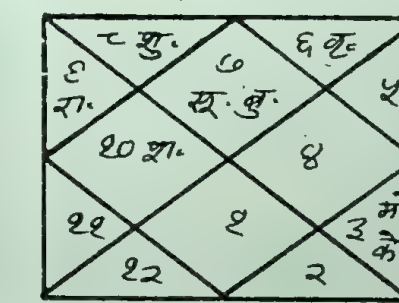
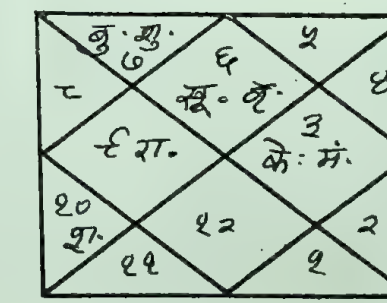
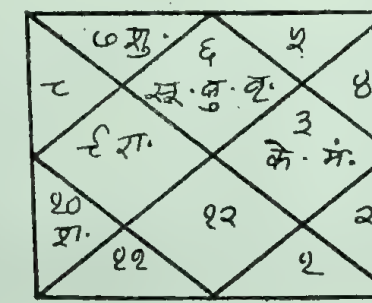
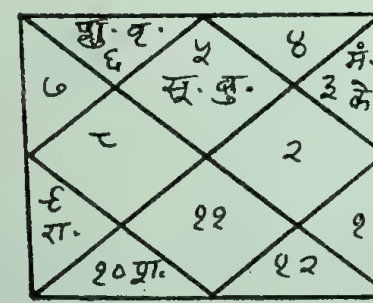
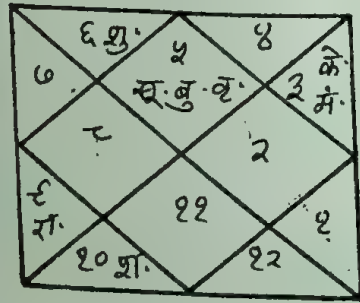
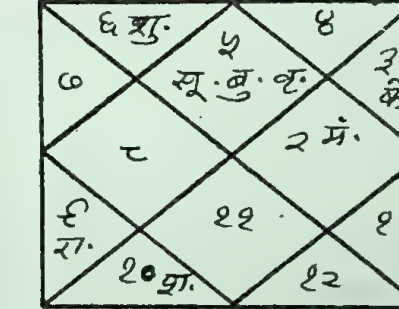
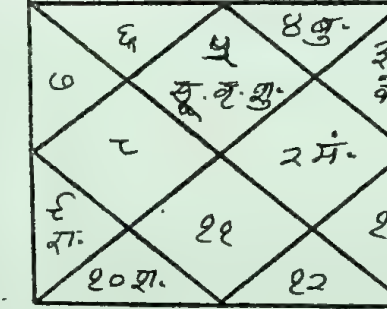
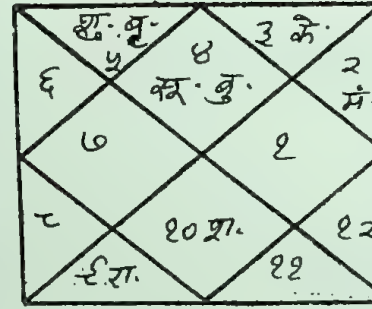
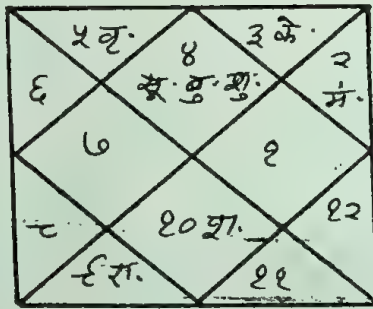
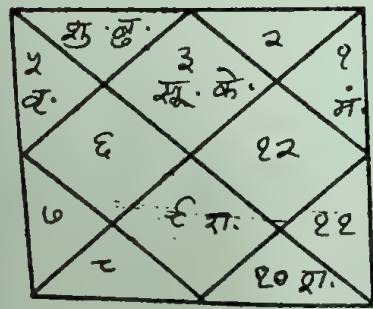
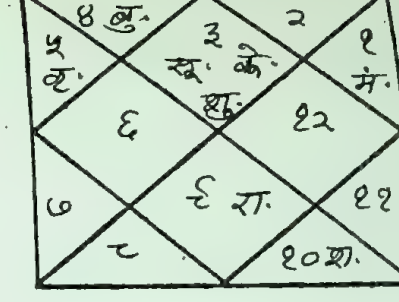
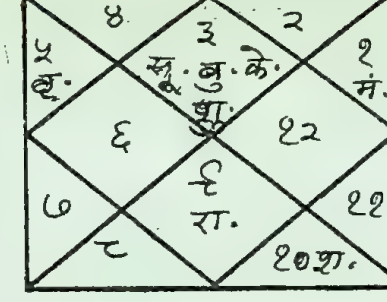
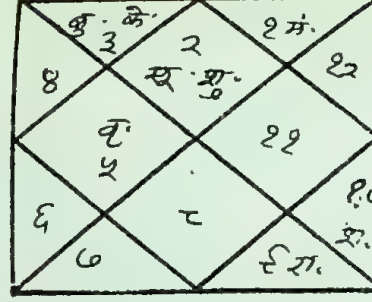


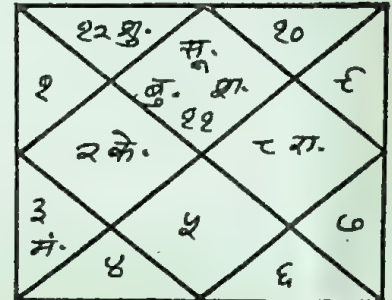
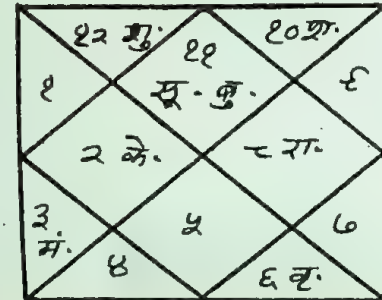
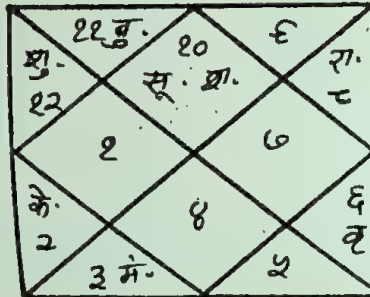
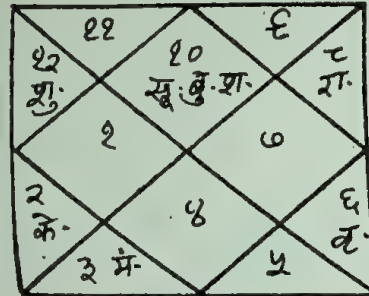
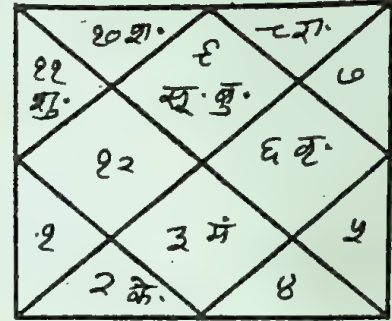
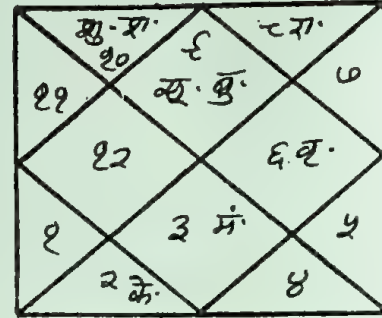
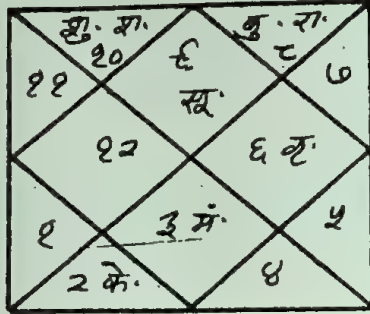
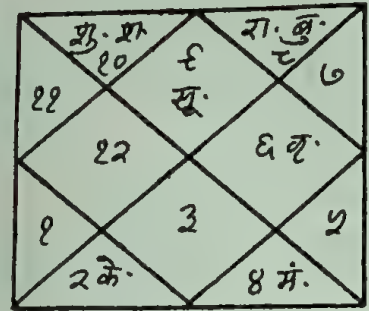
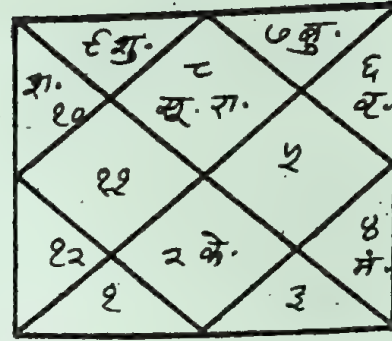
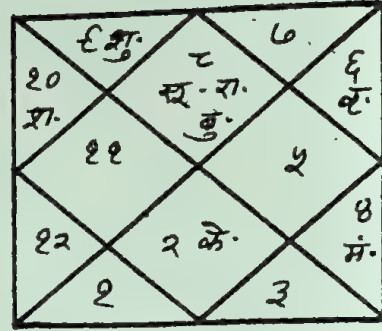
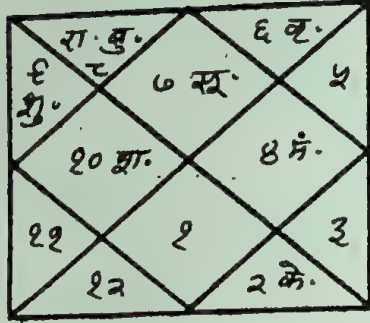
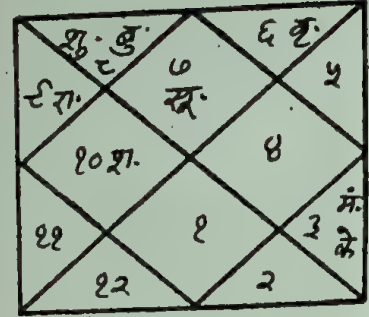
भू०
सं०
२३
७०

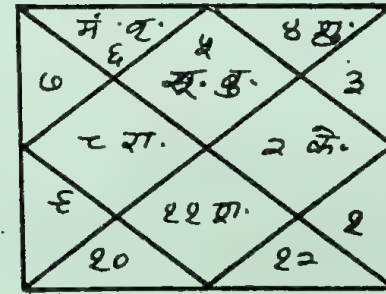
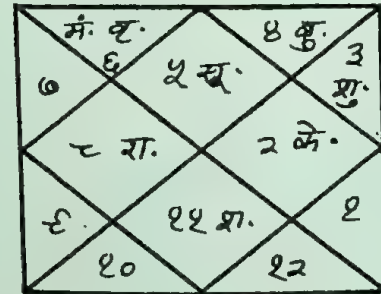
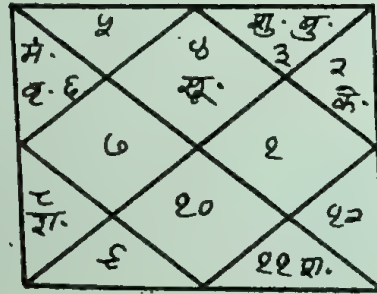
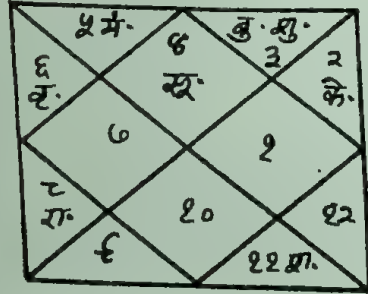
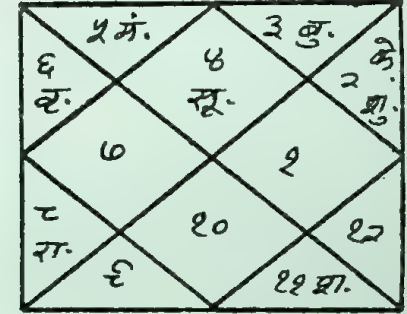
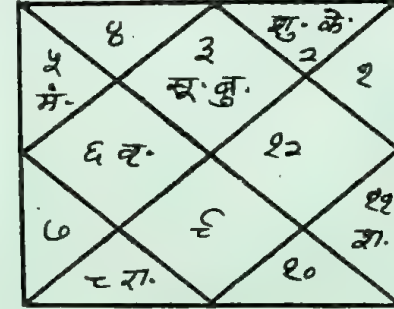
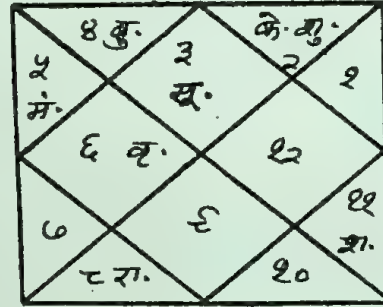
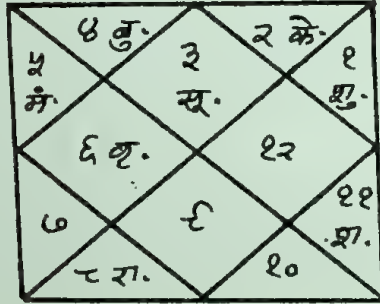
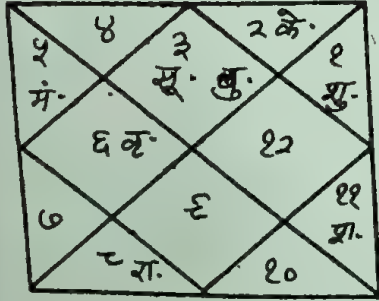
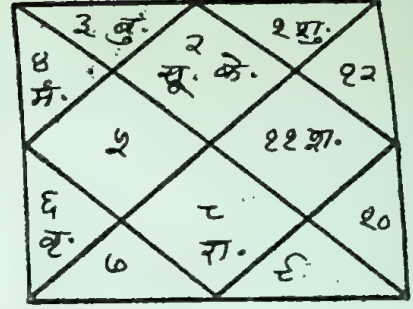
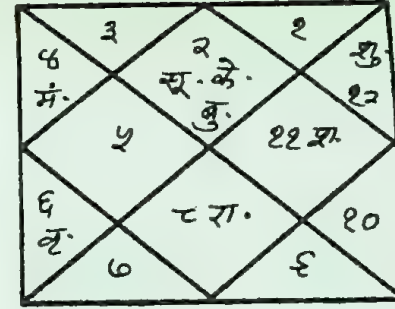
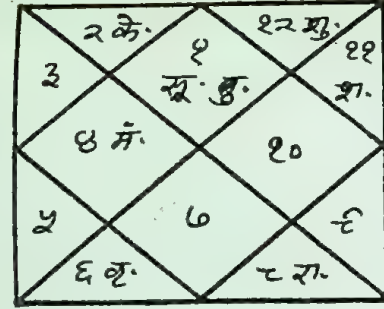
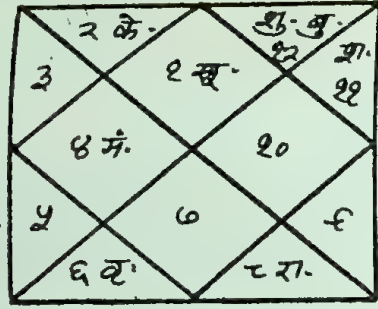
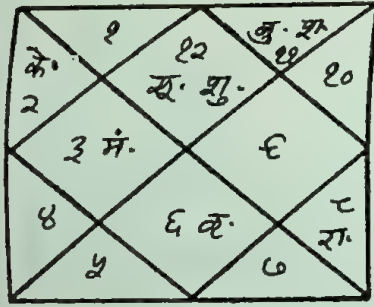


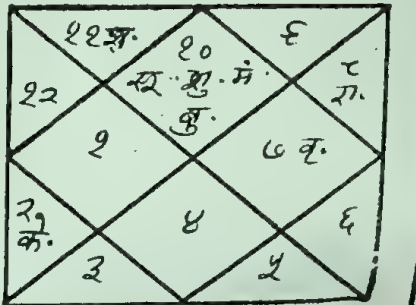
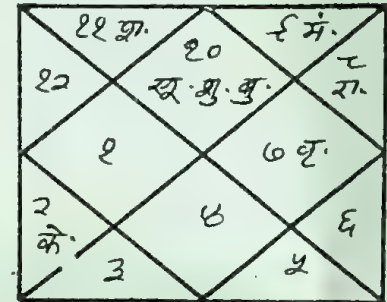
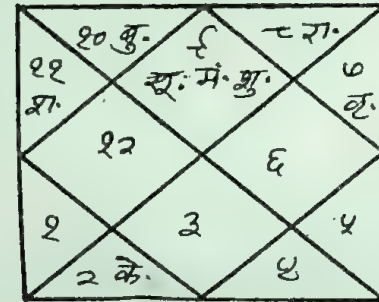
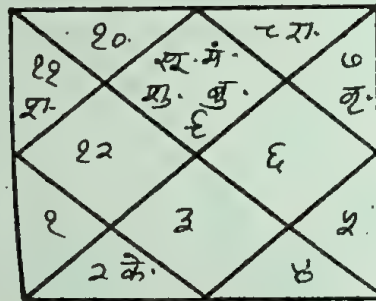
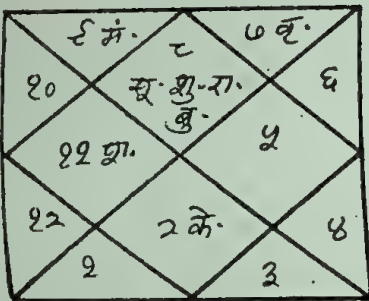
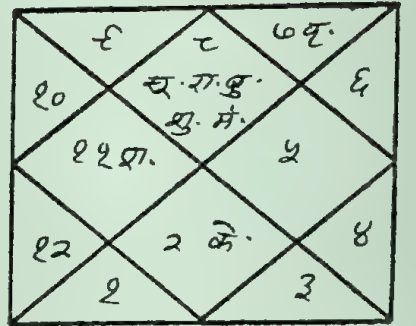
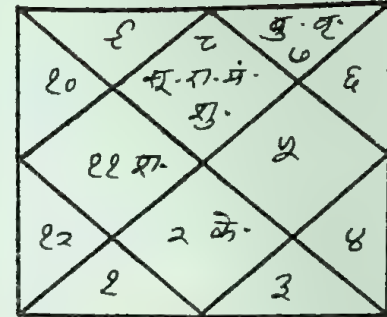
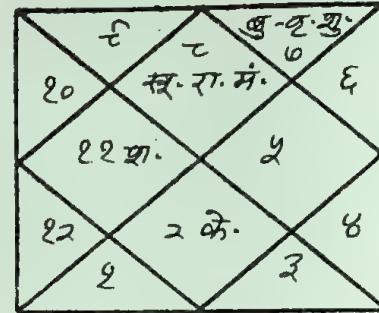
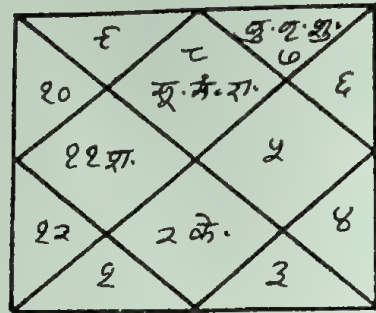
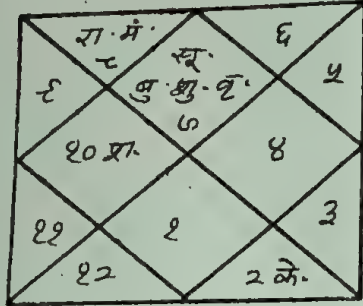
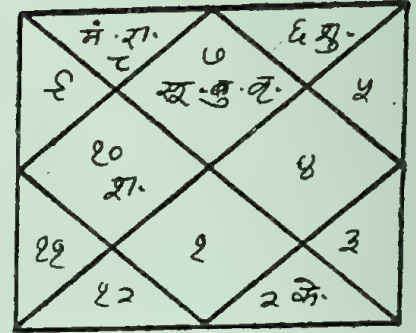
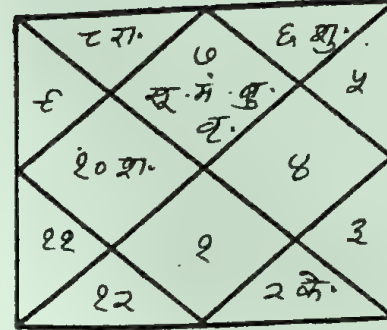
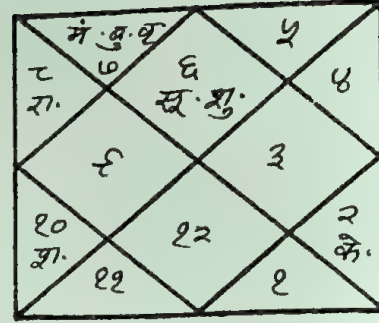
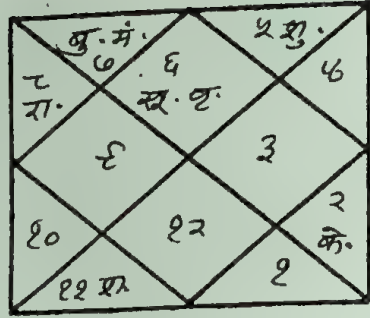
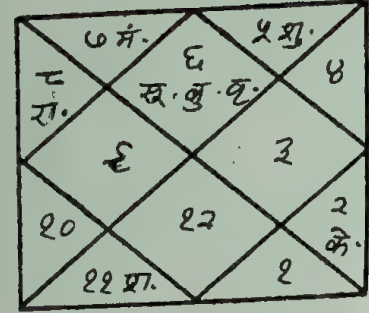
कु०
प०

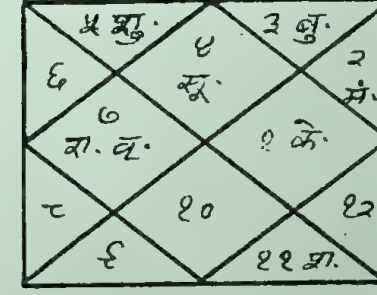
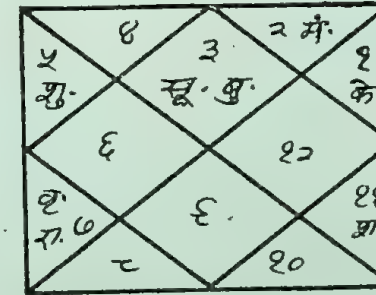
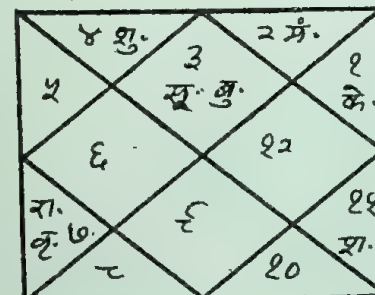
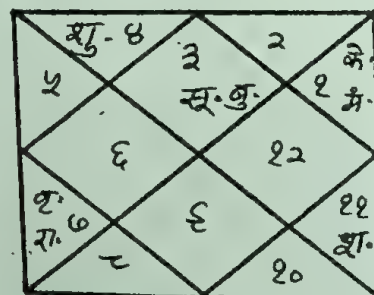
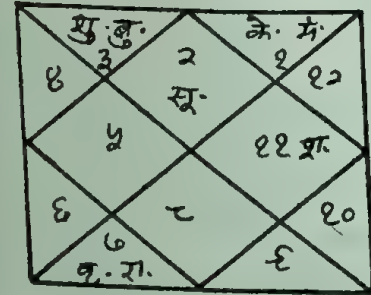
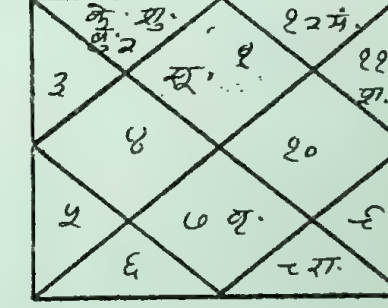
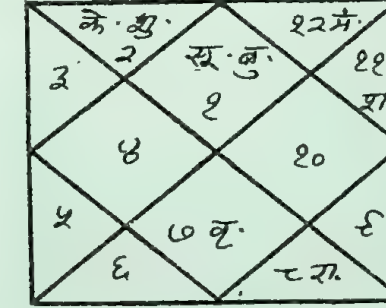
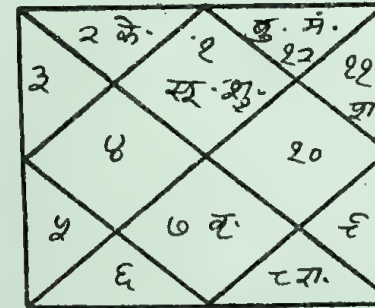
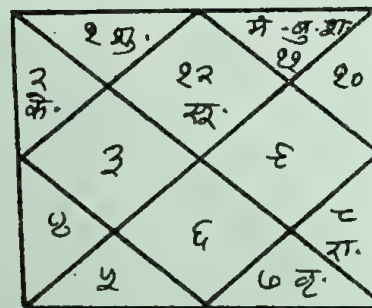
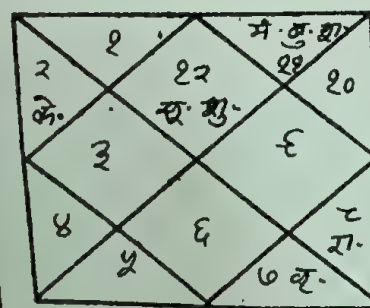
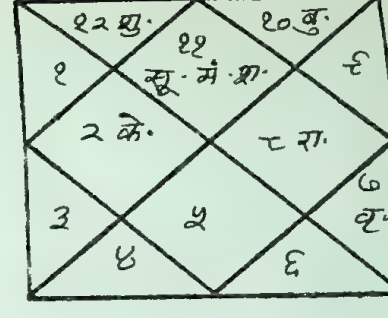
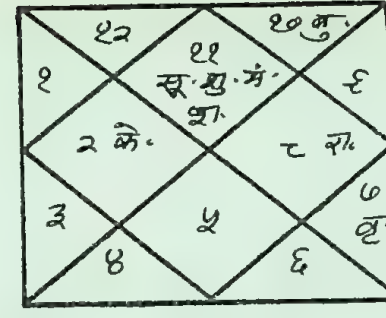
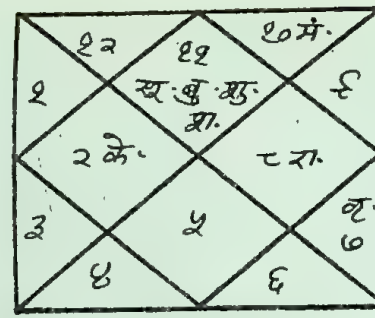
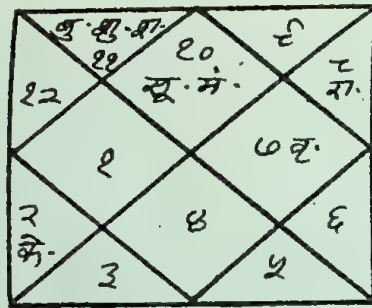
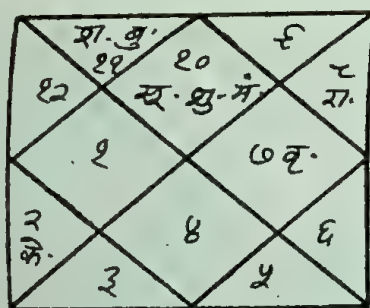


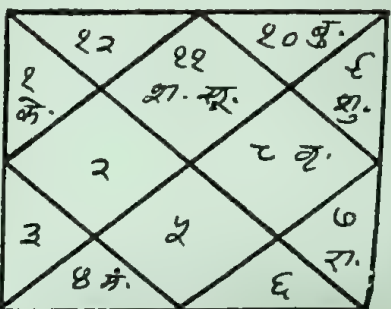
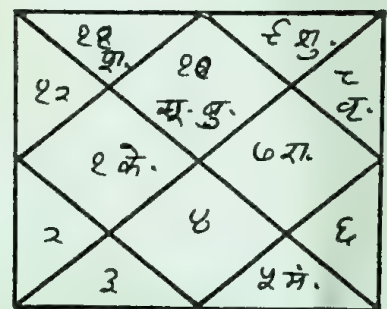
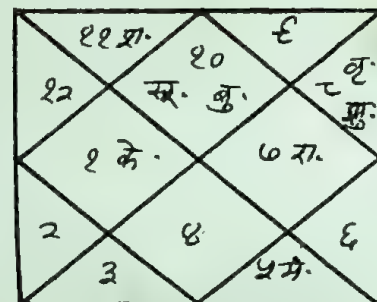
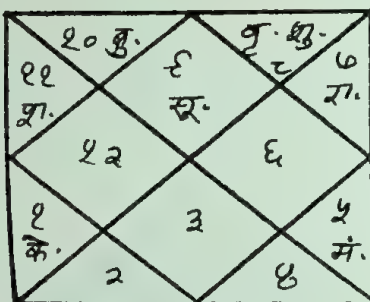
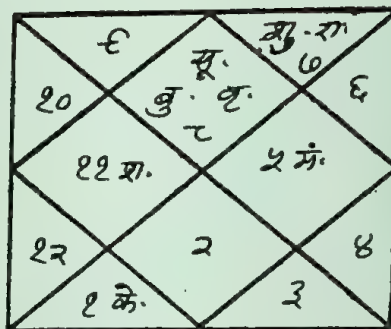
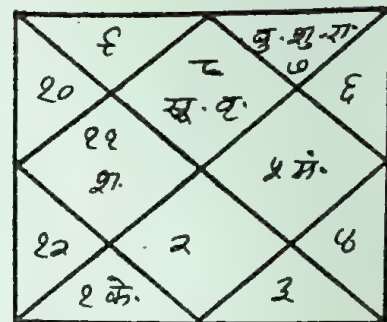
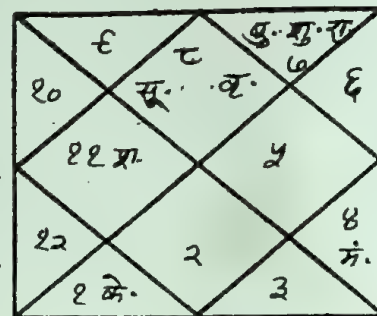
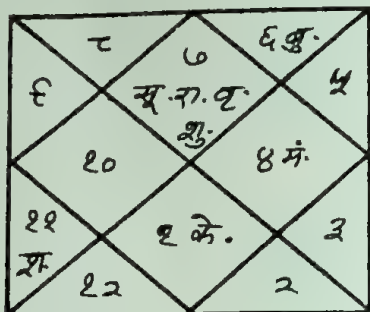
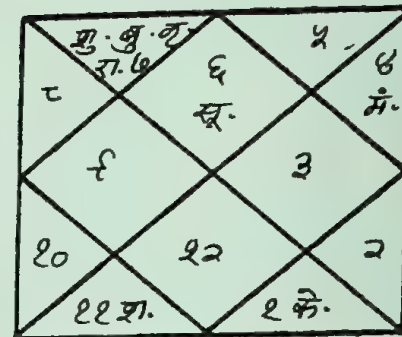
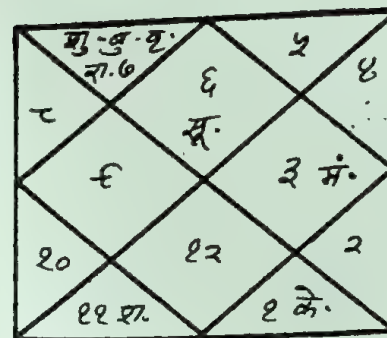
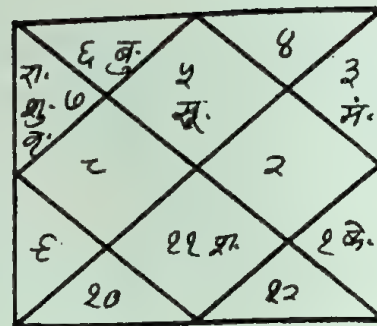
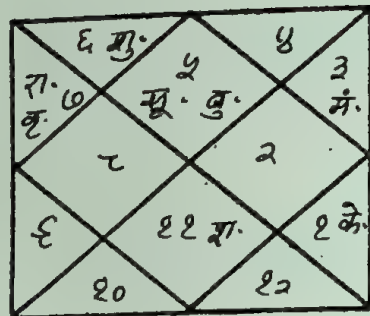
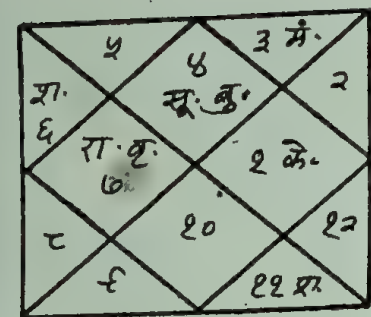


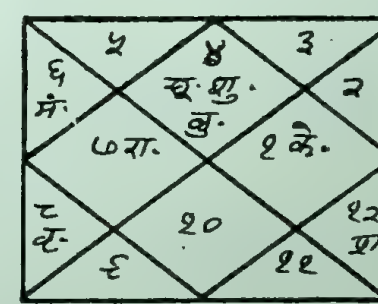
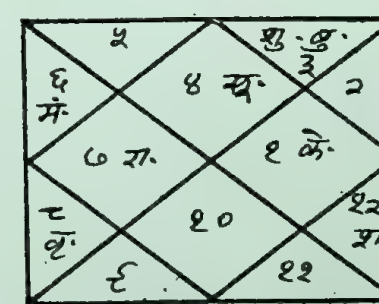
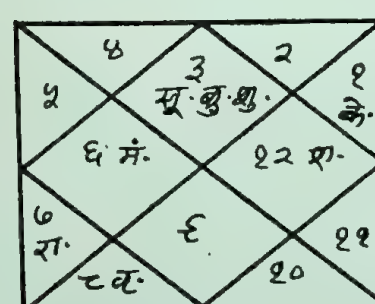
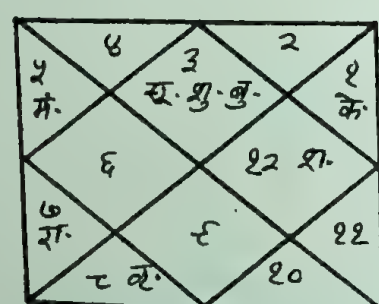
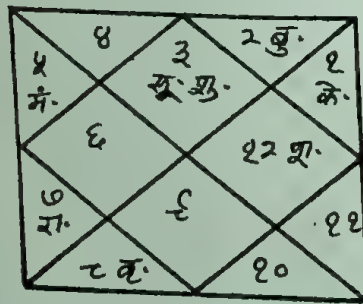
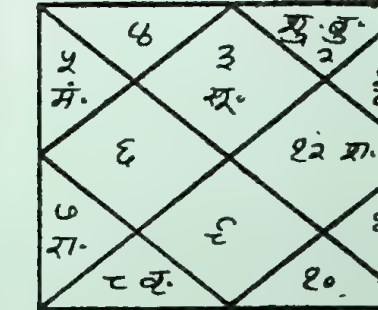
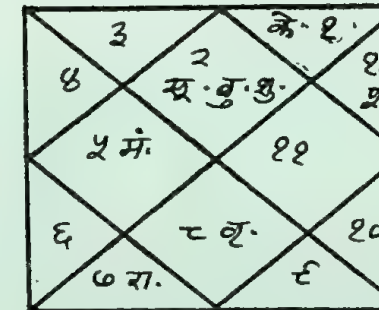
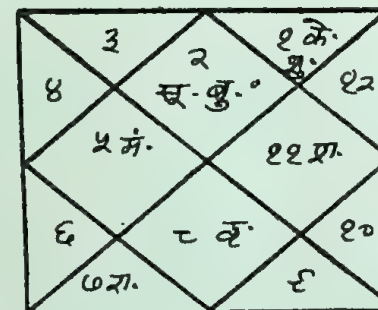
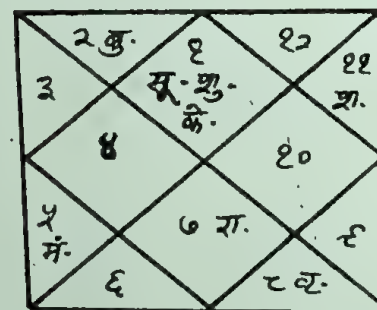
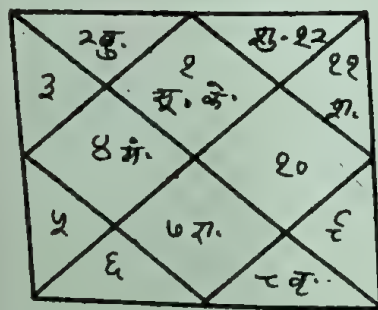
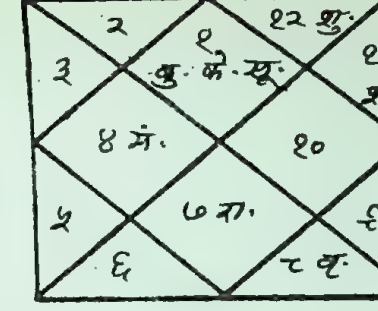
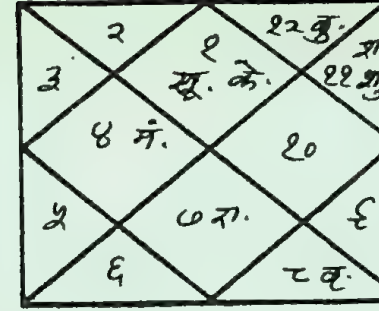
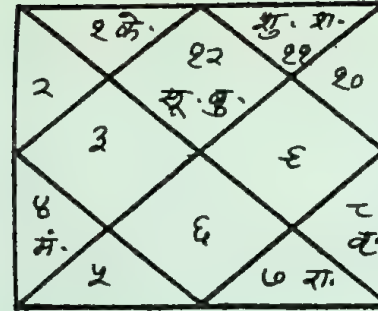
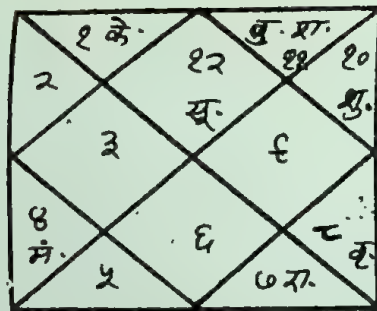
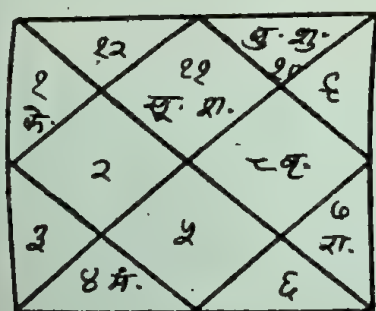


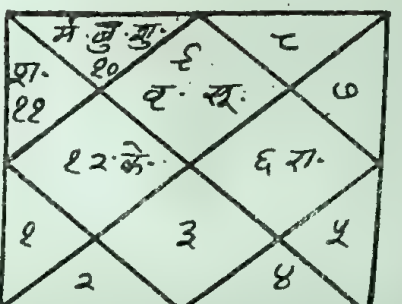
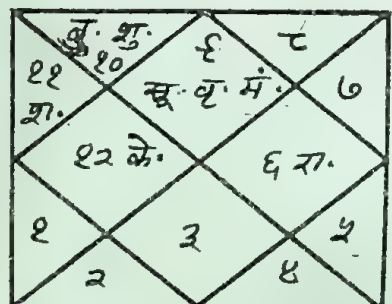
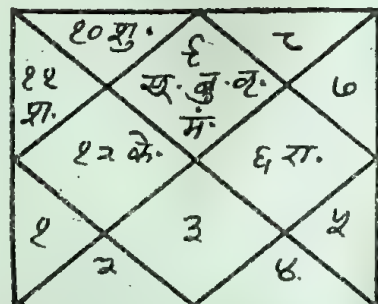
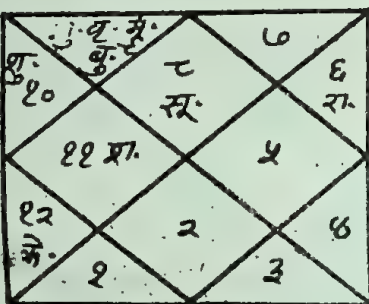
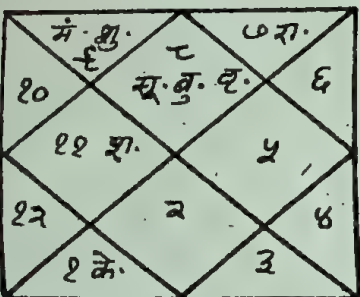
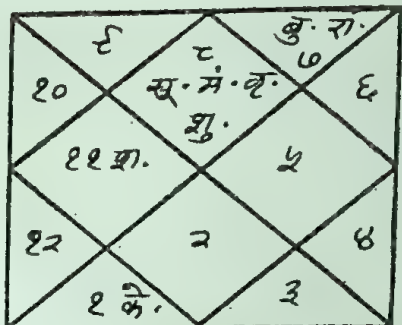
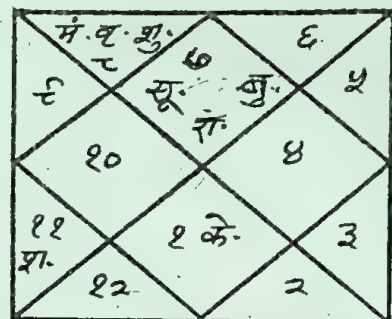
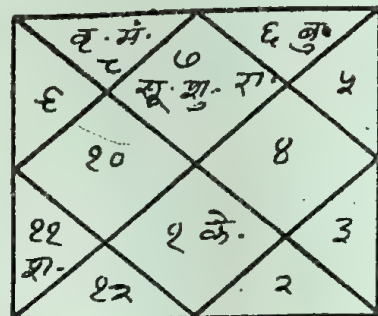
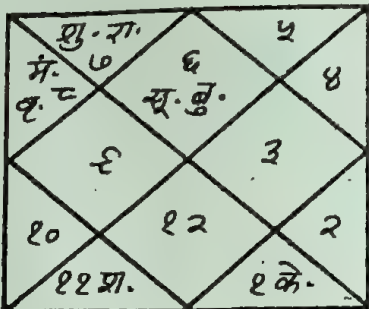
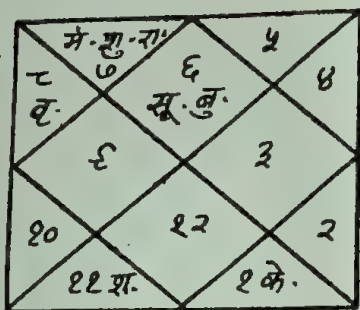
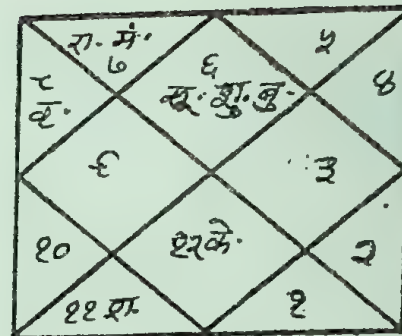
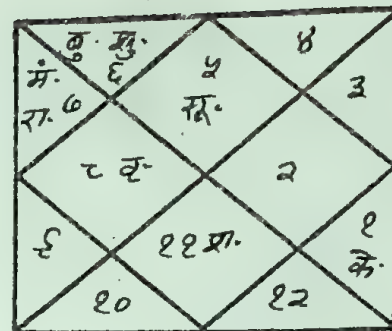
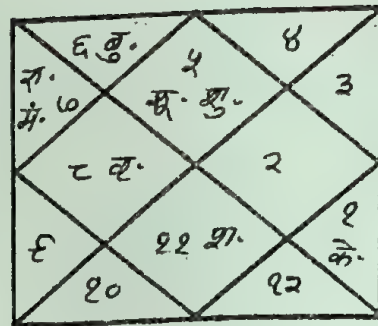
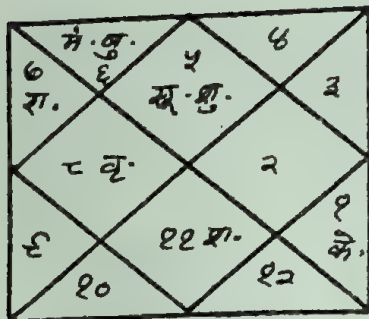
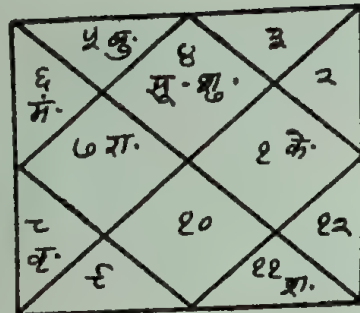


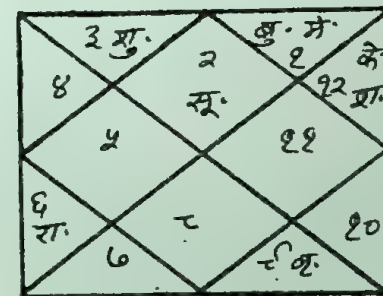
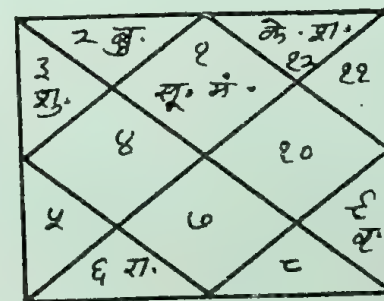
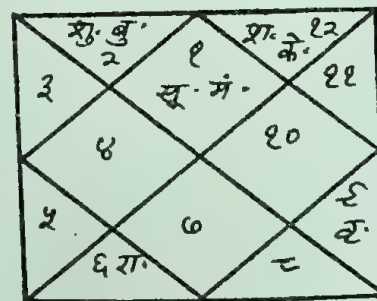
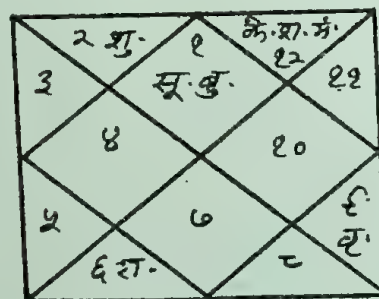
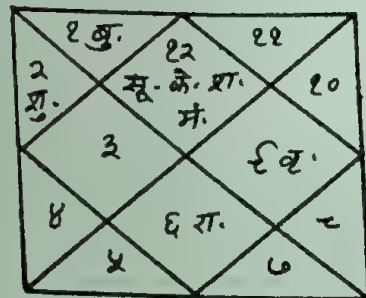
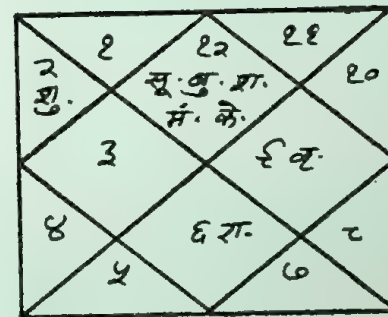
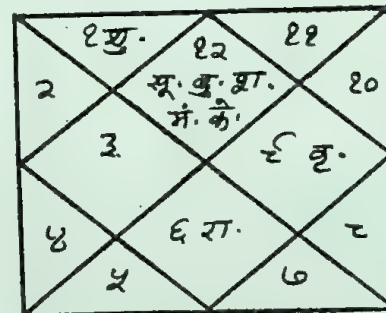
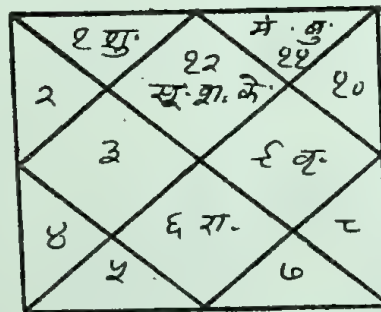
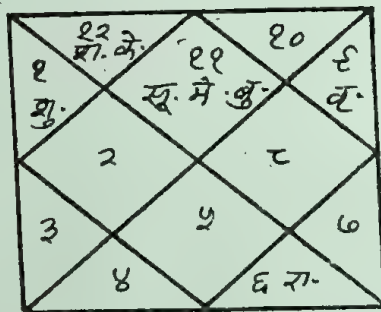
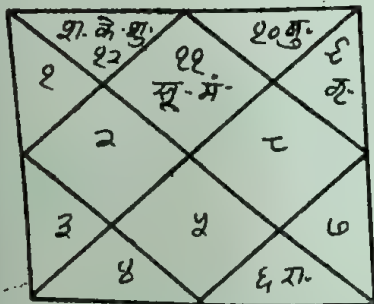
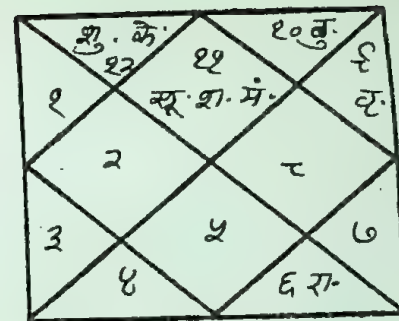
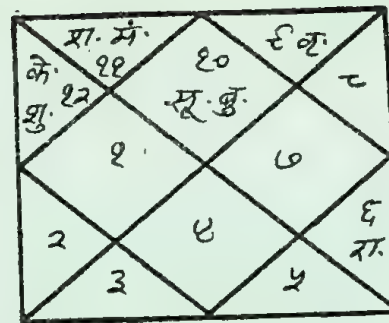
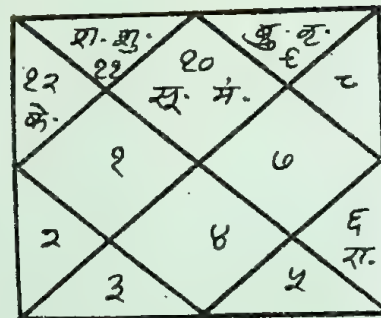
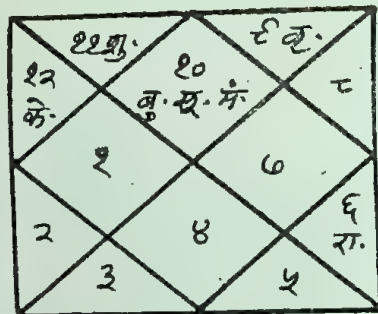
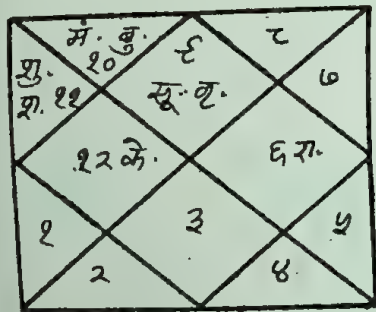




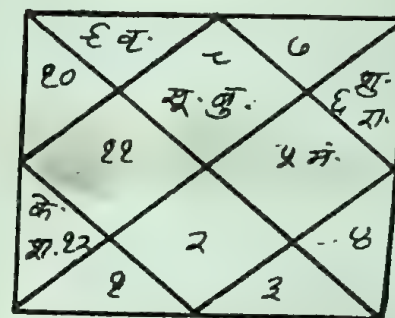
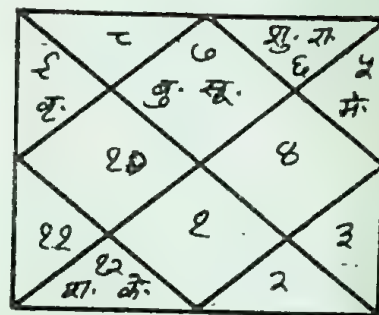
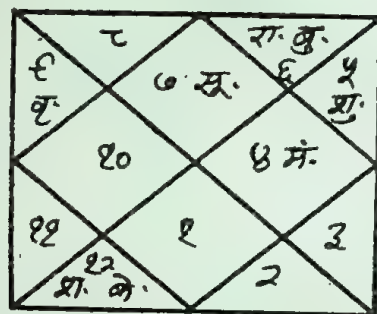
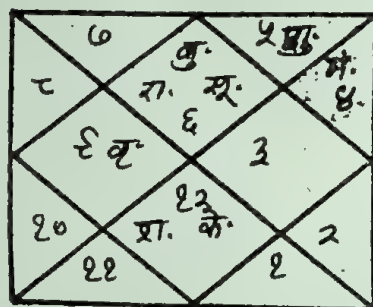
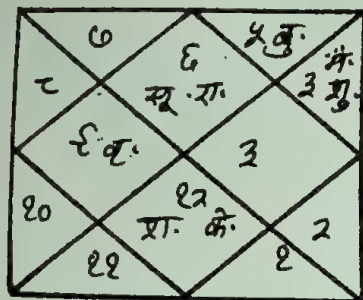
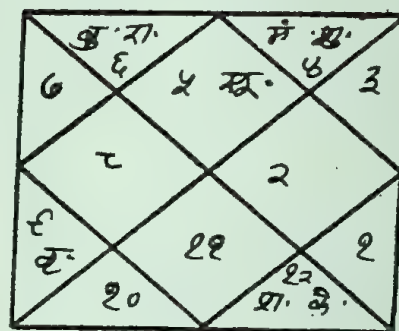
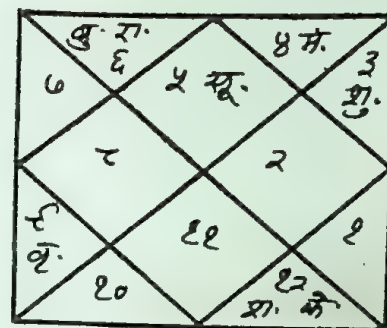
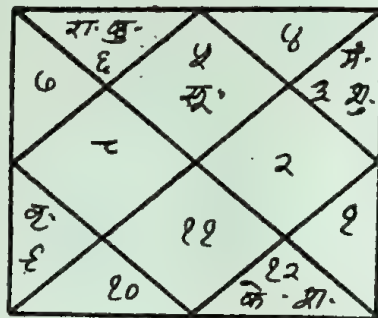
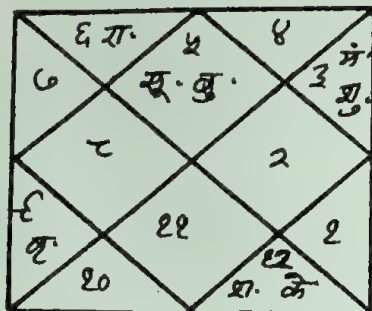
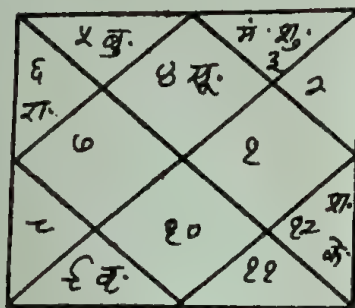
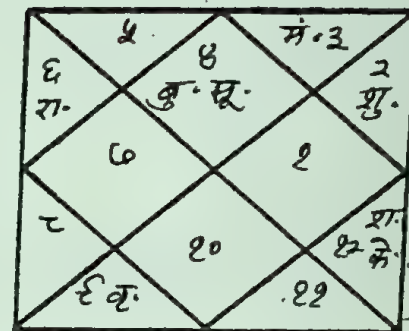
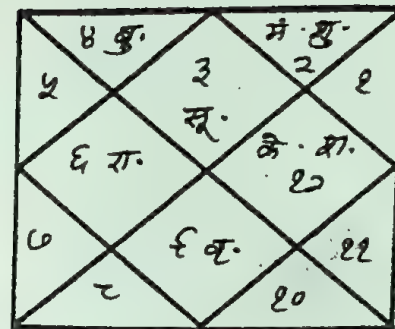
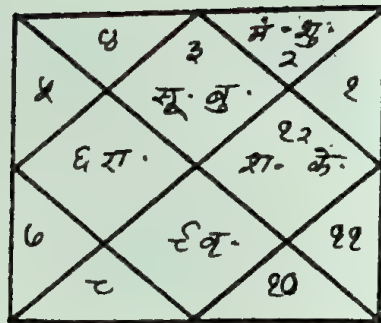
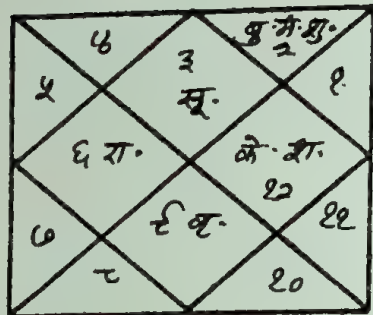
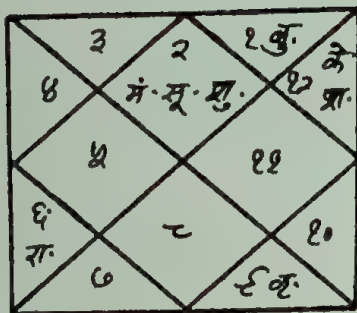




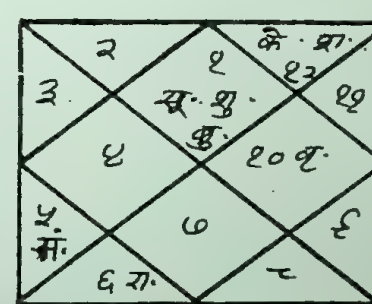
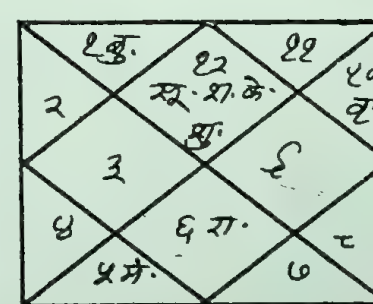
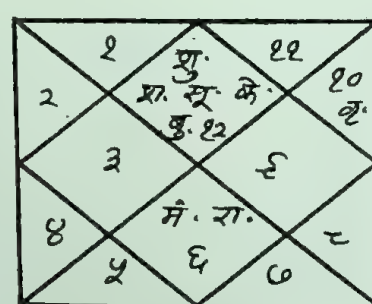
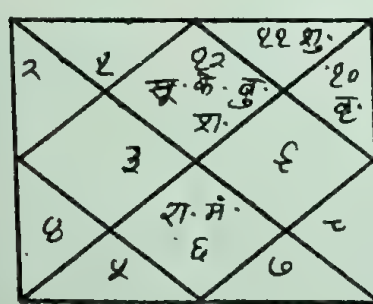
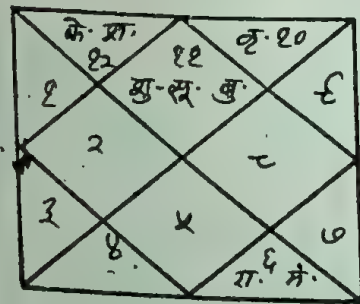
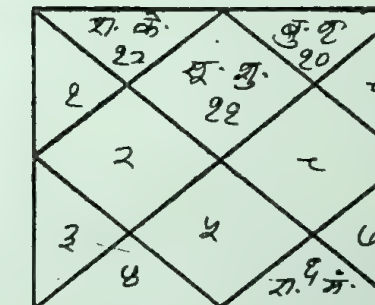
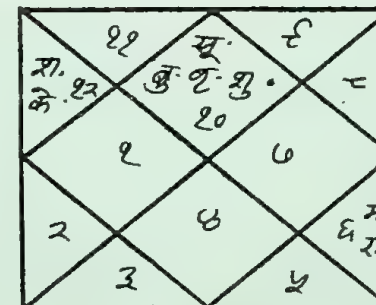
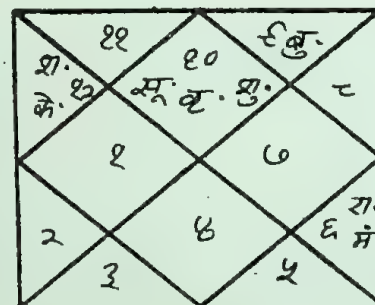
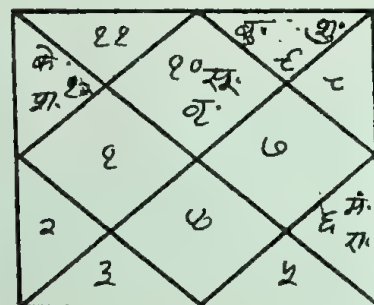
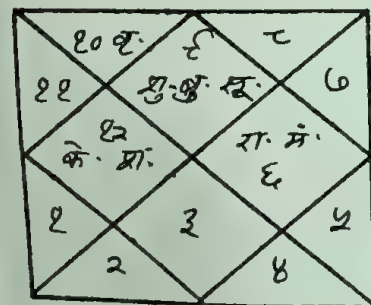
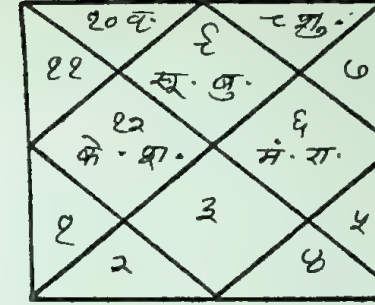
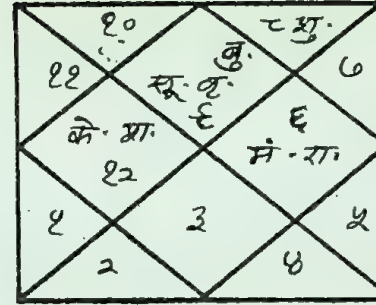
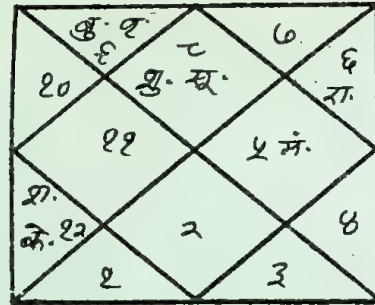
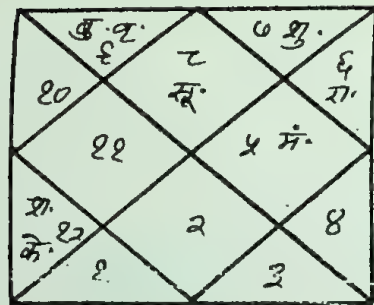
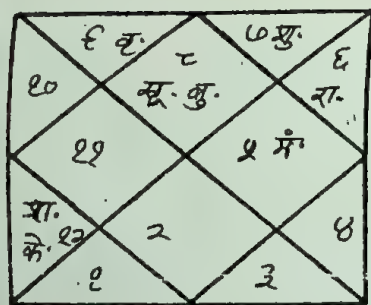


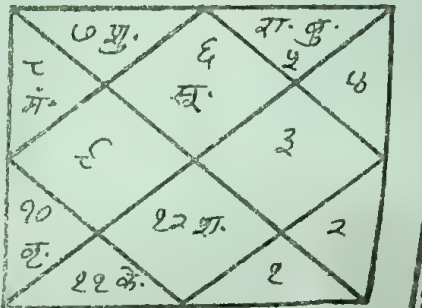
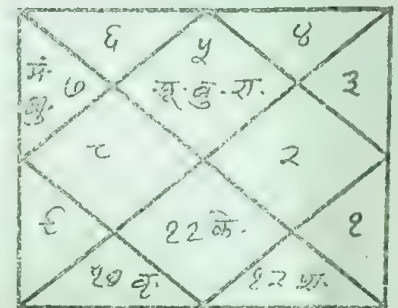
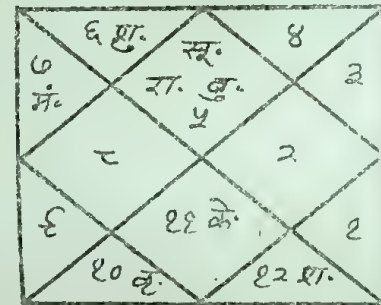
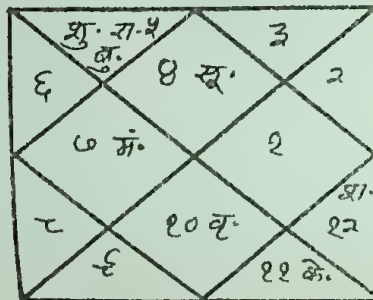
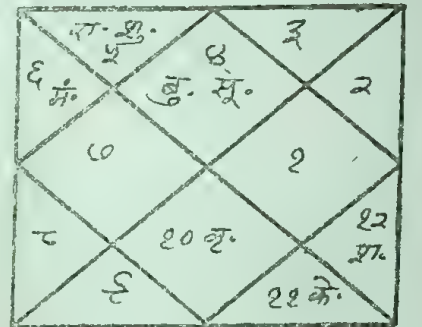
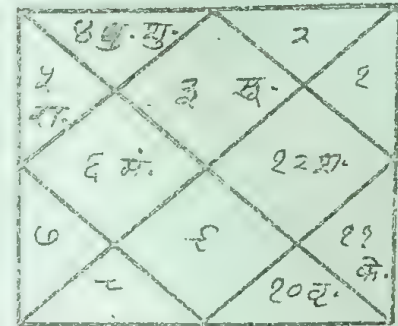
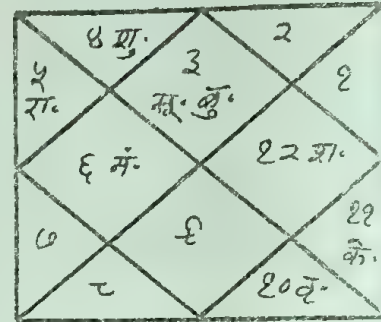
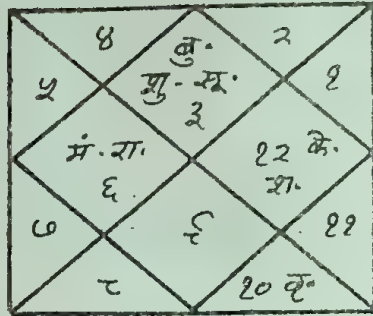
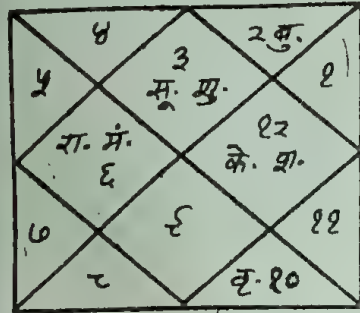
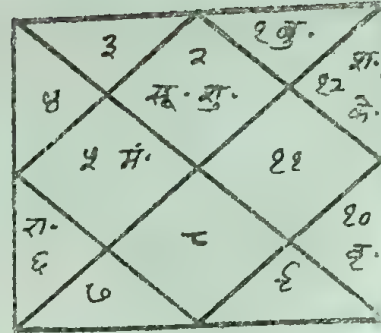
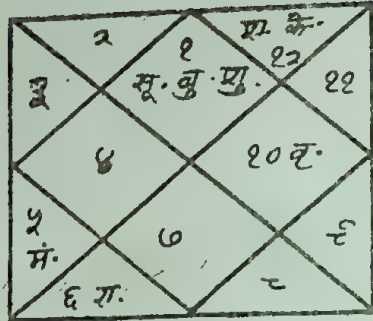


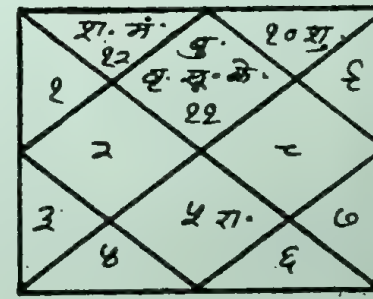
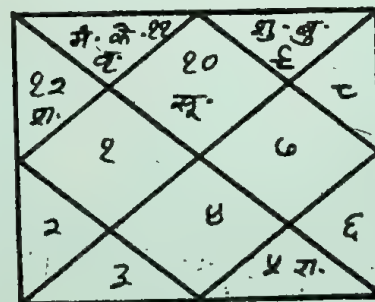
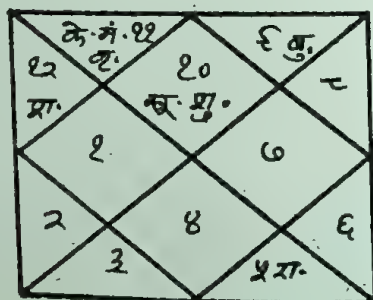
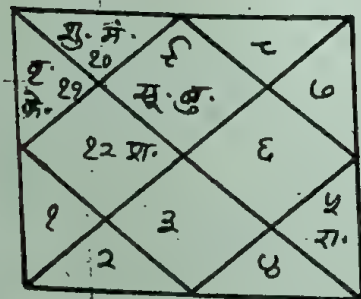
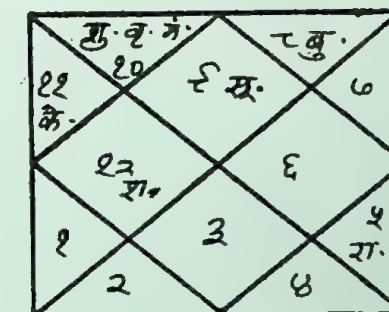
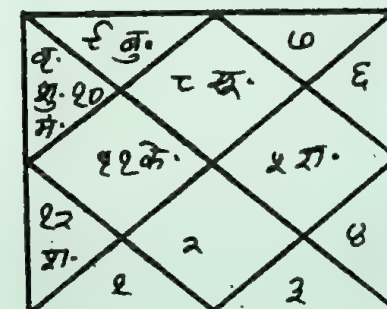
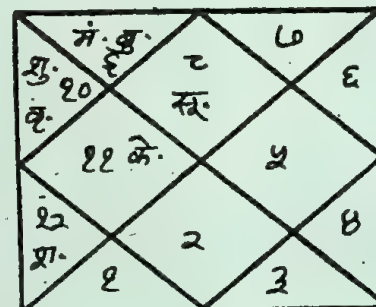
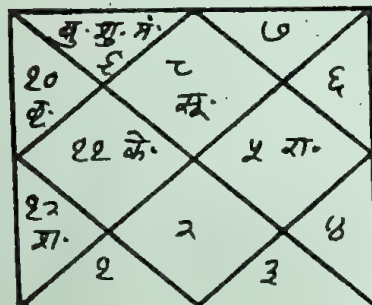
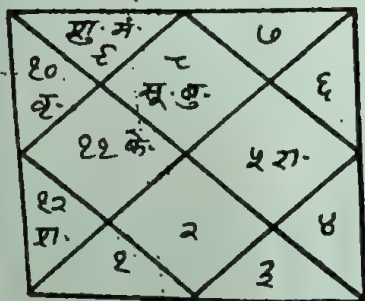
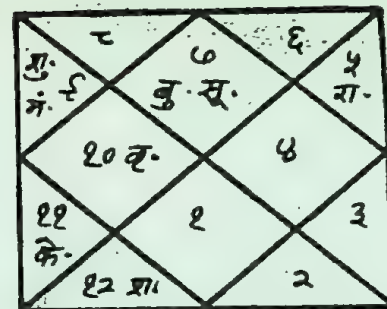
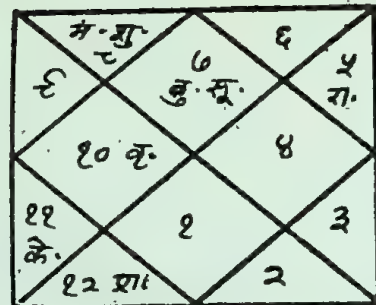
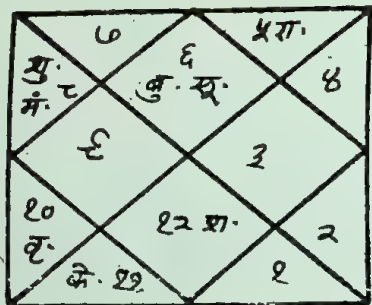
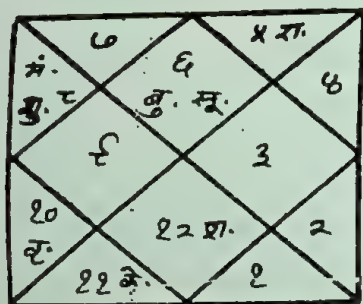
भू०
सं०
५
७
५

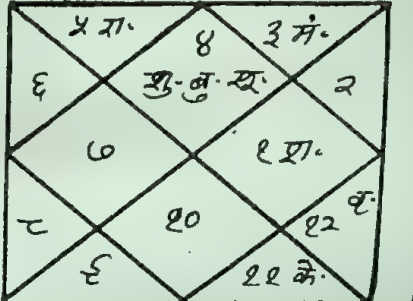
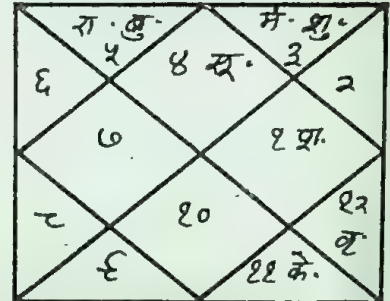
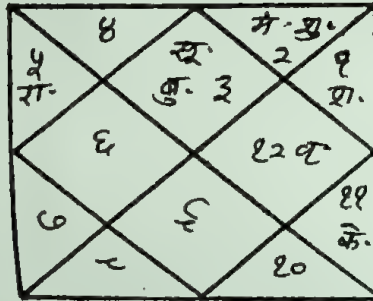
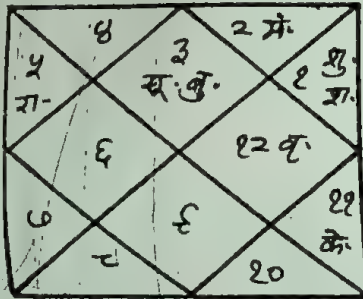
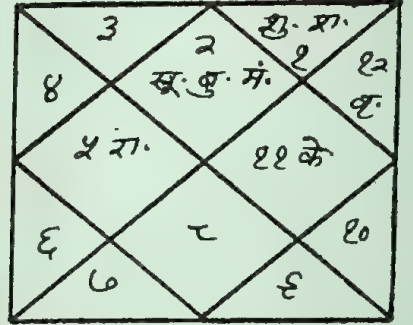
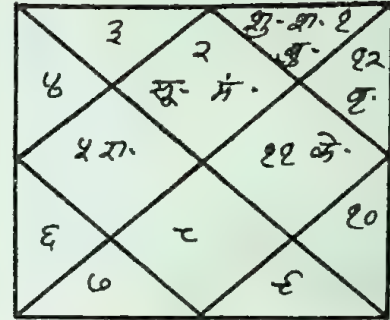
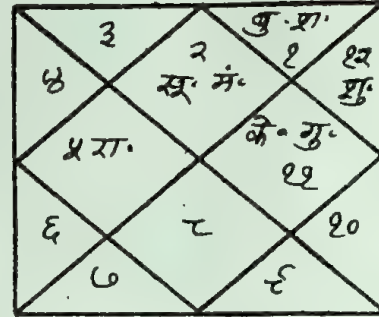
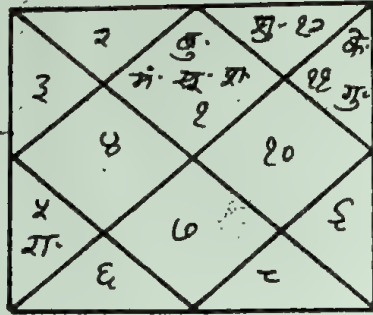
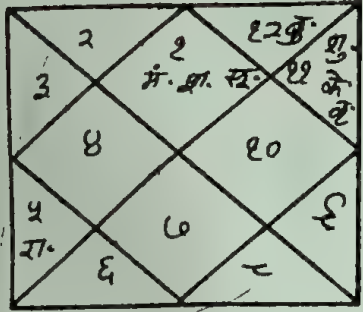
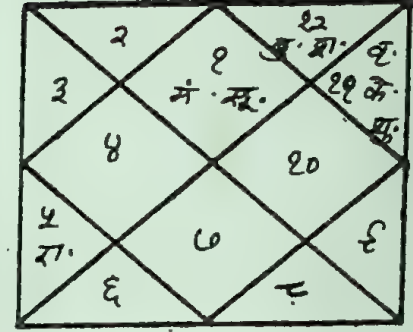
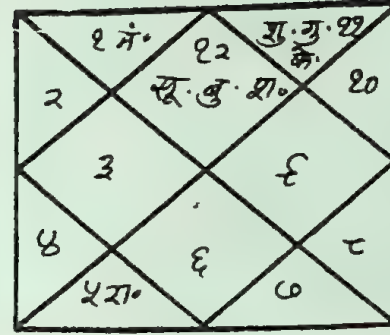
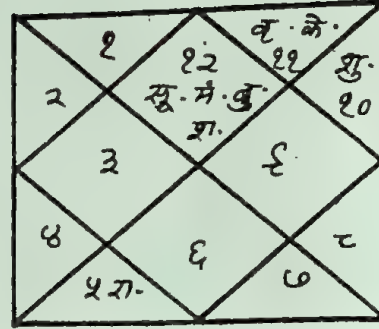
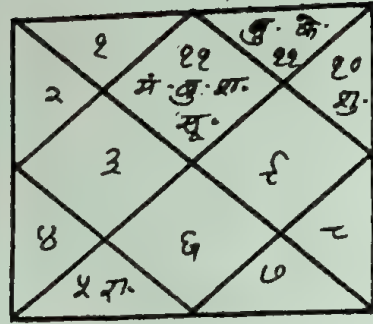
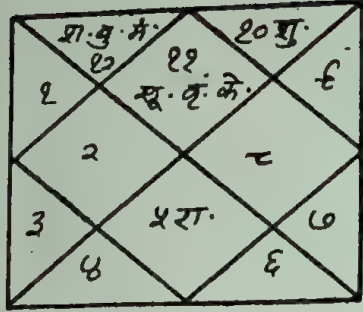


कु०
प०

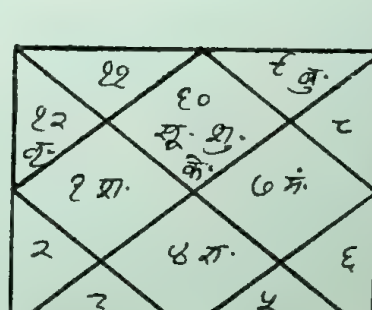
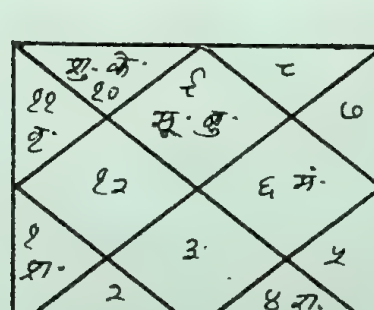
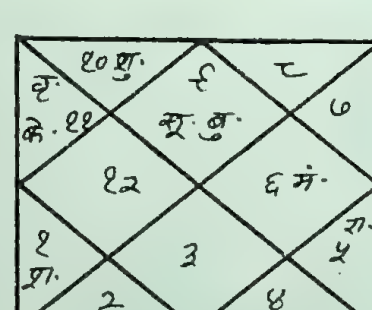
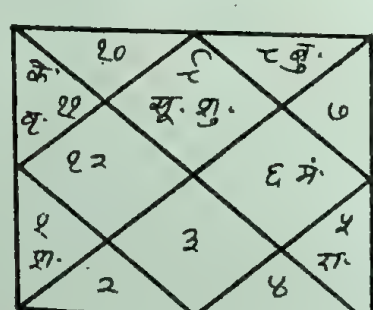
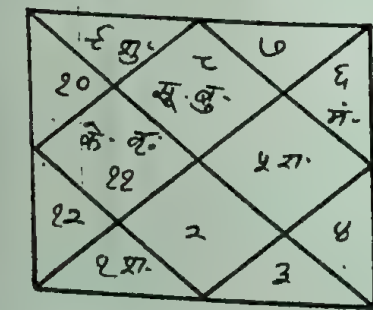
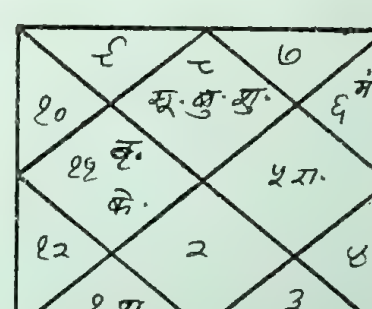
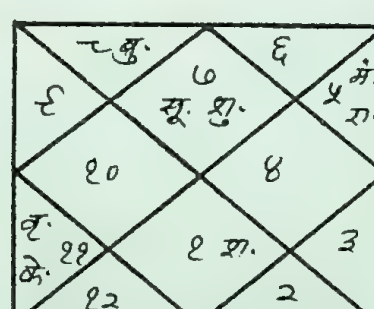
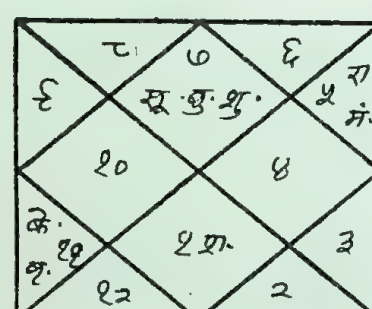
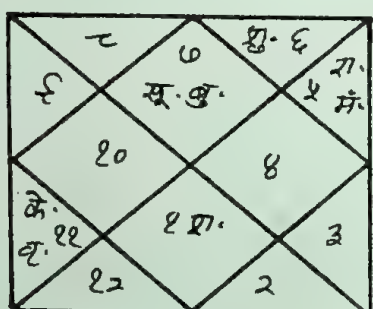
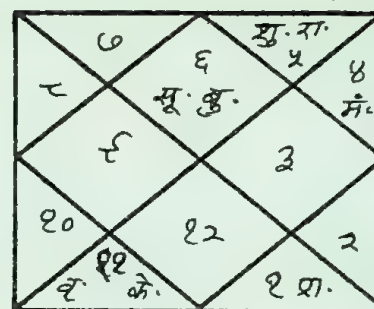
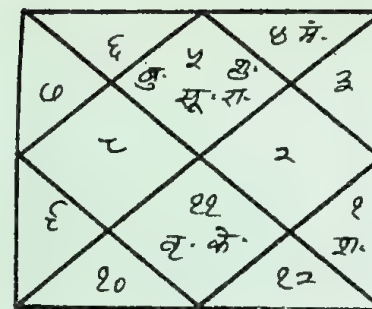
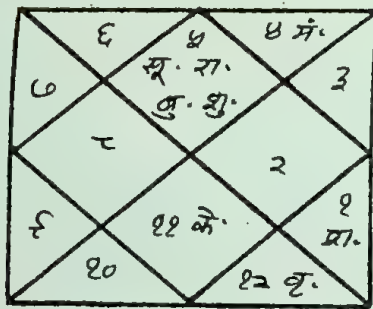
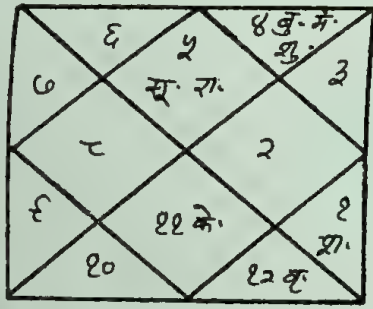




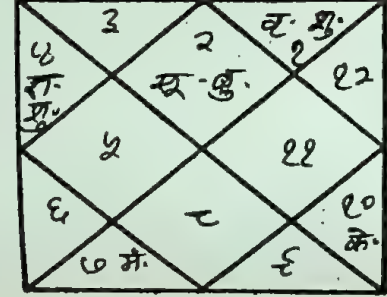
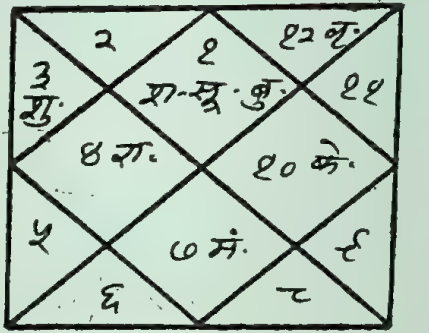
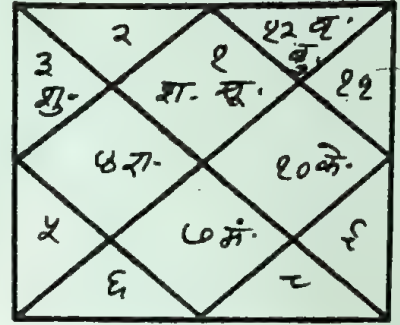
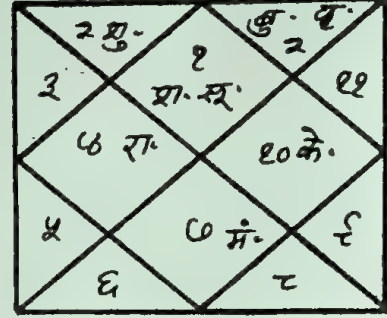
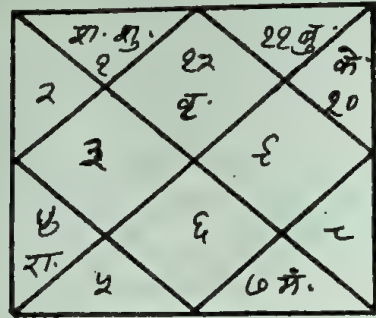
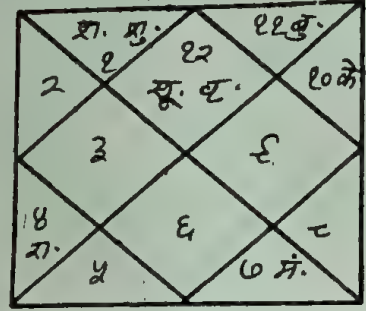
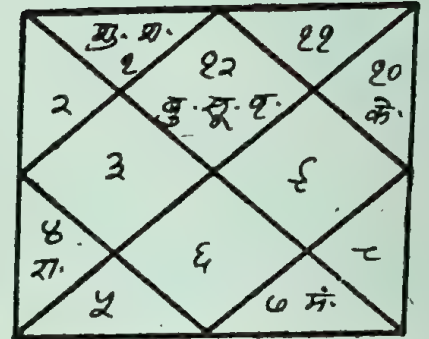
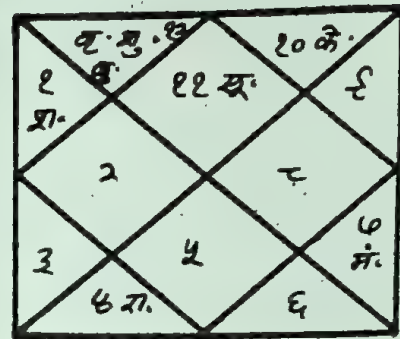
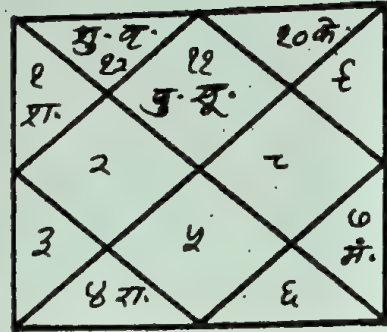
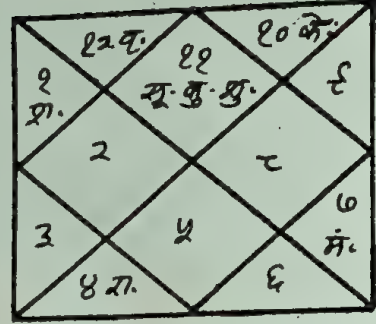
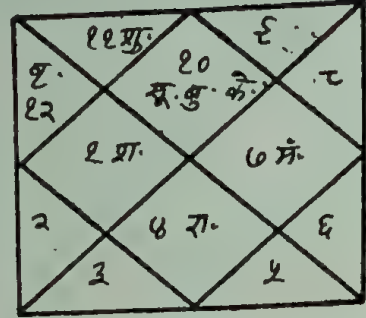




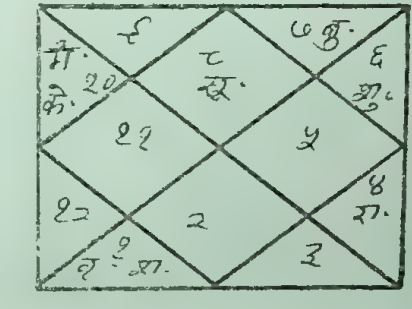
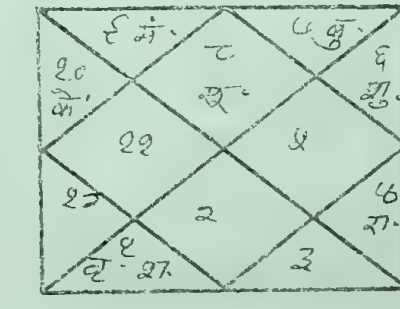
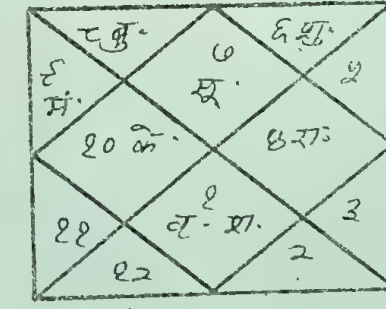
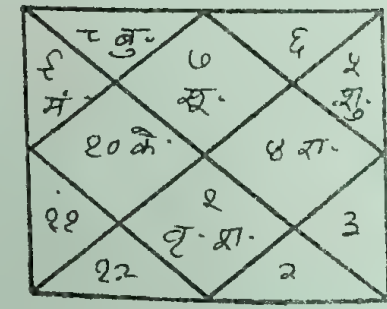
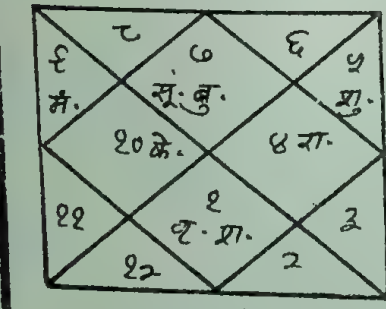
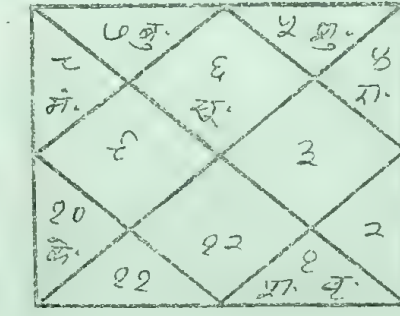
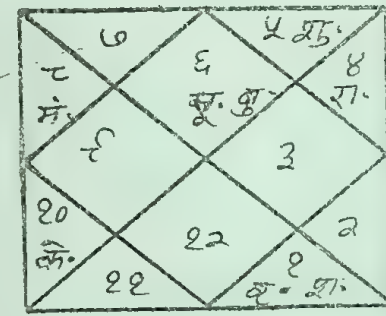
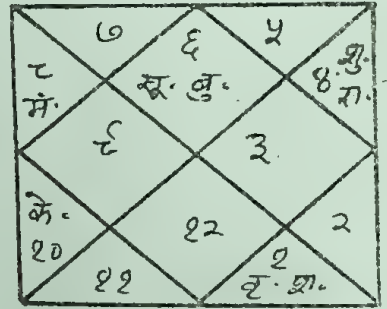
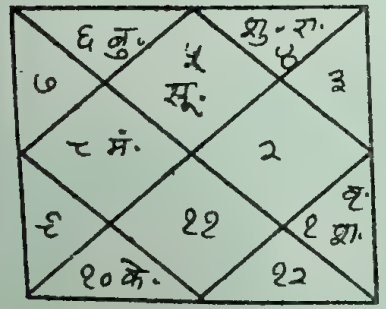
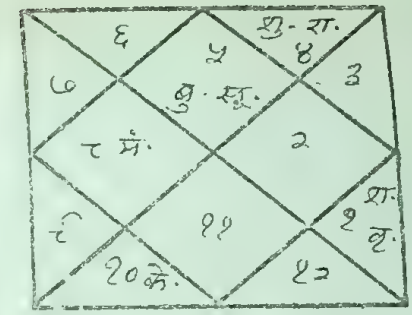
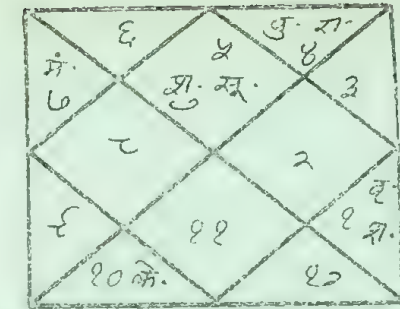
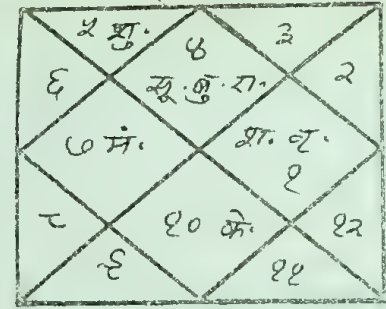
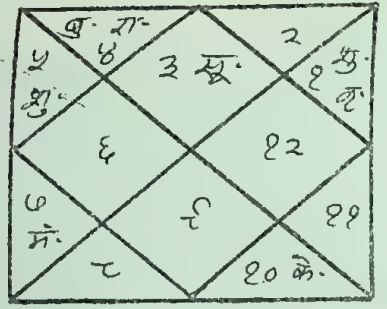
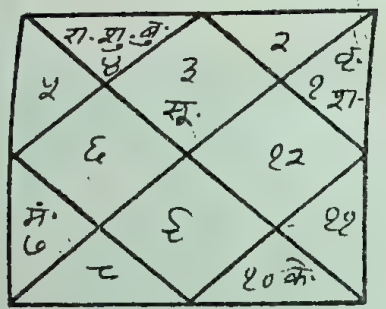
भू०
सं०
७७६



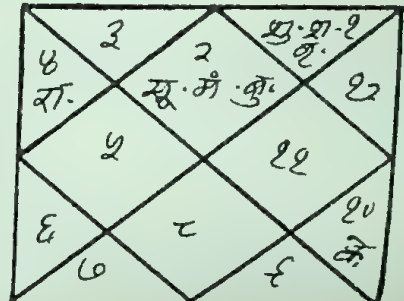
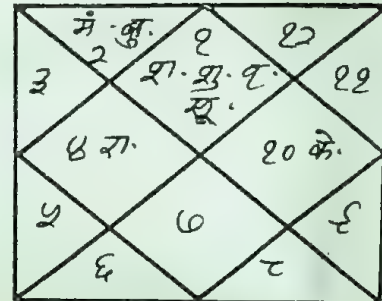
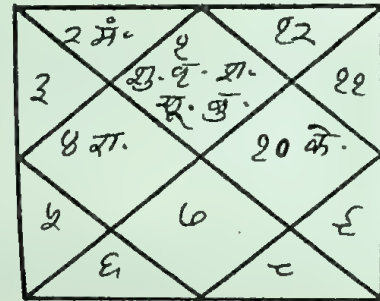
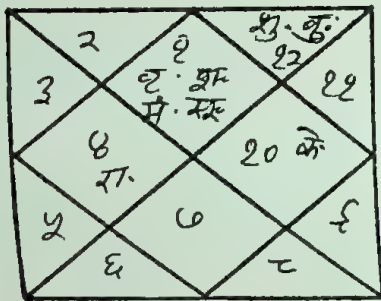
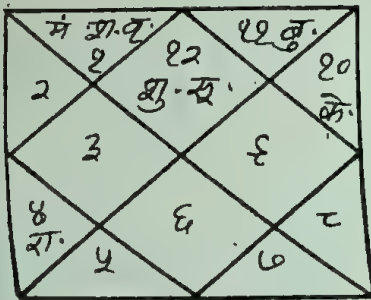
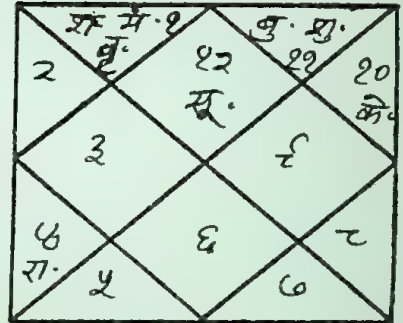
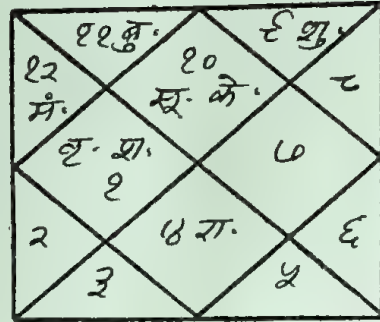
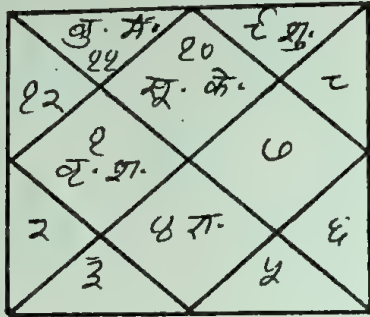
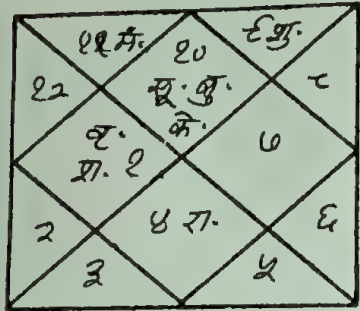
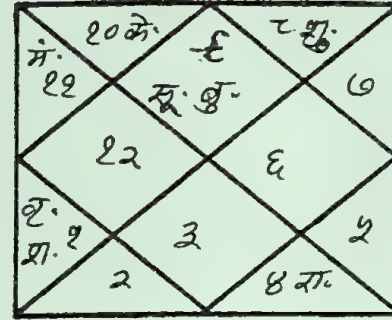
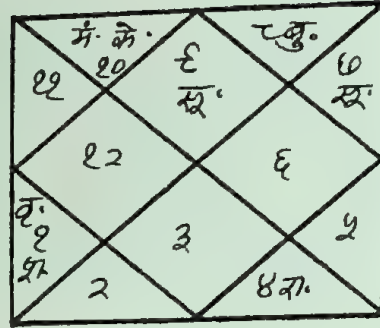
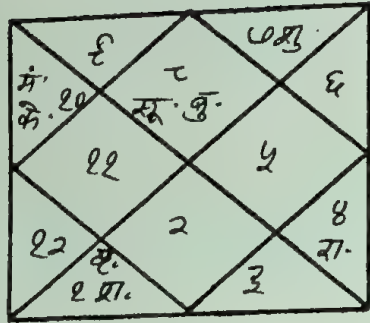
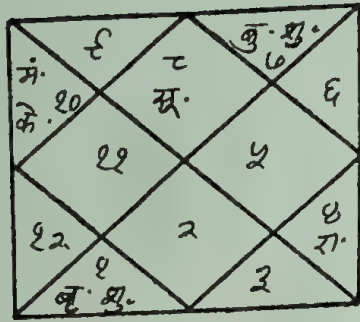
कु०
प०

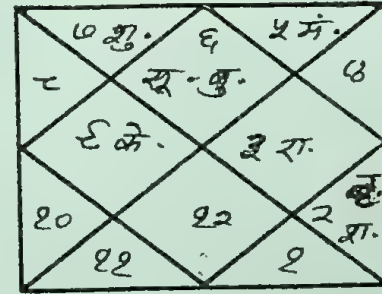
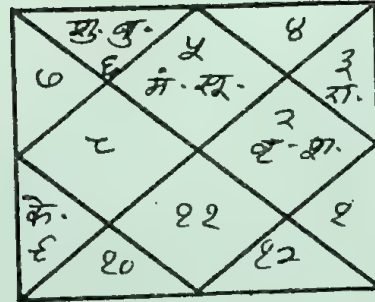
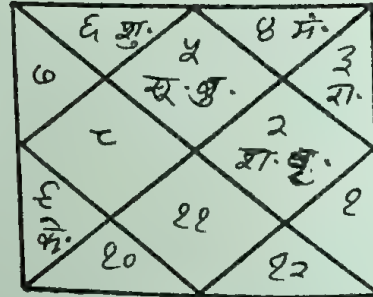
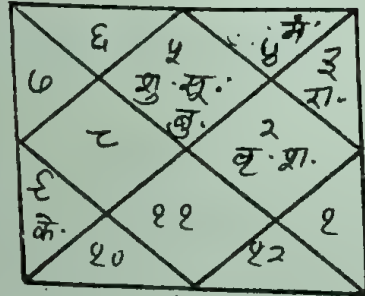
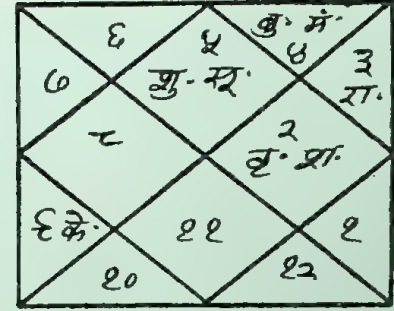
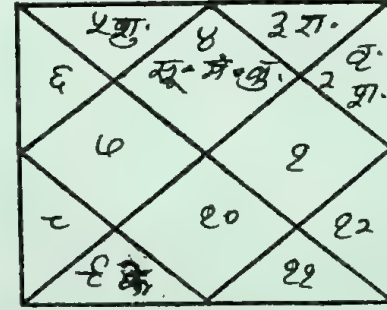
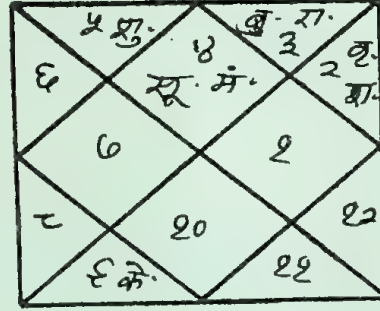
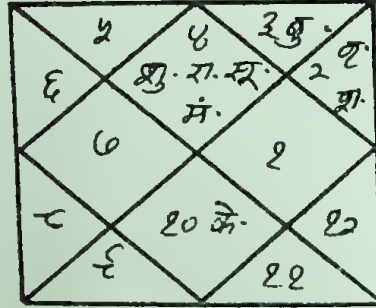
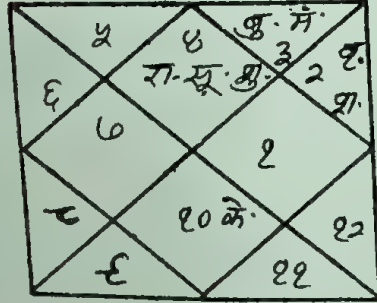
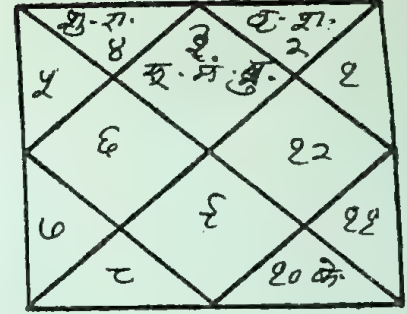
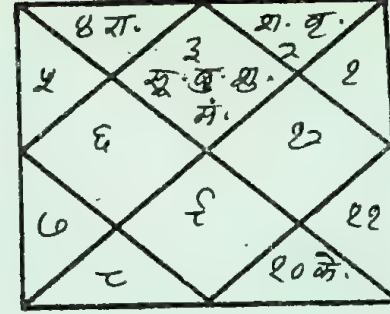
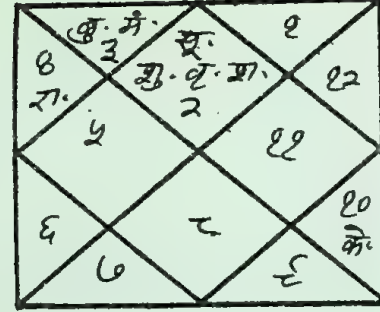
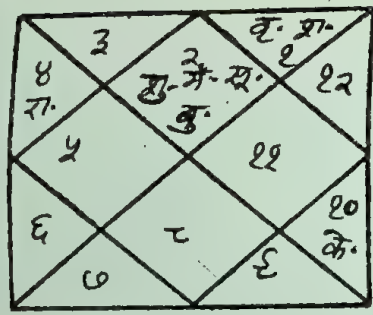


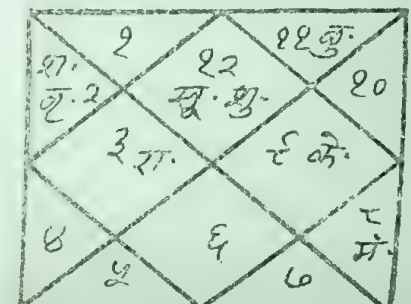
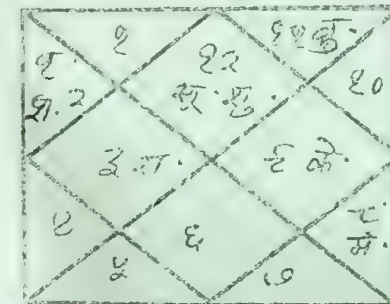
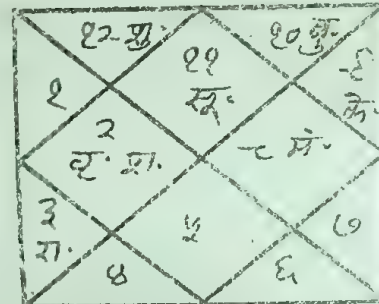
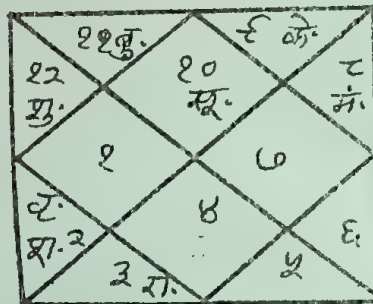
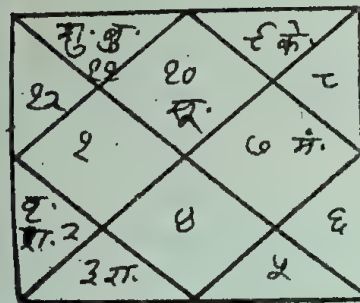
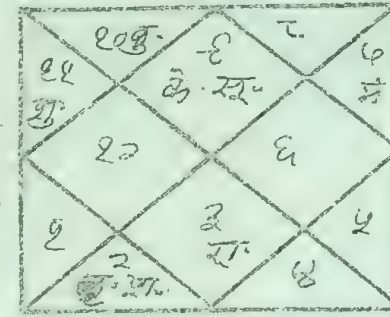
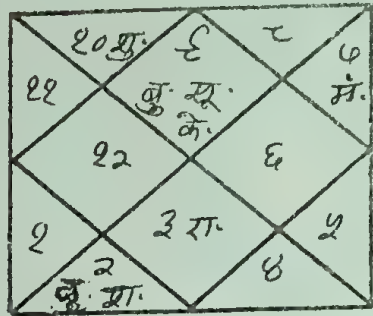
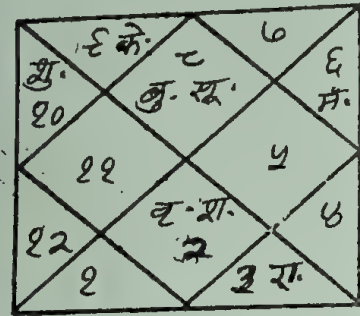
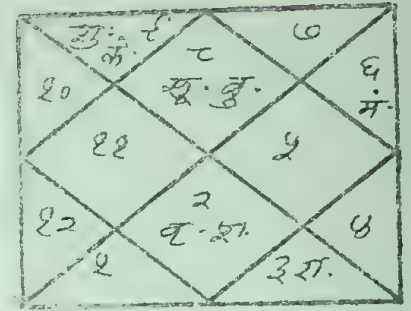
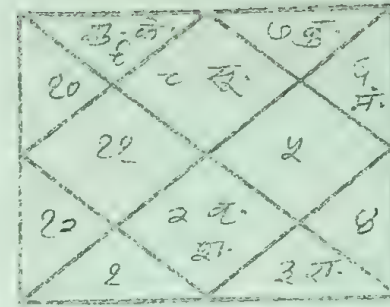
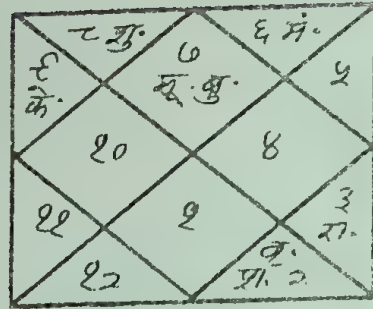
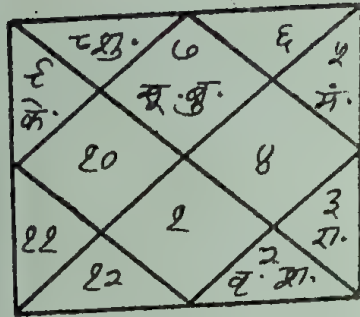
सं०
३०६

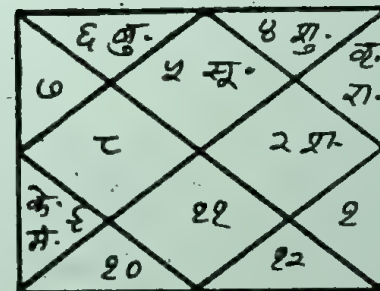
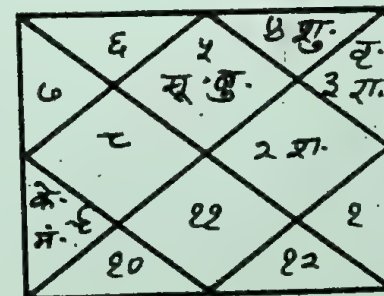
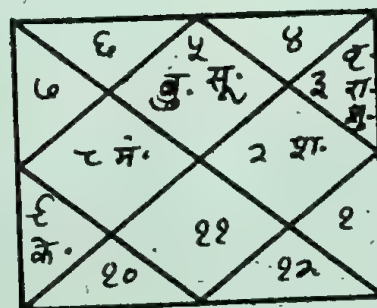
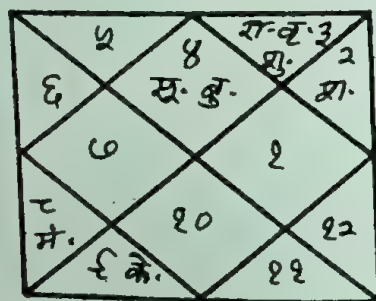
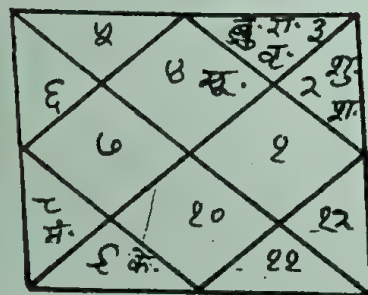
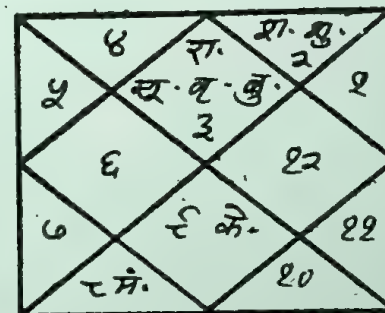
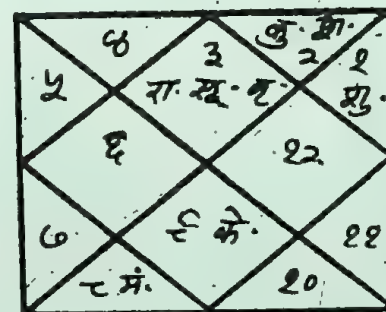
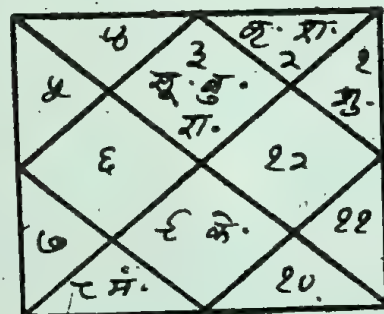
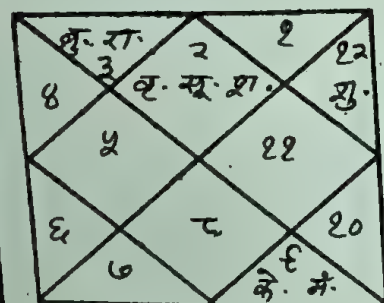
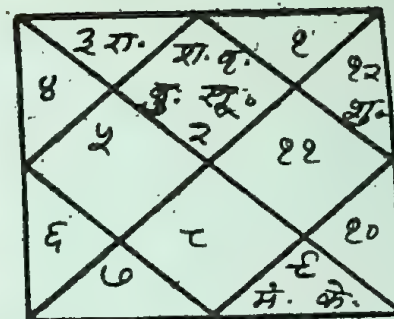
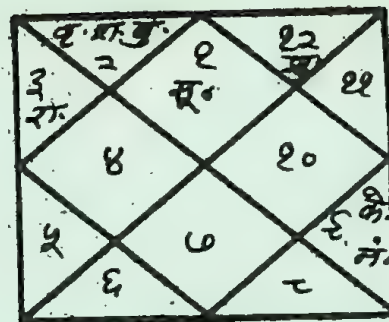
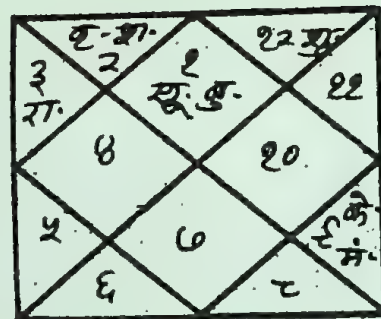
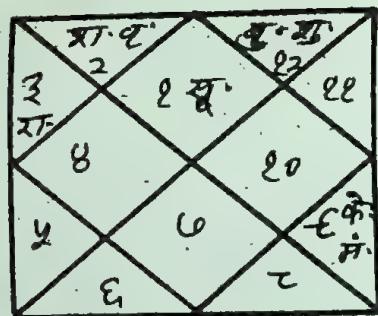
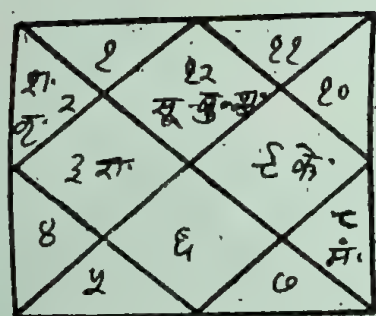


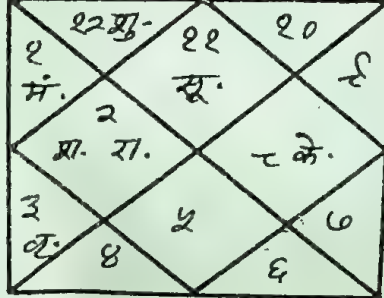
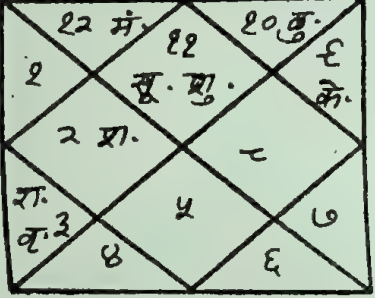
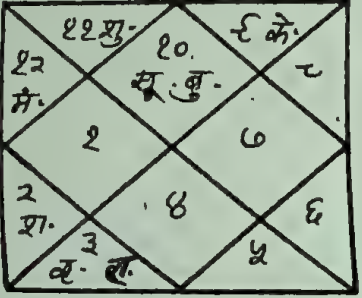
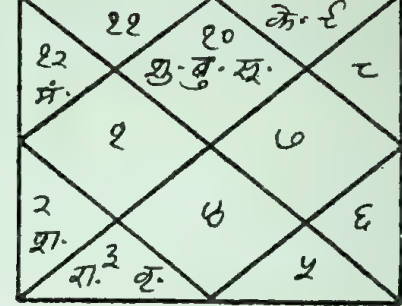
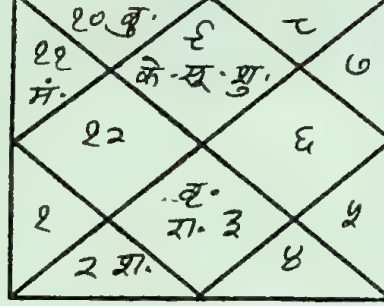
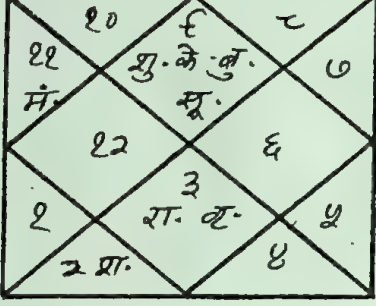
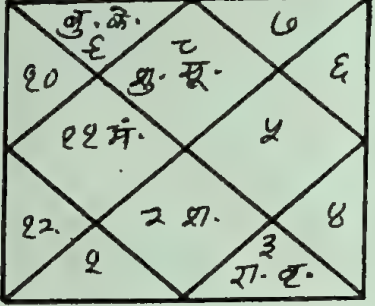
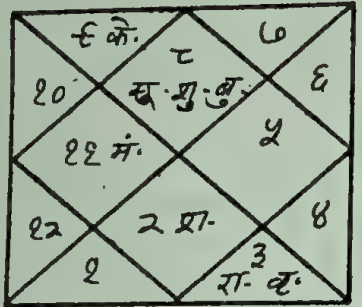
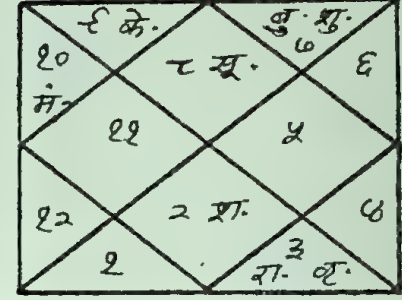
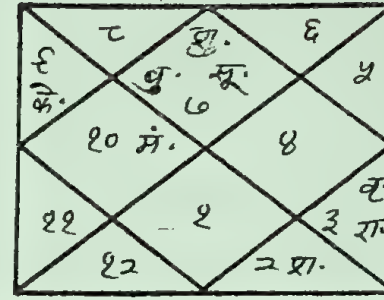
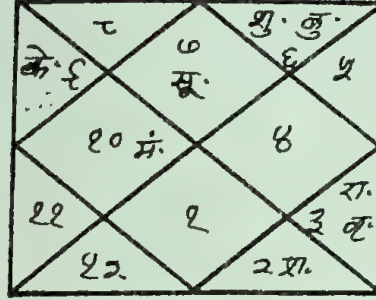
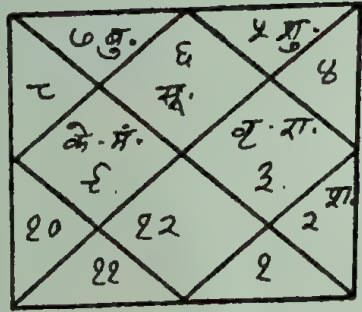
कु०
प०

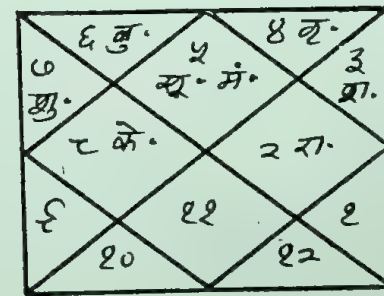
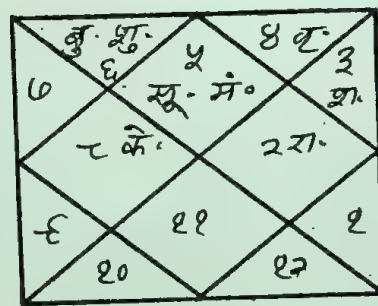
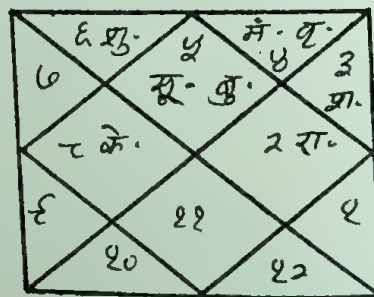
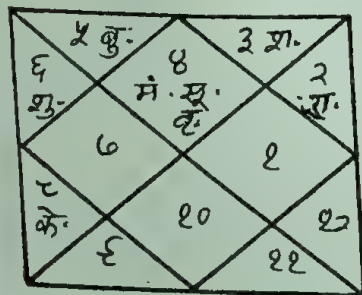
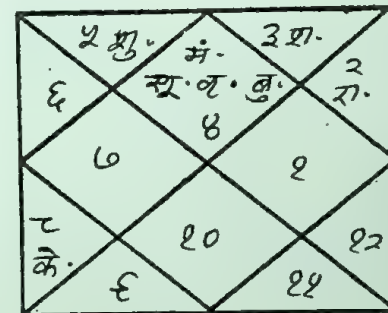
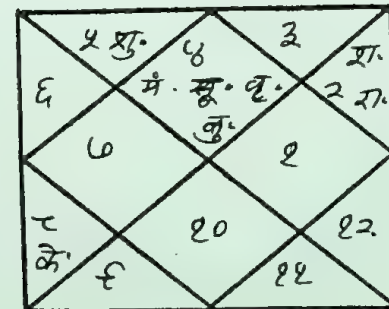
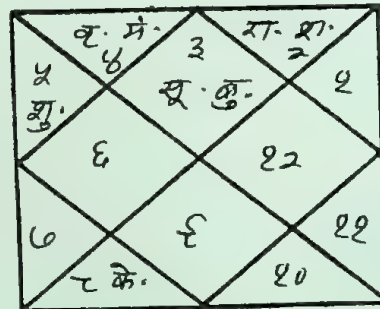
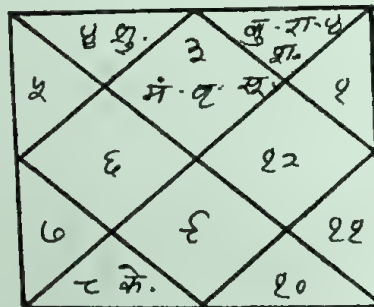
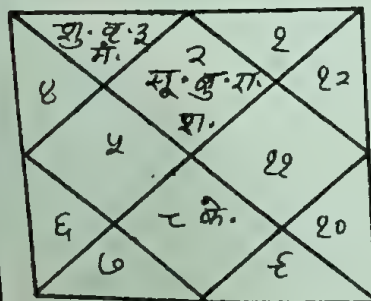
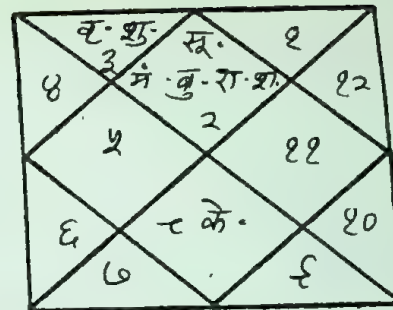
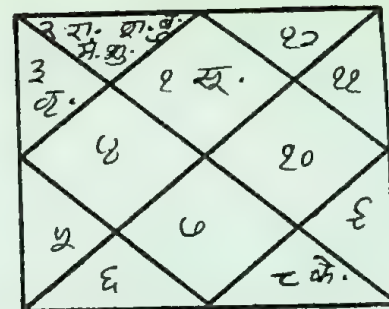
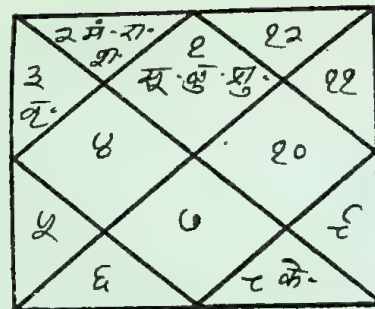
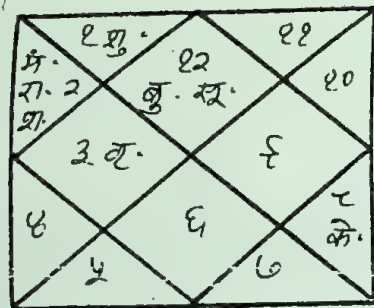
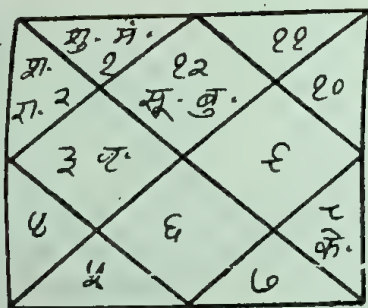


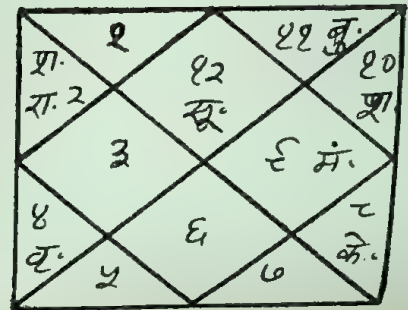
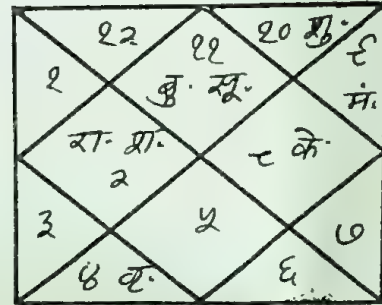
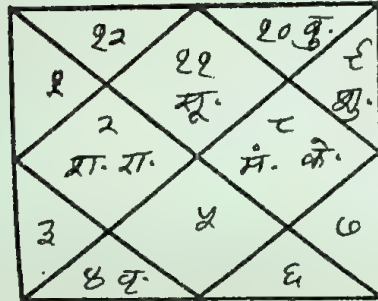
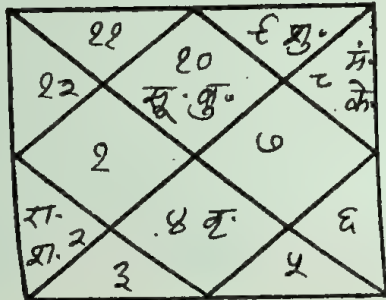
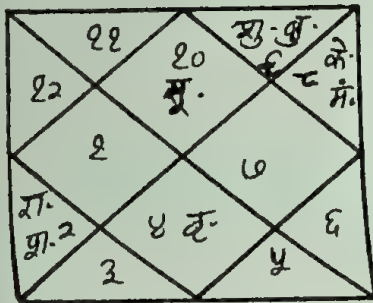
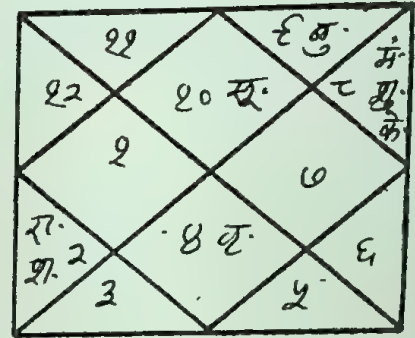
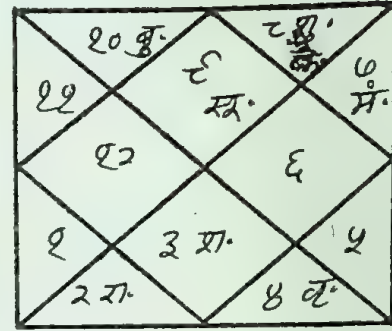
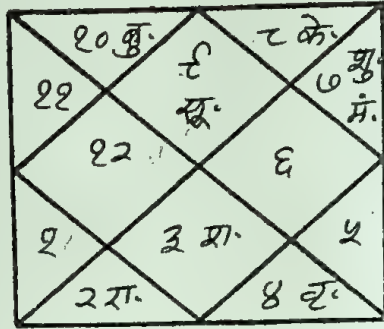
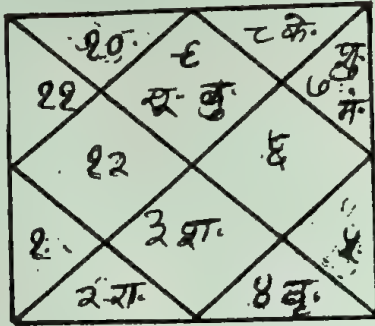
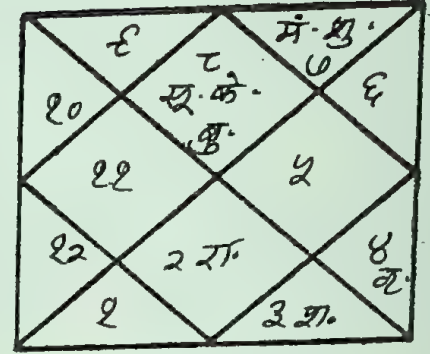
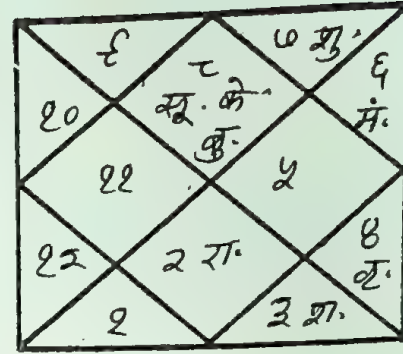
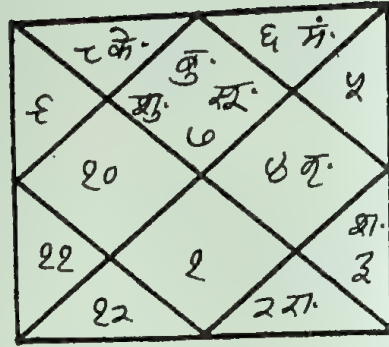
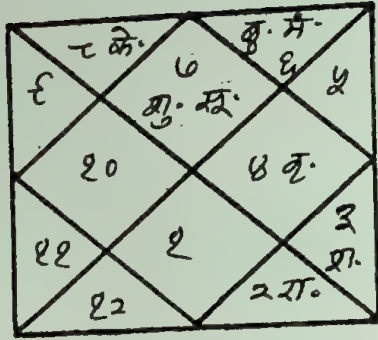
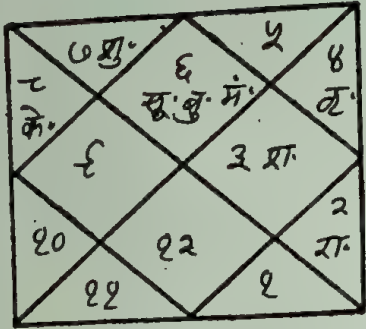


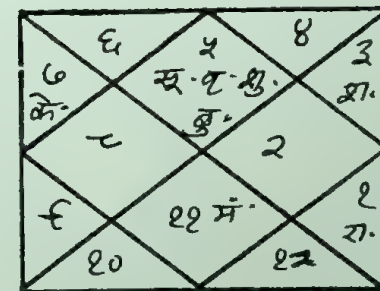
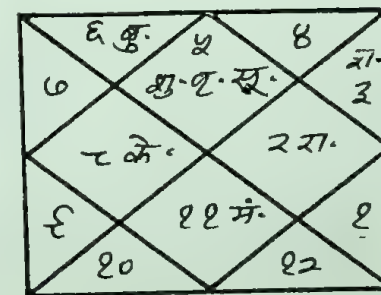
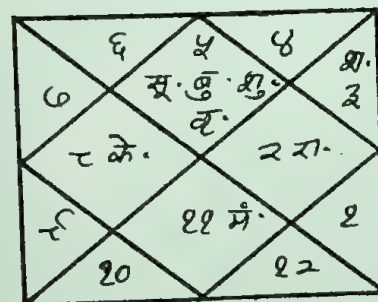
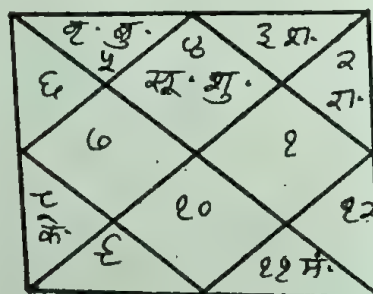
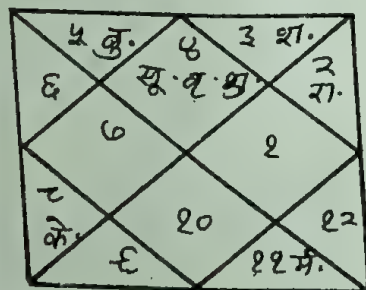
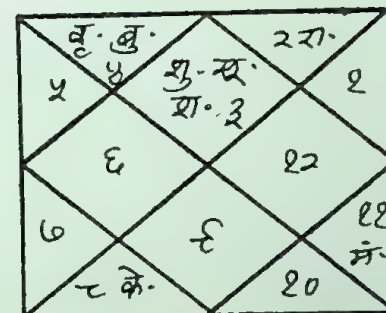
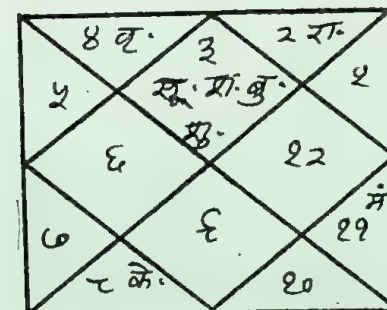
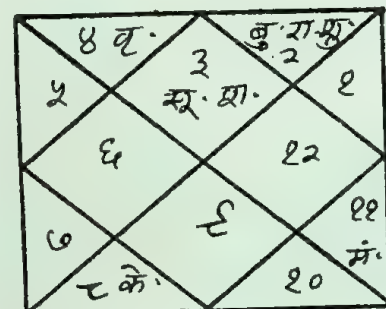
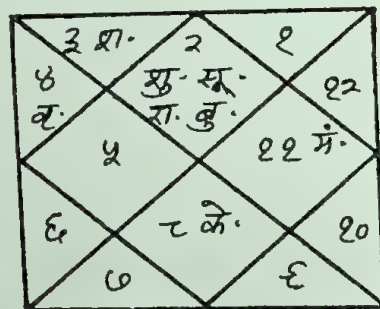
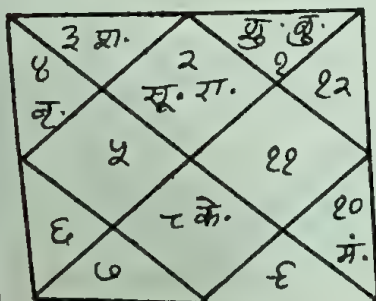
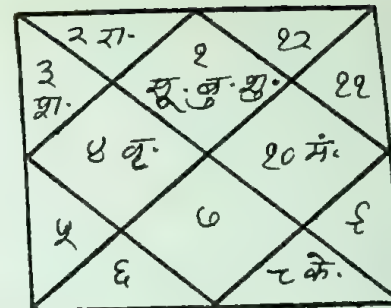
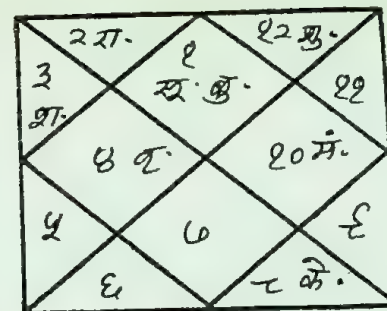
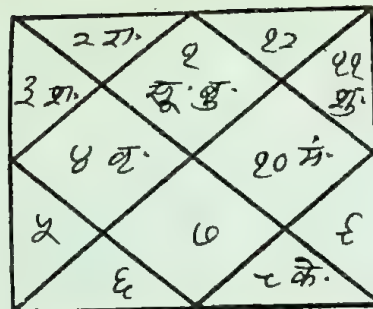
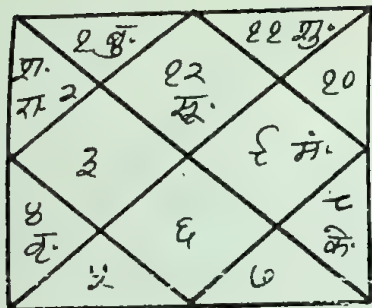
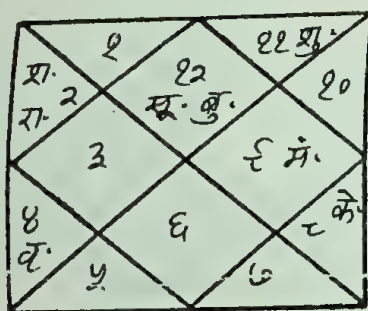


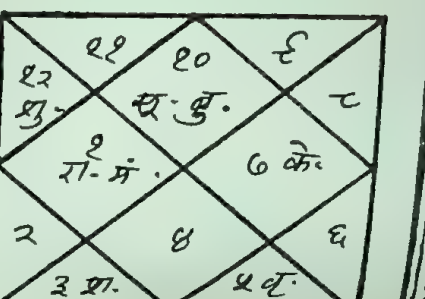
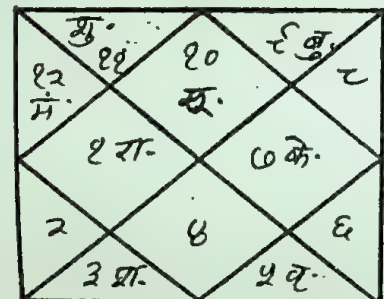
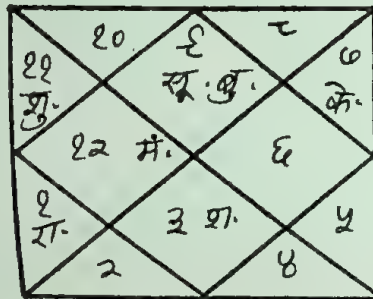
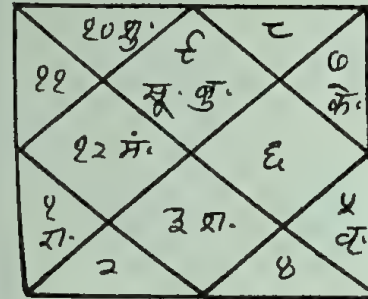
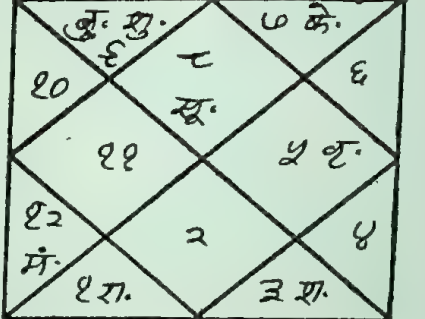
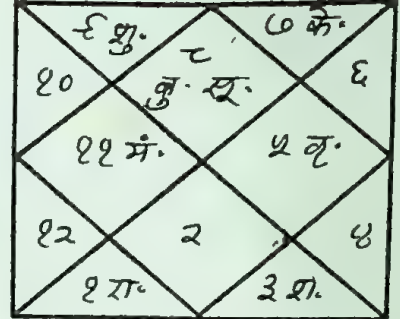
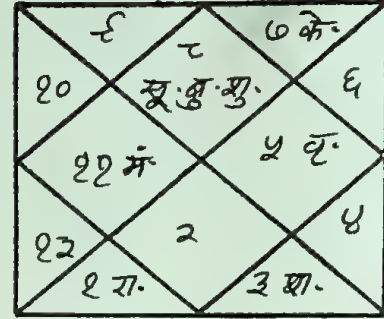
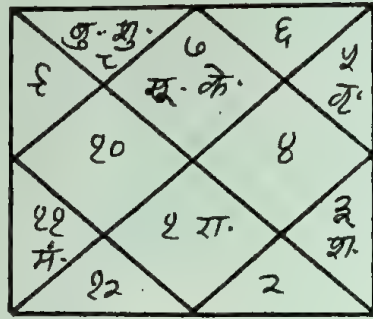
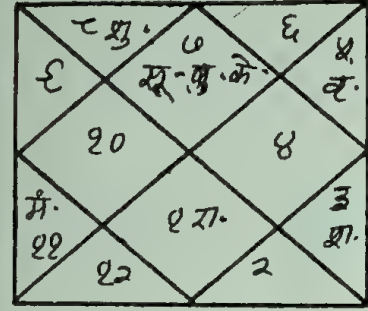
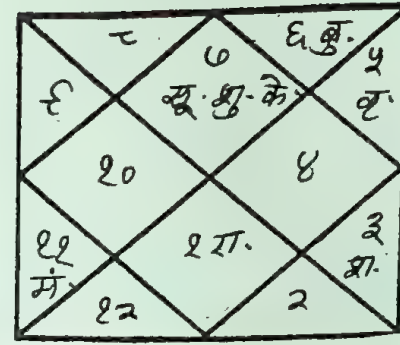
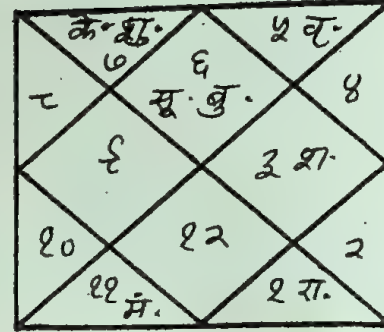
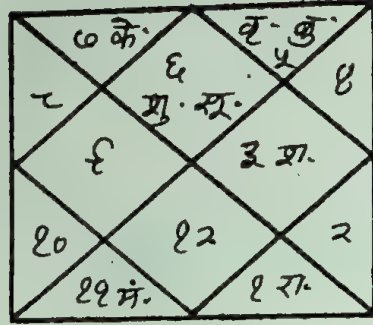
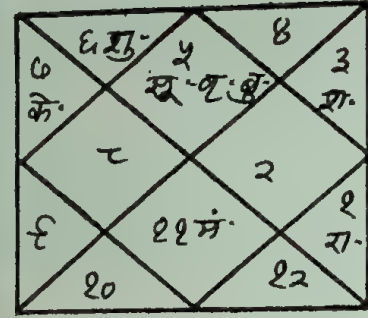




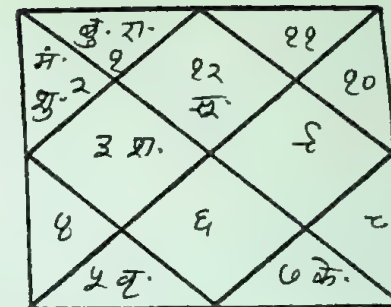
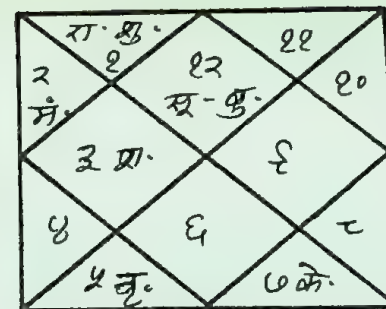
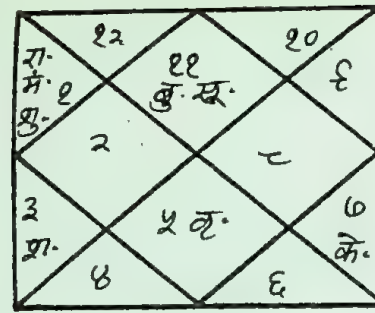
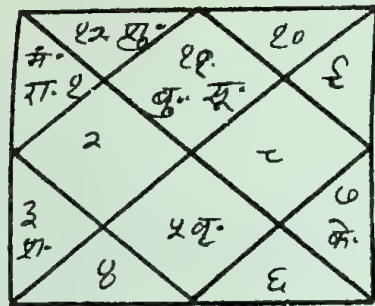
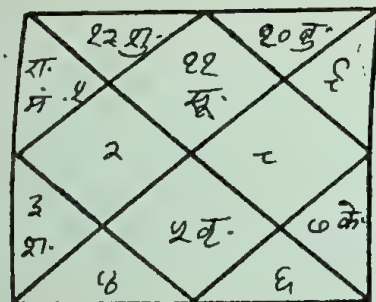




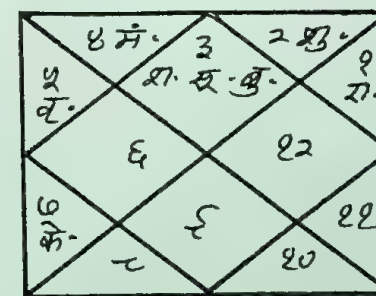
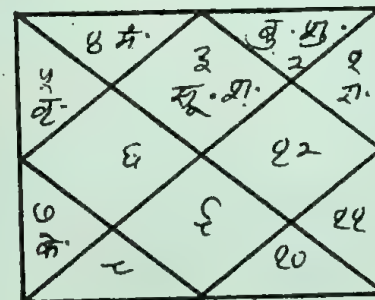
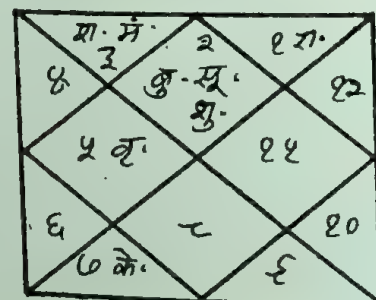
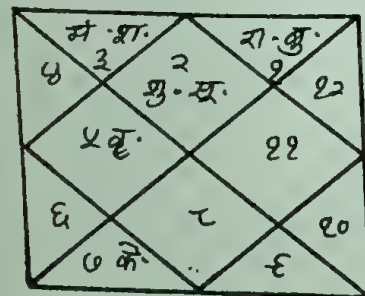
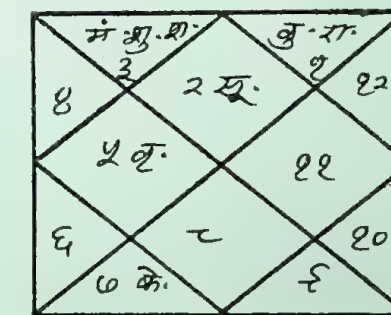
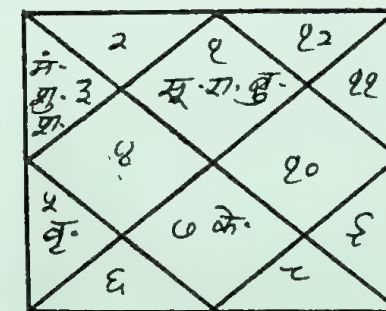
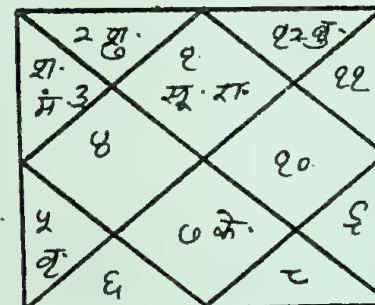
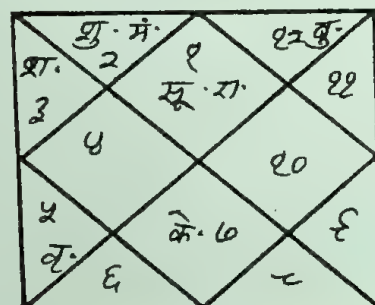
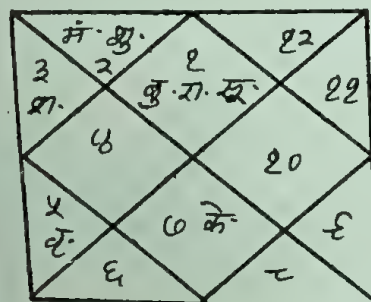


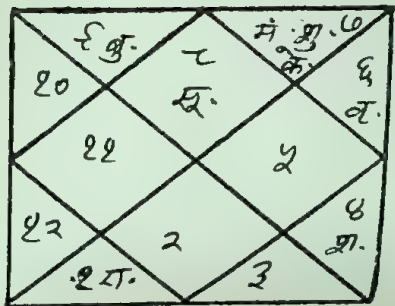
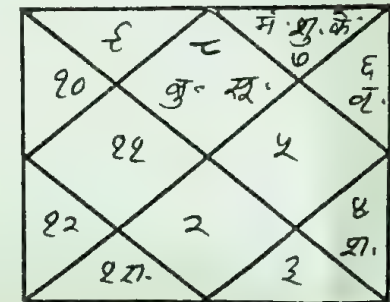
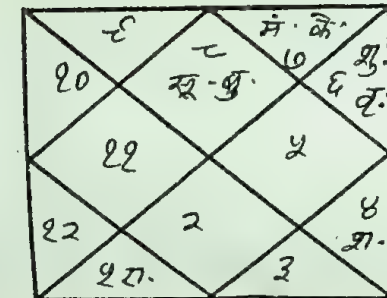
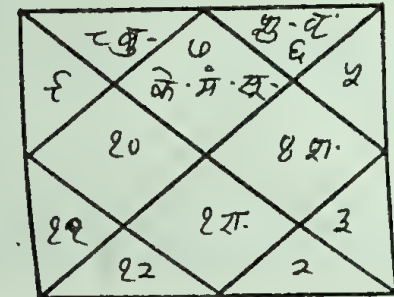
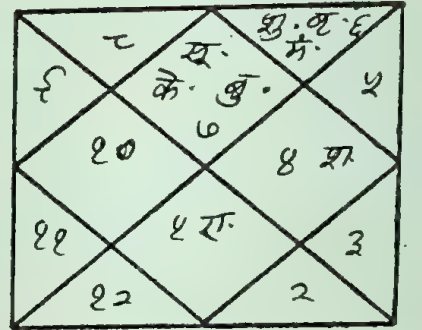
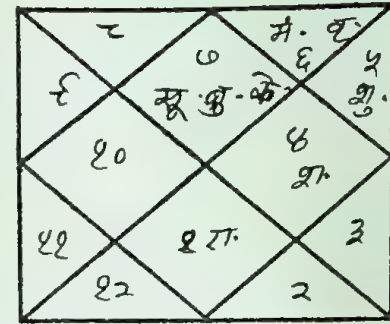
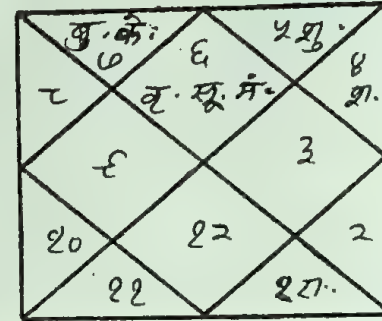
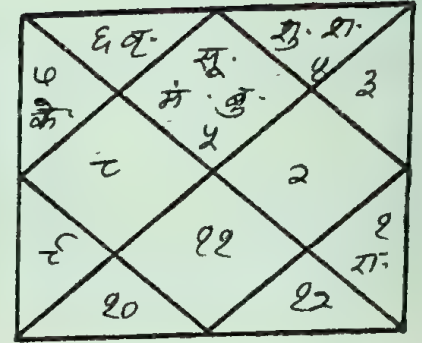
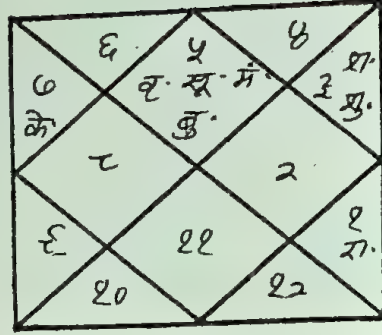
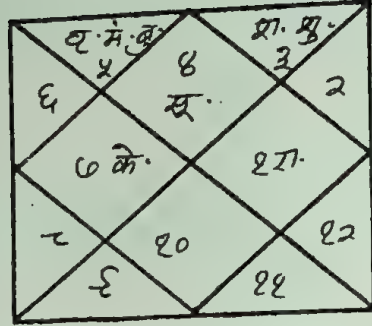
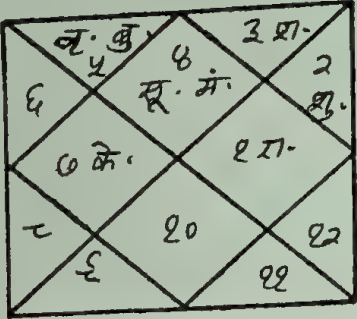


भू० सं०
३२६

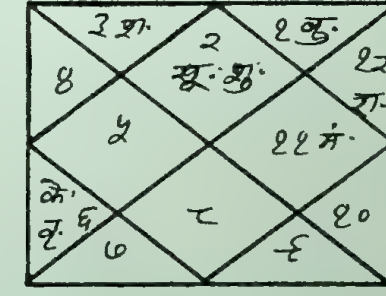
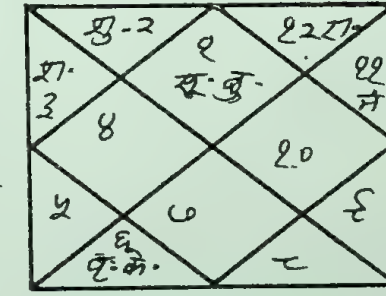
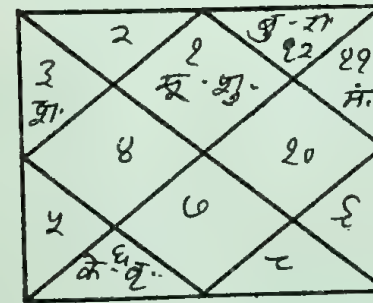
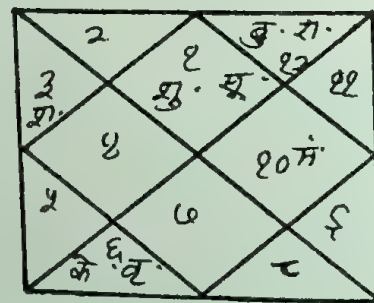
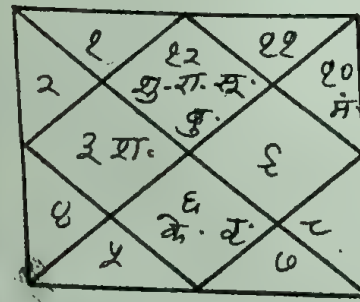
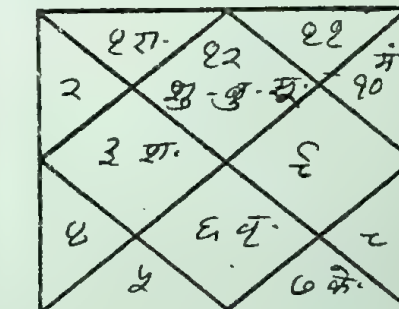
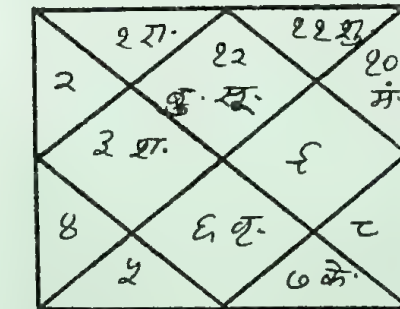
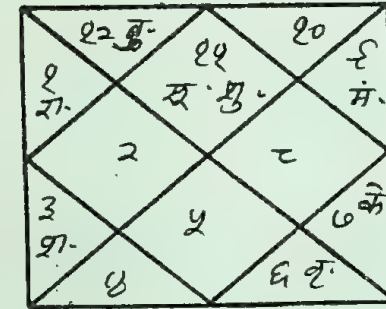
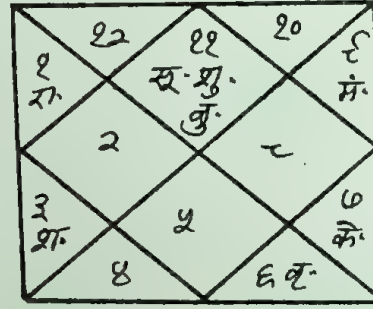
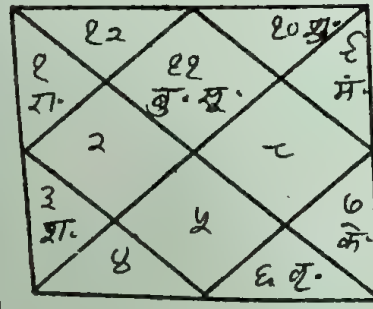
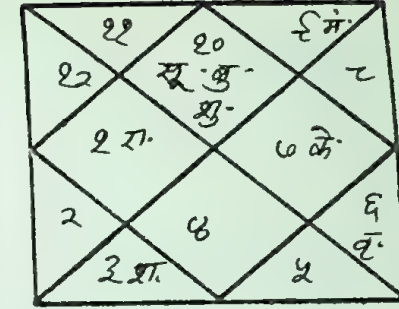
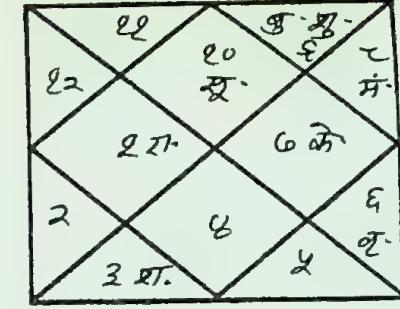
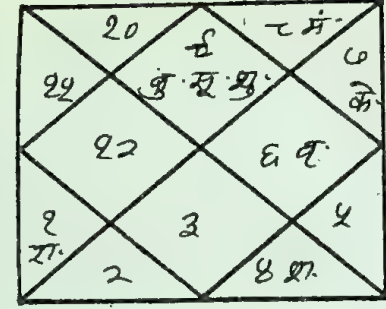
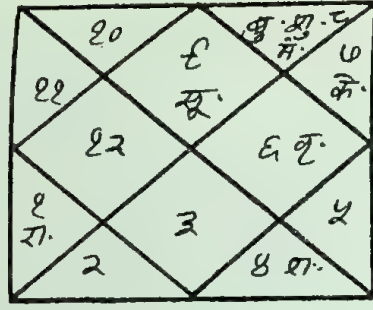
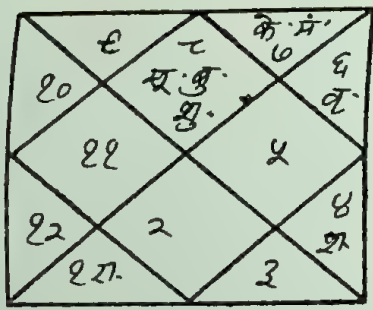


कु०
प०

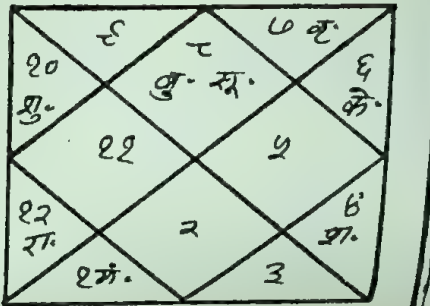
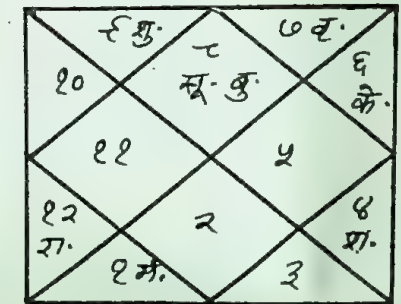
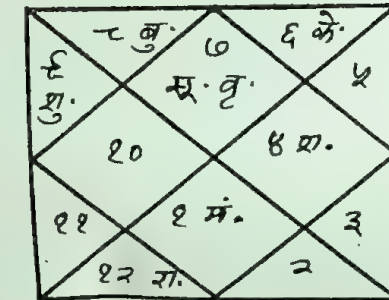
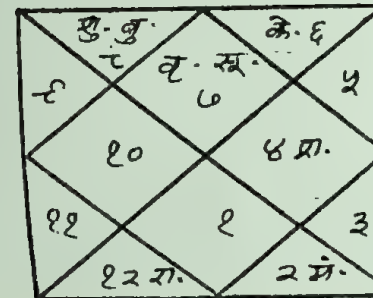
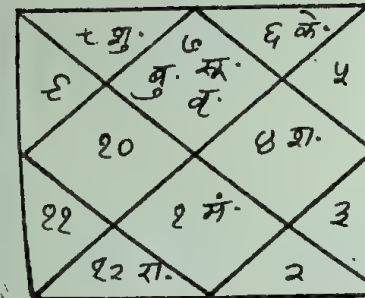
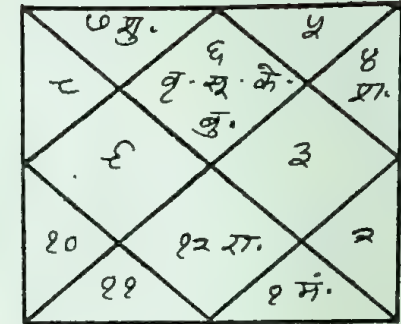
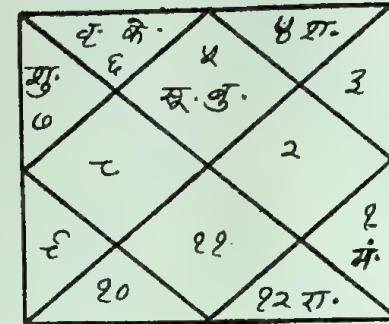
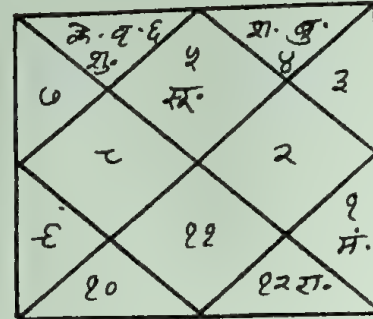
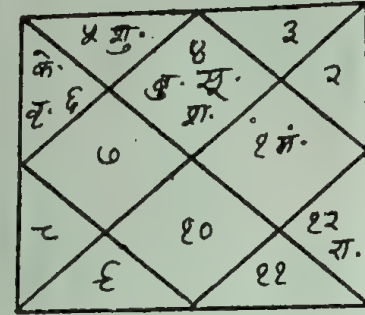
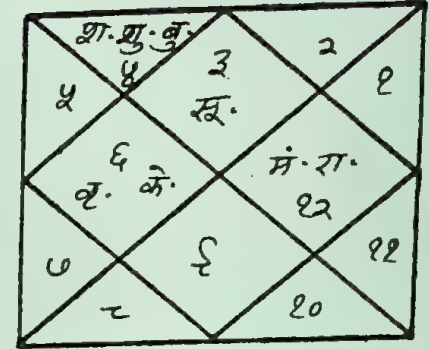
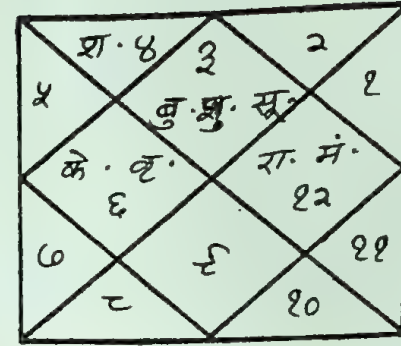
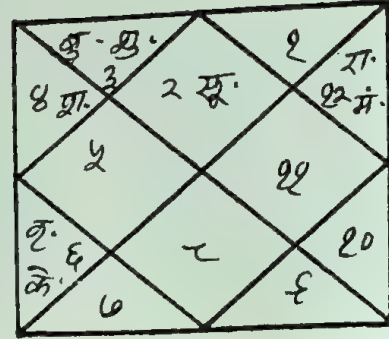
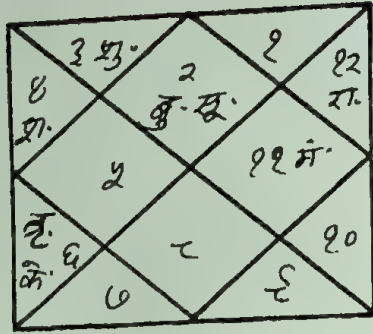
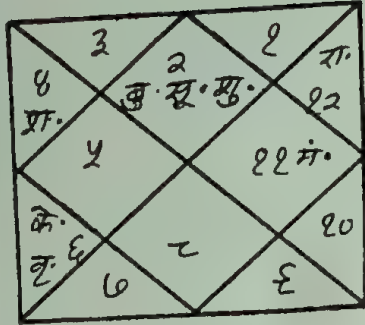




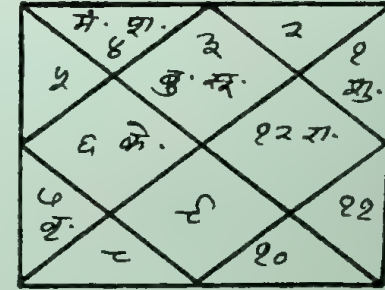
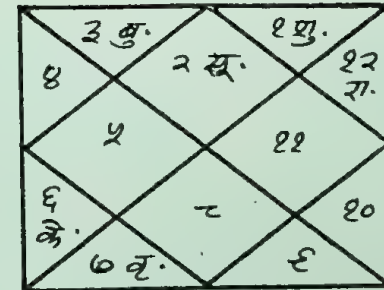
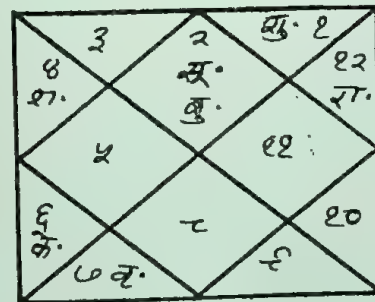
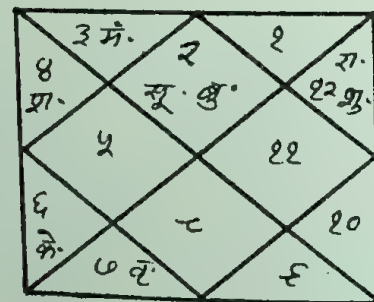
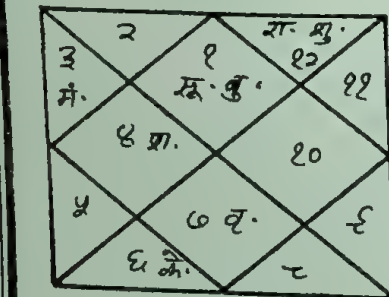
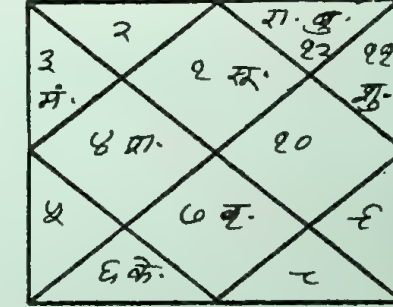
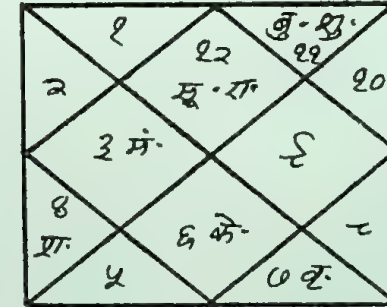
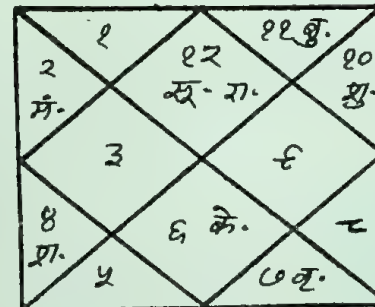
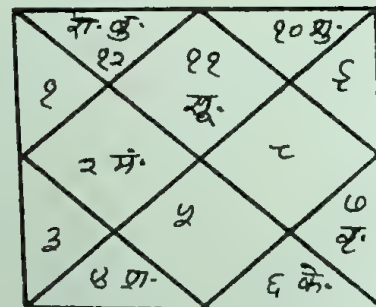
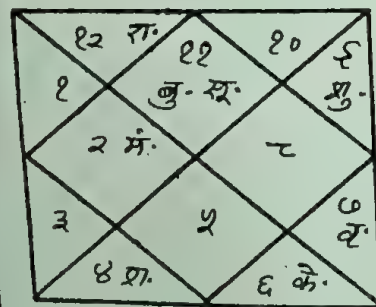
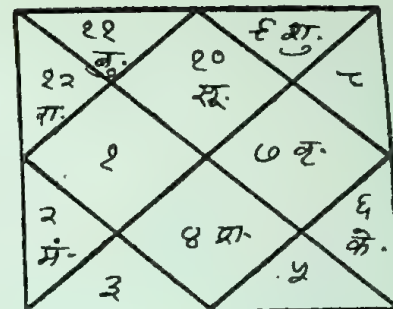
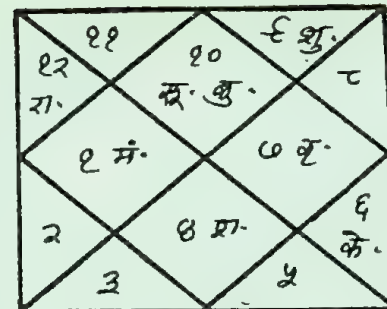
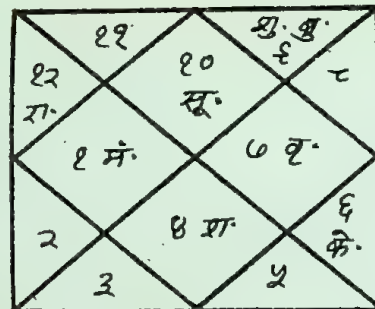
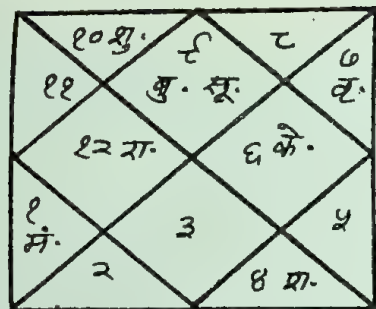
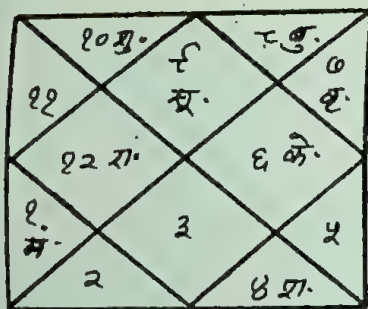
भ. सं.
२३६



कु. प.



૧૦
 સં.
 ૨
 ૩
 ૪



કુ.
 ૫૦

श. सं. कु.	३	शु. २
५	४	३
६ के.	१२ रा.	१
७ व.	८	११
८	१०	

श. कु.	३	२ शु.
५ सं.	४	३
६ के.	१२ रा.	१
७ व.	८	११
८	१०	

५ सं.	४	शु. कु.
६ के.	१२ रा.	१
७ व.	८	११
८	१०	१२ रा.
९	११	

५ सं.	४	३
६ के.	१२ रा.	१
७ व.	८	११
८	१०	१२ रा.
९	११	

५ सं.	४	३
६ के.	१२ रा.	१
७ व.	८	११
८	१०	१२ रा.
९	११	

६ के.	५	शु. श.
७ व.	४	३
८	११	१
९	१०	१२ रा.
१०	११	

५ सं.	४	४ श.
६ के.	१२ रा.	१
७ व.	८	११
८	१०	१२ रा.
९	११	

५ सं.	४	४ श.
६ के.	१२ रा.	१
७ व.	८	११
८	१०	१२ रा.
९	११	

५ सं.	४	४ श.
६ के.	१२ रा.	१
७ व.	८	११
८	१०	१२ रा.
९	११	

५ सं.	४	४ श.
६ के.	१२ रा.	१
७ व.	८	११
८	१०	१२ रा.
९	११	

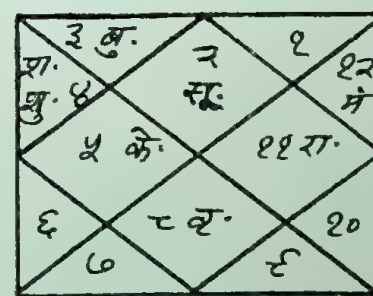
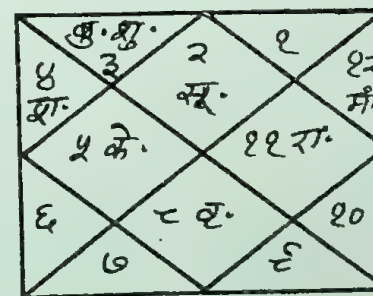
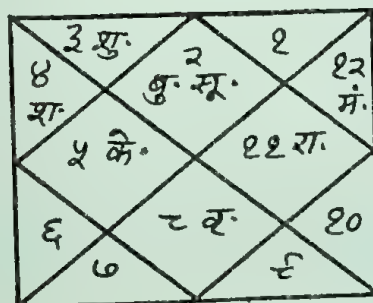
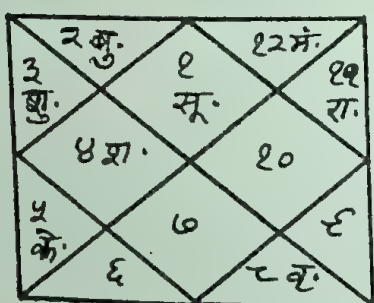
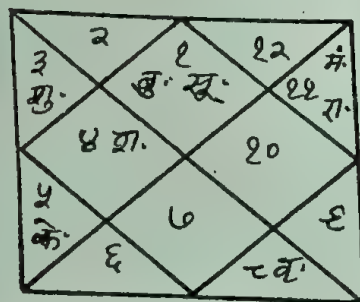
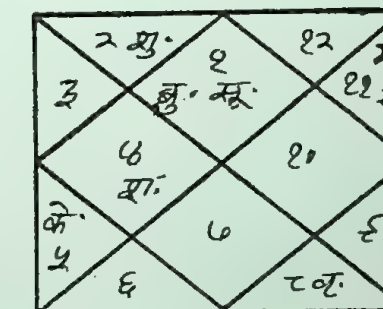
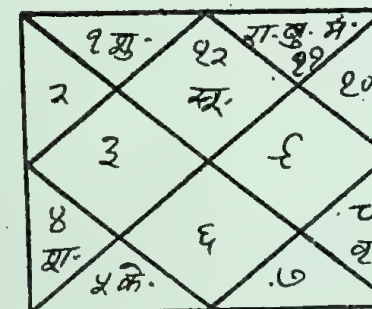
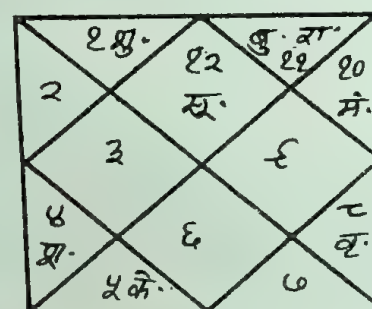
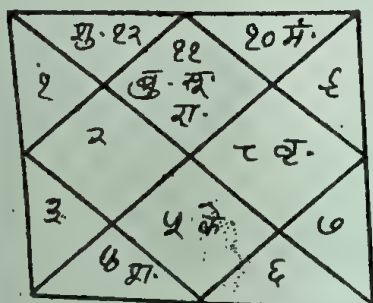
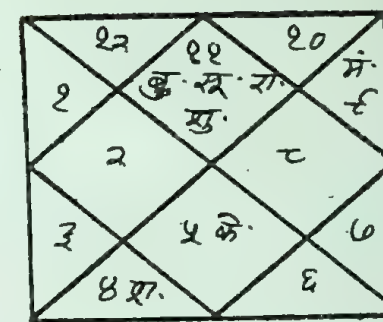
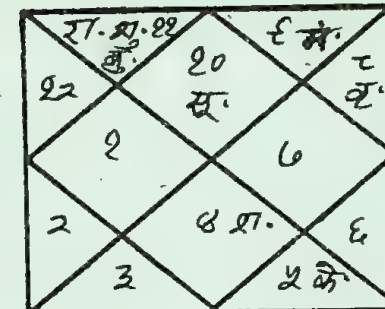
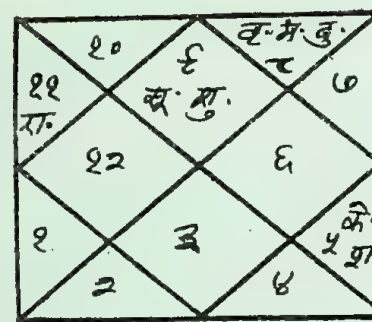
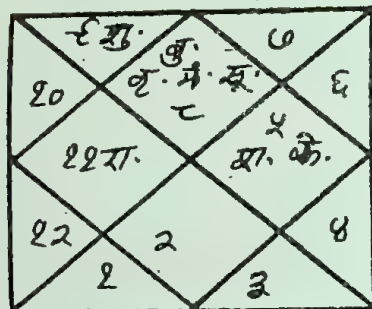
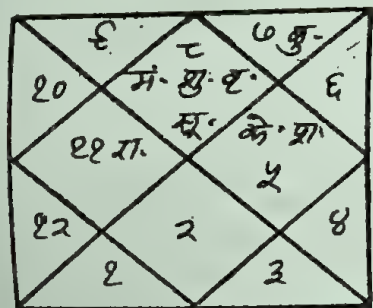
५ सं.	४	४ श.
६ के.	१२ रा.	१
७ व.	८	११
८	१०	१२ रा.
९	११	

५ सं.	४	४ श.
६ के.	१२ रा.	१
७ व.	८	११
८	१०	१२ रा.
९	११	

५ सं.	४	४ श.
६ के.	१२ रा.	१
७ व.	८	११
८	१०	१२ रा.
९	११	

५ सं.	४	४ श.
६ के.	१२ रा.	१
७ व.	८	११
८	१०	१२ रा.
९	११	

५ सं.	४	४ श.
६ के.	१२ रा.	१
७ व.	८	११
८	१०	१२ रा.
९	११	



शु.श. ३	२		
५	४	कु.सू.	१
के.	६		१२ सं.
७		८	११ रा.
	८		१०

श.शु. ३	२		
५	४	सू.कु.	१ सं.
के.	६		१२
७		८	११ रा.
	८		१०

४ रा.	३	२	१
के. ५		सू.कु.	१ सं.
	६		१२
७		८	११ रा.
	८		१०

सु.के. ५	४	३	२
६		४ सू.	२
	७		१ सं.
८		१०	१२
	८		११ रा.

श.के. ५	४	३	२
६		कु.सू.	२ सं.
	७		१
८		१०	१२
	८		११ रा.

६	के. ४		
७	श.शु.सू.	३	
	कु. ५		२ सं.
८		११ रा.	१
	१०		१२

६	कु. ४	४ रा.	
७	सू.श.के.	३	
	५		२ सं.
८		११ रा.	१
	१०		१२

६ कु.	सू. ४	४ रा.	
७	श.के.	३	
	५		२ सं.
८		११ रा.	१
	१०		१२

७ कु.	६	के.श. ४	
८		सू.	४ रा.
	८		३ सं.
१०		१२	२
	११ रा.		१

७ कु.	६	श.श. ५	
८		सू.के. ४	
	८		३ सं.
१०		१२	२
	११ रा.		१

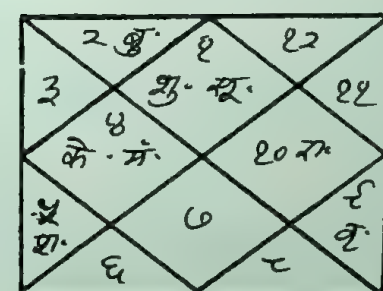
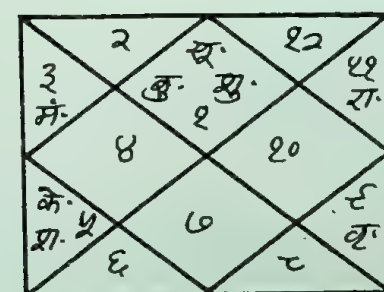
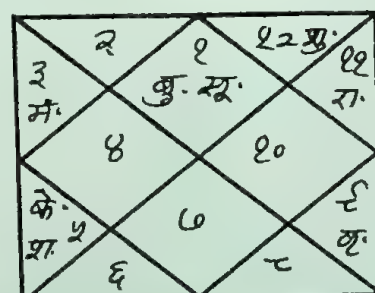
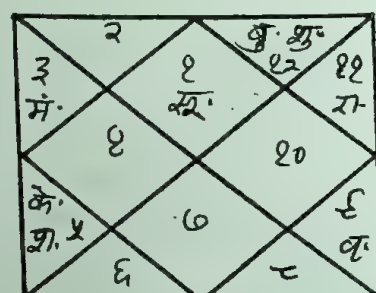
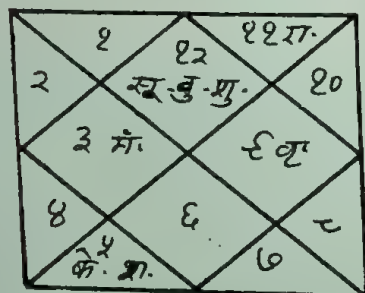
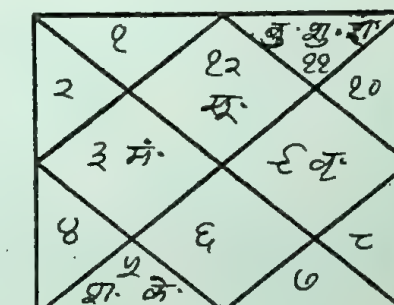
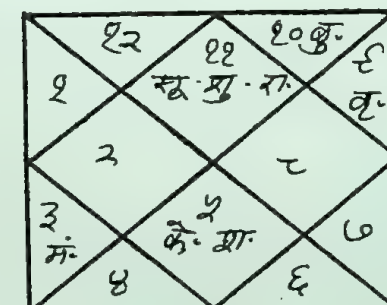
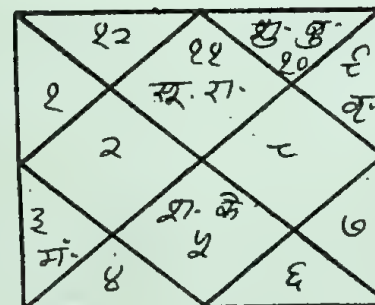
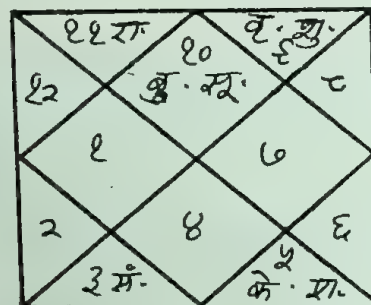
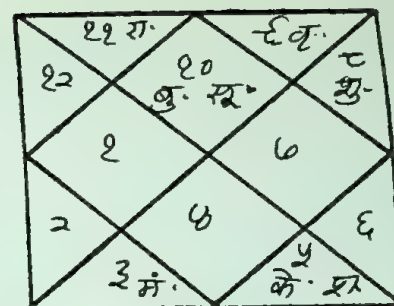
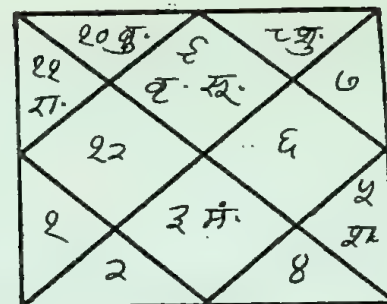
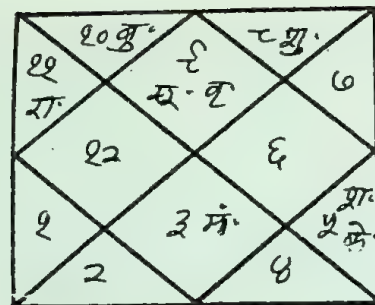
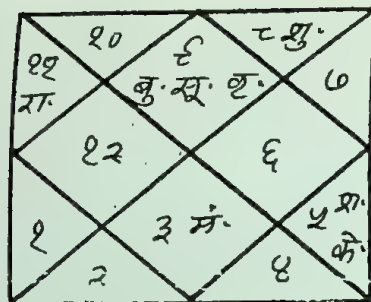
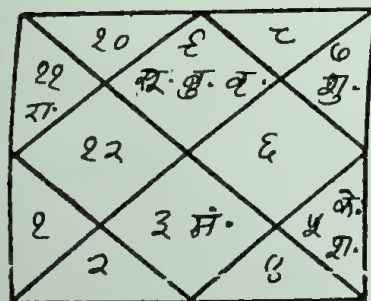
८	७	६	शु.श. ५
	कु.सू.	४	के.
	१०		३ सं.
११ रा.		१	२
	१२		२

८	७	कु.शु. ५	श. ५
	सू.	४	के.
	१०		३ सं.
११ रा.		१	२
	१२		२

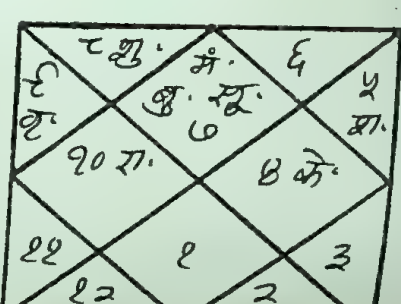
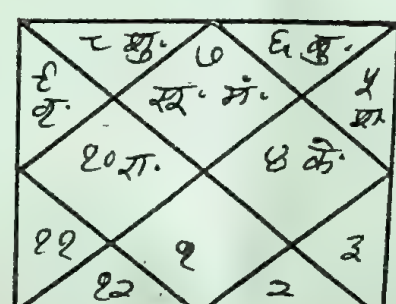
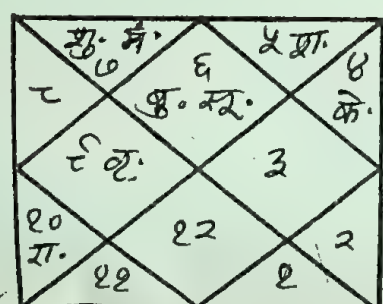
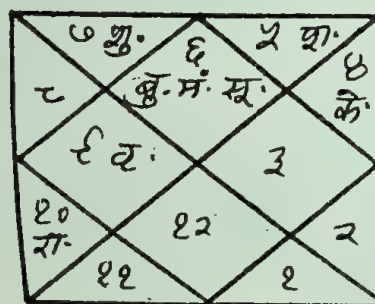
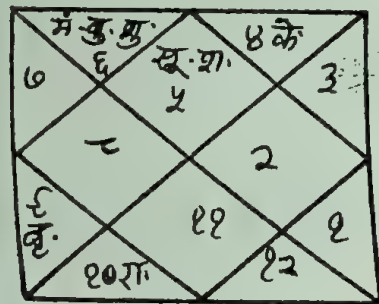
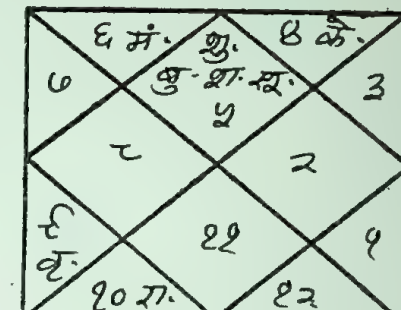
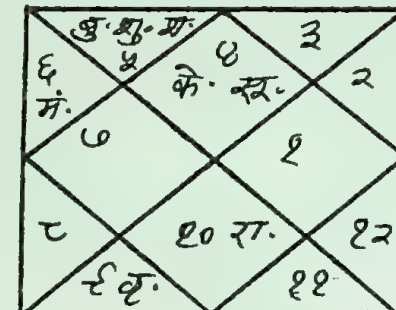
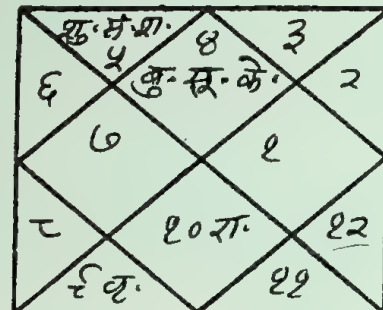
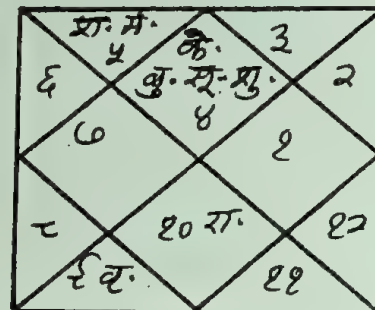
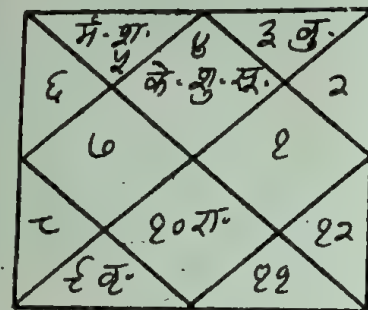
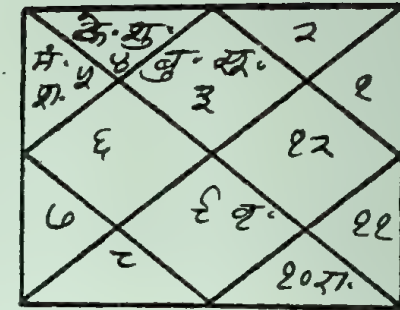
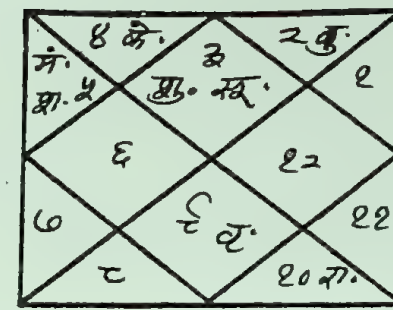
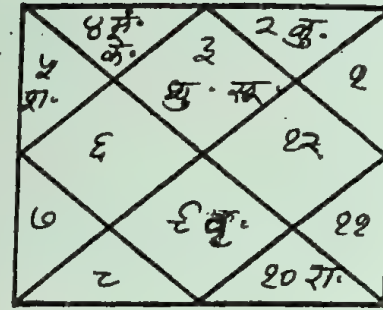
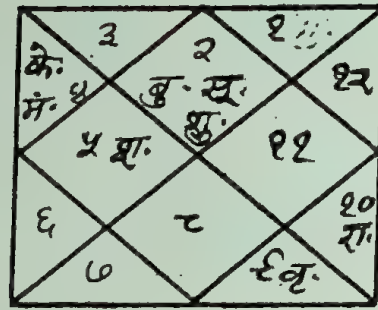
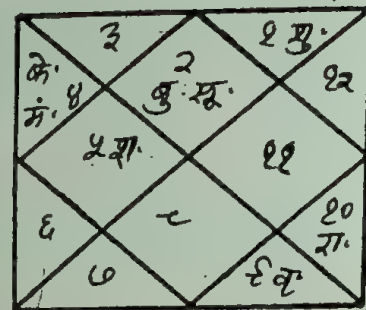
८	७	६ रा.	श. ५
	कु.सू.	४	के.
	१०		३ सं.
११ रा.		१	२
	१२		२

८	७	६	शु. ५
	सू.	४	के.श.
	११ रा.		३ सं.
१२		२	४
	१		३ सं.

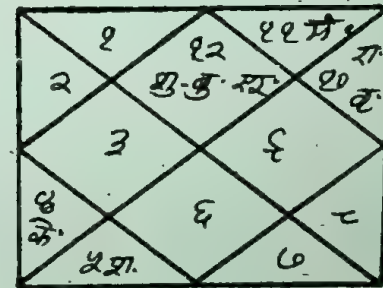
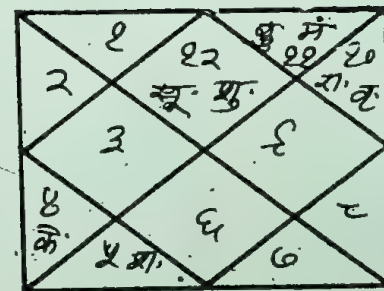
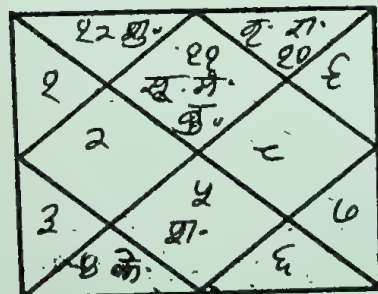
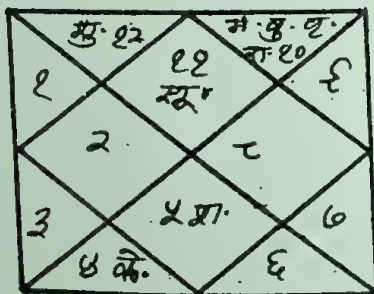
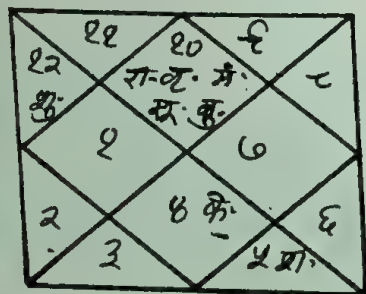
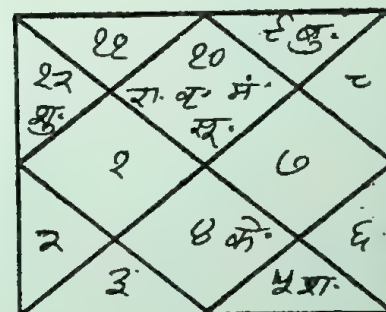
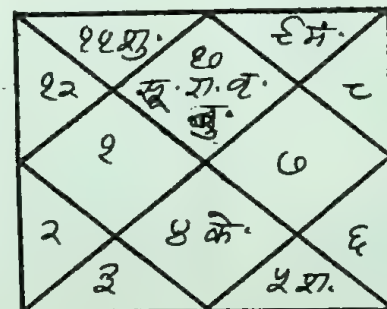
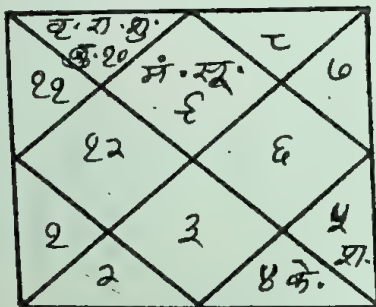
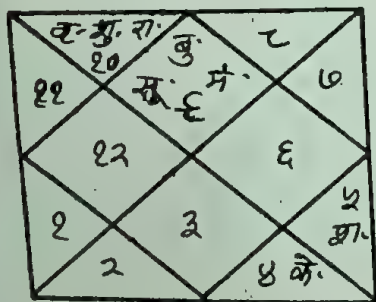
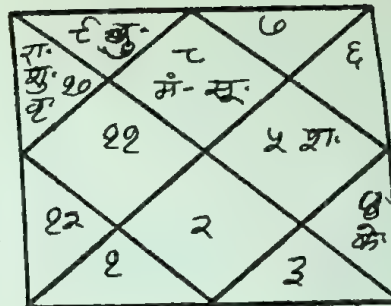
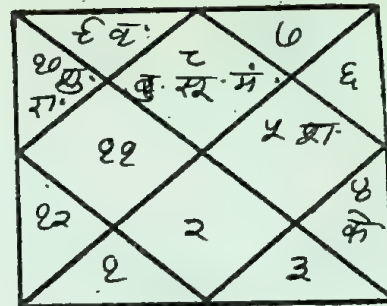
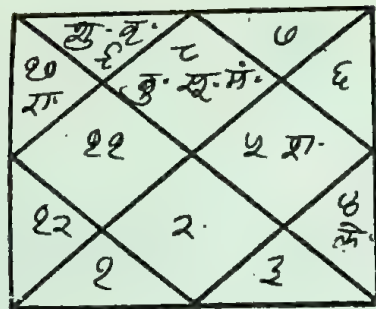
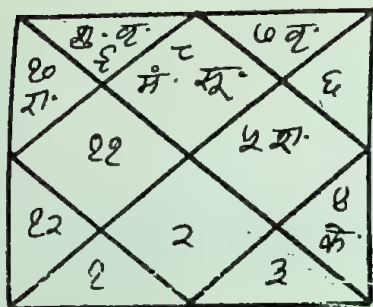
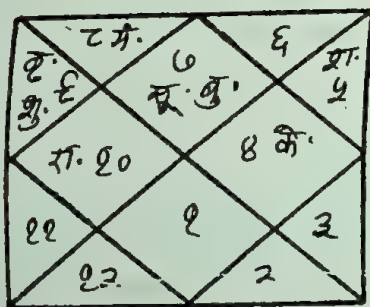
८	७	६	शु. ५
	कु.सू.	४	के.श.
	११ रा.		३ सं.
१२		२	४
	१		३ सं.

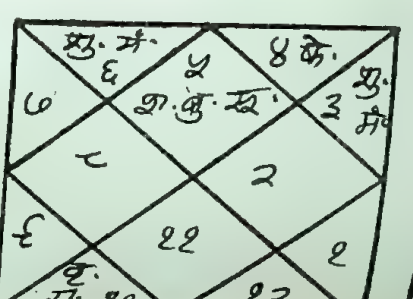
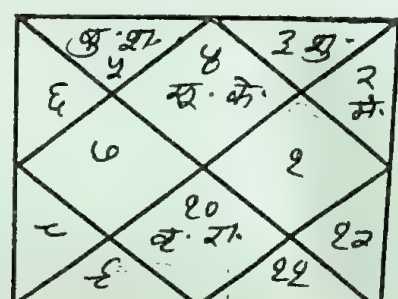
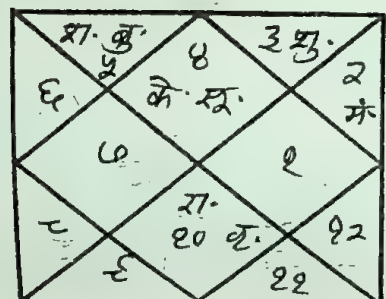
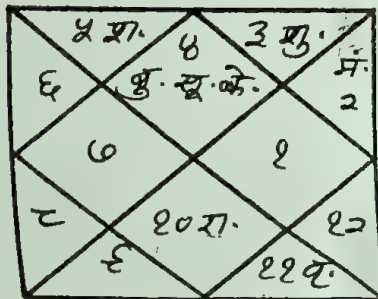
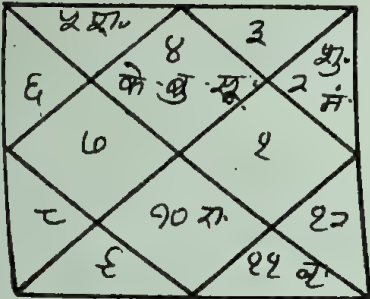
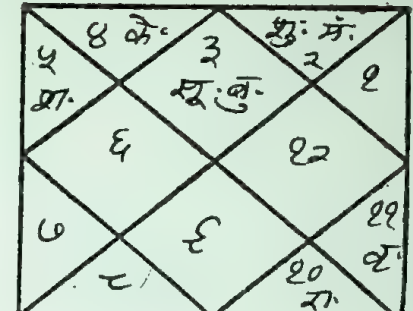
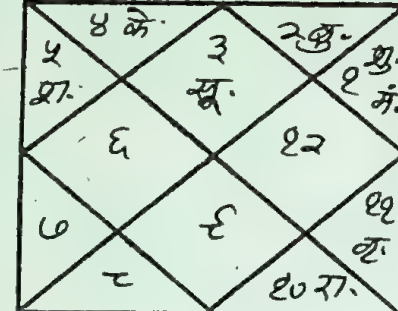
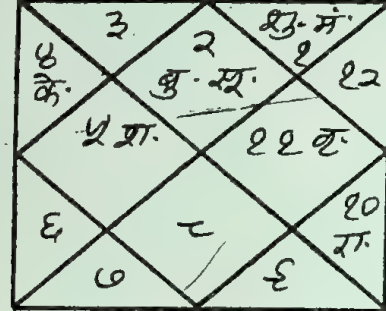
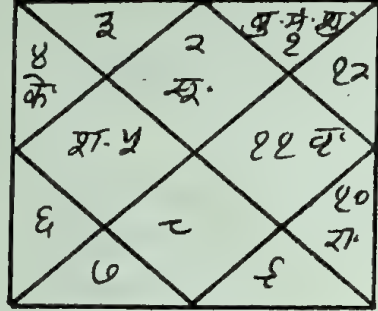
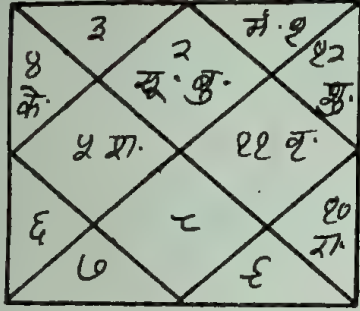
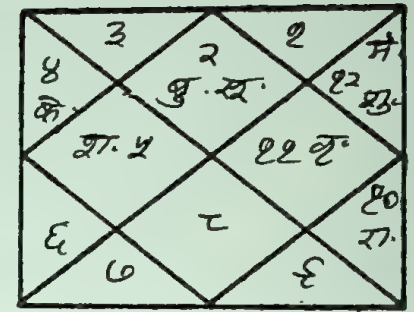
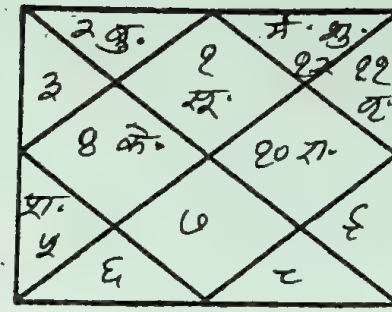
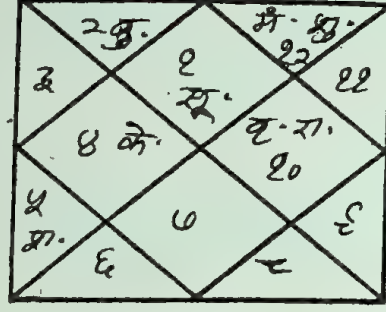
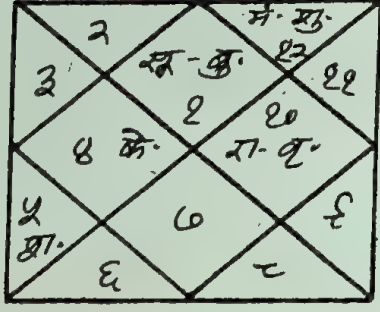


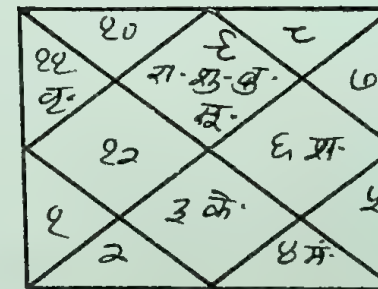
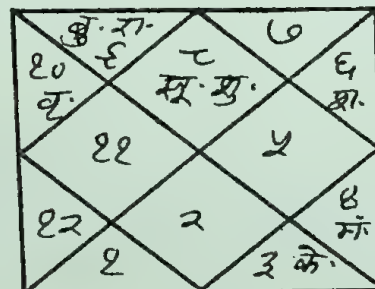
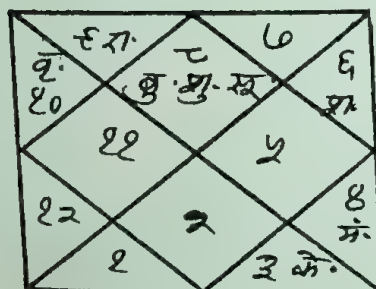
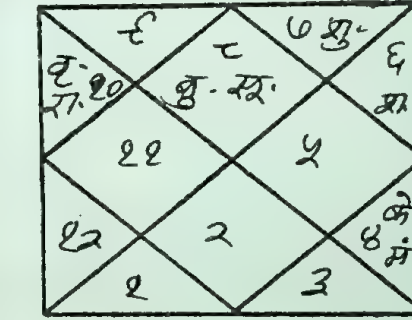
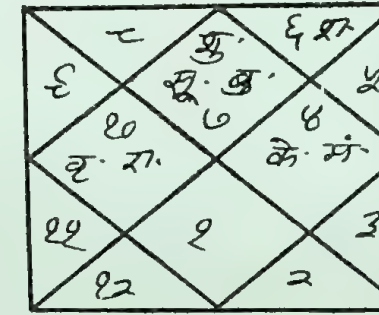
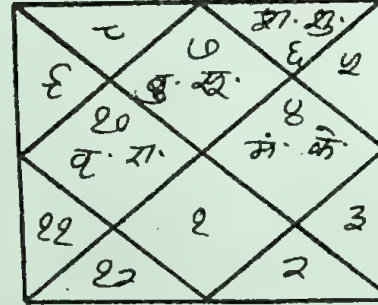
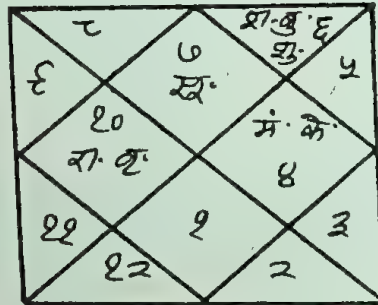
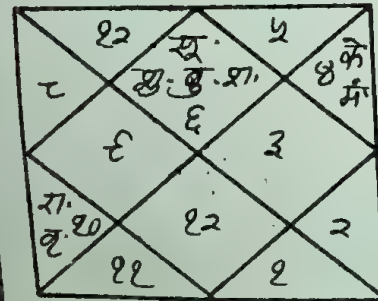
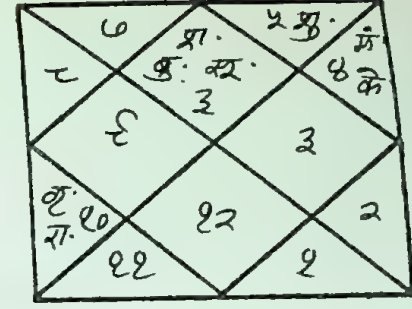
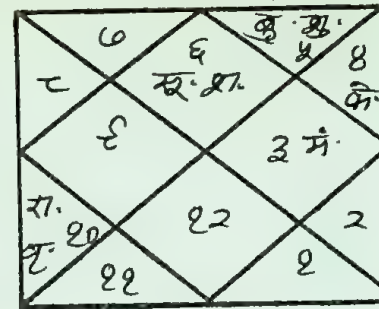
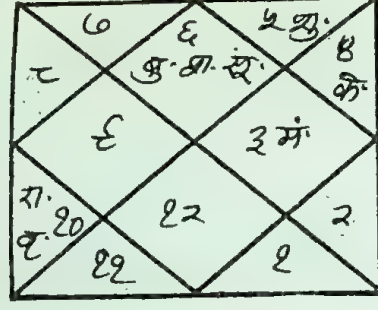
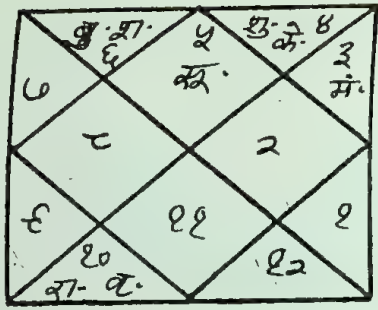
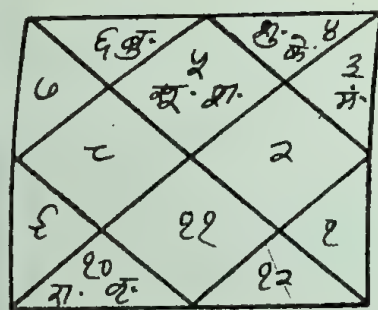
પૃ. સં.
૨૩૬

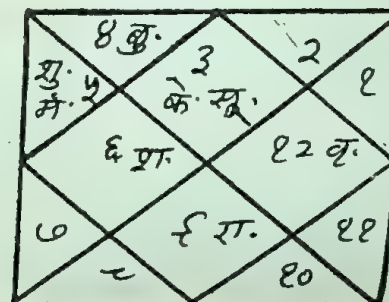
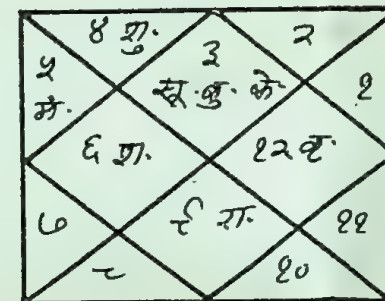
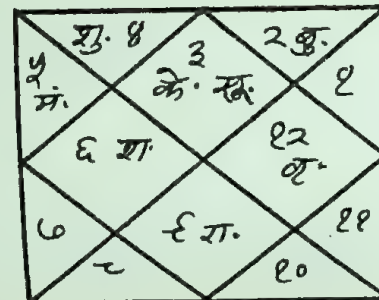
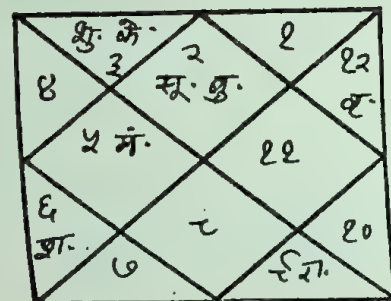
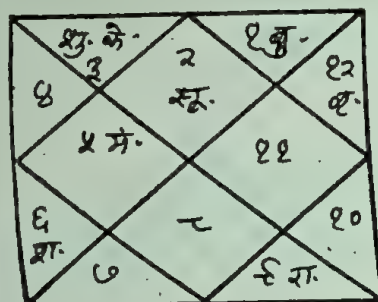
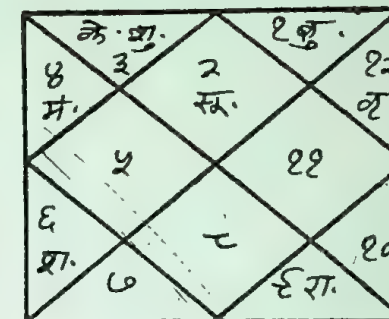
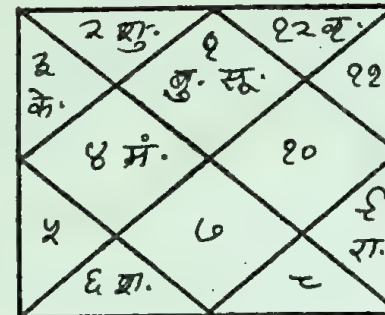
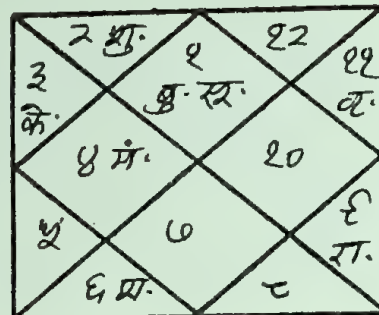
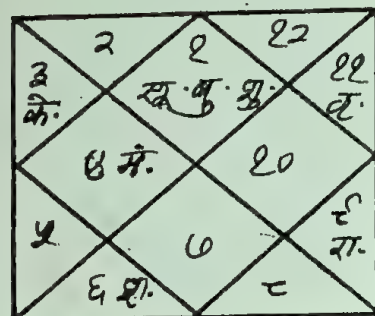
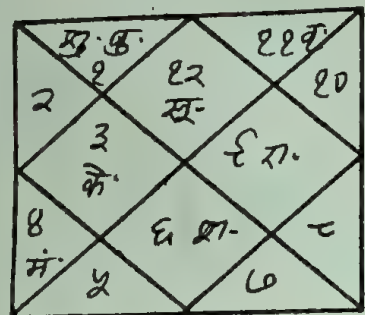
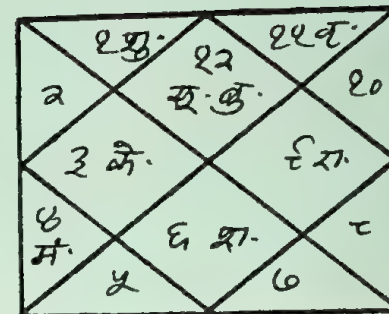
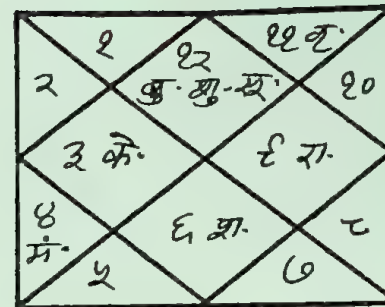
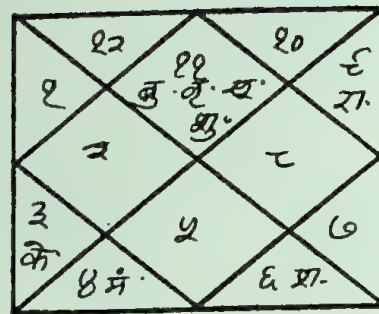
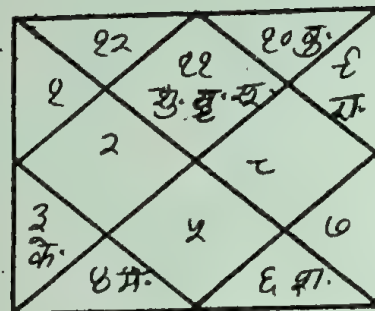
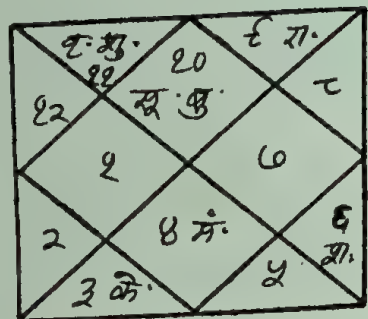


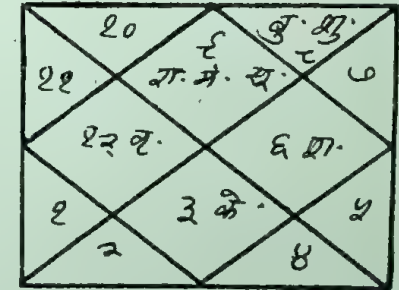
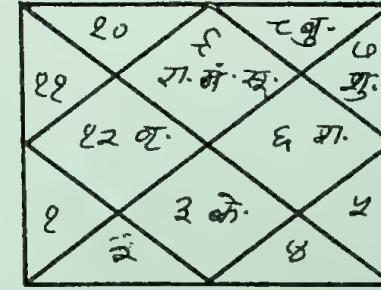
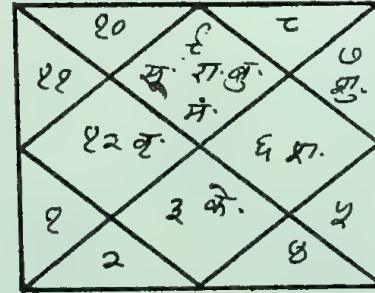
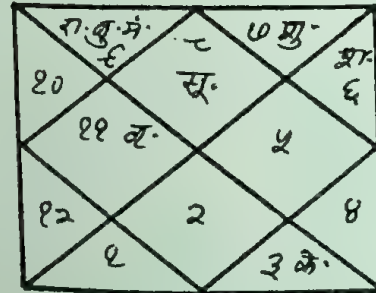
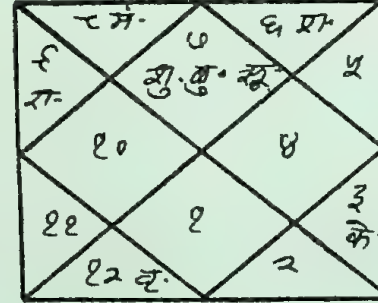
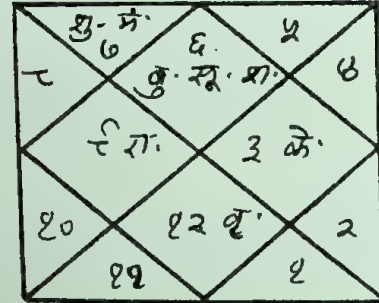
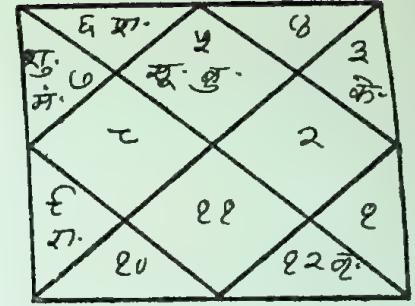
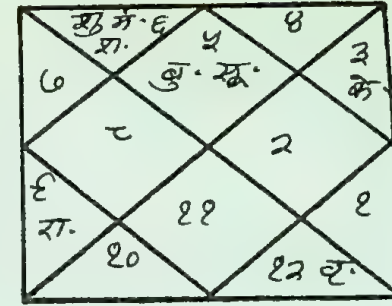
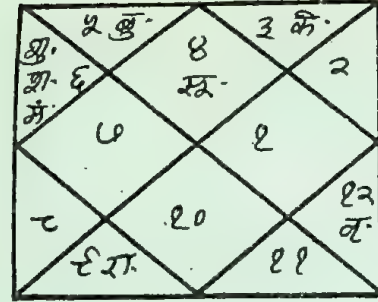
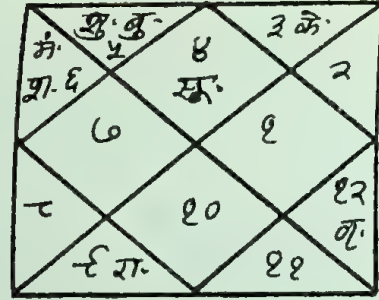
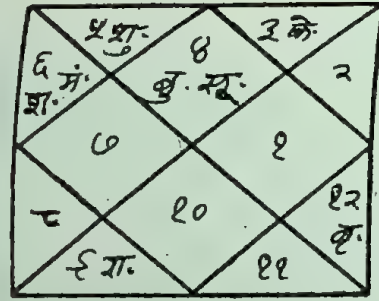
કુ.
૫૦





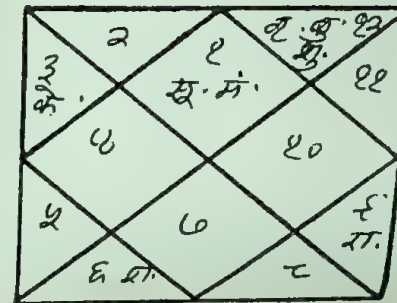
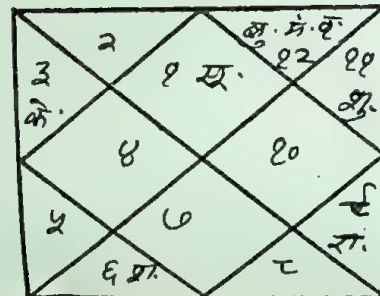
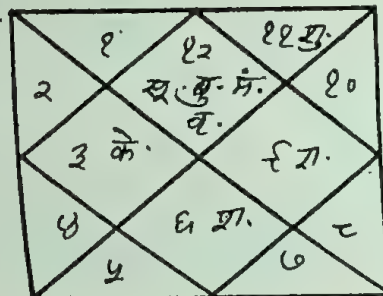
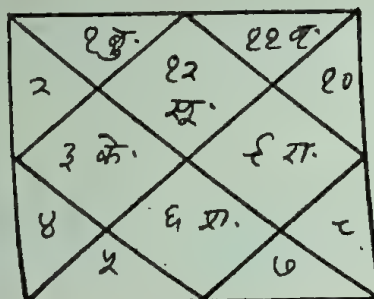
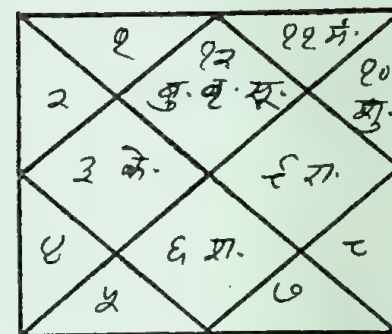
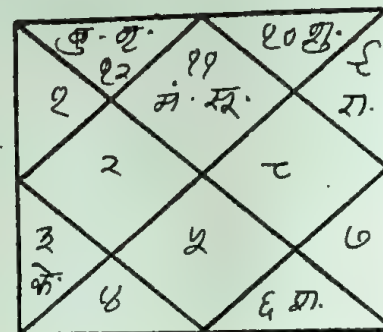
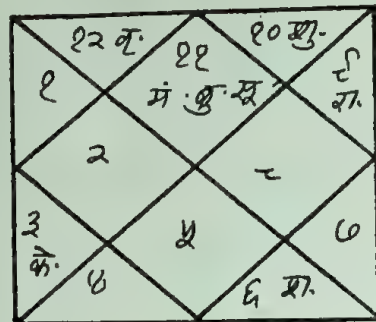
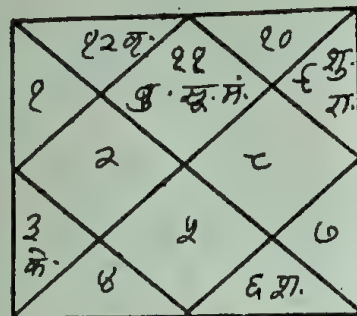
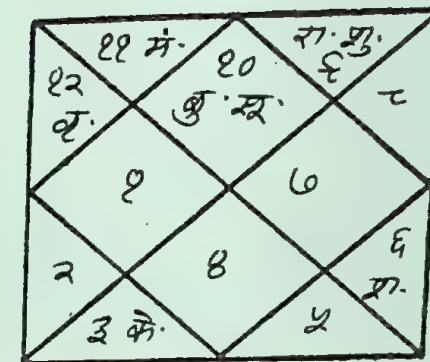
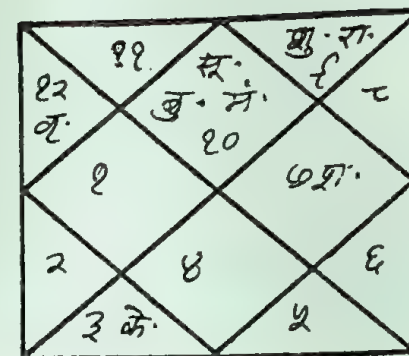
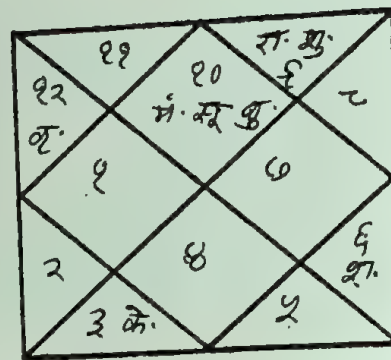
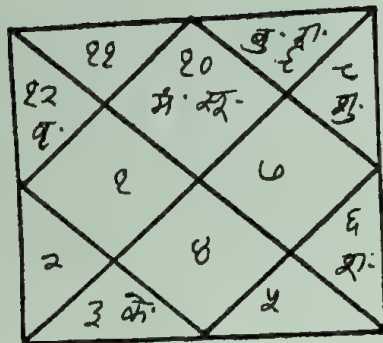
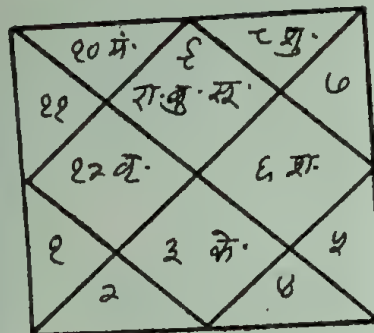




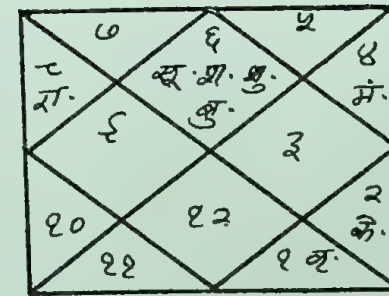
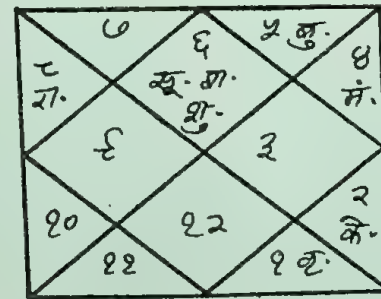
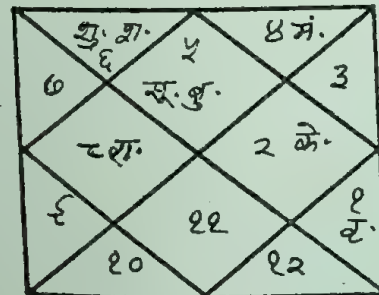
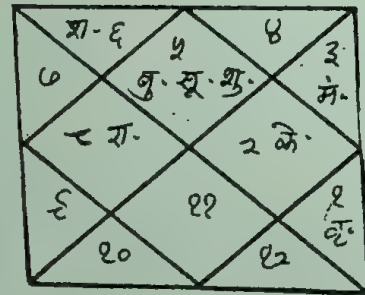
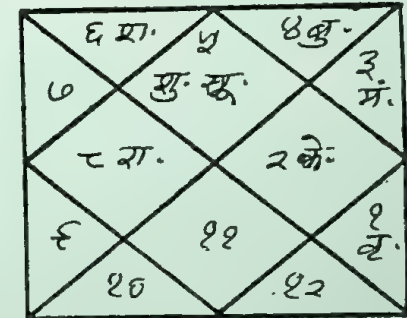
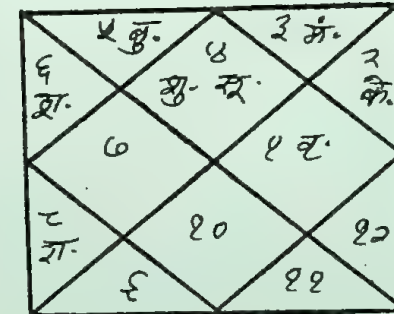
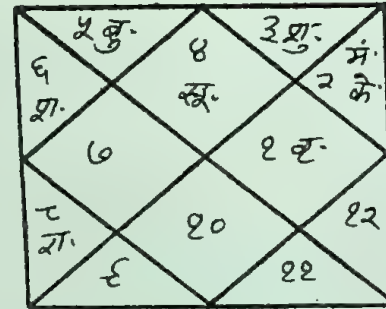
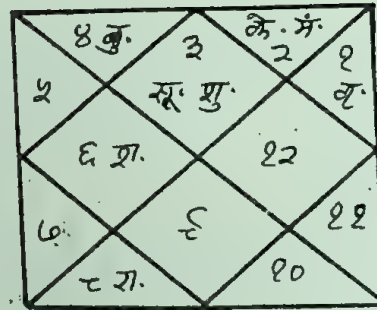
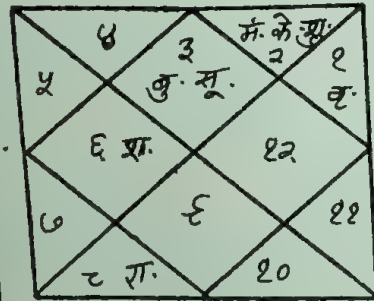
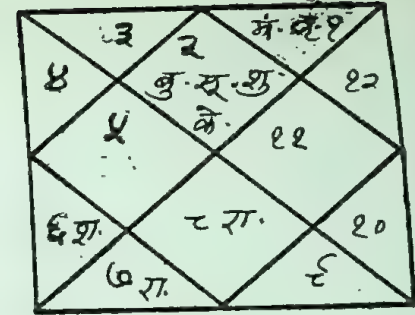
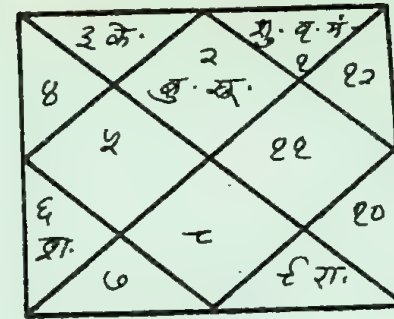
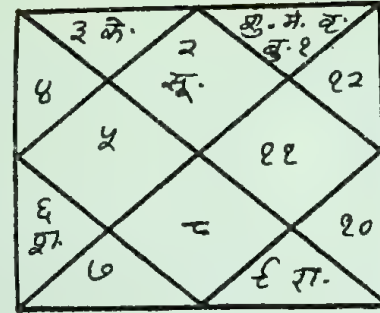
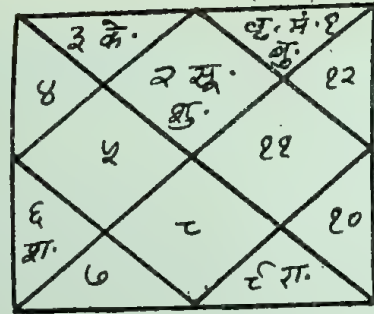
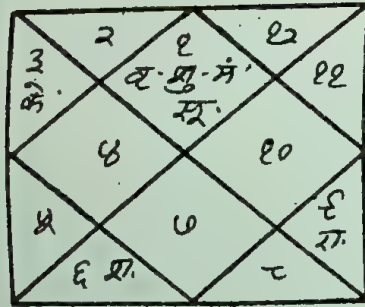


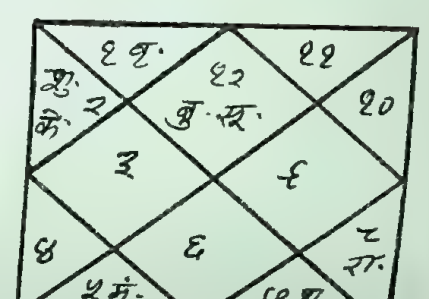
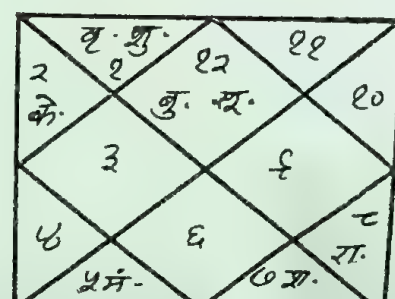
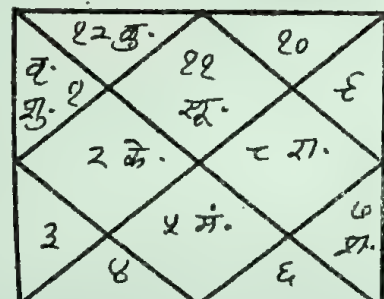
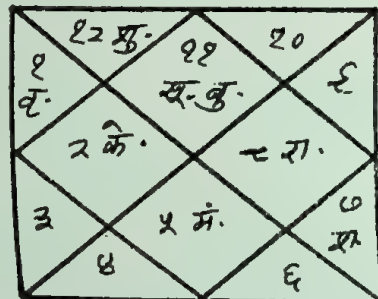
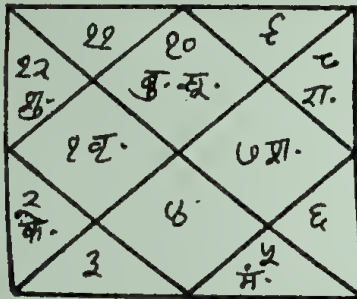
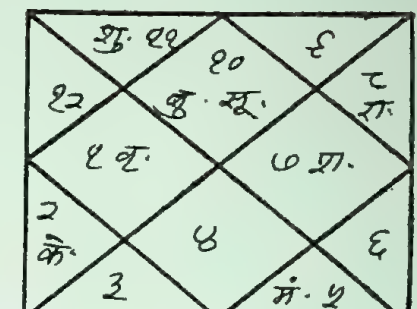
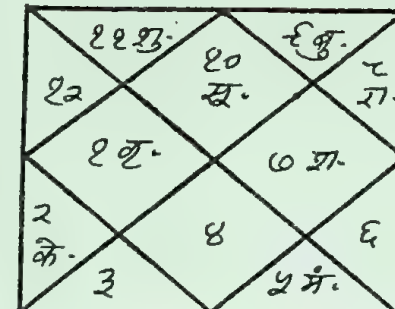
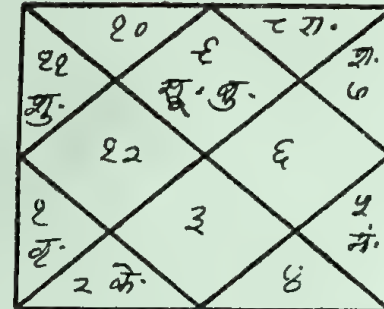
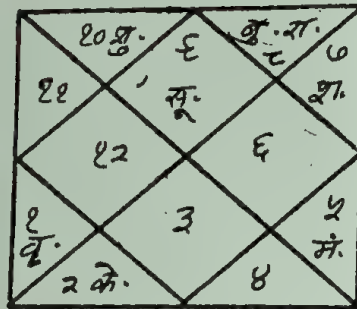
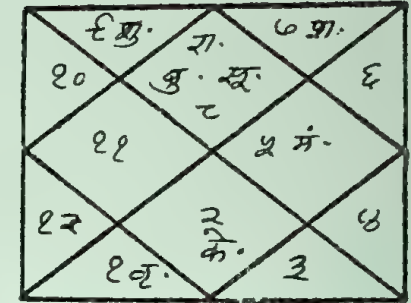
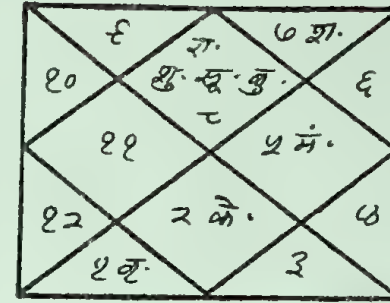
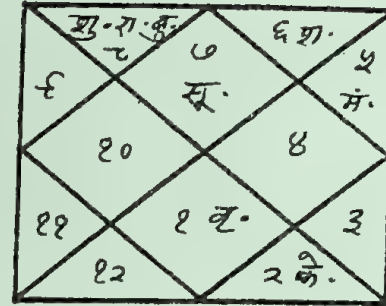
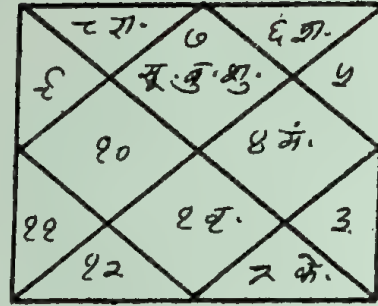
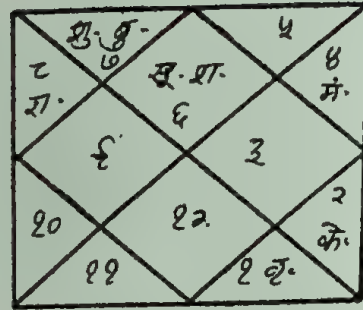
मं. सं.

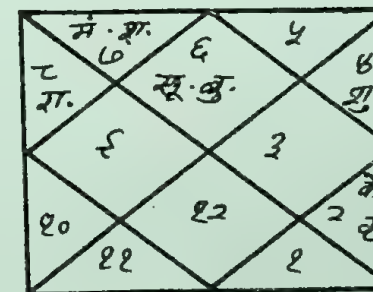
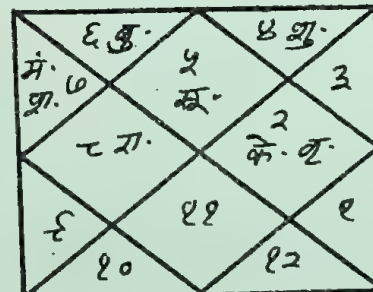
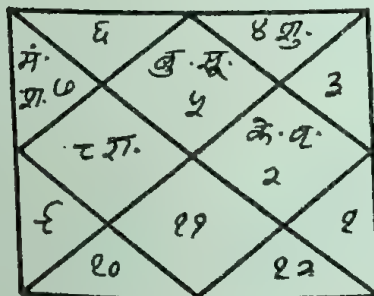
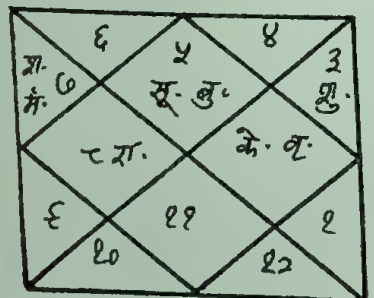
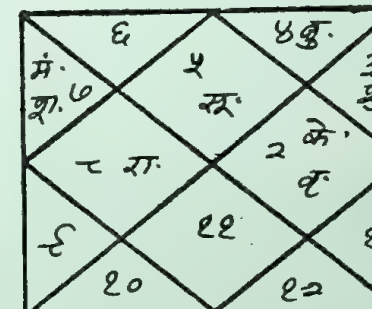
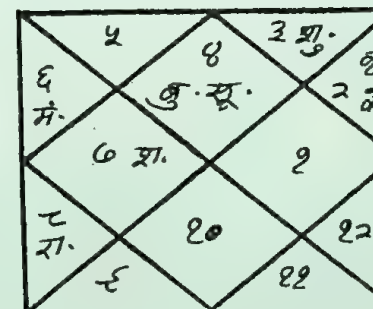
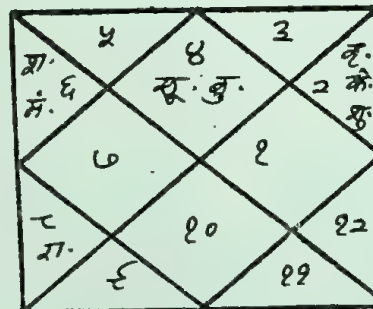
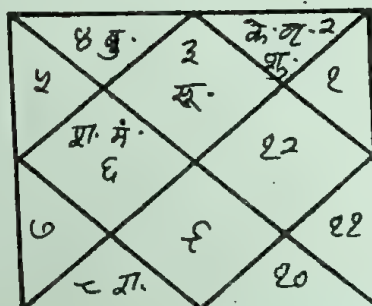
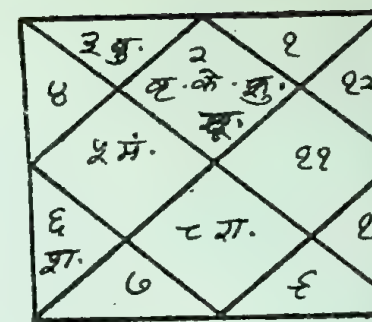
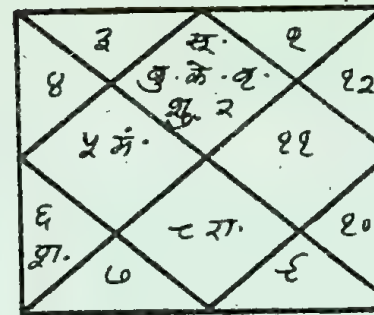
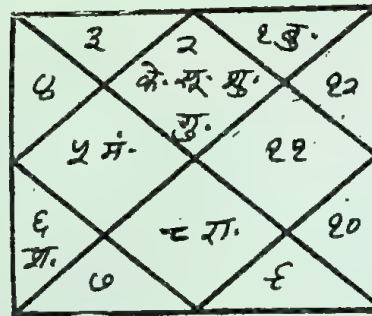
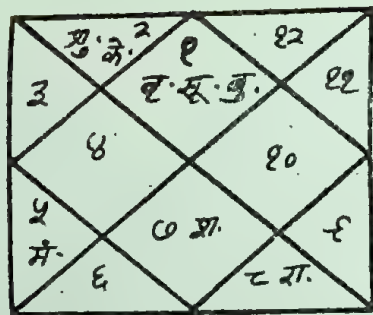
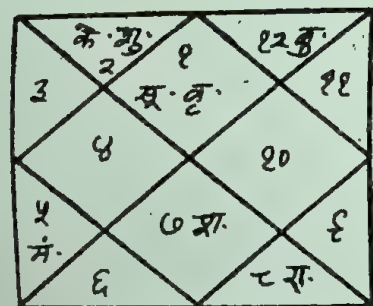
३०९

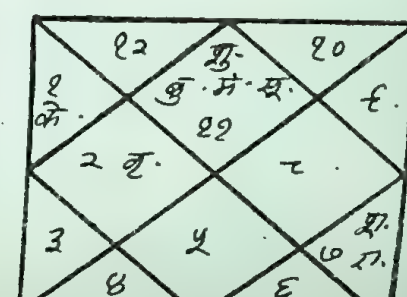
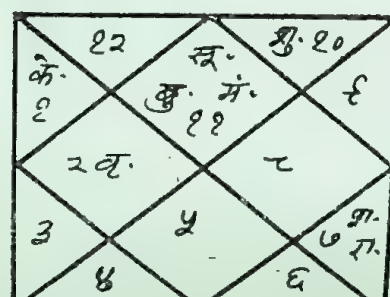
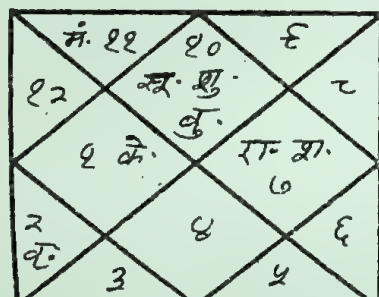
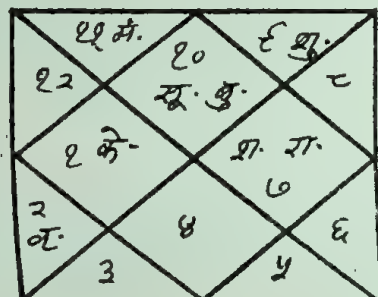
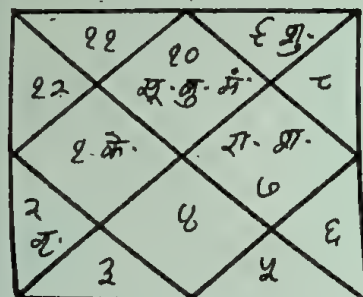
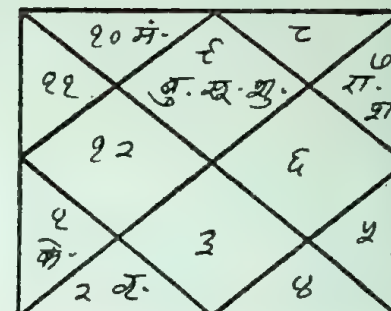
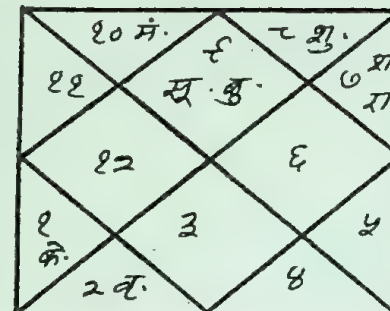
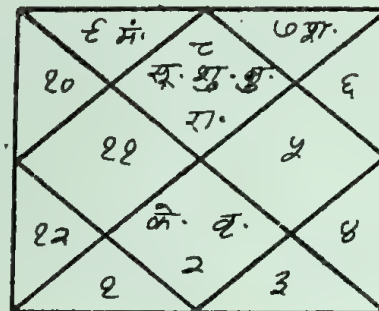
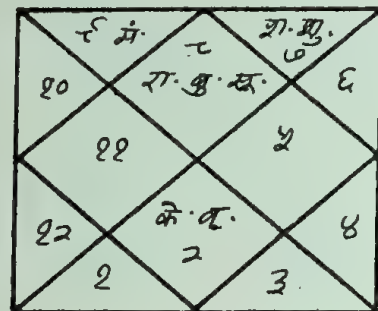
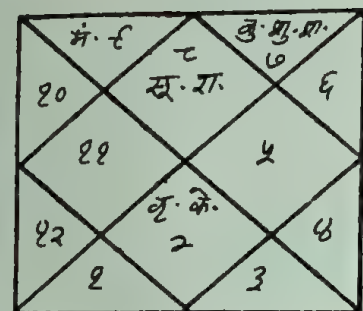
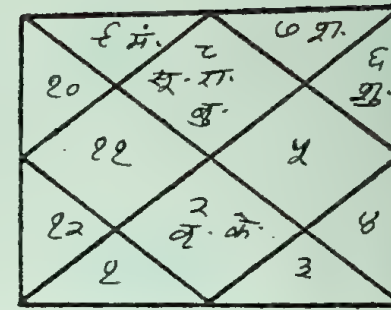
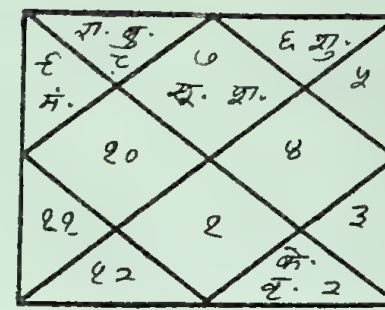
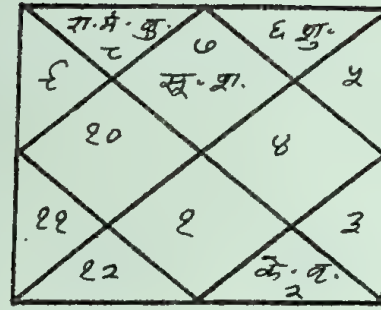
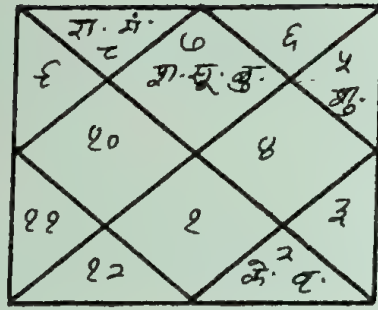
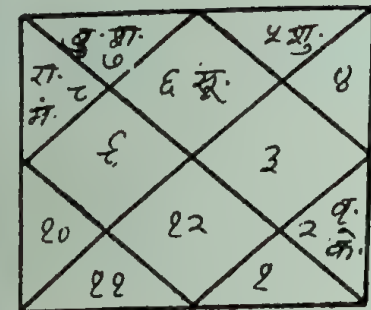


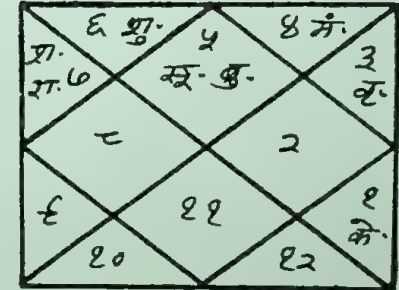
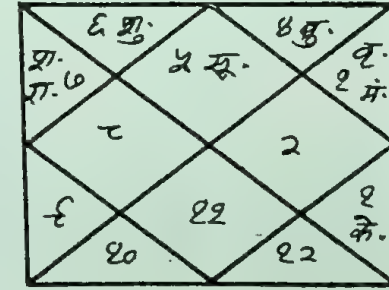
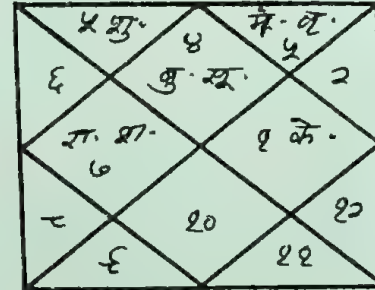
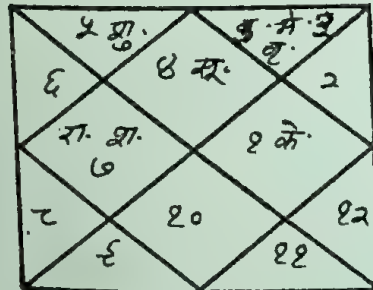
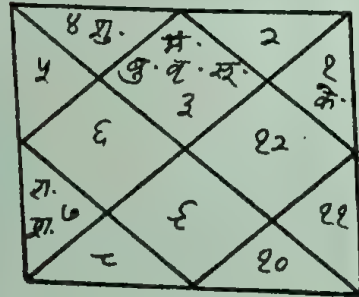
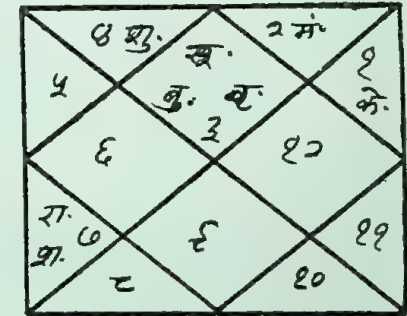
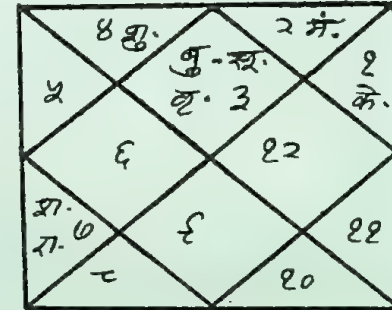
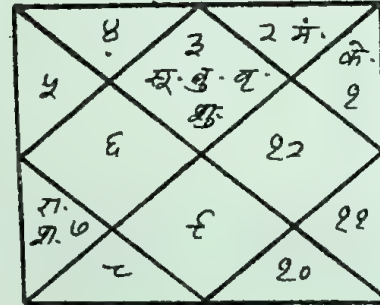
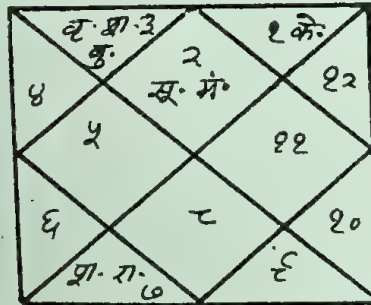
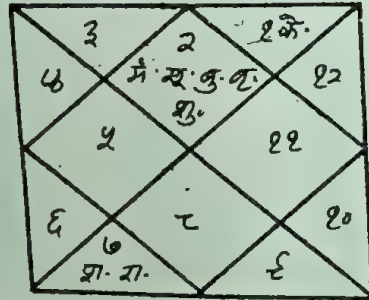
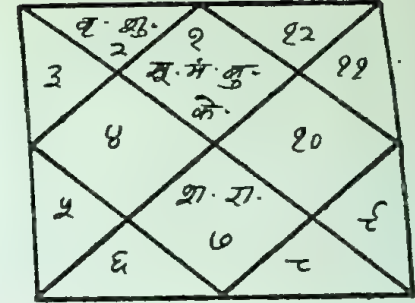
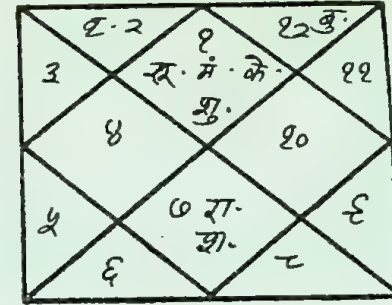
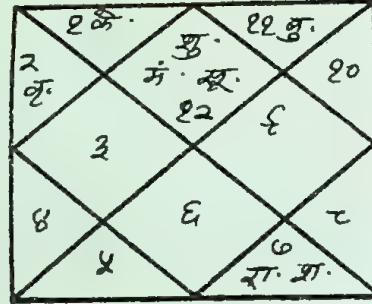
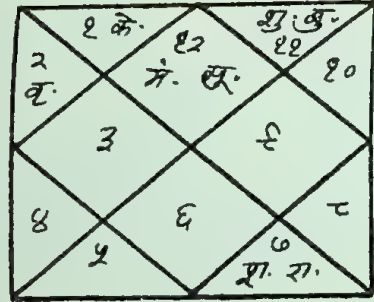
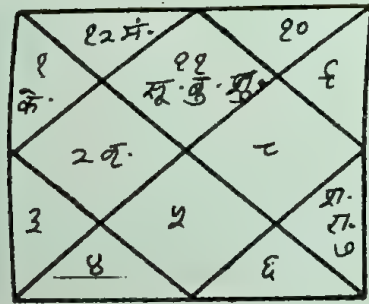
कुं
पं

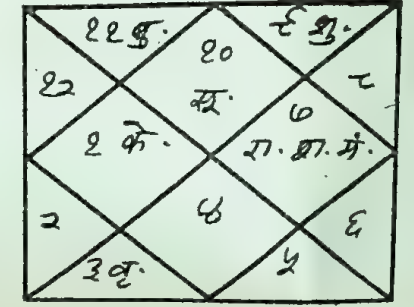
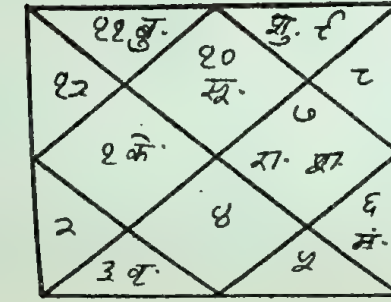
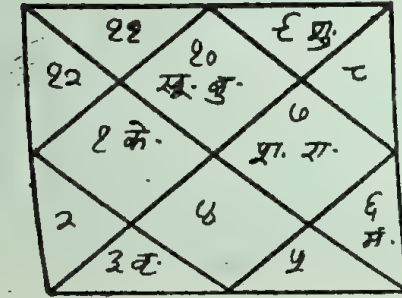
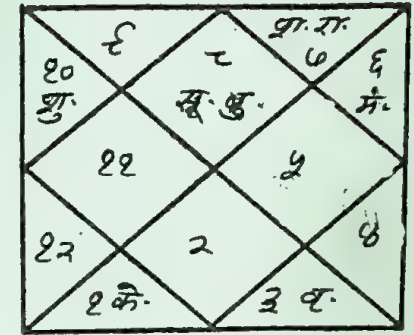
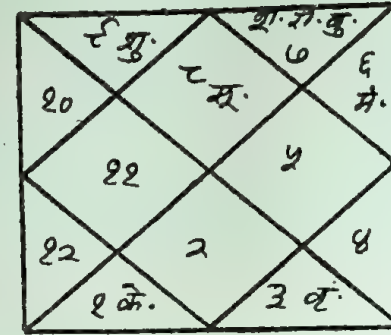
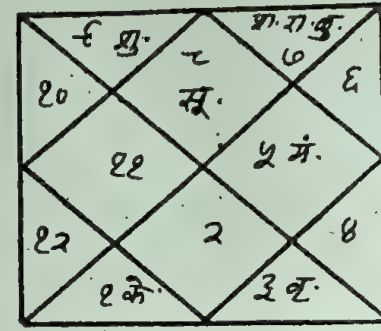
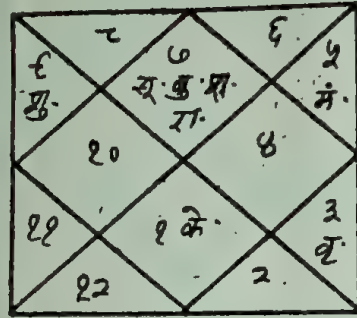
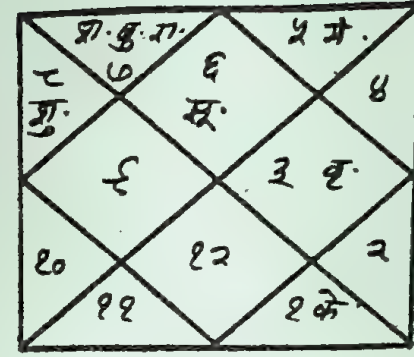
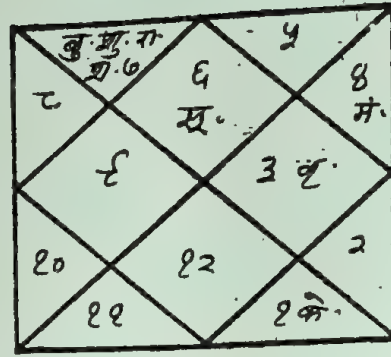
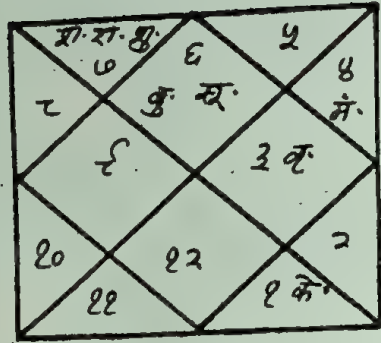
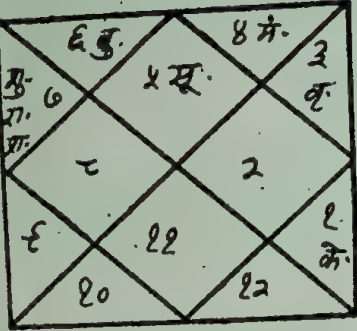


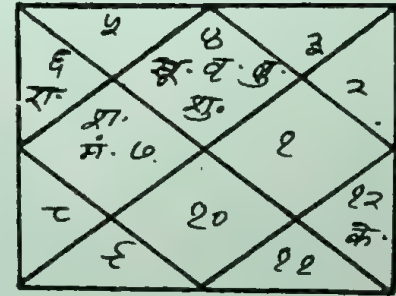
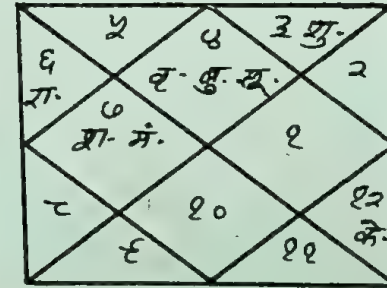
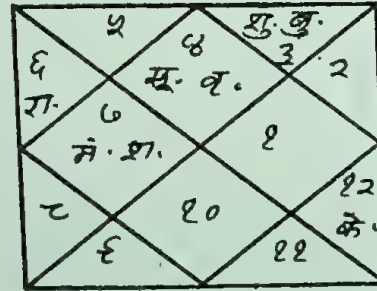
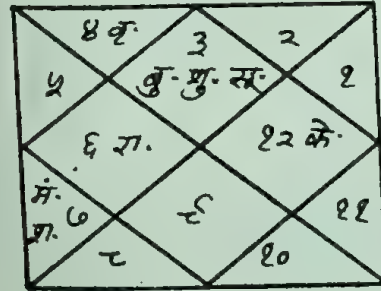
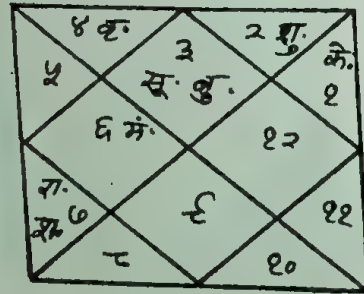
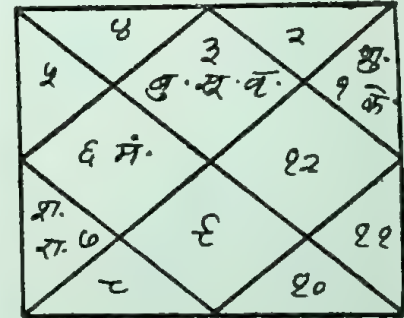
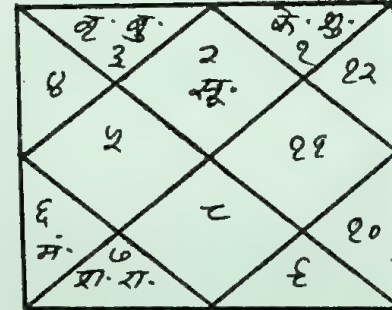
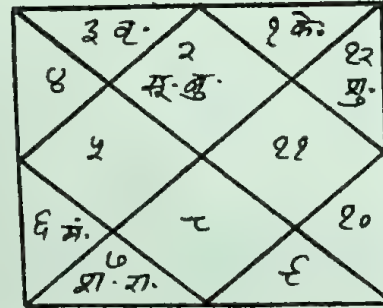
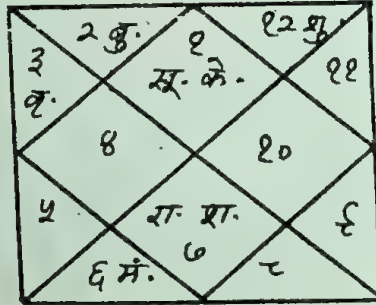
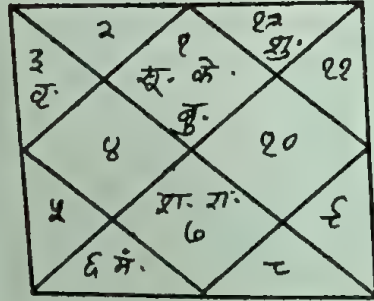
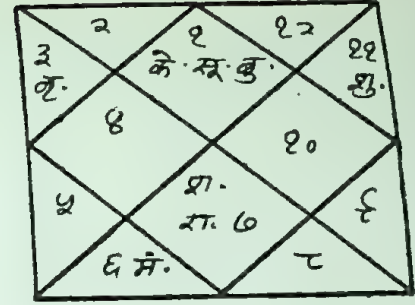
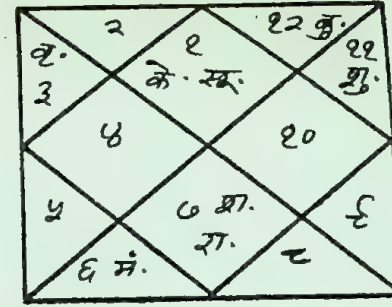
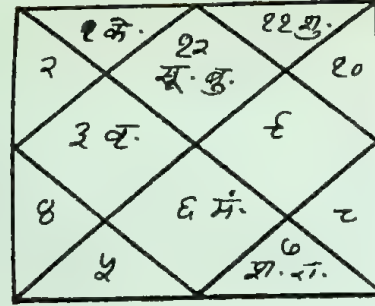
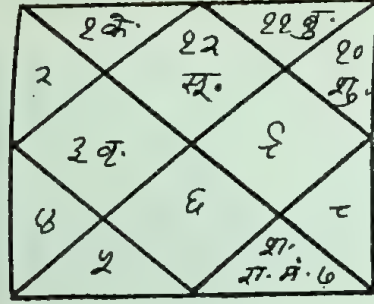
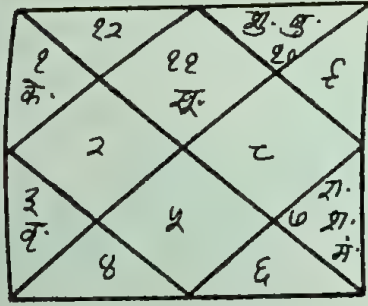


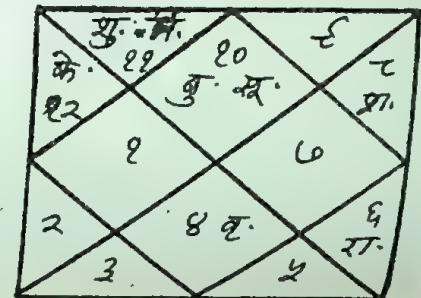
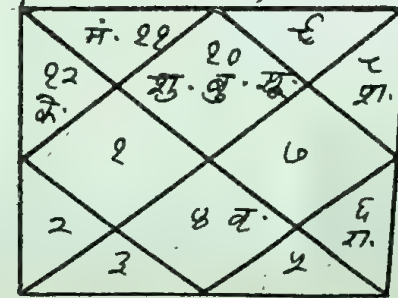
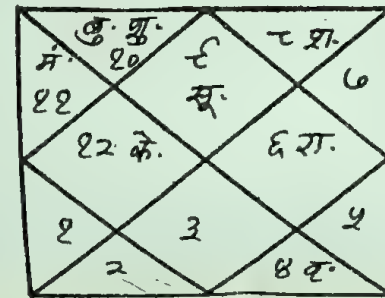
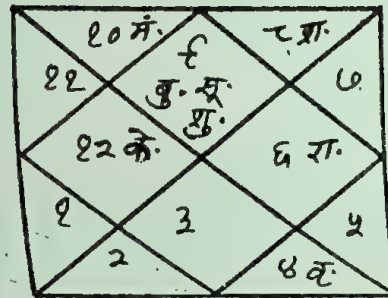
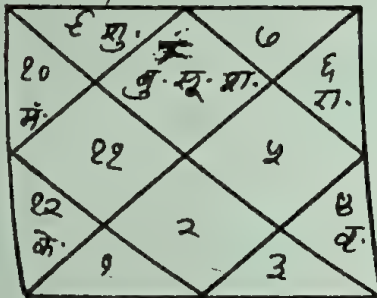
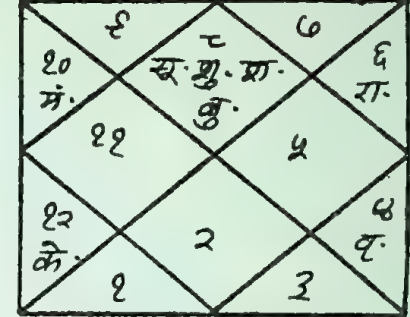
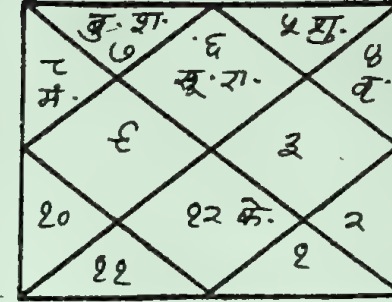
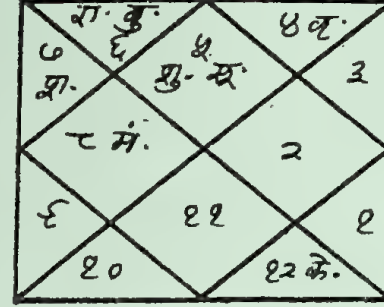
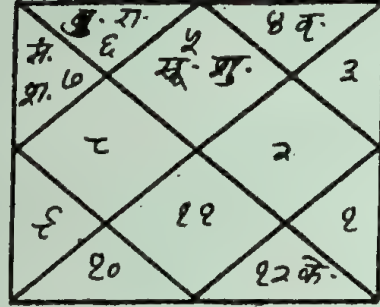
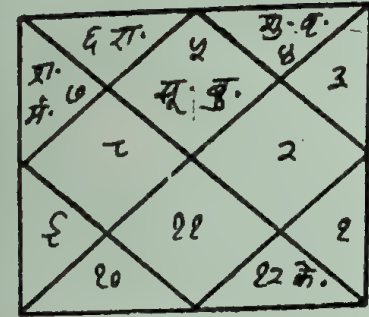


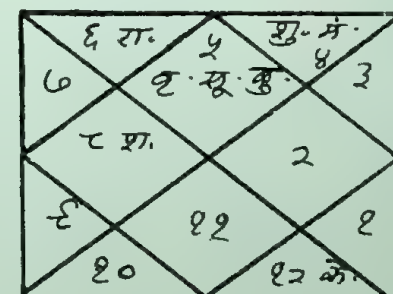
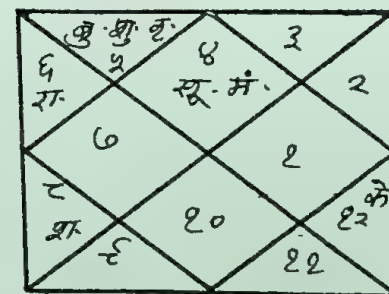
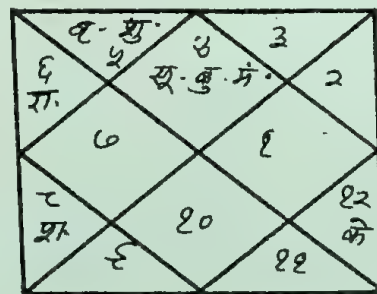
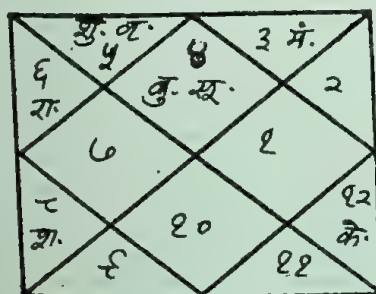
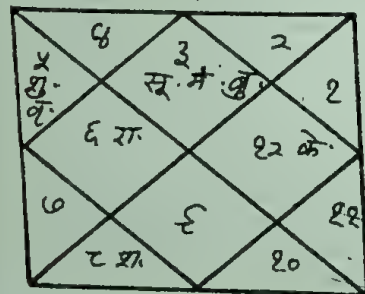
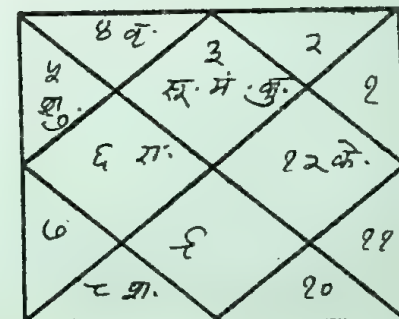
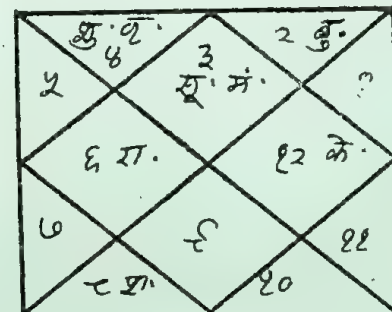
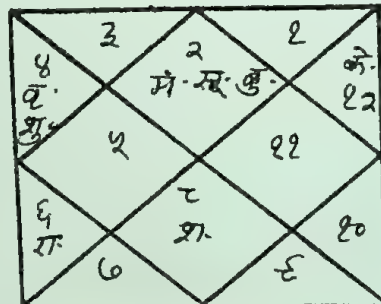
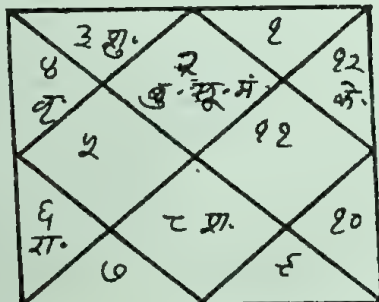
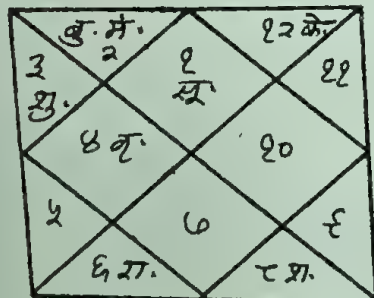
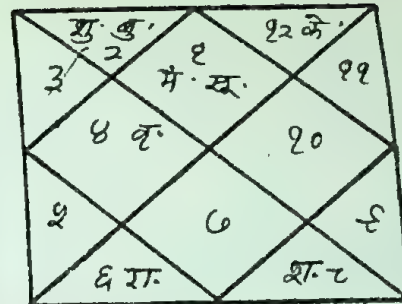
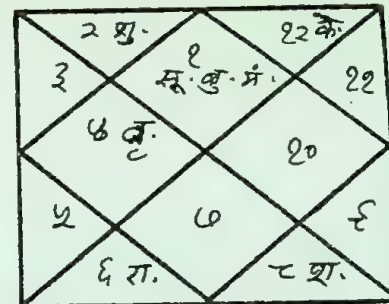
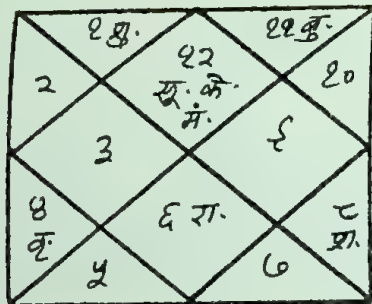
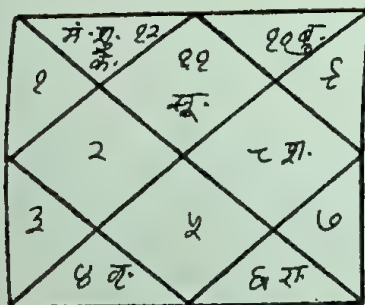


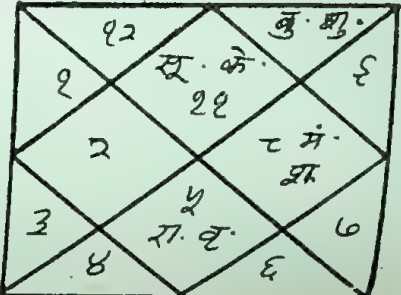
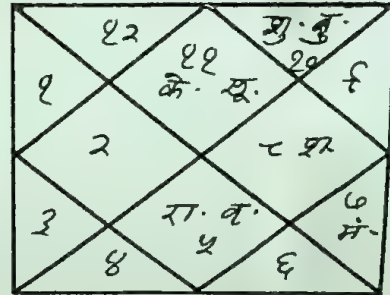
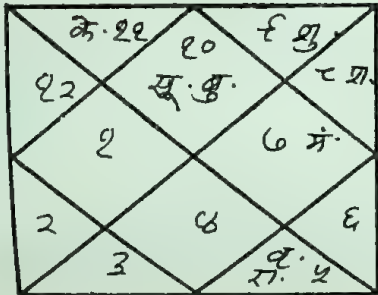
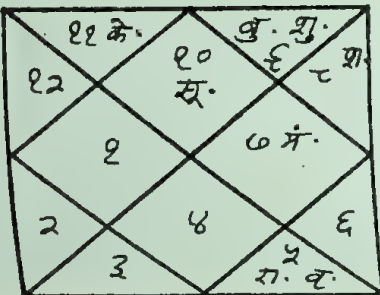
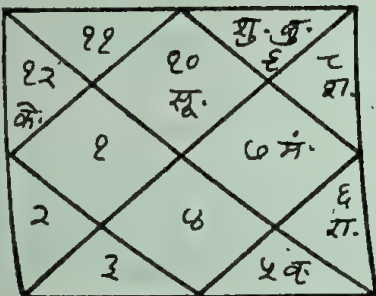
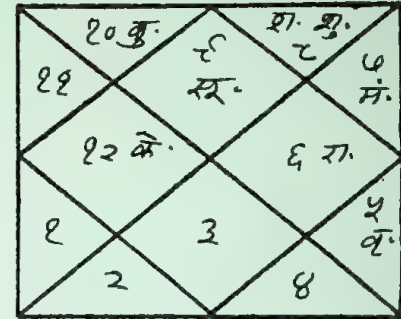
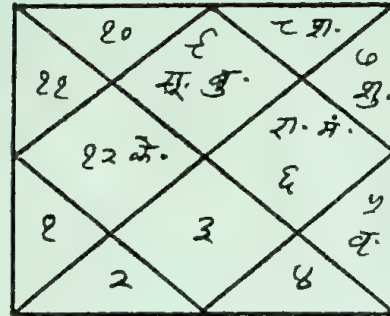
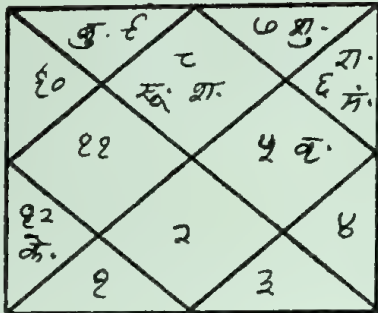
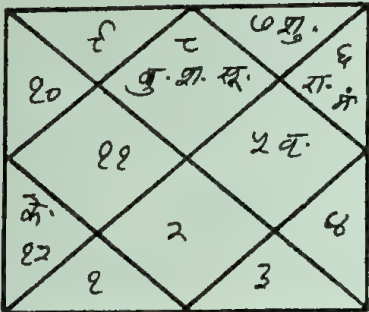
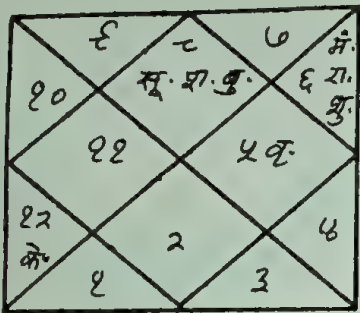
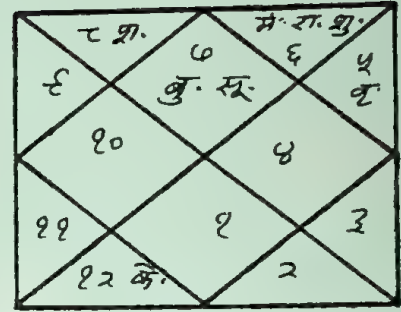
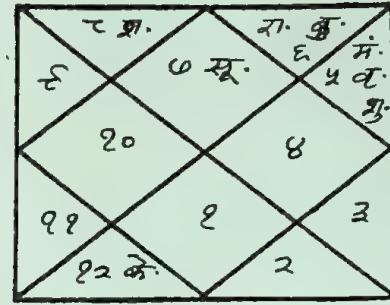
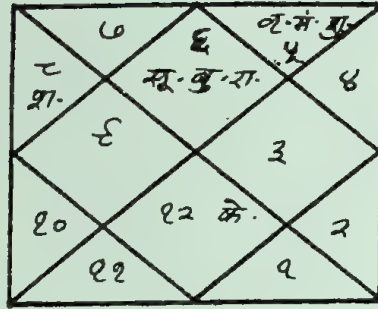
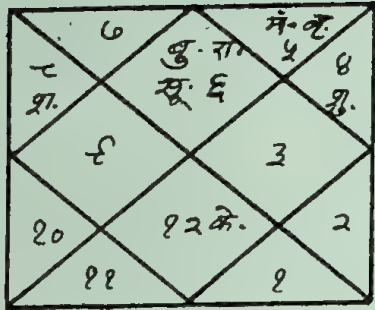
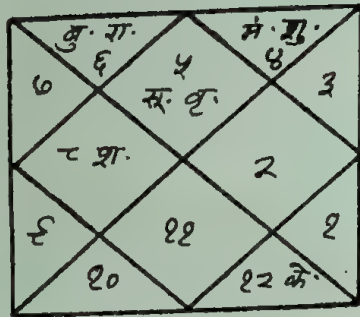






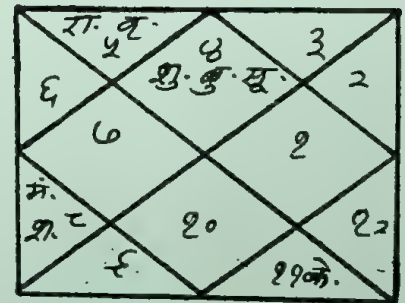
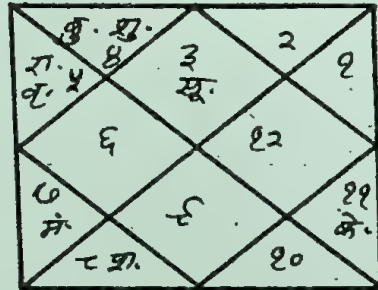
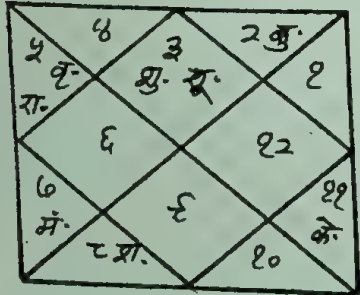
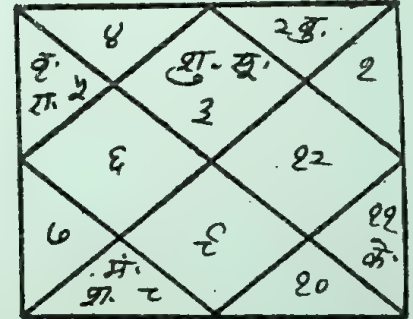
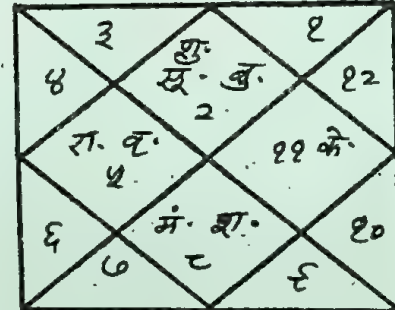
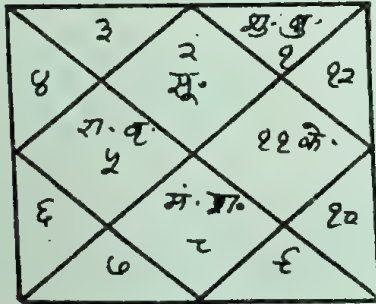
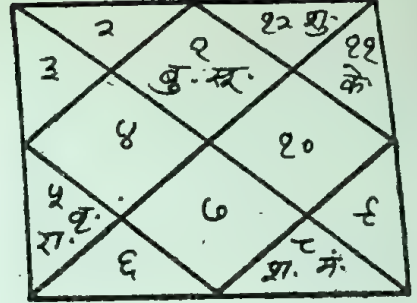
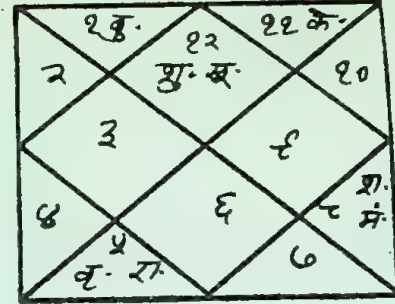
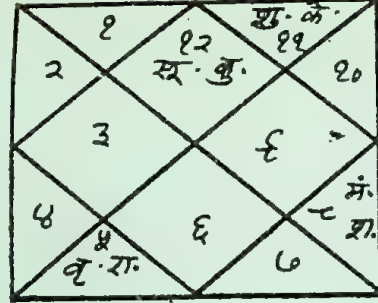
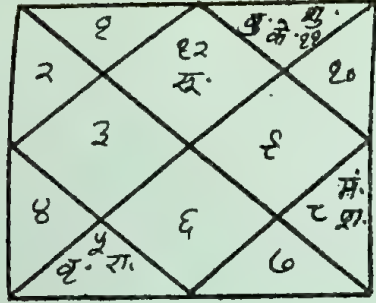
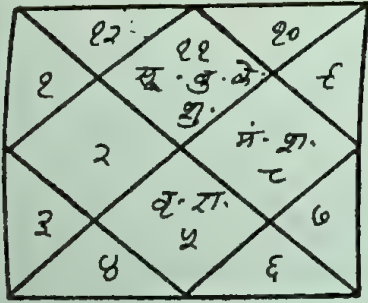




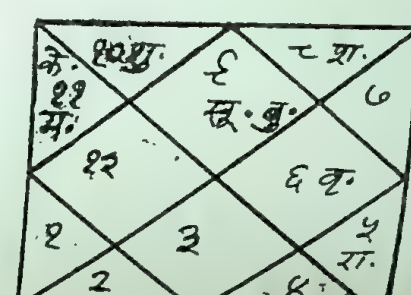
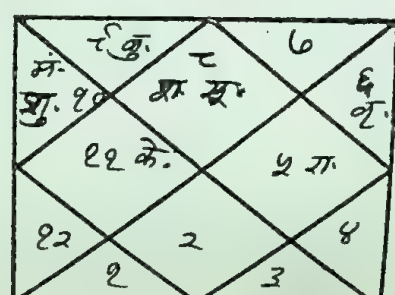
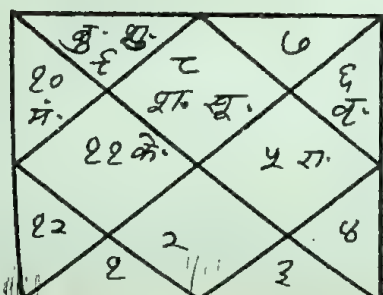
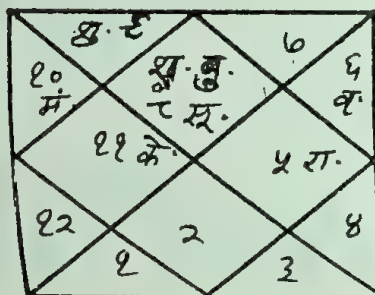
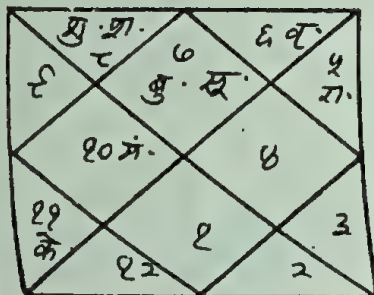
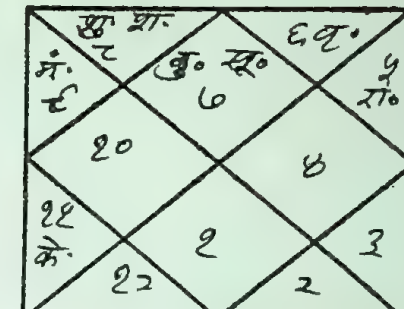
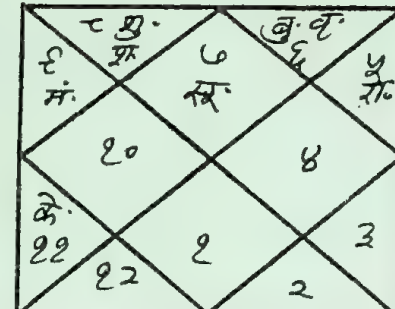
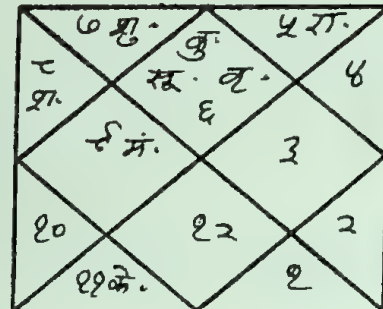
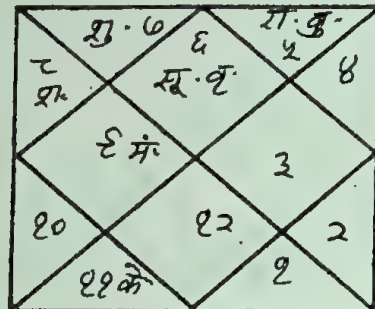
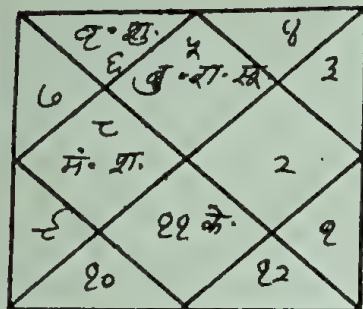
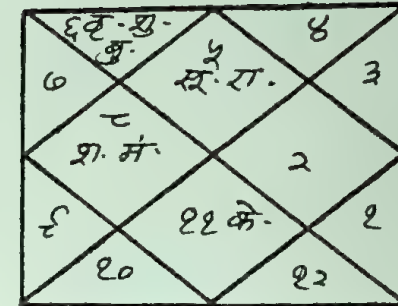
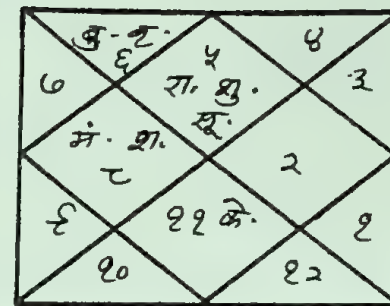
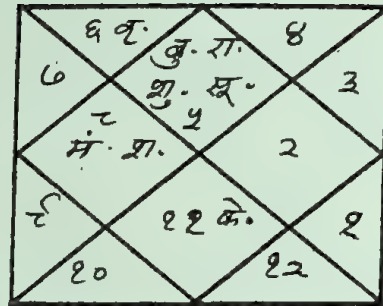
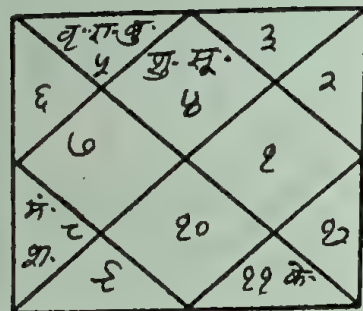


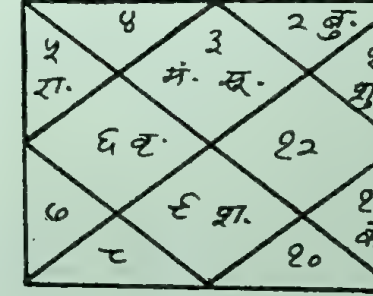
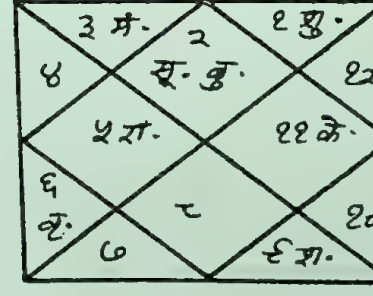
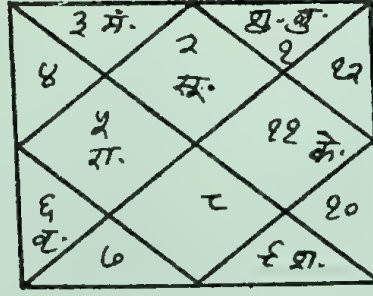
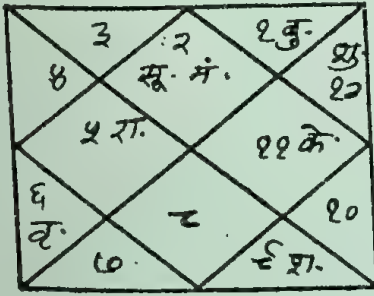
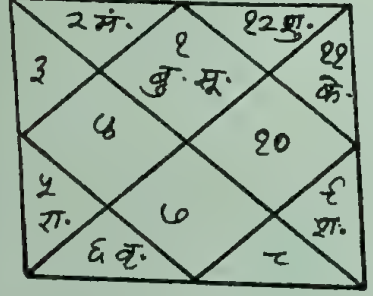
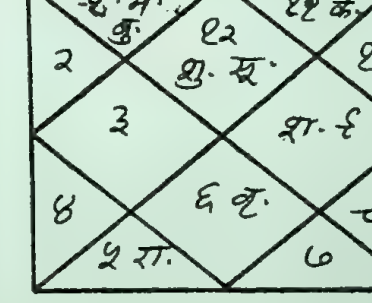
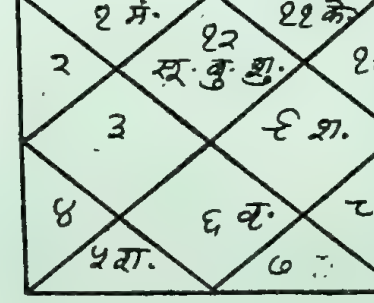
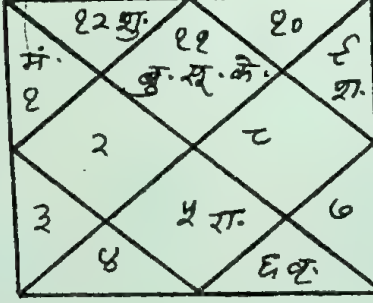
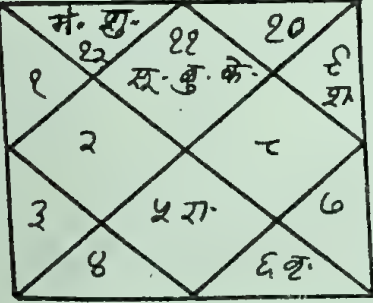
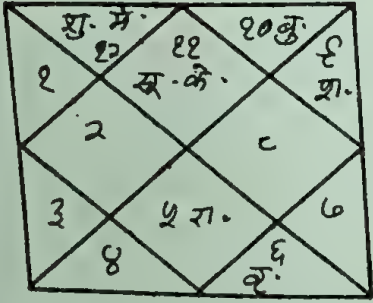
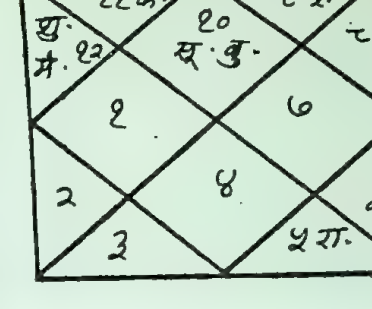
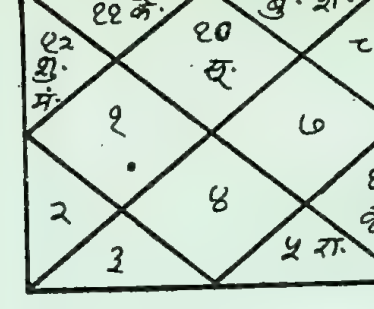
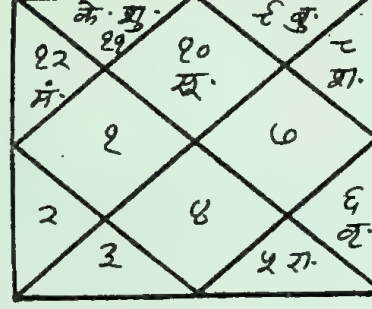
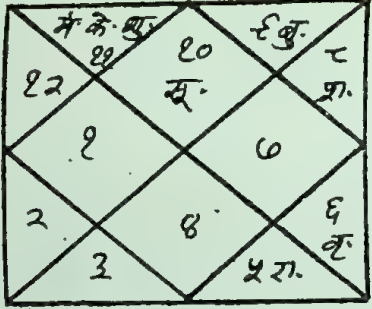
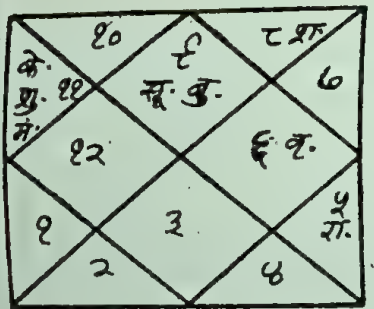
भ०
सं०

२००५



कु०
प०





५ रा.	४	३	२ शु.
	मे.सू.कु.		१ शु.
६ वृ.		१२	
७	६		११ के.
	८ रा.	१०	

५ रा.	४	मे. २ शु.	
	कु.सू.	३	१
६ वृ.		१२	
७	६		११ के.
	८ रा.	१०	

५ रा.	४ कु.	३	२ शु.
	मे.सू.		१
६ वृ.		१२	
७	६		११ के.
	८ रा.	१०	

५ रा.	कु.मे. ४	३	२ शु.
	सू.		१
६ वृ.		१२	
७	६		११ के.
	८ रा.	१०	

६ वृ.	५ रा.	४	३
	सू.मे.कु.		२ शु.
७		१	
८ रा.		१०	१२
६			११ के.

६ वृ.	कु.रा. ५	४	३ शु.
	मे.सू.		२
७		१	
८ रा.		१०	१२
६			११ के.

६ वृ.	५	रा.मे. ४	३ शु.
	सू.कु.		२
७		१	
८ रा.		१०	१२
६			११ के.

६ वृ.	५	मे.रा.शु. ४	३
	सू.कु.		२
७		१	
८ रा.		१०	१२
६			११ के.

६ वृ.	कु.रा. ५	४	३ शु.
	मे.सू.		२
७		१	
८ रा.		१०	१२
६			११ के.

६ वृ.	५	रा.शु. ४	३
	सू.मे.		२
७		१	
८ रा.		१०	१२
६			११ के.

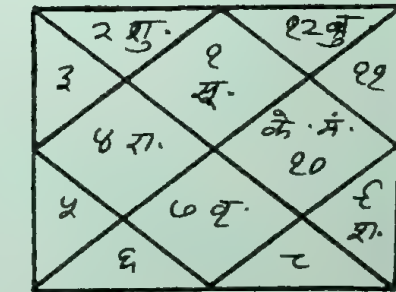
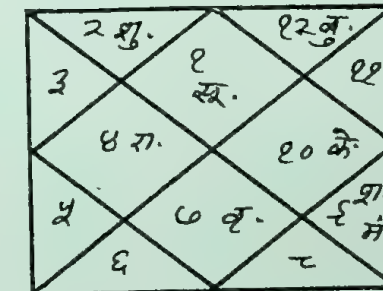
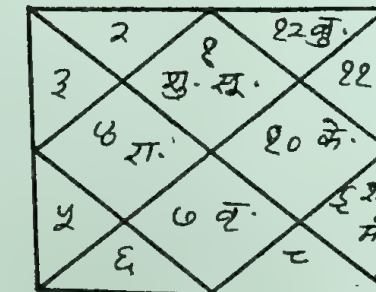
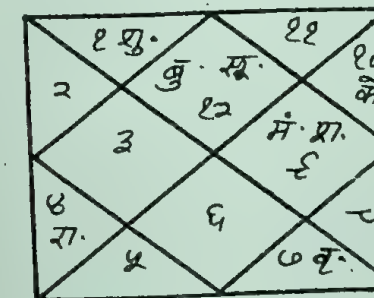
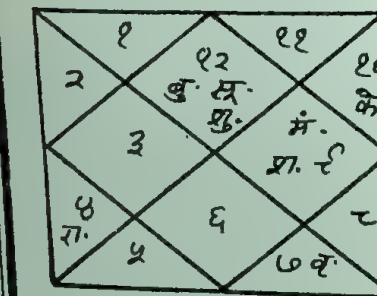
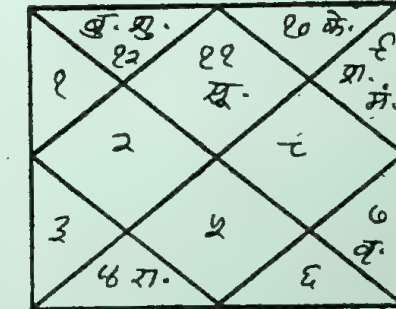
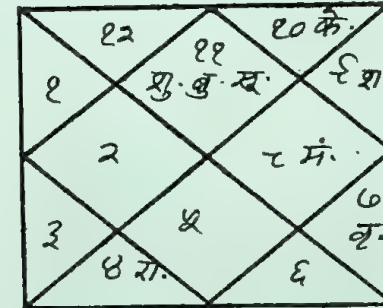
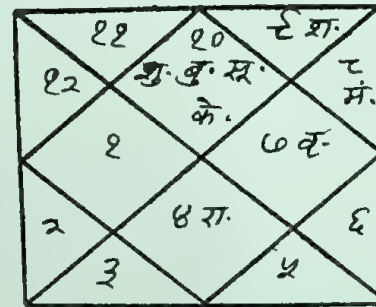
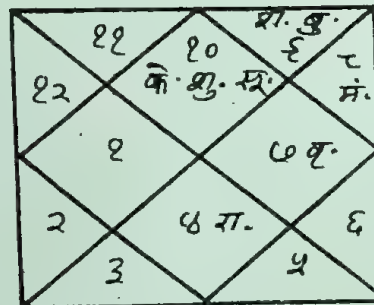
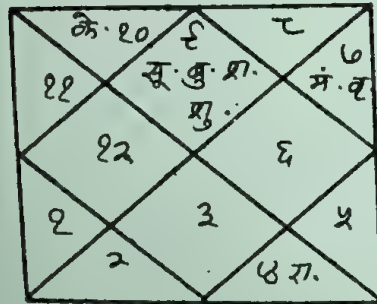
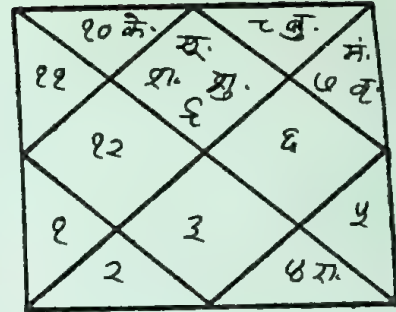
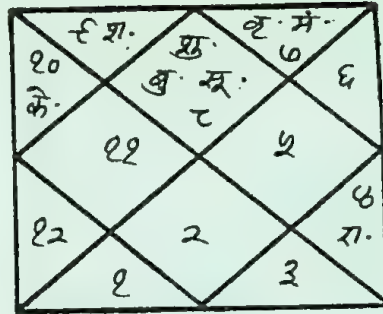
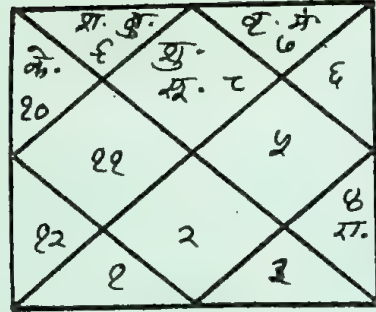
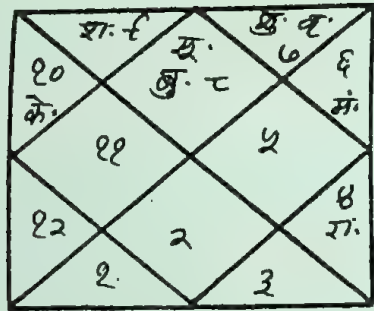
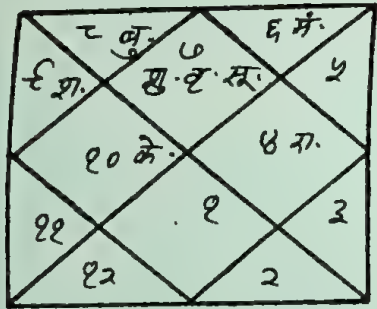
८ रा.	७ वृ.	कु.शु.मे. ५	४ रा.
	सू.		३
६		१२	२
१० के.		११	१
	१२		

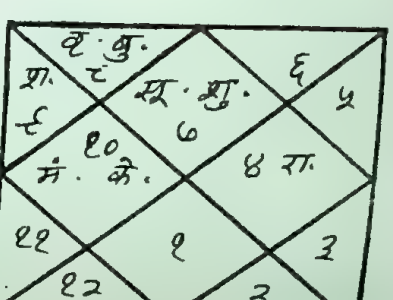
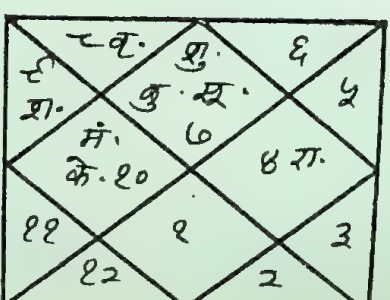
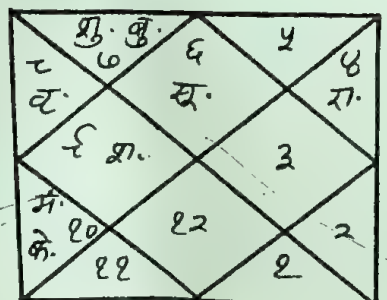
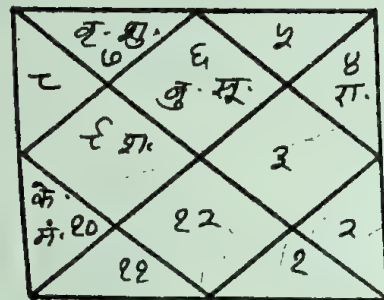
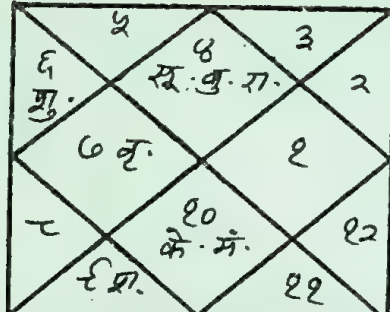
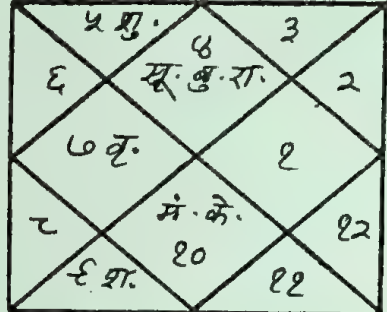
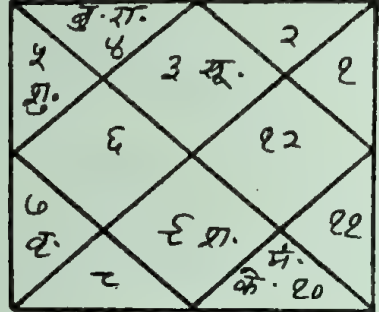
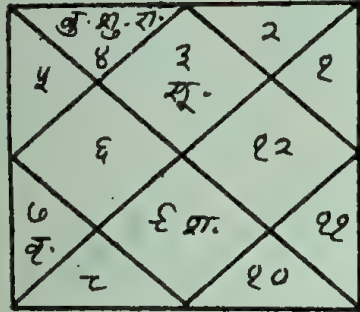
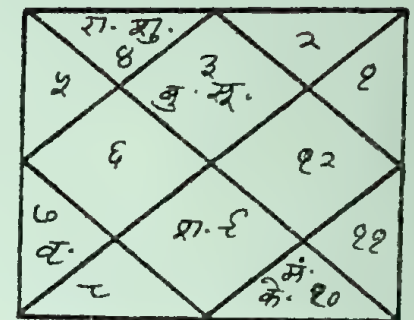
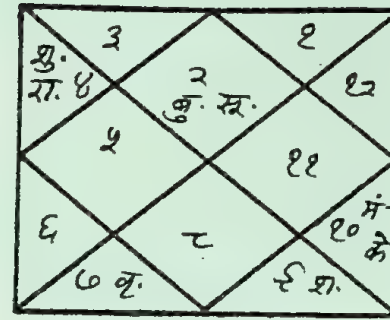
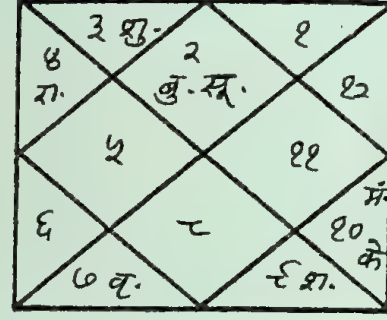
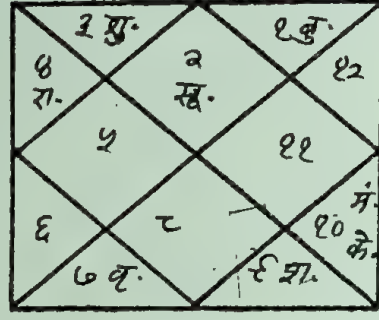
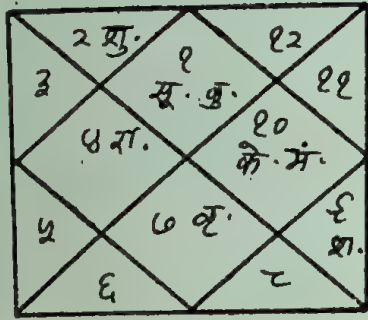
८ रा.	७ वृ.	मे.शु. ५	४ रा.
	कु.सू.		३
६		१२	२
१० के.		११	१
	१२		

८ रा.	७ वृ.	५ मे. ४	रा.
	कु.सू.शु.		३
६		१२	२
१० के.		११	१
	१२		

८ रा.	७	शु.मे. ५	रा.
	सू.वृ.कु.		३
६		१२	२
१० के.		११	१
	१२		

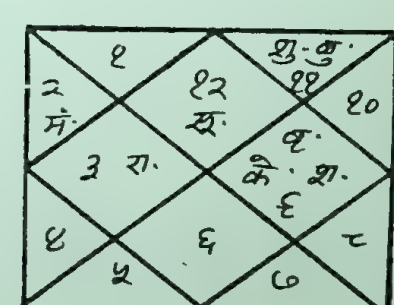
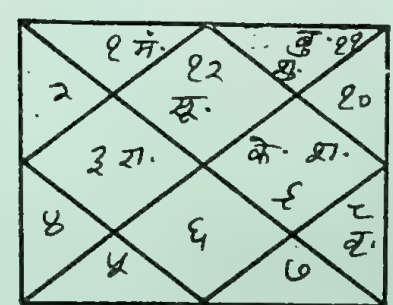
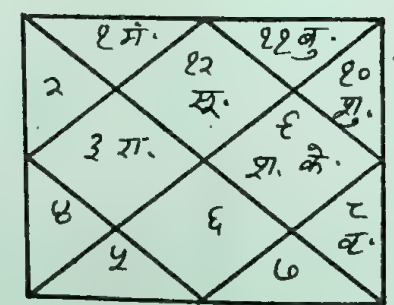
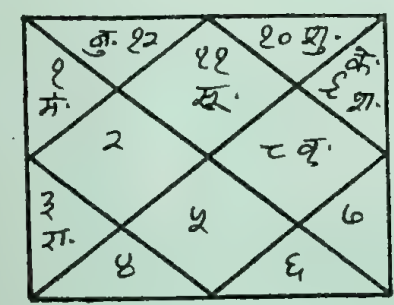
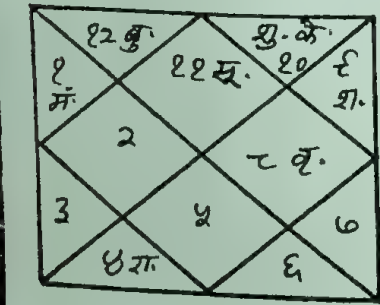
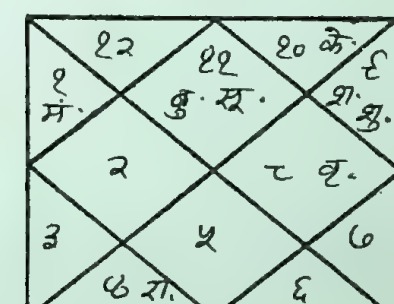
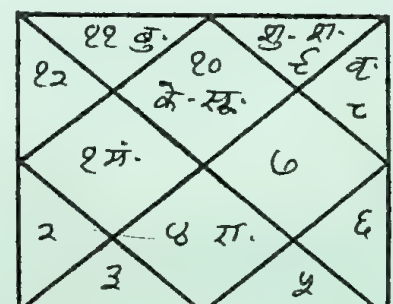
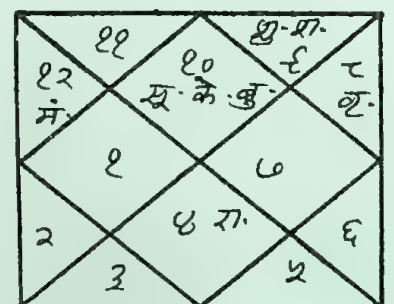
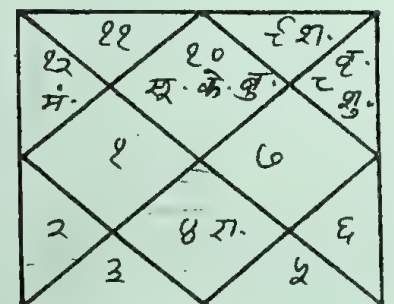
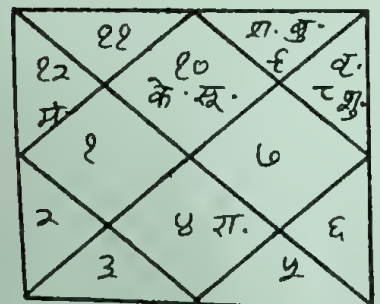
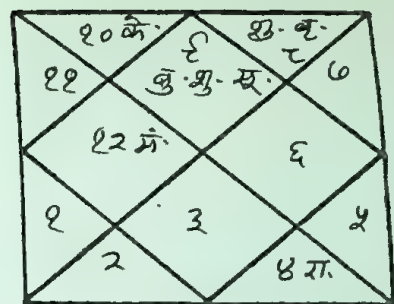
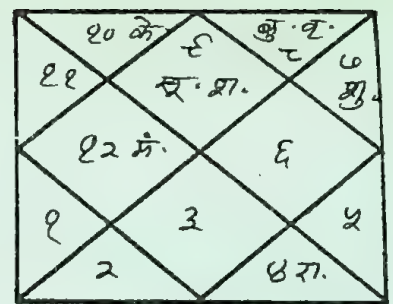
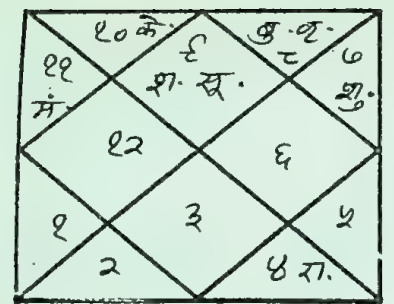
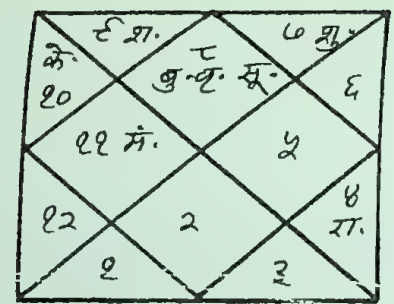
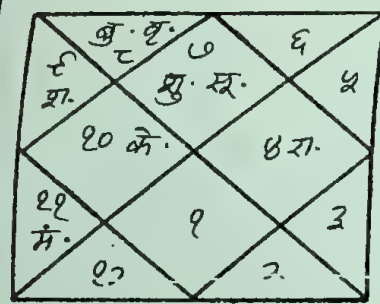
८ रा.	७	शु.मे. ५	रा.
	सू.वृ.कु.		३
६		१२	२
१० के.		११	१
	१२		



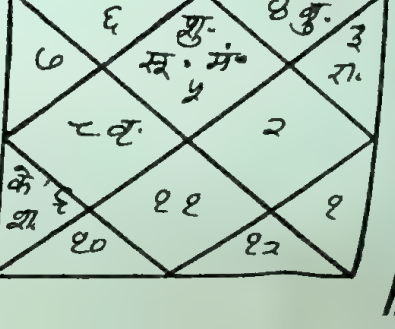
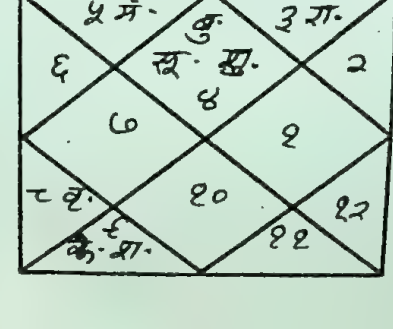
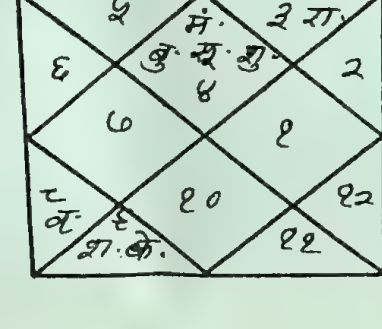
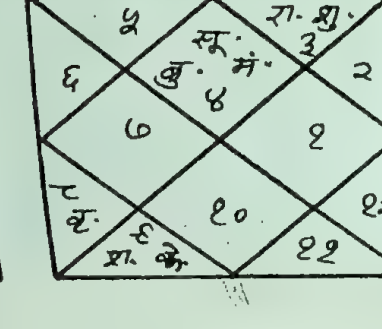
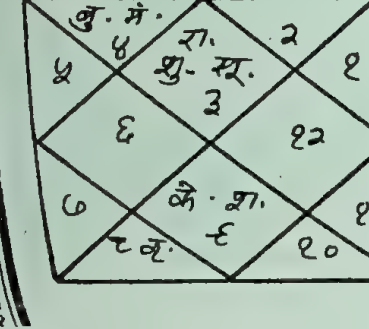
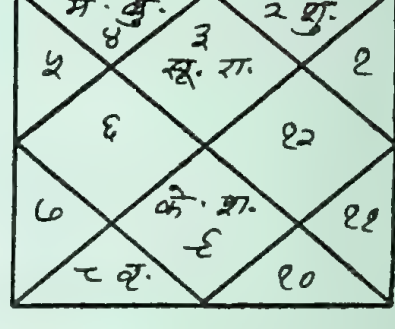
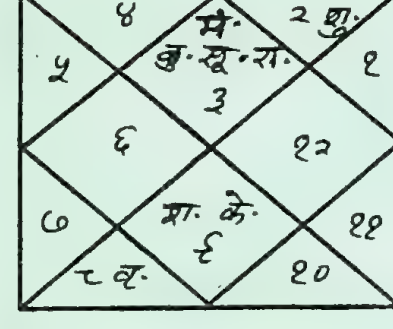
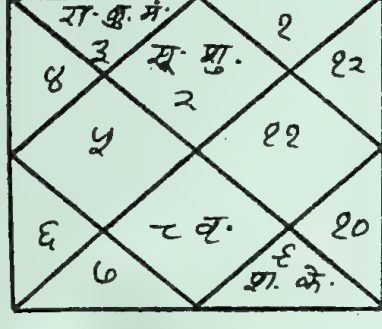
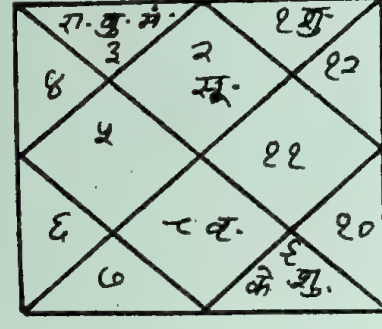
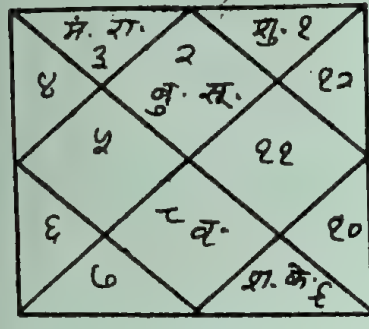
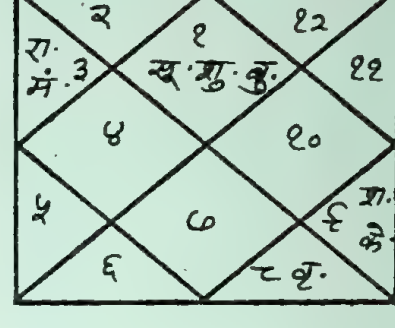
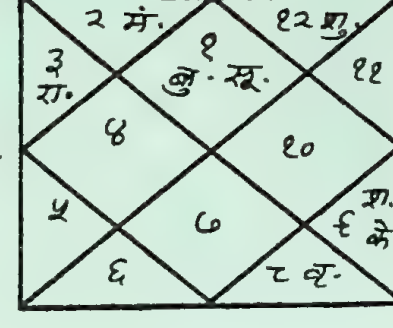
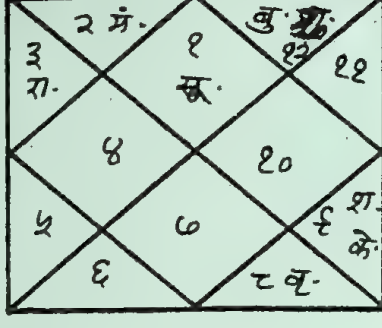
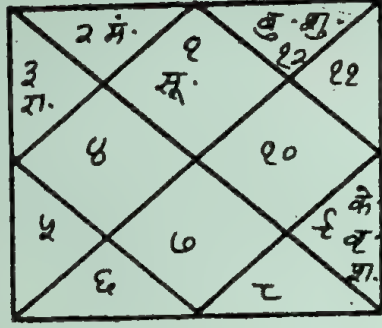
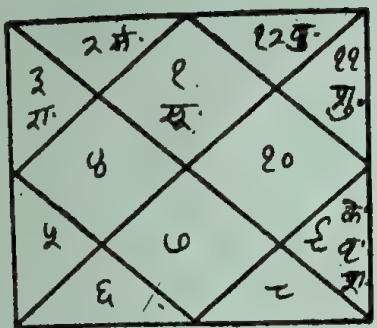


भ० सं० ३२२

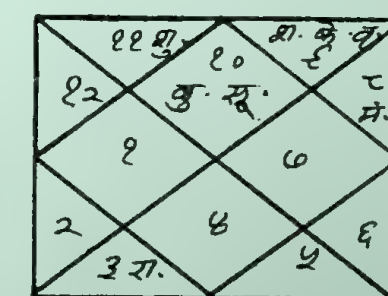
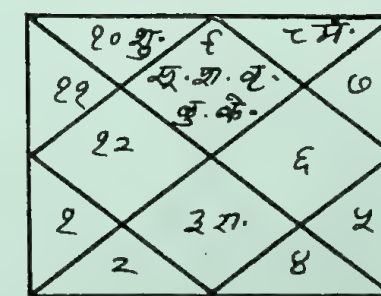
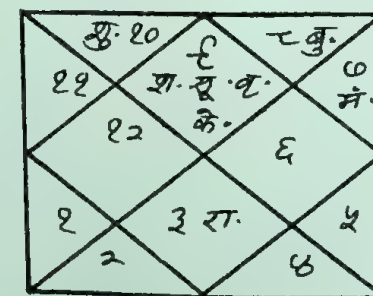
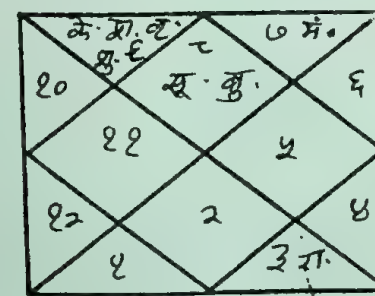
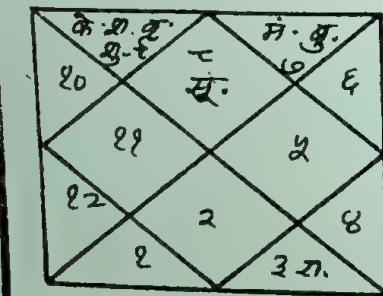
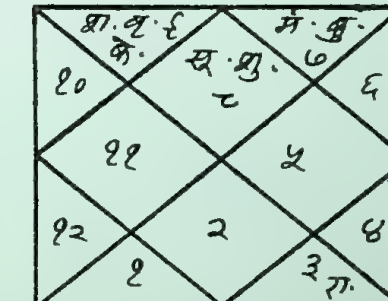
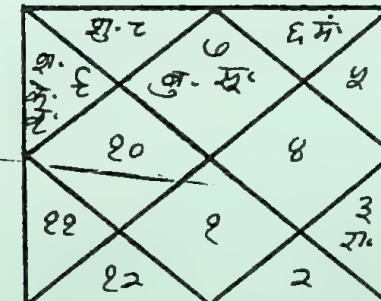
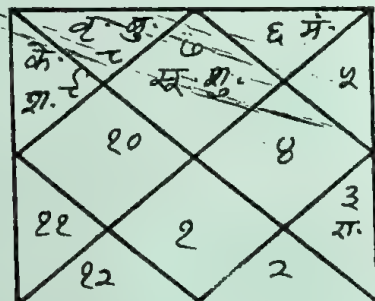
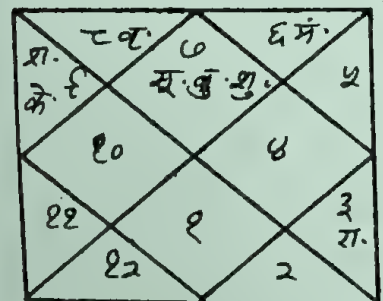
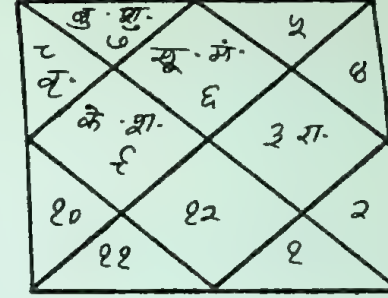
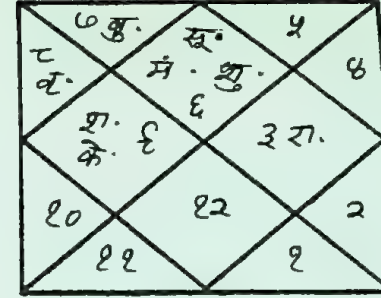
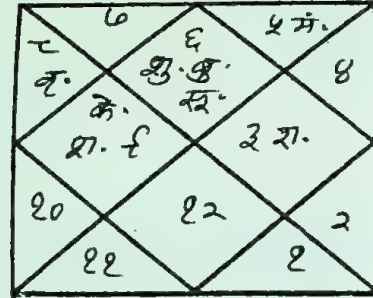
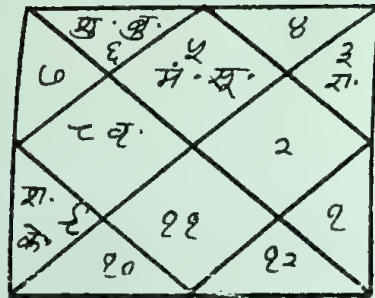
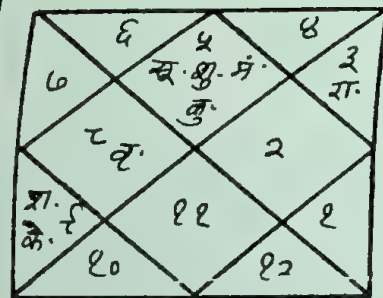
कु० प०

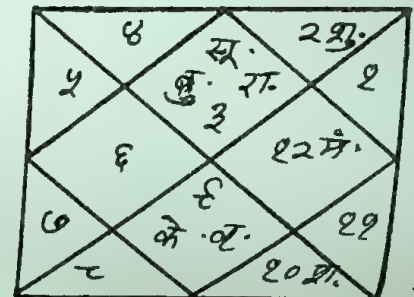
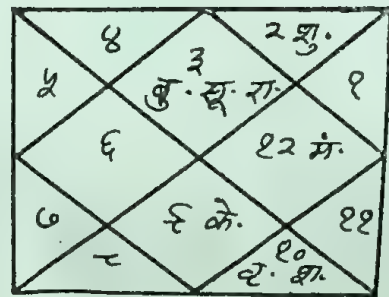
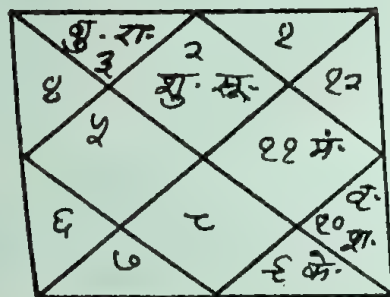
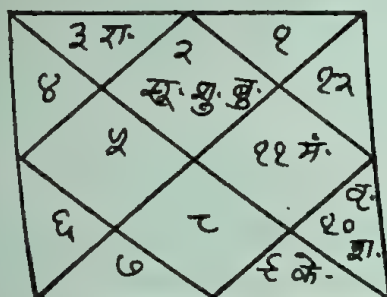
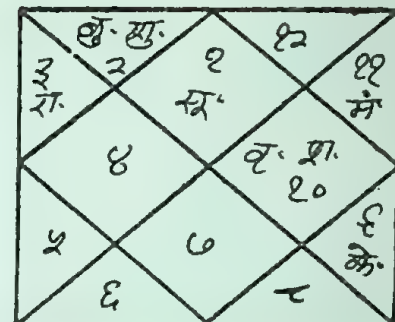
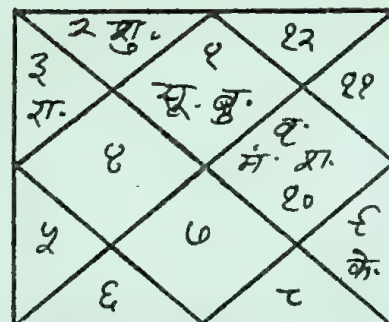
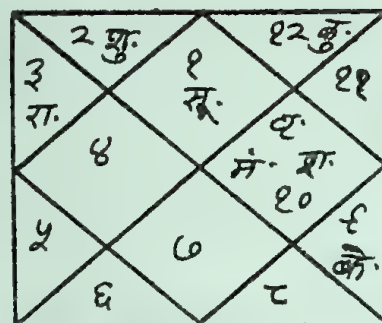
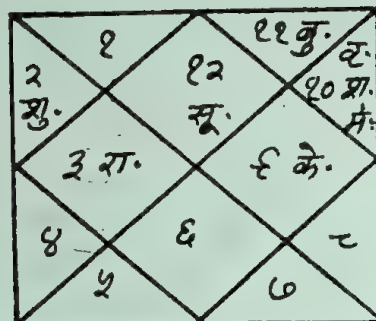
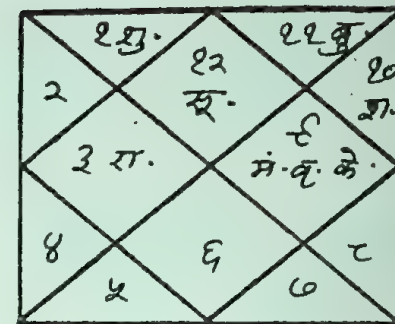
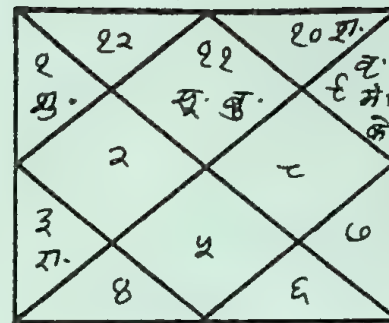
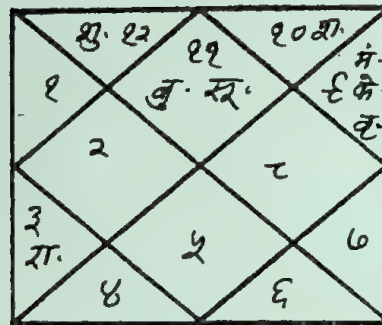
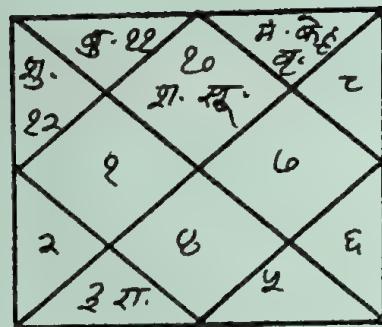
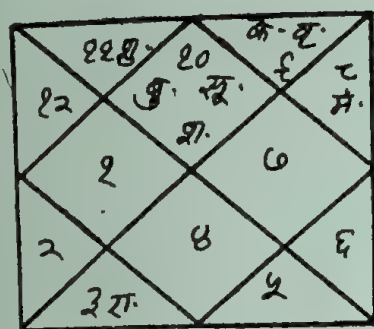


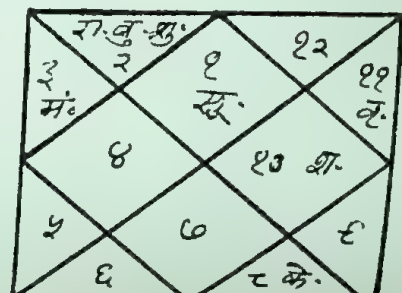
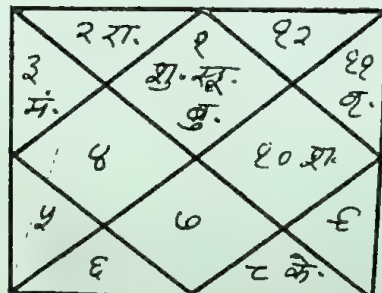
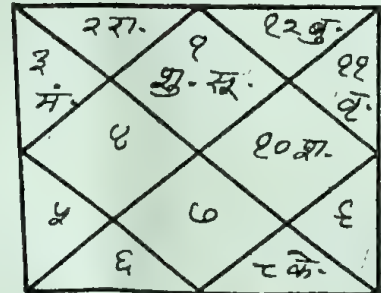
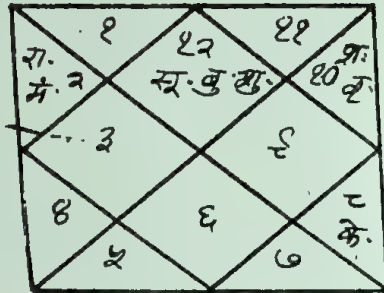
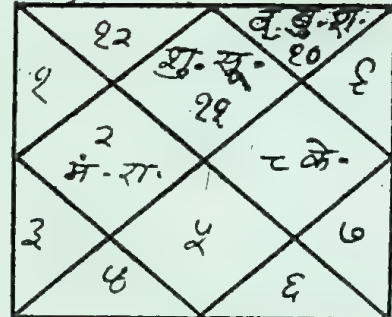
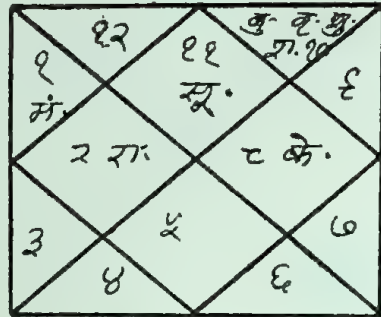
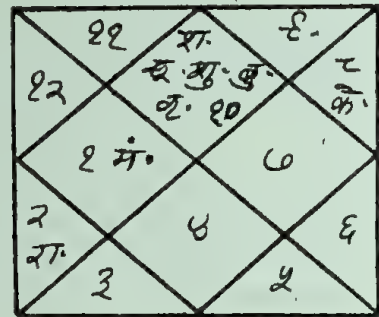
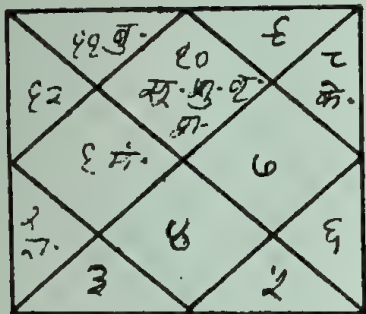
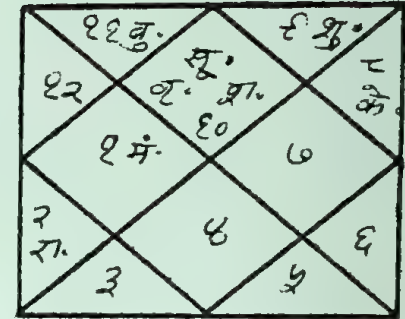
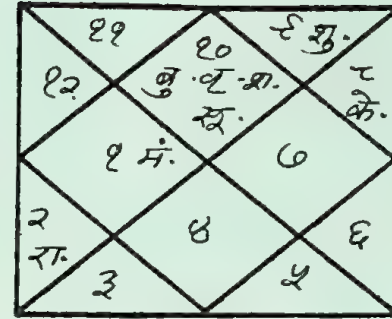
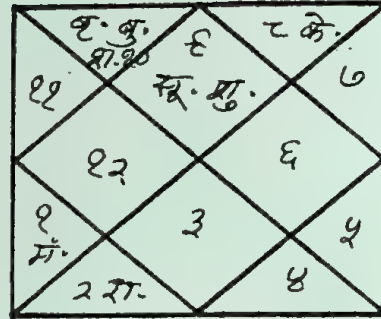
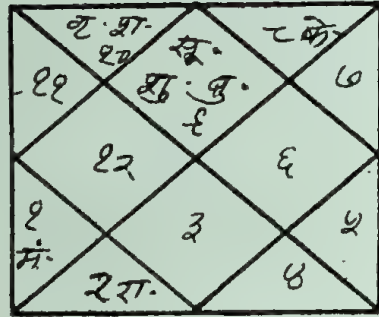
भ० सं० २२२



कु० प०

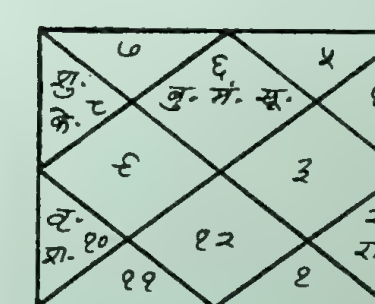
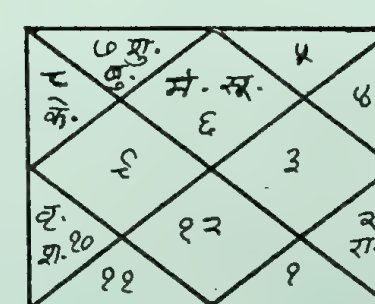
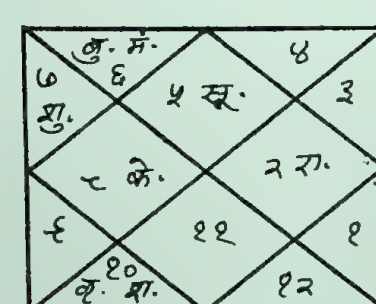
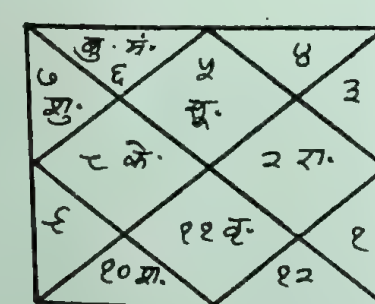
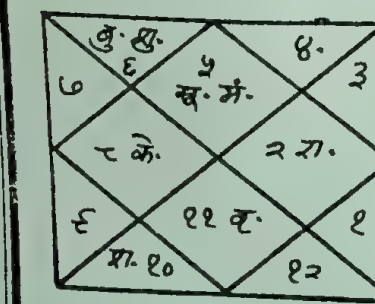
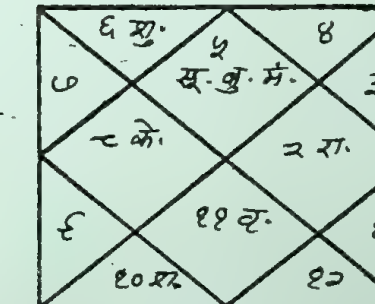
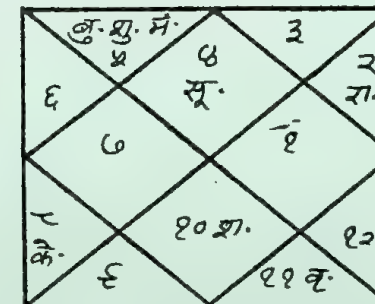
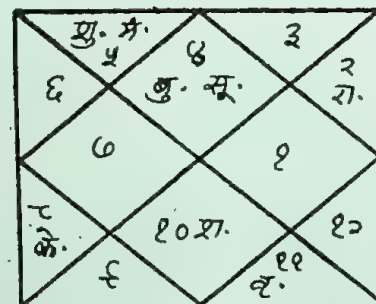
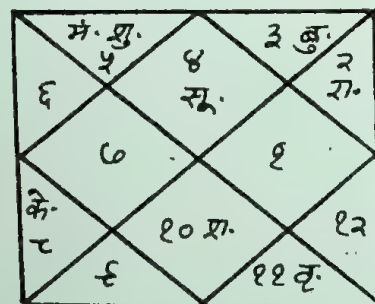
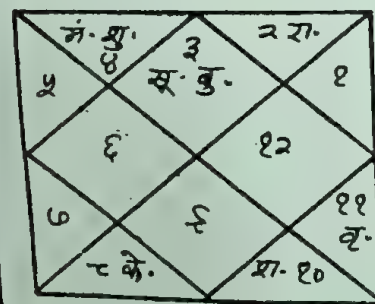
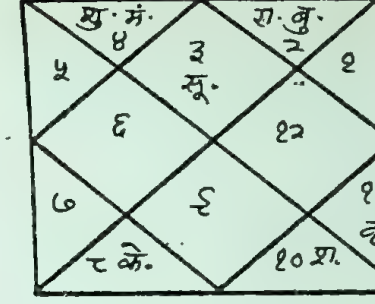
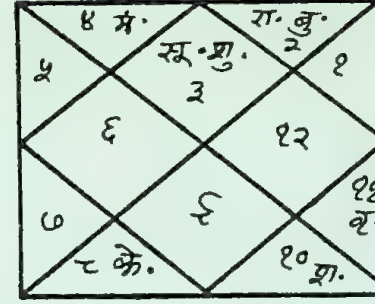
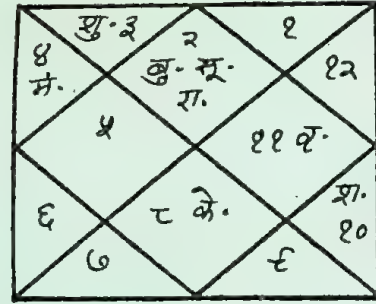
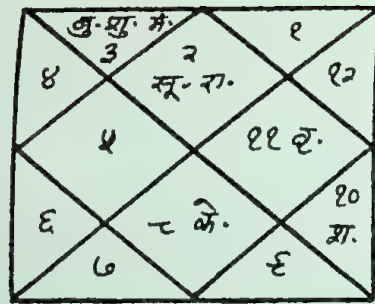
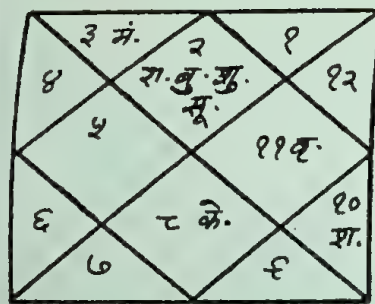


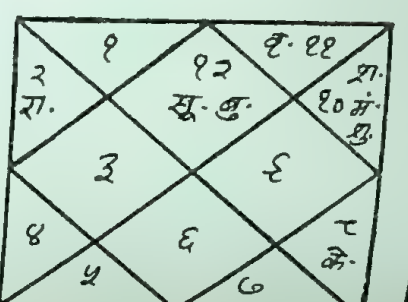
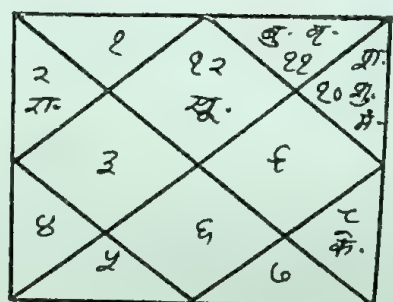
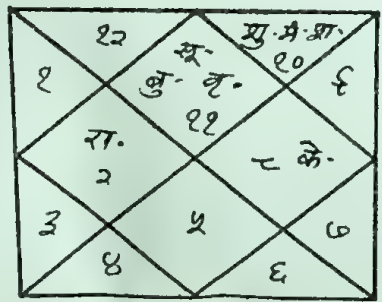
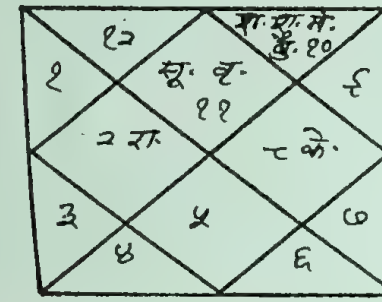
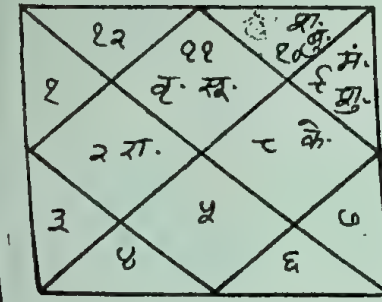
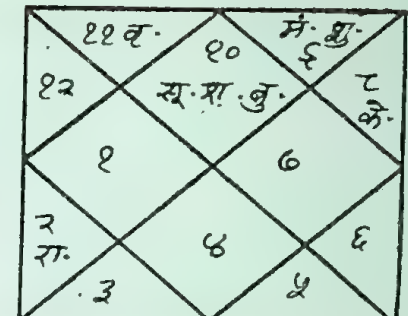
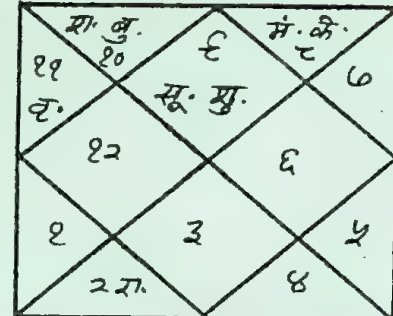
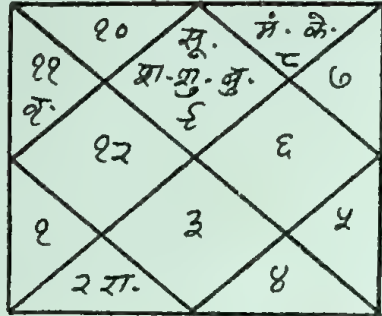
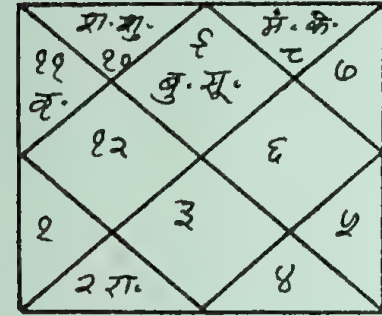
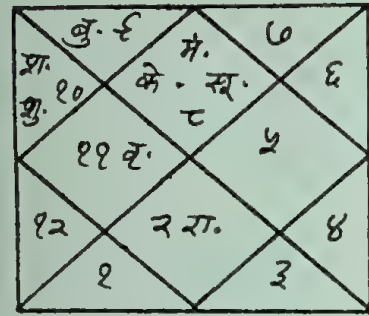
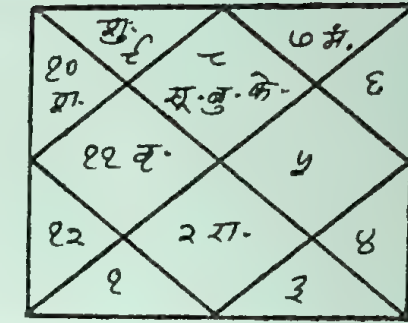
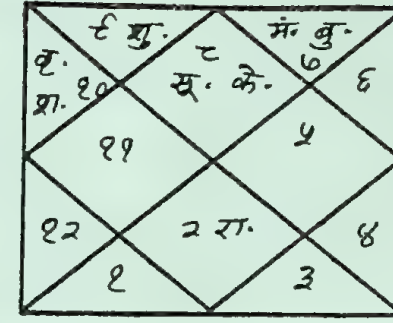
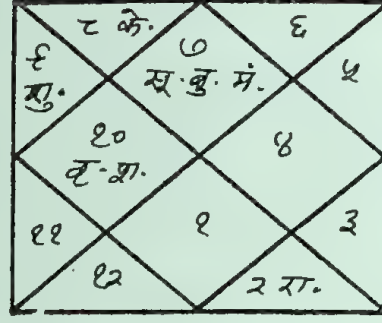
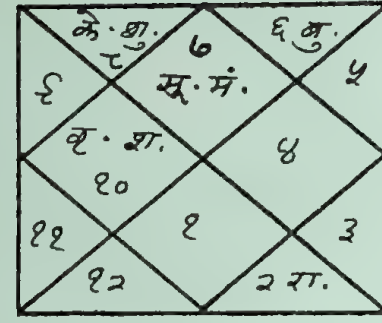
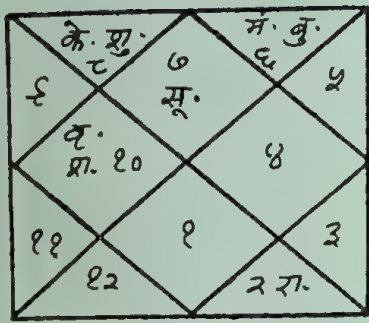


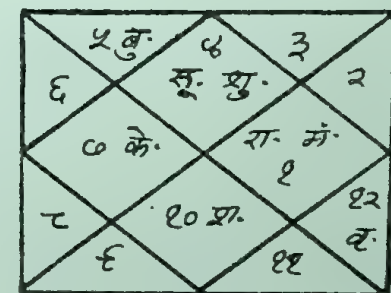
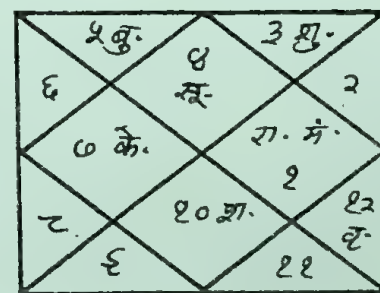
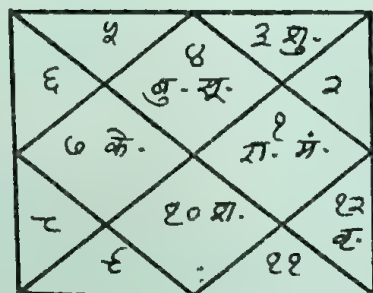
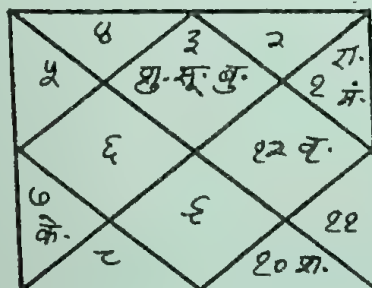
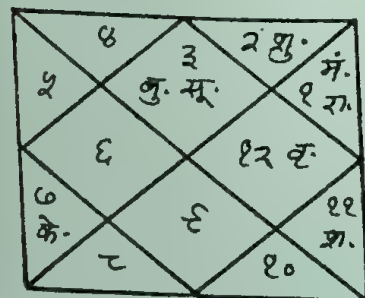
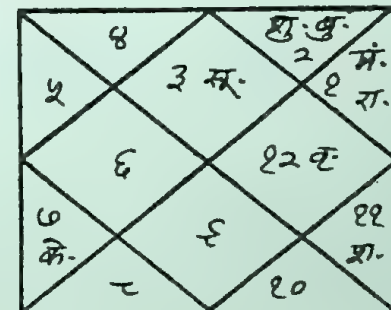
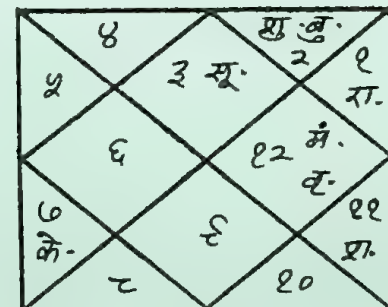
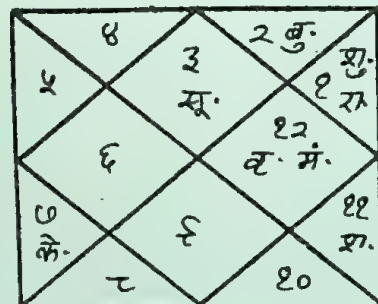
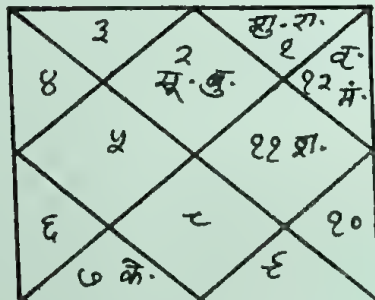
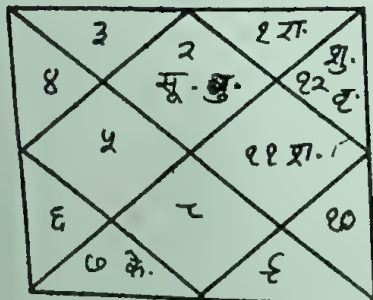
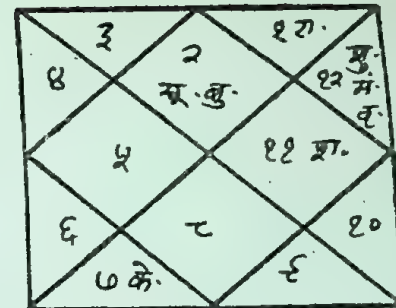
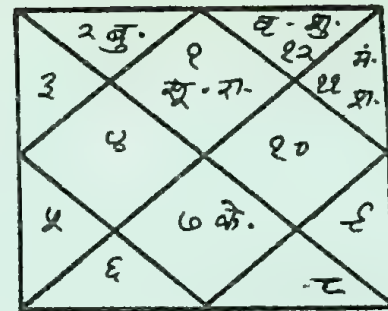
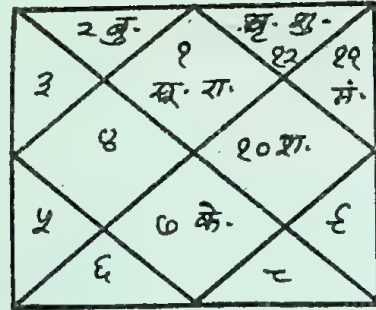
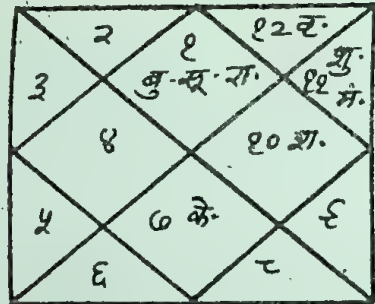
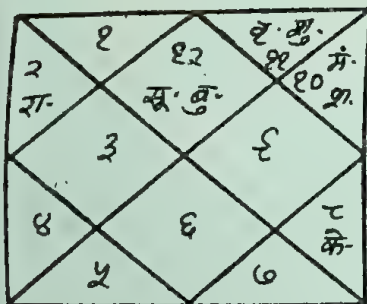


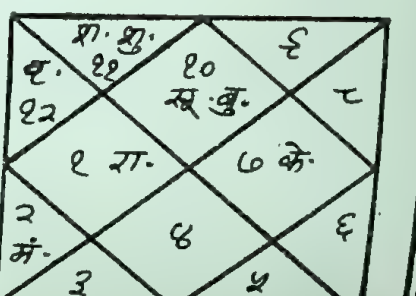
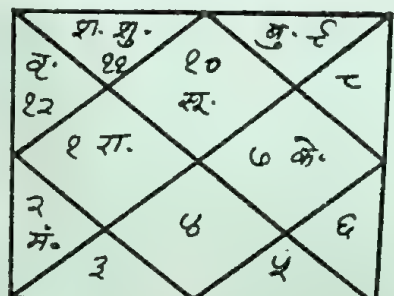
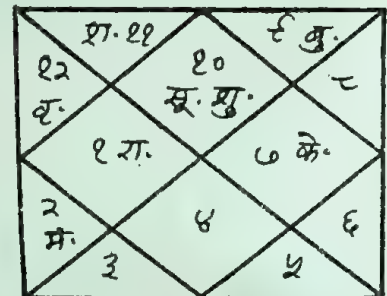
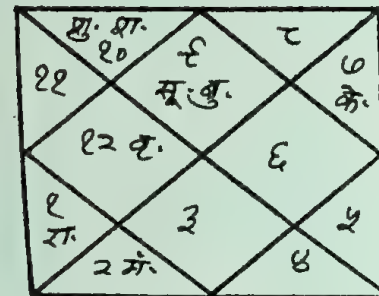
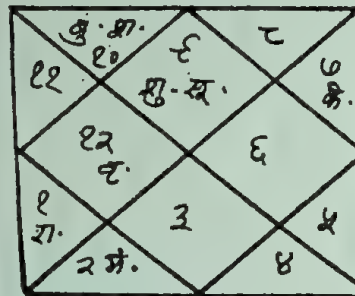
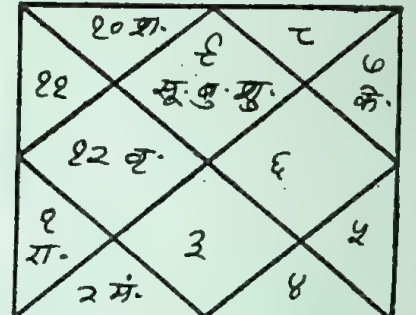
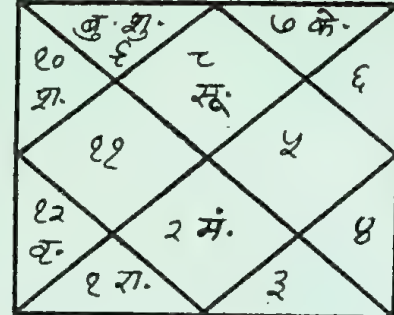
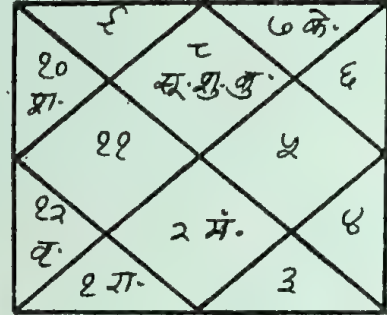
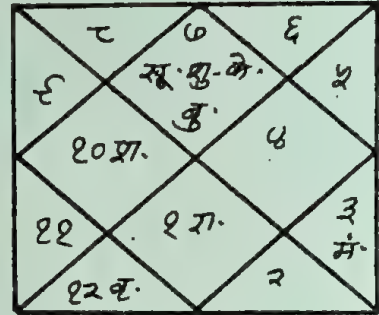
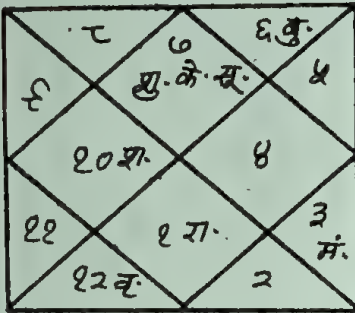
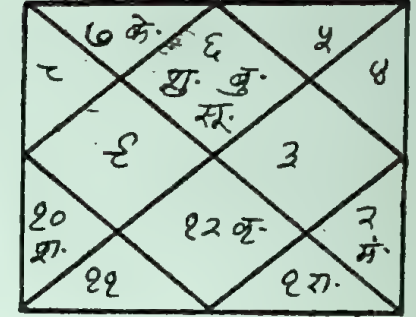
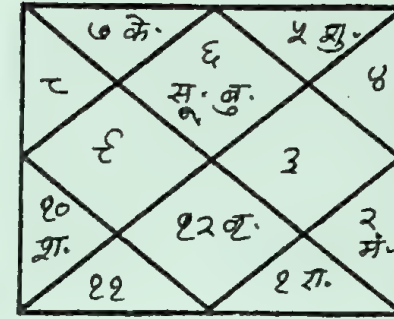
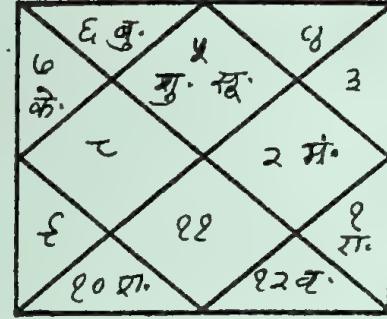
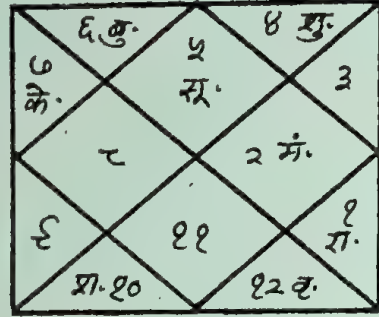
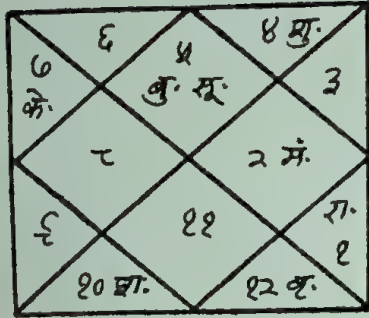
भ०
सं०
०२९

कु०
प०

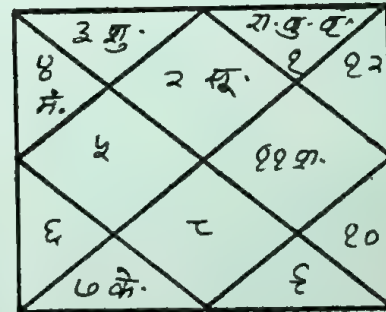
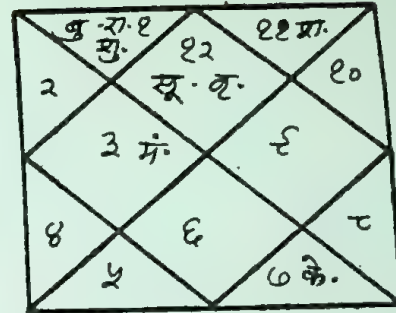


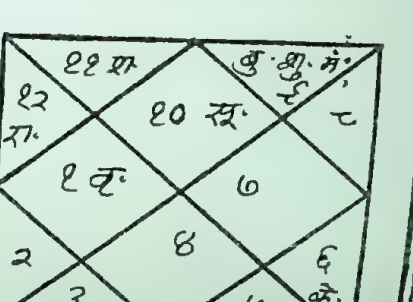
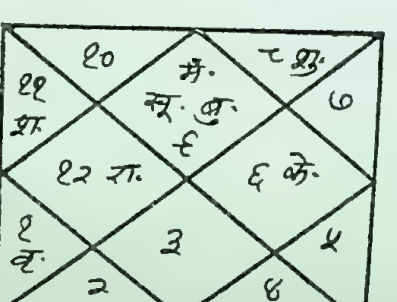
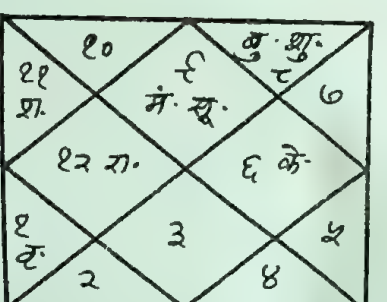
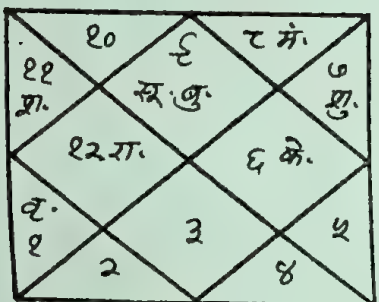
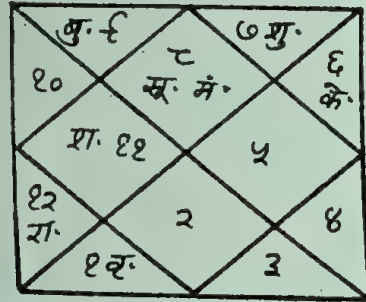
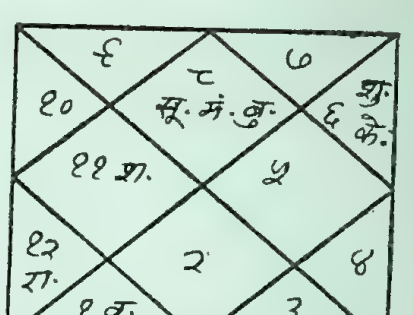
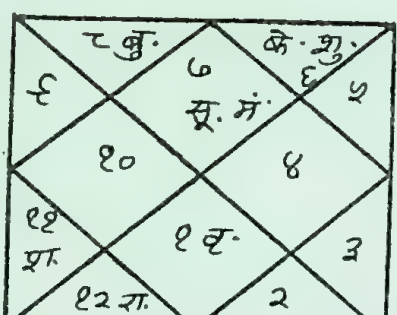
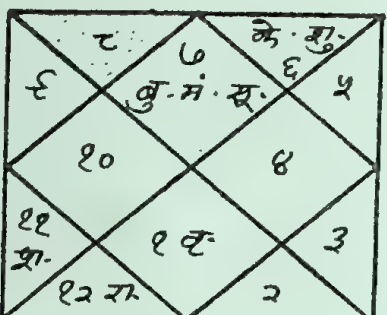
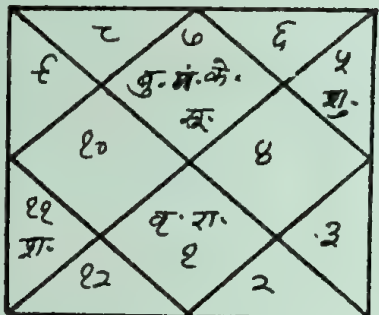
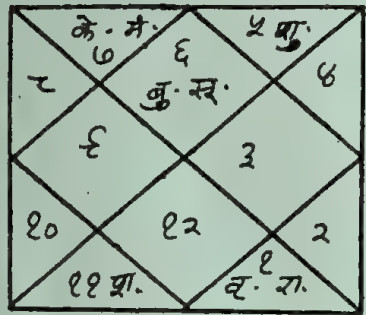
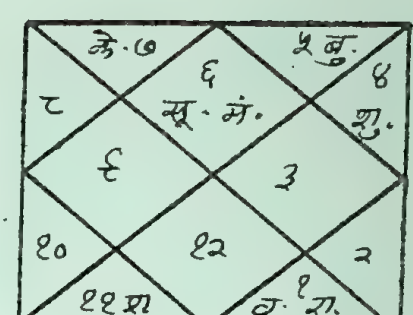
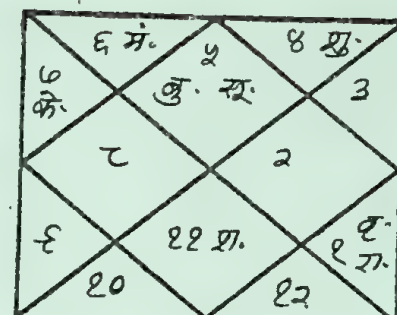
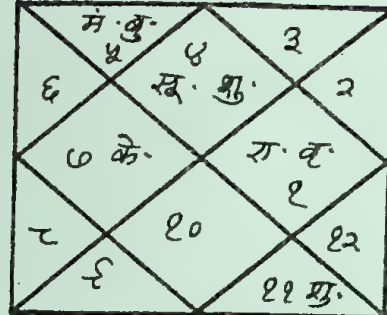
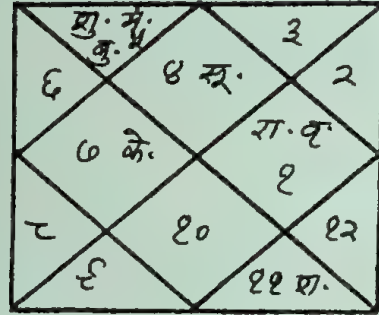
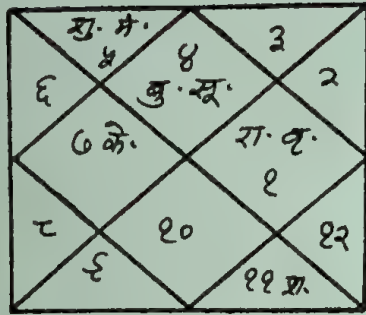


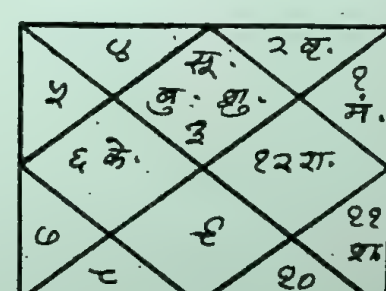
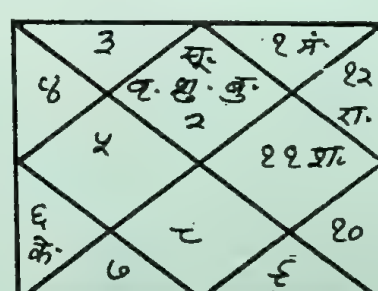
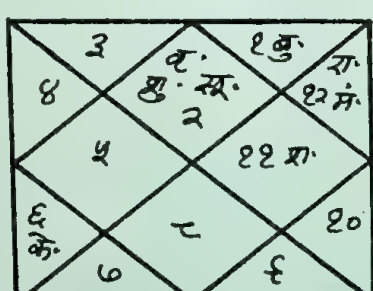
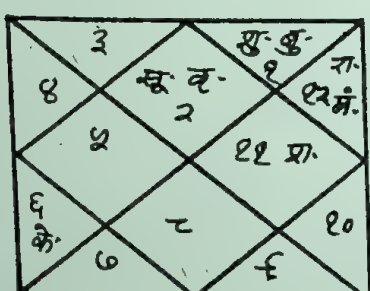
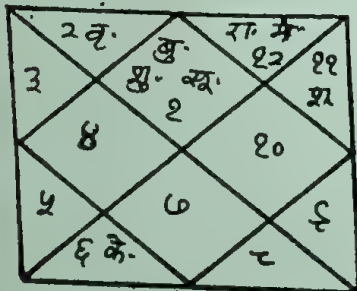
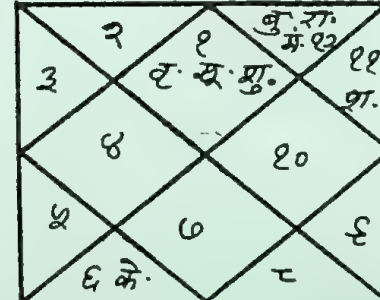
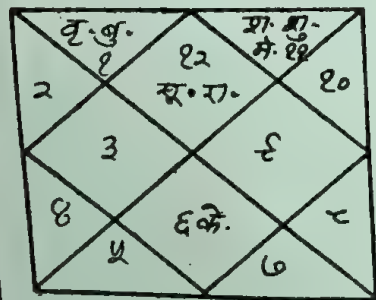
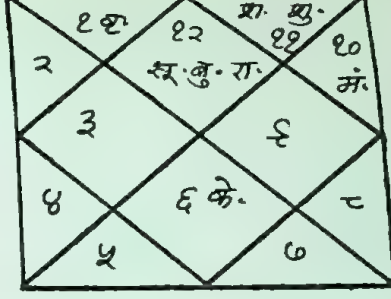
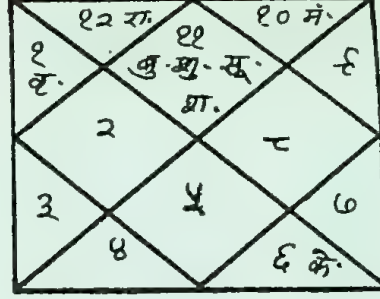
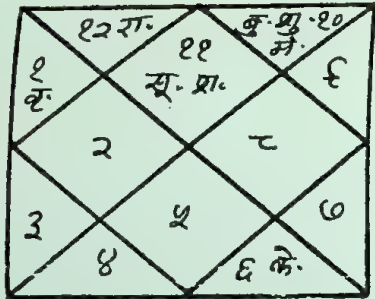
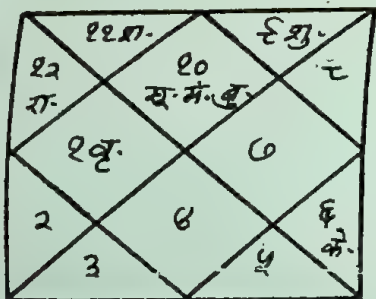


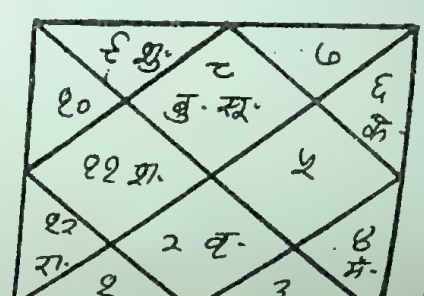
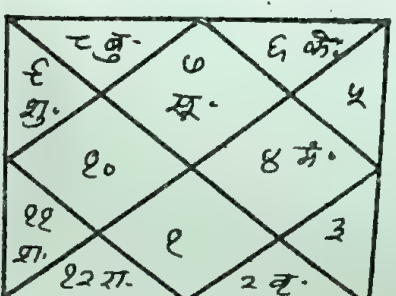
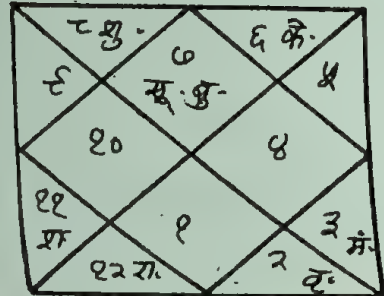
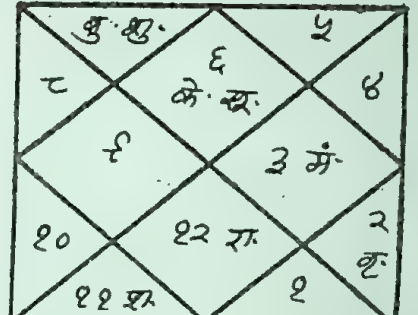
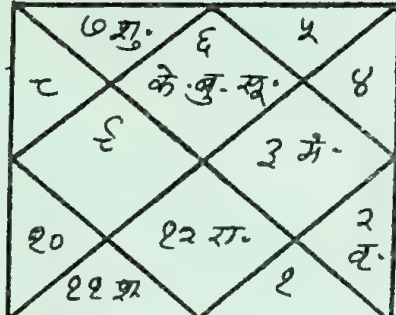
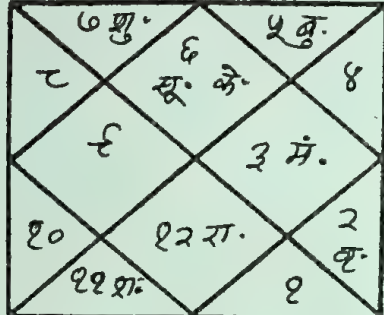
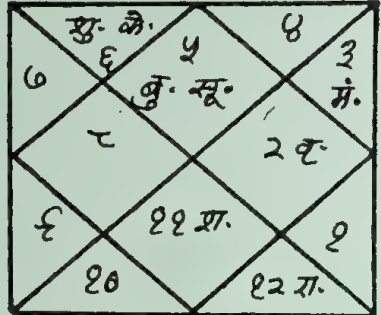
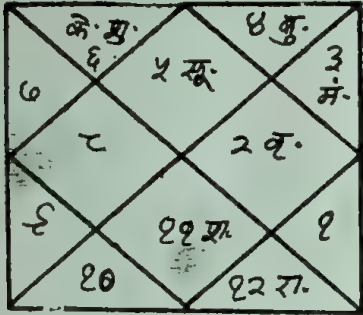
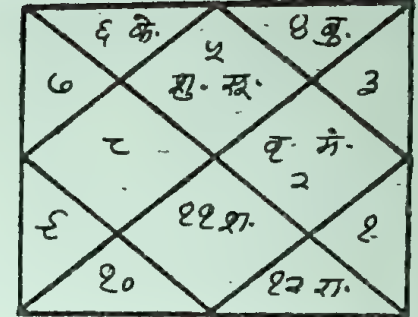
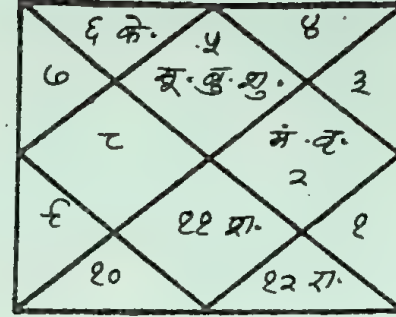
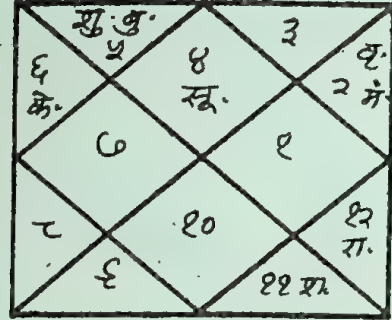


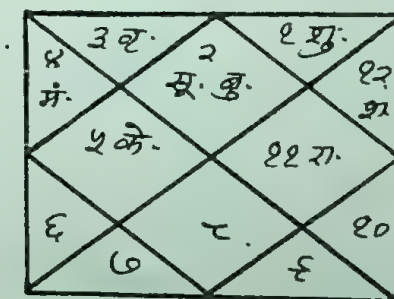
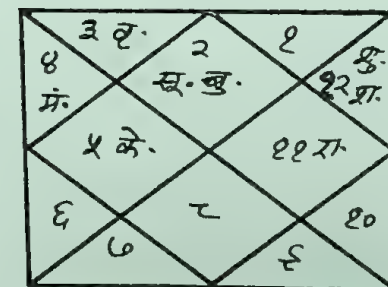
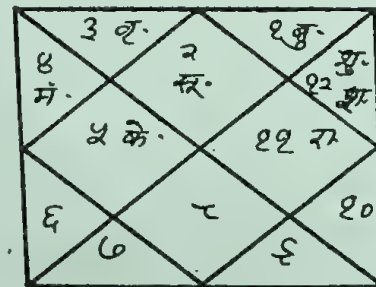
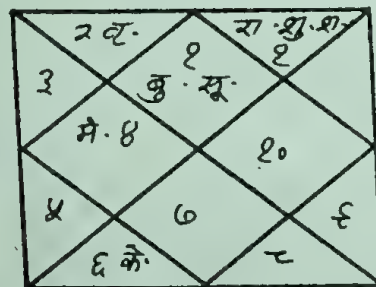
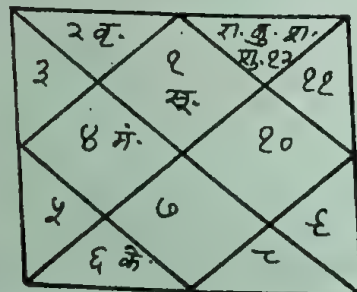
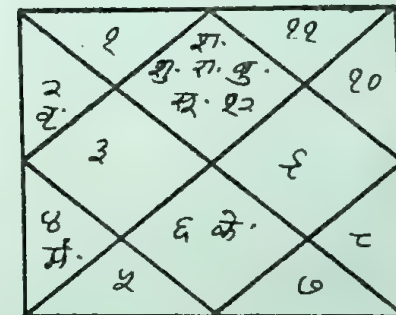
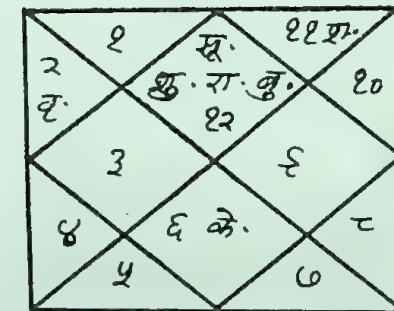
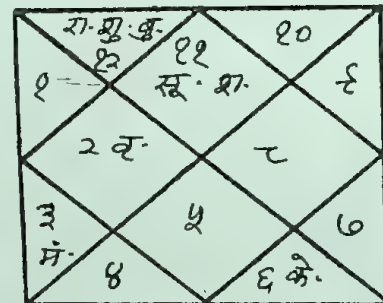
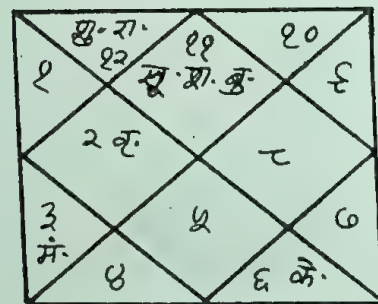
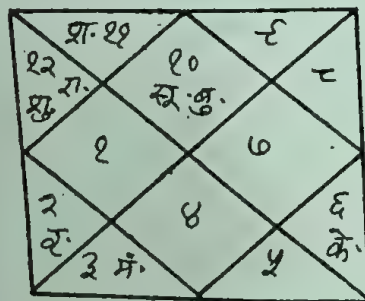
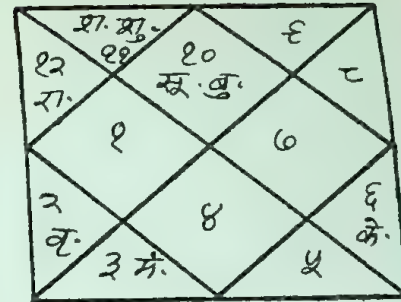
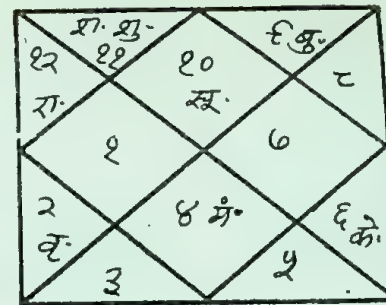
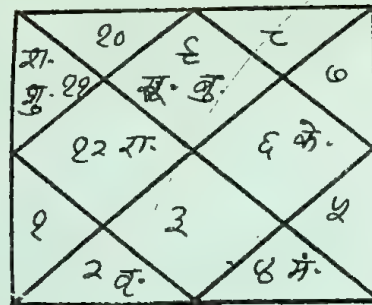
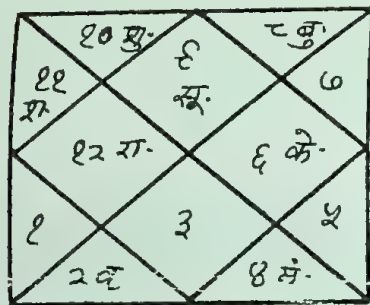
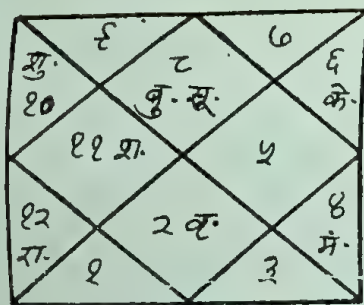
भू०
सं०
५
७
७

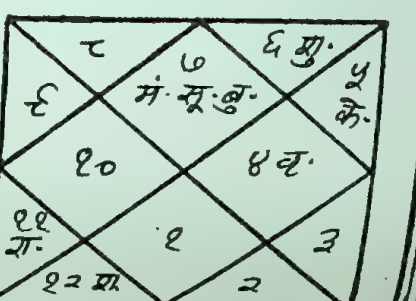
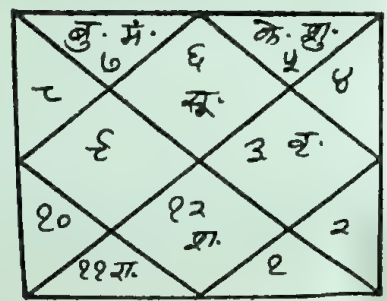
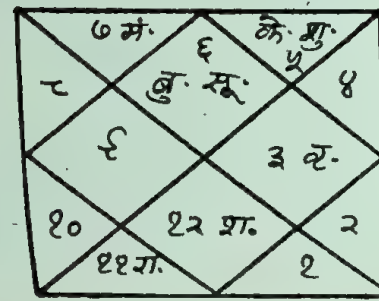
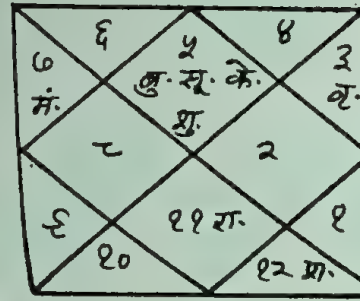
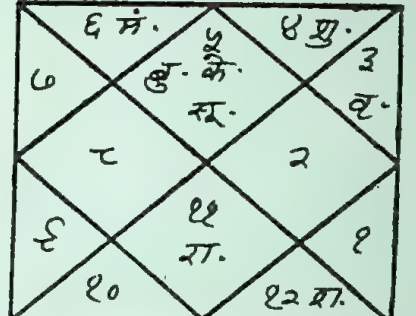
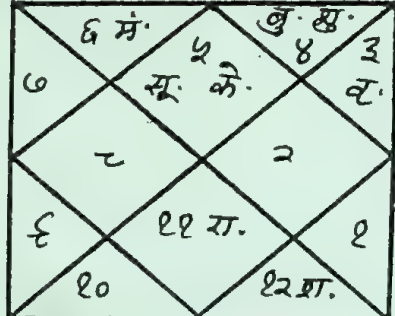
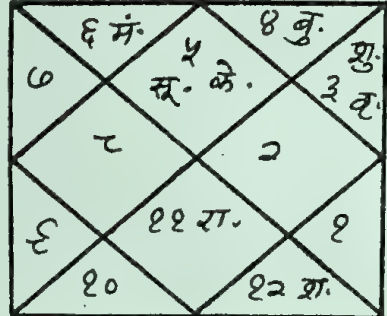
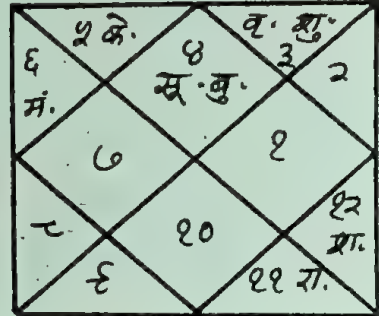
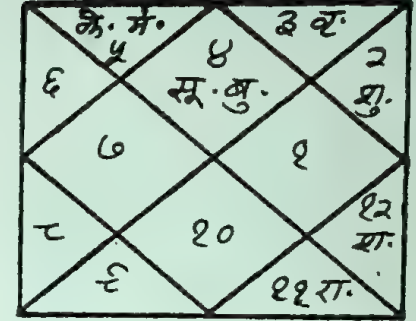
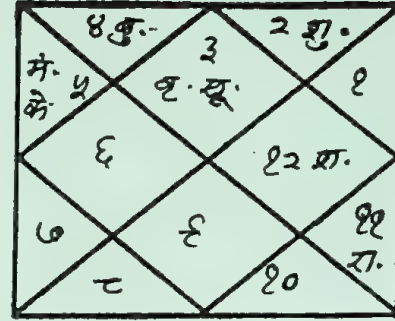
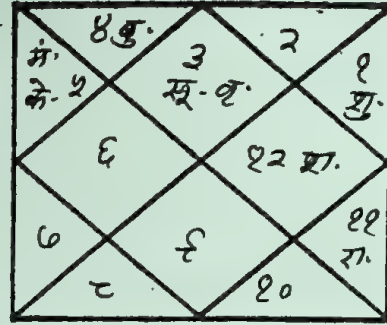
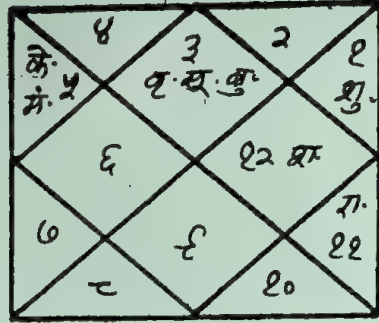
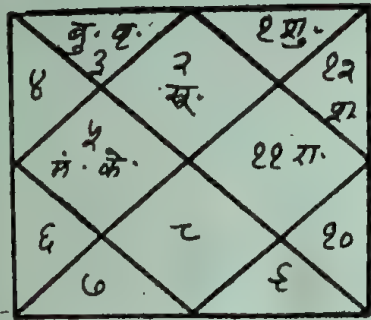


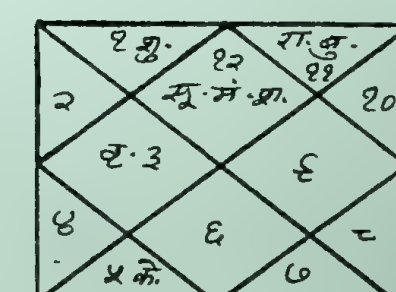
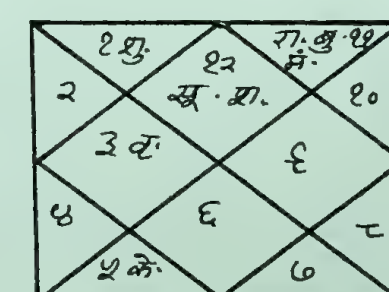
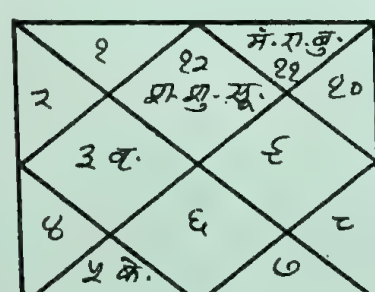
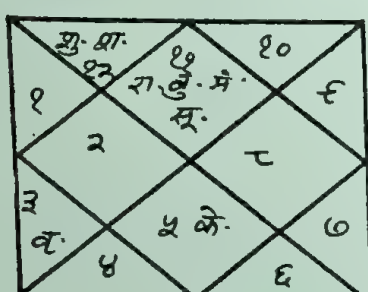
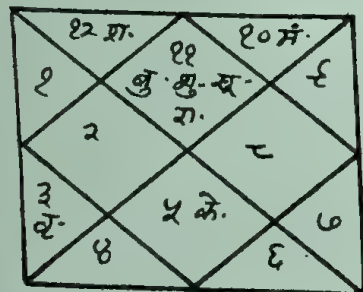
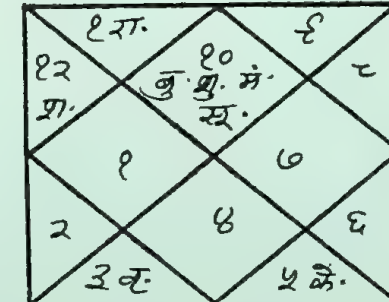
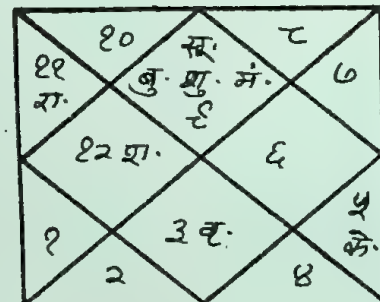
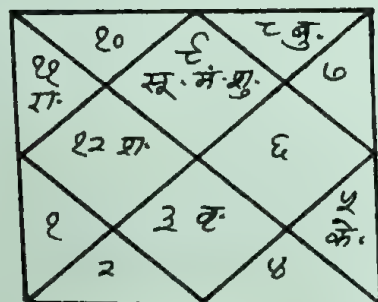
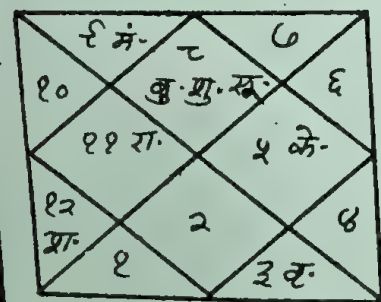
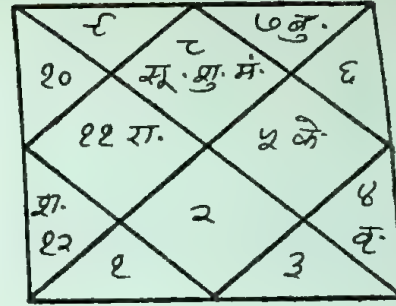
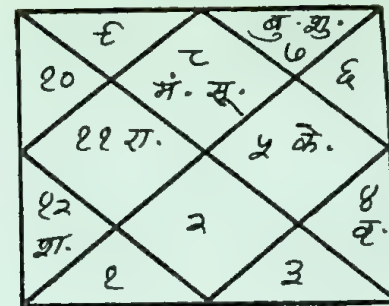
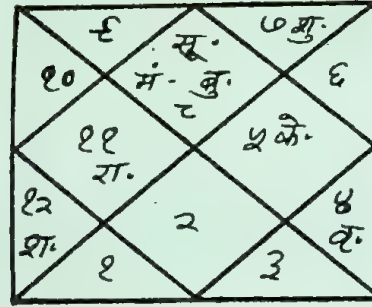
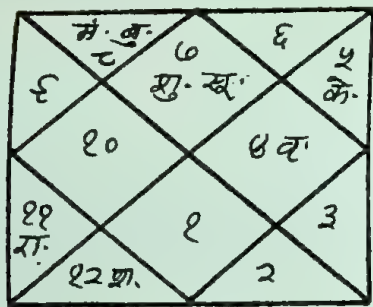
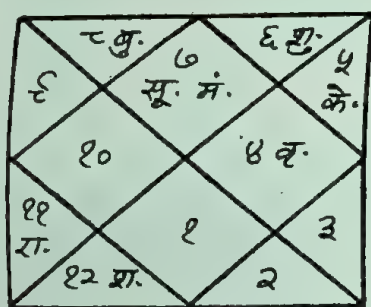


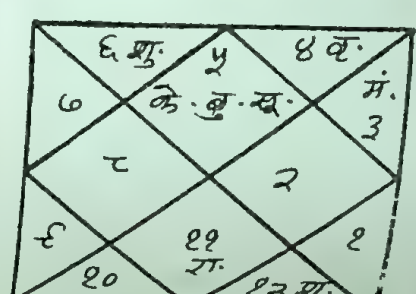
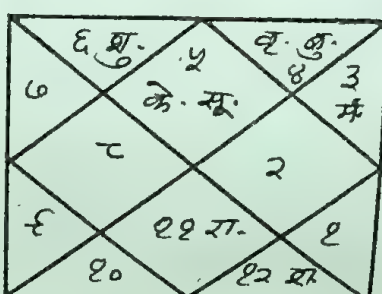
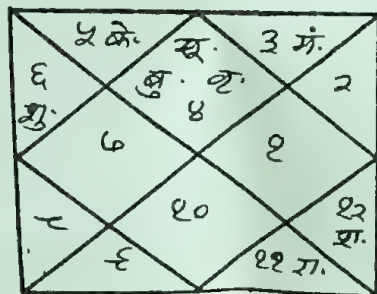
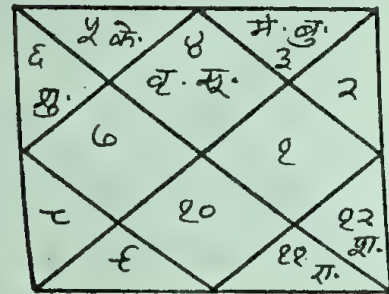
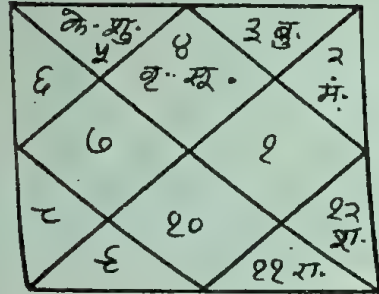
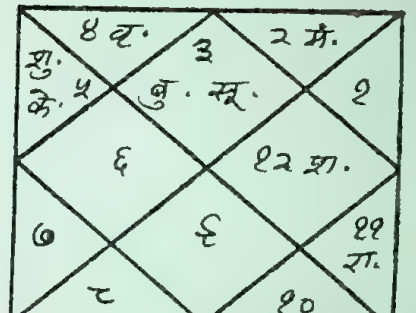
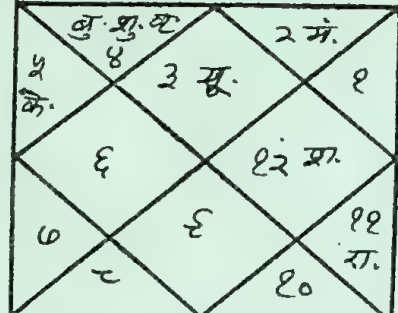
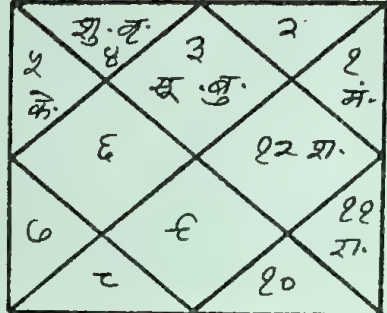
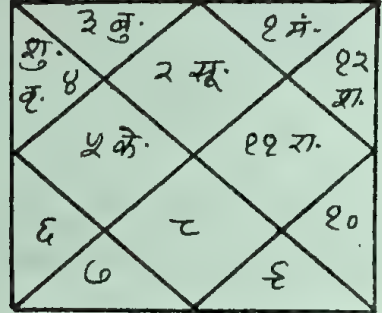
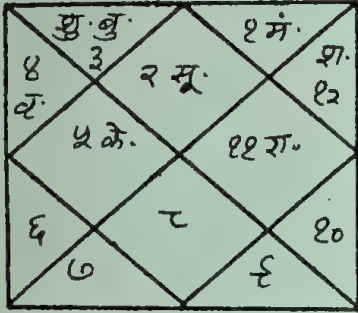
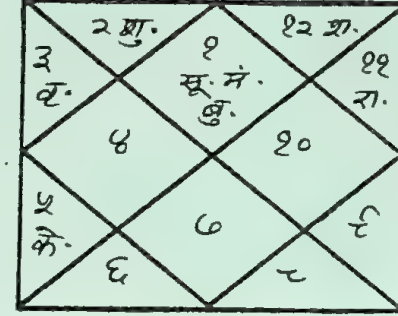
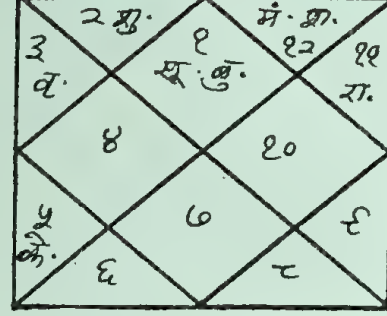
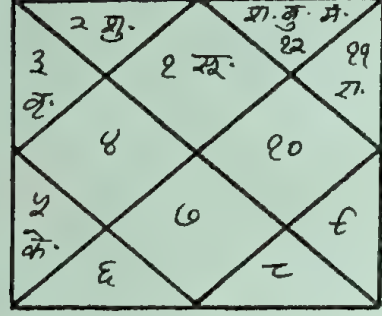




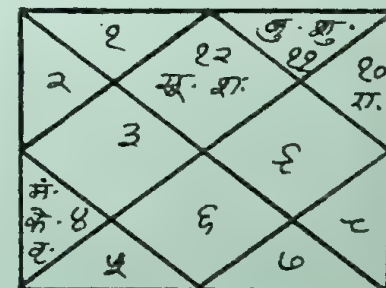
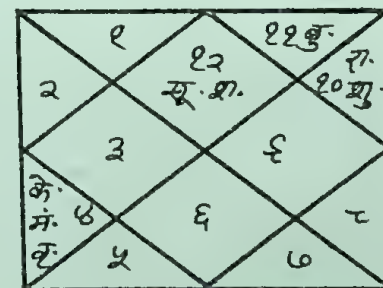
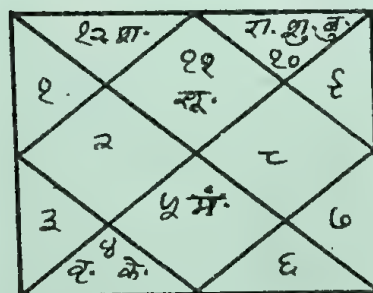
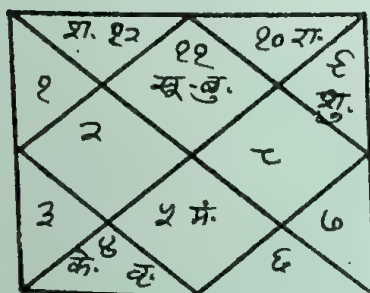
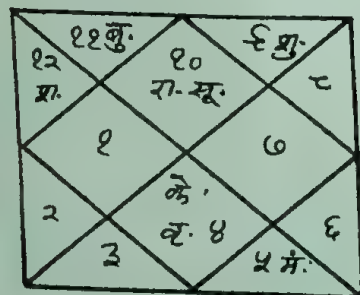
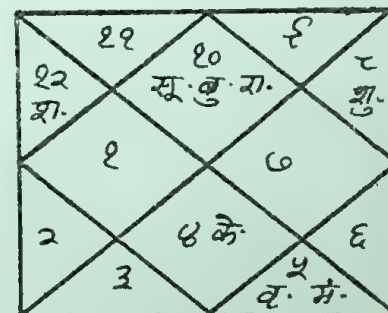
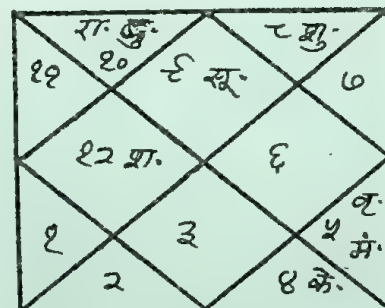
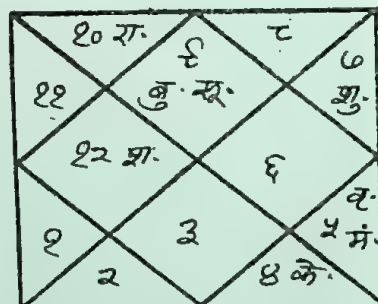
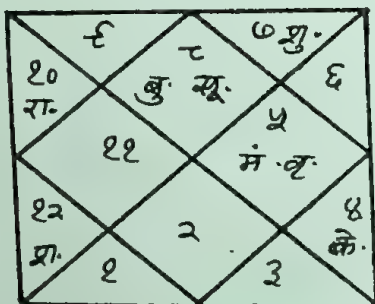
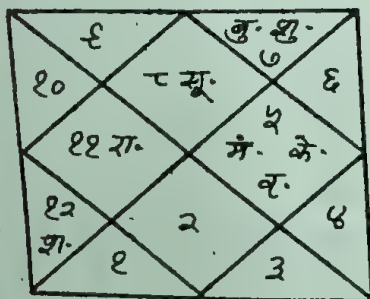
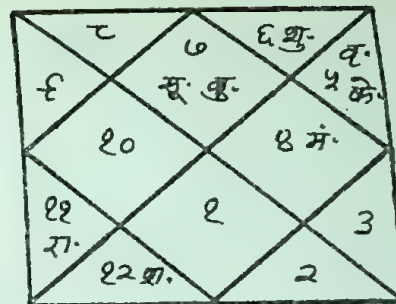
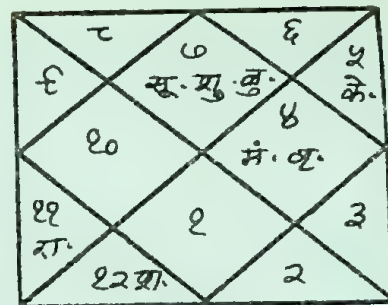
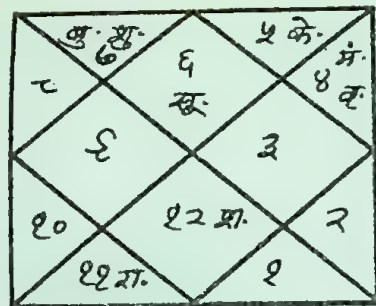
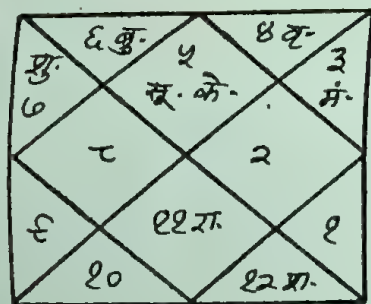








भू०
सं०
१
२
३



कु०
प०

२	१२	११	१०
३	६	७	८
५	४	९	८
५	४	९	८

२	१	१२	११
३	६	७	८
५	४	९	८
५	४	९	८

२	१	१२	११
३	६	७	८
५	४	९	८
५	४	९	८

२	१	१२	११
३	६	७	८
५	४	९	८
५	४	९	८

२	१	१२	११
३	६	७	८
५	४	९	८
५	४	९	८

३	२	१२	११
५	४	९	८
५	४	९	८
५	४	९	८

३	२	१२	११
५	४	९	८
५	४	९	८
५	४	९	८

३	२	१२	११
५	४	९	८
५	४	९	८
५	४	९	८

५	४	९	८
५	४	९	८
५	४	९	८
५	४	९	८

५	४	९	८
५	४	९	८
५	४	९	८
५	४	९	८

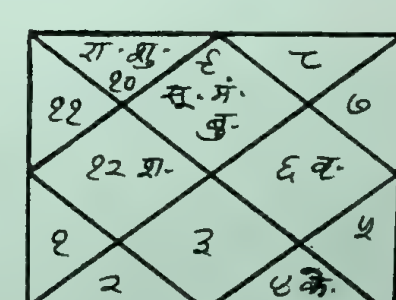
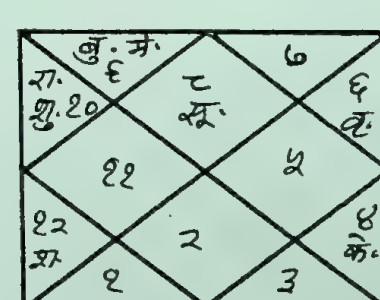
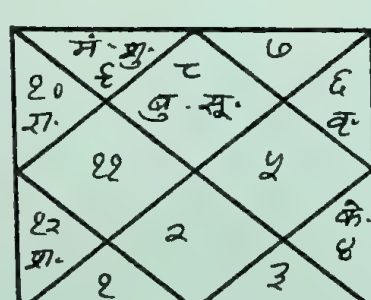
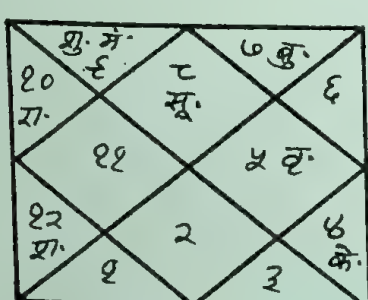
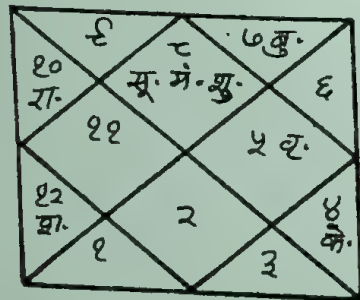
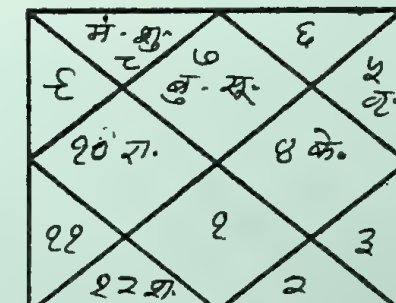
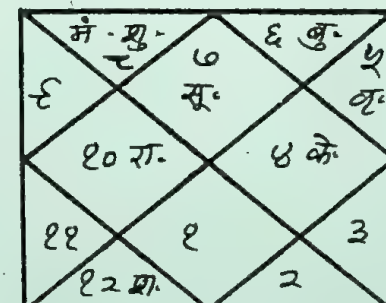
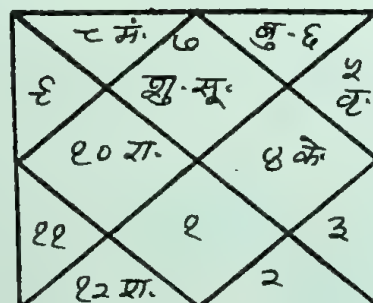
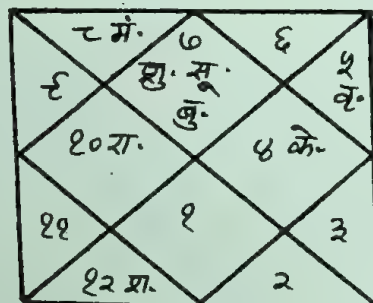
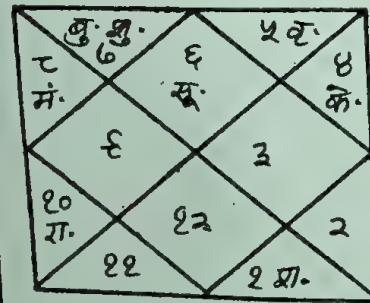
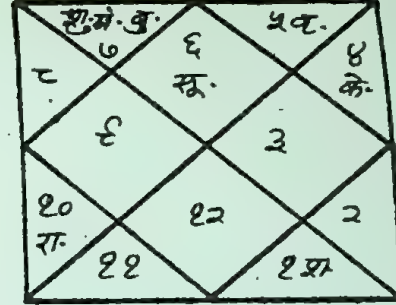
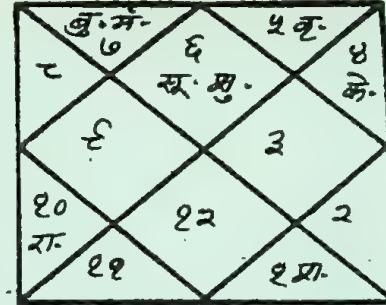
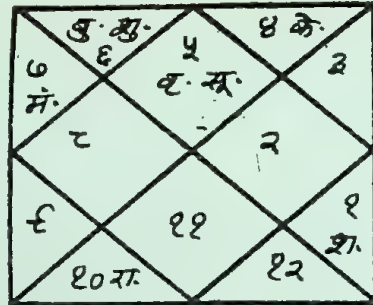
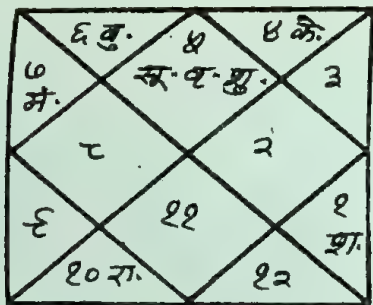
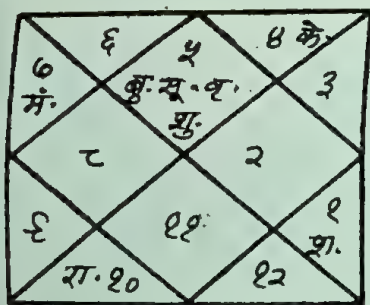
४	३	२	१
५	४	९	८
५	४	९	८
५	४	९	८

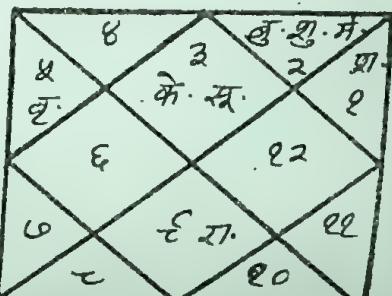
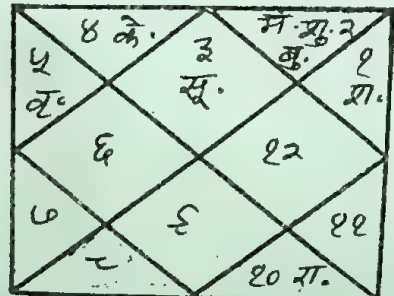
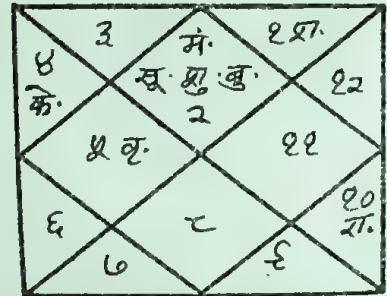
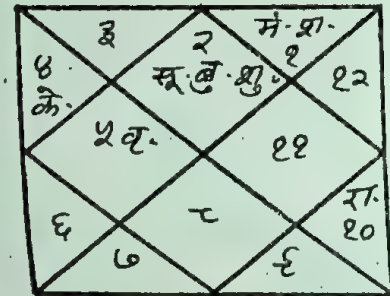
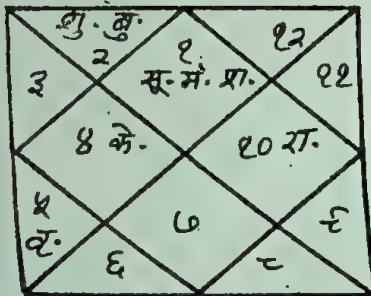
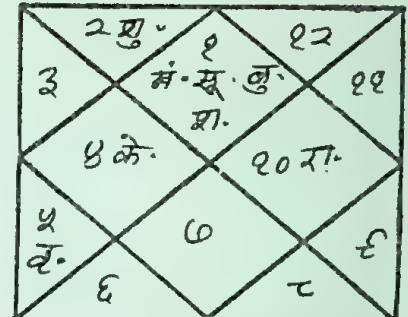
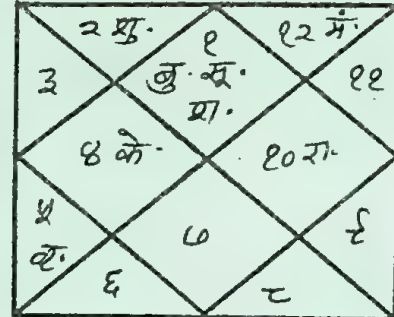
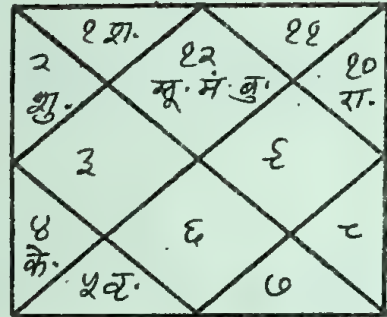
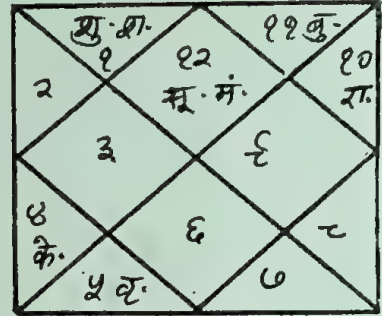
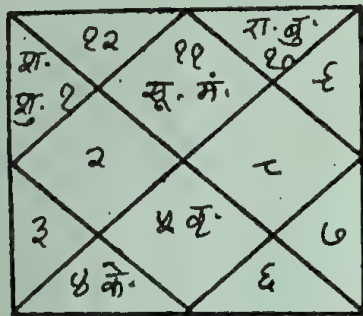
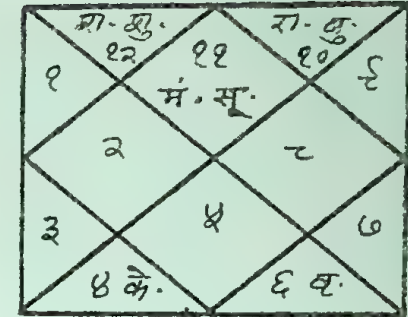
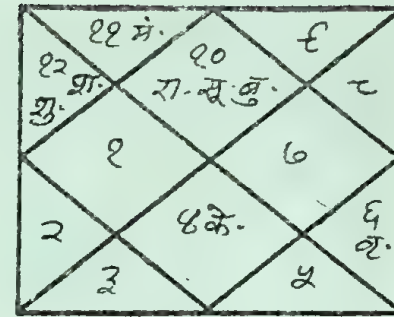
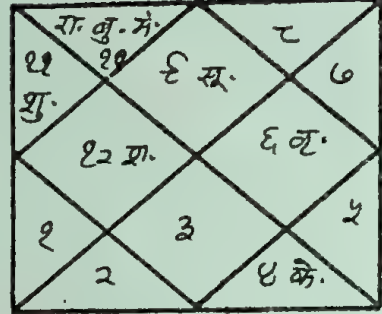
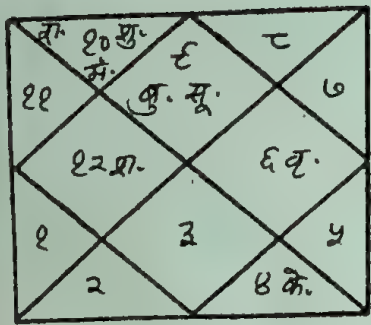
५	४	९	८
५	४	९	८
५	४	९	८
५	४	९	८

५	४	९	८
५	४	९	८
५	४	९	८
५	४	९	८

५	४	९	८
५	४	९	८
५	४	९	८
५	४	९	८

५	४	९	८
५	४	९	८
५	४	९	८
५	४	९	८





५	४ के.	३	२
६	कु. सु.	३	१
७	६	१२	११
८	८	१०	११

५	४	३	२
६	कु. सु. सं.	३	१
७	६	१२	११
८	८	१०	११

५	४	३	२
६	सू. कु.	३	१
७	६	१२	११
८	८	१०	११

५	४	३	२
६	सू. कु.	३	१
७	६	१२	११
८	८	१०	११

५	४	३	२
६	सू. कु.	३	१
७	६	१२	११
८	८	१०	११

५	४	३	२
६	कु. सु.	३	१
७	६	१२	११
८	८	१०	११

५	४	३	२
६	कु. सु.	३	१
७	६	१२	११
८	८	१०	११

५	४	३	२
६	कु. सु.	३	१
७	६	१२	११
८	८	१०	११

५	४	३	२
६	कु. सु.	३	१
७	६	१२	११
८	८	१०	११

५	४	३	२
६	कु. सु.	३	१
७	६	१२	११
८	८	१०	११

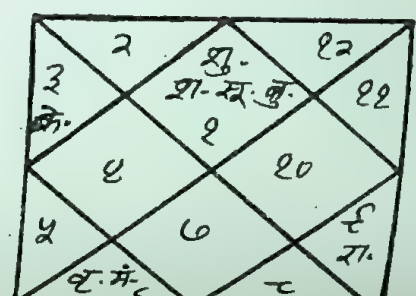
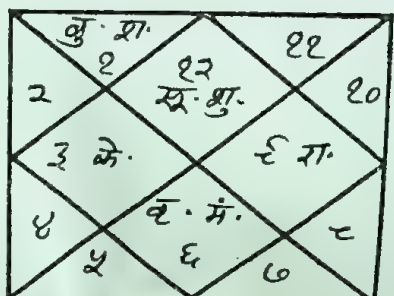
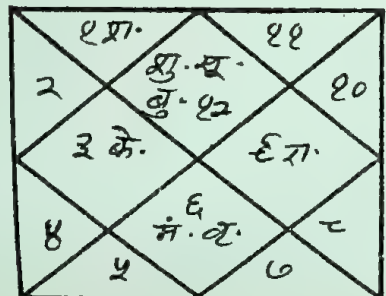
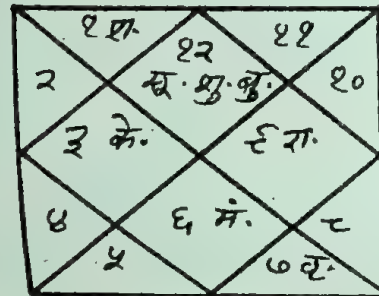
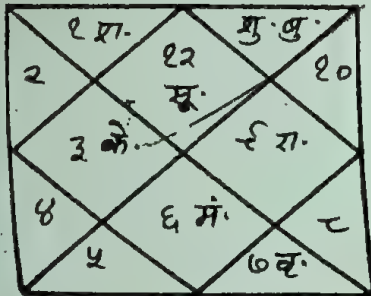
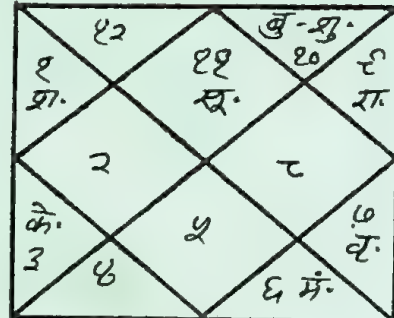
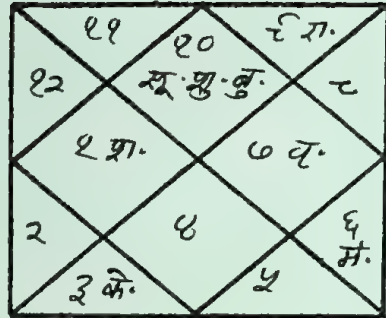
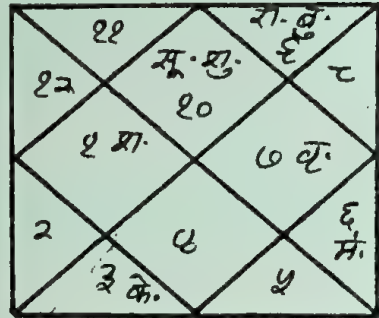
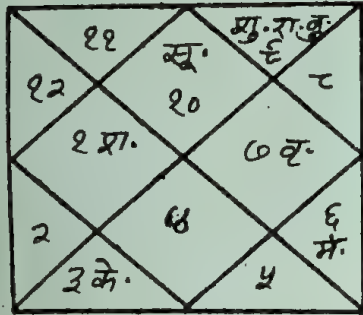
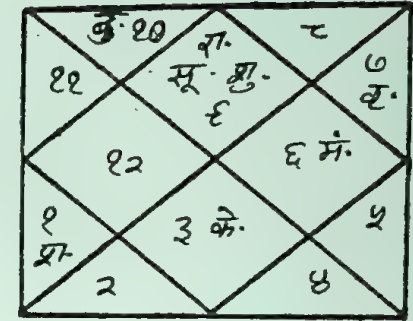
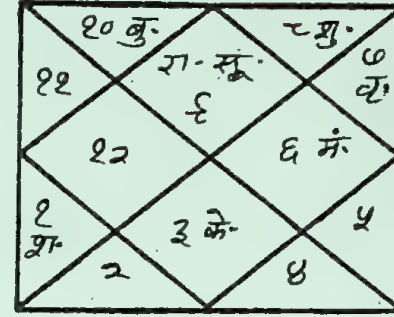
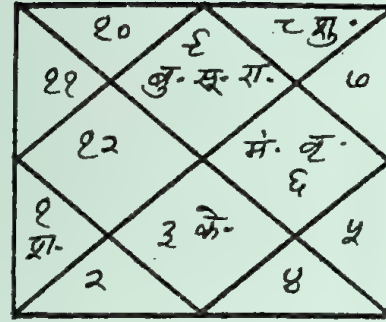
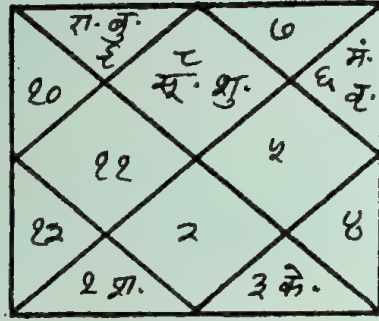
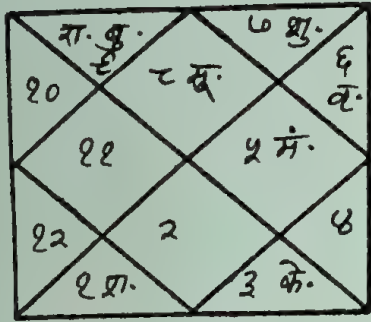
५	४	३	२
६	कु. सु.	३	१
७	६	१२	११
८	८	१०	११

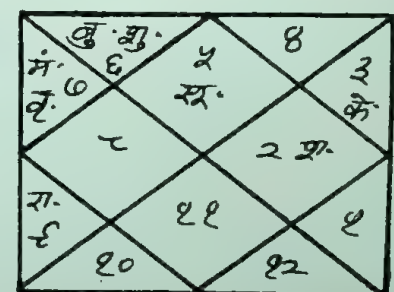
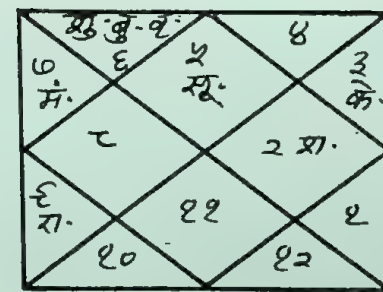
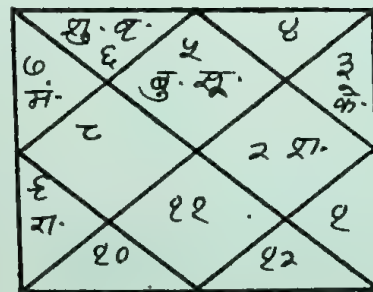
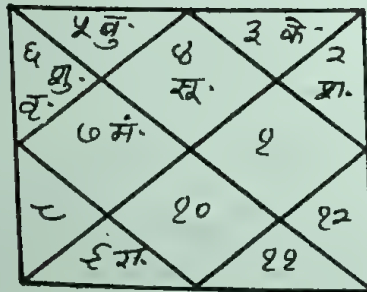
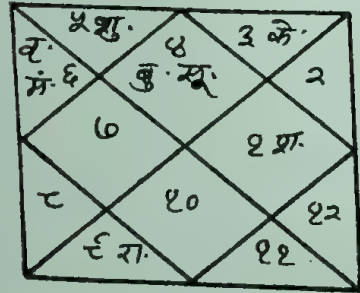
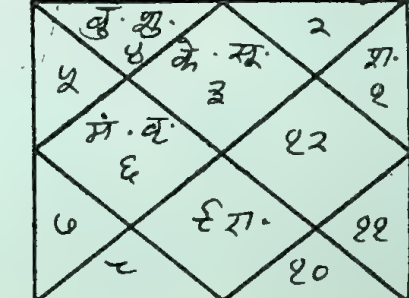
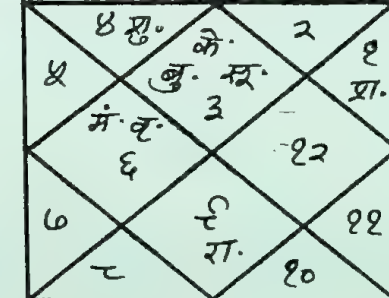
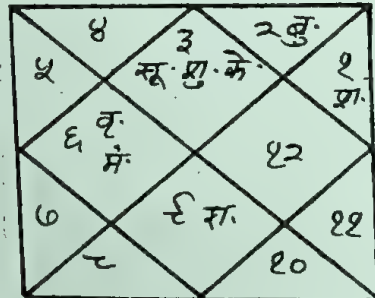
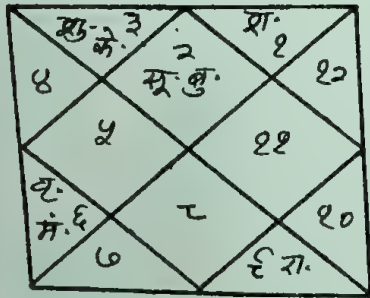
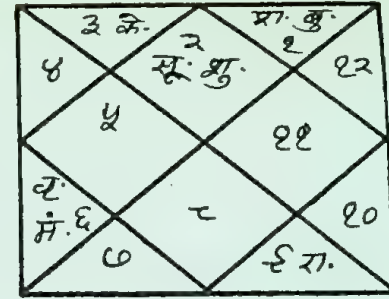
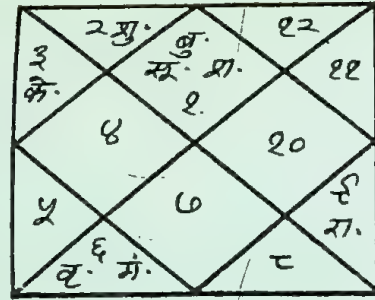
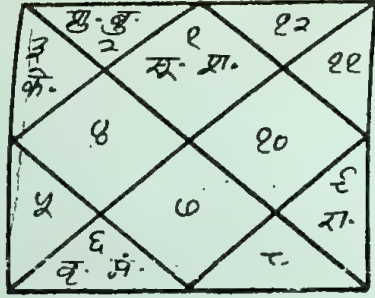
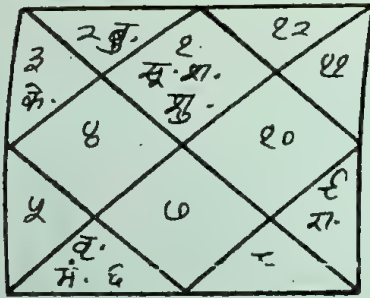
५	४	३	२
६	कु. सु.	३	१
७	६	१२	११
८	८	१०	११

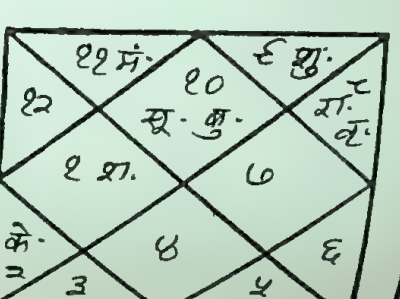
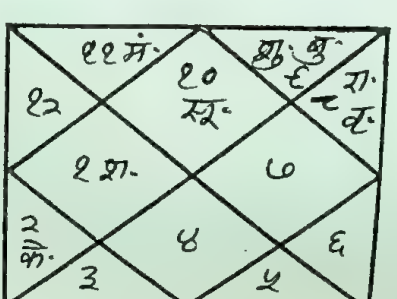
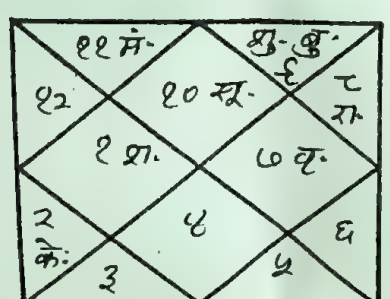
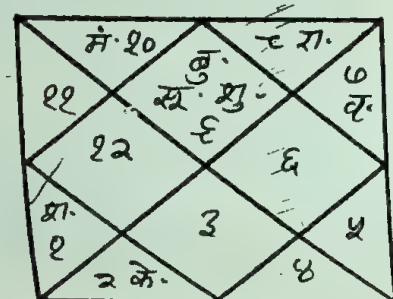
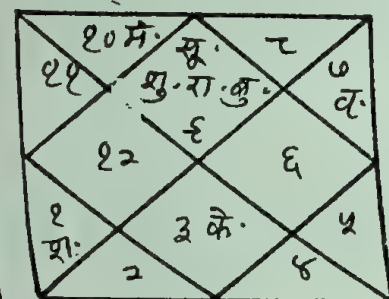
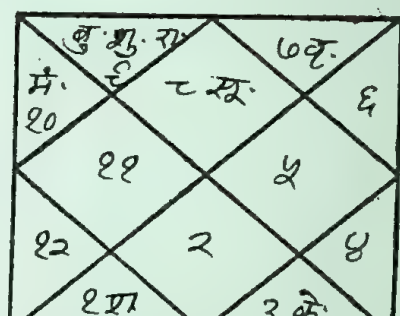
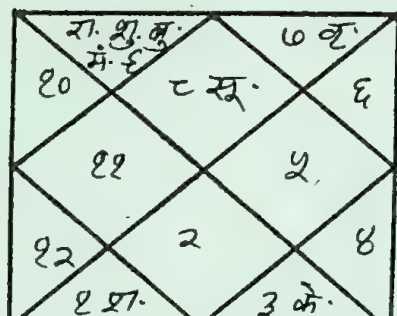
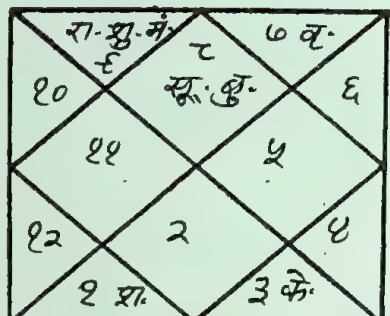
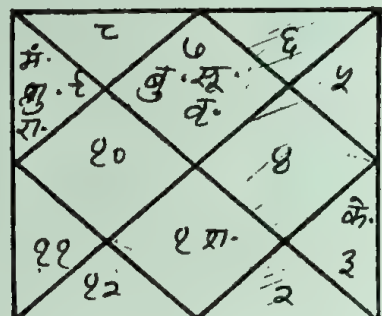
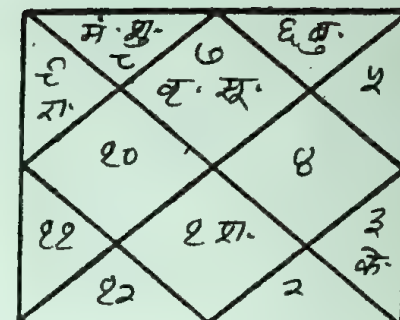
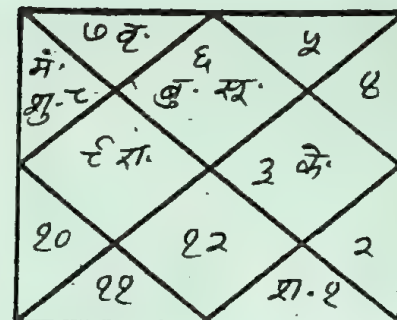
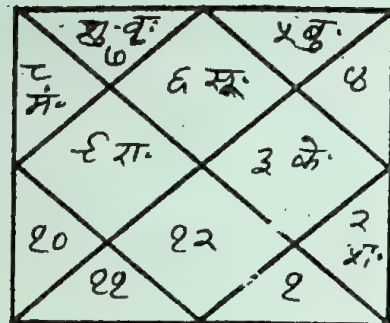
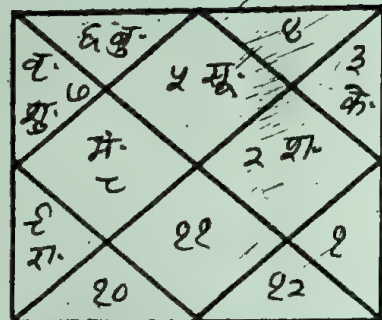
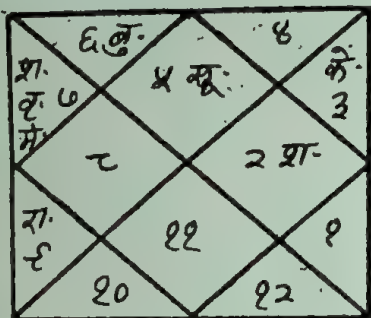
५	४	३	२
६	कु. सु.	३	१
७	६	१२	११
८	८	१०	११

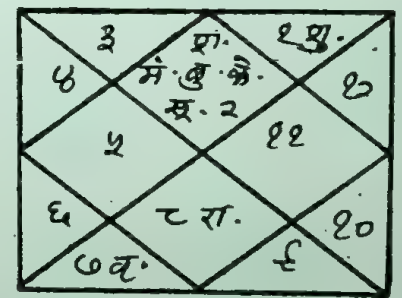
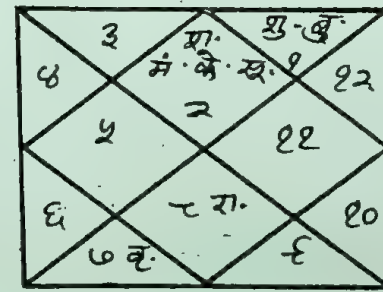
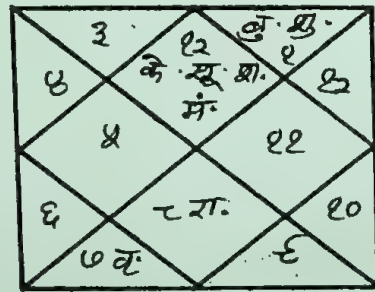
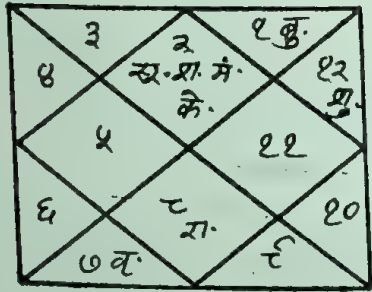
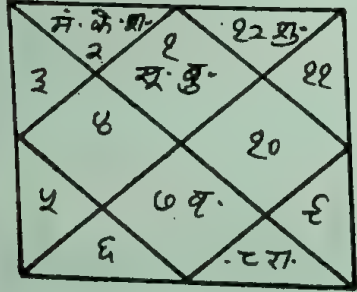
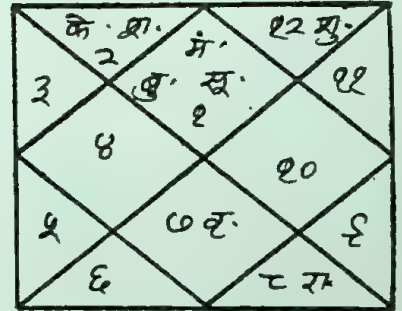
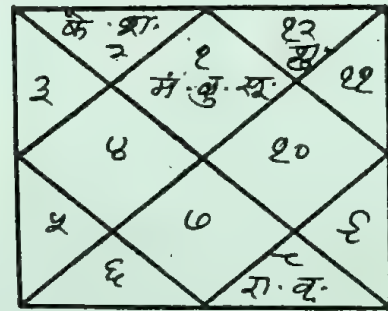
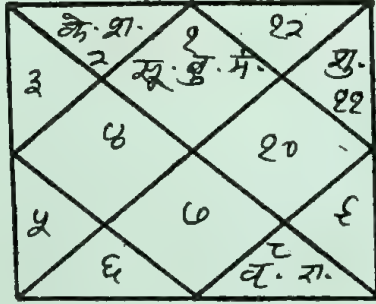
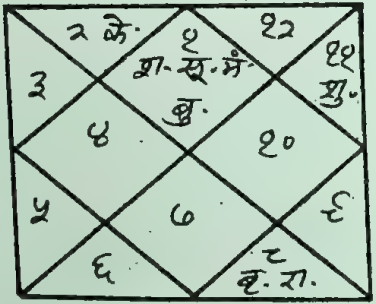
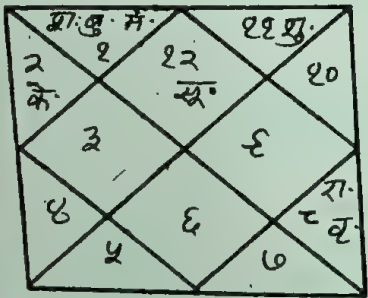
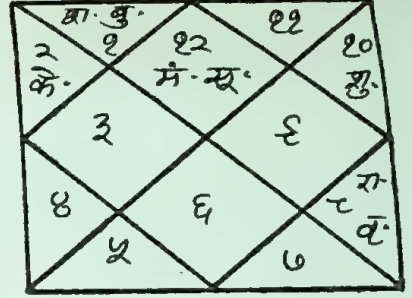
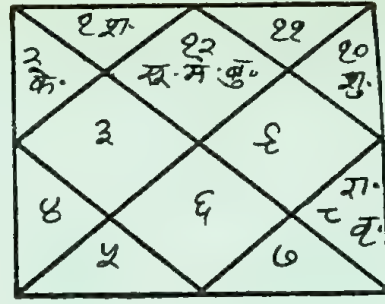
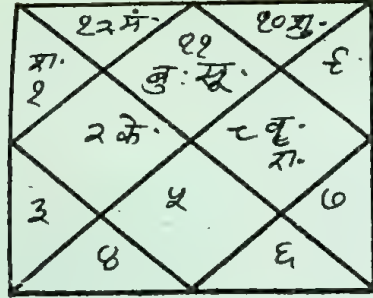
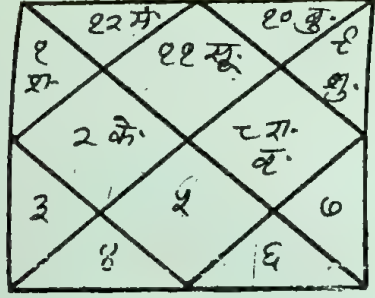
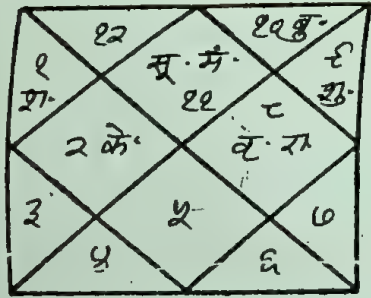
५	४	३	२
६	कु. सु.	३	१
७	६	१२	११
८	८	१०	११

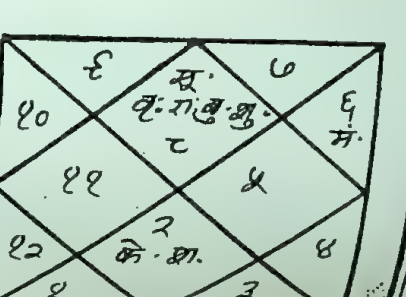
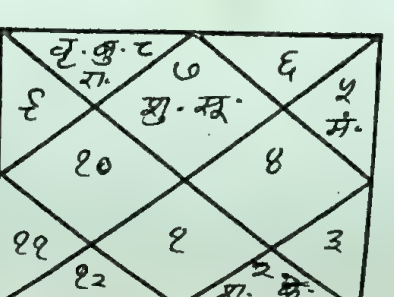
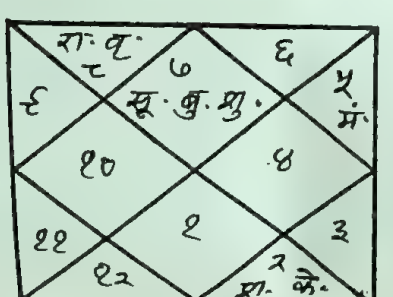
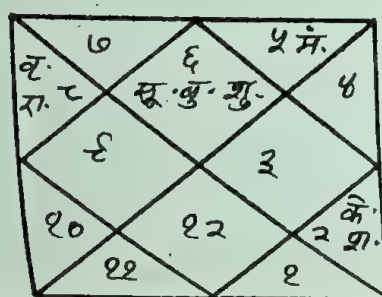
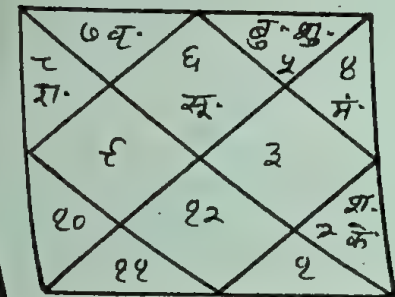
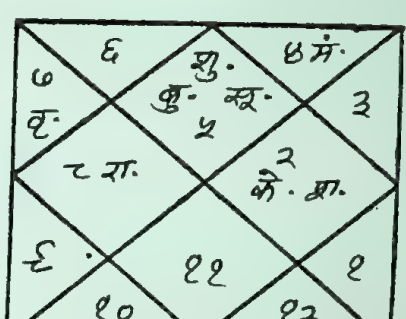
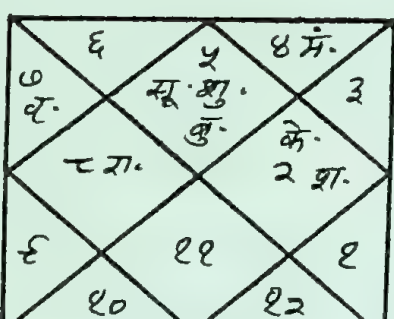
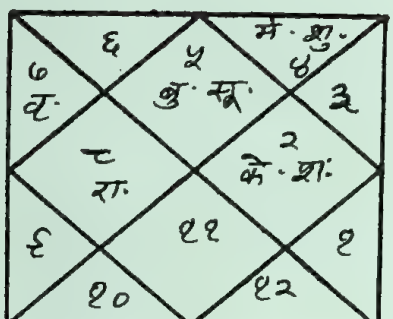
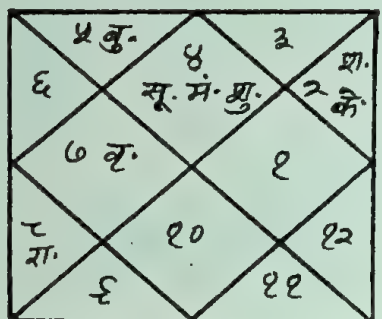
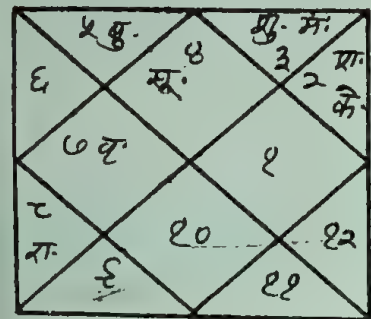
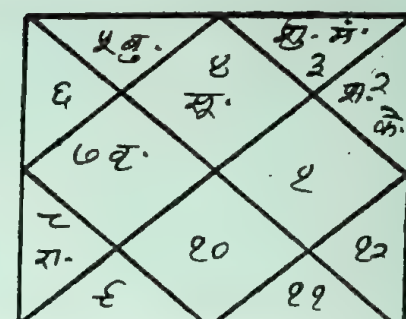
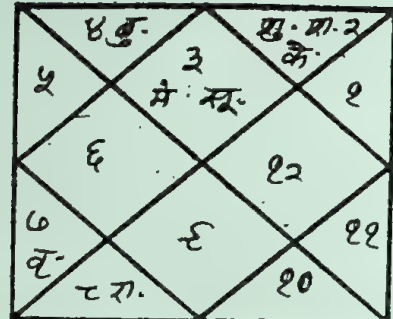
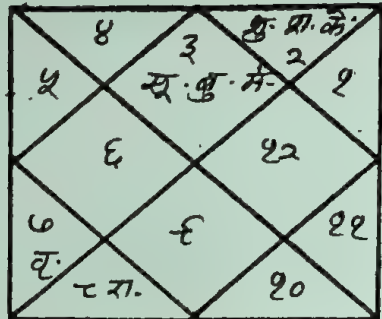
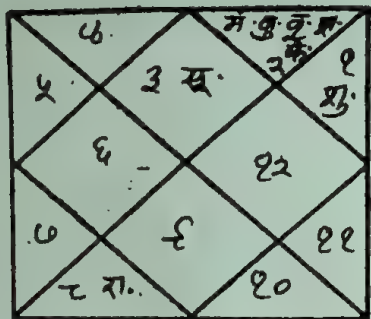
५	४	३	२
६	कु. सु.	३	१
७	६	१२	११
८	८	१०	११

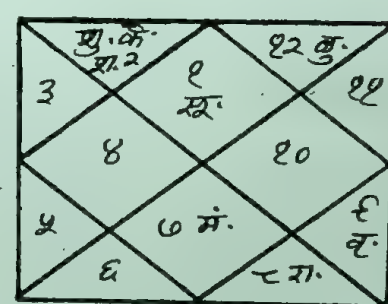
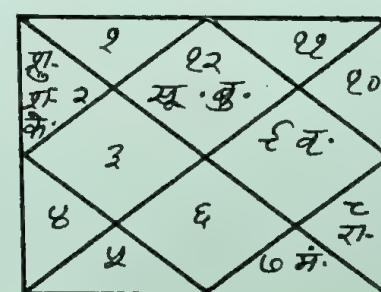
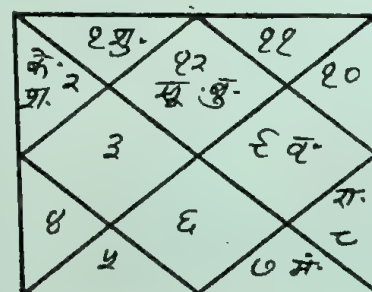
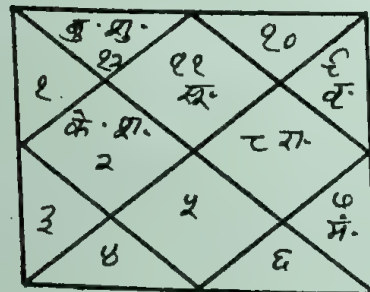
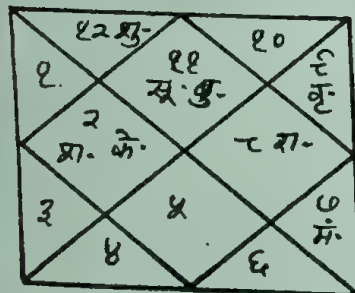
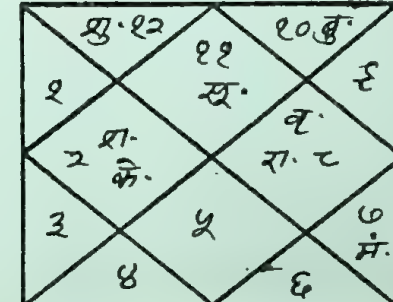
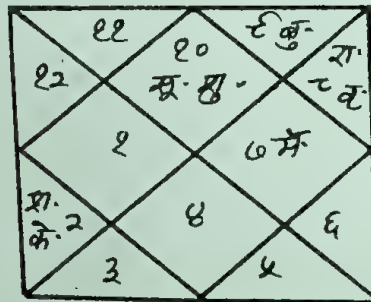
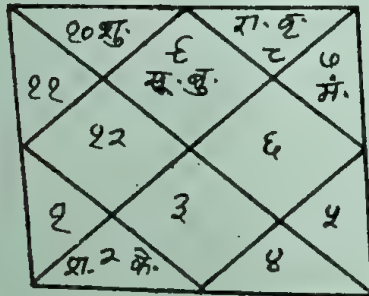
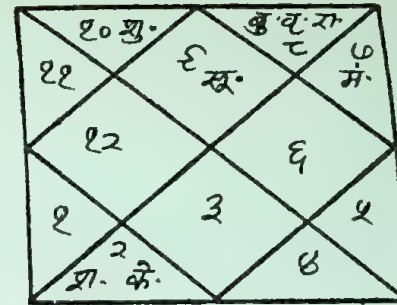
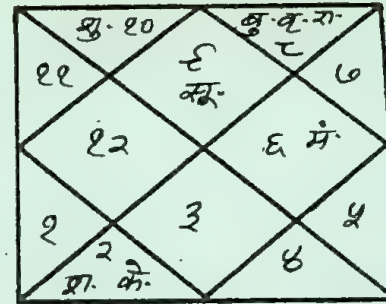
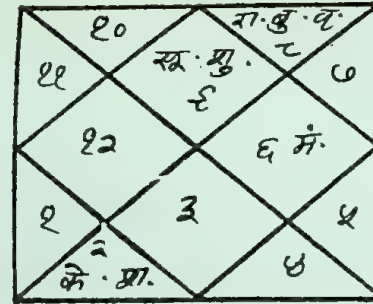
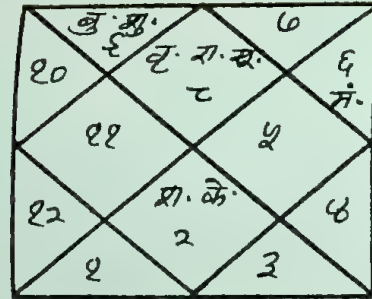
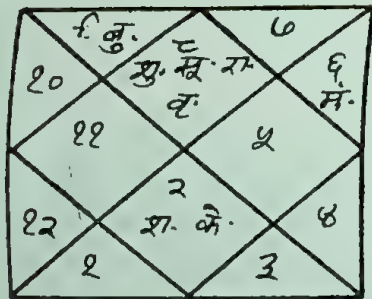




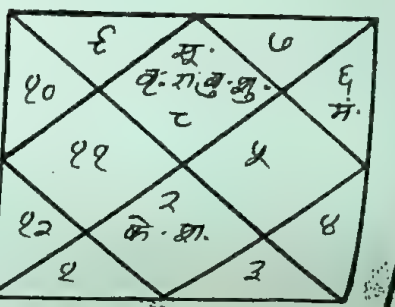
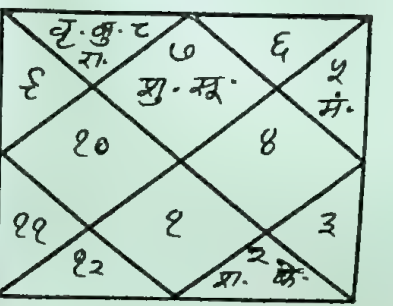
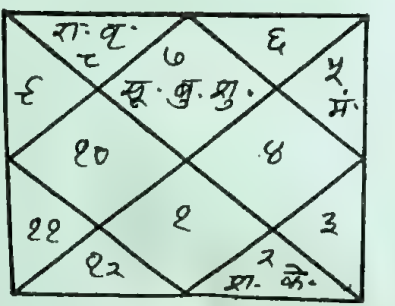
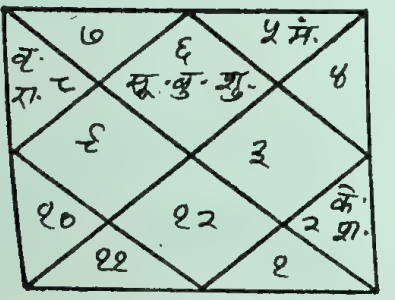
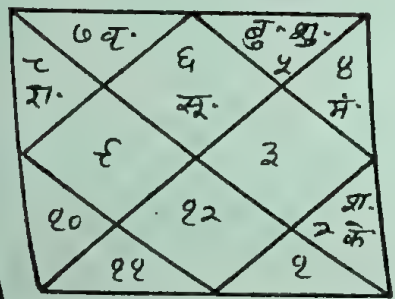
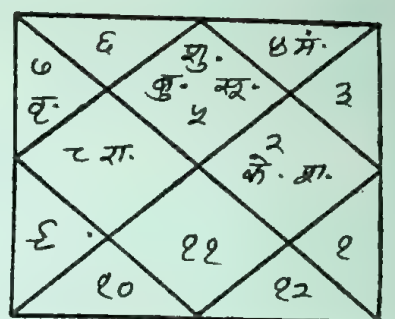
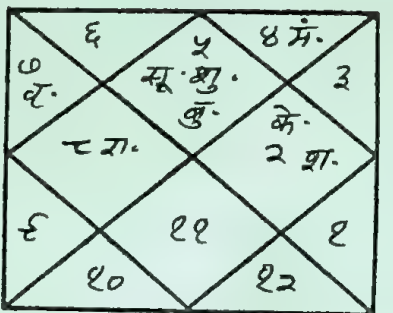
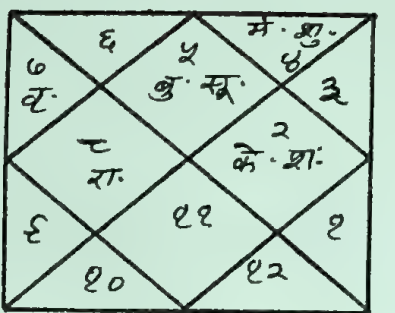
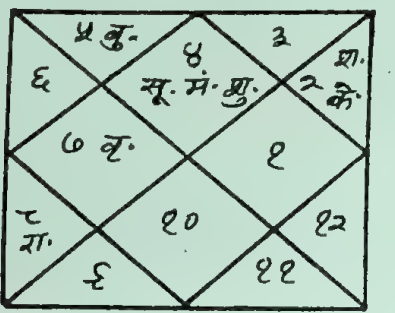
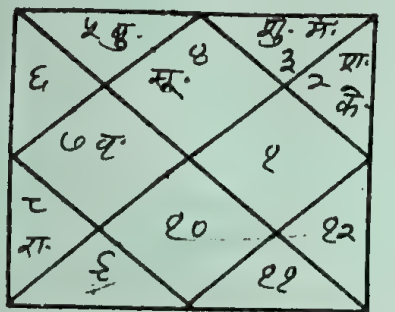
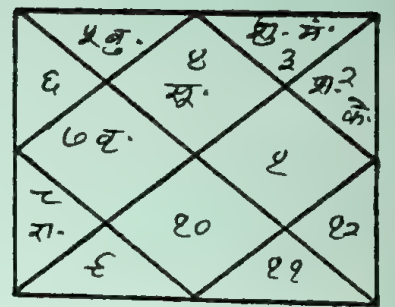
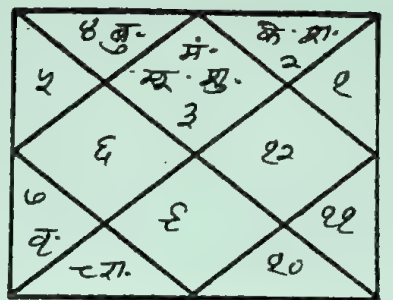
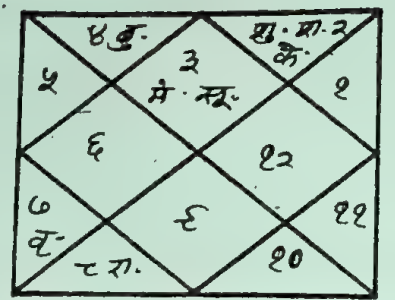
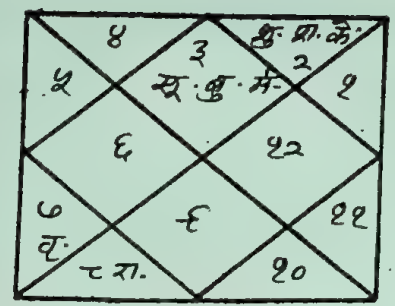
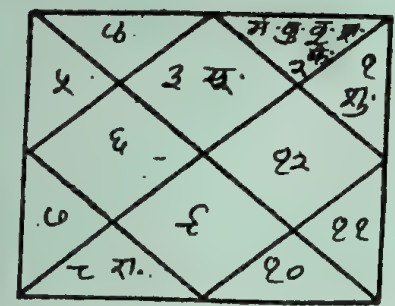






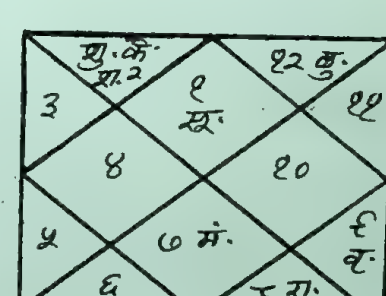
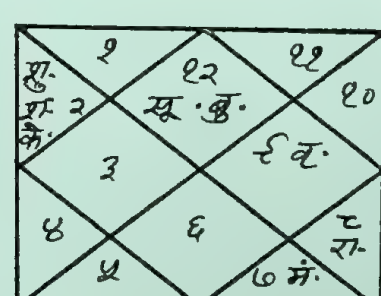
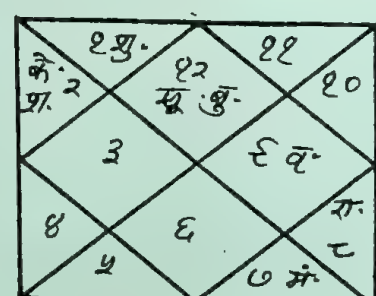
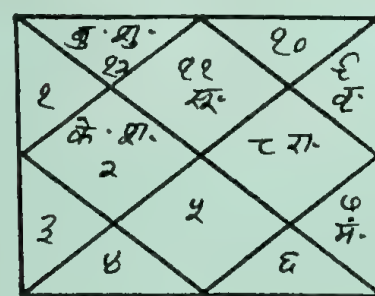
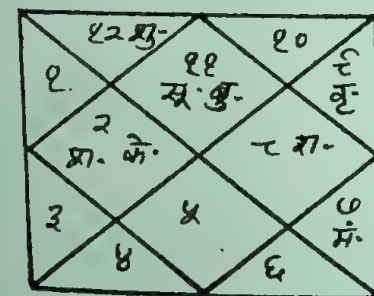
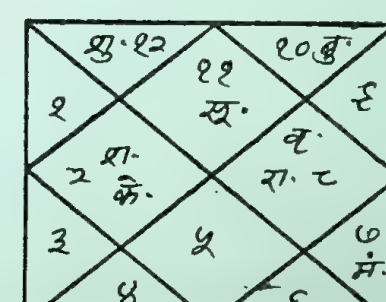
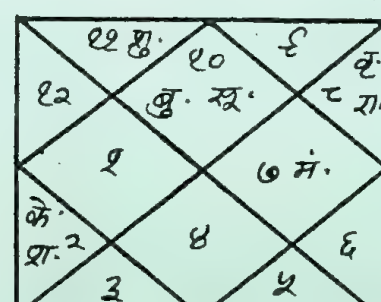
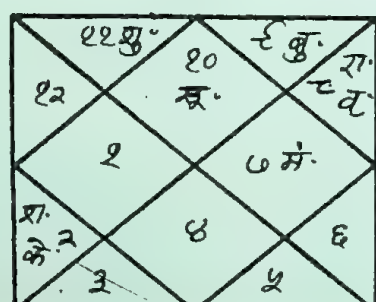
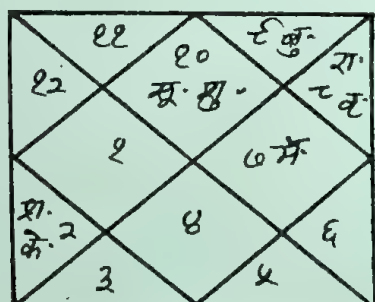
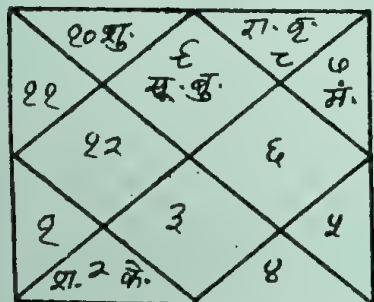
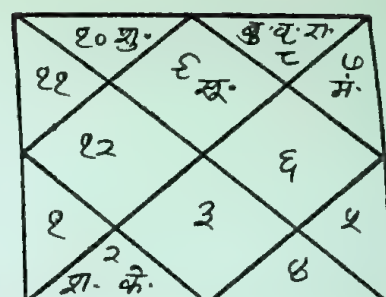
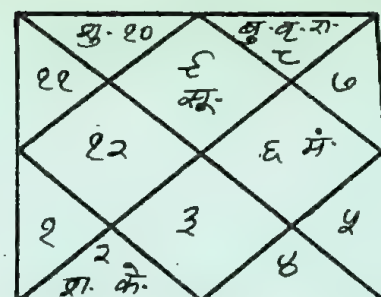
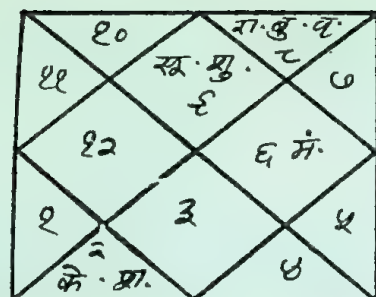
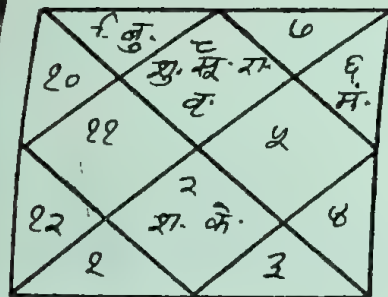


५०
२४९

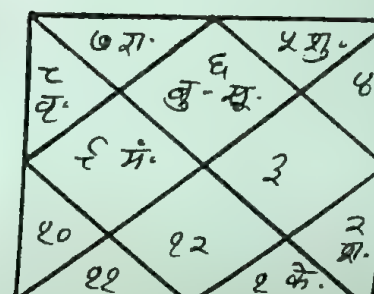
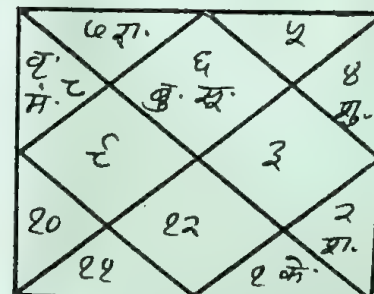
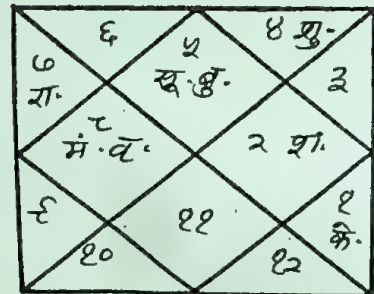
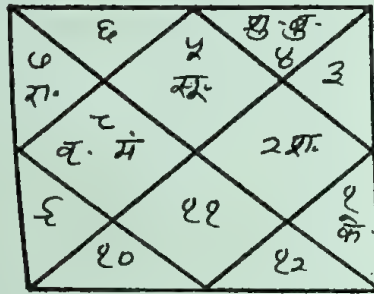
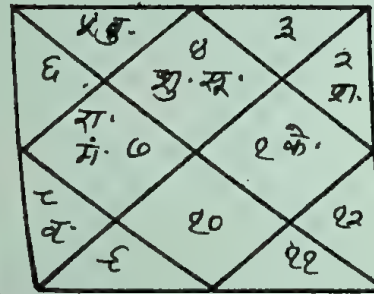
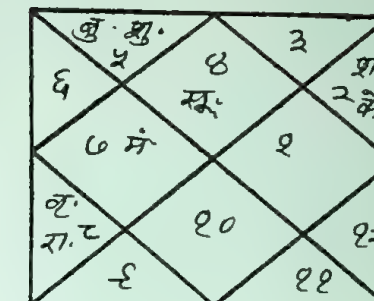
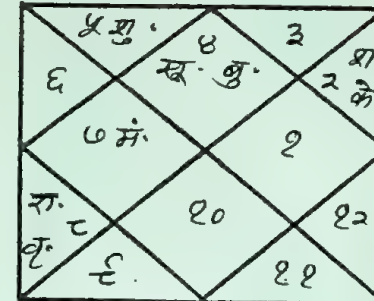
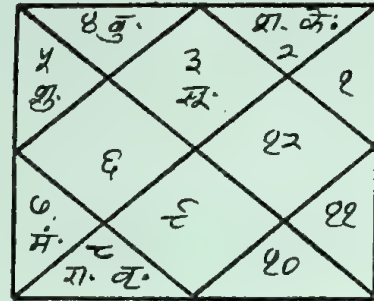
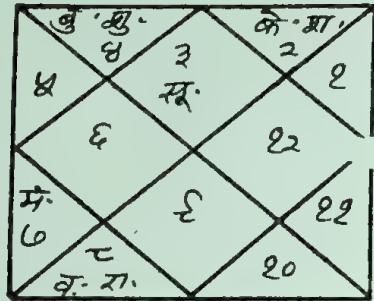
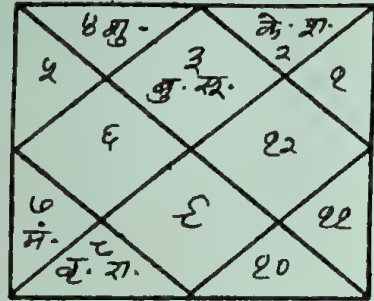
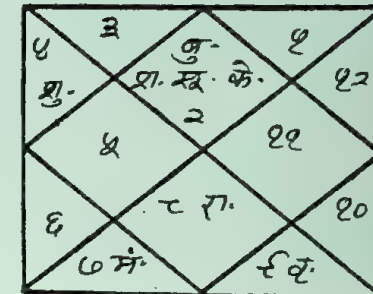
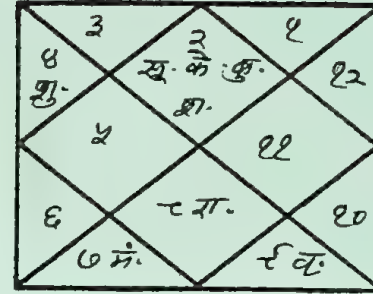
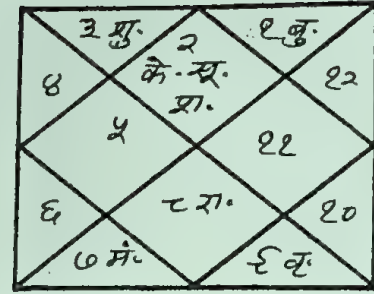
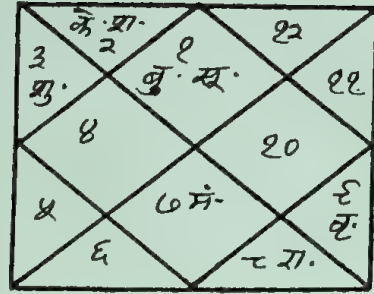
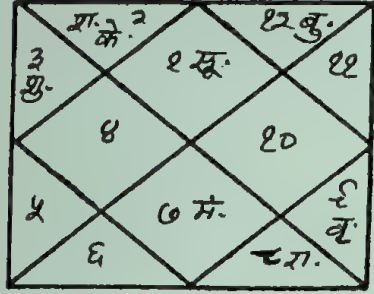


कु.
५०

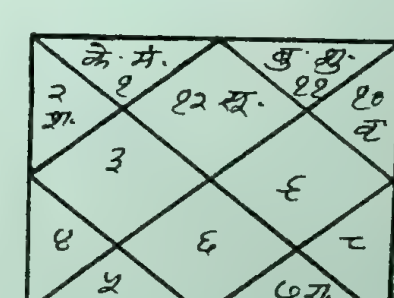
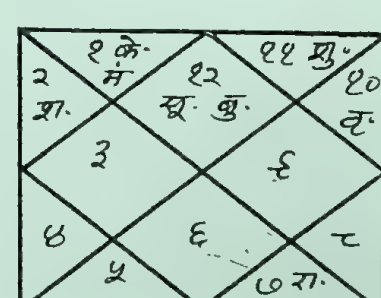
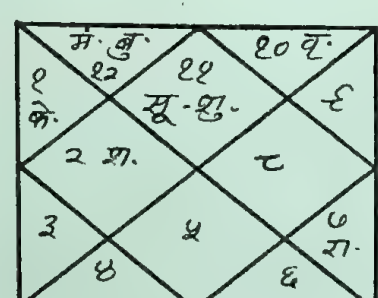
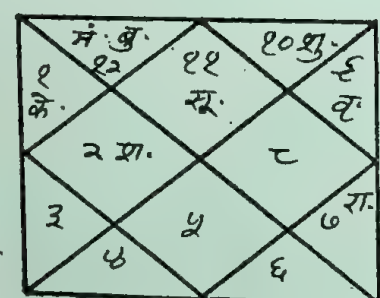
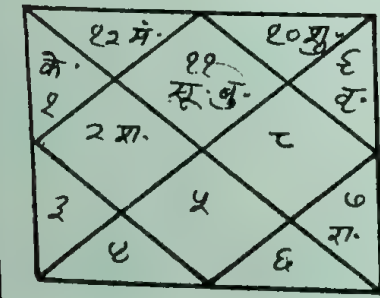
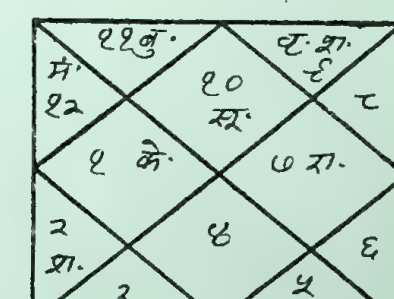
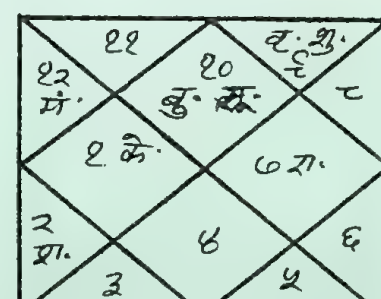
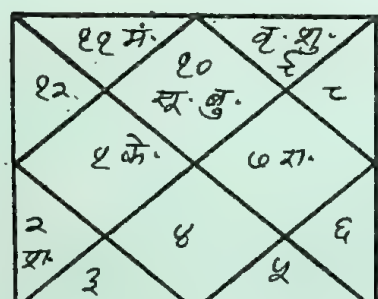
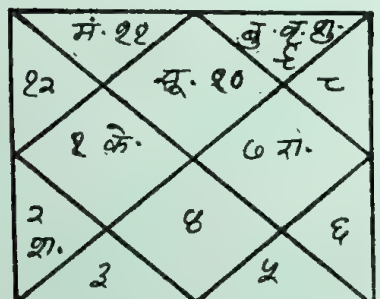
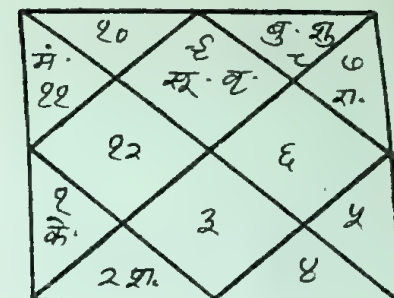
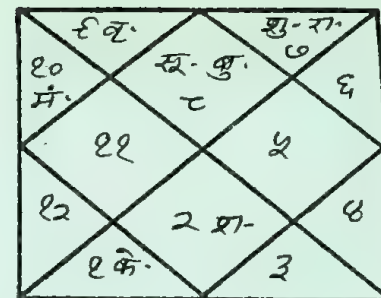
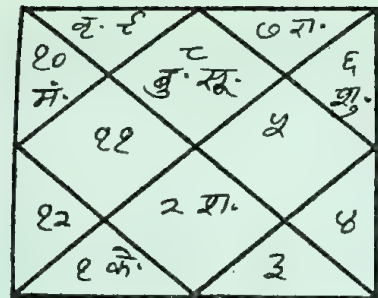
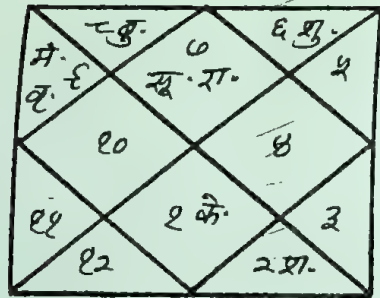
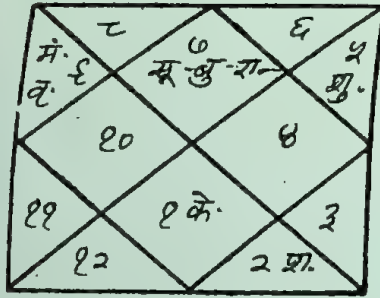
३४३
सं०



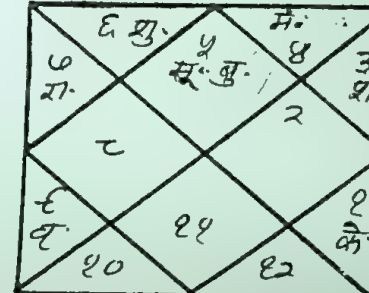
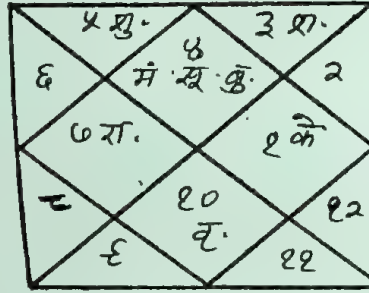
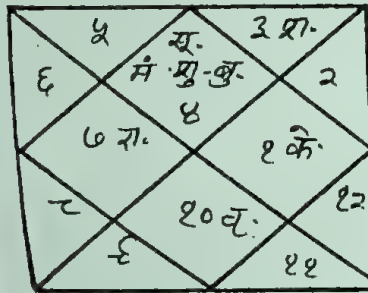
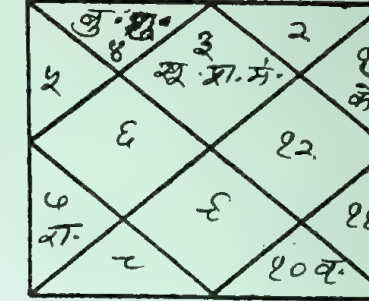
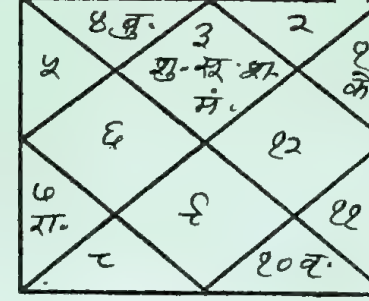
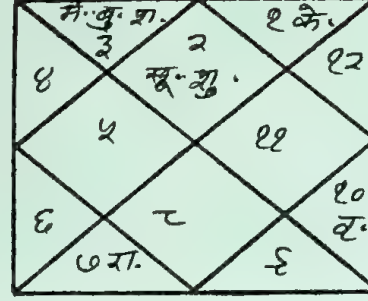
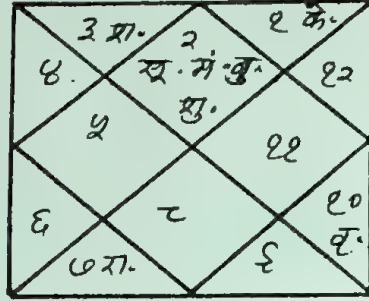
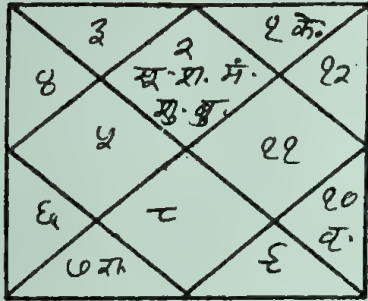
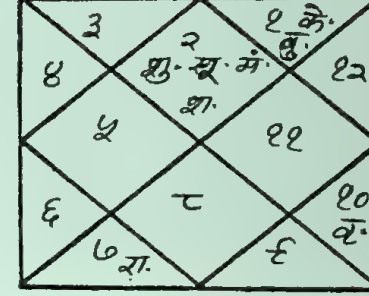
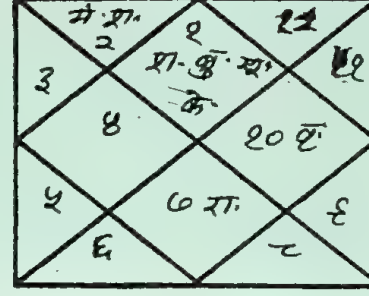
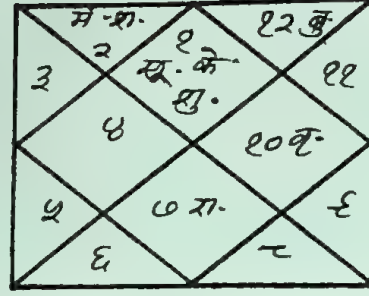
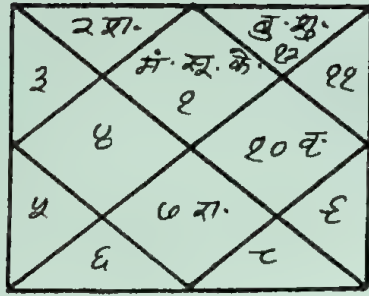
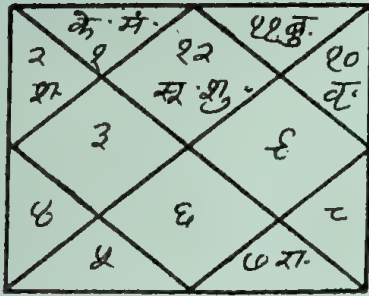
कु०
प०

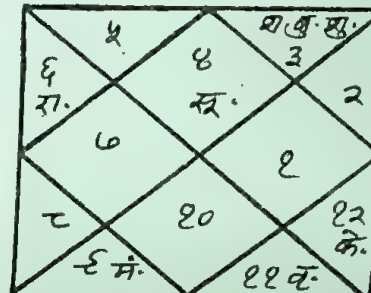
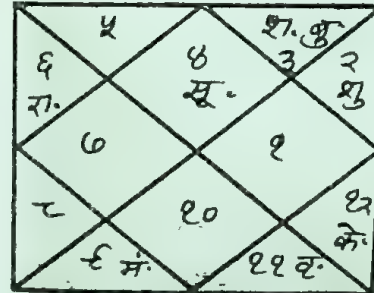
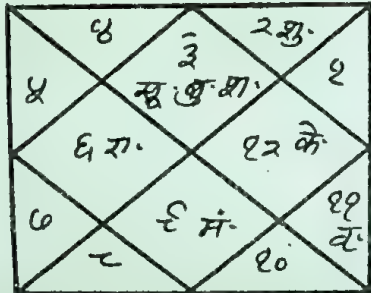
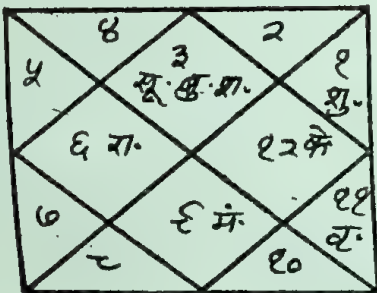
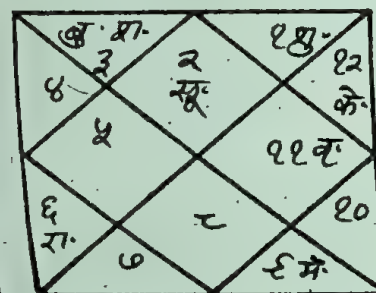
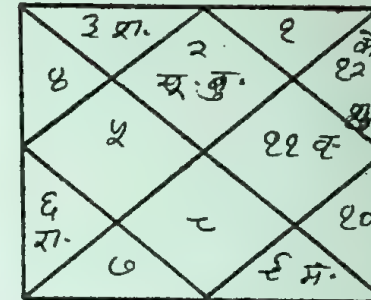
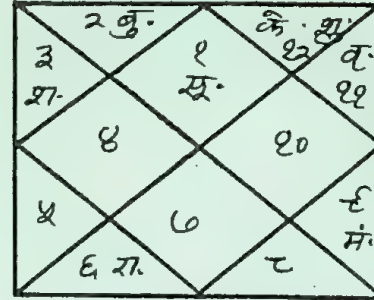
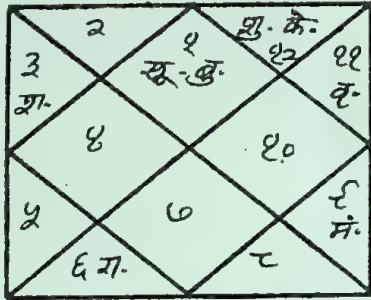
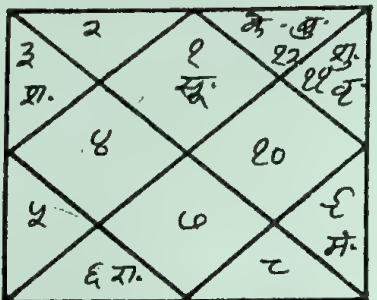
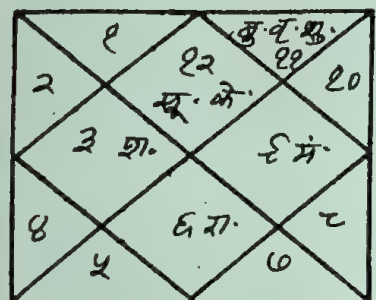
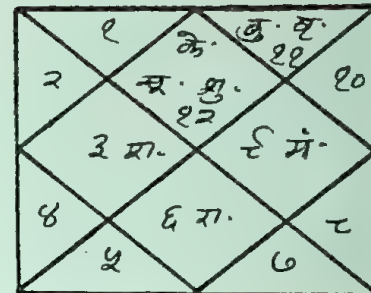
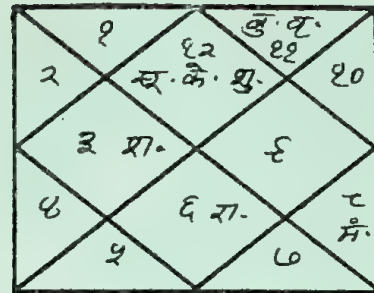
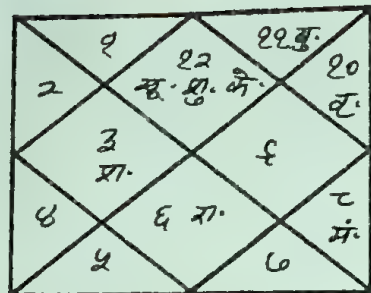
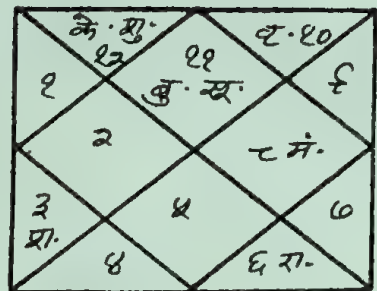
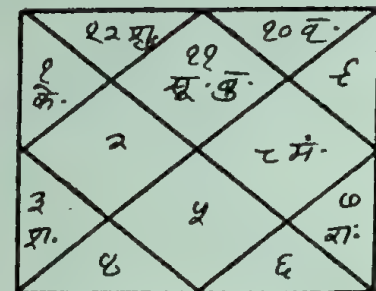


ਸੰ.
੨੫੩



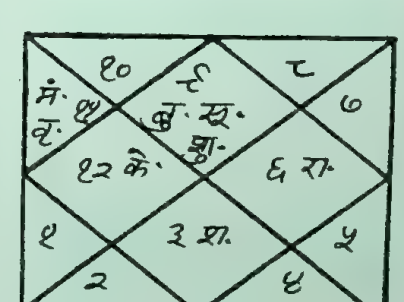
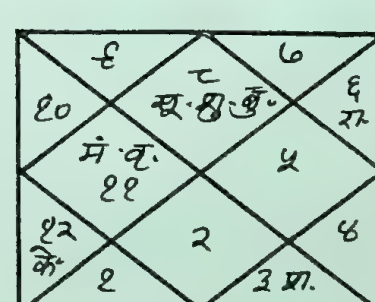
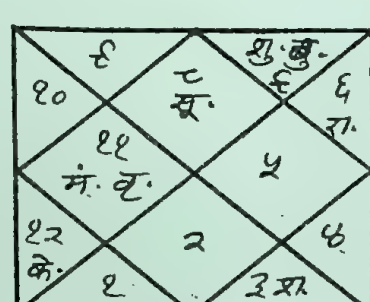
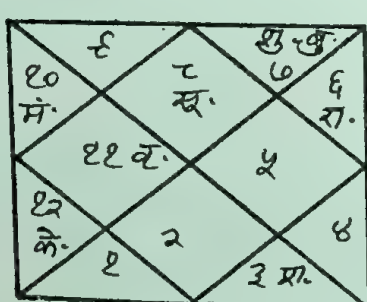
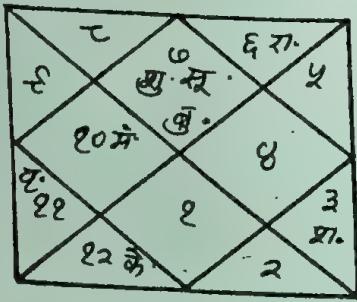
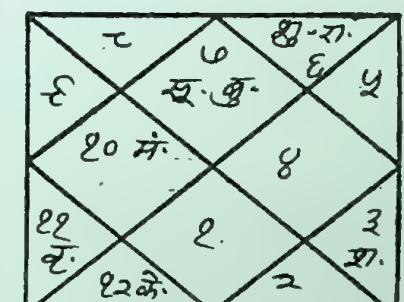
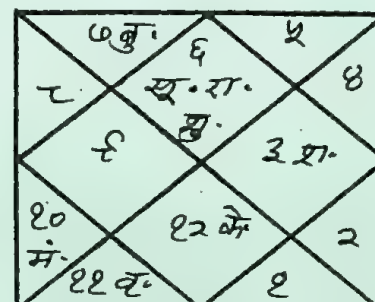
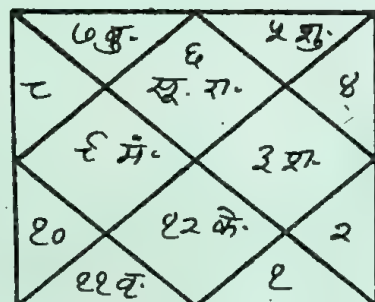
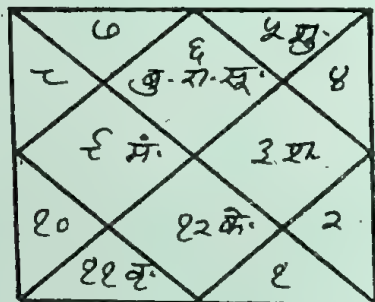
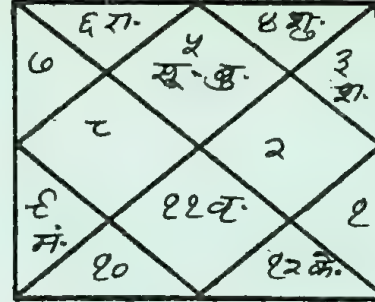
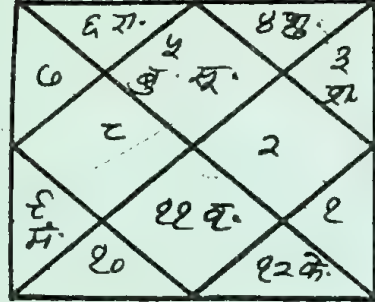
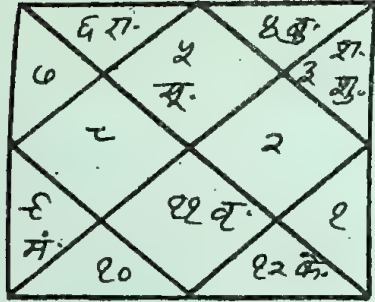
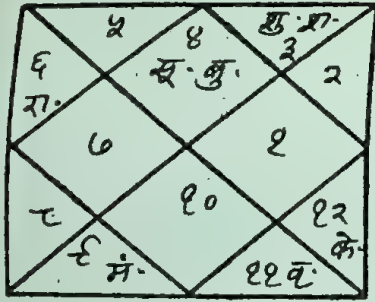
ਕੁ.
੫੦



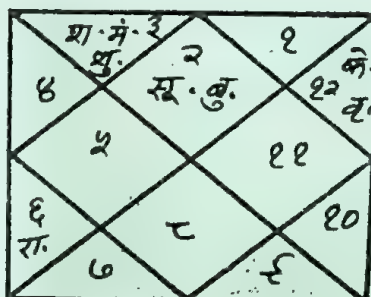
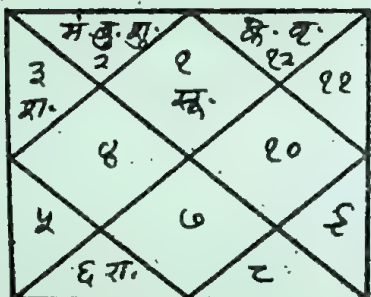
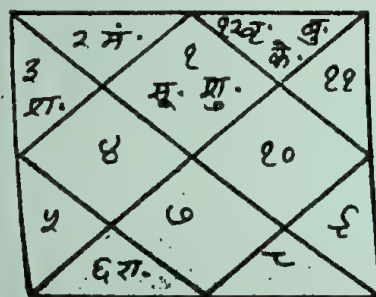
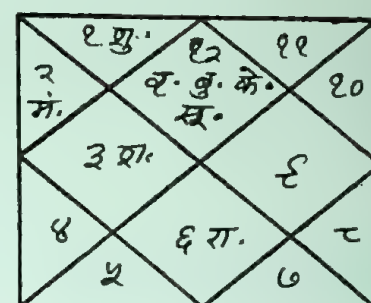
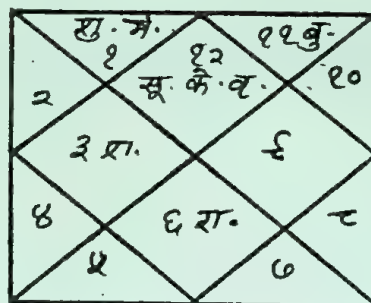
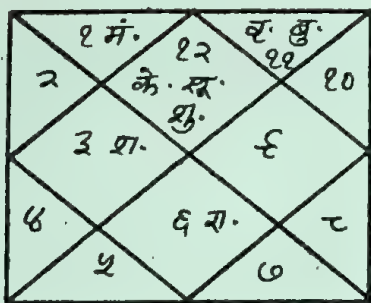
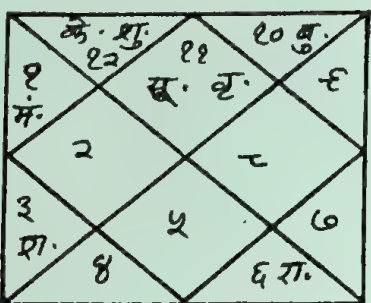
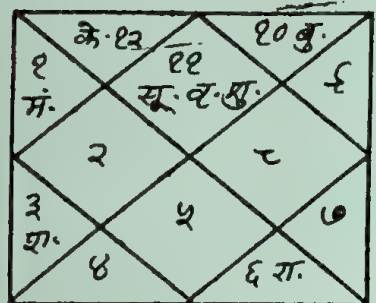
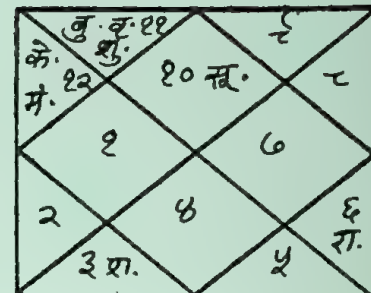
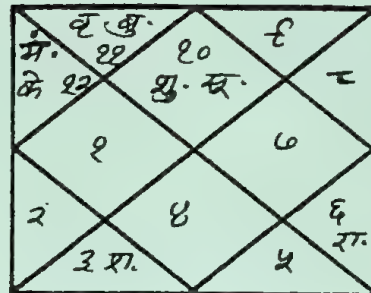
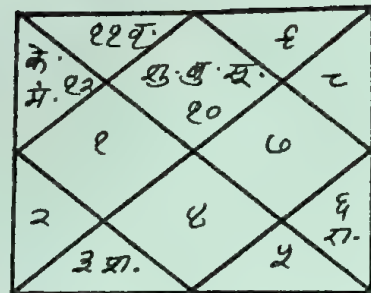
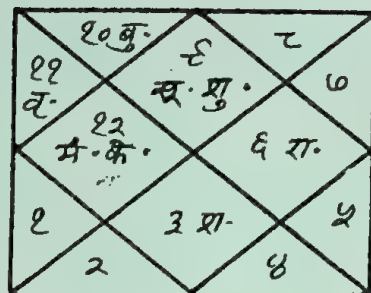
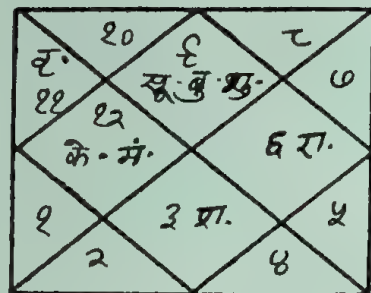


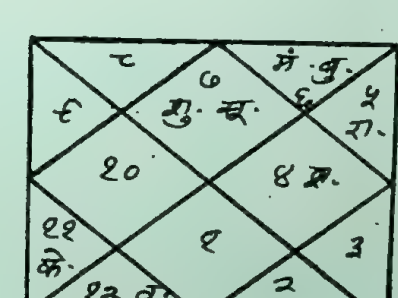
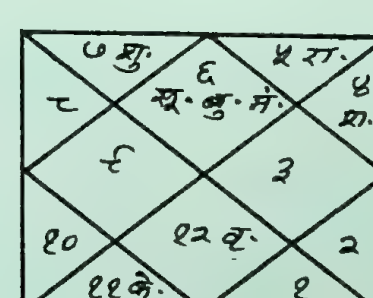
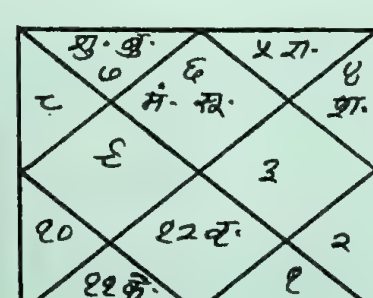
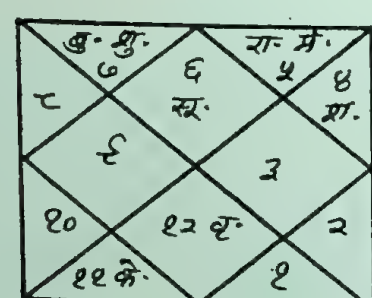
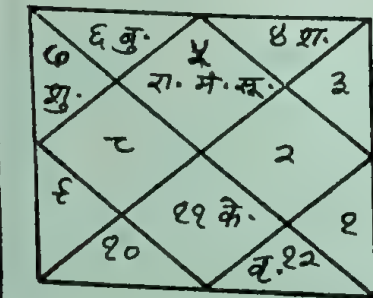
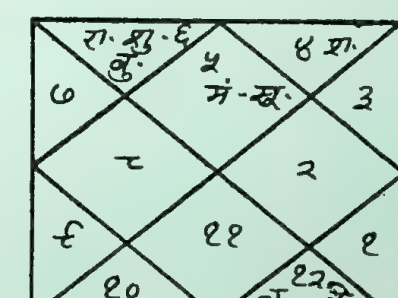
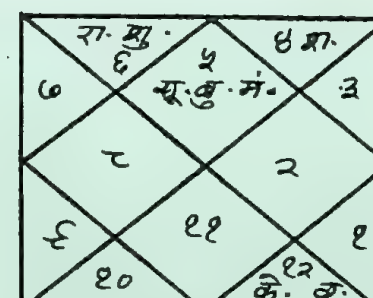
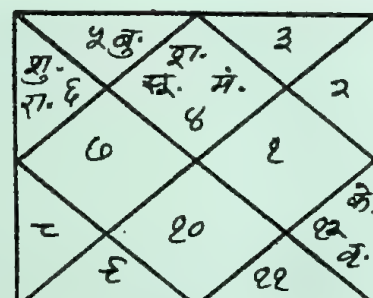
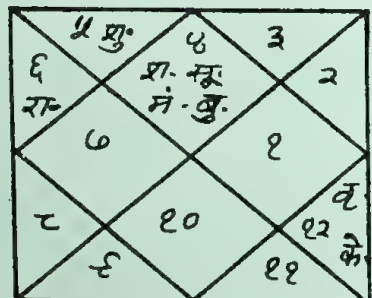
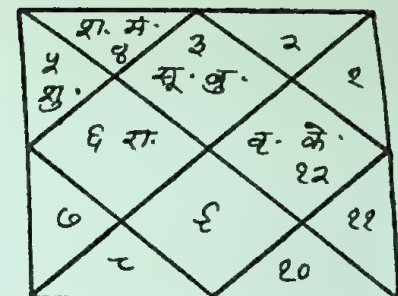
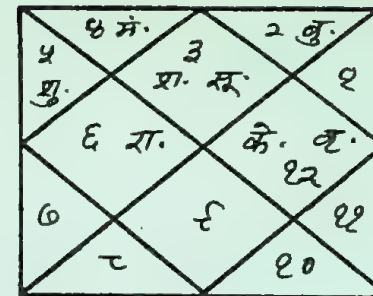
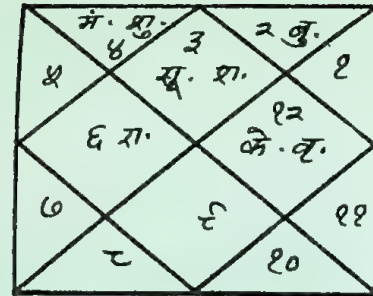
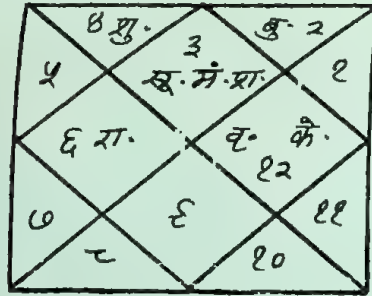
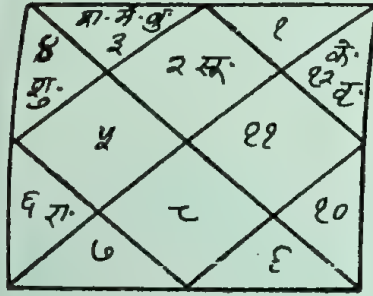
सं०
पं०

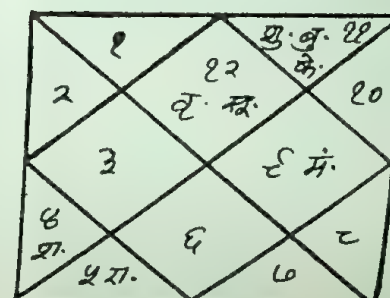
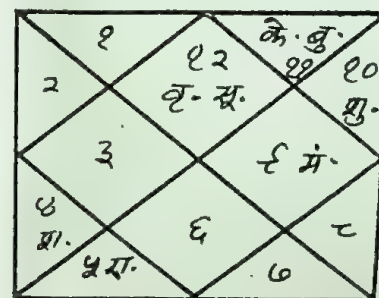
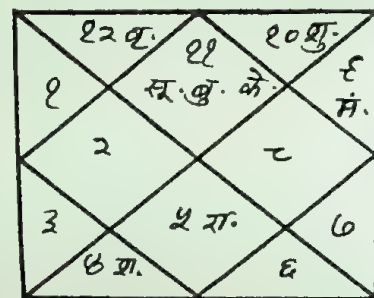
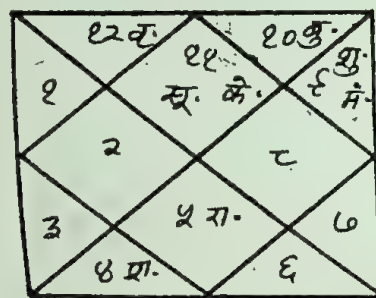
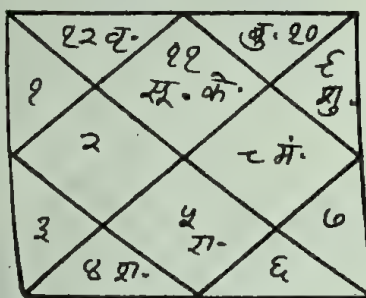
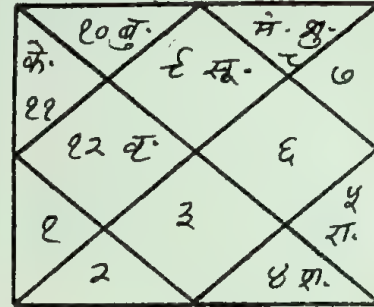
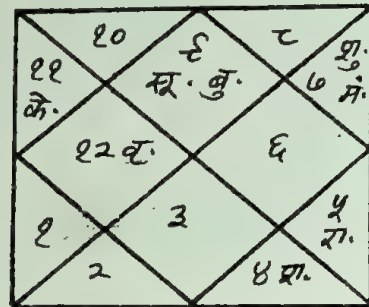
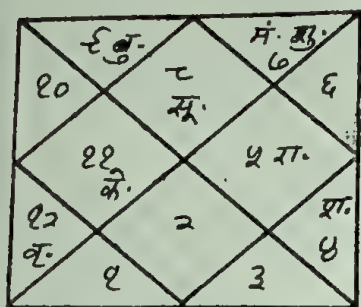
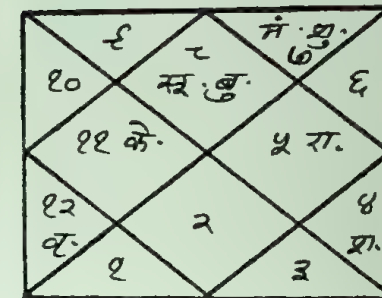
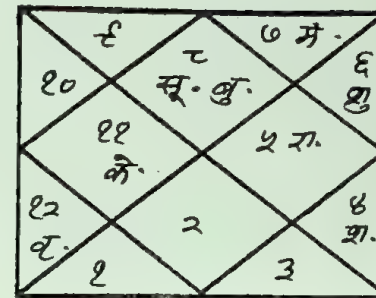
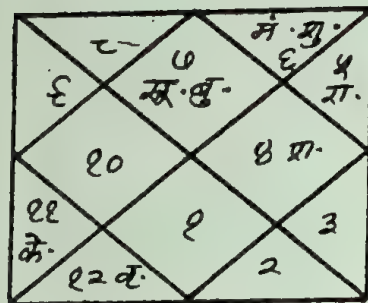
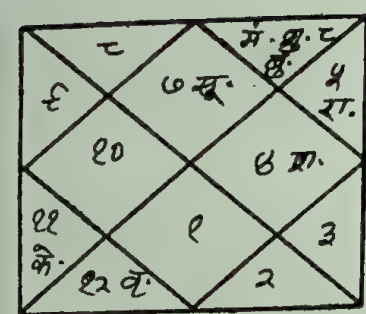
६४

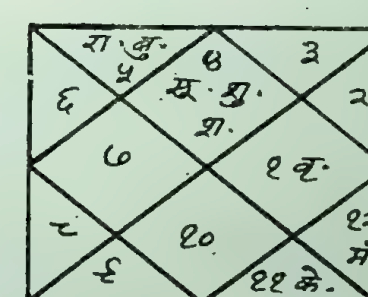
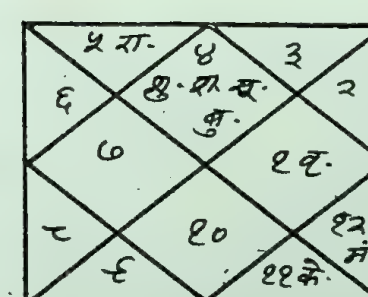
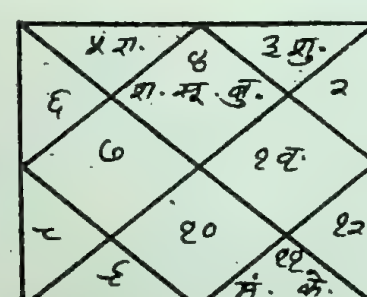
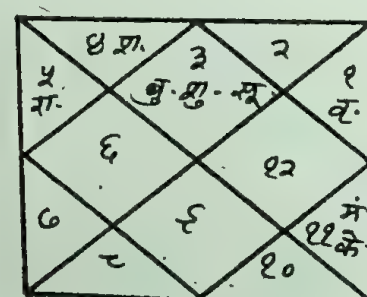
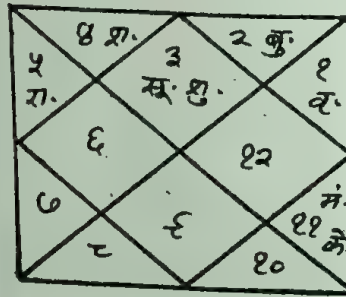
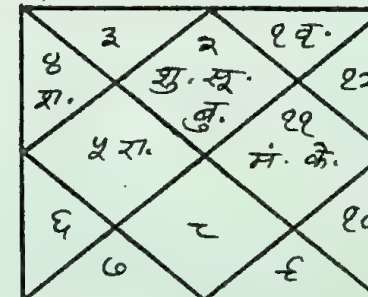
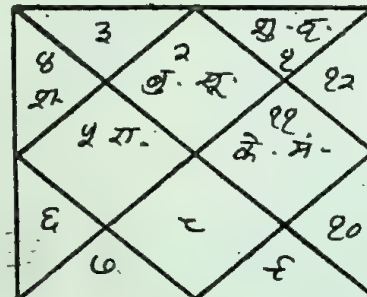
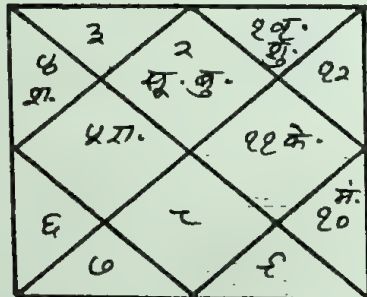
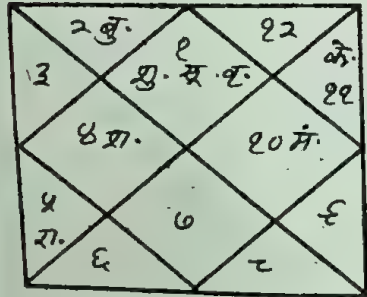
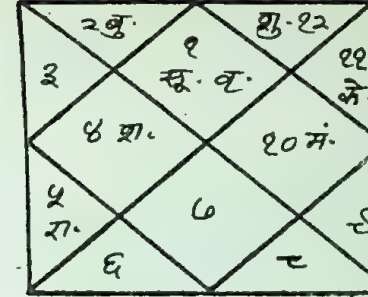
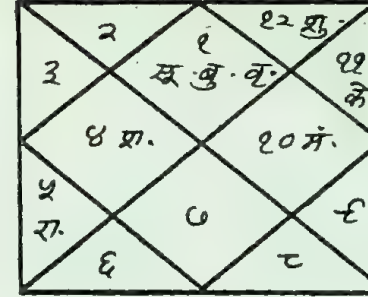
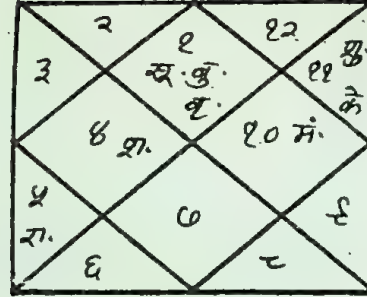
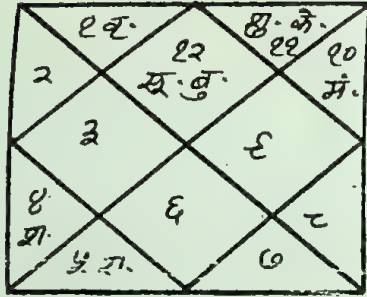
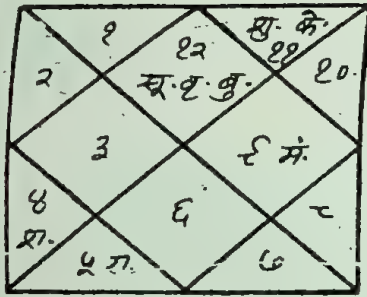


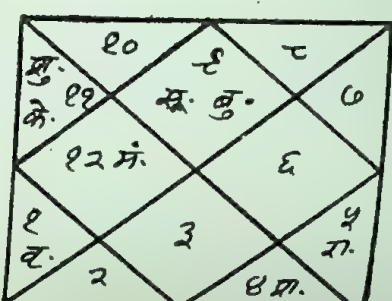
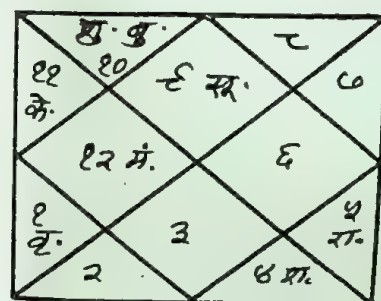
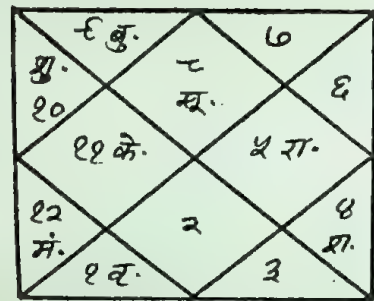
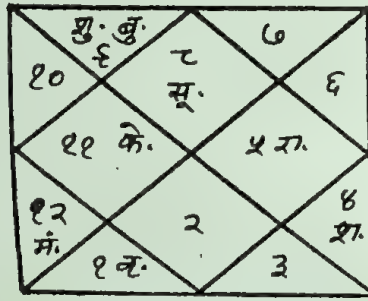
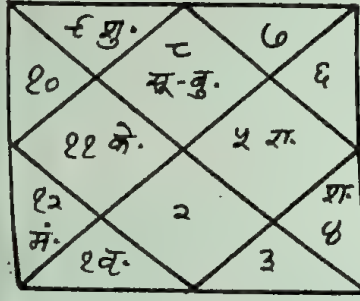
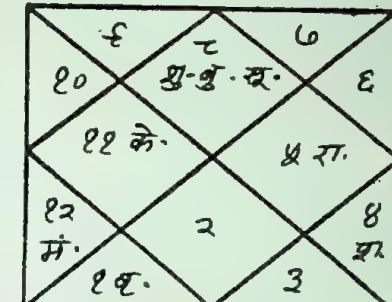
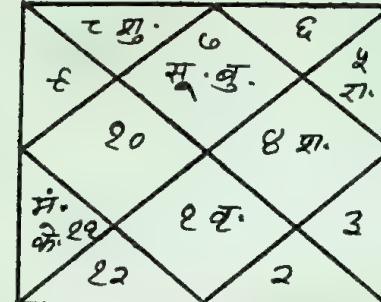
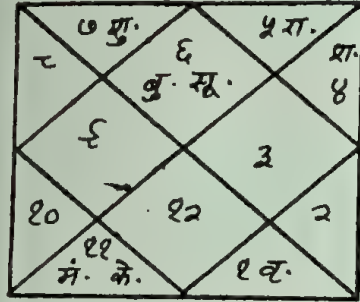
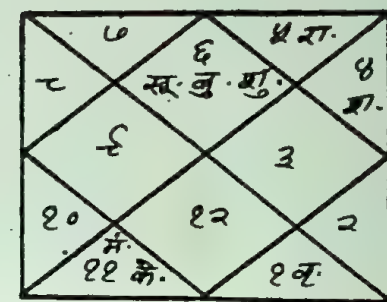
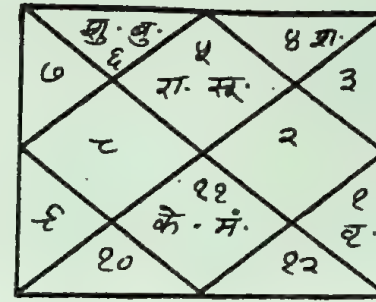
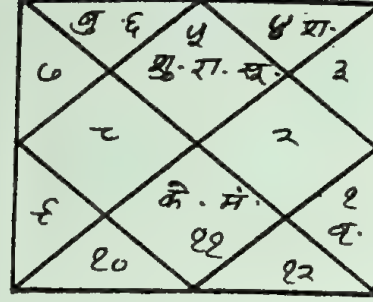
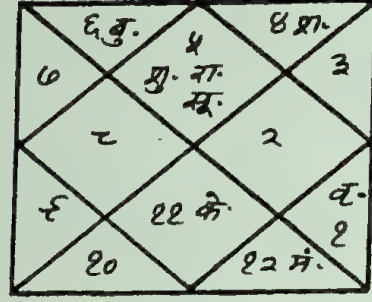
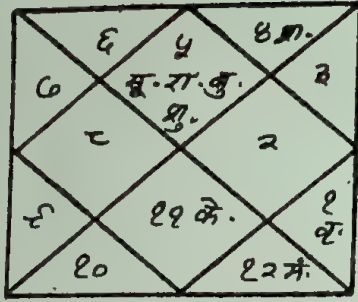
कुं०
पं०



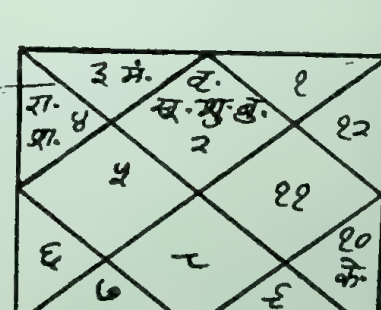
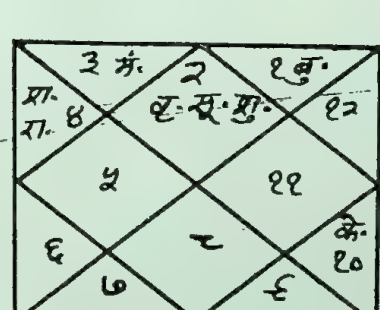
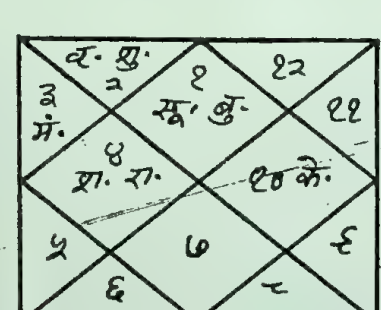
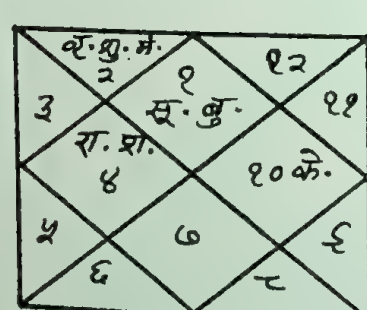
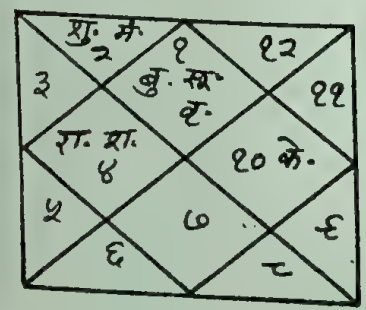
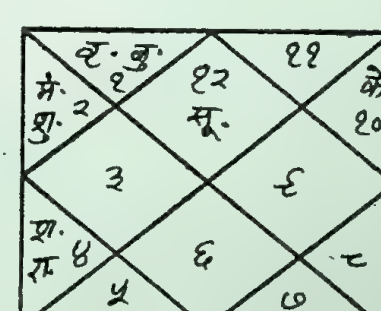
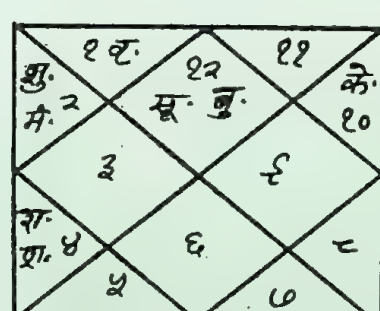
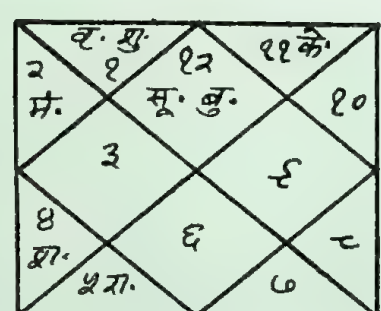
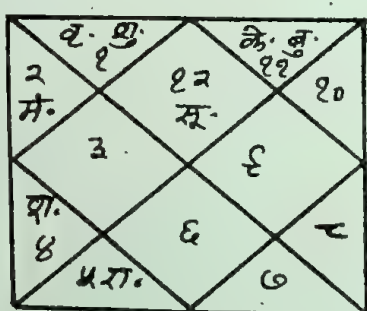
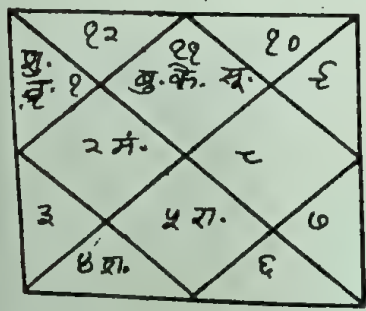
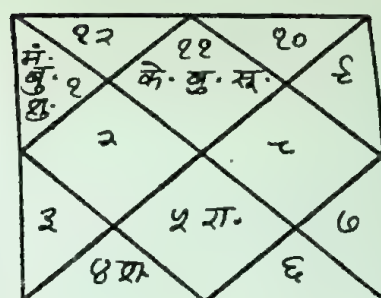
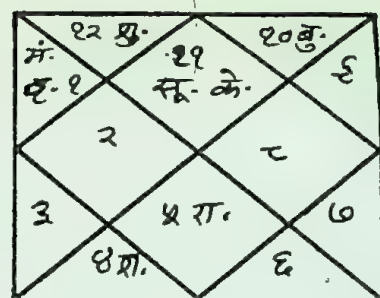
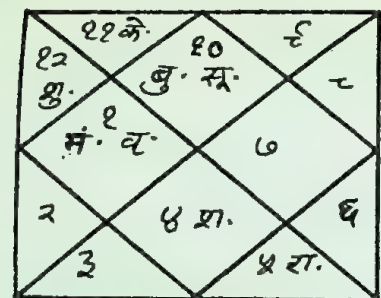
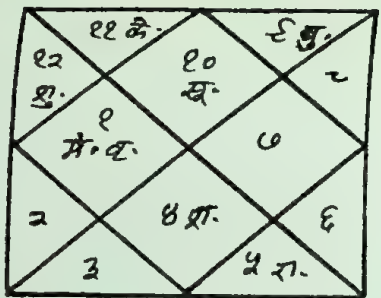
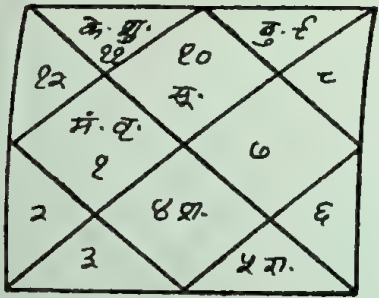








भृ०
सं०
२७७

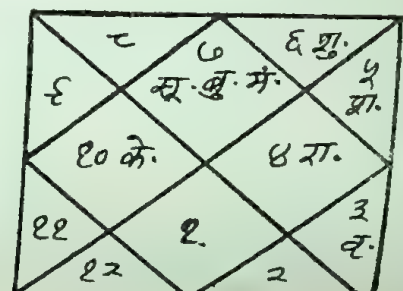
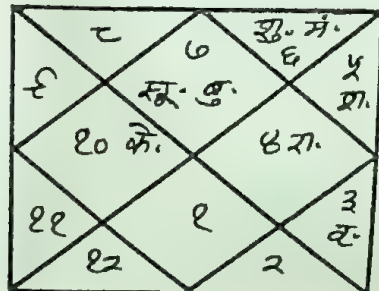
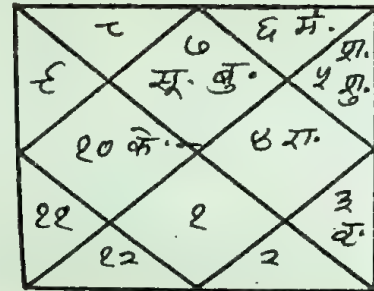
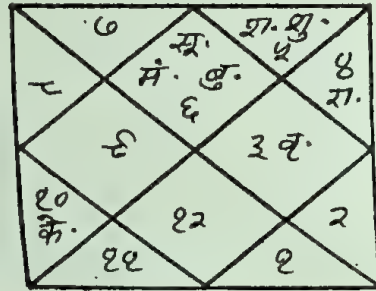
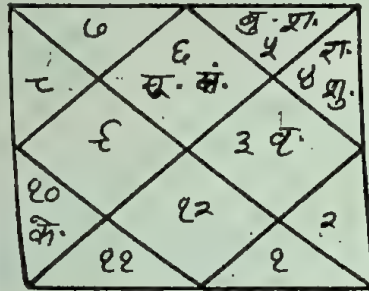
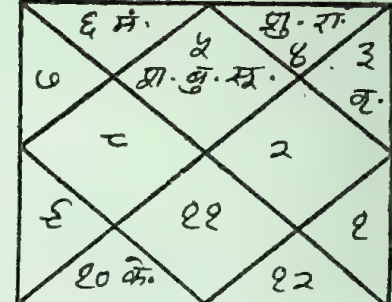
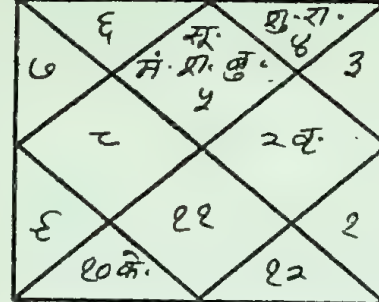
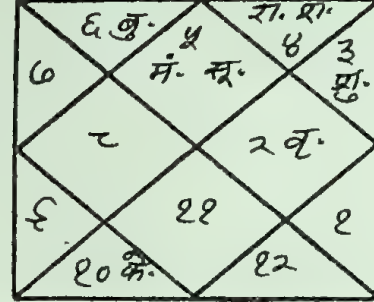
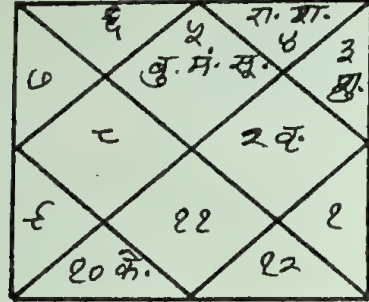
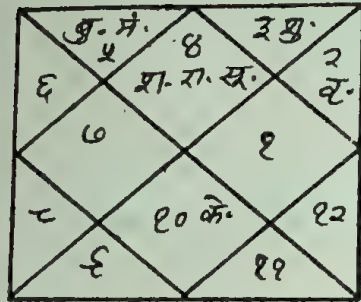
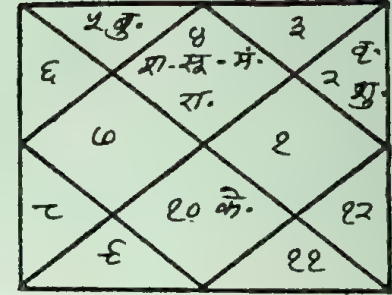
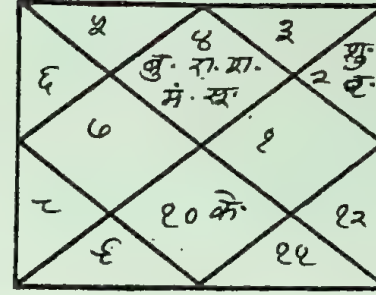
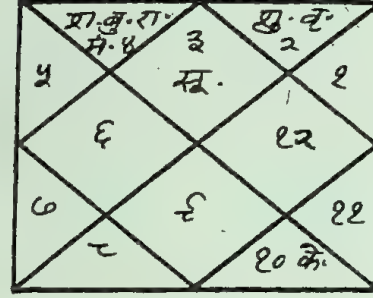
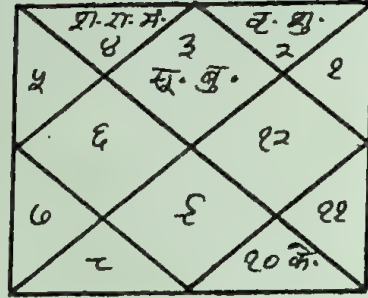
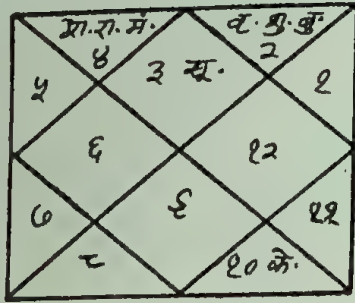


कु०
प०

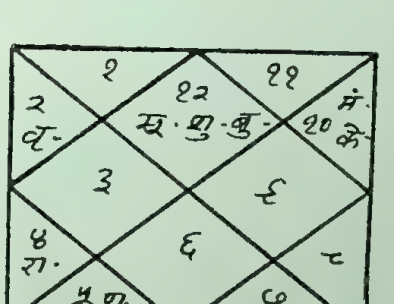
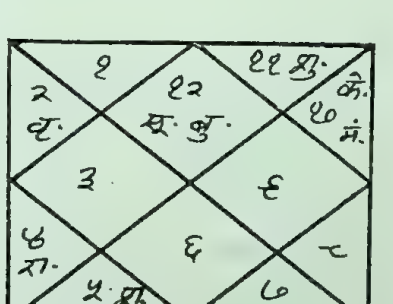
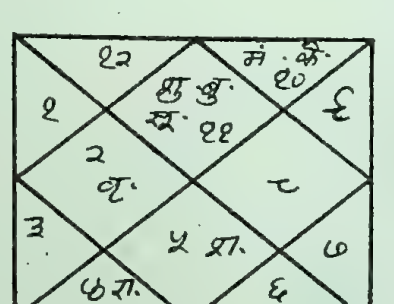
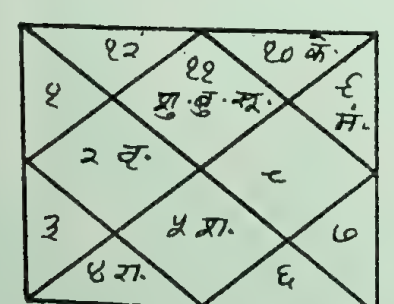
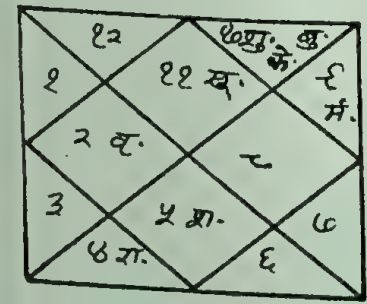
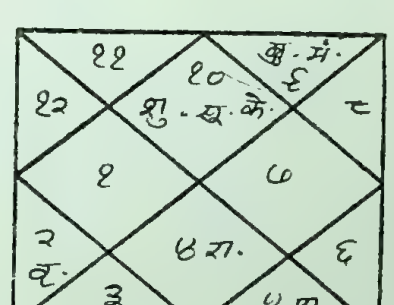
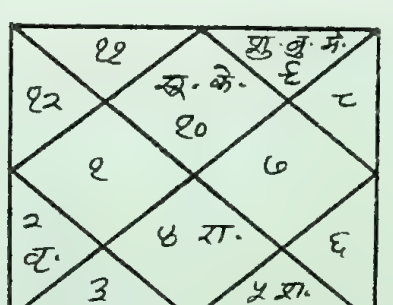
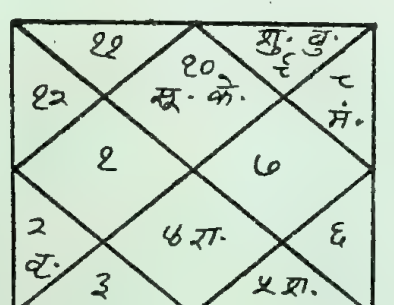
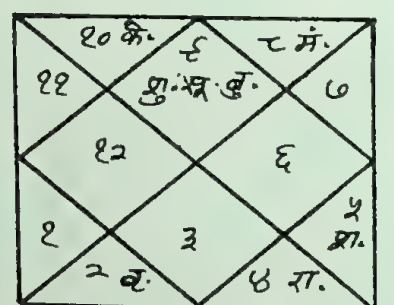
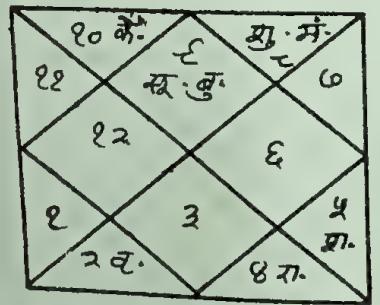
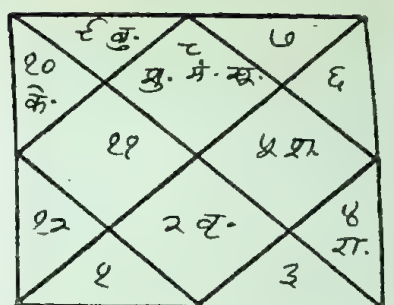
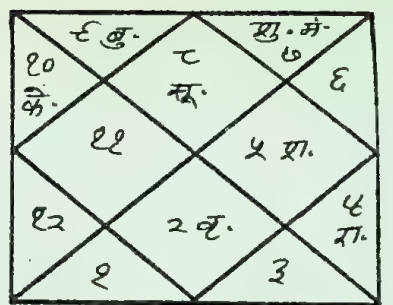
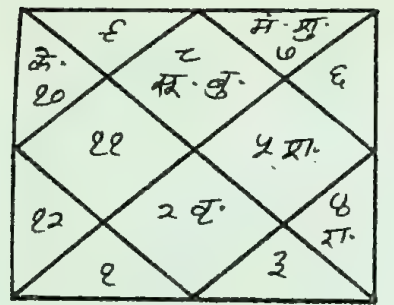
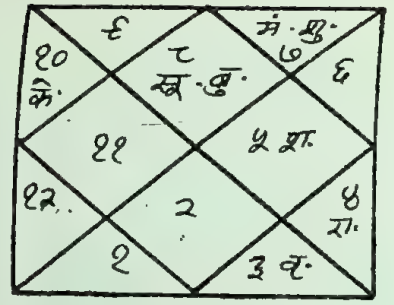
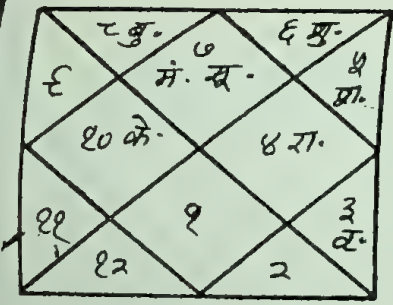
शुं सं०

२३२

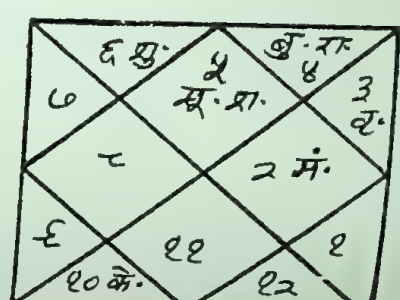
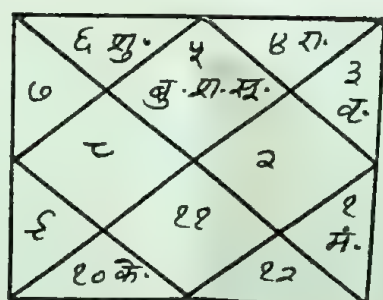
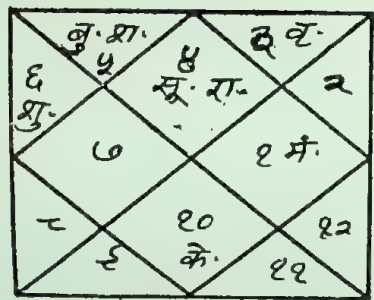
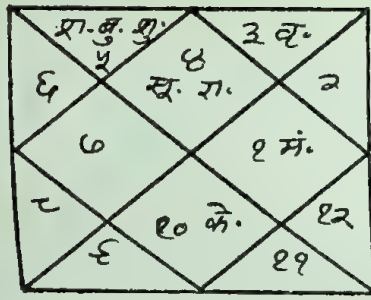
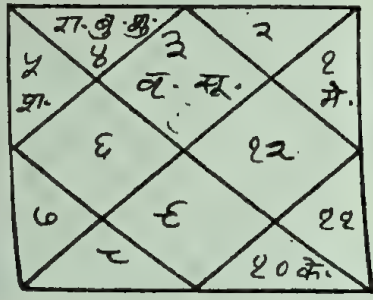
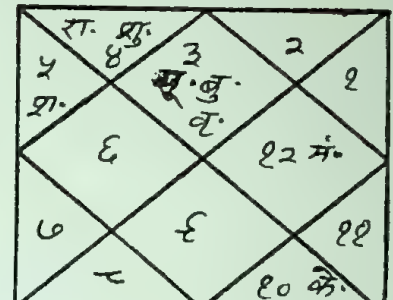
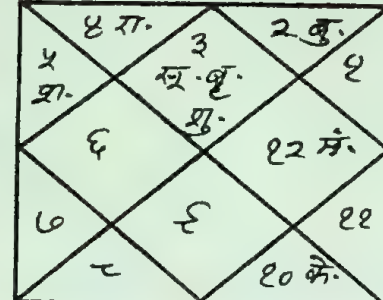
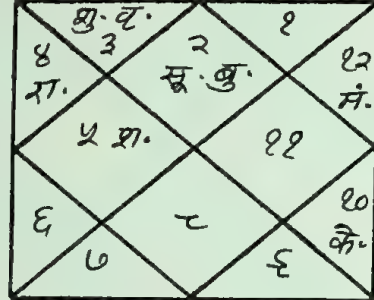
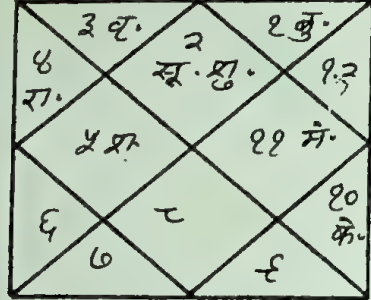
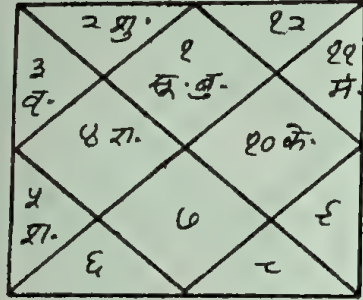
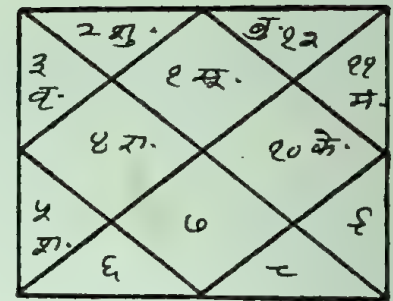
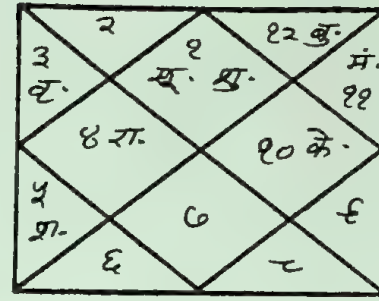
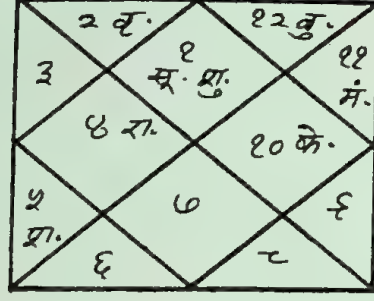
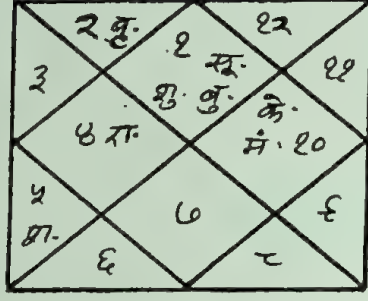
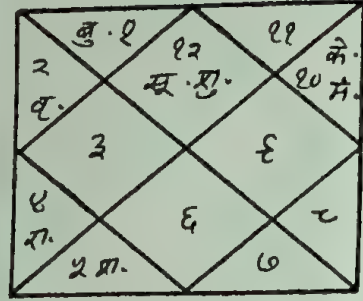
कु० प०



शुं.
सं.
१३०

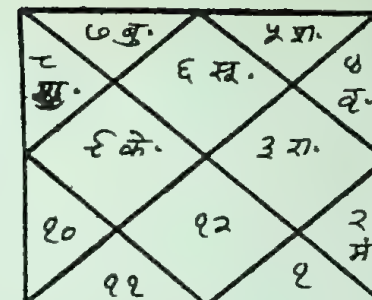
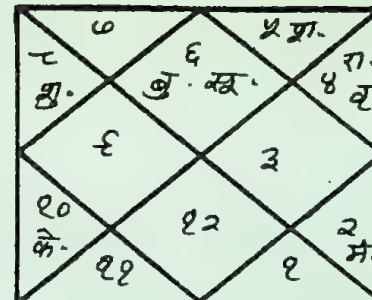
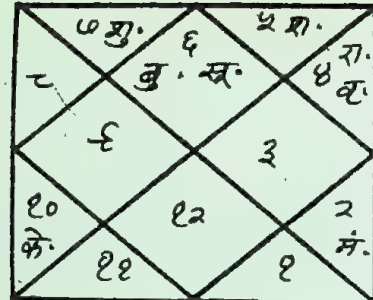
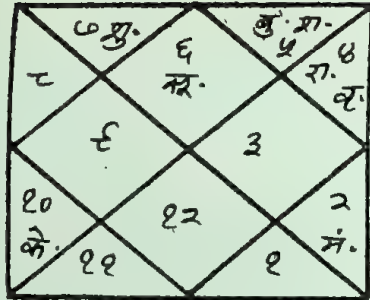
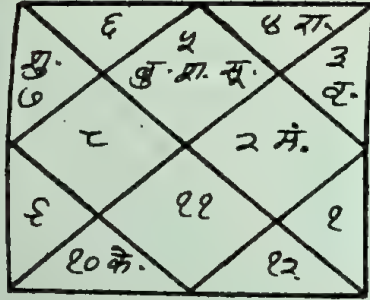


कुं.
पं.

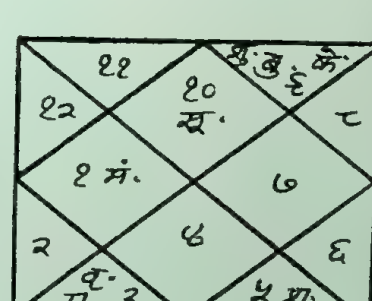
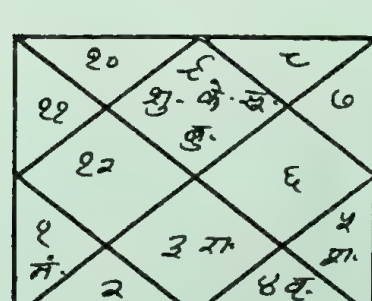
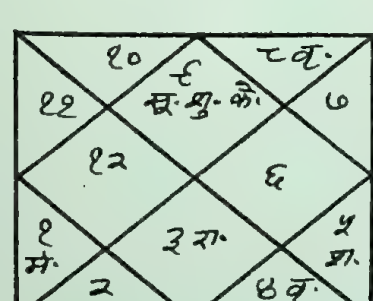
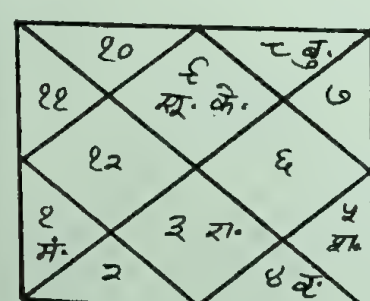
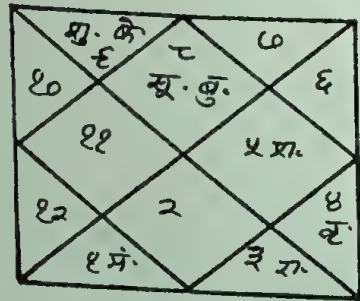
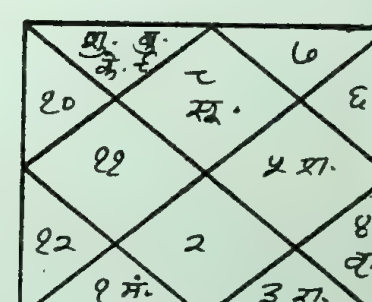
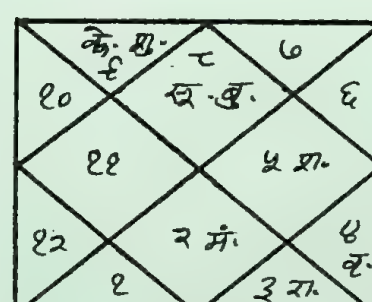
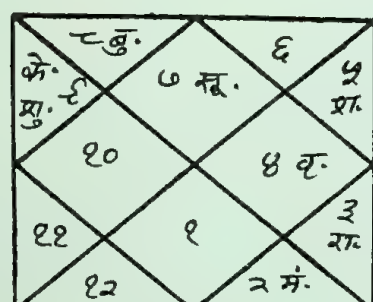
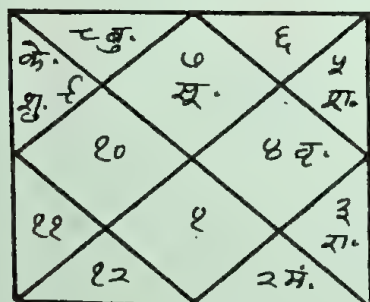
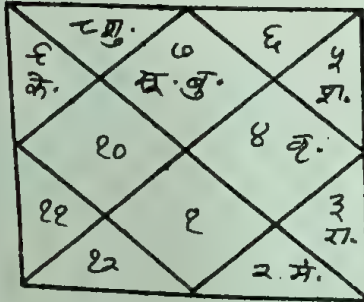


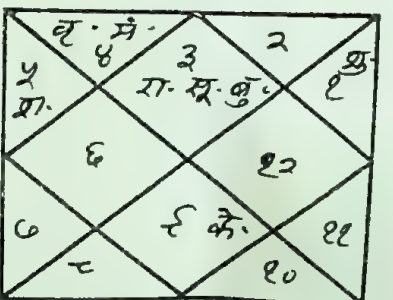
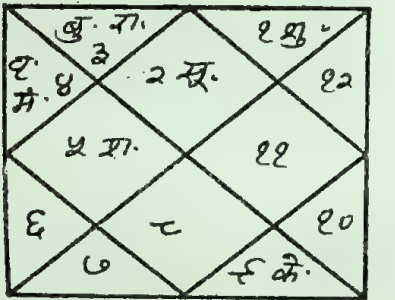
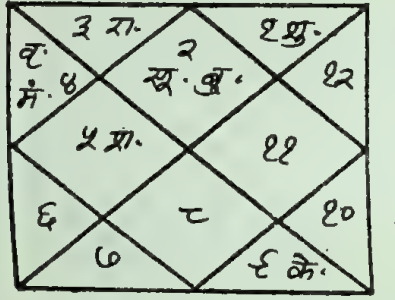
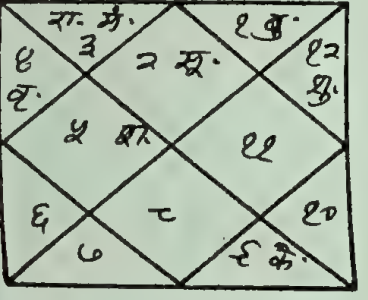
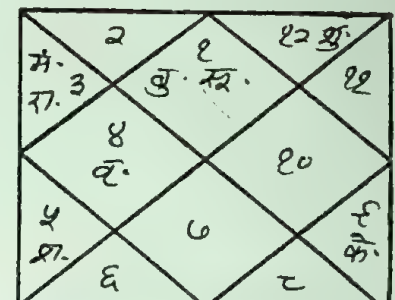
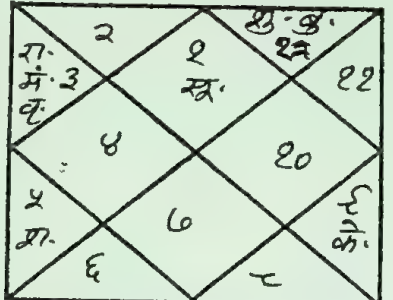
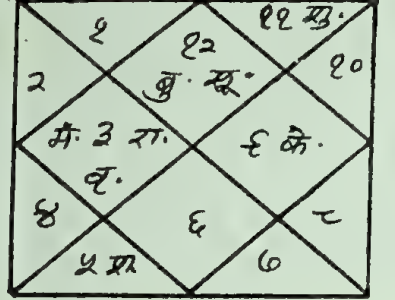
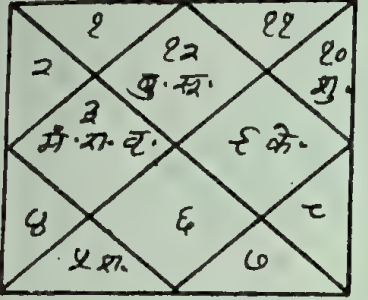
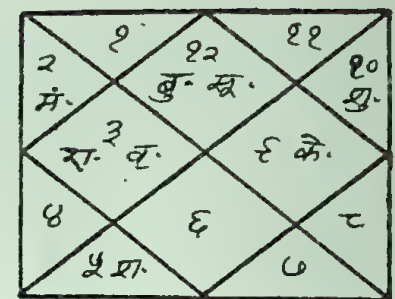
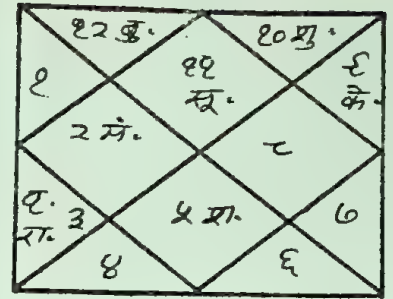
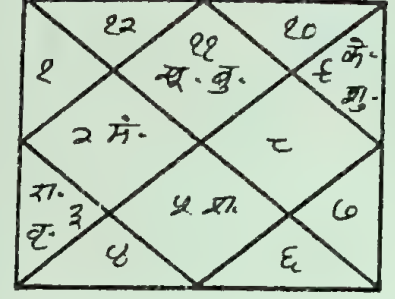
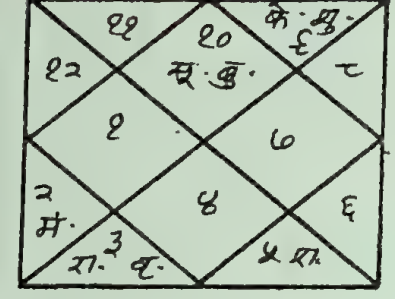
भू०
सं०

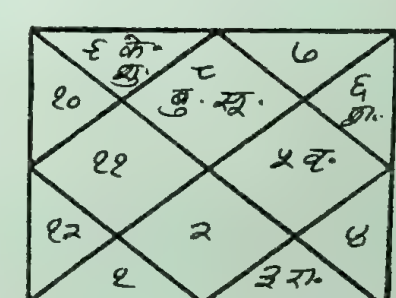
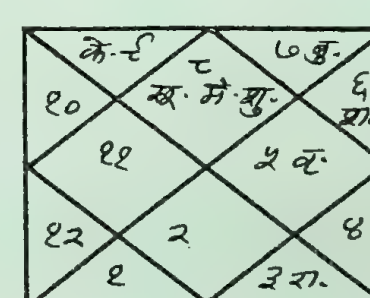
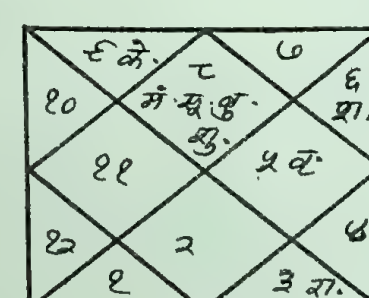
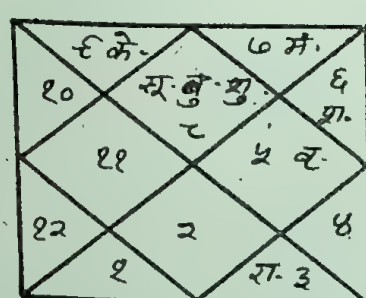
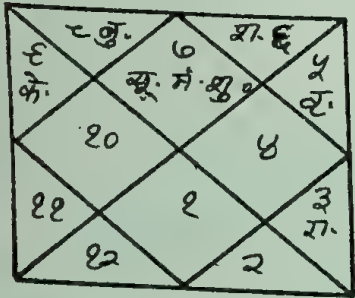
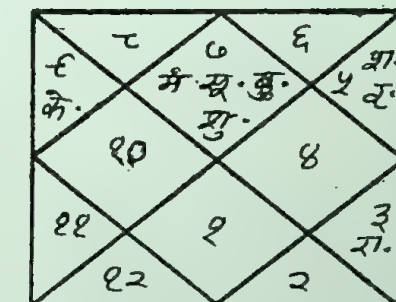
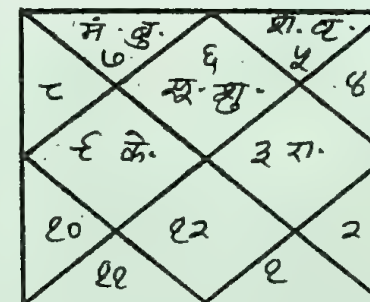
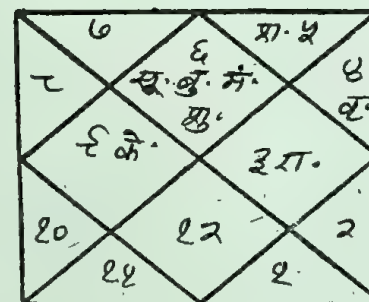
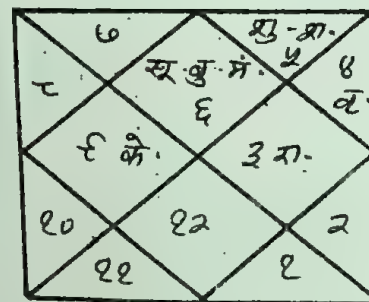
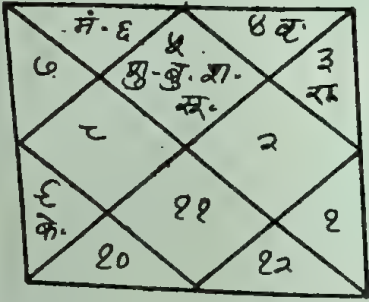
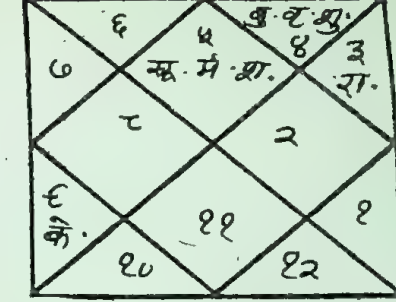
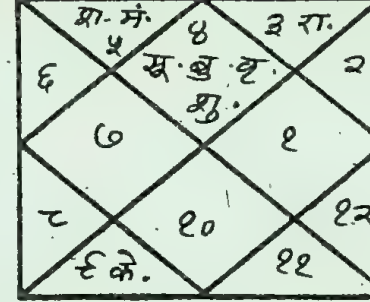
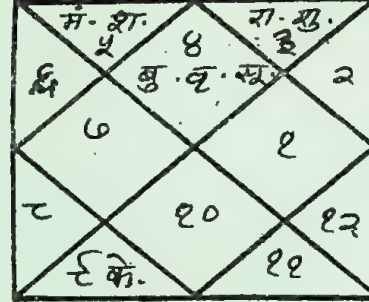
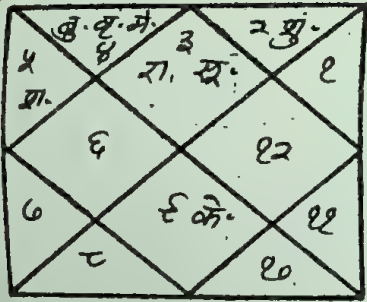
१०
११
१२

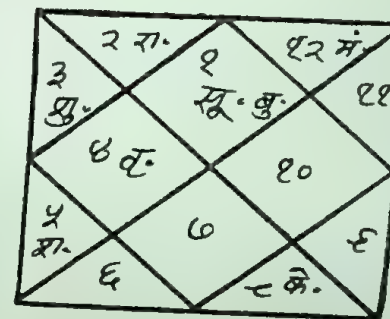
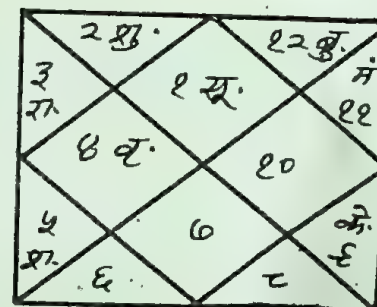
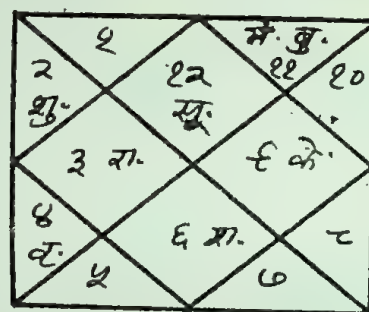
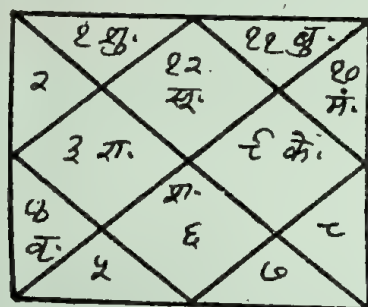
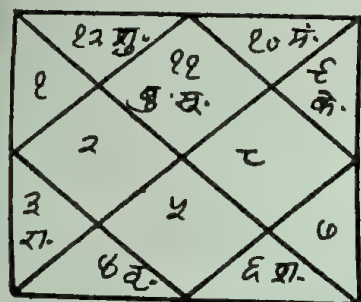
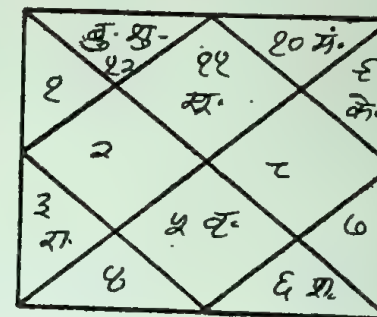
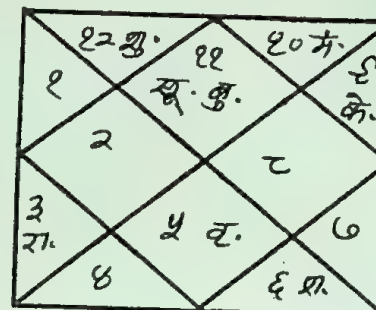
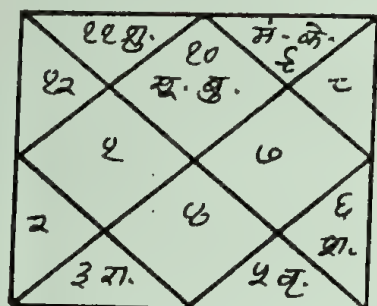
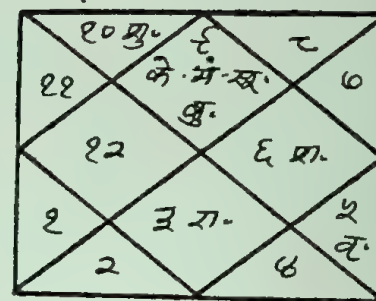
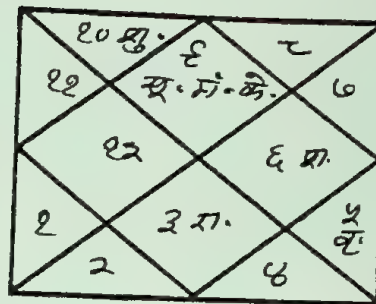
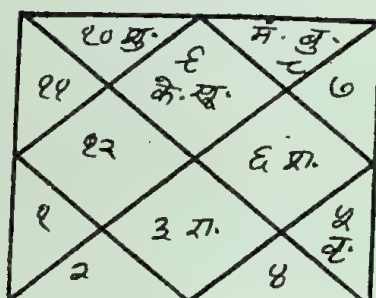
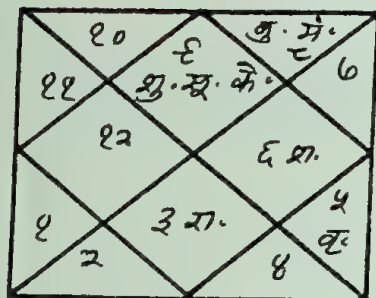
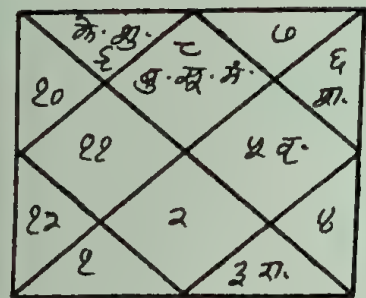


कु०
प०









३ शु.	२ रा.	१ मं.
४ वृ.	५ श.	६ क.
७	८	९

३ शु.	२ रा.	१ मं.
४ वृ.	५ श.	६ क.
७	८	९

३ शु.	२ रा.	१ मं.
४ वृ.	५ श.	६ क.
७	८	९

३ शु.	२ रा.	१ मं.
४ वृ.	५ श.	६ क.
७	८	९

३ शु.	२ रा.	१ मं.
४ वृ.	५ श.	६ क.
७	८	९

३ शु.	२ रा.	१ मं.
४ वृ.	५ श.	६ क.
७	८	९

३ शु.	२ रा.	१ मं.
४ वृ.	५ श.	६ क.
७	८	९

३ शु.	२ रा.	१ मं.
४ वृ.	५ श.	६ क.
७	८	९

३ शु.	२ रा.	१ मं.
४ वृ.	५ श.	६ क.
७	८	९

३ शु.	२ रा.	१ मं.
४ वृ.	५ श.	६ क.
७	८	९

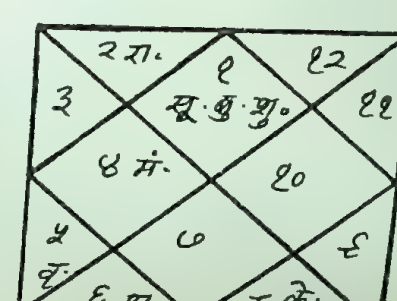
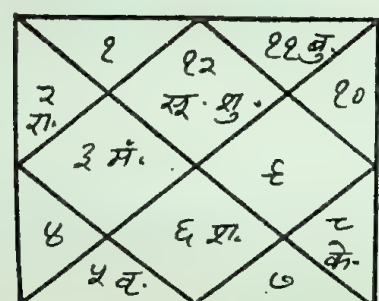
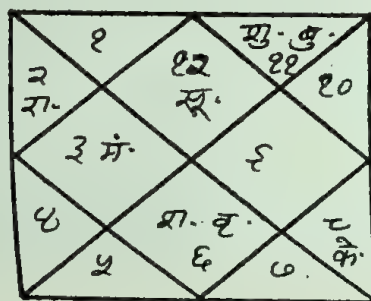
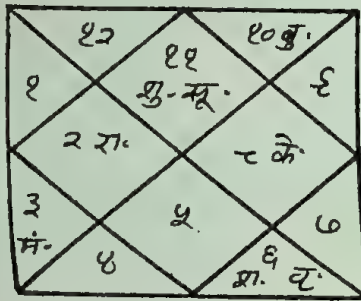
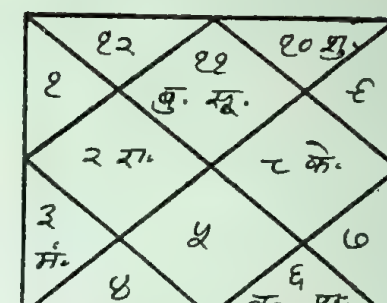
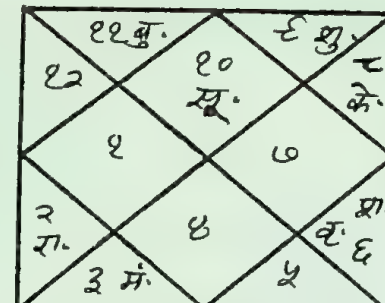
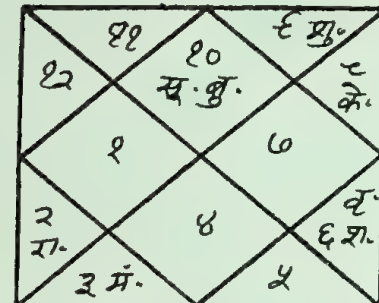
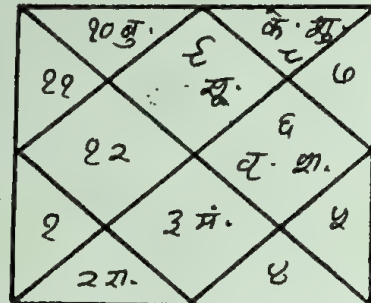
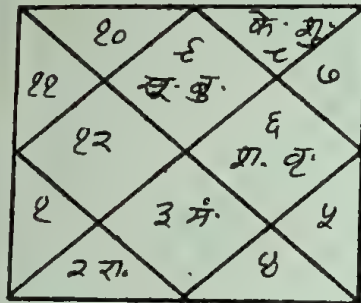
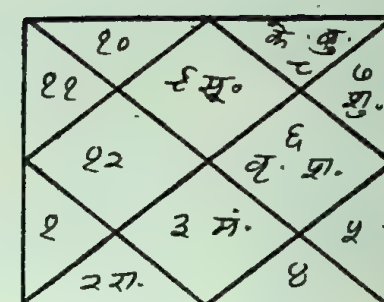
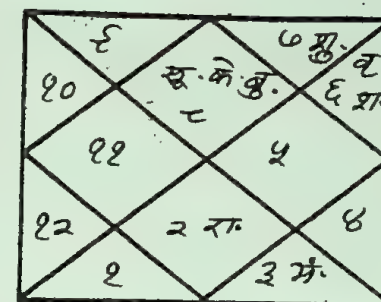
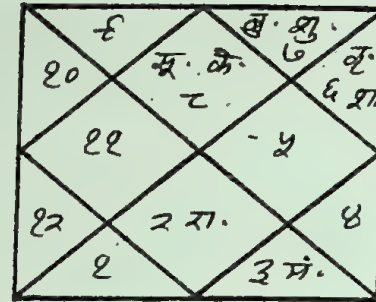
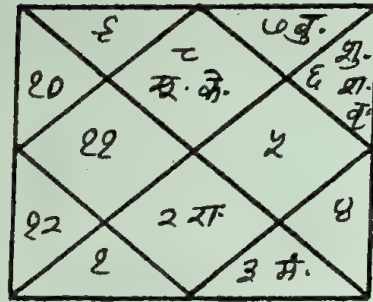
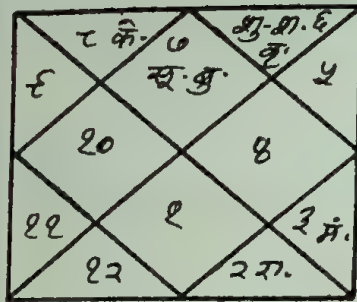
३ शु.	२ रा.	१ मं.
४ वृ.	५ श.	६ क.
७	८	९

३ शु.	२ रा.	१ मं.
४ वृ.	५ श.	६ क.
७	८	९

३ शु.	२ रा.	१ मं.
४ वृ.	५ श.	६ क.
७	८	९

३ शु.	२ रा.	१ मं.
४ वृ.	५ श.	६ क.
७	८	९

३ शु.	२ रा.	१ मं.
४ वृ.	५ श.	६ क.
७	८	९



कु.रा. १	१२	११	३
स.शु.	१०	६	४ सं.
५ वं.	६ श.	८ के.	६

३	२	१	४ सं.
कु.रा.स.	११	६	५ वं.
शु.	१०	८ के.	६ श.

३ कु.	२	१	४ सं.
स.शु.रा.	११	६	५ वं.
६ श.	१०	८ के.	६

४ सं.	२	२ रा.	५ वं.
स.शु.	१२	६	६ श.
७	८ के.	१०	११

४	३	२ रा.	५ वं.
स.शु.कु.	१२	६	६ श.
७	८ के.	१०	११

सु.४	३	२ रा.	५ सं.
कु.स.	१२	६	६ श.
७	८ के.	१०	११

५ सं.	४	३ कु.	६ श.
सु.स.	१२	६	७
८ के.	१०	११	१२

सं.शु.	४	३	६ श.
कु.स.	१२	६	७
८ के.	१०	११	१२

५	४	३	६ श.
स.कु.	१२	६	७
८ के.	१०	११	१२

श.कु.सं.	४	३	६ श.
स.कु.शु.	१२	६	७
८ के.	१०	११	१२

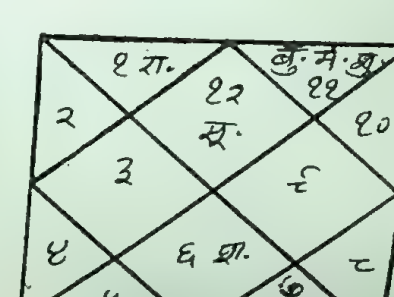
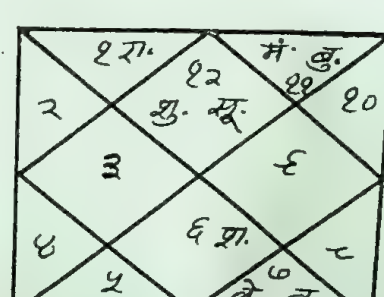
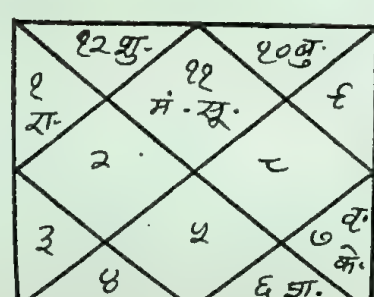
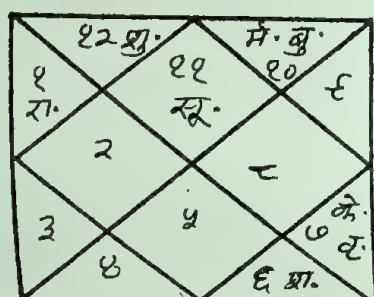
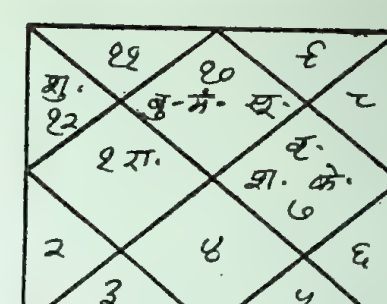
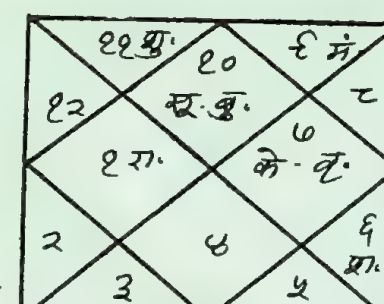
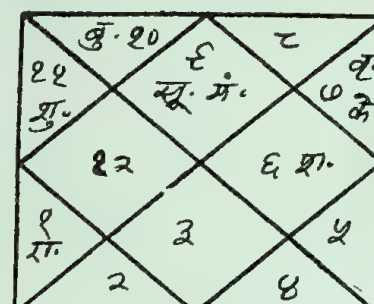
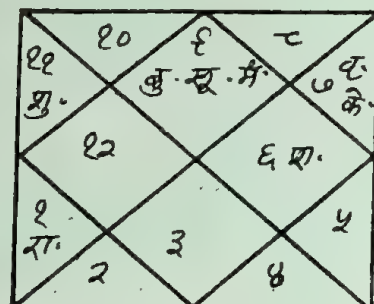
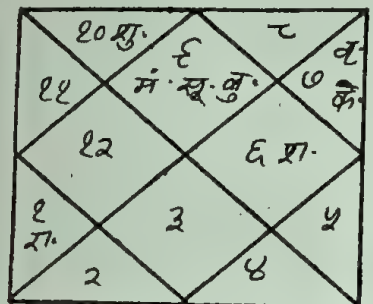
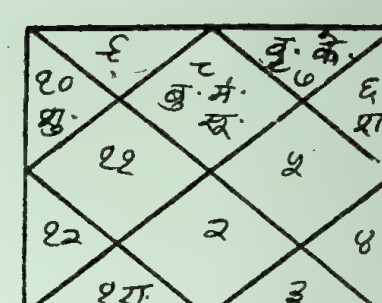
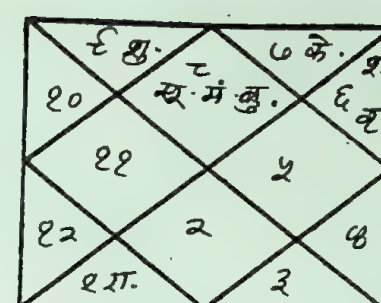
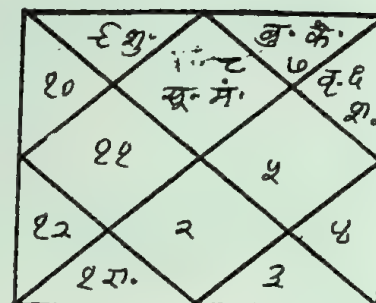
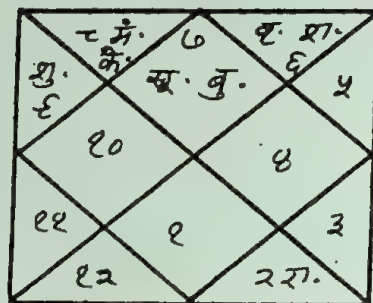
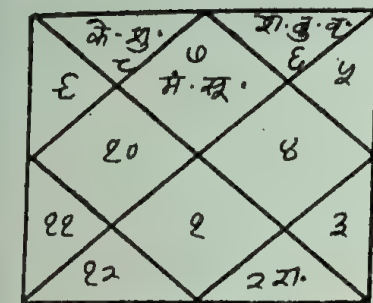
सु.सं.श.कु.	४	३	६ श.
कु.स.	१२	६	७
८ के.	१०	११	१२

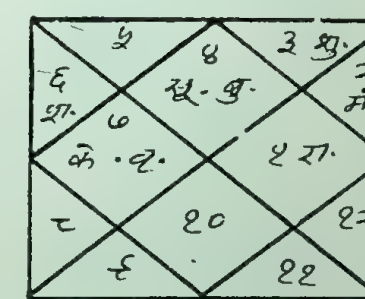
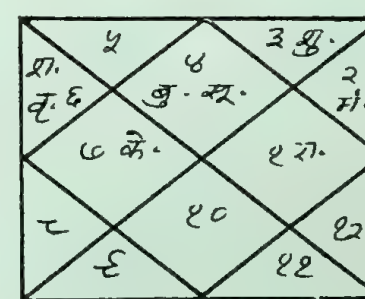
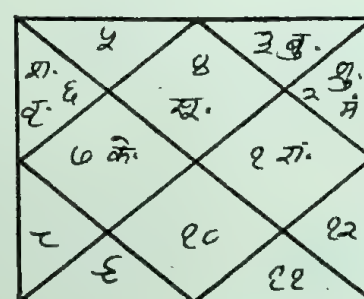
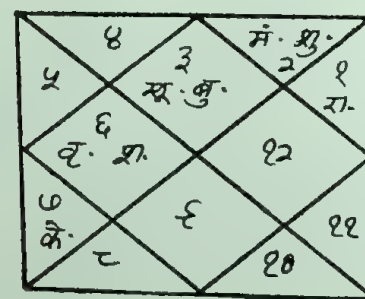
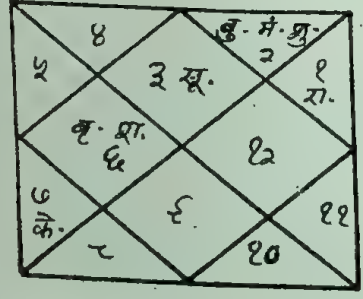
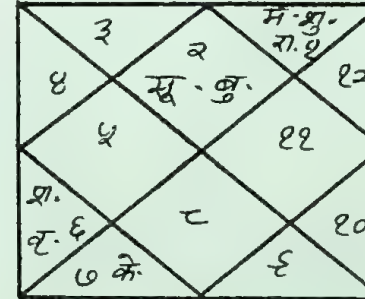
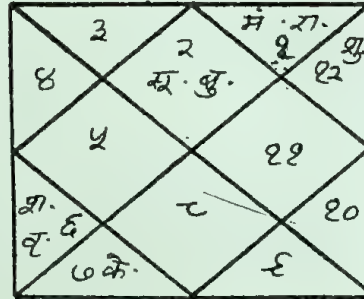
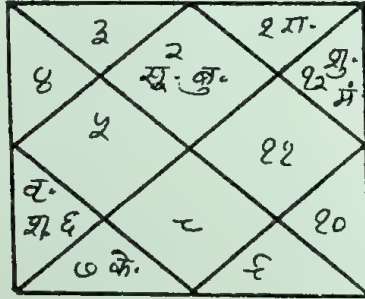
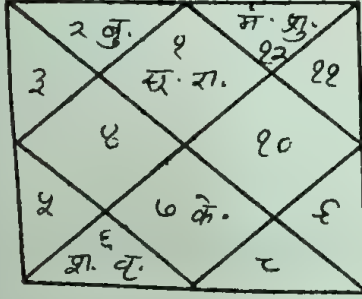
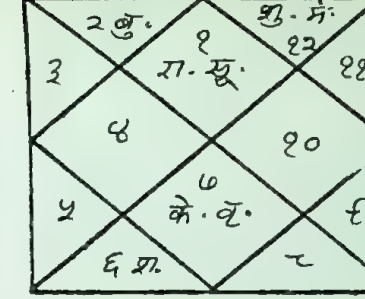
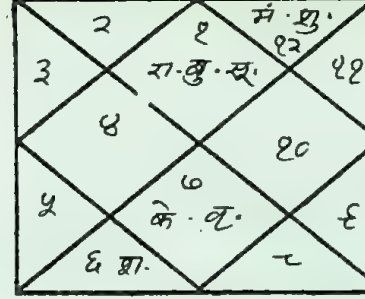
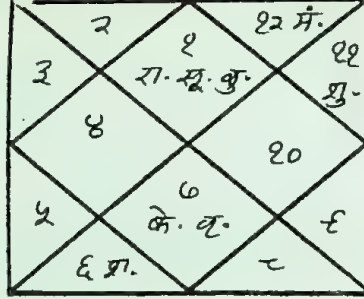
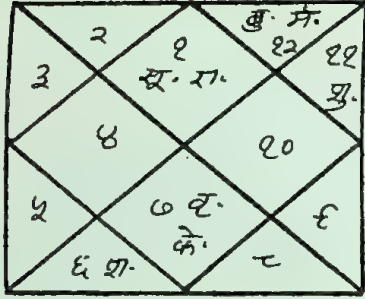
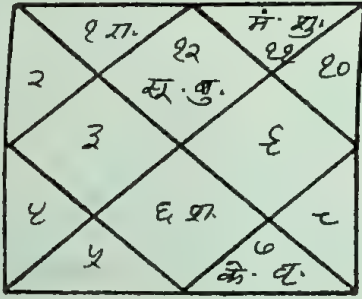
श.शु.कु.	४	३	६ श.
स.स.	१२	६	७
८ के.	१०	११	१२

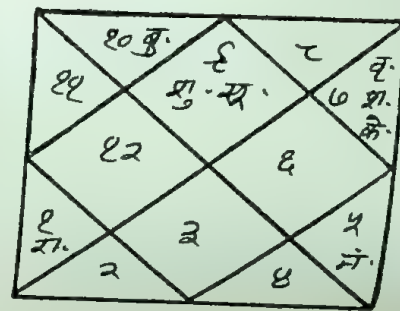
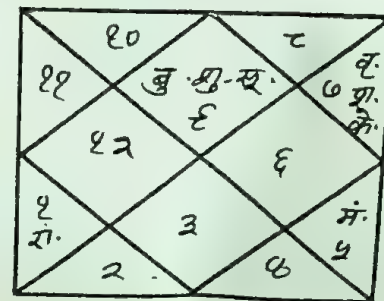
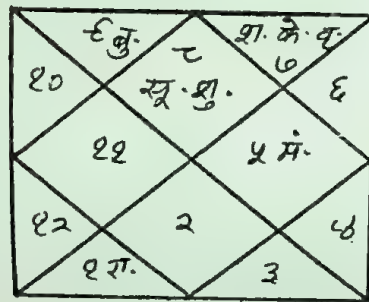
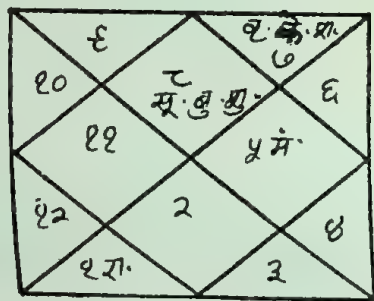
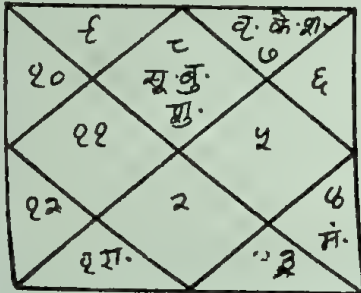
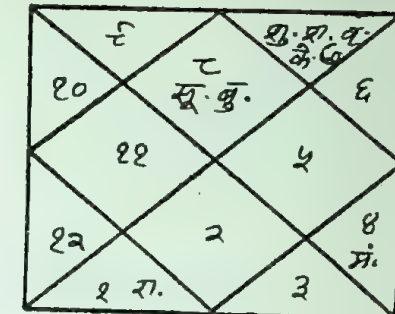
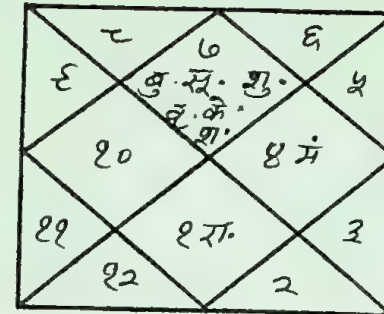
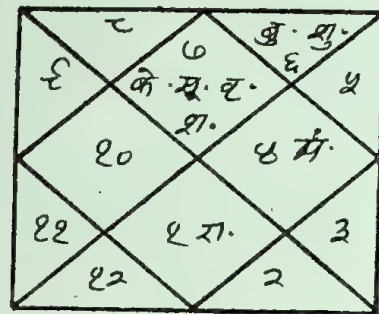
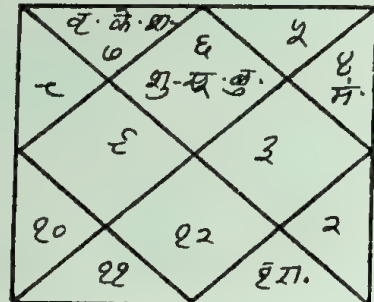
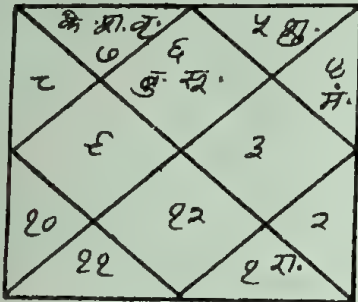
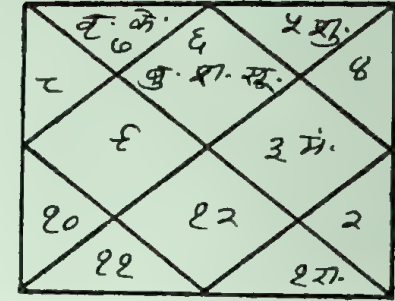
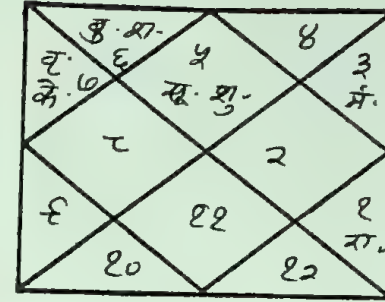
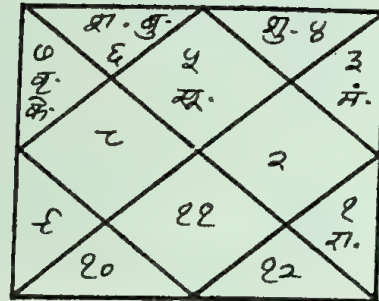
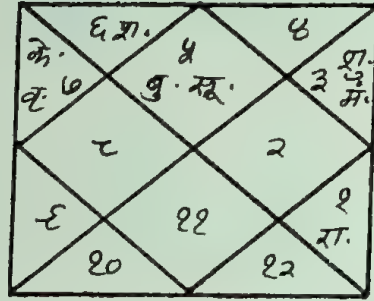
शु.कु.सं.	४	३	६ श.
स.कु.श.	१२	६	७
८ के.	१०	११	१२

कु.सं.श.	४	३	६ श.
स.कु.	१२	६	७
८ के.	१०	११	१२

सु.कु.	४	३	६ श.
स.सं.कु.	१२	६	७
८ के.	१०	११	१२







११	१० कु.	८ व.	७ श. के.
	शु. स.		
१२		६	
१ रा.	३	५ सं.	४
२			

११	१०	८ व.	७ श. के.
१२	शु. स. कु.		
१ रा.		६	
२	४ सं.	५	
३			

११	१०	८ व.	७ श. के.
१२	शु. स.		
१ रा.		६	
२	४ सं.	५	
३			

११	१०	८ व.	७ श. के.
१२	शु. स. कु.		
१ रा.		६	
२	४ सं.	५	
३			

११	१० कु.	८ व.	७ श. के.
१ रा.	शु. स.		
२		६	
३	४ सं.	५	
४			

११	१० कु.	८ व.	७ श. के.
१ रा.	शु. स.		
२		६	
३	४ सं.	५	
४			

११	१०	८ व.	७ श. के.
१ रा.	शु. स.		
२		६	
३	४ सं.	५	
४			

११	१०	८ व.	७ श. के.
१ रा.	शु. स.		
२		६	
३	४ सं.	५	
४			

११	१०	८ व.	७ श. के.
१ रा.	शु. स.		
२		६	
३	४ सं.	५	
४			

११	१०	८ व.	७ श. के.
१ रा.	शु. स.		
२		६	
३	४ सं.	५	
४			

११	१०	८ व.	७ श. के.
१ रा.	शु. स.		
२		६	
३	४ सं.	५	
४			

११	१०	८ व.	७ श. के.
१ रा.	शु. स.		
२		६	
३	४ सं.	५	
४			

११	१०	८ व.	७ श. के.
१ रा.	शु. स.		
२		६	
३	४ सं.	५	
४			

११	१०	८ व.	७ श. के.
१ रा.	शु. स.		
२		६	
३	४ सं.	५	
४			

११	१०	८ व.	७ श. के.
१ रा.	शु. स.		
२		६	
३	४ सं.	५	
४			

૩	૨	૧
૪ શુ.	૨ સુ. શુ.	૧૨ શ.
૫ સં.	૧૧	૧૦
૬ કે.	૮ વ.	૯

૪ શુ.	૩	૨
૫ સં.	૨ સુ.	૧
૬ કે.	૧૨ શ.	૧૧
૭ શ.	૯	૧૦

૪ શુ.	૩	૨
૫ સં.	૨ સુ. શુ.	૧
૬ કે.	૧૨ શ.	૧૧
૭ શ.	૯	૧૦

૪	૩	૨
૫ સં. શુ.	૨ સુ. શુ.	૧
૬ કે.	૧૨ શ.	૧૧
૭ શ.	૯	૧૦

૪ શુ.	૩	૨
૫ સં. કે.	૨ સુ. શુ.	૧
૬	૧૨ શ.	૧૧
૭ શ. વ.	૯	૧૦

૫ શુ.	૪	૩
૬ કે. શુ.	૨ સુ.	૧
૭ શ. વ.	૧૦	૧૧
૮	૯	૧૨ શ.

૬ કે. શુ.	૫	૪
૭ શ. વ.	૨ સુ. શુ.	૧
૮	૧૦	૧૧
૯	૧૨ શ.	૧૩

૬ કે. શુ.	૫	૪
૭ શ. વ.	૨ સુ. શુ.	૧
૮	૧૦	૧૧
૯	૧૨ શ.	૧૩

૬ કે. શુ.	૫	૪
૭ શ. વ.	૨ સુ. શુ.	૧
૮	૧૦	૧૧
૯	૧૨ શ.	૧૩

૬ કે. શુ.	૫	૪
૭ શ. વ.	૨ સુ. શુ.	૧
૮	૧૦	૧૧
૯	૧૨ શ.	૧૩

૬ શુ. મં. શ.	૫ શુ.	૪
૭ વ.	૨ સુ. કે.	૧
૮	૧૦	૧૧
૯	૧૨ શ.	૧૩

૬ શુ. મં. શ.	૫ શુ.	૪
૭ વ.	૨ સુ. કે.	૧
૮	૧૦	૧૧
૯	૧૨ શ.	૧૩

૬ શુ. મં. શ.	૫ શુ.	૪
૭ વ.	૨ સુ. કે.	૧
૮	૧૦	૧૧
૯	૧૨ શ.	૧૩

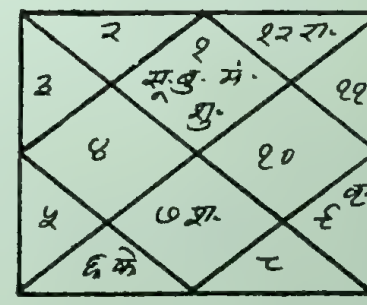
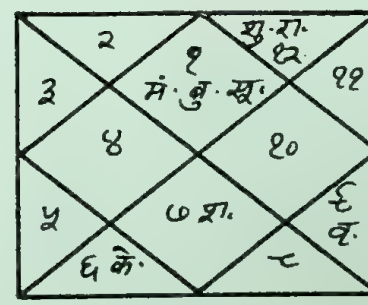
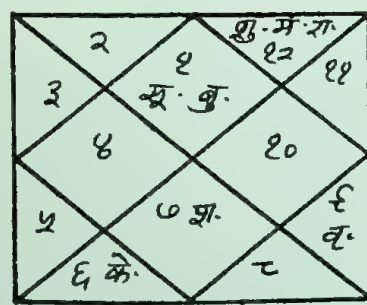
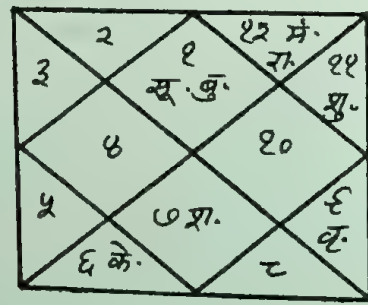
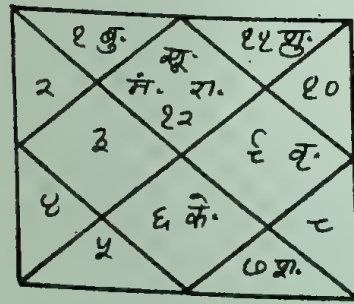
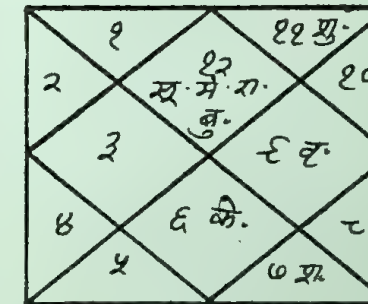
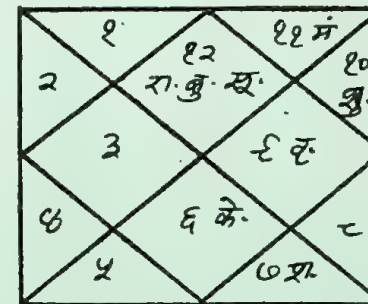
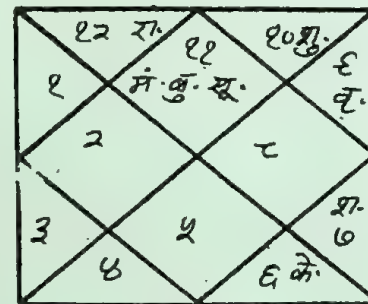
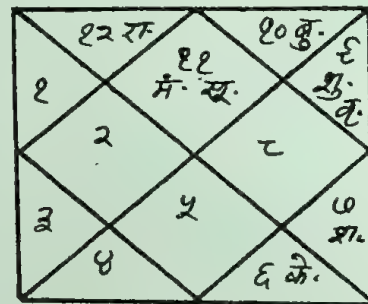
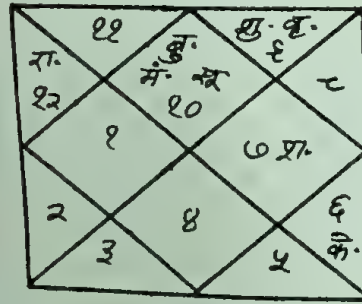
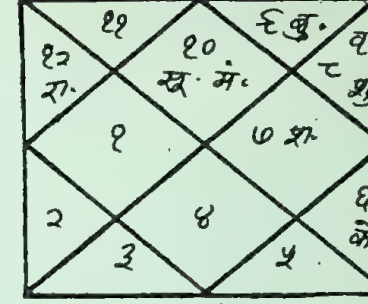
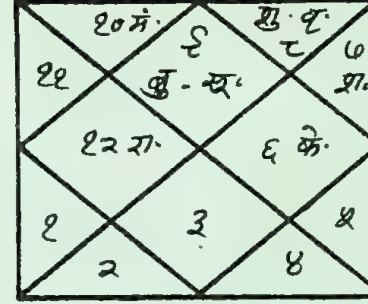
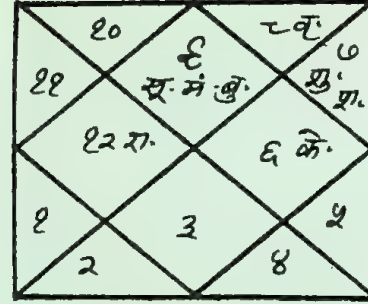
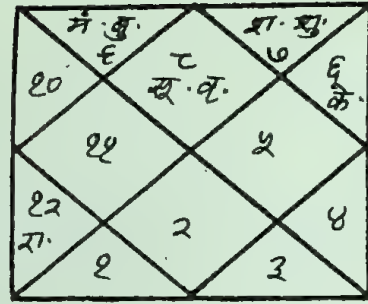
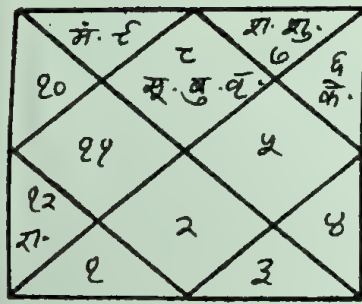
૬ શુ. મં. શ.	૫ શુ.	૪
૭ વ.	૨ સુ. કે.	૧
૮	૧૦	૧૧
૯	૧૨ શ.	૧૩

૬ શુ. મં. શ.	૫ શુ.	૪
૭ વ.	૨ સુ. કે.	૧
૮	૧૦	૧૧
૯	૧૨ શ.	૧૩

भ. सं.

७७७७

कु. प.



३	शु.सं.कु.	१	रा.
४	२	सं.	१२
५	११		
के.६	७	८	१०
श.		९	कु.

३	२	१	१२
४	सं.कु.सं.	शु.	रा.
५	११		
६	७	८	१०
के.	श.	९	कु.

४	३	२	१
५	सं.		
६	के.	१२	रा.
७	श.	९	कु.
८	१०		

४	३	२	१
५	सं.कु.		
६	के.	१२	रा.
७	श.	९	कु.
८	१०		

४	३	२	१
५	सं.कु.सं.		
६	के.	१२	रा.
७	श.	९	कु.
८	१०		

४	३	२	१
५	सं.कु.		
६	के.	१२	रा.
७	श.	९	कु.
८	१०		

५	४	३	२
६	सं.कु.		
७	श.	९	कु.
८	१०		
९	११		

५	४	३	२
६	सं.कु.		
७	श.	९	कु.
८	१०		
९	११		

५	४	३	२
६	सं.कु.		
७	श.	९	कु.
८	१०		
९	११		

६	५	४	३
७	सं.कु.		
८	श.	९	कु.
९	१०		
१०	११		

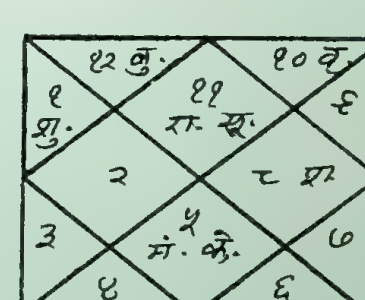
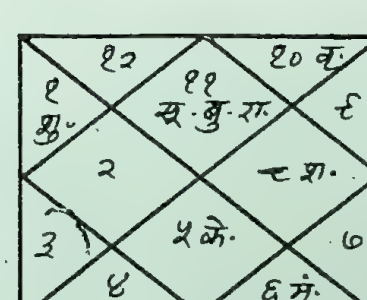
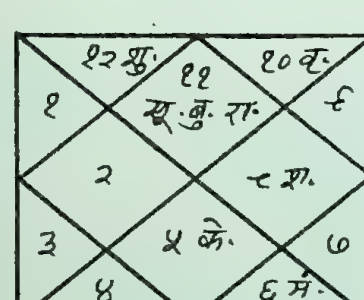
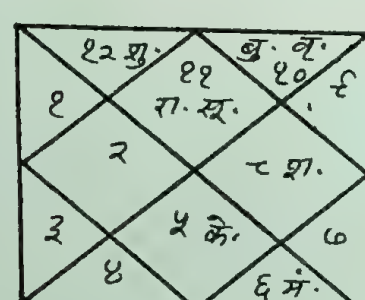
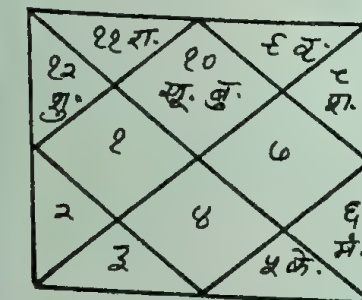
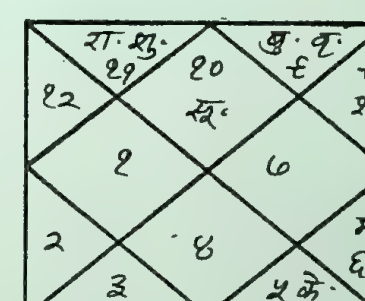
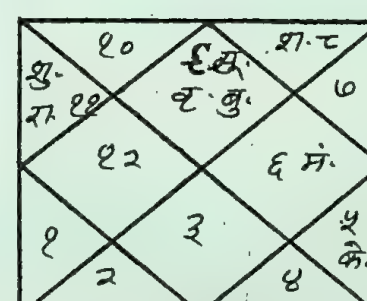
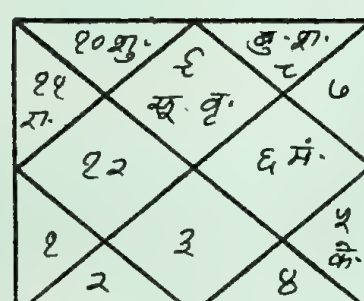
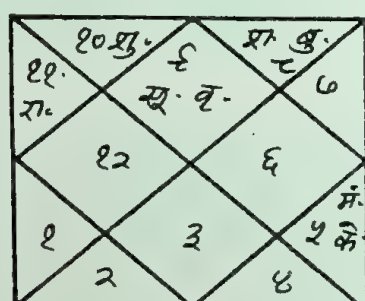
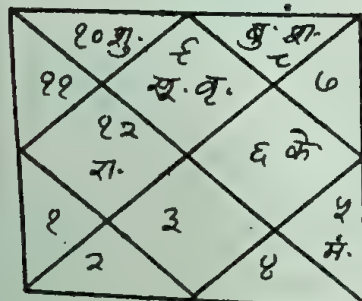
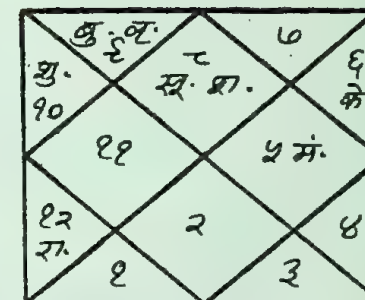
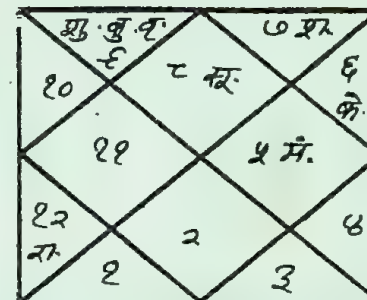
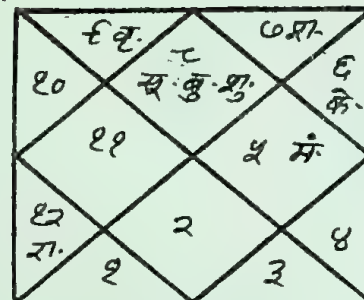
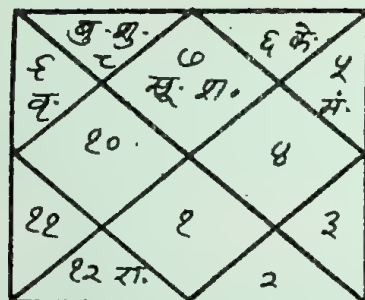
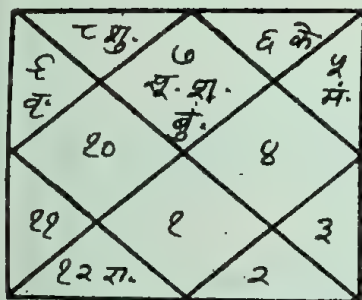
के.शु.	५	४	३
७	६	सं.कु.	
८	श.	९	कु.
९	१०		
१०	११		

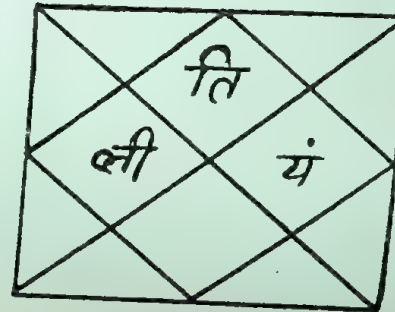
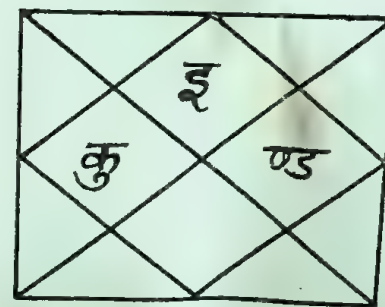
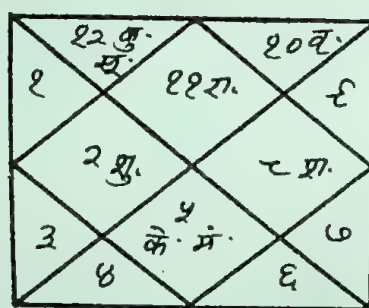
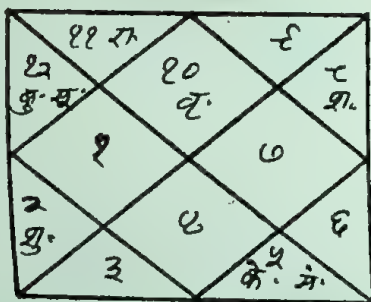
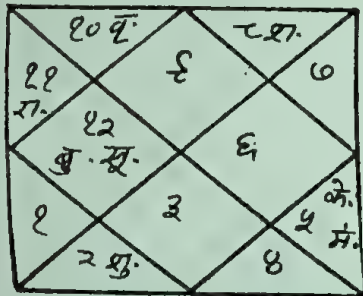
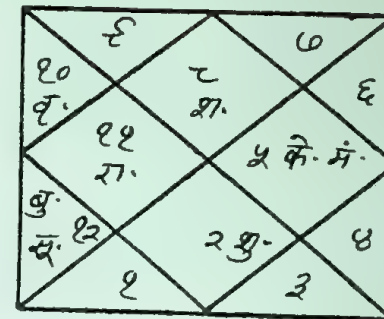
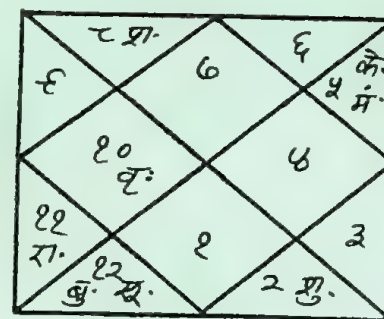
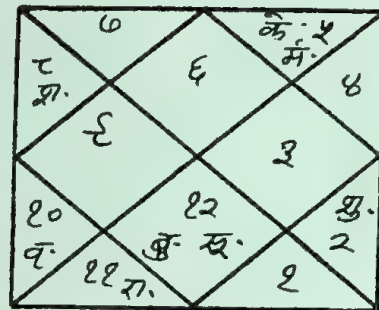
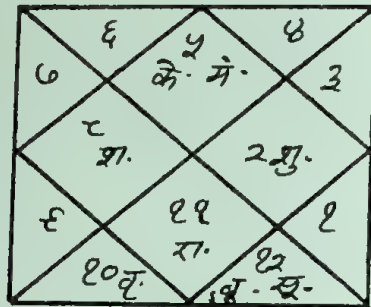
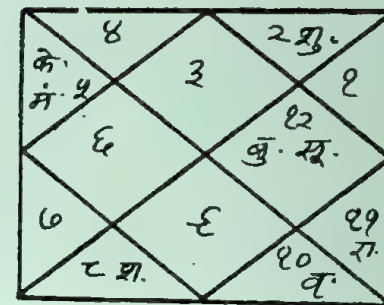
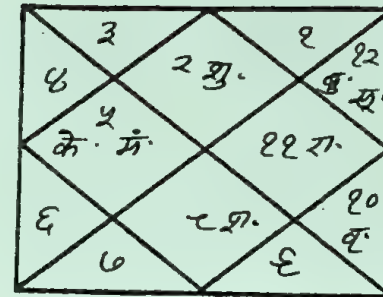
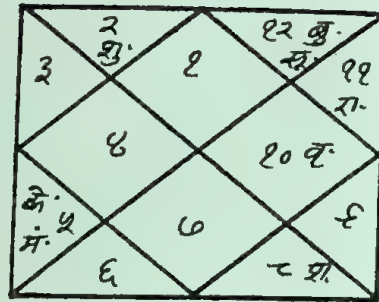
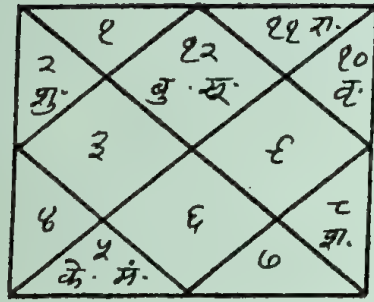
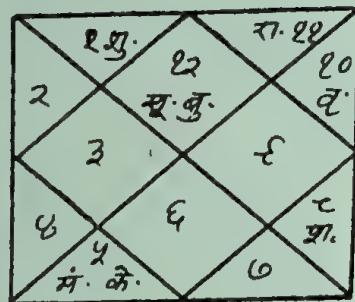
के.शु.	५	४	३
७	६	सं.कु.	
८	श.	९	कु.
९	१०		
१०	११		

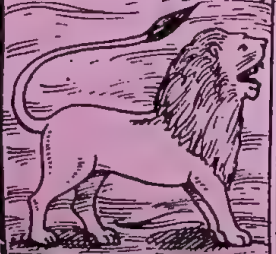
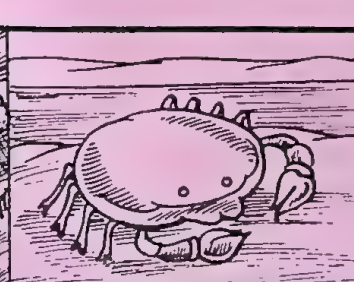
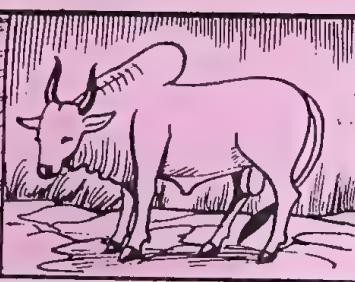
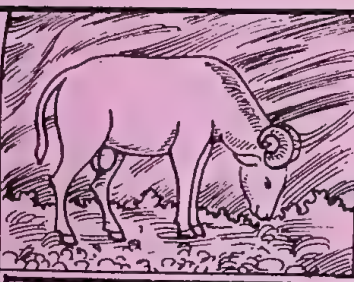
७	६	५	४
८	श.	सं.कु.	
९	१०		
१०	११		
११	१२		

७	६	५	४
८	श.	सं.कु.	
९	१०		
१०	११		
११	१२		

८	७	६	५
९	श.	सं.कु.	
१०	११		
११	१२		
१२	१३		

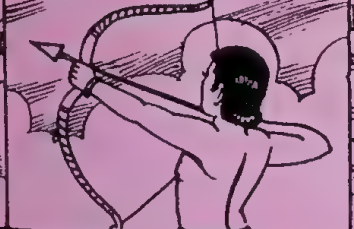
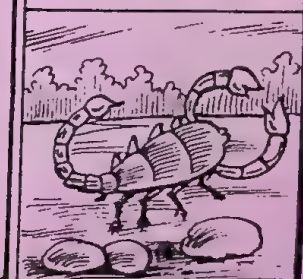
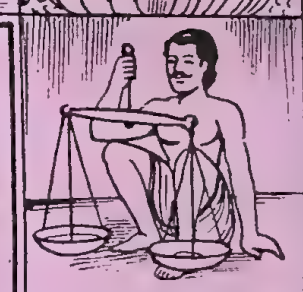






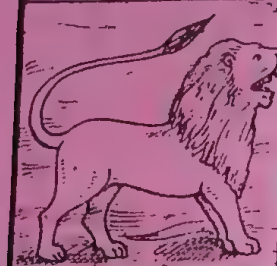
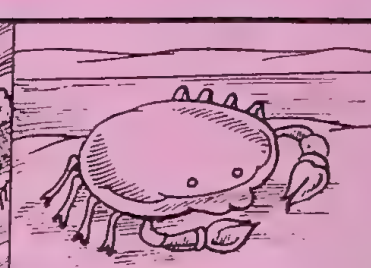
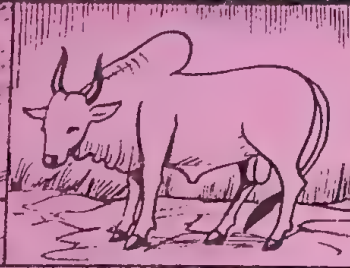
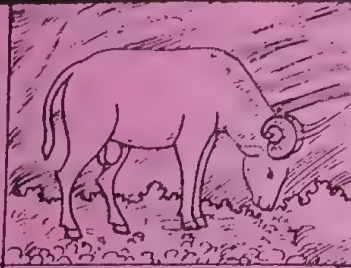
इति श्रीभृगुसंहिताकुण्डलीरहस्यम्

द्वितीय खण्डः समाप्तम्

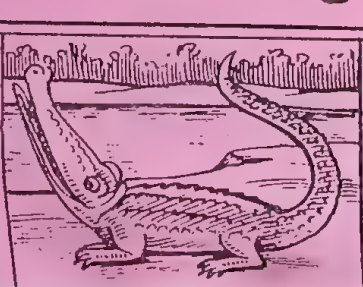
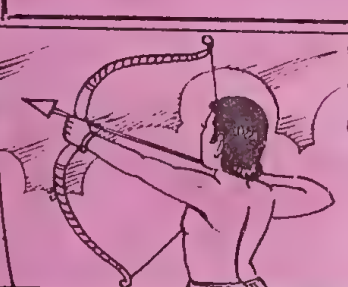
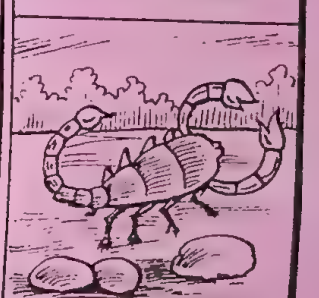


२	१२
३	११
४	१०
५	९
६	८

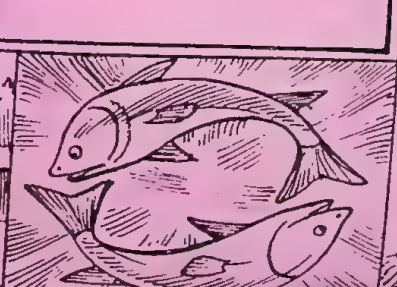




अथ श्रीभूगु संहिता कुण्डली रहस्यम् सूर्य कुण्डली फलम् तृतीय खण्डः



2	92
3	99
8	90
4	4
6	2



अथ मृगसंहिता कुण्डली रहस्यम्

फलादेश - खण्ड ३

(माघ सं. १६६७ वि. से सं. २०४४ वि. तक की सूर्य-कुण्डलियों का फलादेश)

आवश्यक - ज्ञातव्य

१- 'कुण्डलीखण्ड' (पृष्ठ संख्या ६६ से ४८० तक) में सं. १६४२ वि. से सं. २१०० वि. तक की सूर्य-कुण्डलियाँ उदशित हैं। किस पृष्ठ पर किस सम्बन्ध की सूर्य-कुण्डली है तथा सूर्य-कुण्डली के आधार पर लग्न-कुण्डली किस प्रकार तैयार करनी चाहिए, इसका उल्लेख पृष्ठ संख्या २३७ से २५० तक में किया गया है। उसके अनुसार सर्वप्रथम अपने लग्न सम्बन्ध की सूर्य-कुण्डली को ढूँढ कर, उसके आधार पर अपनी लग्न-कुण्डली तैयार करें।

२- प्रस्तुत 'फलोदेश खण्ड' में 'कुण्डली-खण्ड' के पृष्ठ संख्या १०० से १५८ तक अर्थात् सं. १६४२ वि. से सं. १६६७ वि. के वैशाख मास तक की सूर्य-कुण्डलियों के फलोदेश का वर्णन नहीं किया गया है। कुण्डली खण्ड के पृष्ठ संख्या १५६ से पृष्ठ संख्या ३५५ तक अर्थात् माघ मास सम्बन्ध १६६७ वि. से सं. २०४४ वि. तक की सूर्य-कुण्डलियों का संक्षिप्त-फलोदेश इस खण्ड में वर्णित है। सम्बन्ध २०४५ वि. से सम्बन्ध २१०० वि. तक की सूर्य-कुण्डलियों का फलोदेश भी इसमें नहीं है। इन अवधिष्वकालीन सूर्य-कुण्डलियों के फलोदेश का वर्णन इस ग्रंथ के अगले संस्करणों में क्रमशः प्रकाशित किया जाएगा। प्रस्तुत खण्ड में सं. १६६७ वि. के माघ मास से सम्बन्ध २०४४ वि. तक अर्थात् ७२ वर्ष की सूर्य-कुण्डलियों के संक्षिप्त-फलोदेश का ही वर्णन किया गया है।

३- 'कुण्डली-खण्ड' के पृष्ठ संख्या १५६ की पहली सूर्य-कुण्डली के नीचे संख्या १ अंकित है, उसका फलोदेश प्रस्तुत 'फलोदेश-खण्ड' के पृष्ठ संख्या ४८३ पर संख्या १ के आगे ही दिया गया है। इसी क्रम से अन्य कुण्डलियों के विषय में भी समझना चाहिए अर्थात् 'कुण्डली-खण्ड' में जिस सूर्य-कुण्डली के नीचे जो संख्या अंकित है, उसका संक्षिप्त-फलोदेश इस खण्ड में उसी संख्या के आगे दिया गया है। जिन सूर्य-कुण्डलियों के नीचे कोई संख्या अंकित नहीं है, उनके फलोदेश का उल्लेख नहीं किया गया है।

४- लग्न-कुण्डलियों के आधार पर विभिन्न भावों तथा राशियों में विभिन्न ग्रहों की स्थिति, युती एवं दृष्टि के प्रभाव की जानकारी इस ग्रंथ के खण्ड १, ४ तथा ५ में वर्णित सिद्धान्तों के आधार पर प्राप्त कर लेनी चाहिए।

(१) - इस कुण्डली में जन्म लेने वाला व्यक्त शारीरिक सौन्दर्य में कुछ कमी से युक्त और वर्ण, स्वास्थ्य विकार युक्त, सभी पर प्रभाव रखने वाला, स्वभाव से उग्र, दैनिक कार्य करने में परेशमी और साहसी, सभी पक्ष में पूर्ण शक्ति सम्पन्न, शारीरिक बल पर कौनों का विजेता, गृहस्थ में दैनिक रूप से प्रभावी, मातृ-विरोधी, गृह-भूमि के लाभ से पूर्ण, भाई-बहिन से सुखी, गृहस्थों का संचालक, पराक्रम से सुख प्राप्त करता, दैनिक व्यवसाय में सफलता पाने वाला, पितृ-सुख से शक्ति का प्राप्त करता, राज्य और समाज में प्रतिष्ठा एवं मान पाने वाला, अच्छे लाभ और नफे से संयुक्त, अधिक व्ययों, उत्तम इन्द्रिय से हीन, सन्तान विषयक चिन्तित, बुद्धि तथा विवेक से सफलता पाने वाला, साधारण नम्र, अधिक आयु से पूर्ण, धन-संग्रह में असन्तुष्ट, थदा-कदा इन्द्रिय विषयक विद्वेषों से युक्त और चिन्तित, बाह्य सम्बन्धों में अभाव युक्त, धनवृद्धि के लिये सतत प्रयत्नशील, कोटुम्बिक सुख सहयोग में सक्षम, धर्मपालन में दयावा रखने वाला, विरोधियों पर प्रभावी, दोग/बैकुण्ठ शक्ति में शक्ति और गृह का प्रतियोग का धक रहेगा।

(२) इस जन्मलग्न में जन्मा हुआ मनुष्य शारीरिक सौन्दर्य में न्यूनता युक्त तथा थदा-कदा स्वास्थ्य में विकार पाने वाला, तेजावी और प्रभावशाली तथा विवेक से कार्य करने वाला, स्वभाव से उग्र तथा शान्त, अतीव साहसी और परेशमी, उत्तम योजनाओं का निर्माता, साधारण विनम्र, अतीव स्वाभिमानी, मातृ-सुख में कुछ कमी का अनुभव करने वाला, बाहरी सम्बन्धों में सधुरता के प्रभाव से अनेक कौमों में विजयी और सफल, गृह-भूमि के लाभ में पूर्ण सफलता पाने वाला, धर्मपालन में आडम्बर और दोग युक्त, दैनिक व्यवसाय में परेशमी, सभी पक्ष में सफलता से युक्त और अनेक स्त्रियों का भोगी, दण्डलाभ के लिये सतत चिन्तित और संग्रह के लिये प्रयत्नशील, भाई-बहिन की शक्ति से पूर्ण, पितृ-सुख का प्रापक, राज्य एवं सामाजिक साधारण सफलता पाने वाला, दैनिक आमदनी में आवश्यकता से अधिक खर्चीला, बाहर प्रभाव रखने वाला, सन्तान पक्ष में कुछ कमी के साथ सफलता से पूर्ण, विरोधियों पर प्रभावी, उत्तम स्वास्थ्य से सम्पन्न होगा।

(३) इस जन्म में उत्पन्न हुआ मानव शत्रुओं का विजेता, उच्च देह, उन्नत ललाट, गौरवर्ण, व्यक्तित्व से पूर्ण, प्रभावशाली, रक्तविकार से युक्त, परिश्रमी, उग्र कर्मा, स्वभाव से क्रूर, स्त्री पक्ष में विघ्न सम्पन्न, गृहस्थ में परेशानी का अनुभव करने वाला, पराक्रम द्वारा सफलता सम्पन्न, भाई-बहिन की शक्ति से सक्षम, विरोधियों पर प्रभाव रखने वाला, कौटुम्बिक कुरब से पूर्ण, पुरुषार्थ से भाग्योन्नति करने वाला, विघ्नों से उपेक्षा युक्त, धर्म और ईश्वर में निष्ठावान्, पितृ-सहयोग से व्यवसाय की उन्नति में सक्षम, मातृ-सुरब से हीन, गृह-भूमि और गृहस्थ की ओर से विचलित, कारोबार में वास्तव सम्बन्धों से सफलता प्राप्त करने वाला, विवेक पूर्ण स्थिति से अधिक व्यर्थ, दैनिक व्यवहार में कुशल, स्त्रीक्षेत्र में आत्मीयता और स्वाभिमान से युक्त, राज-समाज में मान-प्रतिष्ठा से सम्पन्न, पुरुषार्थ, मध्यायु से सम्पन्न, विद्या-बुद्धि और वाणी तथा सन्तान प्राप्ति के लिये प्रयत्नशील, यथा कदा धोवा जाने वाला, अधिक धनवान्, दैनिक जीवन में मस्त, धनसंग्रह में दुर्बल, रुग्ण अर्थात् लाभ एवं आयवाला होगा।

(४) इस जन्म में उत्पन्न हुआ मानव सुन्दर सुगोल देही, ऊँचा कद, गोधूमवर्ण, परम तेजस्वी और विवेकी, स्वभाव से कुछ उग्र, सरल और उदारचेता, प्रभावशाली वाणी से युक्त, मातृ-सुरब में हीनता का अनुभव, स्वाभिमान और कटु-सत्य का भावी, अधिक व्यर्थ, अच्छी आमदनी से सम्पन्न, गृहस्थ और स्त्री-पक्ष में दुर्बलता अनुभव करने वाला, कौटुम्बिक परेशान, परम धार्मिक, शत्रुजयो, अत्यन्त प्रभावशाली, विद्यावाणी की गम्भीरता से सम्पन्न, विधाक्षेत्र में शक्ति का अनुभूति करने वाला, धनसंग्रह में दुर्बल, पितृ-सुरब और सहयोग से पूर्ण, सन्तान प्राप्ति का प्रयत्नशील, भाई-बहिन से सम्पन्न, गृह-भूमि के लाभ में हीनता प्राप्त करता, दैनिक सुरब से युक्त, स्त्री-पक्ष में मान और प्रतिष्ठा रखने वाला, वास्तव सम्बन्धों की मधुरता से व्यवसाय आदि में अच्छी उन्नति से पूर्ण और कभी-कभी धोवा जाने वाला, परिश्रमी और उत्साही, गृह-कर्मजोरी का अनुभव, बन्धु-सहयोग से वंचित, परम साहसी, स्वकाय साधन में तत्पर, पितृक्षेत्र का निवासी, राज-समाज में प्रतिष्ठा पाने वाला, आदर्शवादी, कठोर परिश्रमी होगा।

(५)-इस अनुत्तरिण में जन्म लेने वाला मानव सुन्दर और विशाल देही, गौरवर्ण, गृहस्थ में विदित पाने वाला, स्त्री पक्ष से चिन्तित, प्रभावशाली, शत्रु और विरोधियों का विजेता, पितृ-सुख एवं सहयोग से पूर्ण, पितृक्षत्र को ही निनासी, उग्रचेता, स्वभावे में कुर, विवेकी, परम धार्मिक और ईश्वरीय निष्ठा से सम्पन्न, परम विवेकी, विद्यावाणी से सम्पन्न किन्तु स्त्री और विद्याक्षेत्र में गुरि का अनुभव करने वाला, अत्यन्त साहसी और वीरभूमा, व्यवसायान्तरों के लिये अतीव प्रयत्नशील, गृह-भूमि लाभ में हानि का प्राप्तिक्षी, आधिक्यधिया, लक्ष्य सम्बन्धों में कुशल, राजा समाजकी प्रतिष्ठा से युक्त, उग्र-इन्द्रिय लाभ से पूर्ण, सामान्य धन का संचय, उत्तम सन्तान सम्पत्ति, कोटिबिषय परेशानियों का अनुभव, वीरभूम से सफलता पाने वाला, मध्याधु सम्पत्ति, उत्तम स्वास्थ्य युक्त, भाला एवं स्त्री के सम्बन्धों में कमी पाने वाला, भद्रोद्धार के सुख-सहयोग से नाचने, गृहस्थ-पक्ष में प्रतिष्ठा का प्रापक, दोनक जीवन एवं व्यवहारक्षेत्र में कुशल एवं आमाद-प्रमाद का प्रेमी, कुछ राज्यक्षेत्र में बन्धन युक्त गुरि का अनुभवों हागा।

(६)-इस कुण्डली में जन्मा हुआ बालक ऊँचे कद वाला, गौरवर्ण, उत्तेजित किन्तु विवेक शील, विद्या-सम्पन्न, वाणी में प्रगल्भ, अत्यन्त स्वाभिमानी, उग्र और गम्भीर योजनाओं की निर्माता, सन्तान की उत्तम शक्ति से पूर्ण, स्त्री पक्ष में क्लेश युक्त जीवन, व्यावसायिक कठिनाइयों का अनुभव, गृहस्थ के लुप्त सम्बन्धों में गुरि सम्पत्ति, धन का कम संचय, कोटिबिषय विघ्न युक्त, धनापाजने में विघ्न एवं संचय से सफलता पाने वाला, विद्याप्राप्ति में कुछ अप्रार, मध्याधु युक्त, जीवन-यथो में प्रभावशाली, धर्म के प्रति निष्ठावान् किन्तु यथावकाश न करने वाला, भाग्यान्तरों में बाधा सम्पत्ति, देह में विकार और रोग युक्त, विवेक द्वारा मान-प्रतिष्ठा पाने वाला, वीरभूम और परुषाश से व्यवसाय में सफल, अनेक विरोधों और शत्रुओं से सम्पन्न, विवाद में लाभ-व्याय एवं धर्म से कार्य करने में सक्षम, राजा और समाज में गुरि एवं जीवन युक्त, धनवृद्धि का प्रयत्नशील, अन्याय से भाग्यान्तरों का प्रापक, सुन्दर स्त्री युक्त, वनराज से प्रत्येक क्षण में सफल, स्वाधीन, भद्रोद्धार के सुख-सहयोग का आकांक्षी, साहसी, अन्य स्त्रियों का भोग, पितृ (स्वामि) से हानि हागा।

(७)-रस जन्मोंग में उत्पन्न हुआ जातक उग्र और (कृत्स्न-कर्म करने वाला, विवेकी, (पुत्रसाध और साहस सम्पन्ना कामलेकर धनसंग्रह के लिये सर्वथा प्रयत्नशील, स्वर्धी, अर्द्ध द्रव्य लाभ से गुप्त, ऊँचा कद, मध्यमवर्ण, मध्यागम सम्पन्न, शरीर में पित्तवायु प्रबोध से दूषित, (सुन्दर सुशोभा स्त्री पावे वाला, पितृ (सुख से अल्प सुख, विरोध और शत्रुओं से करे बार पराभव पावे वाला, राजकीय और सामाजिक प्रतिष्ठा में न्यून, अत्यन्त स्वाभिमान, (कृष्णजीन से परेशान, अर्द्ध सम्बन्धों को मधुरता से अनेक विषयों में सकल, कूटनीतिज्ञ, परम चतुर, दोन के जीवन में रूसी का सावर्चीला, प्रभावशाली, विद्या क्षेत्र में कुछ कृतिगुरु पूर्णता से सक्षम, सन्तान को उत्तम शोभ पावे वाला, पितृ क्षेत्र में उन्नत, भाईवर्द्धि के (सुख सम्बन्धों में कभी न अनुभवों, करे बार शत्रुओं पर विजया, धर्म पालन में रुचि रखने वाला, राजसमाज में मान-प्रतिष्ठा का साधारण प्राप्तकर्ता, (पकट में धनी-मानी (रमका जावे वाला, गम्भीर एवं श्रेष्ठ मान-नीओं का निर्माता, बार-बार धनजन की हानि पावे वाला, करे बार मृत्युवन्धु बंधों का भोगी, (गृहशान्ति पावे वाला।

(८)-रस कुण्डली में जन्म लेने वाला धार्मिक मध्यम कद, गौर श्यामवर्ण, प्रभावशाली धार्मिक से गुप्त, विद्या और वाणी प्रयोग में परम चतुर, मदान् रवर्धी, स्वभाव से उग्र और कर, हृदय से न्याय और धर्म को जीवन परम स्वाधिकार पावे कर्ता, करे विधियों का भोगी, (सुन्दर सुशोभा गृहिणी का पति, व्यवसाय में कुछ कमायूस, सन्तान को उत्तम शक्ति पावे वाला, बुद्धावस्था में तिरस्कृत, स्त्री से क्लेश करने वाला, पराभवा और साहसा, (पुरुषाधा से द्रव्य लाभ, भाग्यवर्द्धि के लिये प्रयत्नशील, प्रभावशाली जीवन से पूर्ण, राजसमाज में प्रतिष्ठा और मान-प्राप्तकर्ता, पितृ क्षेत्र में समुन्नत, यदा कदा द्रव्य लाभ की अपेक्षा हानि से गुप्त, भाईवर्द्धि के (सुख सम्बन्धों में गुरि से हानि, द्रव्यक्षेत्र शत्रुपक्ष पर प्रभाव रखने में सक्षम, भाग्योन्नति में लिप्ता प्राप्त कर्ता, धर्म पालन की यथार्थता रखने, अधक व्यथा, कोटिबिम्ब मतभेद रखने वाला, कर्द्ध सम्बन्धों में चतुर, कोटिबिम्ब (सुख में अभाववास्त, कूटनीतिज्ञ, शारीरिक सौन्दर्य में कृतिगुरु, पितृ सुख का अल्प भोगी, गृहस्थ में पूर्ण आनन्द रखने वाला होगा।

(८)-३२ जन्मलग्न में जन्मा हुआ मनुष्य मातृपक्ष में नीरस, प्रभावशाली व्यक्तित्व से सम्पन्न, दीर्घबधु, गौरवर्ण, गृहभूमि से साधारण सुखी, शारीरिक सौन्दर्य में भूट युक्त, स्त्री-क्षेत्र में प्रभावशाली और सुखी, व्यवसायोन्नाति से सुखी, अधिक व्यय करने वाला, धन-संचय में दुर्बल, स्त्री से मत्सभेद रखने वाला, पिछा और सन्तान पक्ष में कमोका समुभवी, भाग्य और धर्मबुद्धि से पूर्ण, कुछ सज्जनता युक्त, स्वाभिमानी, स्वास्थ्य विकार से चिन्तित, बुद्धि और विवेक से पूर्ण, परुषार्थ से धन-मान और प्रतिष्ठा का प्राप्तावस्था, सन्तान और कुटुम्ब की शक्ति से सम्पन्न, स्त्री से सख सहयोग पाते वाला, बुद्धि बल से धन और धन बल से उन्नति एवं सफलता युक्त जीवन, भाग्य पक्ष में कभी-कभी कमी का अनुभव, नाणी में सज्जनता रखने वाला, स्वाभिमानी में तयार, जीविका हेतु परिश्रम और तन्मयी, नातिलाम में परिवर्तन युक्त, सुयश से वंचित, कष्ट-साध्य सम्पर्क रखने में कुशल, शत्रु और विरोधियों का प्रभावशाली, भाग्यबुद्धि हेतु अनुचित एवं गृह आश्रय लेने वाला, व्यक्तित्व की उन्नति के लिये शततत्पयत्नशाल होगा।

(१०)-३२ जन्मलग्न में पैदा हुआ जातक अपने दैहिक प्रभाव से मान प्रतिष्ठा सम्पन्न, स्वाभिमानी, समुन्नत, काष्ठ-वन्धुओं से युक्त, दारमपुरुषाधीन, साहसी, स्त्री-क्षेत्र में प्रभावशाली, गृहस्थसुख का भोगी, स्फूर्ति, क्रोध, दण्डकाय में दान प्राप्तावस्था, कोटुम्बिक सुख से वंचित, परिश्रमी, विरोधियों द्वारा भी अर्थ-हानि प्राप्त करने वाला, सन्तान पक्ष में दुर्बल, विधा-क्षेत्र में इतने लाभ प्राप्त करेगा, स्वास्थ्य सम्पन्न, धार्मिक श्रद्धा की प्रधानता से हीन, दूरदूरस्थ करने में तयार, शरीर से कुश, मातृ-सुख सहयोग से वंचित, गृहभूमि लाभ से हीन, मातृ सम्बन्ध से युक्त, विवेक द्वारा शत्रुओं का विजय, अधिक व्ययी, राज-समाज में मान प्रतिष्ठा संयुक्त, साधारण गृहभूमि का लाभ पाने वाला, धैर्यकाम्य में गमसायोनित, जीवन में अनेक असुविधाओं के कारण चिन्तित, सन्तान पाने वाला, नाणी-भार्य में दण्ड लाभ का प्रापक, स्वामी अनुचित काम करने में शक्षम, यदाकदा मृत्युतुल्य कष्ट का भोगी, वाचाल, गृह तथा गम्भीर योजनाओं का निर्माता, वातर्ष से गृहस्थसुख का संचालक, आन्तरिक दुर्बलता का अनुभव, स्त्री के सहयोग से कुछ क्षेत्रों में सफलता पाने वाला होगा।

(११)- इस जन्म-भ्रू में उत्पन्न होनेवाला बालक तेजस्वी, उन्नति के लिये सदा प्रयत्नशील, भाई-बहिन की शक्ति से संयुक्त, अत्यन्त साहसी, स्त्री क्षेत्र में प्रभावशाली, गृहस्थ भोगों में पुरुषार्थी, कर्म योगी, स्फूर्ति और स्वाभिमान, क्रोध कोधी किन्तु विवेकी, दय्य-संचय में क्षुब्ध, कोटिभिक-दान से युक्त, विपक्षियों द्वारा चिन्तित, विद्यापक्ष में हठी, सन्तान की ओर से दुःखी, कठिन कार्य करने को भी तय्यार, भाग्योन्नति में विघ्न पानेवाला (सुन्दर और दीर्घवृत्त), गौरवर्ण, मात-सुख से पूर्ण, विवेक शक्ति से जागृत, स्त्री से सुलभ, पुरुषार्थ से सुख प्राप्त कर्ता, सुख शान्ति का अनुगामी, व्यवसाय में सफल, गृहभूमि-भूत्य वाहनादि (सुख से पूर्ण, अन्धा दय्य लाभ, राज-समाज में प्रतिष्ठित, आधिक्य स्वर्धला, रंश्चय में उन्नत और आसक्त, बाह्य सम्बन्धों में मधुर, विलम्ब से सन्तान पाने वाला, अन्य स्त्री का भोगी, शत्रुओं पर-चातुर्य और नस्लता से काम करने में सक्षम, यदाकदा आपे में दारिद्र्य का अनुभव, धर्म-पालन में रूढ़ि, अनुचित प्रयाग से स्वाध्याय में लक्ष्मण, मृत्यु-तुल्य कष्टों का प्रायक, वायल, प्रगल्भ और धूर्त होगा।

(१२)- इस जन्मभ्रू में जन्मा हुआ मनुष्य शरीर को पुरुषार्थ से धनी, कुटुम्ब (सुख से पूर्ण, अत्यन्त प्रभावशाली और भाग्यवान्, कुटुम्ब से मतभेदी, तेजस्वी, मध्यम कद, मध्याय युक्त, गोधूम वर्ण, स्त्री पक्ष में नीरस किन्तु गृहिणी से प्रेम रखने पर भी अन्य स्त्रियों का भोगी, विलासा, पुत्र, कोधी, स्वाभिमान, उग्र-चंचल तथा उग्र क्रम, संघर्षों में रत, विघ्न युक्त लाभ पाने वाला, स्वास्थ्य और सौन्दर्य में गूढ़ युक्त, मुख पर-जोड़ के चिन्हों से युक्त, अनेक प्रकार से रागी, विद्यापक्ष में क्रम का अनुभव, प्रगल्भ और बाबाल, दय्य लाभार्थ स्वाध्याय, सन्तान (सुख में बाधा पानेवाला, मूत्रेन्द्रिय रागी, विवेकी, भाई-बहिन से सम्मन, बाहरी सम्बन्धों द्वारा सफल, पुरुषार्थी, मात-सुख से पूर्ण, सुन्दर और सुशाला स्त्री का पति, अनेक आश्रयों से युक्त, रंश्चय-सम्पन्न और आधिक्य व्यय, राज-समाज में प्रतिष्ठित, शिक्षित, बुद्धिमान्, गुप्त शक्तियों में सक्षम, दुर्बलता को छिपाने वाला, विरोध पक्ष का विजेता, उन्नति के लिये कठिन कार्य करने में सफलता प्राप्त करने वाला होगा।

(१३) - इस कुण्डली में जन्म लेने वाला व्यक्ति दीर्घ और पुष्ट देही, परम निर्वकी, अत्यन्त पुरुषार्थी, मध्यम कद, गौर वर्ण, तेजस्वी, प्रभावशाली, वाचाल, कष्ट-सत्य भाषी, स्वाभिमानी, द्रव्य लाभ से उपेक्षित, मातृ सुख से वंचित, भ्रातृ-वार्द्धन युक्त होते हुए भी सुख-सहयोग से हीन, वाचाल तथा क्रोधी, विद्या क्षेत्र में कमी का अनुभव तथापि सुशिक्षित, एवं अनेक विद्या कला विद, सिन्धियों का भोग-विलास पाने वाला, सुशीला परिवारा स्त्री का पति, द्रव्य लाभार्थ प्रयत्नशील, उदार चेतता, उग्र कर्मा, कृत्स्न और कुचैल, पितृ सुख में अल्प, पितृ क्षेत्र में ही उत्त-
ति प्राप्त करेगा, राज्य में प्रतिष्ठा प्राप्त कर बन्धन पावे वाला, उच्च व्यवसाय से सम्पन्न, गृह भूमि लाभ से सम्पन्न, स-
न्तान सुख से पूर्ण, बुद्धि जीवी तथा कर्मयोगी, सन्तान सुख में चुरे का अनुभव, सुरल और कठोर, पुरुषार्थ से भा-
ग्योन्नति करेगा, अनेक आश्रित पाने वाला, भोगार्थ प्राप्त में लचैला और प्रयत्नी, गुप्त नीतिज्ञ, दैनिक जीवन में चिन्ति-
त, यदा कदा द्रव्य लाभार्थ कठिन विघ्न पाने वाला, ध्यान से द्रव्य लानी, योग्यता प्रदर्शन में शुभी होगा।

(१४) - इस जन्मलग्न में उत्पन्न हुआ मनुष्य पुरुषार्थ से द्रव्य प्राप्त करने वाला, तेजस्वी, कुटुम्ब युक्त, क्रोधी और स्वा-
भिमानी, प्रभावशाली व्यक्ति से सम्पन्न, ऊँचा कद, गौर वर्ण, कृश शरीर, उग्र व्यक्तियों से प्रतिष्ठित और धनी मान्य,
द्रव्य और कोटु चिन्तक, सुख में कमी का अनुभव, स्त्री की ओर से नीरस और चिन्तित, उच्च व्यवसाय, राज्य से द्रव्य
लाभ पाने वाला, पितृ क्षेत्र का निवास, बुद्धि बल से सम्पन्न, विद्या तथा सन्तान सुख का लाभ प्राप्त करेगा, सन्तान की ओर से
चिन्तित और शुभी, दैनिक जीवन में चिन्तित, उत्तम कर्म द्वारा भाग्य बुद्धि कोने में पट्ट, पराक्रम, द्रव्य धाजन कर
धन-संचय का प्रयत्नशील, धन-संचय में सुनता का अनुभव किन्तु प्रतिष्ठा सम्पन्न, भ्रातृ-वार्द्धन के सुख सहयोग से वंचित,
आधिक व्यय, सुयशा, धर्म और ईश्वर के प्रति निष्ठावान्, शत्रु शत्रु, आय क्षेत्र में सामान्य विघ्न का प्राप्त करेगा, साहसा तथा
विजोता, वाह्य सम्बन्धों में सफल, मातृ-विद्योगी, गृहार्थ लाभ में हानि का अनुभव, परम-चतुर, धार्मिक में आश्रित का प्राप्त करेगा,
भोग-विलासों की प्राप्ति हेतु प्रयत्नशील, गुप्त नीतिज्ञ, यदा कदा लाभ क्षेत्र में गृह विघ्न पाने वाला होगा।

(१५)- इस कुण्डली में जन्म लेने वाला मानव स्वाभिमानी, गौरवर्ण, सामान्य कद, कुशक्षेत्र, तेज और प्रतिभा सम्पन्न, बाल्य, दसवीं पर प्रभाव रहित में कुशल, विनम्र तथा चतुर, विद्यादि गुणों से निभूषित, साधारण क्रोध और क्षुब्ध, चानूय से सुख और लाभों का प्राप्तकर्ता, सुख प्राप्त के साधन एवं ऐश्वर्योदि से पूर्ण, मानसुख का प्राप्तकर्ता, आनन्द का अनुभवी, सरल और उदार चेतना, धर्म और ईश्वर के प्रति निष्ठावान्, तीर्थोदनी, स्त्रोपक्ष से सुख और अनेक भोगों का पानवाला, विलासी, साहसी, अन्य भोगों से पूर्ण, अनेक क्रिया में अनेक प्रकार से सफल, धन-धान्य और रत्नादि से पूर्ण, गृह-भूमि-भृत्यवाहनादि (सुख से संयुक्त, राज्यक्षेत्र और उच्चव्यवसाय से धनी तथा मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, दैनिक जीवन में उत्तम और प्रयत्नशील, परम-चतुर, स्वर्ध तथा रजत कार्य से भाग्यान्त, सुन्दर सुख से युक्त, किन्तु चिन्तित, यदाकदा व्यावसायिक हानि का अनुभवी, वाग्मी, धीर तथा साहसी होगा। मातापिता का पूर्ण भक्त, अनेक धार्मिक-कृत्यों का सम्पादक, दीर्घायु पाने वाला होगा।

(१६)- इस जन्मोत्पत्ति में उत्पन्न जातक शारीरिक सम्पन्नता से पूर्ण, अत्यन्त प्रतापी और तेजस्वी, परम क्रोध तथा स्वाभिमानी, आत्मबल एवं साहसी, प्रारम्भिक जीवन में अतीव सुन्दर, मध्यम कद, गोधूम वर्ण, स्त्रोपक्ष में नीरसता का अनुभवी, द्विभागी योग युक्त, व्यावसायिक विद्वान् का अनुभवी, यथोचित धर्मपालक, भाग्यवान्, ईश्वर एवं भाग्य का निरवासी, मानसुख का पूर्ण भोगी, गृह-भूमि-लाभ से युक्त, सुन्दर एवं उत्तम व्याप्य सम्पन्न, मूत्रेन्द्रिय के विकार से युक्त, धन का उत्तम संग्रही, पूर्ण धनी एवं सुरक्षित साधनों का प्राप्तकर्ता, कठोर धार शारीरिक कष्ट पाने वाला, उदर रोगी, नन साल से हीन, हस्तान की ओर से चिन्तित, ऐश्वर्यमय रहन-सहन से पूर्ण, पिता का मरभरी, मानप्राप्ति हेतु प्रयत्नशील, अधिक विचारा, पितृ एवं बन्धु सुख से वंचित, गृह्य सम्बन्धों में सफल, चतुरता और साहस से शत्रुजयो, योद्धा द्वारा अव्यलम्बी, राज्य तथा समाज सम्बन्धों में विघ्न प्राप्तकर्ता, व्यवसायोन्नाति में बाधा पायक, गुप्त गम्भीर योजनाओं केवल या व्यवसाय क्षेत्र में समुन्नत, लुटम्ब से अशान्त, गृहस्थ-जीवन से अत्यन्त दुःख का अनुभवी होगा।

(१७)- इस कुण्डली चक्र में उत्पन्न जातक परम तेजस्वी और कोप्यो, विद्या और शिक्षा से प्रभावशील, अत्यन्त पुरुषार्थी, ईश्वर-धर्म तथा भाग्यवादी, मातृ-सुख तथा पितृ-सुख का अत्यन्त भोगी, अत्यन्त गुप्त और गम्भीर योजनाओं के बल पर व्यवसाय में उन्नत, धन-संचयार्थ प्रयत्नशील, कठिन और दृढ़ता कार्य करने को तत्पर तथा उसमें हारम, गोधूमवर्ण, मध्यम कद, कृशवयु, शह-भूमि नाम में कुटुम्बकी और से चिन्तित, स्त्रीक्षेत्र में नीरसता का अनुभव किन्तु स्त्री-आसक्त, द्विभाषी योग प्राप्त कर्ता, भाग्यादय में विघ्न प्राप्त कर्ता, विरोधप्रस पर सबल, यदा-कदा धर्मपालन में हीन, अनेक चिन्ताओं से युक्त, सन्तान को आर से दुखी, अनेक बाधाओं के अनन्तर स्वकार्य-क्षेत्र में सफल, स्वाधी, क्रुद्धित हृदय, पारोम्भिक (सुख भोगी, भार्य बाधित युक्त होते हुए भी उनके सुख सङ्घाग से वंचित, पराक्रम और पुरुषार्थ शक्ति का आराधक, योगाभ्यासी, तान्त्रिक, सुख-शक्ति बाल में अतीव लापरवाह और हठीला, अपने शत्रुओं की मदद में संलग्न, अयशा, उग्रचेता होगा।

(१८)- इस जन्मलग्न में जन्म लेने वाला बालक परम तेजस्वी और प्रभावशाली, स्वाभिमानी, विद्या और संगीत का प्रेमी, गौरवर्ण, कृशकाय, विवेकी और शान्त-हृस्व, सरल तथा उदारचेता, परम चतुर, भाग्यशाली किन्तु यदा-कदा भाग्यादय में विघ्नों का प्रायक, स्त्री की आर से नारस किन्तु स्त्री आसक्त, ईश्वर्य सम्पन्न, पुरुषार्थ तथा साहस और उद्यम करने को प्रयत्नशील, उद्यम से ही व्यवसाय-कार्य में समुन्नत, मातृ-सुख, पितृ-सुख का अत्यन्त भोगी, ईश्वर तथा धर्म के प्रति आस्थावान् किन्तु धर्म-पालन से घराड़-मुख, ननसाल में हाकिम प्राप्त कर्ता जो मातृन का पोषाकारक, शत्रु और विरोधियों का भुक्तनीति तथा चतुरता से विजय प्राप्त कर्ता, व्यवसाय क्षेत्र में समुन्नत और उच्च व्यवसाय सम्पन्न तथा व्यवसाय में लम्बी दौड़ि बोलनेवाला, धीर-वीर-साहसी, परायकार की भावना से युक्त, किन्तु यथार्थ पारखी, धन-धान्यादि से पूर्ण, पितृक्षेत्र का निवासी किन्तु व्यवसाय हेतु दूर देश का अनुगामी, धन का उत्तम संचयी, अपने द्वारा औरों को उन्नत करने वाला, सन्तान की आर से दुखी होगा।

(१६)- इस कुण्डली चंद्र में जन्मेलेने वाला मनुष्य धनका अधिक व्यापार, तेजस्वी, गौरवर्ण, ऊँचा कद, अतीव प्रभावशाली, स्वोभमान, नादरी सम्बन्धों में पधुर, दृढ़ में दुर्बल, अधिक व्यवसाय चिन्तनशील, रोगोपशान्त, पुरुषार्थका सदैव भागी, भाई बहिन से सुलभ किन्तु उनके सुख सहयोग में कुछ मुस्क, मातृ-सुलभ सम्बन्धों से हीन, पौरुष में सेव्यता में सफल, उत्तम स्वास्थ्य सम्पन्न, दीर्घायु, पितृ क्षेत्र में मान प्राप्त करता, व्यवसायान्त, विवेकी, विशाक्षेत्र में कुल कर्मोपलब्ध, मान प्रतिष्ठा से संभूत, गृहस्थ भाग्यार्थ कर्मों का अनुभव, स्वाभिमान के कारण व्यवसाय रुचि से कुछ हीन, बुद्धिमान्, सौन्दर्य सम्पन्न, गृह-भूमि लाभ संपूर्ण, सन्तान पक्ष में दोबल्य का अनुभव, धनधारों को उपद्रव करने में पट, द्विभार्योग पाते वाला, भाग्यान्तर में कुछ मुस्क जीवन प्राप्त करता, ईश्वर और दाम्पत्य के प्रति आस्थावान्, किन्तु धर्मपालन में दुर्बल, कुटुम्ब से विद्वान् पाकर लयल, मृत्यु तुल्य कष्टों का भागी, द्रव्य संचय में हीन, विरोध-पक्ष में सफल, आरिष्ट मुक्त, पितृ और राज्य क्षेत्र में कमी होने वाला, कठोर पौरुष, धन प्राप्ति के लिये अधिक प्रयत्नशील होगा।

(२०)- इस जन्म-फल में उत्पन्न हुआ मानस परम प्रतापी, बुद्धिमान्, तेजस्वी, गौरवर्ण, ऊँचे कद वाला, अत्यन्त प्रभावपूर्ण, जात-चतुर, विद्या और सन्तान पक्ष में कुछ मुस्क, विवेक सम्पन्न, शत्रु और विरोधियों पर धनबल और भाग्यबल से विजयी, भाई बहिन के सुख सम्बन्धों से हीन, कुटुम्ब से त्यागा हुआ, गृहस्थ-चतुर में पूर्ण, अधिक विचार करने वाला, रव्यातिमान्, क्रूर और कुछ क्रोधी, वाञ्छाल, विवेक सम्पन्न, अपना प्रभाव जमाने में चतुर, रोगोपशान्त में अशान्त किन्तु सुन्दर (सुरोपशान्त) शक्तिशाली स्त्री का पति, कई स्थितियों से भोग विलास में धन व्यय करने वाला, ईश्वर और गो-नामिका का भक्त परन्तु धर्मपालन की मर्यादा सीमा से विमुक्त, स्वाभिमान, जीवन में कठोर आरिष्ट और मृत्यु तुल्य कष्ट होने वाला, पितृ और राज्य विषय हीनता से पूर्ण, मातृ-सुख से वंचित, दैनिक जीवन में द्रव्य की कमी का अनुभव, कठिन पौरुष से द्रव्य प्राप्ति, भाग्य में विद्वान् पाते वाला, गृह-भूमि का लाभ पैतृक रूप में प्राप्त करता, कुलित कर्म, धन संग्रह से हीन, पुरुषार्थ, और द्रव्य प्राप्ति हेतु सतत प्रयत्नशील, मान प्रतिष्ठा से पूर्ण होगा।

(२१)- इस जन्मों में जन्मा हुआ बालक पारिवर्तिक जीवन में सुखी, उत्तम स्वास्थ्य सम्पन्न, आपत्ति काल में उपचार, विद्या और सन्तान-पक्ष में कमी का अनुभव, गौरवर्ण, कुशाकाथ किन्तु पुष्टि देही, तेजस्वी तथा प्रतिभा सम्पन्न, मोती और प्रतिष्ठा प्रापक, ऊँचा कद, कोधी एवं शान्त, रिश्तियों जैसा चपल, उदार-चेला, क्रूर कमी, धन संग्रह में त्रुटि युक्त, स्त्री-पक्ष में क्लेश प्राप्त करती परन्तु सुन्दर-परिपश्यणा-शिक्षिता-सरला स्त्री का पति, वृश्चर-गा-बाह्य भक्त किन्तु धर्मपालक की मशायता से विहीन, मातृ और पितृ सुख का अल्प प्राप्ता करती, उग्र क्रूर कमी, कई विद्याओं का जानकार, परम-चतुर और विवेकी, गोपनीयता रखने वाला, परिश्रम और पुरुषार्थ के बल पर दैनिक जीवन में सफल, पितृ-द्वेष का निवासी, साधारण गृह भूमि लाभ से संतुष्ट, विरोध-पक्ष में सफल, स्वर्गामानी, धन संग्रह का अधिक प्रयत्नी, मृत्यु-तुल्य कष्ट और अरिष्टों का प्राप्ता करती, काम-देन के समान सुन्दर, स्त्री में आसक्त, बुद्धिमान्, भाग्योन्नति में विहीन से पूर्ण, बाह्य-सम्बन्धों में मधुर, अधिक खर्च करेगा।

(२२)- इस जन्मों में जन्म लेने वाला पुरुष देह से दुबला, कुशाकाथ, ऊँचा कद, श्यामवर्णी, दैनिक आय में दुबला, परम-जीवी, गृहस्थ भोगार्थ से पूर्ण, परम सुन्दर स्त्री का पति, अन्य स्त्रियों से रमण करने वाला, तेजस्वी और कोधी, परम विवेकी और-चतुर, कुटिल क्रूर कमी, कोधी, व्यवसायोन्नत, दश-सदृश स्वभाव से पूर्ण, द्रव्य-संग्रह के लिये अधिक पुरुषार्थ और कठोर परिश्रम, अत्यधिक खर्च करने वाला, गृह भूमि लाभ से नितान्त हीन, पर स्त्री-संग में द्रव्य का व्यय, बोगी स्त्री का प्राप्ता करती, उदर विकार और मूत्रेन्द्रिय का रोगी, विरोधियों पर विजयी, दैनिक जीवन में द्रव्य की कमी का अनुभव, मातृ-पितृ सुख का अल्प भोगी, मुख पर कई बार आघात होने वाला, देश-हीन, विद्या और सन्तान से हीन या कमी का अनुभव, क्लृप्त-बन्धन तथा कुटुम्ब का विरोधी, भाई-बहिन के मुख सम्बन्धों से विहीन, दिवावे के लिये धर्मपालक, मान-प्रतिष्ठा हीन, परम-चाथी, स्वास्थ्य में राज्य-हमाजैसे विकार होने वाला, द्रव्य-प्राप्तार्थ निरन्तर प्रयत्नशील, भाग्योदय में विघ्न प्राप्ता करती होगा।

(२३) - इस कुण्डली में उत्पन्न हुआ व्यक्ति देह से दुर्बल और सौन्दर्य में लुप्तयुक्त, परतन्त्र, तेज से हीन, स्त्री क्षेत्र का अधिकारी और सुन्दर परिपरायणा स्त्री का स्वामी, व्यवसायोन्नीति के लिये प्रयत्नशील, अधिक विचिन्तने वाला, वाह्य सम्बन्धों में मधुरता के कारण शक्ति सम्पन्न, धन संग्रह से वंचित, छिद्रम्व की ओर से चिन्तित, गृहस्थ सुख से हीन, भाई बहिन से युक्त, व्यन-उत्तर कुशल, शत्रुपक्ष वा उभावशाली, बाहरी क्षेत्रों से व्यवसायोन्नीत, भाग्योन्नीति में विघ्न प्राप्त कर्ता, विलम्ब से कार्य में सफल, बाहरी क्षेत्रों में मान-प्रतिष्ठा का प्रापक, शत्रुओं वा अनुचित उपयोगों द्वारा सफल, पुरुषार्थी, मोक्षार्थ और नेत्र पीड़ा प्रा-प्य कर्ता, परम साहसी, विद्या-बुद्धि और वाक्शक्ति द्वारा उत्थान को प्रयत्नशील, धर्मपालन और ईश्वर के प्रति पूर्ण निष्ठित, स्त्री से सुख सहयोग प्राप्त कर्ता, साधारण रोग युक्त, स्त्री में पूर्ण आसक्त, व्यवसाय में वल्लोन्नति से सफल, सामान्य दुग्ध स्नेही, मूत्रेन्द्रिय या आन्तरिक रोग पीनेवाला, विद्या में साधारण, बुद्धि बल से भाग्योन्नीत, सन्तान की ओर से चिन्तित, श्यामवर्ण, ऊँचा ऊँचा, स्वभाव से उग्र और शान्त, मस्तक पर चोट चिन्ह युक्त, स्त्री से मते मेद प्राप्त कर्ता है...

(२४) - इस जन्म-चक्र में जन्मा हुआ बालक शरीर से कुशल, ऊँचा ऊँचा, श्यामवर्ण, दुर्बल और असुन्दर, तेज उभाव से हीन, स्वाभिमान, स्वभाव से उग्र और शान्त से स्वार्थ पूर्ति में तत्पर, धन-संव्यवस्था प्रयत्नशील, परतन्त्रोपजीवी, व्यवसाय में प्रयत्नशील, परम विवेकी एवं विद्या-वाणी-बुद्धि योग से कार्य में सफल, उच्च पदासन, दैनिक व्यवहार में पूर्ण कुशल, गुप्त एवं गम्भीर योजनाओं के निमोण में सक्षम, गो-वाहन एवं ईश्वर का भक्त तथा धर्मपालक, विद्या क्षेत्र में श्रुति पात्रकाल, अशान्त चित्त, मान-प्रतिष्ठा प्राप्त कर्ता, मातृ-सुख से वंचित, पितृ-सुख का अल्प भागी, भागी-विलासि, स्त्री से मते मेद या स्त्रीत्यक्त, सुन्दर सुशील तथा रोगिणी स्त्री का पति, मूत्रेन्द्रिय या देह के अधोभाग का रोगी, उदरविषकार पीनेवाला, बाहरी सम्बन्धों में मधुर एवं सफल, अन्य में रमणशील, पितृक्षेत्र का निवासी, सामान्य गृह-भूमि लाभ का प्राप्त कर्ता, पुरुषार्थी तथा साहसी, उग्र कर्मिया अनुचित उपयोगों के क्राने में सक्षम और विरोधियों वा सफल, सन्तान-पक्ष में चिन्तित, भाग्योन्नीति हेतु प्रयत्नशील किन्तु विघ्न प्राप्त कर्ता एवं वृद्धावस्था में कष्ट भोगी होगा!

(२५) - इस जन्मों में जन्म लेने वाला जातक गौरवर्ण, शरीर से कृश, ऊँचा कद, स्वामि मानी, तेज हो और वक्रतापी
मैचतुर, परम उतापी, कोधी किन्तु विवेकी, विद्या तथा सन्तान पक्ष में भूटि युक्त, इन्द्रिय संग्रह से हीन, पैतृक गृह-भूमि
का स्वामी, धन संचयार्थ निरन्तर प्रयत्नशील, पुरुषार्थों एवं साहसों, स्वभाव से सरल और उदार चेत, आपत्तियाँ
और खाल में उपचार, देशादनी, अगमदत्तों की अपेक्षा अधिक व्यर्थों, राज्यवृत्त्योपजीवी, भाग्योन्नति में विघ्नों का प्रा-
प्तकर्ता, व्यग्रचित्त, अन्यपुत्र का पिता, सन्तान की ओर से चिन्तित, धर्मपालक, दैनिक अधोभाग कोरगी, मेत्र-
ज्योति में विकार युक्त, कष्ट-सह्य नाशी, स्त्री से हीन अथवा त्यक्त किंवा अन्य स्त्री का पति, अन्य स्मृतिधर्मों का भोगी,
उच्चर और भाग्य का दुर्ग विश्वासों, पितृ-द्वेष का निवासी, व्यवसाय और भाग्योदयार्थ बाहरी सम्बन्धों में मधुर, मातृ-
वर्धन युक्त किन्तु उनसे सुख-सम्बन्धों से हीन, मातृ और पितृ सुख का अन्य भोगी, मध्याह्न सम्पन्न, विरोध-पक्ष पर गुदा-
एवं गम्भीर योजनाओं से सफल, राज्य-विडम्बनाओं से मुक्त, ऊपर से चरित्रवान् बनेने वाला होगा।

(२६) - इस जन्म-चक्र में उत्पन्न हुआ व्यक्तित्व पितृ सुख से पूर्ण, तेज हो, स्वामि मानी, व्यवसाय में सफल, कोधी, गौरवर्ण,
कृश शरीर, ऊँचा मध्यम कद, सुन्दर वस्त्राभूषणों से युक्त, स्त्री से हीन में उभावी, वैमनस्यता पाने वाला, ठी, शत्रु और विरोधि-
यों पर उपकारी से सफल, पराक्रमी, मातृवर्धन से युक्त, साहसी, मुक्तविकारी, व्यवसायोन्नति में यश-कदा विघ्न प्राप्त कर्ता, धन
संग्रही किन्तु श्रेष्ठमार्गों और दिवाने के रहन-सहन में अधिक व्यर्थों, कौटुम्बिक शक्ति से युक्त किन्तु सहयोग में भूटि का अनु-
भव, उत्तम स्वास्थ सम्पन्न, विद्या एवं सन्तान में कर्मों पाने वाला तथा चिन्तित, दैनिक व्यवहार में चतुर, धन-संग्रह में दुर्ग
को अनुभूति करने वाला, मातृ-सुख से वंचित, बाह्य सम्बन्धों द्वारा इन्द्रियलामी, मध्याह्न सम्पन्न, स्त्री सुखाला का पति होने पा-
गी मतभेद रहने वाला, अन्य स्त्री का प्रेमी, दैनिक जीवन में अज्ञान्त, उत्तम सम्बन्धों से युक्त, शत्रु और विरोधियों का पराभव करने वाला, धैर्य सम्पन्न, सामाजिक मान-
प्रतिष्ठा से युक्त, बुद्धिमान्, भाग्योदय में विघ्नों का प्राप्तकर्ता, सामान्य जीवन वाला होगा।

(१६) - इस (छोटी) चक्रे में उत्पन्न हुआ मानव मध्यम कद, गौरवर्ण, शरीर से कुश और सामान्य पुष्ट, धन-संग्रह में कुदृक्मी के अनन्तर अच्छी सफलता पाने वाला, तेजस्वी और प्रतापी, क्रोधी तथा स्वाभिमानी, याम-निर्वकी, प्रभावशाली व्यक्तित्व से सम्पन्न, बाह्य सम्बन्धों में मधुर, भाग्यवी उत्तमता से पूर्ण, मातृ-सुख से हस्त और पितृ-सुख का अल्प भोगी, सुन्दर शील गुण, मुक्त बृहस्पती का पीति और सुख-सहयोग का भोगी, धर्म-विद, ईश्वर एवं भाग्य के प्रति निष्ठावान्, आदर्श अदालत, व्यवसाय में सफल, वाणी में चतुर, सन्तान एवं निधा की पूर्णता में न्यून, गम्भीर-चेतना, भाई-बहन से वैमनस्यता पूर्ण, शत्रुपक्ष में प्रभावशाली, पितृक्षेत्र की निवासि, काव्य-कला एवं संगीत का प्रेमी, समाज में सम्मानित, उच्च श्वसुराल युक्त, विवेक-द्वारा लौकिक व्यवहार में कुशल, व्यवसाय का उच्च निर्माता और सफलता प्राप्त, गृहस्थ-जीवन में उल्लासित और उमंगी, गृह-भूमि लाभ से पूर्ण, मसखरा, गौरवमयी मृदु भावित्ता से युक्त, उत्तम स्वास्थ्य सम्पन्न, सन्तान में केवल पुत्र पाने वाला, धन लाभ के लिये प्रयत्नशील, शरीर से सामान्य शुकरोणी, व्यवसाय में सामान्य परिश्रम से अच्छी सफलता पाने वाला होगा।

(१७) - इस जर्जुल-ग्न में जन्म लेने वाला पुरुष मध्यम कद, गौरवर्ण, पुष्ट देही, धन-संग्रही, वाणी और प्रभावशाली व्यक्तित्व तथा शत्रुपक्ष पर अत्यन्त प्रभावी, विद्या-बुद्धि का उत्तम योग प्राप्त कर्ता, मातृ-सुख से हीन, पितृ-सुख का अल्प भोगी, सुन्दर रूपवती गुणवती परिव्रता पत्नी का स्वामी, अन्य का धिलासि, गृह-भूमि लाभ से पूर्ण सुखी, धन-धान्य तथा रत्नादि का भोगी, वाहन-भृत्यादि का प्रायः, उच्चकोटि का व्यवसायी, स्वाभिमानी, क्रोधी और साल-हृदय, सहज ही उपन्न होने वाला, अन्य रमणियों का प्रेमी, गृहस्थ में आसक्त, दृढ्य लाभ से पूर्ण, भाग्यवादी, धर्म-रत्न-न्याय का जानकार, देशाटन का प्रेमी, पितृक्षेत्र की निवासि, अवरोध के साथ निधा प्राप्त कर्ता, ईश्वर तथा धर्म के प्रति धोर आस्तिक, शास्त्रार्थ-विजयी, पुरुषार्थी, साहसी, उत्तम स्वास्थ्य सम्पन्न, भुज्जेन्द्रिय का विकारी, वाक्-रोग का दोषी, हृदयरोग का एक बार प्रायः, वाणी में चतुर, धिलासि और रसिक जीवन से युक्त, वृद्धावस्था में सन्तान से क्षब्ध, दीर्घायु सम्पन्न, सामाजिक मान-प्रतिष्ठा का प्रायः, संगीत-काव्य-विद होगा।

(२९) - इस जन्मभोग में जन्म लेने वाला बालक देह के सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कुछ त्रुटि युक्त, गौरवर्ण, कृशकाय, ऊँचा कद, कदाकदा विशेष संकटमय, स्त्री तथा व्यवसायक्षेत्र में त्रुटि युक्त, क्रोधी, स्वाभिमानी, उभावशाली, पितृक्षेत्र में निवासिता तथा पितृ-स्वयं सहयोग से समुन्नत, चतुर, मातृ-स्वयं का अल्प-भोगी, बुद्धिमान्, विद्या और कला का प्रेमी तथा प्रायः कर्ता, सुन्दरी-चतुरा शिक्षिता स्त्री का पति, व्यवसाय में बुद्धि योग से सफल, पौरुषम सम्पन्न, धनको उत्तम कार्यो में निवेक से पच देने वाला, भाग्योन्नति में विघ्नो का प्रायः कर्ता, शत्रुओं के प्राक्पक्ष का प्रायक, यश में न्यून, दम्ब-लार्भ के लिये प्रयत्नशील और अव्यवहार लार्भ करने वाला, स्थिर-आय से युक्त, गृह-भूमिलार्भ से पूर्ण, धन-संग्रह में कुछ अभाव ग्रस्त, कुटुम्ब-स्वयं में कमी पाने वाला, सन्तान की ओर से अत्यन्त सुखी, माता का या मातृ-पक्ष से स्वयं सहयोग प्राप्ति कर्ता, साहसी और निर्भय, शत्रुओं पर सातत्यबल से विजेता, मुकुटमा आदि राज्यकार्यो में व्यस्त और सफल, राज्य एवं सामाजिक मान-प्रतिष्ठा का प्रायः कर्ता, आत्मबली, ईश्वर की अपेक्षा पुरुषार्थ और भाग्यबल को महत्त्व देने वाला होगा।

(३०) - इस जन्म चक्र में उत्पन्न पुरुष गौरवर्ण, कृश-शरीर, ऊँचा कद, क्रोधी, स्वाभिमानी तथा उभावशाली व्यक्तित्व से पूर्ण, अपनी बात प्रतिष्ठापित करने में सक्षम, उग्रकर्मी, रेश्वर्य पूर्ण रहन-सहन रखने वाला, भोगी, विलासो, अन्य कार्य कामनिधो का भोगी, शुक्र-दोष से युक्त, कुटुम्ब शक्ति से हीन, मातृ-स्वयं से वंचित, दृढोत्तरचयी, विद्या और सन्तान का प्रायः कर्ता, सन्तान में कन्याओं का आधिक्य, तेजस्वी पुत्र युक्त, अधिक बचैला, सामाजिक प्रतिष्ठा सम्पन्न, राज्यक्षेत्र में गुप्त योजनाओं द्वारा सफल, साहसी और पौर पौरुषमी, धन-संग्रह की उद्देश्य का गठ-बाट से जीवन व्यतीत करने में दक्ष, पिता का विरोधी, किन्तु पितृ-सहयोग से ही समुन्नत, भाग्योदय में अनेक बार विघ्नो का प्रायः कर्ता, ठीक, कुरकमी, ईश्वर और धर्म के प्रति पारम्भ में अनास्थावान्, शत्रुजयो, मृत्यु-तुल्य कष्टों का जीवन में पॉन्चवार प्रायक, राज्य से आजीविका प्राप्ति करने में सक्षम, स्त्री क्षेत्र में मतभेद राखते हुए निरसता का अनुभवो, अन्य स्त्री का पति, पौर पुतापोस्वंधीर-वीर होगा।

(३१)- इस कुण्डली में जन्मा हुआ व्यक्ति दैहिक सौन्दर्य में अति युक्त श्यामवर्ण, कुशकाम, प्रभावशाली, उग्र और शान्त, गुप्त योजनाओं का निर्माता, दैनिक व्यवहार में उद्योगी, स्त्री पक्ष में अतीव प्रभावशाली, बालिष्ठ, परिश्रमी एवं पुरुषार्थी, दृढ धर्म में सफल, पितृक्षेत्र का निवासी और शक्ति सम्पन्न, परिश्रम से लाभ कने वाला, धन-संग्रह में सफल, कौटुम्बिक सुख-सहयोग से पूर्ण, सन्तान पक्ष से सुखी और शक्ति युक्त, जनसाल की ओर से दुर्बल, अधिक व्ययों, जीवन में कई बार मृत्युतुल्य कष्ट आया करता, स्त्रैण तथा गृहस्थ में आसक्त, वाह्य सम्बन्धों में विवेक और बुद्धि बल से सफल, जीवन भाषा तथा चिन्तित, शत्रु पक्ष में विवेक बल पर सफल, भाग्य बल से धनवान् भाग्यवान् माने जाते वाला तथा गृहस्थ-नृपति, न्याय मार्ग से दुर्व्योपाजक, धर्मपालक और देशपरीय मिष्टान्त पूर्ण, भार्गव होने सम्पन्न, साहसी, विद्यापक्ष में सम्पन्न, मार्गशिक्षा से आदर्शनादी, सुख से भाग्यशाली, स्त्री से कुछ मतभेद रखने वाला, व्यवसाय क्षेत्र में कुछ विवेकी का प्रावक, यदाकदा आलस्य युक्त, अपनी उन्नति में लक्ष्मण, कभीकभी मार्ग से मतभेद रखकर अशान्त चिन्तित वाला होगा।

(३२)- इस जन्मों में उत्पन्न हुआ मनुष्य मध्यम कृद, गौरवर्ण, अत्यधिक तेजस्वी और क्रोधी तथा प्रभावशाली, उत्तम स्वास्थ्य युक्त, परिश्रमी और पुरुषार्थी, साहस के बल पर उच्चकोटि का व्यवसाय तथा कभी कभी विघ्न प्राप्त करते हुए अपने कार्यक्षेत्र में सफल, विद्या और सन्तान शक्ति से पूर्ण, धन-संग्रह के लिये प्रयत्नशील, गृहस्थ में आसक्त, किन्तु स्त्री से मतभेद रखने वाला, दृढ़ निश्चयी, यदाकदा आलस्य के कारण हार मि जाता कता, परम विवेकी और चतुर, अन्य कामियों का भोगी, अधिक व्ययों, धन-धान्य-वाहन-वृत्त्य रत्नादि सुख से पूर्ण, न्यायोचित कार्य करने में सक्षम, जनसाल की ओर से दुर्बल, शत्रुओं पर विवेक द्वारा सफलता पाने वाला, गोब्राह्मण देव और धर्म का यथायथा पालक, यदाकदा मृत्युतुल्य कष्टों का भोगी, रोख्य से सम्पन्न, स्त्री पक्ष में दुर्व्योपाजक, सुन्दर गौरवर्ण शिक्षित स्त्री से युक्त, मार्ग का पूर्ण भक्त और सुख सहयोग प्राप्त कता, पति और साहसी, भोगी का प्रेमी, सुख से भाग्यशाली और भाग्यवान्, दैनिक जीवन में व्यवहार कुशल और अशान्त चित्त, राज समाज में मान प्रतिष्ठा पाने वाला होगा।

(३३)- इस जन्म-चक्र में जन्मे लगे वाला ब्रह्म, केंचा कद, पुष्ट देही, अत्यन्त उत्साही और साहसी, स्वभावमानी, ते-
जस्वी और कोधी, अत्यन्त विवेकी, किसी की परवाह न करनेवाला, यदाकदा विद्वानों का सामना करने में सक्षम तथा
व्यवसाय में उच्चकोटि का सफल भाग्यवान्त, धर्म और ईश्वर के प्रति अतीव निष्ठा सम्पन्न, विद्या में पूर्ण ज्ञातक त-
था अनेक कला एवं विद्याओं में प्रवीण, नाक-भाल पर सम्पन्न और शत्रुओं पर प्रभावशाली व्यक्तित्व से सफल, दृढ़ोप-
स्थिति, धन संबंधी प्रयत्नशील और उत्तम धन का संग्रही, मातृ-सुख सम्बन्धों में दृढ़ युक्त सहयोग प्राप्त करती, स-
न्तान से समुन्नत तथा तद्विषयकी चिन्तित, न्यायोचित बात कहने वाला एवं तदनुगामी, आलस्य से कभी कभी शक्ति
भी पीनेवाला, ऐश्वर्य-गृह-भूमि धन धान्य-भूत्य-वाहन-रत्नादि सुख का पूर्ण भोगी, उत्तम स्त्री-सुख का
प्राप्त करती, निश्चित आय से परिपूर्ण, कोटिबिम्ब सुख सहयोग करने वाला, धैर्यवान्, भाग्यशाली, गृहस्थ में
पूर्ण आसक्त, नानाल-पक्ष से दुर्बल, कठिनताओं का मनोबल से सामना करने में सफल व्यक्तित्व सम्पन्न होगा।

(३४)- इस जन्म में उत्पन्न हुआ जातक मध्यम कद, गौरवर्ण, पुष्ट देही, अतीव साहसी और उत्साही, तेजस्वी,
स्वभावमानी, स्वभाव से उग्र और विवेक सम्पन्न, देशाटन करने में सफल, विदेशन का निवास, उद्यम एवं अन्य
व्यवसाय क्षेत्र में यदाकदा विद्वानों का सफल (सु-दु-सुविशाल प्रतिपरायणा स्त्री का पति) किन्तु अन्धोद्वेगों का
भी प्रेमी। गृहस्थ में पूर्ण आसक्त, विद्या में पूर्ण और संगीत काव्य, न्याय, लभ, मन्त्र में प्रवीण, धर्म का पालक तथा
ईश्वर के प्रति पूर्ण आस्थावान्, भाग्यशाली, ऐश्वर्य के हेतु अधिक पिचेली, सन्तान-सुख प्राप्त करे हुए सन्तान की
आरसे चिन्तित, धन संबंधी प्रयत्नशील और धनकोष भीष्टि करने वाला, गृह-भूमि भूत्य-वाहन आदि के सुख से
संयुक्त शत्रुओं का पार दमन करे, यदाकदा मृत्यु-तुल्य कष्टों का भोगी, परिश्रम से अनेक कष्टों में सफल तथा कभी कभी
आलस्य के कारण शक्ति प्राप्त करती, भाग्यशाली, न्यायोचित बात कहने वाला एवं तदनुगामी, धर्मोपदेशक, भूदा स्त्री में गुप्त
रूप से रमण करने वाला, राज्य और समाज में मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, कोटिबिम्ब सुख से पूर्ण होगा।

(३५) - इस कुण्डली में जन्मा हुआ मनुष्य दैहिक प्रभाव युक्त, ऊँचा कद, व्यक्तित्व सम्पन्न, सामान्य रूप से अच्छा, गौरवर्ण, धार्मिक मान्यता और तेजवान, परम चतुर और विवेकी, प्रभाव की दृष्टि हेतु प्रयत्नशील, चंचल प्रकृति, स्वभाव में विवेकी का प्राप्तकर्ता, अन्योद्देश्यों का भोग्यिलास पाने वाला, शत्रुजयो, व्यवसायाध्य परिश्रम और सफल, गृहस्थ में चिन्तित, दैनिक आय में पूर्ण, कौटुम्बिक सुख सहयोग का प्रायक, धर्म का सामान्य पालन और ईश्वर में पूर्ण आस्थावान्, व्यवसाय में अधिक लाभ करने की प्रार्थना से युक्त, विद्या और सन्तान क्षेत्र में उभाव्यगत, अत्यन्त साहसी, शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में युक्ति युक्त, गृह-भूमि और मातृ-सुख में उभाव्य वाने वाला, आन्तरिक दुःख, स्त्रीपक्ष में मान्यता प्राप्त, पितृ विषय में चिन्तित, व्यवसाय में कठिन विघ्न प्राप्तकर्ता, राज्य और समाज के सम्बन्धों में युक्ति और मान प्रविष्टि में उभाव्य पाने वाला, बाहरी सम्बन्धों में अरुचि से सम्पर्क बनाने वाला, अधिष्ठाया, वैतृक गृह-भूमि लाभ से युक्त, भारी बोझ से संयुक्त, साहस सम्पन्न, गृहस्थ की ओर से अशान्त, धन संग्रह से हीन, धन से चार्थ उपा और कठिन परिश्रम से सफलता युक्त होगा।

(३६) - इस जन्मलग्न में जन्म लेने वाला मातृ जीवन में कड़े वार मृत्यु तुल्य कष्टों का भोगी, जीवन रक्षार्थ अनेक उपाय करने में सक्षम और प्रयत्नशील, उत्तराधिकार और परिश्रम से जीवनीन की दार्थ कठिन साधनों का प्राप्तकर्ता, गम्भीर चिन्ताओं से ग्रस्त, दीर्घायु, गौरवर्ण, ऊँचा कद, तेजस्वी, परम चतुर और विवेकी, कौटुम्बिक सुख सहयोग में युक्ति सम्पन्न, चंचल स्वभाव, धीर, गौर, साहसी, अधिष्ठाया, अन्तःतन में दुःख, पितृ और से चिन्तित, विद्या और सन्तान भी ओर से चयन, धार्मिक मान्यता, राज्य समाज में मान प्रविष्टि से हीन, व्यवसाय क्षेत्र में विघ्नों का प्राप्तकर्ता तथा कठिन परिश्रम से सफल, भारी बोझ के सुख सम्बन्धों में उभाव्य गस्त, अरुचिपूर्ण बाहरी सम्पर्क बनाने वाला, धर्म-पालन में दिनाई करने वाला तथा ईश्वर एवं भाग्यवादी, आलसी, शत्रु का विजोता, स्त्री की ओर से मतभेदी और अन्योद्देश्यों में रमणकर्ता, व्यवसाय में अधिष्ठाया कम होने के स्वभाव से युक्त, मातृ-सुख से वंचित, जीवन निर्वोद के लिये चिन्तित, धूर्त और धोखेबाज, परोपकार को न मानने वाला कृतघ्नी, मृग न भुक्ताने वाला, पितृ क्षेत्र का निवासी होगा।

(३७)- इस कुण्डली में जन्म लेने वाला जातक शारीरिक शक्ति से पूर्ण, शत्रुओं का कोर दमन करे, रक्तविकारयुक्त, प्रभाव हेतु अधिक प्रयत्नशील, स्त्रीक्षेत्र में चिन्तित, गृहस्थजीवन से परेशान, ऊँचा कद, गौरवर्ण, स्वभाव से सहज ही उत्तेजित, चंचल प्रकृति, अधिक परिश्रम, आय से पूर्ण, भाग्य में प्रबल, द्रव्य और कुटुम्ब से पूर्ण, विद्या पक्ष में न्यून, सन्तान की ओर से चिन्तित, अतीव साहसी, भारी नदित और उनके सुवि सम्बन्धों से पूर्ण, पुरुषार्थ से प्रत्येक क्षेत्र में सफल, धन-धान्य-भृत्य-वाहन-गृह-भूमिलाम से सुवि, भाग्यशाली और ईश्वर के प्रति आस्थावान्, भाग्यशाली, राज्य और सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में भूटि युक्त, मध्यायु प्राप्त कर्ता, कुरुक्षेत्र पूर्ण वाह्य सम्बन्धों से युक्त, अधिक स्वयंसेवा, मातृपक्ष से सुवि, ऐश्वर्य से रहने वाला, धन कमाने को प्रयत्नशील, स्वास्थ्य में भूटि पावने वाला, यदा कदा व्यवसाय में हानि प्राप्त कर्ता, स्त्रीपक्ष में सुवि, दुर्य पावने वाला, पिता से वैमनस्य युक्त, सम्बन्धों में गृह, राजावाच्यन युक्त, धन संग्रह गुरुध भूटि युक्त, स्वतः स्वभाव से परेशान रहने वाला होगा।

(३८)- इस जन्म पक्ष में उत्पन्न हुआ व्यक्ति मध्यायु प्राप्त कर्ता, गौरवर्ण, रक्तविकार, शत्रुओं का विजिता, क्रूर कर्मी, स्वाभिमान, प्रभावशील, तेजसम्पन्न, ऊँचा कद, स्वास्थ्य में भूटि का अनुभव, कुशकाय, स्त्रीपक्ष में सुवि, दुर्य पावने वाला, गृहस्थजीवन से चिन्तित, सन्तान की ओर से एवं विद्या पक्ष में न्यूनता युक्त, द्रव्य तथा कुटुम्ब शक्ति से पूर्ण, भारी नदित के सुवि सम्बन्धों में कर्मा का अनुभव, राज्यक्षेत्र में सफल एवं अत्यन्त, अत्यधिक परिश्रम और सुवि, स्वयंसेवा सम्पन्न, विलासि जीवन, स्वभाव से परेशान, धन-धान्य-गृह-भूमिलाम से सुवि, भाग्यशाली के प्रयत्नशील अधिक कर्मा का विजिता, वृद्धावस्था में दुर्य, मान-प्रतिष्ठा में अभाव प्राप्त करने वाला, धर्म और ईश्वरीय निष्ठा से पूर्ण, पुरुषार्थ, द्रव्यलाम से भूटि युक्त, धर्म एवं साहस, पिता से भूटि युक्त सम्बन्ध रहने वाला, मातृ सुवि और मातृपक्ष में निवास, ऐश्वर्य से अधिक स्वयं करने से परेशान, व्यवसाय में कभी कभी हानि युक्त सफल, धन-संग्रह को निरन्तर तत्परता युक्त, कठोर परिश्रम से आमदनी में हदो में सफल, कभी कभी गम्भीर संकट का प्राप्त कर्ता होगा।

(३९)- इस जन्म में जन्म हुआ मनुष्य पराक्रम और चतुरता से द्रव्य प्राप्त करने में सफल, सुदृढ बुद्धि, दोनकव्य-
वसाय में जीविकापार्जन करने में सक्षम, भाई-बोहन मुक्त तथा उनके सुख सम्बन्धों में भुट्टि प्राप्त करती, चातुर्यशालि से
भाग्यवृद्धि को प्रयत्न शील, पुरुषार्थ द्वारा भाग्यवत्, कुश-शरीर, ऊँचाकद, मुख पर चोट धारित शान धारण वाला, (चा-
रुष्य तथा सौन्दर्य में कमी का अनुभव, श्यामवर्ण, मान-प्रतिष्ठा में भुट्टि युक्त, गुप्त योजना बनाना का गहरे संकट काल में सफ-
ल, परिश्रमी, अधिक साहसी, (३१) स्वभाव किन्तु गम्भीर और गुप्त प्रकृति, व्यवसायोन्नति में संलग्न, स्त्रीपक्ष में
शालि सम्पन्न, गुह्यरोग से पीडित, अन्यस्त्रियों में रमण शील, धित-सुख का अल्प भोगी, सामान्य मान-प्रतिष्ठा
प्राप्त करती, कठिन परिस्थितियों में धैर्य युक्त, हृदय में चिन्ता के कारणों से परेशान, गृहस्थ संचालना में चिन्तित, आ-
पस में धन स्वरूप करने वाला, व्यवसाय में द्रव्य लाभार्थ परिश्रम करती, विद्या तथा सन्तान से पूर्ण, शत्रु एवं विरोध पक्ष
पर प्रभाव शालि, विवेक द्वारा मान-प्रतिष्ठा तथा करने में कुशल, शत्रुओं पर विजयी होगा।

(४०)- इस कुण्डली में जन्म लेने वाला पुरुष ऊँचाकद, कुश-शरीर, गोधूमवर्ण, स्वाभिमान और उत्तेजित, स-
न्तान शालि से पूर्ण, स्त्री क्षेत्र में क्लेश प्राप्त करती, विद्या में महान् सौन्दर्य में भुट्टि युक्त, सुख तथा मत्सक पर आपा-
त पाने वाला, द्रव्य प्राप्ति में सफल, यदाकदा कठिनार्यों से युक्त, द्रव्य और कौटुम्बिक असन्तोष प्राप्त करती, सा-
मान्य रोग पीडित उत्तम स्वास्थ्य और आयु प्राप्त करती, धीर-वीर, साहसी तथा गुप्त-गम्भीर योजनाओं में निपुण,
शत्रुओं पर प्रभाव सम्पन्न, पराक्रमी, भाई-बोहन के सुख सम्बन्धों में भुट्टि युक्त, धिये की तथा विजयी, विघ्न सहित स्त्री-
पक्ष में सफल, अन्यस्त्रियों में भी रमण शील, परिश्रम से व्यवसायोन्नति में संलग्न और सफल, धिये की, अश और मान-
प्रतिष्ठा प्राप्त करने में सक्षम, स्त्री का सहयोग पाने वाला, चतुरता से भाग्योन्नति करने में सक्षम तथा धन संचारी, आरम्भ में
कुछ परतन्त्रता युक्त जीवन प्राप्त करती, धित-सुख का अल्प भोगी, मान-सुख का प्राप्त करती अथवा मान क्षेत्र का निवा-
सी, धर्म और ईश्वर के प्रति आस्थावान् किन्तु धर्मपालन में भुट्टि रहने वाला होगा।

५०५

(४१)- इस कुण्डली में जन्म देने वाला पुरुष मातृ-पक्ष में मलमेद प्राप्त करेगा, गृह-भूमि से मुक्त, उभावशाली, तेजस्वी, निम्नमान से उग्र तथा शान्त, धार्मिकतावरण से अशान्त, स्त्रीपक्ष में शक्ति-सम्पन्न, व्यवसाय में सफल, गौरवर्ण, ऊँचा कद, सामान्य देह युक्त, पितृक्षेत्र से अन्यत्र निवासी, राज-समाज और उन्नति के कार्य में बाधा पाकर सफल, स्त्री से सामान्य प्रीतिमय मलमेद, बहरी सम्बन्धों में सधुर, लघु अधिक होने वाला, रक्तविकार युक्त, सन्तान की ओर से चिन्तित और दुःखी, मान-परिच्छा से युक्त, विद्यापक्ष में नृपि युक्त, अन्य स्त्री का भोगी, धन-संग्रह में उभावग्रस्त, वाह्य सम्बन्धों से धन विषयक सुसफलता सम्पन्न, विवेकहीन विरोध पक्ष में सफलता प्राप्त करेगा, पारिभूमि, परतन्त्रता युक्त जीवन, राज-समाज में प्रभावशाली, पितृस्त्रिवका अन्य भोगी, धनवृद्धि को प्रयत्नशील, कौटुम्बिक सुख सहयोग में अभाव प्राप्त करेगा, चतुरता एवं साहस सम्पन्न, भारिबर्हिना सामान्य विरोधी, धर्मपालन में प्रवृत्त, मान-परिच्छा और यश में कमी युक्त, भाग्योन्मुख है, अनुचित और गुरुप्रयोग करने वाला, कठिन परिश्रम से जीवन-यापन करने में सफल होगा।

(४२)- इस जन्मार्ग में उत्पन्न हुआ जातक सामान्यवर्ण, दीर्घनय, उभावशाली, तेजस्वी, विद्या एवं सन्तान पक्ष की ओर से चिन्तित रुमें दुःखी, उग्र स्वभाव, गृहस्थ में अशान्त, स्त्री से सुख सहयोग के साथ मलमेदी, अन्य स्त्री का भोगी, राज-समाज एवं अन्य सम्बन्धों में मान-परिच्छा से चिन्तित, धन-संचय में नृपि प्राप्त करेगा, धर्मधर्म तथा साहस सम्पन्न, धर्मपालन किन्तु अशान्त चित्त के समय धर्म-पालन में कठिनाई करने वाला, रक्तविकारी, देह सौन्दर्य में कमी युक्त, उग्र स्वभाव किन्तु विवेकशील, पितृक्षेत्र से अन्य स्त्रियों में निवासी उन्नति एवं भाग्यवृद्धि के लिये अत्यधिक परिश्रम से प्रयत्नशील, पिता का अन्य सुख प्राप्त करेगा, आय की अपेक्षा अधिक व्यय, गृहस्थ संचालन में साहस और दुःखी, भाग्य गुरुप्रयोगकर्ता का प्रयोगकारी, कौटुम्बिक सुख सहयोग से हीन, भारिबर्हिना से विरोध युक्त, शत्रुपक्ष पर विवेक और चतुराई से सफल, परतन्त्र जीवन, कठिन परिश्रम, धन-संचय से चिन्तित, यदा कदा अनायास दुष्प्रयत्न में सफल, गौरवर्ण, सामान्य गृहादि लाभ से युक्त, उन्नति के कार्य में बाधा पाने वाला होगा।

(४३)- इस कुण्डली में जन्मा हुआ जातक गृह-भूमि लाभसे युक्त, तेजस्वी, प्रभावसम्पन्न, स्वामिमानी, गौरवर्ण, मध्यम कद, पुष्ट-रही, स्वभावसे उग्र किन्तु विवेक के कारण शान्त, मातृपक्ष में मतेभेदी, गृहस्थ-स्वभाव में नुहियुक्त, स्त्री-पक्ष में सुख सहभागी, व्यवसाय क्षेत्र में सफल, अथवा लाभ युक्त घराने में सामान्य-विद्या अधिकांश साधु सन्तान की ओर से स्थित, स्त्रीपक्ष से अच्छा लाभ प्राप्त करता, धनकोष में नुहियुक्त, कौटुम्बिक-कलेश पावेवाला, भाई-बहने से युक्त परन्तु विरोध प्राप्त करता, अधिबुद्धि, शत्रुओं का प्रभाव सम्पन्न, बुद्धिमान तथा पुरुषार्थ से दृढ्य लाम्बी, मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, बुद्धि-वर्त-नता युक्त जीवन, मदाकदा पौर शारीरिक कष्ट प्राप्त करता, साध्य सम्बन्धों में सुधुर, धन संग्रह के लिये प्रयत्नशील, चतुर तथा साहसी, संकटकाल में धैर्य युक्त, धर्मपालन में अङ्गुलि पान्तु आपसिकाल में ढील देने वाला, सहज ही धक जानेवाला, भाग्यशुद्धि हेतु अनुचित और गुप्त प्रयोग करने में सक्षम, भाग्योदय में असन्तोषकर अनुभवी, ऊपर से प्रभावशाली किन्तु आन्तरिक चिन्ताओं से ग्रस्त, कष्ट साध्य सम्बन्धों की स्थापना में चतुर होगा।

(४४)- इस जन्मांग में उत्पन्न होने वाला व्यक्ति शारीरिक शक्ति सम्पन्न, प्रभावशाली, तेजवान्, स्वामिमानी, अपने पक्ष को स्थापित करने में कुशल तथा दृढ़ निश्चयी, कौटुम्बिक शक्ति सम्पन्न, मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, मध्यम कद, गौरवर्ण किन्तु शारीरिक मोन्दर में नुहियुक्त, नृशकाय, स्वभावसे उग्र और क्रोधी, धनसंचय से घीन, भाई-बहने युक्त, पुरुषार्थ और क-मयोगी, स्मृत्, अनेक कार्य में विद्या के साध सफल, पितृ-मतेभेदी, पितृ-द्वेष को निवास और वही लाभ युक्त, राज्य और सा-माजिक सम्बन्धों में सफल, सामान्य रोग-ग्रस्त, पौर शत्रु द्वारा स्त्रिय साधन प्राप्त करने में सफल, सन्तान की ओर से अधिक दुःख, मदाकदा व्यवसाय में विप्लोका संभव, मातृ-स्वभाव में नुहियुक्त प्राप्त, विवेक द्वारा सामान्य दृढ संग्रही, मध्याह्न प्राप्त करता, सुन्दर, वाक् शक्ति में पटु तथा प्रभाव सम्पन्न, स्त्री से नीरस स्त्रिय प्राप्त करता, धर्म में अङ्गुलि पान्तु धन को अत्यधिक महत्व देने के कारण शिथिलता युक्त, दूर-दूरी, गुप्त चतुराई तथा योजनाओं द्वारा दृढ का अच्छा लाभ करने वाला, विरोध पक्ष में अपना कार्य निकाल लेने में कुशल, विद्या शक्ति का अच्छा स्त्रिय प्राप्त करने वाला होगा।

(४५)- ३५ कुण्डली चक्र में पैदा हुआ बालक अत्यधिक प्रभावशाली, सामान्य कद, उन्नत ललाटे, मुख पर चोट चिन्ह युक्त, देह में सौन्दर्य में सामान्य तुरीय, गोधूमवर्ण, स्वाभिमान, उत्तम शिक्षिता प्रतिपक्ष तथा त्रिकोण प्राप्तकर्ता, अन्य त्रिकोणीय रमणशाला, पुरुषार्थ और कर्मयोगी, परिश्रम द्वारा विद्वान् से संबंध कोल द्वारा व्यवसाय क्षेत्र में पूर्ण सफल, विद्या बुद्धि और वाणी तथा विवेक शक्ति का उत्तम प्राप्तकर्ता, सन्तान प्रदत्त में समप्रजो का पिता और सदा विषय में चिन्तित, गुण योजनाओं का निर्माता तथा चालू से विरोध पक्ष प्रभाव सम्पन्न, धर्म के प्रति आस्थावान् किन्तु व्यवहार में शिथिल, उन्नत मन्य ज्योतिष आदि से भिन्न, संगीतकाव्यकला का प्रेमी, पिता से मतभेदी, धर्म क्षेत्र का निवासी, कुछ परतन्त्र, भार्य्याहित से युक्त, धन संयोजन अधिक प्रयत्नशाली, भाग्यवी उत्तम शक्ति से युक्त, दुर्घट लोभ में विघ्नयुक्त सफल, धन संयोजन में साधारण सफल, मातृ स्त्रिया का अल्प भोगी, राज्य और सामाजिक सम्बन्ध स्थापना में कुशल तथा उत्तम मान प्रतिष्ठा प्राप्तकर्ता, सन्तान से वैमनस्य युक्त सम्बन्धों से चिन्तित, गृह भूमि लोभ से युक्त, यदा कदा गम्भीर रोगों का प्राप्तकर्ता होगा।

(४६)- ३५ अनुलून में उत्पन्न होने वाला मनुष्य सामान्य कद, ऊँचा माथा, गौरवर्ण, देह सौन्दर्य में तुरीय, अतीव प्रभाव सम्पन्न, तेजस्वी, धर्मविवेकी, स्वभाव से उग्र, किन्तु सहज में शान्त, अत्यधिक स्वाभिमान तथा दृढ़ निश्चय पर आरुह, गौरवार्थ शिक्षित प्रतिपक्ष स्त्री से युक्त किन्तु अन्य स्त्रियों में भी रमण करने में पट, ऐश्वर्य से रहने वाला, गृह भूमि लाभार्थ से पूर्ण, पिता से मतभेदी एवं धर्म क्षेत्र का निवासी, विशिष्ट परिश्रम और कर्म बल पर व्यवसाय क्षेत्र में समुन्नत तथा सफल, सुश्रुति के विचार से युक्त, विद्या बुद्धि एवं वाक्शक्ति में पूर्ण, विवेक और चालू से विरोधियों का प्रभाव में सक्षम, माता का अल्प स्निग्ध प्राप्तकर्ता, रश्मि के प्रति निष्ठा सम्पन्न, धर्मपालन में प्रवृत्त, संगीतकाव्य ज्योतिष लेखन आदि का जातकार, रहस्यमयी योजनाओं के निर्माण में पट तथा स्वकाय साधन में कुशल, भाग्यवृद्धि हेतु सतत प्रयत्नी तथा धन संग्रह से प्रभाव युक्त, राज्य और सामाजिक सम्बन्ध तथा उत्तम मान प्रतिष्ठा का प्राप्तकर्ता, यदा कदा भयंकर रोग ग्रस्त, मृत्यु बहिन युक्त, कौटुम्बिक स्निग्ध प्राप्त, सन्तान युक्त परन्तु सन्तान से वैमनस्य पूर्ण सम्बन्धों का कारण दुखी रहने वाला होगा।

(४७)- इस जन्ममें मैं उत्पन्न होने वाला मानव दैहिक लोभ्य में कुछ कमी युक्त, कुछ देही, सामान्य कद, ऊँचा माथा, गो-
रवर्णी, स्वाभिमानी और दृढ़ निश्चयी, प्रकृति से उग्र तथा विवर्ण एवं शान्त, कुछ गम्भीर रहने वाला, स्वपक्ष स्थापना में
प्रवीण, पितृ-क्षेत्र का निवास, पितृ-सुख प्राप्त कर्ता, मातृ-मर्त्ये दी, माई-बहिन युक्त, कोट-भ्रमर सुख प्राप्त के साथ सुख
पान में त्रुटि मुक्त, गृह-सुख लाभ से युक्त, कठोर परिश्रमी, रोश्चर्यमुक्त जीवन में पूर्ण, दुर्लभार्थ में सफल, द्रव्य प्राप्ति हेतु
मिन्नतर प्रयत्नी, किन्तु तद्-विषय में कठिन विघ्न प्राप्त कर्ता, विद्या-बुद्धि और वाणी शक्ति में पूर्ण, सन्तान युक्त किन्तु अ-
धिक चिन्तित, धन के प्रति पूर्ण अदालत वाला पालन में शिक्षित, पुरुषार्थ से भाग्यवृद्धि में सफल, शत्रुओं का पूर्ण विजेता,
यदा कदा गम्भीर रोग ग्रस्त, नेत्रज्योति में त्रुटि युक्त, संगीत कव्यादि प्रेमी, तंत्र-मन्त्रादि का प्रयोगी, सुन्दरी पतिव्रता स्त्री का
प्रायक, गृहस्थ में पूर्ण आसक्त, उत्तम स्वास्थ्य और दीर्घायु सम्पन्न, वाद्य सम्बन्धों की स्थापना में पूर्ण प्रवीण तथा
सम्मान प्राप्त कर्ता प्रादाकान में सहस्र, द्रव्य संग्रही और उत्तम कर्मों में धन का व्यय, भाग्योन्नत होगा।

(४८)- इस जन्म-वृक्ष में उत्पन्न मनुष्य गौरवर्ण, ऊँचा कद, उन्नत ललाट, दीर्घ किन्तु कृश वपुः, सौन्दर्य युक्त, प्रभावशा-
ली और तेज सम्पन्न, उग्र स्वभाव तथा स्वाभिमान और स्वाभिमान की रक्षा में तत्पर, विद्या-बुद्धि-वाणी शक्ति से पूर्ण स-
म्पन्न, दृढ़ निश्चयी तथा गम्भीर रहता (गृह-योजनाओं के निर्माण में संलग्न) परिवार भावना युक्त, शत्रुओं का विजेता,
पितृ से मलभेद रहित दुर्ग-पितृ-सुख सहयोग का भागी एवं पितृ-क्षेत्र का निवास तथा उन्नति शाल, कुल का दीपक,
रोश्चर्य मय जीवन व्यतीत करने में कुशल, मातृ-सुख का अन्ध भोगी, माई-बहिन युक्त, किन्तु उनसे मलभेद रहने तथा विरोध प्राप्त
कर्ता, उद्यमी और परिश्रमी, स्त्री-पक्ष में नरस, स्वल्प व्यवसाय तथा संघर्ष युक्त सफल, द्रव्य-संचय में सामान्य, गृह-भूमि-
दिलाम युक्त, अच्छी आय वस्त्रा, गम्भीर रोगी, दीर्घायु सम्पन्न, अदालत तथा रोश्चर्य निष्ठा से पूर्ण, सन्तान प्राप्त क-
र्ता एवं सन्तान की ओर से चिन्तित, कठोर परिश्रमी, पुरुषार्थ से भाग्यवृद्धि में तत्पर एवं सफल, वाहन मध्य सुख युक्त, राज्य-
तथा सामाजिक मान-प्राप्ति प्राप्त कर्ता, उत्तम कर्मों में धन व्यय, (सुन्दरी स्त्री का पति, मातृ-सुख पक्ष में हानि युक्त होगा)

(४६)- इस जन्मजन्त में जन्म लेने वाला बालक गौरवर्ण, उन्नत ललाट, नेत्रज्योति से कुछ बुरे मुक्त, पुष्ट वयु, सामान्य-
कद, क्रोधी-स्वामिमानी, वाक्पटु, परम धीर-गम्भीर तथा शान्त और विवेकी, तेज-सम्पन्न, स्वपक्ष स्थापना में प्रवृत्त,
धन-संग्रह के लिये प्रयत्नशील, यदाकदा उच्छ्वास-लामी, कोटिम्बक-वैननस्ययुक्त, धनवान्, मान-प्रीति स्थापना में प्रवृत्त, दी-
नोद्युताद्वक्ता, ऐश्वर्य से रहने वाला, कभी-कभी गम्भीर रोग ग्रस्त, सुन्दर स्त्रीयुक्त, गृहस्थ में आसक्त, परस्त्री रत, व्यवसाय
व्यवसाय में प्रवृत्त, दैनिकजीवन में अधिक व्यय के कारण चिन्तित, गृहभूमि-लाम से युक्त, राज्य सम्बन्धों में विद्वान्
प्राक्ता, गुप्तनीति सम्पन्न, भोगादि में संलग्न, पितृ-सुख से वंचित, मान-प्रीति में कमी का अनुभव, कोठेनाई मुक्त संपन्न
मयजीवन से युक्त, अत्यन्त साहसी, मातृ-मतेभेदी तथा प्रथमत्व प्रापक, यदाकदा गृहस्थवातावरण से दुःखी, संगीत वाद्यादि प्रेम,
आवासीय-गृह में परिवर्तन युक्त, भाग्यवत् वा मान-प्रीति प्राप्त करने में सक्षम, अधिक-व्यय, परोपकाररत, ऐश्वर्य और
धर्म के प्रति निष्ठावान् तथा धर्म का पालक, बाह्य सम्बन्धों में मधुर जीवन व्यतीत करने वाला होगा।

(४७)- इस कुण्डली चक्र में उत्पन्न जातक, कुशलाय, दीर्घवयु, तेजस्वी, स्वामिमानी, गौरवर्ण, ऊँचाकद एवं उन्नत-
ललाट तथा सहज ही क्रोधी, पितृ-सुख का अल्पभोगी, शत्रुजयो, स्ववाक्य-स्थापना में दक्ष, मान-प्रीति युक्त, राज्य-
सम्बन्धों में दानि युक्त, धर्म के प्रति आस्थावान् एवं यथार्थ धर्म का पालक, विद्या-बुद्धि-वाणी तथा सन्तान का उत्तम
सुख प्राप्तकर्ता, दीर्घायु सम्पन्न, यदाकदा गम्भीर रोग युक्त, संकट पाने वाला, सुन्दर पतिव्रता-स्त्री का पति, किन्तु मतेभेदी,
गृहस्थ जीवन से चिन्तित, कठोर परिश्रम और साहसी, बाह्य सम्बन्धों में विद्वान् से संबंध करते हुए सफल, व्यवसाय क्षेत्र
में कभी-कभी विद्वान् युक्त अच्छी सफलता का प्रापक, अनायास उत्तम वयु लाम युक्त, पितृक्षेत्र में निवासी, भाग्योन्नति में प्रयत्न-
शील तथा शुभ सफल, धन का उत्तम संग्रही, कुटुम्ब से मतेभेद रहित हुए साथ सहयोग का भागी, गृह-भूमि-लाम से युक्त, नि-
वासीय गृह में परिवर्तन करने वाला, वृद्धावस्था में शुभ सुखी, उदर रोग-ग्रस्ता स्त्री पाने वाला, मातृ-सुख सहयोग में बुरे
युक्त, परोपकारी, दयावान्, अधिक-व्यय, गृहस्थ सुख में नीरसता, पुरुषार्थ एवं परिश्रम से दुःख-लाम करने वाला होगा।

(११)- ३५ कुण्डली में जन्म लेने वाला व्यक्त शारीरिक बल से द्रव्यलामी, तेजस्वी, प्रभावशाली, स्वभाव से क्रुद्ध उग्र, धनधान्यादि से पूर्ण, ऐश्वर्य मय जीवन प्राप्त, प्रतिष्ठा सम्पन्न, रक्तविकार युक्त, कुटुम्ब सुख में कुछ नुई युक्त, स्त्री से मतभेदी और नीरस, व्यवसाय में सामान्य विघ्न युक्त, पितृ-सुख प्राप्त एवं पितृसेव का निवासी तथा उन्नतिशाली, विद्या और सन्तान से पूर्ण, उच्चवर्ण, राज्यभाषा एवं राजनैतिक ज्ञान से सम्पन्न, वाक्शक्ति में बहुत, शासनत-आधिपत्य, शारीरिक-सौन्दर्य युक्त, ऊँचाकद, गौरवर्ण, कुशशरीर, प्रभावशाली व्यक्तित्व से पूर्ण, मातृसुख का अल्प भोगी, पुरुषार्थ एवं विवेक से धन संग्रह को प्रयत्नशाली, अधिक व्यय, भाईबहिन के सुख सम्बन्धों से दूर, दैनिक जी-वन में प्रभाव सम्पन्न, जनसाल में दान प्राप्त करी, शत्रु और विरोध का चतुर्थ से सफल, परिश्रम से भाग्योदयो, यथाश-क्ति धर्मका पालक, आन्तरिक दुर्बलता से चिन्तित, पान्थु साहसी, यदा-कदा उन्नति से विघ्न युक्त, गृह सुखलाम सम्पन्न, भोगादि प्राप्त होने में सक्षम, सुख तथा गम्भीर योजनाओं द्वारा व्यवसाय और स्वउन्नति में सफलता प्राप्त करेगा।

(१२)- ३६ जन्मोक्त में जन्मा जातक ऊँचाकद, उन्नत ललाट, परमतेजस्वी, स्वाभिमानी, स्वभाव से उग्र, किन्तु अधि-क विवेक सम्पन्न और शान्त, उदार-चेला तथा पराधकारी दयालु, सुन्दर, शिक्षित प्रतिबल, स्त्री युक्त, पौरुषशक्ति से सम्पन्न, ईश्वर आर्ध के प्रति पूर्ण आस्थावान्, दीर्घ एवं पुष्ट वयु, प्रभावशाली व्यक्तित्व से पूर्ण, मातृसुख से वंचित, पितृसुख का अल्प भोगी, विद्या-बुद्धि-वाणी में प्रबल शक्ति सम्पन्न, शत्रुओं का दमन करे, भाग्यवद् एवं व्यय-साय में विघ्न युक्त तथा परिश्रम और कठोर पुरुषार्थ से उन्नत, धन संग्रह के लिए सदा प्रयत्नशाली, ऐश्वर्य और भोगों से युक्त, मान-प्रतिष्ठा में कुछ कमी का अनुभव, स्त्री-पक्ष अथवा स्त्री-सहयोग से समुन्नत, अधिक व्यय होने के कारण धन संग्रह से विमुख, गृहादि का साधारण लाभ प्राप्त करेगा, बाह्य सम्बन्धों में सुखशाली द्वारा सफल, राज्यकर्म द्वारा प्र-तिष्ठित, अन्य स्त्री प्रेम से पराङ्मुख, अन्य स्त्री से दुराचार प्राप्त करने वाला, सन्तान सुख से पूर्ण, दीर्घायु प्राप्त करेगा, शुक-रोग अथवा हृदयरोग से पीड़ित, नेत्रज्योति में नुई प्राप्त करेगा, कभी-कभी आलस्य करने वाला होगा।

(५३)- इस जन्म-वक्र में उत्पन्न मानव शारीरिक क्षमता और ह्योभिमान युक्त, दीर्घ पुष्ट वयु, प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, उन्नत ललाट, गौरवर्ध, उग्र और परम विवेकी, स्त्रोक्षेत्र में उदात्त किन्तु गृहस्थ में पूर्ण आसक्त, अन्य (भो) में भी रमण शील, ऊँचाकट, उदारचेता तथा यशस्वकारी दमालु, सुन्दर शिक्षित पतिव्रता स्त्री युक्त, पौरुषशक्तित्व सम्पन्न, ईश्वर और धर्म के प्रति पूर्ण आस्थावान्, मातृ-सुख से वंचित, पितृ-सुख का अत्यन्त भागी, विद्या-वृद्धि एवं वाणी में प्रबल शक्ति सम्पन्न, शत्रुओं का प्रबल दमनकारी, भाग्यवृद्धि एवं व्यवसाय में विद्वान् युक्त, मान-प्रतिष्ठा में कुछ कृटिका अनुभवों, स्त्रीपक्ष अथवा स्त्री सहयोग से समुन्नत, अधिक व्ययों होने के कारण धनसंग्रह से विमुक्त, गृहार्थ का साधारण लाभ प्राप्त करता, बाह्य सम्बन्धों में गुप्त शक्ति द्वारा सफल, राज्यकर्मक्षेत्र प्रविष्टा प्राप्त करता, अन्य (भो) से द्रो (का) पति वाला, सन्तान-सुख से पूर्ण, दीर्घायु प्राप्त करता, प्रेम-र अथवा रुद्ध रोग से पीड़ित, साहसी, नेत्र-ज्योति में कृटि प्राप्त करता, कभी कभी शोधित और अग्राह्य युक्त होगा।

(५४)- इस अनुवर्ति में उत्पन्न होने वाला पुरुष शारीरिक सौन्दर्य सम्पन्न, गौरवर्ध, सामान्य कट, मंचल प्रकृति, अधिक विवेकी, उग्र और शान्त, मृदुल और उदारचेता, यशस्वकारी, ऐश्वर्य और भाग-मिलाप प्राप्त करने में पूर्ण, स्त्री से मूलभेदी, मातृ-सुख से वंचित, पितृ-सुख का अत्यन्त भागी, मातृ-दक्ष से सुखी, विद्या-वृद्धि तथा सन्तान-सुख से पूर्ण, ईश्वर और धर्म निष्ठा सम्पन्न, किन्तु यथार्थ पालन में हीन, अन्य हिनेश्वरों में रमणकारी, विरोध-पक्ष में चतुराई से कार्य निष्कालने में सफल, यदाकदा आत्मस्थ पूर्ण, (सुरा-सुन्दरी का प्रेमी, भाग्योदय में विद्वान् युक्त समुन्नत, पाम-व-तुर और साहसी, दीर्घायु प्राप्त करता, राज्यनीति में पटु तथा राज्यक्षेत्र में प्रविष्टा सम्पन्न, स्वयं राज्य-व्यय का भागी, ऐश्वर्य-गोदि में अधिक व्ययों होने से धन-संचयन हीन, गुप्त शक्ति और गन्भीर योजनाओं में निपुण, परिश्रम और अनुशासन प्रिय, साहस सम्पन्न, गृहार्थ सुख में सामान्य, प्रतिपक्ष की ओर से निन्ता युक्त, उच्च पदासन किन्तु अवनीत प्राप्त करता, मान-प्रतिष्ठा में अभाव का अनुभव, स्त्री सहयोग से उन्नति प्राप्त करने में सक्षम होगा।

(५५) - इस जन्मोंग में जन्म लेने वाला मनुष्य शारीरिक शक्ति सम्पन्न, आत्मबली, स्वाभिमान, सौन्दर्य युक्त, तेज-स्वी और प्रभावशाली, व्यवसाय क्षेत्र में चिन्तित, ग्रहस्थ संचालन में भ्रुटिका अनुभवी, धोखा पाने वाला, अत्यधिक खर्चीला, दीर्घायु प्राप्तकर्ता, भार्दकरी के द्वारा संस्कार में भ्रुटि पूर्ण, गृह भूम्यादि लाभ में सामान्य, स्त्री वस्त्र में भ्रुटि कमीका अनुभवी किन्तु परिव्रता स्त्रीका पति, पितृ-सुख का अल्पभोगी, आयदनी में कमीका अनुभव शील, गृहस्थ में आसल, यदाकदा गम्भीर मृदुपुत्रुल्य केष्टोंका प्राप्तकर्ता, राज्यकर्मचारी, विदेश यात्रा की सम्भावना प्राप्त, वाह्य सम्बन्धों की मधुरता से स्वकार्य क्षेत्र में सफल, उन्नति हेतु सर्वथा प्रयत्नशील, विरोध पक्ष में शान्ति नोहिसे सुफल, कुटुम्ब प्रभाव से युक्त, साधारण धनलामी, मातृ-सुख से वंचित, राज्य-समाज में मान-प्रतिष्ठा प्राप्तकर्ता, धर्म-पालन से दूर, धन संग्रह से वंचित, कुटुम्ब से परित्यक्त या वैमनस्य पूर्ण सम्बन्धोंका प्राप्तकर्ता, सन्तान (सुख से वंचित और चिन्तित, दत्तक पुत्र प्राप्तकर्ता, स्वभाव से उग्र, परम-चतुर, अधोशरीर में कीड़ा पातवाला होगा।

(५६) - इस कुण्डली में उत्पन्न होने वाला जातक सुन्दरगौरवर्ण, सामान्य रुढ़, ऊँचा माथा, स्वाभिमान, स्त्री-सुख से वंचित अथवा स्त्रीकी ओर से उदासीन, पारिवर्त साहसी, स्वभाव से उग्र और विवर्धनी तथा शान्त, कुटुम्ब से वैमनस्य पूर्ण सम्बन्धों से युक्त, दीर्घायु प्राप्तकर्ता, भोग-विलास और रोश्मय भयजीवन से पूर्ण, सन्तान से सुखी, किन्तु मलमेद युक्त सम्बन्धों से पूर्ण, यदाकदा गम्भीर रोग-गुस्ता, धन-गृह-भूमि लाभ में साधारण, राज्य क्षेत्र में मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, सामाजिक प्रतिष्ठा में सामान्य, राज्यकर्मचारी, उन्नति को सर्वथा प्रयत्नशील, राज्य-द्रव्यापजीवी, पिता-सुख और उन्नति में साधारण, विरोध पक्ष में उन्नत-योजनाओं एवं मातृ-विलास की विलासिता, अनेक आर्वात्त और औरष्टों से युक्त, मातृ-सुख से वंचित, पितृ-सुख और पैतृक धनका अल्पभोगी, भार्दकरी के द्वारा सम्बन्धों से सर्वथा दूर, वंचित उन्नति, स्वभाव-स्थापना में दृढ़ और समर्थ, संगीत-काव्यादि का प्रेमी, दैनिक आय में भ्रुटि का अनुभवी, भाग्योदय में अनेक बार विघ्ना को प्राप्त करने वाला होगा।

(५७) - ३२ जन्मों में जन्मा जातक शरीर में दुर्बल, सौन्दर्य में अभाव युक्त, सामान्य कद, श्रमावर्ण, दृढ लाभ में भूटि युक्त, परतन्त्र, जीवोपभोगी, व्यवसाय कार्य में चतुर, सुन्दरी शाश्वत स्त्री प्राप्त करती, गृहस्थ भोग में पटु, गृहस्थ संभालने में अभाव गृह, यदाकदा अच्छे दृढ लाभ का पाने वाला, पराक्रम और पुरुषार्थ से सफल, कौटुम्बिक और भाईबहिन के सुख सहयोग से युक्त, स्त्री से मतभेदी, अन्य स्त्री में प्रेम युक्त, काश्य सम्बन्धों से भाग्योन्नीत करती, धर्मपालक, विधेकी - गम्भीर और शान्त, उद्योगी जनोर्ष के निर्भीक में दक्ष, सन्तान पक्ष में वैमनस्य मय, विद्या - बुद्धि मय जीवन पाने वाला, आर्यवली स्त्री का पति, उद्योग हेतु अधिक परिश्रम, आदरनिधी, भाग्यवान्। सुयश प्राप्त कर, किसी भी प्रकार आवश्यकताओं का पूर्ति करती, दैनिक जीवन में ऐश्वर्य युक्त, मध्याह्न सम्पन्न, कभीकभी रोग और निवृत्त मय, उत्साही, वाणी में प्रभावशाली, सामान्य विचाराओं से युक्त, विरोध पक्ष पर गम्भीरता और भाव्य से काम निष्कालने वाला, युक्ति एवं साधनों द्वारा कार्य करने में सक्षम, शरीर के अयोभाग में गम्भीर रोग मय, विचारशील और उद्यमी होगा।

(५८) - ३२ कुण्डली में जन्मे लेने वाला व्यक्ति लम्बे कदका, स्वाभिमानी और शान्त उकील, सामान्य श्रमावर्ण, शारीरिक सौन्दर्य में अभाव युक्त, दुर्बल, विद्या - बुद्धि और पन्थाने में साधारण अभाव के साथ उत्तम योग प्राप्त करती, मध्याह्न प्राप्त करने वाला, व्यवसाय कार्य में दक्ष, आदरनी में भूटि युक्त, गृहस्थ सक्त, सुन्दर भाग्यशालिनी पति-परायणा और श्रमावर्ण स्त्री का पति किन्तु स्त्री से मतभेद रखते हुए अन्धविश्वास में रमण शील उन्नत लक्ष्माट, परतन्त्रता से जीवन यापक, विरोध पक्ष और शत्रुओं या युक्ति एवं गम्भीरता से सफल, धैर्य एवं साहस सम्पन्न, आवश्यकताओं की पूर्ति में संलग्न, दैनिक जीवन में ऐश्वर्य मय, धर्म का यथावत् पालक, परम विवेकी, सुयश प्राप्त करती, सुभेन्द्रिय में विकार युक्त, दैनिक व्यय की ओर से चिन्तित एवं परिश्रम से दृढ लाभ का प्राप्ति, आदरनी की अपेक्षा अधिक व्यय, धन संग्रह से वंचित, कौटुम्बिक और भाईबहिन का सुख सहयोग प्राप्त करती, मातृ सुख का अल्प भोगी, पिता से त्यागा हुआ, निजी पुरुषार्थ से उन्नति करने में संलग्न, गृह-भूमि लाभ से हीन होगा।

(५६) इस जन्म में उत्पन्न मनुष्य दीर्घदेही, शरीर में कृश, कृष्णवर्ण, स्वार्थमानी और कर-स्वभाव, अधिक व्य-
यी, मध्ययुक्त पूर्व और मध्य पादा कर्मा, गृह-भूतलाम से युक्त, कृदित्त विचार युक्त, करकर्म, गम्भीर योजनाओं के
निर्माण में दक्ष, पिता से वैमनस्य रखने वाला, परिहार भी भावनाओं से युक्त, स्त्री-सुख पादा कर्मा, किन्तु स्त्रीविहीन
और अन्यस्त्री में समकाल, वरिष्ठ स्थान का गम्भीर संगी, उग्रवाद वादों से युक्त, धन-संग्रहक लिये अधिक पु-
मल शील और उल्लाही तथा साहसी, धन-संचय में पटु, युधर्पात, विरोधियों का प्रबल दमनकारी, मातृ-सुख
संबन्धित, रक्त-मत्ता युक्त एवं मध्ययुक्त जीवन, सुत कीड़ा में दक्ष, पुरुषार्थ और परिश्रम से द्रव्य लाभ, वाणी
में प्रभावशाली, विद्या और सन्तान की उन्नति से सामान्य सुखों, धर्म का यथार्थ चालक और परोपकारी, चतुर,
कोटिम्बक और भार-वर्धन युक्त तथा शक्ति पादा कर्मा, बाहरी सम्बन्धों में सुख, आदर्शवाद और ईश्वरीय नि-
ष्ठा में दक्ष, राज्य विरोधी, सर्वथा चिन्ताओं से रहित जीवन व्यतीत करने वाला होगा।

(६०) इस जन्म कृष्णवर्णी में उत्पन्न होने वाला मानव धित-सुख और शील सम्पन्न अथवा पैतृक-धन पादा कर्मा, सुन्दर,
गौरवर्ण, कृश-दृष्ट, उन्नत-ललाट, तेजस्वी, परम विवेकी, स्वार्थमानी, विद्या एवं सन्तान विप्रेय तथा उनका उत्तम
सुख भोगी, सर्वथा धर्मपालने में तत्पर, शुद्ध पादा कर्मा, दीक्षा युक्त सम्पन्न, विद्या और नाराज रहने वाला, स्त्री का
द्विभाषायोग पादा कर्मा, स्त्री और द्रव्य लाभ, भाग्यशाली, धन का उत्तम संग्रही, अनन्त परोपकार करने वाला,
अनायास द्रव्य-लाभ से सम्पन्न, सुखी आय वाला, रक्त-विकार युक्त, प्रभाव सम्पन्न, लोक-विख्यात, राज्य और सामा-
जिक सुख सम्बन्धों से पूर्ण तथा सुख-मान-प्रीति-सम्पन्न, विनम्र और शान्त, कोटिम्बक और भार-वर्धन की
सर्व-सहयोग शक्ति का पादा कर्मा, ईश्वर्य में अधिक व्यय, गृह-भूमि-धन धान्य-मृत्त्व वाहनादि सुखों से
युक्त, विरोध पक्ष का दमनकारी, उत्तम कर्मों, व्यवसाय क्षेत्र में कुशल अवरोधों के साथ सफल, अनन्त धियों का वि-
भा, उल्लाही और साहस सम्पन्न, गो-श्रद्धा और देवभक्ति में दक्ष होगा।

(६१)- इस कुण्डली में जन्म लेने वाला जातक पिता-सुख एवं माता-सुख का भोगी तथा पिता-सहयोग का प्रायक, स्वामिमाती और दृढ़ निश्चयी, परमविनेयी, स्वभाव से साधारण उग्र और शान्त, अत्यधिक-चतुर, गौरवर्ण, उन्नतललाट, कुशर्द्ध, दीर्घविधु, अत्यन्त तेज सम्पन्न एवं पुभाव शाली व्यक्ति से पूर्ण, हठी, परोपकारी और दयालु, कुटुम्बिक सुख-सहयोग और शक्ति मय, भाई-बहन मुक्त, विद्या-बुद्धि और वाणी तथा सन्तान का उत्तमशक्ति सम्पन्न और सुखोपभोगी, शत्रुओं का दमनकारी, रक्त-विचार और यदाकदा मृत्युलुब्ध व्यक्त फिनेवाला, दीर्घायु प्राप्तावस्था, धर्म-निष्ठा होने में निरन्तर तत्पर और ईश्वरीय शक्ति से पूर्ण, स्त्री से मतभेद मुक्त सुख भोगी, उद्यम और उत्साही, धन-धान्य-गृह-भूमि लाभ से पूर्ण सुखी, विदेश यात्रा और जलयात्रा का योग फाने वाला, ऐश्वर्य और धर्म कार्य में अधिक व्ययी, राज और समाज सम्बन्धों में दक्ष तथा मान-प्राप्ति का एक सुयश प्राप्तावस्था, उत्तम कर्मी, आदर्शवादियों में निपुण, स्वतन्त्र व्यवसायी और यदाकदा व्यनसाय के कारण अवरोध मुक्त होगा।

(६२)- इस जन्मों में जन्मा हुआ जातक अत्यन्त साहसी, विरोधियों का प्रबल दमनकारी, शरीर में रोग फाने वाला, यश और धर्म प्रालन में कुछ मुट्टि मुल परन्तु ईश्वर और धर्म में पूर्ण आस्थावान्, परोपकारी और उत्साही, नामकमाने वाला, आत्मबली, स्वामिमाती, परोपकारी और दयालु, शरीर में कुश, दीर्घविधु, परमतेजस्वी, विद्या-बुद्धि-वाणी और सन्तान का उत्तम सुख प्राप्तावस्था, स्वभाव से उग्र किन्तु शान्त, आदर्शवादियों में निपुण, रक्त-विचार, मातृ-सुख में कुटुम्बिक, पिता-सुख सहयोग का प्रायक, भाई-बहन और कुटुम्बिक सुख शक्ति सहयोग सम्पन्न, ऐश्वर्य से पूर्ण और अधिक व्ययी, तेज सम्पन्न, पुभाव शाली व्यक्ति से पूर्ण, गृह-भूमि लाभ से युक्त, कठिन परिश्रम और साहसी, मातृ भूमि से अधिक शक्ति का निवास, जाइय सम्बन्धों में मधुरता प्राप्ता, उत्तम आयु सम्पन्न, विरोध पक्ष में कठिन समझाओं से संघर्षरत, आपसी काल में मुक्ति बल विचार करने में लक्ष्म, दृढ़ निश्चयी और हठी, धैर्य सम्पन्न, व्यवसाय में अवरोधों के साथ संकलन प्राप्ता कनिवाला होगा।

(६३)- इस जन्मोंग में जन्म लेने वाला व्यक्त भाग्यशाली, भाग्यशालिनी कालिका शिक्षित सोन्दर्यमयी स्त्री का पति, न्यायनिद, धर्म और ईश्वर के प्रति पूर्ण निष्ठ तथा आदर्शस्वरूप धर्मका बालक, उभावशाली व्यक्तित्व से पूर्ण, व्यवसाय मार्ग में साधारण भ्रष्टाचार से मुक्त, विधापक्ष में अवरोध के साथ सफलता का प्राप्ताकर्ता, विलम्ब से सन्तान का प्रायक, पुत्रप्राप्ति का अधिक योग देने वाला, शत्रु और विरोधियों का दमनकारी, सोन्दर्य और स्वास्थ्य में भ्रष्टाचार, अत्याधिक व्यय, अधिक चिन्तनशील और विचारक, कुशशरीर, सामान्य कद, स्वभाव से उग्र और शान्त, धर्मविरुद्ध, काव्य-संगीतादि का प्रेमी, मन्त्रविद्या में निपुण, यदाकदा दृढलाम्बी और से चिन्तित, गृहस्थ-सुख भोगी, मातृ-पितृ-सुख-सहयोग का प्राप्ताकर्ता, राज्यसमाज सम्बन्धों में दक्ष, मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, दृढ़ निश्चयी और दृढी, सरल और उदारचेता, मध्यायु प्रायकर्ता, स्वाभिमानी, सत्य और मृदुभाषी, गृह-आभिलाम्यमुख, पितृक्षेत्र का निवासी तथा यदाकदा अन्य क्षेत्र में प्रवास, साहसोत्साह से सम्पन्न, धार्मिक प्रायकर्ता होगा।

(६४)- इस जन्म-चक्र में उत्पन्न होने वाला मनुष्य कुशोदर, गौरवर्ण, ऊँचा माथा, दीर्घबिधु, स्वभाव से उग्र और क्रूर तथा स्वाभिमानी, गौरवर्ण, भाग्यहीन, स्वभाव की ओर से चिन्तित, दृढलाम्बी में अपूर्ण, परतन्त्रता मुक्त जीवित भोगी, अत्याधिक व्यय से परेशान, धन-संचय से हीन, मातृ-सुख से वंचित, पितृ-सुख सहयोग का प्रायकर्ता, पितृक्षेत्र का निवासी, शत्रुपक्ष का युक्तिबल से निजया, धर्मविद और ईश्वर निष्ठा से पूर्ण, कर्मपिजीवी, उद्यम से सहायी, सर्वदा चिन्तित, विद्यापक्ष में अपूर्ण, भाग्यशालिनी स्त्री का पति, गृहस्थ पालन में विद्वान्युक्त, स्त्री से मलमेदी, स्त्री से वियोग देने वाला, विलम्ब से सन्तान प्रायकर्ता, आह्वय-सम्बन्धों की ममूरता तथा राज्यसमाज सम्बन्धों से हीन, मान-प्रतिष्ठा में भ्रष्टाचार, गृहादि लाम्बी से वंचित, आपत्तिबाल में दोषयिने वाला, यदाकदा अन्त्यायु लाम्बी, भाग्यान्तरिक से सिद्धे निम्न उदत्तशाल और धर्म बालक, कार्यक्षेत्र में कुशल, कलोकेश-सम्पन्न, मन्त्र-रोग और मृदु हृत्पक्ष कर-कार-व्यय देने वाला होगा।

(६५)-इस छिण्डनी चक्र में जन्म लेने वाला मातव गोरवर्ण, उन्नत ललाट, दीर्घविष्ट, स्वोभिमानी, स्वभाव से कुछ उग्र और शान्त, जीवन में धोखा पाया करने वाला, मध्याह्न प्राय, धर्म विवेकी और बुद्धिमान, कृश शरीर, चतुर और साहसी तथा धैर्य सम्पन्न, पितृ-सुख का अन्य भागी और पितृ-क्षेत्र का निवास, राज्य और समाज एवं वाह्य सम्बन्धों का सुख लह-योग्य प्राय तथा मान-प्रतिष्ठा मय, मातृ-सुख से वंचित, अधिक पुरुषाधी और पौरुष मी, अनायास दुःख लामो एवं अ-धिक बिचौली, दैनिक जीवन में ऐश्वर्य से रहन-सहन मुक्त, गृहस्थ चंचलने के लिये चिन्तित, विद्या एवं सन्तान में उद्योग-मय सुख प्राप्त, शत्रुओं पर विजयी, सामान्य रोगी और स्वास्थ्य युक्त, क्षेत्र ज्योति में नृपियुक्त, धन संग्रह के लिये चिन्तित प्रयत्नशील, दास-मी भोगी, किन्तु आदर्शवादी, धर्म पालक और वाक्शास्त्र में प्रभावशाली, ईश्वर के प्रति निष्ठावान्, भाग्यवादी, सुन्दर स्त्री प्राय वृद्धा किन्तु मत्तमेदी, व्यवसाय में उद्योग के साथ सफल, अधिक चिन्तनशील और विचार-वान्, संगीत का व्यञ्ज्योतिष का प्रेमी, धर्म और न्यायविद्, उपदेष्टा होगा।

(६६)-इस जन्मचक्र में उत्पन्न हुआ पुरुष कृश शरीर दीर्घ देह, लोभ्य में अभावी, स्वोभिमानी उग्र और धूर्त, सुन्दर शिषित स्त्रीमुख, किन्तु स्त्री-सुख से वंचित, प्रभावशाली व्यक्तित्व से सम्पन्न, राज्य-विरोधी और उग्रकर्मा अथवा राज्य में उच्च पदासीन, मातृ-सुख से हीन, पितृ-विरोधी और दुर्ष तथा पितृ-क्षेत्र का निवास, पितृ-गृह लामो, उद्यमी-उत्साही तथा दृढ़ निश्चयी, स्वभाव से दृढ़ और प्रतिकार की भावना युक्त, धर्म और ईश्वर को हृदय से मान्यता देने वाला तथा ऊँचा से धर्म विहीन, कर्मक्षेत्र में आलसी, साहसी, भाग्योदय के लिये प्रयत्नशील दानु विघ्न प्राप्त कर, शत्रुओं पर युक्ति-जल से विजयी, अधिक व्यय से चिन्तित, व्यवसाय क्षेत्र में विघ्न के साथ सफलता प्राप्त, सम्पत्ति का पिता, विद्याश-स्त्रि में अद्योप्यसि सफल, स्थान परिवर्तन से दुःख, बिलम्ब से सन्तान प्राप्त कर, भाग्योदयार्थ दूसरे का आश्रय ग्रहण करने वाला, कटु सत्य भाषी, मान-प्रतिष्ठा में न्यूनता का अनुभव, सामाजिक सम्बन्धों से उदासीन, दीर्घायु सम्पन्न, उग्र रोग-ग्रस्त, काणी में प्रवर, घर-स्त्री में रमणशील, वृद्धावस्था में दुर्धी और असम्मानित तथा तिरस्कृत होगा।

(६६)- इस उच्छली में उत्पन्न हुआ व्योम स्वभाव से कोप्यो ओ। कर, दीर्घबुध, कुशकाय, सामान्यवर्ण, तेज-
मूल, हठी ओ। उद-निश्चयो, पिता (समस्त) रहनेवाला, स्त्री विषय में चिन्तित, किन्तु भाग्यशालिनी स्त्री प्राप्त कृता,
देह-सौन्दर्य में अभावमय, मातृ-सुख का अल्पभोगी, पेट-गुद ओ। पितृ-क्षेत्र का लाम्ही तथा निवासि, शूरवीर ओ। सा-
हसी, धैर्य तथा युद्धशक्ति साधनों द्वारा विरोध-पक्ष पर उभावशील, देशाटन करनेवाला, उच्चपदासीन, मित्रा,
बुद्धि और वाणी में अति युक्त परवर ओ। पूर्ण, सन्तान सुख का निवृत्त स्व से पायक, धर्म के पालने में हीन, उद्यमी ओ। उ-
त्साही तथा भाग्यबुद्धि के लिये प्रयत्नशील, समाज-प्रतिष्ठा से वंचित तथा राज्य-सन्तोषमान प्रतिष्ठा प्राप्त कृता, अनुशासक, आ-
त्मशक्ति में अति मय, ईश्वरीय-निष्ठा का आन्तरिक अनुभवी, कोटि-मित्र ओ। भार-काटने के सुख सम्बन्धों में युनता प्र-
दा, अस्माधिक विचिन्ता, परिवर्तनशील पदार्थ, अन्य स्त्री में रमणकारी, सुखा-सुन्दरी का भोगी, मध्याह्न प्राप्त
कृता, वायु सम्बन्धों में मधुरता तथा युक्ति कल से स्वाभि-मति में लया, बुद्धि-वर्धन में निर-रुत होगा।

(६७)- इस जन्म-चक्र में उत्पन्न होने वाला जातक (सुन्दर शरीर युक्त, विवेकी, गम्भीर ओ। शान्त उच्छली, सामान्यकद,
पुष्ट देह, बुद्धिमान्, ऊँचा माथा, स्वाभि-मानी, विद्या-बुद्धि ओ। वाक्शक्ति में पूर्ण, धैर्य एवं साहस सम्पन्न, यदा-कदा
धोला पानेवाला, स्वभाव से स्थापना में कुशल, हठी, तेजस्वी, उच्च पदासीन, राज्य ओ। समाज सम्बन्धों में दक्ष तथा मातृ-
प्रतिष्ठा का पायक, मातृ-सुख से वंचित, पिता का अल्प सुख भोगी, पितृ-क्षेत्र का स्थायी निवासि, क्रमान्त पद पर आ-
रुह, ऐश्वर्य-भोगी, सुन्दर (सुशील स्त्री) पायकृता, किन्तु स्त्री ने ओ। से असन्तुष्ट, भाग्यवान्, उन्मत्त-लाम्ही से
युक्त, गृहादिलामी, सतत भाग्योदयार्थ प्रयत्नवान्। ईश्वर ओ। धार्मिक निष्ठा सम्पन्न तथा धर्म का पालक, स्वभाव से उग्र-
शान्त एवं उदार उच्छली युक्त, परस्त्री रमणकारी किन्तु आदर्शवादी, मंत्र-तन्त्र-ज्योतिष-काव्यादि में पटु, पुरातत्वशास्त्र
सम्पन्न, विरोधियों पर मधोवामेन विजयी, उत्तम कार्य एवं रहन-सहन में धन-वित्त करनेवाला, विलम्ब से सन्तान प्रा-
प्त कृता, भार-काटने के सुख सहयोग से वञ्चित, मित्र-वशील ओ। मित्रा-कृता होगा।

(६६) - इस जन्मजन्त में उत्पन्न होने वाला मनुष्य स्वास्थ्य में त्रुटि युक्त एवं रक्तविका युक्त, प्रभावशाली व्यक्तित्व से सम्पन्न, (अत्यधिक परे मुमी ओ) उत्साही, सामान्यकद, (पुष्ट देह, गौरवर्ण, सुन्दर, पीपरा का अल्प सुख भागी, दामविवेकी गम्भीर ओ) शान्त किन्तु साधारण उग्र, (वैवाध्य-स्थापना में कुशल) सुन्दर गेहूँ वर्ण सुशिक्षता परिवर्तन स्त्री का पति, अन्य स्त्री में रमणशील, धर्मविद ओ) ईश्वरीय-नेच्छा से पूर्ण तथा यथाशक्ति धर्मपालक, हठी ओ) हृदयनिश्चयो, शारीरिक श्रम से सफल, स्त्री में आसक्त, मान-सुख से पूर्ण, गृहोदयलभ युक्त, भाई-बहिन से सुखी, राज-समाज में मान-प्रतिष्ठा युक्त तथा प्रभावशाली, अच्छा इन्ध लाभ पाने वाला, ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करने में दक्ष, उत्तम कार्य में धन का व्यय, विद्या-बुद्धि ओ) वाणी एवं सन्तान का उत्तम सुख प्राप्त करता, व्ययसाध मार्ग से भाग्योदय के लिये प्रयत्नशील, भाग्यवान् भृत्यवाहन सुख से पूर्ण, इन्ध-संग्रही, पितृ-क्षेत्र में उन्नतिशील, उदार ओ) दयालु, चातुर्यशक्ति से विरोध पक्ष में सफल, यदाकदा विद्वान् प्राप्त करता, मध्याह्न प्रापक, यश प्राप्त में त्रुटि युक्त, अपनी उन्नति में संलग्न, पराक्रम में कभी-कभी शिथिलता युक्त होगा।

(७०) - इस जन्मजन्त में जन्म लेने वाला जातक स्वार्थी मानी, क्रूर ओ) क्रोधी, विद्या-बुद्धि में पूर्ण कृशकाय, दीर्घदीर्घी, साक्षा-गवर्ण, तेज-सम्पन्न, भाई के सम्बन्धों में त्रुटि युक्त किन्तु बहिन का सुख-सहयोग प्राप्त करता, मान-सुख में त्रुटि मय सुखी, सन्तान से सुखी, पितृ-क्षेत्र में उन्नतिशील किन्तु पितृ-मलभेदी, राज-समाज ओ) बाहरी सम्बन्धों में सुधुर तथा उच्च पद प्राप्त करता एवं मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, कुटुम्ब सुख का सहयोगी, स्त्री में पूर्ण आसक्त, गृहस्थ-संचालन में पटु, पितृ-भक्त सन्तान प्राप्त करता, धर्म के प्रति पूर्ण निष्ठावान् ओ) यथाशक्ति धर्म-पालक, आदर्शनिदी, विघ्नयुक्त उत्तम आय से पूर्ण, कभी-कभी आलाय ओ) शैथिल्य का व्यवहार करने वाला, हठी ओ) हृदयनिश्चयो, उद्यम ओ) व्यवसाय में सफल, धन-संग्रह के लिये प्रयत्नशील परन्तु धन संग्रह में अभावग्रस्त, सामान्य धन संचयी, गृह भूमि लाभ से सम्पन्न, ऐश्वर्य ओ) उत्तम कार्य में धन का व्यय करने वाला, मध्याह्न प्राप्त करता, युक्तिबल ओ) चातुर्य से विरोध-पक्ष में विजयी, विमृत अथवा जल से आश्रय प्राप्त करता, सामान्य रोगी, किन्तु कभी-कभी गम्भीर संकटग्रस्त, भाग्यशालिनी स्त्री का प्राप्त करता होगा।

(५१)- इस जन्म-भाग में जन्म लेने वाला (पुरुष सामान्य कद, माला-नीपता का सुख-भोगी और सहयोग तथा दुलार पाने वाला, गौरवर्ण, सामान्य बर्तन, नेत्र ज्योति में धिक्कार का अनुभवों, शरीर से सामान्य, स्थिति मानी, पुष्ट देह, कुटुम्ब को भी, सामान्य और गम्भीर तथा शान्त प्रकृति, धाम-चतुर, व्यवसाय में दक्ष तथा कुछ धिक्कारों के साथ सफल, गृह-भूमि लाभ से युक्त, मातृ-सुख में कुछ मुटि का अनुभवों, काव्य-संगीत-दिवा प्रेमों, ऐश्वर्य-मय जीवन बिताने वाला, धिवे की ओर चतुर, उच्च पदार्थ, धर्मपालक ईश्वर के प्रति निष्ठावान्, धाम-सुन्दरी शिक्षिता स्त्री का पति, मोक्ष-बोद्धि के द्वारा सम्बन्धों में मृदुता का अनुभवों, न्याय-विद, विद्वान्, गृहस्थ में आसक्त, धैर्यवान्। गृह-रोग अथवा प्रेम-हरी, उद्यमों और उल्लाही, वास्तव में समर्थ शील, भोग-विलास और रहन सहन में धन-व्यय करने वाला, भोग्योदय में विघ्न युक्त उन्नति प्राप्तकर्ता, विरोधियों पर युक्ति-बल तथा चतुराई से सफलता प्राप्त करने में सक्षम, गृहस्थ के अतिरिक्त अन्य स्त्री भोगी, यदा-कदा सुरापायो, विलम्ब से सन्तान प्राप्त करता और इसी विषय में चिन्ता ग्रस्त, ज्येष्ठ पुत्र का अथवा सौतेले का मरण देखने वाला या उससे हीन होगा। यदा-कदा रोग युक्त मध्यायु प्राप्त होगा।

(५२)- इस जन्म-फल में जन्मा हुआ जालक सामान्य कद, पुष्ट देह, उन्नत ललाट, गौरवर्ण, कामदेव के समान सुन्दर, नेत्र ज्योति में मुटि युक्त, संगीत-काव्य-ज्योतिष-तंत्र-मंत्रवेत्ता, उद्यमों और साहसों, कुटुम्ब से वैमनस्य प्राप्त करता, उत्तम वा-स्थ (सम्पन्न), कभी-कभी मृदु-तुल्य कष्ट पाने वाला, धन संग्रह के लिये उपलब्ध शील, धन-कमी का अनुभवों, विद्या-बुद्धि और सन्तान से सुखी तथा पूर्ण, भाग्यशाली तथा व्यवसाय क्षेत्र में सफल, माता का अल्प सुख प्राप्त करता, पितृ-सुख सहयोग से पितृ-क्षेत्र में सफल और पितृक्षेत्र का निवासी, ब्रह्म सम्बन्धों में मग्न और राज तथा समाज में मान-परिष्ठा सम्पन्न, धार्मिक यथायथा पालक, गो-बोद्धि और ईश्वर का पूर्ण भक्त, गृहस्थ में आसक्त, सुन्दरी शिक्षिता स्त्री प्राप्तकर्ता, विरोध-पक्ष पर प्रभाव युक्त प्रतेज-स्त्री और आदर्शवादी, मग्न-सुदुल और उदार चेतना, गृहस्थासक्त, वास्तविक, परिश्रम तथा धर्म और विवेक बल पर अर्थ-व्य-लाभ से संयुक्त, ऐश्वर्य और उत्तम व्यक्तियों में धन का व्यय, यदा-कदा पात्रकम परिश्रम में आलस्य, कभी-कभी निज सम्बन्धों में धोखा प्राप्त करता, गृह-भूमि-मृत्यु-वाहनादि सुख से पूर्ण होगा।

(७३) - इस जन्म-चक्र में उत्पन्न हुआ (पुरुष सामान्य कदा, सामान्य वर्ण, देह-लोन्ध्व में अभाव गस्त, कुशकाय, स्वाभि-मान, ओ कोधी, गृह-योजनाओं के निर्माण में दक्ष, जन्मल-पृष्ठित, माता का अल्प सुख भोगी, आत्यधिक उरसाही ओ लाहसी, दही ओ टहनिश्वयी, उद्यम के लिये सर्वथा परिश्रम से कार्य करने में सक्षम ओ सफल, ज्योत्स्नाव से दीन, अन्य हीन वर्ण स्त्री को ज से रखने वाला, स्वकाय-स्थापना में पटु, प्रभावशाली, विरोधियों ओ शत्रुओं का विजयी, मूत्रेन्द्रिय तथा हृक् रोग से पीड़ित, मृत्यु-लुब्ध कष्ट प्राप्तकर्ता, धर्मपालन में क्लिष्ट ईर्दक ईश्वर के प्रति निष्ठावान्, परिश्रम शील उच्च पद प्राप्त आसीन, देशात्मी, विद्या-बुद्धि में पूर्ण विद्या-चतुर, सन्तान की ओ से निरन्तर तथा सुख-प्राप्तकर्ता, भाग्योन्नाति में वि-द्वेष का अनुभव, सुशुभ-दरी का भोगी विलासी, डाढ-बाट से रहने में चतुर, धन-संग्रह में निरन्तर पथ-शील तथा सामा-न्य धन-संगृही, गृहादि का लाभ प्राप्तकर्ता, यदा-कदा अनेक संधियों को पाने वाला, विवेक ओ बुद्धिबल से कार्य करने में प्रवीण, आत्मबल से दीन, आलस्य के कारण कई कार्य में असफलता प्राप्त करने वाला होगा।

(७४) - इस कुण्डली में उत्पन्न होने वाला मनुष्य सामान्य वर्ण, दीर्घ-दीर्घ, कुशकाय, उन्नत ललाट, प्रभावशाली, तेज-ज्यो, बुद्धि-ओ कोधी तथा स्वाभि-मान, हठीला, विवेक-सम्पन्न, शान्त ओ गम्भीर योजनाओं से स्वकार्य करने में प्रवीण, विद्या-बुद्धि-वाणी ओ सन्तान से पूर्ण, परिश्रमक आशु में दूर प्राप्तकर्ता, उत्तम-व्याप्त्युक्त, गृहस्थ ओ भोगी व-लाहादि में आसक्त, सुन्दरी शिशिरा किन्तु कलह-प्रिया स्त्री से युक्त, कुटुम्ब-सुख सहयोग प्राप्त, भाई-बहिन से युक्त ओ उनसे सुखी, कर्म-भोगी तथा कर्म-क्षेत्र में सफल, भाग्योदय में निरन्तर विघ्न प्राप्तकर्ता, अधिक धन-चौला, बाह्य सम्बन्धों में मधुर ओ विवेक-बल से सफल, विरोधियों का दमन करने में दक्ष, दीर्घायु-सम्पन्न, जल या विद्युत्-तापन के भय से प्रभाव-ित, मातृ-सुख का अल्प भोगी, पिता से मरभेद रखने वाला, धन-संयय को प्रेक्षित किन्तु धन-संग्रह में अभाव-गस्त, धर्म ओ ईश्वर के प्रति आस्थावान् किन्तु धर्म-पालन से विभ्रुव, ज्योतिष-प्रेमी, काव्य-विनोदी, कृत-घ्नी, पराश्रय से जीवन-यापक, यदा-कदा गम्भीर रोगों से ग्रस्त, आपत्ति-काल में धर्म-पालन करने वाला होगा।

(७५)- इस जन्मोंग में उत्पन्न होने वाला मानव सामान्यकद तथा सामान्यबल, धीर-वीर, शान्त तथा स्वामिमानी ओ (साहसी, स्वकार्य में निपुण, भाग्योदय में अनेक विघ्नों का प्राप्तकर्ता, तेजस्वी ओ (उभावशाली, स्वभाव से दुष्ट ओ (कूर, विद्याबुद्धि ओ (वाणी में निपुण एवं शूर, सन्तान की ओ (से चिन्तित एवं मत्तमेदी ओ (बुद्धि, वृद्धावस्था में सुखी, भोगी विलासी ओ (स्त्री में आसक्त, पार्श्वों का अधिक डेमा, श्वसुरालय निवासि, मातृ-सुख से हीन, पिता ओ (कुटुम्ब से विरोध करने वाला, हठी-साहसी ओ (हृदय निश्चय से पूर्ण, स्वभावक स्थापना में प्रवीण, गम्भीर युक्ति तथा योजनाओं से कार्य में सक्षम, पत्नी-पालन से विमुख, सुरा-सुन्दरी का भोगी, रोश्चर्यमय जीवन बिताने में अधिक धन व्ययी, परिश्रमी किन्तु गृहस्थ-संचालन में चारों का अनुभवही, जल ओ (आग्न से संकर प्राप्त करता, यदा-कदा मत्सु-तुल्य कष्ट-भोगी, विरोधियों का उभावशाली, पराश्रय से जीवन यापन में दक्ष, स्वस्त्रिके कारण भाग्योदय प्राप्त करता, आपत्ति काल में ईश्वर के प्रति आस्थावान् होगा।

(७६)- इस जन्म-चक्र में जन्म लेने वाला जातक स्वभाव से कूर ओ (क्रोधी, हठी, साहसी, दीर्घबुद्धि, कुशकाय, उन्नत ललाट, श्यामवर्ण, तेजस्वी, उभाव सम्पन्न, चंचल प्रकृति, आपत्ति ओ (अनेक संघर्षों से युक्त, भाग्योदय में अनेक विघ्नों का प्राप्तकर्ता, धर्मविद किन्तु धर्म-पालन से हीन, सुप्त तथा गम्भीर योजनाओं के निर्माण में सफल, पामातु-न्दरी शिक्षिता सुशीला परिपरायणास्त्री का पति, किन्तु उससे मत्तमेद रावका पर-स्त्री में आसक्त, पार्श्वों किन्तु उद्यम-शक्ति से सींग, पिता से प्रेक्ष राखने वाला, मातृ-भक्त, कुटुम्ब से युक्त किन्तु वैमनस्यकर्ता, भार-बोझन युक्त, पान्त् उनसे मत्त-भेद युक्त, दीर्घायु सम्पन्न, भोग विलास ओ (रोश्चर्य से रहने में दक्ष ओ (अधिक व्यय के कारण चिन्तित तथा परेशान, पराश्रित, बाह्य सम्बन्धों में मधुर तथा प्रीण, हृदरागी, वाक्शक्ति में पटु, धनसंचय के लिये प्रयत्नशील किन्तु धन के संग्रह से हीन, वृद्धावस्था में निरस्त ओ (दुःखित तथा अनेक रोगों का भोगी, सन्तान से शूर किन्तु सन्तान द्वारा अनाहत ओ (उपेक्षित, दोर कष्टों को बाने वाला होगा।

(७७)- इस जन्म-चक्र में जन्म लेने वाला जातक दीर्घ-दीर्घी, स्वाभिमानी, स्त्री-पक्ष में कुदृक्के शयुक्त, विशाक्षेत्र में सामा-
न्य किन्तु विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न, उभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, शारीरिक-सौन्दर्य में कुट्टियुक्त, व्यवसाय में अवरोधमय, गृहस्थ
में पूर्ण सुखी, परिश्रमी और पराक्रमी, उत्पन्न साहसमय, मध्यायु सम्पन्न, भाइबुहिन के सुख-सम्बन्धों में अभावगता, संध-
वशील, दैनिक दिनचर्या में उभावशील और ऐश्वर्यसाधा भाग-विलास में धन का अधिक खर्चीला, पितृ-सुख सम्बन्धों में कमी
का अनुभव, शत्रु और विरोधियों के दमन में दक्ष, धर्म और ईश्वर-निष्ठा से पूर्ण एवं धर्म-पालक, भाग्योदय में अव-
रोधयुक्त, राज्याश्रित तथा पितृ-क्षेत्र की उन्नति में संलग्न, राज्य एवं समाज में मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, उच्च पदारूढ़, यदा-कदा
पराभवयुक्त, विवेक और गुहाशील में पटु, धन और कुटुम्ब-वृद्धि के लिये चेष्टावान्, मातृ-सुखी, गृह-भूमि-लामे से
संयुक्त, चारुपंखल ना धन और कौटुम्बिक आनन्द मय, सुन्दर सुलक्षणा स्त्री का पति, अन्य स्त्री में भी रमण करने वाला,
व्यवसाय-कार्य में आदर्शवादी, सन्तान-सुख से पूर्ण, राज्य-विषयक साधारण कुट्टि प्राप्त करता होगा।

(७८)- इस कुण्डली में उत्पन्न होने वाला जातक कुशाकाय, दीर्घवयु, उत्तम गौवर्ण, बाल-सुन्दर, स्वाभिमानी और गम्भीर
तथा शान्त एवं चंचल प्रकृति, क्षणिक क्रोधी, उदारचेता और दयालु, मध्यायु सम्पन्न, परिश्रमी एवं उद्यमी, व्यवसायक्षेत्र
में आदर्शवादी तथा सफल, मातृ-सुख भोगी, पितृ-सुख का अल्प प्रापक, पितृ-क्षेत्र की उन्नति में रत, गृह-भूमि-लामे से संयु-
क्त, अत्यन्त धार्मिक और ईश्वरीय निष्ठा सम्पन्न तथा धर्म-पालन में दक्ष, विद्या-सन्तानादि से पूर्ण, परमविवेकी और चा-
तुर्य सम्पन्न, यश-प्राप्ति में न्यून, अजातशत्रु, परापकारी, भाग्योदय में विघ्नयुक्त सफल, गृहस्थ-सुख से पूर्ण, ऐश्वर्यमय
धानी जैसी रहन-सहन से युक्त, काव्य-संगीत-उद्योग-तन्त्र-मन्त्र और न्यायविद, यदा-कदा और मृत्यु-तन्त्रकष्ट-भोगी,
शरीर के दोषणपार्श्व में चोट युक्त, धर्मक्षेत्र लीलादि करने वाला, भाइबुहिन आदिके सुख-सम्बन्धों से युक्त, सुन्दर सुलक्ष-
णा एवं प्रतिपरायणा स्त्री का स्वामी तथा सम्पन्न स्वसुराल-प्राप्त, आत्मबली तथा सत्य व्यवहार में कुशल, वाणी एवं
स्ववाक्य-स्वी-स्थापना में दक्ष, वाचाल शक्ति सम्पन्न, संघर्ष और आपत्तिकाल में धैर्यवान् तथा पुनर्जन्म से रहित होगा।

(१०६)- इस जन्ममें उत्पन्न हुआ स्वस्तिस्वाभिमानी, गोवर्ण, कुशशेखर, दीर्घदंष्ट्री, धामसौन्दर्यमाधुर्यसम्पन्न, सु-
दुल और मधुरस्वभावी, विद्या-बुद्धि और वाणी तथा सन्तान-सुख से पूर्ण, वाक्-पटु, गम्भीर और शान्त उपकृति, धर्म और
इश्वर के प्रति पूर्ण निष्ठा सम्पन्न तथा न्यायविद और धर्म का पूर्ण पालक, गो ब्राह्मण देव भक्त, मध्यायु युक्त, संघर्ष
काल और आपत्ति और हठ के समय विवेक तथा धैर्य युक्त, साहसी, कुटुम्ब और भाई-बहिन के द्वारा सहयोग से पूर्ण, यदा-
वदा गम्भीर रोग-ग्रस्त, भाग्योदय के मार्ग में अवरोध युक्त सफल, सत्य व्यवहार शील तथा सत्य व्यवहारी, परोपकारी,
दयालुता के कारण धोखा देने वाला, निरुद्ध सुलक्षण धर्म परायण-स्त्री का स्वामी, धनी और मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, धन से
गृह में भूट युक्त सम्पन्न, मातृ-पितृ-सुख-भोगी, भाग्यशाली, यश से दीन, अज्ञात शत्रु, माता का पहले मरण देने वाला,
कर्मयोगी, आदर्शवादी, ऐश्वर्य मय जीवन प्राप्त, गृह-भूम्यादि लाभ से सम्पन्न, पितृक्षेत्र से अन्यत्र जीविका धार्जनार्थ प्रवा-
स, तीर्थटिनी, तीर्थक्षेत्र में मृत्यु प्राप्त करता किन्तु मरणकाल में दैव-स्मरण दीन, और आत्मबली होगी।

(१०७)- इस जन्मलज्ज में उत्पन्न होने वाला मनुष्य स्वस्तिस्वाभिमानी तथा उग्र स्वभाव, तेजस्वी और प्रभावशाली, मातृपक्ष में नो-
रस, गृहस्थ में भूट युक्त सुख प्राप्त, कुशकाय, स्त्रीक्षेत्र में शक्ति युक्त, दैहिक सौन्दर्य में अभावग्रस्त, नेत्रज्योति में विका-
स देने वाला, भाई-बहिन के सुख सम्बन्धी से दीन, निपक्ष सकष्ट प्राप्त करता, सन्तान और विद्या से दूर, पराक्रम और परीक्ष में शी-
घ्र, विरोधी और शत्रुपक्ष के दमन में प्रवीण, यथा साध्य भाग्योदय तथा धर्म-पालक, पितृ लाभ से वंचित, राजसमाज
पक्ष में चिन्तित, मान-प्रतिष्ठा और उन्नति में अवरोध प्राप्त, धनसंग्रह से निरत दीन, अन्य कुटुम्ब युक्त, अधिक बचोली,
बाहरी क्षेत्रों में प्रतिष्ठा प्राप्त करता, विद्वानों में धन का व्यय करके सफलता प्राप्त करने वाला, व्यवसाय और कर्मक्षेत्र में परिश्रम से सा-
मान्य सफल, राज्य और उत्तरे उद्योगिता आमदनी का आश्रित, स्वार्थमय सज्जनता का व्यवहारी, धन-लाभ के लिये कोई भी कार्य
करने को तत्पर, आपत्ति काल में अधीर और दिवावटी साहसी, बाहरी आय से वचसिचालन की शक्ति प्राप्त, शुद्ध रोगी, नेत्र-
ज्योति में दीनता प्राप्त, भ्रमण शील, भाग्योदय में दुर्बलता युक्त, स्वस्थ, मध्यायु प्राप्त करने वाला होगा।

(८१)- इस कुण्डली में उत्पन्न हुआ मनुष्य शारीरिक-सौन्दर्य युक्त, तेजस्वी, स्वामिमानी, साहस-सम्पन्न, आत्मबली, विरोध-पक्ष में विघ्न युक्त तथा चातुर्य-सफलता युक्त, स्त्री-क्षेत्र में शक्ति-सम्पन्न, सुन्दरी किन्तु कूरा-स्त्री का पति, अन्य स्त्रियों के रमण में निपुण, प्रभाव-सम्पन्न, परमविवेकी, साह-पक्ष से विरोधी, गृह-भूमि लाभ से संयुक्त, विद्या, बुद्धि, विवेक तथा वाणी का उत्तम संयोग प्राप्तकर्ता, सन्तान-सम्पन्न, किन्तु सन्तान की ओर से चिन्तित, उत्तम गौरवर्ण, सामान्य क्रद, पुष्ट देह, उत्तम स्वास्थ्य सम्पन्न, दीर्घायु प्राप्तकर्ता, धर्म-पालन में आस्था युक्त, परन्तु धर्म-निर्वह से पराङ्मुख, माग्योन्नाति में विघ्न युक्त सफलता पाने वाला, श्रेष्ठार्थदि से पूर्ण तथा रतद-विषयक अधिक व्ययी, कौटुम्बिक एवं भाई-बहिन के सुख-सम्बन्धों का प्राप्तकर्ता, श्रेष्ठ आय तथा विलक्षण-प्रतिभा सम्पन्न, व्यवसाय क्षेत्र में सफल, शत्रुल तथा उदार चेता, शत्रुओं का दमनकारी, मान-प्रतिष्ठा में कुद करी पाने वाला, सुरापायी, राज्य पक्ष से किञ्चित् सम्पन्न प्राप्तकर्ता तथा पिता एवं स्त्री-पक्ष से लाभान्वित होता है।

(८२)- इस जन्मचक्र वाला जातक तेजस्वी, सामान्य वर्ण, प्रभाव तथा प्रतिभा सम्पन्न, धन-धान्य, मृत्यु, वाहन, गृह, भूमि लाभ से युक्त, शत्रुओं पर युक्त-युक्ति तथा चातुर्य के बल पर विजय प्राप्त करने वाला, यदा-कदा शत्रु-हृत्य कष्ट प्राप्तकर्ता, स्त्री से मतभेद रहिते वाला अथवा उसका त्याग करने वाला, रति-क्षेत्र में निपुण, शारीरिक-बल तथा सौन्दर्य से युक्त, सुरापायी, पर-स्त्रीगामी, माग्योदय तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफल, आत्मबली, दीर्घ-देही, मनस्वी, पराक्रमी, यदा-कदा आलस्य भग्न हो जौन वाला, श्रेष्ठ लाभ सम्पन्न, धर्म-पालन में रुचि रखने वाला, राज्य तथा समाज में उच्च-पद प्राप्तकर्ता, महान् प्रतिष्ठा अर्जित करने वाला, विद्या-बुद्धि तथा वाणी का धनी, दीर्घायु, हठी, दृढ़निश्चयी, आत्मबली, परम साहसी, विवेकी, कौटुम्बिक-सुख तथा भाई-बहिनों के सुख से सम्पन्न, चिन्तनशील, विचारक, श्रेष्ठ वक्ता, युद्ध तथा मंत्रीर योजनाओं का निर्माता, सन्तान सुख से पूर्ण, मातृसुख का अत्यन्त मोगी तथा वृद्धावस्था में अपमानित होता है।

(८३) - इस कुण्डली वाला जन्मक शारीरिक - सौन्दर्य से युक्त, तेजस्वी तथा प्रभावशाली, सामान्य कद एवं सुष्ट शरीर वाला, आत्मबली, विद्या के क्षेत्र में गूढ़ज्ञान युक्त, उत्तम विचारक, काव्य-उद्योगिष्ठ एवं कला विद्, सन्तान-सुख से ठीन अथवा दत्तक-पुत्र लेने वाला, भाग्योदय में अनेक विघ्न पाने वाला, विरोध-पक्ष पर विजयी, धन-संग्रह में प्रधान शील, लेखक तथा विचारक, स्ववाक्य-स्थापन में प्रवीण, धर्मोपदेष्टा, अल्पधिक स्वर्चला, दीर्घायु प्राप्तकर्ता, श्रेष्ठशाली, गृह-भूमि का सामान्य लाभ पाने वाला, राज्योपजीवी, कार्य क्षेत्र तथा राज-समाज में कुछ भुक्ति-पूर्ण मान-प्रतिष्ठा पाने वाला; कुटुम्ब, भाई-बहिन तथा माता के सुख से वंचित, पितृ-सुख का अल्प भोगी, पितृ-क्षेत्र में निवास करने वाला, आपत्तिकाल में अधीर हो जाने वाला, अनेक रिजों का भोगी, मूर्खत्व में विकार पाने वाला, साहसी, वाक्यदु, विवेकी, धर्म तथा ईश्वर के प्रति आस्थावान्, गृह-भूमि-लाभ में कमी पाने वाला, भाग्यवादी, उत्साही, परिश्रमी, आपवृद्धि हेतु गिराना सचेष्ट तथा अनेक स्थानों का भ्रमण करने वाला होता है।

(८४) - इस जन्माङ्क वाला व्यक्ति शारीरिक-सौन्दर्य, विद्या, बुद्धि, विवेक-शक्ति तथा प्रतीभा सम्पन्न, तेजस्वी, प्रभावशाली, आत्मबली, स्वतः एवं उदर-विकार गुप्त, स्त्री-सुख से परित्यक्त, साहसी, सन्तान-सुख से पूर्ण, अनेक रिजों का भोग करने वाला, कार्य-क्षेत्र में कुशल, गृह-लाभ तथा प्रत्य-संग्रहार्थ-निरन्तर परिश्रम करने वाला, भाग्योदय में विघ्न युक्त, धर्म-पालक, विचारक तथा चिन्तक शील, काव्य-सङ्गीत एवं उद्योगिष्ठ आदि का प्रेमी; धर्म तथा ईश्वर के प्रति निष्ठावान्, परन्तु धर्म का प्रथावात् पालन करने वाला, परम-चतुर, सहन-सहन तथा ठाठ-ढाट प्रदर्शन में अधिक स्वर्च करने वाला, मातृ-सुख से वंचित, पिता का अल्प-सुख पाने वाला, गृह-भूमि-लाभ में कमी पाने वाला, अनेक बार मृत्यु-बुल्लु कष्टों का भोगी, अनायास प्रत्य-लाभ पाने वाला, धर्म-सम्पन्न तथा सामान्य-रत्नों का संग्रही होता है।

(२५)- इस जन्म में उत्पन्न बालक तेजस्वी, गोवर्ण, सामान्य कद, उन्नत ललाट, उद्यम तथा उत्साही, कभी कभी आलस्य का व्यवहार, स्वाभिमान की ओर कोप्यी तथा धीरे-धीरे गम्भीर ओर प्रशान्त, मोहिबोद्ध ओर को-
दुम्भक सुख-सहयोग से वंचित, भोग-विलास में दक्ष, स्त्री से मत्त भेद युक्त, सुन्दरी सुशोभा ओर गम्भीर स्त्रिया
पति, अन्य अनेक विधियों से मणिकाने वाला, धीरे धीरे ओर स्वकार्य में कुशल, सुन्दर स्वास्थ्य युक्त, शारीरिक सौन्दर्य
एवं शक्ति सम्पन्न, धन-संग्रह से धीन तथा सर्वथा प्रयत्नशील, यदा यदा धोखा देने वाला, औरष्ट ओर मृत्यु-रुद्ध गम्भीर
रोग कभी कभी पाने वाला, मातृ सुख का अल्प भोगी, साधारण पितृ सुख प्राप्त, पितृ सत्त का निवासी, मध्यायुष्य युक्त,
प्रेम-चतुर ओर निवेकी, राजभोग जिवी, ऐश्वर्य की महत्त्व देना ठाठ ब्याट में अधिक धन का व्यवसाय, धर्म क्षेत्र में पति आसम्प-
न्न तथा मातृ-प्रतिष्ठा प्राप्त, विद्यो में समुन्नत तथा उत्तम सन्तान युक्त, भाग्योदय में अनेक विधा युक्त, अनायास दुःख लाभ
अमणशील, शत्रुओं का विजयो, संगीत-काव्यादि प्रेम युक्त, चिन्तनशील ओर विचारक, धर्म तथा ईश्वर-आस्था युक्त होगा।
(२६)- इस जन्म में जन्म लेने वाला जातक पाम तेजस्वी, स्वाभिमान की, रक्त-विकार प्राप्त, स्वभाव से क्रूर ओर
कोप्यी, उग्र ओर प्रतापी, पितृ सत्त में समुन्नत ओर पितृ सत्त का निवासी, पितृ से मत्त भेद युक्त, गृह-भूमि लाभ से वञ्चित,
सामान्य पैर क-गृह लाभ, स्त्री-सुख से दूर, भोग-विलास से वीतराग, धन-संग्रह के लिये प्रयत्नशील ओर सामान्य धनी,
कुटुम्ब-सुख एवं भाई वैमनस्य सम्पन्न, मातृ सुख से वंचित, सामान्य वर्ण, सामान्य कद प्राप्त, चतुर ओर निवेकी, अनुशासन
में दक्ष, राज्याश्रित अथवा राज्य-विरोध युक्त बन्धन प्राप्त, भाग्योदय के लिये प्रेरित एवं विद्यामुक्त जीवन, समाज-प्र-
तिष्ठो में युन, अश्वारोहण में पट, कम आयुष्य प्राप्त, मृत्यु-रुद्ध कष्ट शोध ग्राही, धर्म ओर ईश्वर-निष्ठा से पूर्ण वक्ष्यार्थ
का यथार्थ पालक, पराक्रमी धीरे-धीरे एवं साहसी, शत्रुओं का शासन करने में सक्षम, व्यवसायिक कर्म से अकुशल, परधानो-
दजीवी, विद्या ओर सन्तान सुख से धीन, स्वावलम्बी, धीरे धीरे, दृढ़ी ओर दृढ़ी, दृष्ट्युक्त में पट अथवा कुत्सित ओर
मलित हृदय, अहंका युक्त, अत्यन्त बल प्राप्त करने वाला होगा।

३८८
म.स.

कु०
२०

(६७) - इस कुण्डली में जन्मा हुआ मनुष्य उत्तम गौवर्ण, देह सौन्दर्य युक्त, दीर्घायु, पुष्ट देही, पलायि ओ (स्वामि) मानी एवं विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न, क्रोधी तथा स्वभाव से कुछ उग्र, विद्या ओ (सन्तान सुविसे पूर्ण, धितु क्षेत्र का निवास) किन्तु धिता से मतभेद युक्त सुख-सहयोग प्राप्त करता। मात-सुखि भागी, विद्या में कुछ त्रुटि का अनुभव, की-श्रमो ओ (उत्साह युक्त, मात-प्रतिष्ठा प्राप्त, राज्य सहशो वैभव प्राप्त में सक्षम, गृह-भूमि लाभ से पूर्ण, धर्म तथा ईश्वर के प्रति पूर्ण निश्चित, किन्तु धर्मपालन में आलस्य का व्यवहरण करने वाला, कोट्टीम्बक ओ (भारु-बाहिर से मतभेद युक्त सुख सहयोग प्राप्त, व्यवसाय ओ (कर्म क्षेत्र में दक्ष, व्यवसाय द्वारा उत्तम धन संगृही, कभी उच्च धन लाभ तथा कभी गम्भीर हानि कोन वाला, विरोध पक्ष प्रा-व्यावृत्त शक्ति से सफल, भाग्योदय में धितु युक्त उन्नति सम्पन्न, स्त्रो से मतभेद युक्त सम्बन्ध निर्ब-हन करने वाला, उत्तम स्वास्थ्य ओ (दीर्घायु युक्त सम्पन्न, अरिष्ट काल में धितु त ओ (साहसो, स्वार्थ पालन में दक्ष, वृद्धा-वस्था में सन्तान से सुखी, काम क्षेत्र में परिश्रमो, दृढी ओ (दृढ निश्चय प्राप्त करता होगा।

(६८) - इस कुण्डली में जन्म लेने वाला पुरुष पाम तेजस्वी, स्वामि मानी, सामान्य वृद्ध, गौरवर्ण, मध्यायु सम्पन्न, रस एवं उदा-विक्रम युक्त, विकेकी-धर-गम्भीर ओ (शान्त, साहसो, आपसि व्युत्पन्न में साधारण अधीर, विरोधी ओ (शत्रुओं का प्रभावशाली तथा विजयो, चतुर, अवरोध के लाभ विद्या ओ (वाणी में पूर्ण, मात-सुख सहयोग तथा धिता का अन्य सुख प्रा-प्त करता, भारु-बाहिर युक्त किन्तु कोट्टीम्बक-विरोध सम्पन्न, पुरुषार्थ ओ (परिश्रम से द्रव्यप्राप्त एवं धन-संग्रहार्थ से बल प्र-बोधित, दृढ ओ (निश्चय आमदनी से सम्पन्न, अनायास द्रव्य लाभ प्राप्त करने वाला, सन्तान से पूर्ण, ऐश्वर्य मय जीवन व्यतीत करने वाला, सामान्य धनी, गृहगिरि का पितृ लाभ, राज्याश्रित, स्त्रो से मतभेद युक्त गृहासक्त, शारीरिक बल में मूलतः का अनुभव, कर्म तथा राज्य-पक्ष में प्रभावशाली ओ (मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, धर्मपालन ओ (ईश्वरीय निष्ठा से पूर्ण, उत्तम जन्म-वनन वाला, उत्तम कर्माश्रयो, उत्तम स्वास्थ्य युक्त, यदा-कदा कार्य क्षेत्र में आलसी ओ (हरिण प्राप्त करता, स्वभाव से दृढी ओ (अनुशासन प्रिय, सत्य का आदर्शनादी, भाग्योन्नति में साधारण विक्रम प्राप्त करने वाला होगा।

(६६)- इस जन्म-चक्र में जन्म लेने वाला व्यक्तिकारी के लोभ में भूटियुक्त, गोवर्ण, तेजस्वी, कुशकाय, सामान्य कद, स्त्रीभिमानी, चंचल-पुष्टि, शान्त ओर गुण-रीति से कार्य करने में सक्षम, प्रभावशाली ओर चतुर, वाणी में प्रभाव रखने वाला, क्षणिक क्रोधी, धर्म-पालन तथा बृहन्निरासे में पूर्ण, उत्तम कर्मधिया, राज्यादजीवी, राज्य से इव्य लाभ में सम्यक्त, सत्य ओर आदर्शयुक्त, पाम विवकी, विद्या दक्ष में अक्षोप्य के साथ सफल एवं पूर्ण, सन्तान सुख प्राप्त तथा सन्तान की उत्तरी दे लिये प्रयत्न करता, गृहस्थ में पूर्ण आसक्त, सुन्दर सुशाला, श्यामवर्ण स्त्री का पति, परिश्रमी ओर उत्साही तथा स्वकार्य में पूर्ण दक्ष ओर चतुर, धातु में अनेक कार्य में सफल, विरोध पक्ष में वाणी-पातय से विजयी, सामान्य धनी तथा गृहदि लामो, मातृ-पितृ द्विपका उत्पन्न भोगी, मध्यायु प्राप्त, राज्याधिकार तथा आ-ज्य से इव्य लाभ संयुक्त, विधायुक्त भाग्योदयो, परोपकारी ओर दयानु, माता-पिता का भक्त तथा धर्मपालक, आलस्य के का-रण धान्य ओर दानि प्राप्त, ऐश्वर्योदि भोगी, मातृ-पितृका प्राप्त करने वाला होगा।

(६७)- इस जन्म-चक्र में जन्मा हुआ जातक अत्यधिक स्त्रीभिमानी, तेजस्वी ओर स्वभाव से उग्र, कुटुम्ब तथा मातृपितृ के विरोध से युक्त, शत्रुओं का प्रबल दमन करे, व्याध्यादि प्रेमी होते हुए अहंका में पूर्ण, दानि प्राप्त करे, सामान्य कद, गोधूमवर्ण, उच्चकोटि की विद्या सम्यक्त, सन्तान का पूर्ण सुख पाने वाला, सुन्दर पति प्राप्त होगा स्त्री युक्त, किन्तु सुख में न्यून; माता-पिता से प्रयुक्त गृहण करने वाला अथवा उनका उत्पन्न-सुरक्ष संयुक्त, वाणी में प्रभावशाली, स्त्रीपिता में चतुर, उग्र तथा क्रोधी, अपनी स्त्रीपितृ के समय शान्त, धर्मका उग्रत पालक ओर उग्रदेवका इष्ट रखने वाला, तन्त्र-मन्त्र विद्या संयुक्त, सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में न्यूनता का अनुभव, ऐश्वर्ययुक्त, धन संग्रह ओर भाग्योदयार्थ चेष्टाना, गृहभूमि लाभ में भूटियुक्त, धन संग्रह में सामान्य, यदावदा गम्भीर हर्षित प्राप्त, मृत्युतन्त्र व्यक्तों का प्रापक, पुरुषार्थ ओर परिश्रम से भाग्यशाली समझा जाने वाला, अनायास हर्षित ओर इव्य लाभ में सक्षम, उर्ध्व ओर प्रतिकार भावना से संयुक्त, भूमि-प्राप्त, भौतिक विद्याविद, वाहनार्थ सुख से पूर्ण होने वाला होगा।

(६१)- इस कुण्डली में उत्पन्न होने वाला मानव सामान्य कद, कुशकाय, गोरवर्ण, स्त्रीभिमानी, तेजस्वी, धामकुन्दा, विलक्षण प्रतिभा युक्त, उन्नत कलाट, कुछ उग्र, शान्त ओर गम्भीर, विवेकी, विद्या-बुद्धि में पूर्ण, माता-पिता का पूर्ण दुःख प्राप्त करता, पितासे मत्तेद, राज्याश्रित ओर राज्य में उच्च पद तथा मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, स्व-कार्य करते में पूर्ण कुशल, मुदुल ओर उदार चित्त तथा प्रोषकारी, ईश्वर ओर धर्म में आस्था युक्त तथा पूर्ण धर्मपालक, कौटुम्बिक तथा भार-बहिर्गके सुखसम्बन्धों में भूट का अनुभव, धनसंग्रह में न्यूनता प्राप्त, गृह-भूमि लाभ से सम्पन्न, विरोध दस्तक विजयो, वाक्शक्ति में निपुण, सन्तान प्राप्त करता तथा उत्तम सुविभागी, साधारण व्यवसाय युक्त, स्त्री-सुख में मत्तेद युक्त किन्तु गृहस्थ में पूर्ण आसक्त, ऐश्वर्य में ठाठ काट से रहने वाला, उसमें कोई एवं रहन-सहन में अधिक कर्बोला, धीरे धीमे ओर उत्साही, कुटुम्ब से शत्रुवत् व्यवहार पाते वाला, सादर, यदा कदा मृत्यु-तुल्य कष्टों का अनुभव तथा मध्यमामुख सम्पन्न होगा।

(६२)- इस कुण्डली में उत्पन्न जातक सामान्य कद, पुष्ट देह, गोरवर्ण, स्त्रीभिमानी, कटु-सत्य का आदर्शवादी, धाम विवेकी, विद्या में न्यूनता का अनुभव, गम्भीर ओर शान्त, उन्नति में सतत संलग्न, अतीव चतुर ओर विवेक सम्पन्न, गम्भीर गुह्य-योजनाओं का निराला, स्वकार्य करते में कुशल, सन्तान-सुख से वञ्चित, प्रोषकारी एवं दानु, भोगोदय में विघ्न युक्त सफल, कुटुम्ब सुख से वंचित, मातृ-सुख से वंचित, पिता का अल्प सुख भोगी, पितृ-सुख का निवासी, सामान्य धन संग्रही, गृह-भूमि लाभ युक्त, भार-बहिर्गके सुख सम्बन्धों में भूट का अनुभव, राज्याश्रित ओर राज्य के लोपजीवी तथा राज्य-समाज में मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, धीरे धीमे ओर उत्साह केवल का लाभ युक्त, ईश्वर एवं धर्म में पूर्ण आस्थावान्, धर्म का उद्देशक, संगीत-काव्य-कला ओर उद्योगिक तथा तंत्र-मंत्र विद, कुन्दा सुशाला, प्रतिष्ठता, श्यामा स्त्री युक्त, अन्धोन्मेषों में रमण करी, ऐश्वर्य से रहने वाला, मित्र-विराट तथा अन्य स्त्री-विराट होला प्राप्त, यदा कदा गम्भीर भार-रूप ओर रोग-ग्रस्त, मध्यमामुख सम्पन्न होगा।

(३) - ३१५ जन्मों में जन्म लेने वाला जातक अधिक बिलेला, रोदनरसि रहने वाला, गोधूमवर्ण, देह सुन्दरता में कमोशुद्ध, शरीर से कुश, सामान्य कद, स्त्रीभिमान, कर ओ (उग्र) स्वभाव, बाहरी क्षेत्र में सफल, विन्ता ओ से गस्त, स्त्री-पक्ष में मुटि का अनुभव, भारी बोटन मुक्त, अनेक विवेकों में समर्थ शील, धर्म पुरुषार्थ ओ पराक्रम, मातृ एवं पितृ सुख-सम्बन्धों में अभाव पाने वाला, अस्त्री का पति, व्यवसाय क्षेत्र में विघ्न पुरु, करिश्म द्वारा सफलता प्राप्त, दीर्घायु प्राप्ति, उन्नत स्वास्थ्य पुरु, सुकेन्द्रिया का गुह्य-स्वात को रागी, मुख में रोग प्राप्ति, व्याधियों में दक्ष ओ उन्नति शील, विद्या में न्यून किन्तु विवेकी, सन्तान सुख में मुटि प्राप्ति, समाज में उभावशाली, भाग्योन्मुख में विघ्न पुरु सफलता प्राप्ति, शत्रुओं का सुस्तराति से उपाय का शमनकारी, कोट्टी-खन मुख-सिद्ध योग का भोगी, राज्य क्षेत्र में गौरव प्राप्ति, राज्य नीति का जानका, धन संग्रहार्थ शिल्प का उपयोगकारी, मातृ-पितृ सुख प्राप्ति, गृह-भूमि-लभ से सम्पन्न, धर्म में आस्थावान् किन्तु धर्म-पालन में हीन, गृहस्थ भोगों में अभिरुचि सम्पन्न होगा।

(४) - ३१६ जन्म-वृत्त में जन्म लेने वाला पुरुष सामान्य कद, कुशदेही, गोधूमवर्ण, विद्या में मुटि मुक्त, स्त्रीभिमान ओ उग्र कोधी, अति ते भक्त पाने वाला, स्त्री एवं भोगादिकों में पूर्ण आसक्त तथा लह विषय में अधिक धन व्यय, धन संग्रहार्थ विन्ता प्रयत्न शील किन्तु धन-संग्रह हीन, स्त्री से मतेभरी, गुह्य-स्वात को रागी, कोट्टी-खन एवं मातृ-मुख में मुक्ति पितृ सुख, सन्तान सुख में न्यूनता का अनुभव, धर्म विवेकी - चतुर - एवं साहसी, व्यवसाय में सफल किन्तु भाग्योदय में विघ्नों से गस्त, भारी बोटन मुक्त पान्थ विरोध मुक्त सम्बन्धों का प्राप्ति, उद्यम ओ उल्लाही, उद्योग के नीचे के भाग में मृत्यु-तुल्य कष्ट पाने वाला, राज्य-समाज में उभावशाली, अन्ध-स्त्रियों में समर्थ शील, पितृ क्षेत्र का निवास, उद्योग से उन्नति करने वाला, सामान्य गृह-दिनाम से युक्त, सुखिन्त ओ चानुम से शत्रुओं का प्रबल, मुक्त-मन्त्राज, धूर्त और उद्यत, मनस्वी, गम्भीर योजनाओं के निष्ठा में दक्ष, साहस से अनेक कार्य में सफलता प्राप्त, धर्म के प्रति आस्थावान् किन्तु धर्म-पालन की अपेक्षा भोग-विलास को महत्व देने वाला होगा।

(६५)- इस जन्म-वर्ग में उत्पन्न होने वाला व्यक्ति दीर्घदेही, श्यामवर्ण, स्वाभिमानी, क्रूर तथा उग्रतको-
पी, धन और पुरुषार्थकी अधिक महत्त्व प्रदान करने वाला, पारिश्रम्य और उल्लाही, गृह-भूमि धनमान्य
केलाम से पूर्ण, धर्म और ईश्वरके प्रति अनास्थावान्, जिससे मरमेदी, भोगविहाराकी चिन्ता से परे, वि-
द्या और सन्तान-सुख में भूरी का अनुभवों, अन्य स्त्रियों में आसक्त, शरीररक्त से नरक में भूरी युद्ध, भारविहिन और
कोटिस्विक-सुख सहयोग से अमाव्यस्त तथा सभीका निरोधी, भाग्योन्नाति और व्यवसाय में विघ्न युद्ध सफल, का-
दरीसम्बन्ध स्थापित करने में सक्षम और दक्ष एवं सधुर, शत्रु और विरोधियोंका गम्भीर शमनकारी, विवेकहीन,
स्वार्थपरता के अतिरिक्त किसीकी चिन्ता न करने वाला, उपस्थान में रोग का अनुभवों, मातृ-सुख से वंचित, व-
लेन्मल और पितृद्वेषी, पितृक्षेत्र कानिवासो किन्तु समणकारी, सर्वथा मलिनचित्त, परोपकार भावना हीन,
आत्मबल से रहित, साहस-सम्पन्न, समाज में न्यूनता युक्त प्रतिष्ठा और प्रभावको प्राप्त करने वाला होगा।

(६६)- इस जन्म-वर्ग में उत्पन्न हुआ पुरुष सुन्दर और धूमवर्ण, तेजस्वी, स्वाभिमानी, विवेकी और उग्र स्व-
भाव, आपत्ति काल में धैर्यहीन, राज्यक्षेत्र में कुछ बन्धन का योग पाने वाला, सामाजिक प्रतिष्ठा युक्त, गृह-
भूमि लाभ युक्त, धनकोषकी वृद्धि के लिये निरन्तर चेष्टित किन्तु दृष्ट-संग्रह में न्यून, उल्लाही और पारिश्रम्य
पारिश्रम्यद्वारा अनेक कार्य में सफलता प्राप्त, भाग्योन्नाति में संलग्न, धानु विघ्न युद्ध भाग्योन्नात, भारविहिन से
पूर्ण किन्तु उनके सुख सहयोग और कोटिस्विक सुख में न्यूनता का अनुभवों, धर्म बालक और ईश्वर तथा भोगा-
दिकों में संलग्न, पितृ सुख से हीन, मातृ-सुख प्राप्त कर्ता, विलम्ब से उपायद्वारा सन्तान पाने वाला, सन्तान सु-
ख से हीन, वृद्धानस्था में सुखी, सुन्दर सुशिक्षित सुशीला पतिपरायणा स्त्रीका पति, किन्तु उससे मरमेद युक्त
सम्बन्ध रखने वाला, काष्ठा युक्त विशाक्षेत्र में सफल, शत्रु और विरोध पक्ष में प्रभावशाली, रोश्चय और रक्तस-
हन में अधिक व्ययी, अशरीर रोग से पीड़ित, मृत्यु-तुल्य कष्टों का अनुभवों, मर्यादा प्राप्त करने वाला होगा।

(६७)- इस कुण्डली में जन्म लेने वाला मातव सामान्यकृप, पुष्टदेही, गोधूमवर्ण, शरीरी को शोण्ड्य सम्पन्न, प्रतिभावान्, स्त्रीभिमानी, आदर्शवादी, सत्य-व्यवहारी, उन्नतललाट ओ (कुष्ठक्रोधी तथा उग्र, पाम साहस ओ (उत्साही, पिलासि मलमोदयुक्त, मातृ-सुखि मन्मथ, पिला का पुण्ड्रिच भागी, धितृक्षेत्र का निवासि ओ (धितृक्षेत्र में ही उत्पत्ति शाल, दीर्घायु प्राप्ति किन्तु अनेक अरिष्टों का प्राणकर्ता, धन-संग्रह के लिये ओ (भाग्यान्वित में सदा प्रयत्नी ओ (अनेकाय-गृह भूमि-धन-धान्य-रत्नादि से परिश्रम द्वारा पूर्णता प्राप्ति, सुन्दर सुशीला परिव्रता स्त्री का प्राणकर्ता, गृहस्थ भागों की चिन्ता से मुक्त उन्नति में चोष्ठित, ईश्वर ओ (धर्म का दालक, विद्या में बाधायुक्त/पूरा, विलम्ब से सन्तान प्राणकर्ता, विवेकी, गम्भीर योजनाओं में पटु, राज्य ओ (समाज में पूर्ण प्रतिष्ठा सम्पन्न, (अपरोक्ष से पीड़ित, वैरोधियों का विजोता, यश में न्यूनता प्राप्ति, सामान्य परोपकारी, ती-शोदन करने वाला, अत्यवहारादि से मुक्त, कोट्टिबिक्क सुखि मन्मथता पाने वाला होगा।

(६८)- इस कुण्डली-मक में उत्पन्न होने वाला व्यक्ति दीर्घ ओ (पुष्ट देही, स्त्रीभिमानी, अत्यधिक बुद्धिमान्, धन-धान्य-गृह भूमि-धन-सम्पन्न, धन कीर्षी को निरन्तर करने वाला, पालाक को महत्त्व प्रदान करने वाला, अनेक-वैद्या, किलक्षेत्र प्रतिभा युक्त, उन्नत ललाट, ऐश्वर्य सम्पन्न, भोगादि में अनासक्त, वज्रि ओ (प्रभावशाली, वाक्-शाली में प्रवीण ओ (शान्तचेता, विद्याक्षेत्र में पूर्णता प्राप्ति, देवी प्रतिभा सम्पन्न, परोपकार ओ (उत्तम कृत्यों में धनव्यय करने वाला, सुन्दर-सुशीला मध्य भागधारी-अतिविप्लवाकर-परिव्रता स्त्री का विमो, धन-संग्रह से हीन, सामान्य धनी, गृहदीर्घाभासे पूर्ण, वोग ओ (अरिष्ट युक्त दीर्घायु प्राप्ति, अज्ञात शत्रु, मारि से भयं अथवा अरिष्ट पात्रे वाला, व्यवसाय क्षेत्र में विद्या युक्त सफल, राज्य ओ (समाज में पूर्ण प्रतिष्ठा प्राप्ति, धर्मविदेशक, आदर्श, श्यामवर्ण स्त्री प्राणकर्ता, पुत्र-सुख प्राप्ति, धितृक्षेत्र का निवासि ओ (प्रवासि तथा तीर्थक्षेत्र में अनायास मृत्यु प्राप्ति करने वाला, पुनर्जन्म में महान् उच्चकोटि के परिवार में जन्म लेने वाला महापुरुष होगा।

(६६)- इस कुण्डली में उत्पन्न होने वाला मनुष्य स्वोपमाती, विभावले कुक्ष उग्र ओ कोधी, रक्त विकार युक्त, शारीरिक सौन्दर्य में भूट युक्त सम्पन्न, गोधूम वर्ण, पुष्ट देही, सामान्य कद, उन्नत कलाट, विद्या-बुद्धि में पूर्ण, तेजस्वी, प्रतापी, रोगिणी श्यामा स्त्री प्राप्त कर्ता, उदर विकारी, स्त्री के कारण भाग्यवान्, परिश्रमी ओ लगनशील, भाग्योदय में कुछ भूट ओ विघ्नो से सम्पन्न, धर्मपालक ओ विश्व के प्रति पूर्ण आस्थावान्, इन्द्रिय चक्रों ओ हठी, विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न, मनस्वी ओ विकारक, चयन ही हृदय में सन्तप्त रहने वाला, धाम्निचर ओ विवेकी, भारी बहिन ओ कुटुम्ब के सुख सहयोग में भूतता पाया, उत्तम आयु सम्पन्न, व्यवसाय क्षेत्र में सफल, धन संग्रह में अभावग्रस्त, सन्तानों में पुत्र से सुखी, राज्य ओ सामाजिक मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, आपत्ति काल में धैर्य सम्पन्न, मातृ-पितृ सुख प्रायक, शत्रु ओ विरोधियों को वाफ चतुर्धर्मा प्राप्त करने में सफल, ऐश्वर्य सम्पन्न, भोग-विलास में दक्ष किन्तु स्त्री की अपेक्षा धर्म की महत्व प्रदान करने वाला, लीकटनी, तीर्थ क्षेत्र में सामान्य गृह-भूमि लाभ तथा वही माण प्राप्त करने वाला होगा।

(१००)- इस जन्म-धर्म में जन्मा दुःख जातक तेजस्वी, गोधूम वर्ण, सामान्य कद, पुष्ट देही प्रभावशाली, धाम्निचर ओ विवेकी, कर्मयोगी, ईश्वर ओ धर्म के प्रति पूर्ण निष्ठा तथा धर्मकार्य में दक्ष, कुछ कोधी एवं उग्र तथा सहज ही शान्त, स्वभावस्थायी सुकुशल, समाज ओ राज्य क्षेत्र में प्रतिष्ठा सम्पन्न तथा राज्याश्रित, राज्यवेतनोपजीवी, धन संग्रह ओ उन्नतिके लिये निरन्तर परिश्रम द्वारा योजित, विद्या में पूर्ण निरतक, सन्तान सुख विलम्ब से प्राप्त कर्ता, ऐश्वर्य भोगी ओ रहन-सहन में रसों जैसा रहने वाला, सुन्दरी शिक्षिता, श्यामा रोग युक्ता स्त्री का प्रति, गृहस्थासक्त, अन्य में भी रमणशील, उत्साही ओ साहसबल का अनेक कार्य में सफल, भाग्योदय में विघ्न प्राप्त कर्ता, मध्यायुष्य सम्पन्न, माता-पिता का अन्य सुख भोगी, पैतृक गृहादिका लाभ, गुप्त-चातुर्य से विरोधियों का सफल व्यवसाय में दक्ष, सामान्य धन सम्पन्न, रक्त विकार प्राप्त कर्ता, गृहस्थ स्थान कारोगी स्त्री की ओर से चिन्तित, हृदय में आन्तरिक दुःख का अनुभव, अशुष्ट युक्त उत्तम इन्द्रिय भोगी, यदा कदा आलस्य के कारण गम्भीर रोगी प्राप्ता, दृढ़ आयु में कर्मों का अनुभव करने वाला होगा।

मू.
सं.
६६

क०
१०

(१०१)-इस कुण्डली में उत्पन्न हुआ मानव पति तेजवी, पलायो, स्वार्थमानी, कुछ उग्र और क्रोध विभाव, अनु-
शासन चतुर, गोधूमवर्ण, अन्तर्द्वेष से स्वयं ही संतप्त, दृढ़ निश्चयी और दृढ़ी, सामान्य कष्ट, दुष्ट देही, धिक्क मयुग-
म्भीर योजनाओं के निर्माण में दक्ष, परिश्रमी और साहसी, लाधारण अवरोध के साथ विद्या में प्रवीण, सन्तान
सुख भोगी, वराक्रमी तथा प्रतिभा-सम्पन्न, राज्य क्षेत्र में उच्च पदासूद्ध मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, मातृ और पितृ-
सुख निश्चय प्राप्त, सुन्दर सुशीला श्यामवर्ण उदर विकार युक्त स्त्री का पति, स्वयं भी गुप्तरोग से पीड़ित, गु-
हस्थासक्त, स्त्री से कुछ मरभेद युक्त सम्बन्ध रखने वाला, अन्य स्त्रियों के साथ भोग-विचारासक्त दक्ष, भाग्योदय में
अवरोध के साथ उत्तम, धर्म और ईश्वर के प्रति निष्ठा सम्पन्न, सुख में रहने सहने में धन का व्यय, पति-
धर्म द्वारा व्यवसाय में सफल तथा धन-संग्रहार्थ सतत चेष्टा करे और गृह-भूमि धन से सम्पन्न, पिता से कुछ मरभे-
द रखने वाला, भ्रमणशील, दीर्घायु प्राप्त कर्त्ता, शत्रुओं का विजेता, आमदनी में सामान्य अवरोध युक्त होगा।

(१०२)-इस जन्म-चक्र में उत्पन्न होने वाला बालक मातृ सुख तथा कैटुमित्र के और माईकाहित के सुख सम्बन्धी
में त्रुटि प्राप्त कर्त्ता, शत्रु और विरोधियों के दमन में दक्ष, विद्या में उत्तम स्तारक, पलायकान्तेजस्वी, प्रतिभा-सम्पन्न, अने-
क विद्याओं में पट, स्वार्थमानी, पामो विवेकी, चिन्तक शील और विचारक, गौरवर्ण, दीर्घ देही और दृढ़, वाक्पटाक्षिप
प्रवीण, माता-पिता-ईश्वर का पूर्ण भक्त तथा धर्म-पालन में धन का व्यय, सुखमय युक्त जीवन भोगी, अधिक व्यय से
विचिन्तित, सन्तान-सुख से हीन, दसक पुत्र लेने वाला, कन्या-पिता, तीर्थारनी, गृह-भूमि लाभ में त्रुटि युक्त, राज्य और
समाज सम्बन्धी सेवकता युक्त, स्त्री और गृहस्थ की अधिक चिन्ता न करने वाला, तीर्थक्षेत्र यात्रावासी और वही मृत्यु
प्राप्त का वैकुण्ठगन्ता, मध्य युद्ध युक्त, धन की अपेक्षा धर्म की अधिक महत्व प्रदाता, विरोध युक्त, सामान्य रोगी,
उत्तम स्वास्थ्य युक्त, दुष्ट-रोग पीड़ित, पिता से मरभेदी, कुछ विचित्रता प्राप्त, गृहस्थ की ओर से उदासीन, भाग्योन्नाति में
मिथन युक्त, द्रव्य संग्रहार्थ परिश्रम वराक्रम हीन, यदाकदा दुःख-लाभी, सामाजिक सुख सम्पन्न होगा।

(१०३)- इस जन्म लगन में जन्मलेने वाला मनुष्य उत्तम गोरवर्ण, दीर्घदेही, कुशधनु, समीले मित्रता रखने में दक्ष, विद्यापक्ष में कुद-युनता प्राप्त, किन्तु अनेक विघ्नों और वाक्नाथी में चतुर, परोपकारी और दयालु, धर्म तेजस्वी और आत्मबल तथा इष्ट वस्तुयुक्त, रत्न-विकारी, तेजस्वी और प्रतापवान्, व्यवसायक्षेत्र में सफल, सुन्दर आयुयुक्त, राज्यसम्बन्धों में संपूर, प्रतिभा तथा प्रभावशाली, धर्म विवेकी, धर्म और ईश्वर के प्रति निष्ठावान्, गो-आस्था देव-भक्त, धर्मपालन में प्रवीण, धर्मकार्यों में धन काव्ययी, तीर्थ-निवासों और वही हृद्दोग से पीड़ित अथवा रक्त दोष से देहदाग का बेंकूण गगना, पुनर्जन्म से रोहित, अतीव विवेकी, भाग्योन्नत, माता-पिता का पुत्र सुख प्राप्त, मध्य-मायुष्य प्राप्त, मृत्यु तुरन्त आरिष्टों का प्रायश्चित्त, उद्यमों और उत्साही, परेशम से भाग्योन्नत, सुशीलाशिक्षित पति-धर्म-प्राप्त, स्त्री का स्वामी, सन्तान का सामान्य सुखी अथवा सुख विहीन, वृद्धादि लाभ युक्त, राज्य सम्बन्ध हीन और सभाजा में सुयश प्राप्त, वि-वक्षण बुद्धि, नवीन वस्त्रों का धारक, दुर्व्यक्ती और से चिन्ता युक्त होगा।

(१०४)- इस जन्मलगन में जन्मा हुआ व्यक्ति पुष्ट देही, गोवर्ण, दीर्घविधु, विद्या में पूर्ण निगतक, प्रभावशाली व्यक्ति, स्व सम्पन्न, सन्तान का उत्तम सुख प्राप्त करता, मातृ-निधन-मातृ-निधन एवं कोट्टुम्बिक सुख-सम्बन्धों से युक्त, प्रतिभा सम्पन्न, धार्मिकमानवी, यथार्थ धर्मपालक और ईश्वर के प्रति निष्ठा युक्त, कठोर और दृढ निश्चय सम्पन्न, अनुशासन प्रिय, विरोध-पक्ष पर प्रभावी, मानवता सम्पन्न, सदा परिश्रम और उत्साही, व्यवसाय में चतुर और सफल, राज्य और समाज में पुण्य प्रतिष्ठा-मान प्राप्त करता, भाग्यशाली, पैतृक धन से युक्त, दीर्घायु प्राप्त करने वाला, तीर्थ-क्षेत्र में नदीतट का निवास, धन-धान्य-गृह-भूमि-मूल्य-वाहन-रत्नादि सुखोपभोगी, सुन्दर गोरवर्ण सुखि-क्षिता-पति निष्ठा युक्त स्त्री का पति, भोग-विलास में दक्ष, मृदुल में सामान्य अनुरक्त, विलक्षण प्रवीणता प्राप्त, वाक्नाथी चार। स्वधाकर्म-प्राप्त में दक्ष, भाग्योदय में यदाकदा हानि प्राप्त करता, रत्न-विकारी, दोहिक सोन्दर्य में कुद-सुख युक्त, परोपकार करने वाला, गुणशाली, गुणीजनो का सम्मान करता, ऐश्वर्य सम्पन्न होगा।

(१०५) - इस कुण्डली में उत्पन्न होनेवाला मनुष्य ऐश्वर्य और भोग-निवास में अधिक (वर्षकृतिवत्), कठोर हृदय, दीर्घायु, अतीव तेजसम्पन्न, काशी, स्वभाव से उग्र, विद्या में प्रवीण, गोवर्ण, कुशशरीर, नेत्रज्योति में अति युक्त, पौरुष और उत्साही तथा अत्यन्त साहसी, धर्म-पालन और भोग्योन्मुख में निरन्तर विचलित, प्रायः कितु भोग्योन्मुख, अनेक हिंस्रों का भोगी, रक्तविकारी, विरोध-वश या सुप्त उधावेन विजय प्राप्त करता। मातृ-सुख सम्बन्धों में कमी पाया, पिता से सहभेद युक्त, सन्तान प्रायः किन्तु सन्तान-सुख वर्जित, कुचेष्ट और कुमांग-गिमी सन्तान का पिता, धर्म-पालन से विमुख, सुन्दरी पुरीला स्त्री का स्वामी, धन उल्लेख्य प्रदाता, उदर और बेलोन्मत्त, सदैव धनार्थ-अन्वेषणशील, स्वयं हृदय में चिन्तित, मिश्रित और दृढ़ आय से वर्जित, पराक्रमी, पौरुषशालि द्वारा विजय युक्त व्यवसाय में सफल, कमी उच्च हृदय लाभ और कमी ऊँची हानि प्राप्त करनेवाला, धन-संग्रहार्थ लक्ष्येष्टित, तथा द्रव्य-प्राप्ति में सफल, पितृ-सुख का अन्य भोगी, अत्यन्त साहस से कार्य करने में रत, सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त होगा।

(१०६) - इस जन्मोग में जन्मा हुआ जातक गोवर्ण, सामान्य कद, पुष्टदेही, धाम साहसी, पराक्रम और पौरुष से सामान्य निरन्त प्राप्त हुआ व्यवसाय करने में सफल और भोग्योन्मुख, तेजस्वी और स्वाभिमानी, अनुशासन प्रिय, उत्साही, धाम-चतुर और विवेकी, संगीत-काव्यादि प्रेम, विद्या और सन्तान-सुख से पूर्ण, मातृ-सुख वर्जित, विराग का अन्वेषण प्राप्त करता, गृह-अभिप्राय से युक्त, मध्यमायु प्राप्त, भोग-निवास में दक्ष सुन्दरी पुरीला गोवर्ण स्त्री से संयुक्त, गृहस्थ में पूर्ण आसक्त, ऐश्वर्यमय जीवन युक्त, ऐश्वर्य एवं उत्तम कार्य में अभिनयन व्यवसाय करने वाला, सामान्य विरोध युक्त, वाक्शालि में प्रभावशाली, आदर्श और भाग्यवादी, ऐश्वर्य में पूर्ण निष्ठावान् किन्तु धर्मपालन से हीन, धर्म की अपेक्षा मानवता को अधिक महत्व देनेवाला, चरोपकारी और दयालु, सामान्य कठोर और दृढ़, सम्पत्ति का पिता, भार-वृद्धि के लिये सम्बन्धों और सहयोग में अभावग्रस्त, साहस से युक्त कार्य करने में दक्ष, यदा-कदा उच्च लाभ में अति प्राप्त करता, मातृ-पक्ष से पुत्रि, राज्य और सामाजिक प्रतिष्ठा सम्पन्न होगा।

उद्देश

क.०
१०

(१०६) - इस जन्म-युक्त में उत्पन्न होने वाला मनुष्य सामान्य कद, उन्नत ललाट, पुष्ट देही, उदर एवं मुखोन्मिषके
विचार युक्त, गोवर्ण, उदर ओर श्वाभु, साहस तथा विवेकी, कुछ दृष्टी, विद्या-कुसुमे में पूर्णता प्राप्त, संगीत
व्यापारि प्रेमी, ऐश्वर्य-सम्पन्न तथा ऐश्वर्य में अति अधिक व्ययी, उत्तम गुणी धित-मल सन्तान का पिता, मातृ-पु-
त्र सम्बन्धों में कर्मों का अनुमोद, मध्यमायु प्राप्त, भाग्यशाली, साहस ओर कौशल से व्यवसाय क्षेत्र में सफल, श्री
सिमत मेद युक्त सम्बन्ध, सुन्दरी गौरीगंगा का स्वामी, उत्तम ओर उच्च कोटि का व्यापारी, धर्म का पालन करने में
दक्ष, धन संग्रहार्थ निरन्तर चेष्टित ओर अच्छा धन-संग्रही, दृढ़-दृष्टि लाभ पाने वाला, भोग-विलास में दक्ष, र-
त्न-विकारी, नेत्र जोहि में युनता पाने वाला, भारिकृष्टि के द्विप-सम्बन्धों से हीन, राज्य दक्ष में कुछ बन्धन प्राप्त
करी, पितृ क्षेत्र का निकाली एवं पितृ-क्षेत्र में समुन्नत, भ्रमण काल में घोषा ओर शान्ति गुह्य, गुह्य भूमिप्राप्ति का
लाभ पाने वाला, समाज में मान प्रतिष्ठा सम्पन्न, विरोधियों द्वारा भी शान्ति पाने वाला होगा।

(१०७) - इस कुण्डली में जन्म लेने वाला बालक कुशलाय, दीर्घशरीर, गोवर्ण, ऊँचा कद, उन्नत ललाट, तेजोवि
ओर स्वाभिमान, उभावशाली व्यक्तित्व से पूर्ण, विद्या में पटु, कठोर प्रकृति, स्वकार्य एवं स्वार्थ परता में दक्ष,
अति अधिक उल्लाही ओर साहसी, पराक्रम में युनता प्राप्त, पितृ-सुख सहयोग का प्राप्त करती, उग्र ओर क्रूर स्वभाव
एवं राज्यक्षेत्र में बन्धन प्राप्त करती, व्यवसाय क्षेत्र में पूर्ण सफल ओर भाग्यशाली, धर्म-पालक, पालन मानवतावादी
भोग-ऐश्वर्य में धन का व्ययी, परलोक आदि को न मानने वाला, निरन्तर परिश्रम द्वारा भाग्योन्नाति में संलग्न तथा
सफल सामाजिक मान प्रतिष्ठा में अग्रगामी, सुन्दरी स्त्री का पति, भोग-विलास की ओर साधारण ध्यान देने वाला,
धन संग्रह में दक्ष, गुह्य-भूमि-भूत-बाह्य से पूर्ण, कुछ कृपण प्रकृति, नेत्र जोहि में मन्दता का अनुमोद, उद-
र रोग या शुक्ल रोग गुह्य, मातृ-पुत्र सम्बन्ध एवं कोटु मित्र तथा भारिकृष्टि के द्विप-सहयोग निवर्जित, विरोधि-
यों द्वारा शान्ति प्राप्त करती, दृढ़-स्वभाव वाला, दृढ़-लाभ से सम्पन्न, भ्रमणशील होगा।

(१०६) - इस कुण्डली में जन्म लेने वाला मनुष्य तेजस्वी, स्वाभिमानी, सामान्य वर्ण, देहलोभ्य में कुछ झुट्टा युक्त, १-
सावशाली ओ। उगलमाव, हृदयदी, गुदा-योजनाओं द्वारा अपने कार्य में रत, साधारण कोषी, अनुशासनप्रिय ओ। ६-
२३, चतुर तथा विवेकी, सहज ही शान्त, उद्यमार्थ सर्वथा निश्चित, मारु-बाहिन ओ। क्रौट्मिक शक्ति तथा पुत्र-सहयोग में
त्रुटि युक्त; श्रमामय की स्त्री प्राप्त, किन्तु स्त्री से प्रेमहीन, व्यवसाय में हठान्वित प्रयत्न शक्ति तथा निश्चित परिश्रम से सफल,
बदाब्धता भाग्योन्नीति में विरत प्राप्त, काटरी मधुर-सम्बन्धों द्वारा अच्छा दम्पती ओ। राज्य तथा सामाजिक मान-प्रीति
छात्र सम्पन्न, रईमी से रहने वाला एवं ऐश्वर्य हेतु धन-धन्य केने में मग्न, सन्तान में त्रुटि युक्त सुख प्राप्त, विद्या-पक्ष
में उन्नति के कामों का अनुभव, गो-व-प्राप्ति को चिन्तित, मातृ-स्वामि में हीनता युक्त, पिता का अल्प-पुत्र भा-
गी तथा पितृ-क्षेत्र में समुन्नत, गृह-भूमि-प्राप्ति सुख प्राप्त, धन-संग्रहार्थ प्रयत्नवान्
तथापि धन-संग्रह में त्रुटि युक्त, चतुर ओ। साहसी, उत्तम आयु प्राप्त, शत्रुओं से संघर्षरत, रक्त-विकारी होगा।
(११०) - इस कुण्डली में जन्मा हुआ जातक धीर-वीर साहसी, तेजस्वी, कुशल, दीर्घायु, कोषी ओ। विवेकी, स्व-
कार्य-साधन में दक्ष, रक्त-विकारी, कृष्णवर्ण, राज्याश्रित ओ। राज्य-वैतनापजीवी, मत्स्य-प्राप्त में कामों का अनुभव, गम्भीर
गुप्त-योजनाओं के निर्माण में मग्न, भाग्योदय में अनेक विघ्न ओ। संघर्षों का प्राप्त कर्ता, उत्साही ओ। उद्यमी, परिश्रम द्वारा
अपने अनेक कामों में सफल, सुरा-सुन्दरी का स्त्री, भोग-विलास में दक्ष, सुन्दरी शिवायिता शक्ति की स्त्री का पति ओ। उससे
प्रेम-रहित रहने वाला, कुछ उग्र ओ। कोषी स्वभाव, व्यवसाय में विघ्न युक्त, धन-संग्रहार्थ सतत-चिन्तित किन्तु धन-संग्रह के अभाव
में गस्त, सामान्य गृह-भूमि का लाभ, ऐश्वर्य में धन का अधिपत्य, सन्तान-सुख ओ। विद्या-पक्ष में त्रुटि युक्त, राज्य ओ।
सामाजिक मान-प्रीति प्राप्त, वाक्-चातुर्य ओ। बुद्धि तथा युक्तिकल से समुन्नत, पिता का अल्प-पुत्र प्राप्त कर्ता, पितृ-क्षेत्र
का निवासि ओ। पितृ-क्षेत्र में समुन्नत, अग्नि ओ। शस्त्र-प्राप्ति से भय युक्त, गुदा-स्थान का गीत तथा अरि-युक्त दीर्घायु प्राप्त,
मारु-बाहिन ओ। कुटुम्ब-युक्त किन्तु उनके स्व-सहयोग से विजित, हृदय में निश्चित तथा सर्वदा सन्तप्त रहने वाला अधा-मिल होगा।

(१११) - इस जन्म लाने में जन्म लेने वाला जासक कुशोदही, सामान्यकर, उत्तमगोवर्ण, तेजस्वी और प्रभावशाली, विद्या और सन्तान-सुख से पूर्ण, शारीरिक-सौन्दर्ययुक्त, स्वाभिमानी और चतुर, सामान्य क्रोधी और शक्तिविकारयुक्त, अत्यन्त मन्त्री उच्च शक्ति, मृदुल तथा हँसने-हँसाने वाला, धिक्केशील, सुन्दर, सुलक्षण शिष्यता, गोवर्ण, पतिव्रता स्त्रीयुक्त, भोगविलास में दक्ष, साधारण विरोधयुक्त या क्षात्रपति से विजयो, ऐश्वर्य मय रहन सहन में अधिकव्यय, परोपकारी और दयालु, उत्तम व्यापारी, धर्मपालक और गोवर्ण तथा ईश्वरका भक्त, सदाचारी एवं धर्मवान्, कम उच्च शक्ति तथा कर्म उच्च लाभयुक्त, गृह-भूमि-धन-धान्य-मृत्त-वाहनदि में सम्पन्न, उत्तम धन-संग्रही, कम योगी, सामाजिक और राजकीय मान प्रतिष्ठा सम्पन्न, चोरी से भय पाने वाला, पितृ एवं मातृ सुखका भोगी, माता-पिताका प्रतिपालक, भाई-बहिन के सुख सहयोग से युक्त, कुटुम्ब से विरोध प्राप्त, स्वकामक्षेत्र में सफल, जाहरी सम्बन्धों में मधुरता प्राप्त, चपल उद्योग, वाक्वाणी में प्रभावशाली, पितृक्षेत्र में उन्नति करती होगी।

(११२) - इस जन्म में उत्पन्न हुआ मनुष्य सामान्यकर, उत्तम ललाट, गोवर्ण, कुशकाय, प्रभावशाली व्यक्ति से सम्पन्न, उदारचेता एवं परोपकारी, ऐश्वर्य से रहने में पट और अधिकव्यय, उत्तम धर्मपालक तथा गोवर्ण, वाहन और स्त्री तथा शक्ति में आशावान्, मध्यशाली, अत्यन्त मधुर और चंचल उद्योग, विद्या और सन्तान-सुख से पूर्णता प्राप्त, अनायास कर्म उच्च शक्ति और लाभ दोनों का प्राप्तकर्ता, उत्तम सफल व्ययसाधक, आयकी अपेक्षा व्यय के अधिकव्यय निश्चित, भोग और शास्त्र तथा दृष्ट्युक्त से भय प्राप्त, युवान तथा प्राप्त, मातृ-पितृ सुख का भोगी, माता-पिता की सेवा से सम्पन्न, उत्तम लक्षणयुक्त, वाक्वाणी में चतुर और शान्त एवं धिक्केशी, भोगविलास में दक्ष, सुभावस्था में अस्ति भय प्राप्त, सुन्दर, पतिव्रता, गौरांगना स्त्रीका पति, राज्य एवं सामाजिक मान प्रतिष्ठा प्राप्त, साधारण विरोध प्राप्त, भाई-बहिन युक्त सुखी, किन्तु कुटुम्ब से विरोध पाने वाला, सदाचार सम्पन्न, आध्यात्मिक काल में मधुर, साधारण साहस, वाहन-मधुरता प्राप्त, वाणी में मृदुल, गृह-भूमि-धन-धान्य सम्पन्न होगी।

(११३)- इस जन्म में जन्म लेने वाला जातक कुशकाय, दीर्घविषु, पाम कीर ओ साहसी, उत्तम गौवर्ण, मुदुक ओ उदा-पेता, गम्भीर शान्त, परोपकारी, ईश्वर ओ धर्म के प्रति पूर्ण निष्ठा, विद्या-बुद्धि ओ सद्गुणी सन्तान का उत्तम सुख पाया करी, भार्वाहिन से प्रेम किन्तु कुटुम्ब से विरोध प्राप्त, उनसे ओ नोरा से मय मने वाला, पाम-चतुर ओ विवेकी, स्वाभिमानी एवं प्रभावशाली व्यक्ति सम्पन्न, माता-पिता का पूर्ण सुख प्राप्त करी, गृह श्रीम-धनकोष-भृत्य-वाहनादि से सुखी, सदाचारी ओ पारिव्र, वाक्शालि में सम्पूरत प्रचुर, विरोध-पक्ष का विजयी, उच्च कोटि का सफल व्यवसायी, कार्यक्षमता युक्त, सुन्दर पतिव्रता शिक्षिता गौवर्णा स्त्री प्राप्त करी, भाग्यशाली, भोग-विभक्त से दस, अधिक व्यय के कारण साधारण चिन्तित, दृढ़ आय सम्पन्न, मातृ-पितृ मर्क, युवा-वस्था में ही मृत्यु भय से ग्रस्त, वाह्य सम्बन्धों की सम्पूरता युक्त राज्य एवं सामाजिक मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करी, विन्तन शालि ओ विद्यात्मक, विद्वान्, अनेक विधा विद्, संगीत-काव्य-ज्योतिषादि का प्रेमो होगा।

(११४)- इस कुण्डली में जन्म ग्रहण करने वाला व्यक्ति कुशकाय, सुन्दर गठित सुडोल शरीर युक्त, श्यामवर्ण, साहसी दौड़ के लो-दम में अभाव प्राप्त, स्वाभिमानी ओ उग्र तथा मयंक कोधी, साहसी, सन्तान सुख ओ विद्या-पक्ष में युन, कट-सत्य भावी, माता-पिता-भार-बाहिन-कुटुम्ब सभी का विरोधी, स्त्री से विरुद्ध अथवा घनि, शूद्रा अथवा हीन जाति की स्त्री को धर्म रखने वाला, जीवन में अनेक बार धोखा पाया, मुनेन्द्रिय या बुद्धि-ज्ञान का रोग, हीन धर्म से जीविकोपार्जन, धर्म विरुद्ध होत दूए साधारण धर्म पालक, राज्यवैतनापजीवी, गृहस्थ से चालनाथ अल्पिन् चिन्तित, धन-संग्रहण निन्तर-व्योषित तथा धन-से ग्रह से हीन, भाग्य ओ कर्म को प्रधानता देने वाला, पितृदोष ओ अन्य शत्रु से निवास करने वाला, दीर्घायु सम्पन्न, मरणकाल में ईश्वर नामोच्चारण तथा तीर्थ-यात्रा से मृत्यु प्राप्त होने से बचूत जाकर आवागमन रहित, अनेक विरोध ओ अदृष्टों का भोगी, स्वयं भी हीन जाति में उत्पन्न, सत्संग-पारिवर्तिक कारण विवेकी, पुत्रावान्, आन्तरिक-चिन्तनी होगा।

(११५)- इस कुण्डली में जन्मा हुआ मनुष्य दीर्घवृद्ध, कृशकाय, श्यामवर्ण, उन्नतललाट, तेजस्यो भोग (प्रतिभावना, प्र-
भावशाली) व्यक्तित्व सम्पन्न, रक्तविकारयुक्त, पितृ-भक्त, मातृ-सुखसे वंचित, विवेकी, दृढी, क्रोधी, पाम-चतुर, विद्यो में
न्यूनताका अनुभव, सन्तान-पुत्र में भी न्यून, गृह-भूमिनाम से युक्त, भोग-विलास में दक्ष, गृहस्थ में अनुरक्त, दीर्घायुष्य प्रा-
प्त, वृद्धावस्था में सुखी, पितृ-क्षेत्र-दानिनीको ओ (करी) समुन्नत, परिश्रम ओ (उत्साह) के बल या कर्म कुशल ओ (सफल,
स्वीकृत) से सुख-सोभाग्ययुक्त तथा भाग्यवान्। धर्मपालक, किन्तु तत्सम्बन्ध में कुछ शैथिल्यका व्यवहारी, गम्भीर गृह्य
भुक्ति द्वारा कार्यक्षेत्र में दक्ष ओ (सफल) युक्त, सामान्य आत्मबल, वाक्-चालुय से विरोधियों का सफल, गुप्तरो-
ग से पीड़ित, नेब-ज्याहि में न्यूनता प्राप्त, भाई-बहिन ओ (कोट्टी) भ्रू-क-सुप सहयोग करने वाला, तीर्थ-क्षेत्र में मृत्यु प्राप्ति-
की, बुरी ओ (उदार) तथा विनोदी स्वभाववाला, दृढ आय प्राप्त, दीर्घायु, हृद-रोगी, गृह-भूमि-वाहनादि से सुखी, पितृ-
संग्रहार्थ-वेष्टित, सामान्यधनी, राज्य ओ (समाज) में पहिछा सम्पन्न, रोश्चर्य में व्यय करने में दक्ष होगा।

(११६)- इस जन्मो में जन्म लेने वाला बालक दृढाशयी, स्वामिनी, सामान्यकद, उन्नतललाट, रक्तविकार ओ (शु-
क्र-रोगी, सामान्य धिया प्राप्त, उग्र ओ (क्रोधी, दृढी, अपनी ही कहने वाला, भोग-विलास में पटु, रोश्चर्य ओ (अन्य) कार्य
में अधिक व्यय सम्पन्न, सन्तान की ओ (से) विन्तत, कभी कभी असफलतायुक्त भाग्योन्निहि में बाधापीनेवाला, कोट्टी-भ्रू-क-सुप
सहयोग प्राप्त, अश्रु ओ (जल) से भय प्राप्त करती, उद्यम ओ (परिश्रम) तथा साहस बल या भाग्यशाली, भाई-बहिन की उत्तम-द्वारा
सहयोग शक्ति युक्त, पितृ-देवी ओ (मातृ-सुख) में न्यून, आन्तरिक दुर्बलताका अनुभव ओ (वंचित) ज्योतिष-प्रेम, गृह-भूमि-नाम युक्त
एवं धन संग्रही, दृढ आय से सम्पन्न, राज्य ओ (समाज) में मान-पहिछा से युक्त, राज्यक्षेत्र में समुन्नत, तेज-मंत्र-गद, दीर्घायुसम्प-
न्न, तीर्थ-क्षेत्र में मृत्यु प्राप्त करने वाला, धर्मिक यथावत् पालने में शैथिल्य युक्त, भाग्य एवं कर्मवादी, स्थिरीयोनिका से पूर्ण, तेज-
ज्योति में मन्दताका अनुभव, यदायदा मृत्यु-तुल्य कष्ट ओ (अरिष्ट) का प्राप्ति, हिमयो में समयाशान्त, श्यामा-सुन्दरी पिम-
नस्वदा स्त्रीका स्वामी, किन्तु उसकी ओ (से) उदासीन, विरोध-पक्षपात बलवान्, गृहासक्त होगा।

(११७) - इस कुण्डली चक्र में उत्पत्ति गृहण करने वाला जातक, संगीत-काव्य-तन्त्र-मंत्र-विद, सामान्य-कद, सुदुर्लभ और उदार-विनोदी-प्रकृति, प्रिय-देही, आन्तरिक-चिन्ता-गुस्त, विद्या-बुद्धि में पूर्ण, उन्नत-लम्बाई, अधिष्ठ कन्याओं का पिता, सन्तान-सुख प्राप्त, मातृ-सुख में-युक्त, पितृ-भक्त, किन्तु पितृ-सुख का अल्प-भोगी, राज्य-क्षेत्र में सम्पन्न, पितृ-क्षेत्र को निया-सो ओ। भूमि-शालि, विरोधियों का घाम-पमन-कारी, अत्यधिक-चतुर ओ। साहसी, विद्या में पूर्णता प्राप्त, अनेक-अहिष्टों का प्राप्ति-कर्ता, अच्छी-आमदनी से सम्पन्न, उदार-चित्त ओ। परोपकारी, मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, सुन्दर-वर्ण-वला, भाग्य-शालि-नी गोल-गना, नवीन-देही (नो) का पति, समस्त-व्यवसाय-युक्त, चिन्तन-शील-विचारक ओ। ग्रन्थ-लेखक, भाग्य-लक्ष्मी में अनेक-विध-पाने-वाला, गृह-भूमि-वाहना-देहान्तों का प्राप्ति-कर्ता, मध्यमायुष्य सम्पन्न, उत्तम-गुण-युक्त पुत्र-वाला, स्वकार्य-क्षेत्र में दक्ष, उल्लस ओ। व्याप्ति सम्पन्न, विद्वान् (पुत्रों में) प्रतिष्ठा प्राप्त, रोश्चर्य से रहने-वाला, भाई-वहिन ओ। क्रौटु-म्बिक-सुख-सहयोग से हीन, वाहन तथा शास्त्रादि से धीरित, नेत्र-ज्योति में मन्दता का अनुभव हो-गा।

(११८) - इस जन्म-लग्न में उत्पन्न हुआ मनुष्य-स्वाभिमानि, तेज-स्वी, पितृ-सुख-प्राप्त-कर्ता, क्रोधी, पिता से मर-मद-हारे-वाला, पैतृक तथा अन्य गृह-भूमि-लाभ-से युक्त, गम्भीर ओ। शान्त, दृढ़ तथा दृढ़-निश्चयी, विद्या-बुद्धि में पूर्णता प्राप्त, सामान्य-उग-स्वभाव-युक्त अनुशासनीय-विध-मालक, मातृ-सुख में-युक्त, उत्तम-गुणी-पुत्रों से युक्त-कन्या-का-पिता, सुन्दर-गो-विण, पति-भक्त (नो) का स्वामी, भोग-विलासकी अपेक्षा धर्म ओ। कर्म-की अधिक महत्त्व देने-वाला ईश्वर ओ। पितृ-भक्त, कार्य-धिक्य के कारण यदा-कदा धर्म-पालन में शिथिल, धर्म-विद्वान् चिन्तक तथा विचारक, अध्यात्म-विद्या-सम्पन्न प्रभाव-शाली-व्यक्तित्व प्राप्त, विरोध-पक्ष-पा-सबल, विद्वान् ओ। राज्य-तथा सामाजिक मान-प्रतिष्ठा युक्त क्रौटु-म्बिक-तर्क-भाई-वहिन के सुख-सहयोग से हीन, कम-क्षेत्र में प्रबल-पान्तु असफलताओं के कारण भाग्य-बादी, अनेक-गन्धों का प्रणेत, ज्योतिष-काव्य-कलादि-प्रेमी ओ। गुण-ग्राहक, मध्यमायु प्राप्त, भाग्य-लक्ष्मी में अनेक-विध-प्राप्ति-कर्ता, दिन-से-गृह-अत्यधिक-उपलब्ध-तथा-दि-धन-से-गृह में-सदैव-हीनता-सम्पन्न, आयु के उत्तरार्ध में पुत्रों ओ। सो भाग्य-शाली-होगा।

८४५

क०
१०

(११६) - इस जन्मांग में उत्पन्न हुआ मनुष्य दीर्घ ओर कुश-शरीर, गोवर्ण, तेजस्वी, उग्र ओर क्रोधोत्पन्न, प्रभावशाली, विलम्ब से सम्पन्न, उन्नत ललाट, हृदिनिश्चयो ओर दृढी, रस-विचार युक्त, नेत्रज्योति में मन्दता का अनुभव, पितृ-मल ओर पितृकृपण-गृह-भूमि-लाम से युक्त तथा पितृ-सुख-पास्तकृति, विद्या ओर सन्तान की ओर से नृपि युक्त, विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न, सुन्दरी, गंगांगना, सुलक्षण, प्रतिपरायणा स्त्री का स्वामी, किन्तु सामान्य मतभेदी, गृहस्थ में अनुरक्त ओर विद्वान्, उत्तम धर्मपालक ओर ईश्वर में दृढ निष्ठा सम्पन्न, अनेक विद्याविद्, परेश्वरी ओर भाग्यवादी, साहसबल से अनेक कामों में सफल, राज्यक्षेत्र में कुद-युक्तता युक्त तथा सामाजिक प्रतिष्ठा युक्त, सफल व्यवसायी, उद्यमो एवं उत्साही, मातृ-सुख का अल्प-भोगी, भाग्योदय में अनेक विधा युक्त, विरोध पक्ष पराजित योजनों ओर द्वारा विजयो, भाई की हित ओर सुदृग्म से नृपि युक्त सुख-सदृश गवा भागी, ऐश्वर्यादि में अधिक व्यय करने वाला, धन-संग्रहाधीनित्वो धीव्रत, साधारण धन-संग्रही, मृदुल लक्ष्य कष्टों का प्राप्ति कर्ता, मध्यमायु सम्पन्न, स्त्रीपक्ष से भाग्यवान् माताजने वाला होगा।

(१२०) - इस जन्मजि में उत्पन्न होने वाला व्योक्त सामान्य कदा-चैतन्य उग्र, गोवर्ण, दुष्टदेही, उन्नत ललाट, मातृ-सुख-सदृश प्राप्ति कर्ता, उत्साही ओर लाहरी, पाम-चतुर ओर विवेकी, संगीत काव्य ओर हिनयो का प्रेमो, प्रतिपरायणाश्रयामा, स्त्री का प्रति ओर गृहस्था-सक्त, उत्तम व्याख्य सम्पन्न, ऐश्वर्य से रहने वाला, स्ववाक्य-स्थापना में पटु, विद्वान्, राज्य ओर सामाजिक प्रतिष्ठा युक्त, स्वभिमानात्मा साधारण उग्र, भाग्योदय में साधारण अनरोधके प्राप्ति धनी, पितृक्षेत्र का निष्ठा, पितृ-सुख का अल्प-भोगी, मृदुल ओर उदात्तता एवं परोपकारी, ईश्वरीय-निष्ठा सम्पन्न तथा धर्मविद् ओर धर्म-पालन में दक्ष, ठाठबाट में लचीला, हृदि आमदनी से युक्त, विद्या ओर सन्तान का उत्तम पुत्र-भोगी, वाक्-चातुर्य से विरोध पक्ष पराजित सफल, मध्यमायु सम्पन्न, युक्तिबल से स्वव्याज में पटु तथा सफल, धन-संग्रहाधीनित्वो धीव्रत, यत्नशील ओर धन-संग्रह युक्त, गृह-भूमि-लाम एवं गृह-वाहनादि सुख से पूर्ण, नित्य का कर्मयोगी ओर भाग्यवादी परेश्वर का आदर्श स्वरूप, यदाकदा परेश्वर में आलम्ब्य करने वाला होगा।

भ०
स०
६४५

क०
१०

(१२१)- इस जन्म-पक्षमें जन-मा कुंडल बालक शरीरसे सुन्दर, गोवर्ण, सामान्यकद, उन्नत-जलाट, धाम-मधुर ओ।
विवेक-सम्पन्न, स्वाभिमानी, साधारण उग्र तथा सहज ही शान्त, वाक्-पटु, परोपकारी तथा दयालु, जीवन में कइबा
धोखा प्राप्त, दुष्टी ओ। दुर्दोष-चय-युक्त, नानुचातुर्य से विरोध-शमन में दक्ष, धार्मिक ओ। ईश्वर-भक्त, उत्तम व्याख्यान स-
म्पन्न, ऐश्वर्य से रहने-सहने में अधिक व्ययी, यदाकदा गृहस्थ-संचालनार्थ चिन्तित, भाग्यशाली, विद्या में कुदृष्ट-युनता
युक्त पूर्ण। पन्तान प्राप्त तथापि पन्तान की ओ। चिन्तित, धर्मपालन में कुदृष्ट आलस्य। भार-बहिन युक्त तथा सुख-सहयो-
ग से परिजित, पीर-भोग ओ। (उत्साही, मातृ-सुख का अल्प भोगी, पिता-भक्त, किन्तु अल्प-पितृ-सुख प्राप्त, व्यवसाय ओ।
कर्मक्षेत्र में अवरोध युक्त सफल, धन-संग्रहार्थ लवदा उद्योषित ओ। सामान्य-पत्नी, गृहगदि-लाम से साधारण सुख,
दृढ़ आशय युक्त ओ। (साहसी, सुन्दर, सुलक्षणा स्त्री का स्वामी, किन्तु मते-भेदी, गृहस्थ में अनुरक्त, नेत्र-ज्योति में
विकार-पाने-वाला, अन्धो-हृदयों का भोगी, पितृ-क्षेत्र-निवासी, राज्य-समाज में मान-प्रतिष्ठा प्राप्त होगा।

(१२२)- इस जन्म-पक्ष में जन्म लेने वाला जातक दीर्घ-विषु, प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, कृश-दही, अत्यधिक स्वा-
भिमानी, तेजस्वी ओ। क्रोधी, साहसी, कर्म-भोगी, पुरुषार्थ-युग्म पीर-भोग से भाग्यशाली, राज्य ओ। समाज में उच्च
पद प्राप्त तथा मान-प्रतिष्ठा युक्त, रक्त-विकारी एवं नेत्र-योषित, श्यामवर्ण सुन्दरी स्त्री से मते-भेद युक्त, अन्धो-हृदयों
का भोगी, ऐश्वर्य से रहने-वाला, अन्धो-हृदयों का भोगी, मातृ-पितृ-सुख का अल्प भोगी, पिता का भक्त, विद्या में न्यूनता
युक्त पूर्णता प्राप्त, साधारण गृहगदि-लाम, गृहस्थापक किन्तु गृहस्थ-संचालनार्थ चिन्तित, अनेकबार धोखा तथा म-
युत-लक्ष्य प्राप्त, भूमण-शाली, पितृ-क्षेत्र-निवासी, उत्तम निश्चित आय-सम्पन्न, कुदृष्ट से शत्रु-वन्धन-हार-पाने-वाला,
भार-बहिन का विरोधी, उत्तम गुण-मयी पन्तान प्राप्त, वृद्धाचार्य में दक्ष, मध्यम आयु-सम्पन्न, विद्या एवं कर्म-शालि से
सफल, ईश्वर ओ। धर्म में निश्चित किन्तु अपेक्षाकृत पुरुषार्थ को महत्त्व-प्रदान, दुष्टी ओ। दुर्दोष-चय-यवान्, जी-
वन में जी-विकोपजनार्थ मातृ-भूमि से पृथक् स्थानों पर रहने-वाला, स्ववाक्य-स्थापना में दाम-दक्ष, अनुशासन-प्रिय होगा।

(१२३)- इस कुण्डली मूल में उत्पत्ति प्राप्त करने वाला व्यक्ति प्ररोधकारी ओ (दयालु, मातृ-सुख से वंचित, सत्यवादी, सामान्य कद, सुन्दर ओ (वर्ण, पुष्ट देही, उन्नत मालयुक्त, स्वाभिमानी ओ (साधारण उग्र तथा सहज ही शान्त, दाम विवेकी, विद्या में पूर्ण ज्ञातक, दृढ़ निश्चय युक्त, उपदेष्टा, अनेकविधा विद, काव्य ओ (ज्योतिष प्रेम, ऐश्वर्य से रहने वाला, शुभ-भूमि तथा धन का साधारण लाभ प्राप्त करती, ईश्वर ओ धर्म में आस्थावान्, पुरुषार्थ ओ (परिष्कृत से भाग्योन्नत, राज्य-समाज में प्रतिष्ठा-सम्पन्न, वाक्-चातुर्य से प्रभावशाली, सफल व्यवसायी ओ (निश्चित आय युक्त, मध्यमायुष्य प्राप्त, भाई-बहिन ओ (कुटुम्ब सुख से विलासित हीन, पिता का सुख सहयोग प्राप्त ओ (विशुद्ध, उत्तम गुण सम्पन्न पुत्रों से युक्त, अधिष्ठा व्यवशालि, अनेक बार धोवा और मृत्यु तुल्य कष्टों को प्राप्त करती। शुक्र रोग से पीड़ित, पौरुष कर्मों में अधिक महत्व प्रदान करने वाला, विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न, धन संग्रहार्थ अत्यधिक चेष्टित तथा सामान्य धनी, गृहादिलाभ से युक्त, चिन्तनशील ओ (विचारक होगा।

(१२४)- इस जन्मोक्त में उत्पन्न मानव सामान्य कद, पुष्ट देही, परम विवेकी ओ (चतुर, व्यवहार कुशल, पोषका-री ओ (दयालु, कर्तृकार धोवा रहता, शुक्र रोग अधिकांश जन्मोक्ति में विकार युक्त, समुन्नत ललाट, संगीत काव्य ज्यो-तिषादि अनेकविधा विद। साहस ओ (हठी, स्वाभिमानी, उपदेष्टा, विद्या क्षेत्र में ज्ञातक, उत्तम गुणी पुत्रों की पि-ता, श्यामवर्ण स्त्री प्राप्त तथा उसके सुख-सहयोग से समुन्नति हो। मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाला, वाक्-चतुर, भाई-बहिन ओ (कुटुम्ब से पूर्ण विरोध करने वाला, ऐश्वर्य तथा कामिनी पदों में अधिष्ठा व्ययी, मातृ-सुख वंचित, पिता का अल्प-सुख भागी, पितृ-मत्त एवं पितृक्षेत्र-निवासी, पुरुषार्थशालि से अनेक कर्मों में सफल, वाक्-चातुर्य तथा विद्या-शालि से स्वकर्म-साधन में मदद एवं विरोध पक्ष या सफल, प्रभावशाली-व्यक्तित्व प्राप्त, शुक्र रोग से पीड़ित तथा कई बार मृत्यु तुल्य अशुभों को प्राप्त करती, मध्यायु सम्पन्न, दृढ़ ओ (निश्चित आय प्राप्त करने में प्रवृत्त, गृहादि का साधारण लाभ, भाग्योन्नति तथा राज्य-प्रतिष्ठा प्राप्त, धर्म ओ (ईश्वर में आस्थावान्, कर्मयोगी, सामाजिक मान में शून्य होगा।

(१२५) - इस कुण्डली-पुरुष में उत्पन्न हुआ पुरुष स्त्री-सुख में युनता भुक्त, अन्ध-हिनयो से भोग-बिलास में दक्ष, शारीरिक-सौन्दर्य में चुरट भुक्त, कुशकाय, धर्म-विषेकी ओर प्रकीर्ण, दीर्घदेही, अधिक उग्र, बहुत धोखे-प्राप्त, नेत्र-ज्या-ति में विकार रहित, उदरे वायुशूल से पीड़ित, विद्या ओर सन्तान से सुख तथा सन्तान द्वारा भाग्योन्नत, धर्म-पालन में सामान्य, सुरा-सुन्दरी का सेवक, गुह्य-रोगी, शत्रु ओर विरोधियों का प्रबल दमन दक्ष, दृढावस्था में सुखी, मातृ-पुत्र-सुख में साक्षात्, सामाजिक ओर राज्यक्षेत्र में मान-उत्तिष्ठा दीन, किसीकी पत्नी-हन करने वाला, लाहरी ओर पौरुष में विविध कार्य में सफल, पक्षेत्र-निवासी, धर्म ओर पौरुष को महत्व देने वाला, भाई-बहिन ओर कुटुम्ब से विरोध भुक्त, शूरा अथवा दीन-जाली की स्त्री में रमण शील, मध्यमायुष्य प्राप्त, गृह-भूमि-लाम से संयुक्त, स्वामिगामी पालतु उन्नत-रिक्त दोष-रहित का अनुभव, लोक-पालक को न मानने वाला, तथापि ईश्वर से निष्ठा-युक्त, स्ववाक्य स्थापना में पटल साधारण विद्या प्राप्त, विवक्षण-बुद्धि, ऐश्वर्य में प्रमाद ओर अधिक व्यय करने वाला होगा।

(१२६) - इस कुण्डली में पैदा हुआ पुरुष दीर्घवयु, कुशकाय, उन्नत-ललाट, श्यामवर्ण, कुछ अर्ध-विशिष्ट, ग्रीवा-धर्म से वंचित, अन्य भुक्ता सोहित, गृह-भूमि-लाम से युक्त, अधिक मौन रहने वाला, भुक्त-वाहन से भुक्त, धन-धान्यादि से शूर, मान-उत्तिष्ठा ओर सामाजिक से वंचित, राज्य-क्षेत्र में कुछ कन्दन करने वाला, मध्यमायुष्य सम्पन्न, अल्प सामान्य विद्या प्राप्त, गृहस्थ में आसक्त, पितृ-क्षेत्र का निवासी, माता का शूर-लुब्ध प्राप्त, पिता को चिन्ता से प्रदान करने वाला, धर्म-धर्म दीन, सहज में ही कोपित, स्त्री-माता के द्वारा भाग्यशाली, पराशित, संकी सन्तान भुक्त, आशु-उत्साह-सन्तान द्वारा पोषित-पालित, कर-बार-जीवन में अनेक मृत्यु-तुल्य कष्टों का प्राप्ति, रोगों के द्वारा अधिक व्यय सम्पन्न उद्योग-निन्दारी तथा नेत्र-ज्या-ति में युनता प्राप्त, पौरुष से कुछ लान्छा-जैसा, धातु-धर्म-पुरुषार्थ तथा पौरुष दीन, व्यर्थ दी-जीवन जीने वाला ओर सन्तान दीन, अधिक दहीला, पितृ-क्षेत्र निवासी, स्त्री पर आश्रित, दीन-धीन ओर कुचैला सम्पन्न-पिता द्वारा भोगी जाने वाली स्त्री सोहित होगा।

(१२७)- इस कुण्डली में जन्म लेने वाला जातक सामान्य मंद, गौर्वाण, उन्नत ललाट, पुष्ट देही, स्वाभिमानी ओं उग्र, विवेकी ओं-चतुर, गम्भीर ओं-सहज ही शान्त, मृदुल तथा उदात्त चेत। योग्यकारी ओं-दयालु, धर्मभीरु ओं-लोक-
पल्लोक का विचारक, लेखक तथा काव्य-संगीत-ज्योतिषादि का प्रेमी, ग्रन्थ-प्रेमी, मिल सखा-परिभा-सम्पन्न, धर्म-
पालक, मातृ-सुख से हीन, पिता का अल्पसुख भोगी, परिश्रम से भाग्यलव, गृह-भूमि का सामान्य लाभ, राज्य तथा
सामाजिक मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, भाग्योदय में अनिरोध मुक्त, विद्या में अनिरोध के साथ समुन्नत, सन्तान की ओं-सी-च-
न्तित, तथा पुत्रों का पिता, पित्र मृत ओं-पितृक्षेत्र-निवास, कार्य-दक्ष, ऐश्वर्य से रहित, उसमें अधिक व्यय, उ-
दा एवं रक्त पित्त विकार, पोरवाला, मध्यमायुष्य सम्पन्न, गृहस्थ मृत, सुन्दरी, श्यामवर्णा, पति परादयणा स्त्री प्राप्त
कर्ता, अच्छा इच्छा लाभ एवं इच्छा-संगृही, वाक्-पातुर्य से विरोध-पक्ष का दमन करने में दक्ष, आपत्ति या अहि-
स के समय अधीर होकर साहस से कार्य करने में सक्षम, चिन्तन शील, योग्य प्राप्त करने वाला होगा।

(१२८)- इस जन्म-पक्ष में जन्म ग्रहण करने वाला मानव दीर्घवृद्ध, कुशोदरी, स्वाभिमानी ओं उग्र, प्रभावशाली, श्रेष्ठ-
शक्ति से सम्पन्न, कोटि-शक्ति ओं भारी करिहने से विरोध मय सम्पन्न का प्राप्त कर्ता, गौर्वाण, उन्नत ललाट,
उत्तम बाल्य मुक्त, यंचल उच्छृंखल एवं अनुराग-सक्त-पुत्र, मातृ-सुख से वंचित, परिश्रम ओं गृह साहस, दृढ एवं
विवाक्य स्थापना में पूर्ण पटु, धर्म-प्रेमी ओं ईश्वर में निश्चित, ऐश्वर्यादि का भोगी, पिता का पुत्र-सहयोग प्राप्त
ओं-पितृ मृत, विपुल पराक्रम, धन-संग्रहार्थ निन्त, प्रयत्न शील किन्तु इच्छा कोष का सामान्य लाभ, गृह-भूमि-
लाभ में भी सामान्य, उत्तम बाल्य मुक्त, विद्या क्षेत्र में पूर्ण, सन्तान-पुत्र प्राप्त कर्ता, किन्तु सन्तान की ओर से चिन्तित,
उत्तम श्रमा स्त्री का पति ओं स्त्री क्षेत्र से भी समुन्नत, पालु स्त्री से मिलने की, राज्य पक्ष में उच्च पदोन्नति अथवा उन्नत
ओं-रंजीतिया, व्यवसाय द्वारा इच्छा लाभ में पटु, सामाजिक ओं राज्य क्षेत्र में उच्च मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, भाग्यशाली,
कभी कभी इच्छा लाभ में अनायास हानि प्राप्त कर्ता, विरोधियों का विजेता, नेत्र-ज्योति में करिह का अनुभव होगा।

(१२६)- २५ कुण्डली-यूके में उत्पन्न होने वाला मनुष्य दीर्घदेही, ऊँचाकद, सामान्य गठेधुमवर्ण, मलिन ओं
कुलित विधाधाराओं से युक्त, साहसी ओं (अधिवंकी, शोचयतिथा भोगादि में अधिभक्त्यो, आत्म दोषेभ्यः युक्त,
शेर अथवा दम्भुओं के ही विधाधारावाला, सामान्य शिक्षा युक्त, उत्तम स्त्री प्राप्त करने तथा स्त्री से न कोनवासो, प्र-
स्त्री-गमन में दक्ष, एक पुत्र प्राप्तकर्ता, वृद्धावस्था में दुःखी, सामाजिक जीहृष्टा हीन, राज्य क्षेत्र में बन्धन युक्त, गृह-
भूमि-भार-बाँटन से युक्त होने वा भी सबका विरोधी, अन्धास दृढ-लाम से संयुक्त, धन-संग्रहार्थ कोई भी व्या-
य कोने को तथा, हृत्पारा ओं (कुटुम्ब से अन्तर्द्वेष एवं प्रतिष्ठाभावना सम्पन्न, मातृ-सुलका भागी किन्तु
धन-सुख से वंचित, धर्म ओं भाग्योदय से पराङ्मुख, वाक्-चातुर्य से विरोधको दबाने में सक्षम तथोपविरो-
धियों द्वारा सर्वदा आतंकित एवं भयगस्त, परिश्रम एवं पारुष्य से यदाकदा दृढ-लाम कोने वाला, रक्त-विकार
युक्त, पतिव्रता स्त्रीका पति तथा स्त्रीको सर्वदा कष्ट प्रदान करने वाला, सर्वदा भय-गस्त रहेगा।

(१३०)- २५ कुण्डली में उत्पन्न गृह्य करने वाला व्यष्टि सामान्य कद, कुट्ट देही, साहसी ओं (उग्र, उन्नत
जलाट, ऐश्वर्य से रहने में दक्ष, विद्या-क्षेत्र में पूर्ण ज्ञातक, सफल व्यापारी, उच्च कोटि का प्रवक्ता, सन्तान के उ-
त्तम गुणों से सन्तुष्ट तथा सन्तान-सुख प्राप्तकर्ता, गृहस्थ-संचालने में कभी कभी धनकी-मुट्टे का अनुभवो, राज्य क्षेत्र की
सफलता में युक्त, सामाजिक मान्यताओं से युक्त भयभीत अन्तर्भावो, विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न, माता-पिता-भार
बाँटन ओं (कुटुम्ब सभी के सुख-सहयोग का भागी, धर्मविद ओं ईश्वर तथा लोकपालों का विचारक पालु धर्म-
पालने में शिथिल, भाग्योदय में अनेक विघ्न प्राप्तकर्ता, उल्लाखी ओं (परिश्रमी, कृपण प्रकृति, यथालुता से परे, जो-
यकार भी भावना से युक्त तथा विरोध करने कोने वाला, धन-धान्य-रत्न-गृह-भूमि-लाम से संयुक्त, प्रथम माता का
मरण करने वाला, विरोध होने वा विरोध की चिन्ता से युक्त, वायु विष का रोगी, मध्यमायु प्राप्तकर्ता, सुन्दरी तथा
मवर्ण पोड़ेका स्त्री का स्वामी, व्यापार-व्यसाय से धन संग्रहार्थ निरन्तर दृढ कोष की वृद्धि में संलग्न रहेगा।

(१३१)- इस जन्ममें जन्मा हुआ व्यक्ति शैविक धर्म में कुछ भ्रष्ट युक्त दीर्घवृद्ध, कृशकाय, ऊँचा कद, उन्नत ललाट, उल्लाही ओं साहसी, स्वाभिमान युक्त, लयबद्ध, विवेकी ओं चतुर, उदर-विकार एवं शुक तथा मुखेन्द्रिय के दोष प्राप्त करता, गोधूमवर्णी ओं सुन्दरी तथा कलहकारिणी स्त्रीयुक्त, स्वस्त्री तथा परदार-रत, ऐश्वर्यमय हस्त लहयुक्त, ऊँचा रेश्मी जेहा प्रभावशाली, व्यासित्व सम्पन्न, मातृ-सुख से वर्जित, पिता का सुवि-संयोग प्राप्त करता एवं पितृभक्त ओं पितृक्षेत्र निकोसो, गृह-आकलन में कुछ भ्रष्ट युक्त, दयालु तथा पोषका वर्जित, धर्म तथा ईश्वर के प्रति आस्थावान् दातु धर्मपालन में शिथिल, भाग्योदय में अनेक विघ्न पावेवाला, इह ओं निश्चित आय सम्पन्न, द्रव्य-संग्रहा-शील सन्तान प्रदत्त शील ओं साधारण धन सम्पन्न, भाई-बहन युक्त दातु कौटुम्बिक सहयोग में भ्रष्टमय, विद्या बुद्धि में पूर्ण, नितान्त शील एवं विद्याक, मधुरभाषी, यदा कदा कटु वाक्य बोलनेवाला, गुप्त पानिन्दक, आत्मदोषवर्ण्य का अनुभव, विरोधियों का प्रबल तथा विरोध युक्त, सन्तान से चिन्तित, दीर्घायु प्रायक, तीर्थ क्षेत्र में देह त्यागने वाला होगा।

(१३२)- इस जन्म-वृत्ति में जन्म ग्रहण करने वाला मानव विद्या-बुद्धि में पूर्ण स्वात तथा विचक्षण, सन्तानवर्क ओं शिथिल दातु सन्तान युक्त, द्रव्यक्षेत्र में पूर्ण, कृपण प्रवृत्ति, दीर्घवृद्ध, पुष्ट देही, ऊँचा कद, प्रभावशाली, उदरमा ओं सा-हसी, सफल व्यवसायो एवं व्यक्तित्व सम्पन्न, उन्नत ललाट, सामान्यवर्ण, श्यामा कलही (सुन्दरी) स्त्रीका स्वामी ओं उससे मतभेदी, परदारामोला, ऐश्वर्य युक्त रहन-सहन में दक्ष, भाग्योदय में विघ्न प्राप्त करता, राज्य क्षेत्र में बन्धन युक्त, सामाजिक प्रतिष्ठा एवं सुयश तथा सुखे संन्युनता का अनुभव, नैज्योति तथा शुक ओं मुखेन्द्रिय एवं उदररोगी, इह ओं निश्-चित आय सम्पन्न, साहसी, आत्मदोषवर्ण्य युक्त, दीर्घायु सम्पन्न, मातृ-सुख से वर्जित, पिता-सुख सहयोग का भागी ओं पि-तृभक्त तथा पितृक्षेत्र कामिवासी, भाग्योदय में विघ्न का प्रायक, मधुर ओं सत्यभाषी यदा कदा परद्रव्य समन्वित, कौटु-म्बिक-विरोध पावेवाला, चतुर, दातु प्रभाने विरोधियों का हानि तथा विरोध ग्रहण युक्त, निवर्त्य-स्थापना में दक्ष, नि-रन्तर द्रव्यक्षेत्र बुद्धि में प्रदत्तवान्, यदा कदा मृत्युतुल्य कष्टों का भोला, भाई-बहन का सुख सहयोग प्राप्ति में पूर्ण होगा।

(१३३)- २४ कुण्डली में जन्म लेने वाला बालक देह में सुन्दर, ऊँचाकद, उन्नत ललाट, पुमानशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, स्वाभिमान और विद्याभिमान से युक्त, स्वमान से उग्र और क्रोधी तथा अनुरागम, गिरी की चिन्तन करनेवाला, पराक्रम से युक्त, कदा रोधित्य का व्यवहारी, मातृ-सुख से नितान्त दीन, पितृ-भक्त किन्तु पिता से सुख-सहयोग प्राप्त करे हुए पितृभक्त से युक्त और पितृक्षेत्र का निवासी, धन संग्रहार्थ सर्वथा चेष्टित तथा सामान्य धनी और वैदिक-सुख सम्पन्न युक्त, वीरभूमि शि-
थिलता से धोखा पाने वाला, स्त्री का उद्यम माण युक्त, अन्य स्त्री भुक्त, भोग-विलास में दक्ष, उत्तम दीक्षा युक्त सम्पन्न, भार-
नोटन के द्विज-सम्बन्धों में भूट जाय कर्ता, सामाजिक प्रतिष्ठा और राज्य मान से हीन, मायोनाते में कई बार विघ्न
मय, ऐश्वर्य की रहत-सहन तथा स्त्री-पक्ष में अधिष्ठा (बिचोला), सन्तान युक्त पालन सन्तान की ओर से उपेक्षित, वृद्धावस्था
में दुःख प्राप्त कर्ता, धर्म कर्म से हीन तथापि ईश्वर में आस्थावान्, तीर्थ-स्थान में अनायास देह त्यागी, धन का वयुक्त,
न्याया में भूट जाय कर्ता, उद्-विकारी, वायु और शूल से पीड़ित, नेत्रज्योति में मन्दता का अनुभव करेगा।

(१३४)- २५ जन्मोण में जन्म ग्रहण करने वाला बालक देह में सुन्दर, गोधूमवर्णी, उन्नत ललाट, परम-
स्वाभिमान और विवेकी तथा मधुरभाषी, मातृ-सुख में न्यूनता प्राप्त, पितृ-सुख भोगी और सहयोग प्राप्त, विद्या
बुद्धि में चतुर, गम्भीर और शान्त, ऐश्वर्य युक्त रहत-सहन में युक्त, पालन से धोखा पाने वाला, विस्त्रो-हण में सामान्य,
सन्तान युक्त, पालन से उपेक्षा प्राप्त, दीर्घमुदय युक्त, नेत्रज्योति में न्यूनताग्रस्त और उद्-रोगी, वायुशूल-पीड़ित, संग-
हणी रोग या अशरीर पानेवाला, भार-वहिन से सुख सहयोग सम्बन्धों में साधारण भूट मय, धनी और सफल व्यवसा-
यी, निश्चय-आय सम्पन्न, धर्म विद और ईश्वर में निष्ठा होले दुर्गोष्म-पालन में शिथिल, वृद्धावस्था में दुःख, तीर्थ-
स्थान में उद्-रोग से देह त्यागने वाला, वाक्-चातुर्य और गुरुत-योजना और शत्रुओं का विजय प्राप्त करने में कुशल, दृढ
निश्चय युक्त, आत्मबल में भूट जाय कर्ता, उद्यमी एवं उत्साही, या उपदेश में दक्ष किन्तु पालन में अपूर्ण, ऊँचा आदर्श-
वादी, हीन जाति की स्त्री का भोक्ता, सामाजिक-प्रतिष्ठा और राज्य-प्रतिष्ठा में न्यूनता प्राप्त, तथा मस्तिष्क बासी होगा।

(१३५)- इस जन्मों में जन्म लेने वाला जातक दीर्घदेही, कुशकाय, उत्तम गौ (वर्ण), उन्नत ललाट, पाम बिबेकी ओ (चतुर, गम्भीर ओ (शान्त, स्वाभिमान, सामान्य उग्र, सुन्दरी (सुशोला बिन म, सुलक्षणा, पतिव्रता स्त्री प्राधान्य, गृहस्थ में अनुरक्त, विद्या ओ (सन्तान से पूर्ण एवं सुवि, उत्तम कार्य में दक्ष, मातृ-पितृ (सुवि-सहयोग) को पाने वाला, सफल व्यवसायी, गृह-भूमि-धन-धान्य-मृत्यु-वाहनार्थ नि पूर्ण, राज्य ओ (समाज में मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, धर्म-पालक तथा ईश्वर में पूर्ण निष्ठा, परंपरारी ओ (दयालु, विरोध-पक्ष को वाक्-धन-तुल्य से दबाने में दक्ष, मधुर एवं सत्यभाषी, यदाकदा भाग्योन्नति में विद्यमान कर्ता, भार्गवार्हन् ओ (को दुर्भिक्ष (दुवि-सहयोग) में सफल, अत्यायु प्राप्त कर्ता, दुर्व्य-कोष का लाली, पुत्रमपिता का मरण पाने वाला, दैहिक-सौन्दर्य में साधारण सुदृढ़, व्यर्थ एवं साहस सम्पन्न, अनेक धार्मिक कृत्यों को करने वाला, निश्चित उग्रययुक्त, ज्येष्ठ पुत्र अथवा सा-वि का मरण प्राप्त, सदाचारी ओ (पवित्र, संगीत-काव्य-कला आदि को प्रेमी होगा।

(१३६)- इस जन्मों में जन्मा हुआ बालक दीर्घवयु, उत्तम गौ (वर्ण), उन्नत भाल, साहस सम्पन्न, विद्वक्षण-दीर्घ, उत्तम कार्य में दक्ष, बिबेकी ओ (चतुर, निरालस्य युक्त, मृदुल-गम्भीर ओ (शान्त तथा विद्या क्षेत्र में पूर्ण दक्ष, सन्तान-सुख से हीन, दत्तक पुत्र गृहस्थ करने वाला, धन-संग्रहार्थ निराला प्रयत्नशील एवं धनसंग्रह में पूर्ण, मध्यमामुष्य सम्पन्न, अध्यात्म विद्या प्रेमी तथा अनेक विद्याओं का ज्ञाता, राज्य क्षेत्र तथा कर्म में यदाकदा विघ्न-पाने वाला, भार्गवार्हन् ओ (प्रायोगिक सम्बन्धों द्वारा सहयोग-प्राप्त में असफल, चिन्तनशील ओ (विचारक, मातृ एवं पिता का पूर्ण भक्त ओ (सेवाभावी तथा उनका उत्तम सुवि-सहयोग प्राप्त कर्ता, भूमणशील, कई ग्रन्थों का प्रणेता ओ (उपदेष्टा, विरोधियों का विजयी, स्वाभिमान ओ (गौ (वर्ण) भावनाओं से संपुक्त, किसी की चिन्तन करने वाला, ईश्वर में पूर्ण निष्ठावान् ओ (धर्मकार्य का प्रेमी, भाग्योन्नति, सामाजिक प्रतिष्ठा-सम्मान प्राप्त, रक्तविकारी तथा गृह्यरोग की पीडा पाने वाला, अति सुन्दरी पति परायण सुशोला स्त्री का स्वामी तथा उत्तम कुटुम्ब उपेक्षा करने वाला होगा।

(१२७)- इस कुण्डली में उत्पन्न हुआ व्यक्ति सामान्य कद, उत्तम गोलबर्ण, उभावशाली व्यक्तित्व और विलक्षण गोलिभा सम्पत्ता, धीर-वीर-साहसी और उन्मत्त तथा परिरक्षणी, सामाजिक एवं राज्य की मान-जतिष्ठा प्राप्त; कर्तव्यगी, मृत-पितृ-सुख सहयोग में युनताग्रस्त, भाग्यवान्, इत्येकाग्र से पूर्ण, धन-संग्रहार्थ-प्रयत्नवान्, साधारण अवरोधमुक्त विद्या प्राप्ति में पूर्ण सफल, उद्योग से कोटित, सन्तान का उत्तम सुख प्राप्त करती, गम्भीर-और शान्त, म-पुर सत्य भाषी, आदर्श स्वरूप, सदाचारी और पवित्र, साधारण उग्र, चिन्तनी एवं विचारक, विशेषकारी तथा अध्यात्म पथ पर अग्रसर, धर्मकार्यों के पालन में प्रवृत्त, विद्वान् और कोटित, व्यवसाय क्षेत्र में सफल तथा समुन्नत, वाक्-साहस्य और योग्य उद्योग से विरोधियों का विजेता, गृह-भूमि धन धान्य भूतधादि से युक्त, भार-बर्हण और कोटित व्यक्तित्व में अभावग्रस्त, मध्यमायु पानेवाला, गो-ब्राह्मण-देव भक्त; प्रतिपदायणा, सुशीला स्त्री प्राप्त करती तथा इसे से सुख पाया और समुन्नत, पराधनार में कभी विनम्रता का अनुभवो, मरणकाल में भगवन्तामकी विस्मृतिमुक्त हो।

(१२८)- इस कुण्डली में उत्पन्न गृहण काले काला मानव सामान्य कद, वाम सुन्द, गोलबर्ण, उभावशाली व्यक्तित्व और विलक्षण तथा सहज ही शान्त, तेज और उभावसम्पत्त, चंचल उद्योग, संगीत-काव्य-ज्योतिष आदि अनेक विषयों में पूर्ण और उनको प्रेम, उन्नत लम्बाट, सामान्य कृपण, प्रोषकारी और दयालु, लोक-पालोक और धर्म एवं ईश्वर में उगाथावान्, म-त-सुख में युन, पितृ सुख एवं पैतृक धन से उन्नति में दक्ष, व्यवसाय क्षेत्र में परिरक्षणी और सफल, उत्तम सन्तान-प्राप्ति में पूर्ण किन्तु सन्तानकी और से चिन्तित, धर्म विद्वान्, चिन्तनशाली और विचारक, गृहस्थ में अनुरक्त, सुन्दर (सुलक्षणा सुशीला प्रतिपदायणा स्त्रीका प्राप्त करती किन्तु स्त्रीका प्रथम माण पानेवाला, इत्येकाग्र और इत्येकाग्र युक्त, तथापि कभी कभी व्यवसाय में गृहरी क्षति पाया, भाग्योन्नति और धन-पथ पर अग्रसर, अध्यात्म क्षेत्र में सहज ही अध्यात्म होकर गृहस्थ वर्ण का समुन्नत, कोटित व्यक्तित्व एवं भार-बर्हण के सुख सहयोग में अभावग्रस्त, अध्यात्म शाली, दीर्घायु प्राप्त, श-स्तु और नम का प्राप्त करती, धन-धान्य-गृह-भूमि लाभ से सम्पन्न और सामाजिक मान-जतिष्ठा सम्पन्न होगा।

(१३६)- इस जन्मों में जन्मा हुआ बालक दोहरे-सौन्दर्य में कमोत्तम, दीर्घवृद्ध, सामान्य वर्ण, स्वाभिमान और कोपका भावना से छिन्न, कुटिल और क्रूर हृदय, परिष्कार भावना सम्पन्न, पाम-चतुर और विवेकी, साहसी और उत्साही, मातृ-सुख से छिन्न, पितृ-सुख पाया, पाल्ने पिला से मरने दे रखने वाला, धर्म-प्रेमी और ईश्वर में निष्ठावान् किंतु आवश्यकता से धर्म का पालक, सुन्दर शोभायी स्त्री का कटि-दिन्दु उससे वंचना का अन्य स्त्रियों में रमणशील, मनोरंजन को अधिक महत्व प्रदान करने वाला, विद्या में कुछ पूर्ण तो कुछ अपूर्ण, सुरा-दिन्दरी का सेवी, सन्तान की ओर से चिन्तित और दुःखी, अत्यधिक पौरुष और उत्साह शक्ति से भाग्योन्नाति हेतु निरन्तर चेष्टित, विरोधियों पर विजयी, गृह-भूमिलामयुक्त परन्तु द्रव्य-लंगह में साधारण, अधिक व्ययी, यदा-कदा गृहस्थ संचालनार्थ चिन्तित, ऐश्वर्यमयी रहन-सहन से सम्पन्न, उत्तम स्यात्स्थ युक्त पाल्ने गृह्यरोग से पीड़ित, नेत्रज्योति में कुछ कमी का अनुभव, साधारण मान पाने वाला, राज्य में बन्धन पाया करता, भोग-विलास में दक्ष, मध्यमायु हो गा।

(१४०)- इस जन्मों में जन्म लेने वाला बालक सामान्य कद, पुष्ट देही, तेजस्वी और प्रभावशाली व्यक्ति से पूर्ण, श्यामवर्ण, दोहरे सौन्दर्य में कुछ कमोत्तम सुन्दरता पाया, साहसी, स्वाभिमान तथा उग्र, सुरा-दिन्दरी का अधिक सेवी, मदनमत्त और बल से उद्धत, मातृ-सुख से छिन्न एवं पितृ से अन्तर्द्वेषी, भाई-वहिन और दौलतारी के सुख-सम्बन्ध सहयोग पाया, अत्यधिक पौरुष और उत्साह-बल से भाग्योन्नाति तथा द्रव्यकोष लंगह में दक्ष, गृहस्थ सम्पन्न, मध्यमायु पाया, विषपात का सम्भावी, विरोधियों का प्रबल दमन करता, गृह्यरोग से पीड़ित, सन्तान की ओर से चिन्तित, पोषकारी भावना से वर्जित, स्वार्थ में तत्परा, ऐश्वर्य से रहन-सहन में अधिक व्ययी, दिन्दरी और रुग्णा स्त्री का पति और उसका वंचक, अन्यायियों में रमण करता, शूद्रा स्त्री को लंग रखने वाला, धर्म-विद और आदित्य के दोहे दुष्प्रतिष्ठा से छिन्न, मान-प्रतिष्ठा में न्यून, राज्य क्षेत्र में कुछ बन्धन गृहस्थ हो गा।

(१४१)- इस जन्म-पूर्व में जन्म गृहस्थ करने वाला न्यस्त धाम सुन्दर, उभावशाली, बाणी में मधुर भाषी, तेज-स्वी, गौरवर्ण, सामान्यकद, कुशदेही, ऐश्वर्य में मग उज्ज्वल जीवन ले रहे थे मंदरा, मृदुल ओ (उदार, चंचल-प्रकृति, मातृ-पितृ सुख में कुछ मत्तभेद या न्यूनता गृहस्थ, सामाजिक मान प्रतिष्ठा ओ (तिरस्कार युक्त, धर्म प्रेमी ओ (इश्वर में पूर्ण आस्थावान्, सुन्दरी पतिव्रता का पति, किन्तु स्त्री का प्रथम माथा प्राप्त, यदा कदा धर्मपालन में आलस्य युक्त, विद्या में पूर्ण दक्ष, परिश्रमी ओ (भाग्योदयार्थ प्रयत्नशील पण्डित भाग्योदय-हीन, धर्म पुत्रों का पिता, वृद्धावस्था में सन्तान द्वारा सुख प्राप्त करता, सदाचारी ओ (शक्ति, गृहस्थ-लाभ में सामान्य, पराश्रित ओ (परद्वय द्वारा गृहस्थ-संचालन करने में गृहस्थजी यथार्थ आय से हीन, भूमण शील, वाक्पटुता से विशेषियों पर सफल, लावक अथवा लावनी बला का जीवन-निर्वाहक, चिन्तनशील ओ (विचारक, लीपाटनी ओ (लीपाटने में मृदु पादा कर्ता, अध्यात्म-पथ का प्रेमी, सामान्य शूल या अशरीरी, उदर शूल से पीड़ित, विनय सम्पन्न होगा।

(१४२)- इस कुण्डली में जन्मा हुआ मनुष्य, दीर्घदेही, कुशकाय, लम्बा कद, गौरवर्ण, स्वाभिमान से ओतप्रोत, स्वभाव से क्रोधी, अत्यधिक परिश्रमी ओ (साहसी, सुन्दर सुशीला पतिव्रता स्त्री का पति, ओ (स्त्री-सुख में मत्तभेदी, उत्तम शुभ लक्षण युक्त सन्तान प्राप्त तथा उससे वृद्धावस्था में सुख, सामान्य धनी तथा गृह-भूमि लाभ से युक्त, मातृ सुख में न्यूनता प्राप्त, पितृ-सुख ओ (सहयोग का भागी एवं पितृ भक्त, ऐश्वर्य में उन्मत्त तथा उत्तम अधिक व्यय सम्पन्न, भाग्य-लाहि देतु सर्वदा प्रयत्नवान् परन्तु भाग्योदय में अनेक विघ्नों का प्राप्त कर्ता, यदा कदा गृहस्थ-संचालन में दय्यकी ओ (से विनित, विरोध पक्ष वाक्पटुता एवं गुप्तसाधनों द्वारा विजयी, सामाजिक प्रतिष्ठा युक्त, मार्ग में चोरो से भय प्राप्त करने वाला, व्यवसाय क्षेत्र में साहस बल वाकभीकरी विघ्न युक्त सफल, धर्म ओ (इश्वर में आस्थावान् किन्तु पालन में आलस्य युक्त, कभी गम्भीर हारित तो कभी गम्भीर लाभ से संयुक्त, मध्यमायु प्राप्त करता, निवृत्तियों में मन्दता का अनुभव, उदर शूल एवं गुह्यरोग प्राप्त करता, पुत्रों के कारण भाग्यशाली माना जायेगा।

(१४३)- इस कुण्डली में उत्पन्न होने वाला पुरुष मध्यम कद, गोवर्ण, पुष्ट देही, स्वामिनी और कुक्ष उग्र तथा सदा ही शान्त, प्रमानशाली व्यक्ति-सम्पन्न, धर्म विवेकी, उद्यमी और चतुर एवं साहस-सम्पन्न, नाक-चातुर्य में दक्ष, विद्या और सन्तानों में पूर्ण तथा सुख सहयोग प्राप्त, चिन्तनशील एवं विचारक, संग्रहकर्ता और पुरातत्त्व विद, संगीत काव्य-कवितादि विद्याओं में दक्ष, व्यवहार कुशल, कटु-सत्य भावी और आदर्शवादी, प्रचीन संस्कृति मय विद्या-धाराओं का प्रेषक, धर्म और ईश्वर में पूर्ण निष्ठाना, सामान्य धनी एवं गृहों में लाभ में साधारण, दीर्घायु प्राप्त तथा बुद्धिवाल्या में सन्तान का उत्तम सुख भोगी एवं भाग्यशाली माने जाना वाला, मातृ-सुख में न्यून एवं पितृ-सुख का भी अन्य भोगी, पितृ क्षेत्र की निवासि और पितृ-भक्त, राज्य क्षेत्रों में मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, स्त्री-सुख में कुछ मरमद और न्यूनता से ग्रस्त, शत्रु और विरोधियों का प्रबल विजय, व्यवसाय में सफल तथापि भाग्योदय में अनेक विघ्नों का प्राप्त कर्ता एवं गृह्य रोग से पीड़ित, गृहस्थ संचालनार्थ कर्मों का अनुभव, तीर्थ क्षेत्र में निवास करने वाला होगा।

(१४४)- इस कुण्डली में उत्पन्न होने वाला मातृव सामान्य कद, पुष्ट देही, मातृ-सुख में अभावग्रस्त, अत्यधिक जाति-माती, गोवर्ण, दौड़क सौन्दर्य युक्त, धर्म ऐश्वर्य सम्पन्न और रहन-सहन में अधिक व्ययी, मृदुल और मधुर भावी, सन्तान सुख में न्यूनताग्रस्त, विद्या-पक्ष में अवरोध युक्त, बुद्धि में प्रतिभा सम्पन्न, धर्म-चातुर्य से स्वकार्य में दक्ष, गृह-भूमि-धान धान्य-मूल्य-वाहनादि सुख से पूर्ण, इव्यकोष युक्त, अनेक धार्मिक कृत्यों का सम्पादक, धर्म और ईश्वर में निष्ठा सम्पन्न और धर्मपालक, गृणी एवं गृणी जनों का सम्मानकर्ता, सम्भवतः दसक पुत्र गृहण करने वाला अथवा बहुत बिलम्ब से सन्तान प्राप्त करेगा, उत्तमाचार्य एवं मध्यमायु प्राप्त, सुन्दरी सुशीला सुतलक्षणा पत्नी प्राप्त करने वाला, भाग्य सिला से दक्ष, अनेक विद्याओं का ज्ञानकारि किन्तु आन्तरिक कर्मों का अनुभव, राज्य क्षेत्र में अवरोध युक्त सफल और उन्नतिकर्ता तथा मान-प्रतिष्ठा युक्त, बिलक्षण प्रतिभा सम्पन्न और विद्वान् माने जाने वाला, नाक-मृदुल और विनयशीलता से विरोधियों पर सफल, कीर्तिक विरोध से ग्रस्त किन्तु बड़ी कठिन वासहयोग भोगी होगा।

(१४५)- इस जन्म-चक्र में जन्मा हुआ कालक दीर्घवृद्ध, कुशकाय, उत्तम गोलवर्ण, स्वार्थिमान, अत्यधिक तेजस्वी, उभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, स्वभाव से उदा, विद्याक्षेत्र में कुछ न्यूनता युक्त ऐश्वर्यमय जीवन में अधिक व्ययी, विदेश यात्रा का योग प्राप्त, चातुर्य और विनयशीलता से विरोधपक्ष पर सबल, प्रतापी एवं साहसी, राज्यक्षेत्र में समुन्नत और सामाजिक मान प्रतिष्ठा सम्पन्न, सन्तान भी और ऐसी-चान्ति से और विलम्ब से सन्तान प्राप्तावस्था परिरक्ष्य और उत्साही, स्थान-परिवर्तनशील, भार-बर्हण और पीढ़ार से संयुक्त तथा पितृ-पुत्र सम्बन्धों से वीरित, कर्म योगी, परिश्रम द्वारा भाग्योदयो, गृहाद्वारा में धन-धान्य और गृह-सुख लाभ युक्त, पितृ-पुत्र और पितृ-सुख प्राप्त करने, विलक्षण प्रतिभा-सम्पन्न, स्वकार्य-साधन तथा इव्यसंग्रह में निम्न प्रयत्नशील, स्त्री-सुख-भोगी, किन्तु स्त्री की अपनी उन्नति की संलग्नता के कारण उद्वेग के कर्तव्य, मातृ-सुख में न्यूनता का अनुभव, धन और ऐश्वर्य में आस्थावान् और समय-समय पर धन का बालक, मध्यमायुष्य सम्पन्न, भूमण्डली, दृढ़ निश्चयी और दृढ़ एवं अनुशासन-प्रिय होगा।

(१४६)- इस कुण्डली में जन्म गृहण करने वाला जातक, तेजस्वी, पुष्टदेही, स्वार्थिमान, शान्त, चतुर और विवेक सम्पन्न, गोलवर्ण, उन्नत-ललाटे, विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न, विद्या-पक्ष में अवरोध युक्त समुन्नत, संगीत-व्यावृद्धि और का उमेर, सन्तान भी और ऐसी-चान्ति से, अनेक विद्याओं का ज्ञान, वाक्-चातुर्य सम्पन्न तथा तद्वल से विरोधियों का विजयता, मातृ-सुख में न्यूनता का अनुभव, ऐश्वर्यमय रहन-सहन युक्त, प्रोपकारी और दयालु, भगवान् और धर्म में पूर्ण आस्था-युक्त तथा धर्मवाचक, राज्यक्षेत्र में समुन्नत और भाग्योदयमात्र अत्यधिक उदयमशील, पितृ-सुख तथा धन प्राप्त करने, दृढ़ निश्चयी, कर्म साहसी दृढ़ तथा पामलाम धानेवाला, भार-बर्हण और पीढ़ार से संयुक्त तथा पितृ-पुत्र सम्बन्धों से उन्नावका अनुभव, ज्योति में मन्दता प्राप्त, सुन्दर सुशाली गोलवर्ण स्त्री का पति और उससे मतभेद, अन्य के द्वारा भी धन लाभ युक्त, मध्य-मायु प्राप्त करता, रक्त-पिप्त विकारी, अनेकवार मृत्यु-रुन्ध कष्टों का प्राप्त करता, परिश्रमी और उत्साह सम्पन्न, वाक्-मय द्वारा भी भाग्योदय युक्त, दृढ़ और दृढ़ निश्चयी, कटु-सत्यभाषी, लघुकृपण, सामाजिक-मान प्रतिष्ठा में न्यूनता युक्त होगा।

(१४१)- इस जन्म-पत्र में जन्म लेने वाला जातक सामान्य ऋषि, पुष्ट-देही, गोरवर्ण, विशाल क्षेत्र में पूर्ण समुन्नत, मा-
तृ सुख में न्यूनता का अनुभव एवं अन्य दशा काचित, स्वामिभगानी, लेखनी, प्रभावशाली व्यक्तित्व से सम्पन्न, पाम-
चतुर और बुद्धिमान, विवेकी तथा प्रसंगी, कुछ कठोर तथा शान्त एवं गम्भीर प्रकृति, स्वकाम-स्थापना में प्रवृत्त, वा-
त्वाणी से सुधुर, दूरदर्शी और गम्भीर योजनाओं का निर्माता, गृह-भूमि-धन-धान्य-भृत्य-बाहनादि सुख से
पूर्ण, राज्य एवं सामाजिक क्षेत्र में समुन्नत और मान-प्रतिष्ठा संयुक्त, ईश्वर तथा धर्म के साथ कर्मयोग को महत्त्व प्र-
दान करने वाला, विरोध पक्ष पर सर्वथा वाक्-चातुर्य से प्रबल, विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न, मध्यमायुष्य प्राप्ता वृद्धि, धर्म-
पालक और दानशील, व्यवसाय क्षेत्र में यदा-कदा गम्भीर दारिद्र्य का गम्भीर स्पर्श पाने वाला, उच्चकोटि का व्यवसायी, भा-
ई-वहिन सहित तथा अन्य सभी से सुधुर सम्बन्ध युक्त, अनुशासन प्रिय, ऐश्वर्य युक्त रहनु रहना पराक्रमी और उत्साही, नि-
श्चित आय सम्पन्न, कभी-कभी धिक्कृत भाग्योन्नत, भोगविनाश में दक्ष, सुन्दरी स्त्री का पति तथा उससे कुछ मते में भी होना।

(१४२)- इस जन्म-पत्र में जन्म ग्रहण करने वाला मनुष्य दीर्घवृद्ध और पुष्ट-देही तथा सामान्य वर्ण, स्वामिभगानी एवं
परिधर्मी, विवेकी तथा चतुर, छोटी और उग्र प्रकृति पालतु विवेक से शान्त, विद्या और सन्तान का पूर्ण सुख प्राप्त, मातृ-
सुख में न्यून, पितृ-सुख एवं पैतृक धन प्राप्त किन्तु पितृ से मते में भी होना, परिवार एवं भार-वहिन के सुख सम्बन्धों में कुछ
कठिनाई, दुःख-संगी, दूरदर्शी, गुप्त-योजनाओं के निर्माण में दक्ष और उनमें सफलता प्राप्त, सामान्य धर्म कालक, हठी
और दृढ़ निश्चयी, गृह-दरिद्र्य लाभ से संयुक्त तथा दृढ़ लाभ प्राप्त, पैतृक-धन द्वारा उन्नति कोते दृढ़ व्यवसाय क्षेत्र
में परिश्रम एवं कर्मयोग से सफल, भाग्य समुन्नत, प्रभावशाली व्यक्तित्व द्वारा राज्य और सामाजिक मान-प्रतिष्ठा प्राप्त,
सुन्दरी स्त्री से मते में दारिद्र्य पाने वाला स्वामी, ऐश्वर्य से रहने में दक्ष, पर-स्त्री गामी तथादि आदर्शवादी और अनुशासन
प्रिय, मध्यमायु सम्पन्न, साहस और प्रतिकार भावना से संयुक्त एवं विरोध-पक्ष का शक्तिशाली साथ विजेता, भा-
ग्यवान् माना जाने वाला, मित्रों से सुधुर सम्बन्धों में कुशल, स्वकाम-साधन में तत्पर और दृढ़ निश्चय सम्पन्न होगा।

(१४८)- इस जन्म-वृक्ष में उत्पन्न होने वाला पुरुष सामान्य वर्ण, दीर्घ वृक्ष, कुशकाय, उग्र तथा कोधी, अधोधिक स्वाभिमान और अहंकार सम्पन्न, बलवान् एवं साहसी, विद्वान् पराक्रमी और पौरुषमी, धर्म को सामान्य महत्व देता, दृढ़ कर्मयोग को अधिक महत्व प्रदान करने वाला, मात-सुख में युक्त और पिता से मतभेद युक्त, मध्यमायु प्रायः, नेत्रज्योति और शरीर गंगा से कोरित, सुन्दरी स्त्री प्राप्त, किन्तु उससे मतभेद रहने के कारण शरीरव्ययमयकीर्ति के साथ परस्पर-वार्त्ता में रहता, स्वाध्याय-साधने में तथा भाग्यदय में विघ्न युक्त सफलता प्राप्त, निर्दिष्ट आश्रम नहीं। भाग्य-लाल में पूर्ण दयित, रक्तविकार प्राप्त, उदरशूल युक्त, दूरदर्शी और शत्रु-योजन और शत्रु-विरोध-शक्ति युक्त दमनकारी, विद्या और सन्तान सुख किन्तु सन्तान भी और विद्वान्तर, राज्य और सामाजिक मान-प्राप्ति प्राप्त, राज्योपजायी, शत्रु-वार्त्ता में निरसक और शत्रु, बदला लेने को उद्यत, अधोधिक दुष्टी और अनुशासनोपय, शत्रु-हर्त्रि लाम से युक्त और दुष्ट-वार्त्ता का संग्रह, भाग्यदय और परिवार से कुछ मतभेद युक्त सम्बन्धों का प्रायः कलह होगा।

(१४९)- इस जन्म-वृक्ष में जन्म ग्रहण करने वाला धीर, दीर्घ वृक्ष, कुशकाय, उन्नत-ललाट, सामान्य वर्ण, दीर्घकालीन, सुन्दर, स्वाभिमान और अहंकार सम्पन्न, धर्म कृपण और पति का भावना युक्त, सुन्दरी स्त्री प्राप्त परन्तु उससे मतभेद युक्त, योग से हीन, परस्पर में समकाल, दुष्ट-वार्त्ता का संग्रह, शत्रु-हर्त्रि और लाम के साथ भाग्य में विघ्न का प्राप्त कलह, विद्या और सन्तान से युक्त किन्तु सन्तान भी और विद्वान्तर, नेत्रज्योति, रक्तविकार और शत्रु-वार्त्ता का संग्रह, अनुशासन-उपय और दृढ़ निश्चय, शत्रु-वार्त्ता में मध्यम, राज्योपजायी परन्तु बन्धन प्राप्त, सन्तान के कारण भाग्यवान् माना जाने वाला, मान-प्राप्ति में युक्त, भाग्यदय और परिवार का दुष्टी, आन्तरिक शत्रु, व्यवसाय में शत्रु-हर्त्रि लाम के साथ सफलता प्राप्त, कष्ट-निवृत्ति में भी संलग्न, विरोधियों का विजेता, पौरुष और कर्म का धार्मिक महत्व प्रदाता, कर्मिल और भाग्य को मानने वाला, मध्यमायुष्य सम्पन्न, शत्रु-हर्त्रि लाम में शत्रु-वार्त्ता लाम पाने वाला, शत्रु-वार्त्ता में शत्रु होगा।

(१११)- इस कुण्डली में उत्पन्न होने वाला मानव स्वाभिमान- हठी- कोधी अत्यधिक अहंकारी ओर अनुशासन-
पिय, दीर्घवृद्ध, कुशकाय तथा सामान्य वर्ण प्राप्त, भार्गवहित के सुख-सम्बन्धों में कुछ नुई का अनुभव, धर्म ओर
इश्वर के साथ परिश्रम ओर धर्मवर्त्म को महत्त्व प्रदाता, दीर्घायु प्राप्त, गृह-भूमिलाभ से सम्पन्न तथा कुछ कर्मों का
अनुभव करते हुए द्रव्य-लेश-हृदये में तथा ओर सामान्य धनी, कर्मक्षेत्र में असफलता पावेगा भाग्य ओर इश्वर को
कोसने वाला, मान-प्रतिष्ठा छीन, शत्रुओं के दमन में दक्ष, उत्तम स्वास्थ्य युक्ती केने ज्योति ओर मुनेन्द्रियों के बल से भी
गता, उत्तम सन्तान का पिता ओर सन्तान द्वारा कुदावस्थों में सुख प्राप्त, भाग्योदय में विद्वानों के साथ सम्बन्ध, राज्य-
सेवा में कुछ कथन युक्त, प्रतिकार भावनाओं से संयुक्त, गुप्त योजनाओं के विमोचन में पटु, दस्युओं सहित प्रकृति, ज्योति
सुख से वंचित, पत्नी में असह्य ओर धोखा पावे वाला, मातृ-सुख प्राप्त, पिता-सुख का अन्त्य भोगी, लक्ष्मी के समोप-
युक्त प्राप्त करता ओर मरणकाल में इश्वर स्मरण से छीन होने के कारण नरक-प्राप्ति का अधिकारी होगा।

(११२)- इस कुण्डली में (सूर्यादि ग्रहण करने वाला बालक दीर्घवृद्ध, कुशकाय, उन्नत ललाटे, सामान्य वर्ण, पिता से अ-
न्तर्द्वेष करने वाला मातृ-सुख भोगी, अत्यधिक स्वाभिमान- हठी- कोधी- दूरदर्शी ओर अनुशासनीय, इश्वर
ओर धर्म को जानते हुए भी न मानने वाला, सुन्दरी स्त्री का स्वामी होते हुए पत्नी में असह्य, बलवान् ओर साहसी, गु-
प्त योजनाओं के विमोचन में दक्ष ओर शत्रुओं का विजेता, कर्म तथा परिश्रम को अधिक मान्यता प्रदान करने वाला, ब-
न्धन युक्त, मान-प्रतिष्ठा से छीन, सन्तान-पुत्र में नुई युक्त, दीर्घायु प्राप्त, वृद्धावस्थों में दुःख ओर विरह-रुत, भार्ग-
वहित के सुख-सम्बन्धों में नुई युक्त, सामान्य धनी, गृह-भूमिलाभ में पितृ-सन्तान का अधिकारी, यदा-कदा असफलता के
कारण इश्वर ओर भाग्य को मान्यता देकर धर्म-पिलक, परिश्रम ओर पुरुषार्थ से द्रव्य-लेश-हृदये में संलग्न ओर भाग्योदय में
सामान्य सफलता युक्त, पारिवारिक द्वेषी, मरणकाल में इश्वर स्मरण से छीन, नेत्र-ज्योति में विकार ओर गुप्त रोग पावे
गा, सतत-चालबाजी ओर धोखे से कार्य करने में दक्ष, प्रतिकार भावना युक्त होगा।

भू०
सं०
३५५

क०
१०

(१५३) - इस जन्म लगे में जन्म लेने वाला मनुष्य सामान्य कद, पुष्ट देही, गौरवर्ण, पामले जस्वी ओर प्रभावशाली, उल्ला-
ही ओर साहस-सम्पन्न, भविष्य सोचने वाला दूरदर्शी, अत्यन्त चतुर ओर स्वयं में आन्तरिक परेशान रहने वाला, विद्या
क्षेत्र में पूर्ण दक्ष किन्तु सन्तान की ओर से निश्चित एवं दुर्यो, परिश्रम ओर पारंगत होते हुए भी बाल्य युक्त, उमर के
कारण दर्शन प्राप्त नहीं, दृष्टि ओर स्वामिमानी, कामदेव के समान सुन्दर एवं भाग-विन्नासादि में पूर्ण दक्ष, अधिक कामुक
ओर नेत्रज्याति में विकार प्राप्त, सुन्दर पल्लव गौरांगना स्त्री का पति किन्तु उसके साथ बंचक, अन्य अनेक स्त्रियों में रमण करता,
ऐश्वर्य ओर कामवासना तृप्ति को धन का अधिक व्यय, एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाकर विपुल द्रव्य प्राप्त करता, धर्म विद ओर
इस्लाम में आस्थावान्, सामान्य धर्मपालक, भाग्यशाली, व्यावसाय में अत्यन्त लाभ युक्त सफलता पाने वाला, दृढ़ ओर निश्चित लाभ
युक्त, विलक्षण मेधावी, पुत्रा संसृज, मध्यमायु प्राप्त, मातृ-स्वयं प्रहयाग का भागी, पितृ-स्वयं दीन, सामाजिक जल्लो में सुन-
ता का अनुभव, भविष्य में युक्त ओर पारिवारिक से द्वेष पाने वाला तथा विरोध पक्ष में चातुर्य तथा गुस्तराति से प्रभावशाली होगा।

(१५४) - इस जन्म में जन्म ग्रहण करने वाला पुरुष सामान्य कद, पुष्ट देही, दृष्टि ओर स्वामिमानी, कटु-सत्य भाषी, गौरवर्ण,
अन्तर्ललाट, मातृ-स्वयं से बंचित, पितृ-स्वयं अल्प भागी, चंचल प्रकृति, गम्भीर ओर लक्ष्य विचारक, दूरदर्शी, परीक्षकारी ओर
दयालु, प्रभावशाली व्यक्ति एवं वाक्-चातुर्य सम्पन्न, पामले धावी ओर चतुर, ईश्वर एवं धर्म निष्ठ ओर धर्मपिदष्ट, ऐश्वर्य में
रहने रहने में दक्ष, विद्यापक्ष में सामान्य तथा सन्तान की ओर से अप्रसन्न या चिन्तित, दीन, पारिवारिक से अत्यन्त शत्रुता पूर्ण सि-
म्बन्धों का प्राप्त करता, सुन्दरी गौरांगना स्त्री का पति किन्तु उसका बंचक ओर शत्रु स्त्री में रमणशील, आदर्शवादी, ज्ञानि संस्कृति
का आरम्भ, पितृ-स्वयं निराला ओर पिता का शत्रु भक्त, धन संग्रह में कमी, अनुभव, परिश्रम ओर उल्लाह शक्ति से अनेक अवरोध होते
हए भाग्योदय में समूलतः वाणी में प्रगल्भ, विद्वान्, राज्य ओर सामाजिक क्षेत्रों में प्रभावशाली तथा मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, विरोध-
पक्ष में गुस्तराति से सफल, मध्यमायु युक्त, समाज में भाग्यशाली मान्यता प्राप्त, गृह-भूमि लाभ में सामान्य, यदा कदा स्त्रियों के
विषय में धोखा गृह, रहने रहने में अधिक व्यय करने वाला, दृष्टि ओर दृढ़ निश्चय होगा।

(१५५)- इस जन्मलेख में जन्म लेने वाला जातक दोहरे सोमदर्म में अभाव युक्त दीर्घवृद्ध, गोवर्ण, अत्यन्त लाटलो और सटज ही भयगस्त, अतीव छोटी और उग्र उग्रोत्त, उत्प्रेक कामकी कोने में तत्परता युक्त, धर्म-कर्म और ईश्वर-निष्ठा हीन, सभी से विरोध करने वाला, राज्य और सामाजिक प्रविष्टा का अभाव होने वाला, पिता का अल्पसुख भोगी अथवा पिता से द्वेषी, मातृ-सहयोग का भागी और समुक्त, अतीव मर्लिन और कुलित विचार धराओं से युक्त, स्त्री और सन्तान एवं विद्या सुख में नितान्त अपूर्ण, हीनवर्ण, हीनवर्ण की अन्योत्प्रेयो में रमणशील, राज्य क्षेत्र में बन्धन पादादसी, अनुशासनत्मक शास्त्र में पूर्ण, आयु की अन्यता से संयुक्त, बहि विवेकहीन, अनेक स्थानों से विरस्कृत, भाग्योदय में हीनता का अनुभवों, सुख और माधे वा उत्पादात के चिन्तों से युक्त, ठगी अथवा धोखे से आजीविका में संलग्न, चौर एवं दह्युओं जैसा व्यवहारी, भाई-जाहिन और पोरवारी जनों से बहिष्कृत, यदा कदा धन प्राप्त करने में सक्षम, आत्म-प्याली किंवा शोष ही मृत्यु प्राप्ता, कुभाग्यगामी, इत्यसंग्रहार्थ प्रवल शाल, सम्भवतः पितृघाती होगा।

(१५६)- इस जन्मलेख में जन्म ग्रहण करने वाला बालक मध्यमकद, पुष्ट देही, श्यामवर्ण, अतीव लाटल सम्पन्न चतुर और निपेकी, अत्यन्त सुभुर वाक्मकहकर आन्तरिक व्यर्थ-तत्पर, स्यामिनी और कूर उग्रोत्त, धर्म-कर्म और ईश्वर-निष्ठा का जानकार होते हुए धर्मपालन में नितान्त हीन, ऊदा से अच्छा दिवाइ देने वाला, प्रामाणिक और नीच प्रकृतिक, आन्तरिक द्वेषी और पतिघार भावनाओं से संयुक्त, मातृ-पक्ष अथवा मातृ-सुख सहयोग का भोगी, राज्य और सामाजिक प्रविष्टा हीन, यदा कदा दयाका व्यवहारी, अनुशासन और शुद्ध योजनाओं के निर्माण में दक्ष, विद्या एवं सन्तान तथा नो-सुख से अनाम प्राप्त, अन्योत्प्रेयो का मेचक-लम्पट और उनमें रमण करता, अतीव कामुक, ऐश्वर्य विरह-सहने में दक्ष, इत्यसंग्रहार्थ प्रवल शाल, अन्य स्थान का धन देने वाला, भाई-जाहिन तथा पोरवारी जनों से बहिष्कृत, पिता-द्वेषी, यदा कदा अनायास इत्य पाका अपने को भाग्योक्त मानने वाला, मेधावी किन्तु आत्मबल से हीन, आन्तरिक भय का अनुभवों, सभी से विरोध करने या माने वाला, बाल-चातुर्य से कार्य करने में सक्षम, गृहोद्धिपरेगी, अन्त्याय प्राप्त होगा।

(१५७)- इस कुण्डली में उत्पन्न हुआ पुरुष दैहिक लोन्धर्म में नृदिपुत्र, श्याम वर्ण, स्त्रीभिमान और क्रूर, मधुरवाक्य
वक्ता, ऐश्वर्यमयी रत्न-सदन में दृष्ट और तत्सम्बन्ध में अधिक व्ययी, सामान्य कद तथा पुष्ट देही, धर्म और ईश्वर में भाव
वान् तथा मदाकदा धर्म पालक, अनेक अरिष्टों से ग्रस्त, आपत्ति काल में ईश्वरवादी, पारिवर्त्य और साहस तथा कर्मयोग
को अधिक महत्व प्रदान करने वाला, पिता एवं माता-सुख में मूल्यता का अनुभवी, पुरुष से भाव्योन्नत और धनसंग्रही तथा
सामान्य धनी, मध्यमायु से पूर्व स्रष्टुग्रस्त, विद्या और सन्तान सुख में सामान्य, स्त्री-सुख सम्बन्धों में मतभेद रावकर अन्य
स्त्रियों का वंचक और लम्पट तथा उनमें रमण करता, कामकाज में लुप्त देह, प्रत्येक कार्य करने को लपर, स्वार्थी और साधारण
मालु, भोग-विवाह में यत्न, अन्य स्थान को निवासो, राज्य और सामाजिक प्रतिष्ठा में अभाव ग्रस्त, भाई-बहिन और
पारिवारिक सुख सम्बन्धों में अशुण्ठा ग्रस्त, सभी से विरोध करने वाला, गुप्तरोग या हृदरोग तथा श्मश्रु रोग से पीड़ित,
आन्तरिक दोषनिष्ठ और भय से सम्पन्न, किसी अन्य स्त्री से धनके कारण धोखा पाने वाला होगा।

(१५८)- इस कुण्डली-चक्र में उत्पन्न होने वाला मनुष्य स्त्रीभिमान और क्रूर तथा अधी पृथ्वीपुत्र, दैहिक लोन्ध-
र्म में नृदिपुत्र, प्रभावशाली-धालित्य सम्पन्न, पिताका अन्य सुख भोगी, मातृक्षेत्र अथवा माता सुख सहयोग का भोगी,
धन संग्रहार्थ निरन्तर प्रयत्नवान् कुक्का और कुक्कल, सभी से विरोध युक्त, श्यामवर्ण स्त्री से मतभेदग्रस्त अन्य स्त्री का
भोगी, गुप्तरोग से पीड़ित, नेत्रज्योति में मंदता का अनुभवी, पारिवर्त्य और पुरुषार्थ से भाव्योन्नति में संलग्न, सामान्य कद,
कुश देही, गौरवर्ण, विद्या और सन्तान सुख में अभाव ग्रस्त या साधारण, सामाजिक और राजकीय प्रतिष्ठा में मूल्य, ईश्वर
और धर्म में आस्थाहीन, दृष्ट्युर्ध्व या गोरों से भय पाने वाला, सामान्य आयु सम्पन्न, अन्य स्थान निवासो, दुन्यक्कोष और
स्थिर आय से सम्पन्न, हठी और हृदीनश्यी, किसी के विरोध नहीं चिन्ता न करने वाला, कुट्टि-निवेक में दुर्बल, भाई-
बहिन और पारिवारिकों से दूर किन्तु धनके कारण उनके विरोध से मुक्त, अनेक आपत्ति और अरिष्टों से संतुष्ट, रा-
ज्य कार्य से सम्पन्न और न्यायालय की कारण लंबा अपने कार्य में सफलता प्राप्त करेगा।

(१५६)- इस कुण्डली में उत्पत्ति ग्रहण करने वाला मानव सामान्य कद, गोबरण, चतुर और विवेकी, गम्भीर तथा शान्त, धर्म-कर्म और ईश्वर में अत्यन्त आस्थावान् और धर्म-पालक, गो-ब्राह्मण-भक्त, सेवा-परायण, परोपकारी और दयालु, प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, मेधावी तथा धैर्यवान्, अनेक लियोंओं का ज्ञानकार, मातृ-पितृ सुख सहयोग में पूर्ण, स्वभाव-स्थापक में दक्ष, सुन्दर और सत्यभाषी तथा आदर्शनिधी, शत्रु और विरोध से हीन, अनेक और अधिकारकर्ता, राज्य और सामाजिक उच्च पदाभिनि तथा मानप्रतिष्ठा सम्पन्न, भार्गवहिन और परिवार का सुख-सहयोग प्राप्त करता, द्रव्य संग्रहार्थी और द्रव्य-कोष में पूर्ण, अनेक प्रकार से द्रव्य आय से युक्त, पितृ-भक्त, निरन्तर शील और विचारक, दीर्घजीवी, विद्या-पक्ष में अवरोध युक्त सम्पन्नता प्राप्त, सन्तान की शुभलक्षणता से युक्त, कर्म और साहस केवल या भाग्योन्मत्त, उत्तमशील और सफल व्यवसायी, अनेक धर्मकृत्यों का सिन्धुदक, सुन्दरी, पतिपरायण, गौरांगी सुदुल्लभ भाविनी स्त्री का पति और उसी में तथा गृहस्थ में अनुरक्त, माता से कुछ मतभेद प्राप्त, ऐश्वर्य-धनधान्य-गृहभूमि युक्त होगा।

(१६०)- इस कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य दीर्घ वृद्ध, ऊँचा कद, कुशदेही, बिलक्षण प्रतिभा-सम्पन्न, पितृ से कुछ मतभेद युक्त, पितृक्षेत्र निवासी, विद्या-क्षेत्र में पूर्ण दक्ष और कुशल, सन्तान की ओर से चिन्तित पान्नु उत्तम लक्षण युक्त सन्तान प्राप्त, प्रचण्ड मेधावी, छोधी और स्वाभिमानि, गौरवशाली, प्रभावशाली व्यक्तित्व से ओतप्रोत, सत्यका व्यवहारी, आदर्श स्वरूप धर्म और ईश्वर-निष्ठा में पूर्ण एवं धर्मपालक, मातृ-पितृ के सुख सम्बन्धों में भूटि युक्त, राज्यक्षेत्र में समुन्नत और भाग्योन्मत्त सामाजिक मानप्रतिष्ठा सम्पन्न, परिश्रमी और उत्साही, नेत्रज्योति में कुछ विकार प्राप्त, जीवन में कई बार भयंकर मृत्यु-तुल्य कष्टों का प्राप्तकर्ता, धन संग्रही और द्रव्यकोष से पूर्ण, मध्यमायुष्य प्राप्त, उच्चमर्त्यों में धनव्यय करने वाला, साहसी और विवेकी, चतुराई तथा दूरदृष्टि से अनेक कर्मों में सफल, शत्रु और विरोध-पक्ष पर विजयी, ऐश्वर्ययुक्त जीवन व्यतीत करने में दक्ष, पारिवारिक और वाह्य सम्बन्धों में भूटि युक्त सुन्दर, इसी ओर इदानीं रच्यो तथा आत्मवली, सुन्दरी गौरांगी पतिव्रता स्त्री प्राप्त, किन्तु उससे कुछ मतभेद युक्त, पुरुषार्थ से कुल का नामोच्चन करने वाला, भाग्यशाली होगा।

(१६१)- इस जन्म में जन्म लेने वाला बालक दीर्घायु, कृशकाय, स्वाभिमानी ओ (ओ) को. पिता से कुछ मतभेद युक्त पितृमल्ल ओ (पितृ-सुख सहयोग का भागी एवं पितृक्षेत्र-निवासी, राज्यापजीवी, गोवर्ण, गोत्र मयोवाणी का वक्ता, धर्म ओ ईश्वर से उगाधवात, मातृ-सुख का अल्प-भोगी, विद्याक्षेत्र में सामान्य, सन्तान की ओर से निमित्त तथा दुर्बो, प्रभावशाली व्यक्तित्व से सम्पन्न, सदाचारी ओ प्रवित्र, उक्तुरासन पिथ तथा आदर्श स्वरूप, राज्य ओ सामाजिक क्षेत्रों में समुन्नत एवं मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, कठोर मृत्युसुख अथ ओ औरष्ट प्राप्त कर्ता, सुदृढ रोति से विरोधियों का दमन करने में दक्ष, पौरुष ओ उत्साही तथा साहस शक्ति से अनेक कार्य में सफल, ऐश्वर्यमूलक रहन-सहन में अधिक, मार्ग में जोरों से भय से युक्त, भार्वाहिक ओ पाणिनीय शक्ति से अभाव-गृह, पौरुष से जीविकोपार्जन का उच्च संशयार्थ निरन्तर-व्यस्त तथा भाग्योन्नत और सामान्य धनी, धर्मपालक, लक्ष्मण-होते हुए कुछ दयालु, दैहिक लोभ्य में कुछ कमोका अनुभवों, सुन्दरी, शिक्षिता, गौरांगी, पतिव्रता गृहिणी का पापक तथा गृहस्थासक्त हो गा।

(१६२)- इस जन्म कुण्डली में जन्मा हुआ बालक दीर्घजीवी, सामान्यकर ओ सामान्यवर्ण, स्वाभिमानी, चतुर ओ विवेकी, विद्याक्षेत्र में कुछ कठोर युक्त, पुत्रादि संयुक्त, स्वाभिमानी ओ साहस सम्पन्न, गोब्राह्मण-देव मल्ल तथा दमलु ओ धर्मपालक, सुन्दर वस्तुसुक्त, विभाव से उग्र ईश्वर देववाली किन्तु शान्त ओ दमलु, ऐश्वर्यमूलक रहन-सहन में पट, सुदा शिक्षिता गौरांगी तथा पतिव्रता स्त्री से मतभेदी ओ गृहस्थासक्त, गृहादि काम में सामान्य, अधिक व्ययो, गृहस्थ-संचालनार्थ आय में संकट का अनुभवों, पौरुष से जीविकोपार्जक, ओ भाग्योदयार्थ सतत प्रयत्नशील, वृद्धावस्था में पुत्रों के वरण सुख प्राप्त कर्ता ओ भाग्यशाली, सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में सामान्य, दुष्म-संगट में अमान-गृह, विरोध-हीन, किन्तु भार्वाहिक और कोटुम्बिक सुम-सम्बन्धों में समुन्नता का अनुभवों, सर्वदा अर्थभाव से आन्तरिक दुःखों, यदाकदा मर्मित विचार युक्त पान्तु दक्षिणायुक्त, कर्मक्षेत्र में भाग्यहीनता से हीन, वाक्पटु ओ स्वभावस्थायी दक्ष, मातृ-सुख-युनता का अनुभवों तथा पितृ-सुख का अल्प-भोगी ओ पितृक्षेत्र-निवासी, उदर-विकार से पीड़ित हो गा।

(१६३) - इस कुण्डली भूक में उत्पत्ति ग्रहण को नाला व्यक्त दीप्ति देदी ओ (बुध, गोधुमवर्ण, स्वोभिमानी ओ (को-
दी, स्वभाव से उग्र, स्वार्थपूर्ति में सर्वदा तत्पर, ग्रहणदि लाभ में सामान्य, साधारण धन-संचयी, परिवारकी भावनाओं से
संयुक्त, पारिवारिक ओ भार-बोझ तदा मातृ-सुख सम्बन्धों में अभावग्रस्त, पिता-सुख का अल्पभोगी ओ अन्य
स्वल्पभोगिनी, अतीव साहसि ओ प्रभावशाली व्यक्तित्व से सम्पन्न, स्त्री-सुख में अभावग्रस्त अपना मतभेद के साथ
सफल, भोग-विलास ओ स्त्री तथा ग्रहस्थ की चिन्तन करते हुए सर्वदा भाग्योदय ओ (धन-संचय में संलग्न, पुत्रादि-
संयुक्त, विधाक्षेत्र में सामान्य, परिश्रम ओ उत्साह शक्ति से द्रव्य संग्रहीत तथा सामान्य-धनी, वृद्धावस्था में सुखि
ओ भाग्यशाली, यदा कदा ग्रहस्थ संचालक से द्रव्य की कमी का अनुभव, आवश्यक लाभ धर्मपालक, रश्मि आस्था संयुक्त,
उदरशून्य ओ रक्त-विकार से पीड़ित, रहन-सहन में साधारण, (पुत्र रोति ओ चातुर्य से विरोध-पक्ष पर सबलीबज-
यो, मध्यमायुष्य सम्पन्न, लीयक्षेत्र में निवासी ओ देहत्यागी होगा।

(१६४) - इस जन्मलग्न में जन्मा कुआ (बुध उत्तम गो-वर्ण, सामान्य कद, बुध देदी, धाम सुन्दर, स्वोभिमानी,
जलर ओ निनेवी, स्वार्थपूर्ति में सर्वदा तत्पर, मधुर ओ व्यत्यभावी किन्तु आन्तरिक-पालकाज, मातृ-सुख-सहयोग
में सुलभा प्राप्त, भार-बोझ के सुख सम्बन्धों का प्राप्तकर्ता, पारिवारिकों से दुःखी, ऐश्वर्य ओ ठाठकाट से रहने वाला,
भोग-विलास में दस; सुन्दरी, श्यामा, शिक्षिता स्त्री का पति ओ अन्योत्पत्तियों के रमण से वर्जित, किन्तु अधिक कामुक,
उत्तमस्वास्थ्य संयुक्त दीप्तिजीमित प्राप्त, पुत्रादि से वृद्धावस्था में सुखि ओ भाग्यशाली, पिता से मतभेद युक्त पिता-सुख
सहयोग का भागी, विधाशालि-चातुर्य ओ साहस से व्यवसाय में सफलतायुक्त पैतृक धन से सम्पन्न हो कर ग्रहस्थ
अत्य-वाहन ओर द्रव्यकोष का अच्छा लाभ प्राप्त करेगा, पत्र ज्योति में नुदियुक्त, यदा कदा उच्च लाभ ओ (हानि का
प्राप्तकरी परिश्रम में निरन्तर रहा धर्म ओ रश्मि में आस्थानान्त तथा धर्मपालक ओ (कर्मवीर, सामाजिक मान-
प्रतिष्ठा सम्पन्न, लीयक्षेत्र-निवासी ओ देहत्यागी तथा कुदृष्ट ओ (दमालु एवं परोपकारी, शत्रुजित होगा।

(१६५) - उस जन्माङ्ग में जन्मा हुआ बालक सामान्य कदवाला, गोष्ठि मन्त्र, ऊँचा भाल, हेमिक-लोन्दम में कुछ नुटि युक्त, स्वाभिमान, तेजस्यो ओ। प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, परम सहस्रो ओ। चतुर, व्यापक सिद्धि हेतु मन्दुरवाणी एवं चतुर-
राई से कार्य करने में दक्ष, विभावसे उग्र ओ। क्रोधी, अनुशासनप्रिय, भोग-मिलास में दक्ष, सुन्दरी, सुदिक्षिता, परित्वता
स्वाभाव कते हुए उससे मलनेद युक्त-अन्य स्त्रियों का भोगी; साहस ओ। चातुर्य से व्यवसाय में सफल, काम हेतु अन्य स्त्रा-
ना में अमशशील, हृद्-रोगी ओ। रक्त-विकार युक्त, मध्यमायुष्य प्राप्त, विरोधियों का दमनकारी, विद्या ओ। सन्तान में
पूर्णतया सुखी, राज्य क्षेत्र में वन्धन प्राप्त कर्ता, सामाजिक प्रतिष्ठा में न्यूनता युक्त, कई बार मृत्यु तत्पश्चात् कर्ष का प्राप्त
कर्ता, ईश्वर ओ। धर्म में आस्थावान्, आदर्श वाक्य युक्त, पराक्रम शैवित्य ओ। आलस्य के कारण जोका गस्त, भाग्यक्षेत्र
में समुल्लस, ऐश्वर्य से रहन-सहन में लुल्लस, मातृ सुख सहयोग प्राप्त कर्ता, गृह-भूमिलामयुक्त, भाई-बहिन ओ। पाल्या-
निक सुख-सहयोग में नुटि सम्पन्न, पितृ क्षेत्र में न्यासी, पितृ-मलमेद युक्त, यदाकदा गृहस्थ संचालन में नुटि युक्त होगा।

(१६६) - उस जन्म चक्र में जन्म लेने वाला जातक सामान्य कद, दुष्टदेही, उत्तम गोष्ठि, शारीरिक-लोन्दम सम्पन्न,
दाय-चतुर तथा विवेकी, साहस ओ। स्वाभिमान, सामान्य उग्र ओ। सहज ही शान्त, मधुर ओ। सत्यवाणी सम्पन्न, हँसने
हँसाने वाला, धीर-बोर गम्भीर, साहस ओ। चातुर्य से स्वकार्य क्षेत्र में पूर्ण सफल, विद्या-कुटि एवं सन्तान सम्पन्न ओ।
उनेत सुख प्राप्त कर्ता, मध्यमायुष्य अधिक आयु प्राप्त कर्ता, माता-पिता का पूर्ण सुख भोगी ओ। पितृ-भक्त, उत्तम धार्मिक कार्यों
में धन का व्यय, ऐश्वर्य से रहन-सहन में दक्ष, भाई-बहिन ओ। कौटुम्बिक सुख सहयोग में नुटि का अनुभव, दीधजीवी, रा-
ज्य प्रतिष्ठा में न्यूनता युक्त, सामाजिक मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, भोग-मिलास में दक्ष, ईश्वर ओ। धर्म में पूर्ण निष्ठावान् तथा धर्म-
बालक, धन-धान्य गृह-भूमि वाटनादि सुख से पूर्ण, सुख पान्यो के चिन्त युक्त, उत्तम निश्चित आय सम्पन्न, विरोधियों पर
विजयी, सुन्दरी, मेरांगी, परित्वता स्त्री का पति ओ। गृहस्थ में अनुरक्त, रक्त-विकार और हृद्-रोग युक्त, परोपकारी ओ। दयालु
किन्तु सामान्य निष्ठुर, पितृ क्षेत्र में भी पूर्ण भाग्योन्मत्त तथा उत्तम कार्यों के कारण स्वर्ग-प्राप्ति का अधिकारी होगा।

(१६८) - उस जन्म लगे में जन्मा हुआ मनुष्य सुन्दर, गौरवर्ण, शारीरिक सौन्दर्य में भूटियुक्त, नेत्रज्योति में नि-
कार-ग्रस्त, दीर्घ ओं कुशकाय, उन्नत ललाटयुक्त, स्वाभिमानी ओं अधिक साहस तथा धैर्य सम्पन्न, कटु-सत्य-
का भावी, आदर्श स्वरूप, पृथ्वी से कुछ ऊँचा ओं धनसंयार्थ निरन्तर उपलब्ध तथा सामान्य धनी, माता का
अल्प सुख भोगी ओं पिता सुख सहयोग का भागी, पितृक्षेत्र निवासि, यदा कदा भोग्योदय ओं ग्रहस्थ-संन्यास में भूट
का अनुभव, ईश्वर ओं धर्म मार्ग का अनुयायी तथा उत्तम कार्य ओं रहन-सहन में धन का अधिक व्यय, भाई बहन
के सुख सम्बन्धों में मधुरता प्राप्त किन्तु कोटिभक्त सहयोग में भूटियुक्त, सुन्दरी गौरांगी शिक्षिता स्त्री का पति
ओं उससे सुख सहयोग का भागी, सन्तान तथा विद्यावी ओं से चिन्तित, स्वकार्य क्षेत्र में सफल, बाह्य-चातुर्य से
विरोधियों का सफल लड़क, मध्यमायु प्राप्त करी, सामाजिक प्रतिष्ठा सम्पन्न, राज्य क्षेत्र में भूटियुक्त सफल, भा-
ग्योन्निहि में युनता का अनुभव, चिन्तनशील ओं विचारक तथा अच्छा प्रबन्ध होगा।

(१६९) - उस जन्म लगे में उत्पन्न होने वाला व्यक्ति सामान्य कद (कुछ देही), गोधूमवर्ण, शारीरिक सौन्दर्य ओं
नेत्रज्योति में विकारग्रस्त, मलिन ओं कुपेन हृदय, स्वाभिमानी ओं साहस तथा क्रोध एवं स्वार्थसिद्धि हेतु मध्या-
वयस कहेने वाला, मूर्खान्दिय और उदररागे से पीड़ित, भोगविलासे में दक्ष तथा अधिक कामी एवं अन्य स्त्रियों में अ-
धिक भोगी, विद्या ओं सन्तान से वृथ्वा, बृद्धावस्था में सन्तान से विरक्त, ऐश्वर्य ओं भोग-विलासे में अधिक धन
समय कहेने वाला, सुन्दरी श्यामा स्त्री प्राप्त करी, किन्तु उसका वंशक ओं मलभेदी, भाई बहन ओं पारिवारिक क्लेशों से
युक्त, माता-सुख का अल्प भोगी, पिता से मलभेद युक्त सुख का भोगी ओं पितृक्षेत्र निवासि, पारिवारिक भावना युक्त, दीर्घ
जीवी, उत्तम प्रबन्ध ओं राज्य क्षेत्र में जीवी, ग्रहस्थ-संन्यास में भूट का अनुभव, बाह्य-चातुर्य से विरोधियों का सफल
तथा विरोध प्राप्त करी, ग्रहस्थ-लाभ में सामान्य, भाग्योन्निहि में अनेक विघ्न होने वाला, धन-संग्रह में मिलान्त दीन,
आरम्भ में शिक्षा-पुत्र, धर्म-कर्म ओं ईश्वर को जानने वाला, किन्तु धर्मपालन से घनिष्ट होगा।

(१६६) - इस कुण्डली में उत्पन्न होने वाला मानव दीर्घ और (पुष्ट देही, पाम सुन्दर और जो (वर्ण, चतुर और विवेकी तथा (गहरी, प्रभावशाली तेजस्वी व्याकुल सम्यक्, मधुर और सत्यमय आदर्शवाणीयुक्त, धर्मप्रेमियों और धर्मविद् एवं ईश्वर तथा धर्म में निष्ठावान् किन्तु धर्मविकल में ल्याये, माता और बहिन - भाई तथा पौत्रादि सम्बन्धों तथा सुख में अभाव रहता, पितृ सुख सद्योग का भागी एवं पितृ क्षेत्र निवासि, विद्या और सन्तान में पूर्ण तथा सुख प्राप्त करती, धनसंग्रह में चुरी का अनुभवी, गृहस्थ सकल; स्थूला, श्यामा स्त्री का पीत, ऐश्वर्यमय जीवन युक्त तथा अधिक व्ययी, मधुर वाणी तथा चतुराई से विरोध पक्ष का विजेता, उदर और गुप्तरोग रहता, दोषाधिक प्राप्त, भाग्योन्नीति में विघ्न युक्त, अन्य स्त्रियों में भी सम्यक् और (प्राप्त, पितृ-सद्योग से स्विकार क्षेत्र में सफल, यदा कदा आलस्य के कारण ठहरा पाया करती, सामाजिक और राज्य क्षेत्र में मान प्रीतिष्ठा सम्पन्न, उच्चकोटि का विचारक, गृहभूम्यादि लाभ में सामान्य, कुटुम्ब कौशल से आपत्ति या अरिष्ट काल में सफलता प्राप्त, धनसंचयार्थ चेष्टित और चुरी युक्त होगा।

(१७०) - इस कुण्डली चक्र में उत्पन्न होने वाला पुरुष दीर्घ और (पुष्ट शरीर, उन्नत ललाट, पाम सुन्दर, प्रभावशाली और तेजस्वी, चिन्तनशील और विचारक, नैजज्योति और गुप्तरोग पीडित, अत्यधिक पुरुषार्थ और (साहस, पुरुषार्थ और (प्राप्त से भाग्योन्नीति करती किन्तु भाग्योन्नीति में चुरी युक्त, आदर्श-सत्य और मधुर वाणीयुक्त, पाम मेधावी अनुशासन प्रिय, काम करने को सर्वदा उद्यत, धर्मिक और ईश्वर में निष्ठावान् एवं धर्म का यथार्थ पालक, सुन्दरी प्रथूला श्यामा स्त्री युक्त और गृहस्थ सुख प्राप्त करती, विद्या एवं सन्तान सुख में पूर्ण, यदा कदा विघ्न युक्त भाग्योन्नीति, भाई बहिन और पौत्रादि सुख सम्बन्धों का भागी, मातृ सुख में धूल का अनुभवी, चतुर और वाक्शक्ति से विरोधियों का सफलता प्राप्त, उत्तम सुख, ऐश्वर्य से रहता रहता में कुशल, बलवान्, परापकारी और दयालु, यदा कदा आय में चुरी का अनुभवी, राज्य क्षेत्र और सामाजिक समुदाय एवं मान प्रीतिष्ठा सम्पन्न, विद्वान्, वृद्धावस्था में सन्तान द्वारा सुख प्राप्त करते हुए भाग्यशाली मान प्रीतिष्ठा सम्पन्न, यदा कदा सुख तुल्य कष्ट प्राप्त करती होगी।

(१७१)- इस कुण्डली में जन्म ग्रहण कोन बाला बालक-मध्यमकद, पुष्ट और गरिष्ठ देही, स्वाभिमानी और उग्र तथा विवेकी, उन्नत ललाट, नासी में भ्रुव, श्यामवर्ण, शारीरिक लोभ में झुट्टा युक्त, स्नायु-सिद्धि में लब्ध, मातृ-सुख भोगी, लावन-काम में कुशल और उसीसे जीविता निकट होने वाला, सदा चिन्तित रहने वाला अधिक कर्मों का पिता, सन्तान की ओर से दुखी, अनुमानोक्ति से शीघ्र से काम कुशल, गृह सुख लाभ से नोचित, साधारण रहस्य रहन युक्त, ईश्वर और धर्म में निष्ठा सम्पन्न, धर्म-कार्य करने वाला तथा उससे कुछ द्रव्य लाभ प्राप्त, अधिक व्यय के कारण दुखी, यदा-कदा गृहस्थ-संचालनार्थ चिन्तित, भाग्योदय में अवरोध युक्त, मध्यमायु प्राप्त, मातृ-सुख भोगी, पैतृक गृह लाभ, पिता का उक्त सुख प्राप्त करती, भाई बहिन युक्त किन्तु उनके तथा पौत्र-पौत्रिक सुख सम्बन्धों में झुट्टा युक्त, सुन्दरी, गेहों की कलहकारीणी सभी से कुछ दहेने वाली स्त्री का पति एवं उसके कारण सभी के विरोध से युक्त, बाह्य चातुर्य से विरोध पक्ष को सन्तुष्ट करने वाला, द्रव्य के संग्रहार्थ सर्वदा प्रयत्नवान् किन्तु द्रव्य संग्रह में अभाव गस्त, परिश्रम एवं उत्साह और साहस सम्पन्न होगा।

(१७२)- इस कुण्डली में जन्मा हुआ बालक मध्यमकद, गोधूमवर्ण, गरिष्ठ और पुष्ट वयु, स्वाभिमानी उग्र तथा क्रोधी, विवेक से कार्य करने में लक्ष्य, स्नायु-सिद्धि हेतु सन्तान सुख-नोक्ति वरीष्ठ और राजनीतियों के निर्माण में दक्ष तथा तत्पर, अनुरागसन्निधय, विद्या-कुक्षि में शक्ति कुशल, धर्म एवं ईश्वर के प्रति आस्थावान् व धर्म-पालक और उसमें कार्य का सम्पादन व उसके द्रव्य लाभ व व्यय प्राप्त, मातृ-सुख सहयोग का भोगी, मातृ-यश से धन लाभ, परिश्रम एवं उत्साह तथा कर्मक्षेत्र या अच्छे द्रव्य लाभ से युक्त, सन्तान भी और से दुखी, गृहादि लाभ से शक्ति, मध्यमायु प्राप्त, बाह्य चातुर्य से विरोध पक्ष को सन्तुष्ट करने में प्रयोग, यदा-कदा गृहस्थ-संचालन में झुट्टा युक्त और द्रव्य तुल्य कष्ट तथा औरों का प्राप्त करती, कलहकारीणी, पुष्ट देही सुन्दरी स्त्री का पति, अधिक कर्मों का पिता, विधायक संग्रह, द्रव्य संग्रहार्थ निरन्तर चिन्तित तथा सामान्य धनी, पितृ-सुख का अल्प भोगी, पैतृक से निष्ठा, भाई-बहिन और पौत्र-पौत्रिकी ओर से सभी का विरोध करने वाला, साहस सम्पन्न, नेत्रज्योति में चिन्ता का अनुभव होगा।

(१७३) - इस जन्मों में उत्पन्न होने वाला व्यक्ति मध्यमकद, कुशोद्देही, स्त्रीभक्तानी, प्रतिकार-भावनायुक्त, क्रोधी और उग्र, अनुशासन-प्रिय, सन्तान भी ओ से निरन्तर चिन्तित ओ दुष्टो, सामान्य सन्तान युक्त, तेजस्वी ओ प्रभावशाली व्यक्ति सम्पन्न, आन्तरिक द्वेष से दग्ध, मानसिक अशान्त, गृह-भूषणार्थ सुख, ईश्वर ओ धर्म के प्रति आस्थावान् तथापि सामान्य धर्मपालक, सुन्दरीकलहा स्त्री का पति ओ उसके कारण सभी का विरोध ग्रहण करनेवाला, मातृ-सुख-सहयोग में अन्ध, पितृ-सुख भोगी, चिन्तनशील ओ विचारक, अत्यन्त गृह-रोहि से विरोध को दवाने में प्रवृत्त तथापि विरोध युक्त, कई बार मृत्यु-तुल्य कष्टों को पाकर मध्यम आयु प्राप्त, दुष्ट-संग्रह ओ भाग्योदयार्थ उत्साह ओ दीर्घमसिवाय काने में लट्ठ तथा सामान्य धन संग्रही ओ भाग्योन्नत, व्यवसाय कर्म में असफलता युक्त सफल विद्या-ग्रहण भी ओ से भूट युक्त, सामाजिक ओ राजकीय प्रतिष्ठा व सम्मान में अभावग्रस्त, नेत्र ज्योतिष रक्त विष्का युक्त, भाई-बहिन ओ कुटुम्ब का विरोध ग्रहण करनेवाला, स्वार्थ-सिद्धि एवं दुष्ट-लाभार्थ निरन्तर चिन्तित रहेगा।

(१७४) - इस जन्म-युक्त में जन्मा हुआ पुरुष उत्तम विचारशक्ति तथा गृह-भोजनाओं के निर्माण में दक्ष, गोम शाली ओ प्रतिष्ठा भावनायुक्त, प्रभावशाली तथा तेजस्वी, दीर्घायु, शारीरिक सौन्दर्य में भूट युक्त, दीर्घदेही ओ उन्नत ललाटे, गोमर्ष, स्त्री का विरोध ओ मतेभर करनेवाला, आदर्शवादी, नाग-विलास एवं ऐश्वर्य युक्त रहने में पट, विद्या-बुद्धि-विकस के श्रेष्ठ, वाक्चातुर्य व कौशल से कार्य करने तथा विरोध को दवाने में सक्षम तथापि निरन्तर विरोध युक्त, उदर-प्रकार एवं अंगन तथा योनि से भयग्रस्त, व्यवसाय क्षेत्र में अवरोध युक्त सफल, पितृ-सुख का अन्ध भोगी तथा पितृ-क्षेत्र-निवासी, माता के सुख-सहयोग का भागी ओ उससे लुप्त एवं मातृभक्त, ईश्वर ओ धर्म के प्रति निष्ठावान् तथा मधार्थ-धर्म का पालक, स्त्रीभक्तान सम्पन्न, वृद्धावस्थामें सुखी, अनेक अशुभ वाक् दीर्घायु सम्पन्न, भाई-बहिन ओ बहिन भी ओ से कुल पाते हुए गन्नीलोक कारण सन्तुष्ट, कन्या व पुत्रों को पिला किन्तु पुत्रों भी ओ से चिन्तित रहेगा उनके कारण भाग्यशाली माने जाना वाला, दुष्ट-लाभ से श्रेष्ठ, मान-प्रतिष्ठा प्राप्त होगा।

(१७५)- इस कुण्डली में उत्पन्न होने वाला व्यक्ति, (पुष्ट देही, उन्नत-ललाट, विद्या-बुद्धि तथा सन्तान-
से पूर्ण व सुखी, दाम-उत्साही ओ (साहसी, ऐश्वर्यपूर्ण इन्द्र सहस्र रहन-सहन में दक्ष, स्वाभिमानी ओ (आदर्शवा-
दी, अनुशासन-प्रेम, मातृ-सुख-सहयोग में स्थिर, पितृ-सुख-सहयोग का भागी, दीर्घजीवी, रक्त-वर्ण-ज्योति में
विकारयुक्त तथा उदर-शूल से पीड़ित, स्त्री-सुख में मत्त भेद-गृह, धर्म व ईश्वर के प्रति आस्थावान्, किन्तु धर्मपालन
में कुछ शैथिल्य युक्त, परिश्रम ओ (कर्मयोग को महत्व प्रदान करते हुए पितृ-घन से व्यवसाय-क्षेत्र में रत तथा अचिर-
धर्म-भाग्योन्नाहि प्राप्तकर्ता, गृह-भूमि-द्वय-कोष से लाभान्वित, वृद्धावस्था में सन्तान-के कारण भाग्यशाली माना
जाये वाला, नेता तथा उत्तमवक्ता, राज्य-क्षेत्र से लाभान्वित तथा सामाजिक मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, विरोध-पक्ष पर
वाणी-चालु तथा अक्षरी-विनोद से सफलता प्राप्त, विलक्षण प्रतिभा-सम्पन्न, पराधमारी ओ (दयालु, विवेक-वर्ण
या अनेक कार्यों में सफलता प्राप्त, मानसिक-अशान्ति गृह, भार-वर्द्धन के व पीढ़ी-वर्ण-सुख-सम्पन्ना से युक्त होगा।
(१७६)- इस कुण्डली चक्र में उत्पन्न हुआ मनुष्य दीर्घ देही, कृश-काय, स्वाभिमानी ओ (शोधी, गो-वर्ण, उन्नत-ललाट,
नेत्र-वर्ण ओ (प्रभावशाली व्यक्ति सम्पन्न, ऐश्वर्ययुक्त रहन-सहन में दक्ष, भोग-विलास में पटु, सुन्दरी-स्त्रीका पीत
किन्तु उसका वंचक ओ (अन्य-स्त्रीयों से दुर्व्य-लाभ करते हुए रमण-शील, दाम-साहसी, धूर्स ओ (लम्बट, कर्म-
क्षेत्र में कृशाल एवं वेम-केन प्रकारेण राज्य-क्षेत्र से जीविका-बलाने वाला, सन्तान-सुख से हीन, किसी की धिन्तान-
माने वाला, उद्धत ओ (बलात्सल, राज्य ओ (सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में न्यून, धर्म ओ (ईश्वर को मान्यता देते हुए अ-
धिक कामों ओ (महाकदा धर्मकी नियन्त्रण करने वाला, अनेक विरोध व भाग्योन्नाहि में विघ्नयुक्त, गृहस्थ-संचालनार्थ
कुछ दुर्व्य-लक्षणी, भार-वर्द्धन तथा पीढ़ी-वर्ण-विरोधी, बुद्धि-कोशल्य से कई कार्यों में सफलता प्राप्त, शत्रुओं ओ
औरिष्ठों से युक्त, मध्यमायु प्राप्त, वृद्धावस्था में दुर्लभ ओ (निराश्रित, यश-हीन, नेत्र-ज्योति ओ (उदर-शूल-संग्रहणी रोग
से पीड़ित, स्वार्थ-नीति में तत्पर, अन्य-स्त्री में सन्तान-युक्त, केवल रक्त-पुत्री के कारण कुछ सुख प्राप्त करते वक्ता होगा।

(१७७)-इस जन्म में जन्म लेने वाला मानव धर्म में धार्मिक, साहसी, स्वोभमानी, गोलबाली बात करने में चतुर, दीर्घबिषु, कुशकाम, (पुंछ) ओ (गोखर्ष), तेजस्वीति में कुछ मन्दता रहता, उन्नत-ल्लाट, दूरदर्शी, तेजस्वी ओ (उभावशाली); सुन्दरी मिथा युक्त, किन्तु उससे मरभेद रहता; अन्य में रमणशोल, बलादत, वि. मा. बुद्धि में अपूर्ण रहते हुए भी पूर्ण माने जाने वाला, देशादनी, रहस्य युक्त होत, दूरपरदर्शी निराला ओ (म. ग. शोल, संगीत-काव्य-ज्योतिष-कला क्षेत्र में प्रवीण ओ (ललन काम से जीविका निर्वाहक, किसीकी निःशान्त न जाने वाला, दीर्घवृत्ता होत, अनेक बार मृत्यु तुल्य कष्ट पाने वाला, तेजस्वी, राज्यव सामाजिक पहिछा-हीन किन्तु राजकीयव सामाजिक व्यक्तियों से मधुर सम्बन्ध स्थापित कर मान-पहिछा प्राप्त करने में सक्षम, भाई-बहिन ओ (कीजसे उपेक्षित, भोग-विलास ओ (सुरा-सुन्दरी एवं ऐश्वर्य में धन का अधिक व्ययो, ईश्वर धर्म में आस्थावान् ओ (उपेक्षित किन्तु धर्म से विमुक्त, गृह-भूमिका पेटक लाम्बी तस्मात्पलाभ हीन, भाग्यान्तरिकी उपेक्षा करने वाला होगा।

(१७८)-इस जन्म में जन्म लेने वाला काल के दीर्घबिषु ओ (पुंछ, गोखर्ष, उन्नत-ल्लाट, स्वोभमानी, गोलबाली आदर्श वाक्य-स्थापना में प्रवीण, उभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, तेजस्वी, गम्भीर विचाराधार ओ (से विवेक सम्पन्न, बलादत, सुरा-सुन्दरी का प्रेमी, सुन्दरी गोखर्षा पहिछा युक्त दतिवृत्ता स्त्री का पति ओ (उसमें सन्तान ग्रहण का उसकी उपेक्षा का निराला भ्रमणशोल तथा अन्योस्वियों में रमणशोल, भोग-विलास ओ (ऐश्वर्य में धन का अधिक व्ययो, शताधिक स्त्रियों का भोगी, साहसी तथा वाक्-चातुर्य से पूर्ण, विषय में अपूर्ण रहते हुए भी वि. मा. माने जाने वाला, पितृ-स्वाध का भोगी, पेटक धनलाम्बी होते हुए भी धन से दान, लयने से अधिक धन कमाकर उठने वाला, सामाजिक मान-पहिछा हीन, वाह्य-सम्बन्धों में मधुर ओ (मान-पहिछा प्राप्त, वृद्धावस्था में धन आका पाने वाला, पुत्रोद्धार उपेक्षित ओ (लिरस्कृत तथा दुर्बल, संगीत-काव्य-दि का प्रेमी, मातृ-स्त्रुति में अल्प, कई बार मृत्यु-तुल्य कष्ट पाकर दीर्घजीवी, भाग्यदयाध उपेक्षा करने वाला, गृहस्थ में अनुरक्त व विरक्त, राज्य क्षेत्र में बन्धन-प्राप्त कला होगा।

(१७६) - इस कुण्डली - धर्म में उत्पत्ति गृहण करने वाला जातक धर्म तेजस्वी ओ (प्रभावशाली एवं स्वाभिमानो, आदर्श विद्वान्, सत्यवादी, शिष्ट, धर्म तथा कर्म में आस्थावान्, दीर्घविधु, नाम कुन्द) ओ (कृशकाय, उन्नत-मान, विचारशील, विद्या-भूषि ओ (सन्तान-प्राप्त से पूर्ण किन्तु विलम्ब से सन्तान ओ (विद्या प्राप्त कसी, पैतृक धन तथा वीरश्रम के बल पर भाग्योन्नत, सुन्दरी स्त्री प्राप्त कसी किन्तु स्त्री-सुख से वञ्चित ओ (अन्य कर्तृ विवेचों में भोग-विलास में दह, साहसी, मातृ-सुख ओ (पितृ-सुख से वञ्चित भागी, धन-धान्य-गृह-भूमि-भूत-वाहनोदि सुख से सम्पन्न, राज्य ओ साम्राज्य, मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, पैतृक-धन से व्यवसाय में अवरोध युक्त भाग्योन्नत, ऐश्वर्यमय रहन सहन में परकीर्ण ओ (अधिक धन व्यय करने वाला, सन्तान भी ओ (से चिन्तित, विरोधियों पर गुप्त शक्ति तथा वाक्-चातुर्य से सफलता प्राप्त, मध्यमायुष्य सम्पन्न, मानसिक-अशांतिका अनुभवो, श्रीवार ओ (भारविहित सभी से सम्बन्धों में मधुर, अधिक उत्साही, अनुशासनोपय, दृढी तथा दृढ निश्चयी ओ (कर्मयोगी होगा।

(१८०) - इस जन्मोक्त में जन्म लेने वाला व्यक्ति अत्यन्त तेजस्वी, स्वाभिमानो, गोवर्ण, सुन्दर ओ (प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, कुटुम्ब, दुष्ट देही ओ (मध्यम कद, ऐश्वर्यमयी रहन-सहन युक्त, अत्यन्त मेधावी ओ (चतुर, विद्या-भूषि ओ (विवेक सम्पन्न, सहज ही शान्त ओ (गम्भीर, सत्यता युक्त आदर्शवादी, उन्नत विचार, नेत्रज्योति में विकार युक्त, विलम्ब से सन्तान प्राप्त ओ (सन्तान की ओ (से चिन्तित, सुन्दरी, गौरांगी, पतिव्रता स्त्री युक्त ओ (उसका वन्द्यक तथा उच्च विवेचों में शमणशील, गृहस्थाल, मातृ-सुखहीन, पितृ-सुख प्राप्त ओ (पितृदेव में व्यवसायान्तर्निवासो, संगीत-व्यायाम-विधादिको प्रेमी, शिष्ट ओ (धर्म के प्रति आस्थावान्, आदर्शवादी, उत्तम धर्मों में धन का व्ययो, धर्मपालक, वाक्-पटुता से विरोधियों का विजेता, गृह-भूमि लाभ में विपन्न युक्त, धन-संबन्धार्थ निरन्तर चेष्टा सम्पन्न, सामान्य धनो, भाग्योन्नत, राज्य ओ (साम्राज्य प्राप्त मान युक्त, अनेक औरष्ट ओ (जल, अग्नि से भय प्राप्त हुआ मध्यमायु प्राप्त, भारविहित ओ (कुटुम्ब का विरोध गृहण करने वाला, विद्या-भूषि से गौरवान्वित, परोपकारी एवं दयालु तथा सहिष्णु होगा।

(१११) - इस जन्म में जन्म लेने वाला बालक अत्यधिक लालच, न केवल योग्य कार्य को करने में भी लालच, गौरव, दीर्घ देदी, कृशकाय, आत्मबल से हीन, चंचल प्रकृति, उन्मत्तललाट, विलक्षण विद्या बुद्धि में उन्नत, स-
न्तकी ओर से अधिक निरन्तर, बलाहल, धूर्त, ऐश्वर्य में उन्नत और रहन-सहन तथा भागविलास में उच्च-
क धन व्यय करने वाला, लम्पट, कामी और स्त्री सुख से हीन, अनेक ऐश्वर्य का भोगी, अधिक दृष्टि और दृढ निश्चय,
इश्वर और धर्म के प्रति आस्थावान्, किन्तु स्वार्थवश धर्म-पालक, गृहभूमि लाभ में लामान्ध, अनेक विद्या विद्वान्
और विरोध-पक्ष को वाक्-चाल में विद्या बुद्धि को रानि से परास्त करने में सिद्ध, संगीत-वाद्य-ज्योतिषादि प्रेम, नि-
रन्तर धन संग्रह को चोखिल, निश्चित आभयनी से सम्बन्ध, नव ज्योति में विचार युक्त, राज्यसभ में प्रतिष्ठा प्राप्त किन्तु
सामाजिक मान से हीन, स्त्री का शोषण करण प्राप्त, मध्यम आयु प्राप्त कर्ता, उदर-रोग से पीड़ित, भार्य-वर्धन युक्त पुत्र सम्ब-
न्धों में कुटिल अनुभव, पारिवारिक कलह और उनका मुक्त मोहि-रीति से प्रबल, आदर्श स्थापना में पटु होगा।

(११२) - इस जन्म में जन्म-ग्रहण करने वाला बालक दीर्घ देदी, विद्या-पक्ष में कुटिल प्रवृत्ति किन्तु साहसशालि
त अनेक कार्य को करने में संलग्न, बलान्मत्त, प्रतापी और तेजस्वी, उमावशाली व्यक्ति है पूर्ण, आत्मबल हीन,
उन्मत्तललाट, गौरव, शौरिक-रोन्ध में कुटिल, आन्तरिक ईश्वरीय-तत्ता का स्वीकार, किन्तु धर्म-पालक
से हीन, भागविलास में दक्ष, लम्पट और कामुक एवं स्त्री सुख से हीन तथा शताधिक ऐश्वर्य में रमण कर्ता, सन्तान
की ओर से दुष्ट, वृद्धावस्था में तिरस्कृत और अपमानित, ऐश्वर्य और रहन-सहन में धन का अधिक व्यय, कर्त्तव्य-भूत
तुल्य कर्त्तव्य का प्राप्त कर्ता, स्त्री का प्रथम मरण प्राप्त अथवा स्त्री-सन्तान हीन, अनेक स्त्रियों पर प्रभुत्व शाल, राज्य और
सामाजिक मान-प्रतिष्ठा विजित, भाग्योन्नाति में विजय का अनुभव, पारन्त रहन-सहन-आयन करने वाला, मोक्ष और कु-
त्सित जीवनमान, गृहभूमि लाभ से वञ्चित, मोरो जैसी प्रकृति, भार्य-वर्धन और पारिवारिक विरोध प्राप्त कर्ता, सम-
ग पक्ष पर विनयशालता और वाक्-पटुता से विरोध-पक्ष को परास्त करने वाला, मातृ-पितृ-सुख से वञ्चित होगा।

(१८३)- इस जन्म-पूर्व में उत्पत्ति ग्रहण करने वाला व्यक्ति सामान्य कद और (बुद्ध देह, व्याधिमिश्रित, उन्नत कला, धर्ममयी और विद्या-बुद्धि तथा वाणी-प्राप्त में दक्ष, स्वाभिमान और लालसा, विवेक और विवेकपूर्ण परिभाषा सम्पन्न, विद्वान् और भाग्यशाली, गृह-भूमि-द्वयकोष, धन-धान्य, मूल्य-वाहनार्थ सुविधा पूर्ण, ईश्वर और दान में आस्थावान् तथा सामान्य धर्मपालक, सुन्दरी-स्त्री का पति किन्तु स्त्री-सुख में ला धारण, अन्धविश्वास में रमणशील, ऐश्वर्य सम्पन्न, भोगविलास में धन का अधिक व्यय, निश्चित आय सम्पन्न, स्वयं स्वयं स्वयं के प्रोण, अनेक विद्याविद संगीत-वाद्यादि प्रेमी, मातृ-सुख में युक्त तथा पित्र-सुख का अन्य भागी, धैर्य धन तथा व्यवसाय क्षेत्र में पूर्णता प्राप्त और कुछ भूट युक्त सफल, निरोधियों का विजेता, उत्तम स्वास्थ्य सम्पन्न, नन्मज्जादि में भूट का अनुभव, भार्गविक के सुख-सहयोग में युक्तता प्राप्त, समाजित, परोपकारी और दयालु, उत्तम उणी सन्तान युक्त तथा उससे पुत्र प्राप्त, दीर्घ जीवन संयुक्त, उदर शुद्ध और गुदरिन्द्रिय में विकार-ग्रस्त, साहस-सम्पन्न, उद्यम और परिश्रम शक्ति।

(१८४)- इस जन्म-पूर्व में जन्मा हुआ मानव गौरवार्थ, कृशकाय, स्वाभिमान और दृढ़, लालसा और क्रोध, भोग विलास में दक्ष, स्वर्ग सुख में सम्मान्य, मेधावी, परिवार भावना युक्त, रक्त-विकार उदर शुद्ध-संग्रहणी आदि रोगों से ग्रस्त, अनेक विवेक का भोगी, सन्तान और विद्या सुख में सामान्य, कृपण, धनोपाज्जनार्थ सर्वथा तत्पर, परिश्रम और उत्साही, मातृ सुख हीन, पित्र सुख सहयोग का भागी और पित्र भक्त, स्वयं स्वयं तथा व्यवसाय में विपन्न मुक्त सफल, निरोधियों का विजेता, भार्गविक के पुत्र सम्बन्ध प्राप्त किन्तु पारिवारिक क्लेश शाही, यदा कदा आलस्य के कारण लम्बी दानि युक्त, गम्भीर और गुदरियोजनाओं के निमोण में दक्ष, सहज ही आपत्ति काल में भयगस्त, निश्चित आय सम्पन्न, पित्र स्वयं विदासी, गृह भूमि लाभ प्राप्त एवं भाग्योन्नत, सन्तान की ओर से चिन्तित, अपन विभाव से आन्तरीक दुख का अनुभव, ईश्वर और धर्म का आश्रित तथा धर्म पालन में युक्तता युक्त, यशहीन, साधारण मान प्रतिष्ठित प्राप्त, मध्यमायु से अधिक जीवन प्राप्त कर्ता, परिवार जीवन में दुख के निबन्ध में भोगा पाते वाला होगा।

(१८५)- इस कुण्डली में उत्तम हुआ मनुष्य अत्यधिक साहस और दृढी तथा मुकुल उच्छि, हँसने-हँसाने वाला, विनोदी, स्वभाव-स्वाधर्म मधुरता, प्रियम्बद, चतुर और मेधा सम्पन्न, जो (वर्ण, कृशकाय, सामान्य कद, सुन्दरी, पतिपरायणा, गौरांगी स्त्री का पति और उससे सुखी तथा उत्तम सन्तान प्राप्त करे, शुद्ध भूमि-पुष्प कोष-मृत्-वाहन-धन-धान्यादि से पूर्ण, मातापिता का पूर्ण सुख प्राप्त, परोपकारी और दयालु, मिश्रित आय सम्पन्न, विद्या-बुद्धि की प्रमत्ता प्राप्त, सन्तान की ओर से सन्तुष्ट, ऐश्वर्ययुक्त रहने-सहने में दक्ष, पौत्र पुत्रों का तथा एक कन्या का पितृ, उत्तम कर्मों में धन का व्यय, भाई-भ्रातृ और पारिवारिक (सुख-सहयोग से पूर्ण, भाग्योन्नीत और व्यवसाय में यदा-कदा अवरोध युक्त सफलता प्राप्त, लीकटनी, गो-व्याधन-इश्वर का पूर्ण भक्त तथा धर्मपालन की दृढी स्थिति के कारण दीर्घायु प्राप्त का सुख प्राप्त होत हुआ, वैकुण्ठ प्राप्त का आवागमन से रहित, उदारचेता, विरोध-हीन और अज्ञातशत्रु एवं सभी प्रकार से सम्पन्नता प्राप्त, किन्तु धर्मपालन का सर्वदा चिन्तित रहेगा।

(१८६)- इस जन्म में जन्म लेने वाला पुरुष श्यामवर्ण, दीर्घदंष्ट्री, उन्नत ललाट, शरीरी के सेन्द्रम मृन्मृदियुक्त, दाम साहस और स्वाभिमानी, कुटुम्ब उग्र तथा सटज ही शान्त, विवेकी और चतुर, विद्या में कुटुम्ब-धनतायुक्त पूर्ण, मेधावी, उद्यम और उत्साह से परिपूर्ण, सत्यवादी और केदार तथा कुटुम्ब दयालु, गौरांगी पतिपरायणा सुलक्षणा स्त्री प्राप्त और उसकी ओर से संतुष्ट तथा सुखी, सन्तान की ओर से चिन्तित किन्तु सन्तान युक्त, भाग्योदय में हीनता का अनुभव तथा राजबेलनोपजीवी और राज्य में उच्चपदासन, राजकीय और सामाजिक मान प्राप्त का सम्पन्न, ईश्वर और धर्म के प्रति आस्थावान् और धर्मपालक, दुष्कलाम से पूर्ण किन्तु दुष्कला के संग्रह में युनता का अनुभव, मातृ-पितृ-सुख-सहयोग का भागी, पारिवारिक से शत्रुता शून्य सम्बन्ध-व्यवहार पाने वाला, सुखेन्द्रिय और उमेद रोग से कोडित, मध्यमायुष्य प्राप्त, हृदय की ओर से चिन्तित एवं कृशकाय, दृढी और दृढीनरच्यो, विरोधियों का अघनीय शरीरता तथा भुक्ति-बल से विजयो, विद्या की ओर से सदा चिन्तित बना रहेगा।

(१८७) - इस जन्म लगने में जन्मा हुआ पुरुष श्याम वर्ण, दीर्घनु, कुशलाय, स्थाभिमानी ओ (कठोर, उग्र) चिन्ता, भाई बहिन के सुख-सम्बन्धों से हीन, पारिवारिक निरन्तर विरोध प्राप्त करता, उभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, शारीरिक सौन्दर्य में औद्योगिक, भुर्रासन-प्रिय, गुप्तयोजनाओं में निर्माण में दक्ष तथा कार्य करने में कुशल ओ (प्रभावी, साहस शक्ति से अनेक कार्य में संलग्न ओ (सफल, सुन्दरी, पतिव्रता स्त्री का पति किन्तु उसका वंचक, जम्पट ओ (कमि, ऐश्वर्योन्मत्त ओ (अधिक व्यय, भोग-विलास में कुशल तथा अन्य-स्त्रियों में अभिरुचि, राज्य क्षेत्र में बेलनापजीवी ओ (उच्च पद एवं सम्मान प्राप्त, सा-भोजन प्रतिष्ठा में युक्त गृह, मध्यमायु प्राप्त, वृद्धावस्था में निश्चित ओ (दुखित एवं सन्तान द्वारा उपेक्षित, गृह भूमि लाभ में सामान्य, विरोधियों का उपरोध से प्रबल दमनकारी, धर्मपालन में सामान्य, मिलात ओ (कुन्नेले हृदय, गुप्तोन्मिष्ट ओ (हृदय निवारण, नेत्रज्योति में मन्दता का अनुभवी, हृदय ओ (निश्चित आय सम्पन्न, अनुशासन प्रिय, विद्या क्षेत्र में स्नातक, मातृ-सुख का अल्प भोगी ओ (पितृ-द्वेषी, अन्य व्यसाय से युक्त, वादनादि सुख से पूर्ण, धर्म भाग्यवाली होगा।

(१८८) - इस जन्म में जन्म ग्रहण करने वाला मनुष्य दीर्घ दीर्घ, कुश-शरीर, शारीरिक सौन्दर्य में कुदृष्ट भुक्त, श्याम वर्ण, साहसी, निर्धकी ओ (चतुर, कठोर ओ (अनुशासन प्रिय, स्वार्थसिद्धि में तत्पर, गुप्तरीति से कार्य करने में कुशल, आवश्यकता में भुर्रा भागी ओ (मृदुल व्यवहार कुशल, पति-निन्दक, उभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, भोग-विलास में दक्ष एवं ऐश्वर्य से हृदय में प्रसन्न, राज्य बेलनापजीवी तथा उच्च पदासि, न्यायवेत्ता, धर्मपालक ओ (इश्वर में आस्थावान्, राज्य द्वारा भाग्यलत एवं प्रतिष्ठा सम्पन्न, सुन्दरी स्त्री का पति किन्तु मतभेदी ओ (उल्लेख सन्तुष्ट तथा सुख-सहयोग का भागी, सन्तान भी ओ (निश्चित, अधिक व्यय, अभिरुचि, मातृ-सुख भोगी, पति-भय ओ (उत्साही, धनसंग्रह से वर्जित, सामान्य गृह-भूमि युक्त, मद्यन्मत्त, वृद्धावस्था में दुखी, दोहिन का पालक, भाई बहिन के सुख-सम्बन्धों में अभाव पाने वाला स्थायी पारिवारिकों द्वारा त्यक्त अथवा पूर्ण विद्वेष युक्त, निश्चित आय सम्पन्न, गम्भीर ओ (शास्त्र रूढ़ि शैली शैली शैली अपने कार्य में कुशल, भाषा-काल में भय-ग्रस्त, मध्यमायु प्राप्त, हृदय एवं शुद्ध योग से कीर्तित, आशेष से वंचित वाला होगा।

(१८८) - इस जन्म-चक्र में उत्पन्न हुआ बालक मोक्षार्थ, कुशोदही, सामान्यकद, उन्नतललाट, चंचल प्रकृति, स्त्रीप्रधानी ओ (सादसी), उत्साही तथा कोरश्रम, विद्या-बुद्धि में पूर्णता प्राप्त, सन्तान भी ओ (सन्नुष्ट), विलक्षण प्रतिभा ओ (गोव-शाली) व्यक्तित्व सम्पन्न, माता-पिता का पूर्ण सुख प्राप्त, किन्तु पिता से कुछ मतभेद युक्त, दयाकारी ओ (दयालु) तथा आक्रामकता भी भण्डार, विलक्षण ओ (विनाशी) विभाव, पशुधर्ममय जीवन से युक्त, मधुर आरुचि तथा सत्यवादी आदर्श स्वरूप, सा-दृश-चातुर्य तथा कोरश्रम से अनेक कष्टों व व्ययसाधन में सफल, गृह-भूमि लाभ संपूर्ण, भारी बोझ ओ (पीड़ा) कुतूहल सम्बन्ध से कितान्त हीन, दीपायुक्त प्राप्त (सुन्दरी, गौरांगी, शशिधरा, पतिव्रता स्त्री प्राप्त ओ (उत्सव सन्नुष्ट) तथा सुख, राज्यक्षेत्र में कर्मोन्मत्त व सामाजिक मान-जतिष्ठा सम्पन्न, पीड़ा के आरिष्ट विरोध हीन तथा सर्वत्र यश प्राप्त कर्ता, उदर-विका-ओ (गुह्यरोग) से पीड़ित, वृद्धावस्था में शुभ सुख, इव्य-कोष संग्रह में कुछ भ्रष्टा अनुभव, धर्मकर्म ओ (इश्वर) के प्रति आस्थावान् ओ (धर्म-पालक), विद्युत्तार्जन के भय से शक्ति, कर्मयोगी, गृहादि का नवनिर्माता होगा।

(१८९) - इस जन्म-कुण्डली में जन्म-गृहण करने वाला जातक सादसी ओ (उ) विभाव, दीपायु, शारीरिक सौन्दर्य में कमजोर तथा कुछ बड़का ओ (बोले) करने वाला, विद्यान्ध, विसात्री करने योग्य यान करने योग्य कार्य को करने में तत्पर, अस्वभाविक कष्टों, भ्रमणशाल ओ (दूर्युत) तथा चोरी से भय अथवा आरिष्ट प्राप्त कर्ता, कल ही ओ (उदर रोगिणी) स्त्री प्राप्त तथा स्त्री-पुत्र से हीन, कलाकार पूर्वक अन्य स्त्री में रमणकर्ता अथवा शूद्रागामा, सन्तान भी विद्यायुक्त, इव्यसंग-राश तल्लोल, किन्तु हीनता प्राप्त, वृद्धावस्था में सन्तान का सुख गृहक ओ (सन्तान के कारण भाग्योन्मत्त, राज्यक्षेत्र से सामा-न्य भाग्योन्मत्त, गृहभूमिदि लाभ से हीन, अधिभक्ष्य, पीड़ा के विरोध ओ (भार) बोझ का विरोध प्राप्त कर्ता, नेत्र-ज्योति में विकार गत, रक्त वायु रोगी, कई बार मृत्युतुल्य कष्ट अथवा आरिष्ट युक्त, आपत्तिकाल में भ्रमणतावश आत्मह-त्यार्थ उदत्तेशोल, अलगाय सम्भावित, दृष्टी ओ (जिह्वा) भावना युक्त, उदरशूल पीड़ित, पशुधर्म हीन, मलिन ओ (कुपे) रहने वाला, गृहस्थ-सेवालक्षण आध-विक्षयक चिन्तित ओ (दुख), पितृ-सुख हीन, माता का अल्प सुख भोगी होगा।

भ.स. २०६

कु. १०

(१८१)- इस कुण्डली चक्र में जन्म ग्रहण करने वाला बालक सामान्य कद, फुल्ट देही, उन्नत ललाट, गोरवर्ण, शारीरिक सौन्दर्य में कुछ त्रुटि युक्त, सुख-भारत का आघात के चिन्ह युक्त, माता-पिता का सुख भागी, किन्तु मातृसुख में मूल-ता ग्रहण करने वाला, उभावशाली और तेजस्वी, मध्यवादी, सुदुल, परोपकारी और दयालु, सहज ही गन्नीर उभो धान्त, दूरदर्शी एवं युक्त योजनाओं के निर्माण व व्यवसाय में दक्ष, चतुर और बिकेकी, पितृसेव निवासि, भोगेश्वर युक्त रहन-सहन, मिथा और सन्तान सुख से पूर्ण, ईश्वर और धर्म में निष्ठा सम्पन्न तथा धर्म-पालक, विरोध-पक्ष को विजेता, उत्तम विद्या सम्पन्न, नेत्रज्योति और अक्षय-राग पीडित, सुन्दरी, श्यामवर्णी, पृथुला स्त्री का स्थिति, किन्तु उससे कुछ मतभेद युक्त, अनेक पोषा का प्रमणशील, राज्य उभो साम्राजिक क्षेत्रों में मान-प्राप्ति प्राप्त, भाग्यवान्, गृह-भूम्यादि लाभ से पूर्ण, अन्य-संग्रहार्थ सर्वदा चेष्टित और धनी, भाई-कीटन युक्त एवं उनके सुख-सम्बन्ध सहयोग का भागी बहनु को-दुश्चिन्तित सुख-सहयोग में अभाव का अनुभव, पीर-क्षम और उल्लाही, यदाकदा भाग्योदय में विघ्न युक्त होगा।

(१८२)- इस कुण्डली में जन्मा हुआ बालक तेजस्वी और उभावशाली न्याय-सम्पन्न, सामान्य कद और फुल्ट देही, विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न, अनुशासनीय, गोरवर्ण, सुख-माधेय चोट का निशान पाये वाला, शारीरिक सौन्दर्य उभो वर्ण में कुछ खीनता युक्त, उदरशूल और नेत्र-रोग पीडित, विनोदी-विभाव, परोपकारी और दयालु, विद्याक्षेत्र में अभाव का अनुभव करते हुए प्रयत्नता प्राप्त, सन्तान की ओर निश्चिन्त, सुन्दरी बालिका श्यामवर्णी स्त्री प्राप्ति किन्तु उसका वैचक और मतभेद, अन्य कई स्त्रियों में स्मरणकला, यदाकदा कर्महीनता और आलस्य के कारण व्यवसाय क्षेत्र में हानि-पाकर भाग्योलाल में अवरोध युक्त, उल्लाह-पीर-क्षम एवं साहस शक्ति से व्यवसाय रहत और सफलता प्राप्त, भोगेश्वर युक्त रहन-सहन और धन का अधिक व्यय, कभी-कभी पोषा पाये वाला, शत्रुओं का काष्ण्यालुय से विजयी, ईश्वर और धर्म में निष्ठा सम्पन्न और धर्म-पालक, गृह-भूम्यादि का लाभ प्राप्त कला, पीर-क्षम क्लेश संकुल, तथापि भाई-कीटन और माता-पिता के सुख-सहयोग का भागी, पितृसेव निवासि, मध्यम आयु प्राप्त, राज्य क्षेत्र में मूल-ता का अनुभव और भाग्यवान् होगा।

(१६३) - इस जन्म में उत्पत्ति होने वाला व्यक्ति, प्रभावशाली ओ (तेजस्वी), मिलकर प्रतिभा सम्पन्न, धर्म ओ (इश्वर) में आस्थावान् होते हुए यथार्थ धर्मवाक्यें सहीन, मातृ-सुखि सन्निहित, भाग्यविकासे में दक्ष तथा अन्योन्नतों का भागी, सदाचा ओ (पवित्रतासे हीन, ऊँचा से आदरनिधी, स्वोभिमानी ओ (सहज ही शान्त, अत्यधिक चतुर ओ (विवेक सम्पन्न, परोपकारी ओ (दयावान्, गृह-भूमि लाभ प्राप्ति, पितृ-सुख का अन्य भागी किन्तु पितृ भक्त एवं पितृ-क्षेत्र का निवासी, धन संग्रहार्थ निरन्तर चेष्टित ओ (धनी, भाग्यदय में अनेक विधियों का प्राप्त कर्ता, प्राणिकार्य क्लेशयुक्त, सामान्यकद, पुष्टदेही, गो (वर्ण), साहस ओ (चातुर्य से व्यवसाय में सफलता प्राप्त, शत्रुओं का विजोता, नेत्र ज्योतिर्म विकार का अनुभवी, संगीत का व्यवसायिकादि प्रेमी, विद्या में अपूर्ण, सुन्दरी स्त्री का पति किन्तु उसका वंचक ओ (मृत-भेद प्रिय, गृहस्थ में आसक्त, सन्तान की ओ (से चिन्तित तथापि सन्तान सुख प्राप्त कर्ता, दीर्घजीवी, सामाजिक ओ (राज-वीर्य मान प्रतिष्ठा में युक्त, सन्तान के कारण वृद्धावस्था में अधिक सुखी ओ (भाग्यशाली माने जाना वाला होगा।

(१६४) - इस जन्म में उत्पत्ति गृहण करने वाला पुरुष उत्तम ओ (कर्ण, पुष्टदेही, दीर्घविदु, स्वोभिमानी, मातृ-सुखि से युक्त, पितृ-भक्त ओ (पितृ-क्षेत्र निवासी, विद्या में अपूर्ण, सन्तान की ओ (से चिन्तित तथापि सन्तान युक्त, उत्तम विद्वान्, धर्मिक ओ (सदाचारी, उल्लाही-साहस ओ (अत्यधिक दौरेछमी तथा कर्मयोगी, इश्वर ओ (धर्मिक प्रतिष्ठा आस्थावान्, गोष्ठ्यारण-पालक ओ (धर्मिकीयों में संलग्न, धर्म-चतुर-विवेकी तथा स्वोभिमानी, मातृ-सुखि में कुछ युनता का अनुभवी, चिन्तनशाली ओ (विचारक, वाक्-चातुर्य से सम्पन्न, उत्तम विद्वान् सम्पन्न दीर्घ जीवन प्राप्त, सम-स्त जीवन भर सुख प्राप्त, गृह-भूमि लाभ युक्त, धनकोष में सम्पन्न, निश्चित ओ (गृह आय युक्त, सन्तान की ओ (से चिन्ता-गृह तथापि उत्तम गुणी सन्तान प्राप्त कर्ता ओ (सन्तान के कारण वृद्धावस्था में अधिक भाग्यशाली, सामाजिक ओ (राज-वीर्य मान प्रतिष्ठा युक्त, मातृ-विद्वान् ओ (कुटुम्ब सभी का सुख-विद्योग प्राप्त, वायुनिकार युक्त, उत्तम कौशिकी में धन का व्यवसाय करने वाला, लीखोदनी ओ (लीख क्षेत्र में भेद-हत्यागी तथा आकाशगमन हीन-बैकुण्ठ-प्राप्ति का अधिकारी होगा।

(१६५) - ३२४ अनुचक्र में जन्मा हुआ मानव उत्तमोत्तम चतुर ओ (देवेवी, स्वामिमांसी, गोवशावी व्यक्तित्व सम्पन्न, उत्तम गोवर्ण, दीर्घ तथा पुष्ट देही, धर्म उगाद शिवादी, सर्वदा वाक्पटु, समाजित, विमोक्षने में अनेक प्रयत्न पूर्णता प्राप्त, माता-पिता का पूर्ण सुख भागी किन्तु मातृ सुख में कुछ न्यूनता का अनुभव, सन्तान की ओ (निश्चित) तथापि उत्तम गुणयुक्त सन्तान का मिला, व्यवसाय युक्त ओ (व्यवसाय में सफल, गृह-भूमि-भृत्य-वाहन-परीक्षा-द्व्यकोष-धन-धान्य-भाईबेटन सभी प्रकार से पूर्ण सुखी, दृढ़ ओ (निश्चित) आय सम्पन्न, जीवन में उत्तम कार्य में संलग्न, अज्ञात शत्रु ओ (विरोध नहीं, समस्त जीवन भर सुख प्राप्त करती, उत्तम स्वास्थ्य युक्त दीर्घजीवी, परोपकार ओ (धर्मकार्य का सम्पादन, गो-वाहन तथा इश्वर में पूर्ण निष्ठावान तथा भक्त, रक्षक यम्य रहन सहन युक्त, धर्म तथा सदाचारण करने वाला, सुन्दरी स्वामा भक्त स्त्री का पति ओ (उसकी ओ (से कुछ उदासीन, गृहस्थ में अनुरक्त, तीर्थोत्सव कर्ता तथा तीर्थ क्षेत्र अथवा निष्ठु भन्दो में देहत्यागी ओ (बहुतेक शत्रु का अधिकारी होगा)

(१६६) - ३२५ कुण्डली में उत्पन्न हुआ मनुष्य उत्तम गोवर्ण, दीर्घ ओ (पुष्ट देही, उन्नत ललाट, स्वामिमांसी ओ (कोपी तथा अनुरागनिष्ठ, दूरदर्शी, माता-पिता का पूर्ण भक्त तथा मातृ-सुख में कुछ न्यूनता का अनुभव, मनसाल पक्ष का प्रिय, भाषा-स्वभाव क कथा आन्तर्गत दुःखी, साहस ओ (वीर्य) सम्पन्न, साहस शक्ति से कर्मक्षेत्र तथा व्यवसाय में सफल, कर्मयोगी तथा धर्म ओ (इश्वर के प्रति आस्थावान् एवं यथार्थ धर्म का बालक, द्व्यकोष ओ (भा. इश्वर के प्रति सम्बन्ध में भूट शुरू सफल, सन्तान की ओ (निश्चित) किन्तु उत्तम गुण सन्तान के कारण कुछ उदासीनता में सुखी ओ (मान्यवान्, ठीक ओ (दूरदर्शी, उत्तम कार्य में धन का व्यय ओ (द्व्यकोष भृत्य वाहन गृह भूमि धर्म सफल, साहस शक्ति साधारण विरोध रहित, गृहस्थ सक्त, धर्म में ओ (सदाचार रहता, चिन्तनशील ओ (लोक पर-लोक का विचारक, राश्वय युक्त रहन सहन में दृढ़, विरोध पक्ष का विरोधी, सुन्दरी स्त्री का त्यागी किन्तु उसकी ओ (से उदासीन, कर्मक्षेत्र इश्वर को मान्यता देने वाला, दीर्घजीवी, मान प्रीति छाया ओ (मोक्ष प्राप्ति का अधिकारी होगा)

(१६७)- इस जन्म में जन्म ग्रहण करने वाला बालक उत्तम (बाल्य में) सन्तानों, दीर्घ देदी किन्तु कुछ कष्ट, स्वामिनी ओ (उत्त) तथा सन्तानों शान्त, ऐश्वर्य युक्त रहने सहने में दक्ष, माता-पिता का पूर्ण सुख प्राप्त तथा पितृ-सुख में युनता का अनुभवों ओ (उन्नत ललाट, विद्याव्यवस्थापना में प्रवीण, पितृ-सर्व निवास, दीर्घ जीवन को प्राप्त), उत्तम गुणमय पुत्रों का पिता, कुछ दृष्टि ओ (परापकारी तथा दयालु, व्यवसायक में पूर्ण दक्ष ओ (सफल तथा भाग्यवान्त, बुद्धावस्था में सन्तानों द्वारा सुख प्राप्त ओ (अधिक भाग्यशाली, राज्य ओ (सामाजिक मान-प्राप्ति तथा सम्पत्ति, धन तथा ऐश्वर्य के प्रति पूर्ण निष्ठ तथा उत्तम धर्मकार्यों का सर्वथा सम्पादन, अनेक क्षेत्रों में दानशाल, विद्या ओ (काल तथा ज्योतिषको प्रवीण), सुन्दरी, सुलक्षण, गौरांगी, शिथिल ओ (भक्त-स्वाका स्वामी ओ (उसकी ओ (सन्तुष्ट तथा उसके कारण बालक का अधिकारी, भार-वहन के द्वारा सम्बन्धों में युक्त दान-सामान्य पारिवारिक विरोध युक्त, गृह भूमि धन धान्य भृत्य-वाहन-वृत्तियों के द्वारा संप्रति रहने वाला होगा।

(१६८)- इस जन्म में जन्म हुआ जातक चिन्तनशाली ओ (विचारक, स्वामिनी ओ (विशेषण प्रीति सम्पन्न, उत्तम गोवर्ण, सामान्य कदा (दृष्ट देदी, मातृ-सुख ओ (पितृ-सुख प्राप्त, माता-पिता ओ (ऐश्वर्य का भक्त, धन में आस्थावान् ओ (बालक, विद्या, धर्म सुख में पूर्ण, उत्तम पुत्रों का पिता ओ (उत्तम सुख प्राप्त कला, मध्यम धन सम्पत्ति, ऐश्वर्य युक्त रहने सहने में पूर्ण दक्ष, दृष्टि ओ (विवेकी, परापकारी ओ (दयालु, सुन्दरी, गौरांगी स्त्री का प्रति किन्तु उससे मतभेद रहने, राज्य वनोपजीवी तथा उससे कुछ दूष्य सिंगदकाने में संलग्न तथा पितृ-व्यवसाय में नृदि का अनुभवों, मदा-कदा ग्रहाथ-संचालन में आन्तरिक दुर्बो, बुद्धावस्था में सन्तानों के कारण भाग्यवान्त ओ (गृह-भूमि लाभ युक्त, वायु-दूतों से विरोधियों को सन्तुष्ट करने में सफल, साहस्य ओ (उत्साही एवं उद्यमरत धर्मयोगी, राज्य ओ (सामाजिक मान-प्राप्ति प्राप्त, संगति-व्यवस्था प्रवीण, स्वस्थ में ही अदुर्लभ, यक्षिण ओ (सदाचारी, गृहस्थ में अधिक समता रहने वाला, शुद्ध ओ (इन्द्रो गी तथा नेत्र ज्योति में नृदि का अनुभवों, दूरदर्शी ओ (लोक-पालोक का विचारक होगा।

(१६८)- २४ कुण्डली में उत्पन्न होने वाला पुरुष दीर्घवियु, (दृष्टि-देही, गौरवर्ण, उत्तम उन्नत ललाट, विद्याक्षेत्र में कुछ श्रुतिभूत पूर्णता प्राप्त, मध्यमायु सम्पन्न, प्राचीन धर्म ओ (संकोचका पीट-पोषक, मालिन्यता का पूर्ण निषेध) भोग-विलास एवं ऐश्वर्य से रहन-सहन में दक्ष, परोपकारी ओ (दयालु, कुल की मान-मर्यादा का रक्षक, राज्य एवं सामाजिक मान-प्रीति प्राप्त, धन-धान्य-गृह-भूमि-द्व्यकोष-भृत्य-वाहनादि सुख से संभूत, उत्तम गुणी पुत्रों का पिता तथा विद्वान् की ओ (लेखनित, सुन्दर सुशोभा ओ (गौरवी पीटवृत्ता) का पीट, किन्तु उससे कुछ मतभेदी, भार्गव-तथा पीटवार का सुख-सहयोग प्राप्त, उद्भूत विचार पीटित एवं सामान्य-चमरोग से प्रभावित, स्वाभिमान, स्वभाव-स्थायता में पटु। वाक्-वाणी में प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, उत्तम स्वास्थ्य भूत, द्व्यकोष में भूतला का अनुभव ओ (भाषा-नत, वाणी-भारुय विरोध का विजेता, संगीत का व्यापार प्रेमी, परिश्रम ओ (साहस-बल) एवं अनेक कर्मों में सफल तथा लाभयुक्त, ईश्वर ओ (धर्म में पूर्ण निष्ठावान् एवं उत्तम धर्मकार्य का सम्पादन होगा।

(२००)- २४ जन्मभोग्य जन्म ग्रहण होने वाला व्यक्ति मध्यमायु प्राप्त, मार्ग में चोरी से भय-गुस्ता अथवा आघात होने वाला, वाणी में चतुर ओ (प्रभाव रहने वाला, मध्यमवृद्ध, गोधूमवर्ण, उन्नत भाल, स्वाभिमान की दृष्टि एवं दृढ़ निश्चय भूत, संगीत का व्यापार प्रेमी, विद्याक्षेत्र में श्रुतिभूत पूर्णता प्राप्त, विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न, अनेक विषयों का प्रीति, मातृ-सुख का अल्प-भोग्य, पितृ-सुख प्राप्त कर्ता ओ (पितृभक्त, उत्तम कर्मों एवं रहन-सहन में दक्षता के साथ दुग्ध का अधिक व्यय, उत्तम गुणी सन्तान प्राप्त ओ (उत्तम कारण भाग्यशाली मान्यता प्राप्त, द्व्यकोष वृद्धि में तत्पर ओ (धनी, नैज्योति एवं गुह्योन्मेष रोग गुह्य, सुन्दरी श्यामा प्रतिपरायणा स्त्री का पीट, गृहस्थ में अतृप्त, धर्म ओ (ईश्वर का अनन्यमल्ल ओ (धर्म-पालक, राज्य से भी दृष्टान्तामी, यदाकदा भाग्योदय में विफलता प्राप्त, परोपकारी एवं दयालु, धार्मिक ओ (विवेक सम्पन्न, सत्यवादी ओ (आदर्श पवित्र, गृह-भूमि लाभ प्राप्त, भार्गव-तथा पीटवार का सुख-सहयोग प्राप्त, उद्भूत विचार पीटित एवं सामान्य-चमरोग से प्रभावित, स्वाभिमान, स्वभाव-स्थायता में पटु। वाक्-वाणी में प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, उत्तम स्वास्थ्य भूत, द्व्यकोष में भूतला का अनुभव ओ (भाषा-नत, वाणी-भारुय विरोध का विजेता, संगीत का व्यापार प्रेमी, परिश्रम ओ (साहस-बल) एवं अनेक कर्मों में सफल तथा लाभयुक्त, ईश्वर ओ (धर्म में पूर्ण निष्ठावान् एवं उत्तम धर्मकार्य का सम्पादन होगा।

(२०१) - इस कुण्डली चक्र में उत्पन्न होने वाला बालक स्वार्थ-सिद्धि में लब्ध, सामान्य ऋद्ध, गौचर्य, उन्नत ललाट, विधा-बुद्धि में शूर, सन्तान-सुख प्राप्त ओ। सन्तान के कारण विधित तत्प्राप्तमानस्यो में उल्लेख कारण भाग्यशाली, धर्म (सर्वतो ओ। उत्साही। स्वभाव से कुछ उग्र तथा सहज ही शान्त, मलिन-चिरा, रक्त ओ। वाम-विकार विचारित, स्वार्थमान्य ओ। प्रतिभा भावना में युक्त, अनेक विधाओं का ज्ञातकार, वाक्-चातुर्य से ओतप्रोत, कटु-सत्य भाषी, बलिदल एवं ऐश्वर्य से रहित-सहज ही भावना की प्रचलता, सफलता प्राप्त, शत्रु ओ। विरोध पक्ष पर बुद्धि कोशिल तथा वाणी अभाव से छिज्यो, राज्य ओ। सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में अनुभवी, मातृ-पुत्र सुख भोगी, किन्तु पिता-सुख में अल्प, पितृ-श्रेष्ठ का स्थायी-निवास, यदोन्नत, धर्मकर्म ओ। दिव्य सत्ता में आस्थावान्, भाग्यो-दय में धिक्कयुक्त, सुन्दरी, गौरांगी स्त्री कलह युक्त प्राप्त, अन्य हिस्से में रमण शील, भाई-वहिन ओ। कौटुम्बिक सुख-सहयोग से वज्रित, दुर्व्यवस्था से ग्रस्त उद्यमों किन्तु न्यूनता का अनुभवी, विलक्षण बुद्धि होगा।

(२०२) - इस जन्मोत्पत्ति में जन्मा हुआ बालक गौचर्य, उन्नत ललाट, सामान्य ऋद्ध, पुष्ट देही, स्वार्थमान्य ओ। उग्र, विवेकी ओ। चतुर, स्वभाव स्थापना में प्रवीण, स्वार्थ-सिद्धि में लब्ध, दुर्व्यवस्था से ग्रही ओ। सामान्य धनी, धर्म-कर्म ओ। दिव्य में निष्ठा युक्त तथापि स्वार्थपरता से धर्म-पालक, स्वभाव से कुछ उग्र एवं कटु-सत्य भाषी, पराधनारी और उदार-चेला, भोग-विनाश में दक्ष, अन्य हिस्से में रमण शील ओ। किसी स्त्री से दुर्व्यवस्था में दोषा-शस्त, उन्नत या शल्य-चिकित्सक, राज्य क्षेत्र में कुछ बुद्धि का अनुभवी, भाग्योदय में विरोध-पक्ष का विजेता, भाई-वहिन युक्त ओ। पारिवारिक कलेश प्राप्त, गृह-भूमि लाभ में सामान्य, विधा ओ। सन्तान के कारण पुत्रि, बुद्धिमान् में सन्तान से सुखी ओ। भाग्योन्नत, मान-प्रतिष्ठा युक्त किन्तु न्यूनता का अनुभवी, नेत्र-ज्योति में कमी प्राप्त, गुप्तोदय में रोगाशस्त, वाक्-चातुर्य ओ। बुद्धि-कोशिल से विरोध-पक्ष का विजेता, मध्यमायुष्य अधिक जीवन प्राप्त, धर्म-धर्म ओ। उत्साही, यदाकदा गृहस्थ-संन्यास का बुद्धि युक्त, मातृ-सुख सहयोग का भागी, पितृ-सुख में अल्प होगा।

(२०३)- ३१ जन्म चक्र में जन्म लेने वाला पुरुष कुशकाम, (सुन्दरी गोनर्ष, दीर्घबिष्ट, राज्य क्षेत्र में समुन्नत ओ (मान-प्रतिष्ठा) प्राप्त। (स्वाभिमान) ओ (साहस), विवेक ओ (क्रोध तथा वाक्-मातृय में पूर्ण, अनुशासनोपय, श्रुत्य वाहन से युक्त, भाग्योन्नीत में अनेक विधन प्राप्त कला, साहस ओ (सभी कार्यों में धन का अधिक व्यय होने से आन्तरिक दुःखी) गृह, श्रुति लाभ में सामान्य, (स्थवर्ममय जीवन एवं रहन-सहन में प्रवृत्त, मार्गोपलब्ध सुख-सहयोग से समुन्नत, मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, सन्तान ओ (विधामें पूर्ण विधा सुखी), भार-विहिन ओ (परिवार-विनिर्मुक्त) क्लेश सहने वाला, मध्यमायुष्य सम्पन्न, कामपाश्व में चोट-गल, दोहिक-सौन्दर्य में कुछ कुराव का अनुभव; सुन्दरी, सुशाला, गोरंगी तथा शिखिता, परिश्रुता (नो) युक्त ओ (उत्तम सुख प्राप्त, धृतराज्य एवं धिते क्षेत्र का (न्यायो) निवास, अन्य स्थानों पर मु-मयशील, विश्व धन्यदा या साहस से कार्य करने में सक्षम, वृद्धावस्था में सन्तान के कारण कुछ भाग्यशाली माना जाने वाला, शिखा ओ (धर्म-कर्म पर आस्था रामते दुःखीपन प्रालम्भ से विमुक्त, कर्मयोग को अधिक महत्व देने वाला होगा।

(२०४)- इस जन्मचक्र में जन्म ग्रहण करने वाला न्यायिक साहसी ओ (स्वाभिमान), सत्य का परिपोषक (मन-धाय पूर्ण बात में प्रसिद्धि प्राप्त, स्वमान से कुछ उग्र-दिवाह देने वाला, चतुर ओ (विवेकी, परावकाश ओ (दयालु) मा-मान-कद-पुष्ट-देही, गोधूम-युक्त, नेत्र-ज्योति में भू-रिक्त युक्त; (सुन्दरी, श्यामा, शिखिता, परिश्रुता तथा (विशेष ओ (उत्तम सुख प्राप्त, विद्या ओ (सन्तान में सुखी, भाग्योदय में निर्गुण विघ्न प्राप्त कला, (द्वय-संग धर्म सर्वदा-ये-धित ओ (परिश्रम) किन्तु, (द्वय-संग) में न्यूनता प्राप्त, मध्यमायुष्य अधिक जीवन देने वाला, भाग्यस्वय ओ (रहन-सहन में प्रवृत्त, स्ववाक्य-स्थापना में दक्ष, हठा, धर्म-पालन में न्यून, राज्य ओ (नामाजिक क्षेत्रों में समुन्नत तथा मान-प्रतिष्ठा प्राप्त। वृद्धावस्था में सन्तान के कारण सुखी ओ (भाग्यशाली, गृह-श्रुति लाभ में सामान्य, भार-विहिन युक्त किन्तु उनके ओ (गो-वर्गा) सुख-सम्बन्धी से वीरित, गृह-प्राप्त, विश्व-धन्यदा या साहस तथा युक्ति बल से प्रभावित, परिश्रम का, अधिक महत्व देने वाला तथा वृद्धावस्था में ईश्वरीय सत्ता ओ (भाग्य को मान्यता प्रदान करने वाला होगा।

(२०५)- उस जन्मों में उत्पन्न होने वाला मुख्य दीर्घदेही, उन्नत ललाट, गोलनर्ध, कृशाकाय परन्तु बलिष्ठ बलेश्वरी
 ओ (पराधी, पितृभक्त ओ (साहस सम्पन्न, बलवान्, स्वाभिमानी ओ (क्रोधा तथा अनुशासनरहित, न्यायोचित कर्म
 से ओ (फोल, सत्य भाषी, सफल कर्मयोगी, परिश्रमी ओ (निरन्तर उत्साही, राज्य क्षेत्र ओ (समाज में समुन्नत ओ
 मान प्रसिद्धा युक्त, प्रभावशाली व्यक्तित्व से पूर्ण, गृह-भूमि-धन-धान्य-भूत-बाह्योद से युक्त, मुख्य-कोष में
 कुछ भूट युक्त सफल, भाग्योदय से विद्यमान, धर्म ओ (इश्वरी अपेक्षा कर्मबल को अधिक मान्यता देने वाला, बाह्य-
 सम्बन्धों में सद्गुण पूर्ण व्यवहार के कारण सफल, मध्यमार्ग से अधिक जीवन प्राप्त, रक्त ओ (पायुर्विकार गृह, विद्या
 ओ (सन्तान-पुत्र से पूर्ण, रोशनी से रहित में पट्ट; सुन्दरी, गौरांगना, परिश्रमाली प्राप्त ओ (उत्तम पुत्र सदैव योग प्राप्त
 कर्ता, विरोध-पक्ष का उबल दमनकारी, गृहस्थ में उन्नत, पलाका भक्त ओ (मातृ-पुत्र से युक्त प्राप्त, भाई-बहन
 के पुत्र-सम्बन्धों ओ (पारिवारिक-सम्बन्धों में भूट-गुल, चमरोगी, वृद्धावस्था में अधिक सुख आन्ती कुदृष्टि होगी।
 (२०६)- इस कुण्डली में उत्पत्ति गृहण होने वाला मानव उन्नत ललाट, वराधकारी ओ (दयालु, उदार चेत, साहस
 ओ (स्वाभिमान, प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, तेजोमय, सामान्य कद, पुष्ट देह, विचारक ओ (चिन्तन शाल, धर्म
 ओ (इश्वरी निष्ठा तथा गृहस्थता ओ (धर्मपालक, विद्या ओ (सन्तान-पुत्र से पूर्ण, भाग्यशाली, कुल ओ (पूर्वजों का
 नामाज्ज्वल करने वाला, राज्य तथा सामाजिक क्षेत्रों में समुन्नत ओ (मान-प्रसिद्धा प्राप्त, भूर-ओ (विदेकी, अनेक वि-
 या विद्वत्ता, विद्वान् की मान्यता प्राप्त, विरोधियों का सर्वथा विजयी, गृह भूमि-साम सफल, पारिवारिक विद्वेष-
 प्राप्त कर्ता, भाई-बहन के पुत्र-सम्बन्धों से भूट युक्त, मुख्य-लेखार्थ निरन्तर प्रयत्नवान् किन्तु मुख्य-लेख में भूट का
 अनुभव, परिश्रम द्वारा अनेक कर्मों में सफल ओ (भाग्यवान्, भाग्यविलासे में दक्ष तथा अन्यत्रो में रमणक्षता, न्यायो-
 चित्त पक्ष का पालक, सुन्दरी प्रभुला-श्यामा-परिश्रमाली का पति, गृहस्थ में आसक्त, नत्रेज्याति ओ (सूत्रेन्द्रिय रागी,
 उदार विचार, गल, इश्वरी ओ (धर्म में आस्थावान् तथा धर्म-पालक, मातृ-पुत्र का अल्प भागी, पितृ-भक्त हागा।

(206)- इस जन्म चक्र में जन्म ग्रहण करने वाला व्यक्ति दीर्घदीर्घ, कुशकाय, गौरवर्ण, स्वाभिमान, तेजस्वि भाव, प्रभावशाली व्यक्ति सम्पन्न, पितृ-भक्त और माताकी अनेक सेवा करता है। सुख-सहयोग प्राप्त, पितृ-सन्निविष्ट तथा पितृ-क्षेत्र में समुत्पन्न, विद्या और सन्तान-सुख संपूर्ण, भाग्योन्नत, क्रोध और कृपण-स्वभाव, धन-संग्रहार्थ निरन्तर प्रयत्नशील तथा धन-संग्रह संपूर्ण, गृह-भूमि-धन-धान्यादि से युक्त; (सुन्दरी-रामा, उदर-रोगिणी स्त्रीका पति तथा उससे सुख-सहयोग प्राप्त तथापि उसका वैचल्य और मरभेदी एवं अन्य स्त्री से प्रणय, ईर्ष्या और गौ-वसय वाक्यों का उच्चारण, गम्भीर और गुप्त-नोतिरोगि-ले विरोध का दमनकारी, भाई-बहन और पौत्र-पौत्रिक कलेश युक्त, राज्य और सामाजिक मान-परिष्ठा प्राप्त, रेश्वर से रहन-सहन में दक्ष, ईश्वर और धर्म में आस्थावान् तथा धर्म-पालक, उत्तम कार्य में कृपणकृति से धन का व्यय तथा स्ववाक्य-प्रधानों में प्रयोग, मध्यमायु प्राप्त, कर-बार प्रत्युत्पन्न व्यक्तियों को प्राप्त करने वाला, चिन्तनशील और विचारक, न्यायप्रिय, गौ-से रहने वाला, धीर-वीर और साहसी तथा विवेक सम्पन्न, उदर-विकार और गुप्तरोग पीड़ित होगा।

(207)- इस जन्म में उत्पन्न होने वाला जातक श्यामवर्ण, दीर्घवधु, आत्मबल से हीन, क्रूर और क्रोधी स्वभाव, धाम-चतुर और विवेक तथा साहस से स्वार्थ-हिंस्र में रत्ना, उन्नत-स्थलाट, कुशकाय, नेत्र-ज्योति में विकार रहत, भोगी विलासी, स्त्री-पुरुषों से नितान्त हीन, शूद्रा अथवा म्लेच्छ स्त्रीका स्वामी, किसीकी दाता बन जाने वाला, ईश्वर और धर्म में आन्तरीक भावना रखते हुए बलवान्, वाक्-पटु, भोग-विलासे में दक्ष और शूर्यका, उदर-विकार और गुप्तरोग पीड़ित, विरोधियों और शत्रुओं पर वाणी तथा गुप्त-रीति-नोति से प्रभावित, द्रव्य-संग्रहार्थ निरन्तर चेष्टित और सभी कार्य करने को उत्पन्न, भाई-बहन और पौत्र-पौत्रिक से युक्त, स्त्री से विरोध करने वाला, राज्य द्वारा लाभ प्राप्त, सामाजिक मान-परिष्ठा में हीन, मदाकषा अनायास द्रव्य प्राप्त से युक्त और भाग्योदय में विघ्न युक्त, कर-बार जल और अग्नि तथा हिंसा युक्त एवं हृदय रोग पीड़ित, गृह-भूमि लाभ युक्त, सन्तान-सुख की उगा ले चिन्तित, मध्यमायु प्राप्त और वृद्धावस्था में दुर्गति, हृदय में आन्तरीक संतप्त, मलिन और कुत्सित भावनाओं से युक्त, धर्म-पालक से हीन, परिरक्षक और उत्साह सम्पन्न होगा।

(२०६) - इस कुण्डली में जन्म लेने वाला बालक दीर्घवयुः, श्यामवर्ण, दुष्टदेही, स्वोभिमानी और ठी - चतुर तथा विवेकी, माता का पुत्र-भोगी, पितृ-शुभ में अल्प, पितृ-क्षेत्र निवासि, साहस और प्रभानशाली व्यक्ति, ठठ पूर्वक वाक्य स्थापना एवं स्वार्थ-सिद्धि में लत्पर, योग्य और साहस-शक्ति से माग्दशाली तथा दृढकोष के संग्रहार्थ स्वार्थ लत्पर, भोग विलास में दक्ष, स्त्री-शुभ में गिनतान्त हीन अधना श्री से पृथक् रहने वाला, विद्या और सन्तान से पूर्ण किन्तु कड़ा बन्ध में सन्तान और श्री से तिरस्कृत तथा दुखी, गृह-भूमि लाभ में सामान्य, क्लेश और दुर्लभ, पुत्रियोजन और कानिमीला, स्वकार्य क्षेत्र में सफल और भाग्योदय में विघ्न युक्त समुन्नत, परिहार भावना युक्त, भाई-वहिन और कुटुम्ब तथा किसी की चिन्ता न करने वाला, मध्यमायु जाय, नेत्रज्योति तथा अक्षरोग और अन्य उदर-विकार गृह, राज्य क्षेत्र में समुन्नत और राज्य बलनोपजीवी, धर्म-कर्म और ईश्वर में आस्थावान् किन्तु धर्मपालन से हीन, रहन-सहन में प्रवीण, अपने दृढ से अन्योक्ति-यों का निन्दित-साधन करने वाला, मरणकाल में कन्दो से सुख-सहयोग माने वाला होगा।

(२१०) - इस जन्म चक्र में उत्पत्ति ग्रहण करने वाला जातक उन्नत ललाट, श्यामवर्ण, दुष्टदेही, ईश्वर ओ धर्म के प्रति आस्थावान् किन्तु यथार्थ धर्मका यदा-कदा पालक, स्वोभिमानी, अर्थाधिक-चतुर और साहसी, साहसशालि से अनेक कार्य में सफल, भाग्योदय में विघ्न युक्त, सामान्य समुन्नत, योग्य और उत्साही, भोगेश्वर्य से रहन-सहन में दक्ष, स्त्री का वन्द्य और स्त्री-पुत्र से हीन तथा श्री से पृथक् रहने वाला, अन्य सम्बन्धित स्त्रियों को लाभ प्रदाता, दुर्लभ और सभी से तिरस्कृत, राज्य क्षेत्र और विद्या पक्ष में पूर्णता प्राप्त और राज्य से अधिक लाभ युक्त, आन्तरिक दुर्गि किन्तु किसी की चिन्ता न करने वाला, ठी और स्वयं को दृढ़ रखने में प्रवीण, उदर-विकार - संग्रहणी - गृहदारी से पोषित एवं नेत्रज्योति में नुरि का अनुभव, मध्यमायु जाय, सन्तान युक्त और सन्तान पुत्र से वजित, कन्या के कारण बुढ़ावा में यदा-कदा सुख जाय, गृह-भूमि लाभ में सामान्य, दृढ संग्रहणी भी उपेक्षा करने वाला और दृढकोष हीन, भाई-वहिन तथा कोट्टि-विरोध युक्त, आत्मबल से हीन, प्रायः मौन रहकर स्वकार्य का सम्पादन होगा।

(२११)- इस जन्म चक्र में उदय होने वाला मानव दीर्घायु, कुश-देही, उन्नत ललाटे, आदर्श स्वरूप, स्त्रीभ-
मानी, गोवर्ण, तेजस्वी, स्वभाव से ऊँच उग्र, अनुशासित, सत्यवादी और निर्भीक, साहस-सम्पन्न, परमेश्वरी,
भोगोपलब्धि-सम्पन्न और रहन-सहन में दक्ष, नेत्रज्योति और रक्त-विकार युक्त, विद्या और सन्तान से सुखी तथा पुत्री-
कोपिता, माता-पिता का सुख-सुख भोगी, विरोधियों का उचल दमनकारी, यदा कदा मृत्यु-तुल्य कष्टों को प्राप्त करता,
गहनमायु, सम्पन्न, पितृ-पुत्र का अथवा अन्यत्र विवाह, रहन-सहन में धन का अधिक व्यय, पत्नी का धन का लोभ
तथा यदा कदा इव्य संग में भूट का अनुभव, गृह-भूमि-धन-धान्यादि से सम्पन्न, भारिकोष्ठ और पौष्टिकी सु-
ख-सहयोग में ऊँच-युनता प्राप्त, ईश्वर और धर्म के प्रति आन्तरिक आस्थावान्, कुद-उदर और कृपण, सु-
न्दरी, श्यामा स्त्री का पति और उसे सुख-सन्तोष प्राप्त, भाग्योन्नत, अन्य स्त्री में भी स्मरणशील, भ्रमणशील, कल
भ्रमण काल में जोड़ा और भयंकर, न्यायोचित बात कहने में घट, सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में ऊँच-युन होगा।

(२१२)- इस जन्मों में जन्म ग्रहण करने वाला बालक स्त्रीभमानी, लाली और निर्भीक, सुन्दरी सुशील, ऊँच-
कोपिनी परिवर्तन स्त्री का पति और उसे सुख-सहयोग प्राप्त तथा उसके कारण भाग्योन्नत, गृह-भूमि-धन-
धान्य-भूत-वाहनादि सुख से पूर्ण, पतिभूमि और उद्यम, सामाजिक प्रतिष्ठा में युनता का अनुभव, साहस सम्पन्न
में अभाव रहता, दीर्घ देही और कुश-शरीर, नेत्रज्योति और रक्त-विकार तथा धामुकी से प्रभावित, इव्य लाभ व
जल होते हुए भी इव्य संग में लय, विद्या और सन्तान से सुखी, पुत्र और पुत्रियों तथा पौत्रादिकों से संयुक्त, मातृ-
पितृ-सुख सहयोग का भागी, अन्य स्त्रियों में भी स्मरण करता, गोवर्ण, भारिकोष्ठ और पौष्टिकी सुख-सहयोग युक्त,
रहन-सहन और भोग-विनास में दक्ष, परोपकार के साथ यथा हीन, गह वार में धन का अधिक व्यय, बलवान् और
तेजस्वी एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व से शत्रुओं का दमनकारी, सर्वथा भाग्योन्नत, भ्रमणशील पुत्र के कारण जानि प्राप्त,
समयानुषंग सम्पन्न, कष्टकार मृत्यु-तुल्य कष्ट और चोट का अपात सहने वाला होगा।

(२१३)- इस कूण्डली चक्र में उत्पन्न होने वाला जातक (सुन्दर, गोल चेहरा, शारीरिक से नन्द्यसिम्पन्न, सुग-
ठ (दुष्ट) देही ओ (सामान्यकद, निवृत्तशरीर प्रतिभा सम्पन्न, संगीत व्यापारि प्रेमी, चतुर ओ (विवेकी, स्वाभिमानी
रुचि उग्र, मान-दुष्ट से वर्जित तथा पिता का अल्प-सुख प्राप्त, भागी ओ (कामुक वास्ती में मग्न शील, सुन्दरी, गौरांगी,
कुक्षि-कारिणी पतिव्रता (नाका-पति ओ (उत्तम भी सुख-सहयोगी सन्तुष्ट, दोरभ्रम-द्वारा तथा अन्य प्रकार से वि-
प्लवण भागी ओ (द्वन्द्व-संग्रहे में पर्याप्त) गृह-भूमि-लामयुक्त, यदा-कदा भाग्येनानि में विप्लवयुक्त सफलता प्राप्त, इष्टी
ओ (विवाह-व्यापार में चतुर तथा दृढ़, अच्छा वक्ता, ईश्वर ओ (धर्म में आस्थावान् ओ (धर्मपालक, विरोध-पक्ष में
विजयी, कई बार मृत्यु-तुल्य कष्ट पाने वाला, विद्या ओ (सन्तान तथा सन्तान-सुख संपूर्ण, वरोधकारी ओ (दयालु
तथा यश-वीर, भार-बहिर्भूत तथा उनके सुख-सहयोगी भागी, किन्तु पारिवारिक-कलह, पातक-सी, पुत्राद्यात ओ (रक्त-
विकार तथा वायु-विकार से पीड़ित, मध्यमायु सम्पन्न, भ्रमण-काल में हानि प्राप्त कर्ता, गृहस्थ में आसक्त होगा।

(२१४)- इस जन्मोक्त में उत्पन्न होने वाला पुरुष उत्तम गोल चेहरा, विशाल देही, दुष्ट, प्रभावशाली व्यक्तित्व स-
म्पन्न, तेजस्वी, स्वाभिमानी ओ (स्वाभिमान-रक्षार्थ सर्वदा तत्पर, आदर्श सत्यवादी ओ (न्यायोपय, चतुर तथा सा-
हसी, इष्टी ओ (दृढ़ निश्चयी, उत्तम आदर्श बात कहने वाला, तेनभीक, ईश्वर ओ (धर्म के प्रति अत्यन्त निष्ठावान्
सर्व धर्म का पालक, माता-पिता-भार-बहिर्भूत सभी का भक्त, धन-वी अघेष्टा-चोरों को महत्त्व प्रदाता, विलक्षण विद्या-कु-
क्षि सम्पन्न, जिज्ञा ओ (सन्तान में कुटुम्ब तथा सन्तानकी ओ (से निमित्त, धर्म-गिर्णी ओ (संस्कृतिका अध्येता एवं उनका
परिपोषक, उन्नत शत्रु, राज्य ओ (सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में पूर्ण, राज्य में पराजित ओ (उत्तम जीवन-निर्वाहक,
भार-बहिर्भूत ओ (पारिवारिक सुख-सहयोग में कुटुम्ब अनुभव, दीर्घजीवन प्राप्त, भगवद्-स्मरण काले दुर्गती-प्रमाण
उपवा-देवालय में देह-त्यागी, गृह-भूमि-लामयुक्त, परन्तु दुष्ट-काल में कुटुम्ब का अनुभव, भाग्यशाली ओ (विद्वान्
माने जाना वाला, यदा-कदा रागी रहने वाला स्वस्थ, उदारमना, सुन्दरी पतिव्रता स्त्री का सुख-भागी होगा।

(११५)- इस जन्म-मृत्यु में उत्पन्न होने वाला व्यक्त दीर्घदेही, उन्नत ललाट, स्वाभिमानी ओ (चौत्रकी रक्षार्थ सर्वदा तत्पर, सत्यवादी, न्यायीपथ, गौचर्य, पुष्ट देही, निर्भीक ओ (साहस), राज्यक्षेत्र में उच्च पदासिन ओ (जननिर्वहक, पाम-चतुष्ट ओ (विवेकी, स्वभाव में मृदुल ओ (परोपकारी एवं दयालु, अजात शत्रु, विद्या-पक्ष में कुटुम्ब अवरोध के साथ पूर्णता प्राप्त, सन्तानकी ओ (से चिन्तित, गृह-भूमि-लाम-युक्त तथापि द्रव्य-संग्रह में न्यूनता का अनुभव, सर्वदा सत्यपथ का अनुगामी ओ ईश्वर-धर्म-मार्ग-पला-भारु-विहित-गो-ब्राह्मण सभी का भक्त ओ (आस्थावान्) (सुन्दरी, सुलक्षणा, पतिपरायणा स्त्री के पुत्र-सहयोग का भागी, उदार-चरा, पदोन्नति तथा कर्मक्षेत्र में अवरोध के साथ सफलता प्राप्त, राज्य ओ (सामाजिक मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, स्वस्थ ओ (निरोग दीर्घजीवन प्राप्त, दृढ एवं निश्चित आय से भाग्योन्नत, पारिवारिक-व्यवस्था में आन्तरिक दुर्बो, भोगैश्वर्य सम्पन्न, वाणीशक्ति से सभी पाप भावशाली, चतुर्व ओ (साहस से अनन्क कार्य में सफलता प्राप्त, गृहस्थ में आसक्त, उसमस्थान वकाल में देहत्यागी होय।

(११६)- इस अनुचक्र में उत्पन्न होने वाला मनुष्य विशाल लक्ष्म, उत्तम स्वाचर्य सम्पन्न गौचर्य, उदार-मत्ता, परोपकारी ओ (दयालु, स्वाभिमानी ओ (सत्य तथा आदर्शवादी का रक्षार्थ सर्वदा तत्पर। पारिवारिक धर्म ओ (परिकृति का रक्षार्थ, भारु-विहित, मार्ग-पला का पुत्र-सहयोग भागी, तथापि मात्र-सुख में न्यूनता का अनुभव, धर्म-मार्ग ओ (ईश्वर-पराय निष्ठा स पूर्ण, विलक्षण-प्रतिभा-बुद्धि-चतुर्व विवेक से सम्पन्न, विद्या-पक्ष में अवरोध के साथ पूर्णता प्राप्त, सन्तानकी ओ (से चिन्तित अथवा बालम्ब से सन्तान प्राप्त करता, राज्य ओ (सामाजिक मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, भारु-विहित ओ (पारिवारिक-पुत्र-सहयोग में भारु का अनुभव, दीर्घायु सम्पन्न, गृह-भूमि-लाम में सामान्य तथा द्रव्य-काष में न्यूनता प्राप्त, भोगैश्वर्ययुक्त उसम जीवन व्यतीत करता, पतिव्रता-सुन्दरी गौरांग-सुलक्षणा स्त्री का निमो ओ (उत्तम स्वाचर्य सम्पन्न एवं सन्तोष पाने वाला, गृहस्थ में अनुरक्त, सदा-कारी ओ (पारिवारिक उत्तमकाल वकाल में देहत्यागी, भाग्योदय में अनन्क कार्य-विघ्न प्राप्त करता तथापि वाणी-प्रभाव से सफलता पाने वाला होगा।

(२१६)- इस जन्मोत्पत्ति जन्म ग्रहण करनेवाला मनुष्य दीर्घ ओ (कुष्ठबधु, स्वर्गभ्रमानी, साहसो ओ (चतुर एवं पूर्ण
वर्षक सम्पन्न, दृष्टि ओ (स्वभाविक-स्थायनो में वाणी प्रभाव से प्रवीण, भोगैश्वर्य सम्पन्न, वरोपकारी ओ (दयालु,
निर्भय, धर्म ओ (इश्वर ईश्वर निष्ठा तथा धर्म-पालक, सत्यवादी ओ (न्यायोपय, विद्या-बुद्धि में पूर्ण तथा उत्तमगुण
युक्त सन्तान की पिता तथा वृद्धावस्था में उत्कृष्ट स्वास्थ्य सुख-सहयोग प्राप्तकर्ता एवं भाग्योन्नत, भाग्योन्नति में सर्व
था विपन्न पानेवाला, रहन-सहन में दक्ष ओ (धन का व्ययी, उत्तमकौशल धर्म में धन व्यय करनेवाला, (सुन्दरी गौतंगी स्त्री
का स्वामी ओ (उत्तम सुख-सहयोग प्राप्तकर्ता, गृहस्थासक्त, सामान्य विरोध पर गुप्तरीति निर्वाह करनेवाली प्रभाव से वि-
जय प्राप्त करने में सक्षम, मातृ-पितृ सुख का उत्तम भोगी ओ (पितृ-भक्त एवं पितृ क्षेत्र में निवासि, गृह-भूमि लाभ में
युनता का अनुभव, सामान्य दय-संग्रही, परिश्रम ओ (साहसे से भाग्योन्नत तथा आत्मसन्तुष्ट, मध्यमायु प्राप्त,
उत्तम स्थान का निवासि, भार-बर्हण ओ (पारिवारिक सुख-सहयोग में आन्तरिक भूट का अनुभव करनेवाला होगा।
(२१७)- इस कुण्डली चक्र में उत्पन्न होने वाला व्यक्ति स्वर्गभ्रमानी, गौव-सम्पन्न, गौवर्ण, दीर्घ वधु ओ (कुशकाय,
साहसो, पुरातत्वेवसा, विलक्षण प्रतिभा एवं प्रभावशाली व्यक्ति के लिये ओ (उत्तम, गुण-योजनो आ के निर्माण में
दक्ष, शोधी ओ (अनुशासन-सत्य तथा न्यायोपय, पिता का सुख-सहयोग भागी, मातृ-सुख ओ (गृह-भूमि लाभ में
युनता प्राप्त, पितृ-भक्त, कुशल ओ (स्वकार्य में दक्ष, राज्य क्षेत्र में उच्च पदसिद्धि ओ (मान-प्रतिष्ठा युक्त भाग्योन्नत,
भाग्योदय में मिथ्या सुख सफलता प्राप्त, परिश्रम ओ (उत्साही, ईश्वरीय सत्ता को स्वीकारते हुए कर्मयोग को महत्व
प्रदान करने वाला, उत्तम स्थान का निवासि ओ (उत्तम कौशल में धन का व्ययी, स्त्री की ओ (स आन्तरिक दुष्ट, उत्तम गुणी
पुत्रों की पिता तथा सन्तान की ओ (से विनिर्गत, बुद्धि-कोशल ओ (वाणी प्रभाव से विरोध का विजेता, भोगैश्वर्य ओ
रहन-सहन में दक्ष, भार-बर्हण का सुख-सहयोग समुत् किन्तु पारिवारिक क्लेश से आन्तरिक दुष्ट, किसी की अधिक सहाय-
न करने वाला, मध्यमायु प्राप्त, वृद्धावस्था में पुत्र-सुख सहयोग से समुत् तथा भाग्यशाली होगा।

प. सं. ३५५

कु. १०

(११८)- इस जन्मांग में जन्म लेने वाला जातक उसमें सुगोष्ठि देही, (दुष्ट ओं गौवर्ण, स्वामिमानी ओं गौवर्ण, मधुर तथा सत्यभाषी, भोगेश्वर्य ओं रहन-सहन में दक्ष तथा अधिकव्ययी, साहस तथा अनेक विषयों में पूर्ण, विद्वान् तथा मेधावी ओं विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न, विद्यामय में आन्तरिक चोट का अनुभव, स्ववाक्य स्थापना में प्रवीण, परिश्रम ओं उत्साही, मातृ सुख में अल्प, पितृ सुख में भी कुछ अल्प ओं पितृ-मरु तथा पितृ-क्षेत्र निवास, राजकीय ओं सामाजिक मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, सन्तान की ओं से विरहित, भारि-कष्टन ओं पौर्वागिक सुख सम्बन्धी में भी दुष्ट सुख सम्पन्न, दुव्य संग्रहार्थ निम्नर-चेष्टित तथा धन-संयमी, गृह-भूमि लाभ में युक्त, यदाकदा भाग्योदय में विघ्न युक्त सफल, सुन्दरी शिक्षिता किन्तु कलही-स्त्री का पति ओं उसके सुख सहयोग में कुछ सन्तुष्ट तथा गृहस्थ में अनुरक्त, पालु अन्य-स्त्रियों में भी यदा-कदा रमण कर दुव्य संग्रहक, ईश्वर ओं धर्म के प्रति आस्थावान् तथा धर्म-पालक, आदर्शवादितोके स्थापने में निधुणता प्राप्त, मध्यमायुष्य सम्पन्न, उत्तम-स्थान में देहत्याग करने वाला होगा।

(१२०)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न होने वाला मनुष्य मध्यम कद, गौवर्ण, स्वामिमानी, तेजस्वी, आदर्श सत्यवादी, यदाकदा आमदनी में अवरोध पाने वाला, विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न, कुछ उग्र स्वभाव ओं सदा ही शान्त तथा विवेकी, वाक्-चातुर्य में प्रवीण, दही ओं स्ववाक्य-स्थापना में पूर्ण पटु, परोपकारी ओं दयालु, मातृ सुख से वञ्चित तथा पितृ सुख का अल्प भोगी, पितृ मरु एवं पितृ-क्षेत्र निवास, परोपकार के अनन्त भी आन्तरिक चोट का अनुभव, विद्या ओं सन्तान सुख में पूर्ण, वाणी-विलास ओं सुदर्शीति से विरोधियों पर विजेता, रहन-सहन में दक्ष ओं अधिकव्ययी, राज्य एवं सामाजिक मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, सुन्दरी गौरांगी कलहकारिणी स्त्री का पति ओं उसके सुख सहयोग प्राप्त काल में भी असन्तुष्ट, धर्मिक ओं सदाचारी, ईश्वर ओं धर्म में आस्थावान् किन्तु धर्म-पालन में शिक्षित, भाग्योदय में कुछ अवरोध के साथ सम्पन्न, भारि-कष्टन ओं पौर्वागिक क्लेशों के कारण दुःखी, गृह-भूमि लाभ युक्त तथा दुव्य का सामान्य संग्रही, यदाकदा अविद्या के अतिरिक्त मध्यमायुष्य सम्पन्न, उत्तम-स्थान में अनाथात्न उत्तम कार्य के साथ देहत्याग करने वाला होगा।

(३२१)- इस जन्मलग्न में जन्म गृहण करने वाला जातक मध्यम कद, सामान्य गोधूम वर्ण, उन्नत कलाट, स्वाभि-
मान और क्रोधी तथा पाम-गह्वर और विवेकी, माला-पत्र का शर्ष कृष्ण विद्ययोग प्राप्त, विद्या और सन्तान क्षेत्र में
समुन्नत और सुखी, गुप्त योजनाओं के निर्माण में मनु, स्वार्थी भाँड़े में तला, पूर्ण ऐश्वर्य युक्त एवं भोग बिनासे में प्रवृत्त,
भार्यवर्धन युक्त तथा पौत्रोत्पत्ति के लिये सन्तान में अतीव क्लेश प्राप्त करती, पौरुष और उत्साही, मध्यमायुष्य
सम्पन्न, राज्य और कर्मक्षेत्र में समुन्नत तथा उच्चपदाधिन और ध्यान-जल्लाल सम्पन्न, पौरुष और साहस से भाग्योदय
प्राप्त करती, दृढ़ और दृढनिश्चयी एवं कार्य हेतु मधुर-वाक्य हेतु, अनुशासन प्रिय, नेत्रज्योति एवं शरीरिक सौन्दर्य में
त्रुटि युक्त, गृह-भूमि लाभ में संकुल, दुष्क-कोष में त्रुटि का अनुभव, दृढ़ और निश्चित आय सम्पन्न, सुन्दरी गौरांगी
शिक्षिता पतिव्रता स्त्री का स्वामी तथा बृहस्पति में आसक्त, पौत्रोत्पत्ति का पितृ, ईश्वर और धर्म में आस्थावान् तथा पौ-
त्रकार, वायु-विकार से उत्तम स्थान में देह-त्यागी, उत्तम कार्य में धन का व्यय और भास्व-भास्व अनुसरणशील होगा।

(३२२)- इस जन्म-लग्न में जन्मा हुआ बालक उत्तम गुण युक्त गोलार्ध, मध्यम कद, उन्नत कलाट, माला-पत्र और
ईश्वर का भक्त, पौत्रकार और शुभल, मधुरवाक्य युक्त, दृढ़ और स्वाभिमान तथा उत्तम गोलार्ध वस्त्रों को मधुरता
में करने वाला, भार्यवर्धन और पौत्रोत्पत्ति से विद्वेषणवाला, दुष्क-संग्रह में दैन, मातृ-सुख में कुछ त्रुटि का अनुभव, सु-
न्दरी सुशिक्षिता सुशोभा पतिप्रायसा स्त्री का पति और उत्तम लक्ष्य विद्ययोग प्राप्त, सन्तान की और लक्ष्मी-पुन्नित,
सम-पुजा का श्रेष्ठकर्ता, पौरुष और साहस-सम्पन्न आत्मवली, दृढ़ और निश्चित आय युक्त तथा उत्तम कार्य और ऐश्व-
र्य में रहने-सहने में धन का व्यय, नेत्रज्योति में विकार युक्त, अनेक विद्याओं में प्रवृत्त और सुखी, संगीत काव्य-ज्योतिष
को प्रेम, रक्त रंग वायु-विकार पानेवाला, वैरोध-पक्ष पा वाक्प-वाक्प तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व से विजयी, मध्यमायु-
प्राप्त करती, भाग्योदय में विघ्न युक्त सफलता गृहण करने वाला, उत्तम स्थान में देह-त्यागी, गृह-भूमि लाभ में त्रुटि का भी
अनुभव, राज्य और सामाजिक मान-जल्लाल प्राप्त, सुयश युक्त मरण प्राप्त का बेकुण्ठ जानने वाला होगा।

(२२३)- इस जन्म चक्र में जन्मा हुआ व्योम दीर्घवृष, कृश-शरीर, (सुन्दर गोलवर्ण, शरीरिक लोन्धे में कुछ नु-
दिगुल, माला-पराका शर्ष सुख-सहयोग प्राप्त, आपसि-बाल में धैर्य के साथ कार्य करने में गम्भीर। साहसो ओ (च-
तुर, विवेकी ओ (मधुर भाषी, चालुय ओ (उदारोति से विरोध-पक्ष दा सबल, भाई-बहिन ओ (पारिवारिक वलेश
का अत्यन्त भागी, गृह-भूमि लाभ युक्त, आत्यबली, धर्म-कर्म ओ (इश्वर के प्रति निष्ठावान् तथा धर्मका पात्रक,
२४) ओ (स्वामिभानी तथा स्ववाक्य-स्थायना में प्रवीण, परोपकारी ओ (दयालु, प्रत्येक कार्य को देखता से करने वाला,
विद्या-कुटि में शर्ष तथा उससे प्राप्त करता, भाग्यादये संकुट अवरोध युक्त, राज्य ओ (सामाजिक क्षेत्रों में समु-
न्नत एवं मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, प्रिय वाक्यों के उच्चारण में प्रवीण, रहन-सहन ओ (रुचिर युक्त, पालिमुली शिक्षिता
जो से पूर्ण सुख सहयोग प्राप्त किन्तु सन्तान की ओ (सिन्धिलत, उत्तम गुणी सन्तान को पता, मित्रिचल-लाभ पाने वाला,
ओष्ठ-उत्तमकों में धन का व्यय, भोग-विलास में दस ओ (गृहस्थासक्त। यदाकदा मृत्यु-तुल्य कष्ट पाने वाला होगा।

(२२४)- इस जन्म में जन्म लेने वाला पुरुष दीर्घ ओ (कृशकाय, पारसीक लोन्धे में विकार युक्त गोलवर्ण, स्वा-
मिभानी ओ (सहज ही क्रोधी तथा अशान्त-चित्त, कुछ विक्षिप्त जैसा। दृढ-काय संग्रहार्थ निरन्तर प्रयत्न-
शील तथा धन-संग्रह से नितान्त हीन, विद्या-कुटि से संकुट होने के कारण राज्य-क्षेत्र में समुन्नत तथा राज्य-
वर्तनापजीवी। धैर्यक गृह-भूमि लाभ युक्त, गृहस्थ ओ (जो प्रसंग में धन का व्यय करने वाला, स्त्री ओ (गार्हस्थ-पु-
त्र से वार्जित, मध्यमायु प्राप्त, विरोध पक्ष को युक्त योजनाओं के बल दा देखने में प्रवीण, किसी की पक्कादन करने
वाला, बलवृद्ध, साहस से कार्य करने में तत्पर, स्वार्थी ओ (कामुक, सन्तान सुख से नितान्त हीन ओ (सिन्धिलत
तथा वृद्धावस्था में महत् सुख प्राप्त करेगा। अभाव-गुल जीनन युक्त, अनेक स्त्रियों में रमण करता, धर्म-कर्म ओ (रुचरीयानि-
ष्ठा से हीन, भाई-बहिन युक्त किन्तु उनका ओ (पारिवारिकों का देखी, पिता का अन्ध सुख प्राप्त करता अथवा मितृ-द्वेषी,
मातृ-सुख सहयोग से कुछ सुख प्राप्त, अनेक स्थानों पर भ्रमणशील, मालिन ओ (कुचैल होगा।

(२२५)- इस जन्म में उत्पन्न होने वाला मानव मध्यमवर्ग, उन्नत-ललाट, (दृष्ट ओर गीठल देदी, स्वाभिमानी ओर दही, रेश्म से रहने-सहने में दह, धामस्वर्ग ओर स्वार्थशक्ति हेतु मधुर वाक्याच्चाण में प्रवेश, मलिन ओर अशान्त हृदय; मलिन-होधिनी शुद्धावत् श्यामा स्त्री का पति ओर उससे विद्वेष का अन्योद्देश्य में रमणकर्ता, अधिक्व्ययो, राज्यक्षेत्र में कुशल तथा राज्यवेलनोपजीवी, विरोध के समक्ष दीन-हीन बन का मधुरता से कार्य करने में कुशल, मातृ-सुख से दीन, पितृ-सुख से दया से विद्या प्राप्त का सुख किन्तु पितृस्वकी ओर निन्दक, भार-बहिर्गता सुख-सहयोग देने वाला, साहस-सम्पन्न, चोर-जेली-पुनर्नि, पैतृक गृहादि के लाभ से मुक्त, पारिवारिक कलह से अशान्त, रेश्म ओर भोगविलास में दह, यदाकदा भाग्यदयी ओर मृत्यु-तुल्य कष्टों का प्राप्तकर्ता, दृष्ट कोष-सिंह से आन्तरिक दुर्बो, परिश्रम ओर बुद्धि में प्रबलता प्राप्त, रक्षोपक्ष के विकार से युक्त, नेत्रज्योति में विकार-गुस्त, मध्यमायु प्राप्त, सन्तान सुख से दीन अथवा उसकी ओर अत्यधिक निवृत्ति तथा वृद्धावस्था में चोर-संकट-गुस्त-दशा।

(२२६)- इस कुण्डली में उत्पन्न हुआ मानव दीर्घ ओर कृशदेदी, श्यामवर्ण, उन्नत-ललाट, ठी ओर कोधी, विद्वेष भावनाओं से पूर्ण ओर आन्तरिक दुर्बो, प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, विलक्षण मेधायुक्त तथा गुप्त योजनाओं का निष्कर्ष, धर्म-धर्म ओर ईश्वर को प्रभु तथा यशस्व धर्मपालन से दीन, (वार्ध-पिता हेतु धर्म-पालक, सामान्य धर्म ओर दृष्टकोष से दी, पैतृक गृहादि लाभ, कोधी, श्यामा स्त्री का पति, भार-बहिर्गता सुख-सहयोग प्राप्त, माता-पिता का दुर्बो ओर निन्दक, अन्योद्देश्य में रमणकर्ता, नेत्रज्योति - मलिन विकार युक्त, मुनेन्द्रिय ओर उदर रोग से पीड़ित, सुरा-सुन्दरी स्त्री अथवा मध्य गृहणकर्ता, रेश्म ओर प्रभाव हेतु धर्म का अधिक्व्ययो, राज्यवेलनोपजीवी ओर राज्यक्षेत्र में समुन्नत, यदाकदा भाग्य-लाभ प्राप्तकर्ता, विरोध पक्ष की प्रबलता से क ईबार असफलता देने वाला, सन्तान मुक्त तथा पि सन्तान सुख में युनता का अनुभव, उदर विकार के कारण मृत्यु-तुल्य संकट-गुस्त, अधिक परिश्रम ओर साहस से यदाकदा भाग्यदय में सफलता प्राप्त, मध्यमायु सम्पन्न, वृद्धावस्था में निरस्कृत ओर अनेक संकटों से गुस्त, यश दीन होगा।

(२२७) - इस कुण्डली में जन्म लेने वाला जातक साधारण क्रम, गौवर्ण, धाम-चतुर ओर विवकी, गम्भी तथा शान्त, उन्नत कलाट, तेजस्वी, सिलक्षण प्रतिभा एवं उभावशाली वाणी ओर व्यक्ति का धनी, स्वाभिमानी ओर कुछ उग्र, माताका अल्प सुख भागी ओर पिता-सुख सहयोग का भोगी तथा पितृ-भक्त, एवं पितृ-सेन गिनासो, राज्यक्षेत्र में समुन्नत ओर राज्यवर्तनोपजीवी, ग्रह भूमि लाभ में सामान्य, साहसी, दायकार ओर दयालु, विद्या ओर सन्तान से पूर्ण किन्तु सन्तान की ओर से निश्चित, भाई बहिन ओर कोटार के पुत्र-सम्बन्धों में भूटियुक्त, विरोधियों का वाक्-कारुण्य तथा गुप्त शक्ति नीति से सफल, वृद्धावस्था में सन्तान का अच्छा लुब्ध प्राप्त कर्ता, नेत्रज्योति ओर उदरविका भुक्त, श्यामा स्त्री का प्रीति किन्तु उसका मत्तभेदी ओर अन्य-रिश्तों में स्मरण शील, भोगे श्वर्ष तथा रहन सहने में दक्ष एवं धन का अधिक व्यय, धन-संग्रह में युनता का अनुभव तथा भाग्यशाली ओर सामाजिक मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, मध्यमायुष्य प्राप्ता, ईश्वर ओर धर्म में आस्थावान् तथा धर्म का पालक ओर संगीत काव्य ज्योतिषादि प्रेमो डोग।

(२२८) - इस कुण्डली-चक्र में जन्म ग्रहण करने वाला बालक दीर्घायु ओर कृश, गौवर्ण, उन्नत कलाट, अत्यधिक साहसी ओर छोटी, तेजस्वी, स्वाभिमानी ओर उभावशाली व्यक्ति सम्पन्न, वाणी में ओजस्वी, दृढ़ एवं दृढ़ निश्चय युक्त, स्ववाक्य स्थापना में दृढ़, पितृ-भक्त ओर पिता-सुख सहयोग के कारण विद्या-कृषि में समुन्नत, दूरदर्शी, गुह्य-गोपनीयों के निर्माण में प्रवीण, पितृ-क्षेत्र निवासी, राज्यक्षेत्र में समुन्नत तथा राज्यवर्तनोपजीवी, सन्तान का वृद्धावस्था में लुब्ध प्राप्त तथा सन्तान की ओर से निश्चित, भोग-विलासि ओर रहन सहने में दक्ष तथा धन का अधिक व्यय, ग्रह भूमि लाभ में सामान्य तथा कुछ कठोर प्रकृति, ईश्वर ओर धर्म में आस्तिक ओर धर्म पालक, नेत्रज्योति एवं उदरविका भुक्त ओर गदा-कदा मृत्यु-रूप कष्टों का प्राप्त कर्ता, स्व-स्व में अल्प तथा अन्य-रिश्तों में स्मरण कर्ता, अकुशासन-रूप, विरोध पक्ष का प्रबल शमककारी, धन संग्रह निरन्तर जोषित तथा सामान्य धन-संग्रही, भाई बहिन ओर कोटार के पुत्र-सम्बन्धों में भूटि का अनुभव, मध्यमायुष्य से अधिक जीवन प्राप्ता, ईश्वर ओर निश्चित आय युक्त, मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न डोग।

(२२९)- इस जन्मों में जन्म लेने वाला व्यक्ति उत्तम गौवर्ण, दीर्घबुद्धि, कुशाकाय, स्वाभिमान और तेजस्वी, ओजस्वी वाणी से सम्पन्न, उक्तललाट, कुछ केदार और हठी तथा हठ-निश्चय युक्त, अत्यधिक सहस्र और उत्साही, पितृ-सुख सहयोग का भागी तथा उस सम्पन्न और पिता का भक्त, मातृ-सुख का अत्यन्त भागी, रहन-सहन में दक्ष और ऐश्वर्य युक्त, धर्म तथा ईश्वर में निष्ठा और धर्मपालक, विद्या-बुद्धि में पूर्ण, गृह-भूमि लाभ से युक्त और धन सम्पन्न, मनसाय में कभी उच्च हानि और कभी उच्च लाभ का प्राप्त करने, वृद्धावस्था में सन्तान-प्राप्त, स्त्री-सुख में स्वल्प और शताधिक स्त्रियों का भागी, मध्यमायुष्य सम्पन्न, शत्रुओं या वाक्-चातुर्य और गुप्त नीति-रीति से सर्वथा विजयो, मातृ-परिष्ठा में सामान्य, अपने स्वभाव से आन्तरिक दुर्गो, भोग-विलास में अधिक धन-व्यय करने वाला, भाई-बहिन के सुख सम्बन्धों का प्राप्त करने किन्तु परिवार-जनों का क्लेश सहन करने वाला, पितृ-क्षेत्र का अधिकार निवास और कार्यार्थ देश-देशान्तरों में भ्रमणशील तथा परिष्ठम और उत्साह से भाग्यशाली, यदा-कदा मृत्यु-सुख कष्टों का प्राप्त करने होगा।

(२३०)- इस जन्मों में जन्म लेने वाले पुरुष साधारण कद, पुष्ट देही, गौवर्ण, उक्तललाट, धर्म-धर्मियों और विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न, तेजस्वी और प्रभावशाली व्यक्तित्व एवं स्वाभिमान युक्त, बुद्धि और वाक्-चातुर्य से पूर्ण कार्य में सफल, केवल एक-दो सन्तानों का पिता और उनसे वृद्धावस्था में सुख, निरन्तर पोरस्यो, स्त्री-सुख से वीरित, धार्मिक और ऐश्वर्य तथा लोक-पालक का मानने वाला, द्रोपकारी और दयालु, विद्या-सुख में कुछ अवरोध युक्त सफल, मातृ-पिता का पूर्ण सुख भागी और उनका भक्त, कर्मयोग को महत्व प्रदान करने वाला, गृह-भूमि लाभ युक्त, राज्य क्षेत्र से हठ और निश्चय आय सम्पन्न, तथा भाग्योन्मत्त, राज्य एवं सामाजिक क्षेत्रों में मान-परिष्ठा प्राप्त, साहस और धैर्य से कार्य करने में कुशल, आसक्ति या और-काल में धैर्य सम्पन्न, विरोध की चिन्ता न करने वाला, भाई-बहिन और पारिवारिक सुख सम्बन्धों में न्यूनता का अनुभव, उत्तम कौशलों से उत्तम स्थान में रहने और वायु-विकार से दह त्यागी और तत्काल में कष्ट प्राप्त का, अवागमन-रहित, मध्यमायुष्य प्राप्त होगा।

(१३१)- इस जन्म लगने में उत्पन्न रहने वाला, मनुष्य स्वाभिमानी ओ (वाक्-कोशल से पूर्ण, साहस ओ (स्वोभ-
मान, तेजस्वी ओ (प्रतिभाशाली, प्रभावपूर्ण व्यक्तित्व-सम्पन्न, सामान्य उग्र तथा सहज ही शान्त-धीर ओ (गम्भीर,
विलक्षण मेधावी, ईश्वर ओ (धर्म-कर्म में पूर्ण आस्थावान् तथा धर्म-पालक, दयाकारी ओ (दयालु, संगीत-काव्य-ज्योतिष
एवं धर्म-ग्रन्थों का अध्ययन, विद्या ओ (सन्तान-सुख से पूर्ण, मध्यमामुध्य सम्पन्न, गोवर्ण, कुष्ठ-दृष्टी, साधारण कद,
उन्नत ललाट, कथोक्त धनी ओ (भाग्यशाली तथा कर्म-योगको महत्व प्रदान करने वाला, सभी धर्मों में उदार-शील-
नृत्ति के कारण मान-प्राप्त करता प्राप्त करता, भाई-बहिन ओ (माला-पिला का पूर्ण सुख-सहयोग प्राप्त, किन्तु पौरुष
से द्रव्य प्राप्त करता, (जयः अजातशत्रु, तथापि बुद्धि ओ (वाणी-चातुर्य से सभी को वश करने में सक्षम, स्त्री-पुत्र-सौख्य,
धन-धान्य-गृह-भूमि-भूतल-वाहन-सुख से पूर्ण, विद्या ओ (सन्तान-सखे संकुक्ष-भूट-युक्त सफलता प्राप्त, मध्यमा-
यु से अधिक जीवन प्राप्त, उत्तम कीर्ति के करने से उत्तम (धान्य में देहत्याग कर वे कुष्ठ-प्राप्त का अधिकारी होगा।

(१३२)- इस जन्म-वृत्त में उत्पन्न रहने वाला मानव गोवर्ण, दीर्घ ओ (कृश-शरीर, उन्नत-ललाट, शारीरिक-सौन्दर्य
में कुष्ठ-भूट-युक्त, साहस ओ (बोधी, अनुशासन-पुत्र, अपने विभाव के कारण आन्तरिक दुःखों, स्वाभिमान तथा दया-
काय अपनी स्वार्थ-सिद्धि हेतु विनय-सम्पन्न, गुहा ओ (गम्भीर-योजनाओं के निमोष में प्रवीण, विद्या ओ (सन्तान-सखे
में समुन्नत, साहस-वीर्यम ओ (बुद्धि-कोशल से धन-संग्रहार्थ निरन्तर प्रयत्नवान् ओ (गृह-भूमि एवं द्रव्य-संग्रह-युक्त
सभी से निरन्तर विरोध का प्राप्त करता, कठोर ओ (दृष्टी एवं दृढ़-निश्चयो, सन्तान-ही ओ (सं-चिन्तित, पितृ-द्वेषी,
माला का पूर्ण सुख-सहयोग भोगी तथापि मान-सेवा से हीन, ईश्वर ओ (धर्म को आन्तरिक मान्यता देकर ऊपर से ऊपर
ओ (धूर्त तथा धर्म-पालन से हीन, स्त्री-सुख में युनता का अनुभवी, आत्मिक दुर्बलता का प्राप्त करता, भोगेच्छा ओ (रहने-
सहन में दक्ष, धन का अधिक व्ययो, अन्य रमणियों का प्रेम ओ (सि-सि से प्रकट होना माने वाला, भाई-बहिन युक्त,
परिवार तथा सभी से जयः द्रव्य रखने वाला, मध्यमामु से अधिक जीवन प्राप्त, वृद्धावस्था में निरस्त ओ (दुःखी होगा।

(३३३)- इस जन्मों में जन्मा हुआ बालक, गोवर्ण, पुष्ट देही, साधारण कद, उन्नत ललाट, साहसी ओ (चतुर एवं विवेक-सम्पन्न, गारीक सौन्दर्य युक्त, गुप्त योजनाओं के निर्माण में प्रवीण ओ (विकल्प में धर्म, कृपा से सम्पन्न ओ (शान्त, किन्तु आन्तरिक धूर्त, स्वाभिमान में पूर्ण उद्यत, तथापि कभी-कभी परोपकारी, भोगे श्वर्य युक्त रहन-सहन में दक्ष, धर्म ओ (इश्वर-आस्था में पूर्ण ओ (धर्मपालक, वाक्-चातुर्य से सम्पन्न, विद्या ओ (सन्तानपक्ष में समुन्नत, पीर-श्री ओ (साहसी तथा बुद्धि-कोशल द्वारा धन-संचय से पूर्ण ओ (भाग्योन्नत, गृह-भूमि लाभ सम्पन्न, सुन्दरी, पतिव्रता, स्त्री का सुख सहयोग प्राप्त, एक पत्नीवली, भोग-विलास में दक्ष, मध्यमामुख्य सम्पन्न, माली-पति के सुख-सहयोग का भोगी, भाई-भ्रातृ के सुख-सम्बन्धों से युक्त, पालु पी-वा-का विरोध पाने वाला, मान-पतिष्ठा में न्यूनता का अनुभव, अच्छी आमदनी से युक्त, रक्त ओ (वायु-विकार तथा नेत्र-ज्याति में त्रुटि युक्त, कुछ उदा-भाव-कारण रहते हुए भी कृपणता युक्त, बुद्धि-कोशल ओ (वाक्-चातुर्य से विरोधपक्ष का विजय पाने वाला होगा।

(३३४)- इस जन्म कुण्डली में जन्म ग्रहण करने वाला बालक पुष्ट देही, गोवर्ण, स्वाभिमान ओ (अनुशासन-प्रेम, उन्नत ललाट, वाक्-कुण्ड, आत्मबल से हीन, विद्या-बुद्धि ओ (विवेक सम्पन्न, सन्तान की ओ (सिध्दिन्त, स्वार्थ-सिद्धि में सर्वथा उद्यत, कृपणता युक्त उदार, भोगे श्वर्य ओ (रहन-सहन में दक्ष, माली-पति का पूर्ण सुख सहयोग भोगी, मान-पतिष्ठा में न्यूनता का अनुभव, सुन्दरी, गौरांगना, पतिव्रता स्त्री का पति, किन्तु उसका वचक ओ (अन्य स्त्रियों में रमण करता, वायु-विकार ओ (नेत्र-विकार रहते, धन-संग्रहार्थ निराला चरित ओ (धनी, गृह-भूमि-द्वय दोष युक्त समुन्नत तथापि भाग्योदय में यदा-कदा विघ्न पाने वाला, पी-वा-से द्वेष दाका भाई-भ्रातृ के सुख-सम्बन्धों ओ (सहयोग का भोगी, प्रायः नो-रोग ओ (स्वस्थ, याम्ना-काल में अविद्य भय रहते, इश्वर ओ (धर्म के प्रति आस्था-वान्, किन्तु स्वार्थ-सिद्धि हेतु धर्म-पालक, गुप्त-नो-ति-शील से कार्य करने में सक्षम तथा उसी के कारण प्रसिद्धि प्राप्त, निमा-क्षेत्र में समुन्नत होकर सम्भवतः इंजीनियर बनने वाला ओ (मध्यमायु तथा विरोधियों का विजय होगा।

(२३५)- इस जन्म कुण्डली में जन्मा हुआ व्यक्ति अधोधिक साहस और क्रोध एवं लहज ही उठा, गोधूमवर्ण, उन्नतकक्षार, मध्यमकद, प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, गृह-भूमि लाभ में सामान्य, सुन्दरी, पुरुषोन्मा, परिवर्तमान का पति और उससे सुख-सहयोग प्राप्त, भाई-बहिन और पारिवारिक तथा जायः सभी जनों से द्वेषयुक्त, परिश्रमहीन और आलसिता तथा बलौद्धर, कठोर-प्रकृति, सर्वथा आन्तरिक-चिन्तित, सन्तान को पोषित करने वाला, माता-पितृ का पूर्ण सुख-सहयोग प्राप्त तथा पि उनसे भी वैमनाययुक्त दुष्टक जीवन निर्वोद करने वाला, विद्या और सन्तान में न्यूनता का अनुभव, मध्यमायुषे स्वर्ग का जीवन प्राप्त, यदा-कदा भुक्तु-तुल्य कष्टों को प्राप्त करता, गृहस्थ संचालनार्थ धन के अभाव से आन्तरिक-दुःखी तथा पि ऊपर से प्रभावशाली, मान-प्रतिष्ठा से वीरित, राज्य-वेतनोपजीवी, सत्त परेशम का विचार, ईश्वर और धर्म का स्वार्थपालन हेतु प्रेमी, व्यर्थ ही गुरुको महत्व प्रदान करने वाला, कृपणवृत्ति, विदेशी रमणी में रमण करता, क्रोध के कारण अपने सभी गुरुओं से वीरित, द्विभाषायोग प्राप्त करता होगा।

(२३६)- इस जन्म चक्र में जन्म लेने वाला पुरुष सुगठित पुष्ट-दृष्टी, गोवर्ण, साधारणकद, शोभिमानी और गोव-सम्पन्न, दृष्टि और दृढनिश्चयी, भोगैश्वर्य युक्त रूढ़-सहने में पटु, साहस और चतुर, स्ववाक्य-विधानों में प्रवीण, भाई-बन्धु और पारिवारिक क्लेश प्राप्त करता, माता-पितृ सुख-सहयोग का भोगी, गृह-भूमि लाभ में सामान्य, धन-संग्रहार्थ निरन्तर चेष्टित और अविरोधयुक्त सामान्यधनी, विद्या और सन्तान-सुख में अटि का अनुभव, मध्यमायुष्य प्राप्त, ईश्वर और धर्म के प्रति आस्थावान् और धर्मपालक, संगीतकाव्य और धर्म संस्कृति का उपासक, राज्य-वेतनोपजीवी तथा वाक्-मातृ और साहससेपदानत तथा पदावनत, सामान्यतः गृहस्थ-प्राय सन्तानक, द्विभाषा योग प्राप्त का दूसरी स्त्री से सुखी तथा पि प्रथम और दूसरी स्त्री से सन्तानोपरान्त भी सन्तान की ओर चिन्तित, और विरस्कृत, मान-प्रतिष्ठा में न्यूनता का अनुभव, गुरुको सर्वाधिक महत्व प्रदान करने वाला, विरोध से युक्त-भाषि राज्य-क्षेत्र में प्रभावशाली और साधारण मान प्राप्त, मध्यमायु प्राप्त, दक्षिणपार्श्व में काम-विकार का चोट गृहस्थ

(२३६)- इस जन्मांग में जन्म लेने वाला बालक दीर्घ-विपु, कुशकाय, गौणवर्ण, स्वोभमानी और उग्र, शारीरिक-
लो-दर्भ में कुछ भूटियुक्त, माता-पिता का पूर्ण सुखसहयोग भोगी और पितृभक्त, बिलक्षण-मेधा-सम्पन्न और योज-
नार्थी कर्मिन्माला तथा उनमें सफल, मेधावी और अनुशासन-प्रेम, अत्यन्त साहसी, गृह-भूमि-लाभ में सामान्य, स-
मयादी और सत्यमार्ग का अनुसरण करनेवाला, ईश्वर और धर्म में आस्थावान्, जो सुखसि वीजित, तथापि सन्तान-पुत्र
से पूर्ण और सन्तान की ओर से चिन्तित, विद्यापक्ष में अवरोध के साथ समुक्त, राज्यवर्तनापजीवी और राज्य तथा सा-
माजिक मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, धन-संग्रहार्थ निरन्तर चिन्तित, तथापि धन-संग्रह में कमीका अनुभव, भाई-बहन और
पारिवारिक सुख-सम्बन्ध और सहयोग में भूटियुक्त, बार-बार भाग्योन्नाति में विघ्न प्राप्त करता, किन्तु वीरश्रम और
साहस-शक्ति से समुक्त, यदाकदा विरोध युक्त तथा मृत्यु-तुल्य कष्टों का प्रापक, संगति-वाच्य-ज्योतिषादि प्रमो एवं
गुणीजनों का आदा करनेवाला, अत्यायुषाया, ऐश्वर्य और रहन-सहन में दृढ़ तथा धन का अधिक व्यय होगा।

(२३७)- इस जन्म कुण्डली में जन्मा हुआ जातक साहसी, मध्यमकद, मध्यमवर्ण, सुगठित और पुष्टदेही,
चंचल-प्रकृति, निन्दा और सन्तान से पूर्ण सुखी, उत्तमगुणी सन्तान कीपिता, परोपकारी और दयालु, साहसी कि-
न्तु अर्पित और अरिष्ट-काल में अधीर, कभी कभी आत्म-कलिये चिन्तित, सुन्दरी स्त्री का पति किन्तु कलहकारी-
णी और रोगिणी रहने से प्रायः स्त्री-सुख से वीजित, गृहस्थ में अनुरक्त, अनेक प्रकार के कर्म और व्यवसाय में संलग्न तथा
राज्य एवं सामाजिक-क्षेत्रों में मान-प्रतिष्ठा युक्त, माता-पिता का सुख भोगी, किन्तु मातृ-सुख में अन्य, भाई-बहन
और पारिवारिक सुख-सहयोग प्राप्त करता, वीरश्रम और साहस से भाग्योदयो तथा धन-संग्रही, गृह-भूमि-धन-
धान्य-भृत्यवाहनादि का उत्तम सुख प्राप्त करता, ईश्वर और धर्म में पूर्ण आस्थावान् तथा धर्म-बालक, उत्तमका-
र्य में विवेक से धन का व्यय, निरान् और सद्गुरु, अनेक विद्यार्थी में प्रवीण, गुणगादी और गुणीजनों का सम्मान
करता, नेत्र-ज्योति तथा रक्त और वायु विकार एवं गुप्ता-रोग से पीड़ित, मध्यमायु में अधिकजीवन, विरोधों-प्रविष्टी हो-

(२२६)- इस जन्म लगने में जन्म गृहण कतेवाला मानव दीर्घवृद्ध, कुशकाय, इयामनर्ण, साहसी और उग्र तथा गम्भीर शुद्ध-योजनाओं के निर्माण में दक्ष, उलीकार भावनायुक्त, पितृदेवी और मातृभक्त, स्त्री सुविसे वीर्य, बलवृद्ध और भोगविलास में प्रीण और उसमें अधिक व्यय करता हुआ अन्य स्त्री में रमण शील, विद्या और सन्तान सुविसे पूर्ण, ईश्वर और धर्म में आस्था रखते हुए भी सामान्य धर्मपालक और सर्वथा स्वार्थसिद्धि में तत्पर, बेलसमेधा सम्पन्न और उभावशाली व्यक्तित्व से पूर्ण, भारी बोहने और परिवार के सुख सम्बन्धयुक्त, सुरा-सुन्दरी का प्रेमी, यदाकदा यशस्विकार कतेवाला, वाक्-चातुर्य और साहसे विरोधियों का विजेता, नेत्रज्योतिर तथा वाक्पलेष्मी वक्ता, गस्त, आन्तरिक असन्तुष्ट और दुर्गो, वृद्धावस्था में पुत्रों से विरक्त, अनेक प्रकार से परिवार का धन संग्रह में पट और धनी, भाग्योदय प्राप्त करता, यदाकदा गहरी इग्न कतेवाला, कई बार मृत्युवृत्त के छाँ का भोगी, सभी का ओर से प्रिय निश्चिन्त, गृह-अभि और ऐश्वर्य का भोगी, मलिन एवं कुचैल चिस वाला होगा।

(२४०)- इस कुण्डली में उत्पन्न हुआ मनुष्य गोवर्ण, सुन्दर, शारीरिक सौन्दर्य में कुछ भूटियुक्त, मध्यावधि और साहसी, धाम-भट्ट और विवेकी किन्तु विद्या और सन्तान-सुविसे हीन, विद्यादिला-स्त्री से त्यक्त और अन्य हीन वर्ण स्त्री को काम रखने वाला, मलिन और कुचैल, सर्वथा स्वार्थतत्पा, गृह-भूमि लाभ से युक्त, सामान्य धन-लभ्य, ईश्वर और धर्म को जानते हुए भी धर्मपालन में सामान्य, भोगविलास और ऐश्वर्ययुक्त रहन-सहन में दक्ष तथा इनमें धन का अधिक व्यय, सुरा-सुन्दरी का अनुगमन, राज्य और सामाजिक प्रतिष्ठा में न्यून, राज्य क्षेत्र में बन्धन तथा कई बार मृत्युवृत्त के छाँ का भोगी, नेत्रज्योतिर तथा रुक्वायु वक्ता से गस्त, मूर्खान्दिय में कष्ट प्राप्त करता, वाक्-चातुर्य और गुप्तनोति-रीति से विरोध का विजेता, अनेक स्थानों पर भ्रमण शील और अन्य स्त्रियों का भोगी, माता का अत्यन्त सुवि प्रायः किन्तु पितृभक्त और प्रसन्न, मलिन और कुटिल विचारा से युक्त, भारी बोहने और परिवार का विरोधी, बुद्धि कोशल को साहसे भाग्योन्त, दीर्घजीवन के अन्तिम काल में बहुत दुर्गो होगा।

(२४१)- इस कुण्डली-मर्के में उत्पत्ति ग्रहण करने वाला दुःख सुगठित पुष्ट देही, दीर्घबिधु, श्यामवर्ण, शारीरिक सौन्दर्य युक्त, स्वभाव से क्रोधी और उग्र, साहसोत्साह विवेकी, पिता से द्वेष करने वाला, (उत्त-गम्भी) योजनाओं के निर्माण में दक्ष, आत्मबल से आलस और तथा अनुशासनीय, न्यायोचित बात कहने वाला, ईश्वर ओ (धर्म) कर्म में आस्थावान् होते हुए भी धर्मपालन से हीन, गृह-भूषण-धन-धान्यलाभ से युक्त और (अनेक प्रकार से अपने) कार्यों में अवरोध युक्त प्रकृत। (हिन्दरी, श्यामा, उदर रोगिणी, दाहिनी ओंका दाहिनी किन्तु उसका वन्द्य और शलाधिक) रिक्तियों में शमयशील तथा इस कार्य में धन का व्यय, यदाकदा परोपकारी और गृहस्थ-संचालनार्थ धन में चुराई का अनुभव, भाग्योन्मत्ति में अनेक विषय युक्त, सन्तान और विद्या सुख में न्यून, दसक पुत्र कापिला, दीर्घा मुष्य-सम्पन्न, कार्यव्यस्त, आन्तरिक दुःखों और रक्त-पित्त तथा मूत्रोन्मिद रोगी, वृद्धावस्था में सामान्य सुख, विरोधी का वाक्-चालुय से लिजेला, मान-प्रतिष्ठा में साधारण और भाई-बहिन तथा परिवार से विद्वेष का प्रयत्न रहने वाला होगा।

(२४२)- इस जनुनर्गल में उत्पत्ति होने वाला धीर शारीरिक-सौन्दर्य में रुद्ध चुराई युक्त, दीर्घबिधु, गोवर्ण, पुष्ट शरीर वाला, साहस और चतुर, विवेक युक्त (उत्त रोगि) से कार्य करने में प्रवीण, पुनर्लभ प्रवीण, अनेक विषयों का ज्ञेता और उत्तम प्रवृत्ति तथा धर्मोपदेश, किन्तु विद्यापक्ष में चुराई का अनुभव, प्रलय और साहस, धन संग्रह में शमयशील, वृद्धि हेतु सचेष्ट पण्डित धन संग्रह में न्यून, अनेक प्रकार से आदर प्राप्त, राज्य और सामाजिक प्रतिष्ठा में न्यूनता का अनुभव। अस्मात्मे प्रमी किन्तु वाह्य उग्र उन्मत्त युक्त, कुछ धूर्त प्रकृति और अनेक रमणियों में शमयकता तथा विप्रभावशाली, प्रमद-रोगी, हृद्-रोग या मूत्रोन्मिद-विकार से अथवा यस्मात् से मृत्यु पावे वाला, अन्त्या मु से कुछ अधिभूत जीवन युक्त, भाग्योन्मत्ति और गृह भूमि लाभ तथा ह्मि और सन्तान सुख से हीन, कुछ ब्रह्मचारी अथवा सन्नासो सा दीपने वाला, येनकेन प्रकारेण जीवन बिताने वाला, भोगेश्वर युक्त, मातृपितृ सुख से हीन, अन्यका परिपोषक, शनैः शनैः नरक-मार्ग को ग्रहण करने वाला, अधम और नीच होगा।

(२६२)- इस जन्म में जन्म गृहण करने वाला बालक दीर्घनिष्ठ और (दृष्ट देही तथा गोलवर्ण, स्वोन्मिषानी, अत्यधिक साहसी और चतुर, चंचल तथा कोपही, अनुशासन और दृढ़ता से कार्य करने में सक्षम किन्तु परिश्रम के उपरान्त भी भायोदय में सर्वथा अवगत और विरोधयुक्त, योजनानिर्माण में पुबोण, अधिक क्रोध और दुरात्मा, सुन्दरी पतिव्रता स्त्री का पीत होते हुए भी उससे करिष्यक्त अथवा विभायोयोग प्राप्त, ऐश्वर्य और बलान्मत्त तथा अधिक व्यय, अन्य अनेक स्त्रियों में रमणवृत्ति, स्वार्थ-सिद्धि में लत्ता, ईश्वर और धर्म को जानने-मानने के अनन्तर भी धर्म-पक्ष में सन्तान्तर्य, राज्यक्षेत्र में समुक्त और राज्यवैतनोपजीवी, मातृ-सुख से हीन, पितृ-द्वेषी और कुलांगार, स्वयं ही आन्तरिक रूप से अपने आचार्यों के कारण दुःख, रक्त-पित्त-विषाण गृह, अनाथाप दुःख लाभ युक्त, भाई-बहिन और पौत्रा का विरोधी, बाह्य-विरोध को दबाने के लिए प्रयत्नशील, भ्रमणशील, गृह-भूमि-लाभ से वर्जित, अल्पायु से कुछ अधिक जीवन प्राप्त, यदा-कदा मृत्यु-तुल्य केष्टों का भोगी, सुरा-सुन्दरी-प्रेमी, साहस और उत्साह से अनेक कार्यो में सफलता प्राप्त करने वाली होगी।

(२६३)- इस जन्म में जन्मा हुआ जातक मध्यमकद, गौरवर्ण, सुन्दर किन्तु कुछ नुष्ट युक्त, स्वभाव से विनम्र, मातृ-सुख-सहयोग प्राप्त, रक्त-सहने में दक्ष, विद्या-क्षेत्र में अवशेष के साथ समुक्त, विलम्ब से सन्तान प्राप्त करती, पितृ-सुख में नुष्टि का अनुभव, पितृ-द्वेष-निवासि, सामान्य-गृहस्थ और सुन्दरी स्त्री का पीत और उसी में आसक्त, ईश्वर और धर्म में पूर्ण निष्ठावान् तथा धर्म-पालक, परिश्रम तथा उत्साही, विरोध-मूलक युक्त और चातुर्य से सफल, राज्यपक्ष में समुक्त और राज्यवैतनोपजीवी तथा मान-प्रतिष्ठा युक्त, सुरैश्वर्य सम्पन्न, गृह-भूमि-लाभ से युक्त, गम्भीर तथा सामान्य उग्र, साहस से अनेक कार्यो में सफल, भायोदय में कुछ अवशेष और विघ्न युक्त, भाई-बहिन और पौत्रा-जनों का प्रिय, परोपकारी और दयालु, अल्पायु से अधिक जीवन प्राप्त, यश और कीर्ति-सम्पन्न, सामान्य धनी, धैर्य और शिव के से कार्य करने में सक्षम, स्त्री के सुख-सहयोग से भी कुछ उच्चता प्राप्त करती, सत्यवादी और मधुरभाषी, आदर्श-वादिता से जीवन व्यतीत करनेवाला, उच्च विचारवान्, लोचक यो लक्षण से भी युक्त प्राप्त करती होगी।

(२४५)- इस जन्म चूने में उत्पन्न होने वाला (पुरुष) (सुन्दर, गौवरण, सुगठित (पुष्ट दही, मध्यम कद, उन्नत ललाट, माता और पिता का पूर्ण भस्त्र तथा उनका परिचालन और) सुख-सुदयोग प्राप्त। गृह-भूमि लाभ युक्त, साहसी और नर, विवेक-सम्पन्न, धर्म और ईश्वर तथा लोक-पालक का जागरूक एवं निष्ठा युक्त धर्मपालक, आदर्शवादी एवं मधुरता युक्त सत्य का आश्रय, मित्रा-कुटुम्ब से पूर्ण विलक्षण जीत भा सम्पन्न, सन्तान की ओर से विनित्त, मध्यमा मुख्य युक्त, लोचक अथवा उद्येष्टा, पितृ-क्षेत्र का स्थायी निवास। राज्य और सामाजिक मान-प्रतिष्ठा एवं सुयश प्राप्त, हरकथे युक्त धृत्य बाहनादि से पूर्ण सुखमय जीवन व्यतीत करने वाला, भारिकोहन तथा दौलत (की पुत्र और) तथा सभा का प्रिय, परोपकारी और दानु, उत्तम कौशलों में धन का व्यय, विरोधहीन किन्तु केशकर मृत्यु-तुल्य के लो का प्राप्त कर्ता। साहसी और धैर्य तथा भूमि-शालिता से अपने परिश्रम द्वारा अनन्त कर्तव्य एवं व्यवसायों में सफलता युक्त, गृहकाय मयुक्त, परम प्रवीण, बहुचर्चित और लोक-विख्यात, (पुरुषार्थ का धनी होगा।

(२४६)- इस जन्म-जन्म में उत्पन्न होने वाला जातक दीर्घविधु, कृपाकाय, गौवरण, उन्नत ललाट, स्वामिभानी और उग्र, दृढ़ तथा दृढ़ निश्चय, अनुशासन प्रिय, अत्यधिक साहसी, निराधियों का प्रबल दमनकारी, ऐश्वर्य युक्त जीवन व्यतीत करने में प्रवीण तथा धन का अधिक व्यय, स्त्री तथा सन्तान-सुख से वर्जित, स्वार्थी और एवं धनसंग्रहार्थ सर्वथा चर्चित, ईश्वर और धर्म का जागरूक होकर दृढ़ धर्मपालन से हीन। अनेक विषयों में रमणकला, स्त्रीचक्र और कुदृष्ट प्रकृति, राज्यक्षेत्र में समुन्नत तथा दृढ प्रदाकला सिद्ध ही कुछ बन्धन युक्त, अन्य-लोकों का से रक्ते वाला बलादित, आधिक कामी और (पुरा-सुन्दरी का प्रेमा, नेत्रज्योति के कुरीत युक्त तथा रक्त विकार ग्रस्त, मार्मिक सुख सुयोग से हीन, किन्तु बाद में पिता का प्रशंसक, अल्पायु प्राप्त, राज्य-यक्षमा अथवा तद्वत् राग से मरण प्राप्त कर्ता, भाग्योदय अनेक विघ्न युक्त अथवा इन सबके अनन्त दाह्यभाव से जीवन व्यतीत करने वाला, कुछ विविध अथवा अन्धलोग, पी दया पर आधारित जीवन यापन करने वाला, मान-प्रतिष्ठा-हीन होगा।

(२४७)- इस जन्मोक्त में जन्म, शरीर का न वाला व्योक्त (पृष्ठ दृष्ट, गोपुत्रवर्ण, मध्यमकद, मेधावी, साहसो ओ (सा-
ममान), विभावसि कृष्ण उग्र तथा कोधी, ठीक तथा दृढ़ निश्चयो एवं अनुशासन-पुत्र, माता-पिता सुख सहयोग
प्राप्त, भाई बहिन ओ (प्रीति) कार्यपुत्र किन्तु बाहरी विरोध युक्त, विरोध का वाक्-चातुर्य ओ (उत्तरी रीति से दबाने में)
सक्षम, गृह भूमि लाभ संपन्न, द्विभाषा वाग-प्राप्त, कलह को (पी) भिल्ल प्रकृति युक्त दूसरी स्त्री की ओ (से) सनेधा
आन्तरिक क्लेश प्राप्त कला, सन्तान की ओ (से) चिन्तित, अवरोध युक्त भाग्यादये में समुत्तल, विद्या-पक्ष में युनरा
कर अनुभवी, गृहस्थ संभालना में धन का अधिक व्यय, शरीर ओ (धर्म) में आस्थावान् होत हुए अनेक संभारों के का-
रण धर्म-पालन की यथाशक्ती से मीन, राज्य ओ (सामाजिक मान-प्राप्ति) में चुराव का अनुभवा। सर्वथा आन्तरिक चिन्तित,
यदाकदा अनायास दृढ-लाभ से सन्तुष्ट, अल्पायु से कुछ अधिक जीवन प्राप्त, धन का सामान्य संग्रही किन्तु दृढ-व्याप-
से हीन, सन्तान हृदय, कुपणता युक्त, स्वाध-सिद्धि हेतु दुस्वरा से दया का याचक हागा।

(२४८)- इस कुण्डली-पत्र में जन्मा हुआ मनुष्य साहसा ओ (चतुर, पाम्फुन्दा गो-वर्ण, प्रभावशाली व्योक्तत्व सम्प-
न्न, तेजस्वी, दूरदर्शी ओ (मेधावी, परिश्रमी, मध्यमकद, उन्नत ललाट), सत्य ओ (व्यायुक्त काल कहने में प-
वाण, -नरुर ओ (विवेक सम्पन्न), सुन्दरी, सुशोभा, सुलक्षणा, परिश्रमी स्त्री का पति; विद्या में कुछ गुरु का अनुभवा
ओ (सन्तान की ओ (से) चिन्तित, गृह भूमि धन-धान्य-भूय-काटनादि लाभ संपूर्ण, परोपकारी ओ (दयालु) एव
युक्त रहने सहने में पटु, व्यवसाय क्षेत्र में सफल, स्त्री-सहयोग से भी कुछ उन्नति युक्त, शरीर ओ (धर्म) का पूर्ण निष्ठा
वान् तथा यथाशक्ती धर्म-पालक, भाई-बहिन ओ (प्रीति) कार्यपुत्र, अल्पायु से अधिक जीवन प्राप्त, सामाजिक मान-
प्राप्ति प्राप्त कला, माता-पिता का पूर्ण भक्त तथा उनके सुख-सम्बन्ध ओ (सहयोग से) जुड़ी, बाल्य में रोगी,
यदाकदा बाहरी विरोध पाने वाला, वाणी में दक्षता युक्त यश-सम्पन्न, अनुशासन-पुत्र, विलक्षण प्रतिभा युक्त, सर्व-
भा-वीर्य ओ (कुछ आन्तरिक चिन्तित, विद्यावान्, मानव जीवन की सफलता प्राप्त उत्तम काल में देहत्याग होगा।

(१४८)- इस जन्म-चक्र में जन्म ग्रहण करने वाला मानव कृश-शरीर, दीर्घ-बुद्धि, काम-सुन्दर, गो-वर्ण, उन्नत-ललाट, माता-पिता और गुरु का पूर्ण सुख-सहाय प्राप्त और उनकी कृपा से सम्पन्न, विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न, नैमिज्योति मंडल-विकार का अनुभवा, मधुर और सत्यतायुक्त न्यायवादी, विद्या क्षेत्र में बुद्धि का अनुमान होत हुए भी पाम-विद्वान्, दूरदर्शी, सभी कार्य-पुण्य, ईश्वर और धर्म तथा माता-पिता गुरु से मं-पूर्ण निष्ठावान् और उन सभी का भक्त-लोक-पालक का विचारक, प्रबल राज्याग प्राप्त, लौकिकी चिन्ता से मुक्त, सुन्दरी, दांत-वला, सुलक्षण, गारंगी-लाका-पति और सन्तान की ओर से कुछ ऐश्वर्य, स्त्रिका मरण प्राप्त अथवा गृहस्थ त्याग का विरक्त होने वाला, अनेक शिष्या से युक्त, धर्मापेक्षा, सर्वत्र सम्मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, उत्तम स्थान व उत्तम काल में देह त्यागी, पुनः मानव-जीवन प्राप्त, मध्यमायुष्य सम्पन्न, दुःख-कोष-भृत्य-वाहनादि, ऐश्वर्य से पूर्ण उत्तम कुल में जन्म ग्रहण करने वाला, भगवद्गीता और शिव-धर्मानुरागी तथा शिव-लोक-गमन करने वाला महापुरुष होगा।

(१४९)- इस जन्म-चक्र में उत्पन्न ग्रहण करने वाला मनुष्य सुन्दर, गो-वर्ण, कृशकाय, दीर्घ-बुद्धि, उन्नत-ललाट, अत्यधिक साहस और परीक्षणी, विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न, स्त्री-भक्तानी और ऊपर से आदर्श-दीर्घने वरुणा, स्त्री-शोभा और अतीव नमो। सुन्दर स्त्री का वंशक और अन्य में मरण-शोक, भार्गव-कासे में कुछ घृणित रीति ग्रहण करने वाला, सुनेश्वर्य में अधिक द्रव्य-काव्ययो, गृह-भूमि तथा द्रव्य-संबन्ध में सामान्य, ईश्वर और धर्म तथा पिता का भक्त और धर्म-पालक तथा धर्मोपदेष्टा, अनेक शिष्याओं में पटु किन्तु विद्या क्षेत्र में आन्तर्बुद्धि का अनुभवा, नैमिज्योति तथा उदर-निम्न गृहस्थ, सन्तान की ओर से कुछ ऐश्वर्य, मातृ-पितृ-के सुख-सम्बन्धों में अभाव-रहित, मान-सुख का अल्प भोगी अथवा व्यभिचारीणी-माला का पुत्र, सामाजिक मान-प्रतिष्ठा युक्त, मध्यमायु प्राप्त करेगा, दृढ-दाल-का में जीवन को सुधा-लेने वाला, संगीत-काव्य-ज्योतिष-का प्रेम और एतद्-विषयक-ग्रन्थों का पुण्यता, मेधावी, यदा-कदा भाग्याय में निष्ठा प्राप्त करेगा तथा जीवन में कई बार मृत्यु-रूप कष्टों को भोगने वाला होगा।

भ. सं. २०३

(२५१)- इस जन्माद्वय में जन्म ग्रहण करने वाला बालक उत्तम गोवर्ण, कृश-शरीर, सामान्य बुद्धि, गम्भीर ओर शान्त प्रकृति, साठसो ओर स्यामभानी तथा चतुर ओर विवेकी, मृदुल, विनोदी स्वभाव, परोपकारी एवं दयालु, अनुशासन-योग्य ओर सत्यप्रिय, विलक्षण प्रतिभासम्पन्न, मेधावी, माता-पिताका पूर्ण सुख सहयोग पाये ओर उनका भक्त, भाई-बहन एवं परिवारीजनोंका प्रिय, धन-धान्य-गृह-भूमि-भृत्य-वाहनार्थ सुख से पूर्ण, ईश्वर ओर धर्म में निष्ठावान् तथा धर्मपालक, कर्मयोगी, पुरुषार्थ ओर परिश्रम तथा साहस शाली से अनेक कार्य ओर विविध व्यवसायों में पूर्ण सफलता पाये, दृढ़ ओर निश्चित अम्बुदनीयुक्त, भागेश्वर्य ओर रहन सहन में दक्ष, राज्य ओर सामाजिक क्षेत्रों में सम्पन्न एवं मानप्रिय छत्र सम्पन्न, मातृ सुख में कृदन्धुनता का अनुभवी, विद्या ओर सन्तान सुख से पूर्ण, विरोधीका युद्ध शक्ति से निजयो, सुन्दरी, शिरोरत्न, गोरोणी, पतिपरायणा स्त्रीका विद्या तथा भाग्योदयका अर्द्धा लाभ प्राप्त करने, मध्यमायुष्य सम्पन्न, यदा-कदा मृत्यु, लज्जामयों का प्राप्त करता, दानशाल, उत्तम कार्य के कारण उत्तम स्थान ओर उत्तम स्थान में रहनेवाली होगी।

(२५२)- इस जन्म-द्वय में जन्म ग्रहण करने वाला बालक उत्तम गूणांसे पूर्ण, स्यामभानी, दीर्घबुध, कृशकाय, गोवर्ण, साठसो विद्या बृद्धि से पूर्ण ओर मेधावी (कृदन्धुनता) उग प्रकृति, गोवर्ण बालक रहने में पट, प्रभावशाली व्यक्तित्व एवं विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न, भागेश्वर्य युक्त ओर रहन सहन में दक्ष, मध्यमायुष्य सम्पन्न, विद्या ओर सन्तान का उत्तम सुखभोगी, मातृ सुख में कृदन्धुनता का अनुभवी ओर पितृ-सुख-सहयोग पाये, पितृ-भक्त तथा पितृ-सन्तानवाला, भाई-बहन एवं परिवारीजनोंके सुख सम्बन्धों से युक्त, ईश्वर ओर गो-बालन तथा धर्म में आस्थावान् ओर धर्मपालक, यथार्थरूप से दानशाल, गृह-भूमि-भृत्य-वाहन, द्रव्य-सुख से पूर्ण, सुन्दरी, सुशीला, पतिव्रता स्त्रीका पति, किन्तु उससे मतभेद युक्त अथवा विभागीयता पाये, राज्य ओर सामाजिक क्षेत्रों में सम्पन्न एवं मानप्रिय छत्र प्राप्त, विरोधीका सम्बन्ध निजयो, गम्भीर ओर धैर्य सम्पन्न किन्तु कृदन्धुनता अज्ञानिता का अनुभवी, सत्यवादी ओर आदर्श, कर्मयोग एवं साहस से व्यवसाय में कभीकभी गम्भीर हानि के साथ सफलता पाये, भागेश्वर्य से पूर्ण, भाग्योन्नीत का अर्द्धा लाभ प्राप्त, उत्तम कार्य का सम्पादन, परिश्रम से उन्नति करनेवाली होगी।

क. ०
२०

(१५३)- इस जन्म-कर्म में जन्मा हुआ मनुष्य भाग्योदय ओ। धर्म-पालन में अवरोध युक्त सफलता प्राप्त, दीर्घनिष्ठ, कृश शरीर, उन्नत ललाट, गोल कर्ण, मातृ-सुख में कुछ-युनता का अनुभव, भ्रमणशील, विलक्षण परिभा सम्पन्न, प्रभावशाली व्यक्ति से पूर्ण, नरुह ओ। विवेकी, अत्यन्त मेधावी, सत्यवादी ओ। अनुशासन प्रिय, स्वोपनिर्माता, अनेक विद्याओं में प्रवीण, धर्म शास्त्रों का अध्ययन ओ। ईश्वर तथा धर्म में निष्ठा युक्त धर्म-पालक, यथाथ-परोपकारी ओ। शान्तशैल, उत्तम कर्मों में धन का व्यय, गृह-भूमि नाम से युक्त, दुर्धी ओ। इष्ट-निश्चय आय युक्त, द्रव्यकोषार्थ निरन्तर प्रयत्नशील, अत्यधिक साहसी ओ। वीरकर्म, धर्म के साथ कर्मयोग को महत्व प्रदान करनेवाला, यदाकदा अवरोध के साथ भाग्योन्नात, भाई-बहिन ओ। सन्तान तथा उत्तम स्त्रियों का पुत्र भागी, किन्तु स्त्री ओ। परिवार से कुछ विरोध प्राप्त, विरोध-पक्ष का विजयी, मध्यमायुष्य में अधिक जीवन प्राप्त, रक्तोपसर्पित गृह, सभी दैर्घ्य में मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, समुन्नत, लेखक अथवा उत्तम सु-कला किंवा विविध व्यासायों का कर्ता, पितृ-सुख सहयोग प्राप्त, पितृ-क्षेत्र में उत्तम काल में देहत्यागी होगा।

(१५४)- इस जन्म-लग्न में जन्म लगे वाला व्यक्ति मध्यम कद, उत्तम गोल कर्ण, वास सुन्दर, मुख ओ। गठित दृष्टि, स्वाभिमान, विलक्षण मेधायुक्त परिभा सम्पन्न, प्रभावशाली व्यक्ति से पूर्ण, माता-पिता का पूर्ण भक्त ओ। उनका सच्चा प्रिय पुत्र किन्तु पितृ-सुख में कुछ-युनता का अनुभव, परिश्रम ओ। साहस शक्ति उत्तम भाग्योदय लाभ, राज्य ओ। सामाजिक क्षेत्र में समुन्नत एवं मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, भाई-बहिन ओ। ईश्वर के विद्वेष पूर्ण सम्बन्धों से युक्त, यदाकदा मृत्यु-तुल्य कष्टों का भागी, ईश्वर ओ। धर्म में आस्थावान् तथा धर्म-पालक, भोगेश्वर्य ओ। रहन-सहन में प्रवीण धन का अधिक व्यय, सुन्दरी प्रतिनृता स्त्री का पति तथा उत्तम पुत्र सहयोग प्राप्त किन्तु अन्य स्त्रियों में भी रमणशील, गम्भीर ओ। शान्त तथा मृदुल प्रकृति, परोपकारी ओ। दयालु, वाक्-चातुर्य तथा विवेक से विरोध का विजय, विद्या ओ। सन्तान पुत्र से पूर्ण तथा पि. परिश्रम के उपशान्त भी द्रव्यकोष संग्रह में निरर्का अनुभव, तीव्रदृष्टि, मध्यमायुष्य सम्पन्न, यदाकदा गृह-स्थ से पालनाथ, द्रव्य व्यय कमी अनुभव होने से अशान्त चित्त, भाग्यवादिता से शान्त का अनुभव होगा।

(१५५)- इस जन्म कुण्डली में उत्पल होने वाला (पुरुष मध्यम कद, दुष्ट-शरीर, गम्भीर ओर शान्त स्वभाव) योजनाओं का निर्माता, उन्नत-ललाट, गौरवर्ण, मातृ-पितृ-सुखसहयोग का भोगी किन्तु पितृ-सुख में भूटिका अनुभवों, परिश्रमों ओर साहसों, भार-भार से युक्त होते हुए उनके सुख सम्बन्धों से भूटिका युक्त ओर परिवारीजनों से विद्वेष प्राप्त होता, विद्या क्षेत्र ओर सन्तान में भूटिका अनुभवों, पैर कंधन ओर गृह-भूमि लाभ युक्त तथा पैर कंधन ओर परिश्रम में शक्त शक्त स्व उन्नति में लगे भोग्योदय का लाभ पाने वाला, विरोध की चिन्ता न करने वाला, गृहस्थ में आसक्त सुन्दरी दीर्घदेही पुष्टांगी गौरांगना परिवारा, किन्तु कलहकारीणी स्त्री से युक्त चिन्तित ओर युक्त, शिवा ओर धर्म में आस्थावान तथा सामान्य धर्म-बालक, शक्ति उपासना को अधिकता से महत्व प्रदान करने वाला, अशान्त चित्त एवं चंचल-प्रकृति, दीनता ओर मलिनता से रहन-सहन में ही सुख का अनुभवों, दुष्ट-संग्रह में निराला प्रयत्नशील तथापि दुष्ट-संग्रह में भूटिका युक्त, मध्यमायु से पूर्व का जीवन प्राप्त, प्रायः स्वस्थ रहने वाला, नेत्रज्योति में विकार रहने होगा।

(१५६)- इस जन्म कुण्डली में उत्पल हुआ मानव दीर्घ-पुष्टदेही, गौरवर्ण, उन्नत-ललाट, उत्तम स्वास्थ्य सम्पन्न, माता-पिता का पूर्ण सुख-सहयोग प्राप्त, विद्या क्षेत्र में भूटिका अनुभवों तथापि विलक्षण मेधा ओर चतुर्य एवं विवेक युक्त, अत्यधिक साहसों, मातृ-पितृ भक्त, परिश्रम पूर्वक पैर कंधन से अच्छा भोग्योन्नत, वृद्धावस्थ में सुखी, सन्तान की ओर चिन्तित युक्त, भार-भार ओर परिवारीजनों के सुख सम्बन्धों में मिलान्त न्यून, अपितु परिश्रम युक्त जीवन, गृहस्थ में अनुरक्त, सुन्दरी पुष्टांगी गौरांगना परिवारा, किन्तु सामान्य उग्रस्त्री का पति ओर उनके सुख-सहयोग से समुन्नत, वृद्धावस्थ में सन्तान-सुख ओर सामाजिक-मान-परिष्ठा सम्पन्न, शिवा ओर धर्म में आस्थावान एवं निराला धर्म बालक, न्यायोचित सत्यता पूर्ण सुधुर-वाक्य कहने में प्रवृत्त, उसमें कार्य एवं रहन-सहन में धन का अधिक व्यय, गृह-भूमि लाभ से युक्त तथापि दुष्ट-संग्रह में भूटिका अनुभवों, शिव शक्ति से वायरायण, नाक-चातुर्य ओर गुप्त नीति रीति से विरोधियों का विजेता, मध्यमायु प्राप्त, यदा-कदा मृत्यु दुष्ट कष्टों का भोगी, विमुक्तगति से दौड़ित होगा।

म०
स०
३३

म०
स०
३०

(२५०) - इस सुपुत्री - युक्त में जन्म ग्रहण करने वाला बालक - पुष्ट देवी, सामान्य कद, गोवर्ण, शारीरिक सेन्द्रम मुकुट
 मुकुट, अत्यधिक साहसी और स्वाभिमान, प्रभावशाली व्यक्तित्व से पूर्ण, न्यायपूर्ण सत्यता युक्त मन्दुर और
 कटु वाक्यवादितों में प्रवीण, उत्तम पुस्तक, धर्मविद, विद्या और सन्तान-सुख से पूर्ण तथा अनेक विद्या एवं कलाओं
 में प्रवीण, मिलनसार प्रतिभा सम्पन्न, भोगैश्वर्य युक्त तथा रहस्यमय में दक्ष, पितृ-मातृ-सुख भोगी तथापि मातृ-सुख
 में मातृ का अनुभव, करिश्म और साहस से उत्तम भाग्योन्मुख, राज्य और समाज में मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, परिवार में और
 पारिवारिक सुख सम्बन्धों में विद्वत्-प्राप्तकला तथा कीर्तिको प्या करने वाला भी उसे त्याग जाने वाला, वृद्धावस्था में अपने को
 अच्छा सुख अनुभव करने वाला, ईश्वर और धर्म में आस्थावान् तथा धर्ममालक, संगीत-कवि-ज्योतिषशास्त्रवेत्ता, उत्तम
 कर्मों में धनकाव्ययी, २२ और कानूनिक से कोटित, सुन्दरी प्रतिबुद्ध स्त्री का पति और उसके सुख-सहयोग का भोगी,
 लोक-परलोक का चिन्तितवान्, विद्वत्-गणेश-भक्त, मृत्यु का कठिन कष्ट सहता हुआ उत्तम स्थान में देह त्यागी होगा।

(२५१) - इस जन्म-युक्त में जन्मा हुआ बालक श्यामवर्ण, कुशवासीर, दीर्घ देही, मलिन और कुचेल चित्त तथा वि-
 द्वेष भावनाओं से पूर्ण, स्वार्थ-सिद्धयर्थ मधुरवाणी का प्रयोगी, किन्तु आन्तरिक-क्रुद्धता युक्त, ईश्वर और धर्म को मा-
 नते हुए भी कुटिल कर्म करने वाला, मलिन शरीर, अपने को अहंकार में गोबर शाली मानने वाला, भोगी और अत्यधिक
 कामी, चोरी अथवा ठगी से परद्वेष का अपहर्ता, निरन्तर न्यायालयों में भ्रमणशील, विरोधपक्ष का विजयी, सु-
 न्दर, प्रतिबुद्ध स्त्री को त्याग कर गीना-स्त्री को धोम रखने वाला एवं सदासर्वदा भोग-विलास और स्त्री विषय में धन
 का अधिक व्ययी, स्त्री द्वारा धोया प्राप्त एवं अनेक तन्त्रियों का रमणकर्ता, जेब-ज्योति-सूत्रेन्द्रिय और उदर-विका का
 प्राप्तकर्ता, मातृ-पितृ-दुष्टी, क्रुद्ध और पीड़ा को कलंक लगाने वाला, स्त्री विषय में राज्य-बन्धन शास्त्र तथा अन्त्या-
 यज्ञ, सदासर्वदा क्लेश सहते हुए भी अपने को सुख मानने वाला, मान-प्रतिष्ठा और हाह-भूमि-द्वयकोष तथा
 सन्तान-सुख से हीन, सम्भवतः स्त्री-विषय में ही दरम्यों के हाथ से अन्त्यशस्त्र से मृत्यु पावे वाला होगा।

(२५८)- इस जन्म में जन्म गृहण करनेवाला व्याक्त मध्यमकद, मध्यमवर्ण, कुशशरीर, नेत्रज्योति ओर
रक्तनाथ-विकार से ग्रस्त, अत्यधिक साहसिक-हीनता से ओर स्वार्थ-मानी, मातृ-पितृ-द्वय-हीन ओर पितृ-द्वय-हीन
परिष्ठम से कुछ द्रव्य-लाभ ओर भाग्योदय प्राप्तकर्ता, चौर ओर मलिन चित्त, धूर्त तथा वंचक, अत्यधिक कामी,
इश्वर ओर धर्म-आस्था से हीन, उदररोग तथा भ्रूण-निन्दय रागी, सुरासुन्दरी को प्रेमी, बलवान्, स्त्री तथा सन्तान
ओर विद्या-सुख में हीनता प्राप्त, व्याधिका-षण्ढा अनेक स्त्रियों में रमणकर्ता, शूद्रवत् आचरणों में प्रवृत्त, भाग-
विलासक समय व्यर्थता से रमणकर्ता, शिष्टकारी की अन्य स्त्रियों को, व्याधिका स्त्री को दो मं रत्न को उसके
सुख-सहयोग तथा धन लाभ प्राप्त, शोध की मध्यम-मार्ग में जाने का सागानु-गम्य, भाई-बहिन ओर पीछा का विद्वे-
षी, राज्य-बन्धन-ग्रस्त ओर सर्वत्र मान-उत्तिष्ठा हीन, पुरुष से यदा-कदा द्रव्य-लाभी, विशेषियों या साहस तथा
काय-धन-युक्त से प्रभावशील, पितृ-क्षेत्र से अन्यत्र निवास करने वाला होगा।

(२६०)- इस जन्म में जन्म लेने वाला पुरुष मध्यमकद, शारीरिक-लोन्ड-वर्ण में कुछ नुदियुक्त गो-वर्णी सामान्य
शरीर, मातृ-पितृ-सुख सहयोग में न्यूनता प्राप्त, पितृ-भक्त, अन्य क्षेत्र-कानिवासि, मध्यमायु-प्राप्त, सन्तान ओर
विद्या-सुख में सामान्य, चतुर ओर विवेकी, सुन्दरी श्यामा पतिव्रता उदर-रोग-हीन स्त्री का पति ओर शोध की उसके माण
से प्राप्त एक-की-जीव-व्यतीत करनेवाला, गृह-भूमि-लाभ से युक्त ओर सामान्य धन-प्राप्ति, शिष्य अथवा दसक पुत्र
से सुख तथा उसको धन-पदाता, इश्वर ओर धर्म में आस्थावान् तथा धर्म-पालक, सामान्य भाग्योदय लाभ, चिन्तन
शील ओर विचारक, भाई-बहिन युक्त तथा उनके ओर पीछा-जिगी-सुख-सम्बन्धों में भ्रष्ट का अनुभवों तथा
भाई-बहिन का हित-चिन्तक ओर उनकी द्रव्यादि से सहयोग करनेवाला, दृढ़ ओर निश्चित द्रव्यादि से हीन,
भाग्यवादी ओर उत्तम वस्त्र-पूर्ण वाक्यों का प्रतिपालक, बुद्धि अथवा वाच-विका-ग्रस्त, सामान्य भाव-उत्तिष्ठा
प्राप्त, उत्तम धर्म-विषयों का सम्यक् ओर उमेर धन का न्यय करने वाला होगा।

(६६१)- इस जन्म (मुण्डली में जन्म लेने वाला बालक श्यामवर्ण, पुष्ट देही, मध्यम कद, शारीरिक-सौन्दर्य में कुछ त्रुटि का अनुभव, विद्या क्षेत्र में पूर्ण किन्तु सम्मान की ओर से विनित, गौरव सम्पन्न, पिता से कुछ मतभेदों और बोद में पिता का प्रशंसक, माता सुख सहयोग प्राप्त करती, स्वामि मानी, दृढी एवं दृढ निश्चय सम्पन्न, स्ववसन-स्थापना में प्रबोण, ईश्वर और धर्म में आस्थावान तथा धर्म-पालक, यथार्थ परोपकारी और दयालु, सामान्य धन संग ही धानु धन-संग ही निरन्तर चेष्टित, यदाकदा आमदनी और ना-ज्योति में निधन का अनुभव, सुन्दरी, वसुन्धरा, सुशीला, उदररोगिणी, श्यामा स्त्री को प्राप्त करती तथा उसके सुख सहयोग से समुन्नत, व्यवसाय क्षेत्र में धैर्य-धन-साहस और धैर्य से सफल, गृहभूमि लाभयुक्त, राज्य और सामाजिक प्रतिष्ठा सम्पन्न, भौतिक क्षेत्र के सुख-सम्बन्ध और पौर्वाणिक सुख सहयोग प्राप्त, सम्मान में अधिक पुत्रों को पिता, विरोधियों का सर्वथा विजय एवं काम प्रारम्भ में धीर्ययुक्त, नेत्र ज्योति तथा वात रक्त रोगी, गम्भीर और गुप्त योजनाओं द्वारा अपनी सफलता सिद्धि के सर्वथा प्रमाणित, भौगोलिक और रहस्य-सहस्र में अधिक व्यय, प्रभावशाली व्यक्तित्व युक्त होगा।

(६६२)- इस जन्म-वर्ग में जन्म-गण कोने वाला जातक परम तेजस्वी, गौरवर्ण, स्वामि मानी, विलक्षण प्रतिभाशाली, दीर्घायु, कृश-शरीर, उन्नत ललाट, स्वभाव से कुछ उग्र, प्रभावशाली व्यक्तित्व-सम्पन्न, उच्च कोटि का मेधावी, विद्या क्षेत्र में पूर्ण, पिता का उत्तम सुख प्राप्त और पितृ-भक्त, माता-माह-बहिन तथा पौर्वाणिक (सुख-सम्बन्धों में कुछ त्रुटि युक्त, राज्य और सामाजिक मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, राज्य क्षेत्र में जीनी, धन संग ही निरन्तर चेष्टित तथा सामान्य धनी, गृह-भूमि लाभ युक्त, पितृ-सुख सहयोग से समुन्नत, भाग्योदय में कुछ अवरोध युक्त, रक्त-विकार एवं नेत्ररोगी, स्त्री सुख सम्बन्धों में युनता का अनुभव, वाक्पटु और मातृयुक्त, शत्रुओं विरोध पक्ष का गुप्त रोहि-नोहि से सफल, यदाकदा शत्रुओं का हानि से मृत्यु-तुल्य दृष्टि को प्राप्त करती, दीर्घायु-सम्पन्न, ईश्वर और धर्म में दृढ-आस्थावान तथा धर्म और पुण्य-कार्य को अधिक महत्व प्रदान करने वाला, विनोदी स्वभाव, सम्मान की ओर से विनित किन्तु उत्तम गुण-सम्बन्धों को पिता, कभीकभी आमदनी में गम्भीर संकट का अनुभव, व्यवसाय क्षेत्र में हानि प्राप्त करती होगा।

(४६३)- इस जन्म चक्र में उत्पन्न हुआ व्योम दीर्घदेही, कुशशरीर, सौन्दर्य युक्त उच्चम गौरवर्ण, स्वाभिमानी और प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, विमान से कुछ उग्र और क्रोधी, विलक्षण प्रतिभाशाली, पितृ-सुख सहयोग से विद्या क्षेत्र में पूर्ण समुन्नत और पैरक धनका सामान्य लाभ, पितृ-भक्त, तेजस्वी एवं अतीव मेधा सम्पन्न, माता-भार्य कठिन एवं परिवार के सुख-सम्बन्धों में न्यूनता ग्रस्त, वातरलेख विकार युक्त एवं नेत्रज्याति में भूटि का अनुभवी, ऐश्वर्य-भोग-विलास तथा पदोपसेधन का अधिकव्ययी, विरोधी का प्रबल दमनकारी, प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी, गुहा-शोले से कार्य करने में दक्ष, सन्तान की आस-चिन्तित, दीर्घायु सम्पन्न, भाग्यादये में अनेक विघ्नों का प्राप्त कर्ता, ईश्वर और धर्म में आस्थावान् होते हुए भी धर्मधारा-धर्म-बालन से हीन, अत्यधिक कामी और अन्य स्त्रियों में रमणशील, एक पुत्रका पिता, धन संग्रहार्थ अत्यधिक पोरछने के उपरान्त भी द्रव्यकोष से हीन, राज्यवर्तन-प्रजापति, यदा-कदा सुदुर्गुण्य कष्ट प्राप्त कर्ता, गृह-भूम्यादि लाभ से हीन होकर राज्यपक्ष में मान युक्त होगा।

(४६४)- इस जन्मचक्र में उत्पन्न होने वाला पुरुष मध्यमकद, गौरवर्ण, पुष्ट देही, स्वाभिमानी और ऐश्वर्य सम्पन्न, विलक्षण प्रतिभा और वाक्-चातुर्य युक्त, प्रसादकारी और दयालु, माता-पिता का पूर्ण भक्त, ईश्वर और धर्म में आस्थावान् तथा धर्मशास्त्रों का विचारक, धर्मपालक, दानशील, पोरछने और उत्साही तथा ग्राह्य और निवेक द्वारा अनेक रोहित से व्यवसाय क्षेत्र में समुन्नत, गृह-भूमि-धन-धान्य-भृत्य-वाहन-द्रव्यकोष संग्रह के सुख से ओतप्रोत, प्रभावशाली व्यक्तित्व और रहनसहन युक्त, वातरलेख और नेत्र-बीड़ा का अनुभवी, दीर्घायु प्राप्त, विद्या और सन्तान सुख संपूर्ण, मातृ-सुख में न्यूनता ग्रस्त, पवित्र और सदाचारी, कुछ ठीक, स्वभाव-स्थापना में पक्की, राज्यक्षेत्र में कुछ कम्पन ग्रस्त, सुयश और सामाजिक मान प्रतिष्ठा सम्पन्न, शत्रु और विरोध-पक्ष पर वाक्-वाणी से प्रफुल्लता प्राप्त, भार्यकठिन और पारिवारिक सुख-सहयोग युक्त, शरीर के दाहिने पार्श्व में बीड़ा ग्रस्त, सुन्दर प्रतिनता और सुशीला तथा धार्मिक स्त्रियों का सुख-सहयोग भागी, देशाटन और लीयाटन करने वाला, मध्यमायुष्य सम्पन्न होगा।

(२६५)- इस कुण्डली में उत्पत्ति ग्रहण करने वाला मानव दीर्घायु, स्वभाव से कुछ उग्र तथा शान्त, तेजस्वी, परिभा-
सम्पन्न, उन्नत ललाट, स्त्रीभिमान, कुशलशरीर, गौरवर्ण, प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी, पितृ-सुख सहयोग प्राप्त
कृति ओर समुन्नत तथा पितृ-भक्त। माता के पुत्र-सम्बन्धों में अभाव प्राप्त, भारिबोधित ओर पारिवारिक सुख-सहयोग
से मुक्त, सदाचारी ओर धर्मवान्, शिक्षण में धनी, विद्या ओर सन्तान का उत्तम सुख प्राप्त तथा यदि सन्तान की ओर से विधित,
धर्म ओर ईश्वर में दृढ़ आस्थावान् एवं धर्म-पालक, राज्य ओर सामाजिक मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, उदार मना ओर दानशील
तथा ऐश्वर्य ओर रहन सहन में अधिक व्यय, लक्ष्य ग्रह-भूमि-धन-धान्य-भूत-वाहन-द्वय को प्राप्त पूर्ण सुखी,
धर्मशाली का विचारक। सुन्दरी, पुष्ट ओर दीर्घदेही गौरांगी-शिखिता-सुशोभा-बहि ओर धर्मपरायणा स्त्री के
सुख सहयोग का हर्ष भोगी, दीर्घायु प्राप्त, भूमि ओर देवादन तथा धार्मिक-कृत्य करने वाला, सभी क्षेत्रों में सफलता
ओर मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, सदाचारी ओर धर्मवान्, दूरदर्शी, उत्तम गौरवमयी प्रभावशाली वाणी मुक्त होगा।

(२६६)- इस जन्मोत्पत्ति में जन्म लेने वाला मनुष्य गौरवर्ण, मध्यमकद, पुष्टदेही, सुन्दर स्वास्थ्य-सम्पन्न, शिक्षण
परिभा ओर प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, अत्यन्त मेधावी, उत्तम गुण मुक्त किन्तु कापिता तथा यदि सन्तान की ओर से
विधित, मातृ-सुख में न्यूनता का अनुभव, विद्या-क्षेत्र में समुन्नत, ग्रह-भूमि-धन-धान्य से पूर्ण, पश्चिम एवं सा-
हस्य कार्य करने में प्रवृत्त, मधुर ओर प्रभावशाली वाणी मुक्त, धर्मवान् ओर सदाचारी, परोपकारी तथा दयालु, राज्य क्षेत्र
में कुछ बन्धन का अनुभव, भारिबोधित ओर पारिवारिक क्लेश सहन कृति, सुन्दरी सुशोभा-बहि-मध्यमवर्णा-
शिखिता धार्मिका स्त्री का सुख भोगी ओर उसके सहयोग से समुन्नत, विरोध-पक्ष को युद्ध-रीति ओर वाणी प्रभाव से
विजय करने में सफल, व्यवसाय-पक्ष में कभी गहरी हानि ओर कभी गम्भीर लाभ प्राप्त होने से भाग्योन्मत्ति में अवरोध
मुक्त सफलता प्राप्त, गुप्त ओर गम्भीर योजनाओं के निमोण में पट और अज्ञान, ईश्वर ओर धर्म का यथार्थ सेवक, नेत्र-
ज्योति तथा शरीर के काम-पार्व में विकार माने वाला, दीर्घायु प्राप्त तथा वृद्धावस्था पर्यन्त सुख भोगी होगा।

(२६६)- इस जन्मांग में जन्म ग्रहण करने वाला बालक लम्बाकद, उन्नत-ललाट, स्वाभिमानी और अत्यधिक कोधी, ठही और ठठ निश्चयवान्, गौरवर्ण, शारीरिक-सौन्दर्य में कुछ बुराईयुक्त, प्रभावशाली, व्यक्तित्व सम्पन्न, माता और पिता का अल्प-सुख प्राप्तकर्ता, अन्य अथवा भारिकद्वारा लालित-पालित, विद्या-बुद्धि में विचक्षण, मेधावी और साहसी, आपसी-मेल में अत्यधिक अधीर और अशान्त, भारिकद्वारा युक्त तथा प्रीति-कार के सुख-सहयोग से समुन्नत किन्तु बाद में सभी से मत-भेदी, सकल-न्यवसायी और निश्चित-आयदनी से संयुक्त, काक-यातु से विरोध-पक्ष पर प्रभावी, उत्तम गुणी सन्तान और कु-शिला प्रतिभुला स्त्री का पति, भाग्योदय में कई बार विघ्न प्राप्त करता, गृह-भूमि और द्रव्य-कोष में साधारण, तथापि रहन-सहन में प्रभावशाली, परिश्रम और साहस से द्रव्योपाजक, उत्तम कर्षी एवं रहन-सहन में द्रव्य-काव्यथा, ईश्वर और धर्म में निष्ठावान् तथा यथार्थ-धर्म का पक्षक, पितृभक्त और बार-बार पिता का स्मरण कर सद्भाग पर चहने वाला, कद-सत्य का भावी, दीर्घायु एवं सम्पन्न तथा उत्तम-स्थान देवालय में अथवा तीर्थ में देह-याग कर बड़े-प्राप्ति का अधिकारी होगा।

(२६७)- इस कुण्डली में जन्म लेने वाला जातक उन्नत-ललाट, उत्तम गौरवर्ण, मध्यमकद, पुष्ट-दृष्टी, कुछ श्यामलता लिये हुए मुख पर पुण्य अथवा चोट के चिह्न से युक्त, साहसी और स्वाभिमानी किन्तु स्वाधीन-हिंसे और प्रभाव हेतु वाक्पटुता में प्रवीण, चतुर और विवेकी, ठही तथा ठठ-निश्चय युक्त, माता और पितृ-सुख भागी, विलक्षण प्रतिभा-सम्पन्न, मेधावी किन्तु आपात-लंकट काल में अधीर, विद्या और उत्तम गुणी सन्तान-सुख से सम्पन्न तथा दीप्त सन्तान की और सिद्धिन्तन शोक्त, उत्तम विचारक, पवित्र और सदाचार एवं रहन-सहन में आदर्श, भारिकद्वारा और प्रीति-कार के सुख-सहयोग भागी, वाक्पटुता, तुर्य से विरोध-पक्ष पर प्रभावशाली, सुन्दरी, गौरवर्ण, प्रतिभुला, सुलक्षणा स्त्री का पति और उत्तम सुख-सहयोग का भोक्ता, कई बार मातृ-तुल्य भक्तों का भागी, ईश्वर और धर्म में पूर्ण निष्ठा, उदार-मन और पराधकार, धर्म-सुधारक और धर्म-शास्त्र और उत्तम पुरुषों का सख्ती, गृह-भूमि तथा द्रव्य-कोष में परिश्रम और साहस से नाशवान् किन्तु अनक बार-बार उदाय में निघ्न प्राप्त करता, देव-स्थान अथवा तीर्थ-स्नान में उत्तम आहुति साथ देह-याग कर मोक्षार्थी होगा।

(२६६)- इस जन्म चक्र में उत्पन्न होने वाला व्यक्ति सामान्य कद, (पुष्ट देही, कुछ श्यामल रंग में गोवर्ण, (मृत्त अ-
थवा माला वृण या चोटि चिन्ह से युक्त, स्वाभिमानी और गोवर्णशाली, पिता का अल्प सुख भोगी किन्तु पितृ-मूल्य, मातृ
अथवा मातृपक्ष से सुख सहयोग प्राप्त, विधा-बुद्धि का उत्तम सुख प्राप्त करता, चतुर- विवेकी- मेधावी- साहसी और उ-
भावशाली व्यक्ति से तथा वाक्-चातुर्य से सर्वत्र और विरोधियों का विजिता, कटु-सत्य का वादी, उत्तम आदर्शकर्मकला,
पवित्र और सदाचारी, धर्मशास्त्र और उत्तम पुत्रों का विवेक तथा विचारक और प्रचारक, परिश्रम और साधन भाग्योदय में कुछ
विघ्न पारा हुआ समुन्नत और गृहभूमि-द्वन्द्वकाय-सन्तान की ओर से भाग्यशाली, निश्चय आर्थ से युक्त, कर-वार
मध्यमवर्गियों का भोक्ता, दीर्घायुध्य सम्पन्न, सुन्दरी गोवर्णशाली स्त्री का कर्त और उसका सुख सहयोग भोगी, रहन-
सहन और उत्तम कर्तों में धन का व्यय, ईश्वर और धर्म की आस्थावान् राज्य की अपेक्षा सामाजिक मान-प्रतिष्ठा सम्पन्नी,
परिपक्वारी और दयालु, मध्यमायु से अधिक जीवन प्राप्त का भगवद्स्मरण जाता हुआ वे कुण्डगन्ता होगा।

(२६७)- इस जन्मचक्र में उत्पन्न गृहण करने वाला पुरुष दीर्घ देही, गोवर्ण, उन्नत-ललाट, विवेकशाली किन्तु अ-
ल्प साहसी और क्रोधी, कर्तव्यता, सुशीला और सौभाग्यशालिनी स्त्री का कर्त, राज्य क्षेत्र में समुन्नत तथा राज्यवर्तनो-
पजीवी, यदाकदा गृहस्थ संन्यासार्थ चिन्तित, सामान्य गृहभूमि का लाभ प्राप्त करता, निरन्तर परिश्रमोपरान्त भी भा-
ग्योदय में विघ्न पारा हुआ द्वन्द्वकाय संग्रह में हानि का अनुभव, दृढ़ और अधिक स्वाभिमानी तथा दृढ़ निश्चय स-
म्पन्न, उत्तम गुणी सन्तान का पिता और सन्तान के कारण वृद्धावस्था में सुखी और भाग्यशाली, राज्य और समाज में
मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, अनुरागलभिय, ईश्वर और धर्म की अपेक्षा कर्मयोग और पुरुषार्थ को अधिक महत्व देने वा-
ला, किन्तु वृद्धावस्था में ईश्वर में पूर्ण-निष्ठा युक्त, पितृ-सुख का अल्प भोगी तथा मातृ और पारिवारिक सुख सम्बन्धों में
भी कृति का अनुभव, यदाकदा मृत्पुत्रवर्ग प्राप्त करता, रक्तविकार और नेत्रज्योति में मृन्मूला गुह्य, मध्यमायु से
अधिक जीवन प्राप्त तथा सन्तान सुख भोग का भगवद्स्मरण जाता हुआ देह त्यागने वाला होगा।

(२६१)- ३२५ जन्माङ्क में जन्म लेने वाला जालक मध्यम कद, गोरवर्ण, उन्नत कलाट, शारीरिक शोध्य में पूर्ण, स्वाभिमानी और कटु-सत्यवादी तथा विवेकी, माला का अल्प सुख प्राप्त तथा पितृ-सुख भोगी और पितृ-भक्त, सा-
दसी एवं परिश्रमी, अत्यन्त मेधावी, विद्या और सन्तान सुखित पूर्ण, राज्य क्षेत्र में समुन्नत तथा राज्यवेतनोपजीवी
एवं उच्च पदासीन, कुल मर्यादा का पोषक तथा राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में मान प्रतिष्ठा प्राप्त, भाई-बहिन और
प्राणिक (पुत्र-सम्बन्धों में) युनता प्राप्त, विलक्षण-मेधा और प्रतिभा सम्पन्न, कर्मयोग के साथ भाग्य और ईश्वर
में भी आस्थावान् एवं धर्म का यथाार्थ पालक, सुन्दरी, सुशीला, धार्मिक स्त्रियाँ पति, किन्तु स्त्री के पूर्ण सुख में कुछ अ-
त्यन्त का अनुभव, उभावशाली व्यक्ति का धनी, रहन-सहन में दक्ष, मानसिक रूप से सामान्यतः अशान्त, प-
रिश्चमूलागृह-भूमिलामी किन्तु द्रव्यकोष-संग्रह में त्रुटि का अनुभव, शत्रुओं और विरोधपक्ष पर वाक्चातुर्य तथा
गुप्त रीति से सफल, चिन्तनशील और विचारक तथा सदृशास्त्रों का अध्ययन होगा।

(२६२)- ३२६ कुण्डली में जन्म ग्रहण करने वाला जालक दीर्घवृद्ध, उन्नत कलाट, गोरवर्ण, अत्यधिक स्वाभिमानी और
सादसी, नितान्त परिश्रमी और कुछ उग्र स्वभाव, दृढ़ एवं दृढ़ निश्चय युक्त, अनुशासन प्रिय, मार्ग-पिता का
पूर्ण सुख सहयोग प्राप्त सुख-भोगी एवं उनका भक्त, विद्या क्षेत्र में कुछ अवरोध युक्त सफल और राज्य तथा सामाजि-
क मान प्रतिष्ठा प्राप्त, राज्य क्षेत्र में उच्च पदासीन तथा राज्यवेतनोपजीवी, ईश्वर और धर्म में आस्थावान् एवं सामा-
न्य धर्म पालक, कर्मयोग और पुरुषार्थ को महत्त्व देने वाला, सत्य का उदासक और आदर्श स्वरूप, भाई-बहिन और
कोटिभक्त-सुख-सहयोगों में त्रुटि प्राप्त, सामान्य गृह-भूमिलामी, रक्त-विकार और नेत्रज्वरों में कुछ युनता प्राप्त,
सन्तान के कारण चिन्तितवान् किन्तु वृद्धावस्था में सन्तान के कारण भाग्यशाली, जीवन में अवरोध युक्त भाग्योन्नत,
रहन-सहन में दृढ़, स्त्री का पूर्ण सुख सहयोग प्राप्त किन्तु कुछ मतभेद युक्त, शत्रु-पक्ष पर उभावशाली व्यक्ति तथा
गुप्त-रीति से सफल, मध्यमायु प्राप्त, मानसिक रूप से अशान्त, उत्तम गुणों से युक्त होगा।

(३७३)- इस जन्म लग्न में जन्मा हुआ मानव गम्भीर प्रकृति, गम्भीर और गुप्त-योजनाओं का निर्माता, अनेक व्यक्तियों के साथ उपकार करने का भी विरोध प्राप्त, सुयश-हीन, दीर्घविपु, श्यामवर्ण, विलक्षण मेधावी और अत्यधिक साहसी, यदा कदा हर्षित प्राप्त अवसंध क्षेत्र में पूर्ण सफल तथा राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में समुल्लस और मान प्रतिष्ठा प्राप्त, मातृ-सुख सहयोग का भागी, पितृ-सुख में अल्प, अतीव पुरुषार्थी, गृह-भूमि-धन-धान्य-वस्त्र-वाहनादि सुख से पूर्ण, भाग्यशाली, उत्तम गुणयुक्त सन्तान प्राप्त तथा उसके कारण पूर्ण सुख एवं वृद्धावस्था में अधिक भाग्यवान्। भाई-बहिन और पौत्रों के सुख सम्बन्धों युक्त, विवेक एवं विद्या-सम्पन्न, स्त्री-सुख में सामान्य, प्रभावशाली व्यक्तित्व तथा बुद्धि योग से विरोध प्राप्त या सफल, यदा कदा मृत्यु तुल्य कष्ट प्राप्त करता, चिन्तनशील और विचारक, ईश्वर और धर्म के आस्थावान् किन्तु यथार्थ-धर्म का पालक, रहन-सहन में दक्षता के साथ कुछ कृपण प्रकृति, धन संग्रहको अधिक महत्व देकर सर्वथा धन संग्रहार्थ चिन्तित और मध्यमायु प्राप्त होगा।

(३७४)- इस जन्म-फल में उत्पन्न होने वाला मुख्य साहसी, आत्ममानी, विवेकी, दीर्घविपु, प्रभावशाली व्यक्तित्व तथा बुद्धि कोशल से विरोध प्राप्त पर सफलता प्राप्त, श्यामवर्ण, विद्या और बुद्धि सम्पन्न, भाई-बहिन और पौत्रों के सुख सहयोग प्राप्त, माता का पूर्ण सुख सहयोग भागी, पितृ-सुख में अल्पता प्राप्त, चिन्तनशील और विचारक, कर्म और पुरुषार्थ से सामान्य अवरोध युक्त सफल भाग्यवान्, राज्य क्षेत्र में समुल्लस, अनुशासनीय और कठोर, दक्षता से कार्य करने वाला, ईश्वर और धर्म में साधारण आस्था युक्त तथा यदा कदा धर्म कृत्या का सम्पादन, जीवन में कई बार मृत्यु तुल्य कष्ट भोगी, मध्यमायु प्राप्त, शारीरिक सौन्दर्य में भूट युक्त, गृह-भूमि-धन-धान्य-वस्त्र-सुख से पूर्ण, धन संग्रहार्थ निरन्तर प्रयत्नवान्, भाग्योन्नत, स्त्री-सुख में सामान्य, वृद्धावस्था में सन्तान के कारण अधिक भाग्यवान्, रोगोपरान्त शीघ्र ही स्वास्थ्य लाभ करने वाला, राज्य और सामाजिक मान प्रतिष्ठा सम्पन्न, बुद्धि और विवेक द्वारा अनेक कार्य में सफलता प्राप्त, रहन-सहन में दक्षता के साथ कुछ कृपणता युक्त, धनको अधिक महत्व देने वाला होगा।

(१७५)- इस जन्म-जन्म में उत्पन्न व्यक्ति दीर्घवयु, श्यामवर्ण, कुशकाय, उन्नत ललाटयुक्त, साहसी और स्वाभिमान, विवेकी, गम्भीरता से योजनाबद्ध कार्य करने में कुशल, चिन्तनशील और विचारक, सफल व्यवसायी, राज्य-क्षेत्र में कुछ बन्धनयुक्त, कठोर और अनुशासनप्रेम, माता के सुवि-सहयोग से समुन्नत, पितृसुख में न्यूनता प्राप्त, ठी और दृढीकरण सम्पन्न, उपकार करने वाला भी सर्वथा विरोधयुक्त, सम्भुविरोध के प्रभावशाली व्यक्ति तथा बुद्धि-योग से दबाने में सफल, उत्तम गुणी सन्तान का पिता और उसकी ओर विचिन्तित तथा प्रवृद्धावस्था में उसी के कारण अधिक सुख और भाग्यवान्, भार-बोझ और कोटि-बिम्ब जुल-सम्बन्धों में कुछ न्यूनतायुक्त, ईश्वर और धर्म की अपेक्षा पुरुषार्थ और कर्म को अधिक महत्व देने वाला तथा पि कभी कभी धर्मकृत्य का सम्पादक, मान-प्रतिष्ठा में सामान्य, साधारण गृह-भूमि और धनलाभयुक्त, सुन्दरी स्त्री का पति तथापि मतभेदयुक्त, यदा कदा रक्त वायुनिन्दारयुक्त मृत्यु, लुब्धक के हाथ का प्राप्त करता, मध्यमायुष्य सम्पन्न, द्रव्य कोष की वृद्धि में सतत-संलग्न, कभी गम्भीर हासि प्राप्त होगा।

(१७६)- इस जन्म-जन्म में उत्पन्न गृहण करने वाला पुरुष दीर्घवयु, कुशकाय, सामान्य वर्ण, ऊँचावृद्ध, उन्नत ललाट, स्वाभिमान और कठोर, साहस सम्पन्न तथा गम्भीरता से कार्य करने में पटु, छोपी, रहस्यमय और परस्त्री-पसंग में धनकाव्ययी, मूर्खोन्मिद और नभज्योति में विकारगस्त, पितृ-सुख-सहयोग से समुन्नत किन्तु पितृ-द्वेषी, माता का पूर्ण भक्त और प्रतिपालक, ईश्वर-धर्म-पुरुषार्थ में आ-आवाग-और कृत्य निष्ठ, राज्यवेतनोपजीवी अथवा राज्य-पंरु से अन्धा द्रव्य लाभ लेने वाला, भाग्योदय में अनेक बार विघ्नों का प्राप्त करता, भार-बोझ और परिवार का सुवि-सहयोग अनेक बार प्राप्त होने पर भी किसी को न मानने वाला कृतघ्नी, ठी और दृढीकरण, येन केन प्रकारेण धन से-गृह का धार्मिक-सिद्धि में लक्ष्मर तथा साधारण गृह-भूमि लाभ प्राप्त करता, श्याम सुन्दरी स्त्री का पति किन्तु उसका मंचक, अन्य स्त्रियों में रुग्णशील, बिया और सन्तान सुख में साधारण अथवा दलक पुत्र गृहण करता, मध्यमायुष्य सम्पन्न, यदा कदा गम्भीर दोषा होने वाला, वृद्धावस्था में अनेक बार अनेक प्रकार से कष्टों को भोगने वाला होगा।

(३६५) - इस जन्म में जन्मा हुआ बालक उत्तम गौरवर्ण, सामान्य-कद, दाढ़ सुन्दर, उन्नत ललाट, उ-
मात्रशाली, व्यासित तथा विलक्षण आदिमा ओ (उत्तम गौरव) से युक्त, साहसो-स्वाभिमानी, चतुर ओ (विनोदी, माता,
पिता का शुभ भक्त ओ (पुत्र-सुहृद् योग भागी, विद्या-पक्ष में शुभ समुत्तर, राज्य ओ (सामाजिक मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, पे-
तक धन द्वारा बुद्धि योग ओ (साहस से सफल बन सौधो, यदा-कदा गम्भीर दार्शनिक युक्त भाव्योन्नत, गृह-भूमि-धन-
धान्य-द्वय-कोष-भूय-वाहनगिद-सुखि से शुभ, विनोदी ओ (चंचल प्रकृति, ऐश्वर्यभक्त रहन-सहन में दक्ष, ईश्वर ओ
धर्म के प्रति उपासकान्, पराधकारी एवं दयालु, सुन्दरी, श्याम, पतिव्रता, किन्तु रोग-ग्रस्तान्ना लायति, यदा-कदा सुरासु-
न्दरी का भी उपभोग, मुनेन्द्रिय और वातरेलक्ष्माणी पीडा से ग्रस्त, भारि-बाहिन ओ (पारिवारिक पुत्र-सम्बन्धों से युक्त,
विरोधियों का विजेता, सन्तान के अधिक कन्याओं का पिता, मध्यमायु से अधिक जीवन प्राप्त, उदर रोग अथवा
विस्फोटक रोगों से मृत्यु (तुल्य कष्टों का प्राप्त कर्त्ता, सत्यवादी ओ (ब्रह्मावस्थामें पहुँचेंगे)।

(३६६) - इस जन्मा हुआ जन्म ग्रहण करने वाला बालक दीर्घवयु, कृश-शरीर, गौरवर्ण, साहसो ओ (अत्यधिक कष्टों
उपलब्ध, विद्या क्षेत्र में सामान्य, मातृ-मुल्ले में अल्प, पितृ-मुल्ले में अल्प, भारि-बाहिन ओ (पिता तथा पारिवारिक पुत्र-वि-
रोधी, उच्छ्वल ओ (उद्विग्न, पैतृक धन को सुरा-सुन्दरीयों में नष्ट करने वाला, स्वाभिमानी, रहन-सहन में चतुर ओ (धन
का भोग विलास में अधिक व्ययो, पुत्र पुत्र का पिता, सुन्दरी, गौरांगी, पतिव्रता स्त्री का पति, अनेक बार मृत्यु-तुल्य
कष्टों को भोगने वाला, पुरुषार्थ ओ (क्रियाशीलता से हीन, वाह्य-सम्बन्धों में न्यूनता प्राप्त, राज्य ओ (सामाजिक
मान-प्रतिष्ठा से हीन, कुसंगति में आसक्त, ईश्वर ओ (धर्म-कर्म का जानते हुए भी उनसे पराङ्मुख, शनैः शनैः गृह-
शान्ति और दय-संगत से हीन होने वाला, अत्यधिक रोग-ग्रस्त होने पर धन का चिन्तक ओ (अपने कष्टों या परचा-
लाप कर दुःखी होने वाला, अन्यायु प्राप्त, राज्य यस्मा रोग से निकलित होने में देह त्यागी, नीच ओ (अशान्त-चित्त,
कुरङ्ग, भाग्यहीन, मरणकाल में कुछ पुत्र स्मरण करने वाला, किन्तु पुत्राश्च न्य अवस्थामें देह त्यागी होगा।

(१६८)- इस कुण्डली में जन्म गृहण करने वाला व्यक्ति गौरवर्ण, सामान्य बदन, साधारण उग-स्वभाव, दोषों देही, चतुर और विवेकी, साहसी तथा स्वाभिमानी, उभावशाली व्यक्तित्व से पूर्ण, वाणी और बुद्धि में विलक्षण, वक्रचतुर एवं स्वाभाविक धारणा में प्रवीण, मातृ-सुर्य से वीर्य, पितृ-सूर्य से योग प्राप्त और धर्म-क्षेत्र में निवासों तथा पितृ-भक्त, मध्यमायु प्राप्त करने, सन्तान की ओर से चिन्तित, विद्यापक्ष में युक्तता का अनुभव तथा विद्वान् माना जाने वाला, मातृ-गोत्राश्रय, उद्यमशील तथा धर्म और ईश्वर में निष्ठा, भाग्यवादी, दृढ़ और निश्चित आय से युक्त, रहन-सहन में दक्ष और भोग-मिलासों में प्रवीण, सर्वत्र भ्रमण का व्यवसाय और जीविकोपार्जन में संलग्न तथा सफलता प्राप्त, विरोध पक्ष पर उभाव रूप से सफल, (सुरेश्वर युक्त, गृह-भूम्यादि का साधारण लाभ, अलीन में धर्म, द्रव्यकोष के संग्रह में सर्वथा उपलब्ध किन्तु साधारण से गरी, सुन्दरी, गौरांगी कृशकाय स्त्री का वर और उससे मतभेदी तथा नव्यक, अन्य विरोधों का बड़ा-बड़ा भोगी, भारि-वहित और परिवार के सुख-सम्बन्धों में साधारण होगा।

(१६९)- इस जन्म कुण्डली में जन्मा हुआ पुरुष अत्यधिक साहसी और स्वाभिमानी, उत्तम गुणों से सम्पन्न, गौरवर्ण, सुन्दर सुगठित, पुष्ट देही, चतुर और विवेकी, मातृ-पितृ-सुर्य का पूर्ण भोगी, स्त्री-पक्ष में विभागी योग प्राप्त करने और भाग्यवान्, अत्यन्त मुदल और उदारचेता, परोपकारी एवं दयालु, ईश्वर और धर्म में पूर्ण आस्थावान् तथा धर्मपालक, विरोध-पक्ष पर उभावशाली व्यक्तित्व तथा वाक्-कोश से सफलता प्राप्त, गम्भीर और शान्त तथा विनोदी स्वभाव, रहन-सहन में प्रवीण, उत्तम गुण युक्त सन्तान का पिता, किन्तु पथन पुत्र के वियोग से अशान्त और दुःखी, गृह-भूमि, धन-धान्यादि सुख से पूर्ण, द्रव्य-कोष का उत्तम लाभ देने वाला, व्यवसायक्षेत्र में सफल, पेटक-अथवा अन्य स्थान से प्राप्त धन और शारीरिक श्रम से उपार्जित धन द्वारा भाग्यवादी, उत्तम स्वास्थ्य सम्पन्न, राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में मान-प्राप्ति प्राप्त, विद्यापक्ष में पूर्ण और समुन्नत, भारि-वहित तथा पारिवारिक-सुख-सहयोगों में मधुर, मध्यमायु से अधिक जीवन प्राप्त करने वाला, सत्य और न्यायपूर्ण वाक्यों का उद्घोषक, चिन्तनशील और विचारक तथा सहयोग देने वाला होगा।

(६८१)- इस जन्म में जन्म लेने वाला बालक गौरवर्ण, पुष्ट देही, सामान्यकद, उमावशानी व्यासित्व का धर्मी, साहसी एवं स्वाभिमानी, चतुर और विवेकी तथा सर्वथा स्वार्थ-सिद्धि में लक्ष्य, कुछ उग्र तथा विनोदी, मधुर-वाक्यों द्वारा स्वकाम करने में प्रवीण, पिता का सुख-सहयोग भागी, मातृ-सुख में न्यूनता का अनुभव, सुन्दर व्यास से मुक्त, कभी-कभी रक्त और वायु-विकार करोगी, यदाकदा अधिक अनरोगों के अनन्तर भाग्योन्नत, धार्मिक और कोट्टीम्बक सुख-सहयोग ले हीन, राज्यसे केवल मुक्त तथा राज्यवर्तनापजीवी, विरोध-पक्षधर अर्थात् प्रमावशानी व्यासित्व एवं साहस से विजयो, सुन्दरी, सुशीला, धार्मिका स्त्री का पति और उसके सुख-सहयोग का भोगी, प्रतीकार मानता से संयुक्त, साधारण गृह-अभिलाष प्राप्त करती, विद्याक्षेत्र में कुछ अनरोगों के साथ सफल, ऐश्वर्य से रहित-सहस्रके लिये प्रयत्नशील, मध्यमायु प्राप्त, यदाकदा मृत्पु-तुल्य कष्ट का भोग, धनसंग्रहार्थ सर्वथा चेष्टितवान् किन्तु द्रव्यकोष हीन, धीरश्रम और बुद्धि-विवेक से कई कार्य में सफलता प्राप्त, सन्तान की ओर से विधिवन्त होगा।

(६८२)- इस जन्म में जन्म ग्रहण करने वाला बालक उन्नतकद एवं उन्नत ललाट, दीर्घ देही, सामान्यतः पुष्ट और गौरवर्ण, अनुशासन-प्रिय, उल्लेखिक साहसी एवं स्वाभिमानी, प्रत्येक कार्य करने को प्रयत्न, धार्मिक और पीड़ा के सुख-सम्बन्धों से निरान्त हीन, रक्तपित्त-विकार करोगी, सुन्दर मेधावी तथा विलक्षण प्रतिभा युक्त, भाग्योन्नति हेतु सर्वथा चेष्टित किन्तु अनरोगों के साथ सफल, सुन्दरी सुशीला श्यामा स्त्री का पति और उसके सहयोग से समुन्नत किन्तु उसका मतभेदी, धीरश्रम और साहस विवेक से स्वकार्य में सफलता प्राप्त, राज्य और साम्राज्य के क्षेत्रों में मान-प्रतिष्ठा में न्यूनता का अनुभव, उद्यम और उत्साही, पितृ-धन और पितृ-सुख सहयोग का भागी तथा पितृ-भक्त, मातृ-सुख में हित, विद्यापक्ष में कुछ विवेका के साथ सफलता प्राप्त, सन्तान की ओर से विधिवन्त, ईश्वर और धर्म में निष्ठावान् तथा धर्मपालक और भाग्यवादी, दृढी एवं दृढनिश्चयो, मध्यमायु प्राप्त, जीवन में दो बार मृत्पु-तुल्य कष्ट पानेवाला, गृह-अभिलाष सामान्य लाभ, द्रव्य-कोष के संग्रह में न्यूनता का अनुभव होगा।

(२८३) - इस जुनून में जन्मा हुआ व्यक्ति मध्यमकर, (दुष्ट-देही, गोलार्ध, साहसि और स्वाभि मानी, उन्नत ललाट, अनुशासन-प्रिय, मिलक्षण प्रतिभायुक्त चतुर और विवेकी, आदर्शवाक्यों की स्थापना में प्रवृत्त, भोगैश्वर्य और रहन-सहन में दक्ष, भाव-वर्धन और पारिवारिक (सुख-सहयोग सम्बन्धों में सामान्य, पितृ-कृपा से पूर्ण समुन्नत और पितृ-सुख-सहयोग का भासा, किन्तु मातृ-सुख में अभाव पानेवाला, पितृ-भक्त और पितृ-क्षेत्र निवासि, द्विभाषी योग श्रेष्ठ का गृहस्थ (सुख का भासा), विधाक्षेत्र में पूर्ण तथा सन्तान का उत्तम सुख प्राप्तकर्ता, अतीव मेधावी, सत्ता-हित और संगीत काव्यादि प्रेमी, ईश्वर और धर्म में आस्थावान् और धर्म-पालक, मध्यायुषाया, वातरूलेक्ष्म रोगी, व-विश्वमशोक और उत्साही किन्तु, द्रव्य-कोष संग्रह में युनता का अनुभव, भाग्योदय में विध्वंस का अनुभव, परोपकारी और दयालु होने से द्रव्य-विक्रयक होकर प्राप्त, विरोध-पक्ष पर नाक चतुर्य से प्रभावित, गृहभूमि लाभ में सामान्य, राज्य एवं सामाजिक क्षेत्रों में मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, द्रव्य के कारण अपने को आन्तरीक दुःख अनुभव करनेवाला होगा।

(२८४) - इस कुण्डली-चक्र में उत्पन्न होने वाला पुरुष अतीव मेधावी और साहसी तथा विवेकी, स्वकार्य-साधन में चतुर, गोलार्ध, संगीत-साहित्य काव्य-प्रतिभादि प्रेमी, कदापि आदर्श तथा आदर्शवाक्य-स्थापना में प्रवृत्त, सुन्दरी सुशोभास्त्री का वीर और उत्तम वचन तथा भोग-विलासादि में प्रवृत्त और अनेक हितियों का भासा, ईश्वर और धर्म में आस्थावान्, भोग-विलास में धन का अधिक व्यय, पितृ-कृपा-गृहादि का सामान्य लाभ, भाग्योदय में अनेक बार विध्वंस पाने वाला, पितृ-सुख-सहयोग का भागी और पितृ-भक्त तथा पितृ-क्षेत्र निवासि, मातृ-सुख में युनता का अनुभव, वीरधर्म और उत्साही, धन-संग्रहार्थ निरन्तर तत्पर, तथापि द्रव्य-कोष संग्रह में अभाव पानेवाला, विविध-पक्ष पर प्रभावशाली व्यक्ति तथा बुद्धि-कौशल से विजयी, विद्या में पूर्ण और उत्तम समुन्नत तथा विद्या-बुद्धि द्वारा बुद्धि-द्रव्य प्राप्त करनेवाला, मध्यायुष्य प्राप्त, सन्तान के द्वारा वृद्धान्तर्भा में सुख और भाग्यशाली माना जायेगा, परोपकारी और दयालु, कृदान्तर्भा में उत्तम कर्मों का सम्पादन तथा उत्तम स्थान में देहत्याग करने वाला होगा।

(१८२)- इस जन्मादु में जन्म गृहण करने वाला मानने उक्त ललाट, गौरवर्ण, शारीरिक सौन्दर्य में साधारण और
 सुख, दाम विद्वान् और विवेकी तथा चतुर एवं साहस, उन्नत कद, स्वाभिमान की किन्तु विद्या-पक्ष में आन्तरिक न्यून-
 ताका अनुभव, सन्तान सुख किन्तु सन्तान सुख से सर्वथा हीन, धनसंग्रहार्थ निरन्तर प्रोद्युक्त और सामान्य पैतृक धन
 के साथ गृह-भूमि इत्येको का उत्तम लाभ प्राप्त होने पर भी आन्तरिक न्यूनता का अनुभव, राज्य और सामाजिक
 क्षेत्रों में मान-प्रतिष्ठा सम्यक्त, मर्यादकारी और दयालु, ईश्वर तथा धर्म में पूर्ण विश्वास, बालशैल्य तथा नेत्र-ज्योति
 में न्यूनता प्राप्त, परिश्रम और विवेक बल से अच्छा दैव्योपाजक और भोग्योन्नत तथा उत्तम कार्य और धर्मपालक,
 सत्साहित्य का उच्चारक और अध्येता मनस्वी, ऐश्वर्य युक्त रहनसहन में दक्ष, पौर्वाहिक भाई-बहिन से पृथक्त्व
 गृहण करने वाला, परिव्राजक स्थिति में राज्ययोग करने वाला, सुन्दरी-पुत्रशाला और पतिव्रता, धार्मिका स्त्री का पति
 तथा उसके पुत्र-सहयोग का भोक्ता, अशिमजन्म को सुधारने वाला, उददेष्टा तथा उत्तम स्मृतिके साथ देह त्यागी हो।
 (१८३)- इस कुण्डली-चक्र में उत्पत्ति गृहण करने वाला मुख्य मध्यम कद, मध्यम वर्ण, उन्नत ललाट, धर्मभीरु और
 पिता का पूर्ण सुख भोक्ता, मातृ सुख में त्वल्य, सुन्दरी किन्तु छोटी और रोगिणी स्त्री का पति, अन्य अनेक
 पत्नियों में रमणशील, ऊँचा से आदर्श दियाई देने वाला, परिश्रम और उत्साही, भोग-विन्नास तथा ऐश्वर्य युक्त
 रहनसहन में दक्ष तथा धनका व्ययो, विद्या क्षेत्र में पट, किन्तु आन्तरिक न्यूनता गृह, सन्तान सुख से हीन अथवा दलक
 पुत्र का पिता, विरोध पक्ष या वाक्-चातुर्य और बुद्धि को शक्त से विजयो, भाई-बहिन और पारिवारिक-पुत्र-सहयोग
 का भागी, आपत्ति-कारण में अपौर और मानसिक अशान्त, परिश्रम और साहस से अनेक कर्मों में सफल तथा भा-
 ग्योन्नत, गृह-भूमि का उत्तम लाभ प्राप्त कर्ता, इत्येको संग्रह में न्यूनता का अनुभव, ईश्वर और धर्म में आस्था-
 युक्त और धर्म-पालक, दीर्घायु प्राप्त कर्ता, कभी-कभी हिंसा की भावना से युक्त होने पर भी अहिंसक, सुरे-
 श्वरमयुक्त होने पर भी नृपति का अनुभव, नेत्र-ज्योति तथा रक्तनायु धिकार से घेरित रहने वाला होगा।

(३८६)- इस जन्म लक्ष्मण से जन्मा हुआ जातक मध्यमकद, गोवर्ण, उन्नत ललाट, पुष्ट ओं गीठ देदी, अत्यधिक स्वाभिमान, साहस-चतुर-विवेकी, विलक्षण प्रतिभायुक्त मंगल, उभावशाली व्यक्तित्वका धनी, चिन्तनशील ओं विचारक, भोगेच्छा ओं विलासी जीवन व्यतीत करने में प्रवीण, सफल परिश्रम ओं व्यवसाय तथा परिश्रम ओं साहस से भाग्योन्नाति करी, नैकज्योति अथवा मुनेन्द्रिय में विकार प्राप्त करी किन्तु मानसिक रूप से अशान्त, भारिबोधन ओं पारीवारिक तथा पितृ-सुख-सहयोग का भोगी, माता का उल्लूक-सुख प्राप्त करी अथवा व्यभिचारीणी माताका पुत्र, ईश्वर ओं धर्म में पूर्ण निष्ठा तथा धर्मपालक, पितृसे मर भेद होते हुए भी पितृभक्त, विद्याक्षेत्र में समुन्नत तथा उत्तम गुणी सन्तान का पितृ किन्तु सन्तानकी ओं से चिन्तित, राज्य ओं सामाजिक क्षेत्रों में मान प्रीति प्राप्त, सुन्दरी कोया अथवा सुगुण स्त्री का पति ओं उसके सहयोग का भोगी, उत्तम कार्य का सम्पादक, गुणग्राही, मधुरभाषी, गृह-भूमि कामयुक्त तथा धि दृष्ट्यक्ष से गृह में सुनता का अनुभव, दीर्घायु होगा।

(३८७)- इस जन्म लक्ष्मण से जन्म लेने वाला जातक दीर्घायु, गोवर्ण, उन्नत ललाट, उभावशाली व्यक्तित्व से ओतप्रोत, साहस ओं स्वाभिमान, विद्याक्षेत्र में पूर्ण तथा अनेक विद्याओं में पट-प्रवीण, सत्संग और सत्साधकों को अधिक महत्व देने वाला धार्मिक ज्ञान करने ज्योतिषी एवं अनेक ग्रन्थों का पठेगा, गुणग्राही ओं विद्वानों को आदर देने वाला, धर्मकर्म ओं ईश्वर में आस्थावान् तथा धर्मपालक, उत्तम कार्य का सम्पादक, दीर्घायु प्राप्त, उत्तम स्थान में देहयागी, भ्रमणशील, मातापितृ का श्रमभक्त किन्तु मातृ सुख में कुछ न्यूनता का अनुभव, राज्य ओं सामाजिक क्षेत्रों में प्रीति-सम्पन्न, परोपार्थ धन-संग्रही ओं गृह-भूमि तथा दृढ आय से समुन्नत तथा अच्छा भाग्यशाली, सन्तान सुख से पूर्ण तथा धि सन्तान की ओं से यदाकदा चिन्तित, दीर्घायु प्राप्त में वायुविकार अथवा पित्तापाह से पीडा पाने वाला अथवा वादनादि चोट से भयगस्त, चिन्तनशील ओं विचारक, धर्म तथा ईश्वर ओं लोकपाल को अधिक महत्व प्रदान करने वाला, विनय सम्पन्न, अनायास ही देहत्याग करने वाला होगा।

१८८- इस जन्मादुः में जन्म लेनेवाला जातक दीर्घायु, गोचरण, स्वाभिमान और विवेकी, नेत्रज्योति में विकारा जाते
वाला, साहसी और चतुर, विनोदी किन्तु गम्भीर, परायकारी और दयालु, विद्या क्षेत्र में पूर्ण होवे इस भी आन्तरिक-
फल का अनुभव, सत्संग और सत्शास्त्रों का प्रेम, संगीत-साहित्य ज्योतिष तथा अनेक विद्याओं में प्रवीण, धर्म-
शास्त्र और ईश्वर के प्रति निष्ठावान् और धर्मपालक, माता-पिताओं का स्तुति का भक्त, पितृ-सुख भागी और पितृ-क्षेत्र निवास
में किन्तु मातृ-सुख में अल्प, धार्मिक-सामाजिक-राज्य क्षेत्रों में मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, भोगेश्वर्यमय रहने-सहने में दक्ष, धन-
संग्रह में अभाव का अनुभव, विलक्षण जीहों और मेधा तथा उभावशोल व्यक्तित्व सम्पन्न, सामान्यवाम विकारग्रस्त, दीर्घ-
युध्य सम्पन्न, उत्तम कौशलों का सम्पादन, भाग्योन्नीत में भूयःशस्त, विरोधियों का सर्वथा विजेता, गुणग्राही और गुणियों
का सम्मानकर्ता, (सुन्दरी, सुशोभा, धार्मिक, प्रियदायण स्त्री का प्रेम, देश-उद्देश में निवृत्त, सन्तान की ओर से निवृत्त,
गृहभूमि तथा दृढ़ आय से सम्पन्न, परायकारी एवं दयालु, उदारमना, आशीर्वाक में भगवदाश्रय ग्रहण करनेवाला होगा।

१८९- इस जन्म कुण्डली में जन्मादुः आनालक मध्यमकद, कुशकाय, उन्नत-ललाट, स्वाभिमान और साहसी, भोगे-
श्वर्यमय रहने-सहने में प्रवीण, भावुक एवं कोटि का विरोधग्राही, धैर्य-धन और साहस तथा पौरुष में भाग्योन्नीत,
सन्तानमय किन्तु सन्तान की ओर से निवृत्त, भोगेश्वर्य तथा उपकार और धार्मिक कृत्यों में धन का व्यय एवं द्रव्य का प्र-
योग में भूयःशस्त, धर्म-चतुर और मेधावी, मनोवा तथा सत्शास्त्रों का अध्यापक, उदारमना और दयालु एवं परायकारी
तथापि गृहभूमि लाभ से मुक्त और दृढ़ तथा निश्चित आय सम्पन्न, मातृ-सुख में अल्प और पिता का पूर्ण सुख (सहयोग)
प्राप्त नाम तथा नेत्र-विकाराशस्त, दीर्घायु प्राप्त करती, उत्तम कौशलों का सम्पादन, यदाकदा मृत्यु-तुल्य कष्ट होनेवाला,
उत्तम स्वास्थ्य सम्पन्न, देश-उद्देश-राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, गुणी और अनेक विद्याविद, ईश्व-
र तथा धर्म के प्रति निष्ठा तथा यथाशक्त धर्मपालक, सत्शास्त्रों का विचारक और प्रचारक, पितृ-क्षेत्र निवास, संगीत-सा-
हित्य-ज्योतिषादि में वद, स्ववाक्य-स्थापना में प्रवीण, कभी-कभी आमदनी के विषये निवृत्त, पतिव्रता स्त्री का प्रीतिग्राही

(३१४) इस जन्माङ्ग में जन्म लेने वाला जालक दीर्घविपु, कुशकाय, श्यामवर्ण, उन्नत-कलाट, स्वाभिमानी ओर कोषी, शारीरिक-सौन्दर्य में कुछ उद्विग्न, गम्भीर ओर उग्र योजनो ओर के निर्माण में पट, सर्वथा स्वार्थ-विद्धि में लक्ष्य, दीर्घायुष्य प्राप्त, सुशीला - धार्मिका - परिग्रहा - श्यामा किन्तु राशिणी - सरला स्त्री का घोर ओर उग्र सख सहायोग प्राप्त, विद्या-क्षेत्र में कुछ-युगलाका उग्र भवी, पुत्र-सुख प्राप्त तथा दिव्य की ओर से चिन्तित, सामान्य गृह-भूमि ओर द्रव्य कोकयुक्त, मातृ-सुख में अल्प ओर पिता से मतभेद युक्त तथा दिव्य पिताका प्रबोधक, ऐश्वर्य-सम जीवन के रहन-सहन में दृष्ट, नेत्र-ज्योति तथा मुनिन्द्रिय में विकार गत, भाई-बहन ओर पारिवारिक-सुख-सम्बन्धों में पूर्ण, राज्यवैतनोपजीवी ओर राज्य से न में समुन्नत तथा मान-प्रतिष्ठा प्राप्त तथा धन का अधिक व्यय कुछ कृपण प्रकृति, यदाकदा गृहस्थ संभालता है द्रव्य उग्रमान का अनुभव, पुरुष-मावदाली व्यक्तित्व एवं कुटुम्ब को राल से विरोध प्रकट पा सफलता युक्त, भाग्योन्मति में बार-बार विघ्न प्राप्त करता, ईश्वर ओर धर्म में निष्ठावान् होगा।

(३१५) इस जन्माङ्ग में जन्म गृहण करने वाला जालक कुछ श्यामवर्ण, दीर्घविपु, कुशकाय, विलक्षण परिभा सम्पन्न, स्वाभिमानी, उदर ओर विवेकी, माता-पिताका पूर्ण सुख सहयोग प्राप्त तथा समुन्नत किन्तु उनसे सर्वथा मतभेदी, नाक-पट, दास-धार्मिक ओर ईश्वर तथा धर्म में आस्थावान्, उन्नत कलाट, कुछ स्वाभिमानी तथा कोषी, भोग-बिलास ओर ऐश्वर्ययुक्त रहन-सहन में प्रवीण, सुन्दरी गौयर्था - सरला - धार्मिका स्त्री का घोर ओर उग्र सख सहायोग का भोगी, सुरापायी, प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी ओर विरोध-प्रकट पा नक-चातुर्य से सफल, पुत्र-सुख तथा दिव्य की ओर से चिन्तित, अनुशासन-प्रिय ओर अधिक कामो, विद्या-क्षेत्र में पूर्ण ओर राज्यवैतनोपजीवी उग्र-व्यवदासिन एवं राज्य ओर सामाजिक क्षेत्रों में मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, गृह-भूमि-मूल्य-बाह्य तथा द्रव्य कोक से पूर्ण तथा दिव्य भाग्योन्मति में कई बार विघ्न को पानेवाला, भाई-बहनों के सुख-सम्बन्धों में युक्त किन्तु पारिवारिक-सुख सहयोग से वञ्चित, यदाकदा धर्म-शान्ति में आलस्य युक्त, नेत्र ओर उदर रोग से पीड़ित, दीर्घ-जीवन प्राप्त होगा।

३८३) ३८ जन्म चक्र में जन्मा हुआ व्यक्ति उभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, सुन्दर गोवर्ण, सामान्य कद, पुष्ट-दृष्टि, उन्नत-ललाट, स्वाभिमान, क्रोधी-सत्यवादी, न्याय-प्रेमी, मातृ-सुख में अन्य अधवादीन, विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न, परोपकारी ओ। दयालु, विद्या-क्षेत्र में पूर्ण तथा प्रवीण ओ। उत्तम सुशिक्षित गृणी पुत्रों का पिता, ओ। उनसे पूर्ण सुख प्राप्त, पिता का पूर्ण सुख-सहयोग भोगी ओ। पितृ-भक्त, राज्य तथा सामाजिक क्षेत्रों में समुन्नत तथा मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, गृह-भूमि का सामान्य लाभ देनेवाला, ऐश्वर्यमय जीवन की रहस्य-सहन में दृढ़ ओ। तत्सम्बन्ध में धन का अधिक व्यय, दृष्टि ओ। इह निश्चय, उत्तम पुत्रों तथा स्त्रियाँ स्थापना में प्रवीण, भाग्यवान् किन्तु दुष्ट-संगों से मुक्ति का अनुभव, भाई-बहिन के सुख-सम्बन्धों युक्त, विनोदियों का प्रबल-दमनकारी, ईश्वर ओ। धर्म में पूर्ण आस्थावान्, सुन्दरी स्त्रियाँ सरल। स्त्री का प्रति किन्तु उसका धर्म के ओ। अन्य अनेक स्त्रियों में रमणार्हता। राज्य-पक्ष में कुछ मुक्ति युक्त, परिश्रम से भाग्योन्नीत करने वाला होगा।

३८४) ३९ जन्म चक्र में जन्म लेने वाला पुरुष सामान्य कद, दाम्बुन्दर, तेजस्वी, गोवर्ण, स्वाभिमान ओ। उग्र, वाम-चतुर ओ। विवेकी, मातृ-निपटा का पूर्ण सुख प्राप्त ओ। उनका भक्त तथा सेवामोदी, अत्यन्त धार्मिक ओ। पश्चिम-संस्कारों का उपासक, पतशास्त्र ओ। सत्संग का सेवन करनेवाला, ईश्वर ओ। लोक-परलाक का चिन्तक, उत्तम धर्मकीर्तियों का सम्पादक, स्त्रियाँ स्थापना में प्रवीण, सत्य ओ। न्याय-प्रेमी, विद्या ओ। सन्तान सुख में पूर्ण, पौत्र पुत्रों का पिता, गृहस्थसत्त्व होते दुर्भी-गृहस्थ की ओ। से जय-उदासित, भाग्यशाली, स्वपरिश्रम तथा वेतु ओ। बन्धु-बान्धवों के सुख-सहयोग से सम्बन्ध भाग्योन्नत, रहस्य-सहन में प्रवीण, गो-ब्राह्मण, द्विज-देव भक्त, उदारमन, उभावशाली व्यक्तित्व से विरोध-पक्ष का विजयी, गृह-भूमि-धन-धान्य-भूत-वाहनार्थ सुख में पूर्ण, दुष्टों का संग-वर्धन निरन्तर प्रयत्नवान् तथा धन-संग्रह में कुछ मुक्ति का अनुभव, गम्भीर योजनाओं द्वारा अनेक कष्टों में शनैः शनैः सफल, दीर्घायु युक्त, स्त्री-सुख प्राप्त, उत्तम कर्तियों द्वारा उत्तम स्थान व समय में देहत्यागी मोक्षार्थी होगा।

क०
र०

(२८५)- इस जन्म-काल में उत्पन्न होने वाला मनुष्य सुन्दर, गौरवर्ण, दीर्घदेही, कुशाभ्याय, उन्नत ललाट, स्वा-
भिमानी और लक्ष्मी उग्र, साहसी, किन्तु आत्मबल से हीन, ठीक और इतना श्रेष्ठ, ईश्वर और धर्म की मानने वाला
किन्तु पापपात्र से हीन, योग्यता, काम और भोग-विलास में दक्ष तथा धन का अधिक न्ययो, ऐश्वर्य युक्त रहने-पहने में
दक्ष, आर्थात् और उग्र-एक काल में सहज ही अधीर, स्त्री-सुख से हीन, किन्तु अन्य स्त्रियों में रमण-रुची, विवाह
ता स्त्री से मत्त-भेद युक्त, विद्या-रस में प्रवृत्त और दक्ष तथा सन्तान-सुख प्राप्ति, मातृ-सुख से हीन अथवा अन्य सुख
भोगी, धन-सुख का भोगी और उसी से समुन्नत तथापि पिता से मत्त-भेदी और बाद में पिता का प्रशंसक, मद्य-मादु
प्राप्तकर्ता, संगीत-काव्य-ज्योतिष का प्रेमी। भाई-बहिन और पारिवारिक सुख सहयोगों से वंचित, धन-संग्रहार्थ नि-
रन्तर चरित-तथापि बार-बार लपक-थक भाग्योन्नत, दीरघ-मौ और उत्साही, राज्य-वसनाय जीवित तथा राज्य-क्षेत्र में
मान-प्राप्त ६३१ युद्ध, नैत्र-ज्योतिष तथा रक्त-विचार गहरत, वृद्धावस्था में अपने कृत्यों का पर्याप्तानुभव करने वाला और दुःखि-होना

(२६६)- ३२५ जन्म-वक्र में (उल्लोचन) का सा मानव जीवन, उत्तर ललाट, सामान्य कद, (दृष्ट-देही, संगीत साहस्य - ज्योतिष और संस्कृत का प्रेम, साहसा और चरित्र, मधुर भाषी तथा सत्यश्रुति और स्वाभिमान, विद्याक्षेत्र में पूर्ण तथा अनेक विषयों का ज्ञानकार, अत्यन्त मर्म मारा तथा का सुख और सन्तोष देने वाला, विरोध दक्ष दावाक-चातुर्य और प्रभावशाली व्यक्ति से समुक्त, गृह-भूमि लाभ में सामान्य, पराधनारी और दयालु, इव्यसंग्रहाध्य प्रयत्नशील, किन्तु गृह का अनुभव, रेशम और भाग-बिलासादि में धन का अधिक व्यय, जो सुख से नितान्त हीन किन्तु उन्मत्त में समानता, सुरा-सुन्दरी का प्रेम और उसी के कारण रोग-ग्रस्त, विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न, सन्तान सुखार्थ चिन्तित, ईश्वर और धर्म में आस्थावान् किन्तु धर्म-पालन से हीन, भाई-बहन और पारिवर्गिक सुख-सहयोगी सिवाजित, राज्यक्षेत्र में समुक्त, दीरघमा और उल्लासी तथा राज्य-वतनोदयजीवी एवं राज्य-पक्ष में मात्र प्रविष्टा मुक्त, भाग्यदक में अनेक बार विपन्न जायाकृती, अत्यायु से कुछ अधिक जीवन देने वाला होगा।

म.
स.
४३३

कु.
२०

(२६७)- इस जन्म कुण्डली में जन्म लेने वाला जातक उत्तम गौवर्ण, दुष्ट देही, सामान्य कद, उन्नत ललाट, सा-
हस्य और स्वाभिमान, दृढ़ और दृढीकृत चित्त, पराधन्य और दयालु, भोगेश्वर और विलासी, मृदुल तथा उदार चेतना,
विनोदोपय और उन्मोदप्रमोद का अधिक महत्त्व प्रदान करने वाला, विलक्षण प्रतिभा एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व का
धनी, यामिविवेकी, शान्त-धीर-गम्भीर तथा बान्ध-चातुर्य से सभी वा प्रभावित, विद्याक्षेत्र में कुटिल युद्ध होते हुए भी अ-
नेक विद्याओं में पराजय प्राप्त, माता-पिता और भारि-वर्द्धन का प्रिय और उनके सुख-सुखयोग का भागी किन्तु पारिवारिक
क्लेशों का प्रयास, भाग्योन्मत्त में विपन्न पाले हुए भी भाग्यवान्, राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में सम्मिलित एवं मानप्रतिष्ठास-
म्पन्न, सदैव उत्साह पूर्वक उत्तम कार्य का सम्पादन तथा सभी का प्रशंसापत्र, सुन्दरी-शिक्षिता गौरांगी-परिमुखा का
पति, गृह-भूमि और द्रव्यकोष संग्रह में वयोप्राप्तता, भ्रमणशाल, उच्चकोटि कान्याय वेत्ता, इश्वर और धर्म में पूर्ण आ-
स्था सम्पन्न तथा धर्म-पालन में कुछ आलस्य, मध्यमायु में अधिक जीवन प्राप्त करने वाला एवं सन्तान की ओर से चिन्तित।
(२६८)- इस कुण्डली चक्र में जन्म ग्रहण करने वाला बालक शारीरिक-सौन्दर्य में कुछ कुटिल युद्ध गौवर्ण, सामान्य कद,
कुत्राकाय, साहस्य और स्वाभिमान, यदा-कदा गृहस्थ संचालनार्थ आदि में कुटिल का अनुभव, चतुर और विवेकी, स्वा-
धीनचित्त में तपस्वर, द्रव्यकोष संग्रह सर्वथा प्रयत्नवान् और वयोप्राप्त धनी, विद्याक्षेत्र में पूर्णतया युद्ध और उसी से भाग्य-
दय प्राप्त, इश्वर और धर्म में पूर्ण आस्थावान्, परशोत्र का प्रमी, उत्तम पुनस्त, मातृ-स्थान से वंचित अथवा अल्पतयायुक्त,
पितृ-सुख का भोगी, गृह-भूमि लाभ से युक्त, भ्रमणशाल भूमि से भाग्योन्मत्त, उत्साही और प्रीतिमय, भारि-वर्द्धन के सुख-
सुखयोग का भागी किन्तु पारिवारिक क्लेशा युक्त, स्त्री-सुख से वञ्चित तथा अनेक भोगेश्वर प्राप्त, सन्तान अथवा नादस-
िधि सुख से पूर्ण, विरोध-यत्न वा सर्वथा सफल, उदारमना, किन्तु कृपणता युक्त, उत्तम कार्य का सम्पादन, सर्वत्र लय-
श और मानप्रतिष्ठा सम्पन्न, गौवर्णजात, यती अथवा सफल-चिकित्सक, चिन्तनशाल और विचारक, कुछ गृहस्थ
भोगों से उदासिन, परिश्रम द्वारा भाग्योदय प्राप्त करेगा, मध्यायु में अधिक जीवन प्राप्त करने वाला होगा।

(२६६) ३५ जन्मों में जन्म ग्रहण करनेवाला व्यक्ति मध्यम-कद, गोलवर्ण, सामान्य देही, उन्नत ललाट, विनोदी, साहसी और चतुर, विवेक-सम्पन्न, विद्याक्षेत्र में पूर्णतः उदा तथा संगीत-मंत्रशास्त्र-ज्योतिष-काव्य साहित्य आदि अनेक विद्याओं में दारुणत, ईश्वर और धर्म में पूर्ण आस्थावान् तथा विद्वान्। उसमें कौशिकी सम्पादक एवं धर्मपालक, गोप्यालय-निर्वाहक, माता-पिता और भारी-कादिक के सुख-सम्बन्धों में पूर्ण तथा माता-पिता का भक्त और उनका प्रतिपालक प्रशंसक, परोपकारी और दयालु, भोगेश्वर तथा सन्तान-सुख प्राप्त, पयोप्ता ग्रह-भूमि-लाम तथा द्रव्य-लाम युक्त। सर्वत्र मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, परिश्रम और साहस से भाग्योदय प्राप्त करता, पारिवारिक जीवन में कुछ भूट युक्त, प्रभावशाली व्यक्तित्व तथा प्रतिष्ठाशालि से विरोध-पक्ष वा सबल, बुद्धिमान्-आम सन्तान से उसमें सुख पाते बाला, यदाकदा द्रव्य-लामार्थ चिन्तित, पितृक्षेत्र-निवासी, उसमें शासक तथा तीर्थक्षेत्र में स्थायी निवास करते बाला, वाके-चातुर्य में प्रभावशाली, उत्तम प्रवृत्ता, स्त्री की ओर से कुछ उदासीनता युक्त, दीर्घायु प्राप्त और उदर-विकार ग्रस्त होगा।

(३००) ३५ जन्म लगने में जन्म लेने वाला पुरुष दीर्घवयु, कृशकाय, गोलवर्ण, उन्नत ललाट, स्वाभिमानी और चतुर, विद्याक्षेत्र में पूर्णतः साथ-काव्य-संगीत-मंत्रशास्त्र-तंत्र-ज्योतिष आदि अनेक विद्याओं और चित्रकला में प्रवीण, विद्वान्, सर्वत्र मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, द्रव्यकोष और ग्रह-भूमि-लाम में प्रवीण, तथापि असन्तोष का अनुभवा, परिश्रम और साहसशालि से भाग्योदयी, ईश्वर और धर्म में पूर्ण निष्ठा तथा धर्मपालक, उसमें शासक युक्त केन्द्रस्थान में पितृक्षेत्र का स्थायी निवासी, स्त्री-सुख में कुछ उदासीन, सन्तान-सुख प्राप्त, यदाकदा द्रव्य-लामार्थ चिन्तित, दीर्घायु शान्त तथा गुप्त रहति और योजनाओं द्वारा (वकायक्षेत्र में) कुशल, मातृ-सुख सहयोग से समुन्नत, पितृ-सुख सहयोग से अल्पलाभ, भारी-कादिक और पारिवारिकों से कुछ भूट युक्त सम्बन्ध प्राप्तकर्ता, अन्यभुक्ता स्त्री का प्रति, अपयशस्वी पितृ-लान्ता नन्दा, अपने पक्ष का अग्रसर, सर्वगुणाः काञ्चनमाश्रिता का आश्रय लेने वाला, तंत्र-ज्योतिष और बतुल-लक्ष्मीविकाशक, प्रभावशाली व्यक्तित्व और द्रव्य-बाके से विरोधका निजोता, दीर्घायु सम्पन्न होगा।

(३०१)- इस कुण्डली में उत्पन्न हुआ मनुष्य स्वाभिमानी और चतुर, साहसी तथा विवर्की, स्वभाव से कुछ उग्र तथा स-
हज ही शान्त, धीर-वीर-गम्भीर और तेजस्वी, विलक्षण उल्लेख सम्पन्न एवं उभाव शाली व्यक्ति से ओतप्रोत,
दीर्घबुध, पुष्टदेही, उन्नत कलाट और उत्तम गौण बुद्धि सुन्दरता प्राप्त, भोगेश्वर और विलासी तथा रहन-सहन में
प्रवीण, स्वभाव्य स्थापना में प्रवीण, योजना बहुत कार्य करने में सक्षम तथा अनुशासन-प्रिय, मृदुल और उदारमना, ईश्वर
और धर्म में उगाधवान् एवं धर्म-पालक, माता-पितर के सुख-सहयोग का भोक्ता तथा मातृ-भक्त, पौरुषमी और साहस तथा
कुक्षि-कोशल से पर्याप्त सफलता प्राप्त एवं भाग्यवान्, द्वन्द्व-आय और द्वन्द्व-कोष सम्पन्न तथा द्वन्द्व-संग्रह में कुछ भूटिका अनुभ-
वी, यदाकदा मृत्यु-तुल्य कष्ट प्राप्त करता, भाई बहिन युक्त तथापि पारिवारिक सुख-सम्बन्धों में भूटियुक्त, विद्या पक्ष में पूर्ण-
प्रवीण तथा राज्य और समाज में गृह-भूषण लाभ से सम्पन्न और मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, सत्य और न्याय का आश्रित, सहज ही
कुर्कमों से उठने वाला, वाक्-पटुता से विरोध-पक्ष में विजयी, सुन्दर, गौरांगी, विलासी प्रिय स्त्री के सुख तथा सुलानुभूति होगा।

(३०२)- इस कुण्डली चक्र में जन्म लेने वाला मानव श्यामवर्ण युक्त सुन्दरता प्राप्त, उन्नत कलाट, दीर्घ तथा पुष्ट देही,
मेगीर-साहित्य कान्ध-ज्योतिष का प्रेमी, विद्यार्थ के में सामान्य किन्तु बहुविज्ञ, मंत्रशास्त्र, आयुर्वेद में निष्णात, सुलानुभू-
ति किन्तु सुलानुभूति और से विजित, तेजस्वी, मेधावी और दृढ़ तथा गम्भीर-योजनाओं के निमाणा में पट, भोग-विलास में
रक्ष, गृह-पराग-प्रीति, विरोध युक्त किन्तु विरोधी की ओर से निश्चिन्त, ईश्वर और धर्म में आस्था युक्त तथापि आप-
त्ति या आर्थ-काल में ही धर्म का पालक, मित्रहीन और गम्भीर, सुन्दरी शिक्षित किन्तु कठोर स्त्री-कापति और स्त्री-की ओर
से उदासीन रहकर अन्य स्त्रियों का भोक्ता तथा पौरुषम और साहस से अपनी उन्नति में सतत संलग्न, गृह-भूषण और दु-
व्यकाय-संग्रह से युक्त, राज्याश्रित अथवा इंजीनियर या स्वयं-उद्योग द्वारा अनेक वस्तुओं का निमाता, कभी-कभी ग-
म्भीर दारिद्र्य पाते वाला, मातृ-पितृ सुख-सहयोग का भोगी, किन्तु पितृ-भक्त में ही, नैत्र-ज्योति में भूटिका अनुभवी, उद्वृ-
त्त और कुछ अहंकार युक्त, कृपण वृत्ति, पान्थु मरण-काल में सहज ही उत्तम स्थान या तीर्थस्थान में देहत्यागी होगा।

(१०३)- इस जन्मांग में जन्म लेने वाला बालक सामान्य रूप, सुष्टि देही, श्यामवर्ण युक्त सुन्दरता प्राप्त, चतुर ओर
मिथैली, अत्यधिक साहसी ओर दुरुकार्य, ईश्वर ओर धर्म में निष्ठा किन्तु धर्मपालन में शिथिलता युक्त सुन्दर
शिक्षिता परिवृता किन्तु कलहास्त्रों का पाल, सन्तान युक्त तथापि सन्तान प्राप्ति में तिलम्ब युक्त या विनित्त, भोगों-
शून्य ओर विलासिता प्रिय एवं रहने रहने में दक्ष, यदा-तदा अवरोध युक्त व्यवसाय में सफल, सफल निष्कलक
अथवा उद्योगी इंजीनियर, अनेक विद्यार्थी में पारंगत, साधारण अष्टकारी, सत्त्व युक्त न्याय प्रिय, आत्म संतुष्ट दोषवन्त
या अनुभवो, मेधावी, गृह-भूमि लाभ से युक्त, द्रव्य संग्रहार्थ निरन्तर प्रयत्नवान् ओर यथास्त धनी किन्तु भाग्योदय
में कुछ थुरी-युक्त, भाई-बहन ओर पारिवारिक क्लेश प्राप्त करता, अनेक विरोधों से युक्त किन्तु प्रभावशाली व्यक्ति तथा
वाक्पटुता से विरोधियों का विजयो, नेत्र ज्योति में विकार ग्रास्त ओर बालश्लेष्मा पीडित, माता-पितृ सुख सहयोग का
अल्प भोक्ता, परिश्रम ओर साहस से समन्तत, उत्तम स्थान या तीर्थ में सहज ही देह त्यागने वाला होगा।

(१०४)- इस जन्मांग चक्र में जन्म ग्रहण करने वाला बालक साहसी, दीर्घमिष्ट, उल्लस-कलाट, स्वाभिमानी ओर चतुर,
कृशनाम्, विघातेन मूर्खता के साथ कुछ थुरी का अनुभवो, गुप्तराति नीति से कार्य करने में कुशल और स्वाधीन
में सर्वथा तत्प्रा, जीवने में सब की उपेक्षा करने की सर्वसि मानकर निरन्तर द्रव्य संग्रहार्थ चैष्टित, माता-पिता का पूर्ण
सुख सहयोग भोक्ता, तथापि उनसे मतभेद राय का प्रथक रहने वाला, द्रव्य संग्रह ओर गृह-भूमि लाभ से युक्त किन्तु द्रव्य सं-
शय भाग्यहीनता से कुछ थुरी का अनुभवो, वायु ओर नेत्र विकार ग्रास्त, भाई-बहन ओर पारिवारिक क्लेश पाने वाला,
भोगी भोक्ता युक्त, स्त्री युक्त किन्तु स्त्री की उपेक्षा करने वाला, सन्तान युक्त पण्डु सन्तान की ओर से विनित्त तथा बड़ाव-
स्था में सन्तान द्वारा उपेक्षित, मध्यमायु से कुछ अधिक जीवन प्राप्त, राज्य विउन्वना या मुकद्दमा में उलझने से धन का अर्पण
व्ययो, मान्योन्नति ओर मान्य प्रतिष्ठा में थुरी युक्त, ईश्वर ओर धर्म का आन्तरिक आस्थावान् पण्डु धर्मपालन से दैन, स्त्री
ओर सन्तान से भी प्रथक रहने वाला, कुछ विविध व्यवसाय युक्त, कठोर, उत्तम स्थान में क्लेश युक्त देह त्यागी होगा।

(१०५)- इस जन्म तक मैं जन्म लेने वाला व्यास मध्यमकद, उन्नत ललाट, गौरवर्ण, कृश-देही, साहसि और
बलुर, वाक्परोष तथा मेधावी, उभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, तेजस्वी, धार्मिक और सुन्दरी-शिक्षिता-गो-
रवणी-परिवृता-धार्मिक स्त्री का पति, धर्मपालक, माता-पिता का सुख सहयोग भागी किन्तु मातृ-सुख में अल्प,
पितृ-भक्त और पितृ-सहयोग तथा निजी जी-भ्रम से कुछ कूट युक्त भाग्यशाली, विद्या और सन्तान सुख संपूर्ण, यत्रतत्र
मदरत का उपयोग रत तथा धन संगृही, गृह-भूमि लाभ से युक्त पर्याप्त धनी, भाई-बहिन और धार्मिक सुख संपूर्ण,
बाह्य विरोध युक्त किन्तु उभावशाली व्यक्तित्व तथा उत्तम कार्यो से विरोध पर सफलता प्राप्ता, मध्यमायु से पूर्व ही जीवन
समाप्त होने वाला, सामाजिक मान प्रतिष्ठा सम्पन्न, यदा-कदा दुःख की ओर से चिन्तित, भोगेश्वर और रहन-सहन तथा
उत्तम धर्म कार्यो में धन का अधिक व्यय, कभी-कभी उमादवश अन्य स्त्री को सेवन करते कालों और उससे धन लाभ ग्रहण
करते कालों, जोहू-अथवा गुरु-विचार मैं रत जी अधिक निर्वहता से देह त्यागने वाला होगा।

(१०६)- इस जन्म तक मैं जन्मा हुआ पुरुष तेजस्वी, विनोदी, मनस्वी और मेधावी, संगीत तथा साहित्य-प्रिय, पिता
का भक्त और सुख-भोला तथा मातृ-सुख में अल्प अथवा हीन, सामान्यकद, गौरवर्ण, उन्नत ललाट, पुष्ट देही, शि-
भिमान और सत्यवादी, भग्योदय में कुछ कूट युक्त, सुन्दरी गेहोंगी धार्मिक सरला शिक्षिता परिवृता स्त्री का पति और
उसके सहयोग सुख का भोला, पति-भक्त और साहस सम्पन्न, चिन्तनशील और विचारक, अनेक विद्याविद और विद्वान्
उत्तम गुणी पुत्रों का पिता और उनसे सुख प्राप्त करने वाला, उभावशाली व्यक्तित्व एवं वाक्पटु, स्ववाक्य-प्रदायक प्रवोण,
रहन-सहन में दक्ष, देवता और धर्म के प्रति आस्थावान् तथा धर्म-पालक, सत्शास्त्री और संस्कृति का अध्येता, उत्तम पुत्र-
ला, उत्तम रीति से अपने धन-साधन से नमैं सफल और गृह-भूमि तथा दुःख संगृह आदि से पर्याप्त धनी भाग्यशाली,
भाई-बहिन से कुछ विरोध करने वाला तथा पिता का प्रतिपालक, राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में मान-प्रतिष्ठा स-
ंपूर्ण, नैन-ज्योति तथा रत वाक्पटु से परिपूर्ण, मध्यमायु प्राप्ता, यदा-कदा दुःख विषय की चिन्तित होगा।

(३०६)- इस जन्मो में उत्पन्न होने वाला बालक साहस, क्रोध, स्वाभिमान, चतुर, कुछ अहंकार युक्त, गौरवर्ण, उन्नत ललाट, सामान्य कद, पुष्ट देही, अहंकार के कारण आन्तरिक दुःख भोला, स्त्री ओ (सन्तान सुख से हीन अथवा सब कुछ त्याग का दौरेवाजक या यली चिरुप गृहण करने वाला, भ्रमणशील, शोष्य ही सन्ध्या में पुनः राजयोग प्राप्त करती, गृह-भूमि-धन-शिष्य-द्वय को कालाभ मानने वाला, विरोध युक्त, कई बार विषम का अन्यीभूति से मृत्यु सुलभ नष्टों का भोला, मध्यमायु में कुछ सुख का ही जीवन गृहण करती, धर्म धार्मिक ओ (महात्म्य का अध्ययन तथा उत्तम विचारक, उपदेष्टा, किन्तु उपदेश में अहंकार युक्त होने से ही सर्वत्र अपयश प्राप्त, मान-प्राप्ति में सत्य, विरोध के कारण स्वर्था आन्तरिक चिन्तित, नेत्रज्योति तथा वायु-विचार से पीड़ित, मनोविकल्पा से अशान्त, कभी कभी उदारमता होने से विरोध बल पर सफलता प्राप्त, राज्य क्षेत्र अथवा वाद विवादों में निरन्तर सफल, मरण काल में उत्तम चिन्तन युक्त देह त्यागने वाला होगा।

(३०७)- इस जन्मो में उत्पन्न गृहण करने वाला बालक दीर्घवयु, गौरवर्ण, पुष्ट देही, उन्नत ललाट, साहस सम्पन्न, धर्म-चतुर ओ (विवेकी, माता-पिता का भक्त ओ (उनका परिपालक तथा उनके सुख सहयोग का भोला ओ (समुन्नत, शान्त, भोगैरुच्य युक्त रहन-सहन में प्रवृत्त, ईश्वर ओ (धर्म के प्रति पूर्ण निष्ठा, सज्जन ओ (गुणी विद्वद् जनों का सख्त ओ (आदर करती, गृह-भूमि लाभ से युक्त एवं सामान्य धनी, राज्य ओ (सामाजिक मान-प्राप्ति प्राप्त, राज्य क्षेत्र में सफल, भाग्योदय में कुछ नृपति युक्त, मातृक्षेत्र का भी सुख सहयोग भागी, भार-बाधित युक्त किन्तु पारिवारिक क्लेश युक्त, स्त्री सुख में अन्य ओ (सन्तान युक्त तथा पि सन्तान की ओ (से चिन्तित, विनय युक्त प्रभावशाली वाणी का धनी, सत्याधियो, अपने भाग्य ओ (परिग्रह से ही समुन्नत, मध्यमायु प्राप्त, सामान्य विरोध मानने वाला किन्तु विरोध बल पर वाणी तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व से सफलता प्राप्त, सर्वथा प्रामाण्य रहने वाला, संगीत कव्य-साहित्य अथवा चित्रकला का प्रेम, जल की उत्प्रेषण, यदाकदा भ्रमणशील नृपति वाला होगा।

(३०८) इस जन्मों में जन्म लेने वाला जातक शीघ्र बुद्ध, गौरवर्ण, स्वाभिमान, चतुर और विवेकी, विनोदी और हंसमुख, गम्भीरता से कार्य करने में कुशल, उन्नत ललाट, विद्या क्षेत्र में श्रुति प्राप्त किन्तु सन्तान की ओर से चिन्तित, पिता का पूर्ण सुरय सहयोग भोक्ता तथा पितृभक्त एवं पितृक्षेत्र से अन्यत्र निवास, मातृसुख सहयोग में अल्प, भाईवर्धन और पारिवारिक सुख सम्बन्ध में त्रुटि का अनुभव, राज्य क्षेत्र में समुक्त और उच्चपदस्थ तथा राज्यवर्तनीयजीवी, भोगेश्वर्यमुख रहन सहन में प्रवीण, प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी, (सुन्दरी गौरांगना शिष्टिता स्त्रियां) पति तथा उसका सहयोग प्राप्त समुक्त, गृह भूमि लाभ में सामान्य परन्तु धन-धान्य-भृत्य-वाहनार्थ सुख से पूर्ण और भाग्यशाली, शत्रुओं विरोध-दक्ष या वाक्नुतय एवं बुद्धिबोशल से सफल साधुस, पर्यटन द्वारा अच्छा लाभ प्राप्त करने वाला, अनुशासन प्रिय और मेधावी तथा स्ववान्य स्थाना में प्रवीण, ईश्वर और धर्म के प्रति आस्थावान् तथा सत्य आदरयुक्त उत्तमकीर्ति का सम्यादक एवं धर्मपालक, परोपकारी और दयालु, किल कीर्ति का प्रकाशक, वातश्लेष्मा तथा आप्तात् से कष्ट-भोक्ता, मध्यमायुष्य प्राप्त करेगा।

(३१०) इस जन्मों में जन्म ग्रहण करने वाला जातक कुदृश्यामलसायुक्त गौरवर्ण, आकृति से दाम्प्यिन्दर, मध्यम कद और बुद्धि देही, प्रभावशाली व्यक्तित्व एवं विलक्षण पूजा से सम्पन्न, दृढ और दृढ-निश्चय, स्वाभिमान, गम्भीरता, उद्योग-योजनाओं द्वारा अपने काम में प्रवीण, अनुशासन-प्रिय, प्रकाशरीति से धर्मपालक, माता-पिता का पूर्ण भक्त तथा उनका प्रतिपालक, पितृक्षेत्र का स्थायी निवासी, मातृ-पितृसुख-सहयोग का भोक्ता, वंश-दाम्प्यरायुक्त संस्कृति तथा आदर्शवादिता का प्रियोद्युक्त तथा रक्षक, उदारमना और दयालु, सुन्दरी शिष्टिता स्त्रियां पति और उसका सुख सहयोग भोक्ता, धनकी अपेक्षा कम और नरक की अधिक महत्त्व देने वाला, उत्तम गुण युक्त धार्मिक तीन पुत्रों का पिता, गृह-भूमि-भूत-वाहन-धन-धान्यार्थ युक्त भाग्यशाली, राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, साहित्य और ज्योतिषादि प्रेम, अनेक विद्या और कलाविद, विद्या सुख से पूर्ण, प्रायः अज्ञात शत्रु तथा पितृप्रमान शाली व्यक्तित्व से विरोधी का विजिता, भोगेश्वर्यमुख रहन-सहन में दृढ, उत्तमकीर्ति का सम्यादक, मध्यमायुष्य प्राप्त, अन्व अथवा बीतिरोग से पीड़ित होगा।

(३११)- इस कुण्डली चण्डे में उत्पन्न होने वाला व्यक्ति दीर्घायु, दुष्टदेही, श्यामवर्ण, सुन्दर, उन्नत ललाट, स्वामिनी ओ (कुछ उग्र, चतुर ओ विवेकी, विधिक्षेत्र में पूर्ण प्रवीण तथा विद्या का सुख मोक्षा, धन से कुछ देम-नाम्नता मुक्त सम्बन्ध विनयात्मा, पितृसन्त से दूर अन्यत्र क्षेत्र में निवासि, उसम गुण युक्त धार्मिक पुत्रों का पिता, सुन्दरी शिशिला किन्तु कलहास्त्रों का निमित्री, राज्य-पक्ष में कुछ बन्धन ग्रहण करनेवाला, दृढ़-आय सम्पन्न, भाग्यशा-ली ओ सफल व्यवसायी, ग्रह-भूमि लाभ से युक्त, स्वार्थ-साधन में प्रवीण, मध्यमायु से अधिक जीवन प्राप्ति केने वाला, दृष्ट्य कोष संग्रहाथ निरन्तर चोरीट ओ पर्याप्त धनी। सामाजिक क्षेत्रों में मान जहिष्ठा प्राप्त, इश्वर ओ धार्मिक प्रति-निष्ठावान् किन्तु यदाकदा धर्मविरोधा सम्पादक, तीव्रहृत् करनेवाला, भोगी ओ विलासि तथा रहनसहन में प्रवीण, पुरुषार्थ एवं परिश्रम, स्त्री से मत्तभेद युक्त लुब्ध-सहयोग प्राप्त, वाक्-चातुर्य ओ बुद्धि-कोशल से विरोध पर विजयी, भाई-बहिन ओ पारिवारिक सुख-सम्बन्धों से युक्त, विद्या ओ कला में प्रवीण, लक्ष्य साधने में चतुर होगा।

(३१२)- इस कुण्डली में उत्पन्न ग्रहण करने वाला पुरुष दीर्घायु, कुछ श्यामवर्ण, उन्नत ललाट, साहसी ओ (स्वा-मिनी, भाई-बहिन के सुख-सहयोग में पूर्ण किन्तु पारिवारिक क्लेश युक्त, कुछ उग्र ओ चंचल प्रकृति, रहनसहन में प्रवीण, सुन्दरी श्यामा स्त्री के सुख-सहयोग का भागी ओ समुन्नत, अत्यधिक परिश्रम ओ उदास, गुण युक्त सन्तान का पिता तथा पि सन्तान की ओ से चिन्तित, धन से कुछ मत्तभेद रहनेवाला, भाग्यशास्त्री किन्तु भाग्योदय में कुछ अवरोध युक्त सफल, सफल व्यवसायी, इश्वर ओ धार्मिक प्रति आस्थावान् किन्तु धर्मपालन की मर्यादा से कुछ उदासीन, धन संग-रार्थ निरन्तर चोरीट ओ पर्याप्त धनी होने का भी आन्तरिक भूट ओ असन्तोष का अनुभव, विद्या-पक्ष में पूर्णता प्राप्त ओ सफल, वाक्-चातुर्य से विरोध पर विजयी, मातृ-सुख-सहयोग का भोक्ता ओ समुन्नत, धन धान्य ग्रह भूमि लाभ में पूर्ण, राज्य ओ सामाजिक क्षेत्रों में मान जहिष्ठा में सामान्य, लक्ष्य एवं चार्थ सिद्धि में तत्पर, कुछ वैचारिक ओ हठी तथा अहंकारी, मध्यमायु प्राप्त, ग्रहयुग से पीड़ा करनेवाला, मध्याह्न ओ उभाकराली व्यक्तित्व सम्पन्न होगा।

(११३)- इस जन्म-चक्र में जन्मा हुआ मानव गौरवर्ण, कुशकाय, दीर्घवयु, शारीरिक सौन्दर्य में अतियुक्त, पु-
तायशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, स्वार्थ-सिद्धि में सर्वथा तत्पर, साहस और अधिकाधिक स्वाभिमानी, पुत्रीकार भावनाओं से युक्त,
इश्वर के प्रति आस्तिक होते हुए धर्म और इश्वर की अवेसा पुरुषार्थ-कर्म को अधिक महत्व देने वाला, मेधावी, गुप्त
रीति से सम्भार योजनाओं द्वारा द्रव्यकोष संग्रहार्थ निरन्तर चोखत, सुन्दरी गोंगरी स्त्रीका मत्तभेद युक्त प्रति, उस मत्त
युक्त सन्तानका पिता और सन्तान की ओर विचिन्तित। विद्यापक्ष में कुछ अवरोध युक्त सफल। विरोध की चिन्ता न वाह
नका लक्ष्यसाधना में तत्पर, परिश्रम द्वारा भाग्योन्मुख, गृह-भूमि-द्रव्यकोषके व्याप से युक्त, दृढी और अनुशासन प्रिय,
माता-सुख सहयोग का भासा और पितृ-सम्बन्धों में मत्तभेद युक्त, कृपण वृत्ति, भावार्थिन और पारिवर्तिक प्रेम-सम्बन्धों में
युनता प्राप्त, वृद्धान्ध में सन्तानका सुख न माने वाला, गुप्त-रोग और उदर-विकार से पीड़ित, राज्य और सामाजिक मान
प्रतिष्ठा में तुरिका, अनुभक्ती, मध्यम आयु में कुछ अधिक जीवन प्राप्त करने वाला होगा।

(११४)- इस जन्म-चक्र में जन्म लेने वाला मनुष्य दीर्घवयु, कुशकाय, माता-पिता का पूर्ण सुख सहयोग प्राप्त, उदण्ड,
युनता युक्त, दृढी और स्वाभिमानी, विमर्श में युनता युक्त, उन्नत कलाट, सर्वदा आन्तरिक द्वेष-भावनाओं के कारण इ-
च्छा और मानसिक अशान्त, माता-पिता को असीव कष्टकारी या उनका हत्यारा, भागी और बिलासि, सुरासुन्दरी
का आराधक, सुन्दरी स्त्रीका प्रति किन्तु उसे कष्ट दाला तथा अन्य स्त्रियों में उमण शील अथवा दूसरी स्त्रियों को अपने
रूपिने वाला। पितृद्वेष से अन्यत्र जाकर निवासि, पैरु कथन और गृहलाभ से हीन, वायु और उदरशूल से पीड़ित, सन्तान
सुख से हीन अथवा सन्तान द्वारा विरस्कृत अपमानित, कुलित कर्मा, इश्वर और धर्म के प्रति आस्थावान किन्तु
धर्मपालन से सर्वथा विमुख, भावार्थिन-परीक्षा एवं उन्मत्त जनों का विरोधी, क्लोदत और द्युत, परिश्रम और पुरुषार्थ
से धन कमा कर उससे उत्तम प्रकार का सुख मोला किन्तु द्रव्यकोष में नितान्त हीन, कमी-कमी कुछ उपकार करने वाला, परोपकारको
न भूलने वाला, बाहुवीर्य युक्त, वृद्धान्ध में परचासापी, और प्रथम स्त्री से सुख प्राप्त, मध्यम आयु सम्पन्न होगा।

११५२- इस कुण्डली में जन्म लेने वाला बालक पाच सुन्दर, गौरवर्ण, मध्यमकद, पुष्टदेही, साहसी और चतुर एवं स्वाभाव से कुष्ठ उग्र, प्रत्येक काम करने को समर्थ तत्पर, विवेकी और नम्रपुत्र, रहन सहन में दक्ष, धर्म संग्रह में सर्वशाली, मातृ-सुख में अनुता का अनुभव, धार्मिक कर्मों में धन का व्यय करने वाला, पितृ-सुख भोगी और पितृ-भक्त, निजी मुजोंओं से उपाजि न दुव्य द्वारा गृह-भूमि स्वयं को बालामी, भारि-बाहिन और पारिवारिक सुख-सम्बन्धों में कुटुम्ब, इन्होके प्रति निष्ठावान्, भाग्य-शाली, राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, विन्याय व्यवसाय में सफल, चतुर और शिक्षित स्त्री का पति, विल-स्व से सन्तान प्राप्त करेगी अथवा सन्तान की ओर से चिन्तित, उभावशाली व्यक्तित्व से विरोध-पक्ष में सर्वथा विजयी, रक्त-रत्न पिच्छा विकार मुक्त, कभीकभी युत-क्षीडा आदि विलास का आस्यो, अपनी उन्नतिके लक्ष्य में निरन्तर संलग्न, उच्च-व्य-क्तियों और बुद्धिमानों से सम्पर्क रखने वाला, मध्यमायु से कुछ अधिक जीवन प्राप्त, विलसठा प्रतिभा-सम्पन्न, अनुशासन-प्रिय, सत्यता और न्याय युक्त मधुर वाक्य कहने में प्रवीण, साहित्य और संगीत का प्रेम से होगा।

११६- इस कुण्डली में जन्म ग्रहण करने वाला बालक दीर्घ और पुष्ट वयु, गौरवर्ण, शारीरिक-मोन्द-ध में कुछ कुटुम्ब, पाच बुद्धिमान और मेधावी, साहस-सम्पन्न, स्वाभिमानवी, मातृ-सुख में अल्प और पितृ-सुख भोगी, विद्या में प्रवी-ण, सर्वथा भाग्यवृद्धि को प्रयत्नशील, स्वभाव से उग्र तथा सहज ही शान्त, अनुशासन-प्रिय, उदारमना, धर्म और ईश्वर में निष्ठा युक्त तथा सामान्य धर्मपालक, सहसंग-प्रमी, ऐश्वर्य-मुक्त रहन सहन में दक्ष, राज्य-सेन में उच्च कद पा आसिन तथा राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, मध्यमायु प्राप्त करने वाला, सुन्दरी-गौरांगी-शिक्षित स्त्री का पति और भोग-विलास युक्त गृहस्थ में अनुरक्त किन्तु सन्तान की ओर से सर्वथा चिन्तित, दत्तक पुत्र ग्रहण करने वाला, भारि-बाहिन और पारिवारिक सुख-सम्बन्ध तथा सहयोग से मुक्त, धर्मनाथ और तीव्रान में धन का व्यय, पैतृक धन तथा मुजोंपाजित दुव्य से पूर्ण धनी, गृह-भूमि लाभ में मुक्त, धन-धान्य-मृत्यु-बाहनादि सुख से पूर्ण, उभावशा-ली व्यक्तित्व से सर्वथा विरोधी का विजय, भाग्यवान्, निश्चित और हृदय-आय सम्पन्न होगा।

म.
स.
०१३

क.
१०

(११६)- इस जन्मोंग में उत्पन्न होने वाला मानव दीर्घ देही, पुष्ट शरीर, गौरवर्ण, रक्त विकार युक्त शारीरिको-
 न्द्रों में कुछ कृटि युक्त, सादस-सम्पन्न, स्वाभिमानी, स्वभाव से कुछ उग्र तथा लज्ज ही शान्त, विलक्षण प्रतिभा
 ओ। मेधा सम्पन्न, संगीत काव्यादि उद्योग, विद्या क्षेत्र में पूर्ण निष्णात, धन-सम्पन्न यार्थ सर्वथा चोष्टि ओ। धनी, कृष्-
 णांगुल परोपकारी, मातृ-पितृ सुख का पूर्ण भोक्ता, पैदल धन-लाभ से युक्त, पिता का भक्त, राज्य क्षेत्र में उच्च पदाभि-
 ओ। राज्य ओ। सामाजिक मान प्रविष्टा प्राप्त, मध्यमायु सम्पन्न, ईश्वर ओ। धर्म में आस्थावान्, धर्मकार्यों का अभि-
 मान से सम्पादक, आत्मबली, तीर्थारण करने वाला, उत्तम कार्य में धन का व्यय, धन-धान्य-गृह-भूमि-भूत्यवाह-
 नादि सुख से युक्त। (सुन्दरी, गौरांगी, विदित स्त्री का पति, भोग-विन्यास में पट ओ। गृहस्थ में अनुरक्त, सन्तान की
 ओर से सर्वथा चिन्तित, कार्यक्षेत्र में कर्म-कर्म आलसी, यदाकदा भाग्योदय में विपन्न माने वाला, दृढ़ और निश्चि-
 त आय सम्पन्न, प्रभावशाली न्याय-तत्त्व का धनी ओ। विरोधियों का सर्वथा विजिता, भौतिक ओ। पारिवारिक सुखी होगा।
 (११७)- इस जन्मोंग में उत्पन्न गृहण करने वाला पुरुष मध्यम कद, गौरवर्ण, पुष्ट देही, साठसो ओ। स्वाभिमान तथा
 स्वभाव से अतीव उग्र ओ। क्रोध, मंचल-पुष्ट, दृढि-स्त्रि-दृढ़ निश्चयो, मातृ-सुख में उत्पन्न और पितृ-सुख प्राप्त, भौ-
 तिक और पारिवारिक सुख में मंचल का अनुभव, सर्वथा अन्तर्गत में मत्सर लोककारण सन्तप्त रहने वाला, विद्या
 क्षेत्र में उद्योग और तन्त्र-मन्त्र आदि का जानकार, योगाभ्यासद्वारा ईश्वर ओ। धर्म में आस्थावान्, सामान्य धनी ओ।
 भाग्यशाली, भूत्यवाहनादि सुख से पूर्ण, साधारण धन-संगृही, स्त्री से कुछ मरभेदी ओ। स्त्री का प्रथम मरण माने
 वाला, मध्यमायु से कुछ अधिक जीवन प्राप्त, विरोधियों का युध्दरीति ओ। नाक्य पटुता से विजयो, अन्य स्त्री में भी
 रमण प्रवृत्ति, कर-पुत्रों का पिता किन्तु दुराचरण के कारण सन्तान की ओर से चिन्तित, राज्यद्वारा जीर्णोद्धारन युक्त उच्च
 पद पा उल्लिखित तन्त्र राज्य से प्रदत्त धन-लामी, सामाजिक मान प्रविष्टा प्राप्त, पराक्रमी और उद्यमी तथा कर्म को अ-
 धिक महत्व प्रदान करने वाला, मुरम और महत्त्व का चोट के निशान से युक्त होगा।

(३१८)- इस जन्म चक्र में जन्म लेने वाला व्यक्त पाम लेज्जो, स्वाभिमान, साहसी, उग्र और जोशी तथा अनुशासन-
पुत्र, दृढ़ और दृढ़निश्चयी, विद्या क्षेत्र में प्रवीण तथा अनेक विद्याओं में दक्षता प्राप्त, आवश्यक क्षेत्र में अधिक परिश्रमी और
उत्साही, जिसकी न सुनने वाला, नेत्र ज्योति में विकार का अनुभव, भौतिक युद्ध तथा मोर्चाबोर्का युद्ध सम्बन्धों में सामा-
न्य बुद्धिमान और मेधावी तथा निर्भय योजनाओं में पटु दूरदर्शी, पण्डित परिश्रमशील भाग्य का यथार्थ लाभ न पाने वाला,
स्त्री से मतभेदी और स्त्री का मरण प्रथम पाने वाला, सन्तान युक्त किन्तु सन्तान की ओर से चिन्तित, मान-प्रतिष्ठा में न्यु-
नता का आन्तरिक अनुभव, हृदय में सर्वथा सन्तुष्ट, स्वार्थ-सिद्धि में कुशल और आवश्यकता के विनम्र और नाकपटुता
से विरोध बल से धीरे-धीरे बढ़ने में सफल, परिवारीजनों से शत्रुतापूर्ण सम्बन्धों से युक्त, कभी-कभी भाग्य लाभ पाने वाला,
इश्वर और धर्म के प्रति आन्तरिक आस्थावान् किन्तु मदीयमत और उद्धत, वृद्धावस्था में सन्तान के कारण भाग्य शान्ति
किन्तु सन्तान से तिरस्कृत जीवन युक्त, गृहादिलास में सामान्य, दाहिने पाँव में चोट पाने वाला, मध्यमायु होगा।

(३२०)- इस जन्म चक्र में जन्म ग्रहण करने वाला अनुष्य सामान्य कद, सामान्य वर्ण, मुख-मांसक दाँवों के चिन्ह
से युक्त, साहसी और उग्र तथा बढ़ने लेने की प्रवृत्ति वाला, विद्या क्षेत्र में न्युन, कुछ चारों जैसी प्रकृति, आवश्यकता के
विनयी, स्त्री से अथवा अन्य स्त्री को गृह में रख कर उसी में उदयना सन्तान से युक्त, उग्र की अपेक्षा अधिक स्वयंसेवी,
अध्ययनेतनोपजीवी, मातृ-मुख में स्वल्प अथवा अन्य द्वारा पालित, पितृ-सुख का भी अल्प भोक्ता, गृहादिलास में सामा-
न्य, यदाकदा भाग्य लाभ पाने वाला, स्वार्थ-सिद्धि में लसत, कई स्त्रियों का भोक्ता, गृहस्थ की ओर से चिन्तित, राज्य
और सामाजिक मान-प्रतिष्ठा से हीन, वृद्धावस्था तक धन-सैन्य से निरन्तर वर्जित, भाग्य पर और इश्वर का आश्रय
लगा का जीवन निवोदक, मध्यमायु से कुछ अधिक जीवन प्राप्त, दुर्भाग्यशाली-सन्तान का पिता, गृहस्थ में चालना-
र्थ दैन्यन्यूनता का अनुभव, परिश्रमी, राज्य क्षेत्र में दण्डित किन्तु विजयो और सफल, कभी-कभी अत्यन्त अमान
गृह जीवन प्राप्त, उदरशूल अथवा गृहोन्मिद से रोग-ग्रस्त, कुछ हीन बुद्धि होगा।

(३२१)- इस जन्म-चक्र में जन्म लेने वाला मानव गोधूमवर्ण, कुशशरीर, मध्यमकद, सदा तिलचारिणी और तेजस्वी तथा दूरदर्शी, गुप्त-योजनाओं के निर्माण में वृद्ध, मातृ-सुरभ का अल्पभोगी, पितृ-धन और पितृ-सुरभ का उपभोगी, चंचल प्रकृति, कटु सत्यवादी, नेत्रज्योति का विकार माने वाला, मध्यमायु से कुछ अधिक जीवन युक्त, भारी बोहिन और परिवार युक्त तथा विभूत सम्बन्धों में वृद्धि युक्त, रंजीति पर अथवा शल्य-चिकित्सक, दोर-श्रम द्वारा दुःखोपाजना से तत्पुत्रवान्, पैतृक-गृह-भूमि लाभ से संयुक्त, पितृ-मरु, विद्या-वृद्धि में वारंगत, अनेक विषयों में पूर्ण, रोगिणी, श्यामा, सुशोभा स्त्रिया का पति, शिक्षित एवं श्रेष्ठ सन्तान से सुखी, गृहस्थ में आसक्त, कुसंगीत से दूर, अपने लक्ष्य वा अटल, स्वभाव से सामान्यतः प्रयत्न, अथवा परिश्रम से भाग्योन्मुख, प्रतिस्पर्धा की भावना से पूर्ण और उन्नतिशील, वाक्-वृत्ता-एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व से विरोध पक्ष का विजेता, अर्थ-संचय में सामान्य, ऐश्वर्य युक्त रहन-सहन में प्रबोध, धन-धान्य-भृत्य वाहनादि सुरक्षित से पूर्ण, उदार चित्त और गृह्य-राग से कोटित, प्रायः उत्तम स्वास्थ्य सम्पन्न, विलक्षण मेधावी और कुल का उत्तरोद्धार होगा।

(३२२)- इस जन्म-चक्र में जन्म ग्रहण करने वाला मुख्य मध्यमकद, साधारण बुद्धि, उन्नत ललाट, साहसा और स्वाभिमान, कभी उग्र तो कभी शान्त, विद्या-वृद्धि में पूर्ण समुत्तल, दीर्घायु युक्त, तीर्थ अथवा उत्तम-भोजन और उत्तम काल में दृष्टागो, निश्चित और दृढ़ आय से सम्पन्न, भारी बोहिन और भारी-वारीक जीवन से सन्तुष्ट, माता से कुछ मतभेद युक्त सम्बन्ध माने वाला, पितृ-मरु और पितृ-सुरभ भोगी तथा पैतृक-धन और गृह-भूमि लाभ से युक्त, अनेक विद्या विषयों में प्रवीण, राज्य एवं सामाजिक क्षेत्रों में मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, धन-धान्यादि से पूर्ण सुखी, श्रेष्ठ गुणी पुत्रों का पिता, रहन-सहन में प्रबोध, आवश्यकता से गुप्त-रीति से कार्य करने तथा विरोध-पक्ष वा विजय प्राप्त करने में प्रसन्न, नेत्रज्योति में कुछ वृद्धि युक्त, विलक्षण प्रतिभावान्, प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी, कर्म और ईश्वर दोनों के प्रति निष्ठा, अथवा परिश्रम द्वारा धन संग्रह और भाग्योन्मुखता, यथार्थ-धर्म का बालक, मानवतावादी, कुछ कठोर किन्तु उदारमन, गोधूमवर्ण, शिक्षित, रोगिणी स्त्री का विधवा, गृहस्थ में अमरुक्त, अनुशासन-पथ, दूरदर्शीता से आतुर, न्याय युक्त वाणी करने में प्रबोध होगा।

(३२३)- ३२३ जन्माङ्ग में जन्म लेने वाला जातक उत्तम गौरवर्ण, मध्यमकद, पुष्टशरीर, शारीरिक-सौन्दर्य सम्पन्न, आ-
र्यक प्रभावशाली व्यक्तिवत्ता धनी, माता-पिता सुख भोक्ता और माता-पिता का पूर्ण भक्त, साहसी और स्वाभिमानी, धर्म
और ईश्वर के प्रति पूर्ण निष्ठावान् तथा सहाय्य और सहाय्य का प्रेम, विद्या-बुद्धि में पूर्ण पारंगत एवं विनम्रता युक्त
नम्र वाक्पति-धारण में प्रवीण, कर्मनिष्ठ, पराधीन और दयालु, यदाकदा मृत्यु-तुल्य कष्ट भोगने वाला, शत्रु और विरोधि-
यों का विजिता, सामान्य अर्थलाभी, उत्तम गुणी सन्तान का पिता और उससे सुख-सेवा पाने वाला, कर्म प्रभाव से राज्य और
सामाजिक क्षेत्रों में बहु-चर्चित तथा प्रतिष्ठित, दूरदर्शी और सन्तान के कारण भाग्यशाली, सदापेक्षा अथवा उत्तम विद्या-
रक्त और प्रवृत्त, लेशक, अनेक विधाओं में पारंगत, कर्म और योग का महत्व दाता, सुन्दरी, शिक्षित, सुशीला
पतिव्रता एवं गौरांगी स्त्री का प्रामो तथा उसके द्वारा पूर्ण सुख-सहयोग प्राप्त समुन्नत, गृहस्थानुरक्त, मध्यमायु से
कुछ अधिक जीवन प्राप्त, यदाकदा गृहस्थ-संचालनार्थ दान्य की कमी का अनुभव और बुद्धिमान् गण्य होगा।

(३२४)- ३२४ जन्माङ्ग में उत्पन्न हुआ जातक उत्तम गौरवर्ण, मध्यमकद, मध्यमवर्गीय पुष्ट देही, उन्नत ललाट, धाम
बुद्धिमान्, साहसी और अत्यधिक स्वाभिमानी, प्रभाव से कुछ उग्र, सत्य और न्याय-पथ का अनुगामी, विलक्षण
वाक् प्रवीण, दूरदर्शी, गम्भीर योजनाओं के निर्माण में प्रवृत्त, कुशाग्र बुद्धि, विधाक्षेत्र में निष्ठावान्, बुद्धि-बौद्धिक और कर्म-
शीलता से राज्य एवं सामाजिक क्षेत्रों में समुन्नत तथा मान-प्रतिष्ठा संयुक्त, सुन्दरी, गौरांगी, गोधूमवर्णी, धार्मिकी प्रति-
परायणा स्त्री का पति और उससे सुख-सहयोग प्राप्त, समुन्नत, कभी-कभी गम्भीर मृत्यु सहसा कष्ट पाने वाला, धाम विवेकी और
चतुर, पुरुषार्थ-बल तथा सन्तान के कारण भाग्यवान्, सामान्य अर्थ-संचयी, गृहस्थ-लाभ से युक्त, माता-पिता
का पूर्ण सुख-सहयोग प्राप्त, भक्त, सहाय्यता का अध्यता, दाहिने नेत्र में विकार पाने वाला, विरोध-प्रवृत्ति अपने सदा-
करण और व्यक्तित्व द्वारा सफल किन्तु पारिवारिक जीवन का क्लेश-भोक्ता, गृहस्थानुरक्त तथा गृहस्थ-संचालन में प्रवीण,
ईश्वर और धर्म तथा भाग्य के प्रति आस्थावान्, उदारमना, उत्तम क्षेत्र में दृष्टांगी, मध्यमायुष्य प्राप्त होगा।

(३२५)- इस जन्मा में जन्म लेने वाला बालक मध्यम कद, मध्यम बर्ण, सुष्टि देवी, साहसी और कोपित तथा स्वा-
भिमानि एवं अनुशासन प्रिय, न्याययुक्त सत्यवादी और स्वभाव से कुदृष्ट, संस्कृतिका उपासक, सदाचारी और प-
वित्र, माता का अल्प सुख पाया और पितृ धन तथा पितृ-सुख सहयोग का भागी एवं पितृभक्त, साधारण रहन सहन
और उच्च निचोरी से सम्पुष्ट, विद्या-बुद्धि में पूर्ण ज्ञातक, पुत्रादि मन्त्रानि से सुखी किन्तु वृद्धावस्था में कष्ट भोगी, जि-
की ओर से उदासिन, पतिव्रता-धार्मिका, सुविशिष्टा त्रिो का प्रिय ओ। गृहस्थ में अनुरक्त, अपने लक्ष्य पूर्ति ओ उन्न-
ति में संलग्न, राज्य और समाज तथा कुटुम्ब में प्रतिष्ठा प्राप्त, धन-धान्य-गृह-भूमि-भृत्य-वाहन एवं द्रव्य कोष
संपूर्ण और भाग्योन्नत, ईश्वर और धर्म के प्रति पूर्ण निष्ठावान् एवं धर्म का यथार्थ पालक, साहस और बुद्धि
कोशल से सर्वथा उन्नत, भाई बहिन का सुख सहयोग भोगी तथा पि पारिवर्गिक क्लेश भागी, उभावशाली व्यासि-
न से शत्रु पक्ष वा सर्वदा विजयी, नेत्रज्योति और रक्तविकार का अनुभवो, पार्श्व भाग के दोड़ा देने वाला होगा।

(३२६)- इस जन्म बल में जन्म ग्रहण करने वाला बालक सुन्दर गोवर्ण, ऊँचा कद और प्रभावशाली देह पाया,
उन्नत ललाट, साहसी-चिन्तनशील विचारक एवं दूरदर्शी, ईश्वर और धर्म के प्रति पूर्ण निष्ठ और धर्म धार्मि-
क, स्वाभिमानि तथा माता-पिता एवं पूर्वजों का सेवक और भक्त, श्यामा-पुष्टा-पतिव्रता-राशिनी त्रिो का प्रीति-
और स्वयं मुग्ध प्रिय में विकार का अनुभवो, माता का अल्प सुख पाया, शत्रुवर्धन रहन सहन में दक्ष, पराधन-
शी और दयालु, कभी-कभी निष्ठुर और दृढी तथा दृढ निश्चय सम्पन्न, विद्या क्षेत्र में कुछ चोट अवरोध के साथ सम्पन्न-
न, धर्म बुद्धिमान् और सतुर, पुत्रादि पिता, बुद्धि एवं वाक्-चातुर्य में पट तथा विरोध-पक्ष वा सर्वथा विजयी,
ब्रह्मजनों का सम्मानक और तीक्ष्ण, धन-धान्य और द्रव्य-कोष में यथोपाधनी, गृह-भूमि लाभ से युक्त, सत्त्व
परिपुष्टो, सत्शास्त्रों का अनुगामी और उपदेष्टा तथा प्रवक्ता, न्याययुक्त सत्यवादी, आदर्श स्वरूप, मन्त्रानामि हि-
माययोग जादु की सम्भावना से युक्त, मध्यमायु से अधिक जीवन प्राप्त, उत्तम स्थान व काल में देह त्यागी होगा।

(३२६)- इस जन्तुत्व में उत्पन्न होनेवाला व्योम गौरवर्ण, उन्नत ललाट, ब्रुष्ट और प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी, साहसी और चतुर तथा दूरदर्शी, सत्शास्त्रों और सत्सौंदर्य तथा सत्संग का प्रेमी, धर्म धार्मिक, स्वाभिमान, दक्षिण १४-निश्चयों तथा यदाकदा कठोर दिवादि देने वाला, विद्या परम में कुछ भूटि अनुरोध के साथ पूर्ण सफलता प्राप्त, गौरवमय उच्च आदर्शिता, न्यायीपुत्र और सत्यवादी एवं अनुशासित जीवन से मुक्त, सुन्दरी, धार्मिक, श्यामा, गीर्वाणी स्त्री का पति, पुत्रों का पिता और सन्तान की ओर से विनिर्मुक्त, ईश्वर और धर्म का बालक, भाईवादि और माता-पिता के साथ सम्बन्ध में कुछ भूटि मुक्त, अधिक परिश्रमी और अपनी उन्नति में संलग्न, गृह-भूमि और इव्य-संग्रह में सामान्य लाभयुक्त, वृद्धावस्था में सुखों और भाग्यवान्, तीर्थटन तथा धर्मकृत्यों का सम्पादन, बुद्धि कोशल और वाक्-चातुर्य से विशेष का विजेता, माता-पिता को सबक, मध्यमायु से अधिक जीवन प्राप्त, बुद्धि निर्वयम अथवा कठिण रोग से जीवन जीना समाधा कर उत्तम काल व स्थान में देहत्याग का वैकुण्ठवासी हो।

(३२७)- इस जन्तुत्व में उत्पन्न गृहण करने वाला पुरुष ऊँचा कद, उन्नत ललाट, अत्यधिक साहसी और स्वाभिमान, विद्यासेत्र में अपूर्ण तथापि अनेक विद्याओं में प्रवीण, संगीत-साहित्य-ज्योतिष-तंत्र-मन्त्रवेत्ता, गृहस्थ की ओर से उदासीन और स्त्री से प्रभक्त तथा गृहस्थ से प्रभक्त रहकर अन्यत्र भ्रमणशील और प्रवासी, अपने लक्ष्य की पूर्ति में प्रवीण, अनेक स्त्रियों का भोक्ता, सुरापायो, बहुचर्चित, सन्तानयुक्त, प्रभावशाली व्यक्तित्व से पूर्ण, वाक्-चातुर्य में सक्षम, धार्मिकता के साथ अधार्मिक, यदाकदा राजनीति का व्याख्याता, वैदिक गृह-लभ से मुक्त, यदाकदा गृहस्थ की ओर ध्यान देने वाला, मदान्मत्त और उद्धत, धूर्त और ठगों जैसी प्रवृत्ति रखने वाला, भाई-बन्धु एवं अन्य की नारी जनों का निन्दक, सत्पुत्रों का पिता, धार्मिकता की वृत्ति स्त्री का पति, पर्याप्त धनोपाजन करने पर भी अत्यधिक व्यय करने वाला, पिता का प्रतापक, मध्यमायु से अधिक जीवन प्राप्त, यदाकदा सुख-सुख कष्टों का भोक्ता, वृद्धावस्था में अत्यधिक दुःख पाकर पैरुका स्थान में देहत्यागी होगा।

भ०
सं०
७३३

५०
१०

(३२८)- इस जन्म चक्र में जन्मा हुआ मानव गौरवर्ण, सामान्य कद, पुष्ट देह, मान-सुख का अल्प भागी और शि-
त कृत्य प्राप्त करने, साहस एवं कष्ट, बुद्धि में तीन किन्तु विद्या क्षेत्र में बहुत साधारण, मीलन-चित्त, पिता का
प्रशंसक, स्त्री सुविधितान्त हीन, अप्राकृतिक व्यक्ति में रत, पेटक-शृङ्गादि लाम्बी किन्तु उससे भी हीन, मीलना-
शय, सन्तान सुख से वञ्चित, पराश्रित, नौरजैसी कुवृत्ति, उदरनिर्वाहार्थ यदा कदा कार्य और पौरुषम कानिनाला,
गुह्य स्थानों में अनेक रोग प्राप्त, कुसंग में चित्त रहने वाला, भाई-बहिन थुल्ल होने या भी तत्सुख का सामान्य
भागी, धीकार-जनों के सुख-सहयोग से वञ्चित, एक स्थान पर रहने वाला, भाग्य हीन, ईश्वर और धर्म का आस्था
होते हुए भी धर्म की धी से विमुख, राज्य और सामाजिक प्रतिष्ठा-सम्मान से वञ्चित, वृद्धावस्था में अर्थाधिक
दुखी, सर्वथा क्लेशयुक्त, राज्य बन्धन और दण्ड प्राप्त वाला, अनेक कुकृत्यों में रत, दीर्घ जीवन युक्त, अथवा अल्पा-
यु में ही शरीर त्यागने वाला, नरक पथ का अनुगम, कर्म करने में मधुर भाषी होगा।

(३३०)- इस जन्म कुण्डली में जन्म लेने वाला मनुष्य रक्त-निवार युक्त शारीरिक-सौन्दर्य में कुछ चोट लिये हुए गो-बले
उन्नत ललाट, दीर्घ और कृश देह, अत्यधिक साहस और स्वाभिमान, अप्रयोजनोन्मुख निर्माथ में रत, प्रभावशाली
भागी और व्यक्ति का धनी, मिष्ठुर और ठही इदो निश्चयी, अनेक स्थितियों का भागी, शृष्टि में आसक्त, रहन सहन
और रोशनी में दक्ष, अधिक स्वयंसेवा, विद्या क्षेत्र में कुछ अनरोध के साथ सफल और उससे द्रव्य लाभ और सुख का उप-
भोग, कई पुत्रों का पिता और वृद्धावस्था में उनसे सुख प्राप्त करने, शृष्टि-भूमि और द्रव्य क्षेत्र में सामान्य, स्त्री से सुख सह-
भोग भोग तथा प्रसुराज से लाभ पाने वाला, पितृ क्षेत्र से अन्य स्थान का निवास, मनःशाली व्यवसाय रत, राज्य और सा-
माजिक प्रतिष्ठा सम्मान में मूल्य, अनुशासन प्रिय, ईश्वर और धर्म में आस्थावान् किन्तु धर्म कालने से विमुख, वृद्धावस्था में प्र-
दान कृत्यों वा परमात्माप करने वाला, भाई-बहिन और धीकार-सुख से वञ्चित, किसी के विरोध की चिन्ता से मुक्त, और क्लेश-
रत, योग और तन्त्र शास्त्र का ज्ञाता, मध्यायु प्राप्त, नेत्र-ज्योति में विकार-शक्ति एवं अनुशासनी प्रिय होगा।

(३११)- इस जन्माद् में जन्म लेने वाला जातक परम सुन्दर गौरवर्ण, मध्यम कद, उन्नत ललाट, स्त्रीभक्तानी और साहसी, पिष्टदेही, विशिष्टा व्युत्पन्न मति, विघासने में कुछ उन्नत के साथ लक्षण, सर्वदा चिन्तित, मातृसुख से वंचित, अन्य वारित, मित्राका प्रशंसक और पितृभक्त, ऐश्वर्यमय रहन-सहन में प्रवीण, सुन्दरी प्रतिवृत्ता गौरांगी स्त्रीका पति किन्तु उसका वंचक और मत्तभेदी, अन्य अनेक स्त्रियों का भोक्ता, नेत्रज्योति में विकार माने वाला, परोपकारी और दयालु, गृह-भूम्यादिका लाभो, कई बार धोखा खाये वला, न्यायीपुत्र और कटु-सत्यवादी, भुजाओं से उद्भाजित, द्रव्य द्वारा अनेक सुख भोगी, जन्मोत्पत्ति का उपासक, ईश्वर और धर्म में आस्थावान्, भौतिक और धार्मिक सुख-प्रदयोग से वंचित, दृष्टी और उग्र, प्रबल मेधावी तथा दुरुधार्थी, विरोध-पक्ष में प्रभावशाली व्यक्ति से सफल, द्रव्य-संग्रहार्थ निरन्तर प्रयत्नशील किन्तु द्रव्यकाय में न्यून, दृढ़ आय और कई पुत्रों का मित्र, वृद्धावस्था में सुख और अनेक धर्मकृत्यों का सम्पादन, मध्यमायु प्राप्ति, उत्तम स्थान में देह त्यागी होगा।

(३१२)- इस जन्माद्, चक्र में जन्मा हुआ जातक उंचा कद, उन्नत ललाट, वृशकाय और सुन्दर गौरवर्ण, साहसी और स्त्रीभक्तानी, मातृसुख का अत्य भोक्ता, पितृ-सहयोग से समुन्नत, पितृ-क्षेत्रका निवास एवं पितृ प्रशंसक, भौतिक सुख किन्तु धीमार्गी और चिन्तित, दृष्टी और उग्रभाव, दृढ़ और निश्चित आय से युक्त, गृह-भूम्यादिका लाभो, द्रव्य संग्रहार्थ प्रयत्नशील, और सामान्य द्रव्य-संचयक, सुन्दरी गौरवर्ण स्त्रीका पति और उसका वंचक, दृढ़ स्त्री, सत्यवादी एवं अनुशासन-प्रिय, राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में मान-प्राप्ति का प्राप्ति, विशिष्टा मेधावी, अनेक स्त्रियों में प्रयोज्य शील, मुनेन्द्रिय तथा नेत्रज्योति में विकार रहित, कई पुत्रों का पिता, मध्यमायुष्म सम्पन्न, ईश्वर में विश्वासवान् किन्तु धर्मपालन से हीन, सर्वदा चिन्तित, अकारण चिन्तित, मनस्वी और विचारक, आत्मिक कारणात् कभी कभी गम्भीर दान से युक्त, विघासने में कुछ उन्नत युक्त सफल, लेखक, मन्त्रलन्त्र और योगशास्त्र का ज्ञाता, पुत्रों के कारण, वृद्धावस्था में सुख, आत्मशाली व्यक्ति से शत्रुओं पर विजयो, पतीकार की माननीय से युक्त, उत्तम मोक्षप्राप्ति करने वाला होगा।

(३३३) - इस कुण्डली चक्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति (सुन्दर, गौरवर्ण, ऊँचा कद, उन्नत ललाट, प्रतीकार की भावना से युक्त, मंत्र-ज्योति में विकारग्रस्त, साहस और स्वाभिमान, पाप-मुक्तिमान, पितृ और माता का पूर्ण सुख सहयोग भोगी, पितृ-भक्त, सदासुखी उन्नति के लिये प्रयत्नशील, उदारचेता, कष्ट-सह्योगी और अनुशासन प्रिय, विद्या क्षेत्र में पूर्ण समुन्नत, ऐश्वर्य युक्त रहन-सहन में दक्ष, बन्धु-बान्धव और भाई-बहिन सभी का प्रिय, कुल का उद्योतक, पाप-मोक्षार्थी, अत्यन्त उद्योगी उच्चकोटि का चिकित्सक, गृह-भूमि-धन-धान्य-भृत्य-वाहनादि (सुख से पूर्ण, राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में उन्नत मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, पुत्र-पुत्री आदि से सुखी, इन्ध-संग्रह में कुछ कमी का अनुभव तथा पथ्याप्त-इन्ध-लाभ से सम्पन्न, प्रायः स्वस्थ और निरोग रहने वाला, यदाकदा मृत्यु-तुल्य कष्ट का भोला, सर्वथा विरोधहीन, पुरुषार्थ और सन्तान-वृद्धि भाग्यशाली, मध्यमायुष्य प्राप्ता, सुन्दरी गौरवर्णी शिष्टि-स्त्री का पति और उसके सुख सहयोग का भाला, मानसिक अशान्त और कुछ उग्र स्वभाव, देशाटन से लाभ प्राप्ति करने वाला होगा।

(३३४) - इस जन्म-चक्र में जन्म लेने वाला अनुष्य गौरवर्ण, कुशकाम, दीर्घायु, अत्यधिक साहस और स्वाभिमान, मानसिक रूप से सर्वथा अशान्त और चिन्तित, उग्र और क्रूर कर्मा, चंचल तथा क्रोधो-पकृत, शारीरिक सौन्दर्य तथा नैतिक विचार-ग्रस्त, व्यवसाय क्षेत्र में सफल, ऐश्वर्य और सामाजिक कर्मा में इन्ध-संग्रह करने वाला, सुन्दरी, गौरवर्णी पतिव्रता, स्त्री का पति और उसके सुख-सहयोग भोगी, तथापि उससे मतभेदी, गुप्त योजनाओं के निमित्त में पट, संघर्षशील, कई पुत्र और पुत्रियों का पिता, दृढ़ और निश्चित आय से युक्त, गृहस्थासक्त, धन-संग्रहार्थ प्रयत्नशील और परोक्ष धनी तथा भाग्य-शाली, यात्राकाल में दृष्टुओं से पीड़ित, ऐश्वर्य और बुद्धि योग से विरोध प्रसक्त विजेता, प्रायः स्वस्थ और निरोग रहने वाला, पुरुषार्थ और साठसकर्म से इन्ध-प्राप्त, ईश्वर और धर्म के प्रति आस्थावान् किन्तु धर्मपालन की अभाव से हीन, मध्य-मायुष्य सम्पन्न, कई बार मृत्यु-तुल्य कष्टों का भोला, राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, भाई-बहिनों का पतिव्रता सुख-सहयोग से भेचित, मातृ-सुख का अल्प भोला, पितृ-सुख में भी अभाव पाने वाला होगा।

पृ०
सं०
०२३

क०
२०

(३३५)- इस जन्म-चक्र में उत्पन्न हुआ मानव सामान्य जड़, उन्नत ललाट, कृष्ण वर्ण, साहसी और उग्र स्वभाव, अपने लक्ष्य साधनार्थ विनयशील और मृदुभाषी, सर्वथा मतभेद की नीति और भावनोंओं से मुक्त, गुदा नीति और योजनाओं के निमोष में प्रवीण, दूरदर्शी तथा काम-चतुर और मेधावी, माता-पिता का पूर्ण सुख भोला, पेटक धन से समुन्नत और भाग्यशाली, विद्या क्षेत्र में पूर्ण सफल, कई कन्याओं का पिता, एक पुत्र या दो पुत्र मुक्त, ईश्वर और धर्म से पूर्ण आस्तिक तथा पूर्ण धर्मपालक और कई धर्मानुष्ठानों का सम्पादक, राज्य क्षेत्र में समुन्नत और उच्च पदांशिन अथवा सफल अधिकारी, भुजाओं से उद्यार्जित द्रव्य द्वारा पूर्ण धनी, उदर-विकार या अगमाशयो रोगी, सुन्दरी गौतमणी विद्विता स्त्री का साथी, कम्पु-बान्धव, भाई बहिन और परिवारीजनों का प्रिय तथा उनका उपकार करने वाला, कई सामाजिक कार्य का सम्पादक, ज्ञान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, पूर्ण गृहस्थानुरक्त, सादा जीवन के साथ रहन-सहन में प्रवीण, मध्यम आयु से अधिक जीवन प्राप्त, यदा कदा दन्ध से कोच का अनुभव, गृह-भूति-वाहनार्थ सुख से पूर्ण होगा।

(३३६)- इस जन्म-चक्र में उत्पन्न गृहण करने वाला पुरुष कृष्ण वर्ण, उन्नत ललाट, दीर्घ और कृशदेही, उभावशाली व्यक्ति का पति, माता-पिता का पूर्ण सुख भोला किन्तु पितृ-सुख में कुछ-युन अथवा पिता से मतभेद रखने वाला, साहसी और बुद्धिबोध-वैचल्य प्रकृति, गुदा नीति-नीति द्वारा कार्य करने में सक्षम, योजना निमोष में प्रवीण, धर्म मेधावी, और दूरदर्शी, प्रायः गम्भीर और अशान्ति चित्त, कर्मयोगी, ईश्वर और धर्म से पूर्ण आस्थावान तथा धर्मानुष्ठान में सल्लसन्न, गीतार्थ करने वाला, द्रव्य संग्रह में सक्षम और बुद्धि तथा साहस से सफल भाग्यवान्, कई पुत्र और पुत्रियों का पिता, संगीत साहित्य का प्रेमी, व्यवसाय क्षेत्र में सफल, विद्या क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त, पितृ क्षेत्र निवासी, लक्ष्य साधनार्थ मृदुभाषी और विनय, गृह-भूति-द्रव्य-भूत वाहनार्थ सुख से पूर्ण, कम्पु-बान्धव और परिवारीजनों का प्रिय तथा सभी का उपकार करने वाला, दीर्घायु-सम्पन्न, धर्म से न्यार्थ सामाजिक धर्म कीर्ति का सम्पादक तथा मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, सुन्दरी विद्वता स्त्री का सुख भोला किन्तु उससे कुछ मतभेद या उर्वेक्षा रखने वाला होगा।

(३३७)- इस जन्माहु में जन्म लेने वाला जालक साहसी और सदैव अपनी लक्ष्य-शक्ति में तत्पर, शारीरिक सेन्द्रे में कुछ
त्रुटि युक्त गौरवर्ण, उभावशाली व्यक्तित्व का धनी, दीर्घ एवं पुष्ट देही, उग्र उग्रता और अनुशासन-पुत्र, धर्म बुद्धि-
मान और मेधवती, विद्याक्षेत्र में हृष्ट सफल तथा वाक्पटु, उन्नत विभाविद और कलाकार, विचक्षण बुद्धि, आवश्यक-
ता से विनयी, स्त्रीपक्ष में सदैव कष्ट उठाने वाला, मातृ-पितृ सुख भोगी, पिताका भक्त और अल्प सुख भोक्ता, अन्य क्षेत्रों का
निवासी, राज्य क्षेत्र में समुन्नत और मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, कर्मयोगी, गुप्त योजनाओं का निमाता, दूरदर्शी, गृह-भूमि,
धन-धान्य-स्वस्व-भूत-वाहनादि सुखों में पूर्ण, कृषु-वान्धव एवं परिवारीजनों का प्रिय, रहन सहन में दक्ष और अधिक
व्ययी, ईश्वर और धर्म में आस्थावान् तथा यथार्थ मानव धर्म का पालक, सन्तान युक्त यथाधा धनी तथा भाग्यमान, अधिक-
मायु से अधिक आयु प्राप्त, गृहस्थ में अनुरक्त, विदेश यात्रा और विदेशीय दारा का भोग-योग प्राप्त, उभावशाली व्यक्तित्व
से विरोधी का विजेता, पूर्ण आय-स्वस्थ और नोरोग, भ्रमणशील, व्यवसाय में सफल, उत्तम स्थान में देह त्यागी होगा।
(३३८)- इस जन्माहु में जन्मा हुआ बालक उत्तम गौरवर्ण, ऊँचा बदन, उन्नत ललाट, उभावशाली व्यक्तित्व से पूर्ण,
साहसी और स्वाभिमानी, उग्र तथा मंचल उग्रता, रहन सहन में पटु, धन-संग्रह में सर्वथा प्रयत्नशील तथा धन-संचय
में कुछ त्रुटि प्राप्त, उड़ी और टूट निश्चयी, स्त्रीपक्ष और से उद्येक्षित, पुत्र-पुत्री सन्तान युक्त, विद्याक्षेत्र में सफल, सफल
वैद्य या सर्गिक का व्यवसायी, अनेक सुख और अनेक स्थियों में समुपाशील, जमा स्वस्थ और नोरोग, यथाकदा मृत्यु-
भय का भोक्ता, नेत्र-ज्योति और रक्त-पित्त विकार प्राप्त, ईश्वर और धर्म में आस्थावान् किन्तु धर्म-तत्त्व से हीन, रा-
जकीय विडम्बना अथवा राज्य-दण्ड के भय से सम्भावित, पितृ क्षेत्र और अन्य क्षेत्र में निवासी, भाई-बहन और पारि-
वारिक सुख सहान, अच्छी आय-प्राप्ति से युक्त किन्तु यथाकदा द्रव्य-न्यूनता का अनुभव, कुत्सित विचार और मलिन कर-
कर्म। अनेक बार विरोध-पक्ष के प्रबल से हानि युक्त, दीर्घा मुल्य प्राप्त, गृहस्थ में पुत्री और सन्तान द्वारा विर-
स्त तथा उत्तम स्थान में दार कष्ट भोगता हुआ उत्तम काल में देह त्यागी होगा।

३३८- इस कुण्डली चक्र में जन्म ग्रहण करनेवाला मानव सुन्दर गौरवर्ण, उन्नत ललाट, न्योत्रद्वय में प्रभावशाली, म-
धमकद, सत्य और न्यायप्रिय नाकपट, निवाक्यव्यापनोर्म प्रबोध, पुष्ट देही, पामबुद्धि मय, स्वकार्यसाधन में सदा
सुन्दरी-शिक्षिता-गौरांगी स्त्रीका बलि, गृहस्थ में अनुरक्त, सन्तानयुक्त और सन्तानकी ओर से विधित्त, विद्या-
क्षेत्र में सफल, सामान्य-दृष्ट्य संग्रही, यदाकदा गृहस्थ संचालनार्थ द्रव्य-न्यूनताका अनुभवो, अधिक विवेकी, भोगप्रवृत्ति
के आधिक्य से कर्तृ रमणियों में रमणशौक, किसी स्त्री से द्रव्यवियोगक धोरनाशय, पितृक्षेत्र निवासो, अनुशासन
प्रिय, मातृ-स्वर्ग से वंचित अथवा जारिणीमालाका पुत्र, पितृ-प्रशंसक, धर्मकर्म में आस्थावान्, किन्तु सामान्य धर्मपालक,
मान-प्रतिष्ठा में सामान्य तथा साधारण भाग्योन्तत और गृह-भूमि आदि में भी सामान्य लाभ युक्त, आईवर्धन और
पारिवारिक सुख में न्यूनताका अनुभवो, दीर्घायुध्य सम्यन्त, बृद्धावस्था में अधिक दुःखो, विरोधपक्ष पर सर्वथा सफल,
अथवा विरोधकी चिन्तासे युक्त, दूरदर्शी, नेत्र-ज्योति में विकार युक्त, पार्श्वकीर्षित, शुक्ररोगी होगा।

३४०- इस जन्म चक्र में जन्म लेने वाला मनुष्य दीर्घ और कुशोदरी, सुन्दरलायुक्त श्यामवर्ण, उन्नत ललाट, सा-
हसी और उग्रचेता तथा क्रूरकर्मा, हठी और हठनिश्चयो, सुन्दरी, पटिवला, शिक्षिता स्त्रीका चामो, अनुशासनप्रिय,
विधाक्षेत्र में सफलता प्राप्त, गृहस्थासक्त, रोश्चर्य युक्त रहन-सहन में दक्ष, व्यवसाय में गम्भीर उत्तार-चढ़ाव पानेवाला,
भाग्योदय में अनेक बाधाओं प्राप्त, पायः सास्थ और नोरोग, क्लोदत तथा अहंकारी, ईश्वर और धर्मकी अपेक्षा
भाग्य और कर्म को महत्त्व देने वाला, मध्यमायुष्य सम्यन्त, जीवनके मध्य अनेक आरिष्टोंका भोक्ता, सन्तानयुक्त कि-
न्तु सन्तानकी ओर से अधिक विधित्त, रक्त एवं पित्त विकारग्रस्त, सूत्रेन्द्रिय अथवा यक्ष्मारोग से वीरित, गृह-
भूमिगत द्रव्यकोष लाभ में सामान्य, धन-संग्रहाय सर्वथा प्रयत्नवान्, मातृ-भूरज में न्यून, पितृ से सदा विरोधी,
और पितृका एक ही पुत्र, पारिवारिक विरोध युक्त, वाक्पटुता से विरोधी वा विजयो, मान-प्रतिष्ठा में सामान्य, बृद्धा-
वस्था अथवा बृद्धावस्था में आन्तरिक पर्याप्तता, यदाकदा गृहस्थ संचालनार्थ द्रव्य-भूरीका अनुभवो होगा।

(३४१)- इस जन्म-फल में उत्पन्न हुआ जातक सुन्दर, औरवर्ण, दीर्घ और पुष्टदेही, उन्नत ललाट, उभरी ओर उल्ला-
री, साहसो ओर स्वाभिमानी, प्रभावशाली व्यक्ति सम्पन्न, कुछ उग्र स्वभाव, दानु विवेकी, विलक्षण बुद्धि, दूरदर्शी और
सत्य तथा शार्ङ्ग प्रिय, अनुशासन प्रिय, वाक्-चतुर, प्रायः स्वार्थ और निरोग, प्रभावशाली व्यक्ति तथा मधुरता से निरोग प्र-
विजयी, विद्या-शिक्षण क्षेत्र में सामान्य, माता-पिता का अल्प सुख प्राप्त, सन्तान की ओर से चिन्तित किंवा विलम्ब से
सन्तान प्राप्त, राज्यवर्तनी मजीवी तथा मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, धैर्य-धन और गृहस्थ लाभ से युक्त, सुन्दरी श्यामापति-
वता-शिक्षिता-बुद्धिमती स्त्रीका पति, व्यवसाय कर्म क्षेत्र में सफल, दृढ़ और निश्चित आय से युक्त, भाई-बहन
और दाई-बाईक सुख में सामान्य, दीर्घायु सम्पन्न, उदर-विकार और नैत्र रोग मानेवाला, ईश्वर-धर्म-भाग्य में
आस्थावान् तथा धर्म-बालक, भाग्योन्नि-में विघ्न युक्त सफलता प्राप्त, रहन-सहन में दक्ष, गृहस्थासक्त, प्रायः अ-
शान्त चित्त, स्त्री अथवा स्वसुराज के कारण भाग्यवान्, कार्य-सम्बन्धी में मधुरता प्राप्त होगा।

(३४२)- इस जन्म-फल में उत्पन्न गृहस्थ कोनेवाला बालक उत्तम औरवर्ण, उन्नत ललाट, पुरुषार्थी और साहसो
एवं स्वाभिमानी, अधिक विवेकी, सामान्यकद और पुष्टदेही, धैर्य सम्पन्न, विद्या क्षेत्र में सामान्य, रहन-सहन में
दक्ष, मातृ सुख में स्वल्प, पितृ सुख भोला, पितृ-क्षेत्र से अन्यत्र निर्वासित, राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में मान-प्रतिष्ठा युक्त,
सुन्दरी श्यामापति का पति किन्तु उत्तम मतेवी, अन्धी स्त्रियों में रमण्यता और द्रव्य लाभ, यदाकदा गृहस्थ संचालनाथ
चिन्तित, व्यवसाय कर्म क्षेत्र में सफल, किन्तु भाग्योन्नि-में अनेक विघ्न युक्त, ईश्वर और दया धर्म में आस्थावान् किन्तु
धर्ममालिन में कुट्टि युक्त, सन्तान द्वारा वृद्धावस्था में सुखी, पुरुषार्थ नर्म में कमी आलस्य युक्त, विलक्षण मेधावी और
अनेक विद्या-विद, साहित्य और ज्योतिषादि प्रेम, गृहस्थ में अनुरक्त, भाई-बहन और दाई-बाईक सुख सहयोग से वृद्धि
गृह-भूमि लाभ में सामान्य तथा द्रव्य संग्रहार्थ निरन्तर प्रयत्नशील तथापि द्रव्यकोष में कुट्टि युक्त, परोपकारी और दयालु,
मध्यमायु प्राप्त, कर-वत् मृत्यु-तन्त्रकष्ट प्राप्तकर्ता, कुछ उल्लेख भावनाओं से युक्त, अशान्त चेत होगा।

(३४३)- इस जन्माङ्ग में जन्मा हुआ व्यक्तित्व उत्तम और धर्म, उन्नत ललाट, मध्यमकद और पुष्ट देही, कुछ उग्र प्रकृति, स्त्रीभारती और सत्य तथा अनुशासन प्रिय, पराधकारी और दयालु, ईश्वर और धर्म में निष्ठावान् किन्तु धर्मपालन की म-
याधरी से वंचित, भाईबहिन और दीवारीजनों के क्लेश से मुक्त, मिलक्षणा प्रतिभा वाकुपटला-सम्पन्न, दूरदेशी, स्वकाय
साधन में लया, मात-सुरक्ष से हीन अथवा जागीरणी काला का पुत्र, पुरुषा धर्म से समुन्नत, सुन्दरी-स्त्री का स्त्री, प्रायः स्व-
स्थ और निरोग, किन्तु कभी-कभी मृत्यु-तुल्य कष्टों का प्राप्त कर्ता, नैऋत्योर्ध्व में विकारग्रस्त, रहस्यमय में प्रवीण और अन्य
कार्यनीति का भोला, विद्या और सन्तान-क्षेत्र में समुन्नत तथा वृद्धावस्था में सन्तान द्वारा सुख प्राप्त, प्रभावशाली व्य-
क्तित्व तथा बुद्धिकोशल से विरोध-प्रसन्न, भाग्यान्तर तथा दृव्य-संग्रहार्थ निरन्तर चेष्टित तथा हि भाग्योदय में अ-
नेक विउम्बना प्राप्त, मध्यमाधुष्य सम्पन्न, प्रायः प्रसन्नचित्त, राज्यवर्तनोपजीवी तथा मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, गृह-भूमि
लाभ में सामान्य, गृहस्थासक्त, दक्षिण-कार्य में गीड़ा तथा मुख-मालन वा प्रत्याघात के विन्दु मुक्त होगा।

(३४४)- इस जन्माङ्ग में जन्म लेने वाला पुरुष सुन्दर दीर्घवयु, और धर्म, उन्नत ललाट, अत्यधिक सादस और स्त्री-
भारती, उग्रस्वभाव और उग्रकर्म, प्रभावशाली व्यक्तित्वका धनी, सुन्दरी प्रतिवृत्ता स्त्री का पति और उसमें तथा अन्य
स्त्रियों में अनुरक्त, अधिक प्रियेला, भोग-विलास में दक्ष, विद्या और सन्तान क्षेत्र में सामान्य, वृद्धावस्था में सन्तान
तथा स्त्रीद्वारा विरक्त और उपेक्षित, गृह-भूमि लाभ में सामान्य, व्यवसाय के मन्त्रिकोलात्कारित किन्तु अनेक वा-
योओ से ग्रस्त, बलादत्त और किसीकी चिन्ता न करने वाला, भाईबहिन और दीवारीक सुख सहयोग से वंचित, सभी को
शकल-दृष्टि से देखने वाला, प्रायः अशान्त चित्त, कष्टवार मृत्यु-तुल्य कष्टों का भोला, किसी स्त्री से भयंका पाया प्राप्त,
मध्यमायु में अधिक जीवन प्राप्त, दृव्यकोष संग्रहार्थ मित्ता प्रयत्नवान् किन्तु दृव्य संग्रह निहीन, भाग्योदय में अनेक वि-
घ्न पाने वाला, प्रभावशाली व्यक्तित्व से विरोध-प्रसन्न, उल्लाही और कर्मयोगी, ईश्वर तथा भाग्य को कोसने वाला,
धर्मपालन से हीन, वृद्धावस्था में अपने कृत्यों का पश्चान्तापी, मान-प्रतिष्ठा से वञ्चित होगा।

(३४५) इस कुण्डली में जन्म लेने वाला आतक गौरवर्ण, साहसी और नामोवरकी, स्वाभिमानी, धीर-वीर और गम्भीर, दीर्घ वृद्धदेही, उन्नत ललाट, अनुशासन-पथ, वरोधकारी और दयालु, स्त्री की ओर से उदासीन, अपना स्त्री के करने वा गृहस्थ को व्योगने वाला, अनेक पुत्र अथवा शिष्यपुरुष, गृह-भूमि-धन-धान्य-भृत्य-काटनादि सुविधि पूर्ण, प्रबल राजयोग प्राप्त, मातृ-सुख में स्वल्प, पितृ-सहयोग और सुख से समुन्नत एवं पितृ-भक्त, ईश्वर और धर्म में पूर्ण निष्ठा तथा धर्म का यथाथ-पालक, देशाटन और तीक्षाटन से युक्त, भारवहन और पारिवारिक क्लेश पावने वाला अथवा उनके सुख-सहयोग से वंचित, स्वच्छा-चारी, मध्यमायुष्य जीवन प्राप्त, विभाजन में अनेक विद्या विदु, भाग्योदय में अनेक लिपियों का प्राप्तकर्ता, मुकेशों से भरत, पन्तानकी और से अधिक चिन्तित, शत्रु और वरोधियों का प्रबल दमनकारी, नेत्रज्योति और उदर-विकार गृह, दूर-दूरी, प्रायः अशान्त-चित्त, राज्य-क्षेत्र में अधिक मान-कतिष्ठा सम्पन्न, विरोधकी चिन्ता न करने वाला तथापि उसमें सर्वथा लगनशालि होगा।

(३४६) इस कुण्डली में जन्म गृहण करने वाला बालक सुन्दर और वर्ण, उन्नत ललाट, साहसी और स्वाभिमानी, दीर्घ वृद्ध और वृद्धदेही, प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, मृदुल और उदार, कुछ उग्र और अनुशासन-पथ प्रकृत, एक विकार और नेत्रज्योति में विकार गृह, साहित्य और संगीत का प्रेमी, भोगविलास में रस, अनेक कार्याभिनयों का सुख-भोक्ता, स्त्री स्त्री की ओर से उदासीन अथवा स्त्री से सर्वथा मतभेद रखने वाला, पौत्र-पुत्रों का पिता, दूर-दूरी और विविध, प्रायः स्वस्थ और निरोग, मानसिक रूप से अशान्त, विद्या-क्षेत्र में पूर्ण स्मात, भाग्योदय में अनेक कष्टादय, भारवहन और पारिवारिक क्लेश सहन करने अथवा योद्धाजी से स्वल्प, मातृ-सुख में अल्प, पितृ-सुख सहयोग से समुन्नत और पितृ-भक्त, ईश्वर और धर्म में आस्थावान् किन्तु धर्म-शिलन की यथाथ-रिहना प्रबल कर्मयोगी, यदाकदा कर्म और बुद्धि-योग से भी असफल होने वा भाग्यवादी, राज्य-क्षेत्र में सम्मानयुक्त, मध्यमायुष्य जीवन प्राप्त प्रभावशाली व्यक्तित्व से विरोधियों का विजोता, उत्तरीकारकी भावना रखने वाला, धन-धान्यादि-गृह-भूमिलार्थ में दयापति होगा।

(३४१)- २५ जन्मांग में उत्पन्न होने वाला मानव शारीरिक सौन्दर्य में कामदेव के समान, उत्तम गोलवर्ण, उन्नत ललाटे, परमेश्वर्य युक्त, २८ मसूदेन और भोगविलास में दक्ष, साहस और स्वाभिमान, सुदुर्लभ और विनोदी प्रकृति, चंचल मन, (सुन्दरी, प्रशिक्षिता वीर्यवता स्त्री का प्रति और गृहस्थानुरक्त, कई पुत्रों का पिता, विद्या क्षेत्र में पूर्ण प्रवीण और समुन्नत संगीत-साहित्य-ज्योतिष-रत्न परीक्षा आदि को प्रेम, मातृ-पितृ सुख-सहयोग से पूर्ण, भाग्योदय में अनेक काथायुक्त तथापि समुन्नत, काव्यांग प्रेमी, पारिवारिक क्लेश प्राप्ति कर्त्ता, अन्धता पीड़ितारी जनों से प्रभु, राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में मान-प्रतिष्ठा प्रप्ति, कुल का दीपक, शत्रु और विरोधियों से क्लेश प्राप्ति तथापि उनका प्रयत्न दमनकारी, धन-धान्य गृह-भूमि-भृत्य-काटनादि सुख से पूर्ण, यदा कदा दुष्ट की कमी का अनुभव, मध्यमायु से अधिक जीवन प्राप्त, मिरन्तर व्यवसाय में संलग्न, व्यवसाय में करियर उन्नत-वृद्धावयुक्त, पराधकार और दयालु, विद्याबुद्धि कोशल से स्वउन्नति में संलग्न और प्रवीण, प्राचीनता का प्रतिपादक तथा कुछ नवीनतायुक्त सलंग को प्रेम होगा।

(३४२)- २६ जन्मांग चक्र में उत्पन्न गृहस्थ होने वाला मनुष्य शारीरिक सौन्दर्य में कूटयुक्त, श्यामवर्ण, अशान्तचित्त, अत्यन्त उग्र स्वभाव कर कर्मी, साहस और अनेक जनों का संहारक, विद्या और सन्तान सुख से हीन, भोगविलास में दक्ष, अत्यधिक लयचौला, मातृ-पितृ-विरोधी, पैतृक गृहादि से हीन होकर यत्र-तत्र भ्रमणशील, बलवान् और धूर्त, स्वभाव-स्वाध्याय का दृष्टी, कर्मक्षेत्र में निष्णात, स्त्री व गृहस्थ-सुख से वंचित, बलात्कार और अन्य अनकीर्तियों में रमणकर्त्ता, नीच और कुचेल प्रकृति, भाग्य की प्रबलता से कभी कभी पराधीन पाने वाला किन्तु स्वधीनिष्पत्ती, प्रायः मन्त्र और मोरोग, मुन्नेन्द्रिय किंवा भुक्रोग से पीड़ित, कभी कभी चोरी करने वाला, सज्जनों जैसा आचरण कर्त्तें हों विधो में प्रवीण, किसीके गृह-भूमि और स्त्री आदि पर शक्ति से अधिकार पाने वाला, स्त्रियों के साथ वाशविकता का आचरण कर्त्ता, भारवहन और पीड़ा तथा मान-प्रतिष्ठा एवं ईश्वर और धर्म की ओर से उदासिन, अनुरागमन को न प्रवीण, अश्व से तेगरक चोट पाने वाला, परीकार भावनों में युक्त, अन्धायु से कुछ अधिक जीवन प्राप्त होगा।

(३४९)- इस जन्म चक्र में जन्म करने वाला व्यक्ति दीर्घबुद्धि, शारीरिक सौन्दर्य में भूट युक्त, श्याम वर्ण, कुरा देही, उन्नत ललाट, आकृति से कुछ भयंकर, मुख और माथे पर चोट या घाव के निन्द युक्त, भोग-विलास और रहस्य करने में दक्ष, अत्यधिक खिंचेला, कभी-कभी दूसरों को धोखा देकर जीवन यापन करने वाला, स्त्री व गृहस्थ सुख से हीन, विद्या और सन्तान सुख से ठीक, कर कर्म तथा क्रूर और उग्र प्रकृति, अनेक व्यसनों में संलग्न, कभी-कभी भाग्य या चौर कर्म से पर्याप्त धन प्राप्त कर भी गृह-भूमि और अन्य सुख साधनों से हीन, जागीरी मालका पुत्र, पितृ-सुख का उत्पन्न भोक्ता, मान-परिष्ठा हीन, कई बार राज्य दण्ड भोगी, अनेक स्त्रियों में रमण शील अथवा अप्राकृतिक मेथुन युक्त धर्मिन्धारक रतापितृ-गृहादि सुख से वंचित, प्रायः पराश्रित, आस्थिर कर्म, यत्र-तत्र भ्रमणशील, बलाद्धत, ईश्वर और धर्म आस्था से हीन, मारिबठिन युक्त तथा परिवारीजनों का सतत विरोधी, बुद्धि रोग से पीड़ित, अंग-भंग तथा कई बार मृत्युतुल्य कष्ट देने वाला, उत्तीकर भावनाओं से ओत-प्रोत, अन्धायु से कुछ अधिक जीवन प्राप्त होगा।

(३५०)- इस जन्मचक्र में जन्म गृहण करने वाला पुरुष शारीरिक सौन्दर्य में कुछ भूट युक्त दीर्घबुद्धि, उभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, गोदण्ड, विवेकी और चतुर, मातृ-सुख भोक्ता, पितृ-सुख में खलप, पैतृक गृहादि लाभ, माता को और भाई-बहिन को कष्ट दायी, पारिवारिक कलह युक्त, स्त्री सुख से हीन अथवा कई स्त्रियों का भोक्ता, विद्या और सन्तान सुख से हीन, संग-हीन स्त्री में सन्तान उत्पन्न करने वाला, पौरुष और बुद्धि को शल से उन्नत करने वाला, यदाकदा पर्याप्त धन देने वाला, भाग्योलहि से वंचित, गृहस्थासक्त तथा अप्राकृतिक मेथुन और भोग-विलास में पट, ईश्वर और धर्म में आस्थावान् होने पर भी धर्मपालन से हीन, सदाचरण और पवित्रता से वंचित, ज्वरे रोग से पीड़ित अथवा अश्वरी रोग-भोक्ता, विरोध-चिन्ता से युक्त, वाक्पटुता से धोखा देने में निपुण अथवा स्त्रियों का विवेक, यत्र-तत्र भ्रमणशील, चौर कर्म में राज्य अथवा दस्ते में पीड़ित, अधिक व्ययो, मान-परिष्ठा से हीन, अन्धायु अथवा जोड़ावस्था में मृत्यु देने वाला, पैतृक गृह-भूमि लाभ को स्त्री-प्रसंग के कारण छोड़ देने वाला, कई स्त्रियों में सन्तानोत्पादक होगा।

३५१- इस जन्म कुण्डली में जन्म लेने वाला मानव दीर्घदेही, कुशकाय, उन्नत ललाट, गौरवर्ण, साहसि और स्वा-
भिमानि, पुरुषार्थी, ईश्वर और धर्म में आस्थावान्, तथा धर्म-पालक, मातृ-सुख में अल्प, पितृ-सु-
ख-प्रीति-लामी एवं पितृ-भक्त, विद्या और बुद्धि क्षेत्र में कुशल र्ण प्राप्तक, आत्मबल से हीन, साहस से गुण-मोजनों आँ के निर्मा-
ण में प्रवीण, स्वलक्ष्य साधन में लय्पर, भाई-बहिन और कुटुम्ब सित्याग दुआ अथवा स्वयं उन्हें विरोध के कारण त्यागने
वाला, कई पुत्रों का पिता, रहन-सहन में लट् तथा ऐश्वर्योदि में अधिक बर्चैला, उभावशाली व्यक्तित्व से विरोध-प्रक्षका
विजेता, भागी-निलासि और ओषधकामी, गृहस्थ में अनुरक्त, सुन्दरी-शिखिता स्त्री का पति किन्तु उनकी स्त्रियों
में शयनशौच, राजस्व क्षेत्र में समुन्नत तथा राज्यवेतनोपजीवी, स्वभाव से ठगी और उग्र, दृढ़ तथा निश्चित आय-युक्त,
वाहनादि सुविसे पूर्ण, विविध-प्रशिक्ष में जानकार, मध्यमायु से अधिक जीवन-उत्तम काल और उत्तम स्थान
में देहत्यागी, दुव्य-संग-हाथ सतत प्रयत्नवान् तथापि दुव्य-कोष-संग-ह में वर्जित, होगा।

३५२- इस कुण्डली तन्त्र में उत्पन्न होने वाला मनुष्य सामान्य कद और पुष्टदेही, उन्नत ललाट, शरीर-कलौन्दर
युक्त उत्तम गौरवर्ण, साहसि और स्वाभिमानि, निवेनी और चतुर। स्वाकथ स्थापना में प्रवीण, धर्म-मेधावी, वि-
द्वान् क्षेत्र में कुशल एवं निष्ठावान्, कई पुत्रों का पिता, सुन्दरी-शिखिता और गौरांगी पतिव्रता स्त्री का प्रिय, गृह-
स्थापक, ऐश्वर्य-युक्त रहन-सहन में प्रवीण, भाग-विलास में दक्ष, ईश्वर और धर्म में आस्थावान्, मानवतावादी, कर्मयो-
गी, साहस-पुरुषार्थ-बुद्धि-कोशल तथा पितृ-सुख सहयोग से समुन्नत और पितृ-भक्त, जागरणी माता का पुत्र अथवा
मातृ-सुख में अल्प, भाई-बहिन और पारिवारिक सुख सहयोग में सामान्य, पितृ-धन और गृहार्थ-लामी, दुव्य-संग-हाथ सतत
निष्कृत, राजस्व क्षेत्र में समुन्नत एवं राज्यवेतनोपजीवी, दृढ़ और निश्चित आय-युक्त, धरोपकारी और दयालु, गृहस्थ अशो-
दि-रोग-प्रदित तथा नेत्र-ज्योति में विकार रहत, उभावशाली व्यक्तित्व का धनी, दुव्य-कोष-संग-ह में सामान्य, भाग्योन्नत,
मध्यमायु से अधिक जीवन-उत्तम तथा उत्तम स्थान में देहत्याग का मोक्ष-प्राप्तिका अधिकारी होगा।

मं
सं
३२३

(३४३) इस जन्म-चक्र में जन्म ग्रहण करने वाला बालक परम सुन्दरता युक्त गोरवर्ण, सादस्य और चिन्मयी, स्वाभि-
मान, सामान्य कद और पुष्ट देही, उन्नत ललाट, अत्यधिक मेधावी और चतुर एवं विनय सम्पन्न, मुद एवं मुग्ध
भावी, विद्या क्षेत्र में पूर्ण मिथ्या तथा कई विधाओं में पारंगत, धर्म विद्वान् साहित्य संगीत - काव्य - ज्योतिषादि प्रेम,
मातृ-पितृ सुख भोक्ता और उनका भक्त, मानवतावादी एवं कर्मयोगी, स्ववाक्य स्थापना में प्रवीण, विनोदी और चंचल
पुष्ट, तेजवान्, कुल का दीपक, शरीर के दक्षिणार्ध में चोट से पीड़ित, यदा कदा मृदु वृत्त्य कष्ट भोग करने वाला, गृह-
भूमि - धन - धान्य - मृत्त वाहनादि सुख से पूर्ण, विद्वत्कुल भाग्योद्भूत में सफल, सतत खान्दति में संलग्न, सुन्दरी शि-
षिता - गौरांगी स्त्री का पति, कई पुत्रों का पिता, ईश्वर और धर्म में आस्थावान्, पराधकारी और दयालु, भोग-विलास
और रहन सहन में प्रवीण, पर्याप्त धन संग्रही, राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में समुन्नत और साम-प्रतिष्ठा सम्पन्न, दीर्घायुव्य
जीवन प्राप्ता, गृहस्थायक, उत्तम कर्मों के प्रभाव से उत्तम काल और उत्तम स्थान में देहत्यागी तथा मोक्षाधिकारी होगा।

(३४४) इस जन्म-चक्र में जन्म लेने वाला बालक पुष्ट देही, सादस्य और हृदय-निश्चयी, पारसुन्दरी गोरवर्ण, उन्नत ल-
लाट, सामान्य कद, प्रभावशाली धार्मिकत्व का धनी, नेत्रज्योति में कुरीत का अनुभव, मातृ-पितृ-सुख सहयोग का
भोक्ता, विद्या क्षेत्र में पारंगत, सफल प्रवृत्ता, मुदुल और चंचल पुष्ट, भोग-विलास युक्त रहन-सहन में ऐश्वर्यमय
जीवन व्यतीत करने वाला, पार्श्व-पीड़ा युक्त, विरोध पर प्रयास विजयी, पैतृक गृह-भूमि का लाभ, राज्य और सा-
माजिक क्षेत्रों में मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, समुन्नत, गृह-भूमि - धन - धान्य - वाहनादि सुख से पूर्ण, धर्म प्रवीण और चिन्मयी,
धन संग्रहण सर्वथा लय और पर्याप्त धनी, भाई-बहिन और पारिवारिक धुल-सहयोग का भागी, यदा कदा मुरावायी,
गृहस्थायक; सुन्दरी, गौरांगी शिषिता - सुशाला स्त्री का सुख भोक्ता, कई पुत्रों का पिता, अनेक विधाओं में तथ्या
संस्कृति और ज्योतिष तथा काव्यंग प्रेम, भाग्योन्नति में कुछ विघ्न युक्त सफलता प्राप्त, कभी कभी मृदु वृत्त्य के कारणों से
जाध कर्ता, ईश्वर और धर्म में आस्थावान्, कर्मयोगी और मानवतावादी, उत्तम स्थान में देहत्यागी व दीर्घायुव्य होगा।

कुं
१०

(३५५)- ३५ जन्म चक्र में उत्पन्न होनेवाला व्यक्ति सुन्दर गौरवर्ण, उन्नत ललाट, प्रभावशाली व्यक्ति स्व-सम्पन्न, साहसी और स्वाभिमानशील, सामान्य कद और पुष्ट देही, सत्यवादी एवं न्याय तथा अनुशासन प्रिय, वदोपकारी और दयालु, तेजवी, कुलका दीपक, भारिकर्तृ और पारिवारिक सुख-सहयोग सम्पन्न, वाम बुद्धिमान और मध्यावधि तथा चतुर, विद्या-क्षेत्र में पूर्ण दारुणता, कर पुत्रों का पिता, स्वयंभू-स्थापना में प्रवृत्त, कुटुम्ब उन्नत तथा चंचल प्रकृति, सफल वाक्पटु, धन-धान्य-गृह-भूमि-भूत-वाहनगति सुविज्ञान, ईश्वर और धर्म में आस्थावान्, रक्त-विकार मुक्त, प्रमत्त और नोशोग, मातृ-भ्रातृ में अल्प और पित्र-भ्रातृ सहयोग में सम्पन्न, राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में मान-प्राप्ति प्राप्त, द्रव्य संग्रहार्थ सर्वथा चोखत और पर्याप्त धनी तथा भाग्यशाली, सुन्दरी-शिक्षिता-गौरांगी-कृशाङ्गी-सुरा-लाजिका भोला, विदेश-यात्रा के योग से युक्त, कर्मयोगी और पुरुषार्थी, दृढ़ तथा मिश्रित द्रव्य-लाभ से प्रभावित, उत्तमकर्मों का सम्पादक, भोगी-विलासी, रहन-सहन और ऐश्वर्यमय जीवन में सफल, दोषोपद्रव प्राप्त होगा।

(३५६)- ३५ जन्म चक्र में उत्पन्न गृहण करने वाला पुरुष परम सुन्दरता युक्त, गौरवर्ण, सामान्य कद और सामान्य देही उन्नत ललाट, साहसी और स्वाभिमानशील, वाम-चतुर और विवेकी, कुटुम्ब उन्नत तथा चंचल प्रकृति युक्त विनोदी स्वभाव, परमपूज्यार्थी, सुरा-सुन्दरी का भोला, साहस और बुद्धि कोशल से सम्पन्न क्षेत्र में सफल, द्रव्य विषय में अनेक उत्साह-प्रदायक प्राप्त होगा, विद्यायुक्त भाग्यशाली, राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में मान-प्राप्ति प्राप्त, राज्यद्वारा धन लाभ, माता-पिता का पुत्र भोला तथा पिता की अपेक्षा मातृ-सखी, पैतृक धन और गृह-भूमिदि लाभ, सुन्दरी-कृशाङ्गी-गौरवर्ण-स्त्रीगणों का प्रिय, कर पुत्रों का पिता, विद्या-क्षेत्र में दारुणता, योगी और मन्त्रवेत्ता, ज्योतिष और साहित्य प्रिय, भारिकर्तृ और पारिवारिक सुख-सम्पन्न में सामान्य, विरोध-पक्ष पर बुद्धि कोशल और वाक्पटुता से सफल, द्रव्य-संग्रह और लक्ष्य-साधन पूर्ण में कुशल और तत्पर, धन-धान्यगति और ऐश्वर्ययुक्त रहन-सहन में सफल और सुखी, यदा कदा द्रव्य-भी लुब्धका अनुभव, द्रव्य संग्रह में सामान्य, मध्यमपक्ष पर अधिक जीवन-प्राप्त, स्वार्थसाधन में तत्पर होगा।

(३५७)- ३२५ जन्माङ्क में जन्म लेने वाला जातक सुन्दर, सुदीर्घदेही, कुशाकाय, गौरवर्ण, तेजस्वी और उन्नत ललाटे, अत्यधिक साहसी और अनुशासनीय, उन्नत और उत्साही, विभाव से कुछ उग्र और चंचल, दूरदर्शी, भाईबहि-
न युक्त तथा उनसे उन्नत पारिवारिक सम्बन्धों में सामान्य, विधाक्षेत्र में कुछ अवरोध युक्त समुन्नत, पितृ-मातृ-स्वयंभोक्ता
और धर्मिक धन तथा गृहादिलाभी एवं पितृभक्त, राज्य और साम्राज्य के क्षेत्रों में समुन्नत और मान प्रसिद्ध प्राप्त, व-
शिष्ठ अधिकार सम्पन्न, सुरिगदित, सुशीला, धर्मपरायण स्त्रीका प्रीति, सन्तान भुक्त और सन्तान की ओर से विधित्त, भाग्यो-
दयार्थ सतत प्रयत्नशील, किन्तु अनेक कष्टों के साथ भाग्यशाली, उत्तिष्ठकर्मयोगी, मानवतावादी, वृद्धावस्थ में ईश्वर और
धर्म के प्रति आस्थावान्, दृढ़ और निश्चित उपाय सम्पन्न, प्रभावशाली व्यक्ति और गृहनिर्माण से निरोध का दमन
करे, गृहस्थ में आसक्त, दुःख संग्रहार्थ निर्देशितवान् तथा सामान्य इच्छा संग्रही, रक्त-पित्त तथा मानसिक विकार से पीड़ित,
मध्यायुष्य प्राप्त, उत्तम चिन्तनशील और विचारक, उत्तम स्थान व उत्तम काल में देह त्यागने वाला होगा।

(३५८)- ३२६ जन्माङ्क में जन्माङ्क ३२५ कालक सामान्य कद, उन्नत ललाटे, गौरवर्ण, वाम सुन्दर और तेजस्वी,
अत्यधिक बुद्धिमान तथा दूरदर्शी एवं विवेक सम्पन्न, सुरा सुन्दरी का प्रेमी, भोगविलास और रति कीड़ा एवं ऐश्वर्य-
युक्त रहन सहन में रस, विधाक्षेत्र में सामान्य किन्तु अनेक मिथ्याविद् होने से विद्वानों की कोटि में माना जाये काल, सुन्दरी
पुष्टांगी-उदरविकारग्रस्ता, श्यामा-सुशीला स्त्रीका प्रीति और अनेक कामनियों का भोक्ता, दुःखकोष संग्रह में सामा-
न्य, गृह-भूम्यादि लाभो, विनोदी और चंचल तथा उदारमन, भाईबहिन और पारिवारिक सुख सम्बन्धों में सामान्य, ई-
श्वर और धर्म में आस्थावान् किन्तु सामान्य धर्मपालक, राज्यवर्तनोपजीवी और उच्च अधिकारयुक्त मान प्रसिद्धा सम्पन्न,
धन-धान्य-वाहनदि सुख समुपार्ज, सन्तान की ओर से विधित्त और विलम्ब से सन्तान प्राप्त करे, विवाह्य आश्रय
में प्रवीण, साहित्य-काव्य-ज्योतिषादि प्रेमी, कई ग्रन्थों का प्रणेत, अवरोध युक्त भाग्योन्नत, मध्यायुष्य कुछ अ-
धिक जीवन देने वाला, सुमेन्द्रिय-अथवा हृत् रोग से पीड़ित, गृहस्थासक्त, किसी स्त्री से दुःख का योग प्राप्त करेगा।

(३५९) इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न होने वाला व्यक्ति पुनः ललाट, प्रभावशाली व्यक्ति का धनी, गौरव और पुष्ट-
देही, सामान्यकर, साहसी स्वामिनी। गम्भीर-सत्यवादी और न्यायवधा अनुशासनप्रेम, वाम मेधावी, बुद्धिमान एवं
विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न, विद्योक्षेत्र में सामान्य तथा अधिक अनेक विद्याओं और कलाविद, दृष्टि और दृढनिश्चय, उच्चमौखि
उल्लाही, कटुसत्यवक्ता होने के कारण कुछ अफयश गृहण करने वाला, स्वभाव से कुछ उग्र, धन-धान्य-गृह-भूमि-भूत-
वाटनादि सुख से पूर्ण, ईश्वर और धर्म में आस्थावान्, पितृ-भक्त और मातृ-पितृ-सुख में अनन्त, पतिव्रत कर्मयोगी, स-
त्त्व उन्नति में प्रवृत्त, राज्यक्षेत्र में वरिष्ठ पदसिद्धि और प्रसिद्धि प्राप्त, सुन्दरी पुष्टांगी-सरला-सुशीला-पतिव्रता-
स्त्री का पति, सन्तानकी और सन्निहित, दत्तक पुत्र युक्त अथवा विलम्ब से सन्तान प्राप्त, साहित्य-संस्कृति-ज्योति-
भादि प्रेमी, स्ववाक्य स्थापना में प्रवीण, रत्न-सङ्ग्रह में रस, भाषाज्ञान, नेत्रज्योति में भूटिका अनुभव, मध्यायुष्य प्राप्ति,
सामान्य-दृष्टि से गरी, पराधकारी और दयालु, मरणाकाल में वीर्यविकार अथवा गुह्य रोगकी बीड़ा धारण करने वाला होगा।
(३६०) इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न गृहण करने वाला पुरुष सामान्यकर और पुष्टदेही, सामान्य गोधुमवर्ण, सुन्दर
और तेजस्वी, पुष्टदेही, वामविवेकी और चतुर, दूरदर्शी, धीर-वीर-गम्भीर और शान्त तथा कुटुम्बिक
प्रकृति, विद्योक्षेत्र में अनेक विद्याओं में पूर्णधारण और निष्णात, व्यवसाय और राज्य-पक्ष में समुन्नत तथा प्रभा-
क्षेत्रों में मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, भाषाज्ञान में भूटिका अनुभव, सुन्दरी-शिष्टता-सामान्य सरला-पतिव्रता-पु-
ष्टांगी-श्रीमास्त्री का पति अथवा विभागी योग प्राप्त, मातृ-पितृ-सुख भाँसा और सभी का आदरकर्ता, अनेक विधाविद
तथा मेधावी, उत्तम गुणी पुत्रों का पिता और उनसे सुख प्राप्त करता, धर्मधार्मिक और संस्कृति तथा ईश्वर का आराध-
क, पुण्यकोष संग्रहाय सतत प्रयत्नशाली तथा विद्वत्संग में भूटिका अनुभव, गृह-भूमि-लभ से युक्त, गृहस्थासिद्ध,
प्रभावशाली व्यक्ति और वाक्कोशल से विरोधी का सर्वथा विजेषा, उत्तम कर्म तथा उत्तम गुणों का सम्पादक, धार्मि-
कारीक स्वयं में युग्म, भाविहित से विरोध प्राप्त, मध्यायु से उच्च अधिक जीवन प्राप्त, नेत्रज्योति में भूटिका प्राप्त होगा।

३६१)- इस कुण्डली में जन्म लेने वाला जलक याम सुन्दर गौरवर्ण, उन्नत ललाट, साहसो, विवेकी, धीरवीर-
गम्य और उगेर प्रशान्त चित्त, स्वाभिमानि, दूरदर्शी, सत्य एवं न्याययुक्त प्रिय सुधुर भावी, सर्वजनप्रिय, परोपकारी और
दयालु, अनेक धार्मिक कृत्यों का सम्पादक, ईश्वर-धर्म और मातृ-पितृ भक्ति में निष्ठावान्, उच्चकोटि कामधनी, विद्या
और सन्तान क्षेत्र में पूर्ण समुन्नत और सुखी, धर्मशास्त्रों एवं अन्य कलाओं में प्रवीण, सत्संग प्रेमी, भाई बहिन और पारिवारिक
सुख सहयोग सम्पन्न, कुल का दीपक, पेटक धन-गृह-भूमि आदि लाभ, दृढबोध-धन-धान्य-भृत्यवाहनादि सुख में पूर्ण
राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में पूर्ण मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, कर्मकर्म दृढ विषयक छोटे का अनुभवों, प्रभावशाली न्यायिकता का
धनी, विरोधवर्जित, छोटे भाई से कुछ विशेष प्राप्ति, सामान्य कद और पुष्ट देही, भाग्यवान् तथा भाग्यशालिनी-सर्वगुण
सम्पन्ना सुन्दरी-धार्मिका स्त्री का पति और उससे सुख सहयोग प्राप्त, प्रायः स्वस्थ और नो रोग, उदर विकार अथवा गु-
ह्य स्थान में पीड़ा पाने वाला, दीर्घायु सम्पन्न, देवी और मानवीय गुणों में सम्पन्न, कर्मयोगी, व्यवहार कुराहण
३६२)- इस जन्म कुण्डली में जन्मा हुआ बालक साहसो और स्वाभिमानि, माता-पिता का पूर्ण भक्त किन्तु मातृभूमि
में कभी का अनुभवों, सुन्दर गौरवर्ण, उन्नत ललाट, सामान्य कद और पुष्ट देही, प्रभावशाली न्यायिकता का धनी, अनेक
धार्मिक कृत्यों का सम्पादक, सर्वगुण सम्पन्ना-सुन्दरी-धार्मिका स्त्री का पति और उससे सुख सहयोग प्राप्त, गृहस्था-
सक्त, सत्य एवं न्याययुक्त प्रियता पूर्ण, सुधुर भावी, विद्या और सन्तान-क्षेत्र में पूर्ण निष्ठावान् तथा सुखी, पेटक धन-गृह-
भूमि आदि लाभ तथा स्वधन से भी दयालु धनी और समुन्नत, यदाकदा दृढ बोधकर्म का अनुभवों, भाग्यदय में विघ्न युक्त सक्त-
कला प्राप्त, पारिवारिक सुख सहयोग युक्त किन्तु छोटे भाई और बहिन से विरोध प्राप्त, धर्म तथा ईश्वर में पूर्ण निष्ठा, द-
र्ममैथानी, विचक्षण बुद्धि, दूरदर्शी, सर्वत्र प्रशंसित तथा राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, सत्संगी, परो-
पकारी और दयालु, कर्मयोगी, उत्साही और उद्यमी, धन-धान्य भृत्यवाहनादि सुख में पूर्ण, भाग्यवान्, बहुचर्चित
और लोक विख्यात, मध्यम आयु से कुछ अधिक जीवित प्राप्ति, रक्त विकार-उदर रोग से उत्तम स्थान में देह त्यागी होगा।

(३६२) इस जन्मांग में उत्पन्न हुआ व्यक्ति सुन्दर गौरवर्ण, कुशलाय और दीर्घवयु, उन्नत ललाट, साइडो ओर स्थाभिमानी, अनुशासन-प्रेम, कुछ नठोरता युक्त प्रिय और मधुर भाषी, सभीकी सेवा में तत्पर, मृदुल और उदार-चेता, मेधावी तथा बुद्धिमान, स्त्रोलाति में सतत संलग्न, स्त्री-विद्या-सन्तान-सुख में न्यून अथवा निकुल किंवा बाल्यकाल में गृहत्याग का अन्यत्र निवास करने वाला, सुखा सुन्दरी का प्रेमी, अन्य संगीता स्त्री का स्वामी अथवा स्काकी जीवनयुक्त, मातृ-पितृ पारिवारिक बन्धु-बान्धवादि सुख में हीन, अधिक विचलित, कुछ बेचारे पृथक् अथवा दुष्टावस्था में पड़े, यत्रतत्र भ्रमणशील, राजकीय बंधन या दण्ड-गन्त, दम्पत्यो द्वारा पीड़ित, मारा को अधिक बर्ह देने वाला, भयभीत और चला भ्रमणशील, गृह-भूमिका लाभ जायाका धन-धान्यादि युक्त होते हुए भी तटस्थ से नितान्त वीरित, स्त्रीकी बर्हने में अभिचार में रत, कर-कार मृत्यु-तुल्य कष्टों को प्राप्त, मध्यायु अथवा उत्तर से कुछ ही अधिक जीवन प्राप्त, सन्तानकी ओर से चिन्तित अथवा जेदावस्था में ही दुर्गुणी सन्तान से पीड़ित होकर देह-त्याग करने वाला होगा।

(३६४) इस जन्मांग में उत्पन्न गृहण करने वाला पुरुष पाम सुन्दर गौरवर्ण, उन्नत ललाट, सामान्य कद और पुष्ट देही, मातृ-सुख में अल्प और पथोप-दुष्ट संगी, पितृ-सुख का पूर्ण भोक्ता और मातृ-पितृ-भक्त, पितृ-प्रशंसक, साइडो ओर स्थाभिमानी, अनुशासन-सत्य-न्याय युक्त, प्रिय तथा मधुर भाषी, परोपकारी और दयालु, राज्यवेतनोपजीवी, साधारण गृह-भूमिदि लाभ, भाग्योदयार्थ सतत प्रयत्नशील तथा पि भाग्योदय में हीन, कुछ गृह्य नोति-शक्ति से कार्य करने वाला, सन्तान-सुख से वीरित, हीन-जगतिके प्रथम को दसक रूप में गृहणी कन्यावाला, धर्मपत्नी-सुख से नितान्त वीरित, अन्य से सेवा में समारणशील, पितृ-क्षेत्र से अन्यत्र निवास, बर्हने का प्रतिपालक, पितृके भाई-चाचा-राजसि उत्प्रेरित, रसमा और उत्सारी, रेश्मा और धर्म में आस्थावान्, तीसरी कीन्तु धर्मका सा-गण्य-पालक, विरागदो-मोह-द्वन्द्व ही साधारण, अधिक विचलित, कुछ प्रशंसित जीवन-व्यतीत करने वाला, मध्यायु प्राप्त, सुदार्श और उदर-विकार पीड़ित, नेत्र-ज्योति में नीर का अनुभव, यदाकदा धन-लाभ और भाग्योदय युक्त, सामाजिक और राजकीय मान-प्रतिष्ठा में न्यून होगा।

(१६५) इस जन्म लगे में जन्मा हुआ मानव उन्नत लकाट, गौरवर्ण, दीर्घ और कुम्हरेदी, अत्यधिक सटिसा और स्वाभिमान, प्रकृति से कुछ उग्र, सत्य एवं अनुशासन प्रिय, सत्यनिष्ठा में तत्पर, मातृ-सुख में युन, पिता का पूर्ण सुख प्राप्त, पैतृक धन से समुन्नत, भुजोओं से उपार्जित धन से सुखी और भाग्यशाली, पिता का प्रशंसक, गृह-भूमि-धन-धान्यादि से पूर्ण, राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, प्रसिद्ध कर्मयोगी, स्त्री की ओर से कुछ उदासीन, भाई-बहिन और परिवारीजनों से आपसी सौहार्द और दुर्लभ पाने वाला। अनेक शत्रुओं का विरोध भूमण्डल और लोकोटनी, सन्तान-सुख में युन और विलम्ब से उपादेय सन्तान युक्त तथा सन्तान की ओर से विनित, विद्या क्षेत्र में और दान-युनता के साथ समुन्नत, अनेक योजनाओं का निर्माता प्रभावशाली व्यक्ति धनी और उत्तम निरोधन-मक का विजेता, यदाकदा इन्धन मक उच्च लाभ और हासिल प्राप्त करे, दूरदेशों, सफल निधनक, रहन सहन में अधिक घर तथा अधिक विनोद, गृहस्थान में रोग से पीड़ित, मध्यमायुष्य सम्पन्न, ईश्वर और धर्म के प्रति आस्थावान्, पवित्र धर्मपालन में मूर्च्छित, सदाचारी और पवित्र रहस्य, कठोर-वाक्य कहने वाला, उदर और पंचक प्रकृतियुक्त हागा।

(१६६) इस जन्म लगे में जन्म ग्रहण करने वाला मनुष्य परम सुन्दर और गौरवर्ण, शारीरिक सौन्दर्य में श्रेष्ठ अथवा माधव गृहण या चांद का निशान धारण वाला, मध्यमकद, सामान्य और प्रसिद्ध, माता-पिता का पूर्ण सुख भोग और माता का सेवाभावी, चतुर-धीर और साहसा-नौति-निपुण, गुण-ग्राहक, प्रशंसक और दयालु, दृष्टि और दृढ निश्चय, प्रतिकार की भावनाओं से युक्त, दूरदेशों और मेधावी, विद्या क्षेत्र में सामान्य, गुरु नौति-रोति से विरोधियों का प्रबल दमनकारी, भुजोओं से उपार्जित धन द्वारा सुखी और भाग्यशाली, उत्तम धार्मिक कृत्यों का सम्पादक, ईश्वर और धर्म में आस्थावान्, पवित्र पुत्रों का पिता, मानसिक रूप से अशान्त, पर्याप्त गृह-भूमि-धन-धान्य-भृत्यवाहनादि (सुख से पूर्ण, सरला-शिखर-गौरांगी-पृथ्वीसुन्दरी-पतिवला-धार्मिक स्त्री का पति प्रभावशाली व्यक्ति तथा वाक्यदत्ता से प्रत्येक कार्य क्षेत्र में सफल, पिता की अपेक्षा पैतृक धन प्राप्त करता, गुरु रोग अथवा हृदयरोग का अनुभव, अनेक कर्म करने वाला, सामाजिक मान-प्रतिष्ठा प्राप्त, उत्साही और वीरश्री, चिन्तनशील और विचारक, नेत्रज्योति में श्रुति का अनुभव, भाई-बहिन और परिवारीजनों से लाभान्व सम्बन्ध युक्त होगा।

(३६६) - इस जन्माद् में जन्मा दुःख जो कि मध्यम श्यामवर्ण, रक्तविकार, सर्वथा अशान्तचेतन, साट्टो और च्छा-
भिमानी, उरीकार भावनाओं से युक्त, प्रभावशाली व्यक्तिवत्पन्न, स्वार्थ-साधन में लक्ष्य लक्ष्य, मलिन और कुचेलचित्त, दूर-
दर्शी, विवेकी, दीर्घबुद्धि और सामान्य पुष्ट, विद्याक्षेत्र में अवरोध के साथ सफल, ईश्वर और धर्म में आस्थावान् किन्तु पुरु-
षार्थ-विषय को अधिक महत्त्व देने वाला और धर्म-पालन की यथाशक्ति से हीन, मातृ-सुख प्राप्त और पितृ-सुख में सामान्य, निरन्तर
दुःख संग्रहण में प्रवृत्त, सुन्दरी, शिगसिता, गोरंगी स्त्री का पति और अन्य स्त्री का भी भोक्ता, सन्तान युक्त किन्तु सन्तान की ओ-
र से वृद्धावस्था में विनित और शून्य तथा तिरस्कृत, सन्तान के कारण भाग्यशाली, राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में मान-प्राप्ति
प्राप्त में युक्त, बालपदुता और प्रभावशाली व्यक्तिवत्पन्न से विरोधीवत् विषय युक्त, भाई-वहिन और पारिवारिक सुख सम्ब-
न्धों में सामान्य, मध्यमायुष्य से अधिक जीवन प्राप्त, उदर-विकार या संग्रहणी रोग से पीड़ित होकर उत्तम स्थान में दंड-
प्राप्त करके पुनः मनुष्य जन्म ग्रहण करने वाला, गृह-भूमि लाभ में सामान्य, रहन-सहन में अधिक विचित्र हो गी।
(३६७) - इस जन्माद् में जन्म लेने वाला पुरुष दीर्घदेही कुशलाय, श्यामवर्ण, अत्यधिक साट्टो और रुद्ध या जनाओं के
निमोष से बृहत् तथा रुद्ध-रीति-नीति से कार्य करने में प्रवृत्त, मलिन और कुचेलचित्त, स्वार्थ-साधन और लक्ष्य-प्राप्ति में
लक्ष्य, पुरुषार्थ और उत्साही, किसी भी दुरन्त-वर्ष को वृद्ध मानने वाला, विद्याक्षेत्र में अवरोध के साथ सफल, दुःख संग-
्रहण निरन्तर-उद्यम और यथाशक्ति, कृपणता युक्त, सुन्दरी शिगसिता और गोरंगी स्त्री का पति, ईश्वर और धर्म में
साधारण आस्था रखने वाला, भाग्यशाली, कई पुत्रों का पिता, स्त्री और गृहस्थ की ओर से उदासीन, भूमण्डल-भूमि युक्त तथा
सुरा-सुन्दरी का प्रेमी, रक्तविकार और संग्रहणी रोग से पीड़ित, नेत्र-उद्योग में भूट का अनुभूति, अन्य स्त्री से धोखा देने वाला,
पितृ-सुख से वंचित, मातृ-सुख सहयोग और स्त्री-सहयोग से समुन्नत तथा भाग्यदय प्राप्त करने, सन्तान की ओर से विनित-
त तथा अपमानित जीवन युक्त, दीर्घायु प्राप्त, मरण काल में उत्तम स्थान में दंडप्राप्ति और पुनः मानव-जीवन प्राप्त, भा-
ई-वहिन एवं पारिवारिक सुख सम्बन्धों में सामान्य, मान-प्राप्ति प्राप्त में युक्त, विरोध-वत्त प्रभावशाली हो गी।

(६६-६) इस जन्म सुपुत्री में उत्पन्न हुआ जातक दीर्घायु, कुशकाय, सामान्य श्रमवर्ग, सर्वथा अशान्तचित्त, दूरदेशों और अत्यधिक साहस सम्पन्न, किसी भी कार्य को करने में लक्ष्म, दृढ़ और अधिक आय के लिये सर्वथा उद्यमशील, उत्साही, विद्या क्षेत्र में पूर्ण समुत्कृष्ट, कई पुत्री पुत्रों का पिता, पिता से द्वेष रखने वाला, मातृ-सुख सहयोग से तथा स्त्री के कारण समुत्कृष्ट और उर्वरोपयोग से भाग्यवान्त, उत्साह और पुरुषार्थ एवं सन्तान के कारण भाग्यवान्, मध्यमायु में कुछ अधिक जीवन प्राप्त, मानप्रतिष्ठा युक्त किन्तु सन्तान द्वारा हिरस्कृत, सुन्दरी शिक्षिता, गौरांगी स्त्री का पति, भूमणशील, अनुशासन प्रिय, आरम्भ में स्त्री से कुछ विरोध रखने वाला, भारी-बोहन और पारिवारिक सुखसम्बन्धों में सामान्य, विरोध का चिन्तन करने वाला और लक्ष्यशर्तों की ओर अग्रसर, पयोध धनी, ईश्वर-धर्म और पुरुष कर्म में आस्थावान्, यदाकदा धर्मपालक, गृह-भूमि-वृद्ध-धन-धान्यादि युक्त, कभी कभी गम्भीर दारिद्र्य से चिन्तित, तेजस्वी में कुटुंब का अनुभव, उदरशूल और अन्य शोच से पीड़ित, उत्तम स्थान में देहत्यागी और स्वर्गादि लोकों में जाने वाला होगा।

(६७-७) इस जन्म लगने में उत्पन्न होने वाला जातक उत्तम ललाट, गौरवर्ध, पुष्ट देही और सामान्य कद, प्रभावशाली व्यक्तित्व स्थापनी, साहस और स्वाभिमानी, सत्य और न्याय तथा अनुशासन प्रिय, पिता और माता का सुख भोला तथा पितृ से स्त्री और पितृ भक्त। पितृ क्षेत्र का श्रेष्ठ मित्र, विद्या क्षेत्र में विघ्न युक्त सफलता प्राप्त, सुन्दरी शिक्षिता और गौरांगी-पतिव्रता स्त्री का पति, राज्य क्षेत्र में समुत्कृष्ट और प्रतिष्ठा युक्त पदोन्नत, वेतनोपजीवी, ईश्वर और धर्म तथा पुरुषार्थ कर्म में आस्थानान्, विघ्न युक्त भाग्यवान्त, सन्तान की ओर से चिन्तित अथवा विलम्ब से सन्तान प्राप्त, विरोध से रीत, तेजस्वी और योगादि शास्त्रों का अध्यापक, ध्यानयोग में लक्ष्य, उत्तम कर्म करने वाला, सदाचारी और धर्मवान्, अधिक व्यय होने का भी गृह-भूमि के लाभ से युक्त, भारी-बोहन और पारिवारिक सुखसम्बन्धों में सामान्य, सहयोग देने तथा पुत्रपुत्रों का आदर कर्ता, मध्यमायु में कुछ कर्म जोड़ावस्था का जीवन प्राप्त, हृदरोग अथवा रक्तविकार युक्त, उत्तम स्थान व काल में देहत्यागी, शरीर के काम चालू में पीड़ा युक्त, अथवा बाह्य दिते आघात पाने वाला, गृहस्थ में आसक्त, मरणपरान्त कीर्तिस्मय लोक में विद्युत होगा।

(३६१) इस जन्माद्वय में जन्म लेने वाला मानव उन्नत ललाट, गोरवर्ण, छुट्ट देही, सामान्य कद, साहस और
जातिभिमानी, सत्य-न्याय एवं अनुशासनपुत्र, विद्याक्षेत्र में पूर्ण विद्वान्, अनेक विद्याकलाविद, नरु मेधावी और ज्ञान-
सम्पन्न, मान-मिट सुख भोक्ता, पिता का भक्त और प्रशंसक, राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में उच्च पदासीन तथा मन्त्र-
पालिका सम्पन्न, जलमय-स्थानों में उत्तम, धन्य-धान्य-गृह-भूमि-भूत-वाहनार्थ सुख से पूर्ण, ईश्वर और धर्म में श्र-
द्धा अगाधवान्, कई-पुत्रों का पिता, प्रसिद्ध कर्मयोगी, शत्रु और विरोधियों का बुद्धि-कोशल निरन्तर विजयी, नेत्रज्योति
में बुद्धि का अनुभव, मुख्य-मस्तिष्क का आकार के चन्द्रयुक्त, भ्रमणशील, भाग्योदय और दुःख-लेगहाथ निश्चिन्त और भा-
ग्यशाली किन्तु दुःख-संग्रह में शरीर का अनुभव, परोपकारी और दयालु, मध्याह्न से कुछ अधिक जीवन युक्त, सुन्दरी-शिखिता,
सरला, धार्मिक और गोरवर्ण की वस्त्रास्त्रों का स्त्रियो, गृहस्थानुरक्त, उत्तम कार्यो का सम्पादक, बहुचर्चित और बहुवि-
श्रुत, स्वार्थकीलाप्य परमार्थ में तत्पर, विचक्षण बुद्धि, विद्याशील, कामदायक में भयंकर दोड़ी गस्त होगा।

(३६२) इस जन्माद्वय में जन्म ग्रहण करने वाला ननुष्य साहस और स्वाभिमान, पूर्ण मेधा सम्पन्न, सामर्थ्य की ओर न-
रु, भाग्योदय में अवशेष और विजय के साथ सफल, सत्य-न्याय और अनुशासनपुत्र, विद्या क्षेत्र में विद्वान् तथा अने-
क विद्याकलाविद, दूरदर्शी, उन्नत ललाट, गोरवर्ण, सामान्य कद और छुट्ट देही, मान-पिता का पूर्ण सुख भोक्ता तथा उ-
त्तम सखा भोक्ता और प्रशंसक, पिता-हयोग से राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में पूर्ण सम्पन्न तथा मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, मध्यमा-
ह्न से कुछ अधिक जीवन प्राप्त, कई पुत्रों और एक कन्या का पिता, सुन्दरी-शिखिता-सरला-धार्मिक-पतिव्रता-पुत्रादायक
स्त्रियों का पति, पूर्ण मेधा सम्पन्न, गृहस्थानुरक्त, शृणीजनों का आदरकरी, परोपकारी और दयालु, नेत्रज्योति तथा शरीर के
कोश में मृदुल-रक्त कष्ट का अनुभव, कुल का दीपक (बुद्धि-कोशल) से विशेष कीर्तिजय, धन-धान्य-गृह-भूमि-भूत-
वाहनार्थ सुख से पूर्ण, लोक-विद्वत्, प्रसिद्ध कर्मयोगी, भार-वहक और परिवारीजनों का पुत्र, दृढ़ आय सम्पन्न, स्वा-
भक्त-स्थानों में बहु, दुःख-लेगहाथ निश्चिन्त और पदार्थाधारी, भ्रमणशील, ईश्वर और धर्म में निष्ठावान् होगा।

(६३)- इस जन्म लगने में उत्पन्न हुआ व्यक्ति सुन्दर गौरवर्ण, उन्नत ललाट, दीर्घ और वृष्टदेही, प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी, ठोड़ी और टहनियुक्त तथा अनुशासन-प्रेम, वामसुन्दर, नेत्रज्योति एवं रक्तमिर्कार का अनुभव, अत्यधिक स्वाभिमान और साहसी, दूरदर्शी, गुप्तनीहिरीति से कार्य करने में सक्षम और योजनाओं के निर्माण में प्रवृत्त, धन-धान्य, गृह-भूमि-भूतकानादि सुख से पूर्ण, भाई-बहिन और पारिवारिक चिन्ताओं से रहित, सुन्दरी शिक्षिता स्त्री का पति, सन्तान भी और से चिन्तित तथा विलम्ब से सन्तान प्राप्त, वाम धार्मिक और ईश्वर में पूर्ण निष्ठा सम्पन्न, विद्या-क्षेत्र में कुछ अवरोध युक्त पूर्ण सफल, वाक्-चातुर्य, प्रभावशाली व्यक्तित्व से विरोधी पर सफल, उत्तम कर्मों का सम्पादन, मातृ-सुख से स्वल्प और पितृ-सुख-सहयोग प्राप्ति सम्पन्न, पिता से कुछ मूलभूत पितृ-भक्त, भाग्यशाली, गुरु-नृप का निर्माता, कुल-दीपक, यदा कदा भाग्योदय में मद सम्बन्धी विघ्न रहता, उदरशूल या संग्रहणी से पीड़ित, पूर्ण भोजनी, मध्यमायुष्य प्राप्ति, नृपावस्थामें सुखी, उत्तम स्थान और उत्तम काल में धर्मपूर्वक देहत्यागी होगा।

(६४)- इस जन्म मूल में उत्पन्न गृहणकालिलाला पुरुष वाम सुन्दर, गौरवर्ण, उन्नत ललाट, प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी, सामान्य कर, कुशन्मात्र, वामनिर्वकी और चातुर्य से कार्य करने में सक्षम, स्वल्प-न्याय और अनुशासन प्रिय, पिता का पूर्ण सुख-भोला तथा पितृ-भक्त और पितृ-सहयोग से सम्पन्न, राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में पूर्ण उन्नत और मान-प्रतिष्ठा प्राप्ति, प्रभावशाली व्यक्तित्व और वाक्-चातुर्य से विरोध का विजयो, भाई-बहिन और पारिवारिक चिन्ताओं से रहित, धन-धान्य-गृह-भूमि लाभ से पूर्ण, ईश्वर और धर्म में पूर्ण आस्थान, सहाय्य अध्येता, अनेक उत्तम कर्मों का सम्पादन, पराधकारी और वशाल, तीव्रदर्शी, सुन्दरी शिक्षिता, परिपरायण स्त्री का पति, गृहस्थासक्त, भाग्योदयार्थ निरन्तर चेष्टित, सज्जन का सहायक, पूर्ण मेधा और ज्ञान सम्पन्न, उत्तम गृणी (पुत्र का पिता, कन्या भी और से चिन्तित, विद्या-क्षेत्र में पूर्ण निष्ठा, वाक्-चातुर्य युक्त किन्तु कुछ गम्भीर और शान्त रहने वाला, सभी से सम्बद्ध, विरोधहीन, पूर्ण भाग्यशाली और विजयी, भाग्य की भवेत्ता कर्मों में मदद देने वाला, मध्यमायुष्य तक जीवन प्राप्ति, उत्तम देहत्यागी होगा।

(३६५)- इस जन्म-युग में उत्पन्न हुआ मानव सुन्दर गौरवर्ण, उन्नत ललाट, दीर्घ और पुष्टदेही, उग्रामशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, साहसी और स्वाभिमानी, धीर-उग्र और शान्त प्रकृति, विवेकी और दूरदर्शी, प्रमादी स्वनं उग्रालो, विर-सहयोग से समुन्नत, तथापि पिता से कुछ मतभेद रखनेवाला, मातृ-सुख का अल्प भोक्ता, चतुर और वाणी-गुण-लक्ष्मी, विद्याक्षेत्र में कुछ अवरोध के साथ निष्णात, अनेक विद्याविद, ईश्वर और धर्म में निष्ठावान् तथा भाग्यवादी और कर्म-कार्य का सम्पादक, दिग्भाषी योगकी प्रार्थना से सम्मानित, सन्तानकी ओर से चिन्तित किन्तु सन्तान युक्त, परोपकारी और दयालु होने के साथ निज-स्वार्थ-सिद्धि में तत्पर, दुर्घ और दुर्द निश्चयो, गृह-भूमि लाभ से सामान्य, राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, भाई-बहिन और दाहिनी-बाई सम्बन्धों में सामान्य, दुग्ध-लेण्डकी अधिक मष्टम प्रदान करनेवाला और प्रदायक धनी, मध्यमायुष्य से अधिक जीवन प्राप्त, उत्तम कर्मों के कारण उत्तम काल एवं उत्तम स्थान में देहत्यागी का पुनः मानव धर्म में उच्च वर्ण-कुल में सुख-सुख्यक सम्पन्न होगा।

(३६६)- इस जन्म-युग में उत्पन्न प्रदण करनेवाला मुख्य दीर्घ और पुष्टदेही, सुन्दर गौरवर्ण, उन्नत ललाट, उग्रामशाली व्यक्तित्व सम्पन्न, मातृ-पितृ-सुख भोक्ता, साहसी और स्वाभिमानी, प्रमाद एवं आलस्यहीन, पति-पत्नी लक्ष्म्यपूर्ति एवं उन्नति में तत्पर, धीर-शान्त तथा कुछ उग्र प्रकृति, कन्या एवं पुत्रार्थ से युक्त, विद्याक्षेत्र में पूर्ण निरन्तर, चतुर-विवेकी एवं उद्यमी, राज्य और सामाजिक क्षेत्रों में मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, पिता से कुछ मतभेद रखने वाला, प्रायः स्वस्थ और निरोग, गृह-भूमि लाभ से युक्त, ईश्वर और धर्म में आस्थावान् तथा उत्तम धर्मकार्य का सम्पादक, नाक पटुता एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व से विरोध का विजेता, भाग्यान्वित में सतत संलग्न, कुछ परोपकारी और दयालु, नेत्रज्योति में चुरी का अनुभव, भ्रमणशील, स्त्रीकी ओर से प्रथम उदासीन, गृहस्थासक्त, भाई-बहिन और दाहिनी-बाई-सुख सम्बन्धों में सामान्य, मध्यमायुष्य से कुछ अधिक जीवन प्राप्त, अनेक मित्र दुग्ध-लाभ से सम्पन्न, दुग्ध-क्षेत्र युक्त भाग्यवान्, कभी-कभी भाग्यदय में कुछ अवरोध करने वाला, कीर्ति और यश प्राप्त करेगा, उत्तम स्थान व काल में देहत्यागी होगा।

(366) - इस जन्माङ्क में उत्पन्न हुआ मनुष्य दृढ़ शरीर का होते हुए भी पतला तथा लम्बा, चौर, गम्भीर, उच्चरवलता-रहित, कोथी, परिष्करी, गौरवर्ण, तेजस्वी लम्हाट वाला एवं दृढ़ स्वभाव का होता है। यह माता-पिता का भक्त तथा उनके पान पाने वाला, विष्णु के स्नेह में रुकावटें पाने वाला, भाग्य का चरनी, पान्थु सम्पत्ति का उपयोग करने में भीरु, बन्धु-बान्धवों की सहायता करने को तत्पर तथा उनके आश्रय देने वाला होता है। इसका विवाह 23 से 26 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला मिलती है, पान्थु अधिक कायक होने के कारण यह पृ-स्त्री से थोड़ा भी रुका हुआ है तथा उनसे लाभ भी उठाता है। यह मध्यामायु प्राप्त करता है। शत्रुओं के लिए भारी तथा प्रतापी होता है। आयु के 24, 26, 31, 33, 35, 43, 45, 47, 49, 53 तथा 56 वर्षों तक लाभ उठा रहे हैं।

(367) - इस जन्माङ्क में जन्म लेने वाला जातक सुन्दर, पान्थु सौवर्ण्य रंग का तथा तेजस्वी व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। यही चौर तथा गंभीर होते हुए भी अपने मन के भेद को शीघ्र उकट करके हानि उठाता है। यह मित्रता एवं सहायता प्राप्त करने में कुशल, विद्वान्, मृदुभाषी, तथा अपने किये हुए कार्यों के प्रति अकारण ही असन्तुष्ट बना रहने वाला संदेहशील भी होता है। यह यात्रा में रुचि रखने वाला तथा बाहरी कामों से लाभ उठाने वाला होता है। विष्णु-लाभ उत्तम तथा विवाह 20 से 24 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी बुद्धिमती तथा विदुषी मिलती है, उसकी सलाह मान कर चलता है। विवाह के बाद ही भाग्योदय भी होता है। यह एक से अधिक सच्चे मित्रों वाला तथा देश-प्रादेश में अनेक हितैषियों से युक्त होता है। आयु के 21, 23, 25, 26, 28, 33, 36, 38, 41, 45, 46, 48, 50, 52, 54, 56, 60 तथा 62 वर्ष आर्थिक-उन्नति कायक रहते हैं। आयु मध्यम से कुछ अधिक रहती है।

(३७६) - इस जन्मांक में उत्पन्न हुआ बालक मध्यम कद, मध्यम शरीर, धिप-दर्शन, स्फुटिमान, साहसिक कार्यों को करने वाला तथा कुछ कोषी स्वभाव का होता है। यह अपनी वैदिक-सम्पत्ति को भी दाँव पर लगा कर, उसकी वृद्धि करने वाला तथा बौद्धिक एवं शारीरिक-क्षमताओं का पूर्ण लाभ उठाने वाला होता है। इसका विवाह २० से २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला, साँवली, बुद्धिमान, निष्ठावान तथा चतुर होती है। यह स्वयंभी कुलीन तथा विद्वान् होता है तथापि पत्नी की सलाह लेकर ही सब कार्य करता है। इसे अपनी बड़ी बहिन से भी सहयोग मिलता है। यह मुख्य-विष्णुओं का भ्राता तथा वचपन से ही सौभाग्यशाली होता है। इसे पत्नी के द्वारा भी धन-लाभ होता है। आयु के २२, २६, २८, ३०, ३४, ३६, ४६, ५०, ५२, ५४, ५८ तथा ६२ के वर्ष आर्थिक-उन्नतिकारक सिद्ध होते हैं। आयु मध्यम से कुछ अधिक होती है।

(३८०) - इस जन्मकुण्डली वाला जातक गौरवर्ण, लम्बे कद तथा स्थूल शरीर वाला, शक्तिप्रिय, स्वामिमानी, आर्थिक हठियों का बालक तथा भाइयों से अधिक बहिनों वाला होता है। यह जन्म विपन्न-परिवार में होता है, परन्तु कुछ ही समय बाद काँकी आर्थिक-स्थिति सुधारने लगती है, परन्तु गुण-शत्रु अधिक फल पहुँचाते रहते हैं। धन की कमी के कारण इसका कोई कार्य रुकता नहीं है। विष्णु मध्यम उम्र होता है। विवाह १८ से २४ वर्ष के बीच होता है तथा पत्नी सुन्द, वाचाल तथा वायुवीर से व्रत मिलती है। सामान्यतः निजी स्वाह्वय ही रहता है। बाहरी लोगों से सहयोग मिलता है। बौद्धिक-कार्यो द्वारा आजीविका चलती है। पूर्ण भाग्योदय ४० वर्ष की आयु के बाद होता है। वृद्धावस्था सुखसे बीतती है। जीवन के २३, २६, २८, ३१, ३५, ३८, ४१, ४३, ४६, ५१, ५३, ५५, ५८, ६३ तथा ६५ के वर्ष आर्थिक-उन्नतिकारक रहते हैं।

(३८१) - इस जन्माक्षु में उत्पन्न होने वाला सुदृढ, सुन्दर, गौरवर्ण, मध्यम कद का, पतले बारी-
र वाला, एकान्तप्रिय तथा ईश्वर पर विश्वास करने वाला होता है। विद्या मध्यम क्रेणी की प्राप्ति
होती है तथा विवाह २३ से २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा वात्सल्य मिलती है।
यह व्यवसाय द्वारा धनोपार्जन करता तथा पारिवारिक-प्रतिष्ठा को बढ़ाता है। सन्तान का पथे-
ष्ट सुख प्राप्त होता है। यह रसिक-स्वभाव का, अनेक स्त्रियों में रुचि रखने वाला, तथापि
संयमी होता है। यह अघयश से डरता है। माता-पिता का भक्त होता है। पत्नी भावपूर्ण-
लिनी होती है। यह शरीर से प्रायः स्वस्थ बना रहता है। आयु के ३० तथा ५० के बीच
अत्युत्तम सिद्ध होते हैं। सामान्यतः २५, २८, ३१, ३७, ४०, ४३, ४५, ४८, ५२, ५४, ५७, ५८,
६०, ६३, ६५ तथा ६८ के वर्ष उत्कर्षावस्था रहते हैं। आयु मध्यम से कुछ अधिक होती है।

(३८२) - इस जन्मकुण्डली वाला जातक उन्नत ललाट, कुञ्चित केश, गौरवर्ण, द्विपदशीर्ष,
धार्मिक आस्थावान्, स्वतन्त्र निर्णय देने वाला, बुद्धिमान होते हुए भी सनकी प्रियता का,
संगीत-कला में रुचि-रखने वाला, कठिन परिस्थितियों का मुकाबला करने वाला, विद्वान्
अथवा मशीनरी से संबंधित कार्य को करने वाला, उच्चशिक्षित तथा व्यवसाय कुशल होता है।
इसका विवाह २२ से २५ वर्ष की आयु में होता है। यह एक से अधिक कार्यों द्वारा धनोपार्जन
करता है तथा अपनी सनक के कारण अपने प्रियजनों को अनजाने में ही हानि पहुँचा-
ता रहता है। शत्रु एवं रोग-कुक्ष रहते हुए भी कभी वात-रोग का शिकार बनता है। आयु के
२५, ३० तथा ३५ के वर्ष उत्कर्ष दायक तथा २४, २६, २८, ३१, ३२, ३६, ४०, ४२, ४४, ४८, ५२,
एवं ६० के वर्ष भी लाभप्रद सिद्ध होते हैं। वृद्धापस्था में पत्नी की निमारी के कारण दुःखी बना रहता है।

(३८३) - इस जन्मकुण्डली वाला जातक दीर्घवयु, गेहुँआ रँग, बलिष्ठ शरीर तथा छोपी-स्वभाव का होता है, परन्तु शान्त भी जल्दी ही हो जाता है। यह अपनी बुद्धिमत्ताहीन-उदारता के कारण शत्रुओं द्वारा हानि भी उठाता है। विष्णुपूजन मध्यम श्रेणी का होता है। विवाह २२ से २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, कला-कौशल में रुचि रखने वाली, परन्तु जिद्दी स्वभाव की होती है। यह परदेस से तथा अपरिचित लोगों द्वारा चमोकार्पण करता है। यह एक से अधिक आसदरी के मोहों वाला, ऐश्वर्यपूर्ण जीवन बिताने वाला तथा श्वेत-वस्त्र, धातु-प्रदार्थ तथा स्त्री-सम्पर्क से लाभान्वित होने वाला होता है। शरीर से प्रायः स्वस्थ बन रहता है। माता, पिता तथा परिवारी जनों से सामान्य स्नेह-सम्बन्ध रहते हैं। आयु ७० वर्ष से अधिक होती है तथा आयु के २६, ३२, ३८, ४२, ४६, ५३, ५८, ६२ एवं ६५ के वर्ष लाभपद रहे हैं।

(३८४) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य सुन्दर, तेजस्वी, हठी स्वभाव का, गौरवर्ण, मध्यम कद वाला, माता का विशेष भक्त तथा श्रेष्ठ एवं शुभ कार्यों में रुचि रखने वाला होता है। विष्णु लाभ श्रेष्ठ होता है। विवाह २२ से २६ वर्ष की आयु में होता है तथा सन्तान-सुखभी उत्तम मिलता है। यह अपने ही कौरव से नवीन गृह का निर्माण करता है। शरीर से प्रायः स्वस्थ रहता है, परन्तु जीवन में अनेक बार मृत्युतुल्य कष्ट होना भी संभव रहता है। पत्नी सुन्दर, समझदार तथा प्रभावशालिनी होती है। जीवन के १५, २०, २१, २४ तथा ४५ के वर्ष महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। एक से अधिक कार्यों द्वारा चमोकार्पण करते हुए यह ऐश्वर्यपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। सेवा-कार्यों द्वारा इसे विशेष लाभ होता है। आयु ७० वर्ष के लगभग होती है। माता, पिता तथा बुढ़म्मी जनों से अच्छे सम्बन्ध बने रहते हैं।

(३८५) - इस जन्मपत्री वाला जातक सुन्दर गौर वर्ण, दीर्घ शरीर, साहसी तथा शयनी स्वभाव का होता है। परन्तु वह अपने दुःसाहसी स्वभाव के कारण ही धन को नष्ट करके कष्ट उठाता है। किन्ती उन्ने धन की कमी अनुभव नहीं होती, क्योंकि धन का अणभन निरन्तर बना रहता है। यदा-कदा निधमित्त आमदनी के रोड़े भी अटकते हैं तथा विशेषियों द्वारा भी लूटि लुट्टी की चेष्टा की जाती है, तथापि अन्तमें लम्बी बाधाओं का विषय भाग्य होता है। इसके विष्णुलाम उत्तम होता है तथा २१ से २६ वर्ष की आयु में विवाह होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा लम्बे शरीर की होती है। दाम्पत्य-जीवन सुखमय बना रहता है। यह अनेक कार्यों द्वारा धनोपाजन करता है तथा पारिवारिक-परिचर में बृहत् करके उस (चरम) प्रशस्ती बना रहता है। जीवन के १२, १५, २०, २५ तथा ३० वें वर्ष में महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। आयु मध्यम से कुछ अधिक होगी।

(३८६) - इस जन्मपत्री वाला सुगुण लम्बे शरीर वाला, गेहुँआ वर्ण का, उदगुचित्त एवं सर्वप्रिय होता है। विष्णु का लाम पच्छे होला है। विवाह २० से २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, पल्लु चिड़चिड़े स्वभाव की होती है। यह व्यवसाय द्वारा जीविकोपाजन करता है तथा धन का संचय करने में कुशल होता है। यह विषय-लोभुषणी होता है, फलतः इसके जीवन में किसी जादरी स्त्री का प्रभाव भी रहता है। इसके जीवन के ३५, ४५ तथा ६० वें वर्ष विशेष लाम उद एवं सुख का सिद्ध होते हैं। इसके द्वारा कंचित धन का मुख्य उपयोग इसका पहला पुत्र करना है। यह स्वयं लम्बी आयु भाग्य करता है तथा बृद्धावस्था तक किसी प्रकार का भौतिक-कष्ट भाग्य नहीं करता। माता, पिता तथा परिवारियों से इसके संबंध उत्तम बने रहते हैं। कुल मिलाकर यह ऐश्वर्यशाली बना रहता है।

(३८७) - इस जन्मांक में जन्मा हुआ व्यक्ति पुष्ट शरीर, गोष्ठुम वर्ण, मध्यम कद वाला, स्वभाव से हठी तथा अपनी बात को ही सनेंसी रखने वाला, नार्थिक एक वा-चाल होता है। अध्ययन के क्षेत्र में उसे सफलता मिलनी है। विवाह २० से २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी एवं सुदृढ माली होती है, जो अपने सामाजिक-सम्बन्धों का पालन निष्ठा में बूढ़ करती है। यह जातक श्रेष्ठ-वस्तुओं के व्यक्तित्व का विशेष चने, पार्थन करता है तथा रिशों के सहयोग से भी पर्याप्त लाभान्वित होता है। यह अनेक प्रकार के कार्य करता है तथा किसी भी एक काम में मन लगावे नहीं दे पाता। इसके जीवन के ३२, ४० तथा ५७ वें वर्ष उत्तम काल का एक उल्लिख्य किट्ट होता है। इसका दाम्पत्य-जीवन सुखमय बना रहता है। कुटुम्बिक-जीवन भी समन्वय रहता है। आयु ७० से ७८ के मध्य,

(३८८) - इस जन्मांक वाली वाला जातक मध्यम शरीर, लम्बे कद का, सुन्दर, उमानशाली तथा भोग-विलास में विशेष रुचि रखने वाला होता है। रिशों इसकी ओर स्वयं आकर्षित होती हैं; पालु यह उनसे स्थायी-लगाव नहीं रखता। विद्या के क्षेत्र में उत्तम सफलता मिलनी है। विवाह १८ से २४ वर्ष के बीच होता है तथा पत्नी कुछ साँवली, सुन्दर तथा सुदृढ माली मिलनी है। दाम्पत्य-जीवन सुखमय बना रहता है तथा पत्नी के सहयोग से जीवन के अनेक क्षेत्रों में सफलता मिलनी है। सन्तान के कारण मन सदैव मीन बना रहता है। माता, पिता तथा कुटुम्बीजों से भी सामान्य सम्बन्ध ही रहते हैं। बाहरी रिशों से विशेष लाभ होता है। जीवन के ३६, ४२, ५० तथा ५९ वें वर्ष के काल का एक सुख-लाभ किट्ट होता है। शरीर स्वस्थ रहता ही आयु मध्यम होती है।

(३८९) - इस जन्माकु में उत्पन्न हुआ बालक सुन्द। गौरवर्ण तथा कुण्ड से हृदय एवं हठी लगते हुए भी भीम से अत्यन्त कोमल स्वभाव का होता है। यह व्यवसाय की अवस्था नौकरी करता है तथा उच्च-पद पर प्रतिष्ठित होकर सम्पत्ति एवं सम्मान की वृद्धि करता चला जाता है। विष्णु का उत्तम लाभ होता है। विवाह २० से २५ वर्ष की आयु में संभव है। पत्नी सुन्दरी, सौन्दर्य, शान्त-स्वभाव की तथा परितुष्ट होती है। यह धर्म में हृदि रहने वाली तथा दान-पुण्य में धन खर्च करने वाली होती है। श्वेत-वस्तुओं के व्यवसाय से धन का लाभ होता है। विलास-पुसाधन तथा आनन्द-प्रमोद के कार्यों में संलग्न व्यक्ति भी लाभ पहुँचाते रहते हैं। ऐसे जातक प्रायः आजीवन सौभाग्यवाली बने रहते हैं। शरीर स्वस्थ रहता है। आयु ७० वर्ष से अधिक होती है। जीवन के २०, २६, २८, ४२, ४८, ५२, ५६, ५८ तथा ६५ वें वर्ष लाभकर रहते हैं।

(३९०) - इस जन्माकुण्डली वाला जातक लम्बे शरीर, उन्नत ललाट, गौरवर्ण, सुन्द शरीर तथा बड़े नेत्रों वाला होता है। यह हठी एवं उत्तम स्वभाव का होने के कारण अपने काम की दृष्टि भी का लेता है। यह जीवन में उच्च-पद प्राप्त करता है तथा ऐश्वर्यप्रेमोगी होता है। पान्थु किसी समय ऐसे ऐसी दक्षिण उठानी पड़ती है, जिसकी कमी कल्पना भी नहीं होती। उस स्थिति में चाल तथा अचल - दोनों प्रकार की सम्पत्ति की दृष्टि होती है। विष्णु का लाभ उत्तम होता है। पत्नी संशयालु स्वभाव की होती है। विवाह २६ वर्ष की आयु तक हो जाता है, पान्थु दाम्पत्य-जीवन आनन्दमय नहीं रहता। परिवारीजन इसके प्रतिद्वन्द्वि बने रहते हैं तथा इसके भाग्योत्कर्ष में बाधाएं पहुँचाने का प्रयत्न करते हैं। जीवन के २०, २६, २८ तथा ४० वें वर्ष महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। आयु मध्यम होती है। शारीरिक-बुद्धि उत्तम बना रहता है।

(३-६१) - इस जन्माडू वाला जन्मक पुष्ट शरीर, विशाल नेत्र, उन्नत ललाट तथा आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न होता है, तथापि उसे क्रम-क्रम पर विद्वत्-बाधाओं का सामना करना पड़ता है और वह उन पर विजय प्राप्त करता हुआ उनकी धाना-धला जाता है। ऐसे लोग सैन्य अथवा पुलिस विभाग में उच्चस्थिति पर होते हैं। यह सामान्यतः कृपणता की सीमा तक कितलपत्ती, परन्तु अपने व्यवसाय शौक के लिए अपव्यय में भी आनन्द का अनुभव करने वाला आदमकेंद्रित होता है। विष्णु का जन्म उत्तम होता है तथा विवाह २२ से २७ वर्ष की आयु के बीच होता है। पत्नी सुदृढ़ तथा पश्चिमिनी मिलती है। सन्तान सुख सामान्य रहता है। माता, पिता तथा परिवारीजनों से औपचारिक मोह-सम्बन्ध रहता है। जीवन के ३०, ३२ तथा ४२ वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। जीवन सामान्यतः सुखश्रवक व्यतीत होता है।

(३-६२) - इस कुण्डली का स्वामी गौवर्ण, पुन्दा, आकर्षक, मृदुभासी, विशाल-हृदय, उदार, विद्वान् तथा ज्ञान-विज्ञान का पण्डित होते हुए भी सामान्य आर्थिक-स्थिति वाला होता है। फिर भी यह धन की कमी से दुःखी नहीं होता। जो भी धन यह कमाता है, उसे तार्किक कार्यों में खर्च करता है। विष्णु उत्तम प्राप्त होती है। विवाह २५ वर्ष की आयु के बाद होता है। पत्नी से इसे सुख प्राप्त नहीं होता, क्योंकि वह अकारण ही अलसपुष्ट एवं लहलहा-सी बनी रहती है। आयु ४५ वर्ष होती है तथा जीवन के १२, १८, २५, ३०, ३५, ४५, ५० एवं ५२ वर्ष आर्थिक, सामाजिक तथा घर-की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। माता, पिता तथा परिवारीजनों से सामान्य मोह-सम्बन्ध रहता है, परन्तु इनके किसी प्रकार का सहयोग-लाभ नहीं होता।

(३६३) - इस जन्म कुण्डली वाला बालक गौरवर्ण, मध्यम कद वाला, उन्नत ललाट तथा वाक्पटु होता है। विद्या का लाभ मध्यम रहता है, तथापि यह विलक्षण तीव्र-बुद्धि सम्पन्न होता है। विवाह २३ से २५ वर्ष की आयु के बीच सम्भव है। पत्नी सुन्दरी मिलती है, तथापि रसिक-स्वभाव का होने के कारण यह पृ-स्त्रियों में भी आसक्त रहता है। अपने ज्ञान (जन्म-भूमि) के प्रति इसका विशेष मोह रहता है तथा अपने बन्धु-बांधवों के बीच सम्मान पाने के लिए लालाचित्र भी रहता है, तथापि इसका सम्बोधन परोक्ष में आगे ही होता है। यह दीर्घ पूर्वक एक ही कार्य में लगा रहता है, पण्डित बाहरी उभाव में आकर दूसरा व्यवसाय भी कर सकता है। जीवन के २६, २८, ३१, ३५, ३८, ४०, ४६, ५२ तथा ५५ वें वर्ष उन्नति का एक सिद्धि होते हैं। आयु ७० वर्ष से अधिक होती है। शरीर स्वस्थ रहता है।

(३६४) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी बालक लम्बे कद का, गौरवर्ण, हृदय का अत्यन्त उदात्त पण्डित अहंवादी होता है। विद्या का लाभ मध्यम होता है। विवाह २१ से २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला मिलती है। ज्ञान का उत्तम सुख प्राप्त होता है। यह आधिकारीक भाव से अपने बन्धु-बांधवों में प्रतिष्ठा प्राप्त करना है तथा अपनी वाक्पटुता के लिए प्रसिद्ध होता है। शत्रु-पक्ष का भेद ज्ञान करने में कुशल तथा उन्हें दबाने में सफल होता है। यह सार्वजनिक-हित के कामों में अपना समय अधिक देता है। स्वेत रंग की वस्तुओं तथा आमोद-प्रमोद के कार्यों से आर्थिक-लाभ उठाता है। आयु लम्बी होती है। जीवन के १५, २०, २३, २४ तथा २८ वें वर्ष विशेष महत्वपूर्ण होते हैं। ३५, ४२, ४६, ४८, ५१, ५६ तथा ६३ वें वर्ष आर्थिक लाभ प्राप्त होते हैं।

(३८५) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी गौरवर्ण, पुष्ट शरीर तथा गौरवशाली वंश में उत्पन्न होता है। यह विद्या का अच्छा ज्ञान प्राप्त करता है तथा ज्योतिष शास्त्र में प्रवीण होता है। धर्म-कार्य का पालक, अत्यन्त गुणी, पण्डित, पुमान्-पद पर प्रतिष्ठित रूप से इच्छित धन एवं सुख से सम्पन्न होता है। इसका विवाह २२ से २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा गुणवती मिलती है, तथापि यह जल-भिणों में आसक्त रहता है एवं अधिक भोगी तथा मजापी होने के कारण विभिन्न लोगों से पीड़ित भी होता है। इसकी पत्नी अपने धर्म की प्रतिष्ठा के कारण अभिमानिनी, स्थूल व्याध तथा धर्म से कुछ असन्तुष्ट रहने वाली भी होती है। आयु लम्बी होती है, पाल्य वृद्धावस्था में वान-रोग से दुःखी भी रहता है। जीवन के मध्यकाल में विशेष रूप से दुःखी रहता है। आयु के २२, ३७ तथा ४२ वर्ष आयु

(३८६) - इस जन्माङ्क वाला जातक मध्यम कद वाला, सुन्दर तथा नपुंसक की भाँति आचरण करने वाला होता है। यह अङ्गीन भी हो सकता है। विद्या के क्षेत्र में सामान्य सफलता मिलती है। इसका विवाह १८ से २५ वर्ष की आयु के बीच होता है। पत्नी सुन्दरी तथा गुणवती मिलती है। यह स्त्री के सहयोग से जीवन में उन्नति करता है। विनये-पढ़ने के कामों में विशेष रुचि रहती है। यह आमोद-उमोद प्रिय तथा पर-भिणों में आसक्ति रखने वाला भी होता है। यह अपने विरुद्ध होने वाले उपपन्नों का सरलता से भेदन करके शत्रुओं को पराजित करने में कुशल होता है। यह अपनी सम्पत्ति की रक्षा करता है तथा स्वजनोपेक्षी देख भी पाता है। इसके जीवन के १८, २२, २६, २८, ३४, ३७, ४२, ५०, ५३, ५८ तथा ६३ के वर्ष उन्नति का काल होते हैं। यह दीर्घायु प्राप्त करता है तथा शरीर से भी स्वस्थ रहता है।

(३८७) - इस जन्माशु में उत्पन्न हुआ व्यक्ति सुन्दर, मध्यम कद तथा स्फूर्ण-शरीर वाला होता है। आँखें बड़ी तथा ललाटे उन्नत होता है। यह अनेक विद्याओं में निपुण होता है। विवाह २२ से २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर, सौन्दर्य रंग की तथा चतुर होती है। वह पति के मनोबुद्धि कार्य कोत वाली, बुद्धिमती, दुष्ट अंगों वाली तथा विवाह-रोग से पीड़ित होती है तथा दीर्घकाल तक पति को लाभ प्रदान करती हुई उसकी सहयोगिनी बनी रहती है। जातक स्वयं लज्जोगे से पीड़ित रहता है। यह अपने परिवार की मान-पुष्टि के लिये तथा कुटुम्बिकों एवं मित्रों को लुब्धक का संरक्षण देता है। माता-पिता से आत्मीयता पूर्ण सम्बन्ध रहते हैं। शरीर कभी-कभी अस्वास्थ्य होता है तथा दीर्घायु प्राप्त होती है। इसकी आयु के १०, १५, १६, २०, ३० तथा ३७ वें वर्ष महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं तथा ४५ वर्ष की आयु के बाद भाग्य की विशेष उन्नति होती है।

(३८८) - इस जन्मकुण्डली वाला जातक देहे हुए रंग का, स्वल्प एवं लम्बे शरीर वाला होता है। आँखें सुन्दर, नाक ऊँची तथा माथा चौड़ा होता है। आँखें पिंगल वर्ण, चमकीली तथा गहरी भी हो सकती हैं। यह वाक्पति तथा अपनी मीठी वाणी से दूसरों को प्रभावित करने में कुशल होता है। स्वभावसे नीच तथा अविश्वसनीयता के लक्षण भी पाये जाते हैं। अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए यह दूसरे की जलाल को महत्व नहीं देता। अपने धन का लचीली बहुत लोच-समझ कर ही करता है। जिनसे लाभ होने की आशंका हो, उनसे किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं बनाना चाहता। विद्याध्ययन साधन रहता है। विवाह २० से २६ वर्ष की आयु में होता है तथा पत्नी नीच-स्वभाव की तथा धन-संचय में संलग्न बनी रहने वाली होती है। जीवन में विशेष सुखी रहता है। जीवन के २८, ३३, ३५, ३८, ४२, ४६, ५०, ५४ तथा ६२ वें वर्ष उन्नति प्राप्त होता है।

(३८८) - इस जन्म लगन कुण्डली वाला व्यक्ति मध्यम कद वाला, सुन्दर तथा स्वच्छ शरीर का होता है। यह मानसिक रूप से वैराग्यवान् तथा सब प्रकार से सम्पन्न होतुएँ भी अकारण असन्तोष का अनुभव करने वाला होता है। विवाह २२ से २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर, तेजस्वी तथा पति के मनोबुद्धि का कार्य करने वाली मिलती है, तथापि कभी-कभी पति-पत्नी एक दूसरे से असन्तुष्ट भी दिखाई देते हैं। ज्ञान-सुख उत्तम रहता है। सामान्य ज्ञान स्वच्छ-व्यवस्था करता है, तथापि लाभ उद नौकरी का अवसर भी नहीं होता। विश्वासनीय कारियों को सँभालने वाले कार्य द्वारा विशेष लाभ प्राप्त करता है। माता, पिता तथा परिवारी जनों से सम्बन्ध सधुर्वने रहते हैं। विद्या के क्षेत्र में उच्च उपाधि प्राप्त न करके भी मिलान् अल्पपत्र प्रीति बना रहा भाग्यता बढ़ता रहता है। जीवन के १२, १५, २० तथा २४ के वर्ष उत्तम रहते हैं। ३२ वर्ष की आयु के बाद विशेष भाग्यदण होता है।

(४००) - इस जन्माशु वाला ज्ञानक सामान्य रूप-रंग का, उन्नत ललाट, तीक्ष्ण श्रोत्रों वाला एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। यह प्रत्येक व्यक्ति का विश्वास अर्जित करने में कुशल होता है तथा शत्रु-पक्ष को भी सहजमें पराजित कर देता है। इसके घर का भेद कोई नहीं पास करता। यह कृतार्थ कार्य द्वारा भी धनार्जन करता है। शिक्षा मध्यम श्रेणी की होती है। विवाह २४ वर्ष की आयु के लगभग होता है। पत्नी सेवा-परायण, सुन्दरी, सुणवती तथा सहयोगिनी के रूप में कार्य करने वाली होती है। सन्तान-सुख उत्तम रहता है। भाग्यदण २५ वर्ष की आयु के बाद होता है तथा जीवन में धन का प्रचण्ड आगमन बना रहता है। इसके पास गुप्त-धन भी हो सकता है। यह वरु तथा प्रसिद्धा देने वाले कार्यों में भी अपने धन का व्यय करता है। इसके जीवन के ३०, ३५, ४०, ४६, ४८, ५०, ५६, ६०, ६२ तथा ६५ के वर्ष लाभप्रद रहते हैं। आयु दीर्घ होती है।

(४०१) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी बुद्ध, गौतम, कथम कर का, ते भवती तथा विपदशी होता है। विष्णुधर्म के क्षेत्र में इसे वर्णन मिलती है। विवाह २३ से २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, गुणवती एवं सुशिक्षिता मिलती है। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। सन्तानें मने नुकूल तथा आलाकांगी होती हैं। यह वाक्पटु, सेव्य भाषणकर्ता, आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न विनोद-पिप, रहस्य-प्रवृत्ति का एवं सर्वत्र भाव्य तथा परिष्ठा प्राप्त करने वाला होता है। यह किसी बड़े सिंघान में महत्वपूर्ण पद पर कार्य करता है तथा अपने शत्रुओं एवं विरोधियों को परास्त करने में सक्षम होता है। यह अनेक प्रकार से धन का संग्रह करता है तथा योग्यकारी भी होता है। अपने कुटुम्बियों तथा मित्रों के संरक्षण एवं सहायता देता है तथा स्वयं भी आजीवन सुखी बना रहता है। इसके जीवन के २०, २२, २४, ४२, ४८, ५२ तथा ६०वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं।

(४०२) - इस जन्म जन्म में उत्पन्न जातक बुद्ध, स्वस्थ तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। इसे विष्णु का उत्तम लाभ होता है। विवाह २३ से २६ वर्ष की आयु के बीच होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मने नुकूल मिलती है। सन्तान-सुख भी उत्तम रहता है। यह वाक्पटु होने के कारण अपने पक्ष को चलाता है, उत्पत्ति को पराजित करने में कुशल होता है तथा सम्मानित-पद पर प्रतिष्ठित होकर धन तथा धन का प्रयत्न उपार्जन करता है। यह पितृ की ओर से सुखी, पितृ माता की ओर से विधित्त तथा असन्तुष्ट रहता है। यह कई प्रकार के उत्तरदायित्वों का निर्वहन करने में सक्षम तथा न-बोहा एक जैसा सम्मान प्राप्त करने वाला होता है। इसे राज्य से भी लाभ होता है। युवावस्था में इसे कुछ कष्ट उठाना पड़ता है, तदुपान्त सम्पूर्ण जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होता है।

(४०३) - इस जन्मादु में उत्पन्न बालक पिछे दर्श स्वप्न तथा मृदुभाषी होता है। वह अपनी वाणी द्वारा दूसरों को प्रभावित करता है तथा अनेकों द्वारा चित्र भी शीघ्र प्रभावित हो जाता है। विष्णु के क्षेत्र में इसे सफलता मिलती है। विवाह २२ से २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुमिली मिलती है, जो इसे अनेक छोटे-बड़े बच्चों (बेटों) तथा अपनी इच्छापूर्वक चलाती रहती है। यह जातक किसी सम्मानित-पद का प्रतिष्ठित होकर प्रशस्त मानका उपार्जन करता है। सन्तान का उत्तम सुख प्राप्त होता है। राज्य द्वारा सम्मानित तथा वैदिक-ग्रन्थों द्वारा प्रशंसित यह व्यक्ति अपने अनेक व्यवहार से सभी का प्रिय प्राप्त करता रहता है। इसकी आयु के १५, २०, २३, २५, २८, ४०, ५२ तथा ५८ के वर्ष आर्थिक-दृष्टि से लाभप्रद एवं उत्तम कारक सिद्ध होते हैं। शरीर प्रायः स्वस्थ बना रहता है। आयु ७२ वर्ष से अधिक होती है। जीवन सुख से बीताता है।

(४०४) - इस जन्मादु वाणा जातक नाक-गच्छा से सुन्दर, आकर्षक-प्रभावित्व सम्पन्न, शरीर से स्वस्थ तथा प्रभावशाली होता है। विष्णु के क्षेत्र में प्रशस्ति सफलता मिलती है। विवाह २० से २५ वर्ष की आयु में होता है तथा पत्नी सुन्दरी, सुस्मि, सुसंस्कृत, चित्र तथा उत्तम विभावनी मिलती है। फलतः दाम्पत्य-सुख प्रभूत मात्रा में प्राप्त होता है। सन्तानें अनेक सुख मिलती हैं। उनके जीवन में किसी अधिक आती है, जो इसके जीवन के उत्तम क्षेत्र को प्रभावित करती है। इसका भाग्य सर्वदा लाभप्रद बना रहता है, फलतः जीवन के आरंभ में अन्त तक यह धनी, ऐश्वर्य सम्पन्न तथा सुखी होता है। यह वैदिक-सम्पत्ति का उपयोग करता है तथा पिता के प्रति चिन्तन बना रहता है। पाम साहसिक कार्य में रहे आनन्द आता है।

(४०५) - इस जन्मांक में उत्पन्न जातक सुन्दर, स्वस्थ, मध्यम क्रम का तथा गौरवर्ण होता है। यह अनेक कलाओं का हारा, श्रेष्ठ लेखक तथा साहित्य-प्रेमी होता है। विद्याभ्यास के क्षेत्र में इसे सफलता प्राप्त होती है। विवाह कुछ विलम्ब से होता है। पत्नी सुन्दरी, विदुषी तथा स्वतन्त्र-व्यक्तित्व सम्पन्न होती है, जो पति का नाम उज्ज्वल करती है। सन्तानें सुख, स्वास्थ्य, दीर्घजीवी तथा मनोबुद्धिमान होती हैं। यह किसी उच्च पद पर प्रसिद्धि प्राप्त सरकारी अधिकारी अथवा किसी महत्वपूर्ण विज्ञान का उच्च पदाधिकारी होता है। इसे शासन तथा समाज द्वारा सम्मान प्राप्त होता है। ये लोग अपने जीवा के जीवनकाल में सम्माननीय स्थान पाते वाले होते हैं। इनका व्यक्तित्व प्रभावशाली होता है। इनके जीवन के १५, २०, २५, ३०, ३६, ४२, ४५, ४८, ५०, ५४, ५८ तथा ६२ के वर्ष लाभप्रद किट्ट होते हैं।

(४०६) - इस कुण्डली वाला मनुष्य सुख, गौरवर्ण, मित्रवादी, प्रियवादी, बुद्धिमान तथा लक्ष्मिपुत्र होता है। इसे विद्या के क्षेत्र में अच्छी सफलता प्राप्त होती है। विवाह २२ से २८ वर्ष की आयु के बीच होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला, बुद्धिमती, सामाजिक-जवाहर में दक्ष तथा जीवारी जनों को भी सुख देने वाली होती है। फलतः पारिवारिक-जीवन आनन्दमय बना होता है। इसकी सन्तानें बुद्धिमान, सेवकरी तथा सौभाग्यशाली होती हैं। सन्तानों की शिक्षा अधिक नहीं होती। पालन मिलती होती है, वे विद्वान् तथा प्रशस्ती बनती हैं। यह व्यक्ति जनता तथा बाल-संगठनों से लाभ प्राप्त कर के धनी बनता है। राज्य द्वारा सम्मान पाता है। जीवन हेतु सर्वप्रकार की सेवा करती है। आयु के ३०, ३५, ३८, ४६, ५२, ५४ तथा ६२ के वर्ष अत्यन्त महत्वपूर्ण तथा अन-प्रति-रक्षक किट्ट होते हैं। यह अभीष्ट सुखी तथा प्रशस्ती बना होता है।

(४०७) - इस जन्मकुण्डली वाला जातक सुन्दर, स्वस्थ, आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न, काव्य-साहित्य में
वाग्जालधर्यन में रुचि लेने वाला तथा धर्म में विशेष आस्था रखने वाला होता है। यह किसी विशेष
देवता की आराधना करने वाला तथा पूजा-उपासना से सुख-कामि का अनुभव करने वाला होता है।
विष्णु के क्षेत्र में इसे विशेष सफलता प्राप्त होती है। विवाह २२ से २६ वर्ष की आयु में होता है।
पत्नी अत्यन्त सुन्दरी, बुद्धिमती तथा गुणवती होती है, पालु वह वात-रोग से पीड़ित बनी रहती
है। वह मितभाषिणी तथा सहृदय भवामन होती है। यह जातक पैतृक-सम्पत्ति को प्राप्त करता
है तथा माता के द्वारा संजित धन का लाभ भी इसे होता है। यह अपने गंभीर जातीयक दायित्वों
का कुशलता पूर्वक पालन करता है। इसके पास धन की कमी कमी नहीं रहती। यह किसी उच्च-
पद पर आसीन होता है तथा निरन्तर उत्तमि करता चला जाता है। इसके लिए ३७ तथा ५२ वें वर्ष महत्वपूर्ण

(४०८) - इस जन्माङ्क वाला जातक सुन्दर, स्वस्थ, उत्कृष्टत्वलात तथा आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न
होता है। यह धर्म-कर्म को हर धर्म के प्रति ज्ञान, आस्था-रहित होता है। इसके सम्पूर्ण कार्य
भाग्य से ही सिद्ध होते हैं तथा यह भाग्य को न मान का पुत्रार्थ को ही महत्व देता है।
विष्णु के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता भी यह बहुत रोझिघा होता है। इसका विवाह २१
से २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सामान्य सुन्दरी सरल तथा सीधे चरित्र की होती है।
दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहता है। पत्नी कफ-रोग से पीड़ित भी रह सकती है। जातक स्वयं
शरीर से जलप, पीथपी तथा कुशल-व्यवस्थापक होता है। यह महत्वाकांक्षी, जमीन अथवा
जमीन से उत्पन्न होने वाली वस्तुओं के व्यवसाय से लाभ उठाने वाला, लौह-निर्मित वस्तुओं
का व्यवसायी तथा ऐश्वर्य सम्पन्न होता है। २४, २६, ३०, ३२, ४२ तथा ५० वें वर्ष विशेष उत्तम रहने हैं।

(४०६) - इस कुण्डली का स्वामी पुष्ट शरीर का, आपत्त कोमल, सुन्दर तथा कम-काफ़ी के कार्य में घबराने वाला होता है, किन्तु यह पुष्टि अथवा लेना में कार्य करने का इच्छुक रहता है। किसी व्यवस्था-सम्बन्धी पद पर आसीन होकर यह अपनी प्रतिभा का अच्छा प्रदर्शन करता है। यह जीवन में अनेक बार कठिनायियों का सामना करता है। विद्या का अध्ययन लाभ होता है। विवाह की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा शान्त स्वभाव वाली होती है। यह अपने कार्य तथा व्यवहार से समाज में प्रतिष्ठा तो प्राप्त करता है, पण्डित का अभाव प्रायः बता रहता है। अनेक कड़े-मीठे अनुभव इसे प्राप्त होते रहते हैं। इसकी सन्तानें बृद्धिमान होती हैं तथा एक पुत्र धन-यश-सम्पन्न कुल के नाम को ऊँचा करने वाला होता है। यह जानक मध्यमायु प्राप्त करता है। इसके जीवन के १५, १८, २२, २६, २८, ३२, ३७, ४२, ४८ तथा ५२ के वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं।

(४१०) - इस जन्माङ्क वाला जानक कुक्ष साँवले रंग का, मध्यम कद वाला, दोहन में सुन्दर, पण्डित कुक्ष उगु स्वभाव का होता है। यह आपत्त बृद्धिमान होते हुए भी अपने उदात्त स्वभाव के कारण उन कार्य को भी कर बैठता है, जिनका परिणाम हानिकर सिद्ध होता है। इसे प्रायः विश्वासघात का शिकार होता पड़ता है। विद्या का लाभ मध्यम होता है। विवाह २२ से २५ वर्ष की आयु में होता है तथा पत्नी सुन्दरी तथा परिश्रमशील प्राप्त होती है। सन्तान-सुखभी अर्थात् रहता है। इसका आश्रय अपने से छोटे तथा किसी बाहरी व्यक्ति के माध्यम से होता है। किसी कार्य पर कुछ समय के लिए पड़ेर जाकर, यह किसी-न-किसी कारणवश बहुत समय तक नष्ट होकर रहता है। इसे जमीन तथा ज्वलनशील वस्तुओं के व्यवसाय से आर्थिक लाभ होता है। यह प्रायः औरों के हित-साधन हेतु कार्य करता है, अतः इसे व्यवसाय रूप में सुख की प्राप्ति नहीं हो पाती।

(४११)- इस जन्म कुण्डली वाला मनुष्य सामान्य गेहुँए (गंका, मध्यम वयु, सामान्यतः स्वस्थ एवं आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। स्त्रियों के प्रति इसका विशेष आकर्षक रहता है। मन की चंचलता इसे इधर-उधर भटकती रहती है। विद्या का लाभ उत्तम होता है। विवाह २४ से २७ वर्ष के बीच होता है। पत्नी सौन्दर्य, परलु सुन्दर, पुष्ट एवं आकर्षक अंगों वाली, लेलचिरी, पाम-मनुष्य तथा अल्पतः प्रभावशालिनी होती है। वह पति की उत्तमि में पूर्ण सहयोग करती है। सन्तानों की संख्या कम होती है, परन्तु वे बुद्धिमान तथा सुखदेने वाली होती हैं। यह जातक जमीन, जमीन से उत्पन्न वस्तुओं, चतुष्टयों तथा अग्नि से संबंधित पदार्थों के माध्यम से अच्छा सेना, पुलिस विभाग में एक अथवा अन्य हिंसात्मक कार्यों का आजीविकोपार्जन करता है। इसके जीवन के ५, ७, १५, २०, ३५ तथा ४५ के वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। आयु मध्यम से कुछ अधिक होती है।

(४१२)- इस जन्मांक का स्वामी गेहुँए (गंका, मध्यम कदवाला, स्वस्थ, सुन्दर तथा ठीक प्रकार का होता है। यह स्त्रियों के प्रति अतुराग-रहित सा होता है। विवाह २२ से २८ वर्ष की आयु में होता है, पत्नी मनेनुकुला तथा सामान्य सुन्दरी मिलती है, परन्तु सन्तान-लाभ में विलम्ब होता है। सन्तानों प्रायः जीवित नहीं रहती अथवा गर्भपात हो जाना करता है। यदि कोई सन्तान जीवित बचे तो वह अल्पतः बुद्धिमान तथा माता-पिता को सुखदेनेवाली सिद्ध होती है। इसकी पत्नी बड़ी व्यावहारिक तथा सांसारिक कार्यों में पूर्ण सहयोगिनी होती है। यह अल्पकाल ले ही पुत्र यात्र का उपार्जन करता तथा अपनी सम्पत्ति में निराला बृद्धि करता रहता है। यह साहित्य एवं का प्रेमी, देश-विदेश में यात्रा करने वाला, ऊपर से गरीब दिगार देने वाला, परन्तु मध्यम में धन-सम्पन्न होता है। इसके जीवन के २२, २८, ३५, ३८, ४२, ४८, ५२, ५५ तथा ५८ के वर्षों में

(४१३) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी दीर्घायु, कुछ देवे हुए रंग का, स्वप्न शरीर तथा प्रसन्नचित्त वाला होता है। वह बृद्धिमान् होने हुए भी उपेक्षार्थ कार्यों में रुचि रखने वाला तथा शत्रुओं से निरन्तर भयभीत बना रहने वाला भी होता है। इसकी शिक्षा मध्यम स्तर की होती है। विवाह २४ से २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी पुष्पाभा, विदुषी, प्रभावशालिनी, पालु दही-स्वभावकी होती है। यह धार्मिक अनुष्ठानों में अपने समस्त तथा धन का अधिक व्यय करता है तथा स्वकी पत्नी उसमें पूर्ण सहयोग देती है। यह अपने से हीन व्यक्तियों की स्तुति का काम करता तथा सुखी रहता है। मुक्तकाल: अपने स्वप्न से बाहर के लोगों से सम्बन्ध रखकर लाभ उठाता है। इसकी सुलाने कम, पालु सुख देने वाली होती है। यह अपने धन का उपयोग भी व्यय करता है, पालु इसकी पत्नी धन का संचय करने वाली होती है। ४२ तथा ४८ वें वर्ष विशेष शुभ होते हैं।

(४१४) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न बालक सुदा, दृढ़ शरीर तथा आकर्षक-व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। इसकी वाणी कुछ कुछ लगेत हुए भी अर्थवृत्त होती है, अतः लोग उसके अनुशासक ही कार्य करते हैं। इसकी शिक्षा उत्तम होती है। विवाह वही आयु में होता है। पत्नी सुदृढ़ तथा मनेत्र-कूल मिलाती है तथा उसके प्रेरणा से यह धार्मिक विद्या-कलाओं में भी रुचि लेता है। यह तीव्र बुद्धि सम्पन्न, अपने समाज में परिचित, केवल व्यक्तियों द्वारा सम्मानित, पालु धन-सम्पत्ति एवं परीक्षा के प्रति लाभवाह होता है। यह विभिन्न कार्यों द्वारा धनोपार्जन करता है। किसी उच्च विद्यालय अथवा संगठन में कार्य करके सहायतापूर्वक धन कमाने वाला, भाग्य का धनी तथा शिक्षा पर अविश्वास रखने हुए भी ग्रीह-स्वभावका तथा प्रयोपकारी होता है। इसके जीवन के १५, १८, २१, ३५, ३८, ४१ तथा ४७ वें वर्ष के लोभ का एवं सुख का सिद्ध होते हैं।

(४२५) - इस जन्मकुण्डली वाला जातक मध्यम शरीर वाला, मध्यम लैंगिक पुष्ट तथा स्वस्थ होता है। यह अपनी पत्नी एवं मित्रों से विपत्तिग्रस्त रहने पर भी स्वतन्त्र-विचारों का होता है तथा कार्य के लक्षण से वचना हुआ, ऐसे अनेक कार्य काता है, जो इसके लक्षण तथा प्रीति के लिए ही कहें सिद्ध होते हैं। इसे विष्णु का उत्तम लाभ होता है। विवाह १८ से २४ वर्ष अथवा २८ से ३२ वर्ष की आयु के मध्य होता है। पत्नी मनोरुक्ला, सुन्दरी तथा मेल स्वभाव की मिलती है। फलस्वरूप - जीवन सुखमय बना रहता है। इसे अपने प्रीति के लोगों का विश्वास नहीं मिलता। यह मनेष्ट्र चतुर्धातु को नष्ट करके इष्ट से प्रदीप्त होता है तथा चित्त का चिन्तन चिन्तन नहीं काता। पत्नी भी बचन का वाली है। इसे लम्बी आयु प्राप्त होती है। पालु यह अनेक पुत्रों के लोगों से कीर्ति भी बनाता है। जीवन के ५, १२, १८, २४, ३० तथा ४८ के वर्ष महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं।

(४२६) - इस जन्मांक से उत्पन्न हुआ मनुष्य सुदा, हृदय तथा लम्बे शरीर वाला एवं आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। यह विष्णु के क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है। विवाह २२ से २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी इससे भी अधिक साहसी स्वभाव की तथा तभी २ कार्य के क्षेत्र में विशेष निपुण होती है। दाम्पत्य - जीवन सुखमय व्यतीत होता है। पत्नी के सहयोग से यह अनेक क्षेत्रों में उत्तरी करता है। वह अपने भाइयों तथा प्रीति के लोगों की सहायता से चित्त का गहन करने में लगी रहती है। इसकी संतानों में पुत्रियों की संख्या अधिक तथा पुत्रों की कम होती है। यह स्वतन्त्र कार्य द्वारा जो चतुर्धातु करता है, वह ही लोगों के सहयोग से भी प्रकट लाभ उठाता है। इसकी आसक्ति सुनिश्चित होती है। इसके जीवन के १०, १२, २०, २४, २८, ३०, ३२, ४२, ४८ तथा ५२ के वर्ष महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं।

(४१७) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी अपनी विज्ञा, बुद्धि एवं बुद्धिमानों के प्रभाव से उच्च पराक्रमवाला स्वप्न, बुद्धि, आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न, स्वतन्त्र-विचारों का स्वामी बनने को प्रभावित करने वाला होता है। विज्ञा का काम मध्यम होता है। विवाह २५ से २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी बुद्धि, सुशीला तथा कर्तव्यवादी होती है, जो अपने पति को सुखी बनाने सुखों में संश्लेष करती रहती है। वह बुद्धिमती तथा सामाजिक-परिष्ठा में वृद्धि करने वाली भी होती है। सन्तान-सुख उत्तम रहता है। यह जातक सुव्यक्त, सेवा-कार्य द्वारा ही अपने पारमार्थिक कामों में भागीदारों के सहायक बन रहा है। पात्राओं में इसे विशेष रुचि रहती है तथा पात्रों के सुख एवं धन का काम भी होता है। इसका अधिकांश धन कीमती वस्तुओं के अगुने-रूपों में व्यय होगा रहता है। इसके जीवन के २०, २१, २२, २५, ४२ तथा ५६ में वर्ष विशेष लाभदायक हैं।

(४१८) - इस जन्माक्षुब्ध बाला जातक शरीर से दृढ़, सामान्य बुद्धि, अपना बुद्धिमान, काम एवं साहित्य का प्रेम रखता अपने अधनमालाधार ही उन्नति प्राप्त करने वाला होता है। विज्ञा का काम मध्यम रहता है। विवाह २२ से २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी बुद्धिमान होती है, जो उसे विचारों का मेल नहीं देता, अतः स्वयं असन्तुष्ट बना रहता है। इसे आकर्षक रूप से अपने जीवन के ऐसे अनेक अवसर प्राप्त होते हैं, जिनमें इसे पर्याप्त लाभ होते हैं। यह सेवा-कार्य का आजीविकोपार्जन करता है। इसे धन की कमी नहीं रहती। यह वैदिक-सम्पत्ति को प्राप्त करने वाला तथा उसकी वृद्धि करने वाला होता है। यह धन को व्यर्थ खर्च नहीं करता। इसकी पत्नी दीर्घायु होती है, जो जातक की मृत्यु के बाद भी बहुत समय तक जीवित रहती है। यह स्वयं मध्यम रूप प्राप्त करता है। इसके पुत्र बुद्धिमान तथा बुद्धिमान होते हैं।

(४१९) - इस जन्मचक्रका स्वामी मध्यम कद वाला, बलिष्ठ शरीर का एवं समानान्तःसुद्धा तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। यह उत्तापयित्वपूर्ण कार्यों का निर्वहन करने में कुशल होता है। यह अपने साथियों के साथ मिल कर कार्य करता है तथा चान-संगठ करना उसके स्वभाव की वृद्धि करता रहता है। यह पौष्टिकता के कार्य को के यश तथा सम्मान भी प्राप्त करता है। विद्या का उत्तम साधन होता है। विवाह कुछ विलम्ब से होता है। पानु पत्नी सुदृढ़ तथा मनोबुद्धिमान मिलती है। वह पारिवारिक उत्तम एवं चान-संगठ के सहायिका बनती है। दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहता है। सन्तानें सुद्धा सुखदायक तथा आशाकारीणी होती हैं। यह सेवा-कार्य (नौकरी) द्वारा आजीविकोपार्जन करता है तथा स्वभाव से कृपण होने के कारण पारिवारिक व्ययों का कुशलपूर्वक निर्वह करता है। जीवन के २८, २९ तथा ४२ वें वर्ष विशेष लाभ प्राप्त होते हैं।

(४२०) - इस जन्मकुण्डली वाला जातक गौरवर्ण, सुद्धा, लम्बे इकठ्ठे शरीर का, गेहनाची तथा त्वण के ही संकुचित रहने के कारण अपने पारिवारिकों के लिए अपना साल-सहज तथा सुख-दायक होता है। इसे विद्या के क्षेत्र में इच्छित सफलता मिलती है। विवाह २५-२७ वर्ष की आयु में होता है तथा पत्नी सुदृढ़, बुद्धिमती एवं पारिवारिक पालन करने में कुशल होती है। यह वैदिक-सम्पत्ति प्राप्त वाला तथा आध्यात्मिक-लाभ प्राप्त। इसकी वृद्धि करने वाला एवं एक निश्चित क्षेत्र में प्रगति करने वाला होता है। यह बाहरी कार्यों से कोटि सम्बन्ध नाल का अपने निज निष्पन्न के कार्यों में ही दत्तचित्त बना रहता है। यह दीर्घायु प्राप्त करता है तथा इसकी पत्नी का निधन इसके जीवनकाल में ही होता है। इसकी आयु के १५, १८, २२, २८, ३१, ३५, ३८, ४०, ४४, ४६, ५०, ५२ तथा ६४ वें वर्ष लाभ प्राप्त होते हैं।

(४२१) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी मंगल सुखा, स्वस्थ, गौरवर्ण तथा कुछ शरीर वाला होता है। यह आत्म-पूजक होता है, चालु इसे आर्थ-आधिपति अधिक नहीं सताती। यह उच्च भावों का सुखा, ऊँचे स्तर के देने वाला, वाचाल, तर्क को के कुशल तथा प्रभावशाली होता है। यह मध्य आयु में अपना निश्चित कार्य करे। अनोपार्जन करता है। विष्णु का प्रवेष्ट लाभ होता है। विवाह २१ से २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुखी तथा धनी, या निपल्लव रहने वाली होती है। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। इसकी पत्नी पति को मार्ग-दर्शन देने वाली तथा पण्य निपल्लव रहने वाली होती है, तथापि पति की अवस्था नहीं काली। सन्तानें प्रवेष्ट होती हैं। पण्य पुत्र विशेष प्रेम्ण नहीं होती। आर्थिक-स्थिति मध्यम होती है। धन का गिनना अशक्य होता रहता है। राण एवं पिता से हानि भी भोगना रहती है। आयु के ४५ तथा ५२ के वर्ष उत्तम।

(४२२) - इस जन्म कुण्डली वाला जातक सामान्य सुखा, स्वस्थ शरीर का तथा अपने सम्पत्ति का धार विष्णु एवं धन का उपार्जन करने वाला होता है। यह अपनी बात को कहने में दृढ़ तथा धन का संचय करने में प्रवृत्त होता है। यह सम्पत्तिस्वयं स्वयं को भी मोह लेता है। विष्णु का मोक्षित लाभ होता है। विवाह २४ से २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुखी, हार्-विलास सुखा तथा धन के वातावरण को प्रफुल्ल वगैरे प्रेम्ण वाली होती है। यह अपना चतुरा, मनकी बात को धन का राणने वाली तथा अवलानुसूत उच्च कदम उठाने के कुशल होती है। इसे पुत्र तथा पुत्री दोनों का लाभ होता है। सन्तानें बहुमान होती हैं, चालु धन वगैरे से प्रभावित हो जाया करती हैं। जातक के निपल्लव कामकाज में तेरे से आते रहते हैं, चालु हानि नहीं होती। जीवन के १५, २०, २५, ४२ तथा ५६ के वर्ष विशेष लाभ प्रद सिद्ध होते हैं।

(४२३) - इस जन्माङ्क का स्वामी जातक सुखा, स्वल्प, भौरवर्ण, कलमों का खाता, बुद्धिमान, साहित्य एवं संगीत में रुचि रखने वाला तथा सर्वत्र सम्मान पावे वाला होता है। यह अपनी माता की ओर से सुख प्राप्त करता है, पालतु पित्त की ओर से असन्तुष्ट-सा बना रहता है। यह भाग्य का धनी होता है, पालतु अपने दुष्टवर्षों को ही सुख मानते हुए कर्मों का पालन करता है। इसकी आयु के मोर अच्छे तथा एक से अधिक होते हैं तथा यह एक ही मोर से विशेष लाभ प्राप्त करता है। विष्णु का लाभ मध्यम होता है। विवाह २२ से २८ वर्ष की आयु के बीच होता है। पत्नी सुन्दरी होती है तथा अहेकाग्रणी होने के कारण स्वयं को बुद्धिमती मानती हुई कभी-कभी पति की अवहेलना भी कर देती है। दोरी-दोरी बातों पर भी हठ करने के उसे कोई संकोच नहीं होता। इसका भाग्योदय विवाहोपान्त ही होता है तथा ३२, ४५, ५३, ५८ एवं ६२ के वर्ष विशेष लाभ प्राप्त होते हैं।

(४२४) - यह जातक सुखा, स्वल्प तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। यह मन-हीन-मग्न स्वयं चिन्तित बना रहता है। यह अपने धन का अपेक्षित परिणाम के दिन में करता है, पालतु अपने बदले उसे लांछनाही मिलती है। विष्णु-लाभ मध्यम रहता है। विवाह २५ से २८ वर्ष की आयु के होता है। पत्नी सुन्दरी तथा तेजस्वी, ऊँच-नीच की लम्पटने वाली एवं लोक-व्यवहारा में कुशल होती है। सन्तान का सुख उत्तम रहता है। विवाहोपान्त विशेष सुख मिलता है तथा यह धन की कमी जीवन में नहीं रहती है। पत्नी जीवन में मनीषा शक्ति प्रकाश देती है, अतः दाम्पत्य-सुख की भाँसा प्राप्त होती है। इसे राज्य से सम्मान प्राप्त होता है तथा प्रपञ्चों का शिकार करने की संभावना भी रहती है। यह पालतु पालतु रहते हुए सुखी रहता है और वहाँ अपने लिए सम्मान प्राप्त करता है। जीवन के २३, २५, ३५, ४२, ४८ एवं ५७ के वर्ष लाभ प्राप्त किए जाते हैं।

(४२५) - इस जगत्कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ तथा आकर्षक व्यक्ति होना है। यह वाक्यद्वय होने के साथ ही साहित्य का समर्थ तथा काव्य-सृजन का शौकीन होता है, तथापि व्यक्ति के रूप में अधिक विज्ञान नहीं होता। विज्ञान का समुचित लाभ होता है। विवाह २४ से २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सौन्दर्य, प्रति-पाद्यता एवं वन-हृत्-कुशल होती है, फलान्, दाम्पत्य-जीवन सुखमय बना रहता है। प्रथम संतान से लाभ की सम्भावना होती है। अल्प सन्तानों से भी सुख की प्राप्ति होती है। यह हृदय का अत्यन्त उदात्त तथा क्षमाशील होता है। आमदनी का स्रोत अच्छा होने के कारण इसे न तो धन की कमी का अनुभव होता है और न कोई काम ही रुक पाना है। यह राज्य द्वारा भी सम्मान प्राप्त करता है तथा नवीन कार्य में धन का खर्च करने हुए, पैसों-सम्पत्ति का लाभ उठाता है। ४२ तथा ४६ में वर्ष विशेष लाभप्रद।

(४२६) - इस जन्तुर्लिंग में जन्मा हुआ बालक सुन्दर, स्वस्थ, उदात्त-हृदय तथा कलात्मक अभिरुचि-सम्पन्न होता है। विज्ञान का प्रवेष्ट-लाभ होता है। विवाह १८ से २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी चतुरा, सुन्दरी तथा योग्यकारीणी होती है। सन्तान-सुख उत्तम रहता है। इस के धन का व्यय कलात्मक-अभिरुचियों की सम्पन्नता में अधिक होता है। बाजारों, मण्डपों में इसके धनार्जन में किसी प्रकार की कमी नहीं आती। किसी भी नवीन कार्य को कार्य करने पर उसमें सफलता की सम्भावना अधिक रहती है। पाल्य होने आकर्षक धन-लाभ के भी अनेक अवसर उपलब्ध होते हैं। अधिक दिनों तक एक ही कार्य को करने रहना न तो इच्छित होता है और न संभव ही। कभी-कभी अप्रत्याशित रूप से भी यह निश्चित कार्य से दूर हो जाता है। आयु मध्यम से कुछ अधिक रहती है। जीवन के २६, २७, ४२ तथा ४८ के वर्ष विशेष लाभप्रद रहते हैं।

(४२७) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य सुन्दर, विपदशील, आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न तथा अपनी वाणी की मधुरता से दूसरों का हृदय जीतने वाला होता है। यह मध्यम शिक्षा प्राप्त करता है तथा इसका विवाह २१ से २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, पतले-दुबले शरीर वाली, अनेक कलाओं में निपुण तथा अपने चारों ओर के वातावरण को उत्कृष्टतम रूप से सज्जित करने वाली होती है। (सन्तानें स्वस्थ, दीर्घजीवी तथा मनेउत्कूल होती हैं)। यह जानक बुद्धि से भरे हुए तथा भाव्य का अच्छा होता है, तथापि इसे प्रायः दुःख के अवसर प्राप्त होने रहते हैं। मान-सम्मान की कमी न होने दुर्लभ बात की कमी बनी रहती है। कभी-कभी आकर्षक रूप से धन-लाभ के अवसर भी प्राप्त हैं; और कभी-कभी शत्रु भी लेना पड़ता है। थोड़ी बहुत अचल सम्पत्ति पैसों-धन के रूप में प्राप्त रहती है। अधिक-जोशानी के कारण हास्यमय चिन्ताएं बरे रहती हैं। (वर्ष ३७ तथा ५३ भरे हुए हैं)।

(४२८) - इस जन्मांक चक्र का स्वामी शरीर से स्वस्थ, मध्यम ऊँचाई का, सामान्य सुन्दर तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। इसके दोरे आर्य प्रक्रमण होते ही नहीं, यदि हों तो बड़ी कठिनाई से ही जीवन बच पाते हैं। विद्या का विशेष लाभ होता है। विवाह २४ से २७ वर्ष की आयु में होता है तथा पत्नी सुन्दरी एवं लम्बी का भला-चढ़ने वाली होती है। तथापि वह पति-प्रेम से वंचित रहने के कारण हीन-भावना से संक्रान्त बनी रहती है। जानक स्वर्ण सुशील, गुरु का कृपापात्र तथा कोशल का अनोखापति में संलग्न रहे वाला होता है। इसे चाह का भी पुत्र से सुख नहीं मिल पाता, जब कि इसके पुत्र सफलता तथा पिता के प्रति प्रेम रखने वाले होते हैं। यह स्वयंभी स्त्री-पुत्रादि से प्रेम नहीं करता। यह प्रकृति से कृपण तथा मंदगति का रोमी होता है। जीवन के १५, २५, २७, ३०, ३५, ४२ तथा ५६ के वर्ष विशेष लाभ प्राप्त किए होते हैं।

(४२६) - इस जन्म कुंडली वाला मनुष्य अल्प केशों वाला, ऊँचे कद का, बलिष्ठ, आलसी, कोधी तथा नेत्र-रोगी होता है। यह कलाओं का श्रमा, सदाचारी तथा अपने यश का विस्तार देव का आनंदित होने वाला होता है। इसके पूर्व उपाधि-धन की हासि होती है तथा जोड़े में रहने का संयोग भी बनता है। धन के नष्ट होने की संभावना रहते हुए भी सम्मान की हासि नहीं होती। इसे निर्भीकता का सुख भी मिलता है। पान्थु जीवनी जन उसमें भी बाधा उपस्थित करते हैं। इसका कार्य-क्षेत्र वर तथा धन के संग्रहण होता है। कला-कौशल का भी इसे अच्छे प्रकार लाभ होता है। कोसा, पीतल और आभूषणों के व्यवसाय में भी लाभ होता है। शिक्षा कथम होती है। विवाह २४ से २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी इसमें कुछ असंतुष्ट अपना विवाह बनी रहती है। जीवन के २१, २४, २८, ३२, ३६, ३८, ४२, ४८, ५१, ५६ तथा ५८ वें वर्ष विशेष लाभ प्राप्त करते हैं।

(४३०) - यह जातक उन्नत मस्तक वाला, गौण, लम्बे कद का, आलसी, पान्थु वीर, कोधी एवं बलिष्ठ, उदात्त तथा कथमवसाय एवं उच्चम उदात्त यश-कीर्ति अर्जित करने वाला होता है। यह कला, निराला, लेख और लेखन करने वाला एवं सुखी जीवन बिताने वाला होता है। इसके केश युवावस्था में ही झिल होने लगते हैं। शिक्षा श्रेष्ठ-तरा भी होती है। विद्वत्ता कथमक प्राप्त होती है। विवाह २३ से २६ वर्ष की आयु में होता है। सन्तान-सुख उत्तम रहता है। इसे अपने किसी विशेष कार्य में रुची भी सहायता से प्रकलता प्राप्त होती है। मित्र भी इसे सहायता देते हैं। यह स्वयं भी अपने मित्रों की सहायता करता है। इसे लघुवारी तथा भवन का सुख भी प्राप्त होता है। पत्नी कोधी-स्वभाव की तथा विवाहीन होती है, प्रसन्न-दाम्पत्य-सुख अच्छा नहीं रहता। इसे गर्दभ में सुख तथा धन का लाभ होता है। यह कष्टों को भी धैर्यपूर्वक सहन करता है। ५० वर्ष के बाद विशेष सुख मिलता है।

(४३१) - इस जगदकुण्डली का स्वामी गौरवर्ण, लम्बी देह, उत्तम-ललाट तथा सुदृढ़ शरीर का होता है, वह उदात्त तथा दूसरों की सहायता को आनन्दित होने वाला एक प्रभाव में मान-सम्मान प्राप्त करने वाला होता है। पशु कभी-कभी आलस्य के कारण अपने कामों को बिगाड़ भी लेता है, यह उच्चमी होने दुर्गम अपने परिवार के प्रति विस्तारवादी होता है तथा परिवारीजनों के ही कारण विपरीत-जीर्णार्थियों का सामना भी करता है। शिक्षा उत्तम प्राप्त होती है। विवाह २१-२७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी के मन नहीं मिलता, अतः वह दुःखी बनी रहती है। सन्तान से सुख मिलता है। परिवारीजनों के ऊपर तथा उनके कारण ही इसका चान नष्ट होता है, जिसकी पूर्ति मह पदोदर में पाई जाती है। इसे पदोदर में तथा राज्य का सम्मान प्राप्त होता है। इसके जीवन के २०, २१, २७, ३५, ४२, ४८ तथा ५२ में वर्ष उत्कृष्ट वर्ष कहिये जाते हैं।

(४३२) - इस कुण्डली का स्वामी जातक गौरवर्ण, मध्यम कद वाला, सुन्दर, विनयी, शान्त, सदाचारी, उदात्त, धैर्यवान् तथा विवेकशील होता है। इसकी अभिरुचि ललित-कलाओं में होती है, जिसके कारण इसे आर्थिक-लाभ भी मिलता है। शिक्षा काम-चलायु प्रयोज्य होती है। विवाह २६ से २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा विवेकशील होती है, जो उत्प्रेक क्षेत्र में पति की सहयोगिता बनी रहती है। सन्तान-सुख भी अच्छा रहता है। निजी सहाय (वाहन) इसके लिए काष्ठ उद्योग कहिये जाते हैं। इसे जवानों से तथा मित्रों से कष्ट मिलता है एवं मित्रों के कारण अनेक बाधा निराशा का सामना करना पड़ता है। वात-वायु से भी इसे पीड़ा पहुँचती है। इस व्यक्ति की कला सर्वत्र सम्मान प्राप्त करती है तथा अपनी कला-विशुद्धता से ही इसे यश तथा चान का लाभ होता है। जीवन के २२, २८, ३०, ३५, ४२, ४८ तथा ५५ में वर्ष उत्कृष्ट वर्ष हैं।

(४३३) - इस जन्म कुण्डली वाला मनुष्य मध्यम कद का, गोलवर्ण, सुन्दर तथा अत्यन्त प्रियदर्शी होता है। वह अनेक कलाओं तथा व्यवसायों का ज्ञानकार एवं उच्चक्रेणी का ईर्ष्याविष्ट होता है। यह राज्य द्वारा सम्मानित एवं राजकीय-पद प्राप्त करने वाला होता है। इसे धन का अभाव नहीं रहता। आर्थिक-कार्य में धन खर्च करना भी इसे अच्छा लगता है। यह निम्नों की ओर आकर्षित होकर भी उनका विश्वास नहीं करता, परन्तु उनके साथ हानि-पीडास तथा मौज-मस्ती करने में भी नहीं चूकता। शिक्षा उच्चक्रेणी की होती है। विवाह लगभग २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, पल्लु हृष्ट होती है तथा दीर्घकालीन ऐश्वर्यशाली के बाद ही स्वयं हो पाली है। यह धनी, सुखी तथा ऐश्वर्यशाली जीवन बिताने वाला, प्रशस्ती तथा पीतारिजनों का पालन करने वाला भी होता है। मध्यमायु के बाद इसे आजीवन सुख मिलता (हता है)।

(४३४) - इस जन्मलग्न में उत्पन्न जातक लम्बे कद, स्थूलदेह, उन्नत ललाट एवं सुन्दरनेत्रों वाला आकर्षक व्यक्तित्व प्रयत्न होता है। शिक्षा का प्रवेष्ट लाभ होता है। विवाह २४ से २८ वर्ष की आयु के मध्य होता है। पत्नी सुन्दर, सुहृदि-सम्पन्न तथा पौष्टिक दायित्वों का पालन करने वाली होती है। यह अपनी स्त्री के सहयोग से कोई नया कार्य आगे बढ़ाकर, अपनी आजीविका में वृद्धि करता है। उत्तम आयुष्मण, वाहन, मकान तथा हेमकों के सुख के अतिरिक्त केवल ज्ञान का सुख भी प्राप्त होता है। कोई शत्रु इसके सामने उठ नहीं सकता। अतः यह शत्रुओं द्वारा भी लाभ प्राप्त करता है। यह दूसरों को उपहृत करने में आनन्द का अनुभव करता है, कायस्वल्प इसे सर्वत्र प्रशस्ति एवं सम्मान की उपलब्धि होती है। इसकी आयु के १०, १२, १४, २०, २६, ३२, ४६, ४८, ५४ तथा ६० के वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं।

(४३५) - इस जलकुण्डली का स्वामी गौरवर्ण, लम्बे कटोरे वाला तथा सुन्दर व्यक्ति का धनी होता है। वह कला-कौशल का हारा, उदार-मन वाला, धन-प्राप्त एवं स्त्री-पुत्रादि में सुखी बना रहता है तथा जिस परिचा में जल लेता है, उसके लिए गर्व का कारण बनता है। शिक्षा उच्च स्तर की प्राप्त होती है। विवाह २२ से २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा मानिनी-स्वभाव की होती है, जो अपने आकर्षक व्यक्तित्व से जल-काट के सभी लोगों को प्रभावित करती रहती है। सन्तान का उत्तम सुख प्राप्त होता है। इस मानक की आजीविका के स्रोत विपुल तथा बहुसंख्यक भी होते हैं। यह जमीन-जादरद, पशु एवं काष्ठारि वस्तुओं के कुप-विकुपरे, राज्य से तथा अन्य अनेक स्रोतों से धन का लाभ प्राप्त करता है। इसकी सामर्थ्यवृद्धि विवाहोपान्त आदि होकर जीवनान्त तक बनी रहती है।

(४३६) - इस जलकुण्डली का स्वामी स्वर्ण, सुन्दर, पुष्ट शरीर एवं मधुरम कदवाला गौरवर्ण होता है। यह साहसी तथा उद्यम पूर्वक धनोपार्जन करने वाला, विद्वान्, संगीत-नृत्य आदि में विपुल तथा अन्य ललित कलाओं में रुचि रखने वाला तथा सुख-साधन की उपलब्धि के लिए कठोर परिश्रम करने वाला होता है, तथापि कभी-कभी अलसता अपना प्रभाव वश अपने काम को बिगाड़ भी लेता है। यह मिष्टान की तथा परोपकारी प्रवृत्ति का होता है। शिक्षा प्रवेष्ट प्राप्त करता है। विवाह २६ से ३० वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सेवाभावी होती है तथापि अन्य स्त्रियों से भी इसके संबंध बनते रहते हैं। यह शत्रु अपना गेग पीड़ित नहीं होता, परन्तु सुन्दर स्त्रियों की अभीष्ट स्वीकार करता है। कभी-कभी विदेश तथा अहंभाव के कारण अपने काम को बिगाड़ भी लेता है। अन्तर्भीमत्त सुख पूर्वक जीता है।

भ०
सं०
४०७

(४३७) - इस जन्तु जगत् वाला जातक मध्यम कद का औवर्ण, सुन्दर तथा वाचाल होता है। यह वि-
द्वान्, बुद्धिमान्, उदार तथा अनेक लोगों को आश्रय देने वाला भी होता है। यह उच्च शिक्षा प्राप्त
करता है तथा कलाओं का प्रेमी एवं जानकार होता है। इसका विवाह लगभग २५ वर्ष की आयु में
होता है। पत्नी अतीव सुन्दरी तथा समोहक-व्यक्तित्व-सम्पन्न होती है। वह पति को अफरीमों
आकर्षित करे रहती है, फलतः दाम्पत्य-जीवन सुखमय बना रहता है। सन्तान का सुवर्ण अर्थात् हास्य
है। यह व्यक्ति मीठा ऐश्वर्य का स्वामी, अनेक लोगों से अनोखापनि करने वाला तथा यदि
जहाँ-तहाँ जाय तो स्वयं मृदा लेकर भी परोपकार करने वाला होता है। यह धर्म का पुत्रात्मा
है तथा दान-पुण्य और धार्मिक-कृत्यों से अभिप्राय रखता है। दिल बोल का रवर्च करता है। अपने
परोपकारी स्वभाव के कारण यह सर्वत्र प्रशंसा, कीर्ति एवं सम्मान प्राप्त करता है। सदैव खुशी बना रहता है।

(४३८) - इस जन्माङ्क चक्रवाला मनुष्य लम्बे शरीर तथा बाल के बीच वाला, चर्मा, शरीर तथा
पुष्ट देह वाला होता है। यह वेद-शास्त्रों का ज्ञाता, धीरुत्तम, धार्मिक-ज्ञान की प्राप्ति में
विशेष लक्ष्मि होने वाला, धर्म का पुत्रात्मा एवं मीठा-बुद्धि तथा मीठा ऐश्वर्य से सम्पन्न होता है।
इसका विवाह २६ से २८ वर्ष की आयु में होता है। इसकी पत्नी विदुषी, सुन्दरी, धर्म-ज्ञा-
यन्ता एवं स्वतन्त्र व्यक्तित्व वाली होती है। दाम्पत्य-जीवन सुखमय बना रहता है। यह अपने
संतानों के प्रति भी आसक्त होता है। पालन प्रशंसा की हानि नहीं करता। यह अणुप्रशंसा
भी अपने जीवा के लिए धन रवर्च करता है। इसे उत्तम सन्तान-सुख प्राप्त होता है। यह सब
को सम्मान करने वाला तथा देह और पौष्टिक-दोनों स्वार्थों पर विपुल धन का अर्पण करने
वाला मीठा-ऐश्वर्य का स्वामी होता है। इसका सम्पूर्ण जीवन आनन्द में बीतता है।

कु०
२०

(४३६) - इस जन्मकुण्डली वाला प्राणी सुदृढ़, स्वस्थ, मध्यम कद, गौरवर्ण तथा मीठी वाणी बोलने वाला होता है। यह गद्य-काल एवं साहित्य का मर्मज्ञ होता है। उच्च कोटि का विद्वान् होने के साथ ही यह जिम्मेदारियों का कुशलता पूर्वक निर्वह करता है। इसका विवाह २२ से २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी अल्पज सुन्दर, मधुरभाषिणी तथा मनमोहक व्यक्तित्व से सम्पन्न होती है। वह सा तथा बाह्य के सभी लोगों के लिए उदात्त तथा पति की पूर्ण सहयोगिनी होती है। फलतः दाम्पत्य-सुख उत्तम बरता हुआ है। सन्तान का सुख भी उत्तम रहता है। व्यक्तिगत रूप में जिम्मेदारियों की अधिकता के कारण यह सुख का अनुभव नहीं कर पाता। नये कार्य में शायद बाधाएँ उठ जाती होती हैं। अनेक प्रकार की चिन्ताओं से गुल्ल रहने के कारण इसे कभी शान्ति नहीं मिल पाती। राज्म द्वारा सम्मानित एवं लोक में प्रशस्ती होकर मध्यमजीवन बिताना है।

(४४०) - इस जन्मकुण्डली कास्वामी लम्बे शरीर का, सुदृढ़, हठ चिन्त वाला, शैर्षकार, उदग तथा आदिमों का लक्षक होता है। विष्कालम्ब (मायाय होत दुर्गम गुणवान् तथा लम्बकय होता है। विवाह २२ वर्ष की आयु के आस-पास होता है। इसी की मंग से काँधिया सुख प्राप्त नहीं होता, तथापि उसके कारण धन की उपलब्धि होती है। अपने पारिवारिक उत्तराधिकारियों का यह कुशलता पूर्वक निर्वह करता है। सन्तान में बहुशूल प्राप्त होती है। इसका आशेष पदस में होता है तथा भोग भी नहीं उपलब्ध होते हैं। यह अपने से बड़ी आयु वालों को भी उच्च मार्ग सुकाता है। फलतः सर्वत्र प्रश एवं सम्मान की उपलब्धि होती है। यह समग्र रहते सावधान होकर चला होता है, अतः इसका सम्पूर्ण जीवन साध पूर्वक व्यतीत होता है। यह अपने जीवन के अन्ततक उत्तम काम चला जाता है।

भ०
सं०
६७५

कु०
२०

(४४१) - इस जन्माङ्क कुलवाला पुण्नी मध्यम कद का सुका, मृदुभाषी तथा स्वस्थ होता है। इसकी शिक्षा मध्यम स्तर की होती है तथा विवाह २२ से २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सौन्दर्य नहीं होती, अतः उनके कारण इसका मन कभी-कभी अधिक दुःखी भी हो जाता है। सन्तान सुख उत्तम रहता है। यह व्यक्ति अपनी मधुरवाणी द्वारा नीरस कानाकाण को भी हस बना देता है तथा साहित्य एवं कलाओं का प्रेम्ण होता होता है। इसे संगीत से भी विशेष प्रेम होता है। यह वाल्मीकिका में होगी रहता है, पालु युवावस्था के आरम्भ में जीवन्त तक नीरोग एवं स्वस्थ जीवन व्यतीत करता है। यह अपने समाज में प्रतिष्ठित-स्थान प्राप्त करता है। तथा धार्मिक कार्य में विशेष हित लेता है। इसकी आयु का स्तर उत्तम रहता है, अतः सुखी एवं समस्त जीवन बिताता है। वर्ष १४, २०, २३, २७, २८, ४५ तथा ५६ विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं।

(४४२) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी मध्यम कद का, कुछ देर हुए वरिष्ठा, धन के शौकाला, शरीर में स्वस्थ तथा आनन्द-प्रसन्नपूर्ण चितोदी स्थान का होता है। शिक्षा मध्यम स्तर की प्राप्त करता है। विवाह २५ वर्ष की आयु के लगभग होता है। इसकी पत्नी सुन्दरी तथा मृदु स्वभाव की होती है तथा निरीह भावना पाई जाती है। कलातः दाम्पत्य-सुख उत्साह प्रदर्शनी रहता। यह सन्तान का उत्तम सुख प्राप्त करता है। इसे चतु-अर्चा सम्पत्ति का लाभ होता है। धन का प्रेम्ण आनन्द होता रहता है। कलातः यह ऐश्वर्यपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। यह मध्यम कद का महीन वस्त्र पहनकर जीवन्त तक उत्तम प्रतिष्ठा में वृद्धि करता चला जाता है। आयु वृद्धि के साथ इसके घर तथा धन में भी वृद्धि होती है। इसके जीवन के २५, २८, ३८, ४५ तथा ५६ के वर्ष विशेष लाभप्रद रहते हैं।

(४४३) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, मध्यमकृद एक बलिष्ठ शरीर वाला होता है। यह भोग-विश्रास से प्रायः विरक्त रहते हुए चार्मिक-कार्यों में विशेष रुचि लेता है। यह केवल भाग्य के भोगे न रह कर, देवी-देवताओं की भक्ति में अन्ध-विश्वास रखने वाला होता है तथा प्रत्येक कार्य को अपनी की कृपा से सम्पन्न हुआ मानता है। यह पंचेष्ट शिक्षा प्राप्त करता है। इसका विवाह २२ से २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी उदात्त-हृदय, मन्दुर-भाषिणी, सुन्दरी, सुशामद-जन्म तथा स्वयं को बड़ा समझने वाली, अहंकारीणी होती है, तथापि दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहता है। यह जातक व्यवसाय करने से डरता है तथा जो तो हाकिमी उठता है, पालु नौकरी द्वारा पंचेष्ट धनोपापनि करता है। आर्थिक-स्थिति मध्यम रहती है। यह विशेष उद्यमी होता है तथा एक प्रकार से विपरीत-भाग्य के कारण क्षण होते वाली सम्पत्ति की अपने उद्यम द्वारा रक्षा करता है।

(४४४) - इस जन्म कुण्डली वाला मनुष्य न प्रियदर्शी होता है और न स्वभाव से ही उदात्त होता है। यह दृढ़ शरीर वाला, अनुदात्त स्वभावका, बुद्धिहीन तथा बहुत लज्जा करने-कुम्हारने ही किसी बात को मानने वाला होता है। शिक्षा सामान्य-स्तर की प्राप्त करता है। विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा समझदार होती है, पालु वह राजके दुर्लभता के कारण दुःखी बनी रहती है। यह व्यक्ति पैतृक-सम्पत्ति को प्राप्त कर, उसकी सुरक्षा करता है, स्वयं जो कुछ धनोपापनि करता है, उसे भी खर्च नहीं करता। यह कृपण स्वभावका होता है तथापि इसकी आमदनी के साधन उत्तम होते हैं। यह निम्न-धन कमाल में ही लगा रहता है, किसी समय इसे खोत लगने का भय भी रहता है तथा इसकी मृत्यु भी किसी आपदा के कारण ही होती है। १५, १७, २१ तथा २५ वर्ष की आयु में इसे विशेष घटनाओं का सामना करना पड़ता है।

(४४५) - इस जन्तुलिंग में उत्पन्न प्राणी दृढ़ शरीर वाला, सुन्दर, कटुभाषी, अग्राधी-पुष्टि का तथा शीघ्र कुटु हो जाने वाला होता है। इसकी विद्या सामान्य होती है। विवाह २१ से २६ वर्ष की आयु में हो जाता है। धनी सुन्दरी होती है, परन्तु उसके साथ इसका मन नहीं मिल पाता। यह जंचाल मन, निंदेयी, उद्विग्न तथा कुद कू स्वभाव का भी होता है। यह आग्नेय-वासुकों, जमीन तथा साहस पूर्ण कार्यों से अर्थ - लाभ करता है। यह लगन का जक्का तथा दृढ़ निश्चयी होता है तथा जोर परीश्रम, उद्यम तथा हर प्रकार के उपलों द्वारा सफलता भी प्राप्त करता है। यह पा-दान का लोभी होने के कारण जुआ-पट्टा आदि खेलने में भी संकोच नहीं करता। इसे अपने पुत्रों द्वारा कुछ एवं निस्कार प्राप्त होता है, परन्तु यह उनकी चिन्ता नहीं करता। इसके सभी कार्यों में रोड़े अटकोते हैं, परन्तु यह उन्हें दूर करने में सफलता प्राप्त करता है।

(४४६) - इस जन्तुकुण्डली में उत्पन्न प्राणी सामान्य कद-काठी का, सामान्य सुन्दर तथा शरीर का दृढ़ होता है। यह स्वभावसे उदण्ड तथा उच्छृंखल होता है तथा बौद्धिक दृष्टि से कमजोर होता है। इसे अपने माता-पिता तथा सन्तान से भी कोई विशेष सुख नहीं मिलता, परन्तु यह उसकी चिन्ता नहीं करता तथा वे लोग भी इसके विरोधी न होकर, तटस्थ भाव रखने वाले होते हैं। शिक्षा सामान्य रहती है। विवाह बड़ी आयु में होता है। पत्नी तीव्र तथा रुद्ध स्वभाव की होती है। जब तक पैतृक-जवसाण रुक जाती लोगों के सम्पर्क से लाभ उठाना रहता है। भाग्य उत्तम होने के कारण इसके मार्ग में पड़ने वाली सभी बाधाएँ स्वयंसेवक दूर हो जाती हैं, यह अभिमानी, कुण्ठा तथा जुआरी भी होता है। जीवन में उत्थान-पतन के अनेक अवसर आते हैं तथा अपने मित्रों एवं साधियों के कारण इसे अत्यधिक दुःख भी उठाना पड़ता है।

(४४७) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य मध्यम कद एवं लुगठित शरीर वाला, सुन्दर तथा बाहर से उग्र प्रतीत होने पर भी अत्यन्त कोमल तथा उदात्त स्वभाव का होता है। इसका विवाह २० से २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर तथा लम्बकण्ठ होती है तथा पति को एवं पत्नी-वालीजनों को मनुष्य वगैरे एवम की चेष्टा करती है। सन्तानों में कमसे अधिक होती है। विद्या का लाभ सामान्य ही होता है। यह भाग्य तथा धन से युक्त तथा आदेश में आकांक्षार्थी पूर्ण कार्य को के बाद में पछाने वाला होता है। अपने से बड़ी आयु वाले हुए। इसका सम्मान प्राप्त को के भी यह उन्हे - मनुष्य नहीं रह जाता। इसका आगेदण २५ वर्ष की आयु के बाद होता है तथा ३७, ३८, ४५ एवं ४७ वर्ष की आयु में कुछ आर्थिक - कठिनाईयाँ तथा अन्ध प्रकाश की परेशानियाँ भी आती हैं। आयु मध्यम से कुछ अधिक होती है तथा जीवन सामान्य सुख से बीतता है।

(४४८) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति हरे, पुष्ट तथा उच्च शरीर वाला, सामान्य सुन्दर तथा वान-रोग से संज्ञित रहने वाला होता है। शिक्षा लाभान्वित रहती है तथा विवाह भी बड़ी आयु में ही हो जाता है। पत्नी कम लम्बकण्ठ तथा अधिक जानास होती है। सन्तानें वगैरे विद्या में उत्तम होती हैं। यह धनी होने हुए भी अपने धन को दान का रास्ता है तथा उसे किसी भी लक्ष्य में व्यय नहीं करता। इसे पैसा-धन की उपलब्धि भी होती है और यह उसेमें बृद्धि भी करता है, तथापि विवाह से अत्यन्त छुपता होने के कारण यह स्वयं भी इसका उपयोग नहीं करता। इसे धन-परीक्षा के सुख की उपलब्धि होती है। आयु के ४५ तथा ५१ के वर्ष शुभ गती रहते। आयु लम्बी होती है तथापि वान-काण्डिका कह दीर्घकाल तक भोगना पड़ता है। यह बाह्य से जितना लज्जित दिखाने देता है, भीतर से उतना सुदृढ़ नहीं होता।

(४४६) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी मध्यम कद, बलिष्ठ शरीर तथा आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। इसके मन में कला तथा साहित्य के प्रति झिलासा रहती है तथा उसका तकनीकी ज्ञान प्राप्त होने का इच्छुक भी होता है, किन्तु उसकी यत्नोन्मत्त प्रवृत्ति नहीं हो पाती। शिक्षा मध्यम स्तर की प्राप्त करता है। विवाह २७ से ३० वर्ष की आयु में होता है। इसे अधिक विनम्र होना भी संभव है। इसे समुदाय से तथा अन्य स्थानों से भी धन का लाभ होता है। पत्नी सुन्दर तथा मनोह-
कला प्राप्त होती है। सन्तान - सुख भी उत्तम रहता है। इसे जीवन के २४, २६ तथा ३१ वर्षों
में कठिनाइयों का अनुभव होता है। भाग्योदय ४५ वर्ष की आयु में होता है। इसे धन की
कमी का कभी अनुभव नहीं होता। धनार्जन होता ही रहता है। यह धन-सहे करी में भी लक्षित
तथा उसमें कभी हानि का कभी जीवन रहता है। यह नीच-कर्मों द्वारा भी धनोपार्जन करता है।

कु०
२०

(४५०) - इस जन्मकुण्डली वाला जातक मध्यम कद वाला, सुन्दर, स्वस्थ तथा प्रियदर्शी होता है।
शिक्षा मध्यम-स्तर की प्राप्त होती है। विवाह २४ से २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर
तथा चतुर होते हुए भी इसे सन्तुष्ट नहीं कर पाती। यह पत्नी की ओर से धन-प्राप्ति ही बना
रहता है। इसकी सन्तानों में कलाओं की रुचि अधिक होती है। इसके गर्भ-वर्धन होने का
योग भी नहीं होता। यह शत्रुओं को पराजित करने वाला तथा अनेक बार धोखा उठाने वाला
होता है। यह भाग्य का उत्तम होता है तथा इसे अकल्पित सौभाग्य द्वारा धन का लाभ होता
रहता है। यह वायु-तोग से ग्रस्त हो सकता है तथा मित्र-शत्रु-शोक एवं दिवाले में भी
अपने धन को खर्च करता है। यह कभी-कभी अपने ही दुर्गतिपूर्ण कृत्यों द्वारा अपमर्श का भागी
बनता है। इसके जीवन के ५० तथा ५२ वर्षों में विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं।

(४४१) - इस जन्म कुण्डली वाला जातक साँवले रंग, मध्यम कद तथा इन्हें शरीर बाला होगा। मइयों की अपेक्षा बहिनों की पोषा अधिक होगी। यह स्वभावसे छोटी पुत्रों का तथा कमजोर बूढ़े वाला होगा। स्त्री सुन्दरी तथा सुशीला होगी एवं दाम्पत्य-सुरक्ष का केवल लाभ भी होगा, परन्तु इसके विवाह एक से अधिक होना संभव है। इसे माता-पिता का पूर्ण सुख प्राप्त नहीं हो सकेगा। यदि जन्म कुण्डली में चन्द्रमा चतुर्थ भाग में हो तो जातक को फेफड़ों से सम्बन्धित कोई बीमारी, राजपक्षा आदि होना संभव है। सामान्यतः जातक पराकुमी तथा जीर्ण होगी एवं चतुर्थावस्था हेतु विशेष उपलब्धी रहते हुए अधिक धन का संचय करने में असमर्थ रहेगा। इसकी आयु के २, ६, ८, १०, १४, १८, २०, २२ तथा २४ वें वर्ष विष्णु के क्षेत्र में विशेष उन्नतिकारक सिद्ध होंगे तथा २५, २६, ३७, ३८, ४१, ४६ तथा ५० वें वर्ष व्यवसाय की उन्नति के लिए केवल रहेंगे। १४ जून से १४ जुलाई का समय प्रतिवर्ष अच्छा व्यतीत होगा।

(४४२) - इस जन्म कुण्डली वाला जातक गौरवर्ण, लम्बे कद तथा उन्नत लावार वाला होगा। इसका व्यक्तित्व आपत्त आकर्षक होगा। यह शत्रुओं का दमन करने वाला, उत्साही तथा युवा पराकुमी होगा, इसे जीवन में धर्म-भवन का केवल उपयोग प्राप्त होगा तथा नैतिक सुख-साधनों पर ध्यान का अधिक व्यय भी होगा। विष्णु लाभ का अच्छा योग है। दाम्पत्य-सुरक्ष भी केवल बना रहेगा। वेद से सम्बन्धित किसी रोग का होना संभव है। इसकी स्त्री सुन्दरी, सुशीला, प्रतिपराधना तथा विनम्र-स्वभाव की होगी। इसके जीवन के ७, ८, ११, १४, २०, २१ तथा २४ वें वर्ष विष्णु-क्षेत्र में उन्नति-कारक तथा २२, २६, २८, ३०, ३२, ३६, ३८, ४०, ४२, ४५ एवं ५० वें वर्ष व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ-कारक सिद्ध होंगे। प्रतिवर्ष १४ दिसम्बर से १४ जनवरी तक का समय केवल तथा लाभ-कारक रहेगा। यह जातक अपने पराक्रम से स्व-भाग्य की बूढ़े काला रहेगा। जीवन सुख से जीतेगा।

(४५३) - इस जन्मकुण्डली वाला जातक गौर वर्ण, मध्यम कद का तथा कोथी-स्वभाव वाला होगा। पर्यन्त इसके जीवन में धन-लाभ के अनेक अवसर आयेगे तथा आमदनी भी अच्छी रहेगी, तथापि व्यय की अधिकता के कारण यह सदैव चिन्तित बना रहेगा। इसे विद्या का श्रेष्ठ लाभ होगा, पालु सन्तान-पक्ष की ओर से चिन्ता बनी रहेगी। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होगी एवं दाम्पत्य-सुख का प्रत्येक लाभ भी रहेगा, पालु जातक अत्यधिक विलासी प्रवृत्ति का होगा, इस कारण यह एक से अधिक स्त्रियों से सम्बन्ध बनाये रहेगा तथा उनके लिए ही धन का खर्च भी अधिक होगा। इसकी कायक प्रवृत्ति ही इसके आत्मश का कारण भी बनेगी। इसके जीवन के ७, ११, १४, २०, २१ तथा २४ वें वर्ष विद्या के क्षेत्र में उन्नति का एक सिद्धि होंगे तथा २२, २६, २८, ३०, ३२, ३६, ३८, ४०, ४२, ४५, ५० तथा ५२ वें वर्ष व्यावसाय की दृष्टि से लाभ प्रद सिद्धि होंगे। आयु दीर्घ होगी।

(४५४) - इस जन्मकुण्डली वाला जातक सौंवले रंग का, गटे कद का तथा मोटे शरीर वाला होगा। इसके पिता माता बाल छोड़े तथा कुंभराले होंगे। यह शंकालु-स्वभाव का तथा ऐसा स्पष्ट वादी होगा कि खरी बात सुँद पट कहते से कभी गद्दी चूकेगा। पैरु-सम्पत्ति के सम्बन्ध में झगड़े-टण्टे एवं मुकद्दमे आदि का होता प्रभावित है, पालु यह शत्रु-पक्ष पट सदैव प्रभावशाली बना रहेगा तथा विरोधी भी इसकी हिम्मत को बहादुरी का लोहा मानते रहेंगे। इसे भाई-बहनों का मध्यम-सुख प्राप्त होगा। इसकी पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा जिनम स्वभाव की होगी, सन्तान का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होगा। इसके जीवन में २२, २६, २८, ३०, ३२, ३६, ३८, ४०, ४२, ४५ तथा ५० वें वर्ष व्यावसाय के लिए उन्नतिकारक सिद्धि होंगे। प्रतिवर्ष १४ दिसम्बर से १४ जनवरी तक का समय लाभ का काल होगा। यह जातक साहसी तथा धीरवी होगा। जीवन सामान्य रहेगा।

(४५५) - इस कुण्डली वाला जातक गौतम, मध्यम कद वाला तथा भगवान् उद्विग्न का होगा। यह विद्या के क्षेत्र में उत्तमि प्राप्त करेगा तथा आर्थिक-क्षेत्र में इसके जीवन में उता-चढ़ाव आते होंगे। आमदनी से व्यय अधिक होने के कारण इसके जीवन में धन सम्बन्धी समस्याएँ तथा चिन्ताएँ निता बनी होंगी। सामान्यतः माना का सुख अल्प प्राप्त होगा। यदि एक कुण्डली के अनुसार धनार्थ भाग में हो तो जातक माना के लिए कहका भी होंगे। इसकी स्त्री कुछ छोटी लगाने की होगी, तथापि दाम्पत्य-सुख प्रवेष्ट माना में प्राप्त होगा। विद्या की दृष्टि से इसके जीवन में ५.७, ११, १५, १७, १८ तथा २३ के वर्ष उत्तमि का केंद्र होंगे तथा आर्थिक-दृष्टि से २८, ३५, ४१, ४७ तथा ५३ के वर्ष समृद्धि प्राप्त होंगे। यह जातक धन-लाभ हेतु कठिन परिश्रम करेगा, पण्डित चतन का संघर्ष हो पाना संभव नहीं होगा। जीवन सामान्यतः सन्तुष्टिपूर्ण बने रहेगा।

(४५६) - इस कुण्डली वाला जातक गौतम, मध्यम कद तथा हठी स्वभाव का होगा। आमदनी की तुलना में व्यय बड़ा-चड़ा होंगे के कारण यह आर्थिक-दृष्टि से दुर्बल बने होंगे। यह संदेय नवीन योजनाओं के विधानधन में लिप्त बने होंगे। दाम्पत्य-सुख अच्चा रहेगा तथा समय-समय पर ससुहात-पक्ष से भी धन का लाभ होगा। पुत्र की अपेक्षा कन्याएँ अधिक होंगी। विद्या-क्षेत्र में क कानों आते रहने के कारण इसे विद्या का मध्यम लाभ होगा। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी का योग अधिक प्रबल बनता है। इसे अपने माना-पिता से भी अधिक सुख प्राप्त नहीं होगा। इसके जीवन में ५.७, ११, १५, १७, १८ तथा २३ के वर्ष विद्या की दृष्टि से उत्तमि का केंद्र तथा २८, ३५, ४१, ४७ तथा ५३ के वर्ष आर्थिक दृष्टि से लाभ का केंद्र होंगे। संक्षेप में इसका जीवन सामान्य ढंग से व्यतीत होगी और मध्यम रहेगी।

(४५७) - इस जन्म-चक्र में जन्म लेने वाला जातक अल्पना सुन्दर, सम्पन्न, ऊँचे कदवाला, शरीर से पुष्ट तथा उत्तम स्वास्थ्य सम्पन्न होगा। वह बड़ा कर्मठ तथा साहसी प्रकृति का होगा। एवं चरित्र, साहस तथा उत्साह के बल पर प्रत्येक क्षेत्र में उत्तति प्राप्त करेगा। इसका स्वभाव सात्विक होगा, तथापि कायकला को अधिकता रहेगी। यह आर्थिक, दृष्टि से सम्पन्न रहेगा तथा गृह-भूमि-वाहनादि का उत्तम सुख प्राप्त करेगा। सन्तान सुन्दर, विष्ट तथा भला-पालक होगी। कन्याओं की अपेक्षा पुत्र अधिक होंगे। पत्नी सुन्दरी, स्वहृदा, सुलक्षणा तथा प्रति-परायणा होगी। विवाह २१ मन्वा २६ वर्ष की आयु में होना सम्भव है। वर्ष ५, ७, ८, १३, १७, १८ तथा २१ विष्णु-क्षेत्र में उत्तति काक है तथा २५ वें वर्ष प्रतिपोगी - परीक्षा में सफलता देने वाला सिंह होगा। २४ तथा ५५ वें वर्ष में स्वास्थ्य की ओर से सतर्क रहना चाहिए। २५, २८, २९, ३२, ३६, ३८ तथा ४० वें वर्ष जन्मभाष में उत्तति काक सिंह होंगे। यह जातक ईश्वर तथा धर्मपर निष्ठा रखते हुए भी कर्म को अधिक सहत्व देगा।

(४५८) - इस सूर्य-कुण्डली में जन्म लेने वाला जातक सुन्दर, सौम्य तथा दृष्ट-पुष्ट शरीर वाला, पालु कर्कश, वाणी वाला होगा। इसकी प्रकृति आलस्यपूर्ण रहेगी। पत्नी अल्पना, सुन्दरी, सुशीला तथा सुविद्विता होगी और यह उससे प्रेम रखते हुए भी अल्प विज्ञान के प्रति आकर्षित होगा। पारिवारिक-द्वन्द्व अल्प मात्रा में उपलब्ध होगा। वैतृक-सम्पत्ति के लिए भ्रमण-मुकदमे आदि के योग भी सम्भव हैं। यह अधपन्न का शौकीन, अनेक विषयों का जानकार तथा विद्वान् होगा। इसकी आयु के ५, ७, ८, १३, १७, १८, २१ तथा २५ वें वर्ष विष्णु के क्षेत्र में उत्तति काक सिंह होंगे। सितम्बर का नदीका स्वास्थ्य के प्रति सतर्कता बताने योग्य रहेगा। यह कूट-नीति तथा वाक्-चातुर्य द्वारा विरोधियों को परास्त करने में सक्षम, परशु-पक्ष से आर्थिक-हाति पाते वाला तथा समधानुबूल चौर्य तथा साहस से काम लेकर निजी सम्पत्तियों को सुलभाने में अग्रणी होगा। अन्तिम समय सुख-शान्ति से व्यतीत होगा।

(४५६)- इस सूर्य-कुण्डली के जन्म लेने वाला जातक स्थूल-शरीर तथा लोटे कद का एवं छोटी स्वभाव का होगा। यह अवस्था-साहसी भी होगा तथा विपरीत-परीस्थितियों पर अपने धैर्य एवं साहस के बल पर विजय प्राप्त करने में समर्थ रहेगा। सन्तान के विषय में किसी-न-किसी प्रकार की चिन्ता अवश्य बनी रहेगी। आर्थिक-दृष्टि से जातक मध्यम स्थिति का होगा। विद्या-क्षेत्र में रुझावें आती रहेंगी। सवारी, श्रम तथा भवन का सुख मध्यम स्तरों का प्राप्त होगा। दाम्पत्य-सुख का लाभ होने पर भी स्त्री की ओर से किसी-न-किसी प्रकार की चिन्ता बनी ही रहेगी। आयु के ६, ८, १०, १४, २०, २२ तथा २४ के वर्ष विद्या के क्षेत्र में उन्नति का सिद्ध होने तथा २६, २८, ३२, ३४, ३६, ४०, ४२, ४६, ४८, ५२ तथा ५८ के वर्ष व्यवसाय के लिए लाभ उठ रहे होंगे। माई-बहनों का सुख मध्यम रहेगा। पिता की अपेक्षा माता से अधिक स्नेह प्राप्त होगा। धर्म पर अच्छा रायें उपस्थित उनके पालन में दिलाई बनी रहेंगी। भक्तिमत्त स्वभाव भी मध्यम रहेगा।

(४६०)- इस कुण्डली वाला जातक सौवले रंग का पल्लु सुन्दर नाक-तन्त्रा वाला होगा। शरीर दृष्ट-पुष्ट रहेगा। आर्थिक-दृष्टि से भी यह भाग्यशाली बना रहेगा। वैदिक-सम्प्रदाय की उपलब्धि होगी। श्रम, मकान, वाहन आदि का सुख भी प्राप्त होगा। माई-बहनों की प्रीति कम होगी अथवा एतत्से आपस सुख-स्वहयोग प्राप्त होगा। इसका स्वभाव छोटी होगा, पल्लु साहसी तथा परीक्षणी बना रहेगा तथा धैर्य एवं परीक्षा के बल पर कठिन समस्याओं पर भी काबू पाता रहेगा। पत्नी सुन्दरी तथा सचचीता होगी, दाम्पत्य-सुख भी उत्तम होगा, तथापि पति-पत्नी के बीच वैचारिक मतभेद बने रहेंगे। आयु के ६, ८, १०, १४, २०, २२ तथा २४ के वर्ष विद्या-क्षेत्र में हितकारी सिद्ध होने। २३ अथवा २६ वर्ष की आयु में विवाह होगा। संभव है। २४, ३०, ३२, ३४, ३६, ३८, ४३, ४६, ४८, ५१, ५२ तथा ५६ के वर्ष में व्यवसाय की उन्नति होगी। जातक दीर्घायु प्राप्त करेगा तथा सामान्यतः सुख-दुःख मिश्रित जीवन व्यतीत करेगा।

(४६१) - इस जन्म चक्र में उत्पन्न होने वाला बालक मध्यम कद तथा सौंवलें हाँ का, स्थूलकाय एवं कोधी स्वभाव का होगा। आर्थिक - दृष्टि से यह सफल रहेगा, परन्तु मध्यकाल में भूमि - मकान आदि के सम्बन्ध में झगड़े - संभट भी उठते रहेंगे। पारिवारिक जीवन सफल होने हुए भी दाम्पत्य - सुख में नीरसा बनी रहेगी। सन्तान - सुख अच्छा रहेगा। प्रत्येक परिस्थिति को अपने अनुकूल बना लेने में इसे सफलता मिलती रहेगी। पत्युष्ट वर्ष की आयु में विष्णु के क्षेत्र में रुकावट आना संभव है। जीवन के २६, ३०, ३२, ३४, ३६, ४४, ४६, ४८, ५० तथा ५२ वें वर्ष तक - साथ में उन्नति काफ़ी सिद्ध होगे। प्रत्येक आंग - वर्ष में १४ अप्रैल से १४ मई तक का समय सबसे अच्छा सिद्ध होगा। माता - पिता से सुख - सहयोग सामान्य रूप से प्राप्त होगा तथा भाई - बहिनों से भी सम्बन्ध सामान्य बना रहेगा। पत्नी सुन्दरी तथा सुविधिता होगी, तथापि उससे वैचारिक मत - भिन्नता बनी रहेगी। जीवन का अन्तिम समय सुख पूर्वक व्यतीत होगा। धर्म - कर्म में सामान्य हर्षि बनी रहेगी। सम्पूर्ण जीवन मध्यम - भिक्षुता का बना रहेगा।

(४६२) - इस जन्म कुण्डली में पैदा होने वाला जातक सुन्दर, लम्बे कद वाला तथा हठी स्वभाव का होगा। यह आपत्त लाहरी तथा स्वार्थ - सिद्धि के लक्ष्य बना रहेगा, पत्नी सुन्दर तथा गुणवती मिलेगी, तथापि तन्नी के साथ विचार - भिन्नता बनी रहेगी। विष्णु का उत्तम लाभ होगा तथा सन्तान - सुख भी अच्छा प्राप्त होगा, आयु के १५ तथा १७ वें वर्ष में विद्याधनन में रुकावट आना संभव है। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय के क्षेत्र में अधिक सफलता प्राप्त होगी। आर्थिक - दृष्टि से इसका जीवन सफल रहेगा। चल सम्पत्ति की अपेक्षा अचल - सम्पत्ति का योग अच्छा बनता है। वाक् - चतुर्ध तथा कुट्टि - बल से विरोधियों तथा शत्रुओं पर विजय मिलती रहेगी। आर्थिक - लाभ हेतु देश - वदेश में भ्रमण करते रहने का भी योग है। धर्म का के प्रति सहभाग्य रखते हुए भी धर्म के प्रकाश - काल में शिथिलता बनी रहेगी। प्रत्येक आंग - वर्ष में जून - जुलाई के महीने उन्नति एवं सफलता प्राप्त सिद्ध होगे। जीवन का अन्तिम समय सुख - शान्ति से बीतेगा।

(४६३) - इस सूर्यकुण्डली में जन्म लेने वाला जातक गौरवर्ण, मध्यम कद वाला तथा कोधी-स्वभाव का होगा। विद्या अच्छी प्राप्त होगी, विद्या की दृष्टि से ज्ञान तथा अज्ञान का समान केवल व्यतीत होगा। मध्यकाल में विद्याधन में रुकावटें आसकनी हैं। दाम्पत्य-सुख मध्यम स्तर का रहेगा तथा एक से अधिक विवाह होना भी संभव है। आयु का २३, २५ तथा २८ वाँ वर्ष विवाहका एक सिद्ध होगा। पैतृक-सम्पत्ति के लाभ का सुयोग है। आर्थिक-स्थिति मध्यम रहेगी। पारिवारिक-सुख अच्छा बना रहेगा। आयु का ३८ वाँ वर्ष पूर्णभिक्षोदय का एक रहेगा। सामान्यतः २१, ३३, ३५ तथा ३८ वें वर्ष भी व्यवसाय में उन्नति का एक सिद्ध होगा। उल्लेख वर्ष में १४ पुण्य से १४ अशुभ तक का समान उन्नति का एक सिद्ध होगा। माता तथा पिता से सम्बन्ध सम्मान्य बने होंगे तथा पितृ-पक्ष से सहयोग भी प्राप्त होता रहेगा। धर्म के प्रति जातक की सामान्य कर्त्ति रहेगी। ईश्वर तथा धर्म से आस्था राखते हुए भी जातक कर्म को प्रधानता देगा। व्यवसाय के संबंध में 'चाचाएँ' भी कानि पड़ेगी।

(४६४) - इस कुण्डली में उत्पन्न जातक सुन्दर नाक-तन्त्रा का, लम्बे कद का, श्यामवर्ण तथा स्थूलकाय होगा, विद्या के क्षेत्र में काफी उन्नति रहेगी। आयु के पन्द्रहवें वर्ष में विद्याधन में कुछ रुकावटें आसकनी हैं। २१ तथा २५ वाँ वर्ष प्रतिपोगी-परीक्षा में सफलता दिलाने वाला सिद्ध होगा। पिता की अपेक्षा माता के प्रति जातक विशेष सहानुता बना रहेगा तथा पिता की आज्ञा का पालन भी करता रहेगा। पारिवारिक-सुख बहुत अच्छा बना रहेगा। स्त्री लुब्ध, लुब्धगीला, लुलभणा तथा परिग्रहा होगी, फलतः दाम्पत्य-सुख का श्रेष्ठ लाभ होगा। आयु के २१, ३३, ३५ तथा ३८ वें वर्ष व्यवसाय में वृद्धि का एक सिद्ध होगा। ६२ वाँ वर्ष आयु के लिए जातक सिद्ध होसकनी है। भूमि, भवन, वाहन आदि का अच्छा योग रहेगा तथा भूमि का धन-लाभ का सुयोग भी संभव है। धर्म-कर्म तथा धरोपकार में जातक की दिलचस्पी बनी होगी तथा पन्ना शक्ति-धर्म का पालन भी करेगा। जीवन सुख तथा शान्ति पूर्वक व्यतीत होगा।

(४६५) - इस जन्माशु में जन्म ग्रहण करने वाला जातक मध्यम कद, श्याम वर्ण तथा कुछ लम्बे शरीर वाला, हँस-पुस एवं स्त्री के प्रति मधुर वचन बोलने वाला होगा। यह अत्यन्त साहसी तथा परीक्षणी होगा। विद्या के क्षेत्र में इसे पूर्ण सफलता प्राप्त होगी। यह कुछ कृपण स्वभाव का, पाल्पु आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होगा। विवाह २२ अथवा २४ वर्ष की आयु में (कम है) पत्नी सुन्दरी, तुल्यवर्णा, परिश्रमा, बुद्धि-मानी तथा मंगलकुल प्राप्त होगी, ज्ञानः वाग्म्य-जीवन मधुरता पूर्ण बना रहेगा। व्यवसाय के क्षेत्र में जातक को विशेष सफलता मिलेगी। आयु के २४, ३०, ३२, ३६, ४२, ४४, ४८ तथा ५२ के वर्ष विशेष उत्कृष्टि काफ़ी सिद्ध होंगे। भूमि-भवन आदि के सुख-लभ के अतिरिक्त जातक को पारिवारिक सुख का लभ भी होगा। माता-पिता-दोनों के प्रति जातक पूर्ण श्रद्धालु बना रहेगा तथा उनसे सुख सहयोग भी प्राप्त होगा। ईश्वर तथा धर्म के प्रति पूर्ण निष्ठावान् रहते हुए सामान्य धर्म-पालक होगा। कार्यविशेष बल देगा।

(४६६) - इस कुण्डली-चक्र में जन्म जातक मौरवर्ण, मध्यम कद तथा इकट्ठे शरीर वाला होगा। विद्या के क्षेत्र में चिन्ते-चिन्ते उत्कृष्टि होगी तथा मध्यम क्षेत्र की विद्या का लभ का पायेगा। आर्थिक-दृष्टि से वह कमजोर बना रहेगा, क्योंकि इसका स्वर्ण बड़ा-चढ़ा रहेगा। इसे भूमि-भवन का लभ प्राप्त होगा, पाल्पु वह इसीके हाथ से निकल भी पाएगा। यदि जन्म कुण्डली में चतुष्ठा एकदश भाग में है तो मानाका सुख प्राप्त नहीं होगा। पिता का सामान्य सुख तथा सहयोग मिलेगा। विवाह का योग एक से अधिक बतला है। वाग्म्य-सुख सामान्य प्राप्त होगा। पत्नी से विचार-चिन्तना भी कम है। उत्प्रेत आंगल वर्ष में १४ सितम्बर से १४ अक्टूबर तक का समय आर्थिक-दृष्टि से कठिनाई तथा १४ पुण्यदि है १४ अगस्त तक का समय आर्थिक-दृष्टि से लभ का सिद्ध होगा। आयु के २४, २७, ३२, ३४, ३६, ३८, ४०, ४२, ४८ तथा ५० के वर्ष व्यवसाय के लिए उत्कृष्टि काफ़ी सिद्ध होंगे। जीवन सामान्य सुखी बीतेगा।

(४६७) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न होने वाला जातक गौवर्ण, मध्यम कद का तथा कोपी स्वभाव का होगा। आर्थिक - दृष्टि से इसका जीवन, थोड़ा बुरा रहेगा। न्याय, दया तथा क्षमा के प्रति इसका विशेष रुकावट रहेगा। सुक-सुक की प्रति के कारण यह जातक सुदुआधी होगा तथा शान्ति-मंगल योग के कारण वैतृक - सम्पत्ति का लाभ भी होगा, तथाकि उसके जन्म होने का योगभी प्रबल रहेगा। विद्या के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी। २३ अथवा २५ के वर्ष में विवाह का योग बनेगा। स्त्री सुन्दर तथा सुलक्षणा होगी तथाकि दाम्पत्य - सुख मध्यम ही रहेगा। व्यवसाय की अथवा नौकरी का योग प्रबल है। जीवन के २५, २७, ३४, ३७, ३८, ४४, ४६, ४८ तथा ५० के वर्षों व्यवसाय में उन्नति का एक सिद्धि होगे। आयु के १७, ४७ तथा ६४ के वर्ष स्वास्थ्य के लिए हानिकार सिद्ध होंगे। माता-पिता से सामान्य स्नेह के सम्बन्ध रहेगे तथा परिवारिकों से भी सम्बन्धों में विशेष प्रगाढ़ता नहीं होगी। जीवन सामान्य बीतेगा।

(४६८) - इस जन्मांक में जन्मा हुआ जातक गौवर्ण, नोहे कद का तथा कोपी स्वभाव का होगा। विद्या-क्षेत्र बहुत मजबूत होने के कारण जातक पूर्ण विद्या प्राप्त करेगा। पत्नी सुन्दरी तथा सुलक्षणा होने पर भी उससे पूर्ण दाम्पत्य-सुख का लाभ नहीं हो सकेगा। आर्थिक - दृष्टि से जातक की स्थिति अच्छी होगी तथा भूमि-मयन का लाभ भी होगा। यह जातक अपने ही बाहुबल द्वारा अति धन से मकान का निर्माण करेगा तथा अपना साहसी ऊँची पौधारी होगा। यह व्यवसाय की अथवा नौकरी में अधिक सफल होगा। २३, २५ तथा २८ के वर्षों में विवाह होगा। संभव है प्रथम आंश-वर्ष का १४ अथवा १५ से २४ तक का समय लाभप्रद सिद्ध होगा। जीवन के २३, २५, २७, ३१, ३३, ३५, ३७, ३८, ४३, ४८ तथा ५० के वर्षों व्यवसाय अथवा आर्थिक-दृष्टि से लाभकारी रहेगे। ६२ के वर्षों में आयु के लिए हानि संभव है अथवा स्वास्थ्य के लिए बहुत खराब हो सकना है।

मं०
सं०
७२७

कु०
२०

(४६८) - इस सूर्य-कुण्डली में जन्म लेने वाला जातक श्यामवर्ण, मोटे कद तथा कूट एवं कुंभी स्वभाव का होगा। यह अल्पना साहसी होगा तथा रक्तों से खेलने में आनन्द का अनुभव करेगा। विष्णु-क्षेत्र में इसे सफलता प्राप्त होगी। पत्नी सुन्दरी, लुशीला तथा परिकृता होगी। फलतः दाम्पत्य-सुख उत्तम रहेगा। विवाह कुछ विमम्बित अर्थात् २२ अथवा २८ वर्ष के होता है। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी का क्षेत्र अधिक लाभ प्रद सिद्ध होगा। आयु का २४ वाँ वर्ष व्यवसाय में लाभ प्रद सिद्ध होगा। जीवन में आकस्मिक-लाभ के भी अनेक अवसर प्राप्त होंगे। यदि चन्द्रमा तमस भाव में हो तो व्यवसाय के द्वारा धन-लाभ का चेष्ट होगा बतला है। आमदनी की अपेक्षा व्यय अधिक होने के कारण जातक गृही भी बना रह सकता है। ३८ वर्ष की आयु में भवन-निर्माण का योग होगा। माता-पिता के साथ जातक का स्नेह-सम्बन्ध सामान्य रहेगा तथा जीवानी ज्यों से ही कोई विशेष सहयोग प्राप्त होने की सम्भावना नहीं है।

(४७०) - इस जन्मकुण्डली में जन्म लेने वाला सुगुण गौवर्ण तथा लम्बे शरीर वाला होगा। यह स्थूलकाय आमदनी के स्रोत एक से अधिक होंगे। विष्णु का क्षेत्र लाभ दियेगा तथा व्यवसाय के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त होगी। २२ अथवा २४ वर्ष की आयु में विवाह होता है। पत्नी सुन्दरी तथा लुशीला होगी एवं दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहेगा। २७ वर्ष की आयु में पूर्ण भाग्योदय होता है। २७, ३१, ३३ तथा ३५ वर्ष की आयु में व्यावसायिक-उन्नति के अवसर उपलब्ध होंगे। प्रत्येक आंग-वर्ष में १४ पुलाह से १४ अगस्त का समस्त क्षेत्र तथा लाभ प्रद सिद्ध होगा। आयु के ५७ तथा ६५ वर्ष स्वस्वभाव के लिए हानिकारक अथवा जातक सिद्ध होंगे। २२ वर्ष की आयु में भाग्योन्नति प्रारंभ हो जाएगी। माता-पिता से सहयोग प्राप्त होगा तथा स्नेह-सम्बन्ध सामान्य बने रहेंगे।

(४७१) - इस कुण्डली - चक्र में जन्म लेने वाला जातक गौरवर्ण, मध्यम कद, नाक - नख्खा से सुन्दर तथा हठी स्वभाव का होगा। विष्णु का सामान्यतः अच्छा लाभ प्राप्त होगा तथा २२, २४ तथा ३१ वर्ष की आयु में विवाह का योग बनेगा। विवाह एक से अधिक होते संभव हैं। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा दयिणीता प्राप्त होगी एवं दाम्पत्य सुख उत्तम बना रहेगा। भूमि तथा भवन के लाभ - लाभ वाहन का सुख भी प्राप्त होगा सन्तानों ४ से ६ के बीच होगी, जिनमें पुत्र - सन्तानों की संख्या अधिक होगी। नौकरी की अवस्था व्यवसाय में अधिक लाभ होगा। जीवन के २१, २४, २८, ३२, ३४, ३६, ४०, ४४, ४६, ४८, ५०, ५२ तथा ५६ के वर्षों में लाभ में उन्नति का एक सिद्धि होगी। ३२, ४० तथा ६१ के वर्षों में स्वस्थ के लिए हानिप्रद सिद्धि होते संभव हैं। आमदनी की अवस्था स्वर्च अधिक बना रहने के कारण जातक को सदैव मानसिक - चिन्ता बनी रहेगी, आर्थिक - निष्पत्ति सामान्य ही रहेगी, तथापि समाज में मान - प्रतिष्ठा बनी रहेगी। जीवन सामान्य व्यतीत होगा।

(४७२) - इस कुण्डली - चक्र में जन्म लेने वाला जातक लम्बे कद तथा सुन्दर शरीरवाला होगा। यह स्वभाव से अत्यन्त आत्म - प्रिय होते ही स्वार्थिधारी होगा। मधुरभाषी होगा इसका विशिष्ट गुण रहेगा। इसके स्वर्च बड़े - बड़े रहेंगे तथापि आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते के कारण आर्थिक - निष्पत्ति सुदृढ़ बनी रहेगी। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा गुणवती मिलेगी तथा उसके दाम्पत्य सुख में वृद्धि होती रहेगी। आयु के २२ अथवा २४ के वर्षों में विवाह होगा संभव है। २४ के वर्षों में व्यवसायिक - उन्नति का अच्छा योग बनेगा। विष्णु का क्षेत्र मध्यम ही होगा तथा २० एवं २२ के वर्षों में विष्णु - क्षेत्र में विशेष प्रफलता प्राप्त होगी। आयु के २४, २८, ३३, ३५, ३७, ४१, ४२, ४७, ५०, ५२ तथा ५४ के वर्षों में व्यवसाय में उन्नति का एक सिद्धि होगी। लाभ के अवस्था प्राप्त उपलब्ध होते रहेंगे। माता - पिता से सह - सम्बन्ध बना रहेगा तथा सहयोग मिलना रहेगा।

(४७३) - इस जन्म में वाला जातक लम्बे कद तथा स्थूल शरीर वाला, अल्पतः सुन्दर तथा गुरु-स्वभाव का होगा। न्याय तथा ईमानदारी के प्रति इसका विशेष प्रकाश रहेगा। वर्ष १६ तथा २२ में विष्णु के क्षेत्र में रुकावटें आऐंगी, सामान्यतः यह मध्यम श्रेणी का विचार होगा। इसकी भाग्य-शक्ति प्रबल रहेगी। आर्थिक दृष्टि से यह जीवन भी समस्त बना रहेगा। धैर्य-सम्यक्ता का लाभ भी प्राप्त होगा। इसके जीवन में एक से अधिक आशुनी के स्रोत बने रहेंगे। लोहे से सम्बन्धित वस्तुओं के व्यवसाय द्वारा इसे परेशान लाभ होगा। भूमि, भवन, वाहन तथा ऐश्वर्य का सुख भी प्राप्त रहेगा। इसका विवाह १८, २२ अथवा २४ वर्ष की आयु में होगा। संसर्ग वाली सुन्दरी, सुलक्षण तथा प्रतिभुता प्राप्त होगी। वास्तव्य-सुख उत्तम बना रहेगा। वर्ष २३, २४, २७, २८, ३३, ३४, ३७, ४१, ४६, ४८, ५१ तथा ५३ व्यवसाय में उत्कृष्टता का सिद्ध होंगे। जीवन में लाभ के अनेक अवसर मिलें रहेंगे और यह उनका समुचित फायदा भी उठावेगा।

(४७४) - इस सूर्यकुण्डली वाला जातक श्यामवर्ण, इकट्ठे शरीर का तथा कोपी स्वभाव वाला होगा। विष्णु के क्षेत्र में १५ वर्ष की आयु में रुकावट आना संभव है। विवाह २३, २४ अथवा २८ वर्ष की आयु में होगा। पत्नी सुन्दरी, सुशीला, सुलक्षण तथा प्रतिभुता होगी तथा उसके कारण वास्तव्य-सुख उत्तम बना रहेगा। सन्तान का योग कुछ विलम्ब से बनेगा। इसके १ या २ सन्तान होंगे। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी का योग अधिक प्रबल है। आयु के २३, २४, २८, ३३, ३७, ४१, ४६, ४८ तथा ५१ के वर्ष में व्यवसाय अथवा नौकरी द्वारा विशेष आर्थिक-लाभ होगा। जीवन में ३८, ४८ तथा ६७ के वर्ष आयु के लिए जातक अथवा स्वास्थ्य के लिए लक्ष्मण सिद्ध होंगे। सामान्यतः आर्थिक दृष्टि से इस जातक का जीवन उत्तम बना रहेगा तथा भूमि-भवन एवं वाहन का सुख भी प्राप्त होगा। माता-पिता से लोह-सम्बन्ध बना रहेगा तथा धन-पद से लाभ भी प्राप्त होगा। पारिवारिक सुख भी उत्तम है।

(४७५)- इस पूर्वकुण्डली वाला जातक मोहवर्ण, कुछ लम्बे शरीर का तथा कोपी स्वभाव का होगा। विष्णु क्षेत्र में इसे शर्ण सफलता प्राप्त होगी। २४, २६ अथवा २८ वर्ष की आयु में विवाह होगा संभव है। इसकी पत्नी सुन्दरी, सुमीला, कुलक्षणा तथा धर्मिणी और धर्म से लैटकारने वाली होगी, फलतः दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहेगा। यदि चन्द्रमा विशेष भाव में हो तो सहाल-पत्नी का दे होगी। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी का। इसे पत्न्य अथवा, पत्न्य व्यवसाय में उन्नति के अनेक अवसर प्राप्त होंगे। २३ तथा २६ के वर्ष में व्यावसायिक-लाभ होगा तथा २८, ३२, ३४, ३६, ४०, ४६, ४८, ५१ तथा ५४ के वर्ष में उन्नतिकारक सिद्ध होंगे। माता-पिता से सुख-सहयोग की शर्णा होगी तथा भूमि, भवन, वाहन तथा पैतृक-सम्पत्ति का लाभ भी होगा। आयु के २५, ४०, ४५ तथा ५५ के वर्ष स्वास्व्य के लिए हानिकारक सिद्ध हो सकते हैं। धर्म-कर्म में लाभान्वित रहने लगेगी तथा धर्मिणी और साहसी बना रहेगा।

(४७६)- इस पूर्वकुण्डली वाला मनुष्य सौम्य रंग, स्फुरे शरीर, ऊँट का चेहरा के अथवा उठ के दाग वाला तथा कोपी स्वभाव का होगा। विष्णु क्षेत्र में १५ के वर्ष में कुछ रुकावटें आना संभव है विवाह का फल कुछ विलम्ब से अर्थात् २७ अथवा २८ वर्ष की आयु में संभव है पत्नी सुन्दरी तथा कुलक्षणा होगी तथा दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहेगा। ३०, ३६ तथा ४२ वर्ष की आयु में सकात तथा सवारी का सुख प्राप्त होगा। सकात यह स्वयं उपाधि धन से बनवायेगा, पत्न्य पैतृक-सम्पत्ति का भी केस लाभ होगा, फलतः इसकी आर्थिक-स्थिति अत्यन्त सुदृढ़ बनी रहेगी। २४ तथा २७ के वर्ष में व्यवसाय में विशेष फल-लाभ का योग है। २३, २५, ३१, ३२, ३७, ३८, ४३, ४८ तथा ५१ के वर्ष में व्यवसाय में लाभप्रद सिद्ध होंगे। माता-पिता, भाई-बन्धु तथा धर्मिणीजनों का फल सुख-सहयोग प्राप्त होगा। यह जातक किसी समय नौकरी भी कर सकता है, पत्न्य नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय में अधिक लाभ होगा।

(४७७) - इस जन्मकुण्डली में जन्मग्रहण करने वाला जातक गेहुँओ रंग, मध्यम कद तथा पुष्ट शरीर वाला एवं स्वभाव से चिन्तु होगा, पालु जब इसे छोड़ करेगा तब यह शीघ्र ही समाप्त न होकर स्वामी प्रायुष्यका हृद्य भाग का लेंगे। विष्णु के क्षेत्र में इसे लाभदायक, सफलता प्राप्त होगी तथा विष्णु अपने निवास स्थान से पूर्व दिशा की ओर से होगा। पत्नी सुन्दरी, सुलक्षणा, परीवृता तथा आलाकारीणी होगी, अतः दाम्पत्य - सुख उत्तम बना रहेगा। यह शिक्षा - विभाग में नौकरी काता अधिक पसन्द करेगा, पालु जब प्राय की दिशा में भी अग्रसर हो सकता है। जीवन के २३, २४ तथा २७ वें वर्ष आर्थिक लाभ की दृष्टि से उत्तम सिद्ध होंगे तथा १४, २१ तथा ५२ वें वर्ष स्वास्थ्य की दृष्टि से प्रतिकूल सिद्ध होंगे। आर्थिक दृष्टि से जीवन ऐश्वर्यमय बना रहेगा। ४२ वर्ष की आयु में निजी भवन - निर्माण करने का भी योग है। धर्म, भवन के कर्त्तव्य वाद तथा सेवा का सुवर्ण उपलब्ध होगा। माता - पिता से सहयोग मिलेगा।

(४७८) - इस जन्मकुण्डली में जन्म हुआ मनुष्य गोवर्ण, उन्नत ललाट, धुंझावले बालों वाला, कदमें कुछ लम्बा तथा विभाव से शक्ति-विश्व होगा। यह अपने जीवन में अपने भाग्य का निर्माण करेगा तथा अधिक - शक्ति सम्पन्न ही रहेगी। यह धर्म एवं भवन का सुख प्राप्त करेगा। विष्णु का लाभ भी उत्तम होगा। आयु का १२ वें वर्ष विष्णु से कुछ रुकावट प्राप्त सकता है। पत्नी सुन्दरी, सुलक्षणा तथा सेवा भावित्री होगी, अतः दाम्पत्य - सुख उत्तम प्राप्त होगा। विवाह का योग २२ अथवा २८ वें वर्ष में बनता है। आयु के २५, २८, ३१, ३४, ४०, ४४, ५० तथा ५२ वें वर्ष व्यवसाय में उन्नति का एक सिद्ध होंगे। १२, ३०, ४४, ४८ तथा ५४ वें वर्ष स्वास्थ्य के लिए हानिकारक रहेंगे। २५ वें वर्ष से आठवें वर्ष होगा तथा नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय में विशेष लाभ प्राप्त होगा। माता - पिता से सह-सहयोग की प्राप्ति होगी। जीवन सामान्य सुखपूर्वक बीतेगा।

भू०
सं०
७२७

(४७८) - इस जन्मकुण्डली में जन्म होते वाले बालक हल्के गौ वर्ण, मध्यम कद, इन्हें शरीर का लक्षण ठीक स्वभाव का होगा। विष्णुधर्म में अनेक हकावों आयेगी तथापि उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकेगा। इसका विवाह अपने विवाह-समय में दक्षिण दिशा की ओर से होगा और वह २२ अथवा २६ वर्ष की आयु में होगा (कम है) पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा सुलक्ष्ण होगी और दाम्पत्य जीवन मधुर बना रहेगा। सन्तानों में ५ तक होगा (कम है), जिनमें कन्याओं की संख्या अधिक रहेगी। २४ वर्ष की आयु में आजीवन का प्रारंभ होगा। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी का अधिक पसंद करेगा। २८, ३२, ३६, ४१, ४३, ४५, ४८ तथा ५२ के वर्ष में आर्थिक - लाभ अधिक होगा। आयु दीर्घ होगी, तथापि १५, २८ एवं ५८ वें वर्ष शारीरिक - स्वास्थ्य के लिए हाताक्षिप्त रहेंगे। माता-पिता, भाई-बहिन तथा पड़ोसीजनों से सामान्य सह-सम्बन्ध रहेंगे। जीवन मध्यम सुख-भाति में व्यतीत होगा।

(४८०) - इस सूर्य कुण्डली में जन्मगृहण करने वाले बालक हल्के गौ वर्ण, इन्हें शरीर, कुछ लम्बाई लिये मध्यम कद तथा स्वभाव में सुलक्ष्ण सुदृढाकी होगा। माँ की अपेक्षा बहने अधिक होगी। विष्णु का उत्तम लाभ प्राप्त होगा, तथापि १६ के वर्ष में विष्णुधर्म में कुछ हकावों का प्रकटीकरण होगा। विवाह २२, २६ अथवा २८ वर्ष की आयु में होगा। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा विचारादिनी होगी, फलतः दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहेगा। आयु के २५ के वर्ष में आजीवन होगा तथा २५, २८, ३०, ३२, ३६, ४०, ४४, ४८ तथा ५२ के वर्ष आर्थिक - लाभ की दृष्टि से उत्तम का प्रकटीकरण होगा। सामान्यतः इन जातक की आर्थिक - स्थिति सुदृढ बनी रहेगी। सन्तानों में कन्याओं की संख्या अधिक होगा (कम है) आयु के १५, २८ तथा ३० के वर्ष स्वास्थ्य के लिए हाताक्षिप्त रहेंगे। माता-पिता, भाई-बहिन तथा पड़ोसीजनों से मध्यम सम्बन्ध बने रहेंगे तथा उनसे मिलना सुख-सहजोगी प्राप्त होगा।

कु०
२०

(४८१)- इस कुण्डली में लग्न लेने वाला जातक इसके शुभम वर्ण का, कुछ लम्बे तथा स्थूल शरीर का एवं कुछ अधिक छोटी-स्वभाव वाला होगा। मातृ की अपेक्षा बहिन अधिक होगी। विष्णु का सामान्य लाभ होगा। २३ अथवा २७ वर्ष की आयु में विवाह होता संभव है। पत्नी सुदृढ़, सुलभणा, परि-
लेखिका तथा प्रियवार्त्ति होगी, अतः दाम्पत्य-सम्बन्ध सधु बना रहेगा। इसे माता-पिता तथा अन्य परिजनों का पूर्ण सुख-सहयोग प्राप्त होगा। व्यवसाय में इसे विशेष लाभ मिलेगा तथा आकस्मिक-लाभ के अवसर प्राप्त होते रहेंगे। २५, २८, ३२, ३६, ४१, ४४, ४८ तथा ५२ के वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होंगे। १४, २८, ४३ तथा ६० के वर्ष में स्वास्थ्य को हानि पहुँचने संभव है। आर्थिक दृष्टि से जातक की स्थिति सुदृढ़ बनी रहेगी तथा समाज में मान-प्रतिष्ठा की प्राप्ति भी होगी। माता-पिता का तथा परिजनों का सामान्य सुख-सहयोग मिलेगा। महापातक स्वभावकर्म से उत्पन्न-पक्ष वर्त बड़ेगा।
(४८२)- इस कुण्डली में उत्पन्न हुआ मनुष्य औन्नत्य, लम्बे तथा इकट्ठे शरीर वाला होगा। स्वभाव से छोटी होगा, तथापि परिजनों के अनुसार लक्ष्मणारी से भी काम लेता रहेगा। विष्णुपक्ष में हकाने कावेगी, तथापि यह उच्च-शिक्षा प्राप्त करेगा। वर्ष २३, २७ तथा २८ में विवाह का योग बनता है। विवाह एक से अधिक होते संभव हैं, तथापि दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहेगा। व्यव-
साय की अपेक्षा नौकरी में इसे विशेष सफलता प्राप्त होगी। सन्तानों में पुत्रों की संख्या अधिक रहेगी। वर्ष २५, २८, ३३, ३७, ४१, ४५, ४८ तथा ५१ व्यवसाय में लाभप्रद सिद्ध होंगे। यह घट लम्बे विकारों का रोगी रहेगा तथा वर्ष १५, ३० तथा ४२ स्वास्थ्य की दृष्टि से चिन्ता-
जनक सिद्ध होंगे। आर्थिक-दृष्टि से इसका जीवन सफल रहेगा तथा समाज में मान-प्रतिष्ठा भी प्राप्त होगी। माता-पिता तथा परिजनों से इसे सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

(४२३) - इस कुण्ड की वातावरण गौण है, लम्बे शरीर का तथा कोष्ठी स्वभाव का होगा। यह वायुमण्डल तथा भूगण्डल प्रकृति का भी हो सकता है। विष्णु का लाभ अच्छा होगा। तथा स्त्री सुन्दरी पालन करती भूगण्डल स्वभाव की होगी, अतः, दाम्पत्य-प्राप्त में सफल बनी रहेगी। विवाह २४ अथवा २८ वर्ष की आयु में होगा। सम्भव है व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी का क्षेत्र अधिक लाभप्रद सिद्ध होगा। विजयी के सम्बन्धित काम-काज में विशेष सफलता प्राप्त होगी। आयु के २५, २७, २८, ३३, ३७, ३८, ४१, ४२, ४०, ४२ तथा ४४ के वर्ष व्यवसाय अथवा आर्थिक क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त सिद्ध होगी, सामान्य आर्थिक - स्थिति मजबूत बनी रहेगी। आयु के ३०, ४२ तथा ६२ के वर्ष स्वास्थ्य के लिये चिन्ताजनक होंगे। पुत्रप्राप्त कारण का अस्पष्ट रहेगा। माता, पिता तथा पत्नीवारीयों के सम्बन्ध लाभप्रद होंगे तथा उनसे कोई सहयोग मिलना सम्भव नहीं होगा। लाभकर्मकारी करने वाला होगा।

(४२४) - इस जन्मांश में जन्म लेने वाला बालक सौंवलेंगे का, मध्यम ऊँच वाला, इकट्टे शरीर का तथा कोष्ठी स्वभाव का होगा। ११ वर्ष की आयु में विद्याभ्यास में हकाकेटें भाषेगी तथा पिछड़ा होगा। स्त्री सौंवलेंगे की होगी तथा स्त्री-पक्ष में सर्वेक चिन्ता बनी रहेगी। विवाह २५ अथवा २७ वर्ष की आयु में होगा। सम्भव है मातृ की अपेक्षा बहनों की परवाह अधिक रहेगी। सन्तानों में भी कला-कलाप का अधिक होगा। सम्भव है आज की अपेक्षा वृद्ध की अधिकता बनी रहेगी। अतः लाभक कर्म - कर्म भूगण्डल भी बड़ा रहेगा। सामान्यतः आर्थिक - स्थिति मजबूत रहेगी। जीवन के २५, ३०, ३२, ३८, ४२, ४६, ४८ तथा ५३ के वर्ष व्यवसाय में उत्कृष्टता का अधिक अथवा आर्थिक - लाभप्रद सिद्ध होंगे। २८, ४३ तथा ६१ के वर्ष स्वास्थ्य के लिए खतरा सिद्ध होंगे, पुत्रप्राप्त कारण का अस्पष्ट रहेगा। यदि भूगण्डल के लाभप्रद के फल का लेगी हो सकता है।

(४८५) - शुक्रकुण्डली में जन्म हुआ वालक गोवर्ण। लम्बे कद का लम्बा बलिष्ठ शरीर वाला होगा। विद्या के काम बुद्धि तथा नष्ट होने से ५५ वीं वर्ष तक है अथवा काम निकालने के लक्ष्य होगा। विद्याधन का क्षेत्र अच्छा होने के कारण यह विद्वान् होगा तथा अपनी योग्यता एवं बुद्धिमत्ता के कारण कोषों को भी हल कर लिये कोष। इसका विवाह २३ या २७ वर्ष की आयु में होगा। पत्नी बुद्धि, प्रतिभालम्बा, मेधावृद्धि होगी, अन्तः काम-सुख उत्तम बना रहेगा। आर्थिक-दृष्टि से जीवन सम्पन्न रहेगा। व्यय की अधिकता के कारण आर्थिक-स्थिति अकुलित बनी रहेगी। भूमि तथा मकान का व्यवसाय होगा तथा यह अपने ही उद्योग से मकान का निर्माण करेगा। व्यवसाय की अथवा नौकरी के लिये विशेष लक्ष्य होगा। वर्ष २३, २७, ३०, ३५, ४०, ४२, ४४, ४६ तथा ५२ के आर्थिक लाभ की दृष्टि से उत्तम रहेंगे तथा २३ अथवा २७ के वर्ष में अपने घर होगा। पूर्ण आयु ६२ से ६६ वर्ष के सम्पन्न होगी।

(४८६) - शुक्र-कुण्डली वाला वालक मध्यम कद का पालतु कुत्ता नारा एवं गौरवर्ण होगा। यह स्वभाव से कोषी होगा तथा भी मृदुभावी होगा। विद्या-क्षेत्र मजबूत रहेगा। इसका विवाह २०, २४ अथवा २८ के वर्ष में अपने स्वभाव से उत्तम दिशा की ओर होगा। २२, २४ अथवा २८ के वर्ष में यह नौकरी के क्षेत्र में प्रवेश करेगा। रत्नान का योग अच्छा है, पालतु विवाह एक से अधिक होंगे अथवा पत्नी के अतिरिक्त या भिन्नजो से भी सम्बन्ध रहेगा। यह अपने जीवन का पाने-पार्जन का, आर्थिक-दृष्टि से सबल बना रहेगा तथा इसकी आय के छोट एक से अधिक होंगे। सहायक पक्ष से भी भूमि-मकान-पार्जन सम्पन्न होगा। यह माना-पिता का अत्यन्त प्रिय होगा तथा शत्रु-पक्ष में लड़ने की प्रवृत्ति प्रभावशाली बनी रहेगा। वाम्बल-सुख अच्छा रहेगा। यह बड़ा धीरवीर तथा जाहशी होगा। आयु के ३, ३६, ५७ तथा ६४ के वर्ष रक्षात्मक के लिए हानिकार सिद्ध होंगे।

(४२७) - इस कुण्डली में अपना हुआ बालक मध्यम कद, गौर वर्ण तथा शान्त स्वभाव वाला होगा।
विष्णु अच्छी प्राप्त होगी। विवाह २१, २५ अपना २८ वें वर्ष में होगा संभव है। पत्नी बुद्धीमान् सुल-
क्षण होगी, फलतः दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहेगा। यह नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय में अधिक
सफलता प्राप्त होगी। आयु के २३, २७, ३१, ३५, ४०, ४३, ४८ तथा ५३ वें वर्ष व्यवसाय में
उन्नतिकारक सिद्ध होंगे। यह बड़ा साहसी तथा जीकमी होने के साथ ही मृदुभाभी भी होगा। इसे
३४ वर्ष की आयु में वाहन का तथा ४६ वर्ष की आयु में भवन का सुख प्राप्त होगा। आसपसी में
अपने अधिक होने के कारण यह धनः धन-गुप्त बना रहेगा, तथापि गृहस्थी सम्बन्धी सभी कार्य
सुचारु रूप से चलते रहेंगे। वर्ष १८, ३७ तथा ५२ स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद सिद्ध होंगे, तथापि यह
पूर्ण अक्षति दीर्घ आयु प्राप्त होगा। माता-पिता तथा जीवारी जनों से सम्बन्ध सामान्य बने रहेंगे।

(४२८) - इस सूर्य-कुण्डली में जन्म लेने वाला मनुष्य इकट्ठे शरीर का तथा लम्बा एवं कोमल स्वभाव
का होगा। तथापि यह स्वभाव से मृदु, साहसी तथा अल्पधिक जीकमी होगा। बुद्धि-बौद्ध्य तथा
वाक्चातुर्य से अपना काम निकाल लेने में कुशल होगा। विष्णु का क्षेत्र अच्छा होने के कारण यह
विष्णु खूब प्राप्त होगा। इसका विवाह २५ अपना २८ वर्ष की आयु में होगा तथा स्त्री ठीकी होगी,
जिसके कारण धनार्थ दाम्पत्य-सुख में कुछ कमी बनी रहेगी। २३, २७, ३१, ३५, ४०, ४३, ४८ तथा
५३ वें वर्ष आर्थिक-दृष्टि से लाभ प्रद सिद्ध होंगे। ४२ वर्ष की आयु में यह अपना मकान बनवावेगा,
भूमि-भवन के साथ वाहनारि का सुख भी प्राप्त होगा। इसका रत्न-महल ऐश्वर्य पूर्ण होगा,
तथापि इसकी आर्थिक-स्थिति सन्तोष-जनक बनी रहेगी। यह नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय के क्षेत्र
में अधिक सफलता प्राप्त होगी। मातृ-वहिनो की सेवा करेगी तथा माता-पिता का उत्तम सुख मिलेगा।

(४८९) - ३५ कुण्डली में जन्म लेने वाला सुदृढ सुदा नाक - नक्का वाला, गौ वरि तथा कोपी स्वभाव का होगा। यह आपत्त कर्मों तथा साहसी होगा तथा स्वोपाधि चतुर्धा भूमि, भवन एवं वाहन का, प्राप्त प्राप्त होगा। यह अल्प विज्ञान होगा। २३ तथा २८ वर्ष की आयु विष्णु के क्षेत्र में उत्तरी काक सिद्ध होगी। इसका विवाह २५ या २८ वर्ष की आयु में होगा। पत्नी सुदृढी, सुशीला तथा मनोरमा प्राप्त होगी, अतः दाम्पत्य - सुख उत्तम बना रहेगा। आयु के २३, २७, ३१, ३५, ४०, ४३, ४८ तथा ५३ के वर्ष आर्थिक-दृष्टि से विशेष लाभ प्राप्त सिद्ध होंगे। व्यवसाय की अपेक्षा यह नौकरी के क्षेत्र में अधिक सफल होगा। जीवन के १८, ३६ तथा ५२ के वर्ष में स्वास्थ्य के लिए खास उपचार होसकती है जो माइनों का उत्तम सुख प्राप्त होगा तथा सन्तान भी अलानुवर्तिनी होगी। यह आर्थिक दृष्टि से संपन्न सम्पन्न बना रहेगा तथा ज्ञान - विद्या के क्षेत्र तथा सहयोग का भागी एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

(४९०) - ३५ कुण्डली में उत्पन्न हुआ बालक मधुमत्त कद, सुदा नाक - नक्का वाला तथा गौ वरि होगा। स्वभावः यह आपत्त कर्मों प्रकृति का होगा, पालन भक्त को प्राप्त आयेगा, जो वह शीघ्र ही ठण्डा न होगा। विष्णु - क्षेत्र मधुमत्त है तथा विष्णुधर्मन काल में रुकावटें भी आयी रहेंगी। इसका विवाह २३, २५ अथवा २८ वर्ष की आयु में होगा। पत्नी सुदृढी तथा सुशीला होगी, फलदा, दाम्पत्य - जीवन सुखी एवं उत्तमपूर्ण बना रहेगा। यह व्यवसाय के क्षेत्र में अच्छा लाभ प्राप्त होगा। वर्ष २७, २८, ३१, ३५, ३८, ४१, ४३, ४७, ५१ तथा ५३ उत्तरी काक एवं चतुर्धा काक सिद्ध होंगे। वर्ष २७ तथा २८ विशेष उत्तरी देने वाले रहेंगे। यह स्वोपाधि चतुर्धा, अनेक मकानों का स्वामी बनेगा तथा वाहन - सेवाकारि के सुख से सम्पन्न होगा। जीवन के २, २६, ३८ तथा ६२ के वर्ष स्वास्थ्य के लिए हाथिपद सिद्ध होंगे। यह समाज में प्रतिष्ठित तथा जीविकार्थनों का पिता होगा।

(४६१)- इस वर्ष कुण्डली में जन्म लेने वाला मनुष्य पिलते हुए गौ वर्ण वाला, लम्बे कद का तथा छोटी स्वभाव का होगा। यह बाल्यकाल में अल्पकाल प्रदु होगा। विष्णु का योग अच्छा रहेगा तथा २२, २६ अथवा ३० वर्ष की आयु में विवाह होगा। इसकी पत्नी सुधी, सुलक्षणा तथा पिपकादिनी होगी, फलतः दाम्पत्य-सुख में अभिवृद्धि होती रहेगी। इसकी आर्थिक-स्थिति मजबूत रहेगी तथा आसानी के साथ ही अनेक छोटे, तथापि बड़ा-सहज का स्वर्ण अल्पकाल बड़ा रहने के कारण धन का संचय अधिक नहीं हो पायेगा। भूमि तथा भवन का सुख उपलब्ध रहने पर भी उस पर भरोसा नहीं करते रहेंगे। वाहन का सुख बड़ा रहेगा। व्यवसाय की अनेक नौकरी में इसे विशेष लाभ होगा। चोर आदि लाने का प्रयत्न भी उणीय हो सकने पर आयु के २२, ३२, ३६, ४०, ४८, ५२ तथा ५६ के वर्ष उत्तरी भाग तथा २५, ३६, ४२ एवं ६३ के वर्ष स्वास्थ के लिए उपेक्षा सिद्ध होंगे।

(४६२)- इस जन्मांक चक्र में उत्पन्न हुआ बालक गौ वर्ण, मध्यम कद तथा छोटी-स्वभाव का होगा। विष्णु का लाभ उत्तम रहेगा, पालु अधःपतन काल में कहीं बड़ा रुकावट भी आयेगी। विवाह २६ के वर्ष में होता संभव है। वैवाहिक-सुख कुछ चिन्ताजनक बने रहने पर भी संभरें सन्तान की ओर से भी चिन्ता बनी रहेगी। वर्ष ३३, ४२ तथा ५० स्त्री के लिए कष्टकांक रहेंगे तथा वर्ष २४ एवं ५३ स्वर्ण के स्वास्थ के लिए भी चिन्ताजनक हो सकते हैं। जानक की आयु दीर्घ होगी, पालु वायु-विकाश मजबूती होगी जो श्रम काल में रहेगी। व्यवसाय की अनेक नौकरी लाभ प्रद सिद्ध होगी, आर्थिक-स्थिति मजबूत रहेगी। नौकरी का योग २४ वर्ष की आयु में संभरें माता-पिता तथा माई-बहिनो के साथ साधन-सम्पन्न रहेंगे तथापि किसी से सुख-प्रयोग संभव लाभ की आशा नहीं की जा सकती। जानक धर्मिका ईश्वर के प्रति अग्रणी बने रहेंगे।

पु.सं. २०

(४६३)- इस जन्म में जन्म लेने वाला शरीर नोटे कद, जोर हूँट, झुँपरा के बाल तथा सौँवले रंग का होगा। यह स्वभाव से छोटी होगी। यह शरीर से हृष्ट-पुष्ट होगा, उल्लेख बाल पर बहस काग इसका स्वभाव होगा। विवाधपत्र में रुकावटें आती रहेंगी, फलतः यह मध्यम-विष्णु जाति होगा। विवाह २७ वर्ष की आयु में होगा लगभग है। पत्नी भी सौँवले रंग की मिलेगी और यह स्वभाव से भी छोटी होगी। फलतः दाम्पत्य सुख भी मध्यम ही होगा। यह नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय में अधिक लाभ प्राप्त करेगा। तिली भूमि, भवन तथा सकारी का सुख-भोग भी प्राप्त रहेगा। इसकी आर्थिक-स्थिति मजबूत रहेगी तथा इसकी आयदारी के मोत भी एक से अधिक होंगे। जीवन के २४, २६, ३१, ३३, ३७, ४१, ४३, ४६, ५१, ५३ तथा ५५ वें वर्ष व्यवसाय के लिए उत्तमि काक सिद्ध होंगे। आर्थिक स्थिति अच्छी रहने के साथ ही जातक को भूमि, भवन आदि का सुख भी प्राप्त होगा तथा बाल्य पर भी व्यय करेगा। पारिवारिक सम्बन्ध मधुर बने रहेंगे।

(४६४)- इस जन्मातु, कुण्डली चक्र में जन्म ग्रहण करने वाला बालक मध्यम कद, सौँवले रंग, झुँपरा के बाल तथा छोटी स्वभाव वाला होगा। शरीर की अपेक्षा बहनों की संख्या अधिक होगी। विवाह २३ अथवा २७ वर्ष की आयु में होता संभव है। इसी से कुछ न-कुछ परेशानी का अनुभव होता रहेगा, अतः दाम्पत्य-सुख उत्तम नहीं कहा जा सकता। भूमि, भवन तथा सकारी का सुख प्राप्त होगा। सन्तानों में पुत्रों की संख्या अधिक होगी तथा पुत्र ही होगी। विष्णु का लाभ भी अच्छा प्राप्त होगा। यह नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय में अधिक उत्तमि करेगा। आयु के २४, २६, ३१, ३३, ३७, ४१, ४६, ५३ तथा ५५ वें वर्ष व्यवसाय अथवा आर्थिक-क्षेत्र में लाभप्रद सिद्ध होंगे। उल्लेख आंगन-वर्ष में १४ अप्रैल से १४ मई का समय विशेष उत्तमि काक रहेगा। आर्थिक-स्थिति मध्यम रहेगी तथा जीवन के मध्यकाल में आर्थिक-कठिनाईयें भी आयेगी। यह जातक मगड़ल स्वभाव का भी होगा।

क. १०

(४६५) - इस कुण्डली में जन्म लेने वाला सुवृद्ध और वृद्ध, लम्बे कद तथा गोल चेहरे वाला होगा। यह स्वभाव से हठी भी होगा। विष्णु के क्षेत्र में इसे परम सफलता प्राप्त होगी तथा बुढ़ी भी बहुत लीख होगी। विवाह का योग २३ अथवा २७ वर्ष की आयु में लगता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुकीर्ण होगी, फलन, दाम्पत्य-सुख उत्तम प्राप्त होगा। संतान का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। इसका रहन-सहन ऐश्वर्यपूर्ण बना रहेगा, फलन-खर्च की चिन्ता बनी रहेगी तथा आर्थिक-स्थिति सधन होगी। भूमि-सकान आदि के सम्बन्ध में भगड़े-मंकर के अवलम्बी भी उनीकृत हो सकते हैं। यह व्यापार का लाभ प्राप्त करेगा। जीवन के २४, २६, ३३, ३७, ४१, ४५, ५० तथा ५५ के वर्ष अवलम्बी में उत्तरी काक सिद्ध होंगे। प्रत्येक आंगल-वर्ष में १४ अप्रैल के १४ मई तक का समय लाभकर सिद्ध होगा। आयु का २८ वाँ वर्ष स्वास्थ्य के लिए हानि प्रद होगा, तथा यह पूण्ड्रि प्राप्त करेगा। मृगा वहता अपहृष्ट रहेगा। मान-विना के सम्बन्ध मनुष्य बने होंगे।

(४६६) - इस जन्मलग्न में जन्मा हुआ बालक सौन्दर्य होगा, सधन कद वाला तथा छोटी स्वभाव का होगा। विष्णु के क्षेत्र में इसे सफलता प्राप्त होगी तथा बुढ़ी भी लीख रहेगी। अष्टमपत्र-काल में आयु का चौदहवाँ वर्ष कुछ रुकने पर चलने वाला सिद्ध होगा। विवाह २९, २४ अथवा २८ वर्ष की आयु में होगा। पत्नी सुन्दरी, फलन तथा स्नेहमयी होगी, जिसके कारण दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहेगा। विवाह उत्तर दिशा की ओर से होगा। आयु के २४, ३०, ३४, ३८, ४२, ४४, ४६, ५० तथा ५४ के वर्ष अवलम्बी में उत्तरी काक सिद्ध होंगे। प्रत्येक-सम्पत्ति के लाभ का योग है, फलन उत्तम भगड़े-मंकर होना भी संभव है। सामान्य भूमि तथा मन्त्र का सुख प्राप्त रहेगा। शारीरिक स्वास्थ्य के लिए ४७ वाँ वर्ष विशेष कष्ट काक रहेगा। जो जन्म को उदा-विका की शिकायतें बनी रहेगी तथा केट का शालोपचा होना भी संभव है। पत्नी उनके सम्बन्ध सामान्य रहेगी तथा धर्म के प्रति मृदा रहेगी।

(४६०)- इस ऊँच कुण्डली में जन्म गृहण करने वाला बालक गौरवर्ण, मध्यम कद, नाक-गर्भ के सुन्दर तथा हृष्ट-पुष्ट शरीर वाला होगा। विद्या का लाभ मध्यम रहेगा तथा विवाह २२, २४ अथवा २८ वें वर्ष में होना संभव है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा शान्ति-प्रिय होगी, अतः दाम्पत्य-जीवन सुख तथा मानक मय बना रहेगा। सन्तान-सुख भी अच्छा बना रहेगा। यह नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय से अधिक लाभ उठावेगा। जीवन के २४, ३०, ३४, ३८, ४२, ४४, ४६, ५० तथा ५४ वें वर्ष व्यवसाय में उत्कर्ष का काल सिद्ध होंगे। छत्तेक अंग-वर्ष में १४ मई से २४ जून तक का समय लाभ प्रद सिद्ध होगा। आयु के १५, ४५, तथा ५६ वें वर्ष स्वास्थ्य के लिए हानिकार सिद्ध होगा। मर्त्य-काल के प्रति जातक अधिक निश्चिन्त रहेगा तथा माता-पिता का भी सुख-सुखोग प्राप्त करेगा। आर्थिक-दृष्टि मजबूत बनी रहेगी। ३७ वर्ष की आयु में भूमि तथा भवन का लाभ होगा। सामान्यतः जातक सुखी-जीवन व्यतीत करेगा।

(४६१)- इस कूर्च कुण्डली में जन्म लेने वाला मनुष्य लम्बे कद, इकट्टे शरीर, साँवले रंग तथा छोटी-स्वभाव का होगा। विद्या-क्षेत्र में उत्कर्ष होगा। २४ अथवा २८ वर्ष की आयु में विवाह होना संभव है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा परिश्रमशील प्राप्त होगी, फलतः दाम्पत्य-सुख उत्तम प्राप्त होगा। भाइयों से उत्तम सहयोग प्राप्त होगा तथा व्यवसाय के द्वारा आर्थिक उत्कर्ष होगी। भूमि-भवन कादि के विषय में भण्डारे-भण्डारों के खड़े होने की संभावना है। सामान्यतः आर्थिक-स्थिति उत्तम बनी रहेगी। सन्तानों में पुत्र की अपेक्षा कन्याएँ अधिक होंगी तथा सन्तान से उत्तम सुख प्राप्त होना रहेगा। आयु के २४, ३०, ३४, ३८, ४२, ४४, ४६, ५० तथा ५४ वें वर्ष व्यवसाय में उत्कर्ष का काल सिद्ध होंगे। जीवन के ४४ वें वर्ष में कोई आकस्मिक-दुर्घटना घटित होने की संभावना है। जीवन के उत्तरार्ध में अँगोरे सम्बन्धित रोग होने की संभावना होगी। गेहरेद पहिना हितकर सिद्ध होगा। जीवन सुखी व्यतीत होगा।

(४८६)- इस जन्तु में उत्पन्न हुआ बालक सौंसे लंग का, मोटे कद वाला, स्थूल-शरीर तथा कोष्ठी स्वभाव का होगा। विद्या का योग उत्तम बना है तथा बुद्धिमान भी अच्छा होगा। २५ अथवा २६ वर्ष की आयु में विवाह होता संभव है। पत्नी सुन्दरी तथा परिशिष्टा होगी, अतः दाम्पत्य-जीवन सुखपूर्वक चलता होगा। सन्तान-पक्ष की ओर है कुछ चिन्ता बनी होगी। व्यवसाय की ओर भी नौकरी का योग अधिक प्रबल है। जीवन के २३, २७, ३३, ३५, ३७, ३८, ४३, ४७, ५१, ५३ तथा ५५ के वर्ष आर्थिक एवं व्यावसायिक दृष्टि से लाभप्रद सिद्ध होंगे। वर्ष ३१, ४७ तथा ६२ स्वास्थ्य के लिए चिन्ता का एक हो सकते हैं। सन्तान का सुख प्राप्त होगा। नौकरी में स्थानान्तरण के अवसर अधिक आते होंगे। आर्थिक-स्थिति सम्पन्न होगी तथा स्वर्च अधिक बढ़ा-चढ़ा होने के कारण अनेक बार आर्थिक-सामान्यता के अवसर भी उपलब्ध होंगे होंगे। माता-पिता, भाई-बहिन तथा पत्नी जनों से निरन्तर सहयोग मिलना होगा।

(५००)- इस सूर्यकुण्डली में एक गृहणी कोने वाला मनुष्य सम्पन्न कद, इकट्टे शरीर तथा गौरवर्ण का होगा। यह स्वभाव है कुछ कोष्ठी भी होगा। पालतु अवलामुखल हृदयस्वभाव भी होगा। व्यापार, दान तथा धन के प्रति भी इसका विशेष मुकाबला होगा। इसका विवाह २३, २५ अथवा २६ के वर्ष में होता संभव है। पत्नी कुछ कोष्ठी स्वभाव की, पालतु सुन्दरी होगी, अतः दाम्पत्य-सुख प्राप्त अतः अच्छा बना रहेगा। पैरों-सम्पत्ति का योग भी बहुत अच्छा बना है तथा लाभक अपने निजी उद्योग से भी सफलता का निर्माण करेगा। नवीन-समय का निर्माण ५५ वर्ष की आयु में होता संभव है। ३२ वर्ष की आयु में इसे वाहन-सुख प्राप्त होगा। आयु के २३, २५, २७, ३१, ३५, ३७, ३८, ४३, ४७, ५१ तथा ५५ के वर्ष व्यवसाय में उत्तमता का एक सिद्ध होंगे। उल्लेख योग-वर्ष का १४ अवसर से १४ नवम्बर का समय लाभप्रद बना रहेगा। पत्नी जनों से सामान्य सुख-सहयोग प्राप्त होगा।

(५०१) - इस सूर्य-कुण्डली में जन्म लेने वाला जातक कुदलम्बाई लिये मध्यम कद वाला, पतले शरीर का तथा गोशर्ण होगा। विष्णु-क्षेत्र में कुदलम्बाई बनी रहेगी। विवाह २५, २७ अथवा २८ के वर्ष में होगा। पत्नी सुन्दरी तथा गुणवती होने हुए भी कुदलम्बाई स्वभाव वाली होगी, जिसके कारण दाम्पत्य-सुख में कुदलम्बाई-विपत्ति बनी रहेगी। इसकी आर्थिक-स्थिति मध्यम रहेगी तथा ठेकेदारी का काम लाभप्रद सिद्ध होगा। आकर्षक-लाभ के भी अनेक अवसर प्राप्त होते रहेंगे। ३२ वर्ष की आयु के बाद पूर्ण भाग्योदय होगा। आयु के २६, २७, ३१, ३३, ३५, ३८, ४३, ४७, ५१, ५५, ५७ तथा ५८ के वर्ष व्यवसाय में उत्तरी कारक सिद्ध होंगे। प्रत्येक आंग-वर्ष में १४ अंगस्य से १४ सिद्धांतक का समय सर्वश्रेष्ठ सिद्ध होगा। आयु के २८ तथा ३६ के वर्ष स्त्री के प्रति चिन्ताकाय रहेंगे। ३५ के वर्ष में वाहन आदि पर चर्च होगी। जातक प्रणीत प्राप्त करेगा तथा माता-पिता आदि से सहयोग प्राप्त करेगा।

(५०२) - इस सूर्य-कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सौंसे रंग का, नोटे कद तथा दुर्बल शरीर वाला होगा। यह स्वभाव से कोपी होगा। बहनों की अपेक्षा भाइयों का प्रेम अधिक प्राप्त होगा। विवाह २५ या २८ के वर्ष में होगा। पत्नी सुन्दरी, सुमीला तथा गुणवती होगी, फलतः दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहेगा। जीवन में संन्यास के तट होने का योग भी है, यन्तु सन्ततिवार होगा। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी में अधिक लाभ होगा। आयु के २३, २५, २७, ३१, ३३, ३७, ४१, ४५, ४७, ५१ तथा ५५ के वर्ष व्यवसाय के लिए अथवा आर्थिक स्थिति के लिए उत्तरी कारक सिद्ध होंगे। यह जातक अपने पाले बाह्य जाकर विष्णु तथा व्यवसाय का भी उपोपादन करने में सक्षम होगा। आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ रहेगी तथा धर्म, भवन एवं सकारी का सुख भी प्राप्त होगा। विद्या का ऊँचा लाभ होगा तथा अपनी योग्यता एवं बुद्धिमत्ता के बल पर समाज में मान-प्रतिष्ठा भी प्राप्त होगी।

(५०३) - २५ वर्ष-कुण्डली में जन्म गृहण कोमेवाला बालक लम्बे शरीर का होगा तथा उसका रंग कुहलारिमा युक्त गौर होगा। स्वभाव से मृदुभाषी, पालु स्पष्टवक्ता होगा। विष्णु का श्रेष्ठ लाभ प्राप्त होगा। विवाह २५ अथवा २६ वर्ष की आयु में होगा। पत्नी सुन्दरी मिलेगी, तथापि दाम्पत्य-सुख में कुछ कमी का अनुभव होना रहेगा। पुत्रम लज्जित पुत्र होगी। कुल लज्जितों में पुत्रियों की अपेक्षा पुत्रों की संख्या अधिक रहेगी। आर्थिक-दृष्टि से जातक का जीवन मध्यम रहेगा। वर्ष ५, ३० तथा ६४ के स्वास्थ के लिए हागिका सिद्ध हो सकते हैं। आयु के २३, २५, २७, ३१, ३५, ३६, ४५, ४७, ५१ तथा ५७ के वर्ष व्यवसाय में उत्तारिकाक तथा आर्थिक-क्षेत्र में लाभक सिद्ध होंगे। वर्ष १३ तथा १६ के विष्णु-दम्पत्य के रुकावट आने की संभावना है। इस जातक के एक से अधिक विकार लाभ हैं। आयु पूर्ण होगी। माता-पिता तथा जीवार्थियों से लाभान्वित रहेंगे तथा धर्म के प्रति निष्ठा करी रहेगी।

(५०४) - इस जन्मलग्न में उत्पन्न होने वाला बालक मध्यम कद, कुछ लम्बाई युक्त शरीर वाला तथा गौर वर्ण होगा। स्वभाव से कोपही होगा। विवाह २१, २३ अथवा २५ वर्ष की आयु में होता पसन्द है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा सुशिक्षिता होगी एवं दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहेगा। इस जातक के जीवन में व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी का योग अच्छा सिद्ध होगा। आयु के २१, २३, २७, ३१, ३३, ३५, ३६, ४३, ४७, ५१ तथा ५४ के वर्ष आर्थिक-लाभ की दृष्टि से उत्तम सिद्ध होंगे। सन्तान-सुख अच्छा रहेगा तथा कलाओं की अपेक्षा पुत्रों की संख्या अधिक रहेगी। जातक को विष्णु का श्रेष्ठ लाभ प्राप्त होगा तथा निजी मकान का सुवर्ण प्राप्त होगा। भूमि, वाहन आदि भी उपलब्ध होंगे। आयु के १६, ३७, ५४ तथा ५६ के वर्ष स्वास्थ के लिए हागिका सिद्ध होंगे। माता-पिता से सुख-परिप्रेक्ष्य प्राप्त होता रहेगा तथा जीवन सुख-मग्न से व्यतीत होगा।

(५०५) - इस वर्ष-कुण्डली में जन्म लेने वाला मनुष्य मध्यम कद वाला तथा कुछ व्यायामा लिये साँवले रंग का होगा। यह स्वभाव से कोपी होते हुए भी व्यवहार में अत्यधिक नम्र तथा मृदुभाषी होगा। विवाहपक्ष में रुचि होगी, परन्तु पंद्रहवाँ वर्ष अचपल में विपत्तिकाक सिद्ध होगा। २३, २५ अथवा २६ वर्ष की आयु में विवाह होता संभव है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा आलापुपतिनी होगी, अतः दाम्पत्य-सुरत उत्तम बना रहेगा। ३६वाँ वर्ष स्त्री के स्वास्थ्य के लिए खतरा सिद्ध होगा। सन्तान का सुख भी अच्छा रहेगा। २६ वर्ष की आयु में सक्ती का सुख प्राप्त होगा। इसी तथा भवन का लाभ भी संभव है। ३८वें वर्ष में जातक अपना निजी मकान बनवावेगा। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी की ओर अधिक रुकावट रहेगा। वर्ष २९, २३, २५, २७, ३१, ३३, ३५, ३६, ४३, ४५, ४७, ५१ तथा ५७ वें वर्ष व्यवसाय एवं आर्थिक-दृष्टि से लाभ प्राप्त सिद्ध होंगे। जीवार्थिकों से संबंध साधुर रहेंगे।

(५०६) - इस जन्मांक; चक्र में उत्पन्न हुआ जातक लम्बे शरीर तथा सौंयले रंग का होगा। यह राजाओं के समान ऐश्वर्य भोगी, पुतापी तथा प्रभावशाली होगा। ऐसा जातक दुर्कृत करने वाला तथा राजसी स्वभाव का होगा। इसे धार्मिक-समन्ति का भी लाभ होगा। यह धैर्य-समन्ति से भी अधिक स्वोपाधि-समन्ति का स्वामी होगा तथा व्यवसाय में भी अपने जीवित का विशेष उत्कर्ष करेगा। विवाह २९, २३ अथवा २५ वर्ष की आयु में होगा। स्त्री सुन्दरी, सुशीला तथा सुवर्णी होगी, फलतः दाम्पत्य-सुरत उत्तम बना रहेगा। अप्रतिष्ठों से सम्बन्ध होता भी संभव है। आयु के २९, २३, २७, ३३, ३५, ३६, ४४, ४५, ४७, ५१, तथा ५५ वें वर्ष आर्थिक-उत्कर्ष काक होंगे तथा ३७, ५४ तथा ६० वें वर्ष स्वास्थ्य के लिए हानिकार सिद्ध होंगे। विपत्तियों के क्षेत्र में रुकावटों के साथ उत्कर्ष प्राप्त होगी। इसी भवन, वाहन, जेवक आदि के लिये सुख तथा ऐश्वर्य उपलब्ध रहेंगे।

(५००) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न होने वाला प्राणी मध्यम रूप, कुछ लम्बाई लिए शरीर तथा गौर वर्ण होगा। यह स्वभाव से कोची होते हुए भी व्याप-प्रिय तथा दयालु होगा। शरीर दृष्ट-पुष्ट तथा बुद्धि परिपक्व होगी। विद्या-लाभ उत्तम रहेगा। विवाह २३ अथवा २५ वें वर्ष में होना सम्भव है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा गुणवती होने के कारण दाम्पत्य-सुख का पूर्ण लाभ प्राप्त होगा। यह जातक व्यवसाय में रुचि राखने वाला होगा, नौकरी से दूर रहना चाहेगा। जीवन में आधुनिक के एक ही अधिक भोग होने के कारण आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ बनी रहेगी। चैतन्य-सम्पत्ति का लाभ भी होगा तथा स्वोपार्जित-धन से गृह आदि का निर्माण भी कोसेगा। यदि नौकरी को ले अध्यापन जैसे कार्य में सफलता प्राप्त होगी। आयु के २४, २६, ३२, ३४, ३६, ४०, ४४, ४८, ५२ तथा ५६ वें वर्ष अवसाद अथवा आर्थिक-स्थिति में उन्नति का एक सिद्धि होंगे तथा २५, ३७, ४८ तथा ६१ वें वर्ष स्वास्थ्य के लिए हानिग्रस्त रहेंगे। २७ वर्ष की आयु में वाहन प्रदाय प्राप्त होगा। जातक धनी होगा।

(५०८) - इस जन्मकुण्डली में जन्म लेने वाला मनुष्य लम्बे शरीर, उन्नत ललाट, गौर वर्ण तथा आन्त प्रकृति का होगा। यह विद्वान् तथा बुद्धिमान भी होगा और समाज में सम्मानित स्थान प्राप्त करेगा। विवाह २२, २४ अथवा २६ वें वर्ष में होना सम्भव है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा सुशिक्षिता होगी, कलत्र-दाम्पत्य-सुख से षष्ठ बना रहेगा। गणित विषय में जातक को प्रबलता प्राप्त होगी। भूमि आदिसे आर्थिक-लाभ प्राप्त होंगे। आयु के २२, २४, २८, ३२, ३४, ३६, ३८, ४३, ४५, ४७ तथा ५१ वें वर्ष अवसाद अथवा आर्थिक उन्नति में लाभग्रस्त सिद्ध होंगे। आयु दीर्घ प्राप्त होगी, तथापि आर्थिक-स्वास्थ्य निर्बल बना रहेगा। यह अपने जीवनकाल में अपने भाग्य का निर्माण कोसेगा तथा धूमि, भवन, वाहन आदि के सुखों को प्राप्त कोसेगा। सन्तान-पक्ष से सन्तान प्राप्त होगी तथा माता-पिता, मातृ-सहित एवं परिवारी उनके से हरेह तथा सहजेग मिलना रहेगा। धर्म तथा ईश्वर के प्रति श्रद्धा बनी रहेगी।

(५०९) - इस जन्म कुण्डली में जन्म लेने वाला व्यक्ति मोटे कद नका, लंबे सौंतेले रंग का, रुले कोथी-स्वभाव का होगा। बहिनों की अवेष्टा भाइयों की होवना अधिक रहेगी। पिता मध्यम उपाहा होगी तथापि स्रेष्ठ विद्वान् बनेगा। सन्तान सुख भी अच्छा रहेगा। पालु उनके कल्याणों की होवना अधिक होगी। विवाह २७ वर्ष की आयु में होगा। निम्न है। स्त्री कुछ कोथी स्वभाव की होगी, मरः दाम्पत्य सुख में गूँथता बनी रहेगी। जो पौजीकारीक-समानि का लाभ भी होगा, तथापि उनके भगड़े संसार भी नष्टेंगे। दान का योग मध्यम रहेगा तथा आर्थिक-रवर्च आर्थिक-सन्तुलन को उगमगाने रहेंगे। पालसा को अवेष्टा मेकरी में लजि रहेगी। जीवन के २१, २३, २७, २९, ३३, ३७, ४१, ४३, ४५, ४९, ५३ तथा ५५ के वर्ष पालसा अथवा आर्थिक-लाभ के क्षेत्र में उत्कृष्टिकाक सिद्ध होंगे। वर्ष २५, ३१, ५५ तथा ६३ स्वास्व के लिए हानिप्रद बनेंगे। आयु दीर्घ होगी तथा पौजीकारी जनों से सामान्य सम्बन्ध बने रहेंगे।

(५१०) - इस वर्ष कुण्डली में जन्म ग्रहण करने वाला मनुष्य मोटे कद का, सौंतेले रंग का तथा हठीले स्वभाव का होगा। पिता - लाभ उत्तम प्रकार से होगा। विवाह २७ वर्ष की आयु में होगा। निम्न है। पत्नी मनेनुकूल न मिलने से दाम्पत्य जीवन में कटुता बनी रहेगी। सन्तानों २ से ४ तक होगी, जिनमें प्रथम सन्तान कन्या होगी। जन्म कुण्डली के चतुर्था यदि मंगल के साथ दो दो केन्द्रों से सम्बन्धित बीमारी होगी, तथापि जातक पूर्ण आयु प्राप्त करेगा। आयु के २१, २३, २५, २७, ३१, ३३, ३७, ३९, ४३, ४५, ४७, ४९ तथा ५३ के वर्ष व्यवसाय में उत्कृष्टिकाक तथा आर्थिक-लाभ देने वाले सिद्ध होंगे। आर्थिक-दृष्टि से जीवन उत्कृष्टि रहेगा तथापि रवर्च की अर्थिकता आर्थिक-सन्तुलन को उगमगानी होगी। भूमि-मकान आदि जातक अपने प्राकृत से उपार्जन करेगा। बुद्धि तीव्र होगी तथा आय के मोहभी शक से अधिक होंगे। पौजीकारी जनों से सम्बन्धों का सामान्य निर्वह होता रहेगा।

(५११)- इस क्षुब्ध कुण्डली में जन्मा हुआ बालक गौवर्ण, मध्यम कद, सुन्दर नाक-नवरा तथा कोपी स्वभाव का होगा। विद्या का योग भी अच्छा रहेगा। विवाह २५, २७ अथवा ३१ वर्ष की आयु में कुक्षि विलम्ब से होगा तथा स्त्री के प्रति चिन्ता बनी रहेगी। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी का योग प्रबल रहेगा। ४० वर्ष की आयु के बाद आमदनी के स्रोत एक से अधिक बनेंगे तथा पत्नी से भाग्योदय आरंभ होगा। जातकधनी तथा भूमि, भवन एवं वाहन सम्पन्न होगा। सन्तानों में कलाओं की प्रवृत्ति अधिक होगी। सन्तान से वैष्णव सुख की प्राप्ति होगी। माहों में लाभ मिलना रहेगा तथा अल्प परीक्षाओं से भी अच्छे संबंध बने रहेंगे। आयु के २३, २५, २७, २९, ३३, ३७, ४१, ४५, ४९, ५३ तथा ५७ वें वर्ष व्यवसाय के लिए उत्तमिकाएँ तथा धन की वृद्धि करने वाले सिद्ध होंगे। वर्ष ९, ३५, ५४ तथा ६३ स्वास्थ्य के लिए हानि-प्रद रहेंगे। आयु दीर्घ होगी। निजी सम्पत्ति के साथ वैदिक अचल-सम्पत्ति-लाभ का भी योग बनेगा।

(५१२)- इस क्षुब्ध कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य लम्बा, इकट्ठे शरीर का, गेहुओं जैसी तथा आकर्षक वस्त्रधारण सम्पन्न होगा। यह स्वभाव से कोपी होने हुए भी उत्तम से मधुराभावी होगा। जड़ियों की अपेक्षा माहों की प्रवृत्ति अधिक रहेगी। विद्या अच्छी प्राप्त होगी। विवाह २१, २३, २५ अथवा २९ वर्ष की आयु में पूर्व दिशा से होगा। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा सुशिक्षिता होगी तथा दाम्पत्य-जीवन सुखद बना रहेगा। वर्ष २२, २४, २६, २८, ३२, ३६, ३८, ४२, ४६, ५० तथा ५४ व्यवसाय में विशेष उत्तमिकाएँ सिद्ध होंगे। २९ वें वर्ष में सकारों का सुख प्राप्त होगा। आमदनी के एक से अधिक स्रोत रहेंगे, फलतः आर्थिक स्थिति मजबूत बनी रहेगी। मंगल योग के कारण जातक अत्यन्त परिश्रमी तथा साहसी होगा। विद्या की अपेक्षा माता के प्रति विशेष श्रद्धा रहेगा। बुद्धि-उद्योगका धन उत्पत्ति करने में जातक को निम्न सफलताएँ प्राप्त होती रहेंगी। सम्पूर्ण जीवन सुखमय रहेगा।

(५१३)- इस द्विपकुण्डली वाला जातक मध्यम कद, कुछ लम्बाई लिए शरीर तथा गौरवर्ण वाला होगा। यदि चन्द्रमा चतुर्विंशत्य में हो तो वक्षःस्थल कमजोर रहेगा और उसे कंधों की बीमारी लगी रहेगी। अल्पका जातक पतल जाहसी होगा तथा कठिन-से-कठिन कार्यों को भी सफलतापूर्वक सम्पन्न कर दिवाने में कुशल होगा। विष्णु उच्च कोटि की जाफ होगी। विवाह २०, २४, २६ अथवा २८ वें वर्ष में होगा। पत्नी सुन्दरी सुश्रीला तथा गुणवती मिलेगी, फलतः दाम्पत्य-सुख में अभिवृद्धि होती रहेगी। सन्तानें ५ होंगी तथा सन्तानों से उत्तम सुख जाफ होगा। पत्नी का स्वभाव कुछ कोपी होगा। श्वशुरालय से घन-प्राप्ति का योग अधिक उत्तम है। आयु के २२, २४, २६, ३०, ३४, ३६, ३८, ४२, ४६, ५० तथा ५४ वें वर्ष व्यवसाय की उत्कर्षिकाएँ होंगे तथा ७, २०, ३८, ५१ तथा ६३ वें वर्ष स्वास्थ्य के लिए हानिग्रह सिद्ध होंगे। ४१ वर्ष की आयु में गृह स्वोपार्जित धन से मकान आदि का निर्माण होगा तथा मर्त्य-वर्तों से भी लाभ जाफ होगा।

(५१४)- इस जलाशय-चक्र में गृहण करने वाला जाती सुन्दर नाक-तन्त्रा वाला, गौरवर्ण तथा लम्बे शरीर वाला होगा। सौजन्यता एवं मधुरता इसके विशिष्ट गुण होंगे। स्वभाव से शान्त बना रहेगा तथा पीयूष का आर्थिक-स्थिति को सुदृढ़ बनायेगा। विवाह २४, २६ अथवा २८ वर्ष की आयु में होगा। पत्नी सुन्दरी तथा आलापलक होगी, जिसके कारण दाम्पत्य-प्रेम में अभिवृद्धि होगी, तथापि पत्नी के कारण चिन्ता भी बनी रहेगी। वर्ष २४, २६, २८, ३४, ३६, ३८, ४०, ४४, ४८, ५२ तथा ५६ व्यवसाय के लिए उत्कर्षिकाएँ सिद्ध होंगे। ३७ वीं वर्ष आर्थिक-दृष्टि से लुप्त होगा। वर्ष ८, १२, २८, ५१ तथा ६३ स्वास्थ्य के प्रति हानिकार सिद्ध होंगे। पैतृक-सम्पत्ति में अचल धंधी का लाभ होगा। विष्णु-बुद्धि लीख रहेगी। आकाशिक-लाभ के अनेक अवसर प्राप्त होते रहेंगे। आयु पूर्ण होगी। सन्तानों के मृत-पुत्रिका भी वृद्धि होगी तथा माता-पिता एवं जीवन्त जनों से मोह मुक्त लम्बका बने रहेंगे।

(५१५) - इस जन्म कुण्डली में जन्म लेने वाला मनुष्य मध्यम कद, कोभी-स्वभाव तथा गेहुँए रंग का होगा। यह स्वभाव से कुछ कोभी भी होगा, पालु, चैमी, लाटा एवं जहाद से सम्बन्ध बना रहेगा। विष्णु का लाभ मध्यम प्राप्त होगा। विवाह २४ अथवा २६ वर्ष की आयु में होगा। पत्नी सुदही तथा सुशीला होगी, कानन, दम्पत्य-प्राप्त में अभिवृद्धि होती रहेगी। संतान-सुख मध्यम रहेगा तथा सन्तान-पक्ष की ओर से कुछ चिन्ताएँ भी बनी रहेंगी। यह जन्मक अपने पक्षिण तथा साहस के बलवत् विषम-पक्षिणियों को भी अपने अनुकूल बना लेने में सफलता प्राप्त होगी। इसके भाई अधिक होंगे। आर्थिक-दृष्टि से यह सशक्त बनारहेगा तथा स्लोपार्थिना धन से भूमि, मकान, वाहनादि का सुख प्राप्त होगा। वर्ष २२, २४, २६, ३०, ३४, ३६, ३८, ४२, ४६ तथा ५२ वर्षवर्ष के लिए उत्तमि काक तथा वर्ष २५, ४३ और ६१ स्वाहय के लिए चिन्ता जन्मक रहेंगे। ३० वर्ष वर्षवर्ष के हेतु विशेष उत्तमि दासक सिद्ध होगा।

(५१६) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न होने वाला प्राणी नोटे कद, शान्त स्वभाव तथा हल्के साँवले रंग का होगा। विष्णु का योग मध्यम रहेगा तथा विवाह २५, २७ अथवा २८ वर्ष की आयु में पश्चिमदिशा में होगा। पत्नी सुदही तथा मनेनु कुला होगी। संतान-प्राप्त की दृष्टि से पक्षिणियों कुछ चिन्ताजनक रहेंगी तथा एक से अधिक लन्तों नष्ट भी हो सकते हैं। यह जन्मवर्ष तथा नौकरी दोनों कार्य कर सकेगा तथा २३, २५, २७, ३१, ३५, ३७, ३८, ४३, ४७, ४८, ५१ तथा ५८ वर्ष वर्षवर्ष की दृष्टि से उत्तमि काक सिद्ध होंगे। आर्थिक-स्थिति मध्यम रहेगी तथा आमदनी की अपेक्षा व्यय की अधिकता बनी रहेगी। भूमि, मकान आदि का सामान्य लाभ होगा। आयु का योग उत्तम है, तथादि रोगादि होते तथा मोर आदि जगने की सम्भावना बनी रहेगी। धर्म तथा ईश्वर के प्रति यह जन्मक भगवान्-वाग् बना रहेगा तथा माता-पिता एवं पक्षिणीजनों से स्नेह-सहयोग प्राप्त कराना रहेगा।

(५१७) - इसका ३३ चक्र में जन्म गुह्य को काया कालक लम्बे शरीर का, गैर वर्ण तथा ब्राना उछरि वाला होगा। इसका मर्त्यक कर्मजोह होगा, अतः विष्णुधर्म में विशेष सफलता नहीं मिल सकेगी। २८ वीं आयु में विवाह होगा। दाम्पत्य - सुख मध्यम रहेगा तथा स्त्री - पक्ष से चिन्ता भी बनी रहेगी, पालु संभान - सुख अच्छा रहेगा। पत्नी को एकाधिक बच्चा गर्भित भी हो सकता है। यह जातक स्वभाव से आलसी तथा निष्क्रिय होगी। आर्थिक - लाभ के हेतु नौकरी करेगी। वर्ष २३, २७, ३५, ३८, ४३, ४७, ५१ तथा ५५ अवसाम अथवा आर्थिक - स्थिति के लिए लाभ का सिद्ध होगा। आयु मध्यम रहेगी तथा १४, २८, ४६ तथा ५८ के वर्ष स्वास्थ के लिए हाथिपद रहेंगे। घर से सम्बन्धित वायु - विवाह की प्रेरणा भी बनी रहेगी। कौटुम्बिक कठिनाईयें मन को अशान्त बनाये रहेंगी। भूमि तथा मकान से सम्बन्धित कठिनाईयें भी प्रेरणा करती रहेंगी तथा प्रीति के लोभ से भी स्नेह - सम्बन्ध में कमी बनी रहेगी।

(५१८) - इस वर्ष - कुण्डली में जन्म लेने वाला मनुष्य कुछ लम्बाई लिए मध्यम कद का तथा हल्के साँवले रंग का होगा। स्वभाव से कुछ कोपी भी होगा। विष्णु धामाय उदलक होगी। विवाह २७ अथवा २८ वर्ष की आयु में होता सम्भव है तथा शुभमाल से धन मिलने की भी संभावना है। माइजों की अपेक्षा बहनों की संख्या अधिक रहेगी। इसी प्रकार पत्नी - पक्ष में भी कमाओं की अधिकता रहेगी। साहस तथा उत्साह के बलपूर्वक कठिन कामों को भी लाल बना लेगा इसका स्वाभाविक गुण होगा। वात्सावल्या आर्थिक - दृष्टि से कष्टग्रस्त रहेगी तथा मध्यम आयु आर्थिक - दृष्टि से उत्तरी का एक सिद्ध होगा। भूमि तथा मकान का प्रोग भी बगल है। नौकरी की अपेक्षा अवसाम की ओर अधिक प्रवृत्त होगा तथा उसमें सफलता भी प्राप्त होगी। वर्ष २३, २७, २८, ३१, ३५, ३८, ४३, ४७, ५१ तथा ५३ अवसाम के लिये उत्तरी का एक होगा तथा १६, ४६ तथा ५८ के वर्ष स्वास्थ के लिए हाथिपद - सिद्ध होगा। संतान की ओर से चिन्ता रहेगी।

(५१८) - इस प्रनुर्गति में उत्पन्न बालक दुबले-पतले शरीर तथा सौंसे रंग का एवं छोटी रचना का होगा।
विष्णु का केष्ठ लाभ प्राप्त होगा। जिनका २५, २७ अथवा २८ के वर्ष में होगा तथा मंगेयुक्ता पत्नी
मिलने से दाम्पत्य-सुख अच्छा रहेगा। स्वभाव से जानक आकाश होगा। अतः गर्ह-बहिर्ग से अच्छे
सम्बन्ध नहीं रह सकेंगे। जीवन में नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय के अवसर अधिक अच्छे होंगे तथा
२३, २५, २७, २८, ३१, ३५, ३८, ४३, ४७, ५१ तथा ५५ के वर्ष व्यवसाय में लाभ उपलब्ध होंगे। ३५ वर्ष
की आयु से पूर्ण भाग्योदय होगा। स्वकीयता द्वारा जानक आर्थिक-लाभ के अनेक उन्नत अवसरों को प्राप्त
करोगा। तथापि आर्थिक-हानि के भी अनेक अवसर आते होंगे। सन्तानों की संख्या कम होगी। सबकी
का सुख ३० वर्ष की आयु में प्राप्त होगा। बेटों से संबंधित होगा के कारण करिगाइजों का शिकार
भी होगा चलेगा। धर्म-कर्म में अच्छी रुचि बनी रहेगी तथा माना-पिता का सामान्य सुख उपलब्ध होगा।

(५२०) - इस वर्ष कुण्डली में लग्न गृह का योग वाला मनुष्य कुटुम्ब में शरीर का, इकहरा, गौर वर्ण तथा दली
स्वभाव का होगा। परन्तु न्याय विषय तथा सुदुर्भागी भी होगा। दाम्पत्य-सुख अच्छा रहेगा, तथापि
पत्नी की ओर से किसी-न-किसी प्रकार की चिन्ता भी बनी रहेगी। पुत्रों की संख्या कम होगी
तथा जन्मान-सुख अच्छा बना रहेगा। वर्ष १६, ४६ तथा ६२ स्वास्व्य के लिए हानि काक सिद्ध होंगे।
२२ वां वर्ष आर्थिक-दृष्टि से कष्ट काक रहेगा तथा ३५ वां वर्ष विशेष उत्तरी काक सिद्ध होगा। आयु
मध्यम रहेगी। व्यवसाय की अपेक्षा जानक का नौकरी की ओर मुकाबल रहेगा। यह अल्पना साहसी
तथा परिश्रमी होगा एवं परिश्रम के द्वारा ही अपने जीवन में उत्तरी करेगा। धर्म, मन्थन तथा वाहन
का भी सामान्य-सुख प्राप्त होगा। गर्ह-बहिर्ग तथा माना-पिता से लेह-सम्बन्ध तो बने रहेंगे,
तथापि कोई विशेष सहयोग प्राप्त नहीं होगा। धर्म के प्रति आस्थावात् होते हुए भी अपने विमुक्त रहेगा।

(५२१)- इस जन्मकुण्डली में जन्म देने के कारण आधी मध्यम कद, जेहूँ रंग का तथा ब्रह्म स्वभाव वाला होगा, विष्णु का योग अच्छा है, तथापि कुछ विलम्ब है अर्थात् २२, २६ या २८ वें वर्ष में विवाह होने के बाद दाम्पत्य-जीवन कष्टप्रद बना रहेगा। एक ही अधिक विवाह होने की संभावना है, अगच्छा पर दूरी सम्पर्क हो सकता है, सन्तान की ओर से भी कुछ चिन्ताएँ बनी रहेंगी। यह जातक अल्पकालावधि तथा पाकुरी होगा एवं व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी करना पसन्द करेगा। जीवन में शत्रुओं तथा विरोधियों की अधिकता रहेगी पालतु यह एक पा प्रवल बना रहेगा। भाई-बहनों से भी सम्बन्ध मधुर नहीं रहेगा। ४३ वर्ष की आयु में जातक अपना निधी मकान बना सकेगा। सामान्यतः आर्थिक-स्थिति कमजोर बनी रहेगी, तथापि अपने चर्च और साहस के बल पर यह रवर्च चलाता रहेगा। कष्ट के २५, २८, ३२, ३८, ४०, ४४ तथा ५० वें वर्ष आर्थिक-स्थिति लाभप्रद तथा २३ वें वर्ष कष्टदायक सिद्ध होगा। जातक धर्म पर कटार खड़े वाला होगा।

(५२२)- इस जन्माहु-चक्र में उत्पन्न होने वाला मनुष्य कुछ लम्बाई लिए मध्यम कद का, गौर वर्ण तथा ब्रह्म स्वभाव वाला होगा। विष्णु का लाभ उत्तम रहेगा, तथापि १५ वर्ष की आयु में अल्पकाल में कुछ व्यवधान पड़ता संभव है। दाम्पत्य तथा सन्तान-सुख अच्छा रहेगा। भाइयों से सम्बन्ध कुछ कम जोर रहेंगे। ३१ वें वर्ष में सवारी का सुख मिलेगा तथा धूमि-भवन का सुख भी प्राप्त रहेगा। आयु के २४, २६, २८, ३२, ३८, ४०, ४४, ५० तथा ५२ वें वर्ष व्यवसाय एवं आर्थिक-स्थिति के लिए उत्तम काम सिद्ध होंगे। वर्ष २६, ४१ तथा ६२ स्वास्थ्य तथा आयु के लिए कष्टप्रद सिद्ध होंगे। यह व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी करना अधिक पसन्द करेगा। आकर्षक-वस्त्रों के कारण जातक की आर्थिक स्थिति कमजोर बनी रहेगी, तथापि सभी आवश्यकताएँ चैन-केन उपकारेण पूरी होती रहेंगी। इसे संगीत, कवि कलाओं से प्रेम होगा तथा धर्म के प्रति भी आस्था बनी रहेगी।

(५२३) - इस क्षीर-कुण्डली में जन्म-गृहण करने वाला बालक गौरवर्ण, नोटे कदका, सुन्दर तथा वाग्निप्रिय होगा। विष्णु का लाभ अच्छा रहेगा, पालु विष्णुधन में रुकने में भी अनेक सम्पत्ति। विवाह २२ वर्ष की आयु में होगा। पत्नी सुन्दरी, सुखीला तथा सुलक्षणा प्राप्त होगी, अतः दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहेगा। आमदनी के स्रोत रुकने अधिक बरने के कारण जातक की आर्थिक-स्थिति उत्तम बनी न होगी। ३५ वर्ष की आयु के बाद जीवन आर्थिक-दृष्टि से अल्पधिक सम्पत्ति की ओर अग्रसर होगा। सन्तान-सुख भी अच्छा प्राप्त होगा। ३९ से ४२ वीं वर्ष की आयु में जातक अन्तः निजी मकान बनवावेगा। शरीर प्रायः स्वस्थ रहेगा। तर्जनी वर्ष २८, ४१ तथा ५३ वीं स्वास्थ्य के लिए कुछ चिन्ताजनक हो सकना है। आयु मध्यम रहेगी। जीवन के २५, २६, २८, ३२, ३८, ४०, ४४, ४८, ५० तथा ५२ वें वर्ष व्यवसाय की दृष्टि से उन्नतिकारक सिद्ध होंगे। ४५ वें वर्ष आर्थिक-दृष्टि से कष्ट का क हिट हो सकना है। शत्रुओं के ऊपर जातक प्रभावी होगा।

(५२४) - इस जन्मकुण्डली में जन्म लेने वाला मनुष्य संवत्सेरा का, नोटे कद वाला, सादरी, पाकुमी तथा कुछ कोपी रूपे कदजेर शरीर वाला होगा। माइयों की अपेक्षा बहिनों की संख्या अधिक होगी। विष्णु का श्रेष्ठ लाभ होगा। विवाह २३ वर्ष या २५ वर्ष की आयु में होता संभव है। पत्नी लौकिक रंग की पालु सुन्दरी होगी, तथा दाम्पत्य-सुख भी उत्तम बना रहेगा। उद्यम सन्तान कमा होगी तथा सन्तान-सुख उत्तम प्राप्त होगा। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी का लाभ अधिक रुचिकर रहेगा। आयु के २९, ३३, ३६, ३८, ४१, ४५ तथा ५९ वें वर्ष उन्नति एवं धनप्राप्ति सिद्ध होंगे। वर्ष ३०, ४२, ५४ तथा ६६ स्वास्थ्य के प्रति चिन्ताजनक हो सकना है। ३९ वें वर्ष में वाहन-सुख प्राप्त होगा। ४४ वें वर्ष आर्थिक-दृष्टि से बहुत परेशानी वाला हो सकना है। सामान्यतः आर्थिक-स्थिति कदजेरी की रहेगी पालु निजी प्रभितम्भन का सुख प्राप्त होगा। परिवारी जनों से आर्थिक-लाभ मिलने की संभावना है। धर्मार्थ महा बनी रहेगी।

(५२४) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न बालक गौर वर्ण, मध्यम कद, शान्त - स्वभाव, पालु कटुभाषी होगा। विद्या का योग कुछ रुकावटों के साथ बनता है। विवाह २४ अथवा २८ वें वर्ष में होगा। पत्नी सुदी, सुमीला तथा सुशिक्षिता पाया होगी, फलतः दाम्पत्य - जीवन सुखमय बना रहेगा। सन्तानों में कष्टा द्वारा सुख-प्राप्ति का योग है। विवाह पूर्व दिशा की ओर से होगा। आर्थिक - दृष्टि से जातक की स्थिति मध्यम रहेगी तथा विरोधियों द्वारा समय - समय पर आर्थिक - हानि पहुँचाने के उपलक्ष भी किये जाएंगे। पैतृक - सम्पत्ति पर भी भगड़े की संभावना रहेगी। इसके बावजूद भी मकान तथा सवारी आदि का सुख उपलब्ध रहेगा। माइको से पूर्ण सुख - सहयोग पाया होगा तथा पिताकी अपेक्षा माता के प्रति विशेष भुकाव रहेगा। जीवन के २२, २६, २८, ३०, ३४, ३८, ४२, ४६, ५० तथा ५२ वें वर्ष आर्थिक - उलटिकाएँ होंगे तथा १८, ३७, ५३ तथा ६१ वें वर्ष स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद सिद्ध होंगे।

(५२६) - इस जन्मकुण्डली में जन्म लेने वाला मनुष्य लम्बे शरीर का तथा गौर वर्ण होगा। यह स्वभाव से दृढी तथा कटुभाषी भी होगा। स्वाभिमान की मात्रा अधिक रहेगी। विवाह २४ अथवा २८ वें वर्ष में होगा। पत्नी मनेकुला, सुदी तथा धर्म-प्राणना पाया होगी, फलतः दाम्पत्य - सुख उत्तम बना रहेगा। २८ वर्ष की आयु में पुनः - प्राप्ति का योग भी है। सुज्ञान - सुख अच्छा रहेगा। जीवन के २२, २६, २८, ३०, ३४, ३८, ४०, ४२, ४६, ५० तथा ५२ वें वर्ष बावलाधिक - लाभ तथा आर्थिक - दृष्टि से उलटिकाएँ सिद्ध होंगे। सामान्यतः आर्थिक - स्थिति मध्यम रहेगी। शत्रुओं द्वारा आर्थिक - हानि के अवसर भी उपलब्ध किये जाएंगे। व्यय की अधिकता के कारण आर्थिक - असंतुलन बना रहेगा। निजी धूमि तथा भवन की उपलब्धि होगी। वाहन - सुख भी पाया होगा। २८ वर्ष की आयु में आर्थिक - कठिनाईएँ अधिक रहेगी। चतुष्पा यदि दूठे स्थान में हो तो नेत्र - रोग की संभावना भी रहेगी।

(५२७) - इस सूर्य कुण्डली में जन्म गृहण करने वाला मनुष्य मध्यम कद तथा सौवले रंग का, साहसी एवं स्वाभिमानी होता है। विद्या का लाभ रुकावटों के साथ होता है तथा विवाह २४ अथवा २८ वर्ष की आयु में पूर्व दिशा की ओर से होता है। पत्नी सुकरी, सुशीला तथा सुशिक्षिता मिलती है। अतः दाम्पत्य-जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होता है। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय के क्षेत्र में अधिक सफलता मिलती है। आयु के २२, २४, २६, २७, ३०, ३४, ३८, ४२, ४६, ५०, ५२ तथा ५४ वर्ष में व्यावसायिक-लाभ मिलता है अथवा आर्थिक-उन्नति होती है। वर्ष २५ तथा ५४ स्वास्थ्य के लिए हानिग्रह सिद्ध होते हैं। आर्थिक-स्थिति मध्यम रहती है तथा पैसा-सम्पत्ति पर भी अग्रे के दिनों की संभावना रहती है। सुलाभ-सुख अच्छा रहता है। घरे-विकास आदि की शिक्षाओं बनी रहती हैं तथा आयु मध्यम होती है। अतः से आर्थिक-लाभ होता रहता है तथा मान-धन के भी सुख-सहयोग प्राप्त होता है।

(५२८) - इस जलकुण्डली में उत्पन्न हुआ बालक दुर्बल शरीर, मध्यम कद तथा सौवले रंग का होता है। मुँह पर चेचक के दाग भी रहते हैं। यह स्वभाव से अगडालू तथा छोपी प्रकृति का होता है। साथ ही पीकरी तथा साहसी भी होता है। यह अपने पीकृत का भी आर्थिक-उन्नति करता है तथा इसकी आर्थिक-स्थिति संतुष्ट बनी रहती है। आर्थिक-स्थिति अंगों के कमजोर तथा जीवन के मध्यकाल एवं उत्तरार्द्ध में सुदृढ़ रहती है। विद्या-क्षेत्र कुछ कठिन रहता है। २५ अथवा २८ वर्ष की आयु में विवाह संभव है। इसी सौवले रंग की तथा अलगाववर्तिनी होती है। अतः दाम्पत्य-सुख उत्पन्न रहता है। पत्नी भी ओर से कुछ चिन्ता बनी रहती है। सकारी, मकान आदि का सुख पूर्ण रहता है। आयु के २३, २६, २८, ३०, ३४, ३८, ४०, ४२, ४६, ५०, ५२ तथा ५४ वर्ष में व्यवसाय के लिए उन्नति काफ़ी सिद्ध होते हैं। ४० वर्ष की आयु में मकान बनता है। उत्तम प्रशिक्षण प्राप्त करता तथा सुखी रहता है।

(५२८) - इस जलकुण्डली में उत्पन्न प्राणी मध्यम कद, कुछ लम्बाई लिए शरीर, साँवले रंग तथा कोष्ठी स्वभाव का होता है। माइनों की अपेक्षा बहिनों की लम्बा अधिक होती है। विष्ठा का क्षेत्र कमजोर रहता है तथा विवाह २५ अथवा २८ के वर्ष में होता है। पत्नी साँवले रंगकी, पानु सुशीला होती है। ३० वां वर्ष पत्नी के विषय में चिन्ताकाय होता है। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी में अधिक रुचि रहती है। आयु के २३, २७, २८, ३१, ३३, ३५, ३८, ४३, ४७, ५१ तथा ५३ के वर्ष व्यवसाय एवं आर्थिक-लाभ की दृष्टि से उत्तम सिद्ध होते हैं। सन्तान - पक्ष से भी कुछ चिन्ता हो सकती है। आयु के १४, २६, ३७ तथा ५५ के वर्ष स्वास्थ की दृष्टि से कष्ट पड़ रहे हैं। जीवन का प्रवर्द्ध आर्थिक-कारणों की तलाश है, पानु मध्यकाल तथा उत्तरार्द्ध अच्छे रहते हैं। भागदारी के साधन एक से अधिक होने के कारण जानक का जीवन ठाठ-बाट एवं सुख-ऐश्वर्यपूर्ण बना रहता है। पीकालीनों से सुखमिलता है।

(५३०) - इस जलकुण्डली में उत्पन्न प्राणी मध्यम कद, साँवले रंग तथा कोष्ठी स्वभाव का होता है। पक्ष अपेक्षा बहिनों की लम्बा कम होती है। विष्ठा के क्षेत्र में उत्तमि बनी रहती है। विवाह २३, २५ अथवा २८ वर्ष की आयु में होता है, पत्नी सुन्दरी होने पर भी कोष्ठी-स्वभाव की होती है, अतः दाम्पत्य-सुख में पूर्णता नहीं है। सन्तान - सुख उत्तम रहता है तथा पुत्रों की लम्बा अधिक होती है। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी में विशेष रुचि रहती है। वर्ष २३, २७, २८, ३१, ३३, ३५, ३८, ४३, ४७, ४८, ५१ तथा ५३ व्यवसाय में तथा आर्थिक-उत्तमि में सहयोगी बनते हैं। वर्ष १४, २६, ३७ तथा ५५ स्वास्थ के लिए चिन्ताजनक होते हैं। माना-पिता का सामान्य-सुख प्राप्त होता है तथा माइ-बहिन एवं पीकालीनों से भी स्नेह-प्रबन्ध बना रहता है। धर्म तथा ईश्वर के प्रति जानक आस्थावान् होता है।

(५३१) - इस जन्म में शरीर छोटा करने वाला मनुष्य मध्यम कद, गठीले शरीर का, हृष्ट-पुष्ट तथा सौम्य रंग का होता है। यह स्वभाव से कोपी होता है तथा मन में बदले की भावना को पाले लाता है। इसे मगाल्य पुरुषि का भी माना जा सकता है। विष्णु के क्षेत्र में कुछ रुकावटें आती हैं तथा विवाह २६ अथवा ३० वर्ष की आयु में होता है। स्त्री (पत्नी) सौम्य रंग की तथा कोपी स्वभाव की होती है। फलतः दाम्पत्य-जीवन सुखद नहीं रहता, तथापि विवाह होता रहता है। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय में अधिक रुचि रहती है तथा वर्ष २४, २६, २८, ३०, ३२, ३६, ४०, ४४, ४८, ५२ एवं ५६ व्यवसाय में उन्नति का एक सिद्धांत होता है। आयु के २५, २७, ४० तथा ५७वें वर्ष स्वास्थ के लिए रक्तव्रत सिद्धांत होता है। जीवन में आर्थिक-हाथि के अनेक अवसर आते रहते हैं तथा सवारी, मकान आदि का फेव्ड सुख प्राप्त होता है एवं ठाठ-काट पूर्ण स्वर्च के कारण अधिक-विशाल कमलें बनी रहती हैं। माना-पिता का सामान्य सुख होता है।

(५३२) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न हुआ बालक कुछ लम्बे शरीर वाला, गेहूँ रंग का तथा कोपी स्वभाव का होता है। यह स्वभाव से लाटसी तथा पीछरी होता है एवं शत्रुओं के अपर अथवा पूर्ण प्रभाव बनाये लाता है। इसका विवाह २६, २८ अथवा ३०वें वर्ष में होता है। पत्नी कुछ कोपी-स्वभाव की होती है, तथापि दाम्पत्य-जीवन सुखमय जाती रहता है। फलतः सुखी (उत्तम) रहता है तथा पुत्रों की संख्या अधिक होती है। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय में अधिक रुचि होती है। विष्णु कुछ रुकावटों के साथ प्राप्त होती है। जीवन के २४, २६, २८, ३०, ३२, ३६, ४०, ४४, ४६, ४८, ५२ तथा ५६वें वर्ष व्यवसाय में उन्नति का एक सिद्धांत होता है तथा २५, २६, २८, ४१ तथा ५६वें वर्ष स्वास्थ के लिए हाथिका सिद्धांत होता है। यह फलतः स्वपीछम द्वारा भाग्य का निर्माण करता है तथा ३५ वर्ष की आयु में धर्म, भवन तथा सवारी का सुख प्राप्त करता है। इसकी आर्थिक-विशाल सुख बनी रहती है।

(५३३)- इस लम्ब कुण्ठली में उत्पन्न सुदृढ गौवर्ण, पुंछरावे बालों वाला, उत्तम लम्बा तथा अत्यन्त स्वाभिमानी पुरुष का होगा। यह स्वभाव से श्रेष्ठी, साहसी तथा धीमसी होगा। इसका विवाह २२, २६ अथवा ३० के वर्ष में होगा संभव है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा सुशिक्षिता होगी, कलत्र-दास्य-य सुख उत्तम बना रहेगा। विद्या का योग भी अच्छा है। सन्तान का भी पूर्ण सुख प्राप्त होगी यह व्यक्ति विपरीति धन से प्रकार का निपटारा करेगा तथा अपनी धन के उपयोग से पर्याप्त धन अर्जित करेगा। इसकी आमदनी के एक से अधिक लोग होंगे, अतः अधिक-निष्पत्ति मिलूँगी बनी रहेगी। २३ अथवा ३५ के वर्ष में वाहन-पुत्र प्राप्त होगा। बहिनों की निष्पत्ति अधिक होगी तथा धीमसी उनके से साक्षात् अर्द्ध लाभ बने रहेंगे। आयु के २३, २४, २८, ३०, ३२, ३६, ४०, ४४, ४८ तथा ५२ के वर्ष जीवन के लिए लाभ उद तथा ८, २९, ३३, ४५ एवं ५७ के वर्ष शरीर के लिए कष्ट उद सिद्ध होंगे। धर्म में लक्षित होगी।

(५३४)- इस लम्ब कुण्ठली वाला लम्ब गौवर्ण, लम्बे कद का, साहसी तथा विनय-स्वभाव का होगा। विद्या का लाभ मध्यम रहेगा। विवाह उत्तर दिशा की ओर से २३ अथवा २७ वर्ष की आयु में होगा। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होगी, अतः दास्य-पुत्र उत्तम बना रहेगा। वर्ष २५ अथवा ३९ में पत्नी को गर्भपात होने की निम्नता है। आमदनी के लोग एक से अधिक होंगे, अतः उन सबको धर्म, भवन तथा वाहन के अतिरिक्त अन्य भी प्रकार के सुख उपलब्ध होंगे। जीवन के २३, २४, २८, ३१, ३३, ३७, ४१, ४५, ४८, ५३ तथा ५५ के वर्ष अवसाद में उत्पत्ति का कल तथा १६, ४४ एवं ५८ के वर्ष शारीरिक-स्वास्थ्य के लिए हानि उद-सिद्ध होंगे। उदा-विद्या लम्बनी होगी प्रायः बने रहेंगे। यह लम्ब अंगुली उठाने का होता है अथवा स्वार्थ-सिद्ध करने में चतुर होगा। माता-पिता तथा भाई-बहिनों का लाभ सुख-सुदोग उपलब्ध होगा तथा धर्म में निष्ठा (बने हुए भी मयावत पालन नहीं) करेगा।

(५३५) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य मध्यम कद, कुछ लम्बाई लिए हुए, गौरवर्ण तथा स्वभाव में विनम्र होगा। दया, दया एवं त्याग के प्रति इसका विशेष आकांक्ष बड़ा होगा। विद्या का केवल लाभ होगा। विवाह २२, २४ अथवा २८ वें वर्ष में होता है। हरी लुहरी तथा सुश्रीला होगी, तथापि दाम्पत्य - जीवन में नीहला बनी रहेगी। सन्तान का सुख कच्चा होगा। मादृशों से भी पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा, परन्तु मित्रों से कभी कोई सहायता नहीं मिलेगी। आर्थिक - स्थिति मध्यम रहेगी तथा आकर्षक वस्त्रों के कारण आर्थिक - असन्तुलन भी बड़ा होगा। वर्ष २२, २४, २६, ३०, ३२, ३४, ३८, ४२, ४४, ४६, ५० तथा ५२ अवसरों में विशेष उन्नति काफ़ी सिद्ध होगे। जीवन के ११, २३, २६ तथा ४७ वें वर्ष स्वस्थान के लिए कुछ काफ़ी सिद्ध होंगे। माना - धन से फेद सम्बन्ध सामान्य बड़ा होगा, परन्तु कोई लाभ नहीं मिल सकेगा। धर्म के प्रति पूर्ण आस्था बनी रहेगी।

(५३६) - इस जन्म कुण्डली में जन्मगृहण कोमल बालक गेहुँए रंग का, गहरे कद वाला तथा स्वभाव से कोमल और मृदुल होगा। नशीली वस्तुओं का सेवन करने में इसकी विशेष रुचि रहेगी, येलू स्वर्ण काफ़ी बड़े - बड़े रहने के कारण अर्थ - संचय में कमी रहेगी तथापि आर्थिक - आय के स्रोत अच्छे बने रहेंगे। मादृशों से जनक को पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। विद्या का लाभ मध्यम होगा। पत्नी मने दुःख मिलेगी तथा दाम्पत्य - सुख उत्तम बड़ा होगा। सन्तान से भी धर्मिका सुख मिलेगी। अपने जीवन का नवीन प्रकार का निष्पत्ति काटेगा। एक से अधिक मित्रों से सम्बन्ध होगा भी है। आयु के २२, २६, २८, ३०, ३२, ३४, ३६, ३८, ४२, ४४, ४६, ४८, ५०, ५२ तथा ५४ वें वर्ष अवसरों में उन्नति काफ़ी सिद्ध होगे। उत्तम सन्तान कमा होगी तथा न्याय विषयों की ओर विशेष आकांक्ष बड़ा रहेगा। पैतृक - कार्य में जनक विशेष उन्नति तथा सफलता प्राप्त होगा।

(५३७) - इस छुई-कुण्डली में जलवा मनुष्य लम्बे कद, सँवले रंग, सुँघराले बाल तथा कोची स्वभाव का एवं चापलूसी करने में अत्यधिक चतुर होता है। वह पीकरी, साहसी, मधुमक्खी तथा कठिन-से-कठिन कार्य को स्थूल का दिवाने भी सक्षम होता है। इसकी बुद्धि प्रायः होती है तथा विद्या का केवल लाभ प्राप्त करता है। इसके जीवन में विवाह के एकसे अधिक सम्भव आते हैं। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय करना प्रसन्न करता है। विवाह २३, २४ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है। सन्तान का भी केवल सुख प्राप्त होता है। इस के जीवन के २३, २४, २७, २८, ३१, ३३, ३७, ४१, ४३, ४५, ४७, ५१ तथा ५३ वें वर्ष व्यवसाय के लिए लाभप्रद सिद्ध होते हैं। वर्ष २९ आर्थिक-दृष्टि से विशेष चिन्ता का कारण (हताहत) आध के फुल एक से अधिक होते हैं तथा आर्थिक-स्थिति मजबूत बनी रहती है। निजी भूमि तथा मकान होता है एक २६ अथवा ३८ वें वर्ष में स्वामी का सुखी प्राप्त होता है। माता-पिता तथा पीकरी जनों से सम्बन्ध को हासिल रहते हैं।

(५३८) - इस छुई-कुण्डली में जलवा मनुष्य लम्बे कद लम्बाई लिए मध्यम कद का, गोल वण तथा शान्त प्रकृति का होता है। परन्तु बदले की भावना भी विषममान रहती है। अहंता का सुख कम मिलता है। विद्या का योग मध्यम रहता है। विवाह २२, २४ अथवा २८ वें वर्ष में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा सुशिक्षिता होती है, अतः सम्पत्ति-सुख उत्तम बना रहता है। सन्तानें होती हैं, परन्तु उनसे कोई विशेष सहयोग नहीं मिल पाता। आलसी-स्वभाव का होने के कारण पर उन्नति के अवसरों का उचित उपयोग नहीं कर पाता तथा स्वर्च अधिक बढ़ा-बढ़ा होने से जीवन में अनेक बाधा-गुस्तार के अवसर भी उपस्थित होते हैं, अतः आर्थिक स्थिति प्रायः कमजोर ही बनी रहती है। जीवन में २२, २६, ३०, ३२, ३४, ३८, ४२, ४४, ४६, ५०, ५२ तथा ५६ वें वर्ष व्यवसाय में लाभप्रद सिद्ध होते हैं तथा ११, २३, ३५, ४०, ४६, ५८ तथा ६४ वें वर्ष स्वास्थ्य के लिए हानिकारक रहते हैं। अशुभ होती है।

(५३८) - इस वर्ष कुण्डली में उत्पन्न हुआ मृगश्रवण मध्यम कद, सौंवले रंग का, मृदुभासी तथा कोथी स्वभाव का होता है। विष्णु के क्षेत्र में कमजोर रहना है। वर्ष २१, २३, २५ तथा २८ में बिराह रोग के एक से अधिक चोग बनेंगे हैं। कृत्री के प्रति चिन्ता बनी रहती है। एक से अधिक सन्तानों में हो जाती है। तथा आयु का ३० वां वर्ष सन्तान के लिए विशेष अनिष्ट का रहना है। जीवन के २१, २३, २७, २९, ३३, ३५, ३८, ४३, ४५, ४७, ५१, ५५ तथा ५७ वें वर्ष व्यवसाय अथवा आर्थिक - स्थिति के लिए उत्तम - काक सिद्ध होते हैं। वर्ष ६० स्वास्थ के प्रति चिन्ता का रहना है। वायु - बिराह संबंधी रोग को जान को रहे हैं। व्यवसाय में आकस्मिक धन - लाभ के चोग भी आते हैं तथा आर्थिक - स्थिति मजबूत बनी रहती है। पालु वर्ष २२ तथा ३२ आर्थिक - हानि पड़ भी होते हैं। वैदिक - सम्पत्ति या भण्डों आदि की संभाला रहती है। पौर्वीयों के जनों से सामान्य सम्बन्ध रहे हैं। कुल मिलाकर जीवन सुख पूर्वक बीतता है।

(५४०) - इस जन्माशु, चक्र में उत्पन्न होने वाला कासक गौ वर्ण, इकट्ठे शरीर का तथा शक्ति - शिष्ट होता है। व्याप के प्रति इसका विशेष रुकाव रहना है। विष्णु का लाभ रुकावों के साथ होता है। बिराह २१, २३ अथवा २५ वर्ष की आयु में होता है तथा बली सुकरी एवं सुशरीला प्राप्त होती है। फलतः सामान्य - सुख उत्तम बना रहना है। वृद्धावस्था में सन्तान के प्रति चिन्ताजनक - स्थिति बनती है। वर्ष २१, २३, २५, २७, ३१, ३३, ३५, ३८, ४३, ४५, ४७, ५१, ५५, ५७ तथा ६१ व्यवसाय के लिए लाभ पड़ सिद्ध होते हैं। भूमि, भवन तथा सवारी का अच्छा सुख मिलता है। आर्थिक - स्थिति मजबूत बनी रहती है। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय की ओर अधिक रुकाव रहना है और उनके सफलता भी प्राप्त होती है। आयु पूर्ण होती है तथा आयु का ६० वां वर्ष कासक सिद्ध होता है एवं बिराह संबंधी रोग होते रहने की संभावना रहती है। पौर्वीयों के जनों से सामान्य सम्बन्ध रहे हैं। धान - धान का सहयोग मिलता है।

(५४१) - इस जलकुण्डली वाला जलक सुदा नाक - नम्रा, लम्बे कद तथा सौंवले रंग का एवं स्वभाव से खोपी होता है। विष्णु का योग अच्छा रहता है। कुट्टि लीज होती है। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय में विशेष रुचि होती है और उसी में सफलता भी प्राप्त होती है। आठवनी के मोल एक से अधिक होते हैं। विवाह का योग २२, २४ अथवा २६ वर्ष की आयु में रहता है। स्त्री सौंवले रंग की तथा हठी स्वभाव की होती है। सन्तान का पुत्र उत्तम रहता है। पुत्रों की अपेक्षा कन्ये अधिक होती हैं। वर्ष २२, २४, २६, २८, ३१, ३२, ३४, ४०, ४४, ४६, ४८, ५२ तथा ५६ व्यवसाय में उन्नति काक होते हैं। आर्थिक-स्थिति गण्डन बनी रहती है। भूमि, गहन तथा वाहन का पुत्र प्राप्त होता है। वर्ष २४ तथा ६१ स्वास्थ के प्रति कष्ट काक होते हैं। दाम्पत्य-पुत्र में कुछ कमी बनी रहती है। तथापि पत्नीवारी उनसे ले लोह-सम्बन्ध पुगाव बने रहते हैं। धर्म-कर्म के प्रति रुचि रहती है तथा जीवन पुत्र पूर्वक कीतना है।

(५४२) - इस सूर्य कुण्डली में उत्पन्न हुआ मनुष्य कुछ लम्बाई लिए मध्यम कद का, गौरवर्ण तथा शक्ति प्रिय होता है। यह स्वभाव से शूद्रोक्त होता है तथा कुपणता भी उद्विग्नता का रहता है। विष्णु का योग अच्छा रहता है। विवाह २२, २४ अथवा २६ के वर्ष में होता है। तथा दाम्पत्य-पुत्र व्यवसाय में भी रहता है। सन्तान का पुत्र पुत्र प्राप्त होता है। आर्थिक-क्षेत्र में मित्रता उन्नति होती जाती है। आठवनी के मोल एक से अधिक होते हैं। वैदिक-सम्पत्ति का भी कुछ लाभ होता है। ४० वां वर्ष मात्र के लिए काष्ठपद सिद्ध होता है। आयु के २२, २४, २६, ३०, ३२, ३४, ३८, ४०, ४४, ४६, ५०, ५२, ५४, ५६ तथा ५८ के वर्ष व्यवसाय के लिए उन्नति काक सिद्ध होते हैं। तथा २४ एवं ६० के वर्ष स्वास्थ्य के लिए चिन्ताजनक रहते हैं। मित्र-वर्ग से धन-लाभ के अवसर उपलब्ध होते हैं तथा मात्रा-पिता, मातृ-वहिन आदि से भी सहयोग मिलता है। लोह तथा मित्रता से संबंधित व्यवसाय लाभकर रहते हैं।

(५४३) - इस सूर्य कुण्डली में उत्पन्न हुआ मनुष्य लम्बे कद, हठीले स्वभाव, गौरवर्ण तथा आलसी प्रकृति का होता है। आलसी होने के कारण ही वह उन्नति के अनेक अवसरों को नोके देता है। यह शरीर से दुबला-पतला तथा कमजोर स्वास्थ्य का होता है। विवाह २२, २४ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी लौंवल्ली होती है। २५ वीं वर्ष स्त्री के लिए विशेष चिन्ता जनक रहता है। एक से अधिक विवाह के योग भी बनते हैं। दाम्पत्य - सुख मध्यम रहता है तथा स्त्री के प्रति जातक की बेवकूफी बनी ही रहती है। सन्तानों में कमजोरों की संख्या अधिक होती है। सन्तान के प्रति चिन्ता भी बनी रहती है। आर्थिक क्षेत्र में शर्तें - शर्तें उन्नति होती हैं। भूमि तथा मकान आदि की हाकिमी संभव है। २५ वीं वर्ष आर्थिक - कष्ट का होता है। वर्ष २२, २४, २६, २८, ३०, ३४, ३६, ३८, ४०, ४४, ४६, ४८, ५२, ५६ तथा ५८ अवसर के लिए उन्नति काक रहे हैं। वर्ष ५९ तथा ६१ स्वास्थ्य के प्रति चिन्ता जनक होते हैं। आयु मध्यम।

(५४४) - इस सूर्य कुण्डली में उत्पन्न हुआ बालक मध्यम कद, गेहुआ रंग, शक्तिशाली, पीकरी तथा पीकरी के बल पर ही आर्थिक - उन्नति करने वाला होता है। आर्थिक जीवन आर्थिक - दृष्टि से कमजोर तथा २५ वर्ष की आयु के बाद सन्तोषजनक रहता है। विवाह २२, २४, अथवा २६ वीं वर्ष में होता है। पत्नी दुबली तथा तुलक्षणा होती है। दाम्पत्य - सुख तथा सन्तान - सुख - दोनों ही उत्तम बने होते हैं। विद्या - व्यापारी पक्षेष्ट होता है। ५५ वीं वर्ष स्त्री के लिए कष्ट काक सिद्ध होता है तथा १२, २४, ३६, ४८ एवं ६० वीं वर्ष स्वयं के स्वास्थ्य के लिए चिन्ता जनक सिद्ध होते हैं। वर्ष २३, ३५ तथा ४७ आर्थिक - दृष्टि से चिन्ता काक सिद्ध होते हैं। वर्ष २२, २४, २६, २८, ३०, ३४, ३६, ३८, ४०, ४४, ४६, ४८, ५२, ५६ तथा ५८ अवसर के लिए उन्नति काक होते हैं। मादरों से कोई विशेष सहयोग नहीं मिलता, पालु आयुष्य का जातक प्रभावशाली बना रहता है। आर्थिक - स्थिति मध्यम बनी रहती है।

(५४५) - इस वर्ष-कुण्डली में उत्पन्न होने वाला मनुष्य लम्बा, पतला, सौंवलें रंग का तथा सुन्दर गाल लम्बा वाला होता है। इसमें स्नेह, लौकिक, आत्मीयता एवं प्रियतादि आदि अनेक सद्गुण पाये जाते हैं। विष्णु-बुद्धि का वर्णन लाभ होता है। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी में अधिक उन्नतवशी बनता है। विवाह पूर्व दिशा से वर्ष २३, २५, २७ अथवा ३१ में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा सुशिष्टिता होगी है, अतः दाम्पत्य-जीवन भी सुख पूर्ण बगाएगा है। सन्तान का भी उत्तम सुख प्राप्त होता है। आर्थिक-बन्धों के कारण जीवन में अनेक बाधा-वृत्तान्त के अवलम्बी कावेंगे, तथापि कार्थिक-विकास सन्तोषजनक, पालु दुर्बल बनी रहेगी। पैतृक-सम्पत्ति-लाभ का भी योग है तथा भूमि, भवन आदि का प्राप्ति प्राप्त होगा। वर्ष २३, २५, २७, २९, ३३, ३५, ३७, ४१, ४५, ४७, ४९, ५१ तथा ५३ आर्थिक लाभ देने वाले होंगे तथा वर्ष २१, २४, २६, ३८, ५० तथा ६२ स्वास्थ्य के लिए चिन्ताजनक होंगे। आयु पूर्ण होगी।

(५४६) - इस वर्ष-कुण्डली में जन्म गुण होने वाला बालक गौरवर्ण, लम्बे कद का तथा शक्ति-प्रिय होगा। मित्रता-स्वाधिनकारी में अग्रणी बनाएगा। विष्णु-लाभ उत्तम होगा, पालु बीच-बीच में रुकावटें भी आएंगी। विवाह २३, २५ अथवा २७ वर्ष की आयु में होगा संभव है। पत्नी सुन्दरी सुशीला तथा सुशिष्टिता होगी। दाम्पत्य-सुख उत्तम होगा तथा सन्तान-सुख भी कुछ प्राप्त होगा। आर्थिक-विकास प्रथम रहेगी। वर्ष २१, २३, २५, २७, ३३, ३५, ३७, ४१, ४५, ४७, ४९, ५१, ५३ तथा ५५ व्यवसाय अथवा आर्थिक-विकास के लिए लाभ प्रद तथा २४, ३६ एवं ४८ वें वर्ष हाकिमद होंगे। वर्ष २४, २८ तथा ५६ स्वास्थ्य के लिए चिन्ताजनक सिद्ध होंगे तथापि जनक प्रवृत्ति प्राप्त करेंगे। जीवन में स्वोपार्जन उम्र से भवन निर्माण कावेगा तथा २८ एवं ४० वें वर्ष में भूमि, वाहन आदि का प्राप्ति प्राप्त करेगा। मित्रों से इसे पूर्ण सहायता मिलना रहेगा, पालु जीवनीयता से कुछ लाभ नहीं होगा।

(५४७) - इस जन्तुर्लभ में शरीर धारण करने वाला मुख्य मध्यम कद, बोधी-स्वभाव तथा सौवले रंग का होगा। इसकी वाणी कठोर तथा कर्कश होगी। विद्या लाभ सामान्य रहेगा तथा बुद्धि भी कष्टजो होगी। जीवन में कभी वाजल हो जाने की संभावना भी है। वर्ष १८, २३, २५ अथवा २७ में विवाह होगा संभव है। स्त्री से पूर्ण दाम्पत्य-प्राप्त होगा तथा वह सहयोग करने वाली सिद्ध होगी, जबकि सन्तानों के जातक को भास (भय) मिलेगा। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी का लाभ प्रबल होगा। वर्ष २१, २३, २५, २७, २८, ३३, ३५, ३७, ४१, ४५, ४८, ५१, ५३ तथा ५७ आर्थिक दृष्टि से हितकर। एवं व्यवसाय होने वाले लाभ प्रबल होंगे। वर्ष २४ आर्थिक-दृष्टि से चिन्ता कायम रहेगा। वर्ष १२, २६, ३८ तथा ६२ स्वास्थ्य की दृष्टि से चिन्ता जागक होंगे। स्वजन-सम्बन्धियों की अपेक्षा जातक को मित्रों से मोह-लहने, प्राप्ति होगा। माता-पिता से संबंध सामान्य होंगे। धर्म-कर्म की प्रति आस्था बनी रहेगी।

(५४८) - इस हर्ष-कुण्डली में जन्म ग्रहण करने वाला मुख्य नाटे कद तथा सौवले रंग का एवं दृष्टि से स्वभाव वाला होगा। यह उत्प्रेक, आलसी तथा सनकी भी होगा, फलतः जीवन में उन्नति के अवसर रहेगा रहेगा। विद्या-लाभ मध्यम केनी का होगा। विवाह २४, २६ अथवा २८ में वर्ष में संभव है, यन्तु दाम्पत्य प्राप्त मध्यम कोटि का होगा, क्योंकि स्त्री से विचारों का ताल-मेल नहीं बैठेगा, सन्तान का प्राप्त उन्नत रहेगा, यन्तु पुत्रों की अपेक्षा कन्याओं की संख्या अधिक होगी। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी अधिक लाभ प्रबल सिद्ध होगी। वर्ष २६, २८, ३०, ३४, ३८, ४०, ४२, ४६, ५०, ५४ तथा ५८ वर्ष तक लाभ में उन्नति कायम अथवा आर्थिक-लाभ देने वाले होंगे। वर्ष १३, ४३ तथा ५८ स्वास्थ्य के लिए चिन्ता जागक रहेगे। आर्थिक-स्थिति अच्छी रहेगी तथा आनंदी के मोह एक से अधिक रहेगे। माता का अल्प प्राप्ति होगा। भूमि तथा भवन का प्राप्त उदलब्ध होगा। जीवन सुख से बीरेगा।

(५४८) - इस जन्म कुण्डली में शरीर चमकाने का काम सुदृढ़ नोटे कर, दुर्बल शरीर, संवले रंग, शान्त स्वभाव तथा कमजोर बुद्धि का होगा। इसे मतिरुद्ध सम्बन्धी रोग (पागलपन जन्म) होगा भी सम्बन्धी भाइयों की अपेक्षा बहनों की संख्या अधिक होगी। विवाह का लाभ अच्छा होगा। विवाह २०, २४ अथवा २६ के वर्ष में होगा सम्बन्धी पत्नी सुशीला, सुन्दरी तथा सुशिक्षिता होगी। दाम्पत्य-सुख उत्तम बढा रहेगा तथा सन्तान का सुख भी अच्छा होगा। पुत्र-लेखाभावी होंगे। अवसाध की अपेक्षा नौकरी अधिक लाभप्रद होगी तथा आपदनी के जोर एक से अधिक होंगे। कारणः आर्थिक - शिष्टाति सुदृढ़ बनी होगी। वर्ष २२, २६, २८, ३०, ३४, ३८, ४०, ४३, ४६, ५०, ५२, ५४ तथा ५८ अवसाध में उत्तरी काक सिंह होंगे। वर्ष २५ आर्थिक-निन्ता काक होगा तथा वर्ष ३, ११, २७, ५८ का ६२ स्वास्थ के लिए हाकिम रहेंगे। आयु पूर्ण (दीर्घ) होगी। निजी मकान, वाहन आदि का योग बढा रहेगा कुल मिलाकर यह जातक सुखी-जीवन व्यतीत करेगा।

(५५०) - इस जन्म कुण्डली में उत्तम हुआ शिशु हल्के (संवले रंग का), लम्बे कद तथा हल-डुल शरीर का अल्पत स्वामिभारी होगा। यह स्वभाव से लाटरी तथा परीक्षणी भी होगा। बुद्धि अल्पत होगी तथा विद्या का श्रेष्ठ लाभ होगा। यह एक से अधिक भाषाओं का विद्वान् तथा सुनां निधि लेने वाला होगा। विवाह २१, २५, २७ अथवा २८ के वर्ष में होगा सम्बन्धी स्त्री मनोयुक्ता, सुन्दरी तथा परिपक्व होगी। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहेगा तथा स्त्री से आर्थिक-लाभ भी मिलेगा। सन्तानों में पुत्रों की संख्या अधिक होगी तथा उनसे सुख भी मिलेगा। आर्थिक-शिष्टाति बहुत अच्छी रहेगी तथा धर्म, भवन, वाहन आदि के सुख प्राप्त होंगे। वर्ष २३, २५, २७, २८, ३१, ३५, ३७, ३८, ४३, ४७, ४८, ५१, ५५ तथा ५८ अवसाध के लिए उत्तरी काक सिंह होंगे। वर्ष १६, २८, ४० तथा ६२ स्वास्थ के लिए चिकित्सक रहेंगे। यह जातक अनुशासन-पिण्ड तथा दुष्कृत्य करने वाला होगा। जीवन सुख पूर्वक बीतेगा। आयु दीर्घ होगी।

(५५१) - इस जलकुण्डली में जल गहरा करने वाला मुख्य लम्बे शरीर, सुन्दर नाक-तन्त्रा, उन्नत ललाट तथा गेहुआ रंग वाला होगा। साहसी तथा परीक्षणी होने के साथ ही यह स्वभाव से अग्रेसर भी होगा। शक्तिक्रान्त धातु का अंगरे-रंगे या अमरादा रहना उसे रुचिका रहेगा। पालु इसके साथ ही यह स्थायकता एवं न्याय-प्रिय भी होगा। विष्णु का श्रेष्ठ लाभ होगा। विवाह २१, २४, २६ अथवा २८ वर्ष की आयु में पश्चिम दिशा की ओर से होगा तथा पत्नी सुन्दरी, सुशीला एवं कुशल करी होगी, कलत्र: दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहेगा। पुत्रों का भी श्रेष्ठ सुख प्राप्त होगा। २२ वर्ष की आयु से आग्नेयध प्रारंभ होगा तथा २२, २४, २६, २८, ३०, ३४, ३६, ३८, ४२, ४६, ५०, ५४, ५८ तथा ६० वें वर्ष आर्थिक-दृष्टि से उत्तरी काक एवं २५ वें वर्ष चित्राकाक सिद्ध होंगे। वर्ष १५, २१, ३३, ४१ तथा ५८ स्वास्थ के लिए हानिकारक रहेंगे। शक्ति-अवन तथा वाहन का विशेष सुख मिलेगा तथा आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ करी होगी।

(५५२) - इस सूर्यकुण्डली वाला जातक लम्बे शरीर वाला, दृष्ट-दृष्ट, सौन्दर्य रंग का तथा अत्यन्त साहसी होगा। यह विपरीत-परिस्थितियों को भी अनुकूल बना लेने में सक्षम सिद्ध होगा। इसके शत्रु गिनता पराजित होते रहेंगे। विष्णु का श्रेष्ठ लाभ होगा। विवाह २०, २४, २६ अथवा २८ वर्ष की आयु में होगा। (संभव है) पत्नी मनेउकुला, सुन्दरी तथा सुदृढ़िणी होगी, कलत्र: दाम्पत्य-सुख उत्तम रहेगा तथा सन्तान-सुख भी अच्छा रहेगा। यह तीव्र बुद्धि वाला, धार्मिक कर्तों में अभिरुचि रखने वाला, राज्य से सम्मानित तथा ठाठ-बाट से रहने वाला होगा। जीवन में आर्थिक-असन्तुलन बगा रहेगा, तथाकि कोश भी कार्य-धन की कमी के कारण नहीं लगेगा। वर्ष २२, २४, २६, २८, ३०, ३४, ३६, ३८, ४२, ४४, ४६ तथा ५० आर्थिक-दृष्टि से उत्तरी काक रहेंगे तथा वर्ष ३३ एवं ४२ स्वास्थ के लिए चित्राकाक सिद्ध होंगे। परीवारी जनों तथा पाला-पिला से अच्छे संबंध रहेंगे तथा धार्मिक जीवन भी बना रहेगा।

(५५३) - इस सूर्य-कुण्डली में जन्म लेने वाला मनुष्य मध्यम-कद, सुका नाक-तन्हा तथा गौर वर्ण वाला सादसी प्रकृति का होगा। यह शरीर से कुछ दुर्बल भी दिखाना देगा। बाल्यावस्था में रोगादि की खबर ना अधिक रहेगी। यह योजनाबद्ध कार्य में रुचि लेने वाला, स्पष्टवादी तथा खुले कवित्व का होगा। विलासिता तथा मनोरंजन के साधनों में इसकी विशेष रुचि बनी रहेगी। यह किसी के निपन्त्रण को स्वीकार नहीं का सकेगा, अतः या तो नौकरीपों को छोड़ना रहेगा अथवा व्यवसाय को ही इसके हित-हित का खर्च बड़ा-बड़ा होगा, अतः धन का ऐन्ध अधिक नहीं का सकेगा। विद्या का प्रेम उत्तम रहेगा। सन्तान-प्राप्त भी अच्छा रहेगा। विवाह २४, २६ अथवा २८ वर्ष की आयु में होगा। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा मनोरुद्धता होगी। वर्ष २२, २४, २६, २८, ३०, ३२, ३४, ३६, ३८, ४०, ४२, ४४, ४६, ४८, ५० तथा ५२ व्यवसाय में उत्तमि काक रहेंगे। मरुतों से किसी प्रकार का सुख-सुहोता नहीं मिल सकेगा।

(५५४) - इस सूर्य-कुण्डली में उत्पन्न हुआ बालक हठ-पुष्ट शरीर का, गौर वर्ण, प्राक्ता बाली, पीकरी तथा सादसी होगा। स्वभाव से कुछ चपड़ी भी होगा। व्यावहारिक होने दुष्परी करी-करी अपने से बड़ा होकर अधिष्ठान का परीचय दे बैठेगा। इसके अन्तः विश्वास की मात्रा अत्यधिक होगी। विद्या मध्यम स्त्रेणी की प्राप्त होगी। विवाह २९, ३२, ३६ अथवा बूट वे वर्ष में होगा। पत्नी सुन्दरी तथा पति से कुछ अधिक लम्बी होगी। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहेगा। सन्तानों में कन्पारे अधिक होगी। व्यवसाय में सफलता नहीं मिलेगी। नौकरी लाभ प्रद (होगी)। वर्ष २३, २५, २७, ३१, ३३, ३५, ३७, ४३, ४५, ४७, ४९, ५१ तथा ५५ आर्थिक दृष्टि से उत्तमि काक रहेंगे। वर्ष ३५, ४० तथा ४५ स्वा-स्व के लिए अहितकर सिद्ध होंगे। बवाली जैसा कोई रोग होता संभव है। आर्थिक-स्थिति मध्यम रहेगी, तथापि आर्थिक-लाभ के अवसा प्राप्त होते (होंगे)। जीवन सामान्यतः सुखी व्यतीत होगा।

(५५५) - इस जन्माङ्क-चक्र में देह-प्राण कोने वाला मनुष्य जीवर्ण, मुकुट-स्वात्मवाच-तथा कोपी-स्वभाव का होता है। इसकी बुद्धि अत्यन्त तीव्र होती है, फलतः विष्णु का भी चचेष्ट लाभ होता है। विवाह २१, २५, २७ अथवा २८ वर्ष की आयु में होता है एवं पत्नी सौन्दर्य होती, लम्बे कद की तथा अग्राङ्ग स्वभाव की होती है, तथापि दाम्पत्य-सुख अच्छा नहीं रहता। सन्तान-सुख भी अच्छा रहता है। पुत्र की अपेक्षा कन्या सन्तान अधिक होती है। ५२ वां वर्ष स्त्री के लिए कष्ट-प्रद सिद्ध होता है। वर्ष २३, २५, २७, २८, ३१, ३७, ३८, ४३, ४८, ५१, ५३ तथा ५५ अवस्था के लिए उल्लिखित कष्ट होते हैं। ६४ वां वर्ष स्वस्थ के लिए उत्कृष्ट सिद्ध होता है। सगाई का सुख ३० वर्ष की आयु में प्राप्त होता है तथा यदि एवं सगाई की उपलब्धि भी होती है। आसुरी के श्रेष्ठ एक से अधिक होते हैं, अतः आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है। समुदाय-पक्ष तथा स्त्री-पक्षी धन का लाभ होता है। आकर्षक-लाभ के अवसर भी मिलते रहते हैं।

(५५६) - इस जन्माङ्क-चक्र में आग्नि-प्राण कोने वाला बालक जीवर्ण, लम्बे कद तथा बलिष्ठ शरीर का एवं कोपी-स्वभाव का होता है। विष्णु का अच्छा लाभ होता है। विवाह २१, २५, २७ अथवा २८ वर्षों में होता है तथा स्त्री सुन्दरी एवं सुशीला होती है। दाम्पत्य-जीवन सुख से कीर्तना है। वर्ष २३, २५, २७, २८, ३१, ३७, ३८, ४३, ४५, ४८, ५१, ५३, ५५ तथा ६१ अवस्था के उत्कृष्ट फल होते हैं। वर्ष ६६ आर्थिक दृष्टि से अधिक स्वाध रहता है। स्वर्च बड़ा-चढ़ा रहने के कारण अर्ध-कोष में कमी रहती है, तथापि जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होता है तथा कोई काम रुकना नहीं है। सन्तानों में कन्याओं की संख्या अधिक रहती है। धर्म, प्रकाश एवं वादनादि की उपलब्धि भी होती है। अवस्था-क्षेत्र में लाभ की बुद्धि तीव्र होती है, अतः वह अपने निम्न लक्ष्यनों पर ध्यान करता रहता है। वर्ष ५२ तथा ६४ स्वास्थ्य के लिए उत्कृष्ट सिद्ध होते हैं, तथापि जनक सम्पत्ति-हीन रहकर प्रणाम्य प्राप्त करता है।

(५५७) - इस जन्माङ्क - चक्र में उत्पन्न हुआ मनुष्य हल्के साँवले रंग का, स्नायु एवं सुन्दर, मध्यम कद एवं कुछ पतले शरीर वाला होता है। विवाह २१, २५ अथवा २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशील तथा लम्बे कद वाली होती है। दाम्पत्य - सुख उत्तम रहता है। सन्तान - सुख उत्तम होता है तथा पुत्रों की अपेक्षा कन्याएँ अधिक होती हैं। आर्थिक - व्यय बड़ा-बड़ा होता है, क्योंकि उसके रहन-सहन का खर्च अधिक होता है। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी में विशेष रुचि रहती है, २५ वें वर्ष से आशुमेदम प्राप्त होता है। वर्ष २५, २७, २८, ३१, ३५, ३७, ३८, ४१, ४३, ४५, ४८, ५१, ५३ तथा ५५ व्यवसाय अथवा आर्थिक - दृष्टि से उत्तमि कारक सिद्ध होते हैं। ४५ वां वर्ष आर्थिक - दृष्टि से कष्ट उद रहता है। ३५ वें वर्ष में स्त्री को कष्ट होता है तथा ५८ एवं ६४ वां वर्ष स्वयं के स्वास्थ्य के लिए चिन्ताजनक रहता है। घराना के स्वभाव से कोपी होता है। भूमि - भवन आदि के सुख उपलब्ध होने हैं।

(५५८) - इस जन्माङ्क - चक्र में उत्पन्न होने वाला बालक मोटे कद का, गौरवर्ण, शान्त स्वभाव का, कर्मठ, साहसी तथा कायिक प्रवृत्ति का होता है। रात-दिन जीवित करते रहता इसके स्वभाव में होता है। विवाह क्षेत्र में कमजोरी रहती है तथा अधजन-काल में हकाबटे आती रहती है। विवाह २२, २६ अथवा २८ वें वर्ष में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनेनुबूला होती है, फलतः दाम्पत्य - सुख उत्तम बना रहता है। कायिक स्वभाव वाला यह जातक नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय करना अच्छा समझता है। वर्ष २३, २४, २६, २८, ३०, ३२, ३६, ३८, ४०, ४४, ४८, ५०, ५२ तथा ५६ व्यवसाय - पक्ष में उत्तमि कारक सिद्ध होते हैं। वर्ष २८, ३५ तथा ५८ स्वयं के स्वास्थ्य के लिए चिन्ताजनक रहते हैं। स्त्री जातः रुग्ण बनी रहती है। मकान तथा विवाह का सुख मध्यम रहता है तथा आर्थिक - स्थिति भी मध्यम ही रहती है। जीवन में जन्तान - दानि के अवसर भी आते हैं। सन्तान से अपेक्षित - सुख नहीं मिलता। आयु पूर्ण होती है।

(५५८) - इस जन्माङ्क - चक्र में शरीर गृहण करने वाला मनुष्य लम्बे कद, दुर्बल शरीर व सँवले रंग का होता है तथा उसका चेहरा कुछ लम्बाई लिए रहता है। यह स्वभाव से दहीला तथा घोर स्वाभिमानी होता है एवं कठिन - से - कठिन परिस्थितियों में भी विचलित नहीं होता। यह संकटों का दृढ़ता पूर्वक सामना करता है। विपरीत - लिंग के प्रति इसका आकर्षण गहरा होता है। इससे 'से' कार्य निकालने की इसके अद्भुत क्षमता होती है। मनुष्यी होने के साथ ही यह कोपी स्वभाव का भी होता है। विज्ञा क्षेत्र में कुछ रुकावटें आती हैं। विवाह २२, २६, अथवा २८ वें वर्ष में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा सुविक्षिता मिलती है। पत्नानो 'से' पुत्र तथा कन्येों बावू होती हैं एवं उनसे सुख भी मिलता है। वैदिक भवन सम्पत्ति का लाभ होता है तथा अग्रे सुखों की उपलब्धि के साथ ही आर्थिक - स्थिति मजबूत बनी रहती है। वर्ष २४, २६, २८, ३०, ३२, ३६, ३८, ४०, ४२, ४४, ४८, ५०, ५२ तथा ५४ आर्थिक उन्नतिकामक होते हैं। उन्न - विकास लभ्य है।

(५६०) - इस सूर्य - कुण्डली में उत्पन्न होने वाला मनुष्य लम्बे शरीर का, दृष्ट - दुष्ट, धोले लम्बे बालों वाला, गिल्लते हुए गों वण का होता है। इसके चेहरे पार्श्वकान लक्ष्मण गीवली रहती है। विज्ञा - क्षेत्र में पक्षि सम्ब - लता प्राप्त होती है। विवाह २७ वर्ष की आयु के लभ्य है। पत्नी वनसी, सँवली तथा कुछ दही स्वभाव की होती है तथा दाम्पत्य - सुख में कुछ कमी रहती है। उच्चतम सन्तान पुत्र होती है तथा ३४ वां वर्ष सन्तान के लिए कष्ट काक होता है। सन्तान - सुख अच्छा बका रहता है। ३५ वां वर्ष स्त्री के लिए कष्ट काक होता है। आर्थिक - दृष्टि से मध्यम स्थिति बनी रहती है, पानु किसी भी काम के लिए धन की कमी अनुभव नहीं होती। श्रमि - सन्तान कदि का योग भी बनता है, पानु उनके नष्ट हो जाने के अवसर भी आते हैं। वर्ष २५, २७, २८, ३१, ३३, ३६, ३८, ४१, ४३, ४८, ५१ तथा ५७ व्यवसाय एवं आर्थिक स्थिति के लिए उन्नतिकामक होते हैं। ६० वां वर्ष चक्र के लक्षण के लिए काष्ट रहता है। आयु मध्यम होती है।

(५६१) - इस सूर्य-कुण्डली में उत्पन्न बालक साँवले रंग का, मध्य कद, छोटे हाँत का कोची स्वभाव वाला होता है। यह स्वभाव से अमीर तथा सन्तोषी प्रकृति का भी वादा करता है। विष्णु का उत्तम लाभ प्राप्त होता है तथा विवाह २३ अथवा २७ वें वर्ष में सम्भव है। पत्नी से अधिक सम्पन्न एक साथ नहीं मिलता। सन्तानों में पुत्रों का सुख अच्छा मिलता है। यह जन्म सामाजिक हृदियों को न मानने वाला तथा वाक्पटु होता है। माता का सुख उत्तम नहीं रहता। भूमि-अवन आदि का निभी भोग रहता है तथा आर्थिक-गिराविल सन्तोष जगक बनी रहती है। यन्त्रादि अर्थ-संचय अधिक नहीं होता। वर्ष २५, २७, २८, ३१, ३३, ३७, ३८, ४१, ४३, ४५, ४८, ५१, ५३ तथा ५५ अवसर में उत्कृष्टि का क रहते हैं तथा ३० वें वर्ष चिन्ता जगक रहता है। वर्ष २२, ३६, ५० तथा ६० स्वास्थ्य के लिए दानिका हिंदू होते हैं। काष्ठ धर्म है। पिता से सामान्य सुख-सहयोग प्राप्त होता है तथा जीवारी जनों से भी सम्बन्ध धीरे धीरे है।

(५६२) - इस सूर्य-कुण्डली में जन्म गुरु का काले बाला मनुष्य गौर वर्ण लम्बे कद का, स्वास्थ्य-शरीर एवं दूरदर्शी होता है। वाक्पटु होने के कारण यह दूसरों को प्रभावित करने की क्षमता भी रखता है। सीछी बातें काले अपना काम निकालने में यह होशियार होता है, जैसे यह स्वभाव का दही भी होता है। विष्णु का लाभ सन्तोष जगक होता है। विवाह २३ अथवा २७ वें वर्ष में सम्भव है। पत्नी सुदृढ़ तथा कोची स्वभाव की होती है। पुत्रों द्वारा आर्थिक-लाभ के अवसर प्राप्त होते हैं तथा सन्तान-सुख उत्तम रहता है। भूमि तथा मकान का सुख उद्योग रहता है तथा ३० वर्ष की आयु में वाहन का सुख भी मिलता है। वर्ष २५, २७, २८, ३१, ३३, ३५, ३७, ३८, ४१, ४३, ४५, ४८, ५१, ५३ तथा ५५ में अवसर की उत्कृष्टि होती है। अर्थ-आर्थिक-लाभ होता है। माता-पिता से सामान्य सुख-सहयोग मिलता है। गरीब-वहिन तथा जीवारी जनों से कोई विशेष सहयोग प्राप्त नहीं होता। आदमी के जोत एक से अधिक बने रहते हैं।

(५६३) - इस जन्तुलिंग में उत्पन्न हुआ व्यक्ति सुदृढ़ शरीर, उन्नत वक्षःस्थल, मध्यम कद तथा सौँवले रंग का होता है तथा स्वभाव से कोपी एवं सारसी प्रकृति का होता है। प्रत्येक विषय परीक्षण के अपने अनुकूल बताने में सक्षम होता है तथापि आत्मी - स्वभाव का होने के कारण उन्नति के अनेक अवसर भी हाथ से निकल जाते हैं। विष्णु का क्षेत्र कमजोर रहता है। विवाह २१, २५ अथवा २८ वें वर्ष में होता है तथा पत्नी सौँवली और कोपी स्वभाव की मिलती है। दायाल - सुख उत्पन्न करता है। सन्तान - सुख प्राप्त रहता है। वर्ष २३, २७, २८, ३१, ३३, ३५, ३८, ४१, ४३, ४७, ५१-५३ तथा ५५ अवसर से उन्नति का एक तथा वर्ष ५६ एवं ६२ स्वास्थ्य के लिए चिन्ताजनक सिद्ध होते हैं। ३४ वें वर्ष में सखी तथा धूमि का योग बनता है। आकस्मिक - लाभ के अवसर प्राप्त होकर होंगे (आर्थिक - स्थिति मध्यम बनी रहेगी। उदा - विकास की योग्यता रहेगी तथापि आयु पूर्ण प्राप्त होगी।

(५६४) - इस जन्तुलिंग चक्र में उत्पन्न हुआ प्राणी गेहुआ रंग का, बलिष्ठ शरीर वाला, संशयालु प्रकृति तथा आत्मी स्वभाव का होता है। आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं। स्वयं के प्रति पूर्ण हृष से ईमानदार तथा मित्रों के प्रति समर्पण की भावना से युक्त होगा। भाग्यशक्ति कुशल होगी तथा धूमि द्वारा आर्थिक - लाभ के अनेक अवसर प्राप्त होंगे। सखी आदि का पूर्ण सुख भी होगा। विष्णु क्षेत्र कुछ हकावों के साथ मध्यम होगा। विवाह २५ अथवा २८ वर्ष की आयु में होता सम्भव है। पत्नी का सुख मध्यम रहेगा तथा पुत्रों द्वारा भी कोई विशेष लाभ होगा सम्भव नहीं है। आयु का २७ वां वर्ष आर्थिक - उन्नति की दृष्टि से लाभप्रद होगा। वर्ष २३, २७, २८, ३१, ३५, ३८, ४३, ४५, ४७, ५१ तथा ५५ अवसर से उन्नति का एक सिद्ध होंगे। अवसर का आर्थिक - लाभ के अनेक अवसर प्राप्त होंगे। आमदनी के अनेक स्रोत बने होंगे। शरीर स्वास्थ्य: स्वस्थ बना रहेगा तथा आयु पूर्ण होगी।

(५६५) - इस लम्बाई, चक्र में उत्पन्न मनुष्य गौचर, गोल चेहरे तथा लुँकाले बालों वाला एवं उम्र २५ वर्षा स्थल का होगा। यह साहसी, ईमानदार तथा न्याय-प्रिय भी होगा। विवाह का लाभ कुछ रुकावटों के साथ होगा। दाम्पत्य एवं सन्तान-प्राप्त मध्यम रहेगा। वर्ष २३, २५ अथवा २७ में विवाह होना संभव है। आर्थिक - हरि मजदूर (हेरी) तथा धन का संग्रह भी वर्षों का लाभ में होगा। वर्ष २३, २७, २९, ३१, ३३, ३५, ३९, ४३, ४५, ४७, ५१, ५३ तथा ५५ अवसर में उत्तम कमाई सिद्ध होगी। वर्ष ३४ में मकान का योग बनना है। जातक की बुढ़ि अत्यन्त तीव्र होगी तथा अवसर के क्षेत्र में वर्षों का उन्नति होती (होगी), वर्ष ३० आर्थिक हरि से कुछ चिन्ता का एक रहेगा। भूमि, भवन तथा लवाही का लेख प्राप्त होगा। वर्ष १४, २६, ५० तथा ६६ स्वस्थ की हरि से हानि सिद्ध होगी। माता-पिता तथा माई-बहिन से लाभ-सहयोग प्राप्त होगा। समाज में मान-पुतिष्ठा की वृद्धि होगी तथा पूजा-पूजा प्राप्त होगी।

(५६६) - इस रूप-कुण्डली में उत्पन्न हुआ बालक गौचर, लम्बे शरीर का, उम्र २५ वर्षा स्थल वाला तथा लुँकाले बालों वाला होगा। साहस तथा आत्म विश्वास के कारण कठिन-से-कठिन परिस्थितियों का सामना करने में लक्ष्म होगा। विवाह २१, २५ अथवा २९ वर्ष की आयु में होगा। दाम्पत्य-प्राप्त उत्तम तथा सन्तान-प्राप्त मध्यम रहेगा। वर्ष २३, २७, २९, ३१, ३३, ३५, ३९, ४३, ४५, ४७, ५१, ५३ तथा ५५ अवसर के लिए उत्तम कमाई सिद्ध होगी। वर्ष ३० आर्थिक-हरि से चिन्ता उत्पन्न रहेगा। वर्ष १४, २६, ५० तथा ६० स्वस्थ के लिए चिन्ता उत्पन्न रहेगी। भूमि तथा मकान आदि के द्वारा भी आर्थिक-लाभ प्राप्त होगा। आर्थिक-हरि से जीवन सशक्त बनेगा। भूमि तथा मकान का लाभ ३४ अथवा ४६ वर्ष की आयु में मिलने की संभावना है। नौकरी की अपेक्षा अवसर में विशेष रुचि रहेगी तथा उसी में लाभ भी होगा। माता-पिता, माई-बहिन आदि से सामान्य मोह-सम्बन्ध रहेंगे।

(५६७) - इस सूर्य-कुण्डली में उत्पन्न जातक का शरीर कुछ सुन्दर होगा का गौरवर्ण, मध्यम कद, सुदृढ़, उन्नत ललाटे तथा नीचे नाक-तन्त्रा वाला होगा। यह स्वभाव से शक्ति-पिब होगा तथा अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए शत्रु-शत्रु-अग्रसर होना रहेगा। विद्या का लाभ कुछ रुकावटों के साथ होगा। विवाह २२, २६ अथवा ३० वर्ष की आयु में होगा संभव है। स्त्री सुन्दरी, सुशीला तथा सुवर्णवर्णी होगी। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहेगा, सन्तान-सुख भी अच्छा प्राप्त होगा। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय के पक्ष में होगा। वर्ष २२, २६, २८, ३०, ३२, ३५, ४०, ४२, ४४, ४६, ४८ तथा ५४ आर्थिक-उन्नति का एक सिद्धि होंगे। ३९ वीं वर्ष आर्थिक-कष्ट का एक रहेगा। मरणों से पूर्ण रहने पर प्राप्त होगा तथा माना-पिता का सम्मान सुख-पितृ होगा मिलेगा। हवारी किले बनाना इसकी उच्छृंखल में होगा, तथापि पोषण को में सफलता भी प्राप्त होगी। मनुष्य होने के कारण कोणात्मा पूर्ण कर्णों से विभक्त रहेगी। आर्थिक-स्थिति मजबूत होगी। अन्तिम जन्म में हृदय-रोग की संभावना है।

(५६८) - इस सूर्य-कुण्डली में जन्म लेने वाला मनुष्य दुबले शरीर का, नारायण, गौरवर्ण तथा सुदृढ़ होगा। राजनीतिक-क्षेत्र में इसे विशेष सफलता प्राप्त होगी। न्याय तथा ईमानदारी का पालन होगा तथा अपने पीछे का आर्थिक-स्थिति को मजबूत बनायेगा। विद्याधन में कुछ रुकावटों के साथ सफलता प्राप्त होगी। चैतन्य-सम्पत्ति का केवल लाभ होगा। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी के क्षेत्र में अधिक सफल रहेगा तथा पदोन्नति भी प्राप्त कला-चला जायेगा। विवाह २२, २६ अथवा ३० वर्ष की आयु में होगा संभव है। दाम्पत्य-सुख सामान्यः उत्तम रहेगा सुखी वृत्ति के साथ एकलाना नहीं रहेगी। दोनों के विचारों में भिन्नता बनी रहेगी। सन्तान का सुख मध्यम रहेगा। वाल्यावस्था में आर्थिक-कठिनाईएँ होंगी। युवा-वस्था से भाग्यवति होगी। वर्ष २६, २८, ३०, ३२, ३५, ४०, ४२, ४४, ४६, ४८ तथा ५० व्यवसाय में उन्नति का एक सिद्धि होंगे। २७ वीं वर्ष में चार लगने की संभावना है। बुद्धि तीव्र होगी तथा धर्म वृद्धि बनी रहेगी।

(५६८) - इस जन्तुर्लोक में उत्पन्न हुआ बालक स्थूल शरीर, नोटे कद का, सौंवले रंग का, कुंभी, ईर्ष्यालु तथा बदले की भावना रखने वाला होगा। व्याधता, आलस्य तथा दूसरों को धोखा देने की प्रवृत्ति उसे अधिक पार्श्व पायेगी। आर्थिक - स्थिति मध्यम होगी। रोगों के प्रति वह चिन्तित बना रहेगा, पालु आर्थिक - लाभ के अवसर प्राप्त होते रहेंगे। विद्याध्ययन लकावटों के साथ पूरा होगा। विवाह २७ अथवा ३१ वर्ष की आयु में होना संभव है। स्त्री सौंवले रंग की तथा कुंभी स्वभाव की होगी। दाम्पत्य सुख मध्यम रहेगा। उत्तान - सुख अच्छा होगा तथा पुत्रों द्वारा आर्थिक - लाभ भी होगा। ३१ वां वर्ष स्त्री के लिए काष्ठ - काक तथा ३२ एवं ६३ के वर्ष स्वर्ण के स्वात्स के लिए चिन्ताजनक होंगे। वर्ष २३, २४, ३१, ३३, ४३, ४४, ४८, ५५ तथा ५७ अवसाय के लिए उलटि काक सिद्ध होंगे। वर्ष २८ आर्थिक - स्थिति चिन्ताजनक रहेगा। अवसाय की अपेक्षा गौरी में अधिक लाभ होगा। आर्थिक - लाभ के अवसर भी मिलेंगे।

(५७०) - इस जन्तुर्लोक में उत्पन्न हुआ मनुष्य गौ वर, लम्बे कद का तथा शान्ति - प्रिय होगा। न्याय, दया तथा ईमानदारी के प्रति इसका विशेष प्रकाश होगा। अवसाय के क्षेत्र में इसकी बुद्धि अत्यन्त तीव्र होगी। पीछा तथा दूर दक्षिण इसका विशिष्ट गुण होगा। विद्या - क्षेत्र मजबूत होगा तथा सन्तान - सुख भी अच्छा मिलेगा। विवाह २३ अथवा २७ वर्ष की आयु में होना संभव है। पत्नी सुन्दरी, सुशील, पालु कुदृष्टी स्वभाव की होगी तथा दाम्पत्य - जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा। भाग्य प्राप्ति प्राप्त देता रहेगा, अतः आर्थिक - स्थिति मजबूत होगी। धर्म तथा ममान आदि का सुख विशेष रूप से उपलब्ध होगा। एक ही अधिक सन्तान होने भी संभव है। वर्ष २३, २४, २८, ३१, ३३, ३४, ३७, ३८, ४३, ४४, ४७, ४८, ५१ तथा ५५ अवसाय अथवा आर्थिक - क्षेत्र में उलटि काक सिद्ध होंगे। वर्ष ५८ तथा ६२ स्वात्स के लिए चिन्ता काक रहेंगे। बुद्धि द्वारा धन - लाभ के अनेक अवसर प्राप्त होते रहेंगे।

(५०१) - इस जलकुण्डली में जल लेने वाला सुदृढ़ हल्के साँवले रंग का, स्थूल - शरीर, गंभीर तथा कोपी स्वभाव वाला, साहसी तथा अत्यन्त परीक्षणी होगा। विद्रोह की भावना इसके भीतर अधिक मात्रा में दिखी रहेगी। ऐसे व्यक्ति अवलम्बी भी होते हैं, जो समय पड़ने पर चींठ भी छूले तथा काम निकाल लगे पर आँखें दिखाता आँसु काढ़ें। ये लोग मित्रता - स्थापित करने में निरुद्ध होते हैं तथा जोड़े बंध मोते की भीति आँखें बदल लेते हैं। विष्णु का लाभ कुछ रुकावटों के साथ होता है। विवाह २२, २४ अथवा २८ वें वर्ष में होता है। पत्नी सुखी, सुश्रीला तथा सुविशिष्टा मिलती है। दाम्पत्य - सुख अच्छा रहता है। सन्तान - सुख प्रफुल्ल सागर में उदलब्ध होता है। कला की अपेक्षा पुत्रों की सेवा अधिक होती है। वर्ष २२, २६, २८, ३०, ३२, ३४, ३८, ४२, ४४, ४६, ५०, ५४ तथा ५६ आर्थिक - दृष्टि से उन्नति काक होते हैं तथा वाल्पावस्था स्वास्थ के संबंध में चिन्ताजनक रहती है। आर्थिक - स्थिति मजबूत रहती है। सन्तान का माहों का सुख सहयोग मिलता है।

(५०२) - इस जलकुण्डली में उदमल बालक साँवले रंग का, स्थूल - शरीर, साहसी, परीक्षणी तथा विद्रोही स्वभाव का होता है। धैर्य तथा साहस के बल पर कठिनतम परीक्षाओं का सामना करने में सक्षम रहता है। यह स्वभावतः विद्रोही भी होता है तथा कुटुम्बी भी रहता है। विवाह २३, २७ अथवा ३० वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुखी तथा सुश्रीला होती है एवं दाम्पत्य - सुख उत्तम प्राप्त होता है। सन्तान - सुख भी अच्छा रहता है तथा पुत्रों द्वारा लाभ प्राप्त होता है। विष्णुधर्म में भी सफलता प्राप्त होती है। जीवन के २५, २९, ३१, ३३, ३७, ३९, ४१, ४३, ४५, ४९, ५१, ५३, ५५ तथा ५६ वें वर्ष आर्थिक - लाभ प्राप्त होते हैं। आर्थिक - स्थिति मजबूत बनी रहती है तथा आकर्षक - लाभ के अनेक अवसर उदलब्ध होते रहते हैं। वाल्पावस्था स्वास्थ के प्रति संतुल्य नहीं रहती। भूमि - सन्तान का कष्ट का सुख प्राप्त होता है। यह पालक का कष्ट भी होता है तथा दूसरों की बातों पर विषय का लक्ष्य भी उठाता है।

(५७३) - इस जन्माङ्क, चक्र में उत्पत्ति ग्रहण करने वाला मनुष्य गौवर्ण, इकोट शरीर का, भीरु स्वभाव वाला, आत्मसी तथा शान्ति-प्रिय होता है परन्तु अवस्था के लाभ उठाता इसकी विशेषता रहती है विजा का योग अच्छा बनता है विवाह २४ अथवा २८ के वर्ष में होता है। स्त्री सौन्दर्य तथा कोथी स्वभाव की होती है, अतः दाम्पत्य-सुख शुरु पूर्ण बना रहता है पुत्र-सुख तथा सन्तान से सहयोग की प्राप्ति होती है वर्ष २२, २४, २६, ३०, ३२, ३४, ३६, ३८, ४२, ४४, ४६, ५०, ५४ तथा ५६ व्यवसाय के लिए उत्कृष्ट कार्य निरूपित होते हैं। ३० का वर्ष आर्थिक-दृष्टि से चिन्ताकारक रहता है। सामान्यतः आर्थिक-प्रति उत्तम रहती है, पालु स्वर्च बड़े-बड़े होने के कारण धन का संचय अधिक नहीं होता। शक्ति-सम्पन्न आदि के लाभ के लाभ ही उसके बिकाने का योग भी बनता है वैदिक-सम्पत्ति को भी जातक द्वारा हानि पहुँचती है ५६ का वर्ष निजी स्वास्थ्य के लिए विशेष चिन्ताजनक रहता है। सामान्यतः जीवन सुखसे बीता है।

(५७४) - इस जन्मकुण्डली वाला जातक गौवर्ण, लम्बे शरीर का, शान्ति-प्रिय तथा आत्मसी स्वभाव का होता है। दुराची आदमी की सहायता करना तथा छोटे एवं ब्राह्मण के लोगों के लाभ सञ्चयना एवं सहयोग का व्यवहार करना इसके स्वभाव में होता है विजा का सेष्ठ लाभ होता है विवाह २२, २४ अथवा २८ के वर्ष में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मोटेपुच्छा मिलती है, कलातः दाम्पत्य-सुख अच्छा रहता है। सन्तान-प्राप्ति प्रत्येक प्राप्ति होता है शक्ति, भवत तथा सवारी के सुख के असीमा वैदिक-सम्पत्ति का भी सेष्ठ लाभ मिलता है। पुत्रों द्वारा ५० सहयोग एवं सुख प्राप्त होता है वर्ष २२, २४, २६, ३०, ३२, ३४, ३६, ३८, ४२, ४४, ४६, ५०, ५४ तथा ५८ व्यवसाय में उत्कृष्ट कार्य निरूपित होते हैं। वर्ष २६ होने के कारण आर्थिक-प्रति सुदृढ़ बनी रहती है तथा जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होता है।

(५०५) - इस सूर्य-कुण्डली में जलाशय मृदुल गौ वरु, लम्बे शरीर का, हृष्ट-पुष्ट, शक्ति-पिप तथा रहस्यमय स्वभाव वाला होता है। महापुरुष की भाँसा इसे अधिक पाई जाती है। आत्मविश्वास की भी उन्नता (हरी है) माहों की अपेक्षा बहनों की लम्बा अधिक होती है। विद्या-क्षेत्र समुन्नत रहता है, विवाह २१ से २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा सुशिक्षिता होती है। दाम्पत्य-सुख तथा सन्तान-सुख उन्नत रहते हैं। सन्तान से सहयोग तथा भक्त लाभ भी मिलते हैं। वातावरण तथा व्यक्ति को पहिचानने तथा उनके मृदुल आचरण को देखी इसे विशेष क्षमता होती है। इनकी अपेक्षा कमियों अधिक होती हैं। वर्ष २३, २५, २७, २८, ३१, ३३, ३७, ३८, ४३, ४५, ४८, ५१ तथा ५५ आर्थिक उन्नति का काल सिद्ध होते हैं। धूमि, भवन तथा सवारी का सुख प्राप्त होता है। पैरुका-सम्पत्ति का लाभ भी होता है। एक से अधिक स्रोत आयदरी के होते हैं, अतः आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है। आयु पूर्ण।

(५०६) - इस सूर्य-कुण्डली में उत्पन्न बालक गौ वरु, लम्बे तथा बलिष्ठ शरीर वाला एवं कोपी स्वभाव का होता है। छोटे से बचपन में जवाहनाइयों का स्वाभाविक लक्ष्ण है। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय में अधिक सफलता मिलती है। आयदरी के स्रोत एक से अधिक होने के कारण आर्थिक-स्थिति उत्तम बनी रहती है। विवाह २३, २५ अथवा २८ वें वर्ष में होता है। पत्नी मनोबुद्धि, मिलती है। सन्तानों में कला-ओं की लम्बा अधिक होती है। वर्ष २३, २५, २७, २८, ३१, ३३, ३५, ३७, ३८, ४३, ४५, ४८, ५१, ५३, ५५, ५७ तथा ६१ अवसाय में उन्नति का काल सिद्ध होते हैं। वर्ष १२, १८ तथा ६० स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होते हैं। माहों से कोई लाभ अथवा सहयोग नहीं मिलता। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय से अधिक लाभ होता है। आर्थिक-स्थिति मजबूत बनी रहने के कारण ही धूमि, भवन, वाहन आदि का भी पूर्ण सुख प्राप्त होता है। माह-बहनों से सामान्य सिंह-सम्बन्ध रहते हैं तथा जीवन सुख पूर्वक बीतता है।

(५७७) - इस सूर्य-कुण्डली वाला जन्म हल्के पाँवले (गं. मध्यम कद का तथा दुबला शरीर वाला होता है) विद्या तथा बुद्धि में प्रवीण होता है। यह व्यक्ति तथा वातावरण को पहिँचाने वाला तथा समझानुसृत स्वयं को बाल सेते में कुशल होता है। विवाह २३, २५, २७ अथवा २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशिक्षिता तथा मनोबुद्धि मालिने से दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। पुत्र की अपेक्षा कन्याओं की संख्या अधिक होती है। वर्ष २३, २५, २७, २९, ३३, ३५, ३७, ३८, ४१, ४३, ४५, ४७, ५१, ५३, ५५, ५७, ५८ तथा ६१ वर्ष आयु के लिए उत्तमि काक होते हैं। व्यावसायिक-कालों में विशेष रुचि रहती है तथा उसीसे आर्थिक-लाभ होता है। भूमि, गवन, वाहन आदि का पूर्ण सुख प्राप्त होता है तथा माना-धिया से भी आर्थिक-लाभ होता रहता है। आर्थिक-लाभ के अवसर भी प्राप्त होते रहते हैं। माना-धिया तथा मर्त्य-वहिनें से स्नेहपूर्ण सम्बन्ध बने रहते हैं तथा आर्थिक-स्वास्थ्य भी उत्तम बना रहता है। आयु पूर्ण तथा दीर्घ प्राप्त होती है।

(५७८) - इस सूर्य-कुण्डली में जन्मग्रहण करने वाला मनुष्य गौवर्ण, लम्बे कद का तथा क्षान्ति विप्र होता है। स्नेह, लोभ तथा एवं मधुरभाषण आदि लक्षण अधिक मात्रा में पाये जाते हैं। विद्याधन के हका-वहों के साथ सफलता प्राप्त होती है। विवाह २२, २४ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है तथा पत्नी सुन्दरी, सुशिक्षिता एवं कुण्वली मिलती है। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है, पालु पुत्र की को से चिता बनी रहती है। यह दूसरों की सहायता करने वाला तथा अत्यधिक स्वाभिमानी होता है, अर्थात् अधिकारी वर्ग से पटरी नहीं बैठ पाती। व्यवसाय द्वारा आर्थिक-उत्तमि काला है। मरणों से पूर्ण सह-योग प्राप्त होता है। वर्ष २२, २४, २८, ३०, ३२, ३४, ३६, ३८, ४४, ४६, ४८, ५०, ५४ तथा ५६ वर्ष आयु के लिए उत्तमि काक सिद्ध होते हैं। वायु सम्बन्धी विकास होता (भवत है) तथापि आयु दीर्घ होती है। आर्थिक-क्षेत्र में परिसर द्वारा गिनता लक्ष्मणों मिलती रहती है। समाज सेवा में भी यह अग्रणी बना रहता है।

(५७६) - इस जन्म कुण्डली में उत्तम धानक गेहूँ रंग, मधुमकद वाला, मृदुभाषी तथा मित्रता स्थापित करने में कुशाप होता है। इसका वारंवार अपन्त मृदु तथा आनन्ददायक होता है। मित्रों के सहयोग से उत्तम भी जाया जाता है। शत्रुकी तथा बहमी स्वभाव का होने के कारण यह किसी सहसा विश्वास नहीं करता। पल्लु अचनें डालने वाले तथा शत्रुता शत्रु के वालों के यह अच्छा सबक सिखाता है। विष्णुदर्शन में कुछ रुकावट आती है। विवाह २२, २४ अथवा २६ के वर्ष में होता है। पत्नी सौन्दर्य रंग की तथा कोपनी स्वभाव की होती है। सन्तान - पुत्र अच्छा रहता है। स्त्री सुदरी तथा परिपराधर्य होती है, अतः दाम्पत्य - सुख में कमी नहीं रहती। आमदनी के लोभ एक से अधिक होते हैं अतः आर्थिक - स्थिति मजबूत बनी रहती है। वर्ष २२, २४, २६, ३०, ३२, ३४, ३६, ३८, ४४, ४६, ४८, ५०, ५४ तथा ५६ अवसरों में उत्तमिपुत्र होते हैं। ६९ वीं वर्ष स्वस्थ के लिए खराब निह होता है। भूमि, गहन तथा वाहनादिका लाभ मिलता है।

(५८०) - इस जन्म कुण्डली में जन्म गृहण करने वाला मनुष्य गौ वरु, सुका, मधुमकद तथा बल्ले शरीर का होता है। यह दूसरों के प्रति सहाय्य प्रीति एवं परोपकार की भावना रखने वाला होता है। विष्णुका लाभ प्रवेष्ट होता है। विवाह २३, २५ अथवा २७ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री सुदरी, सुमीला तथा शान्त-स्वभाव की होती है, कलातः दाम्पत्य - सुख उत्तम रहता है। सन्तान - पुत्र भी अच्छा जाया होता है। यह सामाजिक निधनों तथा परम्पराओं का कठोरता पूर्वक पालन करता है तथा ईश्वर के प्रति अगाध विश्वास रावता है। रहन - सहन हेतु शर्म प्रणी होता है, अतः आपसी रुचिकता के कारण अधिक धनकी संचय नहीं करता, तथापि आर्थिक - स्थिति सन्तोषजनक बनी रहती है। वर्ष २२, २५, २७, २८, ३३, ३७, ३८, ४१, ४५, ४८, ५१, ५३ तथा ५७ अवसरों तथा आर्थिक उत्तमि करने वाले होते हैं। वर्ष २४ आर्थिक - स्थिति से कष्टका रहता है। जीवन में मजान आदि बन्धों के अवसर भी आते हैं। वर्ष ५६ तथा ६६ स्वस्थ (बाल्य कोते है)

(५८१) - इस छिपे कुण्डली में अमल वाली औरत, मध्यम कद, सुन्दर, लीले नाक - नखशा वाला, मधुरी लीली आँवों वाला तथा आत्मविश्वास का धनी होता है। विष्णु का उत्तम लाभ प्राप्त करता है। विवाह २३, २५ अथवा २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होती है, अतः दाम्पत्य - सुख उत्तम बना रहता है। सन्तान का भी पूर्ण सुख प्राप्त होता है। यह धैर्य, साहस तथा धीर्य के बल पर निराला उन्नति करता जाता है। माता का सुख कम रहता है। भूमि तथा मकान के विषय में भी चिन्ता बनी रहती है। वर्ष २३, २५, २७, २९, ३३, ३७, ३९, ४१, ४५, ४९, ५१, ५३ तथा ५५ के वर्ष व्यवसाय में उन्नति काफिर रहेगा, २४ वें वर्ष आर्थिक - दृष्टि से चिन्ताकाक होता है तथा २८ वें वर्ष से आगे नति होती है। वर्ष १२, ५६ तथा ६२ स्वास्थ्य के लिए चिन्ताजनक सिद्ध होते हैं। केन्द्र तथा दिल से संबंधित रोग होता है। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी अधिक लाभदायक रहती है। पत्नी जहाँ से सम्बन्ध था साक्षात् होते हैं।

(५८२) - इस जन्माङ्क चक्र वाला जानक हल्के सौवले रंग का, लम्बे कदवाला, स्थूल - शरीर तथा कोथी स्वभाव का होता है। यह स्वतन्त्र निष्ठा लेने में प्रसन्न तथा कठिनतम परिस्थितियों में भी स्वयं पर निष्ठा राखने हुए उन्हें अपने अनुकूल बना लेने में लक्ष्म होता है। साहसिक कार्यों में इसकी विशेष रुचि रहती है। विष्णु मध्यम प्राप्त होती है। विवाह २०, २४ अथवा २६ के वर्ष में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा सुशिष्ट होती है, अतः दाम्पत्य - जीवन सुखमय बना रहता है। सन्तान का सुख भी धकेल रहता है। कला सन्तानें कम तथा दुर्लभ सन्तानें अधिक होती हैं। आनंदी के पुत्र एक से अधिक रहते हैं, अतः आर्थिक - स्थिति मजबूत बनी रहती है। भगवत - मन्दिर तथा पुस्तकें बाप में जानक को आनंद आता है। जीवन में एक से अधिक विषयों से सम्बन्ध राखता है। वर्ष २२, २४, २६, ३०, ३४, ३८, ४२, ४६ तथा ५० व्यवसाय में उन्नति काक तथा आर्थिक - दृष्टि दाल सिद्ध होते हैं।

(५८३) - इस सूर्यकुण्डली वाला मनुष्य सौवले (गंका, साहसी, धीरवी तथा कुछ भगड़ातु स्वभाव का होता है। विष्णु का क्षेत्र लाभ होता है। विवाह २३, २५ अथवा २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला, सुशिक्षिता तथा धर्म-परायणा होती है, फलतः दाम्पत्य-सुख की अधिकृष्ट होती रहती है। पत्नी के अतिरिक्त अन्य अनेक स्त्रियों के भी जातक का सम्बन्ध रहता है। सन्तान-सुख उत्तम रहता है तथा पुत्रों से लाभ प्राप्त होता है। निजी धर्म-सकान आदि का योग बनता है। आर्थिक-स्थिति मध्यम रहती है। वर्ष २४ तथा २६ व्यवसाय में चिन्ताधनक सिद्ध होते हैं तथा वर्ष २१, २२, २५, २७, २८, ३१, ३३, ३५, ३७, ४१, ४५, ४७, ४८, ५३, ५५, ५८ तथा ६१ व्यवसाय के लिए उत्कृष्ट काल होते हैं। वर्ष ३०, ५८ तथा ६२ स्वास्थ्य के दृष्टि से चिन्ताधनक रहते हैं। २५ वें वर्ष में सन्तान-सुख उपलब्ध होता है। जीवन में आर्थिक-लाभ के अनेक अवसर प्राप्त होते हैं। माता-पिता का सामान्य सुख रहता है।

(५८४) - इस जलकुण्डली में उत्पन्न कालक गौवर्ण, उन्नत ललाट, लम्बे शरीर का तथा साहसी प्रकृति वाला होता है। भगड़ा-टण्टा काल में इसे आनन्द आता है। दृढशी तथा धीरवी होता इनका विशेष गुण रहता है। विष्णु के क्षेत्र में अच्छी उत्कृष्ट होती है। विवाह २३, २५ अथवा २५ वर्ष की आयु में होता होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मृदुभाषिणी होती है। वर्ष २५ तथा २८ में पुत्र सन्तान का लाभ होता है। यह अपने धर्म-ज्ञान आर्थिक-उत्कृष्ट काल है। वर्ष २१, २३, २५, २७, २८, ३१, ३३, ३५, ३७, ४१, ४३, ४५, ४७, ४८, ५३, ५७ तथा ५८ व्यवसाय के लिए उत्कृष्ट काल सिद्ध होते हैं। वर्ष २४ तथा ३६ आर्थिक-चिन्ता उत्पन्न करते हैं। सन्तान-पक्ष से लाभ होता है। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी के भी लाभ होता है। आर्थिक-लाभ के भी अवसर प्राप्त होते रहते हैं। माता-पिता तथा भ्रातृ-भार्याओं से सम्बन्ध सामान्य रहते हैं। धार्मिक क्षेत्र में रुचि रहती है, पण्डित कर्म को प्रचारण देता है।

(५८५) - इस जल कुण्डली में जन्म लेने वाला मनुष्य कुद लम्बे शरीर का गौर वर्ण तथा अल्पना साह-सी होता है। आत्म विश्वास तथा पीयूष इसका विशेष गुण होता है। विवाह २३, २५ अथवा २७ वें वर्ष में होता है। स्त्री सुन्दरी, सुशीला, सुशिक्षिता तथा गुणवती होती है, फलतः दाम्पत्य-सुख श्रेष्ठ बना रहता है। सन्तान-सुख भी अच्छा रहता है तथा पुत्रों की संख्या अधिक होती है। रहन-सहन का खर्च बड़ा-बड़ा (हरे के कारण आर्थिक-स्थिति कमजोर होती रहती है, तथापि ४० वर्ष की आयु में भूमि-मयन आदि का सुख प्राप्त होता है। पशु-पालन का शौकीन होता है। वर्ष २३ में भाग्योदय होता है। वर्ष २३, २५, २७, २९, ३१, ३३, ३५, ३७, ४१, ४५, ४७, ४९, ५३, ५७ तथा ५९ व्यासराज-वृद्धि में सहायक होते हैं। वर्ष १४, ३०, ५६ तथा ६६ स्वात्म्य के लिए चिन्ता उत्पन्न रहते हैं। केफ़रों से संबंधित रोग संभव है। आयु मध्यम रहती है। अगस्त्य-स्वभाव होने के कारण अधिकारीयों से घरी नहीं बैठती।

(५८६) - इस जल कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य कुद लम्बाई लिए मध्यम कद का, हृष्ट-पुष्ट शरीर वाला, कर्मि तथा व्यपणी स्वभाव का होता है। विद्या का श्रेष्ठ मण्डल रहता है। विवाह २४, २६ अथवा २८ वें वर्ष में होता है। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। लती सुन्दरी तथा मनोबुद्धि प्राप्त होती है। वृद्धि अल्पता लीप होती है। वर्ष २४, २६, २८, ३०, ३२, ३६, ३८, ४०, ४२, ४४, ४८, ५०, ५२, ५४ तथा ५६ व्यासराज के लिए उत्तमि काक तथा चतुर्दशक सिद्ध होते हैं। आर्थिक-दृष्टि जीवन उत्तमिशील बना रहता है। आसदरी के मोन एक से अधिक होते हैं। २४ वॉ. वर्ष व्यासराज के लिए लघुद काक होता है। निजी भूमि तथा मकान का सुख भी प्राप्त होता है। ४० वॉ. वर्ष भूमि-सुख के लिए उत्तमि काक होता है। सामान्यतः उत्तम व्यावहारिक होता है, तथापि कभी-कभी आपसे बाह्य होकर अशिष्टता का प्रीचन भी दे उठता है। आसदरी के मोन एक से अधिक बने रहते हैं।

(५८७) - इस जन्म कुण्डली वाला मुख्य गेहुँए रंग का, छूछ-छूछ डील-डोल वाला, स्वप्न, मानु भीह-स्वभाव का होता है। इसे आलविश्वास की अधिकता वाई जाती है, अतः विपरीत-परीक्षितियों में भी यह अपने आप ही निच-ऊँचा रावने में लक्ष्म होता है एवं लक्ष्म की ओर हृत्ताश्र्वक आगे बढ़ता जाता है परन्तु आलसी होने के कारण उन्नति के अनेक अवसरों से वंचित भी रह जाता है। विष्णु की दृष्टि से ओष्ठ उन्नति होती है। विवाह २४, २६ तथा वर्ष की आयु में होता है। एक से अधिक विवाह होने भी संभव है। आमदनी के मोल एक से अधिक होने के कारण आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है। वर्ष २४, २६, २८, ३०, ३२, ३४, ३६, ३८, ४०, ४२, ४४, ४६, ४८, ५०, ५४ तथा ५६ व्यवसाय के लिए उन्नति काक सिद्ध होते हैं। वर्ष ३३, ५७ तथा ६३ स्वास्थ के लिए चिन्ताजनक रहते हैं। माद्यों से चिन्ता बनी रहती है तथा सन्तानों से सुख प्राप्त होता है। पुत्रियों अधिक होती हैं। मान-पिता से सामान्य सम्बन्ध रहते हैं।

(५८८) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न बालक गौ-वर्ण, इकट्ठे तथा लम्बे शरीर का एवं छोटी स्वाभाव का होता है। यह अत्यधिक परीक्षणी तथा साहसी भी होता है तथा उन्नति भी दोपलाने बनाका उत्पन्न लगत पूर्वक कार्य करने में लक्ष्म होता है। आर्थिक-स्थिति अच्छी रहती है, तथाकि व्यय की अधिकता से अर्थ-संचय में कमी रहती है। विवाह २१, २७, २७ अथवा २८ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य-जीवन सफल रहता है तथा सन्तान-सुख भी अच्छा प्राप्त होता है। पुत्रों की अपेक्षा कन्याओं की होना अधिक होती है। वर्ष २३, २५, २७, २८, ३१, ३५, ३७, ३८, ४१, ४३, ४७, ४८, ५१, ५३, ५५ तथा ५८ व्यवसाय में उन्नति काक सिद्ध होते हैं। वर्ष २२, ३४ तथा ५८ स्वास्थ के विषय में काष्ट का सिद्ध होते हैं। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय में अधिक सफलता मिलती है। कटु-शब्दावाजी का प्रयोग करने के कारण जानक के मित्रों की संख्या कम होती है। मोपी जीवन सुख से बीतता है।

(५८८) - इस लम्बाई-चक्र में उत्पन्न हुआ मधुष्ण सौंवलें रंग तथा मोटे कद का एवं छोटी-स्वभाव का होता है। इसका व्यक्तित्व समोदक होता है। पालु किंचित् नेत्र-विकारी या नेत्ररोगी भी होता है। यह अपनी मधुवाणी द्वारा अपनीचित व्यक्त को भी प्रभावित कर लेता है। राजनीति में पटु होता है तथा समग्र आने पर शूठ को भी सत्य सिद्ध कर सकता है। विद्या का योग अच्छा रहता है। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय का पसंद का होता है। इसका विवाह २१, २५ अथवा २७ वें वर्ष में होता है। पत्नी सौंदर्य तथा छोटी-स्वभाव की होती है। दाम्पत्य-सुख मधुमय रहता है। पुत्र की अपेक्षा कन्या से प्रभावित होता है। वर्ष २३, २५, २७, २८, ३१, ३५, ३७, ३८, ४१, ४३, ४७, ४८, ५१, ५३ तथा ५५ व्यवसाय के लिए उलटि काट सिद्ध होते हैं। वर्ष ५८ तथा ६४ स्वाध्याय के लिए रत्नाय सिद्ध होते हैं। वर्ष ३० तथा ५६ में धन तथा व्यवसाय सम्बन्धी चिन्ता रहती है। आर्थिक-स्थिति मधुमय रहती है। धर्म, भवन तथा वाहन का सुख प्राप्त होता है। सामान्यतः सुखी जीवन व्यतीत करता है।

(५८९) - इस सूर्य-कुण्डली वाला बालक सौंवलें रंग का, नेत्र-रोगी, साहसी तथा दक्षिणी होता है। यह साहस के बल पर कठिन-से-कठिन काम को भी पूरा कर दिखता है। शिक्षा-छात्र के लिए इसे बड़ी प्रेरणा दी जाती पड़ती है। पालु व्यावसायिक-क्षेत्र में इसकी बुद्धि काफी तीव्र होती है। विपरीत-लक्ष्य के प्रति इसका विशेष आकर्षण होता है। विवाह २१, २५ तथा २७ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य-सुख सामान्य रहता है। सन्तान-पक्ष में भी सामान्य-सुख प्राप्त होता है। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी में यह धीरे-धीरे उलटि करता है। वर्ष २३, २५, २७, २८, ३१, ३५, ३७, ३८, ४१, ४३, ४७, ४८, ५१ तथा ५३ आर्थिक-दृष्टि से लाभप्रद तथा वर्ष ३२ एवं ५६ लाभप्रद सिद्ध होते हैं। ३० वें वर्ष में इसे सवाही का सुख प्राप्त होता है। जिस कार्य को यह क्षेत्र में अपना उत्साह से शुरू करता है, उसी में वह बड़ी-बड़ी सफलता के कारण हानि उठाने पड़ती है। सत्य को शूठ साबित करने में पटु रहता है। जीवन सामान्य रहता है।

(५८१) - इस लम्ब कुण्डली का स्वामी बालक गौरवर्ण, लम्बे कद का, उन्नत ललाट तथा छोटी उभरी का होता है, तथापि इसके चेहरे पर मुत्कान रेष्यनी रहती है। सहिष्णुता इसका विशेष गुण होती है। विद्या के क्षेत्र में कुछ रुकावटें आती रहती हैं। विवाह का योग २२, २६ अथवा २८ वें वर्ष में बनता है। दाम्पत्य-सुख सामान्यतः अच्छा होता है, तथापि पत्नी की ओर से चिन्ता बनी रहती है। पुत्र कई होते हैं, प्रारंभ उमर की ओर से ही जातक चिन्तित बना रहता है। यह भाग्य के बल पर उन्नति करता है। जीवन के २४, २६, २८, ३०, ३२, ३६, ३८, ४०, ४२, ४४, ४८, ५०, ५४ तथा ५६ वें वर्ष उन्नति का एक होता है। धर्म के प्रति विशेष रुचि रहते हुए भी सामाजिक हितों पर कोई आघात नहीं होती। कृषि-कर्म भावना के आवेश में यह अपना अहित भी काँवता है। निम्नी भूमि-मकान आदि का योग बनता है तथा सवारी का सुख भी मिलता है। पेट से लम्बवर्धित बीमारी बनी रहती है। आर्थिक-स्थिति मध्यम होती है।

(५८२) - इस त्रिभ कुण्डली में उत्पन्न जातक गौरवर्ण, लम्बे कद का, कोमल, मधुर, सुन्दर, सहिष्णु विनम्र, भावुक तथा शान्त स्वभाव का होता है। यह न्याय तथा सत्य-प्रिय एवं ईमानदार भी होता है। भावनाओं के आवेश में यह अपना सर्वस्व खराब का सकता है। शारीरिक-रूप की अपेक्षा मानसिक रूप पर अधिक आघात होता है तथा उसी से लाभ उठाता है। आर्थिक-दृष्टि से इसका जीवन उन्नतिशील बना रहता है तथा आसदरी के सुते एक से अधिक होते हैं। विद्याधन में कुछ रुकावटें आती रहती हैं। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय में अधिक सफलता मिलती है। विवाह २८ वर्ष की आयु में होना संभव है। पत्नी के प्रति चिन्ता बनी रहेगी। जीवन के २४, २६, २८, ३०, ३२, ३६, ३८, ४०, ४२, ४४, ४८, ५०, ५२, ५४ तथा ५६ वें वर्ष व्यवसाय में उन्नति का एक रहेंगे। आसदरी के सुते एक से अधिक रहेंगे, अतः आर्थिक-स्थिति उत्तम बनी रहेगी। सन्तान से सामान्य-सुख प्राप्त होगा।

भ०
सं०
२१७

कु०
२०

(५८३) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न हुआ प्राणी कुछ लम्बाई लिये मध्यम कद का, सोवले रंग का तथा सादी प्रकृति का होता है। यह क्रोध के आवेश में गहरी - से-गहरी मित्रता को भी तुलना रक्खे देता है, तथापि निपटील पीपित्ति को भी अपने अनुकूल बना लेता है। विवाह २३, २७ अथवा २८ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य-सुख मध्यम रहता है तथा स्त्री के विषय में अत्यन्त भाव रखता है। सन्तान से जन्मक को कोई विशेष लाभ नहीं होता। विष्णु अशूर्ण रहती है तथा विद्याधन से लकावटें भी आती हैं। वर्ष २१ तथा २५ भाग्योदय काक होते हैं। वर्ष २७ पुत्र के लिए लहेज काक होती है। वर्ष २५, २८, ३१, ३३, ३७, ४१, ४३, ४५, ४८, ५३, ५५, ५८ तथा ६१ व्यावसायिक उत्तानि के लिए श्रेष्ठ सिद्ध होते हैं। वर्ष २८ आर्थिक - दृष्टि से चिन्ता काक रहता है। वर्ष ६० तथा ६६ स्वास्थ्य के उरी चिन्ता जन्मक सिद्ध होते हैं। आर्थिक - स्थिति कष्टमय रहती है तथा भ्रष्ट-गुणता के अवलम्ब भी आते रहते हैं। व्यापार में कष्ट सफलता मिलती है। वायु-विका रहता है।

(५८४) - इस जन्मकुण्डली में पैदा होने वाला बालक गौरवर्ण, लघुल-शरीर, हृष्ट-पुष्ट, सादसी, पीपित्ती तथा सुन्दर व्यक्तित्व वाला होता है। विवाह २३, २७ अथवा २८ वर्ष की आयु में होता है, पानु दाम्पत्य-जीवन कष्ट उदबग रहता है। विष्णु का-श्रेष्ठ लाभ होता है, पानु सन्तान से अधिक लाभ या सहायता मिलने की संभावना नहीं रहती। प्रत्येक आर्थिक-चोपका में आरम्भ से अन्त तक कठिनाइयाँ आती रहती हैं। स्त्री से विचारों की एकहपना नहीं रहती। आकर्षक-लाभ के अवलम्ब प्राप्त होते रहते हैं। २५ वां वर्ष भाग्योदय काक होता है। वर्ष २५, २७, २८, ३१, ३३, ३७, ३८, ४१, ४३, ४५, ४८, ५१, ५३ तथा ५७ व्यवसाय एवं आर्थिक-स्थिति में उत्तानि काक होते हैं। वर्ष २४, ३६ तथा ६० स्वास्थ्य के लिए हानिकार सिद्ध होते हैं। भाग्यरी के सुत एक से अधिक रहने के कारण आर्थिक-स्थिति सुदृढ जन्मक बनी रहती है। भूमि तथा भवन का लाभ भी प्राप्त होता है। उद्य-विका होता भी संभव है।

(५८५) - इस स्वरूप-कुण्डली में जन्म लेने वाला मनुष्य मध्यम कद, गौर वर्ण, शरीर से दृष्ट-पुष्ट तथा शान्त स्वभाव का होता है। विष्णु का लाभ सामान्य होता है। विवाह २३ अथवा २७ वर्ष की आयु में होता संभव है। सुदृढ-पक्ष से आर्थिक-लाभ का योग बनता है। दाम्पत्य-सुख प्रायः अच्छा रहता है। संतान से सामान्य सुख प्राप्त होता है। आमदनी के जोत एक से अधिक रहते हैं तथा आकर्षिक-लाभ के अवसर भी आते रहते हैं। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय के क्षेत्र में अधिक सफलता मिलती है। वर्ष २१, २३, २५, २७, २९, ३१, ३३, ३७, ४१, ४३, ४५, ४९, ५१ तथा ५३ व्यवसाय में उत्कृष्टिकाएँ होती हैं। वर्ष २८ तथा ६४ आर्थिक-दृष्टि से चिन्ता-जनक रहते हैं। ६० वीं वर्ष स्वास्थ के लिए अहितक सिद्ध होता है। भाग्येच्छा २१ वर्ष की आयु में होती है। अपने मित्रों के प्रति इनका व्यवहार अप्रिय सहाय्यता पूर्ण रहता है। भूमि तथा मकान आदि घर-भूतों के योग बनते हैं। आयु पूर्ण होती है, परन्तु घेह सम्बन्धी रोगों का कष्ट बना रहता है। जीवन सुखमय बीतता है।

(५८६) - इस जन्म-कुण्डली में उत्पन्न बालक गौर वर्ण, मध्यम कद का, सादसी प्रकृति तथा शान्त स्वभाव वाला होता है। आलसी प्रकृति होने के कारण काम को टालते रहता इसका स्वभाव होता है, तथापि विपरीत परिस्थिति को भी अनुकूल बना लेने में सक्षम होता है। विवाह २३ अथवा २७ वें वर्ष में होता है। स्त्री सौवले रंग की तथा सौभाग्य स्वभाव की होती है, अतः उससे ठीक पट्टी नहीं बँध जाती। संतान का सुख सामान्य रहता है। वर्ष २८ तथा ४० व्यवसाय के लिए हानिप्रद रहते हैं। वर्ष २१, २२, २७, २९, ३०, ३१, ३३, ३७, ३९, ४१, ४३, ४५, ४९, ५४, ५६, ५८ तथा ६१ लाभक सिद्ध होते हैं। वर्ष ४८ तथा ६० स्वास्थ के लिए चिन्ता जनक रहते हैं। उत्प्रेक चोपना में आदि से अन्त तक कठिनाइयें आती रहती हैं। आर्थिक-स्थिति उत्तम बनी रहती है तथा भूमि, भवन एवं वाहन आदि का सुख भी प्राप्त होता है। बृद्ध संवर्षों के बाद ही अन्त में सफलता प्राप्त होती है। भला-मिला से सम्बन्ध सामान्य रहते हैं।

(५६०) - इस सूर्य-कुण्डली में उत्पन्न कालक गौ वरुण, कुछ लम्बाई लिए मध्यम कद वाला, सुन्दर नाक-तन्त्र का, सत्य-पुत्र, प्रियवादी तथा स्वाभिमानही होता है। भवता उन्नत होने के कारण पहलीकटो एवं कर्कशावस्था का भी है दूर रहता है। पुत्रादि कार्य से सर्वथा दूर रहता है। जीवन की कठोर परिस्थितियों में शीघ्र ही घबरा जाता है। न्याय में गहरी कानूनी दखलता है तथा आर्थिक - परिस्थिति मध्यम रहती है। विवाह का योग २४ वर्ष की आयु में बनता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा सुशिक्षिता होती है, अतः दाम्पत्य-जीवन सुखमय बसा रहता है। विज्ञा - क्षेत्र में सफलता मिलती है तथा पुत्रों से लाभ का अवसर प्राप्त होता है। सन्तान - सुख उत्पन्न रहता है। वर्ष २६, २८, ३०, ३२, ३६, ३८, ४०, ४२, ४४, ४८, ५० तथा ५२ व्यवसाय में उत्तमि कार्य सिद्ध होते हैं। भूमि तथा मकान के लाभ की संभावना नहीं रहती। रक्ची बड़ा-पड़ा रहने के कारण आर्थिक स्थिति सामान्य रहती है। नौकरी की अवस्था व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है।

(५६८) - इस जलकुण्डली में जल लेने वाला मनुष्य हल्के सौंवर रंग का, साहसी तथा वृद्धाकी होने के कारण छोटी लम्बाई का होता है। राजनीतिक - कार्य में विशेष रुचि रहती है तथा राज्य-पक्ष से लाभ के अवसर भी उपलब्ध होते हैं। विज्ञा के क्षेत्र में पूर्ण सफलता मिलती है। विवाह २९, २४ अथवा २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा सुशिक्षिता होती है तथा दाम्पत्य-सुख सन्तोषपूर्ण रहता है। भाइयों से सहयोग कभी ही मिलता है। वर्ष १३, ५६, ५८ तथा ६९ व्यवसाय के प्रति चिन्ता-जनक रहते हैं। वर्ष २४, २६, २८, ३०, ३२, ३६, ३८, ४०, ४२, ४४, ४८, ५२, ५४, ५६, ६० तथा ६४ व्यवसाय के लिए उत्तमि कार्य सिद्ध होते हैं। २८ वीं वर्ष विशेष सफलता रहता है। एक से अधिक व्यवसाय होने के कारण आर्थिक - स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है। पुत्रों से भी आर्थिक - लाभ होता है। आकस्मिक लाभ के अनेक अवसर प्राप्त होते रहते हैं। जीवन सामान्यतः सुख पूर्वक व्यतीत होता है।

(५८८) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न हुआ बालक साँवले रंग का, लोटे कद का, सुन्दर नाक-नख्खा वाला, तथा न्याय एवं आदर्श के प्रति विशेष प्रकाश रखने वाला होता है। धार्मिक लग्न, दण्डन, चढ़ा-संग्रह, जालीय-कार्य तथा निःस्वार्थ-सेवा में अग्रणी रहता है। प्रांशिक जीवन में इसे विशेष सफलता नहीं मिलती, पणु बाद में वीर्यम, लग्न तथा कार्य-तत्पत्ता से इसे जीवन में अनेक सफलताएँ प्राप्त होती हैं। विज्ञा का लाभ उत्तम होता है। विवाह २१ अथवा २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सौन्दर्य तथा कुदृष्टि स्वभाव की होती है। स्वामी के प्रति इसका विशेष आकर्षण रहता है। पुत्र की अपेक्षा कन्याओं का लाभ अधिक होता है तथा पुत्रों से आर्थिक-लाभ मिलता है। जीवन के २३, २७, २८, ३१, ३३, ३८, ४१, ४३, ४७, ५१, ५३, ५५ तथा ५८ वें वर्ष व्यवसाय में उलटि काक रहते हैं। ६० वर्ष की आयु में स्वास्थ्य के प्रति चिन्ता रहती है। अइसे से पूर्ण सहायता मिलती है तथा भूमि, भवन, वाहन तथा सम्पत्ति का केवल लाभ होता है।

(६००) - इस जन्म कुण्डली में जन्म लेने वाला बालक गौरवर्ण, मध्यम कद का, सादरी तथा हठीले स्वभाव का होता है। इसे क्रोध शीघ्र आ जाता है, उस समय वाणी का भी नियन्त्रण नहीं रह पाता। दीन-हीन के प्रति इसे विशेष आत्मीयता रहती है। अन्धकार के प्रति निडोह क्रोध में यह अग्रणी रहता है। आर्थिक-व्यय बड़ा-चढ़ा रहने से जीवन में कष्ट-गुस्ती का अवसर प्राप्त आते रहते हैं। विवाह २१ अथवा २५ वर्ष की आयु में होता है, पणु स्त्री के साथ विचारों की एकता तथा सहित नहीं हो पाती। दाम्पत्य सुख मध्यम रहता है। विज्ञा तथा सन्तान-सुख सामान्य प्राप्त होता है। वर्ष २३, २७, २८, ३१, ३३, ३५, ३८, ४१, ४३, ४५, ४७, ५१, ५३, ५५, ५७, ५८, ६३ तथा ६५ व्यवसाय में उलटि काक अवसर आर्थिक दृष्टि से लाभप्रद रहते हैं। वर्ष ६० तथा ६२ स्वास्थ्य के प्रति चिन्ताजनक सिद्ध होते हैं। आर्थिक-लाभ के अवसर प्राप्त होते रहते हैं। पणु आर्थिक-स्थिति कदजोर ही बनी रहती है। वैदिक-सम्पत्ति का लाभ मिलता है।

(६०१) - इस जल कुण्डली में जल ग्रहण कोते कला बालक सौवले रंग तथा नोटे कद वाला, छोपी स्वामि का, बदला लेने की भावना राखने वाला, शत्रु को क्षमा न कोते वाला, साहसी, क्रूर, पर-स्त्रीगामी तथा मित्रता-स्थापित कोते में सिद्ध हस्त होता है। विष्णु क्षेत्र उन्नत रहता है। विवाह २६ के वर्ष में होता है। पत्नी के साथ विचारों में एकहपता नहीं रहती, अतः दाम्पत्य-सुख अच्छा नहीं मिलता; पालन-पुत्र उत्तम रहता है। कला भी अपेक्षा कुछ अधिक होते हैं तथा पुत्रों में आर्थिक-लाभ भी होता है। ४७ वर्ष की आयु में भूमि का लाभ होता है तथा निजी मकान आदि के सुख भी प्राप्त होते हैं। आर्थिक-स्थिति मध्यम रहती है तथा जीवनमें अनेक बार भ्रष्ट-गुस्तरा के अवसर भी आते हैं। वर्ष २४, २८, ३०, ३२, ३६, ४०, ४२, ४४, ४८, ५२, ५४, ५६, ६० तथा ६४ अवसर में उन्नति का क होता है तथा ३९ का वर्ष आर्थिक-दृष्टि से चिन्ताप्रद रहता है। आयु पूर्ण होती है तथा स्वास्थ्य प्रायः अच्छा ही बना रहता है।

(६०२) - इस सूर्य कुण्डली में उत्पल दुःख मनुष्य हल्के सौवले रंग का, लम्बे कद वाला, साहसी, परीक्षणी तथा अगाध-स्वभाव का होता है। अधिकारीपों से इसकी घरी नहीं बैठ पानी तथा शत्रु-पक्ष पर भी सबल बना रहता है। स्वार्थ-सिद्धि हेतु यह जोड़े जिसके पाँवों पर भी गिर सकता है। यह शत्रुता को सहज ही नहीं झुलता तथा अवसर की नाक में रहता है। व्यय अधिक बढ़-भड़ा रहता है तथा आर्थिक-स्थिति सामान्य रहते हुए भी उन्नति की ओर अग्रसर होती रहती है। विष्णु के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है। विवाह २२ अथवा २६ के वर्ष में होता है। दाम्पत्य-सुख मध्यम होता है तथा स्त्री भी अंग से चिन्ता बंती रहती है। पुत्रों में आर्थिक-लाभ प्राप्त होता है। वर्ष २४, २८, ३०, ३२, ३४, ३६, ४०, ४२, ४४, ४८, ५२, ५६ तथा ५८ आर्थिक-उन्नति तथा व्यवसाय-वृद्धि में सहायक होते हैं। वर्ष ६० स्वास्थ्य की दृष्टि से चिन्ताजनक रहता है, यह जलक मित्रता-स्थापित कोते में सिद्ध हस्त होता है तथा अवसर का लाभ उठाना रख जानता है।

(६०३) - इस सूर्य-कुण्डली में जन्मलेने वाला प्राणी गेहूँ (गं का, लम्बे कद वाला, स्थूल शरीर तथा तेज-स्वी होता है) यह अल्पतः सादरी तथा मज्जाशुक्ल उकृति का होता है। यह भी शत्रु को क्षमा नहीं करता तथा बदला लेने के लिए अवसर भी तत्काल में ढूँढता है। राजनीतिक क्षेत्र में इसकी विशेष रुचि रहती है तथा मूठ को लाल सिंह का देने की कला में कुशल होता है। यह बहुत सोच-समझ का ही किसी से आत्मीयता स्थापित करता है तथा आत्मीयता के लिए सर्वस्व छोड़कर का देने को भी तैयार रहता है। यह कोनों का कच्चा होता है, अतः दूसरों की कही हुई भूरी बातों पर भी विश्वास करता है। मनोरंजन तथा विलासिता पर इसका अधिक रुचि होता है। विद्या लाभ उत्तम होता है। विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा लीले स्वाभाविक होती है। पुत्रों में भी वरुण सहायोग मिलता है। वर्ष २४, २८, ३०, ३२, ३४, ३६, ४०, ४२, ४४, ४६, ४८, ५२, ५४, ५६, ६० तथा ६४ अवसर में उत्तमिकाएँ होती हैं। आर्थिक स्थिति संतोषजनक होती है।

(६०४) - इस सूर्य-कुण्डली में जन्मा हुआ बालक गौवर्ण, मध्यम कद का, सुनिर्मल, सुस्त्र, शान्त चरित्र का, कार्य-साधक तथा अपने लक्ष्य की ओर विनाश करने वाला होता है। यह समय का बहुत पावबंद होता है, ईश्वर पर गहरी भावना रखता है तथा आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ रहती है, तथापि खर्च की अधिकता के कारण कभी-कभी आर्थिक-कठिनाई भी अनुभव में आती है। विवाह २१, २३ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है। विद्या-क्षेत्र में ठकावटें आती रहती हैं। पुत्र भी अपेक्षा कम होते हैं। शत्रु से आर्थिक-लाभ के अवसर प्राप्त होते हैं तथा शत्रु-पक्ष पर अपना दबदबा बनाने शक्ती होती है। वर्ष २३, २५, २८, २९, ३३, ३५, ३६, ४१, ४३, ४५, ४६, ४८, ५३, ५५, ५६ तथा ६१ अवसर में उत्तमिकाएँ मिलती हैं। वर्ष ५२ तथा ६४ स्वास्थ्य के लिए तथा वर्ष ३२ आर्थिक-स्थिति के लिए चिन्ताजनक बनते हैं। साम्प्रदायिक-जीवन चिन्ता मुक्त बना रहता है। धर्म-भवन आदि का पुत्र भी प्राप्त होता है।

भू०
सं०
४२७

(६०५) - इस सूर्य कुण्डली में जन्म लेने वाला शिशु गौरवर्ण, मधुम कद वाला, कुद लम्बाई लिपेस का शान्त स्वभाव का होता है। शरीर कुद स्थूल होता है तथा चेहरे पर हँसे का पुक्ताहट फलकली रहती है। यह समय का बड़ा पावन होता है तथा अत्येक कार्य समय पर ही करता है। अपने से छोटे तथा बान्नी के लोगों के साथ सम्पत्ता एवं सहृदयता का व्यवहार करता है। दुःखी की सहायता करना अपना कर्तव्य भी समझता है तथा वर्ष के लोग एवं उद्देशन तथा नरक - भय आदि से दृष्टा करता है। विष्णु का प्रेम्ण लाभ होता है। विवाह २१, २३ अथवा २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुखीला तथा सुन्दरी होती है। सामान्य - सुख उत्तम रहता है तथा सन्तान - पुत्र भी अच्छा उपलब्ध होता है। वर्ष २३, २५, २७, २८, ३१, ३३, ३७, ४१, ४३, ४५, ४७, ४८, ५३, ५५, ५७, ६१ तथा ६५ व्यवसाय के लिए उल्लस काक होते हैं। आर्थिक स्थिति सामान्य होती है। आर्थिक - आय अच्छी होते हुए भी व्यय भी अधिकता रहती है। आयु पूर्ण होती है।

(६०६) - इस अनुलग्न में जन्मा हुआ व्यक्ति हल्के साँवले रंग का, लम्बे कद का, स्थूलकाय तथा साहसी एवं मगडाल उच्छति का होता है। विष्णु का लाभ मधुम रहता है। विवाह २३ अथवा २७ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री सुन्दरी, बालु कोपी स्वभाव की होती है, तथापि दाम्भ्य - जीवन में सुख बना रहता है। वर्ष २१, २२, २५, २८, २९, ३३, ३७, ४१, ४५, ४७, ४८, ५३, ५५, ५७, ६१ तथा ६५ व्यवसाय तथा आर्थिक - स्थिति के लिए हितकर सिद्ध होते हैं। पुत्रों की संख्या अधिक होती है तथा उनके पुत्र भी पाप्म होता है। ३६ वर्ष की आयु में भूमि अथवा वाहन आदि का सुख उपलब्ध होता है। निजीमकान की प्राप्ति भी होती है। आयु का ३० वीं वर्ष आर्थिक - दृष्टि से चिन्ता काकर रहा है। वर्ष ५८ तथा ६७ शारीरिक - स्वास्थ्य की दृष्टि से चिन्ताजनक रहते हैं। यह जातक अपने लक्ष्य की ओर निरन्तर बढ़ते रहकर सफलता प्राप्त करता है। आर्थिक - स्थिति सामान्य बनी रहती है।

(६०७) - इस कुण्डली में जन्म ग्रहण करने वाला मनुष्य गौ वण, लम्बे कद का, कोपी (चमक) का लम्बा रहस्यमय प्रकृति का होता है। आत्म विश्वास की इसमें अधिकता पाई जाती है। शरीर से यह दुबला-पतला होता है तथा देश-काल एवं वातावरण को परीक्षण का, न १ ग्रहण (चंद्र) को बाल देने की कहावे मारि होता है। विद्या के क्षेत्र में कुछ हकावटों के साथ उलटि होती है। विवाह २४ अथवा २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुंदरी तथा सुशीला मिलती है, अतः दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहता है। ३० वर्ष की आयु में पुनः-लाभ होता है। कमाओं की संख्या अधिक रहती है। बहिनों की अपेक्षा भाइयों से स्नेह-सहयोग अधिक मिलता है। वर्ष २४, २६, ३०, ३२, ३४, ३६, ४२, ४४, ४८, ५४, ५६, ६० तथा ६२ व्यवसाय में लाभप्रद सिद्ध होते हैं। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय में रुचि रहती है तथा लाभ होता है। आर्थिक-स्थिति अच्छी रहती है। आनंदी के जोर एक से अधिक होते हैं। भूमि-भवन के लाभ के साथ उनकी बिक्री का भी योग है।

(६०८) - इस ज्युलियन के उत्पन्न हुआ बालक कुछ लम्बाई लिए मध्यम कद का, गौ वण, ग्राहसी तथा पीसनी होता है। सप्तग्रहण कार्य करने में इसे कुशलता प्राप्त होती है। विद्याधनन में कुछ हकावटें आती हैं। विवाह २२, २४ अथवा २८ वर्ष की आयु में होता है। पुत्र की अपेक्षा कन्ये अधिक होती हैं। पत्नी सुंदरी, सुशीला तथा सुशिक्षिता होती है। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। सन्तान-हानि के अवसर भी आते हैं। ३३ वर्ष की व्यवसाय तथा आर्थिक-दृष्टि से चिन्तामय होता है तथा वर्ष २४, २६, ३०, ३२, ३४, ३६, ४०, ४२, ४४, ४६, ४८, ५२, ५४, ५६, ५८, ६० तथा ६४ के वर्ष उलटि कारक सिद्ध होते हैं। आर्थिक-स्थिति मध्यम रहती है। जीवन में एकाध बार व्यवसाय के हानि के अवसर भी आते हैं। भूमि तथा मकान के लाभ का योग बनने के साथ ही उसके विक्रय के योग भी बनते हैं। ऐसा जानक अपने लक्षण की ओर देखी के साथ आगे बढ़ता है। शरीर जगः स्वस्थ बना रहता है तथा शक्ति प्राप्त होती है।

(६०८) - इस सूर्य-कुण्डली में जन्मा हुआ बालक हल्के संवत्से रंग का, लोटे कद वाला, सुन्दर नाक-नखा वाला, साहसी तथा कोपी स्वभाव का होता है। यह आत्म-विश्वास के बल पर विपरीत परिस्थितियों का भी विजय प्राप्त करता है तथा जीसमी होने के लिये गिरता उठति काता चला जाता है। विष्णु का लाभ कुछ हफायतों के साथ होता है। विवाह २२ अथवा २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होती है। दाम्पत्य-सुख उत्तम बग़ा (हता है) सन्तानों में पुत्र की अपेक्षा कन्याओं की संख्या अधिक होती है। आयु के २४, २६, २८, ३०, ३२, ३६, ३८, ४२, ४४, ४६, ४८, ५०, ५२ तथा ५४ वें वर्ष उलति काक रहते हैं। ५६ वें वर्ष भी लाभ उदाहता है। वर्ष २६ व्यवसाय में विशेष लाभ उद सिद्ध होता है। वर्ष ५८ स्वास्थ्य के लिए चिन्ताजनक होता है। बहिनो की अपेक्षा भ्रातृपों की संख्या अधिक रहती है तथा भ्रातृपों से लाभ तथा सहयोग भी मिलता है। आय के स्रोत एक से अधिक होने के कारण आर्थिक-स्थिति मजबूत बनी रहती है। भूमि-मकर का भी लाभ होता है।

(६१०) - इस सूर्य-कुण्डली में उत्पन्न हुआ मनुष्य गौरवर्ण, हृष्ट-पुष्ट शरीर, सुन्दर तथा आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। लोह, लौहयन्त्र, विनम्रता तथा मधुर भाषण आदि सद्गुणों की वान होता है। विष्णु के क्षेत्र में पदवि उलति होती है। विवाह २१, २३ अथवा २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, गौरवर्ण तथा मनोमुक्ता होती है। सन्तानों में कन्याओं की संख्या अधिक रहती है। दाम्पत्य-जीवन भी सुखमय बग़ा रहता है। वर्ष २३, २५, २७, ३१, ३३, ३५, ३८, ४३, ४५, ४७, ५१ तथा ५२ व्यवसाय में उलति काक सिद्ध होते हैं तथा वर्ष ३४ आर्थिक-दृष्टि से चिन्ताजनक कीतता है। परोपकार तथा दीन-दुर्गिणों की सेवा में जातक का महाबल लगता है। आनदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं, अतः आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी से अधिक लाभ होता है। भूमि तथा मकर का सुख प्राप्त होता है तथा कारन-सुख भी उपलब्ध रहता है। जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होता है।

(६११)- इस सूर्य-कुण्डली में जन्मा हुआ जातक गौर वर्ण, दुर्बल शरीर, मध्यम ऊँचाई तथा शान्त स्वभाव वाला होता है। मृदुभाषिता इसका विशेष गुण होता है। यह शैशाल-स्वभाव का होता है तथा किसी पर सहसा विश्वास नहीं करता, तथापि इसे शत्रु-पक्ष द्वारा समय-समय पर चोरा जाया होता रहता है। विष्णु का विशेष लाभ होता है। विवाह २१, २३ अथवा २५ वें वर्ष में होता है। पहली सुदरी, पान्थु को भी स्व-भार्य की होती है, तथापि दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। सन्तान-पक्ष में लाभ होता है। वर्ष २१, २३, २५, २७, ३१, ३३, ३५, ३७, ३९, ४३, ४५, ४७, ५१, ५५ तथा ५७ उन्नति काक सिद्ध होते हैं। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी में अधिक उन्नति होती है। यह जातक अपने लक्ष्य की ओर धीरे-धीरे आगे बढ़ता है। जीवन में धर्म-भजन आदि का योग भी बनता है तथा इनसे सम्बन्धित अंगरे-टंटे आदि भी होते हैं। धर्म-सकान की हर्षण का अवसर भी आसकता है। माता, पिता तथा परिवारी जनों से सामान्य सम्बन्ध रहते हैं।

(६१२)- इस जनुर्गन में जन्म गृहण करने वाला मनुष्य गौर वर्ण, मध्यम ऊँचाई, सुन्दर तीव्र-नाक तथा वाण एवं मधुरी जैसे मोहक नेत्रों वाला होता है। यह स्वभाव से शान्त तथा दूसरों के प्रति सहानुभूति रखने वाला एवं सामाजिक रुढ़ियों तथा प्रथाओं का पालन करने वाला होता है। यह लम्बे शरीर का तथा अत्यन्त पीछरी होता है तथा अपनी मेहनत एवं भाग्य के बल पर ही आर्थिक-स्थिति को मजबूत बनाता है। इसे भाइयों से विशेष सहयोग नहीं मिलता। विष्णु क्षेत्र में रुकावटें आती रहती हैं। विवाह २४, २६ अथवा ३० वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य-सुख उत्तम प्राप्त होता है। जीवन के २४, २८, ३०, ३२, ३४, ३६, ४०, ४४, ४६, ४८, ५२, ५४, ५६, ५८ तथा ६० वें वर्ष उन्नति काक होते हैं। इनमें व्यवसाय अथवा कर्म-के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं। जीवन का ३० वाँ वर्ष आर्थिक-स्वास्थ्य के लिए हानिकार सिद्ध होता है। जीवन में निजी सकान आदि का सहयोग भी प्राप्त होता है। आयु का ३३ वाँ वर्ष आर्थिक-दृष्टि से विशेष उन्नति काक सिद्ध होता है। जीवन में सन्तान-पक्ष के अवसर भी आते हैं।

(६१३) - इस जन्म कुण्डली वाला बालक उन्नत तथा दृष्ट-पुष्ट शरीर वाला, गौर वर्ण एवं शान्त स्वभाव का होता है। औंखें बहुत खुली तथा आकर्षक होती हैं। यह सामाजिक-प्रायोजों का जालन करने वाला, दूसरों के प्रति सहाय्य प्रीति पूर्ण, पीछे की तथा अपनी भाग्यशक्ति के बल पर शीघ्र सफलता पाने वाला होता है। जीव-जन्तुओं के प्रति विशेष दयालु होता है। आइये। ये इसे कोई सहयोग प्राप्त नहीं होता तथापि यह आर्थिक दृष्टि से उन्नत तथा प्रत्येक व्यक्ति की सहायता करने का दृष्ट्युक्त होता है। विद्या का लाभ कुछ रुकावटों के साथ होता है। विवाह २४, २६ अथवा ३० के वर्षों में होता है तथा पत्नी सुन्दरी, सुशीला एवं मोहकूला मिलती है। कलातः दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहता है। जीवन के २४, २८, ३०, ३२, ३४, ३६, ४०, ४४, ४६, ४८, ५२, ५४, ५६, ५८ तथा ६० के वर्ष अवसाप एवं आर्थिक-स्थिति में उन्नति का एक रहते हैं। वर्ष ३० तथा ६० (व्याप्त्य के प्रति दार्ढ्यकाक बनते हैं। ३३ वें वर्ष आर्थिक-दृष्टि से चिन्ताजनक रहता है। निजी सफलता का प्रेण बनता है।

(६१४) - इस जन्माङ्क; चक्र में उत्पन्न हुआ प्राणी मध्यम कर तथा गेहुँए रंग का, शान्ति-प्रिया एवं स्वभाव से आलसी होता है। तथापि यह सहायी भी होता है। अपने आलस्य के कारण यह उन्नति के अनेक अवसरों को देता है। व्यय की अधिकता के कारण आर्थिक-स्थिति कमजोर बनी रहती है। अनेक बार भूत भी लेता पड़ता है। पैरुका-सम्पत्ति, धर्म, जलन शक्ति को बेचने के अवसर भी आते हैं। सक्करी का सुख बना रहता है। विद्या-क्षेत्र में साफल्य उन्नति होती है। आइये। ये कोटि सहयोग नहीं मिलता। विवाह २२, २४ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री सुन्दरी एवं सुशीला होती है, अतः दाम्पत्य-सुख प्रेण बना रहता है। जीवन के २४, २६, २८, ३०, ३२, ३४, ३६, ४०, ४४, ४८, ५२ तथा ५६ के वर्ष अवसाप एवं आर्थिक क्षेत्र में उन्नति का एक रहते हैं। वर्ष ६१ व्याप्त्य के लिए चिन्ताकाक बनता है। सन्तान-सुख ऊँचा रहता है तथा उससे सहयोग भी प्राप्त होता है। आर्थिक-स्थिति मध्यम बनी रहती है। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय के क्षेत्र में अधिक सफलता मिलती है।

(६१५) - इस पूर्ण-कुण्डली वाला जातक नारकद तथा गेहुँए रंग का, आलसी तथा कोधी-स्वभाव का होता है। आलस्य के कारण यह उन्नति के अवसर भी खो बैठता है, पालु आत्म-विश्वास की अधिकता के कारण यह विपरीत-परीस्थितियों को भी अपने अनुकूल बना लेने में सक्षम होता है। इसके शत्रुओं की संख्या अधिक होती है, जो पीठ पीछे दुष्ट षड्यंत्रों का उपलब्ध रहेते हैं। आसानी की अपेक्षा लची अधिक होने से यह सफल शत्रु के विपक्ष में चिन्तित बना रहता है। पालु ५१ वर्ष की आयु में निजी सफलता का योग बनता है। विद्या के क्षेत्र में कामजोरी बनी रहती है। विवाह २४, २६ अथवा ३० वर्ष की आयु में होता संभव है। पत्नी मतेनुकूल मिलती है, पालु सन्तान की ओर से चिन्ता बनी रहती है। जीवन के २४, २६, २८, ३२, ३६, ४०, ४२, ४४, ४८, ५२, ५४, ५६, ५८ तथा ६० के वर्ष अवसाद एवं आर्थिक-लाभ के लिए उन्नति काफ़ी सिद्ध होते हैं। वर्ष ५५ एवं ६१ स्वास्थ के लिए चिन्ताजनक रहेते हैं। माता-पिता की वीर्यशक्ति से सम्बन्ध सामान्य रहेते हैं।

(६१६) - इस पूर्ण-कुण्डली में उत्पन्न हुआ मनुष्य उसके सौवले रंग का, बलिष्ठ शरीर वाला, लीबे नाक-नक्का का, सुन्दर एवं कोधी स्वभाव का होता है। साहसिक कार्यों में इसे विशेष रुचि रहती है, अतः लड़ने-झगड़ने को सदैव तत्पर रहता है। जिसपर ये विश्वास करते हैं, उसपर अपना सब कुछ न्योछावर कर सकते हैं। आर्थिक-दृष्टि से ये कामजोर रहेते हैं, क्योंकि इनका लची बड़ा-बड़ा रहता है। शत्रुओं की अपेक्षा बहनों की संख्या अधिक होती है। विद्या के क्षेत्र में प्रवेष्ट सफलता मिलती है। विवाह २३, २५ अथवा २७ वर्ष की आयु में होता है, पालु पत्नी से विचारों में एकहपता स्थापित नहीं हो पाती, तथापि स्त्री से सह-योग मिलता रहता है। आयु के वर्ष २३, २५, २८, ३३, ३५, ३७, ३८, ४१, ४५, ४७, ४८, ५३, ५७ तथा ६१ अवसाद एवं आर्थिक क्षेत्र में उन्नति काफ़ी सिद्ध होते हैं। वर्ष २४ तथा ३६ आर्थिक-दृष्टि से कष्टग्रस्त रहेते हैं। सन्तानों में कन्या की अपेक्षा पुत्रों की संख्या अधिक रहती है। सन्तानों की ओर से सहयोग भी प्राप्त होता है। पीनारी उनके से रह-सम्बन्ध सामान्य बने रहेते हैं।

(६१७) - इस सूर्य-कुण्डली में लग्न गृह का योग वाला मनुष्य मध्यम कद वाला, गौवर्ण तथा अल्पतः साहसी होता है एवं साहस के बल पर विपरीत परिस्थितियों को भी अपने अनुकूल बना लेता है। विज्ञान सम्बन्धी कार्यों में इसे विशेष हस्ति होती है। यह स्वतन्त्र-चेता होता है मूल: किसी की नौकरी अथवा निपन्त्रण में रहकर कार्य नहीं करता। आर्थिक दृष्टि से ये कमजोर रहते हैं, तथापि इनका स्वर्च बड़ा-बड़ा रहता है। सामान्य माली होने के कारण स्वर्च को पूरा करने के लिए इनकी आसदरी के मोल भी खुले रहते हैं। भूमि, गहन आदि का तथा सवारी का सुख भी प्राप्त होता है। विज्ञान का लाभ सामान्य रहता है। विवाह २३, २५ अथवा २७ वें वर्ष में होता है। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। २८ वर्ष की आयु में पुत्र की प्राप्ति होती है। सन्तानों जीवन में तृप्ति का ली है। आयु के २४, २६, २८, ३०, ३२, ३४, ३७, ४१, ४५, ४७, ४८, ५१, ५३ तथा ५७ वें वर्ष आर्थिक दृष्टि से लाभ उठ रहते हैं। सन्तानों में पुत्रों की संख्या अधिक होती है। जीवन सामान्य व्यतीत होता है।

(६१८) - इस सूर्य-कुण्डली वाला लग्नक लम्बे कदका, गौवर्ण, तीव्र ताकत-तन्त्र तथा सुन्दर नेत्रों वाला होता है। यह स्वभाव से विनम्र तथा स्पष्टवर्णी होता है एवं स्वामी-स्वामी दोनों सुँद पर ही कट देता है। यह पौ-जग बड़े ढंग से काम करना पसन्द करता है तथा अधिक कार्यक भी होता है। आसदरी के मोल एक से अधिक होने के कारण इसकी आर्थिक-स्थिति अच्छी बनी रहती है। जीवन में कर्कशीलक-लाभ के भी अनेक अवसर प्राप्त होते हैं। विज्ञान का लाभ प्रवेष्ट होता है तथा विवाह २४ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है। सन्तान-सुख अच्छा रहता है। कर्मजों की अपेक्षा पुत्र अधिक होते हैं। दाम्पत्य-सुख में अनिवृत्ति होती रहती है। जीवन में २२, २४, २६, २८, ३२, ३४, ३६, ३८, ४०, ४२, ४४, ४८, ५२, ५४, ५६ तथा ५८ वें वर्ष आर्थिक तथा व्यावसायिक-दृष्टि से लाभ उठ एक उत्तरी काट रहते हैं तथा ३५ वें वर्ष चिन्तामय होता है। निजी भूमि-गहन आदि का सुख प्राप्त होता है तथा ३८ वें वर्ष में सवारी का योग भी बनता है। मान-प्राप्ति की अनिवृत्ति होती रहती है। पत्नीजी जनों से सामान्य सम्बन्ध रहते हैं।

(६१९) - इस जन्माङ्क चक्र में उत्पन्न जातक गोवर्ण, लम्बे कद का, हृष्ट-पुष्ट तथा सुन्दर नाक-नेत्रों वाला होता है। यह स्वभाव से शक्तिपिप्त तथा अल्पत स्वामिसारी होता है। शिरो के प्रति इहमीनि-शेष आसक्ति रहती है। लम्बी-कौड़ी जीनें मारने में यह पटु होता है तथा अपने साहसी स्वभाव के कारण शत्रु-पक्ष पर सदैव हावी बना रहता है। पैरों - सम्पत्ति पर भरोसे - मुकद्दमे का योग भी बना रहता है। विद्या का उत्तम लाभ होता है। विवाह २४ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य - सुख अच्छा रहता है तथा पुत्राओं में पुत्रों की संख्या अधिक रहती है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा सुशिक्षिता होती है। आयु पूर्ण प्राप्त होती है। जीवन के २४, २६, २८, ३२, ३४, ३६, ३८, ४०, ४४, ४६, ४८, ५२, ५४, ५८ तथा ६० वें वर्ष आधिक एवं व्यवसायिक उत्कृष्टि की दृष्टि से लाभप्रद रहते हैं। वर्ष ४० - आधिक - हृष्टि से चिन्ता-काक रहता है। वर्ष २८, ५४ तथा ६१ स्वास्थ के प्रति कष्ट काक सिद्ध होते हैं। आधिक - शक्ति सम्पन्न रहती है।

(६२०) - इस जन्माङ्क चक्र का स्वामी मयुष्म हल्के सौंवले रंग तथा नाटे कद का, हृष्ट-पुष्ट, गीला करि तथा कोपी स्वभाव का होता है। यह कुछ कोपी स्वभाव का तथा चमेडी होता है, पान्थ अपने से बड़े अफसोसों को उन्मिश्र करने की क्षमता भी रावता है। प्रजापति से लोग पूर्ण आवहारीक होते हैं, तथापि कभी-कभी अपने से बाहर होकर असामाजिकता का परिचाय भी दे सकते हैं, फलतः उनके सम्मान को ठेस भी पहुँचती है। विद्या का लाभ कुछ रुकावटों के साथ होता है। विवाह का योग २३, २५ अथवा २७ वें वर्ष में बना रहता है। पुत्र की अपेक्षा कन्याओं की संख्या अधिक रहती है। दाम्पत्य - सुख उत्तम बना रहता है। आयु के २३, २५, २७, २८, ३३, ३५, ३७, ३८, ४१, ४७, ४८, ५१, ५३, ५८, ६१ तथा ६३ वें वर्ष व्यवसाय एवं आधिक - लाभ की दृष्टि से उत्कृष्टि काक सिद्ध होते हैं। वर्ष ४० में मकार का योग बना रहता है। स्वर्ण अधिक - बड़े-बड़े रहने के कारण जीवन में कष्टों के अंश भी आते हैं। अल्प के कारण आधिक - लाभ के अनेक अवसर हाथ से निकल जाते हैं।

(६२१) - इस जाकाऊ चक्र में जन्म लेने वाला मनुष्य कुछ लम्बाई लिए मध्यम कद वाला, गोलवर्ण, सुन्दर, लक-
नकावाला तथा शान्ति प्रकृति का होता है। यह संगीत तथा ललित-कलाओं का प्रेमी एवं मनोरंजन तथा
विलासिता की वस्तुओं पर धन खर्च करने वाला भी होता है। विवाह का प्रयत्न लगभग २३, २४
अथवा २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी को भी विवाह की होती है। दाम्पत्य-प्राप्त में कुछ मूढ़ता होती है
तथापि सन्तान-प्राप्त उत्तम रहता है। पत्नी के आर्थिक आत्म अनेक विचारों से भी जातक सम्बन्ध बनाये रख-
ता है। यह जातक मनुष्य की होने के कारण सबका प्रिय पात्र बनता रहता है। जीवन के आकर्षक-लाभों के अने-
क अनन्त प्राप्त होते हैं। मन तथा मनीषा पर नियन्त्रण करने के कारण जीवन के बहुत उन्नति का होता है। इस
की आर्थिक-स्थिति मजबूत होती रहती है। निजी भूमि-मालका का प्रयोग करता है। ५२ वर्ष की आयु में निजी धन से
मकान बनाता है तथा जीवन के २३, २४, २५, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ३७, ३८, ३९, ४०, ४१, ४२ एवं ४३ वर्ष के उन्नति प्राप्त होते हैं।

(६२२) - इस चक्र कुण्डली वाला जातक गोलवर्ण, लम्बे कद तथा समोहक व्यक्तित्व वाला होता है। यह
शान्ति-प्रिय तथा कार्य-प्रद होता है। यह अपनी सुदृढ़ वाणी द्वारा अपनी जिज्ञासुता को भी प्रभावित करता
है तथा कठिन-से-कठिन परिस्थितियों में भी अपनी सफलता का मार्ग निकाल लेता है। यह अत्यन्त
कर्मठ तथा साहसी होता है तथा दिन-रात परिश्रम करता इसके स्वभाव में होता है। संकटों का दृढ़ता पूर्वक
सामना करता है। यह अध्ययन में विशेष रुचि रखता है, फलतः विद्वान् बनता है। आमदनी के स्रोत एक
से अधिक होते हैं, अतः आर्थिक-स्थिति उत्तम होती रहती है। निजी मकान आदि का प्रयोग भी करता है। विवाह
२४ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य-प्राप्त उत्तम रहता है। पत्नी मनोरंजना प्रिय होती है। पुत्र
की अपेक्षा बालों अधिक होती है तथा सन्तान-प्राप्ति के अवकाश भी होते हैं। जीवन के २४, २६, २८, ३०,
३४, ३६, ४२, ४६, ४८, ५०, ५४, ५८, ६० तथा ६२ वर्ष के अवकाश एवं आर्थिक-उन्नति में वृद्धि करते हैं। माता
के प्रति विशेष श्रद्धा रहती है तथा माता एवं पिता से सम्मान के अनेक सम्बन्ध बनाये रखते हैं।

(६२३) - इस वर्ष कुण्डली में उत्पन्न जातक गौरवर्ण तथा सम्पन्न व्यक्ति का होता है। संगीत आदि ललित कलाओं तथा नर्तकी जाति के प्रति इसका विशेष आकर्षण होता है। चित्रकला, काव्य, पुस्तकालय-कार्य, सभा-दान चोखन आदि कार्यों में इसे प्रवीणता प्राप्त होती है। यह स्वभाव से सादरी, शान्ति प्रिय तथा कायिक प्रवृत्ति का भी होता है। जेन-जेन प्रयोग अर्थ-संचय करने में यत्न होता है। समग्र को अनुकूल बनाये रखने के लिए यह कठिन परिश्रम करता है। राजकीय सेवा में यह चीरे-चीरे उगार करता है। अधिक परीक्षण करने पर भी लाभ छोड़ ही मिल जाता है। विवाह क्षेत्र में उत्तरी प्राप्ति होता है। विवाह २०, २४ अथवा २६ वें वर्ष में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा सुशिखिता मिलती है। सन्तान का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। जीवन के २२, २४, २६, २८, ३०, ३४, ३६, ३८, ४०, ४४, ४६, ४८, ५०, ५२, ५६ तथा ५८ वें वर्ष व्यसक्त तथा आर्थिक क्षेत्र में लाभक सिद्ध होते हैं। वर्ष ५७ तथा ६३ स्वास्थ्य के लिए चिन्ताका रहते हैं। निजी मकान आदि का सुख भी मिलता है।

(६२४) - इस वर्ष कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य कुदल्लुवाई लिए मध्यम कद का, होठों पर मुस्कान रखने वाला गौरवर्ण तथा अल्पत आकर्षक व्यक्ति सम्भव होता है। ऐसिलेज शैक्षणिक तथा वाणिज्यिक क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करते हैं। आर्थिक - दृष्टि से वे उत्तरीशील होते हैं तथा इनकी कर्मदारी के मोल भी एकटे अधिक रहते हैं। वाणिज्यिक-क्षेत्र की अपेक्षा मानसिक-क्षेत्र इन्हें रुचिकर होता है। राज्यपाल से भी इन्हें सम्मान प्राप्त होता है। भूमि सारी से आर्थिक - लाभ के अवसर प्राप्त होते रहते हैं। विवाह का लाभ उत्तम रहता है, पालतु बीच-बीच में हकाने भी आती रहती है। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। सामान्यतः दाम्पत्य-जीवन ठीक रहता है, पालतु पक्षी की ओर से कुछ चिन्ताएं भी लगी रहती हैं। जीवन के २२, २४, २६, २८, ३०, ३४, ३६, ३८, ४०, ४२, ४६, ४८, ५०, ५४, ५८, ६० तथा ६२ वें वर्ष व्यसक्त तथा आर्थिक उत्तरी में लाभक सिद्ध होते हैं। यद्यपि सम्बन्धित रोगों की संभावना रहती है। निजी मकान, शक्ति तथा वाहन आदि का सुख उत्पन्न होता है। परीक्षाओं में सफलता अच्छे सम्भव बने रहते हैं।

३३७ सं०

(६२५) - इस शूरपुंडरी का स्वामी मनुष्य सुदा, स्वल्प, गौरवर्ण, कोमल, मधुर तथा नम्र स्वभाव का होता है। यह सहनशील तथा क्षान्ति क्षिप्त होने के लालची लीयबुद्धि सम्पन्न एवं कीकरी भी होता है। प्रतिदिन का कार्य प्रतिदिन निपटा देने में इसे अच्छा लगता है। संगीत, नृत्य तथा ललित कलाओं में विशेष रुचि रहती है। ये स्वभाव से कल्पनाशील होते हैं तथा नित्य नवीन चोजनोएँ बनाते रहते हैं। आर्थिक-दृष्टि से इनका जीवन उन्नति क्षील बना रहता है। इनकी भावद्वी के एक से अधिक प्रेम होते हैं। वैदिक-सम्पत्ति का ये सभी अच्छा रहता है। भूमि-मकान आदि का भाव होता है तथा आइजों से सहजोग मिलता है। माना के प्रति विशेष श्रद्धा रहती है। विवाह २५ अथवा २७ वर्ष की आयु में होता है, जन्तु स्त्री हठी स्वभाव की होती है। वर्ष २३, २५, २७, २८, ३१, ३३, ३५, ३७, ३८, ४३, ४७, ५१, ५३, ५५ तथा ५८ व्यवसाय के लिए उन्नति काफ़ सिद्ध होते हैं। निष्ठा-लाभ कुछ रुकावटों के साथ होता है। संतान भी ओ से कुछ चिन्ता रहती है।

(६२६) - इस शूरपुंडरी में उत्पन्न हुआ जाति गौरवर्ण, लम्बे कद का, स्वल्प शरीर, आबुक पकड़ि का तथा स्वभाव से सहिष्णु होता है। यह बातचीत से साधने वाले को नुस्त उपायित करता है तथा अपनी त्राप एवं लप छिपाने के लिए शक्ति होता है। यह सामाजिक हृदियों में विश्वास नहीं करता। शारीरिक श्रम की अपेक्षा सांकेतिक-श्रम इसे अधिक रुचि का होता है। विज्ञाका सामान्य लाभ होता है। विवाह २५ अथवा २७ वर्ष की आयु में होता है तथा स्त्री से अच्छा सहनिलता है। संज्ञात की कमी रहती है तथा उसकी ओ से चिन्ता भी बनी रहती है। जीवन के २३, २४, २६, २८, ३१, ३५, ३७, ३८, ४३, ४७, ४८, ५१, ५३, ५५, ५८ तथा ६१ वें वर्ष व्यवसाय में उन्नति काफ़ सिद्ध होते हैं। ६४ वें वर्ष स्वास्थ के लिए चिन्ता काफ़ रहता है। आर्थिक-दृष्टि से इनका जीवन उन्नतिशील बना रहता है तथा व्यवसाय का अनोपलब्धि के सेठ अवसर प्राप्त होते हैं। भूमि, मकान तथा वाहन का प्राप्ति प्राप्त होता है तथा भूमि का आर्थिक-लाभ के अवसर भी मिलते हैं। पत्नीजीवन से सामान्य सम्बन्ध बने रहते हैं।

(६२७) - इस वर्ष कुण्डली का अधिपति जातक सोवले रंग तथा मधुम कद का, पीसीसी, कोपी स्वाभाव वाला तथा उबल भावविष्वाही होता है। यह सामाजिक हठिजों के गरी मानता। राणवद से इहेस-माना जाफ होता है तथा आर्थिक-स्थिति मधुम बनी रहती है। भाइयों की अपेक्षा बहिन अधिक होती है। विष्वा के क्षेत्र में आवश्यक सफलता मिलती है। विवाह २५ अथवा २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी कुछ ही स्वाभाव की होती है, आसंख दाम्पत्य-सुख चिन्ताजनक रहता है। सन्तान के लिए ३२ वां वर्ष कष्टकाक होता है। जातक को चेहरे सम्बन्धित रोगभी होसकते हैं। वर्ष २३, २७, २८, ३१, ३५, ३८, ४३, ४७, ४८, ५१, ५३, ५५ तथा ५८ व्यवसाय में उन्नति काक सिद्ध होते हैं तथा वर्ष २६, ५० और ६२ आर्थिक-दृष्टि से चिन्ताजनक रहते हैं। ४२ वर्ष की आयु में श्रम तथा भवन का योग बनता है। लड़कों की अपेक्षा लड़कियों की संख्या अधिक होती है। माता-पिता तथा भाई-बहिनों से सामान्य सम्बन्ध रहते हैं। आर्थिक-स्थिति मधुम रहती है।

(६२८) - इस जन्माङ्क-चक्र का स्वामी जातक गौरवर्ण, कुछ लम्बाई लिये मधुम कद तथा उन्नत वक्षःस्थल वाला, घने झुँझाले बालों वाला एवं "क्षणे हस्ताः क्षणे तुष्टाः" स्वभाव वाला होता है। यह अपना नेत्र तथा फुर्तीला होता है। धार्मिक हठिजों पर विश्वास करता है तथा जिससे मित्रता मावे, वह पर अपना सर्वस्व न्यौदावा का देने वाला होता है। पालु रुष्ट होजाने पर यह जोश के आवेश में गहरी-से-गहरी मित्रता को भी एक ही क्षण में तोड़ देता है। विष्वा का क्षेत्र लाभ होता है। विवाह २२ अथवा २६ वें वर्ष में होता है। दाम्पत्य-जीवन सुख पूर्ण रहता है। सन्तानों में पुत्रों की संख्या अधिक होती है। वर्ष २४, २६, २८, ३०, ३२, ३६, ३८, ४०, ४२, ४४, ४८, ५०, ५२, ५६ तथा ६० व्यवसाय में उन्नति काक रहते हैं। आर्थिक क्षेत्र में इसे अपने पीसीसी का ही सफलता प्राप्त होती है तथा आर्थिक-स्थिति सुदृढ बनी रहती है। श्रम-भवन आदि के संबंध में अंगर-मुकदमा आदि की संभावना बनती है। ये लोग अपनी जोशनाओं की सफलता के लिए कठोर पीसीसी करते हैं। पीसीसीजों से सम्बन्ध सामान्यतः अच्छे बने रहते हैं।

(६२८) - इस जन्तुर्लिंग में उत्पन्न मनुष्य सौंदर्य रंग का, हृष्ट-पुष्ट, सुंदराले बाल, गोल चेहरा तथा साहसी स्वभाव का होता है। यह कठिन-ले-कठिन परिस्थितियों को अपने अनुकूल बना लेने में समर्थ होता है, पालु ऐसी आलसी प्रकृति का भी होता है कि जब तक सि पा ही काम न आ जाय, तब तक उसके विषय में सोचना भी नहीं है। यह संशयालु स्वभाव का तथा सारी के प्रति चौकन्ना रहने वाला होता है। यह जिसको अपना लेता है, उसके प्रति सदैव विश्वासपात्र बना रहता है। यह शत्रुओं को पराजित करने वाला तथा अधिकारीयों से मनभेद रखने वाला होता है। विष्णु-लाभ उत्तम होता है। विवाह २२, २६ अथवा २८ वें वर्ष में होता है। पत्नी मनोनुकूल मिलने से दाम्पत्य-सुख अच्छा रहता है। पुत्रों की संख्या अधिक होती है। जीवन के २४, २६, २८, ३०, ३२, ३६, ३८, ४२, ४४, ४८, ५०, ५२, ५४ तथा ५६ वें वर्ष अवसाप में उत्कर्षिकाएँ रहने हैं। जीवन में मकान आदि के लाभ का सुयोग मिलता है, पालु श्रम के संबंध में अग्र्य होने की संभावना रहती है। आर्थिक-स्थिति अच्छी बनी रहती है।

(६३०) - इस जन्तुर्लिंग में उत्पन्न होने वाला बालक और्वर्ण, मध्यम कद, पतली देह, लीले नाक-नक्शा तथा पतले होठों वाला होता है। यह हँसमुख, चतुर तथा विश्वसनीय मित्र होता है। यह छुड़ाई से बचना जानता है तथा कर्मकाण्ड एवं कठोर कार्य में असफल रहता है। रुचि के अनिकूल कार्य का इन्हीं पक्ष में नहीं होता। आर्थिक स्थिति मध्यम रहती है तथा प्रकृति से छे छुपण (कंधूस) भी होते हैं। विष्णु-लाभ मध्यम होता है। आर्यों से सहयोग नहीं मिलता। विवाह २३, २७ अथवा २८ वें वर्ष में होता है। स्त्री सुकृती तथा सुशीला होती है, फलतः दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहता है। सन्तान का सुख भी अच्छा रहता है। जीवन के २२, २७, २८, ३१, ३४, ३७, ३८, ४१, ४३, ४८, ५१, ५३, ५५, ५८ तथा ६१ वें वर्ष अवसाप में उत्कर्षिकाएँ तथा आर्थिक-हानि देने वाले सिद्ध होते हैं। आर्थिक कार्यों में विशेष रुचि तथा ईश्वर से सहारा रहती है। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय से अधिक लाभ होता है। माना-पिता अथवा परिवारी जनों से सम्बन्ध सामान्य रहते हैं। इस का जीवन सामान्यतः सुखपूर्वक बीतता है तथा आधु शर्ण होती है।

(६३१) - इस जन्तुलिंग में उत्पन्न बालक सुतेरे गेहुँआ रंग का, मध्यम कद, लीबे नाक-गन्ना, पतले होठ तथा हँसमुख चेहरे वाला होता है। यह मित्रों का प्रिय होता है तथा बचपन के कार्यों में गहरी रुचि रखता है। अपने बचपन में तथा आजीवन - भ्रमण या विशेष ध्यान देता है। व्यापारिकता में इसकी गहरी आस्था (होती है) काम तथा संगीत का प्रेमी, भावना-प्रधान तथा बुद्धि कार्य में धृष्ट करता है। यह क्रान्ति कार्य में सफल रहता है तथा कठोर परिस्थितियों में शीघ्र बचता जाता है। हिमालय, सुकुमारता, कोमल मादृत्व, प्रेम तथा स्नेह आदि गुणों की प्रशंसा पाई जाती है। आमदनी के मोल एक से अधिक होने के कारण आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है। विष्णु का प्रेक्षक लाभ होता है। विवाह २३ अथवा २७ वें वर्ष में होता है। पत्नी सुशीला तथा गुणवती मिलती है। सन्तान से सहयोग मिलता है, पालु सन्तान - हाकिमी सम्बन्ध। वर्ष २५, २७, २८, ३१, ३३, ३५, ३७, ३८, ४१, ४३, ४७, ४८, ५१, ५३, ५५, ५८ तथा ६१ व्यवसाय में उन्नति का एक होते हैं। सवारी तथा मकान का लाभ मिलता है।

(६३२) - इस सूर्यकुण्डली में जन्म ग्रहण करने वाला मनुष्य हल्के सौंवले रंग का, मध्यम कद, सुध लम्बाई लिए, आकर्षक तथा सुन्दर व्यक्ति, दूसरों के मन की बात पहिंचाने वाले तथा नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय में अधिक रुचि लेने वाला होता है। विज्जालाभ प्रेक्षक रहता है। विवाह २४ अथवा २८ वें वर्ष में होता है तथा दाम्पत्य एवं सन्तान-सुख अच्छा प्राप्त होता है। प्रेमी से जानक को आर्थिक-लाभ होता है तथा माना से भी धन-लाभ होता सम्बन्ध। स्त्री सुधी, सुशीला तथा गुणवती होती है। जीवन के २२, २४, २६, २८, ३०, ३२, ३४, ३८, ४०, ४२, ४४, ४६, ५०, ५२, ५४, ५६ तथा ६२ वें वर्ष व्यवसाय तथा आर्थिक दृष्टि से उन्नति का एक होते हैं। आमदनी के अनेक अवसर मिलते हैं, तथापि खर्च इतना ज्यादा रहता है कि उसके कारण जीवन में आर्थिक-असन्तुलन निम्ना बना रहता है। भूमि तथा मकान आदि का योग बनता है। पिता तथा माता-बहिनो से सम्बन्ध सामान्य रहते हैं। धर्म-कर्म में रुचि बनी (होती है) शक्ति प्राप्त स्वस्थ रहता है तथा श्रेष्ठ प्राप्त होती है।

(६३३) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य गौर वर्ण, लम्बे चेहरे का, स्वस्थ शरीर तथा शान्त स्वभाव का होगा। न्याय के प्रति इसका विशेष रुकावट रहता है एवं अन्धकार का खलका विरोध करता है। सत्यवादिता तथा गरीबों के प्रति दयालुता इसके विशिष्ट गुण होते हैं। निःस्वार्थ-सेवा एवं योग्यता के काम में यह अगुणी रहता है। वार्षिक वृत्ति प्रभाव ऐसे जातक निता प्रत-संचय में प्रवृत्त रहते हैं। आर्थिक-दृष्टि से इनका जीवन उन्नतिशील बना रहता है। इसकी आदमी के मोल एक से अधिक होते हैं। यदि ऐसी इसे प्रत का लाभ मिलता है। मैं ऐसी आर्थिक-लाभ होता है। पुत्रों से भी सहजोग प्राप्त होता रहता है। विद्याध्ययन में कुछ रुकावटें आती हैं तथापि बृद्धि बहुत तीव्र होती है। विवाह २४ वर्ष की आयु में होता लगभग १ हज़ी सुदृढ़, सुशीला तथा गुणवती होती है, अतः दाम्पत्य-सुख उत्पन्न रहता है। वर्ष २२, २४, २६, २८, ३२, ३६, ३८, ४०, ४४, ४८, ५०, ५२, ५४, ५८, ६२ तथा ६४ में व्यवसाय की उन्नति होती है। शरीर स्वस्थ रहता है तथा दीर्घायु प्राप्त होती है।

(६३४) - इस जन्मकुण्डली में वैदा हुआ बालक मध्यम कद, गौर वर्ण, सुन्दर नाक-तन्त्रावाला तथा पतले शरीर का होगा। यह वाग्मय, न्याय तथा आदर्श को सर्वोपरी महत्व देने वाला, अतीतिपूर्व एवं अध्यात्मिक कार्यों से डूब रहे वाला तथा सत्य एवं ईमानदारी का पक्षपात होता है। विद्या, बृद्धि का श्रेष्ठ लाभ होता है तथा व्यावसायिक-क्षेत्र में अत्यधिक सफलता प्राप्त होती है। यदि तथा सफल आदि से भी इसे लाभ प्राप्त होता है। विवाह २४ अथवा २८ वें वर्ष में होता है। पत्नी, सुदृढ़, सुशीला तथा सुलभता होती है, कलत्र दाम्पत्य-सुख अच्छा बना रहता है। प्रथम प्रज्ञान कला होती है तथा पुत्रों से भी आर्थिक-लाभ प्राप्त होता है। वर्ष २२, २४, २६, २८, ३०, ३२, ३४, ३८, ४०, ४२, ४४, ५० तथा ५४ व्यवसाय में उन्नतिकारक तथा आर्थिक लाभप्रद सिद्ध होते हैं। वर्ष २८ तथा ६१ स्वास्थ्य के प्रति चिन्ता कायम रहते हैं। माना, धर्म तथा आर्थ-वृद्धि से अच्छे सम्बन्ध बन रहे हैं। समाज में मान-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है तथा धर्म एवं ईश्वर भक्ति में मन लगा रहता है। आयु दीर्घ प्राप्त होती है तथा जीवन सुखी बीतता है।

(६३५) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य स्थूल - शरीर वाला , सँवले रंग का , साहसी , क्रूर - स्वभाव का , शत्रुओं का मर्दन करने वाला , तंगुल - पिण्ड , तथापि धर्म - पिण्ड तथा मातृ - भक्त होता है। यह शत्रुता को सहज ही नहीं भूलता तथा अवस्था मिलने ही बदला लेता है। यह अल्पना पनीकामी होता है तथा पनीकम डाग ही भाग्य की उलटि काता है । यह मित्रता स्थापित करने में सिद्ध हस्त होता है , पालु गहरी - से - गहरी मित्रता को भी क्षणिक क्रोधावेश में तोड़ डालता है। आर्थिक - दृष्टि से जीवन कष्टग्रस्त रहता है तथा अनेक बार भ्रम - गुस्ताव के अन्तर्गत भी आते हैं। वर्ष २६ तथा ३० आर्थिक - स्थिति के लिए विशेष चिन्ताजनक रहते हैं। विवाहपत्र में हकाने आती हैं। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। सन्तान तथा दाम्पत्य - सुख उचित प्राप्त होता है। वर्ष २३, २७, २८, ३१, ३५, ३८, ४१, ४३, ४७, ५१, ५३, ५५ तथा ५८ अवसाप में आर्थिक लाभका होते हैं। ग्रहणों से सहयोग मिलता है तथा स्वप्राप्त से मकान का योग्यी बनता है। वायु - विकास होता है।

(६३६) - इस द्वितीय कुण्डली में उत्पन्न हुआ बालक गेहुँए रंग का , पलाकामी , साहसी , हास्य - पिण्ड , स्थूल - शरीर वाला तथा दूसरों को सहज ही अकर्मित कालेने की शक्ति से सम्पन्न चुम्बकीय आविर्भाव वाला होता है। यह क्रूर स्वभाव का तथा शत्रुओं का मर्दन करने में लक्ष्य अग्रस्त रहता है। यह ऐसा अवस्थावादी भी होता है कि अपनी गलत पड़ने पर सामने वाले के पाँव छूलेने में भी संकोच नहीं काता। यह विष्णु - भक्ति में लीन रहता है। विवाह २५ अथवा २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी हठीले स्वभाव की मिलती है, अतः दाम्पत्य - सुख द्रष्टव्य रहता है। सन्तानों में पुत्रों की संख्या अधिक होती है। आयु के २३, २५, २७, २८, ३१, ३५, ३८, ४१, ४३, ४७, ५१, ५३, ५५ तथा ५८ के वर्ष अवसाप एवं आर्थिक - स्थिति में उलटि काक होते हैं, वर्ष ३० आर्थिक - दृष्टि से चिन्ताजनक रहता है। अवसाप की अपेक्षा नौकरी में इन्हें अधिक सफलता मिलती है। माला - दिन तथा मार्ग - ग्रहणों से सम्बन्ध सामान्यतः अच्छे बने रहते हैं, पालु किसी से सहयोग प्राप्त नहीं होता। शारीरिक स्वास्थ्य प्रायः उत्तम बना रहता है तथा पूर्णपु प्राप्त होती है।

(६३०) - इस द्विप कुण्डली का स्वामी मनुष्य सौंसे देहा का, हृष्ट-पुष्ट, विश्वासी, माह-अवका, पुष्ट-धिर तथा शत्रुओं का मर्दन करने वाला, पालु कान का कच्चा होता है। यह इसी पक्षी विद्या का लेना है, कल स्वल्प हाथिनी उठानी पड़ती है। यह विद्या बने कोपी, पुस्तक साहस के रूप में बाने कोने वाला तथा गोपनीयता का उदरन करने वाला होता है। अनलवादी होने के कारण मालव के समस्त शत्रु के जीव भी धू सकना है। पालु बदला लेने की भावना इसके मन में निन्ता चलती रहती है। मित्रता स्थापित करने में यह सिद्धस्त होता है तथा सत्य को भूत सिद्ध करने में जागृत होता है। विद्याधनन में कभी रहती है। विवाह बड़ी आयु में होता है। स्त्री कोपी स्वभाव की मिलती है तथा उसी को से चित्ता बनी रहती है। पुत्रों की संख्या अधिक होती है। वर्ष २३, २४, २७, २८, ३१, ३३, ३४, ३८, ४१, ४३, ४७, ४९, ५३, ५५, ५८ तथा ६४ वर्षसाध में उत्तरी काक रहते हैं। २८ वं वर्ष स्वास्थ के लिए कष्ट उद रहता है। आर्थिक विपत्ति सामान्य होती है।

(६३८) - इस द्विप कुण्डली में जन्म ग्रहणकर्ता बालक गौ वर्ण, स्थूल शरीर, उत्तम एवं चित्तुल लालाट वासा, मोटे होठ तथा सुन्दर बालों वाला, क्षान्ति-धिर, अपने लक्ष्य की ओर निन्ता बढ़ने वाला, युक्ता, पुत्रीला तथा कार्य कुशल होता है। आर्थिक-दृष्टि से इसका जीवन उत्तरी शील बना रहता है। आम्दनी के एक हे अधिक साधन होते हैं। जीवन का पान-पंचम का के यह शक्ति, भवन तथा सवारी आदि का सुख प्राप्त करता है। विद्या का योग उत्तम रहता है। विवाह २२ अथवा २६ वं वर्ष में होता है। स्त्री सुन्दरी, सुशीला, सुविदित तथा सुठावनी होती है। आनन्द वासा-सुख उत्तम बना रहता है। सन्तान का सुख भी अच्छा होता है। पुत्रों की संख्या अधिक रहती है। वर्ष २२, २४, २६, २८, ३०, ३२, ३६, ४०, ४२, ४४, ४८, ५२, ५४, ५६ तथा ६० वर्षसाध में तथा आर्थिक-दृष्टि से उत्तरी काक सिद्ध होते हैं। वर्ष ५७ तथा ६३ स्वास्थ के लिए कष्ट उद रहते हैं। मान-धिर तथा कार्य बहिनो से सामान्य, अच्छे सम्बन्ध रहते हैं। आयु दीर्घ होती है। जीवन सुख प्रद कीतना है।

(६३६)- इस जन्माङ्क-चक्र में उत्पन्न हुआ प्राणी सौंभले रंग, मोटे कद, मोटे होठ, सुनहरी बालों वाला एवं कोपी स्वभाव का होता है। सामान्य हास-परिहास से ही यह चिढ़ जाता है। समसप्त कार्य का इसका स्वभाव में होता है। यह अपने से छोटे तथा बराबरी वालों के साथ आत्मीयता एवं सहृदयता का व्यवहार करता है तथा दुःखी मनुष्य की सहायता का अपना कर्तव्य समझता है। वर्ष के प्रदर्शन से इसे चूण होती है। दूसरों के मन की बात शीघ्र जान लेने की इसमें क्षमता होती है। आइये की अकेला बहिनों की संख्या अधिक होती है तथा उनसे सहयोग भी प्राप्त होता है। विवाह २२ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। आयु के २२, २४, २६, २८, ३०, ३२, ३६, ३८, ४०, ४२, ४४, ४८, ५२, ५४, ५६, ५८ तथा ६० के वर्ष व्यसन में उत्कर्ष का रहते हैं। वर्ष ५७ तथा ६३ स्वास्थ की दृष्टि से चिन्ताजनक सिद्ध होते हैं। सन्तान से सहयोग प्राप्त होता है तथा पश्चिम का आर्थिक-स्थिति उत्तम बनी रहती है।

(६४०)- इस जन्माङ्क-चक्र में शरीर गूढ़ण करने वाला मनुष्य गौरवर्ण, छुश शरीर, ऊँचे, लम्बे तथा बलिष्ठ कद वाला, हीन के समान मुख, लम्बी नाक वाला तथा भीरु स्वभाव का होता है। यह पुत्रियों को अपना प्रिय होता है तथा इसके हृदय का रहस्य किसी को पता नहीं चल पाता। इसमें आत्मविश्वास की मात्रा अत्यधिक पाई जाती है तथा अपने कर्तव्यों के प्रति यह जगहक बना रहता है। यह वातावरण एवं परिस्थिति को परिचान का, तदनुरूप स्वयं को ढाल लेने में दक्ष होता है। विवाह का प्रयत्न लाभ होता है। विवाह २३ अथवा २७ के वर्ष में होता है। स्त्री सुन्दरी तथा सुलक्षणा होती है। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। सन्तानों में कन्याओं की संख्या अधिक होती है। वर्ष २३, २५, २७, २९, ३१, ३३, ३५, ३९, ४१, ४३, ४७, ४९, ५३, ५५, ५७ तथा ५९ व्यसन के लिए उत्कर्ष का रहते हैं। वर्ष ३४ तथा ६४ स्वास्थ के लिए चिन्ताजनक रहते हैं। यह लम्बी रोग होते रहते हैं। आर्थिक-दृष्टि से जीवन उत्कर्षशील बना रहता है तथा आकस्मिक लाभ के अवसर भी प्राप्त होते रहते हैं। जीवन सामान्यतः सुखी बीतता है।

(६४१) - इस सूर्य कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य गोल वर्ण, एक ठोरे शरीर, लम्बी नाक तथा कोपी स्वभाव का एवं पुत्रियों को छिप होता है। यह साहस के बल पर विपरीत परिस्थितियों को भी अपने अनुकूल बना लेता है तथा लक्ष्य की ओर अग्रसर बना रहता है। यह जीवन का हल्का होता है, अतः इसके मित्रों की संख्या कम रहती है। समाप्त शक्ति दुर्बल रहती है। जिसके कारण जीवन में अनेक बाधाएँ उत्पन्न होती हैं। मनुष्यों की अपेक्षा बहिरों की संख्या अधिक होती है। घेर सम्बन्धी बीमारियाँ बनी रहती हैं तथा आर्थिक - स्थिति मजबूत रहती है। विद्या का लाभ ठीक रहता है। सन्तानों में पुत्रों की संख्या अधिक होती है। विवाह २१ अथवा २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुश्रिली मिलती है, अतः दाम्पत्य सुख उत्तम बना रहता है। वर्ष २३, २४, २७, २८, ३१, ३३, ३५, ३८, ४१, ४३, ४५, ४७, ५३, ५५ तथा ५७ आर्थिक दृष्टि से उत्कृष्ट काल रहते हैं। वर्ष २८ विशेष उत्कृष्ट काल रहता है। वर्ष ३४, ५७ तथा ६४ स्वास्थ्य के लिए कष्टपूर्ण हैं।

(६४२) - इस सूर्य कुण्डली में जन्मा हुआ बालक हल्के सौंवाले रंग का, दुर्बल शरीर, भीरु-पुष्टि, रहस्यमय स्वभाव का, अतः छेले पर विश्वास राखने वाला, परिस्थिति के अनुरूप स्वयं में परिवर्तन कर लेने वाला, समय को पहिचानने वाला तथा पुत्रियों को छिप होता है। इनके मनोभावों का सहज ही पता नहीं लगाया जा सकता। इन्हें अपने जीवन में काली उताव-चढ़ाव देखने पड़ते हैं। आर्थिक - स्थिति कुछ कमजोर होती रहती है, क्योंकि इनके खर्च बड़े-बड़े रहते हैं। आर्थिक खर्चों के कारण अनेक बाधाएँ उत्पन्न होती हैं। विद्या प्रयत्न प्राप्त होती है। विवाह २३ या २७ वें वर्ष में होता है। पत्नी के विषय में सम्बन्ध रहती रहते हैं, दाम्पत्य - सुख उत्तम रहता है। सन्तानों में कोई सहज नहीं मिलता तथा उनके विषय में चिन्ता बनी रहती है। वर्ष २३, २४, २७, २८, ३१, ३३, ३५, ३८, ४१, ४३, ४५, ४७, ५२, ५५ तथा ५७ व्यवसाय में उत्कृष्ट काल रहते हैं। वर्ष ६४ स्वास्थ्य के लिए चिन्ता काल रहता है। सब काम किसी प्रकार से हो जाते हैं।

(६४३) - इस सूर्य कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य साँवले रंग का, सुन्दर तथा आकर्षक चेहरे वाला, वित्तसम्पन्न का, मधुरभाषी, लम्बे और घनले शरीर का तथा मित्रता स्थापित करने में अत्यन्त कुशल होता है। यह स्वभाव से लाहरी तथा जीवशी होता है। इसकी स्मृताशक्ति तीव्र होती है तथा समस्त एवं विधम के अगुआ काम करता है। पसन्द होता है। आर्थिक-दृष्टि से जीवन उन्नतिशील है तथा पैतृक-सम्पत्ति का लाभ भी मिलता है। माता से विशेष स्नेह-सहयोग नहीं रहता। सवारी आदि का सुख प्राप्त होता है। विज्ञानात्मक मध्यम रहता है। व्यवसाय की अपेक्षा गौकरी में अधिक सफलता मिलती है। विवाह २२, २४ अथवा २८ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री सुन्दर, पालु कोपी-स्वभाव की होती है, तथापि दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहता है। वर्ष २२, २४, २६, २८, ३०, ३२, ३४, ३८, ४२, ४४, ४६, ५०, ५२, ५४, ५६ एवं ५८ वें वर्ष व्यवसाय में उन्नति पाएँगे। वर्ष २१, ३३ तथा ५७ आर्थिक दृष्टि से तथा वर्ष ६५ स्वास्थ्य के लिए चिन्ताकाफ़ रहेगे।

(६४४) - इस सूर्य कुण्डली वाला जातक हल्के गेहूँ रंग का, आकर्षक चेहरे वाला, स्वस्थ शरीर एवं मित्रता स्थापित करने में कुशल होता है। यह स्वभाव से लाहरी तथा जीवशी होता है। यह शोकासु प्रकृति का तथा किसी पर सहसा विश्वास न करने वाला भी होता है। यह सर्वदा चौकला बना रहता है। व्यवसाय की अपेक्षा गौकरी में इसे विशेष सफलता मिलती है। चरन्तु अधिकारी वर्ग से इसकी परी नहीं बैठती। विज्ञान का मध्यम लाभ होता है। विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। वली वित्त-स्वभाव की होती है, अतः दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहता है। सन्तानों की ओर से कुछ चिन्ता रहती है। वर्ष २२, २४, २६, २८, ३०, ३२, ३४, ३८, ४२, ४४, ४६, ४८, ५०, ५४, ५६ तथा ५७ व्यवसाय में उन्नतिपात्र सिद्ध होते हैं तथा वर्ष ५८ एवं ६५ स्वास्थ्य के लिए चिन्ताभाजक रहेगे हैं। निजी मकान प्राप्ति का योग ४६ वें वर्ष में बनता है। आकर्षक वर्चों के कारण आर्थिक-स्थिति कमजोर होती रहती है।

(६४५) - इस क्षय कुण्डली में उत्पन्न हुआ जानक गौवर्ण, कुध लम्बाई लिये मध्यम कद वाला, सुन्दर तथा आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न एवं क्षान्तिप्रिय होता है। आर्थिक दृष्टि से उन्नति प्रीति होने हुए भी धन का संचय अधिक नहीं हो पाता। यह स्नेह, सौजन्य तथा मधुमायिता जैसे गुणों से युक्त तथा दूसरों की सहायता करने में अग्रणी होता है, समाज-सेवा के लिए सदैव तत्पर एवं निष्मायुक्त कार्य करने में रुचि राखता है। सिञ्चना-व्यापित करने में सिद्ध हस्त होता है। इनका वृद्धावस्था कुछ कमजोर होता है तथा चेकड़ों से लम्बित रोग होने की संभावना रहती है। वायु-विकाट होता भी संभव है। विष्णु-लाभ यथेष्ट होता है। विवाह २२ अथवा २४ वर्ष की आयु में होता संभव है। स्त्री सुन्दरी तथा सुशीला मिलती है। दाम्पत्य-सुख उत्कृष्ट रहता है। पुत्रों से सुख-सहयोग मिलता है। वर्ष २२, २४, २६, ३०, ३२, ३४, ३८, ४२, ४४, ४६, ५०, ५४, ५६ तथा ५८ अवसर के लिए उन्नति काफ़ रहे हैं। वर्ष ४५ आर्थिक-दृष्टि से कष्टप्रद रहता है। आर्थिक-स्थिति मध्यम रहती है।

(६४६) - इस क्षय कुण्डली वाला मुख्य गौवर्ण, सुन्दर, मध्यम कद, तीव्र नाक-तन्त्रा, इकहरे बदनवाला तथा मृदुभाषी होता है। धर्म के प्रति झुकाव, ईश्वर के अगाध विश्वास राखने वाला तथा अर्थों के प्रति सहानुभूति पूर्ण होता है। यह एकान्त-प्रिय, दूसरों पर विश्वास न करने वाला, अपने लिए हुए उपकार की प्रशंसा करने वाला तथा सामाजिक हठिधों एवं पाप्माओं का कड़ाई के साथ पालन करने वाला होता है। आर्थिक-दृष्टि से उसकी स्थिति मध्यम रहती है। विलासिता एवं मनोरंजन की वस्तुओं पर इसका वर्च अधिक होता है। भाइयों से इष्टे सहयोग नहीं मिलता तथा बहिनों की संख्या अधिक होती है। सवारी तथा मकान का सुख प्राप्त होता है, विष्णु-लाभ मध्यम रहता है। विवाह २३ अथवा २५ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। जीवन के २३, २५, २८, ३२, ३३, ३५, ३८, ४३, ४६, ५१, ५३, ५५ तथा ५८ वे वर्ष अवसर से उन्नति काफ़ सिद्ध होते हैं। सन्तान से सुख-सहयोग मिलता है। जीवन सामान्यतः सुख-शान्ति पूर्वक व्यतीत होता है।

(६४७)- इस स्वरूप कुण्डली में उत्पलजातक मध्यमकद, दुबले-पतले शरीर एवं लीले नाक-नयनवाला, सुन्दर, मधुरभाषी तथा दूसरों के प्रति सहाय्यप्रति प्रणीत होता है। यह अपने जिसे हुए उपकार को भूल जाता है तथा ईश्वर या अगाध शक्ति राखता है। इसमें आत्मविश्वास की अधिकता पाई जाती है। यह अपने आत्मविश्वास, जी-मन एवं धर्म के बल पर ही जीवन में लक्ष्य की काला है। दूसरों की मदद करना इसके स्वभाव में होता है। इसके व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता यह होती है कि यह अपने शत्रु को भी मित्र बना लेता है। आर्थिक दृष्टि से इसका जीवन उन्नतिशील बना रहता है। आमदनी के स्रोत एक है अधिक होते हैं। विद्यालाम चषेष्ट होता है। विवाह २३, २४ अथवा २६ के वर्ष में होता है। दाम्पत्य-जीवन सुखमय रहता है। सन्तानों से भी सहयोग मिलता है। वर्ष २३, २७, २८, ३१, ३५, ३८, ४१, ४३, ४५, ४७, ५१, ५३, ५५, ५७ तथा ५८ आर्थिक-उन्नति काक तथा ३४ एवं ४६ हासिक होते हैं। वर्ष ६० स्वास्थ्य के प्रति काष्टकाक होता है। आयु मध्यम होती है।

(६४८)- इस स्वरूप कुण्डली में जल केने वाला मधुष्प हल्के पौवले रंग का, सुन्दर, मध्यम कदवाला, मधुरभाषी सुन्दर तथा चंचल आँवों वाला, पतले शरीर का, कार्प-दृष्ट, स्वभाव से विनम्र तथा कुछ कोपी प्रकृति का होता है। यह सामाजिक कर्तव्यों तथा पाम्यराओं का कठोरा से पालन करने वाला एवं सबके प्रति सहाय्यप्रति रखने वाला भी होता है। इसका शत्रु-पक्ष उबल होता है, जो परोक्ष में इसके विरुद्ध बूढ़-रचना काता रहता है। आर्थिक-दृष्टि से इसका जीवन मध्यम रहता है तथा धन भी कभी से प्राप्त, चिन्ता बनी रहती है। विद्यालाम सामान्य: ठीक रहता है। विवाह २३ अथवा २५ के वर्ष में होता है। दाम्पत्य सुख अच्छा रहता है। पुत्र का योग २७ वर्ष की आयु में बनता है। वर्ष २३, २५, २७, २८, ३१, ३३, ३५, ३७, ३८, ४३, ४७, ४८, ५१, ५३, ५५ तथा ५८ व्यनसाप के लिए विलासिकाक रहते हैं। वर्ष ६५ स्वास्थ्य के लिए चिकाणक रहता है। जीवन में धर्म तथा भवन का पुत्र भी प्राप्त होता है। आयु मध्यम रहती है।

(६४९) - इस सूर्यकुण्डली में उत्पन्न हुका मनुष्य सौवले रंग का, छोपी स्वभाव का, सुन्दर औरों वाला, साहसी तथा कठोर-से-कठोर परिस्थिति को भी अपने अनुकूल बना लेने वाला होता है। यह संकटों का डरका मुकाबिला करता है तथा लड़ाई-अगड़े आदि साहसिक कार्यों में रुचि लेता है। यह स्वतन्त्र निष्पत्ति लेने में लक्ष्य होता है। शरीर में पतला-दुबला होने हुए भी जोर पकड़ती होता है तथा विमान एवं मशीनरी के कार्यों में रुचि लेता है। यह पुत्र के क्षेत्र में पूर्ण असफल रहता है। आमदनी के जोत एक से अधिक होते हैं। आर्थिक-स्थिति उत्तम शील बनी रहती है। प्रेमिकान आदि का सुख भी मिलता है। विष्णु का उत्तम लाभ होता है। विवाह २४ अथवा २६ वर्ष में होता है। दाम्पत्य-सुख मध्यम रहता है। कला की अपेक्षा पुत्र पत्नियों अधिक होती है। वर्ष २२, २४, २६, २८, ३२, ३४, ३६, ४०, ४४, ४६, ४८, ५२, ५४, ५६ तथा ५८ व्यावसाय में उत्तमिकाल होते हैं। वर्ष ५८ तथा ६० स्वास्थ के लिए कष्ट पड़ रहे हैं। धर्म-कर्म में रुचि रहती है। आयु दीर्घ प्राप्ता होती है।

(६५०) - इस सूर्यकुण्डली वाला जातक गेहुँए रंग का, कुछ लम्बाई लिए मध्यम कद का, बूँदाले बालों वाला, पतले शरीर का तथा बगारही उच्छृति का होता है। यह विपरीत परिस्थितियों को भी अपने अनुकूल बना लेने में लक्ष्य होता है। यह स्पष्टवादी होने के कारण गुँह या छी बगारी-बगारी बोलें कहता है। इसे किसी प्रकार का भय नहीं लगता। स्वभाव में छोपी होने के कारण इसे लड़ाई-अगड़े को भी आगम आता है। यह स्वयं अपनी योजनाबद्ध कार्य करता है तथा दूसरों के निषेध से रहता स्वीकार नहीं करता। आर्थिक दृष्टि से इसका जीवन उत्तम शील रहता है। आमदनी के जोत एक से अधिक रहते हैं। विष्णु के क्षेत्र में लाभ मिलता है। विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य-जीवन सुखमय रहता है तथा पुत्र से भी सहज मिलता है। वर्ष २२, २४, २६, २८, ३२, ३४, ३६, ४०, ४४, ४६, ४८, ५२, ५४, ५६ तथा ५८ व्यावसाय में उत्तमिकाल मिलते हैं। स्त्री की ओर से चिन्ता बनी रहती है। वर्ष ५८ अथवा ५९ में प्रेम-लाभ होता है। मशीनरी को भी लक्ष्यता

(६५१) - इस सूर्य कुण्डली वाला जातक गौरवर्ण, लम्बे कद वाला, सुन्दर नेत्रों वाला, साहसी तथा कोपी स्वभाव का होता है। यह स्वतन्त्र निर्णय लेने में समर्थ होता है तथा कठिन-से-कठिन परिस्थितियों में भी अपने ऊपर नियन्त्रण बाँधते हुए विपत्तियों का डट कर मुकाबिला करता है। पक्षि यह शरीर से पतला-पुबला एवं कमजोर दिवाही देता है। तथापि इसमें लड़ने-झड़ने की सहज प्रवृत्ति पाई जाती है। यह स्पष्टवादी तथा निर्भीक भाव से खरी-खरी बातें कहने वाला होता है। यह किसी भी गुलामी भयवा निष्ठा में रह कर अपना विकास नहीं करता। आर्थिक-स्थिति कमजोर रहती है, तथापि आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं, तथापि खर्च बहुत अधिक रहता है। विवाह २२, २४ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है। वर्ष २०, २२, २४, २६, २८, ३२, ३४, ३६, ४०, ४४, ४६, ४८, ५०, ५२, ५६, ५८ तथा ६० आर्थिक-उन्नतिकारक होते हैं। वर्ष २३, ३५ तथा ४७ आर्थिक-चिन्ता के तथा वर्ष १२, २५ तथा ६७ स्वास्थ्य-चिन्ता के हैं।

(६५२) - इस सूर्य कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य गौरवर्ण, मध्यम कद, सुन्दर नाक-नभ्या वाला तथा अनाम स्वभाव का होता है। आत्म-विश्वास तथा साहस की भावना अधिक पाई जाती है। यह अपनी हिम्मत के बल पर प्रति-कूल परिस्थितियों को भी अपने अनुकूल बना लेता है। आर्थिक-दृष्टि से जीवन उन्नतिशील होता है। आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी प्रचण्ड सफलता मिलती है। इसे अपने भाइयों से कोई सहयोग नहीं मिलता। स्व-परिश्रम द्वारा ही यह आर्थिक तथा अन्य क्षेत्रों में उन्नति करता है। विवाह के क्षेत्र में भी इसे पक्षि सफलता मिलती है। निजी भूमि, गवन आदि का प्रेम भी रहता है। विवाह २४ वर्ष की आयु में (कम है) दाम्पत्य-सुख उन्नत रहता है। पुत्रों की अपेक्षा कन्ये अधिक होती हैं। कुटुम्बी होती है। वर्ष २२, २४, २६, २८, ३४, ३६, ४०, ४६, ४८, ५२, ५८, ६० तथा ६२ व्यवसाय में उन्नति कारक रहते हैं। समाज में मान-परिष्ठा बनी रहती है। सन्तान से सुख प्राप्त होता है। स्वास्थ्य-प्रति-कूल रहता है।

(६५३) - इस सूर्य कुण्डली में शरीर ग्रहण करने वाला मनुष्य गौरवर्ण, मध्यम कद का, उन्नत ललाट, पुष्ट शरीर, साहसी, कर्मठ तथा पशुमयी होता है। यह बड़े लोगों तथा अधिकारीयों के प्रभावित करने की विशेष क्षमता रखता है। आमदनी के मोल एक से अधिक होते हैं, पण्डित रवर्च बढ़ा-चढ़ा होने के कारण आर्थिक-स्थिति कमजोर होती रहती है। यद्यपि यह पूर्ण व्यावहारिक होता है, तथापि कभी-कभी आवेष्टे बाहर होकर अपना-जिफाना का प्रीत्य भी दे बैठता है। अतः से इसे कोई सहयोग नहीं मिलता। भूमि, भवन आदि का निजी योग रहता है। बुद्धि तीव्र होने के कारण विद्या के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त होती है। सन्तानों में कलाओं की प्रवृत्ति अधिक रहती है। विवाह २४ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है तथा दाम्पत्य-जीवन चित्तालोकक बना रहता है। वर्ष २२, २४, २६, २८, ३०, ३४, ३६, ३८, ४०, ४६, ४८, ५०, ५२, ५४, ५८ तथा ६० व्यवसाय अथवा आर्थिक-क्षेत्र में उन्नति दायक होते हैं। आयु पूर्ण होती है, पण्डित ६१ वां वर्ष स्नातक के लिए चिता देता है।

(६५४) - इस सूर्य कुण्डली में उत्पन्न जातक हल्के लालले रंग का, सुन्दर नाक-नयन वाला, दुबले शरीर का, पण्डित साहसी और अल्पतः पशुमयी एवं कोपी स्वभाव का होता है। यह दिन-रात में रहने में लगा रहता है तथा संकटों का दृष्टा पूर्वक सामना करता है। आर्थिक-स्थिति मध्यम रहती है। आमदनी का क्षेत्र बड़ा रहने पर भी रवर्च की अधिकता रहती है, फलतः धन-संचयन अधिक नहीं हो पाता। अतः कोई सहयोग प्राप्त होता है। विद्या का लाभ प्रवेष्ट रहता है, पण्डित उसे हकावटे भी आती है। विवाह के एक से अधिक अवसर बने हैं। दाम्पत्य-सुख मध्यम रहता है। कभी सुखा, पण्डित कोपी स्वभाव की होती है। पुत्रकी अपेक्षा कलाओं की प्रवृत्ति अधिक होती है। वर्ष २१, २३, २५, २७, २९, ३३, ३५, ३७, ४१, ४५, ४७, ४९, ५१, ५३, ५५, ५७ तथा ६१ व्यवसाय एवं आर्थिक-स्थिति में उन्नति दायक होते हैं। व्यवसाय में हानि के अवसर भी आते हैं। पेट सम्बन्धी रोग एवं वायु-विकार होता रहता है। मध्यम सुखी।

(६५५) - इस सूर्य कुण्डली में उत्पन्न बालक जेहुँहे रंग, लम्बे कद, हृष्ट-पुष्ट शरीर तथा सम्मोहक व्यक्तित्व वाला होता है। यह कार्यकारि में चतुर तथा कोची स्वभाव का होता है। यह साहसी तथा परीक्षणी भी होता है तथा साहस के बल पर विपरीत-परीक्षणी को भी अपने अनुकूल बना लेता है। इसे जीवन में कभी उता-पड़ाव देवेंगे पड़ते हैं। भाइयों से इस जीवन में कोई सहयोग नहीं मिलता। आर्थिक-स्थिति कष्टमय रहती है तथा मृदा-गुस्तरा के अवन भी आते रहते हैं। शत्रु-पक्ष प्रबल रहता है, जिसके कारण आर्थिक-हानि भी उठानी पड़ती है। विवाह कालाग्र ठीक होता है। विवाह २३, २५ अथवा २७ वें वर्ष में होता है। दाम्पत्य-सुख मध्यम रहता है। वर्ष २३, २५, २७, २८, ३१, ३३, ३५, ३७, ४१, ४६, ४७, ४८, ५४ तथा ५८ अवसाप एवं आर्थिक-उन्नति में वृद्धि काक होते हैं। वर्ष ४८ अवसाप की दृष्टि से तथा वर्ष ६२ स्वात्म की दृष्टि से प्रतिकूल सिद्ध होता है। पुत्रों की अपेक्षा कन्याएँ अधिक होती हैं। उदा-विकास होता भी संभव है। आयु दीर्घ होती है। जीवन मध्यम सुखी रहता है।

(६५६) - इस सूर्य कुण्डली वाला बालक गौर वर्ण, लम्बे तथा स्वस्थ शरीर वाला, सम्मोहक व्यक्तित्व का धनी, स्वाभिमानी तथा शान्ति-प्रिय होता है। यह किसी के लक्ष्य हा नहीं मानता। परीक्षणी तथा साहसी होने के कारण विपत्तियों का डट का सामना करता है। यह कायक-प्रवृत्ति का होता है तथा विपरीत-लक्ष्य के प्रति शरीर आकर्षित हो जाता है। इसे पढ़ने का विशेष बौद्ध होता है तथा विज्ञान के क्षेत्र में प्रवृत्तता प्राप्त कर, अनेक भाषाओं का ज्ञान अर्जित करता है। विवाह २३ अथवा २५ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री सुखी तथा सुशीला होती है, अतः दाम्पत्य-सुख उत्कृष्ट रहता है। पुत्रों की अपेक्षा कन्याएँ अधिक होती हैं। भाइयों से सहयोग प्राप्त होता है। वर्ष २१, २५, २७, २८, ३३, ३४, ३५, ३७, ३८, ४१, ४५, ४७, ४८, ५३, ५७, ५८ तथा ६१ में अवसाप की शक्ती होती है। वर्ष ४८ आर्थिक-दृष्टि से कष्टग्रस्त रहता है। वर्ष ३२ तथा ६२ स्वात्म के लिए खराब सिद्ध होते हैं। आर्थिक-दृष्टि से जीवन उन्नतिशील बना रहता है। समस्त सुख से कीतना है।

(६५७) - इस सूर्य कुण्डली में जन्मा हुआ मनुष्य गौरवर्ण, लम्बे कद का, उन्नत ललाटे, कार्य करने में चतुर, चपल स्वभाव का तथा अपनी बातों से अज्ञान व्यक्ति को भी अपना बना लेने की कला में सिद्ध-हस्त होता है। इसके सुंदर पाँव काले रंग का तिल होता है, चेहरा लम्बा होता है तथा विपरीत-शिखरी के प्रति इसका विशेष आकर्षण होता है। अर्ध (धन) करने में पटु होने के कारण यह धन-केन प्रकोण अर्ध-ऐश्वर्य का, अपनी आर्थिक-स्थिति को मजबूत बना लेता है, पालु बाद में धर्म की वृद्धि हो जाने से लज्जे में कभी आ जाती है। राजनीतिक-क्षेत्र में इसे विशेष सफलता मिलती है। भूत को सत्य सिद्ध कर दिखाना इनके बाँचे हाथ का खेल होता है। इसके जीवन में शत्रु अधिक होते हैं, पालु यह अपनी चतुराई का प्रयोग भी अपना काम निकाल लेता है। बुरी तीख होती है। विवाह २५ वर्ष की आयु में संभव है। वात्सल्य एवं प्रज्ञान-प्राप्त उत्तर रहता है। वर्ष २१, २३, २५, २७, २९, ३३, ३७, ३९, ४१, ४५, ४९, ५१, ५३, ५७, ५९ तथा ६१ उन्नति का काल होते हैं।

(६५८) - इस सूर्य कुण्डली में उत्पन्न बालक साँवले रंग का, लम्बाई लिए मध्यम कद का, हल-पुष्ट साहसी तथा कोपी स्वभाव का होता है। वीर्य भी और साहसी होने के कारण यह प्रतिभुल क्रीड़ाकारों को भी अपने अनुकूल बना लेता है। इसकी बुरी या भावनाएँ हावी हो सकती हैं। आर्थिक-दृष्टि से जीवन उन्नतिशील रहता है। आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं तथा आकर्षक एवं राज्य-पक्ष से धन-लाभ के अवसर भी मिलते रहते हैं। वाणी कुछ कर्मका होता है। निजी मकान का योग भी बनता है। भाइयों या धन का विर्च होता है। पुत्रों से सहयोग मिलता है। विवाह का योग २४ अथवा २६ वर्ष की आयु में बनता है, पालु एक से अधिक पत्नी होना भी संभव है। वर्ष २२, २४, २६, २८, ३०, ३४, ३६, ३८, ४०, ४२, ४६, ४८, ५०, ५२, ५४, ५६, ५८, ६० तथा ६२ व्यावसायिक एवं आर्थिक-उन्नति के लिए अच्छे रहते हैं। वर्ष ४५ तथा ६३ वात्सल्य के प्रति चिन्ताजनक रहते हैं। जीवन सामान्यतः सुख पूर्वक बीतता है।

(६५८) - इस सूर्यकुण्डली में उत्पन्न बालक गौवर्ण, सुन्दर, आकर्षक रूप एवं मध्यम कद वाला, नुकीली नाक एवं पतले होठों वाला, शान्ति-प्रिय, अत्यन्त कोमल, मधुर, सहिष्णु, विनम्र तथा मनुक प्रकृति का होता है। यह आर्थिक-श्रम की अपेक्षा मानसिक श्रम को अधिक सहत्व देता है। इसमें आत्म-विश्वास तथा साहस की भावना अधिक पाई जाती है। शैक्षणिक अथवा राजनीतिक क्षेत्र में इसे विशेष सफलता मिलती है। कल्याणशील होने के कारण यह अनेक योजनाओं बनाना है तथा उन्हें क्रियान्वित का लाभ भी उठाता है। यह बातचीत करने में अत्यधिक पटु होता है तथा विपक्ष को प्रभावित करने में समर्थ होता है। इसकी आमदनी के मोल एक से अधिक होते हैं, आग. आर्थिक स्थिति उत्तम बनी रहती है। कुपण प्रकृति का होने से यह धन का संचय भी रख कर लेता है। विवाह २४ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है। वाम्भज-पुत्र अर्थात् पुत्रों की संख्या अधिक होती है। वर्ष २४, २६, २८, ३०, ३४, ३८, ४०, ४४, ४८, ५०, ५२ तथा ६२ के वर्ष होते हैं।

(६६०) - इस सूर्यकुण्डली में जन्म गृहण करने वाला सुवृद्ध गौवर्ण, लम्बे कद का, शान्ति-प्रिय, सहिष्णु, सामाजिक-रूढ़िजों को न मानने वाला, ईमानदार, न्याय-प्रिय, लाहरी तथा वाक्पटु होता है। इसे विपक्षी को अपने अनुकूल बना लेने की कला में दक्षता प्राप्त होती है। आमदनी अच्छी होती है, पान्थ व्यय की अधिकता के कारण आर्थिक-कोष दुर्बल रहता है। निजी मकान तथा वाहन आदि का सुख प्राप्त होता है। विवाह २४ या २६ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री-पक्ष की ओर से कुछ चिन्ता बनी रहती है। सन्तानों में पुत्रों की संख्या अधिक होती है तथा पुत्रों से सहयोग भी मिलता है। जीवन के २२, २४, २६, २८, ३०, ३४, ३६, ३८, ४०, ४२, ४६, ४८, ५०, ५४, ५८ तथा ६० के वर्ष व्यवसाय तथा आर्थिक-स्थिति में एकत्रिकालक होते हैं। ६३ वीं वर्ष स्वास्थ्य के लिए चिन्ताजनक रहता है। पैतृक-सम्पत्ति के नष्ट होने का योग भी बनता है। समाज में मान-उल्लेख बनी रहती है। जीवाणुजनों से सामान्य सम्बन्ध रहते हैं। जीवन सुखमयी चलता है।

(६६१) - इस सूर्यकुण्डली का स्वामी ज्ञानक हल्के लौवने (गं का, मध्यम कद वाला, नुकीली नाक, सुक-चेहा तथा कोपी स्वभाव का होता है। यह अत्यन्त कोमल, मधुर, विनय, सहिष्णु तथा मायुक्त-पुष्टि का होता है। साहसी तथा सहिष्णु होने के कारण इसे राजनीतिक क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है। व्याप प्रियता तथा प्रतापविता के लिए यह उपरि होता है। आर्थिक-स्थिति मध्यम रहती है। व्यवसाय की अपेक्षा गौणी में इसे विशेष सफलता मिलती है। पैतृक-सम्पत्ति को रक्च का देते के अवसर भी आते हैं। विष्णु-क्षेत्र में यशस्वि सफलता प्राप्त होती है। विवाह २४, २६ अथवा २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सांवले रंग की तथा कोपी स्वभाव की होती है। स्त्री-पक्ष में चिन्ता बनी रहती है। दाम्पत्य-सुख मध्यम रहता है। ३० वर्ष की आयु में पुत्र-लाभ होता है। माइको से लाभ मिलता है। वर्ष २२, २४, २६, २८, ३०, ३४, ३६, ३८, ४०, ४२, ४६, ४८, ५०, ५२, ५४, ५६ तथा ५८ व्यवसाय में उत्कृष्टि का कहते हैं। ३२ वर्ष बाद भाग्योद होता है।

(६६२) - इस सूर्यकुण्डली का अधिपति मरुत्य गौवर्ण, चित्तशरी, मध्यम कद, उन्नत वक्षःस्थल, गोल-चेहा स्वामिभारी तथा कोपी स्वभाव का होता है। शत्रुओं का ज्ञान-मर्दन का यह हल्के स्वभाव में होता है। यह स्वयं को उत्तम पीण्डित के अनुकूल ढाल लेने में सक्षम होता है। आर्थिक-स्थिति उत्कृष्टि नील बनी रहती है। निजी धर्म, भवन तथा वाहन का सुख मिलता है। धर्म द्वारा आर्थिक-लाभ के अवसर मिलते हैं। विवाह २५ या २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुकरी तथा सुशीला होती है। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। सन्तान-सुख प्रचण्ड मिलता है तथा उनसे आर्थिक-सहयोग भी मिलता है। माइको की अपेक्षा बहिर्को की शिखा अधिक होती है। वर्ष २५, २७, २८, ३१, ३३, ३५, ३७, ३८, ४१, ४३, ४५, ४७, ४८, ५१, ५३, ५५, ५९ तथा ६३ व्यवसाय एवं आर्थिक-स्थिति में उत्कृष्टि का कहते हैं। वर्ष २२, ३४, ४७, ५८ तथा ६४ स्वास्थ्य के लिए कष्टग्रस्त रहते हैं। पेट संबंधी रोग हो सकते हैं। जीवन सामान्य, सुखी बीतता है।

(६६३) - इस सूर्य कुण्डली में उत्तम मृगशिरा साँवले रंग का, गोल चेहरा तथा हल-पुल शरीर वाला, ऊँचा लंबे बाल तथा उत्तम वस्त्राभूषण वाला एवं कोपी स्वभाव का होता है। यह सर्वदा उत्तम सा दीवारी देता है, जो उसके हृदय के रहस्य को कोटि गही जागृत करता। यह अपने शरीर के प्रत्येक पंगीरिणति के अनुकूल कार्य करता है, परन्तु इसका आलसी भी होता है कि जब तक कि वह काम का बोझ धूरी न हो लेती न शक्य है, तब तक कुछ काम भी नहीं करता। यह जिसको अपना मान ले, उसके लिए सर्वस्व त्याग कर देने को तैयार रहता है। यह तुलना विमर्श करने की शक्ति के साथ ही संशयालु प्रकृति के भी होते हैं। आर्थिक-स्थिति बहुत दृढ़ रहती है तथा निजी शक्ति, भवन एवं वाहनदि का ह्रास भी जानता है। विद्याध्ययन में कुछ रुकावटें आती हैं। विवाह २१, २५ अथवा २७ के वर्ष में होता है। इसी साँवली तथा कोपी स्वभाव की होती है। सन्तान से सुख मिलता है। जीवन के २४, २७, २८, ३१, ३३, ३७, ३८, ४१, ४३, ४७, ४८, ५१, ५३, ५५, ५८ तथा ६१ के वर्ष उत्तमि का कर रहे हैं।

(६६४) - इस सूर्य कुण्डली में जलगुहण करने वाला बालक हल्के साँवले रंग, मध्यम कद, कुछ लम्बाई लिए चेहरा, सुन्दर नाक-तबका, चमके होठ तथा इकहो शरीर का होता है। यह स्वभाव से अगस्त्य, साहसी तथा पीरिणी होता है। बहिनो की अपेक्षा भाई अधिक होते हैं। आर्थिक-स्थिति मध्यम रहती है। आसानी की अपेक्षा स्वर्च बढ़ा-चढ़ा रहता है। निजी शक्ति, भवन आदि का सुयोग मिलता है। विवाह २२ अथवा २६ के वर्ष में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा सुशिष्टिनी होती है, अतः दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। विद्याध्ययन रुकावटों के साथ होता है। सन्तानों से तथा भाइयों से सुयोग प्राप्त होता है। पुत्र आलाकारी होते हैं। वर्ष २३, २४, २६, २८, ३०, ३२, ३४, ३६, ३८, ४०, ४४, ४६, ४८, ५०, ५२, ५४, ६०, ६२ तथा ६४ अवलाप तथा आर्थिक-स्थिति के लिए उत्तमि का कर रहे हैं। ठाठ-कारतया मनें रंजन पर स्वर्च अधिक होता है। समाज में मान-प्रतिष्ठा बनी रहती है एवं पीरिणी प्राप्त होती है।

(६६५) - इस पूर्व कुण्डली में उत्पन्न शिशु लंबा, मध्यम कद, कुछ लम्बाई लिये पतले होठ वाला, हँसमुख, चटु तथा शक्ति छिप होता है। यह कठोर कार्य को करने में असमर्थ होता है तथा पुष्टादि से पृष्ठा करता है। यह अत्यधिक व्याप छिप होता है। निम्नोच्चित सुकुम्भता, कोमलता, लज्जा, भावुकता, रोह आदि गुण इसे प्रज्जि माना में पाये जाते हैं। आर्थिक-स्रोत अच्छे होते हैं, तथापि खर्च बड़ा-चढ़ा रहने के कारण धन का अधिक संचय नहीं हो पाता। सकारी, निजी मकान तथा भूमि का सुख भी मिलता है। नौकरी की अवस्था व्याप में अधिक सफलता मिलती है। विष्ठा का अच्छा लाभ होता है। विवाह २२ अथवा २६ वर्ष की उ. पु. में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होती है। पुत्रों से जीवन में सहयोग मिलता है। वर्ष २४, २६, २८, ३०, ३२, ३६, ३८, ४०, ४२, ४८, ५०, ५२, ५४, ५८ तथा ६० व्यवसाय में उत्तमि काक सिंह होते हैं। वर्ष ५८ तथा ६५ (दाय्य के लिए काष्ट प्रद रहते हैं)। सामान्यतः जीवन सुख-शान्ति पूर्वक व्यतीत होता है।

(६६६) - इस पूर्व कुण्डली में जन्मा हुआ व्यक्ति सौवले रंग का, लम्बा कद, लम्बा चेहरा, कोपी, सादरी तथा अत्यधिक आल विरहाली होता है। यह विदहीन नारी विषयों को भी अपने अनुकूल बना लेता है। इनके विषय में कोई कुछ भी को न लोचे, पालु से अपनी धुन में मग्न रहने वाले होते हैं। नौकरी होने के कारण से अच्छा धन कमाते हैं, पालु खर्च इनके बड़े-चढ़े रहते हैं कि पैसा इनके पास नहीं टिक पाता। आकर्षक-मन के भी अनेक अवसर आते हैं, पालु धन के अभाव के कारण कोडु काम नहीं रुक पाता। मरुजों से जीवन में सहयोग प्राप्त होता है। निजी भूमि तथा मकान का सुख भी मिलता है। विवाह २३ अथवा २७ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री सौवली तथा कोपी स्वभाव की होती है। विष्ठा-धन में कुछ रुकावटें आती हैं, पालु दाय्य एवं सन्तान-सुख उत्तम रहता है। वर्ष २५, २७, २८, ३१, ३३, ३७, ३८, ४१, ४३, ४५, ४८, ५१, ५३, ५५ तथा ५७ व्यवसाय में उत्तमि काक रहते हैं। जीवन सुख से बीता है।

(६६७) - इस सूर्य कुण्डली वाला जातक गेहुँए (गं का, हुँए या चेचक के दाग वाला, कोपी स्वभाव का, शरीर में कुछ लम्बा तथा पतला होता है) यह दूसरों के हृदय की बात को भोंप लेने में दक्ष होता है तथा ठोका खाका भी मुस्कुराना रहता है। यह साहस तथा आत्म-विश्वास के बल पर प्रत्येक परिस्थिति का सामना करता है। द्वादशविंशतिका इसका विशिष्ट गुण होता है। सुखा लाभ-सज्जा तथा विलासिता में इसका धर्म अधिक खर्च होता है, फलतः आर्थिक-स्थिति कमजोर होती जाती है तथा कभी-कभी शून्य-गुप्तता के अभाव में भी आते रहते हैं। यह जिससे एक बात दुश्मनी मान लए, उससे अन्ततः अपने सम्बन्ध नहीं सुलझता। बदले की भावना प्रबल होती रहती है। विवाह २३ अथवा २७ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य एवं सन्तान-सुख अच्छा रहता है। वर्ष २५, २७, ३०, ३२, ४०, ४२, ४४, ४६, ५०, ५२, ५४, ५८ तथा ६२ आर्थिक-उन्नति का एक होता है। दलाली जैसे कार्यों में इसे अधिक सफलता मिलेगी।

(६६८) - इस सूर्य कुण्डली में उत्तम पुनः मनुष्य जीव वर्ण-लम्बे कद का, स्वास्थ तथा कलिष्ठ शरीर वाला, सुखा लाभ-गम्भीर वाला, शान्ति-पुत्र तथा न्याय एवं आदर्श को विशेष महत्व देने वाला होता है। सत्य, दया, क्षमा आदि सद्गुण इसके विशेष रूप से पाये जाते हैं। ईश्वर पर अगाध विश्वास तथा धर्म पर पूर्ण निष्ठा भावने वाला होता है। यह स्वयंसेवा का भाव भी उत्पन्न करता है। आर्थिक-स्थिति उत्तम होती है तथा कामदमी के मोह एक से अधिक होते हैं। संसृष्ट-मन से भी धन-लाभ संभव है। स्त्री सौवर्ती तथा कोपी स्वभाव की होती है। विवाह २३ अथवा २७ वर्ष की आयु में होता है। वर्ष २३, २५, २७, २९, ३१, ३३, ३५, ३७, ३९, ४१, ४३, ४५, ४७, ४९, ५१, ५३ तथा ५७ वर्ष लाभ एवं आर्थिक-उन्नति के लिए लाभकर सिद्ध होते हैं। वर्ष ५४ स्त्री की मृत्यु से चिन्ता का एक रहता है। यह दूसरों के मन की बात पहिचान लेने में पटु होता है। जीवन सुख-शान्ति पूर्वक व्यतीत होता है।

(६६८) - इस छर्प कुण्डली वाला मनुष्य सौंवल्ले रंग का, लम्बे कद वाला, किंचित स्थूल शरीर का, छोपी स्वभाव का तथा स्वाभिमानी होता है। इनमें बदले की भावना पाई जाती है और अपने शत्रु या विरोधी को कभी क्षमा नहीं करता। यह साहसी तथा क्रूर भी होता है तथा लड़ने-झिड़ने के लिए लड़कता भी होता है। सामान्यतः यह शत्रुपक्ष पर हावी बना रहता है, जानु अवलु लड़ने पर पाँव धु लेते हैं भी इसे कोई संकोच नहीं होता। आर्थिक-स्थिति उन्नति की लड़ती है। मकान तथा सवारी का धर्म सुख भी मिलता है। माता के प्रति विशेष स्नेह रहती है। विद्याधनपत्र में हकावे आती है। विवाह २५ या २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुंदरी तथा सुशीला होती है। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। सन्तानों में पुत्रों की संख्या अधिक होती है। वर्ष २२, २६, २८, ३०, ३२, ३४, ३८, ४०, ४२, ४६, ५०, ५२, ५४ तथा ५८ अवसाथ एवं आर्थिक उन्नति के लिए शुभ निहते हैं। वर्ष ५३ आर्थिक कष्ट पद तथा ५८, ६१ स्वास्थ्य के लिए रोग, (६७०) - इस छर्प कुण्डली का स्वामी जातक सौंवल्ले रंग का, स्वल्प शरीर वाला, स्थूल, संगत-धिय, हास्य-प्रिय, चिन्ताशी, मातृ-यत्न, छोपी, गोल चेहरे वाला, मध्यम कद वाला तथा शत्रुको का मत मर्दन कोर वाला होता है। यह शत्रुता को सहन ही नहीं करता तथा अवलु मिलते ही बदला लेता है। मित्रता स्थापित कोर में तथा दूसरों के घर की बात जान लेते हैं यह निहृदस्त होता है तथा सत्य को भ्रष्ट निहृद का देने में माहि होता है। यह अवलु वादी भी होता है तथा कपटगतलक के लिये छोटे जिसके पाँव भी धू सकता है। आशुनी के जोर एक से अधिक होते हैं अतः आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है। निजीयवत तथा वाहन का सुयोग भी मिलता है। स्त्री सुकी तथा सुशीला होती है। दाम्पत्य-सुख एवं सन्तान-सुख उत्तम रहता है। पुत्र अधिक होते हैं। वर्ष २४, २६, २८, ३०, ३२, ३४, ३६, ३८, ४०, ४२, ४४, ४६, ५०, ५२, ५४, ५६, ५८ तथा ६२ आर्थिक-उन्नति का एक होते हैं। जीवन सुख से जीता है।

(६०१) - इस जन्मकुण्डली वाला जातक गौरवर्ण, लम्बे कद का, सुन्दर माक-तन्त्रा वाला, साहसी, संगम-
प्रिय तथा मातृ-भक्त होता है। इसका व्यक्तित्व चुम्बकीय होता है, जिसके फलस्वरूप यह अनेक
लोगों से मित्रता स्थापित करने में सफल हो जाता है। यह कानों का कच्चा होता है तथा इतनी
जी बात पर शीघ्र विश्वास कालेता है, जिसके फलस्वरूप उसे हानिभी उठानी पड़ती है। यह
स्वभाव से कुछ उग्र होता है तथा बातचीत में कुसंयुक्त के माध्यम से गोपनीयता का प्रदर्शनी
काला है। आर्थिक - दृष्टि से इनका जीवन उन्नत बना रहता है। ५५ वर्ष की आयु में भूमि तथा म-
न का योग बनता है। विष्णु का मेरु लाभ होता है। विवाह २४ अथवा २६ में वर्ष में होता है। पत्नी
सुन्दरी तथा सुशीला होती है। दाम्पत्य एवं सन्तान-सुख उत्तम रहता है। वर्ष ५५, ६१ तथा ६७
व्यापक के लिए कष्टप्रद तथा वर्ष २६, २८, ३२, ३८, ४२, ४६, ५२, ५४ तथा ५८ व्यवसाय में उन्नति का कारण है।

(६०२) - इस जन्मकुण्डली वाला मधुर मध्यम कद, स्मूल-शरीर, मोटे होठ वाला, गौरवर्ण तथा
क्रोधी स्वभाव का होता है। यह साहसी तथा समझ का पावक होता है। अपने से छोटे तथा ब-
बरी वालों के साथ इनका व्यवहार आत्मीयता पूर्ण रहता है। इनकी आर्थिक-स्थिति मध्यम
रहती है। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय में लाभ होता है तथा अपने परिजन द्वारा व्यवसाय की उन्नति
काले है। वैदिक-सम्पत्ति का लाभ भी होता है। विष्णु का क्षेत्र कफले रहता है। विवाह २१ अथवा
२५ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री सुन्दरी मिलती है। सन्तान-पक्ष की ओर से मन चिन्तित बना रहता
है। पुत्रियों की अपेक्षा पुत्र अधिक होते हैं। घर संबंधी वीरानीयों लगी रहती हैं। विष्णु-लाभ
के क्षेत्र में अनेक बार असफलताओं का सामना करना पड़ता है। वर्ष २३, २५, २७, २८, ३१, ३३,
३५, ३८, ४१, ४५, ४८, ५१, ५३, ५५ तथा ५७ व्यवसाय में लाभ प्रद किहू होते हैं।

(६७३) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी गेहुँए रंग, मध्यम कद, स्थूल शरीर, विस्तृत ललाट तथा कोष्ठी स्वभाव का होता है। यह कार्य-कुशल, स्फूर्तिवान्, निम्न अपने लक्षण की ओर अग्रसर तथा हास-जीहास को सहन न करने वाला भी होता है। सादा जीवन, उच्च विचार तथा निम्न जीव्य को (हता-यही) इनके जीवन के आदर्श होते हैं। शिक्षा - अधिक से इसकी उम्मीद नहीं होती है। यह विपत्ति-लक्ष्मी के प्रति विशेष आकर्षित होता है तथा जीवन में एक से अधिक स्त्रियों से संबंध रखता है। इसका विवाह २१ या २५ वर्ष की आयु में पश्चिम दिशा में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला, पालु कुद तथा स्वभाव की होती है। सन्तानों में पुत्रों की संख्या अधिक होती है तथा सन्तान-पक्ष की ओर से मन चिन्तित भी बना रहता है। वर्ष ५६ तथा ६२ स्वास्थ्य के लिए हानिप्रदाहते हैं। विष्णु - धर्म कम पोर रहता है। आर्थिक - पक्ष सुदृढ़ बना रहता है। शक्ति, मनन, वाहनदिक सुख भविष्य।

(६७४) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति गौर वर्ण, लम्बे कद का, सुनहरे केश, एकदरे शरीर का, सुन्दर तथा आतिथि होना है। यह दीन - दुःखियों की मदद करता है तथा पश्चिम पक्ष मोक्ष रखता है। विपत्ति-लक्ष्मी के प्रति आकर्षित होता है। विवाह २१, २५ अथवा २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होती है। सन्तान का सुख भी उत्तम (हता) है। आर्थिक - दृष्टि से इसका जीवन उत्कृष्ट पूर्ण बना रहता है। व्यवसाय द्वारा आर्थिक - लाभ के अनेक अवसर उपलब्ध होते रहते हैं। पुत्रों द्वारा सहयोग मिलता है। निजी मनन, शक्ति तथा वाहन की उपलब्धि भी होती है। वर्ष ३० तथा ५४ आर्थिक दृष्टि से चिन्ताजनक रहते हैं। वर्ष ५६, ६२ तथा ६८ स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद किट होते हैं। वर्ष २५, २७, २८, २९, ३३, ३५, ३७, ३८, ४१, ४५, ४७, ५१, ५५, ५७ तथा ६२ वयस में लाभप्रद किट होते हैं। जीवन सुख से बीतता है।

(६०५) - इस जन्म कुण्डली वाला मनुष्य गौ (वर्ग), लम्बे कद, इकट्ठे वदन तथा कोधी स्वभाव का होता है। यह स्वभाव से भी होता है तथा वातावरण के अनुसार स्वभाव को ढाल लेने में सक्षम होता है। किसी व्यक्ति के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए - इसकी इहे जानकारी रहती है। ये आवश्यकता से अधिक पुढे बढ़ी करते हैं तथा पताभाव की स्थिति में भी मित्रों के बीच चली होने का स्वांग रचते हैं। जीम वा निपन्न न आव पोग के कारण इनके मित्रों की संख्या कम ही होती है। शिक्षा का लाभ मध्यम होता है। विवाह २२ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला एवं सुविधिता होती है। सन्तान - पुरुष से पुत्रोत्पन्न रहता है। विजी सवारी अथवा मकागदि की उपलब्धि नहीं हो पाती। दाम्पत्य - सुख उत्पन्न रहता है। आर्थिक - स्थिति मध्यम होती है। वर्ष ३१ तथा ५५ आर्थिक दृष्टि से हानि प्रद होते हैं। वर्ष २४, ३६, ४८, ५२ तथा ६० लाभप्रद सिद्ध होते हैं।

(६०६) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी लॉचले रंग का, लम्बे कद वाला, स्वस्थ एवं बर्बल शरीर का, कोधी स्वभाव का, पनीचमी, साहसी तथा कठिनतम परिस्थितियों में भी विचलित न होने वाला होता है। ये लोग अपनी जीम वा निपन्न नहीं आव पोगे, अतः इनके संबंध विगाड़ जाना कोते हैं। इनमें बुद्धि निष्पत्ति लेने की क्षमता पाई जाती है तथा इनके मन की बाह्य को जान पाना औरों के लिए कठिन रहता है। आर्थिक - दृष्टि से जीवन उन्नतिशील बना रहता है। ये अपना निजी मकान भी बनाते हैं तथा वाहन का सुख भी उपा होता है। माहजों से इहे लाभ रहता है। विवाह का योग २२ अथवा २६ के वर्ष में बनता है। स्त्री सुन्दर तथा सेवाभावी होती है। सन्तान - पुत्र भी उत्पन्न रहता है। ६७ वीं वर्ष शारीरिक - स्वास्थ्य के लिए अत्यधिक कष्टकारक रहता है तथा वर्ष २४, २६, २८, ३०, ३४, ३६, ४०, ४२, ४६, ५२, ५४ एवं ५८ अवस्था में लाभप्रद सिद्ध होते हैं।

(६७७)- इस जन्म कुण्डली का अधिपति मध्यम कद, उन्नत-ललाट वाला, गौरवर्ण, साहसी, परिश्रमी तथा रहस्यमय-प्रकृति का होता है। यह शरीर से पतला-पुबला होते हुए भी परीक्षणी होता है तथा परीक्षम के द्वारा ही अपने भाग्य की उन्नति काण है। इसमें शीघ्र निष्पत्ति लेने की क्षमता पाई जाती है। इसे मित्रों से भी सहयोग मिलना रहता है। इसकी बुद्धि तीव्र होती है। इसे एकसे अधिक भाषाओं का ज्ञान होता है। विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी तथा सन्तान के सुख-सहयोग की प्राप्ति होती है। शत्रु-पक्ष पुबल रहता है, तथापि वह हानि पहुँचाने में समर्थ नहीं हो पाता। इसकी आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ रहती है तथा आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। वर्ष ५५ तथा ६३ स्वास्थ के लिए कष्ट प्रद रहते हैं। वर्ष २४, २६, ३०, ३४, ३८, ४२, ४६, ४८, ५१, ५३, ५८ तथा ६५ व्यवसाय में उन्नतिकारक सिद्ध होते हैं।

(६७८)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी जेठूँए राग, मध्यम कद, पतले शरीर वाला तथा कान्ति-पिष्ट होता है। यह स्नेह, सौजन्यता एवं आत्मीयता से परिपूर्ण मृदु भाषी तथा मित्रता स्थापित करने में कुशल होने के साथ ही कुछ शंका-स्वभाव का भी होता है। अतः यह किसी पर एकदम विरक्त न करके सदैव चौकन्ना बना रहता है। इसके बुद्धि-शत्रु भी बहुत होते हैं, जो समय-समय पर धोखा देते रहते हैं। विद्या का लाभ मध्यम रहता है। विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है तथा दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहता है। भाइयों से कभी कोई विशेष सहयोग नहीं मिल पाता। ४८ वर्ष की आयु में भूमि तथा भवन का योग बनता है। वर्ष ५६, ५८ तथा ६४ स्वास्थ के लिए हानिकारक सिद्ध होती है। वर्ष २५, २७, २८, ३३, ३८, ४२, ४४, ५०, ५४, ५६ तथा ६१ व्यवसाय में उन्नतिकारक रहते हैं। आर्थिक-स्थिति सदैव मजबूत बनी रहती है।

(६७९) - इस जन्माङ्क चक्र वाला जातक सौं वले रंग का, लम्बे तथा पतले शरीर वाला, आकर्षक-
व्यक्तित्व सम्पन्न, परिश्रमी तथा साहसी होता है। मित्रता स्थापित करने में इसे किट्ट-हस्तता प्राप्त होती
है। इसकी उत्पत्ति भी मित्रों की सहायता ले ही होती है। यह मधुमायी तथा स्वामिश्रमी भी होता है,
अधिकारी वर्ग से इसकी पटरी कम बैठती है। यह दूसरों की सहायता को तथा तथा स्वर्णेश्वर
पूर्ण जीवन बिताने वाला होता है। इसकी स्मृतिशक्ति तीव्र होती है तथा समय की पाबन्दी का इसे विशेष
दखान रहता है। भूमि, भवन तथा वाहन लाभ के अवसर इसे प्राप्त होते ही रहते हैं। आर्थिक स्थि-
ति बहुत सुदृढ़ रहती है। शिक्षा यथेष्ट होती है। विवाह २६ से २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी
मनोरुक्ला मिलती है। जीवन के २१, २६, ३१, ३३, ३५, ३७, ४१, ४३, ४५, ४८, ५३, ५५ तथा ५७ वें वर्ष
का वसाव में उन्नतिकाम किट्ट होते हैं। यह समय की कीमतको समझ कर उसका सदुपयोग करता है।

(६८०) - इस कुण्डली चक्र में उत्पन्न मनुष्य गौर वर्ण, सुन्दर नाक-नक्का वाला, मध्यम कद वाला,
महली जैसी आँवों वाला, पतले शरीर का, परिश्रमी तथा सहाय्युत्ति पूर्ण प्रकृति का होता है। यह
सामाजिक वाग्मराजों तथा आर्थिक हठियों का बालन करने वाला, ईश्वर भक्त एवं परोपकारी
स्वभाव का होता है। यह सहज किसी पर विश्वास नहीं करता, अतः इसे विश्वास में ले जाना भी
कठिन रहता है। आर्थिक-स्थिति मध्यम रहती है। पैतृक-सम्पत्ति का भाइयों के साथ विवाद
होता है तथा उसका नाश भी संभव है। विष्णु के क्षेत्र में प्रवीणता प्राप्त होती है। विवाह
२२, २४ अथवा २८ वें वर्ष में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होती है। दाम्पत्य-सुख
उत्तम रहता है। वर्ष ५३ तथा ७० स्वास्थ्य के लिए चिन्ताजनक रहते हैं। वर्ष २२, २४, २८,
३०, ३४, ३८, ४०, ४६, ५०, ५४, ५८ तथा ६० का वसाव में उन्नति काम किट्ट होते हैं।

(६८१) - इस जन्म कुण्डली का अक्षिपति साँवले रंग का, लीने नाक-नख्खा वाला, मधुरी जैसी सुन्दर आँकों वाला तथा मधुरम कद का होता है। यह शान्ति-प्रिय तथा सहायक प्रकृति वर्ण होता है। दूसरों की सहायता करने को सदैव तैयार रहता है। इसका शत्रु-पक्षभीषण होता है, जो इसके प्रत्येक कार्य में रोड़े अटकता है। पैरुका-सम्पत्ति का लाभ तो होता है, पालतु वह नष्ट हो जाती है। यह अपने आत्म-विश्वास के बल पर ही जीवन में उन्नति करता है। भूमि-भवन आदि के द्वारा आर्थिक-लाभ के अवसर भी प्राप्त होते रहते हैं। शिक्षा का लाभ विशेष रहता है। विवाह २२ अथवा २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोरुक्मला मिलती है, अतः दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी लाभप्रद सिद्ध होती है। भाग्योदय तक-रुक का होता है। आयु दीर्घ होती है, पालतु कमी-चोर आदि लगने की संभावना भी रहती है। बर्ष ४५ तथा ५७ आर्थिक-दृष्टि से कष्टप्रद रहते हैं।

(६८२) - इस जन्म कुण्डली वाला सुगुण गेहुँए रंग का, मधुरम कद तथा इकहरे शरीर का, पैनी दृष्टि एवं छोटी चमक का तथा मगडाल प्रकृति का होता है। यह बड़ा वीर्यवीर तथा कठोर होता है एवं विपरीत-परीक्षणों का भी डर का मुकाबिला करता है। स्वयंवादी होने के कारण यह खरी बातें कहता है। आर्थिक-दृष्टि से जीवन उन्नति शीघ्र बना रहता है। भाइयों से सहयोग प्राप्त होता है। इसे मानसिक-वैशालिष अधिक रहती है, पञ्चमि बुद्धि अत्यन्त प्रबल होती है। विज्ञा का केवल लाभ होता है। विवाह २३, २५ अथवा २८ वें वर्ष में होता है। पत्नी मनोरुक्मला मिलती है तथा यह अधिक कायक-प्रकृति का होने के कारण पालतु-पक्षियों की ओर भी आसक्त होता है। आर्थिक दृष्टि से ३४ तथा ४६ वें वर्ष कष्टप्रद तथा २३, २५, २८, ३१, ३५, ३८, ४३, ४७, ४८, ५१, ५५, ५७ तथा ५८ वें वर्ष लाभप्रद रहते हैं। शरीर तीव्र रहता है। आयु दीर्घ होती है।

(६८३) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी साँवले रंग, घुँघराले काले केश तथा मोटे कद वाला होता है। यह स्वभाव से कोपी तथा कठिनता से परिश्रमियों में भी स्वयं का निपटारा करने वाला, सट्टरी तथा भी-वी होता है। यह जिससे प्रेम मानेगा, उसके लिए अपना सर्वस्व भी नौछावा का देते हैं। दुश्मन अथवा विरोधियों से लड़ने-झिड़ने में इन्हें आनंद आता है। ये स्वयंवादी तथा रंगी बोलें कहने वाले होते हैं। पण्डित अपना काम निकालने के लिए चापलूरी करने में भी कुशल होते हैं। इनकी आय के मोल एक से अधिक होते हैं, अतः आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है। विष्णु-लभ सामान्य होता है। विवाह २३ अथवा २४ वर्ष में होता है। एक से अधिक पत्नियों अथवा १७-१८ पत्नियों संभव हैं। इन्हें सन्तान-पुत्र उत्तम रहता है। पुत्र अधिक होते हैं। विपरीत-लक्ष्मी की ओर आकर्षित होता तथा इनका विश्वास कृता इनके स्वभाव में होता है। आयु के २७, ३१, ४३, ४८, ५५ तथा ५८ के वर्ष उत्तम निरुक्त होते हैं।

(६८४) - इस जन्म कुण्डली वाला मनुष्य गौरवर्ण, मध्यम कद, उन्नत ललाट, कटीली माँनें, घुँघराले केश, हृष्ट-पुष्टशील वाला, मृदुभाषी तथा शान्ति प्रिय होता है। इसका मन तथा मस्तिष्क-दोनों का निपटारा रहता है, अतः यह जीवन में शीघ्र उत्तमि कृता है। आत्मविश्वास की अधिकता तथा विपरीत-परिश्रमियों का दृढ़तापूर्वक सामना करने की सामर्थ्य इन्हें पार्थि जाती है। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी से इसे विशेष लाभ मिलता है। शिक्षा अच्छे से प्राप्त होती है। विवाह २२, २४ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोरुक्ला मिलती है, पण्डित सन्तान-पुत्र की ओर से चिन्ता बनी रहती है। सन्तान-हानि के योग भी बनते हैं। भूमि, मकान तथा वाहन का योग भी बनता है। आर्थिक-स्थिति, उत्तम रहती है। वर्ष २२, २६, ३०, ३६, ४२, ४८, ५४, ५८ तथा ६० अवसरों में लाभ उद किहू होते हैं। वार्षिक स्वस्थ अच्छा रहता है तथा दीर्घायु प्राप्त होती है।

(६८५) - इस जन्माङ्क चक्र का स्वामी गेहुँरें रंग का, मध्यम कद तथा हृष्ट-पुष्ट शरीर वाला, साहसी, कर्मि तथा चुम्बकीय व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। यह स्वभाव से अहंकारी तथा आत्मविश्वासी होता है। बड़े अफसों तथा बड़े आदमियों को प्रभावित करने में यह निपुण होता है। आप के साधन अच्छे होते हैं, पान्थ स्वर्च भी बढ़ा-चढ़ा रहता है, अतः आर्थिक-स्थिति मध्यम ही बनी रहती है। यह अपने स्वार्थ हेतु चापलूरी क्रम में भी कुशल होता है। इसे माद्यों से सहजोग नहीं मिलता, पान्थ तिथी भवन का योग बनाता है। विद्या-क्षेत्र मध्यम रहता है। विवाह २३ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, पान्थ दृष्टि स्वभाव की होती है। सन्तान-पक्ष की ओर किसी चिन्ता बनी रहती है। जीवन के वर्ष २३, २७, ३३, ३५, ३६, ४१, ४७, ५१, ५३ तथा ५८ आर्थिक-दृष्टि से लाभप्रद रहते हैं। शरीर प्रायः स्वस्थ बना रहता है तथा आयु ७५ वर्ष के लगभग होती है।

(६८६) - इस जन्माङ्क चक्र का अधिपति गौर्वा, सुन्दर नाक-नखावाला, स्वास्थ, हृष्ट-पुष्ट शरीर का, धीरवीर, बुद्धिमान, विपदशी, पूर्ण व्यावहारिक तथा शान्ति-प्रेम होता है, तथापि कभी-कभी ओष से बाह्य निकाल कर असामाजिकता का परिचय भी दे उठता है। जिसके कारण उसे हानि उठानी पड़ती है। यह स्वयं को अल्पविक्रम प्रेरण सहकता है तथा अधिकारी वर्ग को प्रभावित करने में भी लक्ष्म होता है। इसका विवाह २३ अथवा २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मंगल-कुलामिलती है। सन्तानों में कन्याओं की संख्या अधिक होती है। आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ तथा उत्तमिपूर्ण बनी रहती है। विद्या का लाभ प्रवेष्ट होता है। आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं। तिथी शुद्धि, भवन तथा वाहन आदि का सुख भी उपलब्ध होता है। वर्ष २२, २६, ३२, ३४, ३८, ४४, ४६, ४८, ५२, ५६ तथा ५८ अवसर में उत्तमिकारक रहते हैं। आयु दीर्घ प्राप्त होती है।

(६८६) - इस जन्म कुण्डली वाला मनुष्य गौर वर्ण, स्वस्थ, हृष्ट-पुष्ट, मध्यम कद वाला, परिश्रमी तथा शान्ति-प्रिय होता है। यह मृदुभाषी, कर्मठ, साहसी एवं दिन-रात परिश्रम करने वाला तथा कठिन-से-कठिन परिस्थितियों को भी अपने अनुकूल बना लेने वाला होता है। इसको धन कर्मों में निपुणता प्राप्त है, पालु इसके स्वर्च बड़े-बड़े रहते हैं; अतः आर्थिक-स्थिति मध्यम ही रहती है। इसे अपनी मानस विशेष लगाना रहता है और उसके लिए स्वर्च भी अधिक करता है। विष्णु का लाभ कुछ रुकावटों के साथ होता है। भाइयों से सहयोग प्राप्त होता रहता है। विवाह २४ या २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर तथा कोथी स्वभाव की होती है, तथापि दाम्पत्य-सुख उत्तम बना रहता है। पुत्रों के आर्थिक सहयोग मिलता है। पैर संबंधी रोग होना संभव है। जीवन के २०, २४, २८, ३०, ३४, ३८, ४०, ४२, ४६ तथा ५६ वर्ष आर्थिक-स्थिति लाभप्रद होंगे।

(६८८) - इस कुण्डली का स्वामी ज्ञानक गौर वर्ण, मध्यम कद वाला, कर्मठ, साहसी तथा शान्त-स्वभाव का होता है। यह विपरीत-लिट्टी के प्रति विशेष आकर्षित रहता है। कामुक प्रवृत्ति का होने के कारण इसके एक से अधिक पितृवों के साथ प्रेम-सम्बन्ध बने रहते हैं। आर्थिक-स्थिति उत्तम रहती है। पैरक-सम्पत्ति का लाभ भी होता है। भाइयों से सहयोग मिलता है। बहनों की संख्या कम रहती है। निजी भवन तथा वाहन का सुख भी प्राप्त होता है। विष्णु-लाभ उत्तम होता है। विवाह २४ या २६ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य-सुख अच्छा रहता है। पुत्रों के कल्याणों की संख्या अधिक होती है। पत्नी सुन्दर, सुशील पालु कुछ जिद्दी स्वभाव की होती है। ६९ को वर्ष स्वाध्याय के लिए विशेष कष्ट पड़ रहा है। वर्ष २२, २६, ३०, ३४, ३६, ४२, ४८, ५२, ५४, ५८ तथा ६० वर्षसमय में उलटि का कष्ट रहने है।

(६८६) - इस जन्माकुञ्चक का स्वामी गौर वर्ण, मनोहर नेत्र, लम्बे कद, स्वल्प एवं बलिष्ठ शरीर तथा कार्म-कुशल होता है। इसका व्यक्तित्व इतना आकर्षक होता है कि अनजान व्यक्ति भी इसके पक्ष में सहज ही हो जाता है। इसका चेहरा लम्बा होता है तथा उस पर हिल का चिह्न होता है। यह स्त्रियों को सहज ही अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। काष्ठक प्रकृति का होने के कारण इसके एक से अधिक स्त्रियों से सम्बन्ध होते हैं। भाइयों की अपेक्षा बहनों की संख्या अधिक होती है। अध्यापन एवं गणित संबंधी कार्यों में इसकी विशेष रुचि रहती है। इसे निजी मकान तथा वाहन का भुक्त भाग होता है। विज्ञा के क्षेत्र में कुछ रुकावटें आती हैं। विवाह २४ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर, पालु कोषी स्वभाव की होती है। घेद से सम्बन्धित शिकायतें बनी रहती हैं, आर्थिक-स्थिति मध्यम रहती है। वर्ष २४, ३०, ३६, ४२, ४८, ५२, ५६ तथा ६० उत्कर्षदायक सिद्ध होते हैं।

(६८७) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति गौर वर्ण, सान्त्वनीय, कोमल, विनम्र, मधुरभाषी तथा निवृत्त बुद्धि सम्पन्न होता है। ये औद्योगिक तथा राजनीतिक क्षेत्र में सकल रहते हैं। ये शत्रुः शत्रुः, एकान्तिकाले हैं। आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ रहती है, क्योंकि आनंदी के द्वारा एक से अधिक होते हैं, तथापि खर्च की अधिकता रहती है। वैदिक-संस्कृति का लाभ भी होता है। भाइयों या खर्च अधिक करना पड़ता है। विज्ञा का उत्तम लाभ होता है। विवाह २३, २४ अथवा २७ वें वर्ष में बनता है। पत्नी साँवले रंग की तथा कोषी स्वभाव की होती है। सन्तान-पक्ष से पूर्ण सुख तथा आर्थिक-लाभ मिलता है। इस जन्मक के आलोचकों की संख्या अधिक होती है, परन्तु यह कितनी की चिन्ता न करके अपने मार्ग पर आगे बढ़ना चला जाता है। वर्ष २९, ३३, ३७, ४१, ४५, ४९, ५३, ५७, ६१ एवं ६५ अवसाद में उलटि काळ होते हैं। आयु मध्यम होती है।

(६८१) - इस जन्म कुण्डली वाला मनुष्य गेहुँए रंग का, लम्बे कद तथा उन्नत ललाट वाला, स्वभाव से सहनशील तथा मृदुभाषी होता है। सामाजिक दृष्टियों में इसका विश्वास नहीं होता। पहला व्यवहार होता है तथा विपत्ती को भी अपने पक्ष में कालेने में कुशल होता है। स्वाभिमान की भाँसा इस में अधिक पाई जाती है। समय पड़े का यह विशेषताओं पर हावी भी हो जाता है। इसका मुकाबला तथा ईमानदारी के प्रति रहता है। राजनैतिक तथा शैक्षणिक क्षेत्र में इसे विशेष सफलता मिलती है। जीवन में आर्थिक-लाभ के अनेक अवसर उपलब्ध होते हैं, अतः आर्थिक स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है। भूमि, भवन तथा वाहन का योग भी बनता है। माता से आर्थिक लाभ होता संभव है। विज्ञा का अच्छा लाभ होता है। विवाह २३ अथवा २५ वें वर्ष में होता है। पत्नी मतो बुझला मिलती है। संतान-सुख भी उत्तम रहता है। वर्ष २१, २७, ३४, ४७, ५१ तथा ५८ उन्नति काफ़ी होते हैं।

(६८२) - इस जन्म कुण्डली वाला जातक सौंवले रंग का, पतले होठ, लुन्दा पुल, उन्नत ललाट तथा लम्बे कद का होता है। यह स्वभाव से चित्तु तथा आत्मविश्वासी होता है। सामाजिक-क्षेत्र में अधिक विश्वास रावता है। आर्थिक-स्थिति सधम (हली है) व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी से विशेष लाभ होता है। पैतृक-सम्पत्ति पर कगड़े की संभावना रहती है। विज्ञा का क्षेत्र उन्नति काफ़ी रहता है। विवाह २५ अथवा २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी से विचारों का मेल नहीं हो पाता, अतः दाम्पत्य-जीवन तनावपूर्ण बना रहता है। संतानों से सुख जाफ़ा होता है। पुत्रों की संख्या अधिक होती है। भाइयों से कोई सहयोग नहीं मिलता। वर्ष २१, २५, २८, ३१, ३५, ३७, ४१, ४५, ४७, ५१, ५३ तथा ५७ व्यवसाय में उन्नति उद एवं वर्ष ५४ हाकिमद सिद्ध होते हैं। परिकारी जनों से सम्बन्ध सामान्य रहते हैं। यह जातक मध्यमायु से कुछ अधिक समय तक जीवित रहता है।

(६६३) - इस जन्म कुण्डली वाला जातक गौरवर्ण, स्वास्थ शरीर, सुदृढ़ व्यक्तित्व, मध्यम कद का, कोधी, साहसी तथा स्वामिमारी होता है। यह क्षण-क्षण पर कष्ट एवं प्रसन्न होता रहता है। यह दूसरों को अपनी ओर आकर्षित करने में कुशल होता है, अतः इसके मित्रों की संख्या में वृद्धि होती चली जाती है। यह उत्प्रेक पीरीरिणति का सामना हँसते हुए करता है। यह जिससे भी आत्मीयता के संबंध स्थापित करते हैं, उसके साथ आजीवन निर्विह भी करते हैं। आर्थिक-दृष्टि से इनका जीवन उन्नतिशील बना रहता है। जीवन में निजी मकान का प्रयोग करता है तथा ४१ वर्ष की आयु में वाहन-सुख भी प्राप्त होता है। विवाह २४, २६ अथवा २८ वर्ष की आयु में पश्चिम दिशा की ओर से होता है। पत्नी सुन्दरी, पालु स्वभाव से कोधीनी होती है। पुत्रों से सुख-सहयोग प्राप्त होता है। शिक्षा सामान्य रहती है। आयु के २२, २६, ३०, ३६, ४०, ४६, ४८, ५०, ५४ तथा ५८ वें वर्ष आर्थिक लाभ उड़ाते हैं।

(६६४) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी मनुष्य साँवले रंग, छुँचराले बाल, उन्नत ललाट, विशाल वक्षःस्थल, गोल चेहरा तथा सुन्दर नाक-नक्श वाला होता है। यह कोधी स्वभाव का होता है तथा क्षणिक आवेश में वक्री धुानी मित्रता को भी समाप्त कर देता है। इसके मन की बात को कोई नहीं जान पाता। यह ऐसा आलसी भी होता है कि जब तक सिरु पर ही न आये, जब तक किसी काम के विषय में सोचना तक नहीं है। विद्या का लाभ हकावरों के साथ होता है। विवाह २४ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री के प्रति सदैव चिन्तित बना रहता है, क्योंकि पत्नी से विचार नहीं मिल पाते हैं। आर्थिक-स्थिति उत्तम रहती है। भूमि-वहन आदि का लाभ भी होता है। वर्ष २४, ३६, ४८ तथा ६१ आर्थिक-दृष्टि से कष्ट उद तथा वर्ष २२, २६, ३०, ३६, ४०, ४६, ५०, ५८ एवं ६० लाभ उद सिद्ध होते हैं। संशयालु प्रकृति का होने के कारण शत्रु इसके सामने आते हुए चलाते हैं।

(६६५) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति साँवले रंग का, सुहृद कंधों वाला, झुंझाले के श एवं गोल चेहरे वाला, सादसी, पान्तु संभाषालु उष्टुति का होता है, तथापि एक बार जिससे आत्मीयता के संबंध स्थापित कालेता है, उसका अन्ततक विवाह भी काला है। यह मृदुभाषी तथा प्रान्ति-प्रिय होने के साथ ही आलसी स्वभाव का एवं स्वाभिमानी भी होता है। विष्णु के क्षेत्र में इसे इच्छित सफलता प्राप्त होती है। यह जोभी पौषणों बनाता है, उन्हें आरंभ से अन्ततक कठिनाई आती है, तथापि यह विपरीत परिस्थिति को भी अपने अनुकूल बना लेने में सक्षम होता है। इसका विवाह २२ से २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी साँवले रंग की, सुन्दरी तथा कोपी स्वभाव की होती है। पुत्र अधिक होते हैं, पान्तु सन्तान-पक्ष की ओर से चिन्ता लगी रहती है। आर्थिक-स्थिति उत्तम रहती है। शत्रु-पक्ष दबा रहता है। वर्ष २४, ३५, ४३, ५० तथा ५८ विशेष लाभ उपदेहते हैं।

(६६६) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी गौरवर्ण, उत्तम ललाट, झुंझाले के बों वाला, मृदुभाषी, प्रान्ति प्रिय, पान्तु स्वाभिमानी, वाक्पटु तथा किसी को भी अपना मित्र बना लेने की कला में पटु होता है। इसके भाइयों की अपेक्षा बहने अधिक होती है। भाइयों से सहयोग भी मिलता है। पैसों-सम्पत्ति, मकान आदि का लाभ भी होता है। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय अधिक लाभ उपदेहि होता है। विलान अपना गणित विषय में इसकी विशेष अभिरुचि रहती है। इसे शिक्षा का मध्यम लाभ प्राप्त होता है। विवाह २४ या २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी से सुख प्राप्त होता है तथा सन्तान-पक्ष से भी सन्तोष मिलता है। वर्ष ६१ तथा ६३ स्वास्थ्य के लिए विशेष कष्ट उपदेहते हैं। वर्ष २४, ३०, ३६, ३८, ४२, ४८, ५०, ५४, ५६ तथा ५८ व्यवसाय में लाभ उपदेहि होते हैं। आर्थिक-स्थिति उत्तम बनी रहती है। आयु मध्यम होती है।

(६६७) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य गेहुँए रंग, इकट्ठे बदन, लम्बा चेहरा तथा मध्यम कद वाला है। मुख तथा कान्ति-सिद्ध होता है। यह अपने लक्षण की ओर धीरे-धीरे आगे बढ़ता और सफलता प्राप्त करता है। यह अपने आलसी स्वभाव के कारण उन्नति के अनेक अवसरों को अपने हाथ से निकाल देता है। ये, आर्थिक-दृष्टि से इसका जीवन उल्लिखनीय बना रहता है। माता के प्रति विशेष अनुग्रह रहता है। रवचंद्रिका-युक्त रहने के कारण कर्म कर्म करने की आवश्यकता भी आ पड़ती है। विद्या का खेळ लाभ होता है। विवाह २१ अथवा २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोबुद्धि मिलाती है। सन्तानों में पुत्रों की संख्या अधिक रहती है। जीवन के २३, २७, ३३, ३५, ३८, ४७, ५१, ५५ तथा ५७ के वर्ष व्यवसाय में उन्नति का एक सिद्ध होते हैं। हवाई किले बनाना भी इसके स्वभाव में पाया जाता है।

(६६८) - इस जन्मकुण्डली वाला जातक गेहुँए वर्ण, पतले होठ, मध्यम कद, हृष्ट-पुष्ट शरीर वाला, पतुा तथा विश्वसनीय मित्र होता है। यह भावना-पुष्प होता है तथा कठोर एवं परिश्रम के कार्यों को करने में अक्षम रहता है। ईमानदारी इसके जीवन का मुख्य ध्येय होती है। इसके कलाकोश जैसी प्रवृत्तियाँ पाई जाती हैं। साधेदारी के काम में धारा उठाना है तथा विपरीत-पक्ष से धोखा मिलने की संभावना रहती है। आर्थिक-स्थिति निम्न उन्नत होती चली जाती है। भूमि, भवन का सुख भी प्राप्त होता है। विवाह २५ या २७ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री सुन्दरी तथा सुशीला होती है। वर्ष ५२, ६४ तथा ७२ त्रिंशत् वर्ष के लिए काष्ठ उद्गारते हैं। चोट लगने की संभावना भी रहती है। वर्ष २३, २८, ३५, ४३, ४७, ५१, ५३ तथा ५८ व्यवसाय में उन्नति का एक सिद्ध होते हैं। आयु ७० वर्ष से अधिक रहती है।

(६६६) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी साँवले रंग का, उज्जल-ललाट, पतले होठ, सुदृढ़ नाक तथा मधुमक्कद वाला, भावना प्रधान तथा शान्ति-प्रिय होता है। यह परीक्षम के कामों से घबराता है। अपने लक्ष्य की ओर धीरे-धीरे आगे बढ़ता रहता है। निम्नोच्चित सुकुमारता, लज्जाशीलता एवं स्नेह आदि के गुण भी इसमें पाये जाते हैं। आर्थिक-दृष्टि से बाल्य बर्षा कष्ट प्रद होती है, परन्तु २४ वर्ष के बाद उनके सुख होता है तथा स्थिति मधुमक्कद हो जाती है। विवाह २५ या २७ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री सुन्दरी तथा सुशीला होती है। संतानों से सुख प्राप्त होता है। वर्ष २१, २६, ३८ तथा ५० आर्थिक-दृष्टि से उत्तम होते हैं। इन वर्षों में भूमि तथा मकान-लाभ का योग भी बनता है। वर्ष २३, २५, २६, ३३, ३७, ४१, ४७, ४८, ५३ तथा ५८ अवसाद में उत्तमि कष्ट सिद्ध होते हैं।

(७००) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति मधुमक्कद का, सुदृढ़ लम्बाई लिए पतले शरीर का, साँवले रंग का तथा शान्ति-प्रिय होता है। यह लघुएक को परिचालने में अल्पत विपुण होता है। इस का जीवन संघर्षों में व्यतीत होता है तथा साहसी एवं परीक्षणी होने के कारण यह विपरीत परिस्थितियों का भी लक्ष्य। पूर्वक सामना करता है। हठार्थ किले बनाना तथा घोषणाकटु वृत्ति से कार्य करना इसके स्वभाव में होता है। मनुष्यों से सहयोग प्राप्त होता है। बहनों की संख्या अधिक होती है। विवाह २२ से २६ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री की ओर से चिन्ता बनी रहती है तथा पुत्रों से सहयोग प्राप्त होता है। अवसाद की अपेक्षा नौकरी से विशेष लाभ होता है। जीवन के २८, ३६, ४०, ४४, ४८, ५०, ५६ तथा ५८ वें वर्ष आर्थिक-उत्तमि देने वाले होते हैं तथा ४२ एवं ६३ वें वर्ष शरीर के लिए कष्ट कष्ट सिद्ध होते हैं।

(७०१) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी गौतम, मध्यम कद, कुछ लम्बाई लिए स्वस्थ शरीर, उन्नत ललाट वाला, शान्ति-पिप, न्याय-पिप तथा सत्य-पिप होता है। यह दल-कण्ट, अनीति तथा उपेक्षपूर्ण कार्य से बच का चलता है। हरिणों के प्रति विरोध की भावना रखने से भी यह सर्वथा नवीन-पक्ष को स्वीकार नहीं करता। इसी के मन की बात जान लेने में यह सक्षम होता है। यह व्यवहार में विशेष रुचि लेता है तथा आर्थिक-दृष्टि से इसकी स्थिति उत्तम बनी रहती है। निजी व्यक्तिगत भवन का योग भी उपलब्ध होता है। शिक्षा सामान्य रहती है, परन्तु बुद्धिमत्ता वर्षावांश जाली है। विवाह २२ या २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी स्वभाव से कुछ दली होती है, अतः उसे मन नहीं मिल पाता। सन्तानों से सुख मिलता है। वर्ष २४, २८, ३६, ४२, ४४, ४८, ५२ तथा ६० उन्नति का काल होते हैं।

(७०२) - इस जन्म कुण्डली वाला मनुष्य सौंवलें रंग तथा लम्बे कद का, शान्ति-पिप, सत्यवादी, कल्पनाशील तथा संगीत आदि कलित कलाओं में रुचि रखने वाला होता है। यह अपना का सुलक विरोध करता है तथा ठोके वक्ता भी मानता रहता है। अर्थ-संचयन इसके जीवन का मुख्य ध्येय होता है। विद्या के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है। विवाह २२ से २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सौंवली तथा कोपी स्वभाव की होती है, अतः दाम्पत्य-सुख मध्यम स्तर का रहता है। सन्तान-पक्ष सन्तोष दायक रहता है। वर्ष ६० तथा ६६ स्वास्थ्य के लिए कष्ट पड़ रहे हैं। वर्ष २४, २८, ३२, ३८, ४४, ४८, ५२, ५६ तथा ६० आर्थिक-दृष्टि से उन्नति का काल रहते हैं। यह किसी से घेरा नहीं जा सकता। शारीरिक स्वास्थ्य प्रायः उत्तम रहता है तथा आयु ७५ वर्ष से अधिक होती है।

(७०३) - इस जन्मकुण्डली वाला जातक गौरवर्ण, मध्यम कद, कुछ लम्बाई लिये उत्तर ललाट, मुँहा नाक - नखावाला तथा आकर्षक अवितल सम्पन्न होता है। यह अष्ट लोगों को अपनी ओर शीघ्र आकर्षित कर लेता है। इसके मित्रों की अधिक होती है, जो इसे लाभ पहुँचाते रहते हैं। यह स्वयं भी मित्रों की सहायता करता है, पण्डितान का कच्चा होने के कारण ज्ञान हासिल भी करता रहता है। इसको विद्या का लाभ हक-हक कर होता है। विवाह २३ अथवा २७ वर्ष की आयु में दक्षिण दिशा की ओर से होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होती है। सन्तान-वृद्ध उत्पन्न रहता है। आर्थिक-दृष्टि से जीवन सम्पन्न बना रहता है। सुदृढ़-स्त्री इसकी दुर्द्विषा होती है। जिसके सम्पर्क में वह कर अथवा रहस्य उगल देता है तथा हासिल करता है। वर्ष २२, २७, ३३, ३४, ३६, ३८, ४३, ४८, ५३, ५७ तथा ६७ उत्तम होते हैं।

(७०४) - इस जन्मकुण्डली वाला मधुरवर्ण, मध्यम कद, हृष्ट-पुष्ट शरीर, हास्य-विष, मित्रता-स्वाधिन करने में सिद्ध हस्त तथा कोपी स्वभाव का होता है। (अपना काम निकालने में यह पटु होता है।) गोपनीयता का प्रदर्शन करने पर कुछ फुसफुसाहट के स्वर में बातचीत करता इसकी आदत होती है। यह किसी भी कार्य को बड़े उत्साह से आगे बढ़ाता है, पण्डितान के बीच में ही अचूरा धोड़ देता है। आनंदनी के लक्ष्य अधिक रहने के कारण आर्थिक-स्थिति कमजोर होती रहती है। विद्या-लाभ रुकावटों के साथ होता है। विवाह २३ या २७ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री सुन्दरी तथा सुशीला होती है। सन्तान-वृद्ध की ओर से चिन्ता बनी रहती है तथा स्वयं भी घर संबंधी बीमारियों को ध्यान करती रहती है। वर्ष २७, ३३, ३७, ३८, ४१, ४७, ४८, ५०, ५६ तथा ५८ व्यवसाय में लाभ उठाते हैं।

(७०५) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न पाणी साँवले रंग का, साहसी, लम्बा कद, स्थूल - शरीर, पतिली, विशाल, छोटी, संगम - पिण्ड तथा बदला लेने का इच्छुक होता है। यह अपने शत्रु को कभीभी क्षमा नहीं करता तथा अपना अक्स मिलने ही उसके बदला लेता है। यह अवसादी भी ऐसा होता है कि अपने मतलब के लिए किसी के कंठ भी छू सकता है। यह बहुत सोच - समझ का ही किसी को अपने हृदय में स्थान देता है तथा उसके प्रति सदैव सहाय्य करने पूर्ण भी बना रहता है। सामान्यतः यह स्वाभिमान भी होता है तथा परीक्षणी और साहसी भी। यह धीरे - धीरे अपने भाग्य की उन्नति करता है। विज्ञा - क्षेत्र कमजोर रहता है। विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोरुझल मिलती है, पालतु संतान - पक्ष की ओर से चिन्ता रहती है। वर्ष २४, २८, ३३, ३४, ३८, ४१, ४५, ४८, ५० तथा ५७ आर्थिक - उन्नति काक रहते हैं। निजी मकान का योग भी बनता है।

(७०६) - इस जन्मकुण्डली वाला जातक और कर्ण, नोट कद का, स्थूल तथा विस्फ शरीर वाला एवं सदैव कार्य - मग्न रहने वाला होता है। यह स्वभाव से छोटी भी होता है तथा सामान्य हँसी - मजाक को भी सहन नहीं कर पाता। इसे निजरी शीघ्रता से छोटा आता है, उतनी ही शीघ्र यह शान्त भी हो जाता है। विज्ञा का क्षेत्र कुछ कमजोर रहता है। विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुदृढ़ होती है तथा सहाय्य - पक्ष से आर्थिक लाभ भी होता है। आर्थिक - दृष्टि से जीवन उन्नतिशील बना रहता है। संतान - पक्ष की ओर से चिन्ता रहती है। स्वाभिमान होने के कारण यह किसी के समक्ष झुकना नहीं है, अतः कभी - कभी लानि भी उठानी पड़ती है। यों, आसानी के साथ एक से अधिक लोग के कारण आर्थिक - स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है। वर्ष २४, ३०, ३४, ३८, ४०, ५०, ५४, ५६ तथा ५८ आर्थिक दृष्टि से उन्नति काक रहते हैं।

(७०७) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी मनुष्य गौरवर्ण, मध्यम कद, सुतरे केश, सुन्दर आँखों तथा सनकी स्वभाव का होता है। यह व्यवसायी प्रवृत्ति का होने के कारण धन को सर्वाधिक महत्व देता है। धन को संचित कर्ता भी इसे जानता है। यह समय का बहुत पाण्ड्य होता है। अपने से छोटे तथा बूढ़ा लोगों के साथ आत्मीयता पूर्ण व्यवहार करता है। दुर्गामी आदमी की मदद करता इसे अच्छा लगता है। सादा जीवन, उच्च विचार का यह हामी होता है। यह पश्चिम में विश्वास करता है तथा ईश्वर एवं धर्म पर श्रद्धा रखता है। इसे दृढ़ अथवा केन्द्रों संबंधी प्रेरणा भी होती है एवं वात्स्यायना में जोर लगाने की प्रभावना भी रहती है। विवाह का लाभ सामान्य होता है। विवाह २४ अथवा २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा सुशिक्षिता होती है। वर्ष २४, २६, ३०, ३४, ३६, ४०, ४२, ४८, ५०, ५४ तथा ५८ उन्नति का काल तथा वर्ष ५५, ६१ तथा ६३ स्वाल्प के लिए हानिकारक होते हैं।

(७०८) - इस जन्म कुण्डली वाला जातक सौंवले रंग तथा इकट्ठे बदन का, लम्बे कद तथा कोधी स्वभाव का, रहस्यमय, साहसी तथा परीक्षणी होता है। यह व्याप - धिप भी होता है। इसके मित्रों की संख्या कम ही होती है। आर्थिक - स्थिति भी उत्तम नहीं रहती तथा बहुत खर्च के अवसर भी आते रहते हैं। भूमि तथा भवन आदि के विषय में झगड़े तथा विवाद होते हैं। भाइयों से सहयोग नहीं मिलता। शिक्षा सामान्य रहती है। विवाह २५ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सौंवले रंग की, शिक्षिता, पालु कोधी स्वभाव की होती है। पुत्र की अपेक्षा कन्याएँ अधिक होती हैं। वर्ष ३०, ४२ तथा ५४ आर्थिक - दृष्टि से कष्टग्रस्त रहते हैं तथा वर्ष २३, २७, ३३, ३६, ४३, ४७, ५१, ५३ तथा ५५ आर्थिक एवं व्यावसायिक दृष्टि से लाभग्रस्त रहते हैं। यह अपने मन की बात किसी पर प्रकट नहीं होने देता तथा अनेक प्रकार की चिन्ताओं से गुस्त भी बना रहता है।

(७०८) - इस जन्मचक्र में उत्पल प्राणी सौंघले रंग, लम्बे फुद तथा छोटी स्वभाव का होता है। यह आलसी प्रकृति का होता है, अतः जीवन में उन्नति के अनेक अवसरों को रोक देता है। व्यवसाय में धन की हाकि होती है तथा भ्रष्ट लेने के अवसर भी आते हैं। विष्णु का क्षेत्र उन्नत रहता है। विवाह २५ या ३१ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सौंघले रंग की, अधिष्ठिता एवं कोपी स्वभाव की होती है। अबुष्ट का महीना स्त्री की ओर से चिन्ताजनक रहता है। संतानों में कन्याओं की संख्या अधिक होती है। भाइयों की ओर से सदैव चिन्ताएं लगी रहती हैं। प्रथम संतान कन्या होती है। आकस्मिक-लाभ के अवसर प्राप्त होते हैं। वर्ष २४, २८, ३२, ३६, ३८, ४२, ४६, ५१, ५३ तथा ५७ व्यवसाय में उन्नति प्रद रहते हैं। वर्ष ८, ३१, ५५, ६२ तथा ६८ स्वास्थ्य के लिए कष्ट प्रद रहते हैं। आयु ६५ से ७० वर्ष के बीच होती है।

(७१०) - इस जन्मचक्र का स्वामी गौवर्ण, उन्नत ललाट, चतुर, बुद्धिमान तथा छोटी स्वभाव का होता है। यह समझ तथा वातावरण को वहिंचान का, नदगुरु आचरण करने में कुशल होता है। विष्णु का लाभ मध्यम रहता है। विवाह २५ अथवा २८ वर्ष की आयु में होता है। संतानों में कन्याओं की संख्या अधिक होती है। पुत्रों पर आर्थिक-व्यय अधिक होता है। स्त्री की ओर से सदैव चिन्ता बनी रहती है। वर्ष ३० तथा ५४ आर्थिक दृष्टि से कष्ट प्रद रहते हैं। वर्ष ३१, ५५ तथा ६२ स्वास्थ्य के लिए कष्ट प्रद रहती हैं तथा वर्ष २३, २८, ३३, ३५, ३८, ४१, ४५, ४६, ५१, ५३, ५७ एवं ५८ व्यवसाय में उन्नति का एक निरूप होते हैं। जीवन में आकस्मिक-लाभ के भी अनेक अवसर प्राप्त होते हैं। इनमें आत्मविश्वास की अधिकता पाई जाती है। यह साहस के बल पर विपरीत परिस्थितियों पर भी विजय प्राप्त कर लेता है।

(७११) - इस अनुलिंग के रूपका मुख्य सौंदर्य रंग, इकट्टे वदन, मोटे कद तथा सुंदर आँखोंवाला होता है। यह स्वभाव से कोधी होता है, तथापि मित्रता स्थापित करने में सिद्ध होता है। मित्रों के साथ इसे सहयोग भी प्राप्त होता है। यह शब्की तथा बहमी स्वभाव का होता है और किसी पर बहसा विश्वास नहीं करता। सदैव चौकन्ना बना रहता है। राजकीय-पक्ष में उन्नति नहीं होती होती है। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी से विशेष लाभ होता है। उच्चपद पर पहुँचने के लिए इसे कठोर संघर्ष करना पड़ता है। विष्णु-लाभ मध्यम होता है। विवाह २२ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुंदरी तथा सुशीला होती है। दाम्पत्य-सुरव उत्तम रहता है। सन्तानों से सुख एवं लाभ प्राप्त होता है। भाइयों से सुरव नहीं मिलता। वर्ष २४, २८, ३२, ३८, ४२, ४८, ५२, ५६ तथा ५८ व्यवसाय में उन्नति प्राप्त रहते हैं।

(७१२) - इस अनुलिंग में जन्मा मनुष्य स्थूल शरीर, गौर वर्ण, स्वल्प, सादसी, परीक्षणी तथा कोधी स्वभाव का होता है। यह दूसरों की सहायता के लिए सदैव तत्पर रहता है। समाज-सेवा के कार्यों में सदैव आगे रहता है। इसकी स्मृताशक्ति तीव्र होती है। समय का यह विशेष पाबन्द होता है। मित्रों के सहयोग मिलता है, जिसके फलस्वरूप भाग्योन्नति होती है। विवाह २२, २४ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुंदरी तथा मनोबुद्धिवाली होती है। पुत्रों की संख्या अधिक होती है तथा उनके सहयोग भी मिलता है। आर्थिक-दृष्टि से जीवन उन्नतिशील बना रहता है। वर्ष २४, २८, ३२, ३८, ४६, ५०, ५४, ५६ तथा ५८ व्यवसाय में उन्नति का एक सिद्ध होते हैं। आनंदी के श्रोत एक से अधिक होते हैं। धनिका आर्थिक-लाभ के अचल भी बनाते हैं। वर्ष ३० विशेष रूप से भाग्योन्नति का एक सिद्ध होता है।

(७१३) - इस जन्मचक्र का स्वामी गौरवर्ण, मधुमक्कद वाला, शक्तिप्रिय, साहसी, पीकरी तथा घुड़मक्की होता है। सौभाग्य एवं आसीपन से पूर्ण होगे पर भी इसके शत्रुओं की शृष्ठा अधिक होती है।
जिनके कारण इसे समझ-समझ पर चलाया जाता है। पीकरी द्वारा यह अपनी भावनेनाति करता है, तथापि शान्त-शौकत का जीवन बिना के कारण इसकी आर्थिक-स्थिति निंदव एक जैसी नहीं रहती। यह ऐश्वर्य-आप्त को महत्व देता है तथा राज्य-पक्ष से भी-भीरे उगाति करता है। शिक्षा का क्षेत्र उत्तम रहता है। विवाह २२ आयु २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनुकुल मिलती है। पुत्रों के द्वारा भी आर्थिक-लाभ के अवसर प्राप्त होते हैं। अधिकारीपन से मन नहीं मिलता। भूमि-सकान आदि के लिए होने की अवकाशों एक गुँदे से संबंधित होगे होने की संभावना रहती है। वर्ष ४५, ५७ तथा ६३ स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद तथा २८, ४६, ५६ लाभप्रद रहते हैं।

(७१४) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य सौवले रंग का, मोटे कद वाला, तीव्र नाक-तबका का सुंदर शान्त-उत्कृष्टिका तथा सहानुभूतिपूर्ण होता है। यह पशुओं का पालक, एकान्त-प्रिय, ईश्वर में विश्वास रखने वाला तथा नेत्र-रोग से पीड़ित भी होता है। इनकी दिमागी-शक्ति कमजोर होती है, कलत्र-ये मानसिक-दृष्टि से प्रेरित रहते हैं। भूमि-सकान समझ भी मगड़े भी लगते हैं। विद्या का क्षेत्र कमजोर रहता है। विवाह २५ या २७ वर्ष की आयु में होता है। इसी की ओर से प्रेरित रहती है। सन्तान-पक्ष की ओर से भी चिन्ता बनी रहती है। मातृपुत्रों के क्षय भी शान्त वर्च का प्रदत्त है। वर्ष ५२ तथा ५८ स्वास्थ्य के लिए कष्टप्रद रहते हैं तथा वर्ष २४, २६, २७, ४१, ४५, ५३ तथा ५७ आर्थिक-दृष्टि से लाभप्रद सिद्ध होते हैं। आयु मधुमक्की होती है तथा रोगादि की पीड़ा भी अधिक भोगनी पड़ती है। आर्थिक-स्थिति सामान्य रहती है।

(७१५) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति मंगल कुद लम्बाई लिए मध्यम कद तथा पतले शरीर वाला, कोपी स्वभाव का होते हुए भी अन्धों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण तथा भलाई की भावना रखने वाला। आत्मविश्वासी तथा अपने किये हुए उपकारों को भूल जाने वाला होता है। शत्रु-पक्ष इसे जग-पग पग हाकि पहुँचाने की चेष्टा करता है, यन्तु अपने साहसी एवं दृढ़ स्वभाव से यह उन सभी को न केवल पहाल ही करता है, अन्तिम वाञ्छानुर्भूति से उन्हें अपना मित्र भी बना लेता है। आर्थिक-दृष्टि से जीवन उत्कृष्टिशील बना रहता है। धूमि आदि हे भी आर्थिक-लाभ के अवसर प्राप्त होते हैं। विज्ञा का क्षेत्र कमजोर रहता है। विवाह २२ से २७ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य-प्राप्त नामान्तर रहता है तथा पुत्रों की ओर से भी चिन्ता बनी रहती है। उदा-रोग एवं वायु-विकास प्रभव है। वर्ष २४, २८, ३३, ३७, ४१, ४५, ४८, ५३, ५७ तथा ५८ आर्थिक-दृष्टि से उत्कृष्टि का काल रहते हैं।

(७१६) - इस जन्म कुण्डली वाला मंगल कुद लम्बाई लिए मध्यम कद का, साहसी, परीक्षामी तथा कोपी प्रकृति का होता है। यह विपरीत परीक्षितों को भी अपने अनुकूल बना लेता है। इसमें लड़ते-झिड़ते की प्रवृत्ति भी पाई जाती है। विज्ञान से सम्बन्धित कामों में इसकी गहरी दिलचस्पी होती है। आर्थिक-दृष्टि से इसका जीवन उत्कृष्टिशील बना रहता है। आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं। निजी धूमि-भवन आदि का योग भी बनता है। मातृ-प्राप्त कम मिल पाता है, यन्तु भाइयों से सहयोग प्राप्त होता है। विज्ञा का क्षेत्र उत्कृष्टिशील रहता है। विवाह २४ या २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होती है। पुत्रों से भी सहयोग मिलता है। वर्ष २२, २६, २८, ३२, ३८, ४२, ४७, ५०, ५४ तथा ५६ अवसरों में उत्कृष्टि का काल किटु होते हैं। शरीर स्वस्थ रहता है। आयु प्रायः मध्यम रहती है।

(७१७) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी गौतम, मध्यम कद का, पुष्पाक्ष के शेरवाला तथा कोपी एवं आलसी प्रकृति का होता है। इसका जीवन संघर्ष-भील होता है तथा अपने आलसी स्वभाव के कारण यह उन्नति के अनेक अवसरों को खो बैठता है। यह स्पष्टवादी तथा निरीक्षक भी होता है। चिंतन-चेत्ता होने के कारण यह किसी के निपन्त्रण में नहीं रह पाता। यह नौकरी में असफल तथा व्यवसाय में सफल रहता है। अपनी भावनाओं को निपन्त्रित रावणों से इसे कुशापना प्राप्त होती है। आर्थिक - दृष्टि से इसका जीवन कमजोर रहता है, तथापि आर्थिक-लाभ के अनेक आकांक्षिक-अवलोकन प्राप्त होने रहते हैं। शिक्षा सामान्य रहती है। विवाह २२, २४ अथवा २८ के वर्ष में होता है। सन्तानों में पुत्रों की संख्या अधिक होती है। वर्ष ४०, ४७ तथा ६६ स्वास्थ्य के लिए तथा ३३, ४५ तथा ६५ आर्थिक-दृष्टि से कष्ट प्रद रहते हैं। वर्ष २२, ३०, ४२, ५६ उन्नतिकारक हैं।

(७१८) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति गेहुँए (ग) का, मध्यम कद, इकहरा शरीर, दृढी-स्वभाव का तथा पूर्णतः व्यावहारिक होता है। कभी-कभी यह आपे से बाह्य भी हो जाता है, जिसके फल-स्वरूप इसे हानि उठानी पड़ती है। इसमें आत्म-विश्वास की अधिकता पाई जाती है, अतः यह विपरीत-चरीषा का भी टढ़ना पूर्वक सामना करता है तथा अपने लक्ष्य की ओर निरन्तर भागे रहता चलता जाता है। आर्थिक-स्थिति मध्यम रहती है। पत्नीवारी जने से भगड़े का योग बनता है। मरजो से भी कोई सहयोग नहीं मिलता। विद्या का लाभ हस्तवर्ष के साथ होता है। विवाह २५ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी से मने उद्बल सुख नहीं मिलता। पुत्रों की ओर भी चिन्ता बनी रहती है। वर्ष २५, ३३, ३५, ३६, ४५, ४७, ५२, ५३ तथा ५७ व्यवसाय में उन्नति का एक सिंह होते हैं। स्वास्थ्य सामान्यतः ठीक रहता है। आयु मध्यम प्राप्त होती है।

(७१९) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी गौण वर्ण युक्त नाक-तन्त्र वाला, कुछ लम्बाई लिए मध्यम ऊँचा तथा शान्त-प्रकृति का होता है। यह अपने मन तथा मूर्ति-रूप पर निष्कल रागों में दृष्ट होता है तथा शरीर की ललित कलाओं में रुचि राखता है। यह अपने से बड़े लोगों तथा अधिकारीयों को प्रभावित करने में कुशल होता है, अतः निम्न उन्नति-पथ पर अग्रसर होता-चला जाता है। आर्थिक - स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है। आधुनिक के मुँह एक से अधिक होते हैं। मनो-रंजन तथा सजावट की वस्तुओं पर अधिक व्यय करता है। निजी २ मि तथा मकर का योग भी बनता है। विवाह २४ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है तथा पत्नी युक्त एवं सुशीला होती है। सुसुल-युक्त से अधिक तथा मकर का लाभ होता भी किम्वदं। संतानों से सुख-सन्तोष प्राप्त होता है। वर्ष २४, २६, ३४, ३६, ३८, ४३, ४६, ५३ तथा ५७ उन्नतिकारक होते हैं।

(७२०) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति सांजले रंग तथा मध्यम ऊँचा लाला, लुका, साहसी तथा कोपी स्वभाव का होता है। यह जो पेशी होता है तथा अर्थोपाधि करने में भी प्रवीण होता है। आधुनिक के मुँह एक से अधिक होते हैं। धन-केत प्रकोण धन का संचय करवा उनकी प्रवृत्ति में होता है। विपरीत परिस्थितियों में भी अद्वितीय वचन का मार्ग निकाल लेने में यह कुशल होता है। अशुभों की शिखा बहिनों से अधिक होती है तथा उनसे सहजोग भी मिलता है। विवाह २४ से २८ वर्ष के बीच होता है। पत्नी युक्त, सुशीला तथा मध्यम शक्ति होती है। सुसुल संप्रदाय का लाभ होता है। पुत्र की अपेक्षा कन्याओं की शिखा अधिक होती है। वर्ष २३, २७, ३१, ३३, ३६, ४३, ४७, ५१, ५३ तथा ५६ आर्थिक - दृष्टि से उन्नतिकारक होते हैं। शारीरिक - स्वास्थ्य उत्तम रहता है। आयु मध्यम से कुछ अधिक रहती है।

(७२१) - इस जमादु-चक वाला प्राणी गौवर्ण, मध्यम कद, स्वल्प शरीर, साहसी तथा शक्ति-पिप होता है। यह करीब तथा साहसी होने के कारण रात-दिन परीक्षण करता है तथा धीरे-धीरे पुनर्गति करता चला जाता है। यह विपरीत-परीक्षणियों का साहस के साथ सामना करता है तथा अपने बहिर्-बल से उन पर विजय प्राप्त करता है। यह विपरीत-विपरीत के प्रति विशेष रूप से आकर्षित होता है। बहिनों की अपेक्षा भर्त्ता अधिक होते हैं। गणित इसका शिप विषय होता है। विवाह २३ या २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मंगे-दुखला मिलती है। संतानों के कलाओं की तरफ अधिक होती है। आयुस्सी के मुताबिक एक से अधिक होते हैं, अतः आर्थिक-स्थिति उत्तम होती है। वर्ष २३, २७, ३३, ३७, ४३, ४७, ५१, ५७ तथा ५८ वर्ष तक लाभ उद्विष्ट होते हैं। अल्पजन्म में विशेष रुचि होती है। आयु मध्यम से कुछ अधिक प्राप्त होती है।

(७२२) - इस जमादु-चक वाला मनुष्य इको वदन, गौवर्ण तथा सुन्दर नाक-गर्भा वाला, कुछ लम्बे शरीर का एवं लम्बो-क-कारित्व वाला होता है। यह समय आगे चल बहुत अच्छा श्रम बोल सकता है तथा काम पढ़ने पर लक्ष्य को भी श्रम सिद्ध कर सकता है। यह वातचीत काल में अपना पटु होता है। दूसरों से काम निकालना इसे खूब आता है। शैक्षणिक अथवा राजनीति के क्षेत्र में इसे सफलता प्राप्त होती है। दान करने में भी यह बहुत रोशिया करता है तथा मेव-केन उपकोण अर्थ-संचय करता ही रहता है। विवाह २३, २५ अथवा २८ वर्ष में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला मिलती है। समुदाय से धन का लाभ भी होता है। संतानों के कलाओं की तरफ अधिक होती है। सम्पत्ति-सुख तथा सन्तान-सुख-दोनों ही उत्पन्न होते हैं। शक्ति का गन्तव्य का सुख भी मिलता है। वर्ष २३, २८, ३५, ४१, ४७, ५२ तथा ५७ अवधि उत्तम दिनांक रहे हैं।

(७२३) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी गौवर्ण, सुदृ नेत्र, उन्नत ललाट, जलसे होठ, नुकीली नासिका, मध्यम कद तथा शान्त स्वभाव वाला होता है। कोमलता, गमता, न्यूनता एवं माधुर्यका - ये सब इसके व्यक्तित्व की विशेषता में होती हैं। व्यापारिक - मनुष्य की अपेक्षा मानसिक - काम में इसका विशेष विश्वास रहता है। तिल का काम तिल निपटा देना इसके स्वभाव में होता है। शैक्षिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में यह विशेष उन्नति करता है। कल्पविश्वास की अधिकता होती है तथा कल्पनाशील होने के कारण नई-नई योजनाएं भी रख सकता है। आसानी के प्रेत एक से अधिक होने के कारण आर्थिक - स्थिति मजबूत बनी रहती है। निजी मकान आदि का भोग भी करता है। विद्या का उत्तम लाभ होता है। विवाह कुछ विलम्ब से होता है तथा स्त्री की ओर झुकाव भी बनी रहती है। सन्तानों में पुत्र अधिक होते हैं। माइनों से सहयोग मिलता है। आयु मध्यम।

(७२४) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति गौवर्ण, उन्नत ललाट, सुदृ नेत्र, आकर्षक व्यक्तित्व, शान्त-प्रकृति एवं कल्पनाशील स्वभाव वाला होता है। यह अपनी वाचस्पदता से सामने वाले को प्रभावित करता है और उसे अपने लक्ष्योत्तम में बांध कर मनचारा कार्य करवाता है। यह व्यक्तिगत रूप में ईमानदार भी होता है तथा त्याग में गहरी आस्था रखता है। सामाजिक दृष्टि में इसका विश्वास नहीं होता। आर्थिक दृष्टि से जीवन उत्कृष्टशील बना रहता है। राजनीतिक क्षेत्र में इसे रुचि रहती है तथा राज्य - पक्ष से आर्थिक - लाभ भी होता है। माइनों से कोई सहयोग नहीं मिलता। निजी भूमि तथा वाहन आदि का भोग भी करता है। विवाह २४ या २६ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य तथा सन्तान - सुख उत्तम रहता है। वर्ष ३०, ४६, ५५ तथा ६७ में स्वास्थ्य के लिए चिन्ताजनक रहते हैं तथा वर्ष २४, ३३, ३६, ४२, ४८, ५० एवं ५८ उत्कृष्टक (होते हैं)।

(७२५) - इस जन्म कुण्डली वाला मनुष्य गौवर्ण, सुन्दर नाक-नभसकाला, चूँचाले के शों वाला, साहसी तथा कोधी स्वभाव का होता है। यह विपरीत-परीक्षितियों को भी अपने अनुकूल बना लेता है तथा पौष्टिक के द्वारा जीवन को उत्तम बनाता रहता है। अपने सफोहक व्यवहार के कारण यह मित्रता स्थापित करने के कुशल होता है। यह जितने आत्मीयता के सम्बन्ध स्थापित करता है, उसके साथ जीवनम्भ निकट भी करता है, यन्तु यह अपने अधिकारीजों को उल्ला नहीं आवेता। इसकी आर्थिक-स्थिति उत्तम होती है। भूमि, भवन आदि सभी धन का लाभ होता है। विद्या-लाभ लकावरो के साथ होता है। विवाह २२ से २६ वर्ष के बीच होता है। पत्नी सुन्दरी तथा पुत्रीला होती है। पुत्राणां में कन्याएं अधिक होती हैं। वर्ष २३, २४, ३१, ३७, ४५, ४८, ५३ तथा ५७ व्यवसाय में लाभ प्रद किट्ट होते हैं। आशु मरण होती है।

(७२६) - इस जन्म कुण्डलीका स्वामी गौवर्ण, लम्बे कदका, स्वस्था, आकर्षक व्यवहार तथा साहसी स्वभाव का होता है। यन्तु यह आत्मीय प्रकृति का भी होता है, फलतः जब तक कि या ही न आये, तब तक किसी काम में इसकी प्रवृत्ति नहीं होती। मित्रों की सहायता का इसका स्वभाव के होता है। विपरीत-परीक्षितियों को भी अनुकूल बना लेने में यह समर्थ होता है। आर्थिक-दृष्टि से जीवन उन्नतिशील बना होता है, यन्तु खर्च बड़ा-बड़ा रहने के कारण आर्थिक-स्थिति कमजोर भी बनी होती है। विद्या का लाभ सामान्य होता है। विवाह २३, २५ अथवा २७ के वर्ष में होता है। पत्नी से बुराव मिलता है, यन्तु संतान के प्रति चिन्ता होती है। पुत्रान-दामि के अवसर भी उपस्थित होते हैं। वर्ष २५, २७, ३१, ३५, ३७, ३८, ४३, ४५, ५१, ५५, तथा ५८ व्यवसाय में उन्नतिकारक किट्ट होते हैं।

(७२७) - इस जल कुण्डली वाला मनुष्य सौंदर्य रंग का, लोटे कद वाला, कोपी तथा आलसी चि-
त्त का एवं मुँह पर चेचक के दागों वाला होता है। यह वाला कक्षा में चोरी भी काता है, ज-
न्म बड़ा होने पर अपना इमानदार बन जाता है। यह हवाई किले बनाता है तथा कठोर परिश्रि-
तियों में शीघ्र थकता भी जाता है। यह बातचीत को में पटु तथा स्वभाव से कुछ स्वभि-
मानी भी होता है। यह किसी के विप-ल में रह कर कार्य नहीं कर पाता। आर्थिक-दृष्टि
से जीवन कुछ कष्टप्रद रहता है तथा कार्यदारी के अवसर भी आते हैं। यह कटुभाषी होता
है तथा इसकी पत्नी सुदा होने हुए भी कोपी स्वभाव की होती है। विवाह २४ या २६ वर्ष की
आयु में होता है। जिजा का लाभ मध्यम होता है। जीवन के २२, २६, ३२, ३६, ३८, ४२, ५०, ५२
तथा ५८ वें वर्ष अवलोकन में उन्नति दापक रहते हैं।

(७२८) - इस जल कुण्डली का स्वामी मनुष्य जलक गौरवर्ण, मध्यम कद, सुदा नाक-तबड़ा वाला, पत-
ले होठों वाला, शान्ति-प्रिय तथा आलसी स्वभाव का होता है, जिसके कारण उन्नति के अनेक
अवसर हाथ से निकल जाते हैं। इसकी बुद्धि तीव्र होती है तथा बातचीत में भी कुशल होता
है, अतः वायु-पक्ष पर हावी बना रहता है। यह अपना काम निकालने में साहिर होता है।
आर्थिक-स्थिति चिन्ताजनक रहती है। भाइयों से सहयोग मिलता है। जिजा का उत्तम लाभ
होता है। विवाह २४, २६ अथवा २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी की ओर से चिन्ताएं
बढ़ी रहती हैं। सन्तानों में पुत्रों की संख्या अधिक रहती है। वर्ष २५, ३१, ३७, ४४ तथा
६१ स्वास्थ्य के लिए कष्टप्रद तथा २३, ३५, ४७ एवं ५८ आर्थिक-दृष्टि से विशेष हाकिमुद-
रहते हैं। मित्रों से कोई सहयोग नहीं मिलता। जीवन सामान्य व्यतीत होता है।

(७२८) - इस जन्म कुण्डली वाला मनुष्य गौर वर्ण, स्वस्थ तथा हृष्ट-पुष्ट शरीर का, मध्यम कद वाला एवं शान्तिप्रिय होता है। यह भावना-पुष्कल होता है, अतः कर्मों एवं कठोर कार्यों से व्यूषण करता है तथा अपनी रुचि के विपरीत कार्यों को भी सहन नहीं कर पाता। यह न्याय तथा ईमानदारी का विशेष महत्त्व देता है। संगीत आदि रंग-लाकों में इसकी गहरी रुचि होती है। कविता लेनी प्रेम दावता है। सीधी भाषा के कारण यह अपने मित्रों में छिन्न बना रहता है। विशेषतः पुत्र सुकुमारता, लघुता, स्नेह आदि गुण इन्हीं विशेष रूप से पाये जाते हैं। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय में अधिक लाभ होता है। निजी भूमि, मकान आदि की उपलब्धि होती है। आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ रहती है। मरजो से सहजोग मिलता है। विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य एवं सन्तान-सुख उत्तम रहता है। वर्ष २८, ३६, ४०, ४८, ५०, ५२ तथा ५८ आर्थिक ऐक्यता का कहते हैं।

(७३०) - इस जन्म कुण्डली वाला पाणी साँवले रंग का, लम्बे कद वाला, सुन्दर नाक-तन्त्रा वाला तथा कोष्ठी स्वभाव का होता है। यह दूसरों के मन को पढ़ लेने में कुशल होता है। यह विपत्तियों का डर का मुकाबिल करता है तथा ठोके खाका भी मुकुलाना रहता है। आर्थिक-स्थिति इस लिए उत्तम नहीं रहती क्योंकि प्रत्येक आर्थिक-लाभ होते हुए भी खर्च बड़ा-पड़ा रहता है। मरजो से सहजोग मिलता है। निजी मकान का योग भी बनता है। विवाह का प्रेम उत्तम रहता है। विवाह २१, २५ या २७ वें वर्ष में होता है। पत्नी साँवली, पालु सुन्दर तथा कोष्ठी स्वभाव की होती है। विवाह पूर्वदिशा की ओर से होता है। मरजो से अपेक्षाकृत सहजोग बना रहता है। सन्तान-पक्ष सामान्य रहता है। जीवन के २३, २७, ३३, ३८, ४१, ४५, ५८, ५९ तथा ६८ वें वर्ष विशेष रूप से आर्थिक लाभपद सिद्ध होते हैं। आयु मध्यम प्राप्ति होती है।

(७३१) इस जन्मकुण्डली का स्वामी गौ वरुण, मध्यम कद तथा सुन्दर नाक-तन्त्र वाला होता है। यह व्यापक सत्त्व तथा ईमानदारी को सर्वोपरि महत्व देने वाला एवं अधार्मिक तथा अनैतिक कर्मों से बहिष्कृत होने वाला होता है। यह धार्मिक हस्तियों में विश्वास राखता है तथा धर्म-पालन की दिशा में सचेष्ट बना रहता है। संगीत तथा काव्य में इसकी अभिरुचि होती है। यह प्राचीनता के प्रति विरोध का, तभीतयक या जलने के लिए तैयार नहीं होता। वणिज-वृत्ति उत्पन्न होने के कारण यह तिला अर्ध-संचय में लगा रहता है। बुध-लक्षण सम्बन्धी कर्षण से इसे आर्थिक-लाभ मिलता है। इसकी आर्थिक-स्थिति सर्वे १८६ वनी रहती है। विष्णु-भोग भी उत्कृष्ट रहता है। विवाह २४ से २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मन्दबुद्धि मिलती है। सन्तान-पुत्र का प्रत्येक लाभ होता है। जीवन के २३, २७, ३१, ३५, ३९, ४३, ४७, ५५ तथा ५८ वें वर्ष आर्थिक-समृद्धि दापक सिद्ध होते हैं।

(७३२) इस जन्मकुण्डली का अधिपति मंगल रंग का, मध्यम कद वाला, सुन्दर नाक-तन्त्र एवं कोपी-स्वभाव का होता है। यह दूसरों के मन की बात को भँप लेने में कुशल होता है। यह ठोकर खाकर भी उत्फुल्लित रहता है तथा विरोध-पक्ष को धाजित करने की कोशिश करता रहता है। इसमें आत्म-विश्वास की भावना अत्यधिक पाई जाती है। यह अपनी बुद्धि का प्रयोग अनोपार्जन करता है, अतः इसकी आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ वनी रहती है। विवाह २१ से ३६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मंगल रंग की तथा ठोड़ी स्वभाव की होती है। तथापि दाम्पत्य-पुत्र उत्पन्न रहता है तथा समुदाय-पक्ष से धन भी प्राप्त होता है। ४१ वर्ष की आयु में निजी भवन का प्रयोग भी बनता है। सन्तान से पुत्र प्राप्त होता है। जीवन के २३, २७, ३१, ३५, ३८, ४३, ४७, ५१, ५३ तथा ५५ वें वर्ष उत्कृष्ट रहते हैं। शारीरिक स्वास्थ्य उपर्युक्त बल रहता है। आयु मध्यम होती है। जीवन एकाग्रता-पुत्र पूर्वक व्यतीत होता है।

(७३३) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी लम्बे कद तथा लंबे हाँ का, स्थूल-शरीर एवं डोपी चिन्ता का होता है। बदन लेने की भावना इसके उद्योग से जारी जाती है तथा अवस्था मिलने ही उसका काम उठाना है। यह बुद्धकीर्ण-व्यक्तित्व वाला होता है, अतः दूसरों को सहज ही आकर्षित करने तथा मित्रता स्थापित करने में सक्षम होता है। विपरीत के किम उका पालन निजाला अथवा अपना मतलब किम उका सिद्ध किया जाय, इसका अनुभव होता है। (मित्रों के प्रति इसका विशेष आकर्षण रहता है तथा उनके चक्कर में पड़ा घट गंभीर रहने को भी उलाना कर बैठता है) यह अपने परीक्षका आर्थिक-क्षेत्र में उत्तमिकता है। कुल मिलाकर इसकी आर्थिक-स्थिति सफल होती रही है। विवाह २२ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर होती है तथा दाम्पत्य सुख उत्तम बना रहता है। २४ वें वर्ष में भग्नोदय होता है तथा जीवन के २४, २८, ३४, ३८, ४२, ४४, ४८, ५२, ५६ तथा ६८ वें वर्ष आर्थिक-उत्तमिदायक होते हैं।

(७३४) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति गेहूँ का है तथा मध्यम कद का, जोल चेहरा, चपटी नाक तथा कुछ स्थूल शरीर का, साहसी तथा कोपी स्वभाव का, अपना मतलब सिद्ध करने के लिए बड़े कोशाल के साथ ५० बोलने वाला, भूत को सत्य सिद्ध करने में कुशल, हवाई किसे बताने वाला, कल्पना-उद्धान, किसी भी कार्य को बड़े उत्साह पूर्वक आरंभ करने बाद में विधिले उड़ जाने वाला तथा पाली गामी होता है। इसकी भावद्वी के मोन एक से अधिक होते हैं, अतः आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ होती रहती है। यह मनोरंजन तथा सजाली-वस्तुओं का ध्यान करने वाला एवं सशक्तिपूर्ण जीवन बिताने का शौकीन होता है। विवाह २४ या २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोरंजक मिलाती है, पालन-सत्कार पक्ष की ओर से चिन्ता बनी रहती है। जीवन के २१, २७, २८, ३४, ३८, ४३, ४७, ५१, ५५ तथा ५८ वें वर्ष आर्थिक-दृष्टि से लाभप्रद सिद्ध होते हैं।

(७३५) - इस अनुलिंग में उत्पन्न व्यक्ति हल्के साँवले रंग का, लम्बे कद वाला, स्थूल-शरीर, संगम-प्रिय, साहसी तथा कोपी-स्वभाव का होता है। इसका कोप शत्रुता का रूप धारण कर लेता है। इसे बंदले की भावना का बहुल्य पाया जाता है। स्वामिनी तथा वस्तु-चाप-पीड़ित होने के साथ ही यह शत्रु-पक्ष से पीड़ित बना रहता है, तथापि अपने साहस के बल पर यह विरोधियों को हमेशा दबोच सकता है। शत्रु-पक्ष इसको कोई हानि नहीं पहुँचा पाता। माइफे से सहयोग मिलता है। विष्णु-पक्ष उत्तम रहता है। विवाह २५ अथवा २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी और सुशीला होती है। सन्तान-पक्ष की ओर से चिन्ता लगी रहती है। धर्म, भवन का लाभ भी होता है। आर्थिक-स्थिति सामान्य उत्तम रहती है। वर्ष २३, २७, ३५, ३८, ४३, ४८, ५५ तथा ५८ व्यवसाय में लाभप्रद सिद्ध होते हैं। पौर्वाणों को से सामान्य संबंध रहते हैं। आयु ७० वर्ष से कुछ अधिक होती है।

(७३६) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी साँवले रंग, मध्यम कद तथा कोपी स्वभाव का होता है। यह साहसी तथा साहसी होने के साथ ही कागों का कच्चा भी होता है तथा अपने उत्प्रेक कार्य-व्यवहार तथा बातचीत में गोपनीयता का उद्वेग भी करता है। राजनीतिक अथवा वैयक्तिक क्षेत्र में इसे सफलता प्राप्त होती है। यह जिस व्यक्ति से मित्रता स्थापित करता है, उसके साथ आजीवन मित्र रहता है। आर्थिक-स्थिति मजबूत बनी रहती है तथा राज्य-पक्ष से भी आर्थिक-लाभ के अवसर प्राप्त होते हैं। विष्णु का विशेष लाभ होता है। विवाह २५ के वर्ष में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा समझदार होती है। शत्रु-पक्ष से धन का लाभ भी होता है, पत्नी सन्तान-पक्ष की ओर से कष्ट प्राप्त होता है। जीवन के २३, २७, ३५, ३८, ४५, ४८, ५१, ५५ तथा ५७ के वर्ष व्यवसाय में उन्नातिकाएँ सिद्ध होती हैं। आयु मध्यम होती है तथा शरीर प्रायः स्वस्थ बना रहता है।

(७३६) - इस जलकुण्डली वाला मनुष्य गेहूँ रंग तथा कुछ लम्बाई लिए मध्यम ऊँचाई का, सुन्दर नाक, नक़्श वाला तथा कोपी स्वभाव का होता है। यह सामान्य हास-परिहास से भी हँस होता है। स्वाभिमान से होने के कारण इसकी शत्रुता स्थायी रूप ग्रहण कर लेती है तथा अवलु मिलने ही यह शत्रु-पक्ष से भाँसा बदला भी चुकाता है। यह समय का पावद होता है तथा उल्लेख कार्य निपट-समय पर ही करता है। यह अपने से छोटे तथा बड़ा बालों के साथ आत्मीयता एवं निरद्वेष भावना करता है। किसी भी दुःखी व्यक्ति की सहायता करने में इसे उसका का अनुभव होता है। विष्णु-लक्षण उत्तम होता है। विवाह २२ अथवा २६ के वर्ष में होता है। स्त्री सुन्दरी तथा सुशीला होती है। सन्तान-पक्ष से सहयोग बना रहता है। आमदनी के स्रोत एक से अधिक होने के कारण आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है। वर्ष २४, २८, ३२, ३६, ४०, ४४, ४८, ५४, ५६ तथा ६० उन्नति पद रहेगे।

(७३८) - इस जलकुण्डली वाला मनुष्य साँवले रंग का, विस्तृत ललाट, मोटे होठ, सुन्दरी बाल तथा कोपी स्वभाव का होता है। सामान्यतः यह व्यक्तवदी होता है, पालु स्वार्थ-सिद्धि के लिए कुछ कोलने में भी नहीं हिचकिचाता। यह जीवन्मुक्त अथवा मोक्ष की उन्नति करता है तथा जीवन में किसी भी आलस एवं निष्क्रियता को स्थापित नहीं देता। यह ईश्वर से दूरे वाला तथा धर्म से सदा दूर होने वाला होता है। आर्थिक-दृष्टि से इसका जीवन उन्नतिशील बना रहता है। २४ के वर्ष से पूर्ण भाग्यदण्ड होता है तथा निजी धर्म, गणन, वाहन आदि का योग भी बनता है। विवाह २२ से २६ वर्ष की आयु में होता है। सम्पत्ति-पक्ष उत्तम रहता है। पत्नी मनेकुशला मिलती है। पुत्रों की संख्या अधिक होती है तथा विष्णु का क्षेत्र भी उत्तम रहता है। सन्तान-पक्ष से जीवन में सहयोग भी मिलता है। वर्ष २४, २८, ३२, ४०, ४८, ५२, ५६ तथा ६० आर्थिक-दृष्टि से लाभ प्रद रहेगे हैं।

(७३५) - इस जन्तुलिंग में उत्पन्न व्यक्ति हल्के साँवले रंग का, लम्बे कद वाला, स्थूल-शरीर, संग्राम-पिण्ड, साहसी तथा कोप-स्वभाव का होता है। इसका कोप शत्रुता का रूप धारण कर लेता है। इसे बदले की भावना का बहुत प्रपा जाता है। स्वानिन्मयी तथा वक्त-चाप-वीरिन होने के साथ ही यह शत्रु-पक्ष से वीरिन बना रहता है, तथापि अपने साहस के बल पर यह विरोधियों को हठेय दबोच रखता है। शत्रु-पक्ष इसको कोई हानि नहीं पहुँचा पाता। अइसे से सहयोग मिलता है। विष्णु-पक्ष उत्तम रहता है। विवाह २५ अथवा २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी और सुशीला होती है। सन्तान-पक्ष की ओर से चिका लगी रहती है। धूमि, भवन का लाभ भी होता है। आर्थिक-स्थिति सामान्य उत्तम रहती है। वर्ष २३, २७, ३१, ३६, ४३, ४६, ५५ तथा ५६ व्यवसाय में लाभप्रद सिद्ध होते हैं। पण्डितों से सामान्य संबंध रहते हैं। आयु ७० वर्ष से कुछ अधिक होती है।

(७३६) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी साँवले रंग, मध्यम कद तथा कोप-स्वभाव का होता है। यह साहस-विश्वासी तथा साहसी होने के साथ ही कागों का कच्चा भी होता है तथा अपने उत्प्रेक कार्य-व्यवहार तथा बातचीत में गोपनीयता का उदग्रति भी करता है। राजनीतिक अथवा बौद्धिक क्षेत्र में इसे सफलता प्राप्त होती है। यह दिन व्यक्ति से दिनरा संपादन करता है, उसके साथ आजीवन निवृत्ति करता है। आर्थिक-स्थिति मजबूत बनी रहती है तथा राज्य-पक्ष से भी आर्थिक-लाभ के अवसर प्राप्त होते हैं। विष्णु का प्रवेश लाभ होता है। विवाह २५ के वर्ष में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा समझदार होती है। साधुराल-पक्ष से धन का लाभ भी होता है, पण्डित सन्तान-पक्ष की ओर से कष्ट प्राप्त होता है। जीवन के २३, २७, ३१, ३६, ४५, ४६, ५१, ५५ तथा ५७ के वर्ष व्यवसाय में उन्नातिकाक सिद्ध होते हैं। आयु मध्यम होती है तथा शरीर प्रायः स्वस्थ बना रहता है।

(७३६) - इस जन्म कुण्डली वाला मनुष्य गेहुँए रंग तथा कुछ लम्बाई लिए मध्यम ऊँच का, सुन्दर नाम, नवरा वाला तथा कोपी स्वभाव का होता है। यह सामान्य हास-परिहास से भी हँस होता है। स्वामिमानी होने के कारण इसकी शत्रुता तथा घृणा फैलती है तथा अवलु मिलने ही यह शत्रु-पक्ष से गुप्त बदला भी चुकाता है। यह समय का पावन होता है तथा प्रत्येक कार्य निष्फल पड़ ही जाता है। यह अपने से दोरों तथा बाबा वालों के साथ अमीपता एवं निरक्षर अवस्था का होता है। किसी भी दुर्लभ व्यक्ति की सहायता करने से इसे उसका का अनुभव होता है। विष्णु-लक्षण उत्तम होता है। विवाह २२ अथवा २६ के वर्ष में होता है। स्त्री सुन्दरी तथा सुशीला होती है। सन्तान-पक्ष से लक्ष्य बना रहता है। आमदनी के छोट एक से अधिक होने के कारण आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है। वर्ष २४, २८, ३२, ३६, ४०, ४४, ४८, ५२, ५६ तथा ६० उत्कृष्ट रहते हैं।

(७३७) - इस जन्म कुण्डली वाला मनुष्य सौंदर्य रंग का, विसृत ललाट, मोटे होठ, सुन्दरी बाल तथा कोपी स्वभाव का होता है। सामान्यतः यह व्यक्तवादी होता है, पालु स्वार्थ-सिद्धि के लिए कुछ कोलने से भी नहीं हिचकिचाता। यह जीवन का अपने भाग्य की उत्कृष्टता का होता है तथा जीवन में किसी भी आलस एवं निरक्षरता को स्वीकार नहीं देता। यह रक्षा से डरने वाला तथा धर्म में मड़ा रहने वाला होता है। आर्थिक-दृष्टि से इसका जीवन उत्कृष्ट बनी रहता है। २४ के वर्ष से पूर्ण भाग्यवान् होता है तथा किसी भी भ्रम, गलत, वाहन आदि का भोग भी करता है। विवाह २२ से २६ वर्ष की आयु में होता है। सम्पत्ति-पक्ष उत्तम रहता है। पत्नी मने दुष्टता मिलती है। पुत्रों की संख्या अधिक होती है तथा विष्णु का क्षेत्र भी उत्तम रहता है। सन्तान-पक्ष से जीवन में सहयोग भी मिलता है। वर्ष २४, २८, ३२, ४०, ४८, ५२, ५६ तथा ६० आर्थिक-दृष्टि से लाभप्रद रहते हैं।

(७३६) - इस जन्माङ्क चक्रवाला मुख्य सौंजले रंग तथा नोटे क्रम का, लम्बा चेहरा तथा मोटे होठ वाला, छोटी स्वभाव का तथा दूसरों के मन की बात पहिचान लेने वाला तथा मानापमान का विशेष रूपात रखने वाला होता है। यदि स्वयं से कोई अग्रगण्य होना चाहे तो इसे हिचकिचाहट का अनुभव होता है। स्वभाव से आलसी होने के कारण ये जीवन में अनेक बार अपनी विलासिता के अवसरों को खो देते हैं। आर्थिक स्थिति मध्यम रहती है तथा खर्च बड़ा रहने के कारण कई बार मुँह खाने के अवसर भी उपेक्षित होते हैं। विवाह का लाभ मध्यम होता है। विवाह २४ अथवा २८ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री की ओर से विवाह बन्दी रहती है। पल्लु पन्तान की ओर से सुख तथा सहजोग प्राप्त होता है। वर्ष २४, २८, ३६, ४४, ४८, ५६, ५८ तथा ६० आर्थिक - दृष्टि से लाभप्रद सिद्ध होते हैं।

(७४०) - इस जन्माङ्क चक्रवाला प्राणी सौंजले रंग, लम्बे क्रम का, आकर्षक व्यवहार वाला साहसी तथा छोटी स्वभाव का होता है। यह समझ तथा नीतिमति को पहिचान कर उनके अनुसृत स्वयं को बाल खेले में कुशल होता है। किन्तु व्यक्ति के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए तथा अपना क्या किस तरह निकालना चाहिए इसका उसे पूर्ण ज्ञान होता है। आवश्यकता से अधिक प्रदर्शित करने का दुर्गुण भी इसमें पाया जाता है। आर्थिक - स्थिति कमजोर रहते हुए भी यह अपने को धनवान् प्रदर्शित करता है, फलतः अनेक बार कर्षदायी के अवसर भी आपसते हैं। मातृजों से इसे सहजोग नहीं मिलना। विवाह का लाभ मध्यम होता है। विवाह २३ या २६ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री सुन्दरी तथा पुरुषीला होती है। पन्तानों में कन्याओं की संख्या अधिक होती है। जीवन के २४, २८, ३४, ३८, ४६, ५०, ५४ तथा ५८ के वर्ष आर्थिक - दृष्टि से उत्कृष्ट प्रदर्शित होते हैं। जीवन लाभान्वित। सुख से नीतरा है।

(७४१) - इस जन्माशु चक्र में उत्पन्न मनुष्य गेहूँ के रंग का, कुछ लम्बाई लिए मध्यम कद का, स्वामिमानी, सहसी तथा आत्मविश्वासी प्रकृति का होता है। यह बिगड़ते हुए काम को भी अन्तिम समय पर अपने यक्ष में कलेने में कुशल होता है तथा अपने लक्ष्य को ओर निरन्तर आगे बढ़ता रहता है। यह बड़े हाथ-पोंके वाला, आकाश-गुणों से हीन तथा युवतियों का प्रिय होता है। यह अपने रहस्यों को दिखाने में कुशल तथा दूसरों के प्रति सहाय्य प्रतिक्रिया करने वाला भी होता है। यह नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय में विशेष प्रगति करता है। आर्थिक - दृष्टि से इसका जीवन उत्कृष्ट बन रहा है। भूमि तथा निजी मकान का योग भी बन रहा है। मादको से बचना है। जिन्ना का लाभ मध्यम रहता है। विवाह २४ अथवा २८ के वर्ष में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होती है। वर्ष २४, २८, ३२, ३६, ४०, ४६, ४८, ५०, ५६, ५८ तथा ६० आर्थिक - दृष्टि से उत्कृष्ट लाभ सिद्ध होते हैं।

(७४२) - इस जन्मकुण्डली में जन्म ग्रहण करने वाला नारंग कद का, रूपाय शरीर वाला, स्वस्थ, गौरवर्ण तथा आकर्षक - आभार सम्पन्न होता है। यह एक सदाशु कई विषयों पर विचार करने की क्षमता रखता है तथा अपने परिश्रम के बल पर लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होता है। यह स्वभाव से साहसी होने के कारण विपरीत - परिस्थितियों में भी खड़ा नहीं है, अतः उन्हें अनुकूल बनाने में सफल होता है। जीवन पर निरन्तर न रुकने के कारण इसके दिनों की गिनती कम रहती है। इसकी स्मरण शक्ति कम होती है, तथापि ये दृष्टि तथा जीवन निष्पत्ति देने में कुशल होते हैं। आसक्तियों के प्रति एक से अधिक रहने के कारण इसकी आर्थिक - स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है। निजी भूमि, मकान तथा वाहन का स्वामि भी प्राप्त होता है। जिन्ना का लाभ मध्यम रहता है। विवाह २२ से २६ वर्ष की आयु में होता है। संतानों में कमसे कम की संख्या अधिक होती है। दाम्पत्य-जीवन सुखमय रहता है। ४० वीं वर्ष उत्कृष्ट उद।

(७४३) - इस जन्मा; चक्र में उत्पन्न मनुष्य सौंवे रंग तथा मध्यम कद का, हृष्ट पुष्ट स्वस्थ शरीर का एवं आकर्षक-व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। यह इसी की स्थापना करने के लिए सर्वेव्युत्पन्न रहता है। समाज-सेवा के कार्यों में बड़े का हाथ बटाना है। मित्रता स्थापित करने में सिद्ध होता होता है तथा मित्र के लिए सर्वोच्च-सहायता करने को भी उत्पन्न बना रहता है। साथ ही यह बटमी तथा शायकी स्वभाव का भी होता है तथा किसी भी सहसा विश्वास न करके हा मध्यम-जोकरता बना रहता है। इसे पग-पग पर विशेष का सामना भी करना पड़ता है तथा विषयी इसे आर्थिक-हाथ भी पहुँचाने हैं। आर्थिक-दृष्टि से जीवन मध्यम बना रहता है तथा आकर्षक-लाभ के अवसर भी प्राप्त होने रहते हैं। भाइयों से सहयोग नहीं मिलना, पुरुष भूमि, मयन, वाहन आदि की उपलब्धि होती है। शिक्षा सामान्य होती है। चिकित्सा २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनुष्य कुल मिलती है। सन्तानों में कमसे अधिक होती है। (२५, ३८, ४७ तथा ५१ वें वर्ष उत्तरिपुत्र)

(७४४) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति गुरु रंग तथा लम्बे कद का, इकट्ठे शरीर तथा उत्तम ललाटवाला शान्तिप्रिय तथा शीघ्र स्थापना करने वाला होता है। यह निष्ठावान् कार्य करता है तथा मध्यम का बड़ाणव होता है। यह मित्रता-स्थापित करने में कुशल होता है तथा मित्रों से सहयोग भी प्राप्त करता है। इसके मित्रों को लक्ष्य विपुल होती है। आर्थिक-खर्च काफी बड़ा-चढ़ा रहता है, अतः कर्मचारी के अवसर प्राप्त होते रहते हैं। आर्थिक-दृष्टि सामान्यतः मध्यम रहती है। नैसर्गिक शक्ति कमजोर रहती है। पत्नीवारी-लता से माझे आदि के योग भी बनते हैं। चिन्ता का क्षेत्र उत्कृष्ट रहता है। चिकित्सा २५ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री पुत्र तथा केवल स्वभाव की होती है। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। सन्तानों में पुत्रों की अवस्था कन्याओं की हल्का अधिक होती है। जीवन के २५, २८, ३५, ३८, ४९, ४७, ५९, ५५, ५७ तथा ५८ वें वर्ष आर्थिक-दृष्टि से उत्कृष्ट सिद्ध होते हैं।

(७४५) - इस जन्म कुण्डली में जन्म लेने वाला मुख्य साँवले रंग, मध्यम कद, कुछ लम्बाई लिए आकर्षक व्यक्तित्व, कोथी स्वभाव, कर्कशवाणी वाला तथा आलसी स्वभाव का होता है। इसके जीवन में उन्नति के अनेक अवसर आते हैं, पालतु के इसके हाथ से निकलती जाते हैं। आँखों, वहमी तथा आलसी स्वभाव का होने के कारण यह उनका लाभ नहीं उठा पाता। यह किसी या सहसा विश्वास न करके चौकता बना रहता है। (विरोधी - पक्ष पग-पग कर अड़चनें उत्पन्न करता है। पालतु विरोध के सहयोग से यह उन सबको दूर करने में सफल होता है।) शिक्षा प्रवेष्ट मिलती है। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनेनुकुला मिलती है। सन्तान - पक्ष से सन्तोष बना रहता है। वर्ष ३२, ४४, ५६ तथा ६८ स्वास्थ के लिए चिकित्सा कर रहे हैं तथा वर्ष ३०, ४२, ५४ एवं ६७ आर्थिक दृष्टि से हमीष्ठ रहते हैं। वर्ष २०, ३३, ३७, ४९, ४५, ५९, ५५ तथा ६८ व्यवसाय में लाभ प्राप्त होते हैं।

(७४६) - इस जन्म; चक्र में उत्पन्न हुआ अपनी लम्बे कद का, दुबला-पतला, नेत्र-रोगी, कोथी-स्वभाव तथा साँवले रंग का होता है। यह दूसरों के प्रति सहाय्यता पूर्ण होता है, पालतु उपकार के बदले इसे अपकार ही मिलता है। यह एकता-पिप तथा दूसरों के व्यवहार से घृणा रखने वाला होता है। आर्थिक-स्थिति मध्यम होती है, तथापि जीवन में आर्थिक-लाभ के अनेक अवसर मिलते रहते हैं। विष्णु का लाभ एक-एक कर होता है। विवाह २६ आयु ३० वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनेनुकुला मिलती है। सन्तानों में कमाऊ की संख्या अधिक होती है। भाइयों से सहयोग प्राप्त होता है। बहिनों की संख्या अधिक होती है। जीवन में २४, २८, ३४, ३६, ४४, ४८, ५२, ५६ तथा ६० के वर्ष व्यवसाय तथा आर्थिक-क्षेत्र में लाभदायक रहते हैं। जीवन सामान्यतः सुखपूर्वक बीतता है।

(७४७) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी गेहुँआ हंग, मध्यम कद, गुँह पा दाग वाला, आलसी-उछुनि एवं कोपी स्वभाव का होता है। जीवन में अनेक बार आने वाले उन्नति के अवसरों को यह व्यर्थ ही छोड़ देता है। यह पतले शरीर का तेज चलने वाला तथा एकमात्र-पिण होता है। शत्रु-पक्ष उचल रहा है। विशेष पक्ष पा-पापा कठिनाइयों उपस्थित करता रहता है, जिसके कारण यह पापा चिकित्त बग रहा है, दूसरों के प्रति उपकार की भावना राखते हुए भी इसे अप्रसन्न ही पाया होता है। आकर्षक-लभ के अनेक अवसर प्राप्त होते हैं, तथापि आर्थिक-स्थिति मध्यम ही बनी रहती है। सांख्यिक-पेशवानी के योग भी बने रहते हैं। बुद्धि की कमी होने के कारण जनक कमी-कमी पागलों जैसा आचरण भी करता है। स्वास्थ्य कमजोर रहता है। विवाह २६ वर्ष की आयु में हो सकता है। वर्ष १०, ३६, ५२ तथा ६३ स्वास्थ्य के लिए विशेष ध्यान देना पड़ेगा। वर्ष ३२, ४०, ४८ तथा ५६ उन्नति का काल।

(७४८) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति सौंवेले हंग तथा लम्बे कद का, सादसी, पाकुमी तथा स्वात्त निरपि लेने वाला होता है। इसमें लड़ने-झिड़ने की प्रवृत्ति पाई जाती है। विद्वान् संबंधी कार्यों में इसे गहरी दिलचस्पी रहती है तथा मशीनरी के जटिल यन्त्रों में भी यह गहरी दिलचस्पी राखता है। आर्थिक-व्यय बड़ा-बड़ा रहता है, जिसके कारण समस्त-समस्त का आर्थिक-चिन्ता उत्पन्न होती रहती है, तथापि आर्थिक-स्थिति उन्नतिशील बनी रहती है एवं उसमें उता-चढ़ाव भी आते रहते हैं। मिनी भूमि-मवन आदि का योग भी बनता है। विवाह २२, २६ या २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मने कुदृष्टा मिलती है। पुत्रों की संख्या २०१ सुख प्राप्त होता है। कन्याओं की संख्या कम होती होती है। वर्ष २५, २८, ३३, ३७, ४१, ४५, ४८, ५३, ५७ तथा ५८ व्यवसाय के लिए लाभप्रद रहते हैं।

(७४८) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सौंवेले रंग का, सुहा नाक - नखायाला, दृष्ट-पुष्ट स्वास्थ प्रणीत
वाला, साहसी, परीक्षणी तथा जोशी स्वभाव का होता है। वह विपरीत-परीस्थितियों में भी हठ-
संकल्प के साथ आगे बढ़ता रहता है। इसके विचार स्पष्ट तथा सुलभ हो रहे हैं। यह स्वतन्त्र
मिथि लेता है तथा लड़ने-भिड़ने को सर्व्व लक्ष्य बना रहा है। यह संघर्षशील जीवन बिताता
है तथा जीवन में एक बाधा जिसे अपना लेता है, उसका सर्व्व लक्षण देता है। भाइयों की अपेक्षा
बहनों की संख्या अधिक होती है। आर्थिक-निष्पत्ति उत्तम शील बनी रहती है। विवाह २१, २३
अथवा २७ के वर्ष में होता है। स्त्री सुन्दरी, सुशीला तथा सुविद्विता होती है। सन्तानों में
पुत्रों की संख्या अधिक होती है। भाइयों की अपेक्षा बहनें अधिक होती हैं। जीवन के
२३, २७, ३१, ३२, ३७, ४२, ४८, ५३, ५८, ६१ तथा ६३ के वर्ष उत्तम काट रहे हैं।

(७५०) - इस जन्माङ्क चक्र का स्वामी सौंवेले रंग एवं लम्बे शरीर का, साहसी, परीक्षणी, जोशी,
संघर्षशील तथा जोरदार बहू कार्य करने वाला होता है। स्वतन्त्र चेतने के कारण यह किसीका
निषेध स्वीकार नहीं करता। यह स्वतन्त्रता तथा निरर्थक उछलने का होता है। आकर्षण के मोल
एक हे अधिक होने के कारण आर्थिक-निष्पत्ति उत्तम बनी रहती है। भूमि आदि के सम्बन्ध में
अग्ने-टटे की समावना रहती है। स्त्रियाँ अधिक कमजोर होने के कारण इन्हें कष्ट का हाविष्य रहता
है। कई बार चोट लगने के अवसर भी आते हैं। विवाह २४, २६ या २८ वर्ष की आयु में
होता है। दायित्व एवं ज्ञान-सुख उत्तम रहा है। पुत्रों से सहयोग मिलता है। जीवन के २४,
२८, ३३, ४१, ४८, ५३, ५७ तथा ६३ के वर्ष आर्थिक-उत्तम दायक रहते हैं। वर्ष ६८ स्वास्थ के
लिए विशेष नितावनक रहता है। आयु मध्यम होती है।

(७५१) - इस जन्माहु: चक्र में उत्पन्न मुख्य मध्यम क्रम, पुष्ट शरीर, बड़े डील-डौल तथा हठीले स्वभाव का होता है। सामान्यत: यह व्यावहारिक होता है, पालु कभी-कभी ओषे से बाहर होकर अशिष्टता का परिचय भी दे उठाता है। यह अपने स्व-निर्मित मित्रानों का ही पालन करता है तथा आत्म-विश्वास की अवस्था से पूर्ण होता है। यह विपरीत परिस्थितियों में भी अगुआ होता रहता है तथा स्वयं को निराल्तिन बनाये रखता है। आर्थिक - स्थिति मध्यम रहती है। यह स्वपरिचय द्वारा ही उन्नति करता है, अन्य किसी की सहायता से नहीं। इसे अपने जीवन में भूमि, भवन, वाहन आदि का सुख मिलता है। शिक्षा मध्यम सेनी की पाया होती है। विवाह २२ अथवा २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी हठीले स्वभाव की मिलती है, अत: दाम्पत्य - सुख सामान्य ही रहता है। पुत्रों से भी कोई सुख - सहयोग नहीं मिलता। वर्ष २२, २६, ३२, ३८, ४४, ४८, ५२, ५८, ६० तथा ६२ अवसरों में उन्नतिकारक रहते हैं।

(७५२) - इस जन्मकुण्डली वाला मुख्य गौर्वा, सुन्दर नाक - नब्बा वाला, हष्ट - पुष्ट शरीर का, आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न तथा कुछ अहंकारी स्वभाव का होता है। यह स्वयं को अर्थों की अपेक्षा अधिक बुद्धिमान्, सुन्दर तथा शक्ति - सम्पन्न जानता है। अपने से बड़ों को प्रभावित करने में सक्षम होता है। आत्मविश्वास से पूर्ण तथा आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न रहता है। जीवन में आमदनी के स्रोत एक से अधिक होते हैं। भूमि, भवन तथा वाहन उपलब्धि का योग भी लगता है। विज्ञा का क्षेत्र उन्नत रहता है। बुद्धि तीव्र होती है। विवाह २४ अथवा २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होती है। दाम्पत्य - सुख उत्तम रहता है। पुत्र की अपेक्षा कन्यों में अधिक होती है। ६५ वीं वर्ष स्वास्न के लिए तथा ३८ वीं वर्ष आर्थिक - दृष्टि से चिन्ता लगक रहता है। वर्ष २४, २८, ३२, ३४, ४०, ४६, ५०, ५६, ५८ तथा ६० अवसरों में लाभप्रद सिद्ध होते हैं।

(७५३) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न प्राणी सौंनले रंग तथा बलिष्ठ शरीर का, शांति - प्रिय, सुदुभाषी, सादसी तथा स्वाभिमानही होता है। यह बहुत लोच - विचार का ही कोई योजना बनाता है तथा उसपर टूटना पूर्वक असमर्थ भी होता है। इसका मन तथा मस्तिष्क पर निमग्न रहता है। पत्नी मिली होने के कारण यह सदैव उत्तम - पक्ष पर अग्रणी होता रहता है। यह संगीत - नृत्य एवं काव्य में विशेष रुचि राखता है। आर्थिक - दृष्टि से उत्तमिणीय बना रहता है तथा पैतृक - सम्पत्ति का लाभ भी प्राप्त करता है। भूमि, भवन तथा वाहन का सुख उपलब्ध होता है। भाइयों का सहयोग मिलता है। विद्या का प्रवेश लाभ होता है। विवाह २२ अथवा २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होती है। सन्तानों में कन्याओं की संख्या अधिक रहती है। अपनी बुद्धि के उपयोग से आर्थिक - लाभ प्राप्त करता रहता है। जीवत के वर्ष २२, २८, ३४, ३८, ४०, ४०, ४८, ६० तथा ६२ आर्थिक - उत्तमिणीय होते हैं।

(७५४) - इस जन्मांक; चक्र में उत्पन्न मुख्य गुणवर्ण, सुदुभाष, नवका वाता, बलिष्ठ शरीर का, शांति - प्रिय तथा सुदुभाषी होता है। यह दिन - रात पवित्र काल रहता है। संगीत आदि पवित्र कलाओं से इसकी विशेष रुचि रहती है। यह विद्या धन का विशेष शौकीन होता है तथा कहीं भाषाओं का ध्यान प्राप्त करता है। विवाह २९ से ३० वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होती है। सन्तानों से आर्थिक - लाभ भी होता है। विपरीत - किन्तु के प्रति इसका विशेष आकर्षण रहता है तथा यह उसे आर्थिक - लाभ भी उठाता है। निजी भूमि तथा भवन की उपलब्धि भी होती है। वाहन का सुख भी मिलता है। गणित में इसकी विशेष रुचि रहती है। वर्ष ६६ प्राप्त के लिए विशेष चिन्ता रखता है। वर्ष २३, २८, ३३, ३८, ४५, ४६, ४९, ५८, ६९ तथा ६३ आर्थिक - दृष्टि से उत्तमिणीय किन्तु होते हैं। आयु मध्यम होती है तथा आर्थिक - स्थिति उत्तम बनी रहती है।

(७५५) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सौवले रंग, मधुम कद, उन्नत ललाट तथा सुन्दर नाक नक्शा का धारी, शांति-प्रेम तथा राजनीति में पटु होता है। समग्र आगे जा यह अच्छा से अच्छा फूट कोल लेता है तथा बूढ़ को सत्प भी सिद्ध करने में चतुर होता है। धन कमाने में यह विशेष पटु होता है। धन को संचित करने में भी कुशल होता है। विपरीत-लिट्टी के प्रति इसका विशेष आकर्षण होता है। विपरीत-लिट्टी के प्रति इसका विशेष आकर्षण होता है तथा हमें कायुक्ता अधिक पाई जाती है। विष्णु का अच्छा लाभ होता है। विवाह २२ अथवा २४ वें वर्ष में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा सुशिष्टता मिलती है। दाम्पत्य-प्राप्त उत्तम रहता है। सन्तानों में कन्याओं की संख्या अधिक होती है। वर्ष २८ तथा ६४ स्वास्थ के लिए तथा २९, ३३, ४५ एवं ५७ आर्थिक हानि से कष्टग्रस्त रहते हैं। वर्ष २२, २८, ३२, ३८, ४४, ५२, ५८ तथा ६२ व्यवसाय में उन्नतिकाम रहते हैं।

(७५६) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति गौरवर्ण, लम्बे कद का, उन्नत ललाट, इकट्टे शरीर का तथा सुन्दर नाक-नक्शावाला होता है। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी में इसे लाभ होता है। राजनीति के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। यह कोमल, नम्र तथा भावुक स्वभाव का एवं सहिष्णु तथा मधुरभाषी होता है। ईमानदार तथा भावुक होने के कारण यह कभी-कभी अपनी हानि भी का बर्तते हैं। आपदनी के साधन एक से अधिक होने के कारण इनकी आर्थिक-स्थिति उत्तम रहती है। भूमि तथा भवन के कुल-विक्रय से भी लाभ होता है। विष्णु का अच्छा लाभ मिलता है। विवाह २३ अथवा २५ वर्ष की आयु में होता है, पत्नी पत्नी कर्मशा स्वभाव की मिलती है। अतः दाम्पत्य-प्राप्त में कभी रहती है। पुत्रों की संख्या अधिक होती है और उनसे सहजोग भी मिलता है। वर्ष २३, २७, ३३, ३८, ४२, ४८, ५२ तथा ५८ व्यवसाय में उन्नतिग्रस्त रहते हैं।

(७५७) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य साँवले रंग तथा मध्यम कद का, कुछ लम्बाई लिए पतले शरीर, ठुकीली नाक तथा कोची स्वभाव का होता है। इसकी पुत्रावस्था संघर्षों में बीतती है, फिर यह भी-भी उन्नति का ता हुआ अपने लक्ष्य को प्राप्त का लेता है। यह सामाजिक-होने से विद्रोह करने वाला, बातचीत करने में निपुण तथा अपने ज्ञान के लोगों को समोहित का लेने वाला होता है। आर्थिक-दृष्टि से इसका जीवन मध्यम रहता है तथा अनेक गृह भूत-गुस्सा के अनन्त भी प्राप्त होते हैं। आकर्षक-लाभ के अनन्त भी इसके जीवन में कई गृह आते हैं। विद्या का लाभ मध्यम रहता है। विवाह २३ अथवा २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी कोची स्वभाव की तथा साँवले रंग की होती है। सन्तान-सुख उत्तम होता है। पुत्रों की संख्या अधिक रहती है। वर्ष २२, ३४, ४६, ५२, ५४ तथा ५८ आर्थिक-दृष्टि से कुछ उद्विग्न होते हैं। वर्ष ३३, ३४, ४६, ५५ तथा ५७ उत्तम होते हैं।

(७५८) - इस जन्म कुण्डली वाला मनुष्य गौरवर्ण, उन्नत (पंजाब) कोमल स्वभाव का तथा कारिणी होता है। यह मनुष्य पृथ्वी का होता है तथा इसकी मनुष्यता कभी-कभी भूटि जा भी सकती हो सकती है। यह समझ का पावद, मधुर भाषी, चिंतु तथा सहनशील भी होता है। काम को समझ कर निराले के लक्ष्य उत्पन्न रहता है। आनंद की एक से अधिक होता है। तथा यह इसको आर्थिक-उन्नति भी-भी हो सकती है। विद्या का सामान्य लाभ होता है। विवाह २३ अथवा २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी (साँवली) तथा कोची स्वभाव की मिलती है। आयु का २६ वाँ वर्ष स्त्री के लिए कारुण्य सिद्ध होता है। सन्तान-पक्ष की ओर से चिन्ता बनी रहती है। वर्ष २१, २५, ३१, ३३, ३६, ४३, ४७, ५१, ५५ तथा ५७ जलसाय में उन्नति का एक सिद्ध होते हैं। परिवारों लोगों से सम्बन्ध बनाम बनाम अच्छे होते हैं तथा विशेष-पक्ष दया रहता है। आयु मध्यम से कुछ अधिक होती है।

(७५६) इस जन्म कुण्डली का स्वामी गेहुँहें रंग तथा कुछ लम्बाई लिए मध्यम रूप का, साहसी तथा बोधी स्वभाव का होता है। वह क्षण में लपट तथा क्षण में मुष्ट होता है। क्षणिक क्रोध से गहरी-से गहरी मिलाव का भी समाप्त का देता है। यह इतना आलसी तथा सुस्त होता है कि जब तक कि वह ही न आये, तब तक किसी भी कार्य को नहीं करता। यह संशयालु भी होता है तथा सदैव चिन्तित रहता है, यहाँ तक कि अपनी पत्नी और पुत्रों पर भी सदा विश्वास नहीं करता। इसके सर्वत्र बड़े-बड़े रहते हैं, अतः आर्थिक-स्थिति कमजोर ही बनी रहती है। भाइयों की अपेक्षा बड़े अधिक होती है। भाइयों से सहयोग मिलता है। विवाह २४ या २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी दृष्टि स्वभाव की मिलती है। सन्तान-पक्ष की ओर से भी चिन्ता रहती है। जीवन के वर्ष २४, २६, ३२, ३६, ४०, ४४, ४८, ५६ तथा ५८ आर्थिक-उत्कर्षात्मक सिद्ध होते हैं। आयु मध्यम रहती है।

(७६०) - इस जन्म कुण्डली वाला मनुष्य गौरवर्ण, लोटेकदका, मृदुभाषी, साहसी तथा शक्तिप्रिय होता है। यह उत्प्रेक प्रकार की व्यक्ति में अपने आपको बाल लेता है। जिसे अपनाता है, उसके प्रति अपनीयन ईसायदा बना रहता है तथा मित्र के लिए सर्वस्व त्याग हेतु भी प्रस्तुत रहता है। शत्रु इसे कोई हानि नहीं पहुँचा पाये। वे इसके समस्त पराजित होते हैं। आयुद्वयी के मोन एक से अधिक होने के कारण आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है। भूमि, भवन तथा वाहन का भी पूर्ण सुख प्राप्त होता है। भूमि आदि से आर्थिक-लाभ के अवसर भी उपलब्ध होते हैं। विष्णु का प्रप्रेष्ट लाभ होता है। विवाह २२ से २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोरुक्मा मिलती है। सन्तानों में पुत्र अधिक होते हैं और उनसे प्रप्रेष्ट सुख-सहयोग भी मिलता है। जीवन के वर्ष २२, २८, ३४, ४०, ४६, ५०, ५६, ६० तथा ६४ उत्कर्षात्मक सिद्ध होते हैं।

(७६१) - इस जन्म कुण्डली वाला मरुण गौरवर्ण, सुन्दर नाक-तन्ना वाला, उन्नत-सहाय, विशाल नेत्र, दुबरा ले काले वाला, मृदुभाषी तथा शांति-प्रेम होता है। इसका व्यक्तित्व अल्पक आकर्षक होता है। अतः इसके मित्रों की संख्या भी बहुत होती है तथा ऐसे मित्रों द्वारा सहयोग भी प्राप्त होता है। यह पुरुष पत्नी-पति से स्वयं को उसके अग्रहण हाल लेने में कुशल होता है। यह अल्पक वाक्प्री, शत्रु-और का मर्दन करने वाला, अल्पक पत्नी-पति तथा अल्पक भोगी (कामुक) भी होता है। इसके जीवन में आकर्षक-लाभ के अनेक अवसर आते हैं तथा आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है। इसे निजी भूमि, भवन की उपलब्धि होती है तथा भूमि-भवन आदि के कुछ-विशेष द्वारा भी अल्पक आर्थिक-लाभ होता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी साँचली तथा बोधी स्वभाव की होती है। सन्तान से सुख मिलता है। वर्ष २४, ३२, ३८, ४४, ५२, ५८ तथा ६० लाभप्रद।

(७६२) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मरुण गेहुँए (ग) तथा लम्बे कद का, साहसी एवं बोधी स्वभाव का, अपनी योजनाओं को सूर्ति रूप देने में कठिनाइयों पाने वाला, संशयालु प्रकृति का तथा किसी की भी बात पर सहज ही विश्वास का लेने वाला होता है। जिसके कारण इसे हानि भी उठानी पड़ती है। इसके जीवन में आर्थिक-हासि के अनेकों अवसर आते हैं तथा आर्थिक-दृष्टि से जीवन मध्यम रहता है। भूमि, भवन आदि पैतृक-सम्पत्ति पर कगड़े की संभवता रहती है। विद्या मध्यम श्रेणी की प्राप्त होती है। भाइयों से असहयोग मिलता है। विवाह २२, २४ या २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी से सन्तान सुख मिलता है। सन्तान से लाभ प्राप्त होता है। वर्ष २३, ३५, ४७ तथा ५८ आर्थिक-दृष्टि से चिन्ताजनक रहते हैं। वर्ष ३१, ४१ तथा ६५ स्वाध्याय के लिए हासि प्रद होते हैं तथा वर्ष २४, ३२, ३६, ४४, ४८, ५२, ५८ तथा ६० आर्थिक लाभ प्रद होते हैं।

(७६३) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी गौवर्ण, उन्नत ललाट, पतले होठ, लीखे-नाक-नखा वाला, सुन्दर तथा भावना-पुधान होता है। यह लड़ाई-झगड़े से घृणित होता है तथा अपनी रुचि के विपरीत कार्यों को करने में असमर्थ रहता है। इसकी किले बगाना तथा तनिक सी कठोर नीति नीति में भी बका जाना इसके स्वभाव में होता है। कोमलता, लज्जा, सुकुमारता एवं भावुकता आदि निम्नोच्च गुण इसमें प्रचुरता से पाये जाते हैं। अचल-सम्पत्ति, मकान आदि पर झगड़े तथा उन्हें बेचने आदि के उद्योग इसके जीवन में आते हैं। विवाह २३ या २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी की ओर से कुछ चिन्ता बनती है। विष्णु तथा आर्थिक-स्थिति दोनों सामान्य रहती हैं। सन्तान से भी विशेष सुख-सहयोग नहीं मिलता। वर्ष २६, ३२, ३८ तथा ६७ स्वस्थ के लिए कष्ट प्रद तथा वर्ष २३, ३१, ४३, ४६ एवं ५७ आर्थिक-उन्नति का काल होते हैं।

(७६४) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति साँवले रंग, मध्यम कद, हृष्ट-पुष्ट शरीर वाला तथा कोथी एवं साहसी स्वभाव का होता है। यह अपनी मान्यताओं तथा निरुद्धान्तों पर हटकर बना रहता है तथा अपनी रुचि के विपरीत कार्यों को किसी भी परिस्थिति में करने को तैयार नहीं होता। यह अपने आकर्षक व्यवहार के बल पर अधिकारियों को आकर्षित कर उन्हें इच्छित-लाभ उठाने में कुशल होता है। भाइयों से कोई सहयोग नहीं मिलता। विष्णु मध्यम स्थिति की प्राप्ति होती है। विवाह २३ अथवा २५ वर्ष में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होती है। सन्तानों की ओर से जीवन के उत्साह में चिन्ता बनी रहती है। वर्ष २४, ३६, ४२, ५४ तथा ६० आर्थिक-कष्ट प्रद तथा वर्ष २६, ३२, ३८ तथा ६८ आर्थिक-कष्ट प्रद रहते हैं। वर्ष २३, ३०, ३३, ३६, ४५ तथा ५७ आर्थिक लाभ प्रद रहते हैं।

(७६५) - इस जन्म कुण्डली वाला जातक गौ वर्ण, कुछ लम्बाई लिए मध्यम कद वाला, शारीरिक तथा रसाभिन्नारी होगा। यह व्याप तथा आदर्श को विशेष महत्व देता है। अधार्मिक तथा अनैतिक कर्मों को नहीं करता तथा धार्मिक विधियों से गुस्तरहाता है। यह ईश्वर अत्यधिक भोला राखने वाला होगा। माइनों को ओर से सहयोग मिलना है। अपने जी-जन के बल पर यह आर्थिक क्षेत्र में भी मित्रता उत्पत्ति करता चला जाता है। जीवन का धार्मिक समय कष्टप्रद तथा दुःखान्ता से उत्पत्ति का समय आरंभ होगा। विष्णु मन्त्रम रहती है। विवाह २४ या २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी तथा सन्तान से शुभ प्राप्त होता है। वर्ष २२, २६, ३२, ३८, ४६, ५०, ५४, ५८ तथा ६० वनसाध - अच्छा आर्थिक उत्पत्तिके के लिए श्रेष्ठ सिद्ध होते हैं। जो जीवन के आर्थिक लाभ के अनेक अंश प्राप्त होते (होते हैं)।

(७६६) - इस जन्म कुण्डली वाला मधुर लम्बे कद तथा लंबे रंग का, वाक्पटु, इकट्ठे शरीर का कुछ दुबला, पालु अत्यधिक साहसी एवं आत्मविश्वास को भावना से पूर्ण होता है। यह सदैव सावधान बना रहता है तथा अपने रक्षकों को किसी पर प्रकट नहीं होने देता। आभदरी के भोले एक से अधिक होने के कारण इनकी आर्थिक - स्थिति उत्तम बनी रहती है। आर्थिक - लाभ के लिए यह किसी भी कार्य को करने से नहीं श्रुंका। उसके जीवन का मुल्य रक्षणी धन का संयोजन करता होता है। विष्णु का मन्त्रम लाभ होता है। विवाह २६ वर्ष की आयु में होता संभव है। दाम्पत्य - शुभ कष्टप्रद रहता है, क्योंकि पत्नी चिह्न - स्वाभाव की होती है। सन्तान - पक्ष की ओर से भी चिन्ता बनी रहती है। जीवन के २२, २४, २८, ३४, ४०, ४६, ५० तथा ५८ के वर्ष आनन्दप्रद एवं आर्थिक - लाभ की दृष्टि से उत्तम रहते हैं।

(७६७)- इस जन्म कुण्डली का अधिपति साँवले रंग तथा मध्यम कद वाला, हठीले स्वभाव, पालतु भीड़ प्रकृति का एवं डोपही होता है। यह दूसरों के मन की भावना को बुना पहिचान लेता है। अन्धकार का बुल का विशेष करना तथा न्याय का बंध लेगा इनके स्वभाव में होता है। जीवन में विजीवाहन तथा सवारी का सुख प्राप्त होता है। विज्ञा-क्षेत्र भी उत्कृष्ट रहता है। विवाह २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी हठी स्वभाव की होती है, अतः दाम्पत्य-सुख उत्तम नहीं रहता। सन्तान-पक्ष की ओर से भी चिन्ता रहती है। पुत्रों की संख्या अधिक होती है, पालतु के पुत्र तथा सहयोग नहीं देते। विजीवमान तथा वाहन का सुख उपलब्ध होता है। आर्थिक-दृष्टि से मध्यम, पालतु सेनापण तक बनी रहती है। वर्ष २४, २६, ३०, ३४, ३६, ४०, ४८, ५२, ५६, ६० तथा ६४ व्यवसाय में उत्कृष्ट फल प्राप्त होते हैं। आयु मध्यम प्राप्त होती है।

(७६८)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी हल्के साँवले रंग का, हृष्ट-दृष्ट शरीर वाला साहसी तथा कोपही स्वभाव का होता है। यह अपने शत्रु को कभी क्षमा नहीं करता तथा जीवन में जवा भी अपना मिलता है, बदला लिये बिना नहीं छोड़ता। साहसी होने के साथ ही यह झूठ भी होता है तथा कठिन-से-कठिन परिस्थिति में भी घबराता नहीं है। शत्रुओं का मान-सदन करने में इसे सफलता प्राप्त होती है। इसे भाइयों से सहयोग प्राप्त होता है। भूमि, गवत सम्बन्धी मगडे भी उत्कृष्ट होते हैं। विज्ञा-क्षेत्र रुकावटों के साथ होता है। विवाह २४ आयु का २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी बुद्धि तथा सुशीला होती है, पालतु उसके साथ विचारों का सामंजस्य नहीं बैठ पाता। पुत्रों से सहयोग प्राप्त होता है तथा वे कलाओं की अभिरुचि से अधिक भी होते हैं। वर्ष २४, २९, ३६, ४५ तथा ५१ उत्कृष्ट फल देते हैं।

(७६६) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सौंवले रंग तथा सुन्दर नाक-नख्खा वाला, कुटिल, साहसी, कोपी, हंगाम-पिप तथा घर-हजीगामी होता है। यह शत्रुता को कभी नहीं भूलता तथा अक्सर भी तलाश में रह कर कभी-न-कभी बदला चुका लेता है। इस व्यक्ति पर अपना आकर्षक होता है, फलतः स्त्री-पुरुष-दोनों ही इसकी ओर आकर्षित होते हैं। दूसरों के मंगलकों को पकड़ लेने में भी यह अत्यन्त कुशल होता है। अपना काम निकालने की कला में यह पट होता है तथा मित्रों से भी इसे पक्षिण सहजोग प्राप्त होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य - सुख सामान्य रहता है। विजा - लाभ मध्यम रहता है। ज्ञान के भी कोई विशेष सुख-सहयोग नहीं मिलता। जीवन के उत्तार्ध में दिल अथवा केफड़े से ह्वंक्षित होगा हो सकते हैं। वर्ष २२, २८, ४६, ५८ तथा ६० स्वार्थ के लिए हानिप्रद सिद्ध होते हैं।

(७७०) - इस जन्म कुण्डली का मालिक मध्यम कद वाला, मीनवर्ण, उमर लम्बा, (धूल शरी, साहसी, धर्मवीर तथा अक्लवादी होता है। अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए यह पाँच भी धूलेगा तथा काम निकलवाने के बाद ठोका भी मार सकता है। यह बहुत सौच-साधक का भी किसी से मित्रता स्थापित करता है, पणु आलीपता हो जोगेण यह उसकी उन्नति एवं भलाई के लिए सब कुछ करने को तय्यार रहता है। यह कान-का कच्चा होता है तथा दूसरों की कूची बातों पर भी बड़ी विश्वास कर लेता है। स्त्री इसकी कमजोरी होती है। यह जीवन में अनेक मित्रों से सम्पर्क स्थापित करता है। विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य जीवन सामान्य रहता है। ज्ञानों के भी कोई सुख नहीं मिलता। वर्ष ६० तथा ६४ स्वार्थ के लिए चिन्ता जनक होते हैं। वर्ष २२, २६, ३२, ३८, ४६, ५० तथा ५८ आर्थिक लाभप्रद सिद्ध होते हैं।

(७७१) - इस जन्मकुण्डली का मालिक सौंवाले रंग, इकट्टे शरीर, मध्यम कद वाला, जरिझरी तथा कोथी स्वभाव का होता है। यह सामान्य हास-पीड़ा से भी कष्ट होता है। यन्तु फिरनी जल्दी इसे कोष आता है, उन्नी ही शीघ्र शान्त भी हो जाता है। यह मानापमान का विशेष ध्यान रखने वाला तथा शान्तावस्था में अपनी गलतियों के लिए शत्रु है भी क्षमा प्रान्विता को से हिचकिचाहट का अनुभव न करने वाला होता है। आर्थिक - व्यय बड़ा-चढ़ा रहने के कारण जीवन में आर्थिक - अंतुलन बना रहता है। वैदिक - सम्पत्ति का लाभ भी होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला मिलती है। सन्तान की ओर से चिन्ता रहती है तथा सन्तान - हानि के अवसर भी आते हैं। जीवन के २३, २७, ३१, ३७, ३८, ४५, ४६, ५१, ५५ तथा ५६ वें वर्ष उन्नी दापक रहते हैं। आयु मध्यम प्राप्ता होती है।

(७७२) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी गौरवर्ण, सुन्दर नाक-नक्शा वाला, मध्यम कद, हल-पुष्ट शरीर का, मोटे होठ तथा सुन्दरे के कोण वाला होता है। दीन - दुःखियों की मदद करने को सदैव तय्यार रहता है। सादा-जीवन; उच्च-विद्या - शिक्षा का हामी होता है। आमलों के प्रति एक से अधिक होते हैं, अतः आर्थिक - स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है। निजी धर्म तथा भजन का योग भी बनता है। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय से लाभ होता है। विवाह का मध्यम लाभ होता है। विवाह २१ अथवा २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होती है। दाम्पत्य - सुख उत्तम रहता है। वर्ष ५, १६, २२, २८, ४०, ५२ तथा ५८ स्वास्थ्य के लिए कष्ट का एक तथा वर्ष २६, ३८, ५० एवं ६२ आर्थिक - दृष्टि से चिन्ता-जनक रहते हैं। वर्ष २३, २५, ३१, ३७, ४३, ४७, ५३, ५५ तथा ५६ उन्नी दापक रहते हैं।

(७७३) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी गौर वर्ण, सुन्दर नाक-नक्शा, मोठे होठ, सुन्दर चेहरे वाला, काम-तन्त्र, स्फूर्तिमान, दक्ष एक ब्राह्म-विष्णु होता है। यह अपने लक्ष्य की ओर निरन्तर बढ़ता रहता है तथा समय का अत्यधिक फायदा होता है। यह परीक्षा में विश्वास रखने वाला होता है। विपरीत-लिंगी के प्रति उच्च आकर्षण भी रखता है। विष्णु का उत्तम लाभ होता है। पत्नी सुन्दर तथा सुशीला होती है। दाम्पत्य-जीवन सुखमय रहता है। संतानों में पुत्रों की संख्या अधिक होती है तथा इनसे सुख-सहयोग भी मिलता है। निजी भूमि-भवन, वाहन आदि का योग भी बनता है। नौकरी की अवस्था अवसाहसिक लाभ होता है। आर्थिक-स्थिति उत्तम बनी रहती है। जीवन के २३, २७, ३१, ३५, ४३, ४७, ५५, ५८ तथा ६३ के वर्ष आर्थिक-लाभ की दृष्टि से उत्तम रहते हैं।

(७७४) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति मध्यम कद, स्थूल बारीक, गौर वर्ण, साहसी तथा कोपी स्वभाव का होता है। इसका जीवन आर्थिक-दृष्टि से संघर्षमय बना रहता है, क्योंकि आकर्षक-व्यक्तता प्रायः आते ही रहते हैं। यह विपरीत परिस्थितियों में भी अपना धैर्य एवं सहनशक्ति बनाए रखता है तथा कष्टनाशकों पर विजय पाते में सफल भी होता है। भाइयों से सहयोग मिलता है, परन्तु मित्रों से कोई सहयोग नहीं मिलता। आकर्षक रूप से भूमि-लाभ की कामना रहती है। इसकी वाणी कर्कश तथा कठोर होती है, जिसके कारण बहुत कम लोगों से ही आशीर्वाद स्थापित हो पाती है। विवाह २४ या २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी से सुख मिलता है। संतानों में कन्याएँ अधिक होती हैं तथा संतान-हाकि के अवसर भी आते हैं। मातृ-पितृ-धर्म उलटि करता है।

(००५) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी गौर वर्ण सुधा नाक-नक्का वाला, इकहरे शरीर का लम्बा साहसी उकृति का होता है। इसमें आत्मविश्वास की भावना अधिक पाई जाती है। यह एक ही समय में कई योजनाओं बनाकर, उन्हें कार्पेट में जीवित भी कर सकता है। यह उत्प्रेक कार्य को खूब सोच-समझ कर करता है तथा परिश्रम के बल पर इसमें सफलता भी प्राप्त करता है। यह अपने लक्षण को आँकों से ओझल नहीं होने देता। आर्थिक-दृष्टि से इसका जीवन उत्कृष्ट शील बना रहता है। आकर्षक-लाभ के भी अनेक अवसर प्राप्त होते हैं। बृद्धि बहुत तीव्र होती है। विवाह २२ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुंदरी तथा सुशीला होती है। सन्तान-पक्ष से सुख-सहयोग मिलता है। वर्ष २४, २८, ३२, ३४, ४६, ५२, ५६ तथा ५८ आर्थिक-लाभप्रद रहते हैं।

(००६) - इस जन्म कुण्डली वाला व्यक्ति मध्यम कद, इकहरा शरीर, सुधा नाक-नक्का वाला, गौर वर्ण तथा शान्ति-प्रिय होता है। यह वातावरण को परिचय के नदृष्टि आभाष करता है। जिस व्यक्ति के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए, इसकी जानकारी रखता है, पालन-यह आवश्यकता से अधिक उपदेश-प्रिय होता है। समाज तथा मित्रों के बीच ठाठ-काट का उपशान्त करने के कारण इसकी आर्थिक-वैवाहिक प्रगति धीमी रहती है, तथापि आनंद की एक से अधिक मोहरने के कारण धन की कमी से कोई काम रुकता नहीं है। विवाह लाभप्रद होता है। विवाह २२ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य सुख अच्छा बना रहता है। ३२ वर्ष की आयु में पुत्र-लाभ होता है। वर्ष २४, २८, ३२, ३८, ४८, ५४, ५६ तथा ६० व्यवसाय में लाभप्रद सिद्ध होते हैं।

(७७७) - इस जन्मकुण्डली वाला मधुर गेहूँ रंग का, स्थूल शरीर, लम्बी नाक वाला, शक्ति-
पिप, आत्मविश्वासी, सुन्दर तथा मित्रों को प्यार होता है। यह अपने कार्य के प्रति लगन-
शील तथा लक्ष्य के प्रति निष्ठावान् रहता है। परन्तु स्वयं २७ वाँ वर्ष के कोई विपत्ति नहीं
ले पाता, साथ ही वाणी का कठोर भी होता है, अतः मित्रों की हानि बहुत कम रहती है।
स्वाभाविक कमजोर होने के कारण इसे हानि तथा चोखानी भी लगती पड़ती है। आर्थिक
दृष्टि से जीवन उत्तमिणीय बना रहता है, तथापि धन का अधिक संचय नहीं हो पाता। २३ वर्ष
की आयु में भाग्यदत्त जाग्र होता है। विवाह २३ के वर्ष में होता है। सामान्य - जीवन सुखमय
रहता है। पुत्र की अपेक्षा कन्याओं की हानि अधिक होती है। निजी धर्म तथा भवन का
योग भी बनता है। वर्ष २५, २८, ३३, ३८, ४५, ४८, ५३ तथा ५५ आर्थिक - लाभदायक रहते हैं।

(७७८) - इस जन्मकुण्डली वाला ठोस सौंभले रंग, मोटे कद, कोपी त्वभाव तथा कठोर
प्रकृति का होता है। यह दूसरों की प्रहास काते में भी अग्रणी रहता है। समाज सेवा
तथा राजनीति के क्षेत्र में विशेष रुचि लेता है। भाग्यमति धीरे-धीरे होती है।
आर्थिक - स्थिति मध्यम रहती है। जोर-शक्ति अधिक बड़े-बड़े होते हैं। व्यवसाय की
अपेक्षा नौकरी से अधिक लाभ होता है। भूमि - भवन विषयक चिन्ता लगी रहती है।
शिक्षा मध्यम होती है। विवाह २४ अथवा २८ वर्ष की आयु में होता है। सहायक - पक्ष
धन का लाभ होता है। सन्तान - सुख उत्तम रहता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोरंजक होती है।
वर्ष ६, ८, ३१, ३८, ४५, ४९ तथा ५३ लाभ के लिए चिन्ता लग रहे हैं। वर्ष २६,
२८, ३४, ३८, ४२, ५०, ५४, ५८ तथा ६५ व्यवसाय अथवा आर्थिक क्षेत्र में लाभदायक रहते हैं।

(७७८) - इस जलकुण्डली वाला मनुष्य साँवले रंग का, मुँह चौड़े अथवा आग से जलने के दाग वाला, मध्यम कद का, समय का चाबूत तथा मित्रता स्थापित करने में सिद्धस्त होता है। परीक्षम की दुलना में लाभ कम मिलता है तथा अनेक बार उन्नति के अवसर हाथ से निकल जाते हैं। भाग्य एक-एक कर हाथ देता है। जवान का लीढ़ा होके के कारण अधिकारी वर्ग से पहरी मेल नहीं खाती। सत्यवादी होने के कारण जीवन में कई बार छोटा खाता तथा हानि उठाना है। शंका, दुःस्वभाव का होने के कारण यह किसी पर सहसा विश्वास भी नहीं करता। विष्णु-लाभ मध्यम रहता है। विवाह २४ अथवा २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी साँवले रंग की तथा कोपी स्वभाव की होती है। संतान पुत्र की ओर से पिता बनी रहती है। वर्ष २६, ३२, ४०, ४८, ५४ तथा ६२ उन्नति का काल रहते हैं।

(७८०) - इस जलकुण्डली वाला मनुष्य साँवले रंग, लम्बे मुँह, नाँव कद आला तथा कोपी स्वभाव का होता है। यह दूसरों के प्रति सदा उभरी की भावना रखता है तथा लाभ किसे इस प्रकार को भूल जाता है। भाइयों से सहयोग नहीं मिलता। बहनों की सेवना अधिक होती है। विष्णु-लाभ में रुकावटें आती हैं। आकर्षक-पक्ष के कारण आर्थिक स्थिति अंतर्गुलित बनी रहती है। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। रानी सुंदरी, सुशीला तथा सुशिक्षिता मिलती है। दक्षिण-दिशा से विवाह होता संभव रहता है। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। पुत्रों से लाभ तथा सहयोग मिलता है। वर्ष ५, ३२, ३८, ४६ तथा ६२ स्वास्थ के लिए हानि अथवा कष्ट-उप, वर्ष ३६, ४२, ५४ तथा ६८ आर्थिक कष्ट-प्रद तथा वर्ष २३, २७, ३४, ३८, ४७, ५२ एवं ६८ आर्थिक-लाभ-उप सिद्ध होते हैं।

(७८१) - इस जन्म कुण्डली वाला छापी गौरवर्ण, उन्नत ललाट, विक्राल नेत्रों वाला, सुन्दर, पालु-
कोपी स्वभाव का होता है। यह इन्हें के प्रति सदाव्युत्पत्ति पूर्ण होता है तथा मिलन रक्षा-
मिल कोने में कुशल भी। यह आर्थिक-रुचि का, ईश्वर में अगाध विश्वास रखने वाला एवं
शत्रु-पक्ष तथा भूमि-भवन आदि के विषय में आर्थिक-हानि कोने वाला होता है। भार्ये की
अपेक्षा बहिनों की संख्या अधिक रहती है। शत्रुओं का आर्थिक-हानि पहुंचाने का
उपलब्ध होता रहता है। अतः आर्थिक-स्थिति कष्टप्रद रहती है। भूमि, भवन आदि के
विषय में भी आर्थिक-हानि के अक्सर उच्छिष्ट होते हैं। विष्णु का लाभ रुकाने
के लाभ होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री सुन्दर तथा सुशीला होती
है। सन्तान-पक्ष की ओर से भी चिन्ता रहती है। वर्ष २३, ३५, ४७ तथा ५६ लाभप्रद रहते हैं।

(७८२) - इस जन्म कुण्डली वाला सुवर्ण, सुन्दर, भीरु-स्वभाव, शांति-प्रिय, स्वामि-
मानी तथा सेवापालु-प्रकृति का होता है। इसे विश्वास के लेना कठिन होता है। यह
अपने अपने स्वेषा रहता है, किसी से मिलन-तुलना पसन्द नहीं करता तथा एक-
ता चाहता है। जीवन में मित्रों का अभाव रहता है। आर्थिक-व्यय की अधिकता
के कारण आर्थिक-स्थिति प्रायः कमजोर बनी रहती है। भूमि, भवन आदि का भाड़ा
का योग बनता है। भार्ये से सहयोग नहीं मिलता। विष्णु का लाभ सामान्य रहता है।
विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा सुविद्विता होती है।
सन्तान की ओर से चिन्ता बनी रहती है। वर्ष ६, ८, ३२, ४४ तथा ६२ स्वामि के लिए
कष्टप्रद रहते हैं। वर्ष २३, २७, ३२, ३६, ४५, ४८, ५४ तथा ५८ उन्नति का क रहते हैं।

(७८३) - इस जन्म कुण्डली वाला जातक गेहूँ रंग, इकट्ठे शरीर का, लम्बे कद वाला, स्पष्टवादी, कोमल साहस तथा निर्भीक - प्रकृति का होता है। इसका क्रोध समाप्त भी जल्दी ही हो जाता है। विज्ञान सम्बन्धी कार्यों में इसे विशेष रुचि रहती है। मशीनरी के कामों में भी यह गहरी रुचि रखता है। भाइयों से कोई सहयोग नहीं मिलता। निजी भवन, वाहन आदि का योग बनता है। विवाह का उत्तम लाभ होता है। विवाह २२ या २६ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री सुन्दरी, सुशिक्षिता एवं सुशीला होती है। संतानों में पुत्रों की संख्या अधिक होती है। पेट से सम्बन्धित रोग तथा वात-विष्णु की बीड़ा संभव है। ३५ वर्ष की आयु में किसी अचानक के कारण कागजाल भी संभव है। आर्थिक - स्थिति सन्तोषप्रद बनी रहती है। वर्ष २४, २६, ३०, ३६, ४०, ४८, ५२, ५६, ६० तथा ६२ अवसरों में उत्कृष्ट प्रगति सिद्ध होती है।

(७८४) - इस जन्म कुण्डली वाला मनुष्य गौर वर्ण, लम्बे कद का, सुन्दर नाक - नखशा वाला, उन्नत ललाट, झुँझराले केश तथा आकर्षक व्यक्तित्व का होता है। यह स्वतन्त्र-निर्णय लेता है तथा कठिन - से - कठिन परिस्थितियों में भी डबराता नहीं है। यह विपत्तियों का साहस के साथ मुकाबिला करता है और उन पर विजय भी पाता है। भाइयों की अपेक्षा बहनों की संख्या अधिक होती है। विष्णु का रोग उत्कृष्ट रूप से बना रहता है। विवाह का योग वर्ष २२ अथवा २६ में बनता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होती है। तथापि एक से अधिक स्त्रियों के साथ जातक का सम्बन्ध रहता है। दाम्पत्य - सुख उत्तम बना रहता है। पुत्रों से सहयोग प्राप्त होता है तथा सन्तान - पक्ष से सन्तोष प्राप्त होता है। वर्ष २४, २८, ३२, ३६, ४०, ४८, ५२, ५६, ५८ तथा ६८ अवसरों में लाभप्रद रहते हैं।

(७२५) - इस जन्म कुण्डली वाला मधुसूत गौरवर्ण, मध्यम कद, उन्नत ललाट, हृष्ट-पुष्ट शरीर वाला सुदृढ नेत्रों वाला, साहसी; पालु शक्ति - धिप स्वभाव का होता है। यह प्रत्येक परिस्थिति को अपने अनुकूल बना लेता है तथा जो जगद्गुरु होंगे से कार्य करता है। यह किसी की नौकरी अपना निपटारा में रहकर कार्य नहीं करता। २४ वर्ष की आयु से इनका भाग्योदय आरंभ होता है तथा २८ वर्ष की आयु में पूर्ण भाग्योदय हो जाता है। वैष्णव सम्प्रदाय का लाभ होता है तथा आकर्षिक - लाभ के भी अनेक अवसर प्राप्त होते हैं, अतः आर्थिक - स्थिति उत्तम रहती है। विवाह २२ से २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुदृढ तथा पुत्रीला होती है। एक से अधिक पत्नियों का योग भी संभव है। पुत्रों से सहयोग प्राप्त होता है। वर्ष २४, २८, ३२, ३६, ४०, ४४, ४८, ५२, ५६ तथा ६० वर्ष के उन्नति काल कहते हैं।

(७२६) - इस जन्म कुण्डली वाला जातक गौरवर्ण, मध्यम कद का, सुदृढ नाक-तन्त्रा वाला, स्वास्थ हृष्ट-पुष्ट शरीर, चंचल-उत्कृष्ट का तथा स्वामिसारी होता है। यह बुद्धिमान-व्यक्तित्व का धनी होता है, अतः अनेक लोगों को अपनी ओर शीघ्र आकर्षित कर लेता है। अपने से बड़े लोगों तथा अधिकारीयों को प्रभावित करने में यह विशेष रूप से सक्षम होता है। यह स्व-निर्मित सिद्धान्तों का दृढानुपूर्वक पालन करता है। आमदनी के साधन अच्छे रहते हैं, पालु खर्च बड़ा-चढ़ा रहता है, अतः आर्थिक - स्थिति मध्यम ही रहती है। विष्णु का उत्तम लाभ होता है। विवाह २४ से २८ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य - सुख उत्तम रहता है। पुत्र की अपेक्षा कन्याएँ अधिक होती हैं। वृद्धावस्था में हृदय-रोग होना संभव है। वर्ष २२, ३४, ४६ तथा ५८ वर्ष के लिए कष्ट प्रद तथा वर्ष २५, २८, ३०, ४५, ४८, ५१ एवं ६१ से उन्नति प्रारंभ होता है।

(७८७) - इस जन्म कुण्डली का चामी गौवर्ण, इकहरे बदन का, सुन्दर, पनीसरी, स्वस्थ तथा शान्ति-पिण होता है। यह अहंकारी प्रकृति का भी होता है और इसे यह भ्रम भी रहता है कि मैं अणु लोगों की अपेक्षा अधिक सुन्दर, कुटुम्बमान तथा धनी हूँ। अपने से बड़े लोगों तथा अधिकारीयों को प्रभावित करने में यह सक्षम होता है। आत्म-विश्वास की अधिकता के कारण ही यह अपने कृपा विपन्नता रखने के भी कुशल होता है। मित्रता स्थापित करने में यह बड़ा पटु होता है। यह विपरीत-परीक्षितियों का भी चोर्च पूर्वक सामना करता है तथा अपने साहस को नहीं गिाने देता। यह सदैव उन्नति के मार्ग पर बढ़ता रहता है तथा आर्थिक-स्थिति अच्छी रहती है। समुदाय-पक्ष से भूमि-भवन आदि का लाभ होता संभव है। विवाह २३ या २६ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री साँवले रंग की मिलती है। दाम्पत्य एवं संतान-सुख उत्तम रहता है।

(७८८) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति हल्के साँवले रंग का, नोटे कद का, स्वास्थ, पुष्ट शरीर वाला, साहसी तथा क्रोधी स्वभाव का होता है। सामान्यतः यह व्यावहारिक होता है, परन्तु कभी कभी आपा खोका अभिष्टान का पीचन भी दे बैठता है, जिसके फलस्वरूप सम्मान को ठेस भी लगती है। धन, मन तथा मीठाक व निपन्नता रखने के कारण यह शीघ्र उन्नतिकार होता है तथा साहसी होने के कारण विपरीत-परीक्षितियों को भी अगुल्य बना लेता है। भूमि-भवन का योग भी बनता है। संगीत-काण्य आदि ललित कलाओं में विशेष कचि लेता है। विष्णु का पथेष्ट लाभ होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर, पालु जिद्दी स्वभाव की होती है। पुत्र की अपेक्षा कन्याएं अधिक होती हैं। वर्ष २६, ३२ तथा ४४ आर्थिक-दृष्टि से एवं १०, २२, ३८, ४२ तथा ५२ वित्तपक्ष की दृष्टि से चिन्ताजनक रहते हैं। वर्ष ३३ से भाग्योदय होता है।

(७८८) - इस जन्म कुण्डली का मालिक गौ वर्ण, मध्यम कद का, उन्नत ललाट एवं फुल आगि वाला समोदक-वर्णित, शान्ति-प्रिय तथा कायक-प्रवृत्ति का होता है। विधवा-विधवा के प्रति इसका गहरा आकर्षण रहता है। स्वभाव से धीरवीर होने के कारण वह आर्थिक-क्षेत्रों में विशेष उन्नति करता है। भाइयों से सहयोग मिलता है। शान्त-व्यक्त में अधिक रुचि करते रहने के कारण आर्थिक-स्थिति मध्यम बनी रहती है। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय में विशेष सफलता मिलती है। वह अपने कुटुम्ब-बल से विपत्तियों पर विजय प्राप्त करता है। सखी, भूमि-भवन आदि का पूर्ण सुख प्राप्त होता है। विवाह २२ या २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोनुकूल मिलती है। विष्णु का उन्मत्त लाभ होता है। वर्ष २४, २८, ३०, ३४, ३८, ४६, ५०, ५६ तथा ५८ व्यवसाय में उन्नति का एक निह होता है।

(७८९) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी साँवले रंग का, मध्यम कद, उन्नत ललाट वाला, सुन्दर शान्ति-प्रिय तथा कायक स्वभाव का होता है। वह एक साधक की योजनाएं बनाता है तथा जो भी कार्य करता है, उसमें सफलता प्राप्त करता है। पढ़े-लिखे में इसकी विशेष रुचि रहती है तथा उल्लेख विषय का अध्ययन गंभीरता से करता है। कठिन-से-कठिन परिस्थिति में भी वह अपने धैर्य तथा साहस को नहीं छोड़ता। संकटों का दृढ़ता पूर्वक सामना कर, उन पर सफलता प्राप्त करता है। जीवन में अनेक उन्नत-चढ़ाव आते हैं। आर्थिक-दृष्टि से जीवन उन्नतशील बना रहता है। आसानी के साथ एक से अधिक होते हैं। विवाह २२ अथवा २४ वर्ष में होता है। पत्नी सुन्दर तथा सुशील होती है। कन्याएं अधिक होती हैं। आजोद २६ वर्ष की आयु में होता है। वर्ष २६, ३४, ४०, ४६, ५२ तथा ६० उन्नति का एक रहते हैं।

(७-ई१) - इस जन्मकुण्डली वाला मधुष्म हल्के साँवले रंग का, कुछ लम्बाई लिए मधुष्म कुद का, परिश्रमी तथा छोटी स्वभाव का होता है। लक्ष्य को प्राप्त किए बिना पढ़ चैन से नहीं बैठता। यह एक साध कई विषय पर सोच सकता है तथा कई कामों को कर सकता है। येन-केन-उपायेन धन का संग्रह करना ही इसका उद्देश्य होता है, अतः इसकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है। लोगों से काम निकालने की कला में यह पटु होता है, साथ ही अपने वचन का भी टूटना पूर्वक चालन करता है। बुद्धि द्वारा मनोवार्जनों के अनेक अवसर उसे प्राप्त होते हैं। विष्णु उत्तम रहती है। विवाह २४ से २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुधी तथा शिष्टवादिनी होती है। सन्तानों में कमसे अधिक होती है। वर्ष २१, ३३, ४१ तथा ५१ आर्थिक दृष्टि से कमजोर तथा वर्ष २६, २८, ३४, ४२, ४६, ५०, ५६ तथा ६२ लाभप्रद होते हैं।

(७-ई२) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी गौरवर्ण, उन्नत ललाट, हृष्ट-पुष्ट शरीर, लम्बे कुद का, स्वामिमानी तथा परिश्रमी होता है। यह शारीरिक-श्रम की अपेक्षा मानसिक-श्रम अधिक करता है तथा प्रतिदिन का काम प्रतिदिन ही लगाया कर देता है। शैक्षणिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में इसकी विशेष रुचि होती है। यह अनेक योजनाओं को बनाता तथा मिराला है। आमदनी के क्षेत्र एक से अधिक होने के कारण इसकी आर्थिक स्थिति उत्तम बनी रहती है। विवाह २५ या २८ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य-सुख अच्छा रहता है तथा सन्तानों में पुत्रों की संख्या अधिक होती है। वर्ष ५१ अवसाध की दृष्टि से कष्टकाक रहता है, तथा वर्ष २३, २७, ३५, ३८, ४७ तथा ५५ आर्थिक-दृष्टि से दापक सिद्ध होते हैं। विष्णु का लाभ अच्छा रहता है। आयु मधुष्म से कुछ अधिक प्राप्त होती है।

(७८३)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी गौर वर्ण, पतले तथा सुन्दर होणे वाला, ऊँठ-जैसा, मध्यम कद, छुट-झीर, शान्ति-छिन्न तथा सहनशील स्वभाव का होता है। यह आध्यात्मिक की अपेक्षा मानसिक-सम अधिक करता है। बाल्यालय में पढ़ने के कारण यह अपने सामने जालों को समोहित का लेता है। यह ईमानदार तथा न्याय-छिन्न होता है तथा सामाजिक दृष्टि में पूर्ण विश्वास नहीं करता। आदमी के सुन एक से अधिक होने के कारण आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है। मिथी भूमि तथा भवन का प्रोग भी बनता है। विद्या का लाभ मध्यम होता है। स्त्री साँवले रंग की तथा छोटी स्वभाव की होती है। जन्मों में पुत्रों की संख्या अधिक होती है। वर्ष ६, २३, ३६, ४८ तथा ६३ स्वास्थ के लिए तथा वर्ष २१, ३३, ४५ एवं ५७ आर्थिक-दृष्टि से कष्टग्रस्त रहते हैं। वर्ष २४, ३८, ४५, ५४ तथा ६८ शुभ हैं।

(७८४)- इस जन्मकुण्डली का अधिपति साँवले रंग का, लोटेकद का, साहसी, आलसी तथा छोटी स्वभाव का होता है। क्षणेदृष्टा-क्षणेदृष्टा स्वभाव का होने के कारण यह कहीं बा अपनी हाथ का बैठता है। आलसी होने के कारण लाभ के अनेक अवसरों को अपने हाथ से निकाल देता है। आर्थिक-लाभ के अनेक अवसर मिलते रहने के बावजूद आर्थिक स्थिति कमजोर रहती है तथा अनेक बार मृदा-शुक्ल का शिकार होता पड़ता है। भूमि में से किसी प्रकार का सहयोग नहीं मिलता। छुट-छुटे आदि में भी कहीं बार हाथ ठुकी पड़ती है। भूमि-भवन आदि के विषय में चिन्ता बनी रहती है। विवाह २३ या २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी छोटी-स्वभाव की मिलती है, अतः उसकी ओर से मत चिन्तित बना रहता है। पुत्र जन्म के बाद भाग्योदय होता है तथा पुत्रों से सहयोग भी मिलता है।

(७-६५) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी गौवर्ण, मुग्ध, मोल-चेहरा, घुँघुराले केश तथा सम्मोहक-
व्यक्तित्व वाला होता है। यह उत्प्रेक जीर्णिक के अगुह्य स्वयं को ढाल लेता है, साथ ही
सेवापालु प्रकृति का भी होता है। यह किसी आत्मीयता के सम्बन्ध स्थापित कर लेता है, उसे
अन्ततः निभालता है तथा अपने मित्र के प्रति सदैव ईमानदार एवं वफादार बना रहता है।
यह शत्रुओं को दबाने में सफल होता है, अतः शत्रु-पक्ष इसके सदैव आतंकित बना
रहता है। इसे अपने उत्प्रेक कार्य में संचर्ष काग मड़ता है, परन्तु अन्ततः सफलता भी पाता
होती है। आर्थिक-स्थिति मध्यम रहती है। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय से काम होता है। आ-
पों के कष्ट मिलता है। विष्णु का लाभ मध्यम रहता है। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है।
पत्नी मंगेनुकूल मिलती है। सन्तानों में पुत्रों की संख्या अधिक रहती है। वर्ष २६, ३०, ३४,
४२, ४६, ५०, ५४, ५६ तथा ५८ आर्थिक-दृष्टि से उन्नतिकारक सिद्ध होते हैं।

(७-६६) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति गौवर्ण, मध्यम कृद तथा इकट्टे वदन का, स्वास्थ,
वीर्यशील, साहसी, सदैव उसलालने वाला, परन्तु कोपी स्वभाव का होता है। यह क्षणिक-
आवेश में गहरी-से-गहरी मित्रता को भी समाप्त कर देता है। इसके हृदय की बात को कोई
परिचान नहीं पाता। यह शत्रुओं का मान-सर्वन करने में कुशल होता है। यह अहम्ता-
रहस्यों की छोज में रुचि रखने वाला, उत्प्रेक क्षेत्र में संचर्ष करने वाला तथा आपस में
(कायिक) प्रवृत्ति का भी होता है। विष्णु का क्षेत्र उन्नतिकारक रहता है। विवाह २५ वर्ष की
आयु में होता है। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। सन्तान-सुख भी उत्कृष्ट रहता है। वैष्णव-
सम्पत्ति पर अगड़े भाई के अवसा उपस्थित होते हैं। वर्ष २५, ४० तथा ५६ विशेष लाभदायक रहते हैं।

(७८७) - इस जन्मकुण्डली वाला जातक गौरवर्ण, दृष्ट-पुष्ट मणी, उन्नत ललाट वाला, सुन्दर तथा शान्ति-प्रिय होता है। इसके वैयक्तिक चित्त सुकुमारता, लज्जा तथा मधुकला आदि गुण भी पाये जाते हैं। भवना उद्धान होने के कारण यह कठोर कार्य को नहीं कर पाता तथा लड़ाई-काट्टे आदि से बचता है और उन्हें दूर करता है। अपने इच्छा के विपरीत कार्य को कर पाना इनके लिए संभव नहीं होता। पीछे की होने के कारण इनकी आर्थिक-स्थिति उत्तम रहती है तथा पैतृक सम्पत्ति का भी पूर्ण लाभ प्राप्त होता है। भाइयों से सहयोग मिलता है। निजी भवन, वाहन आदि का पूर्ण सुख मिलता है। विवाह २४ या २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनेकुल मिलती है, पालन-सन्तानें होने हुए भी उनकी ओर से अत्यधिक चिन्ता बनी रहती है। जीवन के २४, ३०, ३६, ४२, ४६, ५०, ५६, ५८ तथा ६० के वर्ष आर्थिक-दृष्टि से उत्तम रहते हैं।

(७८८) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति गौरवर्ण, लम्बे कद वाला, उन्नत ललाट, सुन्दर नेत्र तथा स्वल्प शरीर वाला, शान्ति-प्रिय एवं वाक्पटु होता है। यह सुदुर्भाग्य होता है तथा अपने लक्ष्य की ओर धीरे-धीरे आगे बढ़ता है। यह स्वतन्त्र-चिन्ता क होता है तथा किसी दूसरे की राय को स्वीकार नहीं करता। शत्रु में इसकी अगाध घृणा होती है तथा धार्मिक-कार्य में विशेष रुचि लेता है। आनन्द की के प्रति एक से अधिक होते हैं, अतः आर्थिक स्थिति उत्तम बनी रहती है। पैतृक-सम्पत्ति का लाभ होता है। भूमि, भवन, वाहन तथा लेखक आदि का सुख प्राप्त होता है। शिक्षा पक्षेष्ट प्राप्त होती है। विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री सुन्दरी तथा सुशीला होती है। वर्ष २३, ३५ तथा ४७ आर्थिक कष्टकाक, वर्ष ७, १३, २२, ३७ तथा ५१ स्वाम्य के लिए कष्टप्रद एवं वर्ष २४, ३६, ४८ तथा ५८ उन्मत्तिकाक रहते हैं।

(७६८) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य गौर वर्ण, हृष्ट-पुष्ट शरीर, उन्नत ललाट, पतले होठोंवाला, सुन्दर, शान्ति-प्रिय तथा साहसी होता है। लोगों को पापों की इन्में विमर्शण शक्ति होती है। पद-बातचीत में पटु होता है तथा अजनबी व्यक्ति को भी कुछ ही क्षणों में सम्मोहित कर लेता है। इनके मित्रों की संख्या अधिक होती है तथा पद उनके सहयोग से उन्नति भी करता है। पद-हंस-पुत्र, चतुर तथा श्रेष्ठ-मित्र होता है। पदार्थ-भण्डों से दूर रहता है। विवाह २४ या २६ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री सुन्दर, सुशील तथा सुशिक्षित होती है। विवाहोपरान्त भाग्योदय होता है। विद्या श्रेष्ठ प्राप्त होती है। पुत्रों की संख्या अधिक होती है तथा उनमेंसुख सहयोग भी प्राप्त होता है। भूमि, भवन आदि की उपलब्धि भी होती है। जीवन के २४, २६, ३०, ३६, ४२, ४८, ५४, ५६ तथा ६० के वर्ष उन्नति का काल सिद्ध होते हैं। आर्थिक-स्थिति उत्तम रहती है।

(८००) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य कुछ लम्बा है जिसे मध्यम कद का, गेहुँए रंगवाला, साहसी शान्ति-प्रिय, न्याय-प्रिय तथा आदर्शवादी होता है। पद अधार्मिक तथा अनैतिक कार्यों से दूर रहता है। योग्यता, दल-कपट, बेईमानी आदि से बचकर चलता है। धार्मिक मान्यताओं से तनिक भी चिड़ोह नहीं करता। नौकरों की अपेक्षा स्वयंसे अधिक लाभान्वित होता है। आर्थिक-दृष्टि से जीवन उन्नत बना रहता है। आनंदनी के प्रोत्साहन से अधिक होते हैं। निजी भूमि, भवन आदि का योग्य बनता है। भाइयों के लिए इसे खर्च करना पड़ता है, इनसे कोई सहयोग नहीं मिलता। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी साँवली तथा हठीले स्वभाव की होती है। सन्तान-पक्ष की ओर से चिन्ता बनी रहती है। सन्तान-पक्ष से धन का लाभ होता है। वर्ष २३, २७, ३३, ३५, ४१, ४८, ५३ तथा ५८ आर्थिक उन्नति दापक होते हैं।

(८०१) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य हल्के सौंवले रंग का, मध्यम कद, कुदलम्बाई लिए स्थूल-
शरीर का तथा कोधी-स्वभाव का होता है। यह अल्पधिक आत्मविश्वासी तथा हवाई किले बनाने
वाला भी होता है। मनुष्य को पहिचान लेने की इसमें अदभुत शक्ति होती है। दूसरों के मन की बात
को भाँप लेने में ये कुशल होते हैं। ये वैश्विक-वृत्ति प्रधान होते हैं तथा अर्थ-संचय में इन्हें
विशेष सफलता प्राप्त होती है। अपने साहस एवं परीक्षण के बल पर ये अपनी आर्थिक-स्थि-
ति को सुदृढ़ बनाते हैं। इन्हें निजीभूमि, भवन तथा सवारी का सुख भी प्राप्त होता है। इनके मन
की चिन्ता को अन्य लोग नहीं जान पाते। विवाह २५ या २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी
पुष्टी तथा मनेदुल्ल मिलती है। दाम्पत्य एवं सन्तान-सुख उत्तम रहता है। वर्ष २५,
२६, ३३, ३७, ४५, ५१, ५६ तथा ६१ आर्थिक-दृष्टि से उनमें काफ़ी सिद्ध होते हैं।

(८०२) - इस जन्माङ्कक वाला ज़ाशी सौंवले रंग का, मध्यम कद का, सामान्य रुढ़ी, चतुर
तथा जाग्रदु होता है। इनके हृदय की भावनाओं, सम्बन्धों का साफ़ नहीं होता। यह
होका रखा का भी डुल्ला रहता है। ऐसे प्रत्येक कार्य को करने हेतु यह तत्पर बना
रहता है, जिसके द्वारा आर्थिक लाभ होता सम्भव हो। भाइयों की अपेक्षा बहिनों की इजाजत
अधिक होती है तथा भाइयों से सहजोग भी मिलता है। आर्थिक-स्थिति उत्तमिशील
बनी रहती है। विष्णु का लाभ कुछ रुकावटों के साथ होता है। विवाह २३, २५ या २७ वर्ष की
आयु में होता है। पत्नी हठी स्वभाव की होती है। ससुराल-पक्ष से धन का लाभ होता है।
सन्तान-पक्ष की ओर से धन का बन्ध रहती है। वर्ष २४, ३६, ४८, ५६ तथा ६० आर्थिक-दृष्टि से
एवं वर्ष ३८, ४० तथा ६२ आर्थिक-स्वास्थ्य की दृष्टि से चिन्ताजनक रहते हैं।

(२०३)- इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य गौरवर्ण, मध्यम कद, इकट्ठे शरीर का, सुको नाक-नक्का वाला, साहसी तथा शान्ति-प्रेम होगा। यह सदा, न्याय तथा ईमानदारी को विशेष महत्व देता है। दूसरों की मदद करना इसके स्वभाव में होता है। विचार-प्रेम, भलाई के कार्य तथा धार्मिक कार्य के लिए यह सदैव उत्सुक बना रहता है। यह दूसरों के मन-जावने में कुशल, अपने विषय में सर्वत्र लाभमान तथा इच्छित-वस्तु को प्राप्त करने में सफल रहता है। निजी धर्म, जीवन तथा जीवन का पूर्ण सुख इसे प्राप्त होता है। आर्थिक-सम्पन्नता बनी रहती है। विष्णु-लभ मध्यम होता है। विष्णु २५ से २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनेशकुला मिलती है, पत्नी ज्ञान-पक्ष की ओर है चिन्ता बनी रहती है। घर संबंधी रोग जीवन में लगे रहते हैं। वर्ष ३३, ४७, ५५ तथा ६१ उलटिकाक सिद्ध होते हैं।

(२०४)- इस जन्मांक चक्र में विष्णु प्राणी साँवले रंग, लम्बे कद तथा हृष्ट-पुष्ट शरीर का, कोणी-मुँह-पिच-तथा बाला मुँहों की उत्पत्ति वाला होता है। शत्रु-पक्ष इससे दबा रहता है। यह अपना काम निष्कापने में सफल चतुर होने पर भी कानों का कच्चा होता है। स्वभाव के कारण इसे कभी-कभी हाथ भी उठानी पड़ती है। यह जो भी काम सम्पन्न करता है, उसे उलटका देता है। जीवन में स्वर्च बहुत बड़ा-छोटा होता है, सफलता उत्तम होते इसी आर्थिक-विकास मध्यम बनी रहती है। मनुष्य से सहयोग मिलता है। विष्णु-लभ मध्यम रहता है। विष्णु २४ या २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुखा होती है। तथापि अन्य विषयों से भी संबंध रहता है। सन्तान-पक्ष लाभान्वित रहता है। वर्ष २३, २८, ३५, ३८, ४६, ५४, ६० तथा ६२ व्यवसाय में लाभान्वित सिद्ध होते हैं।

पृ०
सं०
५२२

पृ०
सं०
५०

(२०५) - इस जन्माङ्क चक्र में उत्पन्न जातक गौर वर्ण, गोल चेहरे का, साहसी, कोपी स्वभाव का, मातृ-भक्ता तथा गुरुजनों का डोही होता है। यह बड़े की भावना रावेन वाला, परिश्रमी तथा साहसी होने के कारण प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त करता है। इसके शत्रु सदैव दबे रहते हैं। कुटुम्बियों तथा प्रबन्धियों से इसके विचार नहीं मिल पाते। यह भूत भी बहुत अच्छा और ऐसा बोलता है, जो सत्य जैसा प्रतीत हो। भाइयों से जीवन में सहयोग मिलता है। यदि तथा मकान से प्रबन्धित भगड़े भी होते हैं। विष्णु का नाम सधन होता है। विवाह २२, २६ या २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा बुद्धिमान होती है। पुत्रों से सहयोग मिलता है। वर्ष २४, ३०, ४३, ४८ तथा ६१ आर्थिक - दृष्टि से एक वर्ष ४, २०, २१, ५८ तथा ६३ शारीरिक दृष्टि से कष्ट काक रहते हैं। वर्ष २८, ३२, ४६, ५४ तथा ६० विवाह होते हैं।

(२०६) - इस जन्माङ्क चक्र में उत्पन्न मनुष्य गौर वर्ण, गोल चेहरे तथा दुष्ट-दुष्ट शरीर का, सुन्दर, योगीश्वरी, संघर्षी तथा मातृ-भक्ता होता है। अपने युद्धकीय - व्यवसाय से यह अन्य लोगों को अपनी ओर प्रीति आकर्षित का लेता है तथा मित्रता स्थापित करने में सिद्ध-दाता होता है। मित्रगण इसकी सहायता करते हैं तथा यह स्वयं भी मित्रों की मृदा सहायता करता है। यह अकलवादी भी होता है। अपना स्वार्थ-सिद्धि काम के लिए यह औरों के पाँव भी धूल फेंकता है तथा सतत निकल जाने का किसी को पूछता तक नहीं। भूत को सत्य तथा सत्य को भूत सिद्ध कर देने की काम में भी यह कुशल होता है। यह कानों का कच्चा भी होता है। विष्णु-नाम सधन होता है। विवाह २४ या २६ वर्ष की आयु में होता है। दास्यत्व एवं सन्तान - सुख उत्पन्न रहता है। वर्ष २४, ३०, ३६, ४२, ४८, ५४, ६० तथा ६२ आर्थिक - दृष्टि से उन्नतिकारक रहते हैं।

(८०७) - इस जन्माङ्क चक्र वाला जातक सौंख्ये रंग का, लम्बे कद तथा हृष्ट-पुष्ट शरीर का, मोटे हाथों वाला, छोटी चिमल का, सामान्य हास-पीडास से ही तृप्त हो जाने वाला तथा शीघ्र ही शान्त भी हो जाने वाला एवं मायापमान का विशेष ध्यान रखने वाला होता है। यह अपने आत्मिक चिमल के कारण जीवन में अनेक बार उन्नति के अवसर द्यो देता है। आर्थिक-वैवाहिक सफल रहती है तथा आयदरी भी सुख में व्यय अधिक बढ़ा-चढ़ा रहता है। पैतृक-सम्पत्ति का भगाड़े का योग भी बनता है तथा व्यवसाय के आर्थिक-हानि के अवसर भी आते हैं। भूमि, भवन, वाहन आदि की उपलब्धि होती है। विद्या का लाभ सफल रहता है। विवाह २२ से २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा सुविराहिला मिलती है। दाम्पत्य तथा सुमान-सुख उत्तम रहता है। वर्ष २३, २७, ३१, ३६, ४३, ४६, ५१, ५५ तथा ६१ आर्थिक उन्नतिदायक होते हैं।

(८०८) - इस जन्माङ्क चक्र वाला मनुष्य गेहूँ रंग तथा सुन्दर बालों वाला, विसृत लालट, मोटे हाथ तथा छोटी चिमल का एवं सिर का वाक्य होता है। यह दिलावा अथवा डोंग का उपद्रव नहीं करता। सादा जीवन, उच्च विद्या वाली कलाकान्त शर का लागू होती है। आर्थिक-वैवाहिक उत्तम रहती है। भूमि, भवन तथा सवारी का लाभ होता है। पैतृक-सम्पत्ति की भी प्रचण्ड उपलब्धि होती है। विवाह २१, २३ या २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोरंजक होती है। विद्या का प्रत्येक लाभ होता है। संतानों में पुत्रों की संख्या अधिक होती है तथा उसे प्रचण्ड सहयोग भी मिलता है। वर्ष २६, ३२, ५०, ५६ तथा ६२ आर्थिक हानि एवं वर्ष २८, ४०, ५२, ५८, ६१ तथा ६५ स्वास्थ की दृष्टि से चिन्ताकायक रहते हैं। वर्ष २३, २७, ३१, ३६, ४३, ५१, ५५, ६० तथा ६१ आर्थिक दृष्टि से लाभप्रद रहते हैं।

(८०६) - इस लम्बा; चक्र वाला मुख्य गौ वर्ण, पीली नकल में विलुप्त जलवाला, मोटे रोह तथा सुनहरे बालों वाला, सामान्य लुका तथा शक्ति-पिप होता है। यह अपने ले दोहरे तथा गाबू वालों के साथ सहजता का व्यवहार करता है तथा दीन-दुर्गियों की मदद के लिए लड़ने तथा बका रहता है। यह कार्यलता, स्फूर्तिवान्, विना अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने वाला, आर्थिक कार्यों में हानि होने वाला तथा ईश्वर वा अगाध विश्वास करने वाला होता है। यह पीकम तथा आत्म-विश्वास के बल पर आर्थिक तथा जीवन के अन्तर्गत में एकता करता है। आधुनिक के मुताबिक एक से अधिक होते हैं। विवाह २२ या २५ वर्ष की आयु में पश्चिम दिशा की ओर से होता है। पत्नी लुका तथा सुधीला होती है। दाम्पत्य एवं जन्तान-सुख उत्तम रहता है। विष्णु-लाम सम्पन्न होता है। वर्ष २०, ३७, ४५, ५१ तथा ६३ आर्थिक लाभ कमाते हैं।

(८१०) - इस लुका में उत्पन्न शरीर मीठे रंग का, लम्बे कद तथा हल-हल शरीर का, हरिण के समान मुख तथा छँची नाक वाला, सुवर्ण के पिप तथा एक साफ अनेक चिखों का निचने और पुने कार्य रूप में जीवित करने की सामर्थ्य रखने वाला होता है। इसके द्वारा निमित्त योजनाओं के विचारण के समर्थ कटिनाहण आते हैं, ऐसे यह अपने पीकम के बल पर शक्ति देता है। वातावरण के अन्तर्गत आवाण करने तथा शरीर पीकमियों को भी अपने अन्तर्गत बका होने में यह सहायता होता है। यह आवश्यकता के अधिक उद्देश्य करता है। आर्थिक-स्थिति सम्पन्न रहती है, पत्नी यह बड़े, पार्थिव के समान ठोठ बाह से रहता है। निर्जि भूदि, भवन का सुयोग मिलता है। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनेरु झुला मिलती है। दाम्पत्य एवं जन्तान-सुख उत्तम रहता है। वर्ष २५, ३७, ४३, ४९ तथा ६१ आर्थिक लाभ प्राप्त करते हैं।

(२११) - इस लघुत्वर्ग के उत्पन्न मुख्य मध्यम कद, कुछ लम्बाई लिए स्वल्प शरीर, सौं जले रंग तथा झुंजी तक वाला। साहसी, स्वाभिमान तथा कोपही स्वभाव का, जीम या निमिषा न रखने के कारण मित्रों की निष्ठा में कमी पाने वाला, स्मरणशक्ति कमजोर होने के कारण अनेक बार प्रेरणातिर्जा उठाने वाला तथा आसक्ती के एक से अधिक लक्षण होने के कारण उत्तम आर्थिक - स्थिति वाला होता है। बहिनों की अपेक्षा भ्रातृजों की निष्ठा अधिक होती है तथा उनसे सहयोग भी मिलता है। निजी धर्म, गहन जाह्न आदि की उपलब्धि भी होती है। विष्णु का लाभ मध्यम होता है। विवाह २४ या २६ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य एवं पितृत्व-सुख उत्तम होता है। पालु पहले कमजोर होती है एवं ३१ वर्ष की आयु में पुनः-आदि का योग बनता है। वर्ष २३, २४, ३५, ४३ तथा ५६ आर्थिक उन्नति देते हैं।

(२१२) - इस लघु कुण्डली वाला मुख्य और्ध्व, स्थूल तथा पुष्ट शरीर वाला। भगवान्, कोपही तथा साहसी स्वभाव का होता है। बहिनों की अपेक्षा भ्रातृजों की निष्ठा अधिक होती है। भ्रातृजों से सहयोग भी मिलता है। निजी धर्म, गहन तथा जाह्न की उपलब्धि भी होती है। महत्ता एवं रक्षक-विशेष न रखने के कारण उत्तम के अनेक लक्षणों को छोड़ता है। निजी अपना काम निकालने में महत्तम होता है। महत्तममय प्रकृति का भी होता है, अतः इसके मन की बात को कोई नहीं जान पाता। विष्णु लाभ मध्यम होता है। विवाह २५ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी हठीले स्वभाव की होती है। दाम्पत्य-सुख मध्यम नहीं रहता। पितृत्व-सुख भी मध्यम ही रहता है। आयु दीर्घ होती है। वर्ष ३, २२, ३५, ४०, ४९ तथा ६५ स्वात्म के लिए कष्ट उद होते हैं। वर्ष २२, ३५, ४३, ४४ तथा ६१ आर्थिक उन्नति का क रहते हैं।

(८१३) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न प्राणी गेहूँ (गन्ना, इकहे) लम्बे कद वाला। सुन्दर तथा प्रान्ति
प्रिय होता है। सिंह, मीन तथा एवं आसीपन की भावना इसमें प्रकट हो जायेगी। इनमें
की सहायता करने में यह अगुणी रहता है। यह निपटारा तथा सम्पत्ति का काम करने में
विशेष रचना है। अपने आकर्षक - जातिगत तथा सम्पत्ति के कारण यह सहाय में ही सब
का प्रियजन बन जाता है। यह मित्रता - स्थापित करने में बहुत होता है मैत्री - मित्रता देता
है - है - बड़ा लाभ करने में भी सक्षम है। आसानी की तुलना में (वर्ष) अधिक होने पर
भी इसकी आर्थिक - स्थिति विशेष उत्तम बनी रहती है। विष्णु का भी प्रफेक्ट लाभ होता है।
विकाट २२ या २६ वर्ष में होता है। पत्नी मने उच्छल मिलती है। दाम्पत्य - सुख स्पष्ट रहता
है। सन्तान का सुख भी उत्तम रहता है। वर्ष २४, ३२, ४०, ४८, ५२ तथा ५८ उत्तम प्रकृतियों

(८१४) - इस जन्म कुण्डली वाला मुख्य लम्बे कद का, गोवर्ण, मधुरी जैसी आँख तथा उत्तम
नासिका वाला, सुकुमार पुष्प लोके वाला सुन्दर, पानु को भी प्रभाव का होता है। यह
इसके प्रति भावार्थ तथा सहाय्यता की भावना भी रहता है। धर्म - कर्म में इसकी
गहरी भावना होती है। शिव का इसका पूर्ण विश्वास होता है, तथापि मनुष्यों का सहाय्य
विश्वास नहीं काँधता। अधिक - स्थिति उत्तम बनी रहती है। आकर्षक - लाभ के अवसर भी
प्राप्त होते रहते हैं। निजी धर्म, भजन तथा जाहगादि का लाभ भी होता है। मनुष्यों की
अपेक्षा बहनों की निष्ठा अधिक होती है। विष्णु का उत्तम लाभ होता है। विकाट २४ वर्ष की
आहुति होता है। दाम्पत्य एवं सन्तान - सुख उत्तम रहता है। वर्ष २, २५, ३२, ४८ तथा ६७ रक्षा
के लिए कष्ट रहते हैं। वर्ष २८, ३३ तथा ६२ आर्थिक कष्ट तथा वर्ष ३४, ४६, ५२ विशेष कष्ट रहते हैं।

(८१५) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य गेहुँए बेंग का, दुबले शरीर, मधुरी जैसी आँके वाला, सुन्दर, पालु कोपी स्वभाव का होता है। विरोधी-लोग इसे जीवन में परेशान करने का प्रयत्न भी करते हैं, पालु सामान्य काम में व्यस्त है। यह दूसरों की सहायता हेतु भी सर्वेक उत्सुन रहता है। आमदनी के मोल अच्छे होते हैं, परन्तु खर्च बड़ा-बड़ा होने के कारण कभी-कभी आर्थिक-कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ता है। विष्णु का श्रेष्ठ कर्मणो रहता है। यह से संबंधित रोग भी लगे रहते हैं। विवाह २४ वर्ष की आयु में दक्षिण दिशा से होता है। पत्नी सुन्दरी, दुर्भीष्मा तथा दुर्बिदिता होती है। दाम्पत्य-सुख प्रप्त रहता है, परन्तु सन्तान-पट्ट की ओर से चिन्ता रहती है। वर्ष २२, २६, ३४, ४२, ४८, ५४, ५८ तथा ६० अवसरों में (अलक्षित) मृत्यु होते हैं।

(८१६) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न प्राणी मीवर्ण, सुन्दर नाक-मुख, उन्नत ललाट तथा कोपी स्वभाव का होता है। इसकी बुद्धि कमजोर होती है, अतः यह अपना भाग्य-पीडा नहीं समझ पाता। दूसरों के प्रति यह सहानुभूति एवं भलाई की भावना रखता है, तथापि स्वयं में क्रोध रहता है, अतः लोगों से छुलगा-दिलना परत नही करता। यह सामाजिक सुविधों का उपयोग से पालन करता है। दूसरों के द्वारा किये गये अनुचित कार्यों से यह स्वयं दुःखी होता है। मरुजों से जीवन में कोई सहयोग नहीं मिलता। विष्णु-श्रेष्ठ कर्मणो रहता है। विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। सन्तान की ओर से चिन्ता रहती है। माग्नेद २८ वर्ष की आयु में होता है। वर्ष ३१, ४१, ५३ तथा ६५ आर्थिक-दृष्टि से तथा वर्ष २५, ३८, ४८ तथा ६० स्वास्थ्य के लिए कष्ट प्रद रहते हैं। वर्ष २४, २८, ३८, ४६, ५४, ६० तथा ६२ आर्थिक-काम प्रद रहते हैं।

(८६७) - इस जन्म कुण्डली में उत्पल मुख्य साँवले रंग, लम्बे कद का, सुन्दर नाक-नक्शा वाला, साहसी तथा कोपी स्वभाव का होता है। यह स्मरणवादी, शीघ्र कुट्ट हो जाने वाला, तुल्य मित्र तथा शीघ्र ही भ्रान्त हो जाने वाला भी होता है। आसानी के मोल एक से अधिक होने के कारण आर्थिक-स्थिति उत्तम बनी रहती है। व्यवसाय की अपेक्षा नीकरी से अधिक लाभ होता है। विद्या का खेद लाभ होता। विवाह २१ अथवा २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा तुल्य होती है। दोनों में पुत्रों की मित्रता अधिक होती है क्योंकि उनके मूल भी मित्र होते हैं। वर्ष ३०, ४२, ५४ तथा ६२ आर्थिक-दृष्टि से एक वर्ष २६, ३८, ५०, ५७ तथा ६७ शारीरिक-स्वास्थ्य की दृष्टि से जिता-जक रहते हैं। वर्ष २३, २७, ३१, ३८, ४७, ५५, ५८ तथा ६३ आर्थिक-दृष्टि से उन्नति का एक सिद्ध होते हैं।

(८६८) - इस जन्म कुण्डली में उत्पल प्राणी गेहूँ का रंग, इकट्ठे वदन, घुँघराते केश तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। यह परिश्रमी तथा साहसी होता है। अनेकजीवन का सभी भाग्यकी उन्नति वाला है। यह सामान्य से उच्च पद का जग पहुँचता है तथा स्वतन्त्र-निर्णय देने में लक्ष्य होता है। कठिन-से-कठिन परिस्थिति में भी यह अजग सन्तुलन बनाए रखता है तथा लक्ष्यों का उदक मुकाबिला करता है। साहसिक-कार्यक्रमों में इसे आनन्द का अनुभव होता है। लड़ने-मिटने में इसकी स्वाभाविक छवृत्ति होती है। यह पोषण बनाने में कुशल होता है तथा प्रत्येक कार्य के पोषण बड़े रूप में कार्य सफलता प्राप्त करता है। आसानी के एक से अधिक मोल होने के कारण आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। सन्तान के धन-लभ होता है। पत्नी तथा सन्तान के साथ मित्रता है।

(८१-८) - इस जन्मकुण्डली में छल्ला प्राणी गौरवर्ण, लम्बे कद तथा इकट्ठे शरीरवाला, झट्टी, पीकरी, कोपी स्वभाव का तथा आकर्षक-व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। इसके विद्या तथा सख्त सुलभे हुए होते हैं। यह विद्वान् लक्ष्मी कारी के विशेष रुचि लेता है। जटिल-ले-जटिल मन्त्रीनी कामे-चालन कामे में भी इसे कुशापना प्राप्त होती है। यह दुर्द्वर्ष स्वभाव का एवं सिंघर्षशील भी हो सकता है, यह एकछात्र जिस पर विश्वास कालेता है उसका सर्वोच्च नौकरा का कोन के लिए उपलब्धशील बना रहता है। विशेष-यह इस के लिए कि वह-वह पर कठिनतम उपायान करने का उपान काला है, पानु लामने पड़ने के दाबाला है। आपदनी के योग उत्तम होते हैं, पानु खर्च बड़ा चला रहने के कारण आर्थिक-स्थिति कमजोर हो जाती है। मकान कारि का केस बनता है। दाम्पत्य एवं सन्तान-सुख उत्तम रहता है। वर्ष २३, ३४, ४७ तथा ५२ आर्थिक उन्नति देते हैं।

(८२०) - इस जन्मकुण्डली में छल्ला मनुष्य सौवले रंग का, लम्बे कद वाला, बलिष्ठ, चालाक-चेला कोपी स्वभाव का तथा सख्तवादी होता है। यह किसी के निपटारा में रहकर कार्य नहीं का पाता। पीकरी होने के कारण यह पश्य को प्राप्त करता है तथा नीकरी के उच्च पर पर आसीन होता है, पानु अपने ही भी उच्च अधिकारीयों के साथ इसका नाज-मेल ठीक नहीं कर पाता। इसकी आर्थिक-स्थिति उत्तम रहती है। भूमि, मयन तथा सवारी का प्रचुरी प्राप्त होता है। विद्या का पछेछ लाभ होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर तथा सुशील मित्रणी है। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। सन्तानों में पुत्रों की शिक्षा अधिक होती है। जीवन के २३, ३२, ४३, ४७, ५१, ५७ तथा ५८ वें वर्ष दाम्पत्य में उन्नति का एक अच्छा आर्थिक-दृष्टि के लाभ उद रहते हैं।

(८२१) - इस जन्मकुण्डली वाला सुदृढ़ गौवर्ण, लम्बे कद का, हल-कुल शरीर कला, सुन्दर नाक नखका का, कर्ण, साहसी तथा आतिथि होने के लक्षण ही कुछ अहंकारी प्रकृति का भी होता है। यह अंगों की अपेक्षा स्वयं को अधिक सुन्दर, वल्लिष्ठ, योग्य तथा बुद्धिमान समझता है एवं बात-बात में हाँका आवाज भी करता रहता है। सामान्यतः यह व्यवहारिक होता है, तथापि कभी-कभी अपने ही बाह्य निकल का अविष्टता का परिणाम भी देता है, जिसके फलस्वरूप इसे बड़ी हानि भी उठानी पड़ती है। यह अपने जीवन का आर्थिक-विकास को सुदृढ़ बनाता है। आयु की ओर एक से अधिक होते हैं। यदि तत्काल मरण का सुख भी उपलब्ध होता है। विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य एवं सन्तान सुख उत्तम रहता है। जीवन के २४, ३०, ३६, ४२, ४८, ५०, ५६, ५८ तथा ६० वें वर्ष आर्थिक-उन्नति प्राप्त करने हैं।

(८२२) - इस जन्मकुण्डली में जन्मलेने वाला व्यक्ति गेहूँ पेंग, मध्यम कद, छोटे तथा मोटे हाँठों वाला, हँसमुख, स्वस्थ एवं स्वनिर्मित सिद्धांतों का रहना पूर्वक पावन करने वाला होता है। यह विपत्ति-जीविता किन्हीं में भी अपने आप का निपटारा रखता है। इसके आत्म-विश्वास की उपस्थिति पाई जाती है। मन तथा मनीषा का निपटारा रखने के कारण यह जीवन के सुखों के भोग में उत्कृष्ट होता है। आर्थिक-दृष्टि से जीवन उत्तम बना रहता है तथा पैसा-संपत्ति का लाभ भी प्राप्त होता है। विवाह २२ आयु २६ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य-सुख तथा सन्तान-सुख उत्तम रहता है। वर्ष ३१, ४३, ५२ तथा ६० आर्थिक-दृष्टि से एक वर्ष २६, ३२, ३८, ४४, ५०, ६३ तथा ६७ आर्थिक-दृष्टि से कष्ट पड़ रहे हैं। वर्ष २४, ३०, ३६, ४२, ४८, ५२ तथा ६० आर्थिक लाभ प्राप्त रहे हैं।

(८२३) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न प्राणी गौरवर्ण, मध्यम कद, स्वस्थ शरीर, शान्ति-प्रिय एवं समोदक-व्यक्तित्व का धनी होता है। यह अपनी वात्सल्यता से अत्यन्त व्यक्ति को भी प्रभावित कर लेता है। बौद्धिक एवं व्यावसायिक क्षेत्र में यह सफल होता है। सम्पन्न आर्थिक जीवन कष्टों से भरा हुआ नहीं होता। सत्य सिद्ध करने की कामना भी यह दर्शाता है। भूमि, भवन आदि का काम होता है तथा सहाय-यक्ष से भी सकारण का योग बनता है। विद्या के क्षेत्र में पूर्ण सफलता मिलती है। विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। तली सुन्दर, सुशील तथा चिन्तु स्वभाव की होती है। सन्तानों में कन्याओं की संख्या अधिक होती है। जीवित की तुलना में लाभ कम होता है तथा आर्थिक-स्थिति मध्यम बनी रहती है। वर्ष २५, २६, ३३, ३७, ४१, ४५, ४६, ५३, ५७ तथा ६१ अवसाद तथा आर्थिक-क्षेत्र में अकारिदायक सिद्ध होते हैं।

(८२४) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य गौरवर्ण, स्मूल एवं स्वस्थ शरीर वाला, परिश्रमी तथा शान्ति-प्रिय होता है। यह उत्प्रेरक कार्य को बड़े उत्साह से अग्रिम करता है तथा परिश्रम से सम्पन्नता प्राप्त करता है। पढ़ने-लिखने में इसकी विशेष रुचि रहती है। यह एक साधक है। विषयों पर सोचता है तथा गंभीरतापूर्वक लाभदायक योजनाएं भी बनाता है। विजित-लिट्टी के प्रति इसका विशेष आकर्षण रहता है। यह कार्यक तथा भावुक प्रवृत्ति का होता है। दिन-रात परिश्रम करते रहना इसके स्वभाव में होता है। वर्ष २३ में इसका विवाह पूर्व दिशा की ओर से होता है। स्त्री सुन्दर, सुशील तथा सुशिक्षित होती है। सन्तान का सुख उत्पन्न रहता है। जीवन के २२, २८, ३४, ४६ तथा ५२ के वर्ष स्वास्थ्य के लिए चिन्ता बनकर तथा वर्ष ३२, ४४, ५६ तथा ६८ आर्थिक हानिदायक होते हैं। वर्ष २२, ३७, ४६ तथा ५७ आर्थिक लाभ देते हैं।

(८२५) - इस जन्म कुण्डली में जन्म लेने वाला मनुष्य कुदलम्बाई लिए मध्यम कद तथा साँवले रंग का, डकटे शरीर तथा छोटी-स्वभाव का होता है। यह क्षण-क्षण पर रुष्ट तथा सन्तुष्ट होता रहता है। पालु-कठिन-से-कठिन परिस्थिति में भी ध्वस्त नहीं है। यह संकटों का दृढ़ता पूर्वक सामना करता है तथा जीवन में अनेक उता-पटाओं को देखता है। समय पर यह निस्संकोच-धूर बोधना तथा अपना काम निकालता है। राजकीय सेवा में इसकी तत्पक्षी भी चली होती है। परिश्रम की तुलना में इसे लाभ कम ही मिलता है। फिर भी अपने परिश्रम के बल पर यह सफलतापूर्वक गुप्त करता है। आर्थिक-स्थिति मध्यम होती है। विवाह २३ या २७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोबुद्धि मिलती है। सन्तान-सुख उत्पन्न रहता है। वर्ष २५, २८, ३३, ४१, ४५, ४८, ५३, ५७ तथा ६१ आर्थिक-लाभ देते हैं।

(८२६) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न हुआ मनुष्य साँवले रंग का, मध्यम कद, उन्नत ललाट, पतले शरीर का, सादरी तथा छोटी स्वभाव वाला होता है। यह कठिन-से-कठिन परिस्थिति में भी अपनी कमजोरी का आभास नहीं होने देता। यह विपत्तियों से कायनाशील होता है तथा दिन नई योजनाएँ बनाता रहता है। इसे सामाजिक दृष्टियों पर आस्पा नहीं होती। उसे विवाह तथा नये आवेशों को यह बड़ी बेचैनी से अनुभवता है। विवाह का उत्तम लाभ होता है। विवाह २५ अथवा २८ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री साँवले रंग की तथा छोटी-स्वभाव की होती है। उसके साथ विवाह में एकदमला स्थापित नहीं होती। सन्तान-पक्ष में भी विवाह रहती है। वैतक-स्थिति पर मगरे आदि के अन्तर उद्घोषित है। आर्थिक-स्थिति मध्यम रहती है। वर्ष २४, ३०, ३८, ४४, ५०, ५८ तथा ६२ आर्थिक-उन्नति के होते हैं।

(८२७) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य गोवर्ण, गोरु कद का, पीछमी, साहसी, बलवान् होठोंवाला, सुन्दर तथा शान्ति-प्रेम होता है। यह कोमल, भावुक, सहनशील तथा मधुरभाषी होता है। शारीरिक-धन की अपेक्षा मानसिक-धन पर इसका अधिक विश्वास रहता है। यह जलदिन का काम जलदिन धारा का देने में निश्चय राखता है। यह अपने नि-
मित्तक लोग से काम करता है तथा पीछे पीछे उन्नति करना चला जाता है। यह बात-
चीन में अल्पता पटु होता है तथा सामने वाले को झीझड़ आकर्षित कर लेता है। आर्थिक दृष्टि से इसकी स्थिति मध्यम रहती है। धर्म, भजन तथा आर्थिक-हानि के अवसर भी प्राप्त होते हैं। विद्या का लाभ तत्कालों के लाभ होता है। विवाह २४ अथवा २८ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री को (स्वभाव की होती है)। तत्काल पक्ष से चला रहती है।

(८२८) - इस जन्म कुण्डली में जन्मा हुआ व्यक्ति सौंदर्य रंग का, स्वल्प शरीर, लुब्धक चेतनेवाला तथा कोपी-स्वभाव का होता है। यह कोपी के दृष्टिक आवेश से गहरी निन्ता को भी जान देता है। आर्थिक-धन बढ़ा-बढ़ा रहने के कारण आर्थिक-निराश्रित्य को भी रहती है तथा कहीं बाग़ पक्ष लेने के अवसर भी उपस्थित होते हैं। निजी धर्म तथा भजन आदि का योग बनता है। विद्या का उत्तम लाभ होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी कोपी स्वभाव की होती है, जिससे मन नहीं मिलता। सन्तान १६ तथा दाम्पत्य-सुख को तो ही निन्ता लग्नक रहते हैं। वर्ष २४, ३०, ३६, ४८, ६६ तथा ७२ स्वास्थ के लिए तथा वर्ष २२, ३४, ४६, ५८ तथा ७० आर्थिक-दृष्टि से कष्टप्रद रहते हैं। वर्ष २३, ३१, ३९, ४७, ५९, ६७ तथा ६९ आर्थिक-क्षेत्र में उन्नतिकारक रहते हैं।

(८२६) - इस जन्माङ्क चक्र में जन्म लेने वाला मुख्य गौरवर्ण, आकर्षक व्यवहार वाला तथा शक्ति-
पिण होता है। यह वीरगति के अग्रणी स्वर्ण में जीवने वाले लोग में कुशल होता है। सामान्य
तः आलसी भी होता है, जिसके फलस्वरूप उन्नति के अनेक अवसर हाथ से निकल जाते
हैं। ये जिन्हें आलीशाना मोगे, उनके प्रति पूर्ण इमानदारी रहते हैं तथा मित्रता के
नाम पर सर्वस्व नौछावा कर देने के भी पीछे नहीं रहते। विरोध-पक्ष कग-कग
कर रोने अटकाता है, वस्तु सामान्य करने के असमर्थ रहता है। यह शत्रुओं का मर्दन
कोन वाला, सहसा किसी पर विश्वास न करने वाला, संशयालु-प्रकृति का तथा अत्य-
धिक काशुक भी होता है। विवाह २३ या २५ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य-सुख
एवं सन्तान-सुख उत्तम रहता है। भूमि, भवन पर कगड़े हो सकते हैं। आर्थिक स्थिति मध्यम होती है।
(८३०) - इस जन्माङ्क चक्र में उत्पन्न जातक गौरवर्ण, सुन्दर नाक-नयनवाला, हृष्ट-पुष्ट शरीर
का, पालुमी, लाहरी तथा स्वामिभारी होता है। यह लोभी दोषवाले बनता है, जिसके
गोम से अन्ततः कठिनाई आती है, तथाकि अपने प्रीतिम एवं सहा के बल पर यह उत्प्रे-
कार्य में सफलता प्राप्त करता है। अपने मित्र के प्रति यह जीवन भर इमानदारी बना
रहता है। इनके मन की बात को जान पाना सूल नहीं होता। लड़ने-फगड़ने के इसे आनन्द
आता है। अत्यास-रहस्यों को बोलने में विशेष रुचि रहती है। आर्थिक-दृष्टि से
जीवन उन्नतिशील बना रहता है तथा-होठों पर सदैव मुस्कान गीवली रहती है। विवाह २२ वर्ष
की आयु में होता है। स्त्री तथा सन्तान-पक्ष से सुख प्राप्त होता है। वर्ष ६, २३, ३२, ४७
तथा ६६ (आयु के लिए) पिता जन कर रहे हैं। वर्ष ३४, ४६, ५८ तथा ६२ आर्थिक उन्नति देते हैं।

(८३१) - इस जन्मकुण्डली में उत्पल जाणी दुर्बल शरीर, गोल चेहरा, सुन्दानाक-गच्छ तथा गौरवर्ण का शान्ति छिद्र, आलसी एवं सुखा स्वभाव का होता है। जब तक सिंग पट्ट ही न आपड़े, तब तक किसी काम में हाथ नहीं लगाता। यह स्वभाव है संशयालु, अभी के उमर चौकन्ना तथा किसी के निपटारा में रह का कार्य करने में असमर्थ होता है। यह बुद्धि का अनोखा जन्म का है तथा आर्थिक-निष्पत्ति को सुदृढ़ बनाना चला जाता है। धूमि, भवन आदि का सुखभी उपलब्ध होता है तथा धूमि आदि से सम्बन्धित विवाद भी उठते हैं। विद्या का उत्तम लाभ होता है। शत्रु-पक्ष पक्ष-पक्ष पर विद्वान् (अविद्वान्) करने का उपलब्ध का है, पालु यह उन्हे वाणिज्य करने में समर्थ होता है। विवाह २७ वें वर्ष में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला होती है। सन्तान-पक्ष से सुख मिलता है। वर्ष २६, ३८, ४२, ५०, ५८ तथा ६० आर्थिक-उन्नतिकारक सिद्ध होते हैं।

(८३२) - इस जन्मकुण्डली वाला जानक सुन्दरे बालों वाला गौरवर्ण, कुछ लम्बाई लिए मध्यम कद वाला, पतले होठ, नीले नाक-गच्छ का है। शत्रु, चतुर, शान्त-प्रकृति का एवं निरालोचन। लज्जा, सुकृमारता एवं कोमलता से विभूत होता है। यह दिग्गज तथा कठोर कार्य से दूर रहने वाला, ईमानदार एवं राजनीतिक तथा शौक्षणिक-क्षेत्र में लक्ष्यता प्राप्त करने वाला होता है। बहिनो की अपेक्षा भाइयों की संख्या अधिक होती है। विद्या का प्रचण्ड लाभ होता है। निजी धूमि, भवन आदि का योग भी बनता है। विवाह २३ अथवा २५ वर्ष की आयु में होता है। दास्य-पुत्र एवं सन्तान-पुत्र उत्तम रहता है। सन्तानों में पुत्रों की संख्या अधिक होती है तथा उनसे सहयोग भी मिलता है। आर्थिक-निष्पत्ति मध्यम रहती है। जीवन के वर्ष २३, २८, ३३, ३७, ४३, ४८, ५५ तथा ५८ लाभ उदरते हैं। वर्ष ३४, ४६ तथा ५८ तक उदरते हैं।

(८३३) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य सौंवेले (ग) का, उन्नत ललाट, दुबले शरीर का सुका तथा शालिपिप होता है। मावुक होने के कारण यह कठोर कार्यों से दूर रहता है। यह ईश्वर, चतुर तथा विश्वसनीय मित्र होता है। आर्थिक दृष्टि से जीवन उन्नतिशील बना रहता है। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय में अधिक लाभ होता है। आयदनी के जोत एक से अधिक होने के कारण आर्थिक-निष्ठा मजबूत बनी रहती है। भूमि, मकान तथा सवारी का स्वत्व भी प्राप्त होता है। विवाह २३ या २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुका तथा सुशील मिलती है। साधुगुरु से धन का लाभ होता है। विष्णु की भी विशेष उपासना होती है। दाम्पत्य एवं वंश-सुख उत्तम बने रहते हैं। आयु के २३, २८, ३३, ३७, ४३, ४८, ५५, ५८ तथा ६१ वें वर्ष आर्थिक-दृष्टि से उन्नतिदायक सिद्ध होते हैं। आयु मध्यम होती है।

(८३४) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य गौरवर्ण, सुका नाक-गर्भवाला, कुद लम्बाई लिए मध्यम कद का, हँसमुख तथा समोहक व्यक्तित्व वाला होता है। यह अत्यधिक कल्पनाशील होता है तथा रुचि किले बनाना इसके स्वभाव में रहता है। जीवन की कठोर परिस्थितियों में यह शीघ्र धनड़ा जाता है। निम्नोचित सुकुमाता एवं लज्जा की भावना भी इसमें पाई जाती है। आर्थिक-निष्ठा उन्नतिशील बनी रहती है। व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है तथा धीरे-धीरे बड़ा व्यवसाय की उन्नति होती है। विवाह का योग २३ वें वर्ष में बनता है। पत्नी सुका होती है। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। २३ वें वर्ष से ही भाग्योदय होता है। वर्ष २२, ३४, ५८ तथा ६४ आर्थिक-दृष्टि से एवं वर्ष ८, ३६, ४२, ४८, ५३ तथा ६७ स्वास्थ्य की दृष्टि से चिन्ताजनक रहते हैं। वर्ष २७, २८, ३३, ३८, ४५, ५५ तथा ५७ लाभदायक रहते हैं।

(८३५) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य गौरवर्ण, कुछ लम्बाई लिए मध्यम ऊँच का, सुन्दर
नाक - नखवाला, वाष्पदु तथा शान्ति - प्रिय होता है । इसके मन की चाह जाना कठिन होता
है । इसके चेहरे या हमेशा मुस्कुराहट बनी रहती है, भले ही हृदय में आग ही क्यों न जल
रही हो । व्यवसाय के क्षेत्र में इसे सफलता प्राप्त होती है । परीक्षम द्वारा आर्थिक-क्षे-
त्र में यह मित्रता उत्कृष्ट कृत्य करता जाता है । निःस्वार्थ-सेवा एवं भलाई के कार्यों में
इसकी विशेष रुचि रहती है । जीवन में निजी सम्मान तथा चाहन का योग बनता है ।
विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है । स्त्री सुन्दर तथा सुशील होती है । इसके द्वारा आर्थिक-
जाम के अवलम्बी मिलते हैं । दाम्पत्य - सुख तथा सन्तान - सुख उत्तम रहता है । संगों
के सहयोग भी मिलता है । विष्णु का लाभ मध्यम होता है तथा आर्थिक - स्थिति भी मध्यम रहती है ।

(८३६) - इस जन्मकुण्डलीवाला मनुष्य गौरवर्ण, सुन्दर नाक - नखवाला, सुन्दर और लंबा, सुन्दर
उत्कृष्ट ललाट एवं वक्षःस्थल, सफ़ी, परीक्षम तथा शान्ति - प्रिय होता है । यह सत्य, चाप
दत्ता तथा क्षमा के जीवन में विशेष महत्त्व देता है । कष्ट एवं अनिष्टि दुर्भाग्य कार्य इसे
अच्छे नहीं लगते । यह दूसरों के मन की बात को सहज ही परिचान लेता है । अन्धकार
का सुलभ विरोध करता इसे आता है । आत्मविश्वास की अधिकता पाई जाती है तथा
विपरीत - परिस्थितियों को भी अनुकूल बना लेने की इनमें क्षमता पाई जाती है । निजी
शक्ति, मनन तथा चाहन का लाभ भी होता है । वर्ष २४ के विवाह होता है तथा पत्नी सुन्दर
एवं सुलभ मिलाती है । सन्तान - पक्ष में सुख प्राप्त होता है । विष्णु - लाभ मध्यम रहता है,
वर्ष २२, २८, ३२, ३८, ४४, ४८, ५६ तथा ६० आर्थिक - उत्कृष्ट लाभक होते हैं ।

(८३७) - इस जन्माङ्ग चक्रवाला मनुष्य लम्बे कद, गोहूँआ रंग का, स्थूल-शरीर वाला, पुष्ट-छिन्न-कोपी, लाहरी तथा कूट-स्वभाव का होता है। यह विज्ञान स्थापित करने में निरुद्ध हस्त होता है तथा सामने वाले व्यक्ति को पहली दृष्टि में ही भाँप लेता है। विशेष-पक्ष सामानाकाल से घबराता है। स्वभाव से कल्पनाशील होने के कारण हवाई किले बनाता रहता है। जल की अधिकता के कारण आर्थिक-स्थिति कमजोर रहती है। अनेक बार मृण लेने के अवसर भी आते हैं। निजी भूमि तथा भवन का योग बनता है। विवाह २३ या २५ वर्ष की आयु में होता है। २८ वें वर्ष में पूर्ण मजबूत होता है। पत्नी सुन्दर, सुशील तथा लैन्ड-स्वभाव की होती है। सन्तान-पक्ष से पुत्र-सन्तोष प्राप्त होता है। वर्ष २३, २८, ३३, ३५, ४१, ४७, ४८, ५७, ५८ तथा ६१ जावसाधिक एक आर्थिक-दृष्टि से लाभप्रद निरुद्ध होते हैं।

(८३८) - इस जन्माङ्ग चक्रवाला प्राणी गोवर्ण दृष्ट-पुष्ट शरीर का, मोटे कदवाला, तेजस्वी-कुटिल-ग-स्त्री-गामी तथा शान्त प्रकृति का होता है। यह अपने विशेषी से बदला लिफे बिगा नहीं मानता। सुन्दर-स्त्री इसकी कमजोरी होती है तथा स्त्री के चक्कर में पड़ कर यह गुप्त-रहस्य के भी कोल देता है तथा हाकि उठाता है। शिक्षा मध्यम रहती है। आर्थिक-स्थिति भी कम-जोर रहती है, क्योंकि आर्थिक-जल-चक्र (हताह) मजबूत तथा विलासिता का भी पट होता है और उसे पटनी भी रहता है तथा पित्रों से भी सम्बन्ध बना ही रहता है। सन्तान-पक्ष से सन्तोष रहता है। वर्ष २७, ४२, ४८ तथा ६० आर्थिक-दृष्टि से हाकि प्रद तथा वर्ष २८, ३७, ४७, ५१, ५५ तथा ५८ लाभप्रद निरुद्ध होते हैं।

(२३६) - इस जन्म में चक्र में जन्म मनुष्य गौवर्ण, हृष्ट-पुष्ट शरीर, दम्पण कद, उत्तम ललाट, छोटी जिम्मावका, गुरुजनों का दोही तथा वा-स्त्रीगामी होता है। यह मित्रता स्थापित करने के कुशल तथा पूर्ण हृष्ट अक्सवादी होता है। अपने स्वार्थ के लिए यह किसी के भी चोखू निकता है तथा काम निकल जाने के बाद उसे ठोका भी मार सकता है। यह अपने पीनके बहुत सोच-समझ का ही किसी को आभीषण का स्थान देता है तथा जिसे अपना ले, उसे के लिए ठाण नौदावा करने को भी तय्यार रहता है। आपदनी की भण्डार लक्ष्मी अधिक बना-बढ़ा रहने के कारण इनकी आर्थिक-स्थिति डौंकाडोल रहती है तथा चैतुक-सम्पत्ति को खर्च करने का योग भी बनता है। विष्णु का लाभ रुकावटों के साथ होता है। विवाह २३ अथवा २५ वर्ष की आयु में होता है। दम्पत्य एवं सन्तान-सुख उत्तम रहता है।

(२४०) - इस जन्म कुण्डली में उत्तम बालक गौवर्ण, हृष्ट-पुष्ट शरीर वाला, गम्भीर, नीकरी, लाहरी, विश्वासी, चपटी नाक वाला तथा शांति-प्रिय होता है। यह राजनीतिक क्षेत्र में लक्ष्य प्राप्त करता है। भूत के साथ एक साथ को भूत सिंह का देने की कला में कुशल होता है। यह कोनों का कच्चा होता है तथा दूसरों की बात वा शीघ्र विश्वास कर लेता है। गोपनीयता का शुद्ध शक्ति का यह स्वभाव में होता है। यह किसी से मित्रता बहुत सोच-समझ कर करता है तथा जिसे मित्र बना लेता है, उसके लिए सर्वस्व नौदावा करने को भी तय्यार रहता है। शिवा मध्यम होती है। विवाह २४ या २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनेयुक्त मिलती है। सन्तान-सुख उत्तम रहता है। वर्ष २६, ३८, ४४, ५० तथा ६२ स्वार्थ के लिए चिन्ताजनक रहते हैं। वर्ष २३, २६, ३२, ४५, ४८, ५५ तथा ६८ आर्थिक उन्नति प्रद सिद्ध होते हैं।

(२४१) - इस जलकुण्डली वाला बालक गौवर्ण, लम्बे कद का, दुर्बल शरीर, सुन्दर बाल, सुन्दर नाक-
नखवाला तथा शान्तिप्रिय होता है। यह युवावस्था कार्य-कुशल होता है। अपने लक्ष्य की ओर
नित्य बढ़ता रहता है। वार्षिक में लैम्ब तथा जलवा में सहज होता है। दीन-दुःखी
की सहायता करने को लक्ष्य तत्परा रहता है। परीक्षामें विश्वास राखता है। आसानी
से मोत एक से अधिक होते हैं। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय में अधिक लाभ होता है।
पैतृक-सम्पत्ति का लाभ भी होता है। अपने परीक्षामें एक जगह के बल पर यह आर्थिक-
क्षेत्र में नित्य उन्नति करता चला जाता है। विद्या का मध्यम लाभ होता है। विवाह वर्ष
२२ अथवा २४ में होता है। स्त्री सुन्दरी तथा कुशीला होती है। सन्तान-सुख एवं दाम्पत्य-
सुख उत्तम रहता है। वर्ष २२, ३०, ३६, ४२, ४८, ५४ तथा ६० आर्थिक-उन्नति दायक होते हैं।

(२४२) - इस जलकुण्डली में उत्पन्न शरीर मध्यम कद, गौवर्ण, उन्नत-जलार, पिचकी नाक, लम्ब
शरीर, गोम चेतो वाणा, चतुर, बुद्धिमान, परीक्षी तथा समर्थ का अत्यधिक लाभ होता
है। यह समर्थ कार्य करता है तथा व्यर्थ श्रुत नहीं बोलता। शिवाय चर्म के इसे
विशेष आस्था रहती है। इसके चेतो पर मुष्कान रेखलनी रहती है। विपरीत-लक्ष्मी के
प्रति आकर्षण भी अधिक रहता है। विवाह वर्ष २२ से २४ के मध्य होता है। पत्नी सुन्दरी
तथा कुशीला मिलती है। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है। सन्तान-पक्ष की ओर से आर्थिक
कुद चिन्ता रहती है। बाद में उनके सुख-सहयोग का लाभ होता है। विद्या का लाभ
कुद रक्षावर्षों के लाभ होता है। आर्थिक स्थिति मध्यम रहती है। वर्ष २०, ३२, ४१, ५१ तथा
६१ विवाह के प्रति चिन्ता लगक रहते हैं। वर्ष ४६, ४८, ५४ तथा ६२ उन्नति दायक रहते हैं।

(८४३) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न बालक गेहुँए रंग का, लम्बे कद वाला, स्वल्प शरीर, कुर्तीला, पीछरी तथा छोपी स्वभाव का होता है। सामान्य हास-जोहास से ही हल होता है। पल्लु खिली जलसी गाम होता है, उसी ही जल्दी ठूठा भी होता है। इसे अपने मातापिता का विशेष ध्यान होता है। यह अपने से दोरो तथा बराबरी वालों के साथ सहजता का व्यवहार करता है तथा परिश्रम द्वारा व्यवसाय की उत्पत्ति करता है। आर्थिक - लाभ के अनेक आकर्षक - अवसर प्राप्त होते रहते हैं। इनके जीवन में निरिच्छता अपना अकर्मचलता को कोई स्थान नहीं होता। आर्थिक - स्थिति उत्तम बनी रहती है तथा निजी शक्ति, भवन आदि के लाभ का योग भी बगल है। विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनेनुकुला मिलती है। सन्तानों से भी सहयोग मिलता है। वर्ष २४, ३६, ४८, ५४ तथा ६० विशेष लाभ उपद्रते हैं।

(८४४) - इस जन्म कुण्डली वाला मनुष्य साँवले रंग, लम्बे कद, पतले शरीर वाला, आलसी तथा छोपी स्वभाव का होता है। अपने आलस के कारण ही यह उत्पत्ति के अनेक अवसरों को छोड़ता है। पल्लु आदमी को परिचानने का इसमें विशेष गुण होता है तथा किस समय का काम चाहिए - इस संबंध में निर्णय लेना भी शूष आता है। परिणामजनों से रहे कोई सहायता नहीं मिलती। स्वभाव से छोपी तथा कटुता होने के कारण यह अपने बने हुए काम को भी बिगाड़ लेता है। स्मरण-शक्ति कमजोर होने के कारण भी कई बार हास उठानी पड़ती है। विवाह २४, २६ या २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनेनुकुला मिलती है। सन्तान - पक्ष से सन्तोष रहता है। आर्थिक - दृष्टि से वर्ष ३२, ४२, ५०, ५८ तथा ६२ कष्ट उपद्रव वर्ष २३, २८, ३५, ४३, ४८, ५५ तथा ६१ लाभ उपद्रव सिद्ध होते हैं।

(८४५) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी मध्यम कद, दुबले शरीर, सौंजले रंग तथा हरी लाले मुख एवं कुंजी नाक वाला होता है। यह छोटी, रहस्यमय स्वभाव का, कपड़े हरी-शक्तिवाला तथा अत्यधिक आत्मविश्वासी भी होता है। यह विपरीत - धर्मिणी के अपने अनुकूल वर्गों में लक्ष्य होता है तथा आदमी को पहिचानने में प्रवृत्त होता है। वैश्वविक-क्षेत्र में यह विशेष उन्नति करता है भूमि, गहन तथा वाहन का प्रत्येक उपकरण होता है तथा वैश्व-सम्पत्ति का लाभ भी होता है। भाइयों में कोई लक्ष्य नहीं मिलती। विद्या का कुछ लाभ होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनुष्यत्वा तथा कुटुम्बिणी होती है। सन्तान-पक्ष की ओर से सुख-सहयोग बना रहता है। आर्थिक-स्थिति उत्तम बनी रहती है। जीवन के वर्ष २५, २८, ३३, ३७, ४१, ४७, ५१, ५५, ५८ तथा ६१ उन्नतिदायक रहते हैं।

(८४६) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति सौंजले रंग का, हाँहरी, कुशाशयि जाला, मुँह का चेहरा के दाग युक्त, अत्यन्त छोटी स्वभाव का तथा अत्यधिक आत्मविश्वासी होता है। यह वागजल के अनुग्रह स्वर्ग के दार लेता है तथा लक्ष्य की ओर निरन्तर आगे बढ़ता रहता है। यह धनमान लेते हुए भी स्वर्ग को ब्यापारी होने का ठोस प्रदर्शित करता है। धिमी धन की कमी के कारण इनका कोई काम ककना नहीं है। आर्थिक-स्थिति सामान्य बनी रहती है। विद्या का मध्यम लाभ होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु में उन्नति प्राप्त की ओर से होता है। पत्नी के लाभ विचारों का मेल नहीं पाता, परन्तु संतान पक्ष से सन्तोष बना रहता है। वर्ष १६, २८, ४, ५२ तथा ६४ स्वास्थ्य के लिए चिन्ता-जनक रहते हैं। वर्ष २३, २८, ३३, ३७, ४३, ४८, ५५, ५८ तथा ६१ आर्थिक उन्नति देते हैं।

भु०
सं०
२०

(८४७) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य साँवले रंग, लोहे फंद तथा दुबले शरीर वाला, साँसही एवं छोपी स्वभाव का होता है। कटु भागी होने के कारण इसके मित्रों की निन्हा बहुत कम होती है। आत्मन्य के कारण यह जीवन में उन्नति के अनेक अवसरों को छोड़ देता है। हठाण-शक्ति कम होने के कारण भी इसे बहुत शक्ति उठानी पड़ती है। साँसही होने के कारण यह विपरीत परिस्थितियों के अनुकूल बनाने का भासक उपान करता है तथा कुछ संकलन भी मिल जाती है। आर्थिक-नीयति कम होने रहती है तथा अनेक बार मृत्यु लेने के अवसर भी उपस्थित होते हैं। किसी धन की कमी के कारण कोई काम तकल नहीं है। मरण के लक्षण मिलता है। विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पालन एवं पत्नी-पुत्र उत्पन्न होता है। पूर्ण आयु २६ वर्ष की आयु में होता है। वर्ष ३६, ४८ तथा ६० विशेष लक्षण रहते हैं।

(८४८) - इस जन्माङ्क-चक्र में उत्पन्न बालक उँचीवर्ण, लम्बे फंद का, सुदृढ़ नाक-तन्त्रा वाला, साँसही तथा छोपी स्वभाव का, लज्जा किंहे, लौकिक से परीवर्ण एवं दुर्गों की लक्षणा करने में आगे रहने वाला होता है। यह सब कामों के समपायुक्त तथा निपणायुक्त होता है। स्वयं का अल्पधिक पावक होता है तथा किसी भी वातावरण के अनुकूल चर्च को बाल लेने में लक्ष्म होता है। अलजोगों के साथ इनका व्यवहार मधुर तथा किं लज्जा पूर्ण रहता है। पालन: इसके उद्गमकों की निन्हा भी अधिक होती है। विवाह २४ अथवा २७ वर्ष की आयु में पूर्ण दिवा की ओर से होता है। पत्नी के पूर्ण पुत्र मिलता है तथा पत्नी-पुत्र से भी लक्षण बना होता है। विवाह लग्न मध्यम रहता है। जीवन के वर्ष २३, ३१, ३७, ४३, ४७, ५१, ५८ तथा ६१ आर्थिक-लभ देने वाले रहते हैं।

भ०
सं०
७०७

कु०
२०

(८४६) - इस जन्मचक्र में उत्पन्न प्राणी सौंपले देव तथा गोरे कंद का, सारसी, स्थूल-शरीर, कोष्ठी तथा दूसरों की सहायता कोसे में अगुणी रहता है। यह मित्रता स्थापित करने में कुशल होता है तथा इसकी उत्पत्ति में मित्रों का सहयोग भी रहता है। यह निगम के शक्तों होता है तथा सहसा किसी का विश्वास नहीं करता। इनको उच्च ऋतु तक पहुँचने के लिए अतिरिक्त प्रयत्न करना पड़ता है। विरोधी बड़त होते हैं, परन्तु वे सब इसका सामना करने में हिचकिचाते हैं। आर्थिक-स्थिति उत्तम रहती है तथा आनंदी के साथ ही एक से अधिक होते हैं। विवाह २३ अथवा २५ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य-सुख उत्कृष्ट रहता है। संतान-पक्ष की ओर से संतोष बना रहता है। वर्ष २३, २७, २८, ३३, ३५, ३६, ४३, ४६, ५१, ५३, ५७ तथा ६१ आर्थिक-व्ययों का प्रतिकूल सिद्ध होते हैं।

(८५०) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न बालक गेहुँए (गेहूँ), मधुम-कंद, मत्स्याका नेत्र, जलमा लम्बाई लिए शरीर, सुंदर सुकुमारता वाला तथा लीने नाक-तन्मा वाला आकर्षक व्यक्ति के सम्भव होता है। बाल-पक्ष इसके प्रारंभ में अस्मत्त रहता है, परन्तु यह उन्हे भी अपना मित्र बना लेता है। शत्रु को भी अपना उद्योगिक एवं मित्र बना लेता, इनके अभिलाष की विशेषता होती है। यह ईश्वर के विशेष अर्पण रहता है तथा दूसरों के प्रति सहाय्यता राखते हुए अपने किये हुए उद्योगों के प्रलय जाता है। विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है। सदाचार से धन मिलता है। संतान का योग भी अच्छा रहता है। आर्थिक-लाभान्, प्राण-कष्ट-पद ही रहती है। वर्ष २७, ३३, ४०, ४६, ५२, ५८ तथा ६० आर्थिक-दृष्टि से विशेष कष्ट पड़ते हैं। वर्ष २४, २८, ३२, ३६, ४४, ५१ तथा ६४ लाभान्द होते हैं।

(८५१) - इस जन्म कुण्डली में जन्म ग्रहण कोने वाला बालक गेहूँ (गे), गारे कंद, पुद्ग, नेत्र (नेत्र) लम्बे चेहरे वाला, आलसी एवं शान्त प्रकृति का होता है। यह सामाजिक हितों में तथा गृह-राजों का कठोरता से चालन करता है। अंगों के प्रति सहानुभूति एवं मायाई की भावना हमेशा प्रकट माना में विद्यमान रहती है। शत्रु-पक्ष प्रचलित रहता है तथा इसके कारणों में रोड़ा भी अटकाता है। आर्थिक स्थिति मध्यम रहती है। आकर्षक-लाभ के अवसर आते रहते हैं। माइनों की अपेक्षा बहनों की संख्या अधिक रहती है। माइनों से सहयोग भी रहता है। विष्णु का श्रेष्ठ कर्मजो रहता है। विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री (साँवली) कुछ लम्बी तथा हठीले स्वभाव की होती है। विष्णु का श्रेष्ठ कर्मजो रहता है। संतान-पक्ष से सन्तोष रहता है। २४ वर्ष की आयु से भाग्योदय का प्रारंभ होता है।

(८५२) - इस जन्मांक चक्र का अधिपति मनुष्य साँवले रंग तथा गारे कंद का, साहसी, क्रोधी, आलसी तथा अल्प बुद्धि वाला होता है। यह स्वभाव से क्रोधी होने के कारण अपने कई कामों को बिगाड़ लेता है। यह स्वभाव के बल पर विपरीत-परीक्षणियों को भी अनुकूल बनाने में समर्थ होता है। आर्थिक-जप बड़ा होने के कारण कहीं का आर्थिक कठिनाई भी सामने आती है। कुल मिला कर आर्थिक स्थिति सामान्य रहती है। विवाह २२ अथवा २६ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री साँवली तथा क्रोधी स्वभाव की होती है। संतान-पक्ष से पुत्र-सन्तोष प्राप्त होता है। वर्ष २७, ३३, ३६, ४७, ५१, ५७ तथा ६० आर्थिक-दृष्टि से कष्टक रहते हैं। वर्ष २६, ३१, ४६, ५२, ६५ तथा ७१ स्वास्थ्य के लिए चिन्ता-जनक रहते हैं तथा वर्ष २४, ३५, ४३, ५३, ५६ तथा ६४ आर्थिक लाभदायक रहते हैं।

(८५३) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति गेहुए रंग, लम्बे कद, इकट्ठे तथा चिच्छ शरीर का, साहसी पारिवर्ती, स्वतन्त्र-निष्पत्ति लेने वाला तथा कठिन-से-कठिन परिस्थितियों में भी स्वयं को पूर्ण निपन्नता रखने वाला एवं विपत्तियों का साहस के साथ मुकाबिला करने वाला होता है। साहसिक-कार्य-क्रमों में इसे प्रसन्नता प्राप्त होती है। यह स्याष्टवादी होता है तथा स्वामी-तरी-बोले-हुँट-पा-ही-कह-देता है। यह परीक्षम द्वारा आर्थिक-क्षेत्र में उत्कृष्ट कला चला जाता है, अतः आर्थिक-स्थिति उत्तम बनी रहती है। विज्ञा का लाभ एक-एक कर होता है। राजनीतिक कार्य में रुचि रहती है तथा राज्यपक्ष से आर्थिक-लाभ भी होता है। विवाह २३ या २४ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री सुन्दरी तथा सुशीला होती है। सन्तानों से पूर्ण सुख प्राप्त होता है। वर्ष २५, २८, ३३, ४१, ४८, ५३, ५७ तथा ६१ आर्थिक उत्कृष्टता देते हैं।

(८५४) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी मीन वर्ग, लम्बे कद का, इकट्ठे बदन का, साहसी तथा छोधी स्वभाव का होता है। इसके विचार स्याष्ट तथा सुलभ होते हैं। स्वाभाविक कुदृष्ट कदजोग होती है। छोधी स्वभाव एवं स्वतन्त्र-चेत्ता होने के कारण यह किसी के अधीन या निपन्नता में रहकर काम नहीं करता। विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। सुशाल से आर्थिक-लाभ भी होता है। स्त्री सुन्दर तथा लज्जकालु होती है। दाम्पत्य-सुख सामान्य रहता है, पालु सन्तान-पक्ष से सुख-सहयोग प्राप्त होता है। वर्ष ६, २२, २४, ४८, ५५ तथा ६७ स्वास्थ्य की दृष्टि से चिन्ताजनक रहते हैं। विज्ञा का लाभ सामान्य होता है। आर्थिक-स्थिति सामान्य रहती है। वर्ष २७, २८, ४१, ४८, ५३ तथा ६१ आर्थिक-दृष्टि से चिन्ताजनक रहते हैं तथा वर्ष २५, २८, ३३, ३८, ४३, ५०, ५४ एवं ६० उत्कृष्ट कला सिद्ध होते हैं।

(८४५) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी साँवले रंग, लीचे नाक - नख वाला, मधुरी जैसी आँखों वाला, लूँघराले बाल तथा आकर्षक - ज्योतिष - सम्यक् होता है। इसे लड़ाकू प्रवृत्ति अधिक पाई जाती है। अपने उच्चतम पद तक पहुँचने के लिए इसे जयपि संघर्ष करना पड़ता है। विमान सम्बन्धी कार्यों में इनकी विशेष दिलचस्पी रहती है। मशीनरी के कार्यों में भी प्रेरित होते हैं। स्मरण-शक्ति कुछ कमजोर होती है, जिसके कारण कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं। नशीली-वस्तुओं का सेवन करना हानिकारक रहता है। धर्म तथा समाज आदि का योग बनता है, दानु भण्डों की संग्रहण भी रहती है। शत्रु-पक्ष प्रबल रहता है। विवाह २७ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री सुन्दरी तथा सुशीला होती है। विद्या का लाभ सामान्य होता है। लग्न-पक्ष से संतोष रहता है। वर्ष २८, ३२, ३८, ४६, ५४ तथा ६२ आधिक उल्लेखित।

(८४६) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति मध्यम कद का, सुशील शरीर, गौरवर्ण, कुटुम्ब, कीर्तिमान, प्रशस्ती, धनी, सुखी, सुन्दर, स्वाभिमान तथा शिष्टों को प्रिय होता है। यह स्वयं को अर्थों की अपेक्षा अधिक योग्य समझता है। मन्त्रका मन्त्र - एक पत्र इसका सफल निष्पन्न रहता है। यह बहुत सोच-समझ का ही कोई योजना बनाता है तथा उसमें सफलता पाने का भाव प्रबल भी करता है। इसकी आर्थिक-स्थिति उन्नत होती चली जाती है। यह अपने परिचय से ही हेतुवर्षावकी बनता है। विवाह वर्ष २१ अथवा २५ में होता है। पत्नी मन्त्रोद्भवा मिलती है। लग्न-पक्ष उत्तम रहता है। वर्ष ३०, ३६, ४२, ४८, ५४ तथा आधिक-दृष्टि से कष्ट प्रद तथा वर्ष ६२, ६८, ७४, ८०, ८६ तथा ९२ शारीरिक दृष्टि से कष्ट-प्रद रहते हैं। वर्ष २५, ३१, ४३, ४९, ५५ तथा ६१ लाभप्रद रहते हैं।

(८५७) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी गौ वरुण, मध्यम कद वाला, मधुर भाषी, क्षमाशील, परीक्षार्थी, पानी तथा पुष्पाकार होता है। व्यावहारिक होते हुए भी यह कभी-कभी आगे से बाहर निकल कर अप्रामाणिकता का पर्जन्य दे उठता है, ऐसी स्थिति में इसके सम्मान की हानि भी पहुँचती है। सुहृद् वास्तव्य का होने के कारण इसके मित्रों की संख्या भी अधिक रहती है। यह स्वनिर्मित मित्रों तथा सिद्धान्तों का पालक होता है तथा अपनी हृत्ता के विरुद्ध कुछ भी होने को नहीं मानता। संगीत, कविता एवं अन्तःकलित-कलाओं के प्रति इसका विशेष लगाव रहता है। आर्थिक-स्थिति उत्तम होती है। आगदनी के सुत एक से अधिक होते हैं। शत्रुपक्ष पग-पग पर बाधा उत्पन्न करने का उपक्रम करता है तथा कभी-कभी आर्थिक-हानि भी पहुँचाता है। शुक्रिभवन का मुख मिलता है। विवाह २४ से २२ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य एवं संतान-सुख।

(८५८) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति सौवले रंग का, हृष्ट-पुष्ट शरीर वाला, कर्मठ, सुम्वकीर्ण, वास्तव्य सम्पन्न, उन्नत संगीत, आत्मविश्वासी एवं कोपी स्वभाव का होता है। इसमें परीक्षार्थी के अगुह्य स्वर्ण को ढालने की तथा विपरीत-परिस्थितियों पर भी विचार बाले की आश्चर्यजनक क्षमता पाई जाती है। संगीत आदि के इसकी रुचि होती है। स्वभाव से कुछ अन्वयार्थी कभी-कभी उगीत होता है। मनुष्यों से विचार मेल नहीं खाते। विष्णु का लग्न रुकावटों के साथ होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सौवली तथा कोपी स्वभाव की होती है। पुत्रों की अपेक्षा कन्याओं अधिक होती है, परन्तु लग्नान्तर से संशय उत्पन्न होता है। वर्ष २८, ३१, ४०, ४२, ४५ तथा ५१ चारित्र्य के लिए चिन्ताजनक तथा वर्ष २७, ३३, ३८, ४४, ४८ तथा ५० आर्थिक चिन्ताका काल है। वर्ष ३१, ४३, ४५ तथा ४८ लग्नपक्ष है।

(२५६) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी मौं चले हंग तथा मध्यम कद का, उन्नत मस्तिष्क वाला, कोर्फी स्नायुमानी तथा साहसी होता है। यह राजनीति-कुशल तथा भूठ खेलने में माहिर होता है। भूठ को लक्ष्य सिद्ध करने में भी इसे बहुत ही शक्ति होती है। दूसरों से काम चलाकर इसे खूब आता है। अपने पंचन का पक्का होता है तथा संकल्प को पूरा कर दिवाता है। कठिन-ले-कठिन चीं गिनतियों में भी यह विचलित नहीं होता। संकटों का दृढ़ता पूर्वक सामना करता है। आर्थिक - गिनती मध्यम रहती है तथा कहीं बड़ा भूठ - प्रहारा के अवसर भी आते हैं। विद्या - क्षेत्र उत्तम रहता है। शक्ति, भवन आदि पर भरोसा - दंड का योग बनता है, विवाह २२ या २६ वर्ष की आयु में होता है तथा स्त्री की ओर से चिन्ताएं बनी रहती हैं। सैनिकों से पूर्ण सुख - सहयोग मिलता है। वर्ष २२, २४, ४२, ५२ तथा ६० आर्थिक लाभ देते हैं।

(२६०) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति गौं वर्ण, लम्बे कद वाला, स्वाभाविक शरीर, सुँवामेकेश, मधुरी जैसी आँखों वाला, कुटुम्बानु, पशुत्वी तथा कायिक उद्विग्न का होता है। यह एक निश्चित लक्ष्य बनाकर उसकी प्राप्ति हेतु उपलब्धता तथा धीरे-धीरे उगरे बने हुए सफल होता है। विद्या का प्रफेष्ट लाभ होता है। यह एक साथ कई विषयों पर सोचने तथा निरूपण लेने की क्षमता रखने वाला विद्वान् एवं गुणवान् व्यक्ति होता है। विवाह २२ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य - सुख उत्तम रहता है। सन्तानों से भी सुख - सहयोग प्राप्त होता है। वर्ष १०, १४, २६, ४५, ५७ तथा ६८ स्व. स्वयंकीर्ति से विशेष चिन्ताजनक रहते हैं। वर्ष ३२, ३७, ३९, ४३, ५१, ५५ तथा ५८ आर्थिक-दृष्टि से कष्टकाक रहते हैं। वर्ष २४, ३०, ३६, ४२, ४४, ४८, ५२, ५६ तथा ६० आर्थिक-उन्नति दायक सिद्ध होते हैं।

(८६१)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सौम्य (ग), इकट्ठे शरीर, लम्बे कद वाला, सदा ब्रीच तथा विपरीत-कीर्तिमानि को भी अपने अनुकूल बना लेने की क्षमता रखने वाला होता है। यह शारीरिक-स्वस्थ की अपेक्षा मानसिक-स्वस्थ वा अधिक विश्वास करता है। आसदरी के मोत एक से अधिक होने के कारण आर्थिक-स्थिति उत्तम बनी रहती है। भूमि, भवन तथा वाहन का योग भी बना रहता है तथा मकान आदि से भी अधिक-लाभ होता है। विष्णु का क्षेत्र उत्तमिकाएँ रहता है। विवाह २३ आयु का २७ वर्ष की आयु में होता है। विवाह दक्षिण दिशा से होता है। पत्नी सुन्दरी, सुलक्षणा तथा सहयोगिनी सिद्ध होती है। संतान-सुख भी उत्कृष्ट रहता है। कला की अपेक्षा पुत्रों की शिक्षा अधिक रहती है। आठ-दस वर्ष २८ से होता है। वर्ष २३, २८, ३३, ४१, ४५, ५३, ५७ तथा ५८ अधिक लाभ देते हैं।

(८६२)- इस जन्मांक चक्र में उत्पन्न बालक गौर वर्ण, सुका नाक-नख्खा वाला, नुकीली नाभि-का, उत्तम ललाट वाला, गुणवान्, बुद्धिमान् कीर्तिवान्, हृष्ट-पुष्ट तथा शक्ति-पिष्ट होता है। यह वाक्पटु होने के कारण अरु लोगों के शीघ्र प्रभावित का होता है। ईमानदार तथा न्यायप्रिय होने के अतिरिक्त यह सामाजिक दानिक रहने के उद्योग भी होता है। व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी में इसकी विशेष रुचि होती है। यह विपत्तियों का डरकर मुकाबिला करता है तथा आपत्त सहनशील भी होता है। आर्थिक-स्थिति मध्यम रहती है। पैसों-सम्पत्ति पर धन के अवसर बनते हैं। विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री की ओर से चिन्ता रहती है तथा सन्तानों की ओर से सुख-सहयोग मिलता है। जीवन के वर्ष २४, २८, ३३, ४१, ४५, ५१, ५५ तथा ५७ उत्तमिकाएँ सिद्ध होते हैं।

(२६३) - इस जन्मा; चक्र में उत्पन्न प्राणी सौंवलें हग, मध्यम कद तथा हल-पुल शरीर का, लुब्ध, साहसी, आकर्षक-अपिप्तत्व सम्पन्न, सहज शील, कोमल चिन्तन, मधुर भाषी एवं पति-स्त्रीगामी होता है। यह स्वाभिमुखी होने के कारण अनेक बार अपनी उन्नति के अवसर को बैठाता है। पक्षिणी एवं साहसी होने के कारण यह निपटारी के बीच से भी अपना मार्ग निकाल लेता है। इनकी आशेषानुति चिह्ने-चिह्ने होती हैं। शारीरिक सम्पत्ति की अपेक्षा मानसिक सम्पत्ति अधिक जाता है। २६ वर्ष की आयु से आशेषानुति आरंभ होता है। वैदिक-सम्पत्ति का मगरे के अवसर उपनीषात होते हैं। मगरे से सहजोग प्राप्त होता है। विवाह २३ या २५ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री-पक्ष की ओर से चिन्ता रहती है। दाम्पत्य-सुख में कमी रहती है। सितान से सुख मिलता है। वर्ष २४, २७, ४५, ५३ तथा ५७ अवसर से उन्नति देंगे।

(२६४) - इस जन्मा; चक्र का आधिपति बालक शरीर, कुछ लम्बाई लिए मध्यम कद वाला हल-पुल स्वल्प शरीर का, गोल चेहरा, छुंछाले केशों वाला एवं शक्ति-पिप्त होता है। यह आलसी भी होता है कि जब तक कि वह न आये, तब तक किसी काम में हाथ नहीं लगाता। दूसरे पक्ष शीघ्र विश्वास नहीं करता, परन्तु जिससे आत्मीयता मागता है, उसके प्रति वफादा बना रहता है। यह वाचाल, क्षेपी, शुद्ध शील तथा धृष्टि का कार्य करने वाला भी हो सकता है। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय से लाभ उठाता है। विद्या का श्रेष्ठ उन्नत रहता है। विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य-सुख उत्तम रहता है, परन्तु सन्तान-पक्ष से चिन्तिता एवं दुःखी बना रहता है। आर्थिक-स्थिति मध्यम रहती है। वर्ष २२, ३०-३२, ४२, ५०, ५४, ५८ तथा ६२ आर्थिक-स्थिति में लाभप्रद रहते हैं।

(८६५) - इस जन्म कुण्डली वाला बालक नामवर्ण, मध्यम कद का, रजोयुगी, धातुमी, अस्त्र-
शस्त्र-विद्याभन में कुशल, उदात्त, तेजस्वी, कोपही तथा साहसी होता है। इसके चितोपी अधिक
क होते हैं, पण्डित यह उनका मान-मर्दन करता है। अस्त्र-तहणों को कोपना अथवा
उनके विषय में चिन्तन करना इसके स्वभाव में होता है। यह न तो स्वयं ही सन्तुष्ट रह
पाता है और न अपने अधिकारीयों को ही उसका व्यवसाय है। कोपानेक में यह कड़वा
अपना ही अहित का लेता है। मित्रों से इसे छुट्टी सहजोग डाँटा होता है। आर्थिक-स्थिति
उत्तम रहती है तथा आकर्षक-लाभ के अवसर भी प्राप्त होते रहते हैं। बहनों की शिक्षा
अधिक होती है। माद्यों से सुख-सहजोग मिलता है। विवाह २४ वर्ष की आयु में पश्चिम
दिशा में होता है। विद्या का लाभ हकावटों के साथ होता है। वर्ष ३२, ५४ तथा ६० उत्तम का काल होता है।

(८६६) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी मध्यम कद तथा सौंदर्य के लोका, साहसी, पुँकारले के मोों
वाला, जोल-चेहरा तथा सुदृढ़ कंधों वाला, पीछमी, शक्ति-पुत्र तथा आकर्षक-व्यक्तित्व-
सम्पन्न होता है। यह पीछमी डाँटा ही आर्थिक-क्षेत्र में उत्कृष्ट करता है। यह जोभी कोप-
नोए बनाता है, उनमें कठिनाइयों काती है। पण्डित अपने साहस के बल पर यह उन्हें सफल
बना लेता है। अधिकारीयों को सन्तुष्ट नहीं रख पाता और न स्वयं ही उनके सन्तुष्ट रहता
है। कोपानेक में कड़वा अपना अहित भी का लेता है। यह संशयालु प्रकृति का होने के
कारण एक एक किसी पर विश्वास नहीं करता। विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी
से सामान्य-सुख मिलता है। सन्तानों से भी कोई विशेष सुख नहीं मिलता। वर्ष २१,
३३, ४१, ५३ तथा ५७ आर्थिक-कष्ट प्रद तथा २४, ३०, ३४, ४६ एवं ६० लाभप्रद सिद्ध होते हैं।

(८६७) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी गुरुजी, मंगल-पितृ-बड़े नेत्रों वाला, छिपकायी, शाला-
लगाव का, चतुर, वायपद तथा लम्बोदर-अविनाश वाला होता है। यह कठोर कार्य को
नहीं करता, क्योंकि प्रकृति से यह अल्पत को मूल होता है। अपनी रुचि के विपरीत कार्य
का भी इसके लिए भिन्न नहीं होता। यह वाणिज्य के क्षेत्र में चतुरा शायद काल
है। मनुष्य को पालने की लीज-शक्ति इसमें पाई जाती है। आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ होती
है तथा आयदनी के मोल एक से अधिक होते हैं। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता
है। पत्नी सुन्दरी तथा सुशीला मिलती है। ससुराल-पक्ष से धन का लाभ भी होता है।
सन्तान-पक्ष से सुख मिलता है तथा दाम्पत्य-जीवन भी आनन्दमय बना रहता है। जीवन
के वर्ष २३, ३१, ३५, ४३, ४८, ५३, ५८ तथा ६१ आर्थिक-उन्नति का एक निरुद्ध होते हैं।

(८६८) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति बुधले शरीर का, छोटा हाँ का, चतुर होता, उमरी
ठोड़ी, तीव्र नाक-नक्शा वाला, लँगुल, चतुर तथा छोटी लम्बाव का होता है। यह स्वयं
में ही मग्न रहता है तथा दूसरे लोग उसके विषय में क्या सोचते हैं, इसकी चिन्ता
नहीं करता। यह कल्पनाशील होने के कारण हवाई किले भी बनाता रहता है। आर्थिक
व्यय काफी बड़ा-बड़ा रहता है, अतः आर्थिक-कठिनाइयों के अवसर भी उपस्थित होते
रहते हैं। पौ, आर्थिक-स्थिति मध्यम रहती है। धर्म, भजन या विवाद के अवसर भी
उपस्थित होते हैं। विवाह २४ से २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोबुद्धि मिलती है।
सन्तानों से कमायों की संख्या अधिक रहती है। सन्तान-पक्ष से सुख मिलता है। विवाह
का लाभ मध्यम होता है। वर्ष २२, ३०, ३६, ४४, ५४, ५८ तथा ६० आर्थिक लाभ प्राप्त होते हैं।

(२६६) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी मध्यम कद, गौं कर्ण, उन्नत ललाट वाला, शान्ति-पिप, बुद्धिमान, गुणवान्, चतुरास का निमज्जित गुणों - लज्जा, लुक्कुमाल, विनयता, मधुकता आदि से युक्त आकर्षक तथा सुन्दर व्यक्ति का होता है। स्वामिनी होने के कारण यह अपनी रुचि के विपरीत कार्यों को नहीं करता। जीवन की कठोर परिस्थितियों में यह अत्यधिक धैर्यवान् होता है। यह नौकरी की अथवा व्यवसाय के पक्ष का मत रखता है। अपने लाभ उठाता है। किसी परिणाम की तुलना में इसे लाभ कम ही होता है। शैक्षणिक अथवा राजनीतिक क्षेत्र में भी इसे सफलता मिल सकती है। आर्थिक - अथवा धन-पक्ष रहने के कारण आर्थिक स्थिति सामान्य ही रहती है। वर्ष २२ या २४ में विवाह होता है, दाम्पत्य तथा सन्तान - पुत्र उत्पन्न होता है। विवाह लाभ सामान्य होता है। वर्ष २६ से मज्जोपा (२७०) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति कुम्भ लग्नाई लिखे मध्यम कद का, मोटी नाक, सौंसे रंग तथा कोपी स्वभाव वाला, दुर्लभ शरीर एवं भीत-उद्धति का होता है। यह अपना वाक्पटु होने के कारण जिस भी से भी अपनी बात मनवा लेने में कुशल होता है। पैतृक सम्पत्ति के श्रेष्ठ लाभ के अतिरिक्त सहाय-पक्ष से भी सम्पत्ति का लाभ होता है। आर्थिक स्थिति सर्वदा उन्नत एवं सुदृढ़ होती रहती है। विवाह २३ या २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सौन्दर्य तथा कोपी स्वभाव की होती है, फलतः दाम्पत्य - जीवन कष्ट पूर्ण होता रहता है। सन्तानें अधिक होती हैं, (उनमें भी कमाकों की संख्या अधिक होती है।) समाज पक्ष से भी कोई विशेष पुत्र - सन्तोष नहीं मिलता। वर्ष २९, ४०, ५१ तथा ५७ आर्थिक कष्ट पक्ष तथा वर्ष २२, ३२, ४४, ५२, ६२ तथा ६२ लाभ पक्ष किट्ट होते हैं।

भ०
सं०
७४३

(८७१) - इस जन्म कुंडली का स्वामी जेचे कद वाला, गौं वर्ण, छोटे केशों वाला, कोथी, उंचा स्वभाव का, नासमझ, नेत्र-रोगी, हठीले स्वभाव का, साहसी तथा उदात्त भी होता है। इसका विवाह बड़े गारकीय ढंग से होता है तथा पत्नी अच्छे स्वभाव की नहीं मिलती। एक से अधिक विवाह भी संभव है। यह एक से अधिक विष्णुओं का भूत होता है। पुत्रकी अपेक्षा कन्याएं अधिक होती हैं। छोटे भाई का योग प्रायः नहीं होता, बड़ी बहिन हो सकती है तथा उससे कठिनाई के साथ सहायता भी प्राप्त होती है। सन्तानें होती तो हैं, परन्तु उनसे सुख-सहयोग नहीं मिलता। निम्नी प्रकृतिक योग बनता है। जीवन में अनेक कठिनाईयाँ आती हैं तथा उनका विजय भी प्राप्त होती है। यह जातक भी प्रकृति का तथा अल्पजीवी होता है। अधिकतम आयु ५० वर्ष होगा। वर्ष २२, ३०, ३४, ४३ तथा ४७ आर्थिक-उन्नति का कर रहे हैं।

(८७२) - इस जन्म कुंडली वाला जातक लम्बे शरीर वाला, सामान्य हुंकार वाला प्रभावहीन व्यक्तित्व वाला, न्याय-प्रिय, विनम्र, उदात्त, धीरे-धीरे तथा आत्म-विश्वास से लम्पना होता है। यह आन्तरिक रूप से हानी तथा वाह्य रूप से अज्ञान सिंकोरी एवं अपने काम में रोका ला रहता है। लोकोपकार को तो इस भी इसे कोई महत्व प्राप्त नहीं होता, अतः राज्य-मण्डल में मजबूत बना रहता है। यह काल-विष्णु द्वारा आधीनिकोपार्जन का ना है तथा पुत्रावस्था का भरोसा ही वैवाहिक-बंधन में भी बंध जाता है। परन्तु सन्तान का लाभ बहुत विलम्ब से होता है। इसकी आजीविका जल सम्बन्धी कार्य अथवा वस्तुओं से होती है। एक से अधिक हिजो से इसके से बंध रहे हैं। भाइयों से आत्म-सहयोग मिलता है। वर्ष २३, ३१, ३८, ४५, ५१, ५८ तथा ६३ आर्थिक-हीन से लाभप्रद सिद्ध होते हैं। सन्तानों के कानों के अधिक होती हैं। आयु सम्बन्ध से अधिक

(८७३) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी धिक्कारी, पालु उमाव-रहित वाणी के कारण दुःखी एवं अपनी कार्य शक्ति में असफल रहता है। इसका शरीर कुछ स्थूलता लिए हुए मध्यम कद का तथा गौरवर्ण होता है। इसके सभी काम या तो स्वतः ही देर में पूरे होते हैं अथवा घर अपने आलस्य वश उन्हें बीच में ही छोड़ देता है। इसे पैतृक-सम्पत्ति का लाभ होता है तथा अहंकारवश घर स्वयं को अन्न लोगों से छेड़ छेड़कर रहता है। घर अनुकूल तथा हार्म स्वभाव का होता है तथा अपनी कठोर वाणी से अन्न लोगों की अपेक्षा करता रहता है। इसे अपने छोटे भाई हेतु खर्च मिलता है तथा मशीनरी आदि के व्यवसाय से आर्थिक-लाभ होता है। बाहरी-लोकों के सम्बन्ध इसके लिए लाभप्रद सिद्ध होते हैं। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोरु कुल मिलती है। सन्तान-द्वय है सुखी रहता है। माता-पिता की ओर से सहयोग मिलता है। लगभग ६० वर्ष की आयु होती है।

(८७४) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति शक्र, लम्बे शरीर का, गेहुँए लंग वाला, सुकट के मों वाला तथा उमावशक्ती वाणी का धनी होता है। घर अपने मन का मालिक होता है तथा किसी अन्न के हुक्मों का दखान नहीं देता। घर स्व. कुटुंब से अनोखापन करता है तथा पैतृक-सम्पत्ति की अशिक्षा भी करता है। इसकी आनंदी के कुछ मोल गुण भी रहते हैं। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुधी तथा सुशीला मिलती है। सन्तान-सुख उत्पन्न होता है तथा कुछ लन्तानों की हानि भी भोगेगा। एक बड़ा पुत्र अपना विद्वान् होता है। आजीवन ४५ वर्ष की आयु के बाद होता है। जीवन के ७, २३, ३६ तथा ४२ के वर्ष स्वास्थ्य के लिए चिन्ता जनक तथा २९, २८, ३५, ४२ तथा ५६ के वर्ष आर्थिक-कष्ट पड़ रहे हैं। वर्ष २२, २५, ३३, ३७, ४४ तथा ५३ आर्थिक उन्नति देते हैं। आयु लगभग ६५ वर्ष की होती है।

(२०५) - इस जन्म कुण्डली वाला जातक मध्यम कुटुम्ब, सुदृढ़ केश एवं उमावस्त्राली लक्षित होना चाहिए। यह अपने पारिवारिक कार्यों को करने के लिए भी लगे रहता है। मध्य इसके सभी काम भी नहीं कर सकता। यह अपने परिवार के लिए कुछ उदात्त तथा अल्प लोगों का कार्य करने के लिए भी जान एक कटने वाला होता है। इनका विवाह कुछ जल्द से होता है तथा विवाह के लिए उदात्त भी करना पड़ता है। पत्नी सुन्दरी होती है, तथापि अल्प दिनों के साथ ही इसके प्रेम-सम्बन्ध बने रहते हैं। सन्तान-पक्ष की ओर यह सुखी तथा ललुप्ट रहता है। इसे अपने पुत्र के विवाह का दुःख भी भोगना पड़ता है। २५ वर्ष की आयु से इसका भाग्यदण्ड होता है तथा धन की दिन-प्रतिदिन वृद्धि होती चली जाती है। मत्र साहसिक कार्यों में अधिक लगता है तथा आयु ७० वर्ष के लगभग होती है।

(२०६) - इस कुण्डली का स्वामी मृगश्रुत सुदृढ़, पल्लव-शेखरुला बना रहने वाला होता है। यह शत्रुओं से शत्रु रहते हुए भी उन्नत विजय प्राप्त करता है। नैतिक तथा अनैतिक-दोनों प्रकार के कार्यों में यह अपने धन की वृद्धि करता है। साहस पूर्ण कार्य करने में इसे आनन्द आता है। इसके धन का व्यय निजी स्वार्थ में ही होता है। विवाह २० से २५ वर्ष की आयु में होता है तथा सुन्दरी पत्नी बहुत वाचाल होती है। इसके अल्प अपना पूर्ण प्रभाव बनाये रखती है। यह अपनी पत्नी के वशीभूत रहते हुए ही उसके कार्य करता है। इसे खलो से खेतना अच्छा लगता है तथा उनके काम भी उठाना है। विद्या का काम सामान्य तथा सिमान-स्वभाव उन्नत प्राप्त होता है। कलाओं में अधिक होती है। पत्नी की मृत्यु इसकी मृत्यु से कुछ समय पूर्व ही हो जाती है। जीवन के वर्ष ७, २१, ४६ शारीरिक कष्ट-ग्रस्त तथा वर्ष २५, ३६, ४२, ५२ तथा ६० आर्थिक लाभ ग्रस्त रहते हैं।

(२००) - इस जन्तुलिंग में उत्पन्न मुख्य लम्बे कद, चिाल के साथ तका कठोर स्निग्ध का होता है। यह कटुभावी तथा अद्भुत शक्ति पूर्ण कार्य करने वाला, पालु धन का संयम करने में उत्पन्न प्रदु होता है। यह अनेक बातें सबकुछ दाँव पर लगाने के बाद घड़े पर लाभ प्राप्त करता है। यह पालिक तथा साहसिक कार्यों में रुचि लेने वाला होता है तथा बड़े एवं महत्वपूर्ण कार्यों की ओर इसकी विशेष रुचि रहती है। यह काल्पनिक लाभ का ध्यान न दे कर ठोस (उपलब्धि वाले कार्यों में ही हाथ लगाता है। विवाह का लाभ मध्यम होता है। विवाह २५ या २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी होती है। सन्तानों का लाभ होता है, पालु गर्भज होने की संभावना भी रहती है। पत्नी से पुत्र प्राप्त नहीं होता, भोजोदय विवाह के बाद होता है। आयु ६५ से ७० वर्ष के बीच रहती है। वर्ष ४२, ४२ तथा ५६, ३६ तक देते हैं।

(२०१) - इस जन्तुकुण्डली का स्वामी मौलने (ग) का, मध्यम कद वाला तथा सामान्य बुद्ध होता है। पारिवारिक - निकेदारियों को बहन करने वाला यह व्यक्ति गंभीर स्वभाव का होता है तथा इसी कारण अपने परिवार में प्रभाव स्थापन भी प्राप्त करता है। इसे वात रोग होने की संभावना भी रहती है। यह २० से २५ वर्ष की आयु के बीच कोई नवीन कार्य अपना व्यवसाय कार्य करता है, जिसे जमाने में इसे सफलता भी मिलती है। इसे पारिवारिक सुख जीवन भी मिलता है, तथा कि आक स्निग्ध कठोर का सामना भी करता पड़ता है। इसे किसी दुर्घटना में चोट लगने की संभावना भी रहती है। शिक्षा मध्यम स्तर की होती है। विवाह विलम्ब से होता है तथा सन्तानों में कन्याओं की संख्या अधिक रहती है। भोजोदय ३० वर्ष की आयु के बाद होता है। पत्नी सुन्दरी तथा गुणवती मिलती है। सन्तान - वरु से सन्तोष रहता है। आयु मध्यम से कुछ होती है।

(२७८)- इहजन्म कुण्डली का स्वामी मध्यम कद तथा गेहुँए रंग का, मध्यम कद वाला तथा बुद्धि-विचक्षण होता है। इसकी पैरुक-सम्पत्ति धन के द्वारा ही आनंद-उन्नति तथा विलासिता में बहुत कुशल का दी जाती है, तथापि इसे पैरुक-सम्पत्ति एवं धन का खेप लाभ होता है। धार्मिक-प्राप्त भी मिलता है। यह पैरुक-सम्पत्ति के बल पर ही अपने कलकत्त के जमाना तथा उसकी अभिवृद्धि करता है। इसे अपने दोटे तथा बड़े भाइयों से सहयोग प्राप्त होता है। छोटे भाई से विशेष सहायता मिलती है और वह इसे अधिक विद्वान् तथा समझदार भी होता है। इसे विद्या का लाभ मध्यम होता है। विवाह २१ से २७ वर्ष के बीच होता है। पत्नी-मनोरुक्ता मिलती है। सन्तान का सुख युवावस्था में मिलता है। परन्तु पुत्री की ओर से दुःखी रहता है। यह कला-कौशल तथा धार्मिक-विद्या का ज्ञान होता है। शत्रु-पक्ष से विरोध भी मिलता है।

(२७९)- इहजन्म कुण्डली का अधिपति धन के शौं वाला, मध्यम कद वाला, आत्म-केन्द्रित, स्वार्थी तथा क्रूर-स्वभाव का होता है। यह ऊँचा से उदा दिवाई देता है, पालतु पशुओं से चूरी होता है। यह बुद्धि का मक होता है। इस भी दूसरों की बात के प्रशंसा-मर्म को समझ लेता है। यह धीकाका सुविधा बने रह कर उसे अपनी इच्छापूर्णा चलाता है तथा किसी का विरोध सहन नहीं करता। अपने शत्रु के बदला लिये बिना यह नहीं झुकता। इसकी आसानी के साधन सुख तथा उचित दिवाई देते हैं, तथापि इसके पास गुदा रूप के धन का आगमन होता रहता है। विवाह २१ या २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुख, सौख्य तथा सहयोगिनी होता है। दास्य-सुख उत्तम होता है। सन्तान-पक्ष से भी संतोष प्राप्त होता है। आयु २७ वर्ष की आयु से होता है। जीवन के कठिनाइयों का कम सामना करना पड़ता है, अतः धन-सुखी बना रहता है।

(८८१) - इस जन्म कुण्डली वाला प्राणी मध्यम क्रम, दुबले-पतले शरीर वाला तथा काले चने के रंग का होगा, गेहूँ का रंग का होगा है। यह बुद्धिमान, मनाची, पाकूरी तथा चंचल स्वभाव का होगा है, पालतु चर्यावान् होने के कारण किसी भी काम में जल्दबाजी नहीं करता। इसकी गणना पुण्यशाली व्यक्तियों में की जाती है। इसे राज, सम्राट तथा वीरान में सर्वत्र सम्मान प्राप्त होता है। यह किसी उच्च पद का अधिकारी भी बनता है। शिवा-बुद्ध तथा कार्प-कुशल होने के कारण इसे सर्वत्र प्रशंसा भी मिलती है। विवाह २४ से २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी भी अत्यन्त सुन्दरी, बुद्धिमान तथा समझदार होती है। धर्म में आस्था एवं इसमें यह पुरुषार्थ वा हो गेला करता है। सन्तान पुण्य तो होती ही नहीं और यदि होती तो उसका सुख नहीं मिलता। आर्थिक-स्थिति आजीवन सुदृढ़ बनी रहती है।

(८८२) - इस जन्म कुण्डली में उत्तम मनुष्य शरीर से दृढ़, मध्यम क्रम, साँवला-गौरवर्ण, सुन्दर पुरुषार्थ का धारी तथा भाग्य का बलवान् होता है। यह सब कार्यों में धन रक्च करने वाला आर्थिक-लाभ होता है। बड़े भाग्य का सुख मिलता है, पालतु होता नहीं होगा। कष्टप्रकाश व्यक्तियों का धनोपाधन करता है। विवाह कष्ट विनाश से और कभी-कभी विजय-प्रीति में भी होता है। पत्नी से सुख मिलता है तथा सन्तानों से भी सुख-सहयोग प्राप्त होता है। युगलकोटों के कारण इसे कभी-कभी कष्ट भी उठना पड़ता है, तथापि का-बादा सभी स्थानों से लाभ होता रहता है। दूध (प्राणों की पात्रा तथा पौदस) से संबंधित व्यवसाय द्वारा इसे विशेष लाभ होता है। जीवन सुख पूर्वक बीतता है।

(२२३) - इस जलकुण्डली का अधिपति शुक्रमन्त्र, जल सुम्न, बुद्धिमान तथा वाचस्पति होता है।
इसके वाचस्पतिक बुद्धि की प्रधानता पाई जाती है तथा व्यवसाय द्वारा ही यह आर्थिक
लाभ करता है। किसी बड़े व्यवसायिक - स्थान के सम्बन्धित होने पर यह अपनी योग्यता
का मूला उद्घाटन करता है। यह अपने ही बलबूते पर मूला धारण करने का हेतुवर्धक शक्ति
बनता है। व्यवसाय में हुक्मी रहता है, जल सुम्न - मिला के बिंदोह का हुक्मी शीघ्र ही महत्तम
काय पाता है। विवाह २५ से ३० वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुम्न, मधुरभाषिणी तथा
आकर्षक व्यक्तित्व वाली होती है। यह पत्नी के अलग ही रहता है, क्योंकि पत्नी के लिये
इसके स्वभाव का मेल नहीं पाता। सन्तान सुख उत्तम रहता है। ५० से ५६ वर्ष की आयु
विशेष उत्कर्षदायक सिद्ध होती है। आयु दीर्घ होती है तथा जीवन सुखपूर्वक बीतता है।

(२२४) - इस जलकुण्डली वाला मृगश्रृंग दृष्टि का, सौं वले दृष्टि का, कू तथा कोपी विभाव
का तथा स्वार्थी होता है। यह सामाजिक कार्यों के कण्ठ अपवश का भागी बनता है तथा
कावाला का दण्ड भी पा सकता है। पत्नी के प्रति इसका कोई लगाव नहीं होता। यह अपनी
ही धुन में मग्न रहता है। इसकी आसानी के लिये अच्छे रहते हैं तथा खर्च भी खूब करता है।
वर्ष - वर्ष के दिन दिनों से वाहवाही लूट का प्रसन्नता का अनुभव करता है, तथा दिव्य
मित्र इसकी पीठ पीछे बुद्धि करे तथा मन्त्रक भी बनाते हैं। यह ऐसा भाग्यशाली होता है
कि इसे धन का कभी अभाव नहीं रहता। ३५ वर्ष की आयु के बाद इसका अत्यधिक भाग्य
दण होता है। इसके सभी कार्य जीवन में सुचारु रूप से चलते रहते हैं। विवाह वही आयु में होता है,
पत्नी अधिक खर्चीली होती है तथा स्वयं को बहुत योग्य एवं बुद्धिमान समझती है। आयु अधिक नहीं होती।

(२२५) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी भारी भूकम्प शरीर का, शक्राक्ष वर्ण तथा पुष्पकाली काली
त्व वाला होता है। इसे बचपन से ही कोहल करनी होती है। यह अपनी विष्णु-बुद्धि द्वारा इसे
को पुष्पकाली का जीवनकोपार्जन करता है। वैदिक-सम्पत्ति एवं धन का भी प्रवेष्ट लाभ
होता है। (इसे शब्दों तथा कानों की पद्धति प्रशंसा की जाती है। इसे उच्च राजकीय-
पद भी प्राप्त होता है। यह २१ से २५ वर्ष की आयु तक विवाह-बंधन से बँधा जाता है।
पत्नी बुद्धिशील तथा सुलभता प्रदान करने वाली मिलती है। दाम्पत्य-सुख बहुत उत्तम रहता
है। सन्तानों में भी सुख-सहयोग प्राप्त होता है। इसका भग्नोदय बचपन से ही आरंभ हो
जाता है। बड़ी तथा लम्बी दीर्घकालिक-जात्राओं में सुख एवं लाभ की प्राप्ति होती है। जन-
सेवा के अवसर भी प्राप्त होते रहते हैं। सारा-धन को सुख देता है तथा स्वयं भी सुखी बना रहता है।

(२२६) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मृगश्रृण्ण शक्राक्ष वर्ण, दुर्लभाक्ष का, मध्यम कद वाला, आकर्षक
नेत्र तथा मधुवाणी वाला एवं अपने प्राकृत-उदारता, प्रिय-भाषण आदि लक्षणों से सब
का मन मोहित करने वाला होता है। इसका विवाह २० वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी
सुखी तथा मनोबुद्धि मिलती है। पत्नी का पूर्ण विश्वास प्राप्त होने पर भी यह पत्नी के
का उन्नयन करता है। वैदिक-सम्पत्ति को प्राप्त कर उसकी अभिवृद्धि करता है। इसे धन
का उत्पन्न रहता है। इसका भग्नोदय वालावस्था से ही आरंभ हो जाता है तथा ५०
वर्ष की आयु तक यह सफलता के सर्वोच्च-शिखर पर पहुँचता है। इसे शत्रुओं का कोहल
अपनी नहीं होता। कद तथा वात-विकार की पीड़ा बनी रहती है, पालु अधिक कष्टकाय
नहीं होती। आयु लगभग ७५ वर्ष होती है। सम्पूर्ण जीवन सुख में बीताता है।

(२२०) - इस पुरुष में उत्पन्न मनुष्य जी वर्ण, विशाल नेत्रों वाला, बुद्धिमान तथा गंभीर-
स्वभाव का होता है। यह ईश्वर में पूर्ण आत्मा (जैसे वाला तथा धार्मिक-वृत्ति का होता
है। यह छोड़ा जा भी फल सहन नहीं कर पाता। यह अल्पना कोमल चमक का तथा
मधुरास की होता है। पान्थिक कार्यों से इसे निजमित्त आर्थिक-लाभ होता है। इसका विवाह
१६ से २३ वर्ष के बीच होता है। पत्नी सुका, मनमोहनी तथा चंचल-चमक की, साध-सुख
एवं अंगुलि विष, बड़े आकर्षक-कामिनी वाली होती है। पत्नी के कारण वास्तव में सदा के
विशेष प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। पत्नी अपने अंग पर फल वृद्धि करने वाली तथा मर्दा का उत्पन्न
करके भी दूसरों को प्रभावित करने में सक्षम होने वाली होती है। संतान-पक्ष सन्तोषजनक
रहता है। २५ या २७ वर्ष से मज्जोरु होता है तथा लगभग २० वर्ष की आयु प्राप्त होती है।

(२२२) - इस लम्बकृष्ण की अधिपति सुका, शरीर से दूर, पतली तथा उदात्त प्रकृति का होता
है। इसे पानीपानीक-प्रकृति बड़ी कठिनाई से प्राप्त होती है, तथापि अपने बलबूते पर ही
यह पक्षेष्ट-प्रकृति का अर्थन करता है। इसका मज्जोरु १७ वर्ष की आयु से ही आरंभ हो
जाता है। विवाह भी २१ से २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुका तथा विदुषी होती
है। वह सब जगह सम्मान प्राप्त करने वाली तथा सहज होती है। दाम्पत्य-सुख उत्तम बना होता
है। संतान का लाभ विलम्ब से होता है। छोटे-मछे अपना बर्तन की ओर से इसे काफी गलत-
फहमियाँ रहती हैं। दुसाहसी होने के कारण किसी समय इसे चोट लगना भी संभव है। इसे
२५ वर्ष की आयु में ही विदुल-पान प्राप्त होता है। ५० वर्ष की आयु में चोट लग सकती है।
शुद्धि ७५ से ८५ वर्ष के बीच होती है। सम्पूर्ण जीवन सुख से बीतता है।

(८८८) - इस जन्माडु; चक्र में उत्पन्न प्राणी सुन्दर शरीर वाला, बलिष्ठ तथा मीनको को अपना शिकार होता है। इसे पानीवासीक सुख-सम्पत्ति का वात्सावस्था से ही लाभ होता है। इसे चक्र की कभी कभी नहीं रहती तथा अथ एक पदार्थ भी उपलब्ध रहते हैं। यह अपने से विपुल अपना विशेषता को तनिक भी सहन नहीं करता तथा कभी-कभी कोपान्धक में अपना ही अहित का बैठता है। इसका विकास २० वर्ष की आयु में ही हो जाता है। इसके विकास के कारण जीवा में कुछ कठिनाइयाँ भी उत्पन्न होती हैं। इसे अपने से बड़े जोगों का स्पर्ध मिलता है तथा छोटे से आदमी नहीं मिलता। सन्तान के लिए चिन्ता रहती है। जीवन के ३५ से ४० वर्ष के बीच का समय बहुत लंबा पूर्वक व्यतीत होता है। पूर्ण आयु ६५ से ७० के बीच होती है। यदि इसे पान् काले से २० वर्ष की आयु तक जीवित रहता है।

(८८९) - इस जन्माडु; चक्र में उत्पन्न मनुष्य मध्यम कद का, सुन्दर शरीर, गोल चेहरे का तथा आकर्षक - व्यवहार सम्पन्न होता है। इसे उत्प्रेषण कार्य में सफलता प्राप्त होती है तथा यह जो भी बर्च काता है, उसे इसकी प्रतिष्ठा में बढ़ी होती चली जाती है। यह अनेक विचारों, तथा कलाओं का ज्ञानका, कार्य-कुशल तथा धार्मिक - कार्यों द्वारा अपने धर्मन कोने वाला होता है। यह अनेक प्रतिष्ठानों से सम्बद्ध होकर पत्रिका धन तथा सम्मान प्राप्त करता है। ३५ वर्ष की आयु में इसका भाग्य चमत्कार्य प्राप्त हुआ है और जीवनात् तक उत्कृष्ट कला चला जाता है। यह धैर्य - सम्पत्ति की चिन्ता नहीं करता, क्योंकि स्वोपाधिप्त सम्पत्ति ही इसके पास बहुत होती है। यह देश-विदेश में सर्वत्र मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। आयु के लगभग ३७ वर्ष बिताने के बाद कुछ शारीरिक कष्ट होता है। दाम्पत्य एवं सन्तान-पुत्र उत्पन्न रहता है। आयु २० वर्ष होती है।

(८८१) - इन्द्रजित् चक्र का स्वामी स्वल्प शक्ति, गौतम, ब्राह्मिज्जाली, सुद्धा तथा आकर्षक-वर्णित-
त्व का धारी होता है। काव्य-संगीत तथा ललित-कलाओं में इसे विशेष प्रेम होता है। इसे
अपनी वैदिक-सम्पत्ति को लोग की इच्छा नहीं होती, क्योंकि अपनी ३० वर्ष की आयु में ही
मृत इतनी सम्पत्ति पैदा कालेता है, जो वैदिक-सम्पत्ति से पचासों गुना अधिक होती है।
सामाजिक-पुरिष्ठा, सामाज्य तथा धर्म की इसे अद्भुत उद्विग्न होती है। यह विदेश के
अभिजात जाति तथा विदेश के भी विशेष धन तथा सम्मान अर्जित करता है। परिवारीज्जाली
के लक्ष्य से रहित होता है। यह उनका पालन-पोषण करता है तथा उनसे किसी पुरिष्ठान की
अपेक्षा नहीं करता। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी से बहुत दूरी मिलती है। पाल्य पित्तान
कामा होती है। दत्तक-पुत्र का प्रेम भी करता है। ३० वर्ष की आयु में आजीवन सम्पत्ति बना रहता है। आयु ८५ वर्ष

(८८२) - इन्द्रजित् चक्र का अधिपति सुद्धा, विष्णु, आकर्षक-वर्णित-वर्णित-
का धारा, विष्णु का धारी, कवि तथा कलाकार होता है। इसे मशीनी संबंधी ज्ञान भी होता है-
तथा धर्म करने में भी यह निपुण होता है। यह प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है। इसके
भाग में उच्च राजयोग तथा पुरिष्ठि-योग प्राप्ति पाते हैं। यह किसी के लिए स्वर्ण स्वर्ण नहीं करता
अपने लोग ही इसके लिए स्वर्ण करते हैं। इसका विवाह २० वर्ष की आयु में ही होता है,
पत्नी सुद्धा तथा सुलक्षणा प्राप्त होती है, तथापि इसके अनेक मित्रों से सम्बन्ध रहते हैं। इस
का पूर्ण भाग्योदय ४५ वर्ष की आयु में होता है तथा जीवन में भाग्यशाली बना रहता है। संतान
न-सुख उत्पन्न रहता है। यह दृष्ट-शु की धारों करता है तथा अपने मित्रों को भी धारों करता है,
इसका बड़ा भाई उत्पन्न होता है, पाल्य दोरा नहीं होता। आयु ७५ वर्ष से ऊपर होती है।

(८६३) - इस जन्म कुण्डली में अपना मधुरतम बलिष्ठ शरीर का, सुन्दर, सुश्रील तथा शिखरवर्ण होगा है। यह अनेक कलाओं का ज्ञान तथा सर्वत्र प्रमान पाके वाला होगा है। यह सहज ही में सामा-
निक प्रमान प्राप्त कर एक बड़े आदमी के रूप में प्रतिष्ठित हो जाता है तथा वात्सल्यवत्ता से ही
इसका उत्कर्ष आरंभ हो जाता है। इसे अपने पिता तथा दादा से बहुत शिक्षण प्राप्त होगा है।
इसका विवाह २२ से २६ वर्ष की आयु में अत्यन्त सुन्दरी तथा गंभीर-पुष्टि की महिला से होगा है।
यह जातक के लिए विशेष उत्तमिदायक सिद्ध होती है। यह आयु में कुछ बड़ी भी हो सकती
है। पत्नी जातक की अनुगमिनी बनी रहती है। माता की ओर से भी जातक को सहयोग
प्राप्त होगा है। पुत्रावाका में शरीर कुछ समय तक बिचिलाना का अनुभव करेगा है। सन्तान की
ओर से चिन्ता रहती है तथा लम्बी आयु प्राप्त होती है।

(८६४) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी कुछ लम्बे कद का, सुन्दर तथा आकर्षक व्यक्तित्व से सम्पन्न
होगा है। इसके बर्च बड़े-बड़े रहते हैं, और आदमी अच्छी होते हुए भी अर्थ-संकोच बना रहता
है। पण्डित जीवन में प्रवीण नहीं रहती। विवाह कुछ विलम्ब से होता है, यह पा ले दूर
जाता है अथवा कि पति-पत्नी के बीच मन-मुटाव बना रहता है। यह स्थिति ३० वर्ष की आयु
के बाद उत्पन्न होती है। यह कला के क्षेत्र में अत्यन्त प्रशस्ती होता है, तथापि इसका व्यक्ति-
गत जीवन संतुष्ट नहीं हो पा रहा है तथा इसे पूर्ण काम ही मिल पाता है। इसकी संतानों में
पुत्रियों की संख्या अधिक होती है। १६ वर्ष की आयु के बाद इसका उत्कर्ष आरंभ होता है तथा
२४, २८, २९ एवं ३५ के वर्ष भी अच्छे बीतते हैं। जीवन के अन्तिम समय में यह मान-सम्मान से
कीर्ति होता है तथा दुःख भोगता है। आयु ७५ अथवा ७६ वर्ष की होती है।

(८८५) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न, चीत-शरीर, बलिष्ठ, मजबूत, कद बाला, कला एक समीप का मर्मज्ञ तथा कवि होता है। यह रसायन, कोमल तथा सारिणी स्वभाव का होता है। चीता तथा शरीर भी इनमें अत्यधिक पाई जाती है। यह रोग-शोक के जो कम दुःखी होता है। पालु अपने लोगों के विश्वासपात्र को इसके इलाक़ वड़ी चोट लगाती है। १८ तथा २२ वर्ष की आयु में इसे किसी मानसिक-दुःख-तथा रोग का सामना करना पड़ता है। लुब्धकता यह किसी अच्छे पुत्रिष्ठान की सेवा में बड़ों का अपने जीवन को समर्पित करता है। विवाह २४ से २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी है पूर्ण आत्मिकता सम्पन्न नारी होगी। विवाह पक्ष से भी शुभः कष्ट ही मिलता है। इसके बाद सम्पन्न आर्थिक नारी होगी, तथापि मृत्यु के समय बैंक में पचास लाख जन पाया जाता है। आयु ८६ वर्ष तक हो सकती है।

(८८६) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मृगुष्ण उन्नत माल, हल्का शरीर, स्वरूप शरीर तथा लुब्धकता सम्पन्न बाला होता है। यह स्वभाव से कोमल तथा चीत-शरीर होता है तथा अपने जीवन में अनेक संकटों का सामना करता है। १४ से २० वर्ष की आयु के बीच उसे अनेक में कहीं बग़ जगड़ना मिलती है तथा पिता की ओर से कष्ट प्राप्त होता है। विवाह २३ से २५ वर्ष की आयु में होती है। पत्नी आयु में बड़ी हो गयी होगी, पालु वड़ी बाली लगाती है। वह सम्पन्न तथा सुखावती भी होती है। विवाह-पक्ष से दुःखी रहता है। लम्बायन, यह कला के सम्बन्ध से ही जीविकोपार्जन करता है, तथापि कभी-कभी आत्मा के विरुद्ध कार्य करके भी धन कमाता है। यह करीब ७५ वर्ष की आयु प्राप्त करता है। इसके जीवन के २०, ३४, ३७, ४२ तथा ५० के वर्ष उत्कर्षदायक सिद्ध होते हैं।

(८८७) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सामान्य जीवन बिताने वाला, तत्कालीन आयु बगाली होता है। यह आर्थिक-स्थिति में सम्यक्त, सदैव संगृही तथा कुपण स्वभाव का होता है। इसे न कोई चिन्ता रहती है, न कष्ट होता है। किन्तु यह अपना अकल अपने पनीका का कुद मला नहीं कर पाता। पुत्रवान् होने का चेला होने हुए भी इसे पुत्र का सुख नहीं मिलता। विवाह २० वर्ष की आयु में होता है, पणु स्त्री से अधिक सुख नहीं मिलता, वह अपने माता-पिता की ओर विशेष आकर्षित रहती है। यह जानक सेवा-कार्य (नौकरी) में सकलता आदा करता है। आयु ४० वर्ष की आयु के बाद होता है तथा विपुल संपत्ति का संचय करता है। किसी नवीन कार्य में हाथ डालना इसे अच्छा नहीं लगता। यह लकी का फकीर बना रहता है। आयु लम्बी प्राप्त होती है तथा वृद्धावस्था में कातरोग से पीड़ित बना रहता है। ३७, ४५ तथा ५६ के वर्ष उत्तम।

(८८८) - इस जन्म कुण्डली वाला मनुष्य स्वस्थ, सुदृढ़, लम्बे कद तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। शरीर से कुद स्थूल तथा पुष्टि से स्मैण होता है। विद्या-लाम उत्तम होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु के लगभग होता है। पत्नी गौरवर्णी, छोटी माँके वाली, छोटे ललाट की; पणु आकर्षक एवं सप्रभवा होती है। वह अपने कानूकुल से विशेष लगाव रखती है तथा गर्वीली प्रकृति की होती है। सन्तान-पक्ष से सुख-दुःख कुद नहीं मिलता। संतानों की संख्या भी कम ही होती है। विवाहोपान्त कुद समस्त तक दुःख भोगता पड़ता है, लुपुणा-ना आयुदप होता है तथा कल मार्गी से धन का आगमन होता रहता है। १५ से १८ वर्ष तक की आयु में कष्ट अधिक रहते हैं। जीवन के २०, २२, २५, ३७ तथा ४५ के वर्ष के लामदापक रहते हैं। यह अलसी प्रकृति का होता है तथा दीर्घायु प्राप्त करता है।

(८८८) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी पुष्ट शरीर, सुन्दर स्वभाव वाला, बुद्धिमान तथा काव्य-संगीत आदि ललित कलाओं में रुचिर रहे वाला एवं स्वयं भी काव्य-निबन्धादि की रचना करने में कुशल होता है। यह महादुर्गति पूर्ण तथा उदात्त स्वभाव का होता है। इसे वातरोग के कारण प्राणिक कष्ट उठाना पड़ता है तथा धन का खर्च भी अधिक बना रहता है। आयु के २५ वें वर्ष में यह अपना धन छोड़कर पश्चिम में जाता है और वही रहकर इसका भरणोपार्जन करता है। इसका विवाह काफी विलम्ब से होता है। पत्नी सामान्यतः सुन्दर, बलु कमी-कमी विपरीत आचार्य को वाली होती है। सन्तान के अभाव में वह दुःखी तथा चिड़चिड़े स्वभाव की बन जाती है। इस जातक की आकस्मिक के सम्पन्न उत्तम बने रहते हैं। आयु के २८, २९, ३५ तथा ४७ वें वर्ष विशेष उन्नति का कष्ट सिद्ध होते हैं। स्वास्थ उत्तम रहता है तथा आयु दीर्घ होती है।

(८९०) - इस जन्मकुण्डली वाला जातक लम्बे कद का, सुन्दर तथा आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। यह अल्पजन्म मनुष्य तथा प्राणिक सम्पत्ति का लाभ करने वाला होता है। यह ऐश्वर्यपूर्ण जीवन व्यतीत करता हुआ सर्वत्र मान-परिष्ठा प्राप्त करता है। इसे श्वेतारंग की वस्तुओं तथा मादक पद्यों से लाभ होता है। खेलन, लम्बादन एवं कलात्मक कार्यों से भी इसे आर्थिक-लाभ होता है। विद्या यथेष्ट प्राप्त होती है। विवाह १८-२० वर्ष की आयु में हो जाता है तथा पत्नी सुन्दरी एवं मनोरंजक मिलाती है। अपनी पत्नी से पूर्ण सुख प्राप्त करते हुए भी यह वा-विशेष में आसक्त रहता है। इसका भरणोपार्जन ४० वर्ष की आयु में होता है। माता-पिता का सुख कम मिल जाता है, शत्रु मित्रान-सुख एवं लोक-प्रशंसा का यथेष्ट लाभ होता है। वृद्धावस्था में कोमलता के सोने में कुछ कमी आ जाती है, तथापि सम्पूर्ण जीवन सुखपूर्वक बीतता है। आयु ७० वर्ष से अधिक

(ई०१) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य मध्यम कृद का, सुकृ, कोमल स्वभाव वाला होता है। इसका रंग साँवला भबवा लोहित होना भी संभव है। यह धी, वी, वाक्प्री, इहों की सहायता करने वाला, पानु कोपी एवं उच्चण्ड स्वभाव का होता है। विष्णालाभ उत्पन्न होता है विवाह २२ से २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी तीक्ष्ण स्वभाव की मिलती है। यह पटलीतका इहो सन्तान से दुःखी तथा तीसरी सन्तान से सुख पावे वाला होता है। इसे धन की कमी नहीं रहती। यह स्वयं भवन का निर्माण करता है। पानु इसका भोग अधिक समर्थ तक नहीं कर पाता। कला-सम्बन्धी तथा इहों द्वारा स्थापित कार्यों से इसे लाभ होता है। ऐसे लोग युवानः नौकरी द्वारा लाभ अर्जित करते हैं तथा अपने उत्तराधिकारियों को सफलता पूर्वक दिशानिर्देश करते हैं। इसके लिए जीवन के १७, २०, २५ तथा ३७ के वर्ष विशेष लाभदायक सिद्ध होते हैं। काय मध्यम प्राप्ता होती है।

(ई०२) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य मध्यम कृद का, सुकृ, कोमल स्वभाव वाला तथा कला-प्रेमी होता है। यह साहित्य में अतिरिक्त रचना करता है। इसकी आत्मदृष्टि के मोन एक से अधिक होते हैं। यह चैतक-समन्ति को पावे वाला, धन की रक्षा करने वाला तथा २० वर्ष की आयु से ही स्वयं धर्मोपासना करने वाला होता है। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुकृती तथा गुणवती मिलती है। विष्णालाभ, सन्तान का श्रेष्ठ सुख मिलता है। यह शत्रुओं का दमन करने वाला, बलिष्ठ, स्वस्थ, कार्य-कुशल तथा अत्यन्त कर्मठ होता है। इसका माधोदय स्वदेश में ही होता है तथा २५ वर्ष की आयु में ही यह समन्तिव्रतली बन जाता है। इसे जीवनमृत्यु की कमी का अनुभव नहीं होता। धर्म-पत्नी दोनों ही विविध प्रकार के सुखों का उपाय करते हुए अच्छी आयु तक जीवित बने रहते हैं। माता-पिता का विशेष सुख नहीं मिलता।

(८०३) - इस जन्तुजिन में उत्पन्न मनुष्य सुका, स्वल्प आकर्षक कर्मात्मक - लम्बा, मध्यम कद वाला तथा इनमें के शीघ्र प्रकृति का के में पद होता है। यह उदात्त तथा क्षमाशील होने के साथ ही को भी स्वभाव का भी होता है। यह पानीवासी - लम्बा का लम्बा पाने वाला, पानीवा - हिन्दी तथा लम्बा पिप होता है। किला - लम्बा पधेए होता है। इसका विवाह कुछ विद्वान - लम्बा के साथ २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। इसकी चली सुकरी, लड़कनवनी तथा कुछ भारी शरीर की होती है। यह वालावाला है ही कर्मात्मक होता है तथा इसे सुख के सभी साधन उपलब्ध होते हैं। अग्नि, मयन, वाहन आदि के साथ ही लम्बा का धर्म सुखी इसे मिलता है। यह शरीर में चमकता रहने वाला, शत्रुओं का दमन करने वाला तथा परोपकार में लगा रहने वाला होता है। पालु इसे आकर्षक रूप से चोरे लगती रहती है। यह पुनः लम्बा ६२ से ७० वर्ष की आयु पाने वाला होता है।

(८०४) - इस जन्तु चक्र का अधिपति बलिष्ठ शरीर का तथा सुका एवं आकर्षक कर्मात्मक लम्बा होता है। यह लम्बा एवं कला - पेसी, पानवा, सुजेष्ठ, किला - बुद्धि - लम्बा तथा अजनेरे के कर्मा की सेवा में निरत रहकर इसे सुख देने वाला तथा लम्बा अधिपति करने वाला होता है। इनमें के लिए धन लब्धि को तथा परोपकारी कार्य में इसे सुख मिलता है। इसका विवाह २० वर्ष की आयु तक हो जाता है। पानी सुकरी तथा ली दूरा चमक की होती है। तथा यह पानी की अगुगता बनी रहती है। इसे छोटे मनुष्यों का सुख तो मिलता है - पालु बड़े मनुष्यों का सुख नहीं मिलता। सन्तान - पक्ष में यह दुःखी बना रहता है, पालु लम्बे छोटी सन्तान इसे सुख देती है। यह शत्रु - पक्ष का दमन करने वाला तथा अजनी प्रतिष्ठा की अधिपति करने वाला होता है। आयु लम्बी होती है। जीवन के २०, २२, २५, २७ तथा ३५ के वर्ष उत्तरीकाक होते हैं।

(६०५) - इस जन्म कुण्डली वाला जन्म सुदृशी वाला, आकर्षक व्यक्तित्व प्रदान। मधुरभाषी, कुटुम्बान् तथा लम्बे कद का होता है। विवाहालाभ लाभाल होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है, पालु पत्नी ढीठ स्वभाव की एवं अवज्ञा करने वाली होती है। यह भाग-पिता का सुख अधिक प्रसन्न तक जाया नहीं कर पाता। इसे छोटे भाई की ओर से प्रार्थना: प्राप्त मिलता है, पालु अप्रत्यक्ष रूप में स्थापना भी मिलती है। इसे पारिवारिक कारणों से काफी दुःख उठाने पड़ते हैं, पालु भाग्य का चली होने के कारण यह सभी संकटों को परा-कृत्य चला जाता है। यह जीवनभर एक ही अर्थिक-स्थिति में बना रहता है। अतः इसके भाग्योदय को कोई वर्ष निर्दिष्ट नहीं किया जा सकता। जीवन में कठोर उतार-चढ़ाव आते रहते हैं, पालु यह किसी के समक्ष झुकना नहीं है। यह ७० वर्ष से अधिक आयु जाया करता है।

(६०६) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न प्राणी सुदृ, स्वार्थ, गौरव, लम्बे कद का तथा आकर्षक व्यक्तित्व प्रदान होता है। विवाह का लाभ उत्तम होता है। विवाह २२ से २५ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी अशुक्ल तथा सुकरी होती है। यह किंवदन्तियों से ही किसी भगवान् के प्रति-ष्ठान में सेवा कार्य आदि करेगा है। यह अपने स्वामी अथवा छोटे भाई के लिए कष्ट भी उठाता है, पालु उस प्रकार का कोई कल जाया नहीं होता। पत्नी का पालु अधिकतर रावनी दुर्ग सामाजिक एवं पारिवारिक जीवन का समुचित संचालन करती है। संतान का लाभ ३५ अथवा ४० वर्ष की आयु में विलम्ब से होता है। इसे पैतृक-धन की प्राप्ति नहीं होती और यदि कोई पारिवारिक सम्पत्ति मिलेगी तो वह धीमा-मिल हो जाती है। यह ६५ से ७० वर्ष तक की आयु जाया करता है तथा इसकी मृत्यु भी आकस्मिक रूप से ही होती है।

(६०७) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी कुंभे कद तथा दृढ़ शरीर का एवं गेहुँए रंग का होता है। इसका जल धनी तथा प्रतिष्ठित धनीका में होता है, अतः इसे जल का पूर्ण भुवन प्राप्त रहता है। माता-पिता का सुख वधपति मिलता है। यह अपने पिता के कार्य-व्यवहार को निम्नले वाला तथा उसकी उन्नति करने वाला होता है। यह विद्या, कला, धर्म तथा धार्मिक (इंजीनियरी) के कार्यों में कुशल होता है। इसकी आसदनी का सुख मोत भी धार्मिक-कार्य ही होते हैं। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु के लगभग होता है। पहली मनेदु कुला मिलती है, जो इसकी सहयोगिनी के रूप में कार्य करती है। इसका पूर्ण भाग्योदय ३० से ४० वर्ष की आयु में होता है। तत्पश्चात् इसे अपने पुत्रों से सहायता मिलनी रहती है। यह धार्मिक, योग्यकरी, दानी तथा तीर्थ-यात्री भी होता है। इसको दीर्घायु प्राप्त होती है तथा सम्पूर्ण जीवन आनन्दमय बना रहता है।

(६०८) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति मृगश्रि, ११ वर्ष, अल्प केशवान्, तेजस्वी तथा कोपित स्वभाव का होता है। यह आन्तरिक रूप से लाल तथा उदात्त प्रकृति का होते हुए भी बाह्य से अल्प कठोर प्रतीत होता है। धैर्य-कार्य से इसे लाभ नहीं होता, अतः यह अपना नवीन कार्य आरम्भ करना ही पानु मिली कार्य इसके लिए रातिका ही रहता है, कला, यह नौकरी का होता है और उसी में अत्यधिक उन्नति का तात्पर्य उच्च पद पर पहुँचना तथा वधपति प्राप्त अभिनि काता है। इसे अपना सफल स्वयं बनवाने में राति होती है तथा बना बनाया (वर्धित) ने में लाभ होता है। विष्णु का लाभ उत्तम होता है। विवाह २० वर्ष की आयु के बाद होता है। इसी मनेदु कुला मिलती है तथा उसके नाम पर कोई व्यवसाय का लाभ प्राप्त सिद्ध होता है। भाग्योदय ३५ से ४५ वर्ष की आयु में होता है। २०, २५ तथा २७ के वर्ष उत्कर्ष के होते हैं। आयु ७० वर्ष होती है।

(८०८) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न जातक मारी एवं लक्षण शरीर का, सुन्दर तथा उमावकाली कवित्व सम्पन्न होता है। यह उत्पन्न क्षेत्र में लफलागों जादा जाता रहता है। यह काव्य एवं साहित्य का रचयिता, अध्यापक अथवा उद्देश्यकर्ता होता है। यह अपनी योग्यता एवं विद्वत्ता द्वारा बड़े-से-बड़े लोगों को उमाकित करने में सक्षम होता है। इसे विद्या का उत्तम लाभ होता है। विवाह २५ से २८ वर्ष की आयु में होता है तथा पत्नी मनोरुक्म्या एवं सुदी मिलती है। ३० वर्ष की आयु से इसका आशोदय होता है तथा यश फैलने लगता है। उस समय इसके पास धन की कोई कमी नहीं रहती। इसके अधीन अनेक कर्मचारी कार्य करते हैं, जिन्हें इसे आर्थिक लाभ होता रहता है। पारिवारिक स्थिति शान्त तथा सुदृढ़ बनी रहती है। इनके का उत्तम सुख प्राप्त होता है। आयु मध्यम रहती है। वर्ष २८, ३५, ३८, ४१, तथा ५३ (उत्तम सिद्ध होते हैं)।

(८१०) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर स्वरूप, दृढ़ शरीर, बुद्धिमान, गुणवान् तथा कला-साहित्य-संगीत आदि का प्रेमी और ध्याता होता है। इसे अपने उद्देश्यों एवं मित्रों द्वारा आर्थिक-लाभ प्राप्त होता रहता है। यह राज्य संबंधी अथवा किसी अन्य प्रसिद्ध विज्ञान के सम्बन्ध से लाभ प्राप्त करता है। आशोदय २५ वर्ष की आयु में अगुम होता है। विवाह भी इसी आयु में होता है। विद्या तथा विज्ञान का उत्तम लाभ मिलता है। सम्पूर्ण जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होता है। यह (जन्मदत्त) कठिनी, मान-धन का दीर्घकालीन सुख प्राप्त करने वाला तथा अपने ऐश्वर्य की निराला वृद्धि करने वाला होता है। मित्रों की निष्ठा कम ही रहती है। इसके जीवन के २२, २५, २७, ३२, ४१, ४५, ४८, ५२ तथा ५८ वें वर्ष उत्तमिकाएँ सिद्ध होती हैं। वर्ष ८, १५, ३३ तथा ४६ शारीरिक पीड़ा काफ़ी होते हैं। आयु मध्यम होती है।

(८११) - इस जलकुण्डली का स्वामी कुद लौं लेंगे (ग) तथा दृढ़ शरीर का रख विवेकहीन चिन्ता का होता है। यह क्रोध से भूला अन्धकारी कार्य भी का डालता है। इसका आशेष मध्य मास में या से किसी दूवर्ती स्थान में होता है। यह सेवा-कार्य (नौकरी) द्वारा जीविके को पार्जन में सफल होता है। यह कृपण तथा व्याजवाक्य प्रवृत्ति का होता है तथा भवत-निर्णय, भूमि एवं लोकरी के व्यवसाय द्वारा लाभ प्राप्त करने वाला होता है। विष्णु का पक्षेष्ट लाभ होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु में अपना कुद को विलम्ब से होता है। पत्नी कफ-रोगिणी तथा कर्कशा स्वभाव की होती है। सन्तानों की संख्या अधिक होने हुए भी उनसे मनेपुङ्गव सुख-मरणों की मिलना। २५, २८, ३० तथा ३५ के वर्ष आशेषकति का एक सिद्ध होते हैं, यानु यह जिनकी उक्ति काग-चाहता है, उन्नी नहीं का वाल। इसकी आयु ५५ से ६५ वर्ष के मध्य होती है।

(८१२) - इस जलकुण्डली वाला प्राणी सामान्य कद-काठी का, छुड़-छुट्टी, कृपण, लदेहाचर-जीन वाला तथा भीड़-स्वभाव का होता है। यह भ्रमण में लचि रखने वाला, यात्रा-काय करने अपना नौकरी करने वाला, वाक्पटु, विद्वान्, विष्णु-बुद्धि से पूर्ण, धार्मिक कार्य में लचि रखने वाला, धनी तथा पेन-केन प्रकोण सम्पत्ति की अभिवृद्धि करने वाला होता है। यह यात्र-लाभ हेतु भूत खेलने में भी नहीं हिचकिचाता। यह मज्जमान तथा या-सिजे में अप-विता रखने वाला, कटुवाक्को को भी मज्जान के आवरण में लपेट का अंगों को अपमानित करने वाला, राजकीय सेवा अपना किसी व्यवसाय द्वारा पक्षेष्ट धनोपार्जन करने वाला होता है। विवाह २४ से २६ वर्ष की आयु में होता है। विवाह के पोग होते हैं। दूसरी पत्नी से सुख मिलता है। ३५ वर्ष की आयु में आशेष होता है। ४०, ४२, ४५, ५०, ५५ तथा ५६ के वर्ष उक्ति दासक होते हैं।

भ०
सं०
३३३

कु०
२०

(८१३) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुम्हा, तेजस्वी, विज्ञा-सुहृद्, सम्पन्न एवं उमावशाली व्यवसाय का धर्म होता है। यह अल्पना समृद्धि, अनेक कार्यों को एक साथ सफलतापूर्वक करने वाला। स्व. कार्य-साधन हेतु धर्म तथा नीति की पालना न करे बल्कि तथा अपने लाभ के लिए निकट-वर्तियों से भी संबंध बनाकर का लेने वाला होता है। पालु यह जिसे अपना मान ले, उसके लिए सर्वस्व न्यौछावर करने को भी उत्सुक रहता है। यह अपने भाग्य का निर्णय स्वयं करता है तथा एक क्षेत्र में जो निर्णय पादा को लेने के बाद दूसरे क्षेत्र में स्वयं ही आगे बढ़ जाता है। यह उच्च दायित्व पूर्ण पदों या कार्य करने में सफल होता है। इसे नीचा दिवाने की इच्छा एवंगे बाला। मंद जी नीचा होता है। विज्ञा तथा सन्तान का प्रत्येक सुख मिलता है। पत्नी सुहृद् तथा सुखवती मिलती है। विवाह २२ वर्ष की आयु में अथवा २५ वर्ष में होता है। अधिकतम आयु ६५ वर्ष की होती है।

(८१४) - इस जन्म कुण्डली वाला मनुष्य लम्बे शरीर का, अल्पना बलवान्, उदात्त-चित्त, दानी प्रत्येकरी तथा बाल्यावस्था से ही धर्म-प्रवर्ति से सम्बन्ध होता है। इसे माना-दिना का उत्तम सुख मिलता है। धैर्य-व्यवसाय का। इसे लाभ होता है, तथापि यह नवीन कार्य-प्रारम्भ करता है अपना किसी प्रकार पद या नियुक्ति को। दूर देश में विवास करना हुआ करनेवाले का होता है। विज्ञा का कैल लाभ होता है। विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। सन्तानें कई होती हैं तथा अनेक बच्चे सम्पन्न भी होते हैं। मन्त्र के उपलब्ध होने पर पुत्र का लाभ होता है। इसे आयु तथा रोग का भय कम होता है, तथापि वृद्धावस्था में वात रोग होता है। यह विज्ञा के प्रति आस्थावान् होता है तथा धार्मिक कर्मों में ध्यान रखता है। आयु २५ वर्ष की आयु में होता है तथा लगभग ६० वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(६१५) - इस जमाद, चक्रे में उत्पन्न मुख्य सौंसे रंग का, उन्नत कद वाला, सुंदर तथा समोहक व्यक्ति वाला होता है। यह अपने पुरुषार्थ के बल पर उन्नति करता है। इसे पैरक-व्यवसाय की उपलब्धि होती है तथा यह अनेक प्रकार के दुस्सहसिक कार्यों के करता हुआ बहुत धन कमाता है। राजकीय-सेवा में संलग्न रहकर भी उच्च पद प्राप्त कर सकता है। इसका विवाह फेरव लाभ होता है तथा विवाह लगभग २० वर्ष की आयु में ही हो जाता है। इसके एकधिक पुत्र होते हैं और उनसे सुख भी मिलता है। पत्नी सुंदरी, सुशैल, अत्यंत आकर्षक व्यक्तिता वाली व. रुचिका। पुत्रवर्धन करने वाली होती है, यह पति के अनेक पुत्रों का दाता है तथा यह पति का गुण हठ से अलग-हरी से भी संबंध रखता है। मांगेद २५ से २७ वर्ष की आयु में होता है जीवन के ३०, ३५ तथा ३८ के वर्ष महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। यह लगभग ७० वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(६१६) - इस जमाद कुण्डली का अधिपति मन्त्रे वाला वाला, संकुचित ललाट वाला, छोटी साँको वाला तथा मध्यम कद का होता है। यह स्वैर भावापन, अथु-व्यापारों द्वारा परीक्षित तथा विदेशी स्वभाव का होता है। विवाह का लाभ सामान्य होता है। विवाह २२ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी तीव्र स्वभाव की तथा पति के अनेक निपटारा करने वाली होती है। यह व्यक्ति मनोमानी तथा सबसे अलग पृथक् होता है। यह पैरक-धन की रक्षा करने के लिये रहता और उसकी अभिवृद्धि के लिए उपलब्धील बना रहता है। यह चौकी, खेतरांग की लाल, ओं, भोग-विलास की सामग्री तथा आभूषण-उपहार की चीजों के व्यवसाय से लाभ उठाता है। यह हठी-सेवक, धन-संग्रही, पुत्र-सुखीवान, सुखी, स्वस्थ तथा दीर्घायु होता है। इसका मांगेद २५ वर्ष के भी हो जाता है तथा कभी अधिक लक्ष्य चिन्तित नहीं होता।

(६१७) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुदा, आकर्षक कवित्व सम्पन्न, ईश्वर की सेवा कथम कर वाला होगा। यह विद्वान्, गुणवान्, धनी, ऐश्वर्य सम्पन्न, अस्मिता एवं प्रभावशाली नरक समाज में सम्मानित भी होगा। यह राजकीय सेवा के उच्च पद प्राप्त करेगा है तथा इसके अपने भी अनेक सेवक होंगे। यह बाहरी लोगों को सुखदायक तथा अपने के दुःख उदासीन रहता है। यह कवित्व युक्त कार्य करेगा। यह होगा तथा अविद्य के प्रभाव में इसके अनुमान सभी गूँठे हैं। विवाह २०-२२ वर्ष की आयु में होगा। पानु पत्नी की आयु अधिक नहीं होगी। यह चतुः, मनुष्यवर्गी तथा अकल्पिते वाली होगी, न्यायि धर्म की प्रसन्नता दायक कार्य में संलग्न करी होगी। इसका मरणोदय २५ वर्ष की आयु में होगा तथा जीवन धन-धान्य पूर्ण बनाएगा। आयु ७० वर्ष से अधिक होगी है तथा कभी आकस्मिक चोट लगना संभव है।

(६१८) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुदा, आकर्षक कवित्व वाला, विद्वान्, गुणवान्, शत्रुनाशक, मनुष्य, न्यायि मूर्ख बोलने में भी न हिचकने वाला तथा युद्ध में विजय पाने वाला होगा। यह वस्तु-वस्तुओं से सम्पन्न, किसी जग-हरी के प्रेम प्रभाव में धन-धन करने वाला तथा सुदृढ़ पत्नी वाला होगा। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक होगा। ३० वर्ष की आयु से मरणोदय होगा। ३५, ४०, ४२ तथा ४७ वर्ष की आयु में विशेष उन्नति करेगा। बाहरी लोगों की सहायता से इसके कार्य-कारणों की विशेष वृद्धि होगी। यह विद्या-वृद्धि के उद्योग में निरन्तर लग्न उठाता रहता है। पुत्रों तथा पत्नी से सुखी रहता है। कभी आकस्मिक चोट भी लग सकती है। यह ७० से ८० वर्ष तक की आयु प्राप्त करेगा तथा इसकी मृत्यु भी आकस्मिक रूप से ही होगी।

(८१६) - इस जन्म कुण्डली वाला मुख्य बुद्धि स्वाम वर्ण, पुष्ट शरीर, आकर्षक व्यक्तित्व हल्ला, गुणकार तथा काला - कौशल एवं पारिवर्तिक कार्यों का जगका होता है। यह अपनी योग्यता एवं प्रीति के बल पर उच्च धन का उपार्जन करने वाला तथा कौटुम्बिक - धन से भी धनी हो होगा मुकी जीवन बिताने वाला तथा कुटुम्ब का पालन - पोषण करने वाला होता है। यह अच्छे विद्वान् होता है। विवाह २२-२६ वर्ष की आयु तक हो जाना है। पत्नी सुविधियां एवं पुष्ट होती है तथापि इसे पत्नी-सुख विशेष मात्रा में नहीं मिलता। पुत्रों से इसे सामान्य सुख मिलता है। इसकी आयवनी के अनेक लाभ होते हैं, जिसके कारण इसे कभी भी धन की कमी का अनुभव नहीं होता। किसी राजकीय परिष्ठान की सेवा अच्छा मिलाना है भी इसे बहुत लाभ होता है। इसकी आयु ७० वर्ष से अधिक नहीं होती। इसका सम्पूर्ण जीवन सुख से बीतता है।

(८२०) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी बुद्धि, ज्ञान, सम्पन्न क्रम तथा शरीर वाला एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। यह काष्ण - हंगीर में अभिरुचि रखने वाला, शिष्टाचार अच्छा लेखक होता है। पारिवर्तिक कार्यों में भी इसकी विशेष रुचि रहती है। इसे विद्या का उत्तम लाभ होता है। विवाह २३ वर्ष की आयु में हो जाना है नुपान्त आशोध होता है। यह पदवीक पदों में विवाह का उत्कृष्ट काल है तथा किसी पारिवर्तिक संगठन के प्रधान पद पर प्रतिष्ठित होता है। लगभग ४० वर्ष की आयु में इसे गुप्त अथवा आकर्षक - धन की प्राप्ति होती है। इसका जीवन सम्पन्न होता है तथा सभी परिवारीयों इसे सम्मान भी देते हैं, तथापि गुप्त-राशु इसे नीचा दिखाने का प्रयत्न करते रहते हैं, जिससे इसे सफलता नहीं मिल पाती। इसे सन्तान का प्राप्ति अवसर रहता है। भौ, यह धन के प्राप्ति काल तथा सम्पूर्ण जीवन सुख से बीतता है।

(ई२१) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति उच्च मन्त्रक, लम्बे शरीर वाला, गौरवर्ण तथा आकर्षक के व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। यह काल ऊँ लारिल का जेसी, गुणवार, विद्वान् तथा पशुपती होता है। यह किसी संगठन का उदात्त पद प्राप्त करता है तथा इसे देश के अतिथी तथा विदेशों से भी लाभ प्राप्त होता है। यह व्यक्ति कभी सन्तुष्ट नहीं होता ऊँ लिये कुछ-त-कुछ काल ही रहता है। अपने उच्चतम शील उच्छृति के कारण इसे कभी धन की कमी नहीं होती। यह अधिक बोलने वाला, अपने-तक के लक्ष्य दूसरों से हटाने मानने वाला, पनीवाल का पोषण-कर्ता, उदात्त, तथापि कुछ स्वभाव का होता है। इसका विवाह २०-२२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी से पूर्ण सुख मिलता है। आ-पोषण विवाह के बाद होता है। पुत्रों से सुख मिलता है। जीवन के ३२, ४०, ४६ तथा ५२ के वर्ष उच्छृति का एक रहते हैं। आयु दीर्घ होती है।

(टिप्पणी) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी बुद्ध चिह्नवाण, साधारणतः आकर्षक, उच्च विचारक एवं मनुष्यी होता है। यह महत्वाकांक्षी तथा अल्प लोगों का हिंस्र भी होता है, तथापि अपने दिनों को कभी बर्बाद नहीं पहुँचने देता। यह ऐसे तत्वों का भी प्रोत्साहन करता है, जो इसके निम्न स्तर के होते हैं। विष्णु का प्रवेश लग्न होता है। विवाह 22 से 24 वर्ष की आयु में हो जाता है। अग्रे 24 वर्ष की आयु के बाद होता है। आयु के 20, 34 तथा 40 वर्ष विशेष उन्नति काफ़ी रहते हैं। पत्नी मनेत्रकुला तथा सुक्री होती है तथापि यह 7-8 बच्चों की माँ आकर्षित रहता है तथा भोग-विलास में विशेष रुचि रखता है। इसे एक पुत्र से पुत्र मिलता है। यह राजासुत तथा तथा भग्न का चक्री होता है। इसे अपने बन्धु-बान्धवों से काट छांट होता है, वे इसके डेहरावते हैं। आयु 60 वर्ष के लगभग होती है।

(६२३) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी बुद्ध, एवं जमाव शाली व्यवहार सम्पन्न, गुणवान्, बुद्धिमान् तथा सबका प्रिय होता है। यह अनेक प्रकार से अपने जमाव की वृद्धि करने में चतुर तथा उच्च महत्वाकांक्षियों वाला होता है। इसे कैटुक - सप्तमि कम मिलानी है तथा यह स्वर्ण कल्पिका सप्तमि का उपासक होता है। यह राजकीय कार्यों से जीविकोपार्जन करता है। विष्णु का नाम प्रफेरे होता है। विवाह २२-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा लाल स्वभाव की होती है। वह जीवा या धन का लाल करनेवाली तथा जीविकीयों का भाव-समान करनेवाली होती है। पत्नी के नाम से व्यापार करने पर इसे विशेष लाभ होता है। इसका मरण २२ वर्ष की आयु के बाद होता है। आकर्षक धन-लाभ के अवसर भी जीवन में आते हैं, यह प्रथम पुत्र के द्वारा से वंशान्तर होता है तथा सप्तमपुत्र प्राप्ति करता है।

(६२४) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति बुद्ध, बुद्धील, विनी, धर्मता, हानी, साहसी, गुणी तथा धारी होता है। विष्णु का प्रफेरे लाभ होता है। विवाह २० वर्ष की आयु में ही होता है। पत्नी मनीषिनी, सुन्दरी तथा जमावशालिनी होती है। इसके प्रथम पुत्र की दुःख प्राप्ति होता है, जिसके कारण यह जातक दुःखी बना रहता है। पुत्री विदुषी, सुजेष्ठ तथा कलावता होती है। अपने द्वारा की उपलब्धि होती है। इसे लाभ सम्बन्धी वस्तुओं अथवा कार्य से विशेष लाभ होता है। मातृमरण ३५ वर्ष की आयु में होता है तथा सम्पूर्ण जीवन धारी बना रहता है। कभी-कभी कम एवं वायु-विका का प्रदुर्भाग्य है तथा कि कुल मिलाकर शरीर अस्वस्थ बना रहता है। धर्म-पत्नी - दोनों ही स्वच्छ रहने पर दीर्घजीवन प्राप्त करते हैं। जीवन के २८, ३९, ४७, ४८, ५२, ५७ तथा ६० के वर्ष उल्लेखनीय काल बिंदु होते हैं।

(६२५) - इस जगत्कुण्डली का स्वामी जीवन, सुख, आर्थिक सम्पत्ति वाला तथा सुखी जीवन बिताते वाला होता है। विवाह का प्रथम काम होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु होता है, पल्लु विवाह से पूर्व बग-बग रुकावटें भी आती हैं। पत्नी सुख तथा उदात्त होने हुए भी मूर्खों जैसी बातें करती है तथा समझ-असमझ का ध्यान न रख कर बातचीत को बिगाड़ती रहती है। इसका सम्पत्ति ३५ से ४० वर्ष की आयु में होता है। यह ऊँचा है जिसका सम्पत्ति दिवाली देता है, पक्षों में उतार चमी होता नहीं है, फिर भी इसकी आर्थिक-स्थिति मध्यम तथा सुखोपजनक बनती है। २५ वर्ष की आयु में चलाता रहता है, पक्षों कुछ बचाने ही हो जाती। २५ से ३० वर्ष की आयु में आर्थिक-हानि भी उठानी पड़ती है। इसे अपनी पुत्रसन्तान का दुःख भी उठाना पड़ता है। अन्य सन्तानों से सुखमिलता है। आयु ७० वर्ष से अधिक की प्राप्त होती है।

(६२६) - इस जगत्कुण्डली का अधिपति ऊँचे कद तथा सुख, शरीरवाला, विद्वान्, गुणवान् तथा अल्पना अल्पवलायी होता है। यह साकारी नौकरी से जीविकोपार्जन करता है। यह उदात्त होने के साथ ही कोपी तथा जुआ खेलने का शौकीन होता है। इसे पक्ष-मित्रों में अधिक रुचि रहती है, जिसके कारण अपभ्रंश का भागी बनता तथा धन-हानि उठाना है। इसका विवाह दोपहर में ही होता है तथा सन्तानों भी शीघ्र होती है। इसका पुत्र सामान्य स्थिति का है तथा पुत्री माता के पक्ष में कोलने वाली एक पिता के कष्ट को बढ़ाने वाली होती है। इसकी पत्नी महत्वाकांक्षिणी, पल्लु अधिपवादिनी एवं मूर्ख होती है। इसका सम्पत्ति ३५, ४२ तथा ४५ से वर्ष उत्कर्षकाक सिद्ध होता है। आयु ६५ से ८० वर्ष के बीच होती है।

(८२७) - इस जन्म कुण्डली वाला जातक सुन्दर, स्वस्थ, गौरवर्ण, ऊँचे कद का, साठवीं नका हस्तवाच होता है। यह धार्मिकी का कुशल हाथ होने के बावजूद भी उससे अधिक लाभ नहीं उठा जाता। यह किसी सकाराती पद पर उल्लिखित होकर जीविकोपार्जन करता है। इसका भाग्य उत्तम होने दुष्प्रती प्रचल नहीं हो पाता, क्योंकि यह आकस्मिक रूप से ऐसे कार्य का बैठता है, जो अच्छे नहीं माने जाते। धन का अधिक लाभ होने दुष्प्रती यह सामान्य स्तर का जीवन व्यतीत करता है, विद्या का उत्तम लाभ होता है। विवाह २७-२८ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री से इसे सुख नहीं मिलता। पहली पुत्र-संतान मृत्यु को जानती है। इसका भाग्यदण्ड ३५ से ४५ वर्ष की अवधि में होता है। यह कभी ईश्वर या अगाध सद्भा एवं विश्वास रावता का कभी उल्टी निन्दा करने लगता है। इसकी मृत्यु ७० वर्ष के लगभग होती है।

(८२८) - इस जन्म कुण्डली वाला जातक सुन्दर स्वरूपवाला, लम्बे बाली वाला, बुद्धिमान, पंडित तथा कोपी होता है। यह नीच लोगों से सम्पर्क रावने वाला, लुका छेले में हचिवाच, नैतिक तथा ऊँचेरिक्त - हा उका के कार्यों से धन-शक्ति के लिए उपानशील तथा कनेक मिलने से संबंध रावने वाला होता है। इसका विवाह बड़ी आयु में, बड़ी कठिनाई से होता है अथवा कि होता ही नहीं है। विवाह हो जाने पर यह स्त्री की ओर से दुाकी रहता है। विवाह हो जाने पर भी प-मिलने से संबंध रहता है। इस जीवानी जने से उठेका तथा बाहरी लोगों से आशीपता प्राप्त होती है, अतः यह अथः पदोस में ही निवास करता है। इसकी आर्थिक-स्थिति मध्यम रहती है। संतान-सुख भी अच्छा नहीं रहता। ३५ वर्ष की आयु से इसे जीवनम किमी-न किमी संकर का सामना करना पड़ता है। इसकी मृत्यु लगभग ७० वर्ष की आयु में या के बाद होती है।

(६२६) - इस जन्मकुण्डली वाला जातक सुन्दर, स्वस्थ, गौ/वर्ण, चंचल चिन्ता का, मनस्वी तथा महत्वाकांक्षी होता है। यह वाक्पटु, लेखन में रुचि लेने वाला तथा सूच-विकेक डाए चनेपा-जि कोने वाला होता है। यह राजकीय कार्यों के द्वारा चनेपा-जि करता है एवं सुखी तथा ऐश्वर्यशाली जीवन बिताता है। यह क्रोध-रहित, अपने अन्तर्गते सबको समुद्र रावेन वाला, राजसे उच्चपद पाने वाला तथा अल्प हानों तथा उपायों से भी सम्पत्ति की अतिवृद्धि कोने वाला होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में हो जाता है तथा दो विवाह का योग भी लगता है। पत्नी मंगल कुला मिलती है। सन्तानों से अल्प सुख मिलता है। यह देश तथा प्रदेश में महत्वपूर्ण कार्यों का सम्पादन करता है। स्त्री-पक्ष तथा सन्तान पक्ष की ओर से लाभ-कार्य प्राप्त होता रहता है। सन्तानों की संख्या से ही जीवित रह पाती है। यह लगभग ६५ वर्ष के लगभग जीवित रहता है।

(६३०) - इस जन्मकुण्डली वाला जातक लम्बे शरीर, चमकीली आँखों वाला, स्वस्थ तथा आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। यह सुशील, चमत्कार, हानी, दुःख में भी दुःख का अनुभव करने कोने वाला, राजकीय पद पाने वाला एवं प्रदेशवासी होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में हो जाता है, पत्नी सुशील एवं अल्प सुख मिलती है। अतः इसे दाम्पत्य-सुख प्राप्त नहीं हो पाता। यह पक्ष-सिद्धों से भी सम्बन्ध राखता है। सन्तान-सुख भी अल्प ही रहता है। इसकी कर्मिक-स्थिति उत्तम रहती है। इसे सुन्दर तथा रमणीय स्त्रियों के रहने के अवसर प्राप्त होते रहते हैं। ३०, ३५, ३७, ४२ तथा ४५ वर्ष की आयु के उच्च पद की उपलब्धि होती है। इसका सम्पादन ३२ वर्ष की आयु के बाद होता है। बारी-सावधान नीति राखता रहता है तथा आयु ७० से ८० वर्ष के मध्य होती है।

(८३१) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुखा स्वर्णनाभ, उदात्त-हृदय, सेवक स्वभाव का, फल उम्मी
अपने माता-पिता का भक्त तथा उनके पुत्र स्नेह पात्रे वाला, पत्नी का दालन-पोषण
करे वाला तथा अत्यन्त खलाशी होता है। विवाह का उत्तम लाभ होता है। इसका विवाह किसी
परिचित-कुल में बड़ी धूम-धाम के साथ होता है। पत्नी कुछ स्थूल शरीरवाली, पानु पाम
सुन्दरी, बहुत बुद्धिमती एवं गुणवती होती है। इसे पुत्र तथा पुत्रिके का भी पूरा दुःख प्राप्त
होता है। पुत्रागो को छोटी-मोटी बीमारियाँ होती रहती हैं, पानु कोई विशेष हानि नहीं होती।
यह किसी राजकीय पद या परिचित होकर विपुल धन तथा पशु-अधिति का होता है। इसे बिरा
जिद्वार के ही पक्षेष्ट धन-लाभ होता रहता है तथा पीकल सुख पूर्वक व्यतीत होता है। ३५ वर्ष की
आयु के बाद इसका विशेष भाग्योदय होता है। पूर्ण ६० वर्ष के लगभग होती है।

(८३२) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुखा, पिपदशी, कुछ स्थूलकाय तथा लम्बे कद का होता है,
यह अपनी सम्पत्ति का अधिकांश अपने करीबारी-जनों का स्वर्ण काता है, सोनी अपने चित्त में
सुखी नहीं रह पाता। यह अकाल ही अकाल प्राप्ति काता है, तथापि परम धार्मिक एवं ईश्वर
भक्त होता है। यह गुणवान् तथा विद्वान् होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में बड़ी धूम
धाम के साथ होता है तथा भाग्योदय भी विवाह के बाद होते लगता है। इसकी पत्नी मृदु-
भाषिणी, सुखा, स्वस्थ तथा आहा धालिनी होती है। इसके जीवन के २५, २७, ३१ तथा ४० के
वर्ष महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। पुत्रागो से लघुचित्त सुख प्राप्त होता है। यह जानक कनी-कनी
अकालीन कार्य को भी कर लेता है। इसका चित्त प्रायः अकाल बन रहा होता है। इसकी
पूर्ण ६५ वर्ष के कुछ अधिक ही होती है।

(८३३) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी स्वल्प एवं लुब्ध शरीर का, कोमल अन्तः काष्ठ काला तथा मधु-मवहा करेवाला होता है। इसे विष्णु का प्रथम लाभ प्राप्त होता है। विवाह २०-२२ वर्ष की आयु तक होता है तथा सन्तान का लाभ भी शीघ्र होता है। पुत्र जन्म के बाद इसका भाग्योदय होता है तथा सुख की प्राप्ति होती है। इसके पूर्व की पीढ़ियाँ विषम रहती हैं। यह वायुको के अन्तःकाष्ठ काला तथा उन्हें गण दासक रहता है, तथापि यह स्त्री सन्तान की कार्य में सहाय, सुख शरीर वाला तथा सुख-हीन होता है। इसके स्वयं के उपलब्ध अमूल्य रहते हैं, अतः यह दूसरे के सहयोग से उत्तरी तथा अपने भाग्य का निर्माण करता है। पुत्र के बड़े हो जाने पर उसके काष्ठ पक्ष तथा धन का लाभ प्राप्त होता है। पहली सेमी सुख प्राप्त होता है। यह लगभग ६२ वर्ष की आयु तक सुख पूर्वक जीवन व्यतीत करता है।

(८३४) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य सुदृढ़, स्वरूपवान्, विद्वान्, कलाओं का ह्वाता तथा अन्य अनेक गुणों से युक्त होता है। यह धीर, गम्भीर, जननायक, चित्तान्वीर्य तथा दृष्टिमान् रहने वाला होता है। विष्णु का लाभ उत्तम होता है। किसी समय अन्तःकाष्ठ के दिग्गो जाने का प्रस्ताव इस जीवन में बना रहता है। विवाह २५ वर्ष की आयु तक होता है। पत्नी पत्नी का स्वाभिमानी नहीं रहता, अतः उसके काष्ठ से भी दुःखी रहना पड़ता है। पुत्र-प्राप्ति का योग भी विलम्ब से बनता है। माता-पिता के जीवन काल में ही इसका भाग्योदय होता है तथा वैदिक-सम्पत्ति द्वारा इसे अपने कार्य में बहुत सहायता मिलती है। यह विविध प्रकार के कार्य करता है, जिसमें कुछ गैरकारी भी हो सकते हैं, तथापि इसे सहायक प्रविष्टि प्राप्त होती है। जीवन के १५, १७, २०, २५ तथा ३५ वर्ष के लाभ प्राप्त रहते हैं। इसकी मृत्यु किसी स्त्री के काष्ठ होती है।

(८३५) - इस जगत्कुण्डली का बचायी भी, वी, पाकुमी, सुम्हा, बलवान्, एही नका दूसरे को
दुःख देने वाला भी होगा। पैरु - स्थान में सब उका के सुख उपलब्ध रहने दुख भी इसे किसी
दूसरी जगह में जाकर निवास करना पड़ता है २५-२६ वर्ष की आयु में यह अपना का दोर
का प्रदेश में चला जाता है वही इसका भोजन भी होता है। इसके कारण भाग को कष्ट
प्राप्त होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। एही लग्न बनी होती है, उसकी बीम
भी नका पाणीवाक - निषेध के कारण इसका चित्त अशान्त बना रहता है। काकी सप्तमक
प्रदेश में रहने के बाद यह अपने का लौट आता है और वही उत्तरी भी जाता है। एही का
स्थान अधिक दिनों तक नहीं रहता। यह विष्णुशक्ति का धनी नका पौत्रवर्णा के बाद उत्तरी प्रा
कोगे वाला होता है। जीवन के २० वर्षा २० के वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। आयु ६५ वर्ष की होती है।

(८३६) - इस जगत्कुण्डली वाला भाग्य सुम्हा, स्वप्न नका दुःखारी वाला होता है। इसे कोयसी
आजाता है। पुत्रावेलने में भी इसकी रुचि होती है। इसे पुत्र में होने का लाभ भी होता है, हानि
नहीं उठानी पड़ती। यह भोग-विहार में लिपट होकर अपने धन को कुकर्मों में खर्च
करता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुखीला, नीरस, संचयी नका
पति को सुख देने वाली होती है। वह का की सुखी राखती है नका अनेक धर्मों की सम्पत्ति
में लहापक होती है। यह विवाहोपास को नवीन कार्य करता है और उसे चौच-सात वर्ष
बद काको किसी अन्य स्थान का लेजना करता है। ३० से ३५ वर्ष की आयु तक जीवन हँसक
पूर्ण बना रहता है, लक्ष्मण सुख प्राप्त होते लगता है नका भाग्य की अतिवृद्धि होती है। जीवन
के ३०, ४२, ४५ तथा ५० के वर्ष महत्वपूर्ण बिंदु होते हैं। आयु ६५ वर्ष से अधिक होती है।

(८३७) - इस जन्म कुण्डली वाला व्यक्ति मध्यम कद तथा इकहरे बारीक का, कुछ काले रंग तथा कुंघाले के शों वाला, धर्म-कर्म को न मानने वाला। आचारहीन तथा अपनी मान्यताओं के अनुसार ही प्रत्येक कर्म के औचित्य को निर्धारित करने वाला होता है। यह राज्य द्वारा आजीविका प्राप्त करता है तथा उचित-अनुचित का विचार न करके धन-संचय हेतु उद्यमशील बना रहता है। इसके कारण माता-पिता को कष्ट प्राप्त होता है तथापि माता-पिता इसके प्रति मोहग्रस्त ही बने रहते हैं। इसका विवाह २६-२७ वर्ष की आयु तक होता है तथा प्रथम पुत्र के द्वारा ही वंशान्तर रहता है। इसकी पत्नी रुग्ण बनी रहती है, जिसके कारण इसे भी कष्ट उठाना पड़ता है। इसका भाग्योदय २० वर्ष की आयु से प्राप्त हो जाता है। इसी सुदृढ़, इज्जतवर्णी, अकर्कषक पान्थ धृष्ट बुद्धि होती है। आर्थिक-स्थिति सामान्य रहती है। आयु दीर्घ प्राप्त होती है।

(८३८) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी कुछ दबे हुए रंग, मध्यम कद वाला, सुदा, सुवर्चिपूर्ण तथा शैल वस्त्र धारण करने वाला होता है। यह अपने माता-पिता को सुख नहीं देता, पान्थ इसे स्वर्ण माता-पिता से सुख-सहयोग प्राप्त होता रहता है। वे इसकी धन आदि से सह-पता करते रहते हैं। विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुदृढ़ तथा मनेषुद्धता मिलती है। उससे सुख-सहयोग मिलता है। भाग्योदय २६ वर्ष की आयु से होता है तथा ४० वर्ष की आयु तक निरन्तर उत्कर्ष बना रहता है। इस अवधि में यह अल्पधिक सुख प्राप्त करता है तथा वृद्धावस्था तक के लिए सम्यक् संयत्ति का के राव लेता है। कभी-कभी यह सगरी जैसे काम भी करता है, तथापि समाज के मान-जतिता बनी रहती है। यह आजीवन सुखी बना रहता है तथा लगभग ७० वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(६३६) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी लम्बे कद वाला, खाल, सुन्दर एक आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। यह छोटे कार्य अपने ही सुख के लिए करता है। इसके मनोपार्जन के अनेक साधन होते हैं। साहस पूर्ण कार्य द्वारा यह अधिक सम्पत्ति अर्जित करता है। इसका विवाह लगभग २०-२२ वर्ष की आयु में इसके निजी उपलब्ध तथा चेच्छा से होता है। पत्नी सुन्दरी, मनोवनी, मधुमाषिणी, आकर्षक व्यक्तित्व वाली तथा ऊँच-नीच का विचार रखने वाली होती है। इस जन्मक का भाग्योदय भी अपनी पत्नी के सहयोग से अपना उसके नाम पर कार्य करने से होता है। परार्थ-स्त्री से भी इसे विशेष लाभ होगा संभव है। सन्तान के सुख मिलता है। भाग्योदय २६ वर्ष की आयु से होता है। ३५, ४० तथा ४३ के वर्ष के नारकीय मोड़ आते हैं। यों, इसका सम्पूर्ण जीवन शायद सुख से बीताता है। आयु ७० वर्ष से अधिक प्राप्त करता है।

(६४०) - इस जन्म कुण्डली वाला मधुर सुन्दर, खाल, उच्चरी, निष्ठा कार्य करने वाला तथा अपने पराक्रम से मनोपार्जन करने वाला होता है। यह जुआ खेलने का शौकीन होता है तथा उसके हाथे पायी संपत्ति बना रहता है। यह सड़े आदि से भी धन कमाता है। भू-मालिक के इसे कोई हिचक नहीं होती। यह अपने धन का लोभी होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मधुरकुला मिलती है। सामान्यतः इसकी सन्तानें धन के प्राप्ति होती हैं। उपलब्ध करने पर एक-दो सन्तानें जीवित बच जाती हैं। इसका भाग्योदय २५ वर्ष की आयु के बाद होता है। लुपान्त कोई कठिनाई नहीं रहती। यह पण्य धन कमाता है तथा सुखका होने के कारण अपनी वाणी से लोगों को प्रभावित कर आर्थिक दमन करने भी अर्जित करता है। इसकी अधिकतम आयु ७० वर्ष होती है।

(६४१) - इस जन्म कुण्डली वाला मृगशिरा सुका, ऊँचे ऊँचे का, मधु-पुष्कान पुष्क नेहरे काल तथा आकर्षक भावित्व का धारी होता है। यह आर्तिष्ठ, जिह्वादी, गुणवान्, विद्वान् तथा दयालु होता है। इसे कोष-जल्दी आता है और जल्दी ही वह शान्त भी हो जाता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु तक हो जाता है, लघुपान्त ही इसका सम्बोधन होता है। इसकी पत्नी कनिष्ठ तथा आकाङ्क्षिणी होती है। ३० वर्ष की आयु से इसकी विशेष उन्नति होती है। (विकाशेन शान्त यह बोद्धा - गमन करता है और वही 'उन्मुक्त' तथा धन अर्जित करता है। इसकी सन्तान सन्तोषागरे पूर्ण होती है। सन्तान - सुख उत्तम रहता है। शक्ति - सिद्धांत, अधिकाय - सम्मान, पुत्र, मान - सम्मान तथा ऐश्वर्य। जमी की खूब उपलब्धि होती है। यह लम्बी - लम्बी यात्राएं भी करता है। इसकी आयु ७४ वर्ष से अधिक होती है।

(६४२) - इस जन्म कुण्डली का रचामी उन्नत लालार तथा लम्बे कद वाला, परिश्रमी, गुणवान्, विद्वान् तथा अपने लुका नेत्रों द्वारा दूसरों का मन जीत लेने वाला होता है। यह चिन्ता के कृपण तथा धन-संचयी प्रवृत्ति का होता है, धन अपने सुकोषमें (बैंक की काफ़ी में धन बचि करे में कष्ट नहीं करता। इसका विवाह २०-२२ वर्ष की आयु में हो जाता है, जोर में पत्नी से खूब प्यार है तथा सुख प्राप्त होता है, पञ्च कुटुम्ब सम्पन्न बाद उसके मन - पुत्र हो जाने के कारण दुःखी रहता है। यह अग्निष्ठ - काल में हचि राखे वाला तथा अपने लाभ के हेतु अनेक कार्य करे वाला होता है। यह पढ़ने - लिखने का शौकीन, दूरदर्शी, कोषी तथा कभी-कभी उदात्त उद्विग्न करे वाला भी होता है। इसके जीवन के २४, २२, २४, २४ तथा ३५ के वर्ष विशेष उन्नति का कर लेते हैं (आयु ७५ वर्ष होती है।

(८४३) - इस जग कुण्डली का अधिपति लम्बे कद तथा रुढ़ शरीर वाला, आकर्षक व्यक्ति-
त्व सम्पन्न, मित्रों को सहज ही आकर्षित करने वाला, विद्वान्, बुद्धिमान तथा
अनेक गुणों से युक्त होता है। यह अपने परिश्रम से अपनी कोटिबद्ध सम्पत्ति में वृद्धि करता
है। इसका विवाह लगभग २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा पति को सुख
देने वाली होती है। इसके मंगेदण में स्त्री का पूर्ण सहयोग रहता है। यह विवाहोप-
रान्त किसी भी नवीन कार्य को आरंभ करके पुष्टि सम्पत्ति उपार्जन करता है। सन्तान का
सुख उत्तम रहता है। शालीन विवाह में उच्च पद पर उन्नित होकर अपना नाम
उल्लेख द्वारा खूब ध्यान करता है। जीवन के ३०, ३२, ३८, ४२ तथा ५१ के वर्ष सुख एवं
उन्नति दायक होते हैं। इसकी आयु लगभग ८० वर्ष की होती है।

(८४४) - इस जग कुण्डली का स्वामी सुदृढ़ शरीर वाला, सुदृढ़, मज्जु-भावी, पौरुषी, सुशील,
धीर-चित्त, कुटुम्ब का पोषक तथा मित्र-हितैषी होता है। यह शैवाल-भक्ति अपना
देव पूजनादि में विश्वास न रखने पर अपने पुत्रार्थ या भोगों का करता है तथा वैतक-
सम्पत्ति में अपने परिश्रम से अधिक वृद्धि करता है। इसका विवाह २० से २२ वर्ष की
आयु में होता है। इसके पुत्र सुदृढ़, कल्याणकारी तथा पशु-वृद्धि करने वाले होते हैं।
इसकी आयु के २०, २५, २७, ३१ तथा ३८ के वर्ष विशेष उन्नति का करिन्द्र होते हैं। इन
वर्षों में यह पुष्टि प्राप्त तथा सम्मान उपार्जन करता है। यह पञ्चसंख्यी ज्ञानकारी
रखने वाला, व्यवसाय-कुशल तथा व्यवसाय में धृष्ट होता है। इसका शरीर प्रायः स्वास्थ्य
ही बना रहता है तथा लगभग ८० वर्ष की आयु तक यह जीवित रहता है।

(८४५) - इस जगत्कुण्डली का अधिपति सूर्य के लग्न लेखनी, बुध के लग्न सुक्लानका शुक्र के लग्न बिकान एवं नीलिह होता है। यह सारिल तथा ललित-कलाओं का धारा, अपने शत्रुओं को भी मोहित कालेने वाले काविलन है जयल, बुद्धिमान, काय-पुत्री तथा मधु-माकी होता है। यह जिस कार्य को भी करता है, उसीमें इसे धन का लाभ होता है। यह अपने कुटुम्बियों तथा मित्रों को सुवसायक तथा धनीजनों के बीच गौरवकामी एवं प्रभावित होता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु तक होता है। पत्नी सुकली तथा मनोरुचुला होती है। सन्तान सुख भी उत्पन्न होता है। इसकी आदले विचित्र होती है। यह भी बुधजन्म का पुनर्जन्मकाल का भी अन्तर्गत उदात्त बन जाता है। यह अनेक उल्लिखानों से सम्बद्ध अथवा उच्च राजकीय पद पर उल्लिखित होकर परमार्थ लाभ अर्जित करता है तथा ६० वर्ष की आयु पाता है।

(८४६) - इस जगत्कुण्डली का स्वामी सुक्ल, मेनेहावाणी वाला, विष्णु-बुद्धि में चुकीण, काय तथा सारिल का सर्वक एवं मर्मज्ञ, दुःसाहसिक कार्यों में रुचि लेने वाला, तथा अपने पालन की वृद्धि करने वाला होता है। अल लोग इसके गुणों से प्रभावित होकर उसका काले रहते हैं। इसकी अनेक कामगोष्ट अधूरी ही रह जाती हैं, क्योंकि उनके अनेक विघ्न आ जाते हैं। बाल्यावस्था में इसे किसी गहन बीमारी का सामना करना पड़ता है। बाल्य इसके बाद आजीवन स्वस्थ एवं नीरोग बना रहता है। विवाह २० वर्ष की आयु के आस-पास होता है। पत्नी तथा सन्तान का प्रत्येक सुख प्राप्त होता है। २४, ३० वर्ष की आयु में इसका मरणोदय होता है। स्त्री रुग्ण बनी रहती है। धन की निम्न वृद्धि होती रहती है। आयु-६५ से ७० वर्ष तक भी होती है।

(६४७) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी लम्बे (हुँचे कद का, रक्ता-गौरवर्ण, सूखे केशों वाला, छोटे
सिर तथा पैनी आँखों वाला रावें स्वभाव से रहस्यमय होता है। इसकी कार्यशैली अत्यन्त
होती है, तथापि वह अपने (उद्देश - लाभ के लिए सचेष्ट बना रहता है और उसे प्राप्त करने
ही दम लेता है। सामान्यतः उग्र स्वभाव का होता है, पर परिस्थिति के अनुकूल विनम्रता का
प्रदर्शन करने में भी प्रसन्न होता है। पानु वह अपने अपमान को कभी भूलता नहीं तथा इसका बदला
भी अवश्य लेता है। विष्णु का समुचित लाभ होता है। विवाह २० से २४ वर्ष की आयु के बीच
होता है। पत्नी मंगेयपूरा सुखी मिलती है, तथापि वह अन्तः हिंसे के प्रति भी अतृप्त बना रहता है,
सन्तानों से सुख मिलता है। भाग्योदय ३० तथा ३५ वर्ष की आयु में होता है तथा उत्तरी सीमा -
चौथे वर्ष अधिक उत्तरी काग - चला जाता है। पूर्णाष्टि ७० से ७० वर्ष के मध्य होती है।

(६४८) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुधा, हानी, मधुरभाषी, लम्बे कदवाला, गौरवर्ण तथा
अपने कार्यों का कुशलता पूर्वक समाधान करने वाला होता है। यह स्वभाव से कुपरा, जागीर
विपन्नता न राखने वाला तथा अल्पतः धनवान् होता है। स्वयं को निरर्थक समझने वाला
होता है। स्वभाव से उदात्त होता है पर कभी उदात्तता का प्रदर्शन नहीं करता। शिक्षा
मध्यम स्तर की उपलब्ध होती है। विवाह २० से २२ वर्ष की आयु में ही हो जाता है। संतान
जो से सुख प्राप्त होता है। यह दुर्भाग्यवश कार्यों में तब कुछ होस काके लक्ष्य प्राप्त करने का
उपलब्ध होता है। भाग्योदय ३५ वर्ष की आयु में होता है तथा ४८ वर्ष की आयु तक काफ़ी उत्तरी
काल होता है। आयु मध्यम होती है। वात रोग कदा सम्भवी बीमार होता रहता है। पूर्णाष्टि ७४ वर्ष
होसकती है। जीवन के ११, १७, २२, ३२, ३५, ४४, ४८, ५४, ५७, ६० तथा ६२ वर्ष लाभप्रद होते हैं।

(६४६) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुन्दर स्वरूपवान् बलवान्, मधुरभाषी, प्रभावशाली, योग्य, उन्नतलक्षण, पाठमी तथा कठिन परिश्रम करने वाला है जन्मी व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। इसे विभिन्न प्रकार के सुख प्राप्त होते रहते हैं। विद्या का लाभ उत्तम होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु तक होता है। पत्नी सुन्दरी, सज्जन, सुशीला तथा मंगलकुल मिलाती है। पत्नी का पूर्ण सहयोग प्राप्त कर यह जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उन्नति का लक्ष्य चला जाता है। संतानें सुन्दर तथा आहुताकारिणी होती हैं। इसे किसी उच्च राज्य पद का लाभ होता है तथा आर्थिक धन-लाभ की संभावना भी रहती है। पैतृक-धन भी प्राप्त होता है। अपने व्यवसाय द्वारा भी यह पर्याप्त धनोपार्जन करता है। भाग्योदय ३० वर्ष की आयु से होता है तथा जीवनम् उन्नति होती रहती है। आयु ७५ वर्ष है अधिपति होती है तथा वृद्धावस्था में सेर भी करे रहते हैं। ३५, ४८, ५२, ६० तथा ६३ के वर्ष के लक्षण हैं।

(६४७) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर शरीरवाला, सन्त चिन्त तथा सुशील स्वभाव का होता है। यह विलासी, सुन्दरी निम्नो का पित्र तथा भोगी होता है। यह सामान्य लोगों को भी सम्मान देता है तथा अपने उपकारी-स्वभाव के कारण सब का हित-साधन करता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक होता है। पत्नी तेजस्वी और गृहस्थ-निचालक में कुशला होती है। वह आलस्य से कटिनाली, कला के प्रति अनुरागिनी, धार्मिक-प्रवृत्ति की तथा अपनी चतुराई से सब का मन मोह लेने वाली होती है। वह पत्नी के वातावरण को आनन्दमय बनाये रखती है। संतानें भी उत्तम तथा आहुताकारिणी होती हैं। विद्या का यथेष्ट लाभ होता है। पारिवारिकों से स्नेहपूर्ण सम्बन्ध रहे रहते हैं। राज्य से सम्मान तथा सुख प्राप्त होता है। भाग्योदय २५ वर्ष की आयु से होता है तथा ४५ वर्ष तक आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ हो जाती है और आयु ६० वर्ष के लगभग ही रहती है। सम्मान यथेष्ट मिलता है।

(८५१) - इस जन्म कुण्डली वाला मनुष्य लम्बे काँची का, रक्त-गौरवर्ण, काले रूखे केशों वाला, अल्पता उमावशाली अविनाश सम्पन्न तथा उदार स्वभाव का होते हुए भी हठी प्रकृति का होता है। यह जातक अपना महत्वाकांक्षी होता है तथा बड़े-बड़े काम करने के लिए लालायित बना रहता है। विद्या का श्रेष्ठ लाभ होता है तथा सन्तान-सुख भी उत्तम रहता है। विवाह २० से २५ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी मनोरुक्ला, सुन्दरी तथा गुणवती होती है। वह पति को प्रत्येक कार्य में सहयोग प्रदान करती रहती है। स्वयं कला-कुशल न होते हुए भी प्रबन्ध-व्यवस्था में पटु होती है। इस जातक को बड़े भाई का सुख नहीं मिलता, छोटे भाइयों का मिलता है। पत्नी से प्रेम-संबंध टूट बना रहता है। भाग्योत्पत्ति ३५ वर्ष की आयु में होता है तथा जीवनभर भाग्य की अभिवृद्धि होती रहती है। यह देश-विदेश की यात्राओं का होता है। पैतृक-घन प्राप्त करता है तथा सुखपूर्ण दीर्घायु भोगी होता है।

(८५२) - इस जन्म कुण्डली वाला जातक सुन्दर रूप वाला, गौरवर्ण, बुद्धिमान्, उमावशाली अविनाश सम्पन्न, साहित्य एवं ललित-कलाओं का प्रेमी तथा स्वयं भी कलाकार होता है। इसे सर्वत्र सम्मान प्राप्त होता है। यह भाग्य का धनी तथा अभिलषित वस्तुओं की प्राप्ति में सफल होता है। विद्या का श्रेष्ठ लाभ होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु से पूर्व ही हो जाता है। पत्नी सुन्दरी बुद्धिमती, विद्वान् एवं मधुरभाषिणी होती है। वह पति की सहयोगिनी तथा आलाकारीणी बनी रहती है। सन्तानों भी सुपान्न एवं सुख देने वाली होती हैं। इसका भाग्योत्पत्ति २५ वर्ष की आयु से आरंभ होता है तथा उत्तम सफलताएँ मिलती रहती हैं। सन्तानों की शिक्षा कम होती है तथा कुछ गर्भ मृत भी मरते हैं। सामान्यतः इसका सम्पूर्ण जीवन सुख तथा ऐश्वर्य से परिपूर्ण बना रहता है, बड़े तथा छोटे भाई-बहिनों एवं कुटुम्बिकों से इसके स्नेहपूर्ण सम्बन्ध रहते हैं।

(६५३) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति बाल्यावस्था में विभिन्न रोगों का बिकार बना रहता है। विशेष का नेत्र पीड़ा से कष्ट पाता है। यह कुशा-शरीर का, सामान्य रूपवान् तथा भावधर्मादी होता है, यह अधिकतर पदोन्नति में रहता है, लीचों की संज्ञा काता है तथा उन्हीं से लाभ भी उठाना है। इसका विकास कुपः नहीं होता और यदि हो भी जाय तो वैवाहिक-सुख की उपलब्धि नहीं होती। यह धनी होता है तथा अपने धन को पारिवारिक एवं धार्मिक कार्यों में खर्च भी करता है, तथापि इसे परिवार अपना धर्म के प्रति कोई आसक्ति नहीं होती। यह औपचारिक रूप में विद्वान् एवं शक्ति की उपलब्धि का लेता है। यह कष्ट के समय में भी अपना कौतुकी तथा कइवी एवं तनावपूर्ण बातें करने का अभ्यस्त होता है। लीचों के प्रति आकर्षण राखने हुए भी उनसे अलग सा ही रहता है। इसका भाग्योदय विदेश में होता है। ३५ से ४० वर्ष की आयु में उन्नति काता हुआ प्रत्येक धनोपार्जन काता है।

(६५४) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी गौतम, मध्यम कद वाला, चंचल नेत्र एवं लीकृण दृष्टि सम्पन्न तथा दूसरों के मन की बाह पालने में कुशल होता है। यह अत्यन्त उल्लाही तथा शीघ्रतापूर्वक कार्य करने वाला होता है। यह मान-धन की आकांक्षाओं के विपरीत आचरण का, उन्हीं कष्ट पहुँचाता है। यह बिना आगा-बीछा सोचे अपने धन को किसी भी काम में लगा देता है, तथापि इसे कभी हानि नहीं उठनी पड़ती, सर्वदा लाभ ही होता है। शिक्षा सामान्य, पण्डित प्रत्येक होती है। विकास २२ वर्ष की आयु के लगभग होता है। पत्नी कलाप्रिय, गुणवती, विद्वान् तथा विभिन्न प्रकार के कार्यों में रुचि लेने वाली होती है। वह स्वयं भी कलाका होता सकती है। वैवाहिक-जीवन सुखमय कीलता है। भाग्योदय २२ वर्ष की आयु में होता है, तत्पश्चात् उत्तरोत्त उन्नति का लाभ होता चला जाता है। इसके जीवन का अधिकांश भाग हृदिषों से संघर्ष करने में बीतता है। आयु ७० वर्ष होती है।

(८५५) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी लम्बे शरीरवाला, सुन्दर स्वरूपवान् तथा भाग्य का धनी होता है। इसे बचपन में नेत्र-पीड़ा आदि के कष्ट होते हैं। यह गुणस्थानों अपना गुण कर्णों से धन प्राप्त करने वाला, अल्पनाशकमी, धीर-गंभीर तथा हाँ उका के संकटों पर विजय पाये वाला होता है, विशेषी इसके समस्त पास्त होता है। यह अपने पौत्रों के सुखी रखने वाला, बाल्य में तथा कुलदीपक होता है। अल्प मर्त्य-वर्तिन प्राप्त नहीं होते। विष्णु का स्रेष्ठ लाभ होता है। विवाह उच्च कुल में होता है तथा पत्नी सुन्दरी, सती कर्णों में दक्ष तथा पति को अपने निपन्त्रण में लाने वाली होती है। यह चिन्ताकर्मक होते हुए भी अधिक कोलने वाली होती है। आयु ३० वर्ष की आयु में होता है। पूर्णायु ७० वर्ष के लगभग होती है। सन्तान-सुख (आम रहता है) जीवन के ३५, ४०, ४५ तथा ५१ के वर्ष विशेष उत्कर्ष का काल सिद्ध होते हैं।

(८५६) - इस जन्म कुण्डली वाला समुच्च वक्त्र-गौरवर्ण, सुन्दर केवों वाला, उन्नत क्रम का, उदार, कोमल तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। यह पौत्रों में (उच्च गति प्राप्त करने वाला तथा पौत्रों के धन को बढ़ाने वाला होता है) विष्णु का उत्तम लाभ होता है। विवाह २३ वर्ष की आयु तक हो जाता है। स्त्री सुन्दरी तथा मनोरुक्मिल मिलती है। इसका आयु ३० वर्ष के संकटों के संकटों से होता है और उही से यह लाभ भी उठाना है। यह दुर्गति-संघर्षों में आनन्द लेने वाला, कूट-नीति में लक्ष्मण तथा धनोपाधि करने वाला होता है। आयु ३० वर्ष की आयु के बाद होता है। जीवन के ३२, ३४, ४६ तथा ५१ के वर्ष महत्वपूर्ण तथा उत्कर्ष का काल सिद्ध होते हैं। ५३ वां वर्ष भी उत्तम रहता है। इसी आयु लम्बी होती है तथा वृद्धावस्था में भी यह कठिण अंगों के संकटों में आने के लिए उपलब्ध बना रहता है।

(६५७) - इस जन्म कुण्डली वाला मनुष्य सुदा सुखकाल, गौरवर्ण, नेत्रदीप्ति, पदमे. लम्बे के हचि
राने वाला तथा अनेक गुणों से युक्त होता है। यह अल्पतः महत्वाकांक्षी होता है तथा अपनी काका
क्षेत्रों की पूर्ति के लिए निरन्तर उपलब्धी बना रहता है। यह अपने चारों ओर के वातावरण को
प्रभावित करता है तथा अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए निरन्तर के लोगों के सम्पर्क में आने
से भी नहीं हिचकिचाता। निरन्तर की स्थितियों में उसे बहुत प्रभावित करती है। विष्णु का लाभ
मध्यम होता है। विवाह किसी अच्छे परिणाम में होता है। पत्नी विदुषी, गुणवती तथा सौन्दर्यवान् होती
है। २२ वर्ष की आयु में विवाह होता सम्भव है। इसे छोटे भाई-बहिनों का सुख लाभ होता है।
बड़े भाई से भाई-दरभर मिलता है। संतान अल्पाकांक्षी होती है। आयु लगभग ७५ वर्ष होती है। अन्त
में २८ वर्ष की आयु में होता है। जीवन के ३२, ३७, ४१, ४२, ४६, ५२ तथा ५७ के वर्ष उत्तरी भाग होते हैं।

(६५८) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी कर्कट तथा लम्बे शरीर का, गौरवर्ण एवं पुनः वर्ण होता है
यह लम्बे हाथ तथा उन्नत ललाट वाला आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। यह अनेक मोचनों
बनाता है, पालु एक में लक्षण पाये के बाद ही दूसरे के हाथ आता है। विष्णु का सौन्दर्य लाभ
होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु तक होता है। पत्नी अच्छे कुल की, सुन्दरी तथा किसी दूतरी
स्वातंत्र्य होती है। भाग्योदय विकसित होता है और निरन्तर उन्नति होती रहती है। सब प्रकार
के सुख उपलब्ध रहते हैं। इसे सन्तान सम्बन्धी कष्ट बना रहता है। यह बड़े-बड़े कार्य
का सम्पादन करता तथा राजकीय सेवा में उच्च पदों पर प्रतिष्ठित रहता है। इसे प्रणति ६०,
६५ वर्ष की उम्र होती है। वृद्धावस्था में कष्ट तथा पिता के विवाहों से पीड़ित रहता है। जीवन
के २७, ३०, ३५, ३८, ४२, ४६, ५० तथा ५२ के वर्ष विशेष उत्तरी भाग होते हैं।

पृ०
सं०
२३३-

(६५६) - इस जन्मकु ७५वीं वाला जन्मक हट, पानु चले करीर वाला, जाल्वावाला में रोगी तथा नेत्र-काष्ठ-पीड़ित, विद्वान्, बुद्धिमान तथा महत्वाकांक्षियों से युक्त होता है। यह बहुत कष्ट उठा कर ही अपनी अगिलाखाओं की प्रति जा जाता है। यह धीमा का पोषक होने दुष्ट भी परिवारी जनों से कुछ डाढ़ा जाता है। इसे दूसरों का काम कोगे के बहुत सुख मिलता है तथा अपने काम में भी यह पूर्ण मनोयोग से लगा रहता है। यह उदात्त उच्छृंखल का, अनेक योजनाओं में अधिकांश को हाँ काफ़ी में कसमर्ष, छोटे भारी-बहिनों से युक्त तथा उच्छृंखल का विष्णु-लाम प्राप्त करने वाला होता है। विवाह २०-२२ वर्ष की आयु तक होता है। पत्नी मनोबुद्धि मिलाती है। सन्तान का सुख कम रहता है। भाग्योदय जा के बाद ३० वर्ष की आयु में होता है। आयु लगभग ७५ वर्ष की होती है। जीवन के ३०, ३२, ४२, ४७, ४८ तथा ५६ के वर्ष कष्ट पद रहते हैं।

(६६०) - इस जन्मकु; चक्र का अधिपति सुक्र, गौरवर्ण, लम्बे कद का, कला तथा कर्तित्व में अभिरुचि रखने वाला, पाण्डुर, अनी, चर्माला एवं गुणवान् होता है, तथा पिता वाला एवं मोटे से पीड़ित होकर पश्चिमों में आसक्ति रखता है। शिक्षा मध्यम रहती है। विवाह २५ वर्ष की आयु के बाद होता है। पत्नी सुन्दरी तथा प्रतिभक्ता होती है, तथा पिता यह स्वयं दीर्घवृत्ति एवं कृ-स्त्रीगामी होता है। ३५ से ४० वर्ष की आयु के बीच यह जन-समाज में उल्लिखित स्थान प्राप्त कर लेता है, तदुपान्त इसकी भाग्योदय होती चली जाती है। दोरी तथा बड़ी बहिन से सुख मिलता है, पानु भार का सुख प्राप्त नहीं मिलता। इसे रहस्यमय कार्य से जन का काम होता है तथा कर्मियों के कारण कष्ट तथा अपमान भी भोगना पड़ता है। आयु लगभग ७० वर्ष की होती है। जीवन के २२, २८, ३२, ३७, ४१, ४६, ४८, ५१, ५५ तथा ५८ के वर्ष उल्लिखित कष्ट निह होते हैं।

(६६१) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी हृदयांगी का, लम्बे करवाला, सुन्दर, पतिलीला, अगन्त स्वभाव का तथा लीला कुट्टि होता है। यह लिले मे वड़ा पदु होता है। यह ऊंच-नीच का ज्ञाता, विभिन्न गुणों से युक्त होने हुए भी कुछ निराशापूर्ण स्वभाव का होता है। इसके कुछ कार्य होते हैं जो कुछ अच्छे भी रह जाते हैं। एक साथ अनेक कार्यों में शक्ति लगा देने के कारण इसे वांछित सफलता उपलब्ध नहीं होती। यह लेखन-कार्य का, धन तथा पशु का उपार्जन करता है। इसकी योग्यता अप्रामाण्य होती है। धन की भी कोई कमी नहीं रहती। यह बिना किसी संकोच के किसी भी नवीन कार्य को आरंभ कर लेता है। विवाह २० से २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी कुट्टि तथा मनो-बुद्धि मिलाती है। आश्विन विवाहोत्सव ही होता है। पिताजीवन में उलटि होती रहती है। संतानों का उत्तर सुख प्राप्त होता है। आयु ७० वर्ष के लगभग होती है। ४० वर्ष के बाद विशेष लाभ होता है।

(६६२) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी बड़ी आँखों वाला, सुन्दर, अकर्षक व्यवहार तथा लक्षण, व्यवहार कुशल, स्पष्टवक्ता तथा उच्चरी होता है। यह एक साथ कई कार्यों को करता है। पढ़ने-लिखने में विशेष रुचि रहती है। ललित कलाओं का प्रेमी होता है। किसी पारिवारिक अथवा लौह सम्बन्धी कारणों से विवर्ध रहता है। यह विशेष लाभ उठाता है। इसका विवाह २० वर्ष की आयु में ही होता है। पानु विवाहोत्सव कई वर्षों तक सन्तान का सुख नहीं मिलता। ३० वर्ष की आयु तक इसका जीवन अवशिष्ट होता है, तभी से इसका आश्विन आरंभ होता है। जीवन के ४०, ४३, ४५ तथा ४० के वर्ष में रोग तथा हाथी की निम्नता रहती है। ३२, ३६, ३८, ४१, ४६, ४८, ५२ तथा ५४ के वर्ष लाभ प्रद सिद्ध होते हैं। अष्टमि ६२ वर्ष के लगभग होती है। अन्ततः जीवन रहता है। तब तक विभिन्न प्रकार के सुख प्राप्त करता रहता है।

(६६३) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति हृत्वाणीवाला, गौरवर्ण, लम्बे कद का, निष्ठुर-चिन्तवाला एवं सम्पत्तिवान् होता है। यह पहले-लिखने का शौकीन होती है तथा इसकी विवेक दृष्टि बहुत तीव्र एवं सटीक होती है। यह अनेक कार्यों को एक साथ आगम करता है तथा हानि उठाकर भी उन्हें पूरा करने के लिए उपलब्ध रहता है। इसे दोटे तथा बड़े महलों का पूर्ण सुख प्राप्त होता है। माता-पिता का सुख भी दीर्घकाल तक बना रहता है। विष्णु का उत्तम भाग मिलता है। विवाह १२ से २२ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी बुद्धिमती तथा प्रत्येक कार्य में सक्षम सहयोग देने वाली होती है, पालन-पोषण अपनी पत्नी के लिए भारी होता है। यदि ३० वर्ष की आयु तक पत्नी की मृत्यु न हो तो वह जीवनभर साध देती है। प्रथम पत्नी के न होने पर इसे विवाह का योग बनता है। आगे २१ वर्ष की आयु में होता है। जीवन सुखसे बीतता है। पूर्ण ६२ वर्ष के लगभग होती है।

(६६४) - इस जन्म कुण्डली वाला जातक सुधा रुचक, भावुक हृदय वाला तथा भाव्यातिरेक में अपना गला-बुरा न लेखने वाले काठ हानि उठाने वाला भी होता है, तथापि कुलज के प्रति कुल को भी (१) के कोर पश्चान्ता नही होता। उदात्त चिन्तवाला यह जातक वृद्धि में आगे बढ़ता है। विष्णु का प्रवेश लग्न होता है। विवाह २२ वर्ष तक हो जाता है। यह अपनी पत्नी में अनुरक्त रहता, उसके इच्छासंग कार्य करता है, तथापि कभी-कभी पत्नी-विरोध की ओर भी इसका मुकाबला होता है। दोटे-मर्द-बहिन से न मिलना, पालन बड़ी बहिन से प्रेम बना रहता है। पत्नी मने-मुकला मिलती है। आगे २१ विवाहोपान्त ही होता है। वैष्णव-सम्पत्ति का लाभ भी होता है। पत्नी को शारीरिक कार्यों का भार देती है, पालन जीवनभर बना रहता है। जातक की आयु ७० वर्ष के लगभग होती है। जीवन के ३२, ३८, ४१, ४६, ५० तथा ५४ के वर्ष विशेष उन्नति का कहते हैं।

(८६५) - इस जलकुण्डली का स्क्वाही कोमल बारी तथा मृदुल स्पर्श का, सुन्दर तथा आकर्षक व्यक्तित्व का धनी होता है। वह अपने मातापिता-बालक करिब कार्मों में भी लक्ष्मण प्राप्त कर लेता है। इसकी आर्थिक-स्थिति में उन्नति-वृद्धि आने लगे, तथापि इसका कोई भी कार्य अधूरा नहीं रहता। इसकी लक्ष्मणों के अनेकानेक कम मात्रा में होती हैं। राजकीय सेवा द्वारा जीविकोपार्जन का अभाव इसे उपलब्ध होता है तथापि आयदनी अधिक नहीं होती। शिक्षा मध्यम प्राप्त होती है। विवाह २२-२३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सम्भवतः होती है, अतः विवाहोत्पन्न इसे सुख, धन तथा प्रशंसा में उपलब्ध होती है। सन्तान-सुख भी अच्छा रहता है। ३५ वर्ष की आयु में मातृमरण होता है। जीवन के २५, २७, २८, ३५, ४०, ४२ तथा ४५ के वर्ष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। पूर्ण आयु ६० वर्ष होती है। जीवन में बारी प्राप्त नही होगा बल्कि रहता है।

(८६६) - इस जलकुण्डली का अधिकांश सुन्दर, उन्नत बारी, जाकुमी, उदार, चंचल तथा वात्सल्य युक्त होता है। यह सहनशील तथा मृदु स्पर्श का धनी होता है और किसी को दुःखी होकर तत्काल में उचित लेना चाहता है तथा उसका कष्ट दूर करने की सोचता है। इसे अपने स्थान तथा कार्य-क्षेत्रों में लक्ष्मण प्राप्त होता है। गंदे धन अथवा अधातित-धन का लाभ भी हो सकता है, तथापि इस प्रकार के धन लाभ की शक्ति नहीं होता, बल्कि वह बर्तुल्य है, तथापि यह उसे लाभ नहीं पाना। इसका विवाह २० वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी मनोरंजक तथा मिलती है और उसके सहयोग से मातृ की अभिवृद्धि होती है। जीवन के २४, २७, २८, ३५, ३७ तथा ४५ के वर्ष लाभप्रद रहते हैं। इस अवधि में उत्साहपूर्वक प्रयत्न बड़े पैमाने पर रहकर अपनी उन्नति करता है। सन्तान का सुख अच्छा रहता है। पूर्ण आयु ६५ वर्ष तक हो सकती है।

(६६७) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति हृष्य-पुष्ट शरीरवाला, सुदृढ़, पीछमी, उदार तथा दृढ-निश्चयी होता है। यह गुणवान्, आत्मन्-रहित होने के कारण भी छोटी तथा विद्रोही स्वभाव का होता है। संगीत आदि ललित कलाओं में इसकी रुचि होती है। भवना-पुष्पान होने के कारण भी, यह प्रबुद्ध तथा आत्म-निपुणत्व में समर्थ होता है। अपने समकक्षियों में यह भारी-भूकम प्रतीत होता है तथा बड़े धन-पुत्र की भाँति व्यवहार करता है। सबके ऊपर सदा ही विश्वास करने के कारण यह कभी-कभी धोखा उभरता है। सामान्यतः कट्टर स्वभाव का दिव्य देने वाला भी यथार्थ में यह कहेंगे से दूर रहता है। यह भ्रम का प्रतीक होता है तथा यात्राओं का कारण भी होता है। विष्णु-मूर्ति का होता है। विवाह लगभग २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मंगेनुकूल मिलती है। भाग्योदय ३० वर्ष की आयु में होता है। वर्ष २३, २४ में कष्ट तथा २७ एवं ३५ में विशेष लाभ होता है। आयु दीर्घ प्राप्त होती है।

(६६८) - इस जन्म कुण्डली वाला मनुष्य मध्यम कद का, पीछ-गंभीर स्वभाव वाला, मेधा-पुष्टि का, कला-कौशल का प्रेमी, काव्य-सज्ज, सहृदय, उदार तथा पुष्टि व्यक्ति होता है। इसकी उत्पत्ति वाला वातावरण से ही उत्पन्न होता है तथा यह इन्द्रिय कामनाओं में समकाली प्राप्त करता रहता है। इसे पुस्तक लेखन एवं साहित्य लिखनी व्यवसाय का लाभ होता है। यह ऐश्वर्यपूर्ण जीवन बिताता है। विवाह २० वर्ष की आयु तक होता है, पत्नी पत्नी होगी बनी रहती है, जिसके कारण यह दुःखी रहता है। संतान की ओर से भी यह दुःखी रहता है। इसकी भाग्योदय ४० वर्ष की आयु के बाद होता है। तत्पश्चात् यह आजीवन उत्पत्ति का लाभ प्राप्त करता है तथा अधिकाधिक धन भी प्राप्त करता है। यह पुत्रपुत्री तथा सर्वत्र स्वागत-सम्मान एवं अभिनन्दन प्राप्त करने वाला होता है। लगभग ७५ वर्ष की आयु प्राप्त करता है तथा अनेक पीढ़ी में पुत्र-सम्पत्ति देता होता है।

(८६८) - इस जन्माङ्क का स्वामी गौरवर्ण, उन्नत ललाट, मधुर मकर, वलित शरीर तथा कठोर स्वभाव वाला होता है। यह किसी हानि के हो जाने पर स्वयं को ही उत्तक देवी मानता है। इसके हृदय में परीक्षा के प्रति उस तथा भाग्यकृति गहरी आस्था होती है। इसका पिता संदिग्ध कार्यो को करने वाला तथा यश हीन होता है, यद्युक्त स्वयं अपने कार्यो से सुप्रशस्त प्राप्त करता है। शिक्षा मध्यम होती है। विवाह होता संदिग्ध रहता है, तथापि इसका भाग्योदय किसी स्त्री के माध्यम से ही होता है। स्त्री ही इसे सहायता देती है। किसी इसके भाग्य के स्त्री-सुख नहीं होता तथा इच्छित मात्रा में धन का लाभ भी नहीं हो पाता। यह प्रायः प्रदेश में तथा निम्न वर्ग के लोगों के साथ रहता है, यद्युक्त छोटा बालक में अपने का लौट आता है तथा स्वयं के बीच रहकर सुखी शक्ति का ना है। जीवन के २०, २४, ३६ तथा ४४ के वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। (आधुनिक)।

(८७०) - इस जन्माङ्क का अधिपति विद्वान्, श्रेष्ठ, बुद्धि, धर्म, विपत्तियों, यशस्वी, राजा द्वारा सम्मानित तथा विद्या-धारी होता है। यह परीक्षा का दोषक, यशस्वी तथा यशोपकारी होता है। शिक्षा उत्तम श्रेणी की प्राप्त होती है। इसके दो अथवा तीन विवाह हो सकते हैं, यद्युक्त पुत्र न होने के कारण यह पुत्रहीन बन रहता है। इसकी पत्नी प्रायः रुग्ण होती रहती है, तथापि कार्यात्मक रूप से अक्षम होने के कारण पति की ह्रा आत्मा का पालन करने को विवश रहती है। इसे का-परीक्षा का सुख प्रायः नहीं मिलता। यशोपकारी होने के कारण इसे अपने कीर्ती आलोचना का शिकार बनना पड़ता है, तथापि यह किसी की परवाह न कर, अपने काम में लगा रहता है। इसे अधिकांश प्रदेश में रहना पड़ता है और वहीं पर यह धन तथा यश को अधिपति-काल में भाग्योदय लगभग ३२ वर्ष की आयु में होता है। (आधुनिक)। जीवन में संदर्भ के होते हैं।

(८७१) - इस जाति का एक का अधिकांश सुन्दर, पक्का, चिनी-गंधी, बुद्धिमान, विद्वान्, धानी, राजा-
का समान होते हैं, अपने अधिकांशों के अन्तर्गत गुणों के हिसाब से समान रहने वाला तथा पशु-
स्वी होता है। विवाह २२ वर्ष तक की आयु में हो जाता है। एक से
अधिक विवाह भी हो सकते हैं तथा अनेक पौ-पौत्रों से भी इसका संवर्धन होता है। निजों के
प्रयोग से इसके भाग्य की अभिवृद्धि होती है। सन्तान-सुख सामान्य रहता है। आयु ३० वर्ष की
आयु के बाद होता है। यह लम्बी यात्राएं करता है तथा आन्तरिक-विह्वलनों के कारण अकाल
ही दुःखी भी होता रहता है। इसे अपनी हठी तथा पुत्रों से सुखभी मिलता है। यह बाजुओं का
मात-मर्दन करता है। स्वयं भी चोर लगने की संभावना रहती है। इसके प्रदेश के रहने समय
माता की मृत्यु हो जाती है। लगभग ७० वर्ष की आयु तक यह जीवित रहता है। जीवन सामान्य सुख से बीताता है।

(८७२) - इस जाति कुपडली वाला जातक सुन्दर स्वभाववाला, हठ धारि वाला, काकुमी, अल्प-
तेजस्वी तथा स्वयं को विशेष बुद्धिमान समझने वाला होता है। इसी कारण यह धार्मिक एवं सत्त्व-
सत्त्व के बीच के सीमा-रेखा न लींचकर हा विषय की व्याख्या अपने मतानुसार ही करता तथा
अपनी इच्छानुसार ही आचरण करता है। अपनी हठवादीता के कारण ही इसे हानियों भी उठानी
पड़ती है। यह बहुत बलवान् होता है तथा अपने मनुष्यों से डेर राखता है। शिक्षा प्रदान
होती है। विवाह २२ वर्ष की आयु तक हो जाता है। एक से अधिक विवाह भी हो सकते हैं। यह
स्वयं अपनी पत्नी सहित अनेक बार आकस्मिक रूप से जापल होता है। आयु २५-३० वर्ष
की आयु में, प्रदेश में होता है। कुछ समय तक इसे अत्यधिक संचर्च करते पड़ते हैं तथा कभी कभी
जो दीडना का सामना भी करता पड़ सकता है। आयु ६०-६२ वर्ष के मरण होती है।

(६७३) - इस जमाद, कुण्डली वाला मनुष्य सुन्दर, सुशील एवं राजा द्वारा सम्मानित होता है। रीतिरिवाज से सुख मिलता है, तथा पि अन्ध अनेक दुश्चिन्ताओं के कारण दुःखी भी रहना पड़ता है। यह वैदिक-सम्प्रदाय से कहीं अधिक स्वोपार्जित सम्पत्ति का सुख प्राप्त करता है। यह परोपकारी प्रवृत्ति का, स्वामी, लाभ प्राप्त करने वाला तथा अप्रशम्भ का भी सुखी रहने वाला होता है। इसकी व्यवस्था-कुशलता एवं वाणी की मधुरता श्रोतों को विशेष रूप से आकर्षित करती है। विद्या का अध्ययन लाभ होता है। विवाह २४ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, दृढनिश्चयी तथा उदात्त स्वभाव वाली होती है। वह आर्थिक कार्यों में रुचि लेती है। यह स्वर्ग के पुत्रों के रूप में विचारित करती है। जातकर्मण पत्नी के आश्रित बना रहता है। इसे व्यवसाय अपना वाण्य बिक्री द्वारा लाभ होता है। इसका मंगोदय वादेय में होता है। पूर्ण आयु ७५ वर्ष होती है। जीवन के ३५, ४०, ४२ तथा ४८ वें वर्ष विशेष लाभ प्राप्त होते हैं।

(६७४) - इस जमाद, चक्र में उत्पन्न मनुष्य सुदा, पुण्यशाली, विद्वान् तथा राजा द्वारा सम्मान प्राप्त करने वाला होता है। यह भव्या स्वाने-पीने का शौकीन तथा ऐश्वर्यपूर्ण जीवन बिताने का अभिलाषी रहता है। अपनी वैद्य-श्रद्धा का अभीष्ट अन्ध लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता है। यह भाग्य का पुत्र, सदैव सुखी रहने वाला तथा विविध प्रकार के मोगों को मोगने वाला होता है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोबुद्धिवाली मिलती है। सुरुवाल किसी दूतर्ली स्थान में होती है। इसका मंगोदय वाण्यवसाय से ही होता है तथा आजीवन उत्कृष्ट कर्त्ता हुआ सुखी तथा धनी बना रहता है। पानु इसका जीवन दुर्घटनाओं से घिरा रहता है तथा किसी दुर्घटना में ही इसकी मृत्यु भी हो सकती है। सन्तान-पक्ष में यह दुःखी रहता है और प्रायः उसका अभाव भी रहता है। पूर्ण आयु ६५ वर्ष के लगभग होता है।

(८७५) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुदूर स्वस्वकार, दृढ़ शरीरवाला, उदार-हृदय, धनी-मानी तथा सेवार्थीवादी होगा। इसे लौकिक परदेस के लाभ प्राप्त होगा। इसे वैदिक-सम्पत्ति का लाभ होगा तथा यह स्वयं भी विपुल सम्पत्ति अर्जित करेगा। इसे सर्वविध सुख, सम्मान तथा चमकी-धमकी होगी। इसका मशा चारों ओर फैला है। इसे विद्या का प्रेक्ष (भोग होगा)। विवाह २५ वर्ष की आयु तक होगा। पत्नी सुन्दरी, मानी, वैभवका प्रदर्शन करने में आगे रहने वाली तथा गुणवती होगी। इसे कन्याओं से सुख मिलना है। इसका आशोदय दिन के जीवन-काल में ही होगा। तथा निजा उन्नति का ना-चला जाता है। यह अपने प्रेक्ष गुणों से सबको प्रभावित करने वाला तथा सर्वत्र सुख पानेवाला होगा। पत्नी व्यापारमयिक कार्यों में भी सहयोग देती है। जीवन के २२, २५, २८, ३५, ३८, ४२, ४६, ५१, ५६ तथा ६२ के वर्ष विशेष लाभ प्राप्त होते हैं। पूर्णाष्ट ७० वर्ष होती है।

(८७६) - इस जन्म कुण्डली वाला मनुष्य सुदूर, लम्बे क्रूर काला, दृढ़ शरीरवाला, उदारवादी, विद्वान् तथा धी-गंभीर होगा। इसकी गति विलम्बा होती है। यह कठिनतम कार्य को भी लफला प्रर्वक सम्पत्तिका लेता है, पण्डित इसे स्वयं ही से प्राप्त होने वाले धन को मिलने में भी कुछ विलम्ब करवा देता रहता है। शत्रुओं का प्रीति मिलती है तथा कठिना-पत्नी की ओर से विद्या बनी रहती है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु तक होगा। पत्नी अधिक बोलने वाली तथा धर्मिकों का सुख की तुलना में कार्य अधिक देने वाली होगी। इसका आशोदय ३५ वर्ष की आयु के बाद होगा। जीवन के ४०, ४५, ४८ तथा ५८ के वर्ष विशेष लाभ प्राप्त होंगे। विद्या का लाभ रुकना रहता है तथा सन्तान-सुख भी सामान्य ही प्राप्त होता है। इसे अधिक कठिनाइयाँ प्राप्त बनी रहती हैं। पूर्णाष्ट लगभग ७० वर्ष होती है।

शु०
सं०
०७५

(८७७) - इस जलकुण्डली का अधिपति सुधा, सुदृढ शरीर काल, ईमानदार, दार्शनिक, श्री-श्री तथा शिवा में दृढ आस्था रखने वाला होता है। यह दूसरे या तृतीय विश्वास का होता है। यह अन्तः प्राणी, कठिन कार्य को भी सम्पन्न करने के लिये करने वाला तथा किन्हीं विशेष परिस्थितियों में भी (जैसे नैतिकता के मार्ग से नहीं) भी हरने के अत्यधिक प्रयत्न का अनुभव करने वाला होता है, इसे विष्णु का आत्म लाभ मिलता है। विवाह ३० वर्ष की आयु तक होना चाहिए अथवा नहीं हो सकता है। इसका आश्रय लगभग ३५ वर्ष की आयु में होता है। आश्रय में पदार्थ, कोरिन्थी, मुहम्मद अथवा कुलीन व्यक्ति का सहयोग रहता है। इसे अनेक उदात्त के कार्य करने के अन्तः प्राप्त होते हैं। ३५ वर्ष की आयु के बाद इसे विना सुख प्राप्त होता है, पुरुष ४० से ४३ वर्ष की आयु में शारीरिक-कार्य में निरर्थक प्रमाण लगभग ७० वर्ष की आयु में होता है।

(८७८) - इस जलकुण्डली का अधिपति सुधा, कथम कद, दृढ शरीर काल, मधुर भाषा, चतुर, शान्ति, श्री-श्री तथा सुदृढ स्वभाव का होता है। इसे प्राण्य तथा स्व-प्राण्य-दोनों के सहयोग से पान भी विशेष उपलब्धि होती रहती है। तीन लोगों के सम्पर्क से भी इसे पश्चात्त-लाभ होता है। शिक्षा मध्यम रहती है। विवाह २५ वर्ष की आयु में होना चाहिए। पत्नी सुदृढ, वयस्क, उन्मत्त अथवा अनेक कार्य में सहयोग करने वाली मिलती है। इसे पत्नी तथा सन्तान का पक्षेच्छ-सुख प्राप्त होता है। इसका आश्रय ३० वर्ष की आयु में, पदार्थ में किसी बड़े तथा कुशल व्यक्ति की सहायता से होता है। यह स्वयं किसी अच्छे परिष्कार से निम्न स्थापित का पश्चात्त लाभ होता है। यह शत्रुओं से भी पराजित नहीं होता। ५५ वर्ष की आयु तक इसका जीवन विना उत्कर्ष प्रमाण होता है। यह पश्चात्त होती होकर ६५ से ७० वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(६७६) - इस जनकुण्डली का स्वामी बुद्ध धारी बाला, सामान्य सुदृढ़, हठी, कौपी, जिद्दी, नेत्र-स्वी तथा अपने कार्य का उपहास से सम्पादन करने वाला होता है। इसके कार्य सुदृढ़, निगठन के रूप में उत्तम प्रकार से होते हैं। यह अपना बहुत बुरा नीति तथा राजनीति का पठित होता है। धन, वाहन तथा ऐश्वर्य प्रपन्न यह जातक राजमाल होने के साथ ही लोक मान भी होता है। इसके विवाह का संकेत लाभ होता है। विवाह २७ वर्ष की आयु तक हो जाता है। लगभग २० वर्ष की आयु से अनोपा जीवन का जीवन का देना है। पत्नी सुदृढ़ तथा मनेत्र बुद्धला मिलती है। यह अपना सायावी, बुद्धारी तथा निष्ठावादी भी हो सकता है। अनोपा जीवन हेतु यह किसी विधि-विधान की चिन्ता नहीं करता। एवं कर्मोपेय धन को पानी की मूर्ति कहता है। यह किसी से जोड़ा लेता है तथा किसी भी प्रकार के समय विचलित नहीं होता। आयु लगभग ७२ वर्ष की होती है। इसके जीवन में अनेक उत्तम-पराक आते हैं।

(टी००) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति बुध, कलात्मक रुचिकाला, तीव्र एवं व्यावहारिक-बुद्धि सम्पन्न, अनेक प्रकार के कार्यों से लाभ उठाने वाला, शुद्ध भौतिकवादी तथा निजी मूलका मनीषी के व्यवसाय से लाभ उठाने वाला होगा। विद्या भण्डार होगी। विवाह 22 से 24 वर्ष की आयु के मध्य होगा। पत्नी सुन्दरी तथा उन्नति-पथ पर अग्रगण्य काले में लहाफक होगी। यह शक्ति वन-सम्पदा अथवा पशु-धन के अतिरिक्त विलास-साधनों के व्यवसाय द्वारा विशेष लाभ प्राप्त करेगा। इसका सम्प्राप्य 36 वर्ष की आयु से होगा तथा जीवनान्त तक उत्तम उन्नति का नाचला जाएगा। इस के जीवन के 22, 26, 39, 34, 36, 40, 44, 48, 52, 56, 60, 64, 68, 72, 76, 80, 84, 88, 92, 96, 100 वर्ष विशेष उन्नति का काल सिद्ध होते हैं। वर्ष 2, 10, 18, 26, 34, 42, 50, 58, 66, 74, 82, 90, 98 तथा 100 धार्मिक कष्ट-का काल सिद्ध हो सकते हैं। पूर्वाभि 60 वर्ष से अधिक होगी। यह मकानों में उच्च सम्पत्ति हो जायेगी।

कु०
र०

सं०
सं०
६०३

कु०
२०

(६८१) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य (जन्मे मध्यम कद वाला, सुहृद, करि, एवं ज्ञानवशाली जाविरा संपन्न होता है) इसे अपने दिना के जीवनकाल में ही उत्तमि-यक वा अग्रज होने के सुयोग प्राप्त होते हैं तथा इसे श्रीगुरु की शरण आता भी मानता प्राप्त हो जाती है। इसकी मनुष्य के कारण शत्रुवां सदैव पीड़ित बना रहता है। यह अपनी बीता एक पारुष के बल पर अधिकारिक उत्तमि काल चला जाता है। यह उदा-मन का होने हुए भी कृपण चिन्ता का होता है, आनः मन को बहुत कम प्रिय मानता है तथा अधिक रुचि काता है। यह धर्म विषयक आचार्य का नेतृत्व भी धर्म के प्रति विशेष आस्थावाक नहीं होता। इसका विकास २५ वर्ष की आयु में हो जाता है। यत्नी सुधी, जन्म तदर्थ मवापन होती है अतः वैवाहिक - जीवन शान्त होने हुए भी अधिक सुखपूर्ण नहीं होता। विकास के बाद ही मजोरक है। ५० वर्ष की आयु तक यथार्थत इकठा का होता है। पूर्णपु ७५ वर्ष के लगभग होती है।

(६८२) - इस जन्माडु, चक्र में उत्पन्न हुआ मनुष्य संपन्न कद वाला, सुहृद, शान्त, शत्रु कलत्र में निपुण, अल्पना धनी तथा नेत्र - तेगी होता है। यह बड़ा साहसी, तेजस्वी एवं दूरदर्शी होता है। इसकी अधिक निपुणता उग्रसे ही अच्छी होती है। इसे जीवन में कभी भी धन का अभाव नहीं रहता। विकास का केवल लाभ होता है। विकास २५ वर्ष की आयु में हो जाता है। यत्नी सुधी, यत्नी, शत्रुवा, समाज में प्रतिष्ठा को बढ़ा के वाली तथा सम्मान प्राप्त की होती है। यह जानक तेगीन - वाक्य में रुचि रखने वाला होता है तथा शिष्टों के मनोभावों को समझने में कुशल होता है। इसके जीवन के ३५, ४०, ४२ तथा ४८ के वर्ष अपना महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। मजोरक छोटी आयु होती हो जाता है। यह साहसिक कार्य आता मनोभावक में विशेष सफल रहता है। इसकी आयु अधिक नहीं होती। वात तथा कद तेगी नि पीड़ित होकर लगभग ५५ वर्ष की पूर्णपु प्राप्त काता है।

(८८३) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुक्रा रूपवान्, चित्तकर्षक व्यक्तित्व वाला एवं सभ्य भावी होता है। यह भारी भागी, शान्त स्वभाव का, कम क्रोध करने वाला तथा अपने पीछे के प्रति करुणा के प्रेम करने वाला होता है। यह का के सभी उत्तम विद्वानों का प्रशंसना योग्य निबन्ध करता है। अपने वाणिज्य, योगदान एवं सद्गुणों के कारण कुल का सुशीलता वर का सर्वत्र प्रशंसा प्राप्त करता है। ऐतिहासिक-यन्त्र बहुत कम मिलता है, तथापि अपने उच्चतम द्वारा यह अत्यधिक धनोपार्जन करता है। यह राजकीय सेवा में विभिन्न उच्च पदों पर रहता है तथा ३५ वर्ष की आयु तक बहुत ऊँचे पद पर उल्लिखित हो जाता है। इसका विवाह जल्दी हो जाता है तथा सन्तान का लाभ भी प्रीति होता है। इसके मितों तथा प्रशंसकों की संख्या बहुत बड़ी होती है। यह लोकविख्यात तथा अच्चापक भी होता है, यह अपने जीवन में निता उत्तम कालों का लगभग ७५ वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(८८४) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुक्रा, बुद्ध (बुल भागी का एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। यह विद्वान्, पण्डित, उपदेशक, अच्चापक तथा सद्गुणों को प्रार्थना करने वाला, काष्ण-लाहिरी के अतिरिक्त राजनेता तथा किसी भी वातावरण को अपने अनुकूल बना लेने में सक्षम होता है। यह अपने पीछे से इतना कहीं प्रदेश में रह कर अपनी भावनेनानि करता है। यह अपनी विद्वाना के बल पर बड़े-बड़े को तन-मानाक कर देता है। इसका विवाह २९ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा आह्लादुत्पत्तिनी मिलती है, तथापि यह पत्नीजनों के प्रति भी आकर्षित होता है और उन्हीं पत्नी वरच भी करता है। ३६ वर्ष की आयु में यह कोई नवीन कार्य आरंभ करता है, जिससे इसे पर्याप्त सफलता मिलती है। लगभग ७९ वर्ष की आयु में वातोग का कष्ट भेदने हुए इसकी मृत्यु होती है। अपने पीछे काफी सम्पत्ति छोड़ जाता है।

(८८५) - इस जगत्कुण्डली वाला जन्मक प्रियदर्शन, स्थूलकाय, सूक्ष्म, बुद्धिमान तथा उदम स्वभाव का होता है। यह अपने शत्रु के अपाय को भी क्षमा कर देता है। यह मनुक हृदय का, काय-कला में अग्रेसर रावने वाला, गुणवान् तथा गुणगुम्ही होता है। इसे सर्वत्र यश-सम्मान की उपलब्धि होती है। यह अपने विरोधियों के लिए काल के समान होता है। यह वाक्-चातुर्य तथा बुद्धियों द्वारा अपने प्रतिद्वन्द्वियों को शीघ्र पराजित कर देता है। विद्या का उत्तम लाभ मिलता है। विवाह २० वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, मोतेपुष्पला तथा अष्टाक्षरी मिलती है। इसका माग्योदय १० वर्ष की आयु में ही आरंभ होता है तथा ३० वर्ष की आयु तक दो कन्याओं का पितृभार बन जाता है। २५ वर्ष की आयु में विशेष रूप से अर्थविक्रम उत्पन्न होता है। इसे कृषि-वायुओं, विज्ञान-सामग्री तथा सांख्यिक योजनाओं के लाभ प्राप्त होता है। लगभग २० वर्ष की आयु प्राप्त होती है।

(८८६) - इस जगत्कुण्डली का स्वामी गौवर्ण, सुन्दर, स्निग्ध एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। यह अस्त्र साहसी, धीर, ऐश्वर्यवान् तथा जगत्कुशल होता है। इसे समान की उपलब्धि होती रहती है। यह अपने पराक्रम द्वारा अपने सम्पत्ति का उपार्जन करता है। इसे राज्य, पितृ तथा निम्न वर्ग के लोगों से लाभ मिलता है। भूमि के कृष-विक्रय, रत्नों के व्यवसाय तथा अन्य अनेक कार्यों से यह अपनी सम्पत्ति को बढ़ाता है। विवाह २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी सुखीला तथा धर्मचिन्ता करने वाली होती है। यह अपनी पत्नी से अत्यधिक प्रेम करता है और उसकी सम्पत्ति के बिना कोई कार्य नहीं करता। इसका माग्योदय आरंभ ही होता है। यह कभी किसी के अक्षिप्त नहीं रहता तथा स्वयं ही अपने सुखी जीवन बिताता है। इसकी दूषादि ६५ से ७० वर्ष के बीच होती है।

(६८७) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति बुध, स्वस्थ, आकर्षक व्यक्तित्व रखता तथा भाग्य का धनी होता है। यह अल्पत बुद्धिमान, गुरुवान्, नीरस तथा उत्पादित धर्म कार्य का प्रफलान् प्रवर्धन करने वाला होता है। यह साहित्यिक-अभिरुचि हल्का, साहित्य-मर्मज्ञ तथा धार्मिक प्रवृत्ति का होता है। विष्णु देवदेव प्राप्त होती है। विवाह २३ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, मनोरुक्ता तथा गुणवती मिलती है। अग्रेष्ठ विवाह से पूर्व ही आरंभ हो जाता है। यह जातक स्वभाव से अन्तर्मुखी होने के कारण अपने कार्य में चुपचाप लगा रहता है। इसे धर्म, वन, पशु तथा हमारे जन्मस्थान वस्तुओं एवं कार्यों से धन का लाभ होता है। प-रुही सप्तम से इसे हानि उठानी पड़ती है। ५० वर्ष की आयु तक यह सब प्रकार की सम्पत्ति प्राप्त करता है। यह विद्वान् का सम्मान प्राप्त हुआ लगभग २० वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(६८८) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य बुध, सुगठित बालक, तेजस्वी, उदात्त, गुरुवान्, बुद्धिमान तथा अल्प कौपी होता है। इसे धन-प्राप्त की जीवन मू कमी नहीं रहती। इसे धर्म-सम्पत्ति का लाभ भी होता है और यह स्वयं भी पुरा सम्पत्ति अधिपति करता है। इसे पुरातन के लोग, बाहरी लोगों से सम्पर्क आदि के द्वारा धन का लाभ होता है। यह २५ वर्ष की आयु तक अपनी आयु की के लाभों को निश्चित कर लेता है। २४ वर्ष की आयु तक इसका विवाह हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, वाचाल पान्थ ऊँच-नीच को समझने वाली होती है। संतान तथा पत्नी का देवदेव प्राप्त होता है। ३० से ३५ वर्ष की आयु के बीच यह अपने संकल्प के अन्धकारों का कार्य को प्राप्त करता है। जीवन के २५, २६, ३६, ४५ तथा ५२ के वर्ष विशेष उन्नति का काल सिद्ध होते हैं। इसका उत्कर्ष प्राप्त होता है। लगभग ७५ वर्ष की आयु प्राप्त होती है।

(८८८) - इस जगदुपडली वाला मनुष्य सुका, आकर्षक, व्यक्तित्व सम्पन्न, गुणवान्, कलाकार तथा नीतिज्ञ होता है। इसे कई सम्पत्तियाँ प्राप्त होंगी तथा लाभ होता है। यह अपनी कुशलता एवं योग्यता से धन के व्यय को भी आमदनी में बदल देता है। जग. लाभ या इसका व्यय के उपाय (होना) फलान्: यह सर्वत्र जग एवं सम्मान प्राप्त करता है। इसका विवाह 20 वर्ष की आयु में होता है, पत्नी सुदृढ़ तथा सन्तानदायी बान्धवी होती है। विवाहोपान्त ही इसका आशोचक होता है। इसे पदोन्नति में विकास भी प्राप्त होता है तथा धनोपार्जन भी अधिक करी करता है। सन्तान तथा पत्नी सुख के अतिरिक्त यह धन-सम्पत्तियों का सुख भी प्राप्त करता है। जीवन के 30, 42, 47, 52 तथा 56 वर्ष विशेष उमरकारी मीट्ट होते हैं। इन अवसरों पर इसे अकालमृत्यु के भय से कष्टाधिकार प्राप्त होता है। पत्नी-पक्ष की ओर से भी इसे लाभ मिलता है। पूर्यापु (लग्न) 02 से 20 वर्ष की बीच होती है।

(८८९) - इस जगदुपडली का स्वामी सुका, सत्य, परीक्षणी, श्रमवर्ण, बलवान्, कठोर तथा बुद्धिमान होता है, नकारात्मक यह निम्न वर्ग के लोगों के हितों में रहना और किसी से धन-लाभ भी करता है। यह अपने धन का व्यय स्वयंसे आयु में बड़ी तथा निम्न कोटि की शिक्षा पर करता है। इसका विवाह 22 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुदृढ़ मिलती है। यह पत्नी से 57 वर्ष तथा उसके बड़े अनुयायी ही चलता है। विवाहोपान्त ही इसका आशोचक होता है। सहायक वालों के सह-योग से इसे विशेष लाभ होता है, मर: यह विपुलापीणों का अनुयायी बनता रहता है। 55 वर्ष की आयु में इसके भाग का चलोत्कर्ष होता है। 43, 45, 47, 50 तथा 53 वर्ष की आयु में जीवन में विविध प्रकार के परिवर्तन आते हैं, जिसे यह व्यक्ति बर्बरक फेलता है तथा ऐसे बड़े काम करता है कि लोग देख कर दंग रह जाते हैं। पूर्यापु (लग्न) 02 वर्ष की होती है।

(८८१) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति बुध, स्वयं, मध्यम कदवाला, आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न, गुणवान्, चतुर, धीर-जंजीर तथा मीठी वाणी बोलने वाला होता है। यह विज्ञान के प्रभाव में होता है तथा उनके सहायता भी प्राप्त करता है। इसे ऊँच-नीच का हात होता है तथा अपने पक्ष को विभिन्न प्रकार के प्रश्नों एवं-आदि करने में इसे सफलता मिलती है। यह लेखन-कला में निपुण तथा अपने पीछा का पोषण करने वाला यशस्वी व्यक्ति होता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में सुन्दरी, दृढशिरी एवं ऊँच-नीच को सम्बन्धने वाली विदुषी गरी के साथ होता है। सन्तान-पुत्र भी उत्तम रहता है। विद्या का खेद लाभ मिलता है। यह राजमान्य, लोक-प्रसिद्ध तथा सुखी जीवन व्यतीत करता है। भाग्योदय ३० वर्ष की आयु में होता है तथा ४५ वर्ष की आयु में प्रत्येक मनेमिलाक ओ' की शक्ति प्राप्त होती पूर्ण ७५ से ८० वर्ष की होती है। इसका सम्पूर्ण जीवन सुखमय बसा रहता है।

(८८२) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी बुध, बुद्धिमान, ऊँचे मध्यम कदवाला गौर वर्ण तथा प्रभाव-शाली व्यक्तित्व-सम्पन्न होता है। यह उच्च कुल में जन्म लेने वाला तथा स्वयं के लक्षणों के कारण अपने कुल में प्रसिद्धि प्राप्त करने वाला, विद्वान्, गुणवान्, धैर्य-सम्पन्न-सम्पन्न, महाधनी होता है। यह सर्वत्र सम्मानित होता है तथा अपने धन का लक्ष्यपयोग भी करता है। साहित्य-सृजन एवं प्रकाशन आदि कार्यों में इसे विशेष लाभ होता है। विद्या उत्तम स्तर की प्राप्त करता है। कृषि-विशेष-सम्पन्न अथवा वैदिक कार्य में सम्बद्ध भी हो सकता है। विवाह लगभग २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, गुणवती तथा मनेनुकूल मिलती है। सन्तान-पुत्र भी उत्तम रहता है। यह अनेक प्रकार के धर्मोपासक होता है तथा मित्रता उत्कर्ष का भाव लाता है। जीवन के २१, २४, २८, ३२, ३५, ३८, ४१, ४५, ४८ तथा ५२ वें वर्ष विशेष महत्वपूर्ण रहते हैं। पूर्ण ८० वर्ष होती है।

(८८३) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर स्वरूप, मध्यम कद, बलिष्ठ शरीर, पादुकी तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। यह वाल्मीक्या से ही पुरानी रहता है तथा विष्णुधर्मन-काल से ही इसके सिद्धान्तों का प्रकाश फैलाने लगता है। यह खेल मारा-पिना से सम्पन्न प्रतिष्ठित एवं धन-आप्तपूर्ण कुल में जन्म लेता है। इसका लालन-पालन भी अमीरी विलासिता से तथा सुन्दर ढंग से होता है। यह वाष्पु साहित्य, नाट्य एवं काव्य-संगीत, छिन्न, तथा सद्गुणी होता है। इसका विवाह १२ वर्ष की आयु में ही हो जाता है तथा पत्नी सुन्दरी, मनोरमा, कुछ स्थूल शरीर वाली, आकर्षक एवं मनोरम व्यक्तित्व सम्पन्ना होती है। यह जीवा के प्रति उदासीन रहता है तथा जीवात्मक क्रमों में नहीं पड़ता। भाग्योदय वचन से ही कर्म होता है तथा जीवन मृगशीर्षक का रहता है। इसके बाद अष्टादशवर्ष होती है। पूर्ण २५ वर्ष अथवा इससे अधिक भी हो सकती है।

(८८४) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुन्दर शरीर, मध्यम कद, पुष्ट, रोमाञ्च, मधुरभाषी तथा आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। इसके मित्रों की संख्या अत्यधिक होती है। इसके लक्ष्य कोई विद्यार्थी-व्यापार नहीं करते। यह राजमात्र, उच्चाधिकार, उच्च शिक्षित तथा उच्च स्थिति से लाभ उठाने वाला होता है। इसका विवाह लगभग २० वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशक्ती तथा मनोरम मिलती है। भाग्योदय विवरोपान्त ही कर्म होता है तथा ४५ वर्ष की आयु में ही यह सफलताओं के शिखर पर पहुँचता है। अपनी पत्नी के प्रति निरत यह अन्य किसी से भी संबंध राखता है। इसका व्यवसाय शिक्षा, शिक्षालय अथवा औद्योगिक वस्तुओं से सम्बन्धित होता है। यह आजीवन अप्रतिपक्ष ही बना रहता है। कभी किसी कर्म की माही का विवाह नहीं करता। सन्तानसुख उन्मादित है। पुत्र-पौत्रों से पुकारे २० वर्ष तक जीवित रहता है।

(६६५) - इस जगज्जुडली का स्वामी सुद्धा, मोहक जातिव वाला, मधु माकी नया जल हदय का होता है / यह अनेक गुणों से सम्यक्त नया राज एक लोक के समान पावे वाला नया जलित-कलाओं का प्रेमी होता है। इसका माजोदय व-पयन से ही आगे हो जाता है। यह शिक्षा गृह का कोने हेतु सुद्धा स्थानों पर भी जाता है नया राजका कार्य-देश से बाहर (विदेशों) में भी रहता है। इसका विवाह २५ से २७ वर्ष की आयु के मनकांक्षित पत्नी के साथ होता है, पत्नी सुद्धा, मनेउद्धरा नया महाकांक्षिणी होती है। यह प्रत्येक क्षेत्र में पति को सहयोग प्रदान करती है। ५० वर्ष की आयु तक यह जातक मालीमाली प्रसिद्ध होता है नया स्वर्णि प्रमान जाफ काता हुआ, निश्चित एक सुद्धा जीवन व्यतीत करता है। वह-बाह्य स्वर्णि ही इसे पश्चात् नया आदमी उपलब्धि होती है। यह लगभग २० वर्ष की आयु जाफ करता है।

(६६६) - इस जगज्जुडली का अधिपति शरीर से हठ, सुद्धा, गुणवान्, अनेक विचारों का हान नया प्रफलता से जाफ करने वाला होता है। यह क्षेत्र से वसील भवका (उद्देश्य) भी होता है। यह अपने उद्देश्य की प्राप्ति हेतु अधिक उपलब्ध करता है नया उद्देश्य के प्रफल भी होता है। यह नीचे से ऊपर की ओर उठता नया ४५ वर्ष की आयु तक उन्नति के बाद शिवाजी का सीन होता है। इसका माजोदय विदेश के ही होता है नया कि यह काह्य भी जाता है। इसके विवाह एक से अधिक होने संभव है। यदि पत्नी के गृह बलवार हो तो दूसरा विवाह नहीं होता। इसे सन्तानों के प्रत्येक सुख मिलता है, पानु दानक पुत्र लेने का योग्यता का समकता है। इसके जीवन के अनेक उदात्त-पराय आते रहते हैं। ३० से ४५ वर्ष की आयु के बीच अनेक का निराशाओं का सामना भी करता है। आयु संपन्न होती है।

पृ०
सं०
४२३

कु०
२०

(८८७) - इस जमाकु-चक्र में उत्पन्न सुदृढ़ स्वभाववान्, आवुक-पुष्टि का, सहृदय, गुणी, विद्वान्, कवि, वक्ता अथवा उपदेशक होता है। इसे जलीय-वस्तुओं से विशेष उम होता है तथा श्वेत रंग की बान्हे - वृक्ष, रत्नादि - विशेष रूप से प्यारा करता है। यह किसी के विशेष की चिन्ता नहीं करता तथा न्याय के लिए मित्तर संघर्ष - रत्न बना रहता है। कोमल भावनाओं से पूर्ण होने पर भी यह अनुचित बात पर अपना उच्चतम आगुण कातेता है तथा उसका पूरी शक्ति से प्रतिरोध करता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में सुदृढ़ तथा उच्चकुलीन कला के साथ होता है। इस की पत्नी गंभीर प्रकृति की तथा लज्जका होती है, वह पति का प्रत्येक कृत्य में आप्रत्यक्ष सहाय देती है। विवाह के कुछ समय बाद यह अधिकारों से उन्नत लगता है तथा ४० वर्ष की आयु तक स्थिति स्थिर जाती है। ५० से ५५ वर्ष की आयु कुछ कष्ट उद रहती है। पूर्णतः ७५ वर्ष के लगभग होती है।

(८८८) - इस जमाकु-चक्र का स्वामी सुदृढ़, स्वल्प - हृदय, पुष्टि का तथा सादसी होता है। यह अपने विचारों से अनेक लोगों को प्रभावित करने का उपलब्ध करता है, यद्यपि उसके प्रभावना नहीं मिलती। यह वादेस में रहकर सुख तथा सम्मान प्राप्त करता है तथा बाद में जो लौट आता है। इस की बुद्धि बहुत तीव्र तथा तर्कशक्ति प्रभावशाली होती है। यह अपने दिग्गज के लोको के सम्पर्क में रहता तथा उन्हीं से कार्य भी उठाता है। इसका विवाह २०-२२ वर्ष की आयु में होता है, यद्यपि पत्नी से मेलका नहीं हो पाता, अतः विवाहीन - जीवन कष्ट उद रहता है। संतानों से भी सुख नहीं मिलता। यह पत्नीनियों में अप्रसन्न होता तथा उनसे प्रभावित बना रहता है। इसका आयु लग २८ से ३५ वर्ष के बीच होता है। वादेस में रहकर यह वषट्का चले चलने का होता है। अधिकतर दृष्टि से इसका जीवन सामान्यतः अच्छा बना रहता है। पूर्णतः ८० वर्ष तक हो सकती है।

(६६६) - इस लम्बाई; चक्र का अक्षिणी सुका, छिन्नदर्शी, दृक्विचारों का, साहसी, उदात्त
पुष्टिका तथा प्रत्येक पक्षीपक्षि में प्रसन्न बना रहने वाला बड़ा धीर-गंभीर होता है। यह वादों
में जाकर चतन तथा प्रशन्न जाता जाता है। आकस्मिक रूप से भी चतन का लाभ होता है। यह लम्बित
कलाओं का प्रेमी तथा स्वयं भी कलाकार होता है। यह दुहरी छिन्नदर्शी होने वाला तथा लक्ष्मण सुख
पाने वाला, ऐसेने माता-पिता का भी अल्पना लाभता होता है। विष्णु का उत्तम लाभ होता है। इसका
विवाह २४ वर्ष की आयु तक होता है। पानु पत्नी से विशेष प्रेम नहीं मिलता, अतः यह परीक्षाओं
से भी प्रसन्न नहीं होता है। यह गंभीर साहित्य का अध्येता होता है। इसका आयु ३० वर्ष की
आयु तक होता है। जीवन के ३२.३७, ४४.४८, ५१ तथा ५३ के वर्ष महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। संतान
सुख प्राप्त करता है। यह लगभग ७० वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(१०००) - इस लम्बाई; चक्र में उत्पन्न हुआ सुका, उमावशाली, कथा-वाणी में मन लगाने
वाला, कला-प्रेमी तथा स्वयं भी कवि अथवा साहित्यकार होता है। इसका विवाह २८ वर्ष
की आयु तक होता है। पत्नी सुन्दरी, विदुषी, हानवान्, कुछ स्थूल बगैर वाली गौवर्णी तथा
चक्षुःशाली होती है। इस लम्बक को पत्नी-पुत्र के अतिरिक्त लम्बान-पुत्र भी प्रत्येक माता के
उपलब्ध होता है तथा पुत्र-पौत्रों से पुष्प होता है। लम्बी आयु प्राप्त करता है। पक्षीपक्षियों
से प्रार्थना करता है। इसके लिए कठिन रहता है, इसके व्यवहार भी यह समाज में प्रशंसित, मान
तथा चतन का लाभ पाता है। आयु २५ वर्ष की आयु है अल्प होता है तथा जीवन
मिता उत्पत्तिशील बना रहता है। अन्तिमालम्ब में यह रोगों के कारण मरता है तथा दुःखी होता
है तथा पक्षियों के प्रति उदासीन होता है। ७५ वर्ष की आयु प्राप्त होती है। दुर्घटनाग्रस्त मृत्यु भी सम्भव है।

(१००१) - इस जन्माङ्ग चक्र वाला जानक सुन्दरी (काला, मधुर स्वभावका, अपनी वाणी से सब लोगों को प्रभावित करने वाला, क्षमाशील, उदारचित्त, कोमलभावनाओं से युक्त तथा लोक में सर्वत्र सम्मान पाते वाला होता है) यह ज्ञानशील तथा सन्तुलित चिन्तों का तथा शत्रुओं से भी मित्रता स्थापित करने का इच्छुक होता है। इसके मित्रों की संख्या अधिक होती है। इसका धन आ-
र्थिक रूप से तट होता है। किसी ऐसे धन की कमी नहीं आती। यह बड़े निर्मल तथा शुद्ध हृदय का होता है, जिसकी कुछ लोग इसे गलत समझते हैं। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला, स्वाभिमानी तथा सुयोग्य होती है। वह इसके पहले कर्म में सहयोगिनी सिद्ध होती है। इसे पत्नी तथा सन्तानों का पूर्ण सुख प्राप्त होता है, पञ्चविंश अक्षरीवाणी जनों से इसकी पट्टी नहीं कटती। आयु ३० वर्ष की आयु में होता है। पूर्ण आयु ७० वर्ष होगी।

(१००२) - इस जन्माङ्ग कुण्डली वाला सुखी गौतम, हठशील का, पाकुमी तथा स्वभाव से उदार होता है। इसकी वाणी मधुर तथा अवेशालक होती है। यह लक्षिक, बुद्धिमान, गुरुवान् तथा किसी भी बात की तट तक जा पहुँचने वाला होता है। शिक्षा पण्डित प्राप्त होती है। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुयोग्य तथा मनोबुद्धि मालिनी है। ३० से ३५ वर्ष की आयु के बीच इसकी आर्थिक-स्थिति बहुत अच्छी होगी है, तब यह अपना भवन बनवाना तथा वाहन भी खरीदता है। इसके भाग्यलक्ष्मी की कोई सीमा नहीं होती। यह अपनी सम्पत्ति को कोशों की प्रतिक्रिया में सफल होता है। इसका जीवन अनेक खतरों से घिरा है, पानु यह उन हठ-स्वभावों तथा कठिन हठों पर विजय पाते हुए अनेक खतरा रहता है। जीवन के २८, ३०, ३५, ४०, ४३, ५९ तथा ५७ वें वर्ष विशेष गमवकारी रहते हैं। पूर्ण आयु लगभग ७० वर्ष की होती है।

(२००३) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सामान्यतः सुखा, स्वास्व, मन्त्र कदवाला तथा आर्थिक व्यक्तित्व वाला होता है। यह विष्णुध्वज में रुचि गरी जाया, अतः विष्णुध्वज की कर्महीनता है, तथापि व्यावहारिक - बुद्धि का प्रयोग को के यह जीवन में निराला उत्तमि काला चलता जाता है। यह गुण पौष्टिक के विकास का नाहें अर्थात् वही स्वका आग्नेय भी होता है। विलास एवं लोभ सागरी तथा रत्नादि के व्यवसाय का। इसे आर्थिक-लाभ होता है। बाहरी लोगों से इसे विशेष लाभ होता है। यह शत्रुओं को पराजित करने वाला तथा प्रत्येक परिस्थिति को अपने अनुकूल बना लेने में प्रसन्न होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी मनोरुद्धला मिलती है। वह अपने पतिक प्रत्येक कार्य में सहायक सिद्ध होती है। सन्तान सुखभी प्राप्त होता है। आग्नेय ३० वर्ष की आयु में होता है तथा सम्पूर्ण जीवन प्रायः सुख प्रवर्धक बीतता है। आयु मध्यम प्राप्ता होती है।

(२००४) - इस जन्म कुण्डली का अंधिपति सुखा, सुख, गौरव, परीक्षी, आर्थिक विचारांश तथा ईश्वर भक्ता होता है। यह मन्त्र-निर्गता तथा धर्म के कुछ विषय में विशेष रुचि लेता है। विवाह २६ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी तथा सन्तान से पूर्ण सुख प्राप्त होता है। पत्नी अत्यन्त सुन्दरी, पत्नी पालतु पुष्ट देह वाली, अत्यन्त सज्जन तथा प्रत्येक कार्य में पतिके साथ सहयोग करने वाली होती है। इस जीवन का रहन-सहन ऐश्वर्यपूर्ण होता है तथा समाज के निराला मान-परिष्ठा वरी होती है। इसका आग्नेय १८-२० वर्ष की आयु से ही आरंभ होता है। पालतु जीवन में कुछ रुकावट आ जाती है जो ३० वर्ष की आयु में पूर्ण हटकर दूर हो जाती है। सु-पान्त यह निराला उत्तमि काला चलता जाता है। सन्तान तथा परीक्षाओं से भी सुख मिलता है। जीवन के ३५, ४० तथा ४६ के वर्ष विशेष उत्तमि का काल सिद्ध होते हैं। (प्रमाण ६० से ६५ वर्ष तक होती है)

भु०
सं०
४२३

(२००५) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी बुद्धा, सुशील, मधुरभाषी, दृढ़ संकल्पी तथा उदार हृदय का होता है। इसे पिता तथा परिवारियों का पूर्ण सुख प्राप्त होता है। यह बड़े भवन में रहता है तथा उच्च स्तरीय लोगों से सम्पर्क रखते हुए सुखी जीवन व्यतीत करता है। इसे वैदिक-सामान्य पशु परीक्षण में जाया होती है। स्व-प्राप्त से भी यह विपुल धन संचयन कर लेता है, अतः इसे जीवन में किसी प्रकार की आर्थिक-कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ता। यह कलाकारों का आश्रय, संरक्षण तथा सहायता देता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग करने वाली मिलती है। किसी अजीबोगरीब व्यक्ति द्वारा इसे नवीन व्यवसाय करने की प्रेरणा प्राप्त होती है, जिसके द्वारा यह परंपरागत उद्योगों से नाना-प्रकार उत्पन्न करता है। बृहद्बल में शारीरिक शक्ति प्राप्त होता है, तथा यह २० वर्ष की वृद्धि प्राप्त करने में सक्षम होता है।

(२००६) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य दृढ़ शरीर का, धीर-शक्ति, वीर, उदार तथा बुद्धिमान होता है। पशु कामान्ता में जिही चमक का वन का कुत्ता पूर्ण कार्य भी कर सकता है। यह अकारण ही विवश रहता है। धन की इसके पास कोई कमी नहीं रहती। इसका धन अनेक भाग नष्ट हो जाता है, पशु जिह्वा जोर-जोर से आर्थिक-सिद्धि बनाना करती है। शत्रुओं का मान-मर्दन करने में इसे सफलता मिलती है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, भली, पशु शिव स्वभाव की होती है। सन्तान के कारण इसे दुःख भी प्राप्त होता है। इसका आयु ३५ वर्ष की आयु में किसी प्राकृतिक-कारण (मशीनरी संबंधी व्यवसाय) से होता है। बाल्या धन-हानि होने के कारण इसकी आर्थिक-वैयक्तिक बृद्धि उत्तम नहीं हो पाती। जीवन के २२, २८, ३२, ३५, ३८, ४२, ४६ तथा ५२ वर्ष लगभग रहने हैं। प्रसिद्ध ७० वर्ष से अधिक होती है।

(१००७) - इस जन्म कुण्डली वाला जन्मक सुका स्वल्प का, गुणवान्, स्वल्प, धी - मंदी स्वभाव का तथा अपने कुल में से ६० होना है। इसे विना का जन्म मन्त्रिक नहीं होता, तथापि यह अपनी व्यावहारिक बुद्धि के उद्योग से व्यवसाय अपना राजकीय सेवा कार्य में संलग्न होकर अपनी लाभ उठाना है। इसका विवाह २० से २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुधी तथा सैर विवाह करि लेती है तथा ३१ वर्ष की आयु तक पति की विवाह संलग्न करी रहती है, तथापि ३१ वर्ष की आयु होना है (अथवा) सन्तान से भी कुछ लाभ होता है। माजोद २२ वर्ष की आयु के बाद होता है। इसे राजकीय सेवकों जमाने लाभ होता है तथा कर्मिकी विधि परमाणु, उत्तम करी रहती है। जीवन के २३, २९, ३४, ३६, ४० तथा ४६ के वर्ष लाभप्रद तथा १२, १८, २०, २४ एवं ५२ के वर्ष कष्टप्रद सिद्ध होते हैं। प्रणति ६० से ७० वर्ष के बीच होती है।

(१००८) - इस जन्म कुण्डली वाला सुदृढ सुका, बलिष्ठ, पराक्रमी, विना कान् तथा धी - मंदी होता है। इसे राज तथा विना की ओर से लाभ लाभ होता है। दीर्घजीवी विना इसकी बहुत सहायता का है तथा इसके व्यवसाय को मालीमंति (कारिण) का देता है। अपने परिवार के यह सकारिक करी होता है। इसका विवाह १८-२० वर्ष की आयु में ही होना है। पत्नी अल्प सुधी तथा सुख देने वाली होती है। वह बहुत, हास-विना से युक्त तथा राजालक व्यवसाय करी होती है। इसे कुछ अल्प मात्र हास धन चहुँ-चाने तथा कष्ट देकर उपलब्ध करी है, पण्डित यह उन सब या विना या लेता है। सन्तान से सुख मिलता है। पण्डित पत्नी को चोर लगता करी सामूहिक कार्य भी भोगने करते हैं तथा दीर्घकाल तक अलग भी रहना कर सकना है। ३०, ३२ तथा ५० के वर्ष में इसे विशेष लाभ होता है। माजोद २२ वर्ष की आयु में ही होना है। प्रणति लगभग ७० वर्ष होती है।

भ०
सं०
३२३

(१००८) - इस जगज्जुल्लो का नाम सुगुण स्थूलकाय, गौरवर्ण, पण्डित, विद्वान् तथा उदा स्वभाव वाला होता है। यह बड़ा पानी होता है तथा धूर्त लोगों का दण को अपने कान को नष्ट का करता है। दण के नष्ट हो जाने का स्वयं भी दुःख पाता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक होता है। पत्नी वाचाल तथा धर्मार्थ का विचार करने वाली होती है। फलतः उसे सुख प्राप्त नहीं होता, यह जानकर सुदृढ़ता देगी वही के व्यवसाय से जीविकोपार्जन करता है। पत्नी को उनके हेतु के के कारण कभी - कभी आपत्त दुःखी एवं आशंका भी होता है। ५५ वर्ष की आयु तक पहुँचने - पहुँचने से सब प्रकार की सुख - सम्पत्तियाँ उपलब्ध हो जाती हैं। किसी प्रकार का आशय नहीं है। सामान्यतः सम्पूर्ण जीवन सुख पूर्वक ही व्यतीत होता है। स्वच्छ भी प्राप्त की जाती है। पत्नी से विशेष सुख नहीं मिलता। पूर्ण ६२ वर्ष होती है।

(१०१०) - इस जगज्जुल्लो का नाम सुधा, हृष्ट-पुष्ट, गुणवान्, विद्वान् तथा मेधावी होता है। इसका जीवन एकलता पूर्ण होता है। यह पत्नी को नहीं को से दुःखी तथा चिन्तित बना रहता है, तथापि उनके प्रति कोई दुर्भाव नहीं रहता, कश्चित् संदेह उनके सुख - सम्पन्न का ही प्राप्त रहता है। इसका विवाह २२ से २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुधी, मधुमयिणी तथा प्रिय के दोष का चले वाली होती है। जानकर का मज्जे दण माना - विना के सामने ही होता है। यह अपने मान - विना की विवाही रख कर जाता है। इसकी विशेष उमर ३५ वर्ष की आयु के बाद होती है। ५५ वर्ष की आयु में यह कोई नवीन कार्य कार्य करता है तथा उसे पण्डित नाम उठाता है। इसका सम्पूर्ण जीवन सामान्यतः सुखी बना रहता है। अपने व्यवसाय से यह अन्य लोगों को भी सुख पहुँचाता है। इसकी पूर्ण ७५ से ८० वर्ष के मरण होती है।

(१०११) - इस जगज्जुडली का अधिपति सुदा, स्वप्न, स्वप्न कदवाला, मनी, दार्शनिक विचारों से युक्त, वैरागी उद्योग का होता है। इसे सारा नया बड़ेमर्ग की ओर से विशेष सुख नहीं मिलता, जबकि छोटे मार्ग से सहजता प्राप्त होता है। शिक्षा व्यवस्था रहती है। विवाह २२ वर्ष की आयु के होता है। पत्नी सदा सुख, पालु गीतों चिन्ता की होती है, फिर भी वह पति को समुचित हक सुखी बनाये रखने की चेष्टा करती है। यह वैदिक-सामान्य के लगभग स्वोपनिषद् धर्म से भी पर्याप्त जानी होती है। कभी-कभी यह ऐसी परिस्थितियों से युक्त है कि ईश्वर के साधन-साधन अपने गुणार्थ से भी विश्वास को देता है। इसके पुत्र अधिक नहीं होते। पुत्रिक अधिक होती है। यह उनके लिए बहुत कुछ कामानी है। पुत्रों के बड़े हो जाने पर यह किसी नवीन व्यवस्था को आरंभ करती है। नया अपने धर्म धर्म भी करता है। इसे ६० से ६५ वर्ष की उम्र में प्रणति प्राप्त होती है।

(१०१२) - इस जगज्जुडली का स्वामी सुदा, स्वप्न कदवाला, स्वप्न, दार्शनिक विचारों का नया उदाहरण स्वप्न का होता है। इसे जीवन में कभी सुख नहीं मिलता और न कोई कीमती ही वेश्या होती है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु के होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मने दुखला मिलती है। यह साहित्य, संगीत तथा कलाओं का प्रेमी होता है। इसकी आसानी के लिए एक से अधिक होते हैं। अतः इसकी अधिक-पिन्नी सुदृढ़ बनी रहती है। यह पदोन्नति के लिए भी प्रयत्न करनेवाला होता है। इसके अपने व्यवस्था में राजकीय सहायता भी प्राप्त होती है। जीवन के ३५, ४५, ४७, ५०, ५३ तथा ५७ के वर्ष विशेष लाभ प्राप्त किए होते हैं। यों, इसका मागे दफ २५ वर्ष की आयु से ही आरंभ होता है। यह एक साधक कर्मियों को काम नया उन सब के सफल गों प्राप्त करता है। इसकी आयु व्यवस्था अर्थात् ६०-६५ वर्ष के लगभग होती है।

(२०१३) - इस जन्म कुण्डली में (उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, पुष्ट शरीर वाला, गौ वंश तथा हरे के रंगों वाला होना है) यह सर्वत्र चिन्तित बना रहना है। इसे दोटे तथा के मरण की काल है बुढ़ाव-सहजोग की उपलब्धि होती है। इसके जन्म किशोरोपर काशी के मर्ष प्रकलन पूर्वक हुआ है। इसकी आयु का अंशिकमार्ग मरण के लिए कार्य कोरेदुप ही प्यारी होना है। इसे अपने लिए नमो धन की चिन्ता होती है और न उसके प्रति कोरे भाव होना है। यह अपने पनीवाल तथा पुत्रों के हित में धन खर्च करता है। पुत्रों इसके अलावा ही हो रहे हैं तथा इसे सुख दे रहे हैं। इसका विवाह २० वर्ष की आयु के लगभग होना है। पत्नी सुन्दरी तथा सुलक्षणा होती है, पालु हठमयी होती है। वर्ष ३०, ३५, ३६, ३७ तथा ४५ में धन का विशेष लाभ होता है। साधारणतः आर्थिक-हृष्टि से सम्पूर्ण जीवन सुखी बना रहना है। पूर्णपु लगभग ६२ वर्ष की होती है।

(२०१४) - इस जन्म कुण्डली वाला मनुष्य स्वाध्यायी, सुन्दर, मधुर मयी तथा विद्वान् होता है। इसे वैदिक-सम्पत्ति का लाभ मिलना है तथा स्वयं भी पण्डित धर्म कथाना है। अतः धन की कोरु कमी नहीं रहती। विदेशों के संबंधों से इसे उच्च धन-लाभ होता है। इस उक्त इसकी आयु की के अनेक मार्ग खुले रहते हैं। इसे राजा द्वारा उच्च सम्मान मिलना है तथा कोरे को यश मिलना है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा अद्भुत रूप की मिलती है। सन्तानों से भी सुखी रहना है। यह उल्लेख व्यवसाय में प्रकलन, यश तथा सम्मान अर्जित करता है। अकस्मिक धन-लाभ के भी अनेक अवसर प्राप्त होते हैं। जीवन के २२, २८, ३२, ३४, ३८, ४१, ४५, ४८, ५२ तथा ५६ के वर्ष विशेष लाभ उठाते हैं। वृद्धावस्था में धन रोग की पीड़ा होती है। पूर्णपु ८१ से ८३ वर्ष के मरण होती है।

(२०१५) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी स्वर्ण शरीर का, सुन्दर, मधुर कद वाला, अनेकक कर्मिक लक्षण, धनी, सुखी तथा दीर्घजीवी होता है। विवाह लगभग २५ वर्ष की आयु में होता है। पुत्र-पुत्रियों का पक्षि सुख भी मिलता है। पहली सुन्दरी तथा मनो-मुग्धला मिलती है। राज की ओर से उसे आजीविका एवं धन-लाभ के अनेक अवसर प्राप्त होते हैं। ३० वर्ष की आयु में इसका पूर्ण आशोधन होता है तथा ५० वर्ष की आयु तक पक्षि सम्पत्ति आर्जन का उसे पुत्रों तथा भ्रातृ के बँटका, स्वर्ण लक्ष्मी मिलेगी जो से विपत्ति होकर भगवान् जीवन व्यतीत करता है। इसका उत्कर्षकाल (जी लोको के लिए मान्य ५५ सिद्ध होता है) जीवन के ३२, ३४, ३६, ४२, ४४ तथा ४६ के वर्ष विशेष उत्कर्षकाय सिद्ध होते हैं। यह आजीवन स्वस्थ बना रहता है तथा अन्त समय में भी कोर/कर नहीं जाता। पूर्ण २० वर्ष की होती है।

(२०१६) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति दुबले-पतले, पालु (चमक शरीर वाला, जंभीर विचारक तथा अनेकक कर्मिक काला होता है) इसका आशोधन अपने ही क्षेत्र में होता है। यह स्वर्ण के बीच रहता हुआ भी धन-धन्य प्राप्त होता है। यश-मान-प्रसिद्ध प्राप्त करता है। इसका विवाह लगभग २५ वर्ष की आयु में होता है। पहली सुन्दरी, पालु सुगता मिलती है, कलम: दाम्पत्य-सुख अधिक नहीं मिलता। सुनान-सुख भी सामान्य ही रहता है। यह अनेक गुणों से युक्त तथा सुखी बना होता है। यह कालावस्था में भी धनी होता है। इसकी आयु की लोभ अच्छे रहते हैं। ३५ वर्ष की आयु में यह किसी नवीन कार्य को कार्य करता तथा अपने पक्षि लाभ उठाता है। इसे अनेक विधियों का लाभ प्राप्त होता है। जीवन सुखसे बीतता है। पूर्ण २० वर्ष की होती है।

(१०१७) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य अत्यन्त सुधा, उमावकासी व्यक्तित्व सम्पन्न, मधुरभाषी, तपस्वि कटु-सत्य कहने वाला होता है। यह अत्यन्त विद्वान्, तार्किक तथा सौभाग्यवादी होता है। इसके गुण, योग्यता एवं विद्वत्ता के कारण धन-सम्पत्ति इसके समीप गींचा-चला आता है। यह वास्तव में भी उभावित काले अपना अद्भुत बग लेता है। यह अपने कार्य क्षेत्र में किसी का हस्तक्षेप सहन नहीं करता। इसका विवाह लगभग २० वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी उपाय-रुग्णा बनी रहती है, जिसके कारण जोतकें चिन्तित करता रहता है। सन्तानों के होने हुए भी इसका चित्त अशान्त बना रहता है तथा अपाहि उत्तम दिव्य देते भी भीन-भी-भीन बुझा रहता है। २२ से २४ वर्ष की आयु के बीच इसका भाग्योदय होता है, तब पान्त यह निराला उत्कर्ष का ना-चला जाता है। इसके जीवन के २४, २८, ३२, ३७, ४१, ४४, ४८ तथा ५२ वें वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। (१०१८) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुधा, वाक्प्री, सचका, हानी, विद्वान्, गुणवान् तथा शास्त्रज्ञ होता है। यह साहित्य का सृजन करता है तथा नवीन कार्य का धन कमाता रहता है। इसे अपनी आर्थिक-स्थिति से सन्तोष बना रहता है। धन की अपेक्षा सम्मान पाने की इच्छा अधिक रहती है। यह स्वयं विशेष सम्मान प्राप्त करने के लिए कर्म-कर्म शालीनता की सीमाओं को भी पार करता है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में ही हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा गले स्वभाव की होती है। तपस्वि उससे सुख एवं सन्तोष की प्राप्ति नहीं होती। धर्म-वर्तनी के विषय में उपाय-चाकी ही रहते हैं तथा सन्तति-लाभ तक ही सीमित बने रहते हैं। पत्नीजों की ओर भी यह आकर्षित हो सकता है। २५ वर्ष की आयु से इसका भाग्योदय होता है तथा निराला उत्कर्ष बनी रहता है। धन तथा सम्मान का यथार्थ लाभ होता है। जीवन लगभग ७८ वर्ष का होता है।

(१०१८) - इस जमाऊ चक्र में उपन्य सुदृष्ट सुदा, स्वप्न, अफनोकी तथा अक्काण ही चिन्तित बना रहने वाला होता है। इसकी आमदनी के अनेक स्रोत होते हैं, जिसके कारण इसे कभी आर्थिक-कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़ता। तथापि धन के प्रति इसके मन में गहरी दृष्टि बनी रहती है। यह अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति हेतु अनेक भवनों तथा सार्वजनिक प्रतिष्ठानों की संचालना करता है। यह अपने सुपरा को दू-दू तक फैलाने के लिए सचेष्ट बना रहता है। यह समय-समय पर ही जल लेता है और समय-समय पर ही मृत्यु को जाना होता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु तक होता है। पत्नी कुलीन-जीवा, सुदृष्ट, सुशक्ती, विदुषी तथा मनोरंजकता प्राप्त होती है। यह अपने अंगुष्ठ पर रत्न डाला, उसके कार्य-परी की सलाह से करता है। इसे सन्तानों का भी विशेष ध्यान होता है। जीवन में सुखी रहने हेतु यह लगभग ७५ वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(१०२०) - इस जमाऊ चक्र का स्वामी सुदा, बलवान, भाग्यवान्, मजबूती तथा उच्च-कांक्षाओं से सम्पन्न होता है। इसका हृदय जितना विस्तृत होता है, कार्यक्षेत्र भी उतना ही विस्तृत होता है। यह सभी को प्रभावित करने वाला तथा सर्वत्र प्रश-समान, सदा तथा स्नेह प्राप्त करने वाला होता है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु तक होता है। पत्नी सुदृष्ट, सुशीला, आस्था-परायणी तथा सहयोग करने वाली होती है। उसे भी अपने पति की माँ की ही आर्थिक सहायता प्राप्त होता है। वह लोकोपकारी कार्यों में संलग्न बनी रहकर सुपरा-आगिनी बनती है। जीवन का भागीदर ३५ वर्ष की आयु से पूर्व ही होता है तथा मित्रता-व्यक्ति के पक्ष पर अंगुष्ठ होता रहता है। यह महापुरुष के रूप में दीर्घकाल तक अपने कुल, समाज तथा देश को प्रभावित करता हुआ सुपरा प्राप्त करता है तथा लगभग ८० वर्ष की आयु तक जीवित बना रहता है।

(१०२१) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुदा न का कोमल शरीरवाला, एक विचारों का, सुव्यवस्था विदार होता है। यह कार्मिक जन्मिल सम्पन्न होता है, तथापि धन का आनन्द बना रहता है। यह पदोन्नति के रह का जीवनोपार्जन करता है तथा नीचों की संगति में सुख का अनुभव करता है। उनके निर्देशात्मक कार्य करते हुए जीवन बिताता है। इसे जल के मध्य रहता है, तथापि जल के ही लोभ भी उठाता है। परीक्षकों के प्रति इसका विशेष लगाव रहता है तथा अपने अवशेषक कार्यों की उम्मेद का के भी उनके प्रति लागू बना रहता है। २२ वर्ष की आयु में इसका विवाह होता है, तथापि अपनी पत्नी से सन्तुष्ट नहीं होता। ३२ वर्ष की आयु में यह छोड़ा धन उठा कर के कोठ/मकान आदि करता है, यानु उसमें लफला नहीं मिलती, तब इसे पुनः किसी की नौकरी करती है। इसका जीवन अपना सामान्य है। पूर्णपु लगभग ७० वर्ष की होती है।

(१०२२) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुदा, स्वल्प, सुखी तथा विदार होता है। (यह पेशे के चिकित्सक हो सकता है) इसकी आय के साधन निम्नस्त्री के योग होते हैं। यह वाक्पटु-चतुर होते हुए भी लोगों पर सहज ही विश्वास कर लेता है, फलतः विश्वासघात का शिकार भी बनता है। यानु विश्वासघात का इस पर कोटि विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता, क्योंकि इसे लाभ का महत्त्व योग बना रहता है। इसका विवाह २२-२३ वर्ष की आयु में होता है, तथापि यह अल्प दिनों के भी सम्बन्ध बनाये राखता है। लगभग २४-२५ वर्ष की आयु में होता है। सन्तुष्टाना यह निभी नवन भी बनवा लेता है। परीक्षकों द्वारा इसके धन की हानि भी होती है। इसके जीवन के ३२, ३५, ३७ तथा ४२ के वर्ष विशेष लगभग निरु होता है। स्वल्प प्रायः ठीक बना रहता है। इसकी मृत्यु लगभग ८० वर्ष की आयु में, पदोन्नति के होती है।

(१०२३) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुखा, स्वल्प, गुणी, गुणग्राहक, दुष्टों का भला चाहने वाला, माया-मोह से मुक्त तथा विपुल प्रभुत्ववाली होता है। इसका विवाह १६ से २१ वर्ष की आयु में ही होता है। पत्नी सुखी तथा मनोरंजना मिलती है, तथापि यह पति-पत्नी के भी अशांति बना रहता है। अनेक बार गर्भपात हो जाने के बाद इसे एक सुखी पुत्र का लाभ होता है। कई बार वह भी बिना ही लो कुलदीपक सिद्ध होता है। राजा तथा शत्रुओं से इसे कष्ट प्राप्त होता है तथा पाप की हानि भी होती है। तथापि अपने अधवसाव के चलते यह अत्यधिक पाप सिद्ध होकर जाता है। इसका माजोरद ३५ से ३७ वर्ष की आयु के बीच पदोदय में होता है। इसे पत्नी-विशेष का दुःख भी सहन करना पड़ता है। जीवन के ३५, ३७, ३८, ४३, ४०, ४४, ४८ तथा ६९ वें वर्ष विशेष लाभ प्राप्त सिद्ध होते हैं। यह बृद्धावस्था के कारण से कीर्तिमान होता है तथा लगभग ८० वर्ष तक जीवित रहता है।

(१०२४) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति रक्त-मौलवर्ण, हल्के तथा उसके दुष्ट के भोवा वाला, कोपी चमक का तथा पालुमी होता है। इसे शत्रु-पक्ष से कुछ कष्ट भी मिलता है, पालु वेद से कुछ समय तक अपमान देने के अनिरीक्षा कई कुछ गरी बिगाड़ पाते। इसका विवाह २०-२२ वर्ष की आयु में होता है। रानी सुखी तथा केवल चमक की मिलती है। यह उसके पति अशांति बना रहता है। इसका माजोरद २६ से २८ वर्ष की आयु में होता है। पदोदय में रहकर यह अशांति करना है। मान-उत्तिष्ठा भी रक्त उदल बना होती है। यह नीच कर्मियों की सेवा करने भी अपने व्यक्तित्व का उत्तर तथा उल्लव बनाकर रावता है। जीवन के ३०, ३५, ४० तथा ४६ वें वर्ष विशेष करना शुरू करते हैं। पत्नी तथा पालु से पकेष्ट प्राप्त मिलता है तथा सम्पूर्ण जीवन सुखपूर्वक बीतती रहता है। शत्रु लगभग ७० वर्ष होती है।

(१०२५) - इस जात कुण्डली का स्वामी सुखा स्वस्ववान्, स्वप्न करीर, प्रिय वक्ता, अवलगा दुश्मन
बात करने वाला तथा लोक-कवहा में अल्पत कुशल होता है। यह अपने शत्रु तथा मित्र की परिचय
रहिते वास्तव्य कारित्वका, कवि, कलाका तथा विद्वान् होता है। यह सर्वत्र सम्मान तथा सुप्रशान्ता
का होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी अल्पत सुदृढ़ी, लक्ष्मका, गुणवती, मन-
मित्री तथा परिउता होती है। इसका माण्डेय वचन है ही सांग होता है। जिसका पूर्ण
विकास ३५ वर्ष की आयु में होता है। यह जीवन पत्नी उत्तमि करण चला जाता है तथा विदुल ऐश्व-
र्य का स्वामी बनता है। इसे छा-गीका है सुख-शक्ति, वाण्यपद है सम्मान तथा समाज के
लोक प्रियता प्राप्त होती है। जीवन के २२, २८, ३२, ४९, ४६, ४८, ५२, ५६ तथा ६२ के वर्ष
विशेष लाभ प्राप्त होते हैं। इसकी प्रणति २० से ८० वर्ष तक होती है।

(१०२६) - इस जात कुण्डली का अधिवर्ति सुखा तथा स्वप्न करीर का, वाक्पटु, गुणवान्, विद्वान्
तथा प्रतिभाशाली होता है। यह छोटे-बड़े गृहों में सुखा पणिका है सुख पाने वाला, वडीवहीन
है। इसका प्रका की लक्ष्यपण है तथा लोह पाने वाला एवं सैर विज्ञा का लाभ पाने वाला होता
है। इसका विवाह २२ से २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोदुक्ता मिलती है वह
स्वभाव है रक्षिक, कलाका तथा अनेक विज्ञाओं की जानका होती है। यह जातक अपनी
आजीविका एक से अधिक कार्यों द्वारा चलाता है, फलतः इसके पास पत्र की कोठि कमिनी
रहती। इसका माण्डेय २८ वर्ष की आयु में होता है, जो इसे सामान्य-प्रति से बहुत ऊँचा उठाने
जाता है। जीवन के ३५, ४०, ४२, ४५, ४८ तथा ५० के वर्ष अत्यधिक महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं।
यह आजीवन सुखी रहता है तथा लगभग ८० वर्ष से अधिक की आयु प्राप्त करता है।

(१०२७) - इस जमातु-चक्र वाला मनुष्य सुदा, श्रमवर्ण, मोहक कंठितक वाला, जो संकटों तथा कठिनाइयों में भी विचलित न होने वाला थी-गंभीर तथा भाव का धनी होता है। यह उदात्त, व्यापक तथा वाच्य हारा सम्मानित होता है। यह अपने सामान्य चैतन्य-भावगत में एक जैसा है; परन्तु स्वभावतः ही निर्मल विमल भवन में जीवन व्यतीत करता है। इसका विवाह लगभग २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुखी, विदुषी तथा लोक-कल्याण में कुशल होती है। वह सम्पत्तिवान् तथा धर्म-भवन की स्थापना भी करती है। जानक का भावोदय भी विवाह के उपरान्त ही होता है और यह उत्तरेष्ट अधिकारिक धर्म-विमर्श अर्जित करना चला जाता है। यह कलाओं का ज्ञाता, उद्योगिक, अपनी बात को मनवा लेने वाला तथा पशु-पक्षी होता है। पति-पत्नी दोनों ही सुखी-जीवन बिना दुःख लगभग ६० वर्ष की श्रमिष्ठ शान्त करते हैं।

(१०२८) - इस जमातु-चक्र वाला मनुष्य सौम्य, सुदा, हृष्ट-पुष्ट, विष्णु-कृष्ण सम्पन्न, सौम्य तथा लोक-श्रमिष्ठ होता है। यह सब की सहायता के लिए तत्प्रा, अत्यधिक उदात्त, वाच्य तथा सदैव सुखी रहने वाला होता है। विष्णु का केवल लाभ होता है। इसका विवाह लगभग २० वर्ष की आयु में ही होता है। पत्नी मंगल तथा मंगल कुला होती है। उससे सौ-उत्तम का सहयोग प्राप्त होता है। इस जानक की वाणी सुनने के लिए लोग ला लाधित करने रहते हैं। इसका भावोदय-वाच्यकाल से ही आरंभ होता है तथा दाता-पिता भी इसका नाम लेकर लाभ उठाते रहते हैं। यह अपने अस्मिन् लोगों के लिए विनाशपूर्ण आदौ नीच होता है। यह केवल उच्च पदों को सुशोभित करना तथा अनेक उक्त के सामान प्राप्त करना है। देश-विदेश की जगहों का नाम दुःख तथा सुखी जीवन बिना दुःख यह लगभग २५ वर्ष की आयु तक जीवित रहता है।

(१०२८) - इस जन्माङ्क; चक्र का स्वामी सुधा, स्वप्न, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, प्रभावशाली तथा स्वाधीन वृत्ति का होता है। इसकी सहजता चिन्तास्वामी नहीं होती। स्वार्थ-सिद्धि न होने पर इसका व्यवहार रुका हो जाता है। इसका मधुर-व्यवहार प्रायः दिवावही ही होता है। सामान्यतः यह धनी, मानी तथा उच्च पदासीन हो सकता है। यह सरकारी विभाग के अथवा किसी अन्य प्रतिष्ठान में उच्चपद पर कार्यरत रहने पर संकल्पना प्राप्त करता है। विष्णु का लाभ प्रेक्ष्य होता है। सकाविक 22 से 24 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुदृढ़ तथा इसे वशीकरण क्षेत्र में समझ होती है। यह अपनी कर्मी की सलाह का सम्मान करता। उच्च पद पर आचार्य भी करता है। इसके शत्रु भी बहुत होते हैं, पानु के पिछे होते हैं और इसका कुछ विचार भी नहीं पाते। जीवन के 24, 26, 27, 42, 44 तथा 46 के वर्ष उदा-परायण के होते हैं। पूर्णाष्ट लगभग 20 वर्ष की होती है।

(१०३०) - इस जन्माङ्क; चक्र का अधिपति सुधा, स्वप्न, गुणी, चतुर तथा सर्वत्र सम्मान पाने वाला होता है। यह उच्च कुल के जन्म लेता है। किसी उच्चकुल में 'दत्तक-पुत्र' के रूप में आता है। विष्णु का प्रथम लाभ मिलता है। विवाह 24-25 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुदृढ़, विदुषी तथा सुलेख क्षेत्र में सहयोग करने वाली होती है। यह निम्न स्तर के लोगों पर प्रभाव का तत्त्व होता है। इसे राज्यासन भी प्राप्त होता है। इसके पास धन तथा शक्ति की कोई कमी नहीं। आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है। इसका भाग्य 34 से 40 तथा 40 से 44 वर्ष की आयु में विशेष उन्नत रहता है। यह अजीवन सुख भोगता है तथा शत्रु से भी प्रायः निरोग बचा रहता है। यह 60 से 70 वर्ष तक की आयु प्राप्त करता है।

(२०३१) - इस जाकाउ; चक्र का स्वामी स्वप्न, सुन्दर, तेजस्वी तथा लोक-विमान होता है। इसका जन्म सम्यक् जीवा के होता है। अतः काल्पावस्था से ही इसे सब प्रकार के सुख उपलब्ध होते रहते हैं। यह अपने जीवन में बड़े-बड़े काम करता है। पर-स्त्री तथा पालना-पन प्राप्त करने के इसे अनेक अवसर मिलते हैं, जिनका यह अपूर्व लाभ उठाता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। यही कुशाग्र, पालु कर्मवीर एवं आनन्द के अविनाश सम्पत्ति होती है। इसका भाग्यो-दय वालावस्था से ही होता है। यह निराला के लोगों के साथ भी कार्य करने लाभ उठाता है। इसके जीवन के ३२, ४०, ४६ तथा ४८ वें वर्ष विशेष रक्षा देने वाले सिद्ध होते हैं। इसे सन्तान तथा पत्नी दोनों का पक्षेष्ट सुख प्राप्त होता है तथा शरीर भी प्रायः नीरोग ही बना रहता है। यह देश-विदेश का भ्रमण करता है तथा ७५ वर्ष की पूर्ण आयु प्राप्त करता है।

(२०३२) - इस जलकुण्डली का स्वामी अल्प सुख, चला, बुद्धि मन्द तथा सुवक्ता होता है। इसकी वाणी बड़ी प्रभावशालिनी होती है, जिसे सुने वाले इसके अनुमान हो जाते हैं। यह नेत्रत्वशक्ति सम्पन्न तथा शक्ति एवं प्रभावशाली होता है। इसे वाल्पावस्था से ही सुख प्राप्त होता है, अतः इसका भाग्यो-दय भी वचन से ही अल्प दुःख मानना चाहिए। यह मन का उदा होने के कारण अपने से छोटे कुल की कन्या के साथ विवाह करता है। यह विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है तथा सब लोग उसकी उन्नति काते हैं। इसकी पुनर्पत्नी गुणवती, वंश-वृद्धि करने वाली, सेवाप्राप्त तथा अल्पधिक सुख देने वाली सिद्ध होती है। उसे स्वयं भी सर्वत्र विमान प्राप्त होता है। उसके जीवन के २२, २८, ३२, ३६, ४२, ५४ तथा ६२ वें वर्ष महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। साथ जीवन सुखसे बीताता है तथा लगभग ८० वर्ष की आयु प्राप्त होती है।

(१०३३)- इस जन्म कुण्डली का अधिपति स्वामी बुद्ध, जाडू, सुख के हुए विजय काल, आत्म कोषी, उदात्त, साहित्य-संगीत आदि ललित कलाओं में रुचि रखने वाला तथा विभिन्न स्थानों में भ्रमण करने वाला होता है। इसका चेहरा गोल, लाल ३ तब, कान के बराबर देह पर आकर्मिक होती है। इसको विष्णु का उत्तम लाभ मिलता है। विवाह लगभग २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, उमावशासिनी तथा मनोबुद्धिवाली होती है। वह अधिकांश धन-सम्पत्ति, व्यवहार-कुशल तथा विचारवान् भी होती है। वह जानक के आलसी (जानक को जानका, उसे उसके क्षेत्र में अपना दूत-पूरा सहयोग उदात्त करती है, कालः ३५ वर्ष की आयु तक पहलवान् हाथ का के हथियारों से सम्पन्न होता है। यह जानकों द्वारा चले जायें का नाहें तथा कार्य के कारणों में (वर्च भी रख जाता है) आशीर्वाद स्वात्म प्राप्तः जीवनम् उत्तम बना रहता है तथा ७० से ८० वर्ष की आयु में आकर्मिक मृत्यु पाता है।

(१०३४)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी बुद्ध, स्वामी, कोषी (जानक का, पत्नी आर्थिक उत्पत्तिका) होता है। कोष आने पर यह उचित-अनुचित का विचार नहीं करता। सामान्यतः यह आत्मिका उपासक होता है तथा पुत्रप्राप्ति के बल पर ही अपनी जीवन-यात्रा तय करता है। यह अनेक लोगों को अपने अनुसन्धान में खींचता है। कालः इसके अपने ही लोग उच्छेदना शक्ति भी बनाते हैं तथा बुद्ध रूप से बुद्धिमान पहुँचाने का प्रयत्न करते हैं। यह अपने छोटे-छोटे भाइयों से सुख-सहयोग प्राप्त करता है। इसका विवाह २२ से २५ वर्ष की आयु में होता है। दाम्पत्य-सुख तथा सन्तान-सुख उत्तम रहता है। पत्नी मनोबुद्धिवाली मिलती है। मज्जोदक ३० वर्ष की आयु में होता है। जीवन के ३५, ४०, ४५, ५५ तथा ६० के वर्ष विशेष सम्मान तथा धन-सम्पत्ति देने वाले सिद्ध होते हैं। पत्नी-भोजन भी यह रुचि लेता है। देश-निदेश की जानकारी का नाहें तथा ७०-८० वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(१०३५) - इस जात कुण्डली वाला जातक सुदा, मावना-पुष्पान तथा वीजु निरुधि लेने वाला होता है। यह दूसरे की बातों में शीघ्र आ जाता है, पानु हासि नहीं उठाना। इसका मन तथा मस्तिष्क अत्यधिक छिपावली रहते हैं, उनके भील-ही-भील तक-विरकी चलते रहते हैं। यह संजीव में अमिषि रावने वाला तथा धन-सम्पन्न होता है। यह अपने धनका सुपुत्रों तथा दुःपुत्रों - दोनों ही करता है। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है, पानु सकलका है दक्ष एक मनोउच्छला पत्नी पाया भी इसे-दास्य-सुख गरी मिलना, क्योंकि पत्नी प्रायः हर्षावती होती है। सन्तान-पक्ष की ओर है भी यह दुर्गा रहता है। इसका मांजो दक्ष ३० वर्ष की आयु में होता है तथा ४० वर्ष की आयु तक यह पण्डित धन-संचयन का करता है। इसे धन बचाना भी देख आता है। ४० तथा ४५ के वर्ष विशेष लाभ उद सिद्ध होते हैं। यह लगभग ६० वर्ष की आयु प्राप्ति का होता है।

(१०३६) - इस जात कुण्डली का हचामी सुदा, स्वल्प तथा अकर्मक क कितव वाला होता है, तथा शिषुवावस्था में रोग-गुस्त होकर काट भी उठता है। यह अल्पत मनस्वी, बचकात्मक कार्य में लगा रहने वाला तथा अन्तर्मुखी प्रकृति का होता है। यह अपने स्वार्थ के प्रति सदैव सजग बना रहता है। विद्याध्ययन में इसका मन ब्रह्म लगता है, अतः यह विद्वान् भी होता है। यह भाग्य, धन तथा बड़े मर्दाने सुख से छोटी आयु में ही वंचित हो जाता है। विवाह २० से २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोउच्छला मिलती है। मांजो दक्ष २५ से ३० वर्ष की आयु में की-च होता है तथा ३२ वर्ष की आयु के बाद अवतरिणी होती है। उलटि तथा अवतरि का कुम तीन का चलता है। अन्तर् में साधन-सुखी-जीवन की लगता है। यह राज्याधिकार देना कोने वाला होता है तथा जीवन में अनेक बार अर्थिक-संकटों का सामना करता है। इसकी पण्डित लगभग ६२ वर्ष की होती है।

(२०३७) - इस जन्म कुंडली का स्वामी गौरवर्ण, उन्नत ललाट, सुन्दर स्वरूप एवं नेत्रों वाला, चर्मी-गंभीर, मधुर-स्वभाव का, हँसमुख, क्रियाशील तथा अपने काम-काज के कारणाणाओं को उन्मुखित करने वाले होता है। यह अपनी खुश का प्रयत्न करता है तथा जो निश्चय कर लेता है, उसे पूरा करने की दम लेता है। इसका विवाह कुछ विलम्ब तथा कठिनाइयों के साथ होता है। पत्नी सुगता तथा सुखी स्वभाव की मिलती है, यन्त्र विवाहोपाना कुछ समय बाद स्वस्थ भी हो जाती है, फिर भी इसका दाम्पत्य-जीवन उल्लासपूर्ण नहीं रहता। सन्तान-पक्ष से भी विशेष सुख नहीं मिलता। यह धन-प्राप्ति के लिए निरन्तर चिन्तित बना रहता है तथा धन की कमी न होने का भी, उसे बढ़ाते हेतु मित्रों, उच्चतम शील बना रहता है। यह स्वभाव से आनन्द कृपण होता है तथा निरन्तर धन कमाता रहता है। जीवन में अनेक उन्माद-चढ़ाव आते हैं। जीवन के अन्तिम काल में कुछ प्रमाणों से जाना है कि विवाह २१ वर्ष की आयु के लगभग पूर्ण ६० वर्ष

(२०३८) - इस जन्म कुंडली का अधिपति शन, गंभीर, उन्नत, विशाल हृदय का, स्वस्थ, सुन्दर, उन्नत नाभिका तथा सुन्दर भौतों वाला, उन्नत ललाट वाला, विद्वान् तथा सुधीमान् होता है। यह अनेक कलाओं का ज्ञान, राज्य द्वारा समारम्भ तथा सेवा-कार्य में चहुँ होता है। यह नेत्र-वृद्धि-सम्पन्न होता है। इसका विवाह कुछ विलम्ब से, लगभग २० वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मधुर-कुल मिलती है। लगभग ३२ वर्ष की आयु से होता है तथा ४५ वर्ष की आयु के पूर्व उन्नति का होता है। अविच्छिन्न-जीवन भी उन्नतिशील बना रहता है। इसका धन अनेक कार्यों में खर्च होता है। यह दूसरों के सुख के आकांक्षी धन का अपव्यय करता है। सन्तान-सुख मध्यम रहता है। धर्मिक-आधिक-आभाव के होते हैं। रोग-पीडा भी होती है। पूर्ण ६८ से ७० वर्ष की होती है।

(२०३८) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी लम्बे कद, स्लैफ़ कारीर तथा स्लेब के शौकिया, सामान्य सुन्दर एवं चतुर होगा; पालतु व्यवस्था में यह श्रुति जैसा उच्चतर काल है। यह स्वयं के कुटुम्बानुसंगिक व तबीयतों में रुचि लेगा तथा उनके चार कमरे की संवेष्टा टांगि ही रहना है। इसका विवाह विलम्ब में होगा तथा पत्नी का पूर्ण सुख ही प्राप्त नहीं होगा। यह पत्नी के कारण दुःखी रहना है। सन्तान-प्राप्त भी सामान्य ही रहना है। इसका आयु ३० वर्ष की आयु में होगा, तबसे यह उच्च मार्ग पर चलना शुरू करने वाला तथा चरम संजय भी होगा। जीवन के ४०, ४५ तथा ५२ के वर्ष चरम-दार्ढ्य के होते हैं। वस्तु कुछ समय समय बाद ही आर्थिक-स्थिति में सुदृढ़ होगी है। यह भोग-विवाह में विशेष रुचि रखता है तथा अपने भी चरम का सम्बन्ध बना है। इसकी पूर्ण आयु ६५ से ६८ वर्ष के मध्य ही रहती है।

(२०४०) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुन्दर रूपवान्, अनेक कलाओं में प्रवृत्त, शक्ति विभव का तथा आर्थिक-विषयों का ज्ञान होता है। यह अपने बन्धु-व्याप्तियों तथा साधनों के प्रति विशेष उदात्त होता है। इसकी दृष्टि वैसी तथा लम्बव अनादुःखी होता है। यह सादर जीवन बिताते वाला, अपने चरमों के दिन हेतु व्यय करने वाला तथा योग्यकारी होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होगा। पत्नी मनुष्यकुला प्राप्त होगी है। इसका आयु ३५ वर्ष की आयु में होगा। उसी अवधि से यह सर्वत्र मान-प्रतिष्ठा भी प्राप्त करने लगता है। यह अपने छोटे तथा बड़े भाइयों से लोह-पहना प्राप्त करता है। आयु के ५० तथा ५६ के वर्ष कष्ट-काक सिद्ध होते हैं। जीवन का शेष समय सुख-आति से व्यतीत होता है। इसकी आर्थिक-स्थिति सर्वत्र सुदृढ़ बनी रहती है। पूर्ण आयु लगभग ६८ वर्ष की होती है।

(१०४१) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुदृढ़ बाल, स्वस्थ, नीला, बालु-बाणको से युक्त तथा (उत्प्रेष-मानपाके वाला, स्वभाव से शुष्क तथा सीधी-सपाट, पल्लु कड़वी भाव करेके वाला) होता है। यह अपनी धुन का पक्का तथा गुणरूप से परीणका करने वाला होता है। सामान्यतः यह भुड-स्वभाव का होती है, पल्लु चर्माभ में यह अल्पविक उदात्त तथा सुखका भला चाहने वाला होता है। यह मिलनेवाली के लोगों के दिलों में आता है (उत्प्रेष-लाम भी उठता है)। यह उदा का बीबीक भी होता है तथा युवा के लईक लाम उठता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु तक होता है। दाम्पत्य तथा पितृत्व-सुख उत्तम रहता है। भोजन २५ वर्ष की आयु से होता है, यह शत्रुओं से तथा दुकदके वाली आदि से भी लाभ उठता है। इसका व्यापार विवाहाभ्युदयना रहता है, तथा यह किसी भीदिना बली' का भा (आर्थिक-विकास उत्तम रहती है) धूम्रपि ६७ वर्ष होती है।

(१०४२) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुदृढ़ व्यक्तित्व वाला, स्वस्थ, उमावमानी, धनवान् युवावर्गी तथा उच्चमी होता है। यह लड़ा करी कार्य से लाभ करता है। ४५ से ५० वर्ष की आयु में इसे आर्थिक-लाभ भी होती है, पल्लु सभी इनो सोने से आर्थिक-विकास उत्तम रहती है। इसकी कुटुम्बता उच्चमानी होती है। इसका विवाह २० से २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुदृढ़ तथा सहयोगिनी मिलती है। यह अनेक कार्य में इसकी सहायक तथा कुटुम्ब होती है। इसे पैसा-सम्पत्तिकार्य भी होता है। यह कलात्मक वस्तुओं को संगृहीत करने में रुचि रावता है। इसके बीच के ४०, ४५, ४८ तथा ५२ वें वर्ष कष्टकाळ सिद्ध होते हैं। विद्या तथा पितृत्व का सुख उत्तम रहता है। समाज में मान-परिष्ठा भी उदात्त रहता है। आर्थिक-विकास सामान्यतः ठीक बनी रहती है। धूम्रपि ६८ से ७० वर्ष के बीच होती है।

भ०
सं०
१००८

(१०४३) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुदा, स्वादा, गुणी, उरिमाकामी, राजा दादा सम्मानित एवं केवल लोको के सम्मान रखने वाला होता है। इसे राजा के आजीविका भी प्राप्त होती है। यह सादिल में कचि राखने वाला, कलाओं का ज्ञान तथा सर्वत्र मान-उरिछा पाने वाला प्रशस्ती होता है। इसे २५ वर्ष की आयु में बड़े नारकीष रंग है सुदा तथा मनस्वी पत्नी का लाभ होता है। यह निचों के सहयोग से लाभ उठाता है तथा इसके कार्य में निरर्था विशेष स्तुति प्राप्त होती है। २५ वर्ष की आयु में इसका भाग्यदण होता है, तत्पश्चात् यह निरन्तर उन्नति का रास्ता चलाना है। इसे आकर्षक रूप है - चोर लगने का भय भी उपस्थित होता है तथा दुर्घटनावश मृत्यु हो जाने की संभावना भी रहती है। यदि दुर्घटना से जीवित बच जाय तो यह ५५ से ५८ वर्ष तक की अवधि इससे कुछ अधिक आयु भी प्राप्त कर सकेगा। सन्तान का पुत्र सामान्य विद्या का लाभ मध्ये होता है। अधिक - निरर्था मध्यम केनी की रहती है।

(१०४४) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी अल्प सुदा, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, गुणवान्, विद्वान् तथा लोक-सम्मानित होता है। तथा यह एक सुकांक्षी गीत-गुणि है जो इन रहने के कारण स्वयं को कभी सुखी अनुभव नहीं कर पाता। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोरञ्जक होने का भी इसका दायित्व - जीवन सुखमय नहीं होता, इसका कारण आनंदनी से विरक्ति का अधिक होना रहता है। इसकी सन्तानें कठिनाई में होती हैं और उच्च जीवन नहीं चली। यदि कोई बालक जीवित बच जाय तो वह अल्प भाग्यशाली होता है। इसका भाग्य सदैव एक ही बना रहता है। इसके बड़े साधन से उन्नत - चढ़ाव ही आने है। इसे किसी दुर्घटना में चोर लगने तथा आकर्षक - अपमान की संभावना भी रहती है। इसका सम्पूर्ण जीवन अल्प साधन व्यतीत होता है। यदि अपमान से बचे तो ५५ से ५८ वर्ष तक जीवित रहेगा।

(१०४५) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति पुष्ट शशि, ऊँचे कद का, सुहा, सुकी, उदा तन्हा इसों के द्वारा से हुकी होने वाला होता है यह अनेक विष्णुओं का हारा, फण्डन, हामी तथा विष्णु के बल पर ही उचुा चने पार्ति कने वाला होता है यह अपनी विष्णु-बुद्धि के प्रयोग से नवीन कार्यो में लफलाता उपा फल तथा महान् रक्षाति अर्जित करता है यह ऊँच-नीच कर में नहीं मानता, अफिद तिलकगी के लोगों से विशेष लगाव रावता है और उनकी मलार्थ के लिए प्रयत्नशील बना रहता है। इसे अपने जीवन में अनेक त्रिणों का संलग्न तथा सहयोग भी उपा होता है, तथापि यह अपने चीजों को गिने नहीं देता। इसका विवाह २०-२२ वर्ष की आयु में होता है तथा दाम्पत्य-जीवन सुखमय बना रहता है। अग्रे २० वर्ष की आयु से ही संग्रह होता है तथा वालावृद्धा से अना तक सुखी-जीवन व्यतीत करता है। यह किसी बड़े प्रतिष्ठान का प्रमुख पद पाता है। (पूर्ण २० वर्ष होता है)

(१०४६) - इस जन्म कुण्डली का हामी सुहा शशि, लम्बे कद का, मनोह्र केश, कोमल स्वभाव, आकर्षक व्यक्तित्व स्वयत्, गौवर्ण तथा मधुर मकी होता है यह अनेक गुणों से युक्ता, महापंडित, शत्रु-पक्ष से भी आदर पने वाला, उपदेशक, वक्ता अथवा आचार्य पद का प्रतिष्ठित होता है यह अपनी विष्णु के बल का उचुा चने पार्ति करता है तथा व्यवसाय यदि किसी आर्थिक लाभ उठता है। इसका विवाह २०-२२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, विदुषी, प्रसन्न, मधुराक्षिणी तथा मनोबुद्धि मिलाती है। संग्रह का सुख भी उत्तम रहता है। यह अपनी उच्च प्रकृति के कारण शत्रु तथा मित्र-दोनों का भला करता है यह वक्ता-हृदि स्वयन्त-जीवन जीता है तथा आजीवन संग्रहवाली, महापत्नी, सुखी तथा प्रशस्ती बना रहता है। इसके अंगुष्ठ होता है। यह ६० वर्ष की पूर्ण उपा फलता है।

(१०४७) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति सामान्यतः सुका, स्वास्थ, अलस चतुर, बड़ी सुलभकाली, कुपण स्वभाव का, शिव के प्रति अविश्वासी तथा पुरुषार्थ या भोग करने वाला एक अपने उद्यम के बल पर ही अनेकानेक कार्यों के करने वाला होता है। इसकी कार्यक्षमता बहुरूपमय होती है। अपने विचारों एवं संकल्पों को किसी को प्रकट नहीं होने देता। धन की आस इसी अनेक प्रयत्नों से होती है, अतः कभी आर्थिक-कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़ता। विद्या का प्रवेष्ट लाभ होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु तक होता है। पत्नी सुन्दरी तथा कोमल स्वभाव की होती है। वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में इसे सहजसे प्रदान करती है। इसका सम्बोधन ३० वर्ष की आयु से शुरू होता है। ५० वर्ष की आयु तक यह अपनी आर्थिक-स्थिति को सुदृढ़ बना लेता है। जीवन के ५५, ५८ तथा ६२ वें वर्ष कष्टकायक गिरावटें होती हैं। पूर्ण ७० वर्ष से अधिक होती हैं।

(१०४८) - इस जन्म कुण्डली वाला सामान्यतः सुका, स्वास्थ, धीर-गम्भीर, क्षत्री, उद्यम-हृदय तथा दार्शनिक-प्रवृत्ति का होता है। यह आकर्षक आधिपत्य प्रकट होता है तथा औद्योगिकता के भी युक्त जैसा दिखाई देता है। विवाह २० वर्ष की आयु में ही होता है। पत्नी सुका, कमनीय तथा विद्यावान् होती है। यह धर्म, पशु, रत्न आदि विषयों से निरन्तर व्यस्त रहता है। आर्थिक-लाभ प्राप्त करता है। कार्य क्षेत्र मुख्यतः व्यवसाय में होता है, व्यवसाय जैसा ही होता है। सन्तान-प्राप्त उत्तम (होती है) विदेश यात्राओं से यह लाभ उठाता है। इसकी सम्पत्ति निरन्तर अगल बनी रहती है। इसका हित-सहन भी ऐश्वर्यपूर्ण होता है। समाज के मान-प्रतीक भी प्राप्त होती है। इसे सर्व, हितक-पशु अथवा गोरो से निन्द्य का भय (होता है) और इसी के द्वारा इसकी मृत्यु भी हो सकती है। सामान्यतः यह ७० वर्ष की पूर्ण आयु प्राप्त करता है।

(१०४८) - इस जमादु चक्र में उत्पन्न सुदृढ़ तथा कोमल मांसिका, चिह्न, आकर्षक एवं
भी-भीषी चिह्न का होता है। यह सामान्य जनों के साथ रहने के उपलब्ध का अनुभव
करता है। यह वाष्पाक्षय प्राप्त करता है अथवा किसी परिचित रिश्ते के उच्च पद की कमी
होता है। यह अपने आस-पास रहने वाले व्यक्ति तथा वस्तु-व्यक्तियों के सम्बन्ध में नीचिकोपासी
करता है। विद्या का प्रवेष्ट लाभ होता है। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी
सुदृढ़ तथा सुठाकरी मिलती है। आयु २२ वर्ष की आयु में ही समाप्त हो जाता है। जीवन के
२८, ३०, ३२, ४० तथा ४९ के वर्ष हाविका निह होता है, पञ्चम कठिनाइयों को प्राप्त, अपनी सम्पत्ति
नष्टि को मुह, बनाये राखता है। इसे वन, पर्वत तथा अन्यका पूर्ण ज्ञानों से व्यक्त रहना चाहिए
अथवा कष्ट मिल सकता है और इनके कारण मृत्यु भी हो सकती है। पूर्वादि ७० वर्ष के लगभग होती है।

(१०५०) - इस जमादु चक्र का अधिपति सुदृढ़, मेहेहा हृदयान्, आकर्षक नेत्रों वाला, भीषी
चिह्न तथा इनके नेत्रों के मनेमकों को पद लेने वाला होता है। यह सिंह के समान वाक्प्री, अनेक
उक्त के भोग-विशेषों से युक्ता, सुहृदों को ही ईर्ष्या करने वाला तथा प्रायः नाशिक विचित्र
का होता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु तक हो जाता है। विद्या, दाम्पत्य-प्राप्त तथा सन्तान
प्राप्त की प्रवृत्ति उद्विग्न होती है। यह अपनी विदुषी पत्नी को स्वयं से हीन स्वयं की प्रवृत्ति
निष्ठता भी करता रहता है। पञ्चम वृद्ध विचित्रों की होने के कारण बुढ़ा नहीं मानती तथा
अपने-प्राप्त को केवलतावत्ता के सुदृढ़ बनाये राखती है। यह ज्ञानक विद्वान् तथा हानी होता है
दुग्धी करी-करी अज्ञानियों से सा अवहार्य की कारण है। इसके शिक्षा प्रायः घर के लोग ही
होते हैं। यह प्रवृत्ति प्रवृत्ति अधिपति करता है तथा ६८ से ७० वर्ष की आयु तक जीवन रहता है।

(2041) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुदा, शक्तिशाली, साहसी, दृढ़ चिन्ता वाला, पाण्डुरंगी नका उदा. हृदय का होना है। यह लंबे वर कीत कार्य करने का इच्छुक रहता है तथा कभी किसी के विपक्ष में उठने से नहीं डरता। इसका सम्पूर्ण जीवन ही कोषीकम गुजर रहा है। यह क्षति-लभ का विचार किसे करता है। इसका काम करने में पुरजाना है। इसे अगमप्राप्त ही सफलताएं भी उपलब्ध होनी हैं। इसे विष्णु का चक्रेल लभ होना है। विवाह लगभग 24 वर्ष की आयु में होना है। पत्नी सुन्दरी नका गुणवती होती है, तथापि यह उसकी उद्देश्य ही जाना रहता है। विवाहोपान्त इसका मज्जोद्व होना है तथा कभी उद्या के कार्य में रुक जावसजो डा।। कार्मिक-लभ उठाना है। यह किन्ता उन्मत्ति के वष द अगम होना रहता है तथा धन का आगमन किन्ता बेग रहना है। जीवन के 30, 32, 36, 38, 40 तथा 42 के वर्ष विशेष महत्वपूर्ण होते हैं। सामान्यतः यह 60 वर्ष की आयु अपना का ना है।

(2042) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति मध्यम रूप का, सुदा, गुणवान् नका विद्वान् होना है। यह श्री-गणी, उदा. तथा दृढ़ चिन्तकी होना है। यह वैदिक-सम्पत्ति प्राप्त करता है तथा स्व. पाण्डुरंगी विपुल सम्पत्ति अधिपति का ना है। धन-संचय की लालसा कभी दृष्टा नहीं हो जाती। इसकी मज्जोद्वी वाल्मवज्जा से ही आर्म हो जाती है तथा यह आजीवन उन्मत्ति का ल चला जाना है। इसका विवाह 24 वर्ष की आयु में होना है। पत्नी सुन्दरी तथा सहके गिनी होती है। सन्तान-पक्ष में भी सुख प्राप्त होना है। जीवन के 32, 36, 42 तथा 46 के वर्ष कष्ट उद रहते हैं। इसे अनेक पात्रों की कर्तव्य है। तथा 40, 43 तथा 48 वर्ष की आयु में कुछ संचय के लिए (आभी रूप में भी) बड़े सवास का ल जाता है। विष्णु का उन्नत लभ प्राप्त होना है। मित्रों की सहायता अधिक रहती है। धन-उत्पत्ति भी प्रव मिलती है। यह लगभग 25 वर्ष की धूर्तपु प्राप्त करता है।

(१०५३) - इस जलकुण्डली का स्वामी सुदा हलवाला, मिथोचिन-कावहाला, मधुगुमासी तथा श्री-जंजी हलवाला का होना है। यह पै हक-सम्पत्ति को प्राप्त करना है तथा जो पारिवारिक पत्र का शक्ति कुप करके उसका आलीशान भवन भी बनाना है, पालु इस निमित्त-कार्य में इसे हाथ भी बहुत उठाती पड़ती है। इसे पित्त का सुख अधिक नहीं मिलना, पालु यह पै हक-जवाबदा को मारने का होता है तथा उसके पक्षपात पत्रोपार्जन भी करना है। जवाबदा की दोनो ओर से यह का का पना भी प्राप्त। भुला देता है। इसे कापी जवाबदा को डारा लाभ होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु तक होता है। पत्नी मोहकला मिलती है तथा यह उसे भी अधिक समझ नहीं दे पाता। पूर्ण पत्नी होने पर भी यह उन्नत नहीं रहता है। पुत्र-प्राप्ति हेतु यह अनेक उपाय करता है, तथा मोहकला का पूर्ण नहीं होती। यह अनेक सार्वजनिक परिणामों से संतुष्ट रहता है तथा २० वर्षों में पत्नी की जीवन प्राप्त करता है।

(१०५४) - इस जलकुण्डली का अधिपति सुदा शरीरवाला, पिपकादी, मधुगुमासी, उपदेशक तथा लोकप्रिय होता है। यह मगही, पालु जंगल-स्वामि का होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुदी, सुशीला तथा कर्तव्यपरायण होती है। तथा यह पत्नी-हित के काम करता होता है तथा उसी कार्य एवं जवाबदा के हित लेता है, जिसे निजों भी कार्य करनी है। पित्तान तथा विष्णु का उत्तम सुख प्राप्त होता है। इसे पत्र का कार्य अभाव नहीं रहता, अधिक अनेक लोगों से पत्रागम होने के कारण आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है। महनवीन साहसिक कार्य को करता है तथा वाण्यद्वारा भी सम्मान एवं सम्पत्ति प्राप्त करता है। इसका आयु ९६ वर्ष की आयु से ही होता है तथा आकस्मिक रूप से पत्र-लाभ होता रहता है। इसके पत्र-सम्मान में भी निज। वृद्धि होती पत्नी पाली है। शरीर ७५ वर्ष के लगभग होता है।

(१०५५) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी हरे शशिका, सुधा, श्री. श्री. चक्रमी, उदा उच्छ्रिता, मन्त्र
मायी तथा विष्णु - लक्ष्मी वाला होता है। यह अपना मोहक व्यवहार काला होता है। इसी कारण
से कभी-कभी कर्मगता एक जगता है (आता है) यह जीवन में कुछ ऐसे कार्य भी करता है, जिन्हें वास्तव
में नहीं करता। यद्यपि यह न चाहते हुए भी उन्हें करने को विवश होता है। इसकी कामद्वन्द्वी के मोह
अनेक होते हैं तथा यह उच्च सत्त्विका स्वामी होता है। इसे राजाद्वारा भी आजीविका प्राप्त होती है।
इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक होता है। पत्नी सुलक्षणा, सुशीला तथा सुन्दरी होती है। वह सब
पुष्पा से परि का अनुमान करती है। इसका सम्बोधन स्वदेश में ही होता है तथा जीवन में उन्नति
होती-चली जाती है। आयु के ३४ तथा ४५ के वर्ष में कुछ कष्ट भी होता है। जीवन के कुछ विपुल
होने विरोध लगता होता है। इसकी प्रवृत्ति ८० वर्ष तक हो सकती है।

(१०५६) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य सुधा, श्री. श्री. मन्त्र, चक्रमी तथा कर्णिक साहसी
होता है। यह किसी भी लोभक के कार्य हेतु गुना नष्टा होता है। अपनी सा बहादुरी के कारण
ही यह लोक-विजय होता है। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुधी
विदुषी तथा पति को पूर्ण सहयोग देने वाली होती है। सम्बोधन विवाहोत्पन्न स्वदेश में ही
होता है। ३५ से ४५ वर्ष की आयु में सर्वाधिक उन्नति प्राप्त करता है। इसे राजा से भी सम्मान
एवं आजीविका की उपलब्धि होती है। यह मन्त्र-वर्तन से पुष्पा होता है तथा इसकी सत्त्विका
भी बड़ी होता है। यह अपने पुत्रों के सहयोग से लाभ प्राप्त करता है। धार्मिक कार्य
में धनवर्च कागदों के अच्छा लगता है। यह परोपकारी तथा दानी भी होता है। अपनी उदात्तता
के कारण यह सर्वत्र सम्मान प्राप्त करता है। लगभग ८५ वर्ष की आयु तक जीवित रहता है।

०३०२ नं०

(२०५७) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य अपना सुख, प्रभावशाली, परीक्षी, चीर-गंभीर तथा बराबरी होता है। यह जन्म से ही अपना सुखी-जीवन बिताता है एवं अपने दुःखार्थ तथा उन्मत्त का निम्न उत्कृष्टि काता-चला जाता है। ऐसे वस्तुत्व-शक्ति सम्पन्न यह जन्मक पाँचों में वहुँत का विशेष सम्मान प्राप्त करता है तथा सर्वक अपना प्रभाव स्थापित कर लेता है। इसे राजा का सम्मान तथा सुख की उपलब्धि होती है। यह राजपेरा से पुत्रा सब उका के वैभव, विमान तथा सुख-साधनों के प्राप्त करता तथा अपने शत्रुओं से भी धन-लाभ प्राप्त करता है। यह शत्रुओं का मान-मर्दन करे वाला तथा असह्यो का हरायक होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुखी, बुद्धिमान तथा मनोबुद्धला मिलती है। करीबाना गर्भनष्ट होने के उपरान्त बड़ी कठिनता से बड़ी आयु में एक पुत्र का लाभ होता है। सब उका से सुखी रहता हुआ यह २० वर्ष की पूर्णपु प्राप्त करता है।

(२०५८) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति स्वर्ण तथा आकर्षक कार्य वाला, मोहक वाणी बोलने वाला, भारी-बहिर तथा परीक्षाओं का शत्रु तथा सब उका के ऐश्वर्य से सम्पन्न होने का भी मन-ही-मन अभिलषा तथा दुःखी बना रहने वाला होता है। यह अपने परीक्षम तथा बुद्धि-मानी से वैभव-धन में विशेष अभिवृद्धि करता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुखी तथा मनोबुद्धला मिलती है तथा यह अन्तरीक्षों से भी संबंध रखता है तथा सुखी-सुखी जीवन का पर्याप्त उपभोग करता है। जीवन के ३८ तथा ५० वें वर्ष में जोड़क लक्ष्मी उठाना करता है, पान्थ सामान्यतः सम्पूर्ण जीवन बड़े आनन्द में बीताता है। यह ज्ञा-परीक्षा तथा प्रभाव में सम्मानित, स्थान प्राप्त करता है तथा अपना लोक शत्रु होता है। धन की कमी-कमी करती नहीं होती। यह पुत्र-पौत्रों का पक्षेष्ट सुख भोगता हुआ २० वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(१०५६) - इस जन्म कुण्डली का हवासी सुन्दर एवं स्वल्प शरीर वाला, आकर्षक कवित्व सम्पन्न, शील-
वाह, धैर्यशाली, पुष्ट-बलवान्, चीर-जमी, अनेक युगों से युवा तथा अनेक कलाओं का जानकार
होता है। इसकी वाणी अत्यन्त प्रभावशाली तथा मनोमोहक होती है। यह अपनी वस्तुना के बलवत्
से विशेष उत्कर्ष प्राप्त हुआ उद्देशक, आचार्य, प्राध्यापक अथवा नेता के पद पर उन्नित होता
है। इसे किसी बड़े सम्मान से उच्चपद प्राप्त होता है तथा पदा-कदा कोड़ाकार भी उठना पड़ता है,
यद्यपि उसमें भी यह आनन्द का ही अनुभव करता है। इसका विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में होता है,
पत्नी सुन्दरी एवं मनोमोहा मिलती है। दाम्पत्य-सुख तथा सन्तान-सुख की प्रत्येक उपलब्धि होती
है। यह सर्वज्ञ सम्मान प्राप्त करता है तथा आर्थिक-स्थिति से सम्पन्न बना रहता है। इसे लवच-
रोग प्राप्ति होती रहती है, तथापि २० वर्ष से अधिक की पूर्ण आयु प्राप्त करता है।

(१०६०) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुन्दर, सुशील, लम्बे कद तथा दृढ़ शरीर वाला, शान्ति,
गुणी तथा साहित्य-दर्पित होता है। यह स्वयं भी कवि हो सकता है। इसके यहाँ साहित्य गोष्ठियों,
आदि के आयोजन होते रहते हैं। इसे गृह-वर्धन तथा पुत्र-पुत्रियों का प्रत्येक सुख प्राप्त होता
है। इसकी आयुदरी के मोल एक से अधिक होते हैं, अतः यह सर्वत्र जन-सम्पन्न बना रहता
है। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु में सुन्दरी तथा गुणवती स्त्री के साथ होता है। यह
दाम्पत्य-सुख प्रत्येक मात्रा में प्राप्त करता है। समाज में इसे सब जगह उन्नित एवं सम्मान की
उपलब्धि होती है। माता तथा बड़े गृह का निधान इसके जीवन काल में सबसे पहले होता
है, पत्नी पितृ की मृत्यु प्राप्ति में होती है। यह स्वयं भी लगभग २० वर्ष से अधिक की लम्बी
आयु प्राप्त करता है। शरीर सामान्यतः नीरोग एवं सुखी बना रहता है।

(१०६१) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मृगश्रु सुका, स्वप्न, मृगश्रु स्वभाव का, गौ वरु, ज्वावभाषी एवं चिपवादी होता है। यह सामान्य स्थिति है ऊँचा उठता है तथा अपने पक्षिस्त एवं अधवस्त्र के बल पर सदाय में उल्लिखित स्थान प्राप्त करता है। इसे पैरुका-स्थान में रहने का लक्षण प्राप्त होता है। यह अल्पक पक्षिनी तथा साहसी होता है, तथापि अनेक बार इसके धन की वषट् हाकि होती है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा चिपवादिनी होती है, तथापि यह पत्नी की ओर से दुःखी बना रहता है। सन्तान सुख सामान्य रहता है। यह स्वभाव है कृपण तथा धन-लुब्ध होता है। इसकी आमदनी के भोग अनेक होते हैं। यह अग्नि की लोहे से सम्बन्धित पदार्थों द्वारा धन-लाभ करता है तथा किसी कारखाने की स्थापना करता है। इसका मरणोदय २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। ४०, ४५ तथा ५६ वर्ष की आयु में मरता है। पूर्ण २० वर्ष की होती है।

(१०६२) - इस जन्मकुण्डली वाला मृगश्रु सुका, स्वप्न, धनवान्, गुणवान्, कलाओं का हारा, विद्वान् तथा चिपवादी होता है। इसका विवाह २६-२७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनेकुशला मिलती है, पालु सन्तान के लिए दुःखी रहता है। पत्नी से भी कभी-कभी मगनीयता होता है। यह राजा द्वारा सम्मान तथा धन प्राप्त करता है एवं परदेश में जाकर भी धन कमाता है। यह अपने गुणों द्वारा लोगों को प्रभावित करता है तथा किसी अनपान एवं बाहरी व्यक्ति के मदद पाकर विपुल ऐश्वर्यशाली बनता है। यह कार्मिक कार्यों में अधिकार्य करता है तथा ईश्वर-भक्ति की ओर विशेष रुकाव राखता है। जीवन के २५, २६, २७, ३४, ३६ एवं ४१ वें वर्ष इसके लिए धन-हाकिमक सिद्ध होते हैं, तथापि अपने उद्योग द्वारा यह बिगड़ी हुई आर्थिक स्थिति को सुधारा लिया करता है तथा सुख भोगता हुआ ७५ से ७८ वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(१०६३) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुदा, गौतमी, उभावधाली कर्मित्व सत्त्वता, पीका का चालन-कोषण करने वाला, मधुवाणी बोलने वाला तथा वैदिक-सम्पत्ति का उपभोग करनेवाला होता है। यह साहित्य में रुचि रखने वाला, गुण-लोचक तथा उत्तम रूपाति डाफा करने वाला होता है। इसकी आयदनी के मुताबिक एक से अधिक होते हैं, अतः यह आर्थिक-दृष्टि से समृद्ध बनता है। इसका विवाह किसी परिचित कुल की कन्या के साथ २० से २२ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुदृढ़, व्यावहारिक-कुटुंब सत्त्वता तथा पुष्पिपुष्पावतें करनेवाली होती है। विजा तथा सन्तान-प्राप्त करती उत्तम लाभ होती है। यह राजकीय-सेवा में किसी उच्च पद को डाफा करता है तथा सर्वत्र सम्मान प्राप्त होता है। इसका ऐश्वर्य प्रगल्भीकृत होता है। छोटी मोटी बातों का हम कभी कोई ध्यान नहीं करता। इसका भाग्योदय वचन है ही होता है तथा ७५ वर्ष की आयु तक सुखपूर्वक जीवित रहता है।

(१०६४) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुदा, स्वस्थ, गुणी, अनेक प्रकार के कार्यों में प्रवीण, चतुर तथा मृदुल होता है। इसे सर्वत्र आदर तथा सम्मान की उपलब्धि होती है। यह पीका का चालन कोषण करने वाला तथा अपने धर्म को पीकापीतों पर कर्म करने वाला होता है। इसे स्त्री तथा पुत्र-दोनों का सहज ही डाफा होता है। यह योग्यकारी, धार्मिक वृत्तिक तथा अनेक शुभ कार्यों को करने वाला होता है। इसका भाग्योदय वचन है ही होता है तथा यह जीवन दर्पण कर्मिक-दृष्टि से समृद्ध तथा सुखी रहता है। इसकी मानकी मृदु इसकी उच्छेद अवकाशाली के कारण हो सकती है। कभी कभी यह कुछ-कुछ का शिक्का भी बनता है, परन्तु कि छोटी सी सौल भी जाना है। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुदृढ़, भक्त तथा ऊँची स्वभाव की होती है, जो जीवनभर साथ देती है। सन्तान-प्राप्ति उत्तम रहता है। ५० वर्ष तक हो सकती है।

(१०६५) - इस जन्मकुण्डली का अर्थव्यवस्था सुखा, स्वास्थ्य, सुखी, उदार तथा सुखी समान करने वाला होता है। यह साहित्य अथवा कला के क्षेत्र में पदार्पण का, सबको प्रभावित करता है। इसे पैतृक-प्रभुत्व का प्रवेश लाभ होता है। यह स्वयं अभी स्वभाव का तथा अपने स्वयं के अपने वाले प्रत्येक व्यक्ति को अनुकूल बना लेने की क्षमता वाला होता है। यह धनी का में जन्म लेने के कारण वाला - वस्त्र से ही सुख प्राप्त करता है तथा बड़ा होकर स्वयं किसी नवीन उद्योग की स्थापना की अपनी आर्थिक-स्थिति को विशेष सुदृढ़ बना लेता है। यह महत्वाकांक्षी होता है कि अपनी अर्थव्यवस्थाओं की इति में सफलता भी प्राप्त करता है। इसका विवाह लगभग २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, मंगलित, प्रतिभुता तथा अर्थव्यवस्था होती है। दाम्पत्य-सुख के साथ ही सन्तान-सुख भी प्राप्त रहता है। शारीरिक स्वास्थ्य भी उत्तम बना रहता है तथा लगभग २० वर्ष की दीर्घायु प्राप्त होती है।

(१०६६) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुखा, स्वास्थ्य, आर्थिक व्यवस्था वाला, सुखी, धन्युत्तम कोने में विवाद का सामना करना पड़ता है, यन्तु अन्त में सफल भी होता है। यह धन्युत्तम कोने वाला, सफल व्यवसायी तथा स्वयं के उपलब्धि से ही ऊँची स्थिति करने वाला होता है। यह किसी अच्छे व्यावसायिक-प्रतिष्ठान का स्वामी अथवा संगठन का उच्च पदाधिकारी बनता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा कोनो सुखी होती है। दाम्पत्य-सुख तथा सन्तान-सुख उत्तम रहता है। माग्नेद्व २५ वर्ष की आयु में होता है तथा ३५ वर्ष की आयु तक यह अत्यधिक उत्कृष्टता का होता है। इसे सुखी समान प्राप्त होता है। माता के घर रहता है तथा पिता लग्नी आयु तक जीवित रहते हैं। पुत्र-पौत्रों का व्यवसाय का कार्य उत्तम लगभग २० वर्ष की आयु में यह सुखपूर्वक मृत्यु प्राप्त करता है।

(१०६७) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुदा, वाक्य, स्वाय, जहाजी, गुणवान तथा विद्या - बुद्धि का धनी होता है। यह वायु-वायव्यों से युक्त, वैदिक-सम्पत्ति प्राप्त करने वाला, कुटुम्बिकों से प्रेम करने वाला तथा स्वयं भी सबसे लिए-सम्मान करने वाला होता है। यह स्वभाव है नेपथ्यी तथा भाग्यक-प्रकृति का होता है। अपनी इस प्रवृत्ति के कारण इसे कभी-कभी संकटों का सामना भी करना पड़ता है। यह किसी वायव्यीय कार्य अथवा पद द्वारा लाभ उठाता है। इसकी माता तथा बड़े भाई का निधन जल्दी ही होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, मनेहुङ्गला तथा महत्वाकांक्षिणी होती है। वह समाज में मान-सम्मान प्राप्त करने की आकांक्षा (धनी है) तथा उसे प्राप्त भी करती है। इस जन्म के कार्य अल्पकालीन होते हैं। यह २५ वर्ष की आयु से उन्नति का कार्य करता है तथा ७५ वर्ष की वृद्धावस्था तक निराला उन्नति का कार्य चला जाता है।

(१०६८) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुदा, स्वाय, नेपथ्यी, भाग्यक-प्रकृति का होता है। यह भी आत्मीय चिन्ताओं से कभी ही कीड़ित रहने वाला। उसे क परिश्रम में लगन रहने वाला। अपने दुःखत्व तक या अविश्वास करने वाला तथा स्वयं को हीन अनुभव करने की प्रवृत्ति वाला होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी कुट्टिमती, सुन्दरी तथा गुणवती मिलती है। यह उसे जलाह लेका ही प्रत्येक कार्य को करता है तथा इसका भाग्यदण भी विवाह के बाद ही होता है। जीवन के ३०, ३३, ३७ तथा ४२ के वर्ष बहुत महत्व पूर्ण होते हैं। समाज का आशुमुख मिलता है तथा भाग्यदण विवाह के बाद ही होता है। यह परिश्रमों से रहित रहने वाला तथा स्वयं भी कुछ-कुछ स्नेह-स्वाय का होता है। इसके कार्य प्रेम करने के होते हैं तथा आय के प्रोत्साही अनेक होते हैं। यह धर्म-मकर भाई का सुख भोगता हुआ ७५ वर्ष की वृद्धावस्था का करता है।

म०
सं०
३००८

(१०६६) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य सुदा, स्वल्प नका उमरकाली ककितल सम्पन्न होगा है। यह स्वर्ण को लगे हुए रावण-चाटना है तथा उल्लेख उल्लान पद को उपा कोने का आकांक्षी रहना है। यह अपने प्रशंसकों की सम्पत्ति का ना है तथा स्वर्ण के कुल के काण्ड हृदय के हीनमानना का शिकार भी बना रहना है। इसका विवाह २६-२७ वर्ष की आयु में होगा है। विवाहोत्पत्ति इसे कुछ उदा होना है। पत्नी इसे अपने निपन्नता में राखने वाली, सुदृढ़ तथा विदुषी होती है। यह उसके लभ्य स्वर्ण को हीन ककुल का ना हुका मन-ही-मन विना भी बना रहना है। अपने विद्वान् एवं ह्यन के काण्ड यह लोगो से सम्मान भी उपा का ना है। इसका आयोदध २० वर्ष की आयु में होगा है तथा जीवन के २६, ३२ एवं ४७ के वर्ष विशेष लाभ उद सिद्ध होने हैं। यह विज्ञा तथा सन्तान का पक्षेष्ट पुरव उपा का ना है तथा सामान्य धनी रह का लगभग २० वर्ष की वृणाधि प्राप्त का ना है।

(१०७०) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य अल्पना मगधी, महत्वा को साको से पुका, सुदा-प्राकुमी, स्वल्प तथा सेवसी ककितल वाला होगा है। यह धीका तथा धन-सम्पन्न है पुका होगा है। पानु इसके जन्म के समय माना-पिता आर्थिक-कारिगारों के शिष्या बनने हैं। वाल्मवस्था की लगे पर इसे कुल मिलना और होगा है। पानु पिता का अल्प पुत्र मिलना है एवं जाना तथा मातृको से भी दुःखी ही रहना है। यह स्वप्रापुत्र से धनोपार्जन का ना तथा उन्नति का ना चला जा ना है। विज्ञा का पक्षेष्ट लाभ होगा है। विवाह २५ वर्ष की आयु तक होना ना है। पत्नी सौभाग्यशालिनी तथा मनेकुला होती है। जीवन के २२, ३२, ३४, ४६ तथा ५२ के वर्ष विशेष सुखदपक्ष सिद्ध होने हैं। इसे बीमारीयों उपा: लगी रहती है, किन्ती यह ७० वर्ष से कुछ की आयु उपा का ना है। आध-दनी के अनेक लाभान होने के काण्ड आर्थिक-पिण्डि सामान्य: अच्छी बनी रहती है।

भ०
सं०
२४०४

(१०७१) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य सुदा, सुदृढ़ शरीरवाला, पालु पल्ले और लम्बे कद का, नार्मलक उद्धान का तथा ककरोगी होगा है। इसके पार-पार-पार की कोई कमी नहीं रहती। यह अनेक कार्यों में रुचिलेगा है तथा अपने सामर्थ्यशाली होने का दृष्टा-दृष्टा लाभ उठाता है। यह ऐसे व्यवसायों को करता है, जिनमें हाथ होने की सम्भावना रहती है, तथा यह उसके भी लाभ उठाता करता है। इसका पहला विवाह २०-२२ वर्ष की आयु में तथा दूसरा विवाह २२ वर्ष की आयु में होगा (हलाह)। दूसरी पत्नी से इसे पछेपछे पुत्र मिलता है। इसे माना-पिता, मर्त्य-बहिन तथा पुत्र-पुत्री-स्त्री का सुख प्राप्त होता है। पालु अपने विचारों के कारण यह स्वयं मन-ही-मन असन्तुष्ट तथा दुःखी बनारहता है। यह अनेक कार्यों में मन जाना करता है, अतः इसकी आर्थिक-स्थिति उत्तम बनी रहती है। इसकी वृणष्टि ७५ से ८० वर्ष के बीच होती है।

(१०७२) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी वाला वाला के योगी तथा बाद के चिन्मय होने वाला, शरीर से दुर्बल दिवार्थ देने वाला, सामान्य सुदा तथा अपने उच्चतरक दुष्टार्थ का मन्त्रवृष्टि करने वाला होता है। यह न तो भगवान् के विद्वान् होता है और न किसी धार्मिक-सम्प्रदाय में जुड़ा रहता है। कर्तुं बाध यह अपना काम निकालने के लिए निष्ठुरता का आश्रय भी लेता है और उसे चोखा भी देता है। यह छल-उपेय द्वारा होनेवाली सफल के सम्मान प्राप्त करता है। इसका मन्त्रोदय बचपन से ही होता है तथा यह विशेषावस्था में ही अपने धार्मिक करने लगता है। इसे माना का अलङ्कार मिलता है। यह युवा कर्तुं दार-पार करता है। पहले-पिछे के इसे अधिक रुचि नहीं होती। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है तथा दूसरा विवाह पहली पत्नी की मृत्यु के बाद लगभग ३० वर्ष की आयु में होता है। दूसरी पत्नी से पुत्र मिलता है। अपनी तथा पुत्री जीवन बिताते हुए ८० वर्ष की आयु प्राप्त है।

(१०७३) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति दुर्बल शक्ति, लम्बे छंद वाला, सामान्य विद्वान् तथा सामान्य सुख होता है। यह स्वभाव से भी अधिक उदात्त नहीं होता। यह अपने अधिपति तथा कावहालीक हात के बल वाली उन्नति करता है। इसे कालावस्था से ही बड़े-मीठे अनुभव होने लगे हैं। इसे नीकरी का जीवनिको धारण करता पड़ता है। इसके दो विवाह होते हैं। पहली पत्नी की पाने मृत्यु हो जाती है अथवा उसके सम्बन्ध-विच्छेद हो जाता है। दूसरा विवाह ४० वर्ष की आयु में पहले ही हो जाता है। दूसरी पत्नी से पुत्रपौत्र मिलता है। इसका सम्बन्ध ४० वर्ष की आयु में ही होता है। इस आयु के बाद इसे धन-धान्य से सर्व कष्ट भी कोई कमी नहीं रहती। पत्नीवर्गी जन्म के इसके विच्छेद सामान्य होते हैं। सन्तानों से भी सामान्य पुत्र ही मिलता है। औदार्यता से आदर-समान भी प्राप्त होता है। जीवन सामान्यतः सुखी बीतता है। पूर्णपु ७५ वर्ष होती है।

(१०७४) - इस जन्मकुण्डली वाला सुगुण सुख, कुलवशाली, पण्डित, सुदृढ़ देहवाला, मनु-भावी, उदात्त-हृदय तथा अनेक कार्य के एक साथ करने की क्षमता रखने वाला होता है। यह विद्या, बुद्धि तथा गुण सम्पन्न, सुनचिह्न, कलाप्रेमी एवं वैभवशाली होता है। ४० वर्ष के बाद इसे धन का विशेष लाभ होता है। इसका विवाह २४ वर्ष के लगभग हो जाता है, पहली पत्नी से ही बनी रहती है, जिसके कारण यह स्वयं भी सुखी रहता है। यह अपने अधिपति कार्य के सुफल से करता है तथा अपने धन लोगों के लाभ देता है। अपने योग्य भी रक्ता है। इसे पुत्र-पुत्री का लाभ होता है, यद्यपि अपने विशेष सुख नहीं मिलता। जीवन के ४८, ५० तथा ५२ के वर्ष विशेष उत्तम सिद्ध होते हैं। ६८ वर्ष की आयु तक जीवन सुख पूर्वक बीतता है, ननुप्राप्त जीवन के अन्तिम वर्ष शरीरिक कष्ट छड़ते हैं। पूर्णपु ७२ वर्ष के लगभग होती है।

(१०७५) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी विद्वान्, बुद्धिमान्, सुन्दर, साहसी, पराक्रमी तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। इसका संचयन सुख के नहीं कीटना, पण्डित यह अपने अधमकाल में परीक्षा में उत्तीर्ण कराना हुआ जीवन पथ पर आगे बढ़ता है। यह समाज द्वारा मानता जाया बड़े लोगों का विशेष होता है तथा उनके साथ उच्चलालना पूर्ण व्यवहार करता है। इसका विवाह २०-२२ वर्ष की आयु में ही होता है, पण्डित स्त्री के सुख जाया नहीं होता। यह हठ दण्ड का उदात्त तथा पाले सिने का कृपण भी होता है। यह कभी सहृदय तथा कोमल स्वभाव का जाया नहीं होता। जो कभी स्वयं को महाकोपी तथा दुष्ट व्यक्ति के रूप में उभर कराना है। संतान तथा विद्या का सुख साधन रहता है। यह कला-प्रेमी, गरीबों तथा दीन-दुर्गिणों का सहायक तथा कौतुकी होता है। ४० वर्ष की आयु तक अपनी आर्थिक-स्थिति को सुदृढ़ बना लेता है तथा लगभग २० वर्ष की आयु जाया है।

(१०७६) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य ऊँचे ऊँधवाला, सुन्दर, बलवान्, पराक्रमी तथा उदात्त स्वभाव का होता है। यह जीवन में अनेक विचित्र परिस्थितियों में गुजरता है तथा साहस के बल पर सर्वत्र विजयी होता चला जाता है। यह पुत्र का कमी, धन के प्रति विशेष मोह न रखने वाला, परन्तु ब्रह्म धर्म करने वाला, उदात्त, आर्थिक कार्य तथा दीन-दुर्गिणों पर धन खर्च करने वाला तथा गरीबों का हित रखी होता है। इसका विवाह २२ से २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुदीन, चतुरा तथा कला-कुशल होती है तथा वृद्धावस्था पर्यन्त इसका साथ देती है। वह धर्म के मत को पकड़ने वाली तथा उत्प्रेक कार्य में सहयोग देने वाली होती है। यह जाया ४० वर्ष की आयु में अत्यधिक धन-सम्पत्ति तथा सुखी-जीवन काल का होता है। इसकी पत्नी के कुदुर्भाग नष्ट होते हैं, तथा पि पुत्र-दुर्गिणों का जाया होता है। इसकी पूर्ण आयु ७० वर्ष के लगभग होती है।

(१०७७) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य सुका शरीर तथा उम्र मर वाला, पान्थु किंचित कोपी स्वभाव का होता है। यह अनुशासन-विष होता है तथा दूसरे से भी कठोर अनुशासन में रहने की आकांक्षा राखता है। यह विद्वान्, बुद्धिमान् तथा अनेक गुणों से युक्त होता है। इसका मातृ वय ४० वर्ष की आयु में होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला, गुणवती तथा विद्वान् होती है। यह राजकीय सेवा में उच्च पदों पर रहकर पदविद्या प्राप्त करिष्ये काता है तथा लोक में सम्मानित होता है। सन्तान-पुत्र संख्या ३७, ४५, ४८, ५२, ५६ तथा ५८ वें वर्ष करिगृहों में कीन रहे। पुत्र का सुख बड़ी आयु में प्राप्त होता है। यह अनेक सुते में से एक का पंचम काता है तथा सुखी-जीवन बिताता है। जीवन के अन्तिम वर्ष में यह भक्ति एवं धर्म की ओर विशेष आकर्षित होता है। पूर्वाभि २० वर्ष से अधिक की होती है।

(१०७८) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी विविध विद्याओं में विद्वान्, चतुर, सुका, बलिष्ठ, उत्साही, जा कुपी, गुणवान्, सुवक्ता, सुलोक, नेतृत्व-शक्ति सम्पन्न तथा लोक-समाज में आदर पाने वाला होता है। इसका विवाह २२ से २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोबुद्धि मालिनी है। सन्तान-पुत्र भी अच्छा होता है। यह परिश्रम करने में बड़ा कटोर है तथा अपने शत्रु अथवा अपाथी को कभी क्षमा नहीं करता, अथवा मिलने ही उसके साथे बदले युक्त होता है। ४०-४५ वर्ष की आयु तक यह अपनी निम्न आकांक्षाओं की पूर्ति का विना होता है। जीवन के ४७, ४८, ५६ तथा ५८ वें वर्ष विशेष लक्ष्य तथा सम्मान प्राप्त किए होते हैं। यह राज्य-सेवा में ही का भी विपुल सम्मान प्राप्त करता है। इसके पुत्र भी धनी तथा सुख देने वाले होते हैं। बृहन्नामा में यह धार्मिक कार्यों में मग्न रहता है तथा कृपा स्वभाव का भी होता है। पूर्वाभि ७२ वर्ष के लगभग होती है।

भ०
सं०
२०२५

(2068) - इस नाम कुशली का अधिकांश पुत्र, स्वामी, पालुमी, कान्हा, कुशल, अपने पुत्रों की लक्ष्मी का नाम सदा के प्रतिष्ठित, पुण्यवान्, प्रियवक्ता, उद्देशक, पंडित तथा आचार्य होता है। इसका संबंध प्रायः सिद्धा - विष्णु से होता है, पालु यह किसी उच्च लक्ष्मी - यद्वा कार्यरत रहने हुए भी लोक प्रियता प्राप्त करता है। इसका विवाह 22 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुदृढ़, चतुर, वाक्पटु तथा समझदार होती है। पालु कभी - कभी अपनी कटुवाणी से हृदय को आहत भी करती रहती है। इसका पूर्ण आयु 80 वर्ष की आयु के बाद होता है, तथापि 25 वर्ष की आयु से ही इसे किसी दुर्घटा की कमी नहीं रहती। इसका आयोदय प्रदेश में होता है। जीवन के 40, 43, 45 तथा 47 वें वर्ष कष्ट काळ सिद्ध होते हैं। यह युवावस्था से वृद्धावस्था तक सुखमय होता है। पालु जीवन के अन्तिम दिनों में कृपण स्वभाव का बन जाता है। पूर्ण 100 वर्ष तक होता है।

(2070) - इस नाम कुशली से उत्पन्न महामय चतुर, पुण्यवान्, सुदृढ़, पालुमी, दृष्ट-दृष्ट तथा रूपे कष्टित्व वाला, हठी स्वभाव का होता है। यह जो छान जान लेता है, उसे पूरी भाँके ही समझता है। यह अपने शत्रु तथा विरोधी से अनिशोच लिए बिना नहीं मानता। इसे शत्रुओं से भी धन का लाभ होता है। इसका आयोदय प्रदेश में 44 वर्ष की आयु में होता है। राजकीय - सेवा से इसे विशेष लाभ होता है तथा उन्नति प्राप्त होती है। इसका विवाह 24 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुदृढ़, कुशल, मनोवनी तथा वसिष्ठायण होती है। पालु इस नामक का संबंध दो - तीन अल्प भिक्षुओं से भी बना होता है। जीवन के 40, 42, 44 तथा 47 वें वर्ष उन्नति का काल होते हैं। धार्मिक - धर्मदा देने वाले सिद्ध होते हैं। इसका धन गबर नहीं होता, उसकी वृद्धि होती रहती है। पुत्र की प्राप्ति कठिनाई से होती है तथा पूर्ण 62 वर्ष के लगभग होती है।

कु०
र०

पृ०
सं०
२०४३

कु०
२०

(१०८१) - इस जन्म कुण्डली वाला आत्मक सुधा, बलवान्, गुणवान्, पात्रुमी तथा प्रशस्ती होता है। कभी-कभी इसे कोप भी बहुत आता है, उस समय वह सबको हेल सफ करना है। जिद्दी स्वभाव का होने के कारण वह अपनी हानि भी का भैठता है। इसका आशोदय प्रदेश में होता है। ४० वर्ष की आयु तक वह उत्तम आर्थिक-स्थिति प्राप्त करता है। इसका विवाह लगभग ३० वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा आलसु वर्त्ति होती है, उसके कारण आशोदय के सहायता मिलती है, वह एक से अधिक कार्य द्वारा अपने व्यक्तिगत कामों को जीवन के ३२, ३५, ३८, ४६, ५२ तथा ५६ के वर्ष कर-काक सिद्ध होता है। इसका अपनी पत्नी के अतिरिक्त अनेक ही मित्रों से भी प्रेम-सम्बन्ध रहता है, पालु ऐसे प्रेम-पात्र नहीं होते। इसे बड़ी आयु के पुत्र की प्राप्ति होती है। बड़े होने पर पुत्र ही इसकी धन से सहायता करता है। वृद्धावस्था में वह कृपण तथा रोगी हो जाता है। लगभग ६८ वर्ष की आयु का होता है।

(१०८२) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुधा देह बहिर्वाला, आकर्षक, अधिकतम सम्पत्ति, मशहूर, बुद्धिमान, धन कोने वाला, विद्वान्, गुणवान्, कलाकार तथा उच्च स्थान पर प्रतिष्ठित होकर सम्पत्ति प्राप्त करने वाला होता है। इसे धन तो बहुत मिलता है, तथापि सहायकों की सहायता नहीं हो पाती। आशोदय २६-२७ वर्ष की आयु में तथा विवाह ३५ वर्ष की आयु में होता है। इसे जीवन के ३५, ३८, ४० तथा ४३ के वर्षों में संकटों का सामना करना पड़ता है। सामान्यतः यह मकर, मीन, वारुण, शिवक, धन-ऐश्वर्य आदि सभी सुखों को ही सम्पत्ति सुखी-जीवन बिताता है। इसके पेट का भेद पाना आँखों के लिए कठिन होता है। यह अपने धन को भी गुप्त रूप से छुपित रखता है तथा स्वयं ही इसका उपभोग नहीं करता। शीघ्र ही तथा धार्मिक-कृत्य करने की आकांक्षा है। कृपणता के कारण धीरे-धीरे हो जाती। इसे बड़ी कठिनाई से पुत्र लाभ होता है। पूर्ण ७० वर्ष के लगभग होती है।

सं० ४८०४ सं०

कु०
२०

(१०८३) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी धी-गंभीर, सुन्दर, आन्त स्वभाव का, धनी, गुणी तथा उत्तम कर्मिणी का धी-धैर्य के साथ साथ करने वाला होता है। यह धर्म से स्वच्छ, वाचस्पद, सीधी तथा प्रेमपूर्ण वशी बोलने वाला तथा आकर्षक व्यक्तित्व-सम्पन्न होता है। इसके सम्पर्क में आने वाला प्रत्येक व्यक्ति इसका प्रभावक बन जाता है। इसे कोई भी कार्य करने में कठिनाई का अनुभव नहीं होता। यह साहित्य-प्रेमी, साहित्य-सर्पक, कुटुम्ब तथा विद्या होने के साथ ही सुवक्ता, उपदेशक अथवा केवल अध्यापक होता है। इसका विवाह २०-२२ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुदृढ़ होने वाली धी-कमी बहुत दुःखी करती है, क्योंकि उसका स्वाभाव प्रायः ठीक नहीं रहता, अतः चिड़चिड़े स्वभाव की एक कटुवादिनी हो जाती है। मज्जोदध लगभग ३० वर्ष की आयु में होता है। सन्तान का भी विशेष सुख नहीं मिलता। ४० की आयु के बाद जीवन कठिनाइयों से भिन्न होता है। २० वर्ष की आयु में होता है।

(१०८४) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति रवि स्वभाव का, स्वामी, शरीर से दृढ़, सुन्दर तथा बलिष्ठ होने के साथ ही शोभी तथा अपने छोटे भाई के सहयोग तथा परिश्रम से अपने कार्यों में सफलता पाने वाला होता है। इसका मज्जोदध अपने छोटे भाई के साथ होता है। यदि किसी कारणवश छोटा भाई जीवन में रहे तो किसी गिर की स्थापना से इसका मज्जोदध होता है। इसका उत्कर्ष ४० वर्ष की आयु में होता है। विवाह २४ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी तेजस्वी होती है, जो इसे अपने प्रणय में लाती है। इसे बड़ी आयु में पुत्र के कारण कष्ट मिलता है। जल तथा सर्प से भय हो सकता है। यह प्रायः नारीयक विचारों का होता है तथा स्वयं के कष्टों का भय होता है। इसे जीवन के ३५, ३८, ४२ तथा ४६ के वर्ष में कष्ट मिलना है। शारीरिक स्वास्थ्य अक्सर खराब होता रहता है। ६५ से ६८ वर्ष की आयु में इसका शरीरान्त होता है।

(२०८५) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुदा तथा सुदृशारी का होने पर भी प्रायः रोगी बना रहता है।
इस शत्रुओं का कारण यह उनके कारण मज्जीन भी बना रहता है। कुछ लोग इसे
गुदा रूप से भी हानि पहुँचाते हैं। जन्म जन्मों नका, हफ्ति सही रूप एवं जन्म से भी मज्जीन रहता है।
इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुदृशी, चतुरा तथा बुद्धिमान होती है। वह इसे
अपने वशीभूत (वनी हुई) संकरो से बचानी रहती है। यह जन्मक बुद्धिमान होने पर भी प्रायः शत्रु
जैसा व्यवहार करता है, जिसकी इसके पास धन का कमी सामान नहीं होता। वास्तविक विवाह के अनिवार्य
यह अन्त में दोनों से भी धन का संग्रह करता है। पत्नी धनी तथा सुणी होने पर भी स्वामी के स्वामी
का जन्म बना रहता है। इसका माज्योदय २५ वर्ष की आयु से होता है। (सन्तान-सुख मज्जीन रहता है)
यह ६५ से ६८ वर्ष की आयु प्राप्ति करता है।

(२०८६) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुदा, बुद्धिमान, दृढ़ शारी वाला तथा धीरे-धीरे
स्वभाव का होता है। यह किसी भी कार्य को आगे बढ़ाने के लिए पूरा करने के बाद ही दम लेता है। पालने
होने के कारण यह सदैव उदासा और सज्जन प्राप्ति करता है तथा सबका धिक् भी करता रहता है। धन
के प्रति यह लालच मज्जीन (वनी है) न कि नज्जीन होता है और न अपव्ययी है। यह धन-संचय की
चिन्ता नहीं करता। बल्कि इसे धन की कमी कमी भी अनुभव नहीं होती। इसे धन का अन्त
सुख मिलता है। यह वाला वस्त्र ले ही अपने बच्चों का लड़ा होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु तक
होता है। पत्नी सुदृशी तथा सुशीला मिलती है। माज्योदय ४० वर्ष की आयु के बाद विशेष रूप
से होता है। यह मित्ता उत्पत्ति करता-चलाता है। इसे पुत्र-पुत्रियों का सुख मिलता है। वयोपका
में भी इसकी हानि रहती है। यह लगभग ७५ वर्ष की आयु तक जीवित रहता है।

(१०८७) - इस जन्म कुण्डली का अर्थिक स्थिति तथा लगे कदवाला, सुन्दर, ऊँचा है कठोर तथा भीतर है जो मूल चक्रवाला, नवीन कार्य करने में उत्कण्ठित, पोषकारी, साहस एवं लक्षित-कलाओं में रुचि रखने वाला तथा गुणी लगे का अदा करने वाला होता है। यह अपने सिद्धान्तों का पक्का तथा दृढ़-निश्चयी होता है। यह जमीनी धर्मियों में भी कभी विचलित नहीं होता तथा संघर्षों का डर का सामना करता है। यह दूसरों की विपत्ति को भी अपने लिए न ओढ़ लिया करता है। यह भावना का मन्त्र, पालोक से दूरे वाला, भाग्यवादी तथा पैसा में किसी के भी समुल्लस न भुक्ते वाला होता है। २२ वर्ष की आयु में इसका विवाह सुन्दर, विदुषी तथा आह्लापालक स्त्री के साथ होता है, तथापि अग्रे किशोरे के प्रथम इसका कर्कण बनता है। लज्जा-सुख उभय रहता है। अग्रे ३०, ३२, ४२ तथा ४० वर्ष की आयु में होता है। लग्न में पशु-लग्न भाग्य का नाट्य का यह २० वर्ष से अधिक आयु पाता है।

(१०८८) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, बुद्धिमान तथा गुणवान होता है। इसका विवाह २०-२२ वर्ष की आयु में ऐसी स्त्री के साथ होता है, जो सुन्दरी, बुद्धिमान तथा गुणवती होने के साथ ही इसे अपने निपन्त्रण में रखने में भी समर्थ होती है। यह जानक कुछ कठोर स्वभाव का, पालु चर्चका एवं (उदासी) होता है। यह अल्पके दिन होकर अपने काम में लगता है। धीरे-धीरे तथा अल्प-वयु-बालकों का पालन करने में इसे आनन्द की अनुभूति होती है। उन्हीं दिनों खोल का स्वर्च भी जाता है। यह किसी लगे व्यवसाय का बहुत लाभ उठाता है। इसका अग्रे ३० वर्ष की आयु में होता है, तभी से यह लोक में लगान, पशु तथा धन भाग्य का नाट्य होता है। इसकी धनवाणों तथा गुणवानों में लगान रूप से प्रविष्ट की जाती है। यह लगभग २० वर्ष की आयु भाग्य का नाट्य तथा इसकी मृत्यु भी आकस्मिक रूप से होती है।

(१०८६) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुधा, स्वाय, आकर्षक, उदार, गुणवान् तथा हानी होता है। यह साहित्यिक - रुचि रखता तथा सर्वत्र प्रश-प्रशान्त पातेवाला, तेजस्वी तथा बड़े-बड़े कामों को करने वाला तथा अनेक स्रोतों से आर्थिक-लाभ प्राप्त करने वाला होता है। इसे अपने पारिवारिक व्यवसाय, राज्य तथा अन्य कार्यों से भी लाभ होता है। यह बचपन ही सुखी रहता है, क्योंकि मातृ-सुख से वंचित हो जाता है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुधी, गुणवती तथा महत्वाकांक्षिणी होती है। इस पालक के मन का भेद जाना कठिन होता है। सन्तानों के पुत्रियों की संख्या अधिक होती है। इसका मरणोदय ३० वर्ष के उपास्य होता है तथा ४५ वर्ष की आयु तक शिवांग वा पहुँच जाता है। आर्थिक-स्थिति प्रायः संतोषजनक होती रहती है। यह मर-प्रा कीला छोड़ कर लगभग ७० वर्ष की आयु में संसार से विदा लेता है।

(१०८७) - इस जन्मकुण्डली का अधिकारी मधुरा मकी, सुधा स्वयंवान्, साहसी, ग्राह्य, शक्तिशाली, विद्वान् तथा गुणवान् होता है। यह उद्योग से उदा, धर्म-कर्म में उत्कृष्ट रहने वाला, गुणीयों को आदा देने वाला तथा योग्यकारी होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुधी, मनीषिणी तथा उच्चाकांक्षी होती है। वह गुणवती तथा उदा स्वभाव संयमकारी रहती है तथा पति के उत्प्रेषक कार्य में सहयोग प्रदान करती है। वह कुपणता प्रवृत्ति धन का संचय करती रहती है तथा आर्थिक-स्थिति को सुदृढ़ बनाती है। इस पालक का मरणोदय ३२ वर्ष की आयु से होता है तथा ४०, ४६, ४८ तथा ६२ के वर्ष विशेष लाभप्रद किंहु होते हैं। पुत्रों के सहयोग से इसके धन तथा सुख की वृद्धि होती है। आयु के ५० के वर्ष तक यह आर्थिक-क्षेत्र में प्रगति प्रकलता प्राप्त कर लेता है। कुछ समय के लिए आर्थिक-कठिनाई भी आती है। (पूर्णा ७० वर्ष होती है)

(१०६१) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुख, स्वल्पवान्, गुणवान्, विद्वान् तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। यह धनी-पू के जन्म लेने के कारण जन्मावस्था से ही सुख प्राप्त करता है। अल्पपण, अल्पसंख्या परिश्रम के बल पर यह विद्या, बुद्धि तथा धन-सौभाग्य की अविच्छिन्न कक्षा-चलावता है। इसे माना गया है कि यह व्यक्ति विशेष सुख नहीं मिलता। बड़ी बहिन तथा बड़े भाई का सुख प्राप्त होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक होता है। पत्नी सुन्दरी तथा आकाङ्क्षिणी मिलती है। इसी आयु में यह का से बड़ा लाल रहता तथा धनोपाधि करता है। यह अपने कुल में विद्या, कुशल वक्ता, चतुर तथा अपने कार्य-व्यवहारों में अत्यन्त कुशल होता है। इसे किसी बड़े प्रतिष्ठान अथवा सरकारी विभाग में कार्य करने का सन्धान मिलता है। इसे इंजीनियरिंग का ज्ञान होता है। जीवन के ४२.४३.४६ तथा ५२वें वर्ष में विशेष लाभ होता है। चला-अचल सम्पत्ति का पूर्ण सुख मिलता है। आयु ६२ वर्ष होती है।

(१०६२) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी अपने जन्म काल से ही सुखी, सुख, चैतक-सम्पत्ति को वाला, साह-सुख से युक्त तथा लोकप्रिय होता है। २५ वर्ष की आयु में शत्रु + प्राप्त होता है। लक्ष्मी का यह देश-विदेश की यात्राएं करता है। इसकी पत्नी सुन्दरी तथा के पावता होती है। यह लक्ष्मी से सुख प्राप्त करता है। इसकी आयु के अनेक मोन होते हैं। जीवन के ५२, ५६, ६२ तथा ६४वें वर्ष विशेष लाभ एवं सम्पत्ति प्राप्त सिद्ध होते हैं। इसे गुण-शत्रुओं से भयभीत रहता है, मनु के इसका कुछ बिगाड़ नहीं पाने। यह विद्वानों में, राजा में तथा समाज के अग्रणी में सम्मान प्राप्त करता है तथा ४५ वर्ष की आयु तक प्रफेक्ट धन अर्जित करता है। इसे चला-अचल सम्पत्ति का प्रफेक्ट सुख प्राप्त होता है तथा सब प्रकार से आनन्दमय जीवन व्यतीत करता है। वृद्धावस्था में धर्म-कार्य की ओर रुचि विशेष बढ़ जाती है। श्राद्ध लगभग २० वर्ष की होती है।

(१०-ई३) - इस जन्म कुण्डलीवाला मंगल स्वस्थ, सुख, गुणवान तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होने के साथ ही पुत्रा खेले का शौकीन होता है। यह रसिक स्वभाव का होने के कारण अनेक स्त्रियों के प्रति आकर्षित बना रहता है। विष्णु का लाभ उत्तम होता है। विवाह २४ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी मिलती है, किन्तु स्त्री परिवर्तनों से संकष्ट भुगता है तथा उनके कारण हानि तथा दुःख भी उठता है। इसके मन की चाह पाना कठिन होता है। यह ऐसे कार्यों को करता है, जिनके विशेष परिश्रम न जानाये। सन्तान - सुख उत्तम रहता है। मंगोदक २५ वर्ष की आयु से होता है तथा आजीवन उष्ट्र धन - लाभ होता रहता है। राजकीय - सेवा में रह कर भी यह अपनी प्रतिष्ठा को बढ़ाता है। विवाह के बाद तथा मंगोदक से पूर्व कुछ समय कष्ट में भी बीतता है। पानु बाद में स्थिति सुधाराती है। यह २० से ३० वर्ष तक भी दीर्घायु प्राप्त करता है।

(१०-ई४) - इस जन्म कुण्डलीवाला ज्ञानक स्वस्थ, सुख, गुणवान, कलाओं का ज्ञान तथा अपने स्वभाव से सबको मोहित करने वाला होता है। यह बाल्यावस्था से ही सुखी तथा समृद्ध जीवन बिताता है। इसे धन का कभी अभाव नहीं होता। इसका विवाह २०-२० वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुलक्षणा, महत्वाकांक्षिणी तथा उच्चवर्णाधी काष्ठालय की स्वाधिनरी होती है। यह विदुषी, गुणवती तथा अपने निर्देशन में बड़े परिवार को चलाने वाली होती है। ज्ञानक भी उसकी इच्छा के विपरीत नहीं चलता। २४ वर्ष की आयु में इसका मंगोदक होता है। राजकीय - सेवा अथवा किसी अन्य उच्च प्रतिष्ठान में नौकरी का वह यह उष्ट्र धन तथा पशु कमाना है। ५० वर्ष की आयु तक यह बहुत उत्कृष्ट कालेता है। इसे सन्तान का दुःख होता है, कलनः बृद्धावस्था में मंगलवान होता है। मंगोदक स्वदेश में ही होता है। आयु ८० वर्ष की होता है।

(२०६५) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुधा, आकर्षक व्यक्तित्व एवं सुश्रुवाणी वाला, मधुर, कुशल, उन्नत ललाट, लम्बे कद वाला तथा शरीर में कुछ मर्द होना है। यह अपना उत्तम ही तथा प्रीति भी होता है। सुधा बिना किसी टिचक के कठिन-प्र-कठिन कामों के भी हाथ डाल देता है। कभी कभी इसे मर्द आर्थिक-हासि भी उठानी पड़ती है। तथापि हासि एवं धन का अभाव होने पर भी धन की कोई कमी नहीं रहती, क्योंकि इसकी आमदनी के अनेक स्रोत होते हैं। इसका विवाह २०-२२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुदृढ़ मिलती है, तथापि यह अनेक परिस्थितियों में भी सम्बन्ध बनाये रखता है। इसका आयु २५ वर्ष की आयु से आरंभ होता है। तथा ४० वर्ष की आयु तक यह अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बना लेता है। इसे पुत्र-हासि का दुःख भी होता है तथा भविष्य में पुत्रवश इससे कुछ भी एवरे है। सामान्यतः इसका जीवन धनी, धन अभाव होता है। आयु २० वर्ष के लगभग होती है।

(२०६६) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुधा स्वल्पवान्, विद्वान्, काव्य-मर्द, साहित्यकार, तथा सुश्रुवा होता है। यह अपने कुल के प्रति होता है तथा जीवन के लिए आवश्यक सभी वस्तुओं को प्राप्त करता है। यह कुशलवन्ता, कार्पिक तथा पालेस के एक आयोजन के साथ-साथ अपने पुत्र का विस्तार करने वाला भी होता है। इसे मात्र तथा बड़े मर्द का सुख प्राप्त नहीं होता। स्वर्ग तथा जल से भयभीत बन रहा है, तथापि लम्बी आयु प्राप्त करता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक होता है। पत्नी सुदृढ़ मिलती है तथा वैवाहिक-जीवन भी सुवर्ण रहता है, तथापि इसके एकाधिक परिस्थितियों में भी संकट बने रहते हैं। यह गृहत्व के गुणों से युक्त, राजकीय-सेवा के उच्च पद पाने वाला, जिस अपना निजी व्यवसाय का, स्वतन्त्र जीवन बिताये वाला होता है। जीवन के ४०, ४४, ४६ तथा ५४ के वर्ष विशेष चरणाग्र होते हैं। पूर्ण आयु २० वर्ष के लगभग होती है।

(१०-ई०) - इस जन्मकुण्डली का हवासी सुग्दा, बलवान्, पौष्टिकी, अल्पना-चतुर, विष्का-कुट्टि मे प्रवीण तथा चोरो भोके वातावरण को अपने अनुकूल बना लेने वाला होता है। यह विभिन्न कार्यों का अपने धन की अभिवृद्धि करता है। यह वालावाला में प्रायः रोगी बना रहता है तथा बड़े होके पा स्वीकृत रहता है। यह अल्पना साहसी होता है तथा जोगीवम भरे कामों द्वारा धन कमाता है। इसका धन भी बड़ा साहसी होता है। इस विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा गुणवती होती है। उनके पुत्रों के क्षेत्र में सहयोग प्राप्त होता है। इसका भाग्योदय भी विवाह के बाद होता है। बाद में रहेका इसे धन का उत्तम लाभ होता है। यह धार्मिक कार्यों में धन का व्यय करना चाहता है, तथा कि स्वामय से कृपण होने के कारण पैसा का नहीं जाना। इसके जीवन के २०, २५, २७, २८, ३२, ३८ तथा ४६ वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। यह लगभग ७० वर्ष तक जीवित रहता है।

(१०-ई०) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति अल्पना कुट्टिमान्, अनेक प्रकार की कलाओं का हवाना, सुग्दा, बलवान् तथा गुणवशाली होता है। यह निम्नवर्ग के लोगों से सम्पर्क रावता तथा उनके लाभ उठाता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा गुणवती मिलती है। पत्नी के अतिरिक्त अनेक अनेक मित्रों से भी इसके प्रेम-सम्बन्ध बंधे रहते हैं। इसका भाग्योदय २६ वर्ष की आयु के बाद होता है। यह बाद में रहेका सुख प्राप्त करता है तथा चोरो भोके वातावरण को अनुकूल करता है। यह अपने कार्यों में धन-केन प्रकीर्ण सफलता प्राप्त करने में कुशल होता है। इसे पुत्रों के क्षेत्र में अपनी पत्नी का सहयोग प्राप्त होता है तथा उनकी कुट्टि मत्ता के कारण धन का संचयन कालेता है। इसके जीवन के २८, ३२, ४०, ४६ तथा ५२ वें वर्ष विशेष लाभ प्राप्त सिद्ध होते हैं। यह लगभग ८० वर्ष की उम्र में प्राप्ति प्राप्त करता है।

(१०-६६) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी अल्पना चंचल स्वभाव का, एक ही समय में अनेक कामों को सोचने वाला तथा अनेक कार्यों में हाथ डालने वाला, पल्लु प्रत्यक्ष में अल्पना स्वभाव तथा दीर्घवान् विवाह देने वाला होता है। यह अनेक कार्यों में जल्दबाजी करता है और यदि इसके संगे उद्बल कार्य नहीं होता तो शीघ्र ही क्रुद्ध भी हो जाता है। अपने पिता से यह प्रेम प्राप्त है, पल्लु पिता के वक्षु-बापों से इसकी पटरी गरी होती है। इसका विवाह १७ से २० वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुदृढ़ तथा सुवदेने वाली मिलती है। सब कुछ प्राप्त होने पर भी इसे जीवन में सुख कम तथा दुःख अधिक मिलता है। इसका भाग्यदण्ड अनेक बार होता है तथा हाथियाँ भी कड़ियाँ पठानी पड़ती हैं। कड़ी बाँ नौकरी का काम कई छोड़ देता है। इसका सम्पूर्ण जीवन सामान्यतः संघर्षशील बना रहता है। जीवन का अन्तिम भाग कुछ सुखों से बीतता है। श्रृणु ७५ से ७८ वर्ष की होती है।

(११००) - इस जन्म कुण्डली वाला सुगुण सुदृढ़ तथा चित्त शरीर वाला, दृढ़ चित्त का, धीर-मंजीर तथा सफल होता है, नकारा यह अपने कामों का चित्त ही बिगाड़ भी लेता है शत्रु-पक्ष इसकी कमजोरी का लाभ उठाता है। इसका विवाह २२ से २४ वर्ष की आयु में होता है। भाग्यदण्ड भी विवाह के बाद ही होता है तथा उनमें स्त्री सहयोगिनी बनती है। परमाणव शत्रुओं से पीड़ित तथा दुःखी रहता है। यह अपनी स्त्री के नाम से जो व्यवसाय अच्छा कार्य करता है, उन्हें इसे सफलता मिलती है। इस प्रकार इसका भाग्य स्त्री से सम्बद्ध बना रहता है। ४५ से ५० वर्ष की आयु तक इसकी आर्थिक - स्थिति सुदृढ़ हो जाती है। स्वर्च भी बहुत लगे रहते हैं। यह स्वयं अपने पुत्र भी बहुत स्वर्च करता है। इसे किसी मापों में अचानक भी कष्ट या सफलता प्राप्त नहीं होता। पर सामान्य सुखी जीवन बिताता हुआ लगभग ६८ वर्ष की श्रृणु प्राप्त करता है।

(११०१) - इस जमाकू चक्रवाला जानक दृष्टांत का, मुक्ता, पिण्डकारी, गुठाकान्. विद्वान् तथा चर्मिला होना है। यह अपनी पुनर्जायक पक्का होना है तथा अपनी जिद में आका जायः अपनी ही हाकिम बँटना है। यह अपनी ही लक्षणों से शत्रुओं को उत्पन्न करता तथा करी करी कोष में भुक्ता भुक्ता को भी नुकसान पहुँचाने का उपरान्त करता है। जो लोग ऊँचे से नीचे को लगे हैं, वे भी इससे आन्तरिक प्रेमभाव नहीं रखते। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। करी इसके लिए ब्रह्मचर्य होना है। विवाहोपान्त ही इसका आशोधन होता है। इसके बिगड़े हुए काम हरी के लक्षणों से बन जाया करते हैं। पित्त की ओर से इसे कष्ट मिलता है। सामाजिक रूप से भी पित्त की स्थिति गिरी हुई रहती है। ३० वर्ष की आयु में आशोधन होता है, तथाकि कार्मिक स्थिति आजीवन सामान्य ही बनी रहती है। इसकी मृत्यु लगभग ८० वर्ष की आयु में होती है।

(११०२) - इस जमाकुण्डली वाला मनुष्य कोमल (विनायक), मधुर भाषी, सुदृढ़, आकर्षक, मधुर-हृदयवाला, कवि, साहित्यप्रेमी तथा स्वाध्यायशील होता है। यह अपना दुःख किसीके सिद्धांत उकर नहीं करता। अनर्पणी वृत्ति का होने के कारण यह अपनी चिन्ताओं से चिन्ताहीन भी हो घुटता रहता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होना होता है। पत्नी से मने बुझला तथा जीवन के अनेक क्षणों में सहयोग कोन वाली मिलती है। पत्नी कावाला सुचारु रूप से चलने के अतिरिक्त वह कठिनी कामों में इसका साधन देती है तथा उसी के माग से यह पुत्र प्राप्त करता है। सामान्यतः यह निश्चल विनायक का होता है। अध्यात्म के अभाव में यह अपने ध्यान की अभिवृद्धि करता रहता है। इसे धन का आनंद नहीं रहता, तथाकि यह उसे अपनी इच्छा-साधन नहीं का पाना। स्त्री-पुरुषों का उत्तम पुरुष प्राप्त करने हुए यह लगभग २० वर्ष तक जीवित रहता है।

(१९०३) - इस लकाऊ बच्चा का हजारी मजदूर के ६ बाला, सुन्दर, ने अपनी एक पुमावशाही कारिगार समान
साहसी उछरि का नका पनीसरी होना है। यह राजकीय-सेवा से आजीविके कार्य का ना है। इसका
विवाह २०-२२ वर्ष की आयु में हो जाना है। नका माफेदम भी हरी के माफेद ही होना है। नकाकि इहे
हरी का पूर्ण सुख प्राप्त नहीं होना। सामान्य यह फरी होना है। पालु जिस हीनानक अकेलियन
का इच्छुक होना है, वह नहीं का वाला। २५ वर्ष की आयु के बाद इसके दुःखों का अना हो जाना
है नका सुखों की उपलब्धि होनी (हनी है) इसे माना नका बड़े मर्षी का सुख नहीं मिलना। जीवन
के ३३, ३६ तथा ४५ वें वर्ष कष्टकाक रहने हैं तथा ३४, ३६, ४६ एवं ५५ वें वर्ष विशेष सुख
दायक सिद्ध होने हैं। शरीर प्रायः स्वस्थ बना रहना है। सन्तानों का उत्तम सुख प्राप्त होना है तथा
समाज में मान-परिष्ठा की उपलब्धि भी होनी है। पूर्णाष्टि ७० से ८५ वर्ष होनी है।

(१९०४) - इस लकाऊ डली वाला मुरूप सुन्दर, बलवान, गुणी, साहिल प्रेमी, कवि, पालु भी नका
अनेके पुह कार्य से विजोपार्जन करने वाला होना है। यह अपनी विद्वता से आर्थिक तथा पशालम
प्राप्त का ना है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में हो जाना है तथा विवाहोपरान्त आर्थिक वि-
ति अधिक सुदृढ़ होने लगती है। माफेदम व्ययन से ही हो जाना है, अतः निला उन्नतिकला
पलापना है। यह प्रत्येक कार्य को प्रथम मर लगका करता है तथा उसमें सफलता भी प्राप्त का ना
है। ५० वर्ष की आयु तक इसकी गठना विविध कारिगारों में होने लगती है। इसका जीवन
समाप्त होना है। इहे रीति की पत्ना के अधिक विश्वास नहीं होना। सभी कार्य की सफलता
का स्नेह यह उत्तम को ही देता है। इसे त्वचा रोग होते रहते हैं। विवाह एक से अधिक होते हैं
अथवा अनेक रीतों से प्रेम-सम्बन्ध बने रहते हैं। पूर्णाष्टि ५८ से ६५ वर्ष की होनी है।

(११०५) - यह जन्म कुण्डली वाला जन्म सुखा, स्वस्थ, आदर्श भवना प्रदान, शरीर निर्मल लेने वाला, अपने पुत्र से दूसरों को शरीर मित्र बना लेने वाला, स्वनात्मक कर्मों का विशेष ध्यान देने वाला, लम्बे कद का, गौरवर्ण, कद प्रमाण उकृति का तथा गुणवान् होता है। यह अपने पुत्रवर्ष का जन्म कमाने में प्रवृत्त होता है तथा सर्वत्र सम्मान प्राप्त करता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुकृती तथा मेधावृद्धा मिलती है। वह इसकी अनुमान वह का उत्प्रेष क्षेत्र में सहयोग प्रदान करती है। दास्य - सुख तथा सन्तान - पुत्र उत्तम रहता है। आर्थिक - स्थिति विकसित होकर उन्नत होने लगती है तथा ४० वर्ष की आयु में पूर्ण भाग्योदय होता है। तब यह सफलता के चामक शिखर पर चढ़ता है। यह अपना सम्मान स्वयं बनाता है तथा वाहन एक सेवक आदि का सुवर्ण प्राप्त करता है। इसका भाग्योदय वादेस में होता है तथा अपना स्थायी भवस्थली वही बना लेता है। वृद्धापका में सुखी रहता है। पूर्ण ७०।

(११०६) - यह जन्म कुण्डली का स्वामी सधन कद तथा उन्नत ललाट वाला, मेधावृद्ध, सुखा, स्वस्थ, सुखा तथा सुखा - स्वभाव वाला होता है। पानु इसकी कृपा का दिवाले में कीटी होती है, जैसे हृदय का बड़ा होना होता है। इसमें क्षेत्र की मात्रा अधिक पाई जाती है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुकृती मिलती है तथा यह इसकी ओर विशेष अनु-रुक्ता भी बना रहता है। पत्नी विदुषी तथा बुद्धिमती होती है। वह उत्प्रेष क्षेत्र में धर्म को सहयोग करती है। यह भोग - विलास में विशेष रुचि रखने वाला तथा ऐश्वर्यपूर्ण जीवन बिताये का आकांक्षी होता है। यह मौलिकता का उपासक होता है। ईश्वर तथा धर्म के प्रति आस्थावान् नहीं होता। भाग्योदय वादेस में होता है और वही स्थायी निवास भी बनाता है। ५० वर्ष की आयु तक यह उपनिषद् धर्म कमा लेता है, पानु वह इसकी स्त्री के अधीन रहता है। पूर्ण २० वर्ष होती है।

(११००) - यह लक्ष्मकुण्डली के अपना मनुष्य सुका, स्वामी, अर्धे कद का, उन्नत ललाट, विकार
व्यापकाल वाला, धीर-गरी। इसी के मन की चाह पालने वाला, चतुर, नीतिज्ञ तथा जानाजान
के अतृप्त स्वयं को डाल लेने वाला होता है। यह अपना सहकाओं की होता है तथा साधन-विहीन
होते हुए भी अपनी उत्तमिका मार्ग हैं लेता है। इसका विवाह २० वर्ष की आयु में होता है। पत्नी
सुखी तथा धनी-परीक्षा की होती है। इसका मज्जोदध भी विवाह के बाद ही होता है। यह जीवन
में धनी बनारहता है, पानु धन का भंडार, इसकी पत्नी का ही रहता है। उसी की इच्छा हुआ यह
सब कामों को करता है। इसे पत्नीन विषयक कह होता है। परीक्षा वाले से इसके सम्बन्ध साध
स्वतः अच्छे बने होते हैं तथा समाज में भी इसे मान-प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। स्वात्म्य प्राप्त होकर
बनारहता है। किन्तु से भी सहजोग मिलना (रहता है) प्रमाण ७५ वर्ष से अधिक होती है।

(११०८) - यह लक्ष्मकुण्डली का स्वामी अर्धे उन्नति, गरीबे गरीब तथा मध्यम कद वाला, उन्नत
एवं विशाल ललाट का, धिने से काले के शो वाला, सुका तथा आकर्षक कारित्व सम्पन्न होता है।
यह इसी को आकर्षित करने, किन्तु बन्ने तथा उगरे काम निकालने की कला से कुशल होता है।
इसकी ओर अनेक निष्ठा आकर्षित होती है तथा यह भी कनेक निष्ठा से सम्बन्ध बनाये रखता
है। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। विवाहोपान्त यह अपने लक्ष्मणों को पत्नी
के निष्ठा सौंप देता है। वह उत्तिके श्रेष्ठ सहजोगिनी तथा धन की अभिवृद्धि करने वाली सिद्ध होती
है। ३५ वर्ष की आयु के पश्चात् इसे पूर्ण सुख प्राप्त होता है। यह पुत्रा लेने का शौकीन भी
होता है, पानु उससे धन का गणतरी काला। इसे पुत्र-पुत्रियों का सुख प्राप्त होता है। यह पक्ष
में रहकर अपनी निष्ठा को सुदृढ़ बनाना तथा लोकमान्य होता है। आयु लगभग ८० वर्ष होती है।

(११०८) - इस जन्मकुण्डली का अर्थवर्ष सप्तम कदवाला, सुखा, समृद्धि वाणी को लगे वाला तथा आकर्षक व्यक्तित्व का धरी होता है। यह उत्प्रेक्ष्य वाक्य "को प्रभावित करता है। यह इतना संकल्पित होता है कि इसके लक्षणों में आगे वाले लोग अपनी हाथ उठाकर भी इसका कार्य करने को प्रारम्भ करते हैं। यह दोरी सी आधुनिक ही अपने दिना के पक्ष तथा समृद्धि को लागू कर अलग हो जाता है तथा अपने पुत्र कार्य के कलदा पक्षों लम्बना होता है। यह विद्या आदि प्रदुष्टों से लम्बना विद्यालय जन्मति का स्वामी बनता है तथा भोग-विलास एवं ऐश्वर्य पूर्ण जीवन बिताता है। लोक समाज में समाज भी जादा काम है तथा नौदस में रह कर सुखी जीवन बिताता है। इन सब के कारण भी आन्तरिक कारणों से यह सुखी बना रहता है तथा अन्तिम जन्म में चानहीन भी हो जाता है। २३ वर्ष की आयु में इसका विवाह होता है तथा लगभग ७०-७५ वर्ष की पूर्ण आयु प्राप्त करता है।

(१११०) - इस जन्मकुण्डली का अर्थवर्ष सुखा, सुगठन गरी का जीवन तथा दृढ़ चित्त वाला होता है। यह अपने व्यक्तित्व से अन्य लोगों को प्रभावित करता तथा उन्हें अपनी इच्छाओं से चालित कर लाभ उठाता है। इसे ज्ञान, चोटे लगती रहती है, तथा यह अपने ज्ञान से एवं परिष्कृत प्रकृति के कारण उसकी प्रभावशाली आता। यह ऐसे काम भी करता है, जो अनुचित होते हैं तथा उनके कारण राजकुण्ड का भागी भी बनता है। इसे अपने कामों को धरा करने की धुन सवार रहती है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है अपनी सुखी स्त्री के प्रति अत्यधिक रहने वाला यह अन्त में निजों से भी सम्बन्ध रावता है। यह भाग्य का धारी, समृद्ध तथा पुन-पौनवान् होकर सुखी-जीवन व्यतीत करता है। पूर्ण आयु ८० वर्ष होती है। पानु किनी दुर्घटना में चोट लगने के कारण ५० वर्ष की उमिर तक जीवित रहता है।

(११११) - इस जलकुंड चक्र का अधिपति मुद्गा, सुगठित शरीर वाला, आकर्षक चेहरा युक्त, गोल चेहरे वाला, मुद्गा के बों वाला, कुंद स्मृत आकार का, चट्टा, समकक्ष त्रिकोण जलकान्त होता है। इसके दोहों का प्रसफाहट विलनी रहती है। यह दार्शनिक विचारों का तथा अत्यन्त उदात्त उच्च नि का होता है, जिसे भी इसे कोष बहुत माना है। यह पुत्रा खेलों का शौकीन तथा पार्श्विकों से सम्बन्ध रावने वाला भी होता है। इसे पिता का अल्प-प्राय प्राप्ता होता है। प्राप्ताओं से इसे विशेष लाभ होता है। यह बड़ा उच्चमी होता है तथा अपने जीवनमार्ग ही आर्थिक-स्थिति को सुदृढ़ बनाता है। इसका आयोदध २० वर्ष की आयु से ही मान्य हो जाता है तथा जीवन में किसी भी प्रकार के सुख-साधनों की कमी नहीं रहती। इसका विवाह २०-२१ वर्ष की आयु में हो जाता है। दाम्पत्य-सुख तथा पत्नी-प्राय उत्तम रहता है। समाज में प्रसिद्धा मिलती है। आयु ६० वर्ष के लगभग हो सकती है।

(१११२) - इस जलकुंडली का स्वामी मुद्गा, आकर्षक चरित्र वाला, दार्शनिक विचारों का मधुराधी, चतुर वक्ता तथा जलकाली होता है। यह पुत्र का शौकीन तथा पार्श्विकों से संबंध रावने वाला भी होता है। यह पार्श्विकों में आसक्ति के कारण अपने आवश्यक कामों को भी पूरा करता है तथा हानि उठाता है। इसे अपने पिता की धन-सम्पत्ति से कोई मोह नहीं होता। इसका आयोदध वचन से ही होता है। यह स्वर्ण-इन-अधिक धन कमाना है कि पिता की आर्थिक-स्थिति उसके लक्ष्य की की पड़ जाती है। इसे अपने शत्रुओं से भी धन का लाभ होता है। पुत्रों में यह कमी हास नहीं है, बल्कि हमेशा जीतता ही है। इसका विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा आस्थाकारीणी मिलती है। पुत्रों द्वारा इसके धन की हानि भी होती है। जीवन अकाल निरन्धों की बीमारी के कारण यह काभी काट उठाता है। आयु ७० वर्ष होती है।

भ०
सं०
२६००

कु०
२०

(१११३) - इस जग कुण्डली वाला मधुष्य सुदा, सुकाशित शरीर वाला, नेपाकी, मधुमकी, दार्शनिक वि-
चारों का तथा अपना आकर्षक कवित्व का धनी होता है। यह हाउका के वातावरण के अपने
अनुकूल बना लेता है तथा अपनी योग्यता एवं विद्वत्ता से सुदृढ़ी निम्नों को अपनी ओर आकर्षित
करने में भी सफल होता है। इसे कभी किसी प्रकार का कष्ट नहीं होता। सुदा के सभी साधन इसे
गिना तथा अपना ही उपलब्ध होते रहते हैं। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में होता है,
पत्नी सुदृढ़ी, गुणवती तथा मने दुकूल मिलती है। तथापि उससे इसकी दृष्टि नहीं हो पाती, अतः यह
अपने निम्नों से भी संबंध बनाये रखता है। निम्नों की इसके लिए धन, मान तथा सुख सब कभी फिट होती
हैं। अपने मर्त्य से शत्रुता के कारण इसे दुःख भी उठाना पड़ता है। ऐश्वर्य प्रदर्शित करने वाले कार्यों
से इसे विशेष रुचि होती है। भाग्योदय वचन लेती होता है। पुत्र से मन नहीं मिलता। श्रम ७० वर्ष होती है।

(१११४) - इस जग कुण्डली का स्वामी सुदृढ़ पालु जन्मे शरीर वाला, अल्पन धन, धन का कवक,
उद्यमी, उदात्त, साहसी तथा मधुमकी होता है। यह अपने निम्नों के द्वारा अपने में जीवान से सुदृढ़
जाता है और अपने सफलता भी प्राप्त करता है। यह अपनी नगमन की ओर विशेष आकर्षित
रहता है। इसका विवाह २२ वर्ष की उम्र में होता है। पत्नी अनुगत, सुदृढ़ी तथा सदैव गिनी होती
है। यह पत्नी से सुख प्राप्त करते हुए भी अपने निम्नों की ओर भी आकर्षित बना रहता है। तथा
उससे उम-सम्बन्ध रखता है। इसे सन्तान-सुख प्राप्त होता है, पालु मर्त्य का सुख नहीं मिलता।
इसका भाग्योदय २५ वर्ष की आयु से होता है तथा इसे गिना धन तथा सुख की उपलब्धियाँ
होती रहती हैं। यह स्वभाव से कृपण होते हुए भी मन का उदात्त होता है। इसे निम्नों के लोगों की
सिंहासि से सुख, सम्मान तथा धन का लाभ होता है। श्रम ६२ वर्ष की होती है।

(१११५) - इस जनकुण्डली का स्वामी सुका, सुदृढ़ शरीर, मध्यम वय, गौ वर, आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न तथा नीतिहीन होता है। यह दृष्टि नक के विकास नहीं पाता तथा अपने विचारों को ही सर्वोपरी स्थान देता है। यों, यह उदात्त शक्ति का, दानी तथा प्रबल बुद्धि का होता है। कभी-कभी इसे कोप भी बहुत आता है। यह नीतिहीन होने के कारण सूझ-बूझ से काम लेकर बिगड़े हुए काम को भी बना लेता है। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। यह राजकीय-सेवा में भी सम्मिलित प्राप्त करता है। पत्नी नरोत्तमता मिलती है, सनातन-भावनी रहता है, पालु माइने से स्नेह नहीं करता। इसे पुत्र-पुत्र-पुत्र के सहयोग को है, अतः इसकी आर्थिक-स्थिति धनहीन सुदृढ़ बनी रहती है। यह सम्पन्न तथा परिवार में सम्मानित स्थान प्राप्त करता है। अज्जेय विवाहोपान्त होता है तथा पूर्णपुत्र लगभग ७६ वर्ष की होती है।

(१११६) - इस जनकुण्डली वाला सुदृढ़ शरीर तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। इसके विचारकाल पर रहस्यमय होते हैं तथा इसके मन के भेद को कोटि धार नहीं पाता है। यह प्राप्त राजकीय-सेवा में एक अपनी उत्कृष्टता काता है तथा अपनी विद्वता एवं पदार्थ के बल पर शीघ्र ही किसी उच्च पद को प्राप्त करता है। यह राजकीय-सेवा में न रहे तो अन्य क्षेत्रों में एक भी यह अपने लिए सम्माननीय स्थान प्राप्त करता है तथा आर्थिक-स्थिति को सुदृढ़ बनाता है। इसका विवाह १६-२० वर्ष की आयु में ही होता है तथा विवाह के कुछ समय बाद ही सनातन-भावनी होता है। इसका अज्जेय कालावस्था होती है, अतः यह निराला-पन्न काला रहता है तथा विभिन्न प्रकार के सुखों का उपभोग करता है। अपने उत्तमवय के काल पर अधिक लोकप्रिय नहीं होता, क्योंकि समाज के सुकृति बनने वाला है। पूर्णपुत्र ७० वर्ष से अधिक होती है।

(१९१७) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी लम्बे कद का, बन्ध-गो बर्ण, काले के बने वाला, बड़े नेत्रों वाला, शरीर वतला, पारंगत, सुन्दर, एक आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। यह पुरुषावस्था में प्रवेश करने की चतुर्वर्षीय काले लगता है तथा जीवन में अधिक धन कमाता चला जाता है। यह व्यावसायिक बुद्धि का होना सुभीता का है। सफल नहीं होता। राजकीय सेवा में रह कर ही इसे सफलता मिलेगी। राजकीय सेवा में न जाने पर यह किसी उच्च व्यावसायिक-संगठन में कार्य करता है और वहाँ सफलता, सम्मान एवं आर्थिक लाभ प्राप्त करता है। इसे हल्कापन का भी है प्रेम होता है। यह अपने घर की बात अपनी पत्नी को भी नहीं बताता। नीच व्यक्तियों के संग से इसे विशेष लाभ होता है। इसका विवाह २० वर्ष की आयु में ही हो जाता है। पत्नी सुन्दरी मिलती है, तथापि अशान्ति के भी इसके संबंध बने होते हैं। (सन्तान-सुख उत्तम होता है। प्रणति ६२ वर्ष के लगभग होती है।)

(१९१८) - इस जन्म कुण्डली वाला बालक सुन्दर, आकर्षक, आपत्त प्रभावशाली, हठ-धुर, सुन्दर, गुणवान तथा विद्वान् होता है। यह राजकीय सेवा करता किसी निजी व्यावसायिक संस्थान में नौकरी का भी धन तथा प्रशंसा का उपार्जन करता है। यह स्वतन्त्र विचारों का धरी तथा आकर्षक रूप से लाभ देने वाला होता है। इसका विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा सधु चलाव की होती है, तथापि उसके विचारों से इसका मेल नहीं होता। सन्तान-सुख भी सामान्य ही होता है। बाल्य में ही सहायता से धन की पर्याप्त वृद्धि होती है। यह नैतिक विचारों का होने के साथ ही योगकारी तथा दानी होता है। पृथक्स्था में इसकी प्रवृत्ति धर्म की ओर भी उन्मुख होती है तथा यह नीतिरत भी होता है। (प्रणति ७० वर्ष के लगभग होती है।)

(१११८) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी बुद्धा शरीर वाला, मध्यम ऊँच का, पतली देह धारि का, हठी स्वभाव का तथा अपने ही तरीके एवं विचारों को मान्यता देने वाला होता है। इसका शुक्राणु अतीव्रणवादी की ओर अधिक होता है। भौतिकतावादी दृष्टिधर्मों का यह अनुयायी होता है। इसे राज्याभिषेक से लाभ होता है तथा बाहरी पात्रों से भी परफिटि धन मिलता है। इसका विवाह २१-२२ वर्ष की आयु में होता है, पानु पत्नी के साथ वैवाहिक-सम्बन्ध बना रहता है। पत्नी से अधिक सुखी नहीं मिलता। इसका विवाह होता है। इसका आयोदध २५ वर्ष की आयु से होता है। इसकी आयुदनी रूब होती है, पानु रवर्ष भी अधिक रहता है। पुत्रों द्वारा भी धन की वृद्धि होती है। साहसिक कार्यों से भी इसे परफिटि लाभ होता है। इसके जीवन के ४०, ४२, ४४, ४८ तथा ५२ वें वर्ष अपना महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। पूर्णदि ७० से ७२ वर्ष के बीच होती है।

(११२०) - इस जन्म कुण्डली वाला जातक पतले एवं लम्बे शरीर का, गोबरणी, बुद्धा, संभ्रिता पूर्वक विष्णु कोरे वाला, पानु किसी विधियों के पटुचने में आतमधिक विह्वल लगाने वाला तथा अस्मिता चिन्त वाला होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी कच्चे स्वभाव की, मधुर-भाषिणी, सुन्दरी तथा व्यवहार-कुशल होती है, पानु उन्का जातक से चत्किंचित् सम्बन्ध भी बना रहता है। इसका आयोदध विवाहोपाका होता है तथा कहीं मोरों से धन का अकस्मन्त होता है। इस सर्वत्र यथा तथा समान की उपलब्धि होती है। यह राजकीय-सिवा संघवाकित्सी बड़े संगठन में कार्यरत रहकर परफिटि धन अर्जित करता है। पुत्रों द्वारा भी धन का लाभ होता है। पुत्र अनुगत तथा अह्लाकारी होते हैं। इसके जीवन के ३८, ४३, ४८ तथा ५२ वें वर्ष विशेष महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। पूर्णदि ७५ वर्ष की होता है।

(११२१) - इस जन्म कुण्डली वाला मनुष्य सुदृढ़ कर्मी वाला, आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न, कोमल स्वभाव का। इसने के प्रति सहाय्यकारी दृष्टि, उपदेशकों जैसी व्यवस्था देने वाला तथा धीरे-धीरे विचारक होता है। इसके पास धन का आगमन गिराव बराबर रहता है, अतः यह आर्थिक-दृष्टि से सुखी एवं सम्पन्न बना रहता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा मन्त्रीवर्णी होती है। विवाह के बाद कुछ समय तक इसे बहुत कष्टों का सामना करना पड़ता है, तत्पश्चात् सब कुछ ठीक हो जाता है। इसने के पास धन के एकजोड़े के कारण इसे कष्ट होता है। आयु के २२, २८ तथा ३२ के वर्ष में धन का लाभ होता है तथा ३६, ४० एवं ४८ के वर्ष में धन का नुकसान होता है। यह राजकीय सेवामें, शिक्षालय में अथवा किसी बड़े संगठन में कार्यरत रहकर धनार्जन करता है। इसके संबंध में एक ही अधिकारियों के लाभदायक है। प्रारंभिक १० वर्ष होती हैं।

(११२२) - इस जन्माङ्क चक्र का स्वामी सुदृढ़ तथा स्वल्पशरीर का, उच्च विचारवान् तथा महत्वाकांक्षी होता है। यह अपनी वाक्पटुता से लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता है तथा लार्किक व्यक्ति है प्रभावित करके मानता है। इसे राजकीय-सेवा में जाने का अवसर मिलता है और इसके उच्च पद प्राप्त होता है। इसका विवाह २४-२२ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दर, वाक्पटु, तुलसी तथा सम्पन्न-पणिवत् भी होती है। इसका प्रारंभिकोदय ४५ वर्ष की आयु में होता है। ४८, २२ तथा ६२ वर्ष की आयु में इसे धन का विशेष लाभ होता है। इसका कभी प्रभाव नहीं होता। अपने व्यक्तित्व के प्रभाव से यह सदैव मुक्त निष्ठा में बना रहता है। इसकी मजदूरी के मोत अनेक होते हैं। पुत्र-पक्ष भी ओर से इसे लाभ मिलता है। लगान विषय में होती है तथा योग्य नहीं होती। इसकी मृत्यु लगभग ८० वर्ष की आयु में होती है।

(११२३)- इस जग कुण्डली का स्वामी सुता, पालु गु विभाव का, भोपी, आभी, नजादि सभ का सभ का शान्त हो जाने वाला होता है। यह पुनर्मात्र तथा पापुम को विशेष महत्व देता है तथा अपनी बुद्धिमान के बल पर प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है। इसके उच्चपद में बाधाएं आती हैं, फिर भी मज्जेद शिक्षा पाने में सफल होता है। विद्याभ्यस्यन समाप्त करने की इसे राजकीय सेना में जाने का सुयोग मिलता है। यह २२-२३ वर्ष की आयु में ही आजीविका उपार्जन का उठता है। यह सफलता होते हुए भी कभी-कभी शारीरिक कार्य का करना है तथा अनुचित लाभ को भी प्राप्त करता है। यह अपने बहिन-भाइयों से लोह काता है तथा अपने जीवन को एकत्र बगोछे करता है। इसका विवाह २२-२६ वर्ष की आयु में होता है। भाग्योदय २० वर्ष की आयु में ही आरंभ हो जाता है। अना सभ तक इसके पास वर्जिता धन रहता है। अधिकतम आयु ६८ वर्ष होती है।

(११२४)- इस कुण्डली वाला जातक पहले-दुबले तथा लम्बे शरीर का, स्वभाव से हल्का दिलीब देने वाला, पालु हृदय का अलन को मल २० उदा होता है। यह अनेक गुणों से युक्त विद्वान् तथा स्याधी सम्पत्ति का स्वामी होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुखी तथा अनुदाग पूर्ण होती है। यह उसके कटे अनुदाग ही चलता है। विवाहोपान्त ही इसका भाग्योदय भी होता है तथा ४५ वर्ष की आयु तक इसकी लभ्यता आकांक्षाओं की पूर्ति हो जाती है। इसके पास धन भी उच्च मात्रा में संचित हो जाता है। यह किसी उच्चपद को प्राप्त का पक्षही बनता है। यह प्रायः आप के दिन विभाव का होता है तथा बहुत कम खेलता है। पुत्र-पुत्रियों का पूर्ण सुख प्राप्त होता है। धन को खर्च करने में यह कृपण होता है, तथापि वृद्धान्ता तक इसे सर्वत्र सम्मान मिलता है। प्रणति २० से २५ वर्ष की होती है।

(१९२६)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी अंचे कद तथा दृढ़ शरीर का, लीले स्वभाव का एवं कुंभी होता है। यह अनेक प्रकार के काम करता है, पानु किसी को स्थायी रूप नहीं दे पाता। यह बड़ा इसका मजबूत २२ से २५ वर्ष की आयु में, पदोत्थ से होता है। अपनी वाणी के बल पर वह अपना धर्म प्रसिद्धि प्राप्त करता है। इसका विवाह २० वर्ष की आयु में ही होता है। इसका धर्म तथा अर्थ सम्पत्ति वाली के अधीन हो जाती है। इसे पति तथा राज्य से लाभ होता है। कुपशाता वश यह अपने अपाकुध वर्च नहीं करता। स्वभाव से हिंदी भी होता है। ५५ वर्ष की आयु तक इसकी आयु - शक्ति अत्युत्तम हो जाती है। पूणायु ७०-७५ वर्ष की होती है।

(११२७)- यह जमादु चक्र का सप्तमि सुदी स्वल्प शरीर का, सप्तम कद, कुछ लम्बा तथा पुनः
शाली व्यक्तिव वाला होता है। इसका मागोदय वाल्यावस्था ले ही होता है तथा सप्तमि मिना बली
चली जाती है। इसे पयैष्ट विजा प्राप्त होती है। बुद्धिमान भी रहता है। विवाह २२ से २५ वर्ष की
आयु में होता है। पत्नी सुकरी, सुशीला तथा अनुगामीनी मिलती है। वह कुछ समय तक रोगाकुल भी
रहती है। सन्तान की ओर से भी मन दुःखी होता है। इसे धन-धान की कंहर कमी नहीं रहती।
आमदनी के अनेक फोन रहते हैं। राजकीय-सेवा से भी इसे पदवि आर्थिक-लाभ होता है। इसका
काकी धन नष्ट भी होता है, जो पुनः काले धर्म वापिस नहीं लौटता। इसकी आयु के ३५,
४०, ४२, ४६, ५० तथा ५५ के वर्ष विशेष लाभ प्राप्त सिद्ध होते हैं। पत्नीवाही जनों से सम्मान संबंध
रहते हैं तथा शारीरिक स्वास्थ्य भी प्रायः अच्छा बना रहता है। पूर्ण २० वर्ष के लगभग होती है।

(११२८)- इस जमादु ७३ली का स्वामी सप्तम कद तथा शरीर वाला, स्वल्प। सौं वले रंग का, आक-
रक व्यक्तिव सम्यक्त तथा स्वयं को वानावाण के अनुकूल ढाल लेने वाला होता है। इसे कर्ष ही
शू-स्य बोलते, दूसरों को मुक्ति काले, आउम्हा-पुदवति तथा अपनी महता प्रतिपादन काले
में आनंद का अनुभव होता है। इसका विवाह २२ से २४ वर्ष की आयु में होता है, पत्नी पत्नी
से सौं फन नहीं होता। फिर भी जा-गृहस्थी के संचालन में कंहर/अवरोध उत्पन्न नहीं होता।
अपनी पत्नी से पूर्ण सन्तुष्ट न रहने के कारण यह अल्प विजयें से भी निर्वन्ध बनाये रहता है। इसका
मागोदय वाल्यावस्था ले ही होता है, अतः धन-धान, भूमि, भवन, वाहन आदि के सभी
सुख-साधन इसे उपलब्ध रहते हैं। यह सन्तान के लिए कष्ट उठाता है तथा अपनी कलाकारिता
से धनार्जन करता है। इसकी पूर्ण ७५ से ८० वर्ष तक होती है।

(११२८) - इस जलकुण्डली का (चामी) लुहा, बलित शरीर का छिन्नदशी, गुणवान, विद्वान तथा चतवान होता है। यह वालावाला है ही लुहा जाया जाता है। इसका विचार २५ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा स्वभाव से कृपण होती है। यह धन का संयम करती रहती है। धनी-पनी का। में जल लेने के कारण जानक की आर्थिक स्थिति आगे से ही सुदृढ़ रहती है तथा बाद में वह को भी अधिक दृढ़ होती चली जाती है। विचारपत्र पछेछ होता है। शिक्षा समाप्त करके वह राजकीय सेवा में लगाया जाता है, वहाँ इसे पदोन्नति तथा सम्मान मिलता है को चतुरासमी रखता होता है। पत्नी से किंचित मनभेद होता भी मिलता है। सन्तान के लिए भी दुःखी रहता है। माता-पिता का पूर्ण सुख जाया होता है। धार्मिक अथवा योपकारीन के कार्य में इसकी रुचि नहीं होती। कृपणता पूर्वक धन का संयम ही मूल उद्देश्य रहता है। पूर्ण आयु ८० वर्ष हो सकती है।

(११३०) - इस जलकुण्डली वाला मनुष्य लुहा, आकर्षकपवित्त वाला, अनेक गुणों से लम्पत, बुद्धिमान तथा चतवान होता है। यह अनेक गुणों के धर कोने देहु उपलब्धील भी रहता है। इसका विचार २० से २५ वर्ष की आयु में होता है तथा पत्नी सुन्दरी तथा मनोबुद्धिमान मिलती है। घर में संगठन जीवन नहीं रहती, पानु बाद में जीवन रहती है। इसकी आनदनी के शोत एक से अधिक होते हैं, अतः इसकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है। शत्रु भी इसका आदा करते हैं तथा लोक में सर्वत्र प्रशंसा तथा सम्मान की उपलब्धि होती है। पीकरीजने से लेह पूर्ण सम्बन्ध रहते हैं। कुत्रे द्वारा भी इसे सुख जाया होता है। जीवन के ३२, ४० तथा ५६ वें वर्ष महत्वपूर्ण एवं लाभप्रद सिद्ध होते हैं। तीर्थयात्रा एवं देशांतर का इसे बहुत शौक होता है। शरीर गुणः तीव्र बना रहता है। पूर्ण आयु लगभग ७५ वर्ष होती है।

(११३१)- इस कुण्डली वाला जन्म सुका चिह्न वाग्, आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न तथा अपने कुल
 व्यवसाय में व्यापारकीय स्थान को बाला होता है। यह उदात्त हृदय का, पानु अनीक-चित्त वाला
 होता है, इसी कारण यह दूसरे लोगों से भी कुछ लाभान्वित हो जाता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु
 तक सुकारी तथा विदुषी स्त्री से होता है। दीर्घायु होके के कारण यह अनेक मोक्षगोष्ठ बनाना तथा
 बिगाड़ता रहता है। २५ वर्ष की आयु में यह किसी अच्छे पद पर आसीन हो जाता है। इसकी आजीवि-
 का का मुख्य लाभ राजकीय-सेवा होती है। ४०-४५ वर्ष की आयु तक यह अत्यधिक व्यापार
 उपलब्ध कालेता है। इसके जीवन के ५०, ५२, ५६ तथा ६२ वें वर्ष विशेष महत्वपूर्ण रहते हैं। इन
 वर्षों में यह बहुत उत्तमिकाना है। वृद्धावस्था में इसे लोगरी का कहते हैं। ६६ वर्ष की आयु में
 मृत्यु-भाव में जाने-जाने बचना है तथा ७०-७२ वर्ष की पूर्वाभि उपाय काला है।

(११३२)- इस जलकुण्डली वाला मनुष्य सुका, आकर्षक, स्वस्थ, कलाओं के प्रति रुचिवाग्,
 गुणी, नगस्वी तथा सात्विक उद्यमि का होता है। इसकी आकांक्षों उच्च तथा महत्वपूर्ण होती
 हैं, उसे पूरा करने के लिए यह पीमान से उद्यम काला है तथा आंगिक सफलता भी प्राप्त कालेता
 है। इसे माना का सुख नहीं मिलना, तथा कि बड़े भारी का सुख प्राप्त होता है। यह स्वयं भी समझ-समझ
 पर रोग-ग्रस्त होकर दीर्घकालीन दुःख भोगता है। इसे पानी से भय रहता है। इसका विवाह २०,
 २२ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुकारी तथा गुणवती होती है। उसे अभाग भी बहुत होता
 है। इसे पिता से मिले मिलता है तथा पैतृक-व्ययसय से लाभ प्राप्त होता है। इसका मरण ४०, ४५
 वर्ष की आयु में चापलकषी वा रहता है। यह पीकरी तथा पाकुमी होने के कारण विपुल धन अधिनि
 काला है तथा पुत्र-पौत्रों हेतु का होकर लगभग २० वर्ष की पूर्वाभि उपाय काला है।

(११३३)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी शरीर है स्वप्न, सुखा, पुण्यशाली, मन्त्रमन्त्र का, गुणवान्, अनेक कामों का स्वामी, लोभ के सम्मानित, सुखी तथा वात्सल्यवान् है ही को मन्त्रशाली होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक होता है। पत्नी सुन्दरी, जति तथा वीणा का गला-चाहेनेवाली तथा गृह-कार्य कुशल मिलनी है। यह श्रेष्ठ दाम्पत्य तथा सन्तान-सुख प्राप्त करता है। यह धर्मार्थ एवं ईश्वरभक्त होने के साथ ही जलवादी होता है तथा किसी भी वीर्यशक्ति के ईश्वरदात्री को नहीं छोड़ता। इसका उत्कर्ष विवाहोत्सव ही आरंभ होता है तथा ४५ वर्ष की आयु तक चमक चिग्ला जा पहुँचना है। इसे अनेक प्रकारों से धन का लाभ होता है। आनः आर्थिक-विकास सुदृढ़ बनती रहती है। माना-दिना का पूर्ण सुख मिलना है। जीवन के ३०, ३३, ३५, ३८, ४२ तथा ५२ के वर्ष विशेष उन्नति प्राप्त रहेंगे। ५६ के वर्ष में भी बहुत लाभ होता है। पूर्णपु-८० वर्ष की होती है।

(११३४)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुखा, स्वप्न, राजमन्त्र तथा लव उका है सुखी, धनी, गुणी एवं विद्वान् होता है। विष्णु-लोक श्रेष्ठ होता है। राजकीय-सेवा में उच्च पद प्राप्त करता है। अपवाद किसी बड़े परिष्कार में अधिकारी के पद पर आसीन होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, मनोबुद्धिवाला तथा मन्त्रशालिनी होती है। पुत्र भी बड़े मन्त्रशाली होते हैं। इसे जमीन-जपदाद के व्यवसाय से भी धनार्जन लाभ होता है। जमीन में गढ़े हुए धन की उन्नति-वृद्धि भी हो सकती है। यह निराला भोजे बढ़ता चला जाता है। वीर्य पुत्र का नहीं देना। इसके उत्कर्ष को देवका कुटुम्बी जन हर्षित भी कह सकते हैं। ५० वर्ष की आयु तक यह सफलता के सर्वोच्च बिम्ब जा पहुँचता है, ननुपाना यह आत्मकेन्द्रित होकर अनुदात्त बन जाता है। उस समय इसकी लोक प्रियता में भी कमी आ जाती है। तथापि सफलता के पल्लवावली ७५ वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(११३५) - इस जन्म कुण्डली का लाला जन्मक जौवरण, स्थूल वादीर का, मध्यम कद वाला, सुलभ प्रकृति युवावान्, स्वामी, विद्वान् तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। यह अपने कुलधर्म के बल पर आगे बढ़ता तथा शत्रुओं को नीचा दिखाना है। इसके प्रतिद्वन्द्वी सामने ठहर नहीं पाते। यह अपनी प्रियकाशी द्वारा सख का प्य वना रहता है। अहंकार इसके नितिक भी नहीं पाया जाता। इसका विवाह २२, २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी होने के साथ ही जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में इसका सहयोग करने वाली भी होती है। सन्तान-सुखभी उत्पन्न होता है। लगभग २५ वर्ष की आयु में अन्तिम होता है तथा ३५ वर्ष की आयु तक यह सन्तान-सुख प्राप्त करता पाया जाता है, सुखान्त भी मिलता युगलिकान्त-यत्ना जाता है। इसके पास धन की कमी कमी नहीं रहती। मान उन्निष्ठाकारी व्यक्ति लाभ होता है। पूर्णाष्ट ८० वर्ष की होती है।

(११३६) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुधा, स्वप्न, प्रभावशाली, अपने वीर्य एवं शुभ गुणों द्वारा प्रबल स्वभाव होने वाला, प्रभावी, सुख तथा देवताओं का पूजक, धनी, पुत्रकाट तथा अनेक मित्रों वाला होता है। इसका विवाह १०-२० वर्ष अथवा २० वर्ष की आयु में होता है। इसकी पत्नी प्रायः सुखी रहती है, जिसके कारण यह दुःखी बना रहता है। माता, पिता तथा भाई-बहनों का सुख तथा उस वर्ण का मिलना है। सन्तान-सुख भी उत्पन्न रहता है। स्वस्थ हो जाने पर पत्नी भी प्रत्येक क्षेत्र में सहयोगिनी सिद्ध होती है। इसके जीवन के ३६, ३८, ४३, ५२ तथा ५६ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनमें विशेष लाभ होता है। ४० तथा ४२ वर्ष की आयु में आर्थिक-कष्ट होता है। यह विदेश में ही प्रवा-सकाम तथा धन का लाभ करता है। यह अनेक उच्चपदों पर रहकर सुख तथा कीर्ति अर्जित करता है। यह लगभग ७० वर्ष की पूर्णाष्ट प्राप्त करता है।

(११३७) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी दुर्ग शरीर, उन्नत कंद, कोमल स्वभाव, उदा विचारों का तथा पुष्पावली व्यक्तित्व का धारी होता है यह धर्मशाली, गंभीर तथा अपने शत्रुओं को भी क्षमा की दृष्टि से देखने वाला होता है। इसकी आयु के अनेक प्रेत होते हैं, अतः आर्थिक-स्थिति सर्वत्र सुदृढ़ बनी रहती है यह अत्यंत प्रशस्ती होता है तथा सर्वत्र सम्मान प्राप्त करता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है पत्नी सुदृढ़ तथा सुख देने वाली मिलती है। वह धर्मशाली, कला-ओं की जानकार तथा उच्च विचारों की होती है। आयु की मांगेकति चारों में होती है। ४२ वर्ष की आयु में इसे बीमारी का सामना करना पड़ता है। पुत्र के कारण भी यह दुःखी रहता है जीवन के २६, २८, ३१, ३५, ३८, ४५, ४७, ५२ तथा ५८ में वर्ष विशेष लाभ प्रद सिद्ध होते हैं। लगभग ७० वर्ष की आयु तक यह जीवित रहता है तथा अपने पीछे विपुल सम्पत्ति छोड़ जाता है।

(११३८) - इस जन्म कुण्डली वाला आयुक्त सुता, सुधी, विद्वान्, मधुर भाषी तथा कलाकार होता है यह धर्मशाली तथा संसर्ग के कारण नास्तिक विचारधारा का बन्ध होता है इसका विवाह २२ से २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुदृढ़, सुख देने वाली तथा प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग करने वाली मिलती है। इसे अच्छे तथा आसानी से दुःखों का सामना होता है अतः इसके कारण इसकी सम्मान-वृद्धि भी होती है, जबकि अपने धर्म के कारण इसे किंचित अप्रसन्नता का पात्र बनना पड़ता है। इसका मांगेकति ३० वर्ष की आयु में किसी स्त्री की सहायता से होता है। इसे राजकीय-सेवा में रहने का अवसर भी मिलता है अतः इसके कारण यह विशेष प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। ५० तथा ५५ वर्ष की आयु में इसे विशेष सम्पत्ति मिलती है। पत्नी का भी उसे इसके संबंध में अच्छे होते हैं। आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ रहती है। प्रकृति ७० वर्ष के लगभग होती है।

(११३६)- इस जन्म कुण्डली वाला सुगुण अत्यन्त सुखा, सुशील, शिष्टवादी, आकर्षक व्यक्ति-
त्व वाला, धीरे-धीरे तथा अपने पुत्रवर्ष के बाल्य सम्पत्ति तथा घर अर्जित करने वाला
होता है। इसे धर्मिण-इक की उपलब्धि भी हो सकती है। यह माँ के सुख के रहित तथा स्त्री
की ओर से अल्प सुखी होता है। इसका विवाह २४-२२ वर्ष की आयु में हो जाता है, पालु स्त्री हण्डा
मिलती है। इसका माग्योदध भी २५ वर्ष की आयु में ही होता है। यह देश-विदेश की जागों
काता है तथा पुत्र धन तथा घर कमाता है। इसके पुत्र भी बड़े होकर धनी तथा प्रभावी
बनते हैं। पुत्रों का। इसे सुख भी प्राप्त होता है। ३६ वर्ष की आयु में इसे किसी विपत्ति
में पड़ना होता है, पालु अपने सुख भी मिल जाती है। जीवन के २२, ३१, २५, ३८, ४२, ४५
तथा ५६ वर्ष विशेष लाभदायक रहते हैं। इसकी आयु ६८ से ७० वर्ष के मध्य होती है।

(११४०)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी लम्बे कदका, सुखा, उमा व भागी व्यक्ति का धनी,
सुख तथा धन-सम्पत्ति होता है। यह वाल्मीकि से ही सुखी रहता है। इसे उच्च शिक्षा प्राप्त
होती है और यह अपनी विद्या के बाल्य का-कार। सर्वोत्तम प्राप्त करता है। इसका विवाह
२४ वर्ष की आयु में होता है तथा इसी अवधि में इसका माग्योदध भी आरंभ हो जाता है। यह
आकर्षक, धन-लाभ के अनेक अवसर प्राप्त करता है। काव्य, कला तथा योगीश के अति-
मिका चिकित्सा शास्त्र का भी इसे ज्ञान होता है। यह देश-विदेश की जागों काता करे
अनेक पराधि धन कमाता है। इसका पूर्ण माग्योदध लगभग ५५ वर्ष की आयु में होता है,
इसके पुत्र भी सुखा, प्रभावी तथा धनी होते हैं। अनेक इसे सुख प्राप्त होता है। राजा का।
सम्पत्ति तथा लोक का। सुशील यह व्यक्ति ७४ से ८० वर्ष तक भी आयु प्राप्त करता है।

(१९४१)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी मध्यम कद का, पतले शरीर का, गोल चेहरा, आंखों के लक्षणों का, मधुर आवाज, उदात्त चित्त, हँसमुख स्वभाव का, सदैव उत्तम रहने वाला तथा हार्दिक, हंसमुख आदि लक्षणों का भोग करता होगा। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में होगा। पत्नी सुन्दरी तथा हृदयवर्ती होगी। यह पति को सुख देती होगी, उसके कार्य में सहयोग करेगी। इसका सम्बन्ध २४ वर्ष की आयु में होगा। पत्नी हंसमुख रहने वाली इसके ऊपर अपना निजन्ता राखेगी। धन-सम्पत्ति सब उसी के अधिकार में रहने दें। इसे पुत्रों से भी पर्याप्त सुख मिलेगा। यह जीवनमा उत्तम दायित्व पूर्ण पदों का निर्वहण करेगा तथा उसके कार्य में सफलता प्राप्त हुआ अनेक प्रकार के सुख प्राप्त करेगा। अधिक शिक्षा उत्तम करी रहेगी तथा जीवन में निरन्तर प्रगति करी रहेगी। पूजादि लगभग ६२ वर्ष की होगी।

(१९४२)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुका, स्वल्प, समोदक लक्षणों का तथा विभिन्न कलाओं का भोग करता होगा। यह अनेक विषयों की ओर आकर्षित होगा तथा उसी के सहयोग से अपने भाग्य की अभिवृद्धि करेगा। इसका विवाह २०-२२ वर्ष की आयु में होगा, यद्यपि अपनी पत्नी की ओर से उसे अल्प-सुख ही मिलेगा। पत्नी की ओर से असन्तुष्ट रहना होगा पर अल्प विषयों के द्वारा सुख प्राप्त करेगा। इसे लघु, लटरी लकी के द्वारा आकर्षित हृदय से धन प्राप्त होगा। इसे सुख, धन-सम्पत्ति तथा वैभव की निरन्तर उपलब्धि होती रहेगी। लगभग ४५ वर्ष की आयु में यह विशेष रुका होगा। किन्तु स्वल्प होकर अपने कार्य को पर्याप्त करते लगता है। जीवन के २६, २८, ३१, ३५, ३८, ४२, ४८ तथा ५२ वें वर्ष विशेष सम्पन्न रहते हैं। यह ७० से ७२ वर्ष तक की आयु प्राप्त करेगा।

(११४३)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुका, दुष्ट शरीर वाला, नष्ट नष्ट लक्षणों का, गौरवर्ण तथा उदा-बुद्धि का होता है। वह अपनी हाथ उठाकर भी दूसरों का भला करता है। इसे यदि बिना धन का लाभ होता है तो वह दुष्ट धन को धन की संभावना भी रहती है। यदि अथवा स्थिति वस्तुओं के व्यवसाय से भी, इसे विशेष लाभ होता है। पर १६-२० वर्ष की आयु से ही धन कमाने लगता है। अल्पधिक लाभ तथा निर्धनता से सम्पन्न यह जानकर पराधीनता में रहकर भी धन कमाने लगा तथा धन कमाना है। धन को संचित करने में भी यह बहुत कुशल होता है। पर राज्याध्यक्ष अथवा राजकीय-सेवा से भी लाभ उठा सकता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, गुणवती तथा बुद्धिमती होती है। पुत्रों में भी धनदायक सुख मिलता है। मांगेदम ३४ वर्ष की आयु में होता है। योदेस में एक धन तथा धन की धनदायक व्यवस्था होती है। पुत्रादि ६२ वर्ष होती है।

(११४४)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी शुक, धीर, कीर्ति, शरीर, सुका, चलने शरीर काला, आकर्षक व्यवहार सम्पन्न तथा धन का धन होता है। इसकी बोन बड़ी मधुर तथा मोहक होती है, यह अनेक उपाय से धन का संचय करता है। इसकी आय के स्रोत भी अनेक रहते हैं। इसका विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा इसके अपा निष्कलण कर्म वासी मिलती। उत्तम कार्य क्षेत्र धन से मिलता होता है। वह सन्तान के लिए दुःखी भी रहती है, क्योंकि अनेक का स्वतन्त्र-धन की धनदायक करती है। बड़ी कठिनाई से केवल एक कन्या ही जीवित रह पाती है। इस जानक का मांगेदम राज्याध्यक्ष से होता है अर्थात् यह राजकीय-सेवा कार्य करता है। यह धन-पुण्य का विचार किसे बिना प्रकट सम्पत्ति अधिष्ठित करता है। परन्तु में माहका होकर उसे भी जीवनम् अपने लाभ होता है। इसका मांगेदम सदैव होता रहता है। पुत्रादि २० वर्ष की होती है।

पृ०
सं०
२००८

कु०
२०

(११४५) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी हरे शरीर का, सुधा, आकर्षक तथा इनमें के पुनर्विन्त होने के विशेष रूप से सहज होता है। पालु पर अपने लक्षण के अनुसार जाना जाता है। इसके कारण इसे स्वयं ही हाथ उठारी पड़ी है। यह श्रेष्ठ विद्या का लाभ करता है तथा २३-२४ वर्ष की आयु में ही राजकीय सेवा में पहुँचकर आर्थिक-लाभ पाने लगता है। इसका आशेदक्षी इसी समय में होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु तक होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुभावली होती है, किन्तु यह अनेक जलियाँ में के साथ लक्षण बनाते रावता है। ३२, ३३, ४४ तथा ४६ के वर्ष में इसे बहुत कष्ट होता है। ५० वर्ष की आयु में इसे धन का बहुत लाभ होता है। पत्नी नागिनी तथा दुःखी (हने वाली) होती है। सन्तान-प्राप्त होना है। इसका आशेदक्ष पादस में होता है तथा यह अनेक पात्रों भी करता है। इसे सर्वत्र प्रशंसा तथा सम्मान की उपलब्धि होती है। पूर्णायु ६० वर्ष के लगभग होती है।

(११४६) - इस जन्म कुण्डली वाला जन्म सुधा तथा दुष्ट शरीर का, उत्तम आर्थिक विचारों का, धर्म-धर्म से अपना राबते वाला, सुखी तथा धनी एवं लक्ष्मणमयी होता है। इसे आकर्षक रूप से धन का लाभ होता रहता है तथा इन्दा को ही धन इसके पास आ जाता है। इसका विवाह २९ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा आर्थिक विचारों की होती है। इसका आशेदक्ष २३-२४ वर्ष की आयु में होता है। यह समय के अनुकूल चलता तथा लाभ उठाता है। परदेस में रहकर यह धन धन करता है। सामान्यतः यह या दोस्त का कही जाना नहीं चाहता, पालु पत्नी के आग्रह पर यह उसे साथ लेकर परदेस में रह लेता है। सन्तानों के उत्तम सुख मिलता है। जीवन के २५, २८, ३२, ३८, ४९, ४६ तथा ५० के वर्ष विशेष कष्टग्रस्त गिने होते हैं। यह स्वयं तथा सुखी जीवन बिताता हुआ लगभग २५ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(११४७) - इस जन्म कुण्डली में उत्तम मृगश्रवण चतुर्थे शरीर का, मधुपद कंद वाला, सुन्दर, लीबुद्धि, उदात्त स्वभाव का तथा भाग्यशाली होता है। इसे माना की ओर से दुःख प्राप्त होता है। जो कि वह योगगुणा रहती है। विष्णु नाम का सौष्ठव योग बनता है। पानु विष्णुधन्य में बांधाये भी आती है। कुछ समय के लिए अधन्य हकती जाना है। इसका विवाह २२-२३ वर्ष की आयु में होता है, पत्नी सुन्दरी तथा सुलक्षणा मिलती है, तथा यह अनेक विजयों की ओर भी आकर्षित बना रहता है। २५ वर्ष की आयु में इसका भाग्यदण होता है। उस समय यह समस्त विष्णु-बांधाओं को का का ना हुआ मिलता। उगारि का ना चलाना है। ४० वर्ष की आयु में यह दाफनी होता है तथा सुख के सभी साधनों को प्राप्त कालेता है। ४२, ४४ तथा ४८ वं वर्ष में इसे बीमारी के कारण कारण भोगना पड़ता है। पुत्रों का धन नष्ट किया जाता है। पूर्णपु ७० वर्ष से अधिक की होती है।

(११४८) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी शरीर से उत्तम, सुन्दर, उदात्त बुद्धिवाला तथा अनेक उच्छासि-त्वां जो वरुन कोरे की क्षमता रखने वाला होता है। शिक्षा - वीर्य शक्ति होती है, पानु अधन्य काल में बांधाये भी आती है। इसका विवाह २२-२३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, वाचाल, बुद्धिमान तथा आपदा आकर्षक व्यक्तित्व वाली होती है। यह उसके इतना आसक्त होता है कि उसके सहयोग बिना कुछ काही नहीं पाता। पत्नी इसे अनेक क्षेप में समुचित मार्ग-दर्शक तथा सहयोग भी देती है। सन्तान का सुख भी उत्पन्न रहता है। भाग्यदण विवाहोपान्त ही होता है धन का लाभ मिलता होता है। (हता है) वादेह की भावाये भी काला है तथा निराला के लोगों के समर्थ से भी लाभान्वित होता है। इसे शत्रुओं से भी धन का लाभ होता है तथा शत्रु-पक्ष की किसी स्त्री के साथ भुक्त भी होता है। इसका जीवन वैभव विलास पूर्ण होता है। ६२ वर्ष की पूर्णपु।

(१२४८) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी चरित्र-गुण उच्चरिक्ता, सुका, स्वाध्याय, अपनी सुख-दुःख से सबको चलाकर काहेने वाला, चरित्र-गुण, पुनः का पक्का, अन्धकार को हटाने वाला, भाग्यशाली तथा सुखी-जीवन बिताने वाला होता है। इसे माना गया बड़े भाई का सुख खाया नहीं होता। लगभग २० वर्ष की आयु में ही इसका विवाह हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा गुणवती होती है, वह उसे पक्का सुख का अनुभव कराती है। इसका भाग्योदय प्रायः ही हो जाता है। वह अपने पैतृक-व्यवसाय का पक्षपात करने वाला होता है तथा ४५ वर्ष की आयु तक सुख के सभी लाभ उठाकर काहेता है। सामाजिक मान-प्रतिष्ठा भी पक्षपात मिलती है। वह अपने कुल का नाम ऊँचा करता है। इसे धनका नाम एक से अधिक का जो होता है। अपनी पत्नी के अनिष्टों पर अत्यन्त क्रोध से भी संयत रहता है तथा उन बिंबों को निगलता भी है। पुत्र से काट मिलता है। कुलपुत्र ७० वर्ष के लगभग होती है।

(१२४९) - यह जन्म सुका तथा चरित्र होने के साथ ही चरित्रवान भी होता है। नकारा इसे वाला नहीं होता। बड़ा होता है वह अपने चरित्र, सुख-दुःख, गरीबी तथा परीक्षा से सभी संकटों का विजय पा लेता है तथा एक महान् व्यक्ति के रूप में उभरता है। वह धर्म, भक्ति, पत्नी सुन्दरी, आकर्षक, कुछ कुल की तथा मनुष्यमित्र होती है। वह अपने मनुष्य व्यवहारों से प्रसन्न होती है, नकारा इसका आकर्षण आसक्ति में भी होता है। वह पुत्र विप्लव का शिकार भी होता है तथा उसे लाभ उठाता है। इसके जीवन के २८, ३५, ३७, ३८, ४४ तथा ६०, ६३ एवं ६८वें वर्ष बड़े उल्लास-धन के होते हैं। कुलपुत्र लगभग २० वर्ष की होती है।

(११५१) - इस जलकुण्डली का स्त्री लम्बे पतले शरीर का, सुदा, स्वस्थ, आकर्षक, चंचुल तथा व्यवहार-कुशल होता है। वह अपने गुणों तथा योग्यता से सब लोगों को आकर्षित करती तथा प्रशंसा का पात्र बनती है। इसे वाल्मीकि-संस्कारों से गुणवान् बनाया है। विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुदृढ़ तथा मनुष्यद्वेषी मिलती है, पालु कार्मिक-संगी बनती है। स्वयं विपन्न होते हुए भी वह दूसरों की प्रशंसा स्थापना करने में नहीं थकता। इसकी पुत्रसंतान प्रचल करने वाली जीवन रहती है। २४-२६ वर्ष की आयु में इसे (1) लक्ष्मी-देवता का कथ मिलता है। उसे इसकी आजीवनिका चल उठती है। इसके जीवन में अनेक उन्नत-पराव आते हैं तथा वह दृष्टिमान की सीमा तक सिद्धि होता है, उससमय गीतों की स्थापना है जीवन चलता है। इसीसे वह शत्रु भी प्रेशान करते हैं। पुत्र-सुखी नहीं मिलता। मृत्यु ६-२-६ ई. वर्ष की आयु में आकर्षक रूप में होती है।

(११५२) - इस जलकुण्डली में (1) प्रचल मनुष्य सुदा, स्वस्थ, आकर्षक, गुणवान् तथा उदात्त का होता है, पालु इसके पास धन की कमी नहीं रहती है। फिर भी इसके सभी कार्य सफल प्रचल होते रहते हैं। वह अपनी विद्या-बुद्धि से कठिनाइयों का विजय पाता है, तथापि कुछ लोग इसे अकम्प्य ही शत्रुता मानते लगते हैं। इसका विवाह २० से २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुदृढ़ तथा सुशीला होती है। विवाहोपान्त इसका मजबूत होता है। इसे धर्म, अर्थ तथा लौह पदार्थों में प्रशंसकों से संबंधित व्यवसाय का प्रचल होता है। पुत्र का जन्म होने के बाद इसका मागने की के लक्षण प्रचल होने लगता है। ४०-४२ वर्ष की आयु में इसे प्रचल प्रचल होता है, पालु बाद में नहीं रहती होता है। इसके जीवन में विविध प्रकार के उन्नत-पराव मिलने के रहते हैं। इसे प्रणति ६२ से ७५ वर्ष की उम्र होती है।

(११४३)- इस जलकुण्डली का स्वामी सुदा, रूपवान, धैर्यवान, अत्यन्त उच्चरी, उत्साही तथा अपने पुरुषार्थ द्वारा पुत्र-पुत्र करने वाला होता है। इसका विवाह २०-२२ वर्ष की आयु में सुदरी तथा सुलक्षणा स्त्री के साथ होता है। पान्ति वह अधिक समय तक जीवित नहीं रहती, और उसके निधन-पान्ति दूसरा विवाह करती है। कल्याणसा में यह रोगी रहता है, पान्ति युवावस्था में स्वस्थ बना रहता है। ३० वर्ष की आयु में इसके पास बहुत धन होता है। इसके वायु अक्षाण ही उत्पन्न होते हैं और वे इसे पीड़ा भी पहुँचाते हैं। जन्म परीक्षितियों में इसकी पत्नी ही इसके लिए कारण स्वप्न सिद्ध होती है। वह इसे पैरों से बचानी तथा आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। इसे यदि पशु तथा रत्न-मणि आदि के व्यवसाय से लाभ होता है। जहाँ वायु के बाद इसे कफ संवर्धित होता है। यह पत्नी तथा परोपकारी भी होता है। इसकी पूर्णायु ७२ से ८० वर्ष की होती है।

(११४४)- इस जलकुण्डली वाला पान्ति सुदा, गुणवान, लोक प्रिय तथा शत्रुओं का दमन करने वाला होता है। यह शत्रुओं से लाभ भी उठाता है तथा धन प्राप्त करता है। यह स्त्री विवाहों में विफल पाने वाला, पान्ति-पित्त के द्वारा से सुखी, अनेक गर्भ-बहनें वाला तथा पौष्टिक स्त्री का प्रिय होता है। यह पुत्र, देवता तथा अतिथियों का सेवक तथा धनी होता है। इसका विवाह लगभग २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुदरी तथा मनेनुक्षणा मिलती है। पान्ति पुत्रों की ओर से दुःखी रहता है, क्योंकि उससे मन नहीं मिलता। वे इसके साथ दुर्लभ विवाह भी करते हैं। पुत्री से सुख मिलता है। जीवन के २५, २८, ३१, ३६, ३८, ४२, ४५, ४८, ५०, ५४ तथा ५८ वें वर्ष विशेष लाभ प्राप्त सिद्ध होते हैं। शारीरिक स्वास्थ्य प्रायः ठीक बना रहता है। मान-प्रतिष्ठा भी प्राप्त होती है। पूर्णायु लगभग ६५ वर्ष की होती है।

(११५५)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य ऊँचे फरका, सुदृढ़, त्वाष्ठी, चर्मा-केशी, पतले बगरी बाला तथा कठिन-पे-कठिन परीश्रमियों का हँसने हुए सामना करने वाला होता है। यह किसी उच्चराजकीय-वर्ग के उपाकात्ता तथा पुत्र-पुत्र, पशु तथा लोकप्रियता उपाधि का होता है। इसे माना-मिला तथा गार्ह-स्थितों का दूरा सुख मिलता है। इसका विवाह २०-२२ वर्ष तक की आयु में होता है। पत्नी सुदृढ़ तथा सुवदायक मिलती है। माग्नेदध २५ वर्ष की आयु में होता है। यह साक्षात् नीकी अथवा किसी उच्च प्रतिष्ठान में कार्यरत होता है। इसके विवाह तथा शत्रुओं द्वारा भी धन का लाभ होता है, पालु पुत्र धन की हानि का होता है। पुत्र पुत्र सभी कठिनाई में होता है तथा हानि पहुँचाना रहता है। पत्नी ५५ वर्ष की आयु में साक छोड़ जाती है। वृद्धावस्था में लाभ का पुष्पाव वर्णन की ओर होता है। यह निरक्षर भी होता है। दूरस्थ २० वर्ष होती है।

(११५६)- इस जन्म कुण्डली का त्वाष्ठी सुदृढ़, स्वरूपवान्, ऊँचे फरका, ऊँचे वर्ण तथा सुदृढ़ अंकीय प्रकृति का होता है। विवाहपक्ष के उपात्ता यह कठिन परीश्रम का होता है तथा राजकीय-सिवा में रहने हुए जीवन को चर्चन का होता है। माग्नेदध के लिए इसे बड़ा संचयन का पड़ता है। २६ वर्ष की आयु के बाद आर्थिक-स्थिति में सुखा आता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुदृढ़, आप्तमयी तथा उत्प्रेक क्षेत्र में इसकी सहयोगिनी होती है। २५ वर्ष के बाद माग्नेदध शुरू होता है। बीस वर्षों तक धन का आगमन निरन्तर बना रहता है। यह शत्रुओं से भी आर्थिक-लाभ प्राप्त करता है। उन्हीं पारिजित का होता है। सन्तान-पक्ष की ओर से इसे कष्ट होता है। यह पेशवर्ग की आकांक्षा में लक्ष्य अपने उपलों के असफल होने पर दावता है तो बहुत दुःखी होता है, तथापि पुत्र-पुत्रियों के सुखा लाभमय सुखी जीवन बिताते हुए ६० वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(११५०) - इस जन्माङ्क चक्र में (इसका मुख्य लक्ष्य कद तथा हृष्ट-दुष्ट शरीर का, श्यामवर्ण, गोल-चेहरा, मोमोहक व्यक्तित्व, शिष्टिर्त, सम्प, शान्ता, सुशील तथा विचारों का धनी होता है) इसकी स्मृण तथा रहने वाला होता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु तक हो जाना ही पत्नी सुखी, प्रभावशाली तथा पति को आर्थिक समर्थ देने वाली होती है। इसे राजकीय सेवा में बहुत काम्यवती होती है। यह निम्न उच्चपदों पर उन्नित होना चला जाता है। भाग्येन विवाह के बाद ही आर्थिक सम्पत्ति, धन, पत्नी तथा धन के सभी वस्तुओं के व्यवसाय में भी इसे बहुत लाभ होता है। सन्तानें सुख तथा सुख देने वाली होती है। यह २० वर्ष की पूर्ण आयु का काल है।

(११५२) - इस जन्म कुण्डली वाला मुख्य सव्यमक, ऊँची नाक, सुन्दर तथा सुवर्ण, पुँछाले केशों वाला, शिवा विवाही, धर्म में मग्न रहने वाला, अतिशय-सत्कार-विज, सामाजिक हितों का कलन करने वाला तथा बाल्य में कुशल होता है। इसका विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुखी, उच्च दायित्वों का निर्वहण करने वाली, निराला तथा उद्यमशील होती है। आलस्य की भावना अधिक होने वाली वह गृहस्थी का कुशल तथा पूर्व में जो काम करती है। इस जन्म की आयु की विद्वत्ता पूर्ण कार्य - लेखन, अध्यापन एवं व्यवसायिक सम्पत्ति कार्य से होती है। यह किसी महार सेवा कार्य में संलग्न होकर भी आजीविकोपार्जन करता है। इसके जीवन के २२, ३२, ३६, ४३, ४६, ४८ तथा ५२ के वर्ष धन-सम्पत्ति तथा विशेष महत्त्व के होते हैं। यह महत्त्वपूर्ण पदों पर उन्नित होने वाली संतान के लिए तैयार रहता है। पूर्ण आयु २४ वर्ष हो सकती है।

सं०
सं०
२३०८

(११५६) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुका बुद्धिमान के सा, उन्नत ललाट, सुका नासिका, गहरी आँखों वाला, मध्यम कदका एवं अपना आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। यह सामाजिक हरिणों तथा प्रचीन पाषाणों से प्रेम करने वाला, आठके दिन लगान का तथा अपने सिद्धान्तों पर अटल बना रहने वाला होता है। इसकी उमराना पुत्रांशमीप होती है, उसी के कारण यह लोक तथा समाज में सर्वत्र सम्मान पाता है। इसका विवाह २१-२२ वर्ष की आयु में होता है। धनी सुदृढ़, कलाओं में दक्ष, महत्वाकांक्षी तथा धर्म के अथवा पुण्य के रखने वाली होती है। धनक का धन उसी के लक्षण में रहता है। यह स्वयं ही माधवशास्त्रिणी तथा चर्ची कीर्त्या की होती है। यह धनक किसी लुकाई विमल अथवा बड़े इतिहास के लेका-कार्य करता है। इसकी आसानी के मार्ग अनेक होते हैं, अतः आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ होती है। सन्तान से पुत्रमिलना है। दूरगति २० वर्ष की होती है।

(११६०) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य सुका, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, धर्म-शक्ति, उदात्त प्रकृति का तथा अपने-प्राप्तों ओर के बालावृत्त को पुनर्वित्त करने वाला होता है। यह लौकिक धन, सुखादुःखों तथा ऐश्वर्यपूर्ण रहन-सहन का अविनाशी तथा उच्च स्थिति के लोगों के उठने-बैठने वाला होता है। यह शिष्टों को अपना प्रिय तथा स्वयं ही उनका आकांक्षी होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। धनी सुदृढ़ मिलती है, तथापि यह धर्मियों से संपर्क नहीं होता। सन्तान-सुखभी उत्पन्न होता है तथा पुत्रों का धन-लाभ भी होता है। इसका माण्डव्य विवाहोपासना होता है। इसे राजकीय सेवा, धर्म, गवर्न तथा धारु सम्बन्धी कार्यों अथवा व्यवसाय से लाभ होता है। धनका आगमन मिना होता है। ५६ वर्ष की आयु तक धर्मिता आर्थिक-सम्पत्ति तथा सम्मान प्राप्त करता है। ७२ से ८२ वर्ष की दूरगति प्राप्त करता है।

कु०
२०

(११६१)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न जातक स्वामी शरीर, लम्बे कद का, श्याम वर्ण, गुरु उमरी वाली बोलने वाला, धैर्यवान्, नीरस, मजबूत लिंगा उदात्तरीय काँची दाढ़ धन तथा सम्मान पावे वाला होता है। इसे राज्य में सम्मान प्राप्त होता है। राज्यकीय-सेवा द्वारा इसे आजीविका प्राप्त होती है तथा यह उत्पादित पूर्ण पदों का कुशलता पूर्वक निर्वहन करता है। यह अपने ही उद्योग से धर्म, भवन, वाहन तथा सेवाओं का सुचारु चाल करता है। इसका विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुदृढ़, बुद्धिमान तथा गुरुवरी मिलती है। पुत्री सुका, विद्वान् तथा सुपे-ज्ज निकलने हैं। इसका मरणोदय ३५ वर्ष की आयु में होता है। यह अनेक स्त्रियों से पान करता है तथा शत्रुओं से भी लाभ उठाता है। यह अत्यन्त लेखनी तथा वाक्प्री होता है, कारण इसके लिये विरोधी जन ठहरी नहीं पाते। ४२ वर्ष की आयु में शारीरिक कष्ट पाना है। पूरुष ७५ वर्ष होता है।

(११६२)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुका, लम्बा, बुद्धिमान, उदार तथा दूरियों की सहायता करने में सुख का अनुभव करने वाला होता है। कभी-कभी यह धन की कमी के कारण बहुत दुःखी भी हो जाता है। क्योंकि उस स्थिति में इसे बोधका के कार्य-व्यय का देने पड़ते हैं। यह किसी का कष्ट दूर करने के हेतु स्वयं झूठा लेने से भी नहीं चूकता। यह अत्यन्त लाल उच्छ्रित का उदात्त तथा धार्मिक वृत्ति का लोभपूर्ण भी पुण्य का शौकीन होता है तथा अपने अपने धर्म की बहुत हानि करता है। इसका मरणोदय २७-२८ वर्ष की आयु में होता है। वह समय यह किसी राज्यकीय-सेवा में संलग्न हो जाता है। इसके भर्तृ शत्रु भव पावे हैं, पानु माया के इसके स्नेह सम्बन्ध बने होते हैं। इसको शत्रुओं से भी लाभ होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी गुरुवरी मिलती है। सन्तान-सुख भी उत्पन्न होता है। इसकी पूरुष ७२ वर्ष होता है।

(११६३) - इस जन्म कुण्डली वाला जन्म सुन्दर तथा आकर्षक व्यक्तित्व का, दृढ़ शरीर का, कठोर वाणी बोले वाला, पालु स्वभाव का उदा होता है। यह अपना कुटुम्ब, उच्च शिक्षा प्राप्त तथा अपनी विद्वत्ता से सब लोगों को प्रभावित करने वाला होता है। इसे राज्य से सम्मान तथा उच्च पद प्राप्त होता है। इसे माना जाता है, बड़े भाई तथा बहिन का सुख प्राप्त होता है। छोटे भाई तथा बहिन बाल्य में ही सेंट्रल स्कूल में पढ़ाते हैं। इसका विवाह २१-२२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सुलचित्र, स्नेहशील होती है, पालु वह काफी समय तक रोगिणी रहती है। सन्तान-सुख भी कठिनाई से ही मिल पाता है। अपने जीवन के ३२ वें वर्ष से यह विशेष उत्कृष्टता का है। ४५ वें वर्ष में इसे विशेष आदर-सम्मान प्राप्त होता है तथा धन का उपाधि भी खूब होता है। हाथ का रेखाती तथा लम्बा जीवन बिताता हुआ यह ६२ वर्ष की आयु में स्वर्ग ही पालोक गमकता है।

(११६४) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुन्दर, स्वभाव, अत्यन्त उदात्त चित्त का तथा योग्यकारी होता है। यह अपने साहस तथा अथवा लक्षण का वृद्ध धन कमाना तथा समाज में मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। यह अपने से अत्यन्त लज्जित और लाल दिव्या देता है, पालु पश्चात् में वैसा नहीं होता। यह लौकिक-जन्म तथा कुटुम्बिकों के धर्म के सिद्ध करने वाला तथा समाज एवं नीतिनिरा के अनुकूल कार्य करने वाला होता है। इसका विवाह १२-१६ आयु की २६-२७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा भाग्यवान् मिलती है। सन्तान-सुख भी सेंट्रल वक्त रहता है। इसका सम्मान २५ वर्ष की आयु में होता है। इसकी आधारी अनेक स्रोतों से होती है तथा शत्रुओं से भी धन का लाभ होता है। पुत्री धन की अति वृद्धि करेगी। समाज में सम्मानित, सुखी तथा अर्थिक दृष्टि से लम्बा महान्तक ७५ वर्ष की उम्र में मरेगा।

(११६५) - इस जलकुण्डली का स्वामी कुश शर्मा, पालु १६ एवं चिप, लम्बे कद वाला, सुदृढ़, उदात्त चिन्मय का, विग्रह उकृति का। अलगा मगधी, गुणवान तथा सत्यवादी होता है। इसकी वाणी अत्यन्त मोहक होती है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु तक होता है। पत्नी भी सुदृढ़, मधुर-भाषिणी, गौरी-चिन्मय की तथापि कुछ अहंभाव गुणा होती है। जो, वह व्यवहार - कुशल तथा स्थिति उदात्त जाने वाली भी होती है। जातक का माज्येदक २५ वर्ष की आयु में होता है। इसे आजीविको-पार्जन हेतु कठिन परिश्रम करना पड़ता है। इसकी आर्थिक स्थिति सामान्य ही रहती है। विद्वान् तथा विद्वान् होने के कारण इसे नीच लोगों की सेवा करने के विवश होना पड़ता है। जीवन के उत्तरार्ध ५६ के वर्ष के इसे सुख की प्राप्ति होती है। सन्तान हेतु दुःख उठाना पड़ता है। इसे निवा-कार्य करने के लिए जीवन बिताना पड़ता है। मरण ६२ वर्ष तक हो सकती है।

(११६६) - इस जलकुण्डली वाला मधुर सुदृढ़, चिप, भी, गौरी तथा आलसी चिन्मय का होता है। अत्यन्त आवश्यकता के समय ही वह जीवगति से कार्य करता है। वह गुह्य तथा देवताओं का उपासक, बुद्धिमान तथा कलाविद होता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी भी-गौरी, सुदृढ़ तथा सेवाकर्त्तृ होती है। जातक का माज्येदक ३० वर्ष की आयु में होता है। उस समय इसे राज्य सिंहासन, साम्राज्य में प्रतिष्ठा तथा धन की उपलब्धि होती है। जीवन के ३५, ४०, ४२, ५६ तथा ५८ वें वर्ष विशेष लाभ प्राप्त किए होते हैं। सन्तान के लिए वह दुःखी तथा चिन्तित रहता है। इसका जीवन सामान्य ढंग से कालित होता है। आर्थिक-स्थिति भी सामान्य ही रहती है। इसे कीर्ति का दूरालम्ब नहीं मिल पाता। पारिवारिक क्लेश इसे पोकान बनाये रखते हैं। शरीर से निष्कासित होने पर लगभग २० वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(११६७) - इस जात कुण्डली का स्वामी सुदा, लक्षण, विद्वान्, समझदार तथा गुरुजान होता है। इसकी अर्थ-चिन्ता का तथा एक ही बात पर अनेक प्रकार से विचार करने वाला। दीर्घायु होता है। यह सुदीर्घ, सम्पत्तिकार भी होता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, लक्ष्मण, मनीषी तथा बलि प्रपण होती है। इसका भाग्य स्त्री के सहयोग से उदित होता है। अपने जीवन, लक्ष्मणारी तथा उद्योगशीलता से यह ४५-४६ वर्ष की आयु में आर्थिक-सम्पत्ति तथा सामाजिक-प्रसिद्धि को प्राप्त करेगा। यह स्वभावशून्य है शक्ति, भय, वाहन तथा लेवके का सुव्यवस्था करता है। पुरुष इसे दुर्गों की ओर से सुख नहीं मिलता। वे अल्पजीवी होते हैं। अतः उनके कर्ण पर दुःखी बना होता है तथा बड़ी आयु में निम्नोक्त विकार-सा हो जाता है। सामान्यतः इसका जीवन आर्थिक-सम्पत्ति का होता है तथा वृत्तात्मक भी अच्छा बना रहता है। उदात्त ७२ वर्ष लेगी है।

(११६८) - इस जात कुण्डली वाला जानक स्वप्न, सुदा, गौरवर्ण, ऊँचे कद का, शिल्पीदि कलाओं में कुशल, साहित्य-प्रेमी, काव्य-सर्वक तथा गुरुक हृदय वाला होता है। इसका विवाह लगभग २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, लक्ष्मण तथा बलि की अनुगामिनी होती है। इसका भाग्य ६६ वर्ष के बाद पदोन्नति में होता है। यह अपने जीवन के ४३, ४८, ५२, ५७, ६६, ६९ तथा ६४ वें वर्ष में पराजित भक्त करता है। इसके पुत्र-पुत्री सुदा तथा सुदीर्घान होते हैं। यह उनसे पूर्णसन्तुष्ट रहता है। यह उन व्यक्तियों से विशेष लाभ प्राप्त होता है, जो पदोन्नति अथवा विदेश में सम्पत्ति-रखते हैं। इसकी अचल सम्पत्ति पदोन्नति में भी रहती है तथा स्वदेश में भी यह शक्ति, भय, वाहन तथा लेवके के सुख से सम्पन्न बना रहता है। सर्वत्र सुख तथा सम्मान प्राप्त करेगा। यह जानक लगभग ८२ वर्ष तक जीवन रह सकता है।

(१९६६) - इस जलकुण्ड के उत्पन्न मनुष्य सुन्दा, स्वामि, उवल माधवकाली, शत्रुओं के नाश करने वाला, अत्यन्त साहसी, उद्यमी तथा अपने वीर्य के कारण अत्यधिक उन्नति करने वाला कुल-वीर्य होगा। यह विष्णु, परासी तथा महादानी होगा। अपनी विचक्षण बुद्धि तथा विष्णु के डगा यह लोगों को चमत्कृत करेगा। साहित्य-सृजन तथा कठ-पाठन के विशेष रुचि लेने वाला यह अनेक कलाओं का हथका, दार्शनिक छद्मि का, ईश्वरभक्ता, प्रियमकी तथा सद्गुणी होगा। इसका विवाह २२-२६ वर्ष की आयु में होगा। इसकी पत्नी लुकी तथा मोह भरी होगी। यह उनके अत्यधिक भक्त रहना है तथा कभी-कभी अपने आवश्यक कर्तव्यों को भी भूल जायेगा। इसका माधोदत्त पुत्रावस्था के छोड़ दे ही होगा। शक्ति-विपत्ति संतोष जनक बनी रहेगी। यह प्रदेश में रहकर परासका धन उठायेगा। (प्राप्ति ६२ से ७२ वर्ष होगी)।

(१९७०) - इस जलकुण्डली का स्वामी सिंह के समान दायिनी, मनी-अभिमान, सुन्दर, स्वस्थ, गुणवान्, विद्वान् सम्पत्तिकाली तथा दो भाग्यों का स्वामी होगा। इसे दाह-पुत्र उपलब्ध नहीं होगा तथा बन्धु-बान्धवों से भी दूरे बना रहना है। शक्ति से दुर्बल दिव्य देने पर भी यह अत्यन्त शक्तिशाली होगा। विवाह लगभग २२-२३ वर्ष की आयु में होगा। इस विवाह भी शीघ्र होगा। दोनों पत्नियाँ साफ रहती हैं तथा यह उनके भक्त भी बना रहता है। किसी दुःख का योग बहुत अल्प होगा। इसका माधोदत्त प्रदेश में होगा। ४२ वर्ष की आयु तक यह पण्डित धन-सम्पत्ति अर्जित करेगा। किन्तु शरीर उन्नति का चला जाता है। इसकी सफदरी में गिरावट होगी। सात-समान भी बढ़ता-चला जाता है। वृद्धावस्था में यह अनेक लीजों की चमत्कृत करेगा। (प्राप्ति लगभग ७२ वर्ष होगी)।

(११७१)- इस जन्म कुण्डली वाला जन्म सुका, लम्बे कद का, पल्ले भरी वाला, कला-कौशल एवं वाहीन का डेमी, विद्वान्, बुद्धिमान्, गुणवान् तथा उत्साही होता है। यह अपने जीवन में अनेक कार्य करता है तथा अपनी विद्या-बुद्धि के बल पर उनमें सफल होता तथा अपनी अर्थोपार्जन भी करता है। इसे सर्वत्र लफाव का विशेय लगता है। इसका विवाह २०-२२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुदी, निरुषी तथा सुलभता वाली होती है। प्रथम पुत्रान का कष्ट होता है, पालु अल्प पुत्रों से ही रहती है। विवाहोपान्त ही इसका भरणोदय होता है। इसकी माण्डोमालि में किसी-न-किसी स्त्री का योगदान भी अवश्य रहता है। यह अपने पिता की मूर्ति ही सादर रूप से कार्य को ल काके उनके विधान दिशा में चलता है। लगभग ३० वर्ष की आयु में इसकी स्त्री महत्वाकांक्षी हो जाती है। सुखी एवं सम्यक् जीवन बिताता हुआ यह ६० वर्ष के लगभग जीवन रहता है।

(११७२)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी लम्बे कद का, गौरवर्ण, कवि तथा छोटी चमकका, पालु हृदय का उदार भी होता है। यह वाला बच्चा से ही हाथ का के सुख प्राप्त करता है। उसे विद्या का प्रेय लगता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है तथा अपनी सुदी स्त्री के साथ पुत्रोपभोग करने पर यह अत्यन्त प्रेमी संबंध बनाये लाता है। २५ वर्ष की आयु से ही इसका भरणोदय भी होता है। यह किसी उच्च वाणजीयद या पुरिहित होता है तथा अपने पिता के मवसाद से निम्न प्रकृति के कोई काम अर्थोपार्जन करता है। ५५ वर्ष की आयु तक इसकी स्त्री महत्वाकांक्षी हो जाती है। यह ७५ वर्ष (ममति), शक्ति, भवन, वाहन, निवक कर्षी की उपलब्धि का लेता है। यह बड़े कुटुम्ब तथा पुत्रान्, पुत्र से पुत्र होकर २०-२५ वर्ष की आयु तक सुखी-जीवन बिताता है। इसे सर्वत्र फल से भरा हो सकता है।

(१९७३) - इस जन्मकुण्डली का हवा भी कुछ तथा लम्बे शरीर का, उमर ३५ साली, विष्णु-बुद्धि लक्षण, सब उमर के वातावरण को अपने अनुकूल बना देने के लक्षण, अलक्षणी तथा शत्रु को भी क्षमा करने की उदात्त रात्रि वाला महान् व्यक्ति होगा। यह धार्मिक चिन्तनवाला, अनेक कलाओं का ज्ञाता, योग्यता के लिए अपना धन खर्च करने वाला तथा बहुत हद तक दयालु होगा। इसका विवाह लगभग २५ वर्ष की आयु में होगा। पत्नी सुन्दरी तथा सुवर्णवर्णी होगी। यह अपनी पत्नी के साथ सुखी रहता है, चाबु पुत्र का पुत्र नहीं मिलता। इसकी आजीविका का संबंध भाग्यवीर्य के सहित है। वही है यह धर्म और धर्म का ज्ञाता। पान्थ विधेय अधिक होने के कारण इसके पास धन की गिनती कमी बनी रहती है। यह अपने अधवसाह के कारण गृहस्थी का संघालन करता है तथा समाज में जगिष्ठा बनाये एक लक्षण ६२ वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(१९७४) - इस जन्मकुण्डली वाला मुख्य मुद्रा, स्मरण सुविधित, कला एवं ललित-प्रेमी, गुणवान्, धी-गरी तथा धार्मिक प्रवृत्ति का होता है। यह दूसरों के दुःख को दायका दुःखी होने वाला सहज, योग्यता तथा दार्शनिक विचारों का होता है। अपने अधवसाह द्वारा इसे बहुत कुछ सीखने का अवसर प्राप्त होता है। इसकी विष्णु, बुद्ध तथा कौशल की विशेष उन्नति होती है। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में होगा। पत्नी सुन्दरी तथा आजीवन साथ देने वाली मिलती है। इसे प्रथम संतान से सुख नहीं मिलता, चाबु अगली संतानें पुत्र देती है। इसका भाग्योदय विवाह के बाद होता है। ५०-५५ वर्ष की आयु तक यह पश्चिम लक्षण उद्योगिता का होता है। यह समाज में साध-जगिष्ठा भी खूब पाता है तथा मिथी भवन, वाहन, सेवादि के सुख से समन होकर भो श्रेणीका ललित लगभग ७२ वर्ष की आयु तक जीवित रहता है।

(११७५) - इस कुण्डली का स्वामी बुद्ध, स्वाध्याय, महाप्रवचन, मध्यम कोश, उमान कदवाला, उदा-तद, सब प्रकार के व्यवहार - कुशल तथा अनेक कलाओं का ज्ञान प्राप्त होता है। यह धार्मिक उद्योगों का, हस्तकला तथा वस्त्रोपकरणों का होता है। इसका विवाह लगभग २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोरुक्ता मिलती है, अतः दाम्पत्य-जीवन सुखपूर्ण बना रहता है। अनेक पुत्र-पुत्रियों का सुख भी मिलता है। इसकी माँको मरि २७ वर्ष की आयु में होती है। राजकीय-सेवा का प्रयोग करता है। व्यवसाय के क्षेत्र में भी अच्छी सफलता मिलती है। ४५ से ५५ वर्ष की आयु के बीच इसकी श्री महत्वाकांक्षों पूर्ण हो जाती हैं। धर्म, भवन, वास्तुकारि के द्वारा उपलब्ध होते हैं। जहाँ-जहाँ में इसकी उद्योगों आध्यात्मिक हो जाती हैं। तब यह तीर्थयात्रों का तथा कुछ धार्मिक स्थलों का निरीक्षण भी करता है। यह ७० वर्ष की पूर्ण उम्र प्राप्त करता है।

(११७६) - इस कुण्डली का स्वामी स्वाध्याय, बुद्ध, उग्रिमाशाली, मध्यम कद का बुद्धिमान तथा आत्म-विकारक वाला होता है। इसकी वास्तु-शैली सुन्दर, आकर्षक तथा अत्यन्त उन्नत होती है। इसका वचन काल में होता है। पाल विवाहोत्सव इसकी शक्ति-स्थिति में सुचारु होते लगता है। विवाह २० वर्ष की आयु में ही होता है। पत्नी सुन्दरी तथा आकाशवाणी मिलती है। विद्या का भी उत्तम ज्ञान होता है तथा ज्ञान-सुख भी अच्छा रहता है। २६ वर्ष की आयु से यह प्रत्येक पक्ष में काम करने लगता है तथा ५० वर्ष की आयु तक सब प्रकार से सफल होता है। यह अनेक विज्ञानों से संबंध रखने वाला तथा उनका विज्ञान करने वाला होता है। फिर भी समाज में इसकी मान-परिष्ठा पर आँच नहीं आने पारी। यह भवन, वाहन लेवक मरि सब प्रकार के सुखों को प्राप्त करता हुआ मरती तथा प्रशस्ती जीवन बिताता है। पूर्ण उम्र ८० वर्ष तक की हो सकती है।

(११७७) - इस जन्म कुण्डली वाला मनुष्य सुदा, सौम्य, मृदुल चरित्र का, कल्पना लोक के प्रवर्ण करने वाला नया शीतल दिग्गज कहलाएँ। इसे विष्णुध्वज में रूपावर्ते मानी हैं, पालु उन सब वा विष्णुध्वज का नाहुका चह उच्च शिक्षा ग्रहण कलएँ। अधमनोपान्त राजकीय-सेवा में निपुण होकर अजीवि को-पार्जित काला है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुदृढ़ तथा विदुषी प्राण होती है। माता-पिता का अल्प-प्राण मिलता है। स्वयं भी ३० वर्ष की आयु में कठिन रोग से ग्रस्त होकर दुःख उठाएँ। पत्नी इसके अउक्ष्ण नहीं चलती, अधिक भित्त आचरण रावती है। इससे दाम्पत्य-सुख में कमी आती है। जन्मान-प्राण लामायन रहता है। इसके पास धन की कोई कमी नहीं रहती। अनेक छोटों से धन का आगमन होता है। उसके कारण यह समाज में प्रसिद्धा भी प्राप्त करता है। पुत्र-पौत्रों से पुत्र होकर यह लगभग ७० वर्ष की आयु में पृथ्वी-गमन कलएँ।

(११७८) - इस जन्म कुण्डली वाला ज्ञातक सुदा, स्वस्थ, मज्ज, उदार तथा मनुष्यकी होता है। यह माता-पिता का अल्प-प्राण ही प्राप्त कलएँ। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में होता है, पालु पत्नी से भी सुख प्राप्त नहीं होता। पत्नी इससे स्वयं भी विवाह रहती है। और इसे अपने से लुब्ध मन्मथी है। यह भी पत्नी-प्रेम से सम्बन्ध-रहित होता है। प्रथम जन्मान से पीड़ित होता है तथा दो-बड़े भाई का प्राण भी नहीं मिलता। पुत्र के साथ शत्रुता-प्रेम अवदा रहता है। इसका भग्नोदय २५ वर्ष की आयु में होता है और यह राजकीय-सेवा में रहकर उन्नति कलएँ। इसकी बुद्धि-प्राण होती है तथा विद्या-लाम भी उत्तम रहता है, अतः अपनी योग्यता के अनुसार यह समाज में प्रसिद्धा भी प्राप्त कलएँ। ४० वर्ष की आयु तक यह पदवि सम्पत्ति अधिष्ठान का लेता है तथा उसके बाद का जीवन सुखपूर्ण बनाएँ। इसे ६२ वर्ष की प्रशस्ति प्राप्त होती है।

(११७८) - इस जलकुण्डली वाला मातक सुन्दर, चीनीमन, पनीकरी, पोटकरी, धाँधे दुआ में दुआरी होते वाला। इहाँ की सहायता करने को सत्तर, कोय - सारिल का मर्मल तथा नव्याति लम्ब होना है। यह वाष्पावस्था में दुआरी रहता है तथा पुष्पावस्था में सुख प्राप्ति करता है। इसका विवाह २०-२२ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी होने पर भी अधिकारी तथा अहंकारी होती है, जिसके कारण यह स्थिति दुआरी भी बनी रहती है। मातक से उलका मर्त्य नहीं हो जाता, अतः यह पानीपों की ओर आकर्षित होता रहता है। इसका माजोद २४-२५ वर्ष की आयु में होता है। इसकी आसुरी के सोन एक से अधिक होते हैं, अतः इसे कभी आर्थिक - तंगी का सामना नहीं करना पड़ता। पोटस में रहकर यह बहुत उन्नति करता है। इसके जीवन के २५, २८, ३३, ३७, ४०, ५२ तथा ५६ वें वर्ष कष्ट काफ़ी होते हैं। इसे ६५ वर्ष की पूर्ण आयु प्राप्त होती है।

(११८०) - इस जलकुण्डली का स्वामी सुन्दर, कुद्व दवे हुए रंग का, अल्प उदा दिवादि देने वाला पानु पदार्थ में झुंड स्वभाव का होता है। इसे जीवन के बहुत कम सुख मिलता है तथा अपमान का शिकार अधिक करना पड़ता है। इसे पित्त का सुख भी कम मिलता है। विवाह के प्रति उदासीन रहता है तथा २४-२५ वर्ष की आयु में विवाह हो जाता है। पत्नी से अधिक मर्त्य नहीं हो जाता, अतः यह पानीपों की ओर आकर्षित होता है, पानु उनके से किसी भी स्त्री लक्ष्मण नहीं बनता। सन्तान - सुख भी सामान्य रहता है। इसका माजोद २५ वर्ष की आयु में राजकीय सेवा का होता है। यह अपनी विद्या तथा बुद्धि के प्रयोग से आर्थिक - स्थिति को उत्तम बनाना चला जाता है। जीवन के ३८, ४३, ४६ तथा ५४ वें वर्ष के पक्षि पतन - लक्ष्म होता है। आयु लगभग ७० वर्ष की होती है।

(११८१) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी चतुर्थे भूखले चानु स्वांश शरीर का, आकर्षक वाक्यात्मक सम्पन्न, सुन्दर, उमराही तथा सादरी होता है। यह अनिश्चयतात्मक - बुद्धि का होता है तथा किसी भी विषय को लेने में बहुत देर लगाता है, चतुर्थ अन्तः जो भी विषय लेता है, उस पर अन्ततः देर बना रहता है। इसका विवाह २६-२७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनेरु कुला तथा जोषे के क्षेत्र में इसको पूर्ण सहयोग देने वाली मिलती है। वह मनीषी, महत्वाकांक्षिणी तथा पति के लिए हितकारी भी सिद्ध होती है। सन्तान - सुख पश्चात् रहता है, चानु काद के पुत्रों का। इसका धन गण भी किया जाता है। इसका मातृमोक्ष ३०, ३२ वर्ष की आयु में होता है। राजकीय-सेवा में। एक। यह विशेष उन्नति काता है। इसे पितृ, राज्य तथा शत्रुओं के धन का लाभ होता है। ४६ तथा ५४ के वर्ष में शारीरिक कष्ट होता है। जीवन एक से अधिक होती है। श्रमार्थ ७५ वर्ष हो सकती है।

(११८२) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति सामान्य सुन्दर, चिह्न, आकर्षक वाक्यात्मक वाला, उमराही, सादरी तथा सुखी जीवन बिताते वाला होता है। इसे अपने पितृ से विशेष प्रेम होता है। इसका विवाह २७-२८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनेरु कुला तथा सुन्दरी मिलती है। वह पहले क्षेत्र में पति के साथ सहयोग करती है। सन्तान - सुख अच्छा रहता है। इसकी ममता के स्रोत अनेक होते हैं, जन्म धन की कोर कमी नहीं रहती। यह कभी-कभी ऐसे काम भी काटता है, जिसमें आर्थिक-हाथ की उत्पन्न हितकर रहती है, तथापि इसे उसमें भी लाभ होता है। जीवन के ४६ तथा ५२ के वर्ष शारीरिक कष्ट ४६ तथा हाथिका सिद्ध होते हैं, चानु काद के लक्ष्य के निकट हो जाता है। राजकीय-सेवा में भी इसे बहुत लाभ होता है तथा पण्य की भी बहुत कामता है। इसकी श्रमार्थ ६८ से ७० वर्ष के मध्य रहती है।

(११८३)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुधा, स्वप्न, सहस्र ही आकर्षित करने वाला, उच्च भी तथा उत्साही होता है। यह वाल्मीक्य रूप से ही सुदी जीवन बिताती है, पालु पुत्रावस्था में इसका पुत्र का धन कमाने के लिए कोई के लाभों की ओर हो जाता है, अतः कभी आर्थिक दृष्टि से सुदी और की पोशाक भी रहता है। वाल्मीक्य के माता-पिता के अनुकूल चलता है। लगभग २२ वर्ष की आयु में विवाह हो जाता है। पत्नी सुदी तथा सुहृद-हृदयवादी होती है। विवाहोपरांत ही इसका भाग्योदय होता है। इसे कई पुत्रों, लेखन प्राप्त होता है। ५० वर्ष की आयु के बाद इसकी आर्थिक-स्थिति बहुत अच्छी हो जाती है। यह एक अधिक मित्रों के साथ सम्पर्क रखता है, कि भी समाज में अपने स्वयं को नहीं गिने देता। जीवन के ४०, ४३, ४४, ४८ तथा ५६ के वर्ष कष्ट कष्ट सहित होते हैं। पूर्ण ७० से ७५ वर्ष के बीच होती है।

(११८४)- इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुधा, मधुरा मयी, गल उच्चतिका, स्वप्न, मधुरा मयी, पाले शरीर का, पालु बलिष्ठ एवं आकर्षक कवित्व सम्पन्न होता है। यह काव्य-साहित्य का प्रेमी, लेखक, कवि तथा विद्वान् भी होता है। इसका विवाह २२-२३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुदी तथा लेखन-कला की होती है। यह पति पर निर्भर रावती है तथा संपन्न धर्मार्थ का ही दुर्लभ है। गृहस्थी का कुशलता पूर्वक संकालन भी करती है। इसे अपने पिता से स्नेह रहता है, पालु अन्न बन्धु-बान्धवों से शत्रुता रहती है। इसे २७ तथा ३६ के वर्ष के शारीरिक-कष्ट होता है तथा ३२, ३८, ४०, ४३ एवं ४८ के वर्ष में धन का विशेष लाभ होता है। यह भवन-निर्माण आदि कार्य तथा कुछ-विशेष दान धर्मार्थ अर्पित करता है। ६० वर्ष की आयु तक यह महाधनी होता है तथा ६८ वर्ष की पूर्ण ७० प्राप्त करता है।

(११८५) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुधा, बुद्धिमान, मधुर, अवलोकने वाला तथा दूसरों को सम्मान देने वाला होता है। यह पुत्रवान्, कुटुम्बवान् तथा पुत्रोक्त विचारों का होता है। तथापि कुटुम्बियों के प्रति इसका व्यवहार निलुप्तान् पूर्ण ही बना रहता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुधी होने के अतिरिक्त विलक्षण सेवायुक्त, आदर्शिक चेतन, धन्य कुल एवं स्वाधीन-स्वभाव की होती है। वह अपने पति के मानमें रहती है, अतः दाम्पत्य-जीवन उत्तमोत्तम नहीं रहता। सन्तान-सुख भी सामान्य रहता है। यह जन्म २० वर्ष की आयु में विशेष लाभ प्राप्त करता है। यह राजकीय कार्यों में तथा लेख-रचना, हास-वीर्य, संगीत, उद्योग एवं विलास आदि के व्यवसाय में बहुत धन कमाता है। इसके जीवन के २५, ३८, ४२, ४६, ४८ तथा ५६ वर्ष की आयु में आर्थिक-हानि रहती है। सामान्यतः यह सुधी-जीवन बिना गुरु ६८ वर्ष तक जीवित रहता है।

(११८६) - इस जन्म कुण्डली वाला मधुर, सुधा, बुद्धिमान, सुभावान्, विशाल हृदय का तथा उच्च आकांक्षाओं से सम्पन्न होता है। यह नीच-बुद्धि होता है तथा अल्प-शीघ्रता से निर्णय लेता है। इसका विवाह २६-२७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुधी तथा धनी पत्नी की होती है, धन्य वह जन्म से मानमें रहती है, अतः गृहस्थी में अशान्ति बनी रहती है तथा दाम्पत्य-सुख की हानि होती है। सन्तान-सुख उत्तम रहता है तथा पुत्र बड़े होकर पिता के व्यवसाय की माली बनकर पौत्र-पौत्रकाने तथा उनकी उत्पत्ति करते हैं। वे अपने कुल तथा पिता के पक्ष में होते हैं। जन्म स्वयं विभिन्न कार्यों में संलग्न रहकर उच्च धन कमाता है। जीवन के ३५ से ४६ वर्ष तक जन्म की आर्थिक-स्थिति अल्प सुख बनी रहती है तथा यह हृदय का के सुख-साधन (कर्मका) होता है। ५० से ५५ वर्ष की आयु में इसका पालेक-गमन होता है।

(११८७)- इस लम्बे कुण्डली वाला मनुष्य स्वस्थ, सुन्दर, लम्बे कद वाला, आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न, माना - पित्त को प्रिय, (उचित शिक्षा - वीक्षा पाने वाला तथा अल्पमत समाप्त करके वांछनीय देखा जाय) अधिक - लाभ पाने वाला होता है। यह कला तथा लिखक का ध्यान, पुष्पात्मक, व्यवसायिक अथवा इंजीनियर, डाक्टर आदि भी हो सकता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक होना है। पत्नी सुन्दरी तथा बच्चे सुखी मिलती हैं। २७ वर्ष की आयु में इसका मजबूत होना है, पत्नी पहले पूर्व भी इसके पास पान की कोई कमी नहीं (होती है) मजबूत के बाद यह अधिकारिक धनी होगा - चलाया जाये। धन - पुण्य करने से भी वीक्षे नहीं रहना। यह उदाहरण से दूसरे लोगों की सहायता करता है तथा योग्यता से अपना धन खर्च करके उत्तमता का अनुभव करता है। पुत्र की ओर से ऐसे चिन्ता होती है। इसको ७० वर्ष की पूर्ण आयु प्राप्त होती है।

(११८८)- इस कुण्डली का अधिपति लम्बे तथा मधुर-शरीर का, स्वस्थ, सुन्दर तथा वात्सावल्या से ही माना - पित्त का मधुर सुख पाने वाला होता है। वात्सावल्या में प्रायः बीमा भी होता होता है, पत्नी सुखावल्या में लीला-जीवन बिताता है। शिक्षा प्राप्त करने के बाद लगभग २१ वर्ष की आयु में पाने योग्य आरंभ कर देता है। इसे राज्य-कार्य भी पाने लगता है तथा वा - स्त्री का भी सम्बन्ध प्राप्त होती है। इसका विवाह २२ से २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर, पल्लव शरीर की, बुद्धिमान तथा जातक के कार्यों में सहयोग देने वाली होती है। २८ वर्ष की आयु में इसका मजबूत होना है, तब से जीवन-तक धन का निरन्तर आगमन होता रहता है। इसके पुत्र योग्य हो जाते हैं, पत्नी उनके द्वारा धन-हानि भी होती है। जीवन में ५६ से ६२ वर्ष की अवधि बड़ी उत्तम-पुष्प काक होती है। इसकी पूर्ण आयु ७५ वर्ष होती है।

(११८८)- इस जल कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुदा, चिच्छि, आकर्षक, विद्वान्, योग्यकारी, लहि-
ष्णु, उदा, कवि, गुरुचि सम्पन्न तथा साहित्यकार होता है। यह दूसरों की सहायता करके स्वयं को
धन अनुभव करता है। यह वाल्यावस्था से ही भाग्यशाली होता है तथा अपने भाग्य-धन को
सुख-शान्ति प्रदान करता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुदृढ़, विदुषी तथा
सदैव सुख देने वाली प्राप्त होती है। वह पति की अनुयायिनी बनी रह कर उसे धृष्टता देती रहती है।
इसका विशेष भाग्योदय २८ वर्ष की आयु से होता है। तब यह उच्चपद पर आसीन होकर आदर्शिक
धन तथा सम्मान अर्जित करता है। ४५ वर्ष की आयु तक इसे सब प्रकार की सम्पत्ति, भवन,
वाहन, ऐवक, धन आदि प्राप्त हो जाते हैं। पुत्र-पौत्रों से पुत्र प्राप्त होता है तथा स्वर्गभी भोग-
विलास का आनन्द उठाता है। इसकी पूर्णायु ८० वर्ष की होती है।

(११८९)- इस जल कुण्डली का स्वामी सुदा, चिच्छि, मधु मयी, श्रेष्ठ कुटुंबी तथा व्यवसाय-
कुशल होता है। इसका कर्म मध्यम, स्वात्म उत्तम तथा व्यक्तित्व प्रभावशाली होता है। इसकी
शिक्षा-दीक्षा उच्च स्तर की होती है तथा अध्ययन प्रवास करने के उपरान्त इसे लक्ष्मीप-सिन्धु
में जोते का अवसर मिलता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुदृढ़,
कुछ स्थूल शरीर की, विद्वान्, कवयित्री तथा मधुमयिणी होती है। पति वह अपने व्यक्तित्व
को पति से अलग बगले बाँधने की चेष्टा करती है। प्रजापति वह पति के प्रति अनुयायिनी होती
है तथा उसका साथी देती है। इसका भाग्योदय २७ से २८ वर्ष की आयु के बीच होता है। इसकी
आयुदली के छोर अनेक होते हैं। राजडाग तथा शत्रुपक्ष से भी धन-लाभ होता है। जीवन के ३६, ३८,
४५, ४७, ५१ तथा ५८ वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा पूर्णायु ७८ वर्ष तक हो सकती है।

(११६१) - इस जलकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य कठोर चिन्तक, उग्र कार्य को करने वाला। दुष्ट कार्य का, क्रोधी, मरत्वाकांक्षी, नास्तिक, धर्म तथा धर्मियों का लिहका करने वाला, अपने दुर्गुणों पर गौरव करने वाला तथा स्वयं को सेठ समझने वाला अभिमानी होता है। ईश्वर के प्रति इसे कोई आस्था नहीं होती। यह जो जी चाहे, वह करता है, मलेही नष्ट करों के लिए अधिप अथवा कलह उत्तीर्ण करता है। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी से मनोरंजन नहीं होता, क्योंकि पति-पत्नी एक दूसरे से विमुख नहीं रहते। यह भौतिक अथवा अर्थव्यवस्था - हाथका करने का कार्य में व्यस्त रहता है। इसका माजोरन २५ वर्ष की आयु में आरंभ होता है तथा ५०-५५ वर्ष की आयु तक पण्डित सम्पत्तिशाली बन जाता है। इससेलन का लाभ होता है, पण्डित पुत्रों की ओर से मिलाने रहता है। जैसे इसके पुत्र भी बड़े होकर होते हैं। पुत्रादि २५ वर्ष तक की हो सकती हैं।

(११६२) - इस कुण्डली वाला जलक सुन्दर, स्वस्थ, गुणवान्, कला, मर्मज्ञ, लाहिलका अथवा लाहिलप्रेमी, सधुर्माकी, कलहा - कुशल तथा वात्सावल्या से ही माना - पितृ को प्रिय होता है। इसकी शिक्षा - वीक्षा उचित है। यह अर्थव्यवस्था में कुशल तथा निराला उन्नति करने वाला भी होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक होता है। पत्नी सुन्दरी, कुदृष्ट, शरीर की, स्वभाव से गर्भी तथा गुणवती होती है, क्योंकि पति के प्रति उसका विशेष आग्रह नहीं होता, अतः दाम्पत्य - जीवन में तनाव - सा बन्ध रहता है तथा जनक स्वयं पण्डितों की ओर आकर्षित बना रहता है। इसके पुत्र धनी-मानी होते हैं। दूसरों की सेवा से इसे पण्डित लाभ होता है। जीवन के २५, ३८, ४२ तथा ४८ वें वर्ष में सेठ सिद्ध होते हैं। यह ५० वर्ष की आयु तक सभी प्रकार के भौतिक सुख - साधनों को प्राप्त करता है तथा लगभग ६०-८० वर्ष तक पुत्रवत्त्व की राह है।

(१९८३)- इस जल कुण्डली वाला जलक सुद्ध, स्वस्थ, निष्का-कुट्टि के नीचे तथा उच्च शिक्षा पाने वाला होता है। यह वाला वस्त्र है ही सुद्ध के चलता है तथा पुका वस्त्र में नपका चकोरार्थ का ना है। यह विभिन्न प्रकार की कलाओं तथा विज्ञान का ज्ञान तथा विद्वानों में सम्मान पाने वाला जलधरा बुद्धि का लार्थिक होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाना है। इसकी पत्नी सुद्धी, तेजस्वी तथा विद्वान् होती है, पानु इसका अपने पति से मतभेद बना रहता है, अतः दाम्पत्य-जीवन पूर्ण सुखी नहीं रह पाता। दोनों के कर्षित्व फलित प्रकार के तथा निश्चित होते हैं तथा दोनों ही अपने-अपने लिए निश्चित क्षेत्रों का निर्माण करते हैं। सन्तान-पुत्र अच्छा रहता है। भाग्योदय २५ वर्ष की आयु से शुरू होता है तथा ५० वर्ष की आयु तक शक्ति, भवन, वाहन, निवृत्ति आदि सभी सुख-साधन उपलब्ध हो जाते हैं तथा पक्ष की वृद्धि भी होती है। पुत्रादि २५ वर्ष तक हो सकती हैं।

(१९८४)- इस जल कुण्डली का स्वामी सुद्ध, स्वस्थ तथा धूर्त एवं उदात्त का विचित्र संग होता है। यह शक्ति, भवन, वाहन, निवृत्ति तथा धन आदि से सम्पन्न हो का दूर-दूर तक अपने पक्ष का विस्तार करता है। यह राजकारण से लाभ उठाना है तथा वैदिक-सम्पत्ति भी प्राप्त करता है। यह अष्टि अथवा अष्टाष्ट पूर्ण स्थिति को देख का, स्वर्ण भी करी-करी अत्यधिक धन प्राप्त करता है तथा शरीर शक्ति के साथ बढ़ता जाता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोरंजक मिलाती है। सन्तान-पुत्र भी अच्छा रहता है। यह अपने जीवन में निराला उच्च-पद प्राप्त करता चला जाता है। हृदय में यह पूर्ण आह्लास होता है तथा ऊपर से जितना उदात्त होता है, भीतर से उतना ही कोमल भी होता है। जो लोग एक साथ इसके निकट-सम्पर्क में आ जाते हैं, वे भी कभी अलग नहीं होते। यह ८० वर्ष की आयु तक सुखी जीवन बिताता है।

(११६१)- इस जल कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य मध्यम कद का, सुदृढ़, विज्ञा-बुद्धि में विचक्षण, विशाल-हृदय, उच्च-जीवन वाला; नैतिकता, न्याय तथा सत्य के उच्च आदर्शों को स्थापित करने वाला तथा उच्च वर्ग का महापुरुष होता है। यह सामान्यतः नारीत्व जैसा धारण होता है, पण्डित पदार्थ में आधिकारिक धर्म-भक्ति, ईश्वर-भक्ता तथा उदात्त हृदय का होता है। यह अत्यन्त सुखी तथा समस्त जीवन बिताना है तथा देश-विदेश में सर्वत्र प्रचारित एवं सम्मानित होता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में अत्यन्त सुदृढ़, अपने कुल विपन्नता दूर करने वाली तथा विदुषी कला के लक्ष्य होता है। वह श्रेष्ठ आचार-विचारों वाली घर-गृहस्थी का सुप्रबल एवं संचालन करती है। इसका सम्बोधन २५ वर्ष की आयु के बाद होता है तथा जीवन के ४८, ५६, ६० तथा ६४ वें वर्ष विशेष उपलब्धि प्राप्त करने होते हैं। यह ८० वर्ष की पूर्ण आयु प्राप्त करता है।

(११६६)- इस जल कुण्डली वाला मानव सुदृढ़, ज्ञान-बुद्धि, मोहक वाणी बोलने वाला तथा विवेक पूर्ण होता है, किसी इसका चित्त उद्विग्न बना रहता है तथा इसके मन-मस्तिष्क में अनेक प्रकार के काम करने की धुन गति रहती है। इसके दिमाग में विचारों तथा योजनाओं की भीड़ लगी रहती है, फलतः इसे कोई भी निश्चिन्ता लेने में आधिकारिक विमर्श लगता है। इसका विवाह २०-२२ वर्ष की आयु में सुदृढ़ तथा सुठावली कला के लक्ष्य होता है। वह कुछ कृपा भी होती है। जन्म का सम्बोधन २६ वर्ष की आयु में होता है। यह राजकीय-निवादात्मक चरित्रवाली कला है तथा अपने जीवन में अनेक प्रकार के सम्मान प्राप्त करता है। ६० वर्ष की आयु तक यह आधिकारिक समृद्ध होता है। सन्तान का सुखी उत्पन्न मिलता है। वे इसकी प्रशंसा-कीर्ति को और अधिक बढ़ाते हैं। सम्पूर्ण सुखों का उपभोग करना यह ८० वर्ष की पूर्ण आयु प्राप्त करता है।

(११६६) - इस कुण्डली वाला जातक सुदा, उभावशाली, गुणवान तथा बिकान होता है। इसका बाल्यकाल के ऐश्वर्य में व्यतीत होता है। यह अपनी शिक्षा-दीक्षा सुचारु रूप से सम्पन्न करता है। विवाह २५ वर्ष की आयु में पूर्व ही हो जाता है। पत्नी सुदा, कर्तव्यपरायण तथा अपने सभ्य-व्यवहार से सबको मोहित करने वाली मिलती है। शिक्षा समाप्ति के उपरान्त ही इसका माण्डूक्य आरंभ हो जाता है तथा जीवन में उच्च पदों पर उल्लिखित रहता है। यह विपुल धन तथा रक्षाति अर्जित करता है। राजकीय सेवा में रह कर यह सभी सुख-सुविधाओं का उपभोग करता है। युक्त-पौत्रों से घनीका मग्न रहता है। जीवन के ४२, ४८, ४९, ५३, ५५ तथा ५८ के वर्ष विशेष महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। अग्नि स्वप्न तथा मीरोग रहता है तथा धर्म, भजन, वाहन, शिवक आदि के सभी सुखों का भोग करता हुआ ६५ वर्ष की आयु प्राप्त करता है। राज्य से इसका सम्बन्ध जीवन्तान तक बना रहता है।

(११६८) - इस जन्म कुण्डली में उत्पल मनुष्य सुदा, स्वप्न, उदा स्वभाव का, किंचित कोपित तथा न्याय-प्रिय होता है। इसे बाल्यावस्था से ही सब प्रकार के सुख उपलब्ध रहते हैं। इसकी शिक्षा-दीक्षा सुचारु रूप से सम्पन्न होती है। यह बहुत साक्षर स्वयं के अनुभव से भी ज्ञान का लेखनी होता है। इसका विवाह २३ या २४ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुदा, मनोविनयी तथा महत्वाकांक्षिणी होती है। इस जातक का राजकीय-सेवा का अवसर प्राप्त होता है। ३५ वर्ष की आयु तक यह बहुत उच्च नीति प्राप्त करता है। जीवन के ४२, ४८ तथा ५८ के वर्ष विशेष महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। इसकी सन्तानें सुपोग्य होती हैं। वे बड़ी होकर इसके पशु, धन तथा सम्मान का और अधिक बढ़ाती हैं। ७५ वर्ष की आयु में यह किसी गैर कार्य को आरंभ करता है, जिसे इसके पुत्रगण प्रोत्साहित करके चलाते हैं। यह ८५ वर्ष से अधिक की आयु प्राप्त करता है।

(११६६)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुद्धा, मेधावी, पंडित, विद्वान वेत्ता, कला-मर्मज्ञ तथा अपना आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। यह चरी-चारी कुल में जन्म लेता वह अपावणा से ही सुख प्राप्त करता है। पूर्वजन्माभिनिषुषेयों के फल प्यार इस लोक में सब प्रकार के प्रवेष्टों से सम्पन्न बना रहता है। यह धर्म, भजन, वाहन तथा सेवाओं के फल से सम्पन्न जीवन व्यतीत करता है। इसको उच्च शिक्षा प्राप्त होगी तथा विदेश-यात्रा के अवसर भी मिलने ही रहने हैं। यह अपनी पत्नी का सुख चिरं करता है तथा २५-२६ वर्ष की आयु में विवाह करेगा है। पत्नी सुद्धा, विदुषी तथा मनेषुष्का होगी। इसका भाग्य कल्याणाला से ही दीर्घमान रहना है। ३५ से ४० वर्ष की आयु में यह अत्यधिक उन्नति करेगा है। राज से परास्ति लाभ मिलना है। धन की आपदनी मित्रा एवं अत्यधिक बनी रहती है। पुत्रद्वारा अमगति मिलती है। प्रणति २५ वर्ष होती है।

(१२००)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुद्धा, खोलचलाव का, छोटी पानु मीथुनी भगता हो जानेवाला, छोटे-बड़े सभी कार्य के क्षेत्र में कुशल तथा विभिन्न प्रयोग से अधिक-लाभ करनेवाला होता है। यह राजाद्वय से लाभान्वित होता है तथा राज्य का आजीविका प्राप्त करता है। इसके धन संचय की दृष्टि अत्यधिक होती है। २५-२६ वर्ष की आयु में यह राजकीय-सेवा में कार्यरत होता है तथा उनमें उत्तमोत्तम उन्नति का लक्ष्य प्राप्त होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुद्धा मनेषुष्का तथा आजीवन साथ निभानेवाली प्राप्त होती है। पुत्रों की ओर से इसे सुख नहीं मिलता। इसके जीवन के ३०, ३२, ३८, ४५, ४८ तथा ५६ वें वर्ष अत्यधिक संशयपूर्ण, धन-एवं मान-सम्मान प्रापक सिद्ध होते हैं। यह मित्रा कार्यरत बना रहता है तथा सर्वोच्च मान-सम्मान प्राप्त करता हुआ ५० भयका ५२ वर्ष की आयु में ही मृत्यु को प्राप्त होता है।

भ०
सं०
२०२३

कु०
२०

(१२०१)- इस जन्म कुण्डली वाला मउण सोवे तथा कौपी स्वभाव का होते हुए भी गरीब अपने उदात्तपितृ के पुत्रि सज्ज रहने वाला, सुका, स्वल्प, पुह कार्य, खोजी तथा प्रत्येक कार्य में हाकलरा जाने ला होता है। इसे निर-नैवे कार्य करने की आकोक्षा बनी रहती है। इसकी तिवाह २० से २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुकरी तथा लाकपटु मिलती है वह मनोबुद्धि आजाण करने वाली तथा प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग करने वाली होती है। विवाहोपान्त जातक को कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। धन का लाल भी होता है। तीन बच्चों तक मिलना कष्ट उठाने के बाद ही सुख-आति की उपलब्धि होती है, किं सारा जीवन अभाव में बीता है। राज्य द्वारा तथा अकालाकतो से लाभ होता है। पत्नी जन्मान अजोरा एवं दुःख देने वाली होती है। भाग्योदय ५२ वर्ष की आयु में होता है तथा मृत्यु ६६-६७ वर्ष की आयु में होती है।

(१२०२)- इस जन्माङ्क का स्वामी सामान्य सुका, कौपी एवं केषभाव के कारण उन्नत लाल नेत्रों वाला, अक्षिपुत्रि, पत्नी हृदय का उदात्त तथा क्षमाशील भी होता है। यह सुका कार्य द्वारा अपने महत्व को प्रदर्शित करता है। विजालाभ जन्म होता है। विवाह २२-२३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुकरी, लाकपटु तथा मनीषिनी मिलती है वह प्रत्येक कार्य में इसकी सहयोगिनी बनी रहती है। इसे अपनी पत्नी पर गर्व भी बहुत होता है, क्योंकि वह प्रत्येक क्षेत्र में लफला मिलती रहती है। सन्तानें भी सहयोग होती हैं। २२ वर्ष की आयु से भाग्योदय होता है, सुदुपलब्ध मिलता धनागम होता रहता है। आकस्मिक से जोन एक से अधिक होते हैं। यह राज्य तथा समाज में प्रसिद्ध एवं पश प्रकाशित होता है तथा शरीर से भी आप. स्वप्न होता है। लगभग ७० वर्ष की प्रकृति का उपभोग करता है।

(१२०३) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी स्वामी सुधा, आपना अनुदा तथा रुवि स्वामी का होता है किसी है दुश्मनी हो जाने का यह उसे करी भूलना नहीं, अविदु किसी-न-किसी रूप बदला लेने का उपलब्ध का ना रहता है और बदला युका का ही मानता है। यह आपना अहं-कारी होता है तथा ईश्वर का भी विश्वास नहीं करता। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु तक हो जाता है पत्नी भी इस जैसे ही कुदृष्टियों वाली होती है अतः उसके साथ रख नालेपन होता है। सन्तान भी काफ़ी होती है। यह जो भी कार्य करता है, उसी के इसे लाभ होता है, अतः आर्थिक-स्थिति उन्नत करी रहती है। देश-विदेश भी जानने भी रख करता है। ३५ वर्ष की आयु में इसे अमावास्या ही विपुल धन का लाभ होता है (पुत्रों से हाकिमिलता है) वे धन-संचयनें इसके लहाजक होते हैं। पूर्ण ६५ के ६८ वर्ष की होती है।

(१२०४) - इस जन्म कुण्डली में आपना मनुष्य सुधा, सद्गुणी, कला के भी तथा अत्यधिक धनी होता है। यह जो भी कार्य करता है, उसी के इसे धन का विपुल लाभ होता है। इसकी कुपणता भी धनवृद्धि का कारण बनती है। इसे धन का विशेष सुख मिलता है। माता पति का सेवक का भान कोन वाली होती है। इसे विद्या का सेवक लाभ होता है। विवाह २० वर्ष की आयु में ही हो जाता है। यह विवाह से पूर्व ही धनोपार्जन का आरंभ करता है। पूर्ण आयु ३५ वर्ष की आयु के बाद होता है। ५५ वर्ष की आयु तक यह स्वयं उका के सुख-ऐश्वर्य से सम्पन्न होता है। इसके पुत्र भी सुधा, साहसी तथा धन कमाने में कुशल होते हैं। वृद्धावस्था में इसका सुकाव धर्म की ओर अधिक होता है, तब यह तीर्थयात्रा, दान-पुण्य आदि भी करता है। इसे लगभग ७२ वर्ष की आयु प्राप्त होती है।

भ०
सं०
२०२३

कु०
२०

(१२०५) - इस जन्म कुण्डली वाला मनुष्य सुन्दर, स्वास्थ, मजबूती तथा गुणवान् होता है यह अपने वाक्पुत्र से विपुल धनोपाधि करता है। राज्य में अथवा किसी बड़े प्रतिष्ठान में कार्य करता हुआ विशेष उत्थान, धन तथा सम्मान अर्जित करता है। यह अपनी बुद्धिमत्ता, इन्द्रिय, हसन एवं वाक्पुत्र के आश्रय पर निर्भर बनता है तथा अपनी सुमूर्त है अनेक काम करता हुआ ऐसी स्थिति में जा पहुँचता है कि धन का आगमन कभी रुकता ही नहीं है, मान - प्रतिष्ठा भी भी कोई कभी नहीं रहती। इसका विवाह २० वर्ष की आयु तक ही हो जाता है। पत्नी बुद्धिमती, चतुरा, सुन्दरी तथा मने उकुला मिलती है। पुत्र - पुत्री भी सुका, चतुरा तथा प्रतिष्ठा के बढ़ाने वाले होते हैं। ४५ से ५६ वर्ष की आयु में यह है २० वर्षीय धन के रूप में लाभ को प्राप्त करता है तथा ७२ वर्ष तक जीवित रहता है।

(१२०६) - इस जन्म कुण्डली वाला जन्मक लक्ष-पुष्ट तथा नीरोग शरीर का, सामान्य सुन्दर, अल्पधन धीरवी, मायावी तथा कृपण स्वभाव का होता है। शारीरिक-दम काल में इसे प्रसन्नता का अनुभव होता है। इसका विवाह कुछ विपन्न से २० वर्ष की आयु तक होता है। पत्नी सुन्दरी, चतुरा तथा मने उकुला प्राप्त होती है। यह वात्सावल्या से ही धनार्जन करता और उस में अथवा उसके आश्रय आकर्षक रूप से विशेष धन का लाभ होता है। किन्तु यह विलास को कार्य को आरम्भ काले टाँस उठाता है। पुत्रों से भी इसे सुख नहीं मिलता। इसकी पत्नी का को चाहती है कि उसे व्यापार करने वाली है। ऊँचावस्था के बाद यह जन्मक सुन्दर ही सामान्य जीवन व्यतीत करता है। इसकी शरीर आयु लगभग ६२ वर्ष होती है।

(१२०७) - इस जलकुचक का स्वामी स्वामवर्ण, मधुरभाषी, अनेक गुणों से युक्त, चित्-मंथित स्वभाव का तथा सर्वविध होता है। इसका विवाह २०-२२ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी कुलीन तथा मनोबुद्धि मालिनी है। यह कुछ समय तक अल्पजुवाही रहता है। फिर पुनर्जाय का पतन होता है। फिर उसके २६-२७ वर्ष की आयु तक सुखी हो जाता है। इसके बाद पत्नी को कष्ट प्राप्त होता है। फिर उसके २६-२७ वर्ष की आयु तक सुखी हो जाता है। इसी अवधि में जानक शत्रुओं का वह आपत्तिक बीमा हो जाता है अथवा मृत्यु को प्राप्त हो जाती है। इसी अवधि में जानक शत्रुओं का वह आपत्तिक बीमा हो जाता है अथवा मृत्यु को प्राप्त हो जाती है। फिर ३० से ३२ वर्ष की आयु में बीडिन होता है तथा पुनः-हीन होकर आपत्तिक कष्ट उठाना है। फिर ३० से ३२ वर्ष की आयु में इसे समिगन-मस्तुओं की उपलब्धि होती है, तत्पश्चात् यह सुखी होता है एवं अपने पुत्रवर्धन का आजीविकोपार्जन भी करता है। इसी अवधि में माजोदय भी होता है। शेष जीवन सुखवर्धन करता है। (युक्त-पुत्रियों का सुख मिलता है) पुत्रादि ६० वर्ष के लगभग होती है।

(१२०८) - इस जलकुचक पत्नी का स्वामी सुख, स्वप्न, मधुरभाषी, सत्य को सुख देने वाला, अपना पुत्री तथा पुत्रवर्धन होता है। इसका बचपन सुख में नहीं बीतता। (विवाह २० से २२ वर्ष की आयु में होता है। विदुषात्मक माजोदय होता है। २२ वर्ष की आयु में वधुपति प्राप्त करता है, वधुपति अपने आप वधुपति से मिलता। उन्नति का न-बला जाता है। राजकीय-सेवा में रहने के पक्ष राजकाय से सम्बद्ध होने का अवसर भी इसे मिलता है। यह अपने आपत्तिकारी को उपलब्ध होता है तथा लाभ उठाता है। इसे उन्नत सन्तान के लिए सुखी होता पड़ता है। ४५ वर्ष की आयु में किसी कठिन रोग का बीका बन का दुःख भोगता है। बाद में स्वस्थ होकर, अकस्मिक रूप से वधुपति प्राप्त करता है। ५० से ५५ वर्ष की आयु में इसे स्त्री का विभोग-दुःख रहता पड़ता है। यह स्वयं लगभग ६८ वर्ष तक जीवित रहता है।

(१२०६) - इस जन्म कुण्डली के अपना महान् पल्लव तब तक लम्बे, पल्लव एवं करीर का एक करिबनी स्वरूप का होता है। यह राजकीय-सेवा अथवा अपने व्यवसाय द्वारा ही धनोपाधि कृतान्तक तथा लक्ष्मी प्राप्त होगे। इसका विवाह २२-२४ वर्ष की आयु में होता है। विवाह के बाद ही इसका भाग्योदय होता है। पत्नी सुखी, चतुर तथा महत्वाकांक्षी होती है। वह पति के सम्मान देती तथा प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग करती है। पति का धन भी बड़ा (राष्ट्रीय तथा अद्वय कर्म कोने वाला होता है)। पति के धन से बहुत लाभ होता है। विष्णु तथा लक्ष्मी का सुख साक्षात्। उत्तम रहता है, पल्लव पुत्र के लिए दुःखी भी रहता है। यह अपने जीवन के २० के वर्ष तक अल्पविक्रम उत्पन्न करता है। इसे वृद्धावस्था में श्वास-रोग का कारण होता है। इसे लगभग ७० वर्ष की आयु प्राप्त होती है।

(१२१०) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी अल्पतः पाण्डु, सुन्दर, बुद्धिमान, गुणवान्, सान्नी, हानी, प्राण कालेन है। अपने धन से इसे बहुत प्रेम होता है, पल्लव अल्प कुटुम्बिकों से संकष्ट अन्वेष्टी रहते। इसके शत्रुओं की संख्या भी अधिक होती है और यह उनसे विरिद्ध भी होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक होता है। पत्नी सुखी, वाक्पटु तथा प्रत्येक कार्य में सहयोगिनी रहती है। ३० वर्ष से ७० वर्ष की आयु तक इसके पास धन साक्षात् प्राप्त होता है। इसकी आयुदरी के मोर भी अनेक होते हैं। इसे अकिण्व-दुष्क का लाभ भी होता है। इसकी कुल सन्तानें दुःख देने वाली तथा स्वर्ग जैसा व्यवसाय कोने वाली होती है। वीर्य की सन्तान सुख देती है। इसकी प्रणति ६६ से ७५ वर्ष के बीच होती है।

(१२११)- इस जन्मकुण्डली का जन्म अनेक सुखों से युक्त, सुन्दर, स्वस्थ तथा धार्मिक होता है। यह अपने ही पुत्रों की एक अवस्था से चतुर्धन है। किसी के आश्रित रहना पसन्द नहीं करता। यह अपने सुखों को पुत्रों के प्रशास्त्र एवं चरित्र बनाने में लगा देता है २२-२४ वर्ष की आयु में मनोबुद्धि की शक्ति होती है। यह प्रदेश के एक कार्य करता है। मजदूर २६ वर्ष की आयु में होता है। इसे विपुल धनोपार्जन पड़ती है। विदेश के अतिरिक्त विदेशों में भी आना-जाना लगा रहता है। आयु के २७, ३५, ३८ तथा ४० के वर्ष में इसे अपनी शक्ति एवं अज्ञान के कारण चतुर्धन भी पड़ती है। यह जातक अपने पिता से तो प्रेम करता है। पान्थ बन्धु-व्यापारों से कोई संकल्प नहीं करता। यह बड़े पुत्र के लिए दुःखी रहता है। माना का सुखी छोड़ा ही मिल जाता है। धनार्थ ७५ वर्ष से ऊपर जाफ होता है।

(१२१२)- इस जन्मकुण्डली का जन्म का, चरित्र, मनस्वी तथा पुत्रों के होता है। यह उच्च शिक्षा प्राप्त करता है तथा अपनी विद्या-वृद्धि के चलते राजकीय सेवा में सेवा करने में सफल होता है। यह अदम्य साहसी होता है तथा किसी भी कार्य में हाराने के बाद एक तक उसमें लड़ना जाफ नहीं करता, जैन से नहीं बैठता। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री सुन्दरी तथा सुशीला मिलती है। पान्थ जातक अपने पिता से भी संकल्प राखता है। पान्थों के प्रति इसका विशेष लगन रहता है। यह दीर्घायु तथा विभिन्न प्रकार की धनोपार्जन करने वाला भी होता है। चतुर्धन के कालों में ही यह सुखी रहता है। छोटे इच्छित-चतुर्धन की उपलब्धि न हो। सन्तान के लिए दुःख भोगता है। जीवन लामासतः सुखी बना रहता है। लगभग ७० वर्ष से अधिक की उम्र में जाफ का प्रत्येक शतक का होता है।

(१२१३)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुदा, बुद्धिमान, विदेशक, सुवक्ता, लेखक तथा कवि होता है। यह विवाह है मंगी, उदार तथा अपनी व्यवहार-कुशलता से सबको प्रभावित करने वाला होता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुदा, मनोरंजनी, चंचल स्वभाव की तथा बात-बात पर हँसने वाली होती है। यह ससुराल से प्यार भी प्राप्त करता है। यह अपने कुटुम्बियों से अच्छा प्रेम करता है तथा उनके प्रति अपने उत्साहपूर्वक कामों में भी भागीदारी वाला होता है। फिर भी इसे अपने लोगों के ही क्षेत्र का विकास करना पड़ता है। ३२ वर्ष की आयु में इसे विशेष कष्ट होता है तथा ३४ वर्ष की आयु में अनेकदिन प्यार का विशेष लाभ होता है। इसका भग्नोदय २८ वर्ष की आयु से होता है तथा ४० वर्ष की आयु तक यह सब उक्त के ऐश्वर्य से सम्पन्न होता है। इसी विधि का भी से भी प्यार करता है। प्रणति ६८ वर्ष तक हो सकती है।

(१२१४)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुदा, स्वस्थ, गुणवान् तथा कलाओं का ज्ञान करता होता है। यह जातक को अपना सहाय और दोस्ताने होता-चाहिए। यह कार्य-कुशल तथा अपना व्यवहार भी होता है। इसे विभिन्न प्रकार के कार्यों तथा असामान्य बातों का ज्ञान होता है, जिनके कारण यह उत्प्रेषण के प्रभावित का होता है। इसका विवाह २२-२४ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा गुणवती मिलती है वह इसे सुख भी देती है। इसे राजकीय-सेवा से लाभ होता है अथवा राज्य से सम्बन्ध के कारण आजीविकोपार्जन करता है। सेवा में रहते हुए भी यह स्वतन्त्र रूप से अलग काम भी करता है। किन्तु इसकी ओर विशेष रूप से आकर्षित होती है। तथा यह स्वयं भी अनेक विषयों से सम्बन्ध रखता है। सामान्यतः जीवन सुख से व्यतीत करता है। वृद्धावस्था में तीव्रतरा होता है। (८० वर्ष से ऊपर की प्रणति प्राप्त होती है।)

(१२१५) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी रक्तवर्ण, स्वरूपवान्, सुदृढ़ शरीर का, मजबूत, उदात्त तथा महत्वाकांक्षी होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनेनुकुला होती है। इसकी आजीविका राजकीय - सेवा से संप्रदा रहती है। यह बहुत धनी तथा हाहासी होता है। विष्णु का भी उत्तम लाभ प्राप्त का होता है। इसे ज्येष्ठ-पुत्र का सुख नहीं मिलता। इसका भाग्योदय स्त्री के द्वारा होता है। यह स्वैयं स्वभाव का भी होता है तथा कविता भी करता है। आयु के २७, ३०, ३४ तथा ३८ वर्ष की आयु में विशेष रूप से लाभ होता है। कुछ अच्छे लोगों के इसकी अकाण्ठी शत्रुता हो जाती है। उनके कारण हानि भी उठानी पड़ती है। ४०, ४२ वर्ष की आयु में इसे बीमारी भी होती है। वृद्धावस्था में यह नीच जाति के का होता है तथा धर्म-कर्म में विशेष रुचि लेता है। इसकी पानायु ८० वर्ष के लगभग होती है।

(१२१६) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य गुणी, धनी, कलाका, विद्वान्, सुदा, स्वभाव, उद्योगी तथा राजकीय-सेवा में रह कर आजीविकोपार्जन करने वाला होता है। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनेनुकुला मिलती है। वह पति को सुखी रखने वाली तथा आह्लादवर्तिनी होती है। आतक का भाग्योदय २७ वर्ष की आयु में होता है। जीवन के २८, ३५, ४६ तथा ५६ वर्ष अल्पतः महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। उनके प्रति इसे कोई लगाव नहीं होता, किन्तु भी आर्थिक-सिद्धि प्राप्त करता, उत्तम बनती रहती है। पुत्र के मृत्यु-संघर्ष नहीं रहते। यह भगवद् भक्त, नीच-प्रेमी तथा दीन-दुःखियों का मित्र होता है। यह मनोवीर व्यक्ति के रूप में जीवन बिताता है। यह बड़ा धर्म-मानी तथा मनी होता है। जो विपत्ति में भी यह शत्रु के सहायक नहीं होता। पूर्ण आयु ७५ वर्ष होती है।

पृ०
सं०
२३०४

कु०
२०

(१२१७) - इस जन्माङ्कक का स्वभाव सुख, सुखवान्, सुखभाषी, व्यवहार - कुशल, चौर - गंभीर, बलिष्ठ, गौरवर्ण, लम्बे कद का, कुछ मोठे होठ तथा लम्बी आँखों वाला एवं पुरुषावर्ती होता है। यह हर समय नवीन ज्ञान तथा कलाओं की खोज में प्रवृत्त रहने वाला, गंभीर स्वभाव का तथा काम मित्रों वाला होता है। यह अनेक गुणों से सम्पन्न, ईमानदार, तुल्य-मिलान तथा किंचित् कोपी स्वभाव का भी होता है। परन्तु हृदय से उदार, आनन्दित तथा योग्यकारी भी होता है। इसे माता-पिता का कष्ट होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में हो जाना है। पत्नी सुन्दरी, पालतु कण्ठ-स्वभाव की होती है। वह सदा ही होते हुए भी अहंभाव से पीड़ित होती है। यह जातक ३२, ३२, ४५ तथा ४८ वर्ष की आयु में विशेष सुख तथा लाभ प्राप्त करेगा। सन्तान का प्राप्ति अभाव है। पुत्रा जेलने का शौकीन हो लकना है। यह लगभग २० वर्ष की पूर्ण आयु वाला है।

(१२१८) - इस जन्माङ्कक वाली वाला जातक लम्बे कद का, गौरवर्ण, हृदय शरीर का, पीसपी, कठिन कर्षण के कामों में आनन्द का अनुभव करने वाला तथा किसी भी कार्य को आत्मिकता के बाद सम्पन्न करेगा। यदि वर्तमान जमाने में निराला मनेजमेंट से लगाने रहने वाला होता है। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु में हो जाना है। पत्नी धार्मिक प्रवृत्ति की, सुख तथा सुमनसा देने वाली तथा कुछ स्मृत शक्ति वाली होती है। इसे माता-पिता का अल्प सुख ही प्राप्त होता है। सन्तान का सुख साधन रहता है। यह जातक अल्पतः मरही तथा गुणवान् होता है। एवं राजकीय-सेवा में निपुण होता है। बड़ी-बड़ी जिम्मेदारी के कामों के कुशलता पूर्वक सम्पन्न करता है। इसकी मृत्यु वास्तव में ५५ से ६० वर्ष की आयु में ही होती है। (यह नोर्गो ओग के वातावरण को अपने अनुकूल बना लेता है) तीर्थ यात्रा करता है। यह लगभग २० वर्ष तक सुखी-जीवन व्यतीत करता है।

(१२१६) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, गौरवर्ण, अत्यन्त महत्वाकांक्षी, गुणवान्, कला-कुशल, साक्षी, काय तन्त्र अथ खका के लोका में रहि रहने वाला, गौरीक-सुखों को सर्वोपरि मानने वाला तथा प्रत्येक व्यक्ति या अपने व्यक्ति के अधिकारों की दाय जालने को समुच्चर करिष्य अर्थात् स्वभाव का होता है पर अपने गुणों तथा योग्यताओं के आधार पर राज्य लेवा के संलग्न होगा अपने उत्तराधिकारों का कुशलता पूर्वक परिपालन करता है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु तक होता है। पत्नी बड़ी मनमिचनी तथा विदुषी होने के साथ ही पति के समागरी महत्वाकांक्षी होती है। उसकी सभी अधिकारों पूर्ण होती है। जातक के अपने पुत्रार्थ से धर्म, भवन, वाहन, मणि-रत्न लेवक अथ सभी सुखों की प्राप्ति होती है, पण्डितान के लिए दुःखी रहता है। इसकी प्रणति २० से २२ वर्ष की होती है।

(१२२०) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वात्म, कठिन परिश्रमी, अपने जीवन के प्रत्येक क्षण को साधक बताने वाला, विद्वान्, कुशिलान् तथा कुशलात् होता है। पदा-कदा जब उसे मनेसुख वासावाण अथवा सफलता नहीं मिलती, तब पर अपने निकटवर्ती लोगों के प्रति उदासीन अथवा असह्य भी होता है। सामान्य, इसे निराला अधिक-लाभ मिलता रहता है। इसका विवाह २०-२२ वर्ष की आयु में होता है, तथापि, यह अन्तरीक्षों से भी प्रेम-सम्बन्ध रावता है। इसकी पत्नी विदुषी, सुन्दरी, मनोबुद्धि तथा मनमिचनी होती है। उसका व्यक्ति भी विशेष उमाकशाली होता है और वह समाज में अपने लिए असमर्थ प्रतिष्ठित स्थान भी प्राप्त करती है। आयु के २०, ३५, ४८ तथा ५२ के वर्षों में जातक को धन का विशेष लाभ होता है। पुत्र कठिनार्थ से प्राप्त होता है। आयु लगभग ८० वर्ष की प्राप्त होती है।

(१२२१)- इस जलकुण्डली में उत्पन्न मुख्य सुखा स्वहृदयवात्, आकर्षक कर्मात्मा सम्पत्ता, दृढ, शरीरका, स्वस्थ, सहज, भावना उद्भात, दूसरों के काम को अपना स्वयम् का करने वाला, परोपकारी तथा आपत्ता पीछानी होता है। इसे अगका लाभ अनेक सूत्रों से होता है। पूर्ण शिक्षा से सुखा लेका यह राजकीय-सेवा में नियुक्त हो जाता है तथा राज्याध्यक्ष से परम-पावन तथा पद्म का उपार्जन करता है। इसका विवाह कुछ विलम्ब से, लगभग ३० वर्ष की आयु में होता है। पत्नी पतले शरीर की, सुन्दरी, गंभीर स्वभाव की तथा पति को विशेष सुख देने वाली होती है। सन्तान का सुख भी उत्तम रहता है। भोग-विलास में विशेष रुचि रखते हुए भी जानक शिक्षा के प्रति भक्ति तथा धर्म के प्रति निष्ठावान् होता है। सन्तान मुख्य उत्तम रहता है। मासोदय २० वर्ष की आयु में होता है। ४५ वर्ष तक सब सुख प्राप्त होता है। प्रकृति २० वर्ष होती है।

(१२२२)- इस जलकुण्डली का स्वामी उत्तम ललाट, विशाल नेत्र, गौरवर्ण, लम्बे शरीर वाला तथा आपत्ता उपावकात्मी कर्मात्मा का धनी होता है। यह वैदिक-प्रभृति पाने वाला, कुटुम्ब में पुत्रवत्, पाला कुटुम्बियों की आँखों में काँटे की भाँति गड़ने वाला होता है। इसके पास धन-आप्त की कमी नहीं रहती। इसका विवाह कुछ विलम्ब से, अपने से किसी निम्नकुल वाली अथवा पादसवालिनी स्त्री से होता है। पत्नी सुन्दरी, आलसके प्रति रहने वाली, धार्मिक-भावनाओं को बढ़ावा देने वाली तथा शिक्षा-भक्ता होती है। इसे पुत्रों का भी परम सुख दे ३० वर्ष विशेष सुखदायक सिद्ध होते हैं। यह अपने वंशकुल से अधिक भवन, वाहनदि-का सुख प्राप्त करता है तथा लगभग ७५ वर्ष की आयु तक जीवित रहता है।

(१२२३) - इस जलकुण्डली का स्वामी कुंभे कद वाला, स्वस्थ तथा बलिष्ठ शरीर का, पतिसर से जी न चुराते हुए भी आलसी स्वभाव का तथा इसी कारण अपने कामों को बिगाड़ लेने वाला, गुणी तथा समझदार होता है। पक्षेष्ट शिक्षा काका यह राजकीय सेवा में किसी उच्च पद पर प्रतिष्ठित होता है अथवा चिद का कोई व्यवसाय खेल का पक्षि या नौ चार्जन का होता है इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, पतिव्रती तथा विशेष क्षेत्र में सहयोग करने वाली मिलती है। माघोदय विवाह के बाद ही होता है तथा ४५ वर्ष की आयु तक पक्षि उन्नति का होता है। यह उन्नावधिल पूर्ण काका का बड़ी कुशलता से सम्पादन करता है। जीवन के ३२, ३८, ४० तथा ४५ के वर्ष बड़े महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। उस समय तक यह विपुल धन का स्वामी हो जाता है। ज्ञान-साध-आत्म रहता है। पूर्ण २० वर्ष से कुछ भी हो सकती है।

(१२२४) - इस जलकुण्डली का अधिपति सुधा, बलिष्ठ शरीर, गौरवर्ण, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, अल्प चतुर तथा अनेक शत्रुओं से युक्त होता है। यह मान-पिता का भय, गुह्यजनों का सम्मान करने वाला, पुत्रवत्, उच्चामिलाकी तथा जाकुमी होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी तथा मने बुद्धि मिलती है। माघोदय भी विवाहोपान्त होता है। आयु के २७, २८, ३४, ३८, ४५ तथा ५० के वर्ष विशेष उन्नति काक तथा उच्च पद दिलाने वाले सिद्ध होते हैं। इसे ज्येष्ठ पुत्र की ओर से सुख नहीं मिलता। बृद्धावस्था में इसे पक्षेष्ट सम्मान तथा समाज में लोकप्रियता प्राप्त होती है। यह तीर्थयात्राओं भी करता है। यशोपकृति तथा दानी भी होता है। जीवन के ६२ एवं ६३ के वर्ष में किसी करीब कीवारी का शिकार करना पड़ता है। पूर्ण २० वर्ष से भी कुछ अधिक हो सकती है।

(१२२५) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुधा, स्वहपवान्, स्वाय, गुणवान्, विद्वान्, श्रेष्ठ स्वभाव का, पुण्डरीक, पीपरी, पान्थु कर्मी - कर्मी आलाप में आकर अपने काम को बिगाड़ लेने वाला होता है। इसे अपने ज्ञान, गुण तथा योग्यताओं के कारण विशेष धीरि पादा होती है। विष्णु का श्रेष्ठ लक्षण होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। विवाहोपरान्त ही भाग्योदय भी होता है। विवाह के बाद यह धन-धान्य से पूर्ण होकर मित्तान् उच्चपद प्राप्त करना चला जाता है। ३२ वर्ष की आयु तक यह सभी प्रकार के सुख-कामों का प्राप्त कर ऐश्वर्य पूर्ण जीवन बिताते लगता है। इस जातक के शत्रुओं की संख्या अधिक होती है, जो इसे आर्थिक-हानि पहुँचाते हैं। इसके भाग्योदय में पत्नी अत्यधिक सहायक होता है, पान्थु सन्तान से कष्ट भी मिलता है, पक्षि भी सन्तानें सुयोग्य भी होती हैं। दृष्टादि ६० वर्ष हो सकती है।

(१२२६) - इस जन्माङ्कचक्र में उत्पन्न मनुष्य सुधा, शैवर्ष, स्वस्व, आकर्षक व्यक्तित्व वाला तथा सज्जन होता है। यह काण्ड-साहित्य का सर्जक, विद्वान् तथा पुण्डवान् होता है। यह धन-धान्य से सम्पन्न तथा सब प्रकार के सुखों का उपभोग करने वाला, जन्म से ही ऐश्वर्य में पालने वाला तथा विभिन्न कार्यों में दक्ष होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। यह राजकीय-सेवा में रहकर अपने अधिकारियों का उसका राजा है तथा धन कमाने के किसी भी अवसर को हाथ से नहीं जाने देता है। माता का सुख वाला वात्सा के ही पित्त जाता है तथा पिता का सुख भी प्राप्त नहीं होता। पत्नी मन्त्रेनुबुद्धि मिलती है तथा पुत्र-पुत्री भी प्रशस्ती, सुधा तथा सुखदेके वाले होते हैं। ३३ वर्ष की आयु से यह विशेष उन्नति करता है तथा सब प्रकार के ऐश्वर्यों से सम्पन्न होकर लगभग ८० वर्ष तक जीवित रहता है।

(१२२०) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य ऊँचे ऊँचे कद तथा कुछ स्थूल शरीर का, सुन्दर एवं ऊँचे आँखों वाला होता है। साहित्य तथा चर्च में इसकी रुचि होती है। पानु वह निरुपमा गयी रहती। कभी-कभी वह अपनी चारित्रिकता का विशेषरूप से प्रदर्शित भी करता है। पानु के अतिरिक्त बहुत मोट होता है। माना-पाना का केवल सुख प्राप्त रहता है। इसका विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुविशिष्ट एवं हानवान होती है। वह इसके प्रत्येक कार्य में सहयोग करती तथा अनेक संकटों से बचाती है। इसके जीवन में हनी का योगदान महत्वपूर्ण बना रहता है। पर राजकीय सेवा अथवा किसी काम उच्च संगठन के सेवा-रत रहने पर तावकी काल है तथा ४०-४२ वर्ष की अवस्था में किसी विपत्ति का भिक्का बनाने का अपने दुर्भाग्य से धुटका पाता (एक पुनः उत्पत्ति का ना हो) प्रकामपुनः दुःखी। प्रगति ७० वर्ष।

(१२२८) - इस जन्माङ्क, पक्ष में जन्म गुह्य को के वाला सुन्दर, सुशील, स्थूलकाय, चारित्रिक, पत्नी, बड़े पौत्रा वाला एवं सुखी व लाभ उठाने वाला होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु तक होता है। पत्नी सुन्दरी, विदुषी तथा स्थूल शरीर की होती है। वह पति को सुख देने वाली होती है, किन्तु भी पानु के अनेक विपत्तियों से भी सम्बन्ध बना रहता है। इसकी शिक्षा रुक-रुक कर होती है। विवाहोपान्त इसका आशेष होना है। पर राजकीय सेवा के हितान्न (हका विपुल धन का उपार्जन करता है) वह कुछ ऐसे कार्यें प्राप्त भी चाने-पाने करता है, जो इसकी सामाजिक, स्थिति के अनुरूप नहीं हैं। इसमें की संगति के कारण ही इसे ऐसे कार्य करने पड़ते हैं। ५२ वर्ष की आयु तक वह बहुत पत्नी होता है तथा समाज के प्रतिष्ठित भी प्राप्त करता है। पुनः-पुनः का पूर्ण सुख मिलता है। प्रगति लगभग ८२ वर्ष होती है।

भ०
सं०
७३०४

कु०
२०

(१२२६) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुका, स्वहजवान, विद्वान् तथा वाक्पटु होगा। यह अपने जीवन के अनेक उत्थान-पतन देखेगा। यह मशहूर होने दुर्भी करी-करी अपकी प्रेम्ण होने दुर्भी अपेक्ष एवं उदा होने दुर्भी अनुदा सिद्ध होगा। इसका विवाह २०-२२ वर्ष की आयु में होगा। पत्नी सुदी तथा मनेकुला मिली है। पुत्र-पुत्रियों का सुखनी प्रेम्ण मिलना है। यह राजपतिक क्रियाओं का ज्ञान, अल्पत मन्त्री तथा महत्वाकांक्षी होगा। राजकाज से प्रेम्ण सम्मान मिलेगा। २५ वर्ष की आयु में राजकीय-विद्या में उच्च पद की प्राप्ति भी सम्भव है। यह बहुत धन कमाता है, वस्तु उसे पुत्र में गँवाने रहने के कारण निश्चिन्ता हो जा रहा है। यह कैच-सीच का विचार किये बिना भोग-विलास में लिप्त रहता है, पुत्र-पौत्रों से दुरा होकर यह लगभग ७२ वर्ष की पूर्ण आयु प्राप्त करेगा।

(१२३०) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुका, स्वाम, सुशील, आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न, पुनी, जन्म ही भागवान्, धनी तथा सम्पत्तिशाली होगा। प्रेम्ण कुल में जन्म लेने वाला यह व्यक्ति सबको सुख देगा। माता-पिता को धन प्रिय होगा तथा बपतक हो के प्रेम्ण एक शक्तिशाली व्यक्ति के रूप में इसकी प्रसिद्धि होगी। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक होगा। पत्नी सुका, सुलभता एवं विदुषी होगी। वह इसे प्रत्येक कार्य में मदद करेगी। विकास पराना ही इसका भाग्यदण्ड होगा। तथा सात-आठ वर्ष के भीत ही यह अपनी आर्थिक-प्राप्ति के आधुनिक उत्थान बना लेता है। इसकी आयु के प्रेम्ण प्रेम्ण होगा। उदा तथा प्रेम्णकारी स्वभाव का होगा। सन्तान-सुख से वरिष्ठ रहता है तथा शत्रुओं की निन्दा भी अधिक होगी। पूर्ण आयु ७५ से ८० वर्ष होगी।

(१२३१) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुका, साल उद्योगिक, जवहल-कुशाग्र तथा मधुगंधी होना है। यह सौम्य, सुका वाचुओं तथा संगीत का प्रेमी, रत्न-प्रिय, सुका निजों का अभिलाषी तथा केवल भोगन एवं ऐश्वर्यपूर्ण रहन-सहन को पसंद करने वाला होता है। यह राजसी स्वभाव का होता है तथा बड़े आदमी की भाँति ही जीवन व्यतीत करता है। यह शिक्षा भक्ता, हमारी तथा अनेक मित्रों के पुका होता है। तबकि राजसी रहन-सहन तथा विवाह शिक्षा (प्रेमवाले अनेक लोग इसके उकर मझवा गुदा शत्रु भी बन जाते हैं। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में सुकरी, माहिनी, परिव्रता एक सर्वदुष्ट लक्षणा। स्त्री के साथ होता है। यह पुष्पक कापति वरि को सहजोग करील का उल्लिखित वर वरुण में सहायिका होती है। जीवन के ४१, ५२ तथा ५७ वें वर्ष विशेष लाभपद होते हैं। पूर्ण आयु लगभग ८० वर्ष की होती है।

(१२३२) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुका, अहस्ता मंगस्त्री, उका, महिष्ठा, महाशुनी, नेहल-शक्ति-सम्पन्न एवं सर्वत्र सम्मान पावे वाला होता है। यह परोपकार के कार्यों में अपने धन का बहुत व्यय करता है। अपने सुलोपयोग, विलास तथा ऐश्वर्यपूर्ण रहन-सहन का भी बहुत खर्च करता है। अनेक निजों से इसके निकलते हैं। स्त्री के द्वारा ही इसका भाग्य बनता है। इसका विवाह २६-२७ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनेगुधुला मिलती है तथा पुन-पुनः काभी पुनः पुनः शादा होता है। ३२ वर्ष से ५६ वर्ष की आयु के बीच यह विशेष उल्लिखित करता है। ६० वर्ष की आयु के करीब बीमारी का शिकार बनता है। ६२ से ६६ वर्ष की आयु के राज्य द्वारा सम्मान प्राप्त करता है। यह आजीवन सुखी तथा प्रशस्ती रहने वाला लगभग ७८ वर्ष की पूर्ण आयु प्राप्त करता है।

(१२३३)- इस जग कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुखा, स्वच्छ नका, अनेक पुत्रों के सुखों के उपलब्ध रहने इत्यादी प्राप्ति, अर्थात्, निराशा नका होना ही बना रहता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुखी, मनीषी, चंचल स्वभाव की, अपने अनेक अधिकारों को देने वाली तथा अपने कर्तितत्व को अलग बनाये रखने वाली होती है। उसके कान्हा भी यह जानक हुन्दी बना रहता है। २२ वर्ष की आयु तक इसे चान की बहुत कमी रहती है। विवाहसमय में भी अनेक बाधाएँ आती हैं। (विवाहोपानि इसका मांगे दण होता है, कि चान की कोई कमी नहीं। तभी तथा चानगम के-अनेक पुत्र हुए जाते हैं।) राजाकनका आ-जीविको पार्जन कोने वाला यह लक्ष्य भूमि, भवन, पशुओं के पुत्र-विक्रय आदिकार्क द्वारा बहुत धन कमाता है। ७२ वर्ष बाद सर्वश्रेष्ठ (मरण आता है) प्रारम्भ २० वर्ष तक हो सकती है।

(१२३४)- इस जग कुण्डली का स्वामी सुखा, सुखी तथा लक्ष्य पुत्रों के हे उर्वराकाय प्रयोगों कोने वाला होता है। कल्याणमा में यह दोष-पीड़ित होता है। पानु १२-१४ वर्ष की अवस्था हो जाने पर यह लक्ष्य व्याधियों से सुखा हो जाता है। यह जीवन लक्ष्य भी विवा-कार्य को हे आजीविको पार्जन आता है। इसका विवाह लगभग २५ वर्ष की आयु के वर्ष में ही लगने वाली स्त्री के हाथ होता है। २७-२८ वर्ष की आयु में इसे भूमिगत वस्तुओं का लक्षण होता है। राजकीय-विवा अथवा आकर्षक-मनसों द्वारा भी इसे अधिक लाभ होता रहता है। यह अपने ही नीच लोगों की निंदा करता, उनका धन लुच काता तथा उन्हीं के लक्ष्य भी होता है। शिक्षा-कार्य में इसे विशेष रुचि रहती है। इसका अनेक पुत्रों निम्न के लक्षण लक्ष्य भी बना रहता है। प्रारम्भ लगभग २० वर्ष होती है।

(१२३५) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुका तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला, जो वणी, गुणवर्णकी तथा सुका तथा पिण्डरी वालों से प्रेम करने वाला होता है। यह पुत्रों का भी प्रेमी होता है तथा विविध विषयों के अध्ययन के विशेष रुचि रखता है। शिक्षा प्रत्येक जगह होती है। विवाह २६ वर्ष की आयु तक होता है। पत्नी सुन्दरी, वाक्पटु, चला, पला दाली भी होती है। इसकी अनेक सन्तानों के गर्भ नष्ट होते हैं तथा पुत्र-पुत्रियों का सुख भी मिलता है। राजकीय सेवा से सम्बन्ध यह व्यक्ति अपना दूधरी, सौम्य स्वभाव का तथा कर्मका पात्र होता है। अनेक युक्त से धन-लाभ होता है। परार्थ-वस्तुओं का भी इसकी सहायता-दृष्टि रहती है। इसका आयु २७ वर्ष की आयु से होता है। ३५ के वर्ष में कुछ कठिनाई आती है तथा ४२ के वर्ष में पुनः विशेष लाभ होता है। यह २० वर्ष तक की दीर्घायु जगह का होता है।

(१२३६) - इस जन्म कुण्डली के उत्पन्न मनुष्य सुका, आकर्षक व्यक्तित्व का धनी, दूधरी, गुणी, विद्वान् तथा अपने पैतृक-कलसाधकी उत्तरी करने वाला होता है। यह कार्य-कुशल, व्यवहार-कुशल तथा व्यापार-कुशल भी होता है। इसका विवाह लगभग २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी वा-जाल, सुन्दरी तथा सुदृ मनी होती है। पत्नी की मोग से इसे दूध सुख मिलता है। इसका विवाह का प्रेम उत्तम होता है तथा सन्तान-सुख भी अच्छा होता है। पत्नी की मोग से इसे प्रत्येक क्षेत्र में सहजोग मिलता है। अतः यह मित्रा उत्तरी कला चलाना होता है। इसके जीवन के ३२, ३५, ३६, ४५ तथा ४७ के वर्ष में, लगभग तथा धन की विशेष वृद्धि करने वाले मित्र होते हैं। राज के द्वारा अथवा राजकीय-सेवा से भी इसे धन का अधिक लाभ होता है। इसकी दीर्घायु लगभग ७०-७२ वर्ष होती है।

(१२३७) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुद्ध, स्वस्थ, गुणी, सारी तन्त्र अपने पुत्रार्थ द्वारा अपने पार्जन का के वाला होता है यह लम्बे कद का, गौरवर्ण तन्त्र आकर्षक व्यक्तित्व का धनी एवं धर्मकर्म का पालन करने वाला, सह विचारों तथा ईमानदार उद्योग का होता है। इसका विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुद्धा तथा मंगल कुला मिलती है। विवाह के पूर्व ही यह प्रदेश की यात्रा करता है कई वर्षों से पार्जन करने का है। इसे धन के प्रति विशेष लगन होता है तथा यह दिन-रात धन कमाने की धुन में ही लगता रहता है। इसकी आयवरी के पुत्र भी अनेक होते हैं। जीवन के ३०, ३५, ३८, ४२, ४६, ५२ तथा ५८ के वर्ष विशेष आर्थिक लाभ प्राप्त किए होते हैं। यह अपने काम का अनुभवी होता है शत्रु इसके सामने पराजित होते हैं। अपने धन से कई भिजों का पालन करता है। संतान के लिए दुःखी रहता है। चोर लगता भी लगता है। दण्डित लगभग ७० वर्ष की होती है।

(१२३८) - इस जन्मांकुलक का अधिपति सुद्ध, स्वस्थ, बुद्धिमान, सगरी तथा कार्य-कुशल होता है। यह लम्बेक पीढ़िपति से अपना काम बना लेने वाला, विरोधियों को परास्त करने वाला तथा अपनी विजय, बुद्धि एवं बौद्ध से प्रतिवर्षी या विजय पागे वाला होता है। इसके पास धन, धान्य, मणि-रत्न आदि की कोई कमी नहीं रहती। यह बड़ी सलाला के धन कमाना रहता है। सामान्यतः यह उदारवृत्ति का होता है। धान्य इसका कार्यक्षेत्र होता पूर्ण भी होता करता है। राज्य तथा राज्याधिकारियों से इसके दामिष्ठ सम्बन्ध होते हैं। इसका पहला विवाह २०-२२ वर्ष की आयु में होता है, धान्य यह दूसरा विवाह भी करता है तथा अनेक भिजों से भी संकषा रावता है। ३० वर्ष की आयु में इसे कठिनाई आती है तथा ३७-३८ वर्ष की आयु में भी कष्ट मिलता है। उसे पा करके यह मुल पूर्वक लम्बा जीवन व्यतीत करता है। आकीमक-आकास भी लगाने है।

(१२३८) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी अतपना साल, सुद्धा, त्वत्प, सादमी पूर्ण, उच्च भादशों वाला मन्स्वी तथा उच्च आकांक्षाओं वाला होता है। यह उत्प्रेक्षक व्यक्ति का उच्चका काल चाहता है। धर्म के प्रति विशेष आस्थावान् होता है। यह तीर्थयात्रा तथा सार्वजनिक कल्याण संबंधी कार्यों में विशेष रुचि लेता है। इसका विवाह लगभग २० वर्ष की आयु में सुयोग्य, सुदही तथा सुभीत स्त्री के साथ होता है। दाम्पत्य - सुख उत्तम रहता है तथा सन्तान - सुख भी अच्छा मिलता है। इसका आयोदय २५ वर्ष की आयु में होता है। यह धन - धान्य पूर्ण, सुखी तथा समृद्ध जीवन बिताता है। इसका व्यवसायी सच्चा चलता है। इसे अपने जीवन में किसी भी कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ता। ६० वर्ष की आयु तक यह व्यक्ति धनी एवं प्रशस्ती वस जाता है। एक लोग इसे अपने अच्छे दिनेश के रूप में मानते हैं। यह २५ से ४० वर्ष की आयु वाला है।

(१२४०) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न समुच्च वाला वाला है ही समृद्ध जीवन में चलता है। यह सुद्धा, त्वत्प, विपदशों तथा प्रमादशाली व्यक्ति का स्वामी होता है। इसका विवाह २० से २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुदही, अनेक कलाओं की जानकार तथा धर्म की अनुगामी होती है। यह जानक विज्ञा - बुद्धि में पूर्ण, परार्थ - सेवा से आजीविकोपार्जन करने वाला हृदय का उद्गा तथा दीन - दुःखियों की सेवा में लगे रहने वाला होता है। इसे किसी बड़े धर्म - छात्र में सेवा करने का अवसर भी मिल सकता है। ३५ से ५६ वर्ष की आयु में यह आध्यात्मिक धन, ज्ञान - उन्नति, प्रसिद्धि, भवन, वाहन आदि का सुख प्राप्त करेगा। इसे कभी सांकीयिक - चोर लगने की संभावना नहीं है। धान्य उसके काल जीवन का हिस्सा नहीं आता। यह सन्तान - पक्ष से सदा सुखी रहता है तथा अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूर्ण करता है, ४० वर्ष की आयु में पालोक्य भवन का होता है।

(१२४१) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुका, स्वल्प, आकर्षक व्यक्तित्व का धारी, तीव्र विचार, क्षमता तथा गुणवान् होता है। इसके लक्षण तथा प्रभाववत्तावत्ता से ही पृथक् होने लगते हैं। विवाहपत्र में इसकी विशेष रुचि रहती है और यह उच्च-शिक्षा लक्ष्यता पूर्वक प्राप्त करता है। यह विवाह तथा उच्च स्वभाव का, मधुराभा की एवं परोपकारी होता है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुधी, मनस्वी तथा जीवनी होती है। यह मधुराभा की, परोपकारी तथा उत्प्रेरक क्षेत्र में पति का सहयोग करने वाली होती है। पुत्र तथा पुत्रियों का पक्षिण सुख प्राप्त होता है। ३५ वर्ष की आयु तक उसे सभी प्रकार की भौतिक उपलब्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं। गृहस्थी का सुख पूर्वक पालन करता है। जीवन के ४०, ४६, ४८, ५३ तथा ५८ वें वर्ष अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। यह धर्म, भवन, वाहन आदि का सुख गेहना हुआ लगभग ६० वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(१२४२) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य सुका, स्वल्प, गौरवर्ण, आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न, ललित कलाओं का प्रेमी तथा जानकार। काष्ण-सादृश आदि के लक्षण में निरूपण तथा अपने कार्य-क्षेत्र का स्वयं-निर्माण होता है। यह चित्रकारी अथवा किसी तकनीकी-विभाग में कार्य करने वाला, अपने पुनर्जाय के बल पर ही उत्थान करने वाला, धन की ओर है सुखी तथा धन की ओर से कार्य करने वाला तथा दीर्घकाल तक धन से अलग रहने वाला होता है। इसका विवाह १७ से १८ वर्ष की आयु में ही होता है। इसका दाम्पत्य-जीवन उत्तम, सुखान्तर-सुख-प्रदायक है। माण्डेय पदस्थ तथा नौकरी आदि सेवा-कार्य में होता है। ३५ वर्ष की आयु तक उसे कार्य उठाता तथा अधिक जीवन्त काल प्राप्त होता है। ३८ वर्ष की आयु में माण्डेय होता है। आक-शिक लाभ के अवसर भी मिलते हैं। तीर्थयात्राओं भी करता है। प्रवासी ८० वर्ष के लगभग होती है।

(१२४३) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी अश्विनी सुका, लम्बा, गुणी, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, बुद्धिमान, गुणवान् तथा सर्वप्रिय होता है। यह अपनी पुत्र का पक्का होता है। इसका काम देने में कुछ और तथा करने में कुछ और होता है। यह धन का सुख देता है। यह पुत्र का शौकीन भी होता है तथा उसे एवं विद्या द्वारा अनोपार्जन भी करता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी की ओर से सुखी तथा मिश्रित रहता है, क्योंकि वह छोटे दायित्वों का सम्पन्न मिलने करने वाली होती है। पुत्री जोग्य होते हैं। आयु के ३२, ४६ तथा ४९ के वर्ष कष्ट पड़ रहे हैं। जानु वृद्धावस्था में सुख प्राप्त होता है। युवावस्था में पर्व पूर्ण होती है। इसे कुछ न करने वाली पक्ष प्राप्त होता है तथा सामान्य सुख के साधन सदैव उपलब्ध रहते हैं। पूर्णपु लगभग २० वर्ष की होती है।

(१२४४) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुका, लम्बे तथा छोटे शरीर वाला, मधुरभाषी, स्वाभिमानी तथा आकर्षक व्यक्तित्व का धनी होता है। इसका जन्म सम्पन्न-जीका में होता है, अतः इसका पालन-पोषण सुवर्ध होता है तथा अपनी विद्या-बुद्धि के बल पर वह उच्च पद पर प्रतिष्ठित हो, आजीवन सुखे प्रयोग करता है। राजकीय-सेवा है इसे पदवि लाभ होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुधी, महेन्द्रकुला तथा उभावकाक्षिनी होती है। विवाह पालन ही माधोपधमी आरंभ होता है। यह धन-धन का सुख देने वाला, शत्रु-पक्ष को पालन करने वाला, दान-पुण्य में रुचि रखने वाला, धार्मिक प्रवृत्ति का होता है। आयु के २५, ३०, ३३, ३५, ३८ तथा ४३ के वर्ष धन एवं सम्मान की वृद्धि करने वाले भिन्न होते हैं। यह सम्पूर्ण सुखों का सम्प्रेषण कराना हुआ लगभग २० वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(१२४५) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी जवा एवं लोच चिमाव का उनीन होने का भी मत से सम्मान
 उपासका शत्रुओं के लिए भी क्षमाशील होता है यह सुख, स्वल्प, गुणी तथा परिश्रमी होता है।
 इसका विवाह लगभग २२ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, मनेगुल्ला तथा अनेक
 कलाओं की कठिना होती है। जातक का आशेष भी पत्नी के साथ ही होता है। लगभग २५ वर्ष
 की आयु तक यह पक्षि चान करता लेता है तथा अपने लहड्डा, लहड्डा एवं चारिके प्रवृत्ति
 के कारण पक्षि मात्र - प्रविष्ट भी प्राप्त करता है। इसकी आयु वृद्धि ३५ वर्ष से ६० वर्ष की आयु
 तक गिना होती है। राजकीय-सेवा में रहकर तत्काल राज्य से सम्मान प्राप्त होता है यह
 अपने पीछी जनों को पशुकी बनाता हुआ, उनमें ईर्ष्या का भाव भी बनाता है। इसे पुन-पुनः
 का शत्रु प्राप्त होता है तथा सुखी एवं पशुकी बनाता है ७२ वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(१२४६) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी लोच चिमाव का, माधुर्यहीन, पञ्च व्यवसाय-कुशल, मदन
 स्वार्थ-निष्ठ करने में चतुर होता है यह शत्रुओं के लक्ष्य भी बनकर तथा उनसे मिलना
 स्थापित करने का होता है स्वयं का अपना काम निकाल लेता है। सम्पत्ति प्राप्त होने की
 कला में यह कुशल होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी
 तथा मधुर चिमाव की एवं चारी पीकार से संवर्धित होती है। जातक मदन चान भी इसी
 के पास राखता है। यह जातक स्वयं अपना कुपण होता है तथा पत्नी की अनुमति के बिना
 कोई कार्य नहीं करता। यह राजकीय-सेवा में रहकर भी पक्षि चान करता है तथा उसकी
 गिना वृद्धि करता रहता है ४५ वर्ष की आयु के बाद इसकी आर्थिक स्थिति मजबूत सुदृढ़
 हो जाती है। यह ७४ से ७८ वर्ष की आयु प्राप्त करता है तथा अपने पीछे बहुत संपत्ति छोड़ जाता है।

पृ०
सं०
3028

कु०
२०

(१२४७) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुका, चिराग, अल्पना पाकुमी तथा अपनी रिक्त ब्रह्म है स्वको
चक्राकृत को देने वाला होता है। उसे अपनी माता तथा बेटे, माँ के द्वारा है अल्पानु से ही वंचित
होता है। छकाता है यह अपनी माता की हृदय का काण भी बनता है। पिता का सुखभी
कम ही मिलता है। यह अपने पुत्रार्थ के बलपु तथा परार्थ-सेना में एक विपुल योगदान
न करता है तथा अपने गुण एवं चारुर्ष से कठिनाई कठका तथा के मनको जीतकर वर्णन लाभ
उठाता है। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी अल्पना सुका तथा मधुमासिनी
होती है। उनके सात कार्यक्षेत्र तथा लग्न में लग्न के विशेष उल्लेख प्राप्त होती है। विवाहोत्पन्न
सात वर्षों तक वर्णन चलागा होता है। कि ५ वर्ष तक कुछ कमी होती है। लक्ष्मण शेष जीवन के
वर्णन चलागा होता है। (हता है) यह धर्म-कर्म में आत्मावान् होने पर लगभग ७० वर्ष की आयु पाता है।

(१२४८) - इस जन्मकुण्डली वाला मनुष्य रुले चिराग का, लीपुन हीर वाला तथा सहसा किसी
किसी उपाधि न होने वाला होता है। इसकी उचउता वाला वलना से ही उकर होने लगती है।
हिमों के प्रति यह अल्पना को नल भावनों राजना है। नकार के भी इसे कोला नहीं देखती तथा
कोई अनुचिन कार्य नहीं कर सकती है। इसका व्यवहार बहुत उलझा हुआ होता है। यह किसी का
विश्वास नहीं करता और न किसी से चपल विश्वास करने के लिए ही कहता है। इसका विवाह
२७ वर्ष की आयु के लगभग होता है। पत्नी मन्मथिनी एवं साहसी होती है। पुत्र होते हैं, पत्नी
उत्तम सन्तुष्ट नहीं रहता। विधा उत्तम सेवी की जाफ होती है, पत्नी उसके लकावे भी आती है।
यह स्वयं ही किसी बड़े काम को करता है तथा अपने वर्णन। उत्तम कोने हुए चानी बनता है।
३० वर्ष की आयु तक इसका उलाहल है वर्णन स्वयं बल पाता है। आयु ७२ वर्ष के लगभग होती है।

(१२४९) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी बुद्ध, स्वरूपवान्, अपने चारों ओर के जानाबुझ के प्रभावित एवं प्रशुल्लभ करने वाला तथा नीचबुद्धि सम्पन्न होता है, तथापि यह सभी महापुरुषों जैसा अर्थात् सभी धर्मों जैसा व्यवहार करता रहता है। मन्त्रार्थ में यह लग्नी प्रकृतिक होता है। यह अपना धर्म भी अपने पास नहीं रखता तथा दूसरों के समस्त विधियों जैसा व्यवहार करता है। इस प्रकार के व्यवहार में यह अपना गुणी तथा निकट सम्पर्क के आने वालों को प्रभावित करने वाला होता है। यह हृदय का उदार, धार्मिक, योग्यकारी तथा सब का भला चाहने वाला होता है। इसका विवाह लगभग २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी बहुत नैयमित्तकता की होती है तथा अपने धर्म, मान एवं उच्च विचारों का अहंकार भी रखती है। इसका योग्य-सुख उत्तम, लगान-सुख केन्द्रित रहता है। विवाहोपान्त विशेष सुख मिलता है। धनी एवं सुखी रहने पर यह २० वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(१२५०) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति बुद्ध, मध्यम कद का, अपना गुण बुद्धि का, गुणी, उत्तम तथा विद्वान् होने पर भी बाले चिन्तन का होता है। यह अपने उच्च के प्रभाव से सम्पर्क के आने वाले सभी लोगों को अपने प्रभाव के रास्ते की चेष्टा करता है तथा अपने अहंकारी (चमत्कार के कारण) चिन्तन की दृष्टि बका रहता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में अपना अहंकारी तथा स्वयं को सर्वोच्च मानने वाली स्त्री के साथ होता है। इस प्रकार का आयोदय जन्म से ही होता है तथा ३० वर्ष की आयु तक यह अत्यधिक उत्कर्ष प्राप्त करता है। इसे राजकीय सेवा अथवा राजा से सम्बन्ध रखने का अवसर भी मिलता है। इसे अनेक विधियों के रहती है, तथापि यह उनमें आसक्त नहीं होता। इसे राज्य से सम्मान मिलता है तथा यह का कोई आश नहीं रहता। यह लगभग २० वर्ष की प्रशुद्धि प्राप्त करता है।

सं०
सं०
2028

कु०
२०

(१२५१) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी बुद्धा (चन्द्रमाला, स्वप्न, आकर्षक, बुद्धिमान, वाक्पटु तथा अपने गुणों का प्रकाश फैलाने वाला होता है। यह काण्व-संज्ञा तथा साहित्य का प्रेमी, उपदेशक एवं अत्यधिक लोकप्रिय होता है। प्रत्येक वर्ष का कार्यान्वयन इसका आद्य-समाप्त काल है। इसका विवाह 20-22 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोउद्बुद्ध, बुद्धि तथा धृष्टमति मिलती है। यह विदुषी तथा अज्ञान से लड़ने की होती है। विवाहोत्सव ही शापक का माघे दश होता है। यह किसी उच्चपद का प्राप्ति होकर अपना अच्छे व्यवसाय आदि के द्वारा प्रफेद पागे-कार्य का है। इसका आजीवन सुखी रहता है। इसे राजा तथा धनी व्यक्तियों द्वारा धन-प्राप्त होता है। जीवन के 32, 34, 36, 38, 40 तथा 42 के वर्ष धन, पशु तथा मान-सम्मान की वृद्धि करने वाले सिद्ध होते हैं। धनगम अनेक लोगों से होता है। यह बुद्धिपीक विनाश दुष्ट 22 वर्ष की दूराधि का है।

(१२५२) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी मन्मथकद का, उन्नतलाला, रक्षा-गौरवर्ष, गोल मुँह, बुद्धिमानों वाला तथा आगे से हृष्ट-हृष्ट होता है। यह संकटों को भी हँसते-हँसते सहन करने वाला, उका, जी, पान्थुकी-कभी भू एवं प्रत्येक जैसा व्यवस्था भी का होता है। इसका विवाह लगभग 24-26 वर्ष की आयु में होता है। पत्नी लम्बे फट की, सौवही, गुणवती मधुमतिनी ल चोर्चवात, लक्ष्मणका तथा बुद्धा (चन्द्रमाला) की होती है। वह गृहस्थी का कुशलार्थ स्वर्ण संचालन करती है तथा सुखी पुत्रों को जन्म देती है। इस शापक का प्रीक राजकीय अथवा किसी बड़े प्राप्ति की सेवा में व्यतीत होता है। यह 22 वर्ष की आयु ही धनोपा-र्जन करने लगता है। इसके जीवन के 32, 34, 36, 38, 40, 42, 44, 46, 48, 50, 52 तथा 54 के वर्ष विद्वत्कृतिक दापक सिद्ध होते हैं। यह 40 वर्ष के लगभग विनाश दुष्ट का लगभग 20 वर्ष तक जीवन रहता है।

(१२५३) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, सुदृढ़ शरीर का साहसी तथा उदात्त स्वभाव वाला होता है।
जिन कार्यों को करने में अन्य लोगों की हिम्मत नहीं होती, उन्हें करने के लिए यह हमेशा तैयार रहता है।
यह प्रत्येक कार्य में अद्वितीय कौशल का परिचय देता है तथा हर जगह सबसे आगे दिखाई देता है।

इसका विवाह लगभग २० वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुन्दरी, गंभीर प्रकृति की तथा प्रत्येक
क्षेत्र में शा-शा सहयोग करने वाली होती है। वह वा-वृद्धि के अतिरिक्त आर्थिक-जान के क्षेत्रों
जलसाधन आदि में भी कंधे-से-कंधा मिश्रण चलाती है। यह कहीं पुत्र-पुत्रियों को जन्म देती है, जो
बड़े होकर आत्मा-पालक एवं सुखदायक सिद्ध होते हैं। इसे कभी-काल कभी नहीं रहती, क्योंकि यह
अपने वाक्पुत्र तथा पैतृक-व्यवसाय के निरन्तर धनोपायन करता रहता है। ५० से २० वर्ष की आयु
में इसे विशेष लाभ होता है। वदवृद्धि एवं राजनयनभी मिलता है। पूर्णाष्टि २५ वर्ष हो सकती है।
(१२५४) - इस जन्मकुण्डली में जन्म लेने वाला व्यक्ति सुन्दर, पल्लु आध्यात्मिक होने स्वभाव का,

कोधी, विद्वान् एवं विज्ञा-बुद्धि तथा तर्क में लक्ष्मी किसी से हास्य मानने वाला होता है। यह
अपने ही विचारों को सर्वोपरि मानता है, तथापि अपनी योग्यता के कारण सर्वत्र सम्मान भी प्राप्त करता
है, पल्लु वह सम्मान अपनी शिवाये का ही होता है, लोग हृदय से ही प्रणाम ही करते हैं। इसका
विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में ही हो जाता है। पत्नी समझदार, बुद्धिमान, परीक्षणी तथा कार्यशील
होती है। वह उदात्तचित्त वाली प्रत्येक कार्य को गंभीरता से करती है। दाम्पत्य-सुख एवं सन्तान-सुख
उत्तम रहता है। विवाहोत्पन्न इसका भोजोद्यम होता है। यह राजकीय-सेवा में रह कर उच्चपद प्राप्त
करता है। ४५ से ५५ वर्ष की आयु तक इसे निरन्तर उच्च-पद प्राप्त होते रहते हैं। यह पूर्ण सुखी
एवं समस्त जीवन बिना किसी लगभग २० वर्ष के अधिक की आयु प्राप्त करता है।

(१२४२)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी बुद्ध, रचय, तीव्र बुद्धि सम्पन्न, पान्थ रुहे चिन्मात्र का अग्रहिण्यु होगा। यह अपनी पुत्र का पक्का, सुदृढमान, पालुमी, गुणवान् तथा पीकरी होगा। हावकि से इसका मन नहीं मिलता। पान्थ पालु-स्त्री के द्वारा इसे विशेष लाभ होगा है तथा उसे सम्बन्ध रखने का इसे अभिप्राय भी रहता है। अतः के मामले में यह अल्पविक्रय होगी। इसका विवाह लगभग २५ वर्ष की आयु में होगा। पत्नी गरीब स्वभाव की होगी। वह लम्बे समय तक बीमार भी होगी। यह विवाह से प्रचुर ही अनोपार्जन और कष्ट देगा। भाग्योप ३० वर्ष की आयु में होगा। यह व्यवसाय तथा पदोन्नति में पराधीन-सेवा द्वारा अतः कष्टाग्रस्त होगा। जीवन के ४५, ४८, ५६ तथा ६० वर्ष विशेष लाभ उपलब्ध है। सन्तान-पुत्र उत्पन्न रहता है। मान-प्रतिष्ठा भी प्राप्त होगी। सामान्य जीवन सुख से बीतता है, कभी-कभी रोगों का शिकार भी बनता है। प्रवाप्ति ४८ वर्ष के लगभग होगी।

(१२४६)- इस जन्म कुण्डली का अधिपति बुद्ध, रचय, पान्थ चिन्मात्र एवं विशाल हृदय का, उदात्त तथा महाकांक्षी होगा। यह अपने चारों ओर के वातावरण को अनुकूल बना लेने में प्रयत्न होगा, पान्थ अपने कार्य में आत्मिक का प्रदर्शन करने हुए, पान्थ काम करने के लिए सदैव उत्प्रेरित बना रहता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी काय में इससे बड़ी लगने वाली, अल्पमत सम्पन्न तथा कृपण स्वभाव की होगी। वह अपनी ब्रह्म-भक्त से जाना क के प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग करती है तथा अनोपार्जन में भी सहायक सिद्ध होगी। इस जाति के कष्टों के व्यवसाय द्वारा विशेष लाभ होगा। राजकीय सेवा से भी लाभ हो सकता है। ४०-४५ वर्ष की आयु तक इसका भाग्य विशेष प्रबल रहता है। अनागत अनेक घटने से होता है। पुत्र-पुत्र तथा बहिष्कार होते हैं। (एक प्रकार से सुखीरुकर यह लगभग ८० वर्ष जीता है)

(१२५७)- इसलगाड़, चक्र में उत्पन्न मधुष्म सुदा, चिम्ब, २६ शरीर का, अल्पमात्री तथा मंत्री चिम्ब का होता है। लोग इसे चण्डी समझने की श्रुति का बैठते हैं। यह अपने वचन का पक्का, किसी को भोगा न देने वाला तथा उपका के बड़े उत्पन्न करने वाला होता है। यह बड़ी सादगी का जीवन बिताता है। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु तक सुदा, गंभीर चिम्ब की पानु प्रति प्रसन्न रहने वाली कक्षा के प्राप्त होता है। विवाहोपान्त इसे राजकीय सेवा में जाने का सुयोग मिलता है। वहीं यह गिन्ता (कलत्र का) चला जाता है। दाम्पत्य-सुख एवं सन्तान-सुख से भरा होता है। विद्या-लाभ भी उत्तम होता है। लगभग ५० वर्ष की आयु में यह उच्चपद पर प्रतिष्ठा लेकर पक्षा पक्ष तथा धर्म अर्पित करता है। वृद्धावस्था में विशेष सुखमिलता है। सब प्रकार के ऐश्वर्य से सम्पन्न होकर यह लगभग ७५ वर्ष की आयु प्राप्ति करता है।

(१२५८)- यह जन्मकुण्डली का स्वामी सुदा, चिम्ब, अपना गुणवान्, विद्वान् तथा अपनी कला द्वारा दूसरों के चित्त को मोहित करने वाला होता है। यह काव्य-साहित्य का सर्जक होता है तथा अपने लेखन एवं प्रकाशन द्वारा सर्वत्र सम्मान प्राप्त करता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी पत्नी-दुखी, पानु स्वल्प शरीर की, सुदा, सुशीला एवं मधुमात्रिणी होती है। यह व्यक्ति की दुकी एवं लौकिक तथा सामाजिक-जगत् में अपना निपुण होता है। इसे विद्वती, सुदृढ़, विद्वान् तथा गुणवती होती है। यह जानक अपने व्यवसाय, राजकीय अथवा किसी बड़े प्रतिष्ठान की सेवा से विशेष लाभ प्राप्त करता है। इसका भाग्यदय प्राप्त होती होता है। धर्म की कमी नहीं रहती। ४६ वर्ष की आयु के बाद उच्चपद एवं विशेष सम्मान मिलता है। वृद्धि ६२ वर्ष होती है।

(१२५६)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी बुद्ध, लज्जपवान, गोलपुंहु, मध्यम ऊँचा, धरद्वे शरीर का होता है। इसकी आँखें बड़ी बुद्ध होती हैं तथा उनके लालना एवं निश्चलना भीकरी रहती हैं। उनके माँका इसे सम्मान देता है। कुलीन माता-पिता का पुत्र होने के कारण यह बचपन से ही बुद्धी जीवन बिताता है। यह या तो वाज्य-सेवा के कोर उच्चपद जाता है अथवा व्यवसाय आदि के द्वारा पण्डित अथवा पार्ष्ण काता है। इसकी आर्थिक स्थिति अजीवन उत्तम बनी रहती है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में सुदृढ़ी नका विधान स्त्री के साथ होता है जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में इसका साथ देती है। सन्तानों का भी उत्तम-शुद्ध प्राप्त होता है। सभी सन्तानें गुणवान्, आलाकारी एवं सुख देने वाली होती हैं। ३५ वर्ष की आयु के बाद इसका विशेष मज्जेद्व होता है। यह जीवन में अनेक प्रकार के ऐश्वर्यों को प्राप्त का लगभग ८० वर्ष की आयु तक सम्मानित जीवन व्यतीत करता है।

(१२६०)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी बुद्ध, लज्जपवान, आकर्षक-कविताय वाला, मधुर मस्ती, सर्वप्रिय, तथापि मध्य-मंगिकारों से सामान्यतः कठोर छतीन लेने वाला होता है। यह अपने कार्य को निपटाने में प्रजः विविध प्रवृत्ति मन्त्रिणीति में रहता है, जिसके फलस्वरूप कठिनताओं का शिकार भी बनता रहता है। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी बुद्धी तथा मनेगुल्ला होती है। यह बड़े-बड़े कार्यों को पूरा करने में भी सफल हो जाता है तथा लालना प्रवृत्ति प्रत्येक अनेक पार्ष्ण काता है। निजों के सम्पर्क से अथवा निज कार्य में निष्ठा भी कार्यरत रहती है, (उन्हे इसे विशेष लाभ होता है) उच्च राजकीय-सेवा का अवसर भी इसे मिल सकता है। ५२-५३ वर्ष की आयु तक यह अत्यधिक तृप्ती का लेंता है तथा सर्वत्र परा-सम्मान भी प्राप्त करता है। श्रृंगार लगभग ८० वर्ष होती है।

पृ०
सं०
६३४४

कु०
२०

(१२६१) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी स्वामि, सुदृढ़, सहज, विद्वान् तथा कलाओं का हवाला होता है।
इसका सम्पूर्ण जीवन पाश्चिम पूर्ण, वैचित्र्य तथा अद्भुत विषयों से परिपूर्ण रहता है। इसके सभी कार्य
अगाध प्रतीतिमान होते रहते हैं। यह जिस काम को भी करने का निश्चय लेता है, उसे पूरा करके ही मानता
है। इसे आकर्षक रूप है धन, संशोधन, उच्च राजकीय-सेवा तथा सेवा व्यवसाय के अनेक उपाय
होते रहते हैं। यह सबके का लाल उठाता है। दीर्घजीवी स्वभाव का होने के साथ ही यह किसी काम में
कठिनाई नहीं उठाता। इसका विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी लम्बे कद की, ऊँची-
ना गेठीवनी तथा जानक को अपने निपलण में (लेने वाली होती है) वह दो परिवार का अपना
पुत्रत्व स्वीकार करे रहती है। पुत्र-पुत्रियों का सुख भी अच्छा मिलता है। यह धार्मिक, वैश्व अनुकूल
रहता है तथा उसे लाभ उठाना है। श्रावण २५ से २७ वर्ष तक की हो सकती है।

(१२६२) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुदृढ़, स्वामि, उदात्त हृदय का, सहायक शक्ति पूर्ण, योग्यकारी
पारमेश्वरी, धार्मिकताओं के अपने अनुकूल बना लेने में चतुर, सब की सहायता करने को उद्यत
तथा किसी के सम्मुख न झुकने वाला होता है। इसमें 'वीरता नहीं' पाई जाती। इसका विवाह
२२-२४ वर्ष की आयु तक होता है। पत्नी सुदृढ़, मनोरुक्मला तथा अपने सद्गुणवत्ता से
सम्पूर्ण परिवार को उत्तम रखने वाली मिलती है। वह गठे हुए शक्ति की, लम्बे कद वाली तथा आक-
र्षक व्यक्तित्व सम्मल, देशालु स्वभाव की होती है। यह जानक ४५ वर्ष की आयु के बाद विशेष
उन्नति करता है। यह विवाहवेत्ता भी हो सकता है तथा राजाधिकारी भी। आयु के ५३, ५२ तथा
६१ के वर्ष विशेष लाभ प्राप्त होते हैं। यह अत्यन्त सुखी धनी तथा प्रशास्त्री जीवन व्यतीत करता
है। श्रावण ७२ से ७४ वर्ष तक लेनी संभव है।

(१२६३) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी शुक्र, स्थूलकाय का, काज, चिकनी, लाहिय तथा अन्य जलिनकलाओं में रुचि रखने वाला, अपनी विद्वत्ता एवं कारिगरी द्वारा अन्य लोगों के, उपायित कामेवाला तथा सब प्रकार के सुखी और सम्पन्न होता है। इसके कुल तथा पत्नी के लोगों की पत्नी होते हैं तथा वे इस जातक का भविष्य बताने में अपना पूर्ण सहयोग देते हैं। इसका विवाह लगभग २५ वर्ष की आयु में सुखी तथा सुलभता स्त्री के साथ होता है। यह उसके आकर्षण में होता है कि कभी-कभी अपने आवश्यक कार्यों को भी बिगाड़ लेता है। यह पारिवारिक विचारों का, कुल तथा देवताओं का भक्त, तीर्थयात्री-प्रेमी एवं शक्ति, भजन, वाहन, सेवकादि के साथ सम्पन्न होता है। आयु के ४५, ४८, ४९, ५६, ५७, ६० तथा ६२ वें वर्ष विशेष लाभ प्राप्त होते हैं। पुत्र-पौत्रों का प्रवेश सुख प्राप्त का यह लगभग २५ वर्ष तक बीचता रहता है।

(१२६४) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मृगश्रु शुक्र, स्थूलकाय, मधुरा मयी, हंसमुख तथा आकर्षक कारिगरी सम्पन्न होता है। इसका वाल्यकाल राजसी वातावरण में बड़े सुखपूर्वक व्यतीत होता है। उसे माता-पिता का पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त होता है। पुत्रावस्था प्राप्त होने पर भी यह उसके दमनधाम में रहती चलने का होता है। राजकीय क्षेत्र में इसका प्रवेश स्वयंसेव होता रहता है। इसका विवाह सुखी तथा सुखवरी (स्त्री के साथ २२ से २५ वर्ष की आयु में होता है) पत्नी भी अत्यंत शालिनी होती है। पुत्र-पुत्रियों का भी प्रवेश सुख मिलता है, पतु एक पुत्र से दमनधाम बना रहता है तथा पत्नी का सुखी वीर्यकाल तक उपलब्ध नहीं होता। पुत्र-पुत्रियों ५० वर्ष की आयु में होता है तथा तीन वर्ष विशेष सुख प्राप्त करते हैं। शक्ति, भजन, वाहन, सेवकादि तथा उच्च के रेशमों का तथा चमड़ा-समान का उपयोग करना इसका २० वर्ष की आयु वाला है।

(१२६२) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी बुद्ध, त्वाजवा, हानी, लाहरी, गुणवार तथा बुद्धिमान होते हुए भी भोगों में विशेष उद्यति राखने वाला होता है। यह अनेक कार्यों को कुशलता पूर्वक सम्पन्न करने वाला, जीवनी तथा लाहरी होता है। इसे सौष्ठव मित्रों तथा भाइयों से सुख प्राप्त होता है। इसका विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में सुदी तथा तुलसीमासी तृती के साफ होता है। वह इसे लक्ष्य प्रकाश में सुदी राखती है। इसका माघोदयमासी तृती के आरंभ हो जाता है। तृती के नाम से व्यवसाय आदि कार्य के यह विशेष लाभ उठाना है। इस जातक को राजकीय - सेवा में रह कर अपनी बुद्धिमत्ता प्रदर्शित करने का अवसर भी प्राप्त होता है। ५५ वर्ष की आयु तक यह उत्तरी के पास स्थित जा पहुँच जाता है। इसे प्रथम पुत्र से कष्ट मिलना है। साधारणतः यह जातक सुखी - जीवन व्यतीत करता है तथा धार्मिक उद्यति का एवं शिक्षा भक्त होता है। पूर्णपु लगभग २० वर्ष प्राप्त होती है।

(१२६६) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी बुद्ध, हृषीकेश, उदा, त्वाजवा, राजकार्य में संलग्न होता है। उच्च पद जाने वाला, नवीन पेशा - सम्मान अर्जित करने वाला तथा हठ प्रकाश में सौभाग्यशाली होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में सुदी, त्वाज, तुलसीपूरण, लाहरी तथा उत्तरेक क्षेत्र में सहयोग करने वाली तृती के साफ होता है। यह जातक उत्साहित्वपूर्ण लाभ उठाने वाला होता है। इसके पुत्रों तथा कला में प्रभावित होकर अनेक मित्रों इसकी ओर आकर्षित होती हैं। जीवन के ३५, ३८, ४०, ४५, ४८, ५२ तथा ५७ के वर्ष विशेष महत्वपूर्ण एवं उत्तरी वापक सिद्ध होते हैं। यह धार्मिक उद्यति का, शिक्षा भक्त तथा सुखी जीवन बिताता हुआ लगभग २० वर्ष की पूर्णपु प्राप्त करता है।

(१२६७) - इस जन्म कुण्डली में उपलब्ध मुख्य कुंजे क्रम का, धृष्ट शशी का, सुन्दर तथा गुणवान् होता है। यह ज्ञान-विज्ञान में रुचिवान्, अनेक कलाओं का ज्ञान तथा नेतृत्व के गुणों से सम्पन्न होता है। यह अपने चोरी ओ के जानाबान को अपने अनुकूल बना लेने में सक्षम तथा अपने पुत्रवार्ध, उपलब्ध की साहस से उच्चपद पर जा पहुँचता है। ५५ वर्ष की आयु तक यह उच्चतम सम्मान एवं पद पावे में सिद्ध हो जाता है। इसका विवाह लगभग २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनुकुला मिलती है, अतः दाम्पत्य सुख उत्तम रहता है। सन्तान-सुख अच्छा नहीं रहता है। इसके जीवन के ३५, ३८, ४२, ४७ एवं ५५ वर्ष बहुत पूर्ण सिद्ध होते हैं। इसके पास धन का अभाव कभी नहीं रहता। यह आजीवन वैभव एवं ऐश्वर्य सम्पन्न बना रहता है। कामों तथा बाह्य ज्ञान-प्रतिष्ठा भी बहुत प्राप्त होती है। यह लगभग ८५ वर्ष की आयु में मृत्यु प्राप्ति का दोड़का पालेक के प्रकाशन करता है।

(१२६८) - इस जन्म कुण्डली का चारों मुख्य चिह्न वात, आकाशिक, हवा को प्रभावित करने वाला, धार्मिक विचारों का, सुशील, हानी, लोक-कल्याण में सुशाल तथा सर्वोपेक्ष होता है। पत्नी इसके आगे-पीछे घूमती रहती है। यह विभिन्न प्रकार के मोक्षों से सम्पन्न, सुखी तथा ऐश्वर्यशाली बना रहता है। यह कलाओं का ज्ञान करता होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुधी, सुशीला, प्रभावशालिनी, कुल के सम्मान को बढ़ाने वाली तथा धन-मर्जदा के राजानियों जैसी होती है। यह जानक किसी उच्चपद को सुसमेतित करता है। धार्मिक तथा दार्शनिक विषयों में इसे विशेष रुचि रहती है। कभी-कभी यह विरको जैसा व्यवहार भी कर सकता है। माना का अल्प सुख प्राप्त होता है। सन्तान-पक्ष की ओर से बहुत चिन्तों रहती हैं। स्वयं का शारीरिक स्वास्थ्य प्रायः उत्तम बना रहता है। शनि ८० के २५ वर्ष की होती है।

(१२६६) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी ऊँचे कदवाला, उन्नत ललाट, दण्डकता हुआ मुखकुण्डल, आकर्षक व्यक्तित्व का धनी, अत्यन्त सुन्दर होना है। यह अपनी सुलला, लहजना, पाण्डित्य, ध्यान तथा ऐश्वर्यपूर्ण रहस्य-सहन से लोगों में अनिष्टित स्थान बना लेता है। यह सहृदयी, विद्वान् तथा कुटुम्ब होना है एवं अपने उदात्त-चिन्ता के कारण आपत्तिका लक्ष्य भी होना है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु तक हो जाना है। पत्नी सुन्दर, वाक्पटु, अपने पति के प्रभाव के दर्प से पूर्ण, जन्म संकुचित स्वभाव की होती है। अधिक लक्ष्य होने के कारण कभी-कभी इसे आर्थिक-कष्ट भी उठाना पड़ता है। इसका सामान्य धर्म सदैव प्रकाशित रहना है। अतः आर्थिक-सिद्धि अधिक दे तक नहीं रिकपाना। इसे लज्जित-वस्तुओं द्वारा बहुत लाभ होना है। रत्न एवं धातु सम्बन्धी कार्य विशेष लाभ प्रदरहते हैं। सन्तान-भाव सामान्य रहना है। पुत्रादि लगभग २०-२२ वर्ष की होती है।

(१२७०) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुन्दर, लम्बे कद का, स्वल्प शरीरवाला एवं सर्वप्रिय होता है। इसका व्यक्तित्व उमावकाशी होना है। यह अनेक कलाओं का हाना तथा हस्त-कला के वाता-वाण से स्वर्ण का नादात्म्य स्थापित करने वाला होना है। धन लक्ष्य करने में यह कुशल होता है। इसका संपूर्ण उच्च-श्रेणी तथा निम्न-श्रेणी - दोनों वर्गों के लोगों से होता है। इसे धन का उच्च लाभ होना है। विवाह २४ वर्ष की आयु तक हो जाना है। पत्नी सुन्दरी तथा वाक्पटु होती है। वह अपने पति के सुखी शक्ती का उपलब्ध करने में सुखी नहीं रह पाती। राजकीय-विषयों में संयुक्त होकर यह लगभग ४०-४५ वर्ष की आयु तक उच्च स्थिति प्राप्त कर लेता है। जीवन के ४२, ५२, ५६, ६० तथा ६९ के वर्ष बहुत लाभ एवं सुख प्राप्त रहते हैं। कभी-कभी शत्रु भी कीड़ित का सामना है। पुत्रादि ७२ वर्ष की होती है।

(१२०१) - इस जन्मकुण्डली का स्थायी सुदृढ़, स्वहृदयान, स्वहृदय नया कुट्टिमन होता है। इसे जीवनांश में ही अनेक छुट्टी-लीची जीवितियों में मुकाबिला करना पड़ता है। माता-पिता का पूर्ण सुख रहनेकुल भी उगरे सम्बन्धों में कड़वाहट बनी रहनी है। बड़े अथवा छोटे मर्द-बहिनो की ओर से भी सुख नहीं मिलना। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुदृढ़, समझदार, मधुर, माधुरी, व्यवहार-कुशल तथा कुछ तेज मिजाज की होती है। जातक राजकीय-सेवा में रहकर धन तथा पद कमाता है। ३० से ३५ वर्ष की आयु में इसे धन का विशेष लाभ होता है। तत्पश्चात् ४५ की बरस की लगभग मरुट होती है। यह निम्न श्रेणी के लोगों के साथ रहना है तथा परस्परों के प्रति भी विशेष रूप से काकर्मित होता है। यह आनन्द-उन्मोद विषय तथा सुखी जीवन बिताते वाला होता है। पुत्रपुत्र तथा आलाकृति होते हैं। पुत्रपुत्र २० वर्ष से अधिक होती है।

(१२०२) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति लम्बे, पतले-दुबले पादु शक्तिशाली शक्ति का, जंगी, उद्विगल, अपने कैवल्य विश्वास रखने वाला तथा मन्द एवं ईश्वर की उपासना करने वाला होता है। यह अपने पादुम से ही उन्नति करता है। २५ वर्ष की आयु में इसका विवाह सुदृढ़ तथा पुणवती स्त्री के साथ होता है। पत्नी समझदार तथा व्यवहार-कुशल होने दुर्लभ-सुदु विचारों की होती है। यह जातक आनन्द-उन्मोद की वस्तुओं एवं जमीन, मकान आदि के कुछ-विशेष से परफा लाभ उठाता है। ३० वर्ष की आयु के बाद इसके भाग्य की निम्न उन्नति होती चली जाती है। इसे आजीवन अवकाश नहीं होता। यह किसी उच्च पदीय सेवा-कार्य द्वारा भी पाने-पार्जन का सकता है। पुत्र-पुत्रियों से सुख मिलता है। ४६, ५२ तथा ५७ के वर्ष कष्टग्रस्त रहने हैं। यह ६२ वर्ष की आयु तक सुखी-जीवन व्यतीत करवा डुका पालोकवासी होता है।

(१२७३)- इस जन्म कुण्डली वाला मनुष्य दुबले-पतले लम्बे शरीर का, कुछ श्यामवर्ण, कठोर चमक का, कुछ बाणों से लगे वाला, तथाकि अपने व्यवहार से सब लोगों को उन्मत्त करने वाला होता है। इसकी आयु २१ के लगभग चारों ओर से बढ़ती है। लगभग २०-२१ वर्ष की आयु में इसका ब्रह्म हो जाता है। यही सुदृढ़ तथा लौहमय शरीर होती है। इसके पुत्र मृगाल के होते हैं, कभी कभी गरीब को भी धन से भर देता है। इसका मातापिता ३६ वर्ष की आयु में चारों ओर से होता है। कहीं कहीं इसे सुखी प्राण होता है। चारों ओर से रहता है। कार्य करने हुए यह पक्षपात नहीं करता है। लगभग ४१ वर्ष की आयु में यह किसी बीमारी का शिकार होता है। शिकायत करता है तथा बाद में स्वस्थ हो जाता है। इसे चिकित्सा शास्त्र में नहीं होती है। शरीर लगभग ७२-७६ वर्ष की होती है।

(१२७४)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी दुष्ट-दुष्ट शरीर का, लम्बा, गरीब, स्वभाव से समान, कुछ निवार देने वाला पतलु भीरा है। कुछ उदात्त एवं अपने स्वभाव के प्रति सदैव सज्ज हो जाता है। यह जिद्दी होने के कारण किसी की बात नहीं मानता। अपने छोटे से स्वार्थ की निम्न के लिए यह दूसरों को बड़ी हानि पहुँचाने में भी संकोच नहीं करता। इसके पास मनुष्य के लिए कोई धन नहीं होता। इसका ब्रह्म २४-२५ वर्ष की आयु में होता है। यही सुदृढ़ होती है तथा उसके प्रति इसका व्यवहार भी बहुत रहता है। विचारों में भी संकोच है। इसका मातापिता लगभग ४६ वर्ष की आयु में होता है। यह चारों ओर से रहता है। किसी भी निवार के लिए तथा इसका शरीर निवार के लिए पतलु बनाकर धन प्राप्त करता है। यह अल्पता से होता है तथा ६० वर्ष की आयु तक चरित्र चरित्र का रहता है। पुत्र से अप्रसन्न रहता है। शरीर लगभग २० वर्ष की होती है।

भ०
सं०
३४४४

(१२७५) - इस जलकुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, चतुर, सलकारी, राजमान्य तथा अनेक कलाओं एवं
सूक्तों की कार्य में कुशल होता है। इसके अनेक शिष्यों से लाभकर रहते हैं। यह धनी, मानी, वंशित
उच्चपदाधीन, रक्षणी, अप्रमदवादी एवं साहसी होता है। इसकी कलाकारीय सर्वत्र प्रकाशनीय होती है।
इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुलक्षणा, सुयोग्य तथा मनस्विनी होती है।
इसका भाग्यदण भी स्त्री के का। ही होता है। २७ वर्ष की आयु में जीवन्त तब यह अचानक का
शिका। गरी बनता। अलग्ग ४६ तथा ५५ वर्ष की आयु में इसे छोड़ सा सामर्थिक कष्ट भवश्य होता
है। इसे शत्रुओं द्वारा भी संकटों का शिका। बनना पड़ता है, तथा यह (की) कठिन शत्रुओं का विजय
प्राप्त का लेता है। इसके जीवन के २०, ३०, ३२, ३६, ४२, ४७, ५१, ५६ तथा ६० के वर्ष विशेष
लाभकर रहते हैं। यह ८०-८२ वर्ष की वामाशु प्राप्ति का होता है।

(१२७६) - इस जल कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वस्थ, बुद्धिमान, कार्य कुशल, कलाओं का ह्वाला, चतुर,
उत्साह दण का तथा क्षमाशील होता है। यह उत्तिक कार्य को पूर्ण पूर्वक का। की अपनी चतुराई
से (उमें) लक्ष्य प्राप्त होता है। यह वंशित, धनी, उपदेशक, राज से सम्मान पाते वाला, राजकीय-सेवा
में (इका) उच्च पद पाते वाला तथा अपनी स्त्री अथवा पत्नी के सहारे उत्थिति करने वाला होता है।
इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोबुद्धि मालिनी है। भाग्यदण
२७ वर्ष की आयु में होते लगता है। चतुर्विंशक ४७ वर्ष की आयु में होता है तथा ६२ वर्ष
की आयु तक विना उत्थिति का। चला जाता है। उच्च अधिकारी एवं राज की इसका बुद्धि बनी
रहती है। जीवन के ३०, ३५, ३८, ४०, ४५, ५२ तथा ५८ के वर्ष विशेष लाभकर रहते हैं। सम्पूर्ण
जीवन सुख से बीतता है तथा शत्रु ७२ से ७४ अथवा ८२ से ८४ वर्ष की होती है।

(११७७) - इस जन्माङ्क चक्र में जन्म जन्म सुद्ध, त्रिष्य, मधु मन्त्री, जैचल स्वभाव का, एकपक्षीय विचार
का है जन्म जन्म होने वाला, हनुनिश्चयी, कर्मविप्रापण, सहृदय, अमर्त्या तथा योग्यकारी होता है। यह
स्व-पराक्रम से अनेकपार्जन करने वाला तथा अपने गुणों के कारण ही मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाला
होता है। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुदृढ़ तथा मनोबुद्धि मिलाती है,
तथापि विवाह के समय ही विविध प्रकार के संकटों का आगमन भी होता है। फिर के कारण कर्मवर्षों
तक दुःख भोगता है। पिता का विमोह भी इसी समय होता है। जेष्ठ पुत्र का सुख प्राप्त नहीं होता।
कलाएँ होती हैं, पालु वे भी अल्प जीवी होती हैं। इसकी आजीविका राजकीय से चलती है। जीवन
में अनेक जन्म चक्रों से होते हैं। सद्गुणी होते हुए भी इसका अधिकांश जीवन दुःख भोगते हुए ही
जमीन होता है लगभग २२ वर्ष की आयु में लम्बी बीमारी भोगने के बाद इसकी मृत्यु होती है।

(११७८) - इस जन्म कुण्डली का त्रिष्य सुद्ध, स्वस्थ, कुछ स्थूल शरीर का, जेष्ठ पुत्र तथा बड़ी-बड़ी
आँखों वाला, मधु मन्त्री, सहृदय तथा आकर्षक व्यक्तित्व का धनी होता है। इसका समय
राज्य देश-पादराजापिने से होता है। इसकी पत्नी भी पूर्व-दक्षिणादि का किसी इकाई
स्वात की निवासिनी होती है। इसका विवाह २६-२७ वर्ष की आयु में होता है। इसकी पत्नी
वाक्पटु, सुदृढ़ एवं व्यवहार-कुशाल होती है। जन्म की आसदती का मुख्य भोग राजकीय
से होता है। तथापि अल्पसाधनो से भी इसे धन का लाभ होता रहता है। ४० वर्ष की
आयु के बाद इसे धन का विशेष लाभ होता है। पत्नी के प्रति यह विशेष चिन्तित रहता है
तथा उसके कारण दुःख भी भोगता है। जीवन के २८, ३२, ३७, ४२, ४६, ४८, ५१, ५६ तथा
६० से वर्ष विशेष लाभ उठ रहे हैं। अष्टमि लगभग ७२ वर्ष की होती है।

(१२७६) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुद्धा, स्थिर, गुणवान्, विद्वान् तथा लोकप्रिय होता है। इसके चारों ओर बुणीजनों तथा चरित्रों का जमजम लगा रहता है। धनी-मानी तथा बुद्धिमान् लोग इसके सम्पर्क में आने के लिए लालाचित होते हैं। यह जन्मक कवि, उपदेशक तथा निर्देशनकर्ता का आशीर्वादको प्राप्त करने वाला होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुद्धा, सौन्दर्यनिधानिनी, शृंगारप्रिया एवं आकर्षक व्यक्तित्व की स्वामिनी होती है। विवाहोपान्त होने अनेक प्रकार के कारणों का सामना करना पड़ता है। गर्भपात एवं सन्तान नष्ट होने के डर से बगैरे हैं। इसका आशोदय लगभग ३० वर्ष की आयु में होता है। पदोन्नति-गमने से इसे धन का लाभ होता है। भोग-विवाह की ओर इसकी विशेष प्रवृत्ति रहती है। अर्थिक-स्थिति सामान्य अच्छी होती है। सामान्य सुखी-जीवन बिताता हुआ यह लगभग ७० वर्ष तक जीवित रहता है।

(१२८०) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुद्धा, तेजस्वी, उपदेशगमक तथा वाणीकाला तथा अपने व्यक्तित्व से सब लोगों को प्रभावित करने वाला होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में सुद्धा कला के साथ होता है। आशोदय विवाह के बाद अभि हो जाता है। ३५ वर्ष की आयु तक यह अपने मन्त्र का निर्माण भी करता है। यह अनेक प्रकार से अपने मार्गों को उकड़ करने में निपुण होता है तथा अपने हाथ करी गरी भूरी धातु धारण करने को विश्वास काते में समर्थ होता है। इसे राजकीय सेवा, सम्पत्ति आदि के कारण से तथा धन की व्याप से आर्थिक लाभ होता है। ४४ वर्ष की आयु में इसे थोड़ा सा कष्ट होता है। पुत्रियों की अपेक्षा पुत्रों की (विष्णु) कम होती है। केवल एक पुत्र होता है। लगभग ६० वर्ष की आयु में इसे अत्यधिक निराशा का सामना करना पड़ता है। इसकी मृत्यु ७२ वर्ष के लगभग होती है।

(१२८१) - इस जन्मकुण्डली में उत्पन्न सुदृढ़, स्वाध्याय, पुण्यकाली, तीव्र मानसिक शक्ति सम्पन्न तथा जीवन के लिए अपना आकर्षण की बातें होना हैं। इसकी उद्दिष्टि गैर-विवाह तथा आत्म-विकास की रहती है। माता का अल्प सुख प्राप्त होता है तथा माता का सुख भी कम ही रहता है। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुदृढ़ तथा मनीषिणी होती है। वह पति की हेचिका तथा मंगलकूल होती है। तथापि जबकि अशरीरों से भी सम्बन्ध रहता है। पट राज कीर्ति-सेवा में रहकर योगोपासना करता है तथा निष्कामि की सेवा में रहते हुए भी अपने साधकों की तुलना में श्रेष्ठ स्थिति प्राप्त करता है। इसे पत्नी से सुख मिलता है। सन्तान-सुख भी श्रेष्ठ रहता है। इसका आशेष पत्नी के माध्यम से होता है। सेवा-कार्य के अतिरिक्त अन्य कामों से भी परधान तथा प्रशान्त का उपार्जन करता है। ५८ वर्ष की आयु में अग्रिम होता है। प्रणति ७५ वर्ष होती है।

(१२८२) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सामान्य बुद्धि, चित्त, भाव, मन्त्र, तथा विभिन्न कामों का धारण होता है। इसे माता तथा माता का अल्प सुख मिलता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में सुदृढ़ कला के माध्यम से होता है। विवाह के पश्चात् इसे कीर्ति का प्राप्त करना पड़ा है। किन्तु स्वयं होकर किसी प्रतिष्ठित कार्य के माध्यम से अपने परीक्षक द्वारा योगोपासना करता हुआ उच्चस्तर पर जीवन-निर्वाह करता है। पत्नी तथा सन्तानों से सुख मिलता है। पौत्रोत्पत्ति होती है। भगवद्भक्ति में इसका मन अधिक लगता है। लगभग ५८ वर्ष की आयु में माता की विशेष अभिवृद्धि होती है। वृद्धावस्था में तीर्थयात्रा करता है तथा दान-पुण्य भी करता है। सामान्यतः सुखी जीवन बिताते हुए ७७ वर्ष की प्रणति प्राप्त करता है।

(१२८३)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुक्र, त्वष्टा, मरुत्वा, उमावकाली तथा सैष्ठ आचरणों वाला होता है। यह अनेक प्रकार के योगों से युक्त ऐश्वर्यशाली जीवन बिताने वाला, काष्ण-साहित्य का पंडित, लोक-विद्वान तथा लोकप्रिय होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में सुदरी, कुशावली तथा विद्वान स्त्री के साथ होता है, जो कार्य-कुशला, शिल्प कला में प्रवीण तथा पण्डितों को प्रसन्न करने वाली होती है। यह जब तक अपने साहस तथा परीश्रम से उत्थित काल है तथा ४० वर्ष की आयु तक विपुल धन तथा प्रसिद्धि प्राप्त करता है। जीवन के ४४, ४६ तथा ५६ में वर्ष अपना महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। यह सुक्र सन्तानों का पिता तथा पुत्रों का सुख देने वाला होता है। पति-पत्नी दोनों ही धारी तथा पोषकाही होते हैं। गुरुजनों का आदर करना इन्हें प्रिय लगता है। ६८ वर्ष की आयु में रोग होता है तथा ३ वर्ष तक बीमार रह कर मृत्यु-गमन काग होता है।

(१२८४)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुक्र, त्वष्टा, कलाप्रिय, शिल्पों में रुचि लेने वाला व्यवहार-कुशल, पण्डित वर्ग की चिन्ताओं से ग्रस्त रहने वाला होता है। यह पाकुमी तथा उत्तरी भी होता है। इसका विवाह २३ से २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुदरी, नेपाचिकी, चान्दनी स्वभाव की होती है। विवाहोत्पन्न इसे वादेश-गमन काग वड़ता है, तथा कुछ समय तक का से बाहर भी रहता है। इसका आशेष अनेक ही स्थान में होता है। यह व्यवसाय अथवा राजकीय-सेवा-दोनों से धन-लाभ काग है। इसके जीवन के ४०, ४३, ४६, ४८, ५८ तथा ६१ में वर्ष बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। इन वर्षों में महत्वपूर्ण कार्यों से भरे तथा धन-सम्मान की विशेष उपलब्धि होती है। इसका उदात्तता बढ़ जाता है कि कुरुम्बी जग इससे दबते तथा ईर्ष्या करते हैं। यह विविध प्रकार के सुखों को भोगता २० वर्ष की प्रशस्ति प्राप्त करता है।

(१२२४) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुधा, आकर्षक मुखमण्डल वाला, बलिष्ठ तथा पुष्टकाय होता है। इसका पालाट उत्तम तथा हाथ लम्बे होते हैं। यह खगाव से कभी तथा कम लोगों से मित्रता रखने वाला होता है। यह अपने काम में सुपचार लगा रहता है। इसे पुत्रा विलने का शौक भी होता है। भोग-विलास के प्रति भी इसकी विशेष आलस्य रहती है। इसका स्वप्न होता है इसी तरह है। पत्नी अल्प सुधा, उमावशालिनी तथा पति को वश में रखने वाली होती है। यह जातक अपने पिता से आर्थिक लिह जाता है, पालु-चाचा से शत्रुता रखता है। यह अपने पिता के नाम से उम्मीद भी होता है। अनेक पुत्र-पुत्रियों का पुत्र प्राप्त होता है तथा अनेक सौतेले बच्चे पैदा कमाता है। इसे शत्रु तथा शत्रु का कभी भय नहीं होता। ४१-४८ तथा २७ के वर्ष विशेष लाभ प्राप्त रहते हैं। पूर्णाष्टि ७२ वर्ष की होती है।

(१२२५) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुधा, चिह्न, आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न, कला-कौशल जीविकोपार्जन कातापड़ना तथा पदों में उच्च आश्रय होता है। यह अपने पुत्र, भगवत्पुत्र एवं ज्येष्ठता के कारण सर्वत्र सम्मान प्राप्त करता है एवं स्वको अपना मित्र बना लेता है। इसका विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुधी, सुशीला, स्वार्थ एवं सुखदेनेवाली होती है। पति-पत्नी दोनों ही भाग्यशाली होते हैं, अतः आर्थिक-स्थिति उत्तम बनी रहती है। इसे अनेक व्यक्तियों तथा अनेक स्थानों से लाभ होता है। ४० वर्ष की आयु तक यह अनेक पुत्रों का पिता बन जाता है। जीवन के २७, २८, ३२, ३६, ४१, ४५, ४८, ५२, ५६ तथा ६० के वर्ष विशेष लाभ प्राप्त रहते हैं। वृद्धावस्था में इसे स्वास्थ्य रोग होता है। पूर्णाष्टि ८० वर्ष की होती है।

(१२२७)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मुख्य सुखा, गुणवान्, बुद्धिमान, अनेक कलाओं का ज्ञाता, चहुँप, मधुर तथा प्रभावशाली वाणी बोलने वाला, अत्यन्त आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न तथा लोकमान्य होता है। इसका सम्पूर्ण जीवन अत्यधिक सुख में बीतता है। यह धन-धान्य, भोग-विलास, भूमि, गवना, वाहन, निवास आदि के सुख से सम्पन्न बना रहता है। इसका विवाह लगभग २४ वर्ष की आयु में सुखी, सुलक्षणा तथा पूर्ण अद्वितीय कला के ज्ञाता होता है। २५ वर्ष की आयु में इसका चित्त हलके भावोदय होता है। पुत्र-पुत्री, वैभव आदि की विनाश दृष्टि होती रहती है। दाम्पत्य सुख तथा संतान-सुख उत्तम रहता है। यह उच्च पदों का परिष्कृत होकर राजमात्र तथा लोकमान्य होता है। इसके जीवन के २५, २८, ३२, ३८, ४२, ४७, ५१, ५६, ५८ तथा ६२ वें वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। यह लगभग ८० वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(१२२८)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुखा, सुशील, चमत्कार, ज्ञानी तथा अनेक गीतों के ज्ञाता विद्या करने वाला होता है। यह अपने परीक्षक, पाठक तथा सम्पन्न से धन प्राप्त करने का अपनी सम्पत्ति की अनेक प्रकार से अभिवृद्धि करता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है, पत्नी सुखी तथा विदुषी होती है। दाम्पत्य एवं संतान-सुख विशेषमान के उपलब्ध होते हैं, तथापि सन्तान की ओर से चिन्ता एवं व्यग्रावस्था रहती है। इसका भावोदय २५ वर्ष की आयु में पहले ही होता है तथा ३० वर्ष की आयु तक यह अत्यधिक परिष्कृत प्राप्त करता है। इसे राज से सम्मान प्राप्त होता है। देश-विदेश की भाषाओं के अनेक अवकाश मिलते हैं तथा अनेक बड़े परिष्कारों से इसका सम्पन्न बना रहता है। यह अनेक माँगों से धन तथा पशु प्राप्त करता है एवं आजीवन सुखी रहते हुए लगभग ८० वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(१२८८)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुधा, स्वहृदयान्, स्वल्प तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है।
 चहराजली-स्वभाव का, हानी, विहारी, विद्वान्, मनोहृ कान्तिमान्, कला एवं साहित्य का शौंता तथा
 सृजन करता होता है। यह अत्युच्च श्रेणी तथा निल-श्रेणी - दोनों वर्गों के लोगों से सम्बन्ध रखता है
 तथा अभी से आदा-समान पाता है। इसका विवाह उच्च कुल की कन्या के साथ २३-२४ वर्ष की आयु में
 होता है। पत्नी सुदृढ़ तथा मनोबुद्धि मालिनी है। दाम्पत्य तथा सन्तान सुख उत्तम प्राप्त होता है।
 यह राजकीय-सेवा में रहकर उच्च पद को प्राप्त है तथा ४० वर्ष की आयु में सफलता के सर्वोच्च
 शिखर पर जा पहुँचता है। पुत्र-पुत्रियों की ओर से यह सुखी रहता है। इसके जीवन के २५, २८,
 ३१, ३६, ४०, ४३, ४७, ५०, ५४, ५८, ६१ तथा ६५ वें वर्ष विशेष लाभ उपर रहते हैं। २८, ३२, ३८,
 ४३, ४६ तथा ६६ वें वर्ष में शारीरिक-कष्ट संभव है। पूर्णायु ८० वर्ष होती है।

(१२८९)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुधा, स्वल्प शरीर का, आकर्षक व्यक्तित्व वाला,
 विद्या-कुटु में श्रेष्ठ तथा उच्च शिक्षा सम्पन्न होता है। यह साहित्य, काव्य, तकनीकी-ज्ञान तथा
 चिकित्सा-विज्ञान में भी रुचि रखने वाला होता है। यह किसी उच्च राजकीय-पद पर प्रतिष्ठित
 होकर धन तथा पत्रा का उपार्जन करता है। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में होता है।
 पत्नी विदुषी, सुदृढ़ तथा मनोबुद्धि मालिनी है, तथाकि इसका आकर्षण अन्य मित्रों के प्रति भी
 रहता है। यह सुधा पुत्र-पुत्रियों से सम्पन्न होता है तथा २४ वर्ष की आयु में उत्तम कामात्मिक
 कार्य, ६० वर्ष की आयु तक गिना उत्तम काल चलता जाता है। जीवन के २४, २६, २८, ३२,
 ३७, ४१, ४८, ५२, ५६, ६० तथा ६२ वें वर्ष विशेष उत्तम काल रहते हैं। यह सब उका में
 सुखी एवं सम्पन्न जीवन बिताता हुआ लगभग ८० वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(१२६१) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुदा, स्वस्थ, दृढ़शील वाला, जंचल चित्त का एवं मनमोही होता है। यह स्वर्ण आदि धातुओं का पारखी, धर्म-कर्म का पालन करने वाला, कुल-पारम्परा का निर्वह करने वाला, व्यवसायी तथा लोक-प्रसिद्ध होता है। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुदा, अँच-नीच समझने वाली, कार्य-कुशल तथा सुखदायक होती है। वह अपनी धुक-धुक से गृहस्थी का सफल निष्पादन करती है। परिणामस्वरूप प्राप्ति का लेती है। यह जातक मनस्वी होने के साथ ही अभिमान-चित्त भी होता है, अतः इसके बहुत से काम बिगाड़-भीजाफा करते हैं। यह अपने जीवन के २५ वें वर्ष में पैतृक-व्यवसाय से मिल कोई तथा कार्य आरम्भ करता है तथा ३५ वर्ष की आयु तक उसके द्वारा पक्षि-धनोपार्जन का होता है। देश-परदेश में सम्मान प्राप्त है। पत्नी हेतु कष्ट पाता है, पान्थ सन्तान कार्यदक्ष होती है। प्रसूति २५ वर्ष होती है।

(१२६२) - इस जन्मकुण्डली का अधिपति सुदा, बुद्धिमान, उत्प्रेक कार्य को कुशलता से सम्पन्न करने वाला, कुछ दिनों तक पैतृक-व्यवसाय में संलग्न रहने के बाद राजकीय-सेवा को अपना लेता। पिता के द्वारा प्राप्त प्राप्त का पारिवारिक-सम्पत्ति का उपभोग होता है। यह कुटुम्ब के मूल-पोषण सम्बन्धी दायित्वों का कुशलता पूर्वक निर्वह करता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुदा, गृहस्थी के दायित्वों का पालन करने वाली, परि-प्रापणा पान्थ अल्प-सुखी होती है। २२ से ३५ वर्ष तक की आयु में यह जातक विविध प्रकार के संकटों से गुस्त रहता है। इस बीच शत्रु-पीड़ा, सम्मान-हानि तथा दूष्ण-आमल आदि की घटनाएँ घटती हैं। बाद में अन्तिम सुख मिलती है तथा धर्म, भजन, वाहन कारित्व प्रकाशित सुख तथा सम्मान की उपलब्धि होती है। ७२ वर्ष की आयु के पश्चात् ८२ वर्ष की आयु तक होता है।

(१२८३) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी बुद्धा, स्वस्थ, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, पालु अर्थात् चित्रा एवं ह
समय जगत् का उद्दिग्न बना रहने वाला होता है। यह शत्रुओं से भयभीत रहता है तथा इसके व्यवहार के
कारण ही शत्रुओं की निष्ठा बढ़ जाती है। यह कुछ आचरण का तथा निमकोटि की बातों का विशेष
ज्ञान देने वाला होता है। इसे (वच) - रोग भी होते होते हैं। यह पैतृक - सम्पत्ति को जफा करता है
तथा पारिवारिक दायित्वों का पालन भी करता है। पैतृक - व्यवसाय का। धनी भी होता है। इसका विवा
ह २५ वर्ष की आयु तक होता है तथा भाग्योदय विवाहोत्सव (स्त्री) के का। ही होता है। कि यह
नित्य उत्तमि का। चला जाता है। विजा - बुद्ध तथा वस्तुता के बल पर यह सर्वत्र प्रमाण जफा
करता है। अधिक चतुराई के कारण कभी - कभी दुःख भी उठता है। पत्नी स्वयं भद्रा तथा कार्य-कुश
ल होती है। २८, ३२, ३८ एवं ४५ के वर्ष विशेष लाभ उपलब्ध होते हैं। (पूर्णाष्टि २४ वर्ष के लगभग होती है)

(१२८४) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति बुद्धा, कठोर चिन्तक का, सबको प्रिय न लगने वाला
तथा अहंकारी होता है। तथापि यह सब लोगों से पही कहता रहता है कि मैं अपना निर्मिमाही
हूँ। इसे शीघ्र ही क्रोध आ जाता है। कि शीघ्र ही शांत भी हो जाता है। यह स्वयं ही दूसरों से
उपमा करता है तथा अर्थात् - चिन्ता का होता है। यह अपने वेषभूषण को पुकर नहीं होने देता,
इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पालु पत्नी - सुख अधिक समय तक जफा नहीं लेता
इसके शत्रु अकारण ही उत्पन्न होते हैं। कि यह उनके का। भी पाला है। इसे भूमि - भवन का। के
व्यवसाय का। प्रदेश के का। विशेष लाभ होता है। कुछ समय तक सेवा कार्य का। भी
(आजीविकोपार्जन करता है) ४५ वर्ष की आयु के बाद इसका समय सामान्यतः अच्छा बीतता है
तथा सामान्यतः सुखी बना रहता है। पूर्णाष्टि २९ वर्ष के लगभग होती है।

(१२६५) - इस जलकुण्डली में एकता मनुष्य सुदा, स्वामिणी, कुध लम्बे कदका, इकट्टे बदन का तथा अपनी ही धुन में मग्न रहने वाला होता है। यह उत्प्रेक कार्य को खूब सोच-समझ कर तथा विलम्ब से करता है, पालु इनके का काम करने में शीघ्रता प्रदर्शित करता है। यह हृदय से उदात्त तथा स्वयं हामी उठा कर भी इनके के काम पहुँचाने वाला होता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुदा तथा मनोयुक्ता मिलती है। विवाह के बाद ही भाग्योदय होता है। इसका उत्तमि-पक्ष का अंग होना कुध लोगों के लिए ईर्ष्या का विषय बनता है और वे अकांक्षा ही इसके शत्रु बन जाते हैं। पालु यह अपनी विद्या-बुद्धि का सभी शत्रुओं को पराजित कर देता है। इसके पेट का भेद कोई नहीं जान पाता है। राजकीय सेवा से इसे विशेष लाभ होता है। बहुत देन तथा मान से शीघ्र विभोग का कार्य भी उठाना पड़ता है। ज्येष्ठपुत्र से भी पुत्र मिलता है। पामासु ७१ अथवा ७६ वर्ष की होती है।

(१२६६) - इस जलकुण्डली का स्वामी स्वभावतः प्रशासनिक-क्षमता रखने वाला, अपने बहुत-बाधाओं में प्रभाव, सुदा, गुणवान्, साहसी तथा कीर्त्तनी होता है। यह कार्य, साहित्य, चित्रकला एवं विलास के अध्ययन में रुचि रखने वाला तथा स्वयं की कमाई से चरनी होने वाला होता है। यह राज्य अथवा अथवा किसी बड़े प्रतिष्ठान से सम्बद्ध रहकर आजीविकोपार्जन करता है। इसका विवाह २४ २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुदा, अच्छे विचारोंवाली तथा मनीषिणी होती है। यह अच्छे पुत्रों का सुख प्राप्त करता है। माना का सुख भाग्य में नहीं होता, पालु यह-बहुओं के समूह में होता है। ४३ वें वर्ष में विशेष रूप से भाग्य-बुद्धि होती है। ६२ वें वर्ष में भी आकस्मिक रूप से बहुत लाभ होता है। यह महाधनी होकर ६२ वर्ष की आयु तक जीवित रहता है तथा सर्वत्र परा-समान प्राप्त करता है। लगभग ७२ वर्ष की आयु तक जीवित रहता है।

(१२६७) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न जातक सुका, भाग्य, मोहक व्यवहार वाला, स्वल्प तथा सबको प्रिय होता है। यह योग्यकारी, उदात्त, बुद्धिमान, विद्वान् तथा लेखन-कार्य एवं शिल्प आदि हेतु प्रिय योग्यार्जन करने वाला होता है। यह सम्पन्न परिवार में जन्म लेता है, अतः वाल्पावस्था से ही सुखी-जीवन बिताता है तथा आजीवन सुखी एवं धनी बना रहता है। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में सुखी, गुणवती तथा सतीचरी कन्या के साथ होती है। वह सुदृढ़ नेत्रों वाली, मधुरभाषिणी तथा जातक को उचित सलाह देकर उसका कल्याण करने वाली होती है। सन्तान-सुख भी प्राप्त होता है, किन्तु भी यह जातक पत्नीयों की ओर आकर्षित होता है तथा उनके धन का उपभोग भी करता है। इसे मान ले कर मिलता है, वस्तु-वस्तुओं की ओर से सुख नहीं मिलता। यह विवाह से सुखभी होता है तथा इसे अपना धन-वर्च करने में पीड़ा होती है। इसकी प्रवृत्ति ७१ अथवा ८१ वर्ष होती है।

(१२६८) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुका, आकर्षक, गुणवान्, धनवान्, साहित्य-निर्माता, शिल्पज्ञ तथा वाल्पावस्था से ही धन की वृद्धि करने वाला होता है। इसे ऐसे लोगों से धन प्राप्त होता है, जिनके विषय में कोई कल्पना तक नहीं का सकता। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुका, मधुरभाषिणी, उमलनादायक, सेवामयी तथा उचित सलाह देने वाली होती है। स्त्री के साथ से कोई काम करेगा। इसे विशेष लाभ होता है। इसका मज्जोदध विवाहोप-रान्त भाग्य होता है तथा जीवन के ३८, ४१, ४७ एवं ५६ वें वर्ष अधिक उत्तम सिद्ध होते हैं। ३२ वर्ष की आयु में अधिक समय के लिए बीमार पड़ता है, मनुष्यान्त स्वल्प होकर बहुत धन कमाता है। इसे राज्य द्वारा भी धन-सम्मान की उपलब्धि होती है। इसकी अधिकतर कामनाएं पूरी होती हैं, आयु ६८ अथवा ७८ वर्ष की होती है। कुछ उत्कर्ष रश्मियों लाभकर होते हुए भी पूरी नहीं हो पाती।

(१२८८)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी बुद्ध, स्वर्ण, केमल भक्तियों तथा दुर्लभ कर्मों वाला होता है। धन-धन, स्त्री-पुत्रों के लक्ष सुखों के रहने हुए भी इसे लक्षण नहीं होता। यह सदैव संपूर्ण बना रहता है, पान्थ उपलब्ध करने का भी इच्छित वस्तु को कठिनाई से ही प्राप्त कर पाता है। इसका विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी अल्प बुद्ध, केवल स्वयं की, सद्गुणी, कार्य कुशलता का-गृहस्थी को हलाल करने वाली तथा सहजगील मिलती है। पान्थ इसके मार्ग में स्त्री का प्रभाव नहीं होता, इसके लिए यह सदैव चिन्तित बना रहता है। ३६वाँ वर्ष इसके लिए विशेष शुभ लाभ होता है, कि ४५ तथा ५३ के वर्ष भी अच्छे जाते हैं। कई गर्भ गिरने के बाद इसे एक या दो पुत्रों की प्राप्ति होती है, जो सद्गुणी होते हैं। इस जातक का इसमें का बहुत ज्ञान पड़ता है और यह सार्वज्ञिक सीमा तक उनकी बात मान लेता है। इसे प्रगति २० वर्ष की प्राप्त होती है।

(१३००)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी बुद्ध, बुद्धिमान, अवहा-कुशल तथा चतुर होता है। इसके पास वैदिक-धर्म के अतिरिक्त चोकारित धर्म भी प्रचलित पाया जाता है। पश्चिम का यह अपनी आयु में निराला बृद्धि का बना रहता है। इसे राजकीय-सेवा से भी लाभ होता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु तक हो जाता है, पान्थ स्त्री के लक्षण रहने के कारण इसे स्त्री-पुत्र नहीं मिलता। सन्तानें होवहा निकलती हैं और वे लब्ध में कम होती हैं, प्रायः ही उपलब्ध पूर्वक ही जीवन रह जाती हैं। यह ४२ वर्ष की आयु में अपना मकान बनवा लेता है। राजकीय-सेवा में प्रवेश विवाहोपरांत ही पाता है। ४२ वर्ष की आयु में इसका धर्मोदय होता है तथा ५० वर्ष की आयु तक वह चोत्कृष्ट पा जा पहुँचता है। सामान्यतः सम्पूर्ण जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होता है। स्त्री तथा सन्तान कष्ट के अतिरिक्त अन्य कोई कष्ट नहीं होता। पान्थ २३-२४ वर्ष की होती है।

(१३०१)- इस जल कुण्डली का अधिपति साधव शुक्र, स्वल्प, दुश्चिन्ताओं से भिन्न रहने वाला तथा जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में करिगरों का अनुभव करने वाला होता है। इसे कार्य-निष्ठ हेतु धर्म-धर्म का संबंध बना पड़ता है परन्तु अपने धर्म तथा धार्मिक के बल पर यह विना सगे बंधन चला जाता है। यह अपना मतही, बुद्धिमान तथा सत्यवादी होता है। इसका विवाह २२-२३ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुदृढ़, युवावली तथा बुद्धिमान होती है। वह शरीर, लक्ष्मण तथा जलक भी प्रसिद्धा को बनाने वाली होती है, पालन जलक को धान-अन्न का मायाचित करने से स्त्री-पुत्र का लाभ नहीं होता। जैसे यह अन्न अनेक रीतों से भी प्रेम-सम्बन्ध रावता है। यह कभी-कभी शरीर जैसा व्यवहार भी करता है तथा कभी-कभी अभावगुण जीवितों के कोरे में भी आ जाता है। लगभग २२ वर्ष की आयु से इसे सुख मिलता है। पूर्ण २० वर्ष तक हो सकती है।

(१३०२)- इस जल कुण्डली का स्वामी शुक्र, स्वल्प, साधारण काली तथा धर्म एवं धर्म से संबंधित वस्तुओं एवं कार्यों का चेतोपाधन करने वाला होता है। इसका अन्वेषण जो देश में होता है तथा ३५ वर्ष की आयु तक यह विपुल सम्पत्ति अर्जित कर लेता है। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुदृढ़ होती है। यह उसके लोचन से अभिभूत होकर विलासी बन जाता है तथा उसकी सलाह से ही प्रत्येक कार्य करता है। यह ४० वर्ष की आयु तक अपना सुखमय न बना लेता है। ४२, ४६ तथा ४८ के वर्ष में आकस्मिक रूप से चोर लगने की संभावना रहती है। यह काज, लालच तथा संगीत का प्रेमी होता है। वाला वाता में इसे छोड़ा कष्ट अवश्य उठाना पड़ता है, पालन बाद में आजीवन सुख भोगता है। जीवन के ४१, ४२, ४६, ४३, ४४, ४८ तथा ६१ के वर्ष विशेष लाभ उठ रहे हैं। पूर्ण २० वर्ष की होती है।

(१३०३)- इस जलकुण्डली का स्वामी सुदा, चित्तपवार, आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न, मधुर मुस्कान तथा मीठी वाणी वाला; चरी-मानी तथा अपने गुणों के कारण सर्वत्र सम्माननीय होता है। यह अपना उदा; परोपकारी, चतुर तथा सर्वप्रिय होता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुदा, सुख तथा सुनोद दासक होती है। यह उल्लेख कार्य इसी की सम्पत्ति से करता है। यह अपना वाक्प्री होता है तथा अपने पुत्रार्थ के बल पर नये- नये कार्यों को आरम्भ कर के उनके सफलता पाता है। जीवन के ३३, ३६, ७२, ४४, ५४ तथा ५६ वें वर्ष बहुत सम्मान, धन तथा प्रशंसा देने वाले मिले होते हैं। पत्नी से कभी- कभी किंचित् मतभेद भी हो जाता है तथा पुत्र- पुत्रियों के लिए दुःखी भी रहता है। विष्णु का लाभ अच्छा रहता है। माना, पिता, माता, बहिन तथा जीजाजीजनों से सम्बन्ध सामान्य रहते हैं। पाना २० वर्ष के लगभग होती है।

(१३०४)- इस जलकुण्डली में स्वामी मनुष्य सुदा, बलिष्ठ, भौतिकवादी, तथापि गुरुजनों का आदर करने वाला, कुछ-कुछ दार्शनिक-प्राप्ति होता है। यह अपने पिता से पूरा निरह, सहयोग तथा उत्साह प्राप्त करता है। अपने पुत्रों के भी इसे आदर तथा प्रेम मिलता है और उनकी सहायता से इसे कार्य- व्यवसाय में लाभ भी होता है। इसका विवाह २० वर्ष की आयु तक होता है। पत्नी सुदा, विद्वान्, सुशील तथा ऐश्वर्ययोग कोने वाली माधवकालिनी होती है। यह विवाहोपान्त पुलिस अथवा सेना विभाग में काम करने हुए उच्च पद पर जा पहुँचता है। ३७ से ५६ वर्ष की आयु तक इसे किसी प्रकार का दुःख नहीं होता। यह स्वयंभूत से अथवा किसी स्त्री की सहायता से सम्पत्ति को प्राप्त होता है। यह जल तथा वायु सर्वत्र मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करता है तथा सुखी जीवन बिताते हुए २० वर्ष की पाना प्राप्त करता है।

(१३०५) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुकर, सुखी, सर्वविध, इच्छा-भक्त तथा स्व-पराक्रम से द्रव्योपार्जन करने वाला होता है। यह अपने कुल में विज्जान, कार्य-कुशल, सुवका तथा सर्वज्ञ समान जाने वाला होता है। इसे माता-पिता का पूर्ण सुख प्राप्त होता है। यह शुच, सौन्दर्य तथा विद्या-बुद्धि में अपने माँ में बढ़का होता है। इसका विवाह २२ से २४ वर्ष की आयु में विदुषी तथा मनचिन्ती कला के साथ होता है। विवाहोत्पत्ति ही इसका आशोदय होता है। यह निमोचजोगी, सौन्दर्य-प्रसाधक तथा श्रंगार से संबंधित वस्तुओं के व्यवसाय से धनोपार्जन करता है। होटलों तथा क्लबों का भी भी लाभ होता है। यह ४५ वर्ष की आयु में वादेस में लगे हुए अपनी अत्यधिक उत्कृष्ट कलाओं को सबको इसका प्रदर्शन करता है। इसकी उत्कृष्टता में पत्नी का भी विशेष योगदान रहता है। इसके कार्यक्षेत्र में गरीब लोग भी आते हैं। इसे पुत्रों से सुख मिलता है तथा पूर्णपु ६० वर्ष हो सकती है।

(१३०६) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी दृढ़ तथा स्वात्म शरीर वाला, भौतिक-पुत्रों के प्रति विशेष रुचि रखने वाला पुलित्वा अथवा वैदिक उल्लिखित में कार्यरत रहने हुए सब की सुखा करने में उपलब्ध होता है। इसका विवाह २९ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुदृढ़ मिलती है, तथापि अप्रतिभे से भी यह बहुत लज्जक रहता है तथा उनके मोह में पड़ कर अपने आवश्यक कामों को भी बिगड़ लेता है। इसका आशोदय ३२ वर्ष की आयु के बाद होता है। यह नीच लोगों की संगति में रह कर अपने मन में संतोष का अनुभव करता तथा उनसे लाभ भी उठाता है। इसे पुत्र-पुत्री, पीका, धन-सम्पत्ति, धर्म, भवन, वाहन आदि का प्रचण्ड सुख प्राप्त होता है। यह जीवन्म सुखी, धन-सम्पन्न तथा राज्यमान बना रहता है। कुटुम्बियों में इसे मान-सम्मान प्राप्त होता है तथा बाह्य भी आदर मिलता है। पूर्णपु ८२ वर्ष हो सकती है।

(१३०७)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुदा तथा हल्-दुल शरीरवाला, स्वयं के जाकुम से प्रेम-
मिल, काक-कला-लालिल का हारा, हानी; माना-पिता तथा माता से सुलभ पाने वाला; बहिनो
तथा अन्य पत्नीयों के हरेह से पूर्ण, जन्म से ही सुदी, भाव-मका, धर्मिता तथा हनी के प्रति
विशेष रूप से अनुकूल होता है। इसका विवाह इसकी स्वयं की इच्छा अनुसार २४-२५ वर्ष की आयु में
मनेकुपला कला के साथ होता है। यह पत्नी से सुलभ प्राप्त करता है तथा उसके प्रेम से अभिभूत
बना रहता है। इसका गण अथ ह्यार्थ से सम्बन्ध रखने वाले व्यक्ति को अथवा प्रतिष्ठा के
साधन में जो देस में चमकता है। इसे राजकीय-सेवा का अवसर मिलना भी संभव है। ३२ से
४६ वर्ष की आयु तक यह धर्मिता धनेकार्थी कालेता है। इसे सर्वत्र श्रद्धा तथा सम्मान की दृष्टि से
देखा जाता है। इसके संबंध कई लिखे जा रहे हैं। संतान के लिए दुली हता है। लगभग २७ वर्ष की पूर्णपुत्रता है।

(१३०८)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी बुद्धिमान, धर्मवान, अपनी विद्वत्ता द्वारा लोगों को चमकृत
करने वाला तथा सर्वत्र प्रशंसा-सम्मान पाने वाला होता है। यह जो देस में चला तथा मान के माना
है और वही हका उन्नति का है। धन-धन्य से सम्पन्न होने के लिए यह धन का शौकीन होता है।
यह दूसरों को सुख देने के लिए निराला के कार्य तथा कुसंगति से भी धन कमाता है। इसे धन का
अल्प सुख मिलता है। यह दूसरों के लिए अथवा भी उठता है, तथा यदि किसी व्यक्ति को स्वयं से
अधिक महत्व पाने के लिए देवता है, तो उसे मन-ही-मन देख भी मानता है, पानु उसे न हो किसी
उकट का है और किसी को हानि ही पहुँचाता है। इसका जो देस में होता है। विवाह २४ वर्ष
की आयु में मनेकुपला, सुदी कला के साथ होता है। संतान से सुलभ तथा शत्रु से धन मिलता है।
४०, ४३, ४८, ५० तथा ६२ के वर्ष लगभग रहते हैं। पूर्णपुत्र २५ वर्ष होती है।

(१३०६)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुक, सुकी, सम्मल, अनेक कलाओं का ज्ञान, शिल्प, काज-साहित्य-सर्जक तथा पशुपति होता है। यह आकर्षक रूप से मिलने वाले लोगों से, बाहरी प्रतिष्ठानों से संबंधित कार्यों का बहुत अधिक होता है एवं उपदेश, वक्तृता, आदेश आदि के माध्यम से धर्मोपनिष्ठा काता है। यह वाला वृद्धा में रोगी तथा युवावस्था में सुखी एवं लज्ज रहता है। पिता का अल्प सुख मिलता है। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुक, मधुरभाषिणी एवं आलाकांगी होती है। इसका भाजोदय भी विवाह के बाद ही होता है। २० से ३५ वर्ष की आयु के बीच यह विशेष सुख प्राप्त करता है। इस अवधि में धन भी खूब कमाता है। यह प्रदेश में रहकर अपने उपदेशों अथवा वक्तृता द्वारा सबको मोहित करता हुआ पशुपति काता है। विद्वान्-विद्वान्-उत्तम (१३१०)- इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुक, मधुरभाषी, गुणवान्, पशुपति तथा महाकांगी होता है। इसका भाज प्रबल होता है। अतः इसकी उत्प्रेक आकांक्षाएँ पूरी होती हैं। इसे पैतृक-धन भी मिलता है तथा राजकीय-सेवा एवं भागी लेगी विपुल धन का लाभ होता है। भूमिगत दण मिलने की संभावना भी रहती है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुक, सरल, उत्तमपुत्र तथा मधुरभाषिणी होती है। यह अपनी पत्नी से अत्यधिक प्रेम रावता है तथा उसकी उत्तमता हेतु अपने आवश्यक कार्यों को भी त्यागित कर देता है। इसे पिता का अल्प-सुख मिलता है तथा बड़े भाई का सुख भी नहीं मिलता। २६ से ३५ वर्ष की आयु तक यह बहुत धन कमाता है। अन्त में भी-उम-हं कंध रावता है, पण्डित लगभग ३०-३२ वर्ष की आयु में होने वाली शारीरिक-अक्षमता उत्प्रेषणीक सम्भव नहीं होने देती। यह लगभग ४५ वर्ष की आयु में राजकाज वाली पालोक वाली होता है।

(१३११) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी इकट्ठे शरीर का, सुन्दर, आकर्षक व्यक्तित्व एवं गंभीर स्वभाव का, गुणवान्, बुद्धिमान, विद्वान् तथा अनेक प्रकार के सुख-साधनों हे सम्पन्न होता है। इसकी हचिजों विविध प्रकार की होती हैं। एक ओर तो यह साहित्य एवं कला का प्रेमी होता है, दूसरी ओर तकनीकी कार्य तथा श्रमिक विषयों में भी इसकी रुचि बनी रहती है। इसका विवाह २१ से २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, समझदार, चंचल स्वभाव की, कला-कौशल की जानकारी एवं कई पुत्रों को जन्म देने वाली होती है। इसी पुत्र गुणवान्, आलाकारी एवं भाग्यशाली होते हैं। इसका भाग्य २८ वर्ष की आयु में उदय होता है। यह चत्वारिहेतु परदेस में जाता है, परन्तु बाद में स्वदेश में ही लौटकर उत्थिति करता है। जीवन के ३०, ३५, ३६, ३८ तथा ४५ वें वर्ष बहुत लाभप्रद सिद्ध होते हैं। यह अपने पीछा से ही उत्थिति करता तथा नया सुरुवाती जीवन बिताता है। पूर्णतः ८० वर्ष के लगभग होती है।

(१३१२) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वात्म, दृढ़ निश्चयी, अपने पुरुषार्थ या ही भोगों को वाला तथा प्रकटन। ईश्वर की सत्ता में विश्वास न करने वाला होता है। इस जातक का दाम्पत्य-जीवन सुखमय नहीं रहता। यह अपनी स्त्री को फिलाने भी सुख से क्यों न लें, फिर भी वह जीवित नहीं रह पाती। दो या तीन विवाह होने भी संभव हैं। इसके पुत्रों की संख्या एक से अधिक होती है, परन्तु उन्हे मातृ-सुख नहीं मिलता। वे अल्प विधवा बाल-बोहे जाते हैं। पहला विवाह २५ वर्ष की आयु से पहले ही होता है। भग्योदय २८ वर्ष की आयु से परदेस में होता है। ३५ वर्ष की आयु तक यह बहुत धन एकत्र कालेगा है तथा अपनी सम्पत्ति का उपयोग भी रख करेगा है। राजकीय अथवा किसी अन्य प्रतिष्ठान की सेवा अथवा व्यक्ति विशेष की नौकरी में इसके जीवन का अधिकांश भाग व्यतीत होता है। लगभग ८० वर्ष की आयु तक यह जीवित रहता है।

(१३१३)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य अल्पना सुद्धा, चित्त, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, भाव-
विश्वामी तथा प्रभावशाली होता है। यह तीव्र बुद्धि सम्पन्न, व्यवहार - कुशल तथा दूरदर्शी होता है।
इसे पिता का अल्प-सुख प्राप्त होता है। यह विविध कारणों से सुख-हीन जीवन बिताता है, अतः
स्वभाव से हवा बन जाता है। इसे अपना दुःख दूर करने के लिए अथक परिश्रम करना पड़ता है। इस
का विवाह २०-२२ वर्ष की आयु में होता है, पालु स्त्री अल्पायु होती है, जिसके कारण इसे दाम्पत्य
सुख प्राप्त नहीं होता। इसी विवाह से भी सुख नहीं मिलता। वह स्त्री भी शीघ्र मर जाती है। इस
जातक का भाग्योदय जो देस में होता है। ४०, ४५, ५१ तथा ५८ वर्ष में इसे बहुत धन प्राप्त
होता है। किन्तु के पुत्री इसे कोई आसक्ति नहीं रहती। यह समजोदुसा व्यवहार करने में कुशल होता
है तथा धन का अदम्य नहीं करता। प्रकृति लगभग ७० वर्ष होती है।

(१३१४)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी गुणवान्, कलाओं का ह्याता, स्थापित-मर्मज्ञ, सुद्धा, चित्त
तथा चिकित्सा-विद्वान् अथवा शिल्पकला में प्रवीण होता है। यह अल्पना धनी तथा सम्पत्तिशाली
होता है। इसे धन का निराला लाभ होता रहता है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में होता है।
पत्नी सुद्धा, मनस्वी, तेजस्वी तथा सबको अपने अनुशासन से ताना पसन्द करने वाली होती है।
यह जातक को उत्प्रेक क्षेत्र में सहयोग करती तथा आगे बढ़ाती है। जातक की प्रतिष्ठा बढ़ाने में
उसका विशेष हाथ होता है। विवाहोपान्त जातक के धन, पशु तथा प्रभाव की वृद्धि होती है।
यह अपने पराक्रम द्वारा शत्रुओं को पराजित करता है, राज्य द्वारा सम्मान प्राप्त करता है तथा
राजकीय-सेवा में उच्चपद भी प्राप्त करता है। इसे सुद्धा तथा विद्वान् पुत्र-पुत्री प्राप्त होते हैं, जो
इसकी प्रतिष्ठा को बढ़ाते हैं। प्रकृति लगभग ८० वर्ष होती है।

(१३१५) - इस जलकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य काल्पावस्था में रोगी रह कर कष्ट पाता है, बाद में शरीर में सुख, स्वास्थ्य तथा वलित होता है। यह अपना साहसी तथा ऊँच उछामी होता है। अपने कार्य-व्यवसाय में जो भी शीघ्रता के साथ होता है बाद में राजकीय-सेवा में भी छवेष करता है। यह अपनी वक्तृता, लेखन, शिल्प, गुरु आदि में बड़ा सर्वत्र उद्योगी पाया जाता है। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनेतु कुल मिलती है। वह नैजिचिनी, मनसिनी तथा पुत्रवार्धिनी होती है। ३५ वर्ष की आयु में इसे आत्मिक प्रसिद्धि प्राप्त होती है। यह पानक अपनी योग्यता तथा विद्वत्ता के कारण राजमान्य होता है तथा इसका शासन भी राजकाज पाली होता है। इसकी कामदनी के अनेक भोग होते हैं, अतः यह वैभवपूर्ण सुखी जीवन व्यतीत करता है। इसे पामासु लगभग २२ से २४ वर्ष की उम्र होती है।

(१३१६) - इस जलकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुख, स्वास्थ्य, पादुमी, साहसी, अपने ही अथवा वरुण द्वारा पाये पार्वत कोने वाला तथा अपनी पत्नी दृष्टि से सामने वाले के मनोभावों को साँझ में कुशल होता है। यह बुरी का अभाव में होता है। इसे उच्च राजकीय-सेवा द्वारा पान का लाभ होता है। २२-२३ वर्ष की आयु में ही यह विभिन्न भोगों द्वारा पान करने लगता है। इसका विवाह २४-२५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा अद्वितीय होती है। दाम्पत्य सुख उत्तम होता है। इसकी पत्नी के चरणों पर उठकर भी इसे सुख पहुँचाती है। पुत्रावस्था में पीरकाल तक इसे 'लेगो' का शिक्का बरना पड़ता है। आकस्मिक रूप से गीत-गायन जोरलगा का पापल भी होता है। पञ्च यह उमरे वंचनादुक्त लगभग २० वर्ष की आयु प्राप्त करता है। अपने जीवन के अन्त में कुछ समय पूर्व ही यह विपुल सम्पत्ति एवं मान-प्रसिद्धि का स्वामी बनता है।

(१३१७)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुखा स्वरूपवान्, अनेक विद्याओं को पाने के वाला, विनायक-
बुद्धि युक्ता, अपने पापों से अपनी तथा अपनी भोग्यता एवं विद्वत्ता के कारण सर्वत्र आदर प्राप्त करने
वाला होता है। यह जातक वास्ती से सम्बन्ध रखने वाला, उसके कार्य को करने वाला तथा उसके धर्मों
अपनी वृद्धि करने वाला होता है। इसके धर्म-प्राप्ति के मोक्ष अचिन्त होते हैं। इसे धर्म का आत्म-
सुख मिलता है। विवाह २४-२६ वर्ष की आयु में होता है, पान्थ पत्नी से कष्ट मिलता है। यह
राजकाय में संलग्न रहता तथा राजसाम्य होता है। इसके जीवन के ३०, ३३, ३८ तथा ४७ के वर्ष
बहुत उत्कृष्टि प्राप्त होते हैं। यह अपना कृष्ण होता है तथा पुत्रों का भी इसके धर्म की वृद्धि
की जाती है। इन सबके बावजूद भी यह स्वयं से असन्तुष्ट तथा दुःखी रहता है। भौतिक-सुख
जीवना तक उपलब्ध रहते हैं। लगभग २० वर्ष की आयु में इसकी मृत्यु होती है।

(१३१८)- इस जन्म कुण्डली में इत्यन्त मनुष्य सुखा, चित्त, मालाचमय का, उदात्त, पान्थ मज्जता
में कष्टों एवं छोपी होता है। यह विद्या एवं ध्यान का धनी, मन्त्र-विद्याक तथा दूरदर्शी होता है।
इसे माना की ओ से कष्ट होता है और उसके कारण कभी-कभी बहुत दुःखी होता है। इसका विवाह
२२-२३ वर्ष की आयु में अपना माल, समस्त धन, मन्त्रिणी तथा सामान्यतः दुःखी-परीक्षा की कष्ट
के साक होता है। पान्थ वह धीरे-धीरे इसे अपने पुत्रों से लेकर समस्त दुःखों को भूल जाती है।
यह जातक राज-सेवा में रहता राजसाम्य होता है तथा अनेक पुत्रों से धर्मोपाधर्म का होता है।
इसे अनेक कार्य में प्रफलता मिलती है, क्योंकि इसका भाग्य बलवान् होता है। इसे पुत्र तथा
कन्या-दोनों सन्तानों की प्राप्ति होती है, पान्थ वे बड़े कष्ट से ही जीवन रह पाते हैं तथा
होता भी निकलते हैं। इसकी पान्थ लगभग २३ वर्ष होती है।

(१३१८)- इस कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य मजबूत हड्डियों वाला, पुष्ट शरीर, सुघोरेच्छुक, उच्च कार्यों को करने के लिए सदैव उत्पन्न, शांततापूर्ण तथा दुष्ट-लोक होना है। यह राज में उच्च पद प्राप्त करता है तथा पश्चिम अथवा व्यापारिक हो सकता है। यह बहुत धनी, चतुर तथा प्रतिष्ठित पीढ़ी में जन्म लेने वाला, अनेक विधियों में कामकाज तथा दीर्घस्थिती होता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु तक होता है। पत्नी बहुत सुन्दर, चतुर तथा सुशील होती है और वह वरि के अनेक अविशेष बनाये रखती है। इसका शांतिपूर्ण विवाह के बाद ही होता है। इसे लोगों से अधिक प्रसन्न बनाकर अच्छा नहीं लगता, इस कारण लोगों से दूर रहने से ही तथा उनके से कुछ लोग शत्रु भी बन जाते हैं। इसे अपनी ही चिन्ता रहती है। लोग के साथ ही धर्म-कर्म में भी इसका मन लगता है। यह ७२ वर्ष की आयु में, अथवा कि ८२ वर्ष की आयु में पालोक-गहन करता है।

(१३२०)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी बुद्धि, स्वाभाविक शक्ति का, मान-पिता के पुत्र से युक्त, अनेक शत्रुओं वाला, बुद्धि, सुशील तथा प्रतिभावान् होता है। इसका मन धार्मिक कार्यों में अधिक लगता है। यह दीर्घजीवी भी बहुत करता है। इसे आकाशिक चोरे लगने का भय भी रहता है। इसका विवाह २०-२१ वर्ष की आयु में ही होता है। पत्नी सुन्दर, विविध कलाओं की जानकार, चतुर भाषिणी, धर्म-पीढ़ी के सभी लोगों को प्रिय तथा प्रसन्न करने वाली एवं सुखवती होती है। इसका शांतिपूर्ण भी विवाह पतन ही होता है। यह छोटे ही दिनों में अपनी योग्यता एवं नीतिमत्ता बहुत धन कमा लेता है तथा ३५ वर्ष की आयु तक राजकीय सेवा के किसी उच्च पद पर प्रतिष्ठित होता है। यह धनुर धन कमाता है तथा अनेक गुणों की चिन्ता भी करता है। इसे पुत्र की ओर से काय होता है ५२ वर्ष की आयु तक (बुद्धि-वर्धक) होता है तथा ८५ वर्ष की आयु तक जीवन रहता है।

(१३२१) - इस जन्म कुण्डली में उपजा मुख्य सुका, स्वप्न, उदा, चित्त का, सारिल-सर्जक, शान्त, विज्ञान के तत्वा गुणवान् होता है। यह उमर का जो को कोने वाला, भुमरोच्छु, सारसी, कला-कौशल से युक्त तथा चर्च के लोक-प्रतिष्ठित कोने की हीव इच्छा रावेन वाला होता है। इसका विवाह २२-२३ वर्ष की आयु में काल-कला-रसिका, कला-प्रेमी, सुकरी तथा गुणवन्ती स्त्री के साथ होता है। यह अपनी पत्नी की ओर से सुखी रहता है तथा विवाहोपान्त विशेष उन्नति भी करता है। ३० वर्ष की आयु तक यह पुत्र धन कमा लेता है। यह राजाओं की मंत्री रहनेवाला उच्च पद एवं सम्मान पाने वाला तथा सुखी-जीवन बिताने वाला होता है। ५२ वर्ष की आयु तक यह लोक में अपने लिए महत्वपूर्ण स्थान बना लेता है। इसकी प्रथम सन्तान को कष्ट होता है। आगे की सन्तानों की रक्षा के उपाय को आवश्यक है। पाना पुत्र लगभग ६० वर्ष होती है।

(१३२२) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुका, धनी, मानी तथा उग्र-स्वभाव का होता है। इसे कोप जल्दी आ जाता है और शान्ति भी शीघ्र होता है। इसके व्यवहार में हठापन पाया जाता है। जिसके कारण इसे स्वर्ण भी कभी-कभी बहुत कष्ट उठाना पड़ता है। यह अन्तर्मुखी प्रवृत्ति का होता है तथा अपने मनोभावों को बहुत दबा कर रखता है। इसे शत्रुओं का काम कोने में बड़ा गुल मिलता है। इसका आन्तरिक स्वभाव भी शत्रुओं जैसा ही होता है। जैसे यह बड़ा साहसी तथा जी-जमी होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी से सुख मिलता है, पानु सन्तान का कष्ट रहता है, क्योंकि बालक जीवन नहीं रहते हैं। स्त्री को भी इससे कष्ट होता है। इसका आगे का २२ वर्ष की आयु में होता है। यह राजकीय-विवाह २६ का उन्नति करता है। यह कष्ट से पूर्व कुछ समय तक बीमारी का कष्ट उठाना है तथा ७२ से ८२ वर्ष की आयु तक का होता है।

(१३२३) - इस जल कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य मधुर स्वभाव का, सुन्दर, ललित कलाओं में हृदि रावने वाला, शास्त्रीय-आचारों का पालन करने वाला तथा सद्गुण सम्पन्न होता है। इसका विवाह २२-२३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, मनोबुद्धिमान तथा गुणवती मिलती है। वह ऐश्वर्यवती तथा प्रत्येक क्षेत्र में पति का सहयोग करने वाली होती है। विवाहोपान्त ही इसे धन-धान्य का लाभ होता है। दाम्पत्य-सुख में कभी तटस्थ नहीं रहता। धन लाभ अनेक विधियों की ओर आकर्षित होता है और उसे हाथ में पकड़ने में सक्षम होता है। इसे सन्तान के लिए कष्ट सहन पड़ता है। स्त्री के संबंध में भी दुःख भोगना पड़ता है। उसे ४५, ४८, ५२ तथा ५७ वर्ष की आयु में बहुत धन प्राप्त होता है। धान्य भी बहुत कटाना पड़ता है तथा उसे खूब लाभ भी उठता है। यह समाज में प्रतिष्ठित स्थान बनाये रखेगा, सामान्यतः सुखी जीवन बिताता है। इसकी प्रमायु ७७ से ८० वर्ष तक हो सकती है।

(१३२४) - इस जल कुण्डली का स्वामी सुन्दर, मधुर भाषी, व्यवहार कुशल, उदार स्वभाव का, गुणवान्, बुद्धिमान, सहायी तथा विद्या का धनी होता है। यह युक्तिपूर्वक मधुर वाणी बोलता है, जो सबको प्रभावित करती है। यह साहित्य तथा विज्ञान का ह्वाता, सहायी तथा धर्म-कर्म में हृदि रावने वाला होता है। यह शक्यतः तथा कुछ कार्यों द्वारा लाभ प्राप्त करता है। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है। स्त्री परिश्रमशील तथा प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग करने वाली मिलती है। इसके जीवन में उन्नति के अनेक मार्ग प्रशस्त होते हैं तथा उसमें इसके भाग्य बहुत लाभकारी प्रतीत होता है। आयु के २३, २४ तथा ३३ वें वर्ष विशेष लाभ प्राप्त होते हैं। इनमें यह किसी नये कार्य में प्रवृत्त होता है तथा उसे लाभ उठता है। ५६ वर्ष की आयु तक खूब धन कमाता है। नौकरी अधिक सम्पन्न नहीं करता। प्रमायु ७५ वर्ष होती है।

(१३२५)- इस जल कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुदृढ़, रचरूपवान्, अनेक कलाओं का ह्वाता, गुंफ लेखन साहित्य-संपर्क, विद्वान् तथा आत्मकेन्द्रित होगा। यह उपदेशक, वक्ता, अध्यापक भादि का कार्य करता है तथा अपनी लेखनी कला साहित्य के भाष्य को भी करता है। इसमें नेतृत्व के गुण होते हैं तथा अपने आदेशों का चालन करने की क्षमता भी प्राप्त होती है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु के लगभग होता है। पत्नी सुदृढ़, कुछ स्थूलकाय तथा मनेतुक्ष्ण मिलती है। ३० वर्ष की आयु में यह विशेष प्रसिद्धि प्राप्त कर लेता है तथा स्वयं के माध्यम से अनेक सामाजिक तथा राजनीतिक कार्यों को सम्पन्न करता है। यह अनेक प्रकार से धन तथा धान अर्जित करता है एवं शत्रुओं को परास्त करता हुआ ४२ वर्ष की आयु तक बहुत ऊँचे ज्ञान प्राप्त पहुँचता है। वृद्धावस्था में यह रोग पीड़ित रहता है तथा लगभग ६० वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(१३२६)- इस जल कुण्डली का स्वामी सुदृढ़, रचरूप, कला-कुशल, काव्य-साहित्य का रचयिता स्वच्छ हृदय का, उदात्त तथा कुछ कोपी स्वभाव का होता है, पण्डित मह कोष को स्वयं ही की भी लेता है। यह ज्ञानाल से उठ कर बहुत ऊँची स्थिति प्राप्त पहुँचता है, पण्डित इसके अपने ही लोग शत्रुता मान लेते हैं, जिसके कारण यह बहुत पीड़ित होता है। इसका विवाह २० वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी रुग्ण रहती है, अतः उसके कारण दुःखी रहता है। यह राज्य की सेवा अथवा किसी अन्य प्रसिद्धि के सम्बद्ध रहकर उच्च पद प्राप्त करता है तथा ५२-५६ वर्ष की आयु तक सब प्रकार के ऐश्वर्यों से सम्पन्न हो जाता है। धन की इसे कोई कमी नहीं रहती। इसे सन्तान-पुत्रों के बाध रहता है। वृद्धावस्था में यह बहुत दुःखी भाव से रहता है। इसे लगभग २०-२२ वर्ष की पामायु प्राप्त होती है।

(1320) - इस जनकुण्डली का स्वामी अनेक कलाओं का हारा, साहित्य - सर्जक, ज्योतिषी तथा अनेक विद्याओं का अधिपति तथा विद्वान् होता है। नाट्य - कला में भी इसका सम्बन्ध होता है। यह बुद्धि, स्वास्ति, गुणवान्, कुटुम्ब तथा आकर्षक व्यक्ति का धनी होता है। इसका विवाह 23 वर्ष की आयु से पहले ही हो जाता है। पत्नी सुन्दर, चतुरा तथा क. गृहस्त्री के। स्वर्ण के निर्देशन में चलने वाली, पुण्यशालिनी होती है, पान्थ उसका स्वास्ति अच्छा नहीं। (हता, जिसके कारण जानक भी चिन्तित बनस जाता है) यह व्यक्ति विष्णु के चरणों में लगे पान्थ का अनुभव करता है। तथा वृद्धावस्था में सन्तान हीनता का दुःख मन के विशेष दुःखी रहता है। आर्थिक स्थिति जम रहती है। वृद्धावस्था में नीरस जीवन का होता है। पान्थ लगभग 62 वर्ष की होती है।

(१३२८) - इस जगह कुण्डली में उदयन मनुष्य सुखा, विषय प्राप्त अर्थात् - चित्त वाता होता है। यह कई कामों को एक साथ करने की सोचता है और वैसा करता भी है, फल स्वरूप अधिकारी का। अचूरे रहता है। यह अपनी मनीषा के कारण बहुत कुछ सफल भी होता है, पालु शक्ति नहीं, अपने उदात्त विचार के कारण यह लोकप्रियता भी प्राप्त करता है। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में हो जाता है। उत्पन्न २६ वर्ष की आयु में इसका अजोदय होता है। इसे अपने गुरुगान में ही सफलता प्राप्त होती है। भवनात्मक होने के कारण यह कलाकारीता से सम्बद्ध रहता है तथा कुछ-न-कुछ कला ही रहता है। इसे राज्य से भी सम्मान प्राप्त होता है। इसकी आयु के ३४, ४१, ४८ तथा ५२ वें वर्ष विशेष सम्मान दायक सिद्ध होते हैं। इन वर्षों में धन का लाभ भी अधिक होता है। इसकी पाला ७६ वर्ष होती है।

(१३२८) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दः, बुद्धिमान, चंचल चित्तवाला, उद्यम-व्यवसायी, पालन करने में एक कोषी प्रवृत्ति का होता है। इसे वैदिक - सम्पत्ति का लाभ होता है। शिक्षा - दीक्षा में यह बहुत उत्कृष्ट होता है २३ वर्ष की आयु में इसका विवाह होता है। इसी सुन्दः तथा परिपालना होती है, तथा यह अन्तर्निहित है भी सम्पत्ति रखता है तथा अपने चित्त को उत्तमार्थे एवं एक उच्चकलाका के रूप में परिणीत होता है। विवाहोपरान्त यह धर्मिक कोष को प्राप्त करने का प्रयत्न करता है, पण्डित (इसमें) सफल नहीं हो पाता। इसका आशोधन स्त्री के साथ ही होता है। ५२ वर्ष की आयु तक इसके पास धन - सम्पत्ति की कमी नहीं रहती। सन्तान - सुख भी उत्तम रहता है। सामान्यतः सुखी जीवन व्यतीत करने हुए यह लगभग ७४ वर्ष की आयु में पालोक - गमन करता है।

(१३३०) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दः, सुहृदवान्, चंचल - चित्त का, शीघ्र ही निष्पत्ति लेने वाला, तीव्र बुद्धि तथा सौन्दर्य - विचार में समझ को अधिक बर्बर करने वाला होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दः एवं सुशीला मिलती है। यह पत्नी में अत्यधिक अनुकूल रहता है। यह बड़े महत्त्व तथा नीति के साथ उत्प्रेरक कार्य को करता है। सफलता पाता है। यह सम्पत्ति को बढ़ाता है तथा उसे बन्धु - बान्धवों का उदार प्रवर्धन करता है। इसे तब हुए धन के प्रति कोई चिन्ता नहीं होती। इसके भाग्य का चान्द उत्कर्ष २० वर्ष विशेष छिप होता है। इसके जीवन के २०, २८, ३२, ३६, ३८, ४१, ४६, ५२, ५८, ६१, ६५, ६७ तथा ६८ वें वर्ष विशेष लाभ प्राप्त होते हैं। इसकी वृद्धि लगभग ८० वर्ष होती है।

(१३३१) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी अत्यन्त सुदृढ़, प्रभावशाली, तेजावी, लोकप्रिय तथा वात्सल्यपूर्ण है। अपनी प्रतिभा के प्रभाव को प्रकट करने वाला होता है। विचारों, जीवन में यह अत्यन्त तीव्रबुद्धि वाला, तेजावी प्रमाणित होता है। यह उच्च शिक्षा प्राप्त कर पूर्ण विद्वान् बनता है। यह बहुत धैर्यवान् होता है तथा प्रत्येक कार्य को रूख से कोच-समक का करता है। यह राजकीय सेवा, कला-सृजन तथा कला-प्रदर्शन द्वारा धन प्राप्त करता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुदृढ़, गंभीर स्वभाव की तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व की स्वामिनी होती है। वह धनक से भी अधिक प्रभावशाली होती है। ५५ वर्ष की आयु तक यह धनक स्वयं को अत्यधिक परिष्कृत करता चलायेगा। शारीरिक-विकास को भी सुदृढ़ बनायेगा है। ६० वर्ष की आयु से पूर्व ही सामान्य बीमारी के कारण मृत्यु का भय होता है।

(१३३२) - इस जन्मकुण्डली में अत्यन्त मनुष्य सुदृढ़, धीर, गंभीर, विष्णु-चित्त वाला तथा एक बाल्य में विधवा अनाथक रूप में बड़ा रहा है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में इस लैडी की मनोवृत्ति वाली, सुपण, सुदृढ़ तथा विष्णु-बुद्धि द्वारा आगे बढ़ने वाली स्त्री के साथ होता है। यह ३० वर्ष की आयु से धन कमाना शुरू करता है तथा ४० वर्ष की आयु तक धनदायक लक्ष्य प्राप्त करने का होता है। यह राज्य सेवा में रह कर अपना राजकीय कार्य से संबंधित रहकर भी धनदायक धन कमाता है। यह अपनी शारीरिक-विकास को निरन्तर उत्कृष्ट बनाता चला जाता है तथा अपने देशवर्ष के बल के बल-बाल्यवैराग्य समाज में विशेष परिष्कृत प्राप्त करता है। इसे व्यक्ति अथवा शत्रुओं का भय नहीं होता। यह अनेक कार्यों के कारण एक सच प्रकार से सुखी जीवन बिताता है। इसका लगभग ८२ वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(१३३३)- इस जलकुण्डली का स्वामी मध्यम कद का, मलवाली चाल में चलने वाला, सुदा, पिप्रदशी अपनाने वाला, अपने पुरुषार्थ वा विश्वास करने वाला तथा अपने पुरुषार्थ को ही सर्वोच्च प्राथमिक मानने वाला होता है। पर अथर्व विद्या-बुद्धि के बल पर लक्ष्मी मान-सम्मान प्राप्त करता है। इसका विवाह २२-२३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोरंजक मिलाती है। विवाहोपानयन अनेक छोटों से पार करता होता है। यह किसी उच्च प्रसिद्धि अथवा राजकीय-सेवा में संलग्न रहता परा-धन अर्जन करता है। इसके अतिरिक्त लेखन-कार्य, वस्तुता आदि कार्य से भी धन कमाता है। इसकी आयु के ३५, ३६, ३८, ४०, ४२, ४८ तथा ६५ के वर्ष विशेष धन तथा सुख देने वाले होते हैं। इसे माता का पर्याय सुख मिलता है तथा सन्तान-सुख भी उत्पन्न रहता है। पर स्वयं हृदय का तथा लक्षणादी होता है। पूर्ण ८२ वर्ष तक हो सकती है।

(१३३४)- इस जलकुण्डली का स्वामी सुदा, धी, गरी, राजकीय सेवा में उच्च पद को सुखो-प्राप्त करने वाला, अपा से बुराहावा तथा कोपी प्रतीत होने वाला, पानु हृदय में अल्पतया तथा पराधनकारी होता है। पर इनमें का कुल दू करने के लिए हा समग्र रूप से रहता है तथा पक्षासक्त पतापता करने में कभी पीछे नहीं हटता। इसे लोग प्रायः गलत समझते हैं, इसी कारण कुछ लोग शत्रुता भी मानने लगते हैं। पानु पर अपने विपक्षियों का धर्म ध्वंस के सामने आता है। उन्हें अपने पानु पर नीचे मुका देने वाला होता है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में सुदा, शालीन तथा लज्जक कला के साथ होता है। वह आकर्षक व्यक्तित्व वाली तथा सुलभ है। इसके बाद भी पर उच्च पद पर रहता। इस विपुल परा-धन प्राप्त करने के ७८ वर्ष की आयु जाता है।

(१३३५) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुद्धा, स्वस्थ, मधुरभाषी, शास्त्रज्ञ, गुणवान्, विद्वान्, वेत्ता, उदात्त, व्यवहारकुशल तथा विद्वान् होता है। इसका कद मध्यम, (पल्लव उन्नत तथा) व्याधित्व आकर्षक होता है। इसे दो माताओं का सुख प्राप्त होता है। यह स्त्री - स्वभाव का, अन्तर्मुखी तथा मूढ़ विज्ञानों का ज्ञानकारी होता है। गुण-धन का लाभ होता भी मिलता है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोरुक्ला तथा उत्प्रेक कार्य में सहयोग देने वाली मिलती है। वह सुलक्षणा चरि. गरी तथा अपने सहगुणों के कारण सर्वत्र प्रशंसा भी प्राप्त करती है। यह राजकीय-सेवा में रहकर अनेक प्रकार के सुख प्राप्त करता है। धन के साक-साक प्रशंसा का भी लाभ होता है। ५५ वर्ष की आयु तक इसे किसी बन्धु का आश्रय नहीं होता। सन्तान-सुरक्षी उत्पन्न रहता है। यह ६८ वर्ष की वयस तक जीवित रहता है।

(१३३६) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुद्धा, मधुरभाषी, ज्योतिष शास्त्र का धारता, अपना उदात्त, शास्त्रीय-आचारों का पालन करने वाला, संकोचशील, अत्यधिक विनम्र तथा अपनी प्रशंसा सुनने का इच्छुक होता है। यह चरि. गरी. हानी। खुले हाथ से खर्च करने वाला तथा धर्मधन कमाने वाला भी होता है। यह २२-२३ वर्ष की आयु में ही राजकीय-सेवा में संलग्न होकर धन कमाने लगता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुदृढ़, मनोरुक्ला तथा सुख की अभिवृद्धि करने वाली होती है। ३५ वर्ष की आयु में कया सन्तान प्राप्त होती है, जो बड़े पुत्री होते हैं, परन्तु सन्तानों का कष्ट होता है। इसकी आयु के ३५, ३८, ४२, ४८ तथा ५६ वर्षों में आपत्त महत्वपूर्ण होते हैं। इन वर्षों में इसे धन का विशेष लाभ होता है तथा राज्य से भी सम्मान मिलता है। प्रणति लगभग ८८ वर्ष की होती है।

(१३३७) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुका, सुकाल, बुद्धिमान तथा लाहरी होता है। इसके पिता के दो बच्चे होते हैं तथा इसको स्वयं भी एक से अधिक बच्चों का सुख प्राप्त होता है। इसे विजात का धन का लाभ कुछ कठिनाई से होता है। सामान्य आर्थिक-स्थिति होने पर भी यह अधिक धनरी लोगों जैसा धन वहाता करता है। इसका विवाह २० से २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोबुद्धिवाली मिलती है। इसका भाग्योदय पौर्णमासी में होता है। यह किसी निजी प्रतिष्ठान अथवा साकारी नौकरी के द्वारा अपनी उन्नति करता है। इसके जीवन के ३३, ३८, ४२, ४७, ४८, ५१, ५३, ५५ तथा ५८ के वर्ष लक्ष्म प्रद सिद्ध होते हैं। इसे मारा-पिता का पक्ष प्राप्त होता है और यह लक्ष्म को उनका आलाकारी बनाने राव कर उनकी सुख-सुविधा का ध्यान रखता है। इसे मुकद्दमे तथा गृह कर्षों से धन का लाभ होता है। इसकी मृत्यु ७८ वर्ष होती है।

(१३३८) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुका, स्वल्प, बुद्धिमान, विद्वान्, पाकमी तथा सुलोचनी होता है। यह सुधावस्तुओं, कलाओं, कलाकारों तथा शिल्पियों के सहयोग तथा इनसे संबन्धित कार्य द्वारा धन प्राप्त करता है। इसे मूल-सम्पत्ति का भी लाभ होता है। भूमि में गढ़ा हुआ धन भी प्राप्त होता है तथा इसकी सम्पत्ति गिनना बंदी रहती है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोबुद्धिवाली होती है। इसे धन से बहुत धारा होता है और उसके लिए कुछ भी कष्टों को सम्भार रहता है। विवाहोत्पन्न इसका भाग्योदय होता है तथा कोई अचल सम्पत्ति भी खरीदता है। बाद में इसका मत पौर्णमासी में समझाता है तथा उनके लाभ भोग-विलास को ही यह अपना प्रमुख कर्तव्य मान लेता है। इसकी उन्नति कुछ समय के लिए रुकती जाती है। ५८ वर्ष की आयु में इसे विशेष लाभ होता है। पुन-पौर्णमासी से श्रावरी होने पर यह लगभग ७८ वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(१३३६)- इस जलकुण्डली का स्वामी सुवर्ण, नेत्र-रोग से पीड़ित, पानु-पुच्छ तथा आकर्मिक व्यक्तित्व वाला होता है। यह पहले पुत्रों की शरीर वाला, मध्यम कद का तथा आपत्त व्यवहार कुशल होता है। यह सार्विक प्रकृति का, धार्मिक-विचारों की ओर उन्मुख, मधुमाषी तथा पतन कीटों की एवं निरोधी होता है। भोजन, वस्त्र, माला, सुगन्ध, संगीत-रस भादि का स्वादा तथा दीर्घस्थिती भी होता है। इसका विवाह लगभग २०-२१ वर्ष की आयु में होता है। यह अपनी पत्नी के आश्रित-क अनुरक्त रहता है। यह अनेकों फलफलों बनाम तथा उनकी दूर्ति में लग कर चकाशील अधि-कामिक-कानोपार्जित में लग जाता है तथा फल भी होता है। ३५ वर्ष की आयु से इसे मान-सम्मान तथा धन का विशेष लाभ हो उठता है। बाहरी लोगों से इसे आकर्षक धन का लाभ भी होता है। यह अनेक पुत्रों का पिता तथा राज-द्वारा सम्मानित होता है। लगभग ७४ वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(१३४०)- इस जलकुण्डली का स्वामी सुवर्ण, स्वस्थ, सुवर्ण, पण्डित, ज्ञानी के बल पर सर्वका प्रभावित करने वाला, कुशल-प्रशान्त, कला-कुशल, से १० मित्रों वाला तथा राज-कीर्ति-सेना में उच्चपद पाने वाला होता है। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी से जीविकी-तथा कुशलता पूर्वक गृहस्थी का निजालन करने वाली होती है। इस जलक के कलाकारीना से विशेष धन प्राप्त होता है। यह सुवर्ण पुत्रों का सुवर्ण उादा करता है। ५८ वर्ष की आयु तक इसे सुवर्ण के सुलोपयोग उपलब्ध हो जाते हैं। यह पत्नी के से निकल बगाने रहता है तथा उनके अपा धन भी खूब खर्च करता है। यह बड़ा विद्वान्, लोक-प्रिय तथा सर्वत्र सम्मान प्राप्त करने वाला होता है। जीवन के २४, २८, ३२, ३६, ४०, ४४, ४८, ५२ तथा ५६ के वर्ष विशेष लाभ प्राप्त सिद्ध होते हैं। यह ७५-७८ अथवा ८८ वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(१३४१)- इस जलकुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, स्वस्थ, उमर बढ़ाही, विभिन्न प्रकार के पुत्र-पौत्रों को प्राप्त करने वाला, अपने धार्मिक से ही उत्कृष्ट करने वाला, अपनी विद्या के उभाव से अध्यापक के विचार करने वाला, धर्मार्थ, सुख-दुखों का विना अनेक पीड़ों का उन्मोचन करने वाला होता है। सन्तान के लिए इसे छोड़ा कष्टभी सहन करना पड़ता है। इसे बाहरी-लज्जा से धन का लाभ होता है। आर्थिक धन लाभ के भी अनेक अवसर इसके जीवन में आते रहते हैं। इसे विविध कलाओं का ज्ञान होता है, जिनके बल पर वह आध्यात्मिक उत्कृष्ट करता है। कभी-कभी इसके कर्मों में दिन भरका बहुत-बहुत ही रोड़े अटकाते हैं, उस समय इसे बहुत शिवाग्र होती है। विवाह २१ वर्ष की आयु में होता है तथा इसी समय भाग्योदय भी होता है। जीवन के २६, २८, ३५ तथा ३८ के वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। ५५ वर्ष की आयु तक विना लाभ होता रहता है। प्रणति लगभग ७३ वर्ष होती है।

(१३४२)- इस जलकुण्डली का स्वामी अल्प सुन्दर, लम्बे कद का तथा कुछ केटोर (चमक का होता है) यह धन कमाये तथा उसका खर्च करने में उपलब्ध बना रहता है। वालावस्था से ही यह धन कमा उठता है। यह सुशील, धनुरासी तथा अनेक पीड़ों का विना होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर, पौत्रों का कल्याण करने वाली तथा सुलक्षणा होती है। यह अपनी पत्नी को विशेष प्रेम करता है। इसकी आयु ५१ वर्ष से ५५ वर्ष तथा चतुर्थ कर्मों से भी होती है। इसे सुख-दुख प्राप्त होते हैं तथा उनके पुत्रों से यह प्रसन्न तथा सुखी बना रहता है। इसके जीवन के ३२, ३५, ३८, ४०, ४३ एवं ४८ के वर्ष बहुत लाभप्रद सिद्ध होते हैं। यह जन्मक कर्मों से दोहे-पेगों का गेहूँ का, आध्यात्मिक लोक विपन्न प्राप्त करता है। इसे ७१ वर्ष की आयु में मृत्यु होती है। यदि उसे बच जाय तो ८२ वर्ष तक जीवन रहता है।

(१३४३) - इस जन्म कुण्डली में अत्यन्त सुखा, स्वस्थ, मधुर, मकी तथा सर्वोच्च होता है। तथापि आकृति से कठोर स्वभाव का लगता है। यह अत्यन्त उदा, परोपकारी, बल्य-काम्यकों के अनुकूल तथा परिजनों को अनुष्ठान करने वाला होता है। इसकी अतिरिक्ति कला तथा साहित्य में अधिक होती है। ज्योतिष शास्त्र में भी यह रुचि राखता है। इसका पालन सर्वत्र सराहनीय रहता है। इसका विवाह २२-२३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी अत्यन्त सुखा कला - कौशल की जानका तथा सुहृदिपूर्ण श्रेष्ठ चरित्र की होती है। इसके कार्य-कलाप लोक-प्रसिद्ध होते हैं। यह अपने घर, पुत्र तथा योग्यता के बल पर राजमान्य होता है। इसे धन का अभाव नहीं रहता। कला एवं विज्ञानों के संगम वाले कार्य तथा प्रगतिमान इसकी आयदनी के साधन होते हैं। इसे सन्तान-प्राप्त श्रेष्ठ प्राप्त होता है। पामासु लगभग २२ वर्ष की होती है।

(१३४४) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुखा, बुद्धिमान, सार्विक प्रवृत्ति का, आपत्त हारी, सुवक्ता, प्रभावशाली कवितायुक्त तथा एवं काम्यकाम्य से ही सुखी होने वाला होता है। यह विद्वान् पण्डितों के बीच में प्रमाण प्राप्त करता है। धन का उसे कभी अभाव नहीं रहता, यह अध्यापक, अध्यापक, उपदेशक, वक्ता अथवा नेता होता है। राजमान्य पदों पर इसकी प्राप्ति होती है। इसका विवाह २२-२३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी इसके अनुकूल ही बुद्धिमान, काम्यकी जाना, विदुषी तथा मधुराभिप्रायी होती है। इसे काम्य-प्राप्त अधिक सम्पत्ति नहीं मिल पाता, क्योंकि यह जल्दी ही विधवा होता है। यह प्रकृत ही सम्पत्ति काष्ट प्राप्त होता है। पुत्र सुखा तथा सुख देने वाले होते हैं। जीवन के २५, २८, ३१, ३५, ३८, ४२, ४६, ५०, ५४ तथा ५८ वें वर्ष विशेष सम्पत्ति रहते हैं। पामासु २८ वर्ष की होती है।

(१३४५) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुक्र, बृहस्पति, गुरु, शनि, अनेक विचारों का हारा, कला, मर्मज्ञ तथा लोकप्रिय व्यक्ति होगा। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में होगा। पत्नी सुकी, कलाओं की जानकार, मधुर मुस्कान तथा मृदुवाणी वाली एवं सुख देने वाली होगी। इस जातक का भाग्यदण्ड २३ वर्ष की आयु में होता है तथा किसी हठी के माध्यम से सहाज से ही विभिन्न प्रकार के लाभ प्राप्त होते हैं। यह जातक विभिन्न कार्यों तथा लोगों से अनोखा जिन का ना है। पत्नी इसे जगति का सुख सहयोग देती है। इसका आयु बहुत बड़ा होगा, जिसके काल प्यार-पट राजनेताओं तथा राज्याधिकारियों के बीच भी सम्मान प्राप्त करता है। सभी तार के लोग इसे सम्मान देते हैं। ३२, ३७ तथा ४५ से ५६ वर्ष तक का समय खराब-काल होगा। पुनरी पुनर्जात होती है। सब प्रकार के दुर्भाग्य को भोगना हुआ यह ७२ वर्ष की आयु प्राप्त है।

(१३४६) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुक्र रचयिता, अत्यन्त उदार, योग्यकारी। राज्य से सम्मान तथा सहयोग प्राप्त करता है। सब प्रकार से सुखी होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुक्र, कुशल, व्यावहारिक, मधुर भाषिणी तथा सुख देने वाली होगी। परन्तु यह जातक विवाह से पूर्व ही अनेक कष्टों का शिकार होता है तथा विवाह के बाद भी उसके संबंध बनाये रहता है। इसे दीर्घवृत्ति से कहा जा सकता है। किसी ऐसे कष्ट के कारणों से आश्चर्यजनक सफलताएं प्राप्त होती हैं। इसकी सभी कोशिशें सहयोग से सफल होती हैं। इसे राजकीय-सेवा से ८ आयें होती हैं। सत्तानों से भी जगति सुख मिलता है। प्रदेश में रहकर यह बहुत धन कमाता है। जीवन के २७, २८, ३२, ३६, ३७, ४२, ४७, ५१, ५६ तथा ६२ के वर्ष विशेष लाभप्रद होते हैं। प्रणति २० वर्ष की होती है।

(१३४७) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुखा, स्वस्थ, ज्ञानवान्, कामिन्, विद्वान्, शान्त, कला एवं विमान वेत्ता, प्राचीन पद्धतियों को मानने वाला, गंभीर तथा लोकप्रिय व्यक्ति होता है। इसका विवाह २२-२३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, कला-कौशल की जानकारी एवं जीवन का योगदान के साथ संचालन करने वाली होती है। पहला लक्ष्य प्राप्त होने के लक्ष्य प्राप्त होता है, तथापि इसकी महत्वाकांक्षों शान्त ही प्रतीत होती हैं। कुछ कौशल कार्य में सफलता मिलती रहती है। इसका अग्रेय २४-२६ वर्ष की आयु में होता है। निम्नो का इसे सदैव लक्ष्य मिलती है और उसे लाभ भी उठाना है। जीवन के ३०, ३३, ३८ तथा ४२ वें वर्ष में इसे विशेष लाभ होता है। यह अपने काम से अधिकारीयों को लक्ष्य का लक्ष्य, निम्न उन्नति का लक्ष्य चला जाता है। पुत्र सुयोग्य होते हैं। वृद्धावस्था तक सुखी रहने पर लगभग ८५ वर्ष की उम्र में प्राप्ति करता है।

(१३४८) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति शरीर स्वस्थ, सुखा, उदात्तचित्त का, नीति, ऊँच नीति को स्वीकारने वाला, महत्वाकांक्षों से युक्त, कला, कला एवं साहित्य का गंभीर तथा शक्ति, एवं परीक्षाकारी होता है। इसे ऐसे लोगों तथा स्थानों से आशय तथा सम्मान का लाभ होता है, जो बाहरी हो। इसका विवाह लगभग २३-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुलभता एवं सुवर्णमय होती है। यह अग्नि, धर्म, शक्ति आदि के द्वारा धर्म प्राप्त करने वाला तथा निम्नो के महत्वाकांक्षों एवं बुद्धि से चानी होने वाला होता है। इसे सन्तान-पक्ष से लाभ होता है। कड़ी कठिनाइयों से युक्त प्राप्ति करता है। पुत्र का योग बहुत शीघ्र होता है। लगभग ५० वर्ष की आयु में यह अपने उत्कर्ष के चरम शिखर पर जा पहुँचता है तथा उच्च मान-मर्यादा युक्त सुखी-जीवन बिताता है। इसका देहावसान ८२ वर्ष की आयु में होता है।

(१३४६) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी अत्यन्त सुधा, बुद्धिमान, गुणवान्, विद्वान्, उदार, दानी तथा व्यवसाय में एकदम निष्कपट होता है। इसके विचार उच्च होते हैं, हृदय विशाल होता है तथा आकांक्षाएं बहुत उन्नत होती हैं। यह साहित्य, संगीत एवं ललित कलाओं को प्रश्रय देने वाला, गुरु विद्यार्थियों का जनक तथा अप्रत्याशित कामियों तथा स्त्रियों से आकर्षक धन-लाभ प्राप्त करने वाला होता है। यह अनेक लम्बी यात्राओं का है तथा उनसे लाभ उठाना है। यह राजकीय-सेवा में संलग्न रह कर ऊँचे-से-ऊँचे पद प्राप्त करता है तथा स्वतन्त्र रूप से भी भवनों के कुल-विक्रय एवं किसी वस्तु के उत्पादन द्वारा लाभ उठाना है। इसे विभिन्न प्रकार के भोग व्यवसाय सहज ही प्राप्त होते हैं। इसका विवाह २०-२१ वर्ष की आयु में सुदृढ़, काला-प्रेमी तथा व्यवसाय-कुशल स्त्री के साथ होता है। दाम्पत्य एवं सन्तान-सुख उत्तम रहता है। पुत्रादि २८ वर्ष होती हैं।

(१३५०) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुधा, काला, कौशल का जनक, लोकमान्य, शत्रुओं द्वारा भी सम्मान पाने वाला तथा अनेक प्रयोगों से धन प्राप्त करने वाला होता है। इसका विवाह २५ से २८ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी ६८ वर्ष की आयु तक साथ निभाती है तथा अनेक पुत्र-पुत्रियों को जन्म देती है। यह सुदृढ़ स्वतन्त्रवान् तथा कार्यकुशल होती है। अपनी योग्यता एवं विद्वत्ता के बल पर इस जातक का सर्वोच्च सम्मान किया जाता है। इसकी वस्तुता लोक-मोहक होती है तथा तर्क हृदयगामी रहते हैं। यह काश्तकार, धर्म के तत्व को जानने वाला तथा उल्लास रहता है तथा सब प्रकार से सम्मान पाना दुष्क ६५ वर्ष की आयु तक अत्यन्त उत्कृष्ट स्थिति में प्राप्त करता है। पुत्र-पौत्रों से पुत्रा सुखी-जीवन विरागा हुआ लगभग ७८ वर्ष की आयु में यह पालोक जाता है।

(१३४१) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी स्वल्प लम्बा हृदय शरीर वाला, नीरवी नचा कभी अँधेरे काँला, नीच बुद्धि, किसी भी धर्म धिक् को तुल्य समझ लेने की क्षमता रखने वाला तथा कठोर स्वभाव का होगा। यह अपनी नीति तथा व्यवहार को सिद्धि लिए बाँधे हुए कार्य करेगा। इसे राज्य की सेवा के लिए तथा धन का लाभ होगा। यह आकर्षक व्यक्तित्व का धनी होगा तथा आर्थिक दृष्टि से समृद्ध बना रहना है। वाणिज्य एवं विद्या से पूर्ण पराजयक सांख्यिक गणितों का अध्ययन करना पड़ेगा अर्थात् कठिन कार्य होगा। यह देश-प्रेम की भावना का धनी होगा तथा उन जातियों द्वारा धन भी कमाएगा। इसका विवाह २० वर्ष की आयु में होगा। पत्नी बहुत सुन्दर, लम्बकदा तथा अनुशासन-पूज्य होगी। वास्तव एवं सत्ता-पुत्र उत्पन्न रहता है। पुत्र भी सुन्दर तथा विद्वान् होते हैं। यह धनी, सुखी तथा पशुपति जीवन बिताता हुआ लगभग ८० वर्ष की आयु में लोक गमन करेगा।

(१३४२) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुन्दर, लम्बी, हानी, गुणी तथा अल्प धन है। सिद्धि लेने वाले एवं विविध चिन्ताओं से ग्रस्त रहने की आदत वाला होगा। जिन मामलों में उसका हृदय सम्बन्धी न हो, उनके विषय में भी यह चिन्तित रहता है। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में होगा। पत्नी सुन्दर, लम्बकदा तथा आला काशीणी होगी। यह जातक निकेतन कार्य में हार्ज राखता है तथा राजकीय सेवा में रह कर उत्तम करता है। ४० वर्ष की आयु के बाद इसे धन का बहुत लाभ होगा। उच्च तथा निम्न - दोनों वर्गों के लोगों से इसके सम्बन्ध रहते हैं। यह उत्तम की के निम्न लोक पितृ रहता है। कुछ जातियों के भी इसे लाभ होगा। जीवन के २५, २८, ३१, ३४, ४०, ४२, ४६, ४८, ५१ तथा ५२ के वर्ष विशेष लाभ प्राप्त होंगे। यह लम्बकदा सुखी जीवन बिताता हुआ लगभग ७२ वर्ष की आयु प्राप्त करेगा।

(१३५३)- इस जल कुण्डली में अपना मुख्य सुखा, स्वस्था, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, साहसी तथा जीवम में चतुराई कोने वाला होता है। अपने पाठ्य तथा छोटी चलाय के कारण यह अपने कुटुम्बियों के लिए कष्टक स्वल्प अनुभव होता है, पालु पक्षार्थ में 'सब का हिस्सा एवं योग्यकारी होता है'। इसे राजा की सेवा में होने पर चतुर् लाभ होता है। यह अपने जीवन में अत्यधिक सम्मान प्राप्त करता है। लगभग ४० वर्ष की आयु तक यह पक्षि चतुर् तथा चतुर् से सम्मान होता है। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी बुद्धिमती होने पर भी मूर्खता पूर्ण कार्य को करने वाली तथा पति से मतभेद करने वाली होती है। इसे सन्तानों से दूर रहना होता है, सब ही यह अपनी माना की शत्रु का कारण भी बनता है। अपनी स्त्री से मतभेद होने के कारण यह पत्नी से सम्बन्ध काटता है। ६२ वर्ष की आयु तक पक्षि सम्मान अर्जित कर, ८० वर्ष की आयु में पालोक प्राप्त करता है।

(१३५४)- इस जल कुण्डली का स्वामी सुखा, स्वस्था, साहित्य एवं कला का प्रेमी, चिकित्सा-कार्य में रुचि रखने वाला, चतुर, निष्ठुर, कामी तथा पत्नी गामी होता है। इसका विवाह २०-२२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुखा, कला-कौशल की धारा एवं व्यवहार-कुशल होती है, तथा पति जानक उससे लज्जित नहीं होता तथा पत्नीजनों में मत लगाये रहता है। यह जानक कुछ चतुराई प्रवृत्ति का भी होता है तथा दान-पुण्य भी करता है। अनेक लोगों से चतुराई का लालच प्राप्त कर आनन्द-शोक तथा ऐश्वर्यपूर्ण जीवन बिताता है तथा वैभव-प्रदर्शन को अत्यधिक महत्व देता है। इसे पुत्रों का उत्तम सुख प्राप्त होता है। आयु के २५, २८, ३२, ३५, ३८, ४१, ४५, ४८, ५२, ५६ तथा ६३ के वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होते हैं। इसकी जीवन-सीमा ६८ वर्ष की आयु में पूरी होती है। यदि इससे बचे तो ७८ वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(१३५५) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्द, स्वास्थ, अनेक कलाओं का हारा तथा ध-र्म की एवं लाल के उपना तन्तुओं से लाभ पाने वाला होता है। यह अध्यापक, उद्देशकर्ता, व्यवस्थापक अपना प्रशासन के लक्ष में किसी सेवा-कार्य से हिलता होता है तथा उसी से पक्षपात करने वाला भी होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्द, कर्ण-मात्रिणी तथा अचला-कुशाल होती है। यह अपनी पत्नी से सुखी तथा सन्तुष्ट बना रहता है। इसे सुन्द एवं सुयोग्य पुत्र-पुत्रियों का भी लाभ होता है। इसका मंगेदण २५ वर्ष की आयु से होता है। ३६ तथा ४० वर्षों विशेष लाभ-पद प्राप्त होते हैं। ४२ वीं वर्ष से वृद्धावस्था तक का समय बहुत सुखों से बीता है तथा प्रत्येक दृष्टि से लाभकारी बना रहता है। समाज के पक्षपात तथा समाज-जन को डर यह ७२ अथवा ८२ वर्ष की आयु तक जीवित रहता है।

(१३५६) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्द, स्वास्थ, शास्त्रार्थी, गुण-लोचन में निपुण, उच्च कार्य को करने में आनन्द का अनुभव करने वाला, अष्टोच्चक, साहसी कार्य में ताल, पुत्रा जिलने का शौकीन तथा सौजन्य के प्रति सहज भाव से अनुकूल होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्द, मनोमोहक तथा प्रत्येक क्षेत्र में लक्ष्ये गिनी हिट होती है। यह सामान्य शालिनी के कारण जानक के पक्ष में धन-धन्य की वृद्धि होती है, पानु-सन्तान की ओर से प्रति-पत्नी दोनों ही सुखी रहते हैं। पुत्र-पुत्रियों से होती है; परन्तु के लक्षण तथा उद्भावना-चमक के होते हैं। जानक का मंगेदण विवाह के बाद ही होता है। यह कुशला-उन्नति काता हुआ उच्चपद पर आसीन होता है तथा पक्षपात धन तथा धन का उपार्जन करता है। जीवन के अन्तिम समय से कुछ समय तक यह रोगी रहता है तथा ८४ वर्ष की पूर्णायु प्राप्त करता है।

(१३५०) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी स्वाध्याय, सुखा, गरीर विचारक, भास्व, हान-1 व हान, कला एवं साहित्य में रुचि रखने वाला, गुणकारी तथा विद्वान् होगा है। यह पंचम स्वामी वाला है। स्वामी की गरी बलता। अपने अग्रदूत श्री-गरी स्वामी वाले तथा मागेद नालेने वाले लोगो है ही इसकी मैत्री होगी है। इसका विवाह 22-23 वर्ष की आयु में सुखी तथा मंगीचरी स्त्री के साथ होगा है। वह विदुषी, कलाविद् तथा गृहस्थ-विचारक में कुशल होगी है। (अतः इसका दाम्पत्य-प्राप्त अमर रहना है) पुत्री सुखेष्ट तथा विद्वान् होगी है। उनके वधूक हो जाने पर यह अपने श्री कार्यकर्ता एवं उच्च पदियों के उच्च सौंप का निश्चित होगा है। इसका मागेद 30 वर्ष की आयु में होगा है तथा 45 वर्ष की आयु तक यह गिरना उलटि काना चलाया है। (पुत्री भी अपने पिता की मंगीचरी प्रशस्ती होगी है। 22 वर्ष की आयु में यह पालोक-गमन काना है।

(१३५२) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुखा, स्वाध्याय, श्री-गरीर तथा लोक-विद्यान होगा है। जन्म में इसका बड़ा सम्मान होगा है। अपनी विद्वत्ता, योग्यता, साहस एवं वाक्पुत्र के कारण यह उच्च स्थिति को प्राप्त काना है तथा गिरना उलटि काना चलाया है। इसका विवाह 22 वर्ष की आयु में होगा है। पत्नी सुखा, कलाविद्, श्री, गरीर तथा मंगीचरी होगी है। यह उत्प्रेक्ष्य क्षेत्र में जातक के साथ सहयोग करी है। जातक का मागेद भी विवाह के बाद ही होगा है। 34 वर्ष की आयु में यह अपने पुत्रार्थ में अपना पत्नी तथा प्रशस्ती होगा है। इसे राज्य द्वारा मान्यता प्राप्त होगी है तथा यह गिरना उलटि काना चलाया है। शत्रु भी इसका आदर करे है। यह पालोककारी, दारी तथा चर्चित होगी है एवं अपने पति का अधिकोश मरु लोक-कल्याण में व्यय काना है। कुछ समय रहता है के बाद 22 वर्ष की आयु में यह पालोक-गमन काना है।

(१३५६)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुदा, ज्येष्ठ-स्वभाव का तथा पतिव्रतों में हंकेप (एकेश्वर) का कार्य करने में आनन्द का अनुभव करने वाला होता है। यह स्वर्ण कण्ड उण्का भी पतिव्रतों की सेवा करता है। इसकी बुद्धि तथा उद्योग के कारण कुटुम्ब तथा परिवार के लोग इसे अधिक नहीं चाहते। अतः अग्रज ही रहने हैं। पति यह अपनी इच्छा अनुसार ही कार्य करता है, दूसरों की शिक्षा का इसमें कोई असर नहीं होता। इसके पास धन की कोई कमी नहीं होती। इसका माजोदम बचता है। होता है। यह पहले-पिछे में बहुत तथा अपना बुद्धिमान भी होता है। इसका विवाह २० वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुदही तथा लक्ष्मी सहयोगिनी होती है। यह उनके नाम से अनेक कार्यों में सफलता प्राप्त करता है। इसे सन्तान-पुत्र भी उत्तम मिलता है तथा पशु भी प्राप्त होता है। यह लगभग २० वर्ष तक जीवन बना रहता है।

(१३६०)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुदा, पिपदकी, पल्लु सामान्य, कुछ कठोर सा दिखाने देने वाला, पल्लु उदाहृष्ट का, परोपकारी तथा उच्च विचारों वाला भी। अभी एक सहाय होता है। यह अपनी आकांक्षाओं को सफल कराने में सफल होता है तथा दूसरों की आकांक्षाओं का सम्मान करने हुए उनकी सफलता के लिए अपना सहयोग भी देता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुदही तथा गुणवती होती है, तथापि जानक (उनके पुत्र) अधिक अनुगत रावते हुए, अल्प हिमके में विशेष रुचि लेता है। यह कृषि मंत्री होने के कारण अपने कार्यों को पूरा करता है। ज्येष्ठ-स्वभाव का यह व्यक्ति पतिव्रतों के बीच बहुत प्रसिद्ध होता है तथा उनके कारण कभी-कभी अपने आवश्यक कार्यों को भी बिगाड़ लेता है। इसका माजोदम ३० वर्ष की आयु में होता है। किष्कीन तथा धन की कमी नहीं रहती। पुत्र योग्य होते हैं। पुत्र २५ वर्ष की उम्र होता है।

(१३६१)- इस लक्ष्मकुण्डली का अधिपति सुदा, सुहृद शरीरका, प्रभावशाली व्यक्तित्व स्वभाव, और
वर्ष तथा अधिपति शुक्रके व्यक्तित्व वाला होता है। सामान्यतः यह व्यक्ति बड़ा कठोर तथा हठके
स्वभाव का होता है, तथापि यह उदा, विद्याका धनी, अत्यन्त गुणी, प्रभुत्व स्थान
पाने वाला तथा अपने समीपवर्ती लोगों को अपनी इच्छानुसार चलाये वाला होता है। इसका
विवाह २१ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी लेखिकी, गुणवती, सुन्दरी तथा मनोमोहक होती है।
जातक उसके प्रभाव में रहता है तथा उसकी इच्छा के बिना कोई काम नहीं करता। २३ वर्ष की
आयु में जातक का भण्डोदय होता है, तब यह विद्या उन्नति का नदुका ४० वर्ष की आयु तक
अत्यन्त उच्च मानका पा पहुँचता है। यह सन्तान है सुदी, राजादा, ललाह, स्व-जाकुम का। शत्रुओं से
भी उदात्त मान तथा शत्रुघ्न होता है। ६२ वर्ष की आयु में अश्वि से बचे से ६० वर्ष तक जीवन रहता है।

(१३६२)- इस लक्ष्मकुण्डली का स्वामी सुदा, स्वल्प, कोमल हृदय का, साहित्य-मूर्ति तथा अत्यन्त
प्रभावशाली होता है। इसके घर के देव का कुटुम्ब-परिवार के लोग ईर्ष्या करते हैं। यह स्वर्ण-मी
आलकेन्द्रित बना रहता सुदी होता है। यह अपने विचारों तथा सिद्धांतों का इतना दृढ़ रहता है कि
किसी अर्थ की बातों का चिन्ता नहीं करता। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक होता है। पत्नी
सुन्दरी तथा इस जैसे ही स्वभाव की होती है। सात ही वह कभी अधिक प्रभावशाली व्यक्तित्व
की स्वामिनी होती है। यह जातक को प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग देती है। सुदा सन्तानों को जन्म देने के
कुछ वर्षों बाद यह पालोक-गमन का जाती है, आन्तु जातक पुत्रों के वल्लभ होता है। उन्हे अपना कार्य
व्यवसाय सौंप का, स्वयं संसार से उदासीन हो तीर्थादि की यात्राओं का शरणा है तथा मन्त्र मन्त्र
कोरुष लगभग ७५ वर्ष की आयु में पालोक-गमन करता है।

(१३६३)- इस जन कुण्डली का स्वामी सुदा, चंद्रा, सप्तमारी, विद्वान्, पुण्यवान्, धनी, सात्विक प्रकृति का, आर्त्ता, राजपाल, दानी तथा योग्यकारी होता है। यह पुण्यवान् की कर्मसम्पन्न, मनोहर सुखी, लाला तथा लोकप्रिय होता है। इसका विवाह २० वर्ष की आयु के लगभग होता है। पत्नी सुदी, जिह्वा, आचारवान्, जलक को सदैव उसका एजेन वाली, पुण्यवान् की तथा उच्च भावांशों वाली होती है। वह ६८ वर्ष की आयु तक जलक का साथ देती है। जलक के मरण के ऊँचा उठने में पत्नी का बहुत योगदान होता है और वह स्वतन्त्र रूप से भी कार्य करके योगदान में लक्ष्यिका बनती है। यह जलक २५ वर्ष की आयु से पत्र कमाना शुरू करता है तथा मृत्यु पर्वत सब प्रकार से सम्पन्न होता है। विविध प्रकार के सुखों का उपभोग करता है। इसे राज्य से भी आजीविका एवं पत्र का विशेष लाभ होता है। अन्त में भी पत्रागम होता है। संतानें जोग होती हैं। प्रकृति ८० वर्ष होती है।

(१३६४)- इस जन कुण्डली में उत्पन्न समुद्र सुदा, स्वप्न, नील, दृढ़शी, दृष्ट की चाल के गुण सप्तम लेने वाला, बुद्धिमान्, राज्य से पत्र तथा सम्मान पाने वाला, राजकार्य में सिलग रहकर उच्च पद पाने वाला तथा राज्य के कार्य को निपेटे वाली लहिन सुफलता पूर्वक सम्पन्न करने वाला होता है। इसका विवाह सुदा, स्वप्न एवं पुण्यवान् की कर्मसम्पन्न वाली स्त्री के साथ होता है। यह जलक को सदैव उसका पत्नी तथा पारिवारिक दायित्वों का लक्ष्यित रूप से पालन करती है। विवाह २० या २२ वर्ष की आयु में होता है। विवाहोत्पन्न ही मरण के अंत होता है। संतान के लिए कह होता है तथा ऊँचा वाक्ता में पत्नी की ओर से भी कह होता है। लगभग ४० से ४५ वर्ष की आयु में आकस्मिक हानि होती है। जिसके कारण जलक बहुत दुःखी होता है। वृद्धावस्था भी दुःख के ही की होती है। यह ८८ से ९० वर्ष की वृद्धावस्था प्राप्त करता है।

(१३६५) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुका, कुट्टिमान, मधुर वाणी बोलनेवाला, आह्वीय आचारे का पालन करने वाला, विद्वान, विदुष, उदात्त, ज्योतिषी तथा धारी होगा। इसकी दो मांगें हो सकती हैं। इसका विवाह २३-२४ वर्ष की आयु में होगा। पत्नी सुन्दरी तथा गुणवती होती है, परन्तु उसमें क्रोध की मात्रा कुछ अधिक होती है, साथ ही वह बाल-बाल रुग्ण भी हो जाती है। यह जानकरीजों की सहायि में हुली रहता है तथा उनसे लाभ उठाता है। यह शत्रुओं को पाणिज का उसके धन प्राप्ति का नाह। पुत्रा आदि के शौक में भी यह अपना धन तथा समय नष्ट करता है। इस जानक के अनेक बीमों से लेश्म रहते हैं तथा यह अपनी मां की मृत्यु का कारण भी बनता है। यह भाग्य का धनी होता है, अतः धन के मामले में कभी हुली नहीं रहता। यह घर-सेवा कार्य का के आजीविका कमाता है। सन्तान उत्पन्न होती है। पत्न्यु ७२ वर्ष होती है।

(१३६६) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुका, लाल, मनस्वी, महत्वाकोषी, चंचल चिन्मात्र का तथा पाकुमी होता है। यह साहित्य-तर्क, कलाका, अपने ही पाकुम से धनी, पश्चात्कीनका लोक-विषय जानने वाला होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है, परन्तु पत्नी मने उच्छल नहीं होती, अतः उससे हुली रहता है तथा पत्नीजों में आकर्षित होकर उनसे शारीरिक सम्बन्ध भी रहता है। यह इनमें से है जो एक आजीविका प्राप्त करता है। बीमारी के कारण इसे कई वर्षों तक कार उठाना पड़ता है। फलतः शरीर कुश हो जाता है। २३ वर्ष से ६० वर्ष तक का समय बड़े उगा-धका का तथा उच्छ्वेलता पूर्ण रहता है। इस अवधि में यह स्वयंसेवकी का तथा आनन्दोपभोग का नाह, बाद में मन वैरागी हो जाता है तथा यह अपने भोग्युओं को सब दायित्व सौंपकर पत्नी से विच्छा हो जाता है। श्राव ८० वर्ष हो सकती है।

(१३६७) - इस जन्म कुंडली का स्वामी सुका, स्वस्थ, पिपवाणी बोलने वाला; ईश्वर भक्त
 वाला; दूसरों के काम आने वाला, स्वयं कष्ट उठाकर भी योग्य कार्य करने वाला, धार्मिक वृत्ति
 का तथा सद्गुणी होता है। इसका विवाह २२-२४ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी की ओर
 जातक के कष्ट होता है, अतः उसके प्रति चिन्तित ब्रत रहना है। इसे शत्रुओं से भी भय होता है,
 अतः जीवन शान्ति पूर्वक नहीं बीतना और पुण्य का अभाव ही ब्रत रहना है। इसे धन से
 बहुत स्नेह होता है, पान्थ साहसों एवं योग्यता जनों से विशेष प्रेम नहीं होता। माना का दुष्ट
 भी इसके भाग्य में नहीं होता। पर स्वयं स्वयं को प्रेम देना है, पान्थ अथवा लोग वैसा ही बदला
 नहीं देते। इसे सन्तानें सुका, योग्य तथा धनवान् प्राप्त होती हैं। ६० वर्ष की आयु के बाद इसके
 पाप धर्म की कमी कोर कमी नहीं रहती। इसकी पान्थ ६२ वर्ष की होती है।

(१३६८) - इस जन्म कुंडली का स्वामी सुका, सुखी, कीर्तिमान्, पाकुमी तथा पशुपति होता
 है। इसे पदार्थों में हर्षाचार का लाभ होता है। पर गुरुजी जनों के सम्मुख से चार कमाल
 है। पान्थ दुश्चिन्ताओं एवं शत्रुओं से भिन्न रहने के कारण इसको सुख-शान्ति का अनुभव
 नहीं हो जाता। इसका विवाह २० वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुका, कुछ स्थूल-
 कान्ध, पति को सुख देने वाली तथा गृहस्थ-संचालन में कुशल होती है। जातक का भाग्य
 ३० वर्ष की आयु में होता है। जीवन के ४२, ४४ तथा ५६ वर्ष आयु के दृष्टि से विशेष लाभ
 प्राप्त होता है। नौकरी तथा व्यवसाय दोनों ही इसे लाभ-लाभ होता है। ऊँचा वातावरण पत्नी से मिले
 गा होने की पूरी-पूरी सम्भावना रहती है। संतान की ओर से भी इसे कमी सुख प्राप्त नहीं होता
 साधारणतः संपूर्ण जीवन बिना सुख के ७२ वर्ष की पान्थ प्राप्त होता है।

(१३६६) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वाम्य, गुणवान्, कला - समर्थ, कुपण स्वभाव का तथा बहुत चानी होता है। यह कुटुम्बी जनों के प्रेम का ना है। पान्थु से इसे डेढ माने है। धन के मामले में यह अल्पता अतिरिक्त होता है। बड़े परीक्षों में यह धन का संचय करता है। राजकीय - सेवा अथवा किसी अन्य सेवा - कार्य में रहने हुए यह धन कमाता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दर, लज्जक, तथा जेष्ठ जाति होती है। वह पण - गृहस्थी के आरिणीय अल्पकों में भी इसे सहायता पहुँचाती है तथा ऊँच - नीच के सम्बन्धी - सम्बन्धी रहती है। जानक को शांति में अपनी पत्नी से बहुत प्रेम रहता है, पान्थु बाद में वह अल्प अनेक निजों से भी संबंध स्थापित कर लेता है तथा उनके साथ भी उठता है। जीवन के ३४, ४२, ४६ तथा ४८ के वर्ष विशेष लाभदायक होते हैं। पुत्रों से पुत्री रहता है अथवा उसके शत्रुता रहती है। पान्थु ७७ वर्ष के लगभग होती है।

(१३७०) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, स्वाम्य, हठी, अल्पता चतुर तथा अति प्रवृत्ति का होता है। इसका चित्त चंचल रहता है तथा बोल अविश्वसनीय होती है। यह धन से भी, किसी की बात न मानने वाला तथा शत्रुओं की प्रिया में स्वयं वृद्धि करने वाला होता है। इसको पानी से भय होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर तथा घर में सुख - सन्ति बनाये रखने की चेष्टा करने वाली होती है। वह जानक को भी उचित सलाह देती है। अपनी पत्नी से प्रेम एवं इसे हुए भी वह जानक अल्प निजों से भी संबंध रखता है। पुत्रों से इसकी नहीं बनती तथा उसे विधवा भी जाना होती है। अन्तीक रूप से यह धार्मिक प्रवृत्ति का भी होता है। इसका लगभग २८ वर्ष की आयु हो जाता है, तदुपान्त पर भी - धीरे - धीरे आगे लाने का नाम जीवन का सामान्य साधन होता है। इसे ५८ वर्ष की पान्थु प्राप्त होती है।

(१३७१)- इस जन्माङ्क चक्र में उत्पन्न मनुष्य कुशलम्बे तथा पतले शरीर का धारण करेगा एवं दृढ़ शरीर वाला होगा। यह मधुमायी तथा दूसरों को शीघ्र प्रभावित करने वाला तथा सुस्ती एवं आलस्य के कारण अपने कामों को भी बिना इत्ते वाला होगा। इसका काम करने का ढंग सब लोगों से अलग होगा। यह अपने नौकरी-वालों को भी एक ही काम में निश्चिन्त आदेश नहीं दे पाता, अतः उन्हें कार्य करने में विमग्न होता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में सुन्दरी, कलाओं की हाना तथा व्यवसाय-कुशल स्त्री के साथ होता है। वह पत्नी के सभी उत्पादनों का कुशलना पूर्वक निचालन करती है। स्त्री अपना भाग्यशालिनी होती है। विवाहोपरान्त जानक का भाग्योदय होता है तथा यह मिला। उत्तम कला तथा विपुल धन तथा ऐश्वर्य का स्वामी बनता है। इसे सन्तान-पक्ष से काट होता है। यह स्वयं भी योग का शिष्य होता है। इसे २० वर्ष की पद्मायु प्राप्त होती है।

(१३७२)- इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुन्दर, चिन्तन, उत्तम कर्म का, सतत शीघ्र, बुद्धिमान तथा अत्यधिक चोरीशाली होता है। यह काव्य-साहित्य तथा ललित-कलाओं का हाना, राजकीय-सेवा में एक उच्चपद प्राप्त करने वाला तथा विपुल धन एवं धरा-कीर्ति अर्जित करने वाला होता है। इसका विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोबुद्धिमान होती है। विवाहो-परान्त इसका भाग्योदय होता है। जीवन के २५, २८, ३३, ३७, ३८, ४२, ४९ तथा ५७ के वर्ष विशेष पराजय तथा लाभदायक सिद्ध होते हैं। साहित्य-रत्न, श्रृंगार-लेखन तथा इसी प्रकार के उन कार्यों से, जिनमें कि चिन्ता-बुद्धि का प्रयोग किया जाता है, इसे धन का लाभ होता है। इसे धन का अल्प-सुख प्राप्त होता है। माना तथा छोटे मांटी का सुवर्ण कम ही मिलता है। सामान्यतः यह धन-सम्पन्न, ऐश्वर्यशाली तथा सुखी जीवन बिताते हुए ८० वर्ष की पद्मायु प्राप्त करता है।

(१३७३)- इस जन्म कुण्डली में अपना मुख्य सुख तथा हठ शक्ति वाला, बृहस्पति, गुणवान् तथा विद्वान् होगा। इसका जन्म अच्छे समय कुल में होगा। अतः यह वाल्मीकि का ही पुत्री तथा उच्च शिक्षा प्राप्त होगा। यह उच्च शिक्षा प्राप्त करेगा तथा २५ वर्ष की आयु में ही शास्त्रों का अध्ययन से आगे बढ़ेगी। इसी आयु में इसका विवाह भी होगा। पत्नी सुन्दरी, उच्च शिक्षा प्राप्त, कलाओं की जानकार तथा इसके मन को मोहित करने वाली होगी। इस जन्म के जो जो भी उच्च राजपद का लाभ होगा। ३५ वर्ष की आयु में यह बहुत ऊँची स्थिति में जा पहुँचता है। (यह देश विदेश की यात्राओं का भी है तथा सर्वोच्च पदों पर मान प्राप्त करता है।) इसे सन्तान का सुख अधिक ही मिलता है, अतः मन बहुत दुःखी रहता है, पानु बाद में यह रुद्धा प्री हो जाती है। यह भेदों के पीछे को छोड़ कर लगभग ६० वर्ष की आयु में जल लोक वासी होगा।

(१३७४)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी बुद्धि, स्वरूपवान्, काय सर्जक, योगि कर्मकाण्ड का ज्ञानी, अपना बहुत तथा विद्वान् होगा। इसका वाल्मीकि काटों में जीता है। विजायपत्नी में रुकावटें आती रहती हैं, तथापि उच्च शिक्षा प्राप्त करेगा। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होगा। पत्नी सुन्दरी, अनेक कलाओं की जानने वाली, विदुषी, पतिव्रता तथा उपेक्ष के भोगों को सहने योग्य होने वाली मिलती है। विवाहोत्पत्ति इसे धन तथा सम्मान दोनों की वरदा उपलब्ध होगी। ३५ वर्ष की आयु में इसे कुछ समय तक कष्ट उठाना पड़ता है। इसका आगे बढ़े ४० वर्ष की आयु में होगा। राजा के सम्मान की उपलब्धि होगी तथा धन का सर्जक लाभ होगा। सन्तान- हेतु दुःखी रहता है तथा जोड़ा कष्टों में पत्नी के लिए ही दुःख भोगता है। सामान्यतः सुखी एवं समस्त जीवन बिताते हुए यह ६२ वर्ष की पूर्ण आयु प्राप्त करता है।

(१३०५) - इस लक्ष कुण्डली का स्वामी मरणम कदका, मधुप मकी, सुन्दर, शास्त्रीय आचार्य से पुका
जिज्ञासु स्वामी में विपुल, उदात्त, कार्य कुशल, ज्योतिष-शास्त्र का ध्यान रखने वाला तथा सुन्दर
स्वभाव वाला होता है। इसे दो भाइयों का सुख मिलता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में
होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा परिवर्तनी होती है। ३५ वर्ष की आयु में यह उच्च राजपद
को पाता है तथा अपने पुत्र, विद्या, योग्यता आदि गुणों के आधार पर सर्वत्र सम्मानित होता
है। जीवन के ४०, ४२, ५० तथा ५२ के वर्ष विशेष लाभपद सिद्ध होते हैं। इसकी अपने पुत्रों तथा
अपने अच्छे लोगों से भी शत्रुता हो जाती है, यन्त्र शत्रु-पक्ष इसे किसी प्रकार की शारीरिक मार,
आर्थिक हानि नहीं पहुँचा पाता। यह निम्न उत्पन्न काल हुआ विपुल धन एवं सम्पत्ति अर्जित
करता है। किसी शास्त्री से इसे बहुत सहायता मिलती है। पूर्णपु २०-२२ वर्ष की होती है।

(१३०६) - इस लक्ष कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, चाल, संगीत एवं चित्र कला में रुचि (अपने
काल, काल एवं साहित्य का सर्जक, धर्मज्ञ तथा धारी होता है) इसके दो अथवा तीन
विवाह होते हैं। प्रथम विवाह लगभग २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनेषु-
कुल प्राप्त होती है। यह अपने सद्गुणों से सम्पूर्ण परिवार को वश में कर लेती है। विनोद
रस्य भाग्योदय होता है। राजकीय सेवा तथा अथवा कौशल के माध्यम से अनन्तर लेके लगता है।
पूर्ण भाग्योदय ४६ वर्ष की आयु में होता है। ६० वर्ष की आयु तक विभिन्न लोगों द्वारा धन का लाभ
होता रहता है। इसकी अपने पुत्रों से नहीं बनती तथा उनके कारण कष्ट भी भोगना पड़ता है। धन
सम्पत्ति तथा अथवा कारणों से धन में बढ़ाई-कमर भी बने होते हैं। ऐसी नीति में चित्त में शान्ति
नहीं रहती। यह लगभग ७२ वर्ष की आयु में पालोक-गमन करता है।

(१३७७)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुदा, पिपकादी, उच्च विचारों वाला, सरल स्वभाव तथा प्रत्येक व्यक्ति को प्रभावित करने वाला होगा। इसे आनंद-प्रमोद की, कलात्मक, सुदा, ऐश्वर्य तथा वैभव प्रदर्शित करने वाली वस्तुओं से लाभ होगा। इसका रहन-सहन भी ऐश्वर्यपूर्ण तथा कलात्मक रुचि सम्पन्न होगा। इसका विवाह २६-२७ वर्ष की आयु में होगा। पत्नी सुदा तथा मनोबुद्धि मिलाती है। सन्तान-पक्ष के प्रति चिन्ता रहती है। सन्तानों को सन्तान या चलागे के लिए इसे काफी पीछा काग पड़ता है। इसकी आयु के ३२, ३८, ४०, ४७ तथा ५२ के वर्ष विशेष लाभप्रद सिद्ध होंगे। यों, भाग्योदय विवाह के समय से ही आरंभ हो जाता है तथा इसके पार धन-सम्पत्ति की कोई कमी नहीं रहती। इसे पदोन्नति में रहने का अवसर मिलता है तथा वहाँ पर सुदा-सुदा भोग भी प्राप्त होते हैं। यह पण्य सम्पत्ति घोट का लगभग ७८ वर्ष की आयु में पृथ्वी-गमन काग है।

(१३७८)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुदा, चान्द्र, बुद्धिमान, गुणवान्, कला-साहित्य का उमी, शान्त तथा अपनी योग्यता का प्रकाश फैलाने वाला होगा। यह अनेक कार्यों को पूरा करने का संकल्प लेता है, पण्य उनमें से कुछ ही पूरे हो पाते हैं। इसका रोगों का आक्रमण प्रायः आयु में होता है। पत्नी सुदा तथा कला-मर्मज्ञ होती है। वास्तव-सुख उत्पन्न रहता है, पण्य सन्तान के प्रति निरन्तर चिन्तित रहता पड़ता है। इसका भाग्योदय ४० वर्ष की आयु में होता है तथा ४२ वर्ष की आयु तक यह गिता धन तथा पशु का उपार्जन करण हुआ उच्चपदों पर प्रतिष्ठित होता चला जाता है। कभी आकस्मिक रूप से घोट लगने की संभावना भी रहती है। यह सुखी, धनी तथा प्रसह्य जीवन बिताता हुआ लगभग ८० वर्ष की आयु में पृथ्वी-गमन काग है।

(१३७६)- इस जन्म कुण्डली का म्चामी सुन्दर, स्वस्थ, साहसी, सुमधुर एवं उभावशाली जाणी कोलेने वाला, उगु कार्यों को करने में तत्पर तथा अग्रेच्छुक होता है। यह राजकीय-सेवा में किसी उच्च पद पर प्रतिष्ठित होकर अपनी योग्यता से निराला उन्नति काता चला जाता है। माता-पिता के साथ से प्रणय-पुष्प, अनेक भाइयों वाला तथा कुटुम्ब की ओर से सुखी होता है। इसका सम्बन्ध निम्न-कोटि के लोगों से अधिक रहता है। यह उनके साथ आत्म-हेतु से तो प्राप्त करता ही है, उनका उपकार करने के लिए भी निराला उपलब्ध रहता है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में होना ही पानी सुखी, कला-कुशल, बुद्धिमती एवं विद्वान् होती है। अपनी ह्नी से उसे कोने के असीका यह जन्म निम्नो के मोह में भी डूबा रहता है तथा उनके कारण कभी-कभी अपनी कार्य-हानि भी का बैठता है। ५६ वर्ष की आयु तक यह वर्णन धन-मान अर्जित कोलेता है तथा २२ वर्ष की आयु जाता है।

(१३८०)- इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुन्दर, स्वस्थ, काव्य एवं साहित्य का सज्जक, बाल्यावस्था में शैली, निम्न सुखी एवं प्रतिष्ठित धन की वृद्धि करने वाला होता है। इसकी पत्नी सुखी, चिदुषी तथा उभावशाली व्यक्तित्व की स्वामिनी होती है। वह पति का अनुगमन करती है। विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। अन्य निम्नो से भी जानक का संबंध बना रहता है और उनके सेम में आकर्षण निमग्न भी रहता है। २४-२५ वर्ष की आयु में इसे राजकीय-सेवा तथा सम्मान का लाभ होता है। यह निराला उन्नति काता हुका शीघ्र ही उच्च पद प्राप्त कोलेता है तथा धन भी खूब कमाता है। पत्नी के साथ इसकी उत्तमि में बहुत सहयोग मिलता है। ५६ वर्ष की आयु में इसे विशेष लाभ होता है। ह्नी भौतिक सुख-लाभन इसे उपलब्ध होते हैं। धर्म, भजन, वाहन, हेतुकादि के असीका उच्च धन-सम्पत्ति का भी लाभ होता है। आयु २४ वर्ष के लगभग होती है।

(१३८१) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुदा, स्वास्थ, विज्ञा-बुद्धि में प्रवीण, गुणवान्, कलाका, सर्वज्ञ सम्मान पावे वाला, जगत्प्रसिद्धी का विस्तार का धारी, वैभव-विलास का उपभोग कोरे वाला, अपने पुत्रपौत्र को ही सर्वोपरी मान का देना कोरे की निहा कोरे वाला, अपने पराक्रम से धात पैदा कोरे वाला, धन का लोभी, कुपरा तथा कुपणता के कारण अपवाद सहन कोरे वाला भी होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुदरी होती है, पालु अपने इसे विशेष लगाव नहीं रहता। इसके अंगोदर में लहापक कोई अल्प स्त्री ही होती है, अतः यह उसी का अभिमान काता है तथा उसी के गुण गाता है। ३५ वर्ष की आयु तक इसे सब प्रकार के सुख-साधन, धन-मान, चल-अचल सम्पत्ति, वाहन आदि उपलब्ध हो जाते हैं। राज्य में भी उच्च पद एवं सम्मान प्राप्त होना है। यह सुख पूर्वक रहता हुआ ८८ वर्ष की वृद्धावस्था प्राप्त करता है।

(१३८२) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुदा, स्वास्थ, बुद्धि, कठोर चिन्ता का तथा कुंभी होता है। यह अपना अनुशासन-धर्म होता है तथा अपना भेद किसी को नहीं देता। पीकारी जनतक नौका-यात्रा करी इसके आदेशों का पालन कोरे हुए मान-सम्मान देने रहते हैं। यह धान का पक्का तथा जात सन्धों की गुणवत्ता से लहापना कोरे वाला होता है। इसका विवाह लगभग २२ वर्ष की आयु में सुदा तथा गुणवती स्त्री के साथ होता है, दाम्पत्य-जीवन सुखमय रहता है। पालु सन्तान-पक्ष से दुर्बल रहता पड़ता है। पुत्र के लिए कष्ट होता है। कन्या बड़े पुत्रों से जीवित रह पाती है। वृद्धावस्था में बड़ी कठिनाई एवं उपायों से एक पुत्र की प्राप्ति सम्भव है। इसका अंगोदर १८-१९ वर्ष की आयु में ही हो जाता है। धन, धन, मान-पद-पद-पद (उपलब्ध होते हैं) आयु लगभग ६८ वर्ष होती है, इसे बचने का ८२ वर्ष तक जीवित रह सकना है।

(१३८३)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी बुद्ध, स्वस्थ, विद्वान्, कला-मर्मज्ञ, गुणवान्, धर्म में आस्था रखने वाला तथा उदात्त दानी होता है। यह धन-धन्यमान का पीका में जन्म लेता है। इसका विवाह २२ की आयु में सुदृढ़ तथा गुणवती नारी के साथ होगा। वह अपने व्यक्तित्व से पीका में लक्ष्मी को प्रभावित करने वाली हो पायेगी, अपना उगाध रखने वाली होगी, तथापि इस जातक का एक से अधिक मित्रों से सम्पर्क बना रहता है। यह २१ वर्ष की आयु से ही स्व-प्राप्त्युद्धार प्राप्त करने का उद्योग करता है तथा अपनी पत्नी के साथ अपनी बहुत लाभ उठाता है। इसे बुद्ध तथा सुयोग्य समझते हैं। आर्थिक-स्थिति उत्तम रहती है। धर्म, भजन, जाह्न, देवक आदि सुख के सभी साधन उपलब्ध होते हैं। पत्नी तथा समाज में मान-प्रतिष्ठा भी प्राप्त होती है। परमायु ७०-७२ वर्ष होगी, इससे बचने ७-८३ वर्ष तक जीवित रह सकता है।

(१३८४)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी बुद्ध, विद्वान्, गुणवान्, विद्वान्, गुण-लोक तथा धर्म शास्त्री होंगे से जीवन-प्राप्त करता है। इसे धन, सुख तथा विद्या के साधन स्वयमेव उपलब्ध होते रहते हैं। भजन, जाह्न तथा देवक आदि का सुख भी प्राप्त होता है। मणि-मार्गिक, चरण, आभूषणों से युक्त यह जातक ४५ वर्ष की आयु तक अपना धनी होता जाता है। इसका विवाह २१-२२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुदृढ़ तथा मनोबुद्धि मालिनी है और उसके द्वारा धन का भी विशेष लाभ होता है। इसका भग्नोदय २७ वर्ष की आयु में पृथ्वी में जाकर होता है। इसके जीवन के ४८, ५३, ५६, ६० तथा ६५ के वर्ष अपना महत्वपूर्ण मित्र होने हैं। इसके भग्नोदय में कोई भी लक्ष्मी नहीं होती है तथा उसके माधव से इसे बहुत लाभ होता है। पुत्र बुद्ध तथा आस्था करी होते हैं। पृथ्वी का भी सुख ले कीतनी है। (परमायु ८२ वर्ष होगी)।

(१३८५)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी बुद्धिमान, स्वस्थ शरीर, गुणवान् तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। यह सर्वत्र यश-सम्मान प्राप्त करता है तथा इसे धन का कभी अभाव नहीं होता। बुद्धि कार्य एवं व्यवसायों द्वारा भी इसे धन का विशेष लाभ होता है। भूमिगत धन का भी सहज रूप से लाभ होता है। यह अपने धन का लक्ष्मी गृह भागों में करता है तथा विपुल धन का व्यय कोके आरम्भिक लाभ भी उठाता है। इसका भाग्यदण्ड २५ वर्ष की आयु में होता है। किसी भूमि अथवा भवन की खरीद से इसे बहुत लाभ होता है। राजकीय-सेवा में इसे उच्च पद की प्राप्ति होती है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है (पत्नी बुद्धि, गुणवती तथा गृह-कार्य में सहाय होती है। अल्प-मित्रों के साथ भी इसके सम्बन्ध रहते हैं। यह अपने कार्य में चला होता है। सन्तानों से सुख मिलता है। प्रगति धर्म या धर्म के हो सकती है।

(१३८६)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य बुद्धि, स्वस्थ, गुणी, बुद्धिमान तथा विद्वान् होते हुए भी पुत्रा खेलने का शौकीन होता है तथा पुत्र एवं व्यवसाय के माध्यम से विपुल धन अर्जन करता है। स्वच्छिन्ना भी खूब होता है। सामाजिक कार्य से तथा भूमिगत धन के उत्खनन से भी इसे बहुत लाभ होता है। राजकीय-सेवा में होते हुए २१ वर्ष की आयु से यह विजय प्राप्त लाभ होता है। ३० वर्ष की आयु में इसे पतन से अचानक ही विपुल धन का पहुँचने-पहुँचने इसकी कुछ अच्छे लोगों से शत्रुता हो जाती है, जो इसकी महत्वाकांक्षियों की प्रति में बाधक बनते हैं। पतन से इसका कुछ बिगाड़ नहीं पाने, क्योंकि यह बड़ा साधवी होता है २३ वर्ष की आयु में विवाह होता है। पत्नी तथा पुत्रों का उत्तम सुख रहता है। लगभग २० वर्ष का सुखी जीवन बिताता है।

भ०
सं०
२०२०

भू०
सं०
३००८

(१३८७) - इस जलकुण्डली का स्वामी अंजना सुदा, स्वर्ण, कोष्ठ चरित्रका, सर्वज्ञ प्रभाव फैलाने वाला तथा अपने गुण, व्यक्तित्व, कौशल, बुद्धि, संगठन-क्षमता एवं पाठ्य-क्षमता। सर्वज्ञ सम्मान प्राप्त करने वाला होता है। यह जल-विलास, सौन्दर्य-वृद्धि, आभोग-प्रदोष तथा रत्न-दान की वस्तुओं के प्राप्ति से विशेष आर्थिक-लाभ प्राप्त करता है। इसका आयु २३ वर्ष की आयु में होता है। नृपति का धन तथा सम्मान की निम्न वृद्धि होती रहती है। यह अवस्था में बड़े बड़े दाँव लगाते हैं भी नहीं-बूझना। अपने साहस के बल पर यह अत्यधिक धन भी कमाता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी गुणवती एवं पति पर प्रभावशाली होती है। वह धन को बहुत लालच का रखती है। सन्तानें सुप्रीत तथा पुत्रदेने वाली होती है। जीवन पशु, धन तथा धन से कीर्ति बना रहता है। पूजादि लगभग २२ वर्ष होती है।

(१३८८)- इस जलकुण्डली में अपना मुख्य बाल्यावस्था से ही सब तरह के सुखों का उपभोग करते वाला, सुदा, पक्षात्की, गुणवान, विद्वान, चतुर तथा अनेक दुर्लभों की तुलना में भाग्य के बल पर कहीं अधिक उन्नति करने वाला होता है। इसे समझ बनाने के लिए अन्त लोग पीछे करते हैं। यह वह जैसे ही ऐसे लोगों का सहयोग प्राप्त करता है, जो इसके किसी भी कार्य में धन अपना अमलगाते हेतु तैयार रहते हैं तथा इसे लाभ पहुँचाते हैं। यह २० वर्ष की आयु से ही धन कमाने लगता है। इसके धनागम के मोन भी अनेक होते हैं। जहाँ एकलप्यता भी न की जा सके, ऐसे स्वार्थों से भी इसे धन का लाभ होता है। इसे राज्य की ओर से मजदूरी मिलती है तथा राज्य से दान भी उठता है। महापरीक्षेण भी यह कीर्ति-शून्य बना रहता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी तथा सन्तानों से सुख मिलता है। पूण्ड्रि ७८ वर्ष होती है।

(१३८८)- इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुदा, स्वस्व, धीर- मंथी, बुद्धिमान, न्याय-विन, विचारक, उदार, अनेक कलाओं का ज्ञान, तकनीकी ज्ञान का स्वामी तथा घोषणकारी होता है। इसे विभिन्न श्रेणी के व्यक्तियों का सहयोग मिलता है, जिससे यह पण्डित लाभ उठाता है। यह उल्लेख स्थिति में अपना कार्य सिद्ध करने में सफल होता है। इसका भाग्योदय १८-१९ वर्ष की आयु में होता है। विवाह २०-२१ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोनुकूल प्रेम होती है। यह पत्नी से पूर्ण प्रेम तथा उसके प्रति लज्जित रहता है, परन्तु कुछ समय बाद पत्नी रुग्ण हो जाती है और इसे स्त्री-स्वायत्त विधवा भी होना पड़ता है। सन्तान-स्वायत्त उत्तम रहता है। इसे उन लोगों से लाभ होता है, जिन्हें इसके मित्र और पड़ोसीजन पसन्द नहीं करते। यह पत्नी तथा सुखी जीवन बिताते हुए लगभग २० वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(१३८९)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुदा, बुद्धिमान, धार्मिक, पुष्टि का तथा विद्वान् होता है। परन्तु इसे चिन्ताएँ घेर रही हैं। यह पारिवारिक-दायित्वों का निर्वहण करने वाला तथा पत्नी सुदा, मनीषी तथा उल्लेख क्षेत्र में सहयोग करने वाली होती है। इसका भाग्योदय विवाह के बाद परदेश में होता है। इसे राजकीय-सेवा-कार्य करने का अवसर भी मिलता है, परन्तु उसमें यश प्राप्त नहीं होता। धन से मिलता है, परन्तु सम्मान-प्राप्ति के लिए लड़ता रहता है। यह भील-ही भील दुःखी रहता है। इसे मजबूरी में परदेश में रहना पड़ता है तथा दूसरों की सेवा करने हुए ही अपना जीवन व्यतीत करता है। लत्ताओं में पुत्रों की हानि तथा पुत्रों की अधिक होती है। सभी हानि योग्य होती है। आयु लगभग २८ वर्ष की प्राप्त होती है।

(१३६१) - इस जल कुण्डली का स्वामी अनेक कलाओं का ज्ञान, बुद्धिमान, सुदा तथा निष्कल ज्ञान का धारी होता है। इसका आयु १२-१६ वर्ष की आयु से होता है। पदोत्तम में रह कर पद पञ्चमि धनेष्वर्जन करता है। लगभग २५ वर्ष की आयु में पद नहीं बाह्य से सहायता प्राप्त करके कोई कार्य अंग्रेज करता है और उसके लाभ उठाना है। यह अपने सुयोग से सबका प्रिय बन जाता है, पालु जिस कार्य के करने की विशेष आकांक्षा रहता है, वह प्राप्त नहीं हो पाता। इसे पराई-सेवा द्वारा आजीविका प्राप्त होती है। १२ वर्ष से ३० वर्ष तक ३५ से ५० की वर्ष तक की अवधि में इसे अधिक सेवाएँ करना पड़ता है। विवाह २२ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुदा तथा महत्वाकांक्षिणी होती है, यह उसकी आकांक्षाओं को प्राप्त करता रहता है। इसे पुत्र-पुत्रियों का सुख प्राप्त होता है। इसकी पामासु लगभग ६२ वर्ष की होती है।

(१३६२) - इस जल कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुदा, लच्छीन, बुद्धिमान तथा अनुशासन-प्रिय होता है। यह सर्वेव अपने मन की कला-चाहता है। अपनी इच्छा के विरुद्ध कोई भी काम इसे पसन्द नहीं होता। वह अपना बाह्य - लीजगट इसे संशय की दृष्टि से देखा जाता है। राजद्वार है इसे लाभ के स्थान पर हाथी ही प्राप्त होती है। यह पदोत्तम में रह कर नौकरी द्वारा जीविकोपार्जन करता है। इसे उन कार्यों तथा स्थानों से लाभ होता है, जो किसी दूसरे की कृपा पर निर्भर करते हैं। ३५ वर्ष तक यह चले-चले धन-संचय करता रहता है तथा पञ्चमि धनी हो जाता है। विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुदा तथा लच्छीन मिलती है, तथा यह अन्य स्थानों में भी अनुशासन बना रहता है। पुत्र-पुत्री सुदा होते हैं। इसे अपने जीवन में अप्रमत्त अधिक प्राप्त होता है। पामासु लगभग ८२ वर्ष की होती है।

(१३८३) - इस जलकुण्डली का स्वामी सुदा, चित्त, भगवत्प, कला-सर्वज्ञ, विद्वानी, सुहृदि-
सम्पन्न तथा कपन का र्जि कोने में सिंह के समान पाकुनी, साहसी, कुदृष्टि के चित्तवक्ता को
धोनेवाली में निता सेलन बना रहे वाला होता है। इसे शिक्षा-दीक्षा, अध्ययन में
कोई कठिनाई नहीं होती, क्योंकि यह बुरी का बड़ा तीव्र होता है। यह परोपकारी भी होता
है तथा अपने धन से दूसरों की सहायता काके प्रसन्न होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की
आयु में होता है। पत्नी सुदृढ़, मनोबुद्धि तथा सुख-दुःख में प्राण देने वाली मिलती है, पालु
इसे प्रथम पुत्र का दुःख होता है। इसका माजोदय २५ वर्ष की आयु से होता है, तत्पश्चात् यह
निता उत्तम कला-चला जाता है। राजकीय-सेवा में रहकर अथवा पत्नी के माध्यम से कोई
स्वतन्त्र व्यवसाय काके परम धन अर्जित करता है। (जल से भय रहता है) पामाय २७ वर्ष होती है।

(१३८४) - इस कुण्डली का स्वामी सुदा तथा पुष्ट शरीर वाला, सेलवी, भगवत्प व विश्वास कोने
वाला, पुरानी पान्थाओं का पालन करने वाला तथा उग्र कार्य में संलग्न रहने वाला होता है।
इसमें सुदृढ़ कार्य की उत्कट इच्छा पाई जाती है। यह परम देवायन करता है। इसके माता
पिता धनी तथा समाज में परिचित होते हैं। इस जातक के राजकीय-सेवा तथा समाज-सेवा
- इन दोनों ही धन, धन तथा सुख का लाभ होता है। राजकीय सेवा में इसे निता पदोन्नति
पाई होती रहती है। अनेक सामाजिक संगठनों का भी यह अधिष्ठाता होता है। ३५ वर्ष की आयु
में यह विशेष परिचित स्थान प्राप्त कर लेता है। इसका भय, प्रलय तथा वैश्व जीवनान्तर तक
बना रहता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में सुदृढ़ तथा मनोबुद्धि स्त्री के साथ होता है।
सन्तान-सुख भी बड़ी आयु में प्राप्त होता है। प्रथम पुत्र ७ ई से २५ वर्ष के मध्य होती है।

(१३८५) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी ज्ञानावाणा में नेत्र-रोगी रहता है। बाद में स्वस्थ हुआ तथा साहसी जीवन बिताता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुशील, मधुर भाषिणी तथा सरल स्वभाव की होती है। यह जानक कुछ समय तक वसिष्ठ-व्यवस्था भी कर सकती है। इसका भाजोदय २७ वर्ष की आयु में होता है। ३५ वर्ष की आयु तक यह बहुत धनी बन जाता है। इसको चिदेश तथा चोदेश-दोनों ज्ञानों में आध्यात्मिक-लाभ होता है। यह व्यवसाय में विनम्र, अपनी बात को मली-माली स्पष्ट न कहने वाला, धान्य भील-ही-भील विशेष करने वाले स्वभाव का होता है। यह अपने दुरुष्कर्ष एवं उद्यम के बल पर उत्कृष्ट कृता-फल प्राप्त करता है तथा ४५ वर्ष की आयु में सभी भौतिक सुख-साधनों को उपलब्ध कर लेता है। यह कई प्रकार के कार्य करता है। पुत्र-पुत्रियों में सुखी रहता है। धान्य लगभग २८ वर्ष की होती है।

(१३८६) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुद्ध, स्वस्थ, सुशील, धर्म में अटका रहनेवाला होता है। धर्म को ही जीवन का आधार मानने वाला होता है। यह अपने पिता से अपना मोह रहनेवाला, धान्य कुटुम्बी जनों में डेढ़ रहनेवाला होता है। यह विष्णुवन्दन के द्वारा ब्रह्म की धारणा करने लगता है तथा ईश्वर ही मानती होता है। इसका भाजोदय २१-२२ वर्ष की आयु में आरम्भ होता है। राजकीय-सेवा में इसे विशेष लाभ होता है, तथा कि कमी-कमी धन की कमी का शिका भी होता चलाता है। ३३ वर्ष की आयु में इसकी उत्कृष्टि होने लगती है, तथा स्वयं यह वर्णधर धन-संचय करता है तथा ४५ से ४७ वर्ष की आयु तक वर्णधर धनी होता है। राजमाया बढ़ती-चली जाती है तथा सामाजिक-प्रतिष्ठा भी उपलब्ध होती है। इसके से सुख मिलता है। पुत्र २० वर्ष की होती है।

(१३-६७) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी दृढ़ शरीर एवं उदात्त हृदय का, अत्यन्त परिश्रमी, मध्यम कदवाला सुन्दर तथा अकाण्ठ ही चिन्ताओं से घिरा रहने वाला होता है। यह अपनी सम्पत्ति से घरेवाले दायित्वों से दबा रहता है। अपने स्वर्ची की प्रति हेतु यह प्रायः भ्रष्ट होता रहता है तथा मृणाल बना रहता है। यह जुआ खेलने का शौकीन भी होता है। इसकी शिक्षा चचेष्ट होती है। यह सरकारी-सेवा में रह कर जीविकोपार्जन करता है। जन्म में आर्थिक कठिनाइयों भोगने के बाद २४ से २८ वर्ष की आयु में इसका भाग्योदय तथा विवाह होता है। पत्नी सुन्दरी तथा सेवा-भावी होती है। इसे अनेक बार अपना कार्य-व्यवसाय बदलना पड़ता है। ४५ वर्ष की आयु में यह किसी शिक्षा सम्बन्धी कार्य अथवा उद्योग से हटकर उन्नति-पथ की ओर विशेष रूप से अग्रसर होता है। सामान्य-सुखी रहने हुए यह लगभग ७६ वर्ष की वृद्धि प्राप्त करता है।

(१३-६८) - इस जन्माहु-चक्र में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, सच्चरीत, मधुरभाषी तथा आकर्षक व्यक्ति-त्व सम्पन्न होता है। यह प्रायः ही संधर्षशील बना रहता है। माता का स्वर्गवास अल्पावधि में ही हो जाता है। शिक्षा-दीक्षा में निम्नता व्यवधान आते रहते हैं। अतः यह अधिक पढ़-लिख नहीं पाता। अर्थोपार्जन हेतु बाल्यावस्था से ही छोटी-मोटी नीकियों कानी पड़ती हैं। १७ वर्ष की आयु में किसी बाहरी व्यक्ति की सहायता से भाग्योदय का अवसर मिलता है तथा जीवन की दिशा बदल जाती है। यह किसी शिक्षा-प्रदान, दातव्य-निष्ठान अथवा जनकल्याण सम्बन्धी सार्वजनिक विभाग में कार्यरत होकर अपनी आय को बढ़ाता है। २४-२५ वर्ष की आयु में इसका विवाह होता है। पत्नी सुन्दरी मिलती है। ३५ से ४० वर्ष की आयु में इसकी गणना उच्च-श्रेणी के लोगों में होने लगती है। सन्तान पुत्र देती है। पत्नी ७८ वर्ष होती है।

(१३६६) - इस जलकुण्डली का स्वामी सुदा, बुद्धिमान, सद्गुण, लोचन - आलेखन कला में चतुर, भाषा में रुचि रखने वाला, चर्मरोग तथा गुरुजनों का आश्रय - सम्मान करने वाला होता है। शिक्षा प्रवेष्ट प्राप्त होती है। यह २२ वर्ष की आयु में पतनोपासना करने लगता है। यह बाहरी व्यक्ति अपना स्थान के आर्थिक - लाभ उठाता है। इसका विवाह २२ से २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, विदुषी तथा सुख देने वाली होती है। विवाहोपान्त ही भाग्य में जीवन्ति आता है तथा उत्तमि का नवीन मार्ग प्रकाश होता है। कुछ ही समय में यह सम्पत्ति में परिचित स्थान प्राप्त कर लेता है। राजकीय सेवा में संलग्न होकर जीवन को एक आनन्द दिशा में ले जाता है, कि उसे भी छोड़ कर दूसरे नवीन कार्य में लगता है। यह आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न रहता है। ३० वर्ष की आयु तक भूमि - भवनादि का सुखी प्राप्त कर लेता है। पुत्र देखावे है। (प्रायः १०२ वर्ष होती है)

(१४००) - इस जलकुण्डली का स्वामी सुदा, स्वल्प, कलाका, जेलक, गुणवर्ती, चर्मरोग, उपदेश देने में कुशल, शारी तथा गंभीर स्वभाव का होता है। इसके पास अनेक मूर्तों में चित्र का आशय होता है, अतः आर्थिक - स्थिति सुदृढ़ बनी रहती है। विज्ञा का लाभ उत्तम होता है। २९ वर्ष की आयु में राजकीय सेवा में संलग्न होता है। कि उसे छोड़ कर दूसरी राजकीय - सेवा अवकाश किसी अन्य परिचित की सेवा में संलग्न होता है। यह अनेक कर्मों के साथ भोग - विवाह करनेवाला तथा उनके संग में लाभ उठाने वाला होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोपुष्प मिमानी है। यह अपनी पत्नी के साथ प्रेम करता है। पूर्ण भोग ४० वर्ष की आयु में होता है। तदुपान्त विना उत्तमि का नवीन जाना है। सन्तान के कारण दुःखी रहता है। पूर्ण आयु लगभग १०२ वर्ष होती है।

(१४०१) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी बुद्ध, सुवक्ता, श्रेष्ठ विचारवान्, धनी, भाग्यवान्, होनरी, पण्डित तथा गुणवान् होता है। यह आपत्त (अन्धता, साहसी तथा परीक्षणी होता है। यह अपने मन का धेड़ किसी पर उकट नहीं करता तथा अनेक सूत्रों एवं विचारों के साथ धनोपाजित करता है। यह दूसरों के प्रति दयालु तथा परोपकारी भी होता है। मातृ-भक्त होने के साथ ही यह अपने कुल का पालन-रक्षण तथा गार्ह-बन्धुओं के भेदभावे वाला होता है। इसके मित्रों की संख्या भी अधिक होती है। विद्या का प्रथम लाभ होता है। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, विद्वान् तथा गुणवती होती है। इसका आगेदम राजकीय सेवा में संलग्न होने पर होता है। यह भाग्य तथा पुरुषार्थ दोनों में लाभ उठाता है। ३५ वर्ष की आयु से जीवनान्त तक यह निरन्तर उन्नति करता चला जाता है तथा सुखसम्पन्न बना रहता है। पुत्रों की संख्या दो-तीन होती है। वामाशु ७८ वर्ष होती है।

(१४०२) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी बुद्ध, विद्वान्, अत्यन्त परीक्षणी, अनेक कलाओं का ज्ञाता, सह-गुणी, मन्त्री तथा महत्वाकांक्षी होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। यह पत्नी के प्रति अनुत्साहीन तथा उसके कहे अनुसृत चलने वाला होता है। अन्य मित्रों के प्रति भी इसकी आसक्ति रहती है। ३४ वर्ष की आयु में इसे आर्थिक-संकट का सामना करना पड़ता है। तत्पश्चात् इसे अनेक कार्यों से धन का लाभ होता है। भू-गर्भ स्थित सम्पत्ति भी प्राप्त होती है। तिलवर्ग के लोगों से इसे लाभ होता रहता है तथा उनके साथ रहने में इसे अच्छा भी लगता है। ४८ वर्ष की आयु में इसे विशेष लाभ होता है। इसके पुत्र होनहार सुख देने वाले, साहसी तथा पराक्रमी होते हैं। सामान्यतः इसका जीवन सुख से कीर्तना है तथा सामाजिक मान-प्रतिष्ठा भी मिली रहती है। वामाशु लगभग ७४ वर्ष होती है।

(१४०३) - इस जन्माङ्क चक्र में उत्पन्न मुख्य सुखा, स्वस्थ, शू-वी, जाकुली तथा साहस के कार्यों में विशेष रुचि लेने वाला होता है। यह आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न, चतुर तथा हाथका/की पीछे त्रिजो से मुकाबिला करने में प्रसन्न होता है। यह धार्मिक उद्योगों का, ईश्वर-भक्त, दानी, धरोपकारी तथा अपने परिवार का पालन-पोषण करना हुआ सुखी-जीवन व्यतीत करता है। यह धैर्य-रीज का भेद नहीं मानता। यह अपने संसर्ग में अपने वाले सभी लोगों का दिन-रात पालन करता है। छोटे लोगों के प्रति इसके हृदय में विशेष कहणा रहती है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोबुद्धि मिलती है। तथापि अपने क्रिओं से भी इसके संबंध बने रहते हैं। इसका भाग्यदश २२ वर्ष की आयु में होता है तथा कितीपद कार्य, राज्य अपना बड़े प्रतिष्ठान का आर्थिक लाभ होता है। ३२, ३६ वर्ष की आयु में कुछ हाकिमी बन जाते हैं। पुत्र सुखान्वित होते हैं। पामासु २९ वर्ष होती है।

(१४०४) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुखा, स्वस्थ, धीर-गंभीर, उदात्त स्वभाव का तथा अपनी हानि का कोई दूसरों का उपकार करने वाला होता है। विजा का नयन लाभ होता है। विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी गंभीर चिन्ता की तथा गृहस्थी का निचासन करने में कुशल होती है। ३० वर्ष की आयु में इसे विशेष आर्थिक-लाभ होता है। राज्य निबंधन होने के कारण इसे मिलना लाभ होता रहता है। शत्रुओं की निष्ठा अधिक होती है, तथापि यह अपनी रिक्त-बुद्धि एवं साहस से इसके पालन जाता रहता है। ६२ वर्ष की आयु में क्षीण होने के कारण यह तीन वर्ष तक रोगी रहता है। पत्नी को भी कष्ट होता है। तत्पश्चात् स्वस्थ होकर सुखी-जीवन बिताता है। पुत्रों से इसे सुख प्राप्त होता है तथा समाज में मान-प्रतिष्ठा भी बनी रहती है। पामासु ७८ वर्ष के लगभग होती है।

(१४०५) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुदा, स्वस्थ, आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न तथा शिष्टों को प्रिय होता है। यह उच्च शिक्षा पाने वाला तथा व्यावसायिक - क्षेत्र में विशेष उत्कृष्टि करने वाला होता है। यह अपने जीवन में नया साहस से छोटे काम को भी बहुत बड़ा देता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनेकुबूला तथा सुदारी मिलती है। विवाहोपान्त ही आश्विन भी लग्न होता है। तथा ४५ वर्ष की आयु तक निराला धन कमाना रहता है। इसकी सन्तानों में सुख-धन कमानी है। पालु पिता से विशेष प्रेम नहीं रखती। इसे राज्य, राजकीय-सेवा, अप-गिचिन काका तथा बाहरी लोगों से विशेष लाभ होता है। ५० वर्ष की आयु में बीमारी होती है, जो दीर्घकाल तक कष्ट देती है। बाद में रोग-मुक्त होकर यह धार्मिक कार्यों में विशेष रुचि लेता है तथा दान, पोषका आदि करता है। पूर्णायु ७८ वर्ष के लगभग होती है।

(१४०६) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुदा, स्वस्थ, उत्साही, शत्रुओं को पराजित करने वाला धी-जमीर तथा गुणवान होता है। यह उत्कृष्ट उत्कृष्ट को शान्ति पूर्वक सुलभाने वाला, विद्या बुद्धि में श्रेष्ठ, शिक्षा-दीक्षा में उत्तम, तथा उत्पुत्पन्न रहता है। धार्मिक प्रवृत्ति का होने के कारण धर्म में विशेष रुचि नहीं लेता। पालु इसकी सभी धार्मिक कार्यों में बहुत मन लगानी है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पहली सन्तान पुत्र होती है। दूला-पुत्र विशेष आश्विन तथा कुल-पालक होता है। पत्नी भी गृह कार्य कुशल, सुदारी तथा मनेकुबूला होती है। इसका आश्विन २३-२४ वर्ष की आयु से लग्न होता है तथा जीवन पर्यन्त धनवान् होता रहता है। यह व्यवसाय का लाभ उठाता है। इसे कभी भी चारा नहीं होता। इसका पालन से भी संबंध रहता है। पूर्णायु ८० वर्ष तक हो सकती है।

(१४०७) - इस जन्म कुण्डली में जन्म लेने वाला मनुष्य सामान्य सुन्दर, स्वस्थ तथा अदूरदर्शी होता है। यह दूसरों की सेवा करने वाला, अल्प-धनी तथा अपव्ययी होता है। यह सुखोपभोग, विलास तथा अल्प अनुचित कार्यों में धन व्यय करने वाला तथा बाद में उसके कारण दुःख का अनुभव करने वाला होता है। अधिक धन लाभ की इच्छा है यह लुप्त-संते आदि में अपना धन लगाकर उसकी हानि उठाना है। इसके मित्र तथा पण्डितजन भी धन के मामले में इसे धोखा देते हैं। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी लज्जावती होती है तथा उससे मतभेद भी रहती है। सन्तान होती है, पशु के भी अपने पिता को विशेष सम्मान नहीं देती। इसे जीवन में अनेक कष्ट उठाने पड़ते हैं। राज्याधिकारियों से भी वीर्य मिलती है। इसके कर्म का फल अल्प लोगों को भी भोगना पड़ता है। पूर्णाष्टि ७५ वर्ष की होती है।

(१४०८) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी गुणवान्, कलासमर्थ, दूसरों को लाभ पहुँचाने वाला, प्रोत्साहक तथा परार्थ चिन्ताओं से चिन्तित रहने वाला होता है। यह दूसरों के लिए चरित्र हानि भरा कष्ट उठाना है। यह निंदी चलावका होता है तथा अपने दोष का पंथ धन अर्पित करता है। इसका विवाह लगभग २०-२१ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी पुण्यवती तथा सात्विक स्वभाव की होती है, तथापि यह उसे मतभेद रखना है। वह भी इसे अपने से हीन समझती है, तथापि इसीके धन से धार्मिक कृत्य एवं दान आदि सम्पन्न करती रहती है। वह रोग-ग्रस्त भी रहती है। इसका भाग्यदण्ड १८ तथा ३० वर्ष की आयु में होता है। २३-२४ वर्ष की आयु में दुःख मिलता है। किं ३० वर्ष की आयु से जीवन में धन कालाभ होता रहता है। सन्तान से भी इसे सुख प्राप्त होता है। सन्तानों में लड़कियाँ अधिक होती हैं। पूर्णाष्टि ७८ से ८१ के मध्य होती है।

(१४०८) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुदा, स्वस्थ एवं शिक्षित होता है। सामान्यतः दुली-जीवन बिताता है। अपने जोहों से धन कमाता है तथा अपनी वाणी द्वारा सुनको प्रभावित करता है। यह उदा-चित्तवाला होता दुसरी कभी-कभी बड़ी बुद्धि का परिचय देता है। किसी व्यक्ति से असंतुष्ट हो जाने पर, अवसा मिलने ही उसे परिशोध लेता है और उसे किसी भी स्थिति में क्षमा नहीं करता। धन-लाभ होता दिखाई दे ले यह जुआरी खेलता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी से प्रेम करते दुसरी यह अल्प हिस्सों में अनुकूल रहता है तथा उनके कारण कार्य-हासि का कार्य भी उठता है। ३० वर्ष की आयु में इसका भाग्योदय होता है। यह कई स्त्रियों पर नौकरी करता है तथा कहीं भी टिक नहीं पाता। सन्तानों से इसे सुख नहीं मिलता। धन लाभ कभी कम और कभी अधिक होता रहता है। पूर्णाष्टि २९ वर्ष की होती है।

(१४१०) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति सामान्य सुदा, बुद्धिमान, मधुर भाषी, व्यवहार-कुशल, धी-गंभीर तथा धनवान होता है। पैतृक-सम्पत्ति के रूप में भी इसे धूमि, भवन तथा धन का लाभ होता है, पत्नी उसका आजीवन उपभोग नहीं कर पाता। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर, मनोमोहक तथा मधुर भाषिणी होती है। प्रथम सन्तान पुत्र होती है, पत्नी पछी पुत्र बड़ा होता बहुत दुःख देता है तथा पारिवारिक सम्पत्ति एवं पैतृक-धन का अपहारा भी करता है। तथापि लाभक अपने भाग्य एवं जोहों के बल पर स्वयं को सर्वत्र परिचित बनाये रखता है। ४२ से ४५ वर्ष की आयु में शारीरिक-कार्य होता सिमक है। आर्थिक-स्थिति उत्तम बनी रहती है। यह पारिवारिक के लाभ भी भोग-विलास में रत बना रहता है। रक्षावस्था में बीमार रहता है। पूर्णाष्टि ७८ वर्ष की लगभग प्राप्त करता है।

(१४११) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुधा स्वरूप जात, मध्यम कद का, कुटुमान, रसिक स्वभाव का, विलासी, आमोद-प्रेमोद प्रिय तथा मगमगी करने वाला होता है। यह चापलूसी पसन्द होता है। इसके स्वामी-मित्र अच्छे दिनों में केरे रहते हैं तथा कुछ दिनों में पलायन काफ़ाते हैं। इसे दिन का अल्प-सुख प्राप्त होता है तथा पुत्र ले भी नहीं बनती है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में होता है। कुछ समय तक यह अपनी पत्नी को बहुत प्रेम करता है, किन्तु २५ से २८ वर्ष की आयु में इसका संबंध किसी अन्य स्त्री से हो जाता है, जिससे इसे पुत्र मिले तथा पतनी शांति होती है। यह उसी के प्रेम में मग्न रह कर स्वयं को बहुत पत्नी अनुभव करता है। यह आसानी से अधिक खर्च करने वाला, मविष्य को न देखने वाला तथा नुकसान देने वाले कार्यों को करने वाला होता है। जीवन में उदा-चढ़ाव बने रहते हैं। प्रणय ७४ वर्ष।

(१४१२) - इस जन्मांक चक्र में जन्म लेने वाला मृगश्रम सुधा, स्वल्प, आपन्न पराकुमी, बहुत धन कमाने वाला, लोकप्रिय तथा पर-दुःख-काल होता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी विदुषी तथा सामाजिक-कार्य-व्यवस्था में कुशल होती है। वह गृहस्थी का कुशल-संचालन करती तथा सामाजिक-सम्मान की अभिवृद्धि करती है। इस जातक के पास धन का अभाव नहीं रहता तथा यह खर्च भी खुले हाथों से करता है। इसे विद्या, बुद्धि, शौर्य तथा साहस प्रदर्शित करने के अनेक अवसर प्राप्त होते हैं। यह लोकप्रिय तथा राज्य का सम्मानित होता है। इसका अग्रोदय २५ वर्ष की आयु में होता है। ४५ वर्ष की आयु तक यह विद्या उन्नति करता चला जाता है। जीवन के अन्तिम समय में कुछ दिनों तक बीमारी भी रहता है। पुत्र-पौत्रों से पुत्र सुखी जीवन बिताते हुए लगभग ७८ वर्ष की आयु जाफ़ा करता है।

(१४१३) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुदा, स्वल्प, अनेक कलाओं का हारा, कवि, साहित्यकार, गुण-लेखक तथा सुवक्ता होता है। इसकी कीर्ति देश-विदेश में फैलती है। इसका विवाह २० वर्ष की आयु में ही हो जाता है। पत्नी सुदी, गुणवती, विद्वान् तथा कार्य-कुशल मिलती है। विवाहोपान्त ही इसका अंगोदय आरंभ हो जाता है। इसे धन-धान्य की कमी कमी नहीं रहती। राज-कीर्ष सेना में एक सचवा राज्य के जहा यह विपुल धन तथा यश अर्जित करता है। इसे अनेक लोगों से धन का लाभ होता है। २५ से ५० वर्ष की आयु तक यह निरन्तर उत्कर्ष का ता-बला जाता है तथा धन के साथ ही मान-प्रतिष्ठा भी रखे अर्जित करता है। ६२ वर्ष की आयु में यह किसी अपत्या सम्पत्तिन यद् यद् परिचित होता है। पुन-पौत्रों से पुत्र सुखी जीवन बिताने हुए यह लगभग ७२ वर्ष की आयु में पालोक-गमन करता है।

(१४१४) - इस जन्मकुण्डली में उत्पल मनुष्य सुदा, स्वल्प, पाकुनी, जहाही, साहसी, तथादि अस्मिन्-चित्त वाला होता है। यह बाल्यवस्था से ही धर्मोपासी की दिशा में प्रवृत्त होता है। यह किसी वा विश्वास नहीं करता। स्वभाव से अपत्या कुपण होता है। इसका धन रोग तथा विवादों में अधिक खर्च होता है। धि भी यह यथार्थ धनी बत रहता है। इसका विवाह २० वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी के अतिरिक्त एक अपत्या स्त्री से भी यह संबंध स्थापित करता है। यह राजकीर्ष-सेना में अथवा किसी धनी व्यक्ति की सेना में एक सचवा बड़ा धन कमाता है। अंगोदय २५ वर्ष की आयु से आरंभ होकर बृद्धावस्था तक बत रहता है। इसके पुन पुत्र तथा काम को बढ़ाने वाले होते हैं। वे बृद्धावस्था में सुख भी देते हैं। ७० वर्ष की आयु में यह बीका होता है। पूरा ७२ वर्ष होती है।

(१४१२) - इस जन कुण्डली का स्वामी सुदा, मंगली, उत्तरी तथा साहसा उद्विग्न का होता है।
इसे कोप, शीघ्र आता है। यह अपनी गंभीरी तथा ऊँची कोपों से सामने वाले को पराजित करेगा
है। इसे प्रायः ही खूब खफा होता है। सम्पत्त माला - धन की संतान होने के कारण इसकी
विद्या - दीक्षा उत्तम होती है। २१ वर्ष की आयु में ही यह किसी अच्छे पद पर उन्नित होकर
जीविकोपार्जन का उद्योग है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु तक हो जाता है। पत्नी सुन्दरी
तथा कला-मर्मज्ञा होती है। यह जलाना उद्योग एवं धीमा के सम्मान को बढ़ाने वाली होती
है। यह जातक पत्नी से प्रेम करने हुए भी अन्य विचारों से भी संकष्ट लिता है। ३४ वर्ष की
आयु से इसकी विशेष भाग्यवति तथा पद-वृद्धि होती है। पञ्चांगिक-कार्य में दस पहलातक
६५ वर्ष की आयु में कुछ समय तक बीमार रहता है तथा ७४ वर्ष की पूर्णाष्टि जात का होता है।

(१४१६) - इस जन कुण्डली का स्वामी सुदा, स्वल्प, बुद्धिमान, विद्वान्, कला-मर्मज्ञ तथा
उत्तम धर्मियों का सुगुणित मित्र होने वाला होता है। इसका भाग्यदण्ड अचपल है ही
होता है। २५ वर्ष की आयु में यह विशेष धनोपार्जन करने लगता है। २६ वर्ष की आयु में
इसका विवाह हो जाता है। राजमान्य अथवा राजकीय-सेवक के रूप में यह आजीविको-
पार्जन काता है। काक, लालित तथा लज्जित कलाओं से इसे विशेष प्रेम होता है। यह
धर्मप्रेमी, दयालु तथा दानी भी होता है। भूमि, गवय, मृग-रत्न, वाहन आदि सब प्रकार
की लभ्यताओं से युक्त सुखी-जीवन बिताता है। पत्नी विदुषी तथा जलदा-कुशल होती
है। ४५, ५३ तथा ५६ वर्ष की आयु में इसे विशेष सम्मान की उपलब्धि होती है। ५३
तथा पौन सुयोग्य एवं आलाकारी होते हैं। पूर्णाष्टि ७८ वर्ष की लगता होती है।

(१४१७) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुदा, स्वल्प, सरल, बुद्धिमान, व्यवहार - कुशल तथा सुखी सम्पन्न होता है। यह साहित्य-प्रेमी, लंगीन, कवि अथवा किसी अन्य लालित-कला का जानका होता है। इसकी जीर्णवाल्पावस्था से ही कैल जाती है तथा यह छोटी आयु से ही धन कमाने लगता है। यह धार्मिक विचारों का तथा योगकारी स्वभाव का होता है। दूसरों के काम आता इसे अच्छा लगता है। इसे राज्याध्यक्ष अथवा राजकीय-सेवा से मान्यता प्राप्त होती है। यह अनुशासन-विज होता है तथा उच्चपदों पर कार्य करता है। अनुशासन-मंग होने की निम्नलिखित कड़े-से-कड़ा कदम उठाते से भी नहीं श्रुतता। ४५ वर्ष की आयु तक यह अत्युच्च पद प्राप्त करेगा। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोबुद्धिवाली मिलती है तथा वात्सल्य होती है। ५२ वर्ष की आयु में विशेष लाभ मिलता है। प्रणति ७६ अथवा ८५ वर्ष होती है।

(१४१८) - इस जन्माहु-चक्र के उत्पन्न मनुष्य नीतिज्ञ, हारी, सुदा, पाण्डुरी, उन्नतवर्ण, साहसी तथा सौभाग्यशाली होता है। यह अपने पुत्रार्थ तथा उत्थम से स्वयं को उन्नतित करता रहता है। यह शिक्षा-दीक्षा प्राप्त कर पण्डित बनता है तथा ब्रह्म धर्मोपासी बनता है। २५ वर्ष की आयु तक यह राजकीय-सेवा में लिप्त होता है तथा विनाश उल्लसित करता-चला जाता है। इसी अवधि में इसका विवाह भी होता है। पत्नी सुदारी, उच्च विचारों वाली तथा इसे उत्प्रेषण सेन में सहयोग देने वाली मिलती है। ५०, ५२ वर्ष की आयु में इसे विशेष लाभ होता है। इसके पुत्र सुदा तथा होतारा होते हैं। वे सभी उन्नतवर्ण तथा धन के सुपुत्र को बढ़ाने वाले सिद्ध होते हैं। इस जन्म को जीवन्त के २६, २८, ३२, ३८, ४५, ४८ तथा ५२ वें वर्ष विशेष लाभ प्राप्त रहते हैं। प्रणति ७६ वर्ष की होती है।

(१४१६) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी बुद्धा, स्वप्न, आकर्षक तथा वात्सल्यपूर्ण से ही लोभाग्र-
भागी होगा। इसकी शिक्षा - दीक्षा उत्तम प्रकार से सम्पन्न होती है। यह दयालु, धर्मप्रेमी, दानी
तथा योग्यकारी होगा। यह मधुर-चिन्ता का तथा लोकप्रिय होगा। इसका विवाह २६ वर्ष
की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, चंचल-बुद्धि की तथा पति को अपने वश में रखने वाली
मिलती है। इसे किसी पर-हसी का सेवक आदि भी बनना पड़ सकता है। इसकी आयु का
अधिकांश भाग इसी स्थिति में व्यतीत होगा। यह पदवि धनोपायन भी करेगा।
५५ वर्ष की आयु में इसे भूमि, मकान, धन आदि का विशेष लाभ होगा। यह अपनी बुद्धि-
मत्ता से अपने-चोरे को के वात्सल्य का अपने अनुकूल बना लेने में सफल होगा।
इसकी आयु ६६ वर्ष होती है, इसका काले तो २२ वर्ष तक जीवित रहना है।

(१४२०) - इस जन्मकुण्डल में उत्पन्न मनुष्य बुद्धा, स्वप्न पालु रूप चिन्ता का तथा स्वप्न
को स्पर्शवादी मानने वाला होगा। यह वचन से ही लोभाग्रभागी होगा। २० वर्ष
की आयु तक यह उच्च शिक्षा प्राप्त कर अल्पकाली, विद्वान् तथा मज्जमान बन जाएगा।
इसे माता का अल्प-सुख मिलना है। बड़े भाई का सुख भी नहीं मिलना। जब यह ३४ वर्ष
का होगा, तब इसके परिवार में कुछ संसर्ग के लिए अशान्ति-उपद्रव उत्पन्न होने हैं। इस
का विवाह २५-२६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी, सुकीर्तिदा एवं मनोनुकूल
मिलती है। वह उच्च शक्तोंवाली, मनीषिणी तथा पति को अपने प्रभाव में रखने वाली
होती है। तथा पति के धन का अपव्यय करके किंचित मानसिक-व्यथे भी देती है। संतान
अच्छे लगन की होती है। प्रसूति ६७ अथवा ७६ वर्ष होती है।

(१४२१) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुका, स्वप्न, मध्यम क्रम का, विभिन्न कलाओं का ज्ञान, धी-धीरे, लाभकारी तथा पुत्रप्राप्ति होता है। यह अपने पात्रकुमारे धन-सम्पत्ति तथा मान-प्रतिष्ठा की वृद्धि करने वाला तथा जीका, सम्राज एवं क्षेत्र में लोकप्रिय होता है। इसकी शिक्षा - दीक्षा उत्तम होती है। यह सरकारी नौकरी में किसी उच्च पद या प्रतिष्ठित होकर पदवि धनोपार्जन करता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुकरी, मनसिनी तथा चंचल स्वभाव की होती है। वह पति या पूर्ण निष्ठा रखती है। तथा यमक - दमक वाला उच्च स्वीय - जीवन व्यतीत करती है। ३४ वर्ष की आयु में उसे अनेक प्रकार के लाभ होते हैं तथा मान-सम्मान की वृद्धि भी होती है। ४७ वर्ष की आयु तक यह बहुत उन्नति कर लेता है तथा ६८ वर्ष की आयु तक जीवित रहता है।

(१४२२) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुका, स्वप्न, जौवरण, लोकमान्य, राजमान्य, नीतिज्ञ, तथा वाणिक्य - सेवा का धनोपार्जन करने वाला होता है। यह विद्याधन में विशेष रुचि लेता है तथा उच्च शिक्षा प्राप्त कर स्वयं को बहुत ऊँची स्थिति में ले जाता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनोउत्कला प्राप्ति होती है। मातृपक्ष २६ वर्ष की आयु में आगे बढ़ता है। यह भवनों में रहित, कठोर एवं हठ स्वभाव का तथा कोई बड़ा सा काम बिगाड़ देने या भी कठोर - नि - कठोर दृष्टि देने में न हिचकने वाला होता है। यह अपने शारीरिक-बल के गर्व में दुर्गमित्री भी हो सकता है तथा उद्देश्य सिद्धि के लिए विभिन्न उपजों को अपनाता है। स्वार्थ - साधन हेतु यह छोटे - से - छोटे काम करने में भी सही चूकता। सामान्यतः आर्थिक दृष्टि से सुखी रहकर २२-२४ वर्ष की पूर्णपुत्र प्राप्ति करता है।

(१४२३) - इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य सुदा, गुणी, विद्वान्, विद्वान्, अपने पुत्रों का एक
 कनोपासित करेगा। सुदी तथा समस्त होता है। इसे राज से लाभ होता है। यह राजकीय सेवा
 में उच्चपद प्राप्त करता है। इसे पात्रों का भी लाभ होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु
 में होता है। पत्नी हृदयिकाला, मनेतु कुला, सुदी तथा सुलभ देने वाली होती है। २७ वर्ष की
 आयु तक इस जातक की आर्थिक-स्थिति सुदृढ़ होगी है तथापि यह उच्चपदों पर रहकर
 अधिक लाभ तथा सम्मान अर्जित करता चला जाता है। इसे आयु के ४५, ४८, ४९, ५६ तथा
 ५९ के वर्ष में विशेष लाभ होता है तथा यश प्राप्त होती है। यह परीक्षाओं में भी सफल होता
 है तथा उनकी उत्तमता हेतु विविध कार्य करता है। इसे धर्म, भवन, वाहन, भिक्षा, वस्त्राभूषण,
 धन आदि के सभी सुख प्राप्त रहते हैं। लगभग ८९ वर्ष की आयु में पालोक गमन करता है।
 (१४२४) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुदा, बुद्धिमान्, बहुत गुणी, विद्वान्, उच्चशिक्षा-
 प्राप्त, कठोर्बुद्धि, हिकल्प का धनी तथा अपने शौर्य एवं पात्रों से सबको मोहित करेगा।
 होता है। यह राजकीय सेवा अपना राजकीय-सेवा का विपुल धन अर्जित करता है। यह
 उन लोगों में भी धन प्राप्त करता है, जो बूढ़ एवं रहस्यमय कार्यों का चोरोपासित करते हैं,
 इसका विवाह २९ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुदी, तेजस्वी तथा धन के अपने
 प्रभाव में रहने वाली होती है। वह विपुली तथा कला-महिला होती है एवं पति-गृहस्थी
 ले लेकर बाह्य तक अपना प्रभाव राखती है। पुत्र-पुत्री भी सुदा तथा विवेकशील होते हैं।
 जीवन के २३, २४, २८, ३२, ३५, ३८, ४०, ४२, ४५, ४८, ५२ तथा ५५ के वर्ष विशेष लाभ
 प्राप्त होते हैं। पूर्ण आयु ५९ वर्ष का होता है।

(१४२५)- इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुक्र, चिह्न, बुद्धिमान तथा अनेक कलाओं का हाना होना है। यह विमान, तन्त्रीकी विषय, चिकित्सा कला, काव्य तथा आलेखन आदि विषयों में रुचि लाता है। पानु अनेक कलाओं का जानकार होने दुर्लभ किसी का पूर्ण चरित्र नहीं होगा और न उनके लिये किसी को अपनी आजीविका का साधन ही बनता है। कलाकार बनने की इच्छा रखने पर भी उनकी पूर्ण से सम्बल नहीं होना। यह अनेक कार्यों को बिना संचे-लन के आगे काके अपने धर्म की हानि करेगा है। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में होगा। पत्नी बहुत समझदार तथा प्रत्येक कार्य को ठीक ढंग से करने वाली होती है। वह अपने बुद्धि से पति को अधीन रखती है। जातक स्वयं परीक्षित अपना-कार्य द्वारा ४०-४२ वर्ष की आयु में अपनी आर्थिक-स्थिति को कुछ ठीक करेगा है। पूर्णाष्टि ७० वर्ष होती है।

(१४२६)- इस जन्म कुण्डली में उत्पन्न मनुष्य स्वल्प, सुक्र, विद्वान् तथा तेजस्वी होता है। वह ऊँचे कद का, पीछी, गंभीर, मजबूत, पाकुमी तथा सुकी होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु तक होना है। पत्नी सुधी, धी-अमी, मनीषिनी, बहुत तथा बहुत सोच-समझक बात कहने वाली होती है। यह जातक राजकीय सेवा द्वारा प्रमुख धनोपार्जन करता है। राज्य द्वारा सम्मान तथा उच्चपदवी प्राप्त है। ४२-४६ वर्ष की आयु में इसकी स्त्री आकांक्षाएँ पूरी हो जाती है। यह अनुशासन-विद्वान् तथा कुशल-व्यवस्थापक होता है। इसे धन का अभाव नहीं रहता। यह अनेक वीर्यों में आसक्ति रखने वाला तथा विविध प्रकार के भोग भोगने वाला होता है। इसके पुत्र-पुत्री भी योग्य होते हैं। ७१ वर्ष की आयु में यह किसी करिब होगा का भिन्न बनता है, पानु दो-तीन वर्ष में ठीक होगा २३-२४ वर्ष की पूर्णाष्टि प्राप्त करता है।

(१४२७) - इस जलकुण्डली का रचामी सुद्ध, स्वल्प, उच्च विचारों का, गुणवान्, किसी की भी हानि न पहुँचाने वाला, किसी से द्वेष न रखने वाला, भूमि-भवन-वाहनदि से सम्पन्न तथा सब सुखों से युक्त होता है। यह सोम्य-मनवान् का, आकर्षक-कारिग्य सम्पन्न तथा बालकीय-सेवा द्वारा आजीविकोपार्जन करने वाला होता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुद्ध तथा गुणवती होती है, तथापि अन्ध विज्ञानों से भी इसके विरोध रहते हैं। यह उच्चपदों के प्राप्त का पक्ष तथा धन की वृद्धि का ना है। भाग्यदण्ड विवाह के बाद ही कर्म होता है। स्त्री के माध्यम से तथा अन्ध अनेक लोगों से इसे आर्थिक-लाभ होता रहता है। ६० से ६४ वर्ष की आयु में इसे बहुत लाभ होता है। पुत्र-पुत्रियों से युक्त होकर यह हा-उमर से सुखी-जीवन व्यतीत करता है। पूर्णाष्टि २७ वर्ष की होता है।

(१४२८) - इस जलकुण्डली में उत्तम गुण सुद्ध, स्वल्प, आकर्षक कारिग्य सम्पन्न, पराक्रमी, महत्वाकांक्षी तथा लोकप्रिय होता है। यह अपने जीवन द्वारा पुत्र सम्पत्ति अर्जित करता है। जिन कार्यों के कारण से अन्ध लोग बचते हैं, उन्हें करने के लिए यह सदैव उत्सुक बना रहता है। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुद्ध, गुणवती तथा उत्तम कुल की होती है। इसका सम्बन्ध अन्ध विज्ञानों से भी रहता है। जिन कार्यों में लोगों का सहयोग हो, वे इसे बहुत अच्छे लगते हैं। विज्ञान भी इसे बहुत चाहती है तथा अपना सहयोग-साहचर्य देती रहती है। इसका भाग्य सदैव लाभ देता रहता है। अन्ध छोटे कार्यों से भी इसे सदैव लाभ मिलता है। बन्धु-बान्धव तथा मित्रों से भी यह लाभान्वित होता रहता है। सुखी-जीवन बिना दुःख ५८ अथवा ६८ वर्ष की वृद्धावस्था प्राप्त करता है।

(१४२६) - इस जन्म कुण्डली का अधिपति सुक्र, स्याम, गौवर्ण, मधुम कद का, महत्वाकांक्षी, कलाओं का ज्ञान, नायिक, शास्त्रज्ञ, पाश्चात्तान जीवनपद्धति का उपाहक, विद्या-बुद्धि सम्पन्न अनेक मोलों से चत कसोते वाला तथा अनेक महत्वपूर्ण कार्य करने वाला होता है। अपने जन्म के उच्च दिग्वा पा आसीन रहने समय इसे शत्रुओं द्वारा पीड़ित करने के प्रयत्न भी होते हैं। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनीषी, पति-गर्विता एवं हृष्यगर्विता होती है। २७ वर्ष की आयु में इस जातक को विशेष मान-सम्मान प्राप्त होता है। यह देश-विदेश की यात्राएं करता तथा उनसे लाभ उठाता है। ४५ वर्ष की आयु में इसे किसी विपत्त परीक्षित का सामना करना पड़ता है, जिसे ३ वर्ष बाद दूरका मिलता है। इसकी सन्तान सुयोग्य होती है। एक प्रकार से लकी जीवन बिताता हुआ यह लगभग २० वर्ष की आयु में जलोक जाता है।

(१४३०) - इस जन्म कुण्डली का ह्वासी सुक्र, सुवर्ण, धनित्वा, ज्ञानी तथा अनेक प्रकार के लाभ प्राप्त करने वाला होता है। यह अनेक शत्रुओं का विजय प्राप्त होता है तथा उनका उपकार करता है। वाल्मीक्या के ही इसे लाभ प्राप्त होता है। यह पत्नी तथा सम्पत्ति पा के लाभ लेता है तथा सम्पूर्ण जीवन वैभव तथा ऐश्वर्यपूर्णता में बिताता है। इसका विवाह २९ वर्ष की आयु में हो जाता है। पत्नी सुदृढ़, तुल्यवर्णा तथा प्रजल कुल की बुद्धिमती होती है। यह मंगोबुद्धि तथा सहयोगिनी हिंद होती है। ३५ वर्ष की आयु में इसे विशेष सम्मान मिलता है। चत-लाभ भी होता है। ४० वर्ष की आयु में कोई नया काम करता है तथा बाह्यीक्षण पा सम्पत्ति पद प्राप्त करता है। ५६ वर्ष की आयु में भी इसे विशेष लाभ होता है। पुत्र-पुत्रियों के सम्पत्ति लाभ श्रवण रहते हुए यह ६६ वर्ष की आयु में ८२ वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(१४३१) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुद्धा, मध्यम कद का, विशाल हृदय, परोपकारी प्रकृति का तथा महत्वाकांक्षी होता है। यह अल्पविक दयालु, राजकीय-सेवा द्वारा आजीवि को धार्मिक कार्ये वाला तथा सुखी-जीवन बिताने वाला होता है। २२-२३ वर्ष की आयु में ही यह राजकीय-सेवा में संलग्न होकर अर्थोपायन करने लगता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुद्धा, बुद्धिमती, विवेकशीला तथा आलानुवर्तिनी होती है। वह पति को सुख देती दुर्लभ, गृहस्थी का कुशलाना पूर्वक संचालन करती है। २८, ३४ तथा ३६ वर्ष की आयु में तीन बार इसकी सेवा-स्थिति में परिवर्तन आता है। ४५ वर्ष की आयु में यह पदोन्नति में रहकर अष्टमशतिका प्राप्त कर लेता है। यह वक्तव्य देने के कुशल तथा चोरी की के वातावरण को अपने अनुकूल बना लेने में प्रवीण होता है। ५५ वर्ष की आयु में बड़ा हंगटक बनता है। पुन विमुक्त होता है। पूर्ण ८३ वर्ष होती है।

(१४३२) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुद्धा, बृहद शरीर का, काला-कौशाल के युक्त तथा रागात्मक वृत्ति का होता है। यह मीनपेश के उरि दुर्बल होता है और उनकी उत्प्रेषण कार्ये करने के लिए तत्परा रहता है। इसके पास धन की कोई कमी नहीं रहती। यह धन का भक्षण, पालन परीक्षा-रीजों के उरि विवेक रखने वाला होता है। यह धन की अतिरिक्त का लाभ भी उठाता है। इसका हृदय बहुत बड़ा होता है। यह अपना भेद किसी को नहीं देता तथा अपनी सभी योजनाओं को गुप्त रखता है। यह धन को अपने हृदय में लगाकर लावता है। विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी मनुष्यकुला मिलनी है, पालन अल्पक दिनों तक सुख नहीं दे पाती। पुन-पुत्री होता है। अल्प भिक्षों के संघर्ष से यह सुखोपभोग प्राप्त करता है। इसे प्रसिद्ध धन का विपुल लाभ होता है। ४० वर्ष की आयु में बहुत उत्कर्ष होता है। पूर्ण ७८ वर्ष होता है।

(१४३३) - इस जन्मकुण्डली का स्वामी सुधा शरीर का, बुद्धिमान, उच्च शिक्षित, गुंथ लेखक तथा शा-
स्त्रज्ञ होता है। इसकी मंत्र-शक्ति जीवनभर मील बनी रहती है। धार्मिक हृदय का तथा उदात्त होने के
कारण यह कोई ऐसा कार्य नहीं करता, जो आम लोगों को अनुचित पाले हो। परन्तु जिस
कार्य को यह उचित समझता है, उसे 'सार्वजनिक विरोध' का साधन काले हुए भी धाली ठोक
का अग्रदूत करता है। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुधा तथा विदुषी
मिलती है। अपनी उदात्तता के कारण यह कुल में विख्यात होता है। इसे अपने से निम्न कोर्ट के
व्यक्तियों का सहयोग प्राप्त होता है तथा उनके द्वारा चलायित भी करता है। ४५ वर्ष की आयु में
यह पादश-गन्त करता है तथा वहीं पर इसका आश्रय होता है। धन तथा मान के सम्पत्ति
एवं पुत्र-पुत्रियों से युक्त सुखी-जीवन बिताना हुआ यह लगभग २० वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(१४३४) - इस जन्मकुण्डली में उल्लास मनुष्य सुधा, मधुभाषी, उदात्त स्वभाव का तथा व्यवहा-
कुशल होता है। यह काव्य-कर्म तथा उच्च कलाओं का हारा होता है। इसकी शिक्षा-दीक्षा
उच्चतरीय होती है। इसका विवाह लगभग २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुधा, विदुषी
तथा कुछ स्थूल शरीर की होती है। यह पति की अनुगामिनी तथा गृहस्थी के दायित्वों का सुपुर्च
निर्वाह करने वाली होती है। यह जातक पोषकात्री, गरीबों तथा शिक्षितों के सहारा देने
वाला एक राज्य की सेवा से विपुल धन अर्जन करने वाला होता है। इसके पास धन की कमी
नहीं रहती। यह अपने कार्य द्वारा उच्च शक्ति प्राप्त करता है। इसका आश्रय २६ वर्ष की
आयु में होता है तथा ४० वर्ष की आयु तक विना उल्लंघन काला चला जाता है। इसके पुत्र सुधा
तथा आदाकारी होते हैं। यह लगभग २० वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

(२४३५) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी बुद्धिमान, विज्ञा-सम्पन्न, अनेक सुखों से युक्त, सुन्दर, स्वल्प तथा चारों ओर के वातावरण को अपने अनुकूल बना लेने वाला होता है। यह अपने उच्चमनसा साहस से नवीन कार्यों को करने वाला तथा अत्यन्त प्रभावशाली होता है। इसे किसी भी काम को करने में हिचक नहीं होती। कार्य के लक्ष्य में इसके मानदण्ड अत्यन्त लोगो से भिन्न होते हैं। धन की इसके पास कोई कमी नहीं रहती। नैतिक दृष्टि से इसका व्यक्तित्व उच्च स्तरीय होता है। यह राजकीय-सेवा में उच्च पद प्राप्त करता है। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दर तथा आकर्षक व्यक्तित्व की धारी, अत्यन्त प्रभावशालिनी होती है। इसके पुत्र-पुत्री भी सुन्दर तथा आलाकारी होते हैं। ६५ तथा ६८ वें वर्ष इसके जीवन में विशेष महत्वपूर्ण होते हैं। यह सुखी-जीवन बिताता हुआ लगभग ८६ वर्ष की पूर्णाहुति प्राप्त करता है।

(२४३६) - इस जन्म कुण्डली का स्वामी सुन्दर, मध्यम कद का, मृदुभाषी, सुशील, चर्माग्रा, सारी, लाभ प्राप्त करने वाला, धनी तथा अनेक विधियों से युक्त होता है। यह केवल कुल में जन्म लेने वाला, पशुही माना-पिता का पुत्र, वात्स्यायना से ही हुन-सृष्टि का उपभोग करने वाला, काही व्यक्तियों द्वारा सम्मानित, कुल का मुखिया तथा आत्मकेन्द्रित विभावक होता है। यह अपने सामने किसी की शत्रुता नहीं करता। यह राज्य में उच्च पद प्राप्त करता है तथा राजनीति में भाग लेता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होता है। पत्नी सुन्दरी तथा मनोरंजक मिलती है। यह धन के मामले में कृपण होता है तथा अपने को ऐसा रहस्यमय बनाये रखता है कि इसकी पञ्चाश-शक्ति के विषय में किसी को सही जानकारी नहीं होती। पुत्र-पौत्रों की संख्या अधिक होती है। सम्मानता में जीवन बिताता हुआ यह ८३ वर्ष की आयु प्राप्त करता है।



